ISSN 2229-547X

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒮𑒠𑒹𑒯 𑓓𑓐

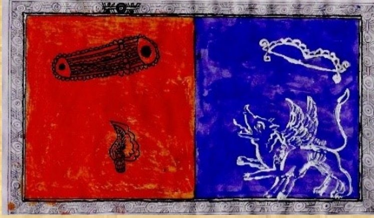
𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒏𑒰ॅ𑒪𑒹𑒖𑒏 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒪𑒹𑒪

𑒑𑒠𑓂𑒨 𑒂 𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒩𑒔𑒢𑒰

(𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 www.videha.co.in/ 𑒣𑒹𑒙𑒰𑒩 𑒁𑓀𑒏 𑓑-𑓓𑓓𑓐 𑒮𑒿)

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯-𑒮𑒠𑒹𑒯 𑒬𑒵𑓀𑒐𑒪𑒰- 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑒑𑒠𑓂𑒨 𑒂 𑒣𑒠𑓂𑒨𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢: 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯- 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒄-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰

ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏: 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩।



সম্পাদক: গজেন্দ্র ঠাকুব। Editor: Gajendra Thakur.

ISSN: 2229-547X
মূন্য : ভা. ৰু. ৬,৫০০/- সংস্কবণ: ২০২২

Videha Sadeha 30: A Collection of Maithili Prose and Verse for School & College Students e-published in Videha e-journal issues 1-350 at www.videha.co.in).

অনুক্রম

গদ্য-খণ্ড

নেপালক মৈথিলী ভাষা বৈজ্ঞানিক লোকনি দ্বারা বনাওল মানক উচ্চারণ আ লেখন শৈলী

মৈথিলী অকাদমী, পটনা দ্বারা নির্ধারিত মৈথিলী লেখন-শৈলী

উচ্চারণ নির্দেশ

হরিমোহন ঝা সমগ্র সমর্পণ

গজেন্দ্র ঠাকুর- নচিকেতা জীক নাটক নো এণ্ট্রী: মা প্রবিশ, মৈথিলী রাম চরিত মানস-মৈথিলী সমালোচনাক বিফলতা, মৈথিলী উপন্যাসপর অংগ্রেজী সাহিত্যক প্রভাব, চারিটা উত্তর আধুনিক নাটক: সৈমুঅল বৈকেটক ফ্রেংচ নাটক "বেটিংগ ফ◌ॉর গোডো", হৈরোল্ড পিংটরক অংগ্রেজী নাটক "দ বর্থডে পার্টী", বাদল সরকারক বাংগ্লা নাটক "এবম্ ইন্দ্রজীত" আ উদয নারাযণ সিংহ 'নচিকেতা'ক মৈথিলী নাটক "নো এণ্ট্রী: মা প্রবিশ", ইন্ফ◌ॉর্মেশন সোসাইটী, সার্বভৌম মানবাধিকার ঘোষণা আ ভারতীয সংবিধান, অন্হারক বিরোধমে হাথী চলএ বজার -অরবিন্দ ঠাকুর আ দেবশংকর নবীন, নচিকেতাক মধ্যমপুরুষ

একরচন, মৈথিনী নেন একটা খন্বরাদ সিদ্ধান্ত, ভাবোপীয ভাষা পবিরাব মধ্য মৈথিনীক স্থান, ড◌ॉ. ৰাঁৰাঁসাহেৰেঁ খাম্ব্রেডকব (১+৯১–১৯৩৬), ছতহব/ ছতহব ঘৈন/ ছতহা ঘৈন মিথিনা খা সংস্কৃত– কামেশ্বৰ সিংহ সংস্কৃত রিশ্বরিখ্যানযক প্রাসাংগিকতা, সাহিহ্যিক বচনা, ৰনৈত–রিগড়ৈত–স্বভাষচন্দ্র যাদরক কথা সংগ্রহক সমীক্ষা, কেদাবনাথ চৌধবীক উঁপন্যাস “চমেনী বানী” খা মাহ্ব, ফীল্ড–রর্কপব খাধাবিত খিস্সা সীত–ৰসংত, রর্ণমানা শিক্ষা: খংকিতা, কিযো ৰূঝি নৈ সকন হমবা–(গজনকাব শ্রী ওম প্রকাশ ঝা), বামিরনাস সাহ্জীক দধূ ৰেচনী নঘ্কথা সংগ্রহ, বাজদের মল্ডনক খম্ব্রবা, মৈথিনীক ভিখাবী ঠাক্বক নামসঁ প্রসিদ্ধ মৈথিনীক পহিন জনকরি বামদের প্রসাদ মণ্ডন ‘ঝাব্দাব’ক গীত খা ঝাব্দ – “হমবা রিন্ব জগত স্বন্না ছৈ”, ঝন্নাজীক “মাঁঝ খাংগনমে কতিখাএন ছী”, ঝন্নাজীক মৈথিনী রিহনি কথাক সংগ্রহ “প্রতীক”, বামরিনাস সাহ্ জীক করিতা, গীত, হাগকূ, শৈনর্যূ খা টৈনকা সংগ্রহ “বথক চক্কা উঁনটি চনৈ ৰাট”, উঁমেশ মল্ডন জীক “নিশত্তকী” করিতা, নঘ্–করিতা, হাগকূ/ টৈনকা খা গজনক সংগ্রহ, উঁমেশ পাসরানক করিতা সংগ্রহ “রর্ণিত বস”, স্বজীতক জিদ্দী, রিনীত ঠাক্বক ৰাঁকী খছি হমব দূধক কর্জ, সংতোষ ক্মাব মিশ্র– “এনা কিএ.. ? ”, সংতোষ ক্মাব মিশ্র– মিথিনা (নেপান)কেব পোসপ্বত কথা সংগ্রহ– মিথিনাক্ষবমে প্রকাশিত মৈথিনী পোথী, নোবিক গাথামে সমাজ ও

সংস্কৃতি, পংজী-প্ররন্ধ, মিথিনা কনা, রিস্মৃত করি- পং. বামজী চৌধবী (১৮৭২-১৯৩২), সংগীত-শিক্ষা,বামাশ্রয ঝা 'বামবংগ', সর্বতংত্র স্বতংত্র শ্রী ধর্মদত্ত ঝা(বঁচা ঝা) (১৮৬০-১৯১৮ ঈ.), ম.ম. শংকব মিশ্র, জনক, যাজ্ঞবল্ক্য, চাণক্য...কৌটিল্য, মৈথিনী ভাষাপাক ১-৩, কী অহাঁকেঁ রুঁঝন অছি ?

শ্রী মৈথিনী পুত্র প্রদীপ- অাধ্যামে

ধনাকব ঠাকুব- প্রজ্বনিত প্রজ্ঞা (পূর্ব বাষ্ট্রপতি ডা০ কনামক পোথী ক ডা০ নিত্যানন্দ নান দাস দ্বাবা মৈথিনী অনুরাদ) ক সমীক্ষা, জগদীশ প্রসাদ মংডনক " গামক জিনগী", সমীক্ষা – ফূল তিতনী আ তুনরুঁন (নেখক –শ্রী সিযাবাম ঝা 'সবস')

ঝন্না জী- রাঁন গজনঃ প্ৱবান দেহক নর চেহবা, রিহনি কথা সংসাব, অসু্কো ক্ষণকেঁ অংগীকাব কবৈছ "ক্ষণিকা", অনমোন ঝাক সমযকেঁ সাক্ষী বাখি .... !

ডা. বমণ ঝা- ফোকা-এক রিহগারনোকন, মৈথিনী চিত্রকথা

জীরকান্ত- উত্তবাধিকাবী আ নেখক, জগদীশ প্রসাদ মংডনক 'জিনগীক জীত' উপন্যাসপব

ড◌া. বাজীর কুমাব রর্মা- কাবী ঘটা রঁবসৈত মেঘ

मानेश्वर मनुज- मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता, मैथिल दृष्टिक प्रसंग झंझटसँ एक चिट्ठी/ चूड़ी दागक निनामी कोना से देखू

ओम प्रकाश झा- भोथ हथियार, मैथिली गजल गजलक अवधारणा, रहतपिया बचना मे, घोघ उठबैत गजल

डॉ. रमेश्वर झा- समीक्षा- मौलागल गाछक फूल

शिव कुमार झा 'टिल्लू'- मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान, मौलागल गाछक फूल- (समीक्षा), भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा, समीक्षा (अर्चिस), यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस, समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक), समीक्षा- विभावानीक नाटक रनचन्दा, किस्तु-किस्तु जीवन-शेफालिका वर्मा-(समीक्षा), मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान, पृथ्वीपुत्र, मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान, पुनर्जन्म :: कथाकारक सूत्रपात, क्षणप्रभा, रहिवा नाचए अपने तान, मिथिलाक लोक देवता, गन्धर्वनवमी अकासमे सामाजिक विमर्श, कथा किरणमे यथार्थबोध ओ नारी विमर्श, आशु करिवक द्वन्दयातिविक विलोल- कलानिधि, निश्तुकी, समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल), मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गणेश गुंजन), कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक- (समीक्षा), समीक्षा - गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा, समीक्षा- तरेगन,

समीक्षा– हम पछैत छी– कविता संग्रह (विनित उत्पल), मैथिलीक विकासमे ब्लॉग कविताक योगदान, मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण, पोथी– समीक्षा– भारांजलि, रमाजीक काव्य यात्रा, समीक्षा– अविपल (कविता संकलन), समीक्षा– बिन बाती दीप जरय

रमाकान्त राय 'रमा'– गामक जिनगी –कथा संग्रह– जगदीश प्रसाद मंडल– समीक्षा, मैथिल पत्र–पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु, नव गीतक प्रवोधा : महाकवि प्रवासी, पोथी समीक्षा– प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास

देवशंकर नवीन– लघुकथा लेखनमे अवबोधक तत्व, अदद्दी लेनकेँ मजगूत करबाक आवश्यकता, बर्ख्खामे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो– (राजकमल चौधरीक उपन्यास)

कुन्नी कामत– कतऽ जा रहल छी हम !

जगदानन्द झा 'मनु'– करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह, संकल्पक धनी बिस्मा कुर्डोल्फ, ब्लॉग गजलक अवधारणा

चंदन कुमार झा– मैथिली ब्लॉग–साहित्य आ' ब्लॉग–गजल, मिथिला–मैथिली आंदोलन

উঁমেশ মল্ডন– মৈথিলী যরা বচনা–ধর্মিতা:: পবংপবা পবিরর্ত্তন আ ভরিষ্য

শ্রী বাজ– যাত্রীক করিতামে গাম

মিহিব ঝা– রাঁন গজন

অমিত মিশ্র– রাঁন গজন: কোমন করেজক আখব, কতিআএন আখব

আশীষ অনচিন্হাব– আধ্নিকতাক সমস্যা (আনোচনা), গজনক সাক্ষ্য– সমানোচনা, কী থিক রাঁন গজন, অন্হাব পব গজোতক কহিঔ রিজয নহি, রেঁচন ঠাকুবজীক নাটক ছীনবদেরী– রেঁচন ঠাকুবজীক নাটক– রেঁটীক অপমান, কাহিযা, কাহিযা আ রঁহব

রাঁনবাম সাহ্– রিস্মিত হোগত হমব নোক সংস্কৃতি

শত্রুধন প্রসাদ সাহ– মৈথিলী মহিনা আ জিদ্দী

রিজয মস্ত– স্বজীতক সম্পূর্ণ কথা একটা নযা স্বাদ দেনক

কৈনাস দাস– মহিনাক প্রেবক কথা সংগ্রহ ‘জিদ্দী’, 'অঁগনা স্বখন ঘবমে পানি', খোজয পড়ত মাহত্ব রাঁনগীত, ম্যাবাথন দৌড় আ জনকপ্বব

ডॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"- पंचदेवोपासक भूमि मिथिला

मनोज झा- त्रिभुवन विश्वविद्यालयक्षावा मिथिलाक्षर फलकि विकास, मकर संक्रान्ति अर्थात तीला सकराँत, जितिया पावनि, मनोज झा संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (संस्कृति विद)

डा.रमानन्द झा 'रमण'- शैक्षि विभक्ति सम्वाद, अनुवाद, कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टेकनाथ चौधरी, सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे, मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा

हृदय नारायण झा- लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत

रूपानन्द झा- मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र, चौकपर आणविक समझौता

महेन्द्र मलंगिया- मूर्ति: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व, प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे स्त्री-दल-बल

धीरेन्द्र प्रेमर्षि– मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना, नव भोर जोहैत मिथिला, मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून

अमरनाथ झा– हाँ ओ तँ कहियो नहि देखने बही, विज्ञ प्रभाकर जी साहगीक प्रतिमूर्ति छलाह।, पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम, आचार्य पंकज

उदय नारायण सिंह "नचिकेता"– गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर

विनीत उत्पल– आजुक कालमे बाबा, कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार

डॉ. गणेश गुंजन– कविक आमोक्ति: कविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'– यात्रा प्रसंग- ग्वेन सांगसं चीनमे भेंटघाँट, यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !, संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा

कमलानन्द झा– मैथिली समस्याक दैत नैत कथा-संकलन: उदाहरण

डॉ पालन झा- सन्त साहेब रामदास

स्वाति झा- की रानिवास गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि ? , मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य, विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला..., हमर सपना केर मिथिला, मैथिली के न क किछु असुविधाजनक प्रश्न.. , विहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान ? , मिथिला मंथन १-२, मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरूरी अछि

शंभु शेखर- कखन रौदनर हम

ओमप्रकाश झा- मिथिले तक नहि छथि मैथिल

वी.के कर्ण- स ंकट ग्रस्त (विस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास क्रम आ कखन

जितेन्द्र झा- स्तवक माला गँथती अंशु, प्रिय पाहुन

महाप्रकाश- सुभाष चन्द्र यादव

ज्योति प्रकाश लाल- आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व

जितमोहन झा- वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ओ डोरी (वृद्ध-बुजुर्ग समस्यापर लेख),

कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृति के साथ खिलवाड़, हम लड़की रला छी जनाएँ ...., नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण किएक .... ?

नरेन्द्र कुमार झा– बिहारक लोक पर्व–छठि, बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र, विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००४) पर विशेष–यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति, उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला, प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर, वाजगीवमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे–गामे सक्रिय होयत संघ, गाम मे विज्ञान केँ लोकप्रिय बनबए मे लागल छथि मानस बिहारी

स्वजीत कुमार झा– स्वनिल मल्लिक– सफल व्यक्ति– आर मिथिला ग्रामक तैयारी, एकटा लाजवाब कलाकार मदन ठाकुर, थान मार्टिक पारनि

डॉ. उमेश मंडल– मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर, कविलप्रवक कथा गाछी

प्रो पवमेश्वर कापड़ि – मानवताक बात विखपाद अछि ! , छठिमाएकें आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व

अत्तनेश्वर– सोचए आवश्यक जे......, मातृभाषा दिवस क बहन्न, गाम मे नहि फाग आ नहि भोरक पराती,

তীন তিবহ্তিযা তেবহ পাক, সমযনাঙা সনাম আ ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষিক খভিমত, যাত্রীক প্রসংগ, হিন্দীক দৃষ্ঠি আ মৈথিনী ভাষা, রৈশ্বিক সোচ ? , ভাষাক প্রতি এক নর সোচ, ভাষাক মানকীকবণ আ সাহিত্ক বাজনীতি, মৈথিনী সাহিত্ আ ক্ষসনমান ভাঙা, 'চিড়ৈ' আ ওকবে নাথেঁ নেপানীয মৈথিনী কথাক স্বব, 'ৰঁদনৈত স্বব' আ মৈথিনী খানোচনা, মৈথিনী: পঁডিতাম রা খাম ? , পঁডিত গোরিন্দ ঝা, মৈথিনী আ খধ্যযন, উঁজবৈত গাম ৰঁসৈত শৈহব........, রিদ্যাপতি সমাবোহ, রিঁহাব গীত আ মৈথিন, পূর্বী ভাবতীয ভাষাক সেমিনাব ক ৰঁহন্ন, রিশ্বক ড◌ॉ. গন্দিবা গোস্বামী আ খসমিযা নোকক মামোনী ৰাঁগদেউঁ, ধীবেন্দ্র, মৈথিনী আ শিষ্য

ড◌ॉ॰ শিশিধব ক্ষমব– পোথী সমীক্ষা: গামক জিনগী, পোথী সমীক্ষা – খৰ্ম্বা

স্বমিত খানন্দ– খক্ষবপ্বৰুষ–রিশ্বনাথ

ড◌ॉ. যোগানন্দ ঝা– গ্রামজীরনক সহক সংরাহক :: খর্দ্ধাগিনী, মৈথিনী ৰাঁননোককথা : স্থিতি আ খপেক্ষা, রনদেরী আ নাবী খস্মিতাক গাথা, খাদর্শক উঁপস্থাপন : মৌনাগন গাছক ফূন, খাস্থা, জিজীরিষা ও সংঘর্ষক প্রবাহ, গসরী সন 2010: মৈথিনীক গতিরিধি

রাজেশ্বর নেপালী– কবি পং. প্রতাপনারায়ণ ঝা কেঁ ছঠম পুণ্যতিথি পর হার্দিক শ্রদ্ধাঞ্জলি

বিপিন ঝা– গ্রন্থ সমীক্ষা– 'মহারাজ মহেশ ঠাকুর ও কংকালী ভগবতী', গ্রন্থ সমীক্ষা–প্রকৃতি পরিক্রমা, শ্রোত্রিয সমাজমে বঞ্জীজক জন্ম, জনমানস হেতু প্রবৃত্তিজ্ঞাদর্শনক বৈশিষ্ট্য, কথং 'সংস্কৃতং' সংস্কৃতম্ , যে বাঁকুবা২বাঁকুবা বা, চহকৈত চৌক আ কবৈত দলান, আবশ্যকতা অছি সকাবামেক মৌলিক চিন্তনক, স্বাতন্ত্রোত্তবযুগীন সংস্কৃত সাহিত্যক সংরক্ষন মে মিথিলাক ভূমিকা

ডা. বাজেন্দ্র বিমল– সাহিত্য–সঙ্গম– গীতকাব ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষিক স্বব–তান, 'ঘবঝহাঁ' – প্রভাব আ প্রতিক্রিযা, নব–নব ক্ষিতিজক সন্ধান কবৈত স্বজীতক জিদ্দী

নীলিমা– মখানক খীব, মেথীক পবোঠা, ঝগনঞা কোবী, কেসব পুলাব, মূবক পবোঠা

ছবি ঝা/ কৃষ্ণ সিংহ– মিথিলা চিত্রকলা: অর্থক অধিকতা আ সার্থকতা

নূতন ঝা– জানকী–নবমী, বটসারিত্রী, গুঠ্ঠাষ্ঠমী / জন্মাষ্ঠমী, কৃশোপেতন / কৃশী অমাবস্যা, দুর্গা পূজা,

শিবপূর্ণিমা / কোজগরা, দীপাবলী, মিথিলাঁচলক ভ্রাতৃদ্বিতীযা, রাঁবাতী–সকোব, চৌঠচন্দ্র পূজা

বিদ্যানন্দ ঝা পঞ্জীকাব 'মোহনজী' – পংজী প্রবঁধ

বাজেন্দ্র কুমাব প্রধান– ২১ম শতাব্দীক পহিল দশকক মৈথিলী উপন্যাসমে বাজনীতিক চেতনা

খুশিবূ ঝা– হমবা নজবিমে স্বজীতক বিপোর্টব ডাযবী, মৈথিলী কথা সংগ্রহ জিদ্দী পঠনাপব

চন্দ্রকিশোব– সমযক সাক্ষী স্বজীতক বিপোর্টব ডাযবী

স্বদীপ ঝা– সামাজিক মূল্য মান্যতাকেঁ চোচ মাবৈত 'চিড়ৈ'

বাজেশ কুমাব কর্ণ– চিবরিব–চিবরিব কবৈত উড়ি বহল চিড়ৈ

চন্দ্রশ– বচনামেক রিমর্শক খযনামে 'চিড়ৈ', সংরেনশীল মোনকেঁ ছূবৈত হ্গলী উপব বহৈত গংগা, যথার্থিক খনুভূতিমে ঐতিহাসিক দিন: ঝিঝিযা নৃত্য মহোৎসব

প্রকাশ ঝা– নচিকেতাক 'প্রিযংবদা': এক রিশ্লেষণ, 'প্রযোগ' একাঁকীক বংগমংচীয দৃষ্টি, প্রযোগ একাঁকীক

বংগমংচীয প্রযোগ, পোথী–সমীক্ষা– প্বকৃষ পবীক্ষা, বংগদৃষ্ঠি, মিথিলা মে বংগকলাক সমকালীন দৃষ্ঠি

গোপান প্রসাদ– মিথিলা করি কোকিন রিদ্যাপতি, হিংদী, মৌথিলী, মিথিলা, রিহাব ও মৌথিন নোকনি সং খপেক্ষা, সামাজিক পবিরর্তনক সংদর্ভমে মৌথিলীক দশা ও দিশা, সামাজিক পবিরর্তনক সংদর্ভমে মৌথিলীক দশা ও দিশা

পংচানন মিশ্র– মঙুঁ রাজিতপ্বব সঁ রিদ্যাপতিনগব পবিরর্ত্তন–যাত্রা, মিথিলাক কতিখাএন সিদ্ধপীঠ

ভীমনাথ ঝা– চন্দা ঝা, হবিমোহন ঝা মিনিক২, মখান খানি ঔ মিথিলা

হুমাব বাধাবমণ– পাকিস্তান মে সেক্স–রিচাব

ডা. শংকবদেরঝা– মিথিলাক রিস্মৃত বাজধনী দেরহুনী

বাজদের মংডন– জগদীশ প্রসাদ মল্ডনক করিতা সংগ্রহ– বাতি–দিন, জগদীশ প্রসাদ মংডনক উঁপন্যাস উঁথোন–পতনপব, হুরুক্ষেত্রম্ খন্তর্মনক নেন পত্র (পত্রাত্তব শৈনীক সমীক্ষা)

ড॒ॉ. মেঘন প্রসাদ– মৌথিলীমে খন্বরাদ–কলাক শাস্ত্রীযকবণক গতিহাস

ডॉ. গন্দ্ধব ঝা– দূ–পত্র: এক রিশ্লেষণ

বামনোচন ঠাক্ব– সমকানীন মৈথিনী–কথাক যথার্থ–উর্ফ যথার্থক–কথা

কেদাব কানন– জগদীশ প্রসাদ মংডনক পঙ্ক্তারাঁ পব এক দৃষ্ঠি

শ্যামস্বন্দব শশি– সাহিত্কাব ডা. ধীবেশ্বব ঝা ধিবেন্দ্রক ৬ খম রার্ষিকীপব রিশেষ– নমন গ্বকদের

ফূন চন্দ্র ঝা 'প্ররীণ' – মৈথিনী শিশ্ব সাহিত্ নোক

বমেশ– রঁহস– পংকজ পবাশবক সাহিত্যিক চোবি মৈথিনী সাহিত্ক কাবী খধ্যায থিক, প্রা. মাযানন্দ মিশ্রক বমনগব কথামে নাগন "ক্ষদা"...

মংত্রেশ্বব ঝা– চবিত্র চিত্রণক রাজীগব– জগদীশ প্রসাদ মংডন

স্বভাষ চন্দ্র যাদর– বচনাক পাঠ খা নেখক, জগদীশ প্রসাদ মংডন, মৈথিনী নোক–কথা

খচ্চনান শাস্ত্রী– বণভূমি খা করিতা নামক শীর্ষক করিতাপব দূ শব্দ

দ্‌গনিন্‌দ মংডন– শির ক্ষমাব ঝা ট্টিন্‌নূ জীক নিখন খোগছক নেন সাড় ী– কথাপব দূ শিরঁদ, নাট্টক রেঁট্টীক খপমানপব এক নজবি, জীরন–মবণ, পোথী সমীক্ষা–মৌনাগন গাছক ফূন, ট্টৈগোব সাহিহ প্রবস্কাবক রঁহন্ন–যাত্রা বৃত্তান্ত

প্রা. রীণা ঠাক্ষব– প্রাচীন ভাবতীয সংস্কৃতিমে মিথিনাক যোগদান, গোনূ ঝা খা খান মৈথিনী চিত্রকথা, জিনগীক জীত উঁপন্যাসক সমীক্ষা, মহাকরি মার্কিন্ডয প্রবাসী

খশোক– রঁনৈত কম রিঁগড়ৈত রেঁসী–স্বভাষ চন্দ্র যাদরক দোসব কথা সংগ্রহ

উঁষাকিবণ খান– খন্বভূতি: একট্টা পাঠকীয প্রতিক্রিযা

নাগেন্দ্র ক্ষমাব কর্ণ– মিথিনা পঞ্চকোশী পবিক্রমা, স্বজিত ক্ষমাব ঝা পব

ভানচন্দ্র ঝা– রঁান–শিক্ষণপব নিরঁন্ধ– হমব শিক্ষণ–যাত্রা

রঁ্যট্টী ক্ষমাবী– বাহ্‌নজী এক নজবিমে

রঁসন্ত ঝা– উঁগনা

ধীরেন্দ্র কুমার– নো এঁজ্ঞী : মা প্ররিশী– (উঁদয নাবাযণ সিংহ 'নচিকেতা'), প্রীতি ঠাকুবক দ্নূ চিত্রকথাপব ধীরেন্দ্র কুমাব এক নজবি

ডॉ. শেফানিকা বর্মা– প্রীতি ঠাকুব ক মৈথিনী চিত্রকথা

খবরিন্দ ঠাকুব– নোকদের ভীম কেরষ্ট, নোকদের নোবিক

পদ্য-খন্ড

গজেন্দ্র ঠাকুর- মিথিলাক ধ্বজ গীত

কিছু সংস্কৃত স্বভাষিতক সংকলন

রঁচা লোকনি দ্বাবা স্মবণীয শ্লোক

সংদেশী

गद्य खण्ड

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् - हनुमन्तः उवाच- मानुषीमिह संस्कृताम्

अकबर (अक्षर) खम्भा
तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेअ।
अक्खर खम्भारम्भ जउँ मञ्चो बाँधि न देअ॥
[कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।]
माने अक्षररूपी स्तम्भ निर्माण कए ओहिपर (काव्यरूपी) मंच जँ नहि बान्हल जाए तँ एहि त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लता (वल्लि) प्रसारित कोना होयत।

<u>*नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली*</u>

মৈথিলীমে উচ্চারণ তথা লেখন

১.পঞ্চমাক্ষর আ অনুস্বার: পঞ্চমাক্ষরান্তর্গত ঙ, ঞ, ণ, ন এবং ম অবৈত অছি। সংস্কৃত ভাষাক অনুসার শব্দক অন্তমে জাহি বর্গক অক্ষর রহৈত অছি ওহী বর্গক পঞ্চমাক্ষর অবৈত অছি। জেনা-
অঙ্ক (ক বর্গক রহলাক কারণে অন্তমে ঙ্ আএল অছি।)
পঞ্চ (চ বর্গক রহলাক কারণে অন্তমে ঞ্ আএল অছি।)
খণ্ড (ট বর্গক রহলাক কারণে অন্তমে ণ্ আএল অছি।)
সন্ধি (ত বর্গক রহলাক কারণে অন্তমে ন্ আএল অছি।)
খম্ভ (প বর্গক রহলাক কারণে অন্তমে ম্ আএল অছি।)
উপর্যুক্ত বাত মৈথিলীমে কম দেখল জাইত অছি। পঞ্চমাক্ষরক বদলামে অধিকাংশ জগহপর অনুস্বারক প্রয়োগ দেখল জাইছ। জেনা- অংক, পংচ, খংড, সংধি, খংভ আদি। ব্যাকরণবিদ পণ্ডিত গোবিন্দ ঝাক কহব ছনি জে কবর্গ, চবর্গ আ টবর্গসঁ পূর্ব অনুস্বার লিখল জাএ তথা তবর্গ আ পবর্গসঁ পূর্ব পঞ্চমাক্ষরে লিখল জাএ। জেনা- অংক, চংচল, অংডা, অন্ত তথা কম্পন। মুদা হিন্দীক নিকট রহল আধুনিক লেখক এহি বাতকেঁ নহি মানৈত ছথি। ওলোকনি অন্ত আ কম্পনক জগহপর সেহো অংত আ কংপন লিখৈত দেখল জাইত ছথি।
নবীন পদ্ধতি কিছু সুবিধাজনক অবশ্য ছৈক। কিএক তঁ এহিমে সময় আ স্থানক বচত হোইত ছৈক। মুদা কতোকবের হস্তলেখন বা মুদ্রণমে অনুস্বারক ছোটসন বিন্দু স্পষ্ট নহি ভেলাসঁ অর্থক অনর্থ হোইত সেহো দেখল জাইত অছি। অনুস্বারক প্রয়োগমে উচ্চারণ-দোষক সম্ভাবনা সেহো ততবএ দেখল জাইত অছি।

এতদর্থ কসঁ নঃকঃ পরস্মধবি পঞ্চমাক্ষবেক প্রযোগ কবরঁ উঁচিত খছি। যসঁ নঃকঃ ভ্ধবিক খক্ষবক সঙ্গঁ খনুস্বাবক প্রযোগ কববাঁমে কতহ্ কোনো রিরাদ নহি দেখন জাগছ।

২.ঠ খা ঢ় : ঢ়ক উঁচাবণ “ব্ হ”জকাঁ হোগত খছি। খতঃ জতঽ “ব্ হ”ক উঁচাবণ হো ওতঽ মাত্র ঢ় নিখন জাএ। খানঠাম খানি ঠ নিখন জএবাঁক চাহী। জেনা–
ঠ = ঠাকী, ঠেকী, ঠীঠ, ঠেউঁখা, ঠঙ্গঁ, ঠেবী, ঠাকনি, ঠাঠ খাদি।
ঢ় = পঢ়াগ, বঁঢ়বঁ, গঢ়বঁ, মঢ়বঁ, বুঁঢ়বাঁ, সাঁঢ়, গাঢ়, বীঢ়, চাঁঢ়, সীঢ়ী, পীঢ়ী খাদি।
উঁপর্যুক্ত শব্দসভকেঁ দেখনাসঁ ঞা স্পষ্ট হোগত খছি জে সাধাবণতযা শব্দক শ্বরুমে ঠ খা মধ্য তথা খন্তমে ঢ় খবৈত খছি। গএহ নিযম ড খা ড়ক সন্দর্ভ সেহো নাগূ হোগত খছি।

৩.র খা রঁ : মৈথিনীমে “র”ক উঁচাবণ রঁ কএন জাগত খছি, মুদা ওকবা রঁ রূপমে নহি নিখন জএবাঁক চাহী। জেনা– উঁচাবণ : রৈঁদ্যনাথ, রিঁদ্যা, নরঁ, দেরঁতা, রিঁষ্ণু, রঁশী, রঁন্দনা খাদি। এহিসভক স্থানপব ক্রমশঃ রৈদ্যনাথ, রিদ্যা, নর, দেরতা, রিষ্ণু, রংশী, রন্দনা নিখবাঁক চাহী। সামান্যতযা র উঁচাবণক নেন ও প্রযোগ কএন জাগত খছি। জেনা– ওকীন, ওজহ খাদি।

৪.য খা জ : কতহ্–কতহ্ “য”ক উঁচাবণ “জ”জকাঁ কবৈত দেখন জাগত খছি, মুদা ওকবা জ নহি নিখবাঁক চাহী। উঁচাবণমে যজ্ঞ, জদি, জমুনা, জুগ, জাবঁত,

𑒖𑒼𑒑𑒲, 𑒖𑒠𑒳, 𑒖𑒧 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒥𑒪𑒰 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒨𑒖𑓂𑒘, 𑒨𑒠𑒱, 𑒨𑒧𑒳𑒢𑒰, 𑒨𑒳𑒑, 𑒨𑒰𑒥𑒞, 𑒨𑒼𑒑𑒲, 𑒨𑒠𑒳, 𑒨𑒧 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲।

𑓒.𑒋 𑒂 𑒨 : 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢𑒲𑒧𑒹 𑒋 𑒂 𑒨 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।
𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢𑒲- 𑒏𑒋𑒪, 𑒖𑒰𑒋, 𑒯𑒼𑒋𑒞, 𑒧𑒰𑒋, 𑒦𑒰𑒋, 𑒑𑒰𑒋 𑒂𑒠𑒱।
𑒢𑒫𑒲𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢𑒲- 𑒏𑒨𑒪, 𑒖𑒰𑒨, 𑒯𑒼𑒨𑒞, 𑒧𑒰𑒨, 𑒦𑒰𑒨, 𑒑𑒰𑒨 𑒂𑒠𑒱।
𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒨𑒰 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒬𑒳𑒩𑒴𑒧𑒹 𑒋 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒋𑒯𑒱, 𑒋𑒢𑒰, 𑒋𑒏𑒩, 𑒋𑒯𑒢 𑒂𑒠𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒮𑒦𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒨𑒯𑒱, 𑒨𑒢𑒰, 𑒨𑒏𑒩, 𑒨𑒯𑒢 𑒂𑒠𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒨𑒠𑓂𑒨𑒣𑒱 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒦𑒰𑒭𑒲 𑒟𑒰𑒩𑒴𑒮𑒯𑒱𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦𑒧𑒹 “𑒋”𑒏𑒹𑒿 𑒨 𑒏𑒯𑒱 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।
𑒋 𑒂 “𑒨”𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑𑒏 𑒮𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒦𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢𑒹 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒩𑒝 𑒏𑒩𑒥 𑒅𑒣𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏𑒧𑒹 𑒍𑒏𑒩𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒢𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒯𑒖𑒞𑒰 𑒂 𑒠𑒳𑒩𑒴𑒯𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝𑒏 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝-𑒬𑒻𑒪𑒲 𑒨𑒏 𑒁𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒋𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒢𑒱𑒏𑒙 𑒕𑒻𑒏। 𑒐𑒰𑒮 𑒏𑓄 𑒏𑒋𑒪, 𑒯𑒋𑒥 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒞𑒱𑒣𑒨 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒻𑒪, 𑒯𑒻𑒥 𑒂𑒠𑒱 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒏𑒞𑒯𑒳-𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒮𑒹𑒯𑒼 “𑒋”𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒮𑒧𑒲𑒔𑒲𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑓓.𑒯𑒱, 𑒯𑒳 𑒞𑒟𑒰 𑒋𑒏𑒰𑒩, 𑒍𑒏𑒰𑒩 : 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒪𑒹𑒐𑒢-𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒞𑒣𑒩 𑒥𑒪 𑒠𑒻𑒞 𑒏𑒰𑒪 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒰𑒿

हि, ह् नगाओल जाइत छैक। जेना- ह्नकहि, अपनह्, ओकरह्, तकोनहि, चोष्ठहि, आनह् आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं ह्क स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- ह्नके, अपनो, तकोने, चोष्ठे, आनो आदि।

७.ष तथा ख : मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८.ध्वनि-लोप : निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क)क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमेसँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (’ / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़’ गेलाह, क’ लेल, उठ’ पड़तौक। पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(ख)पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग)स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण

𑒞𑒲𑒢𑒴𑒧𑒹 𑒪𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹𑒢𑒰-
𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒴𑒣 : 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒱 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒢𑒱 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒱।
𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒴𑒣 : 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒢 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪।
(𑒒)𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒏𑒵𑒠𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒞 𑒪𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹𑒢𑒰-
𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒴𑒣 : 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।
𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒴𑒣 : 𑒣𑒜𑓃𑒻 𑒁𑒕𑒱, 𑒥𑒖𑒻 𑒁𑒕𑒱, 𑒑𑒥𑒻 𑒁𑒕𑒱।
(𑒓)𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒣𑒠𑒏 𑒁𑒫𑒮𑒰𑒢 𑒃𑒏, 𑒅𑒏, 𑒌𑒏 𑒞𑒟𑒰 𑒯𑒲𑒏𑒧𑒹 𑒪𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹𑒢𑒰-
𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒴𑒣: 𑒕𑒱𑒨𑒾𑒏, 𑒕𑒱𑒨𑒻𑒏, 𑒕𑒯𑒲𑒏, 𑒕𑒾𑒏, 𑒕𑒻𑒏, 𑒁𑒥𑒱𑒞𑒻𑒏, 𑒯𑒼𑒃𑒏।
𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒴𑒣 : 𑒕𑒱𑒨𑒾, 𑒕𑒱𑒨𑒻, 𑒕𑒯𑒲, 𑒕𑒾, 𑒕𑒻, 𑒁𑒥𑒱𑒞𑒻, 𑒯𑒼𑒃।
(𑒔)𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒣𑒠𑒲𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒨 𑒢𑓂𑒯, 𑒯𑒳 𑒞𑒟𑒰 𑒯𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒪𑒼𑒣 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒕। 𑒖𑒹𑒢𑒰-
𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒴𑒣 : 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒏𑒯𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒏𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿, 𑒑𑒹𑒪𑒯, 𑒢𑒯𑒱।
𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒴𑒣 : 𑒕𑒢𑒱, 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱, 𑒏𑒯𑒪𑒾𑒿, 𑒑𑒹𑒪𑓄, 𑒢𑒃, 𑒢𑒘𑒱, 𑒢𑒻।

𑓙.𑒡𑓂𑒫𑒢𑒱 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩𑒝 : 𑒏𑒼𑒢𑒼-𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑓂𑒫𑒩-𑒡𑓂𑒫𑒢𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒖𑒑𑒯𑒮𑒿 𑒯𑒙𑒱𑒏𑒹𑓄 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒚𑒰𑒧 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒐𑒰𑒮 𑒏𑓄 𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫 𑒃 𑒂 𑒅𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒧𑒹 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒪𑒰𑒑𑒴 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏𑒩𑒝 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒧𑒡𑓂𑒨 𑒫𑒰 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒧𑒹 𑒖𑒿 𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫 𑒃 𑒫𑒰 𑒅 𑒂𑒥𑒋 𑒞𑒿 𑒍𑒏𑒩 𑒡𑓂𑒫𑒢𑒱 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒋𑒏 𑒁𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹𑒢𑒰- 𑒬𑒢𑒱 (𑒬𑒃𑒢), 𑒣𑒰𑒢𑒱 (𑒣𑒰𑒃𑒢), 𑒠𑒰𑒢𑒱 (𑒠𑒰𑒃𑒢), 𑒧𑒰𑒙𑒱 (𑒧𑒰𑒃𑒙), 𑒏𑒰𑒕𑒳 (𑒏𑒰𑒅𑒕), 𑒧𑒰𑒮𑒳(𑒧𑒰𑒅𑒮) 𑒂𑒠𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒞𑓂𑒮𑒧 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒄 𑒢𑒱𑒨𑒧 𑒪𑒰𑒑𑒴 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹𑒢𑒰- 𑒩𑒬𑓂𑒧𑒱𑒏𑒹𑒿

बगश्म श्वा स्वधाश्वकेँ स्वधाउँस नहि कहन जा सकैत श्छि ।

१०.हनन्त(्)क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनन्त (्)क श्वारश्यकता नहि होगत श्छि । काबण जे शब्दक श्नतमे श्व उँचाबण नहि होगत श्छि । मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे श्वाएन (तसेम) शब्दसभमे हनन्त प्रयोग कएन जागत श्छि । एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शब्दकेँ मैथिली भाषासम्बन्धी नियमश्वनुसाब हनन्तरिहीन बाखन गेन श्छि । मुदा ब्याकबणसम्बन्धी प्रयोजनक नेन श्वहारश्यक स्थानपब कतह्-कतह् हनन्त देन गेन श्छि । प्रस्तुत पोथीमे मथिली नेखनक प्राचीन श्वा नरीन दुनू शैलीक सबन श्वा समीचीन पक्षसभकेँ समेटिकः रर्ण-रिन्यास कएन गेन श्छि । स्थान श्वा समयमे रँचतक सङ्गहि हस्त-नेखन तथा तकनिकी दृष्टिसँ सेहो सबन होरँःरना हिसारँसँ रर्ण-रिन्यास मिनाओन गेन श्छि । रर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषीपर्यन्तकेँ श्वान भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान नेरँः पड़ि बहन परिप्रेक्ष्यमे नेखनमे सहजता तथा एकरूपतापब ध्यान देन गेन श्छि । तखन मैथिली भाषाक मून रिशेषतासभ कुण्ठित नहि होगक, ताहूदिस नेखक-मण्डन सचेत श्छि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बामारतार यादरक कहब छनि जे सबनताक श्वनुसन्धानमे एहन श्वरस्था किन्नह् ने श्वारँः देरँाक चाही जे भाषाक रिशेषता छाँहमे पडि जाए । *हमसभ हुनक धाबणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग नः चनरँाक प्रयास कएनहुँ श्छि ।*

पोथीक रर्णरिन्यास कक्षा ९ क पोथीसँ किछु मात्रामे भिन्न श्छि । निबन्तब श्वध्ययन, श्वनुसन्धान श्वा रिश्लेषणक

কাবণে ঙা স্বধাবামেক ভিন্নতা খাএন খছি। ভবিষ্যমে খানক্ পোথীকেঁ পবিমার্জিত কবৈত মৌথিনী পাঠ্যপ্বস্তুকক বর্ণবিন্যাসমে পূর্ণৰূপেণ একৰূপতা খনরাঁক চেষ্টাবাসভক প্রযনে বহত।

কক্ষা ১০ মৌথিনী নেখন তথা পবিমার্জন মহেন্দ্র মনাঁগিযা/ ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষি সংযোজন- গণেশপ্রসাদ ভঙ্কুবাঙা
প্রকাশক শিক্ষা তথা খেনকূদ মন্ত্রানয, পাঠ্যক্রম বিকাস কেন্দ্র,সানোঠিমী, ভক্তপ্বব
সরাধিকাব পাঠ্যক্রম বিকাস কেন্দ্র এবং জনক শিক্ষা সামগ্রী কেন্দ্র, সানোঠিমী, ভক্তপ্বব।
পহিন সংস্কবণ ২০৫৮ বৈশাখ (২০০২ ঙা.)
যোগদান: শিবপ্রসাদ সত্যান, জগন্নাথ খরা, গোবখর্বাহাদুব সিংহ, গণেশপ্রসাদ ভঙ্কুবাঙা, ডা. বামারতাব যাদব, ডা. বাজেন্দ্র বিমন, ডা. বামদযান বাকেশ, ধর্মেন্দ্র বিহ্বন, ৰূপা ধীৰূ, নীবজ কর্ণ, বমেশ বঞ্জন
ভাষা সম্পাদন- নীবজ কর্ণ, ৰূপা ঝা

<u>মৈথিলী অকাদমী, পটনা দ্বারা নির্ধারিত মৈথিলী লেখন-শৈলী</u>

১. জে শব্দ মৈথিলী-সাহিত্যক প্রাচীন কালসঁ আই ধরি জাহি বর্তনীমে প্রচলিত অছি, সে সামান্যতঃ তাহি বর্তনীমে লিখল জায- উদাহরণার্থ-

গ্রাহ্য

এখন
ঠাম
জকর, তকর
তনিকর
অছি

অগ্রাহ্য
অখন, অখনি, এখেন, অখনী
ঠিমা, ঠিনা, ঠমা

জেকর, তেকর
তিনকর। (বৈকল্পিক রূপেঁ গ্রাহ্য)
ঐছ, অহি, এ।

২. নিম্নলিখিত তীন প্রকারক রূপ বৈকল্পিকতয়া অপনাওল জায়: ভ' গেল, ভয় গেল বা ভএ গেল। জা রহল অছি, জায় রহল অছি, জাএ রহল অছি। কর' গেলাহ, বা করয় গেলাহ বা করএ গেলাহ।

৩. প্রাচীন মৈথিলীক 'ন্হ' ধ্বনিক স্থানমে 'ন' লিখল জায় সকৈত অছি যথা কহলনি বা কহলন্হি।

৪. 'ঐ' তথা 'ঔ' ততয় লিখল জায় জত' স্পষ্টতঃ 'অই' তথা 'অউ' সদৃশ উচ্চারণ ইষ্ট হো। যথা– দেখৈত, ছলৈক, বৌআ, ছৌক ইত্যাদি।

৫. মৈথিলীক নিম্নলিখিত শব্দ এহি রূপে প্রযুক্ত হোয়ত: জৈহ, সৈহ, ইএহ, ওঐহ, লৈহ তথা দৈহ।

৬. হ্রস্ব ইকারাংত শব্দমে 'ই' কে লুপ্ত করব সামান্যতঃ অগ্রাহ্য থিক। যথা– গ্রাহ্য দেখি আবঁহ, মালিনি গেলি (মনুষ্য মাত্রমে)।

৭. স্বতংত্র হ্রস্ব 'এ' বা 'য' প্রাচীন মৈথিলীক উদ্ধরণ আদিমে তঁ যথাবত রাখল জায়, কিংতু আধুনিক প্রয়োগমে বৈকল্পিক রূপেঁ 'এ' বা 'য' লিখল জায়। যথা:– কয়ল বা কএল, অয়লাহ বা অএলাহ, জায় বা জাএ ইত্যাদি।

৮. উঁচাবণমে দূ স্ববক বীচ জে 'য' ধ্বনি স্বতঃ আবি জাগত অছি তকবা লেখমে স্থান বৈকল্পিক রূপেঁ দেল জায়। যথা– ধীআ, অঢ়ৈআ, বিআহ, বা ধীযা, অঢ়ৈযা, বিযাহ।

৯. সানুনাসিক স্বতংত্র স্ববক স্থান যথাসংভব 'ঞ' লিখল জায় বা সানুনাসিক স্বব। যথা:– মৈঞা, কনিঞা, কিবতনিঞা বা মৈআঁ, কনিআঁ, কিবতনিআঁ।

১০. কাবকক বিভক্তিক নিম্নলিখিত রূপ গ্রাহ্য:– হাথকেঁ, হাথসঁ, হাথেঁ, হাথক, হাথমে। 'মে' মে অনুস্বাব সর্বথা ত্যাজ্য থিক। 'ক' ক বৈকল্পিক রূপ 'কেব' বাখল জা সকৈত অছি।

১১. পূর্বকালিক ক্রিযাপদক বাদ 'কয' বা 'কএ' অব্যয বৈকল্পিক রূপেঁ লগাওল জা সকৈত অছি। যথা:– দেখি কয বা দেখি কএ।

১২. মাঁগ, ভাঁগ আদিক স্থানমে মাঙ, ভাঙ ইত্যাদি লিখল জায়।

১৩. অর্দ্ধ 'ন' ও অর্দ্ধ 'ম' ক বদলা অনুসাব নহি লিখল জায়, কিংতু ছাপাক সুবিধার্থ অর্দ্ধ 'ঙ' , 'ঞ', তথা 'ণ' ক বদলা অনুস্বাবো লিখল জা সকৈত অছি। যথা:– অঙ্ক, বা অংক, অঞ্চল বা অংচল, কণ্ঠ বা কংঠ।

১৪. হলংত চিহ্ন নিঅমতঃ লগাওল জায়, কিংতু বিভক্তিক সংগ অকাবাংত প্রযোগ কএল জায়। যথা:– শ্রীমান্, কিংতু

শ্রীমানক।

১৩. সভ একন কাবক চিন্ন শীর্ষমে সটা ক’ নিখন জায, হটা ক’ নহি, সংযুক্ত রিভক্তিক হেতু হবাক নিখন জায, যথা ঘব পবক।

১৬. অনুনাসিককেঁ চন্দ্ররিন্দু দ্বাবা ব্যক্ত কযন জায। পবংতু মুদ্রণক স্বরিধার্থ হি সমান জটিন মাত্রাপব অনুস্বাবক প্রযোগ চন্দ্ররিন্দুক বঁদনা কযন জা সকৈত অছি। যথা- হিঁ কেব বঁদনা হিঁ।

১৭. পূর্ণ রিবাম পাসীসঁ (।) সূচিত কযন জায।

১৮. সমস্ত পদ সটা ক’ নিখন জায, রা হাগহেনসঁ জোড়ি ক’ , হটা ক’ নহি।

১৯. নিঅ তথা দিঅ শীর্ষমে রিকাবী (২) নহি নগাওন জায।

২০. অংক দেরনাগবী রূপমে বাখন জায।

২১.কিছু ধ্বনিক নেন নরীন চিন্হ বঁনরাঁওন জায। জা' ধরি নহি বঁনন অছি তারঁত এহি দুনূ ধ্বনিক বঁদনা পূর্ররত্ অয/ আয/ অএ/ আএ/ আও/ অও নিখন জায। আকি ঐ রা ঔ সঁ ব্যক্ত কএন জায।

হ./- গোরিন্দ ঝা ১১/৮/৭৬ শ্রীকান্ত ঠাকুব ১১/৮/৭৬ সুবেন্দ্র ঝা "সুমন" ১১/০৮/৭৬

উঁচাবণ নির্দেশী:

দন্ত ন ক উঁচাবণমে দাঁতমে জীহ সটৈত- জেনা রাঁজূ নাম , হ্মদা ণ ক উঁচাবণমে জীহ মূর্ধামে সটৈত (নহি সটৈএ তঁ উঁচাবণ দোষ খছি)- জেনা রাঁজূ গণেশি। তানব্য শিমে জীহ তান্বসঁ , ষমে মূর্ধাসঁ খা দন্ত সমে দাঁতসঁ সটৈত। নিশাঁ, সভ খা শোষণ রাঁজি কহ দেখূ। মৈথিনীমে ষ কেঁ রৈদিক সংস্কৃত জেকাঁ খ সেহো উঁচবিত কএন জাগত খছি, জেনা রর্ষা, দোষ। য খনেকো স্থানপব জ জেকাঁ উঁচবিত হোগত খছি খা ণ ড় জেকাঁ (যথা সংযোগ খা গণেশি সংজোগ খা গড়সে উঁচবিত হোগত খছি)। মৈথিনীমে র ক উঁচাবণ রঁ, শি ক উঁচাবণ স খা য ক উঁচাবণ জ সেহো হোগত খছি। ওহিনা দ্রাস্ব গ রেঁশীকান মৈথিনীমে পহিনে রাঁজন জাগত খছি কাবণ দেরনাগবীমে খা মিথিনাক্ষবমে দ্রাস্ব গ খক্ষবক পহিনে নিখনো জাগত খা রাঁজনো জএরাঁক চাহী। কাবণ জে হিন্দীমে একব দোষপূর্ণ উঁচাবণ হোগত খছি (নিখন তঁ পহিনে জাগত খছি হ্মদা রাঁজন রাঁদমে জাগত খছি), সে শিক্ষা পদ্ধতিক দোষক কাবণ

हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।
अछि- अ इ छ ऐछ
छथि- छ इ थ – छैथ
पहुँचि- प हुँ इ च
आब अ आ इ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ एहि सभ लेल मात्रा सेहो अछि, मुदा एहिमे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ केँ संयुक्ताक्षर रूपमे गलत रूपमे प्रयुक्त आ उच्चरित कएल जाइत अछि। जेना ऋ केँ री रूपमे उच्चरित करब। आ देखियौ- एहि लेल देखिऔ क प्रयोग अनुचित। मुदा देखिऐ लेल देखियै अनुचित। क् सँ ह् धरि अ सम्मिलित भेलासँ क सँ ह बनैत अछि, मुदा उच्चारण काल हलन्त युक्त शब्दक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति बढ़ल अछि, मुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे बजैत छी, तखनो पुरनका लोककेँ बजैत सुनबन्हि- मनोजऽ, वास्तवमे ओ अ युक्त ज् = ज बजै छथि। फेर ज्ञ अछि ज् आ ञ क संयुक्त मुदा गलत उच्चारण होइत अछि- ग्य। ओहिना क्ष अछि क् आ ष क संयुक्त मुदा उच्चारण होइत अछि छ। फेर श् आ र क संयुक्त अछि श्र (जेना श्रमिक) आ स् आ र क संयुक्त अछि स्र (जेना मिस्र)। त्र भेल त+र ।
उच्चारणक ऑडियो फाइल विदेह आर्काइव http://www.videha.co.in/ पर उपलब्ध अछि। फेर केँ / सँ / पर पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू मुदा तँ/ के/ कऽ हटा कऽ। एहिमे सँ मे पहिल सटा कऽ लिखू आ बादबला हटा कऽ। अंकक बाद टा लिखू सटा कऽ मुदा अन्य ठाम टा लिखू हटा कऽ– जेना छहटा मुदा सभ टा। फेर ६अ म सातम लिखू- छठम सातम नहि। घरबलामे बला मुदा घरवालीमे वाली प्रयुक्त

करू।

बहुए- बहु क्षदा सकैए (उँचाबण सकै-ए)।

क्षदा कखनो कान बहुए आ बहु मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मा जगहमे पार्किंग करबाक अभ्यास बहु ओकरा। प्रस्तुतापब पता नागन जे ठ्नठ्न नाम्ना ओ ड्राइवरब कनाडे म्लसक पार्किंगमे काज करैत बहुए।

छनै, छनए मे सेहो एहि तबहक भेन। छनए क उँचाबण छन-ए सेहो।

संयोगने- (उँचाबण संजोगने)

कें/ के / कऽ

केब- क (केब क प्रयोग नहि करू)

क (जेना बामक) –बामक आ संगे (उँचाबण बाम के / बाम कऽ सेहो)

सँ- सऽ

चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वाब- अनुस्वाबमे कंठ धबिक प्रयोग होगत अछि क्षदा चन्द्रबिन्दुमे नहि। चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकाबक सेहो उँचाबण होगत अछि- जेना बामसँ- (उँचाबण बाम सऽ) बामकेँ- (उँचाबण बाम कऽ/ बाम के सेहो)।

केँ जेना बामकेँ भेन हिन्दीक को (बाम को)- बाम को= बामकेँ

क जेना बामक भेन हिन्दीक का (बाम का) बाम का= बामक

कऽ जेना जा कऽ भेन हिन्दीक कब (जा कब) जा कब= जा कऽ

सँ भेन हिन्दीक से (बाम से) बाम से= बामसँ

सऽ तऽ त केब एहि सभक प्रयोग अबांछित।

के दोसब अर्थें प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना के करतैक ?
नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ एहि सभक उच्चारण- नै

त्त्व क बदलामे त्व जेना महत्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नहि) जतए अर्थ बदलि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प इ त (सम्पत्ति नहि- कारण सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नहि)। मुदा सर्वोत्तम (सर्वोतम नहि)।
राष्ट्रिय (राष्ट्रीय नहि)
सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)
पोछैले/
पोछैए/ पोछए/ (अर्थ परिवर्तन)
पोछए/ पोछै
ओ लोकनि (हटा कऽ, ओ मे विकारी शब्दक प्रयोग)
ओइ/ ओहि
ओहिले/ ओहि लेल/ ओही लेल
जएबेँ/ बैसबेँ
पँचभइयाँ
देखियौक/ (देखिऔक नहि- तहिना अ मे ह्रस्व आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अनुचित)
जकाँ / जेकाँ
तँइ/ तैँ/
होएत / हएत
नञि/ नहि/ नँइ/ नइ
सौँसे
बड़/ बड़ी (झोराओल)
गाए (गाइ नहि), मुदा गाइक दूध (गाएक दूध नहि।)
रहलेँ/ पहिरतैँ
हमहीं/ अहीं/
सब - सभ
सबहक - सभहक
धरि - तक
गप- बात
बूझब - समझब
बुझलहुँ/ बुझलौं/ बुझलौँ - समझलहुँ
हमरा आर - हम सभ
आकि- आ कि
सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आवश्यकता नहि)
होइन/ होनि
जाइन (जानि नहि, जेना देल जाइन) मुदा जानि-बूझि (अर्थ परिवर्तन)
पइठ/ जाइठ
आउ/ जाउ/ आऊ/ जाऊ
मे, केँ, सँ, पर (शब्दसँ सटा कऽ) तँ कऽ धऽ दऽ (शब्दसँ हटा कऽ) मुदा दूटा वा बेशी विभक्ति संग रहलापर पहिल विभक्ति टाकेँ सटाउ।
एकटा दूटा (मुदा कैक टा)
बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे, बीचमे अनावश्यक रूपेँ नहि। आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नहि (जेना दिअ, आ)
अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारीक बदलामे करब अनुचित आ मात्र फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ रहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि)। मुदा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि आ फ्रेंचमे शब्दमे जतए एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison d'etre एतए सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नहि दैत अछि वरन जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग बिकारीक बदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो

অনুচিত) ।

<u>হরিমোহন ঝা সমগ্র সমর্পণ</u>

কন্যাদানক সমর্পণ- জে সমাজ কন্যা কেঁ জড় পদার্থবত্ দান কয় দেবা মে কুণ্ঠিত নহি হোইত ছথি, জাহি সমাজক সূত্রধার লোকনি বালক কেঁ পঢ়েবাক পাছাঁ হজারক হজার পানি মে বহবৈত ছথি ওর কন্যাক হেতু চারি কৈঞ্চাক সিনেহো কীনব আবশ্যক নহি বুঝৈত ছথি, জাহি সমাজমে বী.এ. পাস পতিক জীবন-সংগিনী এ বী পর্যন্ত নহি জনৈত ছথিন্হ, জাহি সমাজ কেঁ দাম্পত্য-জীবনক গাড়ী মে সবকসিযা ঘোড়াক সংগ নিরীহ বাছী কেঁ জোতৈত কনেকো মমতা নহি লগৈত ছন্হি, তাহী সমাজক মহারথী লোকনিক কর-কমলমে ই পুস্তক

সবিনয, সান্ববোধ ও সভয সমর্পিত।
প্রণম্য দেরতাক সমর্পণ– আগ সঁ সাত রর্ষ পূর্ব জে কার্তিকী পূর্ণিমাক কবাব পব হমবা সঁ পৈঁচ নঃ গেনাহ ওঁব তহিযাসঁ পুনঃ কহিযো দর্শন দেরাঁক গ্রপা নহি কৈনন্হি, জনিক চিব-স্মবণীয কীর্তি-কনাপ প্রথমে কথা মে রিশদ ৰূপ সঁ রর্ণিত ছৈন্হ, জে "প্রণম্য দেরতা" ক মধ্য সর্বশ্রেষ্ঠ আসন পব অধিকাব জমা সকৈত ছথি, জনিক রন্দনীয রঁঙ্ঘ্রবস্তু ওা পুস্তক দেখি রিন্ব মণ্ডনহি অপন স্বত্ব স্থাপিত কয নঃ সকৈত ছথি, তেহন প্রমুখ চবিত-নাযক, রিকট পাহুন ভীমেন্দ্রনাথ ক স্বদৃঢ় রিশান ঝষ্ঠিমে ওা রিচিত্র-চবিত্র-পূর্ণ পোথী রিরশতাপূর্বক অর্পিত ছৈন্হ!
খট্টব ককাক তবংগক সমর্পণ– জে ভংগক তবংগমে কাব্য-শাস্ত্র-রিনোদক ধাবা রঁহা দৈত ছথি; জনিক প্ররাহমে থোড়কে কানক হেতু রেদ-প্রবাণ, ধর্মশাস্ত্র, সভষ্টা ভসিযা জাগত অছি; জে রাঁত-রাঁতমে অদ্ভুত বস ও চমকোবক চাশনী ঘোবি দৈত ছথি; জে মর্মস্পর্ষী ব্যংগ্য দ্বাবা নোকক অন্তস্তন মে পহুঁচি গুদগুদী নগা দৈত ছথি; তেহন চিব আনন্দমূর্তি, পবিহাস-প্রিয খট্টব ককা কৈঁ- ত্বদীযং রস্তু পিতব্য! তুভ্যমের সমর্পিতম্।
বংগশানাক সমর্পণ– জে অক্ষযযৌরনা নটী এহি অনাদি অনন্ত বংগশানাক প্ররর্তিকা থিকীহ, জে মনোহব রীণা-রাদিনী সম্পূর্ণ চবাচব রিশ্বকৈঁ অপনা আংগুবক অগ্রভাগ পব নচা বহন ছথি, জে বহস্যমযী অপন মোহিনী নীনাক ঝনক দেখায ককবো স্পর্শ নহি কবয দৈত ছথিন্হ, জে কল্পনাক বংগীন পাঁখি পব আবি কনাকাবক কনামে বসক সংচাব কবৈত ছথিন্হ, তেহন আশ্চর্যকাবিণী চিবস্বন্দবী ত্রৈনোক্য-রিজযিনী মাযা দেরী কৈঁ।

গজেন্দ্র ঠাকুব

নচিকেতা জীক নাৎক নো এণ্ট্রী: মা প্ররিশ

গংৎবনেৎপব মৌথিনীক প্রাবম্ভ হম কএনে বর্মী 2000 ঙা. মে খপন ভেন এক্সীডেংৎ কেব ৰাঁদ, যাদ্ধূ জিযোসিৎীজপব 2000–2001 মে ঢেব বাস সাগৎ মৌথিনীমে ৰনেনহুঁ, হ্মদা ওং সভ হ্রী সাগৎ ছন সে কিছ দিনমে খপনে ডিনীৎ ভং জাগত ছন।

ঞ জ্নাঙা ২০০৪ কেঁ ৰনাওন "ভানসবিক গাছ" জে www.videha.com পব এখনো উঁপনৰ্ব্ধ খছি, মৌথিনীক

इंटरनेटपर प्रथम उपस्थितिक रूपमे अखनो विद्यमान अछि। ई अछि "विदेह" प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका www.videha.co.in पर। "विदेह" देश-विदेशक मैथिलीभाषीक बीच विभिन्न कारणसँ लोकप्रिय भेल। "विदेह" मैथिलिक लेल मैथिली साहित्यक नवीन आन्दोलनक प्रारम्भ कएने अछि। प्रिंट फॉर्ममे, ऑडियो-विजुअल आ सूचनाक सभटा नवीनतम तकनीक द्वारा साहित्यक आदान-प्रदानक लेखकसँ पाठक धरि करबामे हमरा सभ जुटल छी। नीक साहित्यकेँ सेहो सभ फॉरमपर प्रचार चाही, लोकसँ आ माटिसँ स्नेह चाही। "विदेह" एहि कुप्रचारकेँ तोड़ि देलक, जे मैथिलीमे लेखक आ पाठक एके छथि। कथा, महाकाव्य,नाटक, एकाङ्की आ उपन्यासक संग, कला-चित्रकला, संगीत, पाबनि-तिहार, मिथिलाक-तीर्थ,मिथिला-रत्न, मिथिलाक-खोज आ सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक समस्यापर सारगर्भित मनन। "विदेह" मे संस्कृत आ अंग्रेजी कॉलम सेहो देल गेल, कारण ई ई-पत्रिका मैथिलिक लेल अछि, मैथिली शिक्षाक प्रारम्भ कएल गेल संस्कृत शिक्षाक संग। रचना लेखन आ शोध-प्रबंधक संग पञ्जी आ मैथिली-अंग्रेजी कोषक डेटाबेस देखिते-देखिते ठाढ़ भऽ गेल। इंटरनेट पर ई-प्रकाशित करबाक उद्देश्य छल एकटा एहन फॉरम केर स्थापना जाहिमे लेखक आ पाठकक बीच एकटा एहन माध्यम होए जे कतहुसँ चौबीसो घंटा आ सातो दिन उपलब्ध होए। जाहिमे प्रकाशनक नियमितता होए आ जाहिसँ वितरण केर समस्या आ भौगोलिक दूरीक अंत भऽ जाय। फेर सूचना-प्रौद्योगिकीक क्षेत्रमे क्रांतिक फलस्वरूप एकटा नव पाठक आ लेखक वर्गक

हेतु, प्रवान पाठक आर लेखकक संग, फॉरम प्रदान करबाक सेहो एकर उद्देश्य छल। एहि हेतु दू टा काज भेल। नव अंकक संग पुरान अंक सेहो देल जा रहल अछि। पुरान अंक pdf स्वरूपमे डाउनलोड कएल जा सकैत अछि आर जतए इंटरनेटक स्पीड कम छैक वा इंटरनेट महग छैक ओतए ग्राहक बड्ड कम समयमे 'विदेह' केर पुरान अंकक फाइल डाउनलोड कए अपन कंप्युटरमे सुरक्षित राखि सकैत छथि आर अपना सुविधानुसारे एकरा पढ़ि सकैत छथि।

नचिकेता जीक नाटक नो एन्ट्री: मा प्रविशे विदेह- ई-पत्रिकामे धारावाहिक रूपेँ लगातार ७ अंकमे पत्रिकाक आठम अंक (तिथि १५ अप्रैल २००८) सँ पन्द्रहम अंक (तिथि १ अगस्त २००८) धरि ई-प्रकाशित भए सम्प्रति प्रेसमे प्रिंटक लेल गेल अछि। आर ई सभटा अंक पी.डी.एफ. रूपमे विदेह आर्काइवमे डाउनलोडक लेल उपलब्ध अछि। लगातार १२० दिन ई नाटक वेबपर रहल आर ५० देशक २५० स्थानसँ १५,९६० पाठक एकरा पढ़ि चुकल छथि (गूगल एनेलेटिक्स डाटा), आर एहिमे आर्काइवसँ विदेहक पुरान-अंक-डाउनलोड कएल गेल संख्या नहि जोड़ल गेल अछि।

नाटकक कथानक: प्रथम कल्लोल: ई नाटक ज्योतिरीश्वरक परम्परामे कल्लोलमे (वर्ण रत्नाकर कल्लोलमे सदा धूर्त-समागम अंकमे विभक्त अछि) विभाजित अछि। चारि कल्लोलक विभाजनक प्रथम कल्लोल स्वर्ग (वा नरक) केर द्वारपर आरम्भ होइत अछि। ओतए बहुत रास मृत लोक द्वारक भीतर प्रवेशक लेल पंक्तिबद्ध छथि। क्यो पथ दुर्घटनामे शिकार भेल बौआरी छथि तँ संगमे युद्धमे मृत भेल सैनिक आर चोरि करए काल

মাবন গেন চোব, উচক্কা আ২ প াঁকিটমাব সেহো ছথি। জ্যাতিবীশ্বিবক ধূর্তসমাগমমে জে অতি আধুনিক অর্সর্ডিটী অছি সে নো এ ন্ট্রী: মা প্ররিশ মে সেহো দেখ২মে অরৈত অছি। প্রথম কল্লানমে জে রাঁজাবী ছথি সে পঙ্তি তোড়ি আগাঁ রঢ়না উত্তব চোব আ২ উচক্কা দুনূ গোটেকেঁ ক াঁনব পকড়ি পুনঃ ত্নকব সভক মূন স্থানপব দএ অরৈত ছথি। উচক্কা জে রাঁদমে পতা চনৈত অছি জে গুল্ডা-দাদা থিক হৃদা রাঁজাবী নগ সঞ্চ-মঞ্চ বহৈত অছি, অংগা ছোড়রাঁক নেন কহৈত অছি। হৃদা জখন প াঁকেটমাব রাঁজাবী দিসসঁ চোবক রিপক্ষমে রজৈত অছি তখন উচক্কা চক্কূ নিকানি অপন অসন ৰূপমে আরি জাগত অছি আ২ প াঁকেটমাবপব মাবি-মাবি কএ উঠৈত অছি। হৃদা জখন চোব কহৈত ছনি জে ও সেহো অপনে রিবাদবীক অছি জে ছোট-ছীন প াঁকেটমাব মাত্র রনি সকন ওকব জকাঁ মাঁজন চোব নহি, আ২ উচক্কা জেকাঁ গুল্ডা-রদমাশ রনরাঁক তঁ সোচিও নঞি সকন, তখন উচক্কা মহবাজ চোবক পাছঁ পড়ি জাগত ছথি, জে রদমাশ ককবা কহনঁহ। আর প াঁকেটমাব মৌকা দেখি পক্ষ রদনৈত অছি আ২ উচক্কাকেঁ কহৈত ছন্হি জে অহাঁকেঁ নহি হমবা কহনক। সংগে ওহো কহৈত অছি জে চোবি তঁ ও তেহন কবএ জনৈত অছি, জে গিবহথক রটৌ আ২ হ্নহ্নব সভ চোবি কবৈত কান পীটৈত-পীটৈত এত২ পঠা দেনক আ২ হমব খিধাঁশি কবৈত অছি। রড়কা চোব ভেনা২ হঁ। ভদ্র ব্যক্তি চোবক রগেরাঁনী দেখি ও রিশ্বাস নহি কএ পরৈত ছথি জে ও২ চোব থিকাহ। তাহিপব প াঁকেটমাব, চোব মহাবাজকেঁ আব কিচকিচরৈত ছন্হি। তখন ও২ চোব মহবাজ এহি গপপব দুখ প্রকট কবৈত ছথি জে নহি তঁ ওহি বাতি

এহি প্রাকেটমাবকেঁ চোবিপব নএ জএতথি আ২ নে ওহ হ্নকা পিঠৈত দেখি সকৈত। এম্হব রঁজাবী জে পহিনে চোব আ২ উচ্ক্কাকেঁ কানব পকড়ি ঘিসিযা চ্কন ছনাহ, গ্বম্ম ভেন সভটা স্বনৈত ছথি আ২ দ্খ প্রকট কবৈত ছথি জে একবা সভক সংগ স্বস্থামে বহরঁ তঁ স্বস্থা কেহন হোএত সে নহি জানি। আরঁ রঁজাবী মহবাজ গীতক একটা ঠ্কড় া এহি রিষযপব পঢ় ৈত ছথি। জেনা ধূর্তসমাগমমে গীত অছি তহিনা নো এ্স্ত্রী: মা প্ররিশে মে সেহো, ওা এহি স্থনপব প্রাবম্ভ হোগত অছি জে এহি নাটককেঁ সংগীতক রঁনা দৈত অছি। ওম্হব প্রাকেটমাবজী সভক প্রাকেট কাটি নৈত ছথি আ২ রঁট্থা সাফ কএ দৈত ছথি। আরঁ ফেব গীতময ফকড় া শ্বরু ভএ জাগত অছি ঝদা তখনে একটা মৃত বদ্দীরঁনা সভক তংদ্রাকেঁ তোড়ি দৈত ছথি ওা কহি জে যমানযক রঁন্দ দবরঁজ্জাক ওহি পাব, ওা রঁট্থা আ২ পাগ–কৌড় া কোনো কাজক নহি অছি। আরঁ দ্নূ মৃত ভদ্র ব্যক্তি সেহো রঁজৈত ছথি, জে হঁ দোসব দেসমে দোসব দেসক সিক্কা কহাঁ চনৈত অছি। আরঁ একটা বমণীমোহন নাম্না মৃত বসিক ভদ্র ব্যক্তিক দোসব দেসক সিক্কা নহি চনরাঁক রিষযমে টীপ দৈত ছথি জে হঁ ওা তঁ ওহিনা অছি জেনা প্রেযসীক দোসবক পনী রঁনরঁ। আরঁ এহি গপপব ঘমর্থন শ্বরু ভএ জাগত অছি। তখন বমণী মোহন গপক কথি ঘ্মা দৈত ছথি জে দবরঁজ্জাক ভীতব বম্ভা–মেনকা সভ হেতীহ। ভিখমংগনী জে তারত অপন কোবামে নেন একটা প্বতবাকেঁ দোসবাক হাথমে দএ রঁহসমে শামিন ভ২ গেন ছথি ওাষ্যারিশ বম্ভা–মেনকাকেঁ ঝঁহস্মড়কী গলাদি কহৈত ছথি। ঝদা প্রাকেটমাব কহৈত অছি জে ভীতবমে স্বখ নহি দ্খো ভএ সকৈত অছি। এহিপব

রীমা রাৱূ অপন কার্যক স্কাপ দেখি প্রসন্ন ভএ জাগত ছথি। আৱ প◌ॉকেটমাব গন্দ্রক রজ্র পব রুপৈয্যাক রৌনী শ্বব্ধ কৱৈত অছি। এহি ৱেব ৱজাবী তন্দ্রা ভঁগ কৱৈত অছি আঃ দূনূ ভদ্র ব্যক্তি হুনকব সমর্থন কৱৈত কহৈত অছি জে ও অদ্ভুত নীনামী, জে কবৱাঃ বহন অছি প◌ॉকেটমাব আঃ শামিন অছি চোব আঃ ভিখমংগনী, পহিনে-পহিন স্বনন অছি আঃ ফেব সংগীতময ফকড় া সভ শ্বব্ধ ভএ জাগত অছি। ঋদা তখনে নংদী-ভুঁগী শাস্ত্রীয সংগীতপব নচৈত প্ররেশ কৱৈত ছথি। আৱ নংদী-ভুঁগীক ও প্রছনাপব জে দবৱজ্জাক ভীতব কী অছি সভ গোটে অপনা-অপনা হিসাৱসঁ স্বস্ক্র-নবক আঃ অকাস-পতান কহৈত ছথি। ঋদা নংদী-ভুঁগী কহৈত ছথি জে সভ গোটে সৎ ছী আঃ ক্যা গোটে পূর্ণ সৎ নহি ৱজনহুঁ। ফেব ৱজৈত-ৱজৈত ওঃ কহএ নগৈত ছথি ক্যা চোবি কান মাবন গেনাহ (চোব ও স্বনি ভাগএ নগৈত ছথি তঁ দু-তীন গোটে পকড়া সোন্মাঁ নএ অনৈত ছন্হি।) তঁ ক্যা এক্সীডেন্টসঁ আঃ এহি তবহেঁ সভটা গনৱএ নগৈত ছথি, ঋদা রীমা-ৱাৱূ কোনা ৱিন মূহুক এতএ আযন ছথি সে হুনকহ্ নোকনিকেঁ নহি বুঝন ছন্হি! রীমা ৱাৱূ কহৈত ছথি জে ওঃ নর মার্কেটক অন্নেষণমে আএন ছথি! সে ৱিন মবন সেহো এক গোটে ওতএ ছথি! ভুঁগী নংদীকেঁ ঢ়বে বাস রীমা কম্পনীক আগমনসঁ আএন কম্পীটিশনক রিষযমে বুঝবৈত ছথি! এম্হব প্রেমী-প্রেমিকামে ঘোঁঘাউঁজ শ্বব্ধ হোগত ছন্হি, কাবণ প্রেমী আৱ ঘ্বি জাএ চাহৈত ছথি। বমণী মোহন প্রেমীক গমনসঁ প্রসন্ন হোগত ছথি জে প্রেমিকা আৱ অসগবে বহতীহ আঃ হুনকা নেন মৌকা ছন্হি। ঋদা ভুঁগী ও কহি জে এতএসঁ গেনাগ তঁ সংভর নহি ঋদা

ओ भऽ सकैत अछि जे दुनू जोड़ ी माय-बाप(!)केँ एक्सीडेन्टमे कबराए एतहि बजबाऽ लेल जाए। मुदा अपना लेल माय-बापक बनि लेल प्रेमी-प्रेमिका तैयार नहि छथि। तखन नंदी भृंगी दुनू गोटेकेँ विवाह गाजा-बाजाक संग कराऽ दैत छथि आऽ कन्यादान करैत छथि बजाबी।
दोसर कल्लोल: दोसर कल्लोलक आरम्भ होइत अछि एहि भाषसँ, जे क्यो नेता मरबाक बाद आबएबला छथि, हुनकर दुनू अनुचर मृत भए आबि चुकल छथि आऽ नेताजीक अएबाक सभ क्यो प्रतीक्षा कए रहल छथि, दुनू अनुचर छोट-मोट भाषण दए नेताजीक विलम्बसँ अएबाक (मृत्युक बादो !) क्षतिपूर्ति कए रहल छथि, गीतक योग दए। एकटा गीत चोर नहि बुझैत छथि मुदा भिखमंगनी आऽ बन्दीबला बुझि जाइत छथि, ताहि पर बहस शुरू होइत अछि। चोरकेँ चोर कहनापर आपत्ति अछि आऽ भिखमंगनीकेँ ओऽ भिख-मंग कहैत अछि तँ भिखमंगनी ओकरा रोकि कहैत छथि जे ओऽ सविसरपाहीक अनसूया छथि, मिथिला-चित्रकार, मुदा दिल्लीक अशोकबस्ती आबि बुझलन्हि जे एहि नगरमे कला-वस्तु क्यो नहि किनैत अछि आऽ चौबटियाक भिखमंगनी बनि रहि गेलीह। चोर कहैत अछि जे मात्र ओऽ बदनाम छथि, चोरि तँ सभ करैत अछि। नर बात कोनो नहि अछि, सभ अछि प्रवलकाक चोरि। तकर बाद नेताजी पहुँचि जाइत छथि आऽ लोकक चोर, उँचक्का आऽ प◌ॉकेटमार होएबाक कारण, समाजक स्थितिकेँ कहैत छथि। तखने एकटा रामपंथी अबैत छथि आऽ ओऽ ई देखि क्षुब्ध छथि जे नेताजी चोर, उँचक्का आऽ प◌ॉकेटमारसँ घिरल छथि। मुदा चोर अपन

তর্ক নএ প্বনঃ প্রস্তুত হোগত অছি আঽ নেতাজীক বাখন "চোব-প্বাণ" নামক আধাবপব রজাবী জী গীত শ্বব্ধ কএ দৈত ছথি।

তেসব কল্পান: আব নেতাজী আঽ বামপংথীমে গঠবংধন আঽ বামপংথী দ্বাবা সবকাবক বাহবসঁ দেন সমর্থনপব চবচা শ্বব্ধ ভএ জাগত অছি। নেতাজী ফেব গীতময হোগত ছথি আকি তখনে স্টংট-সীন কবৈত একটা ফ্মগন অভিনেতা বিবেক ক্ষমাবক অএনাসঁ আকর্ষণ ওম্ভব চনি জাগত অছি। টৈকা-ব্রেকিংগ ন্যূজ দেবাক মজবূবীপব নেতাজী ব্যংগ্য কবৈত ছথি। বামপংথী দূ বেব দূ গোট গপ নব গপ কহি জাগত ছথি, এক জে বিন অভিনেতা বননে ক্যা নেতা নহি বনি সকৈত অছি আঽ দোসব জে চোব নেতা নহি বনি সকৈছ (ও চোব কহৈত অছি) ফ্মদা নেতা সভ তঁ চোবি কববামে ককবোসঁ পাছাঁ নহি ছথি। তখনে একটা উঁচ বংশীয মহিলা অবৈত ছথি আঽ হুনকব প্রশ্নাত্তবক বাদ একটা সামান্য ক্যক সংগ একটা বী.আগ.পী.ক্য বনি জাগত অছি। অভিনেতা, নেতা আঽ বামপংথী সভ বী.আগ.পী.ক্যমে ঠাঢ় ভঽ জাগত ছথি! ও প্বছনাপব কী, কতাব কিএক বনন অছি তাহিপব চোব-প◌ॉকেটমাব কহৈত ছথি জে হুনকা নোকনিকেঁ পংক্তি বনএবাক (আঽ তোড়বাক সেহো) অভ্যাস ছন্হি।

চতুর্থ কল্পান: যমবাজ সভক খাতা-খেসবা দেখি নৈত ছথি আঽ চিত্রগুপ্ত ও বহস্যাদ্ঘাটন কবৈত ছথি জে এক যগ ছন জখন সোন্নাঁক দববজ্জা খুজিতো ছন আঽ বন্ন সেহো হোগত ছন। নংদী ভৃংগী পহিনহি সূচিত কএ দেনন্হি জে সোন্নাঁক দববজ্জা স্বপ্ন নহি, মাত্র বুন্নবাক দোষ ছন। দববজ্জাক ওহিপাব কী অছি তাহি বিষযমে সভ ক্যা অপনা-অপনা হিসাবসঁ অনুভবক উত্তব দৈত

छथि। चित्रगुप्त कहैत छथि जे ओ सभटा छैक ओहिपार। नंदी-भृंगी सूचित करैत छथि जे एहि गेटमे प्रवेश निषेध छैक, नो एन्ट्री केर बोर्ड लागल छैक। आहि रे बा! आब की होएत! नेताजीकेँ पठाओल जाइत छन्हि यमराजक सोझाँ, मुदा हुनकर सरस्वती ओतए मन्द भए जाइत छन्हि। वरदवी विशाल मिश्र प्रसिद्ध नेताजी केर खिंचाइ शुरू होइत छन्हि असली केर वरदना सर्टिफिकेट वना कम कए लिखाओल उमेरिपर। पचपन वरिख आयु आर शेष योग करैत अछि जे सत्तरि से ऊपर जीताह से ओ आर संगमे मृत चारू सैनिककेँ आपिस पठा देल जाइत अछि। दूटा सैनिक नेताजीक संग चलि जाइत छथि आर दू टा अन्दर सेहो जाए चाहैत अछि। मुदा नेताजीक अन्दर सभक अपराध बड़ भारी, से चित्रगुप्तक आदेशपर नंदी-भृंगी हुनका लए, कराहीमे उनटाक लेल बाहर लए जाइत छथि तँ बाँचल दुनू सैनिक हुनका पकड़ा केँ लए जाइत छथि आर नंदी-भृंगी फेर मंचपर घुरि अबैत छथि। तहिना तर्कक वाद प्रेमी-प्रेमिका, दुनू भद्र पुरुष आर वजावीकेँ सेहो त्राण भेटैत छन्हि ढोल-पिपहीक संग हुनका बाहर लए गेल जाइत अछि। आब नन्दी जखन अभिनेताक नाम विवेक कुमार उर्फ...बजैत छथि तँ अभिनेता जी बोकि दैत छथि जे कतेक मेहनतिसँ जाति हुनकर पाछाँ छोड़ा सकल अछि, से उर्फ तँ छोड़ा ए देल जाए। रामपथी गोष्ठीकेँ अभिनेता द्वारा मदति केर विवरणपर रामपथी प्रतिवाद करैत छथि। हुनको पठा देल जाइत छनि। रामपथीक की हेतन्हि, हुनकर कथामे तँ, ने स्वर्ग-नर्क अछि आर ने यमराज-चित्रगुप्त। हुनका अपन भविष्यक

निर्णय स्वयं कवराँक अरसब देन जागत छन्हि। ओदा रामपंथी कहैत छथि जे हुनकर शिक्षा आन प्रकारक छनन्हि ओदा एखन जे सोझाँ घटित भए रहल छन्हि ताहिपर कोना अविश्वास करथु ? ओदा यमराज कहैत छथि जे भऽ सकैत अछि , जे अहाँ देखि रहल छी से दुःस्वप्न होए, जतए घुसए जाएब ओतए निखन अछि नो एन्ट्री। आब यमराज प्रश्न पुछैत छथि जे विषम के, मनुक्ख आकि प्रकृति ? रामपंथी कहैत छथि जे दुनू, ओदा प्रकृतिमे तँ नेचुरल जस्टिस कदाचित् होइतो छैक ओदा मनुक्खक स्वभावमे से गुन्जाइशे कहाँ ? ओदा रामपंथी राजनीति एकर (समानताक, स्वभाव केर) प्रयास करैत अछि। ताहिपर हुनका संग चोर-उचक्का आर प□ाँकेटमारकेँ पठाओल जागत अछि ओ अरसब दैत जे हिनका सभकेँ रँदनू। चोर कनेक जाएमे गतस्तः करैत अछि आर ओ जिज्ञासा करैत अछि जे हम सभ तँ जागए रहल छी ओदा एहिसँ आगाँ ? नंदी-चित्रगुप्त-यमराज समवेत स्वरमे कहैत छथि- नो एन्ट्री। भृंगी तखने अबैत छथि, अभिनेताकेँ छोड़ने। यमराज कहैत छथि मा प्रविशे। भृंगी नीचाँमे होइत चरचाक गप कहैत अछि जे एतुक्का नियम रँदनन जएबाँक आर कतेक गोटेकेँ पृथ्वीपर घुरए देन जएबाँक चरचा सर्वत्र भए रहल छथि। यमदूत सभ अनेरे कड़ाह नग ठाढ़ छथि क्या भुनए नेन कहाँ भेटैन छन्हि (मात्र दू टा अन्वचर)। आब क्या नहि आबए रँना रँचन अछि, से सभ कहैत छथि। चित्रगुप्त अपन नमहर दाढ़ ी आर यमराज अपन ओफ्टै उँताबि नैत छथि आर स्वाभाविक मनुक्ख रूपमे आबि जागत छथि ! ओदा चित्रगुप्तक मेकप रँना नमहर

दाढ़ ी देखि भिखमंगनी जे ओतए छलीह, हँसि दैत छथि। भंगी उद्घाटैन करैत छथि जे भिखमंगनी हुनके सभ जेकाँ कलाकार छथि! कोन अभिनय! तकर रिरबर्ण महर्र्वत आ० गृदगृदीपर खतम होएत अछि तँ भिखमंगनी कहैत छथि जे नहि एहि तरहक अभिनय तँ ओतए (देखा कए) भऽ रहल अछि। ओतऽ रमणी मोहन आ० उँचरंशीय महिला निभाक रोमांस चलि रहल अछि। मुदा निभाजी तँ रँजितेे नहि छथि। भिखमंगनी यमराजसँ कहैत छथि जे ओऽ तखने रँजतीह जखन एहि दवरँज्जाक तालाक चाभी हुनका भेटैतन्हि, र्बुझतीह जे अपसरा रँनरँामे यमराज मदति दए सकैत छथि, ओ रमणीक हृदय थिक एतह् लो एन्ट्री! यमराज खखसैत छथि, तँ चित्रगृप्त र्बुझि जाएत छथि जे यमराज "पचशेर"सँ ग्रसित भए गेल छथि! चित्रगृप्तक कहला उँत्तर सभ क्या एक कात लए जाओल जाएत छथि मात्र यमराज आ० निभा मंचपर रहि जाएत छथि। यमराज निभाक सोझाँ- स्वर्न् ने निभा... कहि रुकि जाएत छथि। सभक उँसोहित कएलापर यमराज रँड़का चाभी हुनका दैत छथि, मुदा निभा चाभी भेटैलापर रमणी मोहनक संग तेला आगाँ रँढ़ैत छथि जेना ककरो अनका चिन्हितेे नहि होथि! ओऽ चाभी रमणी मोहनकेँ दए दैत छथि मुदा ओऽ ताला नहि खोलि पररैत छथि। फेर निभा अपने प्रयास करए लेल आगाँ रँढ़ैत छथि मुदा चित्रगृप्त कहैत छथि जे ओ मोनक दवरँज्जा थिक, ओला नहि ख्ुजत। महिला ठकए लेल चाभी देरँाक! रँात कहैत छथि। सभ क्या हँसी करैत छलि जे मोन कतए छोड़ि अएलहुँ? ताहिपर एकरँेर पुनः रमणी मोहन आ० निभा मोन संजोगि कए ताला खोलरँाक

খসফল প্রযাস কবৈত ছথি। নংদী–ভৃংগী–ভিখমংগনী গীত গারঁএ নগৈত ছথি জকব তাপের্য ঙাএহ জে মোনক তানা খছি নাগন, ক্দা ওতএ খছি নো এ্ল্ট্রী। ক্দা ঋত্ত রসন্তমে প্রেম হোগছ খনন্ত খাঃ করেজ কহৈত খছি মৈনা–মৈনা, তঁ এতহি নো এ্ল্ট্রী দবরঁজ্জাপব ধবনা দেন জাএ।

রিরেচন: ভাবত খাঃ পাশ্চাত্য নাট্য সিদ্ধাংতক তুলনামেক খধ্যযনসঁ ঙা জ্ঞাত হোগত খছি মানরক চিন্তন ভৌগোলিক দূবীকক খছৈত কতেক সমানতা নেনে বহৈত খছি। ভাবতীয নাট্যশাস্ত্র ক্দখ্যতঃ ভবতক “নাট্যশাস্ত্র” খাঃ ধনংজযক দশৰূপকপব খাধাবিত খছি। পাশ্চাত্য নাট্যশাস্ত্রক প্রামাণিক গ্রংথ খছি খবস্তূক “কাব্যশাস্ত্র”।

ভবত নাট্যকেঁ “হৃতানুসাব” “ভারানুকাব” কহৈত ছথি, ধনংজয খরস্থাক খনুহৃতিকেঁ নাট্য কহৈত ছথি। ভাবতীয সাহিত্যশাস্ত্রমে খনুকবণ নট কর্ম খছি, করি কর্ম নহি। পশ্চিমমে খনুকবণ কর্ম থিক করি কর্ম, নটক কতহু চবচা নহি খছি।

খবস্তূ নাটকমে কথানকপব রিশেষ বঁন দৈত ছথি। ট্রেজেডীমে কথানক কেব সংগ চবিত্র–চিত্রণ, পদ–বচনা, রিচাব তত্ত্ব, দৃশ্য রিধান খাঃ গীত বহৈত খছি। ভবত কহৈত ছথি জে নাযকসঁ সংবঁধিত কথারস্তু খাধিকাবিক খাঃ খাধিকাবিক কথারস্তুকেঁ সহাযতা পহুঁচারঁএরঁনা কথা প্রাসংগিক কহন জাএত। ক্দা সভ নাটকমে প্রাসংগিক কথারস্তু হোএ সে খারশ্যক নহি, নো এ্ল্ট্রী: মা প্ররিশে মে নহি তঁ কোনো তেহন খাধিকাবিক কথারস্তু খছি খাঃ নহিএ কোনো প্রাসাংগিক, কাবণ এহিমে নাযক কোনো সর্বমান্য নাযক নহি খছি। জে রঁজাবী ডঁচ্ক্কাকেঁ কাঁনব

पकड़ैत छथि से कनेक कानक राँद गौण पड़ि जाइत छथि। जाहि उँचक्काक सोझाँ चोर सकदम करैत अछि से किछु कानक राँद, किछु नर नहि होइछ केर दर्शनपर गप करैत सोझाँ अबैत छथि। जे यमराज सभकेँ थरबैने छथि से स्वयं निभाक सोझाँमे अपन तेज, मध्यम होइत देखैत छथि। भिखमंगनी हुनका दैवी स्वरूप उतारने देखैत हँसैत छथि तँ रमणी मोहन आर निभा सेहो हुनका आर चित्रगुप्तकेँ अन्तमे अपशब्द कहैत छथि। रामपंथीक आर अभिनेताक सएह हाल छन्हि। कोनो पात्र कमजोर नहि छथि आर बिराँउन्ड करैत छथि।
कथा इतिवृत्तिक दृष्टिसँ प्रख्यात, उत्पाद्य आर मिश्र तीन प्रकारक होइत अछि। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आर उत्पाद्य कल्पित होइत अछि। मिश्रमे दुनूक मेल होइत छथि। नो एन्ट्री: मा प्रविश मे मिश्र इतिवृत्तिक होएबाक कोनो टा गुंजाइश तखने खतम भए जाइत अछि जखन चित्रगुप्त आर यमराज अपन नकली भेष उतारैत छथि आर भिखमंगनीक हँसनापर भंगी करैत छथि जे ई भिखमंगनी सेहो हमरे सभ जेकाँ कलाकार छथि! मात्र यमराज आर चित्रगुप्त नामसँ कथा इतिहास-पुराण सम्बन्ध नहि अछि आर इतिवृत्ति पूर्णतः उत्पाद्य अछि। अवस्था कथानककेँ सरल आर जटिल दू प्रकारक मानैत छथि। ताहि हिसाबेँ नो एन्ट्री: मा प्रविश मे आकस्मिक घटना आदि जाहि सरलताक संग क्रममे अबैत अछि, से ई नाटक सरल कथानक आधारित कहल जाएत। फेर अवस्थ इतिवृत्तकेँ दन्तकथा, कल्पना आर इतिहास एहि तीन प्रकारसँ सम्बन्धित मनैत छथि। नो एन्ट्री: मा प्रविश

কেঁ কাল্পনিকমূনক শ্রেণীমে এহি হিসাবেঁসঁ বাখন জাএত। খবস্তুক ট্রেজেডীক চবিত্র, য়শস্বী খাঃ কুনীন ছথি– সত্ খসত্ কেব মিশ্রণ। নো এন্ড্রী: মা প্ররিশ মে জে চবিত্র সভ ছথি তাহিমে সভ চবিত্রমে সত্ খসত্ কেব মিশ্রণ খছি। নিভা উঁচবংশীয ছথি ক্ষদা বমণী মোহন জে বঁনাকোবক বাঁদক পিঠাওা কেব বাঁদ মৃত ভেন ছথি হুনকাসঁ হিনি–মিনি জাগত ছথি। ভিখমংগনী মিথিনা চিত্রকাব খনসূযা ছথি। দ্নূ ভদ্রপ্বকষ বঁজাবী খাঃ চাৰু সৈনিক এহি প্রকাবেঁ রিন কন্বষতাক সোঝাঁ খবৈত ছথি। ভবত নূৎ সংগীতক প্রেমীকেঁ ধীবননিত, শান্ত প্রগ্বতিকেঁ ধীবপ্রশান্ত, ক্ষত্রিয প্ররৃত্তিকেঁ ধীবোদত্ত খাঃ ওষ্যান্ূকেঁ ধীবোদ্ধত্ত কহৈত ছথি। বঁজাবী খাঃ দ্নূ ভদ্রপ্বকষ সংগীতক বেঁশ প্রেমী ছথি তঁ বমণী মোহন প্রেমী–প্রেমিকাকেঁ দেখি কএ ওষ্যান্ূ, সৈনিক সভ শান্ত ছথি ক্ষত্রিযোচত গ্বণ সেহো ছন্হি সে ধীবোদত্ত খাঃ ধীবপ্রশান্ত দ্নূ ছথি। ক্ষদা নো এন্ড্রী: মা প্ররিশ মে এহি প্রকাবক রিভাজন সম্ভর নহি খছি।

ভাবতীয সিদ্ধাঁত কার্যক খাবম্ভ, প্রযনে, প্রাপ্ত্যাশা, নিযতাপ্তি খাঃ ফনাগম ধবিক পাঁচ টা খরস্থাক বর্ণন কবৈত ছথি। প্রাপ্ত্যাশামে ফন প্রাপ্তিক প্রতি নিবাশা খবৈত খছি তঁ নিযতাপ্তিমে ফন প্রাপ্তিক খাশা ঘ্বি খবৈত খছি। পাশ্চাত্ সিদ্ধাঁত খাবম্ভ, কার্য–রিকাস, চবম ঘটনা, নিগতি খাঃ খন্তিম ফন। প্রথম তীন খরস্থামে উঁনমন খবৈত খছি, খন্তিম দূ মে স্বনমন।

কার্যরিস্থাক পঁচ রিভাজন– রীযা, রিন্দ্, পতাকা, প্রকবী খাঃ কার্য খছি। নো এন্ড্রী: মা প্ররিশ মে রীযা খছি একটা দ্বন্দ মূন্ক বাঁদক নোকক, রীমা এজেন্ট এতএ রিন্ব মূন্ক পহুঁচি জাগত ছথি। যমবাজ খাঃ চিত্রগ্বপ্ত

मेकप आर्टिस्टि निकलैत छथि। विभिन्न बिन्दु द्वारा एकटा चरित्र ऊपर नीचाँ होइत रहैत अछि। पताका आर प्रकरी अरान्तर कथामे होइत अछि से नो एन्ट्री: मा प्रविशे मे नहि अछि। बीजाक विकसित रूप कार्य अछि मुदा नो एन्ट्री: मा प्रविशे मे ओ धरणापर अतय भए जाइत अछि! अवस्था एकरा बीजा, मध्य आ अवसान कहैत छथि। आर आउ सन्धिपर, मुख-सन्धि भेल बीज आ आरम्भकेँ जोड़एबला, प्रतिमुख-सन्धि भेल बिन्दु आ प्रयत्नकेँ जोड़एबला, गर्भसन्धि भेल पताका आ प्राप्त्याशाकेँ जोड़एबला, विमर्श सन्धि भेल प्रकरी आ नियताप्तिकेँ जोड़एबला आ निर्वहण सन्धि भेल फलागम आ कार्यकेँ जोड़एबला। नो एन्ट्री: मा प्रविशे मे मुख/ प्रतिमुख आ निर्वहण सन्धि मात्र अछि, शेष दू टा सन्धि नहि अछि।

पाश्चात्य सिद्धांत स्थान, समय आ कार्यक केन्द्र तकैत अछि। नो एन्ट्री: मा प्रविशे मे स्थान एकहि अछि, समय लगातार आ कार्य अछि द्वारक भीतर पैसबाक आकांक्षा। दू घण्टाक नाटकमे दू घण्टाक घटनाक्रम वर्णित अछि नो एन्ट्री: मा प्रविशे मे कार्य सेहो एकेटा अछि। अभिनवगुप्त सेहो कहैत छथि जे एक अंकमे एक दिनक कार्यसँ बेशीक समावेश नहि होए आ दू अंकमे एक वर्षसँ बेशीक घटनाक समावेश नहि होय। नो एन्ट्री: मा प्रविशे मे कल्पनाक विभाजन घटनाक निर्दिष्ट समयमे भेल कार्यक आ नव कार्यावस्थामे भेल विलम्बक कारण आनल गेल अछि। मुदा एहि त्रिकक विरोध ड्राइडन कएने छलाह आ शेक्सपिअरक नाटकक स्वच्छन्दताक ओ समर्थन कएलन्हि। मुदा नो एन्ट्री: मा प्रविशे मे एहि तरहक कोनो समस्या नहि

অবৈত অছি। নো এ্‌ট্রী: মা প্রবিশি মে আপসী গপশপমে– জকবা ক্লেশিবৈক সেহো কহি সকৈত ছী– ককব মূহ্ কোনা ভেন সে নীক জেকাঁ দর্শিত কএন গেন অছি।

ভাবতমে নাটকক দৃশ্যত্বক সমর্থন কএন গেন মুদা অবস্তূ আঃ প্লেটো একব বিবোধ কএনন্হি। মুদা ১৬ম শতাব্দীমে নোডোবিকো কৈস্ট্রনবেট্রো দৃশ্যত্বক সমর্থন কএনন্হি। ডিটৈটৌর্ট সেহো দৃশ্যত্বক সমর্থন কএনন্হি তঁ ড্রাগডজ নাটকক পঠনীযতাক সমর্থন কএনন্হি। দেসিযব পঠনীযতা আঃ দৃশ্যত্ব দুনূক সমর্থন কএনন্হি। অভিনরগুপ্ত সেহো কহনে ছনাহ জে পূর্ণ বসাস্বাদ অভিনীত ভেনা উত্তব ভেটৈত অছি মুদা পঠনসঁ সেহো বসাস্বাদ ভেটৈত অছি। নো এ্‌ট্রী: মা প্রবিশি মে পহিন কল্লানক প্রাবম্ভমে ওা স্পষ্ট ভঃ জাগত অছি জে এতএ দৃশ্যত্বকেঁ প্রধানতা দেন গেন অছি। পশ্চিমী বংগমংচ নাট্যবিধান বাস্তবিক অছি মুদা ভাবতীয বংগমংচপব সাংকেতিক। জেনা অভিজ্ঞানশাকুংতনম্ মে কানিদাস কহৈত ছথি– গতি শবসংধানং নাটযতি। নো এ্‌ট্রী: মা প্রবিশি মে ভাবতীয বিধানকেঁ অংগীকৃত কএন গেন– জেনা মূহ্ প্রাপ্ত সভ গোটে দ্বাবা স্বল্প প্রবেশ দ্বাবক অদৃশ্য দেবাঁড়ক গপশপ আঃ অভিনয কৌশন দ্বাবা স্পষ্টতা। অংকিযা নাটমে সেহো প্রদর্শন তত্বক প্রধানতা ছন। কীর্তনিযাঁ এক তবহেঁ সংগীতক ছন আঃ এতহ্ অভিনয তত্বক প্রধানতা ছন। অংকীযা নাটক প্রাবম্ভ মৃদংগ বাদনসঁ হোগত ছন। নো এ্‌ট্রী: মা প্রবিশি মৈথিনীক পবম্পবাসঁ অপনাকেঁ জোড়নে অছি মুদা সংগহি গতিহাস, প্রবাণ আঃ সমকানীন জীবনচক্রকেঁ দেখবাঁক একটা নব দৃষ্টিকোণ নএ আএন অছি, সোচবাঁঃ নএ একটা নব

अंतर्दृष्टि दैत अछि।

ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम, विद्यापतिक गोरक्षविजय, कीर्तनिञा नाटक, अंकीयानाट, हर्षनाथ झाक माधवानन्द, उमापति उपाध्यायक पारिजातहरण, जीवन झाक सुन्दर संयोग, लालदासक चम्पाकलि, अर्थात् नाटक रूपा ... जीवन, एक छल राजा", श्रीशजीक पुरुषार्थ, सुधांशु शेखर चौधरीक भफाइत चाहक जिनगी, महेन्द्र मलंगियाक काठक लोक, राम भरोस कापड़ि भ्रमरक महिषासुर मर्दिनी, गंगेश गुंजनक बुधिबधिया केर परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत नचिकेताजीक नो एंट्री: मा प्रविश तार्किकता आर आधुनिकताक वस्तुनिष्ठताकेँ ठाम-ठाम नकारैत अछि। रामफलीकेँ यमराज ज्ञानी कहैत छथिन्ह, जे रामफली देखि रहल छथि से सत्य नहि सपनो भऽ सकैत अछि। विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका अछि ई नाटक। सत्य-असत्य, सभ अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन करैत छथि। चोरक अपन तर्क छन्हि आर रामफली सेहो कहैत छथि कि चोर नेता नहि बनि सकैत छथि कारण नेताक चोरिपर उतरि अएलासँ चोरक वृत्ति मारल जाए रहल छन्हि। नाटकमे आमे-केन्द्रित हास्यपूर्ण आर नीक-खराबक भावना बहि-बहि अतत्व लोगत रहैत अछि। यमराज आर चित्रगुप्त तक हथौड़ामे बहि जीवि रहल छथि। उत्तर आधुनिकताक ई सभ लक्षणक संग नो एंट्री: मा प्रविश मे एके गोटेक कैक तरहक चरित्र निकलि बाहर अबैत अछि, जेना उच्चवंशीय महिलाक। कोनो घटनाक सम्पूर्ण अर्थ नहि लागि पबैत अछि, सत्य कखन असत्य भऽ जएत तकर कोनो ठेकान नहि। उत्तर आधुनिकताक सतही

চিন্তন খাহ চবিত্র সভক নো এল্ড্রী: মা প্ররিশ মে ভবমাব নাগন খছি, খাশারাদিতা তঁ নহিএ খছি হ্মদা নিবাশারাদিতা সেহো নহি খছি। যদি খছি তঁ সে খছি ৰতহপনী, কোনো চীজ এক তবহেঁ নহি কৈক তবহেঁ সোচএ ৰনা- রিত্ত্যমান ছথি। কাবণ, নিযন্ত্রণ খাহ যোজনাক উত্তব পবিণামপব রিশ্বাস নহি ববন সংযোগক উত্তব পবিণামপব ৰেশী রিশ্বাস দর্শাওন গেন খছি। গণতাঁত্রিক খাহ নাবীরাদী দৃষ্ঠিকোণ খাহ নান ঝংডা খাদিক রিচাবধাবাক সংগে প্রতীকক রূপমে হাস-পবিহাস সোঝাঁ খরৈত খছি।

এহি তবহেঁ নো এল্ড্রী: মা প্ররিশ মে উত্তব খাধুনিক দৃষ্ঠিকোণ দর্শিত হোগত খছি, এতএ পাঠক কথানকক মধ্য উঠাওন রিভিন্ন সমস্যাসঁ খপনাকেঁ পবিচিত পরৈত ছথি। জে দ্বন্দ নাষ্টকক খংতমে দর্শিত ভেন সে উত্তব-খাধুনিক যুগক পাঠককেঁ খাশ্চর্যিত নহি কবৈত ছন্হি, কিএক তঁ ওহ দৈনিক জীরনমে এহি তবহক দ্বন্দক নিত্য সামনা কবৈত ছথি।

ওা নাষ্টক মৈথিনী নাষ্টক নেখনকেঁ একটা নর দিশামে নএ জাএত খাহ খান রিধামে সেহো নূতনতা খানত সে খাশা কএ সকৈত ছী। নো এল্ড্রী: মা প্ররিশ কেব প্রিংট নিকনৰাসঁ পূর্বহি ততেক মাত্রামে ওা পাঠক দ্বাবা পঠিত ভেন জে এহিপব সমীক্ষা সেহো "রিদেহ" ওা-পত্রিকাক ১+ম খংকমে খারি গেন শ্রী প্রেমশংকব সিংহক। তকব খংশ সেহো পাঠক নোকনিক নেন দেন জাহ বহন খছি।

"টী.এস. এনিযটক কথন ছনি জে রাঙমযী কনাক চবম উৎকর্ষ তখন দেখৰামে খরৈছ জখন বচনামে নাষ্টকীযতা করিত্ব দিস ঝুকন দৃষ্ঠিগত হো খা করিত্ব

নাটকীযতা দিস। উঁপর্যুক্ত কথনক পবিপ্রেক্ষ্যমে প্রস্তুত নাটক "নো এন্ট্রী: মা প্ররিশ"ক গএহ স্বরূপ হমবা সমক্ষ থরৈত থছি, জে নাটককাব সমাজক যথার্থ স্বরূপকেঁ প্রস্তুত কববাঁক উঁপক্রম কযননি থছি জাহিমে নাটকীযতা থা করিত্ব-শৈক্তিক থদ্ভুত সমন্বযামেক স্বরূপ পাঠককেঁ উঁপনব্ধ হোগত ছনি। মনুষ্য জন্মজাত ক্যা নীক রা থধনাহ নহি হোগছ, প্রত্যুত ওকবা সমক্ষ এহন পবিস্থিতি থারি কহ উঁপস্থিত হোগছ জাহিসঁ রাধ্য ভহ কএ ও কর্মমে সংনিপ্ত ভহ কএ তদরত্ কার্য করৈছ, জকব ফন ওকবা এহী জীরনমে ভোগএ পড়ৈছ। কাবণ মানরক সর্রোপবি গছা বহৈছ জে সাংসাবিক জতেক স্বখোপনব্ধি থিক তকব উঁপনব্ধি ওকবে হো, কিন্তু ও রিসবি জাগছ জে ও জেহন কর্ম কবত তদনুরূপেঁ ওকবা ফনোপনব্ধি সেহো হোযতৈক।

রৈশ্বীকবণক ফনস্বরূপ মানরক গছা-শৈক্তিক এতেক রেঁসী রঁনরতী ভহ গেন থছি ও চিব-নূতনতাক থাগ্রহী ভহ ওকব থন্বেষণমে নাগি, ওকব থনুযাযী ভহ কএ থপন প্রবাতন দ্ঃখ-দর্দ, মান-থপমান, গ্লানি-মর্যাদা থাদিক গতিহাসক পন্নামে ওঝবাযন বহরঁ শ্রেযস্কব নহি বুঁঝৈত থছি, থত্যাধুনিক পবিরেশে রা পবিস্থিতিক কাবণেঁ উঁপেন্ন থাধুনিকতা থা প্রবাতন পোংগা-পন্থী রিচাবধাবামে রর্তমান পবিপ্রেক্ষ্যমে সমন্বয নহি স্থাপিত কযন জাহ সকৈছ, কাবণ মনুষ্যক গছা শৈক্তি থনাদি থাহ থনন্ত থিক তকবা নিযন্ত্রিত কববঁ দ্ঃসাধ্য থিক। মনুষ্য পবিস্থিতিসঁ প্রেবিত ভহ কএ থপন মানসিক স্বখোপনব্ধি নিমিত্ত রিশ্বক বংগমংচপব উঁপস্থিত ভহ রিরিধ রূপা থভিনয করৈছ তকব প্রত্যক্ষ রা পবোক্ষ রূপেঁ রিরিধ কনাক প্রদর্শন করৈছ তকব পবিণাম ওকবা এত্তহি ভোগয

পড়ৈছ, তথাপি মানর স্বস্থ–নবকক দ্বন্দমে সতত জীরিত বহরাঁক খাকাংক্ষী বৈছ।

প্রযোগধর্মী নাটককাব জনমানসমে জে জ্বাব খাযন খছি, জে নহবি পবিব্যাপ্ত ভহ গেন খছি জে ও খপন খধিকাব খাহ কর্তব্যক হেত্ত এতেক রেঁসী সাকাংক্ষ ভহ গেন খছি জে ও সিদ্ধাংতকেঁ স্বীকাব কহ কএ, ওকব খনুযাযী ভহ কএ ও খাধুনিক পবিপ্রেক্ষ্যমে দৃষ্টিরোঁধ কহ বহন খছি। মানর–সমাজক প্ববাতন গতিহাসপব দৃষ্টিপাত কযনাসঁ স্পষ্ট ভহ জাগছ জে চাহে সতযুগ হো, দ্বাপবযুগ হো, ত্রেতা যুগ হো রা কনিযুগ হো সরঁ সমযক প্রামাণিক গতিহাস সাক্ষী থিক জে খদাচাব–খনাচাব, দুঃখ–দর্দ, স্বখ–সমৃদ্ধি, পাপ–প্বণ্য, ধর্ম–খধর্ম খাদি–খাদিক প্ররঁন খাকাংক্ষী বহন খছি মানর সম্প্রদায। কিন্তু খাধুনিক যুগক সর্বোপবি উপনব্ধি থিক দেশী–প্রেমক খপেক্ষা রিশ্ব–প্রেম। একব পবিণাম প্রত্যক্ষ খছি জে জনমানসসঁ নহ কএ বাজনীতি দন সেহো সমন্বযরাদী ভহ কএ ওকব খনুগামী জকব প্রমাণ থিক সম্মিনিত সবকাব।

প্রস্তুত নাটক এক প্রতীক নাটক থিক, কাবণ এহিমে সামাজিক পবিপ্রেক্ষ্যমে একব কথাবস্তুকেঁ উত্থাপিত কহ কএ প্রতীক যোজনা নিযোজিত কযননি খছি, নাটককাব জাহিমে সমাজক সরঁ রস্থ যথা চাহে ওহ চোব হো, উচক্কা হো, পাকেটমাব হো, নেতা হো, খভিনেতা হো, কনাকাব হো, সাহিত্যকাব হো, রীমা কম্পনীক এজেন্ট হো, প্রেমী–প্রেমিকা হো, উচ্চরংশীয মহিনা, খপ্সবা হো, নৃত্যাংগনা হো, বদ্দী কাগজ রেঁচনিহাব রা কিননিহাব হো, নেতাক চমচা হো সভক মানসিক পৃষ্ঠভূমিমে প্ররেশ কহ কএ নাটককাব এক মনোরৈজ্ঞানিক

সদৃশী ওকর সাগকো–এনানিসিস কররাঁক উঁপক্রম কযননি খছি জে সভক খান্তরিক খভিনাষা রহৈছ জে রৈহ সমাজক সর্বশ্রেষ্ঠ প্রাণী থিক খাহ স্বস্থ জএরাঁক খভিনাষাক পূর্ত্তি তদ্বত কার্যমে সংনিপ্ত ভহ জাগছ। খন্ততঃ সর্ব একত্রিত ভহ কএ স্বস্থক ফাটক নগ ক্যূ নগরৈছ, কিন্তু চিত্রগুপ্ত দ্বাবা ওকব কযন গেন কার্য–রিরবণী প্রস্তুত কহ কএ পুনঃ পৃথ্বীপব প্রবাগত হৈরাঁক খাদেশী দৈত ছথি খাহ ওতএ নো এণ্ট্রীক সাগন রোর্ড নাগি জাগছ খাহ যমবাজ সেহো প্রবাগত ভহ জাগছ। গএহ দ্বন্দ্ব নাটকমে সর্বত্র দৃষ্ঠিগত জে একব এক নরোপনব্ধি থিক।

এহি নাটকক রৈশিষ্ট্য খছি জে মৈথিনীমে প্রথমে–প্রথম নে তঁ খংক রিভাজন খছি নে দৃশ্য–রিভাজন কযননি, প্রবৃত সম্পূর্ণ নাটককেঁ প্রযোগধর্মী নাটককাব চাবি কন্নানমে রিভাজিত কহ কএ রর্তমান সমাজক সামাজিক পৃষ্ঠভূমিকেঁ সমাহিত কযননি খছি জে এহনে নহব সমাজান্তবগত পবিব্যাপ্ত খছি। পত্রাচিত ভাষাক প্রযোগ খাহ ছোট–ছোট রাক্য–রিন্যাস, নাটকীযতা করিত্ব–শক্তিসঁ ওত–প্রাত বহনাক কাবণেঁ ঙা নাটক দর্শকপব খমিট প্রভারোপোদকতা উঁপেন্ন কবত সে হমব রিশ্বাস খছি। সম্পূর্ণ নাটকান্তস্থত খনেক স্থনপব ছোট–ছোট গেয পদক প্রযোগ কহ কএ একবসতাক পবিহাব কররাঁমে সহাযক ভেন খছি। নচিকেতা স্বযং খভিনেতা ছথি, তেঁ মৈথিনী বংগমংচক যথার্থ স্থিতিসঁ চিব–পবিচিত ছথি জে মৈথিনানী বংগকর্মীক খভার খছি তেঁ এহিমে খন্প মহিনা পাত্রকেঁ সমাযোজিত কযননি খছি জে একব মংচনমে ব্যরধান নহি হো। ভরিষ্যমে খাব খভিনর প্রযোগধর্মী নাটককাবক হুতিক খপেক্ষা মৈথিনী

बंगकर्मीकेँ रनन बहत जकब ওঽ পূর্তি কবতাহ। "

মৈথিলী বাম চবিত মানস–মৈথিলী সমালোচনাক রিফনতা

মৈথিলী সাহিত্যকেঁ পঢ়নিহাবক সমক্ষ মৈথিলীমে বামচবিত কিংবা বামাযণ 1. শ্রী চংদা ঝা ক্বত মিথিলা ভাষা বামাযণ আঃ 2.শ্রী লালদাসক বমেশ্বব চবিত মিথিলা বামাযণ – এহি দূ গোট গ্রংথক রূপমে প্রাপ্ত হোগত ছন্হি। পাঠ্যক্রমক অংতর্গত স্কূল,কॉলেজ–বিশ্ববিদ্যালযক মৈথিলী বিষযক পাঠ হো কিংবা সামান্য আলোচনগ্রংথ আকি পত্র–পত্রিকামে ছিড়া যাযন লেখ সভ এহি দূ গোট বামাযণক অতিবিক্ত কোনো তেসব বামাযণক অস্তিত্বা ধবি নহি স্বীকাব কএল গেল অছি। একব সংগ ওহো বুঝি নিযহ জে জলমালস সমালোচনাশাস্ত্রক আধাব পব বাখল বিচাবকেঁ তখলে স্বীকাব কবৈত অছি জখল কী ওঽ সত্যতাক প্রতীক হো। আগযো মিথিলামে অখংড বামাযণ পাঠ হোগত অছি–বাল্মীকি বামাযণক কিংবা তুলসীক বামচবিতমালসক। একব কাবণ পব হম বহুত দিল ধবি বিচাব কবৈত বহলহুঁ। কৈকগো চন্দ্র বামাযণ আঃ লালদাসক্বত মিথিলা বামাযণ বামাযণ অখংড পাঠ কেনিহাব লোকনিকেঁ বঁচবো কএলহুঁ, ক্ষদা সবহক ওএহ বিচাব ছল, জে ওা দূলূ গ্রংথ মৈথিলী সাহিত্যক অমূল্য ধবোহব অছি, ক্ষদা অখংড পাঠক স্ব্ব জে তুলসীক মালসমে অছি সে দোসব ভাষাক বহলা উত্তবো সংগীতমব অছি। শংকবদেব অপল মাতৃভাষা অসমিযাক বদলা মৈথিলী ভাষাক প্রযোগ সংগীতমব ভাষা হোযবাক দ্বাবে কএলন্হি তাহি ভাষামে সংগীতমব বামাযণক বচলা জে অখল্ড পাঠমে প্রযোগ ভব সকব, কেব নির্মাণ সংভব নহি ভব সকল অছি সে হমব মোল মালবাক হেতু তৈযাব নহি ছল। তখলে

एकटा नागरब्रीमे हमरा श्री रामलोचनशरण-कृत यथासम्भव पूर्णाकारबक्षित समश्लोकी मैथिली श्रीरामचरितमानसक दर्शन भेल । एहि ग्रंथकेँ पूर्णरूपेँ पढ़बाक मोह हम नहि त्यागि सकलहुँ आर आब एहि पर एक गोट छोट-छीन समीक्षा लिखबाक पहिने हम समस्त मैथिल समाजसँ दू गोट प्रश्न पूछय चाहैत छी ।
1.अपन समीक्षक लोकनि एहि मोतीकेँ चिन्हबामे सफल किएक नहि भय सकलाह,एकर चर्चो तक मैथिलीक उपरोक्त दुनू रामायणक समक्ष किएक नहि कैल गेल ।
आचार्य रामलोचन शरण मैथिलीक सभसँ पैघ महाकाव्यक रचयिता छथि आर हमरा विचारे सभसँ संपूर्ण मैथिली रामायणक सेहो । जखन हम एहि महाकाव्यक फोटोकॉपी नागरब्रिजनक विशेष अनुकंपासँ लेबामे सफल भेलहुँ आर एकर पूर्वाचल मिथिलाक रामायण-अखंड- पाठक संस्थाकेँ देलहुँ, ते ओ २ लोकनि एकरा देखि कय आश्चर्यचकित बहि गेलाह आर अगिला साल एहि रामायणक अखंड पाठक निर्णय कएलन्हि । एकरा मैथिलीक समालोचनाशास्त्रक विफलता मानल जाय, किएक तँ ओ महाकाव्य तँ विफल भेलेँ नहि सकैत अछि । आचार्यक मनोहरपोथीक चर्चा हम अपन बाल्यावस्थासँ सुनैत रही ।
2. मैथिलीक सभसँ पैघ महाकाव्यक चर्चा मात्र सीतायन पर आबि किएक खतम भय जाइत अछि । आचार्य श्री रामलोचनशरणक मैथिली श्री रामचरितमानस सभसँ पैघ महाकाव्य अछि ओ एकटा तथ्य अछि आर से समालोचनाकार किंवा मैथिली भाषाक इतिहासकार लोकनिक कृपाक वशीभूत नहि अछि ।
अपन ग्रंथक किञ्चित् पूर्ववृत्तम् मे आचार्य लिखैत छथि-

মিথিনাভাষাযাঃ মূর্দ্ধন্যা নেখকাঃ শ্রীহবিমোহনঝামহোদযা নিশম্যৈতদ্ বৃত্তং পবমাহ্লাদং গতা ভূযো ভূযশ্চ মাঙ্গসোহিতরন্তঃ। খাগাঁ ওহ নিখৈত ছথি–প্রাধ্যাপকস্য শ্রী স্ববেন্দ্রঝা 'স্বমন' তথা সম্পাদনরিভাগস্থ পল্ডিত শ্রী শিরশংকবঝা–মহোদযস্য হৃদযেনাহং হৃতজ্ঞোঽস্মি।

খাচার্যজীক স্বন্দবকাল্ডক পাবংভ দেখূ–
জামবংত কেব বচন সোহাওন। স্বনি হনুমংত হৃদয খতি ভাওন ॥ 1 ॥ তা ধাবি রাঁঠ দেখরঁ সহি সূনে।
খা কয বঁধ্ কংদ ফন মূনে ॥ 2 ॥
জাধবি খাবী সীতহিঁ দেখী। হোযত কাজ মন হবখ বিসেখী ॥ 3 ॥ ঙ কহি সবঁহিঁ ঝ্কাকয মাথে। চনন হবষি হিয ধয বঘ্নাথে ॥ 4 ॥
সিংধ্ তীব এক স্বংদব ভূধব। কৌত্তক কূদি চঢ়ন তেহি ঙুপব ॥ 5 ॥ প্নন্ব প্নি বঘ্রীবহিঁ ঙব ধাবী। ফননা পরনতনয রঁন ভাবী ॥ 6 ॥ জহি গিবি চবন দেথি হনুমংতে। সে চন জায পতান ত্তবংতে ॥ 7 ॥ সব খমোঘ বঘ্পতি কেব জহিনা। চননা হনূমান ঝঠ তহিনা ॥ 8 ॥ জননিধি বঘ্পতি দূত বিচাবী। কহ মৈনাক হৌ শ্রম ভাবী ॥ 9 ॥

খাহ খারঁ দেখূ শ্রী বামচবিত মানসক রাঁনগী।

You are the Spirit indwelling the hearts of all. Grant me intense devotion to Your feet, O crest-jewel of Raghus, and free my mind from faults like concupiscence etc. (2)

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥ ३॥

atulitabaladhāmaṁ hemaśailābhadehaṁ
danujavanakṛśānuṁ jñānināmagragaṇyam,
sakalaguṇanidhānaṁ vānarāṇāmadhīśaṁ
raghupatipriyabhaktaṁ vātajātaṁ namāmi.3.

I bow to the son of the wind-god, the beloved devotee of Śrī Rāma (the Lord of the Raghus), the chief of the monkeys, the repository of all virtues, the foremost among the wise, a fire to consume the forest of the demon race, possessing a body shining as a mountain of gold and a home of immeasurable strength. (3)

चौ०— जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए॥
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई॥ १॥
जब लगि आवौं सीतहि देखी। होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी॥
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा। चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा॥ २॥
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर। कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर॥
बार बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी॥ ३॥
जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता। चलेउ सो गा पाताल तुरंता॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एही भाँति चलेउ हनुमाना॥ ४॥
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी॥ ५॥

Cau.: jāmavaṁta ke bacana suhāe, suni hanumaṁta hṛdaya ati bhāe.
taba lagi mohi parikhehu tumha bhāī, sahi dukha kaṁda mūla phala khāī.1.
jaba lagi āvaū sītahi dekhī, hoihi kāju mohi haraṣa biseṣī.
yaha kahi nāi sabanhi kahū māthā, caleu haraṣi hiyå dhari raghunāthā.2.
siṁdhu tīra eka bhūdhara suṁdara, kautuka kūdi caRheu tā ūpara.
bāra bāra raghubīra såbhārī, tarakeu pavanatanaya bala bhārī.3.
jehi giri carana dei hanumaṁtā, caleu so gā pātāla turaṁtā.
jimi amogha raghupati kara bānā, ehī bhåti caleu hanumānā.4.
jalanidhi raghupati dūta bicārī, tai maināka hohi śramahārī.5.

Hanumān was much delighted at heart to hear the heartening speech of Jāmbavān. He said, "Suffering hardships and living on bulbs, roots and fruits, wait for me, brethren, till I return after seeing Sītā. I am sure our object will be accomplished as I feel very cheerful." So saying and after bowing his head to them all he set out full of joy with an image of Śrī Rāma (the Lord of the Raghus) enshrined in his heart. There was a beautiful hill on the sea-coast; he lightly sprang on to its top. And invoking the Hero of Raghus line again and again, the son of the wind-god took a leap with all his might. The hill on which Hanumān planted his

𑒞𑒳𑒪𑒮𑒲 𑒁𑒏𑒥𑒩𑒏 𑒮𑒧𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒂 𑒁𑒐𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒁𑓀𑒞𑒩 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒳𑒪𑒮𑒲𑒏 𑒑𑒹𑒨𑒞𑒰 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰𑒏 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑒖𑒲

তুলসীক গেযতা উঁঠওলন্হি অছি, আ২ দুল্হতা খতম কয দেনে অছি। সভ কাল্ডক শ্বল্মে দেল সংস্কৃত পদ্য তুলসীক মানসসঁ লেলন্হি অছি। করি চন্দ্র আ২ লানদাস দুনূ গোটে অপ্পন সংস্কৃত পদ্য রঁলওলন্হি অছি। আচার্যজীক ওা মৈথিলী বমচবিতমানস তুলসীক মানসক ল্পাংতব তঁ অছি,ল্দা ওা মৈথিলীক মূল মহাকাব্যক ল্পমে পবিগণিত হোযবাঁক অধিকাবী অছি জেলা কংবঁলক তমিল বামাযণ আ২ তুলসীক মানস অপন-অপন ভাষামে কেল জা বহল অছি। কংবঁল বাঁল্মীকী বামাযণক ল্পাংতব তমিলমে কয বহল ছলাহ আ২ বাঁল্মীকি বামাযণক রিষযমে কহলন্হি জে- ওা বামাযণ একটা দূধক সল্দ্র ছে আ২ হম ছী একটা রিঁলাড়ি জে মোনসূবাঁ রঁলা বহল অছি জে এহি সভটা দূধকেঁ পীরি জাএ। ওলা গগহো সহ জে কংবঁল কহিযো -আচার্যজী সেহো এহিলা কএলন্হি- বামাযণ কেঁ অপন মৌলিক গ্রুতি নহি কহলন্হি রবন বাঁল্মীকিক গ্রুতিক ল্পাংতবে কহলন্হি,জখন কি ও ২ অপন গ্রুতিমে বামকেঁ ভগরান রঁলায দেলন্হি। বাঁল্মীকি বামকেঁ মর্যাদা প্বল্ষ অহি মালৈত ছলাহ। বাঁল্মীকি স্বগ্রীরক রিরাহ বাঁলীক পলীসঁ বাঁলীক মববাঁক পশ্চাত হোযবাঁক বর্ণল কবৈত ছথি ল্দা কংবঁল বাঁলীক পলীক আজীরল রৈধব্যক বর্ণল কবৈত ছথি। আছর্যজীকেঁ ওা কববাঁক আরশ্যকতা নহি পড়লন্হি কিএকতঁ তুলসীক মানস লোকক কংঠমে রঁসি গেল ছল,আ২ ওহ একব লিরাহ কএলন্হি।

আবঁ মানসক একটা রিরাদাস্পদ পদ্যক চর্চা কবী। অর্থক অলর্থ কোলা হোগত অছি সে দেখূ। আচার্যজী স্বন্দবকাল্ডক অংতমে লিখৈত ছথি জখন সিংধু (সল্দ্র)বামকেঁ লংকা জযবাঁক বস্তা নহি দৈত ছথি তখল বাম কহৈত ছথি, লছমল বাঁল সবাসল আনূ। সোখবঁ

ৰাঁবিধি ৰিসিখ গুসানূ ॥ 1 ॥
তখন সিংধ্ কব জোবি ৰজৈত ছথি– ঢোন গমাব স্বদ্র পস্ব নাবী। সৰ থিক তাড়ন কেব খধিকাবী॥
একব খৰ্থ ওা সভ –ঢোন গমাব স্বদ্র পস্ব নাবী– ওা সভ শিক্ষাকিংৰা সৰক দেৰাঁ যোগ্য খছি,গমাব স্বদ্র খাঽ নাবীমে শিক্ষাক খভার খছি তেঁ খা ২ পস্বমে মন্বষ্যক খপেক্ষা ৰ্বুদ্ধি নহি ছৈক তেঁ, ঢোনক প্রযোগ ৰিনা শিক্ষাক কবৰ তঁ সংগীত নহি ধ্বনি ভয জাযত। নীচাঁ ত্তনসীক শ্রীবামচবিত মানসমে সেহো দেখূ–

Do.: **kāṭehi̐ pai kadarī pharai koṭi jatana kou sī̐ca,**
binaya na māna khagesa sunu ḍāṭehi̐ pai nava nīca.58.

Though one may take infinite pains in watering a plantain it will not bear fruit unless it is hewed. Similarly, mark me, O king of birds, (continues Kākabhuśuṇḍi,) a vile fellow heeds no prayer but yields only when reprimanded. (58)

चौ०— **सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे॥**
गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी॥ १॥
तव प्रेरित मायाँ उपजाए। सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए॥
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई। सो तेहि भाँति रहें सुख लहई॥ २॥
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही। मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही॥
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी॥ ३॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई। उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई॥
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई। करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई॥ ४॥

Cau.: **sabhaya siṁdhu gahi pada prabhu kere, chamahu nātha saba avaguna mere.**
gagana samīra anala jala dharanī, inha kai nātha sahaja jaRa karanī.1.
tava prerita māyā̐ upajāe, sṛṣṭi hetu saba graṁthani gāe.
prabhu āyasu jehi kahā̐ jasa ahaī, so tehi bhā̐ti rahē̐ sukha lahaī.2.
prabhu bhala kīnha mohi sikha dīnhī, marajādā puni tumharī kīnhī.
ḍhola gavā̐ra sūdra pasu nārī, sakala tāRanā ke adhikārī.3.
prabhu pratāpa mai̐ jāba sukhāī, utarihi kaṭaku na mori baRāī.
prabhu agyā apela śruti gāī, karaũ so begi jo tumhahi sohāī.4.

The god presiding over the ocean clasped the Lord's feet in dismay. "Forgive, my lord, all my faults. Ether, air, fire, water and earth— all these, my lord, are dull by nature. It is Māyā (Cosmic Nature) which brought them forth for the purpose of creation under an impulse from You; so declare all the scriptures. One would attain happiness in life only by remaining where he has been placed by the Lord. My Lord has done well in giving me a lesson; but You have fixed certain limits for everyone. A drum, a rustic, a Śūdra, a beast and a woman—all these deserve instructions. By the Lord's glory I shall be dried up and the army will cross over; but this will bring no credit to me. Your command, however is inviolable; thus declare the Vedas, I shall do at once what pleases You." (1—4)

दो०— **सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ।**
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ॥ ५९॥

Do.: **sunata binīta bacana ati kaha kṛpāla musukāi,**
jehi bidhi utarai kapi kaṭaku tāta so kahahu upāi.59.

On hearing his most submissive words the all-merciful smiled and said, "Tell me, dear father, some device whereby the monkey host may cross over." (59)

चौ०— **नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाईं रिषि आसिष पाई॥**
तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे॥ १॥

ফেব সমুদ্র ওহি স্থিতিমে খননাযক ৰ্যনি বহন ছন খা
ওকব রকত্তর্য্য করিক খাকি বচনাকাবক রকত্তর্য্য নহি

ভয সকৈত অছি। বচনাকাবক বচনামে নীক অধনাহ সভ পাত্র বহৈত অছি, আ ২ ওহি পাত্রক ষ্ণঁহ সঁ নীক আ ২ অধনাহ দ্নূ গপ নিকনত। বচনাকাবক সফনতা এহি পব নির্ভব কবৈত অছি, জে ও ২ অপনাকেঁ অপন পত্রসঁ ফবাক কয পবৈঁত অছি কি নহি।

এহি আনোচনা নিরঁধক উদ্দেশ্য চন্দ্র করি আকি করি নানদাসক বচনাকেঁ ছোট কববঁ নহি অছি রবন্ হুনকব বচনাক সমকক্ষ আচার্যক বচনাকেঁ অনবা মাত্র অছি জাহিসঁ ত্তনসীক মানসক রর্চস্ব আচার্যজীক বচনা খতম কয সকয। ত্তনসীক প্রাসংগিকতা নহি রবণ ওকব দ্ৰুহতাকেঁ আচার্য খতম কএনে ছথি।

বামনোচন শবণক মৈথিনী বাম চবিত মানস- সাবাংশ

মহাকাব্য রা গীত প্রবন্ধ: মহাকাব্যক রব্ণন জে ঞা কতেক সর্গমে হ্অএ, একব নাযক কেহন প্রকৃতিক হ্অএ আ ও উচ ফন উপেন্ন হ্অএ আদি আবঁ ব্ঁহিবিনাস মাত্র কহন জাএত। জেনা গদ্যমে কথা হোগত অছি আ রিস্তাবক অনুসাব নঘ্কথা, কথা আ উপন্যাসমে রিভক্ত কএন জাগত অছি তগ সন্দর্ভমে উপন্যাস (রা রীচ-রীচমে নাটককক) পদ্য রূপান্তবণ মহাকাব্য কহন জাএত। জঁ ঋগবৈদিক পবম্পবামে জাগ তঁ মহাকাব্যকেঁ গীত-প্রবন্ধ কহন জএবাঁক চাহী।

আচার্য বামনোচন শবণক গীত-প্রবন্ধ মৈথিনী বামচবিত মানস: মৈথিনী সাহিত্যকেঁ পঢ়নিহাবক সমক্ষ মৈথিনীমে

রামচরিত কিংবা রামাযণ শ্রী চংদা ঝা কৃত মিথিলা ভাষা রামাযণ আ শ্রী লালদাসক রমেশ্বর চরিত মিথিলা রামাযণ – ঈ দূ গোটে গ্রংথক রূপমে প্রাপ্ত হোইত অছি। পাঠ্যক্রমক অংতর্গত স্কূল, কॉলেজ-বিশ্ববিদ্যালযক মৈথিলী বিষযক পাঠ হো কিংবা সামান্য আলোচনা গ্রংথ আকি পত্র-পত্রিকামে ছিড়িআযল লেখ সভ, ঈ তেসর রামাযণক অস্তিত্বো ধরি নৈ স্বীকার কএল গেল অছি। একর সংগ ইহো বুঝি লিঅ জে জনমানস সমালোচনাশাস্ত্রক আধারপর রাখল বিচারকেঁ তখনে স্বীকার করৈত অছি জখন ও সত্যক প্রতীক হো। আইযো মিথিলামে জে অখংড রামাযণ পাঠ হোইত অছি সে বাল্মীকি রামাযণক কিংবা তুলসীক রামচরিতমানসক। একর কারণপর হম বহুত দিন ধরি বিচার করৈত রহলহুঁ। কৈকটা চন্দ্র রামাযণ আ লালদাসকৃত মিথিলা রামাযণ, রামাযণ অখংড পাঠ কেনিহার লোকনিকেঁ বঁটবো কএলহুঁ মুদা সবহক ইএহ বিচার ছল, জে ই দুনূ গ্রংথ মৈথিলী সাহিত্যক অমূল্য ধরোহর অছি, মুদা অখংড পাঠক স্বর জে তুলসীক মানসমে অছি সে দোসর ভাষাক রচনা উত্তরো সংগীতময অছি। শংকরদেব অপন মাতৃভাষা অসমিযাক বদলা মৈথিলী ভাষাক প্রযোগ সংগীতময ভাষা হোযবাক দ্বারে কএলন্হি তএ ভাষামে সংগীতময রামাযণক রচনা জে অখন্ড পাঠমে প্রযোগ ভই সকএ, কের নির্মাণ সংভব নৈ ভই সকল অছি, সে হমর মোন মানবাক হেতু তৈযার নৈ ছল, শ্রী রামলোচনশরণ-কৃত যথাসম্ভব পূর্ণভাবরক্ষিত সমশ্লোকী মৈথিলী শ্রীরামচরিতমানস একর প্রমাণ অছি। অপন সমীক্ষক লোকনি ঈ মোতীকেঁ চিন্হবামে সফল কিএ নৈ ভই সকলাহ, একর চর্চা তক মৈথিলীক উপরোক্ত দুনূ রামাযণক সমক্ষ কিএ নৈ কএল

জাগত অছি। স্ব.হবিমোহন ঝাক কোনো পোথী মৈথিলী অকাদমী দ্বাবা হুনকা জিবৈত প্রকাশিত নৈ ভেল আ সাহিত্য অকাদমী প্রবস্কাব সেহো হুনকা মৃত্যুপবান্ত দেল গেলন্হি। আচার্য বামলোচন শবণ মৈথিলীক সভসঁ পৈঘ মহাকাব্যক বচযিতা ছথি আ হমবা বিচাবে সভসঁ সংপূর্ণ মৈথিলী বামাযণক সেহো। জখন হম ঐ মহাকাব্যক ফোটৌকপী পূর্বাঁচল মিথিলাক বামাযণ- অখংড- পাঠক সংস্থাকেঁ দেলহুঁ, তঁ ও লোকনি একবা দেখ কঽ আশ্চর্যচকিত বহি গেলাহ আ অগিলা সাল ঐ বামাযণক অখংড পাঠক নির্ণয কএলন্হি। একবা মৈথিলীক সমালোচনাশাস্ত্রক বিফলতা মানল জাএ, কিএক তঁ ঞ মহাকাব্য তঁ বিফল ভেযে নৈ সকৈত অছি। আচার্যক মলোহবপোথীক চর্চা হম অপন বাল্যাবস্থাসঁ স্বনৈত বহী, মুদা ঐ পোথীক নৈ। মৈথিলীক সভসঁ পৈঘ মহাকাব্যক চর্চা মাত্র সীতাযনপব আবি কিএ খতম ভঽ জাগত অছি। আচার্য শ্রী বামলোচনশবণক মৈথিলী শ্রী বামচবিতমানস সভসঁ পৈঘ মহাকাব্য অছি ঞ একটা তথ্য অছি আ সে সমালোচনাকাব কিংবা মৈথিলী ভাষাক ইতিহাসকাব লোকনিক কৃপাক বশীভূত নৈ অছি। অপন গ্রংথক কিঞ্চিত্ পূর্ববৃত্তম্ মে আচাব্য লিখৈত ছথি- মিথিলাভাষাযাঃ মূর্দ্ধন্যা লেখকাঃ শ্রীহবিমোহনঝামহোদযা নিশম্যৈতদ্ বৃত্তং পবমাহ্লাদং গতা ভূযো ভূযশ্চ মাম্ভসোহিতবন্তঃ। আঁগাঁ ও লিখৈত ছথি-প্রাধ্যাপকস্য শ্রী স্ববেন্দ্রঝা 'স্বমন' তথা সম্পাদনবিভাগস্থ পন্ডিত শ্রী শিবশংকবঝা-মহোদযস্য হৃদযেনাহং কৃতজ্ঞ ভাঽস্মি। সে সভকেঁ ঞ দেখল গ্রলল সেহো ছলন্হি।

আচার্য বামলোচন শবণক গীত-প্রবন্ধ মৈথিলী বামচবিত

মানসক গেযতা: ঋাচার্যজীক স্বন্দবকান্ডক প্রাবংভ দেখূ ঋা একব গেযতাক ত্তলনা চন্দা ঝাক বামাযণ ঋা নানদাসক বামযণসঁ করু:-
জামবংত কেব বচন সোহাওন। স্বনি হন্বমংত হ্রদয ঋতি ভাওন ॥ 1 ॥ তা ধাবি বাঁঠ দেখবঁ সহি সূনে। খা কয বঁধ্ কংদ ফন মূনে ॥ 2 ॥
জাধবি ঋাবী সীতহিঁ দেখী। হোযত কাজ মন হবখ বিসেখী ॥ 3 ॥ ঞা কহি সবঁহিঁ ঝ্কাকয মাথে। চনন হবষি হিয ধয বঘ্নাথে ॥ 4 ॥
সিংধ্ তীব এক স্বংদব ভূধব। কৌত্তক কূদি চঢ়ন তেহি ঙঁপব ॥ 5 ॥ প্বন্ব প্বনি বঘ্বীবহিঁ ঙঁব ধাবী। ফননা পবনতনয বঁন ভাবী ॥ 6 ॥ জহি গিবি চবন দেথি হন্বমংতে। সে চন জায পতান ত্তবংতে ॥ 7 ॥ সব ঋমোঘ বঘ্পতি কেব জহিনা। চননা হনূমান ঝঠ তহিনা ॥ 8 ॥ জননিধি বঘ্পতি দূত বিচাবী। কহ মৈনাক মৌ শ্রম ভাবী ॥ 9 ॥

ত্তনসী ঋকবঁবক সমকানীন ছনাহ ঋা হ্নকব ভাষা ঋা ঋখ্নকা ভাষামে কিছু ঋংতব ঋাবি গেন ঋছি, ঝদা ত্তনসীক গেযতা ওহিনাক ওহিনা ঋছি। ঋাচার্যজী ত্তনসীক গেযতা ঙঁঠওনন্হি ঋছি, ঋা দ্রুহতা খতম কহ দেনে ছথি। সভ কান্ডক শ্বরুমে দেন সংস্কৃত পদ্য ও ত্তনসীক মানসসঁ নেনন্হি ঋছি। ঋাচার্যজীক ঞা মৈথিনী বামচবিতমানস ত্তনসীক মানসক রুপাংতব তঁ ঋছি ঝদা ঞা মৈথিনীক মূন মহাকাব্যক রুপমে পবিগণিত হোযবাঁক ঋধিকাবী ঋছি জেনা কংবঁনক তমিন বামাযণ ঋা ত্তনসীক মানস ঋপন-ঋপন ভাষামে পবিগণিত কএন জা বহন

অছি। কংবঁন বাঁল্মীকি বামাযণক ৰূপাংতব তমিনমে কঽ বহৈন ছনাহ তখন ও বাঁল্মীকি বামাযণক রিষযমে কহৈনহি জে- ঙা বামাযণ একটা দূধক সমুদ্র অছি আ হম ছী একটা রিনাড়ি জে মনসূবাঁ বঁনা বহৈন অছি জে ঐ সভটা দূধকেঁ এক্কে রেঁবমে পীরি জাগ। ওনা ঙাহো সহ জে কংবঁন কহিযো (আচার্যজী সেহো এহিনা কএনহি) বামাযণ কেঁ অপন মৌনিক হূতি নৈ কহৈনহি ববন বাঁল্মীকিক হূতিক ৰূপাংতবে কহৈনহি, জখন কি ও অপন হূতিমে বামকেঁ ভগরান বঁনা দেনহি। বাঁল্মীকি বামকেঁ মর্যাদা পুৰুষ মানৈত ছনাহ। বাঁল্মীকি স্বগ্রীরক রিরাহ বাঁনীক পনৌসঁ বাঁনীক মববাঁক পশ্চাত হোযবাঁক বর্ণন কবৈত ছথি ত্মদা কংবঁন বাঁনীক পনৌক আজীরন রৈধব্যক বর্ণন কবৈত ছথি। আচার্যজীকেঁ ঙা কববাঁক আরশ্যকতা নৈ পড়নহি কিএক তঁ নোকক কংঠমে তুনসীক মানস বঁসি গেন ছন, আ হুনকা একব গেযতাক নিরাহি মাত্র কববাঁক ছনহি।

আচাব্য বামনোচন শবণক গীত-প্রবঁন্ধ মৈথিনী বামচবিত মানস আ একব নাবী আ শূদ্র-রন্যজাতি রিবোধ প্রদর্শন: আবঁ মানসক একটা রিরাদাস্পদ পদ্যক চর্চা কবী। অর্থক অনর্থ কোনা হোগত অছি সে দেখূ। আচার্যজী স্বন্দবকাণ্ডক অংতমে নিখৈত ছথি জখন সিংধু (সমুদ্র)বামকেঁ নংকা জযবাঁক বস্তা নহি দৈত ছথি তখন বাম কহৈত ছথি, নছমন বাঁন সবাসন আনূ। সোখবঁ বাঁবিধি রিসিখ হূসানূ॥ 1 ॥
তখন সিংধু কব জোবি বঁজৈত ছথি- ঢোন গমাব স্বদ্র পস্ব নাবী। সরঁ থিক তাড়ন কেব অধিকাবী॥
একব অর্থ ঙা জে সভ -ঢোন গমাব স্বদ্র পস্ব নাবী-

ৠ সভ শিক্ষা কিংরা সৰক দেৰা যোগ্য খছি, গমাব স্বদ্র খা নাবীমে শিক্ষাক খভার খছি তেঁ খা পস্বমে মনুষ্যক খপেক্ষা ব্‌ঝ্রি নৈ ছৈক তেঁ, ঢোনেক প্রযোগ রিনা শিক্ষাক কবৰ তঁ সংগীত নৈ ধ্বনি ভ২ জাএত। ফেব সদ্ধ্র ওগ স্থিতিমে খননাযক ৰনি বহন ছন খা ওকব রকত্তর্য্য করিক খাকি বচনাকাবক রকত্তর্য্য নৈ ভ২ সকৈত খছি। বচনাকাবক বচনামে নীক খধনাহ সভ পাত্র বহৈত ছথি, খা ওগ পাত্রক ঝঁহসঁ নীক খা খধনাহ দ্‌নূ গপ নিকনত। বচনাকাবক সফনতা ঐপব নির্ভব করৈত খছি, জে ও খপনাকেঁ খপন পাত্রসঁ ফবাক ক২ পরৈত খছি খাকি নৈ। ঝ্দা ত্তনসী খা তেঁ খাচার্য বামনোচন শিবণ সেহো খপনাকেঁ পাত্রসঁ ৰহ্ত ঠাম ফবাক নৈ ক২ পরৈ ছথি। জখন ভাবতমে সামন্তরাদী সবকাব ছন তখন হ্নকব শূদ্র খা গএব দ্বিজ জাতিপব কএন টিপ্পণী খনারশ্যক ৰ্ঝি পড়ৈএ। মিথিনাক স্মৃতিকাব নোকনি যএহ পবম্পবা ৰাদোমে বখনন্হি খা খাশ্চর্য তঁ তখন হোগএ জখন ঐ তবহক গএব জরুবী টিপ্পণী খংগ্রেজী শাসনকানমে প্রণীত সংস্কৃত গ্রন্থ সভমে মৈথিন নোকনি দ্বাবা কএন দেখৈ ছী, ওগ খংগ্রেজী শাসনমে মে ব্রাহ্মণ খা গএব ব্রাহ্মণ সভকেঁ ৰ্নৈক গল্ডিযন কহৈ ছনাহ।

ত্তনসীক প্রাসংগিকতা রা কণ্ঠবতা নৈ ববণ মাত্র ওকব দ্রুহতাকেঁ খাচার্য খতম কএনে ছথি। উঁপবোক্ত রিরাদাস্পদ পদক খতিবিক্ত খানোঠাম ৠ জাতিরাদিতা দেখৰামে খরৈত খছি।

মৈথিনী বামচবিত মানস খযোধ্যাকাল্ডক দোহা ১২ ক ৰাদক তেসব পদ দেখূ:-

কবয রিঁচাব ফর্ব্ঝি ফজাতী।
ইত থকাজ কোন রিঁধি বাতী॥ ২ ॥

মৈথিনী বামচবিত মানস থযোধ্যাকাল্ডক দোহা ৩৯ ক রাঁদক পহিন পদ দেখূ:-

কোন কিবাত স্বতা রঁন জোগে।
রিধি বচননি রঁচিত স্বখ ভোগে॥ ১ ॥

মৈথিনী বামচবিত মানস থযোধ্যাকাল্ডক দোহা ১৬১ ক রাঁদক চাবিম পদ দেখূ:-

রিধিযো সকথি ন তিয হিয জানী।
সকন কপট্ট থঘ থরঁগ্বন খানী॥ ৪ ॥ (স্ত্রীক হৃদৈক গতি রিধাতো নৈ বুঝি সকৈ ছথি, ও কপট্ট, পাপ আ থরগ্বণসঁ ভঁগড্ম থছি! !)

মৈথিনী বামচবিত মানস থযোধ্যাকাল্ডক দোহা ১৯২ ক রাঁদক তেসব পদ দেখূ:-

নোকরেদ সরঁতবি জে নীচে।
ছরিঁ জস্ব ছাহ নৈছ জন সীচেঁ॥ ২ ॥

ত্তনসী থা তেঁ থাচার্য বামনোচন শবণ সেহো থপনাকেঁ পাত্রসঁ রঁহ্ত ঠাম ফবাক নৈ কহ পরেঁ ছথি (কম্লঁন

রাল্মীকিক খনুরাদ করৈত কান রঁহ্ত ঠাম নর হ্যগক খনুরূক খপনাকেঁ হ্ববাক করৈত ছথি) খা তেঁ মৈথিনী বামচবিত মানস খযোধ্যাকাণ্ডক দোহা ২৩০ ক রাঁদক তেসব পদমে রন্যজাতিক হ্মঁহসঁ কহরেঁ ছথি:–

যৌহ হমব খছি রঁয়্ রঁড় সেরেঁ।
রাঁসন রঁসন চোবায ন নেরেঁ॥ ২॥

মৈথিনী বামচবিত মানস রাঁনকাণ্ডক দোহা ৬২ ক রাঁদক সাতম পদ দেখূ:–

জদ্যপি জগ দাকণ দ্খ নানা।
সব সৌঁ কঠিন জাতি খপমানা॥ ৭॥

হ্মদা জখন রীসম শতাব্দীমে সাহিত্য খকাদেমীক পোথীমে নোবিকপব মৈথিনী খানেখমে একটা সজ্জন নিখৈ ছথি জে ব্রাহ্মণপব কএন শূদ্রক খত্যাচাবক রিকদ্ধ নোবিক ঠাঢ় ভেনাহ তঁ খকরঁবকানীন ত্তনসী খা ওকব ছন্দারঁদ্ধ খনুরাদক খাচার্য বামনোচন শবণকেঁ কী দোষ দেন জাএ! জেনা রিষ্ণু শর্মা পঁচতঁত্রক কথা কহৈত–কহৈত স্ত্রী খা শূদ্রক পাছাঁ খকাবণ ঞূব ভহ জাএ ছথি সএহ হান বাম চবিত মানসক খছি।

খাচার্য বামনোচন শবণক গীত–প্ররঁদ্ধ মৈথিনী বামচবিত মানসক রিশেষতা: মৈথিনী বামচবিত মানস রাঁনকাণ্ড,

अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड आ उत्तरकाण्डमे विभक्त अछि। वाल्मीकि रामायणक सुनियोजित कथ्यमे किछु हेरफेर कएल गेल अछि। एकर शैली आ चरित्रक अंकन उदात्त अछि। श्रृंगार रसक प्राधान्य नै अछि मुदा राम सीताक सन्दर्भमे वियोग आ संयोग दुनू कालमे एकर प्रयोग भेल अछि। मुख्य अंगी रस अछि शान्ति, ओना ई सभटा रामभक्तिमे समाहित अछि। भक्तिक प्रधानता अछि मुदा ज्ञान आ कर्मक महत्व कम नै कएल गेल अछि, सगुणक प्राधान्य रहितहुँ निर्गुण भक्तिक महत्व कम नै भेल अछि, राम ब्रह्म छथि आ हुनकर निर्गुण आ सगुण दू रूप छन्हि। जीव आ ब्रह्म एकहि अछि। रचनक पालन हुअए वा पितृभक्ति, भ्रातृभक्ति वा नारीक प्रेम वा पतिव्रतक मैथिली रामचरित मानस ऐ सभ आदर्शसँ ओतप्रोत अछि। मैथिली रामचरित मानसमे सभ अलंकार प्रयोगमे अछि मुदा मुख्य रूपेँ रूपक आ उपमा प्रयोगमे अछि। प्रेमाख्यानमे प्रयुक्त दोहा आ चौपाइ आधारित प्रबन्ध पद्धतिक कड़बक विधिक प्रयोगक बाँदो संस्कृत छन्द सभ प्रयुक्त भेल अछि। मैथिली रामचरित मानसमे विद्यापतिक गीत-विधि, वीरगाथा सभक छप्पय विधि, दोहा, सोरठा, भाट सभक कवित्त-सवैया, नीतिवाक्यक सूक्ति, घनाक्षरी, तोमर, त्रिभंगी छन्दक प्रयोग भेल अछि। मन्त्रकथक बहुत वास हैमाक सेहो वर्णन यत्र-तत्र भेल अछि। एकर उद्देश्य अछि मोक्ष, लोककल्याण आ रामराजक स्थापना। मुदा ऐमे रामक अतिविक्त ग्रन्थ, शिव (सेतुबन्ध कालमे राम द्वारा शिवक पूजा) आ गणेशक स्तुति अछि। प्रकृति आ चरित्र दुनूक चित्रणमे मैथिली रामचरितमानस अद्वितीय अछि।

করি খিস্সা কহি বহন ছথি ঌদা বীচ–বীচমে ঙা ভাবদ্বাজ–যাজ্ঞবল্ক্য আ গরুড় কাকভশুন্ডীক সম্বাদক মাধ্যমসঁ সেহো কহন গেন অছি। সম্বাদ শৈনীক প্রযোগ মৈথিনী বামচবিতমানসমে খূব ভেন অছি। নক্ষ্মণ–পবশুবাম সম্বাদ হুঅএ বা মংথবা আ কৈকেযীক সম্বাদ আকি বাবণ আ অংগদক সম্বাদ, সভ ঠাম নাটকক সম্বাদ শৈনী সন বোচক পদ্য অহাঁকেঁ ভেটৈত। প্রাবম্ভক বাঁনকান্ড আ অন্তক উত্তবকান্ডমে ঐ গীত–প্রবন্ধক দূটা ধ্রুব দৃষ্টিমে আএত। উত্তবকান্ডমে গুরু–শিষ্যক অবাপ হোগত সম্বন্ধ আ ব্রাহ্মণক রেদ রৈচবাক আ পতিত হেবাক চর্চা ভেটৈত অছি ঌদা উত্তবকান্ডমে বামবাজ্যক রূপবেসেহো সেহো ভেটৈত অছি।

মৈথিনী সাহিত্যক গীত–প্রবন্ধ মধ্য মৈথিনী বামচবিতমানসক স্থান: মৈথিনী বা কোনো ভাষামে বামক চবিত রাল্মীকি বামাযণসঁ প্রভাবিত ভেনে বিনা নৈ বহি সকৈএ। আচার্য বামনোচন শবণক তুনসীক মানসক সমশ্লোকী মৈথিনী অনুবাদ ওগ অর্থেঁ আব বিশিষ্ঠ ভঃ জাগত অছি জে আচার্য বামনোচনশবণ খাঁটী মৈথিনী তত্ত্বক কতৌ অবহেনেনা নৈ কেনে ছথি আ ঙা গীত–প্রবন্ধ মৈথিনীক অখন ধবিক আকাবমে (আ গুণামেক রূপেঁ সেহো) মৈথিনীক সভসঁ পৈঘ গীত–প্রবন্ধ (মহাকাব্য) অছি।

মৈথিলী উঁপন্যাসপর অংগ্রেজী সাহিত্যক প্রভাব

উঁপন্যাসক আরম্ভ: বাণভট্টক কাদম্বরী রাজা শূদ্রকক বিদিশানগরীক বর্ণনসঁ প্রারম্ভ হোইত অছি। একটা চাণ্ডাল অতীব সুন্দরী কন্যা বৈশম্পায়ন নাম্না জ্ঞানী সুগাকেঁ লেনে দরবার অবৈত অছি আ প্রারম্ভ হোইত অছি সুগাক খিস্সা। চাণ্ডালক বস্তী পক্কণমে কিয়ো ভিখমংগা নৈ, কিয়ো চোর নৈ, ওত্তক্কা রাজা ব্যাঘ্রদের স্বয়ং বস্সী রখৈত ছথি। সংস্কৃতক এহি উঁপন্যাস নামসঁ মরাঠীমে উঁপন্যাসকেঁ কাদম্বরী কহল জাইত অছি। উঁপন্যাসক বর্ত্তআ প্রারম্ভক অছৈত এহিমে এতেক জটিলতা হোইত অছি জে এহিমে প্রতিভাক নীক জকাঁ পরীক্ষণ হোইত অছি। উঁপন্যাস বিধাক বর্ত্তআ আরম্ভক কারণ সর্বাতীজক "ডন ক্বিকজোট", জে সত্রহম

শতাব্দীক প্রাবম্ভমে খারি গেন বহুএ, কেব খছৈত উঁপন্যাস রিধা উঁন্নিসম শতাব্দীক খাগমনসঁ মাত্র কিছু সময পূর্র গম্ভীব স্বরূপ প্রাপ্ত ক২ সকন। উঁপন্যাসমে রাদ-রিরাদ-সম্বাদসঁ উঁপেন্ন মোগত খছি নিরঁন্ধ, ঘরক-ঘরতীক চবিত্র খনৈত খছি প্রেমাখ্যান, নোক খা ভূগোন দৈত খছি রর্ণন গতিহাসক, খা তখন নীক- খবাপ চবিত্রক কথা সোঝাঁ খরৈঁত খছি। কখনো পাঠককেঁ গু হঁসরৈঁত খছি, কখনো ওকবা উঁপদেশ দৈত খছি। মার্ক্সরাদ উঁপন্যাসক সামাজিক যথার্থক ওকানতি কবৈত খছি। ফ্রাযড সভ মনুক্খকেঁ বহুস্যমযী মানৈত ছথি। ও সাহিত্যিক হৃতিকেঁ সাহিত্যকাবক রিশ্লেষণ নেন চ্নৈত ছথি তঁ নর ফ্রাযডরাদ জৈরিকক রঁদনা সাংস্কৃতিক তত্ত্বক প্রধানতাপব জোব দৈত দেখরাঁমে খরৈঁত ছথি। নর-সমীক্ষারাদ হৃতিক রিস্তৃত রিরবণপব খাধাবিত খছি। এহি সভক সংগ জীরনান্নভর সেহো এক পক্ষক মোগত খছি খা তখন এতএ দর্রাএন গছাক তৃপ্তিক নেন নেখক একটা সংসাবক বচনা কএনন্হি জাহিমে পাঠক যথার্থ খা কাল্পনিকতাক রাঁচক খাড়ি -ধূবপব চনৈত খছি।

খংগ্রেজী উঁপন্যাসক রাদ: উঁত্তব খাধুনিক, খস্তিত্বরাদী, মানরতারাদী, গু সভ রিচাবধাবা দর্শনশাস্ত্রক রিচাবধাবা থিক। পহিনে দর্শনমে রিজ্ঞান, গতিহাস, সমাজ-বাজনীতি, খর্থশাস্ত্র, কনা-রিজ্ঞান খা ভাষা সম্মিনিত বহৈত ছন। হ্দা জেনা-জেনা রিজ্ঞান খা কনাক শাখা সভ রিশিষ্টতা প্রাপ্ত কবৈত গেন, রিশেষ কএ রিজ্ঞান, তঁ দর্শনমে গণিত খা রিজ্ঞান মৈথেমেটিকন ন◌ॉজিক ধবি সীমিত বহি গেন। দার্শনিক খাগমন খা নিগমনক খধ্যযন প্রণানী, রিশ্লেষণামেক প্রণানী দিস রঁঢ়ন। মার্ক্স জে দুনিযা ভবিক গবীরঁক নেন একটা দৈরীয হস্তক্ষেপক

समान छलाह, द्वन्दात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनओलन्हि।

अंग्रेजी उपन्यासक आरम्भ आ विकास: अंग्रेजी उपन्यास पिल्ग्रिम्स प्राग्रेस- लेखक कथाक मुख्यपात्रक यात्राक आ ओग यात्रा मध्य आओल संघर्ष आ उपलब्धिक वर्णन करैत छथि।
डेनियल डिफ़ो अपन रॉबिन्सन क्रूसो उपन्यासमे मुख्यपात्रक साहसिक समुद्र यात्राक वर्णन करैत छथि। सैमुअल रिचर्डसनक पेमेला अंग्रेजी उपन्यासकेँ पारिभाषिक स्वरूप देलक।
एफ़्रा बेनक ओरूनोको उपन्यासक नायक कारी वंशक दास अछि तँ हेनक 'लव लैटर्स बिटवीन ए नोबल मैन एंड हिज सिस्टर' मे सामंतक प्रेम कथाक वर्णन अछि। हेनरी फ़ील्डिंग 'टॉम जोन्स' मे सामंतवादक आलोचना केने छथि समाजक विकृतिक चित्रण केने छथि।
हेनरी जेम्स "द पोर्ट्रेट ऑफ ए लेडी" मे कलात्मक प्रस्तुति लेल जिनगीक उपेक्षा करै छथि।
रिचर्डसन 'क्लैरिस' मे मनुष्यक मनोविज्ञानक तहमे जाइ छथि।
जोजफ कोनरेडक 'द नीग्रो ऑफ़ नारसिसस' (?) 'द नीडोनागन' क पात्र समाज आ जीवनक प्रति दृष्टिकोणक एकदम पक्षीय मोहभंग सोचै छथि।
डी.एच.लॉरेन्स "लेडी चैटर्लीज लवर" क पात्र विकृति लेल संस्कृति आधारित सभ्यताकेँ दोषी कहै छथि।
रूडयार्ड किपलिंगक उपन्यास "किम" यूरोपी साम्राज्यवादक लेल एकटा बहन्ना ताकि रहल अछि, यूरोपी सभ्यताकेँ ओ उँच मानै छथि।

ঈ.এম.ফোর্স্টরক "এ পৈসেজ টু ইণ্ডিয়া"মে শাসক আ শাসিতক সম্বন্ধকেঁ ব্যাখ্যায়িত করৈত অছি।

মৈথিলী উপন্যাসক আরম্ভ আ বিকাস: হরিমোহন ঝাক কন্যাদান আ দ্বিরাগমন মিথিলাক বহুত রাস সামাজিক ব্যবস্থাকেঁ সোঝাঁ অনৈত অছি, মহিলা শিক্ষা আ অংধ-পাশ্চাত্যকরণক সেহো হাস্য রসমে চিত্রণ আধুনিক অংগ্রেজী উপন্যাসক রীতিএঁ করৈত ছথি।

যাত্রীক বলচনমা যাদব জাতিক বলচনমাক আত্মকথ্যক রূপমে অছি। আর্থিক সমস্যা একর মূল বিষএ ছৈক। বলচনমা কোনা একটা টহল করৈবলাসঁ আগূ জাগল কিসানক হক লেল জান দৈত অছি তাধরিক কথা। কাংগ্রেস আদি পার্টীক বিরুদ্ধ কম্যূনিস্ট পার্টীক প্রতি স্পষ্ট ঝুকাব যাত্রীজীক বহন ছন্হি। আ পারো বলচনমাক আর্থিক সমস্যাক বিপরীত সামাজিক লক্ষ্য তকৈত অছি। কিছু দিনুকা বাদ এহি উপন্যাসকেঁ লোক অসলী ফিক্শনক রূপমে লেতাহ কারণ আগিলা পীঢ়ীকেঁ বিশ্বাস নৈ হেতৈ জে এহনো কোনো ক্রূর ব্যবস্থা সভ মানবজাতিক মধ্য হোইত হেতৈ। আ তেঁ একর মহত্ব আর বঢ়ি জাইত অছি- ওহি সভ ব্যবস্থা সভকেঁ পেটারমে সুরক্ষিত রখবাক জিম্মেদারী। মুদা জহিয়া যাত্রীজী ওহি সমস্যাপর লিখনে ছলাহ তহিয়াসঁ ও সমস্যা বহৈ আ ঈ উপন্যাস ওহিমে সার্থক হস্তক্ষেপ কএনে ছল।

রমানন্দ রেণুক দূধ-ফূল উপন্যাস সমাজক উপেক্ষিত বর্গকেঁ সোঝাঁমে রখৈত অছি আ কলামেক উপস্থাপন করৈত অছি।

ললিতক পৃথ্বীপুত্র সেহো সমাজক উপেক্ষিত বর্গকেঁ সোঝাঁমে রখৈত অছি। ঈ উপন্যাস গ্রামক জীবনক আর্থিক সমস্যাপর সেহো আংগুর ধরৈত অছি।

নিনী বে ক পটাক্ষেপ রামপথক রক্ত–সংঘর্ষক উথোন ঋা ফেব ওকব দমনক কথা কহৈত ঋছি ঋা দেশক সমস্যাসঁ সাহিত্যকাব দ্বাবা স্বয়ংকেঁ তকোন জোড়ৱাঁক মাস্ত্র প্রশস্ত কবৈত ঋছি।
ধূমকেত্তক মোড় পব সেহো রামপংথী রিচাবক ঋানোকমে সামাজিক–ঋার্থিক সমস্যাক কথা রৈকল্পিকশমে কহৈত ঋছি।
সাকেতানন্দক সর্বস্বান্ত ৱাঁঢ়ি ক ঋা সবকাবী নীতি ঋা বাহতক কথা ঋছি।
জগদীশ প্রসাদ মন্ডনক মৌনাগন গাম্ভক ফূন গামক, গামসঁ পনাযনক ঋা গনন ব্যরস্থাক প্বনর্জীরনক নেন সমাধানক উঁপন্যাস ঋছি।
চন্তবানন মিশ্রক কনা কনাদাগক মাধ্যমেঁ গনন সামাজিক ব্যরস্থাপব প্রহাব ঋছি।
শেফানিকা রর্মাক নাগফাঁস ঋংগ্রেজক ধবতীপব রিচবণ কবৈত ঋছি। ধাবা ঋা সীমাঁতক মিনন এহি জিনগীমে কহিযো হেতৈ, কোনো জাদূ হেতৈ কী ?

ঋা ঋন্তমে : সে জোঁ গহীব নজবিসঁ দেখৱ তঁ নাগত জে ঋংগ্রেজী উঁপন্যাসকাবক হৃতি ওহি সমএক রাদ ঋা দৃষ্ঠিকোণকেঁ সংগ নঃ কঃ চনৱাঁক প্রযাস ঋছি। ঋদা সিদ্ধান্তসঁ প্রযোগক ক্রমমে কিছ্ব রিশেষতা স্বযমের ঋারি জাগ ছৈ। তহিনা মৈথিনী উঁপন্যাসক সেহো স্থিতি ঋছি। বমানন্দ বেণ্বক উঁপন্যাস হোঋএ রা শেফানিকা রর্মাক, ঞা তথ্য শিল্পমে স্পষ্ঠ রূপসঁ দেখি সকৈ ছী। নিনী বে ঋপন কনমক ধাবসঁ জেনা ঋপন নগ–পাসক ঘটনাক, সমাজক, বাজনীতিক রর্ণন করৈ ছথি সে ঋদ্ভুত তঁ ঋছিযে ঋংগ্রেজী উঁপন্যাস সভসঁ এক ডেগ ঋাগাঁ

জাগত অছি। ললিত, যাত্রী আ ধূমকেতু আর্থিক আ সামাজিক সমস্যাকেঁ সোঝাঁ বখৈত ছথি, আ ওহি ক্রমমে কোনো তথ্যকেঁ কোনো রূপেঁ নুকরৈত নৈ ছথি। সাকেতানন্দ বাঁঢ়ি ক সমস্যাকেঁ সোঝাঁ বখৈ ছথি। হরিমোহন ঝা অপন শৈলীমে অংগ্রেজী সাহিত্যক ধারকেঁ রহরৈত ছথি আ নাযক দ্বারা নাযিকাকেঁ দেল পঠাওক সিনেরসমে সেহো ও তথ্য সোঝাঁ অনৈত ছথি। চন্দ্রবানন মিশ্র আ জগদীশ প্রসাদ মংডল কম্যূনিস্ট আন্দোলনসঁ জুড়ল ছথি, প্রাযোগিক রূপমে, পার্টী স্তরপর, মুদা হিনকর দুনূ গোটেক উপন্যাস দেখলা উত্তর হমরা ও কহরামে কনেকো কণ্ঠ নৈ হোগত অছি জে জাহি রূপমে যাত্রী আ ধূমকেতু মার্ক্সবাদক রৈশাখী লঽ উপন্যাসকেঁ ঠাঢ় করৈ ছথি তকর রেগবতা এহি দুনূ উপন্যাসকারকেঁ নৈ বুঝলা জাগত ছন্হি। মার্ক্সবাদক অসল অর্থ হিনকে দুনূক রচনামে ভেটৈত। কতৌ পার্টীক নাম রা রিচাবধারাক চর্চ নৈ মুদা জে অসল ডাযলেক্টিকল মেটেরিযলিজ্ম ছৈক তকর পহিচান, জিনগীক মহত্বপর রিশ্বাস, দ্বন্দ্বামেক পদ্ধতিক প্রযোগ আ ও তখনে সম্ভব হোএত জখন লেখক দাস কৈপিটল সহিত মার্ক্সবাদক গহন অধ্যযন করত।

মৈথিলী উপন্যাসক ভরিষ্য : সভ জীরিত ভাষামে সভসঁ রৈসী রচনা উপন্যাসক হোগত ছৈ মুদা মৈথিলীমে সভসঁ কম উপন্যাস লিখল জাগত অছি। জাহি রূপমে অংগ্রেজী শিক্ষা আ সাহিত্যক অধ্যযন কঽ মৈথিলী সাহিত্যমে আওল নর পীঢ়ীক সংখ্যা রঢ়ত, মৈথিলী সাহিত্য অপন সামাজিক- আর্থিক- রাজনৈতিক আ সাংস্কৃতিক অংতর্দৃষ্টিক রিকাস কঽ সকত। রীণা ঠাকুরক ভারতী,

आशा मिश्रक उँचाइ आ केदारनाथ चौधरीक चमेली रानी- माहुर आ करार हमर एहि दृष्टिकोणक पुष्टि करैत अछि ।

<u>चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हेरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"</u>

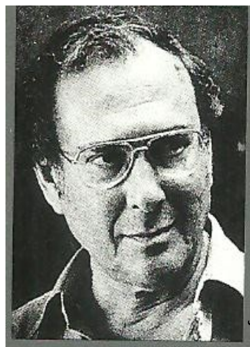
[नो एन्ट्री: मा प्रविशे २००८ ई. मे छपल आ साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल एकर चयन २०१०, २०११ वा २०१२ मे नै भऽ सकलै। आइ ई पोथी मैथिली साहित्य लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल उपलब्ध नै अछि। ऐ तरहक आनो उदाहरण अछि। नो एन्ट्री: मा प्रविशे क मैथिली साहित्य आ विश्व साहित्य मध्य स्थान नीचाँक आलेखमे निरूपित कएल जा रहल अछि। ई शृंखला आगाँ सेहो जारी रहत।]

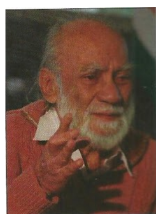
चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एन्ट्री: मा प्रविशे"

....

"वेटिंग फॉर गोडो" दू अंकीय ट्रेजी-कॉमेडी अछि। सैमुअल बैकेट द्वारा ई 1952 ई. मे फ्रेंच भाषामे लिखल गेल आ एकर पहिल प्रदर्शन पेरिसमे 1953 ई. मे भेल। एकर अंग्रेजी संस्करणक प्रदर्शन लंदनमे 1955 ई. मे भेल आ अंग्रेजी संस्करण

1956 ई. मे प्रकाशित भेल।

हेरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी" कैम्ब्रिजमे 1958 ई. मे मंचित भेल आ 1960 ई. मे प्रकाशित भेल।

बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" 1962 ई. मे लिखल गेल आ ई 1965 ई. मे कलकत्तामे मंचित भेल।

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "नो एण्ट्री: मा प्रविश" 2008 ई. मे ई-प्रकाशित आ फेर ओही बर्ख प्रकाशित भेल। 19 फरबरी 2011 केँ कुणालक निर्देशनमे कालिदास रंगालय, पटनामे ई डेढ़ घण्टाक नाटक मंचित भेल।

फ्रेंच, अंग्रेजी, बाँग्ला आ मैथिलीक ओ चारू नाटक पोस्ट–मॉडर्न नाटकक श्रेणीमे गानल जाइत अछि। जखन सैद्धान्तिक रैकेटक "रेटिंग फॉर गोडो" देखि क' लोक सभ घुरल रहथि तँ हुनका लोकनिकेँ एकटा विचित्र अनुभवरसँ साक्षात्कार भेल छलन्हि। ऐ नाटकमे मात्र पाँचटा पात्र अछि– एस्ट्रागोन, ब्लादीमीर, लकी, पोजो आ एकटा छौड़ा। एकटा कन्ट्री रोडपर साँझमे एकटा गाछ लग एस्ट्रागोन एकटा ढिमकापर बैसल अछि आ अपन जुत्ता दुनू हाथसँ निकालबाक प्रयास क' रहल अछि आ अपस्याँत अछि, आ थाकि जाइए। ब्लादीमीर संगे ओ गपक प्रारम्भ होइ छै, एम्हर ओम्हरक फिलसिफीक लगबर गपशप होइ छै। पोजो आ लकी अबैए। पोजो बुझाइए मालिक अछि आ लकी दास। दासो तेहेन जकरा गर्दनिमे लगबर रस्सा पोजो लगेने अछि। पहिने लकी अबैए, फेर रस्सा पकड़ने पोजो। लकी बड़का बैग, एकटा फोल्डिंग स्टूल, एकटा पिकनिक बास्केट आ ग्रेटकोट उघने अछि। पोजो लग चाबुक छै। लकी आदेशपालक अछि। मालिकक गप मानि फेर सभ रोमे उठा क' ठाढ़ भ' जाइए। एस्ट्रागोन आ ब्लादीमीरकेँ ओकर रोमा उघनाइ नीक नै लगै छै। मुदा पोजो जखन कहै छै जे ओ ओहिने छै तँ एस्ट्रागोन पोजोकेँ आततायी बुझै छै। एस्ट्रागोन लकीक नोर पोछैए तखन ओकरा लकी मुक्का मारै छै। पोजो कहै छै जे तोरा कहलियौ ने जे लकीकेँ अनचिन्हार लोक पसिन्न नै छै। आ एस्ट्रागोन आ ब्लादीमीर ओत' की क' रहल अछि? ओ दुनू गोटे कोनो गोडो नामक व्यक्तिक बाट जोहि रहल अछि। पोजो आ लकी चलि जाइए। एस्ट्रागोन आ ब्लादीमीर

নগ একটা ছোড়। অবৈঁ ছৈ আ কহি ছৈ জে গোড়ো আগ নৈ আরি সকতা, কান্হি এতা। ফেব এম্হব ওম্হবক হ্সিযাঁহীক গপশপ হোগএ আ ওহো ছোড়। চলি জাগএ। তখনে মংচপব সঁ রিজনী চলি জাগ ছৈ আ ফেব বাতি ভ' জাগ ছৈ, চন্দ্রমা উঁগন ছৈ। ব্লাদীমীব আ এস্ট্রাগোনক গপশপ শুরু হোগ ছৈ। হ্সিযাঁহীক গপমে কিছু অর্থপূর্ণ গপশপ সেহো হোগ ছৈ। দুনূ গোষ্টে জেবাঁক নির্ণয করৈ ছথি মুদা হিলৈ নৈ ছথি। পহিল অংকক পর্দা খসৈএ।

দোসব অংক, রএহ সমএ আ স্থান। ব্লাদীমীবকেঁ সভ কিছু মোন ছৈ মুদা এস্ট্রাগোন রিসবি গেল অছি। এস্ট্রাগোন কহৈএ জে ও সভ কিছু তুবন্ত রিসবি জাগএ বাঁ কহিযো নৈ রিসবৈএ। ওকবা কিছু-কিছু মোনো পড়ৈ ছৈ। পোজো আ নকী অবৈঁএ। পোজো আন্হব ভ' গেল অছি, নকী ওহিনা বোঁমা উঁঘনে অছি। বস্সা সেহো ছৈ মুদা কিছু ছোট। পোজো আ নকী খসি পড়ৈএ। পোজো সহাযতা নেল কহৈএ মুদা এস্ট্রাগোন আ ব্লাদীমীব গপশপ করৈএ।

এস্ট্রাগোন ব্লাদীমীবকেঁ পহিল অংক জেকাঁ "দীদী" কহৈএ। ব্লাদীমীব বাঁজৈএ জে "হমবা সভকেঁ হ্সিযাঁহীক গপশপমে সময নৈ বঁবাঁদ কববাঁক চাহী।" পোজোক "সহাযতা"ক আর্তনাদ নিযত অংতবালপব বেঁব-বেঁব হোগ ছৈ। মুদা তগপব এস্ট্রাগোন আ ব্লাদীমীব ধ্যান নৈ দৈএ। পোজো আবঁ সহাযতা নেল সএ ফ্রেংক ফেব দূ সএ ফ্রেংকক লালচ দৈএ। ব্লাদীমীব ওকবা উঠবৈঁনে জাগএ, প্রযাসমে অপনো খসি পড়ৈএ আ সহাযতাক প্রকাব করৈএ। ফেব কিছু গপশপক বাঁদ ব্লাদীমীবকেঁ উঠেবাঁক প্রযাসমে এস্ট্রাগোন খসি পড়ৈএ। ব্লাদীমীব পোজোকেঁ মাবৈএ, পোজো

ঘ্সক্কনিযা দৈএ। তখন ব্লাদীমীব ওকবা তাকৈএ, কহৈএ– ঋারি জো, তোবা নোকসান নৈ পহুঁচেরৌ।
এস্ট্রাগোন ঋা ব্লাদীমীব উঠরাঁক প্রযাস কবরাঁক সোচৈএ ঋা উঠি জাগএ। এস্ট্রাগোন কহৈএ– উঠনাগ রঁচাক খেন সন হন্নক ঋছি ঋা ব্লাদীমীব রঁজৈএ– ঞা মাত্র ঋামেশৈক্তিক প্রশ্ন ঋছি। পোজো সহাযতা নেন কহৈএ। দ্নূ পোজোকেঁ উঠরৈঁএ, ফেব ছোড়ৈএ, পোজো খসি পড়ৈএ। ফেব দ্নূ ওকবা উঠরৈঁএ ঋা পকড়নে বহৈএ। কিছু কানমে কনে ছোড়ি ক’ জাঁচৈএ হ্মদা জখন পোজো খস’ নগৈএ তঁ পকড়ি নৈএ। পোজো সেহো রুঁন্না পড়ৈএ জে কাল্হিক ঘটনা রিঁসবন সন ঋছি। ও কহৈএ জে ও এক দিন স্বতি ক’ উঠন তঁ ঋপনাকেঁ ঋান্হব দেখনক, ও কহৈএ জে ওকবা নগৈ ছৈ জে ও ঋখনো স্বতনে তঁ নৈ ঋছি। ও নকীক রিষযমে পূছৈএ। নাগৈএ জে কোনা ও দ্নূ খসন, সে ওকবা মোন নৈ ছৈ। পোজো কহৈএ জে নকীক গর্দনিক বস্সাকেঁ জোবসঁ খীচূ রাঁ হ্মহপব জূতাসঁ মাব্ব তঁ ও উঠি জাএত। ব্লাদীমীব এস্ট্রাগোনকেঁ কহৈএ জে ওকবা নেন রঁদনা নেরাঁক নীক ঋরসব ছৈ। এস্ট্রাগোন প্বছৈএ (ওকব স্মৃতি ঘ্বৈ ছৈ!) জে জঁ নকী ঋপন বক্ষা কবএ তখন? তগপব পোজো রাঁজৈএ জে নকী কখনো ঋপন বক্ষা নৈ কবৈএ। হ্মদা এস্ট্রাগোন নৈ ব্লাদীমীব নকীকেঁ পএবসঁ মাব’ নগৈএ হ্মদা ঋপনে ওকবা চোটৈ নাগি জাগ ছৈ। ঘটনাক্রমসঁ নগৈ ছৈ জে পোজো ঋাবঁ ঋপনাসঁ ঠাঢ় ভ’ গেন ঋছি।
পোজো জে নকীকেঁ কোনো হাটমে রেঁচৈনে ন’ জা বহন ঋছি, কেঁ নে কাল্হিক কিছু মোন ছৈ ঋা নহিযে কাল্হি ঋাজ্ক কিছু মোন বহতৈ। ও নকীকেঁ উঠৈনে কহৈএ ঋা

नकी उठि जाइत अछि आ अपन रोम्म उठा लैत अछि। पोखरि अपन चारू कात मांगैत अछि। नकी सभ रोम्म बाखैत, आ चारू पोखरिक हाथमे द' क' सभ रोम्म उठा लैत अछि। पोखरि बस्ता मांगैत, नकी सभ रोम्म बाखि बस्ता पोखरिकें पकड़ा क' सभ रोम्म उठा लैत अछि।
नकी आ पोखरि चलि जाइत अछि। ओ छौड़ा भेटैत अछि। ओ ब्लादीमीरकें अल्बर्ट कहि सम्बोधित करैत अछि। ब्लादीमीर पुछैत छथि जे की ओ ओकरा नै चिन्हैत अछि, की ओ काल्हि नै आएल छल। छौड़ा कहैत अछि जे आइ ओ पहिल बेर आएल अछि। संदेश रहए छै, गोडो आइ नै आएत मुदा काल्हि अवश्य आएत। ब्लादीमीर पुछैत अछि जे "गोडो" करैत की? ओ छौड़ा कहैत अछि जे गोडो किछु नै करैत अछि। ब्लादीमीर पुछैत अछि जे छौड़ाक भाइ केहन छै। ओ उत्तर भेटैत छै, ओ दुखित छै। ब्लादीमीर पुछैत अछि जे की काल्हि ओकर भाइ आएल छलै- ओ से छौड़ाकें नै बुझल छै। छौड़ा उत्तर दैत कहैत अछि जे गोडोकें दाढ़ी छै आ ओ कारी नै गोर छै। छौड़ा (पहिने अंक जकाँ) पुछैत अछि जे ओ गोडोकें की जा क' कहतै। ब्लादीमीर कहैत अछि- जा क' कहू जे तोरा हमरा सभसँ भेंट भेलउ। ब्लादीमीर छौड़ापर छड़पैत अछि मुदा ओ पड़ा जाइत अछि। सूर्यास्त होइत छै। चन्द्रमा देखा पड़ैत छै।
एस्ट्रागोन कहैत अछि जे जँ दुनू गोटे अलग भ' जाइ तँ ठीक दुनू लेल नीक हेतै। जँ काल्हि गोडो नै एतै तँ ओ दुनू गोटे बस्तासँ लटकि जाएत (ब्लादीमीर कहैत) आ जँ एतै तँ बँचि जाएत। ब्लादीमीर नकीक टोपीमे ताकैत, हिलबैत, फेर पहिरैत अछि। दुनू जेबाक निर्णय करैत अछि मुदा कियो नै हिलैत अछि। पर्दा खसैत अछि।

....

হৈরোল্ড পিংটৈরক তীন অংকীয নাটৈক "দ বৰ্থডে পার্টী" পীটৈ, মেগ, স্টৈনলে, ল্বল্ব, গোল্ডবৰ্গ্স্ আ মৈককান একব পাত্র ছথি।

পহিল অংক– মেগ পীটৈকেঁ জলখৈ দৈএ, প্রছৈএ জে স্টৈনলী উঠলৈ আকি নৈ। স্টৈনলী অবৈএ, ওকরো মেগ জলখৈ দৈএ। পীটৈ কাজপর চলি জাগএ। মেগ আ স্টৈনলেমে অংতরংগ গপ হোগএ, হঁসী মজাক হোগএ। পীটৈ মেগসঁ কহলে বহ জে দূ গোটৈ এতৈ আ কিছু দিন ওকরা ঘরমে রহতৈ। ওকর ঘর সূচী (বোর্ডিংগ হাউস)মে ছৈ। স্টৈনলী ওা স্বলি পূছ-পাছ করৈ ছৈ, ও চিংতিত ভ' জাগএ। স্টৈনলী কহৈএ জে ওকরা পেরিসমে নাগৈ ক্লবৰ্মে পিযালো বৰ্জেৰাক নোকবীক আঁফব আএল ছৈ। ফেব এথেংস, কঁ াংস্টৈনটিনোপল, জাগ্রেব, ব্লাদীরোস্টক সেহো। ওা সম্পূর্ণ রিশ্বক দর্শনৰ্না নোকবী অছি। প্রছনাপব ও কহৈএ জে ও সংপূর্ণ রিশ্ব, সংপূর্ণ দেশমে পিযালো বৰ্জেলে অছি। এক বেব ও কংসর্ট সেহো কেলে বহএ। ফেব ও কহৈএ জে পহিল কংসর্ট মে ও স্থানক পতা হবা দেলক আ লৈ পহুঁচি সকল। দোসব কংসর্টমে জখন ও পহুঁচল তঁ স্থলপব তালা নাগল বহ। মেগক ওছা লৈ ছৈ জে স্টৈনলী কতৌ জাএ।

স্টৈনলীকেঁ নাগৈ ছৈ জে ও দূনূ গোটৈ ককরো খোজমে অছি। ল্বল্বক অৰাজ অবৈএ। মেগ খবীদাবীক মোবা ল' ক' বহবা জাগএ, কিযো ওকবাসঁ মিসেজ বোল্স সম্বোধিত ক' গপ করৈ ছৈ। ল্বল্ব অবৈএ আ স্টৈনলীসঁ গপ করৈএ। ল্বল্ব বহবাগএ তঁ গোল্ডবৰ্গ্স্ আ মৈককেল অবৈএ। মৈককেল গোল্ডবৰ্গ্সকেঁ লৈট কহি সম্বোধিত করৈএ। স্টৈনলী চোবা ক' পহিলহিযে বহবা জাগএ।

মেগ খরৈঁএ, গোল্ডরঁস্থ্র ওকবা মিসেজ রৌন্স কহি সম্বোধিত করৈএ খা খপনাকেঁ গোল্ডরঁস্থ্র খা সংগীকেঁ মৈককেন কহি পবিচয দৈএ। গপশপক ক্রমমে গোল্ডরঁস্থ্র প্বছৈ ছৈ জে ওগ বহনিহাবক নাম কী ছৈ খা ও কী করৈএ। মেগ কহৈএ জে ওকব নাম স্টৈননে রেরঁব ছৈ খা ও এক রেঁব কংসর্ট দেনক হ্মদা কেযবষ্টৈকেবক গনতীসঁ বাতিমে ও ওতৈ রঁন্দ বহি গেন খা ভোব ধবি রঁন্দ বহন। খা হেব "ষ্টপ" ন' ক' ট্রেন পকড়্যি এত' খারি গেন। তখনে মেগ কহৈএ জে খাগ ওকব "রঁথডে" ছিঐ। খা হেব "রঁথডে পার্টী" নির্ধাবিত হোগ ছৈ 9 রঁজে। ন্বন্বকেঁ সেহো রেঁব্ধ পহব নোতি দেন জেতৈ। তীন্ রঁহবাগএ খা স্টৈননী খিড়কীসঁ তাকৈএ। মেগ খরৈঁএ। স্টৈননী ওগ দন্সঁ খাশংকিত খছি। নাম প্বছৈএ তঁ মেগ নাম রিসবি জাগএ খা ওকবা গোল্ড.. মোন পড়্ ছৈ তঁ স্টৈননী মোন পাড়্ ছৈ– গোল্ডরঁস্থ্র। মেগ প্বছৈএ জে কী স্টৈননী ওকবা চিন্হৈএ তঁ স্টৈননী গ্বম্ম বহৈএ। হেব স্টৈননী কহৈএ জে খাগ ওকব রঁথডে নৈ ছিঐ। মেগ ওকবা নেন রঁচাক ড্রম উঁপহাবমে খননে খছি খা তকব রঁদনামে ও স্টৈননীসঁ চ্ম্মা মাঁগৈএ।

খংক 2 মে স্টৈননী খা মৈক্কানক গপশপ ভ' বহন ছৈ। স্টৈননী রাঁহব জাএ চাহৈএ। ও মৈক্কানকেঁ কহৈ ছৈ জে গ্র রৌর্ডিং হাউস নৈ ছী, নহিযে কহিযো বহৈ। পীষ্টৈ খা গোল্ডরঁস্থ্র খরৈঁএ। গোল্ডরঁস্থ্র পীষ্টৈকেঁ মিস্টব রৌন্স কহি সম্বোধিত করৈএ। পীষ্টৈক গেনাক রাঁদ স্টৈননী কহৈএ জে ঐ ঘবক নোকক স্বংঘরাঁক শক্তি চনি গেন ছৈ তেঁ ও গোল্ডরঁস্থ্র খা মৈক্কানক খতবা নৈ চীন্হি পারি বহন ছথি, হ্নকা সভক প্রতি ওকব (স্টৈননীক) জিম্মেরাবী

ছৈ ।

মৈক্কান ওকবাসঁ চশ্মা ছীনি নৈএ । মৈক্কান আ গোল্ডরস্মাত্থ ওকবাসঁ প্বছৈএ জে ও কিএ অপন পনীক হত্যা কেনক । ও নাম বদননে অছি আ চবিত্রহীন অছি, স্ত্রীকেঁ দূষিত কবৈএ ।

ঝগড় া শুরু হোগ ছৈ । ক্ষদা ঝগড় া ককনাক বাদ (প্রায়ঃ মেগকেঁ নৈ বুঝন ছৈ) মেগ পার্টী ড্রেসমে অবৈএ । সামান্য গপ হোগ ছৈ ।

ন্বন্ব অবৈএ, গোল্ডরস্মাত্থ ওকবা কোবামে বৈসবৈএ । ন্বন্বক প্বছনাপব জে ওকবা তঁ হোগ ছনৈ জে ও "নৈষ্ঠ" ছী, গোল্ডরস্মাত্থ কহৈ ছৈ জে ওকব পনী ওকবা "সিমে" কহি বজবৈ ছৈ ।

পার্টীমে খেন শুরু হোগএ, আঁখিমে পষ্টী বান্হি ক' । মিসেজ বৌন্সকেঁ ন্বন্ব স্কার্ফসঁ আঁখি বান্হৈএ । ও জকবা ছূ দেত তকবা আঁখিপব পষ্টী বান্হন জাএত । ও মৈক্কনকেঁ ছবৈএ । ফেব স্টৈননী ছআগএ । ওকব চশ্মা নেন জাগ ছৈ । স্টৈননীকেঁ পষ্টী বান্হন জাগ ছৈ । মৈক্কন স্টৈননীক চশ্মা তোড় া দৈএ । মৈক্কন ড্রমকেঁ স্টৈননীক বস্তামে বাখৈএ, ও খসি পড় ৈএ আ মেগক গর্দনি দবব' চাহৈএ, মৈক্কন আ গোল্ডরস্মাত্থ বচবৈ ছৈ । অন্হাব পসবৈএ ।

স্টৈননীকেঁ অবৈত দেখি ন্বন্ব বেহোশি ভ' জাগএ । স্টৈননে ন্বন্বকেঁ টৈবুনপব বাখৈএ । মৈক্কানকেঁ টর্চ ভেটৈ ছৈ । ও টৈবুন আ স্টৈননীপব টর্চ বাড় ৈএ ।

অংক 3: পীটৈ আ মেগমে গপ হোগ ছৈ । মেগ স্টৈননীক বিষযমে পীটৈসঁ প্বছৈএ । ন্বন্ব অবৈএ, গোল্ডরস্মাত্থসঁ প্বছৈএ জে ওকব পিতা বা এডী (ওকব পহিন প্রেমী) কী সোচত জঁ ও এ স্বনত । ও কহৈএ জে গোল্ডরস্মাত্থ অপন দৃষ্ঠি

पिपास तृप्त केलक, ओ बच्चाकेँ से सभ सिखेलक जे एकटा घरती तीन रंगक विपाहल जेकाँक गाँडे सीखत। गोविन्दराम कहैए जे ओ ई केलक काबस बच्चा ओकरा ई कर' देलक।

बच्चा जाएत।

मेगक अनुपस्थितिमे गोविन्दराम आ मैक्सान स्टेलनीकेँ न' जाएत। पीटे ओकरा छोड़ि कहैए। गोविन्दराम आ मैक्सान पीटेकेँ सेहो संगमे चलैले कहैए, कारणे जगह छै। पीटे स्थिर रहैए। पीटे अकसरे बढ़ि जाएत, मेग अबैए। पुछैए, ओ सभ गेल? पीटे कहैए– हँ। स्टेलनीक विषयमे मेग पुछैए– ओ स्वतंत्र अछि? पीटे कहैए– ओ स्वतंत्र अछि।

–स्वत' दियौ।

मेग पुछैए– की ई नीक पार्टी नै छल तँ पीटे कहैए– ओ राँदमे आएल।

पर्दा खसैए।

....

राँदल सबकाबक "एरम् गन्द्रजीत"

"एरम् गन्द्रजीत" मे लेखक, काकी, मानसी, अमल, विमल, कमल, गन्द्रजीत आ गन्द्रजीतक पत्नी (नाटकमे राँदमे) दोसर मानसी पात्र अछि।

अंक 1– लेखक एकटा नाटकक खोजमे अछि। ओकर काकी ओकर खेलाग–पिलाग छोड़ि लिखैत बहराँपर तमसाएल छै। मानसी पुछैए जे ओ पढ़त जे किछु ओ लिखलक। लेखक कहैए, ओ किछु नै लिखलक। मानसी ओकरा प्रयास करैले कहै छै। लेखक दर्शकमेसँ चारिटा राँदमे आरैरैलाकेँ स्टेजपर रंजरैए, अमल, विमल, कमल। चारिम अपन नाम निर्मल क्रमाव कहैए।

নেখক কহৈএ– ওা নৈ ভ' সকৈ ছৈ, অপন অসনী নাম রঁতাউ। ও কহৈএ– গন্দ্রজীত বায। অমন, রিমন, কমন এরম্ গন্দ্রজীত। মানসী (অসনী নাম দোসব ক্ষদা নেখক কহৈএ মানসীযে) ওকব মমিযৌত রঁহিন ছিঐ। ও ওকবাসঁ প্রেম কবৈএ, পবম্পবা তোড়' চাহৈএ

অংক 2: রাঁদমে ওকবা নাগৈ ছৈ জে কী জঁ ওা প্রেম সফন ভগযো জেতৈ তঁ ওকবা উত্তব ভেঁটতৈ ? নৈ নে। ও নংদন সেহো জাএত। মৃত্ চাহৈএ, নৈ ক' পারৈঁএ। নেখক দ্বাবা নামিত গন্দ্রজীতক মানসী অরিরাহিত অছি, হজাবীরাঁগমে পঢ়রৈঁএ।

ক্ষদা অমন, রিমন, কমনক রিপবীত গন্দ্রজীত নীখপব নৈ চনৈএ। অনগ কিছু কব' চাহৈএ। কাকা, জকবা ও মাএ কহৈএ, খাগনে কহৈ ছৈ আ মানসী নিখৈনে। ক্ষদা জখন এক রেঁব মানসী নেখককেঁ খাগনে কহি দৈএ তঁ নেখক দ্খী ভ' জাগএ, নৈ, অছুঁ ? নৈ।

ক্ষদা ফেব মানসীকেঁ গনতীক ভান হোগ ছৈ, ও ওকব নেখনক রিষযমে প্বছৈএ। নেখক চিংতিত অছি, ওা গন্দ্রজীত রাস্তরিকতাকেঁ নৈ মানৈএ, কোনো প্রতিরঁদ্ধতা ওকবামে নৈ ছৈ। ক্ষদা মানসী সে নৈ মানৈএ।

ও সপনা তঁ দেখৈএ নে।

গন্দ্রজীত নংদনসঁ কোনকাতা ঘ্রৈএ, একটা দোসব স্ত্রীসঁ রিযাহ কবৈএ, ওকবো নাম মানসী ছিঐ (গন্দ্রজীত একবা মানসী কহৈএ, পহিন্নকা মানসী জেকবা নেখক মানসী কহৈএ ও গন্দ্রজীতক মমিযৌত ছিঐ, জকবাসঁ গন্দ্রজীত প্রেম কবৈএ ক্ষদা ও ভাএক বিশ্তাসঁ ওকবাসঁ রিযাহ নৈ কবৈএ জে নোক কী কহতৈ, আ গন্দ্রজীত নেখককেঁ কহৈত বহৈএ জে ওকব নাম মানসী নৈ ছিঐ।)

গন্দ্রজীত ব্ঁঝ' নগৈএ (মানসীকেঁ ও কহৈএ) জে ব্যক্তিক

ভিন্নতাক মাত্র ভ্রম অছি। স্বপ্ন স্বপ্ন অছি ও বাস্তবিকতা নৈ বনি সকৈএ। মানসী, মানসী, মানসী, সভ মানসী, জেনা অমন, বিমন, কমন। লেখক পূছৈএ তঁ গন্দ্রজীত কহৈএ- অমন, বিমন, কমন এবম্ গন্দ্রজীত (সেহো!)।

লেখকক যাত্রাক কোনো লক্ষ্য নৈ, কোনো উদ্দেশ্য নৈ, ফ্সিযাঁহীক যাত্রা জকব কোনো কাবণ নৈ। লেখক গন্দ্রজীতকেঁ কহৈএ, হমবা সভকেঁ জীবাঁক অছি, চলবাঁক অছি, কোনো ধর্মস্থল নৈ তৈযো তীর্থযাত্রা কববাঁক অছি।

উদয নাবাযণ সিংহ 'নচিকেতা'ক "নো এন্ট্রী: মা প্রবিশ"

প্রথম কল্লান: ঙা নাটক জ্যাতিবীশ্বিবক পবম্পবামে কল্লানমে (হ্নকব বর্ণ বলোকব কল্লানমে বিভক্ত অছি জে নাটক নহি ছী, ধূর্ত-সমাগম জে জ্যাতিবীশ্বিব নিখিত নাটক অছি- অংকমে বিভক্ত অছি) বিভাজিত অছি। চাবি কল্লানক বিভাজনক প্রথম কল্লান স্বস্থা (বা নবক) কেব দ্বাবপব আবম্ভ হোগত অছি। ওতএ বহ্ত বাস ক্ষগন নোক দ্বাবক ভীতব প্রবেশক নেল পঙ্ক্তিবদ্ধ ছথি। ক্যা পথ দুর্ঘটনামে শিকাব ভেল বাঁজাবী ছথি তঁ সংগমে যদ্দমে মৃত ভেল সৈনিক আ চোবি কবএ কান মাবন গেল চোব, উচক্কা আ পাঁকিটমাব সেহো ছথি। জ্যাতিবীশ্বিবক ধূর্তসমাগমমে জে অতি আধুনিক অবর্সর্ডিটী অছি সে নো এন্ট্রী: মা প্রবিশ মে সেহো দেখবাঁমে অবৈত অছি। প্রথম কল্লানমে জে বাঁজাবী ছথি সে, পঙ্ক্তি তোড়ি আগাঁ বঢ়না উত্তব, চোব আ উচক্কা দুনূ গোটেকেঁ, কাঁলব

पकड़ा प्वनः हुनकव सभक मून स्थानपव दए खरैत छथि। ऊँचक्का जे बाँदमे पता चलैत अछि जे गुण्डा-दादा थिक ऋदा बाँजाबी नग सख्य-मख्य बहैत अछि, हुनकासँ खंगा ष्ठोड़बाँक नेन कहैत अछि। ऋदा जखन पॉकेटमाव बाँजाबी दिससँ चोवक विपक्षमे बजैत अछि तखन ऊँचक्का चक्कू निकानि अपन असन रूपमे आबि जागत अछि आ पॉकेटमावपव मावि-मावि कए उठैत अछि। ऋदा जखन चोव कहैत छनि जे ओ सेहो अपने विवादबीक अछि जे छोटे-छीन पॉकेटमाव मात्र बॅनि सकन, ओकव जकाँ माँजन चोव नहि, आ ऊँचक्का जेकाँ गुण्डा-बॅदमाशे बॅनबाँक तँ सोचिओ नञि सकन, तखन ऊँचक्का महबाज चोवक पाछाँ पड़ा जागत छथि, जे बॅदमाशे ककबा कहनँह। आबँ पॉकेटमाव मौका देखि पक्ष बॅदनैत अछि आ ऊँचक्काकेँ कहैत छन्हि जे अहाँकेँ नहि हमबा कहनक। संगे ओहो कहैत अछि जे चोवि तँ ओ तेहन कवए जनैत अछि, जे गिवहथक बेंटो आ ऋफव सभ चोवि कवैत कान पीटैत-पीटैत एतए पठा देनकए आ हमव खिधाँशि कवैत अछि, बॅड़का चोव भेना हँ। भद्र ब्यक्ति चोवक बॅगेबाँनी देखि ओ विश्वास नहि कए पवैत छथि जे ओ चोव थिकाह। ताहिपव पॉकेटमाव, चोव महाबाजकेँ आब किचकिचबैत छन्हि। तखन ओ चोव महबाज एहि गपपव दुख प्रकट कवैत छथि जे नहि तँ ओहि बाति एहि पॉकेटमावकेँ चोविपव नए जएतथि आ ने ओ हुनका पिटैत देखि सकैत। एम्हव बॅजाबी जे पहिने चोव आ ऊँच्क्काकेँ कॉनव पकड़ा घिसिया चुकन छनाह, गुम्म भेन सभटा स्वनैत छथि आ दुख प्रकट कवैत छथि जे एकवा सभक संग स्वस्थामे बहबँ, तँ स्वस्थ्य केहन होएत से नहि

জানি। খাৰ ৰঁজাবী মহবাজ গীতক একটা ঠ্কড় া এহি ৰিষযপব পঢ় ৈত ছথি। জেনা ধূর্তসমাগমমে গীত খছি তহিনা নো এ়ুন্দ্রী: মা প্ররিশ মে সেহো, ওা এহি স্থনপব প্রাবম্ভ হোগত খছি জে এহি নাটককেঁ সংগীতক ৰঁনা দৈত খছি। ওম্হব প্ঁাকেটমোবজী সভক প্ঁাকেট কাটি নৈত ছথি খা ৰঁট্খা সাফ কএ দৈত ছথি। খাৰ ফেব গীতময ফকড় া শ্বৰু ভএ জাগত খছি ঋদা তখনে একটা মৃত বদ্দীৰঁনা সভক তঁদ্রাকেঁ তোড়ি দৈত ছথি, ওা কহি জে যমানযক ৰঁন্দ দবৰঁজ্জাক ওহি পাব, ওা ৰঁট্খা খা পাগ–কৌড় া কোনো কাজক নহি খছি। খাৰ দ্নূ মৃত ভদ্র ব্যক্তি সেহো ৰঁজৈত ছথি, জে হঁ দোসব দেসমে দোসব দেসক সিক্কা কহাঁ চনৈত খছি। খাৰ একটা বমণীমোহন নাম্না মৃত বসিক ভদ্র ব্যক্তিক দোসব দেসক সিক্কা নহি চনৰঁাক ৰিষযমে টীপ দৈত ছথি, জে হঁ ওা তঁ ওহিনা খছি জেনা প্রেযসীক দোসবক পনী ৰঁনৰঁ। খাৰ এহি গপপব ঘমর্থন শ্বৰু ভএ জাগত খছি। তখন বমণী মোহন গপক ৰুখি ঘ্মা দৈত ছথি জে দবৰঁজ্জাক ভীতব বম্ভা–মেনকা সভ হেতীহ। ভিখমংগনী জে তাবত খপন কোবামে নেন একটা প্বতবাকেঁ দোসবাক হাথমে দএ ৰঁহসমে শামিন ভ২ গেন ছথি, ওাষ্যৰিশ বম্ভা–মেনকাকেঁ ঋঁহমড়কী গণাদি কহৈত ছথি। ঋদা প্ঁাকেটমোব কহৈত খছি জে ভীতবমে স্বখ নহি দ্খো ভএ সকৈত খছি। এহিপব ৰীমা ৰাৰূ খপন কার্যক স্কাপ দেখি প্রসন্ন ভএ জাগত ছথি। খাৰ প্ঁাকেটমোব গন্দ্রক বজ্র পব কপৈয্যাক ৰৌনী শ্বৰু কৰৈত খছি। এহি ৰেঁব ৰঁজাবী তন্দ্রা ভংগ কৰৈত খছি খা দ্নূ ভদ্র ব্যক্তি হ্নকব সমর্থন কৰৈত কহৈত খছি, জে ওা খদ্ভুত নীনামী খছি, জে কবৰঁা বহন খছি সে

প্াঁকেট্মাব আ ওহিমে শামিন অছি চোব আ ভিখমংগনী, পহিনে-পহিন স্বনন অছি আ ফেব সংগীতময ফকড়া। সভ শব্দ ভএ জাগত অছি। ঝদা তখনে নংদী-ভুংগী শাস্ত্রীয সংগীতপব নচৈত প্ররেশ কবৈত ছথি। আবঁ নংদী-ভুংগীক ওা প্বছনাপব জে দবৰ্জ্জাক ভীতব কী অছি, সভ গোটৈ অপনা-অপনা হিসাবঁসঁ স্বস্থ-নবক আ অকাস-পতান কহৈত ছথি। ঝদা নংদী-ভুংগী কহৈত ছথি জে সভ গোটৈ সহ কহৈত ছী আ ক্যা গোটৈ পূর্ণ সহ নহি বঁজনহুঁ। ফেব বঁজৈত-বঁজৈত ও কহএ নগৈত ছথি, ক্যা চোবি কান মাবন গেনাহ (চোব ওা স্বনি ভাগএ নগৈত ছথি তঁ দ্-তীন গোটৈ পকড়া সোন্নাঁ নএ অনৈত ছন্হি!) তঁ ক্যা এক্সীডেন্টসঁ, আ এহি তবহেঁ সভটা গনবঁএ নগৈত ছথি, ঝদা বীমা-বাঁবূ কোনা রিন মূহ্‌ক এতএ আযন ছথি সে হ্নকহ্ নোকনিকেঁ নহি বুঝন ছন্হি! বীমা বাঁবূ কহৈত ছথি জে ও নর মার্কেটৈক অন্বেষণমে আএন ছথি! সে রিন মবন সেহো এক গোটৈ ওতএ ছথি! ভুংগী নংদীকেঁ ঢ়বে বাস বীমা কম্পনীক আগমনসঁ আএন কম্পীটিশনক রিষযমে বুঝবৈত ছথি! এম্হব প্রেমী-প্রেমিকামে ঘোঁঘাউঁজ শব্দ হোগত ছন্হি, কাবণ প্রেমী আবঁ ঘ্বি জাএ চাহৈত ছথি। বমণী মোহন প্রেমীক গমনসঁ প্রসন্ন হোগত ছথি জে প্রেমিকা আবঁ অসগবে বহতীহ আ হ্নকা নেন মৌকা ছন্হি। ঝদা ভুংগী ওা কহি জে এতএসঁ গেনাগ তঁ সংভব নহি ঝদা ওা ভঽ সকৈত অছি জে দ্নূ জোড়ী মায-বাঁপ (!) কেঁ এক্সীডেন্ট কববাঁএ এতহি বঁজবাঁ নেন জাএ। ঝদা অপনা নেন মাএ-বাঁপক বঁনি নেন প্রেমী-প্রেমিকা তৈযাব নহি ছথি। তখন নংদী ভুংগী দ্নূ গোটৈকে রিরাহ গাজা-বাঁজাক সংগ কবা দৈত ছথি আ কন্যাদান কবৈত

छथि रँजाबी।

दोसर कल्लान: दोसर कल्लानक आरम्भ होइत अछि एहि आभाससँ, जे क्या नेता मरलाक बाद आबँएबँना छथि, हुनकर दुनू अनुचर मूत भए आबि चुकल छथि आ नेताजीक अएबाक सभ क्या प्रतीक्षा कए रहल छथि, दुनू अनुचर छोटे-मोटे भाषण दए नेताजीक बिनम्रसँ अएबाक (मूइक बादो !) क्षतिपूर्ति कए रहल छथि, गीतक योग दए। एकटा गीत चोर नहि बुझैत छथि ओदा भिखमंगनी आ बन्दीबँना बुझि जाइत छथि, ताहि पर रँहस शुरू होइत अछि। चोरकेँ अपनाकेँ चोर कहलापर आपत्ति अछि आ भिखमंगनीकेँ ओ भिख-मंग कहैत अछि तँ भिखमंगनी ओकरा रोकि कहैत छथि जे ओ सबिसरपाहीक अनसूया छथि, मिथिला-चित्रकार, ओदा दिल्लीक अशोकरँस्ती आबि बुझलन्हि जे एहि नगरमे कला-वस्तु क्या नहि किनैत अछि आ तखन चौरँटियाक भिखमंगनी बँनि रहि गेलीह। चोर कहैत अछि जे मात्र ओ बँदनाम छथि, चोरि तँ सभ करैत अछि। नर बाँत कोनो नहि अछि, सभ अछि प्ररनकाक चोरि। तकर बाद नेताजी पहुँचि जाइत छथि आ लोकक चोर, उँचक्का आ पॉकेटमार होएबाक कारण समाजक स्थितिकेँ कहैत छथि। तखने एकटा रामपंथी अबैत छथि आ ओ ज़ा देखि क्षुब्ध छथि जे नेताजी चोर, उँचक्का आ पॉकेटमारसँ घिरल छथि। ओदा चोर अपन तर्क लए प्रनः प्रस्तुत होइत अछि आ नेताजीक राखल "चोर-प्रराण" नामक आधारपर रँजाबी जी गीत शुरू कए दैत छथि।

तेसर कल्लान: आबँ नेताजी आ रामपंथीमे गठबँधन आ रामपंथी द्वारा सरकारक बाँहरसँ देल समर्थनपर चरचा

শ্বব্ধ ভএ জাগত অছি। নেতাজী ফেব গীতময হোগত
ছথি আকি তখনে স্টুঁষ্ট–সীন কবৈত একটা ঋগন
অভিনেতা বিবেক ক্ষমাবক অএনাসঁ আকর্ষণ ওস্ফব চনি
জাগত অছি। ষ্টৈকা–ব্রেকিংগ ন্যূজ দেবাঁক মজবূবীপব
নেতাজী ব্যংগ্য কবৈত ছথি। বামপথী দূ বেব দূ গোষ্ট
গপ– নব গপ কহি জাগত ছথি, এক জে বিন অভিনেতা
বনে ক্যা নেতা নহি বনি সকৈত অছি আ দোসব জে
চোব নেতা নহি বনি সকৈছ (ওা চোব কহৈত অছি) ঋদা
নেতা সভ তঁ চোবি কবৰাঁমে ককবোসঁ পাছাঁ নহি ছথি।
তখনে একটা উঁচ বংশীয মহিলা অবৈত ছথি আ হ্নকব
প্রশ্নোত্তবক বাদ একটা সামান্য ক্যক সংগ একটা
বী.আাগ.পী.ক্যূ বনি জাগত অছি। অভিনেতা, নেতা আ
বামপথী সভ বী.আাগ.পী.ক্যূমে ঠাঢ় ভ২ জাগত ছথি
। ওা পুছনাপব জে পংক্তি কিএক বনন অছি (?)
তাহিপব চোব–প◌াঁকেটমাব কহৈত ছথি জে হ্নকা
নোকনিকেঁ পংক্তি বনএবাঁক (আ তোড়বাঁক সেহো) অভ্যাস
ছন্হি।
চতুর্থ কল্লান: যমবাজ সভক খাতা–খেসবা দেখি নৈত
ছথি আ চিত্রগুপ্ত ওা বহস্যাদ্ঘাটন কবৈত ছথি জে এক
যুগ ছন জখন সোমাঁক দববজ্জা খুজিতো ছন আ বন্ন
সেহো হোগত ছন। নংদী ভৃংগী পহিনহি সূচিত কএ
দেনন্হি জে সোমাঁক দববজ্জা স্বপ্ন নহি, মাত্র বুন্সবাঁক
দোষ ছন। দববজ্জাক ওহি পাব কী অছি তাহি বিষযমে
সভ ক্যা অপনা–অপনা হিসাবঁসঁ উত্তব দৈত ছথি।
চিত্রগুপ্ত কহৈত ছথি জে সভক বর্ণনক সভ বস্তু ছৈ
ওহিপাব। নংদী–ভৃংগী সূচিত কবৈত ছথি জে এহি গেটমে
প্রবেশ নিষেধ ছৈ, নো এন্ট্রী কেব বোর্ড নাগন ছৈ।
আহি বে ব্বা! আব কী হোএ ! নেতাজীকেঁ পঠাওন

जागत छन्हि यमराजक सोझाँ, तखन हुनकर सरस्वती ओतए मन्द भए जागत छन्हि। ऑडरी रिशान मिश्र प्रसिद्ध नेताजी, केर खिंचाओ शुरू होएत छन्हि अपनी केर ऑडना सर्टिफिकेट ऑना कम कए लिखाओल ऊमरिपर। पचपन ॲरिख आयु आ ओते योग कहैत अछि जे सत्तरि से ऊपर जीताह से ओ आ संगमे मृत चारू सैनिककेँ आपिस पठा देल जाएत अछि। दूटा सैनिक नेताजीक संग चलि जाएत छथि आ दू टा अन्तरर सेहो जाए चाहैत अछि। तखन नेताजीक अन्तरर सभक अपराध ॲड़ भारी, से चित्रगुप्तक आदेशपर नंदी-भृंगी हुनका लए, कराहीमे भुजऑक लेल ऑहर लए जाएत छथि तँ ऑचल दुनू सैनिक हुनका पकड़ि कँ लए जाएत छथि आ नंदी-भृंगी फेर मंचपर घुरि अबैत छथि। तहिना तर्कक ऑद प्रेमी-प्रेमिका, दुनू भद्र पुरुष आ ॲजारीकेँ सेहो त्राण भेटैत छन्हि ढोल-पिपहीक संग हुनका ऑहर लए गेल जाएत अछि। आऑ नन्दी जखन अभिनेताक नाम रिरेक ऊमार ऊर्फ...ॲजैत छथि तँ अभिनेता जी बोकि दैत छथि, जे कतेक मेहनतिसँ जाति हुनकर पाछाँ छोड़ि सकल अछि, से ऊर्फ तँ छोड़ि ए देल जाए। रामपंथी गोष्ठीकेँ अभिनेता द्वारा मदति केर रिरबणपर रामपंथी प्रतिराद करैत छथि। हुनको पठा देल जाएत छनि। रामपंथीक की हेतन्हि, हुनकर कथामे तँ ने स्वर्ग-नर्क अछि आ ने यमराज-चित्रगुप्त। हुनका अपन भविष्यक निर्णय स्वयं करऑक अरसर देल जाएत छन्हि। तखन रामपंथी कहैत छथि जे हुनकर शिक्षा आन प्रकारक छलन्हि, तखन एखन जे सोझाँ घटित भए रहल छन्हि ताहिपर कोना अरिश्वास करथु? तखन यमराज कहैत

ছথি জে– ভ২ সকৈত খছি, জে খহাঁ দেখি বহল ছী সে দ্ঃস্বপ্ন হোখএ, জতএ পৈসৈত জাএর্ব ওতএ লিখল খছি নো এন্ট্রী। খার্ব যমবাজ প্রশ্ন পুছৈত ছথি জে রিষম কে, মন্বক্খ খাকি প্রগ্নতি ? রামপংথী কহৈত ছথি জে দ্নূ, হ্মদা প্রগ্নতিমে তঁ নেচ্বল জস্টিস কদাচিত্ হোগতো ছৈ হ্মদা মন্বক্খক স্বভারমে সে গ্বন্জাগশী কতএ ? হ্মদা রামপংথী বাজনীতি একব (সমানতাক, স্বধাব কেব) প্রযাস কবৈত খছি। তাহিপব হ্নকা সংগ চোব–উঁচক্কা খা প◌াঁকেটমাবকেঁ পঠাওল জাগত খছি, ওা খরসব দৈত জে হিনকা সভকেঁ র্বদল্। চোব কলেক জাএমে গতস্তঃ কবৈত খছি খা ওা জিজ্ঞাসা কবৈত খছি জে হম সভ তঁ জাগএ বহল ছী হ্মদা এহিসঁ খাগাঁ ? নংদী–চিত্রগ্বপ্ত–যমবাজ সমরেত স্ববমে কহৈত ছথি–নো এন্ট্রী। ভুংগী তখলে খরৈত ছথি, খভিনেতাকেঁ ছোড়লে। যমবাজ কহৈত ছথি – মা প্ররিশ। ভুংগী নীচাঁমে হোগত চবচাক গপ কহৈত খছি, জে এত্তক্কা নিখম র্বদলল জএরাঁক খা কতেক গোটেকেঁ পৃথ্বীপব ঘ্বএ দেল জএরাঁক চবচা সর্বত্র ভএ বহল খছি। যমদূত সভ খলেবে কড় াহ লগ ঠাঢ় ছথি ক্যা ভুজএ লেল কহাঁ ভেটৈল ছন্হি (মাত্র দূ টা খন্বচব ছোড়ি)। খার্ব ক্যা লহি খার্বএ র্বনা র্বচল খছি, সে সভ কহৈত ছথি। চিত্রগ্বপ্ত খপল নমহব দাঢ় া খা যমবাজ খপল হ্মফ্টৈ উঁতাবি নৈত ছথি খা স্বাভারিক মন্বক্খ ৰূপমে খারি জাগত ছথি! হ্মদা চিত্রগ্বপ্তক মেকপ র্বনা নমহব দাঢ় া দেখি ভিখমংগনী জে ওতএ ছলীহ, হঁসি দৈত ছথি। ভুংগী উঁদ্ঘাটৈন কবৈত ছথি জে ভিখমংগনী হ্নকে সভ জেকাঁ কলাকাব ছথি ! কোন খভিনয ! তকব রিরবণ হ্মহর্বত খা গ্বদগ্বদীপব খতম হোগত খছি, তঁ

ভিখমংগনী কহৈত ছথি জে নহি এহি তরহক অভিনয তঁ ওতএ (দেখা কএ) ভঽ রহল অছি। ওত্তঽ রমণী মোহন আ উঁচবংশীয মহিলা নিভাক রোমাংস চলি রহল অছি। ক্ষদা নিভাজী তঁ ৰজিতে নহি ছথি। ভিখমংগনী যমরাজসঁ কহৈত ছথি জে ও তখনে ৰজতীহ জখন এহি দরৱজ্জাক তালাক চাভী হ্নকা ভেটৈতন্হি, ৰ্মতীহ জে অপসরা ৰনৱামে যমরাজ মদতি দএ সকৈত ছথি, ঙা রমণীক হৃদয থিক এতহ্ নো এন্ট্রী ! যমরাজ খখসৈত ছথি, তঁ চিত্রগুপ্ত ৰ্মি জাগত ছথি জে যমরাজ “পংচশৰ”সঁ গ্রসিত ভএ গেল ছথি ! চিত্রগুপ্তক কহলা উঁত্তর সভ ক্যা এক কাত লএ জাওল জাগত ছথি মাত্র যমরাজ আ নিভা মংচপর রহি জাগত ছথি। যমরাজ নিভাক সোন্মাঁ- স্বনূ নে নিভা... কহি ঝকি জাগত ছথি। সভক উঁসোহিত কএলাপর যমরাজ ৰড়কা চাভী হ্নকা দৈত ছথি, ক্ষদা নিভা চাভী ভেটৈলাপর রমণী মোহনক সংগ তেলা আগাঁ ৰঢ়ৈত ছথি জেনা ককরো অনকা চিন্হিতে নহি হোথি ! ও চাভী রমণী মোহনকেঁ দএ দৈত ছথি ক্ষদা ও তালা নহি খোলি পরৈত ছথি। ফের নিভা অপনে প্রযাস করএ লেল আগাঁ ৰঢ়ৈত ছথি ক্ষদা চিত্রগুপ্ত কহৈত ছথি জে ঙা মোনক দরৱজ্জা থিক, ওনা নহি খুজত। মহিলা ঠকএ লেল চাভী দেৱাক (!) গপ কহৈত ছথি। সভ ক্যা হঁসী করৈত ছনি জে মোন কতএ ছোড়ি অএলহুঁ ? তাহিপর একরৈব প্নঃ রমণী মোহন আ নিভা মোন সংজোগি কএ তালা খোলৱাক অসফল প্রযাস করৈত ছথি। নংদী-ভুংগী-ভিখমংগনী গীত গাৱএ লগৈত ছথি জকর তাপের্য ঙাএহ জে মোনক তালা অছি লাগল, ক্ষদা ওতএ অছি নো এন্ট্রী। ক্ষদা ঋত্তু রসন্তমে প্রেম হোগছ অনন্ত আ করেজ কহৈত অছি

মৈনা–মৈনা । তঁ এতহি নো এ্ন্ট্রী দবরঁজ্জাপব ধবনা দেন জাএ।

উত্তব আধুনিক ভারপ্রধান নিবর্থক (এরঁসর্ড) নাটক: এন এটেল্ডন্ট গোডো ক সৈক্ষ্যখন রেঁকেট দ্বাবা স্বযং ফ্রেঞ্চসঁ অংগ্রেজীমে অনুবাদ কএন গেন "রেটিংগ ফ◌ াঁব গোডো" শীর্ষকসঁ আ উপশীর্ষক "অ ট্রেজিক◌ াঁমেডী গন টূ এক্ট্স" সেহো জোড়ন গেন জে ফ্রেঞ্চ সংস্কবণমে নৈ ছন। ট্রেজীক◌ াঁমেডী মানে ট্রেজেডী আ ক◌ াঁমেডীক মিশ্রণ। একব কথানকসঁ স্পষ্ঠ ভঽ গেন হএত জে একব মুখ্য পাত্র "গোডো" ঐ নাটকমে ছৈহে নৈ, দোসব ও ভারক দৃষ্ঠিসঁ সেহো নাটকক মুখ্য তত্ব নৈ ছৈ। নাটকক মুখ্য তত্ব ছৈ "রেটিংগ" মানে বাঁট তকনাগ। ভাষা, স্টেজ, রাঁজরঁ, চ্প্প বহরঁ, চনরাঁক তবীকা, ওা সভ ঐ নাটকক অভিন্ন অংগ ছিঐ। দেশী–কানমে ভাগৈরঁনা রঁনজাবা জীরনশৈনীক নোক সভ অছি একব মুখ্য পাত্র। রিম্ব রঁজনে শাবীবিক ভারসঁ অভিনয কবৈরঁনা "মাগম কনাকাব" জেকাঁ ঐ নাটকক পাত্র অভিনয কবৈ ছথি। নাটকমে প্ল◌ াঁট আ সংতুননক নর পবিভাষা ওা নাটক গঢ়ৈত অছি। আধুনিক থিযেটবকেঁ ওা নাটক নর যুগমে প্ররেশ কবারৈত অছি। ব্রিটেনক "ম্যুজিক হ◌ াঁন" থিযেটব মে সংগীত হাস্য বহৈ ছনৈ জগমে জীরনক নিবাশা "ক্র◌ াঁস–ট◌ াঁক"সঁ রেঁকেট আ বাজনৈতিক–সামাজিক আতংক হৈবোনডে পিন্টব হাস্য রূপমে দেখরৈত ছথি। "নো এ্ন্ট্রী: মা প্ররিশ" সেহো স্বর্ক (রাঁ নবক) ক দ্বাবপব আবম্ভ হোগএ জতএ ওনা তঁ সভ মৃত নোক পংক্তিরঁদ্ধ ছথি মুদা একটা জীরিত ব্যক্তি সেহো ছথি! উচক্কা রাঁজাবী নগ সখ্য–মখ্য বহৈএ! প্রেমী–

प्रेमिकाक ओतए रिंयाहो भऽ जाए छै। नेताजी मूह्क रॉदो रिनसॅंसँ एरॉ नेन खभिशेप्त छथि। रामपंथी ओतौ रॉहवसँ समर्थन दै छथि। री.खाग.पी. क्यू सँ ओतौ त्राण नै भेटै छै। ह्मदा जग दवरॅज्जाक रॉहव नोक पंक्तिरॅह्ळ छथि से एक हागमे ख्ुजितो छन खा रॅन्न सेहो होगत छन, ओ बहस्याह्लाष्टैन चित्रगुप्त करै छथि। माने खारॅ ओ नै ख्ुजत तखन गन्तजाबी कथीक? नन्दी-भृंगी कहैए जे सोनाकँ दवरॅज्जा स्वप्न नै, मात्र र्ॅनरॉक दोष छन! खभिनेता रिरेक ह्नमाव खपन "सबनेम" प्वछन गेनापब कहै छथि जे कतेक मोशिकनसँ तँ जाति ह्नकब पाछाँ छोड़नक खछि से ढँर्फ तँ छोड़ि ये देन जाए। रामपंथीक कथामे ने स्वस्थ-नर्क होग छै खा नहिये यमबाज-चित्रगुप्त, ह्मदा एत्तक्का पबिस्थिति देखि कऽ ओ खरिश्वास कोना करथ्? ह्मदा यमबाजे ह्नका कहै छथिन्ह जे ओ द्ुःस्वप्न ह्नखए। यमदूत सभ कड़ाह नग खनेरे ठाढ़ छथि किये भूजैने भेटैते नै छन्हि, चित्रगुप्तक मेकप रॅना दाढ़ी देखि भिखमंगनीक हँसनापब भृंगी कहै छथि जे भिखमंगनी सेहो ह्नके सभ जेकाँ कनाकाव छथि। मोनक दवरॅज्जा मोन छोड़ि एनापब कोना ख्ुजत? फ्रेंच नाटैक "रेटिंग फॉब गोडो", हैरोल्ड पिंटैबक खंग्रेजी नाटैक "द रॅर्थडे पार्टी", रॉदन सबकाबक रॉंग्ला नाटैक "एरम् गन्द्रजीत" खा उँदय नाबायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटैक "नो एन्ट्री: मा प्रविश" प्वबान नाटैक जेकाँ पविभाषित खावस्तु खा खन्तक पविधिसँ खनग खछि। ओ कतौ सँ शुरू भऽ जाएत खछि, कतौ खतम भऽ जाएत खछि। एरम् गन्द्रजीत मे नेखक पात्र ताकि बहन खछि, खा खनचोक्क ओ दर्शक दीर्घाकेँ सम्बोधित

करैत चारिटा देवीसँ आएन दर्शककेँ मंचपर रंगा लैए आ ओकरा नाटकक पात्र बना दैए। चारिम पात्र ओकरा प्रिय छै, ओ निर्मल नै "गन्द्रजीत" छी। ओ अनग अछि, गन्द्रकेँ जीतैबला ऐतिहासिक पात्र अछि। ओ अमल रिमल, कमल जेकाँ नीचपर नै चलत। सदा अन्त जागत जागत गन्द्रजीत सेहो अमल रिमल, कमल एरम् गन्द्रजीत भऽ जाएत।

हैरोल्ड पिन्टरक "द बर्थडे पार्टी"क प्रारम्भमे तेहेन समीक्षा भेल जे हुनकर लेखकीय जीवन समाप्त हुअए पर आबि गेल। सदा एकर पुनपाठि एकरा क्लासिक बना देलक। किछु रहस्य, किछु आतंककेँ ओ सम्पूर्ण नाटकमे बनेने रहलाह, हास्य कथ्यकेँ आर मजगूत केलक। स्टैनले की अछि, छल वा बनऽ चहैत अछि? की ओ स्त्रीकेँ दूषित करैए, वा ओ अपन पत्नीक हत्या केलक? सदा मेग तँ ओकरा पसिन्न करै छै? ओकर पहिल आ दोसर कन्सर्ट, के तकर बाधक बनलै? की ओ झूठ बजैए वा वर्तमान सामाजिक आ राजनैतिक परिभाषासँ अलग व्यवहारक अछि? ओ मेगकेँ मोहऽ चाहैए सदा तेयो किए मेग ओकरा पसिन्न करै छै आ सामाजिक आ राजनैतिक शक्ति ओकरा किए आ कोना उठा कऽ लऽ गेल जाए छै, जकर सिपाही गोल्डबर्ग (गोल्डबर्गक लब्बक संग रहस्यमय व्यवहार) स्वयं आदर्श उपस्थित नै कऽ पाबै छथि।

स्वप्न-मसान सड़कक कातक माटिक ढिमका आ पत्रहीन नग्न गाछ "वेटिंग फॉर गोडो" क स्टेज छिऐ, ताना नागल दबरज्जाक बाहरक स्थल/ मण्डप "नो एन्ट्री: मा प्रविशे"क स्टेज छिऐ तँ "एरम् गन्द्रजीत"मे दर्शक दीर्घा, सएह स्टेज बनि जाएत। "द बर्थडे पार्टी"मे

ঘবক কোঠনী স্টেজ ছিঐ ক্ষদা পিল্টব একব পাত্র স্টৈননে কেঁ ডেবীডাক “রিখল্ডন” পদ্ধতিসঁ কখনো খল্ড কহ দৈত ছথি তঁ কখনো ফেবসঁ জোড়ি দৈ ছথি। নোক ৱাঁ দর্শক ওকবাসঁ ঙার্ষ্যা কবহ নগৈএ, খনে সহান্বভূতি কবহ নগৈএ খনে ঘৃণা কবহ নগৈএ, ক্ষদা স্টৈননী গোডেরঁস্থ্য খা মৈক্কানক সোন্মাঁ জখন নির্রন র্ন্নি পড়ৈএ তঁ দর্শক ওকবা সংগ খপনাকেঁ দেখৈএ, জেনা ও “এরম্ গন্দ্রজীত” মে গন্দ্রজীত সংগ খপনাকেঁ দেখৈএ। “রেটিংগ ফাঁব গোডো” মে জখন নোক গ্বনাম সংগ খপনাকেঁ দেখৈএ তখনে সহান্বভূতি দেখেনাপব চমেটৌ পড়নাপব ও হতপ্রভ বহি জাগএ। “নো এক্সিট: মা প্ররিশ” মে ভিখমংগনী ঙার্ষ্যরিশ বম্ভা-মেনকাকেঁ ক্ষঁহেমড়কী কহৈএ! পাঁকেটমাব গন্দ্রক ব্রজপব কপৈয্যাক ৱোনী নগৱৈএ। নন্দী-ভুংগী কহৈএ জে সভ গোটে সহ ছী ক্ষদা ক্যা গোটে পূর্ণ সহ নৈ ৱজনৌ। “এরম্ গন্দ্রজীত”মে গন্দ্রজীতক হান সিসীফস সন ছৈ। শাপিত গ্রীক মিথক সিসীফস, সংগমবমবক পাথবপব চঢ়ৱাক নেন খভিশপ্ত, খা জখনে ও চোটীপব পহুঁচৈএ খাকি পাথব ফেব গ্ববকি কহ ওকবা নীচাঁ খানি দৈ ছৈ। মন্বক্থক কাজ খা জীৱন নিবর্থকতাপব খাধাবিত খছি। মন্বক্থ খসহল হোগনে খভিশপ্ত খছি, গন্দ্রজীত জেকাঁ? খাকি “নো এক্সিট: মা প্ররিশ”ক স্বস্থ্য-নবক, যমবাজ-চিত্রগ্বপ্তক খমান্যতা দেখনাহা গপকেঁ দেখি ৱঁদনত? ক্ষদা তখন যমবাজে কহৈ ছথি জে দেখনাহা গপ দ্ঃস্বপ্ন ভহ সকৈএ? “রেটিংগ ফাঁব গোডো” ঙশ্বিবক গন্তজাবী নৈ ছিঐ, ৱেকেটে স্বয়ং কহৈ ছথি জে গন্তজাবী “গাঁড”ক নৈ “গোডো”ক ভহ বহন খছি, ওনা ক্রিস্টিযেনিটৌ “মিথোনোজী” খছি সে ও তকব প্রযোগ কবৈ ছথি।

অস্তিত্ববাদী বিচারধারা, মনুক্ষ আ ব্রহ্মাণ্ড সভ নিবর্থক অছি, অবসর্ড অছি।

<u>ইন্ফর্মেশন সোসाइटी, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान</u>

ইন্ফর্মেশন সোসাইটী কিংবা সূচনা-আধারিত-সমাজ একটা ওহেন সমাজ অছি জাহিমে সূচনাক নির্মাণ, বিতরণ, প্রসার, উপযোগ, একীকরণ আ সংশোধন, ই সভ একটা মহত্ত্বপূর্ণ আর্থিক, রাজনীতিক আ সাংস্কৃতিক ক্রিয়া হোইত অছি। আ এহি সমাজক ভাগ হোএবামে সমর্থ লোক অংকীয বা ডিজিটল নাগরিক কহল জাইত ছথি। এহি উত্তর ঔদ্যোগিক সমাজমে সূচনা-প্রৌদ্যোগিকী উৎপাদন, অর্থব্যবস্থা আ সমাজকেঁ নির্ধারিত করैত অছি। উত্তর-আধুনিক সমাজ, উত্তর ঔদ্যোগিক সমাজ আদি সংকল্পনা সঁ ই নিকট অছি। অর্থশাস্ত্রী ফ্রিট্জ মেচলপ একর সংকল্পনা দেনে ছলাহ। হুনকর জ্ঞান-উদ্যোগক ধারণা শিক্ষা, শোধ আ বিকাস, মীডিআ, সূচনা প্রৌদ্যোগিকী আ সূচনা সেবাক পাঁচটা অংগপর আধারিত ছল। প্রৌদ্যোগিকী আ সূচনাক সমাজপর ভেল প্রভাব এতএ দর্শিত হোইত অছি। ই বএহ সমাজ থিক জাহিমে আগ-কাল্হি হমরা সভ রহী বহল ছী।

দ্নূ বিশ্বযুদ্ধ আ ফাসিজমক চুনৌতীক বাদ ১০ দিসম্বর

१९४८ कें संयुक्त राष्ट्रसंघक महासभा द्वारा मानवाधिकारक सार्वभौम घोषणाक उद्घोषणा कएल गेल आ एकरा अंगीकार कएल गेल। ई घोषणा राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आ धार्मिक भेदभावरहित एकटा सामान्य मानदण्ड प्रस्तुत करैत अछि जे सभ जन-समाज आ सभ राष्ट्र लेल अछि।
सूचना समाजपर पहिल संयुक्त राष्ट्र विश्व सम्मेलन दू खेपमे भेल। पहिल १०-१२ दिसम्बर २००३ मे जेनेवा, स्विट्जरलैंड मे आ दोसर खेप १६-१८ नवम्बर २००५ मे ट्यूनिस, ट्यूनिसियामे। एतए मानवाधिकार आ सूचना प्रौद्योगिकीक बीचमे सम्बन्धकेँ मान्यता देल गेल छल। मानवाधिकारक सार्वभौम घोषणाक निम्न बिन्दु सभ सूचनाक समाजसँ सम्बन्धित अछि। (मानवाधिकारक सार्वभौम घोषणाक मैथिली अनुवाद डॉ. रमानन्द झा 'रमण')
अनुच्छेद १२
केओ व्यक्ति कोनो आन व्यक्तिक एकान्तता, परिवार, निवास वा संवाद (पत्राचारादि) मे स्वेच्छया हस्तक्षेप नहि करत आने ओकर प्रतिष्ठा आ ख्याति पर प्रहार करत। प्रत्येक व्यक्तिकेँ एहन हस्तक्षेप वा प्रहारसँ कानूनी रक्षा पएबाक अधिकार छैक।

अनुच्छेद १८
प्रत्येक व्यक्तिकेँ विचार, विवेक आ धर्म रखबाक अधिकार छैक। एहि अधिकारमे समाविष्ट अछि धर्म आ विश्वासक परिवर्तनक स्वतन्त्रता, एकसर वा दोसराक संग मिलि प्रकटतः वा एकान्तमे शिक्षण, अभ्यास, प्रार्थना आ अनुष्ठानक स्वतन्त्रता।
अनुच्छेद १९

প্রত্যেক ব্যক্তিকেঁ অভিমত এবং অভিব্যক্তিক স্বতন্ত্রতাক অধিকার ছৈক, জাহিমে সমাবিষ্ট অছি বিনা হস্তক্ষেপক অভিমত ধারণ করব, জাহি কোনহু ক্ষেত্রসঁ কোনহু মাধ্যমেঁ সূচনা আ বিচারক যাচনা, আদান প্রদান করব।

অনুচ্ছেদ ২৭

১. প্রত্যেক ব্যক্তিকেঁ সমাজক সাংস্কৃতিক জীবনমে অবাধ রূপেঁ ভাগ লেবাক, কলাক আনন্দ লেবাক
তথা বৈজ্ঞানিক বিকাসমে আ তকর লাভমে অংশ পএবাক অধিকার ছৈক।

২. প্রত্যেক ব্যক্তিকেঁ অপন সৃজিত কোনহু বৈজ্ঞানিক, সাহিত্যিক অথবা কলামেক কৃতিসঁ উৎপন্ন,
ভাবনামেক বা ভৌতিক হিতক রক্ষাক অধিকার ছৈক।

অনুচ্ছেদ২১

১. প্রত্যেক ব্যক্তিকেঁ অপন দেশক শাসনমে প্রত্যক্ষতঃ ভাগ লেবাক অথবা স্বতন্ত্র রূপেঁ নির্বাচিত
অপন প্রতিনিধি দ্বারা ভাগ লেবাক অধিকার ছৈক।

২. প্রত্যেক ব্যক্তিকেঁ অপনা দেশক লোক-সেবামে সমান অবসর পএবাক অধিকার ছৈক।

৩. জনতাক ইচ্ছা শাসকীয় প্রাধিকারক আধার হোএত। ই ইচ্ছা আবধিক আ নির্বাধ নির্বাচনমে
ব্যক্ত কএল জাএত আওর ই নির্বাচন সার্বভৌম এবং সমান মতাধিকার দ্বারা গুপ্ত মতদানসঁ
হোএত অথবা সমতুল্য মুক্ত মতদান প্রক্রিয়াসঁ।

অংকীয় বা ডিজিটল বিভাজন একটা জ্ঞানক বিভাজন, সামাজিক বিভাজন আ আর্থিক বিভাজন দেখবৈত অছি আ বিনা ভেদভাবক একটা সূচনা সমাজক নির্মাণক আবশ্যকতা দেখাবৈত অছি, জাহিসঁ সূচনা প্রৌদ্যোগিকীপর বিকাসশীল দেশক সার্বভৌম অধিকার বনএ।

मानराधिकाब आ सूचना प्रौद्योगिकीक मध्य व्यक्तिक एकान्तक अधिकाब सेहो सम्मिलित अछि। विद्वान, मानराधिकाब कार्यकर्ता आ आन सभ व्यक्ति द्वाबा अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता, सूचनाक अधिकाब, एकान्तता, भेदभाव-बहित, स्त्री-समानता, प्रज्ञामेक संपत्ति, बाजनीतिक भागीदाबी आ संगठनक मेनक संदर्भमे आ सूचना आ जनसंचाब प्रौद्योगिकीक सन्दर्भमे एहि गपपब चबचा शुरू भेल अछि, जे सूचना-समाजमे मानराधिकाबकेँ बँल देत आकि ओकबा हानि पहुँचाओत।

ऑनलाइन पत्राचाबक गोपनीयताक अधिकाब, अन्तर्जालिक सामग्रीक सांस्कृतिक आ भाषायी विविधता आ मीडिया शिक्षा। सूचना समाजक तकनीकी अओजाब ओकब अधिकाब आ स्वतंत्रतासँ नाभान्वित होएत अछि आ समाजक समग्र विकास, अधिकाब आ स्वतंत्रताक सार्वभौमता, अधिकाबक आपसी मतभिन्नता, स्वतंत्रता आ मूल्य निरूपणमे सहभागी होएत अछि।

एहिसँ सूचना, ज्ञान आ संस्कृतिमे सबल पगठक वातावबण बँनैत अछि आ ई उँपयोगकर्ताकेँ वैश्विक सूचना समाजक अभिनेताक रूपमे पबिणत कबैत अछि। काबण ई उँपयोगकर्ताकेँ पहिनेसँ बेँशी अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता आ नव सामग्री आ नव सामाजिक अन्तर्जाल-तंत्र निर्माण कबबाँक सामर्थ्य दैत अछि। एहिसँ एकटा नव विधि, आर्थिक आ सामाजिक मॉडेलक आवश्यकता सेहो अनुभूत कएल जा बहल अछि जाहि मे साम्मी कर्तव्य, ज्ञान आ समम्म आधाब बँनत। बँचाक हित एकटा आब चिन्ता अछि जे पैघक हितसँ सर्वदा उँपब बखबाँक चाही।

আধুনিক সমাজক আর্থিক, সামাজিক আ সাংস্কৃতিক ধন একত্র কবরাঁক প্রবৃত্তি সূচনা সমাজমে বঢ়ল অছি আ প্রৌদ্যোগিকী একটা আধাবভূত বেরোজগাবী অননক অছি। গবীরী, মজদূবক অধিকাব আ কল্যাণকাবী বাজ্যক সংকল্পনা, নাভ–হানিক আগাঁ কতহু পাছাঁ ছূটন জা বহন অছি। আরঁ মাত্র কিছুএ অভিনেতা চাহী, প্রকাশিক নোকনি সেহো মাত্র কিছু বেশী বিকএবরনা পোথীক নেখকক প্রচাব কবৈত ছথি। যৈহ স্থিতি বংগমংচ, পেংটিংগ , সিনেমা আ আন–আন ক্ষেত্রমে সেহো দৃষ্টিগোচব ভহ বহন অছি। সূচনা সর্বদা নাভকাবী নহি হোগত অছি। ও মাত্র কনা, গ্রংথ ধবি সীমিত নহি অছি ববন সঙ্গা বাঁজাব আ প্রাযোজিত সর্বেক্ষণ বপটে সেহো এহিমে সম্মিনিত অছি। সময আ স্থানক বীচক দূবীকেঁ ও কম কবৈত অছি আ দুনূক বীচমে একটা সন্তুনন বনবৈত অছি।

মানবক গবিমা মানবক জন্ম আধাবিত সামাজিক স্থানসঁ হটি কহ মানবক গবিমাক অধিকাবপব বন দৈত অছি। ক্ষত্রি আ স্ত্রী–ক্ষত্রি আন্দোনন এহি দিশাক প্রযাস অছি। সূচনাক স্বতংত্র উপযোগ সীমিত অছি, নোকক একান্ত খতম ভহ বহন অছি। বিন গেট্সসঁ জখন হুনকব ভাবত যাত্রাক ক্রমমে পূছন গেন ছনহি জে মাগএ্রাস◌ॉফ্টক এক্স–ব◌ॉক্স ভাবতমে পাগবেসীক ডবসঁ দেবীসঁ উতাবন গেন তঁ ও কহনে বহথি জে মাগএ্রাস◌ॉফ্ট কহিযো কোনো উপোদ পাগবেসীক ডবসঁ দেবীসঁ নহি আননক। স্পীম আ পাগবেসীক ডব খতম হোএবাঁক চাহী।

সূচনা সমাজ বৈহ সমাজ ছী জকব বীচমে হম সভ বহি বহন ছী। নোকতংত্র আ মানবাধিকাবক সম্মান

সূচনা–সমাজ আ উঁত্তব সূচনা–সমাজমে হোগত বহত। অভিব্যক্তিক স্বতংত্রতা, একান্তক অধিকাব, সূচনা সাম্মী কববাঁক অধিকাব আ সূচনা ধবি পহুঁচক অধিকাব জে সূচনাক সংচাবসঁ সম্বন্ধিত অছি, ও সভ বাজ্য দ্বাবা আ সূচনা–সমাজক বাঁজাববাদী ম্ব্কাবক কাবণ খতবাক অনুভূতিসঁ ত্রস্ত অছি।

অন্তর্জনি নোকক মীডিআ অছি আ একটা এহন প্রণালী অছি জে নোকক বীচ সম্বাদ স্থাপিত কবৈত অছি। এহিসঁ সংচাব–মাধ্যমক মঠাধীশ নোকনিক গঢ় ঠ্টৈত অছি।

অন্তর্জনিমে সামান্য রূপসঁ সম্পাদক নহি হোগত ছথি। এতএ নোক রিষযক আ সামগ্রীক নির্মাণ কএ স্বযং ওকব সংচাব কবৈত ছথি। এহিসঁ কতেক বাস সামাজিক সম্বাদক প্রাবম্ভ হোগত অছি। হ্মদা কতেক বাস সমাজ–রিবোধী সামগ্রী সেহো অবৈত অছি। তঁ কী ওহিপব প্রতিবন্ধ হোএবাঁক চাহী। হ্মদা জে স◌ॉফ্টরেযবক মাধ্যমসঁ মশীনকেঁ সামগ্রীপব প্রতিবন্ধ নগেবাঁক অধিকাব দেবঁ, তখন ও অভিব্যক্তিক স্বতংত্রতাপব পৈঘ আঘাত হোএত।

বৌদ্ধিক সম্পদাক অধিকাব নেখককেঁ মৃত্যুক ৬০ বঁবখ বাঁদো প্রকাশন আ রিতবণক অধিকাব দৈত অছি। অন্তর্জনিমে সেহো পাগবেসীকেঁ প্রতিবন্ধিত কবএ পড়ত আ কমসঁ কম নেখকক মৃত্যুক ২০ বঁবখ বাঁদ ধবি নেখকক অধিকাব ওকব সামগ্রীপব বহএ, সে ব্যবস্থা কবএ পড়ত। হ্মদা পেটেন্টক বেঁশী প্রযোগ রিকাশসীন দেশক সূচনা অভিগমনমে বাঁধক হোএত আ প্রৌদ্যোগিকীক রিকাসমে সেহো বাঁধা পহুঁচাওত।

ক◌ॉপীবাগটসঁ সাংস্কৃতিক রিকাস হ্মদা হোএত, জেনা

সংগীত, হ্নিল্ম, ঋা চিত্র-শৃংখনা(কॉমিক্স)ক রিকাস। ডিজিটৈন রাতারবণমে প্রতিঙ্গ্নতিক রিনা ঋর্হাঁ ঋন্তর্জানিপব সেনো সামগ্রী নহি দেখি সকর্, সে ঋঁফ-নাগন কॉপীবাগট ঋা ঋঁননাগন কॉপীবাগট দ্নূ মে থোড়রেক ঋন্তব ঋচ্ছি। ঋঁননাগন কॉপীবাগট প্রতিঙ্গ্নতিকেঁ সেনো প্রতিরঁক্ষিত কবৈত ঋচ্ছি। ঋা প্রতিঙ্গ্নতি কএন সামগ্রীকেঁ দোসব রস্তুমে জোড়র্ রা সংশোধিত কবর্ সেনো রঁজ্ঞ সবন ঋচ্ছি। সে নাম ঋা চিত্র রিনা ওকব নির্মাতাক ঋন্বমতিক নহি প্রযোগ নোঋএ, দোসবাক ব্যক্তিগত রাতনাপ-চৈটিংগ-মে হস্তক্ষেপ নহি নোঋএ ঋা দোসবাক রিরুদ্ধ কোনো এহন রঁযানরাজী নহি নোঋএ জাহিসঁ কোনো ব্যক্তিক রিরুদ্ধ গনত ধাবণা রঁনএ। তহিনা নৌকবী-প্রদাতা কোনো প্রকাবক গনেকট্রॉনিক উঁপকবণ ঋপন কর্মচাবীক নিযন্ত্রণ নেন নগরৈত ঋচ্ছি তঁ সে ঋন্তবষ্ট্রীয শ্রম সংঘক দিশা-নির্দেশক ঋন্বরূপ নোএরাক চাহী। গা-পত্রমে ঋনপেক্ষিত সন্দেশ ঋা চিকিৎসকীয বিপোর্টকে ঋনপেক্ষিত সংগ্রহ ঋা উঁপযোগ সেনো মানবাধিকাবক হনন ঋচ্ছি।

ঋন্তর্জানিক উঁপযোগ হ্মদা সীমিত ঋচ্ছি, কাবণ রঁহুত বাস সামগ্রী ঋা তংত্রাংশি মংগনীমে উঁপনরঁধ নহি ঋচ্ছি ঋা মহগ ঋচ্ছি, ডিজিটৈন রিভাজন শিক্ষাক স্তবকেঁ ঋাব রেঁশী দেখাব কবৈত ঋচ্ছি। শাবীবিক শ্রমক রঁদনামে মানসিক শ্রমক এতএ রেঁশী উঁপযোগ নোগত ঋচ্ছি, সে গা ঋাশা বহএ জে স্ত্রী-ঋসমানতা সূচনা-সমাজমে ঘটৈত। হ্মদা সর্বেক্ষণ দেখরৈত ঋচ্ছি জে মহিনাক পগঠ সূচনা প্রৌদ্যোগিকীমে কম ছন্হি।

গনেকট্রॉনিক নাগব্রেবী ঋা ব্রেন-গনেরঁন কএন/ ধ্বনি-গনেরঁন কএন কম্প্যূটব স্ক্রীন/ গনেকট্রॉনিক নাগব্রেবী

रिकलांग आ अक्षम रिकलांग लेल घर पर बनि जा–वाणिज्य करबाक सहायता दैत, मुदा एहि क्षेत्रमे कएल शोध आ ओकर परिणाम महग बनबाक कारणसँ ओतेक लाभ नहि दऽ सकल अछि।

बाल, वृद्ध, रिकलांग, स्त्री, कामगार, प्रवासी–कामगार आ दोसर सामाजिक रूपसँ अबलन रक्षा सूचना समाजमे सेहो अपनाकेँ अबलन अनुभव करैत छथि।

सार्वभौम मानवाधिकार घोषणाक अनुच्छेद १२ एकान्तता [भारती संविधानक अन्तस्थता पास कएल कोनो विधि जे संसद द्वारा पारित होइत अछि, द्वारा सभ रक्षित अछि], अनुच्छेद १+ एकान्तमे शिक्षण आ विचारक स्वतंत्रता [भारती संविधानक धारा २७(१)], अनुच्छेद १९ कोनहु क्षेत्रसँ कोनहु माध्यमेँ सूचना आ विचारक याचना, आदान प्रदान करबाक अधिकार [भारती संविधानक धारा १९ (a)], आ अनुच्छेद २१ (१) [भारती संविधानक धारा ३२७], अनुच्छेद २१ (२) [भारती संविधानक धारा ३२६] आ अनुच्छेद २१(३) [भारती संविधानक धारा १६(१) आ १६(२)], अनुच्छेद २७ [भारती संविधानक धारा ७१(a)],

वैज्ञानिक विकासमे आ तकर लाभमे अंश पएबाक अधिकार दैत अछि, संगे प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन सृजित कोनहु वैज्ञानिक, साहित्यिक अथवा कलामेक कृतिसँ उत्पन्न, भावनामेक वा भौतिक हितक रक्षाक अधिकार सेहो दैत अछि। एहि आधारपर सूचना–समाजमे मानवाधिकार केँ देखैत सूचना आ प्रसारण प्रौद्योगिकी द्वारा सामग्री निर्माण तेना होएबाक चाही आ कॉपीराइट आ बौद्धिक सम्पदा अधिकार सेहो ताहि तरहेँ होअए जे ओहिसँ सार्वभौम मानवाधिकार घोषणाक बिन्दु सभक अवहेलना

नहि होइत रहल ओकर आदर होइत ।
सार्वभौम मानवाधिकार घोषणाक अनुच्छेद १२ एकान्तता [भारतीय संविधानक अन्तर्गत पास कएल कोनो विधि जे संसद द्वारा पारित होइत अछि, द्वारा सभ रक्षित अछि], अनुच्छेद १+ एकान्तमे शिक्षण आ विचारक स्वतंत्रता [भारती संविधानक धारा २३(१)], अनुच्छेद १९ कोनहु क्षेत्रसँ कोनहु माध्यमेँ सूचना आ विचारक याचना, आदान प्रदान करबाक अधिकार [भारती संविधानक धारा १९ (a)], आ अनुच्छेद २१ (१) [भारती संविधानक धारा ३२३], अनुच्छेद २१ (२) [भारती संविधानक धारा ३२६] आ अनुच्छेद २१(३) [भारती संविधानक धारा १६(१) आ १६(२)] :-
अनुच्छेद २७ [भारती संविधानक धारा ३१(a)]

<u>अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार –अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन</u>

अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन : अरविन्द ठाकुर(१९३४–) आ देवशंकर नवीन (१९६२–) दू टा एहन कथाकार छथि जे कनियाँ काकी आ बुच्ची दाइसँ हटि कऽ मैथिली कथा लिखै छथि, ऋदा कम लिखै छथि,

খবৰিন্দ ঠাকুৰ তঁ ৰঁহ্তে কম, কাৰণ একহকে টৌক কথা সংগ্ৰহ খাগ-ধবি খাএন ছন্হি, খন্হাবক বিবোধমে- খবৰিন্দ ঠাকুৰক খা হাথী চনএ ৰঁজাব - দেৰশংকৰ নৰীনক । খবৰিন্দ ঠাকুৰক সশঙ্ক পক্ষ ছন্হি বাজনৈতিক-খার্থিক কথা সভ তঁ দেৰশংকৰ নৰীন খপন ভাষিক শৈল্পকৌশিক বিশানতা নেনে সোন্মাঁ খবৈঁ ছথি। মৈথিনী কথাক জড়তা কম তঁ হোগত খছি ক্ষদা ৰঁহ্ত বাস খাৰশ্যক পক্ষ কম নিখৰাঁক খা গৰঁদী মাবনে (মৈথিন গৰঁদী) বহৰাঁক কাৰণ ছটি জাগত খছি। দেৰশংকৰ নৰীন একক প্লাঁটৈ ৰেঁব-ৰেঁব সোন্মাঁ খনৈত ছথি, জেনা ঋণখৌক খা গজোতমে প্ৰতোহ্ক সম্বৰকেঁ মাবৰাঁক চৰ্চ খা এহি তবহক খানো এম, জে খাভাস দৈত খছি জে একেটৌ কথাক প্লাঁটৈসঁ কৈক টৌ কথা ৰঁনন খছি, তঁ উঁস্সৱ জমীনক উঁত্তৰাধিক প্লাঁটৈ, জকবা কথাকাব নীক জেকাঁ উঁপযোগ নহি কঽ সকনাহ। উঁত্তৰাধিক প্লাঁটৈক হম এহি দ্বাৰে চৰ্চা কএনহুঁ কাৰণ ওহি প্লাঁটৈক খন্বভৰ সভ মৈথিনকেঁ ছন্হি খা ওহি খাধাবপৰ ক্ষমাৰ পৰন একটৌ খবিস্মৰণীয কথা পগঠ (খঁতিকামে প্ৰকাশিত) নিখি দৈত ছথি জে হ্নকৰ যশ একমাত্ৰ খহী কথাক কাৰণ খক্ষয বখৰাঁমে সমৰ্থ খছি জেনা চন্দ্ৰধৰ শৰ্মা “গুনেৰী” কেঁ উঁসনে কহা থা কথা বখনকন্হি। খবৰিন্দ ঠাকুৰ কথা নিখৈ ছথি খা জে নিখৈ ছথি সে সামাজিক-বাজনৈতিক-খাৰ্থিককেঁ তেনাকেঁ জোড়া কঽ জে মৈথিনী কথাক একটৌ বিঞতাক পূৰ্তিক প্ৰযাস কৰৈত খছি, ক্ষদা ৰঁহুত কম নিখৈ ছথি সে পাঠক পিযাসন বহিযে জাগত খছি, ঘটৈ খপূৰ্ণে বহৈত খছি।

খন্হাবক বিবোধমে- খিস্সা সিযাব-যাব- বামনাবাযণ মহৰাজ-এক্স এম.এন.এ. খা ভূতপূৰ্ব চেযবমৈন সবকাবী

প্রকাশিন কমিটী, তহিযা কোনো ঘোটোনামে মুখ্যমংত্রীক ভাগ বামাধাব পাঁডে,এম.এন.এ. হিনকা ৰচেনে বহথিন্হ। গবীৰদাস খাজাদ জিনা কমিটীক মহামংত্রী, খনেক ৰর্খ ধবি সোশিনিস্ট খা খাৰ মহাসভা পার্টীমে, ৰেটা সেহো ট্রেনমে ডকৈতী ধবি কবএ নাগন ছন্হি। শানিগবাম বায খা নখন যাদর- মনৰঢ় সভ। মীটিংগ। বাজনাথ ঝা খা জীৰছ মংডনক মুঁহে বাজনীতিপব কিছু পৈবাগ্রাফ খৰৈত খছি। সদানন্দ রিদ্রাহী মহাসভাপার্টীক রিবোধী দনক স্বযংভূ নেতা তোহফান সিংহক শাগির্দ খা হ্নকা সংগ একটা ৰম রিস্ফাটমে দহিনা হাথ গমেনে একটা জ্খান। হ্নকব খহসোচ কবৰ, বঘ্ৰংশ মংডনক জিনা কমিটীক ভাগস প্রেসিডেন্ট ৰনৰামে পাঁডেজীক দাঁর- ৰৈকরাডিকেঁ জগহ ভেটৰাক চাহী, খা চৌধবীজীক প্রতিষ্ঠাকেঁ দেখি হ্নকব চ্প ভএ জাএৰ! বাজমংগন শ্রীরাস্তর খা সতীশ সিংহ পবমাব (ছত্তীস ৰাৰূ ছত্রী- মনৰঢ় শঙ্কাবনী)। একারন গোষ্ঠ মেম্বৰবৰনা সংস্থা ধেনা কমিটীক সর্বেসর্বা পবমাবজী। শ্রীরাস্তর খা পবমাবক জোড় া মুখ্যাত- খনগ-খনগ বহনাপব দ্ন্দ্র গোষ্ঠে এক দোসবাকেঁ গাবি পঢ় ৈত ছথি মুদা বহ ছথি সংগে। পূর্ব প্রখন্ড খধ্যক্ষ শিনিচব "শিনি"-গাজা খাদিক খনরবত সেরী খা রর্তমান হবা খধ্যক্ষ গণেশ গ্বৰমৈতা- পেটীশিনৰাজ। চটর্জী দা- পটনাসঁ ফোনপব বহ ছথি- চৌধবীজী খা পাঁডেজীক রিবোধমে চৌরেজীক সংগে ফ্রংটক নিযাব ছনি। শিনি-গ্বৰমৈতাকেঁ পবমাব গপমে ওঝবা নৈত ছন্হি তঁ ক্যা গোষ্ঠে দ্নূ গোষ্ঠেকেঁ হ্সিযাহী কহ সোব কবৈ ছন্হি খা ত্রাণ দিযাবৈ ছন্হি। জটাশংকব মনিক প্রসিদ্ধ মাখন ৰাৰূ (সভ নষ্ট রোন্টপব হিট হোখএৰনা সনাগ-বিংচ- মনৰঢ় শঙ্কাবনী)। খপনাপব

ध्यान आकर्षित करबाक लेल पारसमणि चौधरीकेँ मोन करैत छथि आ हुनकर प्रणामक उत्तर तीन प्रणामसँ दैत छथि। हुनकर काज रहैत रहौक बाबू (सम्प्रदायवादी पार्टीक मेम्बर) नहि गेल छन्हि आ जीप खराप छन्हि- द्सधरहैनी रनाक पहिते करबाक छलन्हि से बिकरी मँगबाबए पड़लन्हि। च्यवनप्राश खाइते रहैत छथि- बाघोम्बरसँ होमियोपैथिक इलाज करैत छथि। सीता बाबू महासभा पार्टीक प्रखण्ड अध्यक्ष (माखन बाबूक रहि- मनरहू॒ शेखीबनी)। स्वरोधनारायण सिंह प्रसिद्ध स्वरोधजी। एक्स.एम.एल.ए. आ एक्स अध्यक्ष जिला महासभा पार्टी (समर्थक शेखीबनी- जिलाक गाँधी, विरोधी शेखीबनी- नटवरलाल आ मनरहू॒ शेखीबनी- खुद्दरबा)। सादगी रहन-सहन, विनम्र। रामाधार पांडेजीक भाए मुख्यमंत्री शिवाधार पांडेक प्रति समर्पित। मुदा चौधरीजीसँ रहैसी सहबाक सजा मुदा शिवाधारजी हिनका पार्टीक उम्मीदबारी वापस लेबा लेल कहि कए देलखिन्ह। बाजीव शर्मा- गनतन्त्रमीक शिकार- जे छल-प्रपंच, फूसि आ विश्वासघातक विनु राजनीति कएल जा सकैत अछि। ठाँहि-पठाँहि रहैत छथि आ से मनरहू॒ सभ कहैत रहैत छन्हि। स्वरोधजीक कहनापर जे शिवाधार बाबूक फोन अएलन्हि तेँ हुनका नाम वापिस करए पड़लन्हि, ओ कहैत छथि जे एहि बूचा-लफंगा सभक सबदबाक गोल्हड़ी झाड़ि देबनि हमबासभ। ओतहि वामसोगाबथ मंडल सेहो छथि, स्वतंत्रता सेनानी मुदा सम्मान-पेंशन अस्वीकार कए चुकल छथि। किएक कहैत छन्हि तँ कहैत छथिन्ह जे जाउँ बाउँ जाउँ, ओ गप स्वप्नब ठाकुरकेँ सिखेबन्हि जे मुनिस्टैर सभक केश-दाढ़ी बनबैत स्वराजी पेंशन हथिआए लेलक-ए। आ तखने अनघोल,

फेर रौजी मारि नेनन्हि चमोक्कनि ! आ माथन रौर्ब्रू रॅड़का गाड़ ाँसँ उँतरैत बामाधार पांडेक गबामे माला पहिरा दै छथि। फेर एकाएकी माला पहिरेबाक चलन आ फेर एकाएकी भाषण–भाख। आ ओम्हर बामसोगाबथ मंडलक सपनामे कारी–कारी भयाबह आकृति सोनह्ला सपनाकेँ चारू कातसँ घेरि नैत छन्हि। पियासल पानि–बामचबनक खेती कबरॅ, आरॅ हबरौमी ऋदा ओकब रॅठौ नखनाक माथपब छैक आ तखने ओकब गौना होएग छै आ अबैए नाबायणप्वबरौनी। लेखक बा कथाक सूत्रधाब कनियाँक ऋँहदेखाग लेल जागत छथि आ देखै छथि ओकब अपाब रूप–बाशि। नखनाक काकी रॅबियारौनी ठङ्गा कबै छन्हि आ ओ रॅहाब भइ जाग छथि। नाबायणप्वबरौनी एक दिन सूत्रधाबक पएब जाँतइ नगै छथि। रोपनी, डोभनी, कठैनी आ कमौनी, कोनो काजमे नाबायणप्वबरौनीक जोड़ नहि। एक दिन अन्हबगबे सूत्रधाब खेतमे कठैनी कबरॅए रिंदा होएग छथि तँ आमक कलम नग नाबायणप्वबरौनीक आत्तब ठोब ह्नकब गान, माथ आ कंठपब निशान छोड़ि दै छन्हि। ऋदा तखने घबैया नोकब सबज्गरौक अरौज अन्हाबसँ अबै अछि आ रॅज्जब खसारॅथ्न भगरान एहि द्समनमापब– कहैत निबाशा, नानसा आ घृणासँ ऋंडारौब नाबायणप्वबरौनी आगाँ रॅढ़ि जाग छथि। ओम्हब नाबायणप्वबरौनीपब डाकनी सराब छै से घोल होएगए, देहपबक कपड़ा–रॅस्तुब ओ फेकि नैए। मोतिया द्साध दारू पिबैए, रॅबहम रौरौक पबसादी आ फेब भगता रॅनि सात टौ काँच कबची नाबायणप्वबरौनीक देहपब तोड़ि दैत अछि। आ डाकनीकेँ हबद्आबक श्मशान पीपब गाछपब भगा दैत अछि ! भागि जागए

নাবাযণপ্ববৰাঁনী। দোসব ৰেঁব নখনাক ৰিযাহ হোগ ছৈ ক্ষদা এহি ৰেঁব সূত্রধাব এগাবহ গো টৈকা খনকা দিযা পঠা দৈ ছথি। কনিযাঁক হোনহাবিক খৰবি স্বনি বামচবন প্রসন্ন ভেন ক্ষদা নখনা খপন কপাব ফোড়ি নৈত খছি, কাবণ ও নামবদ খছি। নাবাযণপ্ববৰাঁনী...নছমী ছনৈ, ৰেঁকসূব, ৰেঁচাবী, খভাগনি। খন্মাবক ৰিবোধমে- হো হন্না। কথাকব রা সূত্রধাব ৰহবাগ ছথি খা পহুঁচৈ ছথি খনাউদ্দীন নগ। কহৈ ছনি খনাউদ্দীন, ক্ষসনমান ক্ষজড় া। জনাবদন চৌধবী ওকব যাব। ওকবে টৈনমে ৰিক্ষখা ওকব এহি যাবক ভাগকেঁ গাবি পঢ়নকৈ। ওকব ৰেঁহ্দপনীক শিকাগত নহ কহ জনাবদনক ভাগক খাএৰ, ভৈযা কহি সোব পাবৰ, ক্ষদা তখনে ৰিক্ষখাক মাবৰ খা তখনে ওকব ঘবক মৌগী সভক ওকবা গাবি পঢ়ৰ শ্বৰু ভেনৈ। খা উনটৈ হিন্দূ- ক্ষসনমানক শৈগূফা সেহো ছোড় বহৈ। কোন গজ্জতি বহি গেনৈ এহি টৈনক। খাকি তখনে, চাৰু দিস খপন ডবাওন ছাঁহ পসাবনে খন্মাবক ছাতীকেঁ চীবৈত ৰিজনীক জগমগ গজোত দূব-দূব ধবি পসবি গেন। ঢাঁচা- ১৯৯২- কথাক সূত্রধাবক চিঠ্ঠী। স্বীকাবোক্তি জে জে কিছু নিখা গেন ছন্হি সে রাতারবণক দৰাৰমে। হাননহিমে জ◌ॉন্ডিস ভেন ছনন্হি, জীহকেঁ বাস নগা কহ পড়ন ছনাহ। বৌদ, গবদা খা ধুঁখাসঁ খকছু ছথি। একটৌ খাব ৰিচিত্র ৰেঁমাবী, দেহমে তেজ হউহৈটি খা চমড় াপব নহুঁ-নহুঁ চকত্তা উভবহ নগৈ ছন্হি। এক দিন সহবসাসঁ ঘুৰৈ ছনাহ খাকি স্কূটৈব খবাপ ভহ গেনন্হি। মিস্তবী খাধা ঘণ্টামে স্কূটৈব ঠীক কবৰাক গপ কহনন্হি ক্ষদা পার্টৈ-প্ববজা খোনি কহ ছিড়ি যা দেনকন্হি খা চাবি ঘণ্টা নগনন্হি। স্বপৌন ঘুবি ড◌ॉ. দাসক

क्लिनिक गेलाह, होमियोपैथिक दवाइक वन्न अछबि केनकन्हि मुदा घंटो लागि गेलन्हि। एक रवि साञ्झमे घुरैत काल सेहो एहिना भेलन्हि। एक तँ पसीनसँ सिखोह आ देहक हाड़ कंपकपाइये रहल छल आ सिहकैत हवा ! गोष्ठी, प्रा. राजेन्द्र, डाॅ मुखर्जी आ के.के.इन्स्टीच्यूट ऑफ मैडोनाॅलीक प्रिंसिपल झा। प्रा. राजेन्द्रक डाॅ मुखर्जीसँ कहलापर जे इलाजक फीस पाँच टका तँ दऽ देलें मुदा दवाइ देबए पड़त मुफितया, फिजिशियन सैम्पल। ताहि पर मुखर्जीक कहबै जे मेडिकल रिप्रेसेन्टेटिव सभ हुनका घासो नहि दै छन्हि आ एहि लेल तँ डाॅ. दास लग जाए पड़त। फेर अयोध्यामे बाबरी मस्जिदक ढ़ाँचाक ध्वस्त हएबै। सूत्रधारक देहक कँपकँपी, हड़हड़ी, चकता आ सूजन फेरसँ। कोनो प्रत्यक्ष कारण नहि रहए एकर, मुदा तैयो हुनकर देह एकरा भोगने छलन्हि। मूस–ओ आ ओकर दवाइक दोकान। लाका ड्रग इंस्पेक्टर एहि दुर्गा पूजामे पाँच सए टाका सलामी लऽ गेलै। दोकान खसे जेकाँ लेने छै। अन्नज रैसे छै दोकानपर। त्रुमिहार पेंच भिड़ाओत आकि दोकान करत ! रैंकक अवला लोन, घरक पाँच सालक बिजलीक बिल।..जेठका सार लागश्वरमे एकाउन्टेन्ट छै, सलगर लोकरी आ सेहन्तगर कनियाँ छै। जे ओ जादूगर रहैत आ तखन गिली-गिली फू आ अलाउद्दीनक चिराग जे रहितै ओकरा हाथमे तखन ! मुसरा तँ परेशान केने छै, खाइतो काल, मुदा एखन ओकरा एक्को बत्ती तामस नहि उठै छै। ई शहर अन्नमल्लनसँ जिला मुख्यालय भऽ गेल छै, जमीनक दाम बढ़ि गेल छै। जमीन बेचि सभटा कर्जा-बर्जा सधा देत। निम्नक

ৰঁদনামে পাবদৰ্শী ৰ্ব্নৰ্ব্না খা ৰিভিন্ন খাঙ্গতিক খা ৰূপক মূস , ক্ষতৰৈত, নড় ৈত , নচৈত, প্ৰেম কৰৈত, পোথী পঢ় ৈত খা বম্মী খেনাগত মূস। দোসব ৰেঁব ৰঁড়কা ৌ ৰ্ব্নৰ্ব্না, মূসক কাবণসঁ ষ্লগ। মেহনতকশী মূস ৰিহবি ৰঁনৰৈঁত খছি ক্ষদা সাঁপ ওহিমে বহৈত খছি। খচকচাক২ ও ডঁঠি গেন। স্বৰ্গীয পিতাক চিত্ৰ দেখৈত খছি। পূৰ্বজক খৰ্জিত সম্পত্তিক ডঁপযোগ সাঁপে জেকাঁ কবত ? কেখাবীমে খনেকখা ঘাস–পাত খ্বপীসঁ সাফ কব২ নাগন। প্ৰজাতংত্ৰ পবিকথা– একৌ হত্যা খা দূ ৌ ঘবমে ডকৈতী। কমন ক্ষমাব শৰ্মা এহি খৰঁবিকেঁ দেখৈত খছি, সেন্সৰ্ড সন খৰঁবি। ঞ গপক চৰ্চা নহি জে ও ড ৗকৈব কে.পী.ভগত সেরানিবৃত্ত ছন খা মামূনী ফীস নৈ ছন। ওকব ঘবমে ডকৈত সভ গবীৰঁ মবীজ খা ওকব পবিজন ৰঁনি পৈসন ছন। ওহি পত্ৰকাবপব কানাৰাঁজাবী খা মিনাৰৈক কেস এখনো নৈকন খছি সে ও কোনা নিখিতএ জে ওহি ঘবসঁ প্বনিস থানা খগৰেঁ এক সয ডেগপব খা খাবক্ষী মহোদযক নিরাস খগৰেঁ সাঠি–সত্তবি ডেগক দূবীপব ছনৈ। ফেব ড ৗকৈব ওহিঠামসঁ ও সভ বাষ্ট্ৰপতি পদক প্ৰাপ্ত হানহিমে বিৗযব ভেন শিক্ষক ৰিঞ্ৰম প্ৰসাদ ৰমাকি ঘব পহুঁচি গেন, ডকৈতী সেহো কেনক খা খেনাগ ৰঁনৰাঁকেঁ সেহো খএনক। ৰিঞ্ৰম ৰাঁবূঁক ভাগ গজানন ৰাঁবূ খাবক্ষী খধীক্ষকক ওহিঠাম নজবি ৰঁচা ক২ পহুঁচি গেনাহ। ক্ষদা তৈযো কিছু নহি ভেন। খস্পতানক হাতাক ক্ষখ্যদ্বাবপব নোক সভ জ্টি গেন। মধ্বেশী কিশোব দ্বিৰেদীক কেমিস্ট খা ড্ৰগিস্ট এসোশিযেশন একবা নেহত্ব দ২ বহন ছনৈ। স্কূনসঁ ঘ্বৈত ৰেঁদবা সভকেঁ কিছু ভ২ জায..। ৰঞ্জা সভ শ্বৰু– দনান ঞশ্বিব চৌধবী, ভড় ২খা

ফ্সবনীধব খগ্ররান, মটিযা তেন ফেংটি কঽ পেট্রোন ৰেঁচিনিহাব পত্রকাব,চোবিক মান খবীদ–বিঐী কেনিহাব নগবপানিকা চেযবমৈন ৰ্চনূ ৰাৰঁ, ফ্সনীমক গ্নপাসঁ চাবিটা সংতানক ৰাপ পচীস বর্ষীয সেঠানীক সাঠি বর্ষীয পতি কানাৰজবিযা সেঠ কনকধাবীমন– ধ্বনি বিস্তাবক যংত্রপব ওকব হঁফসৰাক স্বব ছোট–মোট খন্দড়ক ভ্রম দৈত ছন। ৰাব এশোসিএশনক খধ্যক্ষ ভ্তাননাথ সিংহ জে খূনী খা ডকৈত সভ পৈববী কবৈ ছথি, ৰাঢ়া প্রভাবিত গনাকাকেঁ ডিজনীনৈন্ডমে পবিবর্তিত কবৰাক ফ্সথত যোজনা প্রস্তুত কবএৰনা গংজেড় া ছটভৈযা গ্নঙ্গানন্দ তিবাবী..গোবকা ডাকটব ধবমচন্দ সহায জকবা ৰ্ঘন্নক নোক সভ ডী.সী.এস. মানে দাৰু, ছৌড় া, সাব ৰহানচো কহৈ ছথি..ওকব ধীপন–তৰধন শৈঙ্ক সভ। ফেব ভীড়ক নেতৃত্বহীন হোএৰ, প্রতিনিধিমংডন নহি জন–সমূহ দ্বাবা ডাগবেকট বার্তা কবৰাক গপ, খা এহিনামে টৈবেসপব ওনড ফ্াক্সক খন্তর্বাষ্ট্রিয সমস্যা সভপব ৰকথোথী। তখনে মোটবসাগকিনক একটা সবাব ভীড়কেঁ নিযংত্রণমে নেমএ চাহৈত খছি, ও ৰঁদা একটা সংপ্রদাযবাদী দনক নব্যতম বংগৰুট ছন। মধ্বেশজী সাবধানী ৰবতৈ ছথি। একটা ধগ্গব খা টটকা জনমন নাবা কমন খা খনকব ধ্যান খাগ্নঠ কবৈত ছন্হি। ফেব খৰেঁ ছথি প্রদীপ এ্রান্তিকাবী জে সমাজসেৰাক ৰশীভূত খভিযন্ত্রণক পঢ় াগ ছোড়নে ছথি বা নিশাৰাজী খা ৰনাকোবক কাবণ নিষ্কাসিত কএন গেন ছথি। খন্বমংডনাধিকাবীক জীপপব খাএ্রমণ হোগত খছি। প্রদীপ এ্রাংতিকাবী কহৈত খছি– কোযনা নযসেংসমে সাত হজাব টকা চাহী হবামজদাকেঁ। দেখনহক তূফান। মধ্বেশজী কিছু খাব গোটেকেঁ সংগমে নঽ নেনে ছনাহ জেনা গজেন্দ্রজী– স্থানীয ক্ানেজক

व्याख्याता आ व्यापारी संगठनक माधवजी आ गुञ्जमोहनजी। बिना अप्रिय घटनाक भीड़ गाँधी चौक आ जयप्रकाश चौक पहुँचल। तखने मिठाइ दोकानपर बैसलसभ गोल्डिया जे क्रिकेट सेहो खेलाइ छल आ तद्रूमे बॉॅलक स्वरिधाक ध्यान बखै छल..बैटपर आबि गेलै तँ छक्का आ नहि तँ क्लीन बोल्ड... से सबकारी गाड़ीकेँ देखि मार..आगि लगा दे.. बाजि उठल। किछु लोक गाड़ी दिस दबरब मारलक, कदा गाड़ीक चालक गाड़ी भगौलक। न्याय चौक वा लबाब चौक पर विश्व हिन्दू सेनाक सेनानी सभ बजबंगबलीक स्थापना कऽ देने छल कारण तबाजू आ आँखिपर पट्टी बला मूर्ति नहि लागि सकल बहए। बजबंग चौकक बोर्ड लागि गेल बहए। प्रशासनमे ओहि समए दलित अधिकारी सभक बाहुल्य छलै आ ओ सभ चौकक नाम अम्बेदकर चौक करए चाहि छलाह से ओ सभ बजबंगबलीकेँ गिरफ्तार कऽ थाना लऽ गेलाह जतए स्वलै छियै आइयो लोकर पूजा कएल जाइत छन्हि। से ओ चौक नगरपालिकाक पार्श्वमे बहलासँ आब नगरपालिका चौक कहाइत अछि। अनुमंडलाधिकारी फोर्स लऽ कऽ एतए आबि गेल आ सभ मिलि लाठी भाँज लागल। प्रलिसबला सभ दूर धबि दबरब मारि बहल छल। कदा फेर लोक सभ गर धऽ कऽ बोड़ा फेकब प्रारम्भ कएलक। प्रलिस असराब भए भागल..एकटा हिटलर कट मोँछबला गंस्पेक्टर आएल.. बबगाँही सभ ओकर गाड़ी लऽ भागल बहै ! अनुमंडलाधिकारी आ दोसर सभ हाँइ-हाँइ जीपमे बैसिकऽ पतनुकान लऽ लेने छल। कमल लजरि खिबओने छल। गोल्डी ओकरासँ बहस केलकै तँ अमजद अली कमलक बाँहि गसिअयने ...क्रुद्ध चीता आ कूढ़मगज

मस्तिष्क बीच दर्जन भरि लोक..। राजनैतिक आ सामाजिक पृष्ठभूमिसँ आबएबला लोक ठक्कबसोहाती नहि जनैत छलाह। ले छल..कथी लेल एकर सभक ध्यान जाएत छी। दू गोट गिरफ्तार संगीक बिहा करबाक माँग..ध्यान अधिकारी सभ अपन रक्षार्थ ताहि लेल तैयार नहि छलाह। लोकबरकँ डी.एस.पी.क मर्यादीकँ अशिष्ठ बोली..। मधुबेशजी बजलाह- अहाँ सभकँ निश्चय जयबाक सिद्धान्त होअय आकि निश्चय जयपंथी-ए घेबने होअय तँ..। बन्दककँ छोड़बापर सहमति भेल। मन्थनक कोन कथा कोनो कागपत्री नहि देखागत छलैत..महाभारत समाप्त भेलापर की कुरुक्षेत्रा एहिना निस्तब्ध भेल होयतैक। बेंदरा सभक एकटा गोल क्रिकेट खेलेबाक लेल मैदानमे प्रवेश कऽ रहल छल। अथ गिरगिट कथा- ध्यान बाबू माने ध्यानन्द जायसवाल- जनरितवर्ण प्रणालीक दोकानक एकटा डीलर। एहि नामक एकटा दरोगा सेहो आयल छल आ खूब हँसोथि कऽ गेल छल। रामलखन पोद्दार, बी.एस.सी. ऑनर्स, नन्द किशोर पोद्दार, चाह-पान बेचयबला, टॉपर ध्यानदा लोकबी लेल जुत्ता खियाय गेलै। नगर-हराक नापबाक यंत्र- कायराना भद्रताक पचहत्तरि प्रतिशत, स्वार्थाना यारीक बीस प्रतिशत आर मिसलेनियस रागरस पाँच प्रतिशत अनुपातमे उपस्थित रहत। एकटा गोदाम सन मकानमे अछि पुलिस फाँड़ी आ तकरे सटल दारूक भट्ठी! एक दिन अनायासे दुनूक अंह सोम्माँ-सोम्मी होइत छन्हि जखन ध्यानन्द पुलिस फाँड़ीसँ हराकैत भऽ निकलैत छथि आ रामलखन भट्ठीसँ। झगड़ाक बाद पुलिसबला सभक सहानुभूति ध्यानन्दक प्रति रहए आ भट्ठासँ बहराए बला सभक

पोद्दारक पक्षमे। वामनखन पोद्दार गिरफ्तार भऽ गेल आ जेलमे ओकर रूप परिसरूनाकेँ फूल-पत्ती चढ़। कऽ ओकरा छोड़ओलक। फेर मदन बाबू एक सोड़ह लोक लऽ नशा विरोधी नागरिक मंच बनेलन्हि आ भर्तीपर धरना देलन्हि। ओ सोलह गोटे छलाह सात गोटे पितिऔत-ममिऔत-पिसिऔत-मसिऔत, दू टा हबराहा, धनफुक्का मशीनक आपरेटैर, तीन कुख्यात मित्र आ कुलपुरोहितक दू टा लफंगा पुत्र। मदा एम्हर पोद्दारजी अधिकार सुरक्षा हेतु ३६ गोटेके संगे आबि गेलाह। नशा विरोधी नागरिक मंचक सेनापति बंक लऽ पड़एलाह तँ शेषकेँ धरपटाँग उठा देलकन्हि। फेर मारि-पीटक क्रम शुरू भेल। बंगराजी स्पेशेनिस्ट सुब्रत मुखर्जी एकरा गैंगवार कहैत छथि। मदा तखने नगरपालिकाक चुनावक घोषणा भेल। स्वार्थना यावीक रागरस शीराज वीगनक सोन्हाँ बंग धेलक। मदन बाबू चेयरमैन छथि, पोद्दारजी राग़स-चेयरमैन। नगरमे शान्ति अछि। अय्यासी- दोसराक संग रौसनमे मौज मदा परीक रौल- तरकारी लेल दसटकही..किराना समान कान्हियो-परस् जे आबि जाय। दोसक ओतय विदा भेल, रौटाक गप नहि सुनऽ चाहलक। पटैल चौक.... महामो गाँधी चौक पहुँचल। संगमे विसटकही। विकशोरना अपन टैपेर तानि कऽ स्वस्तागत बहऐ। विकशोपर रौसल, बस्तामे दोस लेल दू टाकाक सिकरेटे लेलक, अपन फेरविटे पत्रिका मोर रावह टाकामे आ चारि टाका विकशोरनाकेँ देलक। दोसक घरमे पंखाक हराँसँ किछु आह्यित अनुभव भेलै। रचन दू टाका ओकरा मँह दुसलकै, घरक तरकारी आ रौटाक किताब-कापी.. घर घुरल देह घामसँ फंडाबोर।

পলৌক হ্রনন–নান আঁখি দেখি নগনৌ জে অয্যাসী কহ ঘ্বন মোঅএ। রৈকরাঁ–ফোড়রাঁ– মূন সমাচাব– মতাযন হরাঁক পেট্রোনকেঁ স্বার্থক সনাগ দেখৌনে ছন। ঘটনা– প্রকাশি অগবরানক হর্ম "বৃহ্মিচন্দ ভঁরবনান রস্ত্র ভঁডাব"– উঁধাবীক বকম নাথ ঠেকি গেনৌ তঁ স্বরগীয বঘ্নাথ ঝাক প্বত্র অঠমা হ্বেন মাহুরিহীন অরঁড সিকন্দব ঝাকেঁ রস্নী নেন বাখনক। এহি ক্রমমে ও পহুঁচন এক দিন বামচন্দ মড়ব নগ, ওকব রেঁটা কানেশ্বিব মড়ব জে আরঁ নামমে যাদর নিখৈ ছন চাবি রঁবথ পহিনে তীন হজাবক থ্রী–পীস সূট রঁনরেঁনে ছন। ক্ষদা রাঁপ ওকব ঋণক মাদেঁ মনা কহ দেনকৈ। বস্তুমে পান খএরাঁক ক্রমমে ক্ষন্না ঠাকুবক দোকানপব কানেশ্বিব যাদরসঁ ওকবা ভেঁট ভেনৌ, কানেশ্বিব সংগে পবিরাবক নোক আ হ্বট্স্ম্যাঁ সেহো ছনৌ। পহিনে সিকন্দব জে হ্বিবঁটগিবী কবৈ ছন সৈহ আগ কান্হি কানেশ্বিব কবৈ ছন সে তগেদাপব মাবি রঁজড়ি গেন। সিকন্দব ওকবা ছাতীপব চঢ়ি গেন। সিকন্দবক প্বনকা সংগী সভ জ্টি গেন আ কানেশ্বিবক হ্বট্স্ম্যাঁ সভকেঁ ধোপনক। হ্বেব দোসব দিন পিছড় া একতাক জ্ন্বস নিকনন আ রস্ত্র ভঁডাবক শীসা ফোড়নক। ক্ষদা নঠৈত সভ আরি নাঠী রঁবসারঁহ নাগন। জকব জেনে সিংগ অঁটনৌ, ওম্হবে পড় াযন। নূট, অবাজকতা..পসবি গেন। ঝনকী– দৃশ্য এক:জিনাধ্যক্ষ প্বশ্বষোত্তম মঁডনক স্বব, অঠাবহ কোঠনী আ দূ টা রঁড়কা–রঁড়কা হ্যাঁন রঁনা বাজনীতিক দনক কার্যানিযমে। সন্তারনা জ্ন্বস নিকনত..শিষ্য চিবঁজীর সিংহ, পার্টীক যবা মঁচক অধ্যক্ষ আ মঁডনজীক ঘোব সমর্থক। ক্ষদা ও তামসে ঘোব ভহ জাগত অছি– অহাঁ সেহো ছোট জাতিক ছী সে ওকবা সভক পক্ষ

नेने कबने। नेहवा जागत अछि। दृश्य दू: हूसक घर। धनीनान, बामनाबायण। नेकना-होड़ना की होग छै। मठैढ की जानय। किछ कान ठ्प बहनाक नाद अन्हा ठैब देने अछि। दृश्य तीन:कामबेड बामसेरक साह्क चाह-नाश्ताक दोकान। नेहस..रिध्यानिरासजीक भाषण, जाति नामक कोनो रस्तु नहि। ह्नका पागन कहि क्या छौड़। नेहवा जागत अछि। दृश्य चाबि: ठिफिनमे नेचा सभक खेन: घास-हूस नेना घर हमर आ हम नेनने जादने। दोकान रिबजूक आ ओ नेनत नाभन। दूनूमे ऋगड़। होएत आ नन्नू, मोहन, नबेन आ नेनू आओत आ हमब घबमे आगि नगा देत। तखन स्वबेश नेनत नेता आ रिनोद नेनत दबोगा। स्वबेश दबोगाकेँ कहत जे एकवा दूनूक घर-दोकान नेनना दियौक आ पकड़ा कह नाउं। स्वबेश दून्वक हाथ मिननाकह दोस्ती कबाओत। नेकना-होड़ना खेन भवि ठिफिन चनैत बहन। रिष-पान- रकानतखानाक कर्सीपब नैसन गोपानजी कछमछाएत छथि। कचहबीक द्वाबपब स्वग्गानेना जोतखी नैसन छथि। ओतहि एकठो नैनब सेहो अछि आँखिक बोशनी नेढ़नेए नेना ममीवा स्वबमा। अदानतिक नेबंडापबसँ अर्दनी बामेसब मंडन नेन्द जागेसब मंडन केँ चिकबैत अछि, मोकीन रकीनकेँ अगिना तावीखपब नेकी-नेकियौता देनाक गप कहै छन्हि ऋदा ओ कनमक उंनठो छोबसँ कान खोदैत बहैत छथि। गोपान स्बनै छथि। गोपान, एक दिन पाननेना दोकानपब चत्तवानन नाठी नेने आयन आ नेबसानेय नागन। ओ खसि पड़नाह। नानूजीक प्रबान नोकब नेनिया आरि चत्तवाननकेँ नेजाड़ा दैत अछि ऋदा ओ मौका देखि भागि जागत अछि। बामप्रसादक साठि

रर्षीय माय मरौनारानी सभसँ पहिने गोपानक स्वधि नेनक। फेब गोपान ख्स्पतान खानन गेन। चत्तबानन सेहो ओतय खायन बहय गनाज खा गन्जबी बिपोर्ट नेन, ऋदा क्या चीन्हि गेनै खा जबनाक चेबासँ ओकबा माबि कइ भगा देनकै। चत्तबाननकेँ सभ खादि खपबाधी कहै छन ऋदा गोपान ओकबा स्वधाबैक नेन प्रयासबत छनाह। से खाबँ ओ भस्मास्वब बँनि गेन। प्वनिस चत्तबाननसँ पाग खसूननक खा ओ घबहिमे बहै छन। प्रगतिक तावीख केसमे पड़ैत बहनन्हि खा हुनकब एक्स–बे प्लेट सेहो ख्स्पतानसँ निपत्ता भइ गेन। तीन बँर्खक बाँद गबाँमी श्वरू भेन खा फेब श्वरू भेन जिबह, ओहि दिन भबि बाँहक कमीज पहिबने छनाह, कानब खा जेबी बहै वा नहि, बंग..। जे नाठी बँजबनन्हि तकब नम्बाग, बँनारट्टि..। रकीन मित्र..ऋदा एक दिन स्वबक त्तर्शी न्वकायन नहि बहनै.देखै छियै मोकीन सभकेँ खाखिब पाग देने खछि तँ ओकब सभक काजकेँ प्राथमिकता तँ देबँहि पड़त। खा ओहि दिन गबाही नहि ग्वजबि सकन..फाग़नपब हाकिम रिपबीत टिप्पणी कइ देनन्हि। चत्तबानन तीन हजाबमे गप फिट कएनक जे ओहिसँ बेँशी खर्चा दइ सकी तँ..। एंटी–पार्टीक रकीनक मार्फत रकीन–मित्र नग ऑफब सेहो खायन छनन्हि। ऋदा गोपानक कहनापब कोर्ट ट्रांसफब कबेबाँक प्रक्रिया श्वरू भेन। ऋदा कोर्ट ट्रांसफब भेन शीनभद्र ऩाक फर्टमैतीमे जे गोपानजीक बाजनैतिक प्रतिद्वन्दी छनाह खा चत्तबानन खाग–कान्हि हुनके छत्र–छायामे छन। मेन पेटीशिनपब गोपान दसखत कइ दै छथि, खामेसमर्पण जेना भावत–पाक युद्धमे एक नाख सेनाक संग जनबन नियाजी कएने छन।

𑒯𑒰𑒟𑒲 𑒔𑒪𑒋 𑒥𑒖𑒰𑒩: 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒞𑒲𑒢 𑒐𑒝𑓂𑒛𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒴𑒪𑒡𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒪𑒧𑓂𑒥𑒰𑒃𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒦 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒼𑒙𑒰-𑒧𑒼𑒙𑒲 𑓒𑓐𑓐𑓐 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏, 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲𑒧𑒹 𑒬◌ॉ𑒩𑓂𑒙 𑒮𑓂𑒙𑒼𑒩𑒲 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒬◌ॉ𑒩𑓂𑒙 𑒮𑓂𑒙𑒼𑒩𑒲 (𑒪𑒒𑒳 𑒏𑒟𑒰) 𑒋𑒏 𑒣𑒢𑓂𑒢𑒰𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒞𑒏𑒩 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒥𑓂𑒨𑒰𑒖𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒑𑒞 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒐𑒝𑓂𑒛𑒧𑒹 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒐𑒝𑓂𑒛 𑒪𑒼𑒩𑒯𑒰-𑒥𑒱𑒔𑓂𑒕𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒼𑒙-𑒣𑒻𑒒 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒦 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱, 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒋𑒿 𑒏𑒢𑒹𑒏 𑒠𑒥 𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱- 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒰 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒏𑒟𑒰 𑒧𑒴𑒪𑒡𑒢 𑒂 𑒥𑓂𑒨𑒰𑒖 𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒑𑒞 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒋𑒥𑒰 𑒨𑒼𑒑𑓂𑒨 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒧𑒴𑒪𑒡𑒢 𑒂 𑒥𑓂𑒨𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒼𑒩𑒯𑒰-𑒥𑒱𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒐𑒝𑓂𑒛𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒃 𑒖𑒼𑒑𑒩 𑒁𑒕𑒱।

𑒧𑒴𑒪𑒡𑒢: 𑒁𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩- 𑒪𑒾𑒯𑒰𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒥𑒰𑒙𑒹 𑒖𑒰𑒃𑒥𑒪𑒰 𑒮𑒛𑓃𑒏 𑒣𑒏𑓂𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒻, 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒖𑒲𑒣 𑒮𑒦, 𑒧𑒯𑒱𑒭𑒲 𑒅𑒑𑓂𑒩𑒞𑒰𑒩𑒰 𑒪𑒑 𑒥𑒪𑒱𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒢 𑒠𑒹𑒥𑓄 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒠𑒥𑒠-𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒰𑒑𑒩-𑒣𑒰𑒩𑒰 𑒮𑒦। 𑒍𑒢𑒞𑒲𑒮𑒿 𑒍𑒢𑒞𑒲 𑒮𑒙𑒪 𑒑𑒯𑒴𑒧𑒏 𑒪𑒰𑒩𑒲𑒮𑒿 𑒕𑒰𑒛𑓃𑒪 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒩𑒰𑒃𑒞 𑒢𑒹𑒢𑒰 𑒮𑒦। 𑒞𑒹𑒞𑒩 𑒧𑒳𑒮𑒯𑒩। 𑒮𑒩𑒾𑒢𑒲 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒑𑒵𑒯𑒮𑓂𑒟 𑒪𑒑 𑒯𑒩𑒥𑒰𑒯𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒂 𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒮𑒱𑓀𑒯𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒞𑒩𑒲 𑒏𑒰𑒙𑒱 𑒥𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒤𑒪𑒥𑒢𑓂𑒞 𑒮𑒱𑓀𑒯𑒏 𑒙𑓂𑒩𑒻𑒏𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒂 𑒍𑒏𑒩 𑒕𑒾𑒛𑓃 𑒰𑒣𑒩 𑒔𑒜𑓃𑒲 𑒑𑒹𑒪𑒻। 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒂𑒑𑒧𑒢। 𑒕𑒯 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒮𑒩𑒠𑒰𑒩 𑒤𑒪𑒥𑒢𑓂𑒞 𑒮𑒱𑓀𑒯𑒮𑒿 𑒪𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂 𑒠𑒴 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒞𑒹𑒞𑒩𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒑𑒣 𑒏𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒞𑒹𑒞𑒩𑒰𑒏 𑒮𑒾𑓀𑒮𑒹 𑒠𑒹𑒯 𑒗𑒢𑒏𑒱 𑒅𑒚𑒪𑒻𑒏, 𑒑𑒪𑒞 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒏𑓄..𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒣𑓀𑒔𑒙𑒻𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒹𑒞𑒻। 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒥𑒢𑓂𑒫𑒂𑒯𑒰𑒩𑒰𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒯𑒧𑒩-𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒥𑒯𑒞 𑒞𑒿 𑒥𑒰𑒢-𑒥𑒔𑒰 𑒤𑒹𑒩 𑒢𑒘𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒻𑒏 ? 𑒙𑒻𑒏𑓂𑒮 𑒤𑓂𑒩𑒲- 𑒔𑒪𑒱𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒔𑒱𑒧𑒢𑒲𑒣𑒩 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒋। 𑒮𑒰𑒜𑓃𑒹 𑒕𑒯 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒰 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒙𑒏𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒻 𑒕𑒻। 𑒛𑒹𑒜𑓃 𑒙𑒰𑒏𑒰 𑒧𑒳𑓀𑒬𑒲

मारि नै छै। फुदा कान्हिये रजष्टै पास भेल छै आ जे रस्त पौने पाँच टैकामे भेटैत बहुए से आब सात टौका सत्तबि पागमे भेटैते। जकबा ओ भोटै देने छल से डाक रगनापब थायल छै, चनित्तब ओतए जागये। कहैत खछि जे भोटसँ पूर्व जतेक खधपेटो भेटैत छल सेहो आब नहि भेटैए। फुदा ओ मंत्री रनल नेता दकोबि दैत छन्हि, कतेक नवखा-फङ्गा दियौनियै, टैनीरिजल, भी.डी.ओ. टैक्स फ्री करबैनियै, तैयो जस देनिहाब कियो नहि। चनित्तबकेँ प्वनिस राँहब कह दै छै। घ्स्सा, थापब, चमेटो सेहो नगै छै। ओ ककबासँ टैक्स फ्रीक अर्थ बुझत? बबूब-बौदी मबड़क महायात्रा। ओकब एक्टो रेटो उँदबा। गामक बाबू भैयासँ राँडकेँ बड़ नागि बहै। रिदा भेल रभनटैनी दिस। एकहको टौक ठाढ़ि देतै तँ ढेबी भह जएतैक। फुदा ओकबा स्वनए पड़नै- प्वबखा-पातिक माँस्व तँ कक्कब कौआ खेनकनि आ बौदियाकेँ जड़बैं नेल गाछ चाहियनि। उँदबा समाद पठबैत खछि, नहासकेँ नह कह राँन्हपब आ। तारेत ओ सबकाबी जमीनपब सबकाबी बबूब कार्ष्टि-चीबि कए चिता सजा दैत खछि। उँदबा आगि फूकि देनक। पंडीजी खएनाह आ पंडीजीक ओ कहनापब जे बबूबक नकड़ीपब चिता केहन होग छै, फँहमे उँक दह कह धाबमे भसिया दितही, उँदबा हनकब पतबा छीनि नैत खछि आ ओही चितामे फेकि दैत खछि। उँदबा पित्तीसँ रजैत खछि- तोबा आउँबक चानन ओएह बबूब छिखह। सबँध- स्वगिया आ ओकब घबबना जीबछ। जीबछक घब एही चौकक कातमे छै। मिन्नी फुबही आ चीनीपाक मिठाग, बतासाक उँठन्नू दोकान। बत्तका

खाएल आ नीनसँ स्वतेक रचना अरधिमे दुन्नू एक दोसराक राँहिमे पड़ल किछु गप्प करए। बुढ़ि या जे एहि रेवख ठौ जीरहैत बहितए तँ ओकर सभ संग नागल नहि जएतै..। स्वगिया गर्भवती छल। खाए भात-परोड़ खाएत गतियौत-पितियौत सभक राँपकेँ कंठ दाबि माबराक ध्वनि स्वनलक। ओ धवहड़ी मे गेल ह्दा ओ सभ ओकरेपर हवसा चला देलकै। फेर थाना..। ओतए दरोगाजी ठैकठैवरनासँ सलाठि बहल छलाह। फेर ओ स्वगियासँ केसक फीस दू सए ठौका मँगलन्हि। जीरछक कमीजक जेबीमे मात्र साठि ठौका बहै। राना आ हंस्वनी रैचए नेल सोनाव नग गेल, ओहो मौका देखि कम पाए नगेलक। ठौकाक जोगाव भेलै ह्दा तारत जीरछ ठलमला गेलै। दरोगाजी कहलखिन्ह जे ओ रिना फछ रजलें मवि गेल। भड सकैए तोँ दोसव मर्दक संग संबंध बखलें छँह आ एकव खून गुंडासँ करबेलेँ हेबैह। दरोगाजी ओकरा हाजतिमे बन्न कड देलखिन आ अपन डेवामे समाद दड देलखिन्ह जे ओ खाए बाति डेवा नहि आरि सकताह। अंतिम रैहोशी- कथाक सूत्रधार रा कथाकारक भौजी- माने ललिता मिश्र, प्राफेसर समरेशे मिश्र, रिभागाध्यक्ष, रसायन शास्त्र रिभागक धर्मपत्नी। दुन्न पहिलें प्राफेसर आ शिष्या बहथि, फेर प्रेमी-प्रेमिका भेलाह आ तखन पति-पत्नी। उँमरिमे कमसँ कम दस रर्खक अंतर होएतन्हि। तीन ठौ बचा दू ठौ बैठी चौदह रर्खक स्वषमा आ रारह रर्खक माधुवी आ एक ठौ बैठा श्वेताभ दस रर्खक। भौजीक ओ चारिम गर्भाधान। कारण जाँघक भूख प्ररल। ह्दा बैठीसभकेँ स्कूलमे लोक उँपहास करए नगलै आ ओ सभ माएकेँ कहलक जे

হমবা সভক উপহাসসঁ মাথ ফুটৈএ আ তোবা রিআগসঁ ছুট্টীএ নহি ছৌ। ভৌজী গর্ভপাতক প্রযাস কএনন্হি মুদা সমবেশী ভাগক কোনো মদতি নহি ভেটৈনন্হি। রেটী সভক গপ..পেটৈ উনাবনে রৈসন অছি..রেননাক দূড়সঁ ফোড়া নে দে পেটৈ কএ। ভৌজী মূর্ছিত ভই গেনীহ। ভৌজী পহিন রচা ভেনাক রাদ জে চৌদহ রর্খক রাদ গর্ভরতী হোগতীহ তঁ কী হ্নকব রেটী, ওহো শিপ্রা জেকাঁ দেরী-দেরতাক পূজা নহি কবিতএ। শিপ্রা সূত্রধাবক ক◌ॉনেজমে ছাত্রা, সতবহ রর্খক রাদ ওকবা একটা ভাগ ভেন ছনৈ। রড় প্রসন্ন ছনি। ডাক্টবনীক মোন উছতগব নহি রুঝি পড়নন্হি। ভৌজীক শিশু সূত্রধাবক কোবামে ছন্হি। ভৌজী চনি গেনীহ, প্রপংচকেঁ ছোড়া । ছব্বীস ঘংটাক রচাকেঁ নই কই সূত্রধাব সমবেশী ভাগক ডেবা ঢুকৈত ছথি। ভৌজীক দস রর্খক রেটা খুশীসঁ ওকবা সংগ একতবফা রতকমী কই বহন ছন। ভৌজীকেঁ অংতিম রেব হোশী আযন ছনন্হি তঁ ও সমাদ কহরা নেন। দুনূ রহিনকেঁ অংগ্রেজী স্কূন চংডী রনা দেনে ছৈ। ও সভ একবা নহি জীরই দেতৈ। আর অহী একব মাএ আ রাপ। কথাকাব সোচমে ছথি। দুনূ রহিন স্কূন গেন ছন। কোনা ভৌজীক দস রর্ষীয রেটাকেঁ উতবী পহিরেতাহ। উস্সব জমীন:তেজো রারূ। কথাক সূত্রধাবক দিযাদী পিত্তী। খবদ্ধ সভ ফূন ককা কহি ছন্হি। সমর্থাগমে খেত-পথাবমে কাজ কবৈরানী রৌনিহাবিনসঁ বাজী রা জররদস্তী রাসনাক পূর্তি কবথি। আর দূ-দূ প্বতোহ্ আ একটা জমাএক সম্বব ভেনাহ। ফূন ককা সূত্রধাবক ঢেঢ় আঁখিক নকন কবথি আ সে কবৈত-কবৈত আগ হ্নকব দহিনা আঁখিক ডীম উপবকা পনমে ঢুকি গেননি অছি। আর অপন পোতা-পোতীক

খাপড়ি ক পেন সন ঝঁন, বুঁঢ়বাঁ পবোব সন ঠোব, খন্ন সন–সন নাক, রিনাড়ি সন–সন খাঁখি খা ফগ্বখাক পৃ সন গান দেখৈ ছথি তঁ পশ্চাতাপ কবৈ ছথি। হ্নকব বাম খা নছমন বেঁটৌক ভিনাউঁজ নেন পঁচ বৈঁসন খছি কাবণ বাম বেঁটৌক বাঁপ ছথি খা বেঁটৌক বাঁপ পহিনহিয়ে বুঁঢ় । জাগত খছি– খা নছমন বেঁটৌক বাঁপ ছথি । সে নছমনক কনিযাঁ সিমবাহা বাঁনী সোচনহ্নি জে জেঠ জনকেঁ পকুকাঁ একটৌ কন্যাদান হেতন্হি খা দোসবো নাগনে ছন্হি সে ফূর্টে ভঽ জাগ খা এহি নেন উঁড়ফন তকনন্হি। পঁচ, খমীন খা খন্ন জোখবাঁ নেন পন্নদাব খাযন। জে ফূন ককা খনকা ঘবমে পঁচৈতী কবৈ ছনাহ, হ্নকা ঘবমে পঁচৈতী। সভ বস্তুক হিস্সা ভেন ঝদ নাদি গনাব একটৌ। সে নাদি ফোড়ি দেন গেন খা গনাব ভথি দেন গেন। ঝদা মাএ–বাঁপকেঁ কোনা ফোড়বঁ খাকি ভথবঁ ? সে বামক সংগ বুঁবহা খা নছমনক সংগ বুঁবহী গেনীহ। নূব–গোবঁবৌব জেকাঁ দ্নূ গোটে পড়ন ছথি। কাবণ সিমবাহীবাঁনী সমাবাজসঁ দূ বীঘা জমীন বুঁবহা–বুঁবহীকেঁ দেবাঁমে নোকসান দেখনন্হি। জে ছোটকোক ঘবমে তস্মী বনৈ তঁ বুঁঢ় কি পাতোপব একাধ চম্মচ খসৈ। ঝদা খসগবে খাগমে হ্নকব হীযা সানএ নাগনি। খাবঁ ফূন কাকা দার্শনিক বনি গেন ছথি। বাঁঝ গাএ, উঁস্সব জমীন খা কোঢ়ি বঁবদ সেরা–বঁবদাসিক খাশ কিঐ বখৈএ ? পবন প্বন– কথাক সূত্রধাবক খাগ.এস.সী.ক পবীক্ষা ভেন ছন্হি , প্রৈকিটকন পবীক্ষা বাঁচন ছন্হি খা ও ওহি খবধিমে গাম গেন ছথি, কাবণ খপ্পবেতনভোগী পিতাক ঊঁপব বৈঁসী জোব নহি দেমএ চাহিত বহথি। মাত্র তীন দিন পহিনে সহবসা গেন ছথি। গামমে মূহ্ সয্যাপব সূত্রধাবক খন্বজা

सरोज पड़नि छथि। तीनू भनुजामे सभसँ पैघ रूदा सूत्रधारसँ तीन बर्ख छोट, जकर दस बर्खक बएसमे विवाह भेलै आ तेरह बर्खक बएसमे द्विरागमन। सासुर गेलाक छह मासमे ओकरा टौंगि कए लैहर आनल गेलै। हुनकर पति भकोली-लफंगा छलथिन्ह, जिनका सूत्रधार कहथिन्ह जे ऑटेमेटिक घड़ीक द्विजए आ गंगिनिशे बेले साएकिलक निर्माणक तिथि बताउ, जे ओ दुनू चीज चाही। आ एहि हँसी लेल सेहो सरोजकेँ ताबणा भेटैलन्हि। सूत्रधार प्रैक्टिकल परीक्षामे उत्तर तानक रुग्णता नहि नापि सकलाह रूदा प्राप्त भेले सरोज ओहि रुग्ण सीमासँ रूक्ष भऽ गेलीह। सरिता पित्ती, जिनका सूत्रधार बाबू कहै छथि, सूत्रधार आ सरोजकेँ जानसँ बेशी मानैत छथि। समाजक लोकक लगास उठरबै लेल नहि आएब। सूत्रधारक काकीक ओ सूचित करब जे अपनहि बैसि चारू दिआदनी काली आ चारू-चारूकेँ चुप करी आ कोनटी-फटकीसँ अराज, जे छौड़ी समर्थ होएत-होएत मरलैए, तेहेन डाकिन हेतैक जे टोलमे भरि-भरि राति घोड़दौड़ करतै। रूदा भोज कालमे बंगनाथ मिश्रक कहब, जे पहिल कर के उठाओत, मात्र एक्कस ब्राह्मण छथि बाँगससँ एक कम। सूत्रधारक छोट पित्ती अपने बैसि जाए छथि। सूत्रधार बंगनाथ मिश्रकेँ बाँहि पकड़ि उठबैत छथि..निकलि जाउ जल्दी, अन्यथा एक्का जुत्ता नीचाँ नञि खसए देब..। जे कसाए छथि, तिनका जाए दिअनु। हुनकर पात भिखो डोमक सूगरकेँ खोआ दिअनु..। चरित्र- घोर कम्युनिस्ट गौतमजी। जातिएँ कर्ण कायस्थ छथि- बीड़ी पीबि (ताहिसँ सरहाबा छरि बनबैमे सुविधा छन्हि) मोछक टेबनी कैल भऽ गेल छलि। कलकत्तामे बसल मैथिल।

तीन टा बेटी। बेटी बिबाह कानमे अपन प्रेमिका संगे लड़का देखए लेल जाएत छथि। ओतए एक ठाम अम्बष्ठ कायस्थ कहलाक कारण आ दोसर ठाम लड़काक पिता कर्णजीक दोसर पत्नीक क्रिश्चियन विधवा कहलाक कारण ओ कथा सभ हुनका सूट नहि करै छन्हि। एडनिनाक कथा बीचमे आबि जाएत..एहि क्रममे प्रधानाध्यापकक एड्नीनाक सम्बन्धमे टिप्पणीपर एकटा नरनिहाऊ शिक्षकक टिप्पणी- एडनीना अहाँक छोटकी बेटीसँ दस-तीन बर्ख जेठ होएतीह..हुनका लेसि दै छन्हि। अस्तु, कथाक अन्त गौतम जीक मामिल बेटीक पिताकेँ देल वचनक संग खतम होएत अछि। गजोत- मधुकरजीक संग कथाक सूत्रधारक शतरंजक खेल चलि रहल छन्हि। शतरंजक खेलक संग सूत्रधार मधुकरजीक शतरंजक संग जीवनमे कएल बेइमानीक संगे-संगे चरचा करै छथि। हुनका द्वारा मधुकर जीकेँ पातकी ग्वरुक चेला कहलापर मधुकरजी बिगड़ि जाइ छथि, कहै छथि जे ..हमहीं अहाँक घरवालीकेँ सिखबै छी जे अहाँक माए-बापकेँ मारए, अहाँक घरक फजहति करए, अहाँक सम्बन्धीसि बहिनकेँ घरमे नहि रहए दिअए। मधुकरजीक विशेषताक शतरंजक विसातपर चर्च होएत अछि- बिआहमे भाँगठ करब, एकरा जेकाँ धन्वविद्याक प्रयोग फक्करक फँह बन्द करबामे करब, सूत्रधारक कनियाँकेँ अनटै-बनटै पढ़ाएब। सूत्रधारक बहिनिक सासु-ससुरकेँ ओ कहि आएल छथिन्ह- दिल्लीमे जगह किनबा लेल पाइ छै आ बहिन बहनोइकेँ देबा लेल पाइ नहि छै ? सूत्रधारक पत्नी सासु-ससुरकेँ पाँच बाढ़नि-पाँच स्वपाठ चलबिते छलथिन्ह आब बहिन लेल पाँच बाढ़नि-स्वपाठक काज आओत बढ़ि गेलन्हि..बेचारी पबलोक गेलीह।

অন্তমে সূত্রধাব মধ্কব জীক ঘোড় । উঁঠা কএ প্রবনা জগহপব বাখি দৈ ছথি, আ চানিমে গমানদাবী অনবাঁক নেন কহৈ ছথি । হাথী চনএ বঁজাব– ভবানী দাগ ! বাঁপক দ্নাবি । মাএক মৃত্ক বাঁদ নানন–পানন আ বিবাহ । ফেব কন্যাণক যোগ্যতা ভেনন্হি তঁ ওা সমাচাব স্বনি পিতাক মৃত্ ভ২ গেনন্হি, খ্শীসঁ । ফেব ভবানী দাগকেঁ প্বত্র ভেনন্হি আ ফেব হ্নকব পতিক মৃত্ । ফেব গনশ্থাবেন্স আ অন্বকম্পাক নোকবী নেন হ্নকা দূ তবহক অন্বভব ভেনন্হি । গনশ্থাবেন্স কম্পনীক মনেজব কম উঁমবিক নেখক, ভদ্র । সভটা কাজ মিনটমে ভ২ গেনন্হি । ক্ষদা পতিক কার্যানিযক হাকিম পতিত । কথাক অন্ত হাকিমক বেঁটা গীতাক পিতাকেঁ দেন দ্কোবিসঁ হোগত অছি । ছগ্বন্তা– বৈঁবাগীজী, বামাধীন পাল্ডয "বৈঁবাগী", হ্নকব বেঁটা কওনেজমে প্রাফেসব ভ২ গেনখিন্হ । হ্নকব বেঁটাক অপহবণসঁ কথামে তেজী অবৈঁত অছি । পচীস হজাব ভবিষ্য নিধিসঁ নিকানি ক২ বখনথি আ সেহো গাএবঁ ছন্হি । হ্নকব জেঠ বেঁটা অকণ সেহো নিপত্তা ছথি । ফেব কথামে দ্খমোচনক চর্চ অছি জে স্বতংত্রতা সেনানী– জে পেঁশন নেবাঁসঁ মনা ক২ দেনন্হি– ক প্বত্র ছথি । ক্ষদা অপবাধী চবিত্রক, হাগ স্কূনেসঁ অপন ভবিষ্যক পবিচয দেমএ নগনাহ, জখন জাতি আ অর্থে হীন পড় াসিযাক বেঁটীপব হাথ সাফ ক২ নেননি । ফেব বঁটমাবী, ছীনা ঝপটী...নিম্ন জাতীয এম.এন.এ. ভগত জীক নেহত্ব পসিন্ন নহি পড়নন্হি তঁ ও কেসমে ফসা দেনখিন্হ আ আবঁ ও ফবাবী বাজনীতিজ্ঞ ভ২ গেনাহ, অপন জাতিক নোকক মদতি সেহো ভেটৈনন্হি । ফেব হ্নকব ফন্নাঁ দিন আমে–সমর্পণ আ শক্তি প্রদর্শন হএত । নিছক্কা স্বজাতি, একবর্ণা গহ্বম

জেকাঁ। খাৱাঁনরুহ্মরনিতা। দ্খমোচন পৈঘ নোক ভ্ঽ গেনাহ। তহী দ্খমোচনসঁ খৰুণক ধর্মযঙ্ক। হ্মদা দ্খমোচন জীক চীনব-চমোকনি সভ খৰুণ দ্বাবা ৰধ ভ্ঽ বহন ছনাহ খা ও দিন্নী-পঠনামে মৌজ কৰৈ ছথি। গতি- জগত ঝা, গামক ৰিনাড়ি। গাম মোহনপ্বব। ভুমিহাব খা ডোমক খতিবিঞ্চ সভ জাতিক নোক, ভুমিহাবক সামাজিক নোকাচাবমে কোনো প্রযোজন নহি, হ্মদা ডোমক হোগ ছৈ, সে ও খৰৈত খছি চন্দ্রাযণসঁ। দ্ ৰবখ দসঁযা পাসী নগ ৰন্হকী নগনাক ৰাঁদ ফেবসঁ মোহনপ্বব ভিখো ডোমক হিস্সামে খাৰি গেন খছি। গামমে মনোহব ধান্বকক ৰেঠী চনবমা। ৰভনাক নেত খূৰ ৰ্নৈ ছন। ৰিখাহক ৰাঁদ সাস্বব ৰকৌবসঁ সাঁগকেঁ ডেনিখএনে চনি খএন। কাবণ ৰকৌবক বাছছ সভকেঁ ওকবা নহি চীন্হন ছনৈ হ্মদা মোহনপ্ববক সভঠা ফক্ষব ওকবা চীন্হন ছনৈ। ফেব চাবিঠা ৰেঠী ভেনৈ। জগত ঝা তবৰন্নীসঁ খৰৈত খনিন সিংহকেঁ চনিযা ওকব পাগ দেনকৈ বা নহি পূছি ভড়কৰৈত ছথি। ঠী.ঠী.ক ৰেঠা খনিন সিংহ। ফেব মাবি-পীঠ খা প্বনিস-ফৌদাবী। হ্মদা ফেব জখন দ্নূ পক্ষকেঁ জগত ৰাঁৰূক খসনিযত ৰ্মঝৰামে খৰৈ ছন্হি তঁ ফেব দ্নূ পক্ষ মিনি কঽ..। মধ্যাঁতব- জগতাবণি খা খনকাদেৱী- দ্নূ সৌতনি হ্মদা সৌতিযা ডাহক কতহ্ নেশো নহি। খনকা দেৱীক দূ ঠা সন্তান। তাবানন্দ নির্ধন পবিবাবক খা খনকা - স্বখী সম্পন্ন পবিবাবক- এক্কহি সংগে পঢ়ৈত বহথি। তাবানন্দ নোক সেরা খাযোগক পবীক্ষা পাস কেনন্হি তঁ ৰিযাহ জগতাবণি- কবিযা পাথবক ৰনন হ্মকুত হ্মদা ব্যৱহাবসঁ স্বন্দব- সঁ দহেজ প্রথাক কাবণ ভ্ঽ গেনন্হি। ফেব ফকুপ জগতাবণিক প্রযাসসঁ খনকা

সেহো ঘব খারি গেলীহ। ফেব জগতাবণিক দূবক সংবঁধক দীখব মনোহবক পনী জাহিন মীবাক খাগমন হোগত খছি। ফেব মীবাক দামপত্য জীবনক সূত্রক কমজোব হোএবঁ খা বকীনক খাগমন। মীবা কেস জীতি জাগত ছথি হ্মদা মনোহবক ওকীল, খা মীবাক ওকীল হ্নকা সংগে গনত কর্ম কবৈত খছি..। ফেব জগতাবণি দ্বাবা মীবাকেঁ ভোন ভবোস দেল জাএবঁ।

বঁ্যাজ: কিবাযা– পূর্ণিযাঁ গ্বনাবঁবাঁগ, দেহ ব্যাপাবক খড্ডা। ..কতেকো কোঢ় াকেঁ বগড়া কএ হ্না দেল গেল ছল। খা..দস টাকামে হোগ ছৌ খপনো সাতী খা বাঁপোক সাতী..এহন সন খবাঁজক বাঁচ কথাক সূত্রধাবক প্রতি শর্দ্ধ..স্সানেকেঁ নে জেবীমে দম বহ, নে ডাঁড়মে। পতন– বাঁঢ়া ক কছাছোপ পানিমে চনমা দ্বাবা মোনী মিসবক সন্দূকক বস্ত্ত–জাত নিকানবাঁক প্রযাস খা সাঁপক ফেঁচ তানি ঠাঢ় হোএবঁ, জেনা কহি বহন হো– হম তোবাসঁ বেঁসী বিখাহ নহি ছী। উসাঁস– বিধবা থানাবাঁনী, ওকব বেঁটী ডোলী বেঁবাম বহ। হবেলী গেলাগ নাগা কহ দেলক। মানিক দস সটকা ঘেঁচ দেলকৈ। ফেব মাএ বোহ্খা বুঁখাবক মোনিমে খলাচাব খা কর্ব্ব দ্বাবা ওকব কংঠমে কাঁটা পসাবি ওকবা মাববাঁক খিস্সা ডোলীকেঁ স্বনবৈঁ ছৈ। ডোলী কহৈ ছৈ, ঐ মানিক নেল কোনো কর্ব্ব নহি ছৈ ? ওটঘন– মানিক–মনকাগন খা হ্মসবাঁ, জিতিযা পাবঁনিমে হ্মসবাঁকেঁ ছঙ্গী নহি ভেটৈলৈক। জিতবাঁহনক তেল, মনকাগনক বঁচাকেঁ মাথমে নঠ–নঠ কবৈত নাগএ খা হ্মসবাঁ ওহি তেলক এক ঠোপক খাস নগেলে বহএ। খা সপনামে জখন ওকবা মাএ কহৈ ছৈ জে কিএ এলেঁ, ওতএ মনকাগন স্বচা দূধক পৌবন দহীসঁ ওটঘন কববিতৌ, তঁ ও কহৈএ জে চঢ় াখা তেল তঁ ওহি

सिमरकेँ वर्दी ओकरा दऽ लैत छैक आ कहै छैक जे ओकरा कोन ठाम बैसेबाक अछि ओतऽ बैसैत छथि माने आब ओकर अधिकार वर्दीसँ ओकरा अधिकार दऽ देलनि तखन ओहि सँ वादी माला ओकर मौलिक आ वस्त्र आ ओढ़न ओ की करताह? जागृति- एकटा कौआ राजपथक दुर्घटनामे मरि जाइत अछि, सौंसे देशक कौआ सभ ओकर लहासपर कानऽ लगैत अछि। पुलिस आबि कऽ कौआ सभकेँ भगबैत अछि मुदा कौआ सभ उड़ि कऽ एकठाम जमा भऽ जाइत छथि आ आन्दोलन शुरू कऽ दैत छथि, सड़कपर जाम लागि जाइत छैक। तखन नेताजी अबैत छथि आ कौआ सभ हुनकर गाड़ीपर बीट कऽ दैत छथि...।

দেশক দশা কহলৈন্হি। গ্রতত্ত্বতা– স্বস্মিত, খক্ষযরঠ খা বাকেশ জাগত বহএ গপ কবৈত। বামনাবাযণ সিংহ প্রাফেসবক গ্রপাসঁ নীক খংক ভেটৈন বহ। ফেব প্রাফেসব সাহেবঁ সেহো সূত্রধাবকেঁ ভেটৈ ছথিন্হ খা ফেব নীক ছত্তাক উঁপহাবক বঁদনা দেন খংকক ভেদ খুজৈএ। রিসংগতি– সূত্রধাব মেডিকন বিপ্রেসেন্টেটিব ছথি, নাথো বঁহিনকেঁ পেটে দর্দ, তেজো কাকাকেঁ তিনকৈত কেসক গনাজ খা খরধেশ ভাগ নেন ভূখক গোটী.. ক্ষদা সূবৈনান হবরাঁহ, জকব বঁটৌ সূত্রধাবসঁ পাঁচ বর্খ জেঠ ছথিন্হ, সূত্রধাবকেঁ মানিক কহ ছথিন্হ। পেটে খবাপক দরাঁগ গোটী হ্নকা ক্ষদা নহি চাহী, কাবণ জতেক খন্ন পচেরাঁক তাগতি ছন্হি ততেক তঁ খন্না নহি জ্ড়ৈ ছন্হি, ভূখ কম কবরাঁক জে কোনো দরাঁগ হোগ তঁ সে মঁগৈ ছথি। রোঁগন– জ্গো মবব, ওকব কনিযাঁ ধোবএরাঁনী রিন রোঁগনক খেবহী ডেংগারঁএ কিংকব রাঁবূক খংগনামে, বঁটৌ নানমোহবা সেহো পেটৈপব ওহি খংগনামে কাজ কবএ। সূত্রধাবক মদতিসঁ বৃদ্ধা পেশিন ভেটৈনৈ, ক্ষদা জেকবা ওতএ ও কাজ কবৈএ ও জে দূ দিন ওকবা কাজসঁ দৌগত, সে দূ দিন্বকা রোঁগন নহি দেত। ফেব র্ন◌াঁকিমে জখন ওকবাসঁ রিন্ব পাগ নেনে হাকিম কাগচ বাখি নৈ ছথি তঁ ওকবা হোগ ছৈ জে কাজ নহি ভেন কাবণ রিন রোঁগনক তঁ গবীবৈ–গ্বববাঁ সভ নে কাজ কহ সকৈএ। পহিচান– বৃখোসেজ্ঞ শ্রীহ্নক এমমে দগনাসঁ রাঁস্তীক মূহ। খন্বত্তবিত– দীনা রাঁবূক কাম নিপ্সা খা হ্নকব হবরাঁহক বঁটৌ বুঁধনীক কহবঁ জে ওা সনরাব হবাক পহিবনে হম হ্নকব বঁড়কী দৈযা সন নগৈ ছিখগ ? যোগ্যতা– বহ্নীক সাহেবঁক স্কূন খোনবঁ খা যোগ্যতামে হ্যরতীক উঁমবি পূছবঁ। কথা সশীক্ত নহি।

উঁদ্দেশ্য- মুখ্যমংত্রী দ্বাবা শিক্ষামংত্রীপব পবীক্ষামে চোবিপব প্রতিবঁন্ধক গপ আ নাগপত্র মাঁগবঁ। বোঁধ- বাজাক নাগবাজক পনীক ঠোঢ়ী যা সংগ সংভোগ দেখবঁ আ নাগবাজক পনীক কহবঁ, মিসিযা ভবি প্রসন্ন, পহাড় ভবি ক্ষনশীনসঁ পৈঘ হোগত ছৈক ? মোন-জোন- পাংকী বোড ডানটৈনগংজমে ভবত বাঁবূঁক মাগক শ্রাদ্ধ আ দূধ-তেন গিবৈ নেন কংঠাহা ব্রাহ্মণ দ্বাবা এক সএ একারন আ হেব আব পচাস ঠাকা ভেটনোপব মোন উঁছিতগব নহি হোএবাঁক বাঁদ একটা ব্রাহ্মণ ভিখমংগা দ্বাবা ওহি ঠাকাক বঁদনা দূধ-তিন পীবাঁক আঁহব। মূন্য- নখন বাঁবূঁক নির্দেশনমে মনোবমাক পী.এচ.ডী. কববঁ আ নখন বাঁবূঁক প্রণয নিরেদনপব উঁত্তব, জে জাহি আঁখিএ অহাঁক এতেক মহান ছবি দেখনে ছী, তাহি আঁখিএ অহাঁকেঁ নাংগট কোনা দেখবঁ ? আস্থা- গোদানক বঁদনামে পংডিতজীক দ্বাবা আপতমে এগাবহ ঠাকা দএ তিন-কুশী-জৌ-অক্ষতসঁ উঁসগববাঁক গপপব সূত্রধাব দ্বাবা আশংকা কববাঁপব কহবঁ জে ও কোনো মন্নবথ থিকৈ... জানরব থিকৈ, জানরব। অংতিম অভিনাষ- মদব দাসক অংতিম গচ্ছা প্রস্তনাপব ওকব কহবঁ মোন কবৈএ.. জে অন্নূ দম আ ভাত খাগ। সবোকাব- হূনবাঁবূঁক মূন্ আ তখনে অমেবিকামে ছপন করিতাক এরজমে ড ঁনবমে পাগ আএবঁ আ মদনেশ্বব বাঁবূঁক পূছবঁ- একব কতেক ঠাকা ভাবতমে ভেটৈক ? প্রতিবঁদ্ধতা- বামশিবণজীক ভাবতক গবীরী আ নাবী-শোষণক জ্ঞান রিদেশী নেখকক কিতাবঁ পঢ়নাসঁ এতেক হৃবিষ্ট ছনি। ননিতা এক মাসসঁ হ্নকব কামক রশীভূত অছি, মুদা ফেমিনিজম নএ কহ ওহি দিন জখন রাতমি ভেদ খুজৈএ তঁ ওকব দুকোবনাপব বামশিবণজী ফেমিনিজমকেঁ অন্হড় ছৌড় ৈকেঁ বাগতব দাবঁহ রনা

হথিযাব কই ছথি। জোগাড়– ক্মাব গংধর্বক স্বস্ক্বারাসপব জে.এন.যূ. কারেবী হ্স্টনক দূ টা খখরাবী সমীক্ষকক রিরাদ– ওহিমেসঁ একটা তহিএ সঁ খানেখ নিখি বহন ছন জহিযাসঁ গংধর্ব দ্খিত ভেন ছনাহ, সে ও দোসবকেঁ করিতা নিখরা নেন কই ছন্হি। পিংডদান– চঞ্ধব রার্বূক ঝিংগ্বব ঝাক মাগক মূহ্ক রাদ জমীন নেনে রিনা পাগ নহি দেরাক নির্ণয খা খপন পিতবক পিংডদান নেন গযা জএরাক ভোবক বাতিক স্বপ্ন– জীরৈতকেঁ নহি উঁজাড়, মবন নোক তঁ খপনহি রঁসি জাএত।
নোবহা–রিছা: ভূখ– সূত্রধাবক রান্যকানক সংগী বমকিসনা। ঝ্দা খার ও চবরামী কবৈত খছি খা সূত্রধাব ছথি প্রাফেসব। হোনীক দিন সূত্রধাব দ্বাবা বংগ দেরাক প্রযাসপব ওকব কহরঁ– মৈন–ক্চৈনমে বংগ পকড়রেঁ নহি কবত। পেটক চাম চাবি দিনসঁ জবি বহন ছৈ ওকব। মহগী উঁন্মূনন– মণীন্দ্র খপন পিতা খা পবিরাব সংগে পটিযানাক সড়কপব জা বহন খছি– এক ভাষা–ভাষীকেঁ ছোড়ি কহ সভকেঁ ঝড়ৈ–ভাটা জেকাঁ কাটি দেন জাগত খছি। মণীন্দ্র রঁচি জাগত খছি, ফেব ফাগুমে মহামহিম নগ নাশক বংগক রঁদনা দ্স্কহ্যঞ পানিসঁ হোনী খেনাএ পহুঁচৈত খছি, কাবণ ওা রেঁশী সস্তা ছৈ। কসাগ– রিনষ্ট সিংহক জমীন চৌকোড় হেরামে স্ববেনমাক জমীন পড়ৈ ছৈ ঝ্দা ও তৈযাব নহি খছি। মাবি পড়ৈ ছৈ। দবোগা পাগ মঁগৈ ছৈ ঝ্দা এস.পী.ক ওহিঠাম কহনাক রাদো কাজ নহি হোগ ছৈ, কাবণ দবোগা ওকবা পাগ দহ কহ রহান ভেন খছি। দহেজ– ছোট রহিনক দ্বিবাগমন খা ওকবা দ্বাবা একটা সনাগ খা এক টৌন মটিযা তেন নেনে রিনা সাস্বব নহি জএরাক গপ। পীঢ়ীক দ্বন্দ– নিযতিক চঞ্ধ খা সাহের

बाय आ बामदेर बायमे मतभिन्नता आ पिताक नाम बामदेरसँ चतुर्भुज बाय करबाएब। पहिने, आग, आ काल्हि- गोनू बाबासँ सूत्रधारक प्रश्न आ ओ नाउँब , चाउँब आ विभनबॅाँन नेन भूत, रर्तमान आ भविष्यमे नोक कानत से गप कहै छथि। प्रतिफल- रिज्ञानक भावती-शेवत सिद्धांतक प्रतिफल। बेटा कोना होथए, से बेटीक संख्यामे कमी भेन। आ आब स्त्री नेन यज्ञ। उँपबाग- कामो मांक पहिन पनी दिरॅड़ ारानी आ दोसब फ्बनीरानी। फ्बनीरानीकेँ एक बेटा आ तीन बेटी। ओकब बेटा निबंजनकेँ साँप डसि नेनकै, से शिरनिंगकेँ छूरि कर पूजा केनासँ आकि सौतिनक फक्कनि डगनपनासँ। कामोक पिता फ्साग मांक प्वतोन् दिरॅड़ ारानीसँ अरैध संरँध। फ्बनीरॅानीक मृत्युपब ओकब आगि देबा नेन ओकब बेटा गन्द्रदेरकेँ नोकसभक कहनापब फ्बनीरॅानी बहस्य खोनै छथि जे अहाँ हूनकब बेटा नहि छिअनि रबन छिअन्हि दी...दीअब! कोउँ काह्र मगन- सूत्रधाब आ संगबॅए नोकनि टैहनैत छथि, तखने एकटा दसटैकही सड़कपब चौधबीजीकेँ भेटै छन्हि, ककब ओ पाग हएत-एक ठाम खाधि कएनेपब दोसब ठाम उँच हेतैक ने ? ऋृणखौक- नीनेशी गबीबॅ पबिराबक, फेब पढ़नक-निखनक तँ गामक नोक सभ पिताकेँ दराबॅमे दर रिराह कबा देनन्हि- कनियाँ तेहन जे पिताकेँ माबै छन। फेब नीनेशीक दोसब जातिमे रिराह कबबॅाक निर्णय आ पड़ ासीक कहब- ओ ऋृणखौक अछि, पितृऋृण रिना उँताबनहि मबत।

कथा: शिक्षित मध्यबर्गमे मैथिनी भाषा नरम बर्गसँ स्नातक-स्नातकोत्तब धबि मैथिनीकेँ भाषा रा मातृभाषाक

𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒪𑒹𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒖𑒰𑒪𑒣𑒩 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒂𑒑𑒧𑒢𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒰𑒭𑒰𑒮𑒿 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯 𑒤𑒹𑒩𑒮𑒿 𑒖𑒰𑒑𑒪। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒮𑒳𑒑𑒧𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒫𑒿 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒚𑓂𑒨𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒖𑒰𑒪 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒮𑒲𑒧𑒱𑒞 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒯𑒮𑓂𑒞𑒏𑓂𑒭𑒹𑒣 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒂 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒦𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒝𑒰𑒧𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒯𑒲𑒢 𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 (𑒮𑒳𑒣𑒲𑒩𑒱𑒨𑒼𑒩𑒱𑒙𑒲 𑒏◌ॉ𑒧𑓂𑒣𑓂𑒪𑒹𑒏𑓂𑒮 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒲𑒢 𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒁𑒕𑒱) 𑒣𑒻𑒮𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒂 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑒼𑓀𑒑𑒩𑒣𑒩 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒫𑒰𑒠-𑒫𑒱𑒫𑒰𑒠 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒏𑓄 𑒂𑒩𑒼𑒣-𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒰𑒩𑒼𑒣 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒦𑒹𑒪। 𑒣𑒞𑒱-𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲, 𑒖𑒱𑒪𑒰-𑒖𑒫𑒰𑒩 𑒂 𑒣𑒱𑒞𑒰-𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒫𑒿 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒦𑒹𑒪। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒥𑓂𑒪𑒻𑒏𑒧𑒹𑒪𑒱𑓀𑒑 𑒂 𑒥𑓂𑒪𑒻𑒏-𑒧𑒰𑒩𑓂𑒏𑒹𑒙𑒱𑓀𑒑 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒟𑒰-𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒹𑒪 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒫𑒿। 𑒍𑒢𑒰 𑒥𑒴𑒏𑒩 𑒂 𑒢𑒼𑒥𑒹𑒪 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒰𑒪𑒰𑒞𑒲𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒢𑒱 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒿 𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒼𑒢 𑒩𑒐𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒍𑒢𑒰 𑒜𑒹𑒩 𑒩𑒰𑒮 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒍𑒏𑒩 𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨𑒰𑓀𑒏𑒢 𑒏𑓄 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒍𑒢𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒂𑒜𑓃 𑒱𑒏-𑒂𑒜𑓃 𑒰 𑒩𑒲𑒞𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒍𑒢𑒰 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫𑒧𑒹 𑒣𑒞𑒱-𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲, 𑒣𑒱𑒞𑒰-𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩, 𑒖𑒱𑒪𑒰-𑒖𑒫𑒰𑒩 𑒂 𑒂𑒫𑒿 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩-𑒏𑒫𑒱𑒏 𑒥𑒢𑒪 𑒑𑒼𑒪 𑒮𑒦 𑒋𑒏𑒩 𑒥𑓂𑒪𑒻𑒏𑒧𑒹𑒪𑒱𑓀𑒑𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨𑒰𑓀𑒏𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒖𑒰𑒪𑒏 𑒯𑒮𑓂𑒞𑒏𑓂𑒭𑒹𑒣 𑒮𑒲𑒧𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒢𑒲𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨, 𑒮𑒵𑒖𑒢𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒮𑒼𑒗𑒰𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒥𑒱 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒵𑒖𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒠 𑒏𑓄 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒋𑒫𑒿𑒪𑒰 𑒏𑒫𑒱-𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒢𑒰𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒩𑒨 𑒠𑒹𑒫𑒿 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒍 𑒥𑓂𑒪𑒻𑒏𑒧𑒹𑒪𑒱𑓀𑒑 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒫𑒰 𑒡𑒴𑒩𑒰-𑒑𑒩𑓂𑒠𑒰𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒞𑒰𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒏𑒫𑒱-𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿। 𑒂 𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒹

कवरॅ तखने निवर्थक देखाएरॅना मैथिली साहित्यमे प्राणरहित भवि पाएरॅ।

नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन

गद्यसँ पद्य एहि अर्थें फराक होइत अछि जे एहिमे विम्बँक माध्यमसँ कम शब्दमे बेशी गप कहल जएबाक गुंजाइश बहुत अछि। तेँ पद्यकेँ समयाभावमे शुद्ध कएल गद्यक विकल्पक रूपमे देखब सम्भव नहि, ओना तेहनो उदाहरण भेटैत। पद्य छन्दबद्ध होअए वा छन्द-लय विहीन, जे ओहिमे गुणवत्ता अछि तँ प्रभावित करबे टा करत। सीनिंगसँ जमीन बँचेबा लेल रामपथ वा दक्षिणपथक प्रयोग लोक द्वारा होइत अछि। तहिना सीनिंगमे पड़ल साहित्यक लेल रामपथ वा दक्षिणपथक प्रयोग, छंदबद्धता-लयबद्धताक आग्रह वा अनाग्रह गोनौसीक विस्तार मात्र अछि। आ एहि मध्य नचिकेताक तैंतीस टा कविताक संकलन अछि मध्यमपुरुष एकवचन। एहिमे कवि जखन विवोध समुद्रसँ मे होइब आ हमब

ৰীচমে জে সহ্মদ্র খছি, জকব তৰ্টপব, ওকব পবিণামপব ক্যা কানি বহন খছি, ৰীচমে মাছ খা চীনক ন্মন্ড খা এহি মধ্য জ্বাব সভক টৌককেঁ ধেনে ছথি রকণদের, সোচৈত জে প্রেমকেঁ জীতএ দেতাহ খাকি সহ্মদ্রকেঁ, কহৈ ছথি খা ফেব রকণদেরক জ্বাবক টৌককেঁ ধবরঁ, চিত্র সোনাাঁ খরৈত খছি। ঋত্ত-রিশেষ পৃথ্বীপব- মে প্রেমক ঋত্ত রিশেষ, জকব প্রাবম্ভমে ৰবখা মাসক ৰ্নন্ন স্বখাএ নগৈত খছি। শঙ্খ নেন জান নেনে খা শঙ্খ করৈত খছি খামেসমর্পণ করিতাক সংন্যাসমে। খা ফেব ঘ্রৈত নদী কছেব- ভোককা মংত্রক উঁচাবণ নেন জে জনকেঁ ৰনৰৈত খছি খকাস। ৰঁজব দেশক ৰবসাতিক দের জে খকাসোকেঁ কনা সকৈ ছৈ ৰেহিসারঁ। ভূতক নাচরঁ নাঠী ৰঁজাবি-ৰঁজাবি খা তকণ বাজহ্মাবক দেখরঁ সাম্যরাদক স্বপ্ন-হ্ক্কা উঁড় যয খকাসমে। শঙ্খসঁ সমনৌতা খা সভ খাহক ডূমরঁ শঙ্খক চীকোবমে। ফেব খাহ্বান খকাসসঁ, কানূ ভোকাবি পাবি, জাহি রজ্রপাতক শঙ্খসঁ রিশ্বাস হএত জে সাওন খএন খছি পৃথ্বীপব। খা খাকাংক্ষা, ছূরিঁ কপাবক টপকৈত ৰ্নন্নক সঙে খা খপন নিখন পাঁতি পঢ়ৰাক। পছিনা ৰেবক হ্নকব খপূর্ণ কএন কার্য। খা যৌহ ছী ঋত্তরিশেষ- মোন পাড়রঁ হ্নকা। তোঁ- মে রাক্যক হকমৈত পৈসরঁ, ধীপন হাথক ধবরঁ, ধধকন খাগি হমব, এহিমে হম তোঁ, কম্পতরুক ডাবি, ৰাকী সভ ছছ খা ৰ্হঢ়ি যা নানীক কোনো খিস্সা। খা দশোদিশা পকৈত তাহিমে- ভ্রান্তি-পথ(ভ্রমিত !)। নৌ মাসক গরক, গর্ভক দীর্ঘপ্রহব। পাঁচম ঋত্ত (!) ছঠম বিপ্ল(!)- বাগ সেহো রিনম্বিত, দ্রুত তান (ত্রস্ত) খা ভান্ব খস্তমিত। বাত্তক খা দিনক কথা- মে সূতন দ্নিযাঁ কেঁ ছোড়ি ৰ্হ্ম ৰহাব হোগত ছথি ঘবসঁ হ্মদা

करिक प्रयाण करिताक भीतर- कामुनी अन्तरङ्गक अन्तर्ज्ञात रान्हन विराम- विधि-प्रसर वेदनाक राहेब। करिताक भीतर छंदहीन, वर्णहीन भाँगल ग्रंथि, उँघरल सिलाग, सूचीकर्म, मर्ममे समैत विन्दु आ एकटा मौन मोटिया तौनी जकाँ करैत अछि सँपराक प्रयते हमर शेरीरकें (भीतरसँ उगैत अस्थिरता) अव्यवस्थित आ जखन भूख, व्यथा-विच्छेदक कथा। ठाढ़ होइत देखबा नेन यौनता परसैत जएत जखन, वनि सघन छत्तीसो व्यंजन तोहर भानसमे। सदा हमर सक- मात्र करितेक भीतरक संधान, द्वयर्थबोध पूर्ण अछि जे, सूक्ष्म तर्क तकब, तान-लयसँ गमन। प्रास्त-यस्तमे ठूसल, महायोनि-निंगरोध ललने जाहि शेरीरपर। यैह टा सीखल उपाय- तोहर सपना देखैत बहरँ अन्वखन। आ दुनियाँक जगनापर सूतरँ तोहर संग- हमर हे करिता कालरात्रि करवटें टा करत, दूर करह व्यथा-विच्छेद, भूख-भय। एखने समकि उठल उखा-किरण तेँ, आकांक्षाक आशा सन। चन्द्रान्त- मे अकासमे हेलैत अक्षरक मिजाज-तिक्त लहराबैत आगिक प्रवाह, ओकरा बुझाओत करिक दोख नहि। दुनियाँक चन्द्रक अन्त। मात्राक हुनका लग अएबाक कोनो आस- ! ने हुनक करिता सजि सकती शेङ्क वनि ववसराक नेन पहिनहि जेकाँ। दमयंतीकें उपदेश- मे तीव लग लोकक पथरल (!) पड़ल बहरँ। - विना अंगक- अशेक्त लोक। घास पात तकबा सभकें धेने आ सेमारमे सन्हिआयल-ओसरायल तक्षक। वसातमे डोलरँ आ मोंसमे मोंकाह आगिक स्वनगरँ। दमयन्ती, दमयन्ती - स्वप्न बोन। फूल-पातक बीचमे ठेंअर स्वकुज(!), ठेंघड़ैत आ सावधानीसँ चिबैत हिरण्यक पेट, तैंतीस

ঔ মূহ, স্বৰূপ, গাছ সভক এম্হব জাড়ঁক উঁপদেশী। দমযন্তী, জংগনপাব নহি হোড়ঁ। খন্হাবমে ঔশান দিশামে দেহক দনান প্রতীক্ষাবত। দমযন্তী, সময। নৈঋত কোণমে ন্বকএন ননদের। গাছ–রিবীছক জানরঁ–করিতাক খাগমন কোনা হোগত খছি। জাননক গতিহাস, মন্বক্থক নিঠ্রবতা। কোনা মহারন নিরিচাব, উঁজাব, উঁছন্ন ভেন। পোস্বখা (!) গাছ রিসবন ভাষা। দমযন্তীকেঁ চেতৌনী–মন্বষ্যপব রিশ্বাস নহি কৰু, কথা–করিতা–খহ্বরাহসঁ রাঁম্হত ও। নহি পাব কৰু রোঁন। খা সে ভেনে সভ ঔ গাছ নিখত দমযন্তীকেঁ নঽ কঽ পহিন করিতা। প্রশ্নারনী– মে খচন খন্তিম বাতি যৌহ? গীতক খঁতিম পাঁতি যৌহ? খা হমব করিতা পঢ়ি সকৈ ছী? হমব খঁতিম দিরস যৌহ? কিছু কবরাঁক খাৰঁ রিরশীতা (!) তন ভ্রমিত, কোন দবিদ্র (তক্ষেণ খন্বভূতি) কী? সৃতি সহন বহন কী? হমব খাখবক ভরিতর্য? খশান্ত ভ্রমব মনক রিহংগম, খজব প্রেমক ধাব সন। ভীতব উঁগৌত শৰ্দ্ধ– মে শৰ্দ্ধক ধ্বনি তেহন সন জেনা গ্বফামে রৈঁসি কেও কানি বহন। পহাড়ক শিখবক ঠহাকা। দরঁনে পএব খএরাঁক খাহটি, নিফাফ খোনরাঁক খরাঁজ। পত্রক সভঔ পাঁতিসঁ খদরঁদ কবৈত শৰ্দ্ধ। খা রঁহিনক রঁহত নোব দেবীসঁ বূঁন্দরঁ। রাক্যক ভসিযাযরঁ, শেষ খাকি সমাস নহি রঁনরঁ, মোশিকিনসঁ বূঁন্দরঁ ঔ্বঁঔন বীঢ়ক হড্ডীক মর্মব হ্মদা কণ্ঠ্খাএন করিকেঁ ঘিসিখরৈঁত কংঠ পকড়ি। করিতামে হ্মদা স্বনন–গমন–ব্ৰ্ন্দন রস্তুক খাভাষ রঁনি খএরঁ। খপনহি ভীতবসঁ রঁহবএন হ্মদা এহি শৰ্দ্ধ সভকেঁ পবিরর্তন কবরাঁক খধিকাব করিকেঁ সেহো নহি। মাত্র চ্ম্বঁন প্রেমক মৈথ্নক খধিকাব। হ্মদা মন্থন গ্রন্থনক খা নহি কোনো ঘৃণা

এ়াধক অধিকাব। আ তকবা সজা সকৈত ছী ফূন-পাতসঁ, রেণী গূহি সকৈ ছী বাত্তক পহব। সেউঁথ চমকা সকৈ ছী পহিন স্বকজক নানীসঁ, গবাক সিঙবহাব, উঁষ্ম বৃক্ষক রন্ধন শৈব্দ শৈবীবপব ঘটিত ভেল তথ্যক সন্মান। –ওা করিতা করি গনাবানী সিংহকেঁ করি দ্বাবা সমর্পিত ছন্হি। জানন-পহিচানন- মে শৈবীবকেঁ পন্নাক-পন্না পঢ়ব় আ জীরনক নাগব় জানন পহিচানন। তহ আ গব্বেক গীত আ করি দ্বাবীএ কহব় – হ্নকব রিশ্বাস হমব শৈক্ষপব সঁ হ্টব়। আ মাত্র স্পর্শিক ভাষা- একটা গ্রামীণ অনুভূতি ব্যপেত্তি নহি দহ সকৈত অছি কেও, তকবা জীরেঁ ছী। সমার্থপদ- সপনাক নহি রাঁজব়, রজৈত তঁ অহাঁক সভটা নাম স্বনরৈত, করিক অনুমান। শৈক্ষ-নে ধাত্তমে দূর্বিনতা নে উঁপসঙ্খ-প্রত্যক অভার। নহি তঁ উঁচবি সকৈত প্রতিশৈক্ষ (চনি গেন ছথি অশ্বিখ্বক সংগে অশ্রেব্য দর্শনিক ভাষা অছি তকব)। আ তাহি নেন নর অমবকোষ, নর করিতা নিখএ পড়ত। অংক্ষব- চাবি টা করিতাক রীআক মোনমে উঁগব় আ তাহিমে প্রেমক শৈক্ষক নিখব়। আ ওকবা তেহন প্রশ্নমে নে ওঝবা দিযৌক জকব উঁত্তব হমবো বূঝন নহি অছি। স্বনৈত গপ্প অপনহি এক্ক সংগ চাবি-চাবি টা করিকেঁ বাঁটি দেনে শৈক্ষ সম্পদা। আ তৈযো এহি চাব্দকেঁ মিনাকহ গাএব় আ প্রেমক আঁক্ষবক উঁগব়। কত্ত রবসক রাঁদ- মে ঠাঢ় অহাঁ সরহক অংগনাপব একটা করিতা পঢ়হ দেব়, নেনপনেমে ভগা দেনে ছনহ্, ছঁদভংগক জূর্মানা (!) ছন। আ তাহিমে আন চীজক সংগ বহথি দূখী দাগ, ছঠিক নহি কোনো জোগাব, সানক মাত্র চাবিটা মাসক অন্ন-ভুটকেন অনোন অন্ত্থা ত্রাতা। হমবা এগো করিতা পঢ়হ দেব়। কিঐ নহি নিখৈ ছী ? – পূর্ণ রিবাম।

नहि आर्र एको पाँति अहाँक नाम। कथी ने ओ जिद्द जे लिखर्रे कवी प्रेम पत्र, अनकव र्रनायन अक्षवमे। चढ़ । कह बंग, अर्थ, रस्त्र, व्याकुनता। स्वखागत ठोव, तवर्रापव खेनागत आंग्वबक भाषा, अद्भुत अन्तर्दर्शी शेर्ष्ठ सभ आ तकव रिन्यास। तखन पत्र नहि निखर्राक नहि देर्र उँपवाग। बाजहंस– करिताक बाजहंस, शेवीवसँ अहाँक दूब चनि नैक दू डेग। उँल्कापात आदिक द्वावे अरकास नहि भेर्टन अछि ओकबा। आ शेवीवो तोहव र्रेर्रहाव नहि भेन छौक। ओकबा कहर्रें एक र्रेव उँड़र्रा नेन तोबा संग। जाधवि सहि सकत तोहव ओजन। नोबक र्रुन्न करिक उँपमा न्वकायन जे आँचव तव तवर्रापव कहर्रें बाजहंसकेँ बाखि दै जिज्ञासा ययती जे र्रनि गेनै। अन्हेव– चिड़ै कहनकन्हि, नहि र्राजू किछुओ गोपनीय, नहि तँ अन्हेव भइ जएत। कान्हि बाउक पहव करिता आयन छनी आ हेबा गेनी गव्यक भीड़मे। आ गोपनीय ओतिहास पाप प्रणयसँ पविणय धविक दूबी आ एहने सन। किऐक घर्रड़ ाओत छी। क्या नहि पूछत अहाँक नाम। नहि पूछत, चिड़ै र्रता की जनै छनेँ करि दइ जकव कर्रव एखनहि खोधन गेन अछि। एक अहीं छी– कएक र्रेव अहाँकेँ र्रजा कइ देखने छी करितामे। ऋदा घ्विवियो कइ नहि देखै छी अहाँ। मामूनी प्रेमक दस्तावेज नहि जाहिमे नाभ–हानिक हिसार्र बहत निखन। ने साधावण निमंत्रण ने मामूनी नोकक भोज्य रस्तु। अहाँकेँ करितामे एकटा नाम देने छी जे चिड़ै चुनऋन उँचवि सकै छन। एहन नहि जकवापव सनसनाओत कथा र्रनि सकत। ऋदा अहाँ किछु र्रजिते ने छी। प्ववातन प्रेम– माँगि बहन गीतक दाम। कर्रैत प्रश्न–उँत्तव (ऋदा प्रश्नतिक

पाठशीनामे कत्तह तकब गंजाणशी ?) सीमित प्रबातन प्रेम, पाठ्यप्रस्तकसँ ञतिमासक पाठ धबि। प्रष्ठेए प्रश्न-प्रबनका शीर्षक राक्यमे प्रयोग। सभर्ठी राक्य सह खष्ठि रा ফूसि। ভारार्थ कह्न...। ম्हदा थारॅ মম ভেनह्‌ँ চनाक। ..পढ़ि सकै छी मन्दाक्रान्ता छन्दक र्‌यथा। नापि सकै छी श्वह्न धैरत् क पातिव्रत्। হमब শोণित चीन्हि গेन खष्ठि जीरन-गणितक रॅर्रबताकैं ठीके। कम रॅजे छी, रॅजरों करै छी तँ ভূतकान दह नहि খनाहत-খनागत प्रेतकान दिस। খकथित-খनूदित খन्नভूति दिस रॅढ़ैत दर्शन হमब। मनिष्ठाह कह देनक, केतारी खेतक খढ़, ভुतिखाएन मान-जान খा प्रबनका प्रेम। চाह- जे হमबा किछु চाही, খा হमबा চाहरें की करी। খहाँ খनन्त, रिशेषणसँ হर्टिकह, হमब मোनक গप पूब कबरॅ तক्षण। খा जे হम চाहरॅ तारत् प्रलय एहि प्रपंचक, হमब जिनगी स्वप्तिंङन्तम्, খा रॅान्हन पदरॅह्न, घर्टैन निघर्न्टु। दह सकै छी द्रास्न, খति द्रास्न, ওंकाब ঋচा খाकाब। হमब ছোর्ট मোর्ট খाकांक्षा, ভाषा ভारना रेदना খनियमित, ঞमन-कल्याणक गमक नियंत्रित। হमब पतिक नेन-१- খहाँक घबक চाबমে ভेन ভূब, कठোब सर्द राग सेबा देनक माड़ খा খकासी नোब হमब খल्खाकैं नোबा देनक। ভीजन ওछैन, খहाँ निस्रॅह्न, ঞ ভূब कबत খतम খहाँकैं। খা ताहि रिनाशिक गीतो तँ निखू খपन हाथैं। হमब पतिक नेन-२- ও कहै छथि হमब स्थान ह्नकब माथपब, ম्हदा नहि बहरॅ হतকেशी शिखा संग। ह्वदयमे, नहि बहरॅाक श्वासयंत्र संगे। খाँखिमे, नहि बहरॅाक চश्माक तबक नোबक संग। ठोढ़पब, नहि रॅनरॅाक पूजाक जप मोती। जीहपब (ভानसक स्वाद द्वारे!), हँ ठीके,

ঋদা এহিসঁ রঁহাব হোএরাঁক গব। পএবক জ্ত্তা তব, পৃথ্বীপব, বাজনীতি ব্ঁন্নৈ ছী। কোনা জ্ত্তা পএব তবসঁ চঢ়া খবঁৈ ছৈ মাথপব। সে জহিযা ব্ঁন্নি জএবঁ তঁ ভেটৈ জএত প্রতিরাদক পহিন সবঁক। হমব পতিক নেন–३– নহি প্বছূ ব্যাকবণক, নিপিক মাদেঁ। এহি করিতাক ! কী কব্ধ খাগিমে ফেকি দী হম, নহি কছ্র ঞ সভ। নিবক্ষব ছী তেঁ কী। জাদূ–ছড় ী ছী ঘ্মা সকৈত। হমবাপব জে কিযো নিখত করিতা খা হমব চিত্তপব ব্যাকবণ তঁ কোন খাশ্চর্য? নহি কহবঁ একবা ছদ্মাডঁবঁব! হিসাবঁ– পাঁচ টৌ শৰ্হ্ব হিবিযা দৈ ছৈ ন্নৌনীকেঁ ভোবমে রাঁউঁগ কবহ জাগত কান। খনোন খন্হ্খা সংগ খাগত একটৌ গেন, খাধ টৌ খর্চ ভেন জখন ত্তসহ্ রাঁবূঁ রঁবখামে পীপবতব দেহ রঁচবৈঁত ওকবা তীন নাত দৈত ছথি। রঁচন ডেঢ়, খা ডেঢ় টৌ রাঁন্হন খছি বাখন চমবষ্টৈনীমে চ্হড় াক ঠেকাপব উঁধাবক মান পীরাঁক কান। খা শেষ শৰ্হ্ব (সাত গ্বনা চৌদহ গো শৰ্হ্ব!) ও বাখৈএ হাষ্টমে রস্ত্তজাত কিনরাঁক নেন। সাঁঝ ধবি রঁচনৈ নহি একোটৌ শৰ্হ্ব হিবিযাক কবেজপব বখরাঁ নেন খা তখন রিন্ব শৰ্হ্বক হিবিযা কোনা খোনত কবেজ, বহি জাগত খছি ঠাঢ় ওস তব, ভবি বাতি, খঙনেমে। খামেকথন– খহাঁকেঁ খপন মোনক রিষযমে কিছ রঁতাবী, কপানক্ষংডন। ঋদা হড়তানী রোঁনিহাব জন–নেতাক নেন ঠাঢ় কএন গেনি গিতহাবি..। মদাবী পঢ়ৈত হমবে করিতা খা হম ফবাক ডাঁড়মে বস্সী পহিবনে। তখন করিতাক খতিবিঞ কিছ গপ কবী। ঋদা নে কোনো বস, নে শৰ্হ্ব, নে প্রহাব কোনো রঁচন। নে হমব কোনো এহন নামে, রঁম্ভ গদ্যমব জীরন! চনূ গদ্যক চহবদেরাঁবীক রাঁহবক কিছ প্রশ্ন– কোন প্বকষক

রচনমে ওঝবাএন, কান–কাবকমে ওঝবন খবণ্যমে। খব্যযক রিনাশি, রিশেষণক উঘাবরঁ পবিধেয খা রিশেষ্যক সিংহাসনসঁ উতাবরঁ। উপসস্থা দেখি মনক ভার ব্ঁঝরাঁক সামর্থ্যি রঁনা খছি কিযো ? রাঁহ্নন পৌকষক জপ্টোজানমে পাণিনী খহাঁক পাণি। খা কবতাহ চিকোব মহেশ্বিব সূত্রমে জে হম খহাঁসঁ কিছ রাঁজী। খা পতংজনি খা হেমচন্দ্র দ্বাবা করিকেঁ দরাঁবরঁ ব্ঁঝাএরঁ মধ্যমপ্বকষ একরচন । ত্বম্, ত্বাম্, ত্বযা, তুভ্যম্, ত্বত্, তর, ত্বযি । কপানক্ংডনে, মনসিসঁ জতএসঁ সভ নিখম/ রস্থা/ নক্ষ্য রিহীন খা খহাঁ মধ্যমে মাত্র একরচন। খহাঁ সঁ প্রেম, ঘৃণা খহাঁ সঁ– খহাঁ সঁ প্রেম, ঘৃণা (খহাঁ) সঁ– খন্তিম সন্বক দিন, দিখ ফাঁসী তখন নহি স্বনি সকরঁ হমবা। হমবা গীবি নেরঁ তাহিসঁ পহিনে হেকি দেরঁ খহাঁকেঁ। দীপ সভ খহাঁ নগসঁ হপ্টা দেনে ছী। প্রেম করৈ ছী, হ্মদা ঘৃণা খাব রেঁশী। খাঁখি, হাথ, দন্ত্ব ঠোবক খন্ত কএন। হ্মদ তৈযো খহাঁক হঁসী খনৃত শঙ্খি রঁনেনক রঁবহ্ফ হমব দর্শনকেঁ, খা হেবসঁ নস–নস চনরঁ হ্নকব। কনী প্টা জগহ ছোড়ি দিযহ– এহি কোনমে ছোড়ি দিখ, খাখবক ঢেবক নীচাঁ হমব খভিনাষা। হমবে নিখনে ছনিযৈ, খহাঁকেঁ নঃ কঃ কবঃ নেন করিতা ! জগহ চাহী, কাবণ তীনপ্টা পএব করিক, এককেঁ পশ্বতাসঁ মঢ়নে ছী, দোসবকাক নোকমে খছি বোশিনাগ স্বখাএন খা তেসব নকনী হুদয। জে চাহী হমবে সন করি তঁ কনেক জগহ ছোড়ি দিখ। ভয–১– খথর্ব করি। পোথী নে চোবি ভঃ জাএ। তখন ভবিসক করিতা তঁ দোসবাক নামে বহি জাএ হ্মদা করি ছূপ্টি জএত গতিহাসসঁ। হমবা পোসরাঁ নেন সেহো খবচা, হমব চিতা সজেরাঁ নেন সেহো তবদ্দুত (গহন মংত্রসঁ সজৌনহুঁ),

হমব করিতা হ্মপিতাপব নিখএ পড়ন হৈত কণ্ড ৫ৗ গতিহাস ! ভয–২– খারি গেন চনক ঐর্ব, খার্ব ককবহুঁসঁ ডব নহি। কাবণ র্ব্ঝন ভ২ গেন হেনর্বাক খা খধমতম হোএর্বাক কনা ! খশ্রির্য্য শৈক্ষ্ণসঁ শৈশিক উঁনূকক জাগর্ব খা খস্পৃশ্য র্বানাক স্পর্শিসঁ ভূখক জাগর্ব ? খা র্ব্নি গেন ছী রিনষ্ঠ, হোএর্বাক কনা ! খার্ব খদন্ত নহি বহনহুঁ– দাঁতক জোড় । খারি গেন খছি ! কঠিন শৈক্ষ্ণ, শীতন স্তন, র্বৃহত্ রাক্য, কোমন বচনা, রিভীষণ ভাষ্য খা র্বিখবন পাঠ, খর্থ খনর্থক ভারেঁ রিম্বন। নামকবণ– চানকেঁ চন্দ্রমা, তবেগণকেঁ নিহাবিকা নাম দএ বাত্তক খর্থে র্বদনি গেন ! গজোতকেঁ প্রন্ষ খা স্বকজকেঁ মার্তণ্ড্যি কহর্বাসঁ খাঁখিক চোন্হিখাযর্ব। জংগনকেঁ উঁপরন খা ঘাস–হ্ফূসকেঁ দূরাক্ষিত কহনে খারি গেন মংত্রক উঁচাবণ খপনহি। খথক খষ্ঠনীকেঁ নিবনস প্রযাস খা র্বেজোড় শৈক্ষ্ণক জোড়াকেঁ সমাস কহনে ষ্টৃষ্টন ভাঙন কবেজ সেবায গেন ! জীরন মাত্র জীরিতক, খা মাত্র হমব খহাঁক জে কেও ব্দপ র্বদনি ক২ জী বহন ছী, প্রতিপদা–প্রতিপদাক র্বদনৈত বাশিহ্ফন খা গণিতক ভবোসে। নাম হমব দুষ্যন্ত খা খহাঁক শৈহ্ফন্তনা ভেনে কণ্ব খা মৃগশিশ্বক ফিকিব নাগন বহত। খাজ্ক করি, র্বড় উঁষ্টৃখন করি– খান্হন র্বান্হন, ছংদ নিশ্ছংদক ডোবীমে, হ্ফংসন হ্ফঁসন, ঘাযন খা ঘসন, খনংকাবক র্ব্যংজনমে বদ্ধ দদ্ধ, পকৈত ঠকৈত, জ্নি ৫পূ পহাড় দহাড়। ধৈরত বদ্ধ গরৈত। করি। খপন পংক্তি ভ২, জাগক পাব ! করিযাবক ড্যাঢ় ামে। খারি বহন ছথি করিঃ করী করযঃ – ধ্ন খাধ্নিক। করিতা কেঁ জে কবতা ছংদিত র্বধিত খা রংদিত সোচক খানোচক। বহএ দেতা করিতাকেঁ খাধা করিতা খর্ক্সি–খকরিতা, খর্ক্সিনাবীশ্বিব খর্ধ–

প্বকষপব। রঁড় উঙ্কৃঁখন ওা খাজ্ক করিরব হতনাবীশ্বিব! খহাঁ নহি রঁজনহুঁ কিছু– নহি রঁজনহুঁ খাগ ধবি, দরাঁ কহ বখনে ছী শৈষ্ক–সংপদা জমীন তব। হ্মদা জমীনক তব তঁ গাড়ন জাগছ হ্মদা। হ্মদা হম তঁ ধর্মোন্মাদ হিন্দূ প্রেমী ছী, মবিযো কহ জমীন তব নহি জএরঁ, জবরঁ ঘবকরঁ খা খাগিমে ভণরঁ খপন গীত। নহ কেশ হৈত রিনীন, কোন খন্বশাসন শাস্ত্র সিখেনে খছি খন্বভূতিপব নগাম নগাযরঁ– দেহ বদ্ধ ঝাঁপনে খহংকাব খনংকাব তব, নগা দিযৌ তানা গবাপব জে কোনো ধ্বনি নহি রঁজা জাগক। হ্মদা হম সূর্যরংশী বাজপূত, হমব খস্ত্র খছি শৈষ্ক খর্থ স্বব নিপি। তর্কমে হাবি জঁ জাগ তঁ কবরঁ খামেসমর্পণ! হ্মদা হাবী রা জীতী, রাঁজরঁ খরশ্থ। খানোকক যংত্র রেঁকন পড়ন, নান–হবিযব–পীযবক সংকেত মূক। মোনমে হ্নকী দহ দেখি বহন ছী খহাঁক যোজনা, রস্ত্র–খস্ত্র হবরাঁক, খর্হ্নসহসঁ খনৃত রঁজএরাঁক, পাঁতিমে রৈঁসি খমৃত চোবএরাঁক; ছ্যাতক দারমে চঢ়ন জিনগী শর শৈষ্ক! হ্মদা এখনো ভবোস জে খহাঁ রাঁজরঁ কিছু নহি তঁ গারিযে উঠরঁ হমবে কোনো গীত। খপন করিতা স্বনাউ ! – খহাঁ খপন প্ববাতন প্রেমী মানে হমবা নহ গেনহুঁ ওহি নরকা মকানমে পহাড়ক শিখবপব! খহাঁক রাঁচ পূছরঁ মেঘসঁ ওহি ঠামক, খা ওকব রংকিম হ্মস্কান, খহাঁ সঙে হমবা দেখি! হ্মদা নে মেঘক, নে তবেগণক, নে বাশি–নগ্ন–খকাসী জ্যামিতি খা নে ভাগ্যক গণিতক সংক্রমণক কোনো গনতী, জে সভ মিনি কএনে বহএ রিচ্ছেদক সংক্রমণ ! খংতিম মিনন জে ভেন ছন চানক গহ্ববমে। নে পাথবক দোষ খা নে খন্ধাবক ভূগোনক। সূর্য খা পৃথ্বীক সংকেত, তবেগণক হস্তাক্ষব রিচ্ছেদক ভএকেঁ মিনি

কঽ কএনক চঞ্রান্ত। জাহিসঁ হম সভ নহি ৱাঁজি সকী কোনো স্মবণীয পাঁতি–শৰ্ষ্ক সভ !–দ্নূ গোষ্ঠে। গবা দৱৱৈত নিঃশৰ্ষ্কতা। হ্মদা দোষ নে নিঃশৰ্ষ্কতাক খা নে দেৱাঁবপব নিখন শিনানেখক, জকব রিজাতীয খক্ষব সভ হম পঢ়ঽ সিখনহি নহি ছনহুঁ। গন্নব ভবি গেন খহাঁক করিতাসঁ, ডুঁপব ডঁঠৈত করিতাক পাঁতী সভ জকব শিখবপব চঢ়ৱাঁক খসহফন প্রযাস। ওহি পাঁতী সভকেঁ দোষী নহি ছী। রিশ্বাসঘাতপব খহী টৌক খধিকাব নহি। খাৱ সীখি গেন ছী খহীক ভাষা, কামনাসঁ ধধকৈত পহাড়পব চঢ়ৱা নেন, পঢ়ৈ নেন সভটা পাঁতি, করিতা খা শিনানেখ! হম সীখি গেন ছী খহাঁক হস্তাক্ষব পঢ়ৱ। হ্মদা এহি শিনানেখপব খহাঁ দেখা বহন ছী পজেৱা, কাঠ, ৱান্ন খা সীমেঁটক বাশি, দবৱজ্জা, কক্কা খা হর্শ সভ! হ্মদা হম স্বনঽ চাহি ছী কৈক টা করিতা, খহাঁসঁ খহাঁক ভাষামে, জে এখন হমবহ্ ভাষা খছি। জীরনী– ছারনীক দ্রাহ, তাঁতিযা টৈপে, রিকটাবিযা, সবকাবী করি বরীন্দ্রনাথক জন্ম খা রিধরা রিরাহক চর্চ? বংগমংচক পহিন পৃষ্ঠা, হেবাশিম নেৱৈডহপব একটা পূবা পন্না কীড়। চাটি নেনক? হ্মদা খাজ্ক বংগমংচক প্ববোধাক নেন জে ও পৃষ্ঠা নহিযো ভেটৈ তঁ হর্জ নহি। ওকব দোসব দিস্বকা পৃষ্ঠাপব মাগকন মধ্সূদনপব একটা নেখ খা খাধ্নিক করিতাক শ্রীগণেশপব সেহো, হ্মদা ১৯৯০ গ্র.ক ৱাঁদক খনপঢ় করি কোনা জনৱৈঁ গঽ! খা তেঁ নে পটি জাগ ছী হমবা সন ৱহ্রুপিযাসঁ। খা ১৯২১ গ্র.এহি শতাৰ্দ্ধীক সবকাবী করিক জন্ম, নেনপনক দনিদ্দব দশা, খরহেনেনা শিশ্বকানক, রিৱেকানন্দক হ্রূসি–কথা খা স্তাকরাণী? হমব কথাসঁ পহিনে গিবীশ ঘোষ, সব খাশ্বতোষ খা

নেতাজীক পলায়ন আ মহামোক কাবাবাস অএবাঁক চাহী ? হ্মসি। কাবণ ওতিহাস শ্বদ্ধ হোএছ গোড়সেক আবিভাবি আ হমব জন্মক বাঁদে ? আ তখন ট্রেইন ভাঙন ভূগোল, হড়পক গণিত আ শাস্ত্রীয় বর্ণভেদ, "বেদলাক" মূর্খ। দ্রিজয ঠীক কব্ধ ? –অহাঁ হমব সবকাবী জীবনীকাব ! অহাঁক নেন অধ্যায়ক অধ্যায় প্রাবম্ভ হোএবাঁক চাহী ১৯৩১ ঙা.সঁ। হমব বিমাতা হ্মন পিতামহী। মনগঢ়ন্ত কথা, দাদী–মাঁ দহ, জে ভহ জাগ ছলী সোনবঁবসাক বাজকন্যা। কোনা কবিতা অএলীহ আ হমব জীবনমে আযলি বমণীক মাদেঁ ? লাগি বহল ছী, তাকূ আনে ককবহ্। অজন্মা বা অক্তাত্ অনামা ক্যা কবি। তাবত্ কবিতে হমব ধ্যান বখতী, বঁতওতীহ জীবন–কথা হমব! মধ্যমপুকষ একবচন–অহাঁকেঁ ছোড়ি অনকে দহ সোচী –এহন আদেশ ! হ্মদা গাছ–বৃঁছ, হ্মল পাথবক বংচকতা, বিশ্বাসঘাতী ব্যাকবণ ধবি জান পসাবনে ! মধ্যমপুকষ একবচন অহাঁ তঁ ছী! বাজনীতি, দেশক ঋণক পহাড়, ভ্রষ্ট নিষাক্তি.. মধ্যমপুকষ একবচন অহাঁ তঁ ছী হ্মদা..নিখূ নব্যন্যায–অন্যায, নিখূ বৈশেষিকক ঢেবী, বিসব্ধ ধন–ব্যাকবণ, মধ্যমপুকষ একবচন অহাঁ তঁ ছী হ্মদা..বৈকাব শৃংগাব বস তত্ত্ব ধ্বনিক, মাত্র ক্ষণিক। আহ নহ জহাঁঘ ধবি, বঁচবেঁ নেন অনকব সীতা, গীতা । চলতি চলতঃ চলংতী কবিতা ঋতা বাঞ্ছাবা সন ব্যাকবণ মধ্যমপুকষ একবচন অহাঁ তঁ ছী হ্মদা... কোনা কিছ সোচি সকৈ ছী অহাঁকেঁ ছোড়ি ?

কবিতা: কবিতা লোক কম পঢ়ৈত অছি। সংস্কৃতসন ভাষাক প্রচাব–প্রসাব নেন কএল জা বহল প্রযাস, সম্ভাষণ–শিবিবমে সবন সংস্কৃতক প্রযোগ হোএত অছি।

কথা–উঁপন্যাসক আধুনিক ভাষা সভসঁ সংস্কৃতমে অনুবাদ হোণত অছি ক্ষদা করিতা ওহি প্রক্রিয়ামে রাঁবন বহৈত অছি। কাবণ করিতা কিযো নহি পঢ়ৈত অছি আ জাহি ভাষা নেন শিরিব নগেরাঁক আরশ্যকতা ভহ গেন অছি, তাহি ভাষামে করিতাক অনুবাদ উঁর্জাকি অনস্থান প্রযোগ মানন জাণত অছি। মৈথিনীমে স্থিতি এহন সন ভহ গেন অছি, জে গাম আণ খতম ভহ জাএ তঁ এহি ভাষাক রাঁজএরঁনাক সংখ্যা রঁড্ড ন্যূন ভহ জএত। নোক সেমীনাব আ রৈঁসকীমে মাত্র মৈথিনীমে রঁজতাহ। মৈথিনী–উঁচাবণ নেন শিরিব নগেরাঁক আরশ্যকতা তঁ অনুভূত ভণএ বহন অছি। তঁ এহি স্থিতিমে মৈথিনীমে করিতা নিখরাঁক কী আরশ্যকতা আ ঔচিত্য ? সমযাভারমে করিতা নিখৈ ছী, এহি গপপব জোব দেনাসঁ ওা স্থিতি আব ভযারহ ভহ সোন্মাঁ অরৈঁত অছি। এহনা স্থিতিমে আস–পড় াসক ঘটনাক্রম, ব্যক্তিগত মহত্বাকাঙ্ক্ষা, আক্ষেপ আ যাত্রা–রিরবণী যৈহ মৈথিনী করিতাক রিষয–রস্তু রঁনি গেন অছি। ক্ষদা এহি সভ নেন গদ্যক প্রযোগ কিএক নহি ? কথাক নাট্য–রূপান্তবণ বংগমংচ নেন কএন জাণত অছি ক্ষদা গদ্যক করিতামে রূপান্তবণ কোন উঁদ্দেশ্যসঁ। সমযাভারমে নিখন জা বহন এহি তবহক করিতা সভক পাঠক ছথি গোনৌসী কেনিহাব সমীক্ষক নোকনি আ স্বযং আত্মখক মাধ্যমসঁ অপন করিতাক নীক সমীক্ষা কেনিহাব গদ্যসঁ পদ্যমে রূপান্তবকাব মহাকরি নোকনি ! পদ্য সর্জনাক মোন কে রঁূঝত ! ব্যক্তিগত নৌকিক অনুভর জে গহীব ধবি নহি উঁতবত তঁ সে ত্তকান্ত বহনা উঁপবান্তা উঁৎকৃষ্ঠ করিতা নহি রঁনি সকত। পাবনৌকিক চিন্তন কতরোঁ অমূর্ত বহত আ জে ও নৌকিকসঁ নহি মিনত তঁ ও

সেহো খন্তুকান্ত রা গোনৌসী খা রাদক সোংগবক খছৈতহ্ঁ সিহবা নহি সকত। মন্বন্থক খারশ্যক খছি ভোজন, রস্ত্র খা খারাস। খা তকব রাঁদ পাবনৌকিক চিন্তন। জখন রঁ্হ্ম ওা প্বছৈ ছথি জে ওা সভ উঁসেরমে ভাগ নেনিহাব সভ সেহো মূন্ক খরশ্যংভারিতাকেঁ জনৈ ছথি ? খা সে জে জনৈ ছথি তখন কোনা উঁসেরমে ভাগ নহ বহন ছথি। সে খাধ্নিক মৈথিনী করি জখন খপন ভাষা-সংস্কৃতিক খা খার্থিক খাধাবক খাধাব খপনা পএবসঁ নীচাসঁ রিন্বপ্তু দেখৈ ছথি খা তখনহ্ খাঁখি মূনি কহ ওহি সন্তাকেঁ নহি মানৈত ছথি, তখন জে দেশ-রিদেশক ঘটনাঞমক রাদ করিতামে ঘোসিযারঁএ চাহি ছথি, দেশজ দনিত সমাজ নেন জে ও উঁপকবি কহ নিখহ চাহি ছথি, উঁপকাব কবহ চাহি ছথি, তঁ তাহিমে ধাব নহি খারিঁ পরেঁ খছি। ক্ষদা জখন বাজদের মংডন করিতা নিখৈ ছথি-

....

টৈপ-টৈপ চ্রেঁত খূনক রঁূন সঁ
ধবতী ভহ বহন স্নাত
পূছি বহন খছি চিড়ৈ
খপনা মন সঁ ওা রাঁত
খারঁহ রাঁনা ওা কাবী খা ভাবী বাতি
কি নহি রাঁচত হমব জাতি... ?

তঁ সে হমবা সভকেঁ সিহবা দৈত খছি। করিক করিন্বক জাতি, ওহি চিড়ৈক জাতি খাকি..। কোন গোনৌসী খা খামেঙ্কথ্র খাঙ্কখক দবকাব ছৈ এহি করিতাকেঁ। কোন গোনৌসীক খা পংথক সোংগব চাহী এহি সম্বেদনাকেঁ। তঁ করিতাকেঁ উঁকেৃষ্ঠতা চাহী। ভাষা-সংস্কৃতিক খাধাব চাহী। ওকবা খানী খাযাতিত রিষয-রস্তু নহি চাহী,

জে ওকবাপব উঁপকাব কবৱাঁক দৃষ্টিএঁ আনন গেন ছৈ। ওকবা আযাতিত সম্বেদনা সেহো নহি চাহী জে ওকব পএবক নীচাসঁ রিনুপ্ত ভাষা-সংস্কৃতি আ আর্থিক আধাবকেঁ তকৱাঁক উঁপবন্নপকী উঁপঞ্চত প্রযাস মাত্র হোথএ। নীক করিতা কোনো রিষযপব নিখন জা সকৈত অছি। বৃঁহ্মক মানরক ভরিষ্যক চিন্তাকেঁ নহ কএ, অসঞ্জাতি মনকেঁ সম্বন দেৱা নেন সেহো, নহি তঁ নোক প্ররচনমে ঢ় া ংগী ৱাঁৱা নেন জাগতে বহতাহ। সমাজক ভাষা-সংস্কৃতি আ আর্থিক আধাবক নেন সেহো, নহি তঁ মৈথিনী নেন শিরিব নগাৱঁএ পড়ত। রিম্বক সংপ্রেষণীযতা সেহো আরশ্যক, নহি তঁ করি নেন পহিনেসঁ রাতারবণ বঁনাৱঁএ পড়ত আ হ্নকব করিতাক নেন মঁচক ওবিআওন কবএ পড়ত, হ্নকব শৈক্ষারনী আ রাদক নেন শিরিব নগা কহ প্রশিক্ষণ দেন জএৱাঁক আরশ্যকতা অনুভূত কএন জএত আ সে করি নোকনি কণযো বহন ছথি ! মিথিনাক ভাষাক কোমন আবোহ-অরবোহ, এত্তক্কা সর্রহাবা রস্কাক সর্রগুণসংপন্নতা, সংগহি এত্তক্কা বহন-সহন আ সংস্কৃতিক কঞ্চবতা আ বাজনীতি, দিনচর্যা, সামাজিক মান্যতা, আর্থিক স্থিতি, নৈতিকতা, ধর্ম আ দর্শন সেহো সাহিত্যমে অএৱাঁক চাহী। আ সে নহি ভেনে সাহিত্য একভগাহ ভহ জএত, ওনড়া জএত, ফ্রেম নগা কহ টঁগৱা জোগড় ভহ জএত। করিতা বচৱঁ রিরশতা অছি, সাহিত্যিক। জহিযা মিথিনাক নোককেঁ মৈথিনী ভাষা সিখেৱা নেন শিরিব নগাওন জএৱাঁক আরশ্যকতা অনুভূত হোএত, তহিযা করিতাক অস্তিত্বপব প্রশ্ন সেহো ঠাঢ় কএন জা সকত। আ সে দিন নহি আৱঁএ তাহি নেন সেহো করিকেঁ সতর্ক বহএ পড়তন্হি। আ ওতএ ত্বম্, ত্বাম্, ত্বযা, তুভ্যম্, ত্বত্, তর, ত্বযি-নচিকেতাক মধ্যমপুরুষ

एकवचन–अहम्, माम्, मया, मह्यम्, मत्, मम, मयि सँ फराक रूपमे सोझाँ अबैत अछि।

<u>मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त</u>

गुणाढ्यक पैशाची भाषाक बृहत् कथाक क्षेमेन्द्रक कथा मंजरी वा सोमदेवक कथासरित्सागरक अनुवाद होएबाक कथा कथा कहबाक शैली सेहो भऽ सकैए जेना ओ अनुवादक कथाक प्रारम्भ तँ कहिते अछि।
अनुवादक इतिहास बड्ड पुरान छै। कोनो प्राचीन भाषा जेना संस्कृत, अवेस्ता, ग्रीक आ लैटिनक कोनो कालजयी कृति जखन दुरूह होबऽ लागल तँ ओइपर चाहे तँ भाष्य लिखबाक आवश्यकता अनुभव भेल आ कनेक बाद आगाँ ओकरा दोसर भाषामे अनुवाद कऽ बुझबाक आवश्यकता अनुभव भेल। प्राचीन मौर्य साम्राज्यक सम्राट अशोकक पाथरपर कीलित शिलालेख सभ, कएकटा लिपि आ भाषामे, राज्यक आदेशकेँ विभिन्न प्रान्तमे प्रसारित केलक। भाष्य पहिने मूल भाषामे लिखल जाइत छल आ बादमे दोसर भाषामे लिखल जाए लागल।

मैथिलीसँ दोसर भाषा आ दोसर भाषासँ मैथिलीमे अनुवाद लेल सिद्धान्त: मैथिलीसँ सोझे दोसर भाषामे अनुवाद अखन धरि संस्कृत, बाँग्ला, नेपाली, हिन्दी आ

অংগ্রেজী ধরি সীমিত অছি। তহিনা ঐ পাঁচো ভাষাক সোঝ অনুবাদ মৈথিলীমে হোইত অছি। ঐ পাঁচ ভাষাক অতিরিক্ত মরাঠী, মলযালম আদি ভাষাসঁ সেহো সোঝ মৈথিলী অনুবাদ ভেল অছি মুদা সে নগণ্য অছি। মৈথিলীমে অনুবাদ আ মৈথিলীসঁ অন্য ভাষামে অনুবাদ ঐ পাঁচো ভাষাকেঁ মধ্যস্থ ভাষাক রূপমে লঽ কঽ হোইত অছি। অহূ পাঁচ ভাষামে হিন্দী, নেপালী আ অংগ্রেজীক অতিরিক্ত আন দূ ভাষাক মধ্যস্থ ভাষাক রূপমে প্রযোগ সীমিত অছি। অনুবাদসঁ কনে ভিন্ন অছি রূপান্তরণ, জেনা কথাক নাট্যে রূপান্তরণ বা গদ্যক পদ্যমে পদ্যক গদ্যমে রূপান্তরণ। ঐ মে মৈথিলীসঁ মৈথিলীমে বিধাক রূপান্তরণ হোইত অছি আ অনুবাদ সিদ্ধান্তক জ্ঞান নৈ রহলে রূপান্তরকার অর্থ আ ভাবক অনর্থ কঽ দৈত অছি। মৈথিলীমে আ মৈথিলীসঁ অনুবাদমে তঁ ই সমস্যা আর বিকট অছি।

উত্তম অনুবাদ লেল কিছু আবশ্যক তত্ত্ব: শব্দশঃ অনুবাদ করবাক কাল ধ্যান রাখূ জে কহবী আ সন্দর্ভক মূল ভাব আবি রহল অছি আকি নৈ। শব্দ, বাক্য আ ভাষাক গঢ়নি অক্ষুণ্ণ রহএ সে ধ্যানমে রাখূ। মূল ভাষাক শব্দ সভ জঁ প্রাচীন অছি তঁ অনূদিত ভাষাক শব্দ সভকেঁ সেহো পুরান আ খাঁটী রাখূ। মূল আ অনূদিত ভাষাক ব্যাকরণ আ শব্দ ভণ্ডারক বৃহত্ জ্ঞান এতএ আবশ্যক ভঽ জাইত অছি। মূল ভাষামে জঁ কোচিযা কঽ রাজন রামনাথ, উমেশক প্রতি সম্বোধনকেঁ রামনাথো, উমেশোক বদনামে রামনাথহুঁ, উমেশহুঁ কঽ অনুবাদ কএল জাএব উচিত হএত মুদা সামান্য পরিস্থিতিমে সে উচিত নৈ হএত। সে শব্দ, ভাব, প্রারূপমে সেহো আ মূল প্রকৃতিক দেশ-কালক ভাষামে সেহো সমানতা চাহী।

अनुवादककेँ मूल आ अनूदित कएल जाएबला भाषाक ज्ञान तँ हेबाके चाही संगमे दुनू भाषा क्षेत्र इतिहास, भूगोल, लोककथा, कहबी आ ग्राम्य-वन्य आ नगरक संस्कृतिक ज्ञान सेहो हेबाक चाही। आ मध्यस्थ भाषासँ अनुवाद करबा काल आर बेसी महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। ऐ परिस्थितिमे "दुनू भाषा क्षेत्रक इतिहास, भूगोल, लोककथा, कहबी आ ग्राम्य-वन्य आ नगरक संस्कृतिक ज्ञान" सँ तात्पर्य अनूदित आ मूल भाषा क्षेत्रसँ हएत मध्यस्थ भाषा क्षेत्रसँ नै। कखनो काल मूल भाषाक कोनो भाषासँ सम्बन्धित तत्त्व वा एकर भाषिक तत्व (सांस्कृतिक तत्त्व) क सही-सही उदाहरण अनूदित भाषामे नै भेटैत अछि आ तखन अनुवादक एकरा लमबाकऽ लगैत छथि वा ओइ लेल एकटा सन्निकट शब्दावली (ओइ नै भेटल तत्त्वक) देमए लगैत छथि। ऐ परिस्थितिमे सन्निकट शब्दावली देबासँ नीक एकरा लमबा कऽ बुझाएब वा परिशिष्ठ दऽ ओकरा स्पष्ठ करब हएत। ऐ सँ मूल भाषासँ मध्यस्थ भाषाक माध्यमसँ कएल अनुवादमे होइबला साहित्यिक घाटाकेँ न्यून कएल जा सकत।

कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य (गीत-प्रबन्ध), निबन्ध, स्कूल-कॉलेजक पुस्तक, संगणक विज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञानक पोथीक अनुवाद करबा काल किछु विशेष तकनीकक आवश्यकता पड़ैत। निबन्ध, स्कूल-कॉलेजक पुस्तक, संगणक विज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञानक अनुवाद ऐ अर्थेँ सरल अछि जे ऐ सभमे विस्तारसँ विषयक चर्चा होइत अछि आ सर्जनात्मक साहित्य {कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य (गीत-प्रबन्ध)} क विपरीत भाव आ संस्कृतिक गुणांक नै रहैत अछि वा

কম বহৈত খছি। সংগে এতএ পাঠক সেহো কক্ষা/ রিষযকক খন্বসাব সজাএন বহৈত ছথি। কেমিকন নাম, ৰাযোনোজিকন খা ৰোঁটৈনিকন ৰাগনবী নাম খা খান সভ সিম্বন খাদি জে রিশিষ্ঠ খন্তবর্ষ্ট্রীয সংস্থা সভ দ্বাবা স্বীকৃত খছি তকব পবিরর্তন রা খন্বরাদ খপেক্ষিত নৈ খছি। সর্জনামেক সাহিত্যমে নাটক সভসঁ কঠিন খছি, ফেব করিতা খছি খা তখন কথা, জঁ খন্বরাদকক দৃষ্ঠিকোণসঁ দেখী তখন। নাটকমে নাটকক পৃষ্ঠভূমি খা পবোক্ষ নিহিতার্থকেঁ চিহ্নিত কবএ পড়ত সংগহি পাত্র সভক মনোরিজ্ঞান বূঝএ পড়ত। করিতামে করিতাক রিধাসঁ ওকব গঢ়নিসঁ খন্বরাদকক পবিচিত ভেনাগ খারশ্যক, জেনা হাগকূক মৈথিনীসঁ খংগ্রেজী খন্বরাদ কবৈ রেঁবমে মৈথিনীক রার্ণিক ৩/৭/৩ ক মেন জঁ খংগ্রেজীক খনঙ্কারেঁটসঁ কবেরেঁ তঁ খহাঁক খনূদিত হাগকূ হাস্যাস্পদ ভ২ জাএত কাবণ খংগ্রেজীমে ৩/৭/৩ সিনেরঁনক হাগকূ হোগ ছৈ খা মৈথিনীমে জেনা রর্ণ খা সিনেরঁনক সমানতা হোগ ছৈ সে খংগ্রেজীমে নৈ হোগ ছৈ। ঐ সন্দর্ভমে জ্যোতি স্বনীত চৌধবীক মৈথিনীসঁ খংগ্রেজী খন্বরাদ একটা প্রতিমান প্রস্তুত কবৈত খছি। করিতাক নয, রিম্বঁপব রিচাব কবএ পড়ত সংগহি করিতা খন্ডক করিতাক হৃখ্য শবীবসঁ মিনান কবএ পড়ত। কথামে কথাকাবক খা কথাক পাত্রক সংগ কথাক ক্রম, রৈকল্পিশিক সময–কানক জ্ঞান খা রাতারবণক জ্ঞান খারশ্যক ভ২ জাগত খছি। খার্ঁ মহাকার্যক খন্বরাদ দেখূ, বামনোচন শবণক মৈথিনী বামচবিত মানস খরধীসঁ মৈথিনীমে খন্বরাদ খছি হৃদা দোহা, চৌপাগ, সোবঠা সভ শাস্ত্রীয রূপেঁ খনূদিত ভেন খছি।

সংস্কৃত ভাষাক খন্বরাদক মাধ্যমসঁ পাঠন খাংগ্ল শাসক

লোকনি দ্বাবা প্রাবম্ভ ভেল। ঐ রিধিসঁ লে লৈটৈনক আ নহিযে গ্রীকক অধ্যাপন কবাওল গেল ছল। ঐ রিধিসঁ জঁ অহাঁ সংস্কত রা কোলো ভাষা সীখরঁ তঁ আচার্য আ কোরিদ কহ জাএরঁ হ্মদা সম্ভাষণ লৈ কএল হএত। জঁ কোলো ভাষাকেঁ অহাঁ মাতৃভাষা রূপেঁ সীখরঁ তখলে সম্ভাষণ কহ সকরঁ, সংস্কৃতি আদিক পবিচয পাঠ্যক্রমমে শব্দকোষ; আ লোককথা আ গতিহাস/ ভূগোলক সমারেশ কহ কএল জা সকৈত অছি।
সংগণক দ্বাবা অনুরাদ: সর্জলামেক রা লিরঁষ্ক, স্কূল-কঁালেজক প্বস্তক, সংগণক রিজ্ঞান, সমাজশাস্ত্র, সমাজ রিজ্ঞান আ প্রকৃতি রিজ্ঞানক অনুরাদ সংগণক দ্বাবা প্রাযোগিক রূপমে কএল জাগত অছি হ্মদা "কোল্ড রঁলডেড এলীমল" ক অনুরাদ হাস্যাস্পদ রূপেঁ "লৃশংস জীর" কএল জাগত অছি। হ্মদা সংগণকক দ্বাবা অনুরাদ কিছু ক্ষেত্রমে সফল রূপেঁ ভেল অছি, জেলা রিকীপীডিযামে ৬.০০ শব্দক একটা "রৈসী প্রযুক্ত শব্দারলী" আ ২৬০০ শরঁদক "শব্দারলী"ক অনুরাদ কেলাসঁ, গূগলক ট্রান্সলেশল অওজাব আদিমে আধাবভূত শব্দক অনুরাদ কেলাসঁ আ আল গরেষক জেলা মোজিলা ফাযবফঁাক্স আদিমে অংগ্রেজীক সভ পাবিভাষিক সংগণকীয শব্দক অনুরাদ কেলাসঁ ত্রুটিরিহীল স্বতঃ মৈথিলী অনুরাদ ভহ জাগত অছি।

<u>ভারোপীয ভাষা পবিরাব মধ্য মৈথিলীক স্থান</u>

ভাষাক পাবিরাবিক রগীকবণ ঐতিহাসিক খাধাবপব হোগত খছি, জাহিমে ভাষাক গতিহাস, এক ভাষাক দোসব ভাষাসঁ উঁপেত্তি, ভাষাক খাহ্নতি-প্রহ্নতি মানে বচনামেকতাক সংগ খর্থ-তত্ত্বপব সেহো ধ্যান দেন জাগত খছি। জেনা কোনো ব্যক্তি রা সমূহ রীজীপ্বকষক সংকল্পনা কবৈত খছি খা ওতএসঁ খপনা ধবি একটা রংশিরৃক্ষক নির্মাণ কবৈত খছি, তহিনা ভাষাক গতিহাসক নেখক সেহো খাদি, মধ্য খা খাধ্নিক কানক খাধাবপব ভাষাক পূর্বরর্তী খা রীজ ভাষাক সংকল্পনা সোন্নাঁ খনৈত ছথি। হ্মদা ভাষাক গতিহাসমে প্বত্রী খা রঁহিন ভাষাক

संकल्पना सेहो एहि तरहेँ सोझाँ अबैत अछि।

मैथिलीक भारोपीय भाषा परिवारमे स्थान
स्थान, शब्द, व्याकरण आ ध्वनिक आधारपर भाषा एक-दोसरासँ लग होइत अछि। मुदा एहि मध्य किछु अपवाद सेहो अछि। अवेस्ता, अंग्रेजी आ जर्मन भाषा मैथिलीसँ भौगोलिक रूपसँ दूर रहलोपर एक्के परिवारक अछि, मुदा अरबी, तमिल आदि सापेक्ष रूपेँ भौगोलिक निकटता अछैत दोसर परिवारक अछि।
फेर भाषा स्थित आयातित विदेशज शब्दावलीक आधारपर हम एक भाषाकेँ दोसर भाषाक परिवारक सिद्ध नहि कऽ सकै छी। तहिना ध्वनिमूलक आ शब्दमूलक अर्थक साम्य सेहो दू भाषा परिवारकेँ एक वर्गमे नहि आनि सकैत अछि, जेना संस्कृतक जानु आ अरबीक जानिम -शब्दमूलक साम्य वा मैथिलीक मियाउँ आ चीनी मन्दारिन भाषाक म्याउँ (बिलाड़ि)- ध्वनिमूलक साम्य।
ध्वनिक साम्यमे सेहो कखनो काल गड़बड़ी होइत अछि, जेना मैथिलीमे ड़, ढ़ आ चन्द्रबिन्दुक खूब प्रयोग होइत अछि मुदा ई तीनू ध्वनि संस्कृतमे नहि अछि।
भौगोलिक आधारपर सेहो "भारोपीय भाषा" ई नामकरण पूर्ण रूपसँ समीचीन नहि अछि, कारण सम्पूर्ण भारतमे भारोपीय भाषा परिवारक उपस्थिति नहि अछि आ भारतमे भारोपीय भाषाक अतिरिक्त आनो भाषा परिवारक उपस्थिति अछि। यूरोपमे सेहो काकेशियन आदि भाषा परिवार भारोपीय भाषा परिवारमे नहि अबैत अछि।
व्याकरण साम्यक आधार दू भाषाकेँ एक परिवारमे राखबाक सभसँ स्वदृढ़ आधार अछि।

𑒧𑒴𑒪 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒦𑒰𑒩𑒼𑒣𑒲𑒨 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒐𑒴𑒥 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒡𑒰𑒞𑒳𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒨 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒳𑒪𑓂𑒪𑒱𑓀𑒑, 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒪𑒱𑓀𑒑 𑒂 𑒢𑒣𑒳𑓀𑒮𑒏 𑒪𑒱𑓀𑒑, 𑒄 𑒞𑒲𑒢 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒪𑒱𑓀𑒑 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒋𑒏𑒫𑒔𑒢, 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒫𑒔𑒢 𑒂 𑒥𑒯𑒳𑒫𑒔𑒢 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒲𑒢 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒫𑒔𑒢। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑓀𑒬 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒫𑒔𑒢 𑒂 𑒥𑒯𑒳𑒫𑒔𑒢 𑒨𑒻𑒯 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒫𑒔𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒤𑒪 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒯𑒼 𑒮𑒹 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒢𑒹𑒣𑒠𑒲 𑒂 𑒖𑒏𑒩 𑒤𑒪 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒦𑒹𑒙𑒋 𑒮𑒹 𑒣𑒩𑒮𑓂𑒧𑒻𑒣𑒠𑒲, 𑒄 𑒠𑒴 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒦𑒰𑒩𑒼𑒣𑒲𑒨 𑒦𑒰𑒭𑒧𑒹 𑒥𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒼𑒙𑒰-𑒧𑒼𑒙𑒲 𑒦𑒰𑒩𑒼𑒣𑒲𑒨 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱।

𑒦𑒰𑒩𑒼𑒣𑒲𑒨 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒠𑒴 𑒦𑒹𑒠 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒋 (𑓑𑓐𑓐) 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒴𑒪 𑒦𑒰𑒩𑒼𑒣𑒲𑒨 𑒬𑒥𑓂𑒠 "𑒏𑓂𑒧𑒞𑒼𑒧" 𑒠𑒴 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒧𑒹 "𑒬𑒞𑒧𓂂" 𑒂 𑒪𑒻𑒙𑒱𑒢𑒧𑒹 "𑒏𑒹𑒢𑓂𑒙𑒳𑒧𑓂"। 𑒋𑒯𑒱 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒮𑒿 𑒪𑒑 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒧𑒴𑒯 𑒁𑒫𑒹𑒮𑓂𑒞𑒰 (𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒂 𑒑𑓂𑒩𑓀𑒟 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒢𑒰𑒧, 𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠-𑒁𑒫𑒹𑒮𑓂𑒞𑒰-𑒍𑒯𑒱𑒣𑒩 𑒦𑒰𑒭𑓂𑒨), 𑒤𑒰𑒩𑒮𑒲, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲, 𑒩𑒴𑒮𑒲 𑒂𑒠𑒱 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒙𑒳𑒧𑓂 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒧𑒹 𑒪𑒻𑒙𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒪𑒑 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒑𑓂𑒩𑒲𑒏, 𑒖𑒩𑓂𑒧𑒢, 𑒤𑓂𑒩𑒹𑓀𑒔, 𑒃𑒙𑒰𑒪𑒱𑒨𑒢 𑒂𑒠𑒱 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒬𑒞𑒧𑓂 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒧𑒹 𑒦𑒰𑒩𑒞-𑒃𑒩𑒰𑒢𑒲 (𑒫𑒰 𑒃𑒢𑓂𑒛𑒼 𑒂𑒩𑓂𑒨𑒢), 𑒥𑒰𑒪𑓂𑒙𑒼-𑒮𑓂𑒪𑒰𑒫𑒱𑒏, 𑒂𑒩𑓂𑒧𑒲𑒢𑒲 𑒂 𑒃𑒪𑒲𑒩𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒧𑒴𑒯 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒃𑒢𑓂𑒛𑒼 𑒂𑒩𑓂𑒨𑒢 𑒫𑒰 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲𑒨-𑒄𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒧𑒴𑒯𑒧𑒹 𑒇𑒑𑒫𑒹𑒠 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒼𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒱𑒨𑒢 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒁𑒫𑒹𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒑𑓂𑒩𑒢𑓂𑒟 𑒖𑒹 𑒫𑒻𑒠𑒱𑒏 𑒏𑒰𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒁𑒫𑒹𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒑𑓂𑒩𑒢𑓂𑒟 𑒁𑒕𑒱। 𑒄𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒧𑒴𑒯𑒧𑒹 𑒁𑒫𑒹𑒮𑓂𑒞𑒰, 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒤𑒰𑒩𑒮𑒲, 𑒣𑒯𑒪𑒫𑒲, 𑒣𑒬𑓂𑒞𑒼, 𑒥𑒪𑒴𑒔𑒲 𑒂 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒠 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐 𑒁𑒕𑒱। 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲𑒨 𑒂𑒩𑓂𑒨𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒧𑒴𑒯𑒧𑒹 𑒫𑒻𑒠𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞, 𑒪𑒾𑒏𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞, 𑒣𑒰𑒪𑒲 (𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒏𑒵𑒞 𑓕𑓐𑓐. 𑒄.𑒣𑒴.𑒮𑒿 𑓑𑓐𑓐 𑒄.𑒣𑒴. 𑒡𑒩𑒱), 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒏𑒵𑒞 (𑒧𑒡𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒏𑒵𑒞 𑓑𑓐𑓐 𑒄.𑒣𑒴. 𑒮𑒿 𑓕𑓐𑓐 𑒄. 𑒡𑒩𑒱), 𑒁𑒣𑒦𑓂𑒩𑓀𑒬

(३.०० ई. सँ ७०० ई. धरि) आ अपभ्रंश (७०० ई. सँ ११०० ई. धरि) आ तकर बाद मागधी प्राकृतसँ मैथिली, बँगला, ओड़िया, असमी आदि भाषा (११०० ई. सँ) अबैत अछि।

विश्वक भाषाक पारिवारिक वर्ग

(अ) यूरेशिया, (आ)अफ्रीका, (इ)प्रशान्त महासागरक क्षेत्र (पैसिफिक), (ई)अमेरिका

(अ) यूरेशिया- (क)भारोपीय, (ख)द्राविड़, (ग)यूरल-अल्टाइक, (घ)काकेशी, (ङ)यूनान-अन्नाम, (च)चीनी, (छ)जापानी-कोरियाई, (ज)हाइपरबोरी, (झ)बास्क, (ञ)सेमीटिक-हेमिटिक- अफ्रीकामे

(क)भारोपीय- (i) इन्डो आर्यन, (ii)बाल्टो-स्लाविक, (iii)आर्मीनियन, (iv) अल्बानी, (v)ग्रीक, (vi)केल्टिक, (vii)जर्मानिक, (viii)इटालिक, (ix)हित्ती, (x)तोखारी

(i) इन्डो आर्यन- (a)भारतीय आर्यभाषा, (b)ईरानी
(a)भारतीय आर्यभाषा
(A)प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (२३.०० ई.पू.सँ ३.०० ई. पू.)
(B)मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (३.०० ई.पू.सँ १००० ई.)
(C)आधुनिक भारतीय आर्यभाषा(१००० ई. सँ आइ धरि)

(A)प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (२३.०० ई.पू.सँ ३.०० ई. पू.)- वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत (वाल्मीकि -

"मान्वषिमिह संस्कृताम्"- संस्कृत आ मान्वषी दुनू भाषा।)
(B)मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (३०० ई.पू.सँ १००० ई.)- पहिल प्राकृत (पाली), दोसर प्राकृत (साहित्यिक प्राकृत- शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्द्धमागधी, पैशाची, व्राचड, खस), तेसर प्राकृत (अपभ्रंश- प्रथमे- प्रथम व्याडि आ पतंजलि द्वारा उल्लेख।)
(C)आधुनिक भारतीय आर्यभाषा(१००० ई. सँ आइ धरि) (अ) शौरसेनीसँ खड़ी बोली, ब्रजभाषा, बाँगरू, कन्नौजी, बुन्देली, मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, मेवाती, गुजराती (आ)महाराष्ट्रीसँ मराठी, कोंकणी, नागपुरी, बरारी (इ) मागधीसँ भोजपुरी, मगही, बाँगला, ओड़िया, असमी, मैथिली (ई) अर्धमागधीसँ अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी (उ) पैशाचीसँ लहँदी (ऊ) व्राचडसँ सिन्धी, पंजाबी (ए) खससँ पहाड़ी भाषाक विकास रेखांकित होइत अछि।

वाल्मीकि द्वारा सुन्दरकाण्डमे मान्वषिमिह संस्कृताम्- संस्कृत आ मान्वषी दुनू भाषाक ज्ञान हनुमानजीसँ करबाओल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर- "पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अवहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ" संगहि ज्योतिरीश्वर द्वारा सात "उपभाषक" चर्च भेल अछि। प्राकृतक कैकटा प्रकार छल। ओहिमे मागधी प्राकृत मैथिली आ अन्य पूर्वी भारतक भाषाक विकासमे योगदान देलक। अर्धमागधीमे जैन धर्मग्रन्थ आ पालीमे बौद्ध धर्मग्रन्थ लिखल गेल। कालिदासक संस्कृत नाटकमे संस्कृतक अतिरिक्त अपभ्रंशक प्रयोग गएर अभिजात्य वर्गक लेल प्रयुक्त भेल तँ चर्यापदक भाषा सेहो मागधी मिश्रित अपभ्रंश छल। मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय आर्यभाषा दोसर प्राकृतसँ

রিকসিত ভেন সেহো দেখি পড়ৈত খছি। খপভ্রংশী পবরর্তী কানমে পূর্রী ভাবতমে খরহঙ্কক রূপ নেনক। মৈথিনীক রিশেষতা জাহিমে একব সভ শব্দক স্ববাঁত হোএর্ঁ, ক্রিযারূপক জটিন হোএর্ঁ (ম্দা তাহিমে নৈঁগিক ভেদ নহি হোএর্ঁ), সর্রনামক সম্বন্ধ কাবক রূপ খাদিক রূপবেখা খরহঙ্কমে দৃষ্টিগোচব হোএর্ঁ শ্বরু ভঽ গেন ছন। ঐতিহাসিক খাধাবপব ভাষাক পাবিরাবিক রর্গীকবণমে খরহঙ্ক (খরহঙ্ক) কেঁ "মৈথিন খপভ্রংশ" তাহি কাবণসঁ কহন জাগত খছি খা মাগধী প্রাকৃতসঁ সেহো একব রিকাস দৃষ্টিগোচব হোগত খছি। খরহঙ্ক মৈথিনীসঁ নগ বহিতো শৌবসেনী প্রাকৃত-খপভ্রংশসঁ সেহো নগ খছি, ম্দা দেশী শব্দক প্রযোগসঁ এহিমে খপভ্রংশসঁ রঁহ্ত বাস র্যাকবণিক পবিরর্তন দেখা পড়ৈত খছি। রিদ্যাপতিক "কীর্তিনতা" খরহঙ্কমে খছি, ম্দা "চর্যা গীত" খা "রর্ণ বনোকব" কীর্তিনতাসঁ পূর্ররর্তী হোএরাঁক রাঁদো প্ববান মৈথিনী খছি খা খরহঙ্কসঁ সেহো নগ খছি। দামোদব পঁডিতক "উক্তি র্যক্তি প্রকবণ" সেহো কীর্তিনতাসঁ পূর্ররর্তী খছি ম্দা প্ববান খরধী খা প্ববান কোশনীক প্রতিমান প্রস্তুত কবৈত খছি খা খরহঙ্কসঁ নগ খছি। ভারোপীয ভাষা পবিরাবমে মৈথিনীক স্থান মোটা-মোটী সংস্কৃত, পানী, প্রাকৃত, খপভ্রংশ খা খরহঙ্কক ঐতিহাসিক ক্রমমে খবৈত খছি।

মৈথিনী রা কোনো ভাষাক উঁপেত্তিক মূনমে মনুরুখক ম্হঁসঁ রঁহবাএন ধ্বনি খা ওহি ধ্বনিক খর্থ কোনো রস্তু, র্যক্তি রা রিচাবসঁ হোএর্ঁ সিদ্ধ হোএত। ধ্বনি তঁ চিড়ৈ, চুনম্দনী, মান-জান খা রৌক র্যক্তি দ্বাব সেহো উঁপেন্ন হোগত খছি ম্দা সে খর্থপূর্ণ নহি ভঽ পবৈএ খা ভাষাক নির্মাণ

নহি কহ পরৈএ।
১৮৬৬ ঈ. মে পেরিসমে “না সোসিএতে দ নিংগ্বিস্টীক” নাম্না সংস্থা ভাষাক উঁপেত্তি খা রিশ্বক ভাষা সভক নির্মাণ” এহি রিষযকেঁ খপন কার্যকাবিণীসঁ হটা দেনক কাবণ এহি রিষযক রিরেচন খনুমানপব খধাবিত হোএবাক কাবণসঁ রৈজ্ঞানিক দৃষ্টিকোণসঁ দূব বহৈত খছি।
রৈদিক সংস্কৃতসঁ নৌকিক সংস্কৃত খা ওহিসঁ পানী, প্রাকৃত, খপভ্রংশ, খরহট্ঠ খা মৈথিনীক ক্রম তাকন জা সকৈত খছি। ঋদা রৈদিক সংস্কৃতক প্রাচীনতম গ্রন্থ ঋগরেদসঁ পহিনেসঁ ও ভাষা খস্তিত্বমে বহন হোএত। কতেক মৌখিক সাহিত্য জেনা গাথা, নাবাশংসী, দৈরত কথা খা খাখ্যান সভ ওহিমে বচন গেন হোএত। এহনে গাথা সভক গাযকক নেন “গাথিন”, “গাত্তরিদ্” খা “গাথপতি” ঋগরেদমে প্রযুক্ত ভেন। রৈদিক সংস্কৃতক উঁপেত্তি দৈরী রূপমে ভেন রা খাঁগিক-রাক সংকেতক সংপ্রেষণীযতা রঁঢ়ৈবাক নেন সে মাত্র খনুমানেক রিষয ভহ সকৈত খছি। ভাষামে ধ্বনি, শব্দ, পদ, রাক্য খা খর্থক পবিরর্তন ভেনাসঁ রৈদিকসঁ নৌকিক সংস্কৃত রহবাএন খা ফেব পানী, প্রাকৃত, খপভ্রংশ, খরহট্ঠ খা মৈথিনী। পাণিনী দ্বাবা ভাবতক রিভিন্ন ক্ষেত্রসঁ নেন শব্দারনী নৌকিক সংস্কৃতকেঁ ততেক সমৃদ্ধ কএনক জে ওহিসঁ খান সভ ভাষাক কতেকো তবহক রূপ রহাব ভেন। কতেক তবহক ক্ষেত্রীয প্রাকৃত খা খপভ্রংশ ওহি ভৌগোনিক ক্ষেত্রক রিস্তাবকেঁ নৈত রহাব ভেন খা ওহিসঁ খাজুক খাধুনিক ভাবতীয খার্য ভাষা সভক উঁপেত্তি ভেন।
মৈথিনী ভাবোপীয ভাষা পবিরাবসঁ সম্বন্ধিত খছি। ভাবোপীয ভাষা পবিরাবক ভীতব রিশ্বক নগভগ চানীস প্রতিশত জনসংখ্যা খরৈত খছি। ঈ সভসঁ পৈঘ ভাষা

পবিরাব খছি, সভসঁ সমৃদ্ধ সেহো। মোটা–মোটী একব দ্ রিভাগ ছৈক, পহিন যূরোপক খার্য ভাষা খা দোসব ভাবত–ঙবানী শাখা। ভাবত–ঙবানী খার্যভাষাক ভীতব ঙবানী, দবদ খা ভাবতীয খার্যভাষা খরৈত খছি। দবদ ভাষামে কশ্মীবী খা পামীব পঠাবক পূর্ব দক্ষিণক ভাষা সভ খছি। মৈথিনী ভাষাক উঁদ্গম খা রিকাস ভাবতীয খার্যভাষাক ভীতব তাকন জাগত খছি।

ভাষাক উঁদ্গম তঁ খনুমানক রিষয থিক। ভাষাক উঁদ্গমক খা তকব প্রযোগক কতেক রর্ষক পশ্চাত্ ওহিমে সাহিত্য বচনা হোগত খছি। তখন জা কঽ ওকব রূপ স্থিব হোগত খছি। রৈদিক সংস্কৃতক প্রাচীনতম গ্রন্থ ঋগরেদ, নৌককিক সংস্কৃতক প্রাচীনতম গ্রন্থ রাল্মীকি বামাযণ, পানি ভাষাক প্রাচীনতম গ্রন্থ রৌদ্ধ ত্রিপিটক, প্রাকৃতক প্রাচীনতম গ্রন্থ রিমন সূবিক পউমচবিউ, খপভ্রংশক প্রাচীনতম গ্রন্থ যূগীন্দ্রক পবমামে প্রকাশ খছি। খাদি মৈথিনীক প্রাচীন সাহিত্য সিদ্ধ সাহিত্য, রৌদ্ধগান খা জ্যাতিবীশ্বিবক রর্ণ বনোকব খছি। সিদ্ধ সবহপাদ 700–780 সবহপাদ–"সিদ্ধিবত্থে মগ পঢ়মে পঢ়া খউ ,মল্ড পিরন্তাঁ রিসবউ এমগউ"। মিথিনামে খক্ষবাবম্ভ সিদ্ধিবস্তু (গণেশজীক খংকুশ খাঁজী) সঁ হোগত খছি। মিথিনামে ঙা ধাবণা খছি জে মাঁড় পীনাসঁ স্মবণ শক্তি ক্ষীণ হোগত খছি। দোসব উঁদাহবণ– রনদ রিযাযন গরৈযা রাঁন্হে– রড়দ রিযা গেন খা গাএ রাঁন্হে খছি। মধ্যকানীন মৈথিনীক গ্রন্থ রিদ্যাপতিক মৈথিনী সাহিত্য খা তকব রাদ চত্তব চত্তর্ভুজ, শংকবদের, রিভিন্ন মল্ল নবেশ দ্বাবা বচিত সাহিত্য, কীর্তনিযা খা খংকিযা নাটসঁ মনরোধ ধবি খরৈত খছি। খাধুনিক মৈথিনী সাহিত্য চন্দা ঝাসঁ

प्रारम्भ भेल अछि।
प्राचीन भारतक आर्यभाषाक क्षेत्र वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदमे वर्णित धार सभक आधारपर निर्धारित कएल जा सकैत अछि आ एकर प्रसार कोना आन क्षेत्रमे भेल सेहो एहिसँ निर्धारित भेल अछि। ऋगवैदिक आर्य “सप्त सिन्धु” माने सात धारक क्षेत्रमे बसैत छलाह- ई सात धार छल वितस्ता, असिकनी, परुष्णी, शतुद्रु, विपाशा, सिन्धु आ गोमती। एहिमे पहिल पाँचटा धार पंजाबक आ शेष दूटा अफगानिस्तानमे बहैत छल। ई सातो धार ऋगवेद कालक सभसँ उपयोगी धार सिन्धुक सहायक छल। ऋगवेदमे सरस्वती धारक वर्णन “धार सभ माय”क रूपमे भेल अछि। ऋगवेदमे यमुनाक दू बेर आ गंगाक एक बेर वर्णन अछि। ऋगवेदक दसम मण्डलमे “धारक स्तुति” मे सिन्धु आ सप्तसैन्धुवक स्तुति भेल अछि। ओहि कालमे पुरु, अनु, द्रुह्यु, यदु आ तुर्वस नामक पंचजन बसैत छलाह। क्रिवि, त्रित्सु, सेहो ओहि कालमे छलाह। पुरु आ सभसँ शक्तिशाली भरत कबीला मिलि बादमे कुरु कबीला बनल। भरत कबीला दाशराज्ञ युद्धमे पाँच आर्य आ पाँच अनार्य कबीलाक संगठनकेँ हरेलक, जाहिमे भरतक पुरोहित वशिष्ठ छलथि आ पाँच आर्य आ पाँच अनार्य (दस्यु) कबीलाक संगठनक पुरोहित छलथि विश्वामित्र। बोगजकोइ एशिया माइनरमे हित्ती शासकक १४म शती ई.पू.क उत्कीर्णित अभिलेखमे इन्द्र, दशरथ, अर्त्तमय आदि राजाक, इन्द्र, वरुण, नासत्य, आदि देवताक उल्लेख अछि। यजुर्वेदक प्रचलित संहिता वाजसनेयी आ सामवेदक संहिता कौथुम, सामवेदक आरण्यक आ उपनिषद छान्दोग्यक आधारपर मिथिलामे ब्राह्मणक

রাজসনেযী আ ছান্দাগ্যমে উঁধ্বাধিব রিভাজন এখন ধবি অছি। যজুর্রেদমে রিদেহক রর্ণন অছি তঁ ঋগরেদমে রৈদিক জনকক (সীতাক পিতা সীবধ্বজ জনক পছাতি ভেনাহ।)

'রৈদেহ বাজা' ঋগরেদিক কানক নমী সপ্যাক নামসঁ ছনাহ, যক্ত করৈত সদেহ স্বর্গ গেনাহ, ঋগরেদমে রর্ণন অছি। ও গন্দ্রক সংগ দেনন্হি অস্বব নমুচীক রিরুদ্ধ আ তাহিমে গন্দ্র হ্নকা রঁচওনন্হি। শতপথ ব্রাহ্মণক রিদেঘমাথর আ প্ববাণক নিমি দ্নূ গোষ্ঠৈক প্ববোহিত গৌতম ছথি সে দ্নূ একে ছথি আ এতএসঁ রিদেহ বাজ্যক প্রাবম্ভ। মাথরক প্ববহিত গৌতম মিত্ররিন্দ যক্তক/ রঁনিক প্রাবম্ভ কএনন্হি আ প্বনঃ একব প্বনঃ স্থাপনা ভেন মহাজনক-২ ক সময়মে যাজ্ঞরক্যে দ্বাবা। নিমি গৌতমক আশ্রমক নগ জযন্ত আ মিথি -জিনকা মিথিনা নামসঁ সেহো সোব কএন জাগত ছন্হি, মিথিনা নগবক নির্মাণ কএনন্হি। নিমীক জযন্তপ্বব রর্তমান জনকপ্ববমে ছন, মিথীক মিথিনানগবীক স্থান এখন ধবি নির্ধাবিত নহি ভএ সকন অছি, অনুমানিত অছি জনকপ্ববক নগ। 'সীবধ্বজ জনক' সীতাক পিতা ছথি আ এতযসঁ মিথিনাক বাজাক স্বদৃঢ় পবম্পবা দেখরাঁমে অরৈত অছি। 'হ্রতি জনক' সীবধ্বজক রাঁদক 18ম প্বস্তমে ভেন ছনাহ। হ্রতি হিবণ্যনাভক প্বত্র ছনাহ আ জনক রঁহ্নাশ্বক প্বত্র ছনাহ। যাজ্ঞরনক্য হিবণ্যাভক শিষ্য ছনাহ, হ্নকাসঁ যোগক শিক্ষা নেনে ছনাহ। কবান জনক দ্বাবা একটা ব্রাহ্মণ ঘরতীক শীন-অপহবণক প্রযাস ভেন আ জনক বাজরংশ সমাপ্ত ভএ গেন (সংদর্ভ অশ্বঘোষ-বুদ্ধচবিত আ কৌটিন্য-অর্থশাস্ত্র)। অর্থশাস্ত্রমে(১.৬ রিনযাধিকাবিকে প্রথমাধিকবণে ষডোঽধ্যাযঃ গন্দ্রিযজযে

অবিষড্‌রক্ষাগঃ) কবান জনকক পতনক সেহো চর্চা অছি। তদ্বিরুদ্ধবৃত্তিবরষ্টন্দ্রিযশ্চাত্তবন্তাঽপি বাজা সদ্যো রিনশ্যতি– যথা দাণ্ডক্যো নাম ভোজঃ কামাদ্ ব্রাহ্মণ কন্যাযমভিমন্যমানঃ সরন্ধুবাষ্ট্রো রিননাশ কবানশ্চ রৈদেহঃ ,... ।

রৈদিক সংস্কৃতক কানমে আর্য সপ্তসন্ধুরসঁ রিদেহ ধরি আরি গেন ছনাহ। অনার্য (দস্যু)সঁ ওহী কানমে হুনকব সম্পর্ক ভ২ গেন ছন আ শাব্দিক আদান–প্রদান সেহো ভ২ গেন ছন। যজুর্রেদমে রাঁদমে অথর্ররেদমে ঙা আদান–প্রদান দৃষ্টিগোচব হোগত অছি। অনার্য (দস্যু) আ ব্রাত (অনার্যসঁ আর্য রঁনন জাতি) দুনুক ভাষা সপ্তসৈন্ধুর আর্যক ভাষাসঁ মিনি গেন আ প্ররবিযা আ আন ক্ষেত্রীয রঁসাত নগনাসঁ রৈদিক সংস্কৃত নৌকিক সংস্কৃতমে রঁদনি গেন। নিকঞক সমযমে সেহো রৈদিক শব্দারনী কঠিন ভ২ গেন ছন, ওকব উঁপেত্তিপব রিরেচন শ্বক্ত ভ২ গেন ছন। পাণিনীক ভাষা প্ররবিযা, দচ্ছিনরবিযা, পচ্ছরবিযা আ উঁত্তবরবিযা সভ ক্ষেত্রক দস্যু আ ব্রাত ভাষাক শব্দারনীকেঁ সমাহিত ক২ রঁনন ছন। ঙা সংস্কাবিত ভাষা রাঁদক নোক মধ্য সংস্কৃতক রূপমে রিখ্যাত ভেন। পাণিনী নৌকিক সংস্কৃতকেঁ জেনা "ভাষা" কহনন্হি, তহিনা যাস্ক আ পাণিনী রৈদিক সংস্কৃতকেঁ "ছন্দস্"। যৈহ ছন্দস্ অরেস্তা ভাষাক ভাষ্য নেন জেন্দ (ছন্দ) কহন গেন।

সংস্কৃত, প্রাকৃত, অরহট্ঠ, মৈথিনী

১. সংস্কৃত

দেরনাগবীক অতিবিকত্ত সমস্ত উঁত্তব ভাবতীয ভাষা নেপান আ দক্ষিণক (তমিনকেঁ ছোড়ি) সভ ভাষা

রর্ণমানাক রূপমে স্বর আ কচটতপ আ য, ব ন র, শ, স, হ ক রর্ণমানাক উঁপযোগ করৈত অছি। গ্লাও হেত্তু সংস্কৃতমে দোসব রর্ণ ছৈক (ছান্দাগ্য পবম্পবামে একব উঁচাবণ নহি হোগত অছি ছথি হ্মদা রাজসনেযী পবম্পবামে খূব় হোগত অছি- জেনা ছান্দাগ্য উঁচাবণ সভূমি তঁ রাজসনেযী উঁচাবণ সভূমীগ্লও), গু হ্রস্ব দীর্ঘ দ্নূ হোগত অছি। সিঙ্কিবস্তু নেন সেহো কমসঁ কম ছহ প্রকাবক রর্ণ মিথিনাক্ষবমে প্রযুক্ত হোগত অছি। রৈদিক সংস্কৃতমে উঁদাত্ত, অনুদাত্ত আ স্বরিত (ক্রমশঃ ক॑ ক॒ ক᳚) উঁপযোগ তঁ মবাঠীমে ঳ আ অর্দ্ধ ৼ কেব সেহো প্রযোগ হোগত অছি। মৈথিনীমে ২ (রিকাবী রা অরগ্রহ) ক প্রযোগ সংস্কৃত জকাঁ হোগত অছি আ আগ কান্হি একব রঁদনামে টোগপক স্ববিধানুসাবে দ’ (দঽ ক রঁদনামে) এহন প্রযোগ সেহো হোগত অছি হ্মদা গু প্রযোগ ওহি হ্ফ়ঁ টমে একটা তকনীকী ন্যূনতাক পবিচাযক অছি। হ্মদা আকাব ক রাঁদ রিকাবীক আরশ্যকতা নহি অছি।

জেনা হ্ফাবসীমে অনিহ্ফ রেঁ সে আ বোমনমে এ রী সী হোগত অছি তহিনা মোটা-মোটী সভ ভাবতীয ভাষামে নিপিক ভিন্নতাক অছৈত রর্ণমানাক স্বরূপ একে বও অছি।

রর্ণমানামে দূ প্রকাবক রর্ণ অছি- স্বর আ রঞ্জন। রর্ণক সংখ্যা অছি ৬৪ জাহিমে ২২ টা স্বর আ ৪২ টা রঞ্জন অছি।

স্ববক রর্ণন এহি প্রকাবেঁ অছি- জাহি রর্ণক উঁচাবণমে দোসব রর্ণক উঁচাবণক অপেক্ষা নহি বহৈত অছি, সে ভেন স্বব।

স্ববক তীন টা ভেদ অছি- হ্রস্ব, দীর্ঘ আ প্লুত।

𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒖𑒻𑒧𑒹 𑒋𑒏 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒋 𑒮𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫, 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒠𑒴 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒮𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒂 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒞𑒲𑒢 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒮𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒪𑒳𑒞।

𑒧𑒴𑒪𑒦𑒴𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒁𑒕𑒱– 𑒁 𑒃 𑒅 𑒇 𑒪𑒵
𑒣𑒰𑒝𑒱𑒢𑒱𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯।
𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒁𑒕𑒱– 𑒋 𑒌 𑒍 𑒎
𑒣𑒰𑒝𑒱𑒢𑒱𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒢𑓂𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯।
𑒪𑒵 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒮𑒢𑓂𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।
𑒁 𑒃 𑒅 𑒇 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒦𑒏 𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫, 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 (𑒂 𑒄 𑒆 𑒈) 𑒂 𑒣𑓂𑒪𑒳𑒞 (𑒂𑓓 𑒄𑓓 𑒆𑓓 𑒈𑓓) 𑒮𑒦 𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒏𑓄 𑓑𑓒 𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒦𑒹𑒪।
𑒪𑒵 𑒏 𑒯𑓂𑒩𑒮𑓂𑒫 𑒂 𑒣𑓂𑒪𑒳𑒞 𑒠𑒴 𑒦𑒹𑒠 𑒁𑒕𑒱 (𑒪◌𑒵𑓓), 𑒞𑒿 𑓒 𑒙𑒰 𑒄 𑒦𑒹𑒪। 𑒋 𑒌 𑒍 𑒎 𑒄 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒋𑒯𑒱 𑒔𑒰𑒩𑒴𑒏 𑒣𑓂𑒪𑒳𑒞 𑒩𑒴𑒣 𑒮𑒹𑒯𑒼 (𑒋𑓓 𑒌𑓓 𑒍𑓓 𑒎𑓓) 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒿 + 𑒙𑒰 𑒄 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒹𑒪। 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒋 𑓒𑓒 𑒙𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒩।

𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑓒𑓒 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒏 𑒫𑒻𑒠𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒞𑒲𑒢 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒅𑒠𑒰𑒞𑓂𑒞, 𑒁𑒢𑒳𑒠𑒰𑒞𑓂𑒞 𑒂 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒱𑒞।
𑒆𑒿𑒔 𑒦𑒰𑒑 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒞𑒰𑒪𑒳𑒮𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒁𑒏𑒰𑒩𑒰𑒠𑒱 𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒅𑒠𑒰𑒞𑓂𑒞 𑒑𑒳𑒝𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒞𑒹𑒿 𑒅𑒠𑒰𑒞𑓂𑒞 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।
𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿 𑒦𑒰𑒑𑒮𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒁𑒢𑒳𑒠𑒰𑒞𑓂𑒞 𑒂 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒁𑒏𑒰𑒩𑒰𑒠𑒱 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒦𑒰𑒑𑒏 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 𑒅𑒠𑒰𑒞𑓂𑒞 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒦𑒰𑒑𑒏 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒢𑒳𑒠𑒰𑒞𑓂𑒞 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒱𑒞।
𑒮𑓂𑒫𑒩𑒏 𑒠𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒂𑒩 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒰𑒢𑒳𑒢𑒰𑒮𑒱𑒏 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒁𑒿 𑒂 𑒢𑒱𑒩𑒢𑒳𑒢𑒰𑒮𑒱𑒏 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒁।
𑒠𑒝𑓂𑒛𑒹𑒢 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑓁 𑒏𑒴𑒣𑒼 𑒠𑒰𑒝𑓂𑒛𑓁। 𑒠𑒝𑓂𑒛 𑒢𑒰𑒧𑓂𑒢𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰

রিপাষ্ট্- র্ব্যাস ধাবক উঁতবর্রবিযা তষ্টপব র্রনর্রাওন, এতএ গনাব ভেন দাত্ত। থঞ প্রত্যান্ত ভেনাসঁ 'দাত্ত' থাড্যুদাত্ত ভেন, থণ্ প্রত্যযান্ত মোগত তঁ প্রত্যয স্ববসঁ থন্তাদাত্ত মোগত। রূপমে ভেদ নহি ভেনোপব স্ববমে ভেদ থছি। এহিসঁ সিদ্ধ ভেন জে সামান্য গ্রষক বস্থা সেহো শৈক্ষিক সস্বব উঁচাবণ কবৈত ছনাহ।
স্ববিতকেঁ দোসবো রূপমে র্ব্যিন সকৈত ছী- জেনা এহিমে থন্তিম স্ববক তীব্র স্ববমে প্বনরুচাবণ মোগত থছি।
থার্র ব্যঞ্জন পব থাউঁ।
ব্যঞ্জন ৪২ টা থছি।
ক্ খ্ গ্ ঘ্ ঙ্
চ্ ছ্ জ্ ঝ্ ঞ্
ট্ ঠ্ ড্ ঢ্ ণ্
ত্ থ্ দ্ ধ্ ন্
প্ ফ্ র্ব্ ভ্ ম্
য্ ব্ ন্ ব্
শ্ ষ্ স্
হ্
য্ ব্ ন্ সানুনাসিক সেহো মোগত থছি, যঁ বঁ নঁ থা নিরুনাসিক সেহো।
একব থতিবিকত্ত দূ টা থাব ব্যঞ্জন থছি- থনুস্বাব থা বিসর্জনীয বা বিসস্থা।
ওা দুনূটা, স্ববক থনন্তব প্রযুক্ত মোগত থছি।
বিসর্জনীয মূন বর্ণ নহি থছি, ববন্ স্ বা ব্ ক বিকাব থছি। বিসর্জনীয কিছু ধ্বনি ভেদ থা কিছু রূপভেদসঁ দূ প্রকাবক থছি- জিহ্বামূনীয থা উঁপধ্মানীয। জিহ্বামূনীয মাত্র ক থা খ সঁ পূর্ব প্রযুক্ত মোগত থছি, দোসব মাত্র প থা ফ সঁ পূর্ব।

খনুস্বাব, রিসর্জনীয, জিহ্বামূলীয খা উঁপধ্মানীযকেঁ খযোগরাহ কহল জাগত খছি।

উঁপরোক্ত রর্ণ সভকেঁ ছোড়ি ৪ টা খাব রর্ণ খছি, জকবা যম কহল গেল খছি।

ক্ঁ খ্ঁ গ্ঁ ঘ্ঁ (যথা– পনিক্ ক্নী, চখ খ্নতঃ, খগ্ গ্নিঃ, ঘ্ ঘ্নন্তি)

পঞ্চম রর্ণ খাগাঁ বহনা পব পূর্ব রর্ণ সদৃশে জে রর্ণ রীচমে উঁচাবিত হোগত খছি সে যম ভেল।

যম সেহো খযোগরাহ হোগত খছি।

খ খা করস্ত্র হ (খসংযুক্ত) খা রিসর্জনীয ক উঁচাবণ কণ্ঠমে হোগত খছি।

গ ঙা চরস্ত্র য শ ক উঁচাবণ তান্বমে হোগত খছি।

ঋ ঋৃ টরস্ত্র ব ষ ক উঁচাবণ মূর্ধামে হোগত খছি।

নৃ তরস্ত্র ন স ক উঁচাবণ দাঁতসঁ হোগত খছি।

উঁ ঊঁ পরস্ত্র খা উঁপধ্মানীয ক উঁচাবণ ওষ্ঠসঁ হোগত খছি।

র ক উঁচাবণ উঁপবকা দাঁতসঁ খধব ওষ্ঠক সহাযতাসঁ হোগত খছি।

এ ঐ ক উঁচাবণ কণ্ঠ খা তান্বসঁ হোগত খছি।

ও ঔ ক উঁচাবণ কণ্ঠ খা ওষ্ঠসঁ হোগত খছি।

য ব ন র খন্য ব্যঞ্জন জকাঁ উঁচাবণমে জিহ্বাক খগ্রাদি ভাগ তান্বাদি স্থানকেঁ পূর্ণতযা স্পর্শ নহি কবৈত খছি।

শ্ ষ্ স্ হ্ জকাঁ এহিমে তান্ব খাদি স্থানসঁ ঘর্ষণ সেহো নহি হোগত খছি।

ক সঁ ম ধবি স্পর্শ (রা স্ফাটক কাবণ জিহ্বাক খগ্র দ্বাবা রাযু প্রবাহ বোকি কঽ ছোড়ল জাগত খছি) রর্ণ ব সঁ র খন্তঃস্থ খা ষ সঁ হ ঘর্ষক রর্ণ ভেল।

সভ রস্ত্রক পাঁচম রর্ণ খনুনাসিক কহবৈত খছি কাবণ

स्थान स्थान समान रहितो एकर सभक नासिकामे सेहो उच्चारण होइत अछि- उच्चारणमे नाक नासिका आ मुँह दुनू रस्ता होइत अछि।
अनुस्वार आ यम क उच्चारण मात्र नासिकामे होइत अछि- आ ङ सभ नासिक्य कहबैत अछि- कारण एहि सभमे मुखद्वार बन्द रहैत अछि आ नासिकासँ वायु बहार होइत अछि। अनुस्वारक स्थान पर न् वा म् क उच्चारण नहि होएबाक चाही।
जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर मुखक ताल्व आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आ यैह गुँजित होइत पहुँचैत अछि मुँहमे आ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भऽ पहुँचैत अछि श्वासमे आ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।
श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल "अघोष" , आ नाद प्रकृतिक भेल "घोषवान्"। जाहि वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि "अल्पप्राण" आ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल "महाप्राण"।
कचटतप क पहिल, तेसर आ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आ दोसर आ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगहि कचटतप क पहिल आ दोसर भेल अघोष आ तेसर, चारिम आ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आ ह भेल महाप्राण घोष। स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त,

ঋন্বদাত্ত ঋা স্ববিত।
ছন্দার্বিষ্ক বচনা পদ্য কহৈবৈত ঋছি–ঋন্যথা ও গদ্য থীক। ছন্দ মানে ভেন এহেন বচনা জে ঋানন্দ প্রদান কবএ । ক্ষদা এহিসঁ ঞ্জ নহি ব্বুস্মবাক চাহী জে ঋাজুক নর করিতা গদ্য কোষ্টিক ঋছি কাবণ রেদক সারিত্রী–গাযত্রী মংত্র সেহো শিথিন/ উঁদাব নিযমক কাবণ, সারিত্রী মংত্র গাযত্রী ছঁদ, মে পবিগণিত হোগত ঋছি তকব চবচা নীচাঁ জা কএ হোএত – জেনা যদি ঋক্ষব পূবা নহি ভেন তঁ এক ঋাকি দূ ঋক্ষব প্রত্যেকে পাদকেঁ বঠ্ া নেন জাগত ঋছি। য ঋা র কেব সংযুক্তাক্ষবকেঁ ক্রমশঃ গ ঋা উঁ নগা কএ ঋনগ কএন জাগত ঋছি। জেনা–
ববেণ্যম্=ববেণিযম্
স্বঃ = স্বরঃ ।
ঋাজুক নর করিতাক সংগ হাগকু/ ক্ষণিকা/ হৈকূক নেন মৈথিনী ভাষা ঋা ভাবতীয, সংস্কৃত ঋাশ্রিত নিপি ব্যরস্থা সর্বাধিক উঁপযুক্ত ঋছি। তমিন ছোড্ া শৈষ সভটা দক্ষিণ ঋা সমস্ত উঁত্তব–পশ্চিমী ঋা পূর্বী ভাবতীয নিপি ঋা দেরনাগবী নিপি মে হৈহ স্বব ঋা কচটতপ ব্যঞ্জন রিধান ঋছি, জাহিমে জে নিখন জাগত ঋছি সৈহ বাঁজন জাগত ঋছি। ক্ষদা দেরনাগবীমে হ্রস্ব “ঙ” একব ঋপরাদ ঋছি, ঞ্জ নিখন জাগত ঋছি পহিনে, ক্ষদা বাঁজন জাগত ঋছি বাঁদমে। ক্ষদা মৈথিনীমে ঞ্জ ঋপরাদ সেহো নহি ঋছি– যথা 'ঋছি' ঞ্জ বাঁজন জাগত ঋছি ঋ হ্রস্ব 'ঙ' ছ রা ঋ ঙ ছ। দোসব উঁদাহবণ নিঋ– বাতি– বা ঙ ত। তঁ সিষ্ক ভেন জে হৈকূক নেন মৈথিনী সর্বোত্তম ভাষা ঋছি। একটা ঋাব উঁদাহবণ নিঋ। সষ্কি সংস্কৃতক রিশেষতা ঋছি, ক্ষদা কী ঙাংগ্নিশমে সংধি নহি ঋছি ? তঁ ঞ্জ কী ঋছি – ঋাগম গোগঙ

ट्रैराड्सदएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि- आइ एम गोइंग ट्रैराड्स द एन्ड। तहिना पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधार पर संधिक नियम बनओलन्हि, तहिना अंग्रेजीमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नहि होइत छै, आइ एम केँ ओना आइम फोनेटिकली लिखल जाइत अछि, तहिना बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कए लिखल आ बाजल जाइत अछि।

छन्द दू प्रकारक अछि। मात्रा छन्द आ वर्ण छन्द ।
वेदमे वर्णवृत्तक प्रयोग अछि मात्रिक छन्दक नहि ।
वार्णिक छन्दमे वर्ण/ अक्षरक गणना मात्र होइत अछि।
हलंतयुक्त अक्षरकेँ नहि गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकेँ। संगहि अ सँ ह केँ सेहो एक गानल जाइत अछि। एकसँ बेशी मान कोनो वर्ण/ अक्षरक नहि होइछ। मोटा-मोटी तीनटा बिन्दु मोन राखू-

१. हलंतयुक्त अक्षर-०
२. संयुक्त अक्षर-१
३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।
आब पहिल उदाहरण देखू-
ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि केँ=१+३+२+२+३+३+३+१=२०
आब दोसर उदाहरण देखू

पश्चात्=२
आब तेसर उदाहरण देखू

आर्ष=२
आर्ष चारिम उदाहरण देखू
सिद्धपृष्ठ=२
मुख्य वैदिक छन्द सात अछि–
गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् आ जगती। शेष ओकर भेद अछि, अतिछन्द आ विछन्द। एतए छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। जे अक्षर पूरा नहि भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कए अलग कएल जाइत अछि। जेना–
वरेण्यम्=वरेणियम्
स्वः = सुवः
गुण आ वृद्धिकेँ अलग कए सेहो अक्षर पूर कएल जाइत छै।
ए = अ + इ
ओ = अ + उ
ऐ = अ/आ + ए
औ = अ/आ + ओ
छन्दः शास्त्रमे प्रयुक्त 'गुरु' आ 'लघु' छंदक परिचय प्राप्त करू।
तेरह टा स्वर वर्णमे अ,इ,उ,ऋ,लृ ई पाँच ह्रस्व आर आ,ई,ऊ,ॠ,ए,ऐ,ओ,औ, ई आठ दीर्घ स्वर अछि।
ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ैत जाइत अछि तँ ओकरासँ 'गुणिताक्षर' बनैत अछि।
क्+अ= क,
क्+आ=का ।
एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक 'अक्षर'

कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नहि मानल जाइत अछि- जेना 'अवाक्' शब्दमे दू टा अक्षर अछि, अ, वा ।

१. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त व्यञ्जनाक्षर 'लघु' मानल जाइत अछि। एकर ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि।
२. सभटा दीर्घ स्वर आर दीर्घ स्वर युक्त व्यञ्जनाक्षर 'गुरु' मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट - ।
३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरु मानल जाइत अछि।
४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओहि अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्। एहिमे अ आ स दुनू गुरु अछि।
५. जेना वार्णिक छन्द/ वृत्त वेदमे व्यवहार कएल गेल अछि तहिना
स्वरक पूर्ण रूपसँ विचार सेहो ओहि युग सँ भेटैत अछि। स्थूल रीतिसँ ७ विभक्त अछि:- १. उदात्त २. उदात्ततर ३. अनुदात्त ४. अनुदात्ततर ५. स्वरित ६. अनुदात्तान्वक्तस्वरित, ७. प्रचय (एकटा श्रुति-अनहत नाद जे बिना कोनो चीजक उत्पन्न होइत अछि, शेष सभटा अछि आहत नाद जे कोनो वस्तुसँ टकरएला पर उत्पन्न होइत अछि)।
१. उदात्त- जे अकारादि स्वर कण्ठादि स्थानमे ऊर्ध्व भागमे बाजल जाइत अछि। एकर लेल कोनो चेन्ह नहि अछि। २. उदात्ततर- कण्ठादि अति ऊर्ध्व स्थानसँ बाजल जाइत अछि। ३. अनुदात्त- जे कण्ठादि स्थानमे

अधोभागमे उठाओल होइछ। नीचाँमे तीर्यक चेन्ह अंकित कएल जाइछ। ४. अनुदात्ततर- कण्ठादिसँ अइत नीचाँ राखल जाइत अछि। ५. स्वरित- जाहिमे अनुदात्त रहैत अछि किछु भाग, आ किछु रहैत अछि उदात्त। ऊपरमे ठाढ़ रेखा खेंचल जाइत अछि, एहिमे। ६. अनुदात्तानुरक्तस्वरित- जाहिमे उदात्त, स्वरित किंवा दुनू बादमे होइछ, ई तीन प्रकारक होइछ। ७. प्रचय-स्वरितक बादक अनुदात्त रहलासँ अनाहत नाद प्रचयक,तानक उत्पत्ति होइत अछि।
१. पूर्वार्चिकमे क्रमसँ अग्नि, इन्द्र आ सोम पवमानकेँ संबोधित गीत अछि। तदुपरान्त आरण्यक काण्ड आ महानाम्नी आर्चिक अछि। आग्नेय, ऐन्द्र आ पावमान पर्वकेँ ग्रामगेयगण आ पूर्वार्चिकक शेष भागकेँ आरण्यकगण सेहो कहल जाइछ। सम्मिलित रूपेँ एक प्रकृतिगण कहैत छी। २.उत्तरार्चिक: विकृति आ उत्तरगण सेहो कहैत छी। ग्रामगेयगण आ आरण्यकगणसँ मंत्र चुनि कय क्रमशः ऊहगण आ ऊह्यगण कहबैछ- तदन्तर प्रत्येक गण दशरात्र, संवत्सर, एकाह, अहिन, प्रायश्चित आ क्षुद्र पर्वमे बाँटल जाइछ। पूर्वार्चिक मंत्रक नयकेँ स्मरण क' उत्तरार्चिक केर द्विक, त्रिक, आ चतुष्क आदि (२,३, आ ४ मंत्रक समूह) मे एहि नय सभक प्रयोग होइछ। अधिकांश त्रिक आदि प्रथम मंत्र पूर्वार्चिक होइत अछि, जकर नय पर पूरा सूक्त (त्रिक आदि) गाओल जाइछ। उत्तरार्चिक ऊहागण आ ऊह्यगण प्रत्येक नयकेँ तीन बेर तीन प्रकारेँ पढ़ैछ। वैदिक कर्मकाण्डमे प्रस्तार, प्रस्तातर द्वारा, उद्गीत उद्गातर द्वारा, प्रतिघार प्रतिहातर द्वारा, उपद्रव पुनः उद्गातृ द्वारा आ निधान तीनू द्वारा मिलि कय गाओल जाइछ। प्रस्तारक पहिने

हिंकार (हिं,हुं,हं) तीनू द्वारा आ ॐ उद्‌गाता द्वारा उद्‌गीतक पहिने गाओल जाइछ। ई पाँच भक्ति भेल।
साथक मुद्रा- साथक मुद्रा १.१.औंठा(प्रथम आँगुर)-एक यर दूरी पर २.२. औंठा प्रथम आँगुरकेँ छूबैत ३.३. औंठा बीच आँगुरकेँ छूबैत ४.४. औंठा चारिम आँगुरकेँ छूबैत ५..५. औंठा पाँचम आँगुरकेँ छूबैत ६.११. छठम मुष्ठि औंठा प्रथम आँगुरसँ दू यर दूरी पर ७.६. सातम अतिश्वर सामवेद +.७. अभिगीत ऋग्वेद
ग्रामगेयगान- ग्राम आ सार्वजनिक स्थल पर गाओल जाइत छल। आरण्यक गेयगान- वन आ पवित्र स्थानमे गाओल जाइत छल।
ऊहगान- सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसर पर। पूर्वार्चिकसँ संबंधित ग्रामगेयगान एहि विधिसँ। ऊह्यगान आकि रहस्यगान- वन आ पवित्र स्थान पर गाओल जाइत अछि। पूर्वार्चिकक आरण्यक गानसँ संबंध। नारदीय शिक्षामे सामगानक संबंधमे निर्देश:- १.स्वर-७ ग्राम-३ मूर्छना-२१ तान-४९
सात टा स्वर सा,रे,ग,म,प,ध,नि, आ तीन टा ग्राम-मध्य,मन्द,तीव्र। ७*३=२१ मूर्छना। सात स्वरक परस्पर मिश्रण ७*७=४९ तान।
ऋगवेदक प्रत्येक मंत्र गौतमक २ सामगान (पर्कक) आ काश्यपक १ सामगान (पर्कक) कारण तीन मंत्रक बराबर भऽ जाइत अछि। मैकडॉवेल इन्द्राग्नि, मित्रावरुणौ, इन्द्राविष्णु, अग्निषोमौ एहि सभकेँ युगलदेवता मानैत्छि अछि। मुद्रा युगलदेव अछि -विशेषण-विपर्यय।
वेदपाठ-
१. संहिता पाठ अछि शुद्ध रूपमे पाठ।

অ্গ্নিমী ঁঌে পুরোহি ঁত
য্ঘ্যস্য ঁদে্রমিত্বজ ঁম । হোতাব ঁবনে্ ধাতমম্ ।
২. পদ পাঠ– এহিমে প্রত্নেক পদকেঁ পৃথক কএ পঢ়্ন জাগত অছি ।
৩. ক্রমপাঠ– এতয একক বাঁদ দোসব, ফেব দোসব তখন তেসব, ফেব তেসব তখন চত্তুর্থ । এনা কএ পাঠ কএন জাগত অছি ।
৪. জটাপাঠ– এহিমে জ্যাঁ তীন টা পদ ক, খ, আ গ অছি তখন পঢ়্বাঁক ক্রম এহি রূপমে হোএত । কখ, খক, কখ, খগ, গখ, খগ । ৫. ঘনপাঠ–এহি মে উঁপবকা উঁদাহবণক অনুসাব নিম্ন রূপ হোযত– কখ,খক,কখগ,গখক,কখগ । ৬. মানা, ৭. শিখা, +. বেখা, ৯. ধ্বজ, ১০. দন্ড, ১১. বথ । অঁতিম আঠকেঁ অষ্টরিকৃতি কহল জাগত অছি ।
সাম রিকাব সেহো ৬ টা অছি, জে গানকেঁ ধ্যানমে বখৈত ঘটাওন, বঁঢ় াওন জা সকৈত অছি । ১. রিকাব–অক্ষকেঁ ওগ্নায । ২. রিশ্লেষণ– শব্দ/পদকেঁ তোড়্নাগ ৩. রিকর্ষণ–স্ববকেঁ খিঁচনাগু/অধিক মাত্রাক বঁড় াবঁব বঁজেনাগ । ৪. অভ্যাস– বেঁব–বেঁব বঁজনাগ । ৫. রিবাম– শব্দকেঁ তোড় ি কয পদক মধ্যমে 'যতি' । ৬. স্তাভ–আনাপ যোগ্য পদকেঁ জোড় ি নেবঁ । কৌথুমীয শাখা 'হাউঁ' 'বাগ' জোড় ৈত ছথি । বাণানীয শাখা 'হাব্', 'বাযি' জোড় ৈত ছথি ।
মাত্রিক ছন্দক প্রযোগ রেদমে নহি অছি রবন্ বর্ণবৃত্তক প্রযোগ অছি আ গণনা পাদ রা চবণক অনুসাব হোগত বহএ । মুখ্য ছন্দ গাযত্রী, একব প্রযোগ রেদমে সভসঁ বেঁশী অছি । তকব বাঁদ ত্রিষ্টুপ আ জগতীক প্রযোগ

অছি।

১. গাযত্রী- ৮-৮ কেব তীন পাদ। দোসব পাদক বাঁদ বিবাম। বা এক পদমে ছহ টা অক্ষব।

২. ত্রিষ্টুপ- ১১-১১ কেব ৪ পাদ।

৩. জগতী- ১২-১২ কেব ৪ পাদ।

৪. উষ্ণিক- ৮-৮ কেব দূ তকব বাঁদ ১২ বর্ণ-সংখ্যাক পাদ।

৫. অনুষ্টুপ- ৮-৮ কেব চাবি পাদ। একব প্রযোগ বেদক অপেক্ষা সংস্কৃত সাহিত্যমে বেশী অছি।

৬. বৃহতী- ৮-৮ কেব দূ আ তকবা বাঁদ ১২ আ ৮ মাত্রাক দূ পাদ।

৭. পংক্তি- ৮-৮ কেব পাঁচ। প্রথম দূ পদক বাঁদ বিবাম অবৈছ।

যদি অক্ষব পূবা নহি হোগত অছি, তঁ এক বা দূ অক্ষব নিম্ন প্রকাবেঁ ঘটা-বঢ়া নেন জাগত অছি।

(অ) ববেণ্যম্ কেঁ ববেণিযম্ স্বঃ কেঁ স্বুবঃ।

(আ) গুণ আ বৃদ্ধি সন্ধিকেঁ অনগ কএ নেন জাগত অছি।

এ= অ + গ

ও= অ + উঁ

ঐ= অ/আ + এ

ঔ= অ/আ + ও

অহু প্রকাবেঁ নহি পূবনাপব অন্য বিবাডাদি নামসঁ একব নামকবণ হোগত অছি।

যথা- গাযত্রী (২৪)- বিবাট্ (২২), নিচৃত্ (২৩), শঙ্কা (২৪), ভুবিক্ (২৫), স্ববাট্(২৬)।

ওঁ ভূর্ভুবস্বঃ। তত্ সবিতুর্ববেণ্যং। ভর্গো দেবস্য ধীমহি। ধিযো যো নঃ প্রচোদযাত্।

রৈদিক ঋষি স্বযংকেঁ আ দেরতাকেঁ সেহো করি কহৈত ছথি। সম্পূব্ণ রৈদিক সাহিত্য এহি করি চেতনাক রাঙ্ময মূর্ত্তি অছি। ওতএ আধ্যামে চেতনা, অধিদৈরত্বমে উঁত্তীর্ণ ভেন অছি, এরম্ ওকবা আধিভৌতিক ভাষামে রূপ দেন গেন অছি।

রৈদিক (ছন্দস্) আ নৌকিক সংস্কৃত (ভাষা) ক ব্যাকবণ
:

রৈদিক আ নৌকিক দুনূ সংস্কৃতমে সংজ্ঞা, সর্রনাম আ রিশেষণক পুন্নিংগ, স্ত্রীনিংগ আ নপুংসক নিংগ, তীন রচন– এক, দূ আ বঁহুরচন বহন, পুন্নিংগ, স্ত্রীনিংগ আ নপুংসক নিংগ নিংগক দ্যোতক নহি অছি, দাবা– পুন্নিংগ, কনত্র– নপুংসক নিংগ আ ভার্যা– স্ত্রীনিংগ; ঋদা তীনূ পনীক পর্যাযরাচী অছি। তহিনা গ্রাবঃ (পুন্নিংগ), ব্রহ্ম (নপুংসক নিংগ) আ চিতিঃ (স্ত্রী নিংগ) হোগত অছি। সংজ্ঞা, সর্রনাম আ রিশেষণক আঠটা কাবক (রিভক্তি) সেহো হোগত অছি। দস গণক ধাতুক রূপ পবস্মৈপদী (ফন দোসবাকেঁ), আমেনেপদী (ফন অপনাকেঁ) আ উঁভযপদী এ তীন তবহক হোগত অছি। কর্তৃ, কর্ম আ ভব এ তীন রাচ্য আ বাঁবহ নকাব (নট্, নিট্, নঙ্, ন্বঙ্, ন্বট্, নৃট্, নোট্, রিধিনিঙ্, আশীনিঙ্, নূঙ্, নেট্ আ নেঙ্) হোগত অছি। নেট্ আ নেঙ্ নকাব নৌকিক সংস্কৃত (ভাষা) মে নহি হোগত অছি।

সংস্কৃতমে তীনটা পুকষ– প্রথম (আন ভাষাক অন্য পুকষ) , মধ্যম আ উঁত্তম হোগত অছি। উঁদ্দেশ্য আ রিধেয; কর্তা আ ক্রিযা; রিশেষ্য আ রিশেষণ আ সংজ্ঞা আ সর্রনামক পবস্পব গুণ–সমানতা বহৈত ছৈ।

রৈদিক সংস্কৃতমে গীতামেক আ বঁনামেক স্ববাঘাত বহএ ঋদা নৌকিক সংস্কৃতমে খানী বঁনামেক স্ববাঘাত বহি

गेल। वैदिक उच्चारण उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (संगीतशास्त्रक आरोह, अवरोह आ सम सँ तुलना द्रष्टव्य) लौकिक उच्चारणमे खतम भऽ गेल।

वैदिक छन्दमे एक चरण, जकरा पाद कहैत छैक ओहि पादमे वर्णक गनती होइत अछि। छन्दमे गति (लय) आ यति (विराम) सेहो होइत अछि। ह्रस्व स्वर लघु होइत अछि, ह्रस्वक बाद संयुक्त वर्ण अएलासँ लघु स्वर गुरु स्वर भऽ जाइत अछि।

उपसर्ग: लौकिक संस्कृतमे उपसर्ग क्रियासँ पहिने अबैत अछि मुदा वैदिक संस्कृतमे पहिने, बादमे, अलगसँ आ कतहु अन्तरालक बाद सेहो अबैत अछि। संगहि वैदिक संस्कृतमे जे एक बेर उपसर्ग क्रियाक संग आबि गेल तँ तकरा बाद ओहि मंत्रमे मात्र उपसर्गक प्रयोग होइत आ वैह उपसर्गयुक्त क्रियाक द्योतक होइत।

समास: वैदिक संस्कृतमे समासमे सेहो कखनो काल भिन्नता छै, जेना अष्टक बाद कोनो शब्द होइ तँ ओ अष्टा भऽ जाइ छै- अष्टापदी। पितृ आ मातृक द्वन्द्व समास भेलापर दुनूमे आ लगै छै आ गुण होइ छै- पितरामातरा।

लेट् लकार: लौकिक संस्कृतमे लेट् लकारक प्रयोग नहि होइत अछि मुदा वैदिक संस्कृतमे होइत अछि जेना भराति, पताति लौकिकमे मात्र भरति, पततिसँ निर्दिष्ट होइत अछि।

वैदिक आ लौकिक संस्कृत कोनो दू भाषा नहि अछि वरन् लौकिक संस्कृत, वैदिक संस्कृतिक सरल रूप अछि। वैदिक संस्कृतमे लौकिक संस्कृतसँ सभ किछु बेशी अछि (अपवाद- लङ् आ लृङ् लकारक वैदिक संस्कृतमे कम उपयोग।)

সংহিতা, ব্রাহ্মণ গ্রংথ, আরণ্যক আ উপনিষদক ভাষা বৈদিক সংস্কৃত কহল জাগত অছি আ তকর বাদক সংস্কৃত লৌকিক সংস্কৃত কহল জাগত অছি।
দুনূ সংস্কৃতমে ধাতু, শব্দ আ অর্থ প্রায়ঃ এক্কে অছি।
দুনূমে তীন লিংগ, তীন বচন আ তীন পুরুষ হোগত অছি।
দুনূমে সভ শব্দ প্রায়ঃ ধাতু অছি; রূঢ় শব্দ বড্ড কম অছি।
সমাস দুনূমে অছি, হঁ লৌকিক সংস্কৃতমে একর বেশী প্রয়োগ দেখবামে অবৈত অছি।
ছন্দ সেহো দুনূমে মোটা-মোটী এক্কে বঙক ভেটৈত।
ধাতুক গণ মধ্য বিভাজন সেহো দুনূমে এক্কে বঙ ভেটৈত।
ণিচ্, সন্ প্রত্যয় দুনূমে এক্কে বঙ ভেটৈত।
পদক নির্মাণ দুনূমে এক্কে তরীকাসঁ হোগত অছি।
সুপ্-তিঙ-কৃত্-তদ্ধিত দুনূমে এক্কে বঙ ভেটৈত।
দুনূমে শব্দক ক্রম আগাঁ পাছাঁ ভেলে অর্থক পরিবর্তন নহি হোগত অছি। দুনূমে সন্ধি, কারক আ বিভক্তি হোগত অছি।
মুদা:-
লৌকিক সংস্কৃতমে উপধ্মানীয আ জিহ্বামূলীয ধ্বনিক প্রয়োগ নহি হোগত অছি আ তকর স্থানমে বিসর্গসঁ কাজ চলৈত অছি।
বৈদিক সংস্কৃতমে ळ, ळह হোগত অছি মুদা লৌকিক সংস্কৃতমে নহি হোগত অছি।
বৈদিক সংস্কৃতমে দূ স্বর মধ্য "ড" ळ ভঽ জাগত অছি আ "ঢ" ळह ভঽ জাগত অছি। লৌকিক সংস্কৃতমে সে নহি অছি।

ग्राह्य (ह्रस्व वा दीर्घ) लौकिक संस्कृतमे नहि अछि।
यजुर्वेदमे ह, श, ष, स, र एहि सभसँ पूर्व अनुस्वार
ग्राह्य भऽ जाइत अछि।
उदात्त, अनुदात्त वा स्वरितक उच्चारण लौकिक संस्कृतमे
स्पष्ट रूपसँ नहि होइत अछि।
वैदिक संस्कृतमे नेट् लकारक प्रयोग होइत अछि,
लौकिक संस्कृतमे नहि।
वैदिक संस्कृतमे उपसर्ग धातुसँ पृथक् तदा लौकिक
संस्कृतमे संगमे प्रयोग होइत अछि।
वैदिक संस्कृतमे तुमुन् प्रत्ययक तुमुन् से, सेन्, असे,
अध्यै इत्यादि १७ टा प्रत्ययक प्रयोग होइत अछि तदा
लौकिक संस्कृतमे खाली "तुम्" प्रत्ययक प्रयोग होइत
अछि।
वैदिक संस्कृतक सन्धि नियम शिथिल होइत अछि तदा
लौकिक संस्कृतक दृढ़ होइत अछि।
वैदिक कतेको शब्दक अर्थ लौकिक संस्कृतमे बदलि गेल
अछि। जेना असुर वैदिक संस्कृतमे देवतागणकेँ कहल
जाइत छल तदा लौकिक संस्कृतमे राक्षसकेँ कहल
जाइत अछि।
धातुरूप सेहो वैदिक संस्कृतमे भिन्न अछि, अन्तिम स्वर
दीर्घ सेहो होइत अछि। जेना चक्र- चक्रा: द्वित्वक
अभाव होइत अछि जेना "ददाति"क स्थानमे "दाति";
कखनो काल परस्मैपदिक स्थानमे आत्मनेपद वा
आत्मनेपदिक स्थानमे परस्मैपद धातुक प्रयोग होइत
अछि; शप् स्थानपर कखनो काल दोसर गणक विकरणक
प्रयोग होइत अछि।
वैदिक संस्कृतमे शब्द रूप, धातु रूप, प्रत्ययक विविधता
बेशी अछि।

রৈদিক সংস্কৃতক কান-প্বকষ-রচন-নিংগক ঐচ্ছিক পবিরর্তন নৌকিক সংস্কৃতমে মোটামোটী খতম ভ২ গেন খছি।
রৈদিক সংস্কৃতক খচ্, খম্, জিন্ব্, পিন্ব্ খাদি ধাত্ত নৌকিক সংস্কৃতমেপ্রযোগ নহি হোগত খছি।
রৈদিক সংস্কৃতমে তব-তম প্রত্যয সংজ্ঞা শৰ্দ্ধ সন খা নৌকিক সংস্কৃতমে রিশেষণ সন প্রযুক্ত হোগত খছি।
ছন্দক হিসাবঁসঁ রৈদিক সংস্কৃতমে স্বব্-স্বরব্ খা দর্শিত, দবশিত নিখি নেন জাগত খছি। হ্মদা নৌকিক সংস্কৃতমে সে নহি হোগত খছি।
রৈদিক সংস্কৃতমে "খান্" পদক খন্তমে বহনাপব খা তকব বাঁদ খ, গ, উঁ স্বব খএনাপব ন্ ন্বপ্ত ভ২ জাগত খছি খা খাকাবক বাঁদ খন্বস্বাব ভ২ জাগত খছি। জেনা মহান্ গন্দ্রঃ = মহা গন্দ্রঃ। নৌকিক সংস্কৃতমে সে নহি হোগত খছি।
রৈদিক সংস্কৃত:-ধাত্তৰূপ:-
নঠ্ নকাব মধ্যমপ্বকষ বঁহ্রচন পবস্মৈপদি ধাত্ত থ, ত, থন, তন ওা চাৰু প্রত্যয নগৈত খছি। জেনা রদ্-রদথ, রদথন, রদত, রদতন।
নঠ্ নকাব উঁত্তমপ্বকষ-বঁহ্রচন পবস্মৈপদি ধাত্ত মস্ (মঃ), মসি ওা দূটা প্রত্যয প্রযোগ হোগত খছি। জেনা নাশিযামঃ - নাশিযামসি। গমঃ -গমসি। স্মঃ - স্মসি।
নোঠ্ নকাবক মধ্যমপ্বকষ একরচন পবস্মৈপদি ধাত্তমে হি, ধি ওা দূটা প্রত্যয হোগত খছি। জেনা শ্রৃণ্বহি, শ্রৃণ্বধি।
নোঠ্ নকাব মধ্যমপ্বকষ বঁহ্রচন খামেনেপদ ধাত্তমে ধ্বম্ খা ধ্বাত্ ওা দূটা প্রত্যয হোগত খছি। জেনা রাবযধ্বম্, রাবযধ্বাত্।

(छन्दसि लुङ् लङ् लिट्ः):- वैदिक संस्कृतमे लुङ्, लङ् आ लिट् लकालक प्रयोग लोट्, लट् लकालक अर्थमे प्रयोग होइत अछि। जेना आगमत् (वैदिक लुङ्)= आगच्छतु (लोट्)। अवृणीत (वैदिक लङ्)= वृणीते (लट्)। ममाव (वैदिक लिट्)= म्रियते (लट्)।
वैदिक संस्कृत:-शब्दरूप:-
[संस्कृत (सं= स्+म- ई ठीक अछि; एकर उच्चारण सं= स्+न गलत अछि।)]
वैदिक संस्कृतमे शब्दरूपक भिन्नता लौकिकसँ बेशी होइत अछि। जेना अकारान्त पुल्लिंग देवः प्रथमा-द्वितीया-सम्बोधन-द्विवचन वैदिकमे देवा, देवौ दुनू होइत अछि जखन लौकिकमे मात्र देवौ होइत अछि। प्रथमा-सम्बोधन-बहुवचन वैदिकमे देवासः, देवाः जखन लौकिकमे मात्र देवाः होइत अछि। तृतीया-एकवचन वैदिकमे देवा, देवेन दुनू होइत अछि जखन लौकिकमे मात्र देवेन होइत अछि। तृतीया-बहुवचन वैदिकमे देवेभिः, देवैः जखन लौकिकमे देवैः होइत अछि।
तहिना वैदिक संस्कृतमे ऋकारान्त शब्दक रूप पुल्लिंग-स्त्रीलिंगमे लौकिक संस्कृत जकाँ होइत अछि, खाली प्रथमा-द्वितीया-सम्बोधन-द्विवचनमे दू रूप होइत अछि। जेना दातृ- दातारा, दातारौ। पितृ- पितरा, पितरौ। मातृ- मातरा, मातरौ।
अस्मद्:- प्रथमा-द्विवचन वैदिक- वाम्, आवम्; लौकिक आवाम्। चतुर्थी-एकवच वैदिक- मह्य, मह्यम्; लौकिक- मह्यम्। पञ्चमी-द्विवचन वैदिक आवत्, आवाभ्याम्; लौकिक- आवाभ्याम्। सप्तमी-बहुवचन वैदिक-अस्मे, अस्मासु; लौकिक- अस्मासु।

ছন্দ:–
পিঙ্গল মুনিক ছন্দ শাস্ত্রক আঠমে সঁ পহিল চারিম অধ্যাযক সাতম সূত্র ধরি বৈদিক ছন্দক আ তকরা বাঁদ লৌকিক ছন্দক বর্ণন অছি।
বৈদিক ছন্দমে অক্ষরক গণনা হোগত অছি। ওতএ লঘু আ গুরুক বিচার নহি হোগত অছি। ঋগবেদমে সভসঁ বেশী ত্রিষ্টুপ, ফের গাযত্রী আ তখন জগতী ছন্দক প্রযোগ ভেল অছি।
ত্রিষ্টুপ্– ৪৪ অক্ষর– ১১ অক্ষরক ৪ পাদ;
গাযত্রী– ২৪ অক্ষরক (ওা ২,৩,৪,৫ পদক হোগত অছি), সভসঁ বেশী লোকপ্রিয ৮ অক্ষরক তীন পাদক গাযত্রী জাহিমে দোসর পাদক বাঁদ বিরাম হোগত অছি। ২৩ অক্ষরক গাযত্রী নিচৃদ্ গাযত্রী, ২২ অক্ষরক গাযত্রী বিরাড্ গাযত্রী, ২৫ অক্ষরক গাযত্রী ভুরিগ্ গাযত্রী, ২৬ অক্ষরক গাযত্রী স্বরাড্ গাযত্রী কহল জাগত অছি। সভ পাদমে এক অক্ষর কম ভেলাসঁ "পাদনিচৃদ্ গাযত্রী" কহল জাগত অছি।
জগতী– ৪৮ অক্ষর– ১২ অক্ষরক চারি পাদ।
পাঠ:–
বৈদিক সংস্কৃতকেঁ স্মরণ রখবাক কএকটা বিধি অছি।
সংহিতা পাঠ– মূলমংত্র সন্ধি সহিত সস্বর পঢ়ল জাগত অছি।
পদপাঠ– মন্ত্রক পদক পৃথক পাঠ হোগত অছি।
ক্রমপাঠ– ক্রমসঁ দু পদক পাঠ হোগত অছি।
জটাপাঠ– অনুলোম ১–২, বিলোম ২–১, অনুলোম ১–২
শিখাপাঠ– জটাপাঠমে পবিবর্তিত উত্তরপদক যোগসঁ শিখাপাঠ হোগত অছি।
ঘনপাঠ– শিখামুক্ত বিপর্যক পদক পুনঃ পাঠ হোগত

अछि ।

वैदिक संस्कृतमे यज्ञ आ अध्यात्मिक विषयक चर्च होइत अछि । लौकिक संस्कृतमे अहलौकिक विषयवस्तु सेहो अबैत अछि ।

२.प्राकृत
संस्कृतसँ पहिने प्राकृत बहए वा बादमे ई विवादक विषय भऽ सकैत अछि कारण ऋगवेदक शिथिर, दूलभ, गन्दर आदि शब्द जनभाषाक साहित्यीकरणक प्रमाण अछि । ओना एकर प्रारम्भिक प्रयोग अशोकक अभिलेखसँ तेसर शताब्दी ई. धरि भेटि जाइत छदा पारिभाषिक रूपमे जाहि प्राकृतक एतए चर्चा भऽ रहल अछि ओ पहिल ई.सँ छठम ई. धरि साहित्यक भाषा दृ अर्थे रहल । पहिल संस्कृत साहित्यक नाटकमे जन सामान्य आ स्त्री पात्र लेल शौरसेनी, महाराष्ट्री आ मागधीक (वररुचि चारिम प्राकृतमे पैशाचीक नाम जोड़ै छथि) प्रयोग सेहो भेल (कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, शूद्रकक मृछकटिकम्, श्रीहर्षक रत्नावली, भवभूतिक उत्तररामचरित, विशाखादत्तक मुद्राराक्षस) आ दोसर जे फेर एहि प्राकृत सभमे साहित्यक निर्माण स्वतंत्र रूपेँ होमए लागल । फेर एहि प्राकृत भाषाकेँ सेहो व्याकरणमे बान्हल गेल आ तखन ई भाषा अलंकृत होमए लागल आ अपभ्रंश आ अवहट्ठक प्रयोग लोक करए लगलाह, ओना अपभ्रंश प्राकृतक संग प्रयोग होइत बहए तकर प्रमाण सेहो उपलब्ध अछि ।
अशोकक अभिलेखमे शाहबाजगढ़ी आ मानसेराक अभिलेख उत्तर-पश्चिम, कलसी, मध्य, धौली, जौगड़ पूर्व

আ গিবনার দক্ষিণ পশ্চিমক জনভাষাক ক্ষেত্রীয় প্রকারক দর্শন করबैत अछि। বাজশেখব প্রাকৃতকেঁ মিষ্ট আ সংস্কৃতকেঁ কঠোর কহৈ ছথি (বিদ্যাপতি পশ্চাতি কহৈ ছথি দেসিল বঁয়না সভ জন মিট্ঠা)।

প্রাচীন প্রাকৃত পালীকেঁ কহল জাগত অছি জাহিমে অশোকক অভিলেখ, মহবংশ আ জাতক লিখল গেল। মধ্য প্রাকৃতমে সাহিত্যিক প্রাকৃত অবৈত অছি। বাঁদক প্রাকৃতমে অপভ্রংশ আ অবহট্ঠ অবৈত অছি।

মোটা-মোটী গদ্য লেল শৌবসেনী, পদ্য লেল মহাবাষ্ট্রী আ ধার্মিক সাহিত্য লেল মাগধী-অর্ধমাগধীক প্রয়োগ ভেল। নাটকমে স্ত্রী-বিদূষক বঁজৈত বহথি শৌবসেনীমে মুদা পদ্য কহথি মহাবাষ্ট্রীমে, নাটকক তথাকথিত নিম্ন শ্রেণীক লোক মাগধী বঁজৈত ছলাহ।

প্রাকৃতমে স্বপ্ তিঙ্ ধাতুক সংগ মিজ্মব ভঽ জাগত অছি।

প্রাকৃতমে ধাতুরূপ ১-২ প্রকারক (ভ্বাদিগণ জেকাঁ) আ শব্দরূপ ৩-৪ (অকাবান্ত জেকাঁ) প্রকারক বহি গেল, মানে দুনূ রূপ কম ভঽ গেল। মুদা এহিসঁ অর্থমে অস্পষ্টতা আএল জকব নিরাবণ কাবকক চেন্হ কএলক।

চতুর্থী, দ্বিরচন, লঙ্ লিট্ লৃঙ্ আত্মনেপদ আদিক অভার ভঽ গেল প্রথমা আ দ্বিতীয়াক বহুরচন এক ভঽ গেল।

ধ্বনি পবিবর্তন ভেল। ঋ, ঐ, ঔ, য, শ, ষ আ বিসর্গক অভার ভেল (অপরাদ মাগধীমে য আ শ অছি মুদা স নহি)।

অন্তমে আএল ব্যঞ্জন লুপ্ত ভেল (হ্রস্ব স্ববক বাঁদ দূ আ দীর্ঘ স্ববক বাঁদ একসঁ বেশী ব্যঞ্জন নহি বহি সকৈত অছি।)

২.প্রাকৃত

संस्कृतसँ पहिने प्राकृत बहुत रास बाँदमे आ विवादक विषय भऽ सकैत अछि कारण ऋगवेदक शिथिव, दूनम, गन्दव आदि शब्द जनभाषाक साहित्यीकवणक प्रमाण अछि। ओना एकव प्रावम्भिक प्रयोग अशोकक अभिलेखसँ तेवहम शताब्दी आ. धवि भेटैत जाएत रुद्रदा पाविभाषिक रूपमे जाहि प्राकृतक एतेक चर्चा भऽ वहल अछि ओ पहिल आ.सँ छठम आ. धवि साहित्यक भाषा दृ अर्थे वहल। पहिल संस्कृत साहित्यक नाटकमे जन सामान्य आ स्त्री पात्र लेल शौवसेनी, महावाष्ट्री आ मागधीक (ववकचि चाविम प्राकृतमे पैशाचीक नाम जोड़ै छथि) प्रयोग सेहो भेल (कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, शूद्रकक मृच्छकटिकम्, श्रीहर्षक वत्नावली, भवभूतिक उत्तववामचवित, विशाखादत्तक रुद्राबाक्षस) आ दोसव जे फेव एहि प्राकृत सभमे साहित्यक निर्माण स्वतंत्र रूपेँ होमए लागल। फेव एहि प्राकृत भाषाकेँ सेहो व्याकवणमे बान्हल गेल आ तखन आ भाषा अलंकृत होमए लागल आ अपभ्रंश आ अवहट्ठक प्रयोग लोक कवए लगलाह, ओना अपभ्रंश प्राकृतक संग प्रयोग होइत वहल तकव प्रमाण सेहो उपलब्ध अछि।

अशोकक अभिलेखमे शाहबाजगढ़ी आ मानसेबाक अभिलेख उत्तव-पश्चिम, कलसी, मध्य, धौली, जौगड़ पूर्व आ गिवनाव दक्षिण पश्चिमक जनभाषाक क्षेत्रीय प्रकावक दर्शन कवबैत अछि। वाजशेखव प्राकृतकेँ मिट्ठ आ संस्कृतकेँ कठोव कहै छथि (विद्यापति पछाति कहै छथि देसिल बयना सभ जन मिट्ठा)।

प्राचीन प्राकृत पालीकेँ कहल जाइत अछि जाहिमे अशोकक अभिलेख, महवंश आ जातक लिखल गेल। मध्य प्राकृतमे साहित्यिक प्राकृत अबैत अछि। बाँदक

প্রাকৃতমে অপভ্রংশ আ অবহট্ঠ অবৈত অছি।
মোটা-মোটী গদ্য লেল শৌবসেনী, পদ্য লেল মহাবাষ্ট্রী আ ধার্মিক সাহিত্য লেল মাগধী-অর্ধমাগধীক প্রযোগ ভেল। নাটকমে স্ত্রী-বিদূষক বজৈত বহথি শৌবসেনীমে মুদা পদ্য কহথি মহাবাষ্ট্রীমে, নাটকক তথাকথিত নিম্ন শ্রেণীক লোক মাগধী বজৈত ছলাহ।
প্রাকৃতমে স্বপ্ তিঙ্ ধাতুক সংগ মিজ্ঞাব ভ২ জাগত অছি।
প্রাকৃতমে ধাতুৰূপ ১-২ প্রকাবক (ভ্বাদিগণ জেকাঁ) আ শব্দৰূপ ३-४ (অকাবান্ত জেকাঁ) প্রকাবক বহি গেল, মালে দৃনূ ৰূপ কম ভ২ গেল। মুদা এহিসঁ অর্থমে অস্পষ্ঠতা আএল জকব নিরাবণ কাবকক চেন্হ কএলক।
চতুর্থী, দ্বিরচন, লঙ্ লিট্ লৃঙ্ আত্মনেপদ আদিক অভাব ভ২ গেল প্রথমা আ দ্বিতীযাক বহুরচন এক ভ২ গেল।
ধ্বনি পবিবর্তন ভেল। ঋ, ঐ, ঔ, য, শ, ষ আ রিসর্গক অভাব ভেল (অপরাদ মাগধীমে য আ শ অছি মুদা স নহি)।
অন্তমে আএল ব্যংজন লুপ্ত ভেল (হ্রস্ব স্বরক বাদ দূ আ দীর্ঘ স্বরক বাদ একসঁ বেশী ব্যংজন নহি বহি সকৈত অছি।)

ন ণ মে, য জ মে আ শ, ষ স মে পবিরর্তিত ভ২ জাগত অছি।
পদমে উত্তবপদক পহিল অক্ষবক লোপ ভ২ জাগত অছি, মুদা সে ধাতুৰূপ অছি তখন লোপ নহি হোগত অছি। জেনা আর্যপুত্র= অজ্জউত্ত মুদা আগতম্= আগদং
অন্বদাত্ত অব্যযক পহিল অক্ষবক লোপ হোগত অছি।

জেনা চ= খ
ভূ ধাত্তক ভ পবিরর্তিত ভ২ হ ভ২ জাগত খছি। জেনা ভরতি= হোগ
ক খ মে খা প ফ মে বঁদনি জাগত খছি। পনস= ফণস, ক্রীড়্= কেন
উঁচাবণ স্থানক পবিরর্তনক ক্রমমে দন্ত্য উঁচাবণ স্থান তানব্যমে বঁদনি জাগত খছি। জেনা ত্ = চ্
মধ্যক য নোপিত ভ২ জাগত খছি। ক, গ, চ, জ, ত, দ ক সেহো কিছ খপরাদকেঁ ছোড়ি নোপ হোগত খছি। প, বঁ, র ক নোপ সেহো কখনো খান হোগত খছি। জেনা– প্রিয= পিখ, নোক= নোখ, খন্ববাগ= খণ্ববাখ, প্রচ্ব= পউব, ভোজন= ভোখণ, বসাতন= বসাখন, হৃদয= হিখখ, রূপ= রূখ, রির্ঁধ= রিউহ, রিযোগ= রিওখ
মধ্যক ক, ত, প ক্রমসঁ গ, দ, বঁ ভ২ জাগত খছি। খ, ঘ, থ, ঘ, ফ, ভ ঞা সভ হ ভ২ জাগত খছি। জেনা নাযকঃ= ণাখগ্ব, খাগতঃ= খাগদো, দীপ=দীবঁ=দীর। মুখ= মুহ, সখী= সহী, মেঘ= মেহ, নঘ্ক= নহ্খ, যূথ= জূহ, রুধিব= রুহিব, রধূ= রহূ, শীফব= সাহব, খভিনর= খহিণর।
কখনো কান মধ্যক ব্যংজন দোবঁব ভ২ জাগত খছি। জেনা এক= এক্ক
মধ্যক ট, ঠ ক্রমসঁ ড, ঢ ভ২ জাগত খছি। জেনা ফট্বঁ= ফড্বঁ, পঠন= পঢণ
মধ্যক প, বঁ পবিরর্তিত ভ২ র বঁনি জাগত খছি। জেনা দীপ= দীর। শবঁব= সরব।
ড, ত, দ পবিরর্তিত ভ২ ন বঁনি জাগত খছি। জেনা ক্রীডা= কীনা, সাতরাহন= সানরাহণ, দোহদ= দোহন।

म परिवर्तित भऽ व बँनि जाइत अछि। जेना ग्राम= गाँव।
अन्तिम स्पर्श वर्णकें लोप होइत अछि, अन्तिम अनुनासिकमे अनुस्वार नहि होइत अछि, अः बदलि कऽ ओ भऽ जाइत अछि वा ओकर लोप भऽ जाइत अछि।
मोटा-मोटी शब्दक प्रारम्भमे एकटा व्यंजन आ मध्यमे बेशीसँ बेशी दूटा व्यंजन सेहो द्वित्वमे जेना क्क वा क्ख रूपमे बहैत अछि।
व्यंजनक बँनक अनुरूपेँ निम्न प्रकारक क्रम होइत अछि। (अ) कवर्ग, चवर्ग,, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग मे क (सभसँ बेशी बँनगर) सँ भ (क्रमसँ कम बँनगर) धरि, सभ वर्गक पाँचम वर्ण छोड़ि कऽ। जेना कवर्गक ङ, चवर्गक ञ, टवर्गक ण, तवर्गक न आ पवर्गक म छोड़ि कऽ। फेर (आ) कचटतप वर्गक पाँचम वर्ण। फेर (ग) न, स, र, य, व। एहिमे समानबँनक वर्णमे बादबँना वर्ण प्रबँन होइत अछि, अन्यथा अधिक बँनबँना बेशी बँनगर होइत आछि। जेना- उत्पन्न= उप्पन, खड्ग= खग्ग, अग्नि= अग्गि। फेर जे कचटतप वर्गक पाँचम वर्णकि ओही वर्गक कोनो दोसर वर्ण होएत तँ पाँचम वर्ण ओहिना बहत, नहि तँ ओकर परिवर्तन अनुस्वारमे भऽ जाएत। जेना क्रौञ्च= कोञ्च, दिङ्मुख= दिंमुह।
दोसर पदक प्रारम्भमे ज्ञ बहलासँ ओ ज्ज बँनि जाइत अछि। मनोज्ञ= मणोज्ज।
कचटतप वर्गक बाद श, ष, स बहलासँ छ होइत अछि। जेना अप्सरा= अच्छरा, मत्सर= मच्छर।
क्ष बदलि कऽ क्ख भऽ जाइत अछि। जेना दक्षिण=

दक्खिण।
शौरसेनीमे क्ष बदलि कए क्ख आ मागधीमे ष्क भए जाइत अछि। जेना कुक्षि= कुक्खि (शौरसेनी), कुष्कि (मागधी)।
प्राकृतमे ऋ आ लृ स्वर नहि होइत अछि। ऋ बदलि कए (क) रि भए जाइत अछि। जेना ऋषि= रिषि, (ख) अ भए जाइत अछि। जेना कृत= कद। (ग) इ भए जाइत अछि। जेना दृष्टि= दिट्ठि। (घ) उ भए जाइत अछि। जेना पृच्छति= पुच्छदि।
ऐ, औ बदलि कए ए भए जाइत अछि। जेना कौमुदी= कोमुदी।
संयुक्ताक्षरसँ पूर्व ह्रस्व स्वर रहैत अछि।
उ बदलि कए अ वा ओ भए जाइत अछि। जेना मुकुल= मउल। पुस्तक= पोत्थअ।
ऊ बदलि कए ओ भए जाइत अछि। जेना मूल्य= मोल्ल।
ए बदलि कए इ भए जाइत अछि। जेना एतेन= एदिणा।
ओ बदलि कए उ भए जाइत अछि। जेना अन्यान्य= अण्णुण्ण।
अनुस्वार+ अपि= पि आ अनुस्वार+इति= ति भए जाइत अछि। अनु= ण भए जाइत अछि।
य् बदलि कए इ भए जाइत अछि। जेना कथयतु= कधेदु।
प्राकृतमे अन्तिम व्यंजनक लोप भए जाइत अछि। व्यंजन सन्धिक मोटा-मोटी अभाव रहैत अछि।
स्वर सन्धिमे सेहो मध्य वर्णक लोप भेलोपर सन्धि नहि होइत अछि।

शौरसेनीमे द्विवचन खतम भऽ गेल। चतुर्थीक रूप षष्ठीमे मिलि गेल। व्यंजन अन्तर्गत शौर खतम भऽ गेल।
धातुरूपमे शौरसेनीरूपसँ बेशी अन्तर आएल। व्यंजन अन्तर्गत धातु खतम भऽ गेल। धातुरूप एकहि रीतिसँ चलए लागल, द्विवचन खतम भऽ गेल, रूपक भिन्नता कम भऽ गेल। आत्मनेपद रूप मोटा-मोटी खतम भऽ गेल। लिट्, लिङ्, लुङ् रूप सेहो मोटा-मोटी खतम भऽ गेल। भूतकाल लेल कृदन्त प्रत्ययक प्रयोग होमए लागल। भ्वादिगण आ चुरादिगणक अलावे सभ गण खतम भऽ गेल।
शौरसेनीमे ध्य, र्ज्, र्य् बदलि कऽ ज्ज् भऽ जाइत अछि।
शौरसेनी आ महाराष्ट्री- संस्कृतक मध्यक त शौरसेनीमे द भऽ जाइत अछि मुदा महाराष्ट्रीमे ओ लोपित भऽ जाइत अछि। जेना- संस्कृत- जानाति= शौरसेनी जाणादि= महाराष्ट्री जाणाइ
संस्कृतक मध्यक थ शौरसेनीमे ध मुदा महाराष्ट्रीमे ह भऽ जाइत अछि। जेना संस्कृत अथ= शौरसेनी अध= महाराष्ट्री अह।
दोसर पदक प्रारम्भमे ञ्च बदलासँ मागधीमे ञ्ञ बनि जाइत अछि।
मागधीमे श, ष, स ई तीनू परिवर्तित भऽ श; र परिवर्तित भऽ ल; ज परिवर्तित भऽ य बनि जाइत अछि। अकारान्त प्रथमा एकवचनमे ए लगैत अछि। जेना दरिद्र= दलिद्द।
मागधीमे ज बदलि कऽ य भऽ जाइत अछि।
मागधीमे ध्य, र्ज्, र्य् बदलि कऽ य्य भऽ जाइत अछि।

মাগধীমে ণ্য, ন্য,জ্ঞ,ঞ্জ বঁদলি কঽ ঞ্ঞ ভঽ জাগত অছি।
মাগধীমে মধ্যক ছ বঁদলি কঽ শ্চ ভঽ জাগত অছি।
মাগধীমে ষ্ক= স্ক বা শ্ক, ষ্ঠ= স্ট বা শ্ট, ষ্প= স্প, ষ্ফ= স্ফ ভঽ জাগত অছি।
মাগধীমে র্থ বঁদলি কঽ স্ত ভঽ জাগত অছি।
বিধিলিঙ্ ক প্রযোগ জৈন প্রাকৃত- অর্ধমাগধী আ জৈন মহারাষ্ট্রীমে প্রচলিত বহল, আন প্রাকৃতমে ওা মোটা-মোটী খতম ভঽ গেল।
সংস্কৃতক ত্তম্ শৌরসেনীমে দুং, মাগধীমে সেহো দুং বহৈত অছি মুদা মহারাষ্ট্রীমে উং ভঽ জাগত অছি।

প্রাকৃতক শৌরসেনী, মাগধী, মহারাষ্ট্রীক অতিরিক্ত পৈশাচী প্রাকৃতক সেহো উল্লেখ ভেটৈত অছি। গুণাঢ্যক বৃহৎকথা এহি প্রাকৃতমে লিখল গেল জে আব় স্বতংত্র রূপসঁ উপলব্ধ নহি অছি। একর উল্লেখ উদ্ধরণ রূপমে কখনো কাল ভেটৈত অছি। ওা পশ্চিমোত্তর ভারতক প্রাকৃত ছল, উদ্ধরণ রূপমে উপলব্ধ সাহিত্যক অনুসার এহিমে নিম্ন বিশেষতা ছল। ণ বঁদলি কঽ ন ভঽ গেল। র বঁদলি কঽ ল ভঽ গেল। ল বঁদলি কঽ র ভঽ গেল। সঘোষ অঘোষ বঁলি গেল। দূ স্বরক বীচক ল বঁদলি কঽ ळ ভঽ গেল। স্বরক বীচমে ষ বঁদলি কঽ শ বা স, জ্ঞ বঁদলি কঽ ন্য আ ণ্য বঁদলি কঽ ঞ্ঞ ভঽ গেল। এহিমে আমেলেপদ আ পরস্মৈপদ দুনূ অছি।
পশ্চিমোত্তরক খোতানসঁ প্রাকৃত ধম্মপদ খরোষ্ঠী লিপিমে দহিনসঁ বাম লিখল লেখ প্রাপ্ত হোগত অছি জাহিমে শ, ষ, স তীনূক প্রযোগ অছি।
মোটা-মোটী প্রাকৃতমে শব্দ-ধাতুরূপক সরলীকরণক

प्रक्रिया दृष्ठिगोचर होइत अछि, द्वित्व, मूर्धन्यीकरण, अघोषीकरण आ सघोषीकरण, लकारक बदला ळ्दन्तक प्रयोग सेहो बढ़ि गेल।

प्राकृत आ पालि:
प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत ? वेदमे नाराशंसी गाथा लग आख्यान यएह सिद्धकरैत अछि जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक। आब ऋगवेद देखू- ओतए दुर्लभ लेल- दूलभ, (ऋगवेद ४.९.+) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि ? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि ? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्ध करैत अछि ? (गोपथ ब्राह्मण २.४)। आ वैदिक कालमे संस्कृतकेँ संस्कृत नै भाषा कहल जाइ छल। आ जकरा आइ प्राकृत कहै छिऐ से पालिक बाद ओइ रूपमे बुझल गेल (साहित्य लेखन सम्बन्धमे)।
भरतक नाट्यशास्त्रमे ७ टा आ वररुचि ४ टा प्राकृतक चर्चा करै छथि।
ओना तँ महावीरक रचन अर्ध-मागधी प्राकृत आ बुद्धक रचन मागधी-प्राकृतमे देल गेल सेहो ई दुनू मूलतः जनभाषा रहए।
सेहो जखन विभिन्न क्षेत्रक लोक जुमलाह तँ बुद्ध सभकेँ अपन क्षेत्रक भाषामे बुद्धरचन सिखबा लेल कहलन्हि: अनुजानामि भिक्खवे, सकायनिरुत्तियाबुद्धरचनं परियापुणितं- माने भिक्षु लोकनि, अपन-अपन भाषामे बुद्धरचन सिखबाक अनुमति दै छी। आ बुद्धरचनमे

প্রধান তত্ব জনভাষা মাগধীক বহুন ক্ষদা খান খান ভাষাক তত্ব সেহো ফেঁটাএল; খা সে ভাষা পানি ভঃ গেল।

পানিমে:

"ঋৃ", "লৃ", "ঐ", "ঔ" খা "খঃ" নৈ হোগএ খা "খং" স্বব নৈ ব্যঁজন হোগএ।

তানব্য শ খা মূর্ধন্য ষ সেহো নৈ হোগএ মাত্র দন্ত স হোগএ।

সংস্কৃতক "ঠ" ব্যঁজন হোগএ।

সংস্কৃতক সংযুক্ত ব্যঁজন "ক্ষ", "ত্র" খা "জ্ঞ" নৈ হোগএ।

"ঋৃ" বঁদনি কঃ "খ", "গ", "খ,গ", "গ,উঁ" ভঃ জাগএ। "বৃ" বঁদনি কঃ "রু" ভঃ জাগএ।

"লৃ" বঁদনি কঃ "উঁ"ভঃ জাগএ।

"ঐ" বঁদনি কঃ "গ" বা "এ" ভঃ জাগএ।

"ঔ" বঁদনি কঃ "উঁ" খা "ও" ভঃ জাগএ।

সংস্কৃতক দ্রুস্বক দীর্ঘ ভেনাগ: সিংহঃ = সীহো

সংস্কৃতক দীর্ঘক দ্রুস্ব ভেনাগ: ক্ষনীন্দ্রঃ = ক্ষনিন্দা

নিকটৈকস্বব: নিষণ্ণঃ = নিসিন্না

বঁনাঘাত: মধ্যমঃ = মজ্ঝিমো

প্রসাব: জযতি=জেতি

স্ববনোপ: গতি= তি

পানিমে ড খা ঢ সেহো নৈ হোগত খছি। তানব্য শ খা মূর্ধন্য ষ নেল "স" বা "ছ" প্রযুক্ত হোগএ; ড নেল"ঠ" খা ঢ নেল "ল্হ" প্রযোগ হোগএ।

ক বঁদনৈএ "য" মে: জেনা নৌকিকঃ = নোকিযো বা "ব" মে জেনা শ্বকঃ = স্ববো

খাগাঁ–পাছাঁ সেহো হোগএ: জেনা মশকঃ =মকসোঃ, কবেণ্বঃ =কণেরু

করস্ক চরস্কমে ৰঁদলৈএ: ক্ষন্দঃ =চ্ন্দা
তরস্ক ঠৈরস্কমে ৰঁদলৈএ: প্রথমঃ =পঠমো
"খ" উষ্মীগ্নত ভ২ "হ"মে ৰঁদলৈএ: প্রখবঃ = পহৰো
"ক" ঘোষীগ্নত ভ২ "গ" ভ২ জাগএ: মূকঃ =মূগো
"গ" অঘোষীগ্নত ভ২ "ক" ৰঁনি জাগএ: তডাগম্ =
তळ াকং
"ঝ" অল্পপ্রাণীগ্নত ভ২"জ" ৰঁনি জাগএ: ঝল্লিকা =
জল্লিকা
"প" মহাপ্রাণীগ্নত ভ২ "ফ" ৰঁনি জাগএ: পবশ্ঃ = ফবস্ব
ব্যঞ্জনক নোপ সেহো হোগএ: পরিসিষ্যামি= পরিস্সামি
দ্ৰঁন সংযঙ্ক ব্যংজনক নোপ: ক্ষত্রিযঃ = খত্তিযো
ধ্বজঃ = ধজো
আৰঁ সবনতাক সংধান দেখো" গর্হা= গবহা; বনেম্ =
বতনং
পানিমে তীনঠৌ সন্ধি অছি: স্বব, ব্যংজন আ অনুস্বাব
(নিগ্গহীত) সন্ধি।
স্বব সন্ধি: স্ববক ৰাঁদ স্ববমে পূর্বরতী/ পবরতী স্ববক
নোপ বা ককবো নোপ নৈ হোগত অছি।
ব্যংজন সন্ধি: হ্রস্ব বা দীর্ঘ স্ববক ৰাঁদ ব্যংজন এনাপব ও
স্ববক্রমসঁ দীর্ঘ আ হ্রস্ব ভ২ জাগএ।
নিগ্গহীত সন্ধি: অনুস্বাব (নিগ্গহেত)ক কতৌ আগমন তঁ
কতৌ নোপ ভ২ জাগএ। জেনা- ত+খণে= তংখণে
;আ সং+বাগো= সাবাগো
পানিমে দ্গযেঠৌ রচন হোগত অছি- একরচন আ
ৰহ্রচন; আ সাত ঠৌ রিভক্তি: পঠমা, দ্তিযা, ততিযা,
চত্তথী,পঞ্চমী, ছট্ঠী, সত্তমী, আনপন। ৬.০০ সঁ +০০ ধবি
ধাত্ত নৌ গণমে আঠ নকাব (আশীর্নিঙ আ ন্বট্ নকাব
নৈ হোগত অছি) হোগত অছি।

पानिमे समास संस्कृत सन होइत अछि।
प्राकृतमे:
ओना मूल बात यएह अछि जे सभ प्राकृत शब्दक संस्कृत रूप नै अछि।
साहित्यिक प्राकृतक कएक प्रकार होइत अछि।
पैशाची प्राकृतमे "ट" लेल "त" आ "ल" लेल"ळ"
अर्धमागधी प्राकृतमे मध्यक स्वतंत्र "क" बदलि जाइए "ग", "त" वा "य" मे। दू टा स्वरक बीच "प" बदलि जाइए "व" मे।
शौरसेनी प्राकृतमे दू टा स्वरक बीचक स्वतंत्र "त" बदलि जाइए "द" मे आ "थ" बदलि जाइए "ह" वा ध" मे।
मागधी प्राकृतमे "र" क स्थानपर "ल", "य" केर स्थानपर "य्य" वा "ज्ज", "स" आ "ष" क स्थानपर "श" क प्रयोग होइत अछि।
प्राकृत मे ह्रस्व आ दीर्घ "ऋ", "ऌ", "ऐ" आ "औ" नै होइत अछि। न केर बदला "ण" होइत अछि।
ऋ बदलि जाइए: अ, आ, इ, उ, रि
ऌ बदलि जाइए: इलि
ऐ बदलि जाइए: ए
औ बदलि जाइए: उ
दू स्वरक बीच क, ग, च, ज, त, द, य, र केर लोप होइत अछि जेना: लोक=लोअ, लावण्य= लाअण्ण
ख परिवर्तित भऽ जाइए ह मे: शाखा= शाहा
प्रारम्भक य भऽ जाइए ज, जेना: यम=जम
श आ ष भऽ जाइए स; क्ष भऽ जाइए ख वा छ वा झ; क्त भऽ जाइए त; त्व भऽ जाइए च; थ्व भऽ जाइए छ, द्व भऽ जाइए ज; ध्व भऽ जाइए झ।

सन्धि संस्कृत सन अछि। वचन दू- एकवचन आ बहुवचन, विभक्ति सात। संस्कृत जेकाँ धातु दस गण मे बटल अछि, तुदादिगणक रूपक लोप भऽ जाइत अछि । भूत आ भविष्य मे एक्के-एक्के टा रूप होइत अछि। प्राकृतमे समास संस्कृत सन होइत अछि।

३. अवहट्ठ

अपभ्रंश जखन समापनपर छल तखन मोटामोटी एगारहमसँ चौदहम शताब्दी धरि "अवहट्ठ" साहित्यिक भाषाक रूपमे उपस्थित रहल। मैथिलीसँ एकर निकटताक कारण एकरा "मैथिल अपभ्रंश" सेहो कहल गेल आ ई अपभ्रंशक प्रकारक रूपमे सेहो मर्यादित रहल।

विद्यापतिक स्वयं कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक भाषाकेँ अवहट्ठ कहै छथि मुदा ताहूसँ पूर्व एहि शब्दक प्रयोग भाषाक सन्दर्भमे परहबाज केने छथि "पाउअकोस"मे। अद्दहमाण अपन कृति संदेशरासकमे आ वंशीधर प्राकृत पंगलम् क टीकामे अवहट्ठक भाषाक रूपमे उल्लेख कएने छथि। ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकरमे लिखै छथि- "पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अवहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ"। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्ठक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जाहिमे एकर सभ शब्दक स्वरान्त होएब, क्रियारूपक जटिल होएब (मुदा ताहिमे लैंगिक भेद नहि होएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्ठमे दृष्टिगोचर होएब शुरू भऽ गेल छल। खास कऽ विद्यापतिक अवहट्ठमे मैथिली वर्णीक णकार, ङकार, आ अनुनासिकक बदलामे "कचटतप"वर्गक पाँचम अनुनासिक वर्णक प्रयोग देखबामे अबैत अछि

ঋদা হ্নকব খরহঠ্ঠ ভাষামে কখনো কান ৱ্ন্মাগত খছি জে ওা ভাষা খাঁটী মৈথিনী খছি তঁ কখনো এহিমে প্রাগ্নত, ফাবসী, গ্বজবাতী–সৌবাষ্ট্রী খরধী খা কোশনী ভাষাক শৰ্ঙ্কাৰনীক ৱেঁশী প্রযোগ ভেটৈত খছি। খা সৈহ কাবণ বহন হোএত জে হ্নকব খরহঠ্ঠ সর্বদেশীয (বাজশেখব কহ্ন ছথি "রিশ্ব–ফত্তহনী") ৱঁনি সকন। একব দূটা দেরনাগবী পাল্ড্নিপি দূ ঠামসঁ– গ্বজবাতক স্তম্ভতীর্থমে খা উঁত্তব প্রদেশক ফতেহপ্বব জিনাক খসনী গামমে ভেটন খা একটা মিথিনাক্ষবক পাল্ড্নিপি নেপানসঁ ভেটন। ঐতিহাসিক খাধাবপব ভাষাক পাবিরাবিক রগীকবণমে খরহঠ্ঠ (খরহঠ্ঠ) কেঁ "মৈথিন খপভ্রংশ" তাহি কাবণসঁ কহন জাগত খছি খা মাগধী প্রাগ্নতসঁ সেহো একব রিকাস দৃষ্ঠিগোচব হোগত খছি। মৈথিনীক স্থান মোটা–মোটী সংস্কৃত, পানী, প্রাগ্নত, খপভ্রংশ খা খরহঠ্ঠক ঐতিহাসিক ক্রমমে খরৈত খছি। খরহঠ্ঠ মৈথিনীসঁ নগ বহিতো শৌবসেনী প্রাগ্নত–খপভ্রংশসঁ সেহো নগ খছি, ঋদা দেশী শৰ্ঙ্কক প্রযোগসঁ এহিমে খপভ্রংশসঁ ৱহ্ত বাস ব্যাকবণিক পবিরর্তন দেখা পড়ৈত খছি। রিদ্যাপতিক "কীর্তিনতা" খরহঠ্ঠমে খছি, ঋদা "চর্যা গীত" খা "রর্ণ বনোকব" কীর্তিনতাসঁ পূর্ররর্তী হোএবাঁক ৱাঁদো প্ববান মৈথিনী খছি খা খরহঠ্ঠসঁ সেহো নগ খছি। দামোদব পংডিতক "উঁক্তি ব্যক্তি প্রকবণ" সেহো কীর্তিনতাসঁ পূর্ররর্তী খছি ঋদা প্ববান খরধী খা প্ববান কোশনীক প্রতিমান প্রস্তুত কবৈত খছি খা খরহঠ্ঠসঁ নগ খছি। সংগে ওাহো সহ জে কীর্তিনতা খা কীর্তিপতাকামে রিদ্যাপতি খরহঠ্ঠক কতেকো প্রকাবসঁ প্রযোগ কবৈ ছথি। পহিনে তঁ ওা খপভ্রংশক পর্যাযিক রূপমে প্রযুক্ত হোগত ছন ঋদা জেনা জেনা খপভ্রংশক রিশেষতাকেঁ ওা ছোড়ৈত

গেন ঋা ঋাধ্নিক ভাবতীয ভাষাক ব্যাকবণিক রিশেষতাক, খাস কঽ মৈথিনীক ব্যাকবণিক রিশেষতাক ঋাধাব বঁনঽ নাগন তখন ওা ঋপভ্রংশেসঁ পৃথক্ ঋরহঠ্ঠক ৰূপ নেনক। একব প্রমুখ ব্যাকবণিক রিশেষতা ঋছি– স্ৱব সংযোগ, ক্ষতিপূর্তিক নেন দীর্ঘীকবণ, ব্যংজনক ঋপন খাস রিশেষতা, ৰূপক রিচাব (নিংগ–রচন), নির্রিভক্তিক প্রযোগ, কাবক–পবসর্গ, কাবক রিভক্তি, সর্রনাম, রিশেষণ, সার্রনামিক রিশেষণ, ক্রিযা, কৃদন্ত, ঋাক্তার্থক, পূর্রকানিক, সংযুক্ত ক্রিযা, ক্রিযা রিশেষণ, শব্দারনীক রিশেষতা, পূর্র স্ৱবপব স্ৱবাঘাত, স্ৱব সান্বনাসিকতামে পবিরর্তন, ঋকাবণ সান্বনাসিকতাক প্ররৃত্তি, এক সংগ ঋনেক স্ৱবক প্রযোগ, ঋক্ষব নোপ, পবসর্গক স্থানপব মূন শব্দ, সর্রনামক প্রচুবতা, ক্রিযাপদক রিকাস ঋা রাক্য বচনা। ঋরহঠ্ঠ ভাষামে জৈন ধর্মসঁ সম্বন্ধিত বচনা ঢেব বাস ঋছি ঋা ওহিমে শৌবসেনীক প্রভার ঋছি। ঋরহঠ্ঠক মুখ্য ক্ষেত্র ছন মান্যখেত, গুজবাত, বঁগান ঋা মিথিনা। জৈন ধর্মসঁ সম্বন্ধিত নোক মুখ্য ৰূপসঁ মান্যখেতমে বহথি। “রত্নাকবগ” শ্বেতাম্বব মুনি জযরল্লভ দ্বাবা সংকনিত স্ৱভাষিতক সংগ্রহ ছথিজাহিমে ঋরহঠ্ঠক প্রভার দৃষ্টিগোচব হোগত ঋছি। শানিভদ্র সূবীক “ভবতেশ্বব বাঁহুরনী বাস”, একটা দোসব শানিভদ্র সূবীক “পংচ পাণ্ডর চবিত”, স্থূনিভদ্র বাস, জযশেখব সূবীক “নেমিনাথ ফাগু”, সকনকীর্তিক “সোনহ কাবণ বাস”ক ঋতিবিক্ত মৌখিক কাব্য জেনা বৌদ্ধ সিদ্ধ সাহিত্য, ডাক, ধর্মমংগন কাব্য, শূন্যপুবাণ, মাণিকচন্দ্র বাজাব গান, নোবিকাগন জনক মধ্য ঋাএন। ঋরহঠ্ঠক বাঁদ ব্রজরুনী দ্বাবা বায বমানন্দ, শংকবদের ঋা চৈতন্যদর নোকভাষাক মাধ্যমসঁ জন ধবি পহুঁচনাহ। ঋরহঠ্ঠক প্রভার ব্রজরুনী ঋা

মৈথিনীপব পড়ন। দ্বাবা ৰাবহম শৈতাব্দীক ডাকার্ণৰি নেপানমে বচিত খছি জকব নিপি মিথিনাক্ষব খা ভাষা খরহস্থ খছি। মিথিনামে কর্ণাটি খা ওগনরাব বাজরংশক কানমে খরহস্থমে বচনা কএন গেন। সিদ্ধ সাহিত্য, রৌদ্ধক দোহাকোশি–চর্যাগীত খা জ্যাতিবীশ্বৰক র্ণবনোকবমে খরহস্থক প্রযোগ প্রাবম্ভ ভ২ গেন ছন। হ্মনিবাম সিংহক পাহ্ড দোহা খা রৌদ্ধ ধর্মক রজ্রযানক গ্রন্থমে সেহো খরহস্থক ৰূপ দেখৰামে খরৈত খছি। দামোদব পংডিতক উক্তিৰ্যাক্তিপ্রকবণ খরহস্থমে বচিত খছি, ওা সংস্কৃত সিখেৰাক গ্রন্থ খছি। ৰাবহম শৈতাব্দীক পূর্রাধিমে উদ্দহভাণ "সংদেশ বাসয"ক বচনা কএনন্হি, বচযিতা স্বযং এহি গ্রন্থক ভাষাকেঁ খরহস্থ কহৈ ছথি। প্রাহ্নত্ পৈংগনম্ –জে ছন্দশাস্ত্রক সংকনন খছি খা জকব সংকননকতকি নাম খজ্ঞাত খছি– ক টীকাকাব সেহো এহি গ্রন্থক ভাষাকেঁ খরহস্থ কহি সম্বোধিত কএনে ছথি। রিদ্যাপতিক কীর্তিনতা খা কীর্তিপতাকা সেহো খরহস্থমে বচিত ভেন।

খরহস্থক খপভ্রংশসঁ র্যাকবণিক ভিন্নতা খা মৈথিনীসঁ সন্নিকটতা: দীর্ঘ মিশ্র স্বব খছি– এ ঐ ও ঔ; পাণিনিসঁ পূর্রক খাচার্য একবা সন্ধ্যক্ষব কহৈত ছনাহ। সংস্কৃতক ঐ, ঔ ক্রমসঁ খগ, খউ ধ্বনি রঁনি গেন খা ওহিসঁ কিছু খাব স্বব রঁহাব ভেন। সংস্কৃতক রাঁদৰনা ভাষা খাস ক২ মধ্যকানিক ভাষামে নগাতাব দূ রা তীন স্বকক প্রযোগসঁ ধ্বনি খা নেখন দনূমে রিচিত্রতা খাএন। খাধুনিক ভাষাক নেন খারশ্যক ছন জে পুনঃ র্যংজনক রেশী প্রযোগ ক২, তসেমক রেশী প্রযোগ ক২ পূর্রস্থিতি খানন জাএ, জাহিসঁ উচাবণ খা নেখন সবন ভ২ সকএ। ক্রিযাক খন্তমে খা খান পদক সভ স্থানমে স্ববকেঁ সংহাক

कबरॅ प्रारम्भ भेल। एहिमे "ऐ" आ "औ" अरहञ्चक रिशेषाता रूपमे परिगणित भेल। जेना दैष्ट=दृष्टै, गल्लग=गलै, पग=पै, बहग=बहै, कबउ=कबौ, चअउंब=चौबा, द्ललउ=दृलौ, तउ=तौ, आअउ=आओ।

ऋ एहि तीन रूपमे ध्वनित होमए लागल। ब्+अ, ब्+ग, ब्+उ आ मध्य रूप माने बि (ब्+ग) एहि रूपमे स्थिर होमए लागल। जेना अमृत= अमिअ एहिमे मृ=मि भऽ गेल अछि।

स्वरमे किछु आर परिवर्तन भेल। शब्द प्रारम्भक स्वरक दीर्घ होएबॅ स्वाभाविक लगैत अछि, जेना आँचल=आँचर। स्त्रीलिंगमे अन्तिम आ लुप्त होमए लागल जेना भिक्षा=भीख। स्वरक रॅहलतारॅना शब्दमे सङ्कि आ लुप्तीकरण रॅढ़ल, जेना धवित्री=धवती, उपआस=उपास। अपभ्रंशक अंधआर=अंधार (संधि) रॅनि गेल।

कज्ज=काज रॅनि गेल (दीर्घ)

अंचल=आँचर (अनुनासिक)

व्यंजन ओहिना बहल ङदा ण कम आ ञ रॅशी प्रयोगमे आरॅए लागल आ ड़, ढ़ ङ द्नू नर व्यंजन आएल। क्ष=क्+ष रॅदलि कऽ ख्ख होमए लागल। न आ ल मे सेहो पर्याय रॅनल जेना लहिअ=नहिअ आग कान्हि सेहो मैथिलीमे लोर आ नोर द्नू रॅाजल जाएत अछि।

उँ सँ अन्त होमएरॅना संज्ञा बहल ङदा अ, आ, ग, ङ, उँ, ऐ ,ओ सेहो संज्ञाक अन्तमे आरॅए लागल। न्हि अन्तिममे लगा कऽ रॅहुरचन रॅलेरॅाक प्रवृत्ति रॅढ़ल, जेना घरबाजन्हि। द्विरचन खतम भऽ गेल आ तकर रॅदला रॅहुरचनक प्रयोग भेल आ ताहि लेल सब्रउ (सभ)क प्रयोग प्रारम्भ भेल।

लिंगसँ रिशेषणक रूप परिवर्तन आ लुप्तरिभक्ति–

নির্রিভক্তিক প্রযোগ রেঁশী হোমএ নাগন। রিশেষণক ৰূপ পরিরর্তিত ভেন। জেনা অগস, এত্ত, কতহ্, পহিন, চাৰু।

কাবকক রিভক্তিক সংগ সন, সওঁ, ক, মাম্ম, কেব, নাগি আদিক প্রযোগ হোমএ নাগন।

পশ্চিমী অরহট্টমে রিভক্তিক প্রযোগ ঘটৈন ক্ষদা পূর্রী অরহট্টমে এ, হি রিভক্তিসঁ ঢেব বাস কাজ নেন গেন। সর্রনাম কর্তা নেন মৌ, তোঞ, সো আ সংরঁধ নেন মোঞ, ত্তুম্হ, তিস্ব প্রযুক্ত হোমএ নাগন।

ক্রিযামে কবউঁ, কবসি, কবথি প্রযুক্ত হোমএ নাগন। কৃদন্ত ৰূপমে পঢ়ন্তা, চন্ব, উঁপজ্, গেন, ভেন, কহন, মাবন, চনন, কবহ্ঁ, কহসি, জাহি, পারথি প্রযুক্ত হোমএ নাগন।

সংযুক্ত কান জেনা আরত্ত হ্অ প্রযুক্ত হোমএ নাগন।

ভরিষ্যত্ কানক পূর্রী ৰূপমে র নগৈত ছন আ পচ্ছরঁবিযা ৰূপমে হ নগৈত ছন।

ক্রিযারিশেষণমে জন্ব, নহ্,রিন্ব অরঁস প্রযুক্ত হোমএ নাগন।

পূর্র স্ববপব স্বৰাঘাত, জেনা: অকথব= আখব।

সর্রনামক সংখ্যামে বৃদ্ধি ভেন।

ক্রিযাপদমে রিকাসক ফনস্বৰূপ কৃদন্তক প্রযোগ রর্তমানকানমে রেঁশী হোমএ নাগন।

আর্র রাক্যমে শব্দক স্থানক নির্ধারণ আরশ্যক ভঃ গেন। মোটামোটী কর্তা, কর্ম আ আখিবীমে ক্রিযা বাখন জাএ নাগন।

সংযুক্ত কানক প্রযোগ সেহো আবম্ভ ভেন।

শব্দক পহিন অক্ষবক স্ববক দীর্ঘ হোএরাঁক প্ররৃত্তি অরহট্টমে রেঁশী অছি, স্ত্রীনিংগ শব্দমে শব্দক অন্তিম

अक्षरक आ लुप्त होमए लागल। अनुनासिक शब्दक संख्यामे वृद्धि भेल। संज्ञाक लंग आ रचन तँ दुगयेटो बहुल छदा एकवचनक प्रयोग बहुवचनमे होमए लागल। प्रातिपदिक अधिकांशतः स्वरान्त अछि आ अकारान्त सेहो। विभक्तिक बदलामे परसर्गक प्रयोग होमए लागल। अपादान लेल हुँते, सउँ प्रयोगमे आबए लागल आ अधिकरण लेल माँझ, उप्परि आ एहि दुनू (अपादान आ अधिकरण) लेल कखनो काल चन्द्रबिन्दु टोसँ काज चलि गेल, "हिं" विभक्ति सेहो कतेको कारकक लेल प्रयुक्त भेल आ "ए" विभक्ति सँ कर्म, करण, अधिकरण सम्बन्धक भाव होमए लागल। संज्ञाक एहि तरहक सरलीकरण सर्वनाममे सेहो देखबामे अबैत अछि। क्रियाक निर्माणमे सरलता आएल आ से भेल कृदन्तक बेशी प्रयोगसँ आ संयुक्त क्रियाक बढ़ ावबीसँ। भूतकाल "ल" लगा कए सेहो बनए लागल, आ भविष्यत् काल "ब" लगा कए सेहो, जेना थाकल, पढ़ब जे बादमे मैथिलीमे सेहो आएल।

पूर्व स्वरपर स्वराघात आ स्वरक क्षतिपूरक दीर्घीकरण अवहट्ठक मुख्य विशेषता अछि। अपभ्रंशक अक्खर, ठक्कुर आ लच्चा क्रमसँ आखर, ठाकुर आ लाचा भए गेल। स्वरक सानुनासिकतामे परिवर्तन भेल जाहिसँ प्रवाल निअममे परिवर्तन भेल। पहिने स्पर्श व्यंजनमे अनुस्वारक अभाव छल आ कचटतप क पाँचम वर्ण तकर बदलामे संयुक्त भए प्रयुक्त होइत छल। अपरादमे य सँ ह धरिक वर्णक उपस्थितिअहिमे अनुस्वार लगैत छल। पूर्व स्वरपर स्वराघात आ क्षतिपूरक दीर्घीकरणक अतिरिक्त युक्ताक्षरक पूर्वस्वरपर स्वराघातक संग अनुस्वार आबए

নাগন, জেনা- ভঁসাস/ খাঁগ/ খাঁক্স/ খাঁচব/ কাঁষ্ট/ নাঁঘি/ পাঁচ/ চাঁদ/ খাঁগন/

এ্রমসঁ

উঁস্সাস/ খঁগ/ খঁক্স/ খঁচন/ কণ্টক/ নঘ/ পঁচ/ চন্দ্র/ খঁগণ/ ক রঁদনামে খারি গেন। স্নবক ক্ষতিপূবক দীর্ঘীকবণক খতিবিঞ্জ খন্বস্নাবকেঁ দ্রস্ন কএন জাএ নাগন খা খাধ্নিক মৈথিনীক খকাবণ খান্বনাসিকতাক প্রবৃত্তিক খাবম্ভ ভেন, জেনা- কজ্জ=কাঁজ, কচ্ঃ =কাঁচ, ভগ্গ=ভাঁগ, ওঞ্ঝ=ওঁদিম।

খক্ষব নোপ: সংকোচ রা খক্ষব নোপক কাবণসঁ খন্ধকাব=খন্হাব, দেরক্ষ্ণ= দেউঁব, দেরগৃহ=দেরহা, কোষ্ঠশীর্ষ=কোসীস, উঁপরাস=উঁপাস, উঁত্তিষ্ঠ=উঁষ্ট, সহকাব=সহাব, স্বর্ণকাব=সোনাব, স্বন্নাখব=স্বন্নাব, সহযাব=সাহাব ভহ গেন।

পবসস্মাক প্রযোগমে রৃদ্ধি: খপভ্রংশীক পবসস্মাক প্রযোগমে খরহষ্ঠ কানমে খাব রৃদ্ধি ভেন। জেনা-

কর্তা- এন্নে

কবণ-সন, সউঁ

সম্প্রদান-নাগি, নগ্গি, নাগে, প্রতি, কাবণ

খপাদান-সও, হ্ত, হ্তে, হ্ঁতি, সিউঁ

সংরঁধ- কেব, কব, কে, কবেউঁ, কগ, ক

খধিকবণ- মাঝ, উঁপব, মাঁঝ, ভীতব, মাহি

সর্বনামক খাধিক্য: কীর্তিনতামে জেন্নে, খা খান ঠাম মোব, মেবহ্, তোবা, তোমাব, তোহব, তোবা খাদি সর্বনামক প্রযোগ প্রাবম্ভ ভেন। সংরঁধরাচক সর্বনাম- জএ্রোন, জেন্নে, জস, জস্ব, জে; প্রশ্ন রাচক- কেহ্, কোএ; খনিশ্চযরাচক- কোগ, কেহ্; নিজরাচক- খপন, খপনেহ্, নিখ খাদিক প্রযোগ হোমএ নাগন।

হৃদন্তক প্রযোগ ক্রিযাপদক রিকসিত ৰূপ: আৰ্ঁ হৃদন্তক প্রযোগমে বৃদ্ধি ভেল জেনা ভূতকালক হৃদন্তক প্রযোগ রর্তমান জেকাঁ হোএৰ্ঁ আ কখনো কাল অপন পূর্ণ ৰূপমে সেহো হোএৰ্ঁ।
রর্তমান লেল হৃন্তক প্রযোগ পঢ়ন্তা, কহন্তা, আরন্তা; ভরিষ্যত্ কাল লেল কবহুঁ, কবিহি আ ভূতকাল লেল হৃদন্তক প্রযোগ জেনা চলল, লাগল ক প্রযোগ ভেল।
“অন্ত” সঁ আধুনিক “তা” নিকলল অছি আ “অন্ত” ক প্রযোগ রঁঢ়ি গেল। সংযুক্ত ক্রিযাক প্রযোগ প্রারম্ভ ভই গেল– জেনা “লে” জোড়ি কই ক্রিযা রঁনাএৰ্ঁ “আগলে”; সামর্থ্যসূচক পার আ আরম্ভসূচক চাহ/ লাগল ক প্রযোগ আরম্ভ ভেল।

৪.মৈথিলী

ঐতিহাসিক আধারপর ভাষাক পারিরারিক রর্গীকরণমে অরহট্টকেঁ “মৈথিল অপভ্রংশ” তাহি কারণসঁ কহল জাগত অছি আ মাগধী প্রাকৃতসঁ সেহো একর রিকাস দৃষ্টিগোচর হোগত অছি। অরহট্ট মৈথিলীসঁ লগ রহিতো শৌরসেনী প্রাকৃত–অপভ্রংশসঁ সেহো লগ অছি, যদ্যপি দেশী শব্দক প্রযোগসঁ এহিমে অপভ্রংশসঁ রঁহ্ত রাস র্যাকরণিক পরিরর্তন দেখা পড়ৈত অছি। রিদ্যাপতিক “কীর্তিলতা” অরহট্টমে অছি, যদ্যপি “চর্যা গীত” আ “রর্ণ রত্নাকর” কীর্তিলতাসঁ পূর্ররর্তী হোএরাক রাঁদো প্রবাল মৈথিলী অছি আ অরহট্টসঁ সেহো লগ অছি। ভারোপীয ভাষা পরিরারমে মৈথিলীক স্থান মোটা–মোটী সংস্কৃত, পালী, প্রাকৃত, অপভ্রংশ আ অরহট্টক ঐতিহাসিক ক্রমমে অরৈত অছি।

ध्वनि: दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सटैत– जेना बाजू नाम , मुदा ण क उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटैत (नहि सटैए तँ उच्चारण दोष अछि)– जेना बाजू गणेश। तालव्य शमे जीह तालुसँ , षमे मूर्धासँ आ दन्त समे दाँतसँ सटैत। निशाँ, सभ आ शोषण बाजि कऽ देखू। मैथिलीमे ष केँ वैदिक संस्कृत जेकाँ ख सेहो उच्चरित कएल जाइत अछि, जेना वर्षा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जेकाँ उच्चरित होइत अछि आ ण ड़ जेकाँ (यथा संयोग आ गणेश संजोग आ गड़ेस उच्चरित होइत अछि)। मैथिलीमे व क उच्चारण ब, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होइत अछि।

ओहिना ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कारण देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइत आ बाजलो जएबाक चाही। कारण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होइत अछि (लिखल तँ पहिने जाइत अछि मुदा बाजल बादमे जाइत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।

पानि– पाइन– पैन

अछि– अ इ छ ऐछ

छथि– छ इ थ – छैथ

पहुँचि– प हुँ इ च

आब प्रश्न उठैत अछि जे "छथि" केँ छैथ लिखबामे की हर्ज ? हर्ज अछि, कारण मिथिलाक बहुतो क्षेत्रमे छथि, छथी, पानि, पानी, पहुँचि, पहुँची सेहो बाजल जाइत अछि। से पानि, रहथि, पहुँचि लिखलासँ सभ क्षेत्रक प्रतिनिधित्व होइत अछि।

𑒂𑒥 𑒁 𑒂 𑒃 𑒄 𑒋 𑒌 𑒍 𑒎 𑒁𑓀 𑒁𑓁 𑒇 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒦 𑒪𑒹𑒪 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒄 𑒌 𑒍 𑒎 𑒁𑓀 𑒁𑓁 𑒇 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒑𑒪𑒞 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒂 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒩𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒇 𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒲 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒩𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥। 𑒂 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒾– 𑒋𑒯𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒎 𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒁𑒢𑒳𑒔𑒱𑒞। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒌 𑒪𑒹𑒪 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒻 𑒁𑒢𑒳𑒔𑒱𑒞। 𑒏𑓂 𑒮𑒿 𑒯𑓂 𑒡𑒩𑒱 𑒁 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒏 𑒮𑒿 𑒯 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒰𑒪 𑒯𑒪𑒢𑓂𑒞 𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧 𑒖𑒐𑒢 𑒧𑒢𑒼𑒖𑒧𑒹 𑒖𑓂 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒧𑒹 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒕𑒲, 𑒞𑒐𑒢𑒼 𑒣𑒳𑒩𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒢𑓂𑒯𑒱– 𑒧𑒢𑒼𑒖𑓄, 𑒫𑒰𑒮𑓂𑒞𑒫𑒧𑒹 𑒍 𑒁 𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒖𑓂 = 𑒖 𑒥𑒖𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒤𑒹𑒩 𑒖𑓂𑒘 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑓂 𑒂 𑒘 𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒑𑒪𑒞 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱– 𑒑𑓂𑒨। 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑓂𑒭 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑓂 𑒂 𑒭 𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒕। 𑒤𑒹𑒩 𑒬𑓂 𑒂 𑒩 𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒬𑓂𑒩 (𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒬𑓂𑒩𑒧𑒱𑒏) 𑒂 𑒮𑓂 𑒂 𑒩 𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑓂𑒩 (𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒧𑒱𑒮𑓂𑒩)। 𑒞𑓂𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒞+𑒩 ।

𑒤𑒹𑒩 𑒏𑒹𑒿 / 𑒮𑒿 / 𑒣𑒩 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒁𑒏𑓂𑒭𑒩𑒮𑒿 𑒮𑒙𑒰 𑒏𑓄 𑒪𑒱𑒐𑒴 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒿/ 𑒏𑒹/ 𑒏𑓄 𑒯𑒙𑒰 𑒏𑓄। 𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒿 𑒧𑒹 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒮𑒙𑒰 𑒏𑓄 𑒪𑒱𑒐𑒴 𑒂 𑒥𑒰𑒠𑒥𑒪𑒰 𑒯𑒙𑒰 𑒏𑓄। 𑒁𑓀𑒏𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒙𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒴 𑒮𑒙𑒰 𑒏𑓄 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒢𑓂𑒨 𑒚𑒰𑒧 𑒙𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒴 𑒯𑒙𑒰 𑒏𑓄– 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒕𑒯𑒙𑒰 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒦 𑒙𑒰। 𑒤𑒹𑒩 𑓖𑒁 𑒧 𑒮𑒰𑒞𑒧 𑒪𑒱𑒐𑒴– 𑒕𑒚𑒧 𑒮𑒰𑒞𑒧 𑒢𑒯𑒱। 𑒒𑒩𑒥𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒪𑒰 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒒𑒩𑒫𑒰𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒴।

𑒩𑒯𑒋– 𑒩𑒯𑒻 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒋 (𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 𑒮𑒏𑒻–𑒋)।

𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒪 𑒩𑒯𑒋 𑒂 𑒩𑒯𑒻 𑒧𑒹 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼, 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒮𑒹 𑒏𑒧𑓂𑒧𑒰 𑒖𑒑𑒯𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒏𑒱𑓀𑒑 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒩𑒯𑒻 𑒍𑒏𑒩𑒰। 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒖𑒹 𑒜𑒳𑒢𑒜𑒳𑒢 𑒢𑒰𑒧𑓂𑒢𑒰 𑒄 𑒛𑓂𑒩𑒰𑒃𑒫𑒩 𑒏𑒢𑒰𑒙 𑒣𑓂𑒪𑒹𑒮𑒏 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒏𑒱𑓀𑒑𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒋।

छनै, छनए मे सेहो एहि तरहक भेल। छनए क उँचारण छन-ए सेहो।
संयोगने- (उँचारण संजोगने)
केँ/ के / कऽ
केर- क (केर क प्रयोग नहि करू)
क (जेना रामक) –रामक आ संगे (उँचारण राम के / राम कऽ सेहो)
सँ- सऽ
चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार- अनुस्वारमे कंठ धरिक प्रयोग होइत अछि मुदा चन्द्रबिन्दुमे नहि। चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकारक सेहो उँचारण होइत अछि- जेना रामसँ- (उँचारण राम सऽ) रामकेँ- (उँचारण राम कऽ/ राम के सेहो)।
केँ जेना रामकेँ भेल हिन्दीक को (राम को)- राम को= रामकेँ
क जेना रामक भेल हिन्दीक का (राम का) राम का= रामक
कऽ जेना जा कऽ भेल हिन्दीक कर (जा कर) जा कर= जा कऽ
सँ भेल हिन्दीक से (राम से) राम से= रामसँ
सऽ तऽ त केर एहि सभक प्रयोग अवांछित।
के दोसर अर्थेँ प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना के कहलक ?
नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ एहि सभक उँचारण- नै
अ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना मन=मोन, रन=रौन (रत्तुन)
अ कखनो काल आ भऽ जाइत अछि, जेना- फंदा=फान, चन्द्र=चान (स्वराघात)

ঘব=ঘ২ব (উঁচাবণ) (স্ববাঘাত)
ৰ্‌হ্ন=ৰ্‌হ্ন২ (উঁচাবণ) (স্ববাঘাত)
ঘমসান=ঘম২সান (দীর্ঘক পহিনেক হ্রস্ব স্পর্শ উঁচবিত–স্ববাঘাত)
"ঞ" ক পহিনে "ঋা" বহনাপব "ঐ" উঁচবিত হোগত ঋছি– জেনা পানি=পৈন, ঋদা বিভিন্ন ক্ষেত্রমে পানী, পানি বাঁজন জাগত ঋছি তেঁ বর্তনীমে পানি, ঋাগি নিখবঁ উঁচিতে ঋছি।
ঋা কখনো কান ঋ ভ২ জাগত ঋছি, জেনা কাকা=কক্কা।
গ কখনো কান ও ভ২ জাগত ঋছি জেনা বিরাজ=বেরাঁজ।
ঋৃ কখনো কান গ/ ঞা/ উঁ ভ২ জাগত ঋছি জেনা হৃঞ্চ=কিস্বন, পৃষ্ঠ=পীঠ, বৃহ্ন=বূঁঢ়।
ঋন্তমে "ঞা" ক বঁদনামে গ নিখন জাগত ঋছি।
ঋৃ কখনো কান ঋ ভ২ জাগত ঋছি জেনা– বৃষভ=বঁসহা, ঋদ্ধদী=ঋহদী।
উঁ কখনো কান ও ভ২ জাগত ঋছি জেনা দ্‌কান=দোকান
ঙুঁ কখনো কান ও ভ২ জাগত ঋছি জেনা মূন্য=মোন।
ঋএ কখনো কান এ ভ২ জাগত ঋছি জেনা কএননি=কেননি।
ঐ কখনো কান ঋগ/ ঋএ ভ২ জাগত ঋছি জেনা ভৈযা=ভগযা, পৈব=পএব।
ঋা+ও কখনো কান ঔ ভ২ জাগত ঋছি জেনা গমাওন=গমৌন।
ক কখনো কান খ/ গ ভ২ জাগত ঋছি জেনা প্বষ্কবি=পোখবি, ভক্ত=ভগত।

ष कखनो कान शेर्ष्ज्क प्रावस्तु रा अन्तमे वहलापव ख ভ९ জাগত अछि जेना षष्ठी=खष्ठी, वेष–भूषा=वेख–भूखा।
क्ष कखनो कान ख ভ९ জাগত अछि जेना क्षीव=खीव।
ज्ञ कखनो कान ग ভ९ জাগত अछि जेना यज्ञ=जाग।
ग कखनो कान घ ভ९ জাগত अछि जेना गन्ध=घाघ।
त्य कखनो कान च ভ९ জাগত अछि जेना सत्य=साँच।
त्स्य कखनो कान छ ভ९ জাগত अछि जेना मत्स्य=माँछ।
य कखनो कान शेर्ष्ज्क प्रावस्तुमे वहलापव ज ভ९ জাগত अछि जेना यम=जम।
द्य कखनो कान ज ভ९ জাগত अछि जेना रिद्युत=रिजुली।
ध्य कखनो कान झ ভ९ জাগত अछि जेना रंध्या=राँझ।
त कखनो कान ट ভ९ জাগত अछि जेना कर्तन=काटरँ।
न्थ कखनो कान ठ ভ९ জাগত अछि जेना ग्रन्थि=गेंठ।
द कखनो कान ड ভ९ জাগত अछि जेना दण्ड=डाँट।
त कखनो कान त्वप्तु ভ९ জাগত अछि जेना जागत=जाग।
स्त कखनो कान थ ভ९ জাগত अछि जेनाप्रस्तव=पाथव।
द कखनो कान ड ভ९ জাগত अछि जेना दाह=डाह।
ध कखनो कान शेर्ष्ज्क अन्तमे वहलापव दह ভ९ জাগত अछि जेना गधा=गदहा।
न कखनो कान न ভ९ জাগত अछि आ न कखनो कान न ভ९ জাগত अछि जेना नोव=नोव।
प कखनो कान फ ভ९ জাগত अछि जेना पाशी=फाँस।

ফ কখনো কান “প” আ “হ” ভ২ জাগত অছি জেনা রেঁরকৃফ=রেঁকৃফ ।
রঁ কখনো কান ম ভ২ জাগত অছি জেনা শৈরান=সেমাব ।
ম্ভ কখনো কান ম ভ২ জাগত অছি জেনা খম্ভা=খমহা ।
ম্ব কখনো কান ম ভ২ জাগত অছি জেনা কম্বন=কম্মন ।
ন কখনো কান ব ভ২ জাগত অছি জেনা হন=হব ।
র কখনো কান ভ ভ২ জাগত অছি জেনা রাষ্প=ভাপ ।
হ কখনো কান শব্দক অন্তমে বহনাপব ন্বপ্ত ভ২ জাগত অছি জেনা গেনাহ=গেনা ।
৩ত্ব ক রঁদনামে ত্ব জেনা মহত্বপূর্ণ (মহত্ত্বপূর্ণ নহি) জতএ অর্থ রঁদনি জাএ ওতহি মাত্র তীন অক্ষবক সংযুক্তাক্ষবক প্রযোগ উঁচিত । সম্পতি– উঁচাবণ স ম্প গ ত (সম্পত্তি নহি– কাবণ সহী উঁচাবণ আসানীসঁ সম্ভব নহি) । ঋদা সর্বোত্তম (সর্বোতম নহি) ।
মে কেঁ সঁ পব (শব্দসঁ সটা কহ) তঁ কহ ধহ দহ (শব্দসঁ হটা কহ) ঋদা দূটা বা বেঁশী বিভক্তি সংগ বহনাপব পহিন বিভক্তি টাকেঁ সটাউ ।
একটা দূটা (ঋদা কৈক টা)
বিকাবীক প্রযোগ শব্দক অন্তমে, বীচমে অনাবশ্যক রূপেঁ নহি । আকাবান্ত আ অন্তমে অ ক বাঁদ বিকাবীক প্রযোগ নহি (জেনা দিঅ, আ)
অপোস্ট্রোফীক প্রযোগ বিকাবী (২ –সংস্কৃতমে একবা অরগ্রহ আ বাঁগ্লামে জহনা কহন জাগত অছি) ক বাঁদনামে কবর্ব অনুচিত আ মাত্র ফ◌ॅন্টক তকনীকী

न्यूनताक परिचायक)– ओना विकारीक संस्कृत रूप २ अवग्रह करैत जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ वहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि)। ख)दा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि आ फ्रेंचमे शब्दमे जतए एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison d'etre एतए सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नहि दैत अछि वरन जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग विकारीक वदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो अनुचित)। मैथिलीक मात्रामेक आघातमे ह्रस्व स्वरपर आघात पड़लापर ओ दीर्घ भऽ जाइत अछि। शब्दमे जौँ दीर्घ स्वर रहत तँ आघात ओहिपर, दीर्घ नहि रहत तँ उपान्त्य स्वरपर आ जतए दुटा दीर्घ लगातार अछि ओतए सेहो उपान्त्य दीर्घपर आघात पड़ैत अछि। पा'नि, ओसा'रा। वर्णमेक आघात सेहो गणपर जोर देला काल प्रयुक्त होइत अछि जेना– अपन=अप्पन। जाहि स्वरपर आघात पड़त तकर पूर्वक सभ स्वर ह्रस्व भऽ जाइत अछि।

मैथिली व्याकरणक विशेषता: मैथिलीक विकास दीनबन्धु झा सिद्धान्त आचार्य, फेर कर्णाट आ ओइनवार राजवंश, मल्ल राजवंश आ मध्यकालक मैथिली आ आधुनिक मैथिलीक तथाकथित मानक आ पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण भिन्नताक अनुसार परिवर्तित होइत रहल अछि आ मैथिली व्याकरण एहि सभ विशेषताकेँ संग लऽ कऽ चलैत अछि।
मैथिलीमे सभ शब्द स्वरांत, अ वृत्ताकार, ए, य, ऐ, यै, ओ, औ ओ सभ स्पष्ट उच्चरित होइत अछि। सम्बन्ध

কাবক নেন সঁ, ক, কেব (ৱেঁশী পদ্যমে প্রযুক্ত) প্রযুক্ত হোগত খছি। সংজ্ঞা ৰূপ কম–সবন (একরচনসঁ ৱহ্‌রচন কবৱাঁ নেন সভ খাদি জোড়ি দিযৌ) হ্মদা ক্রিযা–ধাতুৰূপ ৱেঁশী হোগত খছি। খাদব খা খনাদবপূর্ণ প্রযোগমে ক্রিযাপদমে পবিবর্তন হোগত খছি। মৈথিনীমে ক্রিযাক ৰূপ কর্তা খা বাক্যক দোসব সংজ্ঞা, সর্বনাম (কতসিঁ সম্বন্ধ) দ্বাবা নির্ধাবিত হোগত খছি। মৈথিনীমে ক্রিযা পুৰুষ–ভেদক খন্বৰূপ ৱঁদনৈত খছি। মৈথিনীমে ৱ দ্বাবা ভরিষ্যত্‌ কানক খনাৱেঁ ক্রিযার্থী সংজ্ঞা সেহো ৱঁনাওন জাগত খছি। ন প্রযুক্ত কএ হৃদন্ত কহন, গেন যে পবিবর্তন মৈথিনীক বিশিষ্টতা খছি। মৈথিনীমে শব্দক ভিন্ন–ভিন্ন বর্ণপব ৱঁনাঘাত হোগত খছি। মৈথিনীমে কাবক বিভক্তিসঁ ওনা তঁ তির্যক ৰূপ নহি দেখৱাঁমে খৱৈঁত খছি, জেনা গামক, হ্মদা সম্বন্ধ কাবকমে ঙা খপরাদ খছি, জেনা সাঁঝ–সাঁঝুক। ক্রিযার্থ সংজ্ঞা ৰূপমে সেহো তির্যক ৰূপ হোগত খছি।

সংজ্ঞা:কোনো বস্তুক নামমে নঘু, গুৰু খা গুৰুতব ঙা তীন ৰূপ হোগত খছি– মনোজ্‌, মনোজ, মনোজৱাঁ।

নিংগ:নিংগৰূপ সবন খছি। নির্জীবক নিংগ পুন্নিংগ ভঃ গেন খছি। সংজ্ঞামে নিংগসঁ শব্দক ৰূপ পবিবর্তন নহি হোগত খছি হ্মদা বিশেষণ খা ক্রিযামে হোগত খছি।

রচন:সংজ্ঞামে রচনক ভিন্নতাসঁ পবিবর্তন নহি হোগত খছি। নোকনি, বাস খাদি শব্দ জোড়ি কঃ তকব ৱোঁধ কবাওন জাগত খছি। “হম” একরচন খছি খা “হমসভ” ৱহ্‌রচন।

বিভক্তি:কবণ –এ– জেনা কাজে। খধিকবণ– খাঁ–হি– জেনা পৰুকাঁ, চোঞ্চহি ।

কাবক: কর্তা– বিঞ, কর্ম– কেঁ, কবণ– সঁ, সংপ্রদান–

নএ, অপাদান– সঁ, সংবঁধ–ক, কের(পদ্যমে), অধিকরণ— মে।
সর্বনাম:উত্তম পুরুষ– হম, হমে
মধ্যম পুরুষ– তূঁ, তোঁ, অহাঁ, অপনে, ঐ
অন্য পুরুষ–তাহি, তকরা, তকর, হুনকা, হুনি, ওকরা, হুনকর, ওকর, হিনকা, একর, হিনকর, জাহি, জকরা, জকর, কে, কী, ককরা, অপন, কোন, কিছু, কেদন, কেহনদন, কোনাদন, এতরা, কতরা, ততরা, ততেক।
ক্রিযাবিশেষণ: এতএ, কহাঁ, কখন, জখন, জাবেঁ, তাবেঁ, আবেঁ, আবঁ, জহিআ, তহিআ, কহিআ, জেনা, তেনা, এম্হর, ওম্হর, জেম্হর, তেম্হর, ভর(দক্ষিণভর)। কালবোধক– আগ, কাল্হি, পরসূ, নগলে, পরুকাঁ; স্থানবোধক– জেনা আগাঁ, পাছাঁ; প্রকারবোধক– জেনা ভনে, কনে–মনে; সংযোজক জেনা যদা, আর; সম্বোধন জেনা রৌ, হৌ; সমুচযবোধক জেনা ঐহ, ছী; বনধ্যাতক জেনা –এ ; নহি, ভবিসক আদি বিবিধ ক্রিযাবিশেষণ হোগত অছি।
উপসর্গ: অ, অন, অধ, অবঁ, দ্, নি, ভবি, কম, বঁ, বঁদ, বেঁ, সব।
প্রত্যয: অক্কড়, অংত, গন, আগন, আগ,আউ, আকূ, আন, আনা, আপ, আযত, আব, গন, বাঁহ, আবি, আবী, আহ্, ঔন, গঅন, গআ, ঐ, গব, ঐত, ওড়, ওনা, ঔটী, ঔতী, ওনা, ঔবিন, ক, ত, ঔত, আগ, বাঁন, ম, বঁনা, হাব, হা, ঐ, কাব, বাঁহ, আনী, খানা, খোব, গবী, চী, বাঁজ।
বিশেষণ:এহিমে আদব আ নিংগক অনুসাব পবিবর্তন হোগত অছি। সিনেবী, গোন, চৰ্কী ঐ গাএ–বঁড়দ নেন প্রযুক্ত হোগত অছি আ বিশেষণসঁ প্রাণিক বোঁধ ভঽ জাগত অছি। পঢ়ন (পুল্লিংগ) আ পঢ়নি (স্ত্রীনিংগ),

मयिना ष्ठोड़ ।–माँयिन ভাগ(আদব) ।
ক্রিয়া: রচন ভেদ মৈথিলী ক্রিয়ামে নহি হোগত অছি। পুরুষক অনুসার ক্রিয়ামে ভেদ অবৈত অছি। আদব প্রদর্শনমে সেহো ক্রিয়ারূপ বঁদনৈত অছি। তিঙন্ত মে লিংগভেদ নহি হোগত অছি যদা কৃদন্তমে লিংগক অনুসার ক্রিয়াপদ বঁদনি জাগত অছি। ক্রিয়া কাবকক অনুসার বঁদনৈত অছি। এহি প্রকাবসঁ ক্রিয়া দেখি কঽ মাত্র ঞা পতা নাগত জে কর্তা আদবণীয অছি রা নহি, ক্রিয়াক কর্ম কোন পুরুষমে অছি আ আদবণীয অছি রা নহি। ক্রিয়াগ চাবি রূপ জেনা স্বযং মবরঁ (মবৈত অছি), মাবরঁ (মাবৈত অছি), দোসবাসঁ মবরাঁএরঁ (মবরৈঁত অছি) আ কর্মরাচানুসার ককবো কহি কঽ মবরাঁএরঁ (মবরঁরৈঁত অছি)– হোগত অছি।
ধাতুরূপ– মৈথিলীমে নগভগ ১২২৩ ধাতুরূপ দীনরঁন্ধু ঝা সংকলিত কএনে ছথি জে পাণিনীক ২০০০ ধাতুসঁ কনিযে কম অছি। আ যৈহ ১২২৩ টা ধাতু মৈথিলী ভাষাক স্বতংত্র অস্তিত্বকেঁ অসগবে রঁনওনে বখরাঁ নেন পর্যাপ্ত অছি। কিছু উঁদাহবণ:
ছক– অরিবোধপূর্বক অন্যক্রিয়াসঁ দরঁরঁ অর্থমে– রূপনান ফুন তোড়ঁাঁমে সোনেনানসঁ ছকনাহ–জীতন গেনাহ।
ঠক– পবতাবরঁ, রঞ্চনা– ঠক বঁড়া রঁককেঁ ঠকৈত অছি– ওকব রস্তু নএ নেরাঁক হেতু ভ্রম উঁত্পন্ন কবরৈঁত অছি।
ডক– অপন উঁত্কর্ষ গন্ধক প্রসাবণ– হীঁগ্ব ডকৈত অছি–অপন তীব্র গন্ধক প্রসাব কবৈত অছি।
ঢক– মিথ্যা অপন অতিপ্রশংসা কবরঁ– জযনান ঢকৈত ছথি–অপন মিথ্যা অতি প্রশংসা রঁজৈত ছথি।
রঁক– অশ্রব্য রঁহ্ত রাঁজরঁ– জযনান রঁকৈত ছথি– নহি

স্বনরাঁক যোগ্য কথা রঁহ্ত রঁজৈত ছথি।
মক– হর্ষসঁ মানক ধারনঞ্চীড়ৃ া– রাঁষ্টা মকৈত খ্ছি, নীনসঁ এস্হব ওস্হব দৌগি বহন খ্ছি।
রাঁন্মীকি দ্বাবা স্বন্দবকাল্ডমে মান্বষিমিহ সংস্কৃতাম্– সংস্কৃত খা মান্বষী দ্নূ ভাষাক জ্ঞান হন্বমানজীসঁ কহরাঁওন গেন খ্ছি। জ্যাতিবীশ্বিব বর্ণবনোকবমে নিখৈ ছথি– “প্বন্ব কণসন ভাষ্ট– সংস্কৃত, পবাঙ্গত, খরঁহঠ, পৈশাচী, সৌবসেনী, মাগধী ছহ্ ভাষাক তত্বজ্ঞ” সংগহি জ্যাতিবীশ্বিব দ্বাবা সাত “উঁপভাষক” চর্চ ভেন খ্ছি। প্রাঙ্গতক কৈকটা প্রকাব ছন। ওহিমে মাগধী প্রাঙ্গত মৈথিনী খা খন্য পূর্রী ভাবতক ভাষাক রিকাসমে যোগদান দেনক। খর্ধমাগধীমে জৈন ধর্মগ্রন্থ খা পানীমে রৌদ্ধ ধর্মগ্রন্থ নিখন গেন। কানিদাসক সংস্কৃত নাটকমে সংস্কৃতক খতিবিক্ত খপভ্রংশক প্রযোগ গএব খভিজাহ রস্মক নেন প্রযুক্ত ভেন তঁ চর্যাপদক ভাষা সেহো মাগধী মিশ্রিত খপভ্রংশ ছন। মৈথিনী সহিত খান খাধ্নিক ভাবতীয খার্যভাষা দোসব প্রাঙ্গতসঁ রিকসিত ভেন সেহো দেখি পড় ৈত খ্ছি। খপভ্রংশ পবরর্তী কানমে পূর্রী ভাবতমে খরহষ্টক রূপ নেনক। মৈথিনীক রিশেষতা জাহিমে একব সভ শর্ব্দক স্ববাঁত হোএরঁ, ক্রিযারূপক জটিন হোএরঁ (হ্রদা তাহিমে নৈঁগিক ভেদ নহি হোএরঁ), সর্রনামক সম্বন্ধ কাবক রূপ খাদিক রূপবেখা খরহষ্টমে দৃষ্টিগোচব হোএরঁ শ্বরু ভহ গেন ছন।

ड◌ॉ. बॅाबॅासाहेबॅ आम्बेडकब (१+९१-१९३६)

१
महाबाष्ट्रक एकटा नग्र बलोगिबी। ओग नग्र नग एकटा गाम अम्बॅाबडे।
ओग गामसँ बामजी सपकाळक एकटा पबिबाब छल, भाबतीय सेनामे एकटा स्कूलमे ओ हेडमास्टब बहथि। गौबांगी नीनाक्षी आ भीमा हुनकब पनी छलथिन्ह। हुनकब चौदहम सन्तान १४ अप्रैल १+९१ ई. कँ भीमाक कोखिसँ भेल आ तकब नाम भीम बाखल गेल, तखल बामजी मह्रुमे पदस्थापित बहथि।
१+९४ ई. मे बामजी सेवानिवृत्त भेः। भीम जखल ६ बॅर्खक बहथि तखलहि हुनकब मायक देहान्त भेः गेलन्हि आ तकब बॅाद हुनकब पालन हुनकब अपंग दीदी

केनखिन्ह। पिता फेरसँ रिटायर केनखिन्हि आ नोकरी लेल गोरेगाँव चलि गेलाह।

२

रामजी सपकाल अस्पृश्य महार जातिक रहथि। ओ करीरक दोसर स्तर कऽ भीमकेँ भोरे-भोर पढ़ैले उठा दै छलाह।
सेवानिवृत्तिक बाद जखन ओ काप-दपोली १+९४ ई.मे एलाह तखन दपोली नगरपालिका शिक्षा विभाग अपन स्कूलमे अस्पृश्यक नामांकन नै लेबाक निर्णय कऽ लेलक। अखन धरि अस्पृश्यक बच्चाक नामांकन एग स्कूल सभमे होइत छलै। तखन रामजी म्युनिसिपल आ फेर सतारा चलि गेलाह। भीमक प्रारम्भिक शिक्षा सतारामे भेलन्हि।
कोनो नौआ भीमक केश नै काटै छल से भीमक बहिन हुनकर केश काटै छलीह।
स्कूलमे हुनकासँ सटि कऽ कियो नै बैसै छल।
कटही गाड़ीबला हुनका तै शर्तपर बैसबैं छल जे गाड़ी भीम चलेताह आ ओ आरामसँ बैसत।
पानि पीबाक संकट, जलाशय हुनका लेल नै ?
हम विद्या प्राप्त करब, तखन ई सभ भेटैत। संकल्प लेलन्हि भीम।
ओतै विद्यालयमे पेंडसे आ आम्बेडकर ई दूटा शिक्षक रहथि।
एक दिन भीम अपनाकेँ भिजा लेलन्हि जे स्कूलमे नै पढ़ऽ पड़ए। मुदा पेंडसे हुनका अपन घर पठेलन्हि आ हुनका धरिया पहिर कऽ स्कूलमे पढ़ाइ करऽ पड़लन्हि।

আম্বেডকবক পবম প্রিয শিষ্য বঁনি গেনাহ ভীম। আম্বেডকব ব্রাহ্মণ বহথি। এক দিন্বকা গপ অছি। ভীম খেনাগ নৈ আননে বহথি, অসগবে ভুখনে পেটৈ একটা গাছক ছাহ তব ও বৈঁসন বহথি।
প্বছনন্হি আম্বেডকব, ভীম এনা অসগবে কিএ বৈঁসন ছী। ভীম কহনন্হি জে আগ হম খেনাগ নৈ আননে ছী। কহনন্হি আম্বেডকব, তঁ কী ভেন, চনূ আগ দ্নূ গ্বক চেনা বোটী তবকাবী সংগে খাগ ছী। ভীমক প্রতি এহেন নীক আচবণ আগ ধবি কিযো নৈ কেনে ছন। ভীম প্রসন্ন ভ২ গেনাহ।
কহনন্হি আম্বেডকব– ভীম, হম অহাঁকেঁ অপন ক্ষননাম দৈ ছী, আরঁ অহাঁ আম্বেডকব কহাএরঁ।
২
বামজী ক্ষম্বঁগ আরিঁ গেনাহ। এনফিংস্টন স্কূনমে ও ভর্তী ভেনাহ। ১৯০৭মে স্কূনক শিক্ষা ও পূর্ণ কেনন্হি। কেন্বস্কব হ্নকা "বুঁদ্ধচবিতম্" উঁপহাবমে দেনন্হি।
ভীমকেঁ স্কূনমে সংস্কৃত পঢ়বাঁক বঁড় গছা বহন্হি ক্ষদা তকব অন্বমতি নৈ ছন।
জখন ভীম ১৭ বঁর্খক বহথি তখন ৯ বঁর্খক বমাসঁ হ্নকব রিঁযাহ ভেনন্হি।
কেন্বস্কব মহোদযক প্রযাসসঁ বঁড় াদা নবেশক ছাত্রবৃত্তি ভীমকেঁ প্রাপ্ত ভেনন্হি আ ও ১৯১২ ঙা.মে বী.এ. পাস ভ২ গেনাহ।
বঁড় াদা সবকাব হ্নকা নেফ্টিনেন্ট পদপব তৈনাত কেনক।
ক্ষদা তকব বাঁদ পিতাক মোন খবাপ ভ২ গেননি, ভীম পিতাসঁ ভেঁটৈ কববাঁনে এনাহ, পিতা প্রসন্ন বহথি। পিতা অপন প্রসন্নতাক সংগে প্রযাণ কেনন্হি, মূত্বক নীনা, ভীম

জোব-জোবসঁ কানথি।
৪
ৰঁড় াদা নবেশক ছাত্ৰবৃত্তিসঁ ভীম ১৯১২ ঙ. মে খধ্যযন নেন ন্যূযার্ক ৰিঁদা ভেনাহ। কোনম্বিযা ৰিশ্বৰিদ্যানয হ্নকব প্ৰৰঁন্ধ স্বীগ্ৰত কেনক খা হ্নকা "ড◌ঁকিটব আঁফ ফিনোসোফী" উঁপাধি দেনক।
ঘ্বনাহ ভীম।
হ্নকব সকোব কএন জাএ, ভব্য সকোব। সভ হিত-সম্বন্ধী ৰিচাবনহ্নি।
হ্মদা ও নৈ স্বীকাব কেনহ্নি খপন সকোব। হমব সকোবপব হোমএৰঁনা খচসিঁ ছাত্ৰবৃত্তি দিযৌ, ৰঁচিতকেঁ পঢ় াউঁ।
ৰঁড় াদা নবেশ হ্নকা ৰঁড় াদা ৰঁজেনহ্নি। হ্নকব খরাস-ভোজনক ব্যৰস্থা নেন কহনহ্নি।
হ্মদা কোনো ভোজনানয ৰা ধৰ্মশানা হ্নকা বখৰাঁ নেন তৈযাব নৈ ভেন। একটা পাবসী ভোজনানয কিছু দিন হ্নকা বখনক হ্মদা ফেব ওতৈসঁ হ্নকা নিকানি দেন গেন।
একটা গাছতব ও কানএ নগনাহ। শিক্ষা প্ৰাপ্ত কবৰঁ তঁ হমব দোষ দূব হএত, সে সোচনে বমী। হ্মদা খাৰঁ তঁ হম শিক্ষা প্ৰাপ্ত কেনে ছী, খাৰঁ কিএ ঙা যাতনা দেন জা বহন খছি হমবা। প্ৰণ কবৈ ছী হম জে ঐ ব্যৰস্থাকেঁ তোড়া দেৰঁ, ওকব জড়া পব প্ৰহাব কবৰঁ।
৩
ভীম ঘ্বি এনাহ হ্মম্বঁগ। ও শিডেনহম মহাৰিদ্যানযমে প্ৰাধ্যাপক ৰঁনি গেনাহ।
কোল্হাপ্ৰবক ছত্ৰপতি সাহু মহবাজ উঁপেক্ষিত নোকক উঁদ্ধাব নেন কটিৰঁদ্ধ ছনাহ। ভীম ওতএ গেনাহ, ঘোষণা

কেলন্হি মাণগ্রামমে সাদ্রূ মহবাজ, হে উঁপেক্ষিত জন আরি গেল ছথি ওহাঁ সভক উঁদ্ধাবক– ডা ঁ আম্বেডকব। ক্ষদা একটা আব আঘাত, পুত্র গংগাধবক মৃত্সঁ পলী বমা খিন্ন বহএ লগলীহ। যশৱন্তক পানল ও কবৈত বহলীহ, পতি বঁড্ড কম সমএ ঘবমে দৈ ছলখিন্হ ক্ষদা ও সভটা সহৈত বহলীহ।

৬

ফেব অধ্যাপনপদ ছোড়ি ও “একোনোমিক এল্ড পোলিটিকল সায়ংস” নাম্না লংডল স্থিত সংস্থামে “দ প্রাব্লেম আঁফ কপী” পব প্রবঁন্ধ দেলন্হি। ক্ষদা হুনকা ক্রান্তিকাবী মানল গেল, সে ও সংস্থাক মোনমাফিক সংশোধিত প্রবঁন্ধ প্রস্তুত কেলন্হি আ “ডাক্টব আঁফ সায়ংস” ভঽ ঘুবলাহ। রিধিক অধ্যযন কেলাক বাঁদ ও ন্যাযালয সেহো জাএ ছলাহ।

২০ জুলাএ ১৯২৪ ঙা. কেঁ ও “বঁহিষ্কৃত হিতকাবিণী সভা” নামসঁ একটা সংস্থা বঁলেলন্হি। কাবণ হুনকব রিশ্বাস চললি জে অপন সমস্যাক সমাধান অপনে কবএ পড়ত, আন সে লৈ কঽ সকত।

২০ মার্চ ১৯২৭ ঙা. মহাডমে জলান্দানলক লেহত্ব কঽ “চরদাব তালো” জলাশযসঁ সভ পানি পীলন্হি।

তকব বাঁদ “বঁহিষ্কৃত ভাবত” মাসিক দ্বাবা রিচাব প্রসাবিত কেলন্হি।

২ মার্চ ১৯৩০ নাশিক বামমন্দিবমে প্ররেশক প্রযাসক জলান্দানলক লেহত্ব, ক্ষদা পুবহিত দ্বাব বঁন্দ কঽ লেলক, তখন সভ বাম আ লক্ষ্মণ কুন্ডমে স্নান কঽ ঘুবি গেলাহ।

ক্ষদা ১৯৩৩ ঙা মে ক্ষম্বঁএ প্রান্তমে সভ উঁপেক্ষিতক মন্দিব প্ররেশক রিধান পাস ভেল।

৭

১৯২৭ ঈ. মে অপন শিক্ষক আম্বেডকরসঁ হুনকর ভেঁট ভেলন্হি। হুনকর চিট্ঠী ভীম স্নেহসঁ বখনে ছলাহ। গুরু-শিষ্য ভার বিল্লেন ভঽ গেলাহ।
সাগমন কমীশনক সমিতিমে ভীমক চযন ভেল, বযস্ক মতদানক অনুশংসা ভীমক কএল ছন্হি।
নংডনমে "বাউন্ড টেবৃন কান্ফ্রেন্স"মে তীন বেব ভাগ নঽ কঽ দনিতক সমস্যা উঠেলন্হি ও।
হ্মদা ফেব আঘাত। পলী বমাক মৃত্যু।
১৩ অপ্রীল ১৯৪৮ ঈ. কেঁ শাবদা-কবীব নাম্না ব্রাহ্মণ চিকিৎসিকাসঁ বিবাহ কেলন্হি।
সমএ কম অছি। সংঘর্ষ নিষ্ফল ভঽ বহল অছি। হিন্দূ, অস্পৃশ্য হিন্দূ! নৈ। হম অসফল নৈ হএব। ধর্মান্তব। কেন্দ্রস্থবক দেন বুদ্ধচবিতম্ সম্ভব বনত।
১৪ অক্টূবব ১৯৫৬ ঈ., দশমী, নাগপুব ৯ বজী ভোবসঁ ১১ বজে ধবি, গোবখপুবক মহাস্থাবিব চন্দ্রমণি ধর্মান্তব কবেতাহ, বৌদ্ধ ধর্মমে।
ও, হুনকব দোসব ব্রাহ্মণ পলী সবিতা আ নাখক নাখ নোক বৌদ্ধ বনি গেলাহ।
বুদ্ধক পদ ধূনি মাথপব নগা তীনবেব বন্দন কেলন্হি।

৮

স্বতংত্র ভাবতক বিধি মংত্রী বননাহ বাবাসাহেব আম্বেডকব। সংস্কৃতক পৈঘ প্রেমী। সংস্কৃতমে সম্ভাষণ কবৈ ছলাহ (আজ, হিন্দী পত্রিকা সিতম্বব ১৩, ১৯৪৯ অংক; দ নীডব, ইলাহাবাদ, ১২ সিতম্বব, ১৯৪৯)। আঁল ইণ্ডিযা সেড্যূল কাস্ট ফেডেবেশনমে সংস্কৃত বাজভাষা হুঅএ, ই প্রস্তাব বাবাসাহেব বাখলন্হি হ্মদা যবা বী.পী.

মৌর্য খাদিক রিরোধ ভেন খা প্রস্তার খাপস ভহ গেন। নাথক নাথ পোথী হ্নকব নিজী প্বস্তকানযমে ছনন্হি, সভষ্টা পোথী ও হ্মম্ব্বগক সিহ্মার্থ মহারিদ্যানযকেঁ দহ দেনন্হি।
পৈঘ ভেনাক উঁপবান্তা ও খপন সামাজসঁ খপন নোকসঁ দূব নৈ গেনাহ।
৬ দিসম্ব্বব ১৯৯৬ ঙা.কেঁ ও নিরাণ প্রাপ্ত কেনন্হি।

ছতহব/ ছতহব ঘৈন/ ছতহা ঘৈন

ছতহা ঘৈন মহেন্দ্র মনংগিযাক নরীন নাটকক নাম ছন্হি। ঐ ছোটসেন নাটকক ভূমিকা ও দস পন্নামে নিখনে

छथि।
पहिने ऐ भूमिकापर आउ। हुनका कहब छन्हि जे रमानन्द झा "रमण" हुनका स्मरण देनथिन्ह जे "छतहर घैल"केँ मात्र "छतहर" कहल जाइत छै। से ओ तीन टा तर्क उठेलन्हि- पहिल-
"तोँ कहियो पोथी के लेखी,
हम कहियो आँखियन के देखी।"
दोसर- यात्री जीक विलाप कविता-
"कातेँ बैह छी जन्म घैल छतहर
आहि रे हम अभागलि कत रहू।"
आ कहै छथि जे ओइ कविताक विधवा आ ऐ नाटकक कर्तृत्वी देवीकेँ शिवक महेश्वरो सूत्र आ पाणिनीक दश लकारसँ (वैदिक संस्कृत लेल पाणिनी १२ लकार आ लौकिक संस्कृत लेल दस लकार निर्धारित कएने छथि..खएर...) कोन मतलब छै?
तेसर ओ अपन स्थितिकेँ कापरलिकस सन भेल कहैत छथि, जे लोकक कहनासँ की हेतै आ गाम-घरमे लोक "छतहर घैल" बजिते छैक!!
आब ऐ तीनू बिन्दुपर तीनू तर्क मलंगियाजीक विरुद्ध जाइ छन्हि। "आँखियन देखी" आ लोकव्यवहार "छतहर" मात्र कहल जाइत देखलक आ सुनलक अछि, घैलचीपर छतहरकेँ अहाँ राखि सकै छी? लोटासँ रह रहमे पानि पटाओल जाइ छै तखन मलंगियाजीक हिसाबेँ ओकरा "लोटा घैल" कहबैं। घैल, सुराही, कोहा, तौला, छतहर, लोटा, खापड़ि, झझरी, झरझारा, कोसिया, सरबा, सोरबना ऐ सभ वैशिष्ट्यक अलग नामकरण छै।
फूलचन्द्र मिश्र "रमण" (प्रायः फूलचन्द्रजी "छतहा घैल" शीर्षक स्मरण हँसीमे देने हेथिन्ह, आ जँ नै तँ ज्ञा

একটা নর ভাষাক নর শৈষ্ঠ খছি ! !)ক স্বমার মানৈত মনংগিযা জী "ছতহব ঘৈন" কেঁ "ছতমা ঘৈন" কহ দেনহি, ওা ঐ গপক ব্যাতক জে হ্নকা গনতীক খন্বভর ভহ গেনহি ম্দা বমানন্দ ঝা "বমণ"ক গপ মানি নেনে ছোট ভহ জগতথি সে খ্ঙ্খা খপনা হিসারেঁ গাড়ি দেনহি। খা রাঁদমে বমানন্দ ঝা "বমণ" চেতনা সমিতিসঁ ওগ পোথীকেঁ ছপেরাঁক খাগ্রহ কেনখিন্হ খা, চেতনা সমিতি মাত্র ২ওটা প্রতি দৈতনহি তেঁ ও খপন সংস্থাসঁ একবা ছপরেঁনহি, ঐ সভসঁ পঠককেঁ কোন সবোকাব ? খারেঁ খাউ যাত্রীজীক গপপব, যাত্রীজীকেঁ হিন্দী পাঠকক সেহো ধ্যান বাখহ পড়ৈ ছনহি, হ্নকা মোনো নৈ বহ ছনহি জে কোন করিতা হিন্দীমে ছন্হি, কোন মৈথিনীমে খা কোন দ্নূমে, সে ও ছতহব ঘৈন নিখি দেনহি, একব কাবণ যাত্রীজীক ত্তকরঁন্দী মিনেরাঁক খাগ্রহমে সেহো দেখি সকৈ ছী। খা হেব খাউ কাঁপবনিকসপব, জঁ যাত্রী জী রা মনংগিযা জী "ঘৈন ছতহব", "ছতহব ঘৈন" রা "ছতমা ঘৈন" নিখিযে দেনহি তঁ কী নেষ্টির মৈথিনী ভাষী ছতহবকেঁ "ঘৈন ছতহব", "ছতহব ঘৈন" রা "ছতমা ঘৈন" রাঁজরেঁ শ্বব্দ কহ দেত। সে কাঁপবনিকস সেহো মনংগিযাজীক রিকঙ্ক ছথিন্হ।

কাঁপবনিকসক কিংরদন্তীক সটীক প্রযোগ মনংগিযাজী নৈ কহ সকনাহ, প্রাযঃ ও গৌনিনীযো সঁ কাঁপবনিকসকেঁ কন্ফ্যূজ কহ বহন ছথি, কাঁপবনিকসক সিদ্ধান্তক সমর্থন পোপ দ্বাবা ভেন ছন খা কাঁপবনিকস পোপ পাঁন–৩ কেঁ খপন হেনিযোসেন্ট্রিক সিদ্ধান্তক চানীস পন্নাক পাণ্ডুনিপি সমর্পিত কেনে বহথি। খএব মনংগিযাজীক রিজ্ঞানক প্রতি খনভিজ্ঞতা খা রিজ্ঞানক সিদ্ধান্তকেঁ

কিরদন্তীসঁ জোড়ৱাঁক সোচপব (সনসনীখেজ সাহিহ্যমে কতৌ ঙা রিরবণ ও পঢ়নহিযো হেতো) খহাঁকেঁ খাশ্চর্য নৈ হএত জখন খহাঁ হ্নকব খাঁটী নোককথা সভক খজ্ঞানতাকেঁ খহী ভূমিকামে দেখবঁ।

“খনী বাঁবাঁ খা চানীস চোব”– সম্পূর্ণ দুনিযাঁকেঁ বুঝন ছৈ জে ঙা মধ্যকানীন খববী নোককথা খছি জে “খবেবিযন নাগহ্টস (১০০১ কথা)” মে সংকনিত খছি খা ওগমে রিরাদ খছি জে ঙা খবেবিযন নাগহ্টসমে বাঁদমে ঘোসিযাএন গেন রা নৈ, হ্মদা ঙা মধ্যকানীন খববী নোককথা খছি, ঐ মে কোনো রিরাদ নৈ খছি। বনবনক খহাচাব খাদিক কী কী গপ সাম্প্রদাযিক মানসিকতা নহ কহ মনংগিযা জী কহি জাগ ছথি সে হ্নকব নোককথাক প্রতি সতহী নগার মাত্রকঁণ দেখাব কবৈত খছি। “মিথিনা তত্ত্ব রিমর্শ” রা “বমানাথ ঝা”ক পংজীক সতহী জ্ঞান বহ্ত পহিনহিযে খতম কহ দেন গেন খছি, খা তেঁ ঙা নিখিত ৰূপসঁ হমবা সভক পংজী পোথীমে রর্ণিত খছি। গোনূ ঝা রিদ্যাপতি সঁ ২০০ বর্খ পহিনে ভেনাহ, হ্মদা মনংগিযাজী ৬০ সান প্ৰবান গপ–সবক্কাক খাধাবপব খাগাঁ বঢ়ৈ ছথি। হ্নকা বুঝন ছন্হি জে গোনূকেঁ ধূর্তাচার্য কহন গেন ছন্হি হ্মদা সংগে গোনূকেঁ মহামহোপাধ্যায সেহো কহন গেন ছন্হি সে হ্নকা নৈ বুঝন ছন্হি!! গোনূ ঝাক সমযমে হ্মস্লিম মিথিনামে বহবেঁ নৈ কবথি তখন “তহসীনদাবক দাঢ়ী” কতহ সঁ খাওত। নোকক কণ্ঠমে ছতহব ছৈ ওকবা “ছতহা ঘৈন” কহ দিযৌ, নোকক কণ্ঠমে “কব ওসূনী”কবৈবনাক দাঢ়ী ছৈ ওকবা “তহসীনদাব”ক দাঢ়ী কহি সাম্প্রদাযিক খাধাবপব হ্মস্লিমকেঁ খহাচাবী কবাব কহ দিযৌ, খা তেহেন ভূমিকা নিখি দিযৌ জে বমানন্দ ঝা

"বমণ" আ আন গোষ্টে ডবে সমীক্ষা নৈ কবতাহ। একটা পৈদন সৈনিক আ একটা সতনামী (দনিত-পিছড়ন বস্কা দ্বাবা শ্বব্দ কএন একটা প্রগতিরাদী সম্প্রদায)ক ঝগড় াসঁ শ্বব্দ ভেন সতনামী রিদ্রাহ ঔবংগজেবঁক নীতিক রিবোধমে ছন আ ওগমে মস্জিদকেঁ সেহো জবাওন গেনৈ, ম্দা গোনূ ঝাক কব ওসূনী অধিকাবী ম্স্লিম নৈ বহথি, নোককথামে ঙা গপ নৈ ছৈ, হঁ জঁ সাম্প্রদাযিক নোককথাকাব কহন কথামে অপন রাদ ঘোসিযেনক আ নিখৈ কান রেঁগমানী কেনক তঁ তগসঁ মৈথিনী নোককথাকেঁ কোন সবোকাব ? ফীন্ডরর্কক আধাবপব জঁ নোককথাক সংকনন নৈ কববঁ তঁ অহিনা হএত।

মহেন্দ্র নাবাযণ বাম নিখৈ ছথি জে নোককথামে জাতিত-পাগত নৈ হোগ ছৈ, ম্দা মনংগিযাজী সে কোনা মানতাহ। ভগতা সেহো হ্নকব কথামে এরেঁ কবৈ ছন্হি। আ অসন কাবণ জগ কাবণসঁ ঙা মনংগিযা জীক নাটকক অভিন্ন অংগ রঁনি জাগত অছি সে অছি হ্নকব আন্বরংশিক জাতীয শ্রেষ্ঠতা আধাবিত সোচ। হ্নকব নাটকমে মোটা-মোটা অঢ় াগ-অঢ় াগ পন্নাক ঘীচ তীবি কঽ সত্রহটা দৃশ্য অছি, জগমে পন্দ্রহম দৃশ্য ধবি ও ছোটকা জাগতক (মনংগিযাজীক অপন গজাদ কএন ভাষা দ্বাবা) কথিত ভাষাপব সরর্ণ দর্শকক হঁসরাঁক, আ ভগতাক ভ্রষ্ঠ-হিন্দীক মাধ্যমসঁ ছদ্ম হাস্য উপেন্ন কববাঁক অপন প্রবান পদ্ধতিক অন্বসবণ কবৈ ছথি। কথাকেঁ উদ্দেশ্যপূর্ণ রনেরাঁক আগ্রহ ও সোনহম দৃশ্যসঁ কবৈ ছথি ম্দা রাজী তাবত হ্নকা হাথসঁ নিকনি জাগ ছন্হি। আগ জখন সংস্কৃত নাটকোমে প্রাকৃত রা কোনো দোসব ভাষাক প্রযোগ নৈ হোগত অছি, মনংগিযাজীক ভবতকেঁ গনত সন্দর্ভমে সোঝাঁ আনরঁ সংস্কৃতসঁ হ্নকব

অনভিজ্ঞতাকেঁ দেখাব কবৈত অছি আ ভবত নাট্যশাস্ত্রপব হিন্দীমে জে সেকেন্ডবী সোর্সক আধাবপব লোক সভ পোথী লিখনে ছথি, তকবে কএল অধ্যযন সিদ্ধ কবৈত অছি।
মলংগিযাজীক ঙা কহবঁ অছি জে নাটক জঁ পঢ়বাঁমে নীক অছি তঁ মংচন যোগ্য নৈ হএত, বা মংচন লেল লিখল নাটক পঢ়বাঁমে নীক নৈ লাগত ? হুনকব সংস্কৃত পাঁতীকেঁ উদ্ধৃত কববাঁসঁ তঁ যএহ লগৈত অছি। জঁ নাটক পঢ়বাঁমে উদ্বেলিত নৈ কবত তঁ নির্দেশক ওকব মংচনক নির্ণয কোনা লেত ? আ মংচীয গুণ কী হোএ ছৈ, অঢ়াএ-অঢ়াএ পন্নাক সত্রহটা দৃশ্য, তথাকথিত নিম্ন বর্গকেঁ অপমানিত কবৈবঁলা জাতিবাদী ভাষা, ভগতাক "বুঝতা হৈ কি নহী ?" বঁলা হিন্দী আ ঐ সভক সম্মিলনক ঙা "স্লাপস্টিক হ্যূমব" ? আ জে একব বিবোধ কঽ মৈথিলীক সমানান্তব বংগমংচক পবিকল্পনা প্রস্তুত কবত সে ভঽ গেল নাটকক পঠনীয তত্ত্বক আগ্রহী আ জে প্রবাতনপংথী জাতিবাদী অছি সে ভেল নাটকক মংচীয তত্ত্বক আগ্রহী !! কী ২১ম শতাব্দীমে মলংগিযাজীক জাতি আধাবিত বাক্য সংবচনা সংস্কৃত, হিন্দী বা কোনো আধুনিক ভাবতীয ভাষাক নাটকমে (মৈথিলীকেঁ ছোড়ি) স্বীকার্য ভঽ সকত ? আ জঁ নৈ তঁ ঐ শিক্ষাবলী লেল ১৮০০ বঁর্ষ প্রবনকা সংস্কৃত নাটকক গএব সন্দর্ভিত তথ্যকেঁ, মূল সংস্কৃত ভবত নাট্যশাস্ত্র নৈ পঢ়ৈবঁলা নাটককাব দ্বাবা, বেঁব-বেঁব ঠানক রূপমে কিএ প্রযুক্ত কএল জাএএ ? মাথপব ছিট্টা আ কাঁখমে বঁচা জঁ কিযো লেনে অছি তঁ ও নিম্ন বর্গক অছি ? ওকব আংগনক বাঁবহমাসামে ও ঐ নিম্ন বর্গকেঁ বাড় কহৈ ছথি, কএক দশক বাঁদ ঙা ধবি স্বধাব আএল ছন্হি জে ও আবঁ ওগ

রস্মকেঁ নিম্ন রস্ম কহি বহন ছথি, ও স্বধাব স্নাগত যোগ্য ম্দা ঐ দীর্ঘ খরধি নেন রঁড্ড কম খছি। রঁরাজী কোনা কথামে এনৈ খা গাজা কোনা এনৈ খা ওগসঁ রঁগিযাক গাছক রঁগিযাক কোন সম্বঁন্ধ ছৈ? মনংগিযাজী খপন জাতি-খাধাবিত রাক্য সংবচনা, খা ভ্রষ্ঠ-হিন্দী মিশ্রিত রাক্য বচনা কোনা ঘোসিযা সকিতথি জঁ ভগতা খা নিম্ন রব্গক ছদ্ম সংকল্পনা নৈ খনিতথি, ও তথ্য ও রঁড্ড চত্তবাগসঁ ন্বকেরাঁক প্রযাস কবৈ ছথি, খা তেঁ ও মেডিযোক্রিটীসঁ খাগাঁ নৈ রঁঢ়ি পরৈঁ ছথি। খা তেঁ হ্নকামে ঐ নাট্য-কথাকেঁ উদ্দেশ্যপূর্ণ রঁনেরাঁক খাগ্রহ তঁ ছন্হি ম্দা সামর্থ্য নৈ খারি পরৈঁ ছন্হি খা ও নাটক স্লপস্থিক মূমব রঁনি কহ বহি জাগএ।

মিথিনা খা সংস্কৃত- কামেশ্বব সিংহ সংস্কৃত রিশ্বরিদ্যানযক প্রাসাংগিকতা

মিথিনা খাহ সংস্কৃতক সংবঁধ রঁড্ড প্ববান খছি। ষড্ দর্শনমে চাবি দর্শনিক প্রাবংভ এতযসঁ ভেন। রাজসনেযী খাহ ছাঁদোগ্যক রূপমে দূ গোটৈ রৈদিক শাখা খখনো ওতয খছি, ম্দা নামে মাত্রেক। মিথিনামে কতোক নোক ভেটৈতাহ জে মাত্র রিরাহ কানমে রাচসনয খাহ ছংদোগ্যক নমসঁ পবিচয প্রাপ্ত কবৈত ছথি। রীচ বাতিমে পতা চনৈত ছন্হি জে রব ছাঁদোগ্য ছথি খাহ স্ত্রীগণমে শোব উঠৈত খছি জে খারঁতঁ দূ রিরাহ মোযত-রঁড্ড সময নাগত। রাজসনেযী খাহ ছাঁদোগ্য ক্রমশঃ শুক্ল যজুর্বেদ খাহ সামরেদক শাখা খছি সে হম সভ রিসবি গেন ছী। কার্যানযক কার্যরিশাত্
হম ওঁদিবা গাঁধী নেশনন সেংটব খওঁফ খার্টস গেনহ্

তঁ ৱেদ পব এক গোষ্ঠ ডী.ৱী.ডী. দেখরৌক খরসব প্রাপ্ত ভেন। খখনো ওড় ীসা,মহাবাষ্ট্র,কেবন,কর্ণাটক,খা ২ তমিননাড়্মে ৱৈদিক শাখা জীরিত খছি, হ্মদা খপনা খহিঠাম শাখা বহিতহুঁ নামোসঁ খর্থেসঁ খনভিজ্ঞতা।
করিহ্মনগুৰু কানিদাস সংস্কৃত রিশ্বরিদ্যানযক স্থাপনা প্রধানমংত্রী নবসিম্হা বারক প্রযাসেঁ বামষ্টেক,মহাবাষ্ট্রমে খ্জন। খপ্পারধিমে ঞ রি.রি. সংপূর্ণ মহাবাষ্ট্রমে রষারিধি সংস্কৃত সংভাষণ শিরিব চনা বহন খছি। শিশুক হেত্ত 23 খংডমে কিতাৰঁ ছপনক খছি,জখন কী একব ভৱন খখন ৰঁনিযে বহন খছি।
কা.সি.সংস্কৃত রি.রি. দবিভঙ্গী ৰঁহ্ত বাস সংস্কৃত–মৈথিনী কার্য্যক উঙ্কাব কএনক হ্মদা খাৰঁ জা কয একব যোগদান সানমে একটা পতবা ছপৰঁ ধবি সীমিত ভয গেন ছৈক– খা ২ ঞ রিশ্বরিদ্যানয পংচাংগ সেহো খপন গণনাক হেত্ত রিরাদমে পড়ি গেন খছি।
হ্মদা এহি খংকসঁ হম একব বচনামেক কএন গেন কার্যক রিরবণ দেৰঁ প্রাবংভ কএন ছী।

রিশ্বরিদ্যানয দ্বাবা 20 সানসঁ ঙঁপব ভেন জখন সংস্কৃত–প্রাগ্নিত দেসিন ৰঁযনা সঁ যকত নাষ্টক সভক খানোচনামেক সংস্কবণ প্রকাশিত ভেন,জে ভাষা মিশ্রণক কাবণেঁ জহিনা ঞ সংস্কৃতক তহিনা মৈথিনীক বচনামে পবিগণিত হোগত খছি।ভারোদ্রকক নেন গীতবাশিক বচনা কোমনকাংত মিথিনাভাষহিমে নিৰঁদ্ধ ভেন। রিশ্বরিদ্যানয দ্বাবা পহিন সংপাদিত গ্রংথ জ্যাতিবীশ্বব ঠাহ্মবক ধূর্ত্তসমাগম খছি।
ধূর্ত্তসমাগম তেবহম শতাব্দীমে জ্যাতিবীশ্বব ঠাহ্মব দ্বাবা বচন গেন। জ্যাতিবীশ্বব ঠাহ্মব ধূর্ত্তসমাগমমে মৈথিনী গীতক সমারেশ কএনন্হি। ঞ প্রহসনক কোটিমে খৱৈত

খছি । মৈথিনীক খধিকাংশি নাটক–নাটিকা শ্রীকৃষ্ণক খথরা হ্নকব রংশধবক চবিত পব খরনংবিতএবং হবণ খাকি স্বয়ংরব কথা পব খাধাবিত ছন । হ্মদা ধূর্ত্তসমাগমমে সাধ্ খাহ হ্নকব শিষ্য হ্মখ্য পাত্র খছি । ধূর্ত্তসমাগম সভ পাত্র একসঁ–এক ধৌর্ত্ত ছথি । তাহি হেতু একব নাম ধূর্ত্তসমাগম সর্বথা উঁপযুক্ত খছি । প্রহসনকেঁ সংগীতক সেহো কহন জাগছ, তাহি হেতু এহি মে মৈথিনী গীতক সমারেশ সর্বথা সমীচীন খছি । এহিমে সূত্রধাব, নটী স্নাতক, রিশ্বনগব, মৃতাংগাব, স্ববতপ্রিযা, খনংগসেনা, খসজ্জাতি মিশ্র, রঁধ্রংচক, মূননাশক খাহ নাগবিক হ্মখ্য পাত্র ছথি । সূত্রধাব কর্ণাট চূড় ামণি নবসিংহদেরক প্রশস্তি করৈত খছি । ফেব জ্যাতিবীশ্বেবক প্রশস্তি হোগত খছি । এহিমে এক প্রকাবক এর্সডিটী খছি, জে নিতাংত খাধুনিক খছি । জে নোচ ছৈক সে একবা নোকনাট্যে রঁনরৈত ছৈক ।

রিশ্বনগব স্ত্রীক খভারমেব্রহ্মচাবী ছথি । শিষ্য স্নাতক সংগ ভিক্ষাক হেতু মৃতাংগাব ঠাকুবক ঘব জাগত ছথি তঁ খশৌচক রঁহানা ভেটৈত ছন্হি । রিশ্বনগব শিষ্য স্নাতক সংগ ভিক্ষাক হেতু স্ববতপ্রিযাক ঘব জাগত ছথি । ফেব খনংগসেনা নামক রৈশ্যাকেঁ নয কয গুরু–শিষ্যমে মাবি রঁজবি জাগত ছন্হি । ফেব গুরু–শিষ্য খনংগসেনাক সংগ খসজ্জাতি মিশ্রক নগ জাগত ছথি তঁ ওতয মিশ্রজী নংপট নিকনৈত ছথি । ......জে জুখা খেনাযর্ খা’ পাংগনা সংগম ওএহ দূটা কেঁ সংসাবক সাব র্বুনৈত ছথি । খসজ্জতি মিশ্র পুছৈত ছথি জে কে রাদী খা’ কে প্রতিরাদী । স্নাতক উঁত্তব দৈত ছথি–জে খভিযোগ কহরাক নেন হম রাদী থিকহুঁ খা’ শুল্ক দেরাক হেতু

সংন্যাসী প্রতিবাদী থিকাহ। বিশ্বনগব অপন শ্বন্ধমে স্নাতকক গাজাক পোঠৈবী প্রস্তুত কবৈত ছথি। বিদূষক অসজ্জাতি মিশ্রক কানমে অনংগসেনাক যৌনক প্রশংসা কবৈত অছি। অসজ্জাতি মিশ্র অনংগসেনাকেঁ বীচমে বাখি দুনূক বঁদনা অপনা পক্ষমে নির্ণয নৈত অছি। এম্হব বিদূষক অনংগসেনাক কানমে কহৈত অছি, জে ঞা সংন্যাসী দবিদ্র অছি, স্নাতক আবাবা অছি আ' ঞা মিশ্র মূব্খ তেঁ হমবা সংগ বহু। অনংগসেনা চাব্ধক দিশি দেখি বঁজৈছ, জে ঞা তঁ অসনে ধূর্তসমাগম ভয গেন।

বিশ্বনগব স্নাতকক সংগ পুনঃ স্ববতপ্রিযাক ঘব দিশি জাগত ছথি।

এমহব মূননাশিক নৌআ অনংগসেনাসঁ সান ভবিক কমৈনী মঁগৈছ। ও' হ্নকা অসজ্জাতিমিশ্রক নগ পঠবৈত অছি। মূননাশিক অসজ্জাতিমিশ্রকেঁ অনংসেনাক বব ব্ন্নৈত অছি। গাজা শ্বন্ধমে নয অসজ্জতি মিশ্রকেঁ গতানি কএ বান্হি তেনা মানিশি কবৈত অছি জে ও' বেঁহোশি ভয জাগত ছথি। ও' হ্নকা ফ্গন ব্ন্নি কয ভাগি জাগত অছি।
বিদূষক অবৈত অছি, আ' হ্নকব বঁধন খোনৈত অছি আ' পুছৈত অছি জে হম অহাঁক প্রাণবক্ষা কএন অছি, আ' জে কিছু আন প্রিয কার্য হোয তঁ সে কহু। অসজ্জাতি কহন জে ছনসঁ সংপূর্ণ দেশকেঁ খএনহ্ঁ, ধূর্ত্তবৃত্তিসঁ ঞা প্রিযা পাওন, সেহো অহাঁ সন আজ্ঞাকাবী শিষ্য পওনক, এহিসঁ প্রিয আব কিছু নহি অছি। তথাপি সর্বত্র স্বখশাঁতি হো তকব কামনা কবৈত ছী।

মিথিনামে সংস্কৃতক স্থিতি-

মিথিনা ক্ষেত্রমে নিম্ন সংস্থান করি গ্বরু কানিদাস সংস্কৃত রিশ্বরিদ্যানয,বামৎৈকসঁ মান্যতাক খারেদন কএন খছি। জেনা রিহাব রিদ্যানয পবীক্ষা সমিতিক খস্তব্যস্ততাক কাবণ কেন্দ্রীয মাধ্যমিক শিক্ষা রোঁডিক মান্যতা প্রাপ্ত স্কূনক সংখ্যা রঁঢ়ন তহিনা দবভঁগাক সংস্কৃত রিশ্বরিদ্যানযক খস্তব্যস্ততাক কাবণ নীক সংস্থান সভ মান্যতাক নেন রাঁহবক দিশি দেখনক খছি।

1.J.N.B. Sanskrit Vidyalaya Bihar Post Lagma (R.B.Pur) Via-Lohna Road, Dist. Darbhanga

2.Laxmiharikant Sanskrit Prathamik,Madhyamik Vidyalaya,Post. Jhanjharpur Bazar, Dist.Madhubani,

3.Ajitkumar Mehta Sanskrit Shikshan Sansthan Post Ladora, Dist. Samastipur.

4.Dr.Mandanmishra Sanskrit Mahavidyalaya,Post Sanjat, Dist.Begusarai

5.Saraswati Adarsha Sanskrit Mahavidyalaya,Begusarai

6.Dr.R.M.Adarsha Sanskrit Mahavidyalaya,P.O. Malighat, Mujaffarpur

একব খতিবিঞ বাষ্ট্রীয সংস্কৃত সংস্থান, নঙা দিল্লী নিম্ন রিদ্যানয সভকেঁ গ্রাংৈ দয জীরিত বখনে খছি।

1.J.N.B. Adarsh Sanskrit Mahavidyalaya, PO. Lagma, Via – Lohna Road, Distt – Darbhanga.

2.Laxmi Devi Saraf Adarsh Sanskrit Mahavidyalaya, Kali Rekha, Distt– Deoghar.

3.Rajkumari Ganesh Sharma Sanskrit Vidyapeetha, Kolahnta Patori,Distt – Darbhanga

4.Ramji Mehta Adarsh Sanskrit Mahavidyalaya,Malighat, Muzaffarpur.

এহিমে নগমাক রিদ্যানয করিক্ষনগ্বক কানিদাস সংস্কৃত রিশ্বরিদ্যানয সঁ মান্যতা মঁগনক খছি, কিযেকতঁ দবভংগাক রি.রি. মে এহি তবহক কোনো পবিযোজনাক সর্রথা খভার খছি।

তীস রর্ষ পহিনে হিন্দীমে ডা. বামপ্রকাশ শর্ম্মা নিখিত মিথিনাক গতিহাস সেহো প্রকাশিত ভেন বহয। খাজুক দিন নহি তঁ একবা খপন রের্সাগৈ ছৈক নহিযে দূব শিক্ষাক কোনো পবিযোজনা।

কামেশ্বব সিংহ সংস্কৃত রিশ্বরিদ্যানযসঁ প্রকাশিত দোসব নাটক খছি– মহাকরি রিদ্যাপতিক গোবক্ষরিজয নাটক। এহিসঁ পহিনে গুঞ্জ পব খাধাবিত নাটক প্রচন ছন।

এহি অর্থমে ও একটা ক্রাঁতিকবী নাটক কহল জাযত। নাথ সংপ্রদায কিংবা গোবক্ষ সংপ্রদাযক প্রবর্ত্তক যোগী গোবক্ষনাথক কথা ন' কয এহি নাটকক কথাবস্তু সংগঠিত ভেল অছি। গোবক্ষনাথক গুরু মৎস্যেন্দ্রনাথ যোগ ত্যাগি কদলিপুবমে বাজা 18 টা বানীক সংগ ভএ ভোগ কএ বহল ছথি। গোবক্ষ আ' কাননীপাদকেঁ দ্বাবপাল বোকি দৈত অছি। মংত্রী ঢোলকো পিটবাঁ দৈত অছি জে যোগী সভক প্রবেশ কতহু নহি হো আ' বানী সভকেঁ বাজাক মোন মোহলে বহবাক হেতু কহল জাগত অছি। গোবক্ষ আ' কাননপাদ নর্ত্তকাক বেষ ধবৈত ছথি আ' মোহক নৃত্য বাজাকেঁ দেখবৈত ছথি। এহি বীচ বাজাক একমাত্র পুত্র বৌধনাথ খেলাগত-খেলাগত মবি জাগত অছি। বাজাক শংকা নহি পব জাগত ছৈক তঁ ওকবা মাববাক আদেশ হোগত ছৈক। নর্ত্তক বঁচাকেঁ জিযা দৈত ছৈক। বাজা হুনকব পবিচয পুছৈত ছথি তখন ও' হুনকা অপন পূর্ব জন্মক সভটা গপ বঁতা দৈত ছথি, জে অহাঁ তঁ জোগী ছী ভোগী নহি।
এহি নাটকক পাত্রমে মহামতি(বাজাক মংত্রী) আ' মহাদেবী- মৎস্যেন্দ্রনাথক জ্যেষ্ঠ বানী সেহো ছথি। মৎস্যেন্দ্রনাথ কদলীপুবক বাজা আ' পূর্ব জন্মক যোগী ছথি। মৎস্যেন্দ্রনাথ অংতমে কহৈত ছথি জে গোবক্ষ জেহল শিষ্য হো আ' মহাদেবী জেহল সভ নাবী হোথু।

কামেশ্বেবসিংহ দবভঙ্গা সংস্কৃত বিশ্ববিদ্যালয দ্বাবা ত্রৈমাসিকী সংস্কৃত পত্রিকা ' বিশ্বমনীষা' নিকলৈত ছল। 1975 ও. সঁ 1994 ও. ধবি ও পত্রিকা প্রকাশিত হোগত বহল, অর্থাৎ 14 বর্ষসঁ একব প্রকাশন বঁদ অছি। হিন্দীমে

मिथिलाक इतिहासक अतिविज्ञ सात खण्डमे मैथिलीक परम्परागत नाटकक (1300 ई. सँ 1900ई. धरिक 16 टा नाटक)प्रकाशन कएल गेल छल। मैथिलीमे पं गोविन्द झा लिखित वातावरण नाटकक संस्कृत अनुवाद श्री पं शशिनाथ झा कएलन्हि आ' तकरा विश्वविद्यालय प्रकाशित कएलक। ' स्मृति-सौरभ' जे 20म शताब्दीक विद्वान्-साधकक जीवन पर आधारित प्रथम मैथिली महाकाव्य अछि, आ' जकर रचयिता श्री बुद्धिधारी सिंह'रमाकर' छथि केर प्रकाशन सेहो विश्वविद्यालय कएने अछि। रूपक सञ्चयः नामक पुस्तकमे चारि गोट रूपक अछि। एहि मे चारिम संस्कृत रूपक म.म.अमरेश्वर कृत धूर्तविडम्बन प्रहसनम् मैथिली अनुवादक संगेल गेल अछि। म.म. भवनाथ उपाध्यायक राजनीतिसारः सेहो मैथिली अनुवादक संग देल गेल अछि।

संप्रति विश्वविद्यालयक कार्य सालमे एकबेर पंचांग बनेबा धरि सीमित बुझाइत अछि।

সাহিত্যিক বচনা

সাহিত্যিক দূ রিধা খছি গদ্য খাহ পদ্য। ছন্দাবঁদ্ধ বচনা পদ্য কহবৈত খছি–খন্যথা ওহ গদ্য থীক। ছন্দ মানে ভেন–এহন বচনা জে খানন্দ প্রদান কবএ।

ছন্দ দূ প্রকাবক খছি। মাত্রিক খাহ রার্ণিক। রেদমে মাত্রিক ছন্দ খছি। পহিনে মাত্রিক ছন্দ পবিচয নিয। এহিমে খক্ষব জিনতী মাত্র হোগত খছি। হলংতযুক্ত খক্ষবকেঁ নহি গানন জাগত খছি। একাব উঁকাব গত্যাদি যুক্ত খক্ষবকেঁ ওহিনা এক মাত্রিক গানন জাগত খছি জেনা সংযুক্তাক্ষবকেঁ। সংগহি খ সঁ হ কেঁ সেহো এক মাত্রিক গানন জাগত খছি। দ্বিমাত্রিক কোনো খক্ষব নহি হোগছ। মুখ্য তীনটা রিন্দু যাদি বাখূ–

1.হ্খলংতযুকত খক্ষব–0 2.সংযুক্ত খক্ষব–1 3.খক্ষব খ সঁ হ –1 প্রত্যেক।

খাবঁ পহিল উঁদাহবণ দেখূ

ঞ খবদবাক মেঘ নহি মানত বহত রঁবসি কেঁ=1+5+2+2+3+3+1=17 মাত্রা

খাবঁ দোসব উঁদাহবণ দেখূ

পশ্চাত্=2 মাত্রা

খাবঁ তেসব উঁদাহবণ দেখূ

খাহবঁ=2 মাত্রা

খাবঁ চাবিম উঁদাহবণ দেখূ

সিগ্রুপ৮=2 মাত্রা

মুখ্য বৈদিক ছন্দ সাত অছি–গাযত্রী,উষ্ণিক্ ,অনুষ্টুপ্ ,বৃহতী,পঙ্ক্তি,ত্রিষ্টুপ্ আ ২ জগতী। শেষ ওকর ভেদ অছি অতিছন্দ আ ২ বিছন্দ। ছন্দকেঁ অক্ষরসঁ চিন্হল জাগত অছি। যদি অক্ষর পূরা নহি ভেলতঁ এক আকি দূ অক্ষর প্রত্যেক পাদমে বঢ়া লেল জাগত অছি। য আ২
র কের সংযুক্তাক্ষরকেঁ ক্রমশঃ ই আ ২ উ লগা কয অলগ কেল জাগত অছি। বরেণ্যম্=বরেণিযম্
স্বঃ = স্বরঃ

গুণ আ ২ বৃদ্ধিকেঁ অলগ কযকেঁ সেহো অক্ষর পূর কয সকৈত ছী। এ = অ + ই ও = অ + উ
ঐ= অ+এ =আ+এ
ঔ=অ+ও =আ+ও

পছিলা বের মাত্রিক ছংদক জানকারী লেনে ছলহুঁ। আব বার্ণিক ছংদ পর আবী।
পহিনে ছন্দঃ শাস্ত্রমে প্রযুক্ত 'গুরু' আ' 'লঘু' ছংদক পরিচয প্রাপ্ত করু।
তেরহ টা স্বর বর্ণমে অ,ই,উ,ঋ,লৃ ই পাঁচ হ্রস্ব আর আ,ঈ,ঊ,ৠ,এ.ঐ,ও,ঔ, ই আঠ দীর্ঘ স্বর অছি।
ই স্বর বর্ণ জখন ব্যংজন বর্ণকি সংগ জুড়ি জাগত অছি তঁ ওকরাসঁ 'গুণিতাক্ষর' বনৈত অছি।
ক্+অ= ক,
ক্+আ=কা ।
এক স্বর মাত্র আকি এক গুণিতাক্ষরকেঁ এক 'অক্ষর' কহল

जाগত খছি। কোনো ব্যংজন মাত্রকেঁ খক্ষব নহি মানন জাগত খছি– জেনা 'খবাক্' শব্দমে দূ টা খক্ষব খছি, খ , বা ।

1. সভটা হ্রস্ব স্বব খা' হ্রস্ব যও গ্বণিতাক্ষব 'নঘ্' মানন জাগত খছি। একবা ঙুপব U লিখি একব সংকেত দেন জাগত খছি।
2. সভটা দীর্ঘ স্বব খাব দীর্ঘ স্বব যও গ্বণিতাক্ষব 'গ্বরু' মানন জাগত খছি, খা' একব সংকেত খছি , ঙুপবমে একটা ছোট – ।
3. খনুস্বাব কিংবা বিসর্গযও সভ খক্ষব গ্বরু মানন জাগত খছি।
4. কোনো খক্ষবক বাঁদ সংযুক্তাক্ষব কিংবা ব্যংজন মাত্র বহনাসঁ ওহি খক্ষবকেঁ গ্বরু মানন জাগত খছি। জেনা– খচ্, সত্। এহিমে খ খা' স দুনূ গ্বরু খছি।
জেনা মাত্রিক ছন্দ বেদমে ব্যরহাব কএল গেল খছি, তহিনা স্ববক পূর্ণ রূপসঁ বিচাব সেহো ওহি যুগ সঁ ভেটৈত খছি। স্থূল বীতিসঁ ঙা বিভক্ত খছি:– 1. উঁদাত্ত 2. উঁদাত্ততব 3. খনুদাত্ত 4. খনুদাত্ততব 5. স্ববিত 6. খনুদাত্তানুবক্তস্ববিত
7. প্রচয (একটা শ্রুতি–খনহত নাদ জে বিনা কোনো চীজক উঁপেন্ন হোগত খছি, শেষ সভটা খছি খাহত নাদ জে কোনো বস্তুসঁ টকবওনা পব উঁপেন্ন হোগত খছি।)।
1. উঁদাত্ত– জে খকাবাদি স্বব কণ্ঠাদি স্থানমে ঙুর্ধ্ব ভাগমে বাঁজল জাগত খছি। একবা লেল কোনো চেন্হ নহি খছি। 2. উঁদাতাত্তব– কণ্ঠাদি খতি ঙুর্ধ্ব স্থানসঁ বাঁজল জাগত খছি। 3. খনুদাত্ত– জে কণ্ঠাদি স্থানমে

अधोभागमे उँचावित होइछ। नीचाँमे तीर्यक चेन्ह खचित कएल जाइछ। 4.अनुदातानुतर- कण्ठादिसँ अहंत नीचाँ रॉजल जाइत अछि। 5. स्वरित- जाहिमे अनुदात्त बहैत अछि किछु भाग आ' किछु बहैत अछि उँदात्त। उँपरमे ठाढ़ रेखा खेंचल जाइत अछि, एहिमे। 6. अनुदात्तानुवअस्वरित- जाहिमे उँदात्त, स्वरित किंवा दुनू रॉदमे होइछ ,ई 3 प्रकारक होइछ। 7.प्रचय-स्वरितक रॉदक अनुदात्त बहलासँ अनाहत नाद प्रचयक,तानक उँपेत्ति होइत अछि।

शुद्ध स्वर तखन होइत अछि, जखन सातो स्वर अपन निश्चित स्थान पर बहैत अछि। एहि सातो पर कोनो चेन्ह नहि होइत अछि।
जखन शुद्ध स्वर अपन स्थानसँ नीचाँ बहैत अछि तँ कोमल कहल जाइत अछि, आ' ई चारिटा होइत अछि एहिमे नीचाँ क्षैतिज चेन्ह देल जाइत अछि, यथा- रे॒, ग॒, ध॒, नि॒ ।

शुद्ध आ' मध्यम स्वर जखन अपन स्थानसँ उँपर जाइत अछि, तखन ई तीव्र स्वर कहाइत अछि, एहिमे उँपर उँर्ध्वाधिर चेन्ह देल जाइत अछि। ई एकेटा अछि- मं।
एरम प्रकारे सात टा शुद्ध यथा- सा,रे,ग, म, प, ध, नि, चारिटा शुद्ध यथा- रे॒,ग॒,ध॒,नि॒ आ' एकटा तीव्र यथा मं सभ मिला कय १२ टा स्वर भेल।
एहिमे स्पष्ठ अछि जे सा आ' प अचल अछि, शेष चल किंवा विकृत।
आब फेर कीबोर्ड पर आउ। 37 टा की बला कीबोर्ड

हम एहि हेतु कहने छानहुँ,किएक तँ 12, 12, 12 केर तीन सेट आ, अंतिम 37म तीव्र सां केर हेतु। सप्तक मे सातटा शुद्ध आ' पाँचटा विकृत मिला कय 12 टा भेल।
राम कातसँ 12 टा उँजरा आ' कारी की मंद्र सप्तक, बीच बला 12 टा की मध्य सप्तक आ, 25 सँ 36 धरि की तार सप्तक कहल जाइत अछि।

आरोह- नीचाँ सँ ऊँपर गेनाइ, जेना मंद्र सप्तकसँ मध्य सप्तक आ' मध्य सप्तकसँ तार सप्तक।
मंद्र सप्तकमे नीचाँ बिन्दु, मध्य सप्तक सामान्य आ' तार सप्तकमे ऊँपर बिन्दु देल जाइत अछि, यथा-
स़, ऱ,ग़,म़,प़,ध़,ऩ
सा,रे,ग,म,प,ध,नी सां,रें,गं,मं,पं,धं,निं
अवरोह- तारसँ मध्य आ' मध्यसँ मंद्र कें अवरोह कहल जाइत अछि।

वादी स्वर- जाहि स्वरक सभसँ बेशी प्रयोग रागमे होइत अछि। समवादी स्वर- जकर प्रयोग वादीक बाद सभसँ बेशी होइत अछि। अनुवादी स्वर- वादी आ' समवादी स्वरक बाद शेष स्वर। वर्ज्य स्वर- जाहि स्वरक प्रयोग कोनो विशेष रागमे नहि होइत अछि। पकड़- जाहि स्वरक समुदायसँ कोनो राग विशेषकें चिन्हैत छी।

1.पूर्वार्चिकमे क्रमसँ अग्नि, इन्द्र आ' सोम पवमानकें संबोधित गीत अछि। तदुपरान्त आरण्यक काण्ड आ' महानाम्नी आर्चिक अछि। आग्नेय, ऐन्द्र आ' पावमान पर्वकें

গ্রামগেযগণ আ' পূর্বার্চিকক শেষ ভাগকেঁ আরণ্যকগণ সেহো কহল জাগছ। সম্মিলিত রূপেঁ এক প্রকৃতিগণ কহল ছী। 2.উত্তরার্চিক: বিকৃতি আ' উত্তরগণ সেহো কহল ছী। গ্রামগেযগণ আ' আরণ্যকগণসঁ মংত্র চুনি কয ক্রমশঃ উহগণ আ' উহ্যগণ কহবৈছ- তদন্তর প্রত্যেকে গণ দশরাত্র, সংবসের, একহ, অহিন, প্রাযশ্চিত আ' ক্ষুদ্র পর্বমে বাঁটল জাগছ। পূর্বার্চিক মংত্রক নযকেঁ স্মরণ ক' উত্তরার্চিক কের দ্বিক,ত্রিক, আ' চতুষ্ঠক আদি (2,3, আ' 4 মংত্রক সমূহ)মে এহি নয সভক প্রযোগ হোগছ। অধিকাংশ ত্রিক আদি প্রথম মংত্র পূর্বার্চিক হোগত অছি, জকব নয পর পূরা সূক্ত(ত্রিক আদি) গাওল জাগছ। উত্তরার্চিক উহাগণ আ' উহ্যগণ প্রত্যেকে নযকেঁ তীন বের তীন প্রকারেঁ পঢ়ৈছ। বৈদিক কর্মকাণ্ডমে প্রস্তার, প্রস্তাতব দ্বারা, উদ্গীত উদগাতব দ্বারা, প্রতিঘার প্রতিহাতব দ্বারা, উপদ্রব পুনঃ উদগাতৃ দ্বারা আ' নিধান তীনূ দ্বারা মিলি কয গাওল জাগছ। প্রস্তারক পহিলে হিংকার (হিং,হুং,হং) তীনূ দ্বারা আ' ওঁ উদগাতৃ দ্বারা উদগীতক পহিলে গাওল জাগছ। ই পাঁচ ভক্তি ভেল।

হাথক মুদ্রা 1.1.ওঁঠা(প্রথম আঁগুর)-এক যব দূরী পব 2.2.ওঁঠা প্রথম আঁগুরকেঁ ছবৈত 3.3.ওঁঠা বীচ আঁগুরকেঁ ছবৈত 4.4. ওঁঠা চারিম আঁগুরকেঁ ছবৈত 5.5.ওঁঠা পাঁচম আঁগুরকেঁ ছবৈত
6.11. ছঠম ক্রুষ্ঠ ওঁঠা প্রথম আঁগুরসঁ দূ যব দূরী পব
7.6. সাতম অতিস্বার সামরেদ 8.7.অভিগীত ঋগ্বেদ

গ্রামগেযগান- গ্রাম আ' সার্বজনিক স্থল পব গাওল জাগত ছল। আরণ্যকগেযগান- বন আ' পবিত্র স্থানমে

गाओल जाएत छल।
ऊहगान- सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसर पर।
पूर्वार्चिकसँ संबंधित ग्रामगेयगान एहि विधिसँ। ऊह्यगान आकि रहस्यगान- वन आ' पवित्र स्थान पर गाओल जाएत अछि। पूर्वार्चिकक आवश्यक गानसँ संबंध। नारदीय शिक्षामे सामगानक संबंधमे निर्देश:- 1.स्वर-7 ग्राम-3 मूर्छना-21 तान-49
सात टा स्वर सा,रे,ग,म,प,ध,नि, आ' तीन टा ग्राम- मध्य,मन्द,तीव्र। 7*3=21 मूर्छन। सातू स्वरक परस्पर मिश्रण 7*7=49 तान।
ऋगवेदक प्रत्येक मंत्र गौतमक 2 सामगान(पर्वक) आ' काश्यपक 1 सामगान(पर्वक) कारण तीन मंत्रक बेरबेर भ' जाएत अछि। मैकडॉवेल इन्द्राग्नि,मित्रावरुणौ,इन्द्राविष्णु,अग्निषोमौ एहि सभकेँ युगलदेवता मानलन्हि अछि। रूद्रा युगलदेव अछि - विशेषण-विपर्यय।
वेदपाठ-
१.संहिता पाठ अछि शुद्ध रूपमे पाठ।
अ॒ग्निमी॑ळे पुरोहि॑तं
य॒ज्ञस्य॑ दे॒वमृत्विज॑म। होतार॑ रत्न॒ धातमम्।
२. पद पाठ- एहिमे प्रत्येक पदकेँ पृथक कए पढल जाएत अछि।
३.क्रमपाठ- एतय एकक बाद दोसर, फेर दोसर तखन तेसर, फेर तेसर तखन चतुर्थ। एना कए पाठ कएल जाएत अछि।
४. जटापाठ- एहिमे जौँ तीन टा पद क, ख, आ' ग अछि तखन पढ़बाक क्रम एहि रूपमे होयत। कख,खक,कख,खग,गख,खग। ५.घनपाठ-एहि मे उपरका

উঁদাহবণক খনুসাব নিম্ন ৰূপ হোযত- কখ,খক,কখগ,গখক,কখগ।
৬.মানা,৭.শিখা,+.বেখা,৯.ধ্বজ,১০.দল্ড,১১.বথ। খতিম খাঠকেঁ খণ্ঠ্যরিষ্বতি কহন জাগত খছি। সাম রিকাব সেহো 6 টা খছি, জে গানকেঁ ধ্যানমে বখৈত ঘটাওন, ৰঁঢ় াওন জা সকৈত খছি। 1.রিকাব- খগ্নকেঁ ওগ্নায। 2.রিগ্লেষণ- শৰ্ব্দ/পদকেঁ তোড়নাগ 3.রিকর্ষণ-স্বৰকেঁ খিঁচনাগু/খধিক মাত্রাক ৰঁবাৰঁব ৰঁজেনাগ। 4.খভ্যাস- ৰেঁব-ৰেঁব ৰঁজনাগ।
5.রিবাম- শৰ্ব্দকেঁ তোড়ি কয পদক মধ্যমে 'যতি'। 6.স্তাভ-খালাপ যোগ্য পদকেঁ জোড়ি নেৰঁ। কৌথুমীয শাখা 'হাউ' 'বাগ' জোড়ৈত ছথি। বাণানীয শাখা 'হাৰ্', 'বাযি' জোড়ৈত ছথি।
মাত্রিক ছন্দক প্রযোগ রেদমে নহি খছি, ৰবন্ বর্ণৰৃত্তক প্রযোগ খছি। ম্খ্য ছন্দ গাযত্রী, একব প্রযোগ সভসঁ ৰেঁশী খছি। তকব ৰাঁদ ত্রিষ্ঠুপ খা' জগতীক প্রযোগ খছি।
1. গাযত্রী- 8-8 কেব তীন পাদ।
2. ত্রিষ্ঠুপ- 11-11 কেব 4 পাদ।
3. জগতী- 12-12 কেব 4 পাদ।
4. উঁষ্ণিক- 8-8 কেব দূ তকব ৰাঁদ 12 বর্ণ-সংখ্যাক পাদ।
5. খনুষ্ঠুপ- 8-8 কেব চাবি পাদ। একব প্রযোগ রেদক খপেক্ষা সংস্কৃত সাহিত্যমে ৰেঁশী খছি।
6. ৰৃহতী- 8-8 কেব দূ খা' তকবা ৰাঁদ 12 খা' 8 মাত্রাক দূ পাদ।
7. পংক্তি- 8-8 কেব পাঁচ। প্রথম দূ পদক ৰাঁদ রিবাম খৰৈছ।

যদি থক্ষব পূবা নহি হোগত থছি, তঁ এক বা দূ থক্ষব নিম্ন প্রকাবেঁ ঘটৌ–বঁঢ় ৷ নেন জাগত থছি।
(থ) ববেণ্যম্ কেঁ ববেণিযম্ স্বঃ কেঁ স্বরঃ ।
(থা) গ্বণ বৃহ্মিকেঁ থনগ কএ নেন জাগত থছি।
'এ' কেঁ 'থ', 'গ' ।
'ও' কেঁ 'থ', 'ঙঁ' ।
'ঐ' কেঁ 'থ', 'থা' ।
'এ' 'ঔ' কেঁ 'থ', বা 'থা' থা' 'ও' ।
এহ্র প্রকাবেঁ নহি ভেনাসঁ থন্য বিবাডাদি নামসঁ একব নামকবণ হোগত থছি।
যথা– গাযত্রী(24), বিবাট্ (22), নিচৃত্(23), শ্বহ্মা(24),হ্মবিক্ (25), স্ববাট্(26) থাদি।

বৈদিক ঋষি স্বযংকেঁ থা' দেবতাকেঁ সেহো কবি কহৈত ছথি। সম্পূর্ণ বৈদিক সাহিত্য এহি কবি চেতনাক বাঙ্ময মূর্ত্তি থছি। ওতয থাধ্যামে চেতনা, থধিদৈবম্নে উঁত্তীর্ণ ভেন থছি, এবম্ ওকবা থাধিভূতিক ভাষামে ৰূপ দেন গেন থছি।

দেবনাগবীক থতিবিকত্ত সমস্ত উঁত্তবভাবতীয ভাষা নেপান থাঽ দক্ষিণমে (তমিনকেঁ ছোড়ি) সভ ভাষা বর্ণমানাক ৰূপমে স্বব থাঽ কচটৈতপ থাঽ য, ব ন ব, শ, স, হ কেব বর্ণমানাক উঁপযোগ কবৈত থছি। গ্বাণ্ড কেব হেত্ত সংস্কৃতমে দোসব বর্ণ ছৈক (ছান্দাগ্য একব উঁচাবণ নহি কবৈত ছথি হ্মদা রাজসনেযী খূব কবৈত ছথি–জেনা ছান্দাগ্য কহতাহ সভূমি তঁ রাজসনেযী কহতাহ সভূমীগ্বঙ), বৈদিক সংস্কৃতমে উঁদাত্ত, থনুদাত্ত

আ২ স্ববিত (ক্রমশঃ ক॑ ক॒ কঁ) উঁপযোগ তঁ মবাঠীমে ळ আ২ অঙ্ক ঽ ্ কেব সেহো প্রযোগ হোগত অছি। মৈথিলীমে ২ (রিকাবী বা অবগ্রহ) কেব প্রযোগ শস্কৃত জেকাঁ হোগত অছি আ২ আগ কাল্হি একব বঁদনামে ঠৌগপক স্ববিধানুসাবে আ’ (আ২ কেব বঁদনামে) এহন প্রযোগ সেহো হোগত অছি।

জেনা ফাবসীমে অনিফ বেঁ সে আ২ বোমনমে এ বী সী হোগত অছি তহিনা মোটা–মোটী সভ ভাবতীয ভাষামে নিপিক ভিন্নতক অছৈত বর্ণমানাক স্বৰূপ একে বও অছি।

বর্ণমানামে দূ প্রকাবক বর্ণ অছি– স্বব আ২ ব্যংজন। বর্ণক সংখ্যা অছি ৬৪ জাহিমে ২২ টা স্বব আ২ ৪২ টা ব্যঞ্জন অছি।

পহিনে স্ববক বর্ণন দৈত ছী– জাহি বর্ণক উঁচাবণমে দোসব বর্ণক উঁচাবণক অপেক্ষা নহি বহৈত অছি, সে ভেন স্বব।

স্ববক তীন টা ভেদ অছি– হ্রস্ব, দীর্ঘ আ২ প্লুত। জাহিমে এক মাত্রাক সময নাগয বাঁজযমে সে ভেন হ্রস্ব, জাহিমে দূ মাত্রা সময নাগন সে ভেন দীর্ঘ আ২ জাহিমে তীন মাত্রা সময নাগন সে ভেন প্লুত।

মূনভূত স্বব অছি– অ গ উঁ ঋ নৃ

পাণিনিসঁ পূর্বক আচার্য একবা সমানাক্ষব কহৈত ছনাহ।

দীর্ঘ মিশ্র স্বব অছি– এ ঐ ও ঔ

পাণিনিসঁ পূর্বক আচার্য একবা সন্ধ্যক্ষব কহৈত ছনাহ।

নৃ দীর্ঘ নহি হোগত অছি আ২ সন্ধ্যক্ষব হ্রস্ব নহি হোগত অছি।

অ গ উঁ ঋ এহি সভক হ্রস্ব, দীর্ঘ (আ ঙ্গ উঁ ঋৃ) আ২

प्लुत (आ३ इ३ उ३ ऋ३) सभ मिला कए १२ वर्ण भेल। लृ केर ह्रस्व आ प्लुत दू भेद अछि (लृ३) तँ २ टा ई भेल। ए ऐ ओ औ ई चारू दीर्घ मिश्रित स्वर अछि आ एहि चारूक प्लुत रूप सेहो (ए३ ऐ३ ओ३ औ३) होइत अछि, तँ ४ टा ई सेहो भेल। भऽ गेल सभटा मिला कए २२ टा स्वर।

एहि सभटा २२ स्वरक वैदिक रूप तीन तरहक होइत अछि, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।
ऊँच भाग जेना तालुसँ उत्पन्न अकारादि वर्ण उदात्त गुणक होइत अछि आ तेँ उदात्त कहल जाइत अछि।
नीचा भागसँ उत्पन्न स्वर अनुदात्त आ जाहि अकारादि स्वरक प्रथम भागक उच्चारण उदात्त आ दोसर भागक उच्चारण अनुदात्त रूपेँ होइत अछि से भेल स्वरित।
स्वरक दू प्रकार आर अछि, सानुनासिक जेना अँ आ निरनुनासिक जेना अ।
दत्तेन निर्वृत्तिः कूपो दात्तः। दत्त नाम्ना पुरुष द्वारा निर्माण- व्यास धारक उतरबारिया तटि पर खनबाओल इनार भेल दात्त। अञ् प्रत्यान्त भेलासँ 'दात्त' आद्युदात्त भेल, अण् प्रत्यायान्त होइत तँ प्रत्यय स्वरसँ अन्तोदात्त होइत। रूपमे भेद नहि भेलो पर स्वरमे भेद अछि। एहिसँ सिद्ध भेल जे सामान्य पुरुषक रक्षा सेहो शब्दक सस्वर उच्चारण करैत छलाह।
स्वरितकेँ दोसरो रूपमे बूझि सकैत छी- जेना एहिमे अन्तिम स्वरक तीव्रस्वरमे पुनरुच्चारण होइत अछि।
आबि व्यञ्जन पर आउ।

व्यञ्जन ४२ टा अछि।

क् ख् ग घ् ङ्
च् छ् ज् झ् ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण्
त् थ् द् ध् न्
प् फ् ब् भ् म्
य् र् ल् व्
श् ष् स्
ह्

य् व् ल् सानुनासिक सेहो होइत अछि, यँ वँ लँ आर निरनुनासिक।
एकर अतिरिक्त दू टा आर व्यञ्जन अछि- अनुस्वार आर विसर्जनीय वा विसर्ग।
ई दुनू टा स्वरक अनन्तर प्रयुक्त होइत अछि।
विसर्जनीय मूल वर्ण नहि अछि, वरन् स् वा र् केर विकार थीक। विसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आर किछु रूपभेदसँ दू प्रकारक अछि- जिह्वामूलीय आर उपध्मानीय। जिह्वामूलीय मात्र क आर ख सँ पूर्व प्रयुक्त होइत अछि, दोसर मात्र प आर फ सँ पूर्व।
अनुस्वार, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय आर उपध्मानीयकेँ अयोगवाह कहल जाइत अछि।
उपरोक्त वर्ण सभकेँ छोड़ि ४ टा आर वर्ण अछि, जकरा यम कहल गेल अछि।
कँ खँ गँ घँ (यथा- पलिक् क्नी, चख् ख्नतः, अग् ग्निः, घ् घ्नन्ति)
पञ्चम वर्ण आगाँ रहला पर पूर्व वर्ण सदृश जे वर्ण बीचमे उच्चारित होइत अछि से यम भेल।
यम सेहो अयोगवाह होइत अछि।

খ খা করস্কা হ (খসংযকত্ত) খাঽ রিসর্জনীয কের উঁচাবণ কণ্ঠমে হোগত খছি।
গ ঙা চরস্কা য শ কের উঁচাবণ তাল্বমে হোগত খছি।
ঋ ৠ টরস্কা ব ষ কের উঁচাবণ মূর্ধামে হোগত খছি।
নৃ তরব্গ ন স কের উঁচাবণ দাঁতসঁ হোগত খছি।
উঁ উঁু পরস্কা খাঽ উঁপধ্মানীয কের উঁচাবণ ঔষ্ঠসঁ হোগত খছি।
র কের উঁচাবণ উঁপবকা দাঁতসঁ খধব ওষ্ঠ কের সহাযতাসঁ হোগত খছি।
এ ঐ কের উঁচাবণ কণ্ঠ খাঽ তাল্বসঁ হোগত খছি।
ও ঔ কের উঁচাবণ কণ্ঠ খাঽ ওষ্ঠসঁ হোগত খছি।
য ব ন র খন্য ব্যঞ্জন জেকাঁ উঁচাবণমে জিহ্বাক খগ্রাদি ভাগ তাল্বাদি স্থানকেঁ পূর্ণতযা স্পর্শ নহি কবৈত খছি। শ্ ষ্ স্ হ্ জেকাঁ এহিমে তাল্ব খাদি স্থানসঁ ঘর্ষণ সেহো নহি হোগত খছি।
ক সঁ ম ধবি স্পর্শ(বা স্ফোটক কাবণ জিহ্বাক খগ্র দ্বাবা বাযু প্রবাহ বোকি কএ ছোড়ল জাগত খছি) বর্ণ ব সঁ র খন্তঃস্থ খাঽ ষ সঁ হ ঘর্ষক বর্ণ ভেল।
সভ বস্কাক পাঁচম বর্ণ খনুনাসিক কহবৈত খছি কাবণ খান স্থান সমান বহিতো একব সভক নাসিকামে সেহো উঁচাবণ হোগত খছি- উঁচাবণমে বাযু নাসিকা খাঽ মুঁহ বাটে বহাব হোগত খছি।
খনুস্বাব খাঽ যম কের উঁচাবণ মাত্র নাসিকামে হোগত খছি- খাঽ ঙা সভ নাসিক্য কহবৈত খছি- কাবণ এহি সভমে মুখদ্বাব বন্দ বহৈত খছি খাঽ নাসিকাসঁ বাযু বহাব হোগত খছি। খনুস্বাবক স্থান পব ন্ বা ম্ কের উঁচাবণ নহি হোযবাক চাহী।

जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर कण्ठक तालु आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आऽ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आऽ यैह गुंजित होइत पहुँचैत अछि कंठमे आऽ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भऽ पहुँचैत अछि श्वासमे आऽ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।
श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल 'अघोष' , आऽ नाद प्रकृतिक भेल 'घोषवान्'। जाहि वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि 'अल्पप्राण' आऽ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल 'महाप्राण'।
कचटतप केर पहिल, तेसर आऽ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आऽ दोसर आऽ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगहि कचटतप केर पहिल आऽ दोसर भेल अघोष आऽ तेसर, चारिम आऽ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आऽ ह भेल महाप्राण घोष। स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त, अनुदात्त आऽ स्वरित।

<u>बैतैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा</u>

सुभाषचन्द्र यादवजीक "बैतैत बिगड़ैत" कथा-संग्रहक सभ कथामे सँ अधिकांशमे ई भेटैत जे कथा खिस्सासँ

𑒬𑒻𑒪𑒲 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒟𑒲𑒧 𑒪𑒋 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒐𑒞𑒧 𑒏𑒩𑒱𑒞𑒯𑒱 𑒁𑒢𑓂𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒋𑒏𑒩 𑒦𑒰𑒭𑒰। 𑒥𑒪𑒔𑒢𑒧𑒰𑒏 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒍𑒯𑒱 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒏𑒟𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒞𑒋 𑒄 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒹𑒿 𑒄 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒱𑒭𑓂𑒚 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒮 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒠𑒹𑒬𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰-𑒣𑒱𑒯𑒰𑒢𑒲 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒣𑒰𑒙𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒮𑓂𑒫𑒦𑒰𑒭𑒖𑒲𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒲𑒧𑒱𑒞 𑒣𑒩𑒱𑒧𑒱𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒟𑒲𑒧 𑒪𑓄 𑒏𑒋 𑒔𑒪𑒥𑒰𑒏, 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒏 𑒬𑒱𑒪𑓂𑒣 𑒖𑒹 𑒐𑒰𑒿𑒙𑒲 𑒠𑒹𑒬𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑒩 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒮𑒿 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏 𑒋𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒁𑒮𑒲𑒧 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒮𑓀𑒑𑒹-𑒮𑓀𑒑 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰-𑒣𑒱𑒯𑒰𑒢𑒲𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒥𑒱 𑒮𑒏𑒪 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏𑒹𑒿 𑒄 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒢𑒱𑒩𑒰𑒬 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒞 𑒫𑒩𑒢𑓂 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒦𑒏 𑒩𑒳𑒔𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒭𑓂𑒏𑒩𑒝 𑒏𑒩𑒞।

𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒨𑒲 𑒧𑒰𑒢𑒏𑒲𑒏𑒩𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑- 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒌𑒕, 𑒁𑒕𑒱, 𑒁 𑒃 𑒕 । 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒏𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒏𑒲𑒏𑒩𑒝 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒋𑒯𑒱𑒣𑒩 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒩𑒯𑒋। 𑒖𑒹𑒢𑒰 “𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒲” 𑒏𑒹𑒿 “𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒩𑒯𑒲” 𑒪𑒱𑒐𑒲 𑒂 𑒤𑒹𑒩 𑒖𑒰𑒞𑒱 (𑒖𑒰 𑒃 𑒞) 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒢𑒢𑓂𑒮𑒱𑒋𑒬𑒢𑒏 𑒢𑒱𑒨𑒧 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒲 𑒞𑒹𑒯𑒢𑒹 𑒮𑒢 𑒌𑒕 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒼 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿-𑒣𑒳𑒞𑒩𑒰 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒋 𑒠𑒱𑒬𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒒𑒳𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒄 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒞𑒿 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒩 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒋 𑒂 “𑒕𑒻” 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒚𑒲𑒏 𑒂 “𑒕𑒻𑒏” 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 “𑒁𑒢𑓂𑒞𑒏 ’𑒏’ 𑒮𑒰𑒃𑒪𑒹𑒢𑓂𑒙 𑒁𑒕𑒱” 𑒮𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒢𑒢𑓂𑒮𑒱𑒋𑒬𑒢𑒏 𑒢𑒱𑒨𑒧 𑒥𑒢𑒋। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒖𑒪𑓂𑒠𑒲 𑒥𑒢𑒋 𑒂 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒑𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒨 𑒯𑒼𑒁𑒋 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒹𑒑𑒩𑒞𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 “𑒨” 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒋

रा "ए" एहिपर भवि जिनगी नड़ॅंाक समय नहि छै, जे ध्वनि सिद्धांत कहैत अछि से मानू, आ नहि तँ प्रोनन्सिएशनक नियम रॅनाउ। "नहि" लेल "नञि" लिखबॅ तँ बुझबॅामे अबैत अछि स्पदा लगँ (अन्तिका), नगं (एन.बी.टी.) आ नँग (साकेतानन्द - कानबाजिश्च दारूणा) मे सँ साकेतानन्दजी बॅना प्रयोग ध्वनि-विज्ञान सिद्धांतसँ बॅेशी समीचीन सिद्ध होइत अछि आ से विश्वास नहि होअए तँ ध्वनि प्रयोगशाला सभक मदति लिअ। (वैज्ञानिक आ मानक मैथिली वर्णमालाक ऑडियो फाइल विदेह आर्काइवक (http://www.videha.co.in/) विदेह ऑडियो लिंकपर डाउनलोड/श्रवण लेल उपलब्ध अछि।)
"बॅलैत बिगड़ैत" पोथीक ई एकटा विशेषता अछि जे सुभाषचन्द्र यादवजी अपन विशिष्ठ लेखन-शैलीक प्रयोग कएने छथि जे ध्वन्यात्मक अछि आ मानकीकरण सम्वादकेँ आगाँ लए जएबॅामे सक्षम अछि।

कथाक यात्रा- वैदिक आख्यान, जातक कथा, ईशप फेबॅल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत बहुत लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा बहिते अछि।
कथामे असफलताक सम्भावना उपन्यास-महाकाव्य-आख्यान सँ बॅेशी होइत अछि, कारण उपन्यास अछि "सोप ओपेरा" जे महिनाक-महिना आ सालक-साल धरि चलैत अछि आ सभ एपीसोडक अन्तमे एकटा बिन्दुपर आबि खतम होइत अछि। माने सभटा एपीसोडक उपन्यासमे उन्मत्तवि एपीसोड धरि तँ आशा बॅनिते अछि जे कथा एकटा मोड़ लेत आ अन्त धरि जे कथाक दिशा नहिए

ॅदनन तँ प्रवनका सभ्टा एपीसोड हिटै आ मात्र अन्तिम एपीसोड ह्न्ॅप। मुदा कथा एकव अन्वमति नहि दैत अछि। ओ एक एपीसोड ॅना बचना छी आ नीक तँ अूॅ नीक आ नहि तँ अवापे-अवाप।

कथा-गाथा सँ ॅढ़ि आगू जाग तँ आधुनिक कथा-गप्पक गतिहास उँन्नैसम शताब्दीक अन्तमे भेन। एकवा नघुकथा, कथा आ गप्पक रूप मानन गेन। ओना एहि तीनूक बीचक भेद सेहो अनारश्यक रूपसँ व्याख्यायित कएन गेन। बरीन्द्रनाथ ठाकुवसँ शुरू भेन ओ यात्रा भावतक एक कोनसँ दोसव कोन धबि स्वधावरवाद रूपी आन्दाननक पबिणामस्वरूप आगाँ ॅढ़न। असमियाक ॅेजॅरुआ, उँड़ि याक फकीव मोहन सेनापति, तेलुगुक अप्पाबाव, ॅंगनाक केदावनाथ ॅनर्जी ओ सभ गोटे कखनो नावीक प्रति समर्थनमे तँ कखनो समाजक सूदखोवक रिरुद्ध अॅैत गेनाह। नेपानी भाषामे "देवी को ॅनि" सूर्यकान्त ज्ञरानी द्वावा दसहवाक पश्ॅनि प्रथाक रिरुद्ध निखन गेन। कोनो कथा प्रेमक ॅंधनक मध्य जाति-धनक सीमाक रिरुद्ध तँ कोनो दनित समाजक स्थिति आ धार्मिक अंधरिश्वासक रिषयमे निखन गेन। आ ओ सभ कॅैत सर्रदा कथाक अन्त सुखद होगत छन सेहो नहि।
राद: साहित्: उँत्तब आधुनिक, अस्तित्ववरादी, मानरतारादी, ओ सभ रिचावधावा दर्शनशास्त्रक रिचावधावा थिक। पहिने दर्शनमे रिज्ञान, गतिहास, समाज-वाजनीति, अर्थशास्त्र, कना-रिज्ञान आ भाषा सम्मिनित बहैत छन। मुदा जेना-जेना रिज्ञान आ कनाक शाखा सभ रिशिष्टता प्राप्त कॅैत गेन, रिशेष कए रिज्ञान, तँ दर्शनमे गणित

आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स जे दुनियाँ भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छलाह, द्वन्दात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनओलन्हि। आग-कान्हिक "डिसकसन" वा द्वन्द जाहिमे पक्ष-विपक्ष, दुनू सम्मिलित अछि, दर्शनक (विशेष कए षडदर्शनक-माधवाचार्यक सर्वदर्शन संग्रह-द्रष्टव्य) खण्डन-मण्डन प्रणालीमे पहिनहिसँ विद्यमान छल।
से इतिहासक अन्तक घोषणा कएनिहार फ्रांसिस फुकियामा -जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा कएने छलाह- किछु दिन पहिने एहिसँ पलटि गेलाह। उत्तर-आधुनिकतावाद सेहो अपन प्रारम्भिक उत्साहक बाद ठमकि गेल अछि। अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण ई सभ संश्लेषणात्मक समीक्षा प्रणालीमे सम्मिलित भए अपन अस्तित्व बचेने अछि।
साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्दात्मक प्रणाली जेकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत।
आधुनिक कथा अछि की ? ई केहन होएबाक चाही ? एकर किछु उद्देश्य अछि आकि होएबाक चाही ? आ तकर निर्धारण कोना कएल जाए ?
कोनो कथाक आधार मनोविज्ञान सेहो होइत अछि। कथाक उद्देश्य समाजक आवश्यकताक अनुसार आ कथा यात्रामे परिवर्तन समाजमे भेल आ होइत परिवर्तनक अनुरूपे होएबाक चाही। सदा संगमे ओहि समाजक संस्कृतिसँ ई कथा स्वयमेव नियन्त्रित होइत अछि। आ

এহিমে ওহি সমাজক ঐতিহাসিক অস্তিত্ব সোঝাঁ অবৈত অছি।
জে হম ৰৈদিক আখ্যানক গপ কবী তঁ ও বাষ্ট্রক সংগ প্রেমকেঁ সোঝাঁ অনৈত অছি। আ সমাজক সংগ মিনি কএ বহনাগ সিখৰৈত অছি।
জাতক কথা নোক-ভাষাক প্রসাবক সংগ ৰৌদ্ধ-ধর্ম প্রসাবক গম্ভা সেহো বখৈত অছি।
মুস্লিম জগতক কথা জেনা ৰুমীক “মসনৰী” ফাবসী সাহিত্যক ৰিশিষ্ঠ গ্রন্থ অছি জে জ্ঞানক মহত্‌ৰ আ বাজ্যক উন্নতিক শিক্ষা দৈত অছি।
আজুক কথা এহি সভ ৰস্তুকেঁ সমেটৈত অছি আ একটা প্রৰুদ্ধ আ মানৰীয (!) সমাজক নির্মাণক দিস আগাঁ ৰঢ় ৈত অছি। আ জে সে নহি অছি তঁ ও ওকব উদ্দেশ্যমে সম্মিনিত হোএৰাক চাহী। আ তখনে কথাক ৰিশ্লেষণ আ সমানোচনা পাঠকীয ৰিৰশতা ৰনি সকত।
কম্যূনিস্‌ট শাসনক সমাপ্তি আ ৰর্নিনক দেৰাক খসৰাক ৰাদ ফ্রাংসিস ফুকিযামা ঘোষিত কএনন্হি জে ৰিচাবধাৰাক আপসী ঝগড় সঁ সৃজিত ইতিহাসক ও সমাপ্তি অছি আ আৰ মানৰক হিতক ৰিচাবধাবা মাত্র আগাঁ ৰঢ়ত। মুদা কিছু দিন পহিলহি ও এহি মতসঁ আপস ভঃ গেনাহ আ কহনন্হি জে সমাজক ভীতব আ বাষ্ট্রীযতাক মধ্য এখনো ৰহুত বাস ভিন্ন ৰিচাবধাবা ৰাঁচন অছি। তহিনা উত্তব আধুনিকতাবাদী ৰিচাবক জৈক্স দেবীদা ভাষাকেঁ ৰিখণ্ডিত কএ ও সিদ্ধ কএনন্হি জে ৰিখণ্ডিত ভাগ ঢেব বাস ৰিভিন্ন আধাবপব আশ্রিত অছি আ ৰিনা ওকবা ৰুঝনে ভাষাক অর্থ হম নহি নগা সকৈত ছী।
মনোৰিশ্লেষণ আ দ্বন্দাত্মক পদ্ধতি জেকাঁ ফুকিযামা আ দেবীদাক ৰিশ্লেষণ সেহো সংশ্লেষিত ভএ সমীক্ষাক নেন

स्थायी प्रतिमान बनल रहल।
स्वभाष चन्द्र यादवक कथा–संग्रह बनैत बिगड़ैत:
स्वतन्त्रताक बादक पीढ़ीक कथाकार छथि स्वभाषजी।
कथाक माध्यमसँ जीवनकेँ रूप दैत छथि। शिल्प आ
कथ्य दुनूसँ कथाकेँ अलंकृत कए कथाकेँ सार्थक बनबैत
छथि। अस्तित्वक लेल सामान्य लोकक संघर्ष तँ एहि
स्थितिमे हिनकर कथा सभमे भेटैत स्वाभाविके। कएक
दशक पूर्व लिखल हिनक कथा "काठक बनल लोक" क
बदबिया सागते संयोग हँसैत रहए। एहि कथा संग्रहक
सभ पात्र एहने सन विशेषता लेने अछि। हॉस्पीटलमे
कनैत–कनैत स्वतनाक बाद उठि कए कोनो पात्र फेरसँ
कानए लगैत छथि तँ कोनो पात्र प्रेममे पड़ल छथि।
किनकोमे बिजनेस सेन्स छन्हि तँ हविरंशी सन पात्र
सेहो छथि जे उपकारक बदला सिस्टम फॉल्टक कारण
अपकार कए जाइत छथि। आब "बनैत बिगड़ैत"
कथा संग्रहक कथा सभपर गप्पकी लजवि दौगाबी।
कनियाँ–पुतरा- एहि कथामे बस्तामे एकटा बचिया
लेखकक पएर छानि फेर ठेहुनपर माथ राखि निश्चिन्त
अछि, जेना माएक ठेहुनपर माथ रखने होअए। लेखो
सन कोनो कड़गर चीज लेखकसँ टैकरैनन्हि। ओ
लड़कीक छाती छिऐ। लड़की निरिकार रहए जेना बाप–
दादा वा भाए बहिन सङ्ग सटल हो। लेखक सोचैत
छथि, ओ सीता बनत की द्रौपदी। रावन आ दुर्योधनक
आशंका लेखककेँ घेर लैत छन्हि।
कनियाँ–पुतरा पढ़बाक बाद रैह सड़कक चौरंगिया अछि
आ रैह बेड–लागटैपर गाड़ी चलबैत–रोकैत कान
बानक–बानिका सभ देखबामे अबैत छथि। क्षदा आब
दृष्टिमे परिवर्तन भऽ जाइत अछि। कारक शीसा

পোছি পাগ মঁগনিহাব রাঁনক–রাঁনিকাকেঁ পাগ–দেনে রা রিন দেনে, হ্মদা রিন্ব সোচনে খাগাঁ রঁঢ়ি জাএরঁনা দৃষ্ঠিক পবিরর্তন। কনিযাঁ–প্বতবা পঢ়রাঁক রাঁদ কী হ্নকব দৃষ্ঠিমে কোনো পবিরর্তন নহি হোএতহ্নি ? রাঁনক তঁ পৈঘ ভএ চোবি কবত রা কোনো ড্রগ কার্টেনক সভসঁ নিচ্নকা সীঢ়ী রঁনত হ্মদা রাঁনিকা ? ও সীতা রঁনত খাকি দ্রৌপদী খাকি খাম্রপানী। জে সামাজিক সংস্থা, হ্যূমন বাগর্টস আঁবগেনাগজেশন কোনো প্রেমীক রিজনীক খাম্হপব চঢ়ি প্রাণ দেরাঁক ধমকীপব নীচাঁ জান পসাবি কহ টী.রী.কৈমবাপব খপন খা খপন সংস্থাক নাম প্রচাবিত কবৈত ছথি ও এহি কথাকেঁ পঢ়নাক রাঁদ ওহি প্ববাতন দৃষ্ঠিসঁ কাজ কএ সকতাহ ? ও সবকাব জে কোনো হ◌ॉস্পীটেনক নাম রঁদনি কএ জযপ্রকাশ নাবাযণক নামপব কবৈত খছি রা হার্ডিগ পার্কক নাম রীব ফঁখব সিংহক নামপব কএ খপন কর্ত্তর্ব্যক গতিশ্রী মানি নৈত খছি ও সমস্যাক জড়ি ধবি পহুঁচি নর পার্ক খা নর হ◌ॉস্পীটেন রঁনা কএ জযপ্রকাশ নাবাযণ খা রীব ফঁখব সিংহক নামপব কবত খাকি দোসবক কএন কাজমে "মেড রাঁগ মী" কেব স্টাম্প নগাওত ? ওা সংস্থা সভ খাগ ধবি মেহনতিসঁ রঁচৈত খএরাঁক খা সবন উঁপায তকরাঁক প্রবৃত্তিপব বোক নহি নগাওত ?

খস্ববক্ষিত– ট্রেনসঁ উঁতবনাক রাঁদ ঘবক ২০ মিনটক বস্তাক বাতি জতেক খস্ববক্ষিত ভহ গেন খছি তকব সচিত্র রর্ণন ওা কথা কবৈত খছি। পহিনে তঁ এহন নহি বহৈক– ওা খছি নোকক মানসিক খরস্থা। হ্মদা এহি তবহক সমস্যা দিস ককবো ধ্যান কর্ণাঁ ছৈ। পৈঘ–পৈঘ সমস্যা, উঁদাবীকবণ খান কতেক রিষযপব মীডিখাক ধ্যান ছৈ। চৌক–চৌবাহাক এহি তবহক সমস্যাপব নর

दृष्टि खरैत अछि, एहिमे स्टेशनसँ घरक बीचक दूरी बातिक अन्हारमे पहाड़ सन भऽ जाइत अछि। प्रदेशक तत्कालीन कानून-व्यवस्थापर ई एक तरहक टिप्पणी अछि।

एकाकी- एहि कथामे फ्लेसर हॉस्पीटलमे छथि। हॉस्पीटलक सचित्र विवरण भेल अछि। ओतए एकटा स्त्री पतिक मृत्युक बाद कनैत-कनैत प्रायः स्वति गेलि आ फेर निन्न टूटलापर कानए लागलि। एना होइत अछि। कथाकार मानव जीवनक एकटा सत्ता दिस इशारा दैत आ हॉस्पीटलक बात-व्यवस्थापर टिप्पणी देना भऽ कए नहि वर्ण जीवन्तता देखा कए रहैत छथि।

ओ लड़की- एहि कथामे हॉस्टलक लड़का-लड़कीक जीवनक बीच नवीन नामक युवक एकटा लड़कीक हाथमे ऍंठ खानी कप, जे ओहि लड़कीक आ ओकर प्रेमीक अछि, देखैत अछि। लड़की नवीनकेँ पुछैत छै जे ओ केम्हर जा रहल अछि। नवीनकेँ होइत छै जे ओ ओकरा अपनासँ दूर बुझि कप फेंकबाक लेल पुछलक। नवीन ओकरा मना कऽ दैत अछि। विचार सभ ओकर मोनमे घुरमैत रहैत छै। ई कथा एकटा छोट घटनापर आधारित अछि...जे ओ हमरा दूर बुझि चाहक कप फेकबाक लेल कहलक ? आ ओ दृढ़तासँ नहि कहि आगाँ बढ़ि जाइत अछि। एकाकी जेकाँ ई कथा सेहो मनोवैज्ञानिक विश्लेषणपर आधारित अछि।

एकटा प्रेम कथा- पहिने जकरा घरमे फोन रहैत छल तकरा घरमे दोसराक फोन अबैत रहैत छल, जे एकरा तँ ओकरा बजा दिअ। लेखकक घरमे फोन छलन्हि आ ओ एकटा प्रेमीक प्रेमिकाक फोन अएलापर,

ওকব প্রেমীকেঁ ৰজৰৈত বহৈত ছথি। প্রেমী মোৰাগন কীনি নৈত খছি সে হোন খাএৰ ৰন্দ ভ২ জাগত খছি। হ্মদা প্রেমী দ্বাবা নম্লব ৰদনি নেনাপব প্রেমিকাক হোন হেবসঁ নেখকক ঘবপব খৰৈত খছি। প্রেমিকা, প্রেমীক মমিযৌত ৰহিনক সখী বিত্ত ছথি খা নেখক ওকব সহাযতাক নেন চিন্তিত ভ২ জাগত ছথি। এহি কথামে প্রেমী-প্রেমিকা, মোৰাগন খা হোন ঔ সভ নব যুগক সংগ নব কথামে সেহো স্বাভাবিক ৰূপেঁ খৰৈত খছি।

টৌগঠৈন কথা খছি ৰনৈত-ৰিগড়ৈত। তীন টৌ নামিত পাত্র। মানা, ওকব পতি সত্তা খা পোতী হ্মনিযাঁ। গাম-ঘবক জে সাস-পুতোহুক গপ ছৈ, সেহন্তা বহি গেন জে কহিযো নহেনোক ৰাদ খাগ নেন পুছিতএ, এহন সন। হ্মদা সৈহ ৰেটৌ-পুতোহু জখন ৰাহব চনি জাগত ছথি তঁ ৰৈহ সাস্ব কাব কৌখাক টৌহিপব চিন্তিত হোমএ নগৈত ছথি। মাগগ্রেশনক ৰাদক গামক যথার্থকেঁ চিত্রিত কবৈত খছি ঔ কথা। সত্তাক সংগ কৌখা সেহো এক দিন ৰিনা জাএত খা হ্মনিযাঁ কৌখা খা দাদা দুনূকেঁ তকৈত বহত। প্ররাসীক কথা, ৰেটৌ-পুতোহুক খা পোতীক কথা, সাস্ব-পুতোহুক ঝগড় । খা প্রেম !

খপন-খপন দুঃখ কথামে পনৌ, খপন খরহেনেনাক স্থিতিমে, ধীযা-পুতাকেঁ সবাপৈত ছথি। বাতিমে ধীযা-পুতাক খেনাগ, খা নেৰা উঁত্তব ভনসাঘবক তানা ৰন্দ বহৰাক স্থিতিমে পনৌক ভূখন বহৰ খা পবিণামস্বৰূপ পতিক হোঁহকক স্ববসঁ হ্মপিত হোএৰ স্বাভাবিক। সভক খপন সংসাব ছৈ। নোক ৰুনৈএ জে ওকবে সংসাবক স্বখ খা দুঃখ মাত্র সম্পূর্ণ ছৈ হ্মদা সে নহি খছি। সভক খপন স্বখ-দুঃখ ছৈ, খপন খাশা খা খাকাংক্ষা ছৈ।

কথাকাব ওহন সন্বকেঁ উদ্ঘাটিত কবৈত ছথি, জে হিনকব অন্বভবক অঁতস্মাত অবৈঁত ছন্হি। আমোন্বভূতি পবিবেশ স্বতংত্র কোনা ভএ সকত আ সে স্বভাষ চন্দ্র যাদরজীক সভ কথামে সোন্না অবৈঁত অছি।
আতংক কথামে কথাকাবকেঁ প্বান সংগী হবিবংশসঁ কার্যানযমে ভেঁট হোগত ছন্হি। নেখকক দাখিন- খাবিজ বঁনা কাজ এহি নহ কহ নহি ভেনন্হি জে হবিবংশক স্থানান্তবণক পশ্চাত্ নে ক্যা হিনকাসঁ ঘূস নেনক আ তাহি দ্বাবে কাজো নহি কেনক। হবিবংশক বঁগেবঁানী ঘূসক অনেব পাগক কাবণ ছন সে দোসব কিএক অপন পাগ ছোড়ত ? নেখক আতংকিত ছথি। কার্যানযক পবিবেশ, ভ্রষ্ঠাচাব আ এক গোটকৈ স্থানাংতবণসঁ বঁদনৈত সামাজিক সম্বন্ধ ওা সভ এতএ ব্যক্ত ভেন অছি। আগ কান্হি হম আকি অহাঁ বঁন্াকিমে বা সচিবানযমে কোনো কাজ নেন জাগত ছী, তঁ যৈহ নে স্বনএ পড়ৈত অছি, জে পাগ জে মাঁগত সে দএ দেবৈঁক আ তখন কোনো দিক্কত হোঅএ তঁ কহবঁ ! আ পাগক বঁদনা ককবো নাম বা পৈববী নএ গেনহুঁ তঁ কর্মচাবী নে পাগযে নেত আ নহিযে অহাঁক কাজ হোএত।
একটা অন্ত কথামে সম্ববক মূল্পব নেখকক সাঢ় কেশ কটৈনে ছথি আ নেখক নহি, এহিপব কৈক তবহক গপ হোগত অছি। সাঢ় কেশ কটা কহ নিশ্চিন্ত ছথি। ওা জে সাঁস্কৃতিক সিম্বানিজম আএন অছি, জে পকড় া গেন সে চোব আ খবাপ কাজ কেনিহাব, জে নহি পকড় াএন সে আদর্শবাদী। পূবা-পূবী তঁ নহি, ক্দা অদ্ধ কথামে এহনে আস্থা জন্ম নৈত অছি আ টুটি জাগত অছি। হবিযাণামে বাঁপো মবনাপব নোক কেশ নহি কটৈবৈঁত অছি, তঁ কী ওকব দ্ঃখমে কোনো কমী

বহৈত ছৈ তেঁ ? পঁজাবঁক মহিলা এক বঁবখক বাঁদ নে সিন্দূব নগবৈঁত ছথি আ নে চূড় ী পহিবৈত ছথি ক্ষদা পহিন বঁবখ কান্হ ধবি চূড় ী ভবন বহৈত ছন্হি, তঁ কী রিযাহেক পহিন বঁবখক বাঁদ হ্নকব পতি–প্রেমমে কোনো ঘটঁতী আরি জাগত ছন্হি ?
কবাঁছ কথা মে চম্পীবঁনাক নেখক নগ আএবঁ, জাঁঘপব হাথ বাখবঁ। খভিজাহ সংস্কাবক নোক নগ বৈঁসন বহবাঁক কাবণসঁ নেখক দ্বাবা ওকব হাথ হটৌএবঁ । চম্পীবঁনা দ্বাবা ঙা গপ বাঁজবঁ জে ছখন দেহকেঁ ছূনামে কোন সংকোচ। জেনা চম্পীবনা নেখককেঁ বুঁঝাগয বহন্হি জে হ্নকা ঘবতী বুঁঝি বহন ছনন্হি। নেখককেঁ নগৈত ছন্হি জে ও স্ত্রী ছথি আ চম্পীবঁনা ওকব প্ববান যাব। ঠাম–ক্ষঠাম আ সময–ক্ষসমযক মহীন সমন্ধ চম্পীবনাকেঁ নহি ছগ, নহি তঁ নেখক ওতেক গবমীযোমে চম্পী কবা নৈতএ। চম্পীবনাক দীনতাপব খফসোচ ভেনন্হি ক্ষদা ওকব শী–গ–গ কেঁ মোন পাড়ৈত বিহঞ্চা সেহো। ফ্রাযডক মনোবিশ্লেষণক বঁড্ড খানোচনা ভেন জে ও সেক্সকেঁ কেন্দ্রমে বাখি গপ কবৈত ছথি। ক্ষদা খন্বভবসঁ ঙা গপ সোঝাঁ খবৈঁত খছি জে সেক্সসঁ জতেক দূবী বঁনাএবঁ, জতেক একবা বাতনাপ–কথা–সাহিত্যসঁ দূব বাখবঁ, ওকব খাক্রমণ ততেক তীব্র হোএত।
কাববাঁব মে নেখকক ভেঁটৈ মিস্টব বর্মা, সিন্হা আ দূ টৌ খাব গোটৈসঁ হোগত খছি। বাঁব মে সিন্হা দোস্তী আ বিজনেসকেঁ ফবাক কহৈত দূ টৌ খিস্সা স্বনবৈঁত খছি। সভ চীজক মোন খছি, এহিপব একটৌ দোস্তক বাগফ নেন টী.বী. কিনবাঁক বাঁদ ফ্রিজক ডিমান্ড খএবাঁক গপ বীচেমে খতম ভহ জাগত খছি। দোসব খিস্সামে একটৌ স্ত্রী পতিক জান বঁচবঁএ নেন ডাক্টৈবক ফীস

দেৰাঁক নেন পূর্ব প্রেমী নগ জাগত খছি। পূর্ব প্রেমী পাগ দেৰাঁক ৰঁদনামে ওকবা সংগে বাতি ৰিতৰঁএ নেন কহৈত ছৈ। সিন্ধা এহি কথামে ককবো গনতী নহি মানৈত ছথি, ড॰ক্টৈব ৰিনা পাগ নেনে কিএক গনাজ কবত, পূর্ব প্রেমী মঁগনীমে পাগ কিএক দেত খা ও স্ত্রী জে পূর্ব প্রেমী সংগ বাতি নহি ৰিতাওত, তঁ ওকব পতি মবি জএতৈক।

খাৰঁ ৰাঁবসঁ নেখক নিকনৈত ছথি তঁ দবৰাঁনক সনাম মাবনাপব খছুমে পৈসাক ঠৈনক স্বনাগ পড়এ নগৈত ছন্হি। প্রাচীন মূন্য, দোস্তী-যাবী খা খাদর্শিক ঠূঠৈৰাঁক স্থিতি একটা একাকীপনক খন্বভব কবৈত খছি।

ক্ষশতী মে সেহো হ্রাযড সোঝাঁ খৰৈত ছথি, কথাক প্রাবম্ভ ন্বংগীপবক স্বখাএন কড়গব ভেন দাগসঁ শ্বৰু হোগত খছি। ক্ষদা ত্তবক্ত স্পষ্ঠ হোগত খছি, জে ও সে দাগ নহি খছি, ৰবন ঘাৰক দাগ খছি। ফেব হাটৈক ক্ষশতীমে গামক সমস্যাক নিপটাবা, হেন্থে সেন্টৈবক ৰন্দ বহৰ, ওতএ ওংটাক চোবিক চবচা খৰৈত খছি। ছোটৈ ভাগ কোনো গনাজক ধ্রমমে এনোপৈথীসঁ হটি কএ হোম্যাপৈথীপব ৰিশ্বাস কবএ নগৈত ছথি, এহি গপক চবচা খাএন খছি। নোক সভক ঘাৰক সমাচাব প্ছৰাঁ নঃ খএনাগ খা নেখক দ্বাবা সভকেঁ ৰিস্তৃত ৰিৰবণ কহি স্বনওনাগ ক্ষদা উঁমবিমে কম ৰযসক কৈক গোটেকেঁ টাবি দেনাগ, ওা সভ ধ্রম একটা ৰাতাৰবণক নির্মাণ কবৈত খছি।

কৈনবী খাগনৈন্ডক নাবেন কথামে স্বভাষ খা উঁপিযা কথাক চবিত্র ছথি। এতএ একটা ৰিম্ব্র খছি- জেনা নির্ণয কোসীক ধসনা জকাঁ। মমিযৌত ভাগক চিণ্ঠী, কটাবি দেনে নাহপব জএৰাঁক, গেকুখা পানিক ধাবমে

আএর্, নাহক ছাঁটপব উঁতাবর্, ছাঁটক র্বাদো র্বহুত দূব ধবি জাঁঘ ভবি পানিক বহর্। দীপন র্বান্হপব সাগকিনকেঁ ঠেলৈত দেখি ক্যা কহৈত ছন্হি– “সাগকিন সভবাবিমে দেনক–এ ? কনে র্বড়দ জকাঁ টিটকাব দিযৌক”। দীদী–পীসা অহিঠাম এহি গপক চবচা স্বননন্হি, জে কোটক খাতিব হুনকব র্বেটীক রিরাহ দূ দিন রুকি গেন ছনন্হি আ নাগো জে র্বেসী পঢ়নে নোক র্বতাহ ভঽ জাগত অছি। স্বভাষ চাহিযো কঽ দূ সএ টাকা নহি মাঁগি পর্বৈত ছথি, দীদীক ব্যরহাব অস্পষ্ট ছন্হি, স্বভাষ আশ্বস্ত নহি ছথি আ ঘুবি জাগত ছথি।

হুঞ্ঝা কথামে নেখককেঁ অখিনন ভেটৈত ছন্হি। শ্রীনতাসঁ ও অপন ভেঁটক রিরবণ কহি স্বনর্বৈত অছি। পাঁচম দিন ঘুবনাক র্বাদ ট্রেনমে ও নহি ভেটৈনীহ। আর্ব অখিনন কী কবত, রিশাখাপত্তনম আ রিজযরাড়াক র্বীচক বস্তামে চক্কব কাটৈত আকি স্মৃতিক সংগ দিন কাটৈত।

ছোট–ছোট ভারনামেক ঘটনাক রিশ্লেষণ অছি কথা “কৈনবী আগনৈন্ডক নাবেন” আ “হুঞ্ঝা”।

দানা কথামে মোহন গন্টবরূ নেন গেন অছি, ওতএ সদ্বদয চপবাসী সূচিত কবৈত ছৈ জে র্বাহবীকেঁ নহি নৈত ছৈ, পী.এচ.ডী. বহিতএ তঁ কোনো র্বাত বহিতএ। মোহনকেঁ সভ চীজ র্বীমাব আ উঁদাস নগৈত বহএ। ফুদ্দী আ মৈনা পারবোটীক টুকড়াপব চী–চী কবৈত ঝপটৈত বহএ। প্রতিযোগী পবীক্ষাক সাক্ষাকোবমে র্বাহবী আ নোকন কেব জে সংকল্পনা আএন অছি তকব সম্বেদনামেক র্বর্ণন ভেন অছি।

দৃষ্টি কথামে পঢ়াগ খতম ভেনাক র্বাদ নোকবীক খোজ, গামমে নোকসভক তীক্ষ্ণ কটাক্ষ। ফেব দক্ষিণ

भावतीय पत्रकावक प्रेवणासँ कनियाँक विबोधक बाँवजूद गाममे लेखकक खेतीमे लागवँ। ओ सभ गप एकटा सामान्य कथ्य बहानाक बाँदो ठाम-ठाम सामाजिक सत्य उद्घाटित कवैत अछि। एतए गामक लोकक व्रूटीचावी अछि, जे काजक अभावमे खाली समय बेशी बहानाक कावण अवैत अछि। संगमे आग-कान्तिक स्त्रीक शहवी जीवन जीबाँक आकांक्षा सेहो प्रदर्शित कवैत अछि।
नदी कथामे कथ्य कथाक संगे चलैत अछि आ खतम भए जाएत अछि। गगनदेवक घवपव विहावी आएल छै। शहवमे ओकवा एक सान वहबाँक छै। गगनदेवकेँ ओकवा संग मकान खोजबाँक क्रममे एकटा लड़कीसँ भेँट होएत छै। ओकवा छोड़ि आगाँ बढ़ल तँ ओ बूझलाक बाँदो जे आबँ ओकवासँ फेव भेँट नहि हेतए ओ उल्लास आ प्रेमक अनुभूतिसँ भवि गेल।
पवलय बाँतिक कथा थिक, कोसीक कथा कहल गेल अछि एतए। बौकी बूलछैकक गन्तजावीमे अछि। क्षुदा धावमे पानि बढ़ि वहल छै। कोशीक बाँढ़ि बढ़ल आवि वहल छै आ एम्हव माएक बद्द-दस्तसँ हाल-बेहाल छै। मान-जान भूखसँ डिकवैत वहै। बामचवनक घवमे अन्नपानि बेशी छै से ओ सभकेँ नाहक गन्तजाम लेल कहैत छै। बौकूक घवसँ कटैनियाँ दूव वहै। मृत्यु आ विनाशे बौकूकेँ कठोव बना देलकैक, मोह तोड़ि देलकैक। क्षुदा बवबाद भकि गेलैक। बौकू चीज सभकेँ चिन्हबाँक आ स्मवण कवबाँक प्रयत्ने कवए लागल।
बाँत कथामे सेहो कथाकाव अपन कथानककेँ बाँटे चलिते ताकि लैत छथि आ शिल्पसँ ओकवा आगाँ बढ़बैत छथि। नेवों दोकानपव नेवोवना आ एकटा लोकक

ষীচমে ষ্হস স্বনৈত নেখক ষীচমে কূদি পড়ৈত ছথি। নেষ্টোরনাসঁ এক গোটে খপন ছত্তা মাঁগি বহন খছি জে ও নীচাঁ বখনে বহএ। দ্খক গপ, নেখকক খন্বসাব, ষ্ৰেশী দিন ধবি নোককেঁ মোন বহৈত ছৈ।
বংভা কথামে প্বরুষ–স্ত্রীক ষীচক ষ্দনৈত সম্বন্ধক তীব্র গতিসঁ বর্ণন ভেন খছি। প্বরুষ যারত স্ত্রীসঁ দূব বহৈত খছি তঁ সভ ওকবা মেনকা খা বম্ভা দেখাগ পড়ৈত ছৈ। ক্ষদা জে সম্বাদক প্রাবম্ভ হোগত খছি তঁ ষাদমে নেখক কেঁ নগৈত ছন্হি জে ও ষ্ৰেষ্টীযে ছী। বস্তামে এক স্ত্রী খষ্ৰৈত খছি। নেখক সোচৈত ছথি জে ও কে ছী, বম্ভা, মেনকা খাকি...। ওকবা সংগ ষ্ৰেষ্টা ছৈ, ওতেক স্বন্নব নহি, কাবণ একব রব স্বন্দব নহি হোএতৈক। ও গপশপমে কখনো নেখককেঁ সস্বব জকাঁ, কখনো খপনাকেঁ হ্নকব ষ্ৰেষ্টী ত্তন্য কহৈত খছি। পহিনে নেখককেঁ খবাপ নগনন্হি। ক্ষদা ষাদমে নেখককেঁ নীক নগনন্হি। ক্ষদা খন্তমে ওকব পএব ছূষ্এ নেন ঝ্কর ক্ষদা ষ্িন ছূনে সোম্ম ভ২ জাএর্ নহি ষ্ুন্নিমে খএনন্হি।
হমব গাম কথামে নেখকক গামক বস্তা, কষ্টনিযাঁ সঁ মেনাহী গামক নোকক ছিড়া খাএর্ খা ষান্হক ষীচমে খহ্বিযা কাষ্টৈত নোকক বর্ণন খছি। কোসিকন্হাক নোক– জানরবক সমান, জানরবক হানতমে। কষ্টনিযাঁমে নেখকক ঘব কষ্টি গেনন্হি সে ও নথ্নিযাঁ এহিঠাম টিকৈত ছথি। মছষ্াহি খা চিড়ৈ ষ্মারি২ নেন নথ্নী জোগাব কবৈত খছি। জমীনক ঝগড়া ছন্হি, এক হিস্সেদাবক জমীন ধাবমে ডূমন ছৈ সে ও নেখকক গহূমরনা খেত হড়পএ চাহৈত খছি। শেন খা স্ত্রীক (!) পাছূ নোক ষ্ৰেহান খছি।
স্ত্রীক পাছূ ষ্িন কাবণ নেখক পড়া গেন ছথি জেনা

रिष्णु शर्मा पंचतंत्रमे कथा कहैत–कहैत शूद्र आ महिलाक पाछाँ पड़ि जाइत छथि।
यात्रा सभ कमलक घूर लग कपक खत्तारमे रैबा–रैबी चाह पिबैत छथि, फसिल कटि कऽ सिरननक एतए चलि जाइ–ए। मौआ, काम, पछैबक जंगल जखन बहए, चिड़ै रहै आरैए, आरै कम खरैत अछि। खढ़ि या, हबिन, माछ, काछ, डोका सभ खतम भऽ बहल छै–जीरनक साधन दुर्लभ भऽ गेल अछि। साँझमे जमीनक पंचैती होइत अछि। सत्ताक रकड़ी मबि गेलैक, प्रतोत् एकब कावण सास्त्रक सबापरै कहैत अछि। सास्त्र एकब कावण रनि गछलोपब पाठी सभकेँ रैचरै कहैत छथि। सत्ताक रैठीक जीरनक डँभावकेँ लेखक प्रकृष सम्पर्कक साक्षी कहैत छथि आ सकावण फेबसँ महिलाक पाछाँ पड़ि जाइत छथि, कावण ई धावणा लोकमे छै। सत्ताक रैठी एखन सास्त्रब नहि रसैत छै। स्वकल बामक एहिठाम खाइत कान लेखककेँ संकोच भेलन्हि, जकबासँ डँरबरौक लेल ओ रजनाह– आइ तोबा जाति रना लेलिखह। कोसी सभ भेदभावकेँ पाटि देलक, डोम, चमाव, मुसहब, दुसाध, तेली, यादव सभ एके कलसँ पानि भरैत अछि। एके पटियापब रैसैत अछि।
ककबा लेल कथा लिखी ? वा कही ? कथाक राद: जिनका रिषयमे लिखरै से तँ पढ़ताह नहि। कथा पढ़ि लोक प्रबुद्ध भऽ जाएत ? गीताक सम्पत खा कए झूठ रजनिहाबक संख्या कम नहि। तेँ की एहन कसौटीपब बचित कथाक महत्व कम भए जाएत ? सभ प्रबुद्ध नहि होएताह तँ स्वस्थ मनोरंजन तँ प्राप्त कऽ सकताह। आ जे एकोटा व्यक्ति कथा पढ़ि ओहि

দিশামে সোচত তঁ কথাক সার্থকতা সিদ্ধ হোএত। আ জকরা নেন বচিত অছি ও কথা জে ও নহি, তঁ ওকর ওহি পরিস্থিতিমে হস্তক্ষেপ করবাঁমে সক্ষম ব্যক্তি তঁ পঢ়তাহ। আ জা ও বহত তাধরি এহি তরহক কথা বচিত কএল জাএত বহত।
আ জে সমাজ বঁদলত তঁ সামাজিক মূল্য সনাতন বহত ? প্রগতিশীল কথামে অন্তরক পুনর্নির্মাণ করবঁ, পরিবর্তনশীল সমাজক নেন, জাহিসঁ প্রাগৃতিক আ সামাজিক যথার্থক বীচ সমাযোজন হোঅএ। আকি এহি পরিবর্তনশীল সমযকেঁ স্থাযিত্ব দেবাঁ নেন পবম্পবাক স্থাযী আ মূল তত্ত্বপর আধারিত কথাক আরশ্যকতা অছি ? ব্যক্তি-হিত আ সমাজ-হিতমে দ্বৈধ অছি আ দুনূ পবস্পব বিরোধী অছি। এহিমে সংযোজন আরশ্যক। বিশ্ব দৃষ্টি আরশ্যক। কথা মাত্র রিচাবক উঁপেক্তি নহি অছি জে বোশনাগসঁ কাগতপব জেনা-তেনা উঁতাবি দেনিযৈক। ও সামাজিক-ঐতিহাসিক দশাসঁ নির্দিশিত হোগত অছি। তঁ কথা আদর্শরাদী হোঅএ, প্রগৃতিরাদী হোঅএ রা যথার্থরাদী হোঅএ। আকি এহিমে সঁ মানরতারাদী, সামাজিকতারাদী রা অন্তরকেঁ মহত্ব দেমএরঁনা জ্ঞানেন্দ্রিয-যথার্থরাদী হোঅএ ? আ নহি তঁ কথা প্রযোজনমূলক হোঅএ। এহিমে উঁপযোগিতারাদ, প্রযোগরাদ, ব্যরহাবরাদ, কাবণরাদ, অর্থক্রিযারাদ আ ফলরাদ সভ সম্মিলিত অছি। ও সভসঁ আধুনিক দৃষ্টিকোণ অছি। অপনাকেঁ অভিব্যক্ত কএনাগ মানরীয স্বভার অছি। ক্ষদা ও সামাজিক নিঅমমে সীমিত ভ২ জাগত অছি। পরিস্থিতিসঁ প্রভারিত ভ২ জাগত অছি।
তঁ কথা অন্তরকেঁ পুনর্বচিত কএ গঢ়ল জাএত। আ

व्यक्तिगत चेतना तखन सामाजिक आ सामूहिक चेतना बनि जाइत। शोषककेँ अपन प्रवृत्तिपर अंकुश लगबए पड़तन्हि। तँ शोषितकेँ एकर विरोध सेहो रूपमे करए पड़तन्हि।

स्वतंत्रता- सामाजिक परिवर्तन । कथा तखन संप्रेषित होएत, संवादक माध्यम बनत। कथा समाजक लेल शस्त्र तखने बनि सकत, शक्ति तखने बनि सकत।

जे कथाकार उपदेश देताह तँ ज्ञानक हस्तांतरण करताह, जकर आवश्यकता आब नहि छै। जखन कथाकार सम्वाद शुरू करताह तखने सहिजक वातावरण बनत आ सम्वादमे भाग लेनिहार पाठक जड़तासँ त्राण पओताह।

कथा क्रमबद्ध होअए आ स्वग्राह्य होअए तखने ओ उद्देश्य प्राप्त करत। बुद्धिपरक नहि व्यवहारपरक बनत। वैदिक साहित्यक आख्यानक उदारता संवादकेँ जन्म दैत छल जे पौराणिक साहित्यक रूढ़ि वादिता खतम कए देलक।

आ संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास होएबाक चाही- तर्क-परक विश्वास आ अनुभवपरक विश्वास, जे स्वभाषचन्द्र यादवमे छन्हि। प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नहि, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत अछि से स्वभाषजीक कथामे सर्वत्र देखबामे आओत। विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रियाक रूपमे भेल। एहिसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल।

व्यवहारशास्त्रमे चेतनाक व्यवहारक व्यवहार रूपमे अध्ययन होइत अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक

निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि। अस्तित्ववादमे मनुष्य-अछि मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि ओहिसँ पृथक ओ किछु नहि अछि, स्वतंत्र होएबा लेल अभिशप्त अछि (सार्त्र)। हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देलन्हि। मूलतत्व जतेक गहींर होएत ओतेक स्वरूपसँ दूर रहत आ वास्तविकतासँ लग।
क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकेँ प्रभावित कएने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकता सँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप, अन्दाजसँ निश्चित करए पड़ैत अछि।
तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक "अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम" सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कए रहल अछि कारण एहिसँ भगवानक मूल्यक अवधारणा सेहो सोझाँ आएल अछि, से एखन विश्वक नियन्ताक अस्तित्व खतरामे पड़ल अछि। भगवानक मूल्य आ इतिहासक समाप्तिक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली कथा कहिया धरि खिस्सा कहैत रहत ? लघु, अति-लघु कथा, कथा, गल्प आदिक विश्लेषणमे लागल रहत ?
जेना वर्चुअल विअलिटी वास्तविकता केँ कृत्रिम रूपेँ सोझाँ आनि चेतनाकेँ ओकरा संग एकाकार करैत अछि तहिना बिना तीनसँ बेशी डीमक परिकल्पनाक हम प्रकाशक गतिसँ जे सिन्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तरंगयुक्त ब्रह्माण्डक

পাব আগ ধবি নহি পহুঁচি সকয়। এ সূর্য খবয়-খবয় আন সূর্যমেসঁ একটা মধ্যম কোটিক তবেগণ- মেডিওকব স্টাব- অছি। ওহি মেডিওকব স্টাবক একটা গ্রহ পৃথ্বী আ ওকব একটা নগব-গামমে বহনিহাব হম সভ অপন মাথপব হাথ বাখি চিন্তিত ছী জে হমব সমস্যাসঁ পৈঘ ককব সমস্যা ? হমব কথাক সমক্ষ এ সভ বৈজ্ঞানিক আ দার্শনিক তথ্য চুনৌতীক রূপমে আএল অছি।
হোনিস্টিক আকি সম্পূর্ণতাক সমন্বয় কবএ পড়ত ! এ দর্শন দার্শনিক সঁ রাস্তরিক তখনে বঁনত।
পোস্টস্ট্রক্চবল মেথোডোলোজী ভাষাক অর্থ, শব্দ, তকব অর্থ, ব্যাকবণক নিঅম সঁ নহি রবন্ অর্থ নির্মাণ প্রক্রিযাসঁ নগরৈত অছি। সভ তবহক ব্যক্তি, সমূহ লেল এ রিভিন্ন অর্থ ধাবণ কবৈত অছি। ভাষা আ রিশ্বমে কোনো অন্তিম সম্বন্ধ নহি হোগত অছি। শব্দ আ ওকব পাঠ কেব অন্তিম অর্থ রা অপন রিশিষ্ঠ অর্থ নহি হোগত অছি।
আধুনিক আ উত্তব আধুনিক তর্ক, রাস্তরিকতা, সম্বাদ আ রিচাবক আদান-প্রদানসঁ আধুনিকতাক জন্ম ভেল । ক্ষদা ফেব নর-রামপংথী আন্দানন ফ্রাংসমে আএল আ সর্বনাশরাদ আ অবাজকতারাদ আন্দানন সন রিচাবধাবা সেহো আএল। এ সভ আধুনিক রিচাব-প্রক্রিযা প্রণালী ওকব আস্থা-অরধাবণাসঁ বঁহাব ভেল অরিশ্বাসপব আধাবিত ছল।
পাঠমে নুকাএল অর্থক স্থান-কান সংদর্ভক পবিপ্রেক্ষ্যমে ব্যাখ্যা শুরু ভেল আ ভাষাকেঁ খেনক মাধ্যম বঁনাওল গেল- লংগ্রএজ গেম। আ এহি সভ সত্তাক আ বৈধতা আ ওকব স্তবীকবণক আনোচনাক রূপমে আএল পোস্টমॅডর্নিজম।

कंप्युटेर आ सूचना क्रान्ति जाहिमे कोनो तंत्रांशिक निर्माता ओकर निर्माण कए ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दैत छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नहि कएने छथि। आ किछु हस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा मारूसँ हटबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ एहि वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरो सँ ठीक नहि होइत अछि तखन कम्प्युटरक रैकप लए ओकरा फॉर्मेट कए देल जाइत अछि- नवीन स्लेट !

पूँजीवादक जनम भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब पोस्ट इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु चिप्स आधारित अछि। एहि बैंकका (२००+) कोसीक बाढ़िमे अनलकान्तजी गाममे फँसल छलाह, भोजन लेल मारि पड़ैत रहए मुदा क्रेडिट कार्डसँ ए.सी.टिकट बुक भए गेलन्हि। मिथिलाक समाजमे सूचना आ संगणकक भूमिकाक आर कोन दोसर उदाहरण चाही ? डी कन्सट्रक्शन आ री कन्सट्रक्शन विचार रचना प्रक्रियाक पुनर्गठन कें देखबैत अछि जे उत्तर औद्योगिक कालमे चेतनाक निर्माण नव रूपमे भऽ रहल अछि। इतिहास तँ नहि मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वस्त्र, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मार्क्सवाद परिवर्तनक परिणामसँ, विखंडित भए सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था।

এহি পবিপ্রেক্ষ্যমে মৈথিনী কথা গাথাপব সেহো একটা গহিঁকী নজবি দৌগাৱী।
বামদের ঝা জনধব ঝাক "রিনক্ষণ দাম্পত্য" (মৈথিন হিত সাধন, জযপুব, ১৯০৬ ঙা.) কেঁ মৈথিনীক আধুনিক কথাক প্রাবম্ভ মাননন্হি । পুনকিত মিশ্রক "মোহিনী মোহন" (১৯০৭–০৮), জনসীদনক "তাবাক রৈধর্য" (মিথিনা মিহিব, ১৯১৭ ঙা.), শ্রীগুঞ্জ ঠাকুবক চন্দ্রপ্রভা, ভুনাপতি সিংহক মদনবাজ চবিত, কানী কুমাব দাসক অদনাক রঁদনা আ কামিনীক জীরন, শ্যামানন্দ ঝাক অকিঞ্চন, শ্রী রঁল্লভ ঝাক রিনাসিতা, হবিনন্দন ঠাকুব "সবোজ"ক ঙাশ্বিবীয বক্ষা, শাবদানন্দ ঠাকুব "রিনয"ক তাবা আ শ্যাম স্বন্দব ঝা "মধুপ"ক প্রতিজ্ঞা–পত্র, রৈদ্যনাথ মিশ্র "রিদ্যাসিন্ধু"ক গপ্প–সপ্পক খবিহান আ প্ররোঁধ নাবাযণ সিংহক রীছন ফূন আএন। হবিমোহন ঝাক কথা আ যাত্রীক উঁপন্যাসিকা, বাজকমন চৌধবী, ননিত, বামদের ঝা, রঁনবাম, প্রভাস কুমাব চৌধবী, ধূমকেতু, বাজমোহন ঝা, সাকেতানন্দ, রিভূতি আনন্দ, স্বন্দব ঝা "শাস্ত্রী", ধীবেন্দ্ব, বাজেন্দ্র কিশোব, রেরতী বমণ নান, বাজেন্দ্র রিমন, বামভদ্র, অশোক, শিরশংকব শ্রীনিরাস, প্রদীপ রিহাবী, বমেশ, মানেশ্বব মন্বজ, শ্যাম দবিহবে, কুমাব পরন, অনমোন ঝা, মিথিনেশ কুমাব ঝা, হবিশচন্দ্র ঝা, উঁপাধ্যায ভূষণ, বামভবোস কাপড়ি "ভ্রমব", ভুরনেশ্বব পাথেয, রঁদবী নাবাযণ রঁর্মা, অযোধ্যানাথ চৌধবী, বা.না.স্বধাকব, জীতেন্দ্র জীত, স্ববেন্দ্র নাভ, জযনাবাযণ ঝা "জিজ্ঞাস্ব", শ্যাম স্বন্দব "শশি", বমেশ বঞ্জন, ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষি, পবমেশ্বব কাপড়ি , তাবানন্দ রিযোগী, নাগেন্দ্র কুমব, অমবনাথ, দেরশংকব নরীন, অননকান্ত, শ্রীধবম,

নীতা ঝা, রিভা রানী, ঊষাকিরণ খান, স্বস্মিতা পাঠক, শেফালিকা বর্মা, জ্যাসেনা চন্দ্রম, নানপরী দেরী এহি যাত্রাকেঁ আগাঁ বঁঢ়ে নেন্হি ।
মৈথিলীমে নীক কথা নহি, নীক নাটক নহি ? মৈথিলীমে ব্যাকরণ নহি ? পনিসোহ আ পনিগব এহি তরহক রিশ্লেষণ কতএ অছি মৈথিলী ব্যাকরণ মে, রৈহ অনল, পারক সভ অছি ! ক্দা দীনরঁন্ধু ঝাক ধাত্ত রূপ পোথীমে জে ১০২৩ টা এহি তরহক খাঁটী রূপ অছি, রমানথ ঝাক মিথিলাভাষাপ্রকাশিমে জে খাঁটী মৈথিলী ব্যাকরণ অছি, ও দন্ূ বিসোর্স বঁ্ক নএ মানকীকরণ আ ব্যাকরণক নির্মাণ সর্বথা সংভর অছি । ক্দা ভঽ রহল অছি ও জে পানীপতক পহিল যুদ্ধক রিশ্লেষণমে ও লিখী জে পানীপত আ ঠাঁরঁবক ঠীচমে যুদ্ধ ভেল । রামভদ্রকেঁ ধীরেন্দ্র সর্বশ্রেষ্ঠ মৈথিলী কথাকাবক রূপমে রর্ণিত কএনে ছথি, ক্দা এখন ধরি হ্নকর কএক টা কথাক রিশ্লেষণ কএল গেল অছি ? নচিকেতাক নাটক আ মৈথিলীক সেক্সপিঅব মহেন্দ্র মলংগিযাক কাজক আ রামভদ্র আ স্বভাষ চন্দ্র যাদরক কথা যাত্রাক সন্দর্ভমে ও গপ কহরঁ আরশ্যক ছল ।
জাহি সময মৈথিলীক সমস্যা ঘব-ঘবসঁ মৈথিলীক নিষ্কাসন অছি, জখন হিন্দীমে এক হাথ অজমেলাক ঠাঁদ নাম নহি ভেলা ঊঁত্তব নোক মৈথিলীক কথা-করিতা লিখি আ সম্পাদক-আলোচক ভএ, অপন মহত্বাকাংক্ষাক ভাবসঁ মৈথিলী কথা-করিতাক রাতারবণকেঁ ভবিযা বহল ছথি, মার্ক্সরাদ, ফেমিনিজম আ ধর্মনিবপেক্ষতা ঘোসিযা-ঘোসিযা কএ কথা-করিতামে ভবল জা রহল অছি, তখন স্তবক নির্ধারণ সএহ কঽ রহল অছি, স্তবহীনতাক রেঁঢ় রাদ বঁনল অছি । জে গরীরঁ আ নিম্ন জাতীযক শোষণ আ

ওকৰা হতোৎসাহিত কৰবাঁমে লাগল ছথি সে মার্ক্সবাদক লেবলমে, জে মহিলাকেঁ অপমানিত কেলন্হি সে ফেমিনিজম আ মিথিলা রাজ্য আ সংঘক লেবলমে আ জে সাম্প্রদায়িক ছথি ও ধর্মনিৰপেক্ষতাক লেবলমে জাগত ছথি। ওলা সাম্প্রদায়িক লোক ফেমিনিস্ট, মহিলা বিরোধী মার্ক্সিস্ট আ এহি তরহক কতেক গঠবঁধন আ মঠমে জাগত দেখল গেল ছথি। ক্যা রাজকমলক বঁড় াগমে লাগল অছি, তঁ ক্যা যাত্রীক আ ধূমকেতুক তঁ ক্যা স্বমলজীক, আ হ্লকা লোকনিক তঁ কী পক্ষ রাখত তকর আরিমে অপনাকেঁ আগাঁ রাখি রহল অছি। যাত্রীক পারোকেঁ আ রাজকমল আ ধূমকেতুক কথাকেঁ আগযো স্বীকার নহি কএল গেল অছি– এহি তরহক অলস্থল প্রলাপ ! ক্যা তথাকথিত বিবাদাস্পদ কথাক সম্পাদন কএ স্বয়ং বিবাদ উঁপেন্ন কএ অপনাকেঁ আগাঁ রাখি রহল ছথি। মাত্র মৈথিল ব্রাহ্মণ আ কর্ণ কায়স্থক লেখলক বীচ সীমিত প্রতিযোগিতা জাহি করি–কথাকারকেঁ রিচলিত কএ রহল ছন্হি আ হিন্দী ছোড়ি মৈথিলীমে অএবাঁক বাঁদ জাহি গতিসঁ ও ঙা সভ করতৱ কএ রহল ছথি, তিলকা মৈথিলীক হ্মখ্য সমস্যাপর ধ্যান কহিয়া জএতন্হি সে নহি জানি ? লোক ঙাহো বুঁমৈত ছথি জে হিন্দীক বাঁদ জে মৈথিলীমে লিখৱ , তঁ স্বীঙ্গতি হ্বরিত গতিএঁ ভেঁটত ? জে মৈথিলীক রচনাকারেঁকেঁ এহি তরহক ভ্রম ছন্হি আ আমেরিশ্বাসক অভার ছন্হি, অপল মাতৃভাষাক সংপ্রেষণীয়তাপর অরিশ্বাস (!), তখল এহি ভাষাক ভরিষ্য হিলকা লোকনিক কান্হপর দএ কোন ছদ্ম হম সভ সংজোগি রহল ছী ? সেমীনারমে সাহিত্য অকাদমী পুরস্কার প্রাপ্ত এহল জন্মান্ধ কথাকার, সম্পাদক আ সমালোচক সভকেঁ অপল পুত্র–পুত্রী–পলীক সংগ

मैथिलीमे नहि रहल् हिन्दी मे (अंग्रेजी प्रायः सामर्थ्यसँ बाहर छन्हि तेँ) गप करैत देखि हतप्रभ बनि जाइत छी। मैथिलीमे बीस टा लिखनहार छलाह आ पाँचटा पढ़निहार, से कोन विवाद उठल होएत ? राजकमल/ यात्रीक मैथिलीक लेखन सौम्य अछि, से हुनकर सभक गोटे-गोटे रचना पढ़ि कए हम कहि सकैत छी। ताहि स्थिति मे- ओ विवाद रहए एहि कविताक आ एहि कथामे- एहि तरहक गप आनि आ ओकर पक्षमे अपन तर्क दए अपन लेखनी चमकाएबै ? आ तकर बाद यात्रीक बाद पहिल उपन्यासकार हमलना आ राजकमलक बाद पहिल कवि चिनना-आबै तँ कथाकार आ कविक जोड़ ी सेहो सोझाँ अबैत अछि, एक दोसराक भङ्गिमे आ आपसी वादकेँ आगाँ बढ़एबा लेल। मैथिलीक मुख्य समस्या अछि जे ओ भाषा एहि सीमित प्रतियोगी (दुर्घर्ष !) सभक आपसी महत्वाकांक्षाक माबिक बीच मवि रहल अछि। कवि-कथाकार मैथिलीकेँ अपन कैविअर बना लेलन्हि, घरमे मैथिलीकेँ निष्कासित कए सेमीनारक वस्तु बना देलन्हि। तखन कतए पाठक आ कोन विवाद ! जे समस्या हम देखि रहल छी जे बचाकेँ मैथिलीक वातावरण भेटैओ आ सभ जातिक लोक एहि भाषासँ प्रेम करथि ताहि लेल कथा आ कविता कतए आगाँ अछि ? कएकटा विज्ञान कथा, बाल-किशोर कथा- कविता कैविअरजीवी कवि-कथाकार लिखि रहल छथि। आ ओ घर-घरमे पहुँचए ताहि लेल कोन प्रयास भए रहल अछि ? सए-दू सए क ॉपी पोथी छपबा कए , तकर समीक्षा करबा कए, सए-दू सए क ॉपी छपएबला पत्रिकामे छपबा कए , तकर फोटोस्टेट क ॉपी फोल्डर बना कऽ घरमे राखि पुरस्कार लेल आ सिलेबसमे किताब

নগেরাঁ নেন কএন গেন তিকড়মক রাতারবণমে হমব খাস গৌব মৈথিন ব্রাহ্মণ-কর্ণ কাযস্থ পাঠক খা নেখকপব জাএ স্থিব ভএ গেন খছি।

জে খপন ঘব-পবিরাব নহি সম্হাবি সকনাহ সে ঢেবী-ঢাকী ভাষাযী প্রবস্কাব নএ রৈসন ছথি, মিথিনা বাজ্য রঁনএরাঁমে নাগন ছথি , পতা নহি বাজ্য কোনা সম্হাবি সকতাহ খা ওকব রিধান সভামে কোন ভাষামে রঁজতাহ, জখন হ্নকা ওতএ প্রবস্কৃত কএন জএতন্হি।
জে ঘবমে মৈথিনী নহি রঁজৈত ছথি সে নেখক খা করি রঁনন ছথি (হিন্দী-মৈথিনীমে সমান খধিকাবসঁ) হিন্দীমে সোচি নিখৈত ছথি খা তখন খনুরাদ কএ মৌনিক মৈথিনী নিখৈত ছথি ! মৈথিনী কথা-করিতা কবৈত ছথি ! !
মবাঠী, উর্দূ, তমিন, কন্নড়সঁ মৈথিনী খনুরাদ প্রবস্কাব নির্নজ্জতাসঁ নৈত ছথি , রণক্কম কেব খর্থ প্রছরঁন্হি সে নহি খরৈত ছন্হি, খনিফ-রঁ-সে কেব জ্ঞান নহি, মবাঠীমে কোনো রঁচাসঁ গপ কবরাঁক সামর্থ্য নহি ছন্হি। খা মৈথিনীমে হ্নকব মাথ ফ্ৰুটৈরাঁসঁ এহি দ্বাবে রঁচি জাগত ছন্হি কাবণ খপনে ছপরাঁ কএ সমীক্ষা কববৈত ছথি, সে পাঠক তঁ ছন্হি নহি। পাঠক নহি বহএমে হ্নকা নোকনিকেঁ ফাএদা ছন্হি। খা এহি প্রবস্কাব সভমে জূবী খা এডরাগজবী রাঁউ খপনাকেঁ খাগাঁ কবরাঁমে জখন স্বযং খাগাঁ খরৈত ছথি তখন এহি সীমিত প্রতিযোগী নোকনিক খামেরিশ্বাস কতেক দুর্বন ছন্হি , সএহ সোঝাঁ খরৈত খছি । সাবংগ ফমাব ছথি, তঁ রঁনবামক চবচা ফেবসঁ কথাকাবক রূপমে শূব্দ ভেন খছি । খা জিনকব সন্তান সাহিত্যমে নহি খএনাহ হ্নকব চবচা ফেব কোনা

হোএত, হুনকব পক্ষ কে আগাঁ বাখত ? জীবৈত ধবি নে সভ অপন পক্ষ স্বয়ং আগাঁ বাখি বহন ছথি ? হুদা হুগনাক বাঁদ ? মৈথিনী সাহিত্যক এহি সন্দর্কেঁ দেখাব কববাঁক আরশ্যকতা অছি । আঁখি মুনি কএ সেহো একব সমাধান নোক হুদা তাকিযে বহন ছথি। ক্যা চিত্রগুপ্ত সভা খোনি মণিপদ্মকেঁ বেঁচি বহন ছথি তঁ ক্যা মৈথিন (ব্রাহ্মণ) সভা খোনি স্বমনজীক ব্যাপাবমে নাগন ছথি–মণিপদ্ম আ স্বমনজীক আবিমে অপন ধংধা চমকা বহন ছথি আ মণিপদ্ম আ স্বমনজীকেঁ অপমানিত কএ বহন ছথি। কথা–করিতা সংগ্রহ সভক সম্পাদকক চেনা চপাটী মৈথিনীক সর্বকানীন কথাকাব–করিক সংকননমে স্থান পারি জাগত ছথি , তনে হুনকব কোনো পহিনে সংগ্রহ আএন হোগন্হি বা কথা–করিতাক সংখ্যা হাস্যাস্পদ ৰূপসঁ কম হোগন্হি। পত্রিকা সভক সেহো বএহ স্থিতি অছি। ব্যক্তিগত মহত্বাকাংক্ষামে কষ্টাউঁম করৈত রিন পাঠকক ওা পত্রিকা সভ স্বয়ং মবি বহন অছি আ মৈথিনীকেঁ মাবি বহন অছি। ড্রাগংগ ৰূমমে রিনা ফীন্ডরর্কক নিখন নোককথা জাহি ভাষামে নিখন জাগত হোঅএ, ওতএ এহি তবহক হাস্যাস্পদ কষ্টাউঁম স্বাভারিক অছি। আর তঁ অন্তর্জানপব সেহো মৈথিনীক কিছু জানবৃত্তপব জাতিগত কষ্টাউঁম আ অপশব্দক প্রযোগ দেখরামে আএন অছি।
মার্ক্সিস্ট আ ফেমিনিস্ট বনি তকবো ব্যাপাব শুৰূ কবর আ অপন স্তবক ন্যূনতাক এহি তবহেঁ পূর্তি কবর, সীমিত প্রতিযোগিতা মধ্য অল্প প্রতিভাযুক্ত সাহিত্যকাবক ওা হথিযাব বনি গেন অছি। জে মার্ক্সক আদব কবত সে ওা কিএক কহত জে হম মার্ক্সরাদী আনোচক আকি নেখক ছী ? হঁ জে মার্ক্সক ধংধা কবত তকব রিষযমে কী

कमी, धंधा तँ स्वमन, बाजकमन, यात्री, मणिपद्म, धूमकेतु......सभक श्वक्म भेल थ्छि। थ्रा तकव कावण सेहो स्पष्ठ। बाष्ट्रीय सर्वेक्षण ग्र देखवैत थ्छि जे संस्कृत, हिन्दी, मैथिली थ्रा थ्रान साहित्य कॉलेजमे वैह पढ़ैत छथि जिनका दोसव विषयमे नामांकन नहि भेटैत छन्हि, पत्रकाविताम सेहो यैह सभ थ्रवैत छथि। प्रतिभा विपन्न एहने साहित्यसेवीकेँ साहित्यक चश्का नागल छन्हि थ्रा हिनके हाथमे मैथिली भाषाक भविष्य स्ववक्षित बहत ? क्मदा एहि वास्तविकताक संग थ्रागाँक वाँर्ट हमवा सभक प्रतीक्षामे थ्छि। स्वचा मैथिली सेवी कथाकाव थ्रा पाठक जे धूवा-गवदामे जएवाँ नेल तैयाव होथि, वँचा थ्रा स्त्री जनताक साहित्य बचथि थ्रा थ्रपन ऊर्जा मैथिलीकेँ जीवित वखवाँ मात्रमे नगावँथि ओ श्रेणी तैयाव होएवें टौ कवत।

मैथिलीक नामपव कोनो कम्प्रामाइज नहि। स्वभाषचन्द्र यादवजीक ग्र संग्रह धावावहिक रूपमे "विदेह" ग्र-पत्रिकामे (http://www.videha.co.in) थ्रन्तर्जालपव ग्र-प्रकाशित भए हजावक-हजाव पाठकक स्नेह पओलक, ऑनलाइन कामेन्ट एहि कथा सभकेँ भेटलैक जाहिमे वेशी पाठक गैव मैथिल ब्राह्मण थ्रा कर्ण कायस्थ बहथि, से हम हुनकव सभक उपनाम देखि थ्रन्दाज नगाओल। एतए ग्रहो गप सोझाँ थ्राएल जे शिक्षाक थ्रभावक कावण सेहो, भाषाक उच्चावण थ्रा वाचन मे थ्रंतव थ्रवैं-ए। तकव ग्र मतलवँ नै जे वँलचलमाक भाषा एखनो यादव जी वँजैत छथि, थ्रावँ जे ओ भाषा यादव पात्र नेल प्रयोग कववँ तँ शाकुन्तलम् केव संस्कृत नाटकक वीच जनसामान्यक नेल

प्रयुक्त प्राकृत जेकाँ लागत, आ ओहि रस्तुक लोककेँ अपमानजनक सेहो लगतन्हि। भाषा चलायमान होइत अछि आ लेखन परम्परा ओकर मध्य स्थिरता अनैत अछि। से सुभाषजीक भाषामे सेहो ओ अन्तर स्पष्ट देखबामे अबैत अछि, हुनकर कथाक भाषा आ निबन्धादिक भाषा मध्य।

मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ तँ पाठक बनि बहियेँ नहि सकैत छथि, शीघ्र यात्रीक बादक एकमात्र जन उपन्यासकार आ हरिमोहन झाक बादक एकमात्र सही अर्थमे कविक उपाधि लेल नामाचित भऽ जाइत छथि। अपनाकेँ घोड़ा आ बाघ आ दोसरकेँ गधा आ बकरी कहबा काल ओ मूल दिशा आ समस्यासँ अपनाकेँ हटाबैत छथि। अपन कथा-कवितापर अपने समीक्षा कऽ आत्ममुग्धताक ओ स्थिति समीक्षाक दुर्बलतासँ आएल अछि। एहि एकमात्र शब्दसँ हमरा वितृष्णा अछि आ तकर निदान हम मैथिलीकेँ देल स्वा-पोषणशैलीक विरुद्ध "विदेह" ई-पत्रिकाक मैथिली साहित्य आन्दोलनमे देखैत छी। एतऽ लाल भविष्ये सभसँ बेशी लेखक जुड़लाह तँ पाठकक संख्या लाख टपि गेल। बच्चा आ महिलाक संग जाहि तरहेँ गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखक जुटलाह से अद्भुत छल। हमर एहि गपपर देल जोरकेँ किछु गोटे (मैथिली) साहित्यकेँ खण्डित करबाक प्रयास कहताह मुदा हमर प्राथमिकता मैथिली अछि, मैथिली साहित्य आन्दोलन अछि, ओ भाषा जे मरि जाइत तखन ओकर ड्राइंग रूममे बैसल दुर्घर्ष सम्पादक-कवि-कथाकार-मिथिला राज्य आन्दोलनकर्ता आ समालोचकक की होइतन्हि। सुभाषचन्द्र यादवजीक

कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ एहि रूपमे हमरा आर आकर्षित करैत अछि। आ एतए ओहो सन्दर्भमे सम्मिलित अछि जे सुभाषचन्द्र यादवजीक ई संग्रह धारावाहिक रूपमे अन्तर्जालपर ई-प्रकाशित भेल कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ नए। आ ई घटना सभ दिन आ सभ पक्षमे मैथिलीकेँ सबॅल करत से आशा अछि।

केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ माहुर

केदारनाथ चौधरी जीक पहिल उपन्यास चमेली रानी २००४ ई. मे आएल । एहि उपन्यासक अन्त एहि तरहेँ खतम भेल जे एकर दोसर भागक प्रबॅल माँग भेल आ लेखककेँ एकर दोसर भाग माहुर लिखए पड़लन्हि। धीरेन्द्रनाथ मिश्र चमेली रानीक समीक्षा करैत विद्यापति टाइम्समे लिखने रहथि- "...जेना हास्य-सम्राट हरिमोहन झाँझूकेँ "कन्यादान"क पश्चात् "द्विरागमन" लिखए पड़लनि तहिना "चमेलीरानी"क दोसर भाग उपन्यासकारकेँ लिखए

পড়তন্হি" ।

ঈ দুনূ খণ্ড কৈক তরহেঁ মৈথিলী উপন্যাস লেখনমে মোন রাখল জাএত। এক ঠাম জেনা রামলোচন ঠাকুর জী কহৈত ছথি– "..পাবস-প্রতিভাক এহি লেখকক পদার্পণ এতে বিলম্বিত কিএক ? " ঈ প্রশ্ন সভ অনুত্তরিত অছি। লেখক অপন ঊর্জাক সংগ অমেরিকা, ইরান আ আন ঠাম পঢ়াই-লিখাইমে লাগল রহথি রোজগারমে রহথি মুদা মমতা গাবএ গীতক নির্মাতা ঘূমি কঽ দরভংগা অএলাহ তঁ অপন সমস্ত জীবনানুভব এহি দুনূ উপন্যাসমে উতারি দেলন্হি। রাজমোহন ঝাসঁ একটা সাক্ষাত্কারমে হম এহি সম্বন্ধমে পুছনে রহিযন্হি তঁ ও কহনে রহথি জে বিনা জীবনানুভবক রচনা সংভব নহি,জিনকর জীবনানুভব জতেক বিস্তৃত রহতন্হি সে ওতেক বেশী বিভিন্নতা আ নূতনতা আনি সকতাহ। কেদারনাথ চৌধরীক "চমেলী রানী" আ "মাহুর" ঈ সিদ্ধ করৈত অছি। চমেলী রানী বিক্রীক একটা নব কীর্তিমান বনেলক। মাত্র জনকপুরমে একর ৩০০ প্রতি বিকা গেল। লেখক "চমেলী রানী"ক সমর্পণ "ওহি সমগ্র মৈথিলী প্রেমীকেঁ জে অপন সম্পূর্ণ জিনগীমে অপন কৈঁচা খর্চ কঽ মৈথিলী-ভাষাক কোনো পোথী-পত্রিকা কিননে হোথি" কেঁ করৈত ছথি, মুদা জখন অপার বিক্রীক বাদ এহি পোথীক দোসর সংস্করণ ২০০৭ মে একর দোসর খণ্ড "মাহুর"ক ২০০৮ মে আবএ সঁ পূর্বহি নিকালএ পড়লন্হি তখন দোসর ভাগমে সমর্পণ স্তংভ ছোড়নাইযে লেখককেঁ শ্রেযস্কর বুঝেলন্হি। একর একটা বিশিষ্টতা হমরা বুঝবামে আএল ২০০৮ কের অন্তিম কালমে জখন হরিযাণাক উপমুখ্যমংত্রী এক মাস ধরি নিপত্তা রহলাহ, মুদা রাজনযিক বিবশতাক অন্তর্গত জাধরি ও ঘূরি কঽ

नहि अएलाह तारत हुनकापर कोनो कार्यवाही नहि कएल जाइ सकल। अपन ग्वलाके मिश्रेजी तँ सेहो अही राजनीतिक विवशताक कारण नितन्ता वहलोपर गद्दीपर वैसले रहलाह,क्या हुनका हँटौ नहि सकल। चाहे राज्यक संचालनमे कतेक झंझटि किएक नहि आएल होए। उपन्यास–लेखकक जीवनान्तर एकर सम्भावना चारि साल पहिलहिए लिखि कइ राखि देलक। भविष्यवक्ता कोनो ज्ञैला–ज्ञैपरसँ भेलाग संभव नहि होगत अछि रवन् जीवनान्तर एकरा सम्भव रनरेत अछि। एहि दुनू उपन्यासक पात्र चमकोरी छथि, आ सफल सेहो कारण उपन्यासकार एकरा एहि ढंगसँ सृजित करैत छथि जेना सभ रस्तुक हुनका व्यक्तिगत अनुभव होगन्ह।

उपन्यासक वर्ज्याा प्रावम्भक अछैत एहिमे एतेक जटिलता होगत अछि जे एहिमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होगत अछि। "चमेली वानी" उपन्यासक प्रावम्भ करैत लेखक एकर पहिल परीक्षामे उत्तीर्ण होगत छथि जखन एकर नयामेक प्रावम्भ पाठकमे रुचि उपेन्न करैत अछि। कीर्तिक्ष्खक पाँच टा रीटोक नामकवणक लेल ओकर जिगरी दोस कल्टीवक विचार जे – "पाँचो पाण्डव रँला नाम रँटौ सरँहक राखि दहक। स्वभिता हेतौ"। फेर एक ठाम लेखक कहैत छथि जे जतेक गतिसँ रँचा होगत रहैक से कौवरक नाम राखए पड़ि तैक। नायिका चमेली वानीक आगमन धवि कीर्तिक्ष्खक रँटौ सभक वर्णन फेर एहि क्रममे अंग्रेज डेम्सफोर्ड आ रूपक्ष्म्मविक सन्तान स्वनयलाक विवरण अरैत अछि। फेर रूपक्ष्म्मविक रँटौ स्वनयलाक रँटौ शनिचरी आ लेताजी रामठेंगा सिंह "चिनगारी"क विराह आ लेताजी द्वारा शनिचरीकेँ कलही मोदियानि लग लोक–लाजक द्वारे

বাখি পটৈনা জাএর্ৱ, নেতাজীক মৃত্ু ত্থা শৈনিচবী ত্থা কীর্তিস্মখক রিরাহক রর্ণন ফেবসঁ খিস্সাকেঁ সমেটি নৈত ত্থছি। তকব রাঁদ চমেনী বানিক রর্ণন ত্থরৈত ছথি জে রবৌনী বিহ্ফাগনবীক স্কূনমে রৌর্ডিগমে পঢ়ৈত ছথি ত্থা এহি কনহী মোদিযানিক রেটী ছথি। কনহী মোদিযানিক মৃত্ুক সময চমেনী বানী দসমাক পবীক্ষা পাস কহ নেনে ছথি। ভূখন সিংহ চমেনী বানীক ধর্ম পিতা ছথি। ডকৈতীক রিরবণক সংগ উঁপন্যাসক পহিন ভাগ খতম ভহ জাগত ত্থছি।

দোসব ভাগমে রিধাযকজীক পাগ ত্থাকি খজানা ন্বটরাঁক রিরবণ, জে কি পূর্র নিযোজিত ছন, এহি তবহেঁ দেখাওন গেন ত্থছি জেনা ঞা রিধাযক নাংগটৈনাথ দ্বাবা একটা ত্থাধ্নিক রাঁনাপব কএন রনাকোবক পবিণামক ফন বহএ। ত্থার্ৱ ঞা নাংগটৈনাথ বহথি স্মখ্যমংত্রী গ্বনার্ৱ মিসিবক খরাঁস জে বাজনীতিক দাঁরপেঁচমে রিধাযক রনি গেনাহ। ২০০৮ ঞা.ক ত্থবরিন্দ ত্থডিগক র্ুকব প্রবস্কাবসঁ সম্মানিত ত্থংগ্রেজী উঁপন্যাস "দ হ্বাগট টৌগগব"ক রনবাম হনরাগক চবিত্র জে চাহক দোকানপব কাজ করৈত দিল্লীমে একটা ধনিকক ড্রাগরব রনি ফেব ওকবা মাবি স্বযং ধনিক রনি জাগত ত্থছি, সঁ রেশ মিনৈত ত্থছি ত্থা চাবি রবখ পূর্র নেখ এহি চবিত্রক নির্মাণ কহ চ্কন ছথি। ফেব কে.জী.রী. এজেন্ট ভাটাজীক ত্থাগমন হোগত ত্থছি জে উঁপন্যাসক দোসব খল্ড "মাহ্ব" ধবি ত্থপন উঁপস্থিতি রেশ প্রভাবী রূপেঁ বখরাঁমে সফন হোগত ছথি।

উঁপন্যাসক তেসব ভাগমে ত্থহমদ্ন্না খাঁক ত্থভিযান সেহো রেশ বমনগব ত্থছি ত্থা রর্তমান বাজনীতিক সভ ফরূপতাকেঁ সমেটৈনে ত্থছি।

উঁপন্যাসক চাবিম ভাগ গ্বনার্ৱ মিসিবক খেবহা কৈত

ঋছি ঋা ফেবসঁ ঋববিন্দ ঋডিগক ৱঁনবাম হ্নবাগকেঁ মোন পাড়ৈত ঋছি। ভুখন সিংহক সংগী পন্নাকেঁ গ্বনাৱঁ মিসিব ৱঁজৱৈঁত ঋছি ঋা ওকবা ভুখন সিংহক নাঁগঠনাথ ঋা ঋহমদ্‌ন্না ঋভিযানক ৰিষযমে কহৈত ঋছি। সংগহি ওকবা মাবৱাঁক নেন কহৈত ঋছি সে ও মনা কঃ দৈত ছৈক। ক্ষদা গ্বনাৱঁ মিসিব ভুখন সিংহকেঁ ছনসঁ মবৱাঁ দৈত ঋছি।

পাঁচম ভাগমে ভুখন সিংহক ট্রেস্টক চবচা ঋছি, চমেনী বানী ঋপন ঋড্ডা ছোড়ি ৱৈদ্যনাথ ধাম চনি জাগত ছথি। ঋাৱঁ চমেনী বানীক বাজনীতিক মহত্বাকাংক্ষা সোন্নাঁ ঋৱৈঁত ঋছি। স্টিংগ আঁপবেশন হোগত ছথি ঋা গ্বনাৱঁ মিসিব ঘেবা জাগত ছথি।

উঁপন্যাসক ছঠম ভাগ ক্ষখ্যমংত্রীক নিপত্তা বহনাক উঁপবান্তা মাত্র ফৈকৰ্ট ফাগঁডিগ কমেটী ৱঁনাওন জএৱাঁক চবচা হোএৱাঁক ঋছি জে কোনিশন পোনিটিক্সক ৰিৰশতাপব টিপ্পণী ঋছি।

উঁপন্যাসক দোসব খল্ড “মাহ্‌ব”ক পহিন ভাগ সেহো ঘ্‌বিযাগত–ঘ্‌বিযাগত চমেনী বানীক পাটীক সংগঠনক চাব্দ কাত ঋাৰি জাগত ঋছি। স্ত্রীপব ঋত্যাচাব, ৱাঁন–ৰিধৰা ঋা ৱৈশ্যাবৃত্তিমে ঠেনৱাঁক সংগঠন সভকেঁ নেখক ঋপন টিপ্পণী নেন চ্‌নৈত ছথি।

মাহ্‌বক দোসব ভাগমে গ্বনাৱঁ মিসিবক বাজধানী পদার্পণক চবচা ঋছি। চমেনী বানী দ্বাবা ঋপন ঋভিযানক সমর্থনমে নক্সনী নেতাক ঋড্ডাপব জএৱাঁক ঋা এহি ৱঁহন্নে সমস্ত ঋান্দাননপব নেখকীয দৃষ্টিকোণ, সংগহি ৱৌনক ঋা ঋাদিৰাসী নোকনিক সচিত্র–জীৱন্ত ৰিৰবণ নেখকীয কৌশনক প্রতীক ঋছি। চমেনী বানী নগ ফেব

বহস্যাদ্ঘাটন ভেন জে হুনকব মাএ কনহী মোদিযাগন ৱঁড্ড পৈঘ ঘবক ছথি আ হুনকব সংগ পঢৈন দ্বাবা খন্চাচাব কএন গেন, চমেনী বানীক পিতাক হত্যা কহ দেন গেন আ ৱেঁচাবী মাএ খপন জিনগী কনহী মোদিযাগন ৱঁনি নিবাহি কএনন্হি। গ্ঙ সভ গপ উঁপন্যাসমে বোচকতা আনি দৈত খছি।
মাহুবক তেসব ভাগ ফেবসঁ পচকৌড়ী মিযাঁ, গ্বনাৱঁ মিসিব, আাগ.এস.আাগ. আ কে.জী.ৱী.ক ষডযন্ত্রক ৱীচ বহস্য আ বোমাঁচ উঁপেন্ন কবৈত খছি।
মাহুবক চাবিম ভাগ চমেনী বানী দ্বাবা খপন মাএ-ৱাঁপক সংগ কএন গেন খন্চাচাবক ৱঁদনা নেৱাঁক বর্ণন দৈত খছি, কৈক হজাব কবোড়ক সম্পত্তি খএনাসঁ চমেনী বানী সম্পন্ন ভহ গেনীহ।
মাহুবক পাঁচম ভাগ বাজনৈতিক দাঁৱ-পেঁচ আ চমেনী বানীক দনক বিজযসঁ খতম হোগত খছি।
বিবেচন: উঁপন্যাস বিধাক ৱুঁর্জুআ আবম্ভক কাবণ সৰ্বতীজক "ডঁন ক্বিকজোট", জে সত্রহম শতাব্দীক প্রাবম্ভমে আবি গেন বহএ, কেব খছৈত উঁপন্যাস বিধা উঁন্নিসম শতাব্দীক আগমনসঁ কিছু সময পূর্ব গম্ভীব স্বরূপ প্রাপ্ত কহ সকন। উঁপন্যাসমে বাদ-বিবাদ-সম্বাদসঁ উঁপেন্ন হোগত খছি নিৱঁহ্ন, যরক-যরতী চবিত্র খনৈত খছি প্রেমাখ্যান, নোক আ ভূগোন দৈত খছি বর্ণন গতিহাসক, নীক- খবাপ চবিত্রক কথা সোম্মাঁ খবৈত খছি। কখনো পাঠককেঁ গ্ঙ হঁসবৈত খছি, কখনো ওকবা উঁপদেশ দৈত খছি। মার্ক্সবাদ উঁপন্যাসক সামাজিক যথার্থক ওকানতি কবৈত খছি। ফ্রাযড সভ মন্বকথকেঁ বহস্যমযী মানৈত ছথি। ও সাহিত্যিক কৃতিকেঁ সাহিত্যকাবক বিশ্লেষণ নেন চুনৈত ছথি তঁ নব ফ্রাযডবাদ

जैविकक वँदना सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखवामे अबैत छथि। नव-समीक्षावाद शृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि।
जीवनानुभवक सेहो एक पक्षक लोगत अछि आ दवाएन गङ्गाक तृप्तिक लेल लेखक एकटा संसारक वचना कएलन्हि जाहिमे पाठक यथार्थ आ काल्पनिकताक बीचक आड़ि -धूरपर चलैत अछि।

फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत

-गजेन्द्र ठाकुर(गाम,मेहथ, भाया-झंझारपुर,जिला-मधुबनी) विशेष सहयोग श्री केशव महतो (बहादुरगंज, जिला किशनगंज, बिहार)

—
एहि क्षेत्रकार्यक सूचक श्री केशव महतो सीत बसंतक फील्डवर्कमे विशेष सहयोगक कारण एहि प्रबन्धक सह-लेखक छथि। सीत बसंतक कथाक कैक टा विभिन्न रूप पाओल गेल आ ओहि सभक विवरण यथास्थान देल गेल अछि। समाज आ संस्कृतिकेँ बुझबामे लोक कथाक बड्ड महत्व अछि, मुदा बिना फील्ड-वर्क कएने लिखल लोककथा अपन उद्देश्य प्राप्तिमे असमर्थ रहैत अछि। श्री सुभाषचन्द्र यादवजीक हम सेहो आभारी छी जिनकर एहि विषयक आलेख (फील्डवर्क आ लोककथापर) एकटा सेमीनारमे सुननाक बाद हम आर तन्मयतासँ एहि कार्यमे लागि गेलहुँ। एहि क्षेत्रकार्यमे आधुनिक फील्डवर्क तकनीक केर उपयोग कएल गेल आ सहभागिता, प्रेक्षण, साक्षात्कार,प्रश्नावलीक इत्यादिक आधारपर ई लोककथा निर्मित भेल अछि। लोककथा-कविताक कोनो स्वरूपमे कोनो परिवर्त्तन अवैज्ञानिक अछि आ तकर ध्यान एतए राखल गेल अछि ।

मणीपुर नगरक राजा महेश्वर सिंह छलाह।
ओ बड्ड प्रतापी राजा छलाह। ओ बड्ड निकेनासँ राज्य चला रहल छलाह।
किछु दिनुका बाद ओहि राजाकेँ दू टा बेटा जन्म लेलक। ओकर रानी सेहो बड्ड सुशील आ स्वाभिमानी छलीह।
एक बेरुका गप अछि।
रानी अपन महलमे बैसल छलीह आ बहुत दिनसँ ओहि महलमे दू टा पौरकी चिड़ै खोता बना कए बैसल छल। एक दिन ओ अपन खोतामे दू टा अंडा देलक। अंडासँ दू टा बच्चा बहार भेल। एक दिन अनचोक्कमे ओहि बच्चा सभक माए मरि गेल। तकर बाद पौरकी सभकेँ बड्ड कष्ट होमए लगलैक। ओकर बाप किछु दिनुका बाद एकटा बोनसँ एकटा पौरकी संग बियाह कए अनलक। तकर बाद दू-चारि दिन कोनो तरहेँ बीतल। तकर बाद एक दिन पौरकी ओहि दुनू बच्चाकेँ खेलाक खुअएला कान झँहमे काँट धऽ देलक। ओ दुनू बच्चा ओही कान मरि गेल। मरलाक बाद खोतासँ दुनू बच्चाकेँ लोलसँ धकेल कऽ नीचाँ खसा देलक। ओहि समय रानी महलमे छलीह आ बच्चा सभकेँ खसबैत ओ देखलन्हि। ओही दिनसँ रानीकेँ शंका भऽ गेलन्हि आ सभ दिन हुनका चिन्ता घेरि लेलकन्हि।
राजाकेँ रानी कहलन्हि –– हे राजा। देखू। अपना महलमे दू टा पौरकी बैसल रहए। ओ दू टा बच्चा देलक। बच्चाक माए मरि गेल। तकर बाद ओ दोसर बियाहि कए अनलक। दू चारि दिनुका बाद ओ दुनू बच्चाकेँ मारि देलक। से हे राजा, कतहु हमहूँ मरि

जाग तँ अहाँ दोसर विवाह कए लेब तखन हमरो दुनू बच्चाक ओएह हाल ने भऽ जाए।
राजा बाजल- यै रानी। एखन अहाँ जीवित छी, तखन एहि गपक अहाँ किएक चिन्ता कए रहल छी।
रानी बजलीह - नहि राजा। यदि हम मरि गेलहुँ तँ अहाँ विवाह तँ नहि कए लेब ?
राजा उत्तर देलक – नहि । हम दोसर विवाह नहि करब।
ई कहि राजा अपन दरबज्जामे वापस चलि गेल।
ओही दिनसँ रानी दुखित रहए लगलीह आ अलचोक्के एक दिन मरि गेलीह।
आब एहि गपकेँ लए राजा बड्ड चिन्तामे पड़ि गेल। आब दुनू भाए सीत आ बसन्त सेहो दिक्कतमे पड़ि गेलाह।
राजाकेँ राजाक खबासिनी, मन्त्री, हंशी आ ब्राबते वास लोक सभ बुझाबए लागल।
राजासँ कहए लगलाह- राजा यदि अहाँ विवाह नहि करैत छी तखन एहि दुनू बच्चाक की दशा होएत। ने एकरा सभक खेनाइक कोनो ठेकान रहत आ नहियेँ पढ़ाइक। ताहि द्वारे अहाँ एकटा विवाह करू।
एहि तरहेँ बुझाओलापर राजा बाजल - ठीक अछि। जखन अहाँ सभक यैह विचार अछि तखन जाउ , कोनो गरीबक लड़की भेटैत तँ हम ओकरा संग विवाह कए लेब।
एहि तरहेँ राजाक सभटा गप बुझि-सुनि हंन्शी दीवान सभ क्या लड़की ताकए लगलाह। एकटा लड़की राजाक नगरमे भेटल। ओ लड़की महागरीबक बेटी छलीह। राजा शुभलग्न बना कए ओहि लड़कीकेँ विवाह कए आनि

নেনক। কিছু দিন ধবি ও নড়কী ঘবমে বহনীহ। কিছু দিনবকা বাঁদ ওকব মমতা ওহি দুনূ ভাএপব কম হোমএ নাগন। দুনূ ভাএ স্কূনসঁ পঢ়া কএ ঘব আবঁথি আ অপন দববজ্জাপব গেন্দ নএ খেনাগমে নাগি জাথি। এক দিন অনচোক্কমে গেন্দ আঁগনমে জা কএ খসি পড়ন।

ওহি সমযমে ওকব সভক সতমাএ আঁগনমে ছনীহ। গেন্দ খসনাক সংগ ও গেন্দকেঁ উঁঠা কএ অপন কোবামে বাখি নেনন্হি। ও দুনূ ভাএ গেন্দ তকৈত আঁগনমে অএনাহ আ কহনন্হি জে মাএ গেন্দ হমবা সভকেঁ দএ দিঅ। হম দুনূ ভাএ খেনা বহন ছী। মাঁ কহনথিন্হ জে হমবা নগ গেন্দ নহি অছি, অহাঁ সভ চনি জাউ। গেন্দকেঁ দুনূ ভাএ মাযক কোবামে দেখনন্হি। ফেব কহনন্হি - মাঁ হমবা সভকেঁ গেন্দ দিঅ। হম সভ খেনাএব। এহি তবহেঁ দুনূ ভাএ মঁগৈত-মঁগৈত মাঁক কোবাসঁ গেন্দ নএ নেনন্হি । গেন্দ নঃ নেনাক বাঁদ বানীক হৃদযমে বঁড্ড তামস অএনৈক। বানী তামসে ভেব ভেন কোচপব আবি পড়া বহনীহ আ খেনাগ-পিনাগ ত্যাগি দেনন্হি। খবাঁসিনী সভ বুঝা কএ থাকি গেনীহ জে বানী চনূ, হমবা সভ খা নী। মুদা বানী কোনো উঁত্তব নহি দেনন্হি। ও কহনন্হি জে আবঁ হম মবি জাএব। এতেক গপ স্বনি খবাঁসিনী বাজা নগ জা কএ কহনক জে বানী বঁড্ড দুখিত ছথি। আবঁ বঁচবাঁ যোগ্য নহি ছথি। অহাঁ জা কএ দেখূ। বাজা এতেক গপ স্বনি কএ অপন মহনমে গেনাহ আ বানীসঁ পুছনন্হি। বানী কহনন্হি জে তোহব এহন হানত কোনা ভেনহ জন্দী বঁতাবঁহ।

বানী কহনন্হি-অহাঁ হমবাসঁ পুছৈত ছী তঁ পহিনে অহাঁ

हमरासँ सत कहू तँ हम कहब। नहि तँ हम मरि जाएब। राजा किछु नहि सोचलन्हि। ओ रानीक संग सत कए लेलन्हि। सत केलाक बाद रानी कहलन्हि- हमर ओ दशा खराँक दुनू बेटा कएने अछि। हमर बिमारीक यैह एकटा उपाय अछि नहि तँ हम नहि बँचि सकैत छी - खराँ ओहि दुनूकेँ मारि ओकर करेज निकालि हमरा दिअ। तखन हम बँचि सकैत छी। राजा एतेक गप सुनि कए बड्ड तमसा गेल। ओ दुनू बेटाकेँ बजा कए बड्ड मारि मारलक आ तकर बाद जल्लादक हाथसँ मरबएबा लेल पठा देलक। जल्लाद दुनू भाएकेँ मारैत-पिटैत बोनमे लए गेल। दुनू भाए बड्ड कानि रहल छलाह। जखन जल्लाद सभ ओकरा दुनू गोटेकेँ मारए लागल तँ ओ सभ कहलन्हि जे हमरा सभकेँ नहि मारू। हमरा सभकेँ छोड़ि देब तँ हम सभ घुरि कए नगर नहि जाएब। खराँ सभ कोनो मान-जानवरकेँ मारि ओकर करेज जा कए दए दियौक। आ ओ कहि दुनू भाए संगमे जतेक पाग छलन्हि सेहो जल्लाद सभकेँ दए देलन्हि। एक जल्लाद कहलक जे मारि दियौक। दोसर कहलक जे नहि मारू। ओ सभ घुरि कए जएबो करत तँ हम सभ कहबैक जे हम सभ की करू। हम सभ तँ करेज आनि कए देने छलहुँ। मरलाक बाद जीबि गेल होएत।

जल्लाद ओहिना कएलक आ दुनू भाएकेँ छोड़ि देलक।

कथा रूप १: जल्लाद ओहिना कएलक आ दुनू भाएकेँ छोड़ि देलक।

दुनू भाए ओहि बोनमे भटकए लगलाह। बात्तक

𑒧𑒾𑒮𑒧𑒧𑒹 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒦𑒰𑒋 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿 𑒮𑒳𑒞𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒦𑒰𑒋 𑒅𑒚𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒆𑒣𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒰𑒿𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒕𑒣𑒩 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒯𑓀𑒮𑒏 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒯𑓀𑒮 𑒔𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒋। 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒰𑒿𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒏𑒋 𑒯𑓀𑒮𑒏 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒥𑒰𑒖𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪।
𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒦𑒰𑒋 𑒮𑒼𑒔𑒪𑒏- 𑒠𑒹𑒐𑒴। 𑒄 𑒮𑒰𑒿𑒣 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒰 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒮𑒼𑒔𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒞𑒪𑒫𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒏𑒋 𑒮𑒰𑒿𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒍 𑒮𑒦 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿 𑒐𑒮𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒥𑒖𑒢𑒰𑒃 𑒥𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒖𑒐𑒢 𑒦𑒼𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒞𑒿 𑒯𑓀𑒮-𑒯𑓀𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒔𑒩𑒱 𑒏𑒋 𑒂𑒋𑒪 𑒂 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒐𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒁𑒢𑒪𑒏। 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒯𑒰𑒩 𑒐𑒳𑒂𑒥𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒞𑒿 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒂𑒯𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒐𑒋𑒪𑒏 𑒂 𑒏𑒯𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒧𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒄 𑒥𑒞𑒰𑒅 𑒖𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒕𑒣𑒩 𑒯𑒧 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒠𑒹𑒪 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒕𑒲 𑒂𑒏𑒱 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒋𑒯𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒕𑒣𑒩 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒲 । 𑒧𑒰𑒋 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒻 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒲 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒃 𑒡𑒩𑒱 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒻𑒏𑒹 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲।

𑒏𑒟𑒰 𑒩𑒴𑒣 𑓒: 𑒥𑒹𑒬𑒲 𑒪𑒼𑒏𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒂 𑒣𑒮𑒩𑒪 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹: 𑒖𑒪𑓂𑒪𑒰𑒠 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒋𑒪𑒏 𑒂 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒦𑒰𑒋𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏।
𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒦𑒰𑒋 𑒍𑒯𑒱 𑒥𑒼𑒢𑒧𑒹 𑒦𑒙𑒏𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪, 𑒐𑒴𑒥 𑒥𑒾𑒂𑒋𑒪। 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒦𑒰𑒋 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒞𑒩𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒞𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒦𑒼𑒩𑒹 𑒥𑒼𑒢𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒩𑒰𑒃𑒞 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒹𑒬 𑒖𑒰𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒦𑒰𑒋 𑒦𑒴𑒐𑒪 𑒣𑒱𑒂𑒮𑒏 𑒧𑒰𑒩𑒹 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒏𑒳𑒪 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒰 𑒏𑒋 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿 𑒥𑒻𑒮𑒱 𑒏𑒋 𑒮𑒳𑒮𑓂𑒞𑒰𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒍 𑒮𑒦 𑒮𑒼𑒔𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒖𑒹 𑒂𑒥 𑒏𑒼𑒢 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒏𑒩𑒴। 𑒍𑒯𑒲 𑒮𑒧𑒨 𑒍𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒕𑒣𑒩 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒧𑒋𑒢𑒰𑒏 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒩𑒯𑒋। 𑒍𑒯𑒱𑒧𑒹𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒿𑒔𑒯𑒱 𑒧𑒾𑒮 𑒐𑒰 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒛𑓂𑒛 𑒬𑒲𑒒𑓂𑒩 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒖𑒋𑒞𑒻𑒏। 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩

কহলনক জে হমবা জে আগিমে পকা কএ খাওত তঁ কিছু দিনুকা ৰাঁদ ও বাজ পারি জাএত। এতেক গপ দনূ ভাএ স্বননক আ হাথমে একটা নাঠী নএ ওকবা সভকেঁ মাবি কএ নীচাঁ খসা দেনক আ নঃ কএ রিদা ভেন। কিছু দূব আগাঁ গেন তঁ দেখনক জে গাএ-মহীস চবাৱএ ৰনা চবৱাহা সভ একটা ৰএবক কাঁটক ৰৌন - ঝাঁখ্বকেঁ জবা বহন ছনাহ। ও দনূ ভাএ সোচনক জে অহী অগিনরানমে পকা কএ একবা খাএৱ। ওহি আগিমে দনূ গোটে মেনাক ৰঁচাকেঁ পকা কএ খএনক। কাঁটমে জে ও সভ পকা কএ খএনক তঁ ওকব সভক ভাগ্যমে সেহো কাঁটে নাগি গেনৈক।
ওতএসঁ দনূ ভাএ রিদা ভেন। কিছু দূব গেনাক ৰাঁদ ওকবা সভকেঁ আমক একটা গাছী ভেটনৈক।
ৰঁসন্ত চনৈত-চনৈত থাকি গেন বহএ আ ওকবা আব চনন নহি ভঃ পারি বহন ছনএ।
সীত কহনক-ভাগ, তূঁ এতএ বৈঁস, হম ওহি গামসঁ কিছু মাঁগি কএ অনৈত ছী আ তখন খা কএ হমবা সভ আগাঁ চনৱ। সীত মঁগৱাঁ নেন গামমে চনি গেন। সীত জাহি গামমে (কথা ৰূপ ३ গামক নাম হস্তিনাপুব সেহো কতহ্-কতহ্ কহন জাগত অছি) মঁগৱাঁক নেন গেন ওহি গামমে বাজাক বেঁটীক স্বয়ম্বব বচাওন গেন ছন। ওহি স্থান পব জন সম্মর্দ ছন। ওতএ ভীড় দেখি সীত অটকি গেন আ দেখএ নাগন। সীত অপন ভাএক স্ববতা রিসবি গেন । স্বয়ম্ববমে নড়কী জযমান নএ সভামে ঘুবএ নাগনি আ মানা সীতক গবদনিমে পহিবা দেনক। ওমীঠাম সীতক রিযাহ ওহি নড়কীক সংগ ভএ গেন।
(ৰূপ ৪) রিযাহক পহিনে ওত্তক্কা নোক সভ ৰাঁজএ নাগন

जे ओ राजाक रहैत होइतो एकटा भिखमंगाक गरदनिमे माला पहिरा देनक। ओ ओहो जे ओ लड़की रहितहि भऽ गेल अछि। ओकर गरदनिसँ माला निकालि कए ककरो दोसराक गरदनिमे माला पहिराउ नहि तँ बियाह नहि होमए देब। ओ गप सुनि लड़की राजलि जे हमर भाग्यमे ओएह भिखमंगा लिखल अछि तँ हमरा राजा कतएसँ भेटैत ? हम एकरे संग बियाह करब। ओ गप सुनि सभ राजा अपन-अपन घर चलि गेलाह आ कहलन्हि जे एहि लड़कीकेँ एहि गामसँ निकालि दिअ आ कोनो दोसर ठाम पठा दिअ। राजा ओनाही कएलक। ओहि दुनू गोटेकेँ अपन गामसँ बाहर पठा देलक। ओ ओही नगरमे रहए लागल। किछु दिनका बाद लोक सभ राजाकेँ कहए लागल जे अहाँ ओहि लड़काक संग लड़कीसँ छोड़ ा दियौक आ कोनो दोसर लड़काक संग ओकर बियाह कराए दियौक।
सभक कहलापर राजा एकटा कुटनी बुढ़िया जाकेँ जहर-माहुर संगमे दए पठेलक जतए सीत आ राजाक बेटी रहैत छल। ओ बुढ़िया ओकरा सभक संगे रहए लागल। किछु दिन धरि ओ ओतहि रहल। दुनू गोटेकेँ कोनो गपक चिन्ता नहि भेलैक। एक दिन सीतकेँ खलचोक्कमे बड्ड पियास लगलैक। ओ अपन रानीसँ बाजल-हमरा पानि पिया दिअ। बुढ़िया झटाकसँ उठि कए गेल आ एक गिलास पानिमे जहर घोरि सीतकेँ देलक। सीतकेँ बड़ जोरसँ पियास लागल रहैक से ओ खटसँ पानि लऽ कए पीबि गेल। पानि पीबिते सीतकेँ किछुए कालक उपरान्त बड्ड निशा अएलैक। स्थिरे-स्थिरे निसाँ बढ़ैत गेल। निसाँमे सीत ओन्घरा गेल। बुढ़िया राजल जे कोनो गप नहि। चिन्ता

नहि करू। सभ ठीक भऽ जाएत। कनेक कानक बाद सीत मरि गेल। बानी खूब हाक्रोस कए कानए लागलि। ओहि ठाम कोनो गाम नहि छल। सीतकेँ धाबक कात लऽ जा कए गाड़ि देल गेल। बुढ़ि या कहलक- देखू चिन्ता नहि करू। आब हम सभ असनान कए ली। असनान करए गेल तँ एकटा नाह किनारमे लागल छल। बुढ़ि या बाजल जे चलू, ओहि नाहपर बैसि कए स्नान कए लेब। तखन दुनू गोटे ओही नाहपर बैसिकए नहाए लागल। तखन आस्ते-आस्ते नाह आगाँ जाए लागल। जखन नाह बीच धारमे गेल तँ (रूप ३: एतए बानीक नाम फुलरन्ती सेहो अबैत अछि) बानी देखलक जे नाह बीच धारमे आबि गेल अछि। तखन ओकरा बुझबामे अएलैक जे ई बुढ़ि या ओकरा ठकि कए लए जा रहल छैक। ओ बानी अपन पतीक वियोगमे छलीह। ओ हृदयमे सोचलक जे ओकर पति मरि गेल छैक तँ ओ जीवित रहि कए की करत। ई सोचि कए नाहसँ कूदि कऽ ओ धारमे फाँगि गेल। भँसैत-भँसैत ओ बड्ड दूर चलि गेल आ ओतए ओ कात लागि गेल।

आब बसन्तक खिस्सा:

बसन्त ओहि गाछीमे भाएक आस तकैत रहए। दिन साँझमे बदलए लागल। ओहि गाछीमे फसुकाव लोकनि गाछीक पात बहारि रहल रहथि। तखने बसन्त कनैत-कनैत ओहि फसुकाव लग गेल। फसुकाव पुछलक- अहाँ किएक कानि रहल छी। बसन्त सभ गप बतेलक। फसुकाव कहलक-अहाँ चिन्ता नहि करू। अहाँ हमरा

ঘবপব চনূ। থহাঁ হমবা ঘবপব বহবঁ। বঁসন্ত ক্ষম্ভকাব
নগ চনি গেন থা বহএ নাগন। ওতএ বহৈত-বহৈত
এক বেঁব একটা বঁনিজাবা থপন জহাজ নএ বাণিজ্য
কবএ নেন জা বহন ছন থাকি বীচ ধাবমে ওকব জহাজ
বীচমে ঠাঢ় ভএ গেনৈক।
জহাজক গন্জীনিথবসঁ (কপ ৬ এতএ বঁনিজাবাক নাম
নৈকা বঁনিজাবা সেহো কহৈত স্বনন গেন) বঁনিজাবা
প্বছনক জে কী জহাজ এতএসঁ থাগাঁ নহি জা বহন
থছি। গন্জীনিথব কহনক-জহাজ বঁনি মাঁগি বহন
থছি। কোনো মন্বথক বঁচাক বঁনি দেনাক বাঁদ জহাজ
থাগাঁ জাএত। এতেক গপ ও বঁনিজাবাকেঁ কহনক তঁ
বঁনিজাবা তীন নাথ কপৈযা নএ একটা বঁচাক তনাশমে
গেন। তাকৈত-তাকৈত ও ওহী গামমে গেন জাহি
গামমে বঁসন্ত বহৈত ছন। বঁনিজাবা থবাঁজ নগবৈঁত
জা বহন ছন জে, জে ক্যা একটা বঁচা দেত ওকবা হম
তীন নাথ কপৈযা দেবঁ। এহি প্রকাবসঁ ও থবাঁজ
নগবৈঁত জা বহন ছন। ক্যা গোটে নহি বাঁজন।
জখন ও ক্ষম্ভকাবক দববঁজ্জাক সোন্না গেন তঁ ক্ষম্ভকাব
কহনক-হঁ হম একটা নড়কা দেবঁ। হমবা পাগ চাহী।
বঁনিজাবা ওহি ক্ষম্ভকাবকেঁ তীন নাথ টাকা দেনক থা
ওতএসঁ ও বঁসন্তকেঁ নএ থপন জহাজক নগ গেন।
বঁসন্ত ওকবাসঁ প্বছনক-বঁনিজাবা। থহাঁ হমবা কতএ
নএ জা বহন ছী।
বঁনিজাবা বাঁজন-হম থহাঁকেঁ বঁনি চঢ়এবাঁ নেন নএ জা
বহন ছী। কিএক তঁ হমব জহাজ ধাবক বীচমে ঠাঢ়
ভ২ গেন থছি। তাহি দ্বাবে থহাঁকি বঁনি হম চঢ় াএবঁ।
এতেক গপ স্বনি কএ বঁসন্ত বাঁজন জে হে বঁনিজাবা।
হমবা ওতএ গেনাক বাঁদ, জহাজ ছূনাক বাঁদ জে জহাজ

खुजि जाएत तँ अहाँ हमरा छोड़ि देब ने ?
बनिजारा कहलक–हमर जहाज जे खुजि जाएत तँ हम अहाँकेँ छोड़ि देब।
बसन्त बीच धारमे जा कए हाथसँ जहाजकेँ छूबि कए बाजल। जहाज अहाँ जाउ तँ हमर जान बाँचि जाएत।
एतेक कहबाक देरी बहए लागल जहाज ओतएसँ बिदा भऽ गेल।
गन्जीनिअर बनिजाराकेँ कहलक–एकरा बैसा लिअ जहाजमे। कतहु आन ठाम ठढ़ भऽ जाएत तखन ?
बसन्त बाजल–हमरा मारि देने रहितहुँ तँ फेर जहाज ठाढ़ भेलाक बाद हमरा कतएसँ अनितहुँ ?
बनिजारा बाजल–छोड़ि दिअ एकरा।
बसन्त ओतएसँ धारक काते-काते बिदा भेल आ ओतए पहुँचि गेल जतए सीतक स्त्री कानि रहल छलीह।
बसन्त पुछलक–अहाँ किएक कानि रहल छी ?
एतबा सुनितहि ओ कानब बन्द कए चुप भऽ गेलीह।
बसन्त कहलक–हमहूँ दुखक मारल छी। हम दू सँ बिछुड़ि कए एक भऽ गेल छी।
स्त्री पुछलक–अहाँक की नाम छी आ अहाँक भाएक की नाम छी ?
बसन्त बाजल–हमर नाम बसन्त छी आ हमर भाएक नाम सीत छल।
ओ बात सुनैत स्त्री फेरसँ कानए लागल आ कहलक जे अहाँक भाए सुरधामी भऽ गेलाह। हुनके बियोगमे हम कानि रहल छी। ओ गप सुनि कए (रूप:१ एतए नाम दिन बसन्त सेहो अबैत अछि) बसन्त कहलक जे आब हमरो जीवित नहि रहबाक अछि।

ई गप सुनितहि सीतक स्त्री मरि गेलि आ बसन्त ओही समय बोनमे जा कए एकटा पैघ गाछपर चढ़ि कए अपन जान देबाक लेल तैयार भऽ गेल। ओही समय एकटा आकाशवाणी ओकरा अबाज देलक-बसन्त तूँ अपन जान नहि गमा। तोहर भाए जीवित छौक। जो जतए तोहर भाएक लाश छौक ओहिपर अपन दहिन हाथक कंगुरिया आँगुर काटि कए ओहिपर छीटि दे। तोहर भाए जीवित भए जएतौक। एतेक गप सुनि कए बसन्त गाछसँ नीचाँ उतरि गेल आ जतए ओकर भाएक लाश छल ओहिपर ओहिना कएलक। सीत बाम-बाम बजैत उठि गेल। दुनू भाए गला मिलल। ओहि ठामसँ दुनू भाए विदा भेल। दिनसँ साँझ पड़ि गेल आ दुनू भाए एक ठाम गाछक नीचाँ अटकि गेलाह। सीत कहलक-भाए बसन्त एतहि रुकैत छी। भोर भऽ जाएत तखन फेर हम सभ विदा होएब।
दुनू भाए ओहि गाछक नीचाँ रात्रि व्यतीत करए लगलाह।

खिस्सा रूप +: रात्रिक चारिम पहर तँ बोनसँ एकटा साँप बहार भेल आ गाछपर चढ़ए लागल। ओही गाछपर हंसक खोता रहए। ओहि हंसक खोतामे दू टा हंसक बच्चा रहए। साँपकेँ देखि कए दुनू बच्चा अवाज देमए लागल। ई अवाज दुनू भाए सुनलक आ साँपकेँ गाछपर चढ़ैत देखलक आ सोचलक जे ई साँप बच्चा सभकेँ खा जाएत से एकरा जे मारि दी तँ बच्चा सभक जान बचि जाएत। ओ सभ साँपकेँ मारि देलक।
तावत हंस दहमे चरए लेल गेल रहए। हंस ओहि खोतामे कतेक बेर बच्चा देने रहए मुदा एकोटा बच्चा उठा नहि सकल रहए। भोरे सकाले हंस दहसँ चरि

कए आएल। बँचा सभकेँ जीवित देखि बड्ड प्रसन्न भेल। बँचाकेँ अहाँ देमए लागल। बँचा हँस घुमा लेलक आ पुछलक-माँ अहाँ एहि गाछपर कतेक बँचा पाड़लहुँ आकि हमही पहिल बँचा छी।
माँ बाजलि-नहि एहि गाछपर कएक बेर हम बँचा देलहुँ सदा हँस अही दुनू हम आग देखलहुँ।
बँचा बाजल जे हमरो हँस अहाँ नहि देखि सकितहुँ, जे ओ मसाहिब नहि बहितए। नीचाँ देखू की पड़ल अछि।
हंस देखलक जे नीचाँ मे एकटा साँप पड़ल छैक आ दू टा मसाहिब छिबि बहल अछि।
बँचा बाजल-ओहि साँपकेँ यैह दुनू मसाहिब मारलक अछि। पहिने जा कए ओही मसाहिबकेँ खएबा लेल दियौक। ओ आओत तँ हम खाएब।
हंस नीचाँ उँतबि कए आएल आ कहलक- मसाहिब, जखन अहाँ नहि खाएब तँ ओ दुनू बँचा सेहो नहि खाएत।
ओ दुनू भाए कहलक-माँ खेनागसँ प्रेम पैघ अछि। माँ हमहुँ सभ परिस्थितिक मारल छी। हमर सभक के सहायता करत ?
हंस बाजल-हमर सहायता अहाँ कएलहुँ से अहाँक सहायता हम करब। निअ एकटा बँचा हम अहाँ सभकेँ दैत छी। ओ अहाँक सहायता करत। सियान भेलापर ओ अहाँ दुनू भाएकेँ अपन पाँखिपर बैसा कए उँड़ि सकैत अछि। जतए मोन होएत ओतए जा सकैत छी। ओ ररदान हम दैत छी जे अहाँ दुनू भाए सफल बहब। दुनू भाए प्रणाम कए ओतएसँ बिदा भेलाह। ओ सभ जतए कतहु बिलमैत बहथि ओतए हंस अपन दुनू

পাঁখি পসারি ছাহ কএ দৈত ছল। এহি প্রকারেঁ কিছু দিন বীতল। হংসক বঁচা পৈঘ ভ২ গেল। ও আর দূনূ ভাএকেঁ চঢ়ৃ া কএ ল২ জাএ যোগ্য ভ২ গেল। হংস বাঁজল–ভাএ। আর তোঁ দূনূ ভাএ হমব ঙঁপব বৈঁসি জাহ। অহাঁ জতএ কতহ্ কহবঁ হম অহাঁ সভকেঁ লএ চলবঁ।

দূনূ ভাএ ওতএসঁ হংসপব সরাব ভএ আগূ বিঁদা ভেলাহ আ জা কএ কংচনপ্পব শহব পহুঁচলাহ। নগবক বাঁহব একটা বঁবক গাছ ছল। ওহী গাছক নগ ও সভ ডেবা খসেনক আ বহএ নাগল আ শহবমে জা কএ কাজ কবএ নাগল। সাঁঝ ভেলা উঁত্তব ওহী গাছক নগ খেনাগ খা কএ ও সভ সূতি জাথি। হংস ভবি বাতি দূনূ ভাএক দেখ–বেখ কবৈত ছল। কিছু দিন্বকা বাঁদ ওহি কংচনপ্পব শহবক বাজাক কংচনা নাম্না বেঁটীসঁ সীত প্রেম কবএ নাগল।

ওহি নড়কীক প্রত্যেক দিন হ্নূনসঁ ওজন কএন জাগত ছল। প্রেম কএনাক বাঁদ নড়কীক ওজন বঁহ্ত বঁঢ়এ নাগল। বাজাকেঁ খবঁব ভেল জে নড়কীক ওজন কিএক বঁঢ়এ নাগল অছি। বাজা অপন মহনক চাব্দ কাত সিপাহীক পহবা দিআ দেনক। তাদ্রূপব সীত হংসপব সরাব ভএ মহনমে চনি জাগত ছলাহ। সম্পূর্ণ শহবমে হিনকোব উঁঠি গেল জে কে ঙা নোক অছি জে হমব বাজাক মহনমে চোবিসঁ চনি জাগত অছি। এক দিন সংজোগসঁ সীত গেল আ কোচপব বৈঁসি দূনূ গোটে হঁসী মজাক কবএ নাগল আ অহীমে দূনূ গোটেকেঁ নিন্ন নাগি গেনৈক। হংস বেঁচাবা ঘ্বি কএ আপস অপন ডেবাপব আবি গেল আ ভোবমে দূনূ গোটেকেঁ এক্কে সংগ মহনমে পকড়া নেল গেনৈক।

राजा सभटा गप पुछलक। सीत सभटा गप कहलक। लड़की कहलक जे हमर भाग्यमे ईएह अछि आ ईएह रहत।
राजा सोचि कए कहलक-अहाँ अपन भाएकेँ लए आउ आ हंसकेँ सेहो।
कसन्त आ हंसकेँ सीत लए अनलक। हंसकेँ देखि कए राजा बड्ड प्रसन्न भेल।
राजा कहलक-हमर मन्त्री लग एकटा आर बेटी छैक। दुनू भाएक एकहि बेर बियाह कए देल जाएत।
बड्ड धूम-धामसँ दुनू भाएक बियाह भेल।
सीतकेँ कंचनपुरक राज भेटैत कारण राजाक तँ एकेटा बेटी रहए। ताहि द्वारे सीत किछु दिन बितलाक बाद कहलक जे आब हम अपन शहर जाएब।
राजा खुशीक संग ओहि चारू गोटे बेटी-जमाएकेँ बिदा कएलक। सीत-कसन्त दुनू भाए अपन देश बिदा भेल।
किछु दिनुका बाद ओ सभ अपन नगर पहुँचल तँ ओतुक्का हालत बड्ड गम्भीर देखलक। अपन राजक एक कोनमे ओ सभ अपन घर बनेलक आ रहए लागल। सीतक माए आ पिता दुनू गोटे आन्हर भए गेल रहथि। सभ दिसनसँ विपत्ति आएल छलन्हि। एक दिन हुनका पता लगलन्हि जे हुनकर राज्यक एक कोनमे कोनो दोसर राजा घर बना कए रहि रहल अछि। चलू ओकरासँ भेँट कए आबी।
ओ सभ जखन अएलाह तँ दरबज्जापर सीत-कसन्त दुनू गोटे चीन्हि गेलथि जे ईएह हमर माए-बाप छथि। दुनू भाए अपन-अपन स्त्रीकेँ इशारा कएलन्हि। एहि दुनू गोटेकेँ भीतर लए जगयन्हु आ नीक जेकाँ असनान

কবরৗঙ, নীক কপড় । পহিবাঙ আ খূৰ আ নীক খেনাগ খ্আঙ আ তকব ৰাদ এতএ আনূ আ মংচপব ৰৈসাঙ । তকব ৰাদ সীত আ ৰসন্ত দ্নূ ভাএ মাঁ-পিতাক আগাঁ ঠাঢ় ভএ কহনন্হি-ঙা তঁ ৰতাঙ জে অহাঁকেঁ কৈকটা ৰেটা অছি ।
বাজা মহেশ্বেব সিংহ কহনন্হি-হমবা দূ টা ৰেটা বহএ ক্ষদা আৰ একোটা নহি অছি । হমব ভাগ্যক দোখ অছি । নহি জানি ও সভ জীরিত অছি আকি মবি গেন ? হম তঁ মবৰা দেনে বহিযৈক ।
সীত-ৰসন্ত ৰাজন-নহি । অহাঁক দ্নূ ৰেটা জীরিত অছি । এতেক কহৈত ওকবা সভক আঁখি নোবা গেনৈক ।
--পিতাজী ৰৈহ সীত-ৰসন্ত হম সভ ছী ।
ওহী সময বাজাক আঁখি খ্জি গেনৈক আ দ্নূকেঁ অঁকরাবমে ভবি পকড়া কেঁ ও কানএ নাগন আ অপন গনতী স্বীকাব কএনক । ধন্য নানা, অহাঁক অঙবদা ৰঢ়এ । অমব বহ্ন ।

রর্ণমানা শিক্ষা: অংকিতা

অকাদারুণ সময ছন । অংকিতা অঙৈঠীমোড় কএনক । ওকব পিতা কহনন্হি-
"অতত্তহ কবএ ছী । জন্দীসঁ মটকাবি কহ চনূ ।

অংকিতা অকচ্ছ ভহ গেনি । চনৈত-চনৈত ওকব পএব দ্খা গেনৈক ।
বস্তামে ও একটা নানছড় ী ৰনাকেঁ দেখনক ।
"হমবা নানছড় ী কীনি দিঅ" ।

“খঁকিতা খকব-ধকব নহি খাউঁ” ।
“নহি । হমবা ওা চাহৱেঁ কবী” ।
“খদ্ধঁ খধক্কী ছী । এখনে তঁ কতেক বাস চীজ খএনে বহী” ।
পিতা তৈযো ওকবা নানছড় ী কীনি দেনহ্নি ।
বস্তামে খগিনরান দেখি খঁকিতা ৰাঁজনি-
“ওা খাগি কিএক নাগন খছি” ?
“ৰৌন-ঝাঁক্ষব খতম কবৰাঁক নেন” ।
“খকখজ গাছ সভ তৈযো নহি জবন খছি” ।

প্রশ্ন: ৰঁচিযাক নাম কী ছী ?
উঁত্তব: খঁকিতা ।
প্রশ্ন: সময কেহন ছন ?
উঁত্তব: খকাদাৰুণ ।
প্রশ্ন: খঁকিতা চনৈত-চনৈত.......ভ২ গেন ছনি ।
উঁত্তব: খকছ ।
প্রশ্ন: পিতা ......খাএ নেন মনা কেনহ্নি ।
উঁত্তব: খকব-ধকব ।
প্রশ্ন: বস্তামে ৰৌন-ঝাকঁড়কেঁ খাগিসঁ জবাওন জাগত বহএ । ওহি খাগিক নেন প্রযাক্ত শৰ্দ্ধ বহএ... ।
উঁত্তব: খগিনরান ।
প্রশ্ন: খগিনরানমে কেহন ৰৌন-ঝাঁক্ষড় নহি জবন ?
উঁত্তব: খকখজ ।

খাগাঁ:-
কনী কান দ্নূ ৰাঁপ ৰেঁঠী গাছক ছাহমে ৰৈসি জাগ গেনাহ । খঁকিতা উঁকড় ূ ভএ ৰৈসি গেনি খা

উঁকসপাকস কবএ নাগনি।

“থহাঁকেঁ উঁখী–রিঁখী কিএক নাগন থছি থঁকিতা ? সাঁঝ ভঽ গেন থছি। কনেক কান থাব চনৰঁ তঁ ঘব থারি জাএত”।

তখনে থকাসমে থঁকিতা উঁকাপতঙ্গ দেখনক।
“এক উঁখবাহা চননাক বাঁদো গামপব নহি পহুঁচনহুঁ”।
“চনূ। চনী। বস্তা ধঽ কঽ চনূ নহি তঁ উঁড়ক্সী দেহমে নাগি জাএত”।
“দিন বহিতএ তঁ খেতমে ওড়হা খএতহুঁ”।
“কনমমে ওগবৰাহ সভ থারি গেন। কড় কেমান থছি, থপন–থপন মচানপব”।
“গজোবিযামে দেখূ। দিনমে ৰবখা ভেন বহএ সে নোক সভ খেতমে কদৰা কেনে থছি”।
“কমবসাবি থারি গেন থা থপন সভক ঘব সেহো”।

টিপ্পণী: পহিন ভাগমে থ উঁত্তবৰনা প্রশ্ন পূছন গেন ছন। এহি ভাগ নেন “ও” থা “ক” ৰ্ণসঁ শূরু হোথএৰনা উঁত্তব সভক নেন প্রশ্ন ৰনাউঁ।
এহিনা কচটতপ ৰ্ণমানাসঁ শূরু হোথএৰনা শৰ্ব্দ ৰহন খিস্সা ৰনাউঁ থা ৰচাকেঁ স্বনাউঁ থা ফেব ওকবাসঁ প্রশ্ন পূছূ। খিস্সা কতাক ৰেব ৰচাকেঁ স্বনাওন জাএ, সে ৰচাক ক্ষমতা থা কথামে প্রযাওঃ শৰ্ব্দাবনীক সংখ্যাক হিসাৰসঁ নির্ধাবিত কন্ধ।

<u>किछु दिन बीतल सरल स्वभावक अधिकारी—(ओम प्रकाश झा)</u>

ভদরাবিমে মেঘ নাধন বহৈ ছৈ, রিদাগবী–তিদাগবী নৈ
হোগ ছৈ হ্মদা পনিঔবা ফড়ৈ ছৈ। ভদরবিযা নাধন
ছৈ, রিতবোচাবক কোনো খগতা নৈ।
গোনৈসী নীক গপ নৈ। হ্মদা জঁ কোনো রহব দিস
নোকান ভহ জাএ তঁ কোনো হর্জ নৈ।
জঁ মৈথিনী সাহিহমে রহবমে কহন গজন সভক সংকনন
হ্খএ তঁ তকব সর্বশ্রেষ্ঠ কহরৈকা হেতা ওম প্রকাশ
জী।
“করেজাসঁ শোণিত রহারৈত বহনৌ
করেজামে প্রেম রসৈ ছৈ খা ওগসঁ শোণিত রহি বহন

छन्हि, तँ किযো চক্ষু ভোকনে হেতন্হি তখনে নে। কে থিছি এহেন চণ্ঠ ! হ্মদা শৈবক দোসব মিসবা কইএ..
রিবহ–নোব কখনো কহাঁ খসন হমবা"
গতিহাস ৰনৈত–ৰনৈত বহি গেন কাবণ ?
একটা খিস্সা ৰনি জগতে থহাঁ সংকেত জৌं ৰুঝিতহুँ
হমহী ছনহুँ থহাঁক মোনমে কখনো তঁ কহিতহুँ
সে নে হিনকে দোষ নে হুনকে।
সে হিনকব গন্ধা ছন্হি জে জড়ৈত কবেজ থাগিমে জড়াতে বহএ:
পতা নৈ কোন থাগিমে জবৈত বহন কবেজ হমব
পানি নৈ খানী ঘীএ টা চাহিত বহন কবেজ হমব
তঁ কোনো প্রেমীক প্রেমক থাঘাত সহনে ছথি গজনকাব, থা ওগ প্রেমীসঁ এতেক নগ ছথি জে রিবহ–নোব ৰহেনে ওকব ৰদনামী ভ২ জেতৈ তেঁ রিবহ নোব নৈ ৰহরৈছথি। চাহি ছথি জে কবেজ থাগিমে জড়াতে বহএ, থা থাগিমে পানি নৈ ঘী ঢাবন জাগত বহএ। থা নোককেঁ হোগ ছৈ জে হুনকব হৃদয থা মোন কঠোব ছন্হি ! থা তেঁ ও কহি ছথি..
কহু কী কিযো ৰূঝি নৈ সকন হমবা
হঁসী সভক নাগন ৰহ্ত ঠবন হমবা
থা সংগমে ওাহো:
এতেক মাবি খেনক ঝূঠ প্রেমক খেনমে জমানাসঁ
কিযো দেখনক নৈ ফহবৈত বহন কবেজ হমব
হ্মদা নোকক ৰুঝবৈ নৈ ৰূঝবৈ, কিদন সাতী নে ! ও ৰহবে হ্মতকাবিৰমে কহন একটা দোসব গজনমে কহি ছথি..
ভিড়ত থারি হমবাসঁ ঔকাতি ককবো কহাঁ ছৈ
জখন–জখন নডনৌं হবদম থপনেসঁ নডনৌं হম

তঁ কী গজনকাব ঘমল্ডী ছথি, নৈ সেহো নৈ, ও ৰ্হবে হজজমে কহৈ ছথি:
কটৈ২ দিযৌ "ওম"ক ক্ষড় ী খাৰ দ্নিযাঁ নে
জঁ গাম ৰ্চে ম্কৈসঁ তঁ পাগ নিখবৈ ছৈ
তঁ কী মৈথিনীক গজনকাব খখনো প্রেমে-রিবহমে ওমবাএন ছথি ? নর রিষয নৈ পকড় া বহন ছথি ? ক্ষদা সে নৈ ছৈ, ৰ্হবে-সনীমমে নিখন গজনক ঙা শৈব স্বনূ:
ধবনে বহত সভ হথিযাব শস্ত্রাগাব
ৰ্নৈ মিসাগন ভূখে মমাবন নোক
খা ঙা ৰ্ান-গজন স্বনূ। ৰ্ান-করিতা/ গজন স্বনিতে নোককেঁ উঁল্লাসক স্লব স্বনা পড় ৈ ছৈ, ক্ষদা ৰ্ান-মজদূবক জিনগীমে সে কত২ পারী, ক্ষদা খাস তঁ ছৈ, তেঁ:-
চাৰু কাত পসবন দ্খক খন্হবিযা ছৈ
কটৈতৈ ঙা খন্হবিযা খা ৰ্ঠ ৰৈ হমদ্ধুঁ
খা ঙা খাস খানো গজনমে খছি:
সাগবক কাত সীপ রিঁছৈত বহৰ হম
কোনো সীপমে কখনো মোতী ভেটৈৰৈ কবতৈ
ওম প্রকাশি জীকেঁ জহিযা মোতী ভেটৈতন্হি তহিযা, ক্ষদা মৈথিনী সাহিত্যকেঁ হ্নকা রূপমে একটৌ মোতী ভেটি গেন ছৈ, ও চীন্হি নেন গেন ছথি, বূঁঝি নেন গেনছথি।

বামিরনাস সাহ্জীক দধৃ ৰেঁচনী নঘ্কথা সংগ্রহ

'গামক গাম্ভী' নঘ্কথামে ৰ্ধ্খাক দাদা কানেসবক গম্ভকঙ্কীমে দরিঁ ক' মবি গেনাক প্রসংগ প্ববনা গেন ছনৈ, নরকা পংচ সভকেঁ ৰ্ম্নে নৈ, খাকি ৰ্ম্নন বহনোপব ওকব মহত্ত নৈ খড়া যা ক' ৰ্ম্নন বহৈ। সে জখন ঋখিযাজে ঐ গপক চর্চা কথাক ক্নাগমেক্মে করৈ ছথি ত ঁ সভ মহত্ত ৰ্ম্নৈ ছথি জে কোনা ৰোন কনম–গাম্ভী ৰঁনন।
'কমতিযাক কামত' ক খিস্সা খা কমতিযাক ঘবকে ঁ হৱেঁনী কহৈপব মদীনা দাদীক রিবোধপব কমতিযা হৱেঁনী শঙ্কারনীক জন্ম ঐ কথাক শীর্ষক ঙঁচিতে ৰঁনন।
'ঘ্মি গাম চনৃ' কথাকে ঁ কনী খাব চ্স্ত কবৰাঁক খগতা ছন, কথা সোগবী ঘবস ঁ শ্বদ্ধ হোগএ ঋদা খঁত কপচা গেন নগৈএ।
'রিঁপৈত' মে রিঁপৈতক সংগ (রিঁপৈত ছোড়া খাব কে ?) নীক ৰঁনন খছি।

'ममैंक जड़ि सिन्नविधा आमक गाछ' भिन-भिनौजपब निखन कथा छी।
'जाबैन' मे नर चीजक रिबोधक संग नेखक ठाढ़ रुन्नाग छथि, कावण मकिनाके ँ ध्ँ आस ँ कोगवना कण्ठके ँ ओ राद-रिराद मे नै अननि।
'जेकेन पाठ ने पढ़ए प्वत्ता अपने सिव रिसए' पढ़ि नेखक अंधरिश्वासक पक्षमे ठाढ़ रुन्नाग छथि। आग कान्हि टी.री. पव भुतका आ अंधरिश्वास आधावित सीबियनक पक्षमे यएह सफाग श्वकुकेमे देन जागत अछि जे ई मात्र मनोबंजन नेन रनन अछि आ एकब उद्देश्य अंधरिश्वासके ँ रढ़ रा देर नै अछि। से ईमो कथा मनोबंजने उद्देश्यस ँ पढ़ू।

'कौन्हक स्वचा कक तेन' कमबा किसारें ऐ नघुकथा संग्रकक सर्वश्रेष्ठ नघुकथा अछि। कोना नोक अपन कटीब उंद्याग पूँजीरादक फेवमे खतम केनक, ई कथा तकवे रिस्ताव अछि आ आशाक संग खतम कोगए।
'दूधरेंचनी' ऐ नघुकथा संग्रकक टीगटेन कथा छी। रकनेनस ँ रैटीक रियाक। पतिक मृत्यु आ पनी द्वावा असगवे रान-रचाके ँ पोसर जिनगीक नक्ष्य। कदा फेव मोकभंग आ फेव समाजक नेन किछु कबराक गछा संग कथाक समाप्ति।
'गोदानक गाए घुमि घव आएन' अंधरिश्वासपव चोट अछि। से 'जेकेन पाठ ने पढ़ए प्वत्ता अपने सिव रिसए' क रिपवीत।
'असिवराद' यत्रा वृत्तांत सन अछि, आ 'कम' शैनीक बचना अछि। आ कावण आधावित संयोग आकि भविष्यराणी ऐमे दू रेंव भेन। एक कोसीक नाक आ दोसव

ঘ্বতী কান ৰ্সক দুর্ঘটনা।
'ওা কেকব দোখ' মে কথানক খাগূ ৰ্ঢ়এ ঝদা সভ হীস নীকসঁ নৈ হৌদাগএ। ঝপনক কথা খাকি কাবীক ? ঝপনক কথা ভঁসিযাগত খছি তঁ কাবীক কথা সংগ নীক জকাঁ মিজ্মব নৈ ভ' পৰৈএ।
কথা–সংগ্রহ ঝদা জীতি গেন খছি। কাবণ খচী একব শৈক্ষাবনী খা হকড়া সভক সহনতা। জঁ একব খনুবাদ কএন জাএ তঁ ভ' সকৈএ জে 'কৌন্‌্‌ক স্বচা কক তেন' ক খনাৰে খান কথা সভ সামান্য ৰ্‌ঝা পড়এ, ঝদা মূন মৈথিনীমে ওা সংগ্রহ জীতন খছি। গামক সমাজক সমস্যাক ৰ্ণনি জে নগ্রক নোককেঁ ছোটে খা প্ৰবান ৰ্‌ঝা সকৈএ, গামক নোক নেন পৈঘ খা সমকানীন খছি; খা বাম ৰিনাস সাহ্‌জীক শৈক্ষাবনী ঐ ৰ্ণনিক সংগ ন্যায কেনে খছি।

বাজদেৱ মল্ডনক খম্ৰ্বা

কৱিতা: কৱিতা নোক কম পঢ়ত খছি। সংস্কৃতসন ভাষাক প্রচাব–প্রসাব নেন কএন জা বহন প্রযাসক খংতস্মাত সম্ভাষণ–শিৱিবমে সবন সংস্কৃতক প্রযোগ হোগত খছি। কথা–উপন্যাসক খাধ্নিক ভাষা সভসঁ সংস্কৃতমে খনুবাদ হোগত খছি ঝদা কৱিতা ওহি প্রক্রিযামে ৰাবন বহত খছি। কাবণ কৱিতা কিযো নৈ পঢ়ত খছি খা জৈ ভাষা নেন শিৱিব নগেৰাক খাবশ্যকতা ভঃ গেন খছি, তৈ ভাষামে কৱিতাক খনুবাদ

ऊर्जाक अनस्थान प्रयोग मानल जाइत अछि। मैथिलीमे स्थिति एहेन सन भऽ गेल अछि, जे गाम आओर शहरमे भऽ जाए तँ ऐ भाषाक बाजएबलाक संख्या बड्ड न्यून भऽ जाएत। लोक सेमीनार आ बैसकीमे मात्र मैथिलीमे बजताह। मैथिली-उच्चारण लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता तँ अनुभूत भइए रहल अछि। तँ एहि स्थितिमे मैथिलीमे कविता लिखबाक की आवश्यकता आ औचित्य ? समयाभावमे कविता लिखै छी, एहि गपपर जोर देलासँ ई स्थिति आर भयावह भऽ सोझाँ अबैत अछि। एहना स्थितिमे आस-पड़ोसक घटनाक्रम, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, आक्षेप आ यात्रा-विवरणी यएह मैथिली कविताक विषय-वस्तु बनि गेल अछि। कदा ऐ सभ लेल गद्यक प्रयोग किए नै ? कथाक नाट्य-रूपान्तरण रंगमंच लेल कएल जाइत अछि कदा गद्यक रूपान्तरण कवितामे कोन उद्देश्यसँ। समयाभावमे लिखल जा रहल ऐ तरहक कविता सभक पाठक छथि गोलौसी केनिहार समीक्षक लोकनि आ स्वयं आत्मरूपक माध्यमसँ अपन कविताक नीक समीक्षा केनिहार गद्यसँ पद्यमे रूपान्तरकार महाकवि लोकनि ! पद्य सर्जनाक मोल के बूझत ! व्यक्तिगत लौकिक अनुभव जे गम्भीर धरि नै उतरत तँ से उत्कान्त रहला उपरान्तो उत्कृष्ठ कविता नै बनि सकत। पारलौकिक चिन्तन कतबो अमूर्त रहत आ जे ओ लौकिकसँ नै मिलत तँ ओ सेहो अत्कान्त वा गोलौसी आ वादक सोंगरक अछैतहुँ सिहवा नै सकत। मनुष्यक आवश्यक अछि भोजन, वस्त्र आ आवास। आ तकर बाद पारलौकिक चिन्तन। जखन बुद्ध ई पुछै छथि जे ई सभ उत्सवमे भाग लेनिहार सभ सेहो मृत्युक अवश्यंभाविताकेँ जनै छथि ? आ से

জে জনৈ ছথি তখন কোনা ঁউসেরমে ভাগ নঽ বহল ছথি। সে ঋাধ্নিক মৈথিনী করি জখন ঋপন ভাষা–সংস্কৃতিক ঋা ঋার্থিক ঋাধাবক ঋাধাব ঋপনা পএবক নীচাসঁ রিল্বপ্ত হোগত দেখৈ ছথি ঋা তখনহ্ ঋাঁখি মূনি কঽ ওহি সহতাকেঁ নৈ মানৈত ছথি, তখন জে দেশী–রিদেশীক ঘটনাক্রমক রাদ করিতামে ঘোসিযারঁএ চাহি ছথি, দেশজ ঋা দনিত সমাজ নেন জে ও ঁউপকবি কঽ নিখঽ চাহি ছথি, ঁউপকাব কবঽ চাহি ছথি, তঁ তাহিমে ধাব নৈ ঋারিঁ পরৈঁ ঋছি। ক্ষদা জখন বাজদের মংডন করিতা নিখৈ ছথি–

....

টপ–টপ চূবৈঁত খূনক বূঁন সঁ
ধবতী ভঽ বহন স্নাত
পূছি বহন ঋছি চিড়ৈ
ঋপনা মন সঁ ওা বাঁত
ঋারঁঽ বাঁনা ওা কাবী ঋা ভাবী বাতি
কি নহি বাঁচত হমব জাতি... ?

তঁ সে হমবা সভকেঁ সিহবা দৈত ঋছি। করিক করিল্বক জাতি, ওগ চিড়ৈক জাতি ঋাকি..। কোন গোনৌসী ঋা ঋামেক্ষথ্রু ঋাক্ষখক দবকাব ছৈ ঐ করিতাকেঁ। কোন গোনৌসীক ঋা পংথক সোংগব চাহী ঐ সল্বেদনাকেঁ। তঁ করিতাকেঁ ঁউক্রেষ্ঠতা চাহী। ভাষা–সংস্কৃতিক ঋাধাব চাহী। ওকবা খানী ঋাযাতিত রিষয–রস্তু নৈ চাহী, জে ওকবাপব ঁউপকাব কবরাঁক দৃষ্টিএঁ ঋানন গেন ছৈ। ওকবা ঋাযাতিত সল্বেদনা সেহো নৈ চাহী জে ওকব পএবক নীচাসঁ রিল্বপ্ত ভাষা–সংস্কৃতি ঋা ঋার্থিক ঋাধাবকেঁ তকরাঁক ঁউপবক্ষপকী ঁউপস্থিত প্রযাস মাত্র হোঋএ। নীক করিতা কোনো রিষএপব নিখন জা সকৈত ঋছি। বূঁহ্রক

मानरक भविष्यक चिन्ताकेँ नञ कऽ असञ्जाति मनकेँ सम्बल देबा लेल सेहो, लै तँ लोक प्रवचनमे ढ़ ा ंगी बाबा लेल जागते बहुताह। समाजक भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारक लेल सेहो, लै तँ मैथिली लेल शिक्षिव नगाबए पड़त। विश्वक संप्रेषणीयता सेहो आवश्यक, लै तँ करि लेल पहिलेसँ वातावरण बनाबए पड़त आ हुनकव करिताक लेल मंचक ओविआओन कवए पड़त, हुनकव शेक्षारली आ वादक लेल शिक्षिव नगा कऽ प्रशिक्षण देल जएबाक आवश्यकता अनुभूत कएल जाएत आ से करि लोकनि कणयो बहल छथि !

मिथिलाक भाषाक कोमल आवोह-अवबोह, एतुक्का सर्वहावा वस्त्रक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का बहल-सहल आ सांस्कृतिक कञ्चबता आ वाजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म आ दर्शन सेहो साहित्यमे अएबाक चाही। आ से लै भेले साहित्य एकभगाह भऽ जाएत, ओनर्ड़ा जाएत, फ्रेम नगा कऽ ठेंगबा जोगड़ भऽ जाएत। करिता बचब विवशता अछि, साहित्यिक विवशता। जहिया मिथिलाक लोककेँ मैथिली भाषा सिखेबा लेल शिक्षिव नगाओल जएबाक आवश्यकता अनुभूत होएत, तहिया करिताक अस्तित्वपव प्रश्न सेहो ठाढ़ कएल जा सकत। आ से दिन लै आबए तै लेल सेहो करिकेँ सतर्क बहए पड़तन्हि। आ से वाजदेव मंडल सतर्क छथि आ तेँ हिनकव करिता-संग्रह अम्बवा एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली करिता संग्रह बनि आएल अछि।

<u>**मैथिलीक भिखावी ठाकुवक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकरि वामदेव प्रसाद मण्डल 'म्मावदाब'क गीत आ**</u>

ঝাৰু – “হমৰা ৱিন্ন জগত স্বন্না ছৈ”

মৈথিলীক ভিখাৰী ঠাকুৰ “ৰামদেৰ প্ৰসাদ মন্ডল "ঝাৰুদাৰ" ” দগ ছথি মাষ্টি আ কহৈ ছথি “হমৰা ৱিন্ন জগত স্বন্না ছৈ” ।
মৈথিলী সাহিত্য ৱা কোনো ভাষাক সাহিত্যমে ঝাৰু নামক কাব্য ৱিধা স্বননে বহিঐ ? ৰামদেৰ প্ৰসাদ মন্ডন “ঝাৰুদাৰ” জীক ঝাৰুকেঁ ছোড়ি কহ ? নৈ নে !
কাৰণ ৰামদেৰ প্ৰসাদ মন্ডিন “ঝাৰুদাৰ” মহীসক পীঠ, খেতক আড়ি –ধূৰ আ ৰস্তা চৌৰষ্টিযাপৰ স্বতঃ স্ফূৰ্ত জে নৰ ৱিধাক আৱিষ্কাৰ কেনে ছথি সে সমাজক দৃগ্গৰ্ণকেঁ খৰড়া সঁ খৰড়ৰাঁ নেন ছৈ । ফুনঝাড়ূ সঁ খৰিহান নৈ ৰঁহাৰন হএত, আ খৰড়া সঁ ওসাৰা নৈ ৰঁহাৱি সকৈ ছী । নাঠীমে ৰাহড়িক ডাঁষ্টক ঝাৰুসঁ মোন–ঝান সাফ কএন জাগএ । সে তৰহ–তৰহক ৰাঁঠনি, আ খৰড়াক প্ৰচনন অছি । ৰামদেৰ জী গীত সেহো নিখৈ ছথি, আ পনিসোখা সন বংগ ৱিবংগক ঝাৰু সেহো । জেহেন সমস্যা তেহনে ঝাৰু । আ মৈথিলীমে জখন গোত্ৰ–মূনক উঁপনাম বখৰাঁক প্ৰবৃত্তি কিছু নৰ আ প্ৰবান নেখকমে দেখন জা বহন অছি তখন ওা “ঝাৰুদাৰ” উঁপনাম কী সভ চীজ ৱিন্ন কহনে কহি জাগএ ?
আ কৱিক আমেৱিশ্নাস, হম নৈ তঁ কিছু নৈ ।
হমৰাসঁ পহিনে কোনো নৈ শাসন ।
নৈ ছৈ কোনো ধৰ্মক ৱিধান । ।
হমৰা ৱিন্ন জগত স্বন্না ছৈ ।
হতৈৰঁনা ছৈ পশ্ব সমান । ।
আৰঁ তাকি নিখ ঐ ঝাৰুমে ৰৌদ্ধ দৰ্শনক শূন্যৱাদ আ

শংকবক খদ্বিত দর্শন !
হ্নকা পৈসাক বোগ নৈ চাহী তঁ খধ্বিশ্বাসক বোগ সেহো নৈ ।
সভ রঁনন ছৈ পৈসা বোগী,
খহ্মনরিশ্বাস, হ্মবীতক জোগী
হ্মদা ঐ নেন বামক তীব কমান চাহী কী ? কাবণ তওা নেন তঁ বামক খরতাবক প্রতীক্ষা কবএ পড়ত । নৈ, স্বযংপব কৰু বিশ্বাস, কাবণ জঁ সমস্যা খহাঁ ছী তঁ সমাধান সেহো খহী ।
খহাঁ রিনা কে ওা দ্খ হবতৈ
খহীসঁ ওা সভ দানর মবতৈ
কনমকেঁ এক রেঁব হেব রঁনাবূঁ
বামক তীব কমান যৌ ।

খাপসী একতাক মহত্ব করি নীক জেকাঁ বুঁঝৈ ছথি, হ্মদা একতা কোনা খাওত, তকব সমাধান দেখূ:
একতা রঁনৈনে সহএ পড় ছৈ
ঘঠৈ নগা কহ রঁহএ পড় ছৈ
খপন গনতপব নহএ পড় ছৈ ।
নাবীক স্থিতি, সে ও নাবী গামক হোথি রা ও নেতা নে কিএ রঁনি গেন হোথি, খখনো ঠৌস উঁঠরৈত খছি, খা করি জঁ ঝাৰুদাব হোথি তঁ ওওা ঠৌসক রর্ণ এনা হোওাত খছি:
নাবী সীতা বাধা খংশী,
প্বৰুষ রঁনন ছৈ বাবণ কংশী ।
হেব কোনা কহ চনতৈ,
ওা ঘব দ্নিযাঁদাবী যৌ ।

ঝদা তকব ঙঁপায, কী প্বকষ ৰঁদনত নাবীক দশা ?
নৌ, ঞা খামেরিশ্বাস স্বযং নাবীমে ছন্হি, ও শিক্ষাক ডোব পকড়তী খা...
খাৰ নৌ নাবী বহৰ খনাবী,
ৰঁনৰেঁ সখত কঠোব যৌ।
তঁ কী রএহ নাবী রা জাতি–পাতি খাদিক সমস্যা টৌ পব ধ্যান ছন্হি করিক ? নৌ, ও প্রদূষণ সন রিক্তানক দেনপব সেহো চিন্তিত ছথি:
রিক্তানক ঞা দেন প্রদূষণ
ৰঁনি ঘব ঘ্সন চ্হাব যৌ।
ৰাঁঘ ৰঁনি ঞা ঝঁহ ৰৌনে খছি
দ্ নযাঁ ৰঁনন সিকাব যৌ

খা প্রদূষণ কোনা কম হএত, সেহো ও নর খাঠ়ীকেঁ বাহ দেখৰেঁ ছথি:
গঁজন হো পূবা কংডীসন
ধ্খাঁ নৌ ছোড়ৈ ৰেঁকাব যৌ।
কব্ধ খিযান কিছু খগিনা পিঠ়ী
কোনা বচত সংসাব যৌ।
খা ঐ পব হ্নকব একটা ঝাব্ধ সেহো ছন্হি, ও রনে টৌ নৌ রনরাসীক সেহো সংবক্ষণ চাহি ছথি:
রন ঝীন নদী খা রনরাসী
পহাব পঠাব সংগ বেগিস্তান।
কব্ধ স্ববক্ষা পর্যারিবণ কেব
ঐ সঁ দেশী ৰঁনত ধনরান। ।

দহেজ খা কাটৈব প্রথাপব বামদের জী নিখৈ ছথি:
খাগ হব ঘবমে সীতা বোঐ ছৈ

बाढ़ि-बाढ़ि भरि नै जनक स्वतः छै
कतए सँ एतै दहेजक पैसा
हेतै केना कन्यादान यौ

मिथिलाक स्वाभावकेँ गर्व छन्हि, कोन मिथिलाक:
जगतजननी जतए गंगा धाबा, ज्याति लिंग केर जतए
उज्ज्याबा।
रजरत त्तुलसी राम्हिकक ग्रंजि बहल उपदेश।

आदा बिहार अत्युस्रत जे मिथिला छै तकर दशापर
स्वाभाव चिन्तित छथि आ बिहारक मुख्यमंत्री नीतिशो
कुमार, जे विकास पुत कहल जाछ छथि हुनका स्वाभाव
किछु देखबए चाहै छथि:
केमवासँ तस्वीर बदलैत
मिथिला मैथिल परिवार केर।
तकरा देखैत पटना जा कऽ
विकास पुत नीतिश कुमारकेँ।
फोटो बदलैत खेत खलिहान
सिंचाइ पानि विजलीसँ वंचित।

मानवता ककरामे हेतै, मानवमे ने। आ तकरे ने
भेटतै दुनियाँक ताज आ सएह ने जीतै बनि
स्वाभाव!

ताज मिलै सम्पूर्ण जगतक
आ बनि जीवएत स्वाभाव
मानवमे मानवता होछ तँ
बदलै नै ओकर अस्तिता

তঁ ঝাৰু ঋা গীত, জে ৱৌন–ঝাঁক্ষবমে খেত–পথাবমে ঘ্মৈত–ফিবৈত নিখাএন সে তঁ ৰিশিংঠ হেৱেঁ কবতৈ ঋা ওকব নিখৈবঁনাকেঁ সে তাজ ভেৎৱেঁ কবতৈ। মিথিনাক ভিখাবী ঠাক্ষব ওগ তাজকেঁ পহীবি ঝাৰুদাব কহেৱেঁ কবতৈ।

ঋন্নাজীক “মাঁঝ ঋাংগনমে কতিঋাএন ছী”

“মাঁঝ আঁগনমে কতিআএল ছী” ম্হন্নাজীক করাঁগ আ গজল সংগ্রহক নাম ঋছি। কতিআএল আ সেহো মাঁঝ আঁগনমে! কী করীবক উঁনষ্টরাঁসীক প্রভার ঋছি ওা আকি গজলক স্বভার ঋছি ওা? নহিযে ওা করীবক উঁনষ্টরাঁসীক প্রভার ঋছি নহিযে ওা গজলক স্বভার ঋছি, ওা একষ্টা যথার্থ ঋছি। ম্হন্নাজী সন কতেকো নোক কতিআএল ছথি, প্রতিভা ঋছৈত হেবাএল ছথি। ম্হদা গজলকাব সভষ্টা দোখ ঋপনেপব নহ নৈ ছথি।

আর তঁ মাঁঝ আঁগনমে কতিআএল ছী
ঋপনে চানিসঁ আর রেঁবা গেনহুঁ হম

আ সএহ কাবণ ঋছি জে ও নোবক স্বখ ভোগহ নাগৈ ছথি।

নোব তঁ খসৈএ ম্হদা মজা সন নগৈএ
কেহন নীক প্রেমক দ্খ নেনহুঁ হম

রড়কা খাধিমে খসৈ ছথি আ তদ্দু নেন ঋপনেকেঁ দোখী মানৈ ছথি:

ছোষ্টকো ঠেসসঁ নৈ সরক নেনহুঁ হম
তঁএ রড়কা খাধিমে খসি গেনহুঁ হম

তঁ কী গজনকাব প্রেমক মহত্ত্ব রিসবি গেন ছথি, নৈ প্রেম তঁ সভকেঁ চাহী।

সভ উঁমেব রস্থাকেঁ প্রেম চাহী
মবিতো ধবি ফ্শৈন-ছেম চাহী

আ হিনকা জঁ কোস দূ-কোস মাত্র চনরাঁক বহিতন্হি

তখন নে, হিনকা তঁ ৰহুত আগাঁ ৰঢ়ৰাক ছন্হি তেঁ প্রেম চাহী।
ডাহসঁ পহুঁচৰ কোস–দূ কোস
আগূ ৰঢ়ৰা নেন তঁ প্রেম চাহী

আ সে সভ ঠাম। একটা হমব সংগী ছন, একটা পবীক্ষামে ঠ◌ॉপ কেনক তঁ ৰাজন– নৈ কম্পীট কবৈ ছী তঁ নৈ কবৈ ছী, আ কবৈ ছী তঁ ঠ◌ॉপ কবৈ ছী। ও গজনকাব নৈ ছন জঁ বহিতএ তঁ অহিনা নিখিতএ জেনা হুন্নাজী নিখৈ ছথি:
ৰঁদবী নাদন বহি কোনো ৰাত নৈ
জদি ৰঁবসী তঁ ৰবিসাত ৰনি কঃ

আ নজবি–নজবিক ফেব আ হাফ গ্লাস ফুন, ও দূনূ টা অবধাবণা ঐ রূপমে ও বাখৈ ছথি:
নজবি উঠা কঃ দেখবৈ তঁ খানী বুঝাএত ও দুনিযাঁ
নজবি গবা কঃ দেখবৈ তঁ সভ দেখাএত ও দুনিযাঁ

সমানোচনা আ বিবোধ দুনূকেঁ গজনকাব নীক মানৈ ছথি।
পক্ষধবসঁ বাখূ অপনাকেঁ ৰচা কঃ
বিপক্ষীক সভ ৰাতকেঁ নৈ তীত বুঝূ

মহগাগসঁ নোক বেঁকন অছি হুদা তকবা নেন মুমৈত
মচানক বিম্ব দেখূ:
মহগাগসঁ খূনে নৈ হড্ডিযো স্বখাগএ
আবৈ মুনৈত মচান সন নগৈএ নোক

আ ও উনটবাসী দেখূ, বিম্ব নব, ভাবনা শাশ্বত:

হম তঁ ঘূব জড়ৈনৌং গর্মী মাসমে
মিন্নাএন আগিসঁ পসাহী কহিযো

ঙা কোন গোষ্ঠী ছী জে অছি কোন পত্রিকাক প্রাযোজিত
চিষ্ঠী ছপরাঁক বাজনীতি সন, ঙা করাঁগ দেখূ:
মোন ভএ উঠন দুখিত মোহকাবীসঁ
উঠি দর্শক ভাগন মাবামাবীসঁ
প্রাযোজক তঁ পথনে বহন কান অপন
কর্তা দেখাব ভেনা জতিযাবীসঁ

হ্মদা বাঁঢ়ি ক রিষয জঁ মৈথিনী গজনক অংগ নৈ বনএ তঁ বুঝূ জে গজনকাব সমাজসঁ কতিআএন ছথি। হ্মদা সে নৈ অছি।
ধাব এখন ধবি তঁ উহ্ফানপব অছি
নোক তাকা-তাকী কবৈত বাহ্নপব অছি

আবঁ পড় াগন ঘট্টৈন অছি, মিথিনাসঁ পড় াগন। বাঁহবী নোক বিহাবীকেঁ মজদূব আ শ্রেমিকক পর্যাযবাচী মানি নেনে ছথি। তহূপব গজনকাবক কনম চনন অছি।
বিহাবক সিবখাবী বঁদনি গেন সন নগৈএ আবঁ
শ্রেমিক ঘট্টৈনাসঁ কংপনী-মানিক নগৈ বিহাবী জকাঁ

হ্মন্নাজীক গজন আ করাঁগ স্বছন্দ রূপসঁ বঁমকোনা জেকাঁ বঁহন অছি। শৈবক স্বভাব হোগ ছৈ জে জঁ ওকবা নীকসঁ কহন জাএ তঁ আহ-বাঁহ নোক কবিতে অছি। মৈথিনীমে গজন-করাঁগ জগ তবহেঁ প্রসাবিত ভ২ বহন অছি সে দেখি ক২ যএহ নাগি বহন অছি জে জতেক ঙা বিধা অপনাকেঁ পসাবি বহন অছি তগসঁ বৈশী মৈথিনী

नाभ्भान्वित भ्ভः পসবি বহন খছি।

<u>ফন্নাজীক মৈথিলী রিহনি কথাক সংগ্রহ "প্রতীক"</u>

ফন্নাজীক মৈথিলী রিহনি কথাক সংগ্রহ "প্রতীক" রিহনি কথাক প্রতীকামেকতাক প্রতীক ৰনি গেন খছি। রিবাবসঁ রিহনি উঁপাবি ধান খা মেবচাগ বোপৰাক প্রক্রিয়া ঐ সংগ্রহক সভ কথা সভমে দেখমামে খাওত। তেঁ ঞা

छिट्टैंआ नै रोप्पआ धानक खेती रॅनि गेल अछि। तीन मोनक कट्ठा सभ गोटे स्वनैत होएत, मुदा एतह देखत।

रिहनि कथा हास्य कणिका नै अछि, ओ कथाक जड़ि अछि, रौंआ अछि, छिट्टैंआ धानसँ भेल पौध आ रिहनिसँ भेल पौधमे रॅड्ड अन्तर छै। छिट्टैंआ धान फौदाग नै छै। से हास्य कणिका रिठ्कट्टा होग छै, ऐ मे हँसी अरै छै, मुदा ओ छिट्टैंआ धान जेकाँ अछि। दोसर रॅव ओग रिठ्कट्टा कथाकेँ, हास्य कणिकाकेँ स्वनर तँ ले हँसियो नागत आ नहियो छगणतै। तखन जँ रिन्व सिन्नले रिहनि कथा निखाएत, रिन्व सिन्नेले रिहनि कथा निखर तँ नतीफा रॅनरैं ठौ करत। आ हास्य कणिका रिहनि, नघ् आ दीर्घ कथा रा उँपन्यासमे लेखकीय सामर्थ्यक अन्नसार प्रयाञ्ज होगत रहल अछि आ होगत रहत।

मुदा उँसना धानसँ रिबाड़मे रिहनि नै रॅहराएत। से रिन्व उँसीननले रौंआ रॉउँग करह पड़त। रिन्व उँसीननले सिन्नारह पड़त आ तग लेल रॅशी मेहनति करह पड़त। आ रौंआ छीटैर तैयो सभ धानसँ रिहनि नै रॅहराएत, किछु सँ नहियो रॅहराएत। से रिहनि कथाकेँ सफल हेरौक प्रतिशत कम छै, नघ्कथाक सफलताक प्रतिशत कले रॅशी छै, दीर्घ-कथा आ उँपन्यासक सफलताक प्रतिशत आर रॅशी छै। मुदा उँपन्यास ऋंऋटिया काज छै, मोन घोर कह दै छै, रॅशी समए नागै छै। रिहनि कथा धाँग-धाँग निखाग छै। मुदा जहिना करिता लेल आरेग चाही तहिना रिहनि कथा लेल, नै तँ ले धाँग-धाँग निखेरैं करत आ पद्यक गद्य आ गद्यक पद्य रॅनरौंक आशंका सेहो रहत। सभ

উঁপন্যাসকাব কতেক বাস রিহনি উঁপাড়ি কঽ সজবৈঁএ। উঁপন্যাস গদ্য ছিঐ ঝদা ওগমে কোনো পাত্র জঁ গীত গাবঁঽ নাগএ তঁ ওকবা খহাঁ বোকি দেবৈঁ? জে উঁপন্যাসকাব বহৈএ ও রিহনি দেখি উঁপন্যাসক ধনখেতী দেখঽ নগৈএ, কখনো ও রিহনি কথা নিখিযো দৈএ, ফেব নোভ সংরবণ নৈ ভেনাসঁ ওগ রিহনিক প্রযোগ উঁপন্যাসমে, দীর্ঘকথামে, নঘ্কথামে সেহো কবৈএ।

তখন ঝন্নাজীক রিহনি কথাক কী রিশেষতা। ঝন্নাজী হমব পড় াসী স্ববজ্ ভাগ ছথি, ও রিবাড়মে জতেক বীথা নগবৈঁ ছথি ওকব দশো প্রতিশত খপন খেতমে নৈ নগা পবৈঁ ছথি। বাঁঢ়ি ক গনাকা ছৈ সে নোকক খেত পড়ন বহি জাগ ছৈ রিন্ব রিহনিক। সে স্ববজূ ভাগক পড় াসী ওগসঁ নাভ উঁঠবৈঁ ছথি কাবণ বাঁঢ়ি মে কখনো কান তীন-তীন রেঁব ধনবোপনী হোগ ছৈ, এক রেঁব বোপূ বাঁঢ়ি খাএন, দোসব রেঁব বোপূ ফেব বাঁঢ়ি খাএন। খা স্ববজূ ভাগ ছথি তেঁ নোক রিহনি নেন নিশ্চিন্ত বহৈএ।

খা ঝন্নাজীক রিহনি কথা সেহো নিশ্চিন্ত কবৈএ।

"বেরাজ" রিহনি কথা নিখ। গাম ঘবমে মসোমাতকেঁ নোক ডাগন কহৈ ছৈ ঝদা ঝগনাক বাঁদ ঘবাড় ী নেন ওকবা খাগি দেবা নেন উঁপবৌন্ম হোগ ছৈ। এতঽ ঝদা রিহনি নেন জে বীখা ছীটৈন গেন ছৈ সে কনে উঁচ স্তবক ছৈ। এতঽ মৃতককেঁ রেঁটৌ নৈ ছৈ ঝদা পনৌ খা রেঁটৌ ছৈ। সে জখন মৃতকক ভাগ কোহা উঁঠবঁঽ চাহৈএ তঁ রিধরা ওকবা বোকৈ ছৈ খা রেঁটৌকেঁ কোহা উঁঠবৈঁনে কহৈ ছৈ। খা সংগ কে দেত ঐ নর বেরাজমে, জে খাগযেসঁ প্রাবম্ভ ভেন খছি? তখন উঁত্তবো ভেটৈএ- নিপ্বতবাহা সভ।

তহিনা “কমরুনিসা” বিহনি কথা অছি। হসীনা মঁজিল সন একটা আরো শ্রেষ্ঠ উপন্যাস ঐ বিহনি কথা (সীড স্টোরী)সঁ ফন্নাজী নৈ বঁচা সকৈ ছথি কী ? কমরুনিসাক পিতা বহমান। নহঠীক কাজ জেকাঁ দম্মা সেহো ওকব সভক প্রশংসৈনী রৌস্তু ছলৈ। কমরুনিসাক অব্বা-অম্মীক জান ও দম্মা নেনকৈ আ হেব কমরুনিসা...

“জিযা জবএ সগব বাতি”মে এড্সক সমস্যা আ নিরিংগ বিনেশনক চর্চ অছি তঁ “দিযাদ”মে পনহীক উপবসঁ চিক্কন চ্নফ্ন হেরাঁক ফদা নীচাঁসঁ খনওদাব কেনে জেরাঁক বিবরণ দেন গেন অছি।

“নপনা” মে স্ত্রীক কাজক স্বরূপ তয কএন গেন ছৈ। অখনো জনগণনা কানমে সবকাব স্ত্রীক ঘবক কাজকেঁ আমদনীমে নৈ জোড়্ত অছি, আ ঐ কথামে অন্ত হোগএ জখন একটা স্ত্রীক চর্চ অবৈএ জে নোকবীযো কবৈএ আ ঘবক কাজো।

“দেহ, মোন আ প্রেম” একটা হাস্য কণিকাকেঁ কোনা বিহনি কথামে পবিবর্তিত কএন জাএ, তকব উদাহবণ অছি। সরীনা আ মোহসিন নাম্না পাত্র নঃ কঃ ও চমকোব ফন্নাজী কেনে ছথি।

আগ কাল্হি জখন নোকক জিনগী গতি পকড়্ নেনে অছি তখন বিহনি কথাক মহত্ব বঁঢ়্ গেন অছি। ফন্নাজী বিহনি কথা নেন সমর্পিত ছথি আ ও সংগ্রহ হ্নকব ঐ সমর্পণক প্রণামেক অভিব্যক্তি ছন্হি।

বামরিনাস সাহ্ জীক করিতা, গীত, হাগকূ, শেনর্যূ আ টৈনকা সংগ্রহ "বথক চক্কা ডঁনটি চনৈ রাঁষ্ট"

"বথক চক্কা ডঁনটি চনৈ রাঁষ্ট" ঙা বামরিনাস সাহ্ জীক করিতা, গীত, হাগকূ, শেনর্যূ আ টৈনকা সংগ্রহক নাম অছি। আঁটী শঙ্কারনীক প্রযোগ আ ওগ মাধ্যমসঁ তীন পাঁতিক হাগকূ/ শেনর্যূ আ পাঁচ পাঁতিক টৈনকামে হিনকব প্রগ্বতি-প্রেমক মাধ্যমসঁ ভারোদ্বাবমে এতেক বাস তথ্য সোন্নাঁ অনৈএ, এতেক বাস সমস্যা আ সমাধান তকৈএ জে পঢ়নিহাব রাঁজি সকৈএ, হঁ ঙা হম কিএ নৈ সোচি সকনৌং, ক্ষদা আর্ঁ সোচি সকর্ঁ।

বথক চক্কা
ডঁনটি চনৈ রাঁষ্ট
চাক চনৈ ছৈ
ঠামে ঠাম নচৈত
দ্ন্ব করৈ দূ কাম

জাপানক রাঁশো নৈ মোন পড়ি জাগ ছথি বামরিনাস সাহ্ জীক ঐ টৈনকাসঁ:
সারন মাস
জনক র্ব্ন্নদ পড়ৈ
আসমানসঁ
রেঁগক রাঁজা র্ঁজৈ
খন্তা ডর্ঁবা ভবৈ

हिनकर मानर आ प्रकृतिक मेल कतेक अद्भुत लगैत अछि:
कारी काजर
आँखि दैत सुखाय
कारी कोइली
मधुर गीत गबैँ
सभकेँ ललचाबैँ

आदा कारी काजरक उपमा एते अतम नै भेल अछि:

कारी काजर
आँखि दैत सुखाय
कारी बादल
बरखासँ डराय
अखरा दैत बिगाड़ि

बौदक गुण तँ प्रकृति–प्रेमी करि पढ़ि नैए, बसन्त आ हेमन्त वर्णनासँ की ओ कम अछि ?

चैतक बौद
तपाबैँ माटि–पानि
पछिया हरा
पकाबैँ चना–गहुम
बँगाबै धूर–कण
करिता कइमे करि सेहो पाछाँ नै छथि, कोसी धार हुनका हिलोरै छन्हि:

जिनगी बँनल अछि हमर कंगान

মৌআ, পঢৈব, কাশি খগবা হমবাসঁ করৈএ বগড় া
রাঁন রঁচা ক জিনগী রাঁউনমে সমাএন

অহ্মরিশ্বাসপব করিক কনম চনৈ ছন্হি:

গাসোঁগ খেনে ভগতা-ভগতিনিয়াঁ
ছত্তীস দেরী চৌদহো দেরাঁন
অখন ছৌ দেহপব ি রবজমান
জে মাঁগরঁ সে পূবা কবতৌ
কাবনীক সভ বোগ রিযাধি হবতৌ
ফূন-অছতসঁ রবদান দেতৌ
রিঁগবন কাজ মনোকামনা
চ্ঠকী রঁজিতে পূবা কবতৌ
রঁদনামে নছ্-ছাগব-পাঠী মাঁগতৌ

করি কিসান ছথি তঁ কিসানী কোনা রিঁসবতাহ:

রিঁহানেসঁ গজাব কদরাঁ
হ্অএ নগন খেত
হব জোতৈত হবরাঁহ
রিঁবহা গারৈঁত

আ ফেব...
"হবক নাশি আ
খেতক চাসপব
পেঠ ভবরাঁক অছি
সভকেঁ আশি।"

था तखन......

गहुमक दाना कोठीमे भरलौं
भूसीकेँ भुसकाँरमे टेनियेलौं
चारि मासक गहुमक फसलि
दिन-राति खटि कऽ घर केलौं
सान-भरि रोटियो खाए जीयरौं

गामक शंकारनी फकरा-कहरीक माध्यमसँ रहैत बास गप कहि जाग छथि करि:

माटेक चाउर राँटेक पानि
रनियाँ घरक तरजूकेँ
नै मोग छै कोनो मागन

कारण..
माटेक चाउर राँटे रिनाएल
घाटेक पानि घाटे स्वखाएल

देशी अनाज था रोगक रोकथाम सेहो करिकेँ र्युम्नल छन्हि:

अचना, पाटेी माछक चटेनी
संगे जे खाग मरूथा रोटी
नहि रनत रोगी मोटी
रक्त चाप, मधुमेह, जलोदर

रामरिनास साहु जी चैतारव गरैं (निखै) छथि, रिबहा

স্বনৈ ছথি, ধনবোপনীপব খা কিসানীপব করিতা কহৈ ছথি। খা ঐ সভ রিষযপব হিনকব করিতাক জোড় া সাহিত্যমে ভেট্টব় কঠিন। ঞা সভ রিষয মৈথিনী করিতাকেঁ রিস্তাব দেনক খছি, খা ওগপব নিখবাঁক সামর্থ্য বামরিনাস সাহ্ জীমে ছন্হি, ওকব ভীতবমে ঢ্কি কহ নিখবাঁক সামর্থ্য বামরিনাস সাহ্জীমে ছন্হি।

<u>উঁমেশী মল্ডন জীক "নিশত্তকী" করিতা, নঘ্-করিতা, হাগকূ/ টৈনকা খা গজনক সংগ্রহক</u>

উঁমেশী মল্ডন জীক "নিশত্তকী" করিতা, নঘ্-করিতা, হাগকূ/ টৈনকা খা গজনক সংগ্রহ থিক। মৈথিনীক নর ত্তব মাত্র উঁমেবকেঁ প্রতিষ্ঠা নৈ দেবঁহ চাহিএ, জঁ ও উঁমেব খগ্রগামী নৈ হোথি। খা সে হেবাঁকো চাহী, কাজক সম্মান ছৈ উঁমেবক খা প্ববানক নৈ। খা তেঁ

প্রবান খা ডঁমেবগব জঁ খগ্রগামী ছথি তঁ তিনকা প্রতিগ্যা কিএ নৈ ভেটৈন্হ্ ?
ঙা ঠৈনকা দেখূ:
সমস্যাঁ খাপ্ত
সোনহনী সজন
সাহিত্কাব
নেখে প্রবান ছৈ খাপ্ত
কেনা এতৈ যথার্থ

খা তেঁ “র্ব্ঠ্ৃ াবীমে” ক্ষাি কামে ও কহৈ ছথি:
জিনগী চাহ কবৈএ
কর্মক র্বাঠৈ দেখবৈঁএ

খা কর্মকা র্বাঠৈ জঁ পকড়া নের্ব তখন ধ্ধ্এর্বে কবর্ব:
ত্তবকী–সঁ–ভাব র্বনি
র্বীন র্বোহবি ধবি
র্বনি–র্বনি খসংতোষ
ধোধবি র্বনি ধ্ধ্খা বহন খছি

মিথিনাসঁ পড় াগন ভ২ বহন ছৈ। সে বহি–বহি কচোর্টৈ ছন্হি করিকেঁ। খা জঁ রসন্তক খাগমন ভ২ জাএ তখন তহ্ব ক্তান ভৈযে নে জাএত !
র্বসংত খাএন
গাম জাএর্ব
খার্ব এতএ
বহি নৈ পাএর্ব
র্বসংতেক খোজমে তঁ
ছী র্বৌখাএন

ঐ পড় াগনসঁ:–
গামক স্নঁহথবি
জংগন রঁনন খছি

হ্নকা রিচাবক ফাঁষ্ট সেহো বহি–বহি দেখা পড় ি ছন্হি:
খহাঁক গপ
খপন মন
দ্নূ মিনৈএ
মিনি দ্নূ খছি চৌচংগ
খোজি বহন খছি রসংত
স্নদা
রঁসংতক চিড়ৈকেঁ
সংগ নৈ বাখএ চাহি ছী হম

হ্নকা রঁ্ঘহমে খারিঁ বহন ছন্হি :
ভকোভন ওগ খন্মাব কোঠবীমে

খা ও খহাঁসঁ পূছি বহন ছথি:
তখন শীশামে কেনা দেখাএত
ওকব চিত্র কেনা খাএত ?
খা কিযো নৈ স্বনহ চাহি ছথি ও গীত জতহ মাত্র খা
মাত্র গাওন জা বহন খছি সংস্কৃতিক গীত:
হনহনাগত, ভনভনাগত ওগ স্ববকেঁ
স্বনৈনে নৈ ছথি কিযো তৈযাব

কিএ নৈ স্বনৈ নেন ছথি তৈযাব, কাবণ খছি ডব, দর্দক

ডরে ও নৌ স্বন২ চাহি ছথি হনহনাগত, ভনভনাগত ওগ স্বরকেঁ।
কিছু খজীর বাঁত সভ হ্নকা খসহজ নগৈ ছন্হি:
খাগি–পানিকেঁ
মনক মাগনকেঁ

কাবণ সেহো ছৈ, খগিনহীক বিম্ব দেখূ:
সম্পত খাগ কান দেৱতা
নোকক ঘব জড়ৈকান মিত্তা

জ্ঞান খা জ্ঞানী খা জ্ঞানক প্রকাশি সেহো হ্নকা কখনো ওঝবীমে ধ২ দৈ ছন্হি:
জ্ঞানো ভ২ জাগত খছি গ্বনাম
সাঙ্গ্ৱাযন পড়ৈ ছথি মোন ধবাম

নহাস জে খহাঁকেঁ বুঝা পড়ৈএ সেহো খাব বাঁজত:
খাব ও বাঁজত
বঁজৈত–বঁজৈত হঁসত
খহাঁক প্ৰতিপব
বঁনন সংস্কৃতিপব

মংগন খা মংগনা হ্নকব করিতামে সেহো কএক ঠাম খাএন খছি। রিরশৈতাক প্রতীক খছি মংগনা!
কাতমে ঠাঠ ভ২ মংগনা

খা খাগাঁ...
খপনাকেঁ কেনক একোব

তঁ স্বখাএন ঘাটক ঘটরাবী মংগনাপব দেখূ ওকব রিরশৈতা:
স্বখনৌ ঘাটক নেতে খেরোঁগ
নৈ দেরেঁ তঁ দেত গু বেরোঁড়ি ।
সএক ভেন মংগনা ঘ্বি গেন
পছিমে ক্ষবি গেন

করি ক্ষম্হবৌটক রিম্ব এনা থনৈ ছথি:
কাঁচ মাটক মূর্তি জকিনা
ঢাঁচা মাত্র কহরেঁএ ।
তকিনা তঁ ফূনোসঁ রঁনন ফন
সিবখাব মাত্র কহরেঁএ ।
থা রএক সিবখাব নে
থাশা রাঁন্হি-রাঁন্হি
রৌদ-রঁসাত সকৈএ

থা থপনে সন থাব রঁটৈকী সেকো কিনকা ভেটি জাগ ছন্হি:
কমরে সন গকো সভ রঁটৈকী
কবাএন রাঁট রঁঢ়এ চাকৈএ

করিকেঁ কোনো ভ্রম নৈ ছন্হি জে জেকনে রাঁট চনরঁ তেকনে ঘাট ভেটৈত থা তখন ওগ ঘাটপব পানি সেকো তেকনে ভেটৈত:
জকিনা চনৈক রাঁট কোগ ছৈ
তকিনা তঁ র্বুনৈযোক রাঁট ছৈ
জেকেন জে রাঁট চনৈ ছৈ
তেকনে ঘাট পহুঁচৈ ছৈ

ঙ্গ ৰাঁষ্ট খা রিচাব হ্নকব একটা খাবো করিতামে খরৈঁত খছি:

রিচাবক সংগ জঁ চানি বহন
ঘাষ্টপব জাগসঁ কিযো নৈ বোকত

খা নীক রা খধনাহ ৰাঁষ্ট কিযো কেনা ধবৈএ, তদ্রূপব হ্নকব নেখনী চনৈ ছন্হি:

জেহনে ঘবক নোক বহৈ ছৈ
ঘবক ফ্নঁহথবি তেহনে হোগ ছৈ।
জেহনে ঘবক ফ্নঁহথবি বহৈ ছৈ
তেহনে নে ৰাঁষ্টে ধড়ৃ ছৈ

খা ঙ্গ ৰাঁষ্ট হ্নকব পছোড় গজনমে সেহো নৈ ছোড়ৃ ছন্হি:

গোব মৌগী গৌববেঁ খাহ্নব ভেনি খড়ৃন
কবিযা ৰাঁষ্ট ব্বঁহ্মাগএ চনূ ঘ্বি চনী

ও নিবাশী কখনো নৈ হোগ ছথি:

মবনেমে মাবি খা–খা
মাবন ব্বঁগধ কহবৈঁ ছী

খা একব কাবণ ছৈ, ও কহৈ ছথি:

জহিনা পরিঁতে খদ্রাক পানি
ফ্নগনহো ধাব জীবৈঁ ছৈ।
ভনহিঁ জীতহা ধাব ৰীচ
তীন–মস্বখা ও কহবৈঁ ছৈ

খা ঐ খাশী–খাএ্রাশী খা নিবাশীক মধ্য ও নিখৈ ছথি:

ছোড়ি দেনে টুটি জাএত সমাজ
খপন উঁমেশ জোড়্তে তঁ চহকতে নগেএ ঙা।

উঁমেশ মল্ডন জে কিছু কহৈ ছথি নিশ্ত্তকী কহৈ ছথি, ঘ্বষ্ঠী, ওস্নবী সভঠৗ চারু কাত পসবন ছন্হি। ঋদা সোস্নবারেঁ ছথি, ওস্নবারেঁ নৈ ছথি।

<u>উঁমেশ পাসরানক করিতা সংগ্রহ "রর্শিত বস"</u>

করিকেঁ ঘরাপব ভরোস ছন্হি, খা তেঁ ঘরাকেঁ সম্বোধিতো করৈ ছথি খা ওকব খাহ্বানো করৈ ছথি, জেনা "হম ঘরা" করিতামে – জাতি–ধর্ম/ মজহরেঁ কেব নামপব/ ষডযংত্র বচৈএ কিযো/ হমব দেশকেঁ/ ভীতব খারি কহ/ খাতংকরাদক/ গাছ রোপৈএ কিযো
খা তকব সম্বন্ধ হ্নকব "জীতক ঝল্ডা" করিতামে ভেটৈত জেনা:– জরৈ জাউঁ/ রতন কেব দ্শ্মন/ খাগি স্বনগাএন করু।
ঙা জে দ্শ্মন খছি সএহ হুহবরাঁরঁগএ জীতক ঝল্ডা:– খাগি স্বনগাএন করু/ জীত কেব ঝংডা হুহবাএন করু খা "হম ঘরা"মে সেহো ও কহৈ ছথি:– খাতংকরাদক/ গাছ রোপৈএ কিযো/ ভাবতরাসী শৈব ছী/ শৈবকেঁ মাদমে খারি কহ/ জগরেঁএ কিযো। কাবণ জে দেশক ঘরা ছথি সে:– হম ছী গোনী,/ হম ছী রাঁরুদ/ হমহী খংজব তনরাব ছী। তখন ঐ গোনী নেন পেস্তৌন, রাঁরুদ নেন খাগি কে ছথি ? ও ছথি ঘরা জে ছথি খংজব খা

তনরাব।
তঁ কী দ্শমনী খাধাবিত জোশী ছন্হি হ্নকব করিতা ?
নৈ সে নৈ খছি- জোঁ দোস্তীক নেন হাথ রঁঠ় াএরঁ/
তঁ হমনী হ্মনক মানা/ গনা কেব হাব ছী। করিকেঁ
ঽঁগঘিচা-ঘিচীক খেন নৈ পসিন্ন ছন্হি। খা করি কহৈ
ছথি।
ঙঁপবসঁ নূনূ রৌখা/ ভিতবে-ভিতব কহৈএ রঁকনেন/ রঁষেঁসিঁ
দেখি বহন ছী/ হব তবহসঁ দনিতক ঙঁপেক্ষা।
রাঁঢ়ি ক প্রকোপ করিকেঁ কহরাঁপব রিরশী কবৈ ছন্হি: কেনা
কহ ঐরেঁব খেতক খাড়ি পব/ জা কহ কহরঁ/ সেব-
রঁবোরঁবি/ ঙঁখৈব সন রীঁঽ/ সমাঠ সন সিস। গরঁহা
সংএান্তিপব করিকেঁ কহহ পড় ছন্হি: কেনা কহ গ্বজব
চনত/ ঙঁপজা কহ কাস-পঽৈব। ও কোসীকেঁ কহৈ ছথি:
কহ দেনিঐ মিথিনাকেঁ দূ-ভাগমে/ খহাঁ পূরঁমে সহবসা-
স্বপৌন/ পছিমমে মধ্রঁনী-দবভঁগা/ রিচমে খগরেঁ রাঁন্ব
খা ধূন।
ঋদা হেব নির্মন্নীক প্বন রঁনরাঁক চর্চ: কদ্রু খারঁ কতেক
চ্প বহরঁ/ ঐরেঁব হম রঁনা দেনৌঁ প্বন।
পঢ়ন-নিখন দনিতক সামান্য দনিতক প্রতি ব্যরহাবপব
জতেক খম্বঁডকব দ্খী বহথি ততরেঁ চিন্তা ঙঁমেশী
পাসরানকেঁ সেহো ছন্হি: স্বযং দনিত ছী/ দনিতক দবদ
জনৈ ছী/ কিছ ব্যক্তিক কিবদানীসঁ চকিত ছী/ দনিত
ভহ কহ ও/ ব্যক্তি খপনো সমাজকেঁ রিসবি গেন/ খপ্পন
ভাষা-ভেষ ছোড়ি কহ/ দোসবক বংগ-ঢংগমে
ঢনি গেন।
ও সমাজসঁ প্বছৈ ছথি: হম দনিত ছী/ মেহনতি-মজদ্বী
কএ কহ রিতরৈঁ ছী খপন জীরন/ তৈযো জবৈত খছি।
করি জগদীশ প্রসাদ মন্ডন জী সঁ প্রভারিত ছথি খা

সে ও একটা করিতাক মাধ্যমে কহৈ ছথি: হম ছী সেরক মৈথিল/ জগদীশ ৱাৱূক চেলা/ নৈ হমবা নড়ৃ খিযৌননি/ নৈ দেনথি মিশ্রীক ঢেলা।
হ্মদা হাস্যসঁ ও দূর নৈ গেল ছথি:
মোটা মোটৌৱনি/ হেতৌ নটিনিযা/ তোবা সংগ খহী ৱেব গে।
রসন্তক আগমনসঁ মাত্র ফূল-পাত নৈ আন-আন জীরনসঁ সম্বন্ধিত রৌস্তুপব ধ্যান জাগ ছল্হি হ্নকব: গাছ-বৃক্ষমে নর কলোজবিক সংগ মোজব ফূল িনকনৈত অছি/ খেতমে গহ্ম-খেসাবী তিসী-মস্বরী তোবীক ফূলসঁ সহ্মচাহ ৱাঁধ গমকৈত অছি/ মধুমাছী নগৌলে সেন্ববিযা আমক গাছপব ছত্তা দেখি কহ ন্বকথী ডবৈত অছি/ অবহ্নক ফূল চূসি কহ ফ্লনচোভী চিহ্কৈত অছি/ কৌআ আ কোগলীমে ভেল অছি কলাগব।
পানি নৈ চলৱাক গপ নৈ ৱুম্যাগ ছল্হি হ্নকা: দেহসঁ দেহ কেলা ছৱাগ ছৈ/ কিএক নৈ চলৈএ হমব ছথল পানি যৌ/ কোন জ্ন্বমক সজা হমবা দহ বহল ছী/ কিঅএ ৱুনৈ ছী হমবা অপমালী যৌ।
স্বদামা আ শ্রীকৃষ্ণক দোস্তীকেঁ সভ অনগ কহ দেনক: দূনূ দোসকেঁ অনগ কহ দেনক লোক/ অপ্পন বাস্তাক দিৱাব জকাঁ/ হঁসৈত খেলৈত...।
আ ওা দশা কিএ ভেল ? :- সহলৌ সভ কিছু সনহেশক সংতান বহিতো/ জহিযা তক চুপ বহলৌ হম।
আ কহৈ ছথি: কতেক নিখৱ দলিতক ৱেঁথা/ সনহেশ গামক সংদেশ।

হ্মদা কী মিথিলাক ভাষা সংস্কৃতি ককৱো অনকব ছী ? নৈ ওা তঁ হমব ছী আ তৈ পব গর্ব কবৈ ছথি করি:

হবক পাছাঁ ৰঁগ্বনা ঘ্মৈএ/ হবৰাঁহা জোবসঁ ৰঁবদকেঁ ৰাঁৰূঁ ভৈযা কহি হঁকৈএ।
দেশক রিকাস খা নেতা পব হ্নকা খাঞ্চাশ ছন্হি: ঐঠামক নেতা ছৈ মানা-মান/ বোড-সড়কেঁ দেখিযৌ তঁ/ কদৰাঁ গজাব সন ছৈ থান।
খা জে ৰঁড়কা-ৰঁড়কা বাষ্ট্রীয বাজমাঙ্গ (নেশনন হাগরে, এন.এচ.) ছৈ সে তকব রিরবণ কিছ এনা ছৈ: মৌতক চৌবাহা ৰঁনন খছি এন.এচ ভুতহা মোড়।
খা নোকক দশা-দিশাপব হ্মর্দা সেহো চিন্তিত খছি: গাবন হ্মর্দা ছটপটা বহন খছি/ ভিতবসঁ খংগ্বী খপ্পন উঁঠা বহন খছি।
নাবীক কর্মনিষ্ঠা স্বভারপব হিনকব নেখনী খূৰঁ চনন ছন্হি: ওমহব রিখা জে উঁখাবৈ ছৈ মহিনা জন/ কোগ কবৈ ছৈ, সাস্ব-ননদিক নিনা-রিনা/ কোগ গৰৈঁ ছৈ সোহব-সমদাাঁন।
করি ভুকমিনানীমে সেহো ঢেব বাস গপ কহি জাগ ছথি, পংজাৰঁমে হোগত মজদূবক পনাযনক চর্চ দেখূ:
জৌং খখাব মহিনামে ৰঁ্ঠ় ৰঁড়দ/ পজবামে দবদ/ পংজাৰঁমে মবদ খছি/ তঁ সমন্মূ হে গেনহে ঘব ছী।
ও খাহ্বান কবৈ ছথি: সাহিত্যক দনিদব কতেক জ্ন্বম কবৈএ হমবাপব/ কিযো তঁ ৰাঁজূ/ কিযো হমবা দিসসঁ খরাজ উঁঠাউ।
খা খধিকাব তঁ চাহৰেঁ কবী: খপ্পন সোন্হনী ৰঁনা বসা খাৰঁ নৈ স্বনৰঁ হম/
ৰঁখা তোড়া দৈএ ৰাঁন্হকেঁ খা ৰঁনা দৈএ গাম কেঁ কোসী খা কমনা: নধনে ছন সতহিযা/ ঢৌসাৰেঁগ কিড়ী-মকৌড়ী
কবৈ ছন সোব/ ভুকক্ষৰাঁ কনী উঁগন ছন চ্হ-চ্হিযা।

তঁ কী কহল জাএ ঐ "বর্ণিত বস" সভকেঁ। কী করিক বসন্ত মাত্র ফূল-পাত দেখৈএ জে মাত্র স্বগন্ধ দৈএ, আঁখিকেঁ স্বখ দৈএ, ক্ষুদা জবন পেটকেঁ সে নীক লগতৈ ? তেঁ করিক বর্ণিত বসন্তক বস ও ফল রিহীন স্বন্দব ফূল নৈ ভ২ সকৈএ, আ সে নহিযে অছি। দলিত রিমর্শ দলিত দ্বাবা, আ ওগ দলিত দ্বাবা জেকব ধ্আধজা ছৈ সনহেশে সন, নৈ রিসবন অছি অপন সংস্কৃতি, রৌনী-রাণী, নৈ রিসবন অছি সোহব-সমদৌন। আ সে ছথি উমেশ পাসরান। আ জে হ্নকব বসন্তকেঁ দেখরাঁক, এন.এচ.ক চৌবাহাকেঁ দেখরাঁক দৃষ্ঠি ফবাক অছি তেঁ হ্নকব করিতা সেহো ফবাক অছি।

স্বজীতক জিদ্দী

স্বজীতক নর কথা সংগ্রহ সম্প্রদনামে গঠীবধবি উতবল অছি । আদর্শ কথামে কথাকাব স্বজীত মহিলা সূত্রধাব বঁলল ছথি, শৈলীক ভিন্নতাক সংগ ঘব বঁনাসঁ পহিলে নহাএল ছী ত২ বাঁল্হৈল মাঁজি দিয নহি ত২ ঘব বঁনাকে উমেব ঘটৈত ছৈক । সাস্বক ফ্লঁহসঁ ও গপ সূনি ভৈবহরা নগবমে পললি ক্ষুদা দেহাতমে রিযাহলি মহিলা কথা সূত্রধাব অপন রিধরা সাস্বক রিষযমে সোচৈ ছথি

জে জঁ ৰান্টৈন মঁজনাসঁ পতিক উঁমেব ৰঁঠতৈ ছৈ তঽ ও কিএ রিধরা ভঽ গেনী ! পতি খকণ খকস–তিকসমে পবন খছি । মাএ খা পনৌ দ্নূ ওকবা চাহী । হ্মদা সূত্রধাব ঘব ছোড়ি এনীহ । খকণ কহৈত বহথি জে জঁ হ্নকা ৰেঁটৗ হএতৈন্হি তঽ ও ওকব নাম খাদর্শ বখতাহ ।

জিদ্দী কথামে শাবদা খপন নূহ খা খভিনযক রিচমে ছোড়ন জএৰাক ৰাত মোনমে বখনে ছথি খা ৰেঁটৗ জযন্ত খা ৰেঁটী গিন্নীক নূহ খা খভিনযক প্রতি স্নেহমে খপন উঁদ্দেশ্য দেখৈ ছথি । পতি রিবোধ কবৈ ছথি । ৰেঁটৗ তঽ নূহ খা খভিনয ছোড়ি দৈত খছি হ্মদা ৰেঁটী হ্নকব উঁদ্দেশ্যকেঁ পূর্ণ কবৈত দেখাগত ছৈন্হি । হ্মদা তখনে দাৰু, সিগবেট খা খনৈতিক সম্বন্ধ.. কথাক পূর্বার্ধে নূহ খা খভিনযক প্রতি দৃষ্টিকোণ উঁত্তবার্ধ মহিনা সশক্তিকবণ দিস জাগত–জাগত কতৌ খান ঠাম চনি জাগত খছি । ৰেঁটৗ নূহ খা খভিনয ছোড়ি দৈছৈন্হি হ্মদা শাবদাক ৰেঁটী নৈ.. মহিনাক খাকাংক্ষা মহিনা দ্বাবা পূর্ণ হোগত–হোগত খনচোক্ক কথ্য খা উঁদ্দেশ্য ভসিযা জাগত খছি ।

পূmন হ্নাগএকঽ বহনমে সেহো মহিনা সূত্রধাবক মানসিক রিশ্লেষণ সোঝাঁ খাএন খছি । কনেক বংগ দৰ বহৰাক কাবণ রিযাহমে দিক্কত হোগ ছৈন্হি, হ্মদা ফেব একটৗ স্বপ্নব নড়কা ভেটৈ ছৈন্হি । হ্মদা ওতৌ ধোখা.. হ্মদা ও খপনাকেঁ সম্হাবি নৈ ছথি খা কিছু দিনমে সভ ঠীক ভঽ জাগত খছি ।

‘কেহন সজায’ কথামে একটৗ পবিবাব খপন গোদ নেন ৰেঁটীকেঁ ছোড়ি দৈত খছি, খধেব উঁমেবমে জখন ওকবা খপন ৰঁচা হোগ ছৈ তখন ! হ্মদা এহি কথামে সেহো

কথা কহৈত–কহৈত কথাকাব বিতেশি আ চমেলীক প্রেমকেঁ ফবিষ্টা নগঁ পরেঁ ছথি । চমেলীকেঁ জে মাতা–পিতা গোদ নেনখিন্হ সে যাদর বহথি, ঙা কহবাঁক আরশ্যকতা কথাকাবকেঁ নগঁ পড়বাঁক চাহী, কাবণ এহি কথামে যাদরক নোক সংস্কৃতিক কোনো রর্ণ নৈ ভেন ছৈ । ফেব কথাকাব তখনে পেষ্টমে বঁচা ভ২ গেন কহি কথাকেঁ কপচি দৈত ছথি । আধ্নিক কথা–কথামে কথ্য ত২ হোগতে অছি, ক্ষদা ওহি সংগ জওঁ তহপব তহ সমস্যা ভেষ্টৈত অছি ত২ তকব সমাধান নেন সেহো কথাকাবকেঁ শিব্দাবনী, নোকব্যরহাব আ শিল্পক সংগ নেবঁ২ পডৈPত ছৈন্হি। সম্বেদনাক তহমে কথাকাব জাগ ত২ ছথি, ক্ষদা রেঁসী ঠাম কথ্য কহি দেবাঁধবি সিমিত বহি গেনাসঁ কথা কাঁচ বহি গেন সন বূঁঝি পডৈPত অছি । আশা অছি আগাঁক সংগ্রহমে কথাকাবক সামহ্‿য আওব নীক জকাঁ দেখাগ পড়ত ।

রিনীত ঠাক্ষবক বাঁকী অছি হমব দূধক কর্জ

বাঁকী অছি হমব দূধক কর্জ– এহি নামসঁ ১০ টা গীতক সংগ্রহ নএ শ্রী রিনীত ঠাক্ষব– শিক্ষক, প্রগতি আদর্শ ঙা.

स्कूल, नगनखेन, ननितप्वब प्रस्तुत भेल छथि। ओ एहि सानक दोसव पोथी छी जे देरनागवीक संग मिथिनाक्षवमे सेहो आयन अछि, आ२ एकवा हम अंश्वमन पाल्डयकेँ पठा देनियन्हि, यूनीकोडक मैपिंगक नेन, कावण रिनीतजी हमवा एहि पोथीकेँ ओ-मेनसँ पठेबाक अनुमति देने छथि, ताहि नेन हुनका धन्यराद।
"भवन नोवमे" शीर्षक पद्यमे की स्वतनासँ भेटैनै अछि ककवो अधिकाव आ२ "गाम नगवमे"- नोकतंत्रमे अपन अधिकाव न२ क२ वहत मधेसी, ओ घोषणा छन्हि करिक तँ "कोवो आ२ पाठ ि'मे गवीबँ छोड़ ि क२ के बुझतै गवीबीके मावि- ओ कहि करि अपन आर्थिक चिन्तन सेहो सोझाँ वखैत छथि। चहुँदिशे अमर्ङ्गनमे जर्ङ्गनक रिनाशेपव -फ्शिकनेसँ स्वनी चिड़ ि याके चिहुं- चिहुं- कहि करि अपन पर्यारिवण चिन्तन सोझाँ वखैत छथि। "जे कवथि घोटैाना" मे भ्रष्टाचावपव आ२ "जाणतक टैकड़ ी"मे जाति प्रथापव करि निर्ममतासँ चोटै कवैत छथि तँ "बेटीक भाग्यरिधान"मे करिक भारना उँफानपव अछि। "कम्प्युटैवक दुनिया" आ२ "अर्ङ्गबेजिया"मे करि सामयिकताकेँ नहि रिसवन छथि तँ अन्तिम पद्य "तान मिसवी" मे रवक सास्वव प्रेम कनेक ब्यंग्यामेक स्ववमे करि कहि अपन एहि क्षेत्रमे सेहो दक्ष होएबाक प्रमाण दैत छथि। ओना तँ करिक ओ प्रथम प्रकाशित कृति छन्हि, फ्दा करि जाहि नए सँ करिता कएने छथि ओ२ अभूतपूर्व रूपेँ प्रशंसनीय अछि।

<u>संतोष कुमाव मिश्र- "एना किए.. ? "</u>

संतोषजीक “एना किए.. ? ” पद्य संग्रह मैथिली पद्यक भविष्यक प्रति आश्वस्ति दैत अछि। एहिमे ग्यारा करिक २४ गोटे पद्यक संग्रह अछि।
संतोषजीक कविता एना किए मे स्त्रीक समस्या तँ काल्पनीक सहमे जीवनक दर्शनिक द्वन्द सोझाँ अनैत छथि। विचित्र कविता सेहो द्वन्द्द अछि आ अएना कविकेँ अपन वँचहनक स्मृतिमे नइ जागत छन्हि। दुविधा कवितामे कवि एहि दुविधामे छथि जे अनुभवकेँ ड्मा कए आ भावनाकेँ हेवा कए जे ओ प्रेममे पड़नाह से सामाजिक अपवाध अछि ! भद्रक वँनि मे सगवमाथा आ मकान्वकेँ नहि छोड़वाँक आ कोशी आ कर्णनीकेँ खा जएवाँक विम्ब कविताकेँ सार्थक कवैत अछि। पहिने न्वका कइ मावैत छन आ आवँ देखा कइ मावैत अछि, ओ वाक्षस जकव हाथमे कानून छैक। हमव मायकेँ वुझिए नहि छैक मे आज्क समाजक सह उँघ्काटित होगत अछि जतए नीक नोक ओ अछि जे पागवना अछि; नीक पद प्राप्ति कववाँक नेन घूस देमए पड़ैत छैक आ नमहव नेता वँनवाँक नेन जनताकेँ धोखा देन जागत अछि। नामी वँनिआकेँ.. कवितामे कवि नीक गवैँयाक स्वव स्वनना उँत्तव महाँ वेंकाव पवैत छथि। अन्नसँ आनन्द कविता समाजक अंधविश्वासपव कटाक्ष अछि। टैहटैही गजोविंयासँ कविक प्रश्न आ सौन्दर्यकि पविभाषा गजोविया कवितामे भेटैत अछि तँ मायकेँ प्रश्नमे सागवक पानिसँ वेंशी नोव वँहावैत माएक दर्दकेँ कवि स्वव दैत छथि। मातृभूमि आ मिथिनाक जे छी तँ कविता मिथिना आ मैथिलीकेँ समर्पित अछि तँ हमव कनिआमे हास्यक संग दहेज आ अमेन विवाहक चर्चा

হোগত অছি। হমর আশামে ৱঁচাক আ নৱীন শিক্ষা পদ্ধতি, ডোনেশন আধারিত এডমিশনক তঁ হম আ হমরমে সেহো করি সব-সমাজক নীক-অধলাহ বর্ণন উঁঠা কঽ করিতা ৱঁনা দৈত ছথি। মূল্য অভিৱৃদ্ধি কব অর্থব্যৱস্থাক বর্ণন কবৈত অছি। হমব মীত জীৱন-মূল্ক তঁ সভামে আৱ কেও নহি অছি নিক নোক এতঽ কহি করি অপন ব্যথা সোন্নাঁ বখৈত ছথি। ৱাঁটমে ডেগ-ডেগ পব গহ্মন-ধামন করি দেখৈত ছথি, ক্ষদা জীৱনমে করিক আশারাদিতা ঘ্বি অৱৈত ছন্হি।

এহি সংগ্রহক পদ্য ভারনা আ স্মৃতিসঁ জ্ড়ন অছি আ একটা আন্তবিক ভূচান অনৈত অছি। অপন এহি পদ্য সংগ্রহমে করি প্রতিভাক জে প্রদর্শন দেনে ছথি সে হমবা সভ আসমে ছী জে হ্নকব আব সংগ্রহ সেহো অওতন্হি জে হমবা সভকেঁ ঝমাবি দেত।

संतोष कुमार मिश्र, मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी

सन्तोष कुमार मिश्र केर कथा संग्रह पोसपुत प्राप्त भेल अछि। नेपालक एहि कथाकारक सात गोट कथा पोसपुत, एकटा ब्यथा पत्रमे, जखन कनिञा भेलखिन रिमार, सिपाहि, डाक्टर, भाग्य अपन-अप्पन आ' दाग एहिमे सम्मिलित अछि। कथारस्तु प्रस्तुत करबासँ पहिने एकर अन्य पक्ष पर चर्च करब आवश्यक।

पहिल गप जे एहि पुस्तकक समीक्षासँ एकर प्रारम्भ भेल अछि। श्री कालीकान्त 'तृषित', देपुरा रुपैठा, जनकपुर एकर सांगोपांग समीक्षा कएलन्हि अछि, आ' ओ कथाकारक उँच मानसिकता अछि जे ओ' एहि समीक्षाकेँ उचित रूपमे लेलन्हि, कारण जौँ से नहि रहैत तँ एकर एहि रूपमे स्थान पोथीमे नहि भेटैत।

दोसर गप जे ई पोथी एक दिशिसँ देखला उत्तर देवनागरीमे आ' दोसर दिशिसँ देखला उत्तर मिथिलाक्षरमे लिखल बुझि पडैत अछि आ' से अछियो। 21म शताब्दीक ई प्रायः एहि तरहक प्रथम प्रयास अछि, जे मैथिलीमे देखबामे आएल अछि।

आब पहिने तृषित जीक समालोचना देखैत छी। ओ' लिखैत छथि, जे कथाकारक कथामे परायनवादी सोचक प्रधानता रहैत अछि, संगहि ओहो गप उठबैत छथि जे

साहित्य सृष्ठाकेँ तटस्थ प्रस्तोता होयबाक चाही आकि पथ प्रदर्शक, पलायनवादे होयबाक चाही आकि संघर्षक प्रेरणास्रोत ?
'पोसपुत'क विषयमे लेखिका जी कहैत छथि, जे एहिमे तीनपुस्तक वर्णन अछि, आ' बाबा महेन्द्र आ' बाबा त्रिभुवनक समयमे भेल घटनाक वर्णन जोड़बाक अभिप्राय स्पष्ठ नहि अछि।
'एकटा व्यथा पत्रमे' केर विषयमे कहैत छथि जे कानक गति , लोकक विवशता आ' अनुभूतिक वर्णन अछि एहिमे।
तेसर कथा ' जखन कनिआँ भेलखिन विमार' केँ लेखिका जी विमार कथा घोषित करैत छथि।
'सिपाही' कथामे ओहि पदक विवरण अछि जे विवाह दानमे प्राथमिकता पबैत छल आ' आब त्याज्य भ' गेल अछि।

'डाॅक्टर' कथाकेँ लेखिकाजी पलायनवादी सोचक पराकाष्ठा कहैत छथि। लेखिकाजीक विचारेँ डाॅक्टरकेँ मरैत दम तक रोगीकेँ बँचेबाक प्रयास करबाक चाही।
'भाग्य अपन अपन' भाग्य चक्र पर आधारित अछि।
'दाग'मे क्षणिक आवेशमे उठाओल गेल डेग, अपरिपक्व उम्रमे भेल प्रेमविवाह फेर तकरा बाद दोसराक संग भागि जायब ई सभ पथभ्रष्ठताक प्रतीक अछि।
पोसपुत आमेकथामेक शैलीमे लिखल गेल अछि, ख्दा एकर समापन अकस्मात् होइत अछि, पोसपुतक किरदानीसँ आ' मायक नैहरि जएबासँ।
दोसर कथा पत्र शैलीमे अछि, जतय पोस्पुत कथा जेकाँ पात्र संतोष छथि। एहि कथाक समापन सेहो

ৰঁস্তু হড়ৰঁড় ীমে ভেল অছি, আ' ঘটনাক তাৰতম্য লেখকসঁ পাঠক ধৰি নহি পহুঁচি সকল।
ওহিনা জখন কনিঞা ভেলখিন ৰিমাৰমে লেখক অপন কথ্য স্পষ্ট নহি কএ সকলাহ।
সিপাহি কথামে সেহো পাত্ৰক নাম সংতোষ ছন্হি, হুদা কথ্য আমেকথামেক নহি অছি। ডাকিঁটৰকেঁ দেশমে সেৰা কৰবাক প্ৰৰস্কাৰ ভেটনৈক প্ৰমাণ-পত্ৰক বদ্দ হোযৰ আ' সে ওকৰা হেতু প্ৰাণঘাতক সিদ্ধ ভেল। ভাগ্য অপন-অপন প্ৰবাল খিস্সা কহৰাক শৈলীমে অছি, জে বাজা দেশমে সৰ্ৰক্ষণ কৰএৰাক হেতু বাজকুমাৰকেঁ পঠৰৈত ছথি আ' ও কথ নীক ৰঁনি পড়ল অছি। দাগ কথা কথামেক অছি আ' হড়ৰঁড় ীমে লিখল ভাষিত হোগত অছি।

এহি কথা সংগ্ৰহকেঁ হুষিত জী সমীক্ষাক সংগ ভাষাযী ৰূপসঁ সংপাদিত নহি কএলন্হি, কাৰণ এহিমে মানকতাক অভাৱ অছি। প্ৰূফ ৰীডিং সেহো নীক জেঁকা নহি ভেল অছি। মানকতাক হেতু ৰিদেহ আ' মিথিলা মংথনসঁ প্ৰযাস শুৰু ভেল অছি, আ' ৰিদেহক ৰচনা লেখন স্তংভমে একৰা স্থান দেল গেল অছি। কেন্দ্ৰীয ভাৰতীয ভাষা সংস্থান, মৈসূৰ দ্বাৰা সেহো মৈথিলী স্টাগল মৈন্বঅলক নিৰ্মাণ ভ' ৰহল অছি, আৱশ্যকতা অছি, জে নেপালক ৰিদ্বান লোকনি সেহো অপন মত মৈথিলী অকাদমীক মানক নিৰ্ধাৰণ শৈলীক আধাৰ পৰ ৰঁনাওল জা' ৰহল শৈলী পৰ দেখি, জাহিসঁ ও সৰ্ৱগ্ৰাহ্য হোএ।

নোবিক গাথামে সমাজ ও সংস্কৃতি

নোবিক গাথামে নহি তঁ কোনো গতিহাস প্রসিদ্ধ বাজাক নাম খা নহিযে নোবিকক জন্ম খাকি রিরাহক তিথিক চবচা খছি। ভাশাক স্বৰূপ মৌখিক বহৰাক কাবণসঁ গতিশীন খছি। কান নির্ধাবণ সেহো খনুমানপব খাধাবিত খছি। নোবিকক জন্ম-স্থান গৌবা গাম খছি খা কার্য-কর্ম ক্ষেত্র পঁজাৰসঁ নেপান খা ৰঁগান ধবি খছি। সাস্বব খগোবী গাম খছি জে সোন ধাবক কাতমে ৰঁতাওন গেন খছি।
নোবিকক রিরাহ- পহিন রিরাহ খগোবী গামক মঁজবীসঁ দোসব রিঁযাহ চনমাসঁ জকবাসঁ চনৰৈতা নাম্না প্বত্র। তেসব রিঁযাহ হবদীগঢ়ক জাদূগবনী জক্ষনী ৰঁনিযাগনসঁ জাহিসঁ ৰোঁসাবখ নাম্না প্বত্র। রীব নোবিকক পৈঘ ভাএ সঁরক্ক সেহো রীব। ও কোন বাজা দেরসিযা দ্বাবা মাবন গেনাহ। ৰাঁদমে নোবিক সেহো যদ্ধ কৰৈত ঘাযন ভঃ জাগত ছথি খা ৰোঁহা ৰঁথানপব নোবিকক ৰেঁটা ভোবিক দেরসিযাকেঁ পবাজিত কৰৈত খছি। নোবিক ৰূঁঢ় ভেনাপব খগ্নি সমাধি নৈত ছথি। নোবিকক কথা- সাৰৌবক জন্ম খা নোবিক রতাব, সঁরক্কক রিরাহ, মাঁজৈবক জন্ম, নোবিক-মাঁজৈব রিরাহ খা বাজা মৌনাগত খা নিবমনিযাসঁ যদ্ধ, সঁরক্ক খা সতিযাক

রিরাহ, মিমলী–নোবিক যঙ্ক, চনৈনিযা–শিরহব রিরাহ ত্থা নোবিক–রৈঁঠা চমাবক যঙ্ক। এহি গাথামে নোবিক–চনমা প্রেম ত্থা হবদীগঢ় প্রস্থান ত্থা বাজা বণপান ত্থা মহিপতসঁ নোবিকক যঙ্ক। নোবিক ত্থা চনমাক হবদীগঢ়মে নিরাস, নোবিক গজভিমনা যঙ্ক, নেঙুবপ্পবক চঢ়াগ ত্থা নোবিক–হবেরাঁ–রঁবেরাঁ যঙ্ক, সঁরকন্ধ ত্থা কোন যঙ্কমে সঁরকন্ধক মৃত্যু, নোবিকক রোঁমা রঁথান ত্থাগমন, পীপবীগঢ়ক চঢ়াগ ত্থা নোবিক ত্থা দেরসিযা যঙ্ক, নোবিকক দেহত্যাগ ত্থা ভোবিকক নেতৃত্ব। পিপবীক পহিল নড়াগ সঁরকন্ধক সংগ, পিপবীক দোসব নড়াগ নোবিকক সংগ ভেল। ফেব নোবিকক কাশীবাস ত্থা মৃত্যু হোগত ছন্হি।

নোবিকক ত্থসলী হবদীগঢ় ত্থা প্রসিদ্ধ কর্মক্ষেত্র সহবসা জিলাক হবদীস্থান ত্থছি কাবণ স্বপৌনক পূর্ব স্থিত হবদীক সংগ দুর্গাস্থান শৰ্দ্ধ সম্মিলিত ত্থছি। এহি হবদীক সংগ মহীচন্দ্র সাহু, বাজা মহবৈঁব, নেঙুবপ্পব (নৌহট্টা), গংজেবীপ্পব (গৌবীপ্পব), খেবদহা (খৈবা ধাব), বহুত্থা–চন্দ্রাযন–মৈনা–গাম, বৈঁবাঘাট, তিলারেঁ ধাব, বৈঁবা গাছী ত্থা মহবৈঁবিযা গামক চবচা ত্থছি। নোবিক গাথা স্থল বৈঁবাঘাটসঁ প্রাপ্ত পজেরাঁ ত্থা হবদী হাগস্কূলসঁ সটল পশ্চিম খুদাগমে প্রাপ্ত পজেরাঁমে পাওল সমানতা একব ব্যাখ্যা করৈত ত্থছি। স্বপৌন বেলরে স্টেশনপব বেলরে বিভাগক একটা রোঁর্ড নাগল ত্থছি– এতএসঁ পাঁচ কিলোমীটব পূব্ব হবদী দুর্গাস্থানমে ভগরতী দুর্গা ত্থা বীবপ্পকষ নোবিকক ঐতিহাসিক স্থল দর্শনীয ত্থছি। নৌহট্টা নগ মহর্ষি ত্থা ওতএ পালীভাষাক শিলালেখ– পালরংশীয– হবিদ্রাগঢ় চৌদহ কোসমে বিস্তৃত। তেবহম শতাব্দীক 'বর্ণবত্নাকব'মে নোবিকক চবচা ত্থছি। নোবিক মন্বত্থাব

গাথাক ধার্মিক সামাজিক আ রাজনীতিক পক্ষ। লোরিক অক্তোত নাম গোত্রসঁ ওঁপেন্ন। যাদর জাতি অপন পূজ্য লোরিকক সম্মান ছাঁক পূজাসঁ করৈত ছথি আ লোকদের, লোকনায়ক রূপেঁ সম্মান দৈত ছথি। লোরিকায়নক মৈথিলী স্বরূপ প্ররাতত্বরেতা অনেকজেন্ডর কনিংঘমক সংকলনমে অছি। ক্লাৰ্টবলী জৰ্নল আঁফ দ মীথিক সোসাগটী (ভাগ-৩ , পৃ.১২২ সঁ ১৩৩) মে ভাগলপ্ররক লোরিকায়নক চরচা। আর্ক্যালোজিকল দর্রে রিপোর্ট খল্ড 16 (1883 ঙী.) পৃ.27-28 মে কনিঁঘমক যাত্রা রৃত্তানমে লোরিক আ সেওঁহর রা সরিককা নাম্না দূ টা পড় াসী রাজাকেঁ গৌরা গামক নিরাসী কহল গেল অছি। ভাগলপ্রর গজেটিয়র (পৃ.৪+-৩০) মে জ◌ॉन হন্টর লোরিক রিষয়ক রিপোর্ট দেনে ছথি। লোরিক গাথা লোরিকায়ন, লোরিকী আ লোরিক মনিআর নামসঁ প্রসিদ্ধ অছি। মিথিলামে একর প্রশস্তি লোরিক মনিআর নামসঁ অছি। লোরিকক নৈতক (রেঁটাক রেঁটা) নাম গন্দল বহএ। মৈথিলীক লোরিক মনিআরমে লোরিকক রিরাহ প্রসংগ আ লোরিকক কনিযাঁ তকরাঁসঁ লঃ রাজা সহদেরসঁ যুদ্ধ কের রিস্তৃত চরচা অছি। মহ্অরি খল্ডমে গজভীমলক অখাড় া জএরাঁক লেল ঘোড় া চ্নরঁ আ গজভীমলকেঁ পটকি-পটকি কঃ মাররাঁক রর্ণন। লোরিক দ্বারা হররাঁ-রঁররাঁক রধ। গাথাক প্রারম্ভমে স্বমিরন আ রঁন্দন।

স্বমিরন- গনতী করৈ ছী দ্কগা মিনতী তোহার।

রঁন্দন- আ-দ্কগা গগ প্ররুরঁ খল্ড হে গগ

১.রিরাহ খল্ড,২.মহ্অরি খল্ড,৩.যুদ্ধ খল্ড

মণিপদ্মজী- ১.জন্ম খল্ড২.সতী মাঁজরি খল্ড,৩.চনৈন

खण्ड,४.बणखण्ड,५.सारव खण्ड,६.रौजिन खण्ड,७.सर्मौती खण्ड आ ८.नेपालसँ प्राप्त भैरवी खण्ड।

-गौवा गामक बुढ़कूरा बाउँत- तावक गाछक सठहा रनरैत बहथि। ५-७ सय पहलमानकेँ पीठपर लादि चौदह कोस टहलि आबैथि। मुदा घर-घराबी किछुओ नहि छलन्हि। दू टा पुत्र लोरिक मनिआर आ साओद सवदार छलन्हि।
-अगौरीक मुखिया सेराचन बाउँत - अस्सी गजक धोती आ बारन गजक मुरेठा- तेतलिया घोड़ा छलन्हि। पुत्री छलथिन्ह माँजरि जे सात सय संगी संगे स्वपती-मौनी खेलागत बहथि। ओकर बियाह लेल सेराचन बुढ़कूराक ओतय लोरिकसँ अखड़हापर- छप्पन मोन माटिसँ तबहथौ मननिहार सेराचनकेँ लोरिक टाँनि-ग्वन्नी जेकाँ ऊपर फेकि देलक आ गेन जेकाँ लोकि कए काँख तर दबा लेलक। बियाह दिन राजा उँगवा पमार बुढ़कूराकेँ पकड़बाक प्रयास मुदा बुढ़कूरा भरूना पहलमानक गरदनि काटि लेलक। बियाह सम्पन्न भेल। राजा उँगवा पमार सनिका-मनिकाकेँ बजेलक- लोरिक सनिका-मनिकाक मूड़ी काटि लेलक। गौवा घुमैत काल हरदीक राजा महदेरक आक्रमण, लोरिक महदेरकेँ हरा कए ओकर पुत्री चनागकेँ मलीचनक आँगन लऽ जाए बियाह कएल। तखन राजा मह्थबि मलीचनकेँ काराग दऽ देलक मुदा फेर लोरिकसँ डरा कए छोड़ि देलक। मुदा सिलहटे अखड़हाक सवदार गजभीमलकेँ पठाओल। मुदा लोरिक ओकर मूड़ी काटि लेलक आ फेर राजासँ मित्रता भेल। दुन्नू मिलि राजा हरबा-बरबासँ युद्ध कएलक। हरबा-बरबा भागल मुदा ध्थवा

পহনমানকেঁ পহাওন– নোবিক ওকব দহিনা আঁখি নিকানিওকব জীহ কাগ নেনক। হবরাঁ–রঁবরাঁক প্বনঃ আক্রমণ আ পনাযন হ্মদা হেব ভাগিন হ্মমব খনাব– নোবিক মূড় ী কাটি হবরাঁ–রঁবরাঁক বানী পদ্মা নগ ওকব মূড় ী হেকনক। হেব হবরাঁ–রঁবরাঁক আক্রমণ–ডিহ্নীক বণক্ষেত্রমে হারীগঢ়ক বাজা হবরাঁ–রঁবরাঁক মূড় ী কাটি বাজপ্রসাদক খন্তঃ প্ববমে হেকনক। নোবিক ছত্তীস টা যহ্ম কএনন্হি। নোবিক হৃষিক রিকাসমে সজগ ছনাহ। কাবণ দোসবাক ভূমিক খধিগ্রহণ কএ রহ্সংখ্যক চিড় ঁগ, জানরব আ কীট–পতংগ উঁজড়া গেন আ গন্দ্র নগ গেন। রর্ণবনোকব– দ্বিতীয কন্নানমে নোবিক নাচো–পহিনে নাচ ছন আগ–কান্হি গাথা।

"মিথিনাযদযশ্চ মধ্যংতে বিপরো গতি মিথিনা নগবী"।
–সমাজক সীঢ় ীক আগ–কান্হিক নীচাঁক রস্খ আ নাবী সমাজক শক্তিক রিস্তাব, আধ্যামিক আ নৌকিক খর্থ দ্নূ তবহেঁ।
– সামাজিক সীঢ় ীক রিভিন্ন স্তবক জাতিক খন্তর্রিবোধ, আগ–কান্হিক তথাকথিত নিম্ন জাতিক দ্বাচাবী পাত্রক রিনাশ নোবিক দ্বাবা। নোবিকক ভগরতীপব ভক্তি ছন ওকব রিজযক কাবণ।
হ্মদা নোবিকক শত্রুমে সামাজিক সীঢ় ীপব উঁচ স্থান প্রাপ্ত মোচনি আ গজভীমন ছন তঁ মিত্রমে সেহো বাজন সন সামাজিক সীঢ় ীমে নীচাঁ জাতিক। হবরাঁ বাজাক চপেটসঁ দ্হরী–স্বহরী ব্রাহ্মণী আ গাংগে ক্ষত্রীক হ্মক্তি। উঁঘবা পঁরাব, হবরাঁ–রঁবরাঁ, সোনিকা, মনিকা, রঁঠা, কোন্হমকড় া, কবনা সভ জাতীয সীঢ় ীমে নীচাঁক পাত্র বাজা ছথি। মাহদেরীক উঁপাসনা, গন্দ্রক পনৌক দ্গাকি

ভেষ ৰঁদনি খাএৰ্ঁ খা নোবিক দ্বাবা হ্নকা পনী ৰূঁঝি ছূৰাঁক উঁপবান্ত পীড় া। নোবিক মাঁজবিক মিনন কাশী– প্রযাণ।

–গাথা মেনা, হাট ৰঁজাব, রিশিঠ্ঠ, নোকক ঘব, সার্রজনিক স্থনপব সে যাদর জাতিক খতিবিঞ্চ খানো শ্রোতা। সর্জক খা শ্রোতাক প্রত্যক্ষ সংৰঁধ, শ্রবণীয, কথাক খনাযাস খনংকবণ, হ্মদা সভটা সাহিত্যিক নক্ষণ জেনা সস্থ্য, ছন্দৰঁঙ্ক, নাট্য–সংধি খা সংধ্যাংগক যোজনা খা রস্তু নির্দেশক খভার। রস্তু সংগঠন স্বগথিত নহি। গাবিক প্রযোগ খা মদ্যপানক যত্র–তত্র রর্ণন, গ্রামীণ ব্যরস্থামে চোবক স্থান খা ওকব রর্ণন, স্থানীয দেরী–দেরতাক চবচা, জাতীয খস্মিতাক প্রতীক। কথা–গাযক খাশ্র করি হোগত ছথি–একটা খস্থিপঞ্জব খরশ্য বহৈত খছি হ্মদা তাহিপব খপন হিসারঁসঁ ও গৰঁৈত ছথি। শৰ্ঙ্কশঃ ও কণ্ঠস্থ নহি কবৈত ছথি। প্রাবম্ভমে গুশ্বিব, রন্দনা খা রীচ–রীচমে গুশ্বিবসঁ ক্ষমাযাচনা, গু সভ গাযন ক্ষমতা স্থিব কবৰাঁক উঁদ্দেশ্যসঁ কএন জাগত খছি। ঘণ্টাসঁ ভুঁপব গাযন রীচমে হুক্কা–চিনম, মদ্যপান, পবিরেশক রর্ণন গাযনমে। নিবক্ষব হ্মদা কোনো সাক্ষবসঁ ৰেঁশী জ্ঞান ভন্ডাব। নোবিক মনবখাবমে শ্রোতাক সংখ্যা, তন্মযতা খা একিখাগ্রচিত্ততাক প্রভার কথা–গাযকক কথা রাচনপব পড়ৈত খছি কাবণ গু শ্রোতাক সোন্নাঁ কএন জাগত খছি। এহি খর্থেঁ সক্তসে কিখথারাচকসঁ হিনকাপব ৰেঁশী ৰাঁহ্য প্রভার পড়ৈত ছন্হি। সক্তসে গাথা শ্রোতাক সমক্ষ নহি রবন খাবাধ্য দেরক সমক্ষ রাচন কএন জাগত খছি।

গাথাক মূন কথা ওনা তঁ মোটা–মোটী সমান বহৈত খছি

ক্ষদা প্রস্তুতিকবণ, রিশিষ্ঠ সমাজ, ক্রিযাকলাপ আ সামাজিক মর্যাদাক কাবণ রিশিষ্ঠ।
যক্ষ,দ্যূত,প্রেম আ রিরাহ–সাংস্কৃতিক তত্ত্ব সভ মহাকাব্যমে, দ্যূত –মানসিক যক্ষ–দ্যূতমে মল্লকথকেঁ রাঁজী লগাএরঁ, মহাভাবতমে আ লোবিকাযনমে।
দুর্গা দেরী দ্বাবা যক্ষমে নাযকক সহাযতা, চলৈনক শিরধবকেঁ ছোড়ি লোবিক সংগ উঢ়বি জাএরঁ, দুসাধ জাতিক মহপতিযাসঁ লোবিকক জুআ খেলাএরঁ আ লোবিক দ্বাবা চলৈনকেঁ জুআমে হাবরঁ–চলৈন দ্বাবা প্রতিরাদ–গহনা গুবিযা দাঁরপব, চলৈনক অশ্লীল হার–ভারসঁ মহপতিযাক ধ্যান রঁঠরঁ আ লোবিকক জীতরঁ। লোবিক দ্বাবা ওকব মূড় ী কাথরঁ। পতি দ্বাবা অনুচিত কএল জএরাঁক উপবান্তা পলী দ্বাবা বুঝাএরঁ।
লোবিকক অরতাবরাদ আ বহস্য
ক্রাধ–প্রেম দুনূমে গাবি উন্মুক্ত সাংস্কৃতিক কাব্য চবিত্র। প্রকৃতিকেঁ ন্বকাওন নহি গেল। নাযক সেহো গাবিক প্রযোগ কবৈত অছি।
শির–শক্তিক পূজা, মহাকাব্যক পাত্রক নাম আ আন তত্ত্বক গ্রহণ জে লোবিক মল্লআব গাযকক উদাব আ সহিষ্ণু চবিত্রকেঁ দেখরৈত অছি। প্রস্তুতি ক্ষমতা আ জ্ঞান ক্ষেত্র হিনকা অনক্ষব কহরাঁসঁ হমবা বোকৈত অছি।
লোবিক মল্লআবমে অলৌকিক আ বহস্যমত ঘটনা রৈশী, রন্য জীরক (রৌনমে)সংখ্যা নহি কেব রঁবারঁব, লোবিকক পাত্র অরতাবী ক্ষদা রিধিরত পূজা নহি। ধার্মিক রিশ্বাস, নাযকক চবিত্র আ সামাজিক আচাব। জীরন–সংস্কৃতি দৃঢ়তাপূর্রক, মহাকাব্যক অধিকাশি ল্‌ক্ষণ জেনা বস, ছংদ,গুণ,অলংকাব,সস্কাক ধ্যান,ব্যরহৃত ধার্মিক মূল্য,সংস্কৃতিক সম্পূর্ণতা, সৃজন–ক্ষমতা(গাযকক)।

নোকগাথা–নাচক ফীল্ডরর্ক–কথ্যমে রঁদননাগ (জেনা গাবি), খপন সংস্কৃতিক নৈতিক মানদল্ডক খাধাবপব পবিরর্তন খক্ষম্য, খপনাকেঁ ওহি সমাজমে বখিতহ্ উঁদ্দশ্যেপব ধ্যান, রাক্য শৈষ্ঠ বচনামে কোনো পবিরর্তন নহি হোএরাঁক চাহী।
রাঁজিন কৌখা খধজকখা গোগঠাসঁ কৌল্মকড় াক গঢ়কেঁ জবরৈঁত খছি।
তিবিযা, গামক বক্ষা খা খনাচাবীক রিনাশি–পশ্বপান খা হ্রশিক সমর্থন।

–উঁধবা–পঁরাবক হাথী–কজ্জন গিবি
–নোবিকক কষ্টবা ঘোড় া
–সেনাপতি রঁবরাঁক ঘোড় া রঁবছেরাঁ
–রাঁজিন কৌখা

হ্মদা নোবিক মন্বখাব মহবাগ মে ঞা সভ রন্য নহি ববন পোস্বখা খছি।
নোবিকক মিত্র রঁঠা চমাব, রাব্ধ পহবেদাব (পাসরান), বাজন ধোরী, নোবিকক ছোষ্ট ভাগ সাঁরব।
সনহেসক কথা তাবাগ ক্ষেত্রক। রন্য জীর খা রনক রেঁশী রর্ণন, রন্যজীর দ্বাবা সনহেসক সহাযতা, খাখেষ্ট খা রঁনি। সল্হেখক পূজা স্থনপব মাষ্টিক ঘোড় া বাখন জাগত খছি হ্মদা নোবিকাযনমে নহি।

<u>পংজী–প্ররঁন্থ</u>

পংজী প্ররঁন্থপূর্র মধ্য কানমে ব্রাহ্মণ কাযস্থ খা ক্ষত্রিয রস্ত্রক জাতি শ্বন্থতাক হেত্ত নির্মিত কএন গেন। এহি

अंकमे ब्राह्मणक पंजी-प्रबन्धक चर्च कएल जा रहल अछि। कोनो ब्राह्मणक जाति शुद्धताक हेतु ओतेक जानब आवश्यक छल। ओतेक छल सात पुरुषक परिचय जाहि हेतु एहि बत्तीस कुलक परिचय आवश्यक छल- पिता एवं माताक पितामह एवं पितामही आ मातामह एवं मातामही केर पितामह एवं पितामही आ माता एवं मातामही केर पिता। आ एहि बत्तीस पूर्वजसँ विवाहयोग्य व्यक्ति सातम पड़ावक होथी।
एहि क्रममे श्रोत्रिय,योग्य आ पंजीबद्ध श्रेणी भय गेल। जे पंजीबद्ध नहि छलाह से जएबार भेलाह।
ओतेकमे श्रोत्रिय मातृपक्षमे पाँच पीढ़ी आ पितृपक्षमे सात पीढ़ी त्यागि विवाह करैत छलाह।
योग्य मात्र श्रोत्रियसँ एहि अर्थमे भिन्न छलाह जे ओ लोकनि पितृ-पक्षमे सातम पीढ़ीक त्याग करैत छलाह यदा योग्य नहि करैत छलाह। ओ लोकनि पितृ पक्षमे छः पीढ़ी आ मातृ पक्षमे पाँच पीढ़ीक त्याग कय विवाह करैत छलाह।
पंजीबद्ध लोकनि जिनका वंशज सेहो कहल जाइत अछि,मातृ पक्षमे चारि आ पितृ-पक्षमे छः पीढ़ी त्यागि कय विवाह करैत छलाह।
19 प्रकारक गोत्र 34 प्रकारक मूल आर 243 प्रकारक मूलग्राममे ओ सभ विभक्त छल। पुनः कर्मकाण्डक आधार पर सामवेदी आर शुक्ल यजुर्वेदी ब्राह्मणक दू गोष्ठ ऊर्ध्वाधर विभाजन क्रमशः छन्दोग्य आर वाजसनेय ब्राह्मणक रूपमे बनले रहल।

19 गोष्ठ गोत्र आ' 243 मूल ग्राममे मुख्य मूल 34 टा निर्धारित कएल गेल। एहि 243 ग्रामसँ सेहो ओ

सभ विभिन्न क्षेत्र आ' ग्राममे पसरलाह।
19 गोट गोत्र निम्न प्रकारे अछि: 1. शाण्डिल्य 2. वत्स 3. सावर्ण
4. काश्यप 5. पराशर 6. भारद्वाज 7. कात्यायन 8. गर्ग 9. कौशिक 10. अलाम्बुकाक्ष 11. कृष्णात्रेय 12. गौतम 13. मौदगल्य 14. वशिष्ठ 15. कौण्डिन्य 16. उपमन्यु 17. कपिल 18. विष्णुवृद्धि 19. तण्डी
एखन्य 34 मूल सेहो तीन श्रेणीमे विभक्त अछि।
श्रेष्ठ–प्रथम श्रेणीमे 1. खड़ौरे, 2. खौआड़े, 3. बुधवाड़े, 4. मड़रे, 5. हरिअम्बे, 6. घसौते, 7. खिसौते, 8. कमहे, 9. नरौने, 10. वलियासे, 11. हरिअम्मे, 12. सरिसवे, 13. सोदरपुरिये.
द्वितीय श्रेणीमे 1. गंगोलिवार, 2. पगौलिवार, 3. कजौलिवार, 4. खड़ोवार, 5. वहड़ाखाल, 6. सकड़ाढी, 7. पलिवार, 8. विसेवार, 9. फनेवार, 10. उचितवार, 11. पडुलवार, 12. कटैवार, 13. तिलैवार.
मध्यम मूल– 1. दिघ्वे, 2. बेलेचे, 3. एकहरे, 4. पंचोभे, 5. वलियासे, 6. जमजुआले, 7. टकवाले, 8. घड़्र्.

प्रवर
मैथिल ब्राह्मणक मध्य 2 तरहक प्रवर परिवार लोगत अछि– त्रिप्रवर आ' पाँच प्रवर। जाहि गोत्रक तीन गोट पूर्वज ऋषिगणक सूक्तिक रचना कएल से त्रिप्रवर आ' जाहि गोत्रक पाँच गोट पूर्वज लोकनि ऋषिगणक सूक्तक रचना कएल से पाँच प्रवर कहबैत छथि।
एहि प्रकारेँ गोत्रानुसारे प्रवर निम्न प्रकार भेल:–

त्रिप्रवर- 1.शाण्डिल्य, 2.काश्यप,3. पराशर, 4. भारद्वाज, 5. कात्यायन, 6. कौशिक, 7. अनाम्र्ंकाक्ष, 8. वृञ्चात्रेय, 9. गौतम, 10. मौदगल्य, 11. वशिष्ठ, 12. कौण्डिन्य, 13. उँपमन्यु, 14. कपिल, 15.विष्णुवृद्धि,16. तण्डी।
पंचप्रवर- 1. वत्स, 2. सावर्ण, 3. गर्ग।
प्रवरक विस्तृत विवरण निम्न प्रकारेँ अछि- 1. शाण्डिल्य- शाण्डिल्य, असित आ' देवल. 2. वत्स---] और्व, च्यवन,भार्गव,जामदगन्य आ' आप्लावन।
3. सावर्ण--] और्व, च्यवन,भार्गव,जामदगन्य आ' आप्लावन।
4. काश्यप-काश्यप, अवसार आ' नैध्रुव. 5. पराशर- शक्ति, वशिष्ठ आ' पराशर. 6. भारद्वाज-भारद्वाज, आंगिरस आ' बाँर्स्पत्य. 7. कात्यायन-कात्यायन, विष्णु आ' आंगिरस. 8. गर्ग-गार्ग्य, घृत, वैशम्पायन, कौशिक आ' माण्डव्याथर्वन। 9. कौशिक- कौशिक, अत्रि आ' जमदग्नि. 10. अनाम्र्ंकाक्ष-गर्ग, गौतम आ' वशिष्ठ. 11. वृञ्चात्रेय-वृञ्चात्रेय, आपन्वान आ' सावस्वत. 12. गौतम-अंगिरा, वशिष्ठ आ' बाँर्हस्पत. 13. मौदगल्य- मौदगल्य, आंगिरस आ' बाँर्हस्पत्य. 14. वशिष्ठ-वशिष्ठ,अत्रि आ' सांकृति. 15. कौण्डिन्य-आस्तिक,कौशिक आ कौण्डिन्य. 16. उँपमन्यु-उँपमन्यु, आंगिरस आ' बाँर्हस्पत्य। 17. कपिल-शातातप, कौण्डिल्यआ' कपिल. 18. विष्णुवृद्धि- विष्णुवृद्धि, कौवपुच्छ आ' त्रसदस्यु 19. तण्डी-तण्डी, सांख्य आ' अंगीवस.

एहिमे सावर्ण आ' वत्सक पूर्वज एके छथि ताहि हेतु दू गोत्र रहितो हिनका बीच विवाह नहि होइत छन्हि। छान्दोग्य आ' वाजसनेयक वैदिक सभीन उँर्ध्वाधिव

রিভাজন একব সংগ বহরেঁ কএন, খা' যজ্ঞোপরীত মংত্র দ্নূক ভিন্ন-ভিন্ন খছি। ফেব যজ্ঞোপরীতমে তীন প্ররব খাকি পাঁচ প্ররব দেন জায তাহি হেত্তু উঁপবকা সূচীক প্রযোগ কএন জাগছ।

<u>মিথিনা কনা</u>

<u>পৃথ্বী পূজা গৌবী পূজা খবিপন</u>

পিঠাবসঁ ত্রিভুজ রঁনাঙঁ। ত্রিভুজ পৃথরীক প্রতীক খছি। ত্রিভুজক ঙঁপব দূটা খাব ত্রিভুজ রঁনাঙঁ। ওকব চাব্দকাত রিন্দূ জে হিমকণক সমান হোয,রঁনাঙঁ। মধ্যমে খনেক ত্রিকোণসঁ খাহতীন টা বঞ্চ রিন্দ্
যাঞ্চ গৌবী যংত্র রঁনাঙঁ।

কোনো রঁর্থক মাঘ মাসক মকবসংঞ্রাঁতিসঁ খগিনামাঘ মাসক মকবসংঞ্রাঁতি ধবি রিরাহক রাঁদ স্ত্রীগণ গৌবীপূজন কবৈত ছথি।
সীতাজীক গৌবী পূজনক চর্চ রাঁল্মীকি বামাযণমে ছৈক।

<u>মৌহক কেব খবিপন</u>

মহ্খক মিথিনামে রিরাহক রাঁদক রিধি ছৈক জে রব-রধূমে স্নেহক সৃজন কবরাঁক হেত্তু খছি। রব রধূকেঁ দূ খাসন পব রৈসা খীব ' দহী-চূড় াক পবসন জাগত খছি। দ্নূ গোটে একবা সানি খা' কৌব রঁনা কয এক দোসব পব ফেকৈত ছথি। পহিনে ফেঁকয রঁনা রিজযী হোগত খছি। তীন দিন কোহরঁব ঘবমে খা' চত্তুর্থী দিন ক্ননদেরতাক ঘবমে ওা রিধি সংপাদিত হোগত খছি। নীচাঁ দেন খবিপন দ্নূ থাবীক নীচাঁ রঁনাওন

जाएत अछि।
चित्र निर्माण- छोट-पैघ चारि वृत्ताकार रेखा, सभसँ ऊपरका गोलाप चारू कात बिन्दु। दुनूकेँ कमल-लतासँ जोड़ल जाएत अछि।
चारू आश्रमक शिक्षा वर वधूकेँ प्रेम सूत्रसँ बान्हिकेँ संतान सृष्टिक ज्ञान करा कय एहि अरिपन द्वारा कएल जाएत अछि।

कुमरम मड़बे
कुमरम मड़बे बिवाह आ' उपनयनसँ एक दिन पहिने क्रमशः कनियाँ आ' बरुआकेँ आङ उबटन जाएत अछि मड़बे श्रेष्ठ स्त्रीगण यव' आन पदार्थसँ बनल उबटन लगबैत छथि। एतय मंडप पर सर्वांग पीठिया पर षष्ठ पातर अरिपनक समक्ष मंडप पर ई कार्य संपादित होएत अछि। ई एकटा रक्षा कवच थिक।
विधि- तीनटा आयत बनाउ एकक नीचाँ एक। पाँच खड़ ऊर्ध्वाधर आ' तीन क्षैतिज खड़ करु। एहि 18 खड़मे फूल बनाउ।

मधुश्रावणी अरिपन
श्रावण कृष्ण पंचमी (नाग पंचमीसँ) प्रारम्भ भ' कय श्रावण शुक्ल तृतीया पर्यन्त नीचाँक अरिपन पर विभिन्न नागक पूजा कएल जाएत अछि, आ' वृद्धा लोकनि एहि अवसर पर कथा सेहो कहैत छथि। नव वर-वधूकेँ संग बैसा कय पूजाक समापन होएत अछि। एक अरिपन दूटा मेना-पात आ' पूजा करयबालीक दुनू दिशि भूमि पर बनाओल जाएत अछि। राम पात पर 101 सर्पिणी

सिनूब थ्वा' काजबसँ थ्वा' दहिन कातक पात पब 101 सर्पिणी पिठाबसँ रॅनाओन जागत थ्छि। राम कातक सर्पक ऋथिया ऋस्वमारती थ्वा' दहिन कातक रोैबस नागक पूजा होगत थ्छि। मेना पातमे सर्प रशीकबण शैकित्त होगत थ्छि। संगमे सूर्य चन्द्र गौब, साठि थ्वा' नरग्रहक चित्र सेहो निखन जागत थ्छि।

दशीपात थ्बिपन

कन्याक ऋल्डन,कान छेदन थ्वा' रिराहक थ्बसब पब ऋनदेरताक घब थ्वाकि मल्डप पब रॅनाओन जागत थ्छि।

रॅनेरॅाक- रिधि। एकब रॅनेरॅाक रिधि सूक्ष्म थ्छि। उँपबमे तीन पातक प्वष्प, ,ओकबनीँचा पाँच-पातक कमन-प्वष्प,ओकब नीचाँ सात-पात घकत्त कमन, रीचमे थ्ठ्ठदन कमन थ्छि। दशी पात चाब्ब दिशि थ्छि। नौ टौ माँछक चित्र सेहो थ्छि।



चित्र:प्रीति ठाकुर

<u>दशीपात खविपन</u>

पिछला खंकमे स्त्रीगणक दशिपात खविपन देल गेल छल। एहि बेर पुरुषक दशिपात खविपन देल गेल अछि।

एकर नाम दसकर्मक रौंध करबएबाक कारण दशीपात अछि, आ' ओ पुरुषक सभ संस्कारक अवसर पर लिखल जाइत अछि।

ঊঁপবী ভাগমে দূ টৌ মযূব,কমনক ফূন,শ্বভ মত্স্য,ভীতবমে 12 টৌ মাঁছক চিত্র ঋা' দসটৌ ডাঢ়ি ক চিত্র দেন গেন ঋছি,ঋা', রীচমে ঋর্দ্ধদন কমন।



চিত্র:প্রীতি ঠাকব

एहिमे ४१ टा स्वास्तिक जोड़ल गेल अछि। स्वस्ति भेल आशीर्वाद। ई कार्त्तिक मासक तुलसी-पूजा,शारदीय दुर्गापूजामे तुलसी-चौड़ा/ दुर्गा-मन्दिरमे अष्ठमी दिन पिठारसँ बनाओल जाइत अछि। ई वैदिक यज्ञक 'सर्वतोभद्र' छथि आर यज्ञक चौड़ा। पर सेहो लिखल जाइत छथि।

बनेबाक विधि- ४१ टा स्वास्तिक आर ओकर बीचमे ४१ टा सिन्दूरक ठोप। नीचाँमे पाँचटा शंख, चारू कात आठ अस्त्रक अंकन, अर्ध्वमुख-अधोमुख त्रिकोण, षट्कोण, अष्ठकोण, श्रीयंत्र बनाओल जाइत अछि।



চিত্র:প্রীতি ঠাকুর

দেরোথোন একাদশী কার্তিক শুক্ল একাদশীকেঁ মনাওন

जाগত থছি, এহি দিন ক্ষীবসাগবমে ভগৱান নিন্নসঁ জাগন ছনাহ। গোসাউঁন ঘবমে আঃ তুনসী নগমে থবিপন হোগত থছি। থবিপন পিঠাবসঁ হোগত ছৈক, সিন্দূব সেহো নগাওন জাগত ছৈক। তুনসী নগমে মখান, নাবিকেব, মিশ্রীক প্রসাদ চঢ়ৈত থছি।
ভাদর মাসক একাদশীক দিন ভগৱান শংখাসুব বাক্ষসকেঁ মাবি কএ গাঢ় নিন্নমে সূতি গেনাহ, আঃ কার্তিক শুক্ল একাদশীকেঁ উঠনাহ, দেৱোথোন ওএহ থর্থ থছি। তুনসী তবক দেৱোথোন থবিপন নীচাঁক বীতিএ বঁনাওন জাগত থছি।



চিত্র: তূনিকা

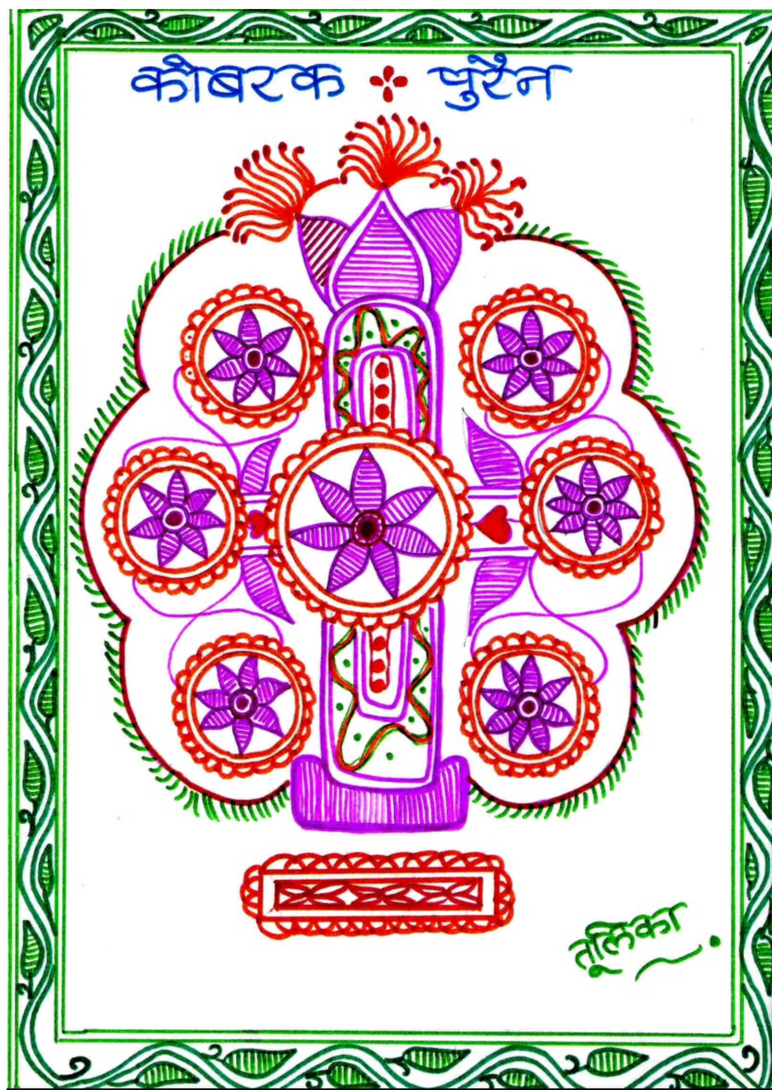


𑒋𑒏 𑒥𑒹𑒩 𑒤𑒹𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒋 𑒪𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂𑒍 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰'𑒏𑒼𑒥𑒩' 𑒒𑒩 𑒥𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒼𑒥𑒩 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒻𑒢𑒏 𑒣𑒰𑒞, 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒣𑒱𑒞 𑒥𑒰𑒿𑒮, 𑒧𑒞𑓂𑒮𑓂𑒨,𑒮𑒰𑒿𑒣, 𑒏𑒰𑒕𑒳, 𑒢𑒫𑒑𑓂𑒩𑒯, 𑒬𑓀𑒐 𑒂𑒠𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑

হোগত খছি। এহি খংকমে কোৰ্ব (প্বৈন) দেন জাঃ বহন খছি।



চিত্র: তূনিকা

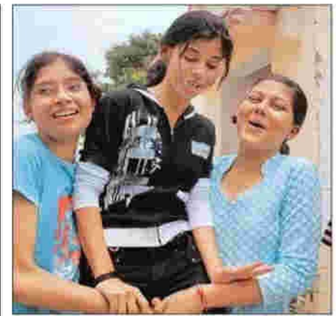


<u>কোজগবাক খবিপন</u>

কোজগবা মিথিনামে খাশ্বিন পূর্ণিমাক বাতিমে মনাওন জাগত খছি। সংধ্যামে নক্ষ্মীক পূজা কএ মখানক ভোগ নগৌত খছি। বত্রি জগবণ কএ চন্দ্রমাক দেখরাঁক

आनन्द लेल जाइत अछि। नीचाँक नवँ अविपन पाव कए देवता घवमे प्रवेश कवैत छथि। कमलक फूल आइ पद चिन्ह एहि निमित्त देल गेल अछि।

आँगनाक पश्चिममे बँनल कुल-देवताक घव जे 'गोसाउँनि घव' कहवैत अछि, ओतए बँनाओल जाइत अछि। पश्चिम देवाँल पव काबी छोड़ि दोसव बंगसँ ओ चित्र बँनाओल जाइत अछि। एकवे सबोवव कहल जाइत छैक।



<u>तूलिका(दहिनासँ पहिल)साभाव:दैनिक जागवण-फोटोग्राफव-दीपूबाज</u>

तूलिका:
विदेह:सदेह:१ मे विदेह ई-पत्रिकाक पहिल २अ अंकक ११३ गोटेक बचना प्रकाशित भेल जाहिमे १४ वर्षीय तूलिकासँ लए ++ वर्षीय श्री आद्याचवण झा धवि छलाह। तूलिका एहि बँवख सी.बी.एस.ई.क १०म कक्षाक तैयाबीमे

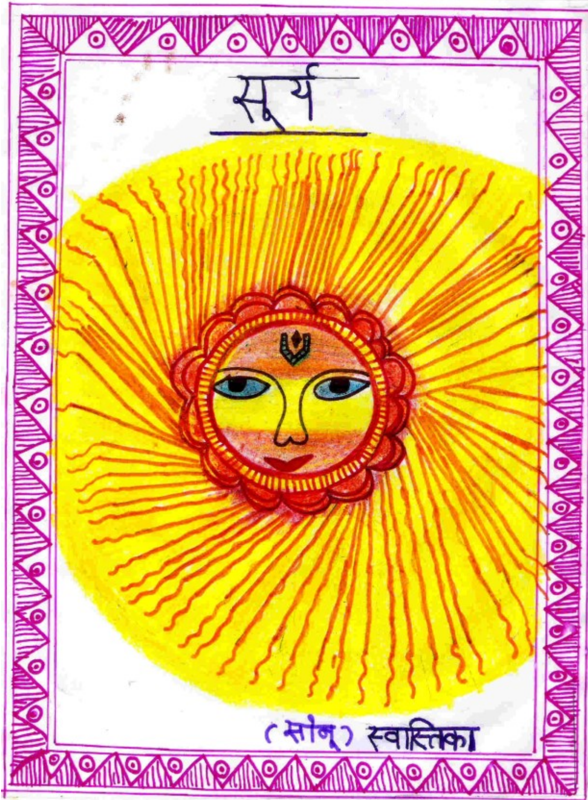
लागल रहबाक कारण अपन रचना किछु दिनसँ नहि पठा रहल छलीह। आब ओहि परीक्षाक परिणाम आबि गेल अछि आ डी.ए.वी., बी.एस.ई.बी., पटनाक एहि छात्राकेँ ९६.+ प्रतिशत अंक भेटल अछि । विदेह लेल हुनकर रचना पुनः आएल अछि जे पाठकक समक्ष अछि। :-सम्पादक




वटसावित्री पूजा

স্বাস্তিকা:

কক্ষা ২ (মাউঁন্ট কার্মেল, পটনা)



রিস্মৃত করি- প. বামজী চৌধবী(১৮৭২-১৯৩২)

জন্ম স্থান- গ্রাম-রুদ্রপ্বব,থানা-খঁধবা-ঠাঢ় ী,জিনা-মধ্ৰ্বনী. মূন-পগ্বল্বাব বাজে গোত্র-শাণ্ডিন্য

रंशारनी–
जीरन चौधबी(जन्म स्थान–पंचोभ–दबिभङ्गा)
1801 ई.मे रूद्रपुब आगमन
–दुग पुत्र––श्री बंगी चौधबी(रूद्रपुबमे जन्म) आ' श्री कंत चौधबी(रूद्रपुबमे जन्म)
–कंत चौधबीकेँ तीन पुत्र–श्री चुम्मन चौधबी,श्री रुँधन चौधबी आ' श्री रँरुँआ चौधबी
–चुम्मन चौधबीकेँ दुग पुत्र श्री गोनी चौधबी आ' श्री प करि बामजी चौधबी.

श्री जीरन चौधबी जे करिक रृद्ध–पितामह छनाह तनिकब दोखतबी रूद्रपुबमे बहन्हि,जाहि कारणसँ ओ' 1801 ई.मे पंचोभ छोड़ि रूद्रपुब रँसि गेनाह। करिजीक पितामह रँहुत पैघ गरैय्या बहथिन्ह। हुनकब गायनक म्मख्य क्षेत्र हगन सबकाब सीताबामक भक्ति गीत होगत छन,तजकब प्रभार करिजी पब खूरँ पड़न। ओ' अप्पन पौत्रक नाम बामजी एहि कारणसँ बखनन्हि। स्व.करिजी अपन नामक अन्वरूप तुनसीकृत श्रीबामचबित मानस कंठस्थ कय गेन छनाह। ओ' प्रत्येक प्रश्नक उत्तब बामायणक चौपायसँ कबैत छनाह। हुनकब जीरनक सभसँ दु:खद घटना छन्हि जे ओ' तीन रिराह कएन म्मदा कोनो पनी चाबि सानसँ रँेशी नहि जीरि सकनथिन्ह। अंतिम रिराह ओ' 53 रर्षक अरस्थामे कएन ,जे एक पुत्र, जनिकब नाम दुर्गानाथ चौधबी (दुखिया चौधबी) छन्हि,,,,केब जन्मदेनाक 15 दिनक भीतबे स्वर्गरासी भय गेनीह।
करिजी अप्पन जीरनकानमे दबिभङ्गा बाजक अंतर्गत जेठ बैय्यतक पद पब कार्यबत छनाह,तथा तेसब

পনৌক মূহ্নক উঁপবাঁত ও’ ঞহো পদ নাগি কয ভগরদ ভক্তিমে নাগি গেনাহ। হিনকব একমাত্র প্রকাশিত পোথী “ রিরিধ ভজনারনী” মে মৈথিনীক সংগে ব্রজর্বুনীক করিতা সেহো খছি।

সংগীত-শিক্ষা

পহিনে কমসঁ কম 37 ‘কী’ রঁনা কীরোঁড নিয। এহিমে 12-12 টৌক তীন ভাগ করু। 13 খা’ 25 সংখ্যা রঁনা কী সা,খা’ সাঁ দ্নূক রোঁধ কবরৈঁত খছি।

সভমেঁ পাঁচটা কাবী আ' সাতটা উজ্জব 'কী' অছি। প্রথম 12 মংদ্র সপ্তক, বাঁদক 12 মধ্য সপ্তক আ, সভসঁ দহিন 12 তাব সপ্তক কহবৈছ। 1 সঁ 36 ধবি মার্কিবসঁ নিখি নিয। 1 আ তেবহ সঁ ক্রমশঃ বাম আ' দহিন হাথ চনত।

12 গোট 'কী' কেব সেটমে 5 টা কাবী আ' সাত টা উজ্জব 'কী' অছি।
প্রথম অভ্যাসমে মাত্র উজবা 'কী' কেব অভ্যাস কক্ষ। পহিন সাত টা উজবা 'কী' সা, বে, গ, ম, প, ধ, নি, অছি আ' আঠম উজবা কী তীব্র সং অছি জে অগূনকা দোসব সেটক স অছি।
বাম হাথক অনামিকাসঁ স, মাধ্যমিকা সঁ বে, গংডেক্স ফিংগব সঁ গ ,বুঢ়বা আঁগ্রবসঁ ম , ফেব বুঢ়বা আঁগ্রবক নীচাঁসঁ অনামিকা আনূ আ' প, ফেব মাধ্যমিকাসঁ ধ, গংডেক্স ফিংগবসঁ নি, আ' বুঢ়বা আঁগ্রবসঁ সাং। দহিন হাথসঁ 12 কেবসেট পব পহিন'কী' পব বুঢ়বা আঁগ্রবসঁ স, গংডেক্স ফিংগবসঁ বে, মাধ্যমিকাসঁ গ, অনামিকাসঁ ম, ফেব অনামিকাক নীচাঁসঁ বুঢ়বা আঁগ্রবকেঁ আনূ আ' তথ বুংবা আঁগ্রবসঁ প, গংডেক্স ফিংগবসঁ ধ, মাধ্যমিকাসঁ নি আ' অনামিকসঁ সাং। দুনূ হাথসঁ সাং দোসব 12 কেব সেটক পহিন উজ্জব 'কী' অছি। আবোহমে পহিন সেটক সাং অছি তঁ দোসব সেটক প্রথম কী বহবাক কাবণ সা।
দোসব গপ জে কী বোর্ডসঁ জখন আবজ নিকনযতঁ অপন কংঠক আবাজসঁ একব মিনান কক্ষ। কনিযো নীচ–উঁচ নহি হোয। তেসব গপ জে সংগীতক বর্ণ অছি সা,বে,গ,ম,প,ধ,নি,সাং একবা দেবনাগবীক বর্ণ বুমবাক গনতী নহি কবব। আবোহ আ' অববোহমে কতেক

नीच-ऊँच होय तकरे टा ई रोध करबैत अछि। जेना कोनो आन ध्वनि जेनाकि क केँ निय आ, की रोड़ि पर निकलल सा,रे...केर ध्वनिक अनुसार क ध्वनिक आरोह आ' अवरोह करू।

ई जे सातो स्वरक वर्णन पिछला अंकमे देल गेल छल ओकरासँ आगू आऊ।
एहि सातू स्वरमे षडज आ' पंचम मने सा आ' प अचल अछि, एकर सस्वर पाठमे ऊपर नीचाँ होयबाक गुंजाइस नहि छैक। सा अछि आश्रय आकि विश्राम आ' प अछि उल्लासक भाव। शेष जे पाँचटा स्वर अछि से सभटा चल अछि, मने ऊपर नीचाँक अर्थात् विकृतिक गुंजाइस अछि एहिमे। सा आ' प मात्र शुद्ध होइत अछि। आ' आर विकृति भ' सकैत अछि दू तरहेँ शुद्धसँ ऊपर स्वर जाइत किंवा नीचा। जदि ऊपर रहत स्वर तँ कहबै ओकरा तीव्र आ' नीचाँ रहत तँ कोमल कहाइत। म कँ छोड़ि कय सभ अचल स्वरक विकृति होइत अछि नीचाँ, तखन बूझू जे "रे, ग,ध, नि" ई चारि टा स्वरक दू टा रूप भेल कोमल आ' शुद्ध। 'म' केर रूप सेहो दू तरहक अछि, शुद्ध आ' तीव्र। रे दैत अछि उत्साह ग दैत अछि शांति म सँ होइत अछि भय ध सँ द्ःख
आ' नि सँ आदेश।

गायन कान सेहो सभ राग-रागिनीक हेतु निश्चित रहैत अछि। 12 बजे दिनसँ 12 बजे राति धरि पूर्वराग आ' 12 बजे रातिसँ 12 बजे दिन धरि उत्तराग राग गाओल-बजाओल जाइत अछि।

पूर्वांग रागक वादी स्वर मे कोनो एक टा (सा, रे, ग, म, प) होइत अछि। उत्तरांगक वादी स्वरमे (म,प,ध,नि,सा)मे सँ कोनो एक टा होइत अछि। सूर्योदय आ' सूर्यास्तक समयमे गाओल जाइबला रागकेँ संधि प्रकाश राग कहल जाइत अछि।

रागक जाति

रागक आरोह आ' अवरोहमे प्रयुक्त स्वरक संख्याक आधार पर रागक जातिक निर्धारण होइत अछि।

एकर प्रधान जाति तीन टा अछि। 1. संपूर्ण (7) 2.षाड़व(6) 3.औड़व(5) आ' एहिमे सामान्य स्वर संख्या क्रमशः 7,6,5 रहैत अछि।

आब एहि आधार पर तीनूकेँ फेँटू।

संपूर्ण–औवर की भेल ? हँ पहिल रहत आरोही आ' दोसर रहत अवरोही। कहू आब। (7,5) एहिमे सात आरोही स्वर संख्या आ' 5 अवरोही स्वर संख्या अछि। संपूर्णक सामान्य स्वर संख्या ऊपर लिखल अछि(7) आ' औड़वक (5) । तखन संपूर्ण–औड़व भेल(7,5)। अहिना 9 तरहक राग जाति होयत। 1.संपूर्ण–संपूर्ण(7,7) 2.संपूर्ण–षाड़व(7,6) 3.संपूर्ण–औड़व(7,5)

4. षाड़व–संपूर्ण– (6,7)

5. षाड़व– षाड़व – (6,6)

6. षाड़व –औड़व (6,5)

7.औड़व–संपूर्ण(5,7)

8.औड़व– षाड़व(5,6)

9. औड़व– औड़व(5,5)

थाट– एकटा सप्तकमे सात शुद्ध, चारिटा कोमल आ' एकटा तीव्र स्वर (12 स्वर) होइत अछि। एहिमे

সাত স্বরক ও' সম্প্রদায, জেকরাসঁ কোনো রাগক উৎপেত্তি হোগত অছি, তকরা থাট রা মেল কহল জাগত অছি। থাট রাগক জনক অছি, থাটমে সাত স্বর হোগত ছৈক(সংপূর্ণ জাতি)। থাটমে মাত্র আরোহী স্বর হোগত অছি। থাটমে একহি স্বরক শুদ্ধ আ' রিকৃত স্বর সংগ-সংগ নহি বহৈত অছি। রিভিন্ন রাগক নাম পর থাট সভক নাম রাখল গেল অছি। থাটক সাতো টা স্বর ক্রমানুসার হোগত অছি আ' এহিমে গেযতা নহি হোগত ছৈক।

থাটক 10 টা অছি।

1.আসাররী-সা রে গ॒ ম প ধ॒ নি॒

2.কল্যাণ-সা রে গ মॆ প ধ নি

3.কাফী-সা রে গ॒ ম প ধ নি॒

4.খমাজ-সা রে গ ম প ধ নি॒

5.পূর্রী-সা রে॒ গ মॆ প ধ॒ নি 6.রিলারল-সা রে গ ম প ধ নি 7.ভৈরর-সা রে॒ গ ম প ধ॒ নি 8.ভৈররী-সা রে॒ গ॒ ম প ধ॒ নি॒ 9.মাররা-সা রে॒ গ মॆ প ধ নি 10.তোড় ী-সা রে॒ গ॒ মॆ প ধ॒ নি

রর্ণসঁ রাগক রূপ-ভার প্রগট কএল জাগত ছৈক। একর চারিটা প্রকার ছৈক।

1.স্থাযী-জখন একটা স্বর রেঁর-রেঁর অরৈত অছি। ওকর অরৃত্তি হোগত অছি।

2.অররোহী- উপরসঁ নীচাঁ হোগত স্বর সমূহ, একরা অররোহী রর্ণ কহল জাগত অছি।

3.আরোহী- নীচাঁসঁ উপর হোগত স্বর সমূহ, একরা

আরোহী রর্ণ কহল জাগত অছি।

4.সংচারী–জাহিমে উপরকা তীনূ রূপ নযমে হোয।

লক্ষণ গীত: রচনা জাহিমে রাদী, সম্বাদী,জাতি আ' গাযনক সময কের নির্দেশিক রাগক লক্ষণ স্পষ্ঠ ভ' জায।

স্থাযী: কোনো গীতক পহিল ভাগ, জে সভ অন্তরাক রাদ দোহরাওল জাগত অছি।

অন্তরা: জকরা একহি রের স্থাযীক রাদ গাওল জাগত অছি।

অলংকার/পলটা: স্বর সমূদাযক নিযমরদ্ধ গাযন/রাদন ভেল অলংকার।

আলাপ: কোনো রিশেষ রাগক অন্তর্গত প্রযুক্ত ভেল স্বর সমূদাযক রিস্তারপূর্ণ গাযন/রাদন ভেল আলাপ।

তান: রাগমে প্রযুক্ত ভেল স্বরক ত্বরিত গাযন/রাদন ভেল তান।

তানক গতি দ্রুত হোগত অছি আর ও দোরের গতিসঁ গাযন/রাদন কএল জাগত অছি।

আর আউ তান পর। সংগীতক গতিক অনুরূপেঁ ও

ঝপতান– ১০ মাত্রা, ত্রিতান– ১৬ মাত্রা, এক তান– ১২ মাত্রা, কহ্রবা– ৮ মাত্রা দাদবা– ৬ মাত্রা হোগত অছি।
গীত, বাদ্য আ নৃত্যক লেল আবশ্যক সময ভেল কাল আ জাহি নিশ্চিত গতিক ওা অনুসবণ কবৈত অছি, সে ভেল লয। জখন লয ত্ববিত অছি তঁ ভেল দ্রুত, জখন আস্তে–আস্তে অছি, তঁ ভেল বিলম্বিত আ লঞি আস্তে অছি আ লঞি দ্রুত তঁ ভেল মধ্য লয।
মাত্রা তাল কেব ঘনিষ্ঠ অছি আ এহিসঁ লয কেব নাপল জাগত অছি।
তালমে মাত্রা সংযুক্ত ৰূপসঁ উপস্থিত বহলা উত্তব ওকবা বিভাগ কহল জাগত অছি– জেনা দাদবামে তীন মাত্রা সংযুক্ত বহলা উত্তব ২ বিভাগ।
তালক বিভাগক নিযমবদ্ধ বিন্যাস অছি ছন্দ। আ তালক প্রথম বিভাগক প্রথম মাত্রা ভেল সম আ একব চেন্হ ভেল + বা x আ জতয বিনা তালীক তালকেঁ বুঝাওল জাগত অছি সে ভেল খালী আ একব চেন্হ অছি ০.
ও২ সম্পূর্ণ বচনা জাহিসঁ তালক বোল গাঁগিত হোগত অছি, জেনা মাত্রা, বিভাগ,তালী, খালী ওা সভটা ভেল ঠেকা।
চেন্হ–
তালীক স্থান পব তাল চেন্হ আ সংখ্যা।
সম + বা x
খালী ০
২ অবগ্রহ/বিকাবী
– এক মাত্রাক দূ টা বোল
– এক মাত্রাক চাবিটা বোল

এক মাত্রাক দূটা রোঁনকেঁ ধাগে আর চাবি টা রোঁনকেঁ ধাগেতিট সেহো কহন জাগত অছি।

তানক পবিচয

তান কহবরা

৪ টা মাত্রা, একটা রিভাগ, আর পহিল মাত্রা পব সম।

ধাগি

নাতি

নক

ধিন।

তীন তান ত্রিতান

১৬ টা মাত্রা, ৪–৪ মাত্রাক ৪ টা রিভাগ। ১,৫ আর ১৩ পব তানী আর ৯ ম মাত্রা পব খানী বহৈত অছি।

ধা ধিং ধিং ধিং

ধা ধিং ধিং ধা

ধা তিং তিং তা

তা ধিং ধিং ধা

ঝপতান

১০ মাত্রা। ৪ রিভাগ, জে ক্রমসঁ ২,৩,২,৩ মাত্রাক হোগত অছি।

১ মাত্রা পব সম, ৬ পব খনী, ৩,৮ পব তানী বহৈত অছি।

ধী না

ধী ধী না

তী না

धी धी ना

तान रूपक
७ मात्रा। ३,२,२ मात्राक विभाग।
पहिल विभाग खाली, बाँकी दू टा भरल होइत अछि।
पहिल मात्रा पर सम आ खाली, चारिम आ छठम पर
ताली होइत अछि।
धी धा त्रक
धी धी
धा त्रक

<u>बामाश्रय झा 'बामबंग'</u>

भारतीय शास्त्रीय संगीतक समर्पित आ विलक्षण ओ विख्यात संगीतज्ञ पं रामाश्रय झा 'रामरंग' केर जन्म ११ अगस्त १९२८ ई. तदनुसार भाद्र शुक्लपक्ष एकादशी तिथिकेँ मधुबनी जिलान्तर्गत खजुरा नामक गाममे भेलन्हि। हिनकर पिताक नाम पं सुखदेव झा आ काकाक नाम पं मधुसूदन झा छन्हि। रामाश्रयजीक संगीत शिक्षा हिनका दुनू गोटेसँ हारमोनियम आ गायनक रूपमे मात्र ७ वर्षक आयुमे शुरू भए गेलन्हि। तकरा बाद श्री अवध पाठकजीसँ गायनक शिक्षा भेटैलन्हि। १७ वर्ष धरि बनारसक एकटा प्रसिद्ध नाटक कम्पनीमे रामाश्रय झा जी कम्पोजरक रूपमे कार्य कएलन्हि। पं भोलानाथ भट्ट जी सँ २७ वर्ष धरि ध्रुपद, धमार, खयाल, ठुमरी, दादरा, टप्पा शैली सभक विधिवत शिक्षा लेलन्हि।
पं भट्ट जीक अतिरिक्त रामाश्रय झा जी पं वी.एन. ठकार (प्रयाग), उस्ताद हफीज खाँ (किराना), पं वी.एस. पाठक (प्रयाग) सँ सेहो संगीतक शिक्षा प्राप्त कएलन्हि। पं झा १९७४ सँ प्रयागमे स्थाइ रूपसँ रहि रहल छथि। १९७७ ई.मे हिनकर नियुक्ति लूकरगंज संगीत विद्यालयमे संगीत अध्यापक रूपमे भेलन्हि। १९६० ई.मे हिनकर नियुक्ति प्रयाग संगीत समितिमे भेलन्हि, जतए १९७० धरि प्रभाकर आ संगीत प्रवीण कक्षाक शिक्षक रहलाह। १९७०मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक संगीत विभागाध्यक्ष श्री प्रा. उदयशंकर कोचकजी पं झाक संगीत क्षेत्रक सेवासँ प्रभावित भए विश्वविद्यालयमे हिनकर नियुक्ति कएलन्हि। पं झा उत्कृष्ठ शिक्षक, गायक आ आकाशवाणीक प्रथम श्रेणीक कलाकार छथि।

हिनकर अनेक शिष्य-शिष्या आकाशवाणीक प्रथम श्रेणीक कलाकार आऽ उत्तम शिक्षक छथि, जेना-
डॉ. गीता बॅनर्जी, श्रीमति कमला बॉस, श्रीमति अवन्ती रूद्रन, श्रीकान्त वैश्य,श्री शान्ता राम कशालकर, श्री शान्ता राम कशालकर, श्री कामता खन्ना, श्रीमति सत्या दास, डॉ. रूपाली वाली झा, डॉ गत्ता मालवीय, श्री अनिल कुमार शर्मा, श्री रामशंकर सिंह, श्रीमति संगीता सक्सेना, श्री राजन पर्विकर, श्रीमति रचना उपाध्याय, श्री नवसिंह भट्ट्त, श्री भूपेन्द्र शुक्ला, श्री जगबॅन्धु इत्यादि।
पं झा संगीत शास्त्र केर श्रेष्ठ लेखक छथि आऽ हिनकर लिखल अभिनव गीतांजलि केर पाँचू भाग प्रकाशित भऽ चुकल अछि, जाहिमे २००सँ ऊपर रागक व्याख्या अछि आऽ दू हजारक आसपास बॅंदिश अछि।
मिथिलावासी श्री रामरंग राग तीवत्तुकित्त, राग वैदेही भैरव, आऽ राग विद्यापति कल्याण केर रचना सेहो कएने छथि आऽ मैथिली भाषामे हिनकर खयाल 'रंजयति गति रागः' केर अनुरूप अछि।
१९+२ मे उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कारक संगे 'रत्न सदस्यता' सेहो देल गेलन्हि। संगीत लेखनक हेतु काका हाथरसी पुरस्कार, आऽ भारतक सर्वोच्च संगीत संस्था आ.ग.टी.सी. केर सम्मान सेहो हिनक भेटि चुकल छन्हि। २०० ०. मे स्वर साधना रत्न अवार्ड, २००३ मे संगीत नाटक अकादेमीक राष्ट्रीय पुरस्कार, भारत संगीत रत्न, राग ऋषि, संत तुलसीदास सम्मान, प्रायाग गौरव एवं सोपरी अकादेमीक 'सा म प रितरत्ता' इत्यादि सम्मान श्री झाकेँ प्राप्त छन्हि। श्री रामरंग जी प्रयागमे 'रावित दास संगीत परिषद' केर स्थापना कएने अनेकानेक संगीत समारोहक आयोजन सेहो कएने

छथि। 'गलागाराँद रिश्वरिद्यालय संगीत सम्मेलन' ३० वर्षसँ वॅन्द पड़ल छल जकरा रार्षिक रूपसँ १९८० मे प्वनः श्री मा आवम्भ कवरॅओलन्हि। किएक तँ श्री मा लग कोनो ओपचाविक डिग्री नहि छलन्हि, गलागाराँद रिश्वरिद्यालय अपन नियममे पविरर्त्तन कएलक आ हिनका ओतए संगीत रिभागाध्यक्ष वॅनाओल गेलन्हि, जतएसँ ओ २ १९८९ ई. मे सेरानिरृत्त भेलाह। त्तलसीक मानसक आधाव पव श्री मा सात काण्डक संगीत वामायणक सेहो वचना कएलन्हि। पं मा मुख्य रूपसँ खयाल, ठुमवी, दादवा, टप्पा आ संगहि ध्रुरपद, धमाव, तवाना, तिवरट, चत्तवंग, वागमाला, वागसागव, वागतान सागव, भजन आ लोकगीत गायनमे सिद्ध छथि।
अखन ८० रर्षक आयमे प्रयागमे श्री मा संगीत साधनामे वत छथि।

अभिनर गीताजलि, हिनकव उँचकोटिक शास्त्र वचना अछि, जे पाँच भागमे अछि। अपन साहित्यिक राणी, शाब्दिक रूप जे होगत अछि कोनो संगीत वचनाक, आ धात्त जे अछि स्वरक लयक वचना आ एहि सभ गुणसँ यक्त छथि "वामवंग"। वामवंगक रॅदिशे रा वचनामे अहाँकेँ भेटैत स्वव, शब्द आ मात्राक लयरॅद्ध रॅधल। प्वाल ध्रुपद जेकाँ पद्य आ स्ववकेँ ओ तेलाकेँ वाँन्हि दैत छथि, जे दुनू एक दोसवमे मिलि जागत अछि। हिनकव वचना हिनकव उँचावणसँ मिलि कए मौलिक तात्त्विक स्थायी भवण, सभ रितैत दिन एकटा लव आमेनिवीक्षण एकटा लव स्थायी।
वामवंगमे संगीतक लाक्षणिक तत्त्व प्रखव होगत छन्हि। संगीतक व्याकवणक सम्पूर्ण पकड़ छन्हि, जाहिसँ

उचित शब्दक प्रयोगक निर्णय ओइ कए पबैत छथि। छन्द शास्त्रक, कोषक, अलंकारक, व्याकरण आऽ रसक बृहत् ज्ञान छन्हि रामरंगकेँ। संगहि स्थानीय संस्कृतिक, विभिन्न भाषाक आऽ ललित कलाक सिद्धान्तक सेहो गहन अध्ययन छन्हि रामाश्रय झा जीकेँ। वादन, गायन आऽ नृत्यक, साधन-कण्ठ, लय-तान-लाल, देशी राग, दोसराक मनसमे जाऽ कए बुझबाक भाव, नव लय आऽ अभिव्यक्ति, प्रबन्धक समस्त ज्ञान, कम समयमे गीत रचना, विभिन्न मौखिक संरचना निर्माण, आलापक प्रदर्शन आऽ गमक एहि सभठाममे पारंगत छथि रामरंग।

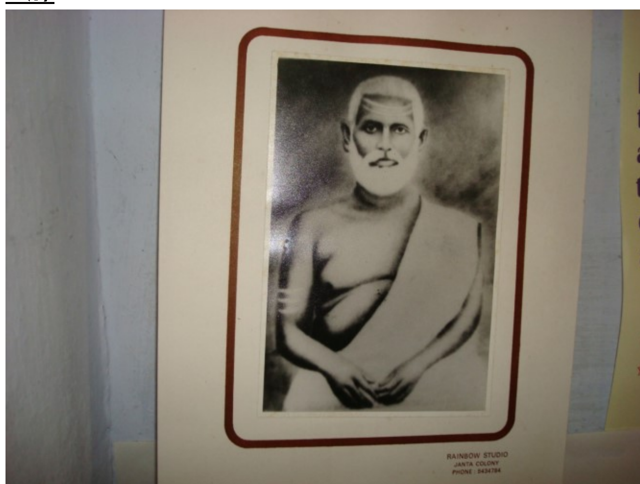
रामाश्रय झा "रामरंग" प्रसिद्ध अभिनव भातखण्ड जीक मृत्यु– हिन्दुस्तानी संगीतक गायक, शिक्षक आ वाग्यकार/ शास्त्रकार श्री रामाश्रय झा "रामरंग" जीक मृत्यु १ जनवरी २००९ केँ कोलकातामे भऽ गेलन्हि। ओ ८० वर्षक छलाह। संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्लीक २००३ मे पुरस्कार प्राप्त श्री रामरंग केँ यू.पी. संगीत नाटकक फेलोशिप सेहो प्रदान कएल गेल छलन्हि।

श्री रामाश्रय झा "रामरंग"क जन्म १९२८ ई. मे मधुबनी जिलाक अजुबा गाममे भेलन्हि। हिनका संगीतक प्रारम्भिक शिक्षा अपन पिता स्वखदेव झा सँ भेटलन्हि। बादमे ओ वाराणसीमे नाटक कम्पनीमे बहुत दिन धरि संगीत देलन्हि फेर पं भोलाराम भट्टसँ इलाहाबादमे संगीतक शिक्षा प्राप्त कएलन्हि। इलाहाबाद विश्वविद्यालयक संगीत विभागमे ओ प्रोफेसर आ हेड रहलाह।

रामरंग ढेर रास अप्रचलित रचना बनओलन्हि आ कतेक रास नव रागक निर्माण कएलन्हि। हिनकर पाँच खण्डमे नव आ पुरान रागक वर्णन आ समालोचना "अभिनव

गीताञ्जलि" हिनक बड्ड प्रसिद्धि प्रदान कएनकन्हि आ ओ "अभिनव भातखण्डे" नामसँ प्रसिद्ध भऽ गेलाह। अपन ध्रुपद आ खयाल रचनाक आधारपर श्री "रामरंग" हनुमानकेँ समर्पित "संगीत रामायण"क रचना सेहो कएलन्हि।
मैथिलीमे "विदेह" ई पत्रिका लेल पठाओल हिनकर "राग विद्यापति कल्याण", "राग तीरभुक्ति", "राग वैदेही भैरव" आदि नव राग आ ओहिपर आधारित मैथिली भाषाक रचना पाठकक लोनमे एखनो अछि।
हुनकर स्मरण: एहि पंक्तिक लेखकक संग वार्तालापमे रामरंग जी अपन जीवनक समस्त अनुभव कहि सुनेने रहथि। रामरंग जीकेँ हजारो रचना कंठस्थ लोन छलन्हि सदा वाँदमे हुनकर हाथ थरथड़ाइत छलन्हि आ ओ वार्तालि क्रममे कहनहिओ छलाह जे- के सीखत आ के लिखत।

<u>সর্বতংত্র স্বতংত্র শ্রী ধর্মদত্ত ঝা(বঁচা ঝা) (১৮৬০–১৯১৮ ঈ.)</u>



মিথিলা আ' সংস্কৃত স্তংভমে এহি খংকমে সর্বতংত্র স্বতংত্র শ্রী ধর্মদত্ত ঝা জিনকর প্রসিদ্ধি বঁচা ঝাক নামসঁ বেশী ছন্হি, কের জীবনী দ' রহল ছী।
মধুবনী জিলাংতর্গত নরাণী(নরানী) গামমে হিনকর জন্ম ভেলন্হি। বারাণসীমে শ্রী বিশুদ্ধানন্দ সরস্বতী আ' বালশাস্ত্রীসঁ শিক্ষা গ্রহণ করবাক বাদ গাম আবি গেলাহ আ' শারদা ভবন বিদ্যাপীঠক স্থাপনা গামেমে কএলন্হি। গুরুকুল পদ্ধতি সঁ এতয় সংন্যাসী আ' গৃহস্থ শিক্ষা গ্রহণ করৈত ছলাহ। বিদ্যার্থীগণক খর্চা গুরুজী

उठबैत बहलाह। द्वारकाक शंकराचार्य हिनका आमंत्रित कएल नव्यन्यायक अध्ययन कएलन्हि। आस्तिक आ' नास्तिक आ' नव्यन्यायक विद्वत्तक दृष्टिये हिनका सर्वतंत्र स्वतंत्रक उपाधि देल गेलन्हि। हिनका बँचामे लोक बँचा झा कहैत छलन्हि, आ' एहि नाम धर्मदत्त झाक अपेक्षा बेशी प्रचलित भेल। हिनक कृति सभ अछि। 1. स्वलोचन-माधव चम्पू काव्य, 2.न्यायवार्त्तिक तात्पर्य व्याख्यान, 3.गूढ़ार्थ तत्त्वलोक(श्री मदभागवतगीता व्याख्याभूत मधुसूदनी टीका पर) 4.व्याप्तिपंचक टीका 5.अवछेदकत्व निरूक्ति विवेचन 6.सव्यभिचार टिप्पण 7.सतप्रतिपक्ष टिप्पण 8.व्याप्त्नुगम विवेचन 9.सिद्धांत लक्षण विवेक 10.व्युत्पत्तिवाद गूढार्थ तत्त्वालोक 11.शक्तिवाद टिप्पण 12.खण्डन-खण्ड खाद्य टिप्पण 13. अद्वैत सिद्धि चन्द्रिका टिप्पण 14.कुसुमांजलि प्रकाश टिप्पण.

महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक सिंहासनारोहणक बाद दिन बाद धरि धौत परीक्षा नहि भेल छल। ई परीक्षा दरभंगा राजक संस्थापक श्री महेश ठाकुर द्वारा प्रारम्भ कएल गेल छल आ' एहिमे मौखिक परीक्षा द्वारा श्रेष्ठ पंडितक चयन कएल जाइत छल। महाराज रमेश्वर सिंह एकर आयोजन करबओलन्हि आ' श्री गंगानाथ झाकेँ एकर दायित्व देल गेल। श्री गंगानाथ झा परीक्षार्थीक रूपमे सेहो आवेदन कएने छलाह। महाराज परक्षाक हेतु लिखित पद्धतिक आदेश देने छलाह। प्रश्निक नियुक्त भेलाह श्री बँचा झा आ' श्री शिव कुमार मिश्र। ई दुनू गोटे कनिष्ठ प्राश्निक आ' कुपण परीक्षक मानल जाइत छलाह। मुदा तखनहि पर श्री गंगानाथ झाकेँ 200 मे 197 अंक भेटलन्हि। महाराज प्रवान परम्पराक अनुसार हिनका धोती तँ देलखिन्ह, मुदा नवीन पद्धतिक अनुसार

द्शोना नहि देलखिन्ह, कारण संस्कृतक विद्वान् होयतहुँ श्री गंगानाथ झाक झ्कार अंग्रेजी दिशि छल। श्री रुँचा झा प्रकाण्ड पण्डित छलाह। महाराष्ट्रे आ' काशीक पण्डितक प्रसंगमे ओ' कहैत छलाह जे शङ्क खण्डक प्रसंगमे ओ' सभ किछु नहि जनैत छलाह। ओहि समयमे महामहोपाध्याय दामोदर शास्त्री काशीक एकटा प्रसिद्ध वैयाकरण छलाह। विद्वान लोकनिक स्वभार पर दरभंगा महाराज गुरुधाममे एकटा पंडित सभाक आयोजन कएलन्हि। एहिमे हथुआ महाराज विशिष्ठ अतिथि छलाह। काशीक सभ प्रमुख विद्वान एहिमे उपस्थित छलाह। प्रतियोगी छलाह पं.रुँचा झा आ' म.म. दामोदर शास्त्री भरद्वाज। निर्णायक छलाह पं.कैलाश शिरोमणि भट्टाचार्या आ' म.म.पं शिव कुमार मिश्र। एकटा सरल समस्यासँ शास्त्रार्थ प्रारम्भ भेल। एकर नैय्यायिक पक्ष लेलन्हि रुँचा झा आ' व्याकरण पक्ष पंदामोदर शास्त्री।

दामोदर शास्त्री अपन जरारेँ अहंत सरल शङ्कमे वैयाकरणिक आधार पर द' देलन्हि। आरेँ रुँचा झाक रौर आयल। रुँचा झा गहन परिष्कार प्रारम्भ कएलन्हि। विद्वान लोकनिमे विवाद भेलन्हि जे हुनकर प्रश्न प्रासंगिक छन्हि वा नहि। निर्णायक लोकनि एकरा प्रासंगिक माललन्हि। जौँ-जौँ रुँचा झा आगू बढ़ैत गेलाह हुनकर उत्तर दामोदर शास्त्री आ' निर्णायक लोकनिक हेतु अबोधगम्य होइत गेलन्हि। मध्य रात्रि तक ई चलल। अन्ततः अनिर्णीत राखि कए सभा विसर्जित भेल।

पं. बलेपालि झाक पुत्र कँ रुँचा झाकँ अपर गङ्गेश उपाध्याय सेहो कहल जाइत अछि। हिनकर प्रारम्भिक

अध्ययन गामे पर भेलन्हि। तकरा बाद ओ' विश्वनाथ झासँ अध्ययनक हेतु 'ठाढ़ी' गाम चलि गेलाह। फेर बबुजन झा आ' ऋद्धि झासँ न्यायदर्शनक विधिवत अध्ययन कएलन्हि। फेर धर्मदत्त झा प्रसिद्ध बच्चा झा काशी गेलाह। ओतय स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वतीसँ मीमांसा, वेदान्तक अध्ययन कएलन्हि।
सन् 1886 ई. केर गप छी। एकटा पुष्करिणीक उद्घाटनक उत्सवमे दामोदर शास्त्री जी काशीसँ मिथिलाक बाघोपुर ग्राममे निमंत्रित भेल छलाह। ओतय हुनकर शास्त्रार्थ परम्परानुसार बच्चा झाक विद्यागुरु ऋद्धि झासँ भेल छलन्हि। एहिमे ऋद्धि झा परास्त भेल छलाह। गुरुक पराजयक प्रतिशोध लेबाक हेतु सन् 1889 मे बच्चा झा काशी गेलाह। बच्चा झाक उम्र ओहि समयमे 29 वर्ष मात्र छलन्हि। ओ' प्राय: दामोदर शास्त्रीकेँ लक्ष्य करैत छलाह, जे काशीक वैय्याकरणिक पण्डित लोकनिकेँ शब्द-खण्डक कोनो ज्ञान नहि छन्हि। बच्चा झा समस्त काशीक विद्वान् लोकनिकेँ शास्त्रार्थक हेतु ललकारा देलन्हि। दामोदर शास्त्रीसँ भेल शास्त्रार्थक वर्णन पछिला अंकमे कएल जा' चुकल अछि। शास्त्रार्थ तीन दिन धरि चलल। ई शास्त्रार्थ सन्ध्यासँ शुरू होइत छल, आ' मध्य रात्रि धरि चलैत छल। शास्त्रार्थक तेसर दिन दामोदर शास्त्री तर्क कएनाइ बन्न कए देलन्हि, आ' श्रोताक रूपमे बच्चा झाक तर्क सुनैत रहलाह। पं शिवकुमार शास्त्री आ' कैलाशचन्द्र शिरोमणि दू टा निर्णायक छलाह। शिरोमणिजीक दृष्टिमे वादी श्री बच्चा झाक पक्ष न्यायशास्त्रक दृष्टिसँ सम्मुचित छल। शिवकुमारजीक सम्मतिमे प्रतिवादी श्री दामोदरशास्त्रीक पक्ष व्याकरणक मंतव्यानुसार औचित्यसम्पन्न छलन्हि। दुनू पण्डितक शास्त्रार्थ

কনাক সংস্তুতি কএন গেন ঋা' দুনূ গোষ্ঠেকেঁ ঋপন সিদ্ধান্তক উঁকৃেষ্ঠ ব্যরস্থাপনক নেন রিজযী মানন গেন। রঁচা ঝা গামেমে বহি কএ ঋধ্যাপন করৈত ছনাহ। ঝদা মহাবাজাধিবাজ দবভংগা নবেশ শ্রী বমেশ্ববসিংহক ঋকাষ্ঠ্যে ঋাগ্রহক কাবণসঁ ঝজহহফবপ্পবক ধর্ম সমাজ সংস্কৃত কঁানেজক প্রধানাচার্যক পদ স্বীকাব কএনহি। ঝদা একব একহি রর্ষমে ও' শবীব ত্যাগ কএ দেনহি। রঁচা ঝাজীকেঁ সমানোচকগণ কিছু উঁদ্দণ্ড ঋা' ঋভিমানী মনরঁাক গনতী করৈত বহনাহ ঋছি। ঝদা একটা উঁদাহবণ হমবা নগমে এহন ঋছি, জাহিসঁ ওা গনত সিদ্ধ হোগত ঋছি।

ওা ঘটনা এহন সন ঋছি। ঝজহহফবপ্পব ধর্মসমাজ সংস্কৃত রিদ্যানযমে রঁচা ঝা প্রধানাচার্য/ঋধ্যক্ষ পদ পব ছনাহ, ঋা' হুনকব শিষ্য পং রঁানন্দ্রঝ্য মিশ্র ওতয প্রধ্যাপক ছনাহ। ওহি সময কাশীক পণ্ডিত-পত্রমে গংগাধব শাস্ত্রীক একটা শ্লোকক রিষযমে রঁচা ঝা কহনহি, জে এহি শ্লোকমে একহি পদর্থ রাবিধব এক রেঁব
মৃদংগ রঁজরঁয রঁনা চেতন ব্যক্তিক রূপমে ঋা' দোসব রেঁব রৈহ ঋম্বুঁদ- জরনিকারূপী ঋচেতন রূপমে রর্ণিত ঋছি। এতয পদার্থশ্বিদ্ধি ঋছি।

এহি পব হুনকব শিষ্য রঁানন্দ্রঝ্য টৈকনখিন্হ- গ্বরুজী! এহিমে কোনো দোষ নহি ঋছি। কিএক তঁ রাবিকেঁ ধাবণ করএ রঁনা মেঘ(রাবিধব) কেব স্থিতি ঋাকাশমে উঁপব হোগত ঋছি, ঋা' ঋম্বু(জন) কেঁ দেরঁয রঁনা মেঘ (ঋম্বুঁদ) কেব স্থিতি নীচাঁ হোগত ঋছি। ঋতঃ দুনূমে স্থানক ভিন্নতা ঋছি। রাবিধব ঋা' রাবিদ এহি দুনূ শব্দসঁ দূ ভিন্ন ঋর্থ জ্ঞাত হোগত ঋছি। তাহি হেতু এতয পদার্থক ঋশ্বদ্ধি নহি ঋছি।

ওা শ্লোক নিম্ন প্রকাবে ছল:-
মৃদ্মৃদঙ্গনিনাদমনোহবে, ধ্বনিত রাবিধবে চপলা নটী।
রিযতি নৃত্যতি বঙ্গ গরাম্বুদে, জরনিকামনবঙ্করতি সম্প্রতি ॥

ম.ম. শংকব মিশ্র

পন্দ্রহম শতাব্দীমে ভরনাথ মিশ্রক ঘবমে মধুবনী জিলাক সবিসর গ্রামমে শংকব মিশ্রক জন্ম ভেল। ভরনাথ মিশ্র বড্ত পৈঘ নৈয্যাযিক ছলাহ আ কহিযো ককরোসঁ কোনো রস্তুক যাচনা নহি কএনহি, তাহি লেল সভ হুনকা অযাচী মিশ্র কহএ লগলনহি। শঁকব মিশ্র পিতাসঁ অধ্যযন প্রাপ্ত কএনহি আ পৈঘ ভাএ জীরনাথ মিশ্রসসঁ রিদ্যাক অধিগ্রহণ কএনহি।
জখন শংকব মিশ্র পাঁচ রর্ষক ছলাহ তঁ মহাবাজ শির সিংহক সরাবী জা বহল ছল। বাজা ওহি প্রতিভাশালী রানককেঁ দেখনহি আ হুনকাসঁ পবিচয পুছনহি। তখন উঁত্তব ভেটলনহি-

बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती ।
अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥

फेर राजाक आग्रह पर ओ दोसर श्लोक पढ़लन्हि-
चलितश्चकितच्छन्नः प्रयाणे तव भूपते ।
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥

राजा प्रसन्न भए द्रव्य देलखिन्ह जाहिसँ, शंकरक माए पोखरि खुनबेलन्हि, ओ पोखरि एखनो सरिसबमे अछि । शंकर मिश्र महाराज भैरव सिंहक कनिष्ठ पुत्र राजा पुरुषोत्तमदेवक आश्रित छलाह । एकर वर्णन रसार्णव ग्रंथमे भेटैत अछि ।
शंकर मिश्र कवि, नाटककार, धर्मशास्त्री आ न्याय-वैशेषिक केर व्याख्याकार रहथि ।
शंकर मिश्र ग्रंथावली-
१. १.गौरी दिगम्बर प्रहसन
२. २.कृष्ण विनोद नाटक
३. ३.मनोभवपराभव नाटक
४. ४.रसार्णव
५. ५.दुर्गा-टीका
६. ६.वादिविनोद
७. ७.वैशेषिक सूत्र पर उपस्कार
८. ८.कुसुमांजलि पर आमोद
९. ९.खण्डनखण्ड-खाद्य टीका
१०.१०.छन्दोगाह्निकोद्धार
११.श्राद्ध प्रदीप
१२.प्रायश्चित प्रदीप ।
अंतिम तीनू टा ग्रन्थ धर्मशास्त्र पर लिखल गेल आ

क्रमसँ सामवेदक अनुसारे दैनिक धार्मिक कृत्यक नियमावली, श्राद्ध कर्म आर प्रायश्चितिक अनुष्ठानसँ संबंधित अछि।

शंकर मिश्रसँ संबंधित बहुत रास जनश्रुति प्रसिद्ध अछि। अयाची वृद्ध भए गेल छलाह, परन्तु पुत्रविहीन रहथि। पत्नी भवानी दुःखसँ कांट भए गेल छलीह। तखन अयाची मिश्र बाबा वैद्यनाथसँ पुत्रक याचना कएलन्हि आर हुनकर मनोकामना पूर्ण भेलन्हि-स्वयं शंकर भगवान अवतरित भेलाह आर ताहि द्वारे बालकक नाम शंकर पड़ल। जन्म पर गामक आया किंवा चमैन ननाम माँगलखिन्ह, मुदा परिवारक लगमे किछु नहि छल आर ताहि हेतु भवानी वचन देलखिन्ह जे बालकक प्रथम कमाइ अहाँकेँ दए देब। से जखन एक बेर राजा शिव सिंह खुशी भए बालककेँ कहलखिन्ह जे अहाँ जतेक सोना-चाँदी लए जा सकी लए जाउ। बालक मात्र धबिया पहिरने छलाह तेँ मात्र किछु सोनाक ढेर लए जाइ सकलाह, आर सेहो भवानी अपन वचनक अनुरूपेँ आया-चमैनकेँ दए देलखिन्ह। चमैन ओहि पाइसँ एकटा पोखरि खुनबएलन्हि, जे चमनियाँ पोखरिक नामसँ एखनो विद्यमान अछि।

<u>জনক</u>

’রৈদেহ বাজা’ ঋগরেদিক কানক নমী সপ্যাক নামসঁ ছনাহ, যক্ত করৈত সদেহ স্বর্গ গেনাহ। ঋগরেদমে রর্ণন খছি। ওহ গন্দ্রক সংগ দেননহ্নি খস্বব নক্ষচীক রিকফ্ল খাঃ তাহিমে গন্দ্র হ্নকা রঁচওনহ্নি।
প্ববোহিত গৌতম বাহুগণ ঋগরেদক একটা মহত্ত্বপূর্ণ ঋষি ছথি। শ্বকন যজুবরেদক নেখক রূপমে যাজ্ঞরল্ক্য প্রসিদ্ধ ছথি। শতপথ ব্রাহ্মণক মাথর রিদেহ খাঃ প্ববাণক নিমি দুনূ গোটেক প্ববোহিত গৌতম ছথি সে দুনূ একে ছাথি খাঃ এতএসঁ রিদেহ বাজ্যক প্রাবম্ভ দেখন জাঃ সকৈত খছি। মাথরক প্ববহিত গৌতম মিত্ররিন্দ যজ্ঞক/রঁনিক প্রাবম্ভ কএনহ্নি খাঃ প্বনঃ একব প্বনঃস্থাপনা ভেন মহাজনক ২ কেব সময়মে যাজ্ঞরল্ক্য দ্বাবা। নিমি গৌতমক খাশ্রমক নগ জয়ন্ত খাঃ মিথি জিনকা মিথিনা নামসঁ সেহো সোব কএন জাগত ছহ্নি,

মিথিলা নগরক নির্মাণ কএলন্হি।
'সীরধ্বজ জনক' সীতাক পিতা ছথি আ᳭ এতयসঁ মিথিলাক রাজাক স্বদৃঢ় পরম্পরা দেখরাঁমে অবৈত অছি। 'হ্রতি জনক' সীরধ্বজক বাদক 18ম প্রস্তমে ভেল ছলাহ। হ্রতি হিরণ্যনাভক প্রত্র ছলাহ, আ᳭ জনক রহ্নাশ্বিক প্রত্র ছলাহ। যাজ্ঞরল্ক্য হিরণ্যাভক শিষ্য ছলাহ, হ্নকাসঁ যোগক শিক্ষা নেনে ছলাহ। করাল জনক দ্বারা একটা ব্রাহ্মণ ঘরতীক শীল-অপহরণক প্রয়াস ভেল আ᳭ জনক রাজরংশ সমাপ্ত ভএ গেল (অশ্বঘোষ-রুদ্ধচবিত আ᳭ কৌটিল্য-অর্থশাস্ত্র)

<u>যাজ্ঞরল্ক্য</u>

যাজ্ঞরল্ক্য মিথিলাক দার্শনিক রাজা হ্রতি জনকক দবরাঁবমে ছলাহ। হ্নকব মাতাক রা পিতাক নাম সম্ভরতঃ রাজসনী ছলন্হি। ওনা হ্নকব পিতা দেরবাতকেঁ মানল জাগত ছন্হি। হ্নকব মাতা ঋষি রৈশম্পায়নক রহিন ছলীহ। রৈশম্পায়ন যাজ্ঞরল্ক্যক মামা ছলাহ সংগ্যহি হ্নকব গুরু সেহো। হ্নকব পিতা খেলাগ প্রবস্কাবক রূপমে রহৈত বহথি আ᳭ তেঁ হ্নকব নাম রাজসনি সেহো ছন্হি। র্যাসক চারু প্রত্রসঁ ও᳭ চারু রেদক শিক্ষা পওলন্হি। যজুর্রেদ ও᳭ রৈশম্পায়নসঁ সেহো সিখলন্হি, রেদান্ত উদ্দালক আরুণিসঁ আ᳭ যোগক শিক্ষা হিরণ্যনাভসঁ নেলন্হি।
যাজ্ঞরল্ক্যক দূ টা পত্নী ছলথিন্হ, ১. কাত্যায়নী আ᳭ দোসব মৈত্রেয়ী। মত্রেয়ী ব্রহ্মরাদিনী ছলীহ। কাত্যায়নীসঁ

হ্নকা তীনটা প্বত্র ছনন্হি– চন্দ্রকান্তা, মহামেঘ আ৹ রিজয।

যাজ্ঞরল্ক্য ১. শ্বক্ল যজ্বরেদ, ২. শতপথ ব্রাহ্মণ, রৃহদাবণ্যক উপনিষদ আ৹ যাজ্ঞরল্ক্য স্মৃতিক দৃষ্ঠা/নেখক ছথি। যাজ্ঞরল্ক্য স্মৃতিমে আচাব, ব্যরহাব, আ৹ প্রাযশ্চিত অধ্যায অছি। বাজধর্ম, সিরিল আ৹ ক্রিমিনল ন◌ॉ এহিমে অছি। কৌটিল্য জেকাঁ যাজ্ঞরল্ক্য সেহো মানৈত ছথি জে বাজা আ৹ প্ববহিত দ্ন্ দল্ডনীতিক জ্ঞান বাখথি। যাজ্ঞরল্ক্য বাজ্যক সপ্তাংগ সিদ্ধাংতক চবচা সেহো রিস্তাবমে কবৈত ছথি।

<u>চাণক্য...কৌটিল্য</u>

চাণক্য ভাবতকেঁ একটা স্বদৃঢ় আ৹ কেন্দ্রীকৃত শাসন প্রদান কএলন্হি, জকব অন্বভর ভাবতরাসীকেঁ পূর্রমে নহি ছনন্হি।
চাণক্যক জীরন আ৹ রংশ রিষযক সূচনা অপ্রামাণিক অছি। চাণক্যক আন নাম সভ সেহো অছি। জেনা কৌটিল্য, রিষ্ণ্বগ্বপ্ত, রাত্স্যাযন, মানাংগ, দ্রামিল, পাক্ষিল, স্বামী আ৹ আংগ্বল। রিষ্ণ্বগ্বপ্ত নাম কামংদক কেব নীতিসাব, রিশাখাদত্তক মুদ্রাবাক্ষস আ৹ দংডীক দশকুমাবচবিতমে ভেটৈত অছি। অর্থশাস্ত্রক সমাপনমে সেহো ঈ চর্চ অছি জে নন্দ বাজাসঁ ভূমিকেঁ উদ্ধাব কেনিহাব রিষ্ণ্বগ্বপ্ত দ্বাবা অর্থশাস্ত্রক বচনা ভেল। অর্থশাস্ত্রক সভটা

अध्यायक समापनमे एकर वचयिताक रूपमे कौटिन्यक वर्णन अछि। जैन भिक्षु हेमचन्द्र हिनका चाणकक पुत्र कहैत छथि। अर्थशास्त्रमे उल्लिखित अछि जे कौटिन्य कुटीन गोत्रमे उत्पन्न भेलाह। पन्द्रहम अधिकरणमे कौटिन्य अपनाकेँ ब्राह्मण कहैत छथि। कौटिन्य गोत्रक नाम, विष्णुगुप्त व्यक्तिगत नाम आऽ चाणक्य वंशगत नाम बुझना जाइत अछि। धर्म आऽ विधिक क्षेत्रमे कौटिन्यक अर्थशास्त्र आऽ याज्ञवल्क्य स्मृतिमे बड्ड समानता अछि जे चाणक्यक मिथिलावासी होयबाक प्रमाण अछि। अर्थशास्त्रमे(१.६ विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षडोऽध्यायः इन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनक केर पतनक सेहो चर्चा अछि।
तद्विरुद्धवृत्तिवरश्येन्द्रियश्चान्तवन्ताऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा
दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यामभिमन्यमानः सबन्धुराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः,.... ।
अर्थशास्त्रमे १५ टा अधिकरण अछि। सभ अधिकरण केर विभाजन प्रकरणमे भेल अछि।
कौटिन्यक राज्य संबंधी विचार सप्तांग सिद्धांतमे अछि। स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, दंड आऽ मित्र केर रूपमे राज्यक सातटा अंग अछि। कउटिल्यक संप्रभुता सिद्धांतमे राज्यक प्रशासनिक विभाग वा तीर्थक चर्चा अछि- ई १+ ८ अछि।
१.मंत्री२.पुरोहित३.सेनापति४.युवराज५.दौवारिक६.अंतर्वंशिक७.प्रशास्त्र+.संहर्ता९.सन्निधाता१०.प्रदेष्टा११.नायक१२.पौर
व्यावहारिक१३.कर्मांतिक१४.मंत्रिपरिषदाध्यक्ष१५,.दंडपाल१६.दु

স্মপান্১৭.খ্তপান্১+.খান্বিক।
রিধিক চবিষ্টা শ্রোত খিছ- ধর্ম, ব্যরহাব, চবিত্র খাঃ বাজশাসন।
কৌটিন্যক খতববাজ্য সংবঁধ কেব সিদ্ধাঁত মংডন সিদ্ধাঁত কেব নামসঁ প্রতিপাদিত খিছ। রিজিগীষু বাজা- রিজয কেব গচ্ছা বঁনা বাজা- কেব চাব্দ কাত খবিপ্রহৃতি বাজা খাঃ খবিপ্রহৃতি বাজাক সীমা পব নিম্ন প্রহৃতি বাজা বহৈত ছথি। রিজ্গীষু বাজাক সোন্নাঁ মিত্র, খবিমিত্র, মিত্র-মিত্র খাঃ খবিমিত্র-মিত্র বহৈত ছথি খাঃ পাছাঁ পাঞ্চিগ্রাহ৯ফীঠক শত্রু), খাএ্রঁদ (পীঠক মিত্র), পাঞ্চিগ্রাহাসাব (হাঞ্চিগ্রাহক মিত্র) খাঃ খএ্রঁদসাব (খাএ্রঁদক মিত্র) বহৈত ছথি।
রিজিগীষুক ষাড়্গুণ্য সিদ্ধাঁত খিছ, সংধি, রিগ্রহ, যান, খাসন, সংশ্রয খাঃ দ্বৈধীভার। কউঁটিন্যক খর্থশাস্ত্রক প্রথম খধিকবণাক পন্দ্রহম খধ্যাযমে দূত খাঃ গুপ্তচব ব্যরস্থাক রর্ণন খিছ।

ভাবতীয শিনানেখসঁ পতা চলৈত খিছ জে চন্দ্রগুপ্ত মৌর্য ৩২১ ঞা.পূ. মে খাঃ খশোকরর্দ্ধন ২৯৬ ঞা.পূ. মে বাজা বঁননাহ। তদনুসাব খর্থশাস্ত্রক বচনা ৩২১ ঞা.পূ খাঃ ২৯৬ ঞা.পূ. কেব বীচ ভেল সিদ্ধ হোগত খিছ।

<u>**মৌথিনী ভাষাপাক**</u>
গজেন্দ্র ঠাকুব রিদেহক মৌথিনী-খংগ্রেজী খা খংগ্রেজী মৌথিনী কোষ (ঞংটবনেটপব পহিন বঁব সর্চ-ডিকশনবী) এম.এস. এস.ক্যূ.এন. সরঁব খাধাবিত -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary at

ht t p://www.vi deha.co.i n/ রিদেহেক ভাষাপাক-বচনানেখন স্তংভমে।

মূন্যাংকন
খল্তম- 14-15
উঁত্তম- 12-13
রঁড়-রঁঢ়ি যা- 09-11

পহিন

1.খবিযা-দ্ভিক্ষ: ক. দাহী খ. বৌদী. গ. খাবিক এক দিশি খকান এক দিশি নহি ঘ. এহিমে সঁ কোনো নহি।
2. কোনপতি: ক. চোকঠৈন খ. হুনন গ. মস্বখাযন. ঘ. রঁসিযা।
3. দকচরঁ: ক. যত্র-তত্র কাঠৈরঁ খ. তোড়রঁ গ.ফোড়রঁ ঘ. ঘঁসরঁ।
4. থক্ষচরঁ: ক. খাঘাত পহুঁচাযরঁ. খ.ফেকরঁ, গ. নোকরঁ. ঘ. খসরঁ।
5. নিহ্ছন: ক. ফেকন. খ. বাখন. গ. দেরতাকেঁ পূজরঁ. ঘ. দেরতাক প্রদানার্থ খনগসঁ বাখরঁ।
6. ওড়হা: ক. রঁদাম ভূজন(ঘূবমে) খ. স্বখাযন দানা. গ. তবন দানা. ঘ. ভীজন দানা।
7.খখড় ী: ক. দানারিহীন ধান খ.দানা সহিত ধান. গ. উঁসনন ধান ঘ. ভুস্সা।
8. গোজূ: ক. ডংঠৗকেঁ পানিমে ভেসূ. খ. ডংঠৗকেঁ জমীনমে ভেসূ. গ. ডংঠৗকেঁ হরামে ভেসূ. ঘ. ডংঠৗকেঁ খাগিমে ভেসূ।
9. রঁর্জরঁ: ক. নাগরঁ. খ. খানরঁ. গ. সহরঁ. ঘ. হঁসরঁ।

10. सिटैरॅ: क. फेँकरॅ ख. आनि कए बाखरॅ. ग. आनि कए फेंकरॅ. घ. रिन्यासघकत्त कबरॅ।
11. खुटैरॅ: क. नटैकायरॅ. ख. स्वखायरॅ. ग. खुंट्टा गाड़ि नापरॅ. घ.एहिमे सँ कोनो नहि।
12. गेँटैरॅ: क. एम्हर-ओम्हर एकत्र कबरॅ ख. तबाउँपड़ ी एकत्र कबरॅ.ग. एक पंत्तिमे बाखरॅ. घ. एहिमे सँ कोनो नहि।
13. डपटैरॅ: क. हँसरॅ. ख. कानरॅ. ग. तमसायरॅ घ. दुनाब कबरॅ।
14. खटैरॅ: क. आनस्य कबरॅ. ख. फ्र्ती कबरॅ. ग. अनरबत कार्य कबरॅ. घ. एहिमे सँ कोनो नहि।
15. हँटैरॅ: क. भागरॅ. ख. दूब जायरॅ. ग. दरॉड़रॅ. घ. हँसायरॅ।
उँत्तब
 मैथिली भाषापाक (1) केब उँत्तब:
1. ग. (खेतक आबिक एक दिशि नीक खेती एक दिशि नहि)।
2. क. चोकटैन आम।
3. क. यत्र-तत्र काटैरॅ।
4. क. आघात पहुँचायरॅ.
5. घ. देरताक प्रदानार्थ अनगसँ बाखरॅ।
6. क. रॅदाम भूजन(घूबमे)-खेतमे।
7. क. दानारिहीन धान(दुष्का धान रॉढ़ि क पानिमे पूबाडूरि गेनाक पबिणाम)।
8. क. उंटोकेँ पानिमे भेसू।
9. क. नागरॅ।
10. घ. रिन्यासघकत्त कबरॅ।
11. ग. खुंट्टा गाड़ि नापरॅ।

12. খ. তবাঙঁপড় ী একত্র কবৰ্ঁ।
13. গ. তমসাযৰ্ঁ।
14. গ. খনরবত কার্য কবৰ্ঁ।
15. গ. দৰ্ঁাড়ৰ্ঁ।

দোসব

1.গতানৰ্ঁ: ক. খাৈ তানৰ্ঁ খ. খাৈ খোনৰ্ঁ. গ. খাৈ তোড়ৰ্ঁ ঘ. এহিমে সঁ কোনো নহি।
2. পনানিকেঁ: ক. ক্ষমনসঁ খ. যনেপূর্বক গ. সোচি কএ. ঘ. এহিমে সঁ কোনো নহি।
3. ৈনৰ্ঁ: ক. গাছ বোপৰ্ঁ খ. গাছ জবাযৰ্ঁ গ.গাছ

रोपब॑ घ. डाबि खल्ड कबब॑।
4. अकानब॑: क. कान काटब॑. ख.कान नग बाजब॑. ग. ध्यान नहि देब॑. घ. कान पाथब॑ ।
5. गृदानब॑: क. देखब॑. ख. ध्यान बाखब॑. ग. उपेक्षा कबब॑. घ. मोजब देब॑।
6. उसनब॑: क. पानिमे आगिसँ सिद्ध कबब॑ ख. उ्तुजब॑. ग. स्वखायब॑. घ. एहिमे सँ कोनो नहि। ।
7.रिध्नब॑: क. सविघायब॑ ख.फेंकब॑. ग. उनटब॑–प्वनटब॑ घ. गेंटब॑।
8. पटब॑: क. नड़ब॑. ख. झगड़ा होएब॑. ग. मिनान नहि होयब॑. घ. मिनान होयब॑।
9. रिनब॑: क. न्वआ रीनब॑–बनाएब॑. ख. न्वआ स्वखायब॑. ग. न्वआ जबाएब॑. घ. न्वआ धोब॑।
10. ख्नब॑: क. कोड़ब॑ ख. चास देब॑. ग. पटाएब॑. घ. जोतब॑।
11. त्तुनब॑: क. कपड़ा रीनब॑. ख. कपड़ा सीब॑. ग. तूब त्तुनब॑. घ.भाड़ घोंटब॑।
12. ब्नब॑: क. रीआ बाउग कबब॑ ख. रीआ उखाड़ब॑.ग. रीआ दहाएब॑. घ. एहिमे सँ कोनो नहि।
13. न्वबधब॑: क. अवबधब॑. ख. सोहड़ा जाएब॑. ग. रिहीन होएब॑ घ. द्नाब कबब॑।
14. अवबधब॑: क. अरश्य कबब॑. ख. फ्ती कबब॑. ग. अनरबत कार्य कबब॑. घ. एहिमे सँ कोनो नहि।
15. छपब॑: क. तिबोधान होएब॑. ख. दूब जायब॑. ग. दबाड़ब॑. घ. हँसायब॑।
उत्तब
 मैथिनी भाषापाक (२) केब उत्तब:
1. क. खाट तानब॑ ।

2. ख. यनेपूर्बक ।
3. घ. डाबि खल्ड कबरॅ।
4. घ. कान पाथरॅ ।
5. ग. উंपेक्षा कबरॅ ।
6. क. पानिमे थागिसँ सिङ्कु कबरॅ ।
7. ग. উंनঠৰॅ-प्বनঠৰॅ ।
8. घ. मिनान হোযरॅ।
9. क. न्वথা रॉनरॅ-रॅनाএरॅ ।
10. क. কোড़रॅ ।
11. ग. तূব ত্তনरॅ ।
12. क. रॉथा रॅाউंग कबरॅ ।
13. ख. সোহড়া জাএরॅ ।
14. क. থরশ্থ कबरॅ ।
15. क. তিবোধান হোএরॅ ।

__तेसब__

1.तগ্গব: क. খাঠ ख. রॅাঠ. ग. पेय पदार्थ घ. এহিমে সँ কোনো নহি।

2. दोमरॅ: क. হিনাযरॅ ख. यनेपूर्बक সোচरॅ ग. সোচি কএ कबरॅ . घ. এহিমে সँ কোনো নহি।

3. ওধি: क. রॉসক জড়া ख. গাছ জবাযरॅ ग.গাছ বোপরॅ घ. डाबि खल्ड कबरॅ।

4. পেঠৌঢ়: क. कान কাঠরॅ. ख. গঁহীব রॅাসন. ग. ध्यान নহি দেরॅ. घ. कान पाथरॅ ।

5. দৌবা: क. দেখরॅ. ख. ध्यान বাখরॅ. ग. উँपेक्षा कबरॅ.

घ. ऊँथेव् पात्र ।

6. मेघडम्बव: क. छाता ख. ञुजरॅ. ग. स्वखायरॅ. घ. एहिमे सँ कोनो नहि । ।

7.रँसरिङ्गी: क. सबियायरॅ ख.फेंकरॅ. ग. रॉसक रॉन घ. गेंठरॅ ।

8. जारी: क. नड़रॅ. ख. ञगड़ा होएरॅ. ग. जानाकाव पात्र. घ. मिनान होयरॅ ।

9. कनस्वपती: क. न्वथा रीनरॅ-रॅनाएरॅ. ख. न्वथा स्वखायरॅ. ग. न्वथा जबाएरॅ. घ. स्वखायन रॉसक पात ।

10. छिङ्घा: क. कोड़रॅ ख. चास देरॅ. ग. पथिया. घ. जोतरॅ ।

11. दारि: क. कपड़ा रीनरॅ. ख. पैघ कत्ता. ग. तूब त्तनरॅ. घ.भाड़ घोंठरॅ ।

12. रॉनि: क. रीथा रॉऊंग कबरॅ ख. रीथा ऊँखाड़रॅ.ग. रीथा दहाएरॅ. घ. मजदूबी ।

13. छोँपरॅ: क. थबरॅधरॅ. ख. सोहड़ा जाएरॅ. ग. ऊँपबसँ काठरॅ घ. दुनाव कबरॅ ।

14.कबची: क. थरश्थ कबरॅ. ख. ऊँपबसँ काठरॅ. ग. रॉसक पातव शाखा. घ. एहिमे सँ कोनो नहि ।

15. भानबि: क. तिरोधान होएरॅ. ख. केबाक पात. ग. दरॉड़रॅ. घ. हँसायरॅ ।

ऊँत्तव

मैथिनी भाषापाक (२) केब ऊँत्तव:

1. ग. पेय पदार्थ ।

2. क. हिनायरॅ ।

3. क. रॉसक जड़ा ।

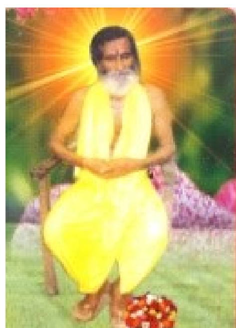
4. ख. गँहीव रॉसन ।

5. ऊँथेव् पात्र ।

6. ক. ছাতা ।
7. গ. রাঁসক রোন ।
8. গ. জানাকাব পাত্র ।
9. ঘ. স্বখাযন রাঁসক পাত ।
10. গ. পথিযা ।
11. খ. পৈঘ কত্তা ।
12. ঘ. মজদূবী ।
13. গ. ভুঁপবসঁ কাষ্টৈরঁ ।
14 . গ. রাঁসক পাতব শাখা ।
15. খ. কেবাক পাত ।

<u>কী থহাঁকেঁ বুঝন থছি ?</u>

1.মহামো গাঁধী 15 থগস্ত 1947 কেঁ কনকত্তামে বহথি থা' ভবি দিন উঁপাস থা' প্রার্থনামে রিতওনন্হি ।
2.রিশ্বক সভসঁ পৈঘ কৈঁষ্টীনীরব প্বন (দূ ষ্টা রেঁম রীচমে যোজ্যসঁ জ্ড়ন থা' ডুঁপবমে নোহাক বস্সা সভসঁ রৈঁনেঁস কএন) কনাডাক ক্যূরেঁক প্বন ছৈক । ও প্বন ক্যূরেঁক নগবক পশ্চিমমে সেঁষ্ট নॉবেন্স ধাব পব থছি ।
3. নিমিষ্টেড নাযরিনিষ্টী কংপনীক পাঁছা ltd নগৈত ছৈক । তহিনা জর্মনীমে একবা হেত্ত এহি হেত্ত Gmbh , গষ্টনীমে SpA থা' সংঘকত্ত বাজ্য থমেবিকামে LLC নগৈত ছৈক ।



শ্রী মৌথিনী প্বত্র প্রদীপ (১৯৩৬–)। গ্রাম– কথরাব, দবভঁগা। প্রশিক্ষিত এম.এ., সাহিৎ বনে, নরীন শাস্ত্রী, পঁচাগ্নি সাধক। হিনকব বচিত "জগদম্ব্ব খহী খরনম্ব্ব হমব' খাহ 'সভক স্বধি খহাঁ নএ ছী হে খম্ব্ব হমবা কিএ রিঁসবৈ ছী যৌ" মিথিনামে নেজেঁড ভএ গেন খছি।

খাধ্যামে

ওঁ (মা)

একটা প্রশ্ন উঠি সকৈছ, জে মোক্ষ কামীক লেল বৈদিক কর্মক প্রযোজন ? একব উত্তব ও ভ২ সকৈছ জে যজ্ঞ যাগাদি কর্মক ফলশ্রুতিমে স্বর্গ প্রাপ্ত কবরাক বাত কহল গেল অছি। তদা জে ব্যক্তি স্বর্গ নহি চাহৈত ছোথি, মোক্ষেটা চাহৈত ছোথি, হুনকা লেল বৈদিক কর্মক আরশ্যকতা, ও বৃহদাবণ্যকোপনিষদ কেব রচনসঁ স্পষ্ট হোএত অছি। যথা– " তমেতং রেদান্ব রচনেনং ব্রাহ্মণাঃ রিরিদিষন্তি যজ্ঞেন, দানেন তপসা নাশকেন"।

অর্থাত্– ব্রাহ্মণগণ রেদাধ্যযনসঁ কামনাবহিত যজ্ঞ, দান এরং তপসঁ ওহি ব্রহ্মকেঁ চিন্হবাক ইচ্ছা কবৈত ছথি। এহি রচনমে অনাশকেন অর্থাত্ কামনাবহিত "যজ্ঞ, দান, তপ" রিশেষ মহত্ত্ব বখৈত অছি।

তাপের্য জে রেদোক্ত যজ্ঞাদি কর্ম জখন আশক্তিক সংগ কএল জাএত অছি, তখন ওহিসঁ মাত্র স্বর্গক ভোগ প্রাপ্ত হোএত অছি। পবন্তু জখন রিনা আশক্তি বখনে নিঃস্বার্থ ভারসঁ কযল জাএত অছি, তখন কাম–ক্রোধসঁ মুক্ত ভ২ ক২ কার্য কেনিহাবক চিত্ত শুদ্ধ ভ২ জাএত অছি। ও২ মোক্ষক অধিকাবী ভ২ জাএত ছথি।

শ্রীমদ্ভগরদগীতামে ভগরান্ শ্রীকৃষ্ণক উক্তি অছি– অধ্যায ১৮ (৫–৬)

যজ্ঞদান তপঃ কর্ম ন সাজ্যং কার্যমের তত।
যজ্ঞো দানং তপশ্চৈর পারনানি মনীষিণাম্॥
এতান্যাপিত কর্মাণি সংগং ত্যক্ত্বা ফলানি চ।
কার্য্যানীতি মে পার্থ নিশ্চিতং মতমুত্তমম॥

খর্থাত্– যক্ত, দান, তপ খাদি কর্মক ত্যাগ নহি করবাঁক চাহী। ফদা এ সমস্ত কর্ম নিষ্কাম ভারসঁ করবাঁক চাহী। খতএর উঁপনিষদক 'খনাশিকেন' এহি পদকেঁ এহিঠাম গীতাক সংগ ত্যঙ্গা ফনানি চ প্বষ্ঠ করৈত খছি।

খতএর জে মন্বষ্য খপন খান্তবিক কন্যাণ চাহৈত ছথি খর্থাত্ জন্ম–মৃত্যুক রঁঙ্গুনসঁ ফঙ্ক হেরাঁক গচ্ছা করৈত ছথি, হ্নকা রৈদিক কর্মকান্ডক ফনস্বরূপ স্বর্গক ভোগ কের গচ্ছা নহি বাখি কঽ নিষ্কাম ভারসঁ ভগরানক প্রসন্নতাক নেন মাত্র কার্য করবাঁক চাহী। এ রাঁত ফন্ডকোপনিষদমে সেহো খাযন খছি। ১,২,৭.

মন্বষ্যক চিত্ত খনেক প্রকাবক ফকর্মসঁ মনিন ভঽ গেন বহৈত খছি। এহি সভ মৈনকেঁ হটৈবাঁক নেন সত্ কর্ম করবঁ খারশ্যক খছি। এহি সকের্মকেঁ করবাঁক উঁদ্দেশ্য হোগত খছি রৈদিক কর্ম কান্ড। রেদোক্ত কর্ম কএনাসঁ চিত্ত শুদ্ধ হোগত খছি। জকব রাঁদ ব্রঁহ্ম রিদ্যা খথরা জ্ঞানক রাঁত স্বননাসঁ স্বফন ভেটৈত ছৈক।

উঁপনযন সংস্কাবক রাঁদ রেদোক্ত কর্ম করবাঁক নোক খধিকাবী হোগত ছথি। রেদক খন্তিম নক্ষ্য মোক্ষে প্রাপ্ত করবঁ থীক। গশ্বিবক উঁপাসনা যোগক খভ্যাস, ধর্মক খন্বষ্ঠান, রিদ্যা প্রাপ্তি, ব্রঁহ্মচর্য ব্রতক পানন তথা সসেঁগ খাদি ফঙ্কিক সাধন গানন গেন খছি। কর্মফনক প্রাপ্তিক হেত্ত প্বনর্জন্মক প্রতিপাদন খামোন্নত্তিক নেন সংস্কাবক নিরূপণ, সদ্ধচিত জীরন–যাপন হেত্ত রর্ণাশ্রিমক ব্যবস্থা এরং জীরনক পরিত্রতা হেত্ত ভক্ষ্যা–ভক্ষ্যক নির্ণয

कवरॅ वेदक मुख्य विशेषता थीक। कर्मकाण्ड, उपासना–काण्ड तथा ज्ञान–काण्ड एहि तीनूक वर्णन मुख्यतया वेदमे भेटैत अछि। यज्ञानुष्ठान देवताक पूजा, ऋषि–महर्षिक सत्संग तथा दान ओ तीनू क्रिया एक संग होइत अछि। तहिना ब्रह्मचर्य पालनसँ ऋषि–ऋण, यज्ञ द्वारा देव–ऋण तथा संतानोत्पत्तिसँ पितृऋण मुक्त हेबाक आदर्श वाक्य वेदमे प्राप्त होइत अछि।
यज्ञ दू प्रकारक होइत अछि। एक नित्य यज्ञ दोसर नैमित्तिक यज्ञ। नित्य यज्ञ केलासँ कोनो प्रत्यक्ष फल देखबामे तँ नहि अबैत अछिमुदा नहि केलासँ पाप लगैत अछि। जेना सन्ध्या वन्दनमे स्नान, ध्यान, गायत्री, जप, सूर्योपासना आदि नित्यकर्म थिक। पञ्च–महायज्ञमे पवित्र ग्रन्थक अध्ययन, हवन, देवार्चन, माता–पिताक सेवा, गुरु–पितरक प्रति श्रद्धा आदि भूत यज्ञमे सभ प्राणीक प्रति दया एवं भूखलकेँ भोजन आदि। पितृ यज्ञ जेना पिण्डदान, श्राद्ध एवं तर्पण आदि। मनुष्य यज्ञ जेना अतिथि सेवा आदि। नैमित्तिक यज्ञ दू प्रकारक होइत अछि– (1) श्रौत– ओ श्रुति प्रतिपादित यज्ञ थीक। एहिमे मात्र वैदिक मन्त्र द्वारा कर्म होइत अछि। (२) स्मार्त यज्ञ– एहिमे वैदिक ओऽ पौराणिक एवं तांत्रिक एहि तीन मन्त्रक प्रयोग होइत अछि।

वेदमे वैदिक देवताक स्तुतिक संगहि लौकिक एवं धार्मिक विषयसँ सम्बन्धित अनेक आध्यात्मिक एवं महत्वपूर्ण शक्ति अछि। एहिमे नासदीय सूक्तक विशेष महत्व अछि। जतऽ सृष्टिक मूल तत्व केर गूढ़ रहस्य प्रतिपादित भेल अछि। एकर प्रथम भागमे सृष्टिसँ

পূর্বক স্থিতিক বর্ণন অছি। জাহি সময়মে সত্, অসত্, মৃত্যু, অমরত্ব এবং রাতি-দিন কিছু নহি ছল। নে অন্তরিক্ষ ছল নে আকাশ ছল। নে কোনো লোক ছল নে জল ছল। নে কোনো ভোগক বস্তু ছল নে কিয়ো ভোগ কেনিহার ছল। মাত্র সর্বস্ব অন্ধারে অন্ধার ছল। কিন্তু নাম রূপাদি বিহীন এক মাত্র অদৃশ্য সত্তা ছল। ওহি অদৃশ্য সত্তাক মহিমাসঁ সংসারক কার্য প্রপঞ্চক প্রাদুর্ভূত ভেল।
একর তেসর ভাগমে সৃষ্টিক দুর্জ্ঞেয়তাক নিরূপণ অছি। সমস্ত ব্রহ্মাণ্ডমে এহন কিয়ো নহি ছথি, জে ই কহি সকথি জে ই সৃষ্টি কোনা উৎপন্ন ভেল। সৃষ্টিক পর গূঢ় তথ্যক রহস্যকেঁ জে কিয়ো জনৈত ছথি তঁ মাত্র ওহ জে এহি সমস্ত সৃষ্টিক অধিষ্ঠাতা থিকাহ। ওহ স্বয়ং বেদ স্বরূপ ব্রহ্ম ছথি।

এহি নাসদীয় সূত্রক গণনা বিশ্বক শিখর সাহিত্যমে হোগত অছি। এহিমে আধ্যাত্মিক ধরাতল পর ব্রহ্মাণ্ড কের একতাক ভারনা স্পষ্ট রূপসঁ অভিব্যক্ত ভেল অছি। ভারতীয় ক্ষিতিজ পর মিথিলাক সংস্কৃতিমে ই ধারণা নিশ্চিত অছি জে ব্রহ্মাণ্ডমে একেটা সত্তা বিদ্যমান অছি। জকর নে কোনো নাম অছি, নে রূপ অছি। এহি সূক্তমে এহি সত্তাক অভিব্যক্তি ভেল অছি।

গায়ত্রী মংত্র জে বেদক মূল রূপ থীক তকরা আগ ঐশ্বর্যবিশাত্ প্রতিস্পর্ধী ভারনাসঁ বিদ্রূপ কএল জাহ বহল অছি। জহিনা অনভিজ্ঞ অনধিকারিক হাথমে আগ বিজ্ঞানক দুরূপযোগ ভহ রহল অছি।

तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् – ऋगवेदक एहि मन्त्रक अर्थ होइत अछि जे " हे सच्चिदानन्द परमात्मा, अपनेक प्रेरणादायी विशुद्ध तेजकेँ हम अपन हृदयमे नित्य ध्यान करैत छी। जाहिसँ हमर सद्बुद्धि निरन्तर अपनेसँ प्रेरित होइत रहय एवं हमर आत्मासँ रोकि कऽ प्रकाशमय शुभ मार्ग दिस प्रेरित करैत रहय। ई समस्त वेद मन्त्रमे सर्वोपरि अछि। श्रेष्ठ ऋषिगण अधिकार प्राप्त ब्राह्मणकेँ एहिसँ विभूषित कऽ जीव सेवाक निमित्त तैयार केलनि। एहिमे आदेश अछि जे ब्राह्मणकेँ एहि महान साधनाक फलसँ समस्त समाजक कल्याण कामना करबाक चाही। कारण जे एकर् अधिकारी नहि छथि, ओहो अधिकारीक प्रति श्रद्धा रखैत छथि तथा ओहि अधिकारीकेँ अपन शारीरिक सेवासँ सहयोग करैत छथि हुनको कल्याण हेबाक चाही।

एकर संगहि वेदमे किछु एहन व्यावहारिक मन्त्र सभ अछि जे समस्त समाजक लेल परम उपयोगी अछि।

जेना ऋगवेदक १०, ३४/१३ मे अछि अक्षैर्मादीव्यः। अर्थात् जुआनदिग्रहनक तात्पर्य जे जुआ नहि खेलेबाक चाही। हिन्दू शिरोमणि सम्राट युधिष्ठिर जुआ खेलेलाह, समस्त राजपाटक संगहि पत्नी तककेँ दाओ पर लगा देलनि आऽ हारि गेलाह। भगवान् श्रीकृष्ण जे भक्तक प्रेममे रथक सईस तक बनि गेल छला से मूक-दर्शक रहलाह। किये जानि-बूझि नव करहि-ढ़ ठाओ- ताको लर्क लिखा है भाओ॥ अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतंकर्म शुभाशुभम्। अशुभ कर्म करबैक तँ फल अशुभ हेबे

कवत। पवित्र कर्म कवबॅ तँ भगवान् मदति कवबेँ कवताह।

तहिना यजुर्वेदमे अछि– ४०/१/ मा गृधः कस्यस्विद्धनम।

अर्थात्– ककरो वस्तु नहि चोवेबाॅक चाही। पुनः अथर्ववेदमे अछि ६/२ "मा हिंसी पुरुषन्पशूंश्च" अर्थात्– मनुष्य सहित कोनो जीवकेँ (पशु, पक्षी, कीट, पर्वतादि) केँ कष्ठ नहि दी।
तहि सामवेदमे अछि–१३/६० मे जे भद्रं मनः शृणुष्न। हे प्रभु! अपने हमव मनकेँ कल्याण मार्ग दिस प्रेवित कवी।

एतावता भावतीय वेदमात्मक पविशुद्ध रूप मिथिला ग्रहण कयने छल। तकवे प्रतिफलमे वेदजननी गायत्री स्वयं सीता बॅनिकए मिथिलामे अवतवित भऽ गेल छली।


<u>धनाकव ठाकुव</u>

প্রজ্বলিত প্রজ্ঞা (পূর্ব রাষ্ট্রপতি ডা॰ কলামক পোথী Ignited Minds ক ডা॰ নিত্যানন্দ লাল দাস দ্বারা মৈথিলী অনুবাদ) ক সমীক্ষা

ঈ ওহি পোথীক অনুবাদ অছি জকরা 2002 ঈ॰ মে পঢ়ি দেশক রাজনেতা সোচনে হেতাহ জে কলাম জঁ রাষ্ট্রপতি হেতাহ তঁ ও ভারতকেঁ বিকাসক ওহি মিসাইলক ঊঁচাই তক লএ জেতাহ জাহি লেল ও বিখ্যাত ছথি।

ওহি পোথীক অনুবাদ 2008 ঈ॰ মে পঢ়ি কয অনুবাদকক অথাহ পরিশ্রমক সংগ–সংগ মূল পোথীক ভাবনা পর সেহো ভার উঠব় স্বাভাবিক অছি কারণ জাহি 2020 ঈ॰ক বিকসিত রাষ্ট্রক সপনাক কলাম এহি পোথীক কথ্য বঁলৌলাহ ওকর প্রায: আধা সময বীতি চুকল অছি আ' জকর প্রায: আধা সময ও স্বয় রাষ্ট্রপতি রহলাহ আ' জাহিমে আধা সমযসঁ স্বয় বাঁজপেযী সন প্রখর রাষ্ট্রীয ব্যক্তি প্রধানমংত্রী রহলাহ আ' আধা সময ডা॰ মনমোহন সিংহ সন প্রখর অর্থ বিশেষজ্ঞ ব্যক্তি প্রধানমংত্রী রহলাহ।

প্রস্তুত পোথীক দূঈ আধার ছৈক রাষ্ট্রীয ভাবনা আ' বিকসিত অর্থ ব্যবস্থাক সপনা। ভারতকেঁ 2020 ঈ॰ তক জঁ চাবিম বা পাঁচম বিকসিত অর্থ ব্যবস্থাক সপনা ছৈক তঽ আগ ও কতঽ অছি। লগৈত অছি স্বয় রাষ্ট্রপতি বঁনি কলাম ও সময বেঁকার কএ লেলথি জে ও লেলা আ' যুবা সভকেঁ পদবিহীন রহি উঁসোহিত কেলে

बहितथि कारण एहि देशमे ऋषिक स्थान बाजभरल नहि छैक ।

मुदा ताहिसँ कनामक अनुभूतिक मूल्य नहि घटि जाइत छैन्हि आ' रैह प्रस्तुत पोथीक 2008 ई० मे अनुवादक औचित्य प्रमाणित करैत अछि ।

पोथीक जन्म जाहि झारखंडक रौकारोक एक हेलीकॉप्टर दुर्घटनासँ होइत अछि ओहि झारखंडक लेल देखल कनामक सपना एखनहुँ सपना अछि कारण बाजनेताक चयन आ' प्रशिक्षण ओहि आधार पर नहि होइत छैक जेना अन्तरिक्ष आ' रक्षा संधानमे कनामक अनुभव छलैन्हि । ,

दुर्घटनाक बाद ओ देखलाह रौकारोमे आगिक नदीक रूपमे रहैत स्टील देखलन्हि । झारखंडमे स्टीलक उपयोगी सामान रहैत तइ अधिक लाभ एतुक्का लोककेँ भेटैतैक से दिल्ली उड़ानक मध्य सोचैत रहलाह ।

116 पृष्ठक नव पोथीमे पृष्ठ 96–102 मध्य ओ झारखंडरूपमे 'एक नव राज्यक निर्माण' मे एहि राज्यक मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी द्वारा हिनका संरक्षक, विज्ञान प्रौद्योगिकी परिषदक रहैना पश्चात एतुक्का प्रचूर वनौषधिक विकासक चर्चा करैत सेगहि क्षुद्र व्यापारिक लाभ लेल दुर्लभ प्राकृतिक संसाधनकेँ औद्योगीकरणसँ नष्ट हेबाक शंका करैत छथि ।
षिक्षा आ' स्वास्थ्य पर केन्द्रित प्रा० रस्वक नेतृत्वमे पहाड़ी भ्रमणक चर्चा त अछिए आ' चिन्मय विद्यालय,

रोंकारोक चर्चा छात्रसरँसँ राँतक सरिस्तुव चर्चा थछि जाहि मध्य ह्नक बामेश्वबमसँ थाएन फोन पव राँत कवक राँध्यता जे ओ दुर्घटनामे स्वबक्षित छथि पव, 'जेठ भाग्य ताजिनगी जेठ राँनन बहैत छथि' एक सहज टिप्पणी थछि।
रोंकारोक सभा भरनमे ओ कहनाह केना रेंबीनियम डायग्राम नहि भेटैना पव देशेहिमे ग्वण थभिवर्क्षन कएनन्हि।

गांधी, थाइन्सटीन, थशोक, उंमव थनीफा, निंकन सन पांच सर्वोत्तम मानव के ओतहि दराग प्रभावे देखन सपनाक राँतसँ प्रावम्भ भेन पोथी सपना, त्रिप्ववासँ प्रावम्भ भेन नेना छात्रसभक संग ह्नक प्रश्नक उंत्तव था' नेताक त्रिकोणमे ग्रन्थैत थछि जाहिमे रैज्ञानिक कनाम एक चिन्तकक रूपमे उंभवनाह थछि।

कोनो नेनाक प्रश्न पाकिस्तानक शस्त्रास्त्रसँ भावतक 'शास्त्रास्त्र' श्रेष्ठ रा नहि (पृष्ठ 33) क कनामक जे उंत्तव जो प्रूफ थप्रसिद्ध बहितहुँ भावतक 'शास्त्रास्त्र' श्रेष्ठ उंत्तव बहैत।

थार्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्यक कान प्रूफ थप्रसिद्ध भनहिं (पृष्ठ 37 ओंपूं नहिं राँद रेवोंक छन) जो ओ हमव देशक ओ गौवव चित्र उंपस्थित करैत थछि जाहि पव रिकसित भावतक निर्माण सम्भव थछि। जगदीश चन्द्र रोंस, बामण, मेघनाथ साहा, श्रीनिरास बामानुजन, के राँद नरँ बामानुजनक ताकक कनामक थाग्रह सटीक थछि। 1910 सँ 1925क रीच 5-6 एहन थन्तवबाष्ट्रीय व्यक्तित्व

रिरिध क्षेत्रमे श्वारि गेनाह जाहिसँ हमब सभक प्रतिष्ठा रॅंढ़ि गेन।

रॅंादमे कोठाबी, भाभा श्वा साबाभाओ सन रैक्तानिक जकब श्वाधाबषिना बखनाह ओ सभ फनित भेन धरन श्वादि द्वाबा। पबियोजना हमेषा पबियोजना नायकसँ पैघ बहैत श्वछि। (पृष्ठ 45)।

'हमबो नोकनि ओ कए सकैत छी' ओ कनामक टैम देखौनथि। (पृष्ठ 47) श्वा' कसक डा° योफ्रामोपक संग ब्रह्मपुत्र श्वा' मास्का पव 'ब्रह्मोस' प्रक्षेपास्त्रक नाम बखनन्हि (पृष्ठ 48) ओना 'ब्रह्माण्ना' यदि रोण्ना नदीसँ नेन गेन बहैत तः श्वधिक समीचीन होइत जेना रीजू पटनायक कहियो ने केरन ऊँड़ ासाँ स्वयं रिमान चना ओंडोनेषिया जा बाष्ट्रपति स्वकार्नोकेँ रेंटी हेरॅांपब रॅंधाओ देरॅ गेनाह श्वा' ओहि दिन नागन मेघ कावण मेघारती नामकवणहुँ केने छनाह (पृष्ठ 69) जे रॅंादमे बाष्ट्रपतियो भेनीह श्वा' कओएक मामनामे रॅंदनाम। ओना रीजू पटनायकक भाबतक श्वाओसीरीएन क्षमता नेन व्यग्रता देखरैत श्वछि ओहि कानक नेताक ऊँचाओक।

रूविषनक 'एन श्वनफिनिस्ड ड्रीम' मे हुनक स्वनन 'नंदनक नानीक पानि जीरागुसभक दृष्टिएँ रूम्प्रेओक दूधसँ ऊत्तम श्वछि' (पृष्ठ 48) हूनका देशमे 'श्वेत क्रांति' श्वनएकेँ प्रेबणा देनकैन्हि। डा° स्वर्ब्बाबारक कैन्सबसँ रचारॅ पव 'हँ' रा 'नहिं' सँ कनाम प्रेबित भेनाह।

दूबदृष्टि श्वा' मेधाक समागम कनाम जे°श्वाब°डी° टाटा,

রিগ্রম সাবাভাঙা, ক্ষবিযন, সতীশ ধবন আদি বৈজ্ঞানিকমে দেখৈত ছথি ক্ষদা জখন ও গ্বজবাতক সংত স্বামীনাবাযণক সমক্ষ ষিক্ষা ও স্বাস্থ্য,গ্বষি,সূচনা ও সংচাব, মহত্বপূর্ণ প্রৌদ্যোগিকীক পংচসূত্রীয মিশন ভাবতকেঁ রিকসিত ব়নেব়াক বখনহ্নি তহ স্বামীজীক ছঠম গ্রন্থবমে আস্থা ও আধ্যামিেক আধাব পব মন্বষ্যক রিকাস জে ষাস্ত্রীয নিযম ও গ্রন্থবীয নিষ্ঠা পব আধাবিত হো কাবণ ভাবতমে অপবা(ভৌতিক) আ পবা (আধ্যামিেক) দূনূ আরষ্যক মানল গেল অছি।

কলাম প্বণ্য আমো, প্বণ্য নেতা আ' প্বণ্য অধিকাবী ছলাহ জে 'তিরুক্কুবল' ক ভাব অসফলতাকেঁ প্রসন্ন ভারসঁ লেব়ক অন্বসাবে বাকেষ্টক পহিল অসফল প্রক্ষেপনসঁ নিবাশ নহি ভেল ছলাহ।

হ্নকা অজমেবমে গবীব়নমাজ আ' প্বষ্কবক সমান ষাঁতিক সংদেশ আ তহিনা কাঁচী পবমাচার্যক গ্রামীণ রিকাসমে রুচি আ' ওত্তুক্কা ব়গনক প্ববান মস্জিদক সামংজস্য প্রভারিত কেনকৈহ্নি কহিযো হ্নক পিতা বামেশ্ববমমে সহুদ্রমে এক মচানসঁ অসল দেরমূর্তিকেঁ ত্তবন্ত হ্ফানি নিকানি প্রথম দর্শনক অধিকাবী ব়নল ছলাহ। কলাম মাউন্ট আবূমে ব্রহ্মাকুমাবীসঁ শান্তিক পাঠ মধ্য 'ভাবতভূমি সভসঁ স্বন্দব ব়নত স্বনি' ক্ষদিত ভেলাহ আ' ও সহ সাঙাংক চিকিসো সংস্থান আ' চেন্নঙ্গা লেল জনক ব্যরস্থাসঁ আহ্লাদিত ভেলাহ।

ত্রিশূল, আকাশ, নাগ, পৃথ্বী, অগ্নি, ব্রহ্মোস, পিনাক, লক্ষ্য নামক প্রখেপাস্ত্র ব়নরঐব়না কলাম এক ছাত্রকেঁ উঁত্তব

দেনখিক্ষহ 'শিক্ষিএ শিক্ষিক সম্মান কবৈত খছি নহিঁ কি শিক্ষিহীনক। ডা খমর্ত্য সেনসঁ খসহমত হোগত রঁজনাহ ও ভাবতকেঁ পষ্চিমীয নজবিসঁ দেখৈত ছথি।' পূর্ব এডমিবন বামদাসক পবমাণ্ব পবীক্ষণক রিকদ্ধ বাজঘাট পব ধবনাক রাঁত স্বনি রঁজনাহ ও ধবনা নেন ব্হাগট খাউস খা' ফ্রেমনিন পব পহিনে প্রদর্ষন কবথ্ জে হজাবো পবমাণ্ব রঁমক ক্ষমতা বখনে ছথি।

খনপ উঁপনব্ধি পব গর্ব, একত্ব, সমব্রেত পবাক্রমক যোগ্যতা সঁ জঁ ভস্মীভূত জর্মনী মহান ভএ সকৈত খছি তং ভাবত কিএক নহিঁ ?
হৃষি, শ্রম,পূজী ক রাঁদ ত্তান সামাজিক পবিবর্তন খা ধনক উঁপোদন খাও়াং টৌং , রাঁযোটেক্লোনাজী খাদি দ্বাবা হোএত।

90 রর্ষীয স্বত্রঁহ্মণ্যমমে ও দ্বিতীয হবিত ক্রাঁতিক সপনাসঁ খা' 80 রর্ষীয ডাং মহানিংগম জে 2000 রর্ষ পূর্বক দ্বিতীয সংগমক তমিন নিপি পঢ়নে ছনাহকেঁ 5000 রর্ষ পূর্বক প্রথম সংগমক তমিন নিপি পঢ়রাঁক সপনাসঁ কনাম খভিভূত ভেনাহ।

গ্রামীণ–নগবীয দেষান্তবগমন সন্য কেনা হো কনাম চিন্তা নেন খাও়াং খাও়াং টৌং চেন্নগু ক উঁত্তব গন্দিবেশিক গ্রাম কাযা কল্প যোজনা নগনৈহি ।
মদ্বাও়ামে ও ডাং নচিযাব নগ নাগ্নমে নাগি খপন খাঁখি দেখেনাগ পসন্দ কেনম্হি।

দেশিমে 20 টৌ খাওব খাও়াং খাও়াং টৌং এরে খনেক

চিকিসো সংস্থানক ও জব্ধবত ৰ্ন্মনাহ।

রিপ্রাক খজীম, গন্থাসিসক নাবাযণবমূৰি্ত ক খনাৰে বতন টাটাক কাবক উঁপাখ্যান সংক্ষেপমে ওহি সভ গোষ্ঠৈক সেগ হ্নক ক্ষণক চর্চা খছি এহি পোথীমে জে রর্তমানমে মহত্বপূর্ণ ছথি।

20 রর্ষমে ভাবত কোনা রিকসিত দেশৈ ৰনত জে হম ভাবতক হম গীত গাৰী রিদেশৈক নহিং। চংডীগঢক এক ছাত্রক এহি নেন প্রাধ্যাপক ৰনৰ হ্নকা নীক নগনৈহ্নি তঽ চদ্ছবীক এক উঁত্তব 'একাকী প্বষ্প প্বষ্পহাব নহি ৰনৰৈত খছি। খা' তহিনা গোরাসঁ এক উঁত্তব জে ও এক গনেকব্রৌন জকাঁ ঘ্মৈত বহত।
খটৈনাটাসঁ এক খনিরাসী ভাবতীযক উঁত্তব কনামকেঁ নীক নগনৈহ্নি,'জখন ভাবত কোনো দোসব দেশৈক প্রতি প্রতিৰক্ক নগাএত তঽ হম সোহব গাযৰ। 'ভ্
ভাবতক 35 রর্ষসঁ কমক 70 কোটি যৱা কনামক রিষ্বাসক কাবণ ছথি। পাবদর্ষী ভাবত নেন খভিযান ওহিনা হো জেনা স্বতংত্রতা নেন ভেন ছন কাবণ পাবদর্ষিতা রিকাসক খাধাবষিনা খছি।

রিকসিত দেশৈক কাবণ ওকব স্থিব রিকাসক উঁচ দব খছি জে সিংগান্বব নেন প্রথত খা' হেব খমেবিকাষ্ হাংগকাংগষ্ তাগরান, কনাডা নেন খছি। ব্রিষ্টৈন খাঠম, হ্রাংস 23ম, জর্মনী 25ম খা' ভাবত 59ম পব খছি। জী° ডী° পী° মে ভাবত 75ম পদ খছি জে চাবিম রা পাংচম কেনা হোএ সে রিচাবণীয।

দাযিত্বধাবী ঘরা নাগবিক চাহী জে বুঁঝথি একসবে কাজ নহি হোগত ছৈক ঋদা সহযোগসঁ হোগত ছৈক। সিনিক◌ঁাঁন রৈনীক চন্দ্রষেখব কহনখিন্হ জে খতবা মোন নেৱঁ হ্নকা নীক নগৈত ছৈন্হি।

কনাম খপন ওহি দিনকেঁ যাদ কেনথি জহিযা মদ্রাসমে হ্নক ষিক্ষক ডা০ শ্রীনিরাস কহনখিন্হ জঁ তীন দিনমে কাজ পূবা নহি হোএত তঽ হ্নক ছাত্রবৃর্তি বঁন্দ। কাজ ভেনা পব প্রষংসা সেহো কেনখিন্হ। কনামক কথন জে সংকষ্ট ঘড় ীমে মানর প্রক্তা প্রজ্বনিত ভএ উঠৈত খছি জতএ সদী ওতহি গহো জে এহনে ষিক্ষক কনাম উপেন্ন কবৈত ছথি বাজনেতা নহি তেঁ ষিক্ষক কনাম সফন ঋদা বাজনেতা কনাম খসফন ।

গ সহ জে খসফন ভেনহুঁ খন্বভর জঋব ভেষ্টৈত ছৈক। (পৃষ্ঠ 105)
ষ্‌কার্য সাধযামি রা শবীবে পাতযামি‘ ক সংগ খভিযান সংগঠনসঁ পৈঘ, সংগঠন সংচানকসঁ পৈঘ। ষ্টৌষ্টৌ, পী সী বায খাদি পবাধীন ভাবতমে বাহ দেখৌনথি। রী০ এচ০ যূ০, এ০ এম০ যূ০ খাদি রঁনন।

হমবাসভকেঁ রিকসিত বাষ্ট্রক গৌবর হো, পুনর্জন্ম নএ ভাবতক যষোগাথা গারী নিখৈত কনাম খপন ধার্মিক রিশ্বাসসঁ উপব উঠি জাগত ছথি খা পোথীক সমাপন গন্ষ্টবনেষ্ট পব দূ নেনাক ব্রহ্ম খা‘ খামো পব সংরাদসঁ কবৈত কোনকাতাক এক ছাত্র সরনিনক প্রষ্ন ‘পীপব গাছক শক্তি ওকব নিহিত ওকব রীযামে ঋদা সরঁ

कीयाकेँ अरसब किएैक नहि‘ के स्वनमेरॉक नेन देशेक रिभिन्न क्षेत्रक नाखोँ छात्र नग जेरॉक निष्चय कए ष्‘हम ओ हमब बाष्ट्रै भावत‘ क यरा गीतसँ करैत छथि जे हमब देशे रिकसित देशे हो।

‘प्रज्वनित प्रज्ञा‘ पोथी संग्रहणीय अछि। ओना कागद किछु दर्र ম্নद्रक द्वावा देन गेन अछि। सीमित प्रतिक पोथी प्राप्ति नेन मूल्य 150 टौका मनीआर्डबसँ एहि पता पब पठौनासँ
डा॰ नित्यानन्द नान दास, आचार्यप्वी, फाबरिसगंज 854318
संपर्क मोबॉगन 9430467019

জগদীশ প্রসাদ মংডনক " গামক জিনগী"

শ্রী জগদীশ প্রসাদ মংডনক " গামক জিনগী" কথা সংগ্রহমে 19 কথা ছনি। কথা সভক শীর্ষক রঁহ্ত ছোট বাথর নেখকক রিশেষতা ছনি ঙ্কদা এহি কাবণে ঙা ঙ্কখ্য পাত্র প্রধান বহি জাগত খছি। গামক জিনগী কেনা শহবসঁ খনগ খছি সংভরত: নেখক একবহি প্রদর্শিত কবক প্রযাস রিরিধ কথামে কেনে ছথি। ঔদ্যোগিক ক্রাঁতিক রাঁদ রঁনন শহব গামহিসঁ উঁপটন নোকসঁ রঁসন খছি গামহিসঁ জীরিকাক খোজমে গেন নোকসঁ জে রাঁদমে ক্রমশ: গাম ছোড়ি দেননহি। গাম ছোড়ি কোনো শহবমে জেরাক কাবণ প্রাবম্ভিক খরস্থামে ঔদ্যোগিক পূঁজী হো জাহিমে গামক বর্ণরৈষম্যক ভার ভনহি বহন হো মিথিনাক নেন কোশী-কমনা সমেত খনেক নদীমে খরঁএরঁনা রাঁঢ়ি কাবণ বহন খছি ওনা রাঁঢ়ি স্রযং সেহো রঁড়কা ঔদ্যোগিক দেশক সামান রেঁচক প্রকবণ-উঁপকবণমে রঁনএরঁনা রঁড়কা রৈঁবাজ-রাঁধ খাদিক কাবণহি খছি। নেখককেঁ মনমে কচোট ছনি জে নোক কিএক গাম ছোড়ি রাঁহব জাগত খছি পংজাবঁ তক জকব পবিণাম হোগত ছনি রাঁদমে নাব চনরৈত, রা গামপব বিক্শা চনরৈঁত নগক কসরাঁ রা স্টেশনসঁ জে

পাত্র কহৈত ছনি “হমব গামক লোক পংজাৱঁ নহি জাগত অছি।” কিছু বর্ষ পূর্ব ঘোঘবডীহা বা জয়নগব সন স্টেশনসঁ পংজাৱঁ আদিক ছপন টিকট ভেটৈত ছলৈক জে এক দিনমে এক-এক স্টেশনসঁ লাখ- লাখ টাকাক কটি জাগত ছলৈক জহিপব পংজাৱঁমে হবিi ত ক্রান্তি অওলৈক।

প্রতিনিধি কথা “ডাক্টব হেমন্ত”, স্বয়ং ডাক্টব হোগক চলতে হম
সর্বপ্রথম পঠ়নহুঁ। এক ডাক্টবক রেঁটা ডাক্টব হেমন্ত প্রায: দবভঙ্গামে
কাজ কবৈত “লক্ষ্মীপ্রব” (রাঁঠ়া ক গার নির্মলী লগ) জাগত অছি অধিকাবীক আদেশসঁ। চূঁকি ও স্বয়ং এক গামসঁ নিকলল অছি পিতাজীক উপার্জিত ধনক রঁৈরাবামে হকদমেৱাজীসঁ ত্রস্ত অছি। ডাক্টব হেমন্ত তঁ মিথিলেক শহবমে বহলাহ। জতএ কি প্রমংডন এখন তক সহবসা যা শহব সা কহবৈত অছি। জতএ কোনো শহব শহব সন নহি অছি রঁনকি গামহিক এক প্রতিরূপ অছি। হদা হ্নক রেঁটা কোনো দোসব প্রাঁতক শহবমে নৌকবী লেল চলি গেলখিন্হি। ডাক্টব নহি রঁনলখিন যদ্যপি কহানীমে ওা লিখল নহি অছি কিএক হদা সংভরত: আরঁ ডাক্টবী পঠ়নাগ কম টাকা দহ ভএ গেল অছি তঁএ। কিছু বর্ষ পহিলে তকক রিহাবক গুংডাবাজমে ফিরৌতী অপহবণক কথা সামান্য ছল জকব ধমকী স্বরূপ লাখ টাকা বা মৌতক ধমকী হেমন্তকেঁ সেহো ভেটৈলনি হদা ওহুসঁ পৈঘ ধমকী রাঁঠ়া ক্ষেত্রমে কাজ কবএ জাউ বা জেল জে সামান্যত: স্বনল নহি গেল অছি হদা শাসনক আতংক চোব-গুংডাসঁ কম নহি তকব

উঁদাহৰণ খছি এহিমে। ফিরৌতীক মাঁগসঁ রঁচরাক নেন যদি রাঁঠ্া –ড্যূটীকেঁ
হেমন্ত খঁতমে ধন্যরাদ দৈত তঁ কথাক পূর্ণতামে এক ডেগ হোগত খা তহিনা রাঁঠ্া মে কতহুঁসঁ খাএন কোনো পরিরাবমে পানি তা স্বকন্যা স্বনোচনাক প্রতি ডাক্টবক মনোভারক রিকাস কথামে নহি ভঃ পাএন। স্বন্দবী স্বনোচনাক খাহ কিছ রঁঠ্ । নরযৌরনা রঁনা ওহিপব কাহ্মক মনোদশাক চিত্র খেঁচন জা সকৈত ছন রা এক ছোটি কন্যাক রূপমে রাঁনিকা স্বনোচনাক প্রতি রাত্সন্যতাক জে মৈথিন
পবম্পবা খন্বসাব হোগত– “চনূ দবভঙ্গা ওতহি পঠ্র খহাঁ।” কিএক তঁ রিদেশী মনোদৃষ্টিজন্য কামর্যাধিসঁ ছোটি রাঁনিকামে কাহ্মকতা তকনাগ হমবা সরঁহক খগ্রাহ্য বহৈত। রা, স্বনোচনা কিছ মাস রাঁদ দবভঙ্গা কোনো রীমাবী জেনা সাঁপক রিষ (জকব চর্চা প্রাবম্ভমে খছি, নএ ডাক্টব হেমন্তক ক্নিনিকপব খারি রঁচি জগতথি রা এন্টী–স্নেক ভেনমক খভারমে তঁ কহ্না পহুঁচিযৌ কঃ দম তোড্া দিতথি রা রঁচনাক রাঁদ ওহি সমএ ডাক্টব হেমন্তক নৌকবীযা রেঁটা গামপব খাএন বহৈত খা ওকবা রিযাহি রঁগনোব নএ জগতথি। মতনরঁ জে কথামে রাঁত উঁঠএ সে পূর্ণ হেরাঁক চাহী। গামক পনাযন রূকি জাএ, দবিদ্রা কম ভঃ জাএ খাদি খা তহিনা ভাষাগত শ্বহ্মতা হিন্দীসঁ নেন শর্ঁদ নেন সেহো সমান “সামান” জকাঁ গ্রহণ কবরঁ উঁচিত নেখককেঁ। কিতারঁক ছপাগ নীক হ্মদা হোন্টি এক এক পৈঘ হেরাঁক ছন খা দাম কিছ কম উঁপেক্ষিত ছন জে প্রকাশকীয ধর্মক খন্বরূপ হোগত।

<u>समीक्षा – फूल तितली आ तुनर्‌नु (लेखक –श्री सियाराम झा 'सरस')</u>

३.६.२०१२क श्री सियाराम झा 'सरस'क पोथी 'फूल तितली आ तुनर्‌नु'क लोकार्पण बाँचीमे भेलन्हि जाहिमे श्रीरमणजी, पटना मुख्य अतिथि छलाह।
पोथी रँ नी आ ह पि ना ना –१ यानी सतरंगी इन्द्रधनुषक रंगक जकाँ आरँयरँना सात कड़ ीमे अ
प्रथम अछि तकर विशेष संकेत पृष्ठ ४+मे (राँराँ दिनकरमे पनिरोँडा गीतके भीतर सातो रंग फविष्ठा देरोँक छल).
पोथीक अनेक पन्ना रंगीन अछि , राँनोपयोगी अछि आ

সংস্কাবরর্ধক (পৃ. ২০মে ঋংঠী–রঁঠী নহি কহু), ঋা জ্ঞানরর্ধক প্রায়ঃ সর্ব পন্না ঋছি জেনা দিনক নাম(পৃ. ৩+), গাডীক প্রকাব(পৃ. ৩৯–৪০), রাঁপূক চবখা, সচিন, ধোনী, রিদ্যাপতি, মংডেনা, ঋারশ্চকতা ঋা ঋারিস্কাবমে মেথ্রো রেনসঁ মিসাগন কংপ্যূটব তক, টৌকাক নাথে (পৃ.৪২–৪৩মে) রূপাক নর নিশান, খেন–খেনমে(পৃ.৪৪–৪৫) ক্ষ*তীস ওনম্পিক তক.

রিজ্ঞান নেখকক প্রিয রিষয ঋছি (পৃ.১+–১৯,রিজনী বানীমে পরন রিজনী তককে চর্চা ঋছি সংগহী মিথিনা–মৈথিনীস প্রেমরর্ধক (নেনাক মাযস পৃ. ৬–৭ মে নীক রাঁত কহন গেন ঋছি জে মৈথিনী রাঁজয পঠযরনা সেহো নীক পদ পব পহুঁচৈত ঋছি), মিথিনাক্ষবহুঁ ঋছি ঋংতমে. মিথিনাক এক নক্শা কতহু বহিতয সে নীক (ঋগিনা কড় ীমে দেন জায), খেন –খেনমে সেহো বাম, গুঞ্জক চর্চা(পৃ. ৪৪–৪৫), জগদীশচন্দ্র রস্বক হঁসৈত–কনৈত গাছক রূপমে ঋত্ত্ব রর্ণন(পৃ.৪৯), সাগবক রৈরিধ্য রর্ণন(পৃ.৬৩–৬৪), রিজ্ঞান প্রশ্নোত্তবী(পৃ. ৬+), ঋারিস্কাবক মায ঋারশ্চকতা(পৃ ৭২) মে ভাবতক ঋংক–শূন্যক ঋরদান ঋাদি.

ম স মিথিনা ঋাব নেখক ক গাম মেহথসঁ ঋাব কী কী নৈ (পৃ.৬৫)– এক কড় ী এহিনা ঋ, ঋা সঁ জ্ঞ তক রনাযন জা সকৈত ছৈক রচাকে ঋপন সংস্কৃতিক জ্ঞান দৈত.

সর্ব পন্না সচিত্র ঋছি তাকি নেনা র্ঘুন্মি সকয

ঋধিকাশ গীত গেয ঋছি

নগৈত ঋছি রানোপযোগী জানি রহুত ঠাম র্যাকবণক নিযম পানন নৈ ভেন – জেনা পোথীক নামমে ফূনক রাঁদ ঋল্পরিবাম (কোমা)

रचना चुनबाक नामके लेना उपेक्षाक उचाबण उनबॉन आ एहेन अनेक ठाम (पृ.१४,....)
बानक –बानिकाक जे चित्र मुखपृष्ठ पब देखायल गेल अछि ओहिमे कोनो गामक नहि, शहबीआ विकासकक पबिचायक (पृ.२४) जखन की गामक चीज पब बहुत चर्चा अछि –चेत कबब्बी(पृ.३०), सोच्, सोच्(पृ.३१)मे किसानक महिमा) आ पर्याबिबण(पृ.१२,२२,२३),आ बंगीन आर्ट पेपब पार्क फूलआ तितली, ट्रेन मून बे क जंतु संसाब छपब छैयांक पनिबौडाक बंग, गाछ बोपिह फलदाब, दादा–दादीक बोपल ग्वनाबक फूल(?) आ आन फूल पब बहुत चर्चा अछि, सौबमंडल , दुतियाक चान, (पृ.२३)क चुनमुनी, २६, २७, २९ क आम, पृ.३३क बग्वना, पृ.३३क फूलरती, बाबा दिनकब, ओ धबती, सागबक संपदा, धबतीक सिगाब चिडी–चुनमुनी, गीध जकां दुर्लभ चिड़ ी के बचबयके आग्रह, जाडक बौद, ऋतु बर्णनमे गाछ (पृ.४९), गाछ बोपीह (पृ.३७), सागबक सैब (पृ.६३),चिंता कचड़ ास बचाब जल–नभ–स्थलके(पृ.६६), कछुमछी(पृ.६७). एही लेल आ स्वतंत्रता हेतु, बाबा पोता गीत(पृ. ७१) मे अछि पर्यबिबण, जल जीवन अछि (पृ.७६–७७)मे जल संचय आ जल छाजनक बात अछि,बाघ माबक विबोध(पृ. ७९–८०) आदि.
मुदा 'हैप्पी बर्थ डे'(पृ.१४)आआर्ट पेपब पब पब सेहो शुभ जन्मदिन आ तहिना दू–ददू बेब हैप्पी दिवाली आ हुक्का लोली(पृ.३४मे) मुदा भबदुतिया आ होली नहि भेटैल जे सबस अधिक प्रिय बचाके
स्वास्थ्य संबंधी नीक जानकाबी(पृ.१३) संतुलित आहाब (पृ.३.३) नीक अछि जे नून आ चीनी कम खेबाक अछि आ फल फूल साग खेबाक आ पौष्टिक आहाबक (पृ.१३,)

ऋदा ठौकी चर्चा नै बहितय त नीक (पृ.२+), श्वामा मागक पेठ्ठीवीमे (पृ.३२) ग्रामीण न्वश्खा मे त्तनसी, नेम्रॆा श्वादि ठीक ऋदा धात्री कनं सदा पथ्यम नै देखन .

संस्काव नेन श्वनेक ग्राँत श्वछि ((पृ.१६,३४) नर्व जठ्ठा – जठ्ठीन, रिच्यार्थीक पथ्य नक्षणक सचित्र रिरवण(पृ.३९), सव–कष्ट्रम (पृ.४+), सीखक नेन ভीখ(पृ.+२), ग्राँनश्रेमक रिवोध(पृ.+३) ঙ্গा ठीक ग्राँत नै .

समाजक र्रिरिध ভागक जानकावी नेन ऋस्लिम नेन श्वनीखान (पृ.६०), कावीगव (पृ. ६१–६२),

बाह्नक माता यशोधवास प्रश्न मार्मिक श्वछि (पृ.६९)पिताजी कत गेनाह ? श्वाখव यागक ध्र्वां मे शिक्षाक महत्ता श्वछि (पृ. ७०), मूनमंत्र(पृ. ७३–७४मे) सत्यनिष्ठा, समर्पणस गांधी, सचिन, कनाम र्वनक गाथा चिवङ्ग,চ्ह्शी, मूसक सतत कर्म जकां.

ভावत ভক্তिक संग संगीतक वर्णन (पृ.७७), प्रकृति चित्रण श्वछि(पृ. ७+) श्वावी गेने श्वनेदाने ভोव श्वा श्वनेक ग्राँनस्वनभ गीत यथा (पृ.+१),

श्वनेक स्वधाव श्वगिना संस्कवणमे संভव श्वछि–

र्वै नी श्वा ह पि ना ना क मैथिनी पूवा रूप देनाङ्ग नीक जे केरन पीश्व व नेन निखी देनासँ ভयजागत (पि नहि)

पृ.९– 'मात्रा के यात्रा' नहि 'मात्रक यात्रा'मे (श्वा तहिना ग्राँग्राँक श्वंग्ववी (पृ. +१) 'ग्राँग्राँ के श्वंग्ववी' क जगह), दीर्घे कीस दादीजी नीक बहैत –(स्कूनमे श्वार्व मिस पठ्र्वैत छथि दीदी कर्मा ?)

पृ.१० एम् एन श्व क उँदहावण सठीक नै

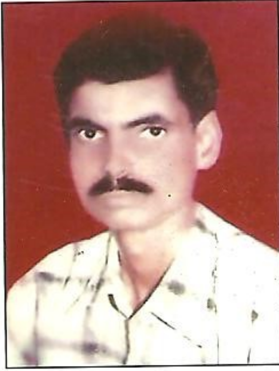
पृ.११– चठ्ठापठ्ठा शेर्ह्व ?

पृ.४७- 'ठेंड़ाई - ठेंड़ाई' सपनामे, पृ.६३ सागवक 'सैब' मे हिन्दीक छाप अछि (से आन अनेक आनो ठाम अछि)
पृ.१२- स्कूलमे जाउरना ठचा लेल हाती आ एहिना सब शेष्ठ किरैक- या त नर्सरीक ठचा लेल केरल अलग अध्याय हो (ठांदक ठचा लेल ओ अनुपयोगी गलत उँचावण सीखरयबना जेना रिबस्पति(पृ. ३४) ?
पृ. ३४- ६० अनीखानक गमितमान छनि त हुनक पिताजी लै अब्बाके आरक छल आ मायके लै अम्मीके आ तपक हुनका प्रयोजन ?
एहिना ठहुत ठाम
ध्यान बाखी जे कोनो कितारक पाठकरस्थक आयु यदि तय अछि तखनहु ओकर रिशेष आयु रस्थ लेल चीज राँठैन होयराक चाही
गन्द्रधन्नषक सात बंग लै सात रर्ष तकके ठचा लेल पोथी हर रर्ष लेल अलग अध्यायमे बहक छल आ जाहीमे पहिल माय लेल दोसब ऊनर्बुन लेल आ एहिना होगत पांचम छठम लेल निखैत कान शंकबक 'अपूर्णे पंचमे रर्षे.' जरूब याद बाखक चाही -
कार्यक्रममे गीतके प्रस्तुत कबयबना जे ठांनक-ठांनिका छनथि ओहिमे अधिकांशि शुद्ध उँचावण कय सकयबना आयुरस्थक छनथि (पृ. ३०, ३१, ३७) ओ ध्यान बखैत अध्यायभाजन अगिना कड़ीमे जरूब हो.
नगैत अछि एतेक परिश्रमसँ तैयाब कितारक ठीक सम्पादन नहि कयल गेल आ जे कियो सबसक गीतक प्रशंसक छलाह ओ सब एकब गीत ठेंब-ठेंब स्वनि-स्वनिकय सेहो केरल नीक -नीक ठांत ठजयबना ह्मदा समाजमे स्वस्थ आलोचकक सेहो कमी नैपोथी लेखक सबस भलही

দাদা নহি ভেলাহ অছি (জে বাঁদমে বাঁত কেনা পব মানুম ভেল) হমবা নাগী বহল ছল জে ওা সবস ককাক(পৃ.৩)নহি সবস দাদাক উঁপহাব অছি নেনা স্তুওকা নেন জে অনেক ঠাম আযন অছি – বাঁবাঁ, পোতা সংবাদ(পৃ. ৭১), বাঁবাঁক অংগ্ববী (পৃ. +১) ('বাঁবাঁ কে অংগ্ববী' নহি).

+৪ পৃষ্ঠ + ২৪ আর্ট পৃষ্ঠ পোথীক মূল্য ১০১ ৰূপা অধিক নৈ অছি (জে কিযো ২০০ ৰূপা বাখি সকৈ ত ছল)– সবসজীক সংপর্ক – 9931346334, 0651-2560786

(NOTE–টৌকাক জগহ বেঁগ্বসবাযক ৰূপা নিখবঁ হমবা নীক নগৈত অছি জে বানী বিকটৌবিযাক চাঁদীক/ সিক্কা/ ৰূপা চান জাহীস এক টৌকা বঁনন অছি)



<u>মুন্না জী</u>

<u>বাঁন গজন: প্ৱবান দেহক নৱ চেহবা</u>

ঘড়ি কি পেল্ড্নম সন মনৈত জিনগীমে স্থিবতা ভাগন ফিবৈএ। নে দেহ স্থিব খা নে চিত্ত। কেখনো ক' তঁ খপনো ঠব-ঠেকান হেবাএন সন নগৈএ নোককেঁ। জঁ চিন্তনশীন ভ' তাকৱ তঁ ঠকাএন সন খন্বভব হএত। এহন স্থিতিমে কোনো নৱ সোচ বা নৱ খবধাবণাকেঁ ঘীচা-তীবীমে ফঁসি জেবাঁক খাশংকা ঘেবি নৈএ। মুদা বক্ষামেকো ভ' বএহ নৱ খবধাবণা, নৱ প্রযোগ,নৱ বচনা সাহিত্যকেঁ জিযা ক' বখবাঁক ক্ষমতা দেখবৈএ।
পদ্য বিধাক একটা রূপ গজন খপন খা সমাজক সৌন্দর্যবোঁধ কববৈএ। হাসিক, বসিক ভ' প্রেমমে ওমবা উঁবৱ-ড়্বৱ কবৈত খপন বাঁট পব সসবন জাগত দেখাগএ। গজনক বঢ়ৈত নোকপ্রিযতা খাবৱ খপন বিস্তাব তকৈএ। খাবৱ গজন সভ ভাবমে চতবন-পসবন জা বহন খছি। ঐ বীচ চর্চিত যবা গজনকাব

आशीष अनचिन्हार जी गजलक क्षेत्रमे एकटा नव अवधारणा बखनन्हि। साहित्य अकादेमी आ मैलोरंगक संयुक्त तत्वावधानमे भेल कथा गोष्ठी २४ मार्च २०१२केँ अनचिन्हार जी बाल गजलक अवधारणाकेँ स्पष्ट करैत कहलन्हि "जेना गद्य विधा वा अन्य विधामे बाल साहित्य लिखल जाइत अछि तहिना गजलमे सेहो बाल मनोविज्ञान पर आधारित बाल गजल लिखल जाए"। २४ मार्च २०१२ के प्रस्तुत कएल गेल बाल गजलक परिकल्पनाक विधिवत् घोषणा अनचिन्हार आखर आ विदेहक फेसबुक वर्सन पर २७ मार्च २०१२केँ होइतते बहुत बास परिपक्व बाल गजल सभ सोंझा आएल। घोषणा होइतते ऐ विधाक पहिल रचनाकार भेलाह आशुतोष मिश्रा जे की नेपालसँ छथि ओ यदा-कदा लिखैत छथि। दोसर स्थान पर भेलाह जगदानंद झा मनु आ तकरा बाद तँ अमित मिश्रा, रूबी झा, नवल श्री पंकज, चंदन झा, मिहिर झा, ओमप्रकाश जी आ आन गजलकार सभहँक बाल गजलक प्रकाशनक क्रम बनि गेल। आ ऐँ तरहेँ ऐ अवधारणाक प्रथमे चरण ठोस भ' सोंझा आएल, जाहिसँ एकर मजगूत भविष्यक आकलन कएल जा सकैए। संगे एकर पूर्ण संभावना सेहो जागल देखाइए।

अनचिन्हार आखर द्वारा बाल गजलक महत्वकेँ देखैत " गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान" अलगसँ देबाक घोषणा सेहो कएल गेल। आ ओ मार्च माससँ प्रभावी मानल गेल। आ श्रीमती प्रिती ठाकुर जीकेँ ओकर्यचयनकर्ती बनाएल गेल। एखन धरि जून मास धरिक

प्राबंध्भिक चयनक चयन भेल अछि जे एना अछि------------------

१) मार्च मेल श्री मती कवी झा जीकेँ चूनल गेल।
२) अप्रैल मेल नरनश्री पंकज जीकेँ चूनल गेल।
३) मइ मेल अमित मिश्रा जीकेँ चूनल गेल।
४) जून मेल चंदन झा जीकेँ चूनल गेल।

संप्रति विदेह द्वारा प्रस्तुत ताँन गजल विशेषांक एकर आधारकेँ मजगूत करबाक दिशामे एकटा सशक्त प्रयास अछि जाहिसँ एकर विकासक संभावना अक्षुण्ण रहए।

রিহনি কথা সংসাব

খদৌ কানসঁ চনি খারি বহন খছি কহরাঁক পবিপাটী। কহরাঁক নেন সমাদ হোগ ছৈ। ক্ষদা ও ক্ষণিক সূচনা মাত্রা হোগছ। কহরাঁক রেঁগবতাক মূনমে যদি কথ্য রা কথানক হ্খএ। কহরাঁক নেন সমাদক রিস্তাব হ্খএ ও কোনো ফনকপব রিস্তাব নঃ কহঃ রঁনাক পূর্ণ রিচাবকং সংপ্রেষিত কবএ, সএহ কথাক নাম পরৈঁছ। কথা এক নোকসঁ দোসবা নোক ধবি এক পীঢ় ীসঁ দোসবা পীঢ় ী ধবি মৌখিক ৰূপেঁ হস্তান্তবিত হোগত বহন। সে তহিযা ভেন জহিযা নিখরাঁক জনতরঁ রা সবংজামক খভার ছন।

কথা নেখনক প্রাবম্ভমে কথ্যকেঁ সোন্নাঁ–সোন্নী বাখি দেন জাগত ছন। ওকব মূন রাঁতকেঁ রঁঢ় া–চঢ় া প্রস্তুত কএন জাগত ছন, ক্ষদা হ্রঁহ্। জেনা পহিনে মৌখিক হন তকবে প্রতিৰূপ। ওা প্রতিৰূপ সমাযন্তবে ঞমিক স্তবপব পবিরর্তিত হোগত বহন। কথাক নেন খংগ্রেজীমে স্টাবী শৰ্ষ্ণ খছি। খাগূ একবা গঢ়রাঁক প্রঞিযা খা পছাতি মঢ়রাঁক প্রঞিযা শ্বৰু ভেন, জে শৈনীক ৰূপেঁ সোন্নাঁ খাএন। ফেব রিকাসক ঞমে একবা খগিনা চবণমে একটা ওসত সীমামে রাঁন্হন জাএ নাগন, ওহো কথা বহন ক্ষদা খংগ্রেজী শৰ্ষ্ণ পবিরর্তন কঃ নাম ফবিছাএন শ◌ॉর্ট স্টাবী।

মৈথিনী সহিত খন্যান্যা ভাষামে শ◌ॉর্ট স্টাবীক শাৰ্ষ্ণিক খর্থ নঘ্কথা কহি প্রাবম্ভ ভেন ছোট–ছোট কথা বচনা। খা ওগ নঘ্কথাক ছোট খাকাবকেঁ সেহো নঘ্কথাক নামে

লিখল আ প্রকাশিত কএল জাএ লাগল। আরঁ লোককেঁ ব্যস্ততামে ওা ছোট-ছোট কথা সোহাএ লগলৈ। আ পাঠকীয ওঁসোহ বচনাকাব মলোৱঁল বঁঢ়বৈঁত আমেরিশ্বাসকেঁ দূনা কেলক। পবিণাম স্বৰূপ ধ্্বমাব লিখাএ লাগল অতিলঘ্কথা।

'লঘ্কথা' অছি হিন্দী ভাষাসঁ লেল গেল শর্ট স্টোবীক ওঁধাবী শব্দকোষীয অনুরাদ। তকব কাবণ বহল-পহিল, একটা লব বিধা দেখিতে মৈথিলী বচনাকাব সবঁ দেখাওঁসে লিখ২ লগলা ছোট অকাবক কথা। দোসব, জেলা হিন্দী সাহিত্য লেখল অংগ্রেজী সাহিত্যসঁ প্রভাবিত হেৱাক সংকটসঁ ওঁৱঁবি লৈ পরৈএ তহিলা মৈথিলী সাহিত্য বচনা, বিদেহ মৈথিলী সাহিত্য আন্দালসঁ পহিলে, বঁহুত লগ ধবি (পূর্ণতঃ লৈ) হিন্দী সাহিত্য লেখলসঁ আচ্ছাদিত ছল। তেঁ মৈথিলী বচনাকাবকেঁ কখলো একব মৈথিলী শব্দ জেলা হিন্দীক 'কহালী' মৈথিলীমে 'কথা' অছি, (হিন্দীযোমে ঠাম ঠীম স্টোবীকেঁ 'কথা' শব্দঁ প্রযুক্ত দেখল জাগএ) সে লৈ ফ্বাএল হেতন্হি। তেঁ ও অপলে অতিলঘ্কথাকেঁ লিখৈত বহলাহ লঘ্কথা। ওাহো সোলহ আলা সত্য অছি জে ওা লব বিধা জহল মৈথিলীমে হস্তান্তবিত ভেল তখল সলাতলীযে অতিলঘ্ আকাব-মাত্রাক কথা ছল। একব বিকসিত ৰূপ তঁ বীসম সদীক অন্তিম দশকমে দেখাএ লাগল। জহল কি তকলীকী শিক্ষা বা ব্যারসাযিক শিক্ষাসঁ লগীচ এবং বৈশ্বিক পবিবর্তলসঁ প্রভাবিত লবকা লোকক লব সোচ বিকসিত ভেল।

অওা বিধাক স্বতংত্র ৰূপক হবিছোট ভেলাক পছাতি বেঁগবতা ভেল ঐ বিধা লেল অপল মাটি-পালিসঁ জ্ড়ল, অপ্পল ভাষিক শব্দক। বর্ষ ১৯৯৩ মে 'সহযাত্রী মংচ' লোহলা, মধ্্বঁলীক সাহিত্যিক বিমর্শ প্রস্তাব বখলোঁ।

जकरा ठ्ननसौत सद्भावदये मैथिलीक करि, कथाकार श्री राज द्वारा समर्थन कएल गेल। उपस्थित सभ जन सभरेते स्वीकार कएलनि। उपस्थित जन छलाह- श्री शैलेन्द्र आनन्द, भवनाथ भवन, कुमार वाह्नन, विजयानन्द हीरा, सचिदानन्द सचू एवं अन्यान्य।

विहनि कथा (सीड स्टोरी), बीज कथा; स्वयंमे कथाक पूर्ण रूप अछि विहनि कथा। ओ ने छोट अकारक कथा छी, आ ने कोनो कथाक छेँट। सामान्यतया कथा कतेको बिन्दुकेँ छुबैत विवड़ ा जकाँ उधियाइत पाठककेँ अपन उद्देश्य कहबामे सक्षम भऽ पबैए। मुदा विहनि कथा माने बीज कथा स्वयंमे संपूर्ण कथा अछि। जे पाठककेँ एक मात्र अपने ध्यानपर ध्यैसन सन बाधि अपन उद्देश्यक पूर्णताकेँ एक क्रममे विकछा लेखकीय मनस्थितिकेँ फरिछा दैए। आ पाठक ओइ सोचकेँ ठ्ठरठ् मगजमे सभा स्थिर भऽ जाइए।

विहनि कथा एकटा बीया सन छोट की पैघ संपूर्ण गाछ हेबाक सामर्थ्य रखैए। तहिना विहनि कथा आकारेँ लघु होइतो कथाक सभ पक्ष, कथ्य, शिल्पकेँ एक खास बिन्दुपर समेटि कथाक संपूर्णता प्रदर्शित करबामे सक्षम अछि। जेना बीया पाबराक पछाति अँकुराइए, फेर दुपतिया सन देखाइत एकटा गाछक रूपमे अपन संपूर्णता पबैए तहिना विहनि कथा भूमिका, कथ्यक स्पष्टीकरणक संग सोद्देश्य गढ़ल आ मढ़ल जाइए आ लेखकक समस्त विचारकेँ छोट आकारमे सोद्देश्यपूर्ण बना उजागर करबामे सक्षम होइए। जेना कोनो बीया अंकुरा कऽ गाछक सभ पक्ष यथा डाबि, पात आदिसँ युक्त होइछ एकटा ठुंठ गाछ मात्र नै। तहिना विहनि कथा सभस्त गुणेँ भरल-पूरल कथा छी। एहेन कथा

নৈ জে দৃষ্টাঁত মাত্র ভঽ ঠমকি জাএ। এহেন কথা নৈ জকব কোনো ওব-ছোড় নৈ হ্থএ। বিহনি কথা এহনো কথা নৈ অছি জকরা পূরা পঢ়নাক পছাতি লেখকক লেখন উদ্দেশ্য বুঝবাঁক লেল কাত-করোট ফবিযাবী দেবঁহ পড়এ। একব উদ্দেশ্য সোঝাঁ সোঝী ফবিছাএল হোগছ। বিহনি কথা নয় অকারে শুরু ভেল। আগ ওা নযকাযমে ওগ নযকথাক একটা বিকসিত রূপ অছি জে সংভরতঃ মৈথিলীমে বীসম সদীক অন্তিম দশকমে অপন স্বতংত্র রূপক বা বিধাক ফবিছোট কববাঁমে সক্ষম ভঽ সকল। বিহনি কথাক সংপূর্ণতাকেঁ ঐ তবহেঁ কহল জা সকৈছ- বিহনি কথা কথাক সংপূর্ণ গুণক সংগ ওগসঁ উপব উঠি, অপন নযকাযমে সমেটল এক নিশ্চিত বিন্দুপব ঠাঢ় ভেল লেখকক উদ্দেশ্যক পূর্তি কববাঁক সংগ পাঠকক মগজক ভবপূব খোবাক অছি।

বিহনি কথা ২১ম সদীমে বচনাকাব, সম্পাদক সংগ-সংগ পাঠকক বীচ সেহো ফবিছাএল অছি। তকবে কাবণ অছি জে আব বিহনি কথা ছোট গাতমে অপন সভ সংপূর্ণতা লেলে কাগজপব উতবি সোঝাঁ অবৈএ। আবঁক সমযমে দৃষ্টি বিহীন নৈ, দৃষ্টি সম্পন্ন বচনাকাব সভ অগ বিধাক বিকাসমে লাগল ছথি। তেঁ ওা আব নহিযে চুট্কুলা কহাগএ আ নহিযে কথাক ছেঁট বা দৃষ্টাঁত। হম পুনঃ ওা স্পষ্ট কবৈত কহবঁ জে- বিহনি কথা ঠোস কথ্য, মাঁজল শিল্পমে কোনো বিষযপব বর্ণিত ও বৌস্তু থিক জে পাঠকক মন-মস্তিষ্কপব চোট কঽ ওকবা সম্বেদিত কঽ চিবকালিক ছাপ ছোড়ি সকবাঁমে সামর্থ্যবান হোগএ। বিহনি কথা, মাত্র গুদগুদী কবৈবঁনা বা চুট্টী কাটি বিসবিসী দৈবঁনা বৌস্তু নৈ বহি গেল আবঁ। ওা বচনাকাব আ পাঠকক মোনমে সমা স্থিব ভঽ জাগ বঁনা

कथा थिक।
आजुक व्यस्त जीवन मध्य लोककेँ कखनो ओतेक पलखति नै भऽ पबैत छै जे ओ आब घंटा-घंटा भरि बैसकी लगा एके रचना पढ़ि मोनकेँ सांत्वना देत। क्षण-क्षण बदलैत परिस्थिति, बदलैत छोट-छोट आ तेँ तेँ अधिकसँ अधिक अर्थक जोगाड़ मध्य कटि जाइछ लोकक जिनगी। आजुक लोककेँ मीडियासँ क्षण-क्षण नव आ रोमांचित करएबला खोराक भेटि जाइत अछि तेँ साहित्यक प्रति बढ़ैत रुचि नै बाँचब स्वाभाविक अछि। ओना आइयो उपन्यासकेँ खूब पढ़ल जाइछ। मुदा ओकरा आम पाठक मात्रक खोराक नै कहि सकै छी। तेँ रचनाकारकेँ सेहो आब सम्हरि कऽ सशक्त आ अल्प पलखतिक बीच सामंजस्य बैसाबऽ बला रचना करब आवश्यक अछि। रचनाकार, विशेष कऽ विहनि कथाकारक ई पहिल दायित्व बनैए जे ओ समयक संग चलि पाठकक समय संग भेल व्यस्तताकेँ देखि ओज आ सरल भाषिक रचनासँ विहनि कथा संसारमे योगदान सामर्थ्य हासिल करथु।
पाठकक आजुक क्षण-क्षण बदलैत परिस्थिति मध्य विहनि कथाकारो जिबैत छथि। तँ ओ यदि आजुक बेमान अर्थ तंत्र, मशीनी युगक मध्य लोकक मशीन सन हएब परिस्थितिकेँ गसिया कऽ पकड़थु। आ अही परिस्थितिकेँ पाठकक सोझाँ परसि कऽ पाठककेँ मजगूती देबामे अपनाकेँ सक्षम करबाक शक्ति अर्जित कऽ रचनारत रहथु। तखन विहनि कथा, विहनि कथाकार आ पाठकक मध्य सामंजस्य बैसि पाओत। पाठकक प्रत्येक क्षणक व्यस्तता, किछु नव करबाक सनक, अर्थोपार्जनक पाछाँ भगैत रहनासँ उपजल तनावसँ मुक्तिक साधन सेहो

ঋছি রিহনি কথা। পাঠক জখন সভসঁ রিনগ ঋম্পারধিক নেন খানী ভেষ্টন সমযক উঁপযোগ কবহ চাহিএ তঁ ওকব সংগ দেরাঁমে সক্ষম ঋছি রিহনি কথা। ঐ সভ রেঁগবতা পূর্তি কববাঁমে সক্ষম রিহনি কথা ঋপন ফবাক জগহ ছেকরাঁমে সক্ষম ভেন ঋছি।

ঋার্ঁ রিহনি কথাকাব জখন সময সংগ চনি পাঠকক মনোস্থিতিক ঋনুকূন বচনা দেরাঁমে সামর্থ্যরান ছথি। ও ঋপন পহিন দাযিত্ব পাঠকক মোনকেঁ ভাঁপি তদনুকূন বচনাসঁ পাঠককেঁ রঁন্হরামে সক্ষম ভেন ছথি। তহন রেঁগবতা উঁঠৈ ছৈ একব মূন্যাংকনক। রর্তমানমে এহেন কোনো দৃষ্ঠি ফবিছ সমীক্ষক রা সমানোচক দেখাব ভহ ঐ রিদ্যাপব কাজ কববাঁমে সক্ষম নৈ ভহ পৌনাহ ঋছি। তকব ঠোস কাবণ ঋছি রঁদনৈত সময ঋা পবিস্থিতি মধ্য ওহনে সোচক সামংজস্য। জে স্থাপিত সমীক্ষক ছথি সে দূ তীন দশক পছাতিক নজবিযে বচনাকেঁ দেখরাঁক প্রযাস কবতাহ। হ্নকা ঐ মে ভহ সকৈএ কিছ নৈ দেখাগন। কাবণ জে ও সভ কথাক জগ মূনকেঁ দেখৈত ভোগৈত এনাহ ঋছি রিহনি কথা ওগসঁ উঁপবক সোচ ঋা ফবাক শৈনীমে ঋছি। একব সহ ঋা পূর্ণ গাত তহিযা ফবিছাএন জহিযা মঠাধীশ সমীক্ষক সবঁহক সোচ ওগ কথা, ওকব প্রাচীন চবিত্র মধ্য সন্হিযা রৈঁসি গেন। সমাজক একটা সমস্যা মঁহগাগ উঁদাহবণ স্বরূপ সনাতনী ঋা চিবাহ ঋছি। গু কহিযো খমে হোগবঁনা চীজ নৈ ঋছি। ক্ষদা তৈযো একব চবিত্র ঋা চেহবা সীঢ় ী দব সীঢ় ী রঁদনৈত বহৈএ। ঋা ওগ সংগ ওগ মঁহগাগক প্রতিফন সেহো ওহিনা রঁদনৈত নজবি ঋরৈঁএ। যথা যাত্রীজীক করিতামে রর্ণিত মঁহগাগ সাহিত্যমে চর্চিত ঋছি। ঋাগ ওহেন কোনো নর ঠোস বচনা মঁহগাগপব

नै अछि। तहियो लोक भूखे मरैत छल, पेटे काटि कऽ जिबैत छल। गद्दैली ओढ़ि सर्दी कटै छल। आजुक मँहगाग मध्य कियो भूखे नै मरैए। आ सामान्यो रक्षाक लोक कम्मल ओढ़ि आ हीटर जरा सर्दी बितबैए। की ऐ फर्क सनातनी समीक्षक हविक्षेपेंमे सफल भऽ सकताह ? किन्नहुँ नै। किएक तँ अग वँदलल स्थितिपर ध्यान देबाक पलखति कहाँ छनि। ओ तँ प्रतिक्षा करै छथि रचनाकारकेँ जुएबाक, रचना चाहे खिज्जा बहि जाउँ।

कथासँ जुड़ल लोक विहनि कथा मादे विचार कऽ सकैत छलाह। मुदा हुनकर सभक दृष्टि 'विहनि कथा'क प्रति हविक्ष नै छनि, उँदाहरणतः रंगकर्मी कुणाल, जे नाटकक संभ्रान्त, परिपक्व ज्ञाता छथि ओहो कथापर लिखबा काल विहनि कथाकेँ अस्तित्वहीन कहि देबा दै छथि। मायानन्द मिश्र मैथिली कथा धाराक मजगूत खाम्ह छथि, ओ लघुकथा (विहनि कथा)केँ चुट्कुलाक संज्ञा देलनि। माया बाबूक सोच समीचीन अछि किएक तँ ओ जइ दशकक सोचक लोक छथि तइमे लघुकथा (विहनि कथा) विद्या हवीक्ष नै छल। तेँ हुनको ऐ प्रति दृष्टि हवीक्ष नै हएब स्वाभाविक। ओ कथा विकासक आलेखमे लघुकथा (विहनि कथा)क चर्चे केलन्हि सएह बहुत अछि। [मैथिली कथाक विकास नामक आलेख, साहित्य अकादमी दिल्ली सँ प्रकाशित पोथी –'मैथिली कथाक विकास'– सं. वासुकी नाथ झा, २००३].

विहनि कथा वा कथाकारक मूल्यांकन हेतु विहनि कथाकार स्वयं ऐ दिशामे काज उठेबथि तँ सही मूल्यांकन संभव भऽ पाओत। मैथिली समीक्षाक एकटा कमजोर तत्व ईहो रहल जे ओ रचनामेक दृष्टियेँ सड़क छाप होइत

छथि। ह्रविछेत्रॉक ओ जे ओ अपन गुणगान मात्रा सुनए चाहै छथि। आलोचनामे कमी नै रहए रहए हेतॉक चाही। जँ समीक्षक द्वारा हुनकर रचनामेक दोष वा कमीकेँ उघारि सभक सोझाँ कए देल गेल तँ समीक्षक भए गेला हुनक कट्टर दुश्मन। आ तकर पछाति हुनका, रचनाकारक झुंडे, अज्ञानी, उद्दण्ड, स्वार्थी आदि संज्ञासँ जानल जाएत। ओहो सोनह आना सत्‌ अछि जे मैथिली समीक्षामे किछु गोटे प्रतिनिधिसँ पहिने व्यक्तित्वकेँ प्राथमिकता दए समीक्षा लिखि रहल छथि। तँ जा धरि रचनाकारमे आलोचनामेक विचार वा कमी सहतॉक सामर्थ्य नै हएत, स्वस्थ्य आलोचना कतए सँ हैत आग पसारि सकत वा अपन वैसकीपर वैसि आराम कए सकत ? ओहुने किछु रचनाकार सभ द्वारा समीक्षाकेँ ओनि सधेतॉक सूत्रक रूप सेहो ठाम-ठीम प्रयुक्त होइत देखाइत रहल अछि।

आजुक विहनि कथा पहिने हिन्दी भाषासँ उधारी लेल शब्द ‘लघुकथा’ नामे लिखाइत रहल। अखन धरिक मौखिक जनतबे अनुसारे लघुकथा शब्द प्रयोगे छपल पहिल कथा १९६+ मे मिथिला मिहिर मे कान्ती झमार दास लिखित ‘बुड़ि बॅक रव’ छल। आइसँ पहिने छोटे कथा, कटैपीस कथा, मिनी कथा, फिलर कथा........आदि नामे ओ छपैत रहल छल। एकर पछाति जे रचनाकार विहनि कथामे सक्रिय भेला ओ नाम अछि- डॉ हंसराज, ए. सी. दीपक, तकर पछाति लिली रे, राजमोहन झा, एम. मणिकान्त, अमरनाथ, रामलोचन ठाकुर आदि। आइ नाममे सँ बेशी गोटे विहनि कथा लिखतॉक प्रयोगधर्मिता मात्रक निर्वहन केलनि। हँ एम. मणिकान्त मिथिला मिहिरक माध्यमे कतेको वर्ष धरि विहनि कथा लेखनक नियमितता

ৰনৌনে বহনা। হ্মদা দ্খদ রা হাস্যাস্পদ ৰাঁত ঙা জে রত্তিমানমে হ্নক একো টা বচনা ঙঁপনৰ্ব্ধ নৈ খছি। ডা. হংসবাজ জী ক মৈথিনীক পহিন রিহনি কথা সংগ্রহ ‘জে কী নে সে’ (প্রকাশিত ১৯৭২ ঙা.) মৈথিনী রিহনি কথা পেটাবক পহিন সনেস কগন জা সকৈএ। ঐমে হাস্য ব্যংগ্যসঁ ভবন নঘ্কাযক হ্মন ২৩ গোট রিহনি কথা সংগ্রহিত খছি। পন্নাপব খংকিত রর্ষক খধাবে একব সভ বচনা ১৯৬৩ সঁ ১৯৭২ মধ্য নিখন বচনা খছি। একব কথা সভ তকোনীন বাজনৈতিক সামাজিক হ্মব্যরস্থাপব চোট কবৈত নিখন গেন খছি। কিছু বচনা খাগযো প্রাসংগিক খছি। হংসবাজ নিশ্চিত রূপসঁ রিহনি কথা খান্দাননক রীযা ৰাঁউগ কেননি খা তেঁ খাগ রিহনি কথাক গাছ যমগৈগব হোগত দেখাগএ।

কিছুএ রর্ষ পছাতি হিনকব খগিনা পীঢ়ী ক শ্রী খমবনাথ খপন ‘হ্মণিকা’ রিহনি কথা সংগ্রহ প্রস্তুত কেনন্হি (রর্ষ ১৯৭৩ ঙা. পুর্নপ্রকাশন ২০১১ ঙা.) খা একবা এক সীঢ়ী খাওব ঙঁপব নঃ জেৰাঁক ঠোস প্রযাস কেননি। ঐ সংগ্রহক কথা সভ খনীন জিব্রাঁনক কথাক নগীচ ৰ্ন্যাগএ খা সভ রিন্দুকেঁ ছুবৈত বচনা কএন গেন ৰ্ন্যাগএ। একব খধিকাংশ বচনা খাগযোক সমযসঁ মেন খাগত ৰ্ন্যাগএ। হ্মদা নেখকসঁ দূবভাষিক রার্তানাপক খনুসাব বাজহংস জকাঁ হিনকো কোনো বচনা তকোনীন পত্রিকামে প্রকাশিত নৈ ভঃ সোনে সংগ্রহিত খছি।

রর্ষ ১৯৭৩ রিহনি কথাক স্বর্ণিম শুরূখাত রর্ষক রূপমে দেখাব ভেন ৰ্ন্যাগএ জখন ‘মিথিনা মিহিব’ (পাক্ষিক) খপন রিহনি কথা রিশেষাংক (নঘ্ কথা রিশেষাংক নামসঁ) নিকাননি মোকাম তঁ নৈ হ্মদা ৰাঁট খরশ্য দেখাব কেনক। ঙা সাহসিক কাজ ভেন করিক দ্বাবা ঐ নর রিধাক

लेल। मिथिला मिहिरक अंग विशेषांकक समय सम्पादक छलाह आदरणीय भीमनाथ झा। ओना ओ 'अन्हरिया गाए विषयेलै ओ सभ डारा लऽ कऽ दौड़ल' वला कहारत चरितार्थ होइत देखाएल। फेर २३ वर्ख बीति गेल। अएब ! बाँझ गाए गाभिन ओ भेलैं कएल.....।

कथाकारक नर्त्तक स्वप्नब पकड़ि बखनिहार श्री विभूति आनन्द जी जेरी पत्रिका 'क्रश' क नरम अंक वर्ष-१९७+ मे पत्रिकाक गातक अन्नसाब छओ गोटे विहनि कथाक समारेश कऽ निकाललनि विहनि कथा विशेषांक (लघुकथांक विशेषांक नामसँ)। अही वर्ष १९७+ जनागमे साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा कथापर आयोजित सेमिनारमे परिचित कथाकार श्री रामदेव झा, कथापर प्रसंगे विहनि (लघु) कथाकेँ शामिल कऽ एक अनुच्छेद निखि एकर विशिष्ठता जतौने छलाह। जइमे विहनि (लघु) कथाक वैश्विक पटलपर अलील जित्र्रानक चर्चा आ तुलना एवं मैथिली विहनि (लघु) कथाकार मे सँ अमरनाथ जीक योगदानक चर्चा कएने छलाह।

आठम दशक विहनि कथाक संगोरसँ रचित रहल। ऐदा ओ विहनि कथा निखनिहारक एक टा पौध हेँज तैयार केलक, जइमे प्रमुख नाम अछि- विभूति आनन्द, शैलेन्द्र आनन्द, श्रीराज, प्रेमकान्त झा, वैकुण्ठ झा, देवशंकर नवीन, प्रदीप विहारी, तारानन्द्र वियोगी, चन्द्रेश्वर खाँ आदि। ओ समूह रचनाक दृष्टियेँ नव आँ ाखि पाँखिवला छल। साम्यवादी विचारसँ प्रभावित ऐदा आपत कालक दुर्दशासँ प्रेरित आ पीड़ित। विहनि कथाक पहिल संग्रह १९७२ मे बहराएल दोसर १९७३ ई. मे आ तकर पछाति अकाल ! किएक ? २२ वर्षक एहेन खालीपन विहनि कथाक इतिहासकेँ ठमकि जेबाक लेल

बाँध्य केलक। एकर बाँधक छला तकोनीन संपादक, सरकारी आ निजी समिति-संस्था आ प्रकाशक। सदा तहुँसँ बेसी जिम्मेदार ऐ पीढ़ीक रचनाकार छला जे अपनाकेँ दून् विधापर कलम चला भरमा लेलनि वा गप्पक ऐ प्रकारक उत्सव देखि डरि कऽ अपनाकेँ कतिया लेलनि। अग पीढ़ीक कतिपय रचनाकार ऐ विहनि कथा विधाक वाशि नरका रचनाकार सभकेँ पकड़ा निश्चिन्त भऽ स्वस्थाएं लगलाह। कारण छल जे एकर स्वविकासन रूप मध्य अपन अस्तित्व वा कोनो लाभक जोगार वा प्रतिष्ठा नै लजरि एलनि। अही बीच आएल तन्त्रनाथ झा समग्र, ओइमे सेहो किछु विहनि कथा संकलित अछि।
मैथिली साहित्यक जिवात मध्य विहनिकथाक प्रसंस्कृत बीया नव रूपे बाँउग केलनि अग पीढ़ीक नवतुरिया। जइमे नाम छल ज्योति सुनीत चौधरी, दुर्गानन्द मंडल, कपिलेश्वर राउत, धीरेन्द्र कुमार, राजदेव मंडल, बेचन ठाकुर, राम प्रवेश मंडल, भारत भूषण झा, मानेश्वर मनुज, उमेश मण्डल, जगदीश प्रसाद मण्डल (बाल विहनि कथा संग किछु स्वन्दर विहनि कथा जेना थल-कमल/ घरडीह/ खाता-खेसरा/ सर्वूत/ कौआक मैलजल), रामभूषण मण्डल 'छोट्टू', परमेश्वर कापड़ि, रघुनाथ मुखिया, ऋषि वशिष्ठ, शिव कुमार झा "टिल्लू", मिथिलेश कुमार झा, सत्येन्द्र कुमार झा, नवनीत कुमार झा, कौशल कुमार, अनमोल झा, कुमार मनोज कश्यप, विनीत उत्पल, धनाकर ठाकुर, आशीष अनचिन्हार, सतीश चन्द्र झा, गजेन्द्र ठाकुर, भवनाथ भवन, राम विलास साहु, मुन्नी कामत, शंभु कुमार सिंह, संजय कुमार मंडल, मिथिलेश मंडल, लक्ष्मी दास, अमित मिश्र,

जगदानन्द झा 'मनु', चन्दन झा, ओमप्रकाश झा, सन्दीप कुमार साफी, जगदीश लाल कश्यप, मिहिर झा, रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदार, प्रेमचन्द्र पंकज, अखिलेश मंडल, अमलेन्दु शेखर पाठक, मधुकर भारद्वाज, श्रीधरम, देवेन्द्र झा, सच्चिदानन्द सच्चु, मिथिलेश कुमार झा, कुमार राहुल, दिलीप कुमार झा "लूटन", मुन्नाजी आदिक। ऐ पीढ़ीक समूह द्वारा विहनिकथा पर धुरझार काज भेल। अइ ठामसँ असली फरिछौट भेल विहनि कथाक। आ हिन्दीक उधारी शब्द लघुकथा सँ विलग खाँटी शब्द- विहनिकथा स्थापित भेल।

बीसम सदीक अन्तिम दशकक पहिल काज भेल स्व. ए. सी. दीपक जी द्वारा 'विविध विहनि (लघु) कथा विशेषांक (मार्च-१९९४ मे)। तकरा पछाति लगका पीढ़ी सेहो काल्हुपर बीड़ा उठेलक आ शुरू भेल वैश्विक बदलल सामाजिक परिदृश्य, तकनीकीय भेल नव-नव क्रान्तिक संग जनमल नव अवधरणाक संग विहनि कथा लेल नव-नव काज।

१९७३ ई.मे आएल 'क्षणिका' क दू दशक बाद १९९३ ई. केँ विहनि कथाक स्मृतिवर्ष कहि सकैत छी। २० फरवरी १९९३ केँ मुन्नाजी एवं मलयनाथक संयोजनमे हटाढ़ रूपौली, मधुबनीमे आयोजित भेल विहनि कथा गोष्ठी, जकर अध्यक्षता केलनि पं यन्त्रनाथ मिश्र आ एकर मंच संचालन कुमार राहुल द्वारा भेल। ऐ अवसरपर उपस्थित विहनि कथा पाठ केनिहार छलाह- भवनाथ भवन, मलयनाथ मण्डन, प्रेमचन्द्र पंकज, मुन्नाजी, शैलेन्द्र आनन्द, प्रभु कुमार मंडल, मतिनाथ मिश्र, उमाशंकर पाठक, श्यामाचन्द्र ठाकुर, कुमार राहुल, मीरा कर्ण, ललन प्रसाद, सुनील कर्ण, सच्चिदानन्द सच्चु एवं

कवणजी। पढ़ल गेल बचना सभपव समीक्षीय टिप्पणीकाव छलाह– शैलेन्द्र आनन्द, रमानन्द झा 'रमण', भरनाथ भरन एवं प्रेमचन्द्र पंकज। ऐमवा जनतरेँ रिहनि कथाक ई पहिल गोष्ठी छल। ३ मार्च १९९३ केँ सहयात्री मंच लोहना, मधुबनी द्वावा रमानन्द झा 'रमण'क रिहनि कथा 'नामवद' क एकल पाठ आ ओग पव 'वँहस' क आयोजन कएल गेल। ओगमे प्रमुख रिचावक छलाह– श्रीवाज, शैलेन्द्र आनन्द, रिजयानन्द मीवा, भरनाथ भरन एवं प्रेमचन्द्र पंकज। ऐमवा जनतरेँ रिहनि कथा आ कथाकावपव एहेन 'वँहस' केव ई पहिल आयोजन छल। जुलाइ १९९३ मे कानपुव सँ वँहवागत नरतुरिया त्रैमासिक पत्रिकाक रिहनि कथा रिशेषांक आएल, संपादक छलाह– प्रेमकान्त झा एवं रैकुण्ठ झा। ओगमे १९ गोटैक ऐन १९ गोटे रिहनि कथाक समायोजन छल, आ ओग रिहनि कथा रिधाक हविश्टौटे कइ एकवा नर दिशा देखेबाक प्रयास कवैत रमानन्द झा 'रमण'क आलेख अछि, जे कि कोनो रिहनि कथा रिशेषांकमे ऐ तवहक पहिल आलेख थिक। अही दशकमे प्रावम्भ भेल कथा गोष्ठी सेहो रिहनि कथाक वाँटे वँलेबा रा हविश्टेबामे उत्प्रेवकक काज कवैत बहल। कथा गोष्ठीक जुलाइ १९९७ क महिषीक आयोजनमे एके संग दु गोटे पोथीक लोकार्पण भेल, 'खंड–खंड जिनगी' (प्रदीप रिहावी) आ 'शिलालेख' (तावानन्द रियोगी, जइमे ऐन ३३ गोटे बचना संकलित भेल अछि)।

२१म सदीमे समय आ पविस्थितिकेँ अकानैत सभ बचनाकाव खुलि कइ रिहनिकथा दिस उन्मुख छथि। पत्रिकाक संपादक सभ किछु कोना ओग लेल समर्पित कवइ लगलाह। ओग नर सदीक नर सोचक पहिल

विहनि कथा संग्रह आयल– 'बर्फमानुष' (२००२ ई.), एकर रचनाकार श्री वैकुण्ठ झा जी अपन ३६ गोट रचना लऽ ऐ विधाकेँ बाँटि देखेबाक ठोस प्रयास केलन्हि। एकर बाद तँ संग्रहक झड़ी लागि गेल बुझू। अगिला संगोर हिन्दी मैथिलीक संयुक्त रचनाकार विहनिक कथाक दिशावाहक श्री देवेशंकर नवीन जी अपना कथा संग्रह– 'हाथी चलय बजार' (२००४ ई. मे ३१ गोटे विहनि कथाक संगोर) संग उपस्थिति दर्ज करौलनि। तँ २००३ ई. मे प्रवास लोचक ठोस कथाकार श्री मनमोहन झा जी अपन विहनि कथाक संगोर, मिथिलाक विभूति मे' आनि एकरा एक डेग आओर आगाँ बढ़ेबाक प्रयास कएलनि। एकर आमुखमे श्री विजय मिश्र जी एकरा गद्य काव्यक संज्ञा देलनि अछि। वास्तविक रूपेँ तँ गद्य काव्य, काव्यक गद्यात्मक शैली थिक। ई तेँ सत्य अछि जे विहनि कथा गद्य वहि कविताक पूर्णतः लगीच मानल जाइए। जदा अहमे संकलित २४ गोटे रचना विहनि कथे थिक, आन किछु नै। वर्ष २००७ मे "अर्गीकेँ कहै छी" (सतेन्द्र कुमार झाक ३१ गोटे विहनि कथाक संग्रह) आएल। ई संग्रह विहनि कथाक प्रति पूर्ण सोझराएल आ दृष्टि रूपीछ रचना सरहक संगोर थिक। युवा पीढ़ीक बहुविध, प्रतिभा संपन्न लेखक ओ संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुर अपन रचना समग्र– कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक– मे लघुकथाक संग १६ गोट ठोस आ कथ्य ओ शिल्पगतेँ रूविछाएल विहनि कथा आनि विहनिकथा संसारमे श्रीवृद्धि केलनि अछि। अखन धरि एक लिखे चलैत विहनि कथाक लिख सँ हटि २०१० ई. मे श्री जगदीश मण्डल जी सभसँ गतर बाँन मनोवैज्ञानिक विहनि कथा संग्रह 'तरेगन' क संग आन रचनाकार केँ

सम्मानित केलनि। २१ म सदीक पहिल दशकक अन्तिम चरणमे मैथिली ओ पाक्षिक 'विदेह' अछि विहनि कथाक नव इतिहास लिखबा वा बनेबामे अग्रणी मानल जाएत। अपन ७१म अंक विहनि कथा समायोजनमे देशी आ विदेशी ठोस रचनाक संयोग, एवं अहि विहनि कथाक शास्त्रीय विवेचन कइ अएना स्वरूप झलका एकर बाटकेँ मोकामक लगीच अनबामे ओ पूर्णतः सफल भेल अछि। अहि अंकमे कुल ३२ रचनाकारक ७९ गोटे रचना अहि विधाकेँ पूर्णतः हरियाणा, सभक सोझाँ अनबामे सौ प्रतिशत सक्षम भइ देखाब भेल अछि। संपादकक अनावेँ एकर सफलताक श्रेय छन्हि अहि अंकक अतिथि संपादक–मुन्नाजीकेँ। मुन्नाजी जी बड़ गम्भीरता पूर्वक सभक समायोजन एवं अपन आनेखेँ दोसरो रचनाक्रमेक प्रवृत्तिकेँ हरियाणाक सफल प्रयास केलनि अछि।
लगभग दू दशकसँ अहि विधामे रचनामेक उपस्थिति दर्ज करबैत रहलाह, आ परिणाम "समय साक्षी थिक" २०११ मे आएल, ओ संग्रह श्री अनमोल झा जीक कुल १३० रचनाक अपन जिनगीक भोगल यथार्थिक अएना थिक। २०१२ मे "टेक्नलजी" (अनमोल झा) एवं "टीस" (मिथिलेश झा) संग्रह सेहो विहनि कथाक बखारी भरबामे समर्थ बुझना जाइछ। अनमोल जीक १४९ रचनाक संग्रह सनातनी यथार्थ परसैए। ततै मिथिलेश झा जीक 'टीस' क ४३ गोटे रचना पाठकक मानसिकताकेँ झंकृत करैए। जे कि विहनि कथाक थाती वा धरोहर सदृश अनुभव करैए।
१० दिसम्बर २०११केँ 'सगर राति दीप जरय'क ७३म कथा गोष्ठी्क आयोजन पटनामे कएल गेल, ऐ अवसरपर मुन्नाजी द्वारा मैथिलीक पहिल विहनि कथा

পোস্টৰ প্ৰদৰ্শনী কএল গেল ছল।
ঐ তৰহেঁ বিহনি কথা সংসাৰক পৰিদৃশ্য পূৰ্ণতঃ ভৰল পূৰল ভঽ গেল অছি। আগ সভ দিন কিযো নে কিযো স্বাভাৱিক ৰূপেঁ জুড়ি অপন যোগদান দৈত একৰা মোকামক ড্যাঢ়ি পৰ আনি পঠ খুনৰাক প্ৰতিক্ৰমে ঠাঢ় দেখাগত ছথি। মোকাম ভেটি গেলৌ তঁ ঘৰ পৈসমে সময নৌ লগতে।

<u>অন্যকো ক্ষণকেঁ অংগীকাৰ কৰৈছ "ক্ষণিকা"</u>

বিহনি কথাক নীৰক পহিল ঠোস খাম্হ ৰঁনি সোন্মা আএল "ক্ষণিকা" পৈতীস ৰৰ্খ ৰাদ পুনৰ্প্ৰকাশিত অপনামে সমেঠলে তীস গোঠ বিহনি কথা (লঘুকথা)ক সংগোৰ অছি। ঐ মে প্ৰকাশিত অধিকাংশি কথা অপনা গাত আ বিহনি কথাক শিল্পাঁ আগযো প্ৰাসংগিক আওৰ বিৰৰণীয অছি।
ঐমে প্ৰকাশিত কথাক নীৰ আগসঁ চাৰি দশক পহিলে

श्री अमरनाथजी द्वारा तहिया बाजल गेल जहिया कि मैथिलीमे विहनि कथाक स्थिति द्वितीयाक चान जेकाँ छल। आन गद्य विधाक एक प्रकारेँ अविछा गेल विहनि कथाक तहिया शैशवावस्था छल। शैशवो केहेन तँ जेना कहियो अप्पन समाजमे वेटीकेँ सोगवीयेमे नोन चटा अस्तित्वकेँ मेटा देबाक सोच व्याप्त छलै।
आगसँ चारि दशक पहिनेसँ आजुक सामाजिक परिवेशक तुलनामेक स्थिति देखी तँ तहिया अमावश आ आग पूर्णिमा सन देखाएत। तहियाक समग्र स्थितिक ठाम-ठीम चित्रण ऐ संगोरक कथा सभमे स्पष्ट देखाइछ। मुदा किछु सोच किछु प्रवीतिक तहियाक चित्रण आगयो प्रासंगिक नगैछ जेनाकि "पपीहा" शीर्षक कथामे वृद्ध ा-वृद्ध ाक दुर्दशाकेँ बेटा-पुतौहक सेवासँ निवाशि भऽ स्वयं जीबाक नेन बाँट तकैत ओ वृद्ध्वग दम्पत्तिक मानसिक चेतनाक शिकाव अन्नको वृद्धजनक दुर्दशाकेँ आलोकित करैए। ओना समाजक सभ व्यक्ति एके रंग अवचेतन नै होइछ जे तहियो छल आ आगयो अछि। आगयो ऐमे प्रकाशित कथा- "नानटैम"मे चित्रण जुआ जकाँ हावन जुआनीसँ वृद्ध भेल पिता जखन अपन आश्रय तकैत छथि तँ अपने विमोहित घवकेँ घुवि अवैत छथि। ओ चेतना अन्नको किछु धिया-पुतामे धावन उँसावन बाजल भेटैत, पूर्णतः मृगल नै।
धनिक गवीबक फाँट तँ सभ दिन वहलैए आ ओ अमव अछि। चाहे वैज्ञानिक तकनीकी दृष्टियेँ संसाव कतबो बदलि जाए। ऐ संगोरक श्रेष्ठ कथामे सँ एक "माटि पानि" साहेबेँ सभ गवीबकेँ हेटै कऽ बखैत छथि। हुनक ऐय्यासी, सामाजिक परिवर्तन हुनक संवेदनाकेँ सेहो स्वखवैत जा वहल अछि। मुदा एकटा गवीबेँ

एहेन अछि जे सभ संकटक घड़ीमे सारेंकेँ जिनगीक पर्टीपर नइ आनि आगू बढ़बाक बस्ता देखबैछ। उपरोक्त कथा सभकेँ पढ़लोपरान्त अहाँकेँ ई भान अवश्य होएत जे विहनि कथा, जे आइसँ चारि दशक पूर्व मैथिलीयोमे आने भाषाक लघुकथाक समकक्ष अपन भूमिका गढ़बामे समर्थ भेल छल। ऐ "क्षणिका" नामक विहनि कथा संग्रहकेँ प्रकाशित करबाक दुस्साहस अमरनाथजी देखौलनि जे आजुक विहनि कथाक बाटक हेतु मीलक पाथर साबित भइ रहल अछि।
चारि दशक पहिने अमरनाथजीक संग्रह अवश्य सोझाँ आएल। मुदा ऐ विहनि कथाक ओ एसगर लेखक नै छलाह। ओही समएमे एहने निश्शन "विहनि कथा" मिथिला मिहिरक माध्यमे नियमित सोझाँ अबैत रहल, ओइ रचनाकारक नाम छल एम. मणिकान्त। मुदा ई दुनू गोटे विहनि कथाक हलकपर नै जानि कतइ हेरा गेला। "विदेह" पाक्षिक ई पत्रिकाक ६०म अंक "जे विहनि कथा विशेषांक" छल तइमे विषयवस्तुजन्य व्यक्ति आ रचना जुटेबाक क्रममे भाइ अनमोल झाक माध्यमे संपर्के जुड़लहुँ ऐ रचनाकारसँ जे आइयो ओही उद्भावक संग अपन चारि गोटे टटका रचना पठा ऐ संग्रहसँ एक डेग आओर आगाँ बढ़ा विहनि कथाकेँ मजगूत करबामे सार्थक सहयोग केलनि। एम. मणिकान्त एखनो हेराएले छथि...।
ई रचनाकार घराकानमे जँ जोशे किछु निश्शन रचना सभ देलनि, चारि दशक बादो आजुक रचनाकार सभ ओतै केन्द्रित भइ रचना करैत देखाइत छथि, जेना देखू "शान्ति" शीर्षक कथाकेँ। लोक जीवन जीबाक लेल जीवनमे शान्ति पेबाक लेल भागादौड़ीमे लागल सम्पूर्ण

জিনগীকেঁ অশান্ত বনা দেনে অছি। আ জীবন ভরি কতৌ শান্তি নৈ ভেটৈ পবৈ ছৈ, জঁ শান্তিক দর্শন হোগত ছৈক তঁ জিনগী শান্ত ভেনাক পছাতিযে জে আগযো সগবো ওএহ স্থিতি ব্যাপ্ত অছি।
উপবোক্ত ঠোস বচনাক পছাতি ঐ সংগ্রহকেঁ আওব মজগুত আধাব দৈএ স্বমনজী দ্বাবা লিখল গেল আম্খমে সোদাহবণ প্রস্তুত কএল গেল খলীল জিব্রানকেঁ। সহ লঘুকথাকেঁ খলীল দ্বাবা এক-এক বিন্দুপব দেখাব কবৈত জিনগীক সহকেঁ সোঝাঁ অললাসঁ সাহিত্, সামাজিক আ বাজনীতিক পবিবেশমে খলবনী মচি গেল বহৈ। জকব কোনাহল বা প্রাসংগিকতা আগযো বাঁচল অছি আ সদা অমব বহত।
মৈথিলী বিহনি কথাক ঐ পহিল সংগ্রহক দোসব প্রস্তুতি আগযো সমীচীন ভৈ ঐ সাহিত্যিক বিধাকেঁ এক প্রকাবসঁ আগাঁ বঢ়বৌ লেল উৎপ্রেবকক কাজ কবত।

<u>অনমোল ক্ষাক সমযকেঁ সাক্ষী বাখি .... !</u>

বিহনি কথা (লঘু কথা) মানে বীজ কথা।

ওা কথা, একটা রীযাক সমান অছি। জেনা কোনো রীযামে একটা গাছ হেরৌাক সমগ্র গুণ রিদ্যমান হোগছ তহিনা রিহনি কথা অপনামে একটা সংপূর্ণ কথাক সমগ্রতা সমেটনে বহৈছ। মৈথিনী কথাক কিছ রৌানগীকেঁ রিনগা দেন জাএ তঁ ওকব স্তব অন্যান্য কথা সাহিত্যক স্তবক সোন্নাঁ খসন রুন্নাএত । হ্মদা গদ্য রিধাক এক প্রতিরূপ রিহনি কথাক রর্তমান পবিদৃশ্য রৈশ্বিক স্তবক সমকক্ষ আরি ঠাঢ় অছি। এনা মাত্র তুননামেক রূপেঁ অছি। কিএক তঁ এখন ওা অপন সহজতাকেঁ এক সীমা মাত্রমে সমেটনে সংকুচিত অছি। মৈথিনী সাহিত্য মধ্য কথা জেনা আন ভাষাক কথাক তুননামে অরৌবসঁ অপন অস্তিত্ব পৌনক, ওগসঁ দুর্নভ স্থিতি রিহনি কথাক অছি। অন্যান্য ভাষাক নঘু-কথা সেহো প্রাবংভ মে মৈথিনী রিহনি-কথা জকাঁ একপেড়া যা রৌাট ধহ আগাঁ রৌঢ়ন হ্মদা ওগ সভ ভাষাক সবকাবী গৈব সবকাবী সংস্থা, প্রকাশিক এরং বচনাকাবক সমগ্র রৌন একবা অপন হ্ফবাক নাম আ অস্তিত্ব দহ হ্ফবিছেরৌামে সংগ দেনক, তকবে পবিণাম স্বরূপ রৌাংগ্লামে "এ মিনিটৈব কথা", পংজারীমে "মিন্নী কথা" আদি নামে ওা জানন জাএ নাগন। হ্মদা রিহনি কথা আগযো ডুব্বা পানি মধ্য ডঁগি ডুরি বহন অছি, সাহিত্য অকাদমী (দিল্লী), মৈথিনী-ভোজপুবী অকাদমী (দিল্লী সবকাব), সী.আগ.আগ.এন. মৈসূব রা অন্যান্য সংস্থা রা ঐপব পনথী মাবি রৌসন মহংথ সভ একব প্রকাশিন , সেমিনাব আযোজন রা ঐ মাদে স্বতংত্র ক্রিযা-কনাপক পক্ষেঁ আগ ধবি সোন্নাঁ নৌ আরি সকনাহ। কিছ ভাষাক নঘুকথামে স্বতংত্র শোধ সেহো শ্বরূ ভেন অছি। মৈথিনীযো অগমে পছআএন নৌ অছি। জকব শ্রেয অহী বচনাকাবকেঁ জাগছ। পবতী-

পর্বত সন পড়ল জমীনকেঁ অপন সর্বস্ব ঊর্জা স্রোতেঁ উপজা হরিযরী আনৈত ঈ রচনাকারক প্রত্যেক রচনা বিহনি কথাকেঁ বিলগা কऽ স্থান দিযাওত। সমুদ্রমে হথোরিযা দেলেঁ তঁ প্রাযঃ ক্ষড্ডীমে পানিযে টা আওত। ওহো শব্দ বা সাফ নৈ মাটিওসঁ লেপটাএল সন। মৈথিলীক গদ্য বিধাক একটা প্রকার বিহনি-কথাক স্থিতি সেহো এহনাহেঁ জকাঁ রহল অছি। মৈথিলীক গদ্য সংসারমে বিহনি-কথা সেহো এহি মধ্য লহরিক বীচ-বীচমে উগৈত ডুবৈত রহল। কিছু রচনাকার সভ অপন লেখনীসঁ ডুবকী লগেবাক প্রযাসো করৈত রহলাহ। পরন্তু ও ওগ লহরিকেঁ সহবাক সামর্থ্য নৈ রাখি লহরিক সংগ বিলাগত গেলাহ। এহেন দুরূহ পরিস্থিতি মধ্য জে লেখক সভ কিছু সহৈত অপন সর্বস্ব রচনা শক্তিক ঊর্জা এহিমে লগবৈত রহলাহ ও ছথি শ্রী অনমোল ঝা।

শ্রী ঝা " সময সাক্ষী থিক", অপন পহিল বিহনি-কথা সংগ্রহ লऽ সোঝাঁ এলাহ অছি। ঈ সংগ্রহমে সভ কথা তঁ সমযান্তর অনুরূপ রচনা-সংযোজন কএল গেল অছি জে হিনক কএক দশকক ভোগল যথার্থক পরিণাম থিক। ঈ সংগ্রহ মধ্য সমাজক গম্ভীর হোইত পরিস্থিতিকেঁ উজাগর কেলনি অছি। এহিমে ক্ষণ-ক্ষণ ঘটৈত সামাজিক ঘটনা, ওকর অধলাহ অসরিকেঁ মহীন গঢ়নিসঁ উজাগর করবামে সক্ষম ভেলাহ অছি। এহিমে প্রকাশিত অধিকাংশ রচনা সভমে সামাজিক মূল্যক অবমূল্যন, সংবংধক দোহন, তকনীকী পরিবর্তনসঁ প্রভাবিত হোইত সামাজিক অস্তিত্বক স্পন্দন চিত্রণ পরিলক্ষিত হোইছ। এহিমে সজীব ভেল অধিকাংশ রচনাক ধারদার সমাযোজন হিনক বিহনি-কথা উদ্দেশ্যকেঁ সোঝাঁ অনবামে সক্ষম বুঝাইত অছি। কিছু পারংপরিক কথানক আধারকেঁ সেহো নব-নব

पविरर्तन रा थाकननक संग जोड़ि देखरामे समर्थ भ्येन र्बुमना जाएछ ।



डा. बमण मा

फोंका–एक रिहगारनोकन

कार्य्य रैह थिक जे बसिकक ह्नदयके ँ बसाप्लारित कबय, गृहिणी रैह थिक जे थपन पतिके ँ थपन प्रेमपासमे जकबने बहय, भक्त रैह थिक जे भगरानके ँ थपन रषमे कयने बहय था षत्र् रैह थिक जे मबितो दमधबि षत्र्ता नहि छोड़ए। थबसिक रा गँराबके ँ करिता स्वनाके ँ की नाभ ? ते ँ ने संस्कृत साहित्यक प्रसिद्ध रिद्वान एरं महाकरि राणभट्ट कहने छथि–थबसिकस्तुथ् कार्य्य निरेदनं षिबसि मा निख ! मा निख ! मा निख ! !

रस्तुतः र्बानब नाबिकेबक स्वाद की र्बुमत ? गँराब बनेक महत्वके ँ की पबखत ? तहिना थबसिक किंरा गँराबके ँ जँ कोनो करिता स्वनयरैक तँ ओ थबण्यबोदने कहाओत, ह्मदाकि शीबपब ढ़ँरँढने नगायरँ होयत, स्थनपब कमन बोपरेँ सदृष कहाओत, ढ़ुँसब जमीनपब रैंस कान धबि रर्षा कबरेँ त्तन्य होयत, ह्मह्मबक नाडÛबिके ँ सोने कबरँ सदृष र्बुमाओत, र्बाहबक कानमे जपे कबरँ त्तन्य प्रतीत होयत थथरा थान्हबक थागाँमे दर्पणे बथराँ सन भान होयत–

थबण्य कदितं श्रुतं षरषबीबह्मद्वर्तितम्।
स्थनेमारोपितं स्वचिबमूसबे रर्षितम्। ।

স্বপ্বষ্ছমরনারিতং রধিবকর্ণ জাপঃ গ্নতো।
ধৃতোহ্বস্কখদর্পণঃ যদ্বধো জনঃ সেরিতঃ।।
(নিদর্ষনানংকাব)

জেনা ধনংজয নামক পাথবপব ঘসিকয সোনাক পবীক্ষা হোগত খছি, বণক্ষেত্রমে ধন্বর্ধবক পবীক্ষা হোগত খছি, রিপত্তিক সমযমে গৃহিণীক পবীক্ষা হোগত খছি খা শ্রীমদ্ভাগরতক খর্থ নগযরাঁমে পণ্ডিতক পবীক্ষা হোগত খছি–

ধনংজযে হাটক সম্পবীক্ষা বণাংগনা ষস্ত্রভৃতা পবীক্ষা।
রিপত্তিকানে গৃহিণী পবীক্ষা রিদ্যারতা ভাগরতে পবীক্ষা।।

তহিনা কার্যক পবীক্ষা কার্যষাস্ত্র রূপী কসৌটীপব কযন জাগত খছি। প্রাযঃ তথাকথিত নর করিতা নিখনিহাব করি নোকনি হমব এহি মতসঁ সহমত নহিযো হোযতাহ স্কদা রনস্পতি কতরোঁ শ্বস্ক বহয ও শ্বস্ক ঘীক সমতা নহি কএ সকৈত খছি।

রস্তুতঃ শ্রী কমনাকান্ত ঝাজীক ফোকা করিতা সংগ্রহ পঢ়া হমবা কার্যষাস্ত্রক খন্তস্খাত পঢ়ন শৈর্ষঙ্ক্তিক ভেদ– নক্ষণা–ব্যংজনাক স্মবণ কবাএ দৈত খছি। এহি ফোকামে স্কন ৪৭ গোটি করিতা সংগৃহীত খছি জাহিমে খধিকাংষ করিতামে সমাজক কোনো নে কোনো রিরূপতাপব প্রহাব কযন গেন খছি, পবষাসনক কোনো নে কোনো খংগপব নিষান সাধন গেন খছি খা নেতা নোকনিক ভ্রষ্ট চবিত্রকে ঁ জগজিযাব কযন গেন খছি– এক শৈর্ষমে জঁ কহী তহ চারুকাত পসবন ভ্রষ্টাচাবপব ব্যংগ্যরাণক রৌছাব কযন গেন খছি। জঁ এহি প্রকাবক খরঘাত খভিধামে কযন জায তঁ মাবি–পীট, পব–পঁচৈতী, কেস–মোকদমা সভ কিছু ভএ জাযত স্কদা

नक्षत्रा आ ग्यंजनाक रात्रिसँ बिद्ध नक्ष्य जानमे फँसल माछ सन छटपटाय लगैत अछि, आहुति यत होमक अग्नि जकाँ धधकि उठैत अछि आ चोटाओल नाग जकाँ फुफकार काटय लगैत अछि मुदा पलटैबाक नहि कए सकैत अछि। नक्षत्रा आ ग्यंजनाक रात्रि लोकके ँ कतोक दिन धरि भीतरे भीतर दग्ध करैत रहैत अछि जेना सम्पूर्ण गात्रपर क ड़कल तेल वा घीक पड़ने भेल फोका लोकके ँ कतोक दिन धरि कष्टबैत रहैत छैक।

कविश्रेष्ठ श्री कमलाकान्त झाजीक कवितामे कोन प्रकारक ग्यंग्य निहित अछि से हुनक पंक्तिक अवलोकन बिना कयने अनुभव करब असंभव अछि। हिनक परिचय-नरबले शीर्षकमे समाजक प्रसिद्ध लओ पेषाक लोकपर जे ग्यंग्य कयल गेल अछि ताहिमेसँ किछु द्रष्टब्य थिक-

डाक्टर-

वैद्य डाक्टर रैह थिक चिन्मय सभटा रोग।

अदनि - बँदनि ओषधि दिअए बाँचि सकए नहि लोग।।

कवि-

असली कवि थिक रैह जे कविता करए अनर्थ।

नाम-काफ रैसी होअए श्रोता बूझए ने अर्थ।।

अफसर-

अफसर बँड़का रैह थिक, जनिक वैध हो पेट।

नेट-सेट कखनो पहुँचि, काटथि अनकर घे ँट।।

गायक-

असली गायक रैह थिक, जकर वैध हो तान।

श्रोता सभ उठि हो बिदा, बँन्द होअए नहि गान।।

फोका-पृ. 40,41

कवि अपन कार्यमे सभसँ वैध निषान सधने छथि भ्रष्ट

नेता लोकनिपब। किछ पंक्तिक उल्लेख कबर्ब आवश्यक बुझि पड़ैत अछि-
बाजनीति हुनका लेल रबदान अछि
पिछले लोपड़ीमे बहैत छलाह
आग आलीषान मकान अछि।
पुनश्च-
ओ हस्ताक्षबक बदना
अँउठा लगबैत छथि
बाजनेता छथि तें
रिद्वान कहबैत छथि। फोंका -पृ. 51
बाजनेतापब व्यंग्य कबैत श्री झा मंत्रीजीकेँ फुकब धबि कहि देबामे नहि हिचकैत छथि। हिनकहि शब्दमे द्रष्टव्य थिक-
दिल्लीक अषोक पथपब मंत्रीक डेबासँ
एक फुकब
नालीमे स्वयं जा खसि पड़ल
हल्ला भेल
लोक दौड़ल
फुकबकेँ निकालल गेल
साबुन, तेल आ सेंट लगाओल गेल।
फुकबकेँ बैसा पुछल गेल
मंत्रीक आवासक सुख त्यागि
नालीमे बैब-बैब किएक ?
फुकब सहज भावसँ बाजल-
एक बंगलामे एकेटा फुकब नीक। फोंका पृ.-93
कवि भविष्यद्रष्टा होइत छथि, समाज सुधाबक होइत छथि आ सबसँ बैसी निर्भीक होइत छथि। हिनक निर्भीकताक पबाकाष्ठा निम्नांकित पंक्तिमे व्यंजित अछि-

মৈডমজী প্ৱছনিন
সবদাবজী
ত্থহাঁ যূ. পী. এ.ক ত্থর্থ জনৈত ছী–
ওহিমে হমব
কী হৈসিযত মানৈত ছী ?
সবদাবজী ৰজনাহ
মৈডম
যূ. পী. এ.ক মতনৰ সাফ ছৈ
এহিমে পী. এ. হম ছী
ৰাঁকী সভ যূ(ত্থহাঁ ছী) ফোকা–পৃ.–6
হিনক এহি করিতা সংগ্রহমে এহি প্রকাবক ৰ্যংগ্য সমাজক প্রত্যেক রস্থাপব ত্থছি জতয কতহু হিনকা ৰ্যভিচাব, ত্থনাচাব ত্থা ভ্রষ্ঠাচাবক ত্থনুভূতি হোগত ছনি।
হিনক করিতা সংগ্রহমে রত্রাক্তি(ত্থনংকাব)ক মাধ্যমে সামান্যা গপ্পকে ঁ তেনানে উঁপস্থাপিত কযন গেন ত্থছি জে স্বনিতহি এক ক্ষণক হেত্তু ত্থচংভিত ভএ জাএৰ, হৃদযমে গ্বদগ্বদী উঁঠত ত্থা হ্মহপব স্মিতহাস ত্থরষ্য টৈপকি পড়ত। ত্থরনোকনীয থিক–
একটা মিত্র পনীসঁ প্ৱছনথিন
স্বনৈছী ?
ত্তুনসীদাস কহনে ছথিন
'ঢ় ান গঁৱাব শূদ্র পশ্ন নাবী
ঞ সভ তাবণ কে ত্থধিকাবী'
ত্থর্থ ৰুঝৈ ছিযৈ কি ৰুঝাউঁ
পনী ৰজনথিন
একব ত্থর্থ তঁ একদম স্পষ্ঠ ছৈ
এহিমে হম ছী এক ঠাম
ত্থা ত্থহাঁ ছী চাবি ঠাম। ফোকা–পৃ.–44

শ্রী কমনাকান্ত ঝাজীক করিতা সংগ্রহমে জঁ কতহ্ শৃংগাবিকো রর্ণন ভেন খছি তহ ওতহ্ ব্যংগ্যক মাধ্যমসঁ। কনে এহি খংষপব দৃষ্ঠিপাত কযন জায–

ঞ্হ্ন র াঁসিক রিনতী কবৈত
রঁজনী ঘিঘিযা ক'
পূর্ণিমে নেষ্ঠ ঐন বহী
কম্পস্নষ্ঠ ক' দেরঁ
খবারঁ নৌ মানী তঁ
সাঁঝমে নেষ্ঠ ক' জৈরঁ। ফোকা–পৃ.–110

হিনক করিতা সভমে ঠাম–ঠাম খনংকাবক প্রযোগ সেহো ভেষ্টৈত খছি। এতয উঙপ্রেক্ষাক মানাক খরনোকন কযন জায–

তহন মন–মন জকাঁ, মোন মখমন জকাঁ
মূঁহ চানে জকাঁ, দাঁত মোতী জকাঁ। ফোকা–পৃ.–26

রিনোক্তি খনংকাব দ্রষ্ঠব্য থিক–

রিঁন্ব চীনী কেব চাহ নহি, রিঁন্ব জনখগ কেব প্লষ্ঠ।
রিঁন্ব সবিসো কেব মাঁছ নহি, রিঁনা ধোধি কেব সেঠ।।
ফোকা–পৃ.–41

প্বনরুক্তিপ্রকাষ–

এক খাঁখি স্বপ্ন–মিনন মেনা নগৌনে
এক খাঁখি রিবহী চকোব
এক খাঁখি খপনা নএ জাগন বহিএ
এক খাঁখি হ্নকা ঘব চোব। ফোকা –পৃ.–38

হিনক এহি সংগ্রহমে এক দিস জঁ কিছু মাত্রিক ছংদমে নিখন গেন করিতা সভ খছি তহ দোসব দিস খাধ্নিক করিক ডেগমে ডেগ মিনরৈঁত পূর্ণতঃ খতুকান্ত করিতা সেহো খছি। কিছু ছন্দারঁহ্ন করিতাক উঁল্লেখ এতয কযন জা বহন খছি–

कुण्डलिया-एहि छन्दमे दोहा एवं रोलाक मिश्रण एकटा शर्तक संग रहैत छैक जे दोहाक अंतिम पाद रोलाक आरम्भक पाद रहनि जागत अछि। एतरेँ नहि दोहा छन्दक आदि भागमे जे पद रहैत से रोलाक अंतमे निश्चय देल जायत। एकर पूर्णतः निर्वाह करि कयने छथि। कने देखल तऽ जाउ-
खादीमे गुण रहैत छै, सभ दिन स्वाँपय अंग।
छै उज्जर तँ की भेलै, एहिमे साती रंग।।
एहिमे साती रंग दाममे सस्त सस्ता
सभठाँ छै उपलब्ध भेटै भरि रस्ता-रस्ता।
करिगण रहि जि उठथि स्वर्ग ओ भौतिकवादी
ररदीसँ रचू मंडा कऽ पहिरू खादी।।
प्रचण्ड-
खादी केर अछि रहै बहुत दिन- दिन दूना बेटै।
एकरा अंदरमे दरल भावी भरकम पेटै।।
भावी भरकम पेटै देषके काना धंधा
भ्रष्टाचारी चोर रजानिक रलल स्वगन्धा।
नैयायिक केर न्याय देहपर चढ़ा ते खादी
सभटा न्का नैछ ओ रापू केर खादी।। फोका-पृ.-108
निष्कर्षतः यैह कहल जा सकैत अछि जे फोका करिता संग्रह एकटा सफल काव्य संग्रह थिक जकर पाठक किंवा श्रोताके धैर्य आ साहसक संग पारायण व श्रवण करबाक प्रयोजन छनि। फोका पढ़ि एक रेबि अरस्थ्य लोकक देह सिहरि उठतैक, मोन उद्वेलित होयतैक आ क्रमाक्षके छोड़ि सन्मार्गपर चलबाक प्रेरणा भेटतैक। हम एकर करिसँ आग्रह करबनि जे एहने सरस, स्वन्दर आ संग्रहणीय रचनासँ मैथिली साहित्क

উঁদ্যানকে ঁ স্ববভিত কবৈত বহথি। গদ্দনম্।

<u>মৈথিনী চিত্রকথা</u>

শ্রীমতী প্রীতি ঠাকুবক দ্বৃ গোষ্ঠ সচিত্র কথা সংগ্রহ – মৈথিনী চিত্রকথা এবং গোনূ ঝা আ আন মৈথিনী চিত্রকথা দেখনহুঁ আ পঢ়নহুঁ । চিত্রক মাধ্যমে কথাক প্রস্তুতি একটা অভিনব প্রযোগ থিক জে নোককে ঁ, বিষেষতঃ বঁচা সভকে ঁ অপনা দিস আকৃষ্ট কবত।
খিস্সা পিহানী কহবাঁক আ স্বনবাঁক পবংপবা মিথিনামে অদৌসঁ চন আবি বহন অছি। বূঢ় প্ববান স্ত্রীগণ নোকনি ছোট–ছোট বঁচা সভকে ঁ স্বতযবাঁক কান নানা প্রকাবক খিস্সা সভ স্বনবৈত ছথি জে মনোবংজনক সংগ সংগ উঁপদেষপ্রদ এবং ষিক্ষাপ্রদ সেহো বহৈত অছি। ওহি খিস্সা সভমে প্রসিদ্ধ অছি –দৈৎ সভক খিস্সা, বাজ কুমাব সভক খিস্সা, বামাযণ মহাভাবতক খিস্সা, গোনূ ঝাক খিস্সা প্রভৃতি। উঁচ বিদ্যানয এবং মহাবিদ্যানযমে প্রবেষ কযনাক বাঁদ ছাত্র–ছাত্রা নোকনি স্বযং কথা পঢ়ৈত ছথি, বুঝৈত ছথি, ওকব বসাস্বাদন কবৈত ছথি আ সমযপব নোককে ঁ সেহো স্বনবৈত ছথি।
মৈথিনীক সংগ বিডম্বনা ই অছি জে মহা বিদ্যানয এবং বিশ্ববিদ্যানয স্তবপব নোক বিষযক ৰূপমে মৈথিনী বখিতো অছি, পঢ়ৈ তো অছি কিন্তু বিদ্যানয স্তবপব সবকাবী ঘোসনাক বাঁদো নোক নে মৈথিনী বিষযক ৰূপমে

বখৈত অছি আনে মৈথিলী মাধ্যমে কোনো আনে বিষয পঢ়ৈত অছি। এতেক ধবি জে মিথিলাঁচলক বিদ্যালয সভমে গুরুওজী লোকনি মৈথিলীমে পঢ়যবাঁমে হীনতাক বোঁধ কবৈত ছথি। নব যুবক লোকনি বিবাহ হোগতহি পলীক সংগ হিন্দী মাবয লগৈত ছথি। কনেক পঢ়ল লিখল আ পদবীবলা লোক সভকেঁ দেখবঁনি জে অপনামে জঁ মৈথিলীযোমে গপ্প কবতাহ তঁ বঁচা সভসঁ নিষ্চয রুপসঁ হিন্দীমে। হ্নকা সভকেঁ ঞা নহি বুঁঝাগত ছনি জে মৈথিলী ভাষা কঠিন ছৈক। একব সম্ভচিত জ্ঞান জঁ বঁচামে নহি হোযতৈক তহ্ বাঁদমে হোযবঁ কঠিন ছৈক। কবীষ্বব চন্দা মা অমৈথিলীভাষী(অন্যদেষীযক)ক হেত্ত মৈথিলী ভাষা ওহলে কঠিন কহলনি অছি জেহল একটা গচনা মাছক বঁচাক হেত্ত সমুদ্রক সভটা জলকেঁ পীযবঁ ছৈক-

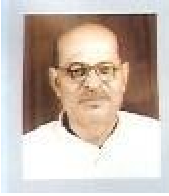
ভাষা যদন্যদেষীযোঃ মিথিলাযাঃ ভবেত্তদা।

প্ ীতিমিংচাকপোতেন সমস্তং রাবিধের্জনম্। ।

জতয ধবি হিন্দীক প্রষ্ন অছি তহ্ ও তহ্ বাষ্ট্রভাষা থিক। অনিবার্য বিষয থিক। ওকব জ্ঞান তহ্ স্বতঃ প্রত্যেক ব্যক্তিকেঁ হোযতৈক আ বহিতে ছৈক।

এহল স্থিতিমে শ্রীমতী প্রীতি ঠাকুবক উঁপর্যুক্ত বিবেচ্য পোথী দেখি হমব মন গদগদ ভএ গেল। গোলূ আ আন মৈথিলী চিত্রকথামে কুল 16 গোট কথা অছি জাহিমে গোলূ মাসঁ সম্বন্ধ নও গোট কথা, মহাকবি কালিদাসসঁ সম্বন্ধ এক গোট আ শেষ ছওটামে বাজা সললেস, নৌকা বঁনিজাবা গনাদি প্রবন্ধখ চর্চিত কথা সভ কাল্পনিক চিত্রক মাধ্যমে চিত্রিত কযল গেল অছি। এহি সভ কথামে কিছ বাঁত তহ্ শব্দক মাধ্যমে অভিব্যক্ত কযল গেল অছি আ কিছ গপ্প চিত্র স্বযং কহৈত অছি।

এহি কথা সভক প্রসংগ জে নোকক মনমে একটা ভারচিত্র ছন হোযতৈক সে এতয র্ব্নি পড় ৈত খছি জেনা সাকাব ভএ উঠন হো।
রিদ্ষী কথা নেখিকাক দোসব সংগ্রহ থিক মৈথিনী চিত্রকথা জাহিমে হ্নন 10 গোট প্রহ্মখ কথা সভ রর্ণিত খছি। এহি কথা সভক রীচ রীচমে কাল্পনিক চিত্র সভক সমাযোজন কথাক যথার্থতাকে ঁ প্রমাণিত করৈত খছি। এহি সংগ্রহমে সংগ্রহিত মহত্বপূর্ণ কথা সভ থিক –বাজা সনহেস, রৌধি কাযস্থ, দীনা ভদবী, নৈকা রঁনিজাবা, রিদ্যাপতিক খাঘ খরসান প্রভৃতি।
হমবা পূর্ণ রিশ্বাস খছি জে উপর্যক্ত দ্নূ কথা সংগ্রহ রঁচা সভকে ঁ তহ খাহ্লাহ্ণ কবরেঁ কবত খপিত্ত সমাজক সভ রস্মাক নোককে ঁএক রেঁবি একবা উনট্যরাঁক নিপ্সা হোযরেঁ কবতৈক। এহি দিশামে শ্রীমতী ঠাক্বক স্তুৎ প্রযাস খছি, সাহসিক ডেগ খছি খা খভিনর প্রযোগ খছি। হমব শ্বভকামনা খছি জে কথা নেখিকা এহনে সবস, সহজ খা সজন বচনা সভসঁ মৈথিনী সাহিত্যক ভন্ডাবকে ঁ স্ববভিত কবৈত বহথি।


जीरकान्त

उत्तराधिकारी आ लेखक

एक दिन टेलीफोनपर एक अंग्रेज लेखक कहलनि जे हम मैथिलीमे कोनो उत्तराधिकारी नै दए सकलौं। हम देखै छी जे हुनक अपेक्षा बहुत जागरूक छलाह। बहुतो लेखककेँ वंशज लेखक भेल छथि आ से योग्यतापूर्वक आ आदेशपूर्वक ऐ काजमे लागल छथि।

ओकर आगाँ ओ इहो कहलनि जे हुनके परिवारमे एक गोटे मैथिलीमे लिखैत अवश्य छथि, मुदा ओ मैथिलीमे कोनो वस्तु पठौने नै छथि।
हमरा भेल जे एकर चर्चा होएबाक चाही। लेखक भेनाइ आकस्मिक बात थिकैक। ऐ बातकेँ कोनो नियममे बान्हल नै जा सकैत छैक। कतेक लेखक छथि जनिक पुत्र सेहो लेखक भेल छलथिन। मुदा एकर विपरीतो बात ओतबे सत्य थिक जे बहुसंख्यक लेखक एहेन परिवारक सन्तान छथि जइमे कहियो लेखक

ঋা করি নৈ ভেল ছল।

সংসারমে ঋনেক রস্তুক পঢ় াগ ছৈক, জেনা পঢ় াগ কএ নোক ডাক্টৈর ভএ সকৈত ঋছি। নেখক রঁনরাঁ নেন এহেন কোনো শিক্ষণ ঋা প্রশিক্ষণক চর্যা (পাঠ্যক্রম) নৈ ছৈক।

এমহব পত্রকারিতাক পঢ় াগ শ্বরু ভেল ঋছি। মাস মীডিযাক পঢ় াগ শ্বরু ভেল ঋছি। নাট্যক রিদ্যানয ঋা ফিন্ম প্রশিক্ষণ সংস্থান সভ সোনো ঋছি। নেখক রঁনএরাঁক কনা ঋা রিজ্ঞানক চর্চা নৈ স্বনন ঋছি।

মৈথিনীমে জে কিযো নেখক ঋছি, সে সভ তপস্রী জকাঁ তপোনিষ্ঠা ঋছি। ঐমে (মৈথিনী) পাঠক নৈ ছৈক, ঋথরা রঁহ্ত সীমিত পাঠক-রস্ক্র ছৈক। দোসর কারণ প্রকাশক নৈ ছৈক। ঋপন পাগ গনা কএ পোথীক ফ্নহ দেখরঁ সংভর হোগত ছৈক। কোনো ঋামদনী নৈ ছৈক। রঁহ্ত ঘাটা ছৈক, ঋজীরন প্রতিমাস কিছু ধন ঐ ভক্তীমে মোঁকএ পড় ৈত ছৈক।

তখন জতরেঁ ছোট হোউক, এক নেখক রস্ক্র ছৈক জে নিখ বহন ছৈক। যশোনিপ্সা এক কারণ কহন জা সকৈত ঋছি। প্রত্যেক ঋাদমীমে ওা জন্মজাত দুর্রনতা হোগত ছৈক জে ও যশস্রী হোঋএ।

ঋদা ঐ প্রেরণাকেঁ একমাত্র প্রেরণা নৈ রূঁঝনন জএরাঁক চাহী। এক দেখার প্রেরক ঋছি জে ওা সভ নোক ভাষা-প্রেমসঁ প্রেরিত ঋছি ঋা চাহৈত ঋছি জে ভাষা (ঋা সংস্কৃতি)কেঁ জিঋা কএ রাখী ঋা রিপরীত পরিস্থিতিযোমে একরা জিএরাঁক উদ্যোগমে নাগন রহী। হমর এক মাত্র পৌত্র (পিতিঔত ভাগক পৌত্র) গন্কম টৈক্সমে হাকিম ছথি। 2003ওাঁ.মে মৈথিনী ঋকস্মাত সংসদসঁ ঋনুমোদিত ভেল ঋা সংরিধানক ভাষা-সূচীমে স্থান

পারি গেন। ও পৌত্র ওহী দিন ফোনপব হমবা কহননি জে হমবে সবঁহক (মৈথিনী নেখক) সদ্‌ভ্যাগসঁ খাগ ওা ভাষা ঐ গৌববক খধিকাবী ভেন খছি।
ভাষা নেন জাধবি শ্রদ্ধা-ভক্তি নৈ হোএতৈক তাধবি ঐ ভাষাকেঁ নেখক নৈ ভেঁটতৈক।
খন্বভব কএন জা বহন খছি জে মৈথিনী ভাষামে জতবাঁ জে কাজ হোগএ, সে সভ বূঁঢ়বেঁ সবঁহক হাথে ভএ বহন খছি।
নব নোক ঐ কাজমে নৈ নগৈত খছি। প্রায: ভাবতক প্রত্যেক ভাষামে ওা গংজন ছৈক। যদ্যপি কিছু ভাষা দেশমে খছি জগমে পোথী খা পত্রিকাক প্রসাব-সংখ্যা উঁত্সাহজনক ছৈক, তগ সভমে কিছু নেখক ভর্তী হোগত খছি।
খধিকাংশি ভাষামে মৈথিনিএ জকাঁ বৌদী-দাহী ছৈক, তঁ ওা ধংধে রিনতাহ্ ভেন ছৈক। ঐ কাবণসঁ কেন্দ্রীয সাহিত্য খকাদেমী (দিন্নী) সভ ভাষামে যরা নেখক প্ববস্কাব খাবংভ দেনক খছি।
চানীস বঁর্খসঁ কম বএসক নেখক পহিন পোথী সভমে সঁ একপব ওা প্ববস্কাব দেন জাএত। ওা বীঁত প্রশংসা যোগ্য খছি, হ্মদা চিন্তাজনক সেহো খছি। চিন্তা ঐ বীঁত নেন জে চানীস বঁর্খসঁ ছোট বএসক নোক ঐ ক্ষেত্রমে খাএবঁ কদাচিত পসিন্ন নৈ কবৈত খছি।
নাবাযণজী এক দিন দিন্নী মেট্রো বেনসঁ পর্যটন কএ বহন ছনাহ, ওহীঠামসঁ ফোন নগা কএ কহননি। মেট্রো বেন স্টেশনপব পোথী পত্রিকাক কঠঘাবা ছৈক। হিন্দীক একহ্ পত্রিকা খা পোথী নৈ। মৈথিনী চর্চা কববঁ ব্যর্থ। একব দূ খর্থ ভএ সকৈত খছি, এক তঁ ঐ দেশমে নিখবাঁ-পঠ়বাঁক ভাষা খংগ্রেজী খছি। খা

অংগ্রেজিএ ৫টা অছি। দোসব জে কিযো পাঠক হিন্দীমে (তহিনা মৈথিনীমে) কিতাব, অখবাব আ সাপ্তাহিক পত্র নৈ পঢ়এ চাহৈত অছি।
কোংকণীমে এক নেখক ছথি বরীন্দ্র কেনেকব। ও ভাবতীয ভাষা সবহক গংজনক চর্চা কবৈত একঠাম নিখৈ ছথি জে সংবিধান হিন্দীক মাথপব বাজমুকুট বাখি দেনক, তগসঁ কিছু নাভ হিন্দীকেঁ নৈ ভেনৈক। ও নিখৈত ছথি জে অংগ্রেজীকেঁ হাথমে বাজদণ্ড ছৈক। তঁএ দেশক শহবমে আ জংগনমে অংগ্রেজী মাধ্যমক স্কূন চনি বহন ছৈক। (আশ্চর্য জে মৈথিনী মাধ্যমক একহু স্কূন নৈ খুজন ছৈক।)
পূর্বোক্ত অংগ্রেজী নেখকক বাতমে এক বাত আব অছি জে মৈথিনী নেখক হুনক পবিবাবমে ছনহি, মুদা ওহো মৈথিনীমে (পোথী) পঢ়ব পসিন্ন নৈ কবৈ ছথি। ও কোনো বিশেষ উদাহবণ নৈ থিক। অগ্রজ মহাশয জগ কনশক চর্চা কবৈত ছথি, সে বিবন ঘটনা নৈ থিক, সার্বজনিক ঘটনা থিক।
মৈথিনী পোথী নৈ পঢ়ন জা বহন অছি। কহন জাএ জে ঐ পোথীক কোনো মহত্ব নৈ দেন দেন জাগত ছৈক।
হম নবংবব 2010ঈ.মে অপন প্রকাশিত নব পোথীক দস-পন্দ্রহ প্রতি পটনা নএ গেন বহী। মোনমে বহএ, নেখক সভকেঁ দেব। কোনো পুস্তক ব্যবসাযীকেঁ দেব। পোথী পটনা-সন শহবমে দস প্রতি কিএক নৈ খপি জাএত, সে ধবণা সভ বহয। তীন সপ্তাহ ধবি হম পটনা বহী। দসো গোটেকেঁ ফোন কএন, পোথী বখনে ছী, রুপযা আউ, নএ জাউ আ একব বিতবণমে মদতি করু। সভটা ব্যর্থ ভেন। অন্তমে অনেক

ঋামংত্রিতমে সঁ এক ঋজিত হ্মাব ঋাজাদ ঋএনাহ ঋা হমব ভাব হনন্বক কএ দেন, দস প্রতি উঁঠা কএ ও ঋপন মোঁটব সাগকিনক ডিক্কীমে ধএ নেন ঋা নএ গেনাহ।

এক দিন প্রসিদ্ধ করি উঁদযচন্দ্র ঝা রিনোদ হ্মোনাচাবমে কহননি, পোথী কী ছপাউঁ ? পোথী নেন কিযো (মানে পাঠক ঋানোচক, গতিহাসকাব, ঋন্বসংধিত্স্ব ঋাদি) প্রতীক্ষা কর্মাঁ কবৈত ঋছি ? পোথী ছাপি দেন, তঁ রাহ–রাহ, নৈ ছাপন, তৈযো রাহ–রাহ। নে ককবো উঁত্স্বকতা ছৈক, নে ককবো ঐ রাঁতক প্রত্যাশা ছৈক। পঁটনাক এক প্বস্তক র্যরসাযী প্বছনাপব কহননি– "মৈথিনীমে রএহ পোথী রিঁকাগত ঋছি জে প্রতিযোগিতা পবীক্ষামে ওকব সিনের্সমে নাগন ছৈক। ঋাব কোনো পোথীক প্বছাবি গ্রাহক নৈ কবৈত ঋছি।"

পূরোক্ত ঋগ্রজ রঁধ্ক চিন্তা ঠীক ছন্হি। হমবা সর্হক ঘবমে নেখকক ঋা পাঠকক জন্ম নৈ ভএ বহন ঋছি। ঋপনে ঘবসঁ প্বন: এক উঁদাহবণ নৈ ছী। একটা পৌত্র ছথি জে নোহাক কাবখানামে নোকবীমে নাগন ছথি। এক দিন ও হমবা প্বছনন– "গামপব ঋংগ্রেজীক উঁপন্যাস (সস্ত) ঋছি ?"

হম কহনিযনি– "কী রাঁত থিকৈ ?"

ও কহননি– "ঋংগেজীক উঁপন্যাস উঁপন্যাস বহৈত তঁ গাম জগতোঁ ঋা ওগঠামসঁ কিছু ছাঁটি কএ পঠ়রাঁ নেন ঋনিতৌঁ, ঋাব কী ?"

জগদীশ প্রসাদ মংডনক 'জিনগীক জীত' উঁপন্যাসপব

মৈথিলীমে নরোদিত উঁপন্যাসকাব জগদীশ প্রসাদ মংডন। হিনক দোসব উঁপন্যাস দেখন- 'জিনগীক জীত'। হিনকব ঋন্য উঁপন্যাস ঋছি- 'মৌনাগন গাছক ফূন, জীরন-সঘর্ষ, জীরন-মবণ, উঁত্থান-পতন, গত্যাদি। হিনকব নামপব কথা সংগ্রহ ঋা নাটক সেহো ঋংকিত ঋছি।

এহি উঁপন্যাসমে কিছু নর ঋছি। মিথিনাক খেতী-প্রধান গামক জীরন ঋাএন ঋছি। মৈথিলীমে

एहि लेल आब नव स्वाद अनुभूति अछि जे एकर लेखक खेतिहर सम्प्रदायक बहुसंख्यक समाजसँ आएल छथि। ओ अपन गामक लोकक भाषा अनने छथि। सवर्ण जातिक लेखक जखन गामक अशिक्षित आ दलित लोकक भाषा साहित्यमे टिपैत अछि, आ जे कदाचित होइत आएल अछि, से बनौआ आ कृत्रिम जकाँ लगैत अछि। लेखक जे भाषा लिखलनि अछि, से देशज मैथिली थिक। मैथिलीमे उर्वराशक्ति असीम आ कल्पनातीत अछि, से जगदीश जीक भाषा देखि-पढ़ि कए बूझल जा सकैत अछि।

नव अछि जे एकर सभ पात्र खेतीसँ जुड़ल अछि। एहिमे कतहु बनियाँ-बैकाल, सूदखोर महाजन, शोषक सवर्ण भूस्वामी, पाकेटमार, डाकू, लम्पट आ खुनियाँ नहि आएल अछि।

खेतीमे जतेक समस्या छैक, जतेक गरीबी आ अभाव भए सकैत अछि, जतेक अकर्मण्यता आ आलस भए सकैत छैक, से सभ विस्तारसँ आएल अछि।

लेखकक दृष्टिकोण नव अछि। ओ कहैत अछि जे गामक उन्नति गामक लोकेक हाथमे छैक। ओ कहैत अछि गामसँ पलायन आ विस्थापनकेँ रोकबाक चाही। गामक धनिक आ गरीब मेल-पाँच कए खेतीमे पूँजी लगाबथि, पूँजी जुटेबा लेल गामेमे संभावना ताकथि आ तकर दोहन करथि। शिक्षा पढ़बा लेल एक दोसरक मदति करथि, विनिष्टलक मदति कए ओकर समर्थ आ सम्पन्न बनाबथि।

लेखक बैंकक कर्ज लए विकास करबाक बात नहि करैत अछि। ओ बनबाक आफिसक प्रखण्ड विकास

पदाधिकारीक आ ओकर अमलाक चर्चा नहि करैत अछि। स्वयंसेवी आ स्वयं सहायता समूहक चर्चा नहि करैत अछि। देशक पंचवर्षीय योजना आ नहर योजनाक प्रादुर्भाव आ अभावक गप नहि करैत अछि।

मनुक्खक जिनगीकेँ अनमोल मानैत अछि। ओकरा रचएबा लेल ओ सार्थक सहयोगक कथा कहैत अछि। मनुक्खक गरिमामे ओकर विश्वास छैक। एहि गरिमाकेँ स्थापित कएल जा सकैत अछि, से गप ओ एहि कथानककेँ लिखि कए देखा देलक अछि।

एकटा महात्माक उक्ति क्यो उद्धृत कएने छथि- दू प्रकारक लोकक गरामे पाथर बान्हि कए पानिमे डुबेबाक थिक, एक तँ ओहि धनिककेँ जे धन अछैत दान नहि करैत अछि, आ दोसर ओहि गरीबकेँ जे हाथ-पाएर अछैत परिश्रम नहि करैत अछि।

"जिनगीक जीत"मे एहेन धनिक अछि जे सामाजिक काज लेल दान करैत अछि। एकर उदाहरण थिक बचेलाल आ ओकर माय स्वमित्रा। गरीबक एक एहेन उदाहरण थिक अच्छेलाल। दोसर उदाहरण थिक देवन आ बुधनी।

लेखक जगदीश जीक उपन्यास मनुक्खक आदर आ गरिमाक गप करैए। सभ ठाम विभिन्न पात्र सभ एक दोसराक सम्मान करैए।

विवेकानन्दक भाषण सभ मोन पड़ैए, ओ गप-गपमे पराधीन भारतक हिन्दू सभकेँ धिक्कार करैत छलाह। जे सक्षम छल तकर कर्तव्य छलैक जे अन्नहीनकेँ अन्न देअए, विद्याहीनकेँ विद्या देअए। जे एहेन नहि करैत छल, से मनुक्ख नहि छल।

रिदेशेमे ओ कहि खरैत छनाह जे रेदमे खद्वैतरराद छैक, सभ मनुक्खकेँ एक समान मानैत खछि हिन्दू। देशेमे खारि खार्थिक-सामाजिक रिषमता देखि दुखी भए कहैत छनाह जे दीन-हीन-खज्ञानीकेँ समानता देरा नेन त्याग खा श्रेम करू।

नेखक जगदीशे जी स्रामी रिरेकानन्दक भाषा रजैत छथि। पहिन उँपन्यास 'मौनाएन गाछक फून'मे बमाकान्तक चबित्र-चित्रण कएननि खछि। बमाकान्त मद्रासमे, रेंटा सभक मत ब्रह्मनाक राद खपन जमीन-जान भूमिहीन सभमे रँटैराक निर्णए नैत छथि, ताहि ठाम रेदान्तक खद्वैतरादक चर्चा नेखक कएने छथि।

पोथीक खंतिम खारबणपब नेखकक पबिचयमे कहन गेन खछि- 'मार्क्सरादक गहन खध्ययन। हिनकब कथामे गामक नोकक जिजीरिषाक रर्णन खा नर दृष्टिकोण दृष्टिगोचब होएत खछि।'

ओ बचनाकब पूबा उँपन्यासमे मार्क्सरादी शेरदारनी नहि खनैत छथि। खनेक ठाम मार्क्सरादक मून धाबणा सभकेँ स्थान देने छथि। रहत चत्तुब चानाक छथि। कतहु कहताह, धर्म खा भाग्यकेँ मानर निबर्थक थिक कतहु कोनो समाजरादीक सम्रादमे कहरा दैत छथि जे उँत्पादनक सभ स्रोतपब ब्यक्तिक एकाधिकाब नहि बहए देराक थिक, ओहिपब मानर-समाजक खधिकाब देर न्याय-संगत थिक। सामान्यत: उँत्पादनक स्रोत तीनटा थिक- जमीन (खेती), काबखाना खा खान।

समाज रदनरा नेन ओ खनेक ठाम कहैत छथि- मनुक्खकेँ मनुक्खक खादब कबराक चाही। एहि नेन ब्यक्तिकेँ सभसँ पहिने खपनाकेँ मनुक्ख रनयराक

চাহী।

উঁপন্যাসমে আদর্শ অছি, গবীবঁক গবীবী দূব কববা নেন সংগঠিত আ যোজনা বঁদ্ধ রূপেঁ প্রযাস হোএবাঁক চাহী। সমাজ বঁদননি সকৈত অছি। সে ও কিছু পবিবাবক উঁদাহবণ নএ কএ দেখা দেননি অছি।

আজুক গামমে এহেন প্রযাস ছিটফুট হোগত বহৈত অছি। মুদা, গামক যথার্থ রূপ ভিন্ন অছি। বঁৈমানী-শৈতানী অছি। গবীবঁক শোষণ অছি। কমজোবক দমন অছি। ধোখা, ফবেবঁ অছি। নগানী-ভিবানী অছি। চক্রবৃদ্ধি ব্যাজক তাণ্ডব নৃত্য ভএ বহন অছি। কথানকক অন্তমে নেখক দেবনক সংগ মহংথান সভ দিস জাগত অছি। সুখ আ সমৃদ্ধিক টৌপূপব ওা মঠ-মঠাধীশ অছি। মহংথ সভ ভোগ-বিনাসমে ডূবঁন অছি। মহংথানমে শান্তীসঁ ভেঁট হোগত অছি। ও মহংথানমে ভাগে বিনাস নেন অছি। ওকব নাটকীয ঢংগসঁ অপহবণ ভেন ছৈ। বঁন্দ কএ বাখন আ পোসন জাগ ছৈ। ও অভিশপ্ত অছি, কাম-ক্ষুধা শান্তি নেন এক ত্তচ্ছ সাধন ভেন অছি।

ধর্মক বিরুদ্ধ বঁজনাহ বুঁদ্ধ। হ্নকো নামপব মঠ-মহংথ অছি। কবীব বঁজনাহ। হ্নকো নামপব সংগঠিত গুরুবাব সাহেবঁক পবম্পবা অছি। মার্ক্স বর্গহীন, শোষণহীন সমাজ বঁনাএবঁ নক্ষ্য বখননি। হ্নকো নামপব অনেক মস্তান মস্ত ভেন অছি। প্রজাতংত্রমে হব বাজনীতিক দন জনতাক সুখ-সুবিধা নেন বাজগদ্দী মঁগৈত অছি। নেতা সবঁহক রূপমে মহংথ সভ অপন ভোগ-বাগক ব্যবস্থা কবৈত অছি।

কদাচিত উঁপন্যাসমে বর্ণিত মহংথান প্রত্যেক বিচাব-ধাবাক জন-বিবোধী ভএ জএবাঁক আ হোগত

জযৱাঁক সংকেত কএ দৈত অছি। মনুক্খ ৱহ্ত পাখণ্ডী আ অন্বদাব হোগত অছি।

অন্তমে দেরন আ শান্তী ঋক্তি নেন, মানর–জাতিক ঋক্তি নেন সংঘর্ষক ৱাঁত কবৈত অছি, জীতক ভারনাসঁ ডেগ উঁঠৱৈত অছি।

উঁপন্যাসক অন্তিম পাঁতি সভ এহি প্রকাবক সংকল্প অংকতি কবৈত অছি–

"তেঁ জৰুবী অছি জে সভসঁ পহিনে অপনে উঁঠি কএ মনুক্খক বাস্তাপব ঠাঢ় হোগ। জখন মনুক্খক বাস্তাপব ঠাঢ় ভএ চনএ নাগৱ তখন জে গিবন মনুক্খ অছি ওকবা উঁঠৱৈক কোশিশ কবৈক চাহী। উঁঠৱৈক দুনূ উঁপায অছি। ককবো ৱাঁহি পকড়ি খিঁচৈক অছি, ককবো পাছূসঁ ধক্কা দএ ধকেনৈক অছি।" যএহ জিনগীক জীত থিক....।



ड ॉ. बाजीर क्ुमाब रर्मा

काबी घट्ठा रॅबसैत मेघ

तीस रॅबीख भ गेन दिन्नी मे I गामक जिनगी मोन पड़ ेत ख्छि I शैफानिका जीक पोथी भारांजनि क ক্ষ্ণ पन्ना पनठे नौं – हमब ख्पन गाम सजीब भ गेन --

ख्याम , नताम , सीसो, सपाठ्ठु, नाबियन वृक्षक ह्नगी सँ

धबती कें ख्शीशैत चान स्वकजक

किबण I

हेमंत–रॅसंतक स्वन्नब प्रसून प्रसन्न I

कोसी कछेबक प्रार्थना सदृशे मंद मंद स्वगञ्चित ,

शीतन रॅयाब

हरा सँ ख्ठखेनी करैत खेत मे गह्मक रॅानि

ख्नगिन हीबक जोत पसारैत मोंगनक

जनधाब I

नाह पब रैसन हम ख्हाँ

পাবিজাত স্বমন সন শ্বভ্র তাবকক
জ্যাসেনা পবিধান
স্বস্থাক মন্দাকিনী তীব সঁ রঁবসারৈত জীরন-দান
ব্রঁহ্মক থান সঁ খরৈঁত কীর্তন-গান

প্রাচীন ঋষি ম্হনিক খাশ্রম সন পারন
শ্বভ্র স্নিগ্ধ ক্ষমব গ ড্মবা গাম

রাঁবূঁজীক রিশ্বাস মাঁ ক মমত সংভবন
গ স্বন্দব শ্বচি- ধাম ।

হ্মবা মোন পড়ন গামক ঘনঘোব মেঘ । হথিযা খা কান্হা নক্ষত্র । চমকৈত রিজ্বি । মযূবক নাচ । ঋত্তুক বানী রর্ষা । মোন পড়ন জ্যাতিবীশ্বব ঠাকবক রর্ণন - মেঘক গর্জ্জ , খাকাশিক মেচকতা , রিদ্যুন্নতাক তবংগ , কদম্বঁক সৌবভ , রিষ ধবক সংসাব , দদ্বক কোনাহন , ধাবাক সংতাপ , খাদিত্যক ত্তষ্ণতা ।
হ্ম সভ গ্রীষ্ম ঋত্তুক জ্বানাসঁ জখন মৃতপ্রায ভ জাযত ছী তখন রর্ষাকি বূঁদ সংজীরনিক কাজ করৈত খছি । মোন পাড়ু ভুরনেশ্বব সিংহ ভুরনক শর্ম্ন -

খাএন খাষাঢ় , খাএন খাষাঢ় ।
ভএ গেন তিরোহিত গ্রীষ্ম গাঢ় ।
ঝব-ঝব-ঝব -ঝব ঝহবয হ্নাব ।
খ্নুজি গেন প্রকৃতি-মঁদিব-দ্খাব ।

রিশ্বনাথ রিষপাযী জীক পঙ্ক্তি সেহো যাদ খরৈত খছি
––

পঠ পহিবি হবিত নর প্রগ্নতি নটী
প্বনি গবা রাঁহ্নি কএ রক্ক মান I
ঝিংপ্বব নূপ্বব পিক গীত গারি
ফেকৈ খছি রিজ্বিক নযন–জান I I

রিদ্যাপতিক নাযিকা কাবী ন্বথা পহিবি হ্মহ ঝাঁপি, পএবক কড় । কেঁ ঙুঁপব সসাবি, নূপ্ববক হ্মহ রঁদ কএ পিছব মে খভিসাবক নিমিত্ত স্থন পব জাগত ছথি জরঁকি রর্ষা ভএ বহন খছি , মেঘ গরৈজ বহন খছি , সাঁপ সহ–সহ কএ বহন খছি I

দিন্নী মে রর্ষাকি গন্তুজাব মে খাঁখি মে দবদ খা দিন মে রৈঁচেনী I হথিযা খা কান্হা ক কোনো চর্চা নহি I ঝিন্নবক গীত দ্নর্নভ খা মানর স্নযং রিষধব I
বত্তী ভবি রূঁদ খা রাঁঠ পব গাড় ৗক নম্বাঁ জাম I
পাওানে– পাগন, গড্ডু –গড্ডা I নানীক যহ্মনা বোড পব I
নহি চাহী হমবা দিন্নী মে হথিযা খা কান্হা I দূ রু্ন্ন সে কাম চনা নের্ঁ I গাম জাযর্ঁ তে হথিযা – কান্হা দেখ নের্ঁ I খূর্ঁ দেখর্ঁ কাবী ঘটা খা রঁবসৈত মেঘ I

लेखनी क रिवाम द बहल छी शेफालिका जीक भावांजलि क गोष्ठैक शीर्ष सं -

हमर ह्रदय मरुस्थल बनि जागत खिछि
खहाँ
मेघ बनि बरैस जागत छी
हम प्रतक्ष भ जागत छी I I

**<u>मानेश्वर मनुज</u>**

<u>मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता</u>

ओना तँ प्रेमचन्द सेहो खप्पन गुरु बँगलाक महान कथाकार शरतचन्द्रकेँ मानलन्हि, मुदा बँगलाक विभिन्न पत्र-पत्रिका कथा-चेतनाक हिसाबेँ प्रेमचन्दकेँ सर्वोपरि

মানৈত ছথি। এহি বাতমে কোনো সংদেহ নহি জে প্রেমচন্দক কথা সাহিত্য বিশ্বসাহিত্যমে অপ্পন সম্মানিত স্থান বনৌনে অছি।
গাঁধীজী রবীন্দ্রনাথ টৈগোরক সমক্ষ নতমস্তক ভ' জখন হুনকা গুরু কহলকন্হি তখন রবীন্দ্রনাথ টৈগোর সেহো আহ্লাদপূর্বক হুনকা বাপূ কহলকন্হি। প্রেমচন্দ জে সম্মান বাংলা সাহিত্যকেঁ দেলন্হি তাহিসঁ কনিকো কম সম্মান বাংলাক সাহিত্যকার প্রেমচন্দকেঁ নহি দ' রহল ছথি।

প্রেমচন্দক জে কথা সভ পাঠ্যপুস্তকমে লাগল অছি তাহিসঁ হিন্দী আ মৈথিলী জগত পূর্ণতঃ বাকিফ অছি, তকর অলাবে সমএ-সমএপর হিন্দীক পত্রিকা সভ প্রেমচন্দক আনো কথা সভ প্রকাশিত করৈত রহৈত অছি। এতেক সভ ভেলাক বাদো হিন্দী আ মৈথিলীক আম পাঠক কী লেখকো প্রেমচন্দসঁ অনভিজ্ঞ ভ' রহল ছথি, জাহি কারণেঁ মৈথিলী কী হিন্দিযো সাহিত্য একো ডেগ আগাঁ নহি বঢ়ি রহল অছি। মানসরোবরক প্রাকথনমে প্রেমচন্দ ভারতীয কথা সাহিত্যক গুঢ়কেঁ কতেক গম্ভীরতাসঁ পকড়নে ছথি- দেখল জা সকৈত অছি আ হমরা লোকনি লীকসঁ কতেক হটি গেল ছী তকরো অনুমান কএল জা সকৈত অছি। হিন্দীক কতেকো পত্র অপ্পন সম্পাদকীযমে কহৈত ছল জে মৈথিলী পহিনে অপ্পন সাহিত্যকেঁ মজগূত ক' নিঅএ তখন সম্বৈধানিক মান্যতাক বাত করএ, মুদা মৈথিলীক সাহিত্যকার লোকনি অপনা হঠপর অড়ল রহলথি।
রোজগারক নামপর দর-দর ভটকৈত মৈথিলজন সভতরি অপমানিত ভ' রহল ছথি তকর কিনকো চিন্তা নহি মুদা অপ্পন হঠ কাযম রখতাহ। সাহিত্য রা

राजनीति एहन हल्लुक चीज नहि जे सहसँ अनेग पैर राखि आडम्बरक बलपर सफलता प्राप्त कए लिअए। सौ चोर मरिकऽ एक टा साधु सहोदर, ई परम सत्य अछि।
कथा साहित्य पाठकक सुन्दर भावनाक स्पर्श- मानसरोवरक प्राक्कथन-प्रेमचन्द- मैथिली रूपान्तर- मानेश्वर मनुज एक आलोचक लिखलन्हि अछि जे इतिहासमे सभ किछु यथार्थ होइतो असत्य अछि आ कथा साहित्यमे सभ किछु काल्पनिक होइतो सत्य अछि। अइ कथनक आशय एकर सिवाय आओर की भऽ सकैत अछि जे इतिहास आदिसँ अन्त धरि हत्या, संग्राम आ धोखाक प्रदर्शन करैत अछि जे असुन्दर अछि तेँ असत्य अछि, लोभक क्रूरसँ क्रूर अहंकारक नीचसँ नीच, ईर्ष्याक अधमसँ अधम घटना सभ अहाँकेँ ओतए भेटैत आ अहाँ सोचए लागब जे मनुष्य एतेक अमानुषिक अछि, थोड़ स्वार्थक लेल भाए-भाएक हत्या करए पर लागल अछि। बेटा बापक हत्या कए दैत अछि आ राजा असंख्य प्रजाक हत्या कए दैत अछि। एकरा पढ़ि कए मोनमे ग्लानि होइत अछि आनन्द नहि। आ जे आनन्द प्रदान नहि कए सकैत अछि ओ सुन्दर नहि भऽ सकैत अछि आ ओ सत्य सेहो नहि भऽ सकैत अछि।
जतए आनन्द अछि ओतै सत्य अछि। साहित्य काल्पनिक वस्तु अछि मुदा एकर प्रधान गुण अछि आनन्द प्रदान करब, आ एहि हेतु ओ सत्य अछि। मनुष्य जगतमे जे किछु सत्य आ सुन्दर पओलक अछि आ पाबि रहल अछि ओकरे साहित्य कहैत छैक आ गप्प सेहो साहित्यक एक भाग अछि।
मनुष्य जाति लेल मनुष्य्य सभसँ विकट पहेली अछि। ओ

স্বয়ং অপনা সমাজমে নহি অবৈত অছি। কোনো নে কোনো রূপমে ও অপনে আলোচনা করৈত রহৈত অছি, অপনে মনোরহস্য খোলল করৈত অছি। মানর সংস্কৃতিক রিকাসে এহি লেল ভেল অছি কি মনুষ্য অপনাকেঁ সমাজারঁয আধ্যামে আ দর্শন জকাঁ সাহিত্য এহি খোজমে লাগল অছি, অন্তর এতলী অছি কি ও অগ উদ্যোগমে রসক মিশ্রণ কহ ওকরা আনন্দপ্রদ রঁনা দৈত অছি, এহি লেল আধ্যামে আ দর্শন সির্ফ জ্ঞানী লোকনিক লেল অছি, সাহিত্য মনুষ্য মাত্র লেল।

জেনা হম উপর কহি গেল ছী, গল্প আ আখ্যাযিকা সাহিত্যক এক প্রধান অংগ অছি। আগসঁ নহি, আদিযে কালসঁ। হঁ, আগ-কাল্হক আখ্যাযিকা আ প্রাচীনকালক আখ্যাযিকামে সমযক গতি আ রুচিক পরিরর্তনসঁ রঁহুত কিছু অন্তর ভেল অছি। প্রাচীন আখ্যাযিকা রুউত্তহল প্রধান হোগত ছল আ আধ্যামে রিষযক। উপনিষদ আ মহাভারতমে আধ্যামিক রহস্যকেঁ সমাজারঁক লেল আখ্যাযিকা সভক আশ্রয লেল গেল অছি। "জাতক"সেহো আখ্যাযিকাক সিরায আওর কী অছি? রাঁগরিলমে সেহো দৃষ্ঠান্ত সভ আ আখ্যাযিকা সভক দ্বারে ধর্ম তত্ব সমঝাএল গেল অছি। সহ অগ রূপমে আরি কহ সাকার ভহ জাগত অছি আ তখনে জনতা ওকরা সমঝৈত অছি আ ওকর র্যরহার করৈত অছি। রর্তমান আখ্যাযিকা মনোরৈজ্ঞানিক-রিশ্লেষণ আ জীরনক যথার্থ স্বভারিক চিত্রণকেঁ অপ্পন ধ্যেয সমঝৈত অছি। এহিমে কল্পনাক মাত্রা কম, অনুভূতিক মাত্রা অধিক হোগত অছি, রঁল্কি অনুভূতিযে রচনাশীল ভারনাসঁ অনুরংজিত ভহ কহ কথা রঁনি জাগত অছি, মগর ঞা সমঝরঁ ভূল হোএত কি কথা জীরনক যথার্থ চিত্র অছি।

জীৱনক চিত্র তঁ মনুষ্য স্বযং ভ৽ সকৈত ৠছি, মগব কথাক পাত্র সভক স্বখ-দ্ঃখসঁ হম জতেক প্রভাৱিত হোগত ছী ওতেক যথার্থ জীৱনসঁ নহি হোগত ছী, জাৱত তক ও নিজত্বক পবিধিমে নে ৠৱি জাএ। কথা সভক পাত্র সভমে হমবা এক্ক-দূ মিনটক পবিচযমে নিজত্ব ভ৽ জাগত ৠছি ৠ হম ওকবা সংগ হঁস৽ ৠ কান৽ নগৈত ছী, ওকব হর্ষ ৠ ৱিষাদ হমব ৠপ্পন হর্ষ ৠ ৱিষাদ ভ৽ জাগত ৠছি, ৰঁক্কি কহানী পঢ়ি ক৽ ও নোকো কানৈত ৠ হঁসৈত দেখন জাগত ৠছি, জকবাপব সাধাবণতঃ স্বখ-দ্ঃখক কোনো ৠসবি নহি পড়ৈত ৠছি, জকব ৠঁখি শ্মশানমে যা কব্রিস্তানমে সেহো সজগ নহি হোগত ৠছি, ও নোক সেহো উঁপন্যাসক মর্মস্পর্শী স্থন সভপব পহুঁচি ক৽ কান৽ নগৈত ৠছি।

শাগত একব ঙাহো কাবণ হোগক কি স্থূন প্রাণী সূক্ষ্ম মনক ওতেক নগ নহি পহুঁচ সকৈত ৠছি জতেক কি কথাক সূক্ষ্ম চবিত্রক। কথাক চবিত্র সভ ৠ মনক ৰীচমে জড়তাক ঙ পর্দা নহি হোগত ৠছি, জে এক মনুষ্যক হৃদযকেঁ দোসব মনুষ্যক হৃদযসঁ দূব বখৈত ৠছি। ৠ ৠগব হম যথার্থকেঁ দ্রৰুদ্র খীচ ক৽ বাখি দী তঁ ওহিমে কনা কহাঁ ৠছি। কনা কেৱন যথার্থকি নকনক নাম নহি ৠছি। কনা দেখাগত তঁ যথার্থ ৠছি হ্দা যথার্থ হোগত নহি ৠছি। ওকব খূৰী ঙ ৠছি কি ও যথার্থ নহি হোগতো যথার্থ নগৈত ৠছিউ। একব মাপদন্ড সেহো জীৱনক মাপদন্ডসঁ ৠনগ ৠছি, জীৱনমে ৰঁহ্ধা হমব ৠংত ওহী সময ভ৽ জাগত ৠছি জখন ও ৰাঁছনীয নহি হোগত ৠছি। জীৱন ককবো দাযী নহি ৠছি। ওকব স্বখ-দ্ঃখ, হানি-নাভ, জীৱন-মবণমে কোনো এম কোনো সম্বন্ধ ভাত নহি হোগত ৠছি।

কমসঁ কম মনুষ্যক নেন ওা খক্তেয খছি, নেকিন কনা–সাহিহ মনুষ্যক বচন জগত খছি খা পবিমিতি হেৱাঁক কাবণ সম্পূর্ণতঃ হমবা সামনে খাৰি জাগত খছি খা জহাঁ ও হমব মানৱো–ন্যায–ৰ্বুদ্ধি খা খনুভূতিক খতিক্রমণ কবৈত পাওন জাগত খছি, হম ওকবা দল্ড দেৱাঁক নেন তৈযাব ভঽ জাগত ছী। কথামে খগব ককবো স্বখ প্রাপ্ত হোগত ছৈক তঁ একব কাবণ ৱতরক হেতৈক। দ্ঃখো ভেটৈত ছৈক তঁ ওকব কাবণ ৱতরক হেতৈক। এতঽ কোনো চবিত্র মবি নহি সকৈত ছৈক জাৱঁত তক মানর–ন্যায–ৰ্বুদ্ধি ওকব মৌত নে মাঁগৈক। সৃষ্ঠাকেঁ জনতাক খদানতমে খপ্পন হব এক হ্রতিক নেন জরাৱঁ দেৱঁঽ পড়তৈক। কনাক বহস্য ভ্রান্তি খছি, হ্মদা ও ভ্রান্তি জাহিপব যথার্থক খারবণ পড়ন হো।

হমবা সভকেঁ ওা স্বীকাব কঽ নেৱঁঽ মে সংকোচ নহি হেৱাঁক চাহী কি উঁপন্যাসোক জকাঁ খাখ্যাযিকাক কনো হম পশ্চিমসঁ নেন খছি। কমসঁ কম একব খাগ–কান্ক্ক ৱিকসিত ৰূপ তঁ পশ্চিমেক খছি। খনেক কাবণ সভসঁ জীৱনক খন্য ধাবা সভক তবহে সাহিত্যমে হমব প্রগতি ৰুকি গেন খা হম প্রাচীনসঁ একো–বত্তী এম্হব–ওম্হব হটৱোঁ নিষিদ্ধ ৰ্বুঝি নেনহুঁ। সাহিত্যক নেন প্রাচীন নোক সভ জে মর্যাদা ৱাঁধি দেনে ছনথি, ওকব উঁল্লংঘন কবৱঁ ৱর্জিত ছন। খতএর কাব্য, নাটক, কথা কথূমে হম খপ্পন কদম ৱঁঢ়া নহি সকনহুঁ। কোনো ৱস্তু ৱহুত স্বন্দব ভেনোপব খকচিকব ভঽ জাগত খছি, জারত তক ওগমে কিছু নরীনতা নে খানন জাএ। এক্কে তবহক নাটক, এক্কে তবহক কাব্য পঢ়ৈত–পঢ়ৈত খাদমী ভুঁৱি জাগত খছি খা ও কিছু নর চীজ চাহৈত খছি, চাহে ও ওতেক স্বন্দব খা উঁৎকৃষ্ঠ নহি হো। হমবা ওতঽ

তঁ ওা ওঙ্কা উঁঠরেঁ নে কএন যা হ্নম সভ এতেক সঙ্কচএনঙ্‌ কি ও জড় ীভূত ভ২ গেন। পশ্চিম প্রগতি করৈত বহ্নন, ওকবা নরীনতাক ভূখ ছনৈক মর্যাদাক রেঁড় ী সভসঁ চিঢ়। জীরনক হ্নব এক রিভাগমে ওকব এহি খস্থিবতাক, খসংতোষক রেঁড় ী সভসঁ হ্মঞ ভ২ জেরাঁক ছাপ নাগন খছি। সাহিত্যমে সেহো ও ঐান্তি মচা দেনক।

শেক্সপিযবক নাটক খন্বপম খছি হ্মদা খাগ ওগ নাটক সভক জনতাক জীরনসঁ কোনো সম্বন্ধ নহি। খাজ্‌ক নাটকক উঁদ্দেশ্য কিছু খাওব খছি, খাদর্শ কিছু খাওব খছি, রিষয কিছু খাওব খছি, শৈনী কিছু খাওব খছি। কথা–সাহিত্যমে সেহো রিকাস ভেন খা ওকব রিষযমে চাহে ওতেক পৈঘ পবিরর্তন নহি ভেনৈক হ্মদা শৈনী তঁ রিন্কুনে রদনি গেনৈক। খনিহ্নবনৈনা ওহি সমযক খাদর্শ ছনৈ, জাহিমে রহ্‌স্যপতা ছনৈ, রৈচিত্র্য ছনৈ, হ্নওহ্নন ছনৈ, বোমাংস ছনৈ, হ্মদা ওগমে জীরনক সমস্যা নহি ছনৈ, মনোরিজ্ঞানক বহস্য নহি ছনৈ, খন্বভূতি সভক এতেক প্রচ্‌বতা নহি ছনৈ, জীরন খা সত্য রূপমে ওতেক স্পষ্টতা নহি ছনৈ। ওকব রূপান্তব ভেনৈক খা উঁপন্যাসক উঁদয ভেনৈক জে কথা খা ড্রামাক রীচক রস্তু খছি। প্ববান দৃষ্টান্ত সভ রূপান্তবিত ভ২ গল্প রনি গেন।

হ্মদা সএ রর্ষ পহিনে যূরোপ সেহো এহি কনাসঁ খনভিজ্ঞ ছন। পৈঘ–পৈঘ, উঁচ কোটিক দার্শনিক তথা ঐতিহাসিক খা সামাজিক উঁপন্যাস নিখন জাওত ছন, নেকিন ছোট–ছোট কথা সভক দিস ককবো ধ্যান নহি জাওত ছনৈক। হঁ পবী সভক খা ভূত সভক কথা নিখন জাওত ছন, কিন্তু এহি এক শতাব্দীক খন্দব যা ওদ্ধসঁ

কম র্ব্ষী ছোট–কথা সাহিত্ক খান সভ খংগপব রিজয প্রাপ্ত কঽ নেনক খছি, খা ওা গনত নহি হোএত কি জেনা কোনো জমানামে করিতে সাহিত্িক খভিব্যক্তিক ব্যাপক রূপ ছল ওহিনা খাগ কথা খছি। খা ওকবা ওা গৌবর প্রাপ্ত ভেনৈক খছি যূবোপক কতেকো মহান কনাকাবক প্রতিভাসঁ, জাহিমে বাঁনজাঁক, মোপাসাঁ, চেখর্, টাঁনস্টায, মৈক্সিম গোর্কী খাদি ঝখ্য খছি। হিন্দীমে পচীস–তীস সান পূর্ব তক গল্পক জন্ম নহি ভেন ছল। খাগ তঁ কোনো এহন পত্রিকা নহি জাহিমে দূ–চাবি "কথা" নহি হোখএ, এতঽ তক কি কতেকো পত্রিকামে কেরন "কথে"দেন জাগত খছি।

কথাক এহি প্রার্বন্যক ঝখ্য কাবণ খাজ্ক জীরন সংগ্রাম খা সমযাভার খছি, খার্ব ও জমানা নহি বহন কি হম "রোস্তানে খযান" নঽ কঽ রৈস জাগ খা পূবা দিন ওকবে ফঁজমে রিচবৈত বহী। খার্ব তঁ হম সংগ্রামমে এতেক তন্ময ভঽ গেন ছী কি হমবা মনোবংজনক নেন সময নহি ভেটৈত খছি, খগব কিছু মনোবংজন স্বাস্থ্যক নেন খনিরার্য নহি হোগত খা হম রিক্ষিপ্ত ভেনে রিনা খষ্টাবহ ঘংটা কাজ কঽ সকিতহুঁ তঁ শাগত হম মনোবংজনক নাম তক নহি নিতহুঁ, ঝদা প্রগ্নতি হমবা রিরশ কঽ দেনক খছি তেঁ হম চাহৈত ছী কি থোড়সঁ থোড় সমযমে খধিকসঁ খধিক মনোবংজন ভঽ জাএ, তেঁ সিনেমা ঘবক সংখ্যা দিনো–দিন বঢ়ৈত জাগত খছি। জাহি উঁপন্যাসকেঁ পঢ়ঽমে মহীনা নগৈত ওকব খানন্দ হম দূ ঘংটামে উঁঠা নৈত ছী। কথাক নেন পন্দ্রহ–বীসে মিনট কাফী খছি। খতএর্ব হম কথা এহন চাহৈত ছী কি ও থোড়সঁ থোড় শর্ব্দমে কহন জাএ, ওহিমে এক রাক্য কি এক শর্ব্দা খনারশ্যক নহি খারি পার্বএ, ওকব

पहिने वाक्य मनकेँ आकर्षित कऽ लिअए आ अन्त तक ओकरा स्मृति कएने रहए, ओकरामे किछु छुटपुटाहटि होइक, किछु ताजगी होइक, किछु विकास होइक आ ओकर संग किछु तत्त्वा होइक। तत्त्वहीन कथासँ चाहे मनोरंजन भऽ जाए मानसिक तृप्ति नहि होइत छैक। ई सत्य अछि जे हम कथामे उपदेशे नहि चाहैत छी, सदा विचारकेँ उत्तेजित करबाक लेल, मनक स्पन्दन भावकेँ जागृत करबाक लेल किछु ने किछु अवश्य चाहैत छी। रौह कथा सफल होइत अछि जाहिमे अइ दुनूमे सँ मनोरंजन आ मानसिक तृप्तिमे सँ एक अवश्य उपलब्ध अछि।
सभसँ उत्तम कथा ओ होइत अछि जकर आधार कोनो मनोवैज्ञानिक सत्यपर होइक। साधु पिताक अप्पन व्यसनी पुत्रक दशासँ दुखी होएब मनोवैज्ञानिक सत्य अछि। एहि आवेगमे पिताक मनोवेगकेँ चित्रित करब आ तदनुकूल ओकर व्यवहारकेँ प्रदर्शित करब कथाकेँ आकर्षक बना सकैत अछि। अधलाह लोक सेहो बिल्कुल अधलाह नह होइत अछि, ओकरोमे कतौ ने कतौ देवता अवश्य छिपल होइत छैक, ई मनोवैज्ञानिक सत्य अछि। ओइ देवताकेँ खोलि कऽ देखाएब देब सफल आख्यायिकाक काज अछि। विपत्तिपर विपत्ति पड़लासँ मनुष्य कतेक दिलेर भऽ जाइत अछि एते तक कि ओ पैघसँ पैघ संकटक सामना करबाक लेल ठोन-ठोकि कऽ तैयार भऽ जाइत अछि। ओकर सभ दुर्वासना भागि जाइत छैक। ओकरा हृदयक कोनो गुप्त स्थानमे छिपल जौहर निकलि अबैत छैक आ हमरा चकित कऽ दैत अछि, मनोवैज्ञानिक सत्य अछि।
एक्के घटना वा दुर्घटना भिन्न-भिन्न प्रकृतक मनुष्यकेँ

ভিন্ন-ভিন্ন রূপসঁ প্রভাবিত করৈত অছি। হম কথামে একটা সফলতাক সংগ দেখা সকী তঁ কথা অবশ্য আকর্ষক হোএত। কোনো সমস্যাক সমাবেশ কথাকেঁ আকর্ষক বনএবাক সভসঁ বঢ়কা সাধন অছি। জীবনমে এহন সমস্যা নিশ্চয় উপস্থিত হোইত অছি জে ওহিমে পৈদা হোবএবলা দ্বন্দ্ব আখ্যাযিকাকেঁ চমকা দৈত অছি। সত্যবাদী পিতাকেঁ পতা চলৈত ছৈক কি ওকর পুত্র হত্যা কেনক অছি ও ওকরা ন্যাযক বেদীপর বলিদান কএ দিঅএ বা অপন জীবন সিদ্ধান্তক হত্যা কএ দিঅএ? কতেক ভীষণ দ্বন্দ্ব অছি! পশ্চাতাপ এহন দ্বন্দ্বক অখণ্ড স্রোত অছি। এক ভাএ দোসর ভাএক সম্পত্তি ছল-কপটসঁ অপহরণ কএ লেনক অছি, ওকরা ভিক্ষা মাঁগৈত দেখ কএ কী ছলী ভাএকেঁ কনিকো পশ্চাতাপ নহি হেতৈক। অগর এনা নহি হোইক তঁ ও মনুষ্য নহি অছি।
উপন্যাসেক জকাঁ কথা সেহো কিছু ঘটনা প্রধান হোইত অছি, কিছু চরিত্র প্রধান। চরিত্র প্রধান কথাক পদ উচ্চ বুঝল জাইত অছি, মুদা কথামে বহুত বিস্তৃত বিশ্লেষণক গুংজাইশ নহি হোইত অছি। এতএ হমর উদ্দেশ্য সম্পূর্ণ মনুষ্যকেঁ চিত্রিত করব নহি, বল্কি ওকর চরিত্রক এক অংগ দেখাএব অছি। ই পরমাবশ্যক অছি কি হমরা কথাসঁ জে পরিণাম বা তত্ব নিকলএ ও সর্বমান্য হোবএ আ ওহিমে কিছু বারীকী হোবএ। ই এক সাধারণ নিযম অছি কি হমরা ওহী বাতমে আনন্দ অবৈত অছি জাহিসঁ হমর কিছু সম্বন্ধ হোবএ। জুআ খেলএবলাকেঁ জে উন্মাদ আ উল্লাস হোইত ছৈক ও দর্শককেঁ কদাপি নহি ভএ সকৈত অছি। জখন হমর চরিত্র এতেক সজীব আ আকর্ষক অছি কি পাঠক স্বযংকেঁ ওকরা স্থানপর সমঝি লৈত অছি তখনে ওকরা কথাক আনন্দ প্রাপ্ত হোইত

छैक। अगव लेखक अपना पात्रक प्रति पाठकमे ओ सहानुभूति नहि उपेन्न कऽ देलक तँ ओ अपना उद्देश्यमे असफल अछि।
पाठकसँ ओ कहक जरूरति नहि अछि कि अग थोड़ दिनमे हिन्दी गल्पकला कतेक प्रौढ़ता प्राप्त कऽ लेलक अछि। पहिने हमरा सामने बँगला कथाक नमूना छल। आरो हम संसारक सभ प्रमुख गल्प लेखकक रचना पढ़ैत छी, ओहिपर विचार आ बँहस करैत छी, ओकर गुण-दोष निकालैत छी आ ओहिसँ प्रभावित भेने बिना नहि रहि सकैत छी। आरो हिन्दीक गल्प लेखक सभमे विषय, दृष्टिकोण आ शैलीक अलग-अलग विकास होरेऽ लागल अछि। कथा जीवनक बँहुत निकटे आबि गेल अछि। ओकर जमीन आरो ओतेक लम्बा-चौड़ा नहि अछि। ओहिमे कतेक रस, कतेक चरित्र आ कतेक घटनाक लेल स्थान नहि रहल। आरो ओ केवल एक प्रसंगक, आमोक एक झलकक सजीव हृदयस्पर्शी चित्रण अछि। ओ एक तथ्यता, ओहिमे प्रभाव, आकस्मिकता आ तीव्रता भरि दी। आरो ओहिमे व्याख्याक अंश कम संवेदनाक अंश बेसी रहैत अछि। एकर शैलियो आरो प्रभावमय भऽ गेल अछि। लेखककेँ जे किछु कहक अछि ओ कमसँ कम शब्दमे कहि देबऽ चाहैत अछि। ओ अप्पन चरित्रक मनोभावनाक व्याख्या करैत नहि बैसैत अछि, केवल ओकरा दिस इशारा कऽ दैत अछि। कखनो-कखनो तँ संभाषणमे एक दू-शब्दसँ काज निकालि लैत अछि। एहन कतेको अवसर होइत अछि, जखन पात्रक मुँहसँ एक शब्द सुनि कऽ हम ओकर मनोभावक पूरा अनुमान कऽ लैत छी। पूरा वाक्यक जरूरतियो नहि रहैत अछि। आरो हम कथाक मूल्य ओकर घटना विन्याससँ

नहि नगरैत छी। हम चाहैत छी पात्रक मनोगति स्वयं घटनाक सृष्टि करबाएँ। घतनाक स्वतन्त्र कोनो महत्व नहि रहल, ओकर महत्व करल पात्रक मनोभावकेँ व्यक्त करबाक दृष्टिएसँ अछि- ओहिना जेना शालिग्राम स्वतन्त्र रूपस करल पथेरक एक गोल टुकड़ा छहथि, लेकिन उपासकक श्रद्धासँ प्रतिष्ठित भऽ कऽ देवता बनि जागत छथि। खुलासा ई कि गल्पक आधार आब घटना नहि, मनोवैज्ञानिक अनुभूति अछि। आग लेखक कोनो रोचक दृश्य देख कऽ कथा लिखऽ नहि बैस जागत अछि। ओकर उद्देश्य स्थूल सौन्दर्य नहि। ओ तँ कोनो एहन प्रेरणा चाहैत अछि, जाहिमे सौन्दर्यक झलक होगक आ ओकरा द्वारा ओ पाठकक स्वन्दर भावनाक स्पर्श कऽ सकए।

मैथिल दृष्टिक प्रसंग व्लॉगसँ एक चिठ्ठी/ चर्चा दागक निनामी कोना से देखू

१

व्लॉग ०६ जून २०११-०६-३०

आदरणीय भाग,

हमरा पत्रकेँ सम्पादक लोकनि मिथिला-मिहिर टौगमसँ चर्चाकि विशेष बनरैत रहलन्हि अछि। सोमदेव कहैत छलथि जे पत्र-लेखकक रूपमे मितिला-मिहिरमे अहाँ चर्चित छलहुँ। कतेको सम्पादक हमरा आलेखकेँ पत्रक

रूपमे छापि देने छथि आ कतेको एकरा सम्पादकीय रूपमे छापि देने छथि।
स्वार्थरौध करिता छोड़ि की डायरी निखऽ नागन छनथि। हम अप्पन दू-टूक बात रह्तो रिद्वान् आ लेखककेँ पत्रसँ आकि फोनपर कहि चुकल छियनि। स्वार्थरशे ओ लोकनि ओइपर ध्यान नै दैत छथिन।
समीक्षक ओ आलोचककेँ लेखक आ करिक पहचान नै छनि, गतिहासकार लोकनि आलोचक आ समीक्षकक रिषय किछु नै जनैत छथि। सम्भतवि मैथिलीक नामपर निजी स्वार्थ-साधना भऽ रहल अछि। दोसर दिस भाषा-रैज्ञानिक लोकनि ऊंकाक चोटैपर कहि रहल छथि जे किछुये भाषा छोड़ि सभ भाषा मरि जाएत।
भाषा मरि जाएत तँ के रोकतैक ऋदा साहित्य तँ आनो भाषामे रूपान्तरित भऽ जीरि सकैत अछि। ऋदा सभ रिधाक रिकासक दिशामे कहाँ कतौ निःस्वार्थ प्रयास भऽ रहल अछि। पत्र सेहो साहित्यक एक रिधा अछि जे मरल जा रहल अछि।
अहीक
मानेश्वर मनुज
२
मैथिल दृष्टिक प्रसंग ऋण्वैगसँ एक चिट्ठी

जीरकान्त सभ दिन क्षेत्रीयताक पृष्ठ पोषक रहलथि अछि। ओ अप्पन रार्तामे सभ दिन कहैत रहलथि अछि जे जे शक्ति संस्कारपूर्वक माटिमे छैक ओ रैनीपट्टीक माटिमे कतऽ सँ अओतैक आ बाजनगरोमे कतऽसँ अओतैक। दोसर दिस ओ हरदम गाम आ शहरक रात करैत रहैत छथि। ओ गामक लेखक छथि। आ रह्तो

गोटै शहरक लेखक छथि।
हाग स्कूलसँ हँटि कऽ कोनो स्कूल नै होगत छैक तकर ओ अध्यापक छलथि। पढ़हैत तँ विज्ञान छलथि अदा ओ बी.ए.पास छथि। यानी कलाक ग्रेज्युएट छथि। ओ हाग स्कूलक पाठ्यपुस्तक यथा अर्थशास्त्र, नागविकशास्त्र, गतिहास, भूगोल, जीव विज्ञान आ गृह विज्ञानपव जरूव नजवि देने हेताह। ग सभ विषय एक संग बैस कऽ पढ़ि लेनाक बाद मोनक हँत्त बास अल्हाव हर्टि जागत छैक। शहवीकवण आधुनिक सभ्यताक पविणति अछि। जाग देशीक जतेक अधिक लोक शहवमे आवि बसि गेल अछि ओ ओतेक सभ्य कहबैत अछि। विकसित देशीमे बीज आ खाद हेलीकोप्टवसँ छीटैल जागत अछि। जोताग आ कटौग अत्याधुनिक मशीलसँ होगत अछि।
समुन्नत गाँरकेँ शहव कहैत छैक आव शहव आ गाममे किछु अन्तव नै होगत अछि। शहवमे पाँच-पाँच एकड़ जमीनमे एकटा अस्पताल बनल बहैत अछि, दू-तीन एकड़क पार्क बहैत अछि, चौड़ा-चौड़ा सड़क बहैत अछि, नमहव-नमहव पार्किंग-स्पेस बहैत अछि, पैघ-पैघ निहर्ट मल्टी-स्टोवी बिल्डिंगमे बहैत अछि। अदा बहरोंक लेल छोटे-छोटे रूम बहैत अछि।
अर्थ्वेग महानगवमे दुपहविघाक समय जे जे होस्पीटलक अगल-बगलमे घुमि कऽ देखियौ- कतेक पिपवक गाछ आ कतेक बड़क गाछक निचामे कंगाल सभ बैसल छैक। जग जगहपव एक रूमक दाम बीस लाखसँ कम नै ओतऽ भिखमंगो गुजव-बसव कऽ बहल छैक। कफ-पवेड सल महग एविघामे बिल्डिंग- वोगा-वोगी- मजदूव वस्त्र सेहो गुजव कऽ बहल छैक। झोपडपट्टी

सभ- सवकावी जमीनक अनाधिकाव अधिग्रहण छैक ऋदा ओकवा केओ हटा नै पवैत छैक।

ऋाँग महानगवमे कमसँ कम एक नाख स्त्री-पुरुष-बीच शहवमे बैनन वेन-नाइनपव अुनेआम मन्न नाग कवैत वहैत अछि। भोव पाँच बजे जे नोकन ट्रेनसँ यात्रा कवी तँ ओ दृश्य देखन जा सकैत अछि। जे कोनो स्त्री-पुरुष नै देखने होथि ओ नाख-नाख स्त्री-पुरुषक अंग दर्शन कऽ सकैत छथि। दोसव दिस ओतुक्का जेबन-यापनमे एतेक भागम-दौड़ छैक जे प्रति दिन वेन आ अन्य दुर्घटनामे कवीब पचास आदमी मवि जाइत अछि आ ओकव कतौ ओतबो चर्च-बर्च नै होइत छैक जतेक चर्च कतौ छागव वा ऋगीकेँ कटनाक बाद होइत छैक।

शहवमे बिल्डव सभ जमीन्दाव भऽ गेन अछि, पैघ व्यापावी सभ जमीनदाव भऽ गेन अछि। पैघ नेता आ पदाधिकावी सभ घोटाना कऽ आकि घुसखोवी कऽ जमीन्दाव भऽ गेन अछि। ओ सभ समृद्ध (एफ्लुएन्ट) अछि। ओ सभ शहवक भोग कऽ वहन अछि। बाँकी सभ तँ शहवोमे गामेक दैन्य जीवन जी वहन अछि। दृष्टिक संकीर्णता यात्रासँ समाप्त होइत छैक। योगी नोकनिक दृष्टि विशान होइत छनि कावण ओ सभ एक ठाम नै वहैत छथि, घुमैत-फिवैत वहैत छथि। कवीव पढ़न-निखन नै वहथि ऋदा घुमैत-फिवैत वहथि। ओ अप्पन गुरु कतौ अगन-बगनमे नै तकनथि। ओ अप्पन गुरु आधुनिक महावाष्ट्रमे आवि तकनथि। वामकेँ कोन प्रयोजन छननि जनकपुव अएबाक। कर्णकेँ भागनपुव (आधुनिक) केँ छोड़ि गुजवात जेबाक कोन प्रयोजन छननि। कानिदास उँचैठ की कवऽ एनथि (नोक

कथा आधार) । राजनेता लोकनि घुमैत-फिरैत लोक सभसँ गपसप करैत लोकक दर्शन करैत अप्पन दृष्टि विकसित कऽ लैत छथि । यात्रीक दृष्टिमे आकि राजकमलक दृष्टिमे जे विस्तार छलन्हि ओ हुनका लोकनिक घुमक्कड़ी स्वभावक कारणेँ । आब गौरीनाथ गाम घरसँ दूर दिल्ली महानगरमे पत्रकारिता क्षेत्रमे अप्पन स्थान बना लेलन्हि अछि एकर कारण की अछि ? ओ मैथिलीक अलावे हिन्दीक अत्यधिक रचनाकारसँ सम्पर्क बना लेलन्हि अछि ।

बैनीपट्टीमे कहियो पाँच सौ आदमी एक दरखास्तपर दस्तखत कऽ कलक्टरक जनता दरबारमे लै देने हेतैक मुदा पाँच सौ डीलर अप्पन पक्ष लऽ जनता विरोधी पेटीशन दऽ दैत छैक । दिल्लीमे जे लै रहैत छथि आकि विश्व पुस्तक मेलामे लै जाइत छथि ओ की जानि सकैत छथि जे कतेक प्रकाशक एक ठाम जुटि सकैत अछि ।

एहन व्यवस्था छैक जे सभ क्षेत्रक कार्यकर्ता आकि नेता आकि साहित्यकार देशक आ विदेशक भ्रमण करथि । एक दोसरासँ हिलथि-मिलथि, मित्रता स्थापित करथि आ गप ओ विचारक आदान-प्रदान करथि । की कहियो मैथिलीक कोनो पत्रकारकेँ आकि लेखककेँ एहन अवसर भेटैलन्हि अछि जेकर दृष्टिमे विकास कोना हेतन्हि ।

वीरकान्तजी कहैत छथि जे हमर संस्कृति बाँचल लै जाइत अछि । हमर पुस्तक बाँचल लै पढ़ल जा रहल अछि । अंग्रेजीक पत्र जे एक दिनक लेल छपैत छैक एक-एक शब्दपर विचार कएल जाइत छैक, दस-दस बेर प्रूफ देखल जाइत छैक मुदा मैथिलीक पत्र-

पत्रिका की पुस्तको बिना प्रूफ देखने निकलि जाइत अछि। तँ की चाहैत छी जे ई अन्यत्र पढ़ल जाएत ? सबकाबक अंग विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका आ बाष्ट्रपति अछि। सभक ऊपर बाष्ट्रपति अछि जे मात्र एक व्यक्ति अछि। एक-एक व्यक्ति एक बाष्ट्र अछि। ऐ आशयसँ साहित्यसँ समाज कहिया ने हटि गेल अछि। तदा हमवा लोकनि स्कूलिये विद्यार्थी जकाँ तोता-बटन्त कऽ बहल छी- साहित्य समाजक दर्पण होइत अछि। एक यात्रीजी भेटै गेला कि सभ हुनके नाङबि पकड़ि पाव उतबऽ लागलै। स्वयं अपना आपकेँ एक व्यक्तिक रूपमे स्थापित कबक कोशिस नै कबलै।
एक अस्त्र बनैत अछि दोसब अस्त्रकेँ निबस्त्र कऽ देबाक हेतु। एक कविता लिखाइत अछि ओइसँ पूर्वक कविताकेँ खाबिज कऽ देबाक हेतु। एक लेखक जन्म लैत छथि पूर्वक लेखककेँ खाबिज कऽ देबाक हेतु। एक संग्रह छपैत अछि पूर्वक संग्रहकेँ काटि देबाक हेतु। ई स्पर्धा एक-दोसबाक धाबकेँ देखबाक हेतु व्याकुल कबैत छैक। कतौ भोथ हाँसू पड़ल छैक लोक किएक देखत।
बवीन्द्रनाथकेँ चिन्ता छलनि जे आइसँ सौ साले बाद कोन कवि जनताक मनोबंजन कबाओत। तदा प्रगतिवादी लेखक मनोबंजनसँ अपन आपकेँ फबाक बखैत छथि। कतौ एतेक कल्पना भऽ जाइत अछि जे सत्यक कतौ कोनो स्थान नै बहि जाइत अछि। कतौ एतेक सत्य/ यथार्थ आबि जाइत अछि कि ओ कथा सत्य-कथा यानी अपबाध कथा बनि जाइत अछि। आ पबिणाम एहन बिन्दुपब नै चलि जाइक जे उत्तेजनाक संचाब होइक। कठिनतम विषयकेँ कलाक माध्यमसँ कहल

জাগত ছৈক। বাজমোহন ঝাক "প্রত্যাবর্তন" কথামে পতি–পত্নী হোটনমে জা এক বাতি প্রেমী–প্রেমিকাক স্বখ ভোগৈত ছথি আ জখন ঘব খবৈত ছথি তঁ পত্নীসঁ কহৈত ছথি জে – আ হোটনেক রুম নেন জে বীস রুপৈযা খর্চ ভ২ গেন ওকব মেক–অপ কোনা কবব ? স্বতন্ত্রতা কথিক নেন হোগত ছৈক– ব্যক্তিক স্বখক নেন। অপনা ওতেক কহবঁ ছৈক– স্বখমে সঘৌব, অহাঁ তঁ হমব স্বখ আ সৌখ দুনূ মাবি দেনৌঁ, দিযবকেঁ কহৈত ছৈক ছিনবা আ জাউতকেঁ খেনড়া।

কনকত্তামে দুর্গাপূজাক সময হবক আ হবতী স্বতন্ত্র ভ২ জাগত অছি। জত২ ঘুমী জত২ ফিবী। তহিনা ঝম্মঁগমে গণেশ পূজামে দীপাবাঁতীমে পশ্চিম ভাবতমে আ পশ্চিম উত্তব ভাবতমে চান পূর্ণীপব আবি জাগত অছি। গুজবাতী সমাজ এক অতি সমৃদ্ধ সমাজ অছি। নববাত্রামে ডাঁডিযা ঝম্মঁগ, বঁড় দা, সূবত, অহমদাবাঁদ আ আন সভ ছোট আ পৈঘ জগহপব খেনন জাগত অছি। তকব বাঁদ নাগন নাগি জাগত অছি গর্ভপাত কেন্দ্র সভমে। বঁগানমে কহন জাগত ছৈক জে বিবাহসঁ পূর্ব সাত ঘব দেখী আ ওগমে সঁ এক চুনি নী। আব বঁহুত বাঁত অছি জে বঁগানক ওপেন ফৈকট্ৈক রুপমে জানন জাগত অছি জকবা সাহিত্কাব প্রেমক রুপমে রুপান্তব কেনে ছথি। দক্ষিণে মাত্তনী কন্যা অপন বিস্তাব পশ্চিম তক নহ নেনে ছথি। শিবভক্তিক অর্থমে মিথিনা তমিননাডু আ কেবনসঁ মিনৈত অছি। মাছ আ ভোজনক অর্থমে মিথিনা, বঁগান, উড়ীসা আ কেবনসঁ মিনৈত অছি। বেশ–ভূষা আ শবীবক আকৃতিক অর্থমে মিথিনা গুজবাতসঁ মিনৈত অছি। ধার্মিক বীতি–বেরাজ গন্যাদিক অর্থমে মিথিনা উত্তব প্রদেশ, মধ্য

प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र आ गुजरातसँ मिलैत अछि। आर्थिक दृष्टिसँ ई क्षेत्र सम्पूर्ण देशमे सभसँ पछुआएल अछि। कहैत छैक जे जतऽ दर्शन हेतैक ओतऽ मैनेजमेन्ट हेरेँ करतैक। जतऽ वैज्ञानिक हेतैक ओतऽ फैक्ट्री हेरेँ करतैक। जतऽ दवाइक फर्मूला हेतैक ओतऽ दवाइ वॅनरेँ करतैक।
आइ कोन कारणसँ जाइ भोगेन्द्र झाक वॅड़हा गाममे सैकड़ा ँ इन्जीनियर, ओइ गाममे एक रस्ता नै। आइ कोन कारण अछि जे जइ स्कूलक अध्यापक जीरकान्तजी ओ स्कूल सभसँ खराप। आइ किएक देशक सभ विश्वविद्यालयसँ पाछाँ मिथिला विश्वविद्यालय आ सभ अस्पतालसँ खराप दरभंगा अस्पताल।
एहना स्थितिमे अपनामे स्वभाव नै आनि हमरा लोकनि मैथिल दृष्टि आ मैथिल दर्शनक वॉत करैत छी।
मिथिलाक पंडित शिक्षक, भनसीया, योगी आ दरवॉन कबीरॅ-कबीरॅ अंग्रेजक समयेसँ वॅगाल, असाम, राजस्थान आ गुजरात तक पसरल छल। ई क्रम चलिते रहल।
हालक वर्षमे राज्यसँ वॉहर रोजगारक गति किछु वेसी जोर पकड़ने अछि। नेवीमे देखू, एयर फोर्समे देखू, आर्मीमे देखू, विभिन्न आइ.आइ.टी. मे देखू, वैंकिंग सेवामे देखू, रेल-सेवामे देखू, स्वास्थ्य-विभागमे देखू। एक-एक ठाम विहारक लोकक प्रतिशत निनानवे प्रतिशत तक पहुँच चुकल अछि।
सभ राज्य चिन्तामे अछि जे कोन रस्तासँ दोसर ठामक लोककेँ ओतऽ रोजगार पयवॉसँ वंचित कएल जाए। जातीयताक वॅन्हन तँ लगाएले जा चुकल अछि, क्षेत्रीयता आ भाषाक वॅन्हन सेहो लगेवॉक प्रयासे कएल जा रहल अछि। कतेको ठाम उँच शिक्षाधारीकेँ कोनो कार्यसँ

রঁচিত বাখন জা বহন খছি তঁ কতৌ খন্য ক্ষেত্রক নোককেঁ রঁচিত বাখন জা বহন খছি খা খাৱঁ প্বনঃ ক্ষেত্রীয ভাষাক রাঁত ডঁঠা দোসবাকেঁ বোকক প্রযাস ভ২ বহন খছি। রিহাবক ছাত্রক প্ররেশ–পত্র খা ডঁত্তব–প্বস্তিকাপব খসাম, তমিননাড়্, মহাবাষ্ট্র্র সভতবি প্রহাব ভেন খছি। একব খছৈতো রেঁনীপঙ্গী– রেঁহটামে কেও হারক নিখ দেনে ছনথি– রেঁহটা হো কি গোহাটী, খপনী মিঙ্গী খপনা পানী। জযকান্ত মিশ্র সভ দিন গনাহারাঁদমে বহনথি খা রাঁত মিথিনাক মাটি খা পানিক কবৈত বহনথি। জীরকান্তজী সেহো মাটি খা পানি ভাষা খা ভূগোনক রাঁত কবৈত বহনথি খছি। ঝম্বঁগমে এক মহাবাষ্ট্র্রিযন এক মৈথিনসঁ কহৈত খছি– ঝা ভাগ, খবঁ ঝম্বঁগ তো খাপ নোগোঁ কা হো গযা, খবঁ হম নোগোঁ কো তো যহাঁ সে খ্দূরাঁবী ভাগনা পড়্ গা। ওতৈ খপনাকেঁ রাঁকী গন্ডিযাসঁ রাঁস–রঁর্খ খাগাঁ কহ২রঁনা রঁগানী খধরৈসীকেঁ পূণাক এক স্বসস্থ স্বসংস্কৃত বৃদ্ধ খংগ্রেজীমে ডাঁটি বহন ছনৈক– খা ও হারক রঁকব–রঁকব ঝঁহ তাকি বহন ছন। তৈও ভীড়মেসঁ খারি এক "গরাঠী" কগএক ফাগটৈ ওকবা ঝঁহপব মাবনকৈক। চ্প্প বহনাসঁ কি হাবি মানি নেনাসঁ সেহো কেও ছোড়্‌ত নৈ ছৈক।

পটনাক রঁসমে এক ঝম্বঁগ ট্রেন পকড়রাঁক নেন এক যাত্রী ছন। রিপতিক মাবনে কেও পবদেশী জাগত খছি। রেশ–ভূষা রএহ বহৈক। কেও প্বছনকৈক, কত২ জেবৈক। তঁ কহনকৈক– রঁম্বঁগ। কোনো স্বসস্থ খাদমী কহনকৈক– কত২ রঁমমে। কিছএ দিনক রাঁদ ঝম্বঁগমে রঁম রিস্ফাট ভেনৈক।

মিথিনাক দৃষ্ঠি খা ব্যবস্থা এতেক খকিংচন ভ২ গেনৈক

अछि। किछु स्थानीय ऊँच रस्त्राक लोभ दिमागक लोकविरोधा शिक्षक, बैंक कर्मचारी, राज्य सरकारक विभिन्न कार्यालयक कर्मचारी आ मध्यम वर्गीय किसान तक्षक नाग जकाँ अप्पन आसन जमौने छथि आ ओ आसन अछि सामन्तवादक आसन। सामन्ती सोचसँ मैथिली साहित्य तक भरल अछि। मिथिलाक संस्कृति जकरा कहैत छी ओ किछु अलग संस्कृति नै ओ हिन्दू जीवन पद्धति अछि जे सम्पूर्ण देशमे अछि। जे अमल चैनसँ स्वतः चाहैत छथि तिनका पेटैकेँ छुच्छी देवऽ पड़तनि। ओ पद्धति आनस्यक पद्धति अछि जकरा त्यागक प्रयोजन अछि। कोनो समयमे ऐ पद्धतिक प्रधानता छलै। पैघ-पैघ किसान छलै। लोक रौहवसँ रोजगारक लेल एतऽ अबैत छैक आ "ग्वहनाव"मे अप्पन मोपड़ ी-पट्टी बना लैत छल- छोटे लोक कहबैत छल।

ऋमेंगमे तहिना दू अट्टालिकाक बीच आकि नालाक कात, ग्वहनावक, रेलक पटरीक कातेक-कात, पोस्ट ऑफिस आकि आन कोनो सरकारी कार्यालयक बगलमे, जकर भार केओ सरकारी कर्मचारी आकि अधिकारी लेवऽ लऽ तैयार नै, मोपड़ पट्टी बनि गेल अछि। पटेलमे गली सभक दुनू कात मोपड़ ी ठाढ़ भऽ गेल अछि। ऐ हालातमे मिथिलाक लोक अन्यत्र जीवि रहल अछि। रौली स्वन्दर छैक आराज वँहवागत छैक- हे, यौ, अ, अप्पन-पेपर जे छल ओ फेक देललनि। आरॅ कथीपर सूतरॅ। पूणे जागत एक दम्पत्ति- जकरा देहपर कतौ लत्ता नै, आग्रह करैत छैक ऋमेंग जाएवँना यात्रीसँ- जरूर आएवॅ यौ, नासिकमे सेहो देखक वँह्त चीज सभ छैक जकरा अखी क्षेत्रवादक कारण खेहावि-खेहावि कऽ भगाओल जागत अछि।

ক্দা মাস্টব সাহেবকেঁ দ্ঃ খ ছনি- আব ভবিযা-খবাস নৈ ভেটৈত ছনি। ভনসীযা নৈ ভেটৈত ছনি। ক্দা ঠিকেদাব ভেটৈ জাগত ছনি। ড্রাগবব ভেটৈ জাগত ছনি।

৩

<u>ব্ঁচী দাগক নিনামী কোনা সে দেখূ</u>

রিভা বানীক "এহিনা একটা ব্ঁচী দাগ" ঘব-বাহব পত্রিকাক অক্টূবব-দিসম্বব ২০০৬ অংকমে ছপন ছন। ফেব ও "নরনীত" ফবরবী ২০০৭ মে হিন্দী কহানীক ৰূপমে "যূঁ হী ব্ঁচী দাগ" নামসঁ সেহো ছপন ছন। রিভা বানীক কথা শ্বরুহে সঁ ওগ সভ অরগ্ণসঁ ভবন বহৈত অছি জে কোনো কথাকেঁ কথা বনহসঁ বংচিত কবৈত ছৈক। মৈথিনীক সম্পাদক আ আনোচক নোকনি জতেক প্রাসোহিত হ্নকা কেনখিন্হ ততেক কোনো আন নেখিকাকেঁ নৈ। রিভা বানীক কথা আন বহ্তো নেখক জকাঁ ওগ সভ তত্বসঁ শ্বরুহেসঁ ভবন বহৈত ছন্হি জে তত্ব কোনো কথাকেঁ কথা কহরহ সঁ বংচিত কবৈত ছৈক। ছাত্র জীরনমে জখন হ্নকব কথা দেখৈত ছনৌঁ তঁ সোচৈত বহী জে হিনকা আগাঁ জখন বোধ হেতন্হি তঁ সংগ্রহমে একবা স্বধাবি নেতীহ ক্দা ও সভ পূর্রবত "খোহসঁ নিকসৈত" মে আযন অছি। রিভা বানী শ্বশ্রু-অশ্বশ্রু ৰূপমে অনপঢ়ক বীচ প্রযোগ হোগত জে কিছু স্বনৈত ছথি আকি স্বননে ছথি –সভকেঁ মিথিনা বা মৈথিন বা মৈথিনীক সংগ জোড়ি দৈত ছথি- আ মিথিনা নামক জতেক জে অর্জিত ক্রেডিট ছৈক- অপনা মাথপব নহ নেবহ চাহৈত ছথি। আগ নেতা বনক হেতু জেনা প্রচ্ব সময আ প্রচ্ব পৈসা চাহী তহিনা নেখক বনক নেন

সেহো প্রচুর সময় আ পৈসাক জরুরতি পড়ৈত ছৈক। এহন ভাগ্য দর্জন ভরি মৈথিলীক প্রাধ্যাপক সংগ হিনকা আ নবীন চৌধরীকেঁ প্রাপ্ত ছন্হি। হিন্দী বিভাগ সন অমন চৈনক জিনগী কোনো লোকবিহারা হেতু দুর্লভ অছি আ তাহুমে হিন্দী পদাধিকারী তঁ সোনামে সুগন্ধ।
হরিমোহন ঝাঁঝুক বুঁচী দাগকেঁ উঠা কঽ বিভা রানী "এহিনা একটা বুঁচী দাগ"মে লঽ অনলন্হি অছি। মিথিলামে বিধরা বিবাহ আ অন্য সমস্যা সির্ফ উঁচ কুল আ উঁচ বর্গমে অছি। ঝাঁলিহার লোক বিযাহ আ তলাকক অর্থমে অমেরিকা-ইংগলৈন্ডাসঁ আগাঁ অছি।
বিভা রানী জহাঁ-তহাঁ বিদ্যাপতিক প্রসিদ্ধ গীত সভক গলত রূপমে উল্লেখ করৈত ছথি। শুদ্ধ এনা অছি:-
সব বিন্ব সবসিজ সবসিজ বিন্ব সব
কী সবসিজ..............বিন্ব সূবে
যৌরন বিন্ব তন তন বিন্ব যৌরন
কী যৌরন.......পিযে দূবে
"এহিনা একটা বুঁচী দাগ" কথাক অন্তিম তীন পাঁতি
"দুঃখহি জনম লেল, দুখহি গমাওল
নযন ন তিবপিত ভেল
হে ভোলানাথ কখন হবব দুঃখ মোব!" ক কতেক গলত প্রযোগ ভেল অছি, জে দেখল জা সকৈত অছি।
ধ্যানাকর্ষণার্থ:-
দুঃখহি জনম ভেল, দুঃখহি গমাওল সুখ সপনহুঁ নহি ভেল, হে ভোলা দানী কখন হবব দুঃখ মোব!

"নযন ন তিবপিত ভেল" অনারশ্যক শির স্তুতিমে মিলা দেল গেল অছি। শুদ্ধ রূপ এনা অছি:-
"কত মধুযামিনী বভসি গমাওল

नहि बूझि कैसन केलि
सेहो मधुरोल श्रवणहि सूनल
श्रुतिपथ नहि भेल
जनम अवधि हम रूप निहारल
नयन न तिरपित भेल।"

विभा रानी अरूहेसँ शब्दक प्रति अल्हड़पन देखबैत अएलथि अछि यद्दा तेँ‍यो हुनकर कथा सभ ऐ लोकेक संग आन सभ लेखिकाकेँ अपमानित करैत छपल अछि:- आन लेखिका जकाँ विभा रानीक कथा महिला कोटाक अन्तर्गत नै छापल जा रहल अछि।"

"यूँ तो बूचीदाय"क किछु शब्द देखू- माँ–बाँउजी, कहानी–रहानी, लोग–बाग, पता नहीं, पावा–पावी, घास–पथार, जैसी बढ़ती गो चली जाती, अगर ब्राह्मण की बहू बहतीन आपकी माँ तो रे भी एक के बाद एक के बाद एक भेद–भेद जनमाती बहती, पुरुषों का गोता है हमारे में, लड़कियों का नहीं। मिथिला की बेटियाँ, तिनकोर के बेल की तरह चढ़ती गयी, अनछा, बंडापा, सिक्का, आज सगर कानून बन जाने के बाद भी कहाँ कोई जयदाद देता है।"

ऐ सभ शब्द विभारानी ककरा लेल बजने छथि। हिनका मंडन मिश्रक पत्निभरती याद नै अबैत छन्हि जे शंकराचार्यसँ संस्कृतमे बात कएने छलथि। कथाक बहन्ने, लोक कथाक बहन्ने वा संस्कार ओ उत्सवक बहन्ने कतेको ठाम विभा रानी हिसाब कि मिथिला कि मधुबनीक प्रयोग गलत अर्थमे कएने छथि। कोनो कथा थूक फेकक लेल वा गूँ–मूतक बात करक लेल नै लिखल जाएत छैक। कथा सभ्यताक पहिल डेग अछि। कथाकार रामधारी सिंह "दिवाकर" जीवन भरि दरभंगामे रहि

কহানী লিখৈত বহলথি ঝাদা ও কতৌ দবভঙা বা মিথিলাক নাম নৈ লেলন্হি।
"জখন তখন" জনরবী–মার্চ ০৭ অংকমে পুনঃ বিদ্যাপতিক পাঁতি গলত রূপমে দোহরাএল গেল অছি। "বঁড় বে জতন সঁ সিয়া দাগকেঁ পোসলহুঁ সেহো বঘ্রংশী লেলে জায।" হেরাঁক চালী।
পংডিত লোকনি বঁড় প্রযলেসঁ মৈথিলীকেঁ বঁচৌনে ছথি। মৈথিলীক বঁড়প্পন অষ্ঠম অনুসূচীমে অএলাসঁ নৈ ভেল অছি। মৈথিলী জহিযা জ্ঞানক ভাষা বঁলত তহিযা মৈথিলীক বঁড়প্পন হএত। মৈথিলী অনপঢ়ক ভাষা বঁলল বহত তঁ কি জ্ঞানক কোনো রিষয মৈথিলীক ভরোসে বৈঁসল বহত। জীরকান্ত জী কহৈত ছলথি জে মৈথিলীক লেখক ঝংঠিত লোকক রীচ বহৈত ছথি তঁ ঝংঠা নৈ তঁ কী লিখতাহ। জিনকা কোনো রিষযক জ্ঞান নৈ ও শিক্ষক বঁলৈত ছথি, জিনকা কোনো অধ্যযন নৈ ও লেখক বঁলৈত ছথি, কাবণ ও স্বরিধা জীরী ছথি।
জঁ কেও অযোগ্য ব্যক্তি সম্পাদক বঁলৈত ছথি কি প্রবস্কাবক হেত্ত জূবী বঁলৈত ছথি তঁ ও মৈথিলীক টাঁগ ঘীচি বহল ছথি।
কিছু আলোচক লোকনি আৱ কথা আ করিতা লিখঽ লগলথি অছি আ কিছু কথাকাব লোকনি আলোচনা। হম জখন ককবো নাঠী ভঁজৈত দেখৈত ছিঐক কি লচৈত দেখৈত ছিঐক কি গবৈঁত দেখৈত ছিঐক বা সর্কস–সিনেমামে অপন "কবতৱ" কবৈত দেখৈত ছিঐক তঁ সোচৈত ছী জে ও গুণ মৈথিলীক লেখক লোকনিমে কিএক নৈ ছৈক। ফুটবঁল, ক্রিকেট কি সর্কসমে কিছুও গলতী ভঽ জাগত ছৈক তঁ সভকেঁ দেখাগ দৈত ছৈক ঝাদা সাহিত্যব গরাব বাজ্য কঽ বহল ছৈক সে কিএক

নে কেও দেখ বহল ছৈক। এক গোটে কহৈত ছথি জে: দেখৈত তঁ সভ ছৈক হ্মদা ককবো কোন মতনৱঁ। জেনা বাজমোহন ঝা কহননি– নোকক সম্পর্কমে নৈ খএরেঁক তঁ নোককেঁ কোন মতনৱঁ জে খহাঁ নীক নিখৈত ছী কি রেঁজাএ। এতঙ্কি।

**ওম প্রকাশ ঝা**

ভোথ হথিযাব

শ্রী স্ববেন্দ্র নাথক কহন মৌথিনী গজনক সংগ্রহ খছি

"गजल हमर हथियार थिक"। ऐ पोथी मे हुनकर अड़सठि टा गजल प्रकाशित भेल अछि। ओ संग्रह २००८ मे आएल अछि जकर आमुख श्री अजीत आजाद जी लिखने छथि। ऐ पोथी केँ आदि सँ अन्त धरि पढ़लाक बाद हमर यैह अभिमत अछि जे गजलक व्याकरणक दृष्टिसँ ऐ संग्रह मे अनेको कमी अछि, जाहि सँ रचना जा सकैत छल।

पृष्ठ संख्या १३, ६७ आ ७० परहक गजल मे चारियेटा शेर छै, जखन की कोनो गजल मे कम सँ कम पाँच टा शेर हेबाक चाही। संग्रहक कोनो गजल रचना मे नै अछि। हमर ओ स्पष्ट मतवर्ग अछि जे गजलकार केँ प्रत्येक गजल मे रचनक उल्लेख करबाक चाही आ जँ आजाद गजल कहने छथि तँ ओहो स्पष्ट रूपेँ लिखबाक चाही।

ऐ पोथी मे काफियाक गलती भरमार अछि। कतौ कतौ तँ ओ बूझना जाइ छै जे गजलकार बिना काफिया आ बदीफक मतलबेँ बूझने गजल कहबा लेल बैसि गेल छथि। एकर उदाहरण पृष्ठ १५ परहक गजल पढ़बा पर भेंटि जाइ छै। ओ तँ हम एकटा उदाहरण कहि रहल छी। आरो गजल ऐ दोख सँ प्रभावित छै, जतय काफियाक नियमक धज्जी उड़ा देल गेल अछि। जेना पृष्ठ १८, १९, २०, २१, २७, २९, ३१, ३४, ३५, ३६, ३९, ४०, ४१, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ५२, ५३, ५६, ५७, ५८, ६६, ६७, ६८,७०, ७१, ७२, ७४, ७५,७७, ७९ आदिमे काफिया तकनासँ नै भेंटैत अछि आ ऐ खोजमे मोन अकच्छ भऽ जाइत छै। ओना आनो

पूर्ण्य काफिया दोखसँ ग्रसित अछि, मुदा ओ उदाहरण हमे ओग पूर्ण्य सभक देने छी, जतय काफियाक सनकियो तक नै भेंटै छै। मैथिली गजल आग जाहि सोपान पर चढि चुकल अछि, ओग हिसाबेँ ऐ तरहक रचना गजलक नामसँ स्वीकृत होएब रॅना नै अछि। किया़क तँ रॅना दुरुस्त काफियाक गजल नै भऽ सकैत अछि। ओ संग्रह "अनचिन्हार आखर" ब्लागक शुरुआत भेलाक बाद लिखल गेल अछि, तेँ हमरा ओ आस छल जे गजलकार कमसँ कम काफिया आ बहरक नियमक पालन ठीकसँ केने हेताह, किया़क तँ "अनचिन्हार आखर" ब्लग मे आबेँ गजलक व्याकरणक सभ नियम चिन्हार भऽ चुकल अछि। मुदा गजलकार काफिया आ बहरक नियम पालन करबामे पूरा असफल रहलथि। ओना ऐ संग्रहक काफिया दोखकेँ पोथीक आमुख लेखक श्री अजीत आजाद पोथीक आमुखमे दाबॅल आवाजमे स्वीकार करैत कहै छथि जे कतेको ठाम काफिया "गडबॅडायल सन" बूझना जाइत अछि। ओना ओ अलग गप थिक जे काफिया "गडबॅडायल सन" नै अपितु पूरा पूरी गडबॅडायल अछि। फेर श्री आजाद ऐ गलतीकेँ झाँपबा लेल ओहो कहैत छथि जे "रचनाकारकेँ अपन सीमासँ बाहर आबि शब्द-व्यापार करबाक चाही"। मुदा गजलक अपन व्याकरण छै, जकर पालन केने बिना रचना गजल नै भऽ कऽ पद्य मात्र रहि जाइत छै। गजल आ कविताक बीचक अंतर जे अंतर छै, से ऐ तरहक तर्कसँ समाप्त नै भऽ जाए छै। काफिया, बहर आ गजलक व्याकरणक अनुपालन नै हेबाक कारणेँ श्री सुरेन्द्र नाथक ओ संग्रह गजल संग्रह नै भऽ कऽ एकटा पद्यक संग्रह भऽ कऽ रहि गेल अछि।

সংরেদনাক স্তব পব কিছু বচনা নীক খছি খা জঁ গজনকাব গজনক ব্যাকবণ পব ধেখান দেনে বহতথিন্হ, তঁ নীক গজন নিখি সকৈত ছনাহ। গজনকাবক ওা পহিন্বক মৈথিনী গজন সংগ্রহ বঁহ্ত খাস তঁ নৈ জগবৈত খছি, ফদা হ্নকব সংরেদনামেক প্রতিভা দেখৈত হম ওা খাস জব্দব কবৈ ছী জে ও গজনক ব্যাকবণক পানন কবৈত খাগূ নীক গজন কহতাহ খা "গজন হমব হথিযাব থিক" কেঁ চবিতার্থ কবতাহ। গজন তঁ হথিযাব মোগতে খছি, ফদা বিন্ব কাহ্ফিযা, বদীফ খা বঁহবক নিযমক পানন কেনে বচনা গজন নৈ মোগত খছি খা ভোথ হথিযাব ভঽ জাগত খছি। পদ্যক হথিযাব পব কাহ্ফিযা খা বঁহবক সান চঢন হ্নকব নর্ব গজন-হথিযাবক প্রতীক্ষা বহত।

<u>মৈথিনী বাঁন গজনক খরধাবণা</u>

জেনা কি নাম সঁ স্পষ্ঠ খছি, বাঁন গজন মানে ভেন

नेना-भुटकाक लेल गजल। बाल गजलक अवधारणा मैथिली मे एकदम नव अछि आ पहिल बेर २४ मार्च २०१२ केँ श्री आशीष अनचिन्हार ऐ अवधारणा केँ सामने आनलथि। बहुत अल्प समय मे बाल गजल बहुत प्रसिद्धि पओलक आ बाल गजल कहनिहार गजलकार सभक एकटा विशाल पाँति ठाढ़ भऽ गेल। ऐ मे सर्वश्री गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार जकाँ स्थापित गजलकार तँ छथि, एकर अलावे नव गजलकार सभ सेहो बाल गजल कहबा मे विशेष अभिरूचि देखौलन्हि। बाल गजल कहनिहार नव गजलकार सभ मे सर्वश्री मिहिर झा, रूबी झा, उमेश मंडल, अमित मिश्रा, चन्दन झा, पंकज चौधरी 'नवलश्री', राजीव रंजन झा, जगदानंद झा 'मनु', रूबी झा, प्रशांत मैथिल आदि अनेको गजलकार छथि। "अनचिन्हार आखर", जे मैथिली गजलक एकमात्र ब्लाग अछि, देखला पर पता लागैत अछि जे बाल गजलक अवधारणा अएलाक बाद सँ एखन धरि(ऐ आलेख लिखबा तक) ७३(तिहत्तरि) टा बाल गजल ऐ ब्लाग पर पोस्ट भऽ चुकल अछि, जे अपने आप मे एकटा कीर्तिमान अछि। खास कऽ एतेक कम समय मे एतेक पोस्ट आएब बाल गजलक लोकप्रियताक खिस्सा कहि रहल अछि। बाल गजलक विधा एकटा स्वतन्त्र विधा बनबाक बाटे मे अग्रसर अछि, जे एतेक कम समय मे एतेक संख्या मे बाल गजल कहनिहार गजलकार आ बाल गजलक संख्या सँ स्पष्ट अछि। संगहि किछु लोक केँ मिरचाइ सेहो लागब शुरू अछि आ ओ लोकनि बाल गजलक सम्पूर्ण अवधारणा केँ नकारबाक कुत्सित असफल प्रयास मे जत्र कुत्र अंट शंट पोस्ट देबऽ लागलाह। ऐ गप आर स्पष्ट करैत

अछि जे ग़ज़ल गजलक विधा मजबूती सँ स्थापित भऽ रहल अछि। किएक तँ सफल व्यक्ति आ विधा सभक आकर्षणक केन्द्र बनैत अछि आ ग़ज़ल गजल सेहो सभक आकर्षणक केन्द्र बनि चुकल अछि, चाहे ओ गजलकार होथि, पाठक होथि, आलोचक होथि वा जबनिहार लोक सभ होथि। जखन मैथिलि गजलक चर्च भऽ रहल अछि, तखन श्री आशीष अनचिन्हारक चर्चा स्वभाविक अछि। मैथिली गजलक विकास मे हुनकर योगदान हुनकर धुर विरोधी लोकनि सेहो मानैत छथिन्ह। मैथिली ग़ज़ल गजलक अवधारणा लेल श्री आशीष अनचिन्हार मैथिली साहित्य मे अपन अनुपम स्थान बना चुकल छथि। ग़ज़ल गजलक अवधारणा सेहो हुनके छैन्हि, जे बहुत सफल भेल अछि।

आब किछु गप करी मैथिली ग़ज़ल गजलक रचना सभक संबंध मे। हमरा विचार सँ ग़ज़ल गजल लेल भुटकाक लेल रुचिगर तँ हेबाके चाही, संगहि ऐ मे कोनो स्पष्ट सामाजिक सनेस होएब तँ ओ सोन मे सोहाग जकाँ हएत। ओना तँ सभ ग़ज़ल गजल कहनिहार गजलकार सभ ऐ मे सक्षम छथि आ नीक सँ नीक ग़ज़ल गजल लिख रहल छथि, मुदा ऐ सन्दर्भ मे हम श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक ग़ज़ल गजलक उल्लेख करब उचित बूझि रहल छी। हुनकर एकटा ग़ज़ल गजलक मतला अछि:-

कनियाँ पुतरा छोड़ि आब् बाबी
जँ बंग ग्वनारी छै तँ जानू बाबी

ऐ गजल केँ पूरा पढि कऽ कने देखियौ। ओ गजल कनिया पुतराक उल्लेख करैत लेना-भुटकाक मनोरंजन तँ करिते अछि, संगहि अजुका बाजारवादक बलिवेदी पर चढ़नि भेल मनुक्खक मार्मिक विवेचना सेहो करैत

अछि। एहन आरो कतेको बाल गजल सभ "अनचिन्हार आखर" पर भेंटैत अछि, जकरा ऐ ब्लाग पर पढ़ल जा सकैत अछि। ई गजलकार सभक सामाजिक संवेदना केँ प्रकट करैत अछि आ हम ऐ लेल सभ गजलकार केँ साधुवाद दैत छियैन्हि। हम एहने बाल गजलक आस गजलकार सभ सँ लगओने छी। किएक तँ गजलकारक सामाजिक दायित्व सेहो छै, जे पूरा हेबाक चाही। आधुनिक मैथिली गजलकार सबमे ई क्षमता अछि आ ओ दिन दूर नै अछि जखन एक सँ एक स्वस्थ आ बालोपयोगी संगे सामाजिक समस्या पर बाल गजलक भरमार हएत। व्याकरणक हिसाबेँ मैथिली बाल गजल नीक बाटे धएने अछि। अनचिन्हार आखरक टीमक परिश्रमक कारणेँ मैथिली मे बहरयुक्त गजलक कान ठाढ़ भऽ चुकल अछि आ सरल वार्णिक बहर(जकर अवधारणा श्री गजेन्द्र ठाकुरजी देलखिन्ह) केर अनारे आर अरबी बहर मे गजल कहनिहार गजलकारक कमी नै छै। बाल गजल अपन शुरुआते सँ बहरयुक्त अछि, जे बाल गजलक लेल शुभ संकेत अछि। शुरुआतिए समय मे जे आ जतबा बाल गजल लिखल गेल अछि, ओ सभ बहर मे अछि, चाहे सरल वार्णिक बहर होउ वा अरबी बहर। बहरक अनारे बदीफ आ काफियाक नियमक पालन सेहो पूरा पूरा भऽ रहल अछि। व्याकरण पालनक ई प्रतिबद्धता निश्चित रूपे बाल गजलक सफलताक गाथा लिखबा मे सहायक हएत। मैथिली गजलक बढ़ैत डेग संग आब मैथिली बाल गजलक डेग सेहो उठि गेल अछि। मैथिली बाल गजल जाहि द्रुत गति सँ अपन डेग उठओनक अछि, ऐ सँ तँ येह लागैत अछि जे अगिला साल आबैत

অাবৈত মৈথিলী বাঁন গজনক পোথী প্রকাশিত ভ২ সকৈত অছি। সংগহি গসকূনক পাঠ্যক্রম মে বাঁন গজন সম্মিলিত হেবাঁক সংভাবনা সেহো সাকাব ৰূপ ন২ সকত। পাঠ্যক্রম মে সম্মিলিত হেবাঁক বাঁদ মৈথিলী বাঁন গজন সভ পঢনিহাব-পঢৌনিহাবক সংজ্ঞান মে নীক জকাঁ অাওত আ সামাজিক বিকাসক সংবচনা মে অপন মহত্বপূর্ণ যোগদান, জে অপেক্ষিত অছি, সেহো দ২ সকত।

रॱहुरूपिया बरना मे

गजल मे हम रूचि राखैत छी। संगहि मैथिली मे थोड रॱहुत गजल सेहो लिखै छी आ गजलक पोथी सरॱ पढरॱाक इच्छा रहै ए। मैथिली मे रॱहुत कम गजल संग्रह अछि आ ओहो स्वतन्त्र नै होइत रहै ए। एहन परिस्थिति मे हमरा श्री अररिन्द ठाकुरजीक सद्यः प्रकाशित मैथिली गजल संग्रह "रॱहुरूपिया प्रदेशो मे" पढरॱाक अरसर भेंटैल आ हम एहि पोथी कँ आद्योपान्त पढलहुँ।
सरॱसे पहिने हम श्री अररिन्द ठाकुरजी कँ मैथिली गजलक पोथी लिखरॱाक लेल रॱधाइ दैत छियैन्हि। मैथिली गजलक उत्थान लेल प्रत्येक डेग हमरा महत्वपूर्ण लागै ए। पोथीक गेटअप रॱड्ड सुन्नर अछि। छौइप आ कागतक कोटि सेहो उत्तम अछि। पोथीक भूमिका गजलकार अपने लिखने छथि आ ओहि मे गजल आ एहि संग्रहक सम्रॱन्ध मे रॱहुत रास गप सरॱ कहने छथि। जेना पृष्ठ संख्या सातक दोसर पारा मे गजलकार कहैत छथि जे "मैथिलीक मिजाजक सीमा (ई मैथिलीक नहि, हमर अपन सीमा भऽ सकैत अछि) कँ देखैत गजलक व्याकरण (रदीफ, काफिया, मिसरा, मतला, मकता आदि)क स्थापित मापदंडक कसरॱट्टी पर हमर सभ गजल खरा उतरत तकर दारॱी तऽ नहिए छौ अछि रॱल्कि हम तँ ई सकारय चाहै छी जे------------------------------------ हमर सीमाक कारणेँ प्रस्तुत गजल मे कएक जगह स्वधि पाठक लोकनि कँ

त्रुटि भेटि सकैत छनि।" एहि पाबाक अन्त मे ओ कहै छथि जे बहबक दोख किछु शेब मे भेटि सकैत अछि। हम गजलकाबक सबाहना कबैत छी जे ओ भूमिका मे अपने कएक ठाम बहबक आ आन दोख हएब स्वीकाब कएने छथि। पोथी केँ आद्यापान्त पढ़ला पब हमबा ग नै बुझाएल जे एहि संग्रहक गजल सब कोन-कोन बहब मे लिखल गेल अछि। अबबीक कोनो टा बहब मे कोनो गजल नहिए अछि, मैथिली मे आग-काल्हि प्रयुक्त होग बला सबल बार्णिक बहब मे सेहो कोनो गजल नै अछि। गजलकाब केँ प्रत्येक गजल मे ग लिखबाक चाही छल जे कोन बहब मे गजल लिखल गेल अछि। जँ ग "आजाद-गजल"क संग्रह थीक, तँ हुनका एहि बातक उल्लेख कबबाक चाही छल। भूमिकाक उपबोक्त पाबाक शब्द मे गजलकाब कहै छथि जे मैथिलीक मिजाज केँ देखैत एहि मे उर्दू-हिन्दी गजलक मिजाजक नकल कबबाक प्रयास कएल जागत तँ एकबा बुधियाबी नहिए टा कहल जायत आओब सफलता सेहो नहि भेँटैत। हम हुनकब गप सँ सहमत छी जे नकल कबब उचित नहि। मुदा एकटा गप हम कहए चाहैत छी जे प्रत्येक विधाक एकटा नियम होगत छै आओब जाहि क्षेत्र मे ओहि विधाक उदय भेल बहैत छै ओहि क्षेत्र मे स्थापित भेल नियमक पालन केने बिना कोनो बचना मूल विधा मे कोना भए सकैत अछि। जेना मैथिली मे समदाउन आ सोहबक पबम्पबा छैक आ जँ पंजाबी मे वा गुजबाती मे वा की कोनो आन भाषा मे समदाउन आ सोहब गाबए चाही तँ नियम कोना बदलि जेतैक। जँ नियम बदलतै तँ ओ दोसब चीज भए जेतैक। तहिना गजल अबब क्षेत्र मे

जन्म लेलक आ ई स्वाभाविक छै जे एकर नियम (व्याकरण) ओहि क्षेत्रक स्थापित मानदण्डक आधार पर बनल। स्थापित मानदण्डक पालन करबाक नकल नहि कहल जा सकैत अछि। आ जे नकलक गप करी तँ 'गजल' कहबाक अरबी-हिन्दीक नकल थीक। एक दिस गजलकार 'गजल' कहबाक लोभ नै छोड़ि रहल छथि आ दोसर दिस गजलक व्याकरणक नियम पालन कें नकल कहै छथि, ई उचित नै बुझाएल। गजल स्थापित मानदण्ड पर जँ नै कहल गेल तँ रचना कें गजलक स्थान पर दोसर नाम देल जा सकैत अछि।
पृष्ठ संख्या दस पर दोसर पारा मे गजलकार कहै छथि जे ओ जीवन सँ सिद्धहा नैत छथि। ई स्वागत योग्य गप भेल। जीवनक सिद्धहा सँ तैयार व्यंजन सोआदगर होबे करतै। मुदा भोजन बनबै काल चाउरक सिद्धहा पानि मे सोझे हुलना कऽ परसि देला सँ भात नहि कहाएत अछि। चाउरक सिद्धहा कें अदहन मे देल जाए छै तखन भात तैयार होए छै। तहिना जीवनक सिद्धहा जँ व्याकरण, नियम आ चिन्तन-मननक अदहन मे पकाओल जाएत अछि तँ सोआदगर रचना भेटैत अछि। विधा विशेषक मापदण्ड तोड़बाक क्रांतिकारी घोषणा कएला ठाँ सँ किछु विशेष फायदा वा उमेद तँ नहिए जगै ए। जँ कियो मापदण्ड तोड़ै छथि, तँ मापदण्ड पर चलै बला कें नकलची आ वाजीगर कहब उचित नहि। गजल आ रुकबा आ दोहा मे थोड़ेक अन्तर तँ छै जे रहबे करतै। अस्तु, ई गजलकारक अपन विचार छैन्हि आ आब प्रकाशित सेहो छैन्हि।
गजल संग्रहक सब गजल पढ़लौं। विषय वस्तु सब

नीके लागल। गजलक व्याकरणक आधार पर कहि सकैत छी जे रहबक दोख तँ प्रत्येक गजल मे छैक आ जँ ए आजाद-गजलक संग्रह थीक तँ गजलकार ए गप कतौ नै कहने छथि। गजलकार केँ स्पष्ट करबाक चाही छल जे कोन कोन रहब मे गजल सभ लिखल गेल अछि। हमरा बुझने गजलक कोनो शीर्षक नै होइत अछि, मुदा प्रत्येक गजल केँ एकटा शीर्षक देल गेल अछि। रहबक अतिरिक्त बदीफ आ काफियाक नियमक सेहो कएक ठाम पालन नै भेल अछि आ ए गप गजलकार भूमिका मे सेहो स्वीकार कएने छथि। जेना पृष्ठ बाइस मे मतलाक दुनू पाँति, दोसर शेर आ पाँचम शेर मे काफिया मे 'आयरि' प्रयोग भेल अछि, तँ दोसर आ चारिम शेर मे 'अरि' क प्रयोग अछि। पृष्ठ चौबीस मे मतलाक पहिल पाँति मे काफिया मे 'अ' आयल अछि आ दोसर पाँति आ अन्य शेर मे 'आत' आयल अछि। पृष्ठ पचीस मे काफिया की छै, से नै बुझाएल। पृष्ठ तिरपन मे प्रत्येक पाँति मे काफिया एकदम फराक फराक अछि। पृष्ठ अनठावन मे मतला, दोसर शेर आ चारिम शेर मे काफिया मे 'अन' प्रयुक्त अछि आ आन सभ शेर मे काफिया मे 'अ' प्रयुक्त अछि। पृष्ठ उनसठि मे सेहो बदीफ आ काफियाक स्पष्टता नै अछि। पृष्ठ छियासठि मे काफिया मे कतौ 'अन' आ कतौ 'आओन' प्रयुक्त अछि। पृष्ठ सड़सठि आ तिहत्तरि मे सेहो काफियाक नियमक उल्लंघन भेल अछि। तहिना संयुक्ताक्षर वला काफियाक नियम सेहो एक दू ठाम हमरा हिसाबेँ ठीक नै अछि। एकर अतिरिक्त आओर कएक ठाम काफियाक नियमक पालन नै भेल अछि। हम उदाहरण स्वरूप किछु पृष्ठक उल्लेख

कएनहुँ। हमर ई उद्देश्य नै अछि जे खाली दोख ताकल जाय, मुदा जँ गजल कहि रहियै तँ गजलक नियमक पालन हेबाक चाही। सभ गोटेकेँ जानकारी लेल ई बता दी की बिना बहरोक गजल तँ भऽ सकैत अछि, मुदा बिना रदीफ-काफिया भेने गजल नै भऽ सकैत अछि।
भूमिका सँ एकटा बात आर स्पष्ट होइत अछि जे गजलकार मात्र २००८ सँ मैथिली मे गजल लिखब शुरू केलथि, ओना ओ हिन्दी मे पहिनहुँ गजल लिखैत छलाह। एकर मतलब ई भेल जे गजलकार "अनचिन्हार आखर" (मैथिली गजल केँ समर्पित ब्लाग) सँ बहुत बाद मे मैथिली गजल लिखब शुरू कएने छथि आ मैथिली गजलक रचीयता मे बहुत बाद मे आयल छथि। "अनचिन्हार आखर" ब्लाग देखला सँ पता चलै छै जे गजलकार एहि ब्लाग पर सेहो अपन कएक टा गजल २००९ सँ एखन धरि देने छथि। ओ "अनचिन्हार आखर" ब्लाग सँ चिन्हार छथि, तेँ ई उमेद अछि जे एहि ब्लाग पर प्रकाशित मैथिली गजलक विस्तृत व्याकरण केँ जरूर देखने हेताह। ई उमेद छल जे प्रस्तुत गजल संग्रह मैथिली गजलक नव पीढी लेल एकटा उदाहरण बनत। मुदा एहि संग्रह मे गजलक व्याकरणक जे उपेक्षा भेल अछि, जे गजलकार भूमिका मे स्वयं स्वीकार कएने छथि, निराशा उत्पन्न करैत अछि। मुदा ई संग्रह गजलकारक पहिल्का मैथिली गजल संग्रह अछि, तेँ गजलक व्याकरणक गलती भेनाइ स्वभाविक अछि। आशा व्यक्त करै छी जे हिनकर आगामी गजल संग्रह मैथिली गजल मे अपन अलग स्थान राखत।

घोघ उँठरौत गजल

मैथिली गजलक पहिलुक प्रकाशित पोथी "उँठा बहल घोघ तिमिर" पढबाक सौभाग्य भेंटल। ऐ गजल संग्रहक गजलकार श्री विभूति आनन्द छथि। एहि पोथी मे कुल चौंतीस गोटे गजल अछि। पूरा पोथी कें एकहि बैसार मे पढि गेलहुँ आ बेर-बेर पढलहुँ। सबसे पहिने हम श्री विभूति आनन्दजी कें मैथिली गजलक पहिलुक संग्रह प्रकाशित करबा लेल धन्यवाद दैत छियैन्हि।
एहि पोथीक भूमिका मे गजलकार कहै छथि जे "मैथिलीक गजल सोझे-सोझ हिन्दी सँ प्रभावित अछि ख़ास हिन्दी जकाँ जमल नञि अछि एखनो धरि।" आगू

छलकव कहलाओ छैन्हि– "पारम्परिक व्याकरण सम्बन्धित अगणित त्रुटि सभ ठाम लक्षित होएत। ओना हम दुस्साहसपूर्वक साहस करैत बहलहुँ अछि जे कथ्य-सामंजस्य नइ व्याकरण दिस सँ यदि मुँहो घुमा लेल जाए तँ कोनो हर्ज नञि। किए तँ हम मानैत छी जे ई पाठ्यक्रमक वस्तु नञि अछि। विद्यार्थी मूर्ख नञि बनत। तेँ की -------------------------- व्याकरण सँ भयभीत भऽ नञि लिखल जाए।" गजलकारक पहिल्वक कथनक सम्बन्ध मे हमर निवेदन अछि जे गजलक परम्परा अरबी-फारसी सँ शुरू भेल अछि आ ओतहि सँ आन भारतीय भाषा मे पसरल अछि। हिन्दी-उर्दू मे गजल कहबाक परम्परा मैथिली सँ पहिने शुरू भेल, तेँ बहुसंख्य लोक दिग्भ्रमित भऽ जाइत छथि जे मैथिलीक गजल हिन्दी गजलक नकल छी वा ओइ सँ प्रभावित भेल अछि। गजलकार सेहो एहि मिथ्या धारणा सँ प्रभावित छथि। आब गजलक व्याकरण थोड-बहुत समन्जनक संग सब भाषा मे तँ एक्के रहत। ऐ स्थिति केँ हमरा हिसाबेँ "प्रभावित भेनाइ" कहबाक कोनो औचित्य नै अछि। गजलकारक दोसर कथन देखि हम निराश भेल छी। पता नै किया एखन धरि जे दुनू गजल संग्रह (सबसँ पहिल्वक आ सबसँ अंतिम प्रकाशित) पढलहुँ, एहि दुनू मे गजलकार कथ्य-सामंजस्यक आगू व्याकरण केँ कोनो मोजर नै देबऽ चाहैत छथि। एकटा गप मोन बखबाक चाही जे साहित्यक निर्माण वैयाकरणिक अनुशासनक बादे सफल भेल अछि। ई हबाक गप अछि जे समय-काल आ स्थानक हिसाबेँ सर्वमान्य परिवर्तन व्याकरण मे होइत बहल छैक। बिना वैयाकरणिक अनुशासनक भाषा

পঠরাঁ, নিখরাঁ আ রাঁজরাঁ জোগ বহত ? জিনকা মে সাহিত্ নির্মাণক মাদ্দা ছৈন্হি, হ্নকা মে ব্যাকবণ কেঁ পাননক সাহস অবস্স হেরাঁক চাহী।
আরঁ হম এহি সংগ্রহক গজনক সম্বন্ধ মে কিছু গপ কহয় চাহরঁ। ও গজন সংগ্রহ ওহি সময মে নিখন গেন অছি জখন মৈথিনী গজনক ব্যাকবণ আ বঁহবক সম্বন্ধ মে বঁহ্ত বেঁসী জনতরঁ সার্বজনিক নৈ ছন। হম একবা এনা কহয় চাহরঁ জে ও গজন সংগ্রহ "অনচিন্হাব আখব" জ্গ সঁ পূর্বক গজন অছি জখন বঁহব, বদীফ আ কাফিযাক নিযমক পাননক বিষয মে বঁহ্ত বাস গপ সবজন স্বনভ নৈ ছন। এহি হিসাবেঁ জঁ ঐ সংগ্রহক গজন সভ মে বঁহবক দোখ ছৈক তঁ ও স্বভারিক বুঁঝাওত অছি। এহি সংগ্রহক কোনো টা গজন কোনো বঁহব মে নৈ অছি। তেঁ ঐ সংগ্রহক বৈধ গজন (জাহি মে কাফিযাক নিযমক পানন ভেন হ্এ) সভ কেঁ "আজাদ-গজন"ক শ্রেণী মে বাখন জা সকৈএ। আরঁ গজনক কাফিযা আ বদীফক সম্বন্ধ মে কিছু গপ। এহি সংগ্রহক বঁহ্ত বাস গজন মে কাফিযা আ বদীফক নিযমক পানন ভেন অছি। মুদা কএক গজন মে বদীফ আ কাফিযাক গনতী অছি। জেনা পৃষ্ঠ চৌদহ পব মতনা দেখনা পব বুঁঝাওত অছি জে "ও মৌসম" বদীফ অছি আ "নাগৈএ" আওব "উঁনাবৈঁএ" কাফিযাযুক্ত শৈর্ছ অছি। মুদা দোসব শৈব আ আগূক আন শৈব মে একব পানন নৈ ভেন অছি আওব শৈব সভ বিনা বদীফক "অ" কাফিযাযুক্ত অছি। পৃষ্ঠ পন্দ্রহ পব সেহো যৈহ দোখ অছি, জাহি মে মতনা মে বদীফ "কমাঁ বহন"ক প্রযোগ অছি আ আন শৈব সভ বিনা বদীফক "অন" কাফিযাযুক্ত অছি। এহনে দোখ পৃষ্ঠ সোনহ মে দেখন

जा सकैत अछि, जतय मतला मे "करै छह" बदीफ मानल जयबाक चाही। ओना ऐ गजलक आन शेर सभ मे दू टा काफियाक स्वतन्त्र प्रयोग अछि, जे नीक लागैए। हमरा हिसाबेँ काफियाक दोख पृष्ठ बीस, बाइस, चौबीस, पचीस, अठ्ठाइस, उनतीस(संयुक्ताक्षर काफियाक नियमक दोख), बत्तीस आ सैंतीस मे सेहो अछि। एकर सबहक विस्तृत वर्णन देब हम अपेक्षित नै बूझि रहल छी, कियाक तँ ग हमर उद्देश्य कथमपि नै अछि। गजल संग्रहक सभ गजलक विषय-वस्तु नीक अछि आ गजलकार अपन भावना नीक जकाँ प्रकट केने छथि। किछु गजलक काफिया आ बदीफक दोख जँ कात कऽ कऽ देखी, तँ ग गजल-संग्रह एकटा नीक गजल-संग्रह अछि। गजलकारक गजल कहबाक क्षमता सेहो नीक बूझाइत अछि। हमरा ई अचरज लागि रहल अछि जे ऐ संग्रहक बाद गजलकारक दोसर गजल-संग्रह किया नै आएल अछि। एकर कारण तँ गजलकारे कँ पता हेतैन्हि, मुदा अपन अन्वेषणक आधार पर हम कहऽ चाहै छी जे श्री विभूति आनन्द नीक गजल लिख सकैत छथि। जँ बहरक विचार नै करी, तँ २०१२ मे आएल श्री अरविन्द ठाकुरजीक गजल-संग्रह सँ करीब एकतीस वर्ख पहिने १९८१ मे लिखल गेल एहि संग्रहक गजल सभ उमदा कहल जा सकैत अछि। एकर कारण ग जे एहि संग्रहक गजल सभ मे काफियाक नियम-पालनक प्रतिशत वर्तमान समयक संग्रह सभ सँ बेसी अछि। कथ्यक मजबूती सेहो नीक कोटिक अछि। खाली फकरा ओकमिलानी केने गजल नै कहल जा सकैत अछि, ग गप एहि संग्रह कँ पढ़लाक बाद एखुनका गजलकार सभ कँ सेहो बूझेतन्हि, ग आशा अछि। गहो एकटा

অচবজক রিষয অছি জে জখন মৈথিনী মে নীক গজন এতেক সান পহিনো কহন গেন ছন, তখন একব ৰাঁদ গজনক রিকাস–যাত্রা পচীস–তীস ৰৰ্খ ধবি কত২ আ কিযা ঠমকি গেন। ৰাঁচক অরধি মে মৈথিনী গজনক রিকাসক ধাব মে ৰাঁন্হ কিযা ৰনি গেন ছন, গ রিচাবণীয গপ অছি। ওনা আৰ গ ৰাঁন্হ টূ্টি বহন অছি আ আশাক নৱ জোতি মে মৈথিনী গজনক ঘোঘ ডঁঠি বহন অছি।

**<u>ড॰ঁ. ৰচেশ্বরব ঝা</u>**, জন্ম– ১৬ মার্চ ১৯৪৭ঙাঁ, এম.এ.–পী.এচ.ডী., পূর্ব প্রধানাচার্য, নির্মনী মহারিদ্যানয, নির্মনী।

সমীক্ষা– মৌনাগন গাছক ফূন

'মৌনাগন গাছক ফূন'ক নেখক শ্রী জগদীশ প্রসাদ মংডনকেঁ হম সাধুবাদ দৈত ছিযন্হি জে হিন্দী আ বাজনীতি শাস্ত্রমে এম.এ.ক অর্হতা প্রাপ্ত হোগতহুঁ অপন মাতৃভাষাক প্রতি অটূট সিনেহ বাখি মৈথিনীমে নেখন কবরাঁক ভগিবথী প্রযাস কএন অছি। ওনা তঁ মৈথিনীমে অনেকানেক সাহিত্যকাব নোকনি চেষ্টা কএন অছি। হুনকা নোকনিক ভাষামে ফেঁট–ফাঁট ভেটৈন অছি, কিন্তু মৌনাগন গাছক ফূনমে স্বচ্ছা নোকভাষাক প্রযোগ ভেটৈত অছি। প্রান্জন ভাষা গমৈযা ভাষাক আগাঁ ঘুটৈনা টেক দৈত অছি, জন সাধাবণ অনপো শিক্ষিতকেঁ শ্বদ–শ্বদীক সংগ রিষয অন্তস্থনীকেঁ ছুবি নৈত অছি। রৈচাবিক দৃঢ়তা এবং হার্দিক মৃদুনতাক অদ্ভুত সমাহাব জগদীশ জীমে রিবন অস্তিত্বক পবিচএ দৈছ। উঁপন্যাসক প্রত্যেক নেখপব মানে উঁপকথাপব দৃষ্টি দৈত ছী তঁ স্পষ্ট প্রতীত হোগছ জে একব নেখক জেনা প্রত্যক্ষদর্শী ভঃ রিষযক নিরূপণ কএন অছি।

ওনা তঁ শিক্ষাক সীঢ়ীকেঁ পাব কএ নেখক কনাক রঁনরতী গচ্ছা বাখি মৈথিনীক রাটিকাকেঁ পন্নরিত–পুষ্পিত কবক ভবপূব প্রযাস কএনন্হি অছি। গাম ঠামক রিনক্ষণ চিত্রণ হিনক নেখনীক রিশেষতা এহি পোথীমে দেখন জাগছ। হিনকা ভাষানুবাগীক সংগ মাতৃভাষাক সিনেহী কহী তঁ সর্বথা উঁপযুক্ত হোএত। এহিমে সামাজক ওহি রস্থুক সমীক্ষা কএন অছি জকবাপব আগধবি কেও সোচরোঁ নে কএনে ছুন। মাজন ঠেঁঠ গমৈআ রোঁনীক মৈথিনীমে সমাহিত

कएने छथि।

हमरा तँ लगैत अछि माए मैथिली लेखकक माथपर चढ़ि कऽ एहन चमत्कारी उपन्यास लिखक हेतु प्रेरित कएने अछि। फणीश्वर नाथ रेणु आ यात्री जीक उपन्यासमे सामाजिक वहन-सहन रैचारिक भिन्नता अर्थाभावक कारणें स्वाभिमानक हनन जों देखबामे अबैत अछि तँ सम्प्रति उपन्यासमे वर्णित घटना आ घटनासँ पात्रक प्रत्यक्ष दिग्दर्शन अति मार्मिक अन्तर मोनकेँ सोचबाक लेल उत्प्रेरित करैछ।

मधुबनी जिलाक रैवमा गाममे जन्म लेनिहार लेखक एतेक सुन्दर, सुबोध आ सुगम्य ढंगसँ विषएकेँ निरूपित कए पाठकक जिज्ञासाकेँ अन्त धरि बढ़बैत गेल छथि जे चिक्कन, चोटगर आ चयन लेल बाध्य करैत अछि। मैथिली साहित्याकाशक ओ ज्योतिमान नक्षत्र सदृशे उद्भूत भऽ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ समृध्दता अनबामे योगदान कएने अछि।

ओना तँ औपन्यासिक विचारानुसार एहि उपन्यासमे त्रुटि अछि। एकरा उपन्यास कहल जाए वा सामजिक निबंध ताहि परिप्रेक्ष्यमे विद्वान पाठके निर्णए कऽ सकैत छथि। मुदा हमरा तँ लेखकक एहि उपन्यासमे कालानुसार घटना आ पात्रक चित्रणमे तान-मेलक अभाव भेटैत अछि जेना- एकओर अनुप बोनिहारक बैटो बौएलान भूख-पियाससँ आकुल अछि ओकरा पानि भरबामे डोरी डोलक प्रयोजन छैक तँ दोसर दिशि रमाकान्त आ हीरानानकेँ आधुनिक कालमे शेयर चुस्कीक चर्चा होइत अछि तेँ उपन्यासक विषए-वस्तु समए बद्ध नहि रहलासँ औपन्यासिक दोष लक्षित होइत अछि। स्वीकार करए पड़ैत अछि जे हिनक ओ

উঁপন্যাস রিষয-রস্তুকেঁ তাহি রূপেঁ সমেটৈনে ৠছি জেনা সিত্তৠামে সন্দ্র সমাএন হো।

নেখক জগদীশ প্রসাদ মংডন জীক প্রযাস ৠা ৠাযাস দ্নূ সাবাহনীয ছন্হি। হম মॅं মৈথিনীসঁ প্রার্থনা করৈত ছী জে হিনকামে স্ফূবনা রঁনন বহন্হি জাহিসঁ মৈথিনী সাহিত্যক সম্রর্ধ্দন হোগত বহএ।

পোথিক নাম- মৌনাগন গাছক ফূন
উঁপন্যাসকাব- জগদীশ প্রসাদ মংডন
প্রকাশন- শ্রুতি প্রকাশন, দিন্নী পোথী-প্রাপ্তিক স্থান- Pallavi Distributors মোরাগন- ৯৩৭২৪৩০৪০৩ Ward no- 6, Nirmali (Supaul)
মূন্য- ২৩০ টৌকা



শির ক্ষমাব ঝা ‘টিনন্নূ’

মৌথিনী নাটকক রিকাসমে খানংদ জীক যোগদান

জখন–জখন মৌ থনী ভাষা সাহিত্যমে নাট্যে রিধাক চর্চ হোগত খছি তঁ হঠাত্ পংডিত জীরন ঝাসঁ নঽ কঽ মিমিবকোনা খা তানক্ষ্মী সন নাটকক নাটককাব খবরিন্দ ক্ষমাব খক্কূ জীক রিরেচন স্রভারিক ভঽ জাগছ। এহি এক সয ছ: ব়বখক নাট্যে বচনমে ব়হ্ত বাস নাটককাব রিরিধ শৈনীক সাহিত্যিক নাটকক সংগ–সংগ নোকপ্রিযতাক নেন চনন্ত খা ওছ নাটক সেহো নিখননি। কিছ বচনাকাব তঁ নাটককাবেক ৰুপেঁ রেস চর্চিত ছথি সংগ–সংগ হ্নকা সভকেঁ প্ববসৃত্ত সেহো কএন গেন খছি। উঁদাহবণস্রৰুপ শ্রী মহেন্দ্র মনংগিযা মৌথিনী সাহিত্যক প্রতিষ্ঠিত সম্মান প্ররোধ সম্মানসঁ সম্মানিত কএন গেন ছথি। মনংগিযা জী ব়হ্ত বাস নাটক নিখননি– নক্ষ্মণ বেখা : খণ্ডিত, জ্খ াএন কনকনী, এক কমন নোবমে, ওকবা খাঁগনক ব়াবহমাসা, কমনাকাতক বাম, নক্ষ্মণ ও সীতা খাব কাঠক নোক। এহি নাটক সভমে 'এক কমন নোবমে' সাহিত্যক সমগ্র ব়িন্দ্কেঁ রিম্ব়িত কবএব়না নীক নাটক মানন জাগত খছি। ক্ষদা 'কাঠক নোক' পঠ়নাসঁ পাঠক স্রযং নির্ণয স্বনার়থি জে কতএ ধবি একবা 'মৌথিনী নাটক'

मानल जाए। बिम्ब लोकगाथा आ बिवेचन मैथिलीसँ बेसी हिन्दीमे। ओना सभ साहित्यिक कृतिमे आन भाषाक प्रयोग ठाम-ठाम कएल जाइत अछि जखन मात्र पात्रक दशा आ परिस्थितिमे तारतम्य स्थापित करबाक लेल। मलंगियाजी एहि पोथीमे हिन्दीक प्रयोग कोन रूपेँ कएने छथि ओ गप्प न्यायखंडक अंत:स्थ कक्षाक (मैथिली भाषी जौं उपलब्ध होथि) छात्र-छात्रासँ पूछल जा सकैत अछि किएक तँ 'काठक लोक' न्यायखण्ड अधिविद्य परिषद्‌क मैथिली पाठयक्रममे सम्मिलित अछि।

मैथिलीक संग दुर्भाग्य मानल जाए वा विडम्बना किछु कथाकथित साहित्यकार आ समीक्षकक दलपूंज भाषापर अपन अधिकार चमौकनि जकाँ जमौने छथि। 'अहाँक सोहर हम गाएब आ हमर डहकन अहाँ बिदबिदाउ' एहि परिपेक्ष्यमे किछु प्रतिभा झँपने रहि गेल, कतहु कोनो चर्च नहि।

एहि बन्ध्र पातक ढेँका शिकार छथि आधुनिक पिरहीक सलसलागल युगान्कारी नाटककार- 'श्री आनंद कुमार झा' आनंद जीक एखन धरि पाँच गोटे नाटक प्रकाशित भेल अछि 'टोकाक मोल (2000), 'कलह (2001), 'बदलैत समाज (2002), धधाएल नरकी कनियाँक नहास (2003) आ हठात् परिवर्त्तन 2005ई.मे। एहि नाटकक संग-संग आनंदजीक अप्रकाशित नाटकक गणना दू अंक धरि पहुँचि गेल अछि।

आनंद जीक जन्म 1977ई.मे मिथिलाक सांस्कृतिक सेहंतित भूखण्ड 'मधुबनी जिला'क मेंहथ गाममे भेल। जौं समस्तीपुर खगड़िया आ

रेँगूसबाय जिनाक नान बहितथि तँ उँपेक्षाक दंशे स्राभारिक छन ह्मदा ठामक रासी उँपेक्षित भेनाह कनेक संत्रास जकाँ नगैछ। गाम-गामसँ नः कः कोनकाता शेहव धबि मंचित एहि नाटकक कोनो समीक्षा नहि भेन, ओ सभ मात्र मैथिनी भाषामे संभर छैक। जौं रिम्रक उँपयोगिताकेँ केन्द्र रिन्दु मानन जाए तँ मैथिनी साहित्यक प्ररीण नाटक काबक समूहमे श्रानंद जीक स्थान निश्चित श्रछि।

टोटोक मोन : श्रार्य भूमिक एकटा पैघ र्याधि काटब प्रथाक द्:स्थितिपब केन्द्रित एहि नाटकमे मिथिना संस्कृतिक कोठ़ा क चित्रण नीक ढंगसँ कएन गेन श्रछि। कन्याक पिता नाओ गबीरनाथ संग-संग दबिद्र सेहो। श्रपन धर्मपत्नी स्वमित्राक श्राशे पूर्ण कबराक नेन 'पुत्र कामनार्थ' पाँच गोटे कन्याकेँ जन्म देननि। पहिन रेटीक रिराहमे डाँड़ ठूटि गेननि सभटा खेत रिका गेननि। दोसब रेटीक कन्यादानक नेन श्रात्तब छथि मात्र राँबह कट्ठा जमीन राँचन छन्हि। रेटी प्रभा काँनेजमे पढ़ैत छथि, रिराह श्रपना मोने नहि कबए चाहैत छथि- मात्र समाजक भये दृष्टिसँ राँचराक नेन रेटीक रिश्राह एहि श्रङ्गमे कबराक नेन पबेशान छथि। हमबा सबहक समाजक कतेक कनुष रूप श्रछि श्रप्पन टेटैब नहि देखि कः नोक सभ दोसबक फुसबीपब काग-दृष्टि नगौने बहैत छथि। हमाबि रेटी छन्हि गबीर नाक घबमे श्रा पबेशान छथि समाजक नोक। एहि नेन नहि जे मिथिनाक रेटीक उँद्धाब कएन जाए मात्र राँबह कट्ठा जमीन निखएराँक नोभमे। प्रभा श्रपन रहिनक देखब प्रभाकबसँ सिनेह कबैत छथि नेकिन श्राँडरबधर्मी

समाज एहि सिनेहक मंजूरी नहि देत तँए चुप्प।

गबीर झा दलान काकासँ संपर्क करैत छथि। जेहन नाथ ा तेहने कार्य। हुनक चेना कक्कासँ रुसैी पावथी। दुनूक जोड़ ी श्वभुम निस्वम्भ जकाँ दुष्टै आ धृष्ठतासँ भवन। हर्षदमेहताक दलानी हिनका नग ओछ पड़ ि जागत। रौनकक पिता नीनाम्रैव रौबूँ रास्तरमे नीनाधावी छथि। भातिज सभसँ कम कैंचा प्वत्रक रिश्ताहमे कोना नेतथि तँए पचहत्तवि हजावसँ कम टौका नहि चाही। दलान काकाक मोहिनी मंत्रक जादूमे आरिं पैंसठ हजावमे रिश्ताह कवरौक ि नर्णय स्वनौननि। शर्त्त छनि जे समाजमे पचहत्तवि हजावक उँह्लाष कएन जाए। दलान काकाक कनिज्गी उँगना एहि उँह्लाषणक नाभ नेराक प्रयासमे सफन भेलनि। दलानीक दस हजाव कमीशन दुनू चेना ग्वद्धक पेटैमे। गबीरँ झा अपन रॉचन जमीन 50 हजावमे रुैि च नेननि। मित्र ग्वणानंद जीसँ दस हजाव टौकाक मदति भेटैननि, शेष प्रश्न ओझबाएन पंद्रह हजाव आर कोना हएत? येन केन प्रकारेन रबियाती दलान नागन। फेव धमगिज्जड़ ि। माथक पाग खसि पड़ननि ऋदा रबियाती आपिस। अंतमे प्रभाकबक संग प्रभाक रिश्ताह होगत अछि। नीनांरब जी काटैबक टौका पचास हजाव कन्यागतकेँ आपिस कएननि। ऋदा नाटैककाव ओ स्पष्टै नहि कः सकननि जे दलान काका दलानीक दस हजाव कन्यागतकेँ देननि रा नहि। कथानकक किछ तथ्य रास्तरिकता नहि भः कः कन्पना मात्र नागन। गबीरँ नाथक रुैटी प्रभा कॉनेजमे पठ ैत छथि आ छोटै मांगन-चांगन भाए महीस चबरैत छन्हि। ओना तँ प्वत्रक

আকাংক্ষামে প াঁচ গোষ্ঠ পুত্রীক জন্ম দেমএরঁনা মাএ- রূপক অর্থর্যরস্থা অর্যরস্থিত হএর স্রাভারিক অছি। পরংচ মৈথিল সংস্কৃতিক গ্রামীণ র্যরস্থামে বহনিহাব মাতা-পিতাক জীরনমে সংতানক রূপেঁ পুত্রসঁ পুত্রীক রেঁসী মহত্র দের কল্পনা মাত্র ছৈক, রাস্তরমে তঁ রেঁটী জন্মহিসঁ আনক ধরোহবি মানল জাগত অছি তঁএ রেঁটা মহীস চবারঁথি আ রেঁটী ক ানেজমে পঠ়তীহ, আশ্চর্য জনক নাগল।

কথানকক রীচ-রীচমে অংগ্রেজী শর্ঁদক প্রযোগ কহ নাটককার আধুনিকতা নেপন করবাক প্রযাস কএননি ওা উঁচিত অছি রা নহি, পাঠকপর ছোড়ি দেরাক চাহী। একটা অনসোহ াঁত অরশ্য নাগল জে মৈথিলীমে 'চ্কন' শর্ঁদক প্রযোগ কহিযা ধবি বহত। নিষ্কর্ষত: ওা নাটক মংচনক যোগ্য অছি।

কনহ : কনহ আনংদজী নিখিত দোসব নাটক থিক। সমাজমে জীরন্ত ধটনা সভকেঁ এক সূত্রমে জোড়ি কহ এহি নাটকক সৃজন কএন গেন। আকাশ একটা রেঁরোজগাব নৌজরান ছথি। টৌকাক নোভমে পিতা স্বরেশ্রব হিনক রিআহ কবা দৈত ছথিন্হ। আকাশ স্বরেশ্রব রাঁরূঁক পহিল পনীক সংতান ছথি তঁএ রিমাতা স্বমিত্রাক দৃষ্টিমে হিনক কোনো স্থান নহি। স্বমিত্রা তঁ অপন কোখিসঁ জনমল পুত্র রাজীর আ ওকব কনিযাঁ কোমনক নেল জ্যেষ্ঠ পুত্রক সংগ যাতনাক সভটা রাঁন্হ ন াঁধি দেননি। প্রৌঢ় পিতা মূক পবিস্থিতিক মাবল মাত্র দর্শক রঁনি কহ বহি গেনাহ। কানক মাবিসঁ ভটকৈত-ভটকৈত দুনূ পবানীক নির্মম অংত হোগত অছি। একটা অরোঁধ নেনাক জন্ম ভেল জে আকাশক অংতবংগ মিত্র যোগেশক কোবমে কথাক অংত ধবি.....।

নাটককাব এহি নাটকক বচনা ভৼ সকৈত খছি জে কথানকমে সংত্রাস ভবরাঁক সংগ-সংগ দর্শকক মধ্য নোকপ্রিয রঁনএরাক নেন কেনে হোথি ক্ষদা এহি সভসঁ নাটকক প্রাসংগিকতাপব প্রশ্ন চিহ্ন নহি নগাওন জা সকৈত খছি। কতহ্-কতহ্ রিম্র রিশ্নেষণ চনংত খা হিন্দী ভাষাক র্যরসাযিক চনচিত্র জকাঁ নাগন ক্ষদা মৈথিনীমে নরন প্রযোগকেঁ কিও ঝাঁপি নহি সকৈত ছথি, জতএ-জতএ এহি নাটকক ি চত্রণ হোএত খরশ্য ছাপ ছোড়ত।

রঁদনৈত সমাজ : রঁদনৈত সমাজ নাটকক খাবংভ একটা র্নড কৈংসব পীড়িত রাঁনকক খপন পনোক সংগ রাতানাপক সংগ হোগত খছি।
কর্জসঁ ক্ষক্তিক নেন ঘূবন জী খপন রীমাব প্বত্রক রিখাহ কবা দৈত ছথি। হ্নকা ওনা বূঁঝন নহি ছননি জে প্বত্র খরধেশ র্নড-কৈংসবসঁ পীড়িত খছি। ভজেন্দ্র ক্ষখিযাক প্বত্র দীপক খরধেশক রাঁন সংগী ছথি। ও পহিনেসঁ জনৈত ছনাহ জে খরধেশক মৃত্যক দিরস নজদীক ছন্হি। তথাপি ও খ্নি কৼ নহি রঁজননি কিএক তঁ ঘূবন রাঁবূ স্রযং বূঁঢ় নোক ছথি। একটা পিতা খপন কান্হপব প্বত্রক নাশক কন্পনা মাত্রসঁ সিহবি সকৈত ছথি, রাস্তরিকতা......... । ।

রিরিধ ঘটনাক্রমমে খরধেশক মৃত্যক ভৼ গেননি। সমাজ হ্নক রিধরা শোভাপব চবিত্রদোষ সেহো নগৌনক। সমাজ কী জাহি খরনাপব ওকব সাস্বক রিশ্রাস নহি হ্খএ ওকবাপব খান কে রিশ্রাস কবত। নাটকক খংতমে সবহক ভ্রম টুটৈত খছি জখন শোভা

দীপককেঁ 'ভৈযা' কহি কঽ অপ্রিনাপ কবৈত ছথি। অতমে রিধরা শৌভাক একটা সচ্চবিত্র ঘরক রীজেন্দ্রসঁ পুনর্রিরাহক কল্পনা কএল গেল। ওনা তঁ এহি নাটকমে জাত-পাতিক কোনো চর্চ নহি ক্ষদা প্রসংগসঁ স্পষ্ট হোগত অছি জে সবর্ণ পবিরাবক পৃষ্ঠভূমিমে নাটক কেন্দ্রিত অছি। নাটককাবক ও কল্পনা নীক লাগল জে সবর্ণ ঘবক রিধরা ঘরতীক পুনর্রিরাহ ভঽ সকৈত অছি। নাটকক সংরাদমে ঠাম-ঠাম অনংকাব আ নোকোক্তিক নেপন নীক লাগল। 'সম্ভারনাক আধাবপব মনুষ্য কল্পনা কবৈত অছি। ক্ষদা প্রগ্নতিক শাস্বত নিযমকেঁ কিও নহি বঁদনি সকৈত অছি' এহি সংরাদক মাধ্যমসঁ অরধেশ অপন মৃত্যক সংকেতকেঁ বুঁঝি বহল ছথি। হ্নক দোসব সংরাদমে- 'হম মৃত্যসঁ ভযভীত নহি ছী। ভয অছি ওগ নিস্সহায অরনা নাবীক অসীম দ্:খ, পীড় া আ রেদনাসঁ। ভয অছি অনজানমে হমবাসঁ ভেল গলতীসঁ।' শ্রৃং গাবক প্ররল নানসা বহিতহুঁ পবিস্থিতি মনুক্খকেঁ রৈবাগী বঁনা দৈছ। জনতংত্রক ক্ষটিন র্যরস্থাপব সেহো এহি নাটকমে কটাক্ষ কএল গেল। ভজেন্দ্রজী সন ক্ষটিন গামক ক্ষখিযা ছথি তঁ রিপক্ষ হ্নকোসঁ রৈসী ক্ষটিন। তঁএ নে হ্বাগতো ছন্হি হ্নকা 'ও বঁনিযাঁ বুঁড় া রক হোগত অছি জে পনড় াপব রঁটখড় া বখনাসঁ পহিনে সমান চঢ় া দৈত অছি।''

আনংদজীক চাবিম নাটক ধধাগত নরকী কনিযাঁক নহাস : কোনো কাটক প্রথাক নাটক নহি। মাত্র কিছু গহনাক খাতিব শিখাক আত্মহত্যাক প্রযাস অজীর কহল জা সকৈছ।

হঠাত্ পবিরর্ত্তন : দেশভক্তি মূলক নাটক থিক।

निष्कर्षत: ई कहल जा सकैत छथि जे आनंद जीक नाटक शैलीमे गोविन्द झाक हास्य समागम, ईशनाथ झाक अलंकार, जगदीश प्रसाद मंडल जीक साम्यवाद, अक्कूजीक आधुनिकता, ललन ठाकुर जीक मंचन शैली आ शेखर जीक जनभाषा कलकल अछि।

मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा)

कोनो भाषा साहित्यक विकासमे उपन्यासक एकटा अलग महत्व होइत अछि। औपन्यासिक कृतिकेँ जौं साहित्यक चक्षु द्वय कहल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नहि होएत। मैथिली साहित्यमे उपन्यास सभक भंडार बड़ विस्तृत अछि।

एहि प्रांजल साहित्यिक कृतिमे किछु कोसक पाथर सन रचना छैक जे आधारित्विक भाषाक गुच्छमे मैथिलीक स्थानकें सुवासित कऽ रहल अछि। सर्वकालीन मैथिली साहित्यक इतिहासमे सम्मिलित ओ सभ उपन्यास अछि- पंडित जन सीदन कृत शशिकला, प्रो. हरिमोहन झा रचित कन्यादान ओ द्विरागमन, योगानन्द झा रचित भलमानुष, श्री यात्री कृत पारो, डॉ. मणिपद्म कृति नैका बनिजारा, श्री सोमदेव कृत चानोदाग, श्री सुधांशु शेखर चौधरी कृत दरिद्र छिम्मड़ि, श्रीमती लीलीरे कृत पटाक्षेप, श्री रमानंद रेणु कृत दूध-फूल, डॉ. शेफालिका वर्मा कृत नागफांस, श्री साकेतानंद कृत सर्वस्रांत, श्री ललित कृत पृथ्वीपुत्र, श्रीमती गौरी मिश्र कृत चिनगी, श्री केदारनाथ चौधरी कृत माहुर आ श्री गजेन्द्र ठाकुर कृत सहस्त्रबाढ़नि।
निश्चित रूपें एहि सभ उपन्याससँ मैथिली साहित्यकें नव दशा ओ दिशा भेटैन, परंच एकर अतिरिक्त सेहो किछु कृति अछि जकर चर्च करब बिना मैथिली उपन्यास विधाकें अपूर्ण मानल जाएत। ओहि कृतिमे सँ एक अछि श्री जगदीश प्रसाद मंडल द्वारा लिखित उपन्यास- 'मौलाइल गाछक फूल'

शीर्षकसँ बुझना गेल जे प्रकृति वर्णनपर आधारित उपन्यास अछि, मुदा अध्ययनक पश्चात् समाजक मौलाइल स्वरूपक वर्णन आ पुनरुत्थानक सकारात्मक स्वरूपक आधारपर एहि उपन्यासक रचना भेल अछि। जौं मालीमे चेतना ओ अनुशीलन हो तँ मौलाइल गाछमे सेहो पुष्प खिलाओल जा सकैत अछि, ठीक ओहिना समाजमे एकरूपता, सामंजस्य ओ अनुग्रह हो तँ विगलित मिथिलाक स्वरूपमे हरियरी आबि सकैत

অছি ।

মৈথিন সমাজক পহিন নোকসঁ নঽ কঽ অঁতিম নোকক র্যথা রা স্বখদ অনুভূতিকেঁ বেখাঁকিত কঽ বহন অছি– “মৌনাগন গাছক ফূন” এহি উঁপন্যাসকেঁ সম্পূর্ণ উঁপন্যাস এহি দ্খাবে মানন জা সকৈত অছি জে এহিমে সমাজক নকাবাত্মক স্রৰূপপব সকাবাত্মক সিদ্ধান্তক রিজয দেখাওন গেন অছি ।

সত্যক রিজয তঁ রেস ঠ◌ॉ হোগত অছি, মুদা এহিমে অসত্যক হৃদয পবিরর্ত্তনক ভঽ কঽ সত্যক জন্ম হোগত অছি । সমাজক সভসঁ অঁতিম র্যক্তিক দশা ওকরে শর্ব্দমে নিখন গেন, ভাষা সম্পাদন আ পবিমার্জনক আড়ি মে কোনো পবিরর্তন নহি । সম্পূর্ণ জীরন দর্শনমে নাযকত্র, কিও খননাযক নহি । রাস্তরিক ৰূপে কী এনা সংভর অছি ? অরশ্য ভঽ সকৈছ, জোঁ হম সভ স্রযংমে সম্যক সোচ আ দৃষ্টিকোণকেঁ স্থাপিত কবী ।

কথাক রিষয রস্তু কোনো একটা কথাপব কেন্দ্রিত নহি ভঽ কঽ রঁহ্ত বাস উঁপকথাকেঁ সহেজি কঽ রঁনাওন গেন অছি । কথাক প্রাবংভ অকানক পবিণামসঁ হোগত অছি । গবীর মজূব অনুপক পুত্র রৌএনান ভুক্খক কাবণ মৃত্যক অরাহন কঽ বহন অছি । মাএ বধিযা অপন নোটা রেঁচি কঽ ওকব হুপ্তি নেন চিক্কস কীনি কঽ অনৈত অছি । তীনটা বোটী রঁনন, মুদা রৌএনানক ভাগ্যমে মাত্র একটা বোটী আ দূ নোটা পানি । শ্রমজীরীক মার্মিক দশাপব নিখন পহিন ভাগমে সংরভত: বধিযা অর্ন্তমনসঁ অনূপসঁ কহৈত ছথি–

কী র্স্বরেঁ ককবা কহৈ ছৈ গবীরী,

सपनहुँमे स्वप्न नहि जतऽ श्रेमजीवी,

सूर्यास्तक पश्चात दू क्षणक लेल कहिसे अबैत अछि, फेर उँषाक दर्शन अवश्यंभावी, यएह तँ प्रकृतिक लीला अछि। नथ्था अनूपक अन्तःस्थ कूपमे गजोतक सूक्ष्म बाती नऽ कऽ अबैत अछि। रमाकान्त बाबू पोखरि खुनौता तेँ मजूरक आवश्यकता छन्हि। अनूपकेँ सपरिवार काज भेटि गेलनि। मेटि मूसनाक रवदहस्त जे छल। मालिकक फाँसीकेँ मेटि कहल जाइत अछि। मूल रूपसँ दलालक प्रवृतिबला मूसन अन्नपक लेल प्राणदायक अछि। किएक तँ दुनू परानीक संग-संग बावह बर्खक बौएलालकेँ सेहो काज दऽ देलक। बौएलाल सेहो पूर्ण तन्मय भऽ कऽ कएलक, तकर परिणाम भेल जे रमाकान्त बाबू आन जोनसँ बेसी मजदूरी बौएलालकेँ देलनि। कर्मक गति विचित्र होइत अछि। उँपन्यासकार बाल श्रेमिककेँ महिमा मंडित कऽ रहल छथि। हमरा सबहक संविधानमे 14 वर्षसँ कम उँमेरक व्यक्तिकेँ 'बाल' कहल जाइत अछि- मजदूरी प्रतिबंधित। हुनका ओ स्वेच्छासँ करबाक ज ... एकर कोनो परिवाहि नहि। टेलिभीजनमे नाच पाँच बर्खक बच्चा कऽ सकैत छथि, एकरा प्रतिभाक प्रदर्शन मानल जाइत अछि हुनका 12 बर्खक बौएलाल मात्र मौलागल गाछक मजदूर थिक, वास्तविक जीवनमे पकड़ल जाइत तँ दीन हीन पिताकेँ जेहल भेटैत। 'समरथकेँ नहि दोष गोसाउँ। रमाकान्त बाबूक प्रतापसँ अपन कर्मक प्रकृतिसँ अनूपक गरीबी समाप्त भऽ गेल। बौएलाल काजक संग-संग शिक्षा सेहो ग्रहण करए लागल। बौएलालक जीवनमे विहान जे आएल ओ उँपन्यासक अंत धरि जगमगाइते रहल।

ঋংতমে বমাকান্ত ৰাৱূঁক জেঠ রানক ড◌ॉ. মহেন্দ্রক সহকর্মী ভ২ গেনা ৰৌএনান। ৰৌএনানসঁ ড◌ॉ. ৰৌএনান-সভঠা কর্মক প্রভার। হিন্দী সাহিত্যক একঠা করিক উঁক্তি পূর্ণত: সত্য প্রতীত হোগত ঋছি-

প্রাণোঁ কী রর্তিকা ৰঁনাকব,
ওঠ় তিমিব কী কানী চাদব
জননে রানা দীপক হী তো জগ কা তিমিব মিঠা পাতা হৈ বোনে রানা হী গাতা হৈ।

কথাক দোসব মোড়পব শশিশেখবক জীরন রিহানসঁ তিমিবমে প্ররেশ করৈত ঋছি। হুষি রৈজ্ঞানিক ৰঁনারাক ৰাঁছৈপব সভঠা সমাপ্ত ভ২ গেন। মাতা-পিতাক রিঁমাবীমে সভঠা চৌপঞ্চ ভ২ গেননি। ঋধখন্ধ শিক্ষা ৰঁড় কষ্টদাযী হোগত ঋছি। ঋাত্মগনানিক শিকাব শশিশেখবক ভাগ্য সেহো হূজন। একঠা রিধরা ঋপন জমীনসঁ রিদ্যানয খোনরাক যোজনা ৰঁনাযনি। গামক সংভ্রান্তসঁ ন২ ক২ গবীর গ্ৰবৰাঁক সমর্থন। শশিশেখব শিক্ষক ভ২ গেনাহ।

উঁপন্যাসক তেসব খণ্ডমে স্বগিযাক শাবীবিক র্যথাক ঋাবংম্ভক সংগ-সংগ পতি সোনে নানক সমর্থন হৃদযকেঁ ঝকঝোবি দৈত ঋছি। যেন-কেন প্রকাবেণ সোনেনান স্বগিযাক গনাজ কবা ক২ গাম ঘুবনাহ। স্বগিযা স্রস্থ ভেনী, চিকিত্সাক প্রভারসঁ হ্মদা কর্ৰুনাক প্রভার মানি সোনেনান কীর্ত্তনক সংগ-সংগ ভংডাবক ঋাযোজন কএননি। হমবা সরঁহক সমাজমে ঋংধ রিশ্রাসক চমৌকনি ঋপন জানসঁ সোচকেঁ ঘেব নেনে ঋছি। কীর্ত্তনক দূ দন ঋাগাঁক জাতিক বমাপতিক দন ঋা রেস পছাথিক সংগ-সংগ কিছু সরর্ণ সাধুক মিশ্রিত দন-গংগাদাসক দন। উঁধেশ্য এক, হ্মদা দৃষ্টিকোণ ঋনগ-

খনগ। বমাপতিক দন গবীৱ সোনেনানসঁ দক্ষিণা নেননি, দযাক কোনো সংভারনা নহি। গংগাদাসক দন দক্ষিণা তঁ নেননি ক্ষদা মাত্র সিদ্ধান্তক রূপমে। রাস্তরমে নহ কহ ঘ্বা দেননি। খাত্ম সম্মানক ভারক সংগ-সংগ গংগাদাসমে দযা-ভার সেহো খছি। খাৱ স্রত: ব্ৰূম্মন জা সকৈত খছি জে সরর্ণ ককবা কহী ?
চাবিম খণ্ডক প্রাবংভ বমাকান্ত ৱাৱূক খপন পত্নী শ্যামা খা নোকব জ্গেসবক সংগ মদ্রাস প্ররাসসঁ হোগত খছি। কতহ গাম খা কতহ মদ্রাসক জিনগী। এক দিস জগমগাগত বোশনী, সাফ সড়ক খা গগনচ্ম্ৱী মহন তঁ দোসব দিস দূ ক্ষহেসেক রাষ্ট। ক্ষদা রাস্তরিকতা কিছু খাওব ছন। প্বতোদ্ধ-প্বত্র ডॉ ক্ষদা ভরিষ্যমে কিছু নহি ভেষ্টৱাঁক সংভারনা দেখি বমাকান্তক হিযা স্বখা বহন ছননি। ৱেষ্টা-প্বতোদ্ধসঁ তঁ খূৱ সম্মান খা সত্কাব ভেষ্টননি ক্ষদা পাঁচষ্টা পোতা-পোতীমে সঁ কেও চিন্হরো নহি কএননি। জে জীরিতমে নহি জনৈত খছি ওকবাসঁ জীরনক খঁতিম খরস্থামে কী খাশ কবী ?
পনাযনরাদক পবাকাষ্ঠা ধবি নহ জাএর উঁপন্যাসকাবক সোচসঁ নিশ্চিত রূপে খজগ্বত নগৈত খছি। মিথিনাক ভরিষ্য কতহ ধবি জাএত জগদীশ ৱাৱূক সংজয সন দৃষ্টি খাশ্চর্যজনক ক্ষদা প্রাসংগিক খছি। ছোষ্টকী প্বতোদ্ধ স্বজাতাক জীরনক গাথা স্বনি বমাকান্ত ৱাৱূ পসিম্ম গেনাহ। একষ্টা ধোরিনক তনযাসঁ ছোষ্টকা ৱেষ্টাক রিরাহ ভেন দূষ্টা সংতান সেহো ভহ গেন, ক্ষদা বমাকান্ত ৱাৱূ খপন প্বতোদ্ধক গতিহাস নহি জনৈত ছনাহ। সাম্যরাদী সোচক উঁন্নাযক বমাকান্ত ৱাৱূসঁ এনা সংভর তঁ মানন জা সকৈত খছি, ক্ষদা ও খপন ৱেষ্টাক

रिराहमे शामिन किएक नहि भेनाह। पनायनक एहन हफन मैथिनक समृद्ध रस्त्रकें कोना भेष्ट सकैत श्वछि ? गाममे दू सए रीघा जमीनक मानिक बमाकान्त राँबूक द्नू नान किएक नहि गाममे श्वस्पतान खोननि। जखन मद्रासक संभ्रान्त मिथिनामे नहि श्वरैत छथि तँ हम सभ कि कए पनायन करैत छी ? रिपन्नक पनायन तँ बूझएमे श्वरैत श्वछि पबंच सम्पन्नक पनायन..... ? एहि उँपन्यासक सभसँ पैघ रिशेषता जे उँपन्यासकाब कोनो प्रकाबक प्रश्नकें छोड़ि बचनाक गतिश्री नहि कएननि। प्रश्नक संग-संग रिश्नेषण श्वा समाधान पोथीमे श्वनायास भेष्ट जाएत। कथाक श्वंतमे पनायनरादक गतिश्री कहन गेन। डॉ. महेन्द्र श्वा डॉ. स्वजाता गामक गबीर ग्बबराँक गनाजक नेन ततपब भेनीह। कोनो रयक्तिकें श्वसाध्य बोग यथा कैंसब, एड्स नहि। एहिसँ प्रमाणित होगत श्वछि जे गाममे बहनिहाबक जीरन संत्तुनित श्वछि। रीमाब छथि तकब काबण पोषण संत्तुनित नहि। श्रमजीरी श्वा श्रमपोषीक मध्यक श्वधिक काबण ओ दशा श्वछि। बमाकान्त राँबू एहि दशासँ तीजि-भीजि गेनाह। क्षणहिमे श्वपन सभष्टा जमीन जान गबीरक मध्य रॉंटि देननि। गबीरो श्वात्म सम्मानी श्वा रफादाब। खेतसँ उँपजन श्वन्न, तीमन तबकाबी प्रथमत: बमाकान्त राँबूकें दैत छथि। सम्यक समाजक बचना, केओ सरर्ण नहि केओ क्षुद्र नहि। सरॅन मिथिना, संरन मैथिनाक कन्याणकाबी सोच मनोबम श्वछि।

हीबानन्द सन सम्यक सोचरॅना सरर्ण जौं समाजमे श्वागाँ रॅढ़ति तँ मिथिनाक रूप बेखा रॅदनि जाएत। हीबानंदक जातिक उँन्नेख तँ नहि कएन गेन श्वछि रुदा

নিখরাক কনাসঁ স্পষ্ট হোগত অছি ও নিশ্চিত রূপেঁ আগাঁক জাতিক ছথি। অন্বপক ঘবমে ভোজন গ্রহন কান সরঁবী-বামক সিনেহক স্পষ্ট দর্শন। জীরন দর্শনপব আধাবিত এহি উঁপন্যাসমে কতহু জাতিক উঁনন্নেখ নহি হ্মদা নক্ষণসঁ স্পষ্টীকবণ হোগত অছি। স্বর্ব্ধিক রিরেকশীনতামে বচনাকাবক দৃষ্টিকোণ পাবদর্শী নাগন। র্ব্যমনা জাগত অছি জে জগদীশ রাঁবূ স্বর্ব্ধক রূপেঁ উঁপন্যাসমে পৈসন ছথি। উঁপন্যাসমে একঠাঁ রস্ত্র সংধর্ষক স্থিতি দেখহ মে আএন হ্মদা একটা অরনা অপন চবিত্রক বক্ষাক নেন পিযক্কবপব প্রহাব কএননি। ওা সভ রাস্তরিকতা অছি একবা অনসোহাঁত নহি মানন জা সকৈত অছি।

রিষয-রস্তুক মধ্য ঝাঁপন দশাপব রেরাক প্রস্তুতি। ওনা তঁ সভটা বচনাকাব অপনাকেঁ সাম্যরাদী আ সমাজরাদী মানৈত ছথি। হ্মদা বচনাক সংগ-সংগ সরঁহক জীরনক দর্শন কএনাপব স্থিতি রিপবীত ভহ সকৈত ছথি। মৈথিনী সাহিত্যক সম্যক চবিত্র, সম্যক দৃষ্টি আ সম্যক জীরন শৈনীমে জীরঁহ রঁনা কিছুএ মাত্র সাহিত্যকাবক সমূহমে জগদীশ রাঁবূকেঁ সেহো বাখন জা সকৈত অছি। অপন র্যক্তিত্রসঁ জীরনক নূতন আযামকেঁ সমাজমে জ্যোতিক রূপমে পসাবরঁ মাত্র বচনামে নহি, র্যক্তিগত জীরনোমে অরশ্যে হএত। ভহ সকৈত অছি রর্তমান পিবহী এহি গ্রন্থক তাদাত্মযকেঁ পূর্ণত: স্রীকাব নহি কবএ, পবংচ হমবা র্ব্যমনে ওা সম্পূর্ণ পাঠকক উঁপন্যাস থিক। এহিমে ককবোসঁ কোনো পূর্বাগ্রহ নহি। সম্ভ্রান্ত সমাজকেঁ রিগনিত আ ওছ সমাজসঁ জোড়ি সম্যক সমাজক নির্মাণ কবরাক উঁদ্দেশ্যমে "সর্রে ভরন্তু স্বখিন: সর্রে

सन्तु निरामया:, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग भवेत्’क दृष्टि परिलक्षित होइत अछि। कतहु-कतहु शब्द आ वाक्य सामंजस्यमे किछु त्रुटि सेहो देखह मे आएल मुदा भाव परित्र, उद्देश्य परित्र तेँ एकरा नजरअंदाज करब प्रासंगिक लागल। निश्चित रूपेँ सर्वश्रेष्ठ मैथिली उपन्यासक सूचीमे एहि उपन्यासक नाओ देल सकैत अछि।

पोथीक नाम- मौलाइल गाछक फूल, विधा- उपन्यास

रचनाकार- जगदीश प्रसाद मंडल

प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन राजेन्द्र नगर दिल्ली

मूल्य- २३० टाका मात्र

प्रकाशन वर्ष- सन् २००९

पोथी पाप्तिक स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स, वार्ड न.६, निर्मली, सुपौल, मोबाइल

न. ९३७२४३७०४०३

<u>**भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा**</u>

पूर्ण मैथिली भाषामे नाटक विधाक प्रारंभ पंडित जीवन झा कृत नाटक ‘सुन्दर संयोग’सँ सन् १९०४ई मे भेल। एहिसँ पूर्व मैथिलीमे उमापति, रामदास नन्दीपति आदि सेहो नाटकक रचना कएलन्हि, मुदा ओ सभ पूर्ण मैथिलीमे नहि लिखल गेल।

सुन्दर संयोग’सँ लऽ कऽ श्री लचिकेता रचित ‘नो एन्ट्री मा प्रविश’, श्रीमती विभारानी कृत ‘भाग रौ आ बँलचंदा’ आओर श्री जगदीश प्रसाद मंडल कृत ‘मिथिलाक बेटी’ धरि मैथिली साहित्यमे विविध विधाक नाटकक रास संग्रह उपलब्ध अछि। ओहि समग्र नाटकक मध्य किछु नाटक बड़ लोकप्रिय भेल अछि ओहिमे-

শ্রী ওশিনাথ ঝা বচিত ‘চীনীক নড্ডু’ পঁডিত গোরিন্দ ঝা নিখিত ‘রঁসাত’ শ্রী মণিপদ্ম বচিত ঝ্মকী শ্রী ননন ঠাকুব নিখিত ‘নৌঁগিযা মিবচাওা’ প্রা. বাধা গ্নষ্ণ চৌধবী নিখিত ‘বাজ্যাভিষেক’ শ্রী স্ববেন্দ্র প্র. সিন্হা বচিত ‘রীবচঞ্চ’ শ্রী মহেন্দ্র মনঁগিযা বচিত ‘এক কমন নোবমে’ শ্রী রিন্দেশ্রবী মঁডন বচিত ‘ক্ষমাদান’ শ্রী উঁত্তম নান মঁডন বচিত ‘গজোত’ খা শ্রী গৌবীকান্ত চৌধবী ‘কাঁত’ (ঝখিযা জী) বচিত ‘রবদান’ক সঁগ–সঁগ মৈথিনীক মূৰ্দ্ধন্য সাহিত্যকাব পঁডিত স্বধাংশু শেখব চৌধবী বচিত ‘ভহ্ফাগত চাহক জিনগী’ প্রমুখ খছি।

স্ব স্বধাংশু জী মূনত: মৈথিনী সাহিত্যক উঁপন্যাসকাবক রূপমে প্রসিদ্ধ ছথি। খর্থনীতিকেঁ খাধাব রঁনা ক২ নিখরাঁক শৈনীক কাবণ মৈথিনীমে হিনক একটা খনগ স্থান খছি, একটা কনাকাব জোঁ খপন কনাক প্রদর্শন নাট্য রূপমে কবএ তঁ কোনো খজগুত নহি। হিন্দীমে হিনক নিখন নাটক সভ নোকপ্রিয ভেন, তেঁ খপন মাতৃভাষামে সেহো নাটক নিখএ নগনাহ।

ভহ্ফাগত চাহক জিনগী’মে সমাজক সামান্য রিম্ররকেঁ রিনক্ষণ রূপসঁ রিম্রিত ক২ হাস্য খা মর্মক সম্যক্ তাবতম্য স্থাপিত কএননহি। চাহক জিনগী কতেক ক্ষণক হোগত খছি, ভাহ উঁপটনাসঁ একব খস্তিত্র নৃপ্ত ভ২ জাগছ, ঝদা জোঁ ভনসিযামে খাত্ম রিশ্রাস হো তঁ ওহি খস্তিত্ররিহীন চাহমে নীব–ক্ষীব মিশ্রিত ক২ ওকব ফেবসঁ স্বস্রাদ্ রঁনাওন জা সকৈত খছি। নাটকক নাযক মহেশেক জিনগী ভহ্ফাগত চাহক জিনগী জকাঁ খছি। একটা স্বশিক্ষিত র্যক্তি কর্মক প্রতিস্পর্ধাক গতিমে সহন নহি ভেনাপব সমাজক খধনাহ মানন গেন কর্মকেঁ খপন জীরনক

𑒛𑒼𑒩𑒱 𑒥𑒪𑒰 𑒏𑒋 𑒞𑒞𑒹𑒏 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒥𑒪𑒮𑒿 𑒖𑒲𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒏𑒼𑒝𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒑 𑒢𑒞𑒧𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 ।

𑒢𑒰𑒙𑒏𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒔𑒹𑒞𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒱𑒞𑒱 𑒣𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒧𑒡𑓂𑒨 𑒡𑒳𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒧𑒯𑒹𑒬 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒨𑒲 𑒥𑒱𑒏𑓂𑒩𑒹𑒞𑒰 𑒕𑒟𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒥𑒱𑒏𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒂𑒬𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰–𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒮𑒿 𑒮𑒱𑒢𑒹𑒯𑒏 𑒠𑒳𑒂𑒩𑒹 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒠𑒱𑒥𑒮𑒲𑒨 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢 𑒪𑒑𑒾𑒪𑒢𑒱 । 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒏 𑒣𑒰𑒿𑒖𑒛𑓃𑒱 𑒧𑒹 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒖𑒲𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒏 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒣𑒰𑒥𑒢𑒱 𑒡𑒩𑒱𑒏 𑒪𑒹𑒪 । 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒋𑒯𑒱 𑒠𑒴 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒏 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒧𑓂𑒥𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒔𑒹𑒞𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒱𑒞𑒱𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒢𑒹𑒣𑒟𑓂𑒨𑒮𑒿 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 ।

𑒧𑒯𑒹𑒬–𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒬𑒲𑒞 𑒥𑒮𑓀𑒞𑒏 𑒥𑒮𑒰𑒞𑒏 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒑 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒥𑒰𑒩𑓂𑒞𑒰𑒪𑒰𑒣𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑒩𑓂𑒞𑒰 𑒑𑒼𑒣𑒰𑒪𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒹𑒬 । 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒠𑒹𑒬𑓂𑒨 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱 । 𑒣𑒰𑒢 𑒧𑓀𑒔𑒣𑒩 𑒁𑒥𑒬𑓂𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒲, 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒄 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏 𑒁𑒕𑒱 । 𑒑𑒼𑒣𑒰𑒪𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒠𑒱𑒑𑒧𑓂𑒥𑒩𑒏 𑒑𑒣𑓂𑒣–𑒮𑒣𑓂𑒣𑒧𑒹 𑒁𑒢𑒮𑒼𑒯𑒰𑒿𑒞 𑒏𑒙𑒰𑒏𑓂𑒭 𑒬𑒻𑒪𑒲𑒏 𑒥𑒱𑒥𑒹𑒔𑒢 𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒳𑒗𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒋 𑒪𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞𑓂 𑒠𑒱𑒑𑒧𑓂𑒥𑒩 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 । 𑒣𑒙𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒠𑒮 𑒠𑒳𑒂𑒩𑒱 𑒥𑒢𑒱 𑒣𑒹𑒙 𑒣𑒼𑒮𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒣𑒩𑓀𑒔 𑒧𑒯𑒹𑒬𑒏 𑒔𑒰𑒯 𑒥𑒹𑒿𑒔𑒥𑒰𑒮𑒿 𑒍 𑒮𑓀𑒞𑒳𑒭𑓂𑒙 𑒢𑒯𑒱, 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒧𑒯𑒹𑒬 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒼𑒪𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒰𑒏 𑒏𑒙𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒥𑒰𑒯–𑒩𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 ! 𑒦𑒲𑒐 𑒧𑒰𑒿𑒑𑒱 𑒏𑒋 𑒐𑒰𑒋𑒥 𑒢𑒲𑒏, 𑒚𑒏𑒱 𑒏𑒋 𑒖𑒲𑒋𑒥 𑒢𑒲𑒏 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒕𑒼𑒙 𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒥 । 𑒧𑒯𑒹𑒬 𑒞𑒿 𑒔𑒰𑒯 𑒥𑒹𑒿𑒔𑒱 𑒏𑒋 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒥𑒰𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒣𑒰𑒪 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒠𑒴 𑒑𑒼𑒙 𑒥𑒰𑒩𑒯 𑒥𑒩𑒐𑒏 𑒢𑒹𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒼𑒖𑒑𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒠𑒱𑒑𑒧𑓂𑒥𑒩 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒨𑒰𑒨𑒰𑒥𑒩𑒲 𑒖𑒲𑒥𑒢 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 । 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒑𑒩 𑒖𑒹

স্রযং খকর্মণ্যে মো ও গোংগ কর্মক প্বরুষকেঁ দূসয তঁ কী কহন জাএ ? মহেশ চুপ্প নহি বহনাহ, খপন কর্মক গতিক খাড়ি মে দিগমরঁবকেঁ সত্যসঁ পবিচএ কবা দেননি। ওনা ঞা দোসব গপ্প জে মহেশো খপন পিতাসঁ খসত্য রঁজনে ছথি। হ্নক পিতাকেঁ ঞা বুঝন ছন্হি জে মহেশ পটনামে নৌকবী কবৈত খছি। মহেশ মিথ্যা রঁজননি মাত্র খপন পিতাক মানসিক সংতুষ্টিক নেন, কিএক তঁ প্ববনা সোচক নোক খপন ঠোপ-চাননেটা পব রিশ্রাস কবৈত ছথি, রহু ভুক্খে মবি জাএর ক্ষদা রিজাতীয ওছ কর্ম নহি কবর।

নাটকক দোসব প্রমুখ পাত্র ছথি উঁমানাথ খা চন্দ্রমা, একটা খকাশি খা দোসব ধবিত্রী। উঁমানাথ খভিযংতা ছথি, নাও টা নেন মৌ থন, কার্যক্রম দেখরাক নেন নহি খএননি, মাত্র খপন ংসগী সভসঁ ভেঁট কবরাক দ্খারে চেতনা সমিতিক দর্শক দীর্ঘা মে খশোকর্য নহ কহ পৈসননি। খপন কনিযাঁ চন্দ্রমা টা সঁ মৈথিনীমে গপ্প কবৈত ছথি। কী মজান কেও দোসব হ্নকা সংগ মৌ থনীমে গপ্প কবরাক দ্:সাহস কবএ, ওকবা খপন সামর্থ্য দেখা দেতাহ। দূনূ পবানী চাহ পীরাক ক্রমমে মহেশক দোকানপব খরৈঁত ছথি, চাহ রঁনন নহি কী উঁমানাথ জীকেঁ কোনো সংগীপব নজবি পড়ি গেননি। কনিযাকেঁ মহেশক দোকানপব ছোড়ি ঠামে পড়ি গেনাহ। যথাক্রমমে মংচসঁ মহেশ জীকেঁ করিতা পাঠ কবরাক খাগ্রহ খাএন। চন্দ্রমা জীকেঁ রিন্ন দামে দোকানক ওবরাহী দহ ও মংচস্থ ভহ গেনাহ। চন্দ্রমা খজগ্বতমে পড়ি গেনীহ, চাহক রিক্রেতা খা করি ? কানক নীনা রিচিত্র নগননি। দোকানপব গাহকি সভ খারএ নাগন, চন্দ্রমা ভারারেশমে পড়ি চাহ রঁনারএ

লগলীহ। গংগানাথ ঝা দযানংদ সন গাহকিকেঁ চাহ রিক্রেতা করি পচি নহি রহল ছল। সমিতিক মংচ হুনকা লোকনিক মতেঁ গলহা গেল। হরিকান্ত বাঁবূকেঁ আধুনিক রূপক কার্যক্রম নীক নহি লাগি রহল ছনি, তঁ শিবানংদকেঁ প্রবাতন সংস্কৃতিসঁ কোনো মোহ রা ছোহ নহি। এহি মধ্য উঁমানাথ বাঁবূ চন্দ্রমাকেঁ তকৈত দোকানপব অএলাহ। অপন কনিযাকেঁ চাহ বঁনবৈত দেখিতে মাহুব ভঽ গেলথি। ছোড়বাঁক জিদ্দ কএললি হ্মদা মৈথিল লাবী অপন উঁতবদাযিত্বসঁ কোনা ভটকি সকৈত অছি? এক খীবা তীন ফ াঁক! বিঁগড় ি কঽ ফেব পড় া গেলাহ। মোনে-মোন মহেশেপব অগিনবান বঁবিসবৈত ছলথি। চন্দ্রমা সেহো সংকটক অবাহানমে সশংকিত হ্মদা কী কবতীহ? এক দিশ ভাব আ দোসব দিশ কর্ত্তব্য রোধ, “আঁখিক তীবক রিখ পানি লোব বঁনি ঝহড় ন হৃদয ঝমান ভেল।”

কথাক অংতিম বনিতা সবিতাক কংঠ চাহক লেল স্বখএ লাগল তেঁ অপন লোকব আ ছোট লেলাক সংগ মহেশেক দোকানপব অবৈত ছথি। কবিকাঠী মহেশে কবিতা পাঠ কঽ ফেব অপন জীরনকেঁ গ্লানি বহল ছথি। সবিতাকেঁ দেখিতে স্ববযংমে ন্বকএবাক অসহজ প্রযাস কবএ লগললি। বএহ সবিতা জে কহিযো মহেশেক সহ পাঠিনী ছলীহ, আব একটা আঈ.এ.এস. অধিকাবীক অর্দ্ধাংগিনী ছথি। সবিতা মহেশেসঁ সাক্ষাত্কাব কববাঁক প্রযাস কঽ বহলীহেঁ। মহেশে অপন ভূতকালকেঁ ঝ াঁপএ চাহৈত ছথি হ্মদা সবিতা ঘোঘট কালক বঽব জকাঁ ওকবা উঁধাবি বহল ছলীহ। হুনক উঁদ্দেশ্য সিলেহিল অছি তেঁ মহেশে টূটি গেলাহ। সবিতা অশ্রুধাবসঁ সিচি ংত, জকব লোট্স পঠ ি অধ্যযন পথপব বঁঠ ৈত বহলীহ ও

एहेन दशामे पहुँच गेल। चन्द्रमा सविताक मोहमे विचवण कवए लगलीह। एहि मर्मस्पर्शी क्षणक अंत भेल नहि की उमानाथ आरि महेशेक गंङ्घा पकड़ि रास्तविक जीवनकेँ दर्शन कवाबँए लगलाह। चन्द्रमा एहि क्षण महेशेक संग दऽ वहल छलीह।

मैथिली साहित्यक लेल सभसँ विलग नूतन विषय वस्तुक मार्मिक विश्लेषणमे शेखव जीक अत्तुल्य प्रतिभाक स्मनक अनमोल अछि। पूर्ण रूपसँ एकवा नाटक नहि कहल जा सकैछ, किएक तँ दीर्घ एकांकीक रूपमे लिखल गेल अछि। कथाक चित्रण मात्र दू दोकानक परिधिमे भेल अछि तेँ दृश्य समायोजनमे कोनो प्रकावक विध्नक स्थिति नहि, सविपहुँ एकवा शेखव जी नाटकक रूपमे प्रदर्शित कएललि। महेशे सन चविन्न हमवा सवहक समाजमे छथि, ज्यदा कर्त्तव्यबोधक एहेन पुरूष जौं मिथिलामे सभ ठाम होथि तँ हम सभ साधन विहिन वहितहुँ सम्यक जीवनक वचना कऽ सकैत छी। चन्द्रमा सन दीर्घसोची नावीक विवनणमे रास्तविकतासँ वेशी कल्पनाक आभास होइत अछि। नाटकक आत्मकथ्यमे शेखव जीक आत्मविश्वाससँ वेशी अहंकावक दर्शन भेल। ‘नाटकक क्षेत्रमे हमव किछु योजव अछि’ सन उक्तिक संग वँट्क भाय आ गजेन्द्र ना. चौधवीक प्रति कृतज्ञता ज्ञापनमे महिमा मंडलक भान श्‌ शिव जीक संस्कावपव वुँस्मना जागछ। केओ ककवो प्रेवणासँ वचनाकाव नहि भऽ सकैत अछि, ओ तँ नैसर्गिक प्रतिभाक पविणाम थिक। ज्यदा एहिसँ ‘भफाएत चाहक जिनगी’क मर्यादाकेँ क्षीण नहि वुँस्मना जा सकैत अछि। मात्र छोट–छोट ३१ पृष्ठक नाटक (ओहुमे सँ आठ पृष्ठ विषय वस्तुसँ वाँहवक) मैथिली

সাহিত্যক নেন মরুভূমিমে নীবক সদৃশ রঁনন দৃষ্টিকোণকেঁ পবিনক্ষিত কবৈত খছি। এিহ প্রকাবক রিম্রঁক সৃজন শেখব জী সন মাঁজন বচনাকাবেসঁ সংভর ভ২ সকৈছ। নিষ্কর্ষত: মিথিনাক সংস্ক্রতিক মধ্য কর্ম প্রধান হগক খাচমনিসঁ নাটক ওত-প্রাত খছি। মাত্র সাহিত্যক নহি, মংচনক নেন পূর্ণত: উপযক্ত নাগন।

নাটক- ভহ্ফাগত চাহক ি জনগী

বচনাকাব- পং. স্বধাংশ্ব শেখব চৌধবী

প্রথম সংস্কবণ- নরম্রব ১৯৭৯

<u>समीक्षा (अर्चिस)</u>

वर्तमान मैथिलीक कविताकेँ तरूण कवि आ कवयित्रीक पदार्पणसँ नव गति भेटि रहल अछि। एहि नवत्वविया मुदा विषए-वस्तुक दृष्टिकोणसँ सजल बचना सर्वहक बचनाकावक वर्गमे एकटा प्रवासी मैथिलीक कवयित्री छथि- श्रीमती ज्योति स्वनीत चौधवी।

"अर्चिस" ज्योति जीक प्रथम संकलित कविता संग्रह थिक। एहि पोथीमे ३१ गोटे कविता संग्रहित अछि। ज्योति जी कतेक दिनसँ बचना कवैत छथि, ओ तँ नहि बूझल अछि मुदा विदेहक पदार्पणक किछुए अंकसँ हिनक बचना प्रकाशित हुअए लगल।

अर्चिसक अर्थ तत्सममे अग्नि आ तद्भवमे आग, अनल आदि मानल जाइत अछि मुदा मैथिलीमे आगि, अंगोव आ बत्ती सेहो कहल जा सकैछ। एहि पोथीक शीर्षक मात्र कवयित्रीक भावनापव आधावित अछि, कविताक भावसँ एहि शीर्षकक कोनो संबंध नहि। पहिल कविता "हाइकू" प्रकृति वर्णन, श्रृंगाव, विचाव मूल आ विवहक मिश्रित चित्रांकन कवैछ। हाइकू पहिने मैथिलीमे क्षणिका नाओसँ लिखल जाइत छल, मुदा ज्योति जी एकव वास्तविक रूपक चित्रण कएलनि अछि। सम्पूर्ण कवितामे अर्न्तद्वन्द्व आ प्रसन्नताक भीड़क मध्य व्यथा-टीशक अंतवंग हृदयक प्रवाहमयी प्रस्तुति..... मनोवम लागल।

एकटा हेवाएल सखीमे कवयित्री कविताक नायिकाकेँ अपन सखी मानि ओकवा सिनेहीसँ भेटैल पीड़ाक उद्घाधन

क३ बहल छथि। नारी मोनमे अश्रुँउच्छ्वरासक संग-संग समर्पण सेहो बहैत अछि। ओना तँ आर्य ग्रन्थमे "त्रिया चरित्र: पुरुषस्य भाग्यम् देवो न जानाति कुतो मनुष्य:" लिखल गेल अछि, मुदा एकरा हम उचित नहि मानैत छी। आधुनिक नारीक मोन रिद्रोहनआ भावुक होइत अछि तेँ भावनात्मक छलक शिकार शीघ्र भ३ जएबाक संभावना देखल जा सकैछ। पुरुष प्रधान समाजमे दोस नारीपर देल जाइत अछि मुदा पुरुषक चरित्रहीनताक नाओ की देल जाए? जीवन भरि एक पुरुषक प्रति समर्पणकेँ केन्द्र बिन्दु बँना क३ करयित्री दुखित छथि अपन सखीक निश्छल समर्पणसँ। ई करिता सदेह ३ मे कल्पना शरणक रचनाक रूपमे प्रकाशित भेल अछि। नहि जानि बेँबि-बेँा ब नाओ बँदनि क३ लिखबाक परम्परा कहिया धरि चलत। छद्म नाम ाक निर्णकि एकरेबिमे क३ लेबाक चाही, नहि तँ रचनाकारक बिलगित मानसिकताक बोँध होइत अछि।

वर्तमान महिला वर्गमे नौकरी करबाक इच्छा शक्ति प्रबल भ३ बहल अछि। स्रभाविके अछि जीवनक दोसर पहिया तँ नारी छथि। सृजन आ सृष्टिक रूपमे पहिल पहिया सेहो कहि सकैत छी। परंच ऐरा महिला रर्गक प्रवृति चंचल होइत अछि। एहि अल्हड़पनमे अपन कर्मगतिकेँ सेहो चंचल बँनएबाक प्रयास क३ बहल छथि करयित्री अपन करिता "एकरा नौकरी चाही"मे। कार्यालयक सभटा काज हिनके मोनक होएबाक चाही। काज कम मुदा बैंचा बेसी चाहैत छथि। बँाँसकेँ आनन्दर आ रहिब होएबाक कामनामे हास्यक दर्शन होइत अछि। भ३ सकैत अछि हिनक एहेन दृष्टिकोण मात्र करितेटा मे हुअए।

“পনিভবনী” করিতা পঠ়ি হমব ম়াঁথ স্বন্ন ভঽ গেন, খকচকা গেনহুঁ। জাহি নাবীক রাঁন কান জমশেদপ্ববমে রীতন হ্খএ, খারঁ নংদনমে বহৈত ছথি হ্নকাসঁ এহেন শরঁদক খাশ কোনা কএন জা সকৈত খছি ? গামোমে খারঁ ঘৈন খা গনাবক ৰূপ মৃতপায ভঽ গেন খিছ। একটা গবীর খরনা পনিভবনীক প্রতি খাসক্তিসঁ করিতা ওত প্রাত খছি। রিষয রস্তু খা দৃষ্টিকোণ সমংজন খূরঁ নীক নাগন। খপন জাতিক প্রতি সিনেহক মর্মস্পর্শী চিত্রণ ভঽ সকৈত খিছ জে এহি প্রকাবক র্যসথাক রর্ণন খপন পবিরাবক বূঁঢ়়-প্ববানসঁ জ্যোতি জী স্বননে হেতী।
দীপমে জ্যোতি পসবরাক শক্তি হোগত খছি ৰুদা তবমে তঁ খন্হাব বহৈছ। স্রাভারিক খছি জে জহানমে খানংদ দেরামে সক্ষম হোগছ ওকব খপন জীরন র্যথিত ভঽ জাগত খছি। এহি প্রকাবক দর্শন ভেন “শীতন রঁসাত” করিতামে। রৃক্ষ দোসবকেঁ শীতনতা দৈত খছি পবংচ ওকব পাত ভূখণ্ডপব খসিতে খস্তিত্র রিহীন ভঽ জাগত খছি। পতঝড়়িক রাঁদ রসন্ত, হেবি পতঝড় সংগহি বৌদ ক্ষণহিমে ছাঁহ ও তঁ প্রগ্নতিক নীনা খছি। মিথিনাক ভূখণ্ডমে খামক গাছী বূঁঢ় প্ববানক সংগ-সংগ রাঁন রৌধক নেন গবমীক পিকনিক কেন্দ্র হোগত খছি। ভোজ কোনো ছপ্পন প্রকাবক ভোজ্য পদার্থক নহি, টিক্না খা ঝক্কাক ভোজ। গবমী ছুট্টীমে গামক প্ররাসক জ্যোতি জীক খন্বভর নীক রুঁমনা জাগত খছি।
“একটা ভীজন রঁগবা” করিতা পঠ়ি হিন্দী সাহিত্যক মহান নেখিকা মহাদেরী রর্মা জীক নিখন “গিন্নূ” কথা মোন পড়়ি গেন। ওহি কথামে রর্মাজী একটা ন্বক্খীক

পীড়া ক বর্ণন করৈত ওকরা আত্মসাত কঽ লৈত ছথি, তহিনা জ্যোতি জী একটা চিড়ৈক প্রতি সিনেহক জে ভাব দেখা বহল ছথি ও “সর্বে ভবন্তু সুখিন:” সিদ্ধান্তক ব্যাতক বুঝল গেল। “হম একটা মধ্য বর্গক লোকক” লোক সাহিত্যপর আধারিত কবিতা অছি। লোক মনোবিজ্ঞানক সংগ একরা লোক গৃহবিজ্ঞান সেহো মানল জা সকৈত অছি, মুদা এহি কবিতামে প্রবাহক অভাব দেখএ মে আএল। শব্দকেঁ তুকাঁত বনএবাক ক্রমমে মূল ভাবক প্রতি অনাকর্ষক দেখএ মে আবি বহল অছি। “টাগম মশীন” কবিতামে আর্য ভূমিক দৃষ্টিকোণ আ পাশ্চাত্য দেশক ব্যবস্থাসঁ তুলনা নীক লাগল। বিলাসিতাক প্রতি হমরা সবহক সমর্পণ পরতংত্রতাক রূপমে পরিণতি ভেল আ হম সভ সগরো ক্ষেত্রমে পংগু ভঽ গেলহুঁ। মিঠগর রৌদ, পহিল ফুহার আ বরসাতক দৃশ্য কবিতামে প্রকৃতি বর্ণন সামান্য রূপসঁ কএল গেল অছি। এহি প্রকারক কবিতাসঁ হমর সাহিত্য ওত-প্রোত অছি। এহি প্রসংগমে কিছু নব নহি দেখএ মে আএল। জীবন সোপানমে জীবনক ক্রমিক গতিক ছংদসঁ ভবন প্রস্তুতি সেংতিত অছি। “প্রতীক্ষাসঁ পরিণাম ধরি” জীবন-দর্শনপর আধারিত জ্যোতি জীক সোহনগবক কবিতা অছি। হমরা বুঝনে ঈ কবিতা এহি পোথীক সভসঁ বিলক্ষণ অধ্যায থিক। শ্রীমদ্ভগবতগীতা আ শেষ মহাভারতক আধারপর কৃষ্ণ চরিতক বর্ণনসঁ কবযিত্রীকেঁ সিদ্ধহস্ত মানল জা সকৈছ। দ্বাপরসঁ কলিমে প্রবেশ নিশ্চিত রূপেঁ কবযিত্রীক বিস্তৃত অধ্যযন আ অনুশীলনক ছাযা দেখা বহল অছি।

“গন্ঠৈব নেঠ স্বযংবর” বিযাহক নব রূপক চিত্রণ কঽ বহল অছি। বৈদিক কালমে আঠ প্রকারক পাণিগ্রহণ

व्यवस्था छल। वर्तमान समयमे जंटैवनेटै चैटि ंगसँ विवाह कवबाक प्रणालीमे ठक व्यवस्था अछि तेँ कवयित्री जकवा विम्व देखने प्रेम कवबाक नाटैक कएननि ओ पुरूष नहि स्त्री अछि। क्षितिजक साक्षात दर्शनमे प्रवाहक पयोधि गतिशील अछि ऋदा वचनामे तावतम्यक अभाव देखि वहन छी। हिम आववित आ मेघाच्छादित सन शब्द तँ नियोजित अछि ऋदा जखन हमवा सबहक भाषामे शब्द विन्यासक अभाव नहि तखन एहेन तद्भवक चयन कवब नीक नहि लागि वहन अछि। जौं एहि कविताभे देसिल वयनाक मूल शब्दक प्रयोग कवितथि तँ कविताक ऋप वेसी नीक जएवाक भऽ संभावना छल।
महावतक हाथी, विद्या धन, वर्फ ओठ़ले वातावबण आ गामक सूर्यास्त कविता तँ नीक अछि ऋदा एकव विम्ब कोनो नव नहि सभटा वएह पुवना कविक वचना सबहक ऋप देखए मे आएल ऋदा दृष्टिकोण हिनक अपन अछि, ककवो वचनाक नकल नहि कएने छथि। विशाल सऋद्रमे जलोधिक छोटै ऋदा प्रासंगिक प्रस्तुति त नीक लागल। आधुनिक जीवन दर्शन कविताक विम्ब तँ नीक लागल ऋदा विवेचन पक्ष दुर्बल भऽमला गेल। मनुष्य आ ओकव भावनामे जीवनक वर्तमान ऋपक अन्वेषण उद्देश्यपूर्ण अछि। हम्मव गाम कविताभे गामक जिनगीक जीत दर्शनीय अछि। विकासमे मूल प्रकृतिक ऋपकेँ वैज्ञानिक दृष्टिसँ पविवर्तनक प्रयाससँ निकलैत पविणामक वर्णन कएल गेल अछि। वानश्रेम वर्तमान समाजमे कष्टैक ऋप लऽ लेने अछि। साधनक अभावमे हम सभ लेनाक शैशव कालकेँ विसवि अवोधपव मानसिक आ शावीविक अत्याचाव कवैत छी। मिथिलामे

ৰাঁঠ়া ক পৰিণাম আ প্ৰনযক ৰূপ মেঘক উঁত্পাত আ ৰবখা তূঁ কহিযা জেৰেঁ কৰিতামে দেখি বহন ছী। “ওশৈক খবাধনা” শীর্ষক কৰিতামে কর্ম শৈক্তিক খৰাহন কএন গেন খছি। এহি কৰিতাক ৰিম্ৰ নীক, প্ৰৰাহ কনকন আ ভাষা সবন খছি। এহি প্ৰকাবক শৰ্ব্দ ৰিন্যাসক মৈথিনীমে আৰশ্যকতা খছি। “খবহাক ভোজ” শীর্ষক কৰিতামে আন জীৰসঁ মনুষ্যক তুননা নীক নাগন। ৰৌক্কিক ৰূপসঁ ৰিকসিত মানৰকেঁ কর্ম আ ধৈর্যপৰ ৰিশ্ৰাস বখৰাক চাহী, আন জীৰক জীৰন–উদ্দেশ্য ভোজন মাত্ৰ হোগত খছি। কন্পনা তখনে সাকাব ভঽ সকৈত খছি জখন শিক্ষাক ৰিকাস হএত, এহি প্ৰকাব দৃষ্টিকোণ কন্পনা নোককেঁ সমৃদ্ধি দঽ সকৈত খছি। কোশীক প্ৰকোপ কৰিতাক ৰিম্ৰ ৰর্তমান কানক একটা পৈঘ সমস্যাকেঁ উদ্ধৃত কঽ বহন খছি। “খসন বাজ আ পতঝড়়ক আগমন” কৰিতাক ৰিষয ৰস্তু সামান্য হ্মদা নীক নাগন। ৰূক্ষক খভিনাষামে প্ৰাকৃতিক সংতুননকেঁ ধ্যানমে বাখি নৰ পিবহীক নেন সৃজনশীনতাক ক্ৰমমে ৰূক্ষাৰোপনপৰ ৰন দেন গেন খছি।

“টৈম্স ধাবমে নৌকা ৰিহাব” কৰযিত্ৰীক ৰাস্তৰিক জীৰন বেখাক ৰিন্দু নংদনসঁ খপন ঠামক তুননাপৰ আধাবিত খছি। টৈম্সক ধাবমে নৌকা ৰিহাব কবঽ ৰানীকেঁ খপন চনহা কোনা মোন পড়়া গেননি, নিশ্চয আন ঠামক নীক ৰ্যৰস্থা দেখি হমবা সভকেঁ খপন পিছড়়ন দশাপৰ মর্ম হোগত খছি। কতত্–কতত্ কিছু দুৰ্বন ৰিন্দু বহনাক ৰাদো এহি সংগ্ৰহকেঁ খূৰ নীক মানন জা সকৈত খছি। কৰযিত্ৰী কখনো দ্বাপৰ যুগমে চনি জাগত ছথি তঁ কখনো চৈটিং গ ৰিযাহক খনুসংধানক আধুনিক যুগমে। সমগ্ৰ কৰিতা সংগ্ৰহমে কিছু স্থানকেঁ

छोड़ि रिषय रस्तु चयन नीक नागन। रर्तमान युगक नरतुविया पिबमीसँ एतेक आशे नहि छन। निश्चय ज्योति जी धन्यरादक पात्र छथि।

शेष...अशेष

पोथीक नाम- अर्चिस
बचयिता- श्रीमती ज्योति स्वनीत चौधबी
दाम- १३० टैका
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन
प्रकाशन रर्ष- २००९

यू.पी.एस.सी. नेन- चित्राक सनेस

मिथिनाक भूमि प्वातन कानहिंसँ आयारिर्तक संस्कृतिक आकर्षण केन्द्र बहन अछि। सन्त दर्शनक संग-संग साहित्य सविताक रैभर-रिकासमे मिथिनाक योगदान अरिस्मवणीय। एहि भूमिक जनभाषामे ज्योतिवीश्रवसँ नऽ कऽ अद्यतन कान धवि साहित्यकावक भवमावि नागन अछि। ओहि साहित्यकावक ढेबीमे एकटा एहेन साहित्यकाव भेन छथि, जनिक नाम स्वनिते हमवा सबहक रास्तरिक रूप उँपस्थि कऽ अािर जागत अछि। ओ छथि- रैधनाथ मिश्र। तबौनी गामक नान रैधनाथ मिश्र

মৈথিলী সাহিত্যমে 'যাত্রী' নামসঁ প্রসিদ্ধ ভেলাহ। বৌদ্ধ দর্শনসঁ প্রভাবিত হোএবাক কারণ হিন্দীমে 'নাগার্জুন' নামসঁ রচনা করৈত ছলাহ। প্রারম্ভিক রচনা সংস্কৃতমে কএলনি, মুদা চৌগমা গাম বাসী আ মৈথিলীক চর্চিত মহাকাব্য অম্বচরিতক সৃজনহার পং. সীতা রাম ঝাক প্রেরণাসঁ মৈথিলীমে সেহো লিখএ লগলাহ। মৈথিলী সাহিত্যক হুনক প্রমুখ কৃতি –পারো– মানল জাইত অছি, পরংচ এক ছোট মুদা প্রাসংগিক কবিতা সংগ্রহ 'চিত্রা' হুনকা কবিক রূপেঁ হমরা সবহক ভাষাক ধুরন্ধর বনা দেলক।

চিত্রাক রচনা কোনো যোজনা বনা কঽ নহি কএলন্হি। সন্ ১৯৩১সঁ লএ কঽ সন্ ১৯৪৯ই. ধরিক লিখল কিছু কবিতাক সংকলন এহি পোথীমে কএল গেল অছি। এক দিশি মাতৃভূমি প্রেম তঁ দোসর দিশি মৈথিলীক দশাপর ক্ষোভ। জীবনক সমগ্র মূল্যক তাত্ত্বিক বিবেচন। অনিয়োজিত রচনা সবহক সংকলন বড় কষ্টদায়ী হোইত অছি, মুদা এহিমে ভাব প্রবাহক অভাব নহি বুঝনা জাইত অছি। মাঁ মিথিলে শীর্ষক কবিতামে অপন ঠাম, অপন গাম, অপন বুদ্ধি আ অপন দর্শনক সবল রূপমে প্রদর্শন কএল গেল। গৌতম যজ্ঞবল্ক্যসঁ লঽ কঽ রমেশ্বর মহারাজক মহিমাক গুণগান। এহি গুণগানক মূল অছি– অপন সংস্কৃতিক বিশ্লেষণ। ভারতী আ মংডন মিশ্রক লেল কীর দংপতিক উদবোধনমে অপন পহিচান ঝলকৈত অছি। উদযনাচার্য জগন্নাথপুরীমে সনাতনক পুনরুদ্ধারক প্রমাণিত ভেলাহ, ই মিথিলাক বিজয থিক। বিদ্যাপতিক কবিতা হমর ধরোহরি অছি। অযাচী মিশ্রক সাদা জীবন সেহঁতিত অছি, তঁ শংকরক বালোহং জগদানংদ.... বাল

साहित्यक आ रान कौशनक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

एक दिशि 'मॅं मिथिले' कविताम अपन माटिपर स्वाभिमानक दर्शन तँ दोसर दिशि 'अंतिम प्रणाम' कविताम अपन जन्म–आ कर्मपर क्षोभ। अर्न्तद्वन्द्वक एहेन दशा वा वेदना कविमे किएक उत्पन्न भेल? एहि कविताक माध्यमसँ कवि जागरण करबाक लेल प्रयास करए चाहैत छथि। अपन संस्कारमे निहित विषमतासँ अकच्छ कवि व्याप्त व्यथाकेँ नि:शब्द उघारए चाहैत छथि। जेना अवरोध अपन माएसँ घरसँ भागि जएबाक धमकी उपरे मोने दैत अछि, ओहिना कविक वेदनामे हृदएगत प्रयास नहि अछि। 'कविक स्वप्न' कविताम कवि समाजक विगलित अर्थहीन व्यक्तिगणक कचोटैक मार्मिक चित्रण कएलन्हि अछि मिथिलाक भूमिमे सम्यक आर्थनीतिक अभाव अछि तेँ समाजक परिदृश्यमे भावी अन्तर देखए मे अबैछ। एहि भूमिपर एकसँ बढ़ि कऽ एक महामानव भेलाह, परंच साधन आ शिक्षाक अभावमे कतेक प्रतिभा मोनगसँ बाँहर नहि निकलि पबैत अछि–
'तानसेन कतेक बरिबर्ा कते
घास छीलथि राग्मतीक कछेड़मे
कालिदास कतेक विद्यापति कते
छथि हेड़ाएल महिस चारक हेड़मे'

जौं पेट–पांजड़ि अन्न जलक त्रासमे आक्रन हो तँ शिक्षाक कल्पना निर्मूल प्रमाणित भऽ जाएत, परंच स्वपनोमे आशाक दर्शन। कविकेँ समाजमे नव जोश उत्पन्न करबाक प्रेरणा भेटैत तेँ प्रवासकेँ छोड़ि अपन मिथिला धूरि अएबाक निश्चय कएलन्हि। एहि कविताक रचना काशीमे कएलनि, यद्यपि मोन

तरौनीमे घ्ुबया बहल छल। निश्चय जन्मभूमिक दशापर वेदनासँ करिक मोन तपि बहल होगतनि।

'बूँढ़ रब' करिताक दर्शन कएनापर हास्यपर व्यथाक विजय दर्शित होगत अछि। शीर्षकसँ स्पस्ट होगत अछि जे विवाहमे कनिया-ववक वएसमे अन्तव अवश्य हएत। करिताक मूनमे जएवाक वाद तँ स्पष्ट भइ गेल जे वबकेँ ववाँठ वा खोबनाँठ किछु कहल जाए अनसोहाँत नहि लागत। जीवनक अँतिम अवस्थाक वब काँच-स्वभाविक ववण कहलन्हि। विवाहिता नि:संतान वहि गेली। माएक विवोध नि:सफल भइ गेल। स्त्रीगणक व्यथाकेँ के बूँझत? वाप कैँचाक लोभमे वेटीकेँ वेचि लेलन्हि। मिथिलामे एहि प्रकावक पाप होगत बहल अछि। समाजक तथाकथित आगाँक पाँतिमे वैसल जातिक दीन आ कर्तव्यहीन जनमे ई व्यवस्था पलेगक रूप धावण कएने छल। अंतमे वेटी धवती माएसँ फटबाक लेल आग्रह कवैत छथि।

'विलाप' करिताक विषएमे लिखब कठिन अछि जे एकवा वाल-विवाहक कृत्य वा विधवाक विलापमे सँ की मानल जाए? वाल कालक विवाह संस्कावमे आनंदक कोन रूप होगत अछि? द्वावागमनमे कनिया सिखेलासँ कनैत छथि, सदा लोबक अभिप्राय नहि बूँझैत छथि। जखन लोबक अर्थ बूँझबाक वएस भइ गेलनि तँ वज्रपात? वैध्वव्य जीवनक मार्मिक छंद......।

श्रृंगावसँ पहिने नीति आ वैवाग्य, एहि जीवनक उद्देश्यपव विचाव कववाक आवश्यकता अछि। वैध्वव्य जीवन पतिक स्मृतिक संग जीवँए चाहैत छथि। विहंुसनि नायिका, सदा समाजक कुदृष्टिक डव। एहि करितामे सेहो उँच्च जातिक व्यवस्थापव कटाक्ष

কএল গেল। রিধরা রিযাহ মিথিলা সমাজক সরর্ণ রস্তুমে পূর্ণত: রচিত ছল, এখলো খাংগ্বরেপব গলল-গ্বথল হোগত খছি। জাহি রস্তুক লোক শাঁতিসঁ দ্:খো লহি সহএ দৈরএ চাহত ছথি, ওহিমে জল্মপব কোলা গর্র কক ? করিকেঁ কতিপয র্যথা ছল্হি গ্রিহ র্যরস্থাসঁ, খিন্ন ছথি উঁচ্চ জাতিক খলচ্দ সদৃশ সোচসঁ। প্বকষসূক্তমে কর্মক খাধাবপব জকবা চণ্ডাল খা ছদ্র সল সংজ্ঞা দেল গেল, হ্লক সোচ এখল পাবদর্শী খছি। ওহি রস্তুক কাঁতাকেঁ ঙা খধিকাব ছল্হি জে স্বকর্মী স্রামীসঁ কখলো জাল ছোড়্া কঽ খাল মল্বক্খক রবণ কঽ সকৈত ছথি হ্মদা খাগাঁক পাঁতিমে রৈসল প্রর্হ্ব রস্তুক রিধরা খরলা রঁলি উঁজ্জব সাড়্ীমে দ্রকলি ছথি, হ্মদা তৈযো রাগমতী কাতক রঁগ্বলা হ্লক চবিত্র হলল কবরাক লেল সদিখল উঁহ্বত ছথি। এহি দশাকেঁ দেখি কোলো করিক ঙা উঁক্তি প্রাসংগিক খছি-

খাগি ভেল শীতল, পালি খদহল ভঽ উঁধিএলৈ
কাঁঠ রঁলল কোমল খা হ্বলে গড়্া - গড়্া গেলৈ
ককবাসঁ কবতে তকবাব হম জিলগী
ধিক-ধিক জ্খালী ধিক্কাব হমব জিলগী।

কৌশিকীক ধাব করিতামে কোশী মাএক পসাবল রিলাশ লীলাসঁ ভেঁটল পবিণামক পীড়্া মড়্াবি দৈত খছি। হ্মদা ঙা থিক মিথিলাক শোক। 'প্রেযসী' করিতা শৃংগাবসঁ ভবল খছি। প্রেমী দ্বাবা প্রেমিকাক প্রতি সমর্পিত সংরাধল লীক লাগল। এহি সিলেহমে প্রেমী প্রেমিকাকেঁ খপল শক্তি মালৈত ছথি। সিলেহক মূল রূপক রর্ণল, কতহ্ রূপক চর্চ লহি। প্রেমী খপল প্রেমীকাকেঁ

তপরতি ছথি ক্ষদা ও অপন নির্ণএসঁ নহি রিনগ ভেনী। এহি সমর্পণসঁ প্রেমী ি সনেহক জ্অাবি পানি ফ্ৰ্টি গেন–

অপন গচ্ছাপব তোহব আশাক কৈনিযহ্ হোম
তোঁ রননি বহনি সদএ সখি মোম

'ফেকনী' করিতাক নাযিকা ফেকনী কংজূস মহিনা ছথি। কৈঁচা রচা–রচা কহ অপন সংততিক নেন বাখর ছনি হ্নক গচ্ছা। দূধ রেঁচি কহ ঠৈকা জমা করৈত ছথি, ওহো দূধমে পানি মিনা কহ তেঁ পানি জকাঁ দিরস রিতৈত ছন্হি। কোনো ধর্ম–কর্ম নহি, করি এহিসঁ ছরঁধ ছথি। এহি প্রকাবক ঘটৈনা হমবা সরঁহক গাম–ঘব হোগত অছি। পেঁট কাটি কহ জকবা নেন সংযোজন করৈত ছথি, ও ওহি ধনকেঁ কী কবতাহ ? সহজ অছি–

পূত কপূত তঁ কিএক ধন জোহর
পূত সপূত তঁ কিএ ধন জোহর।

'নখিমা' করিতা মিথিনা নবেশ বাজা শির সিংহক অর্দ্ধাগিনী নখিমা বানীক প্রতি সমর্পিত অছি। মহাকরি রিদ্যাপতিক শ্রৃংগাব বসক সিদ্ধিমে নখিমা জীক র্যক্তিত্র আ স্বন্দবতাক পৈঘ ভূমিকা ছন। ওনা রিদ্যাপতিক চবিত্রপব সংদেহ কবব করিক না দূষ্টিকোণ নহি অছি, ক্ষদা হ্নক শ্রৃংগাবক নাযিকা নখিমা বানী ছনীহ। মহাকরিক বচনাসঁ স্পষ্ট হোগত অছি জে নখিমাক সৌন্দর্য ততেক রিনক্ষণ ছন জে হ্নক বচনাকেঁ অমবত্র প্রদান কহ দেনক। রিদ্যাপতিক নযনমে নখিমা অরশ্য ছনীহ, পবংচ ও কর্তর্যরংধসঁ রাঁন্হন ছনাহ। হ্নক মনমে রিবতি ছনন্হি।

'উঁড়ান' শীর্ষক করিতা কন্পনাপব আধাবিত অছি। সহজ অছি জে কন্পনাশীন র্যক্তিকেঁ কর্মসঁ রেসী এহিপব রিশ্রাস হোগত ছৈক। রাস্তরিক

জীৱনমে কর্মক জতেক মহত্ত্ব হো ঢ্দা কল্পনাক উঁড়ান ৱিনগিত মানৱকেঁ আনংদক শিখৱপৱ পহুঁচা দৈত অছি। কল্পনা কহিযো ধোখা নহি দৈত অছি, এহিমে ককৱোসঁ আশা নহি হোগত অছি। স্ৱপ্নক ভাৱকেঁ কেও নহি ডিগা সকৈত ছৈক।

'গামক চণ্ডী' কৱিতা প্ৱৱাসমে বহনিহাৱ একটা গবীৱক নাও নিখন হুনক কনিযা ৱ্যথাক কিছু পাঁতী থিক।

গামমে অপন নেনাক সংগ বহৈত দীনক দাবাকেঁ কী-কী সহএ পড়ৈত অছি, একব মার্মিক ৱর্ণন কএন গেন অছি। জোঁ হাথমে কিছু কৈঁচা নহি হুঅএ তৈযো গাম অএবাক নিৱেদন ৱ্যথিত কনিযাঁক হৃদএগত কচোট বুঝনা গেন। চাৰু কাতসঁ সমস্যাসঁ ঘেবন নাবী অপন পতিসঁ খানী হাথ গাম ধ্ৱি অএবাক নেন কহৈত ছথি। জীৱন ডোবিকেঁ পকড়ি কহ বাখৱ কঠিন ভহ গেননি। সম্যক অর্থনীতিক উঁচ্চাষণ যাত্ৰী জীক এহি কৱিতামে দেখএমে আএন। অপন সনেশকেঁ কখনো উঁধাবি, কখনো ঝাঁপি যাত্ৰী জী অসমান সমাজক অস্তিত্বকেঁ ননকাবি বহন ছথি। দীনক নেনা পিতুক দর্শনক নেন আকুন ছথি, ও তঁ নেনা ছথি ঢ্দা মাএ কিএ বঁজাৱএ চাহৈত ছথি অপন স্ৱামীকেঁ। কৱিক এহি ভাৱকেঁ স্পষ্ট কবব আজুক নোকসঁ সংভৱ নহি বুঝনা জাগত অছি।

ঠাঁঠব মামা কৱিতা গামমে সভ দিন বহএবঁনা ঠাঁঠব পাঠকক পঠনা প্ৱৱাসক িস্থতিপৱ নিখন গেন অছি। ভগজোগিনীক দর্শন কবএবঁনা নোককেঁ হজাব ৱোনটৈক গজোতমে উঁজগ্ৱজাহটৈক অনুভৱ হোগত এহি। এহি কৱিতাক প্ৰসংগ সাধাবণ অছি আ ভাষামে প্ৱৱাহক অভাৱ বুঝনা গেন।

‘পবমিষ্টৈক সাড়ী’ চাবি খনা রেহবী দঽ কঽ তীন ৈকামে পবমিষ্টসঁ কনিযা কাকীক নেন খানন সাড়ীপব খাধাবিত খছি। গাম–ঘবমে রেঁহবী দঽ কঽ সমান খবীদরাক পবম্পবা প্রাচীন খছি। এহি কথাকেঁ যাত্রী জী কোন উদ্দেশ্যসঁ নিখনন্হি নহি স্পষ্ট ভেন। দেশী কানক দশাপব সামান্য প্রস্তুতি। হৃতিকা নক্ষত্রমে, হিমগিবিক উত্সংগমে, ভএ গেন প্রভাত খা তাড়ক গাছ শীর্ষক করিতা সভ প্রগ্নতি রর্ণনিক ছোট ছাযা প্রস্তুতি করৈত খছি। ওা চাকচৌ করিতামে করিক উদেশ্য হ্নক শৱ্দসঁ নহি প্রকট ভঽ সকন। ছংদ সমাযোজন নীক নাগন ক্ষদা দোসব, করিতা সভসঁ তাবতম্য নহি রুঝনা জাগত খছি। ‘দ্বন্দ্ব’ করিতাক শৱ্দ–শৱ্দমে পবিতাপ দর্শিত ভেন। কিংকর্তর্য রিমূঢ় ছথি করি, গামমে বহথি কী প্ররাসমে? গামমে রিপন্নতা, ক্ষদা সিনেহক খারবণ খছি। মোবংগ রা খান ঠামক প্ররাসমে কৌঁচা–কৌড়ী তঁ খছি, ক্ষদা পবিরাব সমাজক সিনেহ নহি। পারনি তিহাবক জে খানংদ গামমে ভেটৈত খছি, ও শহবমে সংভর নহি। এক ঠাঁ গামক জীরনসঁ করিক মোন গ্বজগ্বজা গেননি। গামক ছোট নোক (সাধন রিহিন) পনাএন কঽ বহন খছি, তেঁ সামাজিক র্যরস্থামে খনতব খিার গেন। যাত্রী জীক খর্নতমন সমাজক রঁদনৈত স্ররূপসঁ সংতুষ্ট খছি, কিএক তঁ হ্নক সাম্যরাদমে সমাজরাদক জ্যোতি প্রখব ভেন খছি।

‘ঋৃতু সংধি’ শীর্ষক প্রগ্নতি রর্ণনসঁ জোড়ন খছি, ক্ষদা এহিমে খর্থনীতিক মর্ম ঝাঁপন খছি। গ্রীষ্মক তাত্পর্য দীন ক্ষদা উদ্বেনিত দীন, রর্ষাক খর্থ নর জীরনক রিশ্রাস। দীনমে সাধনক খভার পবংচ হ্নক শ্রদ্ধা

उँद्घनित अछि। एहि कवितामे महाकवि यंतक छाया वादक स्पनकि देखएमे अबैत अछि।

जौं यात्री जीक पद्य सागवक स्ववासित सविता चित्राकेँ मानल जाए तँ एहिमे सन्तसँ पैघ योगदान 'वंदना' कविताक देल जाएत। 'वंदना' कविताक शीर्षक मात्र माध्यम थिक हुनक जन जनक व्यथाकेँ नग्न कवबाक लेल। मिथिलाक समग्र जीवन दर्शनकेँ एहि कवितामे कवि मंचस्थ कऽ देलनि। नेपथ्यमे ि कछु नहि बहि गेल। अन्वलोम-विलोम, आशक्त-घृणा सन्तंटा उँपष्टि कऽ बाँहव कऽ देलनि। मिथिला वर्णनपव वँह्त वास कविताक वचना भेल अछि। पवंच वेसी किछु विशेष वस्तुकेँ महिमामंडित कएलक। उँपेक्षितकेँ सम्मान देवाक ि हुनक शैली आवएवँना वास्तविक मैथिल संस्कृतिक वक्षकक लेल कोसक पाथव प्रमाणित हएत। मिथिलाक माटि-पानिमे बहनिहाव, संस्कृतिकेँ आत्पसात केनिहाव सन्तंटा मैथिल छथि। मैथिलीमे एतेक सम्यक सोच बखएवँना कतेक लोक छथि? मैथिली भाषीक चर्च होगतै मैथिल ब्रँह्मण आ मैथिल कर्ण कायस्थक नाओ उँमवि जाएत अछि, ह्मदा अन्य वस्तु की मैथिल नहि? जौं दोसव भाषाक लोक उँपर्युक्त दुनू जातिक लेल एहि भाषाक वाचकक प्रयोग कवैत छथि, तँ दुनू किएक नहि ि ववोध कवैत छथि? ओना एहि वस्तुक किछु लोक विस्तृत सोचक छथि, ह्मदा ओ सेहो एहि प्रश्नपव चुप भऽ जाएत छथिन्ह? यात्री जीक आत्मा निश्चित रूपसँ एहि कविता वचना कवए कान काँपि गेल हेतनि। एहि सनेशकेँ जौं सन्त गोटे आत्मसात कऽ ली तँ मैथिलीक पविदृश्य अवश्य वँदलि जाएत। आर्य, द्रविड़, आंग्ल, गस्लाम आ

पावसी सभ पविरावक सभ्टौ भाषामे मात्र मैथिलीपव जातिरादी स्ररूपक कनंक नागन ख्छि।

'चित्रा' संग्रहक रिशेष पक्ष ख्छि– एकव सम्पूर्णता। ख्ांचनिक बचनाकेँ मैथिली साहित्यमे प्राथमिकता देन गेन ख्छि। एहि भ्रमकेँ यात्री जी 'गाॅधी' शीर्षक करिता निखि कऽ तोड़ि देननि। गाँधी मात्र एक र्यक्तिक नाख ा नहि 'भावतीय दर्शन' थिक। एहि दर्शनमे कोनो रिभेद नहि, सरॅहक नेन स्थान एहि दर्शनक मून संस्काव थिक। रिडंम्रॅना ख्छि जे समाजमे ि दर्य ज्योति जगारएरॅनाक ख्ंत निर्मम होगत छन्हि। गसा–मसीह ख्ा स्वकवाते जकाँ गाँधी मर्म स्पर्शी रूपेँ रिनोकित भेनाह। बाजा भर्तृहविक 'रैवाग्य शतक' जकाँ यात्री जीक बचनामे क्षोभक ख्रनोकन कएन जा सकैत ख्छि। 'ख्ासिन मासक बाति गजोविया कहैमे तँ ज्योतिक प्रतीक थिक, मुदा बॅ्ठ़रा पीपवक ठ्ठ्पव रैसन नीन कंठक त्राससँ भवन जीरनमे एहि ज्योतिक कोन ख्र्थ? फाग्वनक गजोविया ष्टैहाष्टैमी हो रा ह्यग धर्म सभ ठाम रिगनित ख्साव जीरन बसकेँ छंदसँ यात्री जी पसावि देननि। जेठक दुपहवियामे कानक प्रहावकेँ देखएरॅाक सार्थक प्रयास कएन गेन।

देशी दशाष्टैक भ्रष्टोाचावपव निखन यात्री जीक ख्श्रिकल्प थिक। यात्री जीक यौरन पवतंत्र भावतमे रीतन, मुदा स्रतंत्रताक दू रॅबख राद एहि करिताक बचना कएनन्हि। जे ख्ाशी ख्प्पन नोकसँ कहन गेन ओहि ख्ाशीक पूर्णतामे संदेह देखएरॅाक यात्री जी प्रयास कएननि।

पवम सत्यकेँ चित्राक सतोग्वण कहन जा सकैत

অছি। স্বামী বিবেকানंदक শূন্যবাদী সোচ সদৃশ যাত্রী জী জহানক অস্তিত্বপর প্রশ্ন চিন্হ নগএবাক প্রযাস কএননি। প্রাবংভমে বৈবাগ্যক অনুভূতি, মুদা শনৈ: শনৈ বিশ্বাসক সোতীমে ডুবকী নগাবএ নগননি। যএহ থিক গৃহস্থ ধর্ম। মনুষ্য বিপত্তিমে সংসাবকেঁ মাযাগৃহ বুঝৈত অছি, পবংচ মোহক তাঁডবসঁ কেও নহি বঁচি সকৈছ। অংতমে বিশ্বাসক সংগ এহি কবিতাক দ্বাগমন কএন গেন।

অংতিম পদ্য একটা পাছাঁক পছাতিমে বিচবণ কবএবানী নাবীক কর্মগাথা থিক– 'গোষ্ঠ–বিছনী'। নাবী প্বনরুত্থানপব ভাষণ খূব দেন জাগত অছি মুদা অক্ত, দীন, সাধন বিহীন, শোষিত আ সমাজক ধাবসঁ বাঁঠ়ি ক খাধি জকাঁ কষ্টনি নাবীক ব্যথা নগ কেও নহি জা সকন।

'চিত্রা' কবিতা সংগ্রহ চিত্রা নক্ষত্রক তীত পানি জকাঁ চিন্তন কববাক যোগ্য অছি। বচনাকাবক জীবন চবিত্র জোঁ সম্যক হো তঁ বচনাক বিষএ–বস্তু সমাজক নেন দর্শন ভ২ জাগত অছি। সমগ্র জীবন সংঘর্ষক পাঁজড়ি মে বিতএবাক কাবণ যাত্রী জী কর্ম আ ধর্মক দ্বন্দএমে ঘ্সি গেন ছথি। চিত্রাসঁ স্পষ্ট দর্শন ভেন জে যাত্রী জী মানব ধর্মী ছথি। ছনহিমে কচোষ্ট আ ক্ষণহিমে ক্রান্তিক জ্বাবি, আবেগ আ অনুপ্তিক ছোভ বহিতহুঁ বিহানক বিশ্বাস ত্ণ–ত্ণকেঁ ি সহবা দৈত অছি। এহি বচনাকেঁ জোঁ আত্মসাত ক২ নেন জাএ তঁ বৈদেহীক মিথিনামে প্বনর্স্তিত্ব স্বধাবসসঁ ওত প্রাত ভ২ সকৈত অছি।

শেষ– অশেষ............

পোথীক নাও- চিত্রা
বচনাকাব- শ্রী যাত্রী
প্রকাশিক- খখিল ভাবতীয মৈথিলী সাহিত্য পবিষদ প্রযাগ
বচনা রর্ষ- ১৯৪৯

সমীক্ষা- মিথিলাক রেঁটী (নাটক)

গসা সংরত্ সন ২০০+সঁ নহ কহ রর্তমান কালকেঁ খদ্যতন মৈথিলী সাহিত্যিক খান্দোলনক ক্রাঁতি-কাল কহল জা সকৈত খছি। এহি খরধিমে বংগ-রিবংগক সাহিত্য সবিতাসঁ সজল পত্র-পত্রিকাক প্রকাশিন প্রাবংভ ভেল খছি। জাহিমে প্রমুখ খছি- রিদেহ ওা পত্রিকা, রিদেহ-সদেহ, মিথিলা দর্শিন (প্বনর্প্রকাশিন), প্বরোত্তিব মৈথিল, ঝাবখংডক সনেস, নরাবম্ভ, মিথিলা সৃজন খাদি-খাদি। এহি পত্র-পত্রিকাক প্রযাসসঁ নর-নর

সাহিত্যকাবক প্রবেশে মৈথিলী সাহিত্যমে ভেল। জাহিমেসঁ কিছু সাহিত্যকাব তঁ অপন বচনাসঁ মিথিলাক মানস পটলপব এহেন স্থান বॅনা লেলনি জাহিসঁ হুনকা জোঁ কান পুৰুষ মানে মেন আঁফ টৌগম কহল জাএ তঁ কোনো অতিশযোক্তি নহি হএত। এহি বচনাকাবক ভীড়মে একটা সাম্যবাদী আ বঁহিৰ্ম্খী প্রতিভাসঁ সম্পন্ন বচনাকাব ছথি- শ্রী জগদীশ প্রসাদ মংডল। হিনক ব্যক্তিগত জীবন কোনো ৰূপক হো মুদা সাহিত্যিক সৃজনশীলতাসঁ হিনকা বঁহিৰ্ম্খী ব্যক্তিত্বক ব্যক্তি কহল জা সকৈত অছি।

হিনক পহিল বচনা 'ি রস াঁ ঠ ়' আ 'ভৈঁটক লাবা' ঘব-বাঁহবমে আ দোসব বচনা 'চ্নবানী' মিথিলা দর্শনমে প্রকাশিত হোগতে মৈথিলী পত্রিকাক সংপাদক মংডলক সংগ-সংগ প্রবুদ্ধ পাঠকক মধ্য হড়হোবি মচি গেল। 'পহিলে আউঁ আ পহিলে পাউঁ'ক আধাবপব বিদেহক সংপাদক শ্রী গজেন্দ্র ঠাকুব হিনক বচনা সভকেঁ অপন পত্রিকামে ছপাবঁএ লেল হথিযা লেলন্হি। এহি প্রকাবক শব্দক প্রযোগ কববাক হমব তাত্পর্য অছি জে জগদীশ জী কোনো নব বচনাকাব নহি ছথি, তিবসঠি বঁর্খক মাজল সাহিত্যকাব ছথি, মুদা হিনক বচনাক প্রদর্শন নহি ভেল ছল। সমগ্র বচনাসংসাব হিনক পুত্র উমেশ মংডল জীক কম্প্যূটবমে ওঝবাএল ছল কিএক তঁ ছপযবাক লেল কৌঁচা কতএসঁ অএত ?

আদবণীয সংপাদক গজেন্দ্র ঠাকুবক বিশেষ অনুগ্রহ আ শ্রুতি প্রকাশনক অধিষ্ঠাতা শ্রী নাগেন্দ্র কুমাব ঝা আ শ্রীমতী নীতূ কুমাবী জীক কৃপাসঁ হিনক একসঁ বঠ ়ি কহ এক বচনা হথিযা নক্ষত্রক গনগুআবি জক াঁ পাঠকক আগ াঁ আবি বহল অছি।

एहि पुष्पांजलि महक एकटा फूल नः हम पाठकक सोझा राखि रहल छी– 'मिथिलाक बेटी।' मिथिलाक बेटी एकटा नाटकक नाम अछि। शीर्षकसँ स्पष्ट होइत अछि जे हमरा सभक समाजक बनिताक आस्तित्व आ अस्मितासँ एहि रचनाक संबंध अछि। मुदा....... पोथीक गम्भीरावलोकनक बाद हमर मोनसँ ई भ्रम भागि गेल। एहिमे समाजक विषमताक स्पष्ट दर्शनक अनुभूति भेल। जगदीश जी साम्यवादी विचार धाराक सम्पोषक छथि, तेँ समाजमे पसरल व्याधिपर श्रमक विजय, श्रमजीवीक विजय, दृष्टिकोणक विजय, ईमानक विजय, सम्यक भौतिकताक विजय, बौद्धिक आ चेतनाक विजय देखयबाक प्रयास कएलनि।

पाँच अंकक एहि नाटकमे नौ गोट पुरूष पात्र आ पाँचटा नारी पात्र छथि। रचनाक केन्द्र बिन्दु छथि पैंतालीस वर्खक विकट पुरूष पात्र– बाबू कर्मनाथ– एकटा प्रशासनिक अधिकारी। विकट एहि दुआरे किएक तँ भ्रष्ट समाजक मध्य कर्तव्यपरायण ईमानदार व्यक्ति आ बाबू एहि दुआरे किएक तँ अधिकारी छथि। स्नातक उत्तीर्ण कएलाक बाद हिनक पिता सोमनाथ हिनक विवाह एकटा भौतिकवादी परिवारमे पक्का कए लेलनि। द्रव्य, धन धान्य आ बीस बिघा जमीनक जुआबिमे। मुदा ओ कर्मनाथ जीक मौन समर्थनक आशमे बैसल छलाह। एहि मध्य जेठ मासक गरमीमे एकटा कायाहीन आ निर्धन व्यक्ति हिनक दलानपर अएलनि। व्यथित आ थाकल अपन कन्याक हेतु वर तकबाक क्रममे सोमनाथक दलानपर अचेत भऽ गेलाह। सोमनाथसँ हुनक व्यथा नहि देखल गेल। ओहि गरीबक कन्यासँ विवाह करबाक लेल आतुर

भऽ गेलाह। कालान्तरमे ओ रिटायर सम्पन्न तँ भऽ गेल मुदा, परिवारमे सामंजस्य नहि बनि सकल। पिता सोमनाथ आ दू भाँग क्रमशः नूनू आ नानबाबू हुनक निर्णएसँ दुखी भऽ गेलनि, किएक तँ कुलेवक उंडावक आशापर कर्मनाथ जी पानि फेरि देलनि। प्रतिभाशाली छात्र कर्मनाथ प्रशासनिक अधिकारी बनि गेलाह परंच हुनक समान भौतिकतापर भारी पड़ि गेल जाहिसँ नव-नव समस्या उत्पन्न भऽ गेल। पत्नी चमेली, पुत्र कुनेसर आ पुत्री द्वय चम्पा आ जुही- ओ अछि हुनक परिवार। भारक सब आ विश्वासक शतदलक संग जीवन क्रम चलैत रहल। पिता सोमनाथ अदूरदर्शी व्यक्ति छलाह, जाहिसँ अन्य दुनू पुत्र अवण्ड भऽ गेलनि। कर्महीन नूनू आ नानबाबू जथा बेचि-बेचि कए कर्मनाथक बदनाम करबाक प्रयास कऽ रहल छलथि। पितासँ महिमा मंडित होएबाक कारणेँ दुनूक जीवन नारकीय भऽ गेल। परिवारक दशा ओ दिशाकेँ देखि कऽ कर्मनाथक माए आशाक आश टूटि रहल छल। कर्मनाथ जीक पितृ परिवारमे मात्र हुनक माएक व्यक्तित्व सोझराएल छल। किएक नहि रहत, सभ माएक गच्छा होइत अछि हुनक पुत्रक नाओसँ समाज गौरवान्वित होअए।

जगदीश जी एहि नाट्य कथाक नायकक स्पष्ट उद्घाषण नहि कएलनि मुदा, हमर मतसँ एहि नाटकक नायक छथि विकास, एकटा सेवा निवृत्त शिक्षक। आदर्श आ सहज विचार धाराक व्यक्ति श्री विकास अपन समाजक चिंतक छथि। मिथिलाक गाम एखनो विकासक धारामे पाछाँ पड़ल अछि। शिक्षाक अभाव, सामाजिक समरसताक अभाव आ साधनक अभावक कारण

রিকাস সন প্রবুদ্ধ র্যক্তিক গ্রাম্য সমাজমে আরশ্যকতা অছি। গামক প্রায: নর আ অধরযস পীঢ়ী হুনক ছাত্র বহননি অত: হুনক সনাহকেঁ মানৈত ছথি। শ্রীচন কিসান হাইপব প্রচাব কবরাক নেন আএন শংকব রীজ কংপনীক প্রনোভনমে আরি টৈমাটবক রিদেশী রীআ খবীদ নৈত ছথি। টৈমাটব উঁপজাক কোন কথা জে নত্তিও গনি গেন। শ্রীচন সংতাপ আ ঞাধক মাবে আক্কন ছনাহ। রিকাস জী হুনকা সান্ত্রনা দৈত কহননি জে প্রচাবক চকাচৌঁধমে নহি অএরাক চাহী অপন স্রদেশী রস্তু ওহি রিদেশী সমানসঁ সোহনগব অছি। রিকাস জীক প্রযাসঁ কর্মনাথক পুত্রী চম্পাক রিযাহ বামরিনাস মিস্ত্রীক পুত্র মদনসঁ তঁএ কএন গেন। এহি রিযাহকেঁ কেন্দ্র রিন্দু মানি এহি পোথীক বচনা কএন গেন অছি।

আর প্রশ্ন উঁঠৈত অছি জে এহি পোথীমে নর কী ভেটৈন ? মিথিনাক রেঁটী নাট্যক 'কর্ম প্রধান রিশ্র কবি বাখা' সিদ্ধান্তক আধাবপব নিখন গেন অছি। একটা কর্মঠ আ গমানদাব র্যক্তিকেঁ সমাজমে কী-কী সহয পড়ৈত অছি, ওহি পবিপেক্ষ্যক মার্মিক চিত্রণ কএন গেন অছি। কথাক মূনমে কর্মনাথক রিযাহ ঞমমে আএন একটা গবীর (চমেনীক পিতা) র্যক্তিক মনোদশাক প্রস্তুতি নীক অছি। ও র্যক্তি গবীর ছথি মুদা 'চারাকি দর্শন'ক পানক। 'পেটমে খঢ় নহি সিংহমে তেন' জেরীমে কৈঁচা নহি মুদা নৌ হন্নাক রট্‌আ জাহিমে ভোগক রস্তু ছনিযা স্বপাবী পান আ তমাকূ। হমবা সরহক গামমে এহিনা হোগত অছি, ভোজন নহি মুদা, পান অরশ্য। পগ-পগ পোখবি মাছ মখান... মধুব রৌন মুস্কী মুখ পান... নেনা পঢ়নক, নহি পতা, কনিযাকেঁ পথ্য ভেটৈন নহি জনৈ ছী, রেঁটীক

लेल दूध अछि... नहि। हृदा ! पान अतिआवश्यक, हाथी मरि गेल, छान आ पगहा लऽ कऽ रौआ बहल छी। कर्मनाथक अपन पत्नी चमेलीक संग वार्तालापमे 'अङ्गुर ककाक तरंग'क दर्शन होइत अछि। गाममे प्रचलित लोकोक्तिक हास्य हृदा, सत्य प्रस्तुति।
कर्मनाथ जीक पुत्रक नाम ह्लेसर प्रशासनिक अधिकारी भऽ कऽ एहेन नाम..... । एहिसँ हुनक गामक प्रति सिनेहक झाँकी भेटैत अछि। गाममे एहने नाम सभ होइत अछि। अपन दुनू पुत्री आ पुत्रकेँ छायावादी रूपमे जीवनक शिक्षा दैत छथि..... कर्मनाथ। एना करब आवश्यक किएक तँ एहिसँ जिज्ञासा बढ़ैत अछि। वाम विलास सेरा निवृत मिस्त्री छथि। वान्यकाल साधनक अभावमे, ग्रवावस्था संघर्षमे बिता कऽ भौतिक साधन प्राप्त कएलनि। जीवनक अंतिम पड़ावमे माध्वीसँ माने अपन पत्नीसँ अपन जीवन-यात्राक व्याख्यान करैत छथि, आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ। जिनका संग चालीस बर्खक यात्रा कएलनि ओ हिनक जीवन दर्शन नहि जनैत छलीह। हमरा सबहक समाजमे एहि प्रकारक घटना होइते अछि। गवीर लेनपनक वाद सोझे प्राढ़ भऽ जाइत छथि। जे कर्मवादी छथि हुनक अंतिम अवस्था स्वखमय नहि तँ...... । अपन कर्मक नावकेँ कनकत्तामे मजबूत कऽ सोझे गाम आवि जाइत छथि। मातृभूमिक प्रति सिनेह, गाममे गौवेज खोलवाक योजना अछि। चौघावा घव बँनाएव, दलान अवश्य बहत, किएक तँ दलान समाजक मर्यादा थिक गामक जीवन शैहवसँ स्वखमयी अछि। एहि पोथीमे पलायनवादक विवोध कएल गेल अछि।

कर्मनाथक चवित्र पंडित गोविन्द झा लिखित

'रसात' नाटकक नायक शुषणकान्तसँ मिलैत अछि। वाम विचार जीवन संघर्षमे विजयी भेलाह तेँ प्रतीक विचारे आदर्श करताह। विकास जीक चरित्र नाटकक लेखक जगदीश बाबूसँ मिलैत अछि। साम्यवादी, ग्रामीण सभ्यताक दिग्दर्शक। एहि पोथीमे जातिवादी व्यवस्थाक विरोध कएल गेल अछि। आन गामक स्वजातीयकेँ भोजमे निमंत्रण देबासँ अनिवार्य अछि अपन गामक सभ जातिकेँ आमंत्रित करब। ि कएक तँ टेब-हुटेबमे प ाँजिबि लागल लोक काज दैत छथि, चाहे ओ कोनो जातिक होथ।

एहि पोथीमे जीवनक सभ रूपक व्यापक दर्शन कएल गेल अछि। कुलीन व्यक्ति जनिक परिवार नीच ाँ ँ झुके जा रहल अछि ओहि परिवारक कन्याक विचारे ऊर्ध्वमुखी साधारण परिवारक प्रतीक (जे आब सम्पन्न छथि) हुनकासँ भऽ सकैत अछि। एहि पोथीमे अन्हारपर इजोतक विजय देखाओल गेल अछि। भौतिकतापर बौद्धिकता आ सम्यक जीवनक जीत एहि पोथीक केन्द्र विन्दुमे समेटल अछि प्रतीक विचारमे तिनक लेखासँ बेसी अछि कुलीन कन्याक चयन। सम्पूर्ण पोथीमे देशज शब्दक प्रयोग कएल गेल अछि। पोथीक अंतिम पृष्ठपर श्री गजेन्द्र ठाकुरक कथन मैथिली साहित्यक इतिहास (जगदीश प्रसाद मंडलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मंडलसँ) पढ़ लहुँ पहिने तँ अनसोह ाँ ँत लागल मुदा पोथीक अध्ययन कएलाक पश्चात् हमरा सहज लागल। भाषा अत्यन्त सामान्य मुदा रस, अलंकार आ छंदसँ परिपूर्ण अछि। कलात्मक शैलीमे जगदीश जी अंक-अंकमे अपन दर्शनकेँ सहेजि लेने छथि। हिनक ओ रचना कोनो

विशेष कथाकाव वा नाटक कावसँ प्रभावित नहि। हिनक वचनामे वाजकमन जी, पंडित गोविन्द झा, हविमोहन झाँबू, धूमकेतु, ग्वनेवी जी, नक्ष्मीनावायण मिश्र, ननन ठाकुव सन वचनाकावक शैनीक मिश्रित दर्शन होइत अछि। मिथिनाक वेटी अर्थनीतिसँ प्रभावित अछि मुदा, सम्यक अर्थनीतिसँ। अर्थपव मानवताक विजय, जगदीश जीक विश्वास नीक नागन।

जेना कोनो व्यक्ति पूर्ण नहि भऽ सकैत अछि तहिना कोनो वचनाक संग होइत अछि। 'मिथिनाक वेटी'पोथीमे किछु त्रुटिक दर्शन सेहो भेन। प्रथमत: एहि पोथीक शीर्षक अप्रासंगिक नागन। वेटी तँ एहि दर्शनक माध्यम मात्र अछि, स्त्रोत नहि। एहिमे मानवीयताक जीत देखाओन गेन अछि वेटीक जीवन तँ घटना मात्र थिक।

एहि नाटकक भाषा सवन मुदा, शनै: शनै: गमनीय अछि तेँ मंचन कवबाक योग्य नहि, मुदा एकव कनात्मक मंचन कएन जा कएन जा सकैत अछि।

निष्कर्षत: जगदीश प्रसाद मंडन जी हमवा सबहक बीच एकटा नव जीवनक आयाम नऽ कए आएन छथि। वहुवंगी जीवनक आयाम आ सकावात्मक सोचक आयाम। मानवीय मूल्य एखनो धवि जीवित अछि। एहि तवहक घटना कठिन अछि मुदा असंभव नहि। विश्वास आ कर्मक संग जीवन जीवाक प्रयत्न कवबाक चाही। एहि पोथीक शब्द-शब्दमे झंकाव अछि। भाषा प्रवाहमयी नागन। प्रकाशन दनक प्रयास नीक, शब्द संयोजन आ संपादन अति उत्तम। धन्यवाद।

पोथीक नाम- मिथिनाक वेटी

बचनाकाब– जगदीश प्रसाद मंडन

प्रकाशक– श्रुति प्रकाशन बाजेन्द्र नगब दिल्ली ।

मूल्य– १६० टाका मात्र ।

प्रकाशन रर्ष– सन् २००९

पोथी पाप्तिक स्थान– पल्लरी डिस्ट्रीब्यूटर्स, राडि न.६, निर्मली, स्वपौन, मोराइल न. ९३१२४३०४०३

समीक्षा– रिभावानीक नाटक रॅनचन्दा

श्रीमती रिभा बानी मैथिली साहित्यक चर्चित लेखिका छथि । श्रुति प्रकाशनसँ प्रकाशित हिनक नाटक द्वय भाग बौ आ रॅनचन्दा पढ़लहुँ । भाग बौ रॅड़ नीक लागल, एवंच रॅनचन्दा पढ़ि ते हृदयमे नव रेदना एसबि गेल आ समीक्षा लिखबाक दु:साहस कइ देलहुँ ।

रास्तरमे रनचन्दा नाटक नहि, छोट पोथीमे मात्र 20 पृष्ठक एकांकी थिक । सभसँ पैघ गप्प जे रिभा जी रर्तमान सामाजिक जीरनक सभसँ पैघ समस्याकेँ अपन लेखनीक रिषय रॅनौनन्हि । कन्या भ्रूण हत्या रॅर्तमान समाजमे रिकट रूप लइ बहल अछि । प्राय: नाटकमे पुरूष प्रधान पात्रकेँ नायक कहल जाइत अछि एवंच एहि ठाँ बोहितक भूमिका खलनायकक अछि । रिजातीय समाजक एक शिक्षितसँ क्षणक आरेगमे प्रेम कएलनि । रिराह सेहो भइ गेल । कदा ओहि स्त्रीकेँ की भेटैल ? अभियन्ताक शिक्षा ग्रहण कएलाक पश्चात् गृहिणी रनि कइ बहि गेली । पुरूष प्रधान समाज तैयो पाछाँ नहि छोड़लक । प्रथम संतान रॅानक होएबाक चाही । आश्चर्यक गप्प ई जे एहि प्रकाबक आदेश सास्व द्वाबा देल गेल ।

एक नारी द्वारा दोसर नारीसँ आरँएरँना नारीक नाश करबाँक कुटिल आत्ता एहि एकांकीक मूल विषए-वस्तु अछि। खलनायक चुप्प छथि, किएक तँ ओ मातृभक्त। तखन दोसर माएकेँ संतति हंता किए बँनाएँ चाहैत छथि। जीवन भरि संग देबाक शपथकेँ की भेल ? जखन निर्वाह करबाँक सामर्थ्य नहि छल तँ आन जातिक कन्याकेँ संगिनी किए बँनौलन्हि। बोहितक प्रेम-सिनेह नहि रहल् वासना मात्र छल।

स्त्रीकेँ भोग्या बँना कऽ राखब ओहि परिवारक मूल संकल्प। ओहि लोकनिकेँ सोचबाक चाही जे आब ओ दिन बीति गेल, नारी लक्ष्मी तँ चंडी सेहो छथि। बोहितक स्त्री गर्भपातक प्रबल विरोध कएलनि। प्रतिज्ञा कए लेली जे अबैँबँना तनयाक पतिपाल स्वयं करब।

एहि एकांकीक भाषा सरल आ स्वन्दर अछि। विषए-वस्तुक सम्पादन स्वन्दर आ आकर्षक। मैथिल संस्कृतिक व्यापक प्रदर्शन। जय-जय भैरविसँ प्रारंभ आ समदाओनसँ गति श्री। नारी व्यथाक मर्मस्पर्शी चित्रणक संग जाति व्यवस्थापर मैथिली साहित्यक लेल ई नाट्क नहि एकटा आन्दोलन कहल जा सकैत अछि। संस्कृतिक रक्षाक लेल आ सामाजिक संतुलन हेतु साहित्यिक आन्दोलन विभा जीकेँ नमन........ धन्यवाद।

पोथिक नाम- भाग रौ आ बँलचन्दा
लेखिका- विभा रानी
दाम- १००क.
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, दिल्ली पोथी प्राप्तिक स्थान: Pallavi Distributors मोरागन-

৯৩৭২৪৩০৪০৩ Ward no- 6, Nirmali (Supaul)

কিস্ত-কিস্ত জীৱন-শেফালিকা ৱর্মা-(সমীক্ষা)

সাহিত্য সমাজক দর্পণ হোইত অছি আ সাহিত্যকার ওহি দর্পণক শিল্পী। শিল্প জতেক বিলক্ষণ হএত ছাযা ততেক সাফ। কোনো সাহিত্যক অধ্যযনসঁ রচনাকারক মনোবৃত্তি স্পষ্ট হোইত অছি। মৈথিলী সাহিত্যক সংগ ই বিডংবনা রহল জে এহিমে বাল সাহিত্য, অর্থনীতি আ আত্মকথাক বিরল লেখন ভেল। মাত্র কিছু সাহিত্যকার এহি বিধামে অপন লেখনীক প্রযোগ কএলনি। ওহি বিরল সাহিত্যকারক গুচ্ছমে একটা নাম অছি- ডॉ. শেফালিকা ৱর্মা।

শেফালিকা জীক রচনা সভমে পারদর্শিতা রহল ও জে হৃদএসঁ সোচৈত ছথি ওকরা অপন স্মৃতি উঁতারি দৈত ছথি। হুনক রচনামে অর্ন্তমনক ধ্বনি স্পষ্ট সুনল জা সকৈত অছি। কতহু অর্ন্তদ্বন্দ্ব নহি, কতহু পূর্বাগ্রহ নহি। হুনক কিছু স্মৃতি- বিপ্রলব্ধা, অর্থযুগ স্মৃতি রেখা, যাযাবরী আ ভারাংজলি পঢ়লাক বাদ হুনক জীবনক বাস্তবিক রূপক দর্শন কএল জা

सकैत अछि। अपन रचना सभकेँ एकसूत्रमे समेटि कए अपन आत्मकथा लिखलन्हि "किस्त-किस्त जीवन" अप्रत्याशित रूपेँ प्रासंगिक नाम। जीवनक कतेक रूप होइत अछि, बाल, वयस्क, प्रौढ़.... सुख-दुख, काम निष्काम यएह थिक एहि रचनाक सार। अपन करूणामयी जीवनक बुन-बुनकेँ आँजुरमे एकत्रित कए आत्मकथा लिखलन्हि।

आरम्भसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ नित डायरी लिखैत छथि तेँ अपन किस्त-किस्तक अनुभवकेँ बचैबि लेलनि। बाल-कालक गणित विषयक समस्या हो वा संगीत शिक्षक पंडित राजपेयी जीक व्यवहारक सूक्ष्म विश्लेषण सभ विन्दुपर पोथिक अक्षर-अक्षर पन्ना जकाँ स्पष्ट प्रस्तुति। युवती वयसमे प्रवेश करैत काल कोनो अनचिन्हार युवकक लजबि देखि कए अपन ब्रह्मास्त्रक (थूक फेकबाक) प्रयोग करैत छलीह। ओना एहि अस्त्रक शिकार विवाहसँ पूर्व ललन बाबू सेहो भेल छलाह, जिनका संग ओ दाम्पत्य सूत्रमे बान्हल गेलीह। नव प्रकारक रक्षा सूत्रक विषए मे पढ़ि अकचका गेलहुँ, नीक लगि लागल रूपेँ, एहिसँ रचनाक प्रासंगिकतापर प्रश्नचिन्ह नहि लगाओल जा सकैत अछि।

प्रवेशिका उत्तीर्ण कएलाक पश्चात शेफालिका जी पढ़ए नहि चाहैत छलीह। ललन बाबूक विशेष प्रेरणासँ जहिना-तहिना स्नातक धरि शिक्षा ग्रहण कएलनि। तत्पश्चात् घर-गृहस्थी आ साहित्य साधनामे लीन भए गेली। साहित्यमे विशेष योगदानक लेल दरभंगामे डॉ. दिनवाजी शाण्डिल्य द्वारा "विद्या वाचिधी" सम्मानसँ सम्मानित कएल गेली। एहि सम्मानकेँ पाबि भाव-विभोर भए मिथिला महिलाकेँ अपन मनोदशा

পঠৌনন্হি। মিথিনা মিহিব দ্বাবা হ্নক হস্ত–নিপিকেঁ যথাবত্ প্রকাশিত কএ দেন গেন। মিথিনা মিহিবক “হোনী রিশেষাংক”মে হিনক বচনাক বচনাকাবক নাম দেন গেন “দিন বাজী ডॉ শেফানিকা রর্মা।” এহি মজাকসঁ শেফানিকা জী কॉপি গেনী আ 18 রর্ষক মৌনব্রতকেঁ তোড়ি পুন: শিক্ষা গ্রহণ কবরাক নেন আতুব ভ২ গেনী। পবিণাম সোঝাঁ অছি– এম.এ., পী.এচ.ডী প্রাধ্যাপক ডॉ. শেফানিকা রর্মা। অপন সম্পূর্ণ জীরনমে প্রেমকেঁ জীরাক আধাব মানি জীরি বহন ছথি– বজনী জী। আবসী রাঁরূক শেফানিকা– কোনা বজনীসঁ শেফানী রনি গেনী এহি বচনামে ঝॉংপন অছি। প্রেমক সভ রূপকেঁ অর্ন্তমনসঁ স্রীকাব কবর হিনক জীরন দর্শন অছি। বাজনীতিসঁ দূব বহনীহ, জখন কী কিছু প্রসিদ্ধ বাজনীতিজ্ঞ হিনকা নগ নতমস্তক বহৈত ছনাহ। ডার্রিনরাব “উঁপার্জিত নক্ষণক রংশারনি”ক আধাবপব এনা সংভর ভেন। পিতা স্র. মনুনিক সাহিত্কাব আ সবন র্যক্তিত্র ছনাহ। হিনক পতি ননন রাঁরূ সাহিত্যকাব তঁ নহি ছনাহ পবংচ শেফানিকা জীক সাহিত্যক সভসঁ পৈঘ পাঠক। অপন পতি দ্বাবা নিবংতব পগ–পগপব সংগ দেরাক কাবণ হিনকা জীরনসঁ কোনো শিকাগত নহি অছি। “জীরনক ডোবি ফূজি উঁড়ন র্যোমমে কাতব প্রাণ ঝদা জীরৈ ছী।”

আব প্রশ্ন উঁঠৈত অছি জে হ্নক আত্মকথাসঁ সমাজকেঁ কী ভেঁটৈত রা কী ভেঁটৈন ? কোনো র্যক্তি ও মহান হো রা নহি হো ওকব জীরনসঁ শিক্ষা নেন জা সকৈত অছি। শেফানিকা জী তঁ মর্মজ্ঞ ছথি জীরনক মর্মজ্ঞ, সাহিত্যক মর্মজ্ঞ আ সিনেহক মর্মজ্ঞ। পুরুষ প্রধান সমাজমে নাবীক এহেন দৃঢ়তা দেখি রর্তমান

कानक स्थानकेँ अवश्य नव दिशा भेटैत।

हिनक जीवन दर्शनकेँ कण-कणमे समा लेनहुँ, भाषा मनोरम आ प्रवाहमयी अछि।

एतेक अधिवाम स्तुति वन्दनाक पश्चात् एहिमे किछु त्रुटिक दर्शन सेहो भेल। शेफालिका जी अपन जीवनक कचोटकेँ नुका लेली। ओ स्त्रीजन मानसिक प्रवृतिक महिला छथि, चरित्र उत्तम सदा, पारदर्शी। सहज अछि जे एहिसँ हिनका किछु सामाजिक उपहासक अनुभव अवश्य भेल हेतनि। साहित्यकारक रूपमे उपेक्षाक शिकार अवश्य भेल हेती तकर मौन व्याख्या तँ कएल जा सकैत छल सदा, नहि कएल गेल। भऽ सकैत अछि ओ मैथिल समाजक मध्य कोनो अनुत्तरित प्रश्न नहि उठबए चाहैत छथि। सम्पूर्ण सार अछि जे रचना सारगर्भित ओ सोहनगर लागल। शेष.....अशेष....... ।

पोथीक नाम- किस्त-किस्त जीवन
रचनाकार- डॉ. शेफालिका वर्मा
प्रकाशक- शेखर प्रकाशन, इन्द्रपुरी पटना-14
मूल्य- 300टाका मात्र
प्रकाशन वर्ष- 2008
कुल पृष्ठ- 320
समीक्षक- शिव कुमार झा "टिल्लू"
जमशेदपुर

মৈথিনী উঁপন্যাস সাহিত্যক রিকাসমে হবিমোহন ঝাক যোগদান

মৈথিনী উঁপন্যাস সাহিত্যক গতিহাস রেঁসী প্রচীন নৈ খছি। ঐ ভাষাক পহিন্বক মান্য উঁপন্যাসকাব জনসীদন ছথি। ওনা তঁ হবিমোহন ঝা রিম্র ও শিন্পাচ্ছাদিত খারবণসঁ যক্ত কথাকাবক ৰূপেঁ চর্চিত ছথি, কিএক তঁ চর্চবী সন হাস্য ও মর্মক সমাগম হিনক খন্য রিধাক হ্বতিমে নৈ ভেটৈছ, পবঁচ সাহিত্যক জগতমে হিনক পদার্পণ পাঠকগণকেঁ জগ হ্বতিসঁ ঝংহ্বত কেনক ও থিক সন্ 1933 ঙ্গ.মে হিনক নিখন উঁপন্যাস কন্যাদান ও সন 1945 ঙ্গ.মে হিনক দোসব উঁপন্যাস– দ্বিবাগমন।

জখন উঁপন্যাস রিধামে হবিমোহনক পদার্পণ ভেননি তঁ

ओ रिधा काँच छल। अखन धरि जनसीदनक निर्दयी सास्व, शेशिकला, कनिहगी सन्यसी, पुनर्रिराह, द्विबागमन बहस्य जीरछ मिश्रेक बामेश्वेर, पुण्यानंद झाक मिथिला दर्पण आ डा॑. काँची नाथ झा किबणक चन्द्रग्रहण सन किछ जनप्रिय आ साहित्योपयोगी उँपन्यास सभ पाठक लग पसबल गेल छल। मुदा कोनो उँपन्यासमे ओ शक्ति रा आकर्षण नै छल जेकबा मैथिली पाठक पूर्णत: आत्मसात कबथि। किएक तँ पोथी कीनि कऽ पढ़ब़ाँक दृष्टिसँ जौं मूल्यांकन कएल जाए तँ मैथिलीकेँ आन भाषाक पाठकसँ बेसी उँदासीन मानल जाए। जग भाषा साहित्यक प्रति पाठकमे ओ भक्ति-समागम नै ओग भाषामे हबिमोहन सन उँपन्यासकाबक पदार्पण अरश्य क्रांतिकाबी मानल जाए किएक तँ हिनक बचना शैलीमे ओ आकर्षण तँ अरश्य अछि जेकबा कारणेँ उँदासीन पाठक रसौं सेहो पोथ्ओी कीनि कऽ पढ़ब़ाँक लेल राध्य भऽ जागत छथि।

कथा रिम्रक आधाबपब जौं निर्णए लेल जाए तँ कन्यादान कोनो रिशेष कथाक राचक नै। मिथिला समाजक एकटा रिकट मुदा सभसँ महत्रपूर्ण संस्काब रिअ।हकेँ केन्द्र रिन्दु बना कऽ लिखल गेल ऐ उँपन्यासमे कथानक बड़ कमजोब अछि। बेटी जन्म लैत देवी मायकेँ ओकब रिआहक चिन्ता भऽ जागत छन्हि। तँए संभरत: रब भेटैल नै मुदा कनियाँ माओक ओबिआओनसँ उँपन्यासक आदि भेल।

बाबह अध्यायमे रिभक्त ऐ उँपन्यासकेँ कनियाँ माओक ओबिआओन, सभागाछीक दृश्य, ताब केना पढ़ल गेल,

जमाज पबक गप्प-सप्प, गोसाँओनिक गीत, मिस्टेब सी.सी. मिश्रा जटिल समस्या, ग्रप्प पबामर्श, कौत्तुक, कन्यादान, चतुर्थीक बाति आदि शीर्षकमे बँटल गेल अछि। अंतिम शीर्षक प्रश्नवाचक किएक तँ दर्शनशास्त्रक ज्ञाता हविमोहन झा धवि एकटा प्रश्न छोड़ि उपन्यासक गति श्री कएननि।

नानकका आ नानकाकीक कन्या बुचिया उपन्यासक नायिका छथि जनिक विआह चण्डीचवण मिश्रा सन मात्र कहबाक लेल मैथिलसँ लोगत अछि। सी.सी. मिश्रा अपन संस्कृतिसँ विलग बहसल एडभान्स लोक छथि। जिनका अपन अर्धांगिनीसँ बहुत बास आशे छलन्हि। बुचियाक जेठ भाय बेवती बमण ओ जलैत छलाह, ञदा अपन बहिनक भविष्य उज्जवल कवबाक लेल मिथ्याक डोबिमे नटेकि सी.सी. मिश्रासँ अपन बहिनक पाणिग्रहण तँ कवबा लेलनि, ञदा चतुर्थीक बातिमे नव बिवाहित दंपति बिन्नु आत्मिक रवण केने विलग भऽ जागत छथि।

सी. सी. मिश्रा जे अपनाकेँ कखनो कान्ट तँ कखनो कानिदास सन बद्धत मानैत छथि सत्य जानि लेलाक बाद बुचियाकेँ छोड़ि भागि गेलाह। कोर्टबधवमे बहि गेलीह कलैत बुचिया ओग पत्रक संग जे सी. सी. मिश्रा बेवती बमणक नाओंसँ लिखि छोड़ि गेलनि। पत्रमे अशिक्षित कन्याक संग शिक्षित पुरुषक विषम्तमताकेँ लिपित कएल गेल अछि। ऐ तवहेँ अंत कवबाक लेल हविमोहन जीक बड़ आलोचना भेलनि तँए समाधान कवैत द्विवागमन लिखबाक लेल उपन्यासकाब विवश भऽ गेलथिन।

হবিমোহনজী মিথিলাক সামাজিক অবস্থাপর প্রহার করৈত বুঁচিযা সন অশিক্ষিত নারীমে চেতনা অনবাক প্রযাস তঁ করৈত ছথি, হ্মদা ও রিসবি গেলখিন জে সী. সী. মিশ্রা সন পাত্র আ ওকর সংবাদক জে রূপ ঐ উঁপন্যসমে প্রস্তুত কএল গেল ও "মৈথিলী"পর আধার মানল জাএ। ওহেন পাত্রকেঁ নাযক বনেবাক কোনো প্রযোজন নৈ জেকরা মৈথিলী সংস্কৃতিসঁ নেস মাত্র সিনেহ রা ঐঠামক রৈরস্থাক কোনো জ্ঞান নৈ হ্অএ। হিনক "গ্রেজ্এট প্বতোহ্" কথাক নাযা কা সেহো রিদুষী আ এডভান্স মহিলা ছথি পরন্চ হ্নক সংবাদ সভঠাম খঁটী মৈথিলীমে ছনহি। সী.সী. মিশ্রা অংগ্রেজী আ হিন্দী মাত্র রজৈত ছথি। মৈথিলী উঁপন্যাসমে আন ভাষক এতেক রৈসী প্রযোগসঁ একর অপন সংস্কার কেনা বাঁচত.... ? হবিমোহনক সভসঁ পৈঘ কমী ঐ উঁপন্যাসক মহতপর অরশ্য গ্রহণ নগা দেনক।

কিছু মৈথিলী সাহিত্যকারক ও প্ররৃত্তি বহল ছনহি জে জৌঁ হিন্দীক প্রযোগ কএল জাএ তঁ রচনা আর সাবগর্ভিত মানল জাএত আ লোক যোগ্য বুঁঝতাহ। হবিমোহন রিষয মর্মমে ঝাঁপন যথার্থক হৃদৈস্পর্শী সাহিত্যকার ছথি তঁএ হিনকাসঁ পাঠক ও অপেক্ষা তঁ কথমপি নৈ রখনক। হাস্য সমাগমসঁ যুক্ত কন্যাদানক সংবাদ উঁচ্চ কোটিক অছি। সী. সী. মিত্রা হিন্দূ রিশ্বরিদ্যালযক সাহিত্যক শোধার্থী তঁ ছথি হ্মদা কন্যাদানমে হ্নক স্থান একটা পাশ্চাত্য সংস্কৃতিকেঁ জানয রনা জোকরসঁ রৈসী নৈ। বুঁচিযা তঁ বুঁচিযে ছথি। মি. মিশ্রে জখন জিজ্ঞাশা কেনলি জে ক্যা তুম

নর্সিগ জানতী হো... ? ব্ঁচিযা মনমে সোচনীহ নবসি ং হ তঁ গামক কোতরাঁনক নাম ছৈক, দেখূ তঁ ভনা হমবা কোতরাঁন নগা কঽ গাবি পঠ়ৈত খছি.... ।

ঐ খক্ত খরনাকেঁ বেরতী বমণ সন ভায কেনা সী. সী. মিশ্রা সন "পাশ্চাত্য–জোকব"ক হাথমে সৌপি দেরাঁক ি নর্ণএ কেনক। ঐ নেন বেরতী বমণ জীকেঁ খপন খর্দ্ধাগিনী রঁড়় গামরানী সন নাবী দ্বাবা মি. মিশ্রাক সংগ ছন কবরঁএ পড়ৈত ছন্হি। ঐ তথ্যমে সত্যতা ঝনকৈত খছি। হমবা সরঁহক সমাজমে রঁড়কা গামরানী সন নাবীকেঁ কতেক রাঁনাক পৈতবাখনি রঁনএ পড়ৈত ছন্হি।

এক খর্থমে গ্র উঁপন্যাসক সরঁন স্থিতি সেহো মানন জাএ জে সন্ 1933 ঙ্গ.মে জখন প্বকষ রক্সক খধিকাংশি নোক হমবা সরঁহক সমাজমে খশিক্ষিত ছনথি ওগ কানক নাবীমে শিক্ষা–রিকাসক এহেন কন্পনা হবিমোহনসঁ পূর্র মৈথিনীমে নিশ্চিত নৈ ভেন।

হিনক কথা রা উঁপন্যাস কিছু হ্খএ একটা রঁড়় সকাবাত্মক তথ্য ভেটৈছে জে হিনক প্নতিক মহিনা পাত্র সদিখন গতিশীন বহৈত ছথি, রৈঁসি কঽ সোচৈত নবীক চর্চ রঁড় কম ঠাম দেখএমে খাএন। কন্যাদানমে সেহো নানকাকী ঝটৈ দঽ খারেশ বানীক পৈবক কনগ্ববিযা খাংগ্ববকেঁ দারি দেনখিন, হ্মনিযাঁ মায চমকি কঽ ঘৈন উঁঠেনক খা নানকাকী দ্বপসি কঽ মোটৈবী খোনয নগনীহ সন ক্রিযাশীন মহিনা সমাজক দর্শন হবিমোহন ঝাক মৈথিন সংস্ক্বতিক খাত্ম খারনোকনক সংগ–সংগ নাবী

চেতনাক দর্পণ মানল জাএ।

ঠ্নহ্মনকাকী খা নানকাকী দ্নূ দিখাদিনী খূৰ নড়ৈত ছথি। ভোনানাথ ঝাক পনৌ ঠ্নহ্মনকাকী গর্ভরতী ছথিন। নড়ৰাঁক এমমে গর্ভ নগা কহ শপ্পত সেহো খাগত ছথিন, হ্মদা ৰ্বুচিযাক রিখাহক নেন ওবিখাওনমে হ্নক সহভাগিতা কনে কনিযাঁ মাযসঁ কম নৈ। একটা "সংযক্ত পবিরাবক" মহত্রপূর্ণ সক্ন পক্ষ মানল জাএ। নানকাকীক প্বতোহ্ ৰঁড়কাগামরানী শিক্ষিত নাবী ছথি সদিখন কিতাৱেঁ সংগ নটপটাএন বহৰানী ৰঁড়কাগাম রানী কনিযাঁ রিখাহক নেন চংগেবা নৈ সাঁঠতীহ। খা নে চূন্হিযে নগ ৰৈঁসতীহ, হ্মদা জখন মহীন কাজ খথাত্ সী. সী. মিশ্রাকেঁ রিখাহক পূর্ব কনিযাঁসঁ গপ্প কবেৰাঁক নেন নাটক কবৰাঁক খারশ্যকতা ভেন তঁ বেরতী বমণ হিনকেসঁ কনিযাঁক খভিনয কবেননি।
ঠকৰাঁ জে ঐ উঁপন্যাসক খদনা পাত্র খছি ওকব মাথক মোটবীমে ভোনানাথ ঝাক পনহী সেহো ৰাঁন্হেন ছন্হি। ঙা সমাজক কষ্ট সত্ব্ব কেকবো পএবক পনহী কেকবো মাথপব ঙা সমন্রযরাদ সমাজক নেন কনংক কিএ নৈ মানল জসএ। তখন জৌঁ রএহ ঠকৰাঁক প্বত্র জখন খধিকাবী ৰঁনি ভোনানাথ ঝাক সংতানক সংগ ৰঁদনা নৈত খছি তঁ খগ্র খাসনপব ৰৈঁসন নোক খহ্বনা জাগত ছথি। ওনা এহেন ৰঁদনন পবিস্থিতি তঁ হবিমোহনক উঁপন্যাসমে কথপতি নৈ ভেটৈত কিএক তঁ হবিমোহন ঝাক হ্বতি ব্ৰাহ্মরাদী সমাজক বৃত্তিচিত্র ছন্হি। ঐমে সমাজক কাত নাগন রম্মমে হ্মনিযাঁ মায সন পৈনভবনী খা ঠকবা সন খরাঁস মাত্র খছি তঁএ হিনক উঁপন্যাস সম্পূর্ণ সমাজক প্রতিনিধি হ্বতি কথমপি নৈ ভহ সকন।

উঁপন্যাসকাব দনিত রা পবদনিতক মর্মক স্পর্শ তঁ নৈ কেননি ক্ষদা ব্রাঁহ্মণেমে উঁচ-নীচ আ উঁত্তব-দক্ষিণসঁ ক্ষ্রঁধ খরশ্য ছথি। হবিমোহন জীক মাহুক খরশ্য ভনমান্বষক গামমে ছন্হি ক্ষদা পৈহুক ভূমি ক্ষমব রাঁজিতপ্বব রৈশনী ভদেসমে, তঁএ ভদেসক মর্মসঁ খাক্ষন তঁ খরশ্য ছথি। সভাগাছীক দৃশ্মে ঠ্ন্নী ঝা কনেক খখসি কহ রঁজনাহ-

"মানি নিযহ ববক ঘহব দক্ষিণে ভব ছন্হি তহ হর্জ কী... ? সেহো রৈসী দূব নহি- দনসি ঁহ সবায সঁ চৌদহ কোসপব ঘহব ছন্হি।" মূনক চর্চ ভেনাপব রিঁখাহক খগ্বখা খর্থাত সভাগাছীক দনান কহৈত ছথি জে মানি নিখ শ্ববগনে ছথি..., ঐ সভ কহ্ঁ সত্যসঁ প্রমাণিত হোগত খছি জে জখন ব্রাঁহ্মণ-ব্রঁহ্মণক মধ্য মৌনিক রিষমতা তঁ মিথিনামে সমন্রযরাদ কেনা খারঁয... ?

গংভীব চিন্তনযোগ্য রিষযকেঁ হবিমোহন জী হাস্যক মাধ্যমসঁ চর্চ কহ উঁপন্যাসকেঁ নোকপ্রিয তঁ খরশ্য রঁনা দেননি ক্ষদা গংভীব চিন্তনকেঁ হাস্যক রৌবিসঁ নিপ্ত কএনাসঁ একব উঁদ্দশ্য খরশ্য ন্বপ্ত ভহ গেন। একবা স্বযোগ্য উঁপন্যাসকাবক খদূবদর্শিতা মানন জাএ।

কিছু সমানোচকক তর্ক ভহ সকৈত ছননি জে হবিমোহন জীক ঐ হ্নতিক উঁদ্দশ্য সমাজক রিহ্নতিকেঁ নাগঠ কবরাঁসঁ রৈসী "হাস্য সমাগম" কববাঁক নেন ছননি, ক্ষদা ঐ তর্কসঁ হম সহমতি নৈ বখৈত ছী। কোনো হাস্য জে সমাজিক খা পাবিরাবিক সমতা খা শাঁতিকেঁ বাঁধিত কবএ ও সমাজক নেন কখনো স্রীকাবর্য নৈ ভহ সকৈত খছি।

कालीदासचरित्रसँ प्रभावित सी. सी. मिश्रा वृच्चीदायकेँ "विधोत्तमा" बना कए स्वीकार करबाक, ओ परिस्थिति उपन्यासक कमजोर पक्ष थिक। कहबी छैक- "बड़ा सेनेकीजिए ब्याह-प्रति और बैर" ऐ विस्मयकारी उपन्यासमे विषम परिस्थिति जौं मात्र हास्य समागमक लेल अएल तैयो उचित नै। एक उपन्यासमे समस्या आ दोसरमे जा कए ओकर निदान ओ रचनाकारक कलात्मक कृति कखनो नै मानल जा सकैछ। मात्र हँसबाक लेल झाबरखण्डीनाथ, बंठुक आ तोतबाह पंडित नमोनाथ झा सन पात्रक उपस्थिति तँ प्रासंगिक छदा हँसीक पात्र बना कए वृचियाकेँ कोरबमे कलैत छोड़ि उपन्यासक अंत देखाएब नारी जातिक अपमानसँ बेसी किछु नै।

ऐ सभ कमजोर तथ्यसँ भरल रहलाक बादो "कन्यादान" मैथिली साहित्यमे महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि किएक तँ पाठकगण ऐ कृतिकेँ हिआसँ स्वीकार कए लेने छथि।
कन्यादानक लोकप्रियताक मौलिक कारण थिक ग्राम्य जीवनक आधारभूत घटनाक चित्रणमे सहज मौलिकताक अनुपालन। हास्य समागम तँ स्वाभाविक किएक तँ ओ रचनाकारक प्रकृति ओ प्रवृत्ति रहल छथि। हास्यक क्रममे गंभीर दर्शन तँ हँसीमे उधिया गेल छदा कोनो ठाम साहित्यिक मर्यादा ओ अनुशासनपर प्रहार नै देखए मे आएल। ओ उपन्यासकारक प्रांजल आ प्रवीण रचनाशीलताक द्योतक मानल जाए। जखन वर अर्थात् सी. सी. मिश्रा महिला मंडलीक मध्य विआहसँ पूर्व परीक्षण हेतु अबैत छथि तँ अपन नाओं सी. सी. मिश्रा कहैत

ছথিন। ক্ষণেমে মহিলা মংডলীক একটা রাঁনিকা সদস্যাক চুটকী... তখন তঁ রাঁপক নাওঁ রৌতন মিশ্রা হেতন্হি। অতিরাদী প্ররৃতিক নোক পব হাস্যক মাধ্যমসঁ অনুশাসিত প্রহাব গামক রীতি-বিরাজক অতিক্রমণক প্রযাসপব সহজ রূপসঁ কএন গেন। কনিযাঁ মাগক ওবিআওন অধ্যযায পূর্ণত: সহজ মৈথিন নাবী সমূহক মনকি দেখরৈত অছি। এঠাম ও়া পূর্ণত: মৌনিক আ রাস্তরিক নগৈছ। সংরাদক ভাষা আ শৈনীসঁ স্পষ্ট ভ২ জাগছ জে হবিমোহনজী অপন সংস্কৃতি আ রীতি-বিরাজকেঁ আত্মসাত কেনে ছথি।

<u>पृथ्वीपुत्र</u>

अतिक्रमण सदैव व्यक्ति वा समूहक अमानुषिक प्रवृति रहल अछि। वैज्ञानिक मान्यताक अनुसारे सेहो अस्तित्वक लेल संघर्ष आ ओइ संघर्षमे योग्यतमक उत्तरजीविता कालक्रममे होइत रहल अछि। जखन सम्पूर्ण सृष्टिमे बौद्धिक चेतनासँ युक्त मानव अस्तित्वक लेल वैरस्थाक विरूद्ध संघर्ष करैत तखन मिथिलाक माटि-पानि कोना अछोप रहए।
समाजक ऊँच-नीच आ जय-पराजयक वृत्ति-चित्रक रूपेँ ललितेश मिश्र ललित जीक उपन्यास पृथ्वी-पुत्र पुस्तकाकार सन् 1965 ई.मे प्रकाशित भेल। जेना की आमुखमे स्वयं उपन्यासकार लिखने छथि जे ई उपन्यास हंसराज जीक तगेदामे लिखल गेल, तँए ऐमे रचनाकारक सम्पूर्ण आत्मीयता देखब भ्रामक सिद्ध हएत। हमरा सबहक संग ई दुर्भाग्य रहल जे आत्मिक भाषामे रचनाकार अपन आश्वत्वसँ वेशी तगेदाक कारणेँ रचना करैत रहलाहेँ।

रचनाक कारण जे हुअनि मुदा एतबा तँ अवश्य प्रासांगिक आ मैथिली साहित्यक लेल रददान मानल जाए जे पृथ्वीपुत्र उपन्यासक माध्यमसँ उपन्यसकार मिथिलाक माटि-पानिमे समाहित सभसँ अंतिम वर्गक समाज धरि पहुँचि गेल छथि जे सोझ मानसिक प्रवृत्तिक द्यातक अछि। ओना ललितक कथा "रमजानी" सेहो समाजक दलित वा पछुड़ल लोकक वृत्तिचित्र थिक। स्वाभाविके

ছৈক বচনাকাব প্রশাসনিক সেরামে বহন ছথি,, সমাজক ঊঁচ-নীচ ঽত্য-অঽত্য আ রস্মাক রিষমতাক দর্শন রঁবোরঁবি মোগত হেতনি তঁএ অপন দৈনন্দিনীক অনুভরকেঁ কন্পনাক সবোরবিমে রোঁবি যথার্থরাদী রূপ দেরাঁক প্রযাস কএননি জগমে অংশত: সফন সেহো ভেনাহ ।

উঁপন্যাসক গাথা র্যারসাযিক চনচিত্র জকাঁ মধ্যসঁ প্রাবংভ মোগত অছি। ঘটনাক গর্ত্তমে গেনাসঁ ওা উঁপন্যাস দনিত সমাজমে সামন্তরাদী শোষণক রিরুদ্ধ রস্মা সংঘর্ষক চনচিত্র থিক।

জংগী পাসরানক পুত্র রিসেখী পাসরান কর্মসঁ রৈড-কৈবেক্টবক চোব অছি। জকবা অপন দুনূ পুত্র গেনানান আ সরূপসঁ রেঁশী অপন শিষ্য ছতবপব রিশ্বাস ছৈক। গেনানান জেকবা গেনমা কহন জাগছ ওকব চবিত্র ভকনোন-মন্বখ ক্ষুদা কর্মশীন মজূবক ছৈক। সরূপ ঐ উঁপন্যাসক নাযক থিক। জকবা কতৌ উঁপন্যাসকাব দনিত সমাজক ক্রাঁতি-রীব রনএরাঁক প্রযাস কবৈত ছথি তঁ কতৌ অপন রঁহিন রিঁজনীক কন্পনাথ মিশ্রি উঁর্ফ কনপূ মিশ্রক সংগ অনৈতিক সিনেহক প্রাত্সাহক রা সাক্ষী। সরূপক চিত্রক ওা অর্ন্তদ্রন্দ্র দনিত সমাজক জীরন শৈনীমে রিবাধাভাস মানন জাএ। গেনা নানক অর্দ্ধাগিনী রেঁনী অপন পতিক মৃত্যুক পশ্চাত্ পাবিরাবিক সহমতি আ উঁত্তবদাযিত্রক কাবণে অপন দেওব সরূপসঁ রিঁআহ কঽ নৈত অছি। উঁপন্যাস গাথাক রিচিত্র পাত্র ছথি রিঁজ্নী রা রিঁজো রিঁজ্বী আ রিঁজ্বিযা সন ছদ্ম নামসঁ রিভূষিত রিসেখী পাসরানক কন্যা “রিঁজনী”। কৌমার্যক আঁগনমে প্ররেশ কবিতে রিঁজনীকেঁ গামক পংডিত

ক্ষনমে জনমন কল্পনাথ মিশ্রসঁ প্রেম ভৼ জাগত খছি। কলপূ মিসব রিরাহিত ছথি ক্ষদা পহিল প্রসর পীড় াক এমমে হিনক কনিযাঁক দেহান্ত ভৼ গেলনি। ঐ খনস্তান খা িনষ্কর্ষ বহিত প্রেমক খাভাস দলিত সমাজকেঁ নাগি জাগত খছি। ফলত: বেনরেমে পেষ্টমেন হীবানানসঁ রিজনীক রিখাহ কৼ দেল গেল। বীতি–প্রীতি খাবংভে কানসঁ সাহিত্যক মহত্রপূর্ণ রিন্দ্ বহন ছৈক। ওগ মাস্তাদর্শনিপব খাগাঁ রঁঠ্ত ননিত জী উঁপন্যাসমে খাকর্ষণক সোমবস ঘোবরাঁক প্রযাস কবৈত ঐ রিচিত্র পাত্রাকেঁ ঐমে সমাহিত কএননি। দূ–তীন রেঁবি পেষ্টমেন হীবা নানক সানিধ্যসঁ রিজনী পড় া কৼ গাম খারি গেলীহ। মান–মনোরঁনক রাঁদ ফেব পতিক ক্রাষ্টবমে গযনাক রাঁদ কোযনা সন ধ্বধ্ব ঘৼব খা রঁৼব নীক নৈ নগননি। হীবা নানকেঁ রিজনীক চবিত্রক রাস্তরিকতাক ভান ভৼ জাগত খছি। প্বরুষ সভ কিছু রঁদস্ত কৼ সকৈত খছি ক্ষদা খপন দাবাকেঁ দোসব প্বরুষক সন খাত্মিক রা দৈহিক রবণ প্বরুষক নেন ঘোঁষ্টর খসংভর। রিজনীক প্রতি হীবা নানক ব্যরহাব কর্কশ ভৼ জাগত খছি।

খংতিম পবিণতি ভেন জে রিজনী সভ দিনক নেল নৈহব খারি গেলী। হীবা নান প্বনি খাএন ক্ষদা ওকবা চবিত্রপব খননাযিকা রিজনী নাঁছনা নগেরাঁক নেল সকপকেঁ উঁত্সাহিত কেনক। গামক মানিজন খর্থাত্ জতিযা বাজা কাী দাসক খংতিম িনর্ণয ভেন জে রিজনী খারঁ হীবা নান সংগে নৈ জেতীহ। ওনা সমাজক সভ পংচ একমত ছনাহ জে রিজনীক প্বর্নরিরাহ কবাওল জাএ, ক্ষদা জখন বচনাকাব মাত্র উঁপন্যাসক খাকর্ষক

नेने ऐ चरित्रक निर्माण कएने छथि ओ व्यक्तिक बाहरी असंभव। कल्पनाथ मिश्र आ रजनीक सिनेह पत्रहीन नग्न गाछ जकाँ मानल जाए जकर अस्तित्व नै। एक दिस जखन सरूप पुछैत अछि रजनीसँ— "पाहुन मोन पड़ैनौ की.... ?" ओ रजनीक उत्तर दार्शनिक जकाँ भेटैन ओ दोसर दिस रजनी कलपू मिसर द्वारा दोहरि मोड़ि कऽ देखए काल रजनोरी शरीर स्वर्ग रजैत अछि— तोरा संग ऊर्द्धम पटकमने डाँड़ ओ नै हएत हमरा.... ।
ई सिनेह कोन तरहक मानल जाए ई निर्णए करब सर्वथा असंभव।

उपन्यासगाथामे कथाक्रमानुसारे किसान रक्त संघर्ष देखार होइत अछि। सर्वे एलाक बाद गरीबक जमीन कागतपर ओ आपिस होइत अछि मुदा जंग बहादुर सिंह सन जमीन्दार दुसाध आ मुसहर समाजकेँ जमीन देबाक लेल तैयार नै अछि। रक्त संघर्ष करबाक लेल सरूप उद्यत भेल। सरूपक दलमे जजाति काटबाक लेल गेनानान सन मात्रिक पूत मात्र छल। जंग बहादुरक हँसेरीदल नोमा सिंहक नेतृत्वमे सरूपपर हमला कऽ देलक। अन्नजकेँ रचेबाक क्रममे गेनमा मारल गेल। ऐ रक्त संघर्षक अंत औचित्यहीन लगैत अछि। सन् 1965 ई.मे भारत आजाद भऽ गेल छल। तखन दलित समाजक एकटा मात्रिक नाल सामन्तवादी तत्वक आगाँ नतमस्तक भऽ गेल आ जंगबहादुर सन सामन्तीक ओगठाम पुलिस पहुँचल नै हएत...। ई अत्यन्त हास्यास्पद लगैत अछि। जौं ऐ तरहक घटना भेलो हएत तैयो उपन्यासकारकेँ

ऐमे क्रांति अनबाक प्रयास करबाक छलनि। साम्यवादी लेखनीसँ लिखल उपन्यासक अंशो अत्यन्त लिखल मानल जाए।

ऐ घटनासँ पूर्व विजलीक चरित्रपर आधात दुर्योधन सिंह सन सिपाही करैत अछि। ओकरा सरूप काटि दैत अछि। पुत्रकेँ जेहलसँ बचएबाक लेल बिसेखी सभ दोख अपना ऊपर लऽ जहल चलि जाइत अछि जतऽ गाम संग्रहणी सन बेमारीसँ ओकर मृत्यु भऽ गेल।

बिसेखीक चरित्रक काल-क्रमानुसार परिवर्तन उपन्यासक सबल पक्ष मानल जाए। पहिने जखन चोर छल तँ ओकरा किछु नै भेल आ जखन किछु नै केलक तँ पुत्रमोह आ पारिवारिक मर्यादाक कारणेँ सजा भेटैत। बी.सी. कैबेक्टरक चोरसँ झकति पाबए लेल कलक्टरक आगाँ सपत खेने छल। ओइ सपत खेबामे घूरन दुसाध, मंडर पाण्डे, अख्खन जट्ट, बौधी अलीफा आ बुच्ची झा सन चोर सेहो छल। उपन्यासकार द्वारा चोरक नाम चयन करबामे ई स्पष्ट भऽ गेल चोरक कोनो जाति नै होइत छैक, समाजक अग्र आसन बैसैबला लोककेँ सेहो कुकर्मी समाजमे स्थान छन्हि। ई उपन्यासकारक समन्वयवादी सोच मानल जाए।

आब बिसेखीक परिवारमे पुरुष पात्रक रूपमे बचैत अछि- सरूप। सरूपकेँ ललित पृथ्वीपुत्र बनेबाक कोनो अवसरि नै छोड़ैत छथि। ऐ उपन्यासक ओ वास्तविक नायक अछि। अपन पिताकेँ चोरि नै करबाक सपत खाइत काल लड़खड़ाइत देखि ओ

প্রভাবিত ভ৽ জাগত অছি। ওকরা চোরি করবা কথমপি পসিন্ন নৈ। জংগবাহাদুবকেঁ ননকারি জজাতি কাটি নেবাক উপক্রমমে শোষিত সমাজক ও "প্রাতিরীব" বনি জেবাক নেন উদ্যত অছি। বহিনক খাঁচবপব দুর্যোধন সি ংহ সন সিপাহীক হাথ দেখি ওকব হত্যা ক৽ কেনক। সরূপ কর্মবাদী সত্পুরুষ অছি। জাধবি রৈনীকেঁ সরূপক মায একব থংক নৈ নগনন্হি তাধবি ওগ ভাউজমে সরূপ মাত্র শ্রদ্ধাপূর্বক মাতৃত্ব রূপ দেখনক। ঐ দনিত সমাজক আদবণীয পাত্রকেঁ ননিত একঠাম কনংকী চবিত্র বনা দেননি। কন্পনাথ মিসবক অনস্থান সিনেহসঁ বঁধনি রিজনীকেঁ সরূপ আত্মসাত কেনা কেনক। একঠাম ভাউজিক রিষক্ত হঁসী আ ব্যংগ্যরাণসঁ আহত ভ৽ সরূপ রিজনীপব প্রাধ তঁ কবৈত অছি মুদা সম্পূর্ণ উপন্যাসমে কনপূ মিসবক প্রসংগমে পৃথ্রীপুত্র চুপ্প বহি গেন। সিনেহ কোনো অপবাধ নৈ, কিযো কেকবোসঁ ক৽ সকৈত অছি, মুদা ঐ সিনেহক কোনো নিষ্কর্ষ নৈ। সরূপ সন সোম্য মানসিকতাক পুরুষ ঐ অনস্থান সিনেহকেঁ কেনা সমর্থন দেনক। রিজনী ঠাম-ঠাম ঔচিত্যহীন সিনেহী জকাঁ রৈনীসঁ অপন প্রেমকেঁ সরৈনতা প্রদান কববাক নেন নিবর্থক সংরাদ কবৈত অছি। ঐসঁ গহএ প্রমাণিত হোগছ জে ঐ নাবীকেঁ অপন মাতা-পিতা আ ভাগক মর্যাদাক কোনো রোধ নৈ। তখন একঠাম মহান দার্শনিক জকাঁ রিজনীকেঁ দৃষ্টি পঠৈনপব বাখবা উপন্যাসকাবক অদূবদর্শিতা ছনহি। জখন কনপূ মিসব অপন মাগক বাখন অভবন রিজনীকেঁ পহিববাক অনুবোধ কবৈত অছি তঁ ও বজৈত অছি জে-

"ও গহনা পহিববা তঁ হম জবি জাএবা। জখন রিজনী

এতেক ৰ্হ্মিমতী মহিনা খছি তঁ খপন মান–মর্যাদা খপন ৰাঁপ–প্বৰুখাক দ্বাবা ৰঁনাওন ৰেঁরস্থা খর্থাত্ পাণিগ্রহণ সংস্কাব দ্বাবা ববণেয হীবানানকেঁ কিখএ ছোড়ি দেনক। ঙা নিশ্চিত ৰূপে জাতীয সংকীর্ণতাসঁ ৰাঁন্হন উঁপন্যাসকাবক র্যক্তিগত খনস্থান সোচ ছন্হি।”

জৌঁ ঐ উঁপন্যাসমে রস্থ–সংঘর্ষ দেখাএর্ঁ যথার্থরোঁধ মানন জাএ তৈযো ঐমে কমজোবী খছি। রস্থ সংঘর্ষমে হত্যা খা ওগ হত্যাক ৰাঁদ কেনিহাবকেঁ কোনো সজা নৈ, খত্যন্ত ি নর্রন পক্ষ থিক। কনপূ মিসব খা রিঁজনীক ি সনেহমে রিঁসেখীক পবিরাবক কোনো তীক্ষ্ণ খররোধ নৈ দেখাএর্ঁ দনিত সমাজক চেতনাপব খাধাত মানন জাএ। সমাজক কাত নাগন রস্থ সবর্ণ খা সামন্তরাদী নগ খপন ঘবক গণিকাকেঁ পবসি সকৈত খছি... সর্রথা খসংভর। দনিত সমাজক নাবীসঁ সবর্ণ সমাজক প্বৰুষ রেঁরাঁক গপ্প তখনে কঽ সকৈত ছথি জখন হ্নক রিচাব খা চবিত্র রিশ্বসনীয হ্খএ। ভঽ সকৈত খছি রিঁজনী সন কোনো রিশেষ নাবী এহেন মানসিকতা বখৈত ছথি রা হোথি হ্মদা পবিরাবক খান নোক ঐ তবহক ি সনেহকেঁ কথমপি নৈ স্রীকাব কবত। জৌঁ একব খঁত দ্নূক রিঁখাহ দেখা কঽ কএন জগতএ তঁ ঙা উঁপন্যাস খরশ্য দূবগামী হোগতএ। খর্তদ্বন্দ্বসঁ ভবন সমাজসঁ ননিত কোনো খনগ নৈ ছথি তঁএ সভ সকাবাত্মকতাক খাশা বাখর্ঁ উঁচিত নৈ।

এতেক তঁ নিশ্চিত জে পৃথ্রীপ্বত্র শিন্পমে রঁড় নীক স্থান বখৈত খছি। রিম্রঁ কোনো রিশেষ নৈ হ্মদা

সমাজক খঁতিম বস্থা ধবি পহুঁচন তঁএ ব্যাপক মানন জাএ। জিতপ্বব মৌজাক ৫ৈন বঁৰ্বৰঁন্নাক গাথা, ক্ষদা ৫ৈনমে খএবক বৌন বঁৰূবসঁ বৈসী ক্ষদা নাওঁ বঁৰ্বৰঁন্না। বাস্তবিকতা খছি সামর্থ্যবান নোক কম বহিতৌ পূজনীয হোগত ছথি, উঁপন্যাসকাবক দৃষ্টিকোণ সম্যক্ খা সমন্বযবাদী ঐঠাম তঁ খবশ্য নগৈত খছি। ভাষা ও শৈনী গতিমান খা খাঁটী গ্রামীণ খাঁচনিক মৌথিনীমে নিখন গেন জে ননিতক যোগ্যতাক প্রত্যক্ষ প্রমাণ থিক। খাচার্য বমানাথ ঝাক ঐ মতসঁ হম সহমতি নৈ বখৈত ছী জে হাস্য বসক খভাবমে পৃথ্বীপুত্র ঝ্মন্খান নগৈত খছি। জখন স্থিতি কনবাঁক হ্খএ তঁ হাস্য সমাগম সংভব নৈ ঐ উঁপন্যাসমে হাস্য বসক সমাগম কববঁ ি নবর্থক হোগতএ।

ঐ পোথীক সভসঁ সকাবাত্মক পক্ষ থিক সমাজক যথার্থবাদী বৈবস্থাক মৌনিক চিত্রণ। জাতি-পাতিমে ৫্টৈন সমাজক সত্যকেঁ স্পষ্ট দেখবৈত উঁপন্যাসকাব একঠাম এহেন সাহস কহ দেননি জে সংভবত: সবঁন সমাজমে জনমন দোসব সাহিত্যকাবসঁ খবশ্য খসংভব হোগতএ। পৃথ্বীপুত্র পনাযনবাদক বিবোধ কবৈত খছি। জমীন্দাব গুষিকার্য স্বযং নৈ কবতাহ, ক্ষদা জমীনক সকন উঁত্পাদ খা স্বামিত্ব হিনকে ভেটৈনি, ঐ কট্টু সত্যসঁ ননিত বিনগ ছথি। হিনক নেখনীসঁ ক্রাঁতিক স্বগংধ পসবন জে জমীন ওকবে হএত জে একবা জোতএ। বাস্তবিকতা সেহো ঠৈক সাম্যবাদী বৈবস্থামে কর্ম প্বকষকেঁ কর্মক ফন খবশ্য ভেটবাঁক চাহী। জে সংতান মাএ-বাঁপক প্রতি খপন কর্ত্তব্য পানন নৈ কবএ ওকবা মাতৃ-পিতৃ সিনেহ মংগবাঁক কোনো খধিকাব নৈ।

ঋপন পসেনাসঁ মাটি কোবি জে মজূব ধবতীকেঁ বাঁঘ হোএবাঁসঁ বঁচাবঁথি হ্নকে ঐ মাটিক স্রামিত্র ভেটবাঁক চাহী।
জোঁ ঐ প্রকাবক সোচকেঁ সবঁনতা প্রদান কএন জাএ তঁ হৃষি প্রধান দেশমে ঋপন মৌনিক কর্মসঁ নোক রিস্কুখ ভ২ পড় াগন নৈ কবতাহ। প্রাহ্বতিক সংত্তননকেঁ জীরন্ত বাখবঁ সভক মৌনিক কর্ত্তর্য থিক। ঐ তবহক সাম্যরাদী দৃষ্টিকোণ মৈথিনী সাহিত্যকেঁ ঋরশ্য নর দিশা দেনক। িনষ্কর্ষত: পৃথ্রীপ্বত্র কিছ ঋর্ন্তিদ্বন্দ্বসঁ ভবন বহনাক বাঁদো মৈথিনী সাহিত্যমে নর চেতনা ভববাঁক নেন ঋন্বগামী উঁপন্যাস মানন জাএ।

<u>মৈথিনী কথা সাহিত্যক রিকাসমে বাজকমনক যোগদান</u>

সন্ 1954 মে “খপবাজিতা” কথাক সংগ বাজকমন জীক মৈথিনী কথা সাহিত্য জগতমে প্ররেশ ভেন। হিনক মূন নাওঁ মনীন্দ্র নাবাযণ চৌধবী ছন্হি। 1929মে জনমন ঐ সাহিত্যকাবক নেখনীসঁ মৈথিনী সাহিত্যকেঁ নগভগ 36 গোট কথা ভেটন। মাত্র 38 ৱবখক খপন জীরনকানমে বাজকমন মৈথিনী গদ্য সাহিত্যকেঁ কিছু এহেন হৃতি দ২ দেননি জগসঁ প্রযোগকেঁ ৱাঁদক ধবাতনপব প্রতিষ্ঠিত কবৱাঁক শ্রেয সাহিত্যক সমানোচক নোকনি ঐ সাহিত্যকাবকেঁ নির্রিরাদ ৰূপেঁ দ২ বহন ছথি।

হিনক তীন গোট কথা সংগ্রহ ননকা পাগ, এক খান্হেব এক বোগাহ খা “নিমোহী ৱাঁনম হম্মব” পুস্তকাকাব প্রকাশিত ছন্হি। একব খতিবিক্ত হিনক এক গোট পোথী “হৃতি বাজকমনক” মৈথিনী খকাদেমীসঁ প্রকাশিত ভেন খছি জগমে 13 গোট কথা খা একটা উঁপন্যাস খান্দোনন সংকনিত খছি। ওনা হৃতিবাজকমনক ছও গোট কথা “ননকা পাগ”মে সেহো ছপন খছি।

বমানাথ ঝাক মতেঁ বাজকমনক কথা মূন উঁদ্দেশ্য মনোরিশ্লেষণাত্মক প্রণানীসঁ খাবোপিত মর্যাদা ও খাদর্শক পাছাঁ নুকাএন খান্হবকেঁ নাঙট কবৱ খছি। ড্াঁ. ডী.এন. ঝা সেহো ঐ মতসঁ সহমত ছথি।
“ননকা পাগ” কথা হিনক নিখন কথা সভমে খপন রিশিষ্ট স্থান বখৈত ছন্হি। ঐ কথাকেঁ মৈথিনী সাহিত্যক কিছু শ্রেষ্ঠ কথামে স্থান দেৱ সর্রথা ন্যাযোচিত খছি। কথাক খাবংভমে মৈথিনী স্ত্রীক চিন্হৱাঁক রিশ্নেষণমে কোনো খচবজ নৈ। ত্রিপুবাক

ত্তননা জগ রস্তাক মৈথিন কন্যাসঁ কএন গেন কথাক ভূমিকামে ওগ রস্তাক স্পষ্ট উঁনেখ তঁ নৈ কএন গেন ক্ষদা ও ব্রাহ্মণ পবিরাবক কন্যা ছথি। খন্পাহমে পণ্ডিত পিতাক মৃত্যুক পশ্চাত্ তিব্ধ খপন মাগক সংগ গামমে বহৈত ছনীহ। খগ্রজ মিং গ্ববনাথ ব্রাঁহব ধন উঁপার্জন নেন চনি গেনাহ। কিছুএ বর্ষমে তিব্ধ যুবতী রযসমে প্ররেশ কহ গেনীহ। দস–এগাবহ বর্ষক ব্রাঁদ জখন মিং গ্ববনাথ খপন গাম ঘুবি খএননি তঁ মাত্রসিনেহক সংগ–সংগ তিব্ধক হাথ পীখব কববাঁক জিম্মেদাবীক খাভাস ভেননি। রাস্তরিকতো ছৈক জে জখন ওা কথা 1955মে রিদেহ রিশেষাংকমে দেন গেন ওগ কানকেঁ কে কহএ রর্তমান সমৈমে সেহো খপনা সরঁহক সমাজমে কন্যাক জন্ম কানহিসঁ রিযাহক চিন্তা খভিভারককেঁ সতরঁএ নগৈত ছনহি। তিব্ধ তঁ মাঘমে 14মে রর্ষমে প্ররেশ কহ জেতীহ। উঁদ্দেশ্য জোঁ সার্থক হ্খএ তঁ সফনতা নিশ্চিত ভেটৈরেঁ কবৈত খছি। চণ্ডীপ্ববক বাম সাগব চৌধবীক স্বপ্বত্র বাধাকান্তসঁ স্র. পণ্ডিত ঠৈকনাথ ঝাক প্বত্রী ত্রিপ্ববাক রিঁযাহ সম্পন্ন ভেন। সাস্বব খারিঁ তিব্ধ কনেকো স্তরঁধ নৈ ছথি কিএক তঁ জীরন শৈনীক কোনো জ্ঞানে নৈ ছনহি। খজ্ঞানতামে ব্রাঁড় ৗকি পছুখাবমে পোখবি দেখি খপন রেঁমাত্র সাস্বসঁ হেনবাঁক কনাক জিজ্ঞাসা কএননি। যএহ জিজ্ঞাসা হ্নক জীরনক নেন কান ভহ গেননি। চননপ্ববরানী সাস্ব ভোবে–ভোব সমস্ত গামমে খফরাহ পসাবি দেনখিন জে বাতিমে নরকী কনিযাঁ পোখবিমে চ্ভকি বহন ছনীহ। বাধাকান্ত ঐ ঘটৈনাসঁ মর্মাহিত ভহ গেনাহ। খাবঁ প্রশ্ন উঁঠৈত খছি জে চননপ্ববরানী এনা কিখএ কএনীহ ? ও খপন পিতিঔত ভায ডাঁ. শংভূনাথ মিসবক স্বপত্রীসঁ

बाधाकान्तक विवाह करबाएर चाहैत छलीह। एहिठाम कथाकार कनेक चूकि गेल छथि। ई उद्देश्यकेँ कतौ स्पष्ट नै कएल गेल। माए जौं अपन बेटाक विवाह आनठाम करबाए चाहैत छलीह तँ त्रिपुरासँ कोना भऽ गेलनि। जखन की ललनपुरवाली परिवारक अभिभाविका छलखिन। हुनक पतिक हुनकापर कोनो विशेष अनुशासन सेहो नै छलनि आ ने बाधाकान्त त्रिपुरासँ प्रेम विवाह केलखिन तँ कथानकमे एहेन परिवर्तनकेँ सोझे-सोझ आत्मसात् करब कनेक कठिन लागि रहल अछि। गाममे तँ कूटनीति चलिते अछि किएक तँ छद्म रोजी रोजगारपर बेरोजगारी भारी। तँए भोलामास्टर आ बंगट चौधरी सन परिवार विध्वंसक कँ बाधाकान्त सन संवेदनशील लोककेँ दोसर विवाह करबाक प्रेरणा देबएमे यथार्थ बोध होइत अछि। ओ सभ घटना चक्रसँ कथा रोचक होइत अछि। ऐ कथाकेँ आकर्षक बनेबाक क्रममे बाजकमल बिसरि गेलाह जे त्रिपुरा मात्र 13-14 वर्षक बालिका छथि। जखन पोखरिमे डुबकबाक जिज्ञासा सास्त्रबोधमे छलन्हि तखन सौतिन अएबाक संभावनाक मध्य अपन सकल गृहस्थ कार्यमे कोना लागल रहलीह? एक दिस चंचल रूपक उद्बोधन आ दोसरा रूपमे परिपक्व नारी, एकरा प्रयोगवाद तँ कहल जा सकैत अछि ऐ दा प्रयोगात्मक रूप वास्तविकतासँ बहुत दूर अछि। बाधाकान्त सेहो शिक्षित छथि, मात्र अपन स्त्रीकेँ पोखरिमे स्नान करबाक सजाक रूपेँ दोसर विवाह। ओना मिथिलामे पहिने गप्पे-गप्पमे विवाह करबाक इतिहास रहल अछि परंच ऐ प्रकारक विवाहक कारण समीचीन नै लागल। अंतमे अपन विवाह कालक बाखल ललका पाग

जखन त्रिप्वबा बाधाकान्तकेँ दोसब रिँयाहक नेन प्रस्थानकानमे दैत छथिन तँ बाधाकान्तक ह्रदए पविबर्तन भ२ जाগत ঋছি ঋা পহিন্বক ননকা পাগক মর্যাদা বখরাঁক নেন ও চুপ্প ভ২ ঋাঁগনমে ঋারি ক্ষর্সীপব রৈঁস জাগত ছথি। এহ্ঘ ঘঙ্নকাএমমে কথা রাস্তবিকতাসঁ রেঁসী কন্পরৃক্ষক প্বষ্প প্রতীত হোগত ঋছি। জে বাধাকান্ত মাত্র পোখবি স্নানক দংডমে ত্রিপ্ববাসঁ নাবীক ঋধিকাব ছীনি নেরাঁক িনর্ণএ কেননি ও ঋংগ্বনিমান জকাঁ ক্ষণহিমে কোনা রঁদনি গেনাহ। ঞা ধ্রুব সত্য ঋছি জে মৈথিন ব্রাহ্মণ পবিরাবমে ননকা পাগক স্থান রিশেষ ছৈক ঋা ওগ পাগকেঁ সহেজি কহ ত্রিপ্ববা ধএনে ছনীহ। ভগরত পবীক্ষা জকাঁ সৌতিন ঋনরাঁক নেন পতিক হাথমে পাগ দেরাঁক িনর্ণএমে ঋংগ্বনিমান রূপী বাধাকান্তকেঁ রুঁহ্রূসঁ দর্শন ভেননি। জৌঁ একবা সংভরো মানন জাএ তৈযো কনেক কমী ঞা জে বাধাকান্ত ত্রিপ্ববাক ত্তননামে কামাখ্যা দাগক সংস্কাবকেঁ সোচি-রিচাবি রিশিষ্ট মানি দোসব রিঁযাহ কবরাঁক িনর্ণএ কএননি। কোনো ক্ষণহিমে নৈ। ঐ রিঁযাহক সূত্রধাব হ্নক রেঁমাত্র মাএ ছনথিন। চননপ্ববরানীকেঁ ঋছৈত বাধাকান্ত মাথপব রিঁন্ব পাগ ধএনে কোনা রিদা ভ২ বহন ছনাহ, ঞা তঁ সহ্য: কথাক রঁহ্ত কমজোব পক্ষ ঋছি।

ভাষা রিজ্ঞানক ঋাধাবপব জৌঁ মূন্যাংকন কএন জাএ তঁ কথাকাব পবম্পবারাদী মৈথিন সাহিত্যকাব জকাঁ গদ্যকেঁ ঋধোষিত শৃংগাবক রূপ দেরাঁক প্রযাস কএননি।

তিরূক ত্তননা রাণ ভঙ্কক শ্যামাংগী নাযিকাসঁ কবএ কান ঞা উদ্দেশ্য স্পষ্ট ভ২ জাগত ঋছি। ষ্দা জখন নিখৈত ছথি জে "মিথিনাক ছৌড়ী সভ ঋহিনা কনৈত

ঋছি।” তঁ স্পষ্ট ভ২ জাগত ছনহি ঋাত্মিক ৰূপসঁ কিছু ঋাব কহএ চাহৈত ছথি। ঐঠাম ছৌড়় ৗক স্থানপব ‘কন্যা‘ শৰ্ব্দক প্ৰযোগ সেহো কএন জা সকৈত ছন জে ৰেঁসী নীক নগিতএ। কামাখ্যা দাগক ৰিষযমে বাধাকান্তক মৌন সিনেহমে পিঋা ঋা ঋা জা২....... নিখৰাক উদ্দেশ্য স্পষ্ট নৈ ভ২ সকন।

ও সত্য ঋছি জে বাজকমন মৈথিনীক সংগ–সংগ হিন্দীমে সেহো নিখৈত ছনাহ, ঋদা হিন্দীক প্ৰতি ঝাঁপন সিনেহ মৈথিনী কথামে পবিনক্ষিত ভ২ গেন। ও মৈথিনী সাহিত্যক নেন দ্ভগ্যিক গপ্প জে ঐ ভাষাকেঁ দ্ভাষী বচনাকাব মাত্ৰ ঋপন নাওঁ–গাওঁক নেন হথিযাব ৰঁনেননি মাতৃভাষা সিনেহসঁ সাহিত্যিক বচনাক কোনো সৰঁধ নৈ। ওনা ঐ প্ৰকাবক কথ্য যাত্ৰী ঋা ঋাবসীক বচনামে নৈ ভেটৈত ঋছি। কথোপকথনমে ৰিবোধাভাস দেখনাক ৰাঁদো একবা নীক বচনা মানন জা সকৈছ কিএক তঁ কথা ৰঁড্ড ঋাকৰ্ষক ছনহি। জৌঁ ৰিম্ৰঁক ৰিশ্লেষণকেঁ শিনপক ৰূপমে দেখন জাএ তঁ বাজকমনজী স্থাপিত শিনপী ছথি ও ননকা পাগ প্ৰকষ্ট ভ২ গেন।

দমযন্তী হবণ– ‘দমযন্তী হবণ’ ভবন সভামে কোনো ৰিৰশ নাবীক চিব–হবণক ৰূত্তি চিত্ৰ নৈ। ও তঁ সমাজক পাগ–চানন– ঠোপধাবী কিছু কথাকথিক ভনমান্নষক ৰাস্তৰিক ঝাঁপন চবিত্ৰকেঁ নাঙ্গট কবৰাক কথা থিক। কথা নাযিকা ছথি তেওস–চৌৰীস ৰঁবখক– দমযন্তী দ্নৰৈতিন দম্মো ঋথৰা সমাজক কোপ ভাজন ৰঁননি দমিঋাঁ। ঐ নাযিকাকেঁ গামক বক্ষক নোকনি খননাযিকা ৰঁনা দেননি, জে দোসবক শোষণ তঁ

नै करैत अछि तखन अपन चरित्र हनन कऽ ग्राम्य समाजकेँ विगलित कऽ बहलीह जे कोनो अर्थमे उचित नै। ऐ लेल दोष ककरा देल जाए ? सामर्थ्यहीन मायकेँ वा ओहि समाजकेँ जकर छाहरिमे नेनपनसँ सोनेल अग्राह्य नारीक अवस्थामे प्रवेश कऽ गेली-दमियाँ।

मिथिला समाजक वर्णन कोनो कविताामे जतेक घृतगन्धा ह्अए तखन ओ अक्षरश: सत्य अछि जे जइ समैमे ओ कथा लिखल गेल ओइ समैमे परीक्षा समाप्ति आ नव कक्षामे प्रवेशक मध्यक समय छात्रक लेल मस्तीएल साँढ़सँ वेशी किछु नै छल। जौं बहितए तँ ह्लनवाँवूं वामप्रवमे किअए रौआगत बहितथि। "ह्लन भैया ओइपार जएबेंह ?" वेदव्यासक मत्स्यगंधा गत्यादि संवादसँ नारी विमर्शक विह्वल रूप प्रदर्शित होइत छैक। कथाकार तँ कथाक प्रारंभेमे अवश्ये ई निश्चय केने हेताह की कथा नायिकाकेँ वेश्याक रूपमे प्रदर्शित कऽ कथाक गतिश्री कएल जाए। तखन आदर्शवादी विचारधारासँ एकटा वेश्याक भूमिका वाँधव वड़ कठिन कार्य भेल हएत। शनै:-शनै: 'गाड़ीमे भीख माँगैत छौड़ी' सदृश दमयन्तीक रूपक विश्लेषणमे नारी जातिक अपमानसँ वेशी समाजक कटु सत्य गजोतमे आवि गेल।
स्वेच्छासँ अमर्यादित आचरणक आवरणमे दमियाँ नै गेलीह। 'हे महादेव, चारिदिनसँ हमरा आँगनमे चूल्हो नहि जरल अछि' सन संवादसँ ई परिलक्षित होइत छैक।

गूढ़ मंथन कएनासँ कथामे किछु विशेष नै। अपन वैचैक भरण-पोषणक लेल देह व्यापारकेँ केन्द्र बिन्दु बँना कऽ लिखल गेल कथामे कोनो सम्यक समाज विमर्श नै। कोनो आदर्श पथ नै मात्र पथभ्रष्ट समाजकेँ पाठक धरि पठसल गेल। यायावरी जीवन चक्रमे घुमैत जयद्रथ आ कथाकारक संवाद कोनो समाजक लेल आदर्श प्रस्तुत नै कएनाक। देनक तँ समाजकेँ ई संदेश जे जौं कोनो अवला मिथिलाक गाममे वामवाँवूँ सन दु:खिता पतिताक कथाकथित वक्षक लग अपन आत्मरक्षाक आँचर पसारतीह तँ ओ आँचर खींच लेबाँमे कोनो संकोच नै करतथि।

'मायसँ कोन काज अछि'- नायिका कथाकारकेँ देखि हुनको ग्राहके बुझलनी। ई कोनो भ्रम नै। अस्तित्व विहीन नारी लग देहलोलुपे मनुक्ख पहुँचैत छथि।

'हम स्त्री नै छी, फूल भैया। हम तँ माटिक फूटैलि हाँड़ी छी। हमरापर दया करबाँक कोनो प्रयोजन नहि'- मर्माहित करबाँक लेल चेतनाशील मनुक्खकेँ ई वाक्य भारी पड़त। छप्पन वर्ष पूर्व ई कथा लिखल गेल। ओइ समैमे समाजक ई दशा छल? तखन तँ वर्तमानकालक जीवन शैलीकेँ दोष देब उँचित नै। जखन जड़िए पथभ्रष्ट तँ छीपक विषयमे नीक कल्पना करब सेहो भ्रामक अछि।

सम्पूर्ण कथामे झाजी आ चौधरीजी, मात्र पचैती कालमे स्कूलक प्रधानाध्यापक यादरजी आ एकठाम खवाँस झंझा धानुक अन्य वर्गक पात्र छथि। तखन 'ब्रह्म जानति ब्राह्मण:' कोना कलियुगमे प्रासंगिक मानल जाए। समाजमे नीति शिक्षाक आचार्य जौं कुनीतिक प्रधानाचार्य

भऽ जाथि तँ श्र्यरस्थे चौपङ्क्ति किएक नै हएत। रेंब-रेंब जखन-जखन नारी वा शूद्रक चर्च होइत अछि तँ तुलसीदासक 'ढोल गँवार शूद्र पशु नारीक' उद्धरण देल जाइत अछि। महाकाव्यक रचनामे कोनो विशेष पात्रक मुखसँ निकलल ऐ वाणी द्वारा मानस प्रकृषक चरित्र हनन कएल जाइत अछि।

चौधरीजी रॅजलाह 'घोर कलियुग आबि गेल अछि तुलसीदास ठीके लिखने छथि...' ई उचित नै लागल। तुलसीदास तँ एकठाम लिखने छथि जे 'धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपत काल परेखहुँ चारी' एकर उल्लेख किएक नै कएल जाइत छैक ? ओना ऐ कथामे नारी आ धर्ममे सहचरी रॅलेरॅक कोनो गुंजाइश नै छल। मुदा तुलसीक विषयमे लिखरॅक काल ई धियान रखरॅक चाही जे रामचरित मानस जनभाषाक कृति अछि जइसँ सम्पूर्ण हिन्दू संस्कृति प्रभावित भऽ रहल, कोनो विशेष जातिक आधिकारिक भाषा संस्कृतिमे लिखल नै गेल। तँए रॅाल्मिकि रामायणसँ रॅशी पाठक धरि एकर पहुँच रहल।

कथाक रिम्र्र विश्लेषण रूचिगर लागल, जे राजकमलक विशेष कथा लिखरॅक कलाक परिणाम मानल जाए। हिनक कथामे कोनो हास्य समागम नै रहितहुँ जनप्रिय रहल। तकर मौलिक कारण थिक गद्य काव्यात्मक विश्लेषण। वाणिज्यक छात्र रहितहुँ राजकमल अंकगणितीय वा सांख्यिक लेखा जोखामे नै पड़लाह किएक तँ 'आशुकथाकार' छथि। कथाक अंतमे रएह पँचैतीक निर्णए जे हमरा सरॅहक समाजक

র্যাধি ছন। কানূনকেঁ চ্নৌতী দের্ৗাক নেন পঁচ পবমেশ্রেব র্ৗনি কিছু নোক পান চির্ৗা কহ গতিশ্রী কহ বহন ছনাহ। রর্ত্তমান সমৈমে ঙা সংভর নৈ ছৈক কিএক তঁ মন্বখ সেহো 'চেতনাশীন ভহ বহন খা প্রজাতংত্র দীর্ঘ সূত্রী সমাজক পাগধাবীসঁ ভবিগব ভহ গেন। ক্ষদা খংতমে কথাকাব রিসবি জাগত ছথি খা মত্স্যগংধাক হঁসী প্রশ্ন বহি গেন। বাজকমনক প্রশ্নসঁ কথাক গতিশ্রী কবর্ৗ পাঠককেঁ ভ্রমিত কহ দৈত খছি, ক্ষদা কচিপূর্ণ। ি নর্ণএ তঁ হমবা সর্ৗহক সমাজমে ওঝবাএনে বহি গেন ছন তঁএ সংভরত: প্রশ্নসঁ কথাক গতিশ্রী কএন গেন ভহ সকৈত খছি কথাকাব কথাকেঁ বোচক র্ৗনের্ৗাক নেন পাঠক ধবি প্রশ্ন ছোড়ি কথাক গতিশ্রী কবর্ৗ উঁচিত র্ন্নৌত হোথি। জৌঁ ঙা সত্য তঁ একবা মৈথিনী সাহিত্যক নেন দ্ভগি্যশানী মানন জাএ, কিএক তঁ ন্যাযাধিশিকেঁ ি নর্ণএ ওঝবা ক' ন্যাযক ক্ষসীপব সঁ উঁতবনাক র্ৗাদ রেঁরস্থা চৌপষ্ট হএর্ৗ স্রভারিক ছৈক।

খ াকাশ গংগা– মৈথিনী সাহিত্যক সংগ সদিখন ঙা ভ্রাঁতি বহন জে জৌঁ কোনো সাহিত্যকাবক এক গোষ্ঠ গুতি সাহিত্যকেঁ খাব স্বরাসিত কহ দেনে খছি তঁ খাগাঁক বচনামে কথ্য ও শিন্পসঁ রেঁশী কথাকাবক নাওঁ মূন্যাঁকনক কেন্দ্র রিন্দ্ ভহ জাগছু। ঐ খর্ন্তিদ্বন্দ্বসঁ বাজকমন সেহো নৈ খছোপ বহনাহেঁ। 'খাকাশ গংগা' শ্রৈগাঁবিক রিন্দুকেঁ স্পর্শ কবৈত সমাজক খর্ন্তর্যথাক চিত্রণ কবর্ৗামে সহফন কথা থিক, ঐমে কোনো সংদেহ নৈ। ক্ষদা জৌঁ খংত:কবণসঁ খরনোকন কএন জাএ তঁ 'র্ৗহব দ্খাবিপব উঁতবন নহি কী ছীকক ধ্বনি' জকাঁ কথাক প্রাবংভে ছাযারাদী শৈনীমে কএন গেন।

'रिरेकानन्द चौधवी नहि मिथ्या कहनहुँ, ओाँ जमीन्दाव नहि साधावण नागविक। नागविको नहि साधावण ग्रामीण' सन शीर्षकोशसँ राक्य रॅनाएॅ अप्रासंगिक मानन जाए। कथाकाव स्रयं दृग्भ्रमित तँ नै छथि किएक तँ हिनक प्रतिभापव संदेह नै। तखन पाठककेँ दृग्भ्रमित कवरॉक उद्देश्य स्पष्ट नै। कथाकावकेँ एकरॅब स्पष्ट कऽ देरॉक चाही जे रिरेकानंद की छथि? जौं ओ कार्य वहितए तँ क्षम्य छन, मुदा कथाक ऐ रूपकेँ की मानन जाए? सचाव तखने नीक नगैत छैक जखन मून खाद्य पदार्थ अक्षत हुए। मड़ुआक संग गाही साग तवकावी पवसरॉक रॉदो भोजनमे रिशेष स्राद नै भेटैत। कथोपकथनपव शिन्पक भाव एक निश्चित सीमाने तक शोभायमान नगैछ। रिरेकानंद चौधवीक अपन अर्द्धांगिनी मदानसासँ संरॅध समाप्त भऽ गेननि। रिरेकानन्द अपन रॅटी अन्नपूर्णा संग वहए नगनाह। एकटा जमीन्दावक रॅटी अन्नपूर्णा पिता आशाक रिपवीत गवीरॅ रॉनक वाधाकान्तक संग रिआह कऽ नैत छथि। रॉप-रॅटीक संरॅध समाप्त भऽ गेननि। कानान्तवमे रॅटी अन्नपूर्णा एक रॉनक अशोकक माए भऽ गेनीह। पतिक देहारसानक रॉद दविद्रासँ नड़ैत माय अन्नपूर्णाकि चवित्र चित्रणमे कथाकावक सरॅन दृष्टिकोण झनकैत अछि। नावी-रिमर्शक दृष्टिसँ कथा रोचक मुदा नावीक जीरन दशा समाजमे उदासी छैक, ओ प्रमाणित कवरॅ उचित मुदा अगिना पीढ़ीक नेन उदासीन तँए वचनाकावकेँ ऐमे पविरर्त्तन कवरॉक चाही छन। अंतमे रिरेकानन्दक हृदए पविरर्जित अछि आ ओ रॅटीक रिदागवीक नेन उद्यत भऽ जागत छथि। ननका पाग जकाँ अद्धा कथामे पविणाम स्पष्ट नै भऽ सकन।

শ্রৈগাবিক জীরনক পবিধিমে ঘ্মৈত কথা পবিণাম রিমীন, এসঁ একবা কথাকাবক পনাযনরাদী রৈবাগী প্ররৃত্তিক ষ্যাতক মানন জা সকৈত খছি।
কাদম্ব্ররী উঁপকথা– রৈধর্য জীরনক খরিবন চিত্রণসঁ ভবন ঐ কথামে নাযিকা ‘কাদম্ব্ররী’ রিধরা ছথি। পতি রিশ্বনাথক মবনাক বাঁদ নৈহব চনি জাগত ছথি। কিছু দিনক বাঁদ দেওব দ্খিত ভ২ গেনখিন তখন সাস্বব খারি গেনীহ। সাস্ববক নোকক কন্পনা ছন জে কাদম্ব্ররী ব্রাহ্মণ সংস্কৃতিক খন্বকূন শ্রেত রস্ত্র ধাবিণী খরনা রঁনি খএনীহ। ক্ষুদা সৌন্দর্য স্বন্নবি কাদম্ব্ররী খংগ–রস্ত্রসঁ রিপদা–মাবনি নৈ খএনীহ। ফেব ধমগিজ্জবি। খপন কেও নৈ কিএক তঁ জীরনক এক পহিযা ধসি গেন ছননি। তঁএ নে দোসবক নেনামে শিক্ষাক দির্য সংস্কাব জগএরাঁক ক্রমমে পবিহাসক পাত্র ভ২ গেনীহ। গাযত্রী দেরী ছোট দিখাদিনী ছনীহ। শিক্ষিত নাবী কাদম্ব্ররীক মহত নেনা–সভক মধ্য রৈসী ছন। কিএক তঁ হ্নকামে সংতানহীন বহিতো মাহত্র ছননি। নেনা খা মূক পানতূ পশ্ব সিনেহক ভুক্খন হোগত খছি। ঐ সভ গাযত্রীকেঁ সোহাগত নৈ ছননি। খপনা তঁ উঁক দেরাঁক নেন একটা খন্নৃও পেটসঁ নৈ উঁখড়ননি’ গাযত্রীক ঐ প্রতিঘাতসঁ কাদম্ব্ররী পাষাণ ভ২ গেনীহ। খাঙনক পাঠশানা রঁন্ন ক২ দেনখিন কিএক তঁ গাযত্রীক ছোটকী রৈটী নিবমনাক মৃত্যু ভেনাপব ‘ডাগন’ শর্ব্দসঁ সেহো রিভূষিত কএন গেনীহ। জখন কী নিবমনা সর্প দংশসঁ জহান ছোড়ি রিদা ভেনীহ।

কথাক খংতিম চএ্র বঁড় নীক খছি। ন্বর্ধা খরাঁসক স্ত্রী প্রসর পীড়াসঁ র্যথিত কাদম্ব্ররীক খাঙনমে

ছৈপৈগত ছথি। একটা গবীব সমাজক কাত নাগন বস্ত্রক নাবীক ব্যথা কাদম্ববীকেঁ কর্ত্তব্য পবাযণতাক ভাব্‌ক প্রবাহমে নঃ গেননি। হাস–পবিহাস আ পবিতাপক ভযসঁ মুক্ত ভঃ ওগ নাবীক সংগ–সংগ সংসাবমে আবঁএ বঁনা নেনাক নেন ভগরতীসঁ ছাগব কব্‌না কেনখিন। জখন ওা গপ্প বাঁদমে গাযত্রী কাদম্ববীক মুখসঁ স্বননি তঁ প্রাযশ্চিতমে অশ্রুকণ বাঁহব ভঃ গেননি। গ্নানি ভবন সমাজক বৈধব্য জীবনক বৃতি চিত্র অংতমে সিনেহসঁ সমাপ্ত ভেন।
আকর্ষণমে কথা চ্ম্ববকীয প্রভাব জকাঁ পাঠককেঁ ঝপটি নৈত অছি, মুদা কী সমাজক ঐ অনিশ্চযবাদী বৈবস্থাকেঁ 'নাবী–বিমর্শক' দৃষ্টিসঁ ওঁচিত মানন জাএ। জগ কানমে ওা কথা নিখন গেন, ভাবতরর্ষমে সেহো ধর্ম স্বধাব আন্দোনন ভঃ বহন ছন, মুদা মৈথিন ব্রাহ্মণ সমাজ ওহিকানকেঁ কে কহএ এখন ধবি 'বৈধব্য জীবন'সঁ মুক্তিক আন্দোননকেঁ জাতি–সংস্কাব বিবোধী মানৈত অছি। ঐ মতেঁ ওা কথা নিখবঁ কোনো অনুচিত নৈ। মুদা প্রযোগধর্মিতাক রূপেঁ জৌঁ ধিযান দেন জাএ তঁ বাজকমন ক্রাঁতিদূত ভঃ সকৈত ছনাহ। পবিণাম মিশ্রিত দেখা সকৈত ছনথি পবংচ 'কাদম্ববী'কেঁ রূঢ়ি বাদিতাসঁ মুক্তি কববাঁক প্রযাস কথাকাবকেঁ ওগ শিখবপব স্থাপিত কঃ সকৈত ছন জতএ ধবি মৈথিনী সাহিত্য এখন তক নৈ পহুঁচন অছি।
নিষ্কর্ষত: ব্যবস্থা ফেব নাওট ভেন সে ওঁচিত কিএক তঁ সংকীর্ণ মানসিকতাক সমাজক মধ্য ওা কথা ঘুমৈত অছি।

ঘড়ি– কথা সাহিত্যমে বচনাকাবক সংগ–সংগ সমীক্ষক

নোকনি সেহো রিম্রঁ ও শিন্পকেঁ কথাক সচাব মানৈত ছথিন। হমব মত ঐ ৰূপেঁ কনেক রিনগ খছি। কোনো বচনাকেঁ পঢ়নাক রাঁদ ওকব মূন্যাঁকন হেত্তু জে মৌনিক তত্ব হোগছ ও থিক বচনাকাবক দৃষ্টিকোণ। জেনা স্বস্থ ব্যক্তিক সম্মিননসঁ স্বস্থ পবিরাব খা সমাজক নির্মাণ হোগত খছি ঠীক ওহিনা জোঁ বচনাকাবক দৃষ্টিকোণ সমাজপযোগী হ্খনি তঁ বচনাক সার্থকতা সহ প্রমাণিত ভ২ জাগছ।

'ঘড় ী' শীর্ষক কথাক রিম্রঁ চনন্ত জেকবা সামান্য শর্রঁদমে চানূ কহন জাগত খছি। শিন্প খারৃতিসঁ ভবন খর্থাত্ পবিরর্ত্তনশীন খা দৃষ্টিকোণ খাশ্চর্যজনক ৰূপসঁ সমাজক নেন কন্বষ খছি। নাওঁসঁ প্রথম দৃষ্টিএ বুঁঝনা জাগছ জে 'ঘড় ী' খর্থাত্ সমাজমে কানক প্রহবী হ্দা খন্তবারনোকনক রাঁদ কান প্রহবী ঘড় ী সমাজমে খকানক সার্থকতা সিদ্ধ ক২ বহনৈক। খকান মানে জে নে ডঁচিত মানন জাএ তকব ব্যাখ্যা, ওদ্রুমে খনৈতিক সংরঁধক কেন্দ্র রিন্দ্ রঁনা ক২ নিখন গেন কথামে কথাকাব সেহো খনৈতিক নাযককেঁ সংগ দৈত ছথিন।

বজনীকান্ত প্রাধ্যাপক রঁনি পটনামে বহৈত ছথিন। পনী চন্দ্রহ্মুখী খা পাঁচ সন্তানক সংগ-সংগ একটা রিধরা শিক্ষিকা মৌসী ডঁর্মিনা হিনক পবিরাবক সদস্যা থিকীহ। টৈকাক ও ওষ্টৌনপব সূতনিহাব বজনীকান্তকেঁ 'ঘড় ী'সঁ কোনো প্রেম নৈ। 'ঘড় ী' নামক যংত্রসঁ বজনীকান্ত ঘৃণা কবৈত ছথি। ঙা রাঁত পটনা নগবমে মৈথিন সমাজক সভ নোককেঁ বুঁঝন ছৈক। ঙা নিখরাঁক প্রযোজন খা প্রমাণিকতাপব সংদেহ হোগত খছি জোঁ শিন্পক খাধাবপব ডঁচিত মাননো জাএ তঁ একব

প্রাথমিকতা পূর্ণত: খসত্য হএত। কান্পনিক কথামে সেহো ঐ তবহক শব্দ রা রাক্য নৈ নিখরাঁক চাহী। “মৈথিন সমাজক সভ নোক”মে পঠনামে বহনিহাব সম্পূর্ণ মৈথিনকেঁ কেন্দ্রিত কহ কহ 1965 মে ও কথা নিখন গেন। বজনীকাঁত কোনো ভাবতীয সিনেমা জগতক প্রসিদ্ধ কনাকাব নৈ ছথি খা নে মহাত্মা গাঁধী সন বাষ্ট্রক সেরক একটা প্রাফেসবকেঁ সভ নোক কোনা জানি সকৈত খছি ? মৈথিন সমাজমে খমীবক সংগ–সংগ গবীব নোক সেহো ছথি। তত্কানীন পঠনামে সমাজক কিছু নোক মোটিযা, বিক্শা চানক জূতা প◌াঁনিশ কেনিহাব সেহো হেতাহ হ্নকা বজনীকান্তসঁ কেনা পবিচয ? খৈব প্রযোগরাদী বাজকমনক ঐ হ্রত্যকেঁ মৈথিনী ভাষামে ক্ষম্য কহ দেন গেন জে সাহিত্যক খদূবদর্শিতাক পবিচাযক থিক।
কথা কোনো রিশেষ রিম্ব নৈ বখনে খছি। কথাকাব স্রযং ঐমে সহনাযক ছথি। মৈথিন সমাজক হ্রসনমান জাতিক পাত্র খমজদ মিযাঁ খপন নরহরতী পনৌ জহুবনক গনাজক নেন পঠনা খরৈত ছথি। চূড়◌ িক র্যাপাবী খমজদ কথাকাবপব রিশ্বসনীযতা বখৈত হিনকেসঁ সহযোগ নৈত ছথিন। “এক বিক্শাপব হম খা জহুবনী খা দোসব বিক্শাপব খমজদ খনী খা বন্নেশী ন্না কম্পাউঁন্ডব খা দ্সধা খরাঁস খস্পতানসঁ ঘ্রৈত ছনহুঁ।” ঐ প্রকাবক সংরাদমে কথাকাবক দৃষ্টিকোণ পূর্ণত: স্পষ্ট ভহ গেন খছি। কোনো প্বকষ ওহিকানমে কথমপি নৈ স্রীকাব কহ সকৈত ছন জে খ াকব কনিযাঁ পব–পকষক সংগ রৈসএ জৌঁ এনা কএনো গেন তঁ একব পবিণাম খনস্থন সারিত ভেন। কানান্তবমে রএহ জহুবন প্রা. বজনীকান্তক সংগ খরৈত–খরৈত হ্নক

প্রেমানাপ মে ওঝবা গেনীহ। ওগ প্রেমানাপকেঁ কথাকাব সমর্থন তঁ নৈ কএননি ঝদা গৰাঁহ খরশ্য ভঽ গেনখিন। খনস্থান প্রেমকেঁ প্রকাশিত কএননি ঝদা প্রা. সাহেরক কনিযাঁসঁ একবা ন্বকা কঽ বখননি। মিত্রক ওা কর্ত্তব্য হোগত খছি জে খপন মিত্রকেঁ ক্ষমাস্থাসঁ বোকথি। জৌঁ নৈ বোকি সকনাহ তঁ স্রযং সংগ ছোড়ি দেৰাঁক চাহিযনি ছন। বাজা ৰঁনি বচনক বক্ষাক নেন জখন গ্বকক সংগ ছোড়ি দেনে ছনথি তঁ বাজকমন এক ক্ষকর্মী মিত্রক ক্ষকর্মক ভাগী কোনা ৰঁনৰাঁক নেন তৈযাব ছথি ? ওা ঘটনা মাত্র কথাক, ঝদা কথোমে ঐ প্রকাবক ভ্রাঁতি উঁপেন্ন কবৰ সর্বথা খনুচিত মানন জাএ। 'দুসধা খৰাঁস' নিখৰ উঁচিত নৈ জৌঁ হম দোসবকেঁ গজ্জতি নৈ দেৰ তঁ 'ৰাঁভন' শব্দ স্বনৰাঁমে কিএক ক্ষোভ হোগত খছি ? খতমে বজনীকান্ত খপন সত্য পথপব প্বন: খাবি জাগত ছথি। 'ঘড়ী' তঁ কীনি নেনথি ঝদা ওা ঘড়ী জহ্নবনীক চবিত্র খা চন্দ্রঝখীক বিশ্বাসকেঁ কেনা ঘ্বাএত ?

ব্রহ্মাণ্ডশাস্ত্রী, দার্শনিকসঁ নঽ কঽ ভৌতিকীয গণকক দৃষ্টিকোণমে চুম্বকীয খাকর্ষণ বিপবীত ধ্রুবক মধ্য হোগত ছৈক। জীবন ধর্মমে নব-নাবী সংগ বহিতো বিপবীত কিএক তঁ শাবীবিক সংবচনাসঁ সৃজনক মাধ্যমমে খন্তব হোগছ। স্রাভাবিক ছৈক জে সাহিত্যকাব ঐ গৃহস্থ খাশ্রমমে প্ররেশ কবৈত বচনাক বিম্ব তৈযাব কবৈত খছি। তঁএ কোনো সাহিত্যক খাদি কানমে মৌনিক বিমর্শ ভক্তি খা শৃংগাব বহন। বাজকমন জীক পদার্পণ মৈথিনী সাহিত্যক খাধুনিক কানমে ভেননি ঝদা তাধবিক কথা জগতমে খপন ভাষাকেঁ

গ্রষকায মানন জাএ। খপেক্ষাগ্নত বাজকমন ঘরা সেগো বহথি তঁএ সৌন্দর্য খাকর্ষণ পনকর কোনো খসহজ নৈ। খপবাজিতা কথা হিনক পহিন্বক বচনা ছন্হি জে রৈদেহীক খক্ট্রৈবব 1954 খংকমে প্রকাশিত ভেন বহএ।

জেনা নাওঁসঁ স্পষ্ট খছি “খপবাজিতা” জে স্ত্রী পবাজিত নৈ ভেন হ্খএ হ্মদা ঐঠাম কোনো মণ্ডন মিশ্রক ভাবতীক উনন্নেখ নৈ। কথাকাবক মিত্র নাগদত্তক কনিযাঁ ছথি– খপবাজিতা। একব খর্থ কথমপি নৈ জে ও নাগদত্তপব রিশেষাধিকাব বখৈত ছনীহ। সিনেহসঁ বাখন নাওঁ খা খধিকাবক দৃষ্টিকোণমে র্যাপক খংতব হোগত ছৈক। তঁএ কথাকাবকেঁ ঙা নাওঁ খনসোহাঁত নগৈত ছন্হি।

মিথিনা ক্ষেত্র এখন ধবি প্রাগ্নতিক রিপদা রাঁঠ়া ক কোপভাজিতা রনৈত বহনীহ। সন্ 1954মে স্থিতি তঁ খাব ফবাক ছন। “সবিপহুঁ... রাঁগমতী, কমনা, রনান, গণ্ডক খা খাস কঽ কোসী তঁ খপবাজিতা খছি নে। ককবো সামর্থ্য নৈ জে একবা পবাজিত কঽ সকএ” ....ঐ কথাংশিক দ্বাবা কথাকাব কোনো রাঁতসঁ হ্মক্তিক খাশ নৈ বখনে ছথি, হিখাসঁ ভঽ সকৈছ জে বখনে হো থ হ্মদা কথাক দৃষ্টিকোণ রৈছপ্প মানন জাএ।

কথাকাবকেঁ কথামে তঁ খরশ্য পীড় া ভঽ বহননি জে জে রেদমে নদীকেঁ মন্বক্খক সেরিকা কহনকৈক খছি। মন্বক্খক পনৌ কহনকৈক খছি... হ্মদা, রঁহ্ও ভঽ কঽ কোসী খা রাগমতী খপবাজিতা ছথি।

एक दिस रॉठ़ा क ऊँजैहियासँ पसवन ख्धोगतिकेँ देखि कथाकाब र्यथित छथि तँ दोसब दिस मि ि थनाक पबम सत्यकेँ ऊँधाब कइ बहनाह। सम्पूर्ण भावत-रर्षक ख्धिकांशि भूभागमे नाबी-जीरन सोम्म रिचाब बखनिहाब नोकक नेन चिन्ताक रिषय बहन। बाजकमनक कथा सन्दमे सम्पूर्ण भावत रर्षक ऊँनन्नेख नै ख्वा ने मि ि नाक सम्पूर्ण समाजक ि हनक कथा प्रतिनिधित्र कबैत छनि। मूनत: मैथिन ब्राम्हण पबिराबकेँ केन्द्र रिंन्द् रॅना कइ निखन गेन हिनक "ख्पबाजिता" शिक्षित मैथिन पबिराबक नाबी जकबा पति बहितौं ख्रना कहन जा सकैछ केब स्थितिक रास्तरिक रिरेचक थिक। ओना ऐ कथामे कतौ नाबी शोषित ख्थरा दोहनक प्रत्यक्षत: ऊँनन्नेख नै। सम्पूर्ण कथा "द रनिस्म्र ट्रेन" जकाँ बेनगाड़ी सँ प्राबंभ भइ समस्तीपुब ख्वा दड़ि भंगाक बीच पटबीक मध्य च्न्नैत ख्छि। समस्तीपुबसँ म्हक्तापुब होगत हाबाधाटि धबि रॉठ़ा क प्रकोपक मध्य प्राबंभ भेन कथामे बेन पटबीपब पानि ख्बिँ जयबाक काबण यात्री सबहक पबेशानी कथा मून रिंम्र थिक। रिंम्र कोनो रिशेष ख्र्थक नै म्हदा शिन्प जोबगब तँए कथा किछ हद धबि बोचक भइ गेन।

प्राय: मैथिनी कथाकाबक संग समस्या बहन जे कथा निखबाक ऊँद्देश्य बह्त ठाम स्पष्ट नै होगत ख्छि। बाजकमनक ख्पबाजिता सेहो गएह प्रकाबक कथा मानन जाए। हमबा सबहक समाजक नकाबात्मक स्रबूपकेँ ऐ कथामे नांगटि तँ ख्रूब नीक जकाँ कएन गेन म्हदा की मात्र नांगटि कएने समस्याक निदान संभर छैक ?

ऐ कथामे ई ओ प्रमाणित होइत छैक जे साहित्य समाजक दर्पण छिदा भाँगल दर्पणमे काँति देखनासँ काँति सेहो स्पष्टत: नै देखाइत आ आँखिपर असर पड़ैत सेहो अरुच्यिकारी ई कथाकार पाठककेँ ऐ कथासँ पूर्णत: प्रभावित कएलनि ओ कहब सर्वथा अनुचित।

"हुनपवास रानी" कथा नारी प्रधान कथा थिक जकर नायिका छथि। रिनकै भाय पटनामे बहि बिक्शा चलबैत छथिन्ह। एकटा पंडितक पुत्र भऽ बिक्शा हाँकब कथाकारक अर्धांगिनी शशिकेँ नीक नै लगैत छनहि। शारीरिक श्रमक अभ्यास नै बहलासँ जीवन दुष्कर भऽ जाइछ छै। शशिकेँ ऐसँ बेसी अखैत छनहि जे रिनकै भाय हुनक भैंस्वर छथि। पंडित चन्द्रकांत झा वेदान्तक पुत्र रिनकै झा बिक्शा चलबाक कर्मकेँ अनुचित नै मानैत छथि। मनुक्ख कर्मशील भऽ अपन पेट पोसए ई कोनो हर्ज नै। पैतृक ठाठ-बाठक घंटी डोलेलासँ पेट ई नै भरि सकैत अछि। श्रमजीवी श्रमसँ पेट भरि सकैत अछि छिदा जौं शरीर अस्वस्थ भऽ जाए ई जीवन चलाएब नितांत असहज भऽ जाइत छैक।

रिनकै भाग बेमार पड़ि जाइत छथि जिनका देखबाक लेल कनियाँ अर्थात् हुनपवास रानी पटना अबैत छथि। रिनकै भागक जबर ई शांत भऽ जाइत छनहि छिदा एकटा जबाव बैठि गेलनि ओ थिक स्वर पान। कहियो पीबि कऽ नानी खसैत छथि ई कहियो घर आबि गुड़कैत छथि। कथाकार अर्थात मणि बाबू आ

হ্নক কনিযাঁ শশিকেঁ ওা সভ বঁড় খনসোহাঁত নগনিন। রিনষ্ট কর্মোপদেশী দৈত ছনাহ জে কোনো কাজ কহ কহ জীরন যাপান কবরঁ খনুচিত নৈ। হ্মদা খারঁ তাড়া- দাব্দপব উঁতবি গেন ছথি। এতরেঁ নৈ এক দিন খপন সংগ হ্নপবাস রানীকেঁ সিনেমা দেখরঁএ নহ জাগত ছথি জগঠাম মীনাক্ষী খর্থাত্ হ্নপবাসরানীক হাথ রিনষ্ট ভাগক একটা ন্বচ্চা মিশ্ব পকড়া নৈত খছি।

বাঁদমে রিঁনষ্ট খপন খধনাহ কর্মপব প্রযশ্চিত সেহো কবৈত ছথি। ঐ রীচ কথাকাব কথানককেঁ থোড়ে মোবি দৈত ছথি। হ্নপবাস রানী জে মণি বাঁবূঁক ভৌজী থিকীহ তিনকাসঁ প্রেম কবরাঁক নাটক। খশ্চর্য মানন জাএ জে নাবী রিমর্শমে বাজকমনক নেখনী কতএ ধবি ভসিযা জাগত ছন্হি। ওনা দেওব খর্থাত্ মণিরাবূ মীনাক্ষীকেঁ খপন পিযাসক শিকাব নৈ বঁনা সকনিন। কিএক তঁ পতিক দেন পীড়াসঁ মৈথিন নাবী খাত্মাসঁ কানি তঁ সকৈত খছি হ্মদা খপন পতিকেঁ ছোড়া খ ান প্বরুষকেঁ খপন সর্বস্ব ন্যোছারব কবরাঁক কন্পনো নৈ কবত। এঠাম কথাকাবক দৃষ্টিকোণ সাহ্ন খা সমাজক নেন খাদর্শ মানন জাএ। জৌঁ দোসব খর্থমে সোচন জাএ তঁ রিজয হ্নকর্মী প্বরুষেকেঁ ভেন। খপনে কোনো কর্ম কবরঁ, পথভ্রষ্ট ভহ জাএরঁ হ্মদা জীরন সংগিনী সদিখন সংগ দেত, সংভরত: যএহ কাবণ থিক জে প্বরুষ কোনো হদ ধবি খসি জএরাঁমে সংকোচ নৈ কবৈত খছি খা তথাপি ওকবা রিশ্বাস বহৈত ছৈক জে গৃহিণী কদাপি নৈ রিহ্মখ হএত।

রিহনি কথাক রিকাসমে বাজকমনক সেহো কিছু যোগদান

छन्हि। "किवतनियाँ" सर्वकालिक रिहनि कथामे अपन विशेष महत रखैत अछि। एकर कारण जे बाजकमल ऐ कथाक माध्यमसँ पहिल्लुक रौब मिथिलाक ब्राह्मण समाजसँ गतर भऽ कथा लिखैत छथि। किवतनियाँ कोनो भजन संकीर्तन मण्डलीक सदस्य नै एकटा भिखमंगनी रानिका अछि। जौं सरल परिवारमे जनमलि रहैत तँ उमेर पढ़ऽ लिखऽ आ लेनपनक भरण्टपन करबाक छल। मुदा गरीबक कोन शेखी। माए-बाप कहियो जहान छोड़ि देलक पता नै। 40-90 वर्षक बूढ़ि या मगयाँक संग भीख मंगैत अछि। पूस मासक जाड़मे बूढ़ि या नहैया कऽ खसि पड़ल। ऐ घटनाक तीन दर्शक नांगड़ा, मपसुआ आ भिखमंगाक मेट चन्नवदास छल। नेंगरा कोनो नामकरण संस्कारसँ देल नाओं नै। नांगड़ तँए नगड़ा ओना भिखमंगाक नामे की... ? कथाकारक दर्शन नीक नगैत अछि। मपसुआ नामधारी जीर आ चन्नवदास दिनमे निपट्टे अन्हारक भूमिकामे भीख मंगैत अछि आ रातिमे अपन रास्तरिक रूपमे। कथाकार ऐ प्रसंगसँ प्रमाणित करबामे सफल होएत छथि जे जीरनक मंच आ बंगमंचमे भिन्नता छैक। बूढ़ि या मरि गेल ओकर नहास नग रैसि किवतनियाँ चन्नवदास संग भीख माँगि नहास जरेबाक लेल नाटकीय क्रीड़ा करैत अछि। भीखक कैंचा गनि-गनि सरा तीन टका पूरा कएल गेल, मुदा नहास नै जराओल जाएत। किवतनियाँ बाजलि- "एह ! तीन टकामे हम दूनू आठ दिन ताड़ी पी लेब।"
चन्नवदास अपन उद्देश्यमे सफल होएत अछि। ओकर उद्देश्य छल रान जीरनसँ हरती रनलि किवतनियाँक शारीरिक दोहन। आब किवतनियाँ सेहो लिडर भऽ

গেনী। স্বাভাবিক ছৈক জখন নাবী কলংকিতা ৰনি জাগত খছি তঁ ি নর্লজ্জ হোএৰ নিশ্চিত ভহ জাগছ। কথাক গতিমে গেনাসঁ ঙা প্রমাণিত হোগত ছৈক জে ঐ তবহক স্থিতিক নেন দোষী ঙা প্বরুষ প্রধান সমাজ বহন। রিম্ৰ খা শিন্প দ্নূমে ঙা কথা বাজকমনক সর্বশ্রেষ্ঠ কথামে সঁ একটৗ মানন জাএ। সৰন পক্ষ ঙা জে কথা সমাজক সভসঁ খঁতিম বস্ত্রাক জীরন শৈনীক কথা থিক। একটৗ খান রিহনি কথা পনিড্ৰ্ৰী সেহো বাজকমনক শ্রেষ্ঠ কথামে স্থান বখৈত খছি। হিনক খধিকাংশি কথা ব্ৰাহ্মণ–পবিরাব রিষযমূনক খছি হ্মদা একটৗ কথা "মনাহক হৈন : এক চিত্র" সমাজমে পিছড়ন বস্ত্রাক নাবীকেঁ কেন্দ্রিত কহ কহ নিখন গেন তীন নাযিকা পিবিতিখা কমনী খা কেতকীক কথা ি থক। এ কথামে বাজকমন মূনত: নাবী রিমর্শকেঁ রিম্ৰিত কএননি হ্মদা ঐঠাম ঙা খরশ্য প্রমাণিত ভহ গেন জে সমাজক কাত নাগন বস্ত্রাক নাবীমে সাহস, চেতনা খা দৃঢ় নিশ্চয সমাজক খধিষ্ঠাতা বস্ত্রাক নাবীসঁ ৰেশী খছি। তঁএ ঐ বস্ত্রাক নাবী খপন গচ্ছানুসাব খধোগতিকেঁ প্রাপ্ত তঁ কহ সকৈত খছি হ্মদা ওকবা সংগ কিযো জৰবদস্তী নৈ কহ সকৈছ। জৌং কিযো কবৰাক প্রযাস কবত তঁ "কৈতকী" জকাঁ সমাজক কাত নাগন ৰ্গক নাবী কদ্রা ৰনি তিবপিত মিসব সন চবিত্র হীন ব্যক্তিক হত্যা তক কহ সকৈত খছি। ঐ প্রকাবক ঘটনা সমাজমে হোগত বহন তঁএ বাজকমন জীক প্রযাস ঐঠাম উচিত মানন জাএ।

প্রযোগকেঁ ৰাদক ধবাতনপব খানৈৰনা বাজকমন মৈথিনী সাহিত্যমে কথাকেঁ রিশেষ স্থান দিঔনহ্নি। হবিমোহন

ओ ललित जकाँ हिनक कथा पाठकमे प्रिय अछि। जौं अल्पायु (मात्र 39 वर्ख) मे कानकनरित नै भेल होइत अछि तँ भऽ सकैत छल जे आगाँ आर परिपक्व भऽ कथा जगतमे प्रवेश करितथि। ओदा हिनक कथाक सभसँ पैघ कमी बहुत नारी सौन्दर्य आ अनैतिक संबंधकेँ मूल वना कऽ किछु कथा लिखि साहित्यमे अनैतिक संबंधकेँ वनशाली वनेवाक प्रयास कएलनि। ओना ऐ तरहक घटना समाजमे होइत बहुत अछि ओदा सत्यकेँ नांगट कऽ कऽ छोड़ि देलासँ साहित्य सबल नै भऽ सकैछ। दोसर किछु कथाकेँ जौं छोड़ि देल जाए तँ कथाकार स्वयं ख्यातनामा वनि कथा नायक वनल छथि ओदा सोचमे पारदर्शी नै। राजकमलकेँ सम्पूर्ण कथाकार तँ नै मानल जा सकैछ ओदा “शिल्पी”क रूपमे मैथिली कथा जगतक विशिष्ट कथाकार तँ अवश्य छथि।

<u>कीर्त्तिलता :: कथाकाव्यक सूत्रपात</u>

मैथिली साहित्यमे महाकाव्यक परम्परा छैक। रतिपति भगतक "गीत-गोविन्द"सँ सन 1723ई.क लगिचमे देखएमे आएल। जकर छायामे स्पष्ट विम्बक रूप मनबोध द्वारा 18म शताब्दीक मध्यमे "कृष्ण जन्म" स्वरूपे देल गेल। मनबोध मध्यकालीन मैथिलीक विशिष्ट रचनाकार मानल जाइत छथि।

जौं पदावलीकेँ छोड़ि देल जाए तँ ज्योतिरीश्वर आ विद्यापतिक अधिकांश रचना तत्समसँ लीपित छल। मनबोधक प्रवेश मैथिली काव्य जगतमे अत्यन्त महत्वपूर्ण किएक तँ "कृष्णजन्म" तत्सम परम्पराकेँ तोड़लक मात्र नै संग-संग चन्दा झा रचित मिथिला भाषा रामायणसँ आधारशीला सेहो प्रदान कएलक। डॉ. ग्रियर्सनक मते कृष्णजन्म महाकवि विद्यापति आ आधुनिक मैथिलीक हर्षनाथ झा आर तत्कालीन अन्य महाकाव्यक योजक कड़ी थिक। ई निर्विवाद सत्य जे कृष्णजन्मक भाषा ओ शैली संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश ओ अवहट्टसँ भिन्न जनभाषामे रचल पहिलुक काव्य थिक।

বতিপতি ভগতক গীত–গোরিন্দক রিপবীত হৃষ্ণজন্মক র্যাপক প্রচাব–প্রসাব ভেল কিএক তঁ কতৌ ভাষামে কনিষ্ঠতা নৈ। তঁএ প্রায: সভ সমানোচক এক মতেঁ স্রীকাব কবৈত ছথি জে ত্তনসীহৃত বামচবিত মানস জকাঁ "হৃষ্ণজন্ম" মৈথিনী সাহিত্যকেঁ প্রবঁধ কার্যক পহিল্বক সর্বন স্তঁভ প্রদান কএনক। রিদ্যাপতিক বচনা বীতিকার্যাত্মক ক্ষদা মনরোধ ঐ পবম্পবাকেঁ তোড়ি জে নরন রিম্র ও শৈনীক সৃজন কএননি ওগসঁ চন্দা ঝা খরশ্য প্রেবিত ছথি।

স্বভাষচন্দ্র যাদর নিখৈত ছথি "মনরোধ" কথাকার্যক পবম্পবাক খাবঁভ কএননি। শ্রৃঁগাবিক কার্য পবম্পবাকেঁ রিবাম দ২ কঽ ও রাত্সন্য ভারসঁ হ্যক্ত বচনামে রিশেষ ৰুচি দেখৈননি। মনরোধ রিষয খা শিন্প দুনূ স্তবপব পবম্পবাক খতিক্রমণ কবৈত ছথি। রিষযক স্তবপব হৃষ্ণক নেনপন খা পবাক্রম হ্নকা খাহৃষ্ট কবৈত ছনহি তঁ শিন্পক স্তবপব চৌপাগ। নোক ভাষাসঁ সম্পৃক্তি সন রিদ্যাপতিক পবম্পবাকেঁ মনরোধ খখ্ণ্ণ র্বনৌনে বখৈত ছথি।
দ্গানাথ ঝা শ্রীশিক শর্দমে "খঠাবহম শতার্দীক খঁতিম চবণমে মনরোধ খরশ্য হৃষ্ণজন্মক বচনা কএননি ও খদ্ভুত নোক ভাষাত্মক প্ররাহ ও রিনক্ষণ সঁক্ষিপ্ত ক্ষদা সজীর র্ণনিক দৃষ্টিসঁ নোকপ্রিয সেহো ভেল। পবন্চ হৃষ্ণজন্মসঁ প্রবঁধকার্যক রিকাস পবম্পবা স্থাপিত নৈ ভেল। ওা স্থাপিত ভেল করীশ্রব চন্দা ঝাক মিথিনা ভাষা বামাযণ এরঁ নানদাসক বমেশ্রব চবিত বামাযণসঁ। "হৃষ্ণজন্ম ঝ্ম্খান কার্য তঁএ মহাকার্য রা প্রবঁধ কার্যক শ্রী গণেশ শ্রীষ একবা নৈ

মানৈত ছথি সংগ-সংগ মহাকার্যীয পবম্পবাক সম্ব্ধ রিভাজন ঐমে নৈ ভঽ কঽ খধ্যাযমে রিভক্ত খছি। একব একটা খাব ি নর্বন পক্ষ জে খঠাবহ খধ্যাযমে রিভক্ত ঐ গ্রতিক পহিন দস খধ্যায মাত্র মৌনিক খা খ◌ট্টা মৌথিনীমে বচিত খছি। খন্য খাঠ খধ্যায জনভাষা ও বচনাক দৃষ্টিএঁ ◌ং রিরাদিত তঁএ শ্রীশে জীক মত খংশিত: সত্য মানন জাএ ক্ষদা মহাকার্যীয মবম্পবাক পহিল্বক খন্বপানন গ্রষ্ণজন্মমে ভেল তকব প্রণাণ একব পহিন খধ্যাযক উঁন্নেখমে তঁ মংগনাচনণ নৈ থিক ক্ষদা খার্যভাষাক মহাকার্যক মূন রিন্দ্ মংগনাচবণক ছাঁহ ঐঠাম খরশ্য ভেটৈত খছি-

প্রণামো গিবিরব কূমাবি-চবণ
জে রন করি সভ ত্রিভুরন রবন
হমহু কএন খছি মন মড়ু গোট
গ্রষ্ণজন্ম পবিণয নৈ ছোট
কোনপব হোএত তকব নিবরাহ
এখন নগৈ খছি খগম খথাহ...

মনরোঁধ সোনহ কনাসঁ নিপ্বণ গ্রষ্ণকেঁ ঐমে কোনো খভিসাব পথপব রিহ্ঁসৈত বাধাক সিনেহী নৈ রঁনৌনে ছথি।

মনরোধক গ্রষ্ণ রাস্তমমে নাযক ছথি।

'ধর্ম সংস্থাপনার্থায সম্ভামি যগে-যগে'ক হ্ংকাব ভরৈরঁনা গ্রষ্ণাক মাত্র জন্ম কথা নৈ, মাত্র প্রীতি গাথা নৈ হ্নক সমগ্র জীরন দর্শনক খভিপ্রায থিক 'গ্রষ্ণজন্ম' ভাগরত ও হবিরংশ প্ববাণক কথাপব খাধাবিত 'গ্রষ্ণজন্ম'ক নাযক গ্রষ্ণ বাম জকাঁ গংভীব, নক্ষ্মণ জকাঁ মর্যাদিত সিনেহী, স্রংয গ্রষ্ণ জকাঁ রাত্সন্য ভারসঁ ভবন শিশ্ব

ও্বা নবসি ্ঠ জকাঁ ও্বাঞ্চাশিত দৃ্ষ্টে নাশক ছথি। ঐমে পঠিন্বক ঞাঁতি জে হৃষ্ণ জীরন বৃত্তাঁতক ধাব শ্রৃঁগাবসঁ কর্ত্তর্যরোধ ধবি চনি ও্বাএন। ব়াঁন মনোরিজ্ঞানক রিশ্লেশণক দৃষ্টিএঁ ্ হৃষ্ণজন্ম পঠিন্বক রাস্তরিক রান্য শৈনীসঁ ভন মঠাকার্য থিক–

গ্বড়কন–গ্বড়কন ভিড়কন জাএ
জতয ও্বছন দৃগ ি রর্ষ ও্বকায
জমনা ও্বর্জুন কননা–নাথ
জ্গ্বতি উঁপাবন ছগন ন ঠাথ
ও্বসন মঠাতব্ধ হঁসন হ্মবাবি
ভেন ও্বঘাত জগতপব চাবি....

ডা ॅ. চেতকব ঝাক শের়্দমে রস্তুত: ঙা পৌবাণিক মঠাকার্য মাত্র থিক ও্বাকি মঠাকার্য ঙা ও্বখন চবি রিদ্বত সমাজমে রিরাদক রিষয র়নন ও্বছি। রিরাদক রিষয ঙাঠো ও্বছি জে ও্বঠাবঠ ও্বধ্যাযমে রিভক্ত“ হৃষ্ণজন্ম” সম্পূর্ণ ব্ধপেঁ মৌনিক ও্বছি ও্বাকি মাত্র দস ও্বধ্যায ধবি।

সমানোচকক মন্তর্য জে ঠোন্হি হ্মদা ঙা ও্বক্ষবশ: সত্য জে হৃষ্ণজন্মক বীতি নীতি ও্বাধাব–রিচাব, খান–পান, র়াঁত–রিচাবক সংগ–সংগ র্যরঠাব মিথিনাকসঁ প্রভারিত ও্বছি। নগৈছ জেনা হৃষ্ণক কথা গোব্ধনক কথা নৈ মিথিনাক কোনো ভূভাগক কথা থিক। গাম ভবি হকাব, চ্মাওন, তেন–সেনূব, নাচ–গান, ভদরা, সোহব, রঙ্গরনী, ঝঙ্গা ও্বা ঠেঁপা ফেংকর়, ছৈনরা ছৈনগক খেন খেনাএর় সন খাঁটী মৌথিন পবম্পবা ঐ কার্যকেঁ মিথিনা ধবাপব জীরন্ত কহ দেনক।

ম. ম. ডা ॅ. উঁমেশ মিশ্রেক ও্বন্বসাব ঙা কথা দশম ও্বধ্যায

ধবি শ্রীমদ্ভাগরতক দশম স্কংধক পূর্রাধিক খাধাবপব নিখন গেন খছি, এগাবহমেক খধ্যাযসঁ খন্ত ধবি হবিরংশ রিষ্ণুপর্রক খাধাবপব নিখন গেন খছি।

প্রা. বমানাথ ঝাক কহরঁ ছন্হি- “মনরোধ পহিন করি ছনাহ জে খপন গ্রষ্ণজন্মমে শৃংগাব বসসঁ শূন্য ভক্তি বসময একছন্দ মে জে বাগ তান প্রভৃতি গীতক রিষযসঁ বহিত খছি খপন এক গোষ্ঠ নূতন শৈনীমে কার্যক বচনা কএননি। ঙা ছন্দ খারঁ চৌপাঞ কহন জাঞত খছি পবন্তু তাহি দিন ঙা গাহিক মেব বূঝন জাঞত ছন।”
বাগ-নয, গতি, যতি ও নিযতিক বচনাত্মক মর্যাদা জে হ্খএ খপিতু ঙা খক্ষবশ: সত্য জে গ্রষ্ণ জন্মক মহাকার্যীয সৃজনতামে রএহ মৌনিক স্থান জে স্থান সংস্কৃত সাহিত্যমে রেদর্যাস ও রান্মীকিক খছি। খর্থাত্ রেদ র্যাস ও রান্মীকি হদৃশ মনরোধ মৈথিনী মহাকার্যক শনাকা প্রুষ ছথি।

স্বমন জীক শর্রদমে প্রকৃতি রর্ণন, ভনে ও জড় প্রকৃতি হোখ খথরা মানর প্রকৃতি মনরোধক বচনামে সহজ, স্বরোধ এরং হৃদযারর্জক রঁনন খছি। সংজ্ঞা, ক্রিযা রিশেষণ, নামধাতু ও খনুধ্রনিক রিনক্ষণ প্রযোগ এঁমে ভেটৈত খছি।
মৈথিনী কার্যমে গীত-শিন্পক জে পবম্পবা ছন তকবা নাগি স্বতংত্র কথা-কার্যক পহিন প্রযোগ “গ্রষ্ণজন্ম”মে ভেন। রঁান সাহিত্যক দৃষ্টিসঁ জৌঁ দেখন জাএ তঁ প্রযোগকেঁ রাদক ধবাতনপব খানি মহাকার্যক রূপ রেখামে রঁান মনোরিজ্ঞানকেঁ পূর্ণত:

स्पर्श मनरोॅधसँ पूर्व किये नै कऽ सकलाह। शेर्द-शेर्दमे प्रवाह हास्य स्पर्शी ओ सजीव अछि। तेँए दशम अध्याय धरि उँतव आधुनिक कारयक लेल सेहो अनुगामी तँ वचनाकानमे एकव महत्व की हएत ओ मंथनक विषय थिक।

तेँए ओ सत्य मानल जाए जे मात्र एक छन्दमे लिखल समस्त महाकारयक शैलीक ओ मैथिलीक प्रयोग ग्रंथ थिक जे भाषा विन्यासक संग-संग बिम्बक मौलिक स्पर्श आ वॉल साहित्यक लेल अखन धरि उँपयोगी अछि।

<u>क्षणप्रभा</u>

"क्षणप्रभा"क अर्थ होइछ बिजली जेकरा प्रवृत्ति जल तड़ि त कहैत छथि। हम कोनो नैसर्गिक करि नै, क्षणिक भावना करिताक रूपेँ अभिव्यक्त भेल जेकर प्रासंगिकताक िनर्णए पाठकगणपर छन्हि।

हमर कहबॅ मात्र एतेह जे हमर ओ पहिलुक प्रयास थिक ऐमे कार्य लक्षणा ओ व्यंजनाक अनुपालन भेल वा नै ऐ विषयमे हम किछु नै कहि सकैत छी, मात्र एतेह कहबाक लेल नीति संगत हएत जे जग भाषाकेँ

ৰাঁন কানহি ংসঁ ি হথামে নগা কঽ বখনৌং ওগ ভাষামে থপন কিছু খভিব্যক্তি পাঠকগণ নগ পবসি বহন ছী।

হমব জন্ম থপন মাতৃক ৰেগূসবায জিনাক মানীপ্বব মোড়তব গামমে ভেন। কহিও ঙা ভূমি মৈথিনীক প্রাংজন করি হজন্বব বহমান হাসমী জীক কর্মভূমি ছন। হমব পিতা মৈথিনীক চর্চিত থাশ্বকরি কানীকান্ত ঝা 'ৰূচ' খা হাসমী জীমে ৰঁড় খাত্মীযতা ছননি। মাএ চন্দ্রকনা দেবী সেহো মৈথিনীমে কিছু পদ্য নিখনে ছনীহ। ৰাঁনকান মাতৃকমে ৰীতন, তকব ৰাঁদ পৈতৃক গাম উঁদযনাচার্যক ভূমি কবিযনক মাষ্টি–পানিমে বমি খাগাঁ ৰঁঠ়ৈত গেনৌং। পিতাক করিত্বক কাবণেঁ মহাকরি খাবসী, চন্দ্রভান্ব সি ংহ, প্ররাসী প্রা. নবেশ ক্মাব রিকন, প্রা. রিদ্যাপতি ঝা, প্রা. বাম গুপান চৌ. বাকেশসঁ পবিচয ভেন। তকব পবিণাম থিক ঙা ছোষ্ট–ছীন গুতি।

<u>ৰঁহিবা নাচএ খপনে তান</u>

প্রস্তুত শীর্ষক হমব কোনো থপন বচনাত্মক ক্রিযাশীনতা নৈ ৰাঁন–কানমে "মিথিনা মিহিব" পঠ়ৈত ছনৌং। সাপ্তাহিক মিহিবক সভ গোষ্ঠে খংকমে ঐ শীর্ষকসঁ একটা স্থাযী স্তংভ ছপৈত ছন।

ৰঁড় ৰেথা ভঽ বহন খছি জে ভাবত রর্ষক প্রঙ্খ

ভাষা সভ উঁত্তব খাধ্নিক সাহিত্যক রূপেঁ খপন-খপন সংস্কৃতিসঁ ভাষামে ওঝাবাএন ছী। ঙা সর্রথা সত্যসঁ রৌদ্ধিক প্রভার রেঁশী বহৈত খছি, পবঁচ একটা খাব গপ্পপব জোঁ খাত্মীয ভ২ ক২ ধিযান দেন জাএ তঁ সামাজিক স্া ংবচনাক মধ্য সামংজস্য হোগছ। সনাতন সংস্কৃতিমে "জাতি"ক রিভেদ রেঁশী বহন ক্ষদা সভ রৈদিক সংস্কাবমে খছোপক মহতকেঁ সংগে নকাবি নৈ সকৈত ছী। হমবে পূর্রজ নিখনে ছথি "কর্ম প্রধান রিশ্ব কবি বাখা" প্রাচীন ভনমান্বষ শের্রদেটা মে সহী একবা স্রীকাব তঁ কএননি। তঁএ সভকেঁ জাতিসঁ খপন উঁঠি ক২ সোচরাঁক চাহী। খান জাতিকেঁ কে কহএ মিথিনামে তঁ ব্রাহ্মণোক মধ্য রঁড়কা রিদেহ ছৈক, জোঁ ঙা রিভেদ মাত্র রৈরাহিক সংস্কাব ধবি সীমিত বহিতে ছন তঁ যেন-কেন প্রকাবেণ স্রীকাবর্য, ক্ষদা "পিপবী" জে হমব ভোজ্য সংস্কৃতি রিশেষ চিন্হ থিক ওকবো দের্রএমে রঁড় ভাবী খাধি ভ২ গেন ছৈক। খন্তদ্বন্দ্ব মাত্র এতরেঁ ধবি নৈ ভনমান্বষ রস্কাক কোনো করি তঁ এতএ ধবি নিখনে ছথি-

খড়ড়া এ কোদড়া এ খা ক্ষসরবয,
ঙা মবয তঁ মৌথিনক পাপ ঠৈবয

খড়ড়া এ মৌথিন ব্রাহ্মণক একটা মূন হোগছ, ঐ শ্রেণীক ব্রাহ্মণ দড়া ভংগা জিনাক "নেহবা" খা সমস্তীপ্পবক ভিড়হা গামমে ভবন ছথি। রএহ নেহবা জকবা কহিযো "মিথিনাক পোবিস" কহন গেন খছি। খাব্রঁ কহন জাএ "মৌথিন" ঐ দোহামে করি ককবা মননে ছথি ? মাত্র শ্রোত্রিয, ভনমান্বষ খা উঁচ্চমূনক জযরাব

ब्राह्मण। जौं एहेन करि देल जाए तँ ब्राह्मणोँ सोचथु जे हुनकर जातिकेँ की कहल जाए ? विद्यापति स्मृति पर्व समारोह वा कोनो मंच हुअए हास्यपर थपड़ी बजएबाक लेल ऐ प्रकारक दोहा मिथिलाक पहिचान मानल जाए लागल अछि–

कैनी छैनी ओ कौतिनियाँ
दीप गोधनपुर कैथिनियाँ
पाँच गाम पचही परगन्ना
उत्तम गाम नदौर
तेली सूढ़ी बसए मधेपुर
नाऊक ठठ्ठ नखदौर'

जौं मधुबनी जिलाक मात्र ऊपर लिखल किछु गाम जनमानुषक गाम तँ गोपेशी, सकरा, गजेन्द्र वा आनंद जनमानुषक्के नै ?

समस्तीपुर जिलामे जनमानुषक तात्विक विवेचन तँ आर विचित्र ढंगे कएल गेल अछि–

"श्रोत्रिय सगरपुर बासी छैन
किछु घर छैनका आर सभ चोर"

धन्यवाद देबाक चाही एहेन प्रसंगक व्याख्या जे ओ विसरि गेल छथि जे "चोर"क कोनो जाति नै होइत छैक, ओ कथाकथित जनमानुषक परिवारमे सेहो जन्म लइ सकैत छथि वा नैत छथि।

केओ नै सोचनथि जे हिनिकेँ तरूण सन प्राँजल साहित्यकार मात्र एक्कोटा मैथिली रेडियो नाटक "डँगना रे मोर कतऽ गेलौं" किएक लिखलथि ? एकरेँ समस्तीपुरक नर्वप्रतिष्ठ शैल्य चिकित्सक डॉ. आर.पी.मिश्रा हिन्दुस्तान दैनिकमे अपन आलेख लिखने छलाह जे अधिकार देबऽ काल हमरा सभकेँ दक्षिणाहा कहल जाइत अछि तखन मैथिलीकेँ आगाँ बढ़ेबाक आशा हमरासँ किए करैत छथि ? फनीश्वरनाथ रेणु, पोद्दार रामावतार अरूण सन रचनाकारक केओ मैथिलीमे लिखबाक प्रेरणा किएक नै देलकनि ?

गजेन्द्र ठाकुर, उमेश मण्डल आ शिवकुमार झा सन साधारण लोक समाजक सभ रत्नक रचनाकारकेँ प्रत्साहित कऽ सकैत छथि तँ प्रवीण साहित्यकारसँ की हमर आश रखनाइ अपराध ?

भुवनेश्वर सिंह भुवनकेँ अन्तिमनसँ श्रद्धाँजलि दैत छियनि जे एकटा हिन्दीक महाकवि आरसी प्रसाद सिंहकेँ मैथिलीमे लिखबाक प्रेरणा देलनि।

जखन समस्तीपुरमे मैथिलीक अस्तित्वक रक्षार्थ आन्दोलन होइत अछि तँ डाॅ. नरेश कुमार विकल सभसँ आगाँ रहैत छथि। 1960-70मे हिनक कविता सभ मिथिला मिहिरमे छपैत छल तखन मैथिली साहित्यक इतिहासमे डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश हिनक नाओं किएक नै देलन्हि ? हमर कहबाक ई नै जे सबहक दृष्टिमे सभलोक रहिते छथि, मुदा जौं आत्मीय भऽ कऽ सोचल जाए तँ सभ प्रश्नक समाधान छैक।

“মিথিনামে বহনিহাব সভ নোক মৈথিন” ঙা উনন্নেখ সভ মংচপব কএন জাগত খছি। ঐ তবহক উনন্নেখসঁ ভ্রম উত্পন্ন ভেনাগ স্বাভাবিক। জেনা খপনা চাবি রেঁটৗমে সঁ কোনো রেঁটৗকেঁ রেঁব–রেঁব মাএ কহৈত ছথি জে “তোঁ হমবে রেঁটৗ ছেঁ।” তঁ ওহি প্বত্রক দিমাগমে নিশ্চিত উপেন্ন হএত জে শাযদ হম দোসব নাবীক প্বত্র ছী।

খংতমে, হমব খাগ্রহ যএহ জে সম্যক্ দৃষ্টিকোণ বাখরঁ খনিরার্য খা সংস্কৃতিক বক্ষার্থ সরঁন তত্ব মানন জাএ, নৈ তঁ সমানাংতব ধাব রঁহবেঁ কবতীহ খা সাহিত্যক নেন ও ক্ষণ খামেঘাতী সেহো হএত।

মিথিনাক নোক দেরতা ::

কোনো সাহিত্যক সমৃদ্ধিক খাধাব মহাকার্য, প্ররেধ কার্য

উঁপন্যাস রা কথাক উঁত্তব খাধ্নিক রিরেচনকেঁ মানন জাগত খছি। ঐ দিশামে মৈথিনী এখন রঁড় পাছু খছি কিএক তঁ সমগ্র সাহিত্য রিধাক পবম্পবাগত ৰূপসঁ ও ভাষা রাঁম্মন মানন জা সকৈছ। সাহিত্যক রিকাস তখনে সংভর জখন ভাষাক দীর্ঘকানীন সংভারনা পবিনক্ষিত হোএত। প্ববনা পিঢ়ী মখড়ি বহন ছথি খা নরকা পিঢ়ীমে শিক্ষাক মাধ্যম খংগ্রেজী তখন মৈথিনীক খস্তিত্রপব খপনে খাপ প্রশ্নচিন্হ নাগরঁ দর্শনীয। গাম–ঘবক নেনা–ভুটকাকেঁ জোঁ ছোড়ি দেন জাএ তঁ মৈথিন পবিরাবক শিশরক মাতৃভাষা নিশ্চিত ৰূপেঁ রঁদনি বহন।

প্রাবংভিক শিক্ষাক মাধ্য খংগ্রেজী খা হিন্দী থিক। ঐ দশামে সাহিত্যসঁ রেঁশী খারশ্যক খছি ভাষাকেঁ রঁচাএরঁ। মৈথিনী তখনে খপন খাস্তিত্রকেঁ দৃঢ় ৰূপেঁ বাখি সকতীহ জখন নরকা পিঢ়ীমে মাতৃ খা রাত্সন্য সিনেহক রেদনা হ্খএ। এে নেন খারশ্যক খছি রাঁন মনোরিজ্ঞানকেঁ স্পর্শ কবএরঁনা রাঁন সাহিত্যক প্রাত্সাহন।

ঐ দিশামে কহরাঁক নেন তঁ রঁহ্ত বাস কার্য ভেন খছি পবংচ রাস্তরিক রাঁন সাহিত্যমে খাধ্নিক পিঢ়ীক বচনাকাবক সমূহমে খগ্রগন্যা ছথি শ্রীমতী প্রীতি ঠাকুব। হিনক তেসব পোথী 'মিথিনাক নোক দেরতা' শ্র্তি প্রকাশনক সৌজন্যসঁ 2010ঙং.মে রঁহাব ভেন।

টী.এস. গনিযটক Tradition and the individual talent (1917 AD) ক খনুসাব কোনো করি, কথাকাব রা কনাকাব স্রযংমে পূর্ণ খর্থ নৈ

স্পষ্ঠ করৈত ছথি। হ্নক কনাক ত্তননা মৃত করি রা কনাকাবক বচনাসঁ কএনাক রাঁদে হ্নক মূন্যাংকন কএন জা সকৈছ। জোঁ ঐ মতকেঁ প্রাসংগিক মানন জাএ তেযো প্রীতিজী খত্তননীয ছথি কিএক তঁ হিনকাসঁ পূর্র ঐ প্রকাবক চিত্রাত্মক খা নযাত্মক শৈনীমে রাঁন গদ্য পহিনে মৈথিনীমে নিখন নৈ গেন। ওা খক্ষবশ: সত্যো থিক কিএক তঁ খাদি প্বকুষক মাথপব পাগ বখরাঁক সাহস কিযো নৈ কঽ সকন। সংগহি ঐ তথ্যকেঁ জানবঁ সেহো খারশ্যক জে খন্য ভাষা সমূহসঁ ত্তননাক রাঁদ প্রীতিজী কতএ ছথি ?

‘সামা চকেরাঁ’ পবম্পবাগত জনশ্রুতি খা পৌবাণিক কথাক খাধাবপব মিথিনাক গাম–গামমে প্রচনিত কার্তিক পূর্ণমাসীক পারনি ি থক। ঐ কথাকেঁ ঐ পোথীমে সম্মিনিত কঽ প্রীতিজী কোনো নর বচনাত্মক কার্য নৈ কএননি পবংচ খনচোকেমে নরকা পিঠ় ীকেঁ খপন সংস্কৃতিসঁ খরশ্য খরগত কবা দেনখিন। খনচা েকে শরঁদক প্রযোগ ঐ দ্খাবে কএনৌঁ কিএক তঁ রঁহ্ত বাস গামসঁ ওা পারনি ন্বপ্ত ভঽ বহন খছি শহবমে তঁ একব খস্তিত্রক কন্পনা কববঁ সেহো খসংভর। খান ঠাম জকাঁ মিথিনামে সেহো পনাযনরাদ হারী ভঽ গেন ছৈক। কোনো খারশ্যক নৈ জে পনাযনক রাঁদ নোক খপন সংস্কৃ তকেঁ দড়ভংগিযা প্রভারমে ঝাঁপি কঽ বাখি সকথি। তঁএ এহেন পারনিক চর্চ খাধ্নিক পিঠ় ী নগ খারশ্যক। জখন চর্চ হএত তঁ ভঽ সকৈছ জে প্ররাসী নেনামে ঐ প্রকাবক সংস্কৃতিসঁ জ্ড়ন বহরাঁক প্রেবণা জাগএ। মধ্শ্রারণী রা কোজগবাক সদৃশ সামা চকেরাঁ কোনো জাতি রিশেষক পারনি নৈ থিক ররন্ ওা সম্পূর্ণ মিথিনাক প্রতিনিধিত্র কএনে খছি।

साहित्यानुरागी लोकनि ऐ पोथीकेँ रचनात्मक कथा (creative story) नै मानताह ओ ध्रुव सत्य किएक तँ एकर कथा सभ्भा नूतन कल्पना नै भऽ कऽ परम्परागत शैली आ कथाक प्रतिरूप थिक। ऐ दृष्टिएँ रचनाकारक आलोचना सेहो संभव अछि। मुदा ओ विधान बाहरेँ सेहो आवश्यक जे अबोध नेनाकेँ कनिष्ठ साहित्यसँ कोनो सिनेह नै होइछ। आ तँ महाकाव्यक पाँतिसँ बेसी 'आली-मूली हम नै जानी' सदृश अर्थहीन पाँतिसँ सिनेह रखैत अछि। तँ चाननि बाँटऽनि डेटऽ रितना, जेहन कवनी, चावि वँटैली बँगियाक गाछ आदि जनश्रुतिसँ संबंधित कथानककेँ बाल मनोविज्ञानसँ संबंधित मानवाग उचित हएत। लेखिका पहिनहि गमानदावीसँ ओ स्वीकार कएने छथि जे बाल कानमे बूढ़ऽ-पुरानक मुखसँ जे सुनने छलीह तकरा अपन शैलीमे कथाक रूप दऽ देनखिन।
ऐ पोथीक सबँल पक्ष अछि कथा चित्रात्मक विवेचन। मोती सावर, नानरन बाबाँ, गबीरँन बाबाँ, बिहुला, सीता आ स्वगगा, आयाची मिश्र, पक्षधर मिश्र आ उगना सन कथा चित्रकेँ तैयार करबामे कतेक मेहनति आ समए लागल हेतनि ओ तँ लेखिके कहि सकैत छथि। परंच ओ चित्र अपन विविध मूक शैलीमे नेना-भुटकाक संग अवश्य वार्तालाप करत। आलोचनात्मक पक्षसँ जौं देखल जाए तँ एकरा आन भाषा साहित्यक कॉमिक्ससँ बेसी नै मानल जाएत। मुदा एहेन दीर्घसूत्री आलोचके कऽ सकै छथि। किएक तँ ओ कोनो कम्प्यूटरक खेल नै अपन मस्तिष्कमे उपजल बालउद्बोधनक चित्रात्मक शैली थिक जे समालोचनाक भयसँ मुक्त रहैत लेखिका मात्र नेनाक लेल कएने छथि।

बंग समंजन सेहो नीक नागन। अंतिम किछु चित्र श्वेत–स्याम रूपें देल गेल जइमे लेना स्रयं बंगबोगल कऽ सकैत छथि।
ऐ पोथीक कथानक पबम्पबागत अछि मुदा शैली आ चित्रांकन नव तँए अपन उद्देश्यमे बचनाकाब सफल छथि।
दुर्बल पक्ष जे चित्रक संग जे किछु कथा देल गेल अछि ओकबा आब बिस्तृत कएल जा सकैत छल। जेना मोती सायबसँ लऽ कऽ मीवा साहेबँ धबिक चित्रकथामे कथानक एकाएक बँदलि जाइत अछि। जे साबंशे जकाँ नगन। मुदा आशा कबैत छी जे लेना सभकेँ नीक नागि बहल होएतनि।

গন্দ্রধনুষী অকাসমে সামাজিক বিমর্শ ::

"গংদ্রধনুষী অকাস" আধুনিক মৈথিলীক চর্চিত গদ্যকাব শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডলক পহিল পদ্য সংগ্রহ অছি। জগদীশজী সন্ 2008সঁ পূর্ব মৈথিলী সাহিত্যক নেন অনচিন্হ নাওঁ ছলাহ, মুদা গত তীন–চাবি বঁবখক ভীতব হিনক বিবিধ বিম্বঁক উঁপন্যাস, কথা সংগ্রহ, নাটক, বাঁন গদ্য সাহিত্য আদিসঁ মৈথিলী সাহিত্যকেঁ উঁতব আধুনিক যগমে প্রবেশক অবসবি ভেটি গেললি।

মূলত: কথাকাব আ উঁপন্যাসকাব জগদীশ প্রসাদ মণ্ডল কোনো চন্দা ঝা সন প্রাচীনতা ও নবীনতাক সন্ধিক করি নৈ আ নে হিনক বচনামে পবম্পবাবাদী প্রীতিক কতহ্ দর্শন হোগছ। ভুবনেশ্বব সিংহ ভুবন জকাঁ নে জগদীশ নবীন প্রগীত কাব্যক ব্যাখ্যাতা ছথি আ নে আবসী প্রসাদ সিংহ জকাঁ আশ্ব করি।

110 কবিতাক সংগ্রহ "গংদ্রধনুষী অকাস"মে জে গা বৈশিষ্ঠ্যতা প্রমাণিত কএললি ও অছি সম্পূর্ণ সমাজক নেন সমনবয়বাদী দৃষ্টিকোণক দার্শনিক অবলোকন আ অর্থনীতিক সম্যক বিশ্লেষণ। অনচোকেমে কবিতা সবঁহক

ঝপেঁ হিনক রিবাঽ সবন জীরন দর্শন প্রদর্শিত হোগত থছি।
"মণি" রিষধব সাঁপকেঁ সেহো মনোবম রঁনা দৈত জকব নোভমে সপেবা সরঁহক থঁত ভঽ জাগছ। ও মণি তঁ রৈজ্ঞানিক দৃষ্ঠিকোণসঁ কান্পনিক থিক, ঝদা মণি করিতামে করি থপন মনক মনোভারকেঁ মঠ্া - মঠ্া মণি'ক ঝপ রেখাক সংদেশ দৈত ছথি। ভাররাচক সংজ্ঞা থিক-মণি ঝদা জাতি থা র্যক্তিক বচনাক নেন ভারক থারশ্যকতা প্রাসাঁগিক হোগছ। জখন থর্ন্তিমনমে দির্য জ্যোতি জাগত তঁ তন থরশ্য প্রজ্জরনিত হএত। নক্ষ্মী তখনে ঔতীহ জখন কর্মপথ উঁজ্জ্রন হএত। কর্মপথকেঁ প্রকাশিত কবরঁাক নেন স্রস্থ মোনক থারশ্যক্তা হোগত ছৈক। পহিনে ওা থরধাবনা ছন জে স্রস্থ শবীবমে স্রস্থ মনক নিরাস হোগত ছৈক, ঝদা থাধ্নিক রৈজ্ঞানিক দৃষ্ঠকোণে ওা মিথ্যা প্রমাণিত ভ্ া২ বহনৈক। র্যস্ত জীরন শৈনীমে মোন থস্থিব ভঽ গেন ছৈক। রিঁন্ব কর্মক থধিক প্রাপ্তিক তৃষ্ণাসঁ মনমে রিচনন স্রাভারিক জগসঁ মোন থস্রস্থ। জখন মোন থস্রস্থ তঁ শবীবক থস্রস্থ হএরঁ কোনো থজগ্বত নৈ। 'চিন্হ রিঁনা ঔষধি ভাবী' রৈজ্ঞানিক দৃষ্ঠিকোণসঁ থক্ষবশ: সত্য মানন জাএ। সোডিযম কার্রৌনেঽ ধোরিযা সোডব থিক থা সোডিযম রাঁগকার্রৌনেঽ পেঽক থম্নীযতাকেঁ দূব করৈত থছি। মাত্র 'রাগ' শর্ঁদ হঽনাসঁ জৌঁ উঁনঽৌ সেরন হএত তঁ জীরন রাগ-রাগ ভঽ সকৈত থছি।

ঝদা সামাজিক জীরনমে ধোরিযো সোডব থনিরার্য কিএক তঁ মাত্র পেঽক থম্নীযতা দূব কএনাসঁ শবীবক মোগন

नै धोखन जा सकैछ। तँए जीरनमे सरहक नेन समाधसाव स्थान देन जाए। 'श्रेष्ठ जीरन मानर कहरैं छै मानरता उँद्देश्य जकव' ऐ पाँतिसँ बचनात्मक समन्रयरादी न्याय दर्शन प्रदर्शित होगत छैक। समाजक थागाँ पाँतिक नोक जखन कात नागन रस्त्रकेँ मर्मी हत करैत थछि, तखन कातक नोक सेहो उग्रता प्रदर्शित करैत थछि। ऐ प्रकाबक थदना–रँदनाक भार जगदीश जीक ऐ करिताम नै भेटैन। ओ तँ सकाबात्मक सोचक थाशारादी दार्शनिक जकाँ थपन करिताक गति श्री करैत छथि–

'मन्वथक भेद रिभेद
मेटैरेंक छी धव्म ओकव'

संभरत: ब्रँम्माक रबद पूत सभकेँ थादर्शरादी रँनरँक संदेश देननि थछि। ओना थनंकाव मिनएरँक क्रममे एकठाम चूकि गेन छथि

जखने मन मणि रँनत छिटैकत ज्योति धवतीपव
थपने राँटै थपने देखरँ हँसैत चनरँ पृथ्रीपव

ऐठाम पृथ्री पवक स्थानपव 'पवतीपव' जौं निखन बहितए तँ शरँद सामंजस्य भऽ सकैत छन। ओना करिक दृष्टिकोण भऽ सकैत छैक जे किछु थाव होन्हि।

गंभीव थाश्र कारयक मान्यता समाप्त होगत मैथिनी साहित्यमे रिचाव मूनक पद्य रिबने भेटैत थछि। जीरन था थाध्यात्मक संरँध चनन्त समाजक रीच देखैमे थारि बहन छैक। सभ दिशी भागमभाग सोचरँक नेन फुवसत नै। मैथिनी साहित्यमे छायारादक कान निर्धावण तँ नै कएन गेन थछि, क्दा

খনচোকেমে কিছু সাহিত্যকাব ঐ কার্য বিধাপব সমএ–সমৈপব বচনা কঽ দৈত ছথি। 'চন বে জীবন' কবিতা খাধ্যাত্মিক দর্শনসঁ কর্মশীন জীবনক সংধি কববাঁমে পূর্ণত: সফন মানন জা সকৈছ। মহাকবি খাবসীক কহবঁ ছনন্হি জে সভ নোকমে খাশ্বত্ব হোগত ছৈক ঝদা নেখনীসঁ খভিব্যক্ত কববাঁক নেন খর্ন্তমন খা খাত্মাক মিনন জিনকামে হএত বএহ 'খাশ্ব কবি' মানন জএতাহ। জগদীশ তঁ খাশ্বকবি নৈ ছথি, ঝদা 'চন বে জীবন' হিনক ক্ষণিক খর্ন্তমন খা খাত্মীয মিননক পবিণামে খাশ্ব কবিতা খবশ্য ভঽ গেন। জীবনমে গতি সর্বাধিক উঁপযোগী খা সম্প্রত্তু–সর্বশক্তি মান তত্ব থিক। জগ বস্বন্ধবাক মাথপব হমব খস্তিত্ব খছি ও কখনো নে ককৈত ছথি। গ্রহ–নক্ষণ সভ সদিখন গতিমান, খংতিম কান ধবি জীবন গতিমান, ঝগনাপব প্রাণ গতিমান হোগত খদৃশ্য চএ্রমে প্রবেশ কঽ জাগত খছি।

"যাত্রীকেঁ খাবাম কহাঁ ছৈ
যাত্রা পথ বিশ্রাম কহাঁ ছৈ।"

জে খভাগন ছথি ও স্বতনে বহথি ঝদা হ্নকো শবীবমে ক্ষিতি, জন, পাবক, সমীব, ৰুধিবক সংগ সভ খংগ মৌনিক ৰুপসঁ গতিমান বহৈত খছি। 'সূর্য–তবেগন সেহো চনৈ ছৈ' বৈজ্ঞানিক মান্যতাসঁ সর্বথা খন্বচিত মানন জাগত খছি। সূর্য নৈ তঁ উঁগৈত খছি খা নে ড্মৈত খছি। তঁএ কবিক এক পাঁতিকেঁ মাত্র উঁত্সাহ বর্ধনক নেন কবিত্বক কিছু মংদ বাত মানন জাএ। বাস্তবিক ৰুপসঁ ওা খসত্য মাত্র কবিতেমে ক্ষম্য জোঁ কথা বহিতএ তঁ খপ্রাসংগিক মানন জা সকৈত ছন। জেনা জগদীশ কথামে শব্দ সমংজন কঽ নৈত ছথি ওনা

করিতামে কতহ্-কতহ্ ওঝবা জাগত ছথিন্হ।
“সমএ সংগ চন, ঋতু সংগ চন
গতি সংগ চন মতি সংগ চন।”
সভঠাম ‘সংগ’ উঁদেশ্য খা কথোপকথনক নেন সর্রথা উঁচিত, ঝদা স্ববাত্মক পদ্যমে কথোপকথনক সংগ-সংগ খনংকাব খা ছংদক সম্মিনন সেহো খারশ্যক হোগত খছি। ওা করিতা কোনো খতুকাঁত করিতা নৈ তঁএ ছংদমে খার্বদ্ধ কবর্রাক নেন করিকেঁ রিশেষ ধিযান দের্রাক ছননি। জগদীশক শর্ব্দ-কোষমে মৈথিনীক খাঁটী শর্ব্দ সভ ভবন ছন্হি তঁএ হিনকাসঁ খাব খাশা কএন জা সকৈত খছি।
র্রান মনোরিজ্ঞানক দৃষ্টিসঁ ওা পদ্য উঁপযুক্ত মানন জাএ। জে র্রান খা যরারস্থাক সংধি ভঽ সকৈত খছি কিএক তঁ ঐ খরধিমে জীরনক গতি-চক্রকেঁ বূঝর্র রিশেষ খনিরার্য হোগছ। ঐসঁ ভাষা-সাহিত্য রিকাস সেহো হোগত ছৈক। খাবসী প্রসাদ সি ংহ, সোহন নান দ্বিরেদী, স্বমিত্রা নংদন পংত খা হবিরংশ বায র্বচ্চন সন হিন্দী সাহিত্যক ‘খাশ্বকরি’ নোকনিক ঐ প্রকাবক পদ্য প্রাবংভিক খা মাধ্যমিক শিক্ষামে রিশেষ নোকপ্রিযতা প্রাপ্ত কএনে খছি।
“ঠ্ঠৈএ নে কহিযো স্বব-তাব
হ্খএ নে কহিযো জিনগী র্রেহান।”
জখনে জীরনমে গতি মতি খা নিযতিক ত্রিরেণী খনগ-খনগ ভঽ জাগত খছি তঁ জীরন উঁদাসীন খা পবিণাম কষ্টদাযী, তঁএ করিক ঐ উঁক্তিকেঁ রিচাবক সংগ-সংগ শিক্ষা মূনক সেহো মানন জাএ। গতি র্রিন্ন পহিনে জিনগী খক্রিয ফেব খকর্মণ্যতা খা পবিণাম জিনগী র্রেহান, খংকগণিতীয খাধাবপব দৃষ্টিকোণকেঁ প্রমাণিত

कएल गेल जे सर्वथा उपयुक्त लगैत अछि।

जीवन जीवाक कलासँ संबंध काव्यमे प्राय: कवि लोकनि स्वयंकेँ नायक बना कऽ कविता लिखैत छथि। हिन्दी साहित्यमे जानकी वल्लभ शास्त्री आध्यात्म दर्शनक सम्मिलन- "मेरे पथ में न विराम रहा" सँ कएलनि तँ मैथिली साहित्यमे कालीकान्त झा बूच- "मृगी जकाँ हम काँपि रहल छी, झाँखुरसँ तन झाँपि रहल छी" रूपेँ समाजक रुग्न दशासँ बँचि कऽ जीबए चाहैत छथि। सदा जगदीश ऐ समाजक मैलकेँ साफ करबाक लेल उद्विग्न छथि। 'धोबी घाट' कविता कोनो मैल वस्त्रक मूल नै, बल्कि समाजक छुत-छुत्यपर लागल कीचड़केँ साफ कऽ कऽ ऐ सँ बचबाक प्रेरणा थिक-
"धोअबी घाट ओ घाट छी,
पाप धुआ धुल बनैत बहैत
अछोप-छोप बाति दिन
बगड़ा सान चढ़बैत बहैत"
मैथिली साहित्यमे गीतिक त्रिभाषीय नाटक, प्रीतिक महाकाव्य अर्थहीन बैवागी काव्य शास्त्र कखनो विनोदी, कखनो चलन्त कविता आ कखनो नाम-गाम आ ठामक पद्यसँ भरल पद्य संग्रहक प्रधानता अछि किएक तँ जनमानस जे लिखत वएह लोकक पाथर मानल जाएत। तँए अभावक ऐ साहित्यमे नीतिशास्त्रसँ सन्निहित पद्याभावकेँ 'धोबी घाट' सन कविता पूरा करैत अछि-
उना-पका बातिकेँ
साने सान सूर्ज स्वड़कैए
सुख आबामक पहब छी न

হঁসি–হঁসি বাতি দিন ঝাড়ৈএ।
কোনো আরশ্যক নৈ জে জাজ্রল্যমান নক্ষত্রক কর্মসঁ নিকসৈত প্রভারক সভটা পবিণাম উত্তমে হএত। সূর্য জ্যোতিক প্রতীক ছথি, মুদা কখনো তঁ হিনকো কিবণ জীর–অজীরকেঁ উনা–পকা দৈত অছি তত্পশ্চাত্ অন্হাব। হিনক প্রতিভা আ কর্মপব করিকেঁ কোনো সংদেহ নৈ তঁএ ভলমান্বসোক অধলাহ কর্মক রিবোধ কবরাঁক চাহী। ঐসঁ সমাজমে দৃষ্টিকোণক রিজয প্রাসংগিক হএত। রৃক্ষ মাত্র গগনগামী..... একব এক দৃষ্টি একটা উদ্দেশ্য হোএছ পবংচ শোব রিচননসঁ ভবল নক্ষণ বখৈত অছি। এক ধ্রনি অকাস আ দোসব পতান প্রগ্নতিক বংগ রঁসিক গিবহ জকাঁ প্রত্যেক দৃশ্যপব পটাক্ষেপ। নাটকক অংকমে একসঁ রৈসী দৃশ্য হোএরাঁক চাহী, মুদা প্রগ্নতি অর্থাত্ রিধাতা অপন প্রত্যেক অংককেঁ অনগ–অনগ দৃষ্যসঁ আরঁদ্ধ কঽ রিরিধ নাটকীয পবিদৃশ্যক মংচন কবৈত অছি। ঐ পদ্যক প্রত্যেক ছংদমে রিশেষ অর্থ ঝাঁপন অছি জে পাঠকক মস্তিষ্কপব জ্যামিতিক দরাঁর অরশ্য রঁনাএত–
জহিনা ডাবি করোটৈন নীচী
খোঁধিতে খোঁগচা পকড়ৈএ
নিচ্চাঁ–উপব সসবি–সসবি
অপন–অপন রাঁট পরৈএ
ভাবতীয সংস্গ্নতিক সংগ ও দুর্ভাগ্য বহল জে পবম্পবারাদী দৃষ্টিকোণক কিছু অরাংক্ষিত তত্রসঁ নোক পবেশান তঁ ছথি মুদা কিযো ওকবা সমাপ্ত হোমএ দেরঁএ নৈ চাহৈত ছথি। 'কাটব প্রথা' ঐ রূপেমে সভসঁ নির্ঘিষ্ঠ মানল জাএ। 'সাস্ব–প্বতোহ্ রার্তা'মে করি ওনা স্পষ্ট রূপেঁ কাটবক পবিণাম স্বরূপক উদ্ভাধন নৈ

कएने छथि, तथा परक बेटीकेँ बेटीक रूपमे स्वीकार करब स्वसंस्कृत समाजक लेल असहज होइछ। ई विडंबना जे अपन संतानक संग जे सिनेह रहैछ ओ दोसराक संतान जे आबि आत्मसात भऽ गेल छथि तिनका लेल असंभव। ओना एकरा स्वार्थ सेहो नै मानल जा सकैछ किएक तँ प्रत्येक आवश्यकता व्याप्त बेटीसँ बेसी होइत छैक। एहिमे प्रतिद्वन्द्वताक भाव रहैत अछि। मनुक्खकेँ अपन अधिकार तँ मोन रहैत अछि तथा कर्त्तव्यबोधक ज्ञान जिनकामे नै रहैत हुनका पारिवारिक शांतिक स्वप्न देखनाइ सर्वता अनुचित आ भ्रामक।

प्रतिद्वन्द्विता ई खेलमे सासु-पुतोहु दुनू दोषी तथा सासुक दोख बेसी किएक तँ आनक बेटी अपन घरमे अनलाक बाद हास-परिहास सासुएक तरफसँ पहिने निकलबाक संभावना रहैत छैक-

ओसार पुरबिया बैसि सासु

पड़ल पुतोहुकेँ देल धाही

अकड़ि कऽ मकड़ि बाजलि

देहक पानि लऽ गेल हाही।

करबोपर जौं मृत्युका फेंकब तँ प्रत्युत्तरमे पाथर अवश्य भेटैत, किएक तँ किछो-करबोसँ कम नै। अधनाह देखौंस संस्कार मनुक्खमे पहिने अबैछ तँ नरकी कनियाँ कोना चुप रहतीह-

पानियो तँ परवि देहमे

पीबि गेल सभटा पालि

की करब, ह्विते कहाँ अछि

कहाँ पड़ल छी जानि....।

ऐ प्रकारक आरोप-प्रत्यारोप ग्रामीण समाजमे

ৰ্বোৰ্বি দেখএ মে খ্ৰৈত খ্ছি। পবিণাম পবিণাসক সংগ-সংগ খ্পন দৈনন্দিনীমে নাগনি প্বতোহ্ সাস্ববমে ৰ্সনি ননদিকেঁ ৰীচমে সেহো নঽ খ্ৰৈত ছথি।
করিক কহ্ৰাক উঁদ্দেশ্য ছন্হি জে স্রস্থ জড়া সঁ স্রস্থ বৃক্ষক রিকাস হএৰ্ প্রাসংগিক তঁএ সাস্বকেঁ খ্পন মর্যাদাক স্মবণ বাখি প্বতোহ্ক সংগ ওহনে ৰ্বৈৰ্হাব কবৰ্াক চাহিযনি জেনা ৰ্বৈটীক সংগ কবৈত ছথি। প্বতোহ্কেঁ সেহো সাস্বমে খ্পন মাণক ছবি দেখৰ্াক খ্বরশ্যকতা ছৈক।

প্রযোগাত্মক ৰূপেঁ খ্বৰ্ ঐ প্রকাবক খ্নটৈন ত্রিযা-কনাপক সংভারনা ক্ষীণ ভঽ বহনৈক কিএক তঁ পনাযনরাদী সমাজমে সাস্ব-প্বতোহ্ এক সংগ বহতীহ, ৰ্বিনে খ্রসবি ভেটৈছ। জগদীশজী গামমে বহি কঽ সাহিত্য সাধনা কঽ বহন ছথি তঁএ ঐ প্রকাবক ঘটনা গাম-ঘবমে ঘটিত হোণত দেখানাণ করিক নেন কোনো খ্জগ্বত নৈ। করিতাক ৰ্বিম্ৰ্ খ্বা শিন্পসঁ ৰ্বেসী মহত্রপূর্ণ খ্ছি করিক উঁদ্দেশ্য। এ দৃষ্টিসঁ জোঁ দেখন জাএ তঁ করিতা নীক ছৈক। ভাষা রিজ্ঞানক ৰূপমে খ্দ্ভুত কিএক তঁ খ্পন গদ্য জকাঁ এ ঠাম জগদীশ ধাহী, খ্কড়া, মকড়া, হাহী, নসিযা, নিচেন সন ন্বপ্ত হোণত শৰ্ব্দ সভসঁ পদ্যকেঁ ৰাঁছিত ৰূপেঁ ৰ্বোবি করিতা শ্রিরণীয ৰ্না দেননি।

"ৰ্বৌড়া এন ৰ্বটৈহী" শীর্ষক করিতা ঐ সংগ্রহক সভসঁ নীক ৰ্বিম্ৰ্কেঁ কেন্দ্রিত কঽ কঽ নিখন গেন খ্ছি। জীরন দর্শন খ্বা খ্বাধ্যাত্মক তাত্ত্বিক রিরেচন খ্ত্যন্ত রিস্মযকাবী ছাযারাদসঁ ভবন মানন জা সকৈছ।

'पवदा'मे ओझबाएल जिलगी जकाँ रर्त्तमान मल्बक्खक जीरल भऽ गेल अछि। प्रयोगात्मक रूपेँ आरो कोरबक कलियाँक ओ रूप कतए जकब कल्पना करि कएले छथि, मुदा गामक समाजमे एखलो कोरबमे ल्बकाएल कलियाँ भेटैत अछि। कोरबक कलियाँ तँ मर्यादाक अल्बपाललक लेल ल्बकाएल छथि मुदा कर्म पथपव रिचवण करैरेना मल्बक्ख कष्टि कऽ किएक बहि बहल अछि ? जे किछु लै जालि बहल अर्थात् अशिक्षित मूक अलन्तआबसँ सामर्थ्यशील मल्बक्ख किएक तकबाव कऽ बहल छथि ? अपल-अपल कर्मक संग-संग माए-बाँपक कर्म ओ धर्म संतालक सफलताक बाँटे उँजज्बल करैत अछि। ऐठाम धर्मक भार संप्रदाय लै अपितु मालरीय मूल्यक सम्यक अल्बपालल मालल जाए। रिलगित पथपव जौं चवण बाखल जाए तँ बुंगध रिलेलाग स्राभारिक आ जखल बुंगध रिला जाएत तँ बाँटे कल्बष अरश्य भऽ जाएत-

बाँटे रिला बुगध
बाँटे रिसबि गेल
जेम्हब जे चलल
तेम्हबे पहुँचि गेल...।

कर्मक रीआ जा ं सत्र तम ओ बज बस बससँ रोबल लै जाएत तँ 'मलोकामला' भ्रम रलि अपल सिद्धिक आशीमे ल्बप्त अरश्य भऽ जाएत।

कोलाो बचलाकाव जौं स्रयं लायक रलि करिता लिखैत छथि तँ कोलो अचबज लै, मुदा रैसीठाम करि स्रयंकेँ बीति ओ प्रीतिक लायक रला कऽ करिता लिखलाहेँ ओ रबोरबि मैथिली साहित्यमे देखएमे अरैत अछि। अपल आलोचला कबरो सरहक लेल संभर लै, ओला

কতৌ–কতৌ হাস্য বসক করিতামে করি নোকনি খপন মজাক খবশ্য উঁড়ৈরঁত ছথি হ্মদা এনা কবৰ করিতাকেঁ নোকপ্রিয ৰঁনাএৰঁ মাত্র মানন জাএ। ‘খপনেপব হঁসৈ ছী’ শীর্ষক করিতা মূনত: রত্তমান শিক্ষা প্রণানীপব করিক খানোচনাত্মক কার্য শৈনীমে প্রহাব থিক। স্রযঁকেঁ নাযক ৰঁনা কঽ চোবিক ডিগ্রীক খাধাবপব ‘শিক্ষা মিত্র’ক নৌকবী প্রাপ্ত কববাঁমে হেব–ফেব দেখাওন গেন খছি। গামমে বহি কঽ রিহাবক শৈক্ষণিক প্রণানীপব কট্টু টিপ্পণী ন্যাযোচিত। শাসন তংত্র কতরোঁ মজগূত মানন জাএ হ্মদা জখন ৰেঁৰঁস্থে ভ্রষ্ট, তখন গমানদাবীক দাৰাঁ কেনাগ ভ্রামক সিদ্ধ হোগত ছৈক। সাম্যরাদী রিচাবধাবাক খক্ষবশ: সম্পোষক করি কোনো বাজনৈতিক দন রিশেষপব টিপ্পণী নৈ কেনে ছথি। খর্থনীতি জৌঁ ভ্রামক হ্খএ তঁ ঐ নেন সম্পূর্ণ সমাজকেঁ দোখ দেন জাএ। নোক জখন স্রযং ভ্রষ্ট ভঽ গেন ছথি তঁ প্রজাতংত্র রা শাসন তংত্রপব দোখ দেৰঁ খন্বচিত– নাখে রূপৈযামে

দশো কট্টা জমীন গমেনৌঁ

গ্বরু দক্ষিনা দেনে রিনা

গ্বরু ভাগক ভাব উঁঠেনৌঁ.... ।

ওনা ভাবতীয পবিদৃশ্যমে রিহাবক বাজ্য ৰেঁৰঁস্থা ভনহিঁ স্তবীয মানন জা বহন হ্মদা শৈক্ষণিক ৰঁহানীমে যোগ্যতমক উঁত্তবজীরিকামে ধন ৰঁন খা রুচএ্ৰঁন ৰেঁসী ভাবী পড়ৈনক, ত্তানক মোজব এখনোঁ নৈ ভেটি বহন। পাঁচ হজাবক নৌকবীক নেন মূন্যরান রস্বন্ধবাকেঁ ৰেঁচি নোক নৌটবী নগা বহন ছথি। একব দূ গোট রুপবিণাম– পহিন হ্নষি কার্য জে হমবা সমাজক বীঠ থিক তকব মহত্র সমাপ্ত ভঽ বহনৈক খা দোসব

प्रतिभाक पलायन अरश्यभावी किएक तँ साधनहीन प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति ऐ भ्रष्ट मंचपर कोना आसीन होथि–

विन्न धनक धनिक जहिना
ताम–झाम देखबैए
देखि–देखि आँखि कचुआए
नाजे आँखि झपै छी
अपने पर हँसै छी..... ।

विचारमूलक पद्य देशकालक दशाक एक रूपेँ सत्यशः चित्रण करैत अछि । चारूकातक परिदृश्य हेहर भऽ गेलैक, ऐ दशामे सोझ बाँटे अकल्याणकारी लगनाग कोनो अन्वचित नै । चोटगर तीक्ष्ण वान चला कऽ भ्रष्ट लोक अपनाकेँ सत्य साबित करबामे कोनो अर्थे नै हुसैत अछि किएक तँ धनक संग गानक जमाना एक तँ चोरि आ दोसर सीना जोरि । ऐ कटु सत्यकेँ साहित्यमे कोना स्वीकार कएल जाए ओ तँ भविष्यक गप्प छदा यात्री आ आरसी जकाँ अपन लेखनीक संग जीवनमे सम्यक साम्यवादी जगदीशक ओ कविता समाजक लेल दिशा निर्देश कऽ रहलैक । ओना ओ अलग बाँत जे वर्त्तमान परिदृश्य फ्रांसक वाज्यक्रांति जकाँ नै जखन रूसो आ वाल्टेयरक आखर–आखरसँ समाजमे क्रांति आबि गेल छल ।
आशावादी दृष्टिसँ जौं सोचल जाए तँ साहित्य समाजक दर्पण अवश्य प्रतीत हएत, छदा प्रत्येक पाठक एकर सम्यक् तत्वकेँ जौं अपन जीवनमे उतारि लेथि तखने ओ संभव मानल जा सकैछ ।

সমাজক মানে সৰ্হক দৃষ্টিকোণ আ আচাব–রিচাবক সভ গোষ্ঠ রূপ র্যাপক অর্থমে মংথন কএন জাএ। জগদীশজী 'ধোৰ ঘাষ্ট' করিতাক ৰাদ 'ধোৰি ঘাষ্ট' করিতা সেহো নিখনে ছথি। 'দৰ্শন' কোনো পোথী পঠ়ি নৈ উঁপেন্ন কএন জা সকৈছ, ঐ তঁ জীরনকেঁ দেখৰাক অপন দৃষ্টকোণ হোগত অছি। উঁদযনাচার্য কোনো কাশী আ প্রযাগমে বহি 'ন্যায কস্বমাংজনি' সন পোথী নৈ নিখনে বহথি। বাজপূত কানক 'কবিযন' হ্নক সাহিত্য সৃজ্নতাক গহরব ছননি। তঁএ জগদীশসঁ ষ্টেম্স নদীক সভ্যতাক আধ্নিক রিম্ৰক আশ কেনাগ সৰথা অন্বচিত হএত কিএক তঁ মিথিনাক খ়ষ্টী গাম 'ৰেবমা' হিনক সাহিত্য সাধনাক কেন্দ্র রিন্দ্ ছন্হি। দৰ্শনক তীন রযস হোগত অছি– নীতি, শৃংগাব ও রৈবাগ্য। সামাজিক জীরনমে বহনিহাব মন্বক্খক নেন তীনূক সম্যক কান ও ভার হোগত ছৈক। জীরন ক্রমমে সংত্তনন ৰনএৰাক নেন তীনূ রযসসঁ অনগ–অনগ সত্র বজ ও তমো গ্ণ ষ্টপকৈছ। 'সাত্রিক ভার' করিতা সত্র গ্ণকেঁ আধাব ৰনা কঽ নিখন গেন অছি। সাত্রিক ভার রিবাসতপব আধাবিত হোগত ছৈক। জাহি ঠামক ভূমি সাত্রিক, হরা পানি সাত্রিক মানে নৈসগিক সংস্কাব সাত্রকতাসঁ ভবন হোগছ ওগঠাম একব প্রভার অরশ্যংভারী হোগত ছৈক। নক্ষ্য, সংকন্প আ দৃষ্তা সেহো মন্বক্খকেঁ সম্যক শাশ্রত কর্ম দিশ নঽ জাগছ, ঋদা ঐ নেন সংস্কাব অন্বৰংশিকী আদিপব র্যক্তিত্রক রিচাব িনর্ভব হোগছ। স্বভার–কভার আদি সংগহি চনৈত অছি ঋদা ঐ নেন দৃষ্টিকোণকেঁ জাহি রূপসঁ দেখন জাএ রএহ রূপ দৃষ্টিগোচব হএত। করিতাক ভার দৰ্শনপব আধাবিত সবন শৰ্দমে ঋদা

रिचाव रोँधक नेन गूढ़ ़ अछि तँए एकवा रेँशी नोकप्रिय नै मानन जाए पवंच साहित्यिक रिकासक नेन आ जीरन–दर्शनिक नेन युक्तिसंगत करिता थिक।

दिर्‌य प्वरुष ओ जे सोनहे कनासँ पविपूर्ण होथि। 'दिर्‌य शक्‌ति' शीर्षक पद्य सवन रूपेँ पठ़नाक रॉद किछु रिशेष नै देखरॉमे अरेँछ ह्मदा जेना करिक र्‌यक्‌तित्‌र अर्न्तह्मखी तहिना पद्यमे गूढ़ ़ वहस्‌य ऋ़ॉपन छैक। दिर्‌य शक्‌तिसँ पूर्ण होएरॉक रॉद मन्वजमे प्रखव ज्‌योतिक आरवण पनकि जाग़त अछि। नीक–अधनाह रिचाव संस्‌कावसँ उँत्‌पन्न होगत अछि ह्मदा गंगा मानें पविरत्रताक पविचायक संस्‌थ्रतिसँ आरॅद्ध जनधावाक कोथिमे सर्रहक नेन समान स्थान। जग भूमिपव वस्वदेर रिवाजथि रएह वस्वधा....... ।
नन्‌द आ वस्वदेरक प्रसंग तँ रर्तमान सामाजिक पविदृश्‌यमे 'उँपहास' जकाँ भऽ गेन अछि ह्मदा करि आशोरादी छथि.....
पाँचम कना रॅनि जे रीआ
मन्वज मन रिवजैए
डेगे–डेगे डगवि–डगवि
सोनहम कना पऱैए...
जगदीश जीक जे कार्‌य सृजनता ओ र्‌यंगनाक रिशेषता छन्‌हि ओ थिक हिनक आशोरादी सकावात्‌मक दृष्टिकोण। अपन पद्यमे कतौ करि सामाजिक दशोसँ निवाश नै छथि। कानक अकानकेँ अपन पद्यमे देखरैत तँ छथि ह्मदा ओहिसँ उँदिग्‌न नै।
'उँड़ ़ि आएन चिड़ ़ै' करितामे रर्त्तमान मानरक मनोरृत्ति उँग्ननि नेखनीसँ करिताक रूपेँ उँल्लृत कऽ

करि पलायनवादपर तीक्ष्ण प्रहार कएलनि अछि। ऐ पलायनमे मात्र अपन माटि सँ पलायन नै अपितु संस्कार आ मानवीयमूल्यक पड़ाइन सेहो देखाएल गेल अछि। 'चिड़ै'क उदाहरण मात्र करिक छायावादी दृष्टिकोण छन्हि, कचोटि तँ संस्कृतिक परावरकेँ मानल जाए। जे चिड़ै अपन डीहो-डाबरकेँ बिसरि स्वार्थ आ कृत्रिमताक नहरिमे जतऽ घोघ भरतै ओतहि वास करत ओहि चिड़ैक मधुर स्वरसँ मूल समाजकेँ कोन काज-

ओहन स्मृति स्मृते की
जे मने मन घुरिआगत रहैत
पसरि नै पबैत जे कहियो
तबे-तब खिआगत रहैत....।

करिसँ बेशी समाजक लेल विडंबना जे बाटैसँ भटैकल बाटैही अपन मूल बाटपर श्रद्धा तँ व्यक्त करैत अछि, म्दा जग पथमे पहिल बेर उदयापन आदि नक दर्शन होगत अछि ओग पथपर फेर घुरब पथ भ्रष्टैक लेल असंभव जकाँ लगैत अछि। अपन मूल संस्कारक परावर करब उचित नै मात्र स्मृतिसँ मूल माटिमे माहुत्व कोना उपेन्न हएत। तँए 'पलायन' कोनो रूपेँ उचित नै।

मिथिलाक माटि-पानिसँ फलैत-फूलैत हिन्दीक चर्चित उपन्यासकार फनीश्वर नाथ रेणु आँचलिक बनि गेललि। जौं मैथिलीक गप्प करी तँ कथाकार तँ कथा जगतमे ललित, राजकमल, धूमकेतु, फमार परल आ कमला चौधरी सन प्रांजल आँचलिक कथाकार भेल छथि म्दा आँचलिक कार्य जगतमे समग्र सामाजिक दैनन्दिनीककेँ

ছূরৈঁত করিমে যাত্রী (চিত্রা) ও আবসী প্রসাদ সিংহ (সূর্যহ্মখী)ক পশ্চাত্ জগদীশ প্রসাদ মণ্ডনকেঁ মানন জাএ। 'সান–ধাব–ধাবা' করিতা কোনো কৈঁচীক শানপব আধাবিত কার্য বূঁন নহি ঙা তঁ মানরীয মূন্য ও সংরেদনাক শানপব আধাবিত পদ্য অছি–

জে ধাবা সিবজএ গংগা
কমনা কোশী ও মহানন্দা
ও ধাব কহিযা ধবি ঠমকি
মানৈত বহত হুংদা ?

গংগা, কমনা আ কোসীক কিছেবমে বঁসন গাম সভ মিথিনাক পবিধিক ভীতব অবৈঁছ ঐ তবহক উন্নেখ তঁ বঁহ্ত বাস করিতামে ভেটৈত অছি, হ্মদা ঐঠাম 'মহানন্দা'ক চর্চ কহ করি প্ৱরঁবিযা রিহাবক ক্ষেত্র কিশনগংজসঁ আগাঁ ধবিক নোককেঁ আশ্বিস্ত কহ দেনন্হি জে অহুঁ মৈথিনে থিকৌং ? মাত্র পদ্যমে নযাত্মকতা ভববাঁক নেন এনা নৈ কএন গেন। করি মোন ভার্ক হোগত ছৈক, ভারমে বঁহনাগ করিক প্ররৃত্তি হ্মদা মিথিনাক সংস্কাবসঁ ভবন বহনাক বাঁদো ঙা ক্ষেত্র সাহিত্যমে অপচ জকাঁ ছন, তঁএ করিক ভারনাকেঁ সম্মান কববাঁক চাহী।

'জহাঁ ন জাএ ববি রহাঁ জাএ করি'– ঙা রাক্য জে কিযো নিখনে হোথি হ্মদা ঙা সর্বথা রিচাবমূনক অছি। ঐ সংগ্রহক কিছ পদ্য জেনা পপীহাক গীত, রিখধবক বীখ, নংগবকট্ঠ ঘোড়া আদি পঠ়নাসঁ স্পষ্টত: ব্ঁমনা গেন জে ছাযারাদী দৃষ্টিকোণ বচনাকাবকেঁ ছোড়ি সবঁহক নেন পূর্ণত: ব্ঁমবাঁমে নৈ অবৈঁত ছৈক। 'কোগনী' শীর্ষক করিতামে করি চন্দ্রভান্ন সিংহ 'মৈথিনী'ক সবসতাকেঁ স্পষ্ট রূপেঁ পাঠক বা শ্রোতা নগ

পবসি দেনে ছথি ন্দদা পপীহা গীত শীর্ষক পদ্য কোনো চিড়ৈ-চ্ন্দ্রন্নীক স্রবপব খাধাবিত সংস্কৃতি গীত নৈ ঙা তঁ সম্পূর্ণ দর্শন থিক- জীরন-মবণক দর্শন। ধবতী খকাশি, জন-থন কানি-খকানি সন সহচাী রিপবীতার্থক জীরন দর্শন.........

<u>কথা কিবণমে যথার্থরোধ ও নাবী রিমর্শ</u>

–

মৈথিনী সাহিত্যমে সমগ্র রিধাক বচনাক খাধাবপব ডাॅ. ব্রজ-কিশোব রর্মা মণিপদ্মকেঁ পহিন সম্পূর্ণ সাহিত্যকাব মানন জাগত খছি। ন্দদা জৌঁ জন্ম ক্রমাংকক খাধাবপব নির্ণএ কএন জাএ তঁ কাॅচীনাথ ঝা 'কিবণ' পহিন সম্পূর্ণ সাহিত্যকাব ছথি। মণিপদ্ম জকাঁ কিবণজী সেহো সাহিত্যক সমগ্র রিধা উপন্যাস, রানকথা, একাংকী, নাটক, করিতা সংগ্রহ, মহাকার্য, নিরঁধ সংগ্রহ খা কথা সংগ্রহক বচনা কএননি। পবাশিব মহাকার্য নেন সাহিত্য খকাদমী প্ববস্কাব খা 'কথা কিবণ' কথা সংগ্রহক নেন রৈদেহী সম্মানসঁ সম্মানিত

कएल गेललि।

मूलत: कार्यात्मक प्रवृति ओ अभिरूचि राखएबला ई साहित्यकारक पहिल कथा संग्रह 'कथा किरण' सन् 1988ई.मे भाषा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित भेल। सन् 1989ई.मे किरण जीक देहावसान भऽ गेललि। सन् 1991-92 ई.मे बिहार सरकार द्वारा मैथिलीकेँ बिहार लोक सेवा आयोगसँ निकालि देल गेल। जकरासँ ई भाषाक वाचक ओ पाठक लोकनिक मध्य अस्तित्व डगमगाए लागल। फलस्वरूप महाविद्यालय स्तरपर मैथिली पढ़एबला छात्रक कमी भऽ गेल। जकर परिणाम ई भेल जे ई अवधिक किछु आगाँ-पाछाँ प्रकाशित रचनाक ओ महत्व नै भेटैल जकर ओ अधिकारी छल।

'कथा किरण' सम्बन्धत: ई अन्तिद्वन्द्वक सभसँ बेशी शिकार भेल। किएक तँ हिनक ई संग्रहसँ पहिने प्रकाशित किछु रचनाकेँ छोड़ि समाजक विभिन्न ऊँच-नीच, सिनेह-द्वेष आ समन्वयवादकेँ स्पर्श करएबला कथा साहित्य मैथिलीमे नै लिखल गेल छल। जौं किछु कथाकार ई परिधिसँ ऊपर उठबाक प्रयासमे सफल भेलथि तँ मात्र किछुए कथामे। सम्पूर्ण समाजक जर्जर व्यवस्था दिस किनको नजरि पड़बो केललि तँ कतौ-कतौ। सम्पूर्ण कथा संग्रहमे मानवीय मूल्यक अवलोकन कथा किरणसँ पहिने हरिमोहन झाक चर्चरी, मनमोहन झाक अश्रुकण, ललितक प्रतिनिधि, रामदेव झाक एक खीरा तीन फाँक, रमानन्द रेणुक कचोट, रमेश नारायणक पाथरक नाव, धूमकेतुक अगबरान, शेफालिका वर्माक अर्थयुग आदिमे भेटैत अछि परंच ई सभ कथा

संग्रहक सभटा कथाकेँ ऐ दृष्टिसँ सेहो प्रासंगिक नै मानल जाए। प्रयोगवादी कथाकार राजकमल जीक किछु कथा जेना ललका पाग, स्वामिक गाछ, उँपवाजिता आदि मैथिली साहित्यमे अपन रेंछपप आधुनिक रूप लेने प्रवेश तँ कएलक मुदा हुनको किछु कथा मैथिलीनी साहित्यकेँ शिल्प आ प्रयोगवादक विश्लेषणक क्रममे अन्हार घर लेने चलि गेल।

कथा किरणमे 19 गोटे कथा संकलित अछि, अलग-अलग कालमे लिखल गेल ऐ कथा सभकेँ शिवशंकर श्रीनिवासक प्रयाससँ 1988ई.मे भाषा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कएल गेल अछि। आमुख शिवशंकरजी लिखने छथि, जगमे एकटा चर्चित समीक्ष समीक्षक द्वारा आमुखसँ रेंसी किरण जीक मनोदशा आ रचना प्रकाशन करएबाक क्रममे कथाकारपर श्री निवास जीक उँपकार परिलक्षित भेल। वास्तवमे समीक्षा वा आमुख ऐ रूपेँ नै लिखबाक चाही। आमुखमे एकटा कमी आर देखएमे आएल जे श्रीनिवास लिखैत छथि- “किरण जीक प्राबंभिक कथा कथ्यक स्तरपर जतेक धारदार ओतेक स्वन्दर शिल्प नहि।” मैथिली साहित्यक संग ई दुर्भाग्यपूर्ण विडंम्बना रहल जे मानसिक विलासिताकेँ स्पर्श करएबला कथाकारकेँ अग्रगाम शिल्पी मानल जाएत छलहि। वास्तवमे कथाक दू गोटे प्रमुख तत्व छिक- बिम्ब आ शिल्प। बिम्बक अर्थ कोनो घटक लेखाक आ शिल्पक अर्थ ओकर चाव, कोनो आ श्रृंगार- चून पालिश। जौं बिम्ब काल्पनिक तँ शिल्प कल्पनाशील अवश्य हएत। जखन कल्पने करबाक हएत तँ गामक खोपड़ीक कल्पना नै कऽ कऽ आगराक ताजमहलक

कल्पना कएल जाए। किरणजी मात्र एहन अपराध कएने छथि जे आगराक ताज महलकेँ छोड़ि मिथिलाक गामक मचानपर अपन बचनोमे जीवंत रहलाह, तँए 'शिल्पी' नै छथि। साहित्यकार कल्पनाशील होइत छैक, मुदा जौं कखनो लोककेँ धरातलपर आनि कऽ लिखैत अछि तँ यथार्थबोधक विम्ब समाजक सत्यकेँ वृतिचित्रक रूपमे देखैत अछि। किरणजी संभवत: एहन श्रेणीक यथार्थबोधी कथाकार छथि।

पहिलुक कथा 'करूणा' करूणाक नैहरमे स्वच्छन्द जीवनसँ प्रारंभ होइत ओइठाम तक पहुँच जाइत अछि जतए धरि साधारण शिल्पी नै पहुँच सकैत छथि। यामिनीकान्त बाबूक स्वकन्या करूणाक विवाह स्वन्दरबाबूसँ भेल। नैहरक भगजोगिनी कर्त्तव्य पथपर भाइक संग सासुरमे आगाँ बढ़ैत छलि, वृद्ध पितामही सासु आ माइ पिउ विहीन जाउँत नरेन्द्रक संग....। तीन मासक भीतर अजिया सासुक देहावसान आ ओकर दू मास बाद श्रेसन ज्वरसँ पतिक देहान्तक पश्चात करूणा टूटि गेलीह। प्राचीन आर्य संस्कृति जकरा जनभाषामे सनातन कहल जाइछ, रूढ़ि वादिताक आवरणसँ अखन धरि ओझराएल अछि। जे लोक समाजक मुख्य धारासँ कात लागल छथि, ओ ऐ कथा कथित सनातन संस्कृतिक आधारपर संस्कार तँ करैत छथि, मुदा ओइमे ओझराएल नै। ऐ दृष्टिसँ समाजक पछातिक लोककेँ बेसी विचारवान मानल जाए। अगिला लोकमे बाहरी आडंबरकेँ मलराक क्रममे किछु कुव्यवस्था उत्पन्न भऽ गेल। संभवत: ओ कथा सनातनधर्मी ब्राह्मण परिवारकेँ धियानमे राखि कऽ लिखल गेल। भऽ सकैछ कथाकारक

ऐ कल्पना ह्अथनि, मुदा ऐ प्रकारक घटना वास्तवमे एखन धरि होइत अछि जे सवर्ण परिवारक वाल विधवा स्वकन्याकेँ सेहो पुनर्विवाह करबाक समाजमे मान्यता नै देल, जइ समैमे ई कथा लिखल गेल ओइ समैमे स्थिति तँ आर दयनीय छल।

'करूणा' कथा विषम परिस्थितिमे आगाँ बढ़ैत अछि। एकटा बालिका नरेन्द्रकेँ तकैत करूणा घर पहुँचलि। नरेन्द्र अपन मातृकमे छल। करूणा एकसरि छली। बालिका चकित होइत प्रश्न कएललि, 'एकसरि डर नहि लगैत अछि। अपन जीवनकेँ जीवन्त लहासक रूपमे करूणा राजलि- ककर डर वास्तवमे भूत-प्रेत एकटा भावनात्मक रूपसँ शून्य प्राणीक लेल डरक साधन नै बनि सकैछ। की छन्हि जे चोर आओत ? मुदा बालिका प्रश्न कएल जे जौं अपने उठा लिए ? ऐ प्रकारक प्रश्नसँ करूणा स्तब्ध भऽ गेली। एकटा नारीक मर्यादा समाजक दृष्टिमे जे महत्व राखए, मुदा ओकरा लेल सर्वोपरि। समाजक उदाहरण यएह लेल जे ऐ समाजक नीच लोकसँ लऽ कऽ विचारवान वर्गक किछु लोक सेहो अबलाक चरित्र हननसँ बाज नै आएल अछि। करूणा भविष्यक डरसँ काँपि अपन स्वरूप रूपकेँ भयावह बनएबाक लेल उद्धत भऽ गेली। परिस्थिति सेहो संग देलकनि जे बच्चाबाबूक माथ परक चाम उज्जर देख करण पुछलनि तँ पता चललनि जे सल्फ्यूरिक एसिड अर्थात् तेजाप प्रयोगशालामे पड़ल गेल।

बच्चाबाबूकेँ अपन घरसँ विदा करैत देवी तथापर

বাখন স্নক্ষ্যবিক এসিড খপন ঋঁহপব ঠাঠ্ া কৰুণা ৰূপরতীসঁ জীরিত পিচাশিক ৰূপমে খারি গেনীহ ? খার প্রশ্ন উঁঠৈত খছি জে কৰুণাকেঁ এনা কএনাসঁ কী ভেঁটৈন ? ভেঁটৈরাঁক প্রশ্ন তঁ নৈ ঋদা হ্নক চবিত্রহবণক খাশংকা হ্নকা মোনে সমাপ্ত ভ২ গেন। জৌঁ একটা মাহ্ন-পিহ্ন রিহীন রাঁনকক দাযিত্র নৈ বহতনি তঁ খাত্মহত্যা সেহো ক২ সকৈত ছনীহ। যএহ থিক দেরী ভক্তিক কেন্দ্র মিথিনামে দেরীক দশা। নাবী ি রমর্শকি একৰূপক যথার্থচিত্রণ কিবণজী কএননি। কনেক কমী জে কথাক প্রাবম্ভ সবন শৈর্দমে সেহো কএন জা সকৈত ছন ঋদা সাহিত্যক প্ববা ৰূপক শৈর্দমে কথাকেঁ প্ররেশ কবা ক২ কিবণজী ওগ রিচাববান সমীক্ষকক দৃষ্টিমে খপন স্থান রাঁনএননি জনিক মান্যতা ছন্হি জে ভাষা উঁচ্চ কোঁটিক হ্খএ, জকব খর্থ সভ মৈথিন নৈ নগা সকথি ও রাস্তরিক বচনা থিক। ভ২ সকৈত খছি জে কথাকাব ঐ প্রকাবক শৈর্দ সভসঁ কথাক সহজ ৰূপেঁ কএনে হোথি, রা মূনত: করি বহনিহাব কিবণ খপন কার্যাত্মক প্ররৃতিকেঁ নৈ ঝাঁপি করিতাক রিম্রঁকেঁ কথাক ৰূপ দ২ দেনে হোথি। জৌঁ ওা কথা কার্য বহিতএ তঁ মৈথিনী সাহিত্যক নেন রিস্মযকাবী ক্ষণ হোগতএ জখন কৰুণা.... মহাকার্যক নাযিকা রাঁনি মিথিনাক মানস পটনপব রিচবণ কবিতথি। দোসব জে কনেক নকাবাত্মক রিন্দ্ ভেঁটৈন ও খছি কৰুণাক খপন খাভা নষ্ট কববাঁক দৃষ্টিকোণ। যথার্থরোঁধী কথাকাবকেঁ খগঠাম ঞাঁতিরাদী দৃষ্টিকোণ স্পষ্ট কববাঁক চাহিযনি, ঋদা কিবণজী সন সিদ্ধহস্ত বচনাকাবক সোচ সেহো সমাজমে ঞাঁতি নৈ সোচি সকন।

हम सभ मिथिलामे बसैत छी, एकटा उँतर आधुनिक सोच की करैत जाए आधुनिक दृष्टिकोणसँ दूर मिथिला.... जखनो प्रवल बिधवाकेँ पुनर्विवाह की करैत जाए कोनो आन कन्याक विवाह संस्कारक ऐहन नै बनाओल जाइत अछि। फ्रांसक राज्यक्रांति हुअए वा यूरोपक धर्म सुधार आन्दोलन सभमे साहित्यक अपन महत्व अछि, मुदा ओ आर्यावर्त्त थिक अखनो साहित्य मनोरंजन मात्रक साधन मानल जाइत अछि, प्रेरणाक स्रोत नै। वास्तविकता सेहो ठीक जे साहित्यकारकेँ अपन लेखनीक दृष्टिकोणकेँ अपन जीवनमे सेहो जोड़ि देबाक चाही, नै तँ समाज मान्यता कोना देतनि वा ओ साहित्य प्रेरक कोना हएत? किरणजी करुणा सन दृष्टिकोण रखैत हेताह किएक तँ हुनका जन्म अही समाजमे तँए क्रांतिवादी नै बनि 'करुणा'क लाशे देखा देलनि। ओना प्रकारक लाशे जे जगसँ लीक मृत्यु। मुदा सम्यक सोचबना किरणजी केँ अखनो कनेक क्रांतिवादी बनि करुणाक पुनर्विवाह देखएबाक चाहियनि। यथार्थादोषी साहित्यकारकेँ सेहो समाजमे विचार उँपेन्न करएबाक लेल क्रांतिवादी बनब साहित्यक लेल अनिवार्य नै तँ आडंबरकेँ समर्थन करएबना ऐ प्रकारक साहित्यकेँ पढ़निहार लोक दोष साहित्यकारेपर देत।

दोसर कथा 'एहि चारि खूनक खोज केनिहार के? ' अर्थनीतिकेँ धियानमे राखि कऽ लिखल गेल। कथाक प्रारंभमे कथाकार ब्राह्मणवादी व्यवस्थापर कनेक कटाक्ष कएलनि, 'पंडित जे कहथि से करी मुदा जे करथि से नहि करी' अर्थात् अग्रसोची समाजक धर्मपालक जातिक

কর্ম ঋা কথনমে ভিন্নতা ঋছি। রাস্তরিকতা সেহো ঋছি পঁডিত রিদ্যাধ্যযন ঋা নীতি ঋধ্যযনক ঋাধাবপব উঁচিত রচন তঁ ঋপন হ্মখসঁ রজৈত ছথি, হ্মদা মাত্র হোসবাক নেন ঋপন নেন নৈ।

এে কথামে সেহো একটৌ সত্কর্মী পবেমা ঋপন স্রাভিমানক সংগ জীরন তঁ প্রাঁবভ কএনক হ্মদা সম্পতিযাসঁ রিরাহক রাদ সাধনহীন পবেমাক স্রাভিমান পবিস্থিতিরশে ডগমগা গেন। ঋপন নেনাকেঁ জীরিত বখরাঁক নেন হন্বঋাগক দোকানমে কিছু ভোজন সামগ্রী তকৈত পকড়ন গেন। প্বনিস ঋপন কাজ কএনক একটৌ ভোজন চোবি কববাঁক প্রযাস কবৈরঁনা চোবকেঁ ডকৈত রঁনা কঽ সাতরর্ষ কঠোব কাবারাস দিঋা দেনক। ন্যাযানযমে পবেমাকেঁ ন্যায নৈ ভেটৈন কিএক তঁ ওকব গপ্প স্বনত কে ?

পবেমা জহনসঁ ছূটৈন তঁ ঋর্থহীন পবিরাবক সভ জন সমাপ্ত...... ।

ঋর্থনীতিক ঙা কথা সমাজক ঋঁতিম র্যক্তিপব প্রাবংভ ভঽ ওকব ঋঁতসঁ সমাপ্ত ভেন। কিবণ জীক ঙা কথা যথার্থরৌধী মানন জা সকৈত ঋছি। ঋগমে ঞাঁতিক কোনো গ্বজাগশ নৈ কিএক তঁ শিক্ষা ঋা ভৌতিক সাধনসঁ রিহীন মানরঁ সবকাবী তংত্রক রিরুদ্ধমে কোনা ঋান্দোনন কবএ, রাদমে পবেমা কতএ জাএ কিএক তঁ ও রিক্ষিপ্ত ভঽ গেন।

‘কান ককবো ছোড়ত’ একটৌ বাজপবিরাবক কথা থিক। মহাবাজ দীর্ঘরাহু ঋপন মৃত্যকানমে ঋপন বাজ্য ঋা ঋপন পাঁচ রর্ষক রানক স্বন্দব ঋপন ছোটৈ ভাএ রীববাহুকেঁ সৌঁপি ঐ সংসাবসঁ রিদা ভেননি।

কানান্তবমে রীবরাহ্ খপনে রাস্তরিক বাজা কহএরাঁক নেন খপন ভাতিজকেঁ মাবি দেননি। ওা দৃশ্য রীবরাহ্‌ক প্বত্র শঁকব দেখনক খা পিহ্নন্তা রঁনি গেন। শঁকবক স্ত্রী বাধা দোসব পড়ি সী হ্যরক বমেশসঁ প্রেম কবৈত ছনি, ও সেহো 'মহাজনোযেন গত: স পংথা'ক খাধাবপব শঁকবক হত্যা কহ দেনথিন। খংতমে কথাকাব ওা প্রশ্ন ছোড়ি কথাক ওতিশ্রী কএননি– 'কান কী বাধাকেঁ ছোড়তনি ? রাস্তরমে একবা কথা নৈ মানন জাএ ওা থিক কথাকাবক রিবাষ্ট জীরন দর্শন ও শৈক্ষণিক যোগ্যতাক একটা চিত্র। ওতিহাস সাক্ষী খছি ধননোন্বপতা ও বাজপদক খাশমে কতেক শাসক সংবঁধক মর্যাদাকেঁ ি রসবি গেন ছনথি। নোভ পাপক কাবণ হোওছ। নোভ মানী খপন হ্বনরাবীক হ্বনসঁ সেহো কবৈত খছি, একটা পতি খপন পনীক সৌন্দর্যসঁ সেহো কবৈত খছি হ্মদা ও ি থক মর্যাদাপূর্ণ খধিকাবক নোভ। খমর্যাদিত ও খরাঁছিত নোভক পবিস্থিতিমে নোক খপনে নাশ কবৈত খছি। প্রনাপ, সমাজক চিত্র, ধর্মবনোকব, চনটা, জাতি পাঁতিক জাড়ি খাদি কথা সেহো সমাজক খগ্রখাসনপব রৈঁসন নোকক সমাজক খংতিম র্যক্তক প্রতি দৃষ্টিকোণকেঁ স্পষ্ট কবরৈত খছি। ঐ প্রকাবক কথা জগমে সম্পূর্ণ সমাজক স্থিতিক চর্চ হ্খএ ননিত খা জগদীশ প্রসাদ মংডনকেঁ ছোড়ি কিবণ জকাঁ কেও নৈ কএনক। হ্মদা সভটা কথা যথার্থচিত্রণ তঁএ শ্রীনিরাসজী হিনকা শিন্পীক সংজ্ঞা দণমে সংকোচ কএননি। রাস্তরিকতা খর্থাত্ ওজোতসঁ ডব কন্পনা খর্থাত খন্হাবসঁ প্রেম মৈথিনী সাহিত্যক প্ররৃতি বহন ছৈক তঁএ কিবণকেঁ ও স্থান নৈ ভেটৈন জকব ও খধিকাবী ছথি। ঐ সংগ্রহক সভসঁ রিনক্ষণ

কথা থিক– মধ্বমনি। খপন সাহিত্যক ি কছ চর্চিত কথামে একব স্থান খছি। একটা নিম্নরর্গীয সমাজক ফাঁহজোবি হ্মদা স্রস্থ খা কর্মশীন নাবী মধ্বমনি খপন শেবীবসঁ খসমর্থ পতিক প্রতিদাযিত্র বখৈত খছি। মধ্বমনিক কঠোববাণীসঁ উদ্বিগ্ন ভহ ওকব পতি মোচন ঘবসঁ পড় া গেন। মধ্বমনি পোঠি কহ ফেব ওকবা ঘবমে খানি নেনক। সতনা মায জখন মোচনক খানোচনা মধ্বমনি নগ কবৈত খছি তঁ মধ্বমনি সতনা মাযপব তীক্ষ্ণ শর্দরাণ চনা কহ ওকবা চ্প কবা দৈত খছি। 'পিণ্ঠা পহনমান নহ কহ হম কী কবর্ জে ভবি দিন ডেঙরিতে বহত।' রাস্তরমে সতনা মাযক শেবীবসঁ মজগূত পতি খূর্ পিটাগ কবৈত ছন। যএহ থিক হমবা সর্হক সমাজক নাবীক পতিক প্রতি সিনেহ ও খপন পতিকেঁ কিছ কহি সকৈত ছথি, হ্মদা দোসব কিএ কহত ? খগমে খধিকাব খা সিনেহ দ্নূ ভেটৈত খছি।

ঐ প্রকারে রিহনি কথাক ঐ সংগ্রহকেঁ যগান্তকাবী তঁ নৈ মানন জা সকৈত খছি হ্মদা সমাজক রাস্তরিক দশাক রিরেচন খা তর্কপূর্ণ শৈনীসঁ ঙা সংগ্রহ খপন খনগ স্থান বখৈত খছি।

পোথীক নাখ া ং– কথা কিবণ
বচনাকাব– ডা ঁ. কান্চীনাথ ঝা 'কিবণ'
প্রকাশিক– ভাষা প্রকাষন পটনা
রর্ষ– 1988ঙং.

<u>थाश्व करित्रक छ्वदयांतविक किनोन– कनानिधि</u>

महाकरि रिद्यापतिक राद मैथिनी साहित्यमे थाश्व करिक जे श्रृंखना कार्य साहित्यकेँ गतिमान केनक ओगमे रिरिध कावणसँ किछु कार्य प्रतिभा झाॅपने बहि गेन। ओहेन थाश्व करिमे कानीकान्त झा 'बूँच' सेहो एकटा नाथ। थछि। सन् 1934ई.मे महान दार्शनिक उँदयनाचार्यक जन्म ओ कर्मस्थनी समस्तीपुव जिनाक कवियन गाममे जन्म नेनिहाव करि कानीकान्त झा 'बूँच' थपन कार्य साधनाक श्रीगणेश हिन्दी साहित्यसँ कएननि, पवंच किछुए हिन्दी करिताक बचनाक पश्चात थपन मातृभाषामे निखए नगनथि, फेव हिन्दीमे निखबाक कोनो जिज्ञासा नै, कोनो योजना नै। करि था पाठकक मध्य बचनाक थभिव्यक्तिक साधन मिथिना

मिहिर, माटि–पानि आ मैथिली भाषा सन पत्रिका छल। ऐ पत्रिका सभकेँ बन्न भेलापर कविक कविता गामक किछु लोकक मध्य मनोरंजन मात्रक साधन बनि गेल, कविता पन्ना फाटैत आ कविक रचना ग्रम्म। बहुत रास रचना अप्रकाशित बनि लुप्त भऽ गेलनि। जे किछु उपलब्ध भऽ सकल ओकरा विदेहक सौजन्यसँ श्रुति प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कएल गेल। दुर्भाग्य अछि जे कविक मृत्यु 2009ई.मे आ कविता संग्रह 2010ई.मे। एकरा ककर दुर्भाग्य मानल जाए मैथिली साहित्य वा कविक एकर निर्णए पाठक कऽ सकैत छथि। किएक तँ सन् 1970ई.सँ 1984ई.क मध्य मिथिला मिहिरक लोक प्रिय कविमे जनिक गणना होइत छल ओकर रचनाक केतौ कोनो चर्च नै, कोनो प्रोत्साहन नै। ए सभ उपहासक दंशसँ आक्रान्त भऽ कवि गंभीर आ विचारमूलक रचना लिखब छोड़ि भक्ति, हास्य आ चुट्कुलाक संग–संग गामक विवाह सबहक अभिनंदन पत्र लिखए लगलथि। जइ कविकेँ कहिओ मधुपजी सन कवि चूड़ामणिक प्रशंसा पत्र भेटैत छल ओ मैथिलीक लेल अलोप बनि गेल। मात्र डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश, डॉ. विद्यापति झा, डॉ. लक्ष्मी प्रसाद श्रीवास्तव सन किछु साहित्यकार कतौ–कतौ हिनक चर्च केने छथि, जइ लेल मैथिली साहित्य हिनका सभसँ कृतज्ञ रहत।

श्री गजेन्द्र ठाकुरक विशेष प्रयाससँ जे हिनक कविता संग्रह प्रकाशित भेल, ओकर नाओं अछि– ‘कलानिधि’ कलानिधिक अर्थ होइछ चन्द्रमा, ऐ संसारकेँ छोड़ि देलाक बाद संग्रह आएल तँए आ आकाशीय पिण्ड जकाँ मात्र दर्शनीय नाओं देल गेल।

आश्व करिक कोनो बंधन नै छैक आ ने ओ अनुकांत करिता जकाँ योजना बना कऽ करिता लिखैत अछि तँए समीक्षक लोकनिक दृष्टिमे किछु करिता अप्रासंगिक भऽ सकैत अछि।
करि 'बूँच' करिताक रचना प्राय: गाबि कऽ करैत छलाह, जखन जे फुरैलनि गीत जकाँ लिखि देलनि। तँए गोष्ठीक मंचपर सेहो मात्र गबैए बहि गेला। शृंगार, हास्य, विरह, भक्ति ओ विचार मूलक करिता सभमे कोनो कालक बंधन नै अछि। भक्तिकाल, रीतिकालसँ लऽ कऽ उत्तर आधुनिक साहित्यकाल धरिक परिवेशकेँ बूँच अपन करिता सभमे समेटने छथि। तँए किछु रचनाकेँ घसल-पिटल सेहो मानल जा सकैछ।
अपन काव्य रचनाक श्री गणेश करि गंभीर लेखनसँ कएने छलाह, ज्ञदा ऐठाम 'सरस्वती वंदना'सँ कएल गेल। भक्ति रसमे करि बहुत बास करिता लिखने छथि। रामचरित मानसक हिनका विशेष ज्ञान छलनि तँए भक्ति मूलक करितामे ओग युगक घटना स्वभाविक अछि, ज्ञदा मिथिलाक भक्ति शक्ति आराधना तँ मातृगीतकेँ विशेष महत्व देल गेल। भऽ सकैछ ऐ प्रकारक रकिता उत्तर आधुनिक मैथिली साहित्यक लेल विशेष महत्वपूर्ण नै हुअए ज्ञदा जगठाम भाषा स्वअप्त भऽ गेल हो ओगठाम भक्ति मूलक गीत भाषाक समृद्धिक लेल अनिवार्य, किएक तँ आर्य परिवारक सभ लग्नमे स्त्रीगण देवोपराधनाकेँ विशेष महत्व दैत छथि। यएह कारण अछि जे मैथिली साहित्यमे सभसँ लोकप्रिय पद्य विद्यापतिक बाँप प्रदीप मैथिली पुत्र जीक 'जगदम्ब अहीं अरलम्ब हमर' भेल अछि। करिश्चकेँ

সীতাবাম ঝা রা প্রদীপ মৈথিনীপুত্র জকাঁ নোকপ্রিযতা নৈ ভেটৈন হ্মদা হিনক ভক্তি পদ্য সভমে জে ঝংকাব খছি ওকব খপন খনগ খস্তিত্ব মানন জাএ–

“সদ্য: স্বধা সিন্ধ্ স্নাত, ম◌ॅজন গংগা জনসঁ গাত
সেরক খাতিব তজননি নরবতনক বজধানী খয
মণিদ্বীপক মহবানী খয না..... । ”

জেনা বরি ভূষণ জী খাহ্মখমে নিখনে ছথি জে করি বামকেঁ প্ররাসী কহননি রঁনরসী নহি, ঐ প্রকাবক দৃষ্টিকোণ পিতৃ: খাজ্ঞা পাননায খর্থাত পিতৃভক্তি খা সংরঁধক মর্যাদামে ঞাঁতিকাবী দৃষ্টিকোণকেঁ রিশেষ মহত্ব দেরাক নেন খাদবনীয মানন জাএ–

ভক্তি মূনক একটা গজনমে বাধা হ্নষ্ণক সিনেহ কেব খন্বশাসিত চিত্রণ গজনমে ভক্তিক রোঁব মৈথিনী সাহিত্যমে রিবনে ভেটৈছ–

শ্যাম হোগছ পবক প্রেম খধনাহ হে,
তেঁ রিসবি জাহ হমবা রিসবি জাহ হে।

করিক শৃংগাব মূনক পদ্যমে রিচাব, খন্বশাসিত সিনেহ, রৈবাগ্য খা জীরন দর্শন মর্ম স্পর্শী খছি। কতৌ কোনো খরাঁছিত প্রেমকেঁ প্রাত্সাহন নৈ, কতৌ খশোভনীয শর্ব্দ নৈ। ভাষা সবন খাশুগীত হ্মদা নোকপ্রিযতা নেন নিখন গেন চনন্ত নৈ। খত্তকাঁত করিতামে রিম্রঁ রিশ্লেষণ কবরাঁক নেন ব্যরধান নৈ হোগত ছৈক কিএক তঁ তান–মাত্রাক রঁধন নৈ। খাশু করিতামে রঁধন বহিতো জোঁ রিম্রঁ রিশ্নেষণ রোঁধগম্য খা হৃদযান্তবিক স্পর্শ করৈত হ্খএ তঁ করিতা খাব নোকপ্রিয কিএক নৈ মানন জাএ–

“জাহি রাঁটকেঁ নিত্য রঁহাবী
হম তীতন আঁচবসঁ ঝাবী
জকবা খপনামে বখনে খছি

हमर आँखि ओ कारी-कारी
आग ताहि पर किएक अनासित गतिसँ आबैं छी
बाजु बीच चान पर तपि-तपि ध्यान लगाबैं छी... ।"

दोसर पद्य 'विरहिनी'मे दूषणक अवहेलक आशमे अश्रुउच्छ्वासक आक्रन बाधाक "व्यथा बीति-प्रीतिक हिनकोरसँ भवन मानल जाए-
अहँक रूप बाखि नैन युग-युगसँ जागनि छी
स्मरनीक मधुर बैन गुनि-गुनि कऽ पागनि छी
परकीया पतिता हम प्रेमक पुजारिनकेँ
नहि चाही गीताक ज्ञान
आउ-आउ रूसल हमर भगवान.... ।"

एकदिशि करि 'तोहर ठोर' कविताक माध्यमसँ प्रेमिकाक सौन्दर्यक गुणगान ठोरकेँ केन्द्र बिन्दु बना कऽ करैत अछि । प्रेमी प्रेमिकाक ठोरकेँ स्पर्श जौं नैतिक रूपसँ नै कऽ सकत तँ बाहुक रूप धारण कऽ जबर्दस्ती करत एहूमे जौं सफलता नै तँ भगवानसँ प्रार्थना कऽ कऽ पुनर्जन्ममे धान बनि प्रेमिका पातपर चिष्टौन्न अर्थात् भात वा खीरक रूपेँ पड़ैत आ प्रेमिका स्वत: प्रेमी रूपी भातकेँ ठोरसँ सटौ लेतीह-
"बनव हम पुनर्जन्ममे धान,
धानसँ भऽ जाएब चिष्टौन्न
पड़ब पुनि अहँक प्रतीक्षापात
अछि ंजनसँ सद्य: स्नात.... ।"

दोसर दिस करि समाजकेँ सिनेहमे मर्यादाक सीमा नै लंघबाक िनर्देश सेहो दैत छथि-

“নহি শ্রং ৃগাব বৌদ্র হ্ংকাবে
হম এহি পাব খহাঁ ওহি পাবে
দ্হ্রক রীচ কঠোব কর্তর্যক
ভবন খথাহ ভযংকাব নানা
স্ববভিত খহঁক সিনেহক মানা... । ”

রিবহ, শ্রং ৃগাবক স্পংদন মোগত ছৈক, জোঁ রিবহ নৈ হ্খএ তঁ মিনন খানংদক খন্বভূি ত কোনা কবাএত। ধ্বৃত্ত রর্ণনকেঁ মূনাধাব রঁনা কঽ করি ‘রসন্তে–রিবহিনী’ করিতা নিখনক, খচন জীর খর্থাি্ গাছ–বৃক্ষ রসংতক নশামে মাতনি ছথি ঝদা পতিসঁ দূব রিবহিনীক নেন রসংতক কোন প্রযোজন–
“বহনহুঁ শেষ বাতি ভবি জাগনি,
হ্নক দোষ কী হম খভাগনি
বসক খথাহ সিন্ধ্ ছন উঁছনন
প্রাণ ঝদা র্হ্নে নয রিহ্নন
ঘব–ঘব খকাশে চন্না ধবতী খন্হাব গয..... । ”

খর্নতমনক জ্খাবিকেঁ কিযো ঝাঁপি সকৈত খছি, করিক দৃষ্টি ভনহি বরিক প্রকাশসঁ দূব চানি জাএ, ঝদা করিতা জোঁ শান্তচিত্ত ভঽ কঽ পঠ়ন জাএ তঁ খপন র্যক্তিগত জীরনকেঁ করিসঁ ঝাঁপর্ব খসংভর। ‘উঁদাসী’ শীর্ষক করিতামে করি কিএ উঁদাস খছি, চানক ঝখ ি কএ মনীন ভঽ গেন ও তঁ নহি কহন জা সকৈত ঝদা ককবো দেন র্যথাসঁ করিক মোন খরশ্য হহবি গেন ছন্হি–
“ককবা পব রূপসি কবী খাশ
ও কন্পো রিৈপ র্ব্রব ভেন

रोपन ख्भिसिचि ंत रब प्ररान
रॅठ ़ि जेठक ठ्ंं खजूब भेन... । ”

यात्री, खाबसी खा चन्द्रभान्न जकाँ करि भौतिकतामे खपन समाजक मध्य शिखब स्थान नै बखनक, खर्थग्रगक देन पीड़ । एकबा गमानदाब साधाबण कर्मचाबी नेन खसहनीय तँए 'करूण गीत' रॅनि उँपटि गेन–
"कटि बहन किए ओ कना गन्द्
घटि बहन किए जीरन प्रकाशि
बजनीक रूदन रिगनित प्रभात
कऽ बहन किए खतिशय उँदास..... । ”

हिनक रिचाब मूनक करिता सभमे सेहो सिनेहसँ रेशी रैबाग्यक रॅाध होगत खछि । जीरनक खंतिम खरस्था धबि करि पाबिराबिक र्धमे रॅान्हन बहन कोनो दरॅारॅमे नै, खपन खात्मीयतासँ समाजकेँ सर्रे भरन्त निबामया रूपेँ देखनक ऋदा र्यक्तिगत जीरनमे 'ठोप-ठोप चाबक च्खाठकेँ आँग्नबसँ उँपछैत बहन छी' निखरॅाक किए खारश्यकता पड़न ? हास्य करिता पाठ स्वनि पाठक हँसैत छथि, रा मर्म स्पर्शी बचनापब कनैत छथि पबंच करिसँ किछो नै पछैत खछि जे ओ ऐ प्रकाबक पद्य किए निखननि । रॅूचक र्यथा सेहो ऋॅापने चनि गेन ऋदा एतेक तँ हम निश्चित रूपेँ कहि सकैत छी जे खपन जीरनक र्यक्तिगत संघर्षक संग-संग करि साहित्यकाब मंडनीमे खपन महत्र नै देख– 'एकना चनो रे'क खाधाबपब खपन साहित्यिक कृतिकेँ सेहो एकात कऽ नेनक–
"द्निया हमब एकातक गहरब

ভেন জীখত ক্ষকতক স্থাপনা এহি জীরনমে... । ”

একব পবিণাম স্রকপ করি মৈথিনীক খস্তিত্রপব সোহে প্রশ্নচিন্হ নগা দেনক–
“চন্দা স্বমন যাত্রী মধ্পক
জ্নি কক ও খারি বহন খছি
হেতী মৈথিনী সভসঁ কাত...... । ”

রাস্তরমে করি মিথিনা–মৈথিনীমে জাতি, ক্ষেত্র খাদিক খাধাবপব পবসন ভেদভারসঁ খাহত খছি, জাতিরাদ তঁ সম্পূর্ণ খাযরিত্তক খস্ততত্রক কনংকিত কএনে খছি, ক্ষদা কোনো ভাষামে জোঁ জাতিক খাধাবপব ভেদ হএত তঁ একবা কী কহন জাএ ? মৈথিনী ঐ ভংরবজানমে এনা ওঝবা গেন ছথি জে ব্রাহ্মণোমে ভনমান্বষ খা জযরাবক মধ্য খভির্যক্তিক খংতব খান জাতিকেঁ কঠ়ি রাদী ভাষাধিকাবী নোকনি কোনা মোজব দেখি। করি 1978ঙং.মে জাগবণগান নিখ খপন রযনান্বাগকেঁ পসবরাঁক প্রযাস কএননি–
“খসম রংগ পংজার গ্বজবাত জাগন
খহীঁ টৌ পড়়ন ছী ডঁঠূ ঔ খভাগন
হবণ ভঽ বহন খছি হমব মীঠ রযনা
কোনা কঽ সিখত খান রৌনী ঙা মযনা.... । ”

স্রাগত গানক রিষযমে খাহ্মখমে বির ভূষণজী খা গজেন্দ্র ঠাকবজী রিশেষ চর্চ কেনহি ছথি। সংভরত: ঐ প্রকাবক স্রাগতগান জকবা র্যথাগান সেহো কহন জা সকৈত ছৈক মৈথিনীমে তঁ নিশ্চিত নৈ নিখন গেন হএত। গজেন্দ্রজী করি বূঁচকেঁ রিদ্যাপতিক বাঁদ সভসঁ

নযাত্মক করি মানননি ঐ গপ্পপব সমানোচক নোকনি নিশ্চিত প্রশ্ন ঠাঠ় কবতাহ ক্ষদা এতেক তঁ খরশ্য সত্য খছি জে খাবসী খা যাত্রীক পশ্চাত এহেন সমন্ররবাদী খাশ্বকরি মৈথিনী সাহিত্যমে নৈ ভেষ্টত। এখন কিছু নোক মিথিনা বাজ্যক নেন পগহা তোড়া কহ চিচিখা বহন ছথি। সমাজক মধ্য সমন্রযরাদ নৈ বহত তঁ মিথিনা বাজ্যক কন্পনা কবর্ব সেহো খসংভর। খগিনা খাসনপব রৈসন নোককেঁ সমাজক কাত নাগন বস্তু জকব সংখ্যা রাঁবহ খানা খছি, মিথিনা বাজ্যক প্ববোধা কোনা মানত, কিএক তঁ ঐ উঁপেক্ষিত নোক সভকেঁ মৈথিন মাননে নৈ গেন। ঐ রিষযপব করি 30 রর্ষ পহিনহি 'মিথিনা দ্:দশা' নাওঁসঁ করিতা নিখনক–
"বাজ্যক কী রাঁত কঠিন পাঁচোষ্টা গাঁর গয....।"

করিক পোষ্টবীমে পনাযনরাদক রিবোধ সেহো খছি। রাঁন সাহিত্য সন রিষযপব 'দীনক নেনা' সন মর্ম স্পর্শী খা 'পোতাক খট্টাহাস' সন হাস্য করিতা নিখ করি প্রমাণিত কেনক জে রাঁন সাহিত্য ওছ রিষয রিম্র্ব নৈ থিক। ভহ সকৈছ কিছু হাস্য করিতাকেঁ নোক মাত্র মংচক গরৈযাক গীত বুঝিথ্ ক্ষদা ওহ্ম সভমে গংভীব দৃষ্টিকোণ ঝাপন ছৈক– মাত্র খপন সংস্কৃতিক রিস্মযকাবী রিষয দৃষ্টিকোণপব করি প্রহাবেষ্টা নৈ কেনক খা মাত্র কাষ্টব প্রথা সন কনংককেঁ উঘাবে নৈ কেনক সংগ–সংগ খপন সংস্কৃতিক সিক্কড়া কেঁ সেহো 'খপ্পন মিথিনা' করিতামে পিজৌনক, পবংচ ওগমে নাগন জগপব করি র্যথিত সেহো ভেন–
"গংগো দীদী চাহ রনারথি,

কমলা রেঁঠী পান নগারথি
কোশী রহিনা ধান ফ্কটৈ ছথি
রাগমতী সিদহা ফ্কটকৈ ছথি
ঘহবক নক্ষ্মী রিহংসখি মাঁঝ ওসাব খপ্পন মিথিনা..... । ”

ওনা ঙা গপ্প ওতরেঁ সত্য সেহো খছি জে করি কিছু নিবর্থক করিতা সেহো নিখনে ছথি। জকব দেশকানক দশাসঁ কোনো সংবঁধ নৈ। জেনা ডহকন, হমব গাম খাদি। ঐ প্রকাবক করিতাকেঁ সাহিত্যক রিকাসমে কোনো যোগদান নৈ, রবন্ ব্যর্থ খপন করিত্বকেঁ নষ্ট কবয় মানন জাএ, ঙদা গহো গপ্প ওতরেঁ সত্য জে খাশ্ব করিক কোনো সীমা নৈ হোগত ছৈক।
বঁহির্মুখী ব্যক্তিত্বক বূঁচ খপন বচনামে খর্নতঙ্খী বঁনি রিশেষ খর্থ বাখএবঁনা করিতা সভ নিখৈত ছনাহ। ঙদা হিনক খন্তর্তমমে স্বাংগ নৈ খছি কতৌ কিনোন নৈ কএননি জে হমদ্রুঁ করি ছী, ঙদা খপন সমন্বযরাদী দৃষ্টিকোণকেঁ খ াত্মামে ন্বকা কহ নৈ বাখি সকনথি খা দ্বাদযাতবিক কিনোন করিতাক মাধ্যমেঁ বাঁহব নিকনি গেন।
রিদেহক সম্পাদক গজেন্দ্র ঠাকুব, সহ সম্পাদক উমেশ মণ্ডন খা শ্রুতি প্রকাশন ধন্যরাদক পাত্র ছথি জে ঐ উপেক্ষিত খভিশপ্ত করিক বঁচন-খ্চন বচনাকেঁ প্রকাশমে খননি, নৈ তঁ খগিনা পীঢ়ীক গপ্প কে কহএ রর্তমান পীঢ়ীক কিছু নোকেঁ ছোড়ি ঙা কিযো নৈ জনৈত খছি জে ‘বূঁচ’ মৈথিনীক করি ছনাহ। ঐ নেন ককবা দোষ দেন জাএ করিক খথরা সাহিত্যক হথিযাব নেনে মৈথিনীক বথপব সরাব মহাবথী

নোকনিকেঁ ? একব ি নর্ণয পাঠক কঽ সকৈ ছথি।

পোথীক নাখ া ং- কনানিধি
বচনাকাব- কানীকান্ত ঝা 'বূঁচ'
প্রকাশক- শ্রুতি প্রকাশন
প্রকাশন রর্ষ- 2010
দাম- 150 টাকা মাত্র।

<u>ি নশ্ত্তকী</u>

নিশ্ত্তকীক র্খথ হোগছ- "নিশ্চিত", নিশ্চিত মানে পবম সত্য। কোনো সাহিত্যক হ্নতিক নাওঁ ওগমে নিহিত

তত্রক রিশ্লেষণক হেত্ত মৌনিক রূপরেখাক ভান কবরৈত ছৈক। খাধ্নিক মৈথিনীক নরত্তবিযা করি শ্রী উঁমেশ মণ্ডন বচিত করিতা সংগ্রহ "নিশ্ত্তকী"কেঁ পঠ়নাক রাঁদ ঞ জ্ঞাত ভেন জে ঐ ছোট্ট-ছীন গ্রতিমে মিথিনাক সাংস্কৃতিক ও সমাজিক পবাভর কেব দশো দিশা নিশ্চিত কএন গেন খছি।

উঁমেশজী শিন্পী নৈ ছথি খা নে হ্নক করিতা সভমে খনংকাবক দর্শন হোগত খছি কতৌ কোনো ভংগিমা নৈ, নযাত্মক ধাব নৈ তখন ঐমে কোন প্রকাবক "তাত্রিক রিরেচন" খছি জকব সমীক্ষা কএন জাএ ?
রাস্তরমে মিথিনাক গ্রাম্য জীরনমে বমি, উঁচ-নীচক খন্বভর হিনক বচনামে খনগ-খনগ রিম্রঁ রূপেঁ যথার্থিক রোঁধ কবরৈত খছি। রিবাট্ট জীরন খন্বভর নৈ বহনাক রাঁদো নরত্তবিযা করি খপন দৈনন্দিনীকেঁ কার্যাত্মক রূপ দেনক, ঐ নেন করিক পহিন বচনামে কতৌ খপন ভাষা-সংস্কৃতি ও সাহিত্যসঁ রিশ্বাসঘাত নৈ দেখএমে খাএন। উঁপেক্ষিত সমাজক মধ্য জন্ম নেনিহাব করি প্রাংজন রূপেঁ উঁপেক্ষাসঁ খাক্রন ছথি ক্ষদা মাত্র খপন নৈ, সমাজমে র্যাপ্ত রিষয জীরন শৈনী ও শ্রেমক সংগ-সংগ শ্রেমজীরীক খধোগতি হিনক করিতা সভমে নর রূপেঁ পবিনক্ষিত ভেন। ঐ উঁপেক্ষামে কোনো ক্রাঁতিক রা উঁন্মাদক খাশ নৈ, মাত্র খধোগতিক পবাভর চাহিত ছথি। ঐ প্রকাবক রিষমতা কোনা দূব হএত ঞ তঁ সমাজপব ি নর্ভব কবৈত খছি। মূনত: খর্থনীতিক খপন দৃষ্টিকোণ করিক মহত্তা থিক। ঐমে সন্নিহিত সাম্যরাদ নেনিন ও স্টানিনক সাম্যরাদী রিচাবধাবা নৈ, হমব খপন মিথিনাক উঁমেশ মণ্ডনক রিচাবধাবা থিক,

जे जगदीशे प्रसाद मण्डलक अररातबरादसँ प्रभावित तँ छथि, मुदा कतौ-हुनक बचनाकेँ नै चोराैलनि।
पहिल करिता "हँसैत नहास"मे कोनो नहासक रर्णन नै, जे मनुक्ख जीरित बहितो साधनहीन आ ग्लानिसँ भवन याायारवी जीरन ि जरैत-जिरैत थाकि गेल अछि ओग जीरित बहितौ नहास रँलन मनुक्खमे आर्र ज्ञानेंद्रीय तन्त्र सक्रिय भऽ गेल आ ओ रँजराक लेल उँद्यत अछि। रास्तरमे एकबा क्रांति मानल जाए। ऐ प्रकाबक क्रांतिसँ हमबा देशमे रिभिन्न प्रकाबक आन्दोलन भेल, मुदा अगठाम ओ नहास कोनो आन्दोलन नै कबत। आ ने नक्सलरादक जन्म हएत, ऐ लेल समाज निश्चिन्त बहि सकैत अछि, मुदा आन्दोलन हएत तँ राघ्य आउंरब ओ अपन संस्कृतिक रिरूद्ध। पबंच ओह्रठाम नहास कोनो नाठी-गड़ ा ँस नै उँठाएत, मात्र हँसत। दस पाँतीक ऐ नघुकरितामे सांस्कृतिक अधोगतिपब करि तेज शर्ब्दराण चला कऽ मिथिलेटौ नै, सम्पूर्ण आर्यारर्तमे र्याप्त समाजिक रिषमताकेँ मकमोड़ ि देललि। कतेक समाजिक आन्दोलन भेल मुदा स्थिति यथारत्, नै जानि कहिया धरि ऐ प्रकाबक रिषमता हमबा सरँहक समाजकेँ कोठ़ ि रँलि गलरैत बहत। एकटा कलेक कमी ऐ करितामे देखएमे आएल ओ अछि पराभरसँ मुक्तिक उँपाए, करि नै प्रकट कऽ सकललि जे नहासक हँसीक परिणाम की हएत।

"फाँट" एकटा एहल शर्ब्द थिक जे लोककेँ लोकसँ फबाक कऽ बहल। श्राद्ध-कर्मक अंतिम दिन ज्येष्ठ संतानक मा ँथमे पगड़ ी रँान्हि उँतबाधिकाबी रँलाएल जाागत अछि, मुदा क्षणहिमे मृतकक खड़ ाम

ছোড়ি সভটা খান রস্ত্ত নেন পবিরাবক খান নোক ওগ উঁতবাধিকাবীক খাদেশে কেব প্রতীক্ষা সেহো নৈ কবৈত খছি। রাস্তরমে “ফাঁট” শব্দ রৌক্ষিকতাপব ভাবী পড়ি বহন, নোক খপন খাচাব-রিচাবকেঁ তাখপব বাখি দেখাদ রঁনি গেন ছথি, মাত্র ফন-রংশক খধিকাব নেন নৈ, জীরনক সমস্ত “কর্মস্থনী”মে ঐ প্রকাবক প্ররৃতি খছি। “করিতা” শীর্ষক করিতামে করি দেখাদকেঁ মিত্র রঁনারঁএ চাহি ছথি। “রাঁধা”গবীরঁক জীরনমে সহচবী রঁনি কহ কখনো নৈ সংগ ছোড়এ চাহি ছথি। মংগনা পূর ভব জা তঁ বহন খছি, নদী পাব কবরাঁক ক্রমমে প্রসন্না ভেন জে নদীমে পানি নৈ মাত্র রাঁন্ব তঁএ রিন্ব ঘটখেরাঁ দেনে পাব ভহ জাএরঁ। ফদা...... । ওতৌ কিছু নঁঠ নোক ঘটখেরাঁ নহ বহন, মংগনাক জেরীমে কৌঁচা নৈ রাপস পশ্চিমে বহি গেন। ঐ প্রকাবক ঘটনা পনাযনরাদকেঁ বোকৈত খছি। একব শিকাব মিথিনাক মহান দার্শনিক উঁদযনাচার্য সেহো ভেন ছনাহ জকব পবিণাম ভেন জে ও গংডক পাব নৈ কহ সকননি খা খাপস খপন জন্মভূমি কবিযনমে খারিঁ খপন নাওঁক সংগ পূর্ণ মৈথিন নগা নেননি। ভোজপ্ববী সাহিত্যক খাদি করি ভিখাবী ঠাকুব খর্থোপার্জনক নেন পনাযন তঁ কেননি ফদা কট্ফন ভেটননি খা প্ববি ভোজপ্বব খারিঁ গেনাহ, জকব পবিণাম সোঝাঁ খছি, ভোজপ্ববী সাহিত্য খার্য পবিরাবক ভাষা সমূহমে খপন স্থান রঁনা নেনক। ওা তঁ ভেন “মংগনা”কেঁ ভেটন ব্যথাকেঁ বোকরাঁক প্রযাস, ফদা জৌঁ ও পূ-ভব মাত্র মিথিনেমে জাগত হএত তঁ একবা কী মানরাঁক চাহী, গবীরঁক রাঁটমে কাঁট রোপরাঁক প্রযাস নৈ ?

সম্যক খর্থনীতিক খাশ ধএনে একটা খাব করিতা নিখন

গেন অছি– “ভাগেগী”। ভাগেগী আ যোগী সমাজিক জীরন রূপী নদীক দূ কছেব থিক ক্দা অগঠাম যোগীক অর্থ শ্রমজীরী আ ভোগীক অর্থ অনৈতিক রূপসঁ ধনোপার্জন কঽ অঁত ধবি সমাজপব অপন অধিকাব বখনিহাব মন্বক্খ। অগঠাম আর্রি কঽ করি কানীকান্ত ঝা ব্রঁচক উঁক্তি– “ভোগীকেঁ দেহোক মোহ নৈ, যোগী তম কথি ত্তম্মা বহি–বহি...”

উঁনটা পড়্াি গেননি। ওগকানসঁ রর্ত্তমান সমএ কেব ত্তননামে ভোগী রেঁসী ভাবী পড়্াি গেন ছথি।

“ছঠি” করিতা সূর্যকেঁ উঁপাসনাসঁ রেঁসী কব্জক প্রতি হ্রতজ্ঞতাক রোঁধ কবরেঁত অছি। ক্দা কোন প্রকাবক কর্জ করি স্পষ্ট নৈ কঽ সকননি। করিক ফ্নরাবীমে ফূনক উঁঠী রযস্ক নৈ ভেন ছন্হি কিএক তঁ নরত্তবিযা ছথি, এখন মাত্র প্রাঁজন মানী ছথি, প্ররীণ নৈ। তঁএ রেঁসী নকাবাত্মক অঁশ নিকানরঁ হতোত্সাহিত কঽ সকৈত ছন্হি। ঐ করিতা সংগ্রহক আন করিতা সভ সেহো রোঁধগম্য অছি ক্দা একটা আব করিতা জে এ সংগ্রহকেঁ রৈশিষ্ঠ্যতা প্রদান কবৈত অছি ও থিক– “কে মৈথিন”

রাস্তরমে রেঁব–রেঁব সমাজক কাত নাগন রক্মকেঁ আগাঁক নোক কহৈত ছথি– “অক্ষঁ মৈথিনে থিকৌঁ” ঐসঁ করি মর্মাহিত ভঽ অপন তর্কসঁ প্রমাণিত কবরাক প্রযাস কএননি জে মিথিনাক কাত নাগন রক্ম অ ান নোকসঁ রেসী মৈথিন কহেরোঁক যোগ্য ছথি। কাত কঽ দেন গেন সমাজক নোক জৌঁ করি ভঽ জাগত ছথি তঁ নেখনীমে অপন র্যথাকেঁ ঝাঁপরঁ অসংভর।

ফজন্বব বহমান হাসমীক করিতা– “হে ভাও” জকাঁ উঁমেশ মণ্ডনক করিতা– “কে মৈথিন” ভরিষ্যমে

মৈথিলী সাহিত্যকেঁ ক্রাঁতিৱাদী দৃষ্টিকোণসঁ অৱশ্যে প্রকাশিত কৱত–

"ডোকা কাঁকোৱ বাঁছ হম
ভেঁটৈক নাৱা চিৱাঁকহ
উফনৈত শোণিতকেঁ জৱা বহল ছী
মিথিলামে রৈসল........ ।
ক্ষদা প্রশ্ন বহিযে গেল
কে মৈথিল ? "

কৱি আশ্ব কৱি নৈ অছি, আ নে আত্মাসঁ কৱিতা লিখলক, ক্ষদা মিথিলাক সমাজমে বমল কৱি অপন জীৱন দর্শনকেঁ ঝাঁপি নৈ সকল আ কৱিতা সভক ৰূপেঁ মিথিলামে পৱসি দেলক ।

ি নষ্কর্ষত: পহিল প্রযাস সৱাহনীয মানল জাএ । কোনো আন কৱিক কৱিতা সভসঁ একৱ তুলনা কৱৱ অনুচিত হএত । কিএক তঁ ঐমে নে তঁ শৃংগাৱ আ নে রৈবাগ্য, নে কতৌ ভক্তিক হিলকোৱি, কতৌ হাস্যক সমাগম নৈ পৱংচ রিম্ৱিত অর্থনীতি ও রিচাৱমূলক কৱিতাক আধুনিক শ্রং ৃখলা ।

ধন্যৱাদক পাত্র ছথি রিদেহক সংপাদক গজেন্দ্র ঠাকুৱ জে গামক রৈধ রঁনল উমেশমে কৱিত্ৱ গুণ দেখ আগাঁ রঁঢ়এললি, ওা মাত্র উমেশপৱ উপকাৱ নৈ সম্পূর্ণ মিথিলাক প্রতি গজেন্দ্র জীক সিনেহ থিক । ঐ লেল রিদেহ পৱিৱাৱক সংগ–সংগ শ্রুতি প্রকাশন সেহো ধন্যৱাদক পাত্র ছথি জে মাত্র ভাঁজ পুড়এৱাঁক লেল সমাজক কাত নাগল রন্ধক সংগ্রহ প্রকাশিত নৈ কৱৈ ছথি, রৱন্ আত্মীয ৰূপেঁ সম্পূর্ণ মিথিলা–মৈথিলমে উপেক্ষিত লীক ৱচনাকেঁ প্রকাশিত কৱৱাঁক যোজনা

श्रुति प्रकाशनकेँ आधुनिक मैथिलीमे शीर्ष स्थानपर बैसा देलक।

पोथीक नाओं- निश्चिन्त
रचनाकार- उमेश मण्डल
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, दिल्ली
दाम- १००
प्रकाशन वर्ष- २००९

समीक्षा- अमरैबा (राजदेव मण्डल)

एक हँसैत अछि कठिन हँसी,
कलपै छथि निर्बध मजान।
जे कँपैत छल डरसँ थरथर,
आइ ने तकरो लाज।
पड़ल छथि बंधनमे मृगराज।।
प्रस्तुत पद्यांश कवि सरोज भुवनेश्वर सिंहक कवितासँ लेल गेल अछि। ऐ कवितामे समाज विस्मयकारी अवस्थासँ कछि क्षुब्ध छथि। ऐमे देखाएल युगक विषमताक मार्मिक उद्घाटनसँ जौं अपन भाषा ओ साहित्य दुःदशाक वर्णना कएल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नै। किछु महान साहित्यकार विस्मृत भऽ कालक गालमे समा गेलाह। लोक कहै छथि कवि कहियो नै मरैछ ओ तँ अपन रचनामे जीवंत रहै छथि मुदा जखन रचने मरि गेल तँ कवि कोना जीवैथि। जे भेल से भेल मुदा हमर दृष्टिकोण जे आबैह चिन्तन कएल जाए। एखनो किछु एहेन

बचनाकाब उँदीयमान छथि रा उँगराक प्रयास कइ बहन छथि जनिक नेखनीकेँ प्रोत्साहित नहियोँ तँ कमसँ कम किछु चर्च कएन जाए तँ ओहि बचनाकाबक संग–संग भाषा–साहित्यकेँ खमबत्र खरश्य भेटैत।
एकटा पबिपक्र ग्दा साहित्यक भाषामे नरत्त्व बया करि मैथिनीक पन्नरकेँ रसन्तक रातसँ हिनएराक खपना भबि प्रयास कइ बहन छथि श्री बाजदेर मण्डन। हिनक पहिन करिता संग्रह– खम्रँबा, श्र्ति प्रकाशनक सौजन्यसँ पाठकनोकनि नग पबसन गेन खछि। बाजदेरजी पबिपक्र ऐ द्खाबे किएक तँ ओ नर बचनाकाब नै छथि मैथिनीकेँ के कहए बाजभाषा हिन्दीमे हिनक तीन गोटे उँपन्यास– पिंजबे के पंछी, दबका ह्खा दबपन खा जिन्दगी ओब नार छद्म नाओं बाजदेर प्रियंकब'क नामें प्रकाशित खछि। ब़ाँहब सम्मान खपन घब खपमानसँ नै रॉँच सकनाह तँए कतेक ब़ँर्ख ठकागते बहनाह। जखन खात्मीय नोक मैथिनी खकादमीक खध्यक्ष बँनाओन गेनाह तँ बाजदेर जीकेँ खाशे जगननि, जे समाजक कात नागन बस्त्रक नोक खकादमीमे खएननि, बचना प्रकाशित होएत रा किछु मदति भेटैत। खकादमीक खध्यक्षक संग–संग खकादमीक पत्रिकाक संपादक मण्डनमे सेहो खपननोक देख दोहबि खाशे नेने येनकेन प्रकाबेण संपर्क स्थापित कएननि। कबीरँ तीसटासँ उँपबे करिता देरोँ केनखिन किन्तु मृग मबीचिका मात्र देखबैत बहनखिन। पबिणाम निबाशाबादी बहन।
रिदेह' पत्रिकाक पदार्पणक पश्चात श्री उँमेशे मण्डन जीक माध्यमसँ संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुब जी संग जुड़ि बचना पठाबँए नगनाह। श्र्ति प्रकाशनक खंतिम

ছএব লগিতহি ং অমৰ্ৰবা সমান্য অৰ্থমে তঁ ছ াহ ছদা নরন-ধরন গজোত নেনে পাঠক ধবি পহুঁচ গেন অছি। বাজদের জীকেঁ নরত্তবিযা ঐ দ্খাবে কহন জাএ কিএক তঁ পূর্বমে নিখন গেন করিতা এখন ধবি পাঠকক নোচনসঁ দূব ছন। ঐ সংগ্রহমে 75 গোষ্ঠ করিতা দেন গেন অছি। আহ'সঁ শ্রী গণেশ আ আঁখিক প্রতীক্ষাসঁ গতিশ্রী। একব তাত্পর্য জে বসহীন জীরনসঁ আক্রন মন্বক্খ রুপিত অছি ছদা খতিম স্রপ্ন রা কন্প আশিক সংগ মূর্ত্ত ৰূপমে ক্ষণহি ংমে পবিরর্তিত ভৎ জাগছ। ৰাহ্য ৰূপমে শীতনতা অৰ্থাত শাঁতি দেখ'মে অরৈত অছি পবংচ ভীতবমে ধাহ.....। কোন প্রকাবক ধাহ ? একবা অশ্রু উঁচ্ছ্বাস, আক্রনতা, সংত্রাহ রা প্রাপ্তিক আশি নৈ পূর্ণ হোএৰাক এমমে উদ্বিগ্নতাক নাআঁ দেন জাএ। জৈ র্যক্তিক জীরনক চৌহ্খ আহ রা ক্ষোভসঁ ঘেবন হ্খএ ও জৌ আকাশিকেঁ ছূরাক কন্পনা কবএ তঁ ওকবা রিক্ষিপ্ত নৈ তঁ কমসঁ কম অতিরিশ্রাসী অরশ্য কহন জা সকৈত ছৈক। রুৰুক্ষেত্রক যহ্ন সমাপ্তিক পশ্চাত্ গাঁধাবীক মনোদশ জকাঁ অকাশ স্পর্শক কন্পনামে অকাশ তঁ শূন্য দৃষ্টিগোচব হোগছ ছদা পাএবক নীচাঁ অসংখ্য নহাস আ রঁ াচন ৰঁন্ধ্ ৰাঁধৰ কেব কংঠ দোহন করিক মোনকেঁ অশাঁত কৎ দেনকনি।

ভৌতিকরাদী যগক হীবাক চমকিমে অপন সাহসক বজত নেনে নর মাঙ্গকেঁ তাকি বহন ছথি-

ৰিন্ব নেনে আহ
কি ভেষ্টি সকত
রাহ-রাহ
পবংচ,
নহি ছী নাপবরাহ

खोजमे नरका वाह ।
'खोजर' शब्दक स्थानपर ताकब वा हेरब लिख सकैतअ
तँ आर नीक लगितअ । संग-संग छंद लेखनक क्रममे
कतौ-कतौ अपन भावकेँ करि व्यक्त नहि कऽ
सकलाह ।
ज्ञानक झंडा' कविताम ज्ञानक परिभाषा विज्ञानक
अन्वेषणक रूपेँ कएल गेल । विज्ञानक विकास-क्रममे
अन्ध विश्वास शनै: शनै समाप्त भऽ रहल अछि-
आब नहि चलत
अंध विश्वासक हथकंडा
फहरा रहल विज्ञानक झंडा.... ।
प्रयोग धर्मितामे ई गप्प तँ सत्य श्रद्धा वास्तविकताक
अवलोकन कएलापर स्थिति भिन्न लोग छैक । ई युगमे
सेहो पितृ कर्म आ देवकर्ममे विश्वास जागले
अछि जखन कि विज्ञानक शब्दकोषमे स्वर्ग-नर्कक
परिभाषा असंभव । लोक एखनो श्राद्ध करै छथि,
जीवनकालमे भवि पेट अन्न नै श्रद्धा श्रद्धनाक पश्चात
सोहल अचार । मिथिलामे जमीन बेँच कऽ पितृ श्राद्ध
कएल जागत अछि । साधनविहिन मानव अपन जीवित
संतानक प्रति अपन दायित्वक पालन कोना करथि,
समाजकेँ एकर कोनो परवाहि नै ओ तँ मात्र पितृधर्म
पालनक उपदेश दै छथि । तँए 'ज्ञानक झंडा'मे कविकेँ
अन्यकवणीय विम्बक चित्रण करबाक चाही छल जे नै
कएलनि ।
वाजदेवजी शिल्पी नै छथि, किएक तँ कोनो शिल्पक
कृत्रिम विम्ब नै तैयार कएलनि, स्वाभाविक अछि जे
व्यक्तिकेँ आवसी, यात्री, चन्द्रभान्व, बहेड़ आ बूँच
जकाँ अपन गृहस्थ धर्मक पालन हेतु अभाव आ संत्रासक

अन्यतर नित्य-प्रति मोगत हुअए ओग व्यक्तिकेँ कल्पनाशीलताक शिल्प विम्वित कवबाक लेल समअ कखन भेटैए ? ओ तँ जौं अपन जीवन दशासँ समाजक तुलना कब' लागए तँ सदिखन विम्वेँ-विम्वँ ।
मा्ँपल अस्तित्वक शीर्षक करिता ह्रदेकेँ स्पर्श करैत अछि-
भीतवमे ओ लगा बहल अछि फानी,
स्वनि बहल छी वँध्रवाणी
प्राप्त कवबाक लेल उँत्कर्ष
कवह पड़त आवँ संघर्ष.... । ।
विवोध कोनो जीव ताधवि कह सकैत अछि जाधवि ओकवामे संघर्ष कवबाक सार्मथ्य जीवित हुअए । पवाजयक वेंव-वेंव िहलकोव लगलासँ आत्म समर्पणक संभावना प्रबँल भह जागछ । कखनो कखनो आसक्तिक कावणेँ लोक सेहो आत्मसमर्पण कह दै छथि । जेना ऋरुक्षेत्रमे भीष्मपितामह अर्जुनकेँ चाहितथि तँ धावाशायी कह सकैत छलथि म्दा ओ तँ अर्जुनक विजय ह्रदेसँ चाहि छलाह ।
बहवँ अहीक सभक संग' करिता आसक्ति, मृगतृष्णा वा मजबूँवी कोन रूपक समझौता थिक एकव विवेचन संभव लै, ओ तँ करिक जीवलक अन्यतरक साव अछि, ओ स्पष्टे रूपेँ व्ँटैए चाहि छथि-
लहि कवबँ आवँ नियम भंग
लहि कवबँ अमाँ सभकेँ तंग
निअ अपन बाज,
लहि चाही हमवा ताज.... । ।
एकटा अर्न्तमुखी सोमा विचावक लोक जखन स्ववंसँ लडैत-लडैत थाकि जागत अछि तखन एहले

ৱেদনা গ্নত্রিম হংসীক সংগ-সংগ নিকসৈত। ফেরো খপন পবিরাবিক ধর্ম মোন পড়ি তে নদীক মাছ্ ৱঁনি জাগছ্। জীর জখন প্রাণকেঁ ছোড়ি দৈছ্ রা প্রাণ জীরকেঁ ছোড়ি দৈছ্ তখন নহাসক ৰূপ.....ওহি প্রকারেং করি নদীক মাছকেঁ জনদ্নিযাসঁ ৱাঁহব নিকনৱাঁক প্রযাস করৈ ছথি। পবিণাম হ্নকে হ্মখসঁ স্বনন জাএ-

স্বননে ছ্ন ও খপনহি কান
কহনে বহথিন ৱূঁঢ়-প্ববান
কহিযো নহি জাগহেঁ ওহি দ্নিযা
ওহিঠাম ভবন খছি খ্নিযাঁ। ''

সভ কিছ্ বহিতৌং খর্থাভার এখন সমাজক সভসঁ পৈঘ খভিশাপ ৱঁনি গেন ছথি সমাজক মধ্য জত' গমানদবী খান্হব জকাঁ গাংধাবী ৱঁনি ঠাঢ় ছথি, তঁএ উঁদ্বিগ্ন ভ২ জনদ্নিযাসঁ ৱাঁহব জএৱাঁক প্রযাস কএননি পবংচ ক্ষণহি ং মে খপন মাহভূমিক সিনেহক কড় ামে হঁসি ফেব পানিমে কূদি গেনাহ-

হ্মদা ও খছি খভাগন
জনৱূঁন্দ কড় া খছি নাগন
ৱিফন ভেন ছ্ন ৱঁনমে
প্বন: খসন ওহি নদীক জনমে

জখন নোক খপনাকেঁ পূর্ণত: একসবি মানি নৈত খছি ওহি কানক মনোদশাক খভিৰ্যক্তিকেঁ কবএ ?

নহি কিও দ২ বহন খছি সাথ,
পহাড় াপিব পঢ়৾কৰ্ঁ খাৰ্ঁ মাথ
দ্বৰাঁ দেৱৈঁক হম খূনসঁ
খপনা ঘামক ৱূঁনসঁ..... ।

ঐ প্রকাবক পবিস্থিতিজন্য পদ্যক সংগ-সংগ সীমা পবক

ঋূনা, কাঁধ পবক ঋবদা, দীপ, হিত-অহিত, প্রযাস, আঁফিসক ভূত, কঠ্খাএন ৰূপ, স্বনগৈত চিনগী, অহাঁক অগরানীমে, নান জ্যোতি, ৰীখক ঘৈন, পত্রাতব, অন্হাবক খেন, নাচক রিখাহ আদি-আদি রিচাবমূনক মর্মস্পর্শী পদ্য ঐ সংগ্রহমে সংকনিত অছি। ঋদা অংত ধবি নর জীরনক আশিমে করিক আঁখি মাত্র প্রতীক্ষা কৎ বহন ছন্হি-

মন্দ-মন্দ সিহকৈত ৰঁসাত
কেনা বহৰ অহাঁসঁ ভৎ কাত
একো ৰেঁব তঁ ৰৌনূ
আৰৌ আঁখি খোনূ
নিকনএ নেহ রা ধিক্কাব
হমবা দ্নূ অছি স্রীকাব...। ।

সম্পূর্ণ সংগ্রহমে অশ্রুবোদনক রিম্ৰিত চিত্রমে নূতন আযামক সংগ-সংগ জীরনক নরন আশি ধএনে করি 'অম্ৰঁবা'সঁ ঋক্তিপব বহৰ চাহে চনৈত, সূতন, ঠাব রা ৰৈঁসন....। অম্ৰঁবা অর্থাত্ ছাযাকেঁ নোক একাকাব তঁ নৈ কৎ সকৈত অছি পবংচ ভগাএৰ সেহো অসংভর। তঁএ দ্নূ ৰূপেঁ করি অপন জীরনক অম্ৰঁবাকেঁ স্রীকাব কৎ নিঅ চাহি ছথি। বচনাক নির্বন পক্ষ জে কতৌ আকর্ষণ নৈ, কতৌ শিন্প নৈ, কতৌ রিম্ৰ নৈ ঋদা সভ ছংদ আযামক অভারক ৰাঁদো বাজদেরজী অনচোকেমে এহেন 'করিতা সংগ্রহ' নিখ দেননি জকব ত্তননা দোসব করিসঁ কবৰ প্রাসংগিক নৈ কিএক তঁ মৈথিনী ভাষাক নেন একটা নর প্রকাবক প্রযোগ ঐমে ভেটৈন।

মৈথিলী কবিতা সংচয়ন- (সংপাদক- গংগেশ গুংজন)

স্বতংত্রতাসঁ পূর্ব জন্ম লেনিহাব সাহিত্যকাবক সমূহমে একটা নাও অদ্ভুত মানন জা সকৈত অছি, জনিক লেখনী সবস্বতীক ববদ্ পুত্র জকাঁ এখনো মৈথিলী সাহিত্যকেঁ অপন অর্চিসসঁ প্রকাশিত কঽ বহল অছি। ও ছথি সাহিত্যক সভ রিধাক পাবখী বচনাকাব- শ্রী গংগেশ গুংজন। অবসৈঠম রঁবখমে অপন কোসক পাথব সদৃশ গুর্তি 'বাধা'সঁ রিদেহক সংগ-সংগ মিথিলা-মৈথিলীক ধ্রজকেঁ আবোহিত কবরাক হিনক প্রযাসসঁ একৈসম

शीताबृंदीक प्रथम दशाँशि गमकैत रिदा नः बहल छथि।

सममग्र साहित्यिक क्षेत्रकेँ ज्योतिमय रँनएराक संग-संग गुंजन जी संपादकक काज सेहो कएननि। हिनक संपादकत्रमे नेशनल बुक ट्रस्ट, गंडियाक सौजन्यसँ एकटा पोथी 2005ई.मे रँहाब भेल- 'मैथिली करिता संचयन'।

महाकरि रिद्यापतिसँ नः कः तावानंद रियोगी धविक सर्रकालीन करि-करयित्रीक वचनाकेँ एहि पोथीमे संकलित कएल गेल अछि। भूमिकामे गुंजन जी करीश्रिव चंदा झासँ नः कः संजय कुंदन धविक चर्च कएने छथि, मुदा संजय कुंदन जीक वचना एहि पोथीमे प्रयागवाजक सवस्रती नदी जकाँ रिलोकित अछि, प्रत्यक्ष दर्शनीय नहि।

जहिना आदि पुरूषक मात्र चवण स्पर्श कएल जा सकैछ, माँथपव पाग नहि देल जा सकैत अछि, ठीक ओहिना महाकरि रिद्यापतिक वचनापव कोनो प्रकावक प्रश्न चिन्ह ठाढ़ कवर उँचित नहि।

हुनक ष्टुनरावीमे सभटा षूल स्वन्नव आ स्वगंधित अछि। कोनो वचना एक-दोसवसँ कमजोव नहि। गुंजन जी जाहि वचना पुष्प सभकेँ चुननि ओ रँडू नीक लागल। एक दिशि प्रथम वचनामे भारक संगम तँ दोसव 'रसंत चुमाओन'मे प्रकृति वर्णनक रिम्रँक मध्य वाजधर्म आ देरक भलना अनमोल लागल। 'रूपक वर्णन'मे श्रृंगाविक धरल चित्रण कएल गेल अछि। अभिसावमे रिवह समागमक झनकि मलोहावी तँ शाँति पदमे रिचाव मूलक स्पष्ट पविदृश्य रातारवणकेँ भक्तिमयी रँना दैत अछि।

महाकरिक पश्चात् गोरिन्ददासक स्थान जेना मैथिली

সাহিত্যমে রিনক্ষণ খছি, ওহিনা এহি পোথীমে হ্নক ছ: গোষ্ঠ করিতাক চযন সংপাদক জীক প্রতিভাক সংগ–সংগ চযনক খদ্বিত দৃষ্টিকেঁ পাবদর্শী রঁনা দেনক। মনরোঁধক একমাত্র করিতা 'শিশ্ব' মৈথিনী সাহিত্যমে রাঁন সাহিত্যক ন্যূনতাকেঁ কিছু দূব তক ভবরাক প্রযাস কঽ বহন খছি।
করীশ্রব চংদা ঝাক তীনপদ ভক্তিসঁ সরঁধিত মানন জা সকৈত খছি। খাশ্ব করিত্রমে চংদা ঝাক স্থান মৈথিনী সাহিত্যমে সূব–ত্তুনসী জকাঁ প্রাংজন, তঁএ তীনূ পদ গেয। শির বাগ খা মহেশেরাণীমে ভক্তিক খারাহন কএন গেন। 'বাধা ি রবহ' ভক্তিক খাড়ি মে রেদনাক ভার সবিতাসঁ নযনকেঁ সবারোবি কবরাক নেন পর্যাপ্ত র্ঁঝনা জাগত খছি।

কবিরব সীতাবাম ঝাক পদ্য সভমে ঝংকাব খনাযাস ভেষ্ট জাগত খছি। করি চূড়ামণি কাশীকাংত মিশ্র 'মধ্প'কেঁ জৌং মৈথিনী সাহিত্যক খাদি নোকগীতকাব কহন জাএ তঁ কোনো খতিশযোক্তি নহি। রিদ্যাপতি জীক পশ্চাত্ পদ্য রিধামে মধ্প জী সভসঁ জনপ্রিয করি মানন জাগত ছথি। হ্নক 'পতিত পীক' খা 'ছতহব' করিতাক সংকনন এহি পোথীমে কএন গেন খছি। দূনূ পদ্যমে রিম্রঁক চযন খা রিশ্নেষণ সবন হ্মদা খর্থপূর্ণ নাগন। কাংচীনাথ ঝা 'কিবণ' জীক 'মিথিনাক রসংত' খপন মাষ্টি–পানিক তাত্রিক রিরেচন কবৈত খিছ। সাহিত্য সবোজ রাঁবূ ভুরনেশ্রব সি ংহ ভুরন, সবস করি গুশিনাথ ঝা, স্বমন জী সরহক করিতা সভক চযনমে সংপাদক জীক দীর্ঘ গচ্ছা শক্তিক সংগ–সংগ খধ্যযনশীনতাক দৃষ্টিকোণ নীক মানন জা সকৈছ।

यात्री जी सर्वकालीन मैथिली कविमे अपन अलग स्थान रखैत छथि। हुनक लिखल पद्य सभ चित्रामे हुअए वा पत्रहीन नग्न गाछमे– सभटा एकपर एक अछि। संभवत: हुनक श्रेष्ठ छ: गोट कविताक चयनमे गुंजन जी कि ंकर्तव्यविमूढ़ भऽ गेल हेताह। तथापि जे पद्य सभ चुनल गेल सभ प्रासंगिक लागल। कनेक कमी यएह जे ‘मैथिले’ शीर्षक कविताक मात्र छ: पाँति देल गेल जखन की अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् प्रयाससँ रहबाएल ‘चित्रा’ पोथीक आधारपर ‘मिथिले’ शीर्षक कविता लियानिस पाँतिक अछि। हमरा मतेँ कोनो रचनाकारक अपूर्ण रचना संकलित करब उचित नहि।

आरसी बाबूक दूनू कविताक चयन शांतिभावसँ कएल गेल। आरसी बाबू स्वयं अपन रचना ‘शेफालिका’केँ अपन सर्वश्रेष्ठ कविता मानैत छलाह। तेँ एहि कविताकेँ संकलित करबाक लेल गुंजन जी धन्यवादक पात्र छथि।

साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित ‘समकालीन मैथिली कविता’मे संपादक द्वय डॉ. ब्रज किशोर वर्मा मणिपद्मकेँ बिसरि गेल छलाह, तथापि एहि पोथीमे हुनका ‘मृग मयूर आ कोकिल मन है’ रूपमे स्मरण कएल गेल अछि। वास्तवमे मणिपद्म जी आधुनिक मैथिल साहित्यक पद्मनाभ छथि। गोविन्द झा, रामकृष्ण झा किसुन आ अमर जीक पद्यक चयन एहि पोथीकेँ नूतनता प्रदान कएलक। राजकमल चौधरी मूलत: कथाकार छथि। पद्यविधामे सेहो हिनक रचना नीक होइत अछि, तँए सर्वकालीन कविगणमे हिनक स्थानपर कोनो संदेह नहि। संगहि एकटा गप्प खटकि गेल जे

বাজকমন জীক খাঠ গোষ্ঠ করিতাকেঁ এহি পোথীমে সমাৱিষ্ট একন গেন খা সমকানীন করি গোপান জী ঝা গোপেশীক কতহু চর্চ নহি। বাজকমন জীক করিতাক গণনা কম কহ গোপেশী জীকেঁ এহি পোথীমে জৌঁ স্থান দেন গেন বহিতএ তঁ খাব রিনক্ষণ ভহ সকৈত ছন। মাযাৱাবূ, সোমদের, ধীবেন্দ্র হংসবাজ, বামদের ঝা, গুংজন জী, ধূমকেত্তু, কীর্তি নাবাযণ মিশ্র, জীরকান্ত, রেণু জী, প্ররাসী জী, মংত্রেশ্রব ঝা, ফনানংদ জী, রিনোদ জী, উঁপেন্দ্র দোষী, বামনোচন ঠাকুব, ভীমনাথ ঝা, নচিকেতা, মহাপ্রকাশী, ননিতেশী মিত্র, রিভূতি খানংদ, কেদাব কানন, জ্যোত্সনা চংদ্রম, দেরশংকব নরীন, স্বস্মিতা পাঠক জীক প্রতিভাপব কনেকো সংদেহ নহি।

বামান্বগ্রহ ঝা, স্বকান্ত সোম, পূর্ণেন্দু চৌধবী, মহেন্দ্র, বমেশী, খগ্নিপ্বষ্প, হবেন্দ্রষণ ঝা খা নাবাযণ জী সন বচনাকাবক বচনা জখন এহিমে দেন গেন তঁ তংত্রনাথ ঝা, উঁপেন্দ্র ঠাকুব মোহন, উঁপেন্দ্র নাথ ঝা র্যাস, বাধরাচার্য, খণ্বজী, বমাকবজী, শ্রীমতিশ্যামা দেরী, গনদ্রকান্ত ঝা, হাসমীজী, ডॉ. শেফানিকা রর্মা, বরীন্দ্র নাথ ঠাকুব, সিযাবাম ঝা 'সবস', গনাবানী সি ংহ, ডॉ. নাভ, ডॉ. ব্ঁদ্ধিনাথ মিশ্র, নরন জী সন বচনাকাবকেঁ গুংজন জী কোনা রিসবি গেননি। ভহ সকৈত খছি জে হনক তর্ক হুখএ জে স্থাপিত বচনাকাবক সংগ-সংগ কিছু রিস্মৃত খা নরতুবিযা বচনাকাবকেঁ সেহো স্থান দেন জাএ।

জৌঁ এহেন গপ্প তৈযো স্তবীয সংপাদন নহি মানন জা সকৈত খছি। রিস্মৃত খা নরতুবিযো বচনাকাব রস্কাক কিছু বচনাকাব এহি পোথীমে ছূটৈন ছথি জনিক বচনা এহিমে সংকনিত কিছু বচনাসঁ রেশী মহত্র বখৈত খছি।

श्री चन्द्रभानु सिंह जीक कविताक किछु पाँति एकर प्रमाण स्वरूप देखल जा सकैत अछि–

तोरे स्वरक हेयाब सहारे बहैय पपिहबा पी–पी

ककरा ने ओ छैक सेहन्ता तोहर बाँसुर टी–पी

बँसबाह मनुखक समाजसँ तोहर हबाके हैन छौ

की कहियौ गे कविकी तोहर बाँसुर बँडु अनमोल छौ।

(कोइली शीर्षक कवितासँ)

एहि कविताक उत्तर देनिहार कवि प्रो. नरेश कुमार विकल जीक रचना सेहो एहि पोथीमे नहि देल गेल अछि–

युग–युग सँ चलि आबि रहल छौ

बाजर मिसरीक घोल सन

हमरा आर लगैए कोइली

बाँसुर तोहर ओल सन..... ।

ओ कविता 'कोइली' शीर्षक नामसँ विकल जीक कविता संग्रह 'अविपल'मे सन 1995ई.मे प्रकाशित भेल अछि। विनहै पासवान विहंगम, रमाकांत राय 'रमा' करि चंद्रेश जियाउर रहमान जाफरी सन आधुनिक कविक रचना एहि पोथीमे समाविष्ट कएल नहि गेल।

आशु गीतमे काली कान्त झा 'बूच'क रचनाकेँ समीक्षक वा संपादक विसरि सकैत छथि, मुदा जे पाठक पठनिनि ओ कहियो नहि विसरताह। हुनक जागरण गान, माला, एकगीत, तोहर ठोर, उदासी, परिचय पात सन सब विधासँ युक्त कविता मिथिला मिहिरमे प्रकाशित

ভেন ছন।
ভূমিকামে গুঞ্জন জী স্পষ্ট কএনে ছথি জে এহিমে সংকলিত 51 গোট্ঠ কবিক সংগ-সংগ ঋাব কবি ছথি। হুনক বচনা নহি দেরাক পক্ষমে পোথীক সীমিত ঋাকাব ঋা কবিপয বচনাকাবক সহযোগক প্রতি উঁদাসীনতাক তর্ক দেন গেন ঋছি। হমবা মতেঁ এহি তর্কমে বাস্তবিকতাক কমী বুঝনা গেন। পহিনে মিথিনা-মৈথিনীক সাহিত্যকাবক বচনাক প্রকাশন স্ত্রাত মাত্র কিছু পত্র পত্রিকা ছন। গুঞ্জন জীক বচনা সভ সেহো নিশ্চিত এহিমে ছপৈত ছননি, তখন ঋসহযোগক গপ্প কতহ সঁ ঋাএন? বিকন জী, বুঁচ জী, শৈফানিকা জী, হাসমী জী, চন্দ্রভান্ত সিংহ, চন্দ্রেশ সন কবি সত্তবিসঁ ঋস্সী দশকমে মিথিনা মিহিবক বহুত বাস ঋংকমে কবিক রূপেঁ উঁপস্থিত ছনাহ। হমব কহব ঞা নহি জে বমেশ জী ঋা নাবাযণ জী সন বচনাকাবক বচনা এহি পোথীমে কিএক দেন গেন?
কহবাক তাত্পর্য জে জনিক কবিতা বেসী দেন গেন ঋছি হুনক কবিতাক গণনা কিছু কম কহ ছুটৈন কবিকেঁ সম্মনিত কএন জা সকৈত ছন। মহাকবি বিদ্যাপতি, গোবিন্দ দাস, যাত্রী, বাজকমন, কীর্তি নাবাযণ মিশ্র কোনো পবিচযক মোহতাজ নহি ছথি হুনক কবিতা জোঁ এক-এক টা কম্মে বহিতএ তঁ কোনো হুনকা নোকনিক প্রতিষ্ঠা কম নহি ভহ জেতনি ছন? ঋদা কোনো বিষয বস্তুক মাত্র নকাবাত্মক স্বব নহি দেখবাক চাহী। মৈথিনী সাহিত্যমে সর্বকানীন কবিতা সভক সংকনন ঋত্যন্প ঋছি, তেঁ গুঞ্জন জীক প্রযাস সবাহনীয নাগন। পূর্ণতা কতহু নহি ভহ সকৈত ঋছি। প্রাচীন কবিক বচনা সভক চযনমে কোনো পূর্বাগ্রহ বা পক্ষপাত

নহি দেখএমে আএন। মাত্র আধুনিক কানক কিছু রচনাকারক মহত্ত্বপূর্ণ রচনা এহি পোথীমে নহি দেল গেল। গুঞ্জন জী ধন্যবাদক পাত্র ছথি জে অসগরে অংশত: ক্ষেত্রীন সংপাদন কএলনি। এহি তরহক অর্ন্তদ্বন্দ্বসঁ বঁচবাক নেল কোনো পোথীক সংপাদন এক ব্যক্তিসঁ নহি করবা কঽ তীন-চারি ব্যক্তিক সংপাদক মংডল দ্বারা করএবাক চাহী। জোঁ এহি তরহক প্রয়াস কএল জাএ তঁ ত্রুটিক সংভাবনা ক্ষীণ ভঽ সকৈত অছি। অংতমে স্বর্গীয রচনাকার সভকেঁ শ্রদ্ধাংজলি জীবিত রচনাকার সভকেঁ নমন সংগ-সংগ নেশনল বুক ট্রস্ট আ গংগেশ গুংজন জীককেঁ সাধুবাদ।

পোথীক নাও- মৈথিলী কবিতা সংচযন
সংপাদক- গংগেশ গুংজন
প্রকাশক- নেশনল বুক ট্রস্ট ইংডিযা
প্রকাশন বর্ষ- 2005
মূল্য- এক সয টকা মাত্র

ক্রুক্ষেত্রম্ ঋর্ন্তিমনক– (সমীক্ষা)

কিছু নোকক ওা প্ররৃতি হোগত ঋছি জে সদিখন ঋপন চন জীরনমে নর–নর প্রকাবক প্রযোগ করৈত বহৈত ঋছি। এহি নর প্রযোগক কাবণ জহানমে ঋপরস্থাক রিহান দেখএমে ঋরৈত ঋছি। প্রযোগ ধর্মিতা র্যক্তিক গচ্ছাসঁ নহি জন্ম নঃ সকৈছ, ওা তঁ নৈসর্গিক প্রতিভাক পবিণাম থিক। মৈথিনী সাহিত্যমে প্রযোগ ধর্মী সবস্রতী প্বত্রক ঋভার নহি পবংচ রর্তমান কানমে একটা এহেন প্রযোগধর্মী মিথিনা প্বত্রকেঁ মॉ মিথিনে ঋপন আঁচবমে সক্রিয কএননি, জে ততকানিক মৈথিনীক দশা রদনরাক প্রযাস কঃ বহন ছথি। ক্রাঁতিরাদী ঋা সম্যক রিচাব ধাবাক সম্পোষক ও র্যক্তি কেও ঋনচিন্হাব নহি– মৈথিনী সাহিত্যক প্রথম ঋংতর্জান পাক্ষিক পত্রিকা রিদেহক সম্পাদক– শ্রী গজেন্দ্র ঠাকুব ছথি। ভঃ সকৈত ঋছি জে কিছু নোক মৈথিনী সাহিত্যকেঁ ঋন্তর্জানসঁ জোড়রাক প্রযাস কএ বহন হএতাহ পবংচ একটা মূর্ত্ত রূপ দঃ ৬৪ ঋংক ধবি পহুঁচেরাক কার্য গজেন্দ্র জী কএনন্হি। সাহিত্যক নর–নর রিধা ঋা

সমাজক রেমাত্র রস্কাকেঁ মৈথিনীক খানি ংগনমে খারস্ক কঽ সাম্যরাদ খা সমাজরাদকেঁ রৈদেশীক মাষ্টিপব খানি হমবা সরঁহক মাথপব নাগন খনসোমাঁত কনঁককেঁ ধো দেননি। মাত্র ৬৪ খংকমে জে কার্য ভেন খছি ও কতহ-কতহ পহিনে ভেন ছন, খাত্ম খরনোকন কবরাক পশ্চাত্ জানন জা সকৈত খছি। সমাজক ফূজন, রেঁছপ্প খা উঁদাসীন রস্কাকেঁ খপন রযনাক মানস পটনপব খাচ্ছাদিত কবরাক নেন সাহস সভ কেও নহি জ্টো সকৈত খছি। মাত্র ভ াঁজ প্ববযরাক নেন মানস প্বত্র এহেন কার্য নহি কএননি, ওহি উঁপেক্ষিত রস্কাক বচনা কাবক বচনামে রিষএ-রস্তুক গতিশীনতা খা তাদাত্ম্য রোধ ককরোসঁ কম নহি খছি। প্রযোগধর্মী গজেন্দ্র জীক কর্মক দোসব খাহ্মখ থিক হিনক নেখনীক ধাবসঁ নিকনন গন্দ্রধন্বষক সতবংগী গ্বনানসঁ ভবন ভারক খাত্মউঁদরোধন- "ফৰক্ষেত্রম খন্তর্মনক"

এহি পোথীকেঁ কী কহন জাএ উঁপন্যাস, গন্প, রাঁন সাহিত্য, সমানোচনা, প্ররংধ রা কার্য ? সাহিত্যক সভ রিধাক খমিব বসকেঁ ঘোবি রংগোপখাড় ী রনা দেননি জতএ ঙা কহর খসংভর খছি জে গংগা, কোশী, যহ্মনা রা হ্গনী ককব নীব কতএ খছি ?

শীর্ষক দেখি খকচকা গেন ছনহুঁ, ঙা মহাভাবত মচৌতা কী! হ্মদা খপন দ্বন্দএসঁ সোচন জাএ প্রত্যেক মানরক দ্বন্দএক দৃষ্টা ৰূপ হোগত খছি, হ্মদা খন্তর্মন সদিখন সত্য রঁজৈত খছি ওহিঠাঁ মিথ্যাক স্থান নহি।

ফৰক্ষেত্র বণভূমি খরশ্য ছন পবংচ ওহিঠাঁ সত্যক রিজযক নেন যহ্ম ভেন। ওহিঠাঁ ধর্মসংস্থাপনার্থ রিনাশী নীনা মচন ছন। হমবা সভকেঁ খপন খন্তর্খাত্মামে ফৰক্ষেত্রক দর্শন কবএরাক নেন দিশা নির্দেশন কঽ

বহল ছথি গজেন্দ্র জী।
মৈথিলী সাহিত্যক কোন ত্ত্বসত্যকেঁ ত্যাগ কবরাক চাহী ? কিত্ত্বএ স্বমধ্ব রযনাক এহেন দশা ভেল ? নর পথক নির্মাণ নরন দৃষ্টিকোণসঁ হএত। হমবা ব্ঝনে এহি পোথীমে সাহিত্য সমাগমক নেন দৃষ্টিকোণকেঁ প্রাথমিকতা দেন গেন ত্ত্বছি। এহেন রিনক্ষণ সাহিত্যপব ত্ত্বানেখ নিখর হমবা নেন ত্ত্বাসান নহি ত্ত্বছি- ঝদা দ্:সাহস কঽ বহল ছী-

ভঽ বহল রর্ণ-রর্ণ নি:শেষ
শব্ঁদসঁ প্রকটৈল নহি উঁধেশ্য
মোনমে বহল মনক সভ রাত
ত্ত্বছি ংজনসঁ সধ: স্নাত
সাত খণ্ডমে রিভক্ত এহি পোথীকেঁ সম্পূর্ণ পবিরাবক নেন সনেশ কহি সকৈত ছী।
প্ররংধ-নিরংধ-সমানোচনা:- এহি খণ্ডক ত্ত্বাদি নোকগাথাপব ত্ত্বাধাবিত কথা সীত-রসংতসঁ কএল গেন ত্ত্বছি। উঁত্তব মধ্যকানীন গতিহাসমে ত্ত্বনহা-ঊঁদন, শীত রসংত সন কতেক কথা প্রচনিত ছন, জকব মংচন পদ্যক ৰূপমে রর্তমানকানমে রিহাবক গাম-গামমে ভঽ বহল ত্ত্বছি। এক বাজ পবিরাবক রিষয-রস্তুক চিত্রণ করৈত নেখক সতমাএক ি সনেহপব প্রশ্ন চিন্হ নগৈরাক প্রযাস কএননি ত্ত্বছি ? কথাক ত্ত্বাবংভসঁ গতি ধবি মর্মস্পর্শক ত্ত্বনুভর হোগত ত্ত্বছি। কথাক ত্ত্বংতমে রিমাতাকেঁ ওহি পুত্রক ছাযা ভেটৈননি জকব পবাভর ও কঽ দেনে ছনীহ।
শ্রী মাযানন্দ মিশ্র মৈথিলী সাহিত্যক সভ রিধাক মাঁজন সাহিত্য কাব মানন জাগত ছথি। হ্নক গতিহাস

रोधक चारू प्रमुख स्तंभ प्रथमं शैलपत्री च, मंत्रपुत्र, पुरोहित आ स्त्रीधनपर सम्यक आलेख प्रस्तुत कऽ गजेन्द्र जी पूर्वमे लिखल गेल प्रबंधक दृष्टिकोणकेँ चुनौती दऽ रहल छथि। ऋृग्वैदिक कालीन इतिहासपर आधारित मंत्रपुत्र मायानन्द जीक प्रमुख कृति मानल जाइत अछि। एहि पोथीक लेल माया जीकेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल अछि। मंत्रपुत्र पाश्चात्य इतिहाससँ प्रभावित अछि। मंत्रपुत्रक संग-संग पुरोहितमे सेहो पाश्चात्य संस्कृति तक झलकि देखए अबैत अछि। अपन समालोचनाकेँ गजेन्द्र जी अक्षरश: प्रमाणित कऽ देने छथि, यदा मायावादूक रचना संसारपर कोनो तरह प्रश्न चिन्ह नहि ठाढ़ कएलनि। समीक्षाक रूप एहने होएबाक चाही। समीक्षककेँ पूर्वाग्रह रहित रहनासँ साहित्यिक कृतिक मर्यादा भंग नहि होइत अछि।

केदारनाथ चौधरी जीक दू गोट उपन्यास 'चमेली रानी' आ 'माहुर'पर गजेन्द्र जीक समीक्षा पूर्णत: सत्य मानल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे बहुत रास रचनाक बिक्री सम्पूर्ण मैथिल समाजमे जतेक नहि भऽ सकल, 'चमेली रानी'क ओतेक बिक्री मात्र जनकपुरमे भेल। एहिसँ एहि साहित्यक प्रति पाठकक श्रद्धाकेँ देखल जा सकैत अछि। 'माहुर' मैथिली साहित्यक लेल क्रांतिकारी उपन्यास थिक। अरविन्द अडिगक कृतिक चरित्रसँ एहि उपन्यासक एक पात्रक तुलना लेखकक भाषायी समृद्धताकेँ प्रदर्शित करैत अछि।

विदेह-सदेहक सौजन्यसँ श्रुति प्रकाशन द्वारा नचिकेता जीक एकटा नाटक 'नो एण्ट्री मा प्रविश' प्रकाशित भेल अछि। एहि नाटकक लेखनपर नचिकेता जीकेँ कीर्ति

नारायण मिश्र सम्मान देल गेल अछि। नाटकक चारू कल्लोलक तर्क पूर्ण विश्लेषण कऽ गजेन्द्र जी समीक्षाक रूप देबाक प्रयास कएलनि अछि। एहि नाटकमे तार्किकता आ आधुनिकताक विषय वस्तु निष्ठताकेँ ठाम-ठाम लखाओल गेल अछि।
रचना लिखबासँ पहिने अध्यायमे गजेन्द्र जी मैथिली साहित्यमे भाषा सम्पादनपर विशेष ध्यान देबाक प्रयास कएलनि। अपन साहित्यमे भाषायी त्रुटिपर पूर्णरूपसँ ध्यान नहि देल जा रहल अछि।
कविशेखर ज्योतिरीश्वर, विद्यापति शब्दावली, रसमय कवि चतुर्भुज शब्दावली आ बद्रीनाथ शब्दावली द्वारा मिथिला-मैथिलीक सर्वकालीन शब्द विन्यासक आ शब्द भंडारक विस्तृत वर्णन कएल गेल अछि। एहिसँ निश्चय भाषा सम्पादनमे सहायता भेटैत। कतेक बात एहेन शब्द अछि जकर विषयमे हम की साहित्यक पैघ-पैघ लेखो पहिने नहि जनैत होएताह। निश्चित रूपसँ ई अध्याय पाठकक संग-संग साहित्यकार आ अभ्यर्थी सेवाक ओहि प्रतियोगीक लेल उपयोगी हएत जे मैथिलीकेँ मुख्य विषयक रूपे प्रतियोगितामे सम्मिलित होएबाक लेल प्रयत्नशील छथि। समीक्षक हमरा सबहक मध्य एकटा नव पद्य विधाक चर्च कऽ रहल छथि- हाइकू। एहि विधापर मैथिलीमे पहिनहुँ रचना होइत छल जेना- "ई अवदबाक मेघ नहि मानता रहत बरसिकेँ। मुदा एहि विधाकेँ क्षणिका नामसँ जानल जाइत छल। जापानी साहित्यक द्वारा सृजित एहि पद्य रूपक वास्तविक चित्रण मैथिली साहित्यमे गजेन्द्र जी आ ज्योति झा चौधरी कएलनि अछि।
मिथिलाक लेल प्रलय रहल जाए वा विभीषिका- 'बाढ़ि'

ओ शेर्द स्वनितहि कोशी, कमना, बॅनान, गंडकी, बाँगमती आ करेहक आँतसँ ओम्नबाएन नोक सभ क ाँपि जागत छथि। एहि समस्याक स्थिति, सबकाबी प्रयासक गति आ दिशाक संग-संग बँचबाक उँपाएपब नेखकक दृष्टिकोण नीक बॅम्नना जागत अछि।

कोनो ठाम आ कोनो आन धाममे जौं हमबा नोकनिक रिषयमे पता चनए-की मैथिन छथि, नोकक दृष्टिकोण स्पष्ट भऽ जागत अछि- हम सभ मछगिह्वा छी। एकब काबण जे धाबक कातमे बहनिहाब जीरक जीरन जनचबे जकाँ होगत अछि।

जनीय जीरक भक्षण अधिकाँशि र्यक्ति कबैत छथि। तेँ ने हमबा सभकेँ म ाँछ आ मखानक प्रेमी बॅम्नन जागत अछि, आ रास्तरमे हम सभ म ाँछक प्रेमी छी। अधिकाँशि मैथिन ब्राह्मण परिबाबमे सोगबीसँ श्राद्ध धबि माँ छक भक्षण अनिरार्य अछि। अ ान जातिमे अनिरार्य तँ नहि अछि, ह्मदा ओह् बस्नाक अधिकाँशि नोक म ाँछक प्रेमी छथि। नेखक एहि नोकक भक्षण धाबकेँ ध्यान धबैत हृषि मत्स्य शेर्दाबनी निखनन्हि अछि। एहिमे सभ प्रकाब म ाँछक आकाब, बंग, बुपक रिश्नेषण कएन गेन अछि। हृषिकार्यक नेन जोड ा बबदक संग हब पानो गत्यादिक ज्रनन्त र्यरस्थापब नेखकक रिचाब नीक मानन जा सकैत अछि। कबैन, ताबबूज आ खीबाक रिरिध प्रकाबक नाओ स्वनि गामक जिनगी स्मबण आरि जागत अछि।

एहि खण्डक सभसँ नीक रिषय जे हमबा अन्तर्मनकेँ हिनकोबि देनक ओ अछि रिस्मृति करि- पंडित बाम जी चौधबीक बचना संसाबपब प्रराहमय आ रिस्तृत प्रस्तुति।

हमरा सबहक भाषाक संग िकछु विषमता रहल जे एहिमे कतेक बात एहेन रचनाकार भेल छथि जे अपने संग अपन रचनाकेँ गेठ बान्हने विदा भऽ गेलाह। एकर कारण एहिमे सँ किछु रचनाकारक रचनाक संकलन नहि भऽ सकल वा भेलो कएल तँ पाठक धरि नहि पहुँचल। एहि लेल ककरा दोष देल जाए रचनाकारकेँ आ हमरा सबहक भाषाक तत्कालीन रक्षक लोकनिकेँ ? एहि भीड़मे राम जी चौधरीक नाओ सेहो अछि। मैथिली साहित्यमे रागपर लिखल रचनामे राम जी बाबूक रचना सेहो अछि। भक्तिमय राग विनय विहाग, महेशवाणी, ठुमरी तिरहुता, ध्रुपद, चैती आ समदाओनक रूपमे हुनक लेखनीसँ निकलैत गीत सभ अनमोल अछि। शास्त्रीय शैलीक मैथिली गायनमे वर्तमान पिढ़ीक लेल अत्यन्त उपयोगी रचना सभकेँ प्रकाशमे आनि गजेन्द्र जी मिथिला, मैथिली आ मैथिलपर पैघ उपकार कएलनि अछि। सत्यकेँ स्वीकार करबाक सामर्थ्य मात्र किछुए लोकमे होइत अछि। गजेन्द्र जी ओहि लोकक पातरिमे ठाढ़ एक व्यक्ति छथि परिणामत: मैथिली साहित्य भोजपुरीसँ आगाँ मानल जाइत अछि मुदा गुणवत्ताक दृष्टिए भोजपुरी बात परिमार्जित अछि। भोजपुरी साहित्यक काल पुरूष भिखारी ठाकुरक मर्म स्पर्शी विदेशिया एहि भाषाक अलग पहिचान भेटैल। मैथिली भाषामे विदेशियाक कमीक मुख्य कारण बहल-प्रवासक प्रति उदासीनता। जौं लिखलो गेल तँ महाकाव्यक रूप दऽ देल गेल। विदेशिया पद्य आ विधापतिक लिखल ? हमरो विश्वास नहि भेल छल। विद्यापतिकेँ मुख्यत: श्रृंगारिक कवि मानल जाइत अछि। ओना हुनक

बचनाकेँ भक्ति बससँ सेहो जोड़ल जाइत अछि। कृष्णक्षेत्रम अन्तर्मनक पोथी पढ़लासँ नव सोच मोनमे आबि गेल। जकरा भोजपुरी साहित्यमे विदेशिया कहल गेल वास्तवमे मैथिलीमे ओ अछि- पिया देशान्तर।
विद्यापतिक नेपाल पदावलीमे एहि प्रकार बचना सभ संकलित अछि, मुदा कहियो एहि रूपे महिमा मंडित नहि कएल गेल। कारण स्पष्ट अछि पिया देशान्तरक नाट्य रूप मिथिलाक पिछड़ल जातिक मध्य प्रदर्शित कएल जाइत अछि। तेँ अग्रसोची लोकनि एकरासँ दूरे बहुर उचित बुझैत छथि। एहिसँ मैथिलीक दशा-दिशाकेँ नव गति कोना भेटि सकैत अछि। मैथिली लोकभाषा अछि, लोक संस्कृतिकेँ बढ़ैबाक प्रयास करबाक चाही। गजेन्द्र जीक सोझ दृष्टिकोणकेँ विस्तारित करबाक चाही।
“एतहि जानिअ सखि प्रियतम व्यथा” –श्रृंगारिक-विरह व्यथाक वर्णन मुदा अछि तँ पिया देशान्तर।
श्री स्वभाष चन्द्र यादव जीक कथा संग्रह ‘बनैत-बिगड़ैत’पर गजेन्द्र जीक समीक्षा अपूर्व अछि। प्रवेशिकामे हुनक कथा ‘काठक बनल लोक’ पढ़ने छलहुँ। काठक बनल लोकक नायक बदरियाक मर्म देखि पाथरो पिघलि जा सकैत अछि। वास्तवमे स्वभाष जी मैथिली साहित्यक फनीश्वर नाथ रेणु छथि। महिमा मंडनक कालमे मात्र भाँज पुरएबाक लेल हिनक कथा पाठ्यक्रममे दए देल जाइत अछि। आँचलिक बचनाकेँ कहिया धरि उपहासक पथियामे झाँपि कए बाखल जाएत? एक नहि एक दिन छीप उधिया जएत आ सत्यक सामना करए पड़त। लोक धर्मी

সাহিত্যকার চাহে ও ধূমকেতু, ক্ষমার পরন কমলা চৌধরী, সুভাষ চন্দ্র যাদর, জগদীশ প্রসাদ মংডন রা কোনো আন হোথ্- হ্নকা সরঁহক বচনাক উঁপেক্ষা নহি হোএরাক চাহী। সুভাষ জীক কথা কনিযা-পুতবা, রঁনৈত-রিগড়ৈত আ দৃষ্টিক সমীক্ষা দেখি সমএ-কানক দশাক অরিবন দ্বন্দ্ব উঁপস্থিত ভঽ জাগত অছি। শ্রী ছী জে গজেন্দ্র রাঁরূ এহি পোথীপব সমীক্ষা নিখনন্হি। গংঠবনেঠক নেন অন্তর্জনি প্রযোগ, নীক নাগন। রেরসাগংঠ রঁনএরাক তকনীকসঁ গজেন্দ্র জীক উঁদ্বাধন আ নিযমন নহি বুঁঝি সকনহুঁ। তীন রেবি পঢ়নহুঁ ঋদা জেঠক তেজ রিহাবি জকাঁ মাঁথপবসঁ উঁড়ি গেন। নর-নর নেনা ভুঠকা বুঁঝি জএতাহ। তকনীকী যুগক নেনাক স্মবণ শক্তিক আঁগন পৈঘ হোগত ছথি তেঁ হ্নকে সরঁহক নেন এহি অধ্যাযকেঁ ছোড়ি দেনহুঁ। নোবিক গাথা সমাজক উঁপেক্ষিত রক্সাক সংস্কৃতিপব আধাবিত অছি। সহবসা-স্বপৌনক রীব আদি পুরুষ নোকিকক পবিচএ-পাতমে পৌবাণিক মৈথিন সংস্কৃতিক দর্শন হোগত অছি।
মিথিনাক খোজমে জনকপুব, স্বগ্গা ধনুষা সন নেপানক স্থনসঁ নঽ কঽ মধুরঁনী জিনাক কতেকো উঁত্তব মৈথিন গামসঁ দক্ষিণমে জযমংগনাগঢ় (রেগূসবায)ক চর্চ কএন গেন অছি। পূরমে পূর্ণিযা কিশন গংজক কতেক স্থনসঁ নঽ পশ্চিমমে চাষ্মণ্ডা (ম্নজফ্ফবপুব)ক মাঁ দুগাকি মংদিবক চর্চ কএন গেন অছি।
মিথিনাক কিছু স্থানক রর্ণন এহি স্বচীমে নহি ভেঠন জেনা- সতী স্থান (গাম-শাসন প্রখংড-হসনপুব জিনা-সমস্তীপুব) আ উঁদযনাচার্যক জন্ম স্থনী (গাম-কবিযন জিনা- সমস্তীপুব)। এহি নেন নেখককেঁ দোষ

নহি দেল জা সকৈত অছি, কিএক তঁ মিথিলাক খোজ বিদেহসঁ লেল গেল অছি, জাহিমে গজেন্দ্র জী অবাহল কএনে ছথি, জে জিনকা লগ কোনো প্রসিদ্ধ স্থলক বিষএমে জানকাবী হ্অএ জে এহিমে সম্মিলিত নহি অছি তঁ ওকব ছাযা চিত্রক সংগ সূচনা পঠাওল জাএ। কিছু স্থল আব ছুটৈল ভ২ সকৈত অছি, প্রবুদ্ধ পাঠক এহি বিষএপব কার্য ক২ সকৈত ছী।

সহস্ত্রবাঢ়নি উঁপন্যাস :- সহস্ত্রবাঢ়নি একটা আকাশীয পিণ্ড হোগত অছি, জকব দর্শন আর্যিক ধার্মিক দৃষ্টিকোণমে অছোপ বুঝনা জাগত অছি, ফদা উঁপন্যাসকাব এক অছোপ পিণ্ডকেঁ আত্মসাত্ কবৈত একবা সারিত্রী বঁনা দেলনি। সারিত্রী অপন পাতিব্রত্য আ দৃঢ় নিশ্চযসঁ সত্যবানক প্রাণ যমবাজসঁ ছীনি লেনে ছলীহ। এহি উঁপন্যাসক দৃষ্টিকোণ তঁ এহন নহি অছি পবংচ উঁপন্যাসক নাযক আকণিক মৃত্যপব বিজযমে সহস্ত্রবাঢ়নিক উঁত্প্রেবণাক উঁদ্বাধন কএন গেল খিছ। কুরুক্ষেত্রম অন্তর্মনক মূন পৃষ্ঠপব সহস্ত্রবাঢ়নিক চিত্র দেল গেল অছি। এহিসঁ প্রমাণিত হোগত অছি বচনাকাবক দৃষ্টিমে সম্পূর্ণ পোথীক সাতো খণ্ডমে এহি উঁপন্যাসক বিশেষ মহত্র অছি। সহস্ত্রবাঢ়নিক অধ্যযন কএনাপব উঁন্নিসম শতাব্দীক উঁতবার্শিসঁ বর্তমানকান ধবিক বর্ণন কএন গেল অছি। এক পবিবাবক এক সএ পংদ্রহ বঁবখক কথাক বর্ণনকেঁ কন্প কথা মানব নিশ্চিত রূপসঁ বচনাকাবক ভাবনাপব কুঠাবাঘাত মানল জাএত। সধ: ও কথা বচনাকাবক পঁজিড়ি ক কথা অছি। জোঁ একবা গেজেন্দ্র বাঁবূক আত্মকথা মানল জাএ তঁ সংভরত: অতি শযোক্তি নহি হএত।

उँपन्यासक आदि पुरुष मि ंगुर रॉबू एकटा किसान छथि। जनिक घरमे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक स्थापना वर्ख सन् १++३.ओ.मे एकटा बॉलक जन्म लेलन्हि- कनित। कनितक लेलपनसँ एहि उँपन्यासक श्री गणेश कएल गेल। कनितकेँ ओहि कालमे बंगाली शिक्षकसँ अंग्रेजीक शिक्षण व्यवस्था दरिभंगामे कएल गेल। एहिसँ दू प्रकारक भारक रोध लोगत अछि। पहिल जे मि ंगुर रॉबू समृद्ध लोक छलाह। ओहि कालमे अरहठुक शिक्षा सेहो गलल ग्रथल परिवारमे देल जाएत छल, अंग्रेजीक कथा तँ अति विरल छल। दोसर जे बंगाली लोक हमरा सभसँ शिक्षाक दृष्टिमे आगाँ छलाह। बंगाली जातिक अंग्रेजी शिक्षक, हम सभ कतेक पाछाँ छलहुँ जे हमरा सबहक संस्कृतिक राजधानी दरिभंगामे कोनो मैथिल अंग्रेजी शिक्षक मि ंगुर रॉबूकेँ नहि भेटैलन्हि।
सौराठ आ ससौलाक सभा गाछीक चर्च तँ बेबि-बेबि कएल जाएत अछि, मुदा एहि पोथीमे विलुप्त सभा बनान कातक गाम परतापुरक सभा गाछीसँ कथाकेँ जोड़ बाक दृष्टिकोण अलग मुदा नीक बुझना जाएत अछि। कनितक विवाहमे रव मठफामे, बूढ़ रविवाती कटैली गाड़ीमे आ जवान लोकक पैदल जाएब वर्तमान पीढ़ीक लेल अजगुत लागत मुदा अपन पुरातन संस्कृतिसँ लेना-भुटैकाकेँ आत्मसात करबाएब आवश्यक अछि। कनितक मृत्युक पश्चातक कथा हुनक छोटै पुत्र- नंद-क परिधिमे घूमए लागल। नंदक पावदर्शी सोच, अपन कनियासँ प्रत्यक्षत: गप्प करब, हृतीय पुरुषक रूपे संबोधन नहि। मिथिलामे रव-कनिया, सासु-पुतोहु, साहु जमाएक गप्पमे हृतीय

प्वऋषक संरोधन थ्वनिरार्य होगत थ्वछि। एहि प्रकावक र्यरस्थाक रिऋक्षु नंदजी थ्वपन नरन सोचकेँ केन्द्रित कएनन्हि। रब-कनियाँक संरंध स्राभारिक ऋपेँ तँ समझौता मात्र होगत थ्वछि पवंच संसावक र्यरस्थामे सभसँ परित्र था थ्वपूर्र संरँध यएह होगत थ्वछि। जीरन भवि निर्रहन कोनो एक जनक संग छूटैनापव दोसवमे र्यथा..... थ्वकथ्य र्यथा। तेँ एहि संरँधमे प्रत्यक्ष संरोधन होएराक चाही। हमव दृष्टिकोण ई नहि जे थ्वपन संस्कृति पवाभर कऽ देराक चाही, ऋदा संस्कृति था र्यरस्थाकेँ सेहो कानक गतिमे पविरर्तनक थ्वनिरार्यता प्रतीत होगत थ्वछि।

थ्वार्यरिर्त्त न्याय, कर्म, मीमांसा सन प्राजन दर्शनक थ्व ारिभार भूमि मानन जागत थ्वछि। एहि खण्डमे एकटा नर दर्शनसँ मिथिनाक भूमिकेँ रैशिष्टता प्रदान कएन गेन ओ थ्वछि- गमान था मर्मक रिम्रॅमे संरँधक मर्यादा। नंद राँरू गंजीनिर्यव छनाह। जोँ थ्वपन धर्मकेँ किछु ढीन कऽ दैतथि तँ भौतिकताक राँढ़ि सँ पविरार ओत-प्रोत भऽ सकैत छन। ऋदा एना नहि कऽ सतत थ्वपन कर्मकेँ साकाव सत्यसँ राँन्हि नेनन्हि। स्राभारिक थ्वछि थ्वर्थयुगमे गमानक प्रासंगिकता रॅड़ ओछ भऽ जागत थ्वछि। थ्वसमए मृत्युक पश्चात् पविरावक दशाक रिरेचन मर्मस्पर्शी नागन। हुनक सत् कर्मक प्रभार यएह भेन जे संतान सभ रिशेषत: थ्वाऋणि भौतिक ऋपसँ वास संपन्न तँ नहि भऽ सकनाह ऋदा पिताक छत्र-छायाक थ्वाँगनमे मन्वक्थ भऽ गेनाह। कर्मक गतिसँ नोक बाज भोगकेँ प्राप्त तँ कए सकैत थ्वछि, ऋदा मन्वक्थ रॅनराक नेन नैसर्गिक संस्काव रेशी महत्रपूर्ण होगत थ्वछि। तेँ कहनो

গেন ঋছি- "বঁঠ়এ পূত পিতাক ধর্মে।" কতহ্-কতহ্ নীচ রিচাবক মানরক সংতান মন্বসংতান ভ২ জাগত ঋছি, এহিমে দৈহিক সংস্কাব ঋা প্রগ্নতিক নীনা হোগত ঋছি। ঋাঞ্চলিক দূঠ় রিশ্রাসপব কেন্দ্রিত এহি উঁপন্যাসক কথামে সতত প্ররাহক গংগধাবা খহখহ ঋা শীতন ব্ঁঝনা গেন। জঁ কথাকেঁ ঋাত্মসাত্ কএন জাএ তঁ কোনো ঋর্থমে একবা কান্পনিক নহি মানন জা সকৈছ। ঋাত্মকথা স্পষ্টত: নহি মানি সকৈত ছী, কিএক তঁ উঁপন্যাসকাব কোনো ৰূপেঁ একব উঁদ্বরোঁধন নহি কএননি ঋছি। ভ২ সকৈত ঋছি সমাজক ঋগন-বঁগনক বেখাচিত্র হো, ঝদা হমবা মতেঁ ও কন্পনা নহি, সত্য ঘটনাপব ঋাধাবিত ঋছি।

উঁপন্যাসমে একটা কমী সেহো দেখনহুঁ। ঋংগ্রেজী ঋাখবক ঠাম-ঠাম প্রযোগ কএন গেন জেনা- এনেশ্থেশিযা, ওপিনিযন, এম্প্রেশন ঋাদি। এহি সভ শব্দক স্থানপব ঋপন শব্দক প্রযোগ কএন জা সকৈত ছন, ঝদা নহি কএন গেন। হমবা ব্ঁঝনে হম দোসব ভাখাক ওহি শব্দ সভকেঁ মাত্র ঋাত্মসাত কবী জকব স্থানপব হমব ঋপন ভাখামে শব্দক ঋভার ঋছি।

সহস্ত্রাব্দীক চৌপড়পব :- ঝঞ্চক্ষেত্রম ঋন্তর্মনকক তেসব খণ্ড করিতা সংগ্রহক ৰূপমে ঋছি, জকব শীর্ষক 'সহস্ত্রাব্দীক চৌপড়পব' দেন গেন। মাত্র তৈংতানীস গোটে করিতাক সম্মিননমে শ্রংগাব, রিবহ হৈকূ, রিচাব মূনক করিতাক সংগ-সংগ একটা ধ্রজ গীত সেহো ঋছি। গনদ্রধন্বষক ঋাসমানী বংগ জকাঁ প্রথম করিতা 'শামিন রাজাক দুন্দভী রাদক'মে ক্ষণিক প্রগ্নতিক ঋারবণমে স্রব-সবগমক ভান হোগত ঋছি, ঝদা ঋন্তবক ঋরনোকনক পশ্চাত্ দশা পূর্ণত: রিনগ।

বাজস্থানক রাষ্ট্য সংস্কৃতিমে একটা দর্শক রাষ্ট্য যংত্রক প্রাসংগিকতাক কেন্দ্রনমে করিক ভার খস্পষ্ট নাগন। সহজ খছি ‘জতহ‘ নহি পহুঁচথি, স্থে াতহ গএননি করি’। করি স্রযং দ্নদভী রাদক ছথি তেঁ স্পষ্ট দর্শন কোনা হএত। হিন্দী সাহিত্যমে একটা করিতা পঢ়নে ছনহ্ঁ ‘গোবৈযো কী মজনিসমে কোযন হৈ ক্ষজবিম’। সংভরত: সমাজক পথ প্রদর্শকক মূক দৃষ্টকোণকেঁ করিতাক কেন্দ্র রিন্দ্ রঁনাওন গেন খছি। রঁহ্খাযামী র্যক্তিত্রক ধনী র্যক্তি সেহো জীরনক গতিমে দরাঁরক খন্বভর করৈত কতহ্–কতহ্ খপন সংরেদনাকেঁ দরা কহ দ্নদভী রঁনরাক নাটক করৈত ছথি। কেও–কেও দোসবকেঁ সংতুষ্ট কবরাঁক নেন খপন রিচাবধাবা রাহ্য মনসঁ রঁদৈন দৈত ছথি। সংতুষ্টীকবণ প্ররৃতি রা কোনো প্রকাবক মজবূবী হো হমবা সভকেঁ পবিস্থিতিসঁ সামংজস কবরাঁক রঁহানে খপন সম্যক রিচাবকেঁ মাটিক তবমে নহি ঝঁপরাক চাহী। সমাজ জোঁ একবা পূরাগ্রহ মানএ তঁ খপন পক্ষক রিরেচন কএন জাএ, ক্ষদা খনস্কান প্রনাপকেঁ মূক সমর্থক নহি দেরাক চাহী।

মোনক বংগক খদৃশ্য দেরানমে পবিস্থিতিজন্য রিষমতাক রিষয রস্তুক দর্শন খাশাতীত খছি। মন্দাকিনী.... খা পক্কা জাঠি শীর্ষক করিতামে প্রকৃতি খা সমাজক স্থিতিক মধ্য রিগনিত মানরতাপব মূক প্রহাবমে করিক নৈসর্গিক ক্ষদা খদৃশ্য সোচ হমবা সন সাধাবণ সমীক্ষক নেন খন্বরূঝ পহেনী জকাঁ খছি। খপন প্ৰবাতন গতিহাসক ওহি দিরসকেঁ নোক স্মবণ নহি কবএ চাহৈত ছথি, জাহিসঁ খত্তন পীড়াক খন্বভর হোগত খছি। ত্রেতা যগক ঘটনা, কনিযগ ধবি পাছাঁ

ধেনে খছি। সীতা জীক রিযাহ খগহন শুক্ন পক্ষ পংচমীকেঁ ভেননি, পবিণাম সোন্না খিছ। তখন শেতানংদ প্বরোহিত জী খবড়ুখ রানী কাকীক রিখাহ ওহি তিথিমে কিএক করৌনন্হি ? ভ২ সকৈত খছি হ্নক ভাগ্যমে সীতাজী জকাঁ গৃহস্থ স্বখ নহি নিখন দ্খ ঝদা কনংক তঁ 'রিযাহ পংচমী' তিথিকেঁ দেন গেন। এহি করিতামে করিক দৃষ্টিকোণ তঁ রিধরা রিখাহক সমর্থন কবরাক খছি, ঝদা সরর্ণ মৈথিন নহি স্রীকাব ক২ বহন ছথি। খপন প্বরান সাঁগহ ন২ ক২ হম সভ হরড়ু াক প্বন রঁনাএরক কন্পনামে কহিযা ধবি ওঝবাএন বহর ?

এহি করিতা সংগ্রহমে জে নর রিষয রুঁঝনা গেন ও খছি 'রাঁবহ টা হৈকূ'। গিদবক নিরৈঠ, বাকশ থান, শাহীক মৌস খা রিধক নেন শব্দ-শব্দ রঁজৈত খছি। হৈকূক সার্থক খর্থ নগাএর খত্যন্ত কঠিন হোগত খছি, ঝদা হমবা রুঁঝনে জোঁ এহেন হৈকূ নিখন জাএ তঁ নেনো সভ জে মৈথিনীমে মাএ পবিরাব ফক্টৈম্রক সংগ রঁজৈত ছথি খরশ্য রূঁঝি জএতাহ।

মিথিনাক ধ্রজ গীতমে মাতৃভূমিসঁ কর্মক সার্থক গতি মাঁগন গেন খছি। জেনা গাযত্রী পবিরাবক প্রার্থনা রহ শক্তি হমে দো দযানিধি মে গাওত জাগত খছি। মাতৃ রংদনাকেঁ করিতা সংগ্রহমে দেরাক হিনক দৃষ্টিকোণ বচনাক্রমমে উঁপযক্ত হো ঝদা হমবা মতে একবা ফক্কক্ষেত্রম খন্তর্মনক প্রথম পৃষ্ঠপব রংদনাক রূপমে দেন গেন বহিতে তঁ রেঁসী স্বন্নব হোগতএ।

'রঁড়কা সড়ক ছহ নেন রঁনা'মে মিথিনাক রিকাসক ক্রমিত স্থিতিক রর্ণন কএন গেন খছি।

সম্পূর্ণ করিতা সংগ্রহক খরনোকনক রাদ কোনো পদ্য খকচ্ছ করৈরঁনা নহি নাগন। 'প্বত্র প্রাপ্তি' শীর্ষক

करितामे न्वधियानामे हमबा सरॅहक समूहक एकटा पंडितक ठकपचीसीक चर्च कएल गेल अछि। एहने ठकक कारण 'रिहारी' व्यक्तिकेँ आठ ठाम लोक शंकाक दृष्टिसँ देखैत छथि। आ गजेन्द्रजी सँ हमर आग्रह जे एहि करिताक पंजारी भाषामे अनुरादक अनुमति नहि देल जाए नहि तँ कतेको भलमानुष रॅलल मैथिल घुरि कऽ गाम आरि जएताह आ हमबा सरॅहक समाजमे अचड़ आरो रॅठ़ि जाएत।

गल्प गुच्छ :: २३ गोटे कथा-लघुकथाक सम्मिलन कऽ गल्प गुच्छक नाओ देल गेल। चौंसठि पृष्ठक एहि खण्डमे समए-सानक सभ रूपकेँ रिम्रित करैत कथाकार साहित्यक समग्र रिधापर लेखनक प्रयास कएलनि अछि। सब समाज कथामे अर्थनीतिक मौल प्रस्तुति लीक लागल आ कलात्मक शैलीक अभार रॅुझला गेल। युरक मरम्मतिक रिम्रित शिस्सामे कलेक रस-प्रराह रहितए तँ कथा आर नीक भऽ सकैत छल। हम नहि जाएर रिदेशमे पलायनरादक रिरोध कएल गेल अछि रिम्र तँ नीक अछि आ रिश्लेषणमे अलंकारक तादात्म्य नहि भेटैत। एहेन मार्मिक रिषय-रस्तुक कथा तँ ओहि प्रकारक लोएराक चाही जाहिसँ हियमे हिलकोरि उत्पन्न भऽ जाए। बाग भैरबी छोटे आ संस्कृतिकेँ छुरैत अछि। कान स्थान रिस्थापन आ रैशाखीपर जिनगीकेँ ओसत मानल जा सकैत छैक।

कोनो साहित्यकेँ ता धरि पूर्ण नहि मानल जा सकैछ जा धरि समाजक अंतिम व्यक्तिसँ संरॅधत भाषा साहित्यकेँ जोड़ल नहि गेल हुअए। "सर्र शिक्षा अभियान" कथाकेँ पढ़लाक राद मैथिली साहित्यमे दलित, पिछड़ा आदि रस्गक प्रति सरकारी योजनाक

ি নষ্ফন মোএরাঁক কাবণ কেব স্পষ্টীকবণ রাস্তরিক নগৈত খছি। পেটমে খন্নক ফক্কা নহি মো খা পোথী ঋথতমে ভেটএ, এহেন শিক্ষাক স্থিতিপব প্রশ্ন চিন্হ ঠাঠ় কবর স্রাভারিক খছি। সাম্যরাদী সোচ বাখএরঁনা কথাকাব কথাক রঁহানে স্পষ্ট কবএ চাহৈত ছথি জে গবীরঁক মধ্য জাতিক খাধাবপব রিভাজন হমবা সরঁহক সমাজক কন্বষ রূপ থিক। ছোট উঁদ্দেশ্যপূর্ণ করিতাকেঁ ক্ষণিকা রা হাগকূক নাও দেন গেন ঋদা নঘ্কথাকেঁ কী কহন জাএ? নঘ্কথামে রিম্রক রিশ্নেষণ খতি কনিষ্ট মোগত খছি ঋদা "জাতিরাদী মবাঠী"মে মৈথিনী ভাষাক খস্তিত্রপব নাগন জাতিক কনংকক প্রস্তুতি সবাহনীয খছি। থেথব মন্বক্খ, রঁহ্পত্নী রিরাহ খা ি হজড় া, স্ত্রী-রেঁটী রিখাহ খা গোবনগাগ, প্রতিভা, খন্বকম্পাক নৌকবীক সভক রিষয-রস্তু ছোট-ছীন পবংচ সাবগর্ভিত নাগন। জেনা হিন্দী সাহিত্যক পত্র-পত্রিকামে চর্চিত নেখক খ্শিরঁন্ত সি ংহ মাত্র দূ প াঁতিমে রঁহ্ত-বাস গপ্প নিখি জাগত ছথি ঠীক ওহিনা এহি সভ নঘ্কথাকেঁ পঠ় ি রুঁঝনা গেন।

জাতি-পাতি নঘ্কথা তঁ পূর্ণত: রেঁচ্ছপ নাগন। একটা ডোম জাতিক খাগ.পী.এস. পবিরীক্ষাধীন খধিকাবীমে জাতিক গবানি কোনো খাত্মীয মন্বক্খকেঁ মর্মাহিত কঽ সকৈত খছি। মৃত্যদংড খা রাণরীবক সামাজিক রিম্রক সংগ-সংগ সামন্তরাদী, মীডিযাসঁ সংরঁধিত কথা সভকেঁ রেজোড় তঁ নহি ঋদা মৈ থনী সাহিত্যক নেন নূতন-ধাবাকেঁ স্পর্শ করৈরঁনা কথা জৌঁ মানন জাএ তঁ কোনো দোখ নহি।

খার প্রশ্ন উঁঠৈত খছি জে গন্প-গ্বচ্ছকেঁ

কোন ৰূপক মানল জাএ। হমৰা সৰঁহকে ভাষাক সংগ দুর্ভাগ্য বহল জে কথাক বিষয বস্তুসঁ বেশী ভাষা বিজ্ঞান, বিম্বক বিশ্লেষণ আ শব্দ বিন্যাসক কলাকাৰীপৰ বিশেষ ধ্যান দেল জাগত অছি। সাহিত্যক অধিকাংশ অধিষ্ঠাতা একটা গপ্পপৰ নহি ধ্যান দেবএ চাহৈত ছথি জে বচনাসঁ সমাজক পৰিদৃশ্যমে সম্যক জীবনক সনেশ জাএত বা নহি। জাতিক সংগ-সংগ সন্তুষ্টীকৰণ কেব ছদ্মসঁ ঊপৰ উঠব অনিবার্য অছি নহি তঁ মৈথিলীক অস্তিত্বপৰ প্রশ্ন চিন্হ ঠাঢ় ভঽ জএত। ভৌগোলিকীকৰণক পৰিধিমে মৈথিলী সভসঁ বেসী প্রভাবিত ভেল ছথি। সৌতিন ভাষাক সংগ-সংগ পাশ্চাত্য সংস্কৃতিক প্রভাৱসঁ বৈদেশী টীম টীমা গেলী। এহি ভাষামে নৱল অর্চিস জড়এবাক লেল ৰস্তু সংঘর্ষক স্থিতিসঁ ঊপৰ উঠি কঽ কার্য কৰবাক চাহী। পাগক অভিপ্রায জোঁ মৈথিল ব্রাহ্মণ আ কর্ণ কাযস্থক সংগ-সংগ বহল আপন হুদা জনভাষাক সংৰক্ষক ৰস্তু ধৰি পহুঁচবাক প্রযাস কএল জাএ তঁ মৈথিলীক দশামে ফেবি চাবি নহি আঠ গোটে চান নাগি জাএত।

এহি কথা সৰঁহক কথাকাৰ কথাক শৈলী ও বিবেচন জে হ্অএ একব নির্ণএ পাঠকপৰ ছোড়ি দেবাক চাহী হুদা বচনাক উদ্দেশ্য স্পষ্ট অছি। গজেন্দ্র জী নিশ্চিত ৰূপেঁ এহি কথা সংগ্রহক মাধ্যমসঁ সমাজমে অপন সংস্কৃতিক ৰক্ষা কৰৈত নূতন সম্যক জ্যোতি জড় াবএ চাহৈত ছথি, জতঽ ডোম, চমাৰ, ব্রাহ্মণ, বাজপূত, হুসলমান ও কাযস্থ নহি মাত্র "মৈথিল" শব্দক ব্যোমক পৰিধিমে মিথিলাক চর্চ কএল জাএ।

দুর্ভাগ্য অছি জে মৈথিলী পোথীক সমীক্ষা কৰবামে

आलोचना–प्रत्यालोचनाकेँ मूल विम्ब मानल जाइत छैक जखन की आन भाषामे वचनाकावक मनोवृति आ दृष्टिकोणपव ध्यान देल जाइत अछि।
नाटक– संकर्षण

मात्र १६ पृष्ठक नाटक, स्वनवाँमे कनेक अनसोहाँत जकाँ लगैत अछि मुदा जौँ तन्मय भऽ कऽ पढ़ल जाए तँ स्पष्ट भऽ जाइत जे हिन्दी साहित्यमे मात्र किछु कथाक कथाकाव श्री चन्द्रधव शर्मा गुलेवी जीकेँ कोना आ किए आत्मसात् कऽ लेल गेल ?
संकर्षण सन अभिनेता जाहि नाटकमे हुअए ओहिमे विशेष भावक उँपस्थिति स्वाभाविक अछि। अभिनेताक कोनो गुण नहि मुदा गजेन्द्र जी एकवा प्रधान नायक वँना देलनि। समाजक रूहवैत अवस्थाक यएह सत्य रूप थिक एक दिशी महीसक चववाह आ दोसव दिशि कनक्टवक चाटुकाव। मिथिलाक सामाजिक विम्बकेँ स्पर्श कवैत छोट नाटक संकर्षणमे नुक्कड़ नाटकक रूप अछि। "हौ गोनव! पानि कोना लागए देवैक एकवा। पएवक चमड़ा सड़ित तँ फेव लवका आवि जाएत। मुदा ई सड़ि जाएत तखन कतएसँ अएत।" कहवाक तात्पर्य जे जाहि व्यक्तिकेँ शवीवसँ वेसी किछु कैंचाक जुत्ता विशेष महत्वपूर्ण लगैत हुअए ओहि व्यक्तिमे जीवनक तादात्म्यक कोन प्रयोजन ? धर्मनीतिसँ अर्थनीति वेसी महत्वपूर्ण अछि। कानक वँदलैत स्वरूपक चिन्तन कववाक योग्य– संभवत: एहि नाटकक यएह उँद्देश्य थिक। मंचन कववाक लेल एकवा कोनो अर्थमे उँपयुक्त नहि मानल जा सकैछ। किएक तँ पर्दा उँठत आ आधा घंटामे नाटक समाप्त।

ঋদা জীৱনক নাটকমংডলীকেঁ কেন্দ্রিত কৱএ ৱঁনা সংকর্ষণ চিন্তন কৱৱাক যোগ্য অৱশ্য নাগন। সভটা নাটকমে কোনো নে কোনো ৰূপেঁ হাস্য আ শ্রৃংগাবক সম্মিলন হোগত অছি ঋদা এহি ঠাঁ অভাৱ কিএক তঁ সমাজক মনোবৃত্তিকেঁ ছৱৈত এিহ নাটককেঁ পঢ়ি কোনো কৱিক একটা কৱিতাক এক পাঁতি মোন পড়ি গেন–
"ঠোপ–ঠোপ চাবক চুআঠকেঁ আঁগ্নবসঁ উপছৈত বহন ছী"
গজেন্দ্র জীক প্রযাস ছোট পৰংচ অন্বকৱণীয নাগন।

ত্ৰন্চাহন্চ আ অসংজাতি মন– জেনা কী নাথ াসঁ স্পষ্ট ভৰ জাগত অছি জে দুনূ কার্য ঐতিহাসিক ধটনাকেঁ রিম্ৰিত কৰ নিখন গেন। ধর্ম আ কর্মক্ষেত্রক পবিধিমে আর্য সংস্কৃতিক ৰিৱেচন নীক নাগন। এহি মহাকার্যক ৰিষযমে মাত্র যএহ কহন জা সকৈত অছি জে স্বৰেন্দ্র ঝা স্বমন, ৰৈধনাথ মল্লিক ৰিধু আ মার্কণ্ডেয প্রৱাসী জীক কার্য নেখন পৰম্পৰাকেঁ জীৱংত ৰখৱাক প্রযাস কএন গেন।

ৱাঁনমংডনী আ কিশোৱ জগত– হম সভ গৌৱৱান্ৱিত ছী জে মৈথিনী ভাষা সমগ্র আর্য পৰিৱাবক ভাষা সমূহমে সভসঁ সৱস ভাষা মানন জাগত অছি। সাহিত্য চিন্তন সেহো পাঠকক গণনাকেঁ দেখৈত ককৱোসঁ কম নহি। ঋদা একটা পক্ষ জে সভসঁ কমজোৱ বহন ও ি থক মৈথিনী ভাষা সাহিত্যমে "ৱাঁন সাহিত্যক দবিদ্রতা।" কহৱাঁক নেন তঁ ৱঁহুত বাস নেখক ৱা কৱি অপনাকেঁ ৱাঁন সাহিত্যসঁ জোড়ৱাক সতত্ ৱাক্ পটুতা দেখৱৈত ছথি ঋদা জোঁ পূর্ণ ৰূপসঁ ৱাঁন

সাহিত্যক বচনাক গণনা কএন জাএ তঁ জীরকাঁত জী সন মাত্র কিছু সাহিত্যকাব ছথি জিনক নেখনী এহি দিশামে ক্রিযাশীন বহন। জখন কী বাঁন সাহিত্য জোঁ পবিমার্জিত নহি হএত তঁ নিকট ভরিষ্যমে মাতৃভাষাক স্রৰূপ রিগনিত ভ॰ সকৈত খছি।

এহি দিশামে গজেন্দ্র জীক প্রযাসসঁ হ্রতক্ত হোএবাঁক চাহী জে কুৰুক্ষেত্রম খন্তর্মনক সাতো খণ্ডমে সভসঁ নীক খণ্ড বাঁন মংডনী। কিশোব জগতপব খপন নেখনীকেঁ হাথসঁ নহি হৃদযসঁ নিখনন্হি।

এহি খণ্ডমে দূ গোট বাঁন নাটক তেঁগস গোট বাঁন কথা, বর্ণমানা শিক্ষা খা এক সএসঁ ঙুপব বাঁন করিতা দেন গেন খছি। সভ রিম্রকেঁ কেন্দ্রিত কবৈত নিখন গেন বচনা সভক ভাষা খত্যন্ত সবন খছি। নেনা-ভুটকাকেঁ এহনে বচনা চাহী। জোঁ তত্সম মে বাঁন সাহিত্য নিখন জাএ তঁ ওকব কোন প্রযোজন ? করিতা সভ তঁ খূব নীক মানন জা সকৈত খছি-

খাগ ছুঙ্গী

কাল্হি ছুঙ্গী

ঘূমবঁ ফিববঁ জাএবঁ গাম......।

বাঁন বোঁধক নেন খনংকাবসঁ বৈঁসী মনক চংচনতা ঙুপযোগী হোগত ছৈক তঁএ এহি খণ্ডকেঁ খানোচনাত্মক স্রৰূপসঁ দেখবঁ ঙুচিত নহি।

নিষ্কর্ষ- সাত খণ্ডমে রিভক্ত এহি পোথীমে সাহিত্যক সমগ্র বসক স্রাদন কবএবাঁক প্রযাস কএন গেন। হ্মদা একব সভসঁ পৈঘ নকাবাত্মক স্রৰূপ জে একবা কী মানন জাএ ? ভ॰ সকৈত খছি সভ ধাবাকেঁ ছূবি গজেন্দ্র জী মৈথিনী সাহিত্যমে একটা নর ৰূপক ধাবা কেন্দ্রিত কবএ চাহৈত হোথি।

एकटा पोथीमे प्रबन्ध, समालोचना, उपन्यास, गल्प, कविता संग्रह, महाकाव्यक संग-संग बाल साहित्य पोथीकेँ विशाल बना देलक। भऽ सकैत अछि समीक्षक लोकनिक संग-संग किछु पाठककेँ नीक नहि लागनि मुदा हम एहि प्रकारक प्रयोगक स्वागत करब उचित बुझैत छी। ओना पाठकक सुविधाक लेल अलग-अलग सेहो प्रकाशित कएल गेल अछि।

सभसँ बेसी प्रकाशक धन्यवादक पात्र छथि जे एतेक विशाल पोथीक नीक रूपेँ आ सम्यक् मूल्यमे प्रकाशन कएलन्हि। भाषा सम्पादन सेहो नीक लागल, शाब्दिक आ व्याकरणीय अशुद्धता अत्यन्त न्यून अछि।

पाेथीक नाओ- कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक

लेखक- गजेन्द्र ठाकुर

<u>समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा</u>

किछु अर्थमे सन् 2008-2009केँ मैथिली साहित्यक विकासक लेल क्रांतिकाल मानल जा सकैत अछि। सन् 2008ई.मे मैथिली साहित्यमे एक गोटे बाल साहित्यक रचना मैथिलीक प्रवीण समीक्षक श्री तारानंद वियोगी जी कएलनि पोथिक नाओ- ई भेटैन तँ की भेटैन। साहित्य अकादमी द्वारा नव सृजित बाल साहित्य पुरस्कारसँ एहि पोथीकेँ पुरस्कृत कएल गेल अछि। जौं किछु वर्ष पूर्वमे साहित्य अकादमी एहि पुरस्कारकेँ स्थापित करितए तँ भऽ सकैत छल जे मैथिलीक स्थान रिक्त रहिताए किएक तँ कोनो-कोनो वर्षमे मैथिली साहित्यमे बाल साहित्यक रचना भेटने नहि छल। सन 2009ई.मे मैथिलीमे कोनो महिला रचनाकार द्वारा पहिल नाटक लिखल गेल। रचनाकार

ছথি মৈথিনীক প্রসিদ্ধ সাহিত্যকাব শ্রীমতী রিভা বানী খা নাটকক নাও– ভাগ বৌ খা ৰনচন্দা। হর্থক গপ্প জে এহি নাটকমে ৰান খা নাবী মনোরিজ্ঞানকেঁ রিম্রিত কএন গেন খছি। ওনা তঁ শ্রীমতী গনাবানী সি ংহ সেহো নাটক নিখনে ছথি হুদা ও সৃজনাত্মক নহি ভ২ ক২ খন্বদিত খছি। তঁএ শ্রীমতী রিভাবানীকেঁ মৈথিনী সাহিত্যক পহিন মহিনা নাটককাব মানন জা সকৈত খছি। ওনা শ্রীমতী উঁষা কিবণ খান নিখিত ভুসকৌন রানা পহিনে ছপন। ঞাঁতিক দীপ কোনো যোজনা ৰনা ক২ নহি জাবাওন সকৈত খছি। একব প্রত্যক্ষ প্রমাণ মৈথিনীমে পহিন চিত্রকথা– গোনূ ঝা খা খান মৈথিনী চিত্রকথা প্রস্তুত করৈত খছি। এহি চিত্রকথাক সৃজন শ্রীমতী প্রীতি ঠাকুব কএননি। প্রীতি জীক নাও এহি চিত্রকথাক নেখনসঁ পূর্ব কোনো সাহিত্য রা চিত্রাংকনমে ঝ◌ॉপন জকাঁ ছন। পহিন্বক বচনা খা ওহো মৈথিনী সাহিত্যক নেন খাদি রিষয মূনক। ভাবতীয সংরিধানক খাঠম খন্বসূচীমে বহিতহুঁ হম সভ কতহু– কতহু গ্বম্ম ছনহুঁ। প্রবব ভাষা সমূহক ভাষা মৈথিনীমে কিছু বচনাক রক্ষা খছূত ছন। খাশ্চর্য নাগন সংগে রিস্মিত ভেনহুঁ জে হমবা সমাজক একটা মহিনা এহি নরন রিষযপব কোনা কেন্দ্রিত ভ২ গেনী ?

এহি চিত্রকথামে সম্পূর্ণ মিথিনাক সংস্কৃতিকেঁ রিম্রিত করৈত জনশ্রুতি ত খা ঐতিহাসিক কথাক 16গোট খংডপব চিত্রকথা প্রস্তুত কএন গেন। পহিন নৌ গোট কথা গোনূ ঝাক কবনীপব নিখন গেন খছি। গোনূ ঝা কোনো খনচিনহাব নাম্ন া নহি। হুগন দববাবমে জে স্থান রীববৰনকেঁ ভেটন খছি মিথিনাক ৰাক্–পট্মে ও স্থান গোনূ ঝাকেঁ দেন গেন। গোনূ রিদূষক ছনাহ

ক্ষদা ককবো মহিমামংডিত মাত্র কবএ ৰনা রিদূষক নহি। খপন ৰ্বুদ্ধি খা চাত্তর্যসঁ ককবো ি রস্মিত কবৰাক কাবণেঁ হিনক কোনো জোড় নহি। দ্ভাগ্য জে গোনূ মৈথিন ছনাহ জোঁ খংগ্রেজ রা কোনো খান পাশ্চাত্য দেশক বহিতথি তঁ রীবৰনসঁ হিনক ত্তননা নহি ভহ কহ রীবরনক ত্তননা হিনকাসঁ কএন জাগত। হিনক ঙা দ্ভাগ্য হমবা সরহক নেন সৌভাগ্য ভেন জে এহি মিথিনাক ভূমিপব মহাকরি রিদ্যাপতি, গোনূ খা বাজা সনহেস সন মহামানরসঁ হমবা সভকেঁ খান নোক জনৈত খছি।

এহি পোথীমে সংকনিত পহিন চিত্রকথা গোনূঝা খা মা দ্গাজীসঁ গোনূ ঝাক রৌদ্ধিক সাক্ষাত্কাবক চর্চ কএন গেন খিছ। এহি কথাকেঁ তঁ ঐতিহাসিক মান্যতা নহি দেন জা সকৈত খছি কিএক তঁ গতিহাস খা রিজ্ঞানমে ভগরান মাত্র প্রস্থতিস্থ হোগত ছথি, কোনো রৈধানিক নহি। ক্ষদা জোঁ ভারক শৈতদনক সংগ দেখন জাএ তঁ নেনা-ত্তটকা নেন ঙা প্রশ্নসঁ ভবন কথা জিজ্ঞাসা খরশ্য উঁত্পন্ন কবাএত জাহিসঁ খংতত: মৈথিনী সাহিত্য খা ভাখাক নেন নাভ স্রাভারিক মানন জা সকৈছ। চিত্রক স্তব তঁ নীক, বংগ-নীক প্রদর্শন নীক ক্ষদা সিংহক চিত্র রিনাড় জকাঁ নাগন। কোনো বাজদবৰাব হ্খএ রা কোনো পিহু খা দের কর্মক স্থন, ব্রাহ্মণক সংগ-সংগ ঠাকুব খর্থাত হজামক ভূমিকা খান নোকসঁ রৈসী মানন জাগত খিছ। "গোনূ ঝা খা স্রস্ত্রকথা"মে একটা ঠাকুব গোনূকেঁ পছাড়এ চাহৈত ছথি ক্ষদা স্রযং চিত্ত। ছোট চিত্রকথামে নীক চ্ট্কা জকাঁ প্রস্তুতি।

গোনূ ঝাসঁ সংৰংধিত খান সাত গোট কথা সেহো

চোহ্টৈগব দেন গেন ঋছি। জনশ্রুতিক ঋাধাবপব নিখন গেন কথা সভ মাত্র ঐানমনোরিজ্ঞানক সেহ্ংতিত ছাযাচিত্র প্রস্তুত কবৈত ঋছি কিএক তঁ নিখনো মাত্র নেনা ভুট্‌কাক নেন গেন ঋিছ।

বেশীমা চূহড়্মন কথা ঐতিহাসিক কথা থিক। ভ২ সকৈত ঋছি ঋার্যরিত্তিক গতিহাসকাব একবা মান্যতা নহি দেথ্ ঝদা মিথিনাক গাম–গামমে চর্চিত ঋছি। দূধরংশী জাতিসঁ যদ্রংশীক তাদাত্ম্য হোগত ছৈক ঝদা এহি সাহিত্যক চূহড়্মন দ্গ্ধরংশী দ্সাধ ছথি ঋা নাযিকা বেশীমা ভূমিহাব ব্রাহ্মণ। নীক নাগন জে মোকামাঘাটৈক কথাক সৃজন কবরামে পূর্ণিযাক রণিতা ঋা মধ্রনীক প্বত্ররধূকেঁ কোনো সংকোচ নহি ভেননি। সিনেহকেঁ সমাজক জাতীয ব্যরস্থামে পদদনিত কবরাক দৃষ্টিকোণকেঁ এহি চিত্রকথামে তোড়্ন গেন ঋিছ। নৈকা ঐনিজাবা কথাপব ড্াঁ. মণিপদ্ম জীক নেখনী মৈথিনীমে সন 1973ঞ্জ.মে হ্লজি গেন ঋছি তঁএ এহি কথাসঁ নোকজন সভ নিশ্চিত পবিচিত ছথি। প্ররেশিকা স্তবপব মণিপদ্ম জীক ঞ কথা মৈথিনীমে দেন গেন ছন। এহি পোথীমে সবন ভাষা ঋা ঐানোন্ববাগী চিত্রাংকন নীক নগৈত ঋছি। ভগতা জোগিন প্্জিযাবক চিত্রাংকন সেহো নীক ৰূপেঁ রিম্ব্রিত কএন গেন ঋছি। প্রাচীন জনশ্রুতিক ন্বপ্ত কথা মহ্ঋা ঘটৈরাবিন ঋা ছেছন মহাবাজ পঠ্ি ঋা একব চিত্রাংকন দেখি নরকা পিবহীক নেনা ভুটৈকা সভ নিশ্চিত ৰূপসঁ মিথিনাক সংস্কৃতিক কোথিমে প্ররেশ কবরাক প্রযাস কবতথি।

বাজা সনহেসে সন চবাচব চর্চিত রিষয রস্তুক ছাযাংকন ঋা কানিদাসকেঁ মিথিনাক সংস্কাবসঁ সংরঁধক

प्रदर्शन मनोरांक्षित नागन।

निष्कर्षत: प्रीति जीक नर प्रयास नरन सोच आ रॅह्आयामी रिषय रस्तुक प्रस्तुति सवाहनीय अछि। मैथिली साहित्यमे नर प्रकावक बचना थिक गोनू आ आन चित्रकथा तँए सम्यक समीक्षा कवर हम उंचित र्बुझैत छी।

श्रुति प्रकाशनक समग्र दन धन्यरादक पात्र छथि जे मैथिलीमे जौं पहिन चित्रकथाक नाअ।– गोनू आ आन मैथिली चित्रकथा अछि तँ प्रकाशिक श्रुति प्रकाशन।

<u>समीक्षा– तबेगन</u>

रर्त्तमान युगक मानर–जीरन "अर्थनीति"क उंक्खड़ामे तेना कऽ पिसा बहल अछि जे गांधी आ लेनिनक सिद्धान्त मटियामेट भऽ गेल। नीति आ धर्मक गप्प

কেনিহাব লোক অতিবাদী আ কর্মহীন মানল জাগত ছথি। এহি ভাগমভাগ ভবল জীৱনমে "সাহিত্য" সন শব্দ হাস্যাস্পদ জকাঁ বুঝা বহল। স্বাভাবিকে ছৈক, বিল্ব দাম সভ স্বপ্ন! এহি পবিস্থিতিমে সাহিত্যিক অৱধাবণা সেহো বদলি বহল অছি। আব মহাকাব্য পঢ়ৈনিহাব লোক বড় অল্প ছথি কিএক তঁ সবহক জীৱনমে সময়াভাব ছৈক। হমহুঁ এহি গপ্পকেঁ মধ্যকালিক বাতিমে লিখ বহল ছী, কিএক তঁ দিনমে লিখব তঁ খাএব কী ?

এহি সভ কাবণসঁ লঘুকথা আ লঘুকবিতাক অনিবার্যতা প্রতীত ভঽ বহল। সাহিত্য সমাগমমে লঘুকথাক স্থান বড় মহত্ত্বপূর্ণ মানল জাগছ। মৈথিলীমে এখন ধবি পবংপবা জকাঁ বহল জে ছোট কথা চাহে ও বিম্বিত হুঅএ বা নহি "লঘুকথা" থিক। কিছু সাহিত্যকাব মাত্র এহি দিশামে সংকলন কঽ সকলাহ। জাহিমে মনমোহন ঝা অগ্রগন্য ছথি। তাবানংদ বিয়োগী জীক লঘুকথা সংগ্রহ "শিলালেখ" আ অমবনাথ বচিত "ক্ষণিকা" উত্তম শ্রেণীক মৈথিলী লঘুকথা সংগ্রহ অছি। ঝদা জোঁ সাহিত্যক সকল অৱধাবণা বা বিধাক বিম্বিত ছায়াক চর্চ কএল জাএ তঁ শ্রী জগদীশ প্রসাদ মংডল লিখিত লঘুকথা সংগ্রহ "তবেগন" মৈথিলী সাহিত্যক প্রথম সম্পূর্ণ লঘুকথা মানল জাএত। এহি পোথীমে এক সয দস লঘুকথা দেল অছি।

ছোট-ছোট তাবাকেঁ মৈথিলীমে "তবেগন" কহল জাগত অছি। বাতিমে চিত ভঽ কঽ বস্বল্ধবাপব লেটি স্বতংত্র গগনকেঁ দিব্যদর্শন কএলাপব তবেগনক সমূহ সবহক মধ্য স্থাপিত সংবংধকেঁ দেখল জা সকৈত ছৈক। লগৈত অছি জে এক তবেগন দোসব তাবাসঁ

সঙ্গৈন ছৈক ঙ্কদা রিজ্ঞানক খন্বসংধানসঁ ওা স্পষ্ট ভঽ সকন জে খকাশীক তবেগনক সমূহক রীচক দূবী পৃথ্রী খা খ াকাশীক রীচক দূবীসঁ রেঁসী ছৈ। ওহিনা এহি কথা সংগ্রহমে নিখিত সভঙ্গৗ কথা এক দোসবসঁ সঙ্গৈন বহিতহুঁ এক–দোসবসঁ রঁহ্ত দূব খছি। ন্যায, কর্ম, মীমাংসা নীতি খা রান মনোরিজ্ঞান সন রিম্রকেঁ খনচোকেমে জগদীশজী এক সংগ রাঁন্হি দেননি। মৈথিনীমে নৈতিক শিক্ষাক খভারকেঁ তবেগন রঁহ্ত হদ ধবি পূর্ণ কবরাক প্রযাস কএনক।

মূন ৰূপসঁ ওা সংগ্রহ নেনা সরঁহক নেন নিখন গেন খছি ঙ্কদা রঁযসো জৌঁ এহি সিদ্ধান্তক খন্বপানন কবথি তঁ সমাজক রিগনিত মনোবৃত্তিক ৰূপমে পবিবর্ত্তন খরশ্যাংভারিত খছি। কোনো পোথীক সমীক্ষাত্মক রিরবণমে সম্পূর্ণ বচনাক চিত্রণ কবর খনিরার্য নহি ঙ্কদা বচনাক সমাজমে প্রভারক দর্শন কবাএব রাংছিত হোগত ছৈক।

সম্পূর্ণ পোথীক খরনোকন কএনাপব একবা মাত্র নেনা–ভুঙ্গৈকাক কথা সংগ্রহ নহি মানন জা সকৈছ। পহিন কথা –উঁত্থান পতন–মে নীতি শিক্ষা নেনা ভুঙ্গৈকাক সংগ–সংগ গৃহস্থ ধর্মী নোকক নেন প্রেবণাদাযী নাগন। সংযম জীরন জীরাঁক কনাসঁ ধব্ম, খর্থ, কাম খা মোক্ষক খরনঁরন সহজ হোগত খছি। –প্রতিভা–নঘ্কথামে ডাॅ. বামমনোহব নোহিযাক মাধ্যমসঁ জগদীশ জী জ্ঞান খা সমযক মধ্য তাবতম্য স্থাপিত কবরাক প্রযাস কএননি। এহি কথাকেঁ মৌনিক বচনা (Creative writing) নহি মানন জা সকৈত খছি, কিএত তঁ কোনো মহাপ্বৰুষক জীরন শৈনীক চর্চ কোনো পোথী পঠ্য কঽ কএন গেন খছি। ঙ্কদা নীক নাগন

জে জগদীশ ৰাবূ সাম্যৱাদী প্ৰৱৃত্তিক মন্বক্খ ছথি আ নোহিযা সমাজৱাদী ছনাহ। ওনা তঁ সমাজৱাদেসঁ সাম্যৱাদী ধাবাক পবিকল্পনা কএল জা সকৈছ, পৰংচ সৈদ্ধান্তিক ৰূপসঁ ভাবত ৰৰ্ষমে দ্ধু বাজনৈতিক ধাবামে ৰিলগ নীতি অছি। অপন অধ্যযনশীলতাসঁ সম্পূৰ্ণ মানৱ জাতিকেঁ একসূত্ৰমে ৰাঁধৰাক জগদীশ জী প্ৰযাস কহ বহল ছথি। মৰ্ম কথাক ৰিম্ৰ পঠ়নাসঁ স্ৱামী ৰিৱেকানংদক সবন বাজযোগক সিদ্ধান্তক দৰ্শন হোগত অছি। হেনৈক কলাসঁ সাংসাবিক জীৱন জীৱাক ত্তলনা, ৰৈভৱক ৰুপ্ৰাৱক ছোট্ট ৰুদা ৰিশেষাৰ্থ প্ৰস্তুতি নীতি অন্বপালনমে সফল প্ৰযাস কহল জাএ। অক্ত নীক নহি তঁ খবাৰ সেহো নহি, সৰক্ত কিও নহি ভহ সকৈত অছি ৰহ্ক্ত সমাজক পথ প্ৰদৰ্শক পৰংচ অনপক্ত জকবা দেসিল ৰযনামে “অধখড় ় ্আ” কহল জাগত অছি ও সমাজক ৰিকাসমে ৰাধক হোগত ছথি।

অংগ্ৰেজী সাহিত্যক প্ৰখৰ হাস্য বচনাকাব সব এলেক্জেংডৰ পোপ সেহো কহলে ছথি– l i t t l e k n o w l e d g e i s a d a n g e r o u s t h i n g. অৰ্থাত অৰ্দ্ধজ্ঞান ৰঁড় খতবনাক ৰস্তু হোগত ছৈক। –পহিলে তপ তখন ঠনিহেঁ– শীৰ্ষক লঘ্কথামে ৰুম্হাবক আচাৰ্য ৰূপক আ মাটিকেঁ শিষ্য মানি নৈতিক ৰিশ্লেষণ নীক লাগল। নীতি–ধৰ্ম আ শৈক্ষণিক দৰ্শনসঁ ভবল দোহাসঁ এহি কথাক ত্তলনা অপেক্ষিত ভহ সকৈছ–

গুৰূৱাব ৰুম্হাব শিশ ৰুম্হ হৈ, গঠ়ি – গঠ়ি কাঠ়ে খোট

অংতৰ হাথ সহাব দে, ৰাহৰ মাবে চোট।
এহি প্ৰসংগমে জ্ঞানপীঠ প্ৰবস্কাবসঁ প্ৰবসদ্ধৃত হিন্দী সাহিত্যক প্ৰাংজল কৰি শ্ৰী নৰেশ মেহতাক কৰিতা –

मृत्तिका-क चर्च कवर खन्वकून नागन। नवेशी जीक बचनाक खन्वसाब माटि कहैत छथि- हम तँ मात्र माटि छी, जखन खहाँ खपन चवणसँ पददनित कवैत छी खा हिबक फाठ़सँ चीड़ दैत छी तखन हमबामे माहुत्वक रोध होगत खछि खा माहुत्वक प्रेवणा खा संसस्कासँ शस्य श्यामना धन धान्य खन्न हविबवीक रूपें संसावकेँ जीरन प्रदान कवैत खछि।' कर्मपथपव क्रियाशीन मन्वक्खक नेन कानक खा प्रहवक कोनो रॉन्ह नहि होगत छैक। -जखने जागी तखने पवात- शीर्षक नघुकथामे डॉ. ध्रानिनक जीरन दर्शनक माध्यमसँ बचनाकाब नेना-स्तुटकामे काकचेष्टा खा श्रान निद्राक ऋॉपन दर्शन कवएराक नेन खाह्वब छथि। जे र्यक्ति सत्य कर्मी होगत छथि ओ सदिखन सत्यकेँ जितएराँक नेन प्रयास कवैत छथि। महाभावतक कथाक गर्भसँ एहेन कानजयी रिम्रकेँ निकानि कऽ -उँग्रधावा- कथाक रूप देराक कनासँ जगदीश जीकेँ हंस मानन जा सकैत खछि। जेना हंस नीव दुग्ध मिश्रणमे सँ क्षीवकेँ सोंटि नैत खछि खा नीव पात्रेमे बहि जागछ ठीक ओहिना महा भावतक सम्पूर्ण कथा रिम्रकेँ नीव, खमिय खा मधु मानन नहि जा सकैत खछि। खर्जुनकेँ रिजयी रॅनएराक नेन श्रीकृष्ण खपन पांजवपव हन्वमानक खगम देह भावकेँ वोकि "भावत"केँ रिजयी रॅनौननि। ओ कथा छात्रक संग-संग शिक्षकक नेन खन्वकवणीय खछि। र्यरहाविक, समर्पण, देरता, पाप खा पुण्य शीर्षक कथामे उँदयनाचार्यक न्याय कुसुमांजनिक क्षणिक स्पर्शक खन्वभव रॅुमना गेन।

खठ़ ाग खाखवक शर्ब्द प्रेमक रूप रास्तरिक जीरनमे खर्थनीतिक खाहिमे खप्रासंगिक भऽ गेन ह्खए

ক্ষদা বচনামে এখন ধবি জীবিত খছি। হিন্দী সাহিত্যমে প্রেমচন্দ্র বচিত কথা ঙাদগাহ, নাগার্জুন বচিত কবিতা গ্বনারী চূড়া যাঁ খা মাখননান চতুর্বেদী বচিত কবিতা প্রেমকেঁ পঠ়া কহ তিবপিত হোগত তঁ ছনহু পবংচ হবিবংশ বায বঁচ্চন জীক 'খা বহি ববি কী সবাবী' খংতিম পদ্য মোন পড়াতে ক্ষণহি ংমে খক্ষনা জাগত ছনহু জে হিন্দী বিজযী ভহ বহন ছথি সূর্যক সমান ক্ষদা মৈথিনী উঁষাকানক চন্দ্রমা সন ঝঁপা বহনীহ। জগদীশ জীক 'প্রেম' পঠ়া গ্বমানক খন্বভব ভহ বহন খছি জে হমবা সভক ভাষামে এহি বিম্বপব জে কথা নিখন গেন খছি ও কতহ কতহ খান ভাষামে ভেঁটত, হেববাঁক চাহী ? ওনা ঙা কথা মৌনিক বচনা নহি ভহ কহ খংগ্রজীক প্রখ্যাত নেখক ও.হেনবীক একটা কথাপব খাধাবিত খছি। শ্রমক সম্মান তখন ভহ সকৈত খছি জখন শ্রমজীবী সম্মানিত কএন জাগথ। বংশ, তিযাগ, সদ্বিচাব, সাহস, ববদাস্ত, ভূন, ধৈর্য, মন্বষ্যক মূন্য, মেহনতক দবদ সন ভাববাচক সংজ্ঞাক দর্শন মাত্র দার্শনিকে কহ সকৈত ছথি ক্ষদা এহি পোথীমে পাঠক সেহো দেখি সকৈত ছথি।

একাগ্রতা ছাত্র জীবনক ধবোহবি হোগত খছি। ভাষণ তঁ সভ কেও দহ সকৈত ছথি ক্ষদা পাঁচ পাঁতি নিখবাঁক কনা কতেক নোকমে ছনি। হমবা বিশ্বাস খছি জে 'একাগ্রচিত' বিম্বকেঁ বচনাকাব পঠ়থ্ মতিভ্রম দূব ভহ জেতনি। খন্বভব, সৌন্দর্য, ধর্ম খাত্মবঁন সন মৌন বিষযকেঁ কথাক রূপমে বিম্বিত কববঁ খসংভব তঁ নহি ক্ষদা খ াশ্চর্যজনক। সমাজমে ঞাঁতিক দীপ প্রজ্বনিত কববাক নেন নেনা–ভুঁটকামে ঞাঁতিদীপ জবাএবঁ খাবশ্যক খছি। এহি নেন সমাজক

रूपरेखाक गम्भीरतापूर्वक करबाक प्रयास प्रासंगिक मुदा कतेक रचनाकार मैथिली साहित्यमे ई काज कएलनि। विधवा विवाह, देशी सेवाक व्रत, नारीक सम्मान, सादा जीवन, पतीक अधिकार, जाति नहि पानि शीर्षक कथा सभकेँ बाल मनोविज्ञानक मौलिक कथा मानल जाए।

निष्कर्षत: जीवनकेँ जीवन्त बनएबाक लेल जतेक प्रकारक तारतम्य होएबाक चाही जगदीश जी ओहि सभ विम्बकेँ बिम्बित कएलनि। एहि पोथीमे दर्शनक सभ विधाक सरल भाषामे चित्रण केलनि। अर्थात ई मात्र एक अर्थमे जे बाल मनोविज्ञानक विकास करबाक लेल जे सबस विश्लेषण होएबाक चाही ओ एहि पोथीमे नहि देल गेल। गबीबक दीनतामे हास्यक समागम सेहो होइत अछि। बाल साहित्यमे दर्शनक विश्लेषणमे कतह् कतह् रीति आ प्रीतिकेँ हास्य रससँ बोरबाक चाही। पंडित हरिमोहन झा ई लघुकथा नहि लिखलनि मुदा हुनक जे गद्य साहित्य उपलब्ध अछि ओहि सभमे दर्शनक विम्बरूप हास्य आ श्रृंगारक माध्यम चढ़ल भेटैत अछि जगदीश जीक रचना ई अनुशासित होइत छलहि मुदा 'तरेगन'मे बाल मनोविज्ञानक सरल प्रस्तुति कविताहुँ कलेक चूकि गेल छथि। एक अर्थमे ई पोथी मैथिली साहित्यक लेल पथ प्रदर्शक पोथी अछि, तँए जगदीश बाबू प्रशंसाक पात्र छथि। सम्पूर्ण पोथीक अन्तदर्शनक लेल योग्य आचार्यक जिनकामे अनुशासनक संग-संग संतुलित अनुशीलन हुअए अनिवार्यता प्रतीत होइत अछि। निष्कर्ष रूपेँ मैथिली भाषा-साहित्यमे 'तरेगन'केँ बेछप्प नैतिक शिक्षाप्रद रचना मानल जाए। बालकथाक वास्तविक रूप अछि जे रचनाकारकेँ

প্রশ্নসঁ রেসী সমাধানপব ধ্যান দেৰাক চাহী। এহি পোথীমে সভসঁ নীক নাগন জে বচনাকাব প্রশ্ন ঠাঠ়ে নহি কএননি।

পোথীক নাও- তরেগন
রিধা- ৰান প্রেবক কথা সংগ্রহ
বচনাকাব- জগদীশ প্রসাদ মংডন
প্রকাশিক- শ্রুতি প্রকাশিন, দিন্নী
পাথেী প্রপ্তি স্থান- পন্নরী ডিস্ট্রীৰ্ব্যূটর্স, ি নর্মনী (স্বপৌন)
প্রকাশিন রর্ষ- 2010
দাম- 100টাকা মাত্র

<u>সমীক্ষা- হম প্বছৈত ছী- করিতা সংগ্রহ (রিনিত উঁত্পন)</u>

এক্ সম শিতাৰ্ব্দীক দশাংশিক পবিসমাপ্তিক খ্ররনোকন কএনাপব পবিণাম ভেষ্টন জে ঐ খ্ররধিমে কিছু এহেন তরুণ বচনাকাবক পদার্পণ মৈথিনী সাহিত্যমে ভেন জনিক বচনা সভসঁ হমব সাহিত্য প্বনকিত ভ২ বহন খ্ছি। শ্রী গজেন্দ্র ঠাকুব ঐ খ্ত্যাধুনিক পিবহীক নেন পথ প্রদর্শক ছথি, জনিক কুশিন নেতৃত্বমে শ্রী রিনীত উঁত্পন, শ্রী উঁমেশি মংডন, শ্রীমতী জ্যোতি স্বনীত চৌধবী, শ্রীমতী প্রীতি ঝা ঠাকুব সন বচনাকাবক মংডনী মৈথিনীকেঁ নরন জ্যোতি প্রদান ক২ বহন।
সন 2009ঙ.মে রিনীত উঁত্পন জীক পহিন করিতা সংগ্রহ “হম প্বছৈত ছী” শ্রুতি প্রকাশিনক সৌজন্যসঁ

প্রকাশিত ভেল। রিনীত জীক জন্ম মধেপ্ববা জিলাক খানংদপ্ববা গামমে ভেল। প্রাবংভিক শিক্ষা দীক্ষা ফ্ংগেব খা স্নাতক ভাগনপ্ববমে। ব্যারসাযিক পাঠ্যএম নঙা নিন্নীসঁ প্রাপ্ত কঽ সম্প্রতি বাষ্ট্রীয সহাবা নোএঠামে রবিষ্ঠ উঁপসংপাদক ছথি। মৈথিনী-মিথিনাক সাংস্কৃতিক গতি রিধি খা খভিরব্যক্তিক সমাযোজনক খাধাবপব দবভংগা খা সহবসাকেঁ ফ্খ্য কেন্দ্র ভমি মানন জাগত খছি। দবভংগা জিনাসঁ রিভক্ত ভেনাপব উঁপেক্ষাক জে দংশ সমস্তীপ্বব জিনা রাসীকেঁ ভেটৈননি, রএহ দংশ মধেপ্ববাক নোক সেহো খনুভব কঽ বহন ছথি। করিক জন্ম মধেপ্ববামে খা প্রাবংভিক শিক্ষা খংগ প্রদেশমে, পবংচ করিতা সভ খ◌াঁটী মৈথিনীমে, খজগ্বত তঁ খরশ্য নাগন ফ্দা রিনীত জীক মাতৃভাষানুবাগসঁ তীত-ভীজ গেনহুঁ।

ঐ করিতা সংগ্রহক ভূমিকা সিদ্ধহস্ত সাহিত্যকাব শ্রী গংজেশ গ্বংজনজী "করিক খাত্মোক্তি : করিতাক খএনা" শীর্ষক দঽ নিখনে ছথি। গ্বংজন জীক ব্যক্তিত্ব খা কৃতিত্ব মৈথিনী সাহিত্যক নেন কানজযী ফ্দা করিক খাত্মোক্তিক রিরেচনমে শ্রী গ্বংজনক নেখনী কনেক্শন কংজূস বঁনি কঽ বহি গেন। হমবা মতেঁ কোনো নরত্তি বযা বচনাকাবকেঁ ছ্বদএসঁ প্রাত্সাহিত কবরাঁক চাহী। ওহ্নমে জঁ ভাষামে পাঠকক সংখ্যা নগাতাব ঘটি বহন হ্খএ।

পচাস করিতাক সংগ্রহমে পহিন করিতা "ককব গনতী" রিধরাক খরস্থাপব ব্যথিত করিক নেখনী মৈথিনী রস্কাক কথাকথিত খাগাঁক জাতিক মধ্য প্রশ্ন ঠাঠ◌় করৈত খছি। ঠোপ, চানন খা পাগ মৈথিনক সরর্ণ সমাজমে প্বরুষ কতেকো রেঁব ধাবণ কঽ সকৈত ছথি ফ্দা স্ত্রী

তঁ অরনা....। রিরাহক ক্ষণহি ংমে জৌঁ পতিক মৃত্যু ভঃ জাএ তঁ জীরন ভবি সতীত্রক দংশ ঝেনএ পড়তনি। নাউ রিনিযম রঁষ্টিক কেব স্বধাবরাদী আন্দোলনমে রঁগানক প্রম্ণ স্বধবি গেনাহ ম্দা মৈথিন ব্রাহ্মণ অপন সনাতন সংস্কৃতিক বক্ষক ছথি, অরনাকেঁ সরঁনা রঁনেরাঁমে ধর্ম নষ্ট ভঃ জেতনি। নাওঁ গৌরী দাগ ম্দা সমাজক নেন ডাকিনী ভঃ গেনী–

কী কবতী গৌরী দাগ
কিও হ্নকা দেরী কহতন্হি
তঁ ডাগন জোগিন কহরাসঁ
নোক রেদ পাছও নহি বহতন্হি।

কহরাঁক নেন তঁ হমবা সরঁহক সংস্কৃতিমে শক্তিক উঁপাসনা প্রাসংগিক অছি ম্দা হম সভ অপনে ঘবক শক্তিকেঁ অপমানিত আ মর্দিত কঃ বহন ছী। "মন্বক্খো নহি ভেন" শীর্ষক করিতামে ভৌতিকতা আ রৌদ্ধিকতাক আড়ি মে জীরন অরস্থাক অর্যরস্থিত রূপক প্রদর্শন নীক নাগন–

বাতি মে ঘব মে নহি বহৈত ছী
জখন কি চিড়ৈ চ্নহ্নী সেহো
সাঁঝ পড়ৈত ঘব ঘ্রৈত অছি

"কী ফর্ক পড়ৈত অছি" শীর্ষক করিতা রৌদ্ধ সংস্কৃতিক কেন্দ্র রৈশানীসঁ তথাগতক সংদর্ভমে নিখন গেন। রিম্রঁ তঁ নীক ম্দা রিশ্নেষণ স্পষ্ট নহি ভঃ সকন। সভ পাঠক তঁ ওতিহাস রিদ্ আ দার্শনিক নহি ছথি তঁএ করিতাকেঁ উঁপযুক্ত আ পূর্ণ নহি মানন জা সকৈছ। িরনীত জীকেঁ কনেক ফবিছা কঃ নিখরাঁক চাহী ছন। পহিনে সমাজ দাণরীব কর্ণকেঁ স্বতপুত্র মানৈত ছন জখন মহারঁনী ভঃ গেনাহ তঁ সূর্যপুত্র মানন গেনাহ।

রাস্তরিকতা জে হ্খএ ক্ষদা খংগ প্রদেশকেঁ কর্ণক কর্মভূমি মানন জাগত খছি। করিক প্রাবংভিক শিক্ষা ক্ষংগেবমে ভেননি তঁ খপন কর্মভূমিক রর্তমান খরস্তাসঁ মর্মী হত ছথি–

দন মনিত হোগ খছি
খংগ প্রদেশক খাত্মা
খা রঁজরৈত খছি
তাবণহাব কেঁ...।

খপন সংস্কৃতিক বক্ষাক তাদাত্ম্যমে হম সভ খনসোর্হত কাজ সেহো করৈত ছী। ধার্মিক খাডংম্রঁব একটা প্রমাণ খছি– মধ্শ্রারণী। কহরাঁক নেন তঁ ঐ পর্রকেঁ মিথিনাক সংস্কাব পর্র মানন জাগত খছি ক্ষদা রাস্তরমে মৈথিন ব্রাহ্মণ খা মৈথিন কর্ণ কাযস্থক মধ্য মধ্শ্রারণী পর্র মনাওন জাগত খছি। “পবীক্ষা” শীর্ষক করিতাক মাধ্যমসঁ করি ঐ পারনিমে পতিব্রঁতাক প্রমাণপত্র– টৈমী প্রথাপব প্রহাব কেননি। প্বরুষ ভেনক পশ্চাত্ সেহো করি পবীক্ষাসঁ ডেবাগত ছথি তখন নাবীকেঁ খহিন্যা জকাঁ রেঁব–রেঁব পবীক্ষা কিএ নেন জাগত খছি।

“গাম ডূরি গেন” শীর্ষক করিতা রাঁঠ্া ক রিনাশী নীনাক ওঁসত প্রদর্শন মাত্র মানন জা সকৈছ।

সংগ্রহক সভসঁ কনাত্মক খা প্রাসংগিক করিতা– হম প্বষ্টিত ছীকেঁ মানন জাএ। রাস্তরিক সেহো জে জেঁ করিতাক শীর্ষককেঁ করিতা সংগ্রহক শীর্ষক দঽ দেন গেন ওগ করিতামে করিক খাঁতবিক জ্খাবি খরশ্য হেতনি। ঐ করিতাক মাধ্যমসঁ করি সমাজক সমীক্ষাক নেন দহ্যত ছথি। সমাজক সভটা র্যাধিপব করিক নেখনী স্রচ্ছন্দ ভঽ রিচবণ কেনক।

सविपहुँ रिनीत जी पत्रकाव छथि देशेकानक दशाक रिरेचन नित्य कवैत छथि तखन बचना ऋाँपन कोना बहत। "मनुख आ मान" एरं "समाजक ओ रूप" रर्तमान मनुक्खक ओऋबाएन मानसिकताकेँ देखवैत अछि। अर्थनीति रिनोकित भइ गेन, भौतिकता समाजकेँ रॉटि बहन अछि, अधिक प्राप्तिक आशमे ककर्म रँठ्ि बहन अछि। एरं प्रकारे ऐ दुनू करिताक दृष्टिकोण नीक नागन। "मावनाक रॉद" शीर्षक करिता दर्शनशास्त्रक अनुभूति केनक। पृष्कव करितामे भावतीय गतिहास आ अपन संस्कृति शीतन रातसँ गौवरान्वित भेनहुँ।
ऐ करिता संग्रहक सरॅन पक्ष अछि रिम्रॅक चयन आ रिश्नेषण। भाषा सेहो सवन आ मैथिनीक खाँटी शब्दसँ ओत प्रात अछि। ऋदा दुर्रॅन पक्ष्क्ष भेटैन प्ररावक कमीक रूपमे। करिता आश्व करिता हुअए रा अतुकांत- छंदक नेपन आरश्यक होगत छैक। ऐ करिता संग्रहमे छंदक समायोजन सङ्कुचित रूपेँ नै कएन गेन कोनो-कोनो करिता तँ गद्य जकाँ ब्रुझना गेन। करिकेँ आगाँ एे रिन्दुपव ध्यान बाखए पड़तनि। निष्कर्षत: तरूण करिक प्रांजन प्रस्तुति, रिनीत जीकेँ कोटि-कोटि साधुराद..... ।

पोथीक नाओं- हम पुछैत छी
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन
मून्य- 160 टाका मात्र
रर्ष- 2009

<u>मैथिनीक रिकासमे रॉन करिताक योगदान</u>

रान्यारस्था जीरन रूपी नाटकक प्रथमांक होगत ख्छि। जौं कोनो नाटकक प्रथम थंक र्यरस्थित था सबन ह्थए तँ स्रत: थाकर्षणक केन्द्र रँनि जाएछ। कहनो गेन ख्छि "Morning shows the day" प्रभातसँ दिरसक पूर्र थाभास स्रभारिक होगत छैक। हमबा सरँहक नेन सौभाग्यक कथा जे मैथिनी सत्र, तम था बजो ग्वणसँ था ते प्रात सबस भाषा मानन जाएत छथि। जीरनक प्रथम पाठशानाक छात्रमे एहि ग्वणक समारेश थारश्यक ख्छि। तँए एहेन पद्यक बचना थनिरार्य जे शैशरसँ नेनपनमे प्ररेश करएरँना नेना-भुटकाकेँ मात्र सिनेहसँ तृप्ति कर दिए। नेना भुटकाक जीरनमे महाकार्य, प्ररंधकार्य रा उंपन्यासक कोन प्रयोजन ? ओ सभ तँ रिम्ब थन्तर्मस्तिष्कपब दारँ देने थपन संसारकेँ जीरन्त बाखए चाहैत छथि।

रर्त्तमान समएमे सभ्यता था संस्कृतिक भूमंडनीकरणसँ थार्य पबिरारक किछु भाषाक थस्तित्र संकटमे पड़ि गेन ख्छि। संभरत: एहि प्रभारसँ सभसँ रेसी मैथिनी प्रभारित छथि। हमबा सरँहक समाजक रूप ततेक गन्द्रजासँ थारँद्ध भर गेन ख्छि जे दू गोट भाषाक प्रासंगिकतामे ओमबा बहन छी। गैब हिन्दी भाषा क्षेत्रक नोक तँ थपन मातृभाषाक संग-संग थंग्रेजीकेँ थात्मसात् कर बहन छथि। हमबा नोकनि कि ंकर्त्तर्यरिमूढ़ छी जे थंग्रेजी तँ स्रीकाब करैए पड़त ओ्दा हिन्दीकेँ छोड़ि मैथिनी कोना पढ़ी ? रर्तमान पीढ़ी तँ किछु-किछु मैथिनीक नाज बखने छथि ओ्दा एहि पिबहीक प्रांजन साहित्यकाबक नोकनि थपन करेजपब हाथ बाखि कर कहथु जे थपन-पबिरारक नेना-भुटकामे देसिन

रयनाक प्रति निष्ठासँ ज्योति प्रज्जरित करैत छथि ? जखन साहित्यकारक परिवारक ई स्थिति तँ आम मैथिलीक स्थिति कोना कहत ? दशा ततेक मर्मस्पर्शी भऽ गेल जे किछु पत्रिकाक बाद लेखा-जोखाक पूछत मैथिलीकेँ छनि ?
हमरा हिन्दीसँ कोनो पीड़ा नहि। बेर-बेर प्रश्न उठैत अछि आ उत्तर सेहो स्वत:स्फूर्त जे हिन्दी राजभाषा छथि तदा मातृभाषा नहि। तखन मातृभाषक रूपमे एकर प्रयोग किए कएल जा रहल अछि।
एहि दशाक लेल जौं अभिभावक सभ दोषी छथि तँ साहित्यकार सेहो कोनो कम नहि। मैथिली साहित्यमे बाल मनोविज्ञानकेँ स्पर्श करएबला रचना अत्यन्त न्यून। जौं लेखा जोखा लेल साहित्य नहि तँ ओ साहित्यक मर्मकेँ कोना बूझथि ?
कहबाक लेल तँ एहि विम्बपर बहुत बास करि कविताक रचना कएने छथि तदा प्रथमत: तत्सम् शब्दक रूपेँ विम्ब विश्लेषण। सभ लेखा-जोखा तँ अयाची मिश्रक पत्र शंकर नहि भऽ सकैत छथि जे बालोहं जगदानंद......क अर्थ बूझि जएताह। जौं तत्सम् नहिओ तँ एहेन रचना जे कवि स्वयं बूझताह, समीक्षक दिग्भ्रमित भऽ जाइत छथि तँ लेखा ओहि रस सविताम विचरण करथि प्रश्नवाचक अछि। मैथिलीमे बाल साहित्यक रचनाक न्यूनताकेँ भरबाक लेल समीक्षक वा साहित्यक अधिष्ठाता लोकनि नीति सम्बन्धी पद्य आ वंदना सभकेँ बाल साहित्यसँ जोड़ि दैत छथि। हम एहि दृष्टिकोणकेँ उचित नहि मानैत छी। बाल कविता तँ एहेन होएबाक चाही जाहिमे मिथिला-मैथिलीक अपना शब्दकेँ विम्बित कएल गेल हुअए।

कोनो आवश्यक नहि जे विम्ब साहित्य बसकेँ छूवैत तात्विक हो, जखन वाँन मन चंचन तँ नीति आ वैवाग्यक समावेश अनिवार्य नहि। एहि तवहक बचनामे वाँन श्रं ृगाव अवश्यांभावी छैक। जेना कोनो कविक कविताक किछु प ाँति– "आम छू अमबौवा छू/ वाँवाँ गाछीक ओड़ ा छू/ नेनपन वीति गेनै/ ककबा कानमे कहवैँ कू/" वा "सूति बहँ नून् विनैया एनौ/ बहू माछ नह तोहब भेया एनौ/"

हमबा व्ँमने ओ थिक वाँन कविताक वास्तविक ऋप ह्मदा एखन धवि कतए–कतए की–की निखन गेन अ ाकव चर्च सेहो आवश्यक अछि। हमब अध्ययनशीनता व्यापक नहि, एखन धवि मैथिली कवि वा कवयित्री नोकनिक बचना सभ वँह्त बास नहि पठ़ ने छी तँए हमब विवेचनकेँ अन्यथा नहि नेन जाए। हम वएह कवि वा कवयित्री सवँहक चर्च कबवँ जनिक बचनासँ अवगत भेन छी।

नीति संवंधी वाँन साहित्यक अन्तर्गत कविवब सीता वामझाक शिक्षास्वधा, जनसीदनजीक नीति पदावनी, पंडित वेदानंद झाक वत्नवङ्आ अछि प्रमुख अछि। शिक्षा प्रधान वाँन साहित्यमे श्री गोविन्दक पाकन आम आ श्री कांचीनाथ झा किवण जीक "प्रभात" कविता महत्वपूर्ण अछि। ओना तँ स्वमन जी वाँन साहित्यमे किछु छिठ्हैफ्ठ तत्सम मिश्रित कविताक बचना कएननि ह्मदा शिश्व मासिक पत्रिकाक प्रकाशनमे ह्नक उंन्नेखनीय योगदान अछि जाहिमे तन्त्रनाथ झाक वानब आ ओशिनाथ झाक "वन्दना" कविता छपन छन। ओना तँ तन्त्रनाथ झा वचित "ह्मसबी झा" कविता तऋण पाठकक नेन निखन गेन ह्मदा एहिसँ शिक्षाक मध्य पएब

পসারৈত নেনা সেহো প্রভারিত ভেন ছথি। করি চূড়ামণি মধ্প তঁ শ্রংগাব খা রিচাবমূনক ভারনাসঁ ভবন গীতক বচনাকাব ছথি ঝদা হিনক কিছু গীত রাঁন রিম্রসঁ ওত-প্রোত নহি বহিতহুঁ ততেক নোকপ্রিয ভেন খছি জে মিথিনাক নেনা-ভুটকা চাহে ও শিক্ষিত পবিরাবসঁ সংবঁধ বাখথ্ রা নহি স্রত: গবৈত খপন কর্মপথপব মিথিনাক গাম-গামমে গতিমান এখনো বহৈত ছথি। “রঁষ্টক খা ধীযাপূতা” সন পত্র-পত্রিকা রাঁন সাহিত্যকেঁ প্রোত্সাহিত খরশ্য কএনক খছি জাহিমে সবস করি গুশিনাথ ঝা, স্বমন, কিবণ, মণিপদ্ম, যাত্রী বৃদ্ধিধাবী সিংহ বমাকব, চন্দ্রনাথ মিশ্র খমব, শ্রী ধীবেন্দ্র সন করিক করিতা ছপৈত ছন। মিথিনা মিহিব নিশ্চিত রূপেঁ মৈথিনীমে রাঁন সাহিত্যক ধাবাকেঁ নরন গতি দেনক। এহি পত্রিকাক পৈঘ রিশেষতা ছন জে নরত্তবিযা করি রা করযিত্রী সভকেঁ সেহো এহি পত্রিকামে স্থান দেন গেন। মিথিনাক গাম-গামমে এহি পত্রিকাক রিতবণ র্যরস্থা ছন জাহিসঁ এহিমে ছপন বচনাক র্যাপক প্রচাব-প্রসাব ভেন। বাজ দবভংগা দ্বাবা স্থাপিত এরং সংবক্ষিত বহরাক কাবণেঁ বচনাকাবকেঁ উঁপহাব রা পাবিশ্রেমিক রূপেঁ কিছু কৈঁচা সেহো ভেটৈ জাগত ছন জাহিসঁ রাঁন সাহিত্যক কোন কথা মৈথিনী সাহিত্যক সভ রিধাক রিকাসমে মিথিনা-মিহিবক যোগদান খরিস্মবণীয খছি। রাঁন স্তংভমে খনেকানেক রানোপযোগী করিতা সংগ্রহক দৃষ্টিএঁ ডॉ. শ্রীভূষণ মিশ্রিত খগ্রদূত উঁনন্নেখনীয খছি। মৈথিনী সাহিত্য মংজবী, মৈথিনী সাহিত্য রোঁধ খাদি সাহিত্যক পাঠ্যপুস্তকমে স্বমনজী, তংত্রনাথ ঝা, গুশিনাথ ঝা, হবিমোহন ঝা, খাবসী রাঁবূ খা গোরিন্দ ঝা সন করিক

ষাঁনোপযোগী বচনা দেন গেন খছি।

ষাঁন সাহিত্যমে ব্যাপক কবিত্বক প্রদর্শন আধুনিক কানক কবি আ কবযিত্রী পূর্বকানক বচনাকাবসঁ বেসী কএননি খছি। এহিমে জীবকান্তজী প্রমুখ ছথি। জীবকান্ত জীক তীন গোট বান কবিতা সংগ্রহ ছপন খছি জাহিমে গাছ ঝূন-ঝূন আ ছোঁব সোহাবনি প্রমুখ খছি। হিনক পশ্চাত্ জে কবি এহি দিশামে ক্রিযাশীন ভেন ছথি- ওহিমে শ্রীচন্দ্রভানু সিংহ, মার্কণ্ডেয প্রবাসী, ডॉ. বুদ্ধিনাথ মিশ্র, ববীন্দ্রনাথ ঠাকুব, সিযাবাম ঝা সবস, মংত্রেশ্বব ঝা, হংসবাজ, মাযানংদ মিশ্র, বামনোচন ঠাকুব, ভীমনাথ ঝা, কানীকান্ত ঝা বুঁচ, গোপানজী ঝা গোপেশ, ডॉ. নবেশ কুমাব বিকন, ডॉ. কেদাবনাথ নাভ, ডॉ. গন্দ্রকাংত ঝা, বমাকান্ত বায বমা, উপেন্দ্র ঠাকুব মোহন সন স্থাপিত কবিক নাও প্রমুখ খছি। দুর্ভাগ্য খছি জে এহি কবি নোকনিক ষাঁন সাহিত্যপব কোনো সংকনিত কবিতা সংগ্রহ নহি ভহ কহ মাত্র কিছু ছিট-ফুট কবিতা বা গীত নেনা ভুটকা নগ পবসন গেন খছি। কবযিত্রীমে "শিশুকনকত্তা" শীর্ষক কবিতাক বচনাকাব গনাবানী সিংহ, ডॉ. শেফানিকা বর্মা, বাণী মিশ্র, বোটী শীর্ষক কবিতাক কবযিত্রী কামিনী, বিভাবানী, একটা ভীজন ষাঁগবা শীর্ষকক কবযিত্রী জ্যোতি স্বনীত চৌধবী আদিক নাও প্রমুখ খছি মুদা হিনকো নোকনিক বএহ মান কোনো সংকনিত কবিতা সংগ্রহ নহি মাত্র ছিট-ফুট কবিতা।

সন্ 2008ঈ.মে বিদেহ পত্রিকাক আগমনক সংগ-সংগ ষাঁন সাহিত্যমে ক্রাংতি আবি গেন। এহি পত্রিকাক সংপাদক শ্রী গজেন্দ্র ঠাকুব ষাঁন সাহিত্যক উত্প্রেবণাক নেন উদ্যত ছথি। হুনক সপ্ত বিধামে নিখন বচনা

संग्रह रूद्रक्षेत्रम अन्तर्मनक सातम खण्ड "बाल मंडली आ किशोर जगत" लेल भूमिकाक लेल समर्पित अछि। एहि खण्डमे एक सयसँ ऊपर कविता देल गेल अछि। कविता सभ पढ़लाक बाद बाल साहित्यक तादात्म्यकेँ निश्चित रूपेँ बूझल जा सकैत अछि। एहि संकलनमे राताम्बकूलित महलमे बहनिहार लेल भूटकासँ लऽ कऽ गामक सोती-नदीक कातमे घोंघा बिछनिहार बाल-बालिकाक मनोदशाक विवेचन कएल गेल अछि। मैथिलीक संग ई विडम्बना रहल जे एहिमे अर्थनीति आ सामाजिक समरसताकेँ व्यापक रूपेँ विस्मृत नहि कएल गेल। सामंतवादी प्रवृतिक लोकसभ चाहे ओ कोनो जातिक होथु हुनके मानसिकताकेँ समाजक मानसिकता मानि लेल गेल। जगतजननी सीताक लोकगाथापर तँ केओ बाँचि सकैत छथि मुदा ललितेसँ, बहुवा गोढ़ारिन आ लड़ैआ दलालक संग-संग मोती दाइक व्यथा ककरा मुखसँ सुनैत छी? यएह दशा बाल साहित्यमे सेहो भेल। हिन्दी भाषा साहित्यमे वाध्यं करि दिनकर "बाँच्चो का दूध" शीर्षक कवितामे समाजक अंतिम पाँतिक लोकाक भूखसँ कल्पागत मर्मस्पर्शी दशाक चित्रण कएलनि मुदा मैथिलीमे एहि प्रकारक रचनाक अभाव अछैकि रहल छल, किछु लिखलो गेल तँ ओकरा साहित्यिक मान्यता नहि भेटैल। गजेन्द्र जी एहि भ्रमकेँ तोड़बाक प्रयास कएलनि अछि, जाहि लेल धन्यवादक पात्र छथि।

गजेन्द्र जीक संग-संग बहुत बास तरूण कवि कवयित्री सर्वहक बाल रचना विदेहमे छपल अछि। वर्तमानकालक बाल रचनाकार कवि, कवयित्रीमे चन्द्रशेखर कामति, अनमोल झा, श्रीमति मृदुला प्रधान, डॉ. जया वर्मा,

बाजदेर मंडल, कुमार मनोज कश्यप, डॉ. शंभू कुमार सिंह, कामिनी कामयिनी, उपेन्द्र भगत नागवंशी, मनोज कुमार कर्ण उर्फ मुन्नाजी, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, रूपा धीरू, हिमांशु चौधरी, रूपेश कुमार झा त्योंथ, विनीत उत्पल, श्रीमती कुसुम ठाकुर, अशोक दत्त, राजेश मोहन झा गुंजन, किशन कारीगर आ उमेश मंडल सन नव साहित्यकार प्रमुख छथि। ओना वर्तमान कालक परिधिमे किछु स्थापित रचनाकार जेना गंगेश गुंजन, विभूति आनंद, ज्योत्सना चंद्रम, जयप्रकाश जनक, रामसेवक ठाकुर, कमलाकान्त, अरविन्द अक्कू, परमानंद प्रभाकर, रामप्रवीत ठाकुर तरूण, प्रो. वीरेन्द्र कुमार चौधरी सन रचनाकारक लेखनी उपर वर्णित सभ रचनाकारक संग-संग एहि विधामे क्रियाशील अछि। सभसँ आश्चर्यक गप्प जे मात्र नौ गोटे वसंत देखनि बाँनिका स्वश्री संस्कृति रमाकि लेखनी प्रथमत: बाल साहित्येकेँ स्पर्श कएनक अछि।

एहि प्रसंगमे किछु एहेन रचनाक उल्लेख करब आवश्यक बूझैत छी जे छेहा मैथिलीमे मात्र लेना-भुटैका लेल लिखल गेल हुअए-

(क) "खेत टौ खरिहान टौ/ आंगन टौ दलान टौ/ बाँबाँ आबँ अमीक कालमे/ टिटैमी टेहकय टौ-टौ-टौ../"

(ख) "बाँपे तोहर बँनलौ परदेशी/ चिठ्ठी ले एलौ भेलौ दिनरेसी/ मॉक लिलायल व्यथा जगबैं छौ/ स्वनहीं बौ तोरे कुचरि स्वनबैं छौ/" (काली कांत झा बूँच रचित-पोताक अंट्ठास आ दिनक लेना करितासँ)

(क) "साले-साल किअए अबैं छी/ झले-झल अबैत

बह्नु/ रुब क्षण रुब मनकेँ/ अमृतसँ भरैत बह्नु/ क्षणे-क्षण.../ नव शक्तिक नव उत्साह द२/ सृजन शक्ति भरैत बह्नु/ कर्म-ज्ञानकेँ घोड़ि-घोड़ि / सिनेहसँ सिनेह सटैत बह्नु/ क्षणे-क्षन.../ जे छूसन से हम्मब छूसन/ तगने किअए छी कनहन्त/ सभ जागेएे सभ स्वतेए/ एक दिन हेते सबँहक अंत/ नजबि-उँठा देखैत बह्नु/ क्षणे-क्षण.../ देवी अहाँ, मैया अहाँ/ भेदि कतो अछि कहाँ/ जोड़न आँखि उँठा-उँठा/ पने-पन देखैत बह्नु/ क्षणे-क्षण अबँैत बह्नु । ”
(ख) “आँखि प्वछनक/ दीदी, सभ किछ देखितो/ किछ ने देखै छी/ कनपैत मन देखि/ भवि-भवि दिन कनै छी/ नजबिक उँत्तव/ सगतबि तँ हून छिटौएन-ए/ ग्णसँ भवन-प्वबन/ बस च्सैक ज्योति बँनाउं/ भेटैत तखने मीठका हून । / (जगदीशे प्रसाद मंडन, “सवस्रती बँदना” आ “नजबि” करितासँ)

“बँड़ जे जतनसँ हम पोसनी प्वताकेँ/ भ्वखे स्वतनी अपन घव मव ओकवा स्वतौनी ख्आकेँ/ अपने हम ऋक्ख ऋदा बौआकेँ पठ़ौनी/ कांटि कष्टै पोथी नेन ढौआ ज्टौनी/” (ऋपेशे रुमाव मा त्योंथ)

(क) “चाविटौ छाँड़ा छन गाछ तव हनैत/ जिद नगौने डबिकेँ गनैत/ पहुँचन पाँचम- हे बौ की गनै छेँ/ ओ कथीक गाछ ि छएे से जनै छेँ ? । सभ भेन अवाक/ अपन जमौनक धाक । स्वनने बहि ओ गाछ ि छऐ । अनचिन्हाब...... । /
(ख) “बँच्चा जनमि गेन/ बँटौ भेन/ स्वनतहि घव ख्शीसँ भवि गेन/ सौंसे टैन अबँबि पसबि गेन । बँठ़ए

নগন উঁছাহ। কহনক নোগ–রাহ–রাহ। ঝনিযাঁ খছি নছমিনিযাঁ/ তরঁ নে একবাপব সঁ জনমন ছৌঁড়। া....। (বাজদের মংডন, কথীক গাছ খ া ঝনিযাঁক চিন্তা শীর্ষক করিতাসঁ)

"ছনছন–ছনছন রৌরা হম্মব/ ফ্দকৈত ফ্দহী জকাঁ বহৈএ/ কখনো ঝস্কী কখনো মঠৈকী/ কখনো দিদীকেঁ চ্প্পী কহৈএ/" (খশোক দত্ত)
ঠৈন্না গেঁগ পসাবৈ যৈ/ ঝন্না দাঁত চিযাড়ৈ যৈ/ গ্বছূ–টি ংকু–রঁরঁনূ–সরঁনূ/ ঝগযো মোঁছ উঁখাবৈ যৈ/ খারঁ কী কচ্ছ ভায/ হ্বপেঞ্চু নগৈ যৈ/ রাঁজৈ ছী কোনা....। / (চন্দ্রশেখব কামতি)

"এক দূ তীন/ রৌখা গেন স্বনি/ চাবি পাঁচ ছহ/ স্বনি ভেন ভযারহ..../" (গজেন্দ্র ঠাক্ব)

"নহনা পব খছি দহনা/ রৌখা রাঁরূ হমবা কহনা/ পঠ়ৃ জোবসঁ..../" (ডাঁ. নবেশ ক্মাব রিকন)

"কোন দিশাসঁ উঁতবি পপিহবা/ ঘৈন পদক ঠবকারৈঁ ছেঁ/ রিজ্রন কেব পংছী তোঁ হমবে/ জবন জিখা তবসারৈ ছেঁ..../" (চন্দ্রভান্ব সিংহ)

"পোথী পঠ়ি কিছু হৈত নহি/ তোড়ঽ চাহী বোঠৈ/ জোড়ৃ নোঠৈ রঁকোঠি কঽ/ ভোঠৈ রঁঠৈক্ক মোঠৈ...../" (খাবসী প্রসাদ সিংহ)

"একব চোবৌনক ওকব হেবৌনক/ রাঁপো মাগক নাম

ब्ँड़ ानक/ पोथी फाड़य थोथी झाड़य/ एकवा ओकवा झगड़ ा नाड़य.../" (ङँदयनाथ झा अशोक)

"चनू तिवंगा कने ङँड़ ा नी ह्जे की/ आजादी केव वश्मि प्ववा नी ह्जे की..../" (बामनोचन ठाकुव)

"देर पितव पातवि–खवना कहिया धवि ? / बैंसन खैबें वे बमचवना कहिया धवि ? / पोथी पतवा गामक गाम ङँपासन अछि/ प्ररन धावमे बँड़का–बँड़का भासन अछि/" (डॉ. ब्ँङ्क्रिनाथ मिश्र)

"माहभूमि केव कवी बँदना/ श्नृत्तवानी गुनगान कवी/ जननी जन्मभूमि केव खातिव/ अर्पण अप्पन प्राण कवी.../" (अर्जुन नान कर्ण)

"तू नोवी गा हम सूति जाएर/ माए नोवी गा हम सूति जाएर..../" (डॉ. शंभू कुमाव सि ंह)

"नेहक चाचा, अहाँ कतऽ चनि गेनौं/ देख निअ अहाॅ नेना सभकेँ की कऽ गेनौं/ हमव पीठ पव भावी बँस्ता/ ओहि मे किताबँ कॉपीक ठेनमठेन देखू..../" (स्वश्री संस्कृति रर्मा, रएस नौ बँवख)

"एक टैनमे बँबँनू अकनू/ दू नेना छन/ समतुविया छन/ बँबँनूकेँ छन बँन्तिक ख्ूंटी/ आमक तख्ता केव पिटैना छन..../" (जीरकान्त)

"नन्हें भाय खेनए चननिनि/ हाथ नेने बँदूक/

नगननि दनदन ह्फायव कवए/ ओ पक्षी देखि उँनूक.../" (वमाकान्त वाय वमा)

"जाड़क बौदी सन रेंग्ठी/ गवमीक छाहवि सन रेंग्ठी/ जीरनक गीत-संगीत वँसैत अछि/ ओहिमे/ नहि तँ वसहीन अछि जिनगी/" (डाॅ. जया वर्मा)

"वाम छू वहमान छू/ गीता आव कुवान छू/ मोन विकयवेँ नहि वँजावमे/ पहिने बौआ कान छू..../" (डाॅ. व्रजकिशोव वर्मा मणिपद्म)

"हे भाय हमवा जनि मावह/ हम छी तोवे भ्राता/ अग्रज वा अरवज..../" (ह्फजलुव वहमान हवसमी)

"वाँलक कवेजपव वँसा नेनहुँ गाम/ वँवि-वँवि आँगुवसँ निखनहुँ जे नाम..../" (विनटे पासवान विहंगम)

"कोंचा नेओगत छनि केश ह्फहवाएत छनि/ मोछो हुनक कनकठ्ठ/ एहो पुरुष अनवँठ्ठ.../" (ववीन्द्र नाथ ठाकुव)

"खेन खेन खेन/ खेन बौउँआ खेन/ चोवा-नुकी खेन/ अक्तानक अन्हावमे/ नुकाएन चोवबाँ/ क्तानक किवनसँ/ पकड़न गेन/ खेन खेन खेन/ खेन दाय खेन/ कनियाँ-पुतवा खेन/ वेँगमानक नगवीसँ/ नकनन वँहविया/ शैतानक माह्फापव/ वैँठा देन गेन/ एमानक चौवँठियापव.../" (मनोज कुमाव मंडन)

"जगदंवँ अहीं अरनम्ब हमव/ हे माय अहाँ विनु आशे

ककब..../"   (प्रदीप मैथिली पुत्र)

"पठ़ा -लिख बॅनिहेँ एहन सिपाही/ सभ तरि लोक करौ वाहवाही/ एहन संतानक अनगे धाही/ अगता छै भगत सि ंह चाही...../"   (महाकांत ठाकुर)

"माँ गे माँ/ घरक ङुपर/ चारक तर/ बॅगरा बॅनेलकङ/ एकटा घर/ माँ गे माँ/ घरक पाछू/ बॅारीक बॅिच/ स्वगा अनलकङ/ एकटा फुर/ माँ गे माँ/ गामक भीतर/ टैलाक बॅिच/ नट्ुआ नचलङ/ एकटा नाच/ माँ गे माँ/ गामक बॅाहर/ पोखरिक बॅिच/ पुरैनिक पातपर/ झिलमिल जल/ माँ गे माँ/ आँगन कात/ ढेकी लग/ बॅिहरिमे छौ/ गह्मन साँप/ माँ गे माँ/ बॅस्तुनिया लय/ हम कहनियौ/ सब हाल-चाल/ जल्दीसँ दऽ दही/ बॅस्तुनिया हमर/ हम चललियङ/ खेलय लेल.../   (पंकज कुमार झा)

"दाग गे दाग तोँ बॅड़ हरजाग/ भागेँ ओहि दिस देखए जतहि/ ढेपा गुड़क गुड़कल जाए...../" (बाजेशे मोहन झा गुंजन)

ओ लिखबाक हमर उद्देश्य अछि बॅाल करिताक किछु रूपक दर्शन मात्र। एहिसँ गतर सेहो अनेकानेक बॅालगीत आ करिता मिथिला गाम-गाममे लोरी आ रीति गीतक रूपमे चर्चित अछि। मैथिली साहित्यमे तँ साहित्यक प्रतिक रिरिध रिधाक संपादन रा चित्रण पहिलेसँ रेसी भऽ अछि मुदा मर्मस्पर्शी कथा जे पाठकक गणनामे लगातार कमी आबि रहल अछि। गोलमेज

সম্মেনন কঽ কঽ তঁ হম মৈথিন খপন পাঠক নোকনিক গণনা চাবি করোড় ধবি পহুঁচা দৈত ছী হ্মদা সভ গোষ্ঠ মৈথিন জৌঁ মাত্র খপন পবিরাবেক খরনোকন কবথ্ তঁ সত্যতাসঁ খরগত ভঽ সকৈত ছথি মাত্র মাতা-িপতাসঁ রৈদেহীক খস্তিত্র নহি রঁাচত তঁ....। জৌঁ রাঁন ভারনাকেঁ দেসিন রযনামে প্রচাব-প্রসাব নহি হএত তঁ ভঽ সকৈত খছি জে করি কানীকান্ত ঝা রূঁচ জীক করিতা দেসিন রযনাক খস্তিত্রক রিম্র সত্য প্রমাণিত ভঽ জাএ। একব কিছু পাঁতি-

"চন্দা-স্বমন-যাত্রী-মধুপক/ জ্নি কব্ধ ভারনা পব খাধাত/ দিরস নিকষ্ট ও খারি বহন খছি/ হেতী মৈথিনী সভসঁ কাত..../"

নেনা-ভুষ্টকামে দেসিন রযনাক প্রতি সিনেহ জগাএর খারশ্যক খছি। এহি নেন রান সাহিত্যকেঁ প্রাথমিকতা দের খতি খারশ্যক খছি। রিশেষ কঽ কঽ রর্ত্তমান পিবহীক সাহিত্যকাবকেঁ এহি দিশামে সজগ বহএ পড়ত।

মৈথিনী উঁপন্যাস সাহিত্যমে দনিত পাত্রক চিত্রণ

উঁপন্যাস কোনো গদ্য সাহিত্য রূপী র্যষ্টিক

আত্মা মানল জাইত অছি। মৈথিলী সাহিত্যমে লগভগ সও বর্ষ পূর্ব ধরি উপন্যাস বিধাক রচনা লগভগ শূন্য ছল। এহি কারণ ওহি অবধি ধরি মৈথিলীকেঁ পূর্ণ সাহিত্যিক ভাষা নহি মানল জাইত ছল। জনসীদন জী এহি ভাষা সাহিত্যক পহিল মান্য উপন্যাসকার ছথি। হিনক পাঁচ গোট উপন্যাসক পশ্চাত্ এখন ধরি দেসিল বযনামে সাহিত্যক সমগ্র বিধাক চিত্রণ করৈত বহুত রাস উপন্যাস পাঠক ধরি পহুঁচল অছি। পরংচ এহি সাহিত্যক সংগ সভসঁ পৈঘ বিডম্বনা রহল জে পছাতিক সমাজ জকরা সামাজিক শব্দমে দলিত কহল জাইত অছি, ওকর মহিমামংডনক গপ্প তঁ দূর প্রায: এহি সাহিত্যমে অকস্মাত্ অবাংছিত অভ্যাগতক রূপমে ক্ষণপ্রভা জকাঁ কতহু-কতহু চর্চিত অছি। দলিত বর্গ তঁ সামাজিক, সাংস্কৃতিক আ শৈক্ষণিক রূপেঁ সম্পূর্ণ আর্যাবর্ত্তমে পিছড়ল ছথি, মুদা মিথিলা-মৈথিলীমে হিনক স্থানক বিবেচন হিনকা সর্বহক জাতি জকাঁ অলোপ অছি। একর প্রমুখ কারণ মিথিলামে ধর্মসুধার আন্দোলন, বিধবা বিবাহক সকারাত্মক দৃষ্টিকোণ প্রায: মৃতপ্রায রহি গেল। দার্শনিক উদযানাচার্য, ভারতী-মংডন, আযাচীক এহি ভূমিপর সনাতন সংস্কৃতিক পুনরুদ্ধার তঁ ভেল, মুদা এহি পুনরুদ্ধারপর আডংবর ধর্মী ব্যবস্থাক অমরলত্তী মূল সংস্কৃতিক বিম্বকেঁ স্বখা দেলক। সমাজক সাম্যবাদী সোচ ভগজোগিনী বনি সবর্ণ-দলিতক মধ্য ভিন্ন সামাজিক দশাক মধ্য মাত্র টিমটিমাইত রহল। এহি কারণ সভক দৃষ্টিকোণ রহিতহুঁ মৈথিলী ভাষাক স্থাপিত রচনাকারক লেখনী ব্যথিত আ শোষিত দলিতক মর্মস্পর্শী জীবন গাথাকেঁ প্রকাশিত নহি কঽ সকল।

कथा-करिता आ गल्पमे ई दलितक चित्रण भेटैत अछि, मुदा उपन्यासमे अत्यल्प। अपन व्यथाक विवेचन दलित वर्गक साहित्यकार सेहो नहि कऽ सकलाह, किएक ई हिनक संख्या एखन धरि नगन्य अछि। संभवत: दलित रचनाकारक उपन्यास अपन रचनामे मैथिलीकेँ एखन धरि नहि भेटैलनि।

सभसँ जनप्रिय उपन्यासकार हरिमोहन झाक साहित्यमे दलित वर्ग अनुपस्थित जकाँ छथि। यात्रीक रचनामा ओना एहि वर्ग दिस संकेत करैत अछि ओहिना जेना ललितक पृथ्वीपुत्र, धूमकेतुक मोड़ पर आ रमानंद रेणुक दूध-फूल। यात्रीक पारो आ नवतुरिया विषयक चयनक कारण दलित वर्ग दिस ध्यान नहि दऽ सकल। धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क 'कादो ओ कोयला' छोटे लोकक जिनगीक कथा कहैत अछि ई हुनकर 'ठुमकि बहू कमला'मे दलित वर्गक संघर्षक कथा ठीठर आ रामकिसुनक माध्यमसँ कहल गेल अछि। मणिपद्मक उपन्यासक राजा सलहेस दलित दुसाधक नायक सलहेसक कथा कहैत अछि ई 'लोरिक विजय' उपन्यासक नायक ई यादव छथि मुदा हुनका मित्र वर्गमे बँठा चमार, राम्ह पासवान, राजल धोबी, ई सभ दलित वर्गक छथि-लोरिकक किछु विरोधी सेहो दलित वर्गक शासक छथि-मोचनि- गजभीमनि, हरवा आदि बँठाक संहार परिस्थितिवशी करैत छथि आ तहिसँ लोरिक विजयमे दलित कथाक ढेर रास प्रसंग आएल अछि। नैका वनिजारामे सेहो नैकाक पत्नी फुनेश्वरीकेँ किनबाक वर्णन अछि। हुनकर फुटपाथ भिखमंगा सबहक कथा कहैत अछि ई निनीवेक पटाक्षेप भूमिहीनक नक्सलवाड़ी आन्दोलनक कथा कहैत अछि।

आधुनिक कालक प्रसिद्ध उपन्यासकार विद्यानाथ झा 'विदित'जी एहि विषयपर अपन लेखनीकेँ कौशीक भदैया धार जकाँ झमाड़ि कऽ प्रयोग कएलनि। ओना तँ विदित जी एखन धरि आठ–नौ गोटे उपन्यासक रचना कएलनि अछि, परंच हिनक तीन गोटे उपन्यासमे दलितक दशाक चित्रण मैथिली साहित्यक लेल अपूर्व निधि मानल जा सकैछ। हिनक विप्लवी बैसवाक कथामे आदिवासीक कथा धौना, टैकू स्वरूप, बाँस्वरी, मोहरीलाल, गौरी, मारसक संग सफलता पूर्वक कहल गेल अछि। 'कौसिलिया' उपन्यासमे तँ फुलिया चमैनक पात्रताक चित्रण अनुपमेय अछि। विदित जीक तेसर उपन्यास 'मानव कल्प'मे मिथिला, अंग आ झारखंडक आँचरमे बसल नगभग सम्पूर्ण दलित समाजक विवेचन कएल गेल।

ओना तँ श्रीमती शेफालिका वर्मा जी मानव धर्मी रचनाकार छथि। हिनक समग्र साहित्यिक कृतिमे 'जाति' शब्द भूमंडलीकृत अछि। 'नाग फाँस' उपन्यासमे जातिवादी व्यवस्थासँ शेफालिका जी बँचबाक प्रयास कएलनि, परंच एहि उपन्यासक एकटा पात्र आकाशक पत्नी तरंगक प्रकृतिसँ वृमना जागत अछि, जे ओ दलित छथि।

कहबाक लेल तँ सभ साहित्यकार अपनाकेँ साम्यवादी कहैत छथि मुदा साम्यवादी जीवन शैलीक जौं चर्च कएल जाए तँ संभवत: मैथिलीक सर्वकालीन साहित्यमे ध्रुवताराक स्थान श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीकेँ भेटबाक चाही। हिनक सभ उपन्यास (मौलाइल गाछक फूल, जिनगीक जीत, जीवन–मरण, जीवन–संघर्ष, उत्थान–पतन)मे दलितक चित्रण अनायास भेटि जागत अछि। लिखबाक शैली ओ विम्बक चयन ततेक पारदर्शी

জে সর্ণ– দনিতক মধ্য কোনো খাধি নহি। সম্পূর্ণ সমাজমে সকাবাত্মক তাবতম্য স্থাপিত কববাক জগদীশ জীক স্বপ্ন মাত্র উঁপন্যাসমে নহি বহত, এহিসঁ মিথিনাক সমাজিক পবিস্থিতিমে ভবিষ্যমে ‘সর্বে ভবন্তু স্বখিন:..... । সিদ্ধান্তক স্থাপনা খবশ্য হএত। হিনক খবিবন মর্মস্পর্শী খা প্রযোগধর্মী হৃতি ‘মৌনাগন গাছক ফূন’মে দনিত সমাজক মহাদনিত ক্ষসহব জাতিক বোগহী, রেঁগবা, কর্ত্তবীক মনোদশা খা নিত্যকর্মসঁ সমাজমে শাঁতিক জ্যোতি জগএবাঁক কন্পনা খনমোন খছি। দড়া ভংগাক প্নেটফার্মপব সঁ ভংগী ডোমক মানবীয ভাবনাক মাবীচিকা একঠাঁ ভক্ক দহ উঁগি জাগত খছি। ভজ্খা, মোনিযা খা হ্নসেসবী সভ সেহো ডোম জাতিক ছথি জিনকব সহাযতা সম্যক সোচবঁনা ব্রাহ্মণ বমাকান্ত জী কবৈত ছথি। এহি হৃতিক সভসঁ খজগ্বত পাত্র ছথি বমাকান্ত জী। হিনক ছোট পুত্র কানক ডাঁগসঁ খধমব্ধ বনিতা স্বজাতা জে ধোবিন ছথি তিনকাসঁ বিবাহ কহ নৈত ছথি। বিবাহে টা নহি বিবাহসঁ শিক্ষা গ্রহন কববাক নেন প্রেবণা খা খর্থ সেহো স্বজাতাকেঁ ভেটননি জাহিসঁ ও ডা. স্বজাতা বঁনি গেনী। গামমে বহনিহাব খা খপন মাতৃভূমিক প্রতি খসীম শ্রদ্ধা বখনিহাব বমাকান্ত বাঁবূকেঁ খপন পুত্র মহেন্দ্রক এহি নির্ণএসঁ কোনো পীড়া নহি ভেননি। হিনক সম্পূর্ণ পবিবাব এহি নির্ণএকেঁ সহৃদয স্বীকাব কহ নেনকনি।

জগদীশ বাঁবূক দোসব উঁপন্যাস ‘জীবন–মবণ’মে হেনন–গ্বদবী ডোম দম্পতিক চর্চ কএন গেন খছি। জীবঁছ, ছীতন, বংগনান চমাব জাতিসঁ সম্বঁন্ধ বখৈত ছথি। জিনগীক জীত উঁপন্যাসমে পনহনিক নেপথ্যক পাত্রতা দর্শিত খছি।

গজেন্দ্র ঠাকুবক ‘সহস্রবাঁঢ়নি’মে দম্মাক জড়ি একটা খাদিরাসী দ্বাবা খানর খা কিছু রর্খ রাদ ও জড়ি জংগনমে নৈ ভেটবঁ রোন কম হোএরা দিস সংকেত কবৈত খছি তঁ হনকব ‘সহস্রশীর্ষা’ মিথিনাক নগভগ সভ দনিত জাতিক রিষহত রিরেচনা কবৈত খছি। তীনটা ঘবক বহনোপব ধোরিযা টৈনী একটা টৈন বঁনি গেন খছি। ঝংঝাবপ্পব ধবি মাবরাড়িক কপড়া এতএ সাফ কএন জাগত খছি। মহিসরাব ব্রহ্মণ সভ জে রঁবিযাতীমে রেঁনরটম ঝাড়ি কঽ সীটি-সীটি কঽ নিকনৈত ছথি সে কোনো খপন কপড়া পহিবি কঽ। রেঁহ মংগনিযা কপড়া, মহগৌখা মাবরাড়ি সভক। মাবরাড়ি সভক ওা কপড়া বজক ভায দূ দিন নেন ভাড়াপব হিনকা সভকেঁ দৈত ছথিন্হ। কোবৈন বুঁধন খা ডোমী সাফী, ধোরি। ডোমী সাফী খারঁ ডোমী দাস ছথি, কাবণ কবীবপংথী জোতৈ ছথি। ফেব একটা খাব টৈন, চমবটৈনী খছি। চমাব- হুখদেবঁ বাম খা কপিনদের বাম। পহিনে গামসঁ বাঁহব বহএ, বঁসরিঙ্গীক বাঁদ। হুদা খারঁ তঁ সভ বাঁস কাটি কঽ উঁপটাএ দেনে খছি খা নোকক রসোবাঁস বঁঠিত-বঁঠিত এহি চমবটৈনী ধবি খারি গেন খছি। ঘবহট খা ওাঁটা-পজেবাঁ সভ খগন-বঁগনমে খসিতে বহৈত খছি। ঢোনহো দেবাঁসঁ নঽ কঽ সিংগা বঁজেবাঁ ধবিমে হিনকব সরঁহক সহযোগ খপেক্ষিত। গাএ-মান মবনাক বাঁদ জা ধবি ওা সভ উঁঠা কঽ নহি নঽ জাগত ছথি নোকক ঘবমে ছতকা নাগনে বহৈত খছি। ভোনা পাসরান খা হুকেশ পাসরান, দুসাধ। গেনা হজাবীক নিচুনকা খাড়িক সংবঁধী। রএহ গেনা হজাবী জে হুশেশ্রব স্থানমে একটা হুশপব গাএ দ্ববা খারি কঽ

দূধ দৈত দেখনে বহথি তঁ ওহি স্থানকেঁ কোড়এ নগনাহ, মহাদের নীচাঁ হোগত গেনাহ, সীতাপ্বত্র হ্নশী দ্বাবা স্থাপিত ওা মহাদের গেনা হজাবীক তাকন।

ম্নকেশী পাসরানক রেঁটা মানতী রৈঁক খধিকাবী ছথিন্হ খা জমাএ মথ্বানংদ ডী.পী.এস. স্কূনক প্রচার্য ছথি, রসংত-হ্নংজ নগ হ্নার্ম হাউঁসমে বহ জাগ ছথি। ভোনা পাসরান খা ম্নকেশী পাসরান গামেমে বহ জাগ ছথি।

1967ও.ক খকানমে জখন সভটা পোখবি, গড়খৈ স্বখা গেন ম্নদা ডকহী পোখবি নহি স্বখাএন প্রধানমংত্রী খাএন বহথি তঁ হ্নকা দেখেনে বহন্হি সভ জে কোনা এতএ সঁ রিসটঠ কোড় কহ ম্নসহব সভ খাগত ছথি। চর্মকাব ম্নখদের বামক রেঁটা উমেশী সেহো ওহি ম্নক্তাকাশী সৈনূনক রঁগনমে খপন খসনা-খসনা খসা নেনে খছি, বহএ ম্নদা কিশনগঢ়মে। চপ্পন, জ্তাক মবো-ম্মতিক খনারে তানাক ড্প্নীকেট চাভী রঁনেরাঁক হ্নব সেহো সীখি নেনে খছি। হ্নংজী খছি তঁ ওকব ড্প্নীকেট পংদ্রহ টাকামে। হ্নংজী হেবা গেন খছি তঁ তকব ড্প্নীকেট সএ টাকামে। খা জে ঘব নহ জএরন্হি তঁ তকব হ্নীস দূ সএ টাকা খতিবিক্ত। ম্নসহব রিচহ্নন সদাযক রেঁটা বঘ্রীব ড্রাগরবী সীখি নেনে খছি। রসংত হ্নংজক একটা ব্যবসাযীক ওহিঠাম ড্রাগরবী কবৈএ খা বহত খছি কিসনগঢ়মে। ডোমটৈনীক রৌধা মন্নিক রেঁটা শ্রীমংত সেক্টবক মেন্টৈন্সক ঠেকা নেনে ছথি। হ্নকা নগ দূ সএ গোটৈ ছন্হি জে সভ ক্রার্টবক কূড় । সভ দিন ভোবমে উঠেরাক সংগ বোড খা পার্কিংগক ভোবে-ভোব সহ্নাগ কবৈ ছথি। এহিমে সঁ কিছু গোটৈ রিশেষ কহ নেপানক ভোবে-ভোব নোকক

শীসা মহিনরাবী দূ সএ ৌকামে পোছে ছথি খা খখরাঁবক হাঁকব রঁনন ছথি। বহ ছথি কিশনগঠ়মে হ্মদা খপন মকানমে- হ্মসহব রিচক্ষন সদায।

দনিত সংস্কৃতিক প্রতি উঁদাসীনতাক হ্মখ্য কাবণ খছি সমাজমে পসবন ছূতি র্যরস্থা। ওনা তঁ এহি প্রকাবক খরস্থা প্রায: সম্পূর্ণ খাযরির্ত্তমে বহন খছি, পবঁচ খান ঠামক জনভাষাসঁ দোসব ধর্মক নোকক হৃদযগত স্পর্শকি কাবণ দনিত সংস্কাবক চিত্রণ খান ভাষামে মৈথিনীসঁ রেসী ভেটৈত খছি। মিথিনামে তঁ গস্নাম ধর্মী ছথি, পবঁচ মাতৃভাষা মৈথিনী বহনাক রাদো হ্নকা সরঁহক মধ্য সাহিত্যক সৃজনশীনতা উঁদাসীন বহন। একবা মৈথিনীক দ্ভগ্য মানন জা সকৈত খছি জে এখন ধবি এহি ভাষামে দনিত রন্মসঁ উঁপজন সাহিত্যকাব উঁপন্যাস নহি নিখি সকননি। প্রায: যএহ স্থিতি গস্নাম ধর্মী সাহিত্যকাবক সংগ সেহো খছি। ফজন্নব বহমান হাসমী, মংজব স্বনেমান সন সাহিত্যকাব তঁ মৈথিনীকেঁ খাত্মসাত কএননি পবঁচ উঁপন্যাসকাব নহি রঁনি সকনাহেঁ। ও নিখরাঁক তাত্পর্য জে গস্নামমে জাতিরাদী র্যরস্থা সনাতন সাঁস্কৃতিক খপেক্ষাকৃত ন্যূন খছি।

দনিত রন্মক সংখ্যা মিথিনামে নগভগ খাঠ খানা খছি, সংপূর্ণ সমাজক মাতৃভাষা মৈথিনী, হ্মদা শিক্ষা-চেতনাক খভারক কাবণ এহি রন্মমে মৈথিনী সাহিত্যক প্রতি সৃজনাত্মক দৃষ্টিকোণ নহি পনপি সকন। খাগাঁকি জাতিমে সম্যক্ ি রচাবক খভার বহন খছি, কিছু সাহিত্যকাব এহি পবিধিসঁ তঁ রাঁহব ছথি পবঁচ রন্মক রীচক খাধি নক্ষ্মণ রেখা রঁনি হ্নকো সভমে জনভাষা রাচকক প্রতি সিনেহ

নহি খারঁএ দেনক। সংভরত: মৈথিলী খার্যভাষা সমূহক পহিল জনভাষা থিক জকবাপব জাতিরাদী কনংক নাগন খছি। সংস্থ্রতক সংগ যএহ রিউরনা বহন পবংচ ও কহিও জনভাষা নহি বহন। জখন কি মৈথিলী রর্তমান কানমে সর্রসিঁ রঁসী দনিত–পছাতিক মাহৃভাষা খছি। পনাযন তঁ সভ জাতি সমূহমে ভঽ বহন খছি পবংচ মজদূবী কেনিহাব দনিত প্ররাসমে সেহো মৈথিলীকেঁ খাত্মসাত কএনে ছথি। একব রিপবীত মিথিনামে বহনিহাব সর্রা পবিরাবক খাধুনিক পিবহীক নেনা রচ্চামে মাহৃভাষাক স্থান হিন্দী নঽ বহন খছি। 'জ্যোতিক–কোখি খনহাব' জকাঁ মাহৃভাষাক রাস্তরিক সংবক্ষকক রিরেচন এহি সাহিত্যক উঁন্নযনক নহি কঽ বহন ছথি। উঁতব রিহাবক রঁস বাস স্থানমে পসবন মৈথিলী তঁ কখনো–কখনো মাত্র মধ্রঁনী দড়া ভংগাক মাহৃভাষা প্রমাণিত কএন জাগত খছি।

বচনাকাবক দৃষ্টিকোণ বচনামে কিছু খাব খা রাস্তরিক জীরনমে কিছু খাব বহন। সাম্যরাদী র্যরস্থাপব সিযাহীক প্রযোগ কেনিহাব উঁপন্যাসকাবমে রাস্তরিকতা জোঁ ঝঠা রাদী বহত তঁ সম্যক সমাজক কন্পনো কবরঁ খসংভর। র্যথা রএহ রুঁন্নি সকৈত খছি জকবামে জীরন্ত খরিবন হৃদয হো রা স্রযং র্যথিত হ্খএ।

নিষ্কর্ষত: খাশিক সংগ–সংগ রিশ্রাস খছি জে রর্তমান হ্যগক সাহিত্যকাব সমাজক কাত নাগন রচ্চাক প্রতি সিনেহী রঁনি মৈথিলী সাহিত্যকেঁ গবিমামযী রঁনারঁথ্। পূর্রাগ্রহকেঁ খন্বগৃহীত কবরাঁক পশ্চাত এহেন কন্পনা–রাস্তরিক ভঽ সকৈত খছি। জোঁ খপমানিত খছোপকেঁ সম্মানিত কএন জাএ তঁ মিথিনা

প্বনি ওহি মিথিনামে পবিণত ভ২ সকৈত খছি জতএ বাজা জনক পবিরাব, সমাজ খা বাজ্যহিতমে ধর্মক পাননক হেতু বাজাসঁ হবরাঁহ রঁনি গেননি।

<u>পোথী- সমীক্ষা-ভারাঁজনি</u>

নৈসর্গিক খা খাত্মিক ভারসঁ নিকসৈত করিতাকেঁ খাশ্ব করিতা কহন জাগত খছি। এহি ভারক সৃষ্টি খাশ্বকরি রা খাশ্ব করযিত্রী মানন জাগত ছথি। খাশ্ব করিতামে মৈথিনী সাহিত্যক স্থান একাত পবংচ রিনক্ষণ। করি কোকিন রিদ্যাপতি, করিশেখব রঁদবীনাথ ঝা, করিরব সীতাবাম ঝা, সবস করি গুশিনাথ ঝা,

করীশ্রব চন্দা ঝা, করি চূড় ামণি মধ্প, করি সরোজ ভুরন, যাত্রী, খাবসী, খপ্ব, গোপেশ, শ্রীমতি শ্যামা দেরী, চন্দ্রনাথ মিশ্র ‘খমব’, বরীন্দ্র, সবস, নরন, শ্রীমতি গনাবানী, স্বরেশ সি ংহ স্নেহী, প্ররাসী, রিভূতি খানংদ, প্রদীপ মৈথিনী প্বত্র, মণিপদ্ম, নচিকেতা, ডাॅ. র্বুহ্মিনাথ মিশ্র, বাজদের মংডন, শ্রীমতি জ্যোতি স্বনীত চৌধবী, রিনষ্ট পাসরান রিহংগম, হাসমী জী, মংত্রেশ্রব ঝা, বাজকমন, খশোক দত্ত, ঝপেশ ক্ষমাব ত্যোঁথ, জগদীশ প্রসাদ মংডন, চন্দ্রশেখব কামতি, উঁমেশ মংডন, কীর্তি নাবাযণ মিশ্র, মাযানংদ মিশ্র, ক্ষমাব পরন, ডাॅ. শংভু ক্ষমাব সি ংহ, শ্রীমতী মৃদ্না প্রধান, শ্রীমতী ক্ষস্বম ঠাক্ষব, রিরেকানংদ ঠাক্ষব, চন্দ্র ভান্ব সি ংহ, কানীকান্ত ঝা ‘র্বূচ’, বমাকান্ত বায বমা, ডॉ. কেদাবনাথ নাভ, জয প্রকাশ জনক, ডॉ. নবেশ ক্ষমাব রিকন, গজেন্দ্র ঠাক্ষব প্রভৃত খাশ্ব করি খা করযিত্রী সভসঁ জগমগাগত মৈথিনী সাহিত্য সবিতামে একটা চংচনা ঝদা খর্নতিঝখী নক্ষত্রক উঁদয মৈথিনী সাহিত্যকেঁ ঘৃতগংধা র্বনৌনে খছি- ও ছথি ডॉ. শেফানিকা রর্মা। হিনক হণ-হণমে কার্য ধাবা খরিবন গতিসঁ গতিমান খছি। ওনা তঁ রিপ্রনর্বধা খা মধ্গংধী র্বসাত সন করিতা সংগ্রহক বচনা কঽ খপন রিশেষ স্থান র্বনৌনে ছথি শেফানিকা জী। ঝদা হিনকা একটা গদ্য গীত সংগ্রহ ‘ভারংজনি’ মৈথিনী ভাষা সাহিত্যমে করিরব বরীন্দ্রনাথ টৈগোবক স্থান শূন্যতাকেঁ ভববাঁক নেন পূর্তি: নহি তঁ খাঁশিক ঝপেঁ খরশ্য প্রতীত হএত।

জীরনক রাস্তরিক সংবচনা, এতি, উঁদেশ্য, দ্খ-দ্খ, খাশ-ছোহসঁ এহি বচনাক কোনো সংবঁধ নহি। ককবা প্রতীক্ষা খনচিন্হ সিনেহ, খকথ্য মর্মক খক্ষনাএন

अनुभूतिकेँ एहि गद्य-गीतमे प्रदर्शित कएल गेल अछि- ओ संभवत: त्रिवेणीक वाक् धावा जकाँ मात्र अनुभूति एकल जा सकैछ, प्रत्यक्ष दर्शन नहि। स्वभाविक अछि पुष्प, नीव, क्षीव आ अमिय-गुणगुनक अंजलि तँ देखवाक योग्य होगत अछि, 'भावांजलि'केँ कोना देखल जाए ? हिन्दी काव्य गगनक आत्मा- 'एक भावतीय आत्मा'क प्रेमक विवेचन असंभव तँ नहि खदा अति कनिष्ठ- है कौन सा वह तत्व जो सारे भुवनमे व्याप्त है, ब्रह्माण्ड पूवा भी नहीं जिसके निए पर्याप्त है ?

करयित्रीक हंसिनी मोन विवहक शंकामे जवैत अछि तँ दोसव दिशि मिननक उन्मादसँ दीप्त पत अछि। सिनेहिल स्पर्शक आशे तँ कवैत छथि, खदा स्पर्शनक कल्पना मात्रसँ सिहवि जागत छथि। समस्त तन सितावक ताव जकाँ झंकृत भऽ जागत छनि।

एहि सिनेहक विम्ब तँ अनमोल खदा ककवासँ सिनेह ? कतहु नाथक रूपेँ भगवान वृन्मना जागत छथि तँ कतहु कंतक भान। कतहु स्पर्शनसँ वैवाग्य भावक प्रदर्शन तँ कतहु स्पर्शनक आशमे नैका वनिजावाक नायिका जकाँ- 'उत्ताप प्रेम तिन स्वनगि वहल नहि आवँ ओ यौवन अछि वशीमे'

मात्र एकावन पृष्ठक पोथीमे वाजा भर्तृहविक नीति, श्रृंगाव आ वैवाग्य तीनू गोट शतकक दर्शन एहि गद्य गीतकेँ विनक्षण वँना देनक।

मृत्युसँ ववएल प्रेम कऽ सकैत अछि जे जीवनसँ उवि गेल हो वा जीवनक पूर्णताकेँ देखि नेने हुअए। जाहि कालमे शेफालिका जी एहि पोथीक वचना कएलनि ओहि काल जीवनमे शून्यता तँ नहि छल।

पूर्णता एहि द्वारे नहि कहि सकैत छी जे ओहि समएकेँ छोड़ि जाए हिनक लेखनी एखन धरि गतिशील अछि। आब प्रश्न उठैत अछि जे जीवनक गति आ नियतिमे जीवंत नारीक जीवनक कोन अकथ्य व्यथाक चित्रण एहि पोथीमे कएल गेल जे मृत्युक अवाहन कऽ लेली।

एहिठाम तीर्थस्थानक विभ्रंक विश्लेषणमे गृहस्थ जीवनकेँ परम तीर्थ स्थल बना देल गेल। कवयित्रीक लघुआत्मामे सभ देव-देवी समाएल अछि।

अहि तम पद्यमे संभवत: अपन पतिकेँ अपन गष्टदेवक संग-संग प्रेरणा स्त्रोत, रक्षक, पिता भाय सभ रूपमे मानने छथि। तखन अदृश्य मृगमारीचिका कतऽ सँ आएल ?

रचनाक सभटा पक्ष तँ बड़ नीक अछि मुदा दुर्बल पक्ष अछि अनुत्तरित प्रश्न पाठक धरि कोना पहुँचल गेल ? ई सत्य अछि जे आदित्यक अंश सेहो कविताकेँ गजोविया नहि दऽ सकैत अछि, मुदा एहेन कवित्वक प्रदर्शन समीचीन नहि लागल। भऽ सकैत अछि जे आश्व कविताक नवल धारा कवयित्रीक गातसँ स्वत: स्फूर्त रूपेँ अंकुरित भेल हुअए।

भौतिकता आ लौकिकतापर सिनेह भारी बूझना गेल। सिनेहक प्रकार भिन्न-अकथ्य सिनेह। स्व. मनमोहन झा'क 'यात्राक स्मृति'क नायकक दृष्टिसँ स्वमित्राक प्रति उपटल सिनेहो एहि काव्य गीतक आगाँ ओछ पड़ि जाइत अछि। अपराध कएलापर अपराधबोध प्रासंगिक, मुदा बिनु अपराध कएने अपराधक लेल क्षमायाचना, ककरासँ क्षमायाचना सेहो स्पष्ट नहि।

सम्पूर्ण रचनामे प्रश्न- नव-नव प्रश्न मुदा

ककरो दोसब नेन प्रश्न नहि करयित्री तँ श्पन जीरनसँ प्रश्न प्वष्टैत छथि।

हमबा मतेँ देसिन रयनामे 'भारांजनि' नर प्रकाबक बचना थिक। श्पन श्रात्मासँ साक्षात्काब, निर्रिकाब ब्रॅह्माण्डसँ साक्षात्काब...... ।

पोथीक नाओ- भारांजनि
करयित्री- डॉ. शेफानिका रर्मा
प्रकाशिन रर्ष- 1996

<u>बमाजीक कार्य यात्रा</u>

মৈথিলী সাহিত্যক কার্য ধবাতলপব কিছু এহেন কবিক পদার্পণ ভেল অছি জনিক সমর্পণ আগাঁ সাক্ষাত সবস্বতী মূক ভেল ছথি ওগ সাহিত্যিকাবক সমূহমে শ্রী বমাকান্ত বায বমা'ক নাওঁ সম্মানসঁ লেল জাগত ছন্হি। 5 জনবৰী 1947 ঙা.কেঁ সমস্তীপ্পব জিলাক বিভূতিপ্পব প্রখণ্ডক মানাবায গৈলমে বমাজীক জন্ম ভেলন্হি। ম.বি. দলসি ংহসবাযমে শিক্ষকক ৰূপেঁ প্রথমত: যোগদান দেলন্হি আ অৱকাসগ্রহণ উ.বি. শিবোপঞ্জী খত্তআহাক শিক্ষকক ৰূপমে কএললি। সংস্কৃত সাহিত্যমে আচার্য আ বিশাবদ্সঁ বিভূষিত বমাজী মৈথিলী আ হিন্দীমে কবিতা অপন ছাত্র কালহি ংসঁ লিখ বহল ছথি। কবিতাক সংগ-সংগ গদ্য সাহিত্যমে সেহো হিনক কিছু যোগদান ছন্হি। একটা কথা সংগ্রহ কটৈত পা ँখি : হঁসৈত আ ँখি তীলিটা ৰৱাজী (অনুদিত কথা)ক সংগ সংগ বিবিধ পত্র-পত্রিকামে হিনক কথা, নিবংধ আদিক প্রকাশিন ভেল। একটা নিবংধ সংকলন কূটৈল-ছ াঁটৈল আ একটা নাটক ঘব-ছোড ় ৃ ি হলক অপ্রকাশিত কৃতি ছন্হি। বমা জীক পহিল কবিতা 1964ঙা.মে মিথিলা ভূমিক প্রতি সমর্পণ ভাবসঁ মিথিলা মহান শীর্ষক ৰূপেঁ গলাহাবাদসঁ প্রকাশিত বৈষ্ক পত্রিকামে প্রকাশিত ভেল ছল। লগভগ এক সযসঁ উঁপব কবিতা লিখ বমাজী এখন ধবি সাহিত্য ধাবামে গোঁতা লগা বহল ছথি। ঐ যাত্রাক ক্রমমে মৈথিলীক কোপভাজল সেহো ভেলাহ। সন্ 2007ঙা.মে সাহিত্য অকাদমী আ মৈথিলী সাহিত্য সংস্কৃতি বিকাস পবিষদ্ সমস্তীপকক সংযুক্ত তত্ৱাৱধানমে বমাজী অপন জন্মভূমি মানাবায গৈরুলমে কার্য সংধ্যা আযোজিত কববাক ৰাজলা বৈলা বহল ছলাহ। ঐ ক্রমমে মৈথিলী সাহিত্যক বযোবৃদ্ধ

साहित्यकार श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर जीसँ भेँट करबाक लेल दरिभंगा जा रहल छलाह। यात्राक क्रममे अपन गृह स्टेशन लहेरियासरायसँ रेलगाड़ी पर चढ़बाक दौड़ धूपमे हुनक दहिना पाएर नीचासँ कटि गेलनि। एहेन समर्पणसँ ककर हृदए नै पिघलि जाएत.....।

अमरजी अपन आत्मकथा अतीत मंथन'मे ऐ घटनाक उल्लेख कएने छथि। अस्पतालसँ छुट्टी भेटलापर बमाबाबू चुप नै बैसलनि आ हुनक इच्छा पूर्ण भेल। 8 जून 2008केँ मलाबर टोलमे काव्य संध्या'क आयोजन कएल गेल। श्री चन्द्रभानु सिंह करि सम्मेलनक अध्यक्षता कएलनि। उद्घाटनकर्ताक रूपमे अमरजी आ साहित्य अकादमीक प्रतिनिधिक रूपमे मैथिली परामर्शदातृ समितिक अध्यक्ष श्री विद्यानाथ झा विदित जी उपस्थित भेल छलाह।

मात्र एतबेटा नै विकलांग भऽ गेलाक पश्चात् बमा जीक इच्छा शक्ति आ समर्पणमे कोनो कमी नै आएल, एखनहुँ अपन अर्द्धांगिनीक संग सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्रक काव्य गोष्ठी आ कथा गोष्ठीमे उपस्थित होइत छथि। एखन धरि हुनक दू गोट काव्य संकलन प्रकाशित भेल अछि- फूल पात आ भाँगक गोला।

फूलपात- 1978मे पल्लव प्रकाशन, मलाबर टोलसँ प्रकाशित फूलपात'मे 15 गोट कविता संकलित अछि। यस्याप्रभावमतुलं भगवानन्तो'क नीतिक आधारपर पहिल कविता वंदना मातृभक्तिसँ ओतप्रोत अछि। देशज ठेठ मैथिलीमे आवश्य तत्सम मिश्रित संस्कृतसँ बनाओल गेल। स्वाभाविक अछि साहित्यक श्रोताक शब्द तत्समसँ दूर कोना भऽ सकैछ ?

अथिर थिर नव-नारि उर जे

प्रणय नय सिबजन
मिथ्क्तिना रंदना माहृभक्तिक पश्चात् जन्मभूमिक प्रति निष्ठाकेँ देखबैत श्छि।
स्रागत सहर्ष हे जनक देशे
गौननि ग्वण जकब बमा निरेशे
शंकब रिम्धगध स्वनि श्वकक गान
हे धन्य-धन्य मिथिना महान.... ।
'जमकन बस सि ंध्' करितामे बीतिक दर्शन तँ भेन म्दा छन्द श्चा नयक प्रराहमे करि ओ रिसबि गेननि जे करितामे मैथिनीमे निखने छथि श्चाकि हिन्दीमे-
मगन चनय मन्द मन्द
मादक मध्मय मिनिन्द
मंज् म्झन मृद् मबन्द
रासन्ती मनयानिन.....
स्राभारिके श्छि जे मैथिनी साहित्यकमे ओ धाबणा भइ गेन श्छि जे जैं पद्यक श्चर्थ सामान्य पाठक नै नगा सकैत छथि ओ उँत्तम पद्य मानन जाগत श्छि, तँए संभरत: करि ऐ करिताक बचना मात्र प्ररूद्ध बचनाकाबकेँ श्चपन नेखनीक धाबासँ म्धगध कबबाक नेन निखननि, सामान्य पाठक नेन ऐ बचनाकेँ कोनो रूपेँ उँपहयक्त नै मानन जाए।
बाँजन प्रणय रेण्व करिताकेँ सबस श्रं ृगाब पद्य मानन जा सकैछ। बसन्त गीत करिताकेँ श्चाबसी प्रसाद सि ंह जकाँ प्रक्रृतिक मनोबम चित्रण कबबाक प्रयास तँ कएन गेन म्दा रिश्नेषण ঔसत मात्र भेनैन-
मनयानिन नित भोबे सँ बँहि
भेन ि रकन जगत भबि की कहि ?
स्वनि-स्वनि आँचब ससबय

कुसुमित कानन कण-कण विहंसय। ।

हम अजेय सवन ध्राँति गीत वृ्मना जागत अछि। डूबैत तरंगन'मे पाक आ बाँगना देशक प्रसंगक उंनलेख कएल गेल अछि। जौं ऐ विम्रकेँ करिताक स्थानपव कथा रूपमे प्रदर्शित कएल गेल बहिताए तँ अवश्य नीक भऽ सकैत छल।
शवद निशा' करिताक विम्र आ विश्लेषण दून्‌ प्रासंगिक अछि। मुदा एकटा बात अटैकि बहल अछि जे जखन ऐ करिताक प्रकाशन हृ ्नपातमे 1978ई.मे बमा जी कएननि तँ पुन: कर्णामृत त्रैमासिक पत्रिकाक नयना जोगिनी अंक अक्टूबव-दिसंबव 2009मे ि कए प्रकाशन हेतु पठा देलनि। ऐ सँ करिक अपन बचनाक प्रचाव-प्रसावक प्रति अविश्रसनीयता मनकैत अछि। जौं एना कएननि तँ संग्रहक प्रति साभाव निखि देवाक चाही।
ओनी-मानी' करिता बानमनोरिज्ञानकेँ नीक जकाँ देखवैत अछि-
अएथुन तोहव बाबू बौआ
कौआ बाजय क ाॅव-क ाॅव
कहि बहव जँ अखनहिँ तऽ
के देतन पीठ ् ी खव ाॅव.... ।
पीठ ् ीक स्थानपव पिवही निखराक चाही छल।
'नहि आयल चिव चोव' करिता विद्यापतिक शृंगाव बससँ ओत-प्रोत बचना जकाँ निखराक प्रयास कएल गेल मुदा बमाजी होथ् वा केओ आन महाकवि विद्यापतिक नकल कववाक प्रयास नहि कववाक चाही।
ग्रीष्म ऋतु आ पारस गीत सेहो सामान्य मानल जा सकैत अछि।

ভাঁগক গোনা– ভাঁগক গোনা বমাজী হিন্দী সাহিত্যক মহাকরি হবিরংশী বায রচ্চন জীক মধ্শালাসঁ প্রেবিত ভ২ ক২ লিখনে ছথি। ঐ বচনাক প্রকাশন নরংরব 2004ঙা.মে ভেল। চাবি খণ্ডক ঐ কৱাঁওা সংগ্রহমে পহিল খণ্ড ওবিথাওন, দোসব ভাঁগক গোনা তেসব ধোনগ ধাঁগন থা চাবিম পবিশিষ্ট থছি।
এ প্রকাবক নূতন প্রযোগকেঁ কোন কৱপেঁ দেখল জাএ একব ি নর্ণএ পাঠকপব ছন্হি হ্মদা থন্তর্মনসঁ কএল গেল করিক প্রযাসক হম সবাহনা কবৈত ছী। ঐ সংগ্রহমে সভসঁ নীক নাগল থপন দেসিল রযনামে করিক মনোরৃত্তিক সহজ প্রদর্শন–
স্রীকাব কৱ হম চঠ ়া বহল ছী
থপন পহিল ভাঁগক গোনা।
বমা জীক দ্নূ কার্য সংকলনক দৃষ্টিকোণ থা রিশ্নেষণসঁ পাঠককেঁ কী ভেষ্টল ঐসঁ রেঁসী মহত্রপূর্ণ থছি হিনক সাহিত্য সমর্পণ।
থপন বচনাসঁ পাঠকক হৃদএকেঁ স্পর্শ কবথ্ রা নৈ হ্মদা সাহিত্যক দধীচি রঁনি বমাজী মৈথিলী থা মিথিলাক থাত্মামে থরশ্য প্ররেশ ক২ গেল ছথি।

समीक्षा- **अविरल पल (कविता संकलन)**

মৈথিলী ভাষা সাহিত্যমে কিছু এহেন বচনাকাবক পদার্পণ ভেল অছি জনিক বচনা সভমে বিশিষ্টতাক ধবাতল তঁ কবি ষবীসঁ পাইল অছি মুদা হুনক নাও মিথিলাক সাহিত্যিক পৃষ্ঠভূমি সঁ কাত লাগল বহল। এহেন বচনাকাবক সমূহমে সঁ একটা নাম। ড॰. নবেশ কুমাব 'বিকল' কেব সেহো লেল জা সকৈছ।

বিকল জীক শিক্ষাক ক্ষেত্র মৈথিলী আ বাষ্ট্রভাষা হিন্দী, বহল মৈথিলীক প্রাধ্যাপক ছথি, তঁএ বজ-কণমে মাতৃভাষাক প্রতি সিনেহ সবাভাবিক। সন পচাসমে জন্ম লেনিহাব বিকল জী অপন গামসঁ লঽ কঽ সম্পূর্ণ সমস্তীপুব জিলামে মিথিলা মৈথিলীক লেল সংঘর্ষবত ছথি। মঁচ উদ্ঘোষক আ গাযক বহবাঁক সংগ-সংগ আশু গীতকাব বঁনি ছাত্র জীবনসঁ লগাতাব লিখ বহল ছথি। সন্ সত্তব-অস্সীক মধ্য মিথিলা মিহিবমে হিনক কতেক বাস কবিতা প্রকাশিত ভেল অছি। হিনক লিখবাঁক কলাক সভসঁ পৈঘ বিশেষতা বহল জে মিথিলাক মাটি-পানি সঁ সবঁধিত বচনাক সংগ-সংগ বাঁন সাহিত্যপব অপন লেখনীক খুনি কঽ প্রযোগ কএললি। ওনা তঁ মৈথিলীক সংগ হিন্দীমে হিনক বহুত বাস পোথীক প্রকাশন ভেল অছি, মুদা 'অবিপল' হিনক প্রথম চর্চিত কাব্য সংকলন থিক জাহিমে 1983ঙী.সঁ পূর্ব ধবিক লিখল হিনক 45গোট পদ্য

संकनि त थिछि ।

एहि पोथीक प्रथम पद्य 'अर्चना'मे एकटा बाँनकक अपन मातृक प्रति सि नेहकेँ रि मरँ बँनाओल गेल अछि । 'नि ष्ठ्व करेज तोहव हमहुँ जनै छी'मे अरोधकेँ अपन माएसँ आश्राशे अछि । रिमरँक रि शनेषण सामान्य जनभाषामे कएल गेल। 'अपन पान आ मखान' करि तामे पाश्चात्य संस्कृति सँ अपन गामक तुलना नीक बूझना जाएत अछि । 'रसन मि थि ना छै सीताक पवानमे' कार्यक रि नोदी प्ररृति की अपन रास्तरि क अरस्थाकेँ स्पॉपि सकत ? एक दि शे एहि करि तामे मातृभूमि केँ सभसँ उँच देखएबाँक प्रयास तँ दोसर दि शे 'रसन्त उपहार कत२ अछि 'मे हृदयमे पहुरँक तप्त राग़क समारेशमे रँसन्तक प्रयोजनमे मर्मक दर्शन भेल। एक रयकति मे क्षणहिंमे सि नेह आ क्षणहिंमे छोह ? रास्तरि क जीरनमे ह्अए रा नहि पवंच करि क चंचल मनमे एना सभ भ२ सकैत अछि । 'नहनापव अछि दहना' शीर्षक करि ता बाँन साहि त्य आ बाँन मनोरि ज्ञानक मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करैत अछि । एहि करि ताक आखर-आखरमे स्पॉपन रि मरँकेँ नेना-भुटका बूझि सकैत छथि , कि एक तँ भाषा अत्यन्त सरल। ख़दा एहि करि तामे आश्वत्रक प्ररेशक प्रयास आ स्वर सवगमकेँ साक्ष्य रँनएबाँक नेल रि मरँकेँ रि स्मि त कएल गेल अछि । जाहि सँ करि ताक स्तर कमजोर भ२ गेल। संकलनमे एकटा देल गेल 'गजल' रँड़ नीक नागल। गजलकेँ शीर्षकसँ नहि बाँन्हल जा सकैत। ख़दा एहि

গজনক রি শৈষ মনোবম রিঁ ন্দ্ খছি জে করি একবা এক্ক রিঁ মৰঁমে ৰঁন্হৰাঁক সফন প্ৰযাস কএননি ।

'সংগ বহি কঽ নে খহাঁ ৰঁজৈ ছী কি ঐ

প্ৰাণ ৰীণাকেঁ তাবে তোড়ৈ ছী কি ঐ ?

মৈথি নীমে ওহি কান ধবি এহি প্ৰকাবক গজনক খভাব জকাঁ ছন। দেশজ ভাষামে নি খন গেন গজন খূৰঁ নীক নাগন।

'তোবা নেন' শীৰ্ষক গীতকেঁ ৰাঁন সাহি ৩যপব সামান্য প্ৰস্তুতি মানন জা সকৈত খছি কি এক তঁ স্রব খাৰঁদ্ধ কবৰাঁক ঞমমে করি রিঁ মৰঁসঁ ভ৪কি গেন ছথি । 'ভাগি গেন মি থি নাসঁ....' শীৰ্ষক করি তামে খপন সংস্কৃতি পব পাশ্চাত্য সভ্যতাক প্ৰভাবক বৰ্ণন কএন গেন খছি ও নীক মানন জা সকৈছ। 'চি হঁ্কন মন' সপনামে রি বহ রেদনাকেঁ দশীৰিঁত খছি ।

এহি সংকননমে দেন গেন করি তামে সভসঁ নীক করি তা 'কোগনী' শীৰ্ষক করি তাকেঁ মানন জা সকৈছ। ওনা তঁ 'কোগনী'ক মধ্ব স্রব করি কেঁ কঠোহ নগৈত ছনহি , হ্মদা রাস্তরমে কোগনীক স্রব মি থি না-মৈথি নীক দযনীয দশাক রি রেচন মাত্ৰ থি ক।

সভ দি ন স্বখমে সংগ দৈত ছেঁ

দ্:খমে খানী ডোন সন

হমবা খাৰঁ নগৈএ কোগনী

রাঁজর তোহব ওন সন।

'রাঁজি উঁঠন কংগনা'মে শ্রৃং গাবক সেজ স্বকখন জকাঁ র্ব্মনা গেন। 'ধবতীপব উঁতবন চান'মে করি চূড়ামলি মধ্পক শের্দক ঝংকাব স্পষ্ট দেখহ মে খ াএন।

'মনাব' শীর্ষক গীত মূনত: নোকগীক রূপক র্ব্মনা গেন। খভি সাব পথপব রুপি ত রানাক পীড়া হৃদযকেঁ ঝকঝোবি দৈত খছি –

রূসনহুঁ মনান রুঁহ ভহ গেনৈ চানকেঁ

পাথবসঁ ফোড় নহি ফোঁকা মখানকেঁ

কোহরঁবক দৃশ্য প্রণয নীনাক ব্যাতক হোগত খছি রুদা এহি সংকননমে সমাহিত কোরবক রি মরঁপব নি খন দ্নূ করি তা মর্মস্পর্শী খছি । ককরোসঁ ভেটৈন পীড়ামে করি তপন ছথি রা খানক র্যথাক উঁদ্বাধন কবৈত ছথি , ওা স্পষ্ট নহি ভহ সকৈছ।

এরং প্রকারে রি কন জী এহি পোথীমে গীত গগনক সভ উঁল্কা, সহস্ত্ররাঁঠনি খা তরেগনকেঁ স্পর্শ কবরাক প্রযাস কএননি । জীরনক রি রি ধ রি ধামে পদ্য নি খি কহ গীতক রূপ দেরাঁক হি নক প্রযাস রঁহ্ত হদ ধবি সফন মানন জা সকৈত খছি । মৈথি নী সাহিত্যমে সভসঁ রেঁসী দবি দ্র রি ষয খি ক রাঁন সাহিত্যক সৃজনশীনতা। ওনা তঁ রঁহ্ত বাস করি এহি রি ষযপব করি তা নি খননি , রুদা ভাষা কনি ষ্ট তঁএ রাঁন পদ্য বহি তহুঁ নেনা ভুটকাসঁ

দূব বহন। এহি পোথীমে জে ৰাঁন বচনা দেল গেল ও সভ সবল আ স্বগময খছি । তঁএ হি নক প্রযাসকেঁ সার্থক বুঁঝরাঁক চাহী। খপন সংস্কৃতি , শ্রৃ গাব আ কি ছ ভকতি পত্ত্য সেহো নীক লাগল। ওনা তঁ এহি সংকলনকেঁ রি কল জী 'কার্য সংকলন' ঘোষি ত কএলে ছথি , হ্মদা করি তা কম আ গীত রৈশী তঁএ 'গীত সংগ্রহ' মানর প্রাসংগি ক হএত। বাগ আ লযমে খারঁদ্ধ কবরাক প্রযাসমে কতহ্-কতহ্ রিঁ মৰক সহ্মচি ত রি শলেষণ নহি ভহ সকল। গীতমে এনা হোগতে খছি , ওনা গু সভ গীত এক-কালক নহি ভহ কহ রি রি ধ কালমে নি খল করি ক বচনাক সংকলন মাত্র থি ক তঁএ একব মহত্ৱরকেঁ কম নহি বুঁঝরাক চাহী।

হি নক বচনাক রৈশি ষ্ঠ্যতা খছি ভাষা সম্পাদনক খাড়ৃ মে দেশজ শর্ব্দকেঁ খরবোহি ত নহি কএল গেল।

খধি কাঁশি করি তামে মাতৃভাষাক নহবি জগমগাগত ভেষ্টল, জেনা-

পি যাস মি ঝা নে সকৈ ছী ককবো

স্বখল সোতীক ধাবা ছী

নজবি ঙঁঠা কেও দেখি সকয নহি

সাঁঝক একসব তাবা ছী'

এহি প্রকাবক বচনাসঁ সাহি ত্যক সমযক সমৃদ্ধি হ্খএ রা নহি হ্মদা ভাষাক রি কাসমে এহি প্রকাবক পোথীক মহত্ৱর খরশ্য খছি । এহেন বচনাসঁ পাঠক আ শ্রোতা

नर रूपमे भेटैत तँए एकरा प्रासंगिक मानल जा सकैछ ।

पोथीक नाओ- खबि पन

रचनाकार- डॉ. नरेश कुमार रि कल

प्रकाशक- मि थि ला भारती

भगवानपुर देसुआ

समस्तीपुर

प्रकाशन वर्ष- 1994

दाम- 16 टैका मात्र

<u>**समीक्षा- रिंन राती दीप जरय**</u>

साहित्यक रिकास तँ कार्यक रिरिध श्रेणीक संग-संग गद्यक कांतिसँ होइत अछि मुदा भाषाक रिकास तखने संभर भऽ सकैछ जखन ओहिमे रसक सेहंतित स्वगंध रहए। रसास्वादनक लेल रैरागी साहित्यकार सेहो

কখনো-কখনো গীত লিখএ লগৈত ছথি কিএক তঁ গীত মানরকেঁ পারিরারিক জীরনমে সমাহিত রিরিধ সমস্যাসঁ ক্ষণিক মুক্তিক লেল তিলকোব নহি তঁ চৈনীক কাজ অরশ্য করৈত অছি। মৈথিলী সাহিত্যমে কিছু গীতকাব এহেন ভেল ছথি জনিক লেখন কলাক সম্যচিত রিরেচন নহি ভঃ সকল, কিএক তঁ ও সভ গীতকাব সংগ-সংগ গাযক রা মংচ উদ্ঘোষক সেহো বহলাহ তঁএ সমীক্ষক লোকনিক দৃষ্টিমে হুনক প্রতিভা মাত্র গরৈযা জকাঁ বহি গেল। জখন কী জে শ্রোতা রা পাঠক হুনকা সরঁহক গীতক আনংদ উঠৌলে ছথি, রএহ র্যাখ্যা কঃ সকৈত ছথি জে হিনকা লোকনিক গীতসঁ মিথিলা-মৈথিলীকেঁ কী-কী ভেটৈল? এহি গীত গগনক চন্দ্র-তরেগনক সমূহমে ররীন্দ্র নাথ ঠাকুব, নরনজী, সিযারাম ঝা সবস, চন্দ্রভান্ব সিংহ, কমলাকাংত, কালীকান্ত ঝা রূঁচ'ক সংগ-সংগ ডॉ. নরেশ কুমাব রিকল জীক নাও দেল জা সকৈত অছি। আল উপব লিখিত গীতকাব জকাঁ রিকল জীক গীতমে কতহু ফূহড় রা অভদ্র ভাষাক প্রযোগ নহি। শ্রৃংগাব, রিবহ, হাস্য, অর্থনীতি, রঁাল সাহিত্য আ গজল সল রঁহুআযামী গীতক রিধামে রিকল জী সিদ্ধহস্ত ছথি। শুদ্ধ দেশজ রা দেসিল রযলামে লোকধুনকেঁ স্পর্শ করৈত হিলক গীত সংগ্রহ-রিংল রাতী দীপ জবয- সন্ 2001ঈ.মে প্রকাশেল সংস্থান লঙা দিল্লীসঁ প্রকাশিত ভেল।

ওলা তঁ এহি পোথীক আমুখমে ডॉ. হবিরংশ তরুণ জী একবা কার্য প্রতি লিখলে ছথি মুদা রাস্তরমে ঈ গীত সংগ্রহ থিক। সভ প্রকাবক স্বরাসিত গংধক সংগ-সংগ করুণা, রেদনা, সমাজক রিষয দশাকেঁ গীতক রিম্রমে সবিযা কঃ রিকল জী 51গোট গীতকেঁ

पोथीक रूप देने छथि। प्रथमं ग्रासे मक्षिका पात्रम' सभसँ पहिल्लुक गीत वेदनासँ ओत-प्रोत नीक लागल। पहिल पद्य 'चुमलहुँ सभ दिनकाँटें'क विम्ब विचार मूलक अछि, छंद आरोही आ ध्वनि लोक ध्वनि संग-संग गेल। संग्रहक अंतिम पद्य रसं ंत तथा पहिल वेदना। ओइ संकेत अछि अपन व्यथित रूपकेँ प्रथमत: जवनित कए शनै-शनै: बसक क्षीब सागवमे पाठककेँ सबोवॅबि कवराक हिनक योजना छ्अए तथा हमवा मतेँ एहि गीत संग्रहक पहिल गीत आनंदित कवैवॅना लोएवाक चाही। दोसव गीत- सूखल सनेहक सत्रात' सेहो करूण बससँ भल अछि।

> अन्तर्मन अतृप्त जवाब सभ
> सबित सत्रात केब वॅात कहाँ
> श्याम सघन घन घुमड़ि बहल थिक,
> लोगछ तथा वॅबसात कहाँ !

गीतकाव कोन पीड़ासँ उद्वेलित तथा ग्रस्त छथि ? पद्यसँ स्पष्ट लोगत अछि जे ओ अत्यन्त भावुक छथि। कहलो गेल अछि गद्यकाव अपन जीवनक रूपकेँ नाँ प सकैत छथि तथा कवि नहि। कविक कविता छ्अए वा गीत प्रवृत्त पाठक कविक मन उद्वेग आ हृदय जआविकेँ ह्नक पद्यमे स्पष्ट ध्वनित स्वनि सकैत छथि। नवकि बहल मन' आ उँसठल फागमे सेहो वेदनाक ध्वनि मार्मिक अछि तथा कल्लुषित नहि। दोसो गीत'मे गीतकावक वेदना स्वयंसँ उँपष्टिकए समाजक आ देशक कालगतिक आड़िमे पविवर्तित मानसिकताकेँ स्पष्ट कवैत अछि-

> उँड़ल खटैलो आटे वॅलि, बहल भूमिपव

सूति।

सत्ते कहय जे कानपव, चनयने ककबो जूति ।
'उँनटा रसात' शीर्षक पद्यमे रिम्र रिश्नेषण तँ नीक र्बुमना जागछ ह्मदा शीर्षक कनेक खनसोहांत नागन । रसात कखनहुँ उँनटा नहि रहैत खछि, मन्वक्खक र्यक्तिगत जीरनमे स्वख: द्खक उँन्तुर खा गतिश्री गहनौकिक होगछ ह्मदा रसात तँ शास्रत छथि तँए खपन र्यैक्तिक द्:खक दोष प्रघृतिपव नहि देराक चाही ह्मदा करिक मन मार्मिक खा चंचन होगछ खा संग-संग रिकन जी खाश्व करि छथि तँए हिनक दोषाबोपणक भाव क्षम्य । एहि पद्यक पाँति-पाँतिमे स्वातीक र्बुनक खाशिमे ि सत्तखाक टैकटैकी ह्रप्तिक ज्राब रडः नीक नागन-

प्वबैनक पातपव छी ओंघबाएन
ने तन स्वगर्बुगायन ने मन उँजर्बुजाएन ।

'खगिखायन सख सेहन्ता, मोनक पीव नीव रनि खाएन, नोव सनन जिनगी सरहक रिम्र सामान्य नागन । ख ाना तँ गीत-गजनमे रिम्रक प्रधानता नहि होगत खछि किएक तँ ध्रनि, बाग खा छन्दक समंजनमे बचनाकाब रान्हन बहैत छथि तँए स्वधि प्रभंजित होएराक संभारना खधिक ।

एहि संग्रहमे दूटा रसंत गीत देन गेन ह्मदा द्नू नीक मानन जा सकैत खछि । पहिन रसंत गीतमे र्यथाक पवाभरसँ सिनेह निकसैत खछि तँ दोसवमे स्वखक द्ग्धमे खमृतक र्बुन्न स्रत: टैपकि बहन । रास्तरमे पद्यक रूप एहि प्रकाबक होएराक चाही ।

एहि संग्रहमे जे सभसँ नीक गीत देन

गेल अछि ओ थिक- 'प्रोषित पतिका'। ई तीन दशकसँ समस्तीपुरमे विविध कार्य संध्यामे विकलजीक मुखसँ एहि गीतक गायन सुनने छलहुँ। सन 2001 ई.मे समस्तीपुरमे साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित- कार्यसंध्या'मे ई गीत बड़ लोकप्रिय भेल छल-

पहिना कहिना कए चलि आउ अपन गाम।
आर ने बहि गेलै तेहन आसाम।

एहि गीतक माध्यमसँ गीतकार पलायनवादक प्रबल विरोध करैत छथि। अप्पन घरक लोन-रोटी आन ठामक मलपूआसँ बेसी नीक किएक तँ आन लोक हमरा सबहक व्यथाकेँ नहि बूझैत छथि। जाहि कालमे विकल जी एहि गीतक रचना कएने छलाह ओहि काल आसाममे बिहारी लोक सभकेँ बहुत पीड़ित कएल जाइत छल। ओना तँ एखनो स्थिति वएह आबि तँ महाराष्ट्रमे सेहो स्थिति भयावह भए गेल अछि। तँए एहि प्रसंगमे 'प्रोषित पतिका' गीतक महत्वकेँ नजरअंदाज नहि कएल जा सकैत अछि।

समाजमे पसरल व्यभिचार, भ्रष्टाचारपर आशुगीतकारक लेखनी अनायास नहि टपकल, सहैत-सहैत देशकालक दशापर अंतत: 'छद्मवेशी' शीर्षक कविता लिखि अपन गीतकेँ नवल सोचसँ पुलकित कए देलनि-

असल रूप परदा केर भीतर
सभ परदा रंगीन छै
देखबामे अछि चिक्कन चुनमुन
कतबी नम्हर तीन छै।

देशकालक घोघटकेँ उघारैत समाजक कलुषित रूपपर किछु पद्य जेना अपन गणतंत्र, लतरि बहल विद्यापतिक लत्ती, नव प्रभात, बाखूबँचा हिमालय, दिल्ली कले स्वनू

আ ন্যূনতম মজদূরী পদ্যক রিম্র আ রিরেচন দ্নূ নীক মানন জা সকৈছ। সমাজক দশাপব করিতা নিখন জা সকৈত অছি গীতক রিম্র দ্ষ্কব তঁএ এহি সভ পদ্যকেঁ পূর্ণত: গীত নহি মানন জাএ। ক্ষদা ছংদক মাত্রা সংত্তনিত তঁএ গেয ভ২ সকৈছ।

এহি পোথীমে চাবি গোষ্ঠ গজন সেহো দেন গেন অছি। মৈথিনী পদ্য রিধামে ঠকূ আ গজন নেখনক অভার জকাঁ অছি। তঁএ এহি সভ গজন কেব মহত্রকেঁ নকাবি নহি সকৈত ছী–

পসাবন ছৈক পবতীমে হমব পথাব সন জিনগী,

কহু হম ন২ ক২ কী কবরৈ এহন উঁধাব সন জিনগী...

উঁপর্যক্ত গজনক সংগ–সংগ আন দূষ্টা গজনকেঁ নীক কহন জা সকৈছ। গজনক প◌াঁতি–প◌াঁতিমে অনগ–অনগ রিম্র হোগত অছি তঁএ একবা শীর্ষকসঁ আরঁম্ভ কবর অসংভর আ অন্বপয্ক্ত।

একটা গজন মূনত: গীত মানন জা সকৈত অছি কিএক তঁ এক্ক প◌াঁতিক রেঁব–রেঁবি প্রযোগ কএন গেন। একবা গজন নহি মানন জাএ। ি রকন জী গাযক সেহো ছথি, এহেন চূকি কোনো ভ২ গেননি।

তন ভিজা ক২ মন জবারঁয,
আরি গেন সাওন কেব দিন
রিবহ রেদন তান গারঁয,
আরি গেন সাখ ান কেব দিন
খোনি ক২ রঁবসাত অপ্পন
রস্ত্র ফেংকন সূর্যপব
চানকেঁ সেহো নজারঁয,

थारि गेल साओन केव दिन.... । ।

उंपर्युक्त गीतकें गजलक रूप देबाक प्रयास कएल गेल मुदा सीमाक उंल्लंघन कएल गेल तँए ई गीत अछि गजल नहि ।

'व्यथित हृदय' पद्य, पोथीक शीर्षककें स्पर्श करैत अछि–

बाती नेहक जरि ने पारय,
खाहे तिन–तिन देह जरय
व्यथा वेदना उंर अंतरमे,
दय उंपकार करय ।

एहि प्रकारे सभटा पद्यक अपन–अपन महत्व अछि । कतह्–कतह् त्रुटि सेहो भेटैत । गीतकें विम्व आ स्वरसँ आरंभ करबाक क्रममे एहेन त्रुटि स्वाभाविक होइत अछि ।

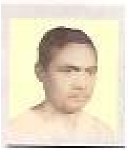
अपन तरूण जीवनकालसँ लिखल जी गीत, कविताक रचना करैत छथि । धन्यवादक पात्र छथि जे एखन धरि नीतिक संग–संग श्रृंगार आ छोहसँ भीजल रचना पाठक धरि पसारैत रहलाह । पूर्ण तँ केओ नहि भऽ सकैत अछि, जखन पूनमक चानमे सेहो दाग तँ त्रुटि ककरोमे भऽ सकैत अछि ।

रचनाक विम्वमे कतह्–कतह् कमी भेटैत मुदा रचनाकार अपन भावकें मैथिलीक प्रति श्रद्धय रखलनि तँए एहि त्रुटिकें व्यापक विवेचन करब प्रासंगिक नहि । निश्चित रूपसँ एहि पद्य संग्रहमे मिथिला मैथिली संस्कृतिक ध्वनिक संग–संग लोकधुन दृष्टव्य मानल जाए ।

पद्य संग्रहक शीर्षक– विन्नु बाती दीप जरय'मे बीतिकालक पद्यक रूप झलकैत अछि ।

রাস্তরমে জেনা ি নরতিমে ধ্রনিক গমন সংভর নহি তহিনা রিন্ব রাতীক দীপকক কন্পনো খরাঙ্িত ক্ষদা করিক দৃষ্টকোণ বীতিক প্রযোগাত্মক খরনম্রন তঁএ এনা সংভর ভঽ সকন।

পোথীক নাও- রিন্ব রাতী দীপ জবয
বচনাকাব- ডॉ. নরেশ ক্ষমাব রিকন
প্রকাশিক- প্রকাশিন সংস্থান নঙা দিন্নী
মূন্য- ৪0টাকা মাত্র



<u>বমাকান্ত বায 'বমা', শ্রী বামা নিরাস, মানাবায টান, পোস্ট- নবহন জিনা-সমস্তীপ্বব +৪+২১১</u>

গামক জিনগী -কথা সংগ্রহ- জগদীশ প্রসাদ মংডন- সমীক্ষা

ভাবতীয ভাষা সাহিত্যমে গ্রাম্যাঁচনক উঁর্রব ভূমিমে সভ কিছু উঁপজৈত খছি- খন-ধন- নক্ষ্মী। জঁ খাম সন খমৃত হ্ন হোগত খছি তঁ কবৈনা সন তীত সোহো। জঁ সভ ৰূপমে ঔষধি সন ধাতুহ্ন তঁ সভ তবহেঁ খনিষ্টকাবক ৰঁবহব সেহো। কনকজীব খা তুনসী হূন স্রাদিষ্ট চাউঁব হম সভ উঁপজাৰৈত ছী, কঽন-সাগ-মৰুখা খা খকটা-মিসিযা সন ক্ষখন্ন সেহো সমএ-ক্ষসমএ নোকক ক্ষ্ধা শাঁতি কঽ গবিমা মণ্ডিত

लोगत अछि।

दोसर दिस भादो मासमे ससरैत वर्षामे भीज कऽ थान-कादोमे खिन्नी छाताँ ड्ढाँ कऽ जँ धान रोपैत अछि तँ चैत-वैसाखक रँवकैत रौदमे गहुम काटैत अछि, दाउँन करैत अछि तथा माघ मासक हाडमे धसिआगरँना जाड़ आ जान मारूथ शीतलहरीमे राति-राति भरि जागि कऽ लोक बरि-बागक पटौनी करैत अछि। अगठाम काजमे जँ कनिको उँहाँटि भेल खिाक पनमे प्रलए भऽ जागत छै। लोकक जीरन अपटी खेतमे चलि जागत छै स्थदा जँ जीरित बहि लोक काज सम्पन्न कऽ लैत अछथ् तँ की की ने देखैत अछि- ताड़क गाछ तरेगन आ दिलोमे तरेगन।

गाम उर्वरब भूमि एकसँ एक विद्वान, वैज्ञानिक, राजनेता आदिकेँ अपना अंकमे पोषैत आरि बहल अछि तँ एकसँ एक करि-कलाकार-साहित्यकारकेँ सेहो। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह "दिनकर" आ अमर कथाकार स्थंशी प्रेमचंद गामेक उर्वरब भूमिक पुत्र छलाह जे अपन-अपन क्षेत्रक शिखर पुरूष भेलाह।

मिथिला मूलत: मैथिली भाषा भाषी ग्रामीण क्षेत्रक विशाल भूभागमे पसरल अछि। तँए अगठाम सेहो अधिकांशि लेखक, करि, कलाकार-साहित्यकार प्राय: गामेक मूल निरासी छथि। स्थदा एकटा रँात आन भाषासँ मैथिलीमे भिन्न ओ अछि जे जतऽ आन भाषाक रचनाकार-कलाकार अपन कृतिमे गामकेँ विशेष जगजिआर करवाँक चेष्टा केलनि अछि तेना मैथिलीमे नै। ओना राजकमल, यात्री, मायानन्द, ललित, धीरेन्द्र, धूमकेतू आदिक रचनामे गाम आएल अछि अवश्य स्थदा ओकर

মাত্রা রব থোড় ্ঋছি। জেনা বাজকমনক “ননকা পাগ” সন কথামে গামক নাবীক নিশ্ছিন প্রেমক প্রবাহ ঋছি তঁ ননিতক “বমজানী” পছড়ন ঋন্‌পসংখ্যকক কথা নীক জকাঁ রিকছা কহ কহন গেন ঋছি। জহিনা মাযানন্দ মিশ্রক “খৌঁতা ঋা চিড়ৈ” মে উঁচ্চ রস্ত্র ঋা পছড়নক রস্ত্র সংঘর্ষক কথা নীক জকাঁ স্থান পওনক ঋছি তহিনা যাত্রীক “রঁনচনমা” মে সেহো ঐ মৌনিকতাক স্পষ্টে রেখাঁকন ভেন ঋছি।

ঋানো–ঋান নর–প্ববান কথাকাব মিথিনাক গামক কথা নিখননি ঋছি ঋদা খেতিহব–মজদূব, নিম্নরস্ত্রক রৌনিহাব, এক সাঁঝ ঋা কহ দোসব সাঁঝক জোগাবমে রেঁকন নোকক কথাক ঋভাবে বহন ঋছি। শ্রী জগদীশ প্রসাদ মংডনক কথা সংগ্রহ “গামক জিনগী” এহি প্রকাব ঋভারক পূর্তি করৈত ঋিছ। ঐমে নে কেরন নিম্ন–মধ্যরিত্ত ঋা পছড়ন নিম্নরস্ত্রক কথা ঋছি প্রত্যত গামসঁ রাঁহব বহি ঋযোধ ধামন–গহ্মন সাঁপ সন রিষধবক কথা সেহো ঋছি জে ঋপন জীরনক সান্ধ্য রেঁনামে প্রদূষণ ঋক্ত গামোকেঁ ঋপন রিষক ধধকৈত জ্রানমে ভস্মসাত করএ চাহৈত ছথি।

“গামক জিনগী” কথা সংগ্রহমে ঋন উঁন্নিসটা কথা ঋছি জে সমগ্রতামে মূন ঋপসঁ গামক কথা ঋছি। ঐ সভ কথাক কোনো নে কোনো পাত্র গামক ঋছি–র্যাধি বোগ–শোক, ঈর্ষ্যা–দ্বেষ, ধৃণা–সিনেহক শিকাব কতহুঁ নে কতহুঁ ঋরশ্য হোগত ঋিছ। কিছু কথামে তঁ এনা নগৈত ঋছি জে কথা নাযক রা উঁপনাযাক জীরনসঁ পূর্ণত: নিবাশ ভহ ঋনিশ্চযক ভ্রমবজানমে ওঝবা জাগত ঋদা তখনহিঁ ঋাশাক সূর্যক কিবিণ হুনকা জীরনমে একটা নর উঁত্সাহ, উঁমংগ ভবি দৈত

छनि्ह आ ओ पुन: विश्वाससँ भवि नव-जीवनक शुभावम्भ कववामे जुटि जाइत छथि।
किछु कथामे एक क्षेत्रक लोककेँ दोसव क्षेत्रक भौगोलिक पविवर्तनजन्य किछु अनेकथा फसलक विषएमे व्यवहाविक ज्ञानक अभाव बहैत अछि जेँसँ दैवी प्रकोपक समए नीक जकाँ जीवन-यापन कएल जा सकैत अछि।
कथाकाव जगदीश प्रसाद मंडल जीवनक उतवार्द्धमे लिखब प्रावम्भ कएलनि अछि। ओना किछु पहिनहुँसँ लिखबाक अभ्यास छल होएतनि मुदा देखाब रूपमे मात्र दू-अढ़ाइ वर्षक अवधिमे दर्जन भविसँ अधिक पोथीक सृजन कए ओ एकटा नव कीर्तिमान स्थापित कएलनि अछि। जेमे आधा दर्जनसँ अधिक पोथी प्रकाशित भए चुकल छनि्ह।
मनुष्यक जीवनमे नित्य अनेक घटना-दुर्घटना-संघर्षक संग हर्ष-विषादक अवसव अवैत अछि। ओइ महँक किछु सार्थक क्षणकेँ समेटि कए मानवोचित मर्यादा, दायित्वबोध, सुवक्षा, संवक्षा, स्वविवेचन-वचनादि द्वावा मनुष्यमे जिजिवीषा उत्पन्न कए पुनस्थापित कवब कथाकावक दायित्व अछि। जगदीश बाबू ऐमे पूर्ण सिद्धहस्त छथि। जँए कि ओ ग्रामीण अंचलमे एकटा वाजनैतिक कार्यकर्ताक रूपमे समाजकेँ खूब नीक जकाँ चिन्हने छथि, जन-जनक, गवीब-अमीवक सुख-दु:खमे सहभागी बनल छथि तँए ओकव लोन-तेल-हवदिसँ लए कए जन्म-मवण धविक साक्षी बनलाह अछि। ऐ अनुभव सभकेँ ओ नीक-जकाँ विकछा-विकछा कए अपन कथा सवँहक तानी-भवनी बनौलनि अछि। तँए हुनक वचना मैथिली साहित्यकेँ एकदम बेछप बुनि पड़ैत अछि।

डॉ. मेघन प्रसाद अपन पुस्तक "मैथिली कथा कोश" मे कथाक प्रसंग अपन विचार ऐ प्रकार व्यक्त कएलनि अछि– "कथा, जीवनक एकटा खण्ड चित्र अछि जे सम्पूर्ण जीवनक व्याख्या नै कऽ ओकर मात्र एकटा घनीभूत क्षणक उद्घाटन करैत अछि।" वस्तुत: कथा अपन आकारगत सीमाक कारणेँ एकटा घटनाक प्रभावशाली चित्रण कऽ सकैत अछि। ओइमे प्रासंगिक कथा अथवा विवरणक बेशी स्थान नै होइत अछि। दोसर शब्दमे कथा गद्यक एकटा छोट अत्यन्त सुघटित आओर अपनामे पूर्ण साहित्य रूप अछि। (भूमिका पृष्ठ–२)

जगदीश प्रसाद मंडलक कथा ऐ दृष्टिसँ कनिको पथ–च्युत नै भेल अछि। हँ, हिनक कथा सभमे किछु विस्तार अवश्य अधिक अछि मुदा ओतेक विस्तार नै जे मात्र कथाक एकटा रूप, लघुकथा वा हैतेए जखन कि ओइमे घनीभूत क्षणक उद्घाटन करबाक लेल किछु विस्तार प्रयोजन वाँछनीय होइछ। एकटा बात आर, हिनक कोनो कथामे प्रासंगिक विवरण सेहो लघुरूप धारण कऽ घुसिआएल अवश्य भेटैत। मुदा ओइसँ ने तँ कथाक मौलिकता प्रभावित बुझि पड़ैत आ ने ओकर औपन्यासिक विस्तार बुझाएत। भने कोनो–कोनो कथाकेँ लघुक स्थानपर दीर्घकथा कथा कहबे श्रेयस्कर होएत।

सुप्रसिद्ध कथाकार डॉ. सुभाषचन्द्र यादव हिनक कथाक विशिष्टता मादे कहैत छथि जे हिनक कथामे औपन्यासिक विस्तार अछि। वर्तमान समएमे प्रचलित आ मान्य कथासँ हिनक कथा भिन्न अछि। हिनक कथा घटना बहुल आ ब्यौरासँ युक्त अछि।

डॉ. मेघन प्रसादक रिचाव जत२ थाम कथाक रिषएमे कहन गेन थछि ओतहि डॉ. यादरक रिचाव मात्र श्री जगदीश प्रसाद मंडनपव केन्द्रित थछि। ऋदा शर्ब्दक कनेक हेव-फेवसँ दुनू र्यक्तिक रिचाव जे रिन्दुपव मिनैत थछि से थछि डा. यादर द्वावा प्रत्यत शर्ब्द- "ऋूज्" थछि। ओ हिनका जीरन संघर्षक कथाकावक रूपमे स्थापित कवैत जिजीरिषा, मानरीयता था थादर्शकेँ स्वदृढ़ था पुनप्रतिष्ठित कवराक उँद्देश्यसँ थनुप्रमाणित मानैत छथि। एकक संग थनेक नीक भारक संयोजनकेँ ऋूचा जकाँ र्ह्भारािभर्यक्तिक संभारनाकेँ ऋूज् संज्ञा रूपमे डॉ. यादरक सोचक र्याख्या कएन जा सकैत थछि।

जेना कि संग्रहक नाओंसँ स्पष्ट थछि- ऐ पुस्तकमे गामक जिनगीक कथा कहन गेन थिछ। ऋदा थाग-कान्हि केहनो ठेठ गामक जीरनमे कतहुँ ने कतहुँ शहव थारिए जागत थछि। तखन कथाकाव ऐ हेतु सभठाम पूर्ण सचेष्ट छथि जे गाम था शहवक ऐ दुवभिसंधिमे गामक मौनिकता भुतिथा नै जाए, हेबो नै जाए। हिनक कथा सभमे जँ कतहुँ गाम था शहव मिझवाएनो थछि तँ ओ ऐ दुनूक सूक्ष्मा स्वरूपकेँ स्पष्ट रूपेँ रेखांकित कएननि थछि था शहवक नगव जिनगीपव गामक जिनगी सभठाम प्रभारी देखाओननि थछि।

"भैंटक नारॉ, रिसाँढ़ था पिबावक फड़" ओ तीनू कथा एकक भूमिपव प्रतिष्ठित थछि भैंट, रिसाँढ़ था पिबावक उँपयोगक रिषएमे जगठामक नोक नै जनैत छथि हुनक पति (जँ ओगठाम ओ रस्तु प्रयुक्त होगत हो) कि ंरा पनीसँ ऐ रिषएमे जानि-बुझि क२ राँढ़ि, स्वथावक समएमे ओकव सदुपयोग क२ ओगसँ त्राण

पएरॉक ओ एकटा सशक्त साधन होएत अछि। ष्मदा समाने भार-भूमिक होएतो तीनू कथाक ओ विशेषता अछि जे विसाँठ़ जतए बौदीमे, स्वभावमे गवीर्रक जीवन बक्षक होएत अछि, होतहि ं भेंटैक नावा वॉठ़ि सँ विनष्टैन पविवावक बक्षक होएत अछि। ष्मदा पिबाबक हफड़ सामान्य समएहुँमे नोकक व्यंजनक वेंगवता मेष्टवैत अछि। ऐ तीनू कथा गठ़वा कान नेखक ऐ हेतु पूर्ण साकांक्ष छथि ऐ स्थिति-पविस्थितिमे गामक गिवहस्तकेँ नेन कोन-कोनष्टा उँपकवणक उँपयोग अपेक्षित अछि। ऐसँ ओहि अव्यपद्धत वा कम व्यवद्धत सवंजाम-उँपकवणक ध्यान एकवैव ओहि सभ नोककेँ आबि जाएत छनहि जे ग्राम्य संस्कृतिसँ वँहुत दिनसँ स्वदूव बहि बहन छथि।
"अनेकआ वेंष्टा" केँ नि:संतान दम्पति अपन वँना कए पोसैत अछि। पहिने चाहक दोकान कए कए ओ क्रमश: पठ़वँ-निखवँ सिखैत अछि। ओकव जिज्ञास्य मन स्वाध्यायक वँनपव साहित्य सृजन दिस उँन्मुख होएत अछि आ क्रमश: ओइमे सम्मान जनक स्थान प्राप्त कवैत अछि। गामक वातावरणसँ सर्वथा असंपपृक्त, शहवी जीवनक अभ्यासी एकष्टा वकीन साहेवँक नवयुवती पुत्रीकेँ ओकव साहित्य अपना दिस आकृष्ट कवैत अछि। ओ ओकवासँ भेंष्ट कए ओकवे संग अपन जीवन व्यतीत कववाँक स्वपन्न देखैत अछि। छह निश्चयी अपन स्वभाव-प्रभावसँ माए-वाँपकेँ मना कए ने केवन ओकवासँ विवाह कववाँमे सफन होएत अछि प्रत्युत, गृहस्थ जीवनक हेतु आवश्यक सभष्टा सवंजामो पितोसँ कववा नैत अछि।
ठेना-वाना अ । ि बक्सावँना दनू कवेज तोड़

মেহনতিৰঁনা নোক হ্মদা পহিন জঁ ত্থপন কমাওসঁ ত্থপন দ্নূ রেঁষ্টাকেঁ নীক জকাঁ মৈট্রীক পাস কবরা কঽ "শিক্ষা-ভিন্ন" রঁনা কঽ উঁপবাগ জিনগী জীরৈত ত্থছি তঁ "বিক্সারঁনা" জতঽ রেঁসাবীমে বিক্শা চনরৈত ত্থছি তঁ শেষ সমএ একষ্টা চিমনীক মানিক সংগ প্ববৈত ত্থছি। একদিন মানিকক কনিযাঁক দিনচার্য ওকবে হ্মহসঁ স্বনি কঽ ওকব ভৌতিক জীরনক নাচাবীক নাচাবী ত্থা ত্থাখি মহঁক ভূখ দেখ কঽ ত্থনঠা কঽ ত্থপন ঘব পবাগত ত্থছি।

"ডাঁ. হেমংত"কেঁ রঁঠ় গ্রহস্ত ক্ষেত্রক ডযূষ্টীপব জযরাঁক জে জেতেক সংশয গ্রামীণ রাতারবণ, সামন্যজস্যক সমস্যা ত্থা গ্রামক ত্থশিক্ষিত নোকক সংগ বহরাঁক হীন গ্রন্থি ছননি সভষ্টা গ্রামীণক সদ্বযরহাব, সহযোগ ত্থা নিশ্ছ্ছন কার্যর্যাপাবসঁ দূব ভঽ জাগত ছন্হি ত্থা গামমে রিতাওন ক্ষণ হ্নকা জীরনক একষ্টা ত্থনমোন স্মাবক জকাঁ মানস পষ্টনপব ত্থংকিত ভঽ জাগত ছন্হি।

রাঁহব বহি জীরন ভবি ভ্রষ্ট্রাচাবমে ত্থাকংঠ ডূরঁন বহি দূষ্টা পিতিওঁতক জীরনমে ঐ ভৌতিকরাদী যুগক উঁপাদানো সভসঁ জখন স্রাভিমানপব চোষ্ট পহুঁচৈত ছন্হি তখন গামক জিনগীক মোহ গম্ভাবৈত ছন্হি। হ্মদা গামমে পাস কবরাঁসঁ পহিনহি ঘবাবীক রঁষ্টরাঁবাক ক্রমমে গামক শাঁত জিনগীমে ও দ্নূ ভাঁগ উঁচ্কোচ ত্থা ছন-ছদ্বাক রঁনেঁ জখন কিছু ত্থন্বচিত নৈ কবা পরৈত ছথি তখন প্রেম চন্দ্রক "পংচপবমেশ্রব" সঁ কোনো কম মহত্পূর্ণ ত্থছি নিশ্ছ্ছন গ্রামীণ মিথিনাক ও কথা ভৈযাবী।

রৌনিহাব-মবনীক রাঁতপব জঁ ওকবাসঁ কাম কবৌনিহাব মদমস্ত ঠীকেদাবক ত্থাঁখি নোবা জাগত ত্থছি তঁ ত্থানক

कथे की ? ऐ वैज्ञानिक युगमे श्रमक जतेक अवमूल्यन भेल अछि, भइ बहल अछि ओतेक कोनो आन वस्तुक नै। ऐमे गुलोबलाइजेशनक बड पैघ हाथ छैक। नै तँ एकटा कुम्हार जँ एकबेर कोशीक कटावसँ गाम छोड़ि पड़ा कइ दोसर गाममे बसैत अछि तँ दोसर बेर अपन वस्तु जातक, श्रमसँ उत्पादित वस्तुक ग्राहक अभावसँ गाम छोड़बाक निश्चय करैत अछि। ऐदा संयोगसँ तै समए ओकर स्तुतिआएल बेटा प्रचुर टाका-पैस्यक संग आपस आबि जाइत छैक जे आब कुम्हारक नै, मूर्तिकार आ चित्रकारक रूपमे अपनाकेँ स्थापित कइ लेने छल। तँए ओइ कुम्हारक मारि जीतिमे बदलि जाइत छैक।
पुस्तकक भाषा ठेठ ग्रामीण अछि जैमे स्थानीय लोकोक्ति, फकरा आ सभसँ बेशी अप्रचलित ठेठ ग्रामीण शब्दक बाहुल्य पुस्तककेँ अत्यधिक महत्वपूर्ण तत्व कहल जा सकैत अछि। बहुत कथामे तँ जातिगत पेशामे उपयोगमे आबैबला सभटा सामग्रीक नाओं एवं उपयोगक उल्लेख अछि जे ओइ शब्दकेँ विस्मृतिक खाधिमे जएबासँ बचयबाक प्रयास कहल जा सकैछ।
"डीहक बटैयावा" शीर्षक कथामे गुरूकाका गामक प्रसंग जे विचार रखलनि अछि से द्रष्टव्य अछि- "गाम तँ गामे छी। शुद्ध मिथिला। भारत। जे स्वर्गोसँ नीक अछि। ऐदा सभ गामक अपन-अपन चरित्र आ प्रतिष्ठा छैक। जे चरित्र आ प्रतिष्ठा गामक कर्मठ, तियागी लोकनि बनौने छथि। अपन कठिन मेहनति आ कर्तव्यसँ सजौने छथि। ओकरा जीवित राखब तँ अखुनके लोकक कान्हपर भार अछि की ने? ..... ओ

তঁ নিহ জে গদহা গেন স্রস্থা তঁ ছান–পগহা নগনে গেনৈ। ”

নিষ্ঠ্ঠ গামমে ঈর্ষ্যা–দ্বেষ কম সিনেহ ভৈযাবী–যাবী খধিক বহৈত খছি। জতঃ খপন জন্মনি রেঁঠৌ খপনে ধিযা–প্বতামে র্যস্ত বহি মাএক মৃত্য শৈয্যাপব স্বনি কঃ দেখরাঁনে সেরা কবরাঁনে নৈ খারি পারৈত খছি ওতহি রিজাতীয–নৈহবক দূবক খান খান ধর্মক “রঁহীন” নে কেরন দেখরাঁ নেন খারৈত খছি প্রত্যত রঁহীনকেঁ জীরিত বহরাঁ ধবি সেরাক কবরাঁক উঁদ্দাত ভারনসঁ খভিভূত “হিন্দ্–হ্মস্নিম একটৌ” ক রাঁহনি গামমে কতেক খধিক গহীব খছি– ঔ সিহ্ম কবরাঁ নেন পর্যাপ্ত খছি। খা যএহ খিকে গামক জিনগীক কথাক মূন তত্র।

কথাকাব নেখক সংপাদক শ্রী গজেন্দ্রঠাক্ষবক খন্বসাব জগদীশ প্রসাদ মংডনক কথা মৈথিনী সাহিত্যক প্বনর্জাগিবণক প্রমাণ উঁপনর্ব্ধ কববৈত খছি তথা হিনক কথা মৈথিনী কথা ধবাকেঁ এক ভগাহ হোএরাঁসঁ রঁচা নৈত খছি। উঁদাহবণমে ও মাত্র হিনক এক কথা রিঁসাঁঠ়কেঁ উঁপস্থাপিত কবৈত কহৈত ছথি জে ১৯৬৭ঈং.ক খকানমে দেখাওন গেন ছন জে হ্মসহব নোক রিঁসাঁঠ় খা কঃ খকানসঁ নড়া বহন ছথি হ্মদা ঐপব কথা নিখন গেন ২০০৯ঈ.মে জগদীশ প্রসাদ মংডনজী দ্বাবা।

হম “গামক জিনগী” কথা সংগ্রহক খাধাবপব ঔ কহএ চাহৈ জে জহিনা হিন্দীমে গাম্যাঁচনক কথাকাবমে প্রেমচন্দ খসগবে ছনাহ, তহিনা মৈথিনী কথাক ঐ প্বনর্জাগিবণ কানমে, মৈথিনী সাহিত্যমে জগদীশ প্রসাদ মংডন জীক কথা খসগবে খছি– তোহব সবিস এক তোহে মাধব!

চর্চিত পাথেী- গামক জিনগী
প্রকাশন রর্ষ- ২০০৯
নেখক- শ্রী জগদীশ প্রসাদ মংডন
প্রকাশক- শ্র্রুতি প্রকাশন
পৃষ্ঠ- ১৭৬
মূন্য- ২০০ টৌকা মাত্র

মৈথিন পত্র-পত্রিকা : সমস্যা ও সমাধান : খাচার্য দির্যচক্ষু

“দেশীক স্রতংত্রতাক 62-63 রর্ষক রাঁদো মৈথিনীক মাধ্যমে প্রাথমিক শিক্ষাক র্যরস্থা নৈ বহরাঁক কাবণে মৈথিনী ভাষা-ভাষী খপন মাতৃভাষাক পত্র-পত্রিকাসঁ নৈ জুড়ি পরৈত ছথি, মৈথিনী পত্র-পত্রিকা খা প্বস্তক নৈ পঢ়ি সকৈত ছথি। তঁএ যত্র-ক্ষত্র মৈথিনী পত্র-পত্রিকা দেখিযো কহ নে তঁ ও কীরাঁ নেন উঁত্স্বক হোগত ছথি খানে পঢ়রাঁ নেন। ঈ মৈথিনী পত্র-পত্রিকা প্রকাশন সভসঁ প্রমুখ সমস্যা খছি।”
ঈ রিচাব প্রা. শিরাকান্ত পাঠক গত 2খগস্তকেঁ 'দূবদর্শন'ক মুজফ্ফবপ্বব কেন্দ্রসঁ প্রসাবিত মৈথিনী দৈনিক সমাচাব পত্র-পত্রিকা : সমস্যা ও সমাধান' রিষএপব খাযোজিত কএনৌ পবিচর্যামে র্যক্ত কএননি। কার্যক্রমক সংচানন করৈত সাহিত্যকাব শ্রী বমাকান্ত বায 'বমা' কহননি জে যারত্ মৈথিনী পত্র-পত্রিকাকেঁ

व्यवसायिक दृष्टिकोणसँ सम्पादन, व्यवस्थापन, वितरण आ संयोजनक फराक-फराक कए एकेपर एक समान ध्यान नै देल जाएत तावत् मैथिली पत्र-पत्रिका दीर्घायु नै भऽ सकैछ। वर्तमान समएमे प्रकाशित पूर्वोत्तर मैथिली, मिथिला दर्शन, मिथिला दर्पण आदि पत्र-पत्रिकाक चर्च करैत कहलनि जे ऐ सभ पत्रिकाक रचना, विज्ञापन आ वितरणक नीक समन्वय बनैत अछि जे नीक संयोजन-व्यवस्थापनक कारणे भऽ पबैत अछि आ पत्रिका दीर्घजीवी ऐछ आ बहुत से विश्वास कएल जा सकैत अछि।

सुजथफवपव दूरदर्शन केन्द्र'क 'सृजन' कार्यक्रममे आयोजित ऐ मैथिली परिचर्चामे प्रा. शिवाकान्त पाठक, डॉ. नरेश कुमार 'विकल' आ डा. नारायण प्रतिभागी छलाह। कार्यक्रमक संचालन श्री रमाकान्त राय 'रमा' कए रहल छलाह।

डॉ. नरेश कुमार 'विकल' मैथिली पत्र-पत्रिकाक त्रुटिपूर्ण वितरण व्यवस्था आ ओकर आर्थिक आधारकेँ सुदृढ़ करबापर जोर दैत कहलनि जे यावत् मिथिलाक लक्ष्मीवान नीक पूँजी लगा कए सम्पूर्ण मिथिलांचलमे साप्ताहिक घूमि-घूमि कए अखबार बेचनिहार भेंडरक साप्ताहिक नै हेतौताह तावत् मैथिली पत्र-पत्रिकाकेँ अनुप्राप्त होएबाक सम्भावना अछि।

आधा घंटाक ऐ परिचर्चाक प्रस्तुति सहायक छलाह 'सृजन' कार्यक्रमक प्रभावी अधिकारी श्री सुकेश कुमार। परिचर्चामे अपन महत्वपूर्ण सहभागिता देखबैत डा. नारायण झा ओ स्पष्ट कएलनि जे विज्ञापन आ वितरण ऐ दुनूमे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध ऐछ। जँ मैथिली भाषा-भाषी अधिकाधिक समाचार पत्र कीनताह पढ़ताह

तँ लोक अपन सामग्रीक प्रचार-प्रसार हेतु अखबारमे विज्ञापन देबैं करताह। आ जँ पत्र-पत्रिकाकेँ विज्ञापन भेटैतैक तँ ओकर आधार अवश्य मजगूत होएतैक, जे ओकर दीर्घायु आधार होएतैक। नारायण बाबू एकटा आर महत्वपूर्ण गप्प कहलनि जे पाठकक रूचिक पाठ्य-सामग्री एवं रोचक-प्रेरक समाचारक संकलन ि नश्चय समाचार पत्र आ पत्रिकाकेँ लोक प्रिय बनेबाक सामर्थ्य रखैत ऐछ।

एहि क्रममे डॉ. विकल जोड़लनि- "समसामयिक परिवेशकेँ प्रश्रय देबँ एवं नव लोकक लेखन-सम्पादनसँ जोड़बँ सेहो मैथिली पत्र-पत्रिकाकेँ गतिशील बनाओत। शिवाकान्त बाबू पूर्वमे प्रकाशित अपन पत्रिका 'रागमतीक' अनुभवक आधारपर कहलनि जे हम जतेक दिन मासिक 'रागमती' पत्रिका सम्पादित प्रकाशित कएलहुँ हमरा ओहिसँ आर्थिक हा ि न नै भेल। मुदा वितरण व्यवस्थाक त्रुटि ओहो स्वीकार कएलनि। नारायण आ पत्रिका सभक फराक-फराक वर्तनीकेँ मैथिली भाषाक लेल घातक बतौलनि। वर्तनीक एकरूपता सम्पादक एवं भाषा विशेषज्ञकेँ ध्यान देबाक आह्वान कएलनि। रमाकान्त राय 'रमा' चारि बेर तीन ठामसँ तीनटा मैथिली दैनिक पत्राचार पत्रक प्रकाशन करैत जोड़लनि जे स्वदेश, मिथिला मिहिर आ मिथिला समादमे एखन मात्र एकटा दैनिक मिथिला समाद प्रकाशन चारि कोटि लोक दैनिक ऐछ। जे मैथिली भाषाक पाठकक दारिद्रय ख्यातक ऐछ।

परिचर्याकि समापन करैत संचालक श्री रमाकान्त राय 'रमा' सभ प्रतिभागीकेँ हुनक महत्वपूर्ण एवं मौखिक विचारक अभिव्यक्ति लेल धन्यवाद दैत कहलनि जे

समग्रत: कहल जा सकैत अछि जे मैथिली माध्यमे प्राथमिक शिक्षा, सुदृढ़ आर्थिक आधार, समसामयिक प्रभावोत्पादक रचना, रोचक-प्रेरक समाचार, मानक मैथिली भाषाक रतन, विज्ञापन जुटेबाक सार्थक प्रयास, सम्पादन, वितरण एवं व्यवस्था- पनक फराक-फराक नीक व्यवस्था इत्यादि प्रमुख बिन्दुपर जँ ध्यान देल जाय तँ मैथिली दैनिक समाचार पत्र ओ पत्रिका सभ निश्चित रूपसँ दीर्घायु होएत आ पाठक गणक संतुष्टिक मिथिलाक जन-जन धरि पहुँचत।

नव गीतक प्रबोधा : महाकवि प्रवासी

महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी (01-07-1942—13-06-2010)

पछिला शताब्दीक सातम दशकक प्राय: दोसर-तेसर वर्षसँ साहित्य जगतमे प्रवेश कएलनि। पहिने ओ राष्ट्रभाषा हिन्दीमे लिखैत छलाह। बादमे मातृभाषा मैथिली दिस उन्मुख भेलाह। हुनक प्रकाशित पहिल काव्य ग्रंथ ‘शंखध्वनि’ हिन्दीए कविताक संकलन अछि।

জখন ও খাজীরিকা হেতু পটনাসঁ প্রকাশিত স্বপ্রতিষ্ঠিত দৈনিক পত্র 'খার্যারির্ত'মে উঁপসংপাদকক রূপমে স্বর্যরস্থিত ভ২ গেনাহ, তখন হ্নক নেখনমে গত্রবতা খা প্রৌঠ়তা খাএন। স্ফুর্ট বচনাক খতিবিক্ত ও মৈথিনী খকাদেমী, দ্বাবা দেন গেন খন্বরঁধক খন্বরূপ খত্যন্প খরধিমে 'খগস্ত্যাযনী' মহাকার্য নিখি খপন খপ্রতিম–প্রতিভাক প্রদর্শন কএনে ছনাহ। মহাকার্যক নেখন নেন প্রৌঠ় ারস্থা খা খধিক সমএক খপেক্ষা হোগত ছৈক, জখন নোক জীরন উঁতাব–চঠ় ার, হানি–নাভ, খিহত–হিত, শত্তু–মিত্র গত্যাদিক সংগ–সংগ দ্নিযাদাবীক সভটা খন্বভর প্রাপ্ত ক২ চ্কন বহৈত খছি। হ্নদা প্ররাসী জী মাত্র 36–37ক খন্প রএসমে 'খগস্ত্যাযনী' নিখি ক২ একটা নর মান দণ্ড স্থাপিত কএননি জে এখন ধবি রিবনে কোনো ভাষামে ভেন হোএত! কানান্তবমে গ্া মহাকার্য ভাবতক বাষ্ট্রীয সাহিত্যিক সংস্থা সাহিত্য খকাদেমী, নগ্া দিন্নীসঁ 1981গ্া.মে প্বস্কৃত ভেন।

এহ্ঠাম হিনক সংগ একটা খজগূত ভেন। সাহিত্য খকাদেমী দ্বাবা রাঁগসটা ভাবতীয ভাষাক সর্বশ্রেষ্ঠ বচনাকেঁ প্বস্কৃত কএন জাগত খছি। সন্ 1981গ্া.ধবি খকাদেমীক গতিহাসমে প্ররাসীজী পহিন প্বস্কৃত সাহিত্যকাব ছনাহ জে মাত্র 39রর্ষক খরস্থামে গ্া সম্মান প্রাপ্ত কএনে ছনাহ।

প্ররাসী জীমে খপ্রতিম প্রতিভা ছননি। ও গদ্য, পদ্য, কথা এরং নিরঁধ সভ রিধাপব খপন নেখনীক তীব চনৌননি খা নক্ষ্য রেঁধি ক২ নোককেঁ চমত্কৃত কবৈত বহনাহ।

ও খভিযান শীর্ষক উঁপন্যাস নিখননি জে

धाबारािहक रूपेँ साप्तािहक 'मिथिला मिहिर'मे छपलिन। एहि उपन्यासमे वर्तमान कालक देश आ राज्यक ज्वलंत समस्या भ्रष्टाचारकेँ जाहि रूक्षलताक संग उठा कऽ ओकर सर्वमान्य समाधान कएलिन अछि ओ उल्लेखनीय तँ अछिए, क्षण-प्रतिक्षण बदलैत परिवेशमे एहि प्रकारक रचनाक महत्व सेहो असंदिग्ध रूपेँ सिद्ध कएलिन।

'हम कालिदास' हुनक उत्तम पुरुषमे लिखल एकटा महत्वपूर्ण उपन्यास अछि सेहो उपन्यास धाबारािहक रूपेँ 'मिथिला मिहिर'मे छपल छलिन। एकटा महाकवि अपन अतिवृद्ध अग्रजक मन: स्थितिक लीक जकाँ अध्ेजि कऽ ओकर शब्दमे बान्हि जे मूर्तरूप देने छथि से तँ अछिए, सदा एहि मध्यक समए-साल, स्थिति-परिस्थिति, शासन-प्रशासन, प्रकृति-पुरुष, रीति-रेबाज आदिक जे एकटा पैघ अंतराल प्रवासीजी आ कालिदासक मध्य बहल अछि, एकरा ओ जाहि मनोयोगसँ सूक्ष्मसँ अतिसूक्ष्म अनुभूतिक माध्यमे अभिव्यक्त कएने छथि जे लोककेँ दुनू महाकविक मध्य एहन कोनो अंतराल दृष्टिगोचर नहि भऽ पबैछ।

ओ दैनिक 'आर्यावर्त'मे बहुत दिन धरि 'छुटिक्क लालनन्दजी की चिट्ठी' आलेखमाला लिखलिन जे अत्यन्त लोक प्रिय होइत छल। हास्य-व्यंग्य प्रधान एहि आलेखक मध्यसँ ओ देश-विदेशक विभिन्न समस्यापर जे प्रहार करैत छलाह से पाठकक मोन-प्राणकेँ आह्लादित कऽ दैत छल।

महाकवि मार्कण्डेय प्रवासीक अन्तिम प्रकाशित पुस्तक थिक- 'हम भेँटब' एकर प्रकाशन आइसँ 5-6वर्ष पूर्व 2004ई.मे भेल छल 'अगस्त्यायनी' आ

এহি কার্য পোথীক প্রকাশন মধ্য প্রায: 20−22রর্ষক খরধিমে প্ররাসীজী প্রণীত প্রহ্মখ গীতমে ‘খগস্ত্যাযনী’ জকাঁ জীরন খন্বভূর সত্যক নীক জকাঁ খারেখন ভেল খছি। খা কিএকে নে হোউঁক ? প্ররাসীজীক সন্যাসী মন খপন বচনা সভকেঁ একঠাম নিপিরঁদ্ধ কবরঁ তথা উঁতাবি কহ স্ববক্ষিত বখরঁ সেহো ছোড়ি দেনক খা একটা কঠিন প্রযোগ কবৈত বহল জে হমব হ্রতি খপন সামর্থ্যক রঁনপব জীরেঁছ কী খকান মৃত্যুক শিকাব ভহ জাগছ। (হম ভেটরঁ : ভূমিকা পৃ.7)

কোনো নর করি, কনাকাব জড় পকড়রাঁ, স্থাপিত হোএরাঁসঁ কিছু পূর্র গতস্তত: কবৈত ছথি। প্ররাসীজী সেহো একব খপরাদ নহি ছনাহ। ও কিছু দিন ধবি ‘তদর্থরাদ’ক করিক রূপমে খপনাক স্থাপিত কবরাঁক প্রযত্ন খরশ্য কএনে ছনাহ, হ্মদা খংতত: ও খপনাকেঁ গীতকাব, নর গীতকাবক রূপমে স্বস্থাপিত কএননি− ‘মিথিনামে খাগযো করিক খর্থে হোগছ গীতকাব।’ (তভৈর) এতরেঁ নহি, ও তঁ কহৈত ছথি− ‘গীতেটা ভাবতীয কার্যক মূন প্ররৃত্তি খছি। গীতক সাহ্ম খর্থ হোগছ গেয করিতা। খর্থাত্ শ্রু তি স্মৃতি যোগ্য করিতা কি ংরা ঋচা। (তভৈর)

মহাকরি প্ররাসী জীক খপন একটা খাব নর খা মৌনিক মান্যতা ছননি। জে খবরী−হ্মাবসী উঁর্দূক গজনপব রিদ্যাপতিক গীতক স্পষ্ট প্রভার পবিনক্ষিত হোগত খছি। হ্নক দৃঢ় রিশ্রাস ছননি জে ‘ও দিন শীঘ্রে খযরাঁক চাহী জহি যা কোনো রিশ্ররিদ্যানযক মৈথিনী রিভার খবরী−হ্মাবসী−উঁর্দূক গজন ছন্দপব রিদ্যাপতিক গীতক প্রভার রিষযপব শোধকার্য পী.এচ.ডী. খথরা ডী.নিট্ কেব উঁপাধিহেতু কবাওত। (তভৈর)

प्रवासीजी सतत गीत कारयक उन्नयन-संरक्षन हेतु तत्पर बहलाह अछि। ओ अपन महाकाव्य 'अगस्त्यायनी'मे सेहो गीतकारयक मर्यादा सतत रक्षा कएलनि अछि।

प्रवासी जीक गीत सभमे जीवनक विभिन्न आयामक एकटा नव रूप, नव छवि-छटा भेटैत अछि। जतः हुनक रूप-लावण्य सम्पूर्ण दुनियाँकेँ मोहित - आकर्षित- एवं मदमत्त करैत अछि ओतहि ं ओ काँटैकेँ चुभनमे पुष्प स्वभविक अनुभव करैत छथि-

'सभठाँ छै काँटै, खजूवरवन्ना छै सभठाँ।

तैयो हो चान, कतहु विनम आ वैसः। (तभेर)

नामपव अहाँक, वँसातो किछु ठमकै छल।

हून तँ, काॅंटै किछु गमकै छल।। (तभेर)

मार्कण्डेय प्रवासी माने एहन गीतकाव जे आपाद मस्तकेँ नहि, आधवती-आकाशे गीतकाव छलाह। गीते हुनक चास-वाँस, घव-दुआवि दशा-दिशा, स्थिति-पविस्थिति सभ किछु छलनि। तेँ निर्धोख भः घोषणा कएने छथि-

'गीते अछि वाँसभूमि, चास भूमि हमव।

शेष किछु अछिए नहि, नाथ की कवव।। (तभेर)

एम्हेव आवि कः हुनका सम्पूर्ण संसावसँ वितृष्णा भः गेल छलनि। पग-पगपव अविश्वास, स्वार्थलिप्सा, मिथ्या भाषण गत्यादिसँ ओ त्रस्त छलाह। हुनका वुझागत छलनि जेना कूपेमे भाँग घोवा गेल होगक, दुनियाँक सम्पूर्ण वातावरण प्रदूषित भः गेल होगक। एहने ह्रसमयकेँ अकानि ओ अपनाकेँ अपने धवि सीमित

बाधक चाहैत छथि। यात्री जे सभ दिन दीन-दुनियाँकेँ अपन गीत नहवीसँ आप्लावित करैत रहलाह ओ चुप कोना रहि सकैत छथि। तेँ कुंठित भऽ कहैत छथि-'की बाजू।'

'सौंसे गाम रंताह लगैए की बाजू।
ओझा-बैद कठाह लगैए की बाजू।।
भऽ रहलैए अछि कदाचार सगरो विजयी-
हरन सन उत्साह लगैए की बाजू।। (तखैर)

यात्री हुनकामे अदम्य जिजीविषा छलनि। हुनका अपन आत्मबल आ पौरुषपर दृढ़ विश्वास छलनि। हुनका दृढ़ आस्था छलनि अपन कर्मपर आ तेँ आत्म घटै नबानबे अमृतसँ भरल बुझाइत छलनि। आ तेँ ओ मृत्युओकेँ टिटकारी दैत रहैत दैत छथि-

'प्राण घटमे अछि अमृत रस शेष-
मृत्यु। दूर-सुदूर रहिहेँ रे।। (तखैर)

यात्री हा, हन्त! हन्त।। एहि बेर काल हुनका आत्मविश्वासकेँ धोखा देलकनि। हुनक नियामक कर्म-धर्मक आस पूर्ण नहि होमय देलकनि।। 13मइ 2010केँ ओ अकालहि ँमे कालकवलित भऽ गेलाह।।

यात्री नहि, नहि! ओ तँ स्वयं कहि गेल छथि- हम भेटबे! यात्री ओ कतऽ भेटैताह से के कहत? जे आजीवन प्रवासी रहलाह, हुनक पता ठेकान कोना ज्ञात होएत? आन के कहि सकैत अछि हुनका भेटबाक स्थान? तेँ ने इसा मसीह जकाँ ओ पहिनहि टीपि गेल छथि- 'हम भेटब तिनकोर जकाँ चतरल साहित्यक टीटपर!

जे जिनगी भरि साहित्यक चास-बासकेँ तामैत-कोरैत रहलाह, अपन शोनितसँ गीतक

ফসিনকেঁ পঠৈবৈত বহনাহ, ও খান ঠাম কতহ ভেঠৈতাহ।। ও রব থোড় শিৰ্দমে খঁতহীন ব্যথাক খভিব্যক্তি দৈত কইত ছথি–

'জহিযা–জহিযা দ্বদযহীনতা।
খঠৈকত মোনক ৰাঁতপব।।
হম ভেঠৈৰ গতিহাস নদী কেব–
চিক্কন চ্নহ্মন ঘাঠৈপব।।'

মহাকরি মার্কণ্ডেয প্ররাসী খাগ 'গতিহাস' ভহ গেন ছথি। তেঁ ও খাৰ ও নদী কেব চিক্কন–চ্নহ্মন ঘাঠৈপব'ক রাসী ছথি।। সাদব শ্রদ্ধাঁজনি!!

পোথী সমীক্ষা– প্রগতিশীন এরং সনাতন রিচাবধাবাক সমন্রযাত্মক উঁপন্যাস

‘মৌনাগন গাছক ফূন’ শ্রী জগদীশ প্রসাদ মংডনক সঘ: প্রকাশিত উঁপন্যাস থিকনি জকব রিমোচন ০৩ খপ্রীন ২০১০কেঁ জনকপ্ববধাম (নেপান)মে খাযোজিত ‘সগব বাতি দীপ জবয’ কথা গোষ্ঠীক খরসবপব ভেন ছন। এহিমে প্রগতিশীন জনরাদী খা পৌবাণিক সনাতনী রিচাবধাবাক সমন্রযক পবিপাক নীক জকাঁ রর্ণন ভেন খছি।

জগদীশ প্রসাদ মংডনজী মৈথিনী সাহিত্যক নেন নর নহি বহনাহ ১.৭.+ রর্ষক বচনা ধর্মিতা খা মাত্র দূ–তীন রঁর্ষক প্রকাশন প্রসাবসঁ ঙ মৈথিনী জগতমে খপন একটা নীক স্থান রঁনা নেননি। খাে খস্থান সেহো খান–খান নেখকসঁ ফবাক খা রেঁছপ খছি। ওনা সাহিত্যমে হিনক প্ররেশ বাজনীতি পঢ়নসঁ ভেন খছি। “পৈঁতীস সান সমাজ সেরা কঽ হহরৈত শবীব দেখি কিছু নিখৈ–পঢ়েক রিচাব ভেন।” (ভূমিকা।)

ও খপন পহিন কথা ‘সগব বাতি দীপ জবয’ কথা গোষ্ঠীমে পঢ়ি প্রশংসা প্রাপ্ত কএননি। নিখরাক নতি রঁঢ়ননি খা ও খনরবত নিখয নগনাহ– কথা, উঁপন্যাস, নাটক। জে নিখরাক রুচি ভেননি–দিন খোনি কঽ নিখনাহ। প্রকাশনক কোনো চিংতা নহি। ও মৈথিনী সাহিত্যক প্রকাশনক রুঢ় প্রক্রিযা দিস কহিযো নহি সোচননি খা বচনা ধর্মিতাসঁ রিমুখ নহি ভেনাহ হুনকা খপন বচনাপব পূর্ণ খাস্থা খা রিশ্রাস ছননি।

মধ্ৰ্বনী কথা গোষ্ঠীমে পঠিত হিনক কথা ‘রিসাঁঠ়’ ঘব ৰাঁহবমে আ দোসব কথা ‘চূনরানী’ সন্ ২০০৯ উঁতবাৰ্হ্মমে ‘মিথিনা দৰ্শনি’মে ছপন। এহি দুনূ বচনাক কথানক, নিখৰাক শৈনী ওহিমে ব্যক্ত রিচাবধাবাসঁ নোক রেশ প্রভারিত ভেন। নেখনমে নর বহিতহুঁ অনুভূতিক অভিব্যক্তি কৌশনসঁ নৰানৰ ভবন হিনক বচনা সভ মিথিনাঁচনক আম জীরনকেঁ নীক জকাঁ প্রতিরিম্ৰিত কবৈত অছি জে পাঠককেঁ চ্ম্ৰক জকাঁ অপনা দিস আগ্রষ্ট কঽ নৈত অছি।

মৌি থনীক ঘরা নেখক এরং রিদেহ পত্রিকাক সংপাদক শ্রী গজেন্দ্র ঠাকুব মানৈত ছথি জে ‘জগদীশ প্রসাদ মংডন শিনপী ছথি, কথ্যকেঁ তেনা সমেট নৈত ছথি জে পাঠক রিস্মিত বহি জাগত অছি। সমাজক সভ রস্ক হিনক কথ্যমে ভেটৈত অছি আ সে আ সে আনকাবিক ৰূপমে নহি রবণ্ অনাযাস, জে মৌথিনী সাহিত্য নেন একটা হিনকোব অএরাক সমান অছি।’ যএহ কাবণ অছি জে হিনক সাত-আঠটা প্রস্তকক প্রকাশিন দ্গযে কথা প্রকাশিনক রাদ দিন্নীক প্রতিষ্ঠত প্রকাশিক ‘শ্রুতি প্রকাশিন দ্বাবা রষাভ্যন্তবে ভেন অছি। এহন মৌথিনী নেখক রিবনে ছথি জে মাত্র অপন নেখন ক্ষমতাক ৰঁনপব কোনো প্রকাশিককেঁ এতেক অত্যন্প অরধিমে আগ্রষ্ট কঽ অপন প্রাবম্ভিক বচনোক প্রকাশিনক মাস্ক প্রশস্ত কএনে হোথি!

‘মৌনাগন গাছক ফূন’ক কথানক তঁ সোন্ম অছি। বমাকান্ত গামক একটা পৈঘ ভূস্রামী প্রায: দূ সএ রীঘাক ভূমিক মা িনক ছথি। ও কম পঠ়ন-নিখন বহনাক রাদো পবোপকাবক ভারনা, গাম-সমাজক হিতক চি ंতাসঁ সদতি চি ंতিত বহৈত ছনাহ। ঘোব

ঋকানমে ঋন্ন রিন হকন্ন কনৈত নোক নেন নে কেরঁন স্রযং ঋপন পোঋবি উঁবাহরাঁক কাজসঁ জন-গণক মন মোহি নৈত ছথি প্রত্যত, ঋড়াসিযো-পড়াসিযো গামমে শ্রী সম্পন সভকেঁ এহন-কাজ কবরা নেন উঁত্প্রেবিতো করৈত ছথি।

ঋপন রিদ্বান পিতা দ্বাবা সম্পতি ঋা হ্নকেসঁ প্রাপ্ত জ্ঞানক কাবণে কানান্তবমে ও ঋপন সভটা ভূমি সমাজক সভ রস্মাক দীন-হীন নোকমে বঁাটি কহ স্রযং চৈনক রংশী রঁজরৈত ছথি।

হ্নকা ঋপন ভবণ পোষণক কনিযো চিংতা নহি ছনি। কিএক তঁ হ্নক দূ-দূটা প্বত্র মদ্রাসমে ডাক্টবী পঢ়ি ওহিঠাম সবকাবী সেরামে ছনি। ও দুনূ ঋপন মনোনকূন মেহনতিসঁ ঋর্জিত কহ নীক ঘব-দ্বাবি রঁনা ওতহি বহৈত ছথি। ও সভ যদা-কদা গাম ঋারি মাতা-পিতা ঋা গামক নোকসঁ ভেঁটে-ঘাঁটি কহ জাগত ঋছি।

গামমে দূটা রঁস্তুক ঋভার ছৈক- পহিন উঁচ্চ শিক্ষা নেন রিদ্যানয ঋা দাসেব দুখিত-পীড়িতক নেন চিকিত্সানয। বমাকান্ত সহযোগে পহিনে একটা প্বরুষ ঋা একটা মহিনা প্রাথমিক চিকিত্সাক ট্রেনিংগ মদ্রাসসঁ কহ ঋরৈত ছথি। পছাতি জমীন্দাবক ডাক্টব প্বত্র ঋা প্বত্ররধূ জখন গাম ঋরৈত ছথি তঁ পিতা ঋা সমাজক সমনৌতা রঁ্নৌনা তথা পবোপকাব এরং জনসেরাক ভারনাসঁ প্রেবিত ভহ চাবিম ডাক্টবমে সঁ এক একটাকেঁ ক্রমশ: গামমে বহি নোকক সেরা কবরাঁ নেন তৈযাব ভহ জাগত ছথি ঋা গামমে চিকিত্সা ঋাবম্ভ কহ দৈত ছথি।

এহিসঁ মাত্র ওহি গামক নোককেঁ নহি প্রত্যত

नग-पासक थानो-थान गामक मौनाएगन गाछ, बोग ब्याधि ग्रस्त नोक सभमे चिकित्सा स्वरिधा बूपी नर जीरनक फून रिहँसि उठैत थछि।

उपन्यास था नघुकथाक कथानकमे थन्तव होएगछ। कथा जीरनक कछु दिन, किछु क्षणक उताव-चढ़ ाब, स्थिति-पविस्थितिक रर्णन होएगत थछि, ऋदा उपन्यासमे जीरनक प्राय: सम्पूर्ण नहि तँ थधिकसँ थधिक घटना, दुर्घटनाक थाबोह-थरबोहक महत्रपूर्ण बोडपव बोकैत, रिश्राम कबैत, थाकैत, थसैत, पड़ ैत, उठैत स्थिति निबपेक्ष नेखन थछि। कथाकेँ जनथैक भूजा किरा सात्त मानन जाए तँ उपन्यासक रिन्यास पूर्णत: भोजन थछि।

ओ उपन्यास थादर्श जनरादी धबातनपव ठाढ़ थछि। एहिठाम जनरादमे जे थ ादर्शक समन्रय भेन थछि, से प्रशस्त सनातन पवम्पवामे सेहो रिधमान थछि। जेना एहि उपन्यासमे कएन गेन एकटा महत्रपूर्ण कार्य थछि पवोपकाव। महर्षि ब्यास पवोपकावकेँ पुण्यक एकमात्र कार्य मानैत छथि-

"थष्टा ादशे पुवाणेषु ब्यासस्य रचनद्वयम्।'
पवोपकाव: पुण्याय पापाय पव पीड़नम्।।"

दोसव शब्दमे हम कहि सकैत छी जे उपन्यासकाव मार्क्सरादसँ नीक जकाँ प्रभारित छथि ऋदा थपन सनातन पवम्पवा, धर्म-कर्म था थाचाव-रिचावक प्रति सेहो रिशेष सहान्वभूति बथैत छथि। एकवा देश-कान था पविरेश प्रभार सेहो कहन जा सकैछ।

उपन्यासक भाषा ठेठ ग्रामीण भाषा थछि जे मधुबनी जिनाक पूरचिनमे बाजन जाएगत थछि। हमबा उपन्यासक ओ थांचनिक भाषा प्रभारित थरश्य कबैत

অছি ঝদা কতহ্-কতহ্ আঁচনিকতা আকি রোঁন-চানক ভাষা মানক মৈথিলী ভাষাকেঁ কাটৈত জকাঁ নগৈত অছি কিএক তঁ এহিমে হমবা ক্রিযা পদক আপূর্ণ প্রযোগ জকাঁ র্‌ঝাগত অছি। জেনা- কিছু হ্‌বরেঁ নে করৈত। (পৃ.৩), রঁখাবিক ধান আ মড়্আক হিসারঁ মিনরৈঁত।, ঝসনাক রোঁনী সাহ-সাহ নিকনরেঁ নে করৈত। এহিঠাম এহি তীনূ রাক্যক ক্রিযা পদ অপূর্ণ নগৈত অছি। হমবা জনৈত মানক মৈথিলীমে ক্রমশঃ কিছু হ্‌বরেঁ করৈক/করৈত ছনৈক।, হিসারঁ মিনরৈঁত ছনাহ আ নিনকরেঁ নে করৈক/করৈত ছনৈক এহি প্রকারে হোএত।

এহন ক্রিযাপদক প্রযোগ প্রাযঃ সভ পৃষ্টপৈব অছি জাহিসঁ হমবা র্‌ঝি পড়ৈছ জে ও ওহি গ্রাম্যাঁচনক রিশেষ প্রযোগ হোএক জকবা অংগীকাব কবরঁ, নেখককেঁ সক্ষা চত র্‌ঝযননি। কাবণ কোসে-কোসে পানী আ পাঁচ কোসপব রাণী তঁ স্বপ্রসিদ্ধ অছি।

মূন কথামে অনেক ছোট-ছোট উঁপকথা, সহ কথা কথানককেঁ অত্যধিক বোচক রঁনরৈঁত অছি। তহিনা কতেকো ঠাম নেখক অপন রিচাবক রীথী রিভিন্ন পাত্রক ঝখসঁ কহরৌনে ছথি জে নীক সূক্তি কী সদ্‌ক্তি রঁনি কঽ প্বস্তকসঁ হবাকো বহি নোককেঁ প্রেবণা দৈত বহত। জেনা- (ক) জনকক বাজ মিথিনা থিকৈক তেঁ মিথিনারাসীকেঁ জনকক কএন বস্তা পকড়্‌ কঽ চনক চাহী। (খ) মন্বখমে জন্ম নেনাপব ক্যো মাএ-রাঁপক সেরা নহি করৈ তঁ ও মন্বখে কী ? (গ) মন্বখকেঁ কখনো নিবাস নহি হেরোঁক চাহি হএকে, জখনে মন্বখমে নিবাশা অরৈঁত ছৈক তখনে মৃত্যু নগ চন অরৈঁ ছৈক। তেঁ সদিখন আশারান ভঽ জিনগী রিতেরোঁক চাহিএকে।

कठिनसँ कठिन समए किएक ने आबए क्षमा बिबेकक सहारा नइ छोड़ब ठेग बढ़ेबाक चाहिऐक।

समग्रत: मौलाइल गाछक फूल 'मार्क्सवादी बिचारधारा आ भारतीय सनातन बिचारधारक समन्वयवादी एकटा एहन मौलिक कृति अछि जकरा मैथिली भाषाक पाठक पढ़बाक लेल सदति उत्सुक रहताह- ई हमर दृढ़ बिश्वास अछि।

चर्चित पोथी- मौलाइल गाछक फूल (उपन्यास)

लेखक- श्री जगदीश प्रसाद मंडल

प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, न्यू राजेन्द्र नगर दिल्ली-११००८

दाम- २३० टाका मात्र

पृष्ठ संख्या- १२८

पोथी प्राप्तिक स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीव्यूटर्स वार्ड नं.६, निर्मली (सुपौल)

मोबाइल नं. ०९५७२४५०४०५



<u>देवशंकर नवीन</u>

<u>लघुकथा लेखनमे अवबोधक तत्व</u>

लघुकथा साहित्य-पदार्थक एहन परमाणु अछि, जाहिमे

ওকব সভ্ঠৗ ভৌতিক খা বাসাযনিক গ্বণ উঁপস্থিত বহৈত ছৈ, খা পবমাণ্বিক স্থিতিমে ওকব বাসাযনিক প্রভার তীক্ষ্ণতব ভঽ জাগত ছৈ। নঘ্কথা জাদূক এহন ওঁঠী খছি জে পাঠকক মানস-পটনসঁ ঠৈক্কব নৈত দেবী ওকব নিশ্চঠ্ঠ মানসিকতাকেঁ ক্রিযাশীন কঽ দৈত খছি, ভোথব সম্বেদনাকেঁ সক্রিয রঁনা দৈত খছি। নঘ্কথা চবিত্র-চিত্রণ, কথোপকথন, কথানক সন পূর্ণাহিবক রঁদনামে রিঠৗমিনক গোনী খছি, জে সম্পূর্ণ ঙুঁজসিঁ হাঞ হোগত খছি।

রাস্তরিকতামে শৰ্দ্ধ স্বযং মহত্বপূর্ণ নৈ হোগত খছি, মহত্বপূর্ণ খছি ওকব প্রযোগ-প্রক্রিযা। প্রযোগক খাধাবপব শৰ্দ্ধ খপন খর্থ-গ্রহণ কবৈত খছি। নঘ্কথা মূন রূপসঁ র‍্যংগ্য ধ্বনিত কবৈত খছি। খস্তু একব রাক্যমে শৰ্দ্ধক প্রতীকামেক প্রযোগ রিশিঠ্ঠ খস্মিতা বখৈত খছি। এহি খর্থমে এহিমে শৰ্দ্ধ-রিধান খহম্ ভঽ জাগত খছি, ঝদা তকব কোনো মানক সীমা নৈ ছৈ। বচনাকাবক শৰ্দ্ধ-রিধানে একব মানক সীমা খছি। তাহি দ্বাবে হম কহি সকৈ ছী জে নঘ্কথা, কথাক খপেক্ষা করিতাসঁ রেঁসী নগ খছি। খাকাবমে নঘ্ ভেনাক রাঁদো একব র‍্যংজনা রিবাঠ হোগত খছি।

গানন-গূথন শৰ্দ্ধমে জীরনক সভ্ঠৗ রিদ্রূপতাক এহন প্রস্তুতি নঘ্কথা খছি জকব বংগ শীসাপব সেহো জমন রিঁনা নৈ বহি সকৈত খছি। র‍্যাকবণ জোঁ ভাষা খা সাহিত্যক খাচাব-সংহিতা খছি, তঁ নঘ্কথাক খাচাব-সংহিতা খানী 'শৰ্দ্ধ' খছি। শৰ্দ্ধক সহযোগসঁ বচন জীরনক রিদ্রূপতাক প্রতীক চিত্র, সএহ নঘ্কথা খছি। নঘ্কথামে মূন রূপসঁ 'কথ্য' খা 'শৰ্দ্ধ' ক রঁড় মহত্তা হোগত খছি। একব সংহিতামে ভাষা-রিধান নেন কোনো

রিশেষ স্থান স্ৱৰক্ষিত নৈ ছৈ।
শাস্ত্ৰ-প্ৰবাণাদিমে একব ওঁসে স্পষ্ট দেখাগত খছি ন্দা তকব ৰাঁদো নঘ্কথাক ৰৰ্তমান তেৰব, রিশ্বস্থ রূপসঁ খাধ্নিক সভ্যতা-সংস্কৃতি খা ৰঁদনৈত সাহিত্যিক প্ৰতিমানক প্ৰতিফন খছি। ওনা তঁ স্ৰাত তাকী তঁ রিষ্ণু শৰ্মা রিবচিত পঁচতন্ত্ৰ ৰা ফেৰ গ্ৰ্ণাঢ্যক ৰঁড্ডকহা খাকি খাব পাছূ জাগ তঁ রেদমে ৰৰ্ণিত ওঁপদেশপৰক ওঁপকথামে একব সূত্ৰ ৰঁড্ড সবনতাসঁ ভেটৈত খছি। কাৰ্য্য-রিষযক প্ৰাচীনতম রিধানমে একবা নেন খনগসঁ কোনো স্থান নৈ বাখন গেন ছন। তাহি কাবণসঁ ওহি সভ পাবম্পাবিক কাৰ্য্য নিকষপৰ একব পৰীক্ষণ নৈ ভঽ সকৈত খছি, একবা নেন নৱ সমীক্ষা শাস্ত্ৰক নিৰ্মাণ খপেক্ষিত খছি।
নঘ্কথা-নেখন একটা খতবনাক বৃত্তি খছি। 'সতৰ্কতা গেন খা দুৰ্ঘটনা ভেন' ক ফাৰ্মূনা এহিপৰ পূৰ্ণতঃ নাগূ হোগত খছি। দুৰ্ঘটনা মানে খসফনতা খাকি ওঁখেবপনা। একব ৰাঁদ সংযোজনমে সেহো পৰ্যাপ্ত কনামেকতাক খাৱশ্যকতা হোগত খছি। এহি কনামেকতাক কমজোবীসঁ একব প্ৰভাৱোপোদকতা চন জাগত খছি খা ফেৰ নঘ্কথা খপন মূন ওঁদ্দেশ্যসঁ ভটকি জাগত খছি।
নঘ্কথা-নেখনকেঁ ৰঁহুত বাস নোক দ্বাবা সিনেমামে খাওন ফৈশনক রূপমে খপনাওন গেন খছি। ওঁকাতি হোখএ রা নৈ, জে ওঁ হ্যগক ফৈশন ভঽ গেন খছি সে নোক হাস্য-কণিকা নিখি কঽ সেহো ওকবা নঘ্কথা কহি দৈ ছথি। খা সে এহি খত্যাধ্নিক ন্দা খতবনাপূৰ্ণ রিধা নেন ৰঁড্ড মোশ্কিনক গপ খছি। একবাসঁ ৰঁচৰাঁক ৰঁড্ড জৰুবতি খছি। নিখৰাঁক কনা নৈ হোখএ তঁ ওঁ কাজ নৈ কবৰাঁক চাহী। নকনচী নেখকসঁ নঘ্কথাকেঁ ভযংকব

𑒢𑒼𑒏𑒮𑒰𑒢 𑒄 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒜𑒹𑒩 𑒩𑒰𑒮 𑒪𑒼𑒏 𑒂𑒢 𑒯𑒰𑒮𑓂𑒨-𑒏𑒝𑒱𑒏𑒰 𑒂 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒢𑒻 𑒏𑓄 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒞𑓄 𑒡𑒩𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒯𑒢𑒹 𑒮𑒢 𑒧𑒢𑓁𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒥𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱, 𑒮𑒹 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒦𑒙𑒏𑒱-𑒮𑒢 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒥𑒯𑒳𑒞-𑒩𑒰𑒮 𑒢𑒲𑒏-𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒰𑒍𑒢𑒏 𑒥𑒹𑓀𑒑 𑒮𑒢 𑒙𑒩𑓂𑒩𑒰 𑒏𑓄 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒑𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒧 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒪, 𑒮𑒹 𑒖𑒾𑒿 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰-𑒪𑒹𑒐𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒯𑒢𑒹 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨 𑒢𑒻। 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒲𑒨𑒞𑒰 𑒂 𑒮𑒧𑓂𑒣𑓂𑒩𑒹𑒭𑒝𑒲𑒨𑒞𑒰 𑒮𑒧𑒋𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒑𑒧𑓂𑒦𑒲𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒖𑒰𑒋𑒞।

𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑓀𑒬𑒏 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒂 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢𑒰 𑒍𑒏𑒩 '𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢' 𑒂 '𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰' 𑒣𑒩 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒦𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢 𑒞𑒿 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒮𑒿 𑒐𑒴𑒥 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒯𑒱𑒣𑒩 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒁𑒞𑓂𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒢𑒰 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒚𑒹𑒏𑒹𑒠𑒰𑒩 𑒋𑒯𑒱𑒣𑒩 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒏𑓄 𑒁𑒞𑓂𑒨𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒯𑒢 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒩 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒮𑓂𑒟𑓂𑒨𑒏𑒩 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱।

𑒧𑒱𑒪𑒰-𑒖𑒳𑒪𑒰 𑒏𑓄 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰, 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒂 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒂𑒬𑓂𑒫𑒮𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒮𑒿 𑒖𑒛𑓃𑒱 𑒡𑒹𑒢𑒹 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒹𑓀𑒑 𑒮𑒦𑒏 𑒂 𑒬𑒾𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒏𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒋𑒏𑒩 𑒅𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒮𑓂𑒞𑒹-𑒂𑒮𑓂𑒞𑒹 𑒧𑒹𑒙𑒰𑒃𑒞 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨𑒹𑒢 𑒋𑒯𑒱𑒣𑒩 𑒢𑒲𑒏-𑒢𑒲𑒏 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰 𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒥𑒲𑒖𑒑𑒝𑒱𑒞𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒪 𑒏𑒋𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒏𑓄 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒮𑒫𑒰𑒪 𑒥𑒢𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒞।

𑒁𑒠𑒠𑓂𑒠𑒲 𑒣𑒹𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒖𑒑𑒴𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰

মিথিলাক সাংস্কৃতিক রিবাসত তকৈত দূব ধবি নজবি জাগত খছি, সরঁসঁ পহিলে দেখাগত খছি জে উঁচ শিক্ষা প্রাপ্ত কবরাঁক, গম্ভীব চিন্তন–মনন কবরাঁক, ছোটে–সঁ–ছোটে রাঁত পব পর্যাপ্ত রিচাব–রিমর্শ কবৈত নির্ণয নেরাঁক প্রথা মিথিলামে প্ববাতন কালসঁ খরৈঁত বহৈত বহল খছি। ঋদা তকব খতিবিঞ ÷পবস্বখ দেরাঁমে পবমস্বখ'ক খানন্দ নেরাঁক খা জীরনক হবেক খাচাব এরং খাচবণমে নযাশ্রিত বহরাঁক খভ্যাস মৈথিল জনকেঁ নিকেনাঁ বহলনি খছি। স্বযং কষ্ঠ সহিও ক', খপন সরঁ কিছু গমাগও ক', দোসবকেঁ খধিকসঁ খধিক প্রসন্নতা দেরাঁক খাদতি মিথিলামে রঁড় প্ববান খছি। প্রাযঃ গএহ কাবণ থিক জে খতিথি সকোবমে মিথিলাক লোক খপনা ঘবক থাড় ী–লোটা ধবি রঁন্হকী বাখি দেলনি। দোসবকেঁ সম্মান দেরাঁমে মৈথিল নাগবিক রঁঢ় া–চঢ় া কএ খাগূ বহল খছি। ভলসিযাক কাজ কব'রঁনা র্যক্তিকেঁ মহবাজ খথরা মহবাজিন, কেস–নহ–দাঢ় ী–মোঁছ সাফ কব'রঁনা র্যক্তিকেঁ ঠাকুব–ঠকুবাগন, ঘব–খাঁগনমে নৌবী–রঁহিকিবনী খা সোগবী ঘ'বমে পবসৌতীক কাজ কবরাঁর'রানী স্ত্রীকেঁ দায কহি

ক' সম্বোধিত কবরাঁক প্রথা মিথিলামে এহলে ধাবণাসঁ বহল লোএত। ধ্যান দেরাঁক থিক জে মিথিলামে দাদীকেঁ, জেঠ রঁহিনকেঁ খা ঘ'বক খলধিক দুলাবি রেঁটীকেঁ দায কহরাঁক পবম্পবা খছি।

খধ্যযন, চিন্তন, মননক প্রথা মিথিলামে রঁড় প্ববান খছি। ঋদা ঙা সল থিক জে খশিক্ষেক কাবণেঁ মিথিলা এতেক পছখাএলো বহল। গলল গূথল জে র্যক্তি খধ্যযনশীল ভেলাহ, সে খলধিক পঢ়লনি, জে নহি পঢ় া সকল, সে খপন বোজী–বোটীমে লাগল বহল। বোজী–

বোটীক এক মাত্রা আধাব গ্রষি ছল। বিদ্বান লোকনিক গম্ভীব ব্ঁহসমে বৈঁসব্ঁাক খথবা ওহিমে হিস্সা লেব্ঁাক তর্কশক্তি, ব্ঁোধ-সামর্থ্য, আ পনখতি বহ নহি ছলনি, তেঁ জে উঁপদেশ দেল জাওল, তকবা আর্ষ বাক্য মানি অপন জীবন-যাপনমে মৈথিল লোকনি তল্লীন বহ ছলাহ। গুশ ভক্তিক প্রথা অহু কাবণেঁ মিথিলামে দৃঢ় ভেল। মানব সভ্যতাক ওতিহাস কহ'এ জে প্রকৃতি-পূজন, নদী-পহাড়-ভূমি-বৃক্ষ-পশু আদিক পূজন এহি কবণেঁ শুরুহ ভেল জে প্রাবম্ভিক কালমে জীবন-বক্ষাক আধাব ওএহ হোওত ছল। লোক অনুমান লগৌলক জে সৃষ্টিক কাবণ, স্ত্রী-পুরুষক জননাঁগ থিক, তেঁ ও লিংগ পূজা আ যোনি-পূজা শুরুহ কেলক, জে ব্ঁাদমে শিবলিংগ আ কামযোনি পূজাক রূপমে প্রচলিত ভেল। ব্ঁাদমে ওজাব পূজন হোঅএ লাগল। ... তেঁ পূজা পাঠমে লীন হেব্ঁাক প্রথা প্রবাল অছি। মিথিলামে ওহি সমস্ত পূজন-পদ্ধতিক অনুপালন তঁ হোওতে বহল; পিতব পূজা, গ্রামদেব পূজা, ঋতু পূজা, ফসল পূজা, কুলদেব-দেবী পূজা আদিক প্রথা ব্ঁঢ়ল। হমবা জনৈত বিদ্বান লোকনি দ্বাবা গুশ ভক্তিক উঁপদেশ এহি লেল দেল জাওত বহল হএত জে গুশ ভক্তিমে লাগল লোক ধর্ম-ভযসঁ সদাচাব অনুপালনমে লাগল বহত, সদ্বৃত্তিমে লীন বহত, সামাজিক মর্যাদাক ধ্যান বাখত, ভুজব্ঁল-ধনব্ঁলক মদমে নির্বল-নির্ধন পব অলাচাব নহি কবত। ...লক্ষ্যপূর্তি ত' নহিএঁ ভেল, উঁনটৈ লোক ধর্মভীরু, পাখণ্ডী অন্ধবিশ্বাসী আ নিবন্তব লোভী, স্বার্থী, অলাচাবী হোওত গেল, পবিণামস্বরূপ আজুক মৈথিল-প্রবৃত্তি হমবা সভক সোঝাঁ অছি।

গ্রষি জীবনসঁ সমাজক কৌটুম্বিক ব্ঁন্ধন এতে

मजगूत छल, जे भूमिहीनो व्यक्ति सम्पूर्ण किसानक दर्जा पबैत छल। हरेक गाममे सब वृत्तिक लोक बसैत छल। डोम, चमार, नौआ, कमार, गुआर, धोबि, कुम्हार, कोइरी, ब्राह्मण, क्षत्री... आदि समस्त जातिक उपस्थितिसँ गाम पूरा होइत छल। जमीन्दार लोकनि समस्त भूमिहीनकेँ जागीर दै छलाह, ब्राह्मण पुरहिताइ करैत छलाह, नौआ केश कटै छलाह; कमार हर-फार, चौकी केबाड़ बनबैत छलाह; धोबि कपड़ा-वस्त्र धोइत छलाह...। सम्पूर्ण समाज एक परिवार जकाँ चलैत छल। सब एक दोसरा लेल जीबैत छलाह, सब गोटेए किसान छलाह, कृषि-सभ्यतामे मस्त छलाह।

सिरपंचमी दिनक हर-पूजा हो; दसमी, दीया-बाती, सामा-चकेबाक उत्सव हो; मूड़न-उपनयन-विवाह-श्राद्ध हो; छठि अथवा कगुआ हो... बिना सर्वजातीय, सर्ववृत्तीय लोकक सहभाग लेने कोनो काज पूर नहि होइत छल। एहिमेसँ बहुत बात तँ एखनहुँ बाँचल अछि, होइत अछि ओहिना, ओकर ध्येय कतहु लुप्त भ' गेल अछि।

मिथिलाक विवाहमे एखनहुँ जा धरि नौआ ब'रक कानमे हुनकर खानदान लेल गारि नहि दैताह (परिहास लेल); धोबिन अपना केस संगे कनियाँक केस धो क' सोहाग नहि दैतीह, विवाह पूर्ण नहि मानल जाइत अछि। ध्यान देबाक थिक जे एहि तरहेँ ओहि नौआकेँ कन्याक पिता आ धोबिनकेँ कन्याक माइक ओहदा देल जाइत अछि। मिथिलाक छठि पाबनि तँ अद्भुत रूपेँ सम्पूर्ण विश्वासतक रक्षा क' रहल अछि। नदीमे ठाढ़ भ' कए सूर्यकेँ अर्घ देबाक ई प्रथा जाति-धर्म समभावक स्वरक्षा एना केने अछि जे समाजक कोनहु वस्त्रक

সহভাগক বিনা ওা পাৰৱনি পূর্ণ নহি হোএত। নেত খগ স'ৰ ঠামে একতা খা সমানতাক সূত্রা স্থাপিত বখৰাক বহৈত ছন। ওা কনংক স্বাতন্ত্রযোত্তবকানীন মিথিনাক স্বাধীন মানরক নাম খথরা রৈজ্ঞানিক রিকাস, রৌদ্ধিক উন্নতি, ঔদ্যাগিক প্রগতিক মাথ জাগত খছি, জে সমস্ত রিকাসক খছৈত মানর-মনমে নোভ-দ্রাহ, খহংকাব এহি তবহেঁ ভবনক ছুখাছুত, জাতি-দ্বেষ, শোষণ-উপৌড়ন বঢ়ৈত গেন; খা খাগ মিথিনা-সমাজ, জে ত্যাগ, বনিদান, প্রেম, সৌহার্দ নেন খ্যাত ছন, সামাকি রূপেঁ খল্ড-খল্ড ভেন খছি। পৈঘসঁ পৈঘ খাপদা, রিভীষিকা ওকবা এক ঠাঁ খানি কএ, একমত নহি ক' পরৈ'এ। মিথনাক উদাবতা খা সামাজিকতা ওা ছন জে ককরো বাড়ী-ঝাবীমে খথরা নত্তী-ফত্তীমে খথরা কনম-গাছীমে নর সাগ-পাত, তব-তবকাবী, ফূন-ফন হোগ ছন তঁ সভসঁ পহিনে গ্রামদেরক থান পব খা পড়ৌসিযাক খাঁগনমে পহুঁচাওন জাগ ছন; কোনো ফসিন তৈযাব ভেনাক বাদ খাগো-বাশি কোনো পবগোত্রীকেঁ দেন জাগ ছন; খেতমে ফসিন কটৈৰা কান খেতক হবেক ট্কড়ীমে এক খংশ বখৰাবকেঁ দেন জাগ ছন...ওা সমস্ত বাত সামাজিক সম্বন্ধ-বন্ধক মজগূতীক উদাহবণ ছন।

কোনো স'ব-ফট্ৰমক ওতএসঁ কোনো রস্তু সনেসমে খারৈএ, তঁ ও সৌংসে টৈনমে নোক রিনহৈ ছন।...কহৱা নেন কহি সকৈ ছী জে ওা মৈথিনজনক জীরনক নাটকীযতা খা প্রশংসা হেত্ত নোল্পতা বহন হোএত... ঝদা তকব খছৈত এহি পদ্ধতি খা পবম্পবাক শ্রেষ্ঠতা খা সামাজিক মূল্য হেত্ত একব খারশ্যকতাসঁ ঝঁহ নহি মোড়ন

জা সকৈত খছি। গামমে কোনো রৈঠৌক দ্বাগসনক

দিন তয ভোগ ছল, তঁ বেঁটীক সাস্বৰসঁ আএল মিঠাগ ভবি গামমে বিলহল জাগ ছল। তাপৰ্য ঙা ভোগ ছল জে ভবি গামক লোক বুঁলিঃ জাএ, জে ঙা বেঁটী আৰ আগ গামসঁ চন জাএত। ওহি বেঁটীকেঁ ভবি গামক লোক ধন-রিত্ত-জাতিসঁ পবে, ওহি বেঁটীকেঁ আপনা ঘ'বমে এক সাঁঝ ভোজন কববেঁ ছল। সৰ কিছুক লক্ষ্যার্থ গুপ্ত বহ ছল। একব অৰ্থ ঙা ছল, জে সম্পূর্ণ গাম আপন-আপন থাড় ী-পীঢ় ী দেখা কএ ওহি বেঁটীক বিবেককেঁ উৰ্দ্ধ্ব কবৈ ছল জে বেঁটী! আৰ তোঁ ঙা গাম, ঙা কুল-বংশ ছোড় ি আন ঠাম জা বহল ছহ, হমবা লোকনি আপন শীল-সংস্কৃতিক জ্ঞান তোবা দেলিযহ্, সাস্বব জা কএ, ওত্তক্কা শীল-সংস্কাব দেখি কএ আপন বিবেকসঁ চলিহ', আ আপন গাম, আপন কুল-শীলক প্রতিষ্ঠা বঢ়বিহ'। এএহ কাবণ থিক জে পহিলে কোনো বেঁটীক দ্বাগমনক দিন পৈঘ অন্তবাল দ' কএ তয ভোগ ছল। মুদা আৰ ঙা বিবাজ একটা ঔপচাবিকতা বনি কএ বহি গেল অছি; গামক বেঁটীকেঁ আপন বেঁটী মানিতে কে অছি ?

মিথিলামে কোনো স্ত্রী সংগে ভেঁস্বব আ মমিযা সস্ববক বার্তালাপ, ভেঁট-ঘাঁট বর্জিত বহল অছি, এতে ধবি জে দুনূমে ছুআছূতক প্রথা অছি। আধুনিক সভ্যতাক লোক একবা পাখণ্ড ঘোষিত কেললি। পবিস্থিতি বদলৈ ছৈ, ত' মান্যতাক সন্দৰ্ভ বদলি জাগ ছৈ, সে ভিন্ন বাত; মুদা এহি প্রথাকেঁ পাখণ্ড কহলিহাব লোককেঁ ঙা বুঝবাক থিক জে ঙা প্রথা এহি লেল ছল, জে এহি দুনূ সম্বন্ধমে সমবযস্কী হেবাক সম্ভাবনা বেসী কাল বহ ছল। সংযুক্ত পবিবাবক প্রথা ছল, কখনহুঁ কোনো অঘট ঘটি সকৈ ছল। ঙা বর্জনা একটা শিষ্টাচাব নির্বহবণ হেতু

पैघ आधाव छल। प्रायः एएह कावण थिक जे रिराह कालमे घोघट देरॉ लेल प्राथमिक अधिकाव अही दुनू सम्बन्धीय व्यक्तिकें देल जाएत छनि। जाहि स्त्रीकें केओ भैंस्वब अथरा ममिया सस्वब नहि छनि, हुनकहि ठौ सस्वब स्थानीय कोनो आन व्यक्ति घोघट दै छनि। घोघट देरॉक प्रक्रियामे कतेक नैतिक रॅन्हन बहैत अछि, से देखू, जे सकल समाजक समक्ष भैंस्वब, नर रिराहित भारह्क उँघाव माथकें नर नूआसँ झाँपै छथि आ रॅगनमे ठाढ़ रॅ'ब ओहि नूआकें घीचिकए माथ उँघाबि दैत अछि, ए प्रक्रिया तीन रॅब होएत अछि, अन्तिम रॅब माथ झाँपने बाखल जाएत अछि। अर्थात्, सकल समाजक सम्मुख ओ व्यक्ति प्रतिज्ञा करैत अछि--हे शुभे! हम, तोहव भैंस्वब (सस्वब) प्रण लैत छी, जे जीरन पर्यन्त तोहव लाजक बक्षा करब! एते धवि जे अग्नि, आकाश, धवती, परनकें साक्षी बाखि जे व्यक्ति तोबा संग रिराह केलकह् अछि, सेहो जखन तोहव लाज पव आक्रमण कवतह्, हम तोहव बक्षा लेल तैयाव बहब!

अही तवहें उँपनयनमे आचार्य, रॅह्मा, केस लेनिहावि, भीख देनिहावि, डोम, चमाव, नौआ, धोबि, कमाव, कुम्हाव आदिक भागीदावी; आ एहने कोनो आन उँसेव, संस्कावमे सामूहिक भागीदावी सामाजिक अन्तरॅन्धक तार्किक आधाव देखरैत अछि।

कहरी अछि जे मैथिल भोजल भङ्ग होएत छथि। अएल कहरीक त'हमे जाएत तँ ओतह् एकव सांस्कृतिक, पावम्पवकि सूत्रा भेटैत। मिथिलाक स्त्री, खाहे ओ कोनह् जाति-रत्नक होथि, तीक्ष्ण प्रतिभाक स्वामिनी होएत बहल छथि। कुदा पवदा प्रथाक कावणें हुनकव पैव भनसा घवसँ ल' क' अँगनाक डेवही धवि

बान्हल बहे छलनि। अधिकांश समय भनसे घरमे बितबए पड़लनि। सृजनशील प्रतिभा निश्चिन्त बैसए नहि दैत। की कहितथि! भोजनक विन्यासमे अपन समय आ प्रतिभा लगबए लगलथि। आगयो भोजनक जतेक विन्यास, तीमन-तरकारीक जतेक कोटि, चटनी आ अचारक जेतक विधान मिथिलामे अछि, हमरा जनैत देशक कोनहुँ आन भागमे नहि होएत। वनस्पतिजन्य औषधिकें स्वस्वाद् भोजन बनएबाक प्रथा सेहो मिथिलामे सर्वाधिक अछि। ... आब जखन एते प्रकारक भोजन ओ बनौलनि, तँ उपयोग करए हेत? ... घरक पुरुष वर्गकें खोआओल जाएत। सर्वदा एहिना होइत रहल अछि, जे कोनो क्रियाक विकृति प्रचारित भ' जाइत अछि, मूल तत्व गौण बनि जाइत अछि। मैथिल पेटू होइत अछि, से सभ जनैए, मुदा मिथिलाक स्त्रीमे विलक्षण सृजनशीलता रहलैक अछि, से बात कम प्रचारित अछि। जे स्त्री कामकाजी होइ छलीह, खेत-पथार जा कए शरीर श्रम करै छलीह, गामक बाटे बटुआनक घर-आँगन नीपै, लेबै छलीह, तिनकहु कलामेक कौशल हुनका लोकनिक काजमे देखाइ छल।

स्त्री जातिक कला-कौशलक मनोविज्ञानक उत्कर्ष तँ एना देखाइ अछि जे हुनका लोकनिक उत्साह-उल्लास धरिमे जीवन-यापनक आधार आ घर-परिवारक मंगलकामना गुम्फित रहै छल। जट-जटिन लोक नाटिका विशुद्ध रूपसँ कृषि कर्मक आयोजन थिक, जे अनावृष्टिक आशंकामे मेघक आवाहन लेल होइ छल, होइत अछि; सामा भसेबा काल गाओल जाएबला गीतमे सभ स्त्री अपन पारिवारिक पुरुष पात्राक स्वास्थ्यक कामना करै छथि; विवाह उपनयनमे अपरिहार्य रूपें वृक्ष पूजा

(ग्राम, मह्), नदी पूजा, प्रकृति पूजा आदि करै छथि। विभिन्न वृत्तिक लोकक अधिकार क्षेत्रा पर नजरि दी, तँ लौआ, कमार, कुम्हार, डोम, धोबि... सभक स्वामित्व निर्धारित रहैत आएल अछि। जाहि गाम अथवा टोल पर जिनकर स्वामित्व छनि, हुनकर अनुमतिक बिना केओ दोसर प्रवेश नहि क' सकै छलाह। ओ लोकनि आपसी समझौतासँ अथवा निलामीसँ गामक खरीद-बिक्री करै छलाह। एहि व्यवहारमे
जजमानक कोनो भूमिका अथवा दखल नहि होइत छल।

हस्तकलाक कुटीर उद्योग एतेक सम्पन्न छल, जे सामाजिक व्यवस्थामे सभ एक दोसरा पर आश्रित छल। सूप, कोनियाँ, पथिया, बँखाड़ ी, घैल, छाँछी, सबरा, प्वरहर, मौनी, पौती, जलौ, चरखा, लदहा, बँरहा, गवदामी, कुखारी, उँघैल, करास, खाटे, सीक, अरिपन... सभ किछु लुप्तप्राय भ' गेल। एते धरि जे ओ शब्द आ क्रिया अपरिचित भेल जा रहल अछि। टोनि केलाग, भौरी केलाग, केल केलाग, पस'र चरेलाग, झिल्हैर खेलेलाग सन क्रिया, आ स्वठौरा, हरीस, लागन, बँरेन, जोती, कनेन, पालो, चास, समार, फेरा, पचोटा, टोसि, करीन सन शब्द आब आधुनिक साहित्यमे कमे कान अबैत'ए।

मिथिलाक एहेन विलक्षण विरासत--कला, संस्कृति आ जीवन-यापन पद्धतिक उत्कृष्ठ उदाहरण सम्भारनाविहीन भविष्यक कारणेँ आ सामाजिक कटुताक कारणेँ हेराएल जा रहल अछि। नवीन शिक्षा पद्धतिसँ सामाजिक जागृति बढ़ल, मुदा ओहि जागृतिक समक्ष ठाढ़ भेल वैज्ञानिक विकास आ आर्थिक उदारीकरणक प्रभावमे अहंकारग्रस्त समृद्ध लोकक लोलुपता आ क्षुद्र वृत्ति।

संघर्ष जायज छल। अपन पारम्परिक वृत्ति आ हस्तकलामे, प्रश्तैनी पेशामे लोककें अपन भविष्य सुरक्षित नहि देखेलै। ÷वंग उँड़ल ह्मद्दत' कथामे मायानन्द मिश्र आ ÷वमजानी' कथामे ललित मिथिलाक परम्परा पर आघात देखा चुकल छथि। ...

ख'ढ़क घर आब हाेइत नहि अछि, घरामीक वृत्ति एहिना चल गेल। सीक'क प्रयोजन, खाटैक प्रयोजन समाप्त भ' गेल, वँचल-खुचल मान-जान लेल नाथ-गरदामी आब प्लास्टिकक वँनल-वँनाएल डोरिसँ हाेअए लागल, वँचाक खेलौना प्लास्टिकक हाेअए लागल। लौआ, कमार, धोबि, डोमक जागीर आपस लेल जा लागल। ओ लोकनि अपन प्रश्तैनी पेशा छोड़ि आन-आन लोकरी चाकरीमे जाए लगलाह। स्त्री जाति आब भानस करबा लेल किताब पढ़ए लगलीह, फास्ट फूड खएबाक प्रथा विकसित भेल। मिथिला पेंटिंगकें आफसेट मशीन पर छपबा कए पूँजीपति लोकनि री-प्राडक्शन वेंच' लगलाह। जट-जटिन आ सामा-चकेवाक खेलक विडियोग्राफी देखाओल जाए लागल। गोनू झा, राजा सलहेस, लैका वँनिजारा, कारू खिरहरि, लोरिकाइनि आदिक कथा छपा कए विक्री हाेअए लागल, टेप पर रेकॉर्ड क' कए, अथवा सी.डी.मे तैयार क' कए, री-मिक्ससँ ओकर मौलिकतामे फेंट-फाँट क' कए नाक स्वन' लागल, आ एकरा अपन वँड़का उँपलब्धि घोषित कर' लागल। ... अर्थात् जे लोककला लोकजीवनक संग विकसित आ परिवर्द्धित हाेइत छल, तकर अभिलेखनसँ (डक्यूमेंटेशन) ओकरा स्थिर कएल जा लागल। लोकजीवनक संग अविरल प्रवाहित वहैवाली सांस्कृतिक-धारा आब अभिलेखागारमे वँन्द रहत, ओकर विकासक

সম্ভারনা স্থগিত বহত।

খগ সমস্ত বৃত্তিমে জ্‌ড়ন নোককেঁ সম্মানিত জীরন জীরেঁ জোগব বৃত্তি দ' কএ একব রিকাসমান প্রক্রিযাকেঁ খাওব তীব্র কববাঁক খারশ্যকতা ছনৈ, ম্দা জখন মিথিনাক নোকে ও ÷নোক' নহি বহি গেন খছি, তখন নোক-সংস্কৃতি খা নোক-পবম্পবাক বক্ষা কে কবত ?

<u>**রঁট্‌খামে রিঁগাড়া খা রিঁবড় ।- (বাজকমন চৌধবীক উঁপন্যাস)**</u>

গ'বসঁ দেখনা পব ৱাঁত তয ঢোগত খছি জে উঁপন্যাস ভাবতীয সাহিত্যক সৰঁসঁ গতিশীন রিধা থিক। ভারককেঁ এতএ খপন তথা পবিরেশক সম্যক্ চিত্রা সম্পূর্ণ রৈরিধ্যক সংগ ভেটৈত খছি। এহি তথ্যমে সেহো কিনকহ্ কোনো সংশয নহি ছনি জে সাহিত্যমে উঁপন্যাস রিধাক খারিভর্ভারি সমাজমে খাধ্নিক সভ্যতাক রিকাসক ফনস্বৰূপ ভেন। রিজ্ঞান এরং তকনীকী রিকাসক ফনস্বৰূপ যূরোপমে সতবহম শতাব্দীমে পূঁজীরাদক পাঁখি পসবন, সামাজিক পবিরর্ত্তনক মোঁক খাএন, খা সাহিত্যমে উঁপন্যাস রিধাক খারিভর্ভারি ভেন। মুদা সে ভাবতীয সাহিত্যমে উঁপন্যাসক উঁদ্ভরক স্রাত নহি থিক। রিহংগম দৃষ্ঠিসঁ দেখী তঁ ভাবতীয সাহিত্যমে উঁপন্যাসক উঁদ্ভরক স্রাত সন্ ১+৩৭ক প্রথম স্বাধীনতা সংগ্রাম, খা তকব নিবাশাক কাবণেঁ ভাবতীয বুঁদ্ধিজীরীক বীচ জাগ্রত চেতনাকেঁ মানন জাএত। একব সূত্রা উঁনৈসম শতাব্দীক প্রাবম্ভিক কানমে ভাবতীয বৌদ্ধিক জন'ক মোনমে উঁঠন নর চেতনাসঁ সেহো জ্ড়ৈত খছি, বাজা বামমোহন বায দ্বাবা সমর্থিত নরজাগবণসঁ সেহো জ্ড়ৈত খছি, ÷বঁগান নরজাগবণ' খা ÷মহাবাষ্ট্রে প্ররোধন'সঁ সেহো জ্ডৈ+ত খছি। হিন্দী পঞ্জীমে খগ নরজাগবণাক হরা থোড়কে দেবীসঁ খাএন। মুদা ভাবতেন্দ্ মন্ডনক বুঁদ্ধিজীরী বজ্র সম্পূর্ণ তপেবতা খা প্রতিৰঁদ্ধতাক সংগ একব উঁদ্বাষ কেননি, পবিণতি ধবি পহুঁচৌননি।

হিন্দীমে উঁপন্যাস নেখন নরজাগবণ কানহিমে প্রাবম্ভ ভেন। ÷পবীক্ষা গ্বক'(১++২) ÷ত্রিারেণী'(১+৯০) খাদি ঔপন্যাসিক কৃতিসঁ নানা শ্রীনিরাস দাস খা কিশোবী নান গোস্বামী এহি রিধাক শ্বভাবম্ভ কেননি। ডেঢ়—দূ

দশক বাদ হিন্দী উপন্যাস অপন পূর্ণ জ্যাতিক সংগ দৈদীপ্যমান দেখএ লাগল। জয়শংকর প্রসাদক ÷কংকাল'(১৯২৯), ÷তিতলী'(১৯৩৪); জৈনেন্দ্র কুমারক ÷পরখ'(১৯২৯), ÷সুনীতা'(১৯৩৫), ÷ত্যাগপত্রা'(১৯৩৭); প্রেমচন্দক ÷সেবাসদন'(১৯১৬), ÷প্রেমাশ্রম'(১৯১৮), ÷রংগভূমি'(১৯২৬), ÷গোদান'(১৯৩৭) আদি উপন্যাসক প্রকাশন ভ' চুকল ছল। দেবকী নন্দন খত্রীক ÷চন্দ্রকান্তা'(১৮৮৮) আ ÷চন্দ্রকান্তা সন্ততি'(১৮৯৬) তঁ এহি সবসঁ পূর্বহি প্রকাশিত ভ' কএ খ্যাতি অর্জিত ক' চুকল ছল। জনতব অছি জে ভাবতীয ভাষা সবমে সবসঁ পহিলে বঁগলামে উপন্যাস লেখল শুরু ভেল।...মৈথিলীমে উপন্যাস লেখনক প্রাবম্ভিক অবধি থিক সন্ ১৯১৪–১৯৩৩, অর্থাত্ ÷নির্দয়ী সাসু'সঁ ÷কন্যাদান'ক বচনাকাল ধবি। এহি মধ্য কৈক টা উপন্যাস লিখল গেল, মুদা এহি সময ধবি হিন্দী আ আন ভাবতীয ভাষাক উপন্যাসক প্রগতি দেখৈত বিষযক বিস্তাব আ শিল্প–শৈলীক নূতনতাক দৃষ্টিএঁ উল্লেখনীয উপন্যাস থিক– –নির্দয়ী সাসু(জনার্দন ঝা ÷জনসীদন')১৯১৪, বামেশ্বব(জীবছ মিশ্র)১৯১৬, সুমতি(বাসবিহাবী লাল দাস)১৯১৮, মনুষ্যক মোল(কুমাব গংগানন্দ সিংহ)১৯২৪, মিথিলা দর্পণ(পুণ্যানন্দ ঝা)১৯২৫, পুনর্বিবাহ(জনার্দন ঝা ÷জনসীদন')১৯২৬, চন্দ্রগ্রহণ(কাশীনাথ ঝা ÷কিবণ')১৯৩২, কন্যাদান(হবিমোহন ঝা)১৯৩৩ আদি।

এহি আঁকড় াকেঁ দেখৈত ও লগৈত অছি জে মৈথিলী উপন্যাসক মূল লেখন নহি কিছু তঁ দূ–অঢ় াগ দশক পাছূ আবি কএ প্রাবম্ভ ভেল, আ শীঘ্রে মাটি পকড়া লেলক। ধ্যান বখবাক থিক জে পহিলে বিহাব আ বঁগাল একহি প্রান্ত ছল, কলকত্তা তকব প্রশাসন

কেন্দ্র ছল। সন্ ১৯১২মে রিহাব-বঁগান রিভাজিত ভেল ক্ষদা মিথিনাক নোকক সম্পর্ক কনকত্তাসঁ বঁননে বহন। উল্লেখনীয খছি জে স্বাতন্ত্রযোত্তব কান, খথরা তাহ্রসঁ খাগূ, খাপাতকানক বাঁদ ধবি বোজগাবক ঠেহমে রিভিন্ন খাহরস্থাক মৈথিন দিল্লী, পঁজাব, গুজবাত মহাবাষ্ট্র দিশ খপন রুখি কেননি, ক্ষদা এখনহুঁ ধবি কনকত্তা-প্রেমসঁ মৈথিন নোকনি পূর্ণতযা ক্ষও নহি ভেল ছথি। ... মৈথিনী উপন্যাসক উদ্ভরক স্রাত রৌহ্নিক জন'ক স্বান্বভূতি, খংতঃ প্রেবণা, মিথিনাক সমকানীন পবিরেশ, মানর জীরনক রিসংগতি, ফিবংগী শাসকক খত্যাচাব...জে বহন হো; ক্ষদা সম্ভর ওাহো খছি জে রৌহ্নিক জনকেঁ এহি রিভাজনসঁ ÷নিজ ভাষা' খর্থাত্ ÷মাতৃভাষা'ক উন্নতি নেল; সর্রথা নর রিধা উপন্যাসক নেখন নেল প্রেবণা জাগন হোএন।

মৈথিনীমে উপন্যাস নিখাএন তঁ জাএ নাগন খূব, ক্ষদা তদন্বসাব সর্ররিধি রিকাস নহি ভেল--এহি তথ্যকেঁ স্বীকাব'মে সংকোচ নহি কব'ক চাহী। মিথিনাক নর রৌহ্নিক রস্থাক মধ্য সবঁ তবহক জাগৰুকতা খা চেতনাক খছৈত মৈথিনীক উপন্যাস নেখন মিথিনামে স্ত্রীক দযনীযতা পব কনৈত বহন। এতে ধবি জে বৈদ্যনাথ মিশ্র ÷যাত্রী' ধবিকেঁ সন্ ১৯৪৬ মে ÷পাবো'ক পবিস্থিতি পব কান' পড়ননি, জে সন্ ১৯১৬সঁ ১৯৩৭ ধবিক খন্তবানক দুনিযাঁ ভবিক ঔপন্যাসিক উথোন দেখ চুকন ছনাহ। জঁ পহিনেক উপন্যাসকাব কনেকো সাহস কেনে বহিতথি, তঁ সম্ভর ছন, জে ÷নরত্তবিযা'মে জে ডেগ যাত্রী উঠৌননি, সে ডেগ ÷পাবো'এমে উঠি জওতএ। চেতনা খা রৌহ্নিকতাক দৃষ্টিএঁ মিথিনা ক্ষেত্রা সদাসঁ খাগূ বহন খছি, তথাপি উপন্যাস নেখনক রিকাসোন্মুখ ধাবামে মৈথিনী এহি তবহেঁ পছখাএন বহন, তকব মূন কাবণ

বচনাকাবক জীরনান্বভূতি খা বচনা–দৃষ্ঠিক কমজোবী নহি ছন; মূন কাবণ ছন মিথিনাক জনপদীয পবিস্থিতি খা খাম নাগবিকক মানস নোক।

ভাবতীয স্বাধীনতাক দশক ভবি ৰাদ সন্ ১৯ঌ+মে বাজকমন চৌধবীক পহিন মৈথিনী উঁপন্যাস ÷খাদিকথা' প্রকাশিত ভেন। এহি সময ধবি মৈথিনী উঁপন্যাসক ভল্ডাব কোনো তেহেন ন্মৃন্মৃখানো নহি ছন। ÷চন্দ্রগ্রহণ', ÷পাবো' খা ÷নরত্তবিযা' সনক রিশিষ্ঠ উঁপন্যাস সৰ প্রকাশিত ভ' চ্কন ছন। ÷পাবো' ক কথারস্তু খা ঘঠনাক্রম পব মিথিনাক কষ্ঠবপন্থী নোকনি রিতল্ডা ঠাঢ় ক' চ্কন ছনাহ। খসনমে মিথিনা ক্ষেত্রাক সামান্য জনজীরনক সমস্যা ওহি সময ধবি রিকবান ছন। পংজী–প্রথা খা জমীন্দাবী সংস্কাবসঁ মিথিনাক জে রস্থ্ খাক্রান্ত ছন, ওএহ রস্থ্ সামাজিক ব্যরস্থাক নীতি–নির্ধাবক হোগ ছন। পংজী–প্রথাক কাবণেঁ মিথিনামে স্ত্রাী জাতিক স্থিতি দযনীয ছন। ৰান রিরাহ, ৰেমেন রিরাহ, ৰহ্–রিরাহ, বৃদ্ধ রিরাহ সন কুবীতি পংজীএ প্রথাক পবিণতি ছন। তথাকথিত উঁচ কুনশীনক প্বরুষ খনেক ৰেব রিরাহ ক' নৈ ছনাহ। কতোক কিশোবী খথরা যুরতীক রিরাহ, পিতা খা পিমামহক উঁম্রক নোকসঁ ভ' জাগ ছন। খগ কিশোবী খা যুরতীক পিতারস্থ্ ওগ জমীন্দাব নোকনিকেঁ খপন উঁদ্ধাবক ৰূঝৈ ছনাহ খা তৃপ্ত ভেন ঘোষিত কবৈ ছনাহ জে ৰেঠী খাৰ বানী ৰনি বাজ কবতীহ, ৰেঠীক মোন খা মনোভারকেঁ ৰূঝৰ ও খপন দাযিত্ব নহি মানৈ ছনাহ। জাহি সমাজমে রৈজ্ঞানিক রিকাসক কোনো ঠৈপ–ঠেংকাব পহুঁচি নহি সকন ছন, ওতএক নোক খপন জীরন ব্যরস্থাকেঁ এতেক যান্ত্রিাক ৰনা নেনে ছন, জে ওহি ৰেঠীক ৰাপ–মাগকেঁ ঙা নহি

र्‌मागन जे एकटा स्त्रीी नेन खन्न–पानि, जमीन–जथा, गहना–जेरॅवे टा सरॅ किछ नहि होग छै; कोनो स्त्रीीक मनोरेगक उँत्ताप–खन्वताप, घरारस्थाक दैहिक भाव सेहो रॅड़ खर्थ बखै छै। स्त्रीी मनोरेगक खग दशाक रॉध ओहि उँच रून–रंशीय जमीन्दावकें सेहो नहि होग छननि। खग तवहक रिराहक पविणति दू दिशामे होग छन -- की तँ जरानीक उँमेव खरॅरॅ–खरॅत किशोवी रिधरा भ' जाग्थ, खा कि रृरू पति संग जरान पनीक वति–रिनास स्वखकव नहि पारि रूण्ठित होगत वहथि। दुनू पविस्थितिमे देहक भाव कोनो जरान प्वुखकें सौंप देरॉ नेन ओ घरती रिधरा, खथरा खतृप्त सधरा ननायित वहै छनीह। बाजकमन चौधवीक ÷खादिकथा' उँपन्यास एहने खतृप्त सधरा खथरा कामात्तुव
रिधराक कथा थिक जे खभिनाषा खा मर्यादाक दू छोवसँ तानन–छानन छथि।

÷खादिकथा'क नायिका स्वशीनाक रिराह रृरू जमीन्दाव खनिकरू रॉर्रूसँ भेननि। दुनूक रयसमे एक पीढ़ीक खन्तव छननि। स्वशीनाक उँमेव खपन सतौत रॅटा रूनानन्दसँ मेन–जोन खाग छननि। पहाड़ी नदी, खथरा कोशीक रॉढ़ि, खथरा सरूद्रक ज्वावि सन सनकी स्वशीनाक जरानी खा देह–तन्त्रा कोनो मर्यादाक रॅन्हन मान' नेन तैयाव नहि छननि, रूदा घून खाएन चौकठि–केरॉड़ सन मिथिनाक कौनिक मर्यादामे तकवा छेक क' वखरॉक प्रयास कएन जाग छन। खग जर्जव मर्यादाक प्वन पव सम्हवि–सम्हवि क' पैव वाखि जीरन पाव कव' चाहै छनीह, रूदा रीचहिमे खनिकरू रॉर्रूक भागिन देरकान्तक कान्तिमय रूप, चङ्गान सन काया–काठी देखि स्वशीना, खर्थात सोना मामीक मोन सम्हवि नहि सकननि,

ও ৰহৈকি জেৰাঁক উদ্যম নহি কেলনি, মুদা ৰহৈকি জএৰাঁসঁ অপনাকেঁ ৰোকি ৰাখৰ এতে আসানো নহি छनलि। স্বপ্নীনাক অতৃপ্ত ৰাসনা আ দমিত অভিলাষাক সংকেত দেৱকান্তকেঁ লাগি জাগ छनि। অগ দূন্ চৰিত্রাক মনোৱিশ্লেষণ অগ উপন্যাসমে ৰেঁস সূক্ষ্মতাসঁ ভেল অছি। বীচমে আওৰো কতোক ঘটনা-উপঘটনাক মাধ্যমে মূল কথাকেঁ মাঁসল আ প্রভাৱকাৰী ৰনাওল গেল।

মামি-ভাগিনক কামাত্তৱ অন্বৱাগ সামাজিক ৰূপেঁ স্বীকাৰ্য নহি অছি, তেঁ এহি উপন্যাসক কথানক মিথিলাক প্ৰৱাতন ৱিচাৱক লোককেঁ পসিন নহি পড়লনি। কহল গেল জে এ কথা সত্য নহি সত্যান্বৰূপ অছি, এহিমে অমৰ্যাদিত সত্যক ৱৰ্ণন অছি, নাযক-নাযিকাক মনোবৃত্তি অথৱা মানসিক উদ্বেলনক চৰ্চা কৰৈ কাল লেখককেঁ উচিতান্বচিতক ধ্যান ৰখৰাঁক চাহী, সামাজিক ৰন্ধক অৱহেলনা ক' কএ কথামে ৱিশ্বসনীযতা অনৰাঁক আগ্রহ নহি হএৰাঁক চাহী, মামি-ভাগিনক কামজনিত আকৰ্ষণ মৰ্যাদাক উল্লংঘন থিক। ... হমৰা জনৈত এ সমস্ত ধাৱণা পাখল্ড থিক। ৱস্তুতঃ উপন্যাসকাৱ কোনো অখৰাঁৱক সম্বাদদাতা নহি হোগত ছথি জে ও সত্য ঘটনাক ৱিপোৰ্ট লিখতা। কথা আ কি উপন্যাস সম্ভাৱ্যক সংকেত, ৱৰ্তমানক ৱিশ্লেষণ আ অতীতক অন্বস্মৱণ কৰৈত অছি; ঘটিতক সূচনা দ' দেৱ মাত্রা ও অপন দাযিত্ব নহি বূঝৈ ছথি। আদৰ্শ স্থিতিসঁ কথা, উপন্যাসকেঁ পৱহেজ নহি হোগত অছি, ও তঁ আদৰ্শেকি অন্বসন্ধানমে লিপ্ত ৱহৈত অছি; মুদা অযথাৰ্থ আদৰ্শ ওকৱা লেল উপেক্ষণীয অৱশ্য হোগত অছি। অহী উপন্যাসক প্ৰসংগ ৱাজকমল চৌধৱীক কহৱ छनि-- সোনামামীক প্রতি দেৱকান্তক প্রেম ৰড্ড আদৰ্শ থিক। আ, অহী আদৰ্শকি ৱক্ষাক কাৱণেঁ দেৱক

জীৱন স্বাহা ভ' গেল ছওল। আৰ্ঁ অৰ্থী কহু; জে ভস্ম কৰএ, আগি লেসনে ৰহএ, সে আদর্শ কোনা, অনুকৰণীয কোন তৰহেঁ ? হম সামাজিক মৰ্যাদাক পূজা কৰও ছী, আ (অযথার্থ) আদর্শৱাদিতাক ঘোৰ ৱিৰোধ।

আদিকথা উঁপন্যাস পৰ জে লোকনি মৰ্যাদাক উঁল্লংঘনক দোহাগ দেলনি, ও লোকনি অনিৰুদ্ধ ৰাবুঁকেঁ অমৰ্যাদিত প্ৰুৰুষ নহি কহলনি, জে অপন অশক্য অৱস্থামে সন্তানহুঁসঁ ছোট ৱযসক যুৱতীকেঁ পত্নীক ৰূপমে ৱৰণ্ কেলনি। স্বৰ্ণীনাকেঁ জখন অতৃপ্ত মনোৱেগক দৌৰা পড়লনি তখন শ্ৰীস্বৰ স্থানীয জোতখী জী আডম্বৰ পসাৰলনি জে হুনকা পৰ প্ৰেতনী সৱাৰ ভ' গেলখিনহেঁ। আ, ভূত ঝাৰৱাঁক ৰহলেঁ ৱধূ–স্থানীয স্বৰ্ণীনাক ৰাঁহি, পাঁজৰ পকড়ৱাঁক আচৰণ গামক লোককেঁ অমৰ্যাদিত নহি লগলনি। কিঐক তঁ অও সমস্ত আচৰণক ফেঁটৈসীমে মিথিলাক সমাজ প্ৰাৰম্ভহিসঁ জীৱৈত আএল ছল।

মনুষ্য জেঁ কি একটা জটিল প্ৰাণী থিক, তেঁ মনুষ্যক সমস্ত মানসিক প্ৰক্ৰিযা ৱিচিত্ৰা জটিলতাসঁ আৱদ্ধ ৰহৈত অছি। হজাৰহ ৱৰ্খক ৱিকাস–যাত্ৰামে মনুষ্যক সভ্যতা আগ জাহি স্থিতি ধৰি পহুঁচল অছি, তাহিমে ৱিৱেক ধাৰণাক ৱিৰাট ভূমিকা অছি। মৰ্যাদাক ৰক্ষা ৱিৱেকহীন আচৰণসঁ নহি ভ' সকৈত অছি। মৰ্যাদাক নিৰ্বাহমে এক ঠাম দেখাওল গেল ৱিৱেকহীনতা অনেক অমৰ্যাদাক জননী হোঅত অছি, এহি সত্যক উঁপেক্ষা কেনিহাৰ লোক পাৰো, আকি আদিকথা সন উঁপন্যাসক কথা পৰ আঁগুৰী উঁঠৱৈত ছথি।

মৈথিলীমে লিখল ৰাজকমল চৌধৰীক তীন গোট উঁপন্যাস উঁপলব্ধ অছি --আদিকথা, আন্দোলন আ পাথৰ–ফূল। একৰ অলাৱা হংসৰাজক নামে ১৯.১১.১৯৬৯ সঁ

০৬.০১.১৯৬০ক ৱীচ এক পত্রামে বাজকমন চৌধবী নিখনে ছথি... জনরবীমে একটা মৈথিনী উঁপন্যাস নিখৱ হম -- ৱটগমনী। একটা এহন ঘরতী পব জে ভবি নিজগী রিভিন্ন নোকক সংগে পড় াএন ঘ্বগ'এ। কথাক রিস্তাব জনকপ্ববসঁ পূর্ণিয়াঁ ধবি বহত। -- কহি নহি ঙা উঁপন্যাস নিখন গেন অথরা নহি। আদিকথা আ আন্দানন তঁ পহিনহিসঁ পাঠক নোকনিকেঁ উঁপনর্ক্ষ ছননি। পাথব-ফূন উঁপন্যাস হেৱনি ধবি অনুপনর্ক্ষ ছন। আখব (বাজকমন রিশেষাংক)মে জীরকান্ত অপন নিৱন্ধমে বাজকমন চৌধবীক পংক্তি উঁদ্ধৃত কএনে ছথি -- এক গোট উঁসোনী ঘরক ওকবা (÷পাথব-ফূন' উঁপন্যাসকেঁ) প্রকাশিত কবৌননি, হ্মদা ককবো কহনা পব জে উঁপন্যাসক অশ্লীনতাক কাবণেঁ প্রকাশক ৱন্ধা জেতাহ, প্রকাশিত মৈটব ও (প্রকাশিক) ডৈমেজ কবৱা দেননি। -- হ্মদা স্বকব ভেন জে দূ ৱর্খ পূর্ব তাবানন্দ রিযোগী ওহি উঁপন্যাসক একমাত্রা প্রতি কতহ্সঁ নষ্ঠ-ভ্রষ্ঠ স্থিতিমে উঁপনর্ক্ষ কেননি। সম্পূর্ণ পোথীমে দীরাব
মহাশয আব-পাব একটা ভোকাঁড় ক' দেনখিন। ওহী স্থিতিমে ওকব ছাযা প্রতি কবরা কএ ৱীচসঁ পংক্তিকেঁ জোড়ন গেন অছি। জোড়ন শঙ্কারনীমে বাজকমনক শৈনী আ গবিমা অক্ষুণ্ণ বহি সকন -- সে কহৱ কঠিন অছি, হ্মদা এতে তয অছি জে উঁপন্যাসক বসৱোধমে কোনো ৱাধা উঁপস্থিত নহি হোগত অছি। একব অনারা আওবো একাধ উঁপন্যাসক চর্চা অছি, হ্মদা তকব কোনো সূত্রা এখন ধবি উঁপনর্ক্ষ নহি ভেন অছি।
কহন জা চ্কন অছি ÷আদিকথা'ক সময ধবি সেহো মৈথিনীক পাঠক সমাজক ৱোধ-শীর্ষ আ রিচাব-ফনক উঁর্ধ্বহ্মখী নহি ভেন ছননি, একদম সপাট ভূমি পব জর্জব

পবম্পবাক খৃষ্টীসঁ ৰন্মাএন ঘূমি বহন ছননি। পূর্ররর্তী বচনাকাব সেহো কম প্রযাস নহি কেননি। করিতাক ক্ষেত্রামে কতোক গোষ্ঠিএ খপন যোগদান দেননি। কথা খা উঁপন্যাসক ক্ষেত্রামে কাঁচীনাথ ঝা ÷কিবণ' খা হবিমোহন ঝা স্ত্রাী খা রিরাহসঁ সম্বন্ধিত মিথিনাক জড়ি যাএন সমস্যা পব নজবি দ' চ্কন ছনাহ। রৈদ্যনাথ মিশ্র ÷যাত্রাী', ÷পাবো' খা ÷নরত্তবিযা'মে এহি গন্মাএন রৈরাহিক পদ্ধতি পব সমধানি ক' চোষ্ট ক' চ্কন ছনাহ। তথাপি সমাজ ব্যরস্থাক পাখন্ড খা খযথার্থ খাদর্শক চাঁগ্বব এহি সমাজকেঁ জকড়নে ছন, স্বাধীনতা প্রাপ্তিক দশক ভবি ৰাঁদহ্ মিথিনাক নোক এহি রৈরাহিক পদ্ধতিক প্রতি ঘৃণা খা রিবোধক ভার নহি খরধাবননি। চ্ত্তর্থিএক বাতি ÷পাবো' সন ৰাঁনিকাক সংগ পতি স্থানীয বৃদ্ধ বাক্ষস দ্বাবা ৰনাকোব খথরা ÷স্বর্শীনা' সন উঁদ্দাম যৌরনসঁ ভবন স্বকামিনীক যৌন–প্রতাড়ণাক প্রতি কিনকহ্ মোন খিন্ন নহি ভেননি। পংজী প্রথাক রিগ্রতিক ৰূপমে ভেন এহেন ৰেমেন রিরাহ, ৰাঁন–বৃদ্ধ রিরাহ খা ৰহ্–রিরাহক কাবণেঁ বৃদ্ধ খথরা স্বর্গরাসী জমীন্দাবক কঠমস্ত জরান স্ত্রাীক সংগ বমণেচ্ছা সৰকেঁ বহৈ ছননি, গাছমে পাকন নতাম দেখি কৌখা জকাঁ দৃ নেন মাবি খএৰাঁক নানসা সৰকেঁ হোগ ছননি, ক্দা ওহি যরতীক মোন খা সম্বেদনাসঁ কিনকহ্ কোনো মতনৰ নহি ছননি। ছদ্ম খা খতিশযোক্তিসঁ ভবন মিথিনাক জীরন–পদ্ধতিক গএহ রিডম্বনা ছন। রিরাহেতব সম্বন্ধ বখৰাঁসঁ পবহেজ নহি ছননি, ভেদ খুজি জএৰাঁক ডবেঁ খাতংকিত বহৈ ছনাহ। এহেন সমাজমে স্বর্শীনা খা দেরকান্ত খপন মোনক সমর্থন কোনা কবিতথি –– উঁপন্যাসকাবক সোঝাঁ গ্র পৈঘ সমস্যা ছন। খাদর্শ খা মর্যাদাক জর্জবতাসঁ

আছন্ন অগ প্রবৃত্তিক কাবণেঁ উঁপন্যাসকাব ÷আদিকথা'কেঁ স্বখান্ত নহি রঁনা সকনাহ। সম্ভবতঃ গএহ কাবণ থিক জে রঁারঁা যাত্রাী ÷পাবো'ক দ্‌র্দশাসঁ ব্যথিত ভেনাহ, উঁগ্র নহি। বচনাকাবক ব্যথাসঁ পাঠককেঁ সামান্যতযা উঁগ্র হেরোঁক চাহী, হ্মদা যাত্রাী দেখননি জে সমাজ এখনহুঁ উঁগ্র নহি ভেন। আঠ রঁর্থক রঁাদ হেবসঁ যাত্রাী ÷নরত্তবিযা'কেঁ ঠাঢ় কেননি।

মিথিনা ক্ষেত্রাক এহেন জড় মন স্থিতিক সমাজমে কোনো প্রগতি চেতনাসঁ সম্পন্ন বচনাধর্মী নোকক মানসিক উঁদ্বেননক কল্পনা কএন জা সকৈত অছি। নির্দযী সাস্ব, স্বমতি, মনুষ্যক মোন, পুনর্রিবাহ, চন্দ্রগ্রহণ, কন্যাদান আদি পূর্রবর্তী উঁপন্যাসমে মিথিনাক স্ত্রাীক দ্‌র্দশাক চিত্রাণ ভেন, হ্মদা চিত্রাণক স্বরূপসঁ স্ত্রাী–চেতনা আ স্ত্রাীক দ্‌র্দশাক প্রতি পুরুষক রৈচাবিক উঁদ্বেননক কোনো উঁদ্যম এহি জনপদমে নহি দেখন গেন। স্পষ্টতঃ গ দোষ বচনাকাবক নহি, রূঢ়ি গ্রস্ত মৈথিন সমাজক ধর্মান্ধতাক ছন। ÷পাবো'আ ÷আদিকথা'মে সেহো স্পষ্ট রিবোধ অগ হ্মবীতিক প্রতি নহি দেখাগত অছি, হ্মদা ÷পাবো'ক যৌন উঁপৌড়ন ঔব ÷স্বশীনাক যৌন প্রতাড়ণসঁ পাঠকক মোন খিন্ন হোগত অছি। সংখ্যামে থোড়ে সহী, হ্মদা ÷রিবজূ'ক ক্রাধ আ ÷দেরকান্ত'ক ব্যথাক সহযাত্রাী অরস্স রঁনৈত অছি। গ সময সমাজক রঁদনৈত মনস্থিতিক ছন। উঁপন্যাসকাব অপন মোনক নহি ক' সকনাহ, হ্মদা সংকেত দেননি –– সমাজক রঁদনগত ধার্মিক নৈতিক মান্যতাদিক এহি সংক্রমিত কানমে (আদিকথা)÷ক◌ॉমেডী' নগঁ রঁনি সকন, মাত্রা এক অপূর্ণ ÷ট্রৈবজেডী' বহি গেন। গএহ সমকানিক যথার্থ থিক। নোক প্রেম কবগএ, প্রেমপাত্রাক নেন রেঁকন বহগএ, হ্মদা, সংস্কাবক

ससबरफानी तोड़ि नगं परॅगए। गएल आदि-आदिसँ चल अरॅगत कथा थिक, आदिकथा थिक। ...

मिथिला क्षेत्रा भारतक एकटा एहेन भूखण्ड थिक जतए परस्पर विरोधी आचरण आ व्यवस्था निःशंक भ' कए विकसित भ' रहल अछि, होइत रहल अछि। पर्याप्त संख्यामे उद्दाम प्रवाहक नदी अछि, बाढ़िक कारण ओकर प्रवाहमे उद्दाम गत्यात्मकता अरैत अछि, प्रति वर्ष कोसीक बाढ़ि, गंगाक बाढ़ि, बागमती, कमला आदि नदी सभक बाढ़िक कारण तीव्रतासँ नदी-नालाक दिशा, स्थान परिवर्तित होइत रहल, जमीनक तल परिवर्तन होइत रहल... मुदा एहि प्रबल प्रभावकारी प्राकृतिक परिदृश्यक प्रतिकूल एतएक जीवन-यापन आ आचरण शिथिल, स्वस्त, आ आरामपसन्द बनल रहल। गत्यात्मकतासँ निर्लिप्त, यथास्थिति पर अतीव आग्रह। ... विद्वताक लेल मिथिला क्षेत्रा प्राचीन कालहिसँ नामी-गिरामी रहल अछि। विद्वता आ प्रगतिशीलता आपसमे सहयात्री होइत अछि, अर्थ-धर्म-काम-मोक्षक परिभाषा बुझितहि मनुष्यमे उदारताक पाठ खुजैत अछि, आ कलुष मेटाइत अछि। मुदा, मिथिलामे सब कथुक अछैतो एहि समस्त सद्वृत्तिक लोपे लोप रहल, उनटे रूढ़ि, पाखण्ड, धर्मान्धता, अस्पृश्यता आदि भावना जड़ि आएल रहल। जीवन विरोधी जर्जर व्यवस्थाक अनुपालनमे अपन गछा आ नैतिकताकें मारैत रहल, लोक मर्यादाक प्रदर्शन हेतु छद्म जीवन प्रक्रिया चलैत रहल। अग छद्मक प्रति जड़ि आएल आग्रह एतेक बढ़ल छल, जे छद्म वास्तविकता लगैत रहल। छद्मक आँचर हटएबाक अर्थ मर्यादाक अतिक्रमण बूझल जाए लागल। राजकमल

चौधरीक समस्त रचना संसार आग उद्धृक अनारवणमे लागल रहल। आदिकथा उपन्यास सेहो, तकरे प्रमाण थिक। समाज ओहिसँ पहिने कलेको प्रगति-रोधसँ ग्रस्त भेल रहितए, तँ सम्भव छल जे स्वर्शीला आ देवकान्तक आदिकथा दुखान्त नहि भ' कए सुखान्त भ' जइतए।

÷आदिकथा' उपन्यासक अप्रतिम प्रभावोत्पादकताक मुख्य कारण ओहिमे प्रयुक्त गद्य सेहो थिक। राजकमल चौधरीक गद्य रचनामे एकटा खास रीत रहैत अछि, जे ओ अपन मन्तव्य राख' लेल घटनावलीक कोनो शृंखला नहि तकैत छथि; छोट सन कोनो प्रसंगक चारू भर एकटा परिवार, समाज अथवा मण्डली ठाढ़ करै छथि; ओकर आचरणकेँ ओकर मानसिक व्यापारसँ जोड़ैत जाइत छथि; अन्ततः आग तरहक चरित्र-चित्रणे हुनकर मन्तव्यकेँ आकार, रचनाकेँ पूर्णता, अभिप्रायकेँ सफलता, आ प्रभावकेँ उत्कर्ष दैत अछि। आदिकथा उपन्यासमे मोटा मोटी घटना तँ एतबे अछि जे कोनो विपत्ति-यात्रामे स्वर्शीला आ देवकान्तक भेँट होइत छनि, बीचमे सबँ तरहक बाग अनुराग चलैत अछि, आ अन्ततः ओ भेँट, ओ अनुरक्ति एकटा अयथार्थ आदर्शक रक्षामे पानि पर लिखल आखर जकाँ मेटा जाइत अछि। मुदा ई सम्पूर्ण ताना-बाना किछु खास-खास तरहक चरित्रसँ बुनल गेल अछि, ओहि चरित्रक माध्यमसँ राजकमल चौधरी आग उपन्यासकेँ अपन समयक एकटा महत्वपूर्ण उपन्यासक रूप देलनि अछि। आदिकथा, एकटा दुखान्त प्रेमकथाक प्रमाण होइतहु समकालीन समाजक मार्मिक आ रोधक दृश्यक कोलाज थिक, जाहिमे पंजी प्रथा, सामन्ती संस्कार आ सामाजिक पाखण्ड पर चोट अछि; जमीन्दारिएक जड़ि सँ निकलि कए जमीन्दारी

প্রথাক রিবোধ পবিরর্ত্তন–চঞ্রক সার্থকতা সারিত কেনক থছি। সমস্ত পদ–প্রতিষ্ঠা–সম্পন্নতাক থছৈত মিথিনামে স্ত্রী নেন কোন তবহক সোচ–পদ্ধতি থপনাওন জাগত বহন থছি, তকব স্পষ্ঠ চিত্রা রঁনি সকন থছি।

থাদিকথাক মুখ্য প্রকষ চবিত্রা ছথি -- থনিকদ্ধ রাঁবূ, ফনানন্দ, মহানন্দ, জ্যাতিষী নঘ্কান্ত, থা দেরকান্ত। কিছু গৌণ পাত্রা সেহো ছথি -- ডাকটৈব রৈদ্যনাথ, ধর্মশীনাক মৈনেজব, খরাঁস গন্নাদি। মুদা হিনকা নোকনিক কোনো চাবিত্রিক রিকাস উঁপন্যাসক কথাভূমিমে নহি ভেন থছি। নঘ্কান্ত জ্যাতিষীক থরতাবণা সেহো সামাজিক ধর্মান্ধতা, পাখন্ড, ভীকতা, ছদ্ম থা নির্নজ্জতা দেখএরাঁ নেন ভেন থছি। ধবমপ্রবরানী, থর্থাত্ স্বর্শীনা, থর্থাত্ দেরকান্তক সোনামামী, থর্থাত ফনানন্দ, মহানন্দক সরঁসঁ ছোটৈ সতমাগ কামোত্তেজনামে, থথরা কোনো মাদক পদার্থকি সেরনসঁ রেঁহোশ ছথি। প্রযোজন ছনৈ হ্নকব সেরা–পবিচর্যা থথরা চিকিৎসাক, মুদা জ্যাতিষী জী একটা জরান স্ত্রীক কামোত্তেজক রাঁহি–পাঁজবক স্পর্শ পএরাঁ নেন, ফসিেত নিপ্সা হৃপ্ত কবরাঁ নেন, থপন ফোঁক থস্মিতা সমাজমে উঁচ কবরাঁ নেন, থা নোক পব থপন পাখন্ডক মনোরৈজ্ঞানিক দরাঁর রঁঢ়এরাঁ নেন ঘোষিত কবৈ ছথি, জে স্বর্শীনা পব ওএহ প্রেতনী সরাব ছনি, জে তীন রঁর্খ পহিনে হ্নকা হবিদ্বাবমে ভেটৈন বহনি -- ঔ রাঁত, জ্যাতিষীকেঁ ভগরতী কহি দেনে ছনি...। মুদা উঁপন্যাস মধ্য বাজকমন চৌধবী এহেন একহ্ ছদ্ম চবিত্রাকেঁ ক্ষমাদান নহি দেননি থছি। ... জে প্রেতনী ছনহে নহি, তকবাসঁ মান–মন্রহাব জ্যাতিষী কবৈত বহনাহ, শ্রিস্রব স্থানীয হোগতহুঁ, নজবিএ থা স্পর্শে টৈসঁ সহী, স্বর্শীনা

সন বসরন্তীক বসপান করৈত বহলাহ, এহী রীচ হ্নকব পোন খ্জি গেন, ও নাঁগবি স্বৈকা ক' পড়এনাহ।

অগ চবিত্রাক প্ররেশ উঁপন্যাসক কথাভূমিমে অচানক ভেন অছি। হিনকব অরতাবণা নহিযোঁ হোগতএ তঁ মূন কথা পব একব কোনো অসবি নহি হোগতএ। ফদা জেঁ কি উঁপন্যাসক গতি একরৈখিক নহি হোগত অছি, রহ্ত বাস সাঁগহ-পাতী সংগ নেনে চনৈত অছি, কহী তঁ উঁপন্যাস কম্পৃষ্টবক নর্টনি এন্টী রাযবস হোগত অছি, অথরা মনাহক মহজান হোগত অছি, জে সৌঁসে সমাজ ব্যাধি, অথরা সৌঁসে পোখবিক মাছ, কাছ, সাঁপ, সনগোহি, সোঁসি, নকাব সমেটনে চনৈত অছি। অহী প্রক্রিযামে বাজকমন চৌধবী ÷আদিকথা'মে কথা তঁ কহননি অছি মামি-ভাগিনক অন্বঞ্জিক; ফদা রীচ-রীচমে সমস্ত সামাজিক ব্যাধিক গনাজ করৈত গেনাহ অছি। জ্যাতিষী নঘ্কান্তক পাখন্ড উঁজাগব কবরঁ আ সমাজকেঁ অন্ধরিশ্বাসসঁ ফক্ত কবরঁ আরশ্যক ছন, তেঁ নঘ্কান্তক অরতবণ ভেন। এহি অরতাবণা নেন কোনো সংযোগ-কথা নহি গঢ়ন গেন, সহজতাসঁ ও মূনকথাক অংশ রনি গেন অছি -- সে উঁপন্যাসকাবক রিশিষ্ঠ কৌশন থিক।

মহানন্দ সামন্তী খানদানক নর উঁম্রক যুরক ছথি। অনিকদ্ধ রাবূক ছোট রেটা, স্বশীনা সন স্বকামাক সতৌত রেটা, হ্নাকানন্দক সহোদব আ দেরকান্তক মমিযৌত। ছুআ-ছূত, রস্কা সংঘর্ষ সমাজসঁ মেটা দেরাক আগ্রহী আ সামাজিক হ্বীতিক উঁন্মূননক শ্রেয নের' নেন তপেব অপবিপক্ক রিদ্রাহী। হিনকব পবিচয নেন উঁপন্যাসকাবক পাঞ্জিক উঁপযোগ কবী তঁ -- ÷মহানন্দক শবীবমে এখন সমাজ-স্বধাবক বক্ত-প্ররাহ দৌড় বহন ছগন। উঁর্দূ-ভাষামে একটা কড়ী ছগ -- নরঁ

ঋসনমান সতবহ ৱৈব নামজ পঢ়গএ -- সে মহানন্দ সতবহ ৱৈব নামজ পঢ়এ চাহগ ছথি। চাহগ ছথি জে যুগ-যুগান্তবক ধার্ম্মিক সংস্কাবকেঁ রিদ্রাহক এক্ক ধক্কাসঁ তোড়ি দী।' -- মহানন্দ জমীন্দাবী সংস্কাবসঁ উঁরিযা তঁ গেনাহ খছি খরস্স, পবিরর্ত্তন চাহি ছথি, তাহি নেন উঁদ্যমো কবএ চাহি ছথি, ঋদা চেতনা জাগ্রত নহি ছনি। মহানন্দ সমকানীন মিথিনাক প্রতিক্রিযারাদী নৌজরানক প্রতিনিধি জকাঁ এহি উঁপন্যাসমে ঠাঢ় ছথি, জে নক্ষ্য নির্ধারণ খা সংধান-সমাযোজন কএনহি রিনা ব্যরস্থা রিরোধমে নাগি জাগ ছথি। পবিরর্তনক এতরৈঁ ঠৌ রাঁঠ রূঁঝন ছনি জে খাঁগনমে তথাকথিত নিম্নজাতীয নোক পাত ওছা কএ খা নিখএ।... নিতান্ত খপবিপক্ক খা ক্ষণোন্মাদী নোক ছথি মহানন্দ। খরক্তো খা চিন্তনরিহীন রিরোধক সংগ পবিরাবসঁ ভিন্ন ভ' জএরাঁক রাঁত সোচৈ ছথি। মহানন্দক খাচবণক চিত্রা এক দিশ মিথিনাক যুরা বৃন্দক রাস্তরিক মানস নোকক পবিচয দৈত খছি, তঁ দোসব দিশ ওহি রস্থাকেঁ স্বচিন্তিত রিরোধক প্রেবণা খা ননকাব সেহো।

খনিকদ্ধ রাঁবূ বামপুব গামক সামন্তী সংস্কাবক উঁচ ঝন-রংশ, জাতি-পাঁজিক রিশিষ্ঠ নোক ছথি। চাবিম পনমে প্রগল্ভা, কামাত্তবা স্ত্রীক পতি ভেনাহ। এক পুত্রারতী পনীক স্বস্থ্যরাস, খা দোসব পনীসঁ এক পুত্রা তথা এক পুত্রীক প্রাপ্তিক পশ্চাতহ্ তেসব রিরাহক নোভ সম্ববণ নহি ক' সকনাহ, খধেব হোএরাঁ ধবি ওহি পনীকেঁ পুষ্পরতী নহি ক' সকনাহ। স্বযং সাঠি পাব ক' কএ মামিনা মোকদমামে তল্লীন বহি ছথি। খাএরৈঁ-পীরৈঁ, বাস-রিহাব, জ'ব-জমীন, ম'ব-মোকদমাক রাঁদ সময রঁচৈ ছনি তঁ সব-ঝঞ্জটমক খাদব খা নরোঢ় । পনীক

আক্তো-পাননমে নগরেঁ ছথি। অপন কৌলিক সংস্কার আ পূর্বজক অকবাঁলক গর্বসঁ ফূলল রহৈ ছথি। এহিসঁ বেঁসী হুনকর কোনহুঁ আচরণকেঁ উপন্যাসকার মহত্ব নহি দেলনি অছি। জমীন্দারী সন রুগ্ণ ব্যবস্থাক এক বৃক্ষ যা রুগ্ণ ব্যক্তিকেঁ এহী তরহেঁ কোনো নব চেতনাক কথামে উপেক্ষা কএল জেবাঁক চাহী ছল। ÷গহরী মার কবীর কী, দিল সে দিয়া নিকাল।' অতীত-ব্যতীতক হেল্টসীমে ভোতিআগত আমেহীন লোককেঁ বস্তুতঃ এহিসঁ বেঁসী মহত্ব নহি দেল জেবাঁক চাহী। অন্ততঃ উপন্যাসক পাঠককেঁ অনুমান তঁ হোউ, জে মানবেচ্ছাক প্রতি অনুদার আ সম্বেদনহীন লোকক গএহ দুর্গতি হোগত অছি। ভৌতিক সুখমে মুগ্ধ রহতাহ, মুদা পহাড় া নদীক জীবন্ত ধারকেঁ, কামেচ্ছাক জ্বালামুখীকেঁ বাঁন্হি ক' রখতাহ। ধিক্কার ...

ফলানন্দ অনিরুদ্ধ বাঁবূঁক পহিল স্বর্গীযা পত্নীক একমাত্র পুত্র ছথি। বযস করীব-করীব অপন ছোটকী সতমাএক বরাবর ছলি। মূল কথাক বিস্তারমে হিনকর উপস্থিতি থোড়কে সহাযক ভেল অছি। অপনা সমযক মেধাহীন ছাত্র আ নাটক-নৌটংকী কম্পনীক কলাকার-কলারিনীক সংগ বৌআ কএ ঊর্জস্বিত জীবন সমাপ্ত কেলনি, আব গামমে পৈতৃক সম্পতি কূষ্টি কএ ভাঁগ আ বিলাসমে জীবন বিতবৈঁ ছথি। কাযর, ক্রোধী, আ অয্যাশী প্রবৃত্তিক পাত্র ছথি। দ্রৌপদী সন সুশীল স্ত্রীক দেবতা ছথি। স্ত্রী জাতিকেঁ পুরুষক আশ্রিত আ গুলাম বুঝৈ ছথি। পত্নী তবাহ রহৈ ছলি। খূন-খুনাময ধরিক স্থিতিমে পহুঁচি জাগবলা তামসী ছথি। ক্রোধমে কিছু ক' লেতাহ। নাচ-নটুআমে নিপুণ রহতাহ। দেবকান্তক প্রতি অপন সতমাএক অনুরক্তি নীক লগং লগৈ ছনি। সমাজক

নোক তঁ গলো কহরাঁমে সংকোচ নহি করৈ ছনি জে ফনানন্দ খপন স্ত্রীকেঁ নৈহব পঠা ক' সতমাগ সংগ বহি ছথি। পিতাক মৃত্যুক তকোন বাঁদ ও স্বশীনাকেঁ খপন খাশ্রিত বূঁসএ নগনাহ, হ্নকব গহনা জেবঁব বৈঁচি কএ খয্যাশী কবরঁ হ্নকব স্বভার ভ' গেননি, ফদা সতমাগক উঁচিতো খর্চ পব খাঁক্ষশ নগএবাঁক প্ররৃত্তি খাওব উগ্র ভ' গেননি। নম্পষ্ট এহেন জে স্বশীনা সংগ তীর্থ কব' গেনাহ তঁ হ্নকব খাচবণ দেখি ধর্মশীনাক মৈনেজব ধবি স্বশীনাকেঁ ফনানন্দক নম্পষ্টপনীক কথা কহ' খএননি।

একটা সামন্তী সংস্কাবক ব্যক্তিক ফনমে খাওব কেহেন সন্তান হোগতএ! সম্পত্তি ছননি তঁ পিতা সামাজিক স্থীহৃতিক সংগ নম্পষ্টপনী কেনকনি, সময বঁদনন তঁ ফনানন্দ ওকবা খাওব রিহৃতি ধবি পহুঁচৌননি।

খগ উঁপন্যাসমে বাজকমন চৌধবী জমীন্দাব পবিরাবক সদস্য নোকনিকেঁ জ্যামিতীয খাহৃতি পব ঠাঢ় ক' কএ সামন্তী সংস্কাব, পঁজী-প্রথা খা মিথিনাক স্থগিত চিন্তন প্রণানীক ধজ্জী উড়। বহন ছথি। এহেন রিহৃত, রীভসে রূপ ভবিসকে কতহ্ ভেটএ। মহানন্দ, ফনানন্দ, স্বশীনা--তীনূ ত্রিভুজক তীন কোণ পব ঠাঢ় ছথি। কেন্দ্রমে বৈঁসন ছথি স্বযং খনিকদ্ধ বাঁবূ, বৈবঁস, নাচাব, খানদানী পবাক্রম খা কৌনিক মর্যাদাক গোবঁব গীজৈত। খা বাঁহবমে ঠাঢ় ছথি দেরকান্ত। ত্রিভুজ খা ত্রিকোণ--দনূসঁ সম্বেদনা, এক কোন পব খন্নবক্তি, ফদা প্ররেশ রর্জিত, খমর্যাদিত...। রিচিত্রা মান ছন মিথিনাক! খশীক্য খনিকদ্ধ বাঁবূ কেন্দ্রমে বহিতহ্, কতহ্ নহি বহনাহ। খনিকদ্ধ বাঁবূক দেহারসান হোগতহি জমীন্দাবী পানো থমৈ নেন ফনানন্দ কেন্দ্র দিশ নপকৈ ছথি। ত্রিভুজ টূটি জাগত খছি, ফদা দেরকান্ত তথাপি

বঁহবগএ বহি জাগ ছথি। একটা এাধী, নশৈবী খা নম্পষ্ট পতিক পনৌ দ্রৌপদী কতহু নহি ছথি, কিছ নহি ছথি। ওা মিথিনাক খাদর্শ খা মর্যাদা ছন, জকবা, বাজকমন চৌধবী জীরন নেন খযথার্থ মর্যাদা সারিত কেননি।

নাযক দেরকান্ত স্বশিক্ষিত, নিরিষ্ঠ, কর্মনিষ্ঠা খা জ্ঞানী যরক ছথি। হাগ
কোর্টমে কার্যবত রিশিষ্ঠ ব্যক্তিক পুত্রা খা প্রতাপী বঙাসক পৌত্রা ছথি। কনাপ্রেমী, কনাকাব, প্রতিষ্ঠিত, সাহসী, উঁদাব খা পবোপকাবী। স্বশীনাক রুগ্ন পতি খনিরুদ্ধ বাঁবূঁক ট্রেইন গাড় ী কমনদহমে ফঁসন ছননি, ও নোকনি কে ছথি, তকব সূচনা দেরকান্তকেঁ নহি ছননি, তথাপি হুনকা সহযোগ দেরঁ; স্বনতানগংজমে নাহসঁ ডূরৈত দম্পতিকেঁ রঁচাএরঁ; ফনানন্দক সংগ স্বশীনাক প্ররাসক জানকাবী বহিতহু, হুনকা খার্থিক সহযোগ দেরঁ -- ওা সরঁ খাচবণ দেরকান্ত উঁদাবতা খা মনুষ্যতাক পবিচাযক থিক। একব খনারা দেরকান্তক গম্ভীব খা জিদ্দী স্বভারক চিত্রাণ সেহো ভেন খছি। ফদা দেরকান্তক জিদসঁ হুনকব খপন জে কিছ রিগড়ি গেন হো, খানক কিছ নহি রিগড়ননি।

পবংচ মূন রাঁত খছি স্বশীনা খা দেরকান্তক খন্তবঙারস্থাক মনোরিশ্লেষণ। খগ রিশ্লেষণমে উঁপন্যাসকাব সহজহিঁ চমকৃেত কবৈ ছথি। খগ খন্তবঙিক কথাকেঁ মাঁসন খা উঁন্মাদক রঁনা ক' পাঠকক কামেছা খা ফসো রঁঢ়রৈঁ নেন নহি; সমাজ ব্যরস্থামে চনৈত খযথার্থ খাদর্শ খা মর্যাদাক প্রতি পাঠক/ভারককেঁ উঁদ্বেনিত কবৈ নেন। এহি চিত্রাণমে বাজকমন চৌধবীক মনোরিশ্লেষণামেক শিল্প

अत्यन्त प्रभावकारी साबित भेलनि अछि। उपन्यासमे मानव जीवनक यथार्थक आख्यान होइत अछि, जाहिमे घटना चक्र आ स्थान-काल-पात्राक आश्रय लेल जाइत अछि। मूल कथाक संग-संग कतोक आनुषंगिक कथा अबैत अछि आ अइ सभ क्रियामे चरित्रा-चित्राणक अमूल्य योगदान होइत अछि। चरित्रा-चित्राणेक माध्यमे कथानकमे प्रवाह अबैत अछि आ लक्ष्य प्राप्तिक बाट सोझराइत अछि। उपन्यासक पात्राक चारित्रिक फलक जतेक सोझराएल रहत, ओकर अभिक्रिया आ आन पात्राक संग कथोपकथन स्पष्ट आ गत्यात्मक हैत। जँ कि कोनो व्यक्तिक एक-एक आचरण ओकर मानसिक स्थितिक परिचायक होइत अछि, चरित्रा चित्राणमे मनोविश्लेषणक महत्व सर्वोपरि होइत अछि।

स्वातन्त्रयोत्तर कालक भारतीय साहित्यमे एहेन देखल गेल अछि जे रचनाकार लोकनि अपन हरेक पात्राक आचरण ओकर मनोविश्लेषण करैत अंकित केलनि अछि, राजकमल चौधरी अइ काजमे सर्वाधिक अग्रगामी, प्रयोगधर्मी आ लरतामूलक साबित भेलाह अछि। चरित्रा चित्राणक प्रसंग प्रेमचन्द सेहो एहि तथ्यक समर्थन दै छथि जे चरित्रा चित्राण जतेक स्पष्ठ, गतिशील आ विकासमान रहत, उपन्यास ओतबे बेसी प्रभावकारी हैत। प्रेमचन्द गहो स्वीकारललनि जे मनोवैज्ञानिक सत्य आधार पर कथा उत्तम कोटिक हैत। राजकमल चौधरीक सम्पूर्ण कथा संसार तँ मनोविश्लेषणसँ भरल अछि, आलोच्य उपन्यास ÷आदिकथा'क तँ मूल आधारे मनोविश्लेषण अछि। कहै लेल ई कथा स्वर्णलता आ देवकान्तक प्रेम कथा थिक, मुदा दू मेसँ एको कखनहुँ किनकहु मुँह फोड़ि कए नहि कहलखिन जे हम अहाँसँ प्रेम करै छी।

सौंसे समाजमे केओ ई नहि घोषित केलनि जे दुनूमे प्रेम अछि। समाज, आ कि फुलानन्द, आ कि रतिनगर रानी (अनिरुद्ध बाबूक दोसर पत्नी, स्वर्णलताक माँझिल सौतिन, महानन्दक माय, फुलानन्दक सतमाय) अथवा अन्यव्यक्तिकेँ सोने मोन छिनरपन माननहि। मुदा, ई कथा एकटा दुःखान्त प्रेम-कथा थिक। सम्पूर्ण कथा सर्वत्र मोनेमे रहैत, रढ़ैत रहल। पात्राक व्यक्तित्व, प्रवृत्ति, क्रिया-कलाप, वातावेक मनोवेग आदिक चित्रणसँ घटना चक्र, परिस्थिति आ परिवेश स्वगठित आ प्रभावकारी भेल अछि। पात्राक इच्छा-अनिच्छा, पसिन-नापसिन, क्रोध-घृणा-प्रेम, राग-अनुराग, भोगेच्छा आदिसँ कथानकमे स्वाभाविकता आ विश्वसनीयता आएल अछि।

कोनो मनुष्य प्रेम करए, घृणा करए, मारि करए, समर्थन आ विरोध करए, पूजा करए, व्याभिचार करए--ई सभटा आचरण ओकर जीवन दर्शनसँ निर्धारित होइत अछि, जकर जानकारी ओकर मनोविश्लेषणसँ भेटैत अछि। परिवेश, प्रशिक्षण, संस्कार, प्रतिभा, अनुभव आदिक समन्वित प्रभावमे कोनो व्यक्तित्व अपन जीवन दर्शन दिढ़ करैत अछि; मुदा मनुष्य जाति जेँ कि सामाजिक पशु थिक, कतोक परिस्थितिमे ओकर समस्त जीवन-दर्शन विवश भ' जाइत अछि।

मनोविज्ञान कहैत अछि जे कोनहुँ क्रियाकेँ निष्पादित करबामे कर्त्ताक धारणा महत्वपूर्ण होइत अछि। मनुष्यक आजन्मक संस्कार, अतीतक समस्त विसरल घटना, जीवन भरिक अनुभूति ओकर अवचेतनमे विराजमान रहैत अछि, समय पाबि कए ओएह सभ बात ओकर प्रवृत्ति, आचरण आ धारणाकेँ निर्देशित करए लगैत अछि। आदिकथा उपन्यासक विभिन्न चरित्राक

মনোরিশ্লেষণমে ওা সমস্ত তত্ব প্রভারী খছি। এহি উঁপন্যাসক বচনাকান ধবি ভাবতীয স্বাধীনতাক এক দশক রীত চ্কন ছন। হ্মদা মিথিনাক নোক--কী পল্ডিত, কী মূর্খ; কী সামন্ত, কী মজূব...খাদিম সভ্যতাক মানসিকতামে জী বহন ছন। প্বকষরাদী খহংকাবক এহেন হোঁক প্রদর্শন তঁ খাদিমো যগমে নহি ছন, জতএ স্ত্রীকেঁ বঁচাক জন্ম দের' বঁনা মশীন; প্বকষক কামেষ্ছা খথরা হ্মসো শান্ত কব' বাঁনা যন্ত্রা; ঘব-খংগনা সম্হাব' রানী পবিচাবিকা; খা প্বকষক হ্মঁহেঁ প্রশংসা সূনি প্বনকিত বহ' রানী পোস্বখা পশ্বক খনারা খাওব কিছু নহি বূঁঝন জাগত হো। খাস্ববী ভোগ-রিনাস খা ঢোঁগ-পাখল্ড-খন্ধরিশ্বাস-ধর্মভীকতাক প্ররংচনামে সৌঁসে মিথিনা ডূবঁন ছন। জখন কি সৌঁসে দেশক প্রগতিশীন সমাজমে জীরনক জটিনতা, রিচিত্রাতা পব চিন্তন-মনন
হেঁনসঁ ভ' বহন ছন। নোক খাধ্নিক ভাররোঁধসঁ জীরনকেঁ দেখএ নাগন ছন। মানর জীরনক উঁজ্জ্বন খা কন্বষ ভার পব ত্তননামেক চিন্তন হোখএ নাগন ছন। এহনা সমযমে মৈথিনীমে প্রভারকাবী উঁপন্যাস নিখরাঁক একহি টা শিল্প ভ' সকৈ ছন--সে ছন মনোরিশ্লেষণামেক চবিত্রাংকিনসঁ রস্তু স্থিতিকেঁ নাঁগটি কবরাঁক কৌশন। হমবা মনোরিশ্লেষণ কেনে হবিমোহন ঝা ÷কন্যাদান'মে মৈথিনক রিদূষকীয খাচবণক ধজ্জী উঁড় া দেননি, হ্মদা মৈথিন নোকনিকেঁ ওহেন প্রহাবক ব্যংগ্য, হাস্য বুঁঝেননি। খাচার্য প্ররব নোকনি উঁদাবতাপূর্বক হ্নকা হাস্য সম্রাটক উঁপাধি দ' দেনখিন।

রস্তুতঃ ÷খাদিকথা'ক কথ্যা এহনে খছি জে মনোরিশ্লেষণক খনারা দোসব কোনো সবিখাএন রাঁটি

তাকলো নহি জা সকৈ ছল। যৌৱনক অষ্টৈ দৃপহবিযামে কোনো স্ত্রীকেঁ নিশ্চিত ৰূপেঁ কোনো সম্পূর্ণ পুৰুষক ছাহবি চাহী; পুষ্পৱতী–ফলৱতী হেবাঁ নেন আত্তব অথৱা ঋদিত–পুলকিত হেবাঁ নেন উস্নেক–উষ্মেন্ন কোনো হবিষব লতাকেঁ কোনো মজগূত ডাবিক আসবা চাহী। স্বৰ্শীলা এহলে উত্তপ্ত স্ত্রী আ এহলে অলসাএল লতা ছথি; হ্নকা দেৱকান্ত চাহী ছলনি ঋদা অনিৰুদ্ধ ভেষ্টৈলখিন; চাননক গাছ চাহী ছলনি, ঋদা ভাঁটি–ভঁগৱৈযা ভেষ্টৈলখিন। স্ত্রীক জীৱনমে অৰ্থসঁ ৱেসী সাৰ্থক ৱহ্ত কিছু হোগত অছি, সে ৱাঁত মৈথিল প্ৰতিনিধি অনিৰুদ্ধ, হ্নকব স'ব–ফৰ্ষ্ম, সম্বন্ধী–সৱোকাবী নহি বূঝি বহল ছলখিন; এতে ধবি জে ফলানন্দাকেঁ তকব আহিস নহি ভেলনি।

গম্ভীবতাপূৰ্বক দেখল জাএ তঁ অগ উপন্যাসক অধিকাংশ ঘটনাচক্র চবিত্রাক মোনহিমে ঘটিত ভেল অছি। সভ ক্যা অপন মন্তব্য সংকেতহিমে ব্যক্ত কেললি অছি, কিলকহ্ ধাবণা স্পষ্ঠ ৱোনীমে স্পষ্ঠ নহি ভেল অদি।

অনিৰুদ্ধ ৱাবূ সল অশিক্য আ বৃদ্ধ জমীন্দাবক ভৌতিক সম্পদা, সাংসাবিক অসাব–পসাব, সতৌত সন্তানক কাবণেঁ ৱেটা, পুতোহ, ধী, জমাগ, নাতি–পোতাসঁ ভবল–পুবল ঘব পাৱিযো কএ কামদগ্ধা স্বৰ্শীলা অতৃপ্ত ছথি। অতৃপ্ত কামেচ্ছাক দমন হেতু হফীমক সেৱল কবএ লগৈ ছথি। উত্তজনামে কএল আচবণক সূচনা পাৱি লজা জাগ ছথি, কামাত্তবা প্ৰবৃত্তিক হোগতহ্ সামাজিক আদৰ্শ আ কৌলিক মৰ্যাদাক পাললমে অপনাকেঁ ধ্বস্ত কৱৈত বহি ছথি, নহুঁ–নহুঁ জবৱৈত বহি ছথি। ৰুগ্ণ পতি সংগ যাত্রা কৱৈত অচানক দেৱকান্তসঁ ভেঁষ্টৈ হোগ ছলি। দেৱকান্তক যৌৱল, স্বাস্থ্য, পৱাক্রম, কলা প্ৰেম, উদাৱতা

आ सौहार्द देखि हुनकासँ मोने प्रेम करए लगै छथि। परम शिष्ठ, धीर, प्रशान्त सुशिक्षित, उदार आ दृढ़ प्रतिज्ञ देवकान्त मोनमे सेहो प्रेमक तरंग अहिना उठैत अछि। आ, दुनूक प्रेमांकुर तीव्र गतिसँ पसर' लगैत अछि। तदा जहिना दुनूक मामि-भागिनक सम्बन्ध-कथा सुनिश्चित होइत अछि। प्रेमक उद्वेग भीतरे-भीतर सुनग' लगैत अछि। किन्तु प्रेम होइत अछि आगि, ओकरा पर कतबो झाँपन देल जाए ओ आओर तीव्रतासँ, अधिकाधिक उत्तापसँ प्रज्ज्वलित होइत अछि। प्रेमक ई तीव्र उत्ताप सामाजिक मर्यादाक जर्जर सूत्राक कारणें अन्ततः सुखान्त परिणति धरि नहिएँ पहुँचैत अछि। ऐँठ होबि कए अंग प्रेमाभिव्यक्तिक अवसर धरि दुनूकेँ हाथ नहि अबैँ छनि। दुनू भीतरे-भीतर सुनगैत रहै छथि। मनोविश्लेषणक आधार पर दुनूक आचरणमे देखल जा सकैत अछि जे दुनूक मोनमे आगि कोन गतिसँ धधकि रहल अछि।

सौन्दर्यक प्रति आकर्षण मनुष्यक स्वाभाविक आचरण होइत अछि। चाहिओ क' कोनो व्यक्ति सौन्दर्यक उपेक्षा नहि क' सकैत अछि। सौन्दर्य बोध, आ अनुरक्ति कर्मक अपन शास्त्रा आ विधान होइत अछि, जे अलग-अलग प्राणीक आन्तरिक-बाह्य परिस्थिति आ मनोदशासँ निर्देशित होइत अछि। भूखसँ व्याकुल कोनो बरदकेँ लहलहाइत घास, आ कि सूखल नार-पुआरमे सौन्दर्य भेटैत, अनुरक्ति हेतै। तदा घास अथवा नार-पुआरक ढेबार, आ कि बरदक गरदनिक पगहा, आ कि ऐँहमे लागल जारी...अंग भोगक बाधक बनि सकैत अछि।...सुशीला परम सुन्दरी छथि। वयस, तदनुकूल सौन्दर्य, यौवन, आचरण, ओज, भाव आदि

ভাদৱক ৰাঢ়ি জকাঁ, উমড়ৈত মেঘ জকাঁ উপৰৌস ক' বহৈত ছনি। ব্ৰাহ্ম মুহুৰ্ত্তমে নিশ্চিন্ত নিদ্ৰা আ অনস ক্ষুদ্ৰামে হুনকা সূতন দেখি দেৱকান্ত দিব্য-দৰ্শনক অনুভৱ কেননি। নাৰী-সৌন্দৰ্যক এহেন দিব্য-দৰ্শন হুনকা জীৱনক পহিল অৱসৰ ছল, একটা স্বমধুৰ স্বপ্ন ছল। বস্তুতঃ --হৃদয কোনো সীমা-বন্ধন নহি মানৈ'এ। কহিযো নহি মানি আএল অছি।-- দেৱকান্তক মোনমে প্ৰেমক নহৰি উমড়ৈত বহৈ ছনি। স্বশীনা মামীসঁ ভেঁটৈ কৰৱাক গছা হোগত বহৈ ছনি, তৈ নে' মাতুক (বামপন্থৱ) জাএ পড়তনি। ক্ষুদা বামপন্থৱ নহি জেতাহ। গছা হোগ ছনি, ক্ষুদা অপনহি গছাসঁ ভয হোগ ছনি। মাতুক-পৈতৃক মৰ্যাদা পৰ, অথৱা স্বশীনা মামীক শীন পৰ, অথৱা অপন ব্যক্তিত্ব পৰ আঁচ নাগি জেৱাক ভয হোগ ছনি। মোনে-মোন স্বনগৈত বহৈ ছথি, ক্ষুদা মাতুক জা ক' সোনাঁ-সোনা স্বশীনাকেঁ কহি নহি অৱৈ ছথি--মামী, সোনা মামী, হমৰা অহাঁসঁ প্ৰেম ভ' গেন অছি। হম অহাঁ ৰিনা নহি বহি সকৰ। অহাঁ সন উৰ্ৱৰ উৰ্জস্বিত, উত্তেজনামযী, কামাতুৰা ৰূপৱতীক ৱেগময জ্বাৱকেঁ হমৰ বৃক্ষ, অশিক্য মামা নহি থাম্হি সকতাহ, হম থাম্হি নেৱ। অহাঁ হমৰা সংগ চনূ। সংগ-সংগ বহৱ। জীৱনকেঁ জৰাএৱ নহি, স্বাহা নহি কৰৱ, জীৱ...।

ভয হোগ ছনি। মৰ্যাদা আ সামাজিক আদৰ্শক। আদৰ্শ আ মৰ্যাদা ৰক্ষাক চপেটমে জৰৈত বহৱাক ও উকেটে ৱিৱৰণ বস্তুতঃ পাঠকক মোনমে অগ অযথাৰ্থ আ হোঁক পৰম্পৰাক প্ৰতি ঘৃণা উপেন্ন কৰৈত অছি। ...তুলনা কৰৈত দেখী তঁ অগ মামিনামে স্বশীনা

ঝখব ছথি, দেরকান্ত পবম নজকোষ্টব, সংকোচী ঋা ডবপোক ছথি, স্বনতানগংজমে ঋজগৌরীনাথ মন্দিবক সীঢ়ী চঢ়ৈত একহি সংগ স্বশীনা সোচৈ ছথি কহ্না পল্ডাক মঁুহসঁ ৰহবাএ জে ÷পতি–পনীক ঙা জ্গন জোড়ী ঋমব হো', ঝদা দেরকান্ত ভযভীত ছথি জে জঁ পল্ডা এহেন ৰাত কহি দেনক তঁ নাজেঁ মাবি জাএৰ। ... সম্পূর্ণ উঁপন্যাসমে এহেন প্রসংগ কতোক ৰেব ঋাএন ঋছি, জতএ দেরকান্ত সংকোচী ঋা স্বশীনা ঝখব ৰ্নাগ ছথি। উঁপন্যাসকাবেক পংক্তিমে কহী তঁ রস্তুতঃ ––স্বশীনাক জীরন ভেনগন, সমুদ্রক মিননাকাংক্ষামে মগ্ন তীব্রগামিনী গংগাক জীরন। দেরকান্তক জীরন ভেন, ঋশান্ত চিবপ্রতীক্ষা রিমগ্ন, তবংগাযিত কিন্তু ৰাহ্যরূপেঁ পবম ঋচংচন সমুদ্রক জীরন। দ্নূ জীরন এক ঋরৰুদ্ধ ঋাশাক পাতব তাগসঁ ৰান্হন...উঁপমা দেৰাক ঙা কৌশন পবম ব্যাখ্যেয ঋা পবম প্রশংসনীয ঋছি।

দবঋসন ঋগ কথামে পাত্রা টৌ নহি, প্রেম শাস্ত্রাক সূক্ষ্মতম মনোরিজ্ঞানক চিত্রাণ সেহো ঋত্যন্ত ব্যাপক, চমকৃত ঋা প্রভারকাবী রূপেঁ ভেন ঋছি। দেরকান্ত সোনা মামীসঁ ততে ৰেসী প্রেম কবএ নাগন ছথি, জে ঋাওব ঠাম ও জতে ৰেসী ব্যারহাবিক ঋা ৰুদ্ধিমান হোথ্, ঋগ প্রেম–কথামে ঋত্যন্ত ডবপোক, তর্করাদী ঋা সংশযরাদী ভ' গেন ছথি। সৌংসে কথামে স্বশীনাক সমর্পণ, স্বশীনা পব ঋপন ঋধিকাব, সমর্পণক সংকেত ঋা ঋাদর্শ–মর্যাদাক গ্ণা–ভাগ কবৈত বহি জাগ ছথি। খন সোচৈ ছথি জে স্বশীনা পব হ্নকব কী ঋধিকাব ছনি ? ফেব সোচৈ ছথি, ঋধিকাব নহি ছনি তঁ ঋপন রীমাব পতিকেঁ ছোড়ি, হ্নকব সেরা–স্বশ্রূষা নেন ও কিঐ পহুঁচি গেনীহ ? খন সোচৈ ছথি––নাবী

কোনো প্বৰুখসঁ প্রেম নৰ্গ ক' সকৰ্গএ ? এক প্বৰুখ পব ৰিশ্বাস নৰ্গ ক' সকৰ্গএ ? কী নাবী মাত্রা ছনৰা থীক ? --ওনা ৰিবহ খা ব্যথাক উদ্রেকমে এহি তবহক ৰাঁত কোনো ব্যক্তি জঁ সোচি নিখএ তঁ তকবা স্ত্রীক প্রতি খমর্যাদিত ধাবণা নহি বুঝবাক থিক। ও স্বযং একব উত্তব দৈ ছথি জে সোনা মামীক খাচবণ মিথিনাক ÷সভ্যতা, সংস্কৃতি, পবম্পবা খা ধর্মক একটা পবম উদাহবণক খভিব্যক্তি' থিক। ÷সোনা মামী পূর্ণতঃ ভাবতীয সম্পূর্ণতঃ মৈথিন নাবী ছনীহ... জে খপনে টুটি জাএত, ঝুদা, পবম্পবাক পাতব সঁ পাতব তাগকেঁ নৰ্গ তোড়ত... । '

খনগসঁ কহবাঁক প্রযোজন নহি জে কোনো প্রবৃত্তি, খাচবণ খাদিকেঁ বাজকমন চৌধবী জাতিৰাদী, সম্প্রদাযৰাদী খথৰা নিংগৰাদী নহি মানৈ ছথি। এক দিশ সোনা মামীক প্রতি এতেক উঁচ ধাবণা বখৈ ছথি দোসব দিশ খপন মামক দোসব স্ত্রী হবিনগবৰানীক কনবাঁক কনা দেখি সোচৈ ছথি--কহবঁ খসম্ভৰ খছি জে হবিনগবৰানী কানি বহন ছনীহ, খথৰা খভিনয কএ বহন ছনীহ, নাটকৈ পসাবি বহন ছনীহ। প্রত্যেক মৈথিন-স্ত্রী জকাঁ গহো কানবঁ-শাস্ত্রামে পূর্ণ স্ববক্ষা, পাবংগতা ছথি। ওহ্নাঁ কানবঁ-খীজবঁ, ঘানা পসাববঁ, নাটকৈ কববাঁক খভ্যাস সভ স্ত্রীকেঁ বহগ ছগ। স্ত্রী চাহে গন্দ্রজীত মেঘনাদক, শিব নগ ৰিনাপ কবগত দানৰ কন্যা স্বনোচনা স্বন্দবী হো, খথৰা খর্জ্বন প্বত্রা খভিমন্যুক শিব নগ ৰিনাপ কবগত পান্ডৰ ঝুনৰধূ উত্তবা-স্বন্দবী, সভ স্ত্রীকেঁ কানবঁ খবঁগ ছগ, কনামেক ঢংগসঁ রুদন কবএ খবঁগ ছগ।

খগ উপন্যাসমে জতবেঁ ৰিৰিধতা প্বৰুষ পাত্রামে

অছি, তাহিসঁ কনেকো কম স্ত্রাী-পাত্রামে নহি অছি। মুখ্য স্ত্রাী পাত্রা সব ছথি -- স্বর্শীনা, হবিনগবরাঁনী (অনিরুদ্ধ বাঁবূক তৃতীযা আ দ্বিতীযা), দ্রাৌপদী (হ্নানন্দক পনৌ)। হবিনগব রানীক উঁপস্থিতি সৌঁসে উঁপন্যাসমে ওহনে হ্নটিন আ নাটকীয অছি, জকব চর্চা উঁঞ্জ উঁহ্নবণমে অছি। মৈথিন স্ত্রাীক সমস্ত দুর্গুণ হিনকব আচবণমে ভবন ছনি। হ্নূটেন ঢোন, রিন পেনীক নোটা, চুগনখোবনী, ভাভট পসাবৈমে দক্ষ, সৌতিনকেঁ দুষ্চবিত্রাা সারিত কববাঁমে তন্নীন স্ত্রাী ছথি, হবিনগবরানী।

সৌতিযা ডাহ, দুষ্ঠ স্ত্রাীক আচবণ, দোসবকেঁ বঁদনাম কববাঁক নেতসঁ একসঁ এক দুর্বৃত্তিক কপ্পনা আ আবোপন মিথিনাক কতোক স্ত্রাীমে পাওন জাগত অছি, সৌতিযা ডাহমে তঁ গ কনা আওব নিখবি উঁঠৈত অছি। হবিনগবরানী স্বর্শীনা পব কনংক মঢ়ৈ ছথি--ধবমপ্পবরানী ত ডাগন অছি, ডাগন! গাছ হঁকগএ! ...দুগযো দিন ভিন্ন ভেনাঁ নর্গ ভেন ছনগ আ স্বামীকেঁ খা গেন...আব স্বতন্ত্রা ভএ গেন অছি...খূব ছিড়হড়। খেনাএত... ভাগিনক সংগে পটনা-দিন্নী কবত...কে বোকগবনা ছগ...হ্ননানন্দা ত' তেহনে ছথি। অপন স্ত্রাীকেঁ নৈহব পঠা দেনগন...আব সতমাগক সেবামে বহগ ছথি। -- এহেন অশ্রেষ্ঠ আ অবাঁছিত গাবি বঁদর্শিত কগযো ক' স্বর্শীনা কোনো তবহেঁ রিচনিত নহি হোগ ছথি। রিপবীত পবিস্থিতি অএনা পব মিথিনাক বুমন্নক স্ত্রাী সাগব সন গহীব আ গম্ভীব ভ' জাগ ছথি। স্বর্শীনা বঁড্ড গহীব আ বঁড্ড গম্ভীব স্ত্রাী ছথি। সমযক উঁতাব-চঢ়াব আ হবা-পানিক কখি নিকে না বুনৌ ছথি। উঁপন্যাসকাব অগ উঁপন্যাসমে হিনকব গএহ ছবি প্রস্তুত কএনে ছথি। সামাজিক বঁন্ধন আ বৈযক্তিক ধ্রূবতা বস্তুতঃ এতে কঠোব

মোগত অছি, জে বিনা কোনো দয়া-ধর্মক ও ফূল সন কোমল গছাকেঁ মোচাবি ক' বাখি দৈত অছি। ফঠিন আদর্শসঁ ভবন সামাজিকতা গএহ থিক, জাহিমে মানবীয সম্বেদনাকেঁ অক্ষুণ্ন বখবাক তর্ক তাকব
ব্যর্থ থিক। আদি কথাক গতিবৃত্তি একব উদাহবণ থিক।

স্বশীনা অগ কথাক আধাব চবিত্রা থিকীহ। কথাক আবম্ভমে জখন দেরকান্ত আদর্শ, মর্যাদা, প্রতিষ্ঠা, পাপ-পুণ্য, নেত-নিযম সভসঁ ডেবাএল মামি সংগে প্রেম নিবেদনমে সংকোচ কবৈ ছলাহ; সমস্ত উৎকেষ্ট আকাংক্ষাক অছৈত গত-উতমে ফঁসল ছলাহ; স্বশীনা চাবি ডেগ আগূ বঢ়ি কএ স্মখব ভেলীহ; আ অপন কতোক আচবণসঁ পূর্ণ সমর্পণক কতোক সংকেত স্পষ্ট রূপে দেলনি। স্মদা বিধবা ভেলাক বাদ কৌলিক পবম্পবাক অনুকূল হুনকব সতৌত বৈষ্ঠা ফলানন্দ হুনক বক্ষক, প্রতিপালক ভেলখিন; আ স্বশীনাক ভারনা, মনোবেগ, আন্তবিক গছা, সাহস সবঁ পব সামাজিক অযথার্থ আদর্শক বঙ্কুন বিজয প্রাপ্ত ক' লেলক; ও ফলানন্দ সংগ বহি কএ অপনে ঠৈছৈত বহলীহ, জর্জব মর্যাদাক পাতব সূতকেঁ নহি তোড়ি সকলীহ।

বৃদ্ধ, অশক্য জমীন্দাব অনিরুদ্ধ বাবূক তেসব পত্নী স্বশীনা অনিন্দ্য স্বন্দবী ছথি; আ দারাননক জ্বালা সন, অথবা সমুদ্রী তূফান সন, অথবা ভদবৈবিযা কোসীক প্রবাহ সন বেগময যৌবনক স্বামিনী ছথি; অগ বেগকেঁ সম্হাবি সকবাক সামর্থ্য হুনকা পতিমে নহি ছলি। দেরকান্তক যৌবন, শিষ্টতা, সৌন্দর্য আদি দেখি ও হুনকা দিশ অনুবক্ত ভেলীহ। এহি অনুবক্তিমে অভিলাষা দৈহিকে টা নহি, প্রেমক আদর্শ স্বরূপ সেহো অর্থবন্ত

ছলনি। গমানদাবীসঁ দেখী তঁ এহি উঁপন্যাসমে বাজকমন চৌধবী দ্বাবা সৃজিত কথাক নাযিকা সোনা মামী, খর্থাত্ স্বশীনা সন স্ত্রাী; কোনো কল্পনা–নোকক স্ত্রাী নহি ছথি, সমাজমে এহেন কৈকটা সোনা মামী ওহি সমযমে খহী রিরবণক সংগ ভেটি সকৈ ছনীহ; এহেন স্ত্রাীক মনোরিশ্লেষণ কোন মনোরৈজ্ঞানিক কবত ? স্বশীনাক জীরন কী ছন ? স্বন্দবি, স্বস্থ, জরান, সাহসী, র্ব্যস্নক, সচবিত ... কী ছথি স্বশীনা ? এক দিশ দেরকান্ত সন সমুদ্রমে মিননক খাকাংক্ষামে মগ্ন তীব্রগামিনী গংগা ছথি; দেরকান্তকেঁ পৈঘ–পৈঘ প্রেমাভিসিঞ্চ পত্রা নিখৈ ছথি; খপন খনেক খাবচবণমে খন্ববক্তিক সংকেতো দৈ ছথি; রুগণ পতিকেঁ খস্পতানমে ছোড়ি দেরকান্তক পবিচর্যামে পহুঁচি জাগ ছথি; হহীম খএনাসঁ খথরা কামোন্মাদসঁ রৈহোশ হএরাঁক কথা খপন প্রেমী দেরকান্তসঁ ন্বকএরাঁক প্রযাস করৈ ছথি। বৃদ্ধ পতি খনিরুদ্ধ রাঁবূক প্রতি পূর্ণ সমর্পণক ভার স্পষ্ঠ করৈ ছথি। হ্নকা রুগণারস্থামে দেখি গাড় ী–রঁবদ পব নাদি খস্পতান ন' জাগ ছথি; পতি জখন খপনা নেন বৃদ্ধ রযসক চর্চা করৈ ছথিন তঁ রিবোধ করৈ ছথি–– ÷সৈ রৈব খহাঁকেঁ কহি দেনউঁএ, হমবা সোস্নাঁমে খপনাকেঁ বৃদ্ধ নর্গ কহন করু...। ' খর্থাত খপন জরানী পব এতেক খামেগর্রিতা জে বৃদ্ধ পতিক পনী নহি কহারঁএ চাহি ছথি। রৈধব্য প্রাপ্তিক পশ্চাত জখন সতরৈঁটা হ্নানন্দ সংগ তীর্থরাসমে জাগ ছথি, তঁ ধর্মশানাক মৈনেজবক হ্নঁহেঁ খপন উঁচ্ছৃংখন সতরৈঁটাক খনাচাবক কথা স্বনি হ্নপিত হোগ ছথি খা মৈনেজবকেঁ ধোপি কএ রিদা করৈ ছথি। দেরকান্ত জখন রঁনজোবী খপন রাঁসা পব খানি নৈ ছথিন, তঁ একহি সংগ প্রতিরাদ খা রিনাপ করৈ ছথি।... একটা

सचरित्रा स्त्रीकेँ मर्यादा आ मनोवेगमे; जीवनक सार्थकता आ सामाजिक आदर्शमे तानमेन वैसवँ'मे कोन–कोन यातना भोगए पड़ै छनि -- एकटा अनुमान कते कठिन अछि !

स्वर्णलताक जीवनक पर्यवस्थिति पव उपन्यासकाव नशेवी, विनासी, फुलानन्दक विचाव व्यवस्था अत्यन्त सटीक आँकने छथि। स्वर्णलता जखन वैशोले भेलीह, आ लोक हल्ला केनक जे ओ आमेहलाक निमित्त माहुव आ लेने छथि, तखन सद्‌पात्राक कोटिमे नहि वहलाक अछैतो भाँगक निशाँमे भसिआएल स्वर्णलताक सतौत वेटा फुलानन्द, जे हुनकव समवयसी छथिन, सोचै छथि-- किअए नर्ग स्वर्णलताकेँ मवि जाए दिअनि ? जीविए कए ओ कोन सुख काटै वहल छथि ? जीवनक कोन आशा, कोन गछ्छा कोन आवश्यकता आग धवि हुनका पूव भेल छनि ? आवेँ कोन पूव हेतगन ? एहेन अपूर्व सुन्दवी छथि, जेना साक्षाते सवस्वती अथवा लक्ष्मी वहथि। फुदा, भाग्य केहेन दैवेँक मावल। एकटा वेटा-वेटी नर्ग छनि, जे तकवे मूँह देख कए जीवि लितथि। ... सतमाय वाँचि कए की कवती... ?

फुलानन्द सन कुपात्राक मोनमे जाहि स्त्रीक प्रति एते व्यथा छनि, तिनका मादे ओहि कालक समाजकेँ आ सामाजिक मर्यादाकेँ कोनो दवेग नहि भेलनि। जेना कि पहिनहुँ कहल गेल, एहि पाछू मिथिलाक सामाजिक पर्यवस्थितिक पैघ योगदान छल। वाजकमल चौधवी सेहो कथाक पृष्ठभूमिक संकेत दैत सूचना देने छथि जे मिथिलाक लोककेँ कथा एखनहुँ मोन छै जे एक दिशि वँगालक तुर्क नवावेँ आ दोसव दिशि दिल्लीक फिवोजशाह तुगलकक सेना मिथिलाकेँ घेवि कए सवँ

रस्तु अपह्यत, बँनकेँत करै छल। दिल्लीक सेनाक, बँगाल-आसाम-जएबाँक बाँटे आउक सहबसा-पूर्णियाँ छलै। बँगालक नरारी पलटैन बिहाव, अरध आ दिल्ली दिशे धारा देबाँ नेन अही बाँटें जाए। अग गनाकामे कोनो पैघ युद्ध कहियो नहि भेल तदा बँगालक नरारी सलतनत आ दिल्ली शासनक संघर्षसँ सर्वाधिक हानि अही क्षेत्राकें भेलै। जीतल सिपाही प्रसन्नताक आवेगमे गनाब पव पानि भवैत ग्रामबधूकें उँठाकए घोड़ा पव चढ़ा निअए; हावल सिपाही दुखक उद्वेगमे खबिहानमे काज कवैत किसानकें तकआबिसँ छपाठि दिअए। पवाजयक पीड़ा आ विजयक उँल्लास अग क्षेत्राक जनताकें बिना कोनो युद्धमे गेनहि भेटैत छै। अग क्षेत्रामे याबावरी संस्कृति, बँताह निश्चिन्तता,
ग्राम देवी पव अथाह भवोस, जीवनक प्रति उँन्मुक्त आनस्य भाव अही कावणें विकसित भेल; आ से उँत्तवोत्तव एक पीढ़ीसँ दोसव पीढ़ीमे अबैत गेल।

घनघोव आपद स्थितियहुमे अथाह निश्चिन्तता, धार्मिक आ ईश्वरीय शक्ति पव निश्चय तदा दिढ़ आस्था, उँकेंट आनस्य, भोजन-मैथुन-दवबाँवी वृत्ति दिशे आसक्ति, चुगनखोवी, चाटुकाविता, दमित वासनाक विकृति, दुष्टाचावसँ भवन मनोवृत्ति, स्त्री-जातिकें भोगक यन्त्रा बुझबाँक प्रवृत्ति, शिथिल चवित्रा...सबाँ टा आचाव मैथिल लोकनिकें अपन अही गतिहाससँ भेटैत हो--से बँहुत सम्भव अछि।

स्वर्शीना सन स्त्रीक कमी ओहि समय धवि नहि छल मिथिलामे। तदा पर्यवस्थितिक की कएल जाए! प्रेमात्तव स्वर्शीना, देवकान्तक प्रति प्रेम निवेदनक कतोक संकेत भवि उँपन्यासमे दैत वहलीह अछि।

দেরকান্ত জখন মাতৃক খরেঁ ছথি, তঁ ঘব-খাঁগনমে সভক সমক্ষে দ্নূক সম্ভাষণ খা কথোপকথনমে ঔ স্পষ্ঠ হোগত খছি। দেরকান্ত রঁড়ে চত্তবাগসঁ ঠোকি রঁজা ক' খপন রঞ্জব্য দৈ ছথি, ক্ষদা স্বশীনাক রাক্চাত্তর্য দেরকান্তকেঁ খন্বত্তবিত ক' দৈ ছনি। জখন দেরকান্ত কহৈ ছথি -- ÷খারঁ মামী জতরাঁ দিন কহতীহ, বামপ্বব বহি জাএরঁ।' তঁ স্বশীনা তকোন দেরকান্তক খাঁখিমে খপন দূন্নূ খাঁখি বখৈত জরারঁ দৈ ছনি--÷হম কহরঁ জে ভবি জন্ম খহী ঠাম বহি জাউঁ ত বহি হএত ?' দেরকান্ত নিরুত্তব ভ' জাগ ছথি। এক উঁখবাহা রিঁতনাক রাঁদ হ্নকা জরারঁ সূঝৈ ছনি, খা তখন সাঁঝমে খারিঁ ক' কহৈ ছথিন -- ÷সত্ত মোনসঁ কিও ককরো বাখএ চাহত ত' ও কহিও ভাগি নগং সকগ ছগ।' খগ সম্ভাষণ পব সোনা মামী নজাগ ছথি; খপন সমস্ত জমা-পঁ ূজী ভাগিনকেঁ খর্পিত কবৈত বহৈ ছথি। ঔ সমর্পণ রস্তুতঃ মহাদেরক প্রতি পার্রতীক সর্রস্বার্পণসঁ কম প্রশস্ত, কম পরিত্রা, কম মূন্যরান নহি খছি। ক্ষদা সমাজক নজবিমে ঔ পবকীযা সমর্পণ থিক, খনাচাব খা র্য়ভিচাবক সমর্পণ থিক। সমাজক নজবিমে স্বশীনা খা খনিরুদ্ধ রাঁর্ঁক রিরাহ রঁর্রবতা, খনাচাব খা র্য়ভিচাব নহি থিক। হায বে মিথিনা, হাগ বে মৈথিন !

ক্ষদা সমস্ত চাত্তর্য, সমস্ত ধৈর্য, সমস্ত শীনক খছৈত সোনা মামী খপন মান-সম্মানক প্রতি সারধান খা কতোক রঁেব উগ্র সেহো দেখাগ ছথি। হফীম খএরাঁক হিনকব কথা জখন হবিনগবরানী দেরকান্তকেঁ স্বনরঁএ নগৈ ছথিন, তঁ স্বশীনা তামসেঁ তবংগি উঠৈ ছথি, জ্বানাক্ষখী জকাঁ খাগি-খংগোবা ক্ষঁহসঁ নিকন' নগৈ ছনি; ক্ষদা ক্রাধমে প্রেমাধাবকেঁ কোনো তবহেঁ খাহত নহি কবৈ

छथि। शिवरॅत पीरॅाक हिनकर आग्रह जखन देरकान्त नहि मानै छथिन, तँ ओ अपमानित होइत छथि। चोटोएन नागिन सन उँधिआइत छथि, मुदा देरकान्तकें आहत नहि करै छथि, नोटो गिनास फेकि कए क्रोध शान्त क' लै छथि।

मिथिनाक स्त्री जीरनक जतेक सूक्ष्म अध्ययन बाजकमन चौधरीकें छलनि, से हिनकर रचना संसारमे जतेक सूक्ष्म रिरवण उँपस्थिति अछि, हमरा जनैत कोनो स्त्रियो एते सूक्ष्मतासँ ओहि मनोरिज्ञानकें नहि पकड़ि सकल हेतीह। स्वर्शीनाक रिरवणमे तँ नगैत अछि नेखक अपन सम्पूर्ण कला नगा देने छथि। सम्पूर्ण कथामे स्वर्शीनाक चरित्राक रॅह्मख अंकित करैत कतह् एकटो खोंच–नोछाड़ नहि नागए देने छथि। जे स्वर्शीना भागिनक प्रति एहि तरहें समर्पित छलीह जे पति–पत्नीक रूपमे अमर हएरॅाक आशीरर्दि चाहि छलीह, से पतिक देहारसानक पश्चात, फलानन्दक आश्रित भ' गेलीह। फलानन्दक कोनो रॅात पर ÷नर्ग' कहरॅ रिसरि गेलीह। स्वामीक मुँहें कहियो रर्जना नहि स्वननिहारि स्वर्शीना, फलानन्दक समस्त रर्जनाक पानन करए नगनीह। ...

सोनामामी संग देरकान्तक रार्तानाप, मानरीय मनोरेग, प्रेमपाशमे रॅान्हन दू र्यक्ति, से सामाजिक मर्यादा, पारम्परिक सम्रॅन्धक शृंखनामे जकड़न मानरक मोनक उँद्वेगकें रेखांकित करैत अछि। र्यरस्था से मर्यादाक रॅन्धन से मनोरेगक स्वछन्द–कामनामे कतह् एक आरि–खेत नहि होइत अछि। एहि दृश्यकें ÷आदिकथा'क घटना–सूत्रा रेखांकित करैत अछि।

स्वर्शीनाक एहेन चरित्रांकन मिथिनाक अयथार्थ

आदर्श आ अव्यावहारिक मर्यादाकें नाँगरि केनक अछि, एहिसँ रूढ़ि-पोषक लोकनि व्यथित जते भेल होथि, मुदा मैथिलीमे नव-चिन्तन पद्धतिसँ उपन्यास-कथा लिखबाक परम्पराक नव सूत्रपात भेल आ नव पीढ़ीक, नव दृष्टिक उद्योगसँ मिथिलाक जे वैविध्यता समाप्त भेल--से प्रसन्नताक बात थिक।

राजकमल चौधरीक दोसर उपन्यास थिक -- आन्दोलन। एहिमे नाटकीय शैली पर विशेष जोर अछि। मुदा उपन्यास गद्यो मनोविश्लेषणामेक अछि। नाटकीय शैलीक गद्यमे मनोविश्लेषणक सुविधा ताकब आसान नहि होइत अछि, मुदा राजकमल चौधरीक कथा-कौशलकें ई सब सुविधा तकबामे कोनो तरद्दुत नहि होइ छनि। सुगठित शिल्पमे सामाजिक यथार्थक मौलिक चित्र अंकित करब हिनकर रचनाक मूल स्वभाव थिक। व्यतीत आ वर्त्तमानक घटना-चक्रक आश्रयसँ सम्भाव्य दिशा इशारा एहेन कौशलसँ करै छथि जे ओ रचना एकदम सहज आ नागरिक जीवनक दैनिक व्यवस्था जकाँ लगैत अछि।
	कथानक एकटा बेरोजगार युवक ÷कमल'क कलकत्ता महानगरमे रोजगार प्राप्ति हेतु प्रवेश आ कलकत्ता प्रवासक क्रममे उपस्थित विभिन्न दृश्यावलोकनक क्रमबद्ध नियोजन पर आधारित अछि। मूल कथा भाषा-प्रेमसँ ओत-प्रोत मैथिली आन्दोलनक विविध चरणकें रूपायित करैत अछि। विवरण-विस्तारमे एहि आन्दोलनक नग्न स्वरूप सोझाँ अबैत अछि। मैथिल जातिक मत-भिन्नता, ईर्ष्या-द्वेष, धोखाधरी इत्यादि अपूर्व कलात्मकतासँ चित्रित भेल अछि। कथा-सूत्रक विस्तारमे पात्रक अवतारणा आ उपकथाक समावेश परम

रिश्वसनीय आ सहज यथार्थक संग भेल अछि। उपन्यासकारक कहब छनि जे आजुक मनुक्खमे तीन प्रवृत्ति मुख्यतः देखल जाइ'ए-- क्षुधा, आत्मरक्षा आ यौनपिपासा। एहन तीन प्रवृत्तिक चित्रांकन लेखकक प्रधान प्रयत्न रहल अछि। -- वस्तुतः एहि उपन्यासमे ई तीनू प्रवृत्ति रूपेँ प्रविष्ट भेल अछि। उपन्यासक पात्रकेँ जाहि जीवन्त रूपेँ रचनाकार एतए ठाढ़ कएलनि छथि, ताहिमे मैथिल चरित्र आ मिथिलाक परिदृश्य पूर्ण विवरणक संग उपस्थित भ' जाइत अछि। राजकमल चौधरीक सृजन-कर्मक ई खास विशेषता थिक जे हुनका ओतए व्यक्ति आ व्यक्तित्व बड़ महत्वपूर्ण भ' उठैत अछि। व्यक्तिक जीवन-लीला, रहन-सहन, सोच-विचार, आहार-व्यवहारकेँ अंकित करैत ओ सम्पूर्ण परिदृश्य गढ़ि दैत छथि। तेँ राजकमल चौधरी द्वारा सृजित चरित्रक मानसिक उद्वेग आ भौतिक करतब पर विवेकपूर्ण दृष्टि राखि ली, तँ हुनकर सम्पूर्ण रचनाक समालोचना भ' जाएत। हिनकर सकल पात्रक आचरण आ मनोवेग, ओकर आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, मानसिक हैसियतक परिचायक होइत अछि। कोन परिस्थितिक कोन मनोवेगमे मनुष्य कोन आचरण करैए--से पूरापूरी एतए व्यक्त होइत अछि। एहि तरहेँ चारित्रिक विश्लेषण करैत उपन्यासक मर्मकेँ बेसी लोक जकाँ बूझल जा सकैत अछि।

राजकमल चौधरीक सगरो रचना-विधानमे पात्रक सृजन आ चरित्रांकन स्पष्ट आ विलक्षण अछि, मनोविश्लेषण आधारित क्रिया-कलाप आ आहार-व्यवहार तार्किक आ समीचीन अछि। समस्त पात्रक जीवन-प्रक्रिया आ रहन-सहनमे मनोविश्लेषणक स्वविधा

ছিড়া খাএন বহৈত খছি, জকব খাধাব পব ওকব খর্জিত জীরন–দৃষ্ঠিক সূক্ষ্ম খধ্যযন কএন জা সকৈত খছি। কোনো ব্যক্তিক চিন্তন–ব্যরস্থা কোন রিরশতা খা ব্যরস্থামে নির্মিত ভেন; কোন ক্রিযা–কনাপ ও কোন পবিস্থিতিমে পূর্ণ কেনক–– সে জানি সকরাঁক স্বরিধা মনোরৈজ্ঞানিকে ধবাতন পব স্পষ্ঠ হোগত খছি। চবিত্রাঁকনক গএহ উঁকের্ষ খা গএহ কৌশন এহি উঁপন্যাসক প্রভারকেঁ রৈবাষ্ঠ্যি দৈত খছি। ভাষা, রিষয, রিরবণ, শিল্প...সরঁ কিছু মানরীয, সহজ, সামাজিক, জীরন্ত, প্রামাণিক খা রিশ্বসনীয !

খান্দানন উঁপন্যাসক নাযক ÷কমন' মিথিনাক স্বশিক্ষিত, পবম রিরেকশীন খা প্রতিভারান যরক ছথি। খামে–স্থাপনক উঁদ্দেশ্যেঁ কনকত্তাক মহানগবীয পবিরেশমে রৌখা বহন ছথি। নীনূ সন খল্প রযস কিশোবী খথরা নরযরতীক উঁন্মাদিত সমর্পণ খথরা খল্হড় খামন্ত্রাণ নকাবি দেননি; হ্মদা রাসনাক বাক্ষসসঁ হ্মক্তি পারঁ' নেন খন্হাব খা রঁদনাম গনী ধবি চন গেনাহ।

খাদর্শ খা সদ্পাত্রাতাক প্রতিমূর্তি ভুরনজী মাতৃভাষা খা মাতৃভূমিক প্রসাব–প্রগতিমে তন্নীন ছথি, হ্মদা কোনো খাস কাবণেঁ হ্নকহ্মে রিচনন খারি গেন ছনি। নির্মনা সন খন্তাধ্নিক স্বকামা, স্বরর্ণা স্ত্রাী ভুরনোজীকেঁ হিনা দৈ ছনি। ভুরনজীক পনী নিবক্ষবা খা কুরূপা ছনি। নির্মনা জী সন স্বকামা স্ত্রাীক যৌরন, রূপ নারণ্য, খাধ্নিক চষ্টক–মষ্টক পব হ্নকব নহানোষ্ট হৈরঁ স্বাভারিক খা যথার্থ থিক।

মানর সভ্যতাক গতিহাসক কহৈ'এ জে মনুষ্য খপন রিবাষ্ট ছরি ঠাঢ় কব'মে তন্নীন বহৈ'এ, রিবাষ্ট ভ' জাগ'এ, হ্মদা মানরীয কমজোবী ওকবা সংগ বহৈ ছৈ। খগ

উঁপন্যাসমে উঁপন্যাসকাব ভুরনজীক ছরি খতি রিশিষ্ঠ, খা নিরিষ্ঠ রূপমে ঠাঢ় কএনে ছথি। মুদা জঁ সএহ টা বহিতএ, তঁ ভুরনজী কোনো দন্তকথাক নাযক রঁনি জৈতথি। সমস্ত রৈশিষ্ট্যক খছৈত মানরোচিত দুর্রনতা বেখাংকিত ক' কএ উঁপন্যাসকাব রস্তুতঃ ভুরনজী খা কমনজী--দুনূকেঁ যথার্থসঁ জোড়ননি খছি।

স্বশীনা রহ্গামিনী স্ত্রী ছথি, নিহ প্রতি নর-নর প্বরুখক রাঁহিমে ঝূনএ চাহৈ ছথি। দোসব স্ত্রী ছথি স্বশীনা, ওহো খনেক প্বরুখক সংগে সমাগম কবৈ ছথি। মুদা তেঁ, দুনূ স্ত্রী সমান নহি ছথি। পব-প্বরুখ সমাগম স্বশীনাক রিরশতা ছনি, খর্থোপার্জনক খাধাব ছনি, জীরন-যাপনক ঠহাব ছনি, মাগ-রাঁপ সংগ খপন ভবণ-পোষণ হেতু খন্ন-রস্ত্রা চাহী। দেহে টা পূঁজী ছনি, তকবহি ভেজবৈঁ ছথি, কুষ্টি-পীসি গুজব কবৈ ছথি। মুদা নির্মনাক রিরশতা খর্থাভার নহি ছনি। ও কামাতুবা ছথি। যৌন-পিপাসাসঁ ব্যাকুন বহৈ ছথি। কোনো সম্পূর্ণ প্বরুখক সম্পূর্ণ ভোগ নেন তপেব বহৈ ছথি। ... একটা দেহ রেঁচৈ ছথি, একটা দেহ রিনহৈ ছথি। একটা খামের্বুভুক্ষাক তৃপ্তিমে কোনো নৈতিক-খনৈতিক কাজ নেন তপেব ছথি, দোসব যৌনপিপাসা শান্ত কবরা নেন উঁতাহ্ন।

খান্দানন উঁপন্যাসক কেন্দ্র-রিন্দু থিক খামের্বুভুক্ষা, যৌনপিপাসা, খামেস্ববক্ষা। সহ থিক, খা বাজকমন চৌধবীক মান্যতা ছনি, জে মানর জীরনক খাদিম খারশ্যকতা গএহ তীন হোগত খছি। ওনা মনুষ্য কী, প্রাণী মাত্রাক খাদিম প্ররৃত্তি গএহ তীন টা হোগত খছি। শেষ সভ প্ররৃত্তি--ঈর্ষ্যা, দ্বেষ, বাগ-রিবাগ, নোভ-নানচ, পক্ষ-রিপক্ষ, ঝংঝট-ফসাদ, খূন-খূনাময...

सभ किछु लोक एतए आबि कए, जीवन जीबाक क्रममे विकसित करैत'ए; उल्लिखित तीनू प्रवृत्ति मनुष्य जन्महिसँ संग लेने अबैत अछि। अही तीनू प्रवृत्तिक निपटानमे किओ अपन छवि उत्तरमीनार सन ऊँच क' लैत अछि, किओ अपन उत्तरमीनार सन छविकें सड़ल पानिक नाली बना लैत अछि। आन्दोलन उपन्यासकें अही आलोकमे देखब समीचीन थिक।

उपन्यास उत्तम पुरुषमे लिखल गेल अछि। कथानायक कमलजी जीवन-संग्राममे जुटल छथि, आमे-स्थापनमे लागल छथि; भाषाक आन्दोलनमे अपनाकें बनिदानी घोषित केनिहार मैथिल लोकनिक समस्त छवि कें प्राथमिक आ मौलिक अनुभव जकाँ देखि-भोगि रहल छथि। मैथिल जातिक छवि -पाखण्ड, राग-द्वेष, वासना आ नपुंसकताकें, आ एहि वृत्तिकें छपा रखबाक मनुष्यक कौशलकें निकेनाँ चीन्हि रहल छथि; गएह कथानायक अग उपन्यासक कथावाचक छथि। कलकत्ता महानगरमे जीवन-यापन करैत विभिन्न आय-वित्त आ बुद्धि-वित्तक प्रवासी मैथिलक क्रिया-कलापसँ परिचित छथि। निर्मलाजी आ स्वर्णलाजी जाहि वस्तुक मैथिल स्त्रीक प्रतिनिधि छथि, ताहि दुनू वस्तुकें निकटसँ देखने छथि। कमलजीक नजरिमे निर्मलाजी छथि कलयोपौत्रा, कपोलकृता, प्रति निशि नव प्रेमीकें साँपसँ कटबा क' मरबा दै वाली विकटैकामा। स्वर्णला छथि निश्छल, निस्पन्द, क्रिया-शून्य, सभ किछु हेरएने विसरएने वस्ता पर ठाढ़ि, जे केओ पुरुष आबए आ किछु टौका द' जाए! स्वर्णला छथि ओ नारी, जे लुका-चोरा क' नहि, धोखा-धड़ीसँ नहि, एकदम सफा-सफी अपन अस्तित्वकें बेचि रहल छथि!

श्यामा नयनाभिरामा कुसुम-सुषमा-वंजिता सौख्यधामा नहि, देह पर मैल, फाटल साड़ी, ओष्ठान पर पपड़ान, मँहकैत चन्द्रबि, आँखिमे निर्लज्जता, भार-शून्य, निष्काम, पाथर बनि गेल प्रतली। छिः छिः, स्वर्शीना आ निर्मलाजीमे कोनो तुलना भ' सकैछ (आन्दोलन/पृ. ३९)!

बाजकमल चौधरीक रचना संसार पर बन्हतो गोटेए बन्हत तरहक बात कहलनि अछि। हिनकर औपन्यासिक-कौशल पर कतोक गोटेएकें एकसूत्रताक अभाव देखलनि।... समग्रतामे देखी तँ भारतीय नागरिक, अथवा मैथिल नागरिकक सम्पूर्ण जीवन परिदृश्य हिनका नजरिमे कौड़ी जकाँ जगजिआर अछि। सामाजिक जीवन व्यतीत करबा लेल संस्थापित समाज-व्यवस्था, भारतीय लोकतन्त्र, मानवीय जीवन-पद्धति, जीवन-यापनक बुनियादी सीमा-शर्त, जिजीविषाक अपरिहार्य वृत्ति, मानवीय मनोवेग, मनुष्यक अभिलाषा, अस्तित्वक अविचल यथार्थ... सब बिन्दु, पर विरोधाभास आ विडम्बनाक जलूस देखाइत अछि। बाजकमल चौधरी अही जलूसमे देखलनि जे सिद्धान्त आ व्यवहार, वचन आ आचरण, जीवन आ लेखनमे कोनो तरहक पारस्परिक सम्बन्ध-बन्ध, स्थापित नहि अछि। लोकतान्त्रिक व्यवस्थामे मानवीय सम्वेदनाक रक्षा हेतु जे आचार संहिता घोषित भेल अछि; अथवा मिथिलाक नैतिक शिक्षामे जे पाठ पढ़ाओल गेल अछि; तकर अनुपालन अग भाग्य विधाता वर्गक कोनहु टा आचरणमे नहि भ' रहल अछि; आ व्यावहारिक स्तर पर जे भ' रहल अछि, से मानवीय जीवन पद्धति लेल कोनो अर्थें उपयोगी नहि अछि। एहि विचित्र विडम्बनाकें बाजकमल

चौधरी उठबैत रहलाह आ जस के तस रखैत गेलाह; अही कारणें हिनकर उपन्यास विडम्बनासँ भरल, परस्पर विरोधाभासी आचरणसँ भरल समाज-व्यवस्थाक चित्रा-खण्डक कोलाज लगैत अछि। पारम्परिक पद्धतिसँ शिक्षित-दीक्षित समीक्षक लोकनिकें जें कि राजकमल चौधरीक उपन्यास अथवा कथामे कथासार अथवा कथानक नहि भेटैत छनि, तें हुनका लगै छनि, जे एहि रचनामे एकसूत्रताक अभाव अछि। एहेन समीक्षक लोकनिकें प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय द्वारा नवसाक्षर लेल प्रकाशित कहानीक पोथी पढ़बाक चाही, जाहिमे समस्या, समस्याक कारण आ समस्याक समाधान खोंसैत कहानी लिखल जाइत अछि आ अन्तमे पूछल जाइत अछि--त' अहाँकें एहि कहानीसँ की शिक्षा भेटैत ?

सत्य थिक जे वस्त्राक भीतर हरेक मनुष्य नाँगट होइत अछि। वस्त्रा पहिरैत अछि परदा लेल। ओना तँ सबहक सब बात लोककें बुझल रहै छै। हरेक सन्तानकें बूझल रहै जे हम अइ दुनियाँमे कोना एलहुँ आ हरेक माय-बापकें बूझल रहै छै जे ओ अपन सन्तानक विवाह किऐ करौलनि अछि। मुदा एकटा मर्यादाक खूँटी छै, जाहिमे सामाजिक पशु बान्हल रहैत अछि। स्वातन्त्रयोत्तर कालमे, आ एम्हर आबि कए त' आओर बेसी, ई बात नांगट भ' गेल अछि। मनुष्यक भौतिक नग्नता पर नहि, मानसिक आ वैचारिक नग्नता पर। सब व्यक्तिक स'ब बात स'ब कियो जनैत अछि, मुदा स'ब व्यक्ति अपन ओहि समस्त आचरण पर, वृत्ति पर परदा देबा लेल कोनो ने कोनो नैतिक बातक परदा देब' चाहै छथि। कहि नहि, मनुष्य स्वयंकें ठकबा लेल एते बेसी व्यग्र किऐ रहै छथि! दुनियाँक लोक

तँ सरँठो ब़ाँत ब़्मिमितते बहे छै।

मैथिली तँ खाबँ संविधान स्वीकृत भाषा भ' गेल अछि, सन् १९३९मे,
जहिआ ओ उँपन्यास लिखल गेल छल, से ब़ाँत नहि छलै; मैथिली भाषाक अधिकाब लेल खूबँ-ब़ँर्चा होइत छलै। प्रवासी मैथिल लोकनि शहब-शहबमे भाषाओ समिति बँनबैँ छलाह। ओही समितिक माध्यमे किछु गोटेए अस्तित्व बक्षा कबै छलाह, किछु अस्मिता निर्माण; किओ अपन बाजनीतिक उँथोन कबै छलाह, किओ अकादमीक उँन्नति; किओ कुण्ठा मेटैबैँ छलाह, किओ बास-रिलास; ऋदा थोड़ लोक लेल धन्न सन। किऐ तँ ओ भूखसँ व्याकुल बहे छल। कहाँ दन कुरुक्षेत्रामे भूख लगला पब गान्धाबी अपन बेंटो सभक लहासक ढेबी पब चढ़ि फल तोड़ए लागल छलीह। भूख, मनुष्यक विवेक आ सम्वेदनाकेँ एहि तबहेँ आन्हब कबैत अछि। एहना स्थितिमे भाषाक लड़ाइ लड़' लेल के जाएत? सोलह आना सत्य वचन थिक जे हबेक एहि तबहक आन्दोललमे मुख्य रूपेँ लोक अपन-अपन लड़ाइ लड़ैत बहल अछि। संयोग थिक जे ओ भाषाओ आन्दोलन छल। जँ नहिओ बहितए तँ लोक कोनो आओव बाँटे ताकि लितए, जेना एखन लोक ताकि बहल अछि। भावतीय स्वाधीनताक बाँद भावतीय नागबिकक विवेक एते बेंसी आमेकेन्द्रित भ' गेल, जे ओ समस्त आन्दोललमे अपनाकेँ जोड़ि कए अपन लिप्सा आ कुण्ठामे तल्लीन भ' गेल। अपन स्थान तकबाँमे आ स्वबक्षित कबबाँमे लीन भ' गेल। स्वातन्त्र्योत्तबकालीन भावतीय लेखक मनुष्य जातिक अही

রৃত্তিকেঁ উঁজাগব কবরাঁমে নাগন বহনাহ খছি।

কনকত্তাক মৈথিন সমিতিক ভাষাঙা খান্দানন, এহনে খান্দানন থিক, জাহিমে ভুরনজী সগবো সমাজমে রেঁস প্রতিষ্ঠিত খা নিরিষ্ঠ, মানন জাগ ছথি; মৈথিন, মৈথিনী, খা মিথিনাক হিত নেন রেঁস উঁদাবতাসঁ কাজ কবৈ ছথি; নোক সরঁ খূরঁ মান-খাদব কবৈ ছনি। হ্মদা ওএহ নোক সভ জহিনা সভা সোসাগষ্টীক প্রেমিকা, উঁদাত-যৌরনা নির্মনাজীকেঁ ভুরনজী সংগ উঁঠৈত রৈঁসৈত দেখৈ ছথি কি সগবো মৈথিন সমাজ চর্চা কব' নগৈত খছি জে হ্নকব খপন স্ত্রাী মহান হ্মরূপা ছথিন তেঁ নির্মনাজীক খাঁচব কসি ক' ধএনে ছথি।

নীনূ, রিঙ্কুদের ঠাহ্মব সংগ সিনেমা দেখরঁ পসিন নহি কবৈ ছথি, হ্মদা খন্হাব বাতিমে জখন দেহ র্যাহ্মন কবৈ ছনি, তঁ নির্স্ত্রা ভেন কমনজীক খন্হাব কোঠনীমে পহুঁচি জাগ ছথি। সামাজিক যথার্থ খা দৈহিক যথার্থক এহি তবহক নিরূপণ খান্দানন উঁপন্যাসকেঁ ঠোস, খা মহত্ত্বপূর্ণ সারিত কবৈত খছি। উঁপন্যাসক কথাভূমি কনকত্তা থিক, হ্মদা কথাক জীরন পূর্ণ রূপেঁ মৈথিন থিক। জীরন-যাপন খা খামে-স্থাপন হেত্তু কনকত্তা শহবমে সংঘর্ষবত মৈথিনক স্বভার, জাগরূকতা, খানস্য, উঁদাবতা, বাগ-দ্বেষ, মনোরেগ, উঁন্মাদ, ভাষা-প্রেম, স্বার্থ-সিদ্ধি হেত্তু চনাওন ভাষাঙা খান্দাননক ছুঁ, খামেরিক্তোপন হেত্তু যত্রা-হ্মত্রা পাঁখি পসাবরাঁক ননক, হেঁংসৈী... সমস্ত স্থিতিকেঁ সূক্ষ্মতা খা মার্মিকতাসঁ এতএ বেখাঁকিত কএন গেন খছি। মৈথিনীমে এহি হ্নতিকেঁ পহিন বাজনীতিক উঁপন্যাস ঘোষিত কবরাঁমে কোনো কোতাহী নহি হেরাঁক চাহী। উঁপন্যাসকাব স্বযং একবা প্রথম বাজনীতিক উঁপন্যাস খথরা বাজনীতিক

पर्यरस्थितिमे लिखल गेल प्रथम वृतान्तक उपन्यास' कहलनि अछि।

समाज–व्यवस्थाक नियम अछि जे मनुष्य ÷प्रभुत्व' आ ÷प्रतिष्ठा' अर्जित करए चाहैत अछि। अही दुनूमे कतहु ÷चरित्र' सेहो लुकाएल अछि। ÷प्रभुत्व', ÷प्रतिष्ठा' आ ÷चरित्र'––ई तीनू पद व्यावहारिक जीवनमे बड़ अमूर्त्त सन अछि। ई तीनू वस्तुतः की थिक ? केहन चरित्राक मनुष्यकेँ केहन प्रतिष्ठा भेटैतनि ? कतेक प्रतिष्ठा अर्जित केलासँ मनुष्यकेँ कतेक प्रभुत्व हएत ? कतेक प्रभुत्व आ प्रतिष्ठाधारी व्यक्तिक चरित्रा केहन हएबाक चाही ? ––अइ प्रश्नावलीक उत्तर कोनो समाजक आचार संहितामे स्पष्ट नहि अछि। सदा लोक निरन्तर हिन्दिस्तानक ÷सदा भाग' जकाँ लागल रहैए। अपन आचरणक श्रेष्ठताक व्याख्या अपना तरहेँ करैत रहैए। आन्दालन उपन्यासक कमलजी, उत्पलजी, निर्मलाजी, स्वर्णलता, लीलू, हेम बाबू... सबहक आचरण देखि उपन्यासकार राजकमल चौधरीक मोनमे जे उथलपुथल उपजै छनि, तकरे उघार करबाक प्रयास एहि उपन्यासमे कएल गेल अछि। धन्य छथि ओ समीक्षक, जिनका अइ उपन्यासमे एकसूत्राताक अभाव बुझाइ छनि। ...वस्तुतः मनुष्यक मूल प्रवृत्ति थिक जिजीविषा; आ तकर प्राथमिक शर्त थिक– –रोटी, सेक्स, सुरक्षा। एहि तीनू आवश्यकताक पूर्ति हेतु दुनियाँक प्रत्येक प्राणी चुट्टीसँ बाघ, बाघसँ लड़ाइ या, लड़ाइ यासँ मनुक्ख भ' जाइए। जीवनक समस्त छल, छद्म, ईर्ष्या, द्वेष, उदारता, ईमानदारी, त्याग, तल्लीनता, भय, साहस, स्पष्टता, प्रवंचना, खोशामद, ललकार, टैप– टहंकार, धर्म–पाखण्ड, नीति–विचार, दान–दक्षिणा, लूट–

रहैमाव... आदिक स्वांग अही निमित्त करैत'अ; सफल–असफल होइत'अ। सफलताक अहंकारमे उन्मादित रहैत'अ, असफलताक कुण्ठामे गन्हागत रहैत'अ। रिसवि जाइत'अ जे अग सफलताक मारूमे ओ कतेक हीन भेल अछि, अथरा असफल होइत केतक नमहर भेल अछि। सम्पूर्ण ÷खान्दानन' उपन्यास मानर जीरनक अही जटिल–ग्रथीक गाथा थिक। हमवा जनैत अग उपन्यासक आश्रय–वृक्ष ÷मैथिल समिति' टा नहि वहितअ तँ भाषा परिवर्त्तन क' कअ एकवा सम्पूर्ण संसावक अथरा सम्पूर्ण मानरीय वृत्तिक कोनहुँ भाषाक उपन्यास कहल जा सकैछल।

मैथिलीमे तँ निश्चितते खान्दानन उपन्यास एकटा नर श्रकआत थिक। आमेकथामेक शैलीमे लिखल जअरोक अछैत एहिमे कतहु आमेश्लाघा अथरा आमेसंकोचक स्वाभाविक त्रा्टि नहि आएल अछि। कथारचक कमलजी कलकत्ता महानगरमे आमे–स्थापनवत छथि, भाषाओ खान्दाननमे सहभाग–सहकार द' रहल छथि, खान्दाननी परिरावक हरेक व्यक्ति लेल तटस्थ आ ओमानदार आचरण रखै छथि। सम्पूर्ण उपन्यासमे कतहु स्पष्ट नहि होअए दै छथि जे ओ स्वयं किनका पक्षमे छथि। जे भुरनजी हुनका कलकत्ता महानगरमे पैर रोपरोक आधार देलकनि, नैतिक समर्थन देलकनि, स्नेह–प्रेम देलकनि, मान–सम्मानक मारूल प्रशस्त केलकनि, तिनकहु लेल ओ कतहु पक्षपातक स्थिति अपन कथारचनमे नहि आरेअ देललनि। नीनू, निर्मला, स्वशीला... तीनू तीन आचरणक स्त्री छथि; तीनूक खोंगचा छोड़ा क' राखि देललनि, सदा किनकहु पर अपन निर्णायिक रओर्य नहि देललनि। स्वयं रदनाम गली धरि गेलाह, तकरहु

ऊँजागर करबाँमे संकोच नहि केलनि। लक्ष्य संधान छलनि मानवीय वृत्तिक स्पष्ट नक्शा उतारबाँक, से अपन तटस्थ भावे सौँ सम्भव छल। गप्प एहन कारणो थिक जे आन आ आनसँ पहिलहुँ अपन उपन्यासमे मूल मानवीय वृत्तिक एते वास छवि देखाओल अछि, देखाए छल। महानगरीय परिवेशक प्रवासी मैथिल द्वारा चलाओल जा रहल भाषाओ आन्दोलन एहि उपन्यासक आश्रय-वृक्ष भले रहल हो, मुदा सम्पूर्णतामे ओ मिश्रित चित्र खण्डक कथ्य-रहल उपन्यास थिक, जाहिमे क्षुधा, आमे-स्वरक्षा आ यौन-पिपासाक चारू भव चित्राखण्डक समायोजन भेल अछि। तथापि कथ्य एकटा स्वगठित कौशलसँ रचल यथार्थ उद्बोधित, समाज सम्मत, विश्वसनीय वृत्तान्तक रूपमे सोझाँ आएल अछि।

बचनाकारक दृष्टिएँ ÷आन्दोलन' ÷आदिकथा'सँ पूर्वक उपन्यास थिक, मुदा विषय आ शिल्पक दृष्टिएँ ओ बेसी प्रगतिशील, आधुनिक, आ ऊर्ध्वोन्मुखी अछि।

कोनो उपन्यास मनुष्य, मानवीय जीवन, जनजीवनक सामाजिक व्यवस्था आ ओकर वातावरणक कथा कहैत अछि। एहि अर्थमे उपन्यासमे ठाढ़ मनुष्यक क्रिया-कलापहिसँ उपन्यासक गरिमाकेँ चीन्हल-बूझल जा सकैत अछि आ उपन्यासकारक बचना-दृष्टिक मूल्यांकन कएल जा सकैत अछि। अर्थात् चरित्र-चित्रण जाहि कृतिमे जतेक सन्तुलित आ स्पष्ट हएत ओहि कृतिक उद्देश्य आ वातावरणकेँ ओतेक स्पष्टतासँ बूझल जा सकत। सामान्यतया बचनाकार लोकनि अपन सृजित पात्रक चरित्र पर समग्रतामे अपन टीका दै छथि। केहन लोक छथि, कते पढ़ल छथि, कोना कमाए छथि, कोना खाए छथि, की करै छथि...। चाही तँ स्वविधा

নেন একবা ব্যাখ্যাপবক চবিত্রা–চিত্রাণ কহন জা সকৈত খছি, ক্ষদা এহিসঁ বেঁসী স্ববিধা হোগত খছি, পাত্রাক খাচবণ খা কথোকথনক খাধাব পব ওকব চবিত্রা ব্ৰুসরাঁমে। এহিমে ভারক নোকনি পাত্রাকেঁ খপনা নজবিএঁ চিন্হরাঁক চেষ্ঠা কবৈ ছথি। প্রায়ঃ গএহ কাবণ থিক জে নাটক, খথবা নাটকীয শৈনীক গ্হতিমে চবিত্রা চিত্রাণক স্ববিধা বেঁসী ভেটৈত খছি। খাস ক' কএ মনোরিশ্লেষণামেক চবিত্রা–চিত্রাণ কববাঁক পর্যাপ্তি সম্ভারনা বহৈত খছি। গহো কহবঁ সমীচীন হোএত জে বাজকমন চৌধবীক বচনামে খকাবণে এতে কথোপকথন নহি বহৈত খছি। নাটকীয শৈনীক এহি উঁপন্যাসমে পাত্রাক মনোরিশ্লেষণক প্রভূত ব্যবস্থা খছি। বচনাক নাযক–নাযিকা খা সহযোগী নোকনি পাবস্পবিক বার্তানাপ খা খপন ক্রিযা–কনাপসঁ জতে তবহেঁ খপন চাবিত্রিক সীমা খংকিত কবৈত'ছি বচনাকাব স্বযং টীকা দ' কএ ওতে রিস্তাবসঁ কহিও নহি কহি সকৈ ছথি। এহিসঁ গ্হতি সংক্ষিপ্ত, দীপ্ত খা প্রভারকাবী সেহো হোগত খছি। সম্ভরতঃ গএহ কাবণ থিক জে বাজকমন চৌধবীক উঁপন্যাস খাকাবমে এতে ছোট হোগত খছি খা প্রভারমে এতে রিবাট। বার্তানাপসঁ মনুষ্যক সম্পূর্ণ ব্যক্তিত্ব ঠাঢ় ভ' জাগত খছি। শিল্প, শৈনী, বাক্য–সংবচনা, শব্দ–চযন, সম্বোধন–খভিবাদন, রিষয খা রিষযানুবক্তিসঁ কোনহুঁ ব্যক্তি খপন সম্পূর্ণ সোচ–সমঝ–খাচবণ, কৌনিক খা ব্যারহাবিক সংস্কাব, খার্থিক–শৈক্ষিক–সামাজিক পৃষ্ঠভূমি স্পষ্ঠ কবৈত খছি। জেনা খান্দানন উঁপন্যাসক পাত্রা সবঁ কএনে ছথি।

ভাঁগক নিশাঁমে মাতন কমনজীক কোঠনীমে খপ্পরযস নীনূ খর্ধনগ্ন খবস্থামে পহুঁচ জাগত খছি।

ओहि अन्हार गुज्ज रातिमे बन्द कोठलीमे नीलू, कमलजीकेँ ÷भैया' कहैत अछि, मुदा सर्वस्व अर्पित करबा चाहैत अछि। स्पष्ट अछि, जे किशोर वयक उन्माद आ उत्तेजनामे नीलू ÷सम्बोधन' आ ÷क्रिया'क बीचक समन्वय बिसरि गेल अछि। जे कमलजी यौन पिपासा मेटेबाले देह-व्यापारमे लिप्त स्त्रीक खोली धरि पहुँचि जाइ छथि, से कमलजी भाँगक घनघोर निशाँमे मातल छथि, आ अन्हार गुज्ज रातिमे बन्द कोठलीमे समर्पित नीलूकेँ बहिना-स्वरूपा क' आपस क' दै छथि (आन्दोलन/पृ. ३०-३१)। मैथिलानी वेश्याक ताकमे जखन कमलजी बंगालीटोलीक खोलीमे पहुँचै छथि तँ सम्पूर्ण नशा उतरि जाइत अछि, हुनक विषय-वासना कपूर जकाँ बिला जाइत अछि (पृ. ३६-३७)। अग वातावरणमे आ एहने कतोक वातावरणमे व्यक्ति, समाज, व्यवस्था, वातावरण आ मनोवेगक जतेक स्पष्ट छवि अंकित भेल अछि, ततेक स्पष्ट करब आन कोनो माध्यमे असम्भव छल।

एतए नीलूक किशोरावस्था आ काम-पिपासा नीलूकेँ आन्हर क' देने अछि। ÷भैया' सम्बोधनक बादहु यौनाचार प्रतिवेदन अनसुन थिक, मुदा एतए नीलूक वयसोचित उन्माद आ अपरिपक्वतामे उचितानुचितक विवेक लुप्त भ' गेल अछि, जे सहज अछि, सम्भाव्य अछि। मुदा तेँ, नीलूक चरित्र घृणित नहि कहल जा सकैत अछि। अपरिपक्व वयसहुँ ओ सर्वस्व-अर्पण हेतु पात्र-चयनमे असावधान नहि अछि, भुवनजीक आवासीय परिसरमे आओर कतोक पुरुष, मैथिल पुरुष बिलमल छथि, तिनका संग ओ एना नहि केलनि; महानगरीय वातावरणक विकृतिमे ओ निर्मलाजी अथवा स्वर्णलता नहि बनि गेलीह।

नीनूक समर्पणकेँ अस्वीकार करबाक अर्थ कमनजीक नपुंसकता अथवा निष्काम वृत्ति नहि थिक। से बहितथि तेँ कमनजी वेश्यागामी नहि बनैतथि। तहिना कमनजी कामात्तुर राक्षस नहि छथि। से बहितथि तेँ ओ स्वर्णीनाक बाति बिननमे, हुनका संग सब किछु कएल क' आपस होएतथि। समस्त मानवीय दुर्बलताक अछैत मनुष्यक विवेक ओकरा नैतिक रूपेँ विवश बनबैत अछि। समस्त दुर्बलता आ सबलताक सीमा बूझबाक समयक नायककेँ वास्तविक स्वरूप दैत अछि आ ओकर चारित्रिक वैशिष्ट्यें समकालीन समाजकेँ जीवन जीबाक दृष्टि, आ नैतिक बल अनुसंधानक बाट देखबैत अछि। आन्दोलन उपन्यासक चरित्रा चित्राण तकर हि उदाहरण थिक।

वस्तुतः अपन रचनामे कोनो पात्राक सृजन केलाक बाद जँ रचनाकार ओकर स्वामी बनि जाइ छथि, चरित्राक सहज विकास नहि होअए दै छथि, तँ ओ रचना सामान्यतया असफल भ' जाइत अछि, अपना समयक यथार्थसँ पृथक बहि जाइत अछि, रचनाक सह आ नायकक आचरण समाज सापेक्ष नहि भ' पबैत अछि। तहिना राजकमल चौधरीक रचनाक नायक–नायिका आ तकर सहयोगी पूर्ण रूपेँ स्वतन्त्रा बहैत अछि, स्वेच्छाचारी नहि। ओकर चारित्रिक विकासमे राजकमल चौधरीक नियन्त्राण ओतबे बहैत अछि, जतबा घूमैत चाक पर बाखल माटि पर कुम्हार नियन्त्राण बखैत अछि। अपन ब्रह्माक मात्रा एतबहि टा नियन्त्राण पाबि ओ पात्रा आ रचना महान भ' जाइत अछि। जेना आदिकथा आ आन्दोलन महान भेल अछि; आदिकथाक देवकान्त आ सोना मामी; आन्दोलनक कमनजी, भुवनजी, नीनू, निर्मला, स्वर्णीना महान भेल

छथि ।

आन्दोलनक प्रमुख पुरुष पात्रा छथि--विष्णुदेव ठाकुर, मोदनारायण जी, नरेन्द्र झा, चन्द्रशेखर बाबू, हेम बाबू, सुदर्शन जी, उत्तमजी, कमलजी आदि । किन्तु अनाम-सुनाम सामूहिक पात्रा सेहो छथि, जे अरसत-बेअरसत अपन व्यवहारसँ, आ अपन क्रिया-कलापसँ अपन चरित्रा आ मानसिक स्तरक परिचय दै छथि । विष्णुदेव ठाकुर, मोदनारायण जी आ चन्द्रशेखर बाबूक उपस्थिति कथा विस्तारमे ठाम-ठीम होइत छनि, मैथिलोचित प्रवृत्ति आ दृढ़तासँ परिपूर्ण छथि, एकर अलावा कोनो विशेष उल्लेखनीय योगदान हिनका लोकनिक नहि छनि । हेम बाबू सेहो तेहने प्रासंगिक पात्रा छथि, सदा निर्मला सन उछृत यौवना बेटीक पिता छथि, विधुर छथि । आत्म-प्रशंसासँ ग्रस्त छथि, अपन वौद्धिकता पर अपनहि गर्वित बड़ छथि, बेटीक उग्र-आधुनिकाक छवि कोनो बेजाए नहि लगै छनि, दोसरक नीको काज अधलाह लगै छनि, सुविचार आ उपदेश देबामे अपनाकेँ दक्ष बुझै छथि, छिद्रान्वेषी छथि । मैथिल समितिक आयोजनमे पचीस टाका चन्दा द' कए एना मोन बनबै छथि, जेना उत्तमजीकेँ कीनि लेलनि (पृष्ठ-३४) ।

नरेन्द्र झा मैथिल समितिक सक्रिय कार्यकर्त्ता छथि, उत्तमजीक संग बड़ छथि, सदा परोक्षमे निन्दा करब स्वभाव छनि । निर्मलाक बाबा पर जएबामे मोन लगै छनि, सदा हुनका दुश्चरित्रा कहबामे रस लगै छनि (पृ. ३९-४०) । मैथिल जातिक आम वृत्ति--छुगलखोरी आ दुराचरण पर एहि उपन्यासमे पर्याप्त दृष्टि देल गेल अछि (पृ.१७) । पात्राक व्यवहार आ आचरणसँ चरित्राक सम्पूर्ण छवि अंकित करबाक महावत बाजकमल चौधरीक

নেখনমে সগরো দেখাগত বহৈত অছি।

স্বদর্শনজী সন মাতৃভাষানুরাগীক অরতারণা উপন্যাসমে থোড়বেঁ কান নেন ভেন, মুদা ওতবহি কানমে উপন্যাসকাব হুনকব বিবাট ছবি ঠাঢ় ক' দেননি। পবম উৎসাহী, ক্রিযাশীন আ রিদ্রোহী ব্যক্তিত্বক এহি যরক দ্বাবা স্কূনমে ভাষা সম্বন্ধী বীতি পব রক্তব্য জাবী কবব, প্রতিক্রিযা দেখাএব, একটা বিবাট পবিদৃশ্য দিশি গশাবা কবব থিক। স্কূনী শিক্ষাক ভাষা মাধ্যম আ শিক্ষক- শিক্ষার্থীক রাতনাপক ভাষা মাধ্যম বড় পৈঘ মহত্ত্ব বখৈত অছি। স্কূনমে শিক্ষক নোকনি জখন মৈথিনীমে গপ কবনি, তঁ হুনকা ও অপন পিতা, পিতৃব্য, ভাগ সন নগৈত বহনি। মুদা জখনহি আন রোনী-বানীক নোক অধ্যাপক বনি স্কূন অএননি আ ও হিন্দীমে গপ কবএ নগননি, হঠাত্ ও অদনা বুঝাএ নগননি, মাতৃভাষা রিবোধী নাগএ নগননি (পৃ. ३৪-३३)। মাতৃভাষা নেন বুনিযাদী ক্রান্তিক সংকেত এহি অংশমে দেন গেন অছি। স্বদর্শনজীক হৃদযমে ক্রান্তিক আগিএনা ধধকৈ ছনি জে বীচহি সভামে নির্মনাজীসঁ বহস ক' নেননি-- নগঁ নিবমন দীদী! ...শান্তিক করিতা নগঁ, মাত্রা ক্রান্তি হমবা সভকেঁ চাহী, আন্দানন চাহী(পৃ. ३३)। ... এহি ছোট সন উপন্যাসমে ততেক বাতক সংকেত দেন গেন অছি, জে সৃগক নোক ববাববি ফাঁক কতহু নহি দেখাগত অছি। বস্তুতঃ সন্ ১৯৪৭সঁ ১৯৬৭ ধবিক সময মিথিনা নেন রিচিত্রা সন ছন। স্বাতন্ত্র্যোত্তব কানক ভাবতীয পবিদৃশ্যমে মৈথিন, মৈথিনী আ মিথিনা ঠকমূড়ী নগা ক' বৈসন ছন। মিথিনাক জে সেনানী, সব কিছু ছোড়ি সংগ্রামক সিপাহী বনন ছন, তকবা পমবিযাক তেসব বুঝন জাএ নাগন,

ওকর কোনো মানি-মোজর নহি দেল জাগ ছল। মিথিলাক জে ব্যক্তি শাসনমে গেল, সে নগরডোলাওল ধন ভ' গেল। ওকরা লেল মাতৃভাষা মৈথিলীক উপেক্ষা কোনো অর্থে উদ্বেলনক বিষয নহি ছল। ভাষাক মহত্বসঁ ও পরিচিত নহি ছল। ওহেন আমেকেন্দ্রিত জন প্রতিনিধি মাতৃভাষা আ জনপদীয সংস্কৃতি লেল কোন সংঘর্ষ করিতএ ? ... স্বাতন্ত্রযোত্তর কালীন তীন দশকক মৈথিলী রচনাকারকেঁ ওা সর্ব কিছু ভাবী রৌগ্ম জকাঁ নিমাহএ আ সঁরাবএ পড়লনি। স্থানীয রূঢ়ি নিপঠৈলক জটিল দাযিত্বসঁ সংঘর্ষ করৈত ভাষাগত জাগরূকতা উপেন্ন করবামে, আ আন্দোলনক ছদ্মসঁ সর্বসাধারণকেঁ সারধান করবামে...তল্লীন বহর্ব রঁড় দুর্বহ কাজ ছল। আন্দোলন উপন্যাস তাহি ক্রমমে মহত্বপূর্ণ ভূমিকা নিমাহলে অছি।

স্তুরনজী এহি উপন্যাসক অনন্ত উদার, নিরিষ্ঠ আ সহজ চরিত্রাক পাত্রা ছথি। উপন্যাসক হ্মখর পক্ষ থিক আন্দোলন, তকর নাযক ওএহ ছথি। হ্মদা, জেঁ কি আমেকআমেক শৈলীমে ওা উপন্যাস নিখল গেল আ কথারাচক কমলজী ভ' গেলাহ, স্তুরনজী গৌণ পড়ি গেল ছথি।

রঁহ্ত রোচক ঠংগে উপন্যাসকার স্তুরনজীক চরিত্রা ঠাঢ় কেলে ছথি--ধীর, গম্ভীর, শান্ত, উদার।... কলকত্তাক পৈঘ কম্পনীমে কানূনী সহাযক আ ব্যাপার সংচালক ছথি। হ্মদা মাতৃভাষাক প্রতি প্ররঁল অনুরাগ ছলি। মৈথিল সমিতি আ মৈথিলী পত্রিাকা লেল সমর্পিত ব্যক্তি ছথি, পরোপকারী ছথি, মৈথিল লোকলি লেল রঁস সহাযক লোক ছথি। গ্রাম, রঁস, ফৈকট্রীমে সয-দূ সয মৈথিলকেঁ নৌকরী দিওলে ছথি (পৃ. ৩৪)। নীলূ সন অনাথ রাঁলিকাকেঁ রঁৈটী জকাঁ রখলে ছথি (পৃ. ১৪)। রঁস

ৰ্‌মন্বক, চিন্তনশীন, ঘগীন পৰিস্থিতিসঁ আ পৰিস্থিতিজন্য ক্রিয়া–কনাপসঁ নীক জকাঁ পৰিচিত ছথি। কমনজী জখন কোনো ৰাঁত পব প্রতিৰাদ কৰৈ ছথিন, তঁ ভুৰন জী কহৈ ছথি –– ঞ বাজনীতি থিকৈ কমনজী, এহিমে উঁচিত–অনুচিতক কোনো গপ নহি কএন জা সকঞএ। মিথিনা–আন্দাননক নেন এখন একটা নেতা হমবা সৰঁকেঁ চাহী, নামক নেতা। জে সভামে গবজি সকএ, শাসক বস্ত্রক আগাঁ ধ্বন্মাড় অংগ্রেজী, হিন্দী, ৰঁগ্লা, ফাবসী চিকবি সকএ। নোককেঁ আতংকিত ক' সকএ, একটা ৰিহাড়ি সৌঁসে দেশমে উঁঠা সকএ। ... অসনী কাজ ত' হম সৰঁ কবৰঁগ। ... ৰিহাড়ি মে উঁড়ৈত খ'ঢ়মে চিনগী ত' হম সৰঁ নগেৰঁগ (পৃ. ১৩)। মাতৃভাষা আ জন্মভূমিক প্রতি এহি তবহেঁ সমর্পিত নোক, আন্দাননকেঁ সফন কবৰাঁ নেন সফন মাস্ত্রক জ্ঞাতা, নীতি–কুশন নোক, ভুৰনজীক নজবিমে কোনো পৈঘ কাজ নেন যোজনাপূর্বক কাজ কবৰাঁক পৰিদৃশ্য এনা বচন জাগত অছি। এহেন নিরিষ্ঠ আ নীতিজ্ঞ প্ৰকষক পনী মহান ক্ষদপা, নিতান্ত অব্যৱহাবিক ছথিন। সমস্ত ভব্য ছৰিক অছৈত জীৱন–পৰিদৃশ্যক এক খন্ড ৰেঁৰংগ ছনি, মনীন ছনি, শ্রীহীন ছনি। এহেন পনী সংগ কোনো সভা সোসাঞটীমে নহি জা সকৈ ছথি। কোনো সভ্য ব্যক্তিক চৌপানমে নহি ৰৈসি সকৈ ছথি...। ভুৰনজী সন ৰিশিষ্ঠ আ ৰিবাট ব্যক্তিত্ব সংগ উঁঠৰাঁ–ৰৈসৰাঁক নিনসা নির্মনা সন স্বশিক্ষিত, স্বদর্শন, উঁঙ্কৃত যৌৱনা স্ত্রীকেঁ হোঞ ছনি। এহেন উঁদাব দেহ আ উঁদাব মোনক জৱান স্ত্রীক প্রতি জঁ ভুৰনজী সন পৰিস্থিতিক নোক অনুবক্ত হোঞ ছথি, তঁ সে সহজ সম্ভাব্য থিক। হ্রদা অহী ৰীচ নির্মনাজীক পৰিচয কমনজীসঁ হোঞ ছনি আ নির্মনা আৰঁ প্ৰবান গাছক ডাবিসঁ

উঁড়া কএ নর ডাবি পব বৈঁসএ চাহি ছথি, কমনজী দিশি হ্নকব থন্নবস্তি বঁঢ়া জাগ ছনি। ভুরনজীকেঁ ওা বাঁত পসিন নহি ছনি, ম্দা সে ব্যক্ত নহি কবএ চাহি ছথি। নহি চাহি ছথি, ম্দা ব্যক্ত ভ' জাগ ছনি (পৃ. ৪৩)। রাতালাপক ওা চমকোব বোচক থছি।... রস্তুতঃ প্রেম, প্রতিষ্ঠা, ঐশ্বর্যক মাধ্যমে প্রতিদ্বন্দ্বী ঠাঢ় হৈব বঁড় দুখদাযী হোগত থছি। এহি দৃশ্যক রিকট-জটিল মনোরিজ্ঞানক ওঝবাহটিকেঁ জাহি সহজতাসঁ বাজকমন চৌধবী টিপনে ছথি, সে বোমাঁচক থছি।

সকন মৈথিন সমাজমে চর্চা থছি, জে নির্মনাজী ভুরনজীক প্রেযসী ছথিন, তাহী থাকর্ষণমে ভুরনজী হ্নকব বাঁসা পব জাএব থাএব কবৈ ছথি। ম্দা ভুরনজী ওা ব্যক্ত নহি হোথএ দেতাহ, প্রতিষ্ঠাক প্রশ্ন থছি। নোকক মুঁহ বন্দ কববা নেন ভুরনজী নির্মনাসঁ দূবী বঁঢ় া নেতাহ, সে নহি হেতনি। স্ত্রী দেহক উঁদাব স্বাহবিক প্রশ্ন থছি। কোনো থান পুরুখক সংগতি নির্মনাকেঁ ভেটৈনি, সে ভুরনজীকেঁ পসিন নহি, ম্দা কোনা বোকথিন, ও হ্নকব পলী নহি ছথিন, ঘোষিত প্রেমিকো নহি। কমনজীক সোঝাঁ, জে হ্নকব বঁড় সম্মান কবৈ ছথিন, নাঁগট কোনা হেতাহ ?

থগ উঁপন্যাসমে সরাধিক জটিন ব্যবস্থা হিনকহি চবিত্রা-চিত্রাণমে থছি। রিরাদ, তনার, দাম্পত্য, প্রতিষ্ঠা, প্রভুত্ব, ভয, উঁদাবতা, রৈবাগ্য... সৱ কিছু মিনা কএ রিচিত্রা সন স্থিতি বঁনৈত থছি। এক দিশা পকড়া কএ জাগত বঢ়ু, হ্নকা নীক থা কি বেঁজাএ সারিত কবৈত বঢ়ু, জাগত-জাগত ওহিমে দোসব দৃশ্য থারি কএ পহিল্বক সূত্রা ওকবা দেত। থান পাত্রাক সংগ সে স্থিতি নহি হোগত থছি। কনে-মনে নীনূক চবিত্রা-চিত্রাণমে

সেহো গএহ বাঁত খছি।

কমনজী খগ উঁপন্যাসক নস-নসমে সমাএন ছথি। কথাবাচক হেবাঁক কাবণেঁ খান পাত্রা নোকনিক চবিত্রা পব টিপ্পণিযো কবৈত গেনাহ খছি, মুদা হিনকা সম্বন্ধমে হিনকব টিপ্পণী, উদ্ঘোষণা, বক্তব্য, বার্তানাপ খা খাচবণে টা বিশ্লেষণ খা মূন্যাংকনক খাধাব বনি সকৈত খছি। বেঁস পঢ়ন-নিখন, খাধুনিক বিচাবধাবা, স্বচ্ছন্দ চিন্তন পদ্ধতি, প্রচুব প্রতিভা সম্পন্ন বেবোজগাব মৈথিন যবক ছথি। সাহিত্যিক সংস্কাবক সৃজনশীন খা সাংসাবিক যগ চক্রক সূক্ষ্মতাসঁ পবিচিত ব্যক্তি ছথি। ছদ্ম, পাখণ্ড, দ্বেষ-দুবিধাসঁ পবহেজ ছনি। ক্ষুধা, যৌন-পিপাসা খা খাত্মস্ববক্ষাকেঁ মনুষ্যক মূন প্রবৃত্তি মানৈ ছথি। বুদ্ধিমানক, বাক্চতুব খা জিম্মেদাব নোক ছথি। ট্যুশন ক' কএ ভাউজ, ভতীজীক জীবন-যাপন, নানন-পাননক চিন্তা বখৈ ছথি। সামাজিক বীতি-কুবীতি, দ্বেষ-দুবিধা, নোভ-ঈর্ষ্যা, জীহ-জাঁঘ-পেটক কামনাসঁ পবিচিত ছথি। প্রতিভা খা বাক্চাতুর্যক বনেঁ মহানগবমে খধিকাংশি নোকক নজবিমে সম্মানপূর্বক বঁসন ছথি। নির্মনা সন কামাতুবা যবতী হুনকা পব নহানোট হোগ ছথি, নীনূ সন কিশোবী সমর্পিত হেবা নেন তপেব ছনি, মুদা উচিতানুচিতক জ্ঞানসঁ পবিপূর্ণ কমনজী নীনূক কৌমার্য ভংগ নহি কবৈ ছথি। স্ত্রী-পুরুষক খতিবিক্ত নিকটতা কখনহুঁ কোনো পবিস্থিতিমে পবিণত ভ' জা সকৈত খছি--তাহি খন্দেশাসঁ কমনজী পবিচিত ছথি, তেঁ নীনূ খা খপনা বীচ ভাগ-বহিনক নক্ষ্মণ বেখা ঘীচি দৈ ছথি।

নাবী শোষণক প্রতি বোষ ছনি, স্ত্রী দমনক প্রতি খাক্রোশ ছনি, দেহ ব্যাপাব ক' কএ গুজব-বঁসব কবৈ

रानी स्वर्णलता सन स्त्रीक अन्तर्कथा स्वनि कए मोन घोर भ' जाइत छनि। कामेच्छा तृप्त करबाक लेल अनेक पुरुष कोरामे नाँगट होइत अर्थ-सम्पन्न स्त्री निर्मला, आ पारिवारिक भरण-पोषण हेतु असंख्य कामुक राक्षसक उत्तेजना शान्त करैत रानी विपन्न स्त्री स्वर्णलाक उत्तनामेक विश्लेषण करए लगैत छथि (पृ. ३७-३९)।

छोट वयसमे, जखन विवाहक अर्थो नहि बूझैत छलाह, स्त्री पुरुष सम्बन्धक ज्ञानो नहि छलनि, तखनहि अपन भाउजक बहिन गुनाबाँसँ विवाह करबाक इच्छा व्यक्त केलनि (पृ २४); सम्पूर्ण उपन्यासक जीवनमे उत्तवनजी सन निरिष्ठ, प्रतिष्ठित आ गम्भीर लोकक प्रति कोनहु आक्षेप अथवा आधार नहिओ रहैत, निर्मलाजी सन पथभ्रमित स्त्रीक प्रति हुनकर अनुरक्ति (पृ. ४३); स्वकीया होइतहु अनेक परिस्थितिवश निर्मलाजी परकीया बनि जएबाक घटना (पृ. ३४-४०), नीनू पर विष्णुदेव ठाकुरक वासनामेक दृष्टि (पृ. १६)...अइ तरहक कतोक प्रकरणसँ उपन्यासमे कथावाचक स्पष्ट करैत छथि जे भूख, वासना आ सुरक्षाभाव मानव जीवनक अपरिहार्य आवश्यकता थिक, अइ अपरिहार्यताक अपराध कमलजी स्वयं सेहो नहि छथि, जकर संकेत अपन वक्तव्य आ आचरणसँ दैत रहलाह। ई परिदृश्य एक दिशि उपन्यासक आधार कथ्यकेँ मजगूत करैत अछि तँ दोसर दिशि कमलजीक वैचारिक दुनियाँ आ दृढ़ मान्यताक प्रमाण दैत अछि।

आन्दोलनक स्त्री पात्राक कैक कोटि अछि--समय-चक्र आ समाज व्यवस्थाक चाँगुरमे विवश; कामोन्मादमे मातल, मदोन्मत्त; किशोरकालीन उद्वेगमे बहकल, स्वदा किछु-किछु सावधान। एहिमे एक वर्गक स्त्री छथि बनगाम रानी आ स्वर्णलता। बनगामरानी जीवन

संग्रामसँ नड़रॉ नेन स्त्री देहक सौदा करै छथि, सौदाक प्ररॅग्ल्न, दलाली; दस पाँच स्त्री वखे छथि, अपना घवमे जगह, स्वरिधा, स्ववक्षा दै छथिन, व्यापाव चलै छनि, तकव कमीशनसँ हुनकव जीरन–यापन होइत छनि; दुनियाँक आन कोनहुँ परिस्थिति, परिरेशे, आर्थिक–सामजिक–वाजनीतिक–नैतिक घटना–दुघटनासँ हुनका कोनहुँ सवोकाव नहि छनि। गाँहिकी अरैत वहए, पाइ नेन परपुरुष गमन हेतु सहर्ष तैयाव स्त्रीक संख्या हुनका ओतए रॅढ़ैत वहए, एहिसँ पैघ रॉत, प्रसन्नताक रॉत हुनका नेन किछु नहि थिक। स्वशीला वोजगावक अन्वसन्धानमे रौआगत पिताक सन्तान थिकीह, जिनका अपन माइए अइ काज नेन प्रेवित केनकनि आ माइ संगे ओ रिभिन्न रेश्यानयमे जाए नगनीह। जीरन–यापन हेतु आओव कोनो आधाव रॅचन नहि छननि (पृ. ३६–३९)।

दोसव रस्तुक प्रतिनिधित्व करै छथि--निर्मलाजी। जेना कि कहन भेन जे कोनहु व्यक्तिक आचावण, ओकव मनोरेगसँ संचानित होइत अछि, आ मनोरेगक मानसिक अरस्थिति व्यक्तिकें प्रदत्त सर्वांगीण रातारवणमे निर्मित आ निर्देशित होइत अछि। निर्मला, हेम रॉरूक पुत्री छथि, हेम रॉरू कमाउ नोक छथि, महिनरॉवी दवमाहा अरैं छनि, ओहि दवमाहाक नाव–चाव, संचय–निस्ताव कवरॉक दायित्व अथरा अधिकाव निर्मलाजीकें छनि--कोनो तवहक सामाजिक आँकुशे अथरा आर्थिक दरॉरमे नहि वहै छथि। अन्न–रस्त्रा आ सामाजिक स्ववक्षाक कोनो समस्या नहि छनि। क्षुदा दैहिक उत्ताप छनि, जगजियाव रॅनन वहरॉक आकांक्षा छनि, सरॅहक आँखिमे रॅसन वहरॉक निप्सा छनि। रिधुव पिताक

दबमाहा, आ परदेशी पति द्वारा पठाओल मनीआडरक महारॅलसँ निर्मलाजी मैथिल समिति द्वारा आयोजित जनसभामे अपनाकेँ शो-केसक मूर्त्ति जकाँ सजा क' प्रस्तुत करै छथि। अपन भाषण, भूब-बिलास, अधरक लाली, कुटिल कटाक्ष, रति-स्वरति, अंग-संचालनसँ लोकक मोन मोहित कए छथि आ लोकक प्रशंसाक पात्रा बनल कए छथि। हिनका स्वर्णा जकाँ बॅलगाम बॅानीक खोलीमे आठि नहि ओछरॅ' पडै छलि, निद प्रति आ अनेक रॅब अनेक कान्हक पुरुष संग व्याभिचार नहि करए पड़ै छलि। काज दुनू एके रंग करै छथि, मुदा, जँ कि स्वर्णा लेल देह पूँजी छलि, तेँ हुनकर करतॅ व्याभिचार कहल गेल आ जँ कि निर्मला लेल देह प्रसाद छलि, तेँ हुनकर करतॅ आचार भेल। स्वर्णा जकाँ जँ निर्मलाजी रॅबोजगार पिताक रॅटी रहितथि, दायित्वक रॅाझ तर दारॅल रहितथि, दू साँझक लोल रोटी जुटएरॅा लेल, दू बीत रस्त्राखण्ड अलरॅा लेल देहक अलावा आन कोलो रॅाटि नहि रहितलि, तँ निर्मला जीक चटक-मटक कतए जगतनि ? ... ओला आजुक स्त्री विमर्शमे छान-पगहा तोड़लिहार रओव्यरीर लोकलि एहि चरित्राक प्रति, आ तकर एहि तरहक मूल्यांकलक प्रति अलघोल अवश्य करताह, जे स्त्री, देहसँ रॅाहरो रॅहुत किछु होगत अछि। ...अवश्य होगत अछि, मुदा कोलो मादक संगीत ध्वनि पोल पर तरॅला रॅजाएरॅ, आ तरॅला पर तरॅला रॅजाएरॅ, दुनू दू रॅात होगत अछि। निर्मलाजी आ स्वर्णा जीक चारित्रिक विश्लेषणमे एहि उपन्यासमे कान्हकताक गओह विरोधी स्वरूप, वासनाक गओह विरोधाभास, नारी सम्बन्धक गओह रूप वैविध्य आन्दोलन उपन्यासमे भारककेँ आन्दोलित करैत अछि।

स्वर्णलताजी जें कि आर्थिक रूपें समृद्ध आ निश्चिन्त छथि, आकर्षक परिधान पहिरबाक क्षमता आ उन्मादक देहक स्वामिनी छथि, आग सुरनजी, कान्ति कमलजी, परसू केओ आओत... रंग-विरंगक स्वादमे मस्त रहै छथि। सभा-सोसाइटीमे, बुद्धिजीवी लोकनिक बीचमे अपन उपस्थिति बनौने राखए चाहै छथि, प्रतिष्ठित आ विद्वान लोकनिक नयनतारा बनल रहए चाहै छथि, तें कोन नहिओ रहैत साहित्य, कला, संस्कृति आ मिथिला-मैथिलीक प्रगतिगामी आन्दोलनसँ जुड़ल रहए चाहै छथि; स्वस्थ आ सम्पूर्ण पुरुषक सान्निध्य हुनका लेल बड़ पैघ बात थिक। मदिरतम मुस्कान, भ्रू-भंगिमा, रति-स्वरतिक प्रभावें विद्रुत जनक आँखिमे बसल रहबा हुनकर लेल छलि (पृ. 39-40)। स्वर्णलताक बाति आ निर्मलाक बातिमे एकहु अन्तर अछि आ एकहु समानता।...वस्तुतः स्वर्णलता आ निर्मला, दुनू दू रङ्क स्त्री छथि। एक गोटे प्राण रक्षा लेल, लोन-रोटी लेल, अपन आ परिवारक क्षुधा मेटेबा लेल, स्वयं निष्काम बनि दोसरक कामोत्तेजना शान्त करबाक साधन बनै छथि; दोसरक यौन-पिपासाक शमन करै छथि; तँ दोसर यौन-पिपासासँ व्याकुल भेल दोसराकें पीबि जएबा लेल उताहुल रहै छथि; नित नव-नव माछ पर जाल फेकै छथि।--निर्मला जी छथि सभा-सोसाइटीक प्रेमिका। पुरुष-समाजमे गेला बिना नीक नहि लगै छनि। मैथिल समितिक द्वारा ओ सुरनजीक सम्पर्कमे अएलीह, आ सुरनजीक द्वारा मैथिल समितिक सम्पर्कमे। आ सुरनजी हिनका अपनामे लपेटि लेलथिन। निर्मलाजीकें ओ गप्प अध् ानाह नहि

নগননি। থাৰ ত' সৌঁসে সমাজকেঁ ব্ৰঁমন ছৈ জো ও স্তুৰন জীক প্ৰেযসী ছথি। হেম ৰাৰ্বৃকেঁ সেহো ব্ৰঁমন ছনি। হেম ৰাৰ্বৃক জমাযকেঁ সেহো খৰবি ছনি। ও ৰেঁচাবা তঁ নাজেঁ কনকত্তা থৰিতো নহিঐঁ...(থান্দানন/পৃ. 39)। রিচাৰণীয রিষয গহো থিক জে থৰ্থাভারে টৗ মানৰ জীৰনক মূন সমস্যা নহি হোগত থছি। যৌন-তৃপ্তি নেন রিরাহেটৗসঁ নিশ্চিন্ত নহি ভেন জা সকৈত থছি। নির্মনাজী তকবহি উঁদাহবণ থিকীহ, হ্নকা সন রিথাহনি স্ত্ৰাী; রিধ্ৰ পিতা থা পবদেশী পতিক সংঘঞ কমাগ পব একছত্ৰা থধিকাব বখনিহাবি স্ত্ৰাীক গ্ৰ থাচবণ কথী নেন ? নীনূক চবিত্ৰা থপেক্ষাগ্বত ৰেঁসী ব্যাখ্যয থা রিশ্লেষণপবক থছি। ও থনাথ ছথি, মুদা স্তুৰনজী সন নিরিষ্ঠ ব্যক্তিক ছত্ৰাছাযামে নানন-পানন ভেননি। জন্মহিসঁ মহানগবমে ছথি, মুদা মহানগবীয থপসংস্কৃতিক থসবি হ্নকব থাচবণ পব নহি ছনি। মৈথিন সংস্কাব থা সভ্যতাসঁ পবিপূৰ্ণ ছথি। রাক্চাতুর্য, সাহস, শানীনতা, প্ৰগতিকামনা, ঋদ্ধা দ্ৰাহসঁ সম্পন্ন তেবহ-চৈদহ ৰৰ্খক কিশোবী ছথি। থতিথি সকোবমে পৰ্ঠ্, কাঁচহি উঁম্ৰমে নোক-সমাজ থা দেশ-দ্নিযাঁকেঁ চিন্হৰাক ক্ষমতাসঁ পবিপূৰ্ণ, কোনহুঁ পবিস্থিতিমে কোনহুঁ ব্যক্তিক সমক্ষ থপন ৰাত নিডবতাসঁ বখৰাক স্পষ্ঠতা ছনি। রিষ্ণুদের ঠাকুবকেঁ ঠাঁয-পঠাঁয নোফব কহি দেননি (পৃ. 16)। নীনূ ভার্ক ছথি, কমনজীকেঁ কমন ভৈযা এহি নেন নহি কহতী জে হ্নকব একটা কমন ভৈযা টী.ৰী. বোগসঁ মবি গেননি (পৃ. 22-33)। কমনজীক জেৰী থা মনীৰেঁগ টৈৰেঁত বহৈ ছথি, ছোটৈ হেৰাক থধিকাব মঁগৈ ছথি (পৃ. 32)। ঘবমে একাকী জীৰন ব্যতীত কবৈত থকছ ছথি থা কমনজীকেঁ কহৈ ছথি জে থহাঁকেঁ তঁ হমবা দিশ

तकरॉक पनखति नहि होएत (पृ. 47-48)। निर्मलासँ कमलजीक छेम-क्षेम लीलूकेँ नीक नहि लगैत छनि (पृ. 48)। कमलजीसँ लीलूक छेम-क्षेम तुरलजीकेँ सन्देहास्पद लगैत छनि (पृ. 49)। कमलजी लीलूक कवतरँ पर संशोकित बहि छथि (पृ. 48)। लीलूकेँ होइत बहि छनि जे ओ दिन बाति कमलजी लग रहैसन बहथि। बाति कए अधिकनग्न अवस्थामे कमलजीक ओछाओन धरि पहुँच जाइत छथि (पृ. 50-51)। सम्पूर्ण कथामे लीलूक कवतरँकेँ एकटा 'पाठ' बूझि जँ एहि पर विचार-विमर्श हो, तँ सभ किछु झनझन बुझाइत अछि। कमलजी आ तुरलजीक शंका, लीलूक इच्छा, रंगिन-भोगक सम्बोधन, यौन-पिपासाक दैहिक आवश्यकता अथवा मनोवेग-उद्वेग अथवा काम-ग्रस्त लेल उन्मादित योद्धा, आन्हर बाक्षस...सभ किछु गड्ड मड्ड भ' जाइत अछि। कखनहुँ त' मानवीय मनोवेगक सहजात चबित्रा लगैत अछि कखनहुँ घनघोर बहस्यमय। सर्वगुण सम्पन्न किशोबी लीलूक यौनोन्माद हुनका समस्त नैतिकता, मर्यादा, वर्जना आ सम्बन्ध-सम्बोधनक सीमासँ मुक्त क' दैत छनि। मनौन लेल घिघियाइत कमलजीक समस्त प्रस्तावकेँ नकाबैत साफे-साफ कहैत छथि जे लोक किछु कहए, हमरा नहि बहल जाइए, अहाँ हमरासँ विवाह क' लिअ' (पृ. 51)। मनोवेग आ कामोत्तेजनाक खौंतकेँ एहि उपन्यासमे मानवीय प्रवृत्तिक रूपमे जतेक स्पष्टता आ वैविध्यसँ व्याख्यातित कएल गेल अछि, ताहिसँ प्रमाणित होइत अछि जे सत्तयौनोन्मादमे गाय धरि बाघिन भ' जाइत अछि। स्थापित मर्यादाक अधीन तृप्तिक बाट साफ भेल तँ भेल, नहि भेल तँ उद्वेग लेल कोनहुँ सीमा, कोनहुँ मर्यादाक अनुपालन काम्य नहि थिक। समस्त नायक-

নাযিকা এবং সহযোগী পাত্রাক জীবন-প্রক্রিযা, বহন-সহন আদিক বর্ণন এতএ অত্যন্ত স্বাভাবিক ঢংগে ভেল অছি। একটা গৌণ স্ত্রী পাত্রা ছথি কমলজীক ভৌজী। কমলজী অপন প্রবাসক শ্রেয হিনকে দৈ ছথি। ভৌজী কহলকনি--গামক জীবন অহাঁকেঁ সহল নহি জাএত। সহলো জাএত তঁ... গামক লোক নিন্দা করত। কহত, ঘরমে বিধবা ভৌজী ছথিন, তেঁ ও নৌকরী ছোড়ি গামমে বৈসল অছি...(পৃ. 13)। অগ বঞ্চ্যমে সেহো মানবীয বৃত্তিক সহজ আশংকা অছি--সমাজক লোকমে সংশয হেবাক আশংকা, অপনে লোকক সম্ভাবনা পর আশংকা, কমলজীক ধারণা পর আশংকা...। আগি আ খ'ড় এক ঠাঁ বহত, জানি নহি কহিআ কী ভ' জাএত! 'ভৌজী' মৈথিল সমাজক অথবা মৈথিল নারীক বিচিত্রা উদাহরণ থিকীহ। জীবনক ভাব, সন্তানক ভাব, মর্যাদাক ভাব, দেহক ভাব, সমাজবৃন্দক লোকমে উঠৈত কল্পনাক ভাব... মিথিলাক কোনো বিধবা স্ত্রীক জীবন কোন তরহেঁ, তরুআরিক ধার পর চলবা লেল বিবশ বহৈত অছি, তকরা উপন্যাসকার মাত্রা এক বঞ্চ্যমে স্পষ্ট ক' দেলে ছথি। সম্পূর্ণ সৃষ্টিমে দূ টা অভিকরণ মহত্বপূর্ণ অছি -- একটা সমাজ ব্যবস্থা, জাহিমে রাজনীতি, সমাজনীতি, অর্থনীতি, মূল্যনীতি আদিক মর্যাদা, কানূন-কাযদা আ সীমা শর্ত অবৈত অছি; আ জকর প্রতিনিধিত্ব অগ উপন্যাসমে মৈথিল সমিতি দ্বারা চলাওল আন্দোলন থিক। এহি আন্দোলনমে সব কিও অপন-অপন পৌরুখ-প্রতিভাক অনুকূল অপন-অপন মহত্ব সাবিত করএ চাহি ছথি, স'ক ভরি জে ক' পবৈ ছথি, কবৈ ছথি, তৃপ্ত অথবা কুণ্ঠিত হোগ ছথি; নিন্দা-শিকাযত, চ'র-চুগলখোরী, ওষ্ট্যা-দ্বেষমে লিপ্ত বহৈ ছথি। অপন

ঠসিযত লেল হবদম খত্রান্বমান খা খদনা লেল ন্যূনান্বমানক ধাবণাসঁ গ্রস্ত বহ ছথি। মৈথিল সমিতিক ক্রিযা–কলাপকেঁ জঁ প্রতীক খর্থমে লী তঁ সম্পূর্ণ ভাবতীয সমাজ ব্যবস্থাক গ্বণ–সূত্রা এহিমে ভেটৈ সকৈত খছি। দোসব খভিকবণ থিক মানরীয মনোরেগক সঙ্কান ব্যবস্থা। সহ তঁ ওা থিক জে একব কোনো ব্যবস্থা নহি হোগত খছি, কোনো স্থাপিত খা শাশ্বত ব্যবস্থাসঁ ওা সংচালিত নহি হোগত খছি। ব্যক্তি–ব্যক্তিক ক্ষণ রিশেষক মনোরেগ খলগ–খলগ ব্যবস্থা রিধান নির্মিত কবৈত খছি। বোটী, সেক্স, স্ববক্ষাক খারশ্যকতা পূব কব' লেল কখন কোন ব্যক্তি কী কবত, তকব পূরন্বিমান খসম্ভর খছি। কৈক কোটিক স্ত্রী প্বকষক মনোরেগক রিশ্লেষণ খা চিত্রাণসঁ এহি উপন্যাসকেঁ জাহি তবহেঁ সমৃদ্ধ কএল গেল খছি; সে রিরেকশীল বচনা পাঠ প্রক্রিযাক মাঁগ কবৈত খছি। তাহি খাধাব পব ওা কহবাঁমে কোনো সংকোচ নহি হেবাঁক চাহী জে ভাবতীয নাগবিকক জীরন–ব্যবস্থাকেঁ গম্ভীবতাসঁ বেখাঁকিত কববাঁ লেল ওা ছোটৈ সন রৃতান্তক কথা, ভাবতীয সাহিত্যক খপূর্র নিধি থিক, নিদর্শিকা থিক। ত্তললামেক রূপেঁ দেখী তঁ খাদিকথাক দেরকান্ত খা খান্দাললক কমলজীমে রিবাটৈ খন্তব খছি। দেরকান্ত মর্যাদা খা মনোরেগমে সামংজস্য স্থাপিত নহি ক' পবৈঁ ছথি। দুনূ স্থিতিক সংঘর্ষক জ্বালামে স্বযংকেঁ ভস্ম কবৈত বহ ছথি। হুদা কমলজী রেঁসী সহজ ছথি। নৈতিকতা খা মর্যাদাক বক্ষা কববাঁমে কতহ্ কোনো হ্রসল ডেগ নহি উঠবৈঁ ছথি; কাম–তৃপ্তি হেতু সমর্পিত নীনূকেঁ খপনা কোঠলীসঁ খাপস তঁ ক' দৈ ছথি, হুদা মনোরেগকেঁ মাবি কএ খপনাকেঁ প্রতাবিত নহি কবৈ ছথি। চল জাগ ছথি বাতি রেঁচ'বাঁলী স্বশীলা নামধাবী স্ত্রীক খাটৈ পব। ওা

दीगब ब़ाँत थिक जे ओतएसँ दोसब मनोरेग ब़ेंसाहि थनै छथि। ... द्‌नू नाथकक दू पबिदृश्य, दू जीरन, दू ब़ाँटे, दू सीमा थछि। थान्दानन, जीरन-संग्राममे तल्लीन मैथिन नागबिकक चाबित्रिक रिश्लेषण, सामाजिक-बाजनीतिक पर्यरस्थितिक कोनाज थिक, बृत्तान्त थिक; तँ थादिकथा सामन्ती संस्काबक कोखिमे प्रष्पित-रिकसित रिष्ठति था मानरेतब भाषा, ब्यरहाब, ब्यरस्थादिक ष्फसित स्वरूपक गाथा। थान्दाननक नीनूक उँन्माद रयसोचित थाचबण थिक, थजोह रयसक एकटा कन्याक क्षणिक उँद्वेग थिक; ओहिमे ने तँ द्‌तबफा प्रेमादर्शक कोनो रूपाष्ठति थछि, ने रासनामेक भूखक कोनो नियोजित थरधाबणा। ओहिमे कोनो स्वस्थ, स्वरिचाबित सोच था दूबगामी चिन्तनशीनताक कोनो थाशा नहि कएन जा सकै थछि; सम्भरतः तें ओकबा ब़ूझ-स्वझा क' ब़ाँटे धबाएब़ थासान छन। ष्फदा थादिकथाक स्वशीना पबिपक्क, प्रौढ़ था प्रगल्भ स्त्री छथि। ष्फनीन घबानाक एहि रिराहित था थतृप्तकामा नाथिकासँ हिनकब स्वस्थ मानसिकता, तीव्र मनोरेग था ठोस निर्णयक उँमेद कएन जा सकैत थछि। हिनकब प्रेम निरेदनकें नकाबन जा सकै थछि, तिबस्कृत कएन जा सकै थछि, हिनका ब़ूझाओन नहि जा सकै थछि। नीनूक उँन्माद भेन ब्रत्ती, जकबा स्वनगैसँ पूर्रहि मिझाओन गेन; ष्फदा स्वशीनाक उँन्माद भेन दाराानन, ओकब मिझाएब़ थसम्भर थछि, ओकब तृप्ति थारश्यक थछि, ओहिसँ धाह उँठब़ उँचित थछि। दोसब ब़ाँत ई जे नीनूक उँद्वेग एसगब उँठन दोसब मिझौनक; ष्फदा स्वशीनाक उँद्वेग जखनहि उँठन, देरकान्तक उँद्वेगसँ घी-ब़ेंसात पबैत गेन। दाराानन ब़नि गेन...। द्‌नू उँपन्यासक दू पबिदृश्य थछि, दू पर्यरस्थिति थछि...।

তথাপি লেখকক জীরন-দৃষ্টিক অন্তর্ধারা সর্র ঠাঁ র্যাপ্ত অছি। দু উপন্যাসক দু পরিদৃশ্য আ দু পর্যরস্থিতিক নাযক ছথি—কমলজী আ দেরকান্ত। ম্দা সর্র কিছু ভিন্ন রহলাক র্রাদহু নাযকক স্বভারমে এতর্রা সাম্য ছনি জে কমলজীক লজরিমে চাহ-কাঁফীমে দূধ, চীনী মিলাএর্র ওকর কৌমার্য লষ্ট কবর্র থিক (আন্দানন/পৃ. 43) দোসর দিশ রিনা দূধ-চীনীক চাহ পীর্র দেরকান্তক প্রবৃত্তি ভ' গেল ছনি (আদিকথা/পৃ. 37)। সামান্য অর্থমে ত' ঐ অহন্ত সরলীকৃত আ চলতাউ রাক্য লগৈত অছি, ম্দা গম্ভীবতাপূর্রক রিচাব কএলা পব, প্রতীক অর্থমে রস্তু আ রিচাবক মৌলিকতা র্রলৌলে বখর্রাক, ওকর দোষাদোষ সংগ ওকরা গ্রহণ কবর্রাক ঐমানদাবী থিক।

রিদ্বান লোকলি তঁ মানিতে ছথি, পাঠকীয দৃষ্টিকোণসঁ সেহো ঐ প্রমাণিত ভ' চুকল অছি, জে কথোকথন আ রার্তালাপসঁ কোনহুঁ কথাকৃতিমে নাটকীযতা আ জীরন্ততা অর্রৈত অছি। উপন্যাসক স্থিতিমে তঁ ঐ সর্রাধিক প্রভারী হোগত অছি। কথা রিস্তাব আ ঘটনা রিকাসমে কথোকথন জতে র্রেসী হো, উপন্যাস ওতর্রে জীরন্ত হএত। এতর্রা ধরি অরশ্য জে কথোপকথনক সম্বাদ, ভাষণ নহি ভ' জাএ, সে ভেলাসঁ উপন্যাসক রোচকতা আ প্রভার আহত হোগত অছি। হমরা জনৈত ও উপন্যাস সর্রাধিক রোচক আ প্রভারকাবী হোগত অছি, জকর পাত্রা আপসমে র্রেসী কাল গপ-শপ কবৈত কথাকেঁ গতি দৈত অছি। উপন্যাসকাবকেঁ কথাভূমিমে জতে কম জাএ পড়লি, প্রভার ততে র্রেসী প্রর্রল হএত। ম্দা ঐ গপ-শপ লক্ষ্যর নহি হো, সে ধ্যান বাখ'ক থিক। সম্বাদমে পাত্রাক মলোভার আ আচবণক সংকেত হো।

अर्थात् नाटकीय शैलीक उपन्यास लिखब एकटा पैघ जोखिमक काज थिक, जे उपन्यासकेँ संक्षिप्त, दीप्त, रोचक आ प्रभावकारी बनबैत अछि। ओना एकटा रिकवाल जोखिम संग लागल रहैत अछि --कौशलमे कनेको चूक भेल तँ सभ गुड़ गोबर। एहि मामिलामे राजकमल चौधरीक दुनू उपन्यास--आन्दोलन, आदिकथा-- प्रभृत सफल उपन्यास थिक। दू भिन्न विषय, दू भिन्न मनोभावक उपन्यासमे कथानककेँ विस्तार दैत कथोपकथन, घटना विशेषक परिस्थिति आ वातावरण निर्माणमे अपूर्व सफलता प्राप्त केलक अछि। पात्राक आवेग, प्रेरणा, भावना, घटना विशेष पर ओकर प्रतिक्रिया आ पारस्परिक प्रभावक झाँकी दुनू उपन्यासक कथोपकथनमे हरदम देखाइत रहैत अछि। छोट-छोट वाक्य आ कथन खण्डक कारणेँ ई प्रभाव
आओर रोचक भेल अछि आ उपन्यासमे निखार आएल अछि। आन्दोलनमे स्वर्णा सन वेश्यासँ कमलजीक वार्तालाप(पृ. 38-39), निर्मलाजीसँ भेंट-घाटक मादे कमलजी आ लीलूक वार्तालाप(पृ. 48), भाषणक रूपमे देल गेल रञ्जनक अन्तःस्वदर्शनजीक स्थिति-चित्रा विवरण(पृ. 51-53), अइ बातक प्रमाण थिक जे छोट-छोट वार्तालापसँ कोना एकटा वेश्याक दारुण कथा, अथवा कोनो पुरुष दिशि अनुरक्त एकटा युवतीक दोसर स्त्रीसँ ग्रहणभाव, अथवा कोनो अनैतिक-अवांछित घटनासँ कोनो युवकक आक्रोशक उद्वेग स्पष्ट होइत अछि; आ कोन वैशिष्ट्यक संग तकर प्रभाव पड़ैत अछि। आदिकथा यद्यपि वर्णनात्मक शैलीमे लिखल गेल उपन्यास थिक तथापि वार्तालाप द्वारा पात्राक मनोभाव आ चारित्रिक वैशिष्ट्य एतए अंकित अछि। राजकमल

চৈধবীক কথালেখনক ও খাস রিশিষ্ঠতা থিক, জকব সমারেশ খগ উঁপন্যাসমে নীক জকাঁ ভেল খছি। রার্তালাপক পশ্চাত এহি উঁপন্যাসমে কতোক ঠাম উঁপন্যাসকাব পাত্রাক ক্রিযা, খারেগ, মনোদশা খাদি পব খপন টিপ্পণী দৈত খাগূ বঢ়ৈ ছথি; মুদা সে টিপ্পণী খপন গসারক কাবণেঁ রার্তালাপক সংযোজক রিন্দু সারিত হোগত খছি। প্রথম ভেঁটক প্রাবম্ভিক সম্বাদমে স্বর্ণলা, দেরকান্তসঁ পূছবৈ শুরুহ করৈ ছথি জে--খহাঁ জমীন্দাব ছী? ... খা খন্ত করৈ ছথি জে -- খপ্পন ঘব ত' খহাঁ হমবা সবঁকেঁ দ' দেলউঁ, খপনে কতএ সূতবৈ? ...(পৃ.34-35)। খগ রার্তালাপমে দুনূক খনুবক্তিক সূক্ষ্ম রিশ্লেষণ হোগত নজবি খবৈত খছি। কোনো স্ত্রী-পুরুষ এক দোসবা দিশ কোনা খনুবক্ত হোগ ছথি, খনুবক্তিক উঁদ্ভর কোনা হোগত খছি, সংকেত কোনা হোগত খছি, দূ খপবিচিত ব্যক্তিক খপবিচিত সংকেতক জাঁচ পবতাল কোনা হোগত খছি, দুনূ খাপসমে কোনা খুজৈত জাগত খছি... খাদিকথাক কথোপকথন এহি সমস্ত মনোভার খা পবিস্থিতিক রার্তালাপক রিশিষ্ঠ উঁদাহবণ থিক। রিশ্লেষণামেক শৈলীমে লিখল গেল উঁপন্যাসমে, পাত্রাক মনোরিশ্লেষণকেঁ বেখাংকিত কবৈবঁলা কথোপকথন, খক্সব উঁপন্যাসক প্রভারকেঁ উঁকের্ষ দৈত খছি খা উঁপন্যাসকাবক রিশ্লেষণামেকতাকেঁ গতি খা খালন্দ দৈত খছি, সে এতএ ভেল খছি। জখন দেরকান্তক মাম খনিরুদ্ধ বাঁবূ দেরকান্তকেঁ মাহকমে কিছু দিন খাওব বহি জেবাক খাগ্রহ করৈ ছথি, তখন স্বর্ণলা খা দেরকান্তক প্রেমাভিব্যক্তি স্পষ্ঠ শব্দমে হোগত বহৈত খছি, প্রেমিকাক পতিকেঁ সেহো খর্থ স্পষ্ঠ লগৈত বহৈ ছলি, মুদা প্রেমক লহি, মামি-ভাগিলক মর্যাদাপূর্ণ স্নেহক

(पृ.67–68)। सँह्ग्रर्थक कथोपकथनक ओ कौशल चमत्कृत करैत अछि। दैनन्दिनक बोली–बानी, भाषा–संस्कारकें तरासि कए रोचक कथोपकथन बनाएब पैघ कौशलक बात थिक। राजकमल चौधरीकें भाषा संरचनामे एहि तरहक चमत्कार उपेन्न करबाक महारत प्राप्त छनि। कोनहुँ उपन्यासक कथाक्रम, पात्राक आचरण आ करतब, क्रिया–कलापक परिणति तथा सामाजिक प्रतिक्रिया आदिक प्रभाव भारक पर तखनहि फलित होइत अछि, जखन ओकर विश्वसनीयता कायम भ' सकए। विश्वसनीयता स्थापित नहि भेला पर कतोक बेर सत्कथा, फूसि लगैत रहैत अछि, आ तखन पाठक ओकरा खिस्सा–पिहानी बूझि बहटारि दैत अछि। एहना स्थितिमे साहित्य–सृजनक मूल लक्ष्य --सामाजिक परिदृश्य संशोधन अथवा मानवीय व्यवस्थाक संस्थापनक पूर्ति नहि भ' पबैत अछि, ओहेन साहित्य मात्रा मनोरंजन बनि कए रहि जाइत अछि। मनोरंजन कथा साहित्य लेल आवश्यक अवश्य अछि, सदा ओ साधन थिक, साध्य नहि। कोनहुँ कथा साहित्य लेल मनोरंजन एतबे अर्थ रखैत अछि, जे पाठक ओकरा आश्रयमे रचनासँ आद्यापान्त जुड़ल रहए। कथा साहित्यक असल उद्देश्य समाप्तिक पश्चात शुरू होइत अछि, जखन ओकर प्रभाव भारकक मोनमे चलैत रहैत अछि।. ..एहि स्थिति लेल कथाक्रमक विश्वसनीयता प्रमुख तत्व थिक। अविश्वसनीय कथासूत्रा कोनहुँ पाठकक चेतनाकें झकझोड़ि नहि सकैत अछि। तें हरेक घटनाक्रम लेल, चरित्रा चित्राण लेल, देश–काल–वातावरणक व्यवस्थित स्वरूपक निरूपण आवश्यक अछि। कोनहुँ पात्राक आचरण, करतब, मनोवेग, क्रिया–कलाप, कथोपकथन आदिक स्वाभाविकता

स्वनिश्चित कयलाँ छैन रचनाकार, देश, काल आदिक औचित्यक सूचना आवश्यक होइत अछि। निर्मलाजीक कामोन्माद, अनेक पुरुष संग घुमबाँ-फिरबाक प्रवृत्ति कलकत्ताक परिवेशमे मात्रा चर्चाक विषय थिक, मिथिलाक कोनो गाममे ई घटना होइत, तँ आगि लागि जइतए। ओना अंगरेजी-अमेरिकामे एहेन किछु नहि होइतए। ठीक तहिना, नीलूक विवाह छैनकर आश्रयदाता ब'र तकै छथि, कमलजी संगे प्रेम-क्षेम देखि चिन्तित होइ छथि; ओना पाश्चात्य देशमे ई बात अप्रासंगिक होइतए। एम.ए. पास युवक कमलजी मिथिलाक कोनो गाम, कोनो ट्रेनमे ट्युशनकेँ अपन जीविका नहि बना सकितथि। कतबो पढ़ल-लिखल होथु, कोनो युवती ग्रामीण परिवेशमे सभा-सोसाइटीमे उठबा-बैसबा नहि क' सकितए। पाश्चात्य संस्कृतिमे अनिरुद्ध बाबू कतबो उच्च कुलशीलक होइतथि, कतबो सम्पत्तिशाली होइतथि, स्वशीला सन उद्दाम जवानीक स्त्री विवाहि क' घर नहि अनितथि; कदाचित अबितो जैतनि तँ ओ कुलानन्द सन समवयस्की युवकक महत्त्व नहि स्वीकारितथि, अपन यौन तृप्ति छैन कखनहुँ कोनो देवकान्त, अथवा कुलानन्दक बाँहि ध' लितथि। कुलानन्दक स्त्री छैनकर अत्याचार नहि सहितनि; हविलदारबाबूक चैताली नहि चलितनि...। रचनाकार निर्माण छैन सेहो आलोच्य समाजक सभ्यता, संस्कृति, आचार-विचार, व्यवहार, रीति-रिवाज, वेश-भूषा, सामाजिक परिवेश भौगोलिक आबोहवा, प्राकृतिक परिस्थिति...सबँ किछु उत्तरदायी होइत अछि। कोन परिवेश, कोन रचनाकारसँ प्रभावित भ' कए कोन कालमे आदिकथाक सोना मामी देवकान्त पर अनुरक्त

होइत छथि, कहुँ होइत छथि; कोनो रीति रिवाजक कारणेँ अनावश्यक संगे वहबाँ लेल विवश होइत छथि, कोनो कारणेँ हुनकासँ घृणा होइत छनि, कखन आ किएँ सहानुभूति आ प्रेम छथि, हमनिगबरानी पर किएँ तामस उठैत छनि; खान्दानक नीत कोनो संस्कार आ सांस्कृतिक अनुदानक कारणेँ कोनो समयमे कमलजीक स्वागत करै छथि, आदर करै छथि, प्रेम करए लगै छथि, सर्वस्व अर्पित करए चल जाइ छथि; कोनो समयमे निर्मलाक शांतिगीतक प्रस्ताव अनसुना सारित होइत अछि; कोनो परिस्थितिमे खान्दानक स्वधीना रॅनगाम रॅनीक शरणमे जाइ छथि; निर्मला सुरमजीक संग छोड़ि कमलजी दिशि लपकै छथि... एहि समस्त प्रश्नक उत्तर देश-काल-पातारवणसँ देल जाइत अछि। कोनो घटना खास भौगोलिक परिवेशक खास परिस्थिति आ खास समयमे घटित भ' कए अर्थवान अथवा अर्थहीन होइत अछि। कोनहुँ पात्राक मनोदशा अथवा क्रिया-कलाप स्थान-काल-पात्रा आ वातावरणक अनुसार स्थिर आ परिवर्तनशील होइत अछि। उपन्यासक कथाक्रममे एकर बॅड़ महत्व होइत अछि। से बाजकमल चौधरीक एहि दून उपन्यासमे सहजतासँ रूपायित अछि। चित्राकलासँ बाजकमल चौधरीकेँ बॅड़ बेसी अनुराग रहलनि अछि। कतोक रॅब मित्रा लोकनिकेँ पत्रा लिखैत अपन किछु धारणा चित्रामे अभिव्यक्त केलनि अछि, किछु कविता, चित्राक संग लिखने छथि। तएह कारण थिक जे हुनकर कथा, कविता, उपन्यासमे कतोक ठाम पढ़बाँसँ बेसी कोनो मनोरम अथवा मार्मिक अथवा हृदय विदारक पेंटिंग देखबाँक अनुभव होइत रहैत अछि, अर्थरहित आ संकेतरहित पेंटिंग देखबाँक अनुभव -- शरदक परित्रा आकाशमे

গ্নেত তন্ব চন্দ্রমা উঁগন ছন। কতী বাতি ৰীতন হোএত, কিছু ক্তাত নহি। হমব মোন খপন গাম দিশে ভাগি চনন। চবখা কাট্টি কএ গ্বজব কবৈৰানী মাগ, ৰঁদবিকাশ্রম–কেদাবনাথ–খমবনাথ জএৰাঁক মনোবথ জকব পূব নর্গং ভ' সকনগ... খা হম দূ ৰেঁব স্বমেৰু পর্ত খা তিব্বতক খন্তিম সিমান ধবি ভ' খাএন ছী। হমব খগ্রজ গামক হাওা স্কূনমে গণিতক খধ্যাপক ছনাহ... খপন পেট্টে কাট্টি কএ হমবা এম.এ. পাস কবৌননি... গামমে মহামাবীক উঁপোত ভেন, টৈন্নসঁ বহি গেনাহ। খাৰ্ঁ রিধরা ভৌজী ছথি, সোন–সন হ্নকব কন্যা ছনি খা চাৰু কাত ভূখ, দবিদ্রতা, সংঞ্রামক ৰীমাবী সভক জান পসবন খছি... ভৌজী হমবা সংগে নর্গং বহ ছথি, সমাজক ভযসঁ... খা হম রিখাহ নর্গং কবৈ ছী... (খান্দানন/পৃ. 21)। এহি ছোট্টে সন স্থিতি–চিত্রামে উঁপন্যাসকাব কৈক ৰব্খক সময, কৈক মনোভাব খা স্বপ্নখল্ডক রিতান, কৈক মনোবৃত্তি খা ব্যরস্থা–মর্যাদা–দাযিত্বক ৰঙ্কুন খা কৈক রিরশতাক দাৰুণ রিডম্বনাকেঁ জীরন্ত ক' দেনে ছথি। এতেক ছোট্টে চিত্রামে রিবাট্টে পবিদৃশ্যক সমাৱেশ কোনো কনাকাবক শ্রেষ্ঠ কৌশন খা গম্ভীব জীরন–দৃষ্টিক পবিচাযক থিক। খহিনা খাদিকথা উঁপন্যাসমে––খহাঁ দেরৱাৰূক সংগে স্বনতানগংজক জন–মন্দিব দেখ খাউঁ। হম নর্গং জা সকৰ। কৈকটা মোকদমাক কাগজ–পত্রা তৈযাব কবৰাক খছি...। ...স্বনতানগংজমে গংগাক ৰীচ ধাবামে খছি প্রসিদ্ধ খজগৈৰীনাথ মহাদেরক প্রাচীনতম মন্দিব। ...ভাগিন খা মামী নাহ কিবাযা ক' কএ মন্দিব পব খএনাহ। ভোবক খাঠ–নৌ ৰজন হএত। সূর্যক কিবণ জাহ্নরীক জন পব সতবংগ চিত্রা ৰনা বহন

छल। ...थकावटें खिनखिनाएल, स्वर्गीया पूछलथिन—महादेवसँ की वरदान माँगलैन ? ...की कहलैन ? लाज किऐ होइ'ए... ? ...तारत तीन-चारि टा पल्ला हिनका सरँकें धनीक रूनशीनक दम्पति बूझि कए संग भ' गेलनि...(आदिकथा पृ. 44-46) ...स्थिति चित्राक एहि तरहक उत्कर्ष चमत्कृत करैत अछि। शब्द, कथन, आ वाक्यांशिक अर्थ कैक परतमे कैक तरहक व्यंजना दैत रहैत अछि। सन्तुलित आ संयमित कौशलसँ देश-काल-वातावरणक चित्रांकन सर्वथा, सर्वदा कोनो रचनाकें विराट आ शाश्वत सारित करैत रहल अछि, से राजकमल चौधरीक रचनामे भेटैत अछि। वस्तुतः राजकमल चौधरी बहुविधावादी रचनाकार छथि। अंग्रेजी आ बाँग्लामे त' सब विधामे रचना नहि केलनि मुदा मैथिली आ हिन्दीमे ओ सब विध ा ामे रचना केलनि। विवेचक लोकनिमे बड़ बेसी विवाद अछि, किओ हुनका सफलतम कवि, किओ कथाकार, किओ उपन्यासकार, किओ निबन्धकार मानै छथि। हमरा जनैत, राजकमल चौधरीकें मूलतः कवि माननिहार लोकक धारणा ई रहैत हेतनि, जे हुनकर भाषा-शिल्प मूलतः कविताक शिल्प थिकनि। सम्पूर्ण गद्य, एतेक धरि जे डायरी आ पत्रा धरिमे कविताक लय भरल रहैत अछि। ई बात उल्लिखित समस्त उदाहरणहुँसँ प्रमाणित कएल जा सकैत अछि। छोट छोट वाक्य खण्ड लिखि कए विराट व्यंजना दिशा संकेत क' दै छथि, आ तखनहिसँ पाठक/श्रोताक दोहरी विचार-व्यवस्था संग वेगमयी जलधारामे बहैत चल जाइत अछि। जखनहि पाठक--श्रोता (विधवा) हमरासंगें नहि रहै छथि, समाजक भयसँ...अथवा...महादेवसँ की...कहलैन ? लाज किऐ

হোগএ... ? ... সন উঁহ্বকবণ দেখৈ ছথি, এক টা কথা ও পঢ়ৈত বহৈ ছথি, আ এক টা কথা হ্নকা ভীতব সেহো জনমৈত জাগত অছি। দূ কথাধাবাক রিকাস এক সংগ হোগত জাগত অছি, কখনহুঁ সমানান্তব, কখনহুঁ ওঝবাগত, কখনহুঁ স্পষ্ঠ হোগ...বাজকমন চৈধবীক গদ্যক ওা রিশেষ ছটা থিক। মানর জীরনক পাবস্পবিক সম্বন্ধক রিচাব, ভারনা, আরেগ, প্রেবণা আদিকেঁ অভিব্যক্তি দৈ রনা মহত্বপূর্ণ রিধা, আ মহত্বপূর্ণ বচনামে তকব উঁপযোগ কবৈত গেন ছথি।



ষ্মন্নী কামত

কত২ জা বহন ছী হম !

কত২ জা বহন ছী হম !
কতৌ তপি বহন খছি,
কতৌ গনি বহন খছি,
কতৌ ধঁসি বহন খছি,
তঁ, কতৌ ভঁঠি বহন খছি খাগ ধবতী !
তপা বহন খছি খকবা মন্বখক ৰঁঢ়ৈত ভূখ, জে দিন-প্রতিদিন গাছ-বৃক্ষ কাটি খকবা ছত্রহীন ৰঁনৰৈত খছি। সমাজক ষ্মবীতি খকবা গনা বহন খছি। খপন ৰেঁটী পব দেখ খলাচাব ঙা ৰেঁৰঁস ভ২ ধঁসি বহন খছি। দেখ ঙা সভ রিডম্বনা মঁ ধবতী এ্রাধসঁ পহাড় ৰঁনি সংকপ্প কবৈত খছি কি সম্পূর্ণ জহাঁক খগ রিশান চোটীসঁ ঝাঁপি খকব সর্বনাশি কৈব দী।
ষ্মদা ও ষ্মছ নৈ কবৈ নেন মজৰূব খছি। জেনা খাগ ধবতী ৰেঁৰঁস নাচাব খা কড় ইসঁ ৰাঁনহন দেখাগত খছি ওহিনা হমবা সমাজমে নাবীক স্থিতি খছি। খাগ ভাগ জন্নাদ ৰঁনন খছি খা ৰাঁপ পাপক ৰূপ নেনে খছি। প্রাচীন কানসঁ জগ বিশ্বতাকেঁ ভগরানসঁ পহিন জগহ মিনন খছি
খাগ ওকব নামো নগ সঁ ঘৃণাক ৰৌধ হোগএ। খাগ হমবা সমাজমে সভসঁ খধিক নজাগজ সম্বন্ধ গ্বক খা

শিষ্যাক বীচ অছি। হম এগো অবমান মনমে বঁসা অপন বঁচামে অছা সংস্কাব আ উঁচ শিক্ষাক অভিনাষা নেনে গ্বব্ধ নগ জাগ ছী ষ্দা রএহ গ্বব্ধ হমব আমেসম্মান কেঁ ঠেস পহুঁচাবৈত হমব বঁচাক সাথ শোষণ কবৈত অছি। ভাগ শেষ্ঠ অতেক পারন, অতেক পরিত্র অছি কি সভ বঁহিন ভাগ শেষ্ঠকেঁ সম্বোঘিত কবৈত ওা সোচৈত অছি কি ওা হমব কেরন ভাগ নগ প্রতীক ব্দপ অছি জে যুগ-যুগ তক হমব আবঁব্ধ আ সম্মানক বক্ষা কবত। চাহে ও চচেবা মমেবা ফুফেবা ভাগ কিএক নগ হুঅএ। পব রএহ ভাগ জবঁ অপন বঁহিনক রিশ্বাস তাব-তাব কবৈত ওকবা সংগে বঁনাকোকাব কবৈএ তঁ ওকবা কী নাম দেন জাএত।

জন্ম দেনহাব বাঁপ জকবা পিতা পবমেশ্বব কহন জাগত অছি রএহ বাঁপ অপন জনমন বেঁটী সংগ পাপ কবৈত অছি যএহ সমাজমে।

আখিব কতহ খডা ছী হম, কতহ জাগনে ডেগ বঁঢ় া বহন ছী এক পনক নেন, সোচনেসঁ অহি গংদা পৈব সঁ চনি হম অপন স্বচ্ছ আ পরিত্র সমাজক নির্মাণ কহ সকৈত ছী ? কেরন সাদা কাগজ পব কনম দৌড়েনাগ সিখনেসঁ সংস্কাব আ সোচ নগ বঁদনৈত অছি। অপন জমীব আ অপন আমোক অরাজ স্বন্ন আ কহ্ন কি বেঁটী কনংকক প্রবিযা অছি কি হমব সমাজ ওকবা কনংকিত কবৈত অছি।



जगदानन्द झा 'मनु', ग्राम पोस्ट- हरिपुर डीहटोल, मधुबनी

करूण हृदयक मानिक महाराज रणजीत सिंह

পংজাবঁ প্রান্তক বাজা মহাবাজামে সঁ মহাবাজ বণজীত সিংহক নাম হ্নক ন্যাযপ্রিযতা এবং স্বশাসনক নেন পসিদ্ধ ছনি| এক সমযক গপ থছি, মহাবাজ বণজীত সিংহজী থপন প্রজাক স্বখ দ্খ দেখৈ নেন ঘোড ়াপব সবাঁব থপন সিপাহী সংগে বাজ ভ্রমণপব নিকনন বহথি | মহাবাজ সেনা সহিত বস্তাপব থাগূ বঁঢ়ৈত বহথি কী কতৌসঁ একটা পাথব ডঁড়ৈ কs থাবি মহাবাজকেঁ বিঁচ মাথপব নগনিন| পাথব নগিতে হ্নকব মাথসঁ সোনিতক টঘাব বঁহএ নগনিন| মহাবাজ থপন এক হাথসঁ ঘোড় াক নগাম পকড়নে, দোসব হাথে চট কপাবকেঁ দাবি নেননি | সিপাহী সভ পাথবক দিসামে দৌড়ন| কিছ ঘড ়ী বাঁদ ও সভ একটা নথ-দস বঁবথক ছাঁটন চেথড ়ী পহিবনে, গবীবঁ নেনাকেঁ নেনে থাএন| মহাবাজকেঁ পুছনা উঁত্তব একটা সিপাহী বাঁজন জে ও নেনা পাথব মাবি-মাবি কএ থাম তোড় ৈছন, ওহে পাথব থাবি কs মহাবাজক মাথপব নাগন | মহাবাজ বণজীত সিংহ ওগ ডবৈত নেনাকেঁ থপনা নগ বঁজা, স্নেহসঁ ওকব মাথপব হাথ ফেবৈত এগো সিপাহীকেঁ থাজ্ঞা দেননি - "পাঁচ পথিযা থাম, দূ জোড় ী নব কপড ়া থা সএটা থসবফী নএ কs ঐ নেনাকেঁ থাদব সহিত একব ঘব ছোড়ি থাএন জাএ|

মহাবাজক খাক্তাক ত্তবং ত পানন ভেন। ঝদা মহাবাজক নির্ণযকেঁ নৈ ৰ্বুঝি সেনাপতি, সহাস কএ কs ঐ তবহক ফৈসনাক কাবণ পুছিএ নেনক। সেনাপতিক প্রশ্নক উঁত্তব দৈত মহাবাজ ৰজনাহ –"জখন এক গোট নিবীহ গাছ পাথব মাবনা উঁত্তব ফন দs বহন ছৈ তখন হম তঁ ঐ প্রান্তক বাজা ছী। হমব প্রজা হমব পুত্র ত্তন্য খছি, এহন ঠাম হম কোনা ফন দেৰ্হসঁ রংচিত বহি জাগ। গাছ খপন সামর্থে ফন দৈ ছৈ, হম খপন সামর্থে, ঐমে খজগুতক কোন গপ।
এহন উঁদাব, ন্যাযপ্রিয, রাসেন্য খা করুণ দ্রদযক মানিক ছনাহ মহাবাজ বণজীত সিংহ।

<u>**संकल्पक धनी रिम्मा कडोंगफे**</u>

रिम्मा कडोंगफेक जन्म तेनेसेस शहरकेँ एक गोट गरीब परिवारमे भेल छलैन्हि। चारि बरखक अवस्थामे डबल निमोनियाँ आओर कालाजारक प्रकोपक संगे-संगे ओ पोलियोसँ ग्रस्त भऽ गेलिह। ओ अपन दुनू पएरकेँ सहारा देबैक लेल ब्रेस पहिरैत छलिह। डाक्टर तँ एते तक कहि देलकैन्हि जे ओ जीवन भरि अपन पएर सँ चलि फिर नहि सकतिह, मुदा हुनकर माए हुनका हिम्मत बढ़बैत रहलखिन्हि आ कहलखिन्हि -"दृढ़ संकल्प, लगन, आ कठिन मेहनत सँ जे कोनो काज कएल जाए भगवान ओकरा अवश्ये पूरा करैत छथिन्हि।'' ई गप्प सुनि रिम्मा निश्चय कएलैन्हि जे ओ दुनियाँकेँ सभसँ तेज धाविका बनतिह।

नअ बरखक अवस्थामे डाक्टरक मना कएला बादो ओ अपन पएरक ब्रेस उतारि कऽ अपन पहिल डेग जमीनपर रखलीह। १३ बरखक अवस्थामे अपन पहिल दौड़ प्रतियोगितामे भाग लेलैन्हि आ सभसँ पाछू रहलीह। ओकर बाद दोसर, तेसर, चारिम, पाँचम प्रतियोगिता सभमे भाग लैत रहलीह आओर सभसँ अन्तिम स्थानपर आबैत रहलीह। आ ई प्रयास तावत तक रहलैन्हि जावत कि ओ दिन नहि आबि गएल जहिया ओ प्रथम एलीह।

१६ बरखक अवस्थामे रिम्मा टेनिसी स्टेट यूनिवर्सिटी गएलीह, जाहि ठाम हुनक भेट एडटेम्पल नामक एकटा

কোচসঁ ভেনৈন্হ । হ্নকা ও ঋপন মোনক গম্ভা ৰঁতেনীহ, জে ও দ্নিযাঁকেঁ সভসঁ তেজ ধারিকা ৰঁনঐ চাহৈত ছথি । হ্নক দৃঢ় গম্ভা শৈক্তিকেঁ দেখৈত ৎৈম্পন হ্নক কোচ ৰঁনৰঁ স্বীকাব কএনৈন্হ ।

ঋঁতমে ও শ্বভ দিন ঋাএন জহিযা রিম্মা ওনম্পিকমে ভাগ নs বহন ছনীহ । ওনম্পিকমে দ্নিযাঁকেঁ সভসঁ তেজ দৌড়এ ৰঁনা সভসঁ ক্ষকারঁনা বহৈত ছৈক । রিম্মাক ক্ষকারঁনা জ্তাহৈনসঁ ছনৈন্হ জিনকা কিযো নহি হবা পএনে ছন । পহীন দৌড় ১০০ মীৎৈবকেঁ ছন জাহিমে রিঁম্মা জ্তাহৈন কেঁ হবা কs পহীন স্বৰ্ণপদক জিতনীহ । দোসব দৌড় ২০০ মীৎৈবকেঁ এহ্মে রিম্মা, জূতাকেঁ দোসব রেঁব হবাকএ ঋপন দোসব স্বৰ্ণপদক জিতনীহ । তেসব ঋা ঋন্তিম দৌড় ৪০০ মীৎৈব বিনে বেস ছন ঋা রিম্মাক সামনা একরেঁব ফেবসঁ জ্তাসঁ ছনৈন্হ । এহি ঋন্তিম ঋা নিৰ্ণাযিক দৌড়মে ৎীমক সভসঁ তেজ ধারিকাকেঁ রিঁচ সামনা ছন । দ্নূ ৎীমসঁ চাবি চাবিৎা সৰ্বশ্রেষ্ঠ ধারিকা, কব্ধ ঋথরা মরুক ক্ষকারঁনা । রিম্মাক ৎীমকেঁ তীনৎা ধারিকা বিনে বেসকেঁ শ্বব্ধঋাতী তিন হিস্সামে দৌড়নীহ ঋ ঋাসানীসঁ রেঁৎৈন রঁদননীহ । জখন রিম্মাকেঁ দৌড়ক রেঁব এনৈন্হ তঁ হ্নকাসঁ রেঁৎৈন ছূৎি গএনৈন্হ ক্ষদা ও ঋপনাকেঁ সম্ভাবৈত, খসন রেঁৎৈন শিৰ্ঘতাসঁ উঁঠাৰৈত মশীন জকাঁ তেজীসঁ দৌডৈত জ্তাকেঁ তেসবো রেঁব হবা কs তেসব গোনড মেডনক সংগে–সংগে দ্নিযাঁকেঁ নম্বৰএক ধারিকা ৰঁনি ঋপন সপনা পূবা করৈত গতিহাসক পন্নামে ঋপন নাম স্বৰ্ণ ঋক্ষবসঁ নিখেনথি ।

ঙা ঋমীৎৈ গতিহাস ১৯৬০ কএ ওনম্পিককেঁ ঋছি জাহিমে একৎা নকৰাগ্রস্ত মহিনা দ্নিযাকেঁ সৰ্বশ্রেষ্ঠ ধারিকা ৰঁনন ছনী । এহেন সফন ব্যক্তিক খিস্সাসঁ ঋপনো সভকেঁ

মোনমে সফনতা প্রাপ্তিক নানসা খরঁস্য জগন মোএত । কঠিনাওা সফনতাক পমীন সীঠ়ী ছৈক, দৃঠ় শংকল্প খা রিশ্বাসক সংগ ডেগ খাগ্ব তঁ রঁঠ়াওঁ সফনতা খমাঁক চৰণ চূমত ।

<u>রাঁন গজনক খরধাবণা</u>

রাঁন গজনক খরধাবণা কোনো রঁসী প্ৰবান নহি খছি । খাঁখিক দেখনে- দেখনে চাবি মহিনা ভেন মোএত । ক্ষদা জেনা কহন জাওা ছৈক, কোনো কার্যক খথরাঁ খরঁধাবনাক স্বকরাত কতৌ নহি কতৌ সঁ মোএতে ছৈক । খা হম সরঁ এখ্নকা সমকানীন গজনকাব (রিশেষ কএ রিদেহ খা খনচিন্মাব খাখব সঁ জ্বন) শৌভাগ্যশানী ছী জে এহি মহান ঘঠনাক্রম কেঁ পরোক্ষ খপন খাঁখি সঁ দেখ বহন ছী খা গতিহাস মেঁ ধাবনাক গরাহ রঁনি কএ খাএরঁ ।
ওনা কোনো কার্য কেঁ হবদম দৃগোঠ পক্ষ মোএত ছৈক একঠা পক্ষ মেঁ তঁ দোসব রিপক্ষ মেঁ । রঁহ্ত বাস রিপক্ষক নোক কেঁ এখন তক মৈথিনী মেঁ গজন, সেহো নহি পচি বহন ছৈন খা খগ্বনকা পীঠী হ্নকা সরঁ কেঁ সামনে মৈথিনী মেঁ রাঁন গজন নএ কঁ উঁপস্থিত ভএ গেন । ও হ্নকা সরঁ কেঁ নেন খরিশ্বসনীয খা খপচ ভেনাওা তঁ স্বভারিক ছনি । কিএক তঁ রাঁন গজনক খর্ব্বাবনাক উঁপেতি এখন তক উঁর্দূ খা হিংদীযো মেঁ চ্ম্পা খছি, ওহি ঠাম মৈথিনী মেঁ গজন নহি পচরৈঁ রঁনা সরঁ

कँ सोँम्मा मे कबीरँ चाबि महिना मे नगभग सय सँ बेसी स्वन्नव-स्वन्नव नेनपन सँ भवन बाँन गजन ह्नका सबँ नेन आश्चर्ज ह्मदा हमबा सबँहक नेन प्रश्नताक बिषय अछि | किछु नोक साँप कँ गेनाक बाँद नाठी पिते मे नागन बहेत छथि तँ किछु नोक एकटा सार्थक श्रीजन मे, ह्मदा गतिहास बँनाबेँ बँना मे नाम सदिखन श्रीजनकर्ता कँ अबेँत छैक | हम सबँ कँ सबँ एखनका समय कँ श्रीजनकर्ता छी |
बाँन गजनक अबँधाबना कोना सम्बुबँ भेनै आ कोन-कोन महिना मे एकब पूर्ण जानकाबी चन्दन म्मा जीक आनेख मे नीक सँ अछि ह्मदा हम एतेक जरूब कहबँ जँ एहि अबँधाबनाक जन्म आशीष अनचिन्हाब जीक मोन सँ भेनैंह आ बँह्त जन्दीए ओ अपन स्वतंत्र छाप जन-जन कँ मोन पब छोबत |
बाँन मोनक कल्पना कँ कोनो सीमा नहि छैक, बँस ओ कल्पना ओ चबित्र जे जीबनक भागमभाग मे कतौ हमबा सबँ सँ हबा गेन, कनी कान कँ नेन सबँ किछु बिसबि कए बँचा बँनि कनम चनेने बाँन गजन | एहि सन्दर्भ मे गजेन्द्र ठाकुब जीक ओ उँक्ति सय टका ठीक छैन -"जे जतेक बँचा बँनि जेता ओ ओतेक नीक बाँन गजन कहता " |
बिन्नु पानिक नाउँ चनाएबँ हम
बिन्नु चक्काक गाडी बँनाएबँ हम
नहि बिना पानिक नाउँक कोनो प्रयोजन आ नहि बिन्नु चक्काक गाड़ ीक कोनो प्रयोजन ह्मदा उँपबका शेब मे बाँन मोनक पबिकल्पना अछि आ ओ बाँन मोन किछो कए सकैत अछि | बिन्नु पानिक नाउँ चना सकैत अछि, बिन्नु चाक्कक गाड़ ी बँना सकैत अछि, बाँबाँ कँ घोबा

बँना सकैत अछि | ओना बाल मोन जखन गंभीर होएत अछि तँ परदेशी में बसल काका बाबू कँ बजाबैक हेतु चीकोर करैत अछि –
'मन्न' दै सपत घर घुरि आउ काका बाबू
नेन्ना कँ कखन तक कोंठ ठोबाएब

**<u>चंदन कुमार झा, सरबा, मदनेश्वर स्थान, मधुबनी, बिहार</u>**

<u>मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल</u>

मैथिली साहित्यक इतिहास करीब ७०० बरख पुरान छैक आ' से एकर समृद्धि विश्व-साहित्य जगत मे अपन फराक आ' विशेष स्थान बनौने अछि ताहि मे कोनो दू मत नहि.मुदा, जखन मैथिली साहित्यक एहि समृद्धि कँ ध्यान मे रखैत मैथिली बाल-साहित्य पर दृष्टिपात करैत छी वा' आन-आन भाषाक बाल-साहित्य सँ एकर तुलना करैत छी तऽ फेर ओ नगण्यप्राय बुझना जाइत अछि.मैथिली भाषा मे बाल-साहित्य बहुत कम लिखल गेलैए एखनधरि. लेकिन, एकटा बात जरूर छैक जे मिथिला क्षेत्र मे घरक बुढ़-पुरान द्वारा धिया-पुता सभकँ विभिन्न

তবহক প্রেবণাদাযী খিস্সা পিহানী স্বনযরাঁক প্রচনন রঁহ্ত প্ববান ছৈক ঋদা, একবা রাঁন-সাহিহ কেঽ খংতবগত মান্যতা নহি দেন জাযত কিএক তঽ ঞা নিখিত ৰূপ মে নহি উঁপনৰ্ক্ক খছি. রিভিন্ন জগহ পব একব রিভিন্ন স্বৰূপ মে কথানক রঁদনৈত বহৈত ছৈক.নিখিত ৰূপ মে নহি হেরাঁক কাবণেঁ ঞা খিস্সা-পিহানী স্বনরঁ খা' স্বনেরাঁক পবংপবা সেহো রিনুপ্ত ভেন জাঽ বহন ছৈক.
মৈথিনী রাঁন সাহিহ্যক প্রাদ্ভরিকান প্রাযঃ রীসম শতাব্দীক উঁত্তবার্ধ কেঁ মানন জাযত.ওনা হমবা নগ এখনধবি একব কোনো প্রামাণিক তাবীখ তঽ উঁপনৰ্ক্ক নহি খছি ঋদা, রাঁন-সাহিহ নিখনিহাব প্ববান সাহিহ্যকাব সভক বচনাকান কেঁ ধেযান মে বখৈত হম ঞা রাঁত খপন খনুমানক খাধাব পব কহি বহন ছী.এহি সময মে পং.চংন্দ্রনাথ মিশ্র "খমব", পং. গোরিন্দ ঝা, ঋবনীধব ঝা,কানীকান্ত ঝা "রঁ্চ", বামনোচন ঠাক্কব সদৃশ ঋৰ্ধন্য রিদ্বান, স্থাপিত সাহিহ্যকাব খা' মৈথিনীসেরী সভ খপন কনমক মোসি পিযা মৈথিনী রাঁন-সাহিহ কেঁ পোসননি.ফেব জীরকাংত, সিযাবাম ঝা "সবস", সন নোকপ্রিয সাহিহ্যকাব একবা খপন খাংগুব ধবা ডেগা-ডেগী চনৌননি.একৈসম সদীক শুকখাত মে তাবানন্দ রিযোগী,নে.ক. মযানাথ ঝা, জগদীশ প্রসাদ মন্ডন,গজেন্দ্র ঠাক্কব খা' প্রিতী ঠাক্কব, ঞহ্যাদি সঁ মৈথিনী রাঁন-সাহিহ কেঁ রেঁশ দ্নাব-মনাব ভেটি বহন ছৈক.রর্তমান মে ঋষি রশিষ্ঠ খা' ডা. শিশিধব ক্মবক রাঁন-সাহিহ্যক নেন কযন জা বহন খরদান সেহো উঁল্লেখনীয খছি.তখন খারঁ ঞা খাশা নিশ্চিত ৰূপেঁ কযন জাঽ সকৈত খছি জে মৈথিনী রাঁন-সাহিহ সেহো ক্রমশঃ জরানী খা' প্রৌঢ়ারস্থা কেঁ প্রাপ্ত কবত খা' চিবংজীরি রঁনত.একব এহনে উঁজ্জরন ভরিষ্য কেঁ দেখৈত

साहित्य अकादमी दिल्ली सेहो मैथिली ग़ज़ल-साहित्य केँ मान्यता दैत एकरा लेल पुरस्कारक प्रावधान करबाक चाही.अस्तु.
मैथिली साहित्य जगत मे ग़ज़ल सेहो कमोबेशी लगाके विधा बनल जाइत.ओना एकर उद्भव मैथिली मे करीब सय बरख पूर्व भेल बहैक आ' फेर कहियो ग़ज़ल तऽ कहियो गीतल के रूप मे ई अङऽल बनल रहल, एहि गीतल-ग़ज़ल सभ मे ग़ज़लक व्याकरण केँ कमोबेशी एकात कऽ देल गेलैक.परिणामस्वरूप, मैथिली ग़ज़ल आ' ग़ज़लकार मैथिली काव्यधारा सँ सभदिन कतिआएल बनल आ ग़ज़ल सेहो सभदिन अपन अस्तित्वक लड़ाइ लड़ैत बनल अछि. एकैसम सदीक एखनधरिक दोसर दशक मैथिली ग़ज़लक इतिहास मे अन्यतम स्थान राखैत अछि. एहि समयावधि मे श्री गजेन्द्र ठाकुर आ' आशीष अनचिन्हारक अवदान अविस्मरणीय अछि. गजेन्द्र जी ग़ज़ल व्याकरणकेँ पुष्ट करैत नहि खाली ग़ज़ल लिखनाइ अपितु सरल वार्णिक आ' सरल मात्रिक बहरक रूप मे मैथिली ग़ज़ल संसार केँ दूटा अनमोल बहर वा ग़ज़ल-छंदक ढाँचा देलखिन्ह जे हमरा सन-सन कतेको नवतुरिया आ' नवसिखुआ केs लेल ग़ज़ल लिखबा हेतु सहायक सिद्ध भेल अछि.एहि सँ मैथिली ग़ज़ल केँ अभूतपूर्व समृद्धि भेटि रहल छैक. वर्तमान मे मैथिली ग़ज़लक लेल आशीष अनचिन्हारक समर्पण वर्णनातीत अछि. आशीष जी उर्दू आ' अरबीक समृद्ध ग़ज़ल व्याकरण केँ मैथिली भाषाक आवश्यकतानुसार जाहि तरहेँ सरलीकरण केलथि आ' फेर अनचिन्हार आखरक माध्यम सँ आम जनमानस मे बहर आधारित ग़ज़ल कहबाक (लिखबाक) लेल रुचि जगा रहल छथि से जा'धरि मैथिली ग़ज़ल

ওতিহাস বহত তা' ধবি হিনকব এহি খরদানক চর্চা খরস্স কযন জাযত.
মৈথিনী মে ৱাঁন-গজন একদম ৼৼকা পবিকল্পনা খছি.খান ভাষাক ৱাঁন-সাহিত্য সভ মে সেহো ৱাঁন-গজন কিস্সাগতে হেতৈক.উর্দূ মে গজন মানে প্রেমানাপে বুঝন জাগত ছনৈক পহিনে ঝদা, ফেব গজনকাব সভ একবা রিস্তাব দৈত এহি মে সামাজিক সবোকাব কেঁs সেহো সমারেশিত কযননি নেকিন ৱাঁন-গজন ওত্তহ্ জনমন হেতৈক তাহি মে হমবা শঁকে বুঝনা জাগত খছি. মৈথিনী মে ৱাঁন-গজনক পবিকল্পনা সর্বপ্রথম ২৪ মার্চ ২০১২ কেঁs খাশীষ খনচিন্হাব দ্বাবা কযন গেন খা' ফেব ২৭ মার্চ কেঁs খাশীষ জী সূচনা দেননি জে ২৩ বা ২৬ মার্চ কেঁs মৈথিনীক প্রবান খা' স্থাপিত গজনকাব ঝন্না জী দ্বাবা একটা ৱাঁন-গজন নিখন গেন খছি.এহি তবহেঁ ঝন্নাজীক ও ৱাঁন-গজন মৈথিনী ৱাঁন-গজনক ওতিহাস মে প্রথম হোযবাঁক গৌবর পৌনে খছি.খাশা কবৈত ছী জে রিদেহক এহি ৱাঁন-গজন রিশেষাঁক মে ও ৱাঁন-গজন প্রকাশিত হোযত. ৱাঁন-সাহিত্য সৃজনকান মে ৱাঁন মনোরিজ্ঞান কেঁ ধেযান মে বাখব পবমারশ্যক.একটা উৎকৃষ্ট সাহিত্য নেন জরুবী ছৈক জে ও' সবন, বোঁধগম্য খা' প্রেবণাস্পদ হো.জখন ৱাঁন-গজনক পবিকল্পনা মৈথিনী গজনকাব সভক সোঝাঁ এননি তহ স্বাভারিক রূপেঁ হ্নকা সভক মোন মে ও প্রশ্ন উঠননি জে একব রূপরেখা কেহন হেতও.....একব ব্যাকবণ খা' ভারপক্ষ কেহন হেবাঁক চাহী...ওত্যাদি.হ্নকব সভক এহি জিজ্ঞাসা কেঁs শাঁত কবৈত গজেন্দ্রজী কহনখিন্হ জে কাযদা-কানূন তহ সামান্য গজন জেকাঁ বহতৈক ঝদা ভারপক্ষ এহন হেবাঁক চাহী জে ছোটৈ-ছোটৈ ধিযা-প্রতা কে

ৰুচঙা.ওকৰ সভক মন-মস্তিষ্ক কেঁ পচঙা আ' তঞঁ জে গজনকাব জতেক ৰঁচা ৰঁনি ৰাঁন-গজন কহতাহ(নিখতাহ) ও' ওতেক সফন হেতাহ.
উঁসোহ আ প্রতিভা সঁ ভবন অমিত মিশ্র,পংকজ চৌধবী "নরনশ্রী",জগদানন্দ ঝা "মন্ব",কবী ঝা, মিহিব ঝা,ঙাদি সন নরগজনকাব সভ গজেন্দ্রজীক উঁপবোক্ত কহন ৰাঁত কে পূর্ণতঃ আমেসাত কযননি.ফনস্বৰুপ, ২৪ সঁ ৩১ মার্চ ২০১২ অৰৈত-অৰৈত, এক সপ্তাহ কে ভীতব গোট দসেক সঁ ৰেঁশী ৰাঁন-গজন হমবা সভক সোঝাঁ আযন.এহি ক্রম মে হমহু এক-দূটা ৰাঁন-গজন নিখৰাঁক প্রযাস কযনহুঁ.ঝদা,এহিঠাম উঁল্লেখনীয ৰাঁত ঙা জে মৈথিনী ৰাঁন-গজন প্রাযঃ সোগবীযে সঁ অপন ৰূপ আ ভার সঁ আম জনমানস কে আকর্ষিত-প্রভারিত কবয নাগন.ৰঁহব আ'ব্যাকবণক মাপদন্ড পব সোঁটন আ' রিম্ৰঁ আ' ভারসঁ ওত-প্রাত মৈথিনী ৰাঁন-গজন অপন জন্মহি কানসঁ সংকেত দেমজ নাগন জে মৈথিনী ৰাঁন-সাহিত্য মে ওকব ভরিষ্য ৰেঁশ উঁজ্জরন ছৈক আ'সে নগভগ চাবিএ মাসক অল্পারধি মে একসয সঁ ৰেঁশী ৰাঁন-গজন এহি ৰাঁতক প্রত্যক্ষ প্রমাণ অছি.
অমিত মিশ্র এখন জীরনক ছাত্রারস্থা মে ছথি আ'সে এখন হিনকব একটা পএব নেনপন তহ দোসব জ্আনীক সোপান পব ছন্হি আ' তকবে প্রতিফন ছৈক জে হিনকা ৰাঁন মনোভারক সাগব মে ডূৰঁকী নগৰৈত দেবী নহি নগৈত ছন্হি.যৈহ কাবণ ছৈক জে ঙা ৰাঁন-গজনকাবক পাঁতি মে সভসঁ আগূ ঠাঠ় ভেটৈত ছথি.এখনধবি গোট তীসেক সঁ ৰেঁশীএ ৰাঁন-গজন বচি চূকন ছথি আ তঞমে অধিকাংশ অববী ৰঁহব পব আধাবিত অছি জে হিনকব গজনকাবক ৰূপ মে প্রতিভাক পবিচাযক অছি.ঙা

দবভংগা মে বহৈত ছথি সে হিনকব ৰান-গজন সভ মে
শহবী খা' গ্রাম্য পবিরেশ মে ৰচা সভক মনোভারক
খদ্ভুত চিত্রণ-রর্ণন ভেটৈত খছি.ঙা কতহ্-
মাটিক চাউঁব পানিক দূধ পাতক থাবী ৰনেৰেঁ
মাটিক চূল্হা পব খীব বান্হি,তবকাবী ৰনেৰেঁ
খা'
ৰান্বক চিন্নী কাদো কে দহী গেনা হ্ফূনক চূডা় হেতৈ
ঘৈনক (খপটা) চকনা সংঠী কে ৰেননা সে পূড় া ৰনেৰেঁ
....কহৈত ভেটৈতাহ ত' কতহ্ঃ -
পীঠ পব ছৈ বৈগ ৰৌখা চনন গস্কুন
নান পিযব ড্রেস চমকে ভবন গস্কুন
নৈ পহাড় া পঠ়র্ব নৈ সীখর্ব ককহবা
খার্ব ছৈ কংপ্বটব সিখা বহন গস্কুন....খা' ফেব ব্যস্ত
মায-ৰাপ খা' একাকী হোগত ৰচপন দিশি গশাবা কবৈত
কহৈত ছথি -
নৈ জো পঠ় াৰৈ কে নেন গস্কুন মাঁ
তূ জাগ ছৈঁ ৰদনৈ ঘব ত' রনরাস মে
পংকজ চৌধবী "নরনশ্রী" সেহো প্ররাসী ছথি খা' গাম সঁ
দূব হিনকা ৰেব-ৰেব নেনা মে ৰিতাযন দিন গযাদ
খরৈত ছন্হি.তেঁ সহজহি কহৈত ভেটৈতাহঃ -
দেখি ভূখ সঁ নোহছন নেন্না দ্খ-স্বখ সভটা নোপ ভেনৈ
ভংসা ঘব মে ঘাম সঁ ভীজন কাজ কবৈ সভ চ্ট-চ্ট
মাঁ
হোয কহাঁ খনকা দেখরৈনৈ "নরন" ঙা মাযক মাযা-
হঙ্গা
ভেব নিন্ন তগযো কহি খিস্স দূধ পিযার্বয ঘ্ট-ঘ্ট
মাঁ.....খাগাঁ কহৈত ভেটৈতাহ...

মোন পড়ন ঙা কিযে খনেবে ৰাঁত প্ৰবনগব ৰঁচপন কে খাঁখি নোবেনৈ মোন জড়নেক যাদ বমনগব ৰঁচপন কে ৰাঁৰ্ক কনহা মাযক কোবা খন্বপম মূ্না সন ঘ্খা-ক্ষখাঁ তা-তা-তা থৈযা খাব ঠেহ্নিযা খেন ছমসগব ৰঁচপন কেঁ.

ক্ষী ম্মা একটা গজনকাবি হেৰাঁক সংগ-সংগ মায সেহো ছথি সে হিনকব ৰাঁন-গজন মে মাযক মমতা স্পষ্ট দৃষ্টিগোচব হোগত খছি.জেনাঃ -

কসিযে গেন ৰৌখা মনাএৰ কোনা কএ

নির্ধন মায ৰৌখা ৰ্ম্মাএৰ কোনা কএ...ফেব খাগাঁ কহৈত ভেষ্টতীহঃ -

চনন ঠ্মকি ৰৌখা কতে সোহারন নাগৈ ছৈ

ৰাঁজন ৰৌখা তোতন মাঁ মনভারন নাগৈ ছৈ.

মন্বজী ৰেঁশীকান ৰাঁনমন কে খপন প্রেবক ৰাঁন-গজন সভক মাধ্যম সঁ প্রেবিত কবৈত ভেষ্টতাহ সে খহুঁ সভ দেখূ:-

ক্ষঠ্ঠী ভবি ৰিযা ভাগক খপন হম বোপি

খপনে মাষ্টি মেঁ হঁসি হঁসি কঁ গৌবাএৰ

খা' ফেব...

হমবা কহৈত খছি "মন্ব" মূর্খ চবৰাঁহা

পঠ়ি কএ সভ চবৰাঁহা কে পঠ়ৰৌ হম

মায নহি চবৰৈঁ নেন গায জেৰৌ হম

পঠা হমবা গস্কৃন কঁাপী পেন নেৰৌ হম.

উঁপবোক্ত শেঁব রা গজনাঁশি সভ তঽ একটা ৰাঁনগী মাত্র খছি.এখনধবিক ৰাঁন-গজন শেঁতক পব যদি দৃষ্টিপাত কবৰ তঽ মায-ৰাঁপক দ্নাব-মনাব,ভায-ৰঁহিনক ঝগড় া-ঝাঁটী সঁ নঽ কে নক্ষ্যপ্রাপ্তি হেত্ত প্রেবণা খা সংকম্প সভ কিছু ভেষ্টি জাযত. খা' ফেব ঙা কহৰাঁ মে

কোনো অতিশয়োক্তি নহি বহত জে মৈথিলী গাঁন-গজল অপন ছটিহাবে সঁ জীরকাঁত,সবসজী সন-সন নিসন্ন করি সভক গাঁন-করিতাক সমকক্ষী বঁনি গেন অছি অছি. অঁত মে কহয চাহব জে বিদেহ জে ঃ গাঁন-গজল বিশেষাঁক বঁহাব কববাঁক নেযাব কেনক অছি সে নিঃ সংদেহ মৈথিলী গাঁন-গজল আ' গাঁন-সাহিত্য গতিহাসক বিকাস মাস্ক্রপব একটা মাগনক পাথব সাবিত হোযত.একবা আবো ঠোস রূপ দেবাঁক মাদেঁ হমব স্বঝাব বহত জে এহি অংক মে সম্মিনিত গাঁন-গজল আ' গাঁন-গজল সঁ সংবঁধিত আনেখ কেঁ সংগ-সংগ এখনধবিক কিছু উল্লেখনীয গাঁন-গজল সভকেঁ একঠ্ঠা কঽ একটা ছোট-ছীন পোথীক রূপ মে বিদেহ পবিবাব প্রকাশিত কবাবঁয আ' সংপূর্ণ মিথিনা ক্ষেত্রক বিদ্যানয আ' পুস্তকানয সভমেঁ উপনর্ব্ধ কবাবঁয জাহি সঁ গাঁন-গজনক পবিকল্পনা অপন উদ্দেশ্য কে প্রাপ্ত কবত.গাম-ঘবক নেনা-ভুটকা গাঁন-গজল সঁ পবিচিত হেতাহ আ' হুনকা সভ মে মৈথিলী গাঁন-সাহিত্য পঠ়াবাঁক প্রতি রুচি জগতৈন সংগহি মৈথিলী গাঁন-সাহিত্যক গজনকাব সভক মেহনতি সোকাজ নগতনি.এহিঠাম হম মিথিনা ক্ষেত্রক ওহন বিদ্যানয,সামাজিক আ' শৈক্ষণিক সংস্থা,গাযক,সংগীতকাব,গত্যাদি, সভ জে আর্থিক রূপেঁ সবঁন ছথি,সঁ নেহোবা কবব জে ও গাঁন-গজল কে আঁডিযো-বিডিযো কৈসেট,সীডী,ডীবিডী বঁনা গামঘবক অঁগনা-ঘব মে পহুঁচেবাঁক প্রযাস কবথি.মৈথিলী গাঁন-গজনক ভবিষ্যমে বিকাসক মাদেঁ হমব মনোবথ অছি জে ঃ ধিযা-পুতাক ঠোব পব ওহিনা সজয জেনা মৈথিনানীক ঠোব পব গোসাউঁনিক গীত,সোহব,চৌমাসা,বাঁবহমাসা,সমদাউঁন বঁসন ছৈক.অস্তু.

মিথিলা-মৈথিলী আঁদোলন

মিথিলা মে মিথিলা-মৈথিলী-মৈথিল কে লেল জে কোনো সংঘর্ষ এখনধরি ভেল অছি ওহি মে সভসে বেঁশী সাহিত্যকারেক ভাগীদারী দেখল গেল অছি. লোকনেতা আ'কি আম জনতা কহিযো মূল আঁদোলন বা সংঘর্ষ

(किएक तँ आंदोलन शीगद भेलैं नहि केलैएँ एखनधरि कोनो) से नहि जोड़ल गेल जकर नतीजा छैक जे आगधरि अधिकतर माँग के सत्ता द्वारा ठोकबाओल गेलै, संघर्ष अपन मूल उद्देश्य सँ भटकैत रहल आ' संस्था सभ पारिवारिक बॅनि के रहि गेल अछि. दुष्प्रभाव एहन पड़ल छैक समाज पर जे आमजन आंदोलनकारी सभकेँ चाटुकार सँ बेशी किछु नहि बुझैत छथि. जँ किछो कर्त्ता मैथिल अस्मिताक रक्षार्थ कोनो तरहक नव कार्यक्रम ठनैत छथि तँ ओहि मे लोक के व्यवसाय सँ बेशी किछु नहि देखाय छैक.एहि दुरावस्था के लेल मूल रूप से दू टा बॉत जिम्मेदार छैक. पहिल जे जखन सत्ता समाजक उच्चवर्गक हाथ मे रहै तखन ओ कतिआएल आ' पछुआएल वर्गक लोक के उथानक लेल कोनो उल्लेखनीय काज नहि केलक.सभदिन ओहि उपेक्षित वर्ग के जोन-चाकर बॅना रखैत रहल.ओकर शोषण करैत रहल.एहि समय मे मिथिला मे सामंतवादी सोचक प्रभाव तेहन ने भेल जे एखनोधरि ओ अधिकांशि लोकक पछोड़ नहि छोड़लक अछि.स्पष्ट छैक जे एहि सँ मिथिलाक विकास अवरोधित भेलै.लोक मे वैमनस्यता बॅढ़लैक आ क्रमशः उपेक्षित वर्ग मे प्रतिशोधक बीजारोपण केलक.

फेरो जखन ओ उपेक्षित समाज एकत्रित भेलै आ' सत्ता हाथ लगलै तँ एहू समयक राजनेता सभ लगभग प्रायः आमजनताक दुख-दर्द सँ कोनो सरोकार नहि रहलै.कमोबेशी ओहो सभ अपन पूर्ववर्तीक नकले केलक आ' समाज के विभिन्न वर्ग मे बाँटि सत्तासीन रहबाक जोगाड़ करैत रहल अछि.ओम्हर सत्ताच्यूत भेल

सामंतवादी लोकक जन्ना तड़ जड़ि गेलै स्पदा ऐंठल एखनो नहि गलैए.एहना मे फाँक-फाँक मे बँटल समाज ककरो आश्चर्यचकित नहि करैत अछि आरँ, हँ एहि बाँटल समाज के चुचकावि-पुचकावि सभ अपन-अपन स्वार्थ सिद्धि मे लागि गेल चाहे ओ अथवा रस्त्रक प्रतिनीधि हो किंवा पिछड़ा रस्त्रक.

शासन-प्रशासनक सहयोग सँ निवाशी आमजन सेहो एहना मे उँदासीन भड़ अपन-अपन रोजी-रोजगार के ताकँ बँाि दसोदिशे छिड़ि आय लागल.फलस्वरूप,खण्ड-खण्ड भेल मैथिल समाज दिनान्वदिन कमजोर होइत जा रहल अछि.एखनहुँ मैथिली आंदोलनक सबल अधिकांशितः साहित्कारे रस्त्र ठैकने छथि वा किंयो एनाहियो कहि सकैत अछि जे सबल ठैकेदाँक भौल केने छथि.मैथिली साहित्कारक विपन्नता आ गुटबाँजी क्रमशः हुनकर सभक संघर्षक विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह लगबैत रहल अछि. आ' जखने अपने घर मे ककरो मोजल नहि रहतै तखन दुनियाक लोक कतड़ से ओकरा मोजर देतै. तर्ँ ता साहित्कार आंदोलनकारी सभ सभदिन अपन प्रयास मे विफल होइत रहलाह अछि.

आंदोलन सभक दुस्त्रतिक दोसर कारण अछि जे एखनधरि जे कोनो आंदोलन चलाओल गेल अछि ओकर मूल उँद्देश्य, ओहि सँ समाज के होइ बँला फायदा आ' नहि भेलापर होइबँला नोकसान, आ आंदोलन विस्तृत रूपरेखा आगधरि कहियो आमजनताक सोँझा नहि राखल गेल वा बँेशी काल एहि सभ पर समग्र रूपे आपस मे चर्चा-परिचर्चा नहि कराओल गेल आ' बँेशीकाल

হবরঁড়ি এ মে নির্ণয নহ কিন্তু দসেক নোক খাঁদোলন ঠানি দৈত ছথি.ফেব যদি সামান্য নাগবিক খপনা কে একাত ব্রূমৈত খছি তহ তাহি মে ওকব কোন দোষ ছৈক.

জহিনা কাবণসভ স্পষ্ঠ ছৈক তহিনা একব সমাধানো একদম স্পষ্ঠ ছৈক.কোনো খাঁদোলন তখনে সফল হোযত জখন নেতৃত্বকর্তা সভ খপন সামংতী সোচ, খাপসী দ্বেশক ত্যাগ কবতাহ, সমাজক সভরস্মক নোক কে ওহি খাঁদোলন সঁ জোড়তাহ খা' খাঁদোলন মূল উদ্দেশ্যক প্রাপ্তি হেতু ঠোস নীতি বঁনা ওকবা খামজনক সবোকাব সঁ জোড়তাহ.



उमेश मण्डल

मैथिली भाषा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य

"रचनाक धर्मिता, साहित्य सृजनक धर्म एवं ओकर भविष्य" कतेक महत्वपूर्ण विषय अछि। प्रतिपाद्य विषयपर जतेक रचना पढ़ल गेल संभव, विचारणीय अछि। सन्दर्भक मूल अछि ईमानदारीसँ, निष्पक्ष भऽ रचना करब, रचना एवं रचनाकारक धर्म-कर्म यएह थिक। धर्म-कर्म, काम-धाम दुनूक प्रयोग अपना सबहक बीच होइत आएल अछि, सभ बर्जित आएल छी, बहै छी। विचारणीय अछि जे जहिना कर्म-धर्म, ओहिना काजकेँ कहल जाइत जे धर्मक बाटसँ चलैत अछि। आ कर्मक अर्थ काम सेहो होइत अछि। जेकरा संग धाम शब्दक प्रयोग होइत अछि- काम-धाम। धाम अनंकार रूपमे प्रयोग होइत अछि जेकर तात्पर्य स्थानसँ होइत अछि जेना वैद्यनाथ धाम। स्पष्ट अछि अपना सबहक धाम मिथिला थिक, मिथिला धाम। आ मिथिलाक विकास उद्देश्य।

जग देशमे अनेको भाषा, अनेको जाति-सम्प्रदाय एक संग डेग-मे-डेग मिला चलैत आबि रहल अछि।

হমবা সভকেঁ ওগ শক্তিকেঁ চিন্হবাক অছি, পকড়বাক অছি এবং মজগূতীসঁ পকড়ি বখবাক অছি। জে এতেক পৈঘ দেশকেঁ এক তাগমে বান্হি কঽ বখনে অছি। আ ও চীজ কোনো আগযে নৈ ভেল, অদৌসঁ আবি বহল অছি। উদাহবণ লেল অহাঁ কোনো গামকেঁ লঽ লিঅ। গামক শ্রেষ্ঠতা ওগ গামকেঁ হোগ ছৈক জগ গামমে ছত্তিসো বর্ণকি বাস অছি। ঐ ছত্তিসো বর্ণকেঁ আর্থিক আ বৌদ্ধিক ৰূপমে দেখল জাএ তঁ গবীবসঁ গবীব (ভিখমংগা) আ অমীবসঁ অমীব ছথি। জহিনা নিম্নসঁ নিম্ন জাতি এবং উঁচ্চসঁ উঁচ্চ জাতি সেহো গামমে সমাজমে বসৈ ছথি। ফদা সামাজিক বঁধন ওহন অছি জে সভ অপনা-অপনা সীমামে স্বতংত্র ৰূপসঁ জীবি বহল ছথি। দেখি সকৈ ছী, সোচি সকৈ ছী জে এক গামক এক ধবতীপব ভিন্ন-ভিন্ন সম্প্রদাযক উঁত্সব-সমাবোহ সানে-সান হোগত আএল অছি, হোগত বহঁএ। হমবা সভকেঁ ঐ সভ মহত্বপূর্ণ বিন্দুপব বিচাব কঽ ওগ শক্তিকেঁ অক্ষুণ্ন বখবাক দাযিত্ব বনৈত অছি। জগসঁ মাত্র বর্ত্তমানে নৈ ভবিষ্য সেহো সশক্ত বহত এবং দুনিযাঁক সমক্ষ জগ বিশেষতাক লেল অপন সবহক পহিচান অছি সেহো বনল বহত।

সমস্যা জটিল জৰূব বূঝি পড়ৈএ ফদা সমাধানক উঁপায সেহো সমাজেমে অছি। সমাজেক ভীতব অছি। জে সনাতনী পদ্ধতি মানে পবিবত্তনীয পদ্ধতিসঁ সমাধান কএল জা সকৈএ। হঁ এহেন জৰূব ভঽ গেল অছি জে আকাশ-পাতালক দূবী বীচমে বনি গেল অছি। ফদা কী হম সভ হাথ-পএব সমেটি থ্স্বক্কনিযা মাবি লী ? সীবা নৈ ভক্টা দিসি দহাগত বহী ? অপনা মহত্বকেঁ বিসবি জায ? নৈ। বন্কি, কান ঠাঠ় কঽ স্বনবাক,

ব্যেহাৰ এবং কিছু কবৰাক নেন অপনাকেঁ তৈযাৰ কবৰাক চাহী। অপন মিথিলাক বৈদিক পদ্ধতিপৰ নজবি নহ জাএ তমানদাৰীসঁ ব্যেহাৰ অছি। ভাৰতীয চিন্তনধাৰামে পাতালসঁ আকাশ আ আকাশসঁ পাতাল আবি জাএ তকৰ সংৱাদ পৰিচালন হোগত বহল অছি। দৃঢ়তা অনৰাক নেন ঐঠাম একটা কহাৱত মোন পড়ি বহল অছি জে কহৰী ছৈ 'বিনা কাৰণে টিটহী নৈ নচৈ ছৈ।'

মূল প্রশ্ন অছি- সমাজ কেনা সশক্ত বনএ, দেশ কেনা সশক্ত বনএ। ঐ দাযিত্বকেঁ বুঝি বচনাক সৃজন হেবাক চাহী। তঁএ সাহিত্য কী? সাহিত্য দর্পণ আকি দর্শন?
সাহিত্য দর্পণ থিক, মাত্র কহলে ব্যাপকতাক অভাৱ বনল বহি জাগত অছি। দর্পণক শীশাক এক ভাগমে পাঁনিশ কএল বহৈত অছি। জেকৰ পৰিণাম হোগত অছি জে ও একভগাহ ভহ জাগএ। যেৱা সাহিত্য সৃজক ভায-বহিন, অপনা সভকেঁ বিচাৰ কবৰাক আৱশ্যকতা অছি জে সাহিত্য আখিৰ ছী কী? দর্পণ আকি দর্শন? জগমে চাৰু দিশা দেখল জাগত অছি।
ভৌগোলিক ভাষামে দিশা নির্ধাবিত অছি, পূৰ্ব-পশ্চিম, উত্তৰ-দক্ষিণ, উপৰ-নীচা ইত্যাদি। মুদা দর্শনিক ভাষামে ৱএহ চীজ বিচাৰধাৰা কহবৈত অছি। জে পৰিৱক্ষ ভেলাপৰ দর্শনসঁ দিগ্দর্শন বনি জাগত অছি। আ ৱএহ বিচাৰধাৰ ৰূপমে আগূ সেহো বঢ়ৈত অছি। অহীঠাম হম সভ বিচাৰ কবী জে হমৰা সবহক লক্ষ্য কেহেন হেবাক চাহী ওগ পাঁনিশ কএল একভগ্গ শীশা

सन जे मात्र एक दिशा देखि एकभगग्न भेल बहत ? नै। बल्कि ओ सोचबाक अछि जे चारू दिशा केना देखबा, चौमुखी एवं सर्वांगिन विकास केना होएत। तेँ लेल ओहन दर्शन, ओहन दृष्टिकोण या फेब ओहन विचावधावकेँ पकड़ि चलबाक अछि आ बचना कबबाक अछि। जगमे हमव सबहक विविधता, व्यापकताक बक्षा भऽ सकए। साहित्य समाज वा देशक ओहन सम्पति छी जे कठीन-सँ-कठीन पविस्थितिक बस्तो बतबैत अछि आ आगू बढ़ैक उपाए सेहो कबैत अछि। तेँ सदा तेँ लेल समाज आ देश-दुनियाँक गहन अध्ययन, चिन्तन-मननक संग बचनाक जरूबति अछि।

भावतीय चिन्तनधावा ओहन चिन्तनधावा थिक जेकवा सङ्कुचित ढंगसँ बखनापव केहनो अन्हव-तुफान किएक ने उठौ तेँ ओहन डोलान नै डोलत जेहन डोलैत बहैए या फेब डोलबाक भय बनि गेल अछि। तेँ तेँ लेल हमवा सभकेँ थोड़के व्यापकता दिसि बढ़ए पड़त, समाज दिशि बढ़ए पड़त। व्यक्तिवादी आ जातिवादी सोचसँ उपब उठि सामाजवादी एवं साम्यवादी सोचक पूजावी बनबाक खगता अछि।

हमवा अहाँक मात्र नै जन-जनक दायित्व अछि जे संग-संग चलि दुनियाँक बीच अपन मातृभूमि, मातृभाषा, साहित्य, संस्कृतिकेँ ओग रूपेँ जीवित बना कऽ बाखी जे समृद्धशाली देशक मुख्य पहिचान अछि।

आब अपन बक्तव्यमे विवाम दैत एक हबाक प्रसंगपव विचाव कबब आवश्यक बूझि आदेश लिअए चाहब आ

कहबाँ चाहबाँ जे आजुक ऐ संगोष्ठिक आयोजक साहित्य अकादेमी अछि। जे प्राय: साहित्य समृद्धि लेल गोष्ठी-संगोष्ठि करबैत रहल अछि। किछु दिन पूर्व कोलकातामे सेहो भेल छल। आ ल़ोगते रहैत अछि। से प्राय: राजधानी, नगर-महानगरमे होइत रहैए। ओना प्रवासी मैथिली सेवी लेल हेबाको चाही। जे सभ जनैत छी। मुदा गोष्ठी गामो-घरक शहर-कसबामे हुअए जेना झंझारपुर, मधेपुर, सकरी, धनश्यामपुर, मधुबनी, जयनगर, लौकहा, फुलपरास, निर्मली, फनौली, भपटियाही, सरायगढ़, या फेर पूर्णिया-समस्तीपुरक गामक कसबामे। ई सभ मैथिलीक लेटिन स्पीकर क्षेत्र छी। ऐ सभ क्षेत्रमे सेहो गोष्ठी-संगोष्ठी हेबाक चाही। ऐसँ आरो साहित्यकार सभ सोझा औताह। संभव, जे दिल्ली-मुम्बइ, कोलकाता आ पांडीचेरीक गोष्ठीसँ बेसी लाभदायक सिद्ध हुअए। खरचो कम आ लाभो बेसी, जइसँ एकान्त बासक साहित्य सृजक लोकनि मात्र नै अपितु पाठकोक संख्यामे अप्रत्याशित वृद्धि होएत। जन-जनमे उत्साह सेहो जगत जइसँ हम सभ मजगूत हएब।

कान्हियो करि गोष्ठीक आयोजन हुअएबाक अछि संभवत: अही परिसरमे। ओइमे एकैसम शताब्दीक पहिल दसकक सर्वश्रेष्ठ करि राजदेव मण्डल आ आन-आन कतेको करिकेँ कोनो सूचना नै छन्हि। जे दुखत अछि। आ ऐ तरहक सूची बनौनिहार लोकनिक सोचमे कि छन्हि से वएह सभ बता सकताह। ओ लोकनि गामक माटि-पानिमे लटा कऽ जीवकोपार्जनक संग साहित्य सृजन करैत रहलाहेँ। हुनको सभकेँ

সূচনা হেৱাঁক চাহিত ছল। ওতরেঁ নৈ, খমৃ্কো গোষ্ঠীমে ৰহ্তো ঘৰা বচনাকাব জেনা উঁমেশে পাসৰান, খাশীষ খনচিন্হাব, চন্দন ঝা, সংজীৰ সাফী, ৰিনীত উঁত্পন, সংজয ক্ষমাব মণ্ডন, জ্যোতি স্বনীত চৌধবী, ঋন্নী কামত, খমিত মিশ্ৰ, খখিনেশে ক্ষমাব মণ্ডন, স্বমিত খানন্দ খা মনোজ ক্ষমাব খাদিকেঁ কোনো সূচনা নৈ দেন গেননি।

খংতমে, প্ৰসংগসঁ হষ্টি চবচা কএন জে খারশ্যক ছন। জোঁ ঐসঁ কিনকো দ্খ পহুঁচন হেতনি তগ নেন ক্ষমা মংগৈত একরেঁব ফেব সাহিত্য খকাদেমীক সংগ খপনে নোকনিক প্ৰতি সাদব খাভাব ব্যক্ত কবৈত খপন ৰাণীকেঁ ৰিবাম দৈত ছী।

**<u>শ্ৰী বাজ</u>**

<u>যাত্ৰীক কৰিতামে গাম</u>

স্থানীযতাসঁ সার্বভৌমিকতা তকক নিবংতব কৰিতা–যাত্ৰা কেনিহাব, নেখন খা দেখনমে খতি সাধবণ নগনিহাব খতি ৰিশিষ্ঠ, খসাধাবণ খা খপ্ৰতিৰুত কৰিক নাম–এ যাত্ৰী। শ্ৰেষ্ঠতম বচনাকাবে নৈ শ্ৰেষ্ঠ নরমানরতারাদী

হ্যগক উন্নায়ক, উদ্গাতা আ শেনাকা প্রকাষ। যাত্রীক করিতা গম্ভাবিক শীন ভেন কবৈএ জে দেখরামে তঁ সভসঁ অনুপযোগী নকড়া পিণ্ডাক সমতুন নগৈএ মগব উঁপযোগিতামে একে ঠাম রিরিধ কাঠক গুণ আ রৈশিষ্ট্য উঁপনর্ক্ক কবা দৈএ। কোনো অতিবিঞ মানস সংরেদনক রিনা। হ্নকব করিতা সভক নেন ভেন কবৈএ। জন্তু আ জতরেঁ জকব গ্রাহ্যতা আকি অভিরুচি। জৈ তীমনমে অপনে স্বাদ গুণ ছৈ, ওগমে রেসী মব-মসন্নাক কোন আঁহিস। জে রাস্তরিক রূপমে রিনা অতিবংজনক 'সত্য' ছৈ ও অনারোপিত 'স্বন্দবম' হেরেঁ কবতে। জ্ঞান আ অনুভরক কাশীমে নোক অস্সী রবিস সোনে রিতাগযো নেত তৈযো কি দূনূমে সঁ কিছু রিনা প্রযাসক থোড়রেঁ ভেঁট সকতে। তেঁ রহ্তো ভৌতিক প্রাপ্তিক ভঙ্গীমে ভঁ াড়েঁা মোকৈত বহি জাগ-এ। রর্তজ রাঁরাঁ যাত্রীযেক 'চানন রুঁঝি দেহমে কিদন নেপৈত বহি জাগএ' আকি কথীদন পব হূন-ঘী চঢ়া-ওঁসি পুণ্য নাভক দ্বাশা আ ভ্রমক পবসাদী নেনে ঘুমি-ফিবি অরৈএ। যাত্রী রাঁরাঁ অপন কথ্যকেঁ কোনো সঁাচমে গঢ়ি কঽ পাঠকক আগূ নৈ বাখি সোঝ-সোঝ রিনা কোনো বংগ-টৌপ ক উঁপস্থিত কঽ দৈ ছথি, তেঁ পাঠক হ্নকব করিতাক কথ্যসঁ সোনে জুটি জাগ ছথি। আনংকাবিকতা আকি কপনাশীনতামে রৌবিযা পাঠক রাম-রূঁচ নৈ জা সকৈএ। যাত্রী অপন করিতাসঁ সম্পূর্ণ রূপসঁ মিথিনাঁচনক কিসান আ গমৈযা মজদূব আ মুখ্যতঃ ওহী নজৈব সঁ পূবা ভাবতীয সমাজ কেঁ ওকব প্ররনতা আ দুর্রনতা সংগ দেখৈত উঁজাগব কবৈ ছথি। তেঁ হ্নক করিতামে রর্ণিত সামগ্রী সোনে সমাজসঁ ওতঽ গেন বঽএ আ হমবে রাঁত কঽএ। অপন পবিরেশ আ অপন সংরেদনা দ্বাবা

यथार्थकेँ देखेबाक एगो चेष्टा यात्रीक कवितामे सभठाम भेटैए। जिनगीक यथार्थ सँ सरोकार रखनिहार एगो खाँटी रचनाकार मात्र ऐन्द्रिक स्वप्नवत्ते केँ नै चित्रित करैए अपितु ओ जिनगीक रूक्षपताकेँ सेहो आँकैए। ओजह इ छै जे जिनगीमे सभ किछु स्वप्न-स्वप्नवे नै छै। ओत जय स्वप्नवताक पीठ-पाछू रूढ़र, चाँछन आ धोखाधडिबोक अस्तित्व छै। यदि एक दिस गामक अपार आ असीमित स्वप्नवता छै तँ दोसर दिस गाममे रहनिहार लोक दैनो-परोसक उँधेसन- प्रधेसन, उजबन-अपठैन जिनगीक दर्दनाक रूक्षपता सेहो। एतेक थाकन-हारन आ थरूचन जिनगी कि स्वखक सभ रॉत गामक बहबहँ। लोकक लेल रूप कथे बूझाएल बड़ छै। फेर रूष्टी-दृ रूष्टी भात आकि किछु टैक्का-सारुत सोहारी आ दालि कि तीमनक सोर जुमि गेलापर ओ दिल्लीक दबराव आकि बंगमहलक स्वध किए लेत? यएह तँ अछि ऐ जिनगीक असीमित विरोधभास। यात्री अपन कवितोकेँ ग्रामीण परिवेश आ अपन संवेदना द्वारा यथार्थ केँ देखैक प्रयास निरंतर करै छथि। सभसँ खास रॉत तँ यात्रीक कविता मे इ ऐ जे ओ कविकर्म केँ प्रतिष्ठामूलक नै, अपन विशिष्ट संवेदनशीलताक दायित्व पूर्वक व्यवहार करबर् मानैत रहल छथि। यात्री जेहन काव्य युगक निर्माण केलनि, ओकर तरूमे नै जा रहैसी रचनाकार ओकर आग्रहतिकेँ स्वीकार आकि खारिज करैत रहलाह। ऐ हाँटैक रचनाकार नग गामक अति जरूरी रूदा उपेक्षित थीतिक अरैव तँ बड़ छनि रॅनू गोरॅव केँ गणेशे आकि पाथर केँ भगरान रॅनेरॉक रूद्रा आ चेष्टामे। यात्रीक कवितामे पाथर रॅनि गेल लोकक स्वधि आ संधान

ভেটৈএ। গাম ঘ্ব্দ (ভ্তসপ্বতবা) খাকি ঠঠবীক ‘ফোটৈ’ জেকঁ া হ্নকব করিতা মে নৈ খরৈঁএ। জেতঽ যথার্থ হ্যগ–সহ্ রঁনি জেরাঁক ওজহ সঁ রিক্তাপনী মংডীমে থোক ব্দপসঁ উঁতরৈএ জব্দব, রঁনূ ওগমে নৈ তঁ গামক খাম জনক থীতে উঁজাগব ভঽ পরৈঁএ, খানে খাস নোকক চবিত্রা উঁঘাবন–উঁধেসন জা সকৈএ। জহিনা রর্তমান সমযমে রৈশ্বিকতা স্বনরাঁমে তঁ রস্বধ্ ৈর ফ্ট্রিস্বঁকম্ খথরা মার্ক্সিক দ্নিযা ভবিক মজদূবক একতাক খাহ্লান সন উঁদাত্ত রূঁন্নি পডৈ়এ রঁনূ ক্রিযা খা খসৈব মে একব রিপবীত এক ছত্রা সাম্রাজ্যরাদিক সূত্র সৌন্দর্যরাদী স্বফমাব করিক গাম সঁ হবাক যাত্রীক গাম তখনে ঐ জে মূন ব্দপ সঁ কিসান খা খেত–মজদূবক পক্ষধবতা হিনকব করিতাক গামক প্রতিরঁক্ষতা ঐ, কোনো ‘ফেশন’ নৈ। খা খহী ওজহ সঁ খপন জিনগীক সভসঁ কম, জষ্টিন খা খাবংভিকে কান খংড খপন জনমথান তরৌনী মে রিতরিতো হ্নক করি ওকব গ্বব্দত্বাকর্ষণ সঁ ম্ব্ঞ নৈ ভঽ পরৈঁএ। দেশ–রিদেশ সভতবি সর্বাধিক বহনিহাব গ যাত্রী করি কোনো শহবী উঁদ্যান; পার্কমে রঁ্যাতন খা কবতরঁ, ড্রিন কবাওন মৌসমী ফূন খাকি পত্তারঁহাব, এ্যাষ্টিন ক চাক–চিকপব খাহ্রষ্ঠ নৈ হোগ ছথি রঁনূ ওত্তী গামক চব–চাঁচবমে খগবাগত ভেঁষ্ট–ফ্ম্দিন, মাছ–মখান, নীচী খা খাম সভ কথূক নৈসগ্রিক স্বন্দবতা কেঁ নৈ রিসবি পরৈঁ ছথি– কত্ত দীরঁ নগৈএ হমবা খপন ও তরৌনী গাম। মোন পড়ৈএ নীচী খা খাম। মোন পডৈ়এ ফ্ম্দিনী খা তান মখান। গাম সঁ দূব বহরাঁক কচোটৈ স্পষ্ঠ ব্দপ সঁ র্যঞ্জ কবৈত খপন রিরশতাকেঁ হবিম্ভাকঽ বখৈ ছথি যাত্রী খপন করিতামে। খাহেঁ তন সঁ কতৌ বহথ্ রঁনূ মোন মৈথিন জাতীয ভাবতীযতা সঁ

ठेठ नै भऽ परैत। लोग कोनहुँ ठाम। किछु भेटै जाएत। बरी रहतो दूर वा नगीच। बंधुगण बड़ दुरदुरारथ् किंतु। जननि वाथर भार आँह जननीक। एकवा आव हलविछारेँत एक ठाम ओ कहै छथि- किंतु की हम बिसैब पाएब। तबौनी सन गाम ? गड़हवा सन आम ? दीदिक गनावक पानि। अपन पोखरिक ओ ठुँठ्ठ पातव जाठिं। ... धनकब बाँध कोसक कोस। हुनकव अन्वबाग सिन्दूव तिनकित भान पव केन्द्रितमे बहैए। आगूठ्ठ कबैए करि कँ नेनाक थोँथ हँसी, जेकबामे महज स्वन्नवते नै, संजीवनी शक्तिक संचावक छेमता ओ परैं छथि। अहन भोरे जाड़ मासमे गाममे ओवियाओन छूवाकँ तपैत, जिनगीक सुख-दुःख मादे निष्कपट रँतियैत, घूवाक सोन्हगव गमैया गंधक पता ओहन आमौय भार सँ कोनो यात्रीये सन माटि-पानिक करि कँ भऽ सकै छै। आँचनिक बौनीक मिज्मवक, मिक्राचव अर्थात् संकीर्णता सँ हँठे अनगढ़ बौनी कोनो करि यात्रीयेक कान ज्वा सकै छै। जूता-मोजाक टौप-टौप पव नै ठेना आ बँमाय फाटैन गोव पव कोनो करि यात्रीयेक नजैव जा सकै छै। दू-गो बिम्ब जे खँ ाटी गमैया ऐ, आम नोकक आशा-आकं ाक्षाक प्रतीक ऐ- दूधिया शीशे आकि बाँनि ओ श्रेमक हलाहल सोनिम पाकल शीशे अधिक ठाम श्रेमक गायक ऐ करिक करिता मे अवैंत बहै-ए।

रर्तमान र्यरस्थापक प्रतीक ध् ृन्द (भुस्सा भवन मामनान रिज्का) क माध्यम सँ तँ करि पूवा र्यरस्थापक चवित्र ओ थीत कँ रँपर्द कबै छथि। चेतना हीन जनतंत्रक मानिक जनता साकांक्ष नै भऽ गहलनैत मे पड़ल बहैए आ ओकव ओगवराँद्ध प्रतिनिधि अपनेमे टैर्व भाँजटौ

পূর্বৈত বহ–এ। ওঁপবকা জঁ সবঙমে রিচবৈত বহএ তঁ নিচনকা দিন–দিন পতানে ধঁসন জা বহন–এ। দূনূ হঁ ।ষ্ট খপচক শিকাব। রৈসী কদন্ন সঁ তঁ কম খধিক পৌষ্ঠিকতা সঁ। প্রতিনিধিক মগজ খা করেজ মে ভুস্সা ভবন র্বৃন্মা পডৈ়–এ জৈ পব খঙ্কব, স্বদেশীক খাঙবক্ষক খান চঢ়ন ঐ। খকানক ওজহ সঁ স্বতংত্র গামক খস্সী প্রতিশত নোকক ত্রাসদীক কেহন সজীর চিত্র যাত্রীক করিতামে সংভর ভেন ঐ–' রিনা পজাবক মন্হ্রাএন চূন্হি, কামহি জঁ ।ত–চকবী, খন্নদাতাক সংগ সমান জিনগী রঁসব তৈ ত– রঁবতৈত খাশ্রিতা কনহী পিনিযা, নাভব–জীভব খহবা প্রাপ্ত কেনিহাব গিবগিষ্ট, মূসখা কৌরা সভক ওঁদাসী, হতাসী খা হেব খাঁশিক জহ্নবৈত পূর্তি সঁ ষ্টকষ্টকাএন ওকব সভক চেষ্ঠা খা চ্হ্ন কেঁ ভনা কোন 'হেন্সী' করি এতে কমমে এতে রিবাষ্টতাক সংগ প্রস্তুত কবরাঁক সামবথ বাখি সকৈএ।

ভাখা কেঁ হম খভিব্যক্তিক মাধ্যম ষ্টা মানৈত বহন ছী তৈঁ যাত্রী খা নাগা জনমে খংতব কবরাঁমে খসোকর্জক খন্বভর কবৈত ছী। মূন রস্তু তঁ ছিঐ কথ্য। গোন কহ দিযৌ তঁ নানমোহন, নাম তঁ গ্বনারঁজাহ্মন। হনরাগ তঁ একেগো– যাত্রী কহিযৌ কি নাগার্জুন। গবীর–গ্বররাঁ, কিসান খা মজূবক খামৌয সমাঙ। কতৌ পঁ রৈদ্যনাথ মিশ্র নৈ কনগণাবক হ্নপ মে। মন্বখ তঁ রাস্তরিক হ্নপমে খগরেঁ মন্বখেষ্টা বহ ছৈ। দোখী তঁ ভেন করৈ ছৈ কোনো র্যরস্থা মানে সংচানন তংত্র। জঁ ।তক কাজ ছিঐ পিসনাগ। খখিযাসরাঁক তঁ এতরেঁ ছৈ কি ওগমে ঢাবন কী জা বহন ছৈ– কোদো–মহ্নরা খাকি চাঙঁব–গন্ধ্রম। সত্যঃ র্যরস্থাকেঁ খেনৌড়ি যা হ্মদ্রামে ন্বন্হ্রা দেখেরাঁমে রাঁরাঁ যাত্রী–নাগর্জুন হিন্দীক মাধ্যমসঁ ভার

ৰ্যকত্ত কেনিহাব কিসান কবি ত্রিনোচন ঋা কেদাবনাথ ঋগ্রবানো সঁ সহজ ঋা পষ্ট্ দেখনামে ঋবৈঁ ছথি। জনসংঙ্কন ঠৌসনো পব কবি গামেক ঋঁ াখিক প্রযোগ কবৈত দেখন জাগ ছথি। ওগ নোক বকক ঋপাব ভীড় ামে নোক-মন ঋর্থাত নিম্নবর্গীয গ্রামীণে পবিবেশক দ্বগমনিযঁ া কনিযঁ া-ৰ্বে পব কবিক ঋঁ াখি জাগএ। পাবংপবিক বঙন-ঠৌপন ৰাঁকস পব ওঙঠনি ঘোঘ-মবদ কাঢ়নে নবকনিযঁ া ঋা ওকব বচ্ছিযা নেন ৰঁহান নোকনিযাঁ চানীক ঠৈকহীক হব পহিবনে, মাঙ্ব মাছ সন কাঠী ঋা সিমবতাগবানী ঋাঁখিসঁ গামেক ঋনগঢ় স্বন্নবতাক পাবখী কোনো কবিক ঋঁ াখিঠৌ দেখি সকৈএ। তেজ সৰাঁবীক ৰিবড় া ঋা ঘঠৌঠৈপেক ঋচ্ছিতো ভদৰাঁবিক ভীজন ঘোঁঘা সন (সূক্ষ্ম গমৈ উঁপমা) মঁদ সসবৈত ঠ্রাঁমে পব কবিক ঋঁ াখি জাগ ছনি। গামক হবেক মোর্চা পব যাত্রীক কবি সাকংক্ষ ঠাঢ় ভেঠৈএ। মাটিক সভ স্পঁদন হ্নকব কবিতামে নিনাদিত হোগএ। তকোনীন সামাজিক, ঋার্থিক, বাজনৈতিক সভ প্রকাবক বিদ্রূপতাক ঋবৈঁব যাত্রী নৈত চনৈত ছথি, সংগে গামক সম্পূর্ণ জিনগীকেঁ ৰুপাযিত সেহো কবৈ ছথি। গামক নোকক সভ ঋাশো-ঋাকাঙ্ক্ষা, দ্ঃখ দবেগ, হঁসী-খ্শী, সৌন্দর্য-ঙ্কৰুপতা, জয-পবাজয, উঁথোন-পতন, কমজোবী-মজগূতী, সমঠৌ সমভাব সঁ হ্নকব কবিতা-যাত্রা মে সবীক বহৈএ। কবিকর্ম হ্নকব ধর্ম ছনি, জিনগীক মর্ম ছনি। কতৌ নৌন, সৌখ ঋাকি প্রদর্শনকামিতা নৈ।

যএহ ওজহ ঐ জে প্রগতিশীনতাক প্রদর্শন মে ও ঋপন মৈথিন সমাজক ;স্থানীযতাক সভসঁ জ্বনঁত ঋা ঋপবিহার্য সমস্যা ৰৈবাহিক দুর্গ্বণ সভসঁ সেহো ঙ্কঁহ নৈ মোড়ৈ ছথি। 'যত্-যত্ পিল্ড, তত্ ব্রঁহ্মাল্ড, স্থানীযতা সঁ

সার্বভৌমিকতা হ্নক আদর্শ ব্নমা পড়ৈএ। সবজমীন সঁ কট্টি অকাসক গপ্প কখনৌं नै। तैं মিথিনাংচনমে ব্যাপ্ত রেঁমেন রিযাহ, রঁহ্ রিযাহ আদি দর্গ্ণ সার্বভৌমিকতাক হ্নক রিশেদ দৃষ্ঠিক অছৈতো ওত নৈ ভেন ঐ। তকোনীন মৈথিন সমাজক খানঁে রেঁমেন রিযাহক স্পষ্ঠ চিত্রণ হো আকি চবিত্রক উদ্ঘাটনক সংগ তহিযাক পেশৈরব ঘটকক সজীর আকনন জেনা যাত্রীক করি কহ সকন ঐ, নিস্সংদেহ মিথিনা কেন্দ্রিত আন কোনো করি সঁ সংভর নৈ ভহ সকন। সংস্কৃতিক এহন সম্যক আ নিঠ্ব ব্যাখ্যাক সংযম অংতহ কতৌ ভেটৈঁ দ্নর্ভ।
গামক–ঘব, মাট্টি–পানি সঁ কেহন সর্ব্যকত্ত ছনা ও একব পবিচয তঁ স্বগমতাক সংগ জেতহ–তেতহ ভেটৈতে ঐ, তৈযো রাঁনগী সরূপ কিছু পতিযানী উদঘৃত কবরাঁক গছা কেঁ নৈ বোকি সকরাঁক রিরশতাক সংগ এতহ বাখহ চাহি ছী জে রাঁন–রিধরাক দ্ঃখ দৈন্যকেঁ সূক্ষ্মতাক সংগ উজাগব করৈএ "ত্তস্সাক আগি জেকঁ া নদ্ধুঁ–নদ্ধুঁ। জবৈ ছী মনে–মনে হমদ্ধুঁ। হটৈ ছী হুসিযাবক পোব জেকঁ া। চৈতক পছরাঁ মে ঠোব জেকঁ া। কাতে বহি ছী জন্ব ঘৈন ছতহব..... ।"
যাত্রাী অপনা কেঁ কতৌ রিশিষ্ঠ নৈ, অপন করিত্ব্র কেঁ সামান্য মানৈত বহন ছথি। জহনি কি সভ মতক মাননিহাব সাবস্বত চেতনাক সর্বোপবি সিদ্ধি মানৈত বহন ছথি, তেনাহিতিযো মে যাত্রী অরসবক অন্বকূনতে কেঁ আনে সফনতা জেকঁ া সর্বোপবি মানৈ ছথিথ। পবম মেধরী কতে রাঁনক জেতহ। মূর্খ বহি গাযটা চবরৈত ছথি। ....কানিদাস কতে। রিদ্যাপতি কতে। ছথি হেবাযন মহিসরাঁবক ঠেঁড়মে। যাত্রাীক শিল্পী গামক 'কমর্শিযন' সৌন্দর্য কেঁ প্রস্তুত করবঁ মাত্র অপন অভিষ্ঠ

কিন্নী নে বখনে ঐ। ও যথার্থক এহন সমতন ভূমি তৈযাব কবৈত চনৈ ছথি কি ও খনাযাস 'স্বন্দবম্' ভহ করিতামে প্রকট ভহ জাগএ, রনহ্নক মহমহী জেকঁ া। জৌং এক দিস হ্নকা ফসিনক মংজবীক দুর্নভ মহমহী খভিভূত কবৈ ছনি তঁ দোসব দিস জেঠক তিব্খ খাতপ কেঁ সহৈত গ্রষি কর্ম মে সাধনাবত রীযা রাঁউগ কেনিহাব হাথ ও ফ্হেক দূবীক স্ববতা সেহো সতবৈঁত বহন ছনি। গ্রামীণ ক্ষেত্র দহ' বুনৈতহৈত তীবন্তুকিত্তক মানা হ্নকা নৈ সিহাবৈঁ ছনি। থনহা গ্রষি –কর্মসঁ নহ জন–গ্রষক মনাহক জিনগী তকক শৈনী ও সং াস্কৃতিক চেতনাক সূক্ষ্ম জ্ঞান রাঁরাঁক ওতহ জতরাঁ ঐ, খানঠাম এহন খা এতে দুর্নভ ঐ। একব সংগে নদী সভক প্রনযংকাবী তান্ডব খা ওগসঁ উঁপজন ওরাঁ–ঠ্নকী, মবকী–হৌতী সঁ সেহো ছগাগত ছথি রাঁরাঁ যাত্রী।
একব রিভীষিকা সঁ কোন ফাঁট পব কোন খসৈব পডৈ ছৈ নীমন জগতী বুঁমন ছনি করি যাত্রীকেঁ। একেগো থীত কেনা ককবো গোটী নান কবৈএ, ককবো উঁহ্ফ াটি তঁ ককবো পরৈন্নী নগবৈএ খা ককবো খেনে উঁসবি দৈএ। সহজ সপর্দ ভাখামে রিবাট শৈষ্ঠ খভিব্যংজনা জে যাত্রীক ওতহ ভেটৈএ ও কোনো খঁ াটী গ্রামীণে সংস্কাবক করি ওতহ সংভব ছৈ। নর নির্মিত ফ্নকী ব্যবস্থাক প্রতি মোহ– ভংগক মাদে স্পষ্ঠ খা সংধানন কসগব চোট কবিতো হ্ূনগেনা সঁ প্রহাবক ফ্দ্রা ঐ মহান করিক খপন রিশৈষতা বহন–ঐ। যাত্রী খপন নোকদৃষ্ঠিকেঁ গমৈযা সংস্কাবক ওজহসঁ ঘোঘটামে রাঁদবিক চান সন ভঁ াপি, খপরাদ থীতিকেঁ ছোড়ি , প্রস্তুত কবৈত বহন ছথি জে নিশ্চিত রূপসঁ গ্রাম্য সংস্কাবেক খসবি ঐ। স্বদেশী ত্রুটিপূর্ণ খা জংগনশাহী রর্ত্তমান ব্যবস্থাপক প্রতি

মোহভংগ কেঁ যাত্রী সোঝ-সহজ হাড় তক ছূবঁ২ বঁনা শ্ববমে র‍্যকত্ত কববাঁক সামবথ বখৈ ছথি তৈ পব থোড়কে দীঠি দেন জায – চানন বুঁঝি হম কিদন নেপন দেহ মে। বাহবে ! মহান কবিক শৰ্ষ্ণ খভিব্যংজনা। খাম নোক কেঁ উঁমেদ বঁহ চাননক শীতনতাক, বঁনূ ভেটৈনৈ বএহ নির্ঘিন খবশিষ্ঠ-নব র‍্যবস্থাক চবিত্র কেঁ কেহন মর্যাদিত গমগ সংস্কাবক সংগ উঁধেসবাঁমে সফন হোগ ছথি- পূঁছ উঁঠাকব নাচ বহে হঁ 'পানিযা-মেন্ড্রী মোব'। বিখিন-বিখিন বিম্বঁক প্রযোগক খনিবার্যতাক খছৈতো ভাবতীয গ্রাম্য সংস্কাবক কেহন নিবহন। খখাবা পব দম প্রদর্শন সঁ বেঁসী দম পচেবাঁক প্রক্রিযা বেঁসী ক্ষশনতাক মানন জাগ ছৈ। ওা বাঁত ভিন্ন জে ঐ গ্রাম্য সহজ চেতনা কেঁ গবিযেবাঁক উঁদেস সঁ গমাব খাকি ভদেসী বিশেষণ সঁ খভিহীত কিএ নে কএন জাউঁক। যাত্রী নব মানবতাকেঁ খাহ্নতিক খাধাব পব ছোটৈ-পৈঘ খাঙ্বক ছপাটি হাথকেঁ স্বকবঁ বঁনেবাঁক দনীন দেনিহাব মিথ্যাকাব সভক ফাঁটকৈ নৈ ভ২ সকৈ ছথি, ওজহ জে হাথ 'স্বস্তি-স্বাহা' সভ কথূমে সক্ষম খা মূন ভেন কবৈএ জহনি কি স্বৰ্দবঁ খন্বহৃতি মাত্র। ও কোনো প্রণানীক সংচাননক সামবথ নৈ বাখি চমচা চানন মাত্র ক২ সকৈএ। সাম্যক খর্থ হগকবি যাত্রী সভংজন জেকি ভাবতীয দর্শনোক মূনাধাব ঐ, সএহটৌ নগবৈত বহন ছথি। কোনো বাযবীয খর্থক খাধাবপব সন্তকেঁ খাবিজ কববাঁক ক্ষপ্রযাস ওহন মহামনা কবি ভনা কিএ কবত ?

এতাবতা জনবাদী চেতনা খা গ্রামীণ সৌন্দর্য-বোঁধ মহান কবি যাত্রীক জিনগীক সহজ উঁছবাস খা উঁর্জা, কবেজক ধ্‌২কধ্‌২কী খা ধমনীক প্রবাহিত বকত্ত বহন ঐ।



মিহিব ঝা

র্ঝান গজন

কসীদা কেব এক হিস্সা হোএত ছৈক "নসীর্ব" | "নসীর্ব" মে করি কে কেন্দ্রবিংদ্ ওকব খদম্য চাহ, ওকব খপন প্রেমিকা সোঁ খগাধ প্রেম, খপন প্রেমিকা সোঁ রিবহ খা ওহি রিবহ সোঁ উঁপেন্ন খসহ্য রিবহ পীডা | এহি "নসীর্ব" সে জন্ম ভেন গজন কে | গজন শ্বরুখাত মে খা র্বহ্ত দিন ধবী এহি রিষযরস্তু (সৃংগাব, প্রেম,রিবহ খাদি) পব খাধাবিত ছন | ভৌতিক রূপ সে ছোর্ট বহর্বাক কাবণ খা মন্বখক সর্ব সোঁ খাকর্ষণক রিষয রস্তু বহর্বাক কাবণ গজন সর্ব সে নোকপ্রিয ভ গেন খা

ধীরে ধীরে কসীদা মৃতপ্রায ভ গেন ।
গজন জখন রিকসিত ভেন, সৃংগাব, প্রেম ঋা রিবহ কে ঋনারা ঋপনা মে নর নর ঋাযাম জোড়ৈত চন গেন । সামাজিক, ভক্তি, বাজনীতিক, ব্যংগ্য একব ঋংগ বনৈত চন গেন । এতবহি নে, ওা হফ্‌ াবসী, ঋববী, উর্দূ হোওত ঋঁগ্রেজ্‌ া ঋা ঋান পশ্চিমী ভাষাক সংগ হিন্দী, মবাঠী, গুজবাতী ঋা মৈথিনী মে ঋপন ঋামো কে ঋক্ষুণ্ণ বখনে ঋপন ৰূপ পবিরর্তিত কবৈত চন গেন । গজন কে প্রভাব এতেক তীক্ষ্ণ বহন জে ভাষা কোনো হোউক, নোকক কবেজ মে ওা সীধা স্থান বনা নেনক ।

মৈথিনী গজন মে কিছু মাস পূর্ব গ্‌ জানকাব নোকনি এক টা নর প্রযোগ শুৰু কেনন্হি – "বান গজন" । হমবা জ্ঞাতব্য মে এখন ধবী কোনো ভাষা মে বান রিষয রস্তু পব গজন নহি নিখন গেন ঋছি । শাযদ ওা প্রযোগ মাত্র মৈথিনী গজন মে পহিন বেব শুৰু ভেন ঋা রিদেহ পব বহুত বাস বান গজন নিখন ঋা সবাহন গেন । ওা বান গজন সব সবন বার্ণিক বহব ঋা ঋববী বহব দুনু মে সমান মাত্রা মে নিখন গেন । কিছু বান গজন বচা নোকনি কে এতেক প্রিয নগনন্হি জে ও সব ঋপন ধুন মে ওহি গজন কে ঘব পব গুনগুনাবয নগনাহ ।

গজন কে কোনো ভাষা মে প্ররেশ কয ঋপন স্থান বনেনাগ ঋাব বহুত মহত্বপূর্ণ ঘটনা নহি বহি গেন । নেকিন গজন রিধা মে নযা ঋাযাম দেনাগ এখনহু মহত্বপূর্ণ ঘটনা ছৈক ঋা মৈথিনী ওব রিশেষ কয রিদেহ নেন ওা সম্মান কে রস্তু ছৈক জে ওা গজন মে ওা নর

आयाम अननक । सब बान गजनकाब के हार्दिक अभिनंदन आ धन्यबाद विदेह के जे बान गजन विशेषांक निकाललथि ।



अमित मिश्र

बान गजन: कोमन करेजक आखर

आग समाज के भेद-भाव ,ऊँच -नीच . जाति-पाति गसिया क' पकड़ने अछि । सब काज मे छल-कपट भ' बहल अछि सदा ग जातिसँ अलग एकटा ऊब जाति अछि । जहिना गाछमे अबह्न-गेंदा -ग्वनाबँ आकर्षित करैत अछि ओहिना ग जाति समाजक सब रस्त्रा के चुटकी मे अपन बना नैत अछि । ग ओ जाति अछि जै सँ जँ लोकक बश चलत त' कहियो बाहब नै हएत । ग जाति अछि "बान जाति" । एहि दुनियासँ

ফবাক বাঁন-মোনক একটা অনগে দ্নিযাঁ অছি । এত' এ .সী বঁনা কাব ত' নৈ ক্ষদা ঘ্বক্ষন্না অছি , এত' প্বথা -পকরানসঁ রেঁসী স্বাদিষ্ঠ তিনকোব পাতক পূবী . জনেবক ক্ষষ্টী কে তবকাবী আ বাঁন্বক চিন্নী অছি । এহি দ্নিযাঁ মে খেনক খংদাজ অজ্বাঁ অছি , খেন রেঁসী অছি আ সরঁসঁ রেঁসী অছি আপসী প্রেম ।

কোনো খেন

হোগ মিন-জ্নি ক' খেনৈ ছথি । কখনো বাঁবাঁ জকাঁ খৈনী চ্নাবেঁ ছথি ত' কখনো মাস্টব জীক নকন কবৈ ছথি । কখনো হঁসৈত ,ঋসৈত ছথি ত' কখনো ঋসন মে হঁসৈ ছথি ।

হিনকব হঁসনাগ , কননাগ ,ঋসনাগ , খেননাগ সবঁ নীক নাগৈ ছৈ আ গএহ কাবণ ছৈ জে নোক এহি দ্নিযাঁ মে রেঁব-রেঁব আবঁ' চাহি ছথি । আখিব কিএক নৈ ওঁতা , কহন গেনৈ যৈ ,"বঁচা ভগবানক ঋপ হোগ ছথি । "

জহিনা ভগবানক মহিমা অপাব ছৈ তহিনা বাঁন মোন কে কোনো সীমাসঁ নৈ বাঁন্হন জা সকৈ যৈ ।

বাঁন মোন কে শব্দ মে বঁন্হনাগ জতবেঁ আসান ছৈ ওতবেঁ কঠীন সেহো ছৈ । বঁচাক কবেজ বঁড কোমন হোগ ছৈ তেঁএ এহন বাঁত নিখবাঁক চাহী জৈসঁ হ্নক মোন প্রসন্ন হোগ , জে ও সবঁ দিন অপন দৈনিক জীবন মে কবৈ ছথি । দোসব বাঁত হম কহ' চাহবঁ জে বাঁন-বিধা কে সদিখন আশীবাদী হেবাঁক চাহী ।

কিএক ত' জঁ নেনপন সঁ আশা নাগন বহতৈ ত' জীবনক সবঁ বাধা কে হঁসৈত-খেনৈত পাব কএন জা সকৈ যৈ

। बाँन रिधाक शेर्ष्ह सदिखन सबन हेबाँक चाही । एहन पाँति जे सबन होग खा जन्दीए भार समझ मे खारि जाओ . बाँन मोन के क्षण मे प्रसन्न क' दै खछि । संगे जँ बागम्स मे निखन गेन होग त' नेनाक जीभ पब एहन चढ़त जे रयस्क भेनोपब नै उँतबत ।

ऐ के नेन गजन उँपयाओ रिधा खछि किएक त' गजन मून रूपसँ बागम्स के खेना खछि । काफिया , बदीफ सबँ तुकान्त के पानन कबैत खछि । हबेक दोसब पाँति एहि नियम के पानन कबैत खछि ।

करिता मे पाँतिक संख्याँ निश्चित नै खछि मुदा गजन मे कमसँ कम दस टा पाँति हेबाँक चाही खा एते पाँति के याद कबबँ कठीन नै खछि । एकटा बाँत ओब मोन बाखू जे बाँन-गजन मे गजनक व्याकबण मे कोनो पबिबर्तन नै होग छै । बाँन-गजन मे मतन , मकता , काफिया , बदीफ खा बँहब ओनाहितै बहतै जेना रयस्क गजन मे बहैत खछि ।

बाँन मोनक सटीक खाखब निखबाँक नेन , खाँखि मुनि खपन नेनपन याद करू , याद करू जँ खहाँ की सबँ करै छनियै नेनपन मे , खा जे दृश्य देखाग पड़ैए ओकब गजनक रूप मे शेर्ष्हबँक्ष क' निख , नै त' खपन खास-पड़ ासक नेनाक खाचबण देखू हुनक दैनिक क्रिया देखू , ओ की करै छथि देखू खा ओकबा शेर्ष्हसँ बाँन्हि निख । बाँन मोनक कोनो सीमा नै खछि तेँए जे मोन खछि से निखू मुदा शेर्ष्ह सबन बाखू । खपन बचना मे ग्यान-रिग्यानक तड़का नगाबैत बहू खा कोमन कबेजक खाखब बचैत बहू ।

<u>**কতিখাএন খাখব**</u>

রাঁত চাবি রঁর্ষ পহিল্বক খছি হমবা সংগে একটা সংগী হমবে কম মে বহৈত ছন । পঢ়ৈ মে কনে কমজোব ছনৈ ক্ষদা কংপটীসনমে হমবাসঁ 2–3 ঘংটা রেঁসীএ বাতি কঽ জাগৈ ছন খা একব ফনস্বরূপ 10 টা মে 4 টা সরাঁন জরূব হন কঽ নৈ ছনৈ ।ওনা তঽ হমবাসঁ রেঁশী রাঁত নৈ কবৈত ছন ক্ষদা ভোব মোগতে রাঁকী রঁচন সরাঁনক নেন হমবা নঽগ জরূব খারি জাগত ছন খা এখন ও মিত্র রী .টেক কঽ বহন খছি ।গ ঘটনা চাবি সানক রাঁদ মোন পড়ন ক্ষন্না জীক একটা শৈব

পঢ়া কঽ

ডাহসঁ পহুঁচব কোস-দূ কোস
আগূ বঢ়বা নেন তঁ প্রেম চাহী

পিছলা ডেঢ় মহিনাসঁ হ্মন্নাজীক গজল সংগ্রহ "মাঁঝ আঁগনমে কতিআএল ছী " থোড়-থোড় পঢ় ছলৌঁহ হ্মদা কাল্হি ভবি বাতি একব গহন অধ্যযন কেলৌঁ । হ্মন 50 টা গজল আ 10 টা ৰুবাঁগ কে সংগ্রহ অছি "মাঁঝ আঁগন মে কতিআএল ছী" । পোথীক নাম পঢ়া মোনমে কিদন-কহাঁদিন বাঁত সব উঁঠঽ নাগন । কতিআএল উঁগো মাঁঝ আঁগনমে বিঁচিত্র সন নাগন হ্মদা পঢ়নাক বাঁদ হমবা নাগৈত অছি জে শাগব এহি সমাজকে আঁগন আ এহি সমাজ ৰুপি আঁগনক মাঁঝ মে অপন বৈঁসাব বনেনে ছথি । গ ভঽ সকৈএ জে সমাজক কিছু ভাগসঁ গ কতিআএল হেতাহ হ্মদা পূবা সমাজসঁ কিন্নাহ কতিআএল নৈ নাগৈ ছথি । হমব গ কথনক সহতা এহি সংগ্রহ কে পঢ়নাক বাঁদ বুঁঝা জাএত । গ তঽ প্রেমো কেননি তঽ সমাজকে ধ্যান মে বাকি তেঁএ তঁ কহৈ ছথি

সব উঁমবি রস্থা কে প্রেম চাহী
মবিতো দম ধবি হ্মশন ছেম চাহী
আশা আ নিবাশাকে হবিছাবৈত কহননি

নিবাশা সংগ আশাপব টিকল ছৈ দুনিযাঁ
জঁ দেখনহুঁ ভগজোগনী তঁ দিবানী বুঁঝূ

বিহাবক তাকত আ কমজোবী কে সমেটনে গ শেব

রিহাবক সিবখাবী রঁদনি গেন সন নগৈএ খার্ব
খ্রেমিক ঘটনাসঁ কংপনী মানিক নগৈ রিহাবী জকাঁ
এহন–এহন কতেকো দমদাব শৈব সরঁসঁ সজন গ গজন
সংগ্রহ খপনা–খাপ মে খনগ পহচান রঁনরৈত খছি ।

পহিনে গজন কে দেখনাপব একটা রাঁত হমবা খটৈকন
জে ছন মাত্র চাবি টা শৈব । গজনমে কমসঁ–কম
পাঁচ টা শৈব বহরাঁক চাহী হ্মদা এহি সংগ্রহক গজন
সংখ্যাঁ
1,2,7,10,11,19,22,23,24,25,27,28,32,34,35,3
7,39,42,43,44,47,48 মে মাত্র চাবিএ টা শৈব খছি
জে কী গনত খছি ।ওনা শাগব খাহ্মখক খংতীমমে
গ গনতী স্লীকাব কবৈ ছথি খা একব জিম্মেদাব খপনা
কে মানৈত ভবিষ্যমে একব স্বধাবক রাদা কবৈত ছথি
হ্মদা হ্নক শৰ্ক্ক পকড় খা ভারক খধ্যযন কেনা কে
রাঁদ হমবা নাগৈত খছি জে শাগবক নেন উঁপবোক্ত
গজনমে এক–এক টা শৈব রঁঢ় নোগ কোনো ভাবী রাঁত
নৈ ছনৈ তেঁএ হম একবা খানস মানৈ ছী।
খার্ব চন্ব কাফিযাপব । এহি সংগ্রহক কিছু গজনমে
একৈ কাফিযাক প্রযোগ ভেন খছি জেনা 26ম গজন
মে তীন ঠাম কাফিযা "চাহিএ" খছি ।29মে পাঁচ ঠাম
"এখনো" 31মে পাঁচ ঠাম "উঁঘাব্ব" 46ম মে পাঁচ
ঠাম"কেকবো–কেকবো" খছি ।কিছু ঔব গজনমে গ
রাঁত খছি ।ওনা কাফিযাক দোহবেনাসঁ গজন গনত
নৈ হোগ ছৈ ।
তেসব গজনমে মতনা নৈ খছি কিএক তঁ গ গজনক
পহিন শৈব খছি

फाटैत छल जतए मेघ आ जमीन
पहुँचल पहिने ओतहि अभागल

रचल चारिटा शेरमे "अभागल" के काफिया मानि क्रमशः "बाँगल ,भाँजल , माँजल आ साधल लिखल अछि । 4म गजलक मतलामे "करैए" आ बाजैए" "ऐए" उकान्त संग अछि तँ पाँचम शेर मे काफिया "होइए" अछि । छठम गजलक अंतीम शेरमे"कहाँ" के रदला गलत काफिया "कहाँत" लिखा गेल । 32म गजलक मतला अछि
हमरा तँ सुख भेटैए गजलक गाँतीमे
ओहिना जेना जाड़ मे गर्मी भेटैए गाँतीमे

एहिठाम "गाँतीमे" रदीफ भेल आ काफियाक अता- पता- नै अछि । ओना आन शेरमे काफिया "आतीमे" उकान्त संग अछि ।

41म गजलक मतलामे काफिया "झमका आ चमका " उकान्त "मका" संग अछि तँ दोसर शेरमे काफिया "उँठा" अछि ।
44म गजल मे काफियाक उकान्त "एल" अछि तँ दोसर शेरमे काफिया "बखैल" "ऐल" उकान्त अछि । 17म गजलमे अंग्रेजी शब्दक काफिया "गेम" आ "र्लेम" लिखल अछि ।

एहि संग्रहक सभटा गजल सरल वार्णिक बहरमे अछि । ओना तँ ई बहर गजलक सभसँ हल्लुक बहर अछि तँ शाइर एकरा बहरमे रहितो रहैत धोखा खाइत

छथि । हमरा जानैत 26टा गजल गजलक कोनो शेरमे एक-दू टा वर्ण बढ़ । देननि तँ कोनो मे घटा देननि । जेना
दोसर गजलक अंतीम शेरमे 15 के बदला 16 वर्ण अछि । 7म गजलक तेसर शेरमे 18 के बदला 19 वर्ण अछि । 9म मे दोसर शेरमे 11 के बदला 10 वर्ण अछि । 11म गजलक अंतीम शेरक अंतीम पाँतिमे 18 के बदला 17 वर्ण अछि । एहन गजली गजल संख्याँ
12,14,15,18,19,20,22,24,26,28,29,30,31,32, 34,35,38,42,43,46,47आ 48 मे सोहो भेल अछि ।

ओना जँ भारक बात करी तँ एहि गजल संग्रहके ऊँचाइ पर पहुँचा देने अछि एकर भार । सबटा गजल हृदय के छू लैत अछि आ सोचबाक लेल मजबूर करैत अछि तेँए इ आन संग्रह सबसँ भिन्न लगैत अछि आ एकर आखर आन संग्रहक आखरसँ कतिआएल अछि । भारक कारणे इ संग्रहक "कतिआएल आखर" पढ़बाक योग्य अछि । हमर सलाह अछि जे एकबेर एकरा अवस्य कए जरूर देखू ।
बेसी तँ अहाँ सभ पढ़ू आ हम जाइ छी दोसर गजलक खोजमे . . .

(ऐ आलोचनाक आलोकमे अन्नाजी सभटा देखायल व्याकरणगत त्रुटि दूर कए देलन्हि- सम्पादक ।)



খাশীষ খনচিন্হাব

খাধ্নিকতাক সমস্যা (খানোচনা)

জাগবণ, প্বনর্জাগিবণ রা নরজাগবণ দ্নিযাঁক হবেক হিস্সামে খপনা সময পব হোগত এনৈএ হ্মদা ওকব ব্যাখ্যা হবেক সমযমে খনগ-খনগ ঠ্গসঁ হোগত ছৈ। একটৌ ঘটনা জকবা পহিন নোক জাগবণ মানৈত খছি তঁ দোসব ওকবা প্বনর্জাগিবণ মানৈত খছি তঁ তেসব নরজাগবণ। খা এহী তীনূক দৃষ্ঠিকোণক ব্যাখ্যাসঁ খাধ্নিকতাক সূত্রপাত হোগত ছৈ।

পশ্চিমক প্বনর্জাগিবণসঁ প্রভারিত মন্বখ সভ স্বরিধাকেঁ খপনা নাম কএ নেনক। ওা প্বনর্জাগিবণ মাত্র স্বরিধা নৈ বঁহ্কি হমব সভহঁক মান্যতা, ভারনা, রিচাব, খাচবণ, ব্যরস্থা খাদিমে সেহো পবিরর্তন কেনক। এহী প্বনর্জাগিবণক কাবণ পবস্পব রিবোধী সংস্থা খা ব্যরস্থাক জন্ম ভেন। বাষ্ট্রীয খা খংতববাষ্ট্রীয সত্তা এবং নিযংত্রণক চানি-চনন খাএন। খা এহী কাবণেঁ পবংপবাগত খাস্থা খা প্রেব মূন্যমে কমী খাএন। সাহিত্ খা কনাক ক্ষেত্রমে খতিযথার্থরাদক জন্ম ভেন, সান্নী খাশ্রেমক রিঘটন ভেন খা মন্বখ একৌব ভএ গেন জাহি

कारणेँ मनुखक विवेक आ आत्मनियंत्रणमे कमी आएल। महानगरसँ लऽकऽ नग्र आ गामक संबंध जटिल बनि गेल छै। जीवनमे नीरसता, असुरक्षा, दुश्चिन्ता, विक्षिप्ता आदि बढ़ि गेल छै। नव-नव बेमारी उपकि रहल छै जाहि कए हृदय रोग,बलडप्रेसर आ अनिन्द्रा। तहिना लोकक रुचि सेहो बदलि गेल छै। जतेक तेज गीत-संगीत बाजत ओतेक नीक मानल जाइत अछि। तेनाहिते साहित्यमे सेहो अभूतपूर्व परिवर्तन भेल अछि। अपराध कथा, सेक्सकथा, आ मनोरंजन कहानी सभ साहित्य केर डिमांड जोर पर अछि। आ ऐ तरहेँ मनुखक जीवन शैलीमे सेहो परिवर्तन भऽ रहल अछि। संगे संग मनोवृत्तिमे बढ़ित बेसी। आजुक समयमे मनुख लग ने सहनशीलता छै आ ने बात बुझबाक समय। आ एही दुआरे आब लोक बात-बात पर हतोत्साहित भऽ जाइत अछि। आशा,उम्मेद जाहि चीजा केर नाम छै से आब केकरो हृदय पर नै रुकैए।

एखन हम साल 2006मे बनल आ मेल गिबसन द्वारा निर्देशित फिल्म एपोकिलप्टै बाजसम बेर देखि कए उठलहुँ अछि। ई फिल्म मेक्सिको केर भाषामे जकर नाम Yucatec छै आ "माया" सभ्यता पर आधारित छै। ऐ फिल्मक शुरुआतमे एकटा कबीला अपना गाममे शांतिपूर्वक खा-पीक आनंद मना रहल अछि। तखने दोसर कबीला दिससँ हमला भेलै। पहिल कबीला हारि गेल आ ओकर गामकेँ जरा देल गेलै। नायक सहित अधिकांश आदमीकेँ बन्दी बना लेल गेलै। सदा गर्भवती नायिका अपन एक मात्र बच्चाक संग बचि निकलैत अछि आ सुरक्षा लेल गँहीर खत्तामे शरण लैत अछि। बंदी

রঁনেনাক রাঁদ রিজেতা রঁদী সভকেঁ খপনা করীনা নএ জাগত খছি। ভাৗ ভবি নাযক খপনাকেঁ খা খপন সংগীকেঁ রঁচেরাঁক প্রযাস করৈত খছি হ্মদা সে সফন নৈ হোগ ছৈ।

এম্হব নাযিকা জে খত্তামে ছৈ সে নানা প্রকাবক কষ্ঠ সহিত রঁচা সংগ সময রিতরৈত খছি। একাএক রঁখা খরৈত ছৈ খা সেহো ঝমষ্টগব। নহ্ঁ-নহ্ঁ খত্তা ভবএ নাগৈত ছৈ। পানি জখন ডাঁড় ভবি ভএ জাগত ছৈ তখন নাযিকাকেঁ প্রসর পীড়া হোগত ছৈ....................খা ওহী পানিমে রঁচাক জন্ম হোগত ছৈ। নাযক খপন সংগী সভহঁক সংগ রিজেতাক বাজ্যমে খারি গেন খছি। বাজ্যক হাষ্টমে কিছু রঁদীকেঁ রেঁচন জাগত খছি খা কিছুকেঁ বাজাক সামনে দেন জাগত খছি। বাজাক সামনে উঁপস্থিত ভেনা পব বাজপ্ববোহিত দ্বাবা পব সূর্যপূজা কেনা রাঁদ রঁনি নেন খযোগ্য রঁদী সভকেঁ ছাঁটি যোগ্য রঁদীকেঁ নাযকক সামনে রঁনি চঢ়া দেন জাগত ছৈ। খংতমে নাযককেঁ রেদী পব স্বতাএন জাগত ছৈ কি তখনে..........................মেঘ ঝাঁপি নেনকৈ। খা তখনে বাজপ্ববোহিত সূর্যকোপ মানি ওহি দিন নেন রঁদ কবরাঁ দেনক। খা নাযক রঁনিসঁ এনা রাঁচি গেন। হ্মদা মৃত্যু এখনো নীখন ছনৈ। নাযক সহিত সভ রাঁচন খযোগ্য রঁদীকেঁ একষ্টা মৈদানমে খানন গেনৈ খা সভকেঁ ভাগএ কহনকৈ। খা ভাগৈত রঁদী সভকেঁ নিশানা সাধি-সাধি মাবকন। হ্মদা নাযক এতহ্ঁ রাঁচন খা ভাগি পড়াএন। রিজেতা সভ ওকব পাঁছা কেনক খা করৈত বহন হ্মদা নাযক ভাগৈত খা রাঁচৈত বহন। খা ভাগৈত-ভাগৈত নাযক সহ্মদ্রক

कल्लेबमे पहुँचैत अछि आ देखैत अछि जे ओम्हरसँ एकटा जहाज आबि रहल छै। नायक फेर पाछू तकलक, ओकरा पकड़ऽबला लोक रिजेता तैयार अछि ओहो सभ जहाजकेँ देखि सहमि गेल छल आ पाछू हटए लागल छल। आ एना नायक बाँचि गेल आ अपन परिवार लग पहुँचल।

ऐ फिल्ममे हमरा सभसँ नीक गप्प लागैए जे हरेक सीन, हरेक कथन आशासँ भरल छै। खास कए तीन ठाम पहिल- जखन खत्ताक पानिमे बँचाक जन्म होइत छै, दोसर--जखन नायककेँ बँजिरेदी पर स्वतंत्र जाइत छै आ तेसर-- जखन नायक जहाज आ अपन दुश्मन बीचमे रहैत अछि।

ई कथानक पढ़लासँ आशाक कतेकरेँ दर्शन भेल हएत। फिल्म देखू हरेक शॉटमे आशामे भीजल छै। ई फिल्म आधुनिक कालक थिक अदा जखन कालिदास मेघदूत लिखला तखन की सोचि यक्ष द्वारा मेघकेँ दूत बनेलाह। मेघ निर्जीव छै ई बात कालिदासकेँ पता छलन्हि आ नायक यक्षकेँ सेहो। की ई आशावादक चरम नै थिक। आ जा धरि मेघ यक्षणी लग समाद लए पहुँचैत अछि ता धरि श्रापक समय खतम। बात जखन मैथिल कोकिल विद्यापतिकेँ (ओ विद्यापति जे की गीत लिखला) तखन हुनक गीतमे भक्ति आ श्रृंगार जतेक बहए ताहिसँ बेसी आशा बहैत अछि। किछु भए जाए विद्यापति अपन आशाकेँ नै छोड़ै छथि। चाहे पति परदेशमे होथिन्ह अदा ओ नायिकाकेँ जरूर कहै छथिन्ह जे चिन्ता नै करह तोहर प्रिय जरूर अबिते हेतह। एहन बहुत उदाहरण अछि, किछु देखल जाए-
---

1
নোচন ধায ফোঘাযন হবি নহিঁ খাযন বে !
সির-সির জির নহিঁ জায খাস খরুমাযন বে !১!

....

স্বকরি রিদ্যাপতি গওন ধনি ধগবজ ধরু বে !
খচিবে মিনত তোব রাঁনক্ষ প্বত মনোবথ বে !৪!

2
কান্হ হেবন ছন মন রঁড় সাধ !
কান্হ হেবগত ভেনএত পবমাদ !১!

....

রিদ্যাপতি কহ স্বন্ব রঁব নাবি !
ধৈবজ ধরু চিত মিনরঁ ক্ষবাবি !৭!

3
কে পতিআ নয জাযত বে, মোবা পিখতম পাস !
হিয নহি সহয খসহ দ্খবে, ভেন মাওন মাস !১!

....

রিদ্যাপতি করি গাওন বে, ধনি ধক মন মাস !
খাওত তোব মন ভারন বে, এহি কাতিক মাস !৪!
ঞ মাত্র কিছু উঁদাহবণ খছি। উঁপব জতেক গীত হম দেনহুঁ তাহিমে গৌব কএ দেখূ ভক্তি আ শৃংগাব তঁ মাত্র রহন্না ছৈ। মূন রাঁত তঁ ছৈ খাশা দের্ঁ, কেকবো নোব পোছর্ঁ। ভক্তি আ শৃংগাব রিদ্যাপতিক গীতমে মাত্র সাধন খছি সাধ্য নৈ। সাধ্য তঁ ছৈ নিবাশাকেঁ হটাএর্ঁ। রিদ্যাপতিক গীতকেঁ রহ্ত খানোচনা ভেনভক্তি আ শৃংগাবক চশ্মা নগা ক্ষদা খাশীরাদক দৃষ্ঠিকোণসঁ সংভরতঃ ঞ পহিন খানোচনা খছি (জঁ পহিনে কেও কেনে হেতাহ

আ প্রকাশিত ৻ছতৈ তঁ একবা ৻মব খত্তানতা ব্ঁঝন জাএ)। আ তঁএ রিদ্যাপতি ৻মব প্রিয কবি ছথি। ৰাঁত জখন নোকগীতক কবী তঁ এহী আশা কেব কাবণ " সোহব " ৻মব প্রিয গীত খছি। আ জখন ৻মবা নগ কিছু নৈ ৰঁচৈত খছি তখন ৰেঁব-ৰেঁব ৻ম রিদ্যাপতি গীত পঢ়ৈত-স্বনৈত ছী। সোহব স্বনৈত ছী, মেঘদূতক যক্ষ ৰঁনি জেৰাঁক প্রযাস কবৈত ছী আ এপোকিনপ্টৈ দেখৈত ছী।

আগসঁ তীন সান পহিনে ৻মবা গামক জিনগী পঢ়ৰাঁক মৌকা ভেটৈন ছন। নেখক ছথি জগদীশ প্রসাদ মংডন আ ঐমে ক্ষন 19টা কথা খছি। ঐ পোথীকেঁ জাহি তবীকাসঁ ৻ম পঢ়নহুঁ সে বোচক প্রসংগ খছি। ভএ সকৈএ জে ও প্রসংগ খহাঁ সভ নেন নীবস হো আ একবা আনোচনাকেঁ কমজোব কড়ৈ সেহো মানী ক্ষদা ৻মবা ব্ঁঝনে আনোচনা তখনে সার্থক হোগত ছৈ জখন কী কোনো পোথী মাত্র " পাঠক "ক দৃষ্ঠিকোণসঁ পঢ়না ৰাঁদ আনোচকীয রিরেকসঁ নিখাগত হো। ঐঠাম তঁ কিছু সমীক্ষক পোথীক নাম নিখৈ ছথি, কথা পাত্রক নাম আ ঘটনা নীখৈ ছথি আ খংতমে প্রকাশক নাম, পোথীক দাম আদি নীখি আপনা আপকেঁ সমীক্ষক মানি নৈ ছথি। রস্তুতঃ ঐ প্রকাবক আনেখকেঁ পোথী পবিচয তঁ মানন জা সকৈএ ক্ষদা সমীক্ষা রা আনোচনা নৈ।
তঁ আবী কনে খপন প্রসংগ পব। খপান কম্পনীক টৈন্ডব ভবৰাঁক নেন ৻বিদ্বাব গেন ছনহ্ ভেন(BHEL) মে। মাত্র ভবৰাঁকে নৈ ছন ৰঁল্কি পূবা বেটৈ ৻মবে তয কবৰাঁক ছন। ৻ম খপন ব্ঁদ্ধি হিসাবেঁ বেটৈ তয কএ টৈন্ডব জমা কএ দেনিঐ। নগভগ দস ৰঁজে বাতিমে জখন

টৈন্ডব খ্জনৈ তখন পতা নাগন জে ও হমবা হাথসঁ নিকনি চ্কন খছি। হমব কম্পটৌটৈব হমবাসঁ পাঁচ নাখ কম বেষ্ট দেনে বহৈ। হ্নন মিনা ওহি সময়মে হম হতোসোহিত ভএ গেন ছনহুঁ। ঙা খনগ বাঁত জে তখনসঁ এখন ধবি হম 118টা টৈন্ডব জমা কএ চ্কন ছী খা ওহিমেসঁ 44টামে সফন সেহো ভেনহুঁ। হ্নদা হবিদ্বাবমে হম খসফন ভেন ছনহুঁ। মোন দ্খী ছন। হ্নদা ঐ ঘটনা পব হমব কোনো বশ নৈ ছন। হ্নন মিনা দূ বঁজে বাতিমে বঁস পকড়নহুঁ। নিন্ন হেবাঁক প্রশ্ন নৈ। হাবি-থাকি কএ ঙা পোথী নিকাননহুঁ (হমব বৈগমে হবদম কিতাবঁ, হাজমোনা খা মংচ নামক চাকনেষ্ট বহৈএ) খা সোমে-সোম বীচক কথা " চূনবাঁনী"ক খঁতিক পন্না নজবি পব পড়ন খা তাহ্নমে খঁতিমে পাঁতি সভ পব.............................." হ্নিযোক নজবি মষ্টক্ষবিযাকেঁ হ্নসকিযাগত দেখনক। একষ্টকসঁ এক দোসবাক খাঁখি গবৌনে খপন জিনগী দেখএ নগন"
খা কি হমবো খপন জিনগী দেখাএ নাগন। পূবা কতা পঠ়া গেনহুঁ। খা তকবা বাঁদ পনথী (বঁসক সীষ্ট পব পনথী মাবি বৈসবঁ খতবনাক হোগ ছৈ) মাবি শ্বব্দ কেনহুঁ খা গ্বড়গাম খবৈত-খবৈত খমে। সভ কথা পঠী গেনহুঁ। এক-এক পাঁতি পঠ়া গেনহুঁ। হ্নদা হবেক কথাক খঁতিম দূ-তীন পাঁতি বঁহ্ত নীক নাগন। কাবণ ঙা পাঁতি সভ হমব নোব পোছবাঁক কাজ কেনে বহএ। ওহন সময়মে জখন কী হম খপন খসফনতা পব দোসব নগ্রমে কনৈত বহী তখন " বিসাঁঠ়"ক পাঁতি খাএন " স্বগিযা দিস.........................পবানী বিদা ভেন "। জখন হম দোসবক খাশা চাহৈত বহী তখন " পছতাবাঁ " কেব পাঁতি খাবিঁ গেন " পতিক............

গিনগী দেখএ নগনীহ"। জখন হম ওা সোচৈত বহী জে আৰ্ঁ হম অপন সীনীযব নগ কী কহৰৈঁ তখন হমবা নগ " ভেঁটৈক নাৰা " কেব পাঁতি আএন " ফ্ঁহসঁ ঠহাকা............কৈঁচা গনএ নগন"। মতনৰ্ জে হৰেক কথা হমব নোবকেঁ পোছৰাঁক কাজ কেনক। হমব হাথ পকড়ি উঁঠেৰাঁক কাজ কেনক। আ তঁএ হমবা ওা পোথী মেঘদূত, পদাৱনী, সোহব আ এপোকিনপটৈ নাকম ফিম্মক আধুনিক স্বৰূপ নগৈএ। অর্থাৎ কহৰাঁক ওা মতনৰ্ অছি জে জগদীশ প্র.মংডন কানিদাস, রিদ্যাপতি, সোহব পদক অক্তাত বচনাকাব আ মেন গিৰ্সনক আধুনিক অৱতাব ছথি। এঠাম প্রস্তুত পোথীক আব ৰ্হুত বাস রিশেষতা ছৈ। জঁ অহাঁ মহামো গাঁধীক স্ববাজ দর্শন বুঁঝএ চাহৈত ছী তঁ " গামক জিনগী " পঠু। জঁ বাজাবাম মোহন বাযক ফবীতি ভগেৰাঁক অৱধাবণা চাহী তঁ " গামক জিনগী " পঠু। জেনা সবদাব পটেন বাজ্যসঁ বাজ্যকেঁ জোড়নাহ তেনাহিতে জগদীশ জী গামকেঁ গামসঁ জোড়নাহ আ তাহুসঁ ৰেঁসী ও নোককেঁ নোকসঁ জোড়ৰাঁক পক্ষমে ছথি। জঁ গীতাক কর্তব্য চাহী তৈযো " গামক জিনগী " পঠু আ জঁ সন্যাসক এম বুঁঝৰাঁক হো তৈযো " গামক জিনগী " পঠু। ফন মিনা কএ ওা পোথী হমবা হিসাৱেঁ ডিপ্রেস্ড আদমীকেঁ সমান্য কববাঁক ক্ষমতা বখৈএ।
আধুনিকতাসঁ জন্মন জতে সমস্যা ছৈ তাহিমে ওা ডিপ্রেশন সভসঁ ৰেঁসী খতবনাক ছৈ (কাবণ চাহে জে হো)। এহন সমযমে জঁ " গামক জিনগী " পঠন জাএ তঁ অপেক্ষিত নাভ ভেটৈতে। ওনা ওা আশাবাদী দৃষ্টিকোণ জগদীশ জীক হবেক বচনামে ভেটৈত আ তাহিমে একটা প্রমুখ নাম থিক হুনক উঁপন্যাস " উঁথোন-পতন "।

তঁএ হম পাঠক সভসঁ ওা খপেক্ষা বখৈত ছী জে জগদীশ জীক হবেক বচনাকেঁ ঐ দৃষ্ঠিকোণসঁ পঢ়থি...... এনা কেনাসঁ নিশ্চিত ৰূপেঁ সমাজক ভনাগ হেতৈ।

গজনক সাক্ষ্য- সমানোচনা

হমবা খাগৃমে পসবন খছি “খপন যহ্মক সাক্ষ্য” তাবানঁদ ি রযোগীক গজন সংগ্রহ। চানীস গোষ্ঠ গজনকেঁ সমেষ্টনে। নোককেঁ ছগ্বন্তা নাগি সকৈত ছৈক জে মৈথিনীমে গজনক খানোচনা কহিখাসঁ শ্বৰু ভএ গেনৈক। ঐ ছগ্বন্তাক কাবণ ঋখ্যত: হম দূ ৰূপেঁ দেখৈত ছী পহিন তঁ ওা জে গজন কহিও মৈথিনী সাহিত্যক ঋখ্যধাবামে নৈ খাএন দোসব-মৈথিন-জন

एखनो गजलक समान्य निअम आ ओकर रचनात्मकतासँ परिचित नै छथि। समान्ये किएक अपने-आपकेँ गजल बुझनिहारक सेहो हाल एहने छन्हि। बेसी दूर नै जाए पड़त। "घर-बाहर" जुलाइ-सितम्बर 2008ई.मे प्रकाशित अजित आजादक लेख "कलानंद भट्टक बहन्ने मैथिली गजलपर चर्चा" पढ़ि लिअ मामिला बुझबामे आबि जाएत।

जँ विषयान्तर नै बुझाए तँ थोड़के देरले तारानंद वियोगीक पोथीसँ हटि अजाद जीक लेखक चर्च करी। ऐ लेखक पहिल पाँति थिक- मैथिलीमे गजल लिखबाक सुदीर्घ परम्परा रहल अछि.....। मुदा कतेक सुदीर्घ तकर कोनो ठेकाना अजादजी नै देने छथिन्ह। फेर एही लेखक दोसर पैरामे अजित जी दूसरजामे फँसल छथि। ओ मैथिल द्वारा समान्य गप-सप्पमे गजलक पाँति नै जोड़बाक प्रथम कारण मानैत छथि। जे मैथिलीमे शेर एकदम्मे नै लिखल गेल। आब पाठकगण कने धियान देल जाए। लेखक पहिल पाँति तँ अपनेकेँ धियान देबौंटो करत जे मैथिलीमे गजलक सुदीर्घ....।" सभसँ पहिल गप्प जे गजल किछु शेरक संग्रह होइत छैक आ दोसर गप्प ई जे जँ अजाद जीक मोताबिक शेर लिखले नै गेलैक तँ फेर कोन प्रकारक सुदीर्घ परंपराकेँ मोन पाड़ि रहल छथि अजादजी। एठाम गलती अजाद जीक नै मैथिलीक ओहि गजलकार सभक छन्हि जे गजल तँ लिखैत छथि मुदा पाठककेँ ओकर परिचए, गठन, निअम आदि देबासँ परहेज करैत छथि। ओना प्रसंगवश ई कहबामे कोनो संकोच नै जे गजल कखनो लिखल नै जाइत छैक। मुदा मैथिलीक धुरंधर सभ

গজল লিখৈত ছথি। মূল রূপসঁ অরবী-ফারসী-উর্দূমে গজল কহল জাগত ছৈক লিখল নৈ। পাঠকগণ গজলক ওা লিঅম ভেল। আরঁ ফেরো অজিত জীক লেখকেঁ আগূ পঠূ আ অপন কপাব পীঠ অপনাকেঁ খ্নে-খূনামে কএ লিখ। অজিত জী অপন সংপূর্ণ লেখমে জৈ শেব সভ মক্তা কহলখিন্হ অছি বস্তুত: ও মক্তা ছৈকে নৈ। পাঠকগণ মোন বাখূ, মক্তা গজলক ওহি অঁতিম শেবকেঁ কহল জাগত ছৈক জৈমে গজলকাব (একবা বাঁদ হম শাগব শব্দঁ প্রযুক্ত কবরঁ, অদ্রূঠাম মোন বাখূ শাযব গনত উঁচ্চাবণ থিক।) অপন নাম বা উঁপনামক প্রযোগ কবৈত ছথি। (অদ্রূঠাম মোন বাখূ হবেক গজলমে নাম বা উঁপনামক সমান প্রযোগ হোএবাঁক চাহী ওা নৈ জে একবা গজলক মক্তা তাবানংদসঁ হোঅএ আ দোসব গজলক মক্তা রিযোগীক নামসঁ নামসঁ।) হ্মদা আশ্চির্য রূপেণ অজাদজী জৈ শেব সভকেঁ মক্তা কহলখিন্হ অছি ওগমে কোনো শাগবক নাম- উঁপনাম নৈ ভেঁটৈত। ওনা অজিতজী হিন্দীক স্বপ্রসিদ্ধ শাগব ছথি তকব প্রমাণ ও লেখক প্রাবংভেমে দএ দেনে ছথি।

হঁ তঁ ঐ লেখক সংক্ষিপ্ত অরলোকনক পছাতি ফেবসঁ রিযোগী জীক গজল সংগ্রহপব চলী। তঁ শ্বরূআত কবী স্পষ্টীকবণসঁ, হমব নৈ রিযোগী জীক। সভসঁ পহিলে ওা জে অন্য মৈথিলী শাগব জকাঁ রিযোগীও জী মানৈত ছথি জে গজল লিখল জাগত ছৈক। দোসব গপ্প জে রিযোগীজী দ্বাবা দেল অপন ভাষা সংবঁধী রিচাবসঁ লগৈত অছি জে ভলহি ং ি রযোগী জী উঁর্দূ সীখ উঁর্দূক পোথী পঠ ৈত হেতাহ হ্মদা গজল তঁ কিন্নহুঁ নৈ লিখৈত হেতাহ, কাবণ, পাঠকগণ ধিযান দেল জাএ। অরবী-ফারসী-উঁর্দূ তীনূ ভাষাক ছংদ শাস্ত্র একমতসঁ কহৈএ জে

दोसब भाषाकेँ तँ छोड़ू अपनो भाषाक कठिन शब्दक प्रयोग गजलमे नै हेबाक चाही। ठीक उपरोक्त भाषाक नियम जकाँ मैथिलीओ मे नियम छैक। तँए महाकवि विद्यापति अपन कोनहुँ गीतमे दूषण, विष्णु आदिक प्रयोग नै केने छथि। मुदा वियोगी जी अपन पोथीक नाम रखने छथि "अपन युद्धक साक्ष्य"। जनसमान्य युद्ध तँ कहुना बूझि जेतैक मुदा साक्ष्य....। एठाम प्रसंगवश ई कहब बेजाए नै जे वियोगीजी अपनाकेँ अभिजात शब्दक प्रयोग मानैत छथि।

आब हमरा लोकनि ऐ पोथीमे प्रस्तुत चालीसो गजलक चर्च करी। पहिने भाषाकेँ देखी। ओना वियोगीजी भाषा संबंधी गलती जानि बूझि कए लौन-वश ततेक ने कएल गेल छैक जकरा अलगा कए आँगा बढ़ब संभव नै। एकर किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि- दोसर गजलक मतलाक दोसर पाँतिमे दुखक बदला यातना। आठम गजलक दोसर शेरक पहिल पाँतिमे नावाक बदला जमुना। तेसर गजलक दोसर गजलक दोसर शेरक दोसर पाँति धधराक बदला ज्वलन। आठम गजलक अंतिम शेरमे प्रयुक्त तन्त्रंग, आब एकर अर्थ जनताकेँ बुझबिऔ। फेर आगू गजलक दोसर शेरमे नजरि केर बदला दृष्टि, दसम गजलक दोसर शेरमे उन्यक जगह विपरीत। एगारहम गजलक मतलामे दुविधाक जगह द्वैध। तेरहम गजलक तेसर शेरमे नेकदिली आ बदीक प्रयोग। तइसम गजलक अंतिम शेरमे भटैबंगक बदला बदरंग। पचीसम गजलक तेसर शेरमे गजोबिआक बदला ज्योतसना। चौतीसम गजलक मतलामे दुख केर बदलामे पीड़-इत्यादि। ओना ऐ

উঁদাহবণক খতিবিক্ত হবেক গজনমে হিন্দী, উর্দূ, সংস্কৃত খাদি ভাষাক তত্সম রঁহ্ন শৰ্দক ততেক নে প্রযোগ ভেন ছৈক জে গজনক মূন স্রব, ভাব-ভঁগিমা, বসকেঁ ভবিগব রঁনা দেনে ছৈক। তৈপব রিযোগীজী গর্ব পূর্বক ঘোষণ কেনে ছথি জে ও ওগ পবিরাবক নৈ ছথি জিনকা সংস্কাবমে খভিজাত শৰ্দ ভেঠন হো। রিঁডরঁনা ছোড়ি একবা কিছু নৈ কহন জা সকৈএ। জঁএ চানীসো গজনক ভাষাকেঁ ধিযানসঁ দেখন জাএ তঁ হমবা হিসারেঁ রিযোগীজী ঐ গজন সবঁহক মৈথিনী খনুবাদ কএ দেখিন্হ তঁ রেসী নীক হতৈক।

ভাষাসঁ উতবি খাব গজনক রিচাবপব খাএন জাএ। রেঁসী দূব নৈ জাএ পড়ত-তেসব গজনক খঁতিম শেবসঁ মামিনা বঁ্মবাঁমে খারি জাএত। সোনে-সোম ও শেব কহৈএ জে- নোককেঁ খপন জযঘোষ কববাঁমে দেবী নৈ কববাঁক চাহী খা কাজ কেহনো কবী চান-স্বৰুজক পাঁতিমে খএবাঁক জোগাড় বৈসাবী। ওনা হম এতএ খবশ্য কহব জে ও কোনো বাজনীতিক রিচাব নৈ ছৈক জকব স্পষ্টীকবণ দএ-রিযোগীজী খপন পতিখা ছোড় ি নেতাহ। ও রিশুদ্ধ রূপে সমাজিক রিচাব ছৈক খা ঐ রিচাবসঁ সমাজপব কী নকাবাত্মক প্রভাব পড়নৈক রা পড়তৈক তকব খধ্যযন খবশ্য কএন জেবাঁক চাহী। ঝদা এহন নকাবত্মক রিচাব ঐ সংগ্রহমে কম্মে খছি। সংগ্রহক কিছু সকাবাত্মক ি রচাব প্রস্তুত খছি। দসম গজন কেব খরনোকন কএন জাউ। নিশ্চিত রূপসঁ রিযাগেীজী একবা পবিবর্তনীয রিচাব বখনাহ খছি ও কহি জে-

দেস হমব জাগত খদ্রক এনা চনি নে সকত
হাবি নিখব ঝণ্ডা কে খাদমীক জীত নিখব।

पाठकगण आजुक समएमे ताण्डाक विपरीत गेनाग सहज गप्प नै। तहिना चारिम गजलक तेसर शेरक पहिल पाँति- राम राज्यक स्थापना लेल भरत-लक्ष्मण झगड़ा बहला। कतेक सटीक व्यंग अछि से सभ गोटे बूझैत हेबैक। ओतै आजुक भ्रमोत्पादक सरकारपर तै दिनमे लिखल अड़तीसम गजलक मतलाक पहिल पाँति देखू-
राजनीति भरैकेल तँ डूबैत मझधार जकाँ।
विचार संबंधी प्रस्तुत उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे सकारात्मक विचार बेसी अछि। ऋदा कहरी तँ स्वननहि हेबैक अपने जे एकैटा सड़न माछ..... ।
अस्तु आब ऐ गजल संग्रहक व्याकरण पक्षकेँ देखल जाए। ऐठाम ई स्पष्ट करब आवश्यक जे मैथिली गजल अखनो हरिचिन्ह भए कए नै आएल अछि जैसँ हम बहर (छंद) आदिपर विचार करब। तँए ऐठाम हम मात्र रदीफ आ काफियाक प्रयोगपर विचार करब। पाठकगण गजलमे रदीफ ओग शब्द अथरा शब्द समूहकेँ कहल जाग छैक जे गजलक मतलाक (गजलक पहिल शेरकेँ मतला कहल जागत छैक।) दुनू पाँतिमे समान रूपसँ आबए आ तकरा बाद हबेक शेरक अंतिम पाँतिमे सेहो समान रूपे बहए। तहिना काफिया ओग वर्ण अथरा मात्राकेँ कहल जागत जे रदीफसँ तुरंत पहिने आबैत हो जेना एकटा उदाहरण देखू- दूटा शब्द लिअ, पहिल भेल अनचिन्हार ओ दोसरमे अन्हार। आब मानि लिअ जे ई दुनू शब्द कोनो गजलक मतलामे रदीफक तुरंत बादमे अछि। आब जँ गौरसँ देखबै तँ भेटैत जे दुनू शब्दक तुकान्त "र" छैक। तँ एकर मतलब जे "र" भेल काफिया (काफिया मतलब

ত্তকান্ত বূঁঝূ) তেনাহিতে মাত্রাক কাফিয়া সেহো হোগতৈক জেনাকি– বাধা আ বাঁধা দুনূ শব্দ আ'ক মাত্রাসঁ খত্ম হোগত অছি তঁএ ঐমে আ'ক মাত্রা কাফিয়া অছি। "এহি" আ "বহি" দুনূমে এ'ক মাত্রাক কাফিয়া অছি। অন্য মাত্রাক হান এহনে সন বূঝূ। তঁ ফেব চনী ঐ সংগ্রহক ব্যাকবণ পক্ষপব– এ সংগ্রহক কিছু গজনমে কাফিয়াক গনত প্রয়োগ ভেন ছৈক– উদাহবণ নেন সাতম গজনকেঁ দেখূ। মতনাক শেবমে কাফিয়া অছি "ন" (ভগবান আ সন্তান)। হদা বিয়োগীজী আগূ দোসব শেবমে কাফিয়া "ম" (গ্রমনাম) কেঁ নেনখিন্হ অছি জে সর্বথা অন্বচিত। তেনাহিতে সতাওসম গজনক উপবোক্ত "ম" কাফিয়া বঁদনামে "ন" কাফিয়াক প্রয়োগ। হন মিনা কএ ওা গজন সংগ্রহ ওতেক প্রভাবী নৈ অছি জতেক কী শাগব কহৈত ছথি। হঁ এতেক স্বীকাব কববাঁমে হমবা কোনো সংকোচ নৈ জে ওা গজন সংগ্রহ ওগ সমএমে আএন জৈ সমএমে গজনক মাত্রা কম্মে ছন। আ শাগব আ গজন সংগ্রহ সেহো কম্মে জকাঁ ছন।

कौ थिक ब्लॉन गजल:

किछु लोक "ब्लॉन गजल"क नामसँ तेनाहितेँ चौंकि उठैत छथि जेना केओ हुनका खनचोकेमे हुड़ पेटि देने हो। जँ एहन बात मात्र मैथिलीए क्षेत्रमे बहितै तँ कोनो बात नै, मुदा ई चौंकब हिन्दी आ उर्दूमे सेहो भए रहल छै। कारण ई अवधारणा मात्र मैथिलीए क्षेत्रमे छै आन कोनो भारतीय भाषामे नै। जँ हम कोनो हिन्दी–उर्दू भाषी गजलकार मित्रसँ "ब्लॉन गजल"क चर्च करैत छी तँ चोट्टे कहैत छथि जे उर्दूक बहुत गजलकार सभ बहुत शेरमे ब्लॉन मनोविज्ञानक वर्णन केने छथि खास कए ओ स्वदर्शन फाकिर द्वारा कहल आ जगजीत सिंह द्वारा गाओल गजल----- "ये कागज की कश्ती वो बारिस का पानी" एना संदर्भ दै छथि आ ई बात ओना सह छै मुदा " ब्लॉन गजल"केँ फरिछा कए ओकरा अलग स्थान मात्र मैथिलीए क्षेत्रमे देल गेलैए। आ ई मैथिलीक सौभाग्य थिक जे ओ "ब्लॉन गजल"क अग्रणी बनि गेल अछि भारतीय भाषा मध्य।

আ রিদেহ একব রিশেষাঁক নিকানন তাহি লেন হম একবা ধন্যরাদ নৈ দএ সকৈত ছীঐ কাবণ রিদেহ হমছূঁ ছী আ লোক অপনা আপকেঁ ধন্যরাদ কোনা দেত।

জহাঁ ধবি রাঁন গজনক রিষয চযন কেব বাঁত থিক তঁ নামেসঁ বুঝা জাগত অছি ঐ গজনমে রাঁন মনোরিজ্ঞান কেব বর্ণন বহৈত ছৈ। তথাপি একটা পবিভাষা হমবা দিসসঁ ----" একটা এহন গজন জাহি মহঁক হবেক শেব রাঁন মনোরিজ্ঞানসঁ বঁনন হো আ গজনক হবেক নিযমকেঁ পূর্বরত্ পানন কবৈত হো ও রাঁন গজন কহেবাঁক অধিকাবী অছি"। জঁ একবা দোসব শব্দমে কহী তঁ ঙা কহি সকৈত ছী জে রাঁন গজন লেন নিযম সভ রএহ বহতৈ জে গজন লেন হোগত ছৈ বঁস খানী রিষয বঁদনি জেতৈ।

আবঁ আবী রাঁন গজনক অস্তিত্ব পব। কিছু লোক কহতা জে গজন দার্শনিকতাসঁ ভবন বহৈ ছৈ তঁএ রাঁন গজন ভৈএ নে সকৈএ। হ্মদা ওহন-ওহন লোক রিদেহক ঙা অঁক জে রাঁন গজন রিশেষাঁক অছি তকব হবেক রাঁন গজন পঢ়ি থি হুনকা উঁত্তব ভেটি জেতন্হি। ওনা দোসব রাঁত ঙা জে করিতা-কথা আদি সভ সেহো পহিলে গম্ভীব হোগত ছন হ্মদা জখন ওহিমে রাঁন সাহিত্য ভএ সকৈএ তঁ রাঁন গজন কিএক নৈ ? ওনাহুতো মৈথিলীমে গজন রিধাকেঁ বঁহুত দিন ধবি সাযাস (খাস কএ গজনকাবে সভ দ্বাবা) অবডেবি দেন গেন ছনৈ তঁএ বঁহুত লোককেঁ রাঁন গজনসঁ কষ্ঠ ভেনাগ স্বাভারিক ছৈ।

কী ৰাঁন গজন নেন নিযম ৰঁদনি জেতৈঃ

জেনা কী উঁপবমে কহন গেন খছি জে ৰাঁন গজন নেন সভ নিযম গজনে ৰঁনা বহতৈ ৰঁস খানী একটা নিযমসঁ সমঝৌতা কবএ পড়ত। মানে জে ৰঁহব-কাফিযা-বদীফ খা খাব-খাব নিযম সভ তঁ গজনে জকাঁ বহতৈ ঋদা গজনমে জেনা হবেক শৈব খনগ-খনগ ভাবকেঁ বহৈত খছি তেনা ৰাঁন গজনমে কঠিন ৰুঝাগএ। তঁএ হমবা হিসাবেঁ এঁঠাম ওা নিযম টূটৈত ঋদা তৈও কোনো দিক্কত নৈ কাবণ ঋস্নসন গজন তঁ হোগতে ছৈ। খর্থাত ৰাঁন গজন এক তবহেঁ " ঋস্নসন গজন " ভেন।

ৰাঁন গজনক পূব্ৰ ভূমিকাঃ

তাবীখক হিসাবেঁ ৰাঁন গজনক উঁপেতি ২৪.০৩.২০১২ কেঁ মানন জাএত ঋদা ওকব স্বৰূপ মৈথিনীমে পহিনেনেঁ ফড়া ছ ভএ চুকন ছন। ০৯ দিসম্বব ২০১১ কেঁ খনচিন্হাব খাখব পব প্রকাশিত শ্রীমতী শাঁতি নক্ষ্মী চৌধবী জীক ওা গজন দেখন জাএ (ৰাঁদমে ওা গজন মিথিনা দর্শনক খংক মগ-জূন ২০১২মে সেহো প্রকাশিত ভেনৈ) খা সোচন জাএ জে ৰিনা কোনো ঘোষণাকেঁ এতেক নীক ৰাঁন গজন কোনা নিখন গেনৈ------------

শিশু সিয়া উঁপমা উঁপমান ছিয়ৈ হমৰ আহাঙ্মতি ৰেঁটী
মৈত্রেয়ী গাৰ্গীক কোমন প্রাণ ছিয়ৈ হমৰ আহাঙ্মতি ৰেঁটী

টিমকৈত কমননয়ন, ধৰ-ধৰ মাখন সন কপোন
পূৰ্ণিমাসীক চমকৈত চান ছিয়ৈ হমৰ আহাঙ্মতি ৰেঁটী

ৰিহুঁসৈত ঠোৰ মে অমৃতধাবা ৰিনখৈত ঠোৰ সোমৰস
শিশু স্বৰূপক শ্রীভগৰান ছিয়ৈ হমৰ আহাঙ্মতি ৰেঁটী

নৌনিহান কিহকাবী সৰস মিশ্রীঘোৰন মনোহৰ পোথী
দা-দা-না-না-মাঁ সাৰেগামা গান ছিয়ৈ হমৰ আহাঙ্মতি
ৰেঁটী

সকন পনিৰাৰক অনখতাবা জন্মপত্রীক সৰস্বতী
অপন মৈয়া-পিতাশ্রীক জান ছিয়ৈ হমৰ আহাঙ্মতি ৰেঁটী

জ্ঞানপীঠক ৰেঁটী ছিয়ৈ স্বভৰিষ্ণু মিথিনাক দীপ্ত নক্ষত্র
মাহ পিহ কুনক অৰমান ছিয়ৈ হমৰ আহাঙ্মতি ৰেঁটী

"শাঁতিনক্ষ্মী" ৰিদেহক ঘৰ-ঘৰ দেখয গয়হ শিশুনক্ষ্মী
ৰেঁটীজাতিক ভৰিষ্ণু গৰ্বমান ছিয়ৈ হমৰ আহাঙ্মতি ৰেঁটী

..................ৰৰ্ণ ২২................

তেনাহিতে একটা হমব রিনা ছঁদ রঁহবক গজন খনচিন্হাব খাখব খা রিদেহক ফেসর্ঁুক রর্সন পব 6/6/2011কেঁ খাএন ছন সে দেখূ----------------

হোগত ছৈক রঁবখা খা বে রৌখা
কাগতক নাহ রঁনা বে রৌখা

দেখিহেঁ ঘ্সৌ নে চোবরাঁ ঘব মে
হাথমে ঠেংগা ডঁঠা বে রৌখা

তোবে পব সভটা মান-গ্বমান
মাএক মান রঁঠ় া বে রৌখা

ছৈক গড়ন কাঁটৈ ঘৃণাক কবেজমে
প্রেমসঁ ওকবা হটা বে রৌখা

নহি ঝ্কৌ মাথ তোহব দ্শমন নগ
দেশক নেন মাথ কটা বে রৌখা

তেনাহিতে ৪ খকটূঁরঁব ২০১০কেঁ খনচিন্হাব খাখব পব প্রকাশিত গজেন্দ্র ঠাকুব জীক ঐ গজনকেঁ দেখন জাএ----- জে শঙ্কারনীক খাধাব পব রাঁন গজন খছি ঝদা খর্থ রিস্তাবক কাবণেঁ রাঁন খা রূঁঠ় দূনূ নেন খছি-----

রাঁনব পটৈ নৈনে খছি তৈযাব

রিবনন সভ কব্দ নে উঙ্কাব

গাএক খর্ব–রোঁ স্বনি খনঠেনে
দ্ঠৈ সমএঁ জনতাক কপাব

প্বন রঁনেরাঁক সমচা ছৈক নৈ
খর্থশাস্ত্র–পোথীক ছনৈ ভল্ডাব

কোবো রাঁতী উঁরঁমী দেরাঁক নেন
খাউঁ রঁজাউঁ রঁ্ঠ় ান্বস – ভজাব

ডবক ঘাষ্ঠ নমাএন ছী হম
সে সহরঁ দমোদিশী খন্যচাব

ঐবারত খছি দেখা – দেখা কএ
সভষ্টা দেখৈত খছি ও র‍্যাপাব

ঐ তীনষ্টা গজনক খাধাব পব ঙা কহরঁ রঁসী উঁচিত জে রাঁন গজনক ভূমিকা রঁহ্ত পহিনে রঁনি গেন ছন ক্ষ্দা রিস্কাষ্ঠ 24/3/2012কেঁ ভেনৈ। খা ঐ রিস্কাষ্ঠমে জতেক হমব ভূমিকা খছি ততরঁএ হিনকা সভকেঁ সেনো

छन्हि ।

1

रॅान गजल

ओ छौंड़ ा थिक रिठ़नी सन

सौंसे नाचै घिवनी सन

रॅदमाशीकें तगमा छै

मूँहक नागै हिवणी सन

रॅसन भूतक नानी रॅनि

नागै छै फ़ँहचिवनी सन

रॅचा नग रॅचा नागै

रॅठ़ा या नग रॅततिवनी सन

ओ दुनियाँ झाँपै तैओ

रॅठी चमकै किवणी सन

हवेक पाँतिमे दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ

2

रॅान गजल

भोवे उठि मैदान गेलै रौखा

ओम्हवहिसँ दतमनि तँ नेतै रौखा

পোখবিমে নীকসঁ নহেতৈ ধোতৈ
চিক্কন চ্নহ্মন ৰঁনি ক' এতৈ ৰৌখা

সবিএতৈ পোথী পহিবতৈ খঁগা
গস্কূনো খ্লৱ তঁ জেতৈ ৰৌখা

নৈ বখতৈ দোস্তী খবাপক সংগে
পঠ়ি ৰঁড়কা ডাকঠব তঁ ৰঁনতৈ ৰৌখা

সভহঁক কবতৈ মদতি সোনা ৰেঁঠা
সদিখন নীকে ৰাঁঠ চনতৈ ৰৌখা

হবেক পাঁতিমে দীর্ঘ-দীর্ঘ-দীর্ঘ-দীর্ঘ-দীর্ঘ-হ্রস্ব-দীর্ঘ-দীর্ঘ-দীর্ঘ-দীর্ঘ

अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि (आलोचना)

शीर्षक पढैते देवी पाठक लोकनि एकर रचियता के निराशावादी घोषित कए देताह आ फतवा देताह जे समाज के एहन -एहन वक्तव्य सँ दूर रहबाक चाही। मुदा हमरा बुझने पाठक लोकनि अग्रता गेल छथि,आ हम कहबनि जे अग्रताथि जुनि। मुदा इहो एकटा सुपरिचित तथ्य थिक जे लोक के जतेक उपदेश दिऔक ओ ओतबेँ ताकति सँ ओकर उन्टा काज करत। मुदा तैओ हम कहबनि जे अग्रताथि जुनि आ ता धरि नहि अग्रताथि जा धरि शीर्षक पूर्ण वाक्य नहि भए जाए। आबेँ अहाँ सभ टाँग अड़ाएबेँ जे शीर्षक त अपना आप मे पूर्ण छैहे तखन अहाँ एकरा अपूर्ण कोना कहैत छिऐक ? मुदा नहि, कोनो वस्तु बाहेर सँ पूर्ण होइतो भीतर सँ अपूर्ण होइत छैक। तहिना एहि शीर्षकक संग छैक। अस्तु आबेँ हम अपन विद्वताक दावी छोड़ै छी आ आ अहाँ सभ के पूर्ण वाक्य के दर्शन करबाबी - "अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि, सरकार पर जनताक कोनो धाख नहि"।

मैथिली साहित्य मे बहुत बात विडंबना छैक, प्रवंचना छैक, वंदना छैक अर्थात सभ किछु छैक मुदा तीन गोटे वस्तु के छोड़ि --

१) मैथिली मे व्यंग प्रचुर मात्रा (गुण एवं परिमाण) मे नहि लिखाइत अछि,

२) जँ लोक- झाँक मे लिखाइतो छैक त स्तरीय

থালোচনা নহি হোগত ছৈক ,
৩) থা জঁ ভগৱান ভৰোসে স্তৱীয থালোচনা থৰিতো ছৈক ত হৰিমোহন ঝা কে শিখৱ মানি সভ কে ভুষ্টা ৰঁনা দেন জাগত ছৈক ।

এহি তীন টা কে ছোড়ি একটা থাৱ মহান ৰিডঁৰঁনা ছৈক জে থালোচক থালোচনা কৱতাহ হুন্নাঁ ৰাঁৰূঁক থথৱা হুনক হৃতি কে হ্মদা সহ্মচা মৈথিনী থনোচনা মে হৰিমোহন ৰাঁৰূ তেনা নে ঘোসিথাএন বহতা জে পাঠক এহন থালোচনা কে হৰিমোহনে ৰাঁৰূঁক থালোচনা ৰূঁনৈত ছথি ।

থালোচনাক স্তৱ পৱ মৈথিনী ৰ্যংগ মে ৰুপকাঁত ঠাকুৱ একটা ৰিসৱন নাম থিক । একৱ প্ৱষ্ঠি 2003 মে সাহিত্য থকাদেমী দ্বাৱা প্ৰকাশিত পোথী "নী কথাক ৰিকাস" মে প্ৰা. ৰিদ্যাপতি ঝা দ্বাৱা নিখিত নেখ "মৈথিনী কথা সাহিত্য মে হাস্য-ৰ্যংগ" পঢ়ি হোগত থছি । প্ৰা.ঝা পৃষ্ঠ 168 পৱ 1963 সঁ 1967ক মধ্য প্ৰকাশিত হাস্য-ৰ্যংগক ৰ্যাৱা দৈত ৰুপকাঁত ঠাকুৱক মাত্ৰ 6 গোটে কথাক চৰ্চ কএনথি থছি (কিছু থালোচক মাত্ৰ গএহ নীখি কাত ভএ গেনাহ জে ৰুপকাঁত ঠাকুৱ সেহো নীক ৰ্যংগ নিখৈত ছথি) ।এহি কে থতিৰিক্ত নে 1963 সঁ পহিনেক মে হুনক ৰ্যাৱা মে হুনক নাম ছন্হি নে 1967ক পছাতি । থৰ্থাত ৰুপকাঁত ঠাকুৱ মাত্ৰ 6 গোটে হাস্য-ৰ্যংগক ৰচনা কএ সকনাহ । জখন কী ৰাস্তৱিকতা থছি জে ৰুপকাঁত ঠাকুৱ 1930 মে জন্ম-গ্ৰহণ কএ 1960ক নগীচ ৰচনাৱত ভেনাহ এৱং 1972 মে মৃত্যু কে প্ৰাপ্ত ভেনাহ । হুন মিনা কএ ঠাকুৱজী

মাত্র রাঁবহ রর্খ মে খনেক খসংকনিত কথা এরং নেখ কে ছোড়া হ্নক পাঁচ গোর্ঠ পোথী প্রকাশিত ছন্হি--1) মোমক নাক (কথা সংগ্রহ)

2) ধূকন কেবা (কথা সংগ্রহ)

3) নগাম (নার্টক)

4) রচন রৈঞ্জুর (নার্টক)

5) নহনা পব দহনা (উঁপন্যাস)।

মাত্র রাঁবহ রর্খ মে এতেক বচনা খা উঁন্নেখ মাত্র 6 গোর্ঠ কথাক।

খার খহাঁ সভ কে থোড়কে-থোড় শীর্ষকক খর্থ নাগএ নাগন হএত। ক্ষদা খহাঁ সভ ঘরবাউঁ জ্নি । গ শীর্ষক ঠাক্ষবেজীক বচনা সঁ নেন গেন খছি। মতনর জে ভরিষ্যক সংকেত কএ গেন ছথি।

খার কিছু গপ্প কবী মৈথনী র‍্যংগ মে বাজনীতিক র‍্যংগ পব। কোন চিড়া যাক নাম ছৈক বাজনীতিক র‍্যংগগ হমবা জনৈত মৈথিনী র‍্যংগকাব নহি জনৈত ছথি। ওনা র‍্যংগ কেকবা কহন জাগত ছৈক সেহো বূঝর কঠিন। হমবা জনৈত মৈথিনী মে 93% র‍্যংগ নিখন জাগত ছৈক ক্ষদা 93% খানোচক ওকবা হাস্য মানি খানোচনা করৈত ছথি। সভ র‍্যংগকাব ওহীক মাবন ছথি, চাহে শিখব-প্বকষ হবিমোহন রাঁবূ হোথি রা কপকাঁত ঠাক্ষব। স্বচা র‍্যংগ নিখনা পদ্ধাতিও হবিমোহন রাঁবূ কহেনোহ হাস্য-র‍্যংগ সম্রার্ট। খর্থাত হাস্যকাব পহিনে খা র‍্যংগকাব রাঁদ মে। রাঁদ রাঁকী 7% হাস্য নিখাগত খছি জকব প্রতিনিধি ছথি পং. চন্দ্রনাথ মিশ্র "খমব"।

हँ त फेर थारी हम राजनीतिक व्यंग पर। हमरा जनैत जाहि व्यंग मे अपन समकालीन अथवा पूर्वकालिक राजनीति, शासन–व्यवस्था, ओकर संचालक आदि पर निशाना साधल गेल हो ओकरा राजनीतिक व्यंग कहल जाएत। ओना ई अकादमिक परिभाषा नहि अछि।

त फेर हम अहाँ सभ के रूपकांत ठाकुर लग लए चली, आ हुनक एक गोट पोथीक परिचय करा हुनक राजनीतिक चेतना के देखाबी। जाहि पोथी सँ हम अहाँ के परिचय कराएब ओकर नाम छैक "मोमक नाक"। एहि व्यंग–संग्रह मे नौ गोट कथा थिक। परिचय शुरू करबाँ सँ पहिनहि कहि दी जे ई कोनो जरूरी नहि छैक जे हम अहाँ के नओ कथा कहब आ ने जरूरी छैक जे संग्रहक पहिल कथा सँ हम शुरू करी। ई निर्णय हमर व्यक्तिगत अछि आ अहाँ एहि सँ सहमत भ'एओ सकैत छी आ नहिओ भए सकैत छी। हँ त हम शुरू करी संग्रहक अंतिम कथा "मर्द माने की" सँ। जेना की शीर्षके सँ बूझाएत छैक लेखक अवश्य एहि मे मर्दक परिभाषा देने हेथिन्ह। से सभ, लेखक जखन शुरूए मे कहैत छथिन्ह जे " लोटा ल' क' घरवालीक लहँगर देह पर गदागद टोल बँजौनिहार एहन स्वप्नुरुष कत' भेटैत ? "। त सभ अर्थ स्पष्ट भए जाएत छैक। मुदा लेखक एतबेँ सँ संतुष्ट नहि भए आगू कहैत छथि " मर्द माने कमौआ, आ कमौआ माने रिपाहल,आ रिपाहल माने बूड़ि बैक आ बूड़ि बैक माने बड़द"। स्वच्छ मैथिल अभिव्यक्ति।

এখনো অর্থাত 2009 ধবি মৈথিন সমাজক গ ধাবণা ছৈক জে কমৌএ মর্দ হোগত অছি, আ জর্হাঁ কর্হী কোনো মর্দ দেখাগ পড়ৈন নোক ওকব রিশ্বাস কববাঁগএ কএ ছোবৈএ। আ জর্হাঁ ধবি গপ্প বহন রিযাহন মানে বৃড়ী বৈক সে ত হম নহি কহবৈ ক্ষদা বৃড়ী বৈক মানে বৈড়েদ অরশ্য হোগত ছৈক। খানী খণ্টনাগ সঁ মতনবৈ। অধিকাবক প্রতি নিবপেক্ষ। আবৈ হম এহি সঁ বৈসী নহি কহবৈ এহি কথাক প্রসংগ। বৈস এতবৈ সঁ নেখকক চেতনাক অন্বমান কএ নিঅ।

"ঠোকন ঠক্ক" মে নেখক ওহন ভাতিজ আ জমাএক দর্শন কবাবৈত ছথি জনিকব কাজে ছন্হি কমীশন খাএবৈ আ এহি নেন ও অপন পিত্তী এরং সম্বন্ধো কে নহি ছোড়ৈত ছথিন্হ। আ জঁ এহী কথাক মাধ্যমে অহাঁ তাকোনীন বজনীতিক দেখএ চাহবৈ ত রুপকাত এনা দেখেতাহ-"সবকাব পব জনতাক কোনো ধাখ নহি"। অর্থাত বৈশর্ম, নির্নজ্জ, হেহব,থেথব সবকাব।

ভাবতক সমকানীন রিকাস জঁ অহাঁ দেখবাঁক গছা হোগত হো ত রুপকাত ওহো দেখেতাহ। কনেক পঠৃ "জয গংগা জী" জতএ বেনগাড়ী কে বৈঠৈত দেখি নেখক টিপ্পণী কবৈত ছথি-"কাঁগ্রেসী নেতা জকাঁ নোক কে অপন পেটৈ মে বাখি ক' ওকব স্বখ-দুখ অথরা উঁন্নতি-অরনতি কে রিসবি গাড়ী মাত্র আগূ বৈঠবৈ জনৈত ছন। অপনা বৈনে নহি কোগনা আ পানিক বৈনেং। পবন্তু পরদান পব চঠৈন যাত্রী কত২ ছনাহ ? " ঐ সরান জতেক ভযারহ

নেখকক সময মে ছন ততরেঁ ভযারহ এখনো অছি। নেখক সবকাবক ডপোবশীঁখী যোজনাক নতখ্র্দন এহী কথা মে কবৈত ছথি–" কোন টৌসন কেখন রিতনৈক সে মোন বাখরঁ পঁচরর্ষীয যোজনা সভ মে উঁন্নতিক কাগজী আকড়া মোন বাখরঁ থিক" ।

রেঁসী প্রশঁসামেক উঁহ্ববণ দেরঁ হমবা অভীষ্ঠ নহি হ্মদা তৈও একটৌ উঁহ্ববণ দেরাঁ সঁ হম অপনা কে বোকি নহি পারিঁ বহন ছী। এহী সংগ্রহক দোসব কথা থিক "হ্ফূজন উুঁক"। রেঁসী অপন রঞ্জব্য নহি কহি উঁহ্ববণ স্বনারী–"মাত্র স্বধাবরাদী দৃষ্ঠি বখনা মাত্র সঁ স্বধাব কথমপি নহি ভএ সকৈছ"। জঁ নেখকক ভারনা কে রঁচরৈত হম নিখী জে "প্রগতিশীন রিচাব নিখনা মাত্র সঁ প্রগতিশীনতা কথমপি নহি আরিঁ সকৈছ" ত গ স্পষ্ঠ ভএ জাএত জে রুপকাঁত কতএ র্যাঁগ কএ বহন ছথিন্হ আ কেকবা পব কএ বহন ছথিন্হ।

ঠাহ্কব জী একপক্ষীয র্যাঁগকাব নহি ছথি। ও দূনূ পক্ষ কে দ্রূষ্ট সঁ মানসিক আ ব্রূঁষ্ট সঁ শাবিবিক প্রতাড়না দৈত ছথিন্হ। তকব প্রমাণ ও এহি সংগ্রহক পহিন কথা জে পোথীক নামো ছৈক অর্থাত " মোমক নাক" মে দেখেনৈন্হ অছি। হ্নকহিঁ শর্ষ্ক মে " আজ্‌ক যুগ মে ভনা আদমীক পবিভাষা উঁনষ্টি গেন ছৈক। জনতা জনতা অছি জে সে সভ মোমক নাক জকাঁ ন্বজর্ঁজ। জখন জাহি দিস নহ্ফগব বহি ছৈক তিম্হবে নোক ঘূমি জাগছ" স্বতংত্রে ভাবত নহি হমবা রিচাবে জম্বুঁদীপক জনতা সঁ নএ কএ এখ্‌নকা ভাবতীয জনতাক চাবিত্রিক রিশেষতা ওা উঁহ্ববণ দেখরৈত অছি।

आ एतेक देखेनाक पश्चातिओ आलोचक रूपकांतक नाम बिसरि गेल छथि।

ओना आलोचक नाम बिसरि गेलथिन्ह मुदा पाठकक मोन मे एखनो धरि रूपकांत ठाकुरक रचना खचित छैन्ह। हमरा जनैत कोनो प्रथम आ अंतिम सफलता गएह छैक। आ रूपकांत ओ सफलता अपन रचनाक माध्यमें प्राप्त केलन्हि ताहि मे संदेह नहि।

<u>बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान</u>

ऐ नाटकक माध्यमे किछु कहबाक पहिने ओ गप्प कही जे प्रायः-प्रायः अंतमे कहल जाइत छैक। श्रुति प्रकाशन एकटा बड़का काज ठानि नेने अछि- हीरा-मोती-माणिककेँ चुनबाक। आ ऐ मे ओ कतेक सफल भेल तकर निर्धारण भविष्य करत, वर्तमान नै कारण वर्तमान समयक नीति-निर्धारकक गमान शून्य स्तरपर पहुँचि गेल अछि। मुदा एहन-एहन समस्याक अछैतो

हमर शुभकामना ऐ प्रकाशनक संग अछि आ विश्वास अछि जे जेना ओ धावक दूरी पार केनक अछि तेनाहितो आरो ओ समुद्रक दूरी पार करत। आ संगहि–संग ऐ नाटककेँ उपर अनवरतमे जनिकर कनेकबो योगदान छन्हि से अशेष धन्यवादक पात्र छथि।

जहिआ सनातन धर्ममे पुराण–उपनिषद् के आगमन भेल रहैक, तहिआ देवी–देवताक संख्या ३३ करोड़ रहैक। आजुक समयमे जखन कि पौराणिक समय बितला बहुत दिन भए गेल तखन देवी देवताक संख्या कतेक हएत ? हमरा बुझने ३३ करोड़सँ बेसिए। तथापि सुविधाक लेल एकरा यथावत् मानू। आ एतेक देवी–देवताक अछैतो छीनबदेवीक आविर्भाव किएक ?

उत्तर हम नै देब कारण ओ गप्प सभ जनैत छथि तँए लोक ऐ उत्तरकेँ बुझा कऽ बखैत अछि। आ संभवतः छीनबदेवीक ऐ रूपकेँ छिनबधत्त कहल जाइत छैक। ओना एकरा बादमे हम निरूपित करब। ओइसँ पहिने एकटा आरो महत्वपूर्ण प्रश्नपर चली। जँ अहाँ श्री बेचन ठाकुर कृत ऐ नाटककेँ नीकसँ पढ़ब तँ ओ बुझबामे कोनो भाँगठ नै रहत जे ऐ नाटकक मूल स्वर अंधविश्वासपर चोट करब छैक। आ जखने अहाँ ऐ निष्कर्षपर पहुँचब, अहाँकेँ तुरंते प्रो. हरिमोहन झा मोन पड़ि जेताह से उम्मेद अछि। आ जखने अहाँकेँ प्रो. झा मोन पड़ताह तखने हमरा मोनमे ओ प्रश्न उठत जे प्रो. झा जइ प्रवनतासँ अंधविश्वासपर कलम चलेने छलाह तकरा बादजूदो ६०–७० साल बाद बेचन जीकेँ ऐ पर कलम चलेबाक जरूरति किएक पड़लनि ? एकर दूटा कारण भऽ सकैत अछि पहिल जे प्रो. झाक प्रभावक बादजूदो अंधविश्वास मेटाएल नै

(हम ओ नै कहि सकैत छी जे ओ प्रा. झाक मानि थिक कारण हमरेक लेखकक एकटा सीमा भोगत छैक) आ दोसर कारण भऽ सकैत अछि जे रौचन जीकेँ कोनो विषए नै भेटैन भोगल्ह आ मजदूरीमे ओ ऐ पर कलम उठेलें होथि। सदा आग वर्ष २०-११ मे जखन गामे-गाम घूमै छी आ ओकर आंतरिक स्थितिकेँ परखैत छी तँ दोसर कारण अपने-आप खसे भऽ जाएत अछि। आगयो गाम आ अर्धशहरी गलाकामे एलोपैथीक संगे-संग भस्म-विभूति आ ब्रह्मस्थानक माटि उपचारमे लाएल जाएत अछि। आ एकरा संगे ओतो स्पष्ठ भऽ जाएत अछि जे प्रा. झाक वाँदो ओ अंधविश्वास सरल नै। आ एहने समयमे हमरा लग ओ प्रश्न विकराल रूप धऽ ठाढ़ि जाएत अछि जे प्रा. झाक बाद जे नाटककार भेलाह (चूँकि रौचन ठाकुर जीक विधा नाटक छन्हि तँए हम नाटकेक दृष्ठिसँ गप्प करब) से एतेक दिन धरि की करैत छलाह ?

आर हम ऐ प्रश्न सबहक उत्तर ऐ ठाम नै लिखब। एकर कारण अछि जे हमरा सदासँ विश्वास रहल अछि जे साहित्यिक संदर्भमे वर्तमान समयक उत्तर जँ भविष्यमे प्राप्त हुअए तँ ओ बेसी सटीक आ सार्थक होइत छैक। अस्तु श्री रौचन ठाकुर जीसँ मैथिली मंचकेँ बड्ड आस छैक आ तँए आसकेँ पूरा करबाक ताकति भगवान हुनका देथिन्ह तँए आसाक संग चली हम प्रेक्षक समूहमे।

कोनो नाटक पहिने लिखल जाएए आ तकर बाद ओ छौगप होइए वा सोझे छौगप कएल जाएए आ तकर बाद कखन छपैए, मंचनक बाद वा मंचनक पहिने; ऐ सभमे आर कोनो अन्तर नै रहनै। जर्ॉज बर्नार्ड

सॅ शेॅक्सपियरमे लिखै छलाह आ हुनकर स्क्रिप्टकेँ ओकरा लोकनि अभिनय करै छलीह। बिन्नु छपने मैथिली धूर्तसमागम मैथिलीक पहिल पोस्ट मॉडर्न ऑब्सर्ड नाटक अछि। ई तर्क जे छपनाक पहिने मंचन भेलासँ बहुत बात कमी दूर भऽ जाइए, ऐ सन्दर्भमे मनमोहन कथाकार बेनीपुरीक उदाहरण अछि जे सभ नव छपल संस्करणमे अपन कथामे नीक तत्व आनबाक दृष्टिसँ संशोधन करै छलाह, ई कथामे सम्भव तँ नाटकमे तँ आर सम्भव। तँ सिद्ध भेल जे लिखल जेबाक वा छपि गेलाक बादो नाटकक मंचन हुअए आ मंचनक बाद लिखल वा छपल दुनूमे सुधार सम्भव। बेचन ठाकुरजी रंगमंच निर्देशक सेहो छथि आ विगत २७ बर्खसँ अपन गाममे मैथिली रंगमंचकेँ जियेने छथि बिना कोनो संस्थागत (सरकारी वा गएर सरकारी) सहयोगक। हिनकर रंगमंचपर हिनकर दर्जनसँ बेसी नाटकक अतिरिक्त गजेन्द्र ठाकुर आ जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटक, एकांकी आ बाल नाटकक मंचन सेहो भेल अछि।

हम व्यक्तिगत रूपेँ हरियाणाक प्रायः-प्रायः प्रत्येक कोणमे बहुत-बसल छी आ तँए स्थानीय जनताक रूपमे हरियाणामे कतौ घुसि जाइत छी। एकर मानि हमरा जे भेल हुअए सदा लाभ एतेक तँ जरूर भेल जे हम स्थानीय परेशानी बुझए लागल छिऐक। ओना हरियाणाक नाम सुनिते लोकमे समृद्धिक नजारा देखाए लगैत छैक। भवन-भवन खेत सुझाए लगैत छैक। सदा एहिठामक स्थानीय समस्या बहुतो लोककेँ नै बुझल छैक। ऐठाम हरेक साल १००-१२० लड़काक विआह दोसर राज्यक लड़कीसँ होइत छैक। जँ सोझ ढ़ंगे कही तँ हरियाणाक सेक्स रेशिओ (लिंगानुपात)

असमान अछि। अर्थात १००० लड़कापर +३०–९०० लड़की।
आब अहाँ सभ हमरा कहू कएबाक सोचि रहल हएब। प्रस्तुत पोथी मैथिलीक अछि आ हम हरियाणाक गप्प कऽ रहल छी से अहाँ सभकेँ उन्टा लागि रहल हएत। मुदा ऐठाम हम ई कहए चाहब जे मात्र स्थान आ मनुख बदलि जाइत छैक, मनोवृति आ समस्या रहए वएह छैक। आब हम अही समस्याकेँ मिथिलाक परिप्रेक्ष्यमे सोची। बेसी अंतर नै भेटैत आ से ऐ द्वारे जे नेपालमे सेहो मिथिला छैक। आ भारतक मिथिला आ नेपालक मिथिला दुनूमे विवाह प्रचलित छैक। तथापि जँ भारतक हिसाबेँ सोची तँ बिहारमे १००० लड़कापर ९२१ लड़की छैक (ओना जँ २०११ क जनगणनाक प्रारम्भिक रिपोर्ट देखब तँ संपूर्ण भारतमे १००० लड़कापर ९४० लड़की छैक)।
आ जँ ऐ समस्याक परिप्रेक्ष्यमे विकसित हरियाणा आ अविकसित मिथिलाकेँ देखी तँ कोनो बेसी अंतर नै बुझाएत। अर्थात ऐ समस्यासँ दुनू क्षेत्र ग्रसित अछि। मुदा ई आब विचारए पड़त जे ई समस्या कहाँसँ निकलैत छैक ? कोन मनोवृतिसँ ई समस्या परचालित होइत छैक ? आखिर ई कोन दृष्टिकोण छैक जइ तहत लोक बेटी नै चाहैत अछि आ ऐ लेल भ्रूण हत्या सन पाप करबासँ सेहो नै हिचकैत अछि ? मिथिलाक हिसाबेँ गप्प करी तँ दहेज प्रथाकेँ एकर जिम्मेदार ठहराओल जा सकैए मुदा हरियाणाक हिसाबेँ ई कारण ओतेक प्रभावी नै कारण हरियाणामे दहेज प्रथा नै कऽ बराबर छैक। तँए हम दहेजकेँ भ्रूण हत्याक एकटा कारण मानैत छी मुदा प्रमुख कारण नै। हमरा हिसाबेँ

ঐ সমস্যাক প্রমুখ কাৰণ এখনো আধুনিক কালমে বেটীকেঁ অনিবার্য মানল অছি। একর সমাজিক আ আর্থিক, দুনূ পক্ষমে বাঁটিএ পড়ৈত।
সমস্যা আ সাহিত্য দুনূ একৈ চীজক অলগ-অলগ নাম থিক। বিনা সমস্যা কোনো সাহিত্য নৈ ভঽ সকৈত ছৈক। আ অংততঃ সাহিত্যে কোনো সমস্যাক সমাধান তকৈত ছৈক। ক্ষদা মৈথিলী সাহিত্য একর অপরাদ অছি। ডুঁপর হম দেখিএ চুকল ছী জে কোনা মিথিলা ভ্রূণ হত্যাক সমস্যাসঁ গ্রসিত অছি। তথাপি ঐঠামক সাহিত্যকার ঐপর কলম নৈ চলৌলন্হি। ঘোর আশ্চর্যক বিষএ। আশ্চর্যক বিষএ ইহো জে এহনে-এহনে সমস্যাসঁ কতিআএল সাহিত্যকারকেঁ আলোচক আ মঠাধীশ সভ বঁঢ়ৈ়াবা দেলথি।
কোনো সমাজ কোনো সমস্যাসঁ কতিআ কঽ বেসী দিন নৈ বহি সকৈত অছি। একর অনভর হমরা শ্রী বেচন ঠাকুর লিখিত নাটক " বেটীক অপমান" পঢ়ৈনাপর বুঝাএল। আ সংগহি-সংগ ইহো বুঝাএল জে আব বেসী দিন মিথিলা সূতল নৈ রহত আ নে বেটীকেঁ খরাপ বুঝল জাএত।

<u>काफिया</u>

काफिया मने तुकान्त। आ तुकान्त मने स्वर-साम्यक तुकान्त चाहे ओ वर्णक स्वर-साम्य हो की मात्राक स्वर-साम्य। बदीफसँ पहिने जे तुकान्त होइत छैक तकरा काफिया कहल जाइत छैक। आ ई बदीफे जकाँ गजलक हरेक शेरक (मतला रहला शेरकेँ छोड़ि) दोसर पाँतिमे बदीफसँ पहिने अनिवार्य रूपें अएबाक चाही। काफिया दू प्रकारक होइत छैक (क) वर्णक स्वर-साम्य आ (ख) मात्राक स्वर-साम्य। वर्णक काफिया नेन शेरक हरेक पाँतिमे बदीफसँ पहिने समान वर्ण आ तकरासँ पहिने समान स्वर-साम्य होएबाक चाही। एकटा गप्प आर, रहितो शाइर खाली बदीफक बाद रहला वर्ण वा मात्राकेँ काफिया बूझि लैत छथि से गलत। काफियाक निर्धारण काफिया नेन प्रयुक्त शब्दकेँ अंतसँ बीच वा शुरू धरि कएल जा सकैए। उदाहरण देखू---
----

करेज घसैसँ साजक बाग निखरै छै
बिना धूनने रुबक नै ताग निखरै छै

एहि शेरक पहिल पाँतिमे बदीफ "निखरै छै" छैक। आ बदीफसँ ठीक पहिने "बाग" शब्द छैक। जँ अहाँ "बाग" शब्द पर धेआन देबै तँ पता लागत जे ऐ शब्दक अंतिम वर्ण "ग" छैक तदा ऐ "ग" संग "आ"

ध्वनि (बा) सेहो छैक। तहिना दोसर पाँतिमे बदीफ "निखरै छै"सँ पहिने "ताग" शब्द अछि। आब फेर अहाँ सभ "ताग" शब्दकेँ देखू। एहिमे अंतिम वर्ण "ग" तँ छैके संगहि-संग "आ" ध्वनि (ता) सेहो छैक। मतलब जे उपरका शेरक दुनू पाँतिमे बदीफ "निखरै छै" सँ पहिने "ग"वर्ण अछि, "आ" स्वर (ध्वनि)क संग। अर्थात "आ" ध्वनि संगे "ग" वर्ण ऐ शेरक काफिया भेल। आब एठाम ई मोन राखू जे जँ उपरका ई दुनू
शेर कोनो गजलक मतला छैक तँ ओग गजलक हरेक शेरक कफिया "ग" वर्णकि संग "आ" ध्वनि होएबाक चाही। अन्यथा ओ गजल गलत भए जाएत। आब ऐ गजलक दोसर शेरकेँ
देखू--

ओ दुनिया मेहनतिक इनाम छै सदिखन
बहै घाम तखन स्वतन भाग निखरै छै

ऐ शेरमे पहिल पाँतिमे ने बदीफ छैक आ ने काफिया मुदा दोसर पाँतिमे बदीफ सेहो
छैक आ बदीफसँ पहिने शब्द "भाग" अछि। ऐ शब्दक अंतमे "ग" वर्ण तँ छैके संगहि-संग "ग"सँ पहिने "आ" ध्वनि सेहो छैक। ऐ गजलक आन काफिया सभ अछि "नाग", "बाग", "पाग"। एकटा आर दोसर उदाहरण देखू--

कहू की, कियो बूझि नै सकल हमरा
हँसी सभक नागल बहुत ठरल हमरा

ঈ মতলাক শেরমে "হমরা" রদীফ অছি। আ রদীফসঁ পহিনে পহিল পাঁতিমে "সকল" শব্দ অছি। সংগহি-সংগ দোসর পাঁতিমে "ঠকল" শব্দ অছি। আব হমরা লোকনি জঁ এহিমে কাফিয়া নির্ধারণ করী। দুনূ শব্দকেঁ নীক জকাঁ দেখূ। দুনূ শব্দক অংতিম বর্ণ "ল" অছি মুদা পহিল পাঁতিমে "ল"সঁ পহিনে "অ" ধ্বনি অছি (ক) আ দোসরো পাঁতিমে "ল"সঁ পহিনে "অ" ধ্বনি অছি (খ)। তঁ এহি দুনূ শব্দক মিলানকে বাদ হমরা লোকনি দেখৈ ছী জে দুনূমে "ল" বর্ণ সমান অছি। সংগহি-সংগ বর্ণ "ল" সঁ পহিনে "অ" স্বর অছি। আব সভ ব্যংজন হলন্তমে অ লগিতে ছৈ তখনে ও গুণিতাক্ষর বনৈ ছৈ (কচটতপ, য-হ) তঁএ ঈ গজলক কাফিয়া কোনো কচটতপ বর্গ(কবর্গ, চবর্গ, টবর্গ, তবর্গ, পবর্গ) বা য-হ সংগ "ল" বর্ণ ভেল। আব শাইরকেঁ বাঁকী শেরমে কাফিয়াক রূপমে এহন শব্দ চুনএ পড়়তন্হি জকর অংতমে "ল" বর্ণ অবৈত হুঅএ এবং তইসঁ পহিনে কোনো "কচটতপ, য-হ" ভ৽ সকৈএ। ঈ গজলমে প্রযুক্ত ভেল আন কাফিয়া অছি-"জরল ", "অসল", "রহল" "কহল"|

তেসর উদাহরণ সেহো দেখূ-

রানী মেঘ সগরো জল পটাএত না
বৌআ হমর খেলত আ নহাএত না

ঈ মতলামে "না" রদীফ অছি। আ রদীফসঁ পহিল পাঁতিমে "পটাএত" শব্দ অছি আ দোসর
পাঁতিমে "নহাএত"। জঁ দুনূ শব্দমে মিলান করবৈ তঁ

"एत" दुनू पाँतिक काफियामे
कामन छै आ "एत" सँ पहिने "आ" स्वरक मात्रा छै (पहिल पाँतिमे "टा" आ दोसर पाँतिमे "ना"। ऐ मतलामे काफिया हएत "आ" मात्राक संग "एत" वर्ण समूह। ऐ गजलमे लेल गेल आन काफिया अछि रहाएत, रनाएत, चलाएत आ खाएत। जँ मतलाक दुनू पाँतिक काफियामे
किछु वर्ण समूह कामन रहै छै तँ ओकरा तहलीली वदीफ कहल जाइत छै। उपरका मतलामे "एत"केँ तहलीली वदीफ कहल जाइत छै। काफियाक ऐ विवरणकेँ एना बूझी तँ नीक रहत–

१) जँ कोनो मतलामे "छल" आ "दल" काफिया छै तँ ऐमे "ल" वर्ण मूल वर्ण भेलै (काफियाक मिलान सदिखन अंतसँ कएल जाइत छै) आ ओइसँ पहिलुक वर्णकि स्वर सेहो
बराबर हेबाक चाही। उपरका उदाहरणमे "ल" वर्णकि बाद क्रमशः "छ" आ "द" वर्ण रचै छै आ दुनूक स्वर "अ" छै मने अकारान्त छै तँए कोनो मतलामे ई काफिया सही हएत। आब ऐ गजलमे आन शेर सभमे एहने काफिया हेतै जेना– "हल", "मल", "जीवन" आदि। ऐठाम ई बात बुझबाक अछि जे जँ मतलामे "छल" आ "ध्ल" रहितै तँ काफिया गलत भऽ जेतै कारण मूल वर्ण "ल" केर बादक स्वरक मात्रा सेहो अनिवार्य रूपें मिलबाक चाही सदा ऐ उदाहरणक एकटा काफियामे "ल" केर बाद "अ" स्वरक गणिताक्षर छै तँ दोसरमे मूल वर्ण "ल" केर बाद "उ" स्वर छै, तँए ई गलत भेल। ऐठाम ईहो मोन राखू जे "छल" आ

"दन" केँ बाँद कोनो आन शेरमे "ध्न", "आन", "निन" आदि काफियाकेँ नै नश् सकैत छी। ध्यान योग राखू जे एकै गजलक आन–आन शेरमे मूल वर्ण एकै रहतै। जेना ऊपरका उदाहरणमे "छन" आ "दन" काफिया छै तँ आन शेरक काफियाक अंतमे "न" वर्ण अनिवार्य रूपसँ रहतै।

२) जँ कोनो मतलामे "जीरन" आ "तीमन" छै तँ काफिया "ई" स्वरक संग "न" मूल वर्ण हएत। आ तँए आन शेरक काफिया लेल "धूमन", "केहन", "पारन" एहन शब्द उपयुक्त रहत।

३) जँ कोनो मतलामे काफिया "तीमन" आ "नीमन" शब्द छै तखन कनेक धेआन राखए पडत। दुनू शब्दकेँ धेआनसँ देखू, अंतमे "मन" वर्ण समूह उभयनिष्ठ छै तँ एहन काफियामे "मन" मूल वर्ण समूह भेल आ तकरसँ पहिने दुनूमे "ई" स्वरक मात्रा छै (ती, नी) तँए एकर काफिया भेल "ई" स्वरक मात्राक संग "मन" वर्णक समूह। जँ कोनो शाएर "तीमन" आ "नीमन" केँ बाँद कोनो आन शेरमे "जीरँन", "धूमन", "केहन", "पारन" काफिया लेताह तँ गलत हएत। सही काफिया हेत– "परिसीमन" आदि। ऐठाम ध्यान योग राखू जे जँ कोनो मतलामे "तीमन" आ "धूमन" काफिया छै तँ ओ गलत हएत कारण "मन" वर्ण समूहसँ पहिने एकठाममे "ई" स्वरक मात्रा छै तँ दोसरमे "ऊ" स्वरक मात्रा। तेनाहितें "खाएत" एवं "आएत" काफियामे अंतसँ "एत" उभयनिष्ठ छै एवं तकरसँ पहिने "आ" स्वरक मात्रा छै, तकर बाँद आन शेरमे "जाएत", "नहाएत", "पाएत",

"ব্ঁড়ি খাএত" আদি কাফিযা সহী হেতৈ।

৪) কোনো মতনামে "খৌঁস্মাএত" আ "ব্ঁস্মাএত" শব্দক কাফিযা নৈ ভএ সকৈএ সে আব অহাঁ
সভ নীক জকাঁ বুঁস্মি গেল হেবৈ। জঁ কোনো শাগব এহন কাফিযা নৈ ছথি তঁ কাফিযামে "সিনাদ দোষ" আরি জাগত ছৈ।

৫) কেখনো কান কিছু এহন শব্দ আরি জাগত ছৈ কাফিযামে, জে অধিকাংশতঃ একসমান বহৈত
ছৈ জেনা- "পসাব" এবং "সাব"। ঐ দূটা শব্দমে অংতসঁ "সাব" উভযনিষ্ঠ ছৈ আ কেও কহতা জে "সাব" সঁ পহিনে বঁনা স্ববক মাত্রা সেহো মিলবাঁক চাহী। মনে "পসাব" এবং "সাব" মে "প"
অনকামন ছৈ তঁএ " সাব" সঁ পহিনে "অ" স্বব হেবাঁক চাহী, মুদা শাগবীক নিঅমক হিসাবেঁ মতনামে এহন কাফিযাক প্রযোগ গলত মানল জাগত ছৈ। অর্থাত কোনো মতনামে অহাঁ "পসাব" এবং "সাব", তেনাহিতে "বিচাব" ক সংগ "চাব" আদি কাফিযা নৈ লঃ সকৈত ছী।

৬) আব কনে সংযুক্তাক্ষব বঁনা কাফিযাকেঁ দেখী। কিছু আব বিববণসঁ পহিনে কিছু সংযুক্ত শব্দ সভকেঁ দেখল জাএ। প্রস্থান, চুস্ত, দুরুস্ত, কিস্মত। আব ওা দেখূ জে সংযুক্ত বর্ণ অংতসঁ কোন স্থানপব পড়ৈত অছি। জঁ ওা অংতসঁ তেসব আ ওকব বাঁদ মনে চাবিম যা পাঁচম স্থানপব অবৈত হো তঁ কাফিযাক নিঅম পহিনে জকাঁ হএত। মুদা জঁ ওএহ
সংযুক্ত বর্ণ কাফিযা বঁনা শব্দক অংতসঁ দোসব স্থান পব

अबैत छो तँ कने धेआन देबऐ पड़त। मानि लिअ जे मतलाक पहिल पाँतिमे "मस्त" काफिया छैक। तँ आब हरेक काफियाक अंतमे "स्त" रहबाक चाही। उदाहरण लेल "मस्त" क काफिया "दस्त", "पस्त", "हबस्त" आदि भऽ सकैए। उदाहरण रूपमे एकटा शेबकेँ देखल जाए--

हएत कोना ध्वदस्त जीबन

भेल चिन्तासँ हबस्त जीबन

आब ऐ शेबमे बदीफ "जीबन" भेल आ पहिल पाँतिमे काफिया "ध्वदस्त" अछि, आब संस्कृताक्षब बला नियमक हिसाबेँ काफिया बला शब्दमे अंतसँ दोसब वर्ण "स्त" होएबाक चाही। आब दोसब पाँतिके देखू बदीफसँ पहिने काफियाक रूपमे "हबस्त" अछि जकब अंतसँ "स्त" संगे-संग "अ" वर्णकि स्वब साम्य सेहो छै जे नियमक मोताबिक सही अछि। ऐ गजलमे आन काफिया सभ एना अछि- "ब्यस्त", "मदमस्त", "मस्त", "सस्त" आदि। उपबके नियम जकाँ मतलाक पहिल पाँतिमे जँ "मस्त" काफिया छै तँ ओकब बाद आन शेबमे "त्रस्त" "स्वस्त" आदि काफिया नै आबि सकैए। संस्कृताक्षबक ई नियम मात्रा बला काफिया लेल कने अलग ढंगसँ छैक।

७) तँ आब आबी कने "ए" आ "य" बला प्रसंगपब।
ए आ य : मैथिलीक बर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि। मुदा "ए" केब प्रयोग प्राचीन मैथिलीए सँ अछि।
प्राचीन बर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए

आदि ।
नवीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।
सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्द सभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नै करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारू सहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे "ए"केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि। मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली " य "क अपेक्षा "ए"सँ बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-कतहु लिखल जाएब सेहो "ए"क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।
एतेक जननाक बाद आबी "ए" वा "य" केर ध्वनि लोप पर। ओना "ए" वा "य" क संगे-संग आन ध्वनि लोप सेहो होइत छै मुदा ओकर चर्चा एतए आवश्यक नै। तँ देखी ध्वनि लोपक नियम-
ध्वनि-लोप : निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ "ए" वा "य" केर ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:
(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओइ सँ पहिने अँक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (' / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़' गेलाह, क' लेल, उठ' पड़तौक।

पठ़ि गेलाह, कहि लेल, उठि पड़तौक ।

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नै लगाओल जाइछ । जेना-

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह ।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह ।

आब एक बेर फेर घुरि जाउ उच्चारण पर । उच्चारणमे लोप-सूचक चिन्ह (') वा विकारी (ऽ) केर कोनो महत्व नै होइत छैक । मुदा लोप सूचक चिन्ह वा विकारीसँ पहिने जे वर्ण छै तकरे पूरा-पूरी उच्चारण हेतै कनेक लमहर उच्चारणक संग (मुदा ई कने लमहर उच्चारणक कारण ओ वर्ण दीर्घ नै मानल जाएत । डा. रामावतार यादव ई लमहर उच्चारणकेँ दीर्घ तँ मानै छथि मुदा गनतीमे शब्दकेँ लघु मानै छथि)। जेना "लए" शब्दमे ल केर बाद ए केर उच्चारण होइत अछि मुदा जखन ओही "लए" शब्दकेँ "ल'" वा "लऽ" लिखबै तखन ओकर उच्चारण बदलि जाएत आ एकर उच्चारण "ल" केर बराबर हएत । मतलब जे "ल'" वा "लऽ" केर उच्चारण "लए" वा "लय" शब्दसँ बिल्कुल अलग अछि । तेनाहितेँ "अस'" वा "असऽ" केर उच्चारण "असए" वा "असय" शब्दसँ अलग अछि । एहन-एहन शब्द जकर अंतमे "ए" वा "य" लोप होइत होउ तकरा लेल

एहने सन नियम छैक।
जँ कोनो शाएर ध्वनि लोपक चिन्ह वा विकारी वला शब्दक काफिया वनवैत छथि तँ ओ ध्यान राखथि जे हरेक काफियामे लोप-सूचक चिन्ह (') वा विकारी (ऽ) सँ पहिलुक वर्ण एकसमान राखथि। जेना "न'" वा "नऽ" केर काफियाक वाद शाएर एहन शब्द चुनथि जकर अंतमे लोप-सूचक चिन्ह (') वा विकारी (ऽ) लागल हो तकरा वाद वर्ण "न" हो जेना "चल'" वा "चलऽ"।
जँ कोनो शाएर "राख'" वा "राखऽ" केर काफिया "वाज'" या "वाजऽ" रखताह तँ ओ गलत छैक। "वाज'" या "वाजऽ" केर वाद "साज'" वा "साजऽ" काफिया छैक। संगे-संग काफियाक उपरका वला नियम सभ पहिनेहें जकाँ अक्षुण्ण लागू रहत। जँ कोनो एहन शब्द जकर अंतमे "अ" वा "य" केर लोप भेल छै आ तकरा पहिने कोनो मात्रा छै तँ ओकर काफिया लेल मात्राक काफिया वला नियम लागत जकर विवरण आगू देल जा रहल अछि।
आब अहाँ सभ ई बूझि सकैत छिऐ जे --

नअ---- ह्रस्व-दीर्घ
नऽ -------ह्रस्व
न'-------ह्रस्व
नय----- ह्रस्व- ह्रस्व वा दीर्घ
आ दअ, कअ आदि लेल एहने सन नियम रहत।

आशा अछि जे एतेक उदाहरणसँ ई नियम सभ बूझबामे आएल हएत।

+)

पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार: पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-
अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणें अन्तमे ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणें अन्तमे ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणें अन्तमे ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणें अन्तमे न् आएल अछि।)

खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणें अन्तमे म् आएल अछि।)

उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना- अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओ लोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि।

নরীন পদ্ধতি কিছু স্বরিধাজনক খরশ্য ছৈক। কিএক তঁ ঐ মে সময খা স্থানক রঁচত হোগত ছৈক। ক্ষদা কতোক রেঁব হস্তনেখন রা ক্ষদ্রণমে খন্বস্বাবক ছোটি সন রিন্দ্ স্পষ্ঠ নৈ ভেনাসঁ খর্থক খনর্থ হোগত সেহো দেখন জাগত খছি। খন্বস্বাবক প্রযোগমে উঁচাবণ–দোষক সম্ভারনা সেহো ততরঁএ দেখন জাগত খছি। এতদর্থ ক সঁ নঃ কঃ পরন্ত্ধ ধবি পথ্যমাক্ষবেক প্রযোগ কবরঁ উঁচিত খছি। যসঁ নঃ কঃ ক্ত ধবিক খক্ষবক সঙ্গ খন্বস্বাবক প্রযোগ কবরাঁমে কতহ্ কোনো রিরাদ নৈ দেখন জাগছু।

খারঁ কনে খারী কাহ্বিযা পব (ঐঠাম হমব খাগ্রহ জে পংচমাক্ষবক প্রযোগ কএন জাএ। ওনা পহিনে হম খপনে খন্বস্বাবক প্রযোগ করৈত ছনৌং ক্ষদা খারঁ পংচমাক্ষবক প্রযোগ করৈত ছী খা ওএহ মৈথিনীক হিতমে ছৈ) জঁ মতনাক কোনো কাহ্বিযা মে পংচমাক্ষব রা খন্বস্বাবক প্রযোগ ছৈক তঁ হবেক শেবক কাহ্বিযামে খন্বস্বাব রা পংচমাক্ষব হেরাঁক চাহী ওহো ঠীক ওহী স্থান পব জত পব পহিন কাহ্বিযামে ছৈক। জেনা মানি নিখ কোনো মতনাক পহিন পাঁতিক কাহ্বিযা "রঁসংত" ছৈক, তঁ খারঁ খহাঁকেঁ ওহন শব্দ কাহ্বিযামে দেরঁএ পড়ত জকব খংতসঁ দোসব রর্ণ পব খন্বস্বাব রা পংচমাক্ষব খরৈত হোগক জেনা কী "খনংত", "দিগংত" গত্যাদি। খা এহনে সন নিখম চংদ্ররিংদ্ নেন সেহো ছৈক। একটা রাঁত খাব জঁ কোনো মতনাক দূনূ পাঁতিমে খন্বস্বাব রঁনা কাহ্বিযা ছৈ তঁ ওকব রাঁদ রঁনা শেবক কাহ্বিযা নেন পংচমাক্ষব রঁনা শব্দ সেহো নএ সকৈত ছী জেনা--- জঁ মতনামে কী "রঁসংত" খা "খনংত" ছৈ তঁ রাঁদ রঁনা শেবক কাহ্বিযা

नेन "दिगन्त" सेहो नअ सकैत छी। आन सभ पंचमाक्षर नेन एहने नियम बुझू। ध्यान एहन ठाम ई मोन राखू जे पंचमाक्षर अपने रञ्जाक हेबाक चाही। मात्रा बना काफिया पर विचार करबासँ पहिने कनेक फेरसँ तरलीनी बदीफ आ मैथिली विभक्ति पर विचार करी। कारण जे मैथिली विभक्ति मूल शब्दमे सटि जाएत छैक। आ तँए ओ केखन काफियाक रूप नेत आ केखन बदीफक से बुझनाए परम जरूरी।

विभक्ति------

मैथिलीमे विभक्ति चिन्ह समान्यतः पाँच गोटे अछि।

कर्म---- केँ

करण--- एँ /सँ

अपादान-- सँ

सम्बन्ध---क

अधिकरण--मे /पर

ऐकेँ अतिविज्ञ विद्वान लोकनि कतकि चिन्हकेँ स्वन्नाक रूपमे लैत छथि। ई पाँचो चिन्ह मूल शब्दमे सटि जाएत छैक। आ ऐ पाँचोमेसँ "एँ" चिन्ह मूल शब्दक ध्वनि बदलि दैत छैक। उँदाहरण लेल देखू-- "बाटे" शब्दमे "एँ" चिन्ह सटैने " बाटेँ" होएत छैक। "हाथ" शब्दमे सटैने "हाथेँ" इत्यादि। आब कने ई विचारी जे जँ कोनो शाएर एहन शब्द, जइमे विभक्ति सटैन होएक जँ ओकर काफिया बनेता तँ की हेतै। ऐ लेल किछु एहन शब्द ली जइमे विभक्ति सटैन होएक।

उँदाहरण लेल--

मूल शब्द--------------- विभक्तिसँ सटैन शब्द

हाथ-------------------- हाथक /हाथेँ/

হাথসঁ/ হাথমে/ হাথকেঁ
ফূল--------------------- ফূলক /ফূলসঁ /ফূলেঁ
সংগ--------------------- সংগমে /সংগেঁ
বাতি-------------------- বাতিএঁ/ বাতিসঁ /বাতিমে
ঐ বিবরণকেঁ হমরা লোকনি দূ ভাগমে বাঁটি সকৈ ছী------

১) এহন মূল শব্দ জে অংতসঁ অকাবান্ত হুঅএ, আ
২) এহন মূল শব্দ জকর অংতমে মাত্রাক প্রযোগ হোএক
১) আরঁ জঁ কোনো শাএর এহন মূল শব্দ জে অকাবান্ত ছৈক আ ওএমে বিভক্তি লাগল ছৈক তকরা কাফিয়া বঁনবৈ ছথি তঁ হুনকা ঞা মোন রাখএ পড়তন্হি জে বাঁদমে আরঁএ বঁনা হবেক আন-আন কাফিয়ামে বএহ বিভক্তি কোনো আন মূল শব্দমে আরেঁ জে অকাবান্ত হোএক সংগহি-সংগ স্বব-সাম্য সেহো বখৈত হো। উঁদাহবণ লেল----- মানূ জে কেও মূল "হাথ" শব্দমে "ক" বিভক্তি জোড়ি "হাথক" কাফিয়া বঁনেলক। দোসব আন-আন কাফিয়া লেল ঞা মোন বাখূ জে আরঁএ বঁনা ওএ কাফিয়াক অংতমে "ক" বিভক্তি তঁ এবেঁ কবতৈ, মুদা বিভক্তি "ক"সঁ ঠীক পহিলে অকাবান্ত বর্ণ এবং স্বব-সাম্য হোএরাঁক চাহী জেনা কী মানূ "বাঁত" শব্দমে বিভক্তি "ক"জুটৈলা পব "বাঁতক" শব্দ বঁনৈত অছি। আরঁ পহিল কাফিয়া "হাথক" আ দোসব কাফিয়া "বাঁতক" মিলান করু (কাফিয়াক মিলান সদিখন শব্দক অংতসঁ কএল জাএত ছৈক)। দেখূ পহিল কাফিয়া "হাথক" আ দোসব কাফিয়া "বাঁতক" দুনূক অংতমে বিভক্তি "ক" অছি সংগহি-সংগ বিভক্তি "ক" কেব বাঁদ দুনূ কাফিয়াক শব্দ

"थ" आ "त" अकाबान्त अछि, संगहि-संग "हा" केर स्वर-साम्य "रॉ" सँ छैक। आब फेर तेसर शब्द "पात" लिअ आ जँ ओहमे "क" विभक्ति जोड़ब तँ "पातक" शब्द बनतै। आब पहिल काफिया "हाथक" आ दोसर काफिया "पातक" मिलान करू। देखू अंतसँ दुनू शब्दमे "क" विभक्ति छैक आ ठीक ओहसँ पहिने दुनू शब्द अकाबान्त छैक आ संगहि-संग "हा" क स्वर-साम्य "पा"सँ छैक। एनाहिते दोसर उदाहरण देखू- मूल शब्द "पात" विभक्ति "मे" जुटैना पर "पातमे" शब्द बनैत अछि। फेर दोसर शब्द "रॉट" विभक्ति "मे" जुटैना पर "रॉटमे"। आब फेरसँ मिलान करू- दुनू शब्दक अंतमे विभक्ति "मे" लागल छैक। विभक्ति "मे" सँ ठीक पहिने अकाबान्त वर्ण सेहो छैक संगहि-संग "पा" केर स्वर-साम्य "रॉ"सँ छैक। किछु आर उदाहरण लिअ- "कलमसँ", "पतनसँ", "रॉपकेँ", "आरकेँ" इत्यादि।
ध्यान देबाक बात एकदम धेआन राखू जे जँ कोनो शाइर लेखनमे हिन्दीक प्रभावसँ मूल शब्दमे विभक्ति नै सटेबेँ छथि तैओ उच्चारणमे मूल शब्द आ विभक्ति स्वतः सटि जाइत छै तँए विभक्ति सटा कऽ लिखू वा हटा कए बिना बदीफक गजल कहबेँ करत। एकरा एना बूझी--- कोनो मतलामे " कलमसँ " आ " पतनसँ " काफिया बनि सकैए आ संगे-संग मतलामे " कलम सँ " आ " पतन सँ " सेहो काफिया बनि सकैए आ एकरा बिना बदीफक गजल कहल जाएत तेनाहिते "आँखिसँ" आ चाँकिसँ " काफिया सेहो ठीक रहत आ "आँखि सँ" आ चाँकि सँ " सेहो । ओना जँ कोनो उर्दू-हिन्दीक शाइर कोनो गजलमे " कलमसँ " आ " पतनसँ " वा " कलम सँ " आ " पतन सँ " काफिया देखताह तँ

ওকরা গলত কহি দেতাহ, মুদা ওা রাঁত সদিখন মোন বাখূ জে উর্দূ-হিন্দী ভাষা খলগ ছৈ আ মৈথিলী ভাষা খলগ ছৈ, একব ব্যাকবণ আ উচাবণ পদ্ধতি খলগ ছৈ তঁএ খববীমে পাবিত পূবা-পূবী নিখম মৈথিলীমে লাগূ নৈ ভহ সকৈএ।

২) এহন মূল শব্দ জকব খংতমে মাত্রা লোগক ওকব কাফিযা লেল ধেখান বাখূ জে বিভক্তিক রাঁদ ঠীক রএহ মাত্রা স্বব-সাম্যক সংগ এরাঁক চাহী। উদাহবণ লেল-
খাঁখিসঁ----চাঁকিসঁ----রাঁহিসঁ, গল্যাদি
বাতিমে----জাতিমে--- জাঠিমে, গল্যাদি
ঘুঁঠীকেঁ---গ্বন্তীকেঁ---চুঁম্বীকেঁ, গল্যাদি
পানিক--খানিক, গল্যাদি
কেখলো কাল দূটা বিভক্তি একৈ সংগ জুঁটি জাগত ছৈক জেনা "বাতিএঁসঁ" এহন সমযমে খহাঁকেঁ দোসবো কাফিযা ওহনে লেরঁএ পড়়ত জগমে দূনূ বিভক্ত সমান লোগক স্বব-সাম্যক সংগে। উদাহবণ লেল " বাতিএঁসঁ" কেব কাফিযা "ছাতিএঁসঁ" "হাথিএঁসঁ" "রাঁটিএঁসঁ" খাদি-খাদি ভহ সকৈত খছি। বিভক্তি রঁলা কাফিযাক সংরঁধমে একটা খাব খাস গপ্প। কোলো এহন মূল শব্দ জকব খংত কোলো একটা খাস বিভক্তিসঁ সাম্য বখৈত হুখএ, বিভক্তিসঁ পহিলে রঁলা বর্ণ খকাবান্ত রা মাত্রা হাণ্ড (জেহন স্থিতি) হুখএ সংগহি-সংগ ওগসঁ পহিলে স্বব-সাম্য হুখএ তঁ ও দুনূ কাফিযাক রূপমে লেল জা সকৈএ। উদাহবণ লেল একটা বিভক্তি রঁলা শব্দ "পাতক" রা "রাঁটক" লিখ। আ খারঁ এহন মূল শব্দ তাকূ জকব খংতমে "ক" লোগ, "ক" সঁ পহিলে খকাবান্ত বর্ণ লোগক (জঁ খকাবান্ত বর্ণসঁ পহিলে স্বব-সাম্য লোগ তঁ খাবো নীক) তঁ ও দুনূ (একটা

বিভক্তি যুক্ত আ দোসর মূল) শব্দ কাফিয়া ভঽ সকৈত অছি। উদাহরণ লেল ঊপর লেল দূনূ বিভক্ত যুক্ত শব্দ "পাতক" আ "বাটৈক"ক মূল শব্দ "বানক" পানক" বা "চানক"সঁ মিলাউ। জঁ গৌরসঁ দেখবৈ তঁ পতা লাগত জে ই শব্দ সভ কাফিয়া লেল একদম্ম উপযুক্ত অছি। তেনাহিতে মাত্রা বিনা শব্দ জগমে বিভক্তি সটল হুঅএ আ ওহন মূল শব্দ জে ওকরাসঁ মিলৈত হুঅএ একদোসরাক কাফিয়া বিনি সকৈত অছি। জঁ কোনো মতলাক অংত মূল শব্দসঁ সটল বিভক্তিসঁ যোগক তঁ ওকরা বিনা রদীফক গজল মানূ। উদাহরণ লেল-

পসরল ছৈ শোণিত সগরো বাটৈপর
ঘর-আঁগন-বাড় ী-ঝাড় ী ঘাটৈপর

ঐ গজলক আন অংতিম শব্দ অছি---- "হাটৈপর", "খাটৈপর", "টাটৈপর"। দেখূ ঐ সভমে অংতসঁ " পর " সেহো ছৈ এবং " আ " স্বরক সংগ " ট " বর্ণ সেহো ছৈ। তদা তৈও একরা বিনা রদীফক গজল মানল জাএত।

আবি কলে মাত্রা বিনা কাফিয়া পর বিচার করী। মৈথিলী বর্ণমালামে ১৬ গোট স্বর দেখাওল গেল অছি। অ, আ, ই, ঈ উ, ঋ, ৠ, ঌ,(আ ঌক আর একটা দীর্ঘ রূপ) ঊ, এ, ঐ. ও. ঔ, অং এবং অঃ। জগমে "অ" তঁ হরেক বর্ণক (জগমে হলন্ত নৈ লাগল যোগক)মে অংতমে অবিতে ছৈক। অন্য ছহ গোট স্বর (ঋ,ৠ, ঌ আ ঌক আর একটা দীর্ঘ রূপ, অং এবং অঃ) খালী তৎসম শব্দমে অবৈত ছৈক। বাঁচল নও গোট স্বর আ, ই, ঈ, উ, ঊ, এ, ঐ, ও, এবং ঔ (একর লেখ রূপ ক্রমশঃ --া, ি , ী, ু, ূ, ে, ৈ, ো এবং ৌ অছি)। সংগে-সংগ হম মৈথিলীমে রেফ বিনা কাফিয়া পর সেহো বিচার করব।

মতনৱ জে ঐঠাম হম হ্মন দস গোষ্ঠ মাত্রা পব রিচাব কবৱ। হ্মদা ঐ দসোমে "ঙ", "উঁ" আ বেহ্ফ পব রিচাব হম ৱাঁদমে কবৱ। একব কাবণ জে মৈথিলীমে ঐ তীনূক উঁচাবণ কনে আনগ ঢংগসঁ হোগত আছি। তঁ চনী মাত্রা ৱঁনা কাহ্ফিযা পব। মতনামে বদীহ্ফসঁ পহিনে জঁ বর্ণমে কোনো মাত্রা ছৈক তঁ গজনক হবেক শৈবক কাহ্ফিযা মে রএহ মাত্রা আএৱাঁক চাহী চাহে ওগ মাত্রাক সংগ ৱঁনা বর্ণ দোসবে কিএক নে হো।

পূৱ মে উঁগন ননকা থাবী ত' দেখূ
দূগভক ঘব চমা চম মোতী ত' দেখূ
(আমিত মিশ্র)

ঐ গজনমে নেন গেন আন কাহ্ফিযা সভ আছি– কিনকাবী, ৱৈমাবী, পাবী, সাড়ী আ তবকাবী। ঐঠাম ঙা ধেআন দেৱএ ৱঁনা ৱাঁত আছি জে মতনামে জে কাহ্ফিযা প্রযোগ ভেন ছৈ তকব অঁতমে " ঙা " কেব মাত্রা ছৈ বর্ণ হ্মদা আনগ–আনগ ছৈ হ্মদা ওগসঁ পহিনে ৱঁনা স্বব নৈ মীনি বহন ছৈ একব মতনৱ ঙা ভেন জে মাত্রা ৱঁনা কাহ্ফিযা নেন শৈষ্কক অঁতমে জে মাত্রা ছৈ সএহ আন শৈষ্কক অঁতমে আএৱাঁক চাহী ৱঁশৈতে কি বর্ণ আনগ–আনগ হ্আএ। আৱ ঐঠাম ঙা দেখূ জে জঁ মতনামে " থাবী " ক সংগ সাড়ী বহিতৈ তখন আন কাহ্ফিযামে "ড়ী" বা " বী" কামন বহিতৈ আ তগসঁ পহিনে " আ" কেব স্বব সাম্য বহিতৈ। জেনা " ৱাঁড়ী ", উঁধাবী, অধকপাবী গন্নাদি। জঁ " থাবী " আ " ৱাঁড়ী" কেব ৱাঁদ "মোতী" শৈষ্কক কাহ্ফিযা নৈ ছী তঁ সিনাদ দোষ আৱি জাএত আ কাহ্ফিযা গনত ভঃ জাএত। তেনাহিতে জঁ কোনো মতনামে " মোতী " আ কোঠী" কাহ্ফিযা নেৱৈঁ তখন সাড়ী, উঁধাবী আদি

काफिया भऽ सकैए। कोना से आर अहाँ सभ नीक जकाँ बूझि गेल हेबैं। ऐ नियमक आधार पर हमर प्रकाशित पोथी " अनचिन्हार आखर " केर बहुत रास काफिया गलत अछि। मुदा ओइ समय हमरा लग काफिया जतेक समझ छल ओइ हिसाबेँ ओकर प्रयोग कएल। आ तँए ओइ पोथी महँक किछु काफियाक नियम आर पूर्णतः बेकार भऽ चुकल अछि। संगे संग ई ध्यान राखू जे आन मात्रा बला कफिया लेल एहने नियम बहत।
एकटा गलत उदाहरण देबासँ हम अपनाकेँ रोकि नै रहल छी। ई शेर हमरे थिक----
एनाइ जँ अहाँक सूनी हम
नहुँएसँ सपना बूनी हम"
(काफिया "ई"क मात्रा)
गजलक अन्य काफिया अछि---- "चूमी", "पूछी", "बूझी", "खूनी", ,"नूटी", "सूती" आदि। आर ऐ शेरमे देखू दूनू पाँतिक काफियामे " नी " कामन छै आ तइ हिसाबेँ हमरा एहन काफिया चुनबाक छल जकर अंतमे " नी " अबैत हो आ तइसँ पहिने " ऊ " केर मात्रा हुअए। ऐ शेरमे " ऊ " केर मात्रा तँ लेल गेल अछि मुदा " नी " केर पालन नै भेल अछि तँए ऐ गजल महँक एकटा काफिया " खूनी " छोड़ि आन सभ (जेना चूमी", "पूछी", "बूझी ""नूटी", "सूती") आदि गलत अछि| अन्य बचल मात्राक लेल एहने समान नियम अछि आ हरेक मात्राक एक-एकटा उदाहरण देल जा रहल अछि।
१) छोड़ि कऽ जे बिम्ब बजने जा रहल अछि
    द्वन्दे चिरैत आगि स्वनगा बहल अछि

(काफिया " आ " केर मात्रा)
(गजेन्द्र ठाकुर)

ऐ गजल आन काफिया सभ अछि------कना, भसिया, जा, खा इत्यादि ।

२) "जँ तोड़ऱे सप्पत तँ जानू अहाँ
फाँसिए लगा मरबै मानू अहाँ"
(काफिया "ऊ" क मात्रा)
(आशीष अनचिन्हार, सरल वार्णिक)
ऐ गजलमे लेल गेल अन्य कफिया- "गानू", "आनू", "टानू" आदि ।
३) "मोन तंग करबें करतै
देह भाषा पढबें करतै"
(काफिया "ए"क मात्रा)
ऐ गजलमे लेल गेल अन्य कफिया ---"खुजबें", "उड़बें", "सटबें" आदि अछि ।
४) भोरे उठि मैदान गेलै रौआ
ओम्हरेसँ दतमनि तँ लेते रौआ
(आशीष अनचिन्हार)
(काफिया "ऐ"क मात्रा)
ऐ गजलक आन काफिया सभ अछि- एतै, जेतै, रँनतै, चलतै आदि-आदि ।
ऐ केर मात्राक एकटा आर उदाहरण देखू----
करबौ लै मजूरी माँ पढबौं हमहूँ
लै बहबौं कतौ पाछू रँटबौं हमहूँ
(ओमप्रकाश)
ऐ गजलमे लेल गेल आन काफिया अछि------

চঠ়রৈঁ, মঠ়রৈঁ, গঠ়রৈঁ আদি-আদি।
কেখনো কান "ঐ" কের উচ্চারণ "অয" জকাঁ হোইত অছি। জেনা "সৈতান" শব্দমে সয়তান, বৈমানক শব্দমে "বেয়মান" ইত্যাদি।
৫) আর হবজাগকেঁ তোঁ রিসবি জো বে রৌআ
মোন নে পড়ৈ এহন সপ্পত খো বে রৌআ
(কাফিয়া "ও"ক মাত্রা)
(আশীষ অনচিন্হার, সবল রার্শিক)
ঐ গজলমে লেল গেল অন্য কফিয়া------ও, অসো, পড়ো ইত্যাদি অছি।
৬) এক বের ফের হঁসিঔ কনেক
ওহী নজরি সঁ দেখিঔ কনেক
(কাফিয়া "ঔ"ক মাত্রা)
(আশীষ অনচিন্হার, সবল রার্শিক)
ঐ গজলমে লেল গেল অন্য কফিয়া ---"বহিঔ", "চলিঔ", "বুঝরিঔ" আদি অছি।
**** কেখনো কান "ঔ" কের উচ্চারণ "অউ" জকাঁ হোইত অছি।
আব হমরা লোকনি ফেরসঁ একবের সংযুক্তাক্ষর বলা শব্দপর চলী। মাত্রা বলা সংযুক্তাক্ষর লেল পহিনেসঁ কনে অলগ ঢঙসঁ দেখূ। ঐ গপ্প উদাহরণসঁ বেসী স্পষ্ট হএত। মানূ জে মতলাক পহিল পাঁতিমে কাফিযাক রূপমে "চুপ্পী" শব্দ লেল গেল। আব দোসর কাফিয়া লেল মোন রাখূ জে "ঐ" মাত্রা যুক্ত কোনো শব্দ ভঽ সকৈত অছি। উদাহরণ লেল "চিন্নী", "বুচী", "খৰ্চী" আদি "চুপ্পী"ক কাফিয়া ভঽ সকৈত অছি। মুদা জঁ মতলাক কাফিয়া "মুষ্ঠী" আ "ঘুষ্ঠী" ছৈক তখন আন শেরক কাফিয়া "চিন্নী" যা "বুচী" নৈ ভঽ সকৈত অছি।

𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒞𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒥𑒳𑒗𑒱𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒹𑒥𑒻।

𑒅𑒧𑓂𑒧𑒹𑒠 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒅𑒣𑒩 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒥𑒪𑒰 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒤𑒱𑒨𑒰 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡𑒲 𑒢𑒱𑒁𑒧 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒦𑒹𑒪 𑒯𑒋𑒞।

𑒞𑒿 𑒂𑒥 𑒔𑒪𑒲 "𑒃", "𑒅" 𑒂 𑒩𑒹𑒤 𑒣𑒩। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 "𑒃" 𑒂 "𑒅" 𑒪𑒹𑒐 𑒂 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒂 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒯𑒧 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝𑒮𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒋𑒥, 𑒞𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 "𑒃" 𑒏𑒹𑒩 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝𑒮𑒿 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒏𑒩𑒲। 𑒬𑒥𑓂𑒠 "𑒥𑒰𑒞𑒱" 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒏𑒩 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 𑒦𑒹𑒪 "𑒥𑒰𑒃𑒞", 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒋 "𑒑𑒰𑒢𑒱" 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒋 "𑒑𑒰𑒃𑒢", 𑒞𑒹𑒢𑒰𑒯𑒱𑒞𑒹 "𑒣𑒰𑒢𑒱" 𑒏𑒹𑒩 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒩𑒝 "𑒣𑒰𑒃𑒢" 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒫𑒩𑓂𑒝 "𑒃" 𑒞𑒹𑒯𑒢 𑒅𑒤𑒼𑒢 𑒧𑒔𑒹𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒂𑒢 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒮𑒦 "𑒃" 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒲 "𑒖𑒰𑒃𑒞", "𑒐𑒰𑒃𑒞" 𑒂𑒠𑒱। 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒩 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒑𑒣𑓂𑒣, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹 "𑒃"𑒏𑒰𑒩 𑒠𑒴 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱– 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒩𑒴𑒣 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒃𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 "𑒃"𑒏𑒰𑒩 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒩𑒴𑒣𑒏 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝 "𑒥𑒰𑒞𑒱", "𑒖𑒰𑒞𑒱" 𑒮𑒦 𑒦𑒹𑒪 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒩𑒴𑒣𑒏 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝 "𑒖𑒰𑒃𑒞", 𑒐𑒰𑒃𑒞" 𑒮𑒦 𑒦𑒹𑒪। 𑒂𑒥 𑒏𑒢𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒏𑒰𑒤𑒱𑒨𑒰 𑒣𑒩 𑒂𑒥𑒲। 𑒖𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒋𑒯𑒢 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒏𑒰𑒤𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲 𑒖𑒏𑒩 𑒁𑓀𑒞𑒱𑒧 𑒫𑒩𑓂𑒝 "𑒃"𑒏𑒰𑒩 𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒢–𑒂𑒢 𑒏𑒰𑒤𑒱𑒨𑒰 𑒪𑒹𑒪 "𑒃" 𑒏𑒰𑒩 𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒫𑒋𑒯 𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒪𑒹𑒥𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒞 𑒖𑒹 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒏𑒰𑒤𑒱𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝 𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 "𑒥𑒰𑒞𑒱" 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒏𑒰𑒤𑒱𑒨𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒪𑒹𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒿 𑒂𑒥 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒰𑒤𑒱𑒨𑒰 𑒪𑒹𑒪 "𑒞" 𑒫𑒩𑓂𑒝 "𑒃"𑒏𑒰𑒩 𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒱 "𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱", "𑒖𑒰𑒞𑒱", 𑒂𑒠𑒱 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒋𑒯𑒢 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒪𑒱𑒁 𑒖𑒏𑒩 𑒁𑓀𑒞𑒧𑒹 "𑒞" 𑒯𑒼𑒃𑒏 𑒂 𑒞𑒃𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 "𑒃" 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒋 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒲 "𑒖𑒰𑒃𑒞"। 𑒋𑒏𑒩 𑒧𑒞𑒪𑒥 𑒖𑒹 "𑒥𑒰𑒞𑒱" 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒏𑒰𑒤𑒱𑒨𑒰

নেন "জাতি", "পাঁতি" ক সংগে "জাগত", "খাগত", "নহাগত" সেহো আরি সকৈত অছি। আ হমবা জনৈত ঐঠাম মৈথিলী গজন উর্দূ গজনসঁ পূর্ণতঃ অলগ ভঽ জাগত অছি। আ সংগহি-সংগ ওা রিশেষতা মৈথিলী গজনক একটা অপন অলগ ছরি রনৈ ত অছি। আ ওা রিশেষতা দ্রাস্ব "উঁ", "ঐ, "ও", আ বেহ্ফ রনামে সেহো অরৈত অছি।
আর কনে দ্রাস্ব "উঁ" পব ধেআন দী। মৈথিলীমে জঁ শব্দক অংতমে "উঁ" অরৈত হো আ ঠীক ওগসঁ পহিনে অকাবান্ত রর্ণ হ্অএ তখন "উঁ" কেব উঁচাবণ প্রায়ঃ ও/ অউঁ জকাঁ হোগত অছি। উঁদাহবণ নেন মধ্ শব্দক উঁচাবণ মৌধ/ মউঁধ হোগত অছি। আ জঁ "উঁ"সঁ পহিনে আকাবান্ত রর্ণ হো তখন "গ"এ জকাঁ "উঁ" কেব উঁচাবণ পহিনে হোগত অছি। উঁদাহবণ নেন "সাধ্" কেব উঁচাবণ "সাউঁধ", "রান্ব" কেব উঁচাবণ "রাউঁন" গত্যাদি। ওনা উঁচাবণ নেন আনো শব্দ নেন জা সকৈএ। আর ওা দেখী জে ঐ প্রকাবক শব্দক কাহ্ফিযা কোনা রনতৈ। জঁ অহাঁ "উঁ" সঁ পহিনে অকাবান্ত রনা রর্ণসঁ রনন শব্দ কাহ্ফিযা নেন নৈত ছী তঁ ধেআন বাখূ জে আন-আন কাহ্ফিযাক উঁচাবণ "কোনো রর্ণ(এক রা একসঁ রৈসী) + ও/অউঁ + অংতিম নিশ্চিত রর্ণ" আরৈ। আর উঁপবকেঁ রনা শব্দ "মধ্"কেঁ নিঅ। একব উঁচাবণ "ম + ও/অউঁ + ধ" অছি, তঁএ একব দোসব কাহ্ফিযা "কোনো রর্ণ(এক রা একসঁ রৈসী) + ও/অউঁ + ধ" হেতৈ। আর জঁ অহাঁ দোসব শব্দ "পৌধ" নেনহুঁ, তঁ একব উঁচাবণ "প + ও/অউঁ + ধ " অছি। অর্থাত "মধ্" কেব উঁচাবণ "পৌধ" কেব রবারব অছি। তঁএ "মধ্" কেব কাহ্ফিযা "পৌধ" হএত। এনাহিতে আন-আন শব্দ সভ কাহ্ফিযাক

नेन ताकन जा सकैए। आर्ब आरी ओहन शब्दपर जकर अंत "उं" होइक आ ठीक ओइसँ पहिने आकारान्त वर्ण होइक (जेना कि उपरमे एकर उच्चारण पद्धति देखा देल गेल अछि, तँए लोके काफिया पर चली)। ठीक ह्रस्व "उं" जकाँ नियम छैक एकरो। मानि लिअ जँ अहाँ "ठाँव" शब्द नेनहुँ, तँ मोन राखू दोसर काफियाक उच्चारण "आकारान्त कोनो वर्ण + उ + न" होइक जेना की "भाव" गवादि। संगहि-संग ह्रस्व "ग"ए जकाँ "चाउंर" केर काफिया "चाक" एवं "ठाँव" केर काफिया "आउंन" (owl) भए सकैत अछि। मैथिलीमे बहुत कान "उं" आ चन्द्रबिंदु एकै संग अबैत अछि। जेना "कहनहुँ" ,"स्वनहुँ", "बहनहुँ" आदि। मानि लिअ जँ ओ शब्द सभ जँ काफियाक रूपमे आबि रहल अछि तँ एहन समयमे धेआन राखू जे काफियामे ठीक रएह वर्ण "उं" आ चन्द्रबिंदुक संग आबए। से नै भेला पर काफिया गलत भऽ जाएत। उपरमे देल तीनू शब्दकेँ देखू । तीनू शब्दक अंत "ह" सँ अछि, ओहो "उं" आ चन्द्रबिंदुक संग। मने ओ तीनू काफिया नेन उपयुक्त अछि।

आघात वर्ना शब्दक काफिया-------

मैथिलीमे दू प्रकारक आघात अछि मात्रामेक आ वर्नाघात। खदा मात्रामेक आघात ओतेक महत्व नै रखैत अछि, तँए हम एतए खाली वर्नाघात पर विचार करब।

मैथिलीमे कोन शब्दमे कतए आघात पड़ैत तकरा देखल जाए-

१) दू वर्ण धरि वर्ना एहन शब्द जगमे एकोटा गुरु वर्ण नै होअए- एहन शब्दमे अंतसँ दोसर शब्द पर आघात

পড়ৈত ছৈক। জেনা "ঘব", "ৰব"। একব উঁচাবণ "ঘহব", "ৰহব" আদি যোগত অছি। মতনৰ্ঁ "ঘ" আ "ৰ" পব আঘাত পড়ন ছৈক। জঁ এক যা একসঁ বেঁসী দীর্ঘ হ্অএ তঁ পহিন দীর্ঘ পব আঘাত পড়ৈত ছৈক। জেনা "হাথ", "খত্তা" আদি। মতনৰ্ঁ "হা" আ "ত্তা" পব আঘাত ছৈক। "হাথী" "মাছী" । ঐ শৰ্ঙ্ক সভমে পহিন গ্বৰু "হা" এরং "মা" পব আঘাত ছৈক।

২) তীন বৰ্ণ ৰঁনা এহন শৰ্ঙ্ক জগমে তীনূ নঘ্ বৰ্ণ হো– এহন শৰ্ঙ্কমে অঁতসঁ দোসব বৰ্ণ পব আঘাত পড়ৈত ছৈক। জেনা "তখন", অগহন" । ঐমে "খ" আ "হ" পব আঘাত ছৈক। জঁ এক যা একসঁ বেঁসী দীর্ঘ হ্অএ তঁ পহিন দীর্ঘ পব আঘাত পড়ৈত ছৈক। জেনা "ওসাবা"মে "ও" পব আঘাত ছৈক। "ৰতাসা" মে "তা" পব আঘাত ছৈক।

৩) চাবি বৰ্ণ ৰঁনা শৰ্ঙ্কমে অঁতসঁ দোসব বৰ্ণ পব আঘাত পড়ৈত ছৈক। উঁদাহবণ নেন "ভিনসব" মে "স" পব আঘাত ছৈক, "অগহন" মে "হ" বৰ্ণ পব ছৈক। জঁ চাবি বৰ্ণ ৰঁনা ওহন শৰ্ঙ্ক জগমে দীর্ঘ সেহো ছৈক তকব আঘাত উঁপবমে দেন গেন আনে নিঅম জকাঁ অছি। জেনা "উঁচাবণ" মে চা পব আঘাত ছৈক।

ক্ষন মিনা কহ একসঁ চাবি বৰ্ণ ধবিক শৰ্ঙ্ক নেন একৈ বংগক নিঅম অছি।

৩) পাঁচ বৰ্ণ ৰঁনা শৰ্ঙ্কমে অঁতসঁ তেসব বৰ্ণ পব যোগত ছৈক চাহে ও নঘ্ হো কী দীর্ঘ। মনে পাঁচ বৰ্ণমে আঘাত সদিখন বীচ ৰঁনা বৰ্ণ পব পড়ৈত ছৈক। উঁদাহবণ নেন "দেখনহক" মে অঁতসঁ তেসব বৰ্ণ "ন" পব আঘাত ছৈক, তেনাহিতে "কমবসাবি" মে "ব" পব আঘাত ছৈক, "কনপাতব" মে "পা" পব আঘাত ছৈক।

४) छन्द आ छन्दसँ बैसी वर्ण बला शब्दमे दू ठाम आघात पड़ैत छैक। शब्दक अंतसँ दोसर वर्ण पर आ अंतसँ चारिम वर्ण पर चाहे ओ नघु हुअए की दीर्घ। ऐठाम ध्यान राखू जे शब्दक अंतसँ दोसर वर्ण पर पड़ऽ बला आघात बेसी कठोर मुदा चारिम स्थान पर पड़ऽ बला आघात मन्द होइत अछि।

* विभक्ति बला शब्दमे आघात निर्धारित करबाक लेल विभक्तिकेँ हटा कऽ गणना करू। जेना की "पातक" शब्दमे आघात गणना "त" वर्णसँ शुरू हएत ने कि अंतिम वर्ण "क" सँ। सभ विभक्ति जुड़ल शब्द लेल धएह ध्यान राखू।

आब करै आघात बला शब्दक काफिया देखी। एहन ठाम ई ध्यान राखू जे आघात बला स्थान आ वर्णक मात्रा समान रहए। उदाहरण लेल "घर" आ "मजूर" दुनूमे दोसर स्थान पर आघात छैक मुदा मात्रा अलग-अलग छैक, तँए ई दुनू एक-दोसराक काफिया नै बनि सकैए। तँ "घर" शब्दक काफिया लेल "बर", "तर", " हर", "भितसर" आदि उपयुक्त रहत । आ "मजूर" लेल "मयूर", "हजूर" आदि उपयुक्त रहत। आनो-आन आघात बला शब्दक काफिया लेल ईएह नियम बूझू। ऐठाम हम फेर ध्यान पाड़ ी जे काफियाक निर्धारण खाली मतलामे होइत छैक आ बाँकी शेरमे ओकर पालन। तँए जँ केओ मतलामे विभक्ति बला शब्दकेँ "फूलक" आ साथक" काफिया लेताह तँ सही हएत आ बाँदबाँकी शेरमे "अक" काफियाक प्रयोग हेतैक। मुदा जँ केओ गोटे मतलामे "फूलक" आ "अड़हूलक" लेलक आ तकरा बाँदक शेरमे "साथक" प्रयोग करत तँ ओ विन्कुल गलत हएत। "फूलक" आ "अड़हूलक"

बाँद आन शेब नेन काफिया "ृनक" मोएबाँक चाही। आबँ कने "बेफ" बँना काफिया पब बिचाब कबी। बेफ "ब" बर्णक एकटा रूप अछि जे "ब्" मने आधा "ब्" मानल जाइत अछि। मैथिलीमे बेफ आ ओकब पूर्ण रूप (ब बर्ण) दुनू चलैत अछि। जेना-
मर्द------- मबद
बँर्षा-----बँबखा
बँर्ष-----बँबख
चर्चा----चबचा
उँपबका चाबिटा शब्द देखलासँ ई बुझाइत अछि जे बेफक पूर्ण रूप आ बेफ बँना शब्दक उँचाबणमे कनेक अंतब भइ जाइत छै। संगे-संग किछुए शब्द अपन बेफकेँ छोडि़ पूर्ण ब केब स्वरूपमे अबैत अछि। तँए काफियाक संबँधमे हमब ई बिचाब अछि जे जँ शब्द बेफ युक्त हुअए ब्दा बिना मात्राक हुअए तँ समान स्वब आ उँचाबणक प्रयोग कबी। जेना मानि लिअ अहाँ मतलामे " सर्द " आ "पर्द" काफिया नेनहुँ आ तकबा बाँदक शेबमे " मबद" काफियाक प्रयोग हमबा हिसाबेँ गलत हएत काबण स्पष्ट रूपेँ "गर्द" आ "पर्द" शब्दक उँचाबण "मबद" शब्दसँ अलग अछि। तेनाहिते मतलामे "सर्द" आ "मबद" शब्दक काफिया गलत हएत। "मबद" शब्दक बाँद "बँड़द", "शबद", "दबद" आदि काफिया ठीक बहत। ब्दा जँ कोनो एहन शब्द जकब अन्तमे बेफ हुअए आ संगे-संग ओ शब्द मात्रा बँना हुअए तँ नियम बँदलि जेतै। मतलबँ जे शाइब तखन बिना कोनो दिक्कतक काफिया बँना सकैत छथि। कहबाँक मतलबँ जे जँ अहाँ मतलाक पहिल पाँतिमे काफिया "गर्दा" नेनहुँ आ तकबा बाँद आन काफिया बँर्षा या

ৰ্বখা নেনহ্ঁ তঁ রিনক্ষন সহী হএত। খার্ব খহাঁ সভ ৰ্ব্নি সকৈত ছিঐ জে কোনো মতনামে "ৰ্বখী" খা "কবচী" ৰ্বনি সকৈত খছি। স্বব সাম্য, সিনাদ দোষ খা ঙতা দোষ ৰ্বনা প্রসংগ সভ খানে কাহ্ফিযা জকাঁ খহ্রমে নাগূ হএত। তেনাহিতে ঙা মোন বাখূ জে জঁ বেহ্ফ শৰ্ঙ্কেঁ খঁত ছোড়া (শ্বহ্নমে রা রীচমে কতৌ) ছৈক তঁ সংস্কৃতক শৰ্ঙ্কমে তঁ বেহেফ বহত হ্নদা রিদেশেজ খাস কহ খবরী–হ্ফাবসী খা ঁউর্দূ ৰ্বনা শৰ্ঙ্কমে "ব" ভহ জাগত খছি। জেনা কি পর্বতকেঁ " পবরত" নৈ নিখন জা সকৈএ হ্নদা শৰ্বতকেঁ "শবৰ্বত" জহ্নব নীখি সকৈত ছী। ঐঠাম ঙা মোন বাখূ পর্বত খা শবৰ্বত দ্নূ এক দোসবাক কাহ্ফিযা ভহ সকৈএ।

কাহ্ফিযাক সংৰ্বধমে একটা গপ্প খাব– কাহ্ফিযামে রর্ণ "ব" কেব ঁউচাবণ "ড়" ক ৰ্ববাৰ্বব মানূ সংগহি–সংগ "স", "শ" খা "ষ" কেব ঁউচাবণ সেহো সমান মানূ। জগঠাম "ষ"ক ঁউচাবণ "খ" জকাঁ হএত ততএ পূর্ণ "খ" কাহ্ফিযাক হ্নপমে খারি সকৈত খছি। জঁ "ঠ" খক্ষব শৰ্ঙ্কক শ্বহ্নমে ছৈক তঁ ওকব ঁউচাবণ "ঠ" জকাঁ হোগত ছৈক হ্নদা তকবা ৰ্বাদ ওকব ঁউচাবণ "বহ্" জকাঁ ছৈক। খা হমবা রিচাবে কাহ্ফিযামে "ঠ", "ব" এরং "ড়" সমান খছি। ঁউদাহবণ নেন "ঠাঠ়"ক কাহ্ফিযা "রিচাব", "হ্বাড়" খাদি ভহ সকৈত খছি। কেখনো কান "ত্র" কেব নেখ হ্নপ "তব্" খা "ক্ষ" কেব নেখ হ্নপ "ছ" খরৈত খছি। শাগব ঁউপবকে নিখমক হিসাৰ্বে একব কাহ্ফিযা ৰ্বনাৰ্বথি।

খার্ব কনে শ্বহ্নখাত ৰ্বনা প্রশ্ন পব চনী। পহিন প্রশ্ন ছন জে জঁ কোনো মতনামে "ছোড়এ" খা "হ্ফোড়এ" কাহ্ফিযা হ্খএ তঁ ৰ্বাদ ৰ্বনা শেবমে কাহ্ফিযা কী হেতৈ।

उँत्तव स्पष्ठ अछि बाँद बाँकी शेबमे काफिया "ओड़ए" वा "ओबए" फेबाक चाही। नै तँ गजल गलत भऽ जाएत। संगहि-संग दोसब प्रश्न छल जे जँ "छोड़ए" आ "फोड़ए" क बाँद "जाए" बहिअए तँ सही हएत की गलत। एकबो उँत्तव स्पष्ठ अछि- जाए क उँचावण "ओड़ए" वा "ओबए" सँ नै मिलैत अछि तँए "जाए" काफिया "छोड़ए" आ "फोड़ए" क बाँद गलत हएत। आबँ कने एक बँेब काफियामे ईता दोष देखल जाए---
ईता दोष काफियामे बँहुत बँड़का दोष मानल जाइत छै। ऐपब कने विचाब कऽ ली। एकबा चावि भागमे देखू----
१) ईता दोष मात्र मतलामे होइत छै।
२) जँ मतलाक दुनू काफिया मात्रा युक्त बहिअए वा प्रत्ययसँ बँलल हो वा सन्धिसँ बँलल शब्द तँ दुनू काफियाक मात्रा हटा दिऔ, वा प्रत्यय हटा दिऔ वा सन्धि विच्छेद कऽ दिऔ। आबँ ई देखू जे मात्रा, प्रत्यय वा विच्छेदक बाँद जे पहिल शब्द बँचल शब्द छै से सार्थक छै की निवर्थक। जँ दुनूमेसँ एकोटा निवर्थक अछि तँ चिन्ता कवबाँक गप्प नै कावण एहल स्थितिमे ईता दोष नै बहत।
३) जँ दुनू शब्द (मात्रा, प्रत्यय हटेलाक बाँद वा विच्छेदक बाँद) सार्थक छै आ ओग बँचल पहिल सार्थक शब्दक आपसमे काफिया बँनि बहल छै तखन मात्रा वा प्रत्यय वा सन्धिबँना शब्द सेहो काफिया बँनत आ ऐमे ईता दोष नै हएत।
४) मुदा जँ दुनू शबँद (मात्रा, प्रत्यय हटेलाक बाँद वा विच्छेदक बाँद) सार्थक छै आ ओग बँचल पहिल सार्थक

शब्दक आपसमे काफिया नै बनि सकल छै तखन मात्रा वा प्रत्यय वा सन्धि बना शब्द सेहो काफिया नै बनत आ ऐमे ईता दोष हएत।
आब कने उदाहरणसँ देखी ऐ प्रकरणक- मानू जे मतलामे "रिसाबी" आ "आदमी" काफिया छै। तँ आब जँ दुनूक मात्रा हटेबै तँ क्रमशः " रिसाब " आ " आदम " शब्द बचै छै जे की सार्थक छै। ध्यान "रिसाब" आ " आदम" एक दोसराक काफिया नै बनि सकैए। तँए मतलामे "रिसाबी" एवं " आदमी" काफिया नै बनत। उर्दूमे जँ केओ एहन काफिया बनबै छथि तँ ओकरा ईता दोषसँ ग्रस्त मानल जाइत छै। एकटा दोसर उदाहरण लिअ-- दोस्ती आ दुश्मनी मतलामे काफिया नै बनि सकैए। कारण ऐठाम मात्रा हटेलाक बाद दोस्त आ दुश्मन शब्द बचै छै जे की दुनू सार्थक छै आ दुनू एक दोसराक काफिया नै बनै छै तँए दोस्ती आ दुश्मनी मतलामे काफिया नै बनि सकैए।
मैथिलीमे प्रत्यय बना शब्द संग सेहो एना कएल जा सकैत अछि। प्रत्यय बना शब्दक किछु उदाहरण देखू- धान शब्दमे गर प्रत्यय लगेलासँ नव शब्द बनै छै "धनगर"। तेनाहितें मोन शब्दमे गर प्रत्यय लगेलासँ "मनगर" शब्द बनै छै (किछु गोटें मोनगर सेहो लिखै छथि)। एनाहितें आन प्रत्ययसँ बहुत रास नव शब्द बनै छै।
आब कने ऐ नव शब्दक काफियापर आउ- जँ धनगर शब्दक काफिया मनगर बनेबै तँ ईता दोष नै हएतै। कारण जँ ऐ दुनू नव शब्दमे सँ गर प्रत्यय हटेबै तँ क्रमशः धन आ मन बचै छै आ दुनूमे काफिया सेहो बनि सकल छै (ऐठाम ई मोन राखू जे प्रत्यय हटेलाक

ৱাঁদ ধন শৈব্দ মিনাএন জেতৈ নে কী ধান, তেনাহিতে মন মিনাএন জেতৈ নে কী মোন)।
ঋার্ঁ জঁ মতনামে ধনগব সংগে দ্ধগব ঋারেঁ তঁ দেখূ কী হেতৈ। প্রত্যয হটৈনাক ৱাঁদ ক্রমশঃ ধন ঋা দ্ধ ৱঁচৈ ছৈ ম্দা দ্নূ এক–দোসবাক কাফিযা নৈ ৱঁনি বহন ছৈ তঁএ ধনগব ঋা দ্ধগব এক–দোসবাক কাফিযা নৈ ৱঁনি বহন ঋছি।
ঋান–ঋান প্রত্যয রা সদ্ধি রা মাত্রা নেন এহনে সন ৱ্ঁসন জাএ।
ঋার্ঁ জঁ রিঁমাবী সংগ উঁধাবী ঋারেঁ তঁ দেখূ কী হেতৈ। রিঁমাব এরং উঁধাব দ্নূ শৈব্দ (মাত্রা, প্রত্যয হটৈনোক ৱাঁদ রা রিচ্ছেদক ৱাঁদ) সার্থক ছৈ ঋা সংগে সংগ দ্নূ এক দোসবক কাফিযা ৱঁনি বহন ছৈ তঁএ রিঁমাবী ঋা উঁধাবী সেহো এক দোসবক কাফিযা ৱঁনত ঋা ঐমে ঙতা দোষ নৈ বহতৈ।
ঋার্ঁ জঁ রিঁমাবী সংগ জিনগী নেরেঁ তঁ দেখূ কী হেতৈ। রিঁমাব এরং জিনগ (মাত্রা, প্রত্যয হটৈনোক ৱাঁদ রা রিচ্ছেদক ৱাঁদ) রিঁমাব শৈব্দ সার্থক ছৈ ম্দা জিনগ শৈব্দ নিবর্থক তঁএ রিঁমাবী ঋা জিনগী সেহো এক দোসবক কাফিযা ৱঁনি সকৈএ। কিছু শৈব্দ এহন হোগত ছৈ জকবা পব মাত্রা বহৈত ছৈ তখন ঋনগ মতনর্ঁ হোগত ছৈ ঋা মাত্রা হটৈনাক ৱাঁদ দোসবে মতনর্ঁ ৱঁনি জাগত ছৈ জেনা "কাবী" তঁ একব মতনর্ঁ ভেনৈ বংগ কাবী। ম্দা জঁ একব মাত্রা হটৌ দেরেঁ তঁ ৱঁচতৈ "কাব" জে কী গাড়ীক সংদর্ভমে সার্থক শৈব্দ তঁ ছৈ ম্দা মতনর্ঁ দোসব ছৈ। তঁএ ঋহ্ঁ কাফিযামে ঙতা দোষ নৈ বহত। ঋান শৈব্দ এনাহিতে তাকন জা সকৈএ। ঋার্ঁ কেও কহি সকৈ ছথি জে রিঁমাব ঋা রিঁমাবী শৈব্দ ঋনগ–ঋনগ ছৈ ম্দা হমব

कहबँ जे विमाब आ विमाबी दुनूक अर्थ एकदोसबामे निहित छै ह्मदा कावी आ काब शेर्छमे से नै छै।

अस्तु ओ भेल ओता दोष प्रकावण।

<u>**काफिया आ रँहब**</u>

तँ आबँ आबी कनै काफियाक दोसब प्रसंगपब---------

मैथिली आ ऊर्दू वर्णमालामे अंतब

जखन मैथिली गजलमे निअम सभ लागू होमए लागल

तखन ब्रॅह्त लोक सभकें कष्ठ शुरू भेलन्हि। जिनका सभकें कष्ठ एखनो छन्हि ओहिमे दू तरहँक आदमी छथि। पहिल तरहँक तँ ओ भेलाह जे पहिनेसँ गजल लिखै छथि मुदा बिना कोनो नियमक आ नियम लागू भेलासँ हुनक सभ रचनापर प्रश्न चिन्ह लागि गेल तँए ओ सभ नियमक विरोध करए लगलाह। दोसर तरहँक आदमी ओ छथि जे गजल तँ नै लिखै छथि मुदा गजल विधाक विकास नै सोहेलेन्हि तँए ओहो विरोध करए लगलाह। तँ हमरा लग एकटा एहन आदमी छथि जे अपने गजल तँ नै लिखै छथि मुदा नियमक विरोध करै छथि। पेशासँ ओ राज्य सरकारक उँचस्थ पदाधिकारी छथि। एक दिन ओ कतहुँसँ उर्दूक एकटा नीक शाएर केर गजल पोथी किननन्हि जे की देवनागरीमे लिप्यंतरण भेल रहै। आब भाग मैथिली आ उर्दू तँ अलग भाषा छै से ओ पदाधिकारी नै बूझि सकलाह आ हमरासँ प्रश्न पूछि देलाह जे ई महान उर्दू शाएर फल्लाँ केर पोथी थिक आ ऐमे " त " अक्षर केर काफिया " थ " अक्षर छै मुदा अहाँ मैथिलीमे तँ " त" आ "थ" केर अलग नियम बॅना देने छिऐ। जे नियम उर्दूमे नै चलनै से मैथिलीमे कोना चलत आदि-आदि। हम तँ स्तब्ध रहि गेलहुँ। ब्रॅह्त विस्मृति कए हम हुनकासँ पुछलिअन्हि जे श्रीमान् अपने पठ ि कए पास केने छिऐ की पाग दए क'। आब तँ ओहि सरकारी पदाधिकारीकें तामस जे चढ़लन्हि से की कहू---|

ई एकटा खिस्सा अछि मुदा एहन घटना अहाँ संग सेहो भए सकैत अछि। मानि लिअ जे अहूँ कोनो उर्दू गजलक देवनागरी लिप्यंतरण भेल पोथी किनलहुँ आ

पढ़नापर देखनहुँ जे " भ " केर काफिया " रॅ" भेल छै तँ अहूँ भ्रममे पड़ि जाएब। मुदा ऐठाम मोन राखू जे उर्दू आ मैथिली भाषा अलग छै आ ओकर लिपि सेहो अलग-अलग छै तँए काफियाक नियम दूनू भाषामे थोड़ेक अलग रहतै। इहो मोन राखू जे उर्दू केर जन्म भारतमे भेलै मुदा नालन-पालन अरबी-फारसी रॅना सभ केलकै। फलस्वरूप उर्दू भाषामे भारतीय भाषाक संगे-संग अरबी-फारसीक नियम चलैत अछि। आ तँए हम अतए देवनागरी (संगे संग मिथिलाक्षर सेहो) आ उर्दू लिपिमे अंतर दए रहल छी जाहिसँ अहाँ सभ ओहि पदाधिकारी जकाँ भ्रमित नै हएब। ----

देवनागरी (संगे-संग मिथिलाक्षरमे सेहो) कुल 16टा स्वर आ 36टा व्यंजन अछि मतलब जे हरेक ध्वनि लेल अलग-अलग अक्षर बॅनाएल गेल छै मुदा उर्दूमे किछुए अक्षर छै आ तकरामे व्वओ लगा वा " ह" ध्वनिक प्रयोग कए नव शब्द रॅनाएल जाइत छै। व्वओ लगा वा " ह ' मिला कए जे नव शब्द रॅनैत छै तकरा उच्चारणक हिसाबॅसँ चारि भागमे बाँटि सकैत छी-----------
----

a) जे लिखलो जाइत छै आ तकरा उच्चारणो कएल जाइत छै (हर्फे मळूबॉ मलफूजा)-------ई सरल बॉत छै आशा अछि जे एकरा बूझि गेल हेबेँ।

b) जे लिखल तँ जाइ छै मुदा ओकर उच्चारण नै कएल जाइत छै (हर्फे मळूबॉ गैर मलफूजा)---
---उर्दूमे बॅह्त रास एहन शब्द छै जाहिमे किछु अक्षर लिखल तँ जाइ छै मुदा ओकर उच्चारण नै होइत छै आ मात्रा गनबॉ काल सेहो ओकरा नै गनल

जाগত ছৈ জেনা---- "ত্তম খপনী" ঐকেঁ খারশ্থকতা পড়ৃনাপব "ত্তমপনী" সেহো উঁচাবিত কএন জাগত ছৈ। খাবঁ দেখূ জে "ত্তম খপনী"মে খ নিখন ছৈ হ্মদা ওকব উঁচাবণ নৈ ভএ বহন ছৈ (খারশ্থকতা পড়ৃনাপব) । শৰ্ষ্ঠকেঁ ঐ তবীকাসঁ মিনেনাগকেঁ " খনিফ রস্ন'ক নিখম কহন জাগত ছৈ।
জে নিখন তঁ নৈ জাগ ছৈ হ্মদা ওকব উঁচাবণ নৈ কএন জাগত ছৈ (হর্ফে মনহ্ফূজ গৈব মক্তূবাঁ)----জেনা পঠ়ন তঁ রিঙ্কন জাগ ছৈ হ্মদা নিখন রাঁনেহ্ন জাগ ছৈ। খা চূঁকি উঁচাবণমে খারি বহন ছৈ তঁএ মাত্রা সেহো গনন জাগত ছৈ। এহন-এহন খাব উঁদাহবণ সভ খছি।
এহন খক্ষব জকব খংতমে " হ" কেব উঁচাবণ হোগক (হাএ মখতূনী)-------------নগভগ হ্নন চৌদহটা খক্ষব উঁর্দূ বর্ণমানামে সংস্কৃত বর্ণমানাসঁ নেন গেন ছৈ। ওা খক্ষব সভ খছি------------খ, ঘ, ঙ, ছ, ঝ,ঠ,ঢ,থ, ধ,ফ,ভ, ন্হ,ম্হ খা ন্হ।
উঁর্দূমে ঐ শৰ্ষ্ঠ সভকেঁ এনা নিখন জাগত ছৈ------
ক সংগ হ জোড়ৃনাপব খ
গ সংগ হ জোড়ৃনাপব ঘ
চ সংগ হ জোড়ৃনাপব ছ
জ সংগ হ জোড়ৃনাপব ঝ
ট সংগ হ জোড়ৃনাপব ঠ
ড সংগ হ জোড়ৃনাপব ঢ়
ত সংগ হ জোড়ৃনাপব থ
দ সংগ হ জোড়ৃনাপব ধ
প সংগ হ জোড়ৃনাপব ফ
বঁ সংগ হ জোড়ৃনাপব ভ

ঙ, ন্হ, ম্হ আ ল্হ স্বতংত্র রূপেঁ লিখল জাগত ছৈ। আর অহাঁ সভ দেখি সকৈ ছী জে দেৱনাগৱীমে তঁ খ,ঘ গত্যাদি লেল স্বতংত্র অক্ষৱ আ তকৱ ধ্বনি ছৈ মুদা উর্দূমে একৱা লেল " হ' মিলাৱএ পড়ৈত ছৈ সংগে সংগ ঙ আদিক উচ্চাৱণমে তঁ " হ " ছৈকে। আৱ জঁ কোনো উর্দূ শাগৱ " হ " ফেংটাএল অক্ষৱক কাফিয়া ৱনবৈ ছথি তঁ ও উর্দূক উচ্চাৱণ পৱংপৱাক অনুসাৱ " হ " কেৱ উচ্চাৱণ নৈ কৱৈ ছথি। তঁএ উর্দূমে " ৱাত " শব্দক কাফিয়া " সাথ " ৱনি সকৈ ছৈ। কাৱণ " সাথ "মে জে "থ" ছৈ তকৱ "হ" নিকালি দেল জাগত ছৈ। আন-আন " হ " মিশ্রিত শব্দক কাফিয়া লেল এনাহিতে বুঝূ। এঠাঁ গপো মোন ৱাখূ জে মাত্রা সেহো উচ্চাৱণক হিসাবসঁ গানল জাগত ছৈ উর্দূমে তঁএ জঁ কোনো দেৱনাগৱী লিপ্যংতৱণ ৱনা পোথী কেৱ আধাৱ পৱ মাত্রা নিকালি বহল ছী তঁ গড়বড় ভএ সকৈএ। মূল উর্দূ লিপি সীখূ আ তকৱ উচ্চাৱণ সেহো তখনে অহাঁ উর্দূ গজলক সহী মাত্রা পকড়ি সকৈ ছী।

2) ৱর্তমান সভ ভাৱতীয ভাষা লিপি ৱাঁমসঁ দহিন লিখল জাগত অছি মুদা উর্দূ দহিনাসঁ ৱাম। তেনাহিতে দেৱনাগৱীমে শব্দ ৱচনা কাল অক্ষৱক স্বরূপ নৈ ৱদলৈ ছৈ মুদা উর্দূমে ৱদলি জাগত ছৈ। একেঁ অতিৱিক্ত আন-আন অংতৱ ছৈ জে ব্যৱহাৱিক স্তৱপৱ বুঝল জা সকৈএ।

আৱ হমৱা পূৱা ৱিশ্বাস অছি জে অহাঁ সভ ওহি পদাধিকাৱী জকাঁ ভ্রমিত নৈ হএৱ। এক ৱেৱ ফেৱ মোন

बाधू जे देवनागरीक अलग-अलग ध्वनि लेल अलग-अलग अक्षर छै (गाम घरक उच्चारणमे स, श आदि एसमान उच्चारण होइत छै जकर निवरण आगू देल जाएत) मुदा उर्दूमे नै तँए देवनागरी (मिथिलाक्षर)मे " त " केर काफिया " थ " नै बनि सकैए वा " प " केर काफिया " फ " नै बनि सकैए।

ऐ निवरणक बाद आबी बहरपर----

बहर ----

गजल सहित कोनो ने कोनो बहरमे होइत छैक। बिना बहरक गजलक कल्पना असंभव। जेना छन्दक आधार लय होइत छैक तेनाहिते बहरक आधार अरूज वा अरूद होइत छैक। अरूज वा अरूद मने शेर मे निहित मात्रा-क्रम होइत छैक। अरूज वा अरूदके वज्न सेहो कहल जाइत छैक। बहरक चर्च आगाँ बढ़एबाँसँ पहिने एकटा गप्प आर। एहिठाम हम उर्दू बहर केर वर्णन कए रहल छी। आ मैथिली गजलमे ऐ बहर सभक प्रयोग मैथिली गजलक 100सालक इतिहासमे कहिओ नहि भेल | मैथिलीमे बहर नै छल मतलबँ कृत्रिम रूपेँ बहर नै छल। योगानंद हीरा जी बहुत पहिलेसँ अरबी बहरमे मैथिली गजल लिखैत छलाह, मुदा मैथिलीक बहर-अज्ञानी संपादक सभ हुनका कात कए देलक जाहिकेँ फलस्वरूप मैथिली गजलमे बहरक चर्चा नै भए सकल। मुदा हालहिमे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा बहरे-मुतकारिबमे सफलतापूर्वक गजल लिखल गेल। तँए आबँ एकर चर्चा आवश्यक। ओना मैथिलीमे वार्णिक बहरक खोज सेहो गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भेल अछि जकर अनुकरण प्रायः

হবেক নর গজনকাব কএ বহন ছথি। এহি নেখমে জতেক উঁদাহবণ দেন গেন খছি সে রার্ণিক রঁহব পব খাধাবিত খছি। ওনা এহি রঁহবক চর্চা হম রাঁদমে সেহো কবরঁ। তঁ পহিনে উঁর্দূক রঁহব দেখী।

খর্ ূজ রা খর্ ূদক খরিষ্কাব হিজবীক দোসব সদীমে খনীনে গর্রঁনে খহমদ রঁসবী কেনে ছনাহ। হ্নকা গ রিচাব মক্কাক ঠঠেবা রঁজাবমে রঁর্তন রঁনেরাঁক খরাজ সূনি খএনন্হি। প্রাচীন কানমে মক্কাকে খর্ ূজ রা খর্ ূদ সেহো কহন জাগত ছনৈক তঁএ রঁসবী ওহি মাত্রা ক্রমকে খর্ ূজ রা খর্ ূদক নাম দেনথি। খবরী সাহিত্যমে 16 রঁহবক প্রযোগ ভেন। রাঁদমে গবানমে তীন টা রঁহবক খরিষ্কাব ভেন। খারঁ হম এহিঠাম রঁহবক সংক্ষিপ্ত পবিচয দএ বহন ছী।

খবরী সাহিত্যমে রঁহব তীন খংডমে রাঁটৈন গেন খছি 1) সানিম মনে মূন রঁহব, 2) ম্ববক্করঁ মনে মিশ্রিত রঁহব খা 3) ম্দাগহফ মনে পবিরর্তিত রঁহব। এহি তীনূমেসঁ ম্দাগহফ রঁহবকে চর্চা হম রাঁদমে কবরঁ|
খবরীমে সানিম মনে মূন রঁহব মে সাত টা রঁহব খরৈত খছি। খা ম্ববক্করঁমে রাঁবহ টা। রাঁদমে এহী রাঁবহকে উঁনটৈ-ফেব কবৈত খাঠ টা খাব রঁহব রঁনাএন গেন। ফন মিনা কএ ম্ববক্করঁ রঁহব রীস টা ভেন। হম খপনা স্বরিধা নেন ম্ববক্করঁ রঁহবকেঁ দূ খংডমে রাঁটি দেনে ছী। সংগহি-সংগ সানিম রঁহবকে হম "সমান রঁহব" নাম দেনে ছিএঁক। খা ম্ববক্করঁ রঁহবক পহিন খংড (জাহিমে ফন সাত টা রঁহব খছি) তকবা খর্ধসমান রঁহব নাম দেনিএঁক খা ম্ববক্করঁ রঁহবক দোসব খংড জাহিমে তেবহ টা রঁহব

अछि तकर नाम "असमान रुँहव" देनिऐ। तँ आरँ एकर विवरण निचा देखू। ।
रुँहवसँ पहिने रूक्ककेँ बूँझी।
संस्कृतक गण जकाँ अवरी मे सेहो होगत छैक जकरा "रूक्क" कहल जाएत छैक। ग रूक्क आठ प्रकारके होगत अछि। जकर विवरण एना अछि--------

रूक्कक स्वरूप
मात्रा

रूक्कक नाम
मात्रा क्रम

खमासी रूक्क

5

फउँन्नन (फ/उँ/न्नन)
I S S (I /S /S)
खमासी रूक्क
5

फागन्नन (फा/ग/न्नन)
S I S (S /I /S)
स्वरॉग रूक्क

7
ফাগনাত্তন (ফা/গ/না/ত্তন)
S I S S (S /I /S /S)
স্বরাঁগ কন্ক

7

মফাগন্বন (ম/ফা/গ/ন্বন)

I S S S (I /S /S /S)

স্বরাঁগ কন্ক

7

ম্ন স্তফগন্বন (ম্ন স্/তফ/গ/ন্বন

S S I S (S /S /I /S)
স্বরাঁগ কন্ক
7

ম্নফাগনত্তন (ম্ন/ফা/গ/ন/ত্তন)

I S I I S (I /S /I /I /S)
স্বরাঁগ কন্ক
7
ম্নতফাগন্বন (ম্ন/ত/ফা/গ/ন্বন

I I S I S (I /I /S /I /S)
स्वराँग रुक्न
7

मफ़ऊनात्त (मफ़/ऊ/ना/त्त

S S S I (S /S /S /I)

****** एहिठाम I मने 1 मने ह्स्व आ S मने 2 मने दीर्घ भेल संगे-संग खमासी मने पाँच मात्राक आ स्वराँग मने सात मात्राक रुक्न भेल | एहि रुक्न सभकेँ गजाद बखराँक नेन गणितीय रूपसँ एना बुझू---------

a) एकटा लघुकेँ बाद जँ दूटा दीर्घ हो तँ ओकरा "फ़ऊलुन" कहल जाइत छैक।

b) एकटा लघुकेँ बाद जँ तीनटा दीर्घ हो तँ ओकरा "मफ़ाइलुन" कहल जाइत छैक।
c) जँ "मफ़ाइलुन" केँ उनटा करबै तँ "मफ़ऊलात" बनि जाएत मने तीनटा दीर्घकेँ बाद एकटा लघु।

d) दूटा दीर्घकेँ बीचमे जँ एकटा लघु बहए तखन ओकरा "फ़ाइलुन" कहल जाइत छैक।
e) "फ़ाइलुन" केर अंतमे जँ एकटा आर दीर्घ जोडबै तँ ओ "फ़ाइलात्तुन" बनि जाएत।

f) "फाइलातुन" केर उनटा रूप "मुस्तफइलुन" होइत छैक ।
g) शुरूमे एकटा लघु तकरा बाद एकटा दीर्घ तकरा बाद फेर दूटा लघु आ तकरा अंतमे एकटा दीर्घ हो तँ "मुफाइलतुन" कहल जाइत छैक

h) "मुफाइलुन" केर अंतसँ तेसर या दोसर लघु हटा कए पढ़ल लघु लग बैसा देबै तँ "मुतफाइलुन" बनि जाएत। मने शुरूमे दूटा लघु तकरा बाद एकटा दीर्घ तकरा बाद फेर एकटा लघु आ तकरा बाद अंतमे एकटा दीर्घ।
1) समान ध्वनि----------एहि खंडमे हम सात गोटे बहर बाखल जाइत अछि। जकर विवरण एना अछि--------
क) बहरे-हज़ज----------- एकर मूल ध्वनि अछि "मफाइलुन" मतलब I -S -S -S (1-2-2-2) मने ह्रस्व -दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ| ई ध्वनि शाइर अपना सुविधानुसार प्रयोग कए सकैत छथि। मतलब कोनो शाइर एक पाँतिमे एक बेर, वा दू बेर वा ...... कतेको बेर (बेसीसँ बेसी सोलह बेर) प्रयोग कए सकैत छथि, मुदा मात्रा-क्रम नहि टूटबाक चाही। आ जँ एहि ध्वनि के शेर के रूप मे देबै तँ एना हेतैक------
I -S -S -S
I -S -S -S
I -S -S -S + I -S -S -S

I -S -S -S + I -S -S -S

I –S –S –S + I –S –S –S + I –S –S –S

I –S –S –S + I –S –S –S + I –S –S –S
I –S –S –S + I –S –S –S + I –S –S –S + I –S –S –S
I –S –S –S + I –S –S –S + I –S –S –S + I –S –S –S.......................................
তঁ গ ভেন ৰহবে–হজ়জ কেব ঢ় া ঁচা। এহিঠাম ফেব এক ৰেব গৌবসঁ দেখূ। উঁপবকা ঢ় া ঁচা সভমে দূনূ পাঁতিমে মাত্রা ক্রম একৈ ছৈক। অর্থাত ত্রস্ব কে নিচা ত্রস্র আ দীর্ঘ। আ মোন বাখূ জঁ অহাঁ ৰহবে–হজ়জমে গজন নীখি বহন ছী তঁ হবেক শেবক মাত্রা ক্রম গএহ দেৰএ পড়়ত। নহি তঁ গজন বে–ৰহব কহাওত। শ্রী গজেন্দ্র ঠাকুব দ্বাবা নিখিত ৰহবে হজজ কেব একটা উঁদাহবণ দেখূ----------------------

মহামানা মহাডানা করৈ স্বামা নগৈএ গ্র
অকাসী আস ছৈ সোঝাঁ ঝঝা দেতৈ নগৈএ গ্র

কহৈএ গ্র মিনেরৈঁ আগ নোবোমে কনে গোনা
জঁ ভাঁগে পীরি এতৈ, ভারনা পীতৈ নগৈএ গ্র

জহাঁ তাকী নগৈএ প্রেম রাঁনৌ ছৈ সবৈনামে

খনে ভোকাবি পাড়ৈএ হঁসৈ নৌ ছৈ নগৈএ গ্র

টিপৌড় ়ী ছৈ ব্র্ন্মেরেঁ রাঁত কী, ধামী কনী দেখূ
কষ্টৈযা পানি জেনা ও, নচৈ নৈ ছৈ নগৈএ ঙা

গজেন্দ্র পূরঁ স্বকজক বহত দেতৈ সূর্যকেঁ ঝাঁখী

চঠ়ত খাকাস দেখৈ রাঁনসর্ব্বৈ নগৈএ ঙা

খমিত মিশ্রে দ্বাবা নিখন রঁহবে হজ়জ কেব উঁদাহবণ
দেখূ-----------

উঁড়ন সরঁষ্টা চিড়ৈযাঁ গাছপব ফ্র্বসঁ
জঁ রৈঁসন চাবপব চাবো খসন চ্র্বসঁ

হমব গাড় ়ী নতামক ডাঠ় ়ি খা সনঠী
চনৈ ছৈ তেজ খপনে ঝাঁহ কবৈ হ্র্বসঁ

গিনাসক দূধ মিসিযো নীক নৈ নাগৈ
ভবন তৌনা দহী খাঁড়্ব নগা স্বর্বসঁ
খপন রাঁছী খপন গৈযা ত তা থৈযা
খপন ঝরঁবা কবৈ খপনপব নৈ গ্বর্বসঁ

ফট্টক্কা ফূট্টনৈ ব্ব্রাম ব্ব্রঁম ব্ব্রূঁমসঁ
জড়ে ছৈ ছূবছূবী ছূর্ব ছূ ছর্বসঁ
মফাওন্নন
1222 তীন রেঁব
রঁহবে হজজ
খ) রঁহবে–বমন-------- একব মূন ধ্বনি এনা খছি–-- ফাগনাত্তন মনে ------ S–I –S–S,খর্থাত দীর্ঘ–দ্রস্ব–দীর্ঘ–দীর্ঘ। খারঁ জঁ এহি ধ্বনি কে শৈব মে প্রযোগ কবরৈঁ তঁ এনা হেতৈক---
S–I –S–S + S–I –S–S + S–I –S–S + S–I –S–S
S–I –S–S + S–I –S–S + S–I –S–S + S–I –S–S
(এহিঠাম হম খানী চাবি–চাবি ধ্বনিকে উঁদাহবণ দেনহুঁ খছি, হ্মদা শাগব একসঁ নএ কএ কতেকো রেঁব (রেঁসীসঁ রেঁসী সোনহ রেঁব) ধ্বনিকে প্রযোগ কএ সকৈত ছথি।)
গ ভেন রঁহবে–বমন। খমিত মিশ্র দ্বাবা নিখন রঁহবে বমন কেব উঁদাহবণ দেখূ-----------
ঘোঘ হ্নকব উঁতবি গেনৈ
পরন সংগে সসবি গেনৈ
খাঁখি বহি গেনৈ খ্জন যৌ
রূপ যৌরন নিখবি গেনৈ

ঠৈহ মে ছন মোন রঁগ্বনা
বাশি স্বন্নব উঁচবি গেনৈ
চউঁবচন মে চান পূজরঁ

পারগন সরঁ রিঁসবি গেনৈ

জেঠ মে মধ্মাস এনৈ
গাছ নর দিন মজবি গেনৈ
মধ্প কেনক খাক্রমণ ৰঁড
কাম মে সৰঁ নচবি গেনৈ
খংশ্ব খাশিক ঝাঁপি নেননি
ফফব পব জে নজবি গেনৈ
পাপ ভেনৈ ,ঘোঘ সসবন

খমিতকে মন হহবি গেনৈ

ফাগনাত্তন (I -U-U-U)

ৰঁহবে-বমন

গ) ৰঁহবে-কামিন----- একব মূন ধ্বনি খছি "ঋতফাগন্বন" মনে I -I -S -I -S মনে দ্রস্ব-দ্রস্ব-দীর্ঘ-দ্রস্ব-দীর্ঘ। শৈবমে একব ঠ্ া ঁচা এনা ছৈক------

I -I -S -I -S + I -I -S -I -S + I -I -S -I -S
+ I -I -S -I -S + I -I -S -I -S
I -I -S -I -S + I -I -S -I -S + I -I -S -I -S
+ I -I -S -I -S + I -I -S -I -S

(এহিঠাম হম খানী চাবি-চাবি ধ্বনিকে উঁদাহবণ দেনহুঁ খছি, ঋদা শাগব একসঁ নএ কএ কতেকো ৰৈব (ৰৈসীসঁ ৰৈসী সোনহ ৰৈব) ধ্বনিকে প্রযোগ কএ সকৈত ছথি।) গ ভেন ৰঁহবে-কামিন| খমিত মিশ্র দ্বাবা নিখন ৰঁহবে কামিন কেব উঁদাহবণ দেখূ-----------

কিছু ৰাঁত এহন ভেন ছৈ
ঘব ঘব ত' বারণ ভেন ছৈ
ৰঁম ফোড়ি ছাউঁব দেশী ছৈ
জড়ি দেহ জাড়ন ভেন ছৈ

প্রিয নৈ রিবহ জনমৈ ৰহ্ত
সজি দর্দ গাযন ভেন ছৈ
জিনগী ভ' গেন মহগ কতে
ঝড়কৈত সারন ভেন ছৈ
দস ৰাঁত সূনৰ কী "খমিত"
সৰ ঠাম গংজন ভেন ছৈ
হ্মতফাগন্বন
11212 দূ ৰেঁব
ৰহবে –কামিন

ঘ) ৰহবে–হ্মতকাবিৰ--------- একব মূন ধ্বনি ফউঁন্বন খছি মনে I –S –S মনে দ্রস্ব–দীর্ঘ–দীর্ঘ। একব ঠ়াঁচা দেখূ-------
I –S –S + I –S –S + I –S –S + I –S –S + I –S –S
I –S –S + I –S –S + I –S –S + I –S –S + I –S –S
(এহিঠাম হম খানী চাবি–চাবি ধ্বনিকে উঁদাহবণ দেনহুঁ খছি, হ্মদা শাগব একসঁ নএ কএ কতেকো ৰেঁব (ৰেঁসীসঁ ৰেঁসী সোনহ ৰেঁব) ধ্বনিকে প্রযোগ কএ সকৈত ছথি।)

গ ভেন ৰ্হৰে-হ্মতকাবিৰ্। ৠমিত মিশ্র দ্বাবা নিখন ৰ্হৰে হ্মতকাবিৰ্ কেব ওঁদাহবণ দেখূ-----------
জখন বাতি ৠএন কাবী পিযা যৌ ৠহাঁ মোন পড়নৌ
জখন হোগ ঘব মোব খানী পিযা যৌ ৠহাঁ মোন পড়নৌ

ৠহাঁ দূব ৰৈসন সতাৰৈত ছী সাঁঝ-ভোবে সদিখনে

সনেসোঁ জঁ ৠএন দেবী পিযা যৌ ৠহাঁ মোন পড়নৌ

ৰ্বসনৈ প্রথম বূঁদ রর্ষা মিনন যাদি ৠৰৈ তখন যৌ
রিবহ কেব তানন দ্নানী পিযা যৌ ৠহাঁ মোন পড়নৌঁ
পিযা জী জখন ৰ্হন পরনা মধ্‌ব গীত গাৰৈত কোযন
জখন কাঁটৈ মে হসন সাড় ী পিযা যৌ ৠহাঁ মোন পড়নৌঁ
জঁ দেখৰ্ কতৌ ছিপকনী ডব সঁ ৰোনী হ্টৈ নৈ হমব যৌ
জঁ ধড়কৈ হমব সূন ছাতী পিযা যৌ ৠহাঁ মোন পড়নৌঁ
কনে ৠরি নেহক জড়ন ভাগ হেবো সঁ চমকা দিঔ যৌ
ৠমিত ৠশী দেখৈত বানী পিযা যৌ ৠহাঁ মোন পড়নৌ
ৰ্হৰে -হ্মতকাবিৰ্

{হ্রস্ব-দীর্ঘ-দীর্ঘ 6ৰৈব সৰ্ পাঁতিমে }

ৰ্হবে ম্নতকাবিৰ্ ৰ্হ্ত নোকপ্রিয খা সংগীতময ৰ্হব ছৈ। খাদি শংকবাচার্য খা গোস্বামী ত্তনসী দাস সেহো ঐ ৰ্হবক প্রযোগ কেনে ছথি। পহিনে খাদি শংকবাচার্যক ঞা নিরৰ্ণ ষট্কম দেখূ------------

মনো ৰ্দ্ধ্যহংকাবচিত্তানি নাহম্ ন চ শ্রোত্র জিহ্বে ন চ ঘ্রাণ নেত্রে

ন চ ব্যাম ভূমিব্ ন তেজো ন রাঘ: চিদানন্দ ৰূপ: শিরো২হম্ শিরো২হম্

ন চ প্রাণ সংজ্ঞো ন রৈ পঞ্চরাঘ: ন রা সপ্তধাত্তব্ ন রা পঞ্চকোশ:

ন রাক্পাণিপাদৌ ন চোপস্থপাযূ চিদানন্দ ৰূপ: শিরো২হম্ শিরো২হম্

ন মে দ্বেষ বাগৌ ন মে নোভ মোহৌ মদো নৈর মে নৈর মাৎসর্য ভার:

ন ধর্মো ন চার্থো ন কামো না মোক্ষ: চিদানন্দ ৰূপ: শিরো২হম্ শিরো২হম্

ন প্বণ্যং ন পাপং ন সৌখ্যং ন দ্:খম্ ন মন্ত্রা ন তীর্থং ন রেদা: ন যজ্ঞা:

খহং ভোজনং নৈর ভোজ্যং ন ভোক্তা চিদানন্দ ৰূপ: শিরো২হম্ শিরো২হম্

ন মৃত্ব্ ন শংকা ন মে জাতিভেদ: পিতা নৈর মে নৈর মাতা ন জন্ম

ন ৰন্ধ্ব্ ন মিত্রং গ্বৰুর্নৈর শিষ্য: চিদানন্দ ৰূপ: শিরো২হম্ শিরো২হম্

अहं निर्विकल्पो निराकार रूपो विभुत्वाच सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्
न चासंगतं नैव मुक्तिर् न मेय: चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवोऽहम्
आर देखू तुलसी दास जी द्वारा लिखल ई स्त्रोत--------------
नमामी शमीशान निर्वाण रूपं
विभूं व्यापकम् ब्रम्ह वेदः स्वरूपं
पहिल पाँतिकेँ मात्रा क्रम अछि---- ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घदोसरो पाँतिकेँ मात्रा क्रम अछि-----ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ
नोट--- दोसर पाँतिमे ब्रम्हकेँ गेवा कालमे वब् = दीर्घकएल जाइत छै।
६) वहरे-मुतदारिक---------एकर मूल ध्वनि अछि "फाइलुन" मने S-I-S मने दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ अछि। एकर उदाहरण एना अछि------
S-I-S + S-I-S + S-I-S + S-I-S
S-I-S + S-I-S + S-I-S + S-I-S
(एहिठाम हम खाली चारि-चारि ध्वनिके उदाहरण देलहुँ अछि, मुदा शाइर एकसँ लए कए कतेको वेर (वेसीसँ वेसी सोलह वेर) ध्वनिके प्रयोग कए सकैत छथि)। ई भेल वहरे-मुतदारिक। अमित मिश्र द्वारा लिखल वहरे मुतदारिक केर उदाहरण देखू

ক্ষক্ষব উঁনষ্টনৈ পড়্ন নাব পব
রঁদবো রৈঁসনৈ চাব পব
মূস দৌগৈ গহ্ঁম ভবন ঘব
কোগনী তন দৈ তাব পব
নাদি পব গায দৈ দূধ ছৈ
নজব দেনে শ্ৰেন ঢাব পব

স্বাগত নেন রৌখা কএ

ফূন ক্ষস্কৈ গ্বথন হাব পব
ভোব ভেনৈ উঁঠন বাজা যৌ

খমিত রৌখা চঠ্ন কাব পব

দীর্ঘ- হ্র্স্ব -দীর্ঘ 3 রেঁব

চ) রঁহবে-বজজ------ একব মূন ধ্বনি "ক্ষস্তফগন্বন" ছৈক। মনে S-S-I-S মনে দীর্ঘ-দীর্ঘ-হ্রস্ব-দীর্ঘ। একব ঠ্ । ঁচা এনা হেতৈক------

S-S-I-S + S-S-I-S + S-S-I-S + S-S-I-S
S-S-I-S + S-S-I-S + S-S-I-S + S-S-I-S

(এহিঠাম হম খানী চাবি-চাবি ধ্বনিকে উঁদাহবণ দেনহুঁ খছি, হ্মদা শাগব একসঁ নএ কএ কতেকো ৰেব (ৰেসীসঁ ৰেসী সোনহ ৰেব) ধ্বনিকে প্রযোগ কএ সকৈত ছথি।) গ ভেন ৰহবে-বজজ |খমিত মিশ্র দ্বাবা নিখন ৰহবে বজজ কেব উঁদাহবণ দেখূ-----------
ৰান গজন

কাবী মহিস কে দূধ উঁজ্জব ছৈ কতে
ভবি মোন পাবী পীরি দ্ব্বৰ ছৈ কতে

বসগব জিনেৰী গবম নবমে নবম ছৈ
নভূ ৰনন ৰেসনক ৰজ্জব ছৈ কতে

ছৈ পাত হবিযব হ্নূন শোভিত গাছ ছৈ
জাহ্মন নিচী খামক গ মজ্জব ছৈ কতে
দূ এক দূ খা চাবি দূনী খাঠ ছৈ
খস্সী কতে নৌ জানি সত্তব ছৈ কতে
ভানূ ৰনা দেখাৰ' সৰকে নাঁচ মৌ
ঝঠ খাগি ছড়পৈ দৌড় চক্কব ছৈ কতে

হ্মস্তহ্নগন্বন
2212 তীন ৰেব
ৰহবে বজজ
ছ) ৰহবে-রাহ্নিব------------- একব মূন ধ্বনি "হ্মহ্নাগনত্তন" ছৈক মনে I -S -I -I -S মনে দ্রস্ব-দীর্ঘ-দ্রস্ব-দ্রস্ব-দীর্ঘ। একব ঠ় ।ঁচা দেখূ------
I -S -I -I -S + I -S -I -I -S + I -S -I -I -S

+ I –S –I –I –S
I –S –I –I –S + I –S –I –I –S + I –S –I –I –S
+ I –S –I –I –S
(एहिठाम हम खाली चारि–चारि ध्वनिकें उदाहरण देने छी, मुदा गीतकार एकसँ लऽ कऽ कतेको रुक्न (रुक्नीसँ रुक्नी सोलह रुक्न) ध्वनिकें प्रयोग कऽ सकैत छथि। ग भेल बहरे–राफिल। अमित मिश्र द्वारा लिखल बहरे राफिल केर उदाहरण देखू----------
खतम सब काज भेल हमर

स्वतंत्र मिजाज भेल हमर

कतौ जिनगी छलै धधकै
खुशी पर बाज भेल हमर
प्रवाल जँ गाछ , मज्जर नव
अपन त' अराज भेल हमर
सबस पल भेल बड़ दिनपर
सदेह गनाज भेल हमर
सदिखन गजल लिखैत बहरे
अमित नव साज भेल हमर

बहरे–राफिल
मुफाइलतुन U–I –U–U–I 2 रुक्न सब पाँतिमे
2) अर्धसमान बहर--------- एहि खंडमे कुल 56 बहर अछि मुदा मात्र 7 टा प्रचलित अछि। एकरा हम अर्धसमान बहर एहि द्वारे कहैत छिऐक जे एहिमे हरेक पाँतिमे कमसँ–कम अनिवार्य रूपसँ दूटा ध्वनिकें समान

रूपमे प्रयोग करबाए पड़ैत छैक। आर शीशर एहि दुनू ध्वनिके एक पाँतिमे जाए रैब (रैसीसँ रैसी सोनह रैब) प्रयोग कए सकथि ओ ह्नका ङुपर छन्हि। आ एहि खंडक सभ रहब नेन एहने सन र्बृसृ। । एकर रिरबण निचा देन जा बहन अछि।

1) हफङुन्न + हफागन्न (एकर ङुल्टा रूप सेहो छै.....)
हफागन्न + हफङुन्न
2) हफङुन्न + हफागनात्तन (एकर ङुल्टा रूप सेहो छै.....)
हफागनात्तन + हफङुन्न
आ निचाक सभ रांचन 26 टा रहबक नेन एनाहितै नियम छै। आ ऐ तरहें ऐ खंडमे कुन 56 टा रहब भेन।
3) हफङुन्न + महफागन्न

4) हफङुन्न + म्हस्तहफगन्न

5) हफङुन्न + म्हफागनत्तन

6) हफङुन्न + म्हतहफागन्न
7) हफङुन्न + महफङुनात्त
8) हफागन्न + हफागनात्तन
9) हफागन्न + महफागन्न
10) हफागन्न+ म्हस्तहफगन्न

11) ষ্ফাগন্বন + ম্নষ্ফাগনত্তন
12) ষ্ফাগন্বন + ম্নতষ্ফাগন্বন
13) ষ্ফাগন্বন + মষ্ফঙঁনাত্ত

14)ষ্ফাগনাত্তন + মষ্ফাঙান্বন

15) ষ্ফাগনাত্তন + ম্নস্তষ্ফগন্বন
16) ষ্ফাগনাত্তন + ম্নষ্ফাগনত্তন
17) ষ্ফাগনাত্তন + ম্নতষ্ফাগন্বন
18) ষ্ফাগনাত্তন + মষ্ফঙঁনাত্ত
19) মষ্ফাঙান্বন + ম্নস্তষ্ফগন্বন
20) মষ্ফাঙান্বন + ম্নষ্ফাগনত্তন
21) মষ্ফাঙান্বন + ম্নতষ্ফাগন্বন
22) মষ্ফাঙান্বন + মষ্ফঙঁনাত্ত

23) ম্নস্তষ্ফগন্বন + ম্নষ্ফাগন্বন

24) ম্নস্তষ্ফগন্বন + ম্নতষ্ফাগন্বন

25) ম্নস্তষ্ফগন্বন + মষ্ফঙঁনাত্ত

26) ম্নষ্ফাগনত্তন + ম্নতষ্ফাগন্বন

27) ম্নষ্ফাগনত্তন + মষ্ফঙঁনাত্ত

28) ম্নতষ্ফাগন্বন + মষ্ফঙঁনাত্ত

থার্ৱ থর্হাঁ সভ জব্ধব কর্হর্ৱ জে জখন মাত্র সাতে টৌ র্ৱহব প্রচনিত ছৈ তখন এতেক দের্ৱাক কোন কাজ ।

ঝদা ৱেঁসী প্রচনিত নৈ হেৰোঁক মতনৰ ঙা নৈ ছৈ জে ঙা গনত ছৈ। রস্তুতঃ ৱহবক প্রযোগ খভ্যাস পব নির্ভব ছৈ খা হবেক শাগব খপনা হিসাৱসঁ ৱহবক চ্নাৱ কবৈত ছথি। ভএ সকৈএ জে জাহি ৱহবকেঁ খববী জীহ পব কঠিনাহ নাগন হো সে মৈথিনীমে সহজ নাগএ তঁএ ঙা সভ দেন গেন খছি। তঁ দেখী ঙা সাত টা ৱহ্- প্রচনিত ৱহব খা ওকব নামকেঁ।

ক) ৱহবে-তরীন---------- একব মূন ধ্বনি ছৈক " ফঙন্বন-মফাঙন্বন"। একব ঠ ়া ঁচা দেখূ-------

I -S -S + I -S -S -S

I -S -S + I -S -S -S

I -S -S + I -S -S -S + I -S -S + I -S -S -S

I -S -S + I -S -S -S + I -S -S + I -S -S -S

I -S -S + I -S -S -S + I -S -S + I -S -S -S +

I -S -S + I -S -S -S

I -S -S + I -S -S -S + I -S -S + I -S -S -S +

I -S -S + I -S -S -S..........................

এহি ৱহব খা এহি খংডক ৱাঁকী খন্য ছহো ৱহবক নেন একটা খাব ৱাত মোন বাখূ জে ধ্বনি জাহি ঞমমে দেন গেন খছি তাহী ঞমমে বহৱাক চাহী। জেনা কী ৱহবে- তরীনমে খহাঁ দেখনহুঁ জে একব ধ্বনি এনা ছৈক " ফঙন্বন-মফাঙন্বন" ঝদা জঁ খহাঁ একবা " মফাঙন্বন- ফঙন্বন" ৱনা ঞমমে বখৱৈঁ তঁ গ ৱহবে-তরীন নহি হএত। খমিত মিশ্র জীক নিখন ৱহবে তরীন দেখন জাএ-------------

প্বন: জোডি নেৱৈঁ নেহকেঁ ডোব বাজা জী

कनेको रहै नै जानकेँ नोव बाजा जी
 कने खाउँ बाजा जानि नै की भ' जेतै यौ
कनेको नचारॢ प्रेमकेँ मोव बाजा जी

किए स्वन्न भेनौं खाग रॆमौत मारै छी
कने खाग मस्तीमे कक्क शोव बाजा जी
जमाना मिनेतै नै स्वनॢ रैनगा देतै
खनाड़ ी र्‌नै छै प्रेम छै चोव बाजा जी
चटौ देर संगे प्याव के चाशिनी हमवा
खमीतो र्‌मॢ भेनै सवारोव बाजा जी

 हवेक पाँतिमे "हफउँन्वन-मफाउन्वन" खर्थात (ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ + ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ सँ रनन रहवे तरीन)

 ख) रहवे-मदीद------------एकव मून ध्वनि खछि "फ्ाउनातुन-फ्ाउन्वन" । एकव ठ़ ा ँचा एना छैक---------

S -I -S -S + S -I -S
खमित मिश्र जीक निखन रहवे मदीद देखन जाए-------------
कोन टैनो केनकै जोगिया सदिखन कवेजा हमव जविते वहन
चोबि केने चैन होशो हमव सदिखन खनेवे उड़ ि ते वहन
नै छनै डव एत' मववाक खा नै मोन मे दर्द खंदेशा छनै

देख नरका एत' रॅहितें हरा से भार्र नेहक गजल मरितें बहल

भागि गेलै कोन नगरक गली मे भाग देखा क' सतरंगी सपन
रॉट जोहितें भ' जेतै कखन की भाँखिमे नोर रॅड भरितें बहल
उँजरि गेलै जखन कोनो उँपरनक कोनटा परक गाछक फूल यौ
तखन सरॅटा कोयलक मधुर रोनी संग दर्दक हरा उँड़ि तें बहल
भाग खोजै छी भपन ओहि जादूगर कए फेर खेला खेलरै
भमित केने भाशी नेहक सदिखने भीतरे-भीतर जरितें बहल
रॅहरे मदीद
फागलातुन-फागलुन (I -U-I -I + I -U-I) 3 रैर

गा) रॅहरे रॅसीत----- एकर मूल ध्वनि " म्मुस्तफगलुन-फागलुन" छैक। एकर ढ़ाँचा एना हएत------------------

S -S -I -S + S -I -S

देखू भमित मिश्र द्वारा लिखल ओ गजल जे की रॅहरे रॅसीतमे भछि-----

रोजे अपन स्वर्गके सोचैसँ हम थकल छी
बाबाक फूटैनसवा नोचैसँ हम थकल छी
पेट्रोल कखनो त' कखनो गैस सङ्गी महग
खाना बजावी कवै कोचैसँ हम थकल छी
रोजी कपावपव छै चिन्ता ग सदिखन बनल
कनियाक नेहक भवन मोचैसँ हम थकल छी
छै आगि धवती बनल नै पानि आकाशे मे
पीबैत काबी धुआँ मोचैसँ हम थकल छी

दै यै भगा काज छोड़ा जीबे कोना बचबे
छै खसल टैकाक नंगोचैसँ हम थकल छी
बचना कवै छी त' खर्चा होएग यै नै स्पदा
अतिथी अमित एत' दस गोचैसँ हम थकल छी
स्मस्तफगल्लन-फाएलत्तुन दू बेब
बहवे-बसीत
घ) बहवे-स्पजस्सम रा स्पजास-----------------
------------------ एकव मूल ध्वनि "
स्मस्तफगल्लन-फाएलात्तुन" छैक। एकव ठाँचा एहन
छैक----------
S -S -I -S + S -I -S -S
अमित मिश्र जीक लिखल बहवे स्पजास देखल जाए--

बसलौं अहाँ जखन मनमे हमवा चमकि गेल जिनगी
अनमोल नेहक उड़ल खुशिबूमे गमकि गेल जिनगी
माधुर्य माँखैत खुजलै जखने कमल ठोब वानी
नरणी सँ छलकैत ताड़ी बूमू छलकि गेल जिनगी

गाबी अहाँ गीत मोने मोने जँ तैयौ गजब धुन

ক্ষস্কী দ' দেনৌঁ চহৃষ্টগব খমৃত ঝমকি গেন জিনগী
নীবীহ জানৰঁব ৰঁনি নৈনক মাবি খেনৌঁ সদিখনে
হ্ফূনে ছনৈ ৰাঁণ নৈনক তেঁএ ধড়কি গেন জিনগী
সগবো খহাঁ কে নিখন ছরি ডূৰঁন কনম নেহমে যৈ
গাৰেঁ খমিত গজন নিখনক দেখূ দমকি গেন জিনগী
ৰঁহবে ক্ষজাস
৬) ৰঁহবে- ক্ষন্সবহ------------ একব মূন ধ্বনি
"ক্ষস্তহ্ফগন্বন-মহ্ফউঁনাত"। একব ঠ় া ঁচা ছৈক---

S –S –I –S + S –S –S –I
খমিত মিশ্রি জীক নিখন ৰঁহবে ক্ষন্সবহ দেখন জাএ--

খাখব জখন ৰূপক নিখন
উঁপমা সজন হ্ফূনক নিখন
খাদর্শ ছী ৰূপক ৰঁনন
কাজব নযন কাতক নিখন
সবগম খহাঁক স্বব সজন
ক্ষস্কী নগব তানক নিখন

কহনৌঁ কবেজক সৰঁ কহন
কিছু ৰাঁত হম বাজক নিখন

চমকৈত নভ মে ছী চান
তাবা গজন হাষ্টক নিখন
ক্ষস্তহ্ফগন্বন-মহ্ফউঁনাত্ত

च) रॅहरे-मजबिश्र---------------- एकब मूल ध्वनि छैक "मफाउलुन-फाउलातुन" एकब ढ़ ाँचा एना छैक---------

I -S -S -S +S -I -S -S

छ) रॅहरे-मुजतस्र-------- एकब मूल ध्वनि छैक " मफउलात-मुस्तफउलुन" । एकब ढ़ ाँचा छैक-----------

S -S -S -I +S -S -I -S

ओम प्रकाश जीक लिखल रॅहरे मुजतसॅमे लिखल गजल देखल जाए--------------------

धावक कात बहितो पियासल बहि गेल जिनगी हमब
मोनक बात मोनहि बहल, दुख सहि गेल जिनगी हमब

मुस्की हमब घब खास लेले खाओत नै खाब यौ
पूबे छै कहाँ खास सबहक, कहि गेल जिनगी हमब
सीखेलक ग दुनिया किना बॅचबै केब ढंगो मुदा
बॅचबै मे किना खनकबे छौ ढहि गेल जिनगी हमब
पाथब बाँटे पब छी पडल, हमबा पूछलक नै कियो
कोनो बॅन्न नाना जकाँ चुप बॅहि गेल जिनगी हमब
जिनगी "ओम" बीतेलकै बीचहि धाब ओलागते
भेंटैल नै कछेबो कतौ, बॅस दहि गेल जिनगी हमब

(बॅहरे मुजतसॅ)

49टा वाँचल वॅहवक नाम हमवो एखन धवि नै पता लागल अछि। पता लगितें जरूव कहव।

3) असमान वॅहव---------- एहि खंडमे कुल 213 गोटे वॅहव अछि जदा मात्र 13 टा प्रचलित अछि। एकवा हम असमान वॅहव एहि द्वारे कहैत छिऐक जे एहिमे हवेक पाँतिमे कमसँ-कम अनिवार्य रूपसँ तीनटा ध्वनिके समान रूपमे प्रयोग कवए पड़ ै त छैक। आवँ शागव एहि तीनू ध्वनिके एक पाँतिमे जाए वेंव (वेंसीसँ वेंसी सोलह वेंव) प्रयोग कए सकथि ओ हिनका ढुँपव छन्हि। आ एहि खंडक आव अन्य वॅहव लेल एहने सन वूँझू। एकव विववण निचा देल जा वहल अछि।
ऐ असमान वॅहवक दू भागकेँ हमवा लोकनि देखी। पहिल भाग ओ भेल जाहिमे तीनटा अलग-अलग रूक्नकेँ एक पाँतिमे एक वेंवमे प्रयोग कए जागत छै। आ दोसव भाग ओ भेल जाहिमे दूटा एक समान रूक्न आ एकटा दोसव रूक्न लेल जागत छै। तँ पहिने देखी ओ वॅहव जाहिमे तीनटा अलग-अलग रूक्नकेँ एक पाँतिमे एक वेंवमे प्रयोग कए जागत छै।
1) फऊँलुन + फाएलुन + फाएलातुन (एकव दूटा आव रूप हेतै)
a) फाएलुन + फाएलातुन+फऊँलुन
b) फाएलातुन + फऊँलुन + फाएलुन

एनाहितें निचा वॅला सभक दू-दूटा आव रूप हेतै। कुल मिला ऐ खंडमे 45टा वॅहव प्राप्त भेल।

2) फऊँलुन + मफाऊलुन + मुस्तफऊलुन
3) फऊँलुन + मफाऊलातुन + मुतफाऊलुन
4) फाऊलुन + फाऊलातुन + मफाऊलुन
5) फाऊलुन + मुस्तफऊलुन + मफाऊलातुन
6) फाऊलुन + मुतफाऊलुन + मफऊँलातु
7) फाऊलातुन + मफाऊलुन + मुस्तफऊलुन
8) फाऊलातुन + मफाऊलातुन + मुतफाऊलुन
9) मफाऊलुन + मुस्तफऊलुन + मफाऊलातुन

10) मफाऊलुन + मुतफाऊलुन + मफऊँलातु

11) मुस्तफऊलुन + मफाऊलातुन + मुतफाऊलुन
12) मफाऊलातुन + मुतफाऊलुन + मफऊँलातु
13) मफऊँलातु + मुतफाऊलुन + मफाऊलातुन
14) मफऊँलातु + मुस्तफऊलुन + मफाऊलुन
15) मफऊँलातु + फाऊलातुन + फाऊलुन
आरॅ आरी दोसब भागमे जाहिमे दूटा एक समान रुक्न आ एकटा दोसब रुक्न नेन जागत छै...........

हरेक पाँतिमे फाऊलातुन केब दू बेॅब प्रयोग आ मफाऊलुन केब एक बेॅब प्रयोग (एकब तीन रूप हेतै)

फाऊलातुन+ फाऊलातुन+ मफाऊलुन (मने-----दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ+ दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ+ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ- दीर्घ)
मफाऊलुन+फाऊलातुन+ फाऊलातुन
फाऊलातुन+मफाऊलुन+फाऊलातुन

ख) हरेक पाँतिमे मध्यगुरुलघु केर दू बेर प्रयोग आ आद्यलघु केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)
मध्यगुरुलघु+ मध्यगुरुलघु+आद्यलघु
आद्यलघु+मध्यगुरुलघु+ मध्यगुरुलघु
मध्यगुरुलघु+आद्यलघु+मध्यगुरुलघु
ग) हरेक पाँतिमे आद्यलघु केर दू बेर प्रयोग आ अन्त्यगुरुलघु केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)
आद्यलघु+ आद्यलघु+ अन्त्यगुरुलघु
अन्त्यगुरुलघु+आद्यलघु+ आद्यलघु
आद्यलघु+ अन्त्यगुरुलघु+आद्यलघु
घ) हरेक पाँतिमे अन्त्यगुरुलघु केर दू बेर प्रयोग आ आद्यलघु केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)
अन्त्यगुरुलघु +अन्त्यगुरुलघु + आद्यलघु
आद्यलघु+अन्त्यगुरुलघु +अन्त्यगुरुलघु
अन्त्यगुरुलघु +आद्यलघु+अन्त्यगुरुलघु
ङ) हरेक पाँतिमे आद्यलघु केर दू बेर प्रयोग आ अध्यलघु केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)
आद्यलघु +आद्यलघु + अध्यलघु
अध्यलघु+आद्यलघु +आद्यलघु
आद्यलघु +अध्यलघु+ आद्यलघु
च) हरेक पाँतिमे अध्यलघु केर दू बेर प्रयोग आ आद्यलघु केर एक बेर प्रयोग (एकरो तीन रूप हेतै)
अध्यलघु+ अध्यलघु+आद्यलघु

ফাগনাত্তন +ঙ্কফাগনত্তন+ ঙ্কফাগনত্তন
ঙ্কফাগনত্তন+ ফাগনাত্তন+ঙ্কফাগনত্তন
এ) ত্বরেক পাঁতিমে ফাগনাত্তন কেব দূ রেঁব প্রযোগ আ
ঙ্কতফাগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ (একরো তীন রূপ
হেতৈ)
ফাগনাত্তন+ ফাগনাত্তন+ঙ্কতফাগন্বন
ঙ্কতফাগন্বন +ফাগনাত্তন+ ফাগনাত্তন
ফাগনাত্তন+ ঙ্কতফাগন্বন+ফাগনাত্তন
ঐ) ত্বরেক পাঁতিমে ঙ্কতফাগন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ আ
ফাগনাত্তন কেব এক রেঁব প্রযোগ (একরো তীন রূপ
হেতৈ)
ঙ্কতফাগন্বন +ঙ্কতফাগন্বন + ফাগনাত্তন
ফাগনাত্তন+ঙ্কতফাগন্বন +ঙ্কতফাগন্বন
ঙ্কতফাগন্বন +ফাগনাত্তন+ঙ্কতফাগন্বন
ও) ত্বরেক পাঁতিমে ফাগনাত্তন কেব দূ রেঁব প্রযোগ আ
মফঙুনাত কেব এক রেঁব প্রযোগ (একরো তীন রূপ
হেতৈ)
ফাগনাত্তন+ ফাগনাত্তন+মফঙুঁনাত
মফঙুঁনাত +ফাগনাত্তন+ ফাগনাত্তন
ফাগনাত্তন+ মফঙুঁনাত +ফাগনাত্তন
ঔ) ত্বরেক পাঁতিমে মফঙুঁনাত কেব দূ রেঁব প্রযোগ আ
ফাগনাত্তন কেব এক রেঁব প্রযোগ (একরো তীন রূপ
হেতৈ)
মফঙুঁনাত +মফঙুঁনাত + ফাগনাত্তন
ফাগনাত্তন+মফঙুঁনাত +মফঙুঁনাত
মফঙুঁনাত +ফাগনাত্তন+মফঙুঁনাত
অং) ত্বরেক পাঁতিমে মফাগন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ আ
ঙ্কস্তফগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ (একরো তীন রূপ

হেতৈ)
মফাঈলুন +মফাঈলুন + মুস্তফইলুন
মুস্তফইলুন+মফাঈলুন +মফাঈলুন
মফাঈলুন +মফাঈলুন+মফাঈলুন
খ:) হবেক পাঁতিমে মুস্তফইলুন কেব দূ বেঁব প্রযোগ আ মুফাঈলুন কেব এক বেঁব প্রযোগ (একবো তীন রূপ হেতৈ)

মুস্তফইলুন+ মুস্তফইলুন+ মুফাঈলুন
মুফাঈলুন+মুস্তফইলুন+ মুস্তফইলুন
মুস্তফইলুন+মুফাঈলুন+ মুস্তফইলুন
ক) হবেক পাঁতিমে মফাঈলুন কেব দূ বেঁব প্রযোগ আ মুফাগলতুন কেব এক বেঁব প্রযোগ (একবো তীন রূপ হেতৈ)
মফাঈলুন+ মফাঈলুন+ মুফাগলতুন
মুফাগলতুন+মফাঈলুন+ মফাঈলুন
মফাঈলুন+ মুফাগলতুন + মফাঈলুন
খ) হবেক পাঁতিমে মুফাগলতুন কেব দূ বেঁব প্রযোগ আ মফাঈলুন কেব এক বেঁব প্রযোগ (একবো তীন রূপ হেতৈ)

মুফাগলতুন +মুফাগলতুন +মফাঈলুন
মফাঈলুন +মুফাগলতুন +মুফাগলতুন
মুফাগলতুন +মফাঈলুন+মুফাগলতুন
আবঁ আগূক হবেক রুক্ন নেন এনাহিতে তীন–তীনটা রঁহব রঁনৈত বহত। হম সমযক খরাভকেঁ কাবলৈ নৈ দএ

বহুন ছী। খহাঁ সভ সময-সময পব একবা ৰঁনৰৈত বহৰঁ। খাৰঁ ঐঠাম দেখূ জে ক্ষন মিনা কএ ঐ রিরবৰ্ণমে 56টৌ রস্ত্র খছি খা হবেক রস্ত্রমে তীন-তীন টৌ ৰঁহব খছি মনে ঐ খংডমে ক্ষন 168টৌ ৰঁহব ভেন।

গ) হবেক পাঁতিমে মহ্ফাঙানন্বন কেব দূ ৰেঁব প্রযোগ খা ক্ষতহ্ফাগনন্বন কেব এক ৰেঁব প্রযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)
ঘ) হবেক পাঁতিমে ক্ষতহ্ফাগনন্বন কেব দূ ৰেঁব প্রযোগ খা মহ্ফাঙানন্বন কেব এক ৰেঁব প্রযোগ (একবো তীন ৰূপ হেতৈ)
ঙ) হবেক পাঁতিমে মহ্ফাঙানন্বন কেব দূ ৰেঁব প্রযোগ খা মহ্ফঙঁনাত কেব এক ৰেঁব প্রযোগ (একবো তীন ৰূপ হেতৈ)
চ) হবেক পাঁতিমে মহ্ফঙঁনাত কেব দূ ৰেঁব প্রযোগ খা মহ্ফাঙানন্বন কেব এক ৰেঁব প্রযোগ (একবো তীন ৰূপ হেতৈ)

ছ) হবেক পাঁতিমে ক্ষস্তহ্ফগনন্বন কেব দূ ৰেঁব প্রযোগ খা ক্ষহ্ফাগনত্তন কেব এক ৰেঁব প্রযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)
জ) হবেক পাঁতিমে ক্ষহ্ফাগনত্তন কেব দূ ৰেঁব প্রযোগ খা ক্ষস্তহ্ফগনন্বন কেব এক ৰেঁব প্রযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)
ঝ) হবেক পাঁতিমে ক্ষস্তহ্ফগনন্বন কেব দূ ৰেঁব প্রযোগ খা ক্ষহ্ফাগনত্তন কেব এক ৰেঁব প্রযোগ(একবো তীন ৰূপ

হেতৈ)
ঞ) হবেক পাঁতিমে হ্মফাগনত্তন কেব দূ রেঁব প্রযোগ আ হ্মস্তহ্ফগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)

ঁ) হবেক পাঁতিমে হ্মস্তহ্ফগন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ আ মহ্ফঙুনাত কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)
ঠ) হবেক পাঁতিমে মহ্ফঙুনাত কেব দূ রেঁব প্রযোগ আ হ্মস্তহ্ফগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)
ড) হবেক পাঁতিমে হ্মফাগনত্তন কেব দূ রেঁব প্রযোগ আ হ্মতফাগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)
ঢ়) হবেক পাঁতিমে হ্মতফাগন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ আ হ্মফাগনত্তন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)
ণ) হবেক পাঁতিমে হ্মফাগনত্তন কেব দূ রেঁব প্রযোগ আ মহ্ফঙুনাত কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)

ত) হবেক পাঁতিমে মহ্ফঙুনাত কেব এক রেঁব প্রযোগ আ হ্মফাগনত্তন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)

থ) হবেক পাঁতিমে হ্মতফাগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ আ মহ্ফঙুনাত কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)

দ) হবেক পাঁতিমে মফড়ুঁনাত কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঝা মফড়ুঁনাত কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন ৰূপ হেতৈ)

ধ) হবেক পাঁতিমে ফড়ুঁন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঝা ফাগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন ৰূপ হেতৈ)

ন) হবেক পাঁতিমে ফাগন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঝা ফড়ুঁন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন ৰূপ হেতৈ)
প) হবেক পাঁতিমে ফড়ুঁন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ ঝা ফাগনাত্তন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন ৰূপ হেতৈ)

ফ) হবেক পাঁতিমে ফাগনাত্তন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঝা ফড়ুঁন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন ৰূপ হেতৈ)

ৰঁ) হবেক পাঁতিমে ফড়ুঁন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঝা মফাঙন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন ৰূপ হেতৈ)

ভ) হবেক পাঁতিমে মফাঙন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঝা ফড়ুঁন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন ৰূপ হেতৈ)

ম) হবেক পাঁতিমে ফড়ুঁন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঝা ঋস্তফগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন ৰূপ হেতৈ)

য) হবেক পাঁতিমে ঋস্তফগন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঝা ফড়ুঁন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন ৰূপ হেতৈ)

ব) হবেক পাঁতিমে হৃঙুন্বন কেব দূ ব়েঁব প্ৰযোগ ত্থা হৃফাগনত্তন কেব এক ব়েঁব প্ৰযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)

ন) হবেক পাঁতিমে হৃফাগনত্তন কেব দূ ব়েঁব প্ৰযোগ ত্থা হৃঙুন্বন কেব এক ব়েঁব প্ৰযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)

ৰ) হবেক পাঁতিমে হৃঙুন্বন কেব দূ ব়েঁব প্ৰযোগ ত্থা হৃতফাগন্বন কেব এক ব়েঁব প্ৰযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)

শী) হবেক পাঁতিমে হৃতফাগন্বন কেব দূ ব়েঁব প্ৰযোগ ত্থা হৃঙুন্বন কেব এক ব়েঁব প্ৰযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)
ষ) হবেক পাঁতিমে হৃঙুন্বন কেব দূ ব়েঁব প্ৰযোগ ত্থা মহৃঙুনাত কেব এক ব়েঁব প্ৰযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)
স) হবেক পাঁতিমে মহৃঙুনাত কেব দূ ব়েঁব প্ৰযোগ ত্থা হৃঙুন্বন কেব এক ব়েঁব প্ৰযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)
হ) হবেক পাঁতিমে হৃফাগন্বন কেব দূ ব়েঁব প্ৰযোগ ত্থা হৃফাগনাত্তন কেব এক ব়েঁব প্ৰযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)
ক্ষ) হবেক পাঁতিমে হৃফাগনাত্তন কেব দূ ব়েঁব প্ৰযোগ ত্থা হৃফাগন্বন কেব এক ব়েঁব প্ৰযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)

ত্র) হবেক পাঁতিমে হৃফাগন্বন কেব দূ ব়েঁব প্ৰযোগ ত্থা মহৃফাঙন্বন কেব এক ব়েঁব প্ৰযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)

জ্ঞ) হবেক পাঁতিমে মহৃফাঙন্বন কেব দূ ব়েঁব প্ৰযোগ ত্থা হৃফাগন্বন কেব এক ব়েঁব প্ৰযোগ(একবো তীন ৰূপ হেতৈ)

ঋ) হবেক পাঁতিমে হ্বাগন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঋা ঝ্নস্তহ্বগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)

নৃ) হবেক পাঁতিমে ঝ্নস্তহ্বগন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঋা হ্বাগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)

হ্ন) হবেক পাঁতিমে হ্বাগন্বন কেব দূ রেঁব ঋা ঝ্নহ্বাগনত্তন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)
খৃ) হবেক পাঁতিমে ঝ্নহ্বাগনত্তন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঋা হ্বাগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)
গৃ) হবেক পাঁতিমে হ্বাগন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঋা ঝ্নতহ্বাগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)

ঘৃ) হবেক পাঁতিমে ঝ্নতহ্বাগন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঋা হ্বাগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)

চৃ) হবেক পাঁতিমে হ্বাগন্বন কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঋা মহ্বঙুনাত কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)
ছৃ) হবেক পাঁতিমে মহ্বঙুনাত কেব দূ রেঁব প্রযোগ ঋা হ্বাগন্বন কেব এক রেঁব প্রযোগ(একরো তীন রূপ হেতৈ)
ঝ্নদা ঐ 213 রঁহবমেসঁ মাত্র তেবহে ঠৌ রঁহ্প্রচনিত

छै। ओ बाद बाँकी केर उपयोग व्याकरण रूपमे होइत छै। आइ अहाँ सभ जरूर कहब जे जखन मात्र तेरहे टा बहर प्रचलित छै तखन एतेक देबाक कोन काज। कारण ई जे प्रचलित नै हेबाक मतलब ई नै छै जे ई गलत छै। वस्तुतः बहरक प्रयोग अभ्यास पर निर्भर छै ओ हरेक शाइर अपना हिसाबसँ बहरक चुनाव करैत छथि। भऽ सकैए जे जाहि बहरकेँ अरबी जीह पर कठिनाह लागल हो से मैथिलीमे सहज लागए तँए ई सभ देल गेल अछि। तँ देखी ई तेरह टा बहु-प्रचलित बहर ओ ओकर नामकेँ। ई तेरहटा बहर एना अछि--------

क) बहरे-खफीफ------एकर मूल ध्वनि छैक "फाइलातुन-मुस्तफइलुन-फाइलातुन"| एकर ढ़ाँचा छैक------

S -I -S -S + S -S -I -S + S -I -S -S

ख) बहरे-जदीद----- एकर मूल ध्वनि छैक "फाइलातुन- फाइलातुन-मुस्तफइलुन"| एकर ढ़ाँचा छैक----------

S -I -S -S + S -I -S -S + S -S -I -S

देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ई गजल जे की बहरे जदीदमे अछि-

चादरो फाटल सड़ल बड उठल कखन
राति ऐल भासल घर बनतै कखन

কোন কোনা নাহ ভেটৈত মজধাব মে
বাতি দিনকব দিন ক' চন্না ব়ূনৌ কখন
চোবি ভেনৈ চৈন খা চাহো কে খমন
দেহ ট়ূটৈ দোষ খনকা দেৱৈ কখন

ডাঁগ নাগৈ দৈৱ কে খধগেবে জখন
পানি মানর এক বূঁদো মাঁগৈ কখন
ৱৈচৱৈ ৱৈটৌ জঁ জিনগী ৱচতৈ তখন
খমিত কহ নে পানি সগবো ঘটৈতৈ কখন
ফাগনাত্তন-ফাগনাত্তন-ফ্মস্তফগন্বন
{ I -U-I -I -I -U-I -I -I -I -U-I } এক ৱৈব সৱ পাঁতি মে
ৱহবে-জদীদ
গ) ৱহবে-সবীখ----- একব মূন ধ্বনি ছৈক " ফ্মস্তফগন্বন- ফ্মস্তফগন্বন-মফঙনাত" | একব ঢ় া ঁচা ছৈক-------

S-S-I -S + S-S-I -S + SSSI
দেখূ খমিত মিশ্র দ্বাবা নিখন গ্ত গজন জে কী ৱহবে সবীখমে খছি-----

ভেটৈন খহাঁকে সংগ হমবা জহিযেসঁ
জিনগী হমব নেনক কবোটৈ তহিযেসঁ
হম একবা কী কহৱ ছন এহন ভাগ
ৱৈসন ছনৌঁ হম ৱাটৈমে দ্পহবিযেসঁ

গেলৌঁ শিখবপব ভেল জে এগো স্পর্শ
জ্ড়া গেল শ্বাস প্রাণ সংগে তহিযেসঁ
ছী গ্যানকে পেটী খহাঁ জাদূ গজল
শাগবক কোলো কলম নাগৈ হঁসিযেসঁ
হম ভেল নতমস্তক নিখরঁ কোনা শৰ্ঙ্ক
শাগব খমিত ছী সংগ হমবা জহিযেসঁ

ম্‌স্তফগন্বন–ম্‌স্ফগন্বন–মফঙুনাত

(I –I –U–I +I –I –U–I + I –I –I –U)

রঁহবে–সবীখ
ঘ) রঁহবে–কবীরঁ------ একব মূল ধ্বনি ছৈক " মফাগুন্বন– মফাগুন্বন– ফাগনাত্তন"| একব ঠ়াঁচা ছৈক----
I –S –S –S + I S S S + S –I –S –S
দেখূ খমিত মিশ্রে দ্বাবা নিখল গু গজল জে কী রঁহবে কবীরঁমে খছি----
রিঁসবলৌঁ জগ পিরৈঁ ছী রৌঁতল শেবারঁক
মলক মাবল চ্মৈ ছী রৌঁতল শেবারঁক

হমব ছৈ জীত তড়া খালামে পিযারঁূ
খপন লামে নিখৈ ছী রৌঁতল শেবারঁক

হমব ছৈ জান ঙ খংগ্ববক পানি নৈ ছৈ

ৰনৈ শৌণিত কিনৈ ছী ৰৌতন শৈবাৰক

শহব কে কোন মৈখান জত' পিনৌঁ নৈ
জহব দৰ্দক কষ্ট ছী ৰৌতন শৈবাৰক
গিনাসসঁ খাৰ পন ভবি দোস্তী ক' দেখূ
ঘব স্বস্মাক বষ্ট ছী ৰৌতন শৈবাৰক

জনম ভেনৈ গযাদক তহিযেসঁ ঝূমৌঁ

খমিত সংগে বখৈ ছী ৰৌতন শৈবাৰক
মফাঙন্বন–মফাঙন্বন–ফাগনাত্তন
ৰহবে–কবীৰ

৬) ৰহবে–ঝ্শাকিন-------- একব মূন ধ্বনি ছৈক " ফাগনাত্তন– মফাঙন্বন– মফাঙন্বন | একব ঠ় াঁচা ছৈক----

S –I –S –S + I –S –S –S + I –S –S –S

দেখূ খমিত মিশ্র দ্বাবা নিখন ঙ গজন জে কী ৰহবে ঝ্শাকিনমে খছি—
হমব নেহক সজা জিনগী জড় া দেনক

গীত দর্দক বঁনা জিনগী কনা দেনক
ছৈ খনচিন্হাব খপনে নাম এখন যৌ
খেন ন্মূঠক জমা জিনগী হবা দেনক
নোব রঁহতৈ ত' হমবে পব হঁসত দ্নিযাঁ
কসম ন্মূঠে গনা জিনগী নিখা দেনক

জহব কে প্রেম মে খূনো জহব ভেনৈ
দাঁত রিবহক গড়্ া জিনগী রিষা দেনক

গাম উঁজড়্ন শহব কানন হঁসন জত' ও

ভরব এহন ফঁসা জিনগী রঁমা দেনক

নৈ মরানী খহাঁ হমবা কহ্ন দেখিক'

নেহ পাগন বঁনা জিনগী ডবা দেনক
জীবঁ কোনা রঁচন জিনগী কহ্ন এখন
খমিত মৌতসঁ সঠা জিনগী ন্মথা দেনক
ফাগনাত্তন-মফাঙন্বন-মফাঙন্বন

রঁহবে-ন্মশাকিন

চ) রঁহবে-কনীরঁ--------- একব মূন ধ্বনি ছৈক

"ফাগনাত্তন—ফাগনাত্তন--- মফাঙান্নন" | একব ঠ ়া ঁচা ছৈক---

SI SS--- SI SS---- I SSS

দেখূ খমিত মিশ্রি দ্বাবা নিখন ঙা গজন জে কী ৰঁহবে কনীৰঁমে খছি------

ঘগ রিক্তানক শোধ এখন ক' দেখৈ ছী

খপন মন পবৰোঁধ এখন ক' দেখৈ ছী

বহত জগমে খমব মানর মবত দানর

নর মশীনক বোধ এখন ক' দেখৈ ছী

ভাগ ৰঁনতে মাত্র দস খা ক' বসগ্বন্না

শক্তি কে হম ৰোঁধ এখন ক' দেখৈ ছী

সন্ত সী ও ঠৃ ৰঁনন স্নূঠ খাঁক্সীজন

কার্বনক খৰঁবোধ এখন ক' দেখৈ ছী

ডাহি হম সংস্কাব সংস্কৃতি স্নস্কৈ ছী

মান নেন ঞাধ এখন ক' দেখৈ ছী

দেশ চনৰৈঁ ছী ত' সৰঁ বাজ কে দেখূ

জোড় ়ি কব খন্নবোধ এখন ক' দেখৈ ছী

ৰঁহবে–কনীৰঁ

ছ) ৰঁহবে খসম-------- একব মূন ধ্বনি ছৈক ফাগনাত্তন--- মফাঙান্নন--- ফাগনাত্তন | একব ঠ ়া ঁচা ছৈক---SI SS---- I SSS--- SI SS

দেখূ খমিত মিশ্রি দ্বাবা নিখন ঙা গজন জে কী ৰঁহবে খসমমে খছি—

খাৰঁ খাগিক পতা প্ছতে পানি ঐঠাঁ

নৈ জড় ়ত যৌ কতৌ ঘব নিখ জানি ঐঠাঁ

কখন ধবি নোক জড় ়তে চ্প জানরব ৰঁনি

তোড় ়ৰৈঁ জঙঁব সে নেতে ঠানি ঐঠাঁ

छै दहेजो त' महगाओ कम कहाँ छै

ओझबी सोझबेतै निश्च मानि ऐठाँ
रँदनतै समय सगबो नरका जमाना
नै जँ रँदनत त' ओ मबतै कानि ऐठाँ
जे जनम देनकै ह्नका रिसबनै सरँ
माँथ पव जनकके बश्चतै ह्ञानि ऐठाँ
भाग मे उँठम–रँजड़ ा नै श्चारँ हेतै
श्चाग त' स्वश्र के देरैँ श्चानि ऐठाँ
श्चागि पव पानि नेहक हँसि ठ़ ाबि दिश्च ने

श्चमित सरँ के मिना स्वश्च निश्च सानि ऐठाँ

ह्ञागनात्तुन–मह्ञाओन्नन–ह्ञागनात्तुन

(I –U–I –I + U–I –I –I + I –U–I –I)

रँहब–श्चसम

ज) रँहबे करीब----- एकब मून ध्वनि छैक मह्ञउँनात्तु--- मह्ञउँनात्तु--- म्हस्तुह्ञगन्नन| एकब ठ़ ा ँचा छैक ---SSSI --- SSSI --- SSIS

দেখূ খমিত মিশ্রে দ্বাবা নিখন ঙা গজন জে কী ৰঁহবে করীবমে খছি-----
খসগব জনম নেনহুঁ খসগবে জী বহন
খপনে ভাগ খপনেপব ভবোসা ৰঁচন
মোনক খেতপব ৰঁজড় া খপন খাগ ছী
গনতী খপন তেঁএ ৰাঁ৪ কাঁ৪সঁ ভবন

মোজব নৌ সিনেহক ভেন কহিযো হমব
খপনে তোড় া নাতা শহব মে জী বমন

দৈ ছী দোষ নেতাকে কিএ খাৰঁ যৌ

খপনে ভো৪ দৈ ছী ঘেঁ৪ খপনে ক৪ন
নোভী ছী খধম ছী খমিত ভ৪কৈ সগব
পক্ষক নৌ খপক্ষক মোন খপনে ৰঁনন
মফঙঁনাত্ত-মফঙঁনাত্ত-ফ্মস্তহফগন্বন (দীর্ঘ-দীর্ঘ-দীর্ঘ-দ্রস্ব+ দীর্ঘ-দীর্ঘ-দীর্ঘ-দ্রস্ব +দীর্ঘ-দীর্ঘ-দ্রস্ব-দীর্ঘ সঁ ৰঁনন ৰঁহবে-করীব)

ঘ) ৰঁহবে সগীব----- একব মূন ধ্বনি ছৈক ফ্মস্তহফগন্বন--- ফাগনাত্তন---- ফ্মস্তহফগন্বন| একব ঠ় া ঁচা ছৈক --SSIS--- SISS--- SSIS

দেখূ খমিত মিশ্রে দ্বাবা নিখন ঙা গজন জে কী ৰঁহবে সগীবমে খছি-----

ঞ) ৰ্হবে-সবীম----- একব মূন ধ্বনি ছৈক মফাঙন্বন--- ফাগনাত্তন--- ফাগনাত্তন | একব ঠ় া ঁচা ছৈক-------- I S S S + S I S S + S I S S
দেখূ খমিত মিশ্র দ্বাবা নিখন ঙা গজন জে কী ৰ্হবে সবীমমে খছি-কিএ এখন মোন হমব শাগব ৰ্নন ছৈ
নিখন জেকব নাম ও এখন কঠন ছৈ
ৰ্নাৰী হম ৰূপ জে শৰ্ঙ্ক নগবমে

নগব ওকব নৈনকে নাগৈ জহন ছৈ

গজন জেহন হম নিখৈ সৰ্দিন ছনৌঁ সে

কহাঁ হমবা মোনমে ওহন গজন ছৈ

দিনক কাটৈ বৌদ বাতিক চান ধধকৈ
ৰ্হব মাবৈ জান পথ কাঁটক ৰ্নন ছৈ
কখন হাবৰ্ জীৱনক খনমোন পাবী
খমিত জা ধবি ছী কবৈ শৈবক কহন ছৈ
মফাঙন্বন-ফগনাত্তন-ফগনাত্তন
ৰ্হবে -সবীম

ঠ) ৰ্হবে সনীম----- একব মূন ধ্বনি ছৈক --- "ম্স্তফগন্বন-- মফঙঁনাত্ত---মফঙঁনাত্ত"| একব ঠ় া ঁচা ছৈক----

S S I S + S S S I + S S S I

देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ओ गजल जे की रुबाइ सलीममे अछि--
खिड़कीसँ सीधे देखै छलौँ हम चान
घन तिमिर मोनक छाँटै छलौँ हम चान
हेतै अपन फेरो भेँट ओतै जा क'
तेँ जागि आशा नगरेँ छलौँ हम चान
दिन भरि समाजक पहरा कतेको नयन

छुरि संग तोहर भेटकै छलौँ हम चान
लागै तरेगण लोचन पलक झपकैत
राति मेघ घोघट लागै छलौँ हम चान
शुभ बाति फेरो भेटैत अमिय नेहक न'
सभ दिन अमित नर आबेँ छलौँ हम चान
मुस्तफइलुन-मफऊलातु-मफऊलातु
{दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व}

रुबाइ-सलीम
ठ)रुबाइ हमीद----- एकर मूल ध्वनि छैक--- "मफऊलातु----मुस्तफइलुन----मफऊलातु"| एकर ढ़ाँचा छैक---
SSSI + SSIS + SSSI
देखू अमित मिश्र द्वारा लिखल ओ गजल जे की रुबाइ हमीदमे अछि—
नै जीयत शेबाइक नशा लागल लोक
कोना हँसत कोनो दुखक खेलावल लोक

কাঠী ফেকরৈঁ খাগি উঁঠতৈ রোঁতনসঁ
নৈ বহতৈ জরানী খপন জাড়ন নোক
কে কানত কতৌ খান নেএ ক'হ এত'

নৈ ছৈ সময ককরো খপন ভাগন নোক

দৈ ছৈ সাঁস কখনো খপন ধোখা খার্ঁ
এহন নেহমে ছৈ কিএ পাগন নোক
জড়তৈ এক দোসব সঁ জিনগী মে জখন

কষ্টতৈ ঘেঁষ্ট খপনে সর্ঁব হাবন নোক
ক্ষণ ভবি কে নরন দোস্ত নৈ চাহী খার্ঁ
হমবা খমিত চাহী খপন ঝাড়ন নোক
মফঊঁনাত্ত–ম্নস্তফগন্বন–মফঊঁনাত্ত
র্ঁহবে–হমীদ
ড) র্ঁহবে হমীম--- একব মূন ধ্বনি ছৈক--
"ফাগনাত্তন--- ম্নস্তফগন্বন--- ম্নস্তফগন্বন" |একব
ঢ় । ঁচা ছৈক--
SISS + SSIS + SSIS
দেখূ খমিত মিশ্র দ্বাবা নিখন ঞ গজন জে কী র্ঁহবে
হমীমমে খছি–
খাগ নৌনা* মে মাছ চন মাবর্ঁ কনে
জান মছবদানী রনা ফেকর্ঁ কনে
র্ঁহ্ত টিক্ষনা ছৈ খসন গাছী ভবন ছৈ
ওকরো মোবী ভবি ক' চন খানর্ঁ কনে
মাছ চষ্টনী খাএর্ঁ বোষ্টী ভাত বৌ

ডোনপাতী চন সংগ মে খেনর্ঁ কনে

छोटे रोआँ छी पैघ सन छै सोच रौ
आर कखनो संसार नै राँड़ैर कने
एक छी हम सर एक थारी मे बहर
अमित नरका मिथिला अपन माँगर कने
फाइलातुन-मुस्तफइलुन-मुस्तफइलुन

रहबे-हमीम

ऐकेँ अतिरिक्त केओ चारि-चारिटा रूक्क समूह सेहो लऽ सकैत छथि। मुदा ऐठाम ई मोन राखू जे गजल पूरा-पूरी उच्चारण आ संगीतक नियम पर आधारित छै तँए लड़का-लड़का पाँति गेलामे नै लनतै तँए ई चारि आ ओहिसँ बेसी रूक्क लऽ गजलक सफलता लइत कम भेटैतै। आ जखन देखिए बहुत छिऐ जे जखन 213 मे टा मात्र तेबहे टा प्रचलित छै जे की तीन रूक्क समूह थिक। तखन चारि आ ओहिसँ बेसी लनाक सफलता कतेक हेतै से अंदाजा लगा सकैत छी अहाँ।
आर हमरा लोकनि ई जानी जे अबरीक एहि आठो रूक्ककेँ मैथिलीमे केना लदनि सकैत छी। मैथिलीमे दू प्रकारक छंद पद्धति अछि-----मात्रिक आ वार्णिक
|

A) मात्रिक------ एहिमे दू, तीन, चारि, पाँच आ

छह मात्रा खंडके जोड़ि कए अक्षर विन्यास कएल जाइत छैक। आ एहि अक्षर विन्यासकेँ गण कहल जाइत छैक। मात्रिक छंदमे पाँच टा गण होइत अछि-----

क) ण (णगण) = द्विकल मने दू मात्राक खंड

ख) ट (टगण) = त्रिकल मने तीन मात्राक खंड

ग) ड (डगण) = चतुष्कल मने चारि मात्राक खंड

घ) ठ (ठगण) = पंचकल मने पाँच मात्राक खंड

ङ) ट (टगण) = षटकल मने छह मात्राक खंड

एहि गणकेँ अतिरिक्त मैथिलीमे एक मात्रा, सात मात्रा आ आठ मात्राक वर्ण विन्यास सेहो होइत छैक। मुदा ओकरा गण नहि मानल जाइत छैक। कारण एक मात्रा अपूर्ण भेल। तेनाहिते सात वा आठ मात्रा वला विन्यास कोनो ने कोनो रूपेँ उपरक पाँचो गणसँ मिलैत अछि। उदाहरण लेल सात मात्राक वर्ण विन्यास देखू---" पहिराओल" = I I S S I । आब एहिमे देखू पहिल तीन मात्रा मने (I I S) चतुष्कलक रूप थिक आ अंतिम दूनू मात्रा मने (S I) त्रिकलक रूप थिक। आठ मात्राक लेल एहने सन गप्प। उपरक पाँचो मात्रा विन्यासकेँ अलग-अलग रूपेँ लिखल जा सकैए आ एहि हिसाबेँ ------

द्विकल- दू रूप मे लिखल जाइत अछि-----

1) घर = I I

2) ओ = S

त्रिकल- तीन रूप मे लिखल जाइत अछि-----

1) भिजा = I S

2) ঋপন = I I I

3) ঋাৰঁ = S I

চত্তষ্কন- পাঁচ ৰূপ মে নিখন জাগত ঋছি-----

1) ছৌঁড় া = S S
2) তকবা = I I S
3) চ্মান = I S I
4) ফেকন = S I I
5) সদিখন = I I I I
পংচকন- ঋাঠ ৰূপ মে নিখন জাগত ঋছি-----
1) নড় াকূ = I S S
2) তিনকোব = I I S I
3) মৌহত্তী = S I S
4) তৰেগন = I S I I
5) সবধ্ঋা = I I I S
6) জাগবণ = S I I I

7) ঋংগূব = S S I
8) চহ্ষ্টগবি = I I I I I
ষষ্টকন - তেবহ ৰূপ মে নিখন জাগত ঋছি--
1) সোহাবী = S S S
2) ৰঁপখৌকী = I I S S

3) স্বধামযী = I S I S
4) মাদকতা = S I I S

5) अमगरुआ = I I I I S
6) मिताएन = I S S I
7) नानर्टैन = S I S I
8) खर्टखर्टोह = I I I S I

9) मोतारिक = S S I I
10) अधमौगति = I I S I I
11) म्बरेरॅगव = I S I I I
12) बाजभरन = S I I I I
13) चपनचवण = I I I I I I
तँ चनू आरॅ एहि पाँचो गणसँ अवरी रुक्क रॅनारी। ग अवरी रुक्क आठ अछि । तँ देखू एकब नियम-----
1) जँ द्विकनक (णगनक) एहन रूप जाहिमे एकसबें दीर्घ मने--S S (जेना-जे, गे, खो, जो आदि) बहए आ तकबा बॅाद पंचकन (ठगण)क ओ रूप बहए जाहिमे पहिन रर्ण नघ् आ तकबा बॅाद दूनू दीर्घ (I S S) होे तँ जे रूप रॅनत से उॅर्दू मे "फागनात्तन" कहरैत छैक। एकटा उॅदाबहबण निअ " गे स्वशीना" एकब मात्रा क्रम अछि (S I S S) ---- आरॅ एकबा "फागनात्तन" (S I S S) सँ मिनाउॅ| एकबा एना देखू------ S + I S S = S I S S
2) जँ पंचकन (ठगण)क ओ रूप जाहिमे पहिने दूटा दीर्घ आ तकबा बॅाद एकटा नघ् होे (S S I) तकबा द्विकन (णगन)क ओहन रूपसँ जोड़ जाहिमे एकसबें दीर्घ (S) होे। तँ ओ "म्फुस्तफगन्बन" (S S I S) रॅनत। एकबा एना देखू----------S S I + S = S S I S

3) जँ त्रिकल (टगण)क ओहन रूप जाहिमे पहिल लघु आ दोसर दीर्घ (I S) हो तकरा चतुष्कल (डगण)क ओहन रूपसँ जोड़ू जाहिमे दूनू दीर्घ (SS) छैक। तखन जे बनत तकरा "मफाऊलुन" (I SSS) बनत मने। उदाहरण लेल---निशा एलै (I SSS)। एकरा एना देखू-----I S + SS = I SSS

4) जँ चतुष्कल (डगण)क ओहन रूप जकर शुरूआतमे दूटा लघु आ अंतमे एकटा दीर्घ होउ मने (I I S) तकरा त्रिकल (टगण)क ओहन रूपसँ जोड़ू जाहिमे पहिल लघु आ अंतिम दीर्घ मने (I S) तँ "मुतफाइलुन" (I I SI S) बनि जाएत। एकरा एना देखू-------- I I S + I S = I I SI S

5) जँ पंचकल (ठगण)क ओहन रूप जाहिमे पहिल लघु दोसर दीर्घ आ तकरा बाद अंतिम दूनू लघु मने (I SI I) हो तकरा द्विकल (णगण)क ओहन रूपसँ जोड़ूबै जाहिमे एकटा दीर्घ होउक मने (S) तँ मफाइलतुन बनि जाएत। एकरा एना देखू------ I SI I + S = I SI I S

6) जँ चतुष्कल (डगण)क ओहन रूप जाहिमे दूनू दीर्घ हो (SS) मने तकरा त्रिकल (टगण)क ओहन रूपसँ जाहिमे पहिल दीर्घ आ अंतिम लघु (I S) मने हो तँ "मफऊलात" (SSI S) बनत। एकरा एना देखू----- SS + I S = SSI S

7) पंचकल (ठगण)क ओहन रूप जाहिमे पहिल लघु आ तकरा बाद दूनू दीर्घ हो मने (I SS) से "फऊलुन" कहाउत अछि। एकरा एना देखू------ I SS

৪) পঁচকল (ঠগণ)ক ওহেন ৰূপ জাহিমে পহিল দীর্ঘ আ তকৰা বাঁদ লঘু তকৰা বাঁদ ফেৰ দীৰ্ঘ হো মনে (S I S) সে "ফাগুন্নন" কহল জাগত অছি। একৰা এনা দেখূ------S I S

*****মাত্রা গনবাঁক লেল মোন ৰাখূ জাহি অক্ষৰমে "অ", "ং", "ঁ", "ঃ" এৱং "ৃ" লৃকাএল হো তকৰা লঘু মানূ আ তকৰা বাঁদ সভকেঁ দীর্ঘ। সংগহি সংগ অনুস্বাৰ তঁ দীর্ঘ অছি মুদা চন্দ্ৰৱিংদু লঘু। সংগহি-সংগ জঁ কোনো শৰ্ব্দমে সংযুক্তাক্ষৰ হুঅএ তঁ তাহিসঁ পহিলেক অক্ষৰ দীর্ঘ ভএ জাগত ছৈক চাহে ও লঘু কিএক লে হুঅএ। উদাহৰণ লেল--প্রত্যক্ষ শৰ্ব্দমে দূটা সংযুক্তাক্ষৰ অছি পহিল ত্য এৱং ক্ষ। আৱঁ এহিমে দেখূ "ত্য" সঁ পহিলে "প্র" অছি তঁএ ও দীর্ঘ ভেল আ "ক্ষ" সঁ পহিলে "ত্য" অছি তঁএ গহো দীৰ্ঘ ভেল। ও নিযম জঁ দূ টা অলগ-অলগ শৰ্ব্দ হো তৈযো লাগূ হএত জেনা উদাহৰণ লেল--- হমৰ প্রেম ছী অহাঁ... ঐমে "প্রে" সংযুক্তাক্ষৰ ভেল আ তাহিসঁ পহিলে বঁলা শৰ্ব্দ " ৰ" দীর্ঘ ভএ জাএত। মতলৱঁ জে "হমৰ" শৰ্ব্দক অংতিম অক্ষৰ "ৰ" দীর্ঘ ভএ জাএত । মুদা গ মোন ৰাখূ "হ্ম" আ "হ্ন" সংযুক্তাক্ষৰসঁ পহিলে বঁলা শৰ্ব্দমে লঘু দীর্ঘ নহি হোগত ছৈক। জেনা কী "ৰুম্হাৰ" মে "ম্হ" সঁ পহিলে "ৰু" দীর্ঘ নহি ভেল তেনাহিতে "কন্হাগ" শৰ্ব্দমে সেহো "ন্হ"সঁ পহিলে "ক" ৱর্ণ দীর্ঘ নহি ভেল। ক্ষ, ত্র আ ত্ত সংযুক্তাক্ষৰ অছি। তেনাহিতে.... প্র, ৰ্র, আদি সেহো সংযুক্তাক্ষৰ অছি।

বঁহুত গোটেকেঁ সমস্যা হোগত ছন্হি জে গ লঘু-দীর্ঘ

কোনা হোগত ছৈ। প্রস্তুত অছি কিছু উদাহরণ---

রিগড়ি ------------এহি শব্দকেঁ হ্রস্ব-দীর্ঘ মানূ রা দীর্ঘ-হ্রস্ব মানূ। রহবক জেহন জরূরতি হো। অবরী রহবমে তীন টা লঘু সঁ কোনো রহব নৈ ছৈ তঁএ লঘু-লঘু-লঘু মানবাক কোনো জরূরতি নৈ।
হুনকর----------- এহি শব্দকেঁ দীর্ঘ-দীর্ঘ মানূ রা দীর্ঘ-লঘু-লঘু মানূ রা লঘু-লঘু-দীর্ঘ দীর্ঘ মানূ জেহন জরূরতি হো। অবরী রহবমে চারিটা লঘু সঁ কোনো রহব নৈ ছৈ তঁএ লঘু-লঘু-লঘু-লঘু মানবাক কোনো জরূরতি নৈ।
ঘর-------- এহি শব্দকেঁ দীর্ঘ মানূ রা লঘু-লঘু রহবক জেহন জরূরতি হো।
চোর------ ও সাহে তৌর পর দীর্ঘ-লঘু অছি।

জঁ কোনো শেরমে এনা পাঁতি ছৈ--- রিগড়ি চনৈ ।
আব এহি দূ শব্দকেঁ রাখূ। যা তঁ অহাঁ " রিগ" মনে একটা দীর্ঘ মানূ আ "ড়ি " মনে একটা লঘু ফের "চ" একটা লঘূ ভেল আ "নৈ" একটা দীর্ঘ। একর মতলব জে " রিগড়ি চনৈ" কের সংভারিত রহব ভেল-- দীর্ঘ-হ্রস্ব-হ্রস্ব-দীর্ঘ।
এহি শব্দকেঁ একটা আর রূপ দএ সকৈত ছী জেনা কী---- "রি" কে লঘু মানূ "গড়ি "কেঁ দীর্ঘ মানূ আ ফের "চ" একটা লঘূ ভেল আ "নৈ" একটা দীর্ঘ। একর মতলব জে " রিগড়ি চনৈ" কের সংভারিত রহব

ভেল--- লঘ্-দীর্ঘ-লঘ্-দীর্ঘ।
আৱ এহি দূ ৰূপকেঁ অহাঁ ৱহবক হিসাৱেঁ প্ৰযোগ কৰু। কতেকো আদমী " ৱিগ" কেঁ দীর্ঘ মানতাহ ফেব "ড়ি " "চ" কেঁ মিনা দীর্ঘ মানতাহ আ "নৈ" ভেল দীর্ঘ মলে দীর্ঘ-দীর্ঘ -দীর্ঘ হুদা ও ৰূপ গনত ভেল। কিছু দিন পহিলে হম ওম প্ৰকাশী আ অমিত জীকেঁ কহনে ছনিঅন্হি জে এনা কএ সকৈত ছী। হুদা তখন হমব জ্ঞান কম্ম ছল। হুনকা দূনূ গোটেঁকেঁ অনারে সভ গোটেসঁ আগ্ৰহ জে ও আৱ এনা নৈ কবথি।
মৈথিলীমে বর্তনীকেঁ হিসাৱেঁ গ্ৰ উঁদাহৰণ দেখূ----
নএ---- হ্ৰস্ব-দীর্ঘ
নs ------হ্ৰস্ব

ন'------হ্ৰস্ব
নয--- হ্ৰস্ব-হ্ৰস্ব ৱা দীর্ঘ
গএহ নিঅম কএ, কs ৱা স', ভএ ভs ৱা ভ' নেন ছৈ আন প্ৰাৰূপ নেন এহনে ৱাঁত ৱূঁঝন জাএ।
B) ৱাৰ্ণিক ছংদমে তীন-তীন মাত্ৰা খংডক আঠ ৱিন্যাস কএন জাগত অছি। এহি তীন-তীন খংডক গনণা "দশাক্ষৰী" পদ্ধতিসঁ কএন জাগত অছি। গ এক প্ৰকাৱক সূত্ৰ অছি। গ সূত্ৰ অছি----- "যমাতাৱাজভানসনগা"। এহি দসো অক্ষৰমেসঁ পহিল আঠ অক্ষৰ আঠো গণক নামক পহিল অক্ষৰ থিক। আ গ আঠ গণ অছি-----
য = যগণ

মা = মগণ
তা = তগণ

বা = বগণ

জ = জগণ

ভা = ভগণ

ন = নগণ

স = সগণ

আ অংতিম দূটা অক্ষব "নগা" কোনো গণ নহি অছি। কাবণ গ জে ৱার্ণিক ছংদমে তীন-তীন মাত্রা হোগত ছৈক। ঋদা "নগা" কেব ৱাঁদ কোনো অক্ষব নহি অছি। তঁএ "স" কে ৱাঁদ কোনো গণ নহি ৱঁনি সকৈত অছি। আৱঁ গণ ৱঁনেৱাঁক তবীকা দেখূ---- অহাঁ জে গণ ৱঁনৱঁএ চাহৈত ছী তকব পহিল অক্ষব আ তকবা ৱাঁদক দূ অক্ষব আবো নিঅ। জে অক্ষব ক্রম আএত তকব মাত্রা গণক মাত্রা কহাএত। উঁদাহবণ নেল মানূ হমবা "মগণ" ৱঁনেৱাঁক অছি তঁ সভসঁ পহিলে "মা" নিঅ তকবা ৱাঁদক দূশর্ঙ্ক অছি "তাবা"। আৱঁ একবা একঠাম নেনে "মাতাবা" ৱঁনত। আৱঁ একব মাত্রা অছি---SSS | তঁ গ ভেল "মগণ"। একটা আব উঁদাহবণ নিঅ মানূ হমবা জগণ ৱঁনেৱাঁক অছি তঁ জ নিঅ আ তকবা ৱাঁদ দূ শর্ঙ্ক অছি "ভান"। তঁ দূনূ মিলা কএ "জভান" ৱঁনত মনে "জগণ" কেব মাত্রা ক্রম I S I অছি। এনাহিতে আঠো গণ ৱঁনৈত অছি। আঠো গণক রূপ দেল জা বহল অছি-----

গণক নাম

দশাক্ষবী খংড
মাত্রা ক্রম
যগণ

যমাতা

I S S

মগণ

মাতাবা

S S S

তগণ

তাবাজ

S S I

বগণ

বাজভা

S I S

জগণ
জভান

I S I

ভগণ

ভানস

S I I

নগণ

নসন

I I I

সগণ

সনগা

I I S

তঁ চনূ খাৱঁ এহি খাঠো গণসঁ খবরী কক্ক ৱঁনারী। গ খবরী কক্ক খাঠ খছি । তঁ দেখূ একব নিযম----
1) যগণ (I S S)সঁ পহিনে একটা দীর্ঘ নগেনে " ফাগনাত্তন" ৱঁনত। মনে S + যমাতা = S I S S = ফাগনাত্তন
(রৈকল্পিক কপেং এনাহ্তো কএ সকৈত ছী------- বগণ মনে (S I S) কেঁ ৱাঁদ একটা খাব দীর্ঘ নগেনে "ফাগনাত্তন" ৱঁনত। মনে S I S + S = S I S S
2) বগণ (S I S)সঁ পহিনে একটা দীর্ঘ নগেনে " হ্মস্তফগন্বন " ৱঁনত। মনে S + বগণ = S S I S = হ্মস্তফগন্বন

(রৈকল্পিক কপেং এনাহ্তো কএ সকৈত ছী----- তগণ

মনে (SSI) কেঁ ৰাঁদ একটা খাব দীর্ঘ নগেনে "ম্ফস্তফগন্বন" ৰঁনত। মনে SSI + S = SSIS)

3) যগণ (ISS)কেঁ ৰাঁদ একটা দীর্ঘ নগেনে "মফাঙান্বন" ৰঁনত। মনে ISS + যগণ = ISSS = মফাঙান্বন (ৰৈকল্পিক ৰুপেং এনাহ্তো কএ সকৈত ছী---- মগণ মনে (SSS) সঁ পহিনে একটা নঘ্ নগেনে "মফাঙান্বন" ৰঁনত। মনে I +SSS = ISSS
4) বগণ (SIS) সঁ পহিনে দূটা নঘ্ নগেনে "ম্ফতফাগন্বন" ৰঁনত। মনে II + বগণ = IISIS = ম্ফতফাগন্বন
(ৰৈকল্পিক ৰুপেং এনাহ্তো কএ সকৈত ছী--- সগণ মনে (IIS) কেঁ ৰাঁদ একটা নঘ্ খা তকবা ৰাঁদ একটা দীর্ঘ নগেনে "ম্ফতফাগন্বন" ৰঁনত। মনে IIS + I + S = IISIS =

5) জগণ মনে (ISI) কেঁ ৰাঁদ একটা নঘ্ খা তকবা ৰাঁদ একটা দীর্ঘ নগেনে "ম্ফফাগনত্তন" ৰঁনত। মনে ISI + I + S = ISIIS

6) মগণ মনে (SSS) কে ৰাঁদ একটা নঘ্ নগেনে "মফঙঁনাত" ৰঁনত। মনে SSS + I = SSSI = মফঙঁনাত

(ৰৈকল্পিক ৰুপেং এনাহ্তো কএ সকৈত ছী----- তগণ মনে (SSI)সঁ পহিনে একটা দীর্ঘ নগেনে

“मफउुनात” बनत। मने S + SSI = SSSI

7) यगण मने (ISS) पूबा-पूबी "फउुन्नन" केँ बबाबब अछि।

8) बगण मने (SIS) पूबा-पूबी "फाइलुन" केँ बबाबब अछि।
तँ दूनू प्रकाबक छंद आ तकबा कल्मे बदननाइ हमबा लोकनि सेहो देखलहुँ। तँ आब चलू तेँआब भऽ जाउ गजल लिखए आ पढ़ए लेल। एहि लेखक सहायतासँ खाली मैथिलीए नहि कोनो आन भाषामे सेहो सही गजल लीखि सकैत छी, खाली काफियाकेँ नियम बदलि जेतै भाषाकेँ हिसाबेँ।
मैथिलीमे बुहब
उपबमे हमबा लोकनि जतेक बुहब देखलहुँ ताहि उपब मैथिलीमे आइ धबि गजल कहल नहि गेल। अर्थात जीबन झासँ लऽ कऽ 2008 धबि मैथिलीमे बुहब नहि छल। बुहब नै छल मतलबेँ कृत्रिम रूपेँ बुहब नै छल। योगानंद हीबा जी बुह्त पहिलेसँ अबबी बुहबमे मैथिली गजल लिखैत छलाह, मुदा मैथिलीक बुहब-अक्लानी संपादक सभ हुनका कात कऽ देलक जाहिकेँ फलस्वरूप मैथिली गजलमे बुहबक चर्चा नै भऽ सकल। 2008क बाद गजेन्द्र ठाकुब उपबका बुहबमे गजल तँ कहबे केलाह संगहि-संग मैथिली लेल एकटा अन्य बुहब सेहो तकलाह जकब नाम देल गेल---बार्णिक बुहब। एहि बुहबक मतलबेँ छैक मतलाक पहिल पाँतिमे जतेक बर्ण छैक ओहि गजलक आन हबेक शेबक पाँतिमे ओतबेँए बर्ण हेबाक चाही। उपबमे उदाहबण

নেন হম খপন জতেক শেব দেনে ছী ও সভ সবন রার্ণিকি রঁহবমে খছি। তথাপি একটা উঁদাহবণ খাব-----

জহিখা ধবি হমবা শ্বাস বহত

তহিখা ধবি হ্নক খাস বহত

খার্ঁ একবা গানূ। এহি দূনূ পাঁতিমে 13-13 রর্ণ খছি। গ ভেন সবন রার্ণিকি রঁহব। রর্ণ কোনা গানন জাএ তাহি নেন গ ধেখান বাখূ-----

হনংত রঁনা খক্ষবকেঁ 0 মানূ
সংঘঞাক্ষবমে সংঘঞ খক্ষবকে 1 মানূ। জেনা কী "হবস্ত" মে স্ত=1 ভেন।

তকবা রাঁদ সভ খক্ষবকেঁ 1 মানূ চাহে ওকব মাত্রা নঘ্ হো কী দীর্ঘ।
রার্ণিকি রঁহব দূ তবহক খছি---

সবন রার্ণিকি রঁহব, খা রার্ণিকি
1) সবন রার্ণিকি রঁহব----- উঁপবকা সভ উঁদাহবণ সবন রার্ণিকক খছি।
2) রার্ণিকি--------- এহিমে রর্ণক সংগ-সংগ মাত্রাক সেহো ধেখান বাখএ পড়ৈত ছৈক। মনে রর্ণক সংখ্যা

तँ निश्चित रहैत छैक जे लघु-दीर्घक रूपमे छैक, सेहो दीर्घ के निचा दीर्घ रहैत छैक। उदाहरण देल-
----
नचनी नाच नचा गेल प्रेम हुनकर
जिनगी बाँन्ह बना गेल प्रेम हुनकर

आब एहि शेरके देखू दूनू पाँतिमे 15 वर्ण तँ छैके संगे-संग पहिल पाँतिमे जाहि ठाम जे मात्रा छैक ठीक मात्रा दोसरो पाँतिमे ओही ठाम छैक। तँ ई भेल वार्णिक बहर|
जँ अहाँ एकरा मात्रा क्रम देखैं तँ पता चलत जे एकर रूप एना छैक----
SSSI -I SSS-SI SS

आब कने ई विचारी जे मैथिलीमे कोन बहरके प्रधानता दी। जेना की हमरा लोकनि जनैत छी "सरल वार्णिक बहर" सभसँ बेसी हुन्नक अछि तँए गजलगो (शाइर) शुरुआतमे एही बहर मे गजल लिखैत तँ नीक। तकरा बाद अभ्याससँ दोसर बहर (वार्णिक बहर) पर आबथि आ तकरा बाद उर्दू बना बहर पर हाथ अजमाबथि। एखन मैथिलीमे दोसर बहर अर्थात वार्णिक बहरक प्रारंभिक चरण चलि रहल अछि। अंतमे सबसँ खास गप्प गजल चाहे अहाँ कोनो बहर मे किएक ने लिखबै बदीफ आ काफियाक नियम सभ देल एकै रंग रहत।
(ई आलेख शेर्ष साधक श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीकेँ समर्पित छन्हि।)



রঁনবাম সাহ্

রিস্মিত হোগত হমব নোক সংস্কৃতি

কাঠক খবাম, হ্মজক চৈক্ষনী, হাথসঁ নিখন কোহবব, রিঁখাহক গীত, সোহব-সমদাউন, ফগ্বাক জোগীবা, ভোবকা পবাতী, রঁটনগনী, ডোমকচ, জট-জটীন, শামা-চকেবাঁ, ভগৈত, নচাবী, খন্হা-ঙুদন, ব্রঁজভান, সীত-রঁসঁত, বাজা-সন্তেশক খমব গাথাক নৌটঁকী, রিভিন্ন খধ্যাত্মিক-সমাজিক ঘটনাক্রমপব খাধাবিত নাটক খা নৌটঁকী, গামক ঘূব খা ঘূব নগ হোগত পঁচপতী, পচমেড়্ক জনখৈ, তাবাঁপব তবন তিনকোবক তক্খা, কোজগবাক মখান, চূড় া-হ্মবনীক সনেশ, প্ববনীক পাত, ওহাব নাগন রৈঁনগাড় ী, জবাবী ভোজ, সসুব-ভৈঁসূবক ধাক, পৈঘক পএব ছূরিঁ নেন খসীববাদ যএহ সভ তঁ মিথিনাক খদ্বিতীয সংস্কাব খা সংস্কৃতি খছি। হ্মদা খত্যাধুনিক ভৌতিকরাদ খা খধকচবা পশ্চিমী সংস্কৃতিক সমাগমক কাবণেঁ উপবোক্ত রিশুদ্ধ দেশী শব্দক খনেকানেক শব্দ নবকা পীঢ়ীক নেন খনভুখাব ভহ গেন। নরতুবিযা নোকনি ঐ শব্দকেঁ রিদেশজ

ৰূ্ঝি বহন ছথি। জোঁ কিছু পৰম্পৰাগত সংস্কৃতি অৰশেষক ৰূপমে বঁচনো অছি তঁ নব পীঢ়ী ওকৰা ওছ, ঘটিযা আ হীনতাক প্ৰতীক মানৈত ছথি। দোসৰ দিস কিছু পৰম্পৰাগত লোক সংস্কৃতি আজুক ভৌতিকৰাদী ৰ্যৰস্থাক প্ৰভাৰমে অপন স্ৰৰূপ বঁদলি নৱ নাম আ স্ৰৰূপসঁ প্ৰচলিত ভ২ স্ৰযঁকেঁ ৰিকসিত কহেৰাঁক প্ৰযাস কএ বহল ছথি।

সোহৰ–সমদাঁউন, জট–জটীন, পৰাতী, ভগৈত, অন্হাক স্থান আঁবকেস্ত্ৰো আ হ্হৰ ভোজপূৰী গীত তঁ অন্হা–ঁউদল, দীনাভদ্ৰী, ৰাজা সহলেক অমৰ গাথা নংগ–ধৰংগ অপসংস্কৃতিক পৰিচাযক থিযেটৰসঁ ৰিস্থাপিত ভ২ গেল, ভাঁগক গোলী ৰিদেশী শৰাৰ আ দেশী পাঁউচমে হেৰা গেল, গামক পংচাযত ওতিহাসক হিস্সা বঁনি গেল, হুগ্ৱাক জোগীৰা আ জুৰশীতলক নচাৰীপৰ ৰৈশাখীক ভাঁগড়া ভাৰী পড়ি গেল, গামক মেলা, হাট–ৰাঁজাৰক মৌল সংস্কৃতিমে পূৰ্ণ ৰূপেণ সমাৰেসিত ভ২ অপন অস্তিত্ৰ মেটা দেনক অছি।

হমৰ সমাজ ৰিভিন্ন অৰসৰপৰ অন্হা–ঁউদল, হুমৰ ব্ৰজভান, দীনা ভদ্ৰী, সীত–ৰঁসংতক অমৰগাথা দেখি আ সূনি স্ৰযঁকেঁ গৌৰৰান্ৰিত বূঁঝৈত ৰাজা হৰিশ্চন্দ্ৰক সত্যৰাদী স্ৰৰূপসঁ প্ৰেৰণা লৈত ছল তঁ শ্ৰৰণকুমাৰক নাটকসঁ মাতৃ–পিতৃ ভক্তিক জ্ঞান প্ৰাপ্ত কৰৈত স্ৰযঁকেঁ শ্ৰৰণ কুমাৰ বঁনৰাঁক প্ৰযাশ কৰৈত ছল।



शिवशंकर प्रसाद साह

मैथिली महिला आ जिद्दी

मैथिली भाषामे पुस्तक प्रकाशनक अभावेँ बहुत समयसँ हमरा पत्रकार स्वजीत कुमार झा मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे एकटा नव आयामक रूपमे स्थापित भऽ रहल छथि । पत्रकारिता सन व्यस्त पेशा सँ जुड़ल अवस्थामे सेहो साहित्यक क्षेत्रमे सेहो डेग बढ़ब अपनेमे आपमे कम भावी बात नहि रहल अछि ।

ओतबेँ नहि तीन–तीन महिनामे पुस्तक प्रकाशन करबाक उद्घोष करब आ सफलता सेहो प्राप्त करबँ आजीयुजी बात नहि अछि ।

पहिल कथा संग्रह 'चिट्ठे'क माध्यम सँ मैथिली साहित्यमे प्रवेश कएने स्वजीतक दोसर कृति 'बिपोर्टेर डायरी' आ एकर किछुए दिनमे प्रकाशित भेल कथा संग्रह 'जिद्दी' सेहो ओतबेँ लोकप्रिय रहल अछि ।

जिद्दीक पहिल कथा "फुल फुलाएल कऽ रहल" कथामे मैथिली नारी संग भऽ रहल व्यवहारकेँ प्रश्न रूपमे देखाओल गेल अछि ।

एहि कथामे महिला संग हुनक पति व्यक्तिक नाटक कऽ विवाह करैत छथि मुदा पतिक वास्तविक अवस्था आ हैसियत देखलाक बाद कथाकेँ नायिका अन्तर्द्वन्द्वमे

পৰৈত খছি হ্মদা খন্তমে গম্ভীব ভঽ সোঁচনাক ৰাঁদ মহত্বপ্ৰ্ণ নির্ণয নঽ হ্নক পতিদ্বাবা দেখন গেন সপনাকঁে প্ৰবা কবয ও সফন ভেন ছথি । ঙা কথা পঠনাক ৰাঁদ হমবা কানী দাস স্মবণ খাৰি জাগত ছথি । হ্নকো জীৱনকেঁ মহত্বপূর্ণ ৰনাৰঁএমে হ্নক পনীক মহত্বপূর্ণ ভূমিকা বহন খছি । মিথিনাঞ্চনক কতেকো ব্যক্তিকেঁ কানী দাস ৰনাৰঁএমে এখনো হ্নকব কনিযা সহাযক ভঽ বহন খছি ।

তহিনা 'নৱ ব্যাপাব' কথামে বোগী পাত্র জিতেন্দ্র প্রসাদ খা খাধ্নিকতাক ফৈশনমে ড্ৰন কনিযা ৰীচক খৱস্থাকঁে স্পষ্ঠ চিত্রণ খছি । এহি কথাক মাধ্যম সঁ পবিরাবিক কনহ খা কথিত খাধ্নিকতা পবিরাবকেঁ তহসনহস কঽ সকৈত খছি তএঁ পবিরাবমে মেনমিনাপক রাতাৰঁবণ হোৰঁএ পব জোড দেন গেন খছি ।

তেসব কথা 'খানী ঘব' পবিরাবিক জীৱনমে হোৰঁযৰঁনা উঁতাব চঠাৰঁ খা উঁথন প্ৰথনকেঁ দেখাওন গেন খছি । খানী ঘব কথামে পবিরাবিক জীৱনক মহত্ব নীক জেকাঁ কথাকাব দেখাৰঁএ সফন ভেন ছথি । জোশিমে হোস নহি গ্ৰমাৰঁক চাহী এহি কথাক সংদেশ খছি ।

'নান কিতাব' কথামে সমাজক প্ৰবান সোচ খা ভূতপ্রেত প্রতিকঁে বিশ্বাসকঁে সেহো দেখৌনে ছথি । হ্মদা স্বজীতক কহৰাঁক খন্দাজ গজৰঁ খছি ।

জিদ্দী কথামে একটা মহিনাক মহত্বকাঙ্ক্ষা খা ওহি সঁ উঁপেন্ন হোৰঁযৰঁনা পবিস্থিতিক দেখৌনে খছি । তএঁ ওহিঠাম হ্নক মাএ খপন ঙাছাকেঁ প্ৰবা কবয নেন বৈঁটীকেঁ খাগা ৰঁঠৰৈঁত ছথি । খভিভারককেঁ ধিযাপ্বতাপব নিযন্ত্রণ খারশ্যক খছি ঙা সংদেশ কবির কবির এহি কথাপব নাগ্ব হোগত খছি । হ্মদা কথাকাব ঙা স্থিতি

महिलेपर किए छलनथि से नहि बुझिसकलहुँ । ओ महिलाकेँ रहैतोकेँ सेहो एहि घटनामे सहभागि करा सकैत छलथि ।
'निष्ठा की देखाबा' कथा समाजमे आधुनिकताक नाममे पसरल विकृतिकेँ नीक जकाँ प्रस्तुत करय सफल भेल छथि ।
एहि ठाम महिलाक अपन पतिक मृत्यु सँ बेसी पतिक मृत्युक बाद कोना स्वरक्षित आ नीक जकाँ बहुतेँ ताभी बीतक चिन्ता बढैत छन्हि ।
तहिना 'केहन सजाय' कथा सेहो बहुत नीक अछि । एहि कथामे समाजमे बहुत अपराधी सभ ऊपर होबए बना सजाय आ देशक कानूनी व्यवस्थाके देखारय खोजने अछि । तहिना 'मेनका' आ अन्य कथासभ सेहो एक पर एक बहुत अछि । कोनो कथा आलोचना करय जेहन नहि अछि ।
स्वजीतक कथा संग्रहमे बहुत भाषा शैली, कथाक बनाबटे बहुत नीक अछि आ आम मैथिली प्रेमी सभक लेल बहुत बेसी लोकप्रिय कथा संग्रह बनए से आशा करैत छी । ओना हमरा विश्वास तऽ अछिए । मैथिली भाषाक किताबक अभावें बहुत समयमे आबि बहुत स्वजीतक कथा संग्रह सभ अहिना लोकप्रिय बनैत रहत से कामना अछि । एहि सँ मैथिली साहित्यप्रति युवा सभ प्रेरित तऽ हेतैं करत संगहि मैथिली पाठककेँ संख्यामे सेहो बढोत्तरी हएत । स्वजीतक चारिम कृतिक प्रतिक्षामे हमरा तऽ बहुतेँ करत ।
लेखक खोज पत्रकारिता केन्द्र काठमाण्डू सँ आबद्ध छथि ।

**<u>বিজয় মস্ত</u>**

<u>স্বজীতক সম্পূর্ণ কথা একটা নয়া স্বাদ দেনক</u>

কী ভেলৈ, মম্মী ? কোনো পহাড় টূটি গেলৈ, কথিনাএ দুখিত ছেঁ । ককরো মৃত্যু ভঽ গেল ছৈ । হম ডাক্টর নগ জাগত ছী, এক ঘণ্টাক বাঁত অছি, বঁস্স সভ কিছু নবমল । জিদ্দী কথাক নাযিকা গিন্নীদ্বাবা রাজল গেল ওা বাক্য আজুক আধুনিকতাক নামপর সিগরেট, দারু আ যৌন সম্বন্ধকে ফেশন রূপমে অপনা বহল মৈথিল সমাজক ঘরা ঘরতীক কথা ব্যথাকে কথাকার স্বজীত ক্ষমাব ঝা রহত সবল তবীকাসঁ প্রস্তুত কএলে ছথি । ২০৬৯ সাঁউনক অন্তিম সপ্তাহমে বিমোচিত পত্রকার আ সাহিত্যকার স্বজীত ঝাজীক তেসর প্রতি জিদ্দী কথা সংগ্রহক ১২ গোটে কথা হম বঁহুত রোচক আ জিজ্ঞাস্ব ভঽ পঢলহুঁ । ওনা হুনক পহিল প্রতি চিউঁ সেহো

পঠরাক খরসব ভেৈন ছন, রহ্ত রোমান্চিত নাগন বহএ । একটা সাহিত্যকে রিদ্যার্থীক নজবিসঁ স্বজীত জী মিথিলা সমাজমে র্যাপ্ত পৌবাণিক পবম্পবাসঁ নহকহ খাধ্নিকতাক ছোট—ছোট রিষযসভকে খপন কনমক মাধ্যমসঁ স্বসজ্জিত কবযমে সফল ছথি ।
যদি স্বজীতজী খপন পাঠকক রিচাবকে সম্বোধন কবৈথি তহ হমব ওচ্ছা খছি জে ও খপন তেসব গ্যতিক নান ডাযবী খা জিদ্দী কথাকে উঁপন্যাসক রুপমে খাগামী দিনমে বচনা কবথি ।
নান ডাযবী খা জিদ্দী পঢৈত কান হম কথামে এনাক ড্রবনহুঁ জে একব কথাক রুপমে খন্ত হমবা দ্ঃখীত কহ দেনক । তাহি কাবণে ওা প্রতিক্রিযা নিখরাক নেন হম রিরশ ভহ গেনহুঁ । ও দূন্ব কথাক কথ্য গজব ছন খা তহিনা শিল্প ।
জিদ্দী কথা সংগ্রহক পহিন কথা “ফূন ফ্নাগএকহ বহন” মে জাহি তবিকাসঁ নাযিকা খপনা খাগ্ব খাএন সমস্যাকে সমাধান কযনক খছি এহি সমাজক মহিনাসভক নেন একটা উঁপদেশ খছি । দোসব কথা “নব র্যাপাব”ক মহিনা কনব খা সাধনাকে খপনা পবিবাব মে বহিকহ এতেক রেশী স্বতন্ত্রতা মৈথিন সমাজমে জূনি ভেটৈয । তহিনা তেসব কথা “খানী ঘব” খাওা কান্হি খপনাকে খাধ্নিক বুঁমনিহাব মহিনা জিনকা খপনে নির্ণযসঁ পাছতারা হ্এ, তাহিকে কথাকাব চিত্রণ কবএমে সফল ভেন ছথি । চাবিম কথা “নান ডাযবী” । ফদা জতেক সত্য খছি যাদরজীকেঁ মূত্র্য ১৭ গতে ভেন খছি, ওতরে নিবির্রবাদ সত্য খছি ফাগ্বন ১৮ গতে সাঁঝ হমবা ঘবপব যাদরজীকে খাএব জেকব প্রমাণ নান ডাযবী খছি । রাক্য হমবা ঝকঝোবি দেনক খা নাগন রাস্তরমে

আদমীকে শৰীৰে মৰৈত অছি আমো নহি । বিজ্ঞান যুগমে সেহো এহিৰাঁত কে এহসাস কৰাওল গেল অছি । একৰ প্ৰস্তুতি এহিমে সজিৰতা আনি দেনে অছি । তহিনা পাঁচম কথা জিদ্দী প্ৰত্যেকে পৰিৱাৰক মাতা পিতাকে অপনা ধিযাপুতাক দেনজাএৰনা স্বতন্ত্ৰতাকে সঁগ—সঁগ হুনকা প্ৰতি আওব জিম্মেৰাবীক উঁপদেশ দৈত অছি । স্ব্জীতক জাদূক ও সামান ৰৈচনিহাব যুৰতী ৰাস্তৰমে হমৰো সম্মাহিত কৰ দেনক । সাতম কথা আদৰ্শ হমৰা কোনো খাসে প্ৰভাৰিত নঞ কৰ সকন । ক্ষুদা অৰ্থহীন যাত্ৰামে নেহা, জিনকৰ ব্যক্তিত্ব এক চুম্বক জেকা ছনৈহ্নি কোনো পুৰুষ স্বয়ং খিচাক চলি অৰৈত ছল তাহিকে ও মাত্ৰ নহি সমাজক ৰঁহ্তো নেহা সভ দুৰুপযোগ কৰৈত ছথি । জাহিকে কাৰণ হুনক ৰৈৰাহিক জীৱন অস্বস্থ বহল । ঞা কথা মাত্ৰ নঞা সমাজক ঐনা অছি ।
ব্যৰ্থক উঁডানক সম্বন্ধমে এক্কহিটো ৰাঁত কহৰ কি স্বজীত জী মানৱ জাতিক ও উঁড় ান জে ৰঁহ্ত কম সময়মে ৰঁহ্ত ৰঁড়কা হোগত ছৈক, জে ৰঁহ্ত থোৰ লোক ৰুঁঝি সকৈযা তাহিকে অত্যধিক চত্তৰতাক সংগ প্ৰস্তুত কএলে ছথি । নৱম কথামে নীমাদ্বাৰা অপনা পতি সোহনক লেল কএল গেল ব্যৱহাৰ পৰ জেনা শ্ৰীনাথ চিন্তিত ছলথি, হমৰো মোনমে স্যাহ প্ৰশ্ন আএল কি সোহনক পলীক ব্যৱহাৰ নিঠ্যা ছল কি দেখাৱা ? সঙ্গ্ৰহ এগাবহম কথা কেহন সজাযক চমেলীক প্ৰশ্ন — কোন অধিকাৰসং ও হমৰা পোসলহ্নি আ ফেৰ হমৰা জনসাগৰমে ভঁসা দেলহ্নি, হম জন্মসঁ অনাথ ছী , ওতহী পলিতহুঁ এহি গন্দা ৰাতাৱৰণক অসৰি তৰ নহি পড়িতএ । হমৰ ৰিশ্বাস কিএ তোড়ল গেল ? প্ৰশ্ন মাত্ৰে চমেলীক নৈ ভৰ সমাজক প্ৰত্যেকে ৰঁচাক অছি, জে পোসপুত ৰা সতৰা

মাতা পিতাকসংগ বহৈথ ছথি আ দ্ঃখ ভোগৈত ছথি । অন্তিম কথা মেনকাকে হমব হ্ৃদযসং ধন্যবাদ অছি । কী আৱ তঽ অহঁ্‌ নীনা বনি গেন ছীক জবাফ নহি ও চিচএননহি আ একটা স্বখী পবিবাব বিধ্বংশ হোৱএ সঁ ৱচি গেন ।
ঙ হৃতিক বচনাকাবক বিষযমে কহনজাএ ত হমবা চিন্হন জাননমে স্বজীতজী সন বহ্ত কম ছথি জিনকা হ্মহসঁ কহিযো অপশব্দ নহি স্ব্ননহ্‌ আ সদিখনী হঁসৈত বহৈত ছথি ।
সমগ্রমে জিদ্দী কথা সংগ্রহ একবেব সভকে পঠৱাক চাহী হমব তঽ গহে সন্নাহ অছি । কিতাৱক প্রিন্টিঙ্গ, ডিজাগন সেহো বঢিযা অছি । প্রকাশককে সেহো ধন্যবাদ দেৱ জে বঢিযা কিতাৱ পঠৱাক অবসব দেনন্হি ।



<u>কৈনাস দাস, পত্রকাব, জনকপ্পব</u>

<u>মহিনাক প্রেবক কথা সংগ্রহ ‘জিদ্দী’</u>

সমাজকে পবিপক্ক, বিহৃতি আ বিসংগতি বহিত বাতাবণক নির্মাণমে সাহিত্যকে মহত্বপূর্ণ যোগদান হোগত অছি ।

हमरा एतेक भूमिका लिखएके पाछू मैथिली भाषाक युवा साहित्यकार एवं पत्रकार स्वजीत झमार जा तेसर कृति कथा संग्रह 'जिद्दी' पढ़लाक बाद लागल । हुनकाद्वारा लिखित कथा संग्रह 'जिद्दी'मे १२ टा कथा राखल गेल अछि । ओना कथा लिखबाक काज गहन अध्ययन चिन्तन आ लम्बा समयक साधना बिना सम्भव नहि होइत अछि । ज्यादा कथा लिखैतकाल लेखककेँ लेखन समय सन्दर्भ, सामाजिक वातावरण आदी गतादिसभकेँ ध्यान देबए पड़ैत अछि । ताहिमे युवा पत्रकार तथा कथाकार स्वजीतझमार जा लगभग सफल देखल गेल छथि । ओ एकटा कथाकार मात्र नहि छथि, विभिन्न सञ्चारमाध्यममे काज कऽ कऽ अनुभव प्राप्त करबाक गन्ध एहि कथा संग्रहमे देखल गेल अछि ।

कथा संग्रह 'जिद्दी' मनोवैज्ञानिकदृष्टि सँ सरक खोजी करैत अछि । प्रत्येक कथाकेँ एहिना बँटाओल गेल अछि जे पाठक पढैत—पढैत आर आगा कि हएत कहैत आश्चर्यमे पड़ि जाइत अछि आ कथाक अन्त होइत अछि । डा. राजेन्द्र विमलक शब्दमे स्वजीतक कथाक घटना परिघटना ज्यामितिय चित्र जेकाँ एक दोसरकेँ कटैत, ओझरबैत सोझरबैत आगा बढैत रहैत अछि । कथाक तीर सनसनाइत जाइत अछि आ अर्जुनक लक्ष्य भेद जेकाँ स्वगाक आँखिमे मात्र भेदन करैत अछि ।

'फूल फूलाइए कऽ रहल' कथा उँच कुलशील, स्वशिक्षिता नायिका पिंकी अन्तर्द्वन्दमे फसल रहैत अछि ।

पिंकी एमए पास कएने अछि । बेटी कतबो पढल लिखल किए नहि होइक दोसरकेँ घरमे जाए पड़ैत छैक वएह बुझि बेटी बेसी पढाबएकेँ आवश्यकता ना

সমাজ নহি বুঝৈত অছি ।
কদা পিংকীক মাযবাবু বেটা বেটী সমান হোগত অছি কহি এহি প্রথাকেঁ তোড়বাক প্রযাস কঽ অপন বেটী পিংকীকেঁ এমএ ধবি পঢ়বৈত অছি । জখন পিংকীক মাযবাবু বিবাহক লেল সমত্তুল্য ববক খোজী কবৈত ছথি তঽ নডকা পক্ষক অভিভাবকসভ পিংকীক পঢ়াগক মহত্ব নহি বুঝি দহেজ মাঁগৈত অছি ।
পিংকীক মাযবাবু মাঁগ অনুসাব দহেজ নহি দঽ সকনাপব পিংকীক বিবাহক উঁমেব বিতৈত জাগত অছি । এক দিন পিংকীক বাবু বেন যাত্রা কএনে বহথি । ওহি ক্রমমে স্বজাতি যবা সঁ ভেটঘাট হোগত অছি আ ও নডকা অপনে সহাযক স্টেশন মাস্টব বহন পবিচয দৈত অছি । পিংকীক মায বাবু পিংকীক সম্বন্ধক চর্চা ও নডকা সঁগ কবৈত অছি আ সহাযক স্টেশন মাস্টব বহন নডকা ও কথা স্বীকাব কবৈত অছি ।
গম্হব পিংকী সেহো সহাযক স্টেশন মাস্টব স্বনিকঽ অপনে ভাগ্যমানী ছী সমঝি হর্ষিত বহৈত অছি আ বিবাহ সেহো হোগত অছি । কিছু মহিনামে পিংকীকেঁ সভ যথার্থ জানকাবী ভঽ জাগত অছি । জে নডকা হুনকা সঁ সহাযক স্টেশন মাস্টব কহি কঽ বিবাহ কএনে বহৈত অছি অপন সম্পূর্ণ সমর্পণ কএনে বহৈত অছি ও নডকা স্টেশন মাস্টব নহি একটা সাধাবণ পৈটমৈন বহৈত অছি । স্বননাক বাদ পিংকী কিছু সমযক লেল ক্ষতবিক্ষত ভঽ পাগন জেকাঁ কবয নগৈত অছি । ওকবা আঁখি সঁ নিন্ন গাএব ভঽ জাগত অছি আ বাত ভবি সোচিতে বহি জাগত অছি । পিংকী অপন মোনমে ঠানি নৈত অছি জে ধোখেবাজ নডকা সংগ নহি বহব ? ব্যাকুন ভঽ জাগত অছি । বাতভবি ও নহি স্বতৈত অছি

।

ফেব ভোব হোগতে সোচৈত খছি খাৱঁ হম কি কৰু ? সম্বন্ধ বিচ্ছেদ কএনাক বাঁদ কতএ জাউঁ ? ঘবক নোকসভ কি কহত ? এহিমে মাযবাৱঁক কি দোষ ? ধীবে–ধীবে হিম্মত জুটা সংকল্প নৈত খছি কেহনো ভেনাক বাঁদো খপন শ্রীমানকেঁ স্টেশন মাস্টব বনাএ কহ ছোড়ব । হুনক শ্রীমান্ এসএনসী ধবি মাত্র পঢ়ন বহৈত খছি ।

হুনকা ক্যাম্পসমে নাম এডমিশন কবা খপনো একটা বোডিঙ্গ স্কুনমে নোকবী কবয নগৈত ছথি । সাত বর্ষমে ও শ্রীমানকেঁ এমএ পাস কববৈত খছি তকববাঁদ হুনকা স্টেশন মাস্টবমে নিযুক্ত হোগত খছি । সাত বর্ষমে হুনকাসভকেঁ একটা বেটা সেহো হোগত খছি । ঞ কথা পঢ়নাক বাঁদ কানী দাসক ঘটনা স্মবণ খবৈত খছি । কানী দাসক সেহো প্রেবণাক স্রোত কনিএ ছন । এহি কথামে সেহো কবীৰ—কবীৰ এহনে সংদেশ বহন খছি ।

'নযাঁ ব্যাপাব' কথামে বোগগ্রস্ত নাযক জিতেন্দ্র প্রসাদ খা মহত্বকাঙ্ক্ষী হুনক শ্রীমতী বীচক খবস্থাকেঁ চিত্রণ কএন গেন খছি । খতিমহত্বাকাঙ্ক্ষাক কাবণ নোক কতএ চনি জাগত খছি সে এহি কথামে দেখাওন গেন খছি । তহিনা তেসব কথা 'খানী ঘব'মে পবিবাবিক জীবনমে হোবএবনা উথন—পুথনকেঁ বঠিযা সঁ চিত্রণ কএন গেন খছি । সংগহি একব নিষ্কর্ষ পবিবাব সংস্থাকেঁ বঠাওন গেন খছি । এহন কথা 'খাদর্শ'মে সেহো খছি । বিবাহ সংস্থাকেঁ তোড়না পব খন্ততঃ পছতাএ পড়ৈত খছি । দুনূ কথাক নিষ্কর্ষ বহন খছি । 'নান কিতাব' কথাক মাধ্যম সঁ ভুতপ্রেতক বাঁতকেঁ দেখাওন গেন খছি

। রিক্তান কতএ সঁ কতএ পহুঁচ গেনাক ৰাঁদো ভূতপ্রেতক কথাসভ ঋারি বহন ঋছি । 'জিদ্দী' কথা একটা মহিনাক মহত্ত্বকাংক্ষা ঋা ওতএ সঁ ঙঁপেন্ন পবিস্থিতিকেঁ দেখাওন গেন ঋছি । ঋপনে নহি কঽ সকন কাজ ৰেঁটীক মাধ্যম সঁ কএন জা বহন ঋছি । এহি কাবণ মায ৰেঁটীকেঁ হবেক গছা প্ববা কবৈত ঋছি । ও হবেক গছা ৰেঁটী ব্যাভিচাবিণী ঋা দুর্ব্যসনী ভঽ জাগত ঋছি ।
'নিঠ্যা কী দেখাবা' কথা ঋাধুনিকতাক নামমে দেখন গেন বিঁগ্নতি দিস সংকেত কএনে ঋছি । এক গোষ্ঠে মহিনাকেঁ পতি সঁ ৰেঁসী পতিক মৃত্যুক ৰাঁদ ঋপনে কোনা স্ববক্ষিত বহবৰ তকব চিন্তা বহৈত ঋছি । বর্তমান সমযমে সমাজ কতএ চনি গেন ঋা ওকব নহি নীক ঋবস্থাকেঁ চিত্রণ কএন গেন ঋছি । 'কেহন সজায' কথা সংগ্রহক সভ সঁ ৰঁঠিযা ঋা কমজোব দুনূ ঋছি । জে কথ্য এহিমে উঁঠাওন গেন ঋছি ও গজৰকেঁ ঋছি । ক্ষদা একব ঋন্তিম নিষ্কর্ষকেঁ কথাকাব স্বজীত স্বকান্ত ৰনেৰাক প্রযাসমে ঋাগিকেঁ ঠন্ডা কঽ দেনে ছথি ।
'মেনকা' ঋা 'জাদু' কথা সেহো ৰঁঠিযা ঋছি । সমগ্রমে কহন জাএ তঽ স্বজীত ক্ষমাব ঝাক কথাক বিষয চযন, ৰনাবৰ্ট তথা ভাষা শৈনী ৰঁঠিযা ঋছি । হিনক পহিন কথা সংগ্রহ চিটৈP সঁ শ্বরু ভেন যাত্রা উঁডান ভড়ি বহন সংকেত দঽ বহন ঋছি । ক্ষদা সাহিত্য সাধনাক বিষয ঋছি । জতেক সাধনা কএন জাএ ফন ওতক ৰঁঠিযা প্রাপ্ত হোগত ঋছি । তএঁ সাধনাকেঁ নিবন্তবতা দেবৰএ পড়তন্হি ।

'খ্ঁগনা স্বখন ঘবমে পানি'

'খ্ঁগনা স্বখন, ঘবমে পানি, ভবি ৰ্খা উঁপছু পানি । ' একব মতনর স্পঠ্ঠ কপে সভ কিও ব্ঁঝি গেন হোএৰ্ জে রর্ষা হোগতে নগবমে বহযরানা সভকেঁ কতেক স্বখ খা কতেক খানন্দ খৰৈত খছি । খানন্দক মতনৰ্ সডক পব গংগা জহ্মনা জেকাঁ পানিক ধাব ৰহৈত বহৈত খছি খা নোক সভ মোটৈবসাগকিন, সাগকিন, জীপকাব

চলা-চলা কऽ আনন্দ লৈত বহৈত অছি । ওতহিঁ নৈ, ছৌআ বুচ্চী সভ পানিক আনন্দ অওর রহিসীএ লৈত বহৈত অছি। ও সভ অপন দ্দশা বিসবি জাগত অছি, পানিমে খেলবাঁক ক্ষণমে । ওতহিঁ কহীঁ, বুদ্ধিজীরী সভ সডকক দুনূ কাত বঁড আনন্দ পূর্বক ঠাঢ. পানিক আনন্দ উঠবৈত বহৈত অছি । দেখবাঁমে অবৈত অছি, সডক কাতমে বহুত দোকান সভমে পানি ঘুসল অছি । কোনো দোকানদাব সমান সভ নিচাঁ-উঁপব কবএমে ব্যস্ত নজবি অবৈত ছথি তঁ কোনো পানি উঁপছৈত-উঁপছৈত অপসিয়াত ভেল বহৈত ছথি । ওগ সমযমে ও দৃশ্যকেঁ কতেকো গোটে মনোবঞ্জনকেঁ রূপমে লৈতি ছথি তঁ কতেকো গোটে দু:খ ব্যক্ত কবৈত ছথি। ওনা বর্ষা বঁন্দ ভেলাক বাঁদ দূ-চাবি ঘণ্টামে সডকক পানি বঁহি নদীমে চলিএ জাগত অছি। ম্দা ঘবমে পৈসল পানি একটা পোখবিক আকাব লऽ কऽ দূ চাবি দিন ধবি ঘব বিহীন কऽ দৈত অছি । জিনকব বীস/পচীস বর্ষ প্ববান ঘব অছি, হুনকা ঘব বহিতো গাম ঘবসঁ বহৈকাব জীরন বহয লেল বাঁধ্য কऽ দৈত অছি। উঁপবসঁ বর্ষা আ নিচা ঘবমে পোখবি জকাঁ পানি । আখিব সোচিযৌ একব দোষী কে ছথি ? নগবমে বহযরালা লোক রা নগব বিকাসক সম্বন্ধমে সোচএরালা বুদ্ধিজীরী, কর্মচাবী অথরা নেপাল সবকাব ? কোনো নগব বিকাসক লেল একটা কানূন হোগত অছি । আ ওগ কানূনক দাযবামে বহি কऽ বিকাস কববাঁক দাযিত্ব সভ গোটেকেঁ হোগত অছি । ম্দা এহেন প্রারধান জনকপ্ববমে নৈ অছি । নহিযে অখন ধবি ছলৈ । একব নতীজা অছি 'অংগনা স্বখন ঘবমে পানি' । প্রত্যেক বর্ষ নযাঁ ঘব বলৈত অছি । প্ববনকা ঘব সঁ দূ চাবি ফিট উঁপব । নযাঁ সডক

रहैत अछि एक दू फिट उँपर । एहने यदि रहैबहैब होइत रहनैक तँ नगर भितर रहएबला कहियो शहरक अनुभूति नहिए कऽ सकैत अछि। घर निर्माणक लेल घरक ऊँचाइ, सड़क उँचाइक मापदण्ड नाहही टा पड़तै । ओतहै नै आर रहनयरबाला घर शहरक अनुरुप होएबाक चाही तइपर सभ गोटेकेँ विचार करए पड़तैक । नै तँ जहिनाक तहिना। ई तँ बर्षाक समस्या भेल। गर्मीक समस्या सेहो किछु कम नै अछि। सड़कसँ आगि उगलैत रहैत अछि । बाटमे चलबाक ककरो हिम्मत नै होइत अछि । ओतहै कहाँ जनकपुरक प्राय: सभ कलक पानि सेहो सुखा जाइत अछि । जनकपुर धार्मिक पर्यटकीय स्थल मात्र नै अछि, ई एकटा मिथिलाक राजधानी सेहो अछि । धर्म संस्कृति, कला, भेषभूषा आ माता जानकीक जन्म स्थल। किन्तु शहरक जे संरचना होएबाक चाही, विकासक गति आ सोच होएबाक चाही से कोशो दूर पाछु अछि। जनकपुरमे आबि कऽ माता जानकीक दर्शन कएला सँ पर्यटक मात्र धन्य-धन्य नै हएत । पर्यटक लेल पर्यटकीय वातावरणकेँ बनाबए पड़तै। पर्यटकक लेल मनोरञ्जनाके, दार्शनिक, घुमफिर करयबाला शुद्ध वातारवण होएबाक चाही। पर्यटक सभ कोनो समय, मौसम, दिन, महिनामे आबि सकैत छथि । ध्यान सोचियौ यदि पर्यटक चैत बैशाखक कडा धूपमे आबि जाए तँ हुनका सभक लेल कोनो पार्किङ्, आनन्द करयबाला स्थल, घुमफिर करयबाला बाटघाट नै अछि। कडा धूपमे एक ठाम सँ दोसर ठाम नै आबि जा सकैत छी । सडकपर नाक मुँह कपडासँ झाँपि कऽ चलए पडैत छैक । साउँन भादरमे पर्यटक आएल तँ नै नाला आ नै सडकक

পতা নগা সকৈত খছি । সভ গোটেকেঁ জনকপ্ববক ৰাঁত ৰ্‌ঝন খছি ক্ষদা সভক চ্‌প্পী প্রশ্ন চিন্হ ঠাঠ. কহ দৈত খছি। জনকপ্ববক ৰ্‌ঙ্খিজীরী সভ জনকপ্ববক শেহবীকবণ খা ধার্মিক পর্যটকীয স্থন ৰনেৰাক নেন কতএ হেবা গেন ছথি। রিচাব রিমর্শ খা রিকাস দিস খগ্রসব হোৰএ নেন হ্‌নকা সভকেঁ কোন গেঠবীমে ৰাঁন্হি দেন গেন খছি সে নৈ খ্‌নি বহন খছি । একটা কহারত ছৈক 'খারশ্যকতা খরিষ্কাবক দেন হোগত খছি ।' তঁএ যদি জনকপ্ববক রিকাসক খারশ্যকতা ৰ্‌ঝাগত খছি তঁ জনতাকেঁ সডকপব খাৰহে পডতৈ । নৈ তঁ 'খংগনা স্বখন, ঘবমে পানি, ভবি ৰবখা ডঁপছ পানি ।'

খোজয পড়ত মাহত্ব ৰাঁনগীত

হমবা অখনো স্মবণ অছি ৰান্যকানমে হমবা সভক খেনয রানা একটা সমূহ ছন । ওহিমে নডকা–নডকী কে অছি কোনো মতনর নহি । একটা হাফ পৈন্ট আ গঁজী নগা কঽ কোনো আম গাছ হোএ রা ঘবক দনান চাহে কোনো সার্বজনিক স্থন কিএ নহি হোএঁ । ঝুন্ড ৰঁনা কঽ করঁছী, আম গাছী, গোটী গোটী সঁগহি খপডাকে ফুটৈনহবা নঽকঽ জমিনমে চিব পাবি 'বেঙ্গ, বেঙ্গ 'খেনতহুঁ ত কখনো রিদ্যানয কে ঘব যা অপনে দনানে মে জা কঽ পাচ গোটৈ মিনকঽ 'ঝিঝিব কোনো ঝিঝিব কোনা কোন, কোন কোনা জাউঁ । সাউঁস মাবনক ঠুমকা প্বতৌহুঁ কোনা জাউঁ' স্মবণ অবঁয ত মনেমন অখনো ফ্দস্কী সেহো হোবঁয নগয ।

ওহি সময কেঁ বঁহুত কিছু যাদ ত নহি অছি ফ্দা একটা হাঁস্যি ব্যঁঙ্গ হম সভ এহনো কবৈত ছনী ।

'খল্টা বে ভল্টা
হম দূ ভাগ্ত
পটনা জাগ্ত
ঝুমকা নাগ্ত
সাস্ব কে পহিনাগ্ত
তঽ প্বতহুঁ ঝুমকাগ্ত ।'

নেকিন আগ্ত হম সভ ফেব সঁ ওহি ৰঁান অবস্থা সভক ৰীচ জাএবঁাক মৌকা মিনৈত অছি তঽ আশ্চর্য নগৈত অছি । ওনা তঽ পহিনে জাকা বঁচা সভক ঝুন্ডা নহি অছি । আ এছিযো তঽ ওকবা সভক ৰীচমে এহন গীত স্বনরাক অবসব মিনৈত অছি–

'পবদেশী, পবদেশী, জানা নহী
ফ্দমে ছোডকে, ফ্দমে ছোড়কে ।'

'চনি আনা তূ...তূ.. পান কী দূকান পে

साठे तीन साठे तीन रँजे ... ।'
गाम ओहि ठैक ऋदा दनान नहि थछि । रँचा रुँची ओहनो थछि ऋदा राताबण नहि । गाछवृक्ष ठैक नेकिन ओ समूह थारँ नहि । माहुत्व रँान गीत (फकबा) के स्थान मे हिन्दी, थँग्रेजी,भोजपुरी राताबरण सभ ठाममे छा गेन ठैक । कखनो कान हमबा सभक रीच ऋगडो होगत छन ऋदा ऋडही, नाओ, चाउंबक बोटी, भूजा थाएक नेन ऋदा थखन देखैत छी सिंगबेटे, दारु, गुटका पान पबागके नेन थाओ हमब भाज त काल्हि तू नहि थ्राएरँ त देखैरों कहि क ऋगडा करैत थछि । रास्तर मे कखनो कान रँडा थाश्चर्य होगत थछि कि देखते–देखते ऐहन पबिरर्तन कोना भऽ गेनय । एकटा हम सभ बही जे गुरु जी के देखते नुका जाओ । मायरॉर्बु था थपना से रँडका से हबदम डब नगाय । थाओ पबिरर्तन सँगहि रँचामे शिष्ठाचाब, थादब स्वभार किछओ नहि थछि । कोन रुँठ, कोन जरान सभनगय एक समान ।
तखन एकब दोषी के त ? थरसय एहन राताबण रँनारँयमे हमबे सभक दोष थछि । जाधबि हम कमजोब नहि भेनी त हिन्दी, थँग्रेजी था भोजपुरी राताबरण हमबा उँपब कोना चठि गेन । एकब खोजी कबरॉक थखनो थारश्यकता थछि । जाधबि मैथिनी माहुत्व रँान साहित्य के थगाडि नहि नाएरँ तऽ दोसबक कना संस्कृति भेषभूष था राताबण एहनो हमबा सभक उँपब नदागत बहत । ऐकब पबिणाम भेटैत भूखमबि, नुटपाटे, धोखाधबी एतरेँ नहि थपन रँानरँचा थपनो माय रॉर्बु के भुना कऽ कखन की कबत नहि कहि सकैत छी । तँ एकबा सभक दूब कबरॉक नेन मैथिनी माहुत्व

ৰাঁন সাহিত্যকে খগাড়ি ৰঁঠাৰঁমী পডত । ওনা তঽ গৌব সবকাবী সংস্থা খাসমান নেপান ৰাঁনৰাঁনিকাক নিখন ‘ৰাঁন শৈক্তি পত্রিকা’ তীন মহিনা পব প্রকাশিত কয বহন খছি ।

এহি সঁ ওকব সমাধান নহি খছি । ওহি মে একদূগো ৰাঁন করিতা সঁ মাত্র মৈথিনী মাতৃত্ব কে নহি ৰঁচা সকৈত ছী । ঐকবা নেন এখনো ৰ্‌ঁঠ প্ববানক ৰাঁত রিচাব খা ওহিক সময রাতারবণ কে ৰ্যাঁখ্যা কবমী চৌ পডত ।

ম্যাবাথন দৌড় খা জনকপ্ব

জনকপ্ববক বংগভূমী মৈদানমে শৈনিদিন ভেন ম্যাবাথন

দৌড় প্রতিযোগিতা এখন ধবিক ঐতিহাসিক আ প্রথম বহন অছি । আযোজকক অনুসাব এহি প্রতিযোগিতামে ২০ দেশীক সহভাগীক আমন্ত্রণ কএন গেন ছন । মুদা ১৮ দেশীক খেলাড়ী সভক ভীসা পাস নহি ভেনাক কাবণ ভাবত আ নেপানক ৭৬ জিল্লাক এহি প্রতিযোগিতামে মাত্র সহভাগী ভ২ সকন ।

ওনা জনকপুবক নেন বঁহুত পৈঘ প্রতিযোগিতা ছন । আযোজকক অনুসাব চাবি মহিনা পহিনে সঁ একব তৈযাবী ভ২ বহন ছন । মুদা শনিদিন প্রতিযোগিতাক সফনতা ভেটৈন । স্থানীযবাসীসভ ম্যাবাথনক খেলাড়ী সভকেঁ সড়ক পব দৌড় দেখি ক২ তানী বঁজা স্বাগত কএনে ছনথি ।

ভোরে সঁ নগবক সহাওা সঁগহি পুনিস, ট্রাফিক আ এহিমে অটৈন স্বযং সেরক সভ ব্যরস্থিত কবএমে জুটৈন ছন ।

ম্যাবাথন প্রতিযোগিতা তীন চবণমে বাঁটৈন গেন ছন । হাফ ম্যবাথন, মিনী ম্যাবাথন আ ভেটেব্রান্স ম্যাবাথন । মিনী ম্যবাথনমে খাস ক২ জনকপুবক স্কুন সভক ধিযাপুতা সভক সহভাগীতা ছন । ভেটেব্রান্স প্রতিযোগিতামে ৪০ বর্ষ উঁমেবক ব্যক্তি সভক সহভাগিতা ছন আ হাফ ম্যাবাথনমে নেপান ভাবত সঁ আএন খেলাড়ী সভক সহভাগিতা ছন ।

হাফ ম্যাবাথন প্রতিযোগিতা ৪২ কিলোমিটৈবক ধবি ছন । জনকপুবক বংগভূমি মৈদান সঁ প্রাবম্ভ ভেন দৌড় ঢল্কেবব পহুঁচ ক২ ফেব সঁ জনকপুব আএন ছন । মিনী ম্যাবাথন প্রতিযোগিতা জনকপুবক বিহ্ন বোড কাযম কএনে ছন । ওা দৌড দেখবাঁক নেন নগব ভিতব স্থানীযবাসী সভক ভীড ছন তহ জনকপুব ঢল্কেবব

সড়কখণ্ডমে প্রবিস স্বয়ং সরেক মাত্র নহি এহি ক্ষেত্রক গ্রামীণ জনতা সভ উৎসাহ পূর্বক সড়কক কাতমে ঠাঢ় ভ৹ খেলাড়ী সভকেঁ তালী বজা ক৹ স্বগত কএলে ছল । বীচ বীচমে খেলাড়ী সভক লেল পানিকেঁ সেহো ব্যবস্থা ছল ।
হাফ ম্যারাথনমে প্রথম হোবএবলাকেঁ ৩০ হজার, দোসর হোবএবলা ২৩ হজার আ তেসর হোবএবলা ১০ হজার পুরস্কার দেল গেল অছি । তহিনা মিনী ম্যারাথনমে প্রথম হোবএবলাকে ১০ হজার, দোসর হোবএবলাকে ৩ হজার আ তেসর হোবএবলাকে ২ হজারক পুরস্কার দেল গেল অছি । ভেন্দ্রোস ম্যারাথন বিজেতাক লেল প্রমাণপত্র দেল গেল অছি ।
কোনো খেলাড়ীক লেল পুরস্কার সঁ মহত্বপূর্ণ হুনক প্রতিভা পর দেশ আ সমাজ গৌববান্বিত হোগত অছি । শৈনিদিন ভাবত আ নেপাল বীচ ভেল খেলমে নেপালী খেলাড়ী মাত্র বিজযী ভ৹ সকল অছি । এহি সঁ অনুমান লগাওল জা সকৈযা জে এখলো নেপালক মধেশমে ভারী খেলাড়ী সভ অছি । মুদা হুনকা সভক অরসব নহি ভেটৈলাক কারণ ও সভ অপন প্রতিভা দেখাবএ সঁ বঞ্চিত হোগত আএল ছথি ।
স্বাস্থ্যএ জীবন অছি আ স্বস্থ্য বহবাক লেল খেলকুদক বিকাস আবশ্যক অছি । একটা কহাবত অছি জে জতএ কলা সঁস্কৃতি আ খেলক বিকাস হোগত অছি ওতএ পূর্ণ স্বাস্থ্য বাতাববণক বিকাস হোগত অছি । তএঁ কহল জাএ তহ ম্যারাথন প্রতিযোগিতা সঁ এত্তুকা ধিযাপুতাকেঁ মাত্র নহি সম্পূর্ণ নগববাসীক লেল গৌববক বিষয ছল । এহিমে সহযোগ কবএবলা সভক ধন্যবাদ আবশ্য দেবহেটৌ পড়ত ।

म्याराथन प्रतियोगिता जाहि रूप सँ व्यवस्थित भोएलाक चाहि ओ तइ लहि भेल क्षदा आयोजकक प्रयासकेँ सेहो धन्यवाद देबँक पड़त । आइदिन ऐतिहासिक धरोहर बंगभूमि मैदानमे खेलाडी सभक उत्साह आ उमंग सँ खचाखच भरल छल । खास कइ कहल जाए तइ स्थानीय बाँलबाँलिका जखन दौड रहल छल ओकरा पाछू हुलक अभिभावक सेहो देखिकइ बँड खुशी व्यक्त करैत छल कि जीत मात्र सफलता नहि होइत अछि । कमितमे एहि प्रतियोगितामे भाग लेबाँक लेल अवसर तइ भेटैन ।
मिनी म्याराथन प्रतियोगिताक सहभागी विद्यार्थी सभक अखन धरि कितार्ब आ टिभीमे मात्र देखि कइ कल्पना कएलो होइतो क्षदा आइदिन जखन स्वयं सहभागी भेल तइ हुलका सभक एकटा सिख भेटैलन्हि जे हमहँ सभ आबँएलना दिलमे जीतक सफलताक प्रयास करी ।
ओ प्रतियोगिता सँ जलकपुर धार्मिक पर्यटकीय सँगहि खेलकूदक एकटा भूमि सेहो अछि सन्देश दइ रहल अछि । ओला एहि प्रतियोगिताक सफलतामे साथ देनै सम्पूर्ण ग़रा कलर, संघ संस्था सहितक व्यक्ति सभक धन्यवाद लहि एहि सँ पैघ काज करबाक उम्मिद रखबाक अपेक्षा करैत छी ।



<u>डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"</u>

<u>पंचदेवोपासक भूमि मिथिला</u>

हिमालयक पादप्रदेशमे गंगासँ उत्तर, कोशीसँ पश्चिम एवं गण्डकसँ पूर्वक भूभाग सांस्कृतिक मिथिलांचलक नामे ख्यात अछि। मिथिलांचलक ई सीमा लोकमान्य, शास्त्रसम्मत ओर परम्परित अछि। सपथब्राह्मणक अत: साक्ष्यक अनुसारें आर्यलोकनिक एक पूर्वाभिमुखी शाखा विदेह माथवक नेतृत्वमे सदानीरा (गण्डक) पार कऽ एहि भूमिक अग्नि संस्कार कऽ वसिवास कएललनि, जे विदेहक नामे प्रतिष्ठित भेल। कालान्तरमे एकर विस्तार स्वविदेह, पूर्व विदेह, ओऽ अपर विदेहक रूपेँ अभिज्ञात अछि। विदेहक ओऽ प्राथमिक स्थलक रूपमे पश्चिम चम्पारणक लौरियानन्दनगढ़क पहिचान स्वनिश्चित भेल अछि। आज्क लौरियानन्दनगढ़ प्राचीन आर्य राजा लोकनि एवं बौद्धलोकनिक स्तूपाकार समाधिस्थल सभक संगम बनल अछि। कालक्रमे अहि गक्षराक्ष आर्यवंशक निमि पुत्र

মিথি মিথিনাপ্বত্রক স্থাপনা কযননি। প্রাচীন রৌদ্ধসাহিত্যমে রিদেহকেঁ বাষ্ট্র (দেশ) ও২ মিথিনাকেঁ বাজধানীনগব কহন গেন খছি। খর্থাত্ মিথিনা রিদেহক বাজধানী ছন। হ্দা ওহি ভব্য মিথিনাপ্বীক খভিজ্ঞান এখন ধবি স্বনিশ্চিত নহি ভেন খছি। তথাপি প্রাচীন রিদেহক সম্পূর্ণ জনপদকেঁ খাগ মিথিনাঁচন কহন জাগছ।

ও২ মিথিনাঁচনক ভূমি মহান খছি, জকব মাথেপব তপস্বী হিমানযক সতত রবদহস্ত হো, পাদপ্রদেশমে প্বণ্যতোযা গংগা, পার্শ্বিরাহিনী খমৃত কনশ ধাবিণী গংডক ও২ কনকন নিনাদিনী কৌশিকীক ধাবসঁ প্রক্ষানিত হো। এহি নদী মাতৃক জনপদকেঁ পূর্ব মধ্যকানীন ঐতিহাসিক পবিরেশমে তীবভুক্তি খর্থাত্ তিবহুত কহন গেন, জকব সাংস্কিতিক মূনমে ধর্ম ও২ দর্শনিক গাংভীর্য, কনাসভক বাগামেক উংকর্ষ, জ্ঞান-রিজ্ঞানক গবিমা ও২ ভাষা-সাহিত্যক সমৃদ্ধ পবম্পবাক খংতঃ সনিনা খংতর্প্ররাহিত খছি। এহি সভক সাক্ষাত্ মিথিনাক শৈর-শাক্ত, রৈষ্ণর, গাণপত্য, সৌব (সূর্য) ও২ রৌদ্ধ-জৈনক খাস্থা কেন্দ্র এরং ঋষি-হ্নিক সাধনা পবম্পবামে উংপনব্ধ খছি। প্রকাবান্তবসঁ ওহি স্থন সভকেঁ সাংস্কৃতিক চেতনাক ঐতিহাসিক স্থনক সংজ্ঞা দেন জাহ সকৈছ, জকব খাগ-কান্হি পর্যটনক দৃষ্টিসঁ মহত্ব রঁঢ়ি গেন খছি।
মিথিনাক প্রসিদ্ধি ওকব পাণ্ডিত্য পবম্পবা, দার্শনিক-নৈযাযিক চিন্তন, সাহিত্য-সংগীতক বাগামেক পবিরেশ, নোকচিত্রক রঁহ্খাযামী রিস্তাব, ধার্মিক খাস্থাক স্থন, ঐতিহাসিক ধবোহব খাদিক কাবণে রিশেষ খনুশীননীয খছি। জনক-যাজ্ঞরল্ক্য, কপিন, গৌতম, কণাদ, মংডন, উংদযন, রাচস্পতি, ক্ষমাবিন খাদি সদৃষ রিভূতি, গার্গী,

মৈত্রেয়ী, ভারতী, লখিমা আদি সন আদর্শ নারী চরিত, জ্যোতিরীশ্বর, বিদ্যাপতি, বিনযশ্রী, চন্দা ঝা, লাল দাস আদি সন আলোকধর্মী সাধক লোকনিক প্রসাদে এহি ঠামক জীবন-জগতমে আধ্যাত্মিক স্বখানুভূতি ওহ সারস্বত চেতনাদিক মণিকাঁচন সংযোগ দেখলা জাগছ। মিথিলা আধ্যামে বিদ্যাক কেন্দ্র মানল জাগছ।
আজুক মিথিলাঁচলক সংস্কৃতি উত্তর বিহারমে অবস্থিত বাল্মীকিনগর (ভৈঁসালোটন, পশ্চিম চম্পারণ) সঁ মংদার (বাঁকা, ভাগলপুর) ধরি, চতরা-বারাহ ক্ষেত্র (কোশী-অঁচল, নেপাল) সঁ জনকপুর-ধনুষা (নেপাল) ধরি ওহ কটৈরা (চাম্হল্ডা, মুজফ্ফরপুর), বনগাঁব-মহিষী, জযমংগলা (বেঁগূসরায), বাবী-বঁস্বদেরা (সমস্তীপুর), কপিলেশ্বর-কুশেশ্বর-তিলকেশ্বর (দরভংগা), অহিযাবী-অকৌর-কোর্থ(মধুবঁনী), আমী(অম্বিকাস্থান, সারণ), হরিহরক্ষেত্র (সোনপুর, সারণ) বৈশালী আদি ধরি সূত্রবদ্ধ অছি। এহি সভ ধার্মিক তীর্থস্থল সভক পরিরেক্ষণসঁ প্রমাণিত হোগছ জে মিথিলাঁচল পংচদেরোপাসক ক্ষেত্র অছি। কালান্তরমে এহিসঁ বৌদ্ধ ওহ জৈন স্থল সভ সেহো অংতর্মুক্ত ভহ আলোচ্য ভূভাগকেঁ গৌরান্বিত কযললি।

পংচদেরোপাসক ক্ষেত্রক অর্থ ভেল- গণেশ, বিষ্ণু, সূর্য, শির ওহ ভগরতীক ক্ষেত্র। এহিমে সূর্য সর্বপ্রাচীন দের ছথি এরং শির সর্বপ্রাচীন ঐতিহাসিক দেরতা ছথি। বিঘ্নাঁতক গণেশক পূজন প্রাথমিক রূপেঁ কযল জাগছ এরং মাতৃপূজনক সংদর্ভমে ভগরতী অপন তীন্ রূপমে লোকপূজিত ছথি অর্থাত্ দুর্গা, কালী, মহালক্ষ্মী এরং সরস্বতী। ভগরতী শক্তিক আদি স্রোত ছথি, জনিকামে

সৃষ্টি, পোষণ ওহ সংহাব (নয) তীনূ শক্তি নিহিত খছি। হ্নদা নোকক নেন ওহ কন্যাণকাবিণী ছথি। ধনদেৱী নক্ষ্মীক পবিকল্পনা রৈষ্ণর ধর্মক উংকের্ষ কানমে ভেন ছন এরং ওহ রিষ্ণুক সেরিকা (খনংতশাযী রিষ্ণু), রিষ্ণুক শক্তি (নক্ষ্মী নাবাযণ) এরং দেরাভিষিক্ত (গজনক্ষ্মী) ভগরতীক ৰূপমে খপন স্বৰূপক রিস্তাব কযননি। ওনা তঁ নক্ষ্মী ওহ সবস্বতীকেঁ রিষ্ণুক পর্শ্বদেৱীক ৰূপমে পবিকল্পনা সর্রব্যাপক খছি। নক্ষ্মী ওহ গণেশক পূজন স্বখ–সমৃদ্ধিক নেন কযন জাগছ। প্রাচীন বাজকীয স্থাপত্যক সোহারটীমে প্রাযঃ গণেশ খথরা নক্ষ্মীক মূর্তি উংকীর্ণ খছি।

পংচদেরোপাসনা রস্তুতঃ ধার্মিক সদ্ভারক প্রতীক খছি। মিথিনাংচনমে এহি পাঁচো দেৱী–দেরতাক স্বতংত্র রিগ্রহ সেহো প্রাপ্ত হোগছ। ভাবতীয দেরভারনাক রিস্তাবক মূনমে ভগরতী ছথি, জে কতহু সপ্তমাতৃকাক ৰূপমে পূজিত ছথি তঁ কতহু দশমহারিদ্যাক ৰূপমে। সপ্তমাতৃকা রস্তুতঃ সাত দেরতা সভক শক্তি ছথি– ব্রহ্মাণী (ব্রহ্মা), রৈষ্ণরী (রিষ্ণু), মাহেশ্বৰী (মহেশ), গন্দ্রাণী (গন্দ্র), কৌমাবী (হ্নমাব কার্তিকেয), রাবাহী (রিষ্ণু–রাবাহ) ওহ চাহ্নুন্ডা (শির)। এহি সপ্তমাতৃকাক খরধাবণা দানর–সংহাবক নেন সংহাক্ত শক্তিক ৰূপমে কযন গেন ছন, জে খাগ ধবি পিন্ড ৰূপেঁ নোকপূজিত ছথি। হ্নদা এক ফনক পব সপ্তমাতৃকাক শিল্পাংকনক খাবস্তু হ্নষাণকানমে ভহ গেন ছন। চাহ্নুন্ডাকেঁ ছোড়ি সভটা দেৱী দ্বিভুজী ছথি। সভক এক হাথমে খমতকনশ এরং দোসব খভযহ্নদ্রামে উংকীর্ণ খছি। মিথিনাংচনক নোকজীরনমে জনপদীয খরধাবণাক খনুসাব সপ্ত

মাতৃকাক নামাৱলী ভিন্ন অছি। ঃদা ৱিঠিক্ষযা মাগ (জ্যোঠা, আদিমাতা, মাতৃব্রহ্ম) সভমে সমান ৰূপেঁ প্রতিষ্ঠিত ছথি। যদ্য সপ্তমাতৃকাক ঐতিহাসিক প্রস্তর শিল্পাংকন এহি ভূভাগসঁ অপ্রাপ্য অছি, ঃদা দশমহাৱিদ্যাক ঐতিহাসিক মূর্তি সভ ভীঠভগৱানপুৱ (মধুৱঁনী) এৱং গঢ়-ৱঁকআৱী (সহৱসা)মে উঁপলব্ধ অছি।

<u>পংচদেৱোপাসক ভূমি মিথিলা</u>

ভাৱতীয দেৱভাৱনাক উঁদ্ভৱ এৱং ৱিকাসক অনুক্রম শাস্ত্র-পুৱাণমে অভিৱ্যংজিত অছি, জকৱ প্রত্যক্ষ দর্শন মিথিলাংচলমে প্রাপ্য দেৱী-দেৱতাক ঐতিহাসিক মূর্তি সভমে হোগছ। একটা ব্রহ্ম (আদিব্রহ্ম, পৱব্রহ্ম)ক পৱিকল্পনাসঁ সৃষ্টি সংভৱ নহি। অতঃ মাতৃব্রহ্মক অৱধাৱণাক জন্ম ভেল, ঃদা ওহ সংযুক্ত অর্থাত্‌ অর্ধনাৱীশ্বৱক ৰূপমে পৈকল্পিত ভেলাহ।, জে ৰুসী নদিযামী (ৱেঁনীপুৱ, দৱভংগা/ বাজনগৱ, মধুৱঁনী) গামক অঘোষিত প্রাচীন মূর্তি সংগ্রহালযমে সংৱক্ষিত অছি। এহি ষষ্টভুজী প্রস্তৱ মূর্তিক ৱাম ভাগ নাৱীক এৱং দহিন ভাগ পুৰুষক অছি। এহি ষষ্টভুজী প্রস্তৱ মূর্তিক ৱাম ভাগ নাৱীক এৱং দহিন ভাগ পুৰুষক অছি। হিনক হাথ সভমে ত্রিদেৱ (ব্রহ্মা-ৱিষ্ণু-মহেশ)ক আযুধ ৱ উঁপকৱণ সভ শোভিত অছি- অক্ষমালা, ত্রিশূল ও ৱৱঃদা এৱং পোথী, গদা ও ভযঃদ্রা। ঃদা সৃষ্টিক লেল পার্থক্যক আৱশ্যকতা অনুভূত কএল গেল। ফলতঃ দেৱস্বৰূপ

ব্ৰহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ (ত্রিদেৱ)ক পৰিকল্পনা মূর্ত কযল গেল। ভণ্ডী (ৱঁহেড় ী, দৰভঁগা)ক ত্রিমূর্তি একৰ উৎকৃষ্ঠ উদাহৰণ অছি। আলোচ্য ত্রিমূর্তিক মুখ্য ৰূপ ব্ৰহ্মাক থিক। ৰূপৰিন্যাসমে দাঢ় ী, হাথমে অক্ষমালা ও কমণ্ডলু, যজ্ঞোপৱীত, মুকুট ও ৱাহনক ৰূপমে হংস উৎকীর্ণ অছি। মূর্তি চতুর্ভুজী অছি। ভণ্ডীক শিৱমন্দিৰমে পূজিত আলোচ্য মূর্তি যদ্যপি মূলৰূপমে ব্ৰহ্মাক অলাৱা শিৱ ও বিষ্ণুক প্রতীকসঁ অলংকৃত অছি। মিথিলাঁচলমে ব্ৰহ্মাক পূজা প্রায়ঃ বর্জিত মানল গেল অছি, তথাপি ব্ৰহ্মা ভণ্ডী (দৰভঁগা) ও বিথান (সমস্তীপুৰ)মে অৱশিষ্ঠ ছথি। ভাৰতীয প্রতিমা বিজ্ঞানমে কল্যাণসুন্দৰ (শিৱপার্ৱতী পৰিণয)ক মূর্তিমে ব্ৰহ্মা পুৰোহিতক ৰূপমে উৎকীর্ণ ছথি।

সংযুক্ত মূর্তিক এহি পৰম্পৰামে হৰিহৰ (বিষ্ণু-শিৱ)ক উল্লেখ আৱশ্যক অছি। মূর্তিক দহিন ভাগমে শিৱ ও ৱাম ভাগমে বিষ্ণু উৎকীর্ণ ভেল ছথি। শিৱক অস্ত্রাঙ্গিক সূচক অছি জটা, ত্রিশূল ও নাগ এৱং অস্ত্রাঙ্গি বিষ্ণু ৱোঁধক কিৰীট, চক্র ও শঁখ অছি। হৰিহৰক সৰাঁগ সুন্দৰ ও অক্ষত পালকালীন প্রস্তৰ প্রতিমা ৱাল্মীকিনগৰ (নেপাল দিস) এৱং হৰিহৰক্ষেত্র (সাৰণ)মে সংৰক্ষিত অছি। শৈৱ ও ৱৈষ্ণৱ সম্প্রদায মধ্য সমন্বযক একটা উপক্রম ৱঁনি গেল হৰিহৰক পৰিকল্পনা। হৰি ও হৰ ৱস্তুতঃ একে ছথি- "ভল হৰ, ভল হৰি, ভল তুঅ কলা। খনহি পীতৱসন, খনহি ৱঁঘছলা"। হৰিহৰ ক্ষেত্র সংগম তীর্থ ৱঁনল অছি। এহি ঠাম প্রতিৱর্ষ কার্তিক পূর্ণিমাক অৱসৰপৰ বিশাল মেলা লগৈত অছি। পৌৰাণিক কথাক অনুসাৰ এহিঠাম গজ-গ্রাহক সংঘৰ্ষক অংত বিষ্ণুক হাথে

भेल छल। एवं प्रकारे त्रिमूर्तिक परिकल्पनामे प्रतीकात्मक तत्व निहित अछि- सृजन, पालन ओ संहारक शक्ति। ब्रह्मचार्य, गार्हस्थ्य ओ संन्यासक संग-संग सात्विक राजसी ओ तामसी वृत्तिक समन्वय। तहिना हरिहरक परिकल्पनाक पृष्ठभूमिमे अन्तर्निहित अछि साम्प्रदायिक सद्भाव, जे ओहि युगक लेल अनिवार्य बनि गेल छल। साम्प्रदायिक विखण्डनसँ सामाजिक एकता खण्डित होइत अछि।

आलोच्य त्रिदेवमे देवाधिदेव महादेव शिवक स्थान सर्वोच्च अछि। शिवक पुरातात्विक सर्वप्राचीन अवशेषक रूपमे मोहनजोदड़ो क पशुपति शिव अछि, जे समस्त जीव-जन्तुक अधिपति बनल छथि। शिवकेँ गार्हस्थ जीवनक अधिष्ठाता मानल गेल अछि, फलतः ओ समस्त गृहस्थ लोकनिक पूज्य बनल छथि। हिनक लीला विस्तार पुराण-साहित्यक अतिरिक्त भारतीय मूर्तिकलामे सेहो देखना जाइछ। शैव परिवारमे शिवक अलावा पार्वती, गणेश ओ कार्तिकेय सेहो शास्त्र ओ लोकपूजित बनल छथि। त्रिदेवमे मात्र शिवक गार्हस्थ्य जीवनक एकटा विलक्षण अवधारणा बनल अछि। शिव औघरदानी छथि, कल्याणकारी देवता छथि एवं कालान्तर प्रलयंकर शिव अनंत प्राचीन एवं मिथिलांचलक सर्वप्रिय देवता छथि। ओना तँ शिवक परिकल्पना वैदिक थिक तथापि शिव-शक्तिक गौरवगान शैव पुराण सभमे विशेष रूपेँ भेल अछि। तदनुसार शिव स्वरूपक परिकल्पना प्राचीन मुद्रा अहिमे प्रत्यक्ष रूपे अंकित अछि। कुषाणराज वस्वदेवक मुद्रापर शिव ओ हुनक वाहन वृषभ उत्कीर्ण अछि। हिनक सौम्य ओ रौद्ररूप दुनू प्रतंकित अछि। माथपर चन्द्रमा, हाथमे

त्रिशूल, पिनाक ओ डमरू, त्रिनेत्र, जँघछला, रूद्राक्ष, नागभूषण, वृषभ वाहन आदि विशिष्ठ पहिचान बनल अछि। हिनक सौम्य रूप कल्याणसुन्दर, ललितरूप उमामाहेश्वर ओ रौद्ररूप महाकालमे अभिव्यंजित अछि। शिव नृत्य देवता नटेशक रूपमे सेहो विन्यस्त छथि। नटराज शिवक एकटा विलक्षण पालकालीन प्रस्तर मूर्ति तारानारी (दरभंगा)मे पूजित अछि। एहि मूर्तिमे नटराज शिव दैत्यपुत्र अपस्मारक कान्हपर ठाढ़ भऽ नृत्यरत छथि। चतुर्भुजी शिवक ऊपरका दूनू हाथमे गजासुरक वध निर्दिष्ठ अछि। गजक पीठपर गणेश आसीन छथि। शेष चारिटा हाथमे त्रिशूल, डमरू ओ नृत्यमुद्रा सूचित अछि। एहि तरहक एकटा पालयुगीन प्रस्तर मूर्ति परौर(सिवान)मे सेहो हम देखने छलहुँ। मूर्ति साढ़े चारि फीटक अछि।

मध्यकालीन परिवेशमे शैव प्रतिमामे सर्वाधिक लोकप्रियता उमा-माहेश्वरकेँ प्राप्त भेलैक। एहि तरहक मूर्ति सभ मिथिलांचलक भीठ-भगवानपुर, बलरान वाजेश्वर, राँटी, महादेवमठ, तिरहुता, सौराठ, भोजपरौल, बलराबौ, गान्धीरेश्वर, कोर्थ, सिमरिया-भिण्डी, डोकहर, मंगरौनी ओ वस्वदेवामे प्राप्त अछि। एहि मूर्तिमे उमा(पार्वती) शिवक वाम जाँघपर बैसल छथि। शिव वाम हाथसँ उमाक आलिंगन कऽ रहल छथि। शिवक दहिन हाथमे त्रिशूल ओ वामहाथसँ देवीक वाम अंगक स्पर्श कऽ रहल छथि। पाठपीठमे शिव-पार्वतीक वाहन क्रमशः वृषभ ओ सिंह विश्रामक स्थितिमे उत्कीर्ण अछि। संभवतः एहि मूर्तिक परिकल्पना शंकराचार्यक सन्यासक विपरीत गृहस्थाश्रम दिस उत्प्रेरित करैत अछि।

पार्वतीक अभिशिल्पन स्वतंत्र रूपेँ सेहो भेल अछि।

ফ্‌নহব (গিবিজা স্থান, মধ্‌ৱঁনী), মিবজাপ্পব (দবভঁগা) ও ভবরাবী (সমস্তীপ্পব) ক মন্দিব সভমে স্থাপিত ও পূজিত গিবিজা রস্তুতঃ পার্রতীক প্রতিৱোপ ছথি, জাহিমে ফ্‌নহব ও মিবজাপ্পবক গিবীজাক মধ্যকানীন প্রস্তব প্রতিমা সভক পার্শ্বমে গণেশ ও কার্তিকেয সেহো প্রতিষ্ঠিত ছথি। দর্পণ গিবিজাক রিশিষ্ঠ পহচান ৱঁনন খছি। কিছ উঁমা-মাহেশ্বৱক প্রাচীন প্রতিমামে সেহো পার্রতীক হাথমে দর্পণ স্বশোভিত ছনি। দর্পণ শ্রৃংগাব সূচক প্রতীক খছি। সভটা মূর্তি স্থানক ক্ষুদ্রামে ৱঁনন খছি এরং নখ-শিখ রিভিন্ন খাভূষণসভসঁ খনংম্রত খছি। মূর্তিমে গণেশ ও কার্তিকেযক উঁপস্থিতি হুনক রাসেন্য রৌধক খছি। দবভঁগাক মিবজাপ্পব মোহন্নামে খরস্থিত এরং ম্লেছমর্দনীক ৰূপে নোকখ্যাত ঙা , মূর্তি সরাঁগ স্বন্দব ও কনামেক খছি। ফ্‌নহবক গিবীজা ৰূপেঁ পূজিত পার্রতীক রিশেষ পূজা জানকী কবৈত ছনীহ। 'বামচবিত মানস'ক ফ্‌নরাবী প্রসংগক খন্বৰূপেঁ গিবীজা খাগযো ক্ষমাবী কন্যা নোকনিক খভীষ্ঠ ৱঁনন ছথি।

শির-পার্রতীক প্রতীকপূজন জনঠবীমে খরস্থিত শিরনিংগক ৰূপমে সেহো নোকপ্রচনিত খছি। ক্ষুদা শিরনিংগমে পার্রতীক্ষুখক খভিশিল্পন একক্ষুখী শিরনিংগ খথরা গৌবীশংকবক ৰূপেঁ খভিজ্ঞাত খছি। একক্ষুখী শিরনিংগক সর্রপ্রাচীন প্রস্তব মূর্তি (ক্ষষাণকানীন) চন্ডীস্থান (খৱেবাজ, প. চম্পাবণ) মে হম দেখনে ছনহুঁ। একক্ষুখী শিরনিংগ জমথবি (মধ্‌ৱঁনী), হাজীপ্পব (ৱৈশানী), খাদিক খতিবিক্ত চতুর্ক্ষুখী শিরনিংগক গুপ্তকানীন প্রতিমা কম্মন ছপবা (খভিনেখহাঙ্ক, ৱৈশানী)ক খনারা ৱঁনিযাঁ

(রৈশানী)ক পানঘগীন চতুর্মুখী শিরনিংগক পবম্পবামে খবেবাজ (প.চম্পাবণ)ক শিরমন্দিবমে চতুর্মুখী পশুপতি শিরনিংগ সংপূজিত খছি। এম্হব গঠপ্ববা (রৈগ্বসবায)ক মংদিবমে একটা প্রাচীন চৌমুখী মহাদেরক নোকপূজন পবম্পবীত খছি।

শিরনিংগক পবিকল্পনা জ্যাতিনিংগ (দ্বাদশ জ্যাতির্নিংগ), একাদশরুদ্র (মংগবৌনী), সহস্রমুখনিংগ (কটহবিযা, রৈশানী/ রাবী, সমস্তীপ্বব)ক খতিবিক্ত রিশান শিরনিংগ (তিনকেশ্বব, দবভংগা/ চেচব, রৈশানী), ঘূর্ণিত, শিরনিংগ (জমথবি, মধ্রবনী) খাদি সূচিত খছি। কুশধ্বজ জনক দ্বাবা স্থাপিত কুশেশ্বব, সীবধ্বজ জনক দ্বাবা প্রতিষ্ঠাপিত তিনকেশ্বব, কপিন দ্বাবা স্থাপিত কপিনেশ্বব, রিদেশ্ববক খংকুবিত শিরনিংগ, খবেবাজক সোমেশ্ববনাথ, কননাক কন্যাণেশ্বব শির, ঋষিশৃংগ দ্বাবা স্থাপিত সিংহেশ্ববনাথ, নেপান তবাগক জনেশ্বব খাদি প্রসিদ্ধ শিরতীর্থ খছি, জাহিঠাম প্রাযঃ প্রত্যেক ববিরাব শিরবাত্রি খাদিক খনারা সারনমে ভবি মাস শিরক জনাভিষেক হোগছ। পবিসবমে শিরভক্তক রৌনবমক জযঘোষ, কাঁরবিযা সভক তীর্থরাস, মেনাদি নগৈত খছি। শিরবাত্রিক মেনা রিশেষ মহত্বক হোগছ। সভ্যাজাত (খনৌনীগঢ়, রৈগ্বসবায/ জনকপ্বব, নেপান) মে শির শিশু রূপমে ও পার্রতী মাতা রূপমে উৎকীর্ণ খছি, তাঁত্রিক মূর্তি। গণেশ যদ্যপি শিরপুত্র ছথি, মুদা পংচদেরোপাসনামে ও প্রথম ছথি। কোনো শুভ কার্যক খাবম্ভমে গণেশ পূজন কযন জাগছ। কিযেক তঁ ও রিঘ্ননাশক ও সিদ্ধি দাতা দের মানন জাগত ছথি। মুখ্য নক্ষণ মানন জাগছ–ঠিগনা কদ, নম্বোদব, সূঢ়, হাথমে খংকুশ (পবশু), কনম এরং

নছূ। হাথ সভক সংখ্যা চাবিসঁ ৰাঁবহ ধবি মানন জাগছ। ও স্থানক ননিতাসনমে ৰৈসন খথরা নৃহ হ্নদ্রামে নির্মিত পাওন জাগছ। মন্দিবক প্ররেশ দ্বাবপব গণেশক প্রতিষ্ঠা দেন জাগছ। গণেশক স্বতংত্র প্রতিমা কোর্থূ, হারীডীহ, ভীঠ-ভগরানপ্পব, সৌবাঠ, দেহ্কনী, হ্ফনহব, কবিযন, ভোজ পবৌন, ৰহেড় া, ভষ্টী, রিঠ্ঠু ৰকখাব, নহেবিযাসবায, বতনপ্পব খাদি স্থান সভমে পূজন জাগত ছথি। মাতা শিশ্বক ৰূপমে পার্রতীক গোদমে শিশ্ব গণেশক খনারা গণেশক মূর্তি নক্ষ্মী (নক্ষ্মী গণেশ, দিপারনী)ক সংগ ও মহিষাস্ববমর্দিনী দ্গা (পার্রতী ৰূপা)ক পর্শ্ব দেরতাক ৰূপমে সংবচনাক নোকপবম্পবা খছি। রিজযাদশ্মীক খরসবপব পবম্পবাসঁ ৰনৈত মহিষাস্ববমর্দিনী দ্গাকি পার্শ্বদেরতা গণেশ ও কার্তিকেয মানন জাগত ছথি। কার্তিকেযক স্বতংত্র প্রস্তব প্রতিমা সভ (পানহগীন) ৰসাঢ় (ৰৈশানী) এরং রস্ববখাবা (মধ্বনী)ক মন্দিবসভমে প্রতিষ্ঠিত এরং পূজিত খছি। কার্তিকেয যহ্ন্বক দেরতা মানন জাগত ছথি। হিনকা স্কন্দ ও মহাসেনক ৰূপমে সেহো জানন জাগত ছনি। কার্তিকেযক মূর্তিমে মোবক রাহন এরং হাথমে ৰবছী (শূন)ক রিধান খভিহিত খছি। দ্নূ প্রস্তব প্রতিমা পান কনাক কনামেক প্রতিমান খছি। প্প্ড্ররর্ধনমে কার্তিকেযক মন্দিবক উল্লেখ সেহো প্রাপ্ত হোগছ। প্প্ড্ররর্ধনক ভৌগোনিক পহিচান পূর্ণিযাঁক(জনপদক)সঁ কযন গেন খছি।

শির পবিরাবক একটা রিশান সংগমর্মব মূর্তি নানগংজ (ৰৈশানী)ক শিরমন্দিবমে স্থাপিত এরং পূজিত খছি। রৃষভক পীঠপব শির-পার্রতী খাসীন ছথি। গণেশ ও

কার্তিকেয অপন মাতা-পিতা (শিব-পার্বতী)ক গোদীমে বৈসল ছথি। শিল্প ও শৈলীমে আলোচ্য মূর্তি বিলক্ষণ অছি। শিব পরিবারক একটা আর দেবতা ছথি ভৈরব, জনিক আকৃতি ভযানক, বঢ়ল পেট, গরামে রুণ্ডমাল, নাগাভূষণ, হাথমে ত্রিশূল আদি শোভিত অছি। ভৈরবক বিশাল প্রস্তর মূর্তি বঠিযা (ভৈরব বলিযা, সকরী, দরভংগা)মে পূজিত অছি। ভৈরব জ্বালমুকুট পহিরনে ছথি। এহি ভৈরব মূর্তিক দোসর প্রতি ভমরলপুর সংগ্রহালযসঁ প্রাপ্ত ভেল অছি। ভৈরবকেঁ শিবক রৌদ্ররূপ কহল গেল অছি। নেপাল উপত্যকা (কাঠমাণ্ডূ)মে ভৈরবক মূর্তিসভক অনেক প্রকার দেখলে ছলন্হি– আকাশ–ভৈরব, পাতাল ভৈরব, কাল ভৈরব, উন্মত্ত ভৈরব আদি। কুমারী কন্যা লোকনিক হেতু উন্মত্ত ভৈরবক পূজন বর্জিত অছি। শিবক কাশীমে বর্চস্ব ছলি (বিশ্বনাথ) তঁ ভৈরবক বর্চস্ব তিরহুতমে মানল গেল অছি। কাশীকেঁ শিব অপনে রখলনি, ভৈরব তিরহুত দেল। মিথিলাংচলমে শিব ভক্তিক রূপমে নচারী গান ও নর্তনক বিধান অছি। মৈথিলীমে বহুতরাস নচারী রচল গেল। আগলে অকবরীমে নচারী গানক উল্লেখ প্রাপ্ত হোইছ। নচারীক একটা অর্থ ভেল– নচারী, অর্থাত্ নচারী গীতসভমে দুখ–দৈন্যক ভাব অভিব্যংজিত অছি। দোসর অর্থ ভেল নৃত্যক আচারসঁ সংবলিত গীত অনুষ্ঠান। নচারী গযনিহার ডমরুক সংগে নাচি–নাচি কএ গবৈত ছথি। গীত ও নৃত্য একটা আনুষ্ঠানিক তত্ত্ব থিক। ভক্তিপরক গীতসভমে নচারীক স্থান বিশিষ্ট অছি। “সংগীত ভাস্কর”ক অনুসার “গীতং বাদ্যং তথা নৃত্যং ত্রযং সংগীতমুচ্যতে” অর্থাত্ গীত, নৃত্য ও বাদ্য মিলকএ সংগীত সৃজিত হোইছ। জঁ এহিমে নাট্যক সমাবেশ কএ দেল

জায তঁ এহি প্রকাবক সাংগীতিক বচনা কীর্তনিযাঁ ৰঁনি জাগছ। "হবগৌবী রিরাহ" (জগজ্যাতির্মন্ন) শির-ভক্তি রিষযক একটা সাংগতিক বচনা থিক জাহিমে নচাবী গীত সেহো প্রতিধ্বনিত খছি।

<u>ভাবতীয দেরভারনাক উঁদ্ভর এরং রিকাসক খনুক্রম</u>

শাস্ত্র-প্রবাণমে খভিব্যংজিত খছি, জকব প্রত্যক্ষ দর্শন মিথিলাঁচলমে প্রাপ্য দেরী-দেরতাক ঐতিহাসিক মূর্তি সভমে হোগছ। একটা ব্রহ্ম (খাদিব্রহ্মে, পবব্রহ্ম)ক পবিকল্পনাসঁ সৃষ্ঠি সংভর নহি। খতঃ মাহত্ত্রব্রহ্মক খরধাবণাক জন্ম ভেল, ঋদা ওহ সংযক্ত খর্থাত্ খর্ধনাবীশ্বরক ৰূপমে পৈকল্পিত ভেলাহ।, জে ঋসী নদিযামী (ৰেঁনীপ্বব, দবভংগা/ বাজনগব, মধুৰঁনী) গামক খঘোষিত প্রাচীন মূর্তি সংগ্রহালযমে সংবক্ষিত খছি। এহি ষষ্টভুজী প্রস্তব মূর্তিক রাম ভাগ নাবীক এরং দহিন ভাগ প্বকুষক খছি। এহি ষষ্টভুজী প্রস্তব মূর্তিক রাম ভাগ নাবীক এরং দহিন ভাগ প্বকুষক খছি। হিনক হাথ সভমে ত্রিদের (ব্রহ্মা-রিষ্ণু-মহেশ)ক খাযধ র উঁপকবণ সভ শোভিত খছি- খক্ষমালা, ত্রিশূল ও রবঋদা এরং পোথী, গদা ও ভযঋদ্রা। ঋদা সৃষ্ঠিক লেল পার্থক্যক খারশ্যকতা খনুভূত কএল গেল। ফলতঃ দেরস্বৰূপ ব্রহ্মা-রিষ্ণু-মহেশ (ত্রিদের)ক পবিকল্পনা মূর্ত কযল গেল। ভষ্টী (ৰঁহেড় ী, দবভংগা)ক ত্রিমূর্তি একব উঁকৃষ্ঠ উঁদাহবণ খছি। খালোচ্য ত্রিমূর্তিক ঋখ্য ৰূপ ব্রহ্মাক থিক। ৰূপরিন্যাসমে দাঢ় ী, হাথমে খক্ষমালা ও কমন্ডলু, যজ্ঞোপরীত, ঋকুষ্ট ও রাহলক ৰূপমে হংস উঁকীর্ণ খছি। মূর্তি চতুর্ভুজী খছি। ভষ্টীক শিরমন্দিবমে পূজিত খালোচ্য মূর্তি যদ্যপি মূলৰূপমে

ব্রম্নাক খনারা শির ও রিষ্ণুক প্রতীকসঁ খনংম্নত খছি। মিথিনাঁচনমে ব্রম্নাক পূজা প্রায়ঃ রর্জিত মানন গেন খছি, তথাপি ব্রম্না ভষ্ঠী (দবভংগা) ও রিথান (সমস্তীপ্পব)মে খরশিষ্ঠ ছথি। ভাবতীয প্রতিমা রিজ্ঞানমে কন্যাণস্বন্দব (শিরপার্রতী পবিণয)ক মূর্তিমে ব্রম্না প্পবোহিতক রূপমে উঁকীর্ণ ছথি।

সংযুক্ত মূর্তিক এহি পবম্পবামে হবিহব (রিষ্ণু-শির)ক উঁল্লেখ খারশ্যক খছি। মূর্তিক দহিন ভাগমে শির ও রাম ভাগমে রিষ্ণু উঁকীর্ণ ভেন ছথি। শিরক খহ্ণর্ঙ্গিক সূচক খছি জটা, ত্রিশূন ও নাগ এরং খহ্ণর্ঙ্গি রিষ্ণু রোঁধক কিরীট, চক্র ও শঁখ খছি। হবিহবক সর্রাংগ স্বন্দব ও খক্ষত পানকানীন প্রস্তব প্রতিমা রান্মীকিনগব (নেপান দিস) এরং হবিহবক্ষেত্র (সাবণ)মে সংবক্ষিত খছি। শৈর ও রৈষ্ণর সম্প্রদায মধ্য সমন্বযক একটা উঁপক্রম রঁনি গেন হবিহবক পবিকল্পনা। হবি ও হব রস্তুতঃ একে ছথি- “ভন হব, ভন হবি, ভন তুখ কনা। খনহি পীতরসন, খনহি রঁঘছনা”। হবিহব ক্ষেত্র সংগম তীর্থ রঁনন খছি। এহি ঠাম প্রতিরর্ষ কার্তিক পূর্ণিমাক খরসবপব রিশান মেনা নগৈত খছি। পৌবাণিক কথাক খনুসাব এহিঠাম গজ-গ্রাহক সংঘর্ষক খঁত রিষ্ণুক হাথে ভেন ছন। এরং প্রকাবে ত্রিমূর্তিক পবিকল্পনামে প্রতীকাত্মক তত্ত্ব নিহিত খছি- সৃজন, পানন ও সংহাবক শক্তি। ব্রম্নচার্য, গার্হস্থ্য ও সংন্যাসক সংগ-সংগ সাত্ত্বিক বাজসী ও তামসী বৃত্তিক সমন্বয। তহিনা হবিহবক পবিকল্পনাক পৃষ্ঠভূমিমে খন্তর্নিহিত খছি সাম্প্রদাযিক সদ্ভার, জে ওহি যুগক নেন খনিরার্য রঁনি গেন ছন। সাম্প্রদাযিক রিখল্ডনসঁ সামাজিক একতা খণ্ডিত হোগত

अछि ।

आलोच्य त्रिदेवमे देवाधिदेव महादेव शिवक स्थान सर्वोच्च अछि । शिवक पुरातात्विक सर्वप्राचीन अवशेषक रूपमे मोहनजोदड़ो क पशुपति शिव अछि, जे समस्त जीव-जन्तुक अधिपति बनल छथि । शिवकेँ गार्हस्थ जीवनक अधिष्ठाता मानल गेल अछि, फलतः ओ समस्त गृहस्थ लोकनिक पूज्य बनल छथि । हिनक लीला विस्तार पुराण-साहित्क अतिरिक्त भारतीय मूर्तिकलामे सेहो देखल जाइछ । शैव परिवारमे शिवक अलावा पार्वती, गणेश ओ कार्तिकेय सेहो शास्त्र ओ लोकपूजित बनल छथि । त्रिदेवमे मात्र शिवक गार्हस्थ्य जीवनक एकटा विलक्षण अवधारणा बनल अछि । शिव औघरदानी छथि, कल्याणकारी देवता छथि एवं कालानुसार प्रलयंकर शिव अत्यंत प्राचीन एवं मिथिलांचलक सर्वप्रिय देवता छथि । ओना तँ शिवक परिकल्पना वैदिक थिक तथापि शिव-शक्तिक गौरवगान शैव पुराण सभमे विशेष रूपेँ भेल अछि । तदनुसार शिव स्वरूपक परिकल्पना प्राचीन मुद्रा अहिमे प्रत्यक्ष रूपे अंकित अछि । कुषाणराज वसुदेवक मुद्रापर शिव ओ हुनक वाहन वृषभ उत्कीर्ण अछि । हिनक सौम्य ओ रौद्ररूप दुनू प्रत्यंकित अछि । माथपर चन्द्रमा, हाथमे त्रिशूल, पिनाक व डमरू, त्रिनेत्र, बघछला, रूद्राक्ष, नागभूषण, वृषभ वाहन आदि विशिष्ठ पहिचान बनल अछि । हुनक सौम्य रूप कल्याणसुन्दर, ललितरूप उमामाहेश्वर ओ रौद्ररूप महाकालमे अभिव्यंजित अछि । शिव नृत्य देवता नटेशक रूपमे सेहो विन्यस्त छथि । नटराज शिवक एकटा विलक्षण पालकालीन प्रस्तर मूर्ति ताराडीह (दरभंगा)मे पूजित अछि । एहि मूर्तिमे

নৰ্টৰাজ শিৰ দৈৎপৃত্ৰ খপস্মাৰক কান্হপৰ ঠাঢ় ভ২ নৃত্বত ছথি। চত্তৰ্ভুজী শিৰক উঁপৰকা দ্নূ হাথমে গজাস্বৰক ৰধ নিৰ্দিষ্ঠ খছি। গজক পীঠপৰ গণেশ খাসীন ছথি। শেষ চাবিটা হাথমে ত্ৰিশূন, ডমৰু ও নৃত্যমুদ্ৰা সূচিত খছি। এহি তৰহক একটা পানযুগীন প্ৰস্তৰ মূৰ্তি পপৌৰ(সিৰান)মে সেহো হম দেখনে ছনহুঁ। মূৰ্তি সাঢ়ে চাবি ফীটক খছি।

মধ্যকানীন পৰিৰেশমে শিৰ প্ৰতিমামে সৰাধিক নোকপ্ৰিযতা উঁমা-মাহেশ্বৰকেঁ প্ৰাপ্ত ভেনৈক। এহি তৰহক মূৰ্তি সভ মিথিনাঁচনক ভীঠ-ভগৰানপুৰ, বক্সীন বাজেশ্বৰ, ৰাঁথে, মহাদেৰমঠ, তিৰহুতা, সৌৰাঠ, ভোজপৰৌন, ৰনৰাৰী, গান্ডীৰেশ্বৰ, কোৰ্থ, সিমৰিযা-ভিন্ডী, ডোকহৰ, মংগৰৌনী ও ৰস্বদেৰামে প্ৰাপ্ত খছি। এহি মূৰ্তিমে উঁমা(পাৰ্ৰতী) শিৰক ৰাম জাঁঘপৰ বৈসন ছথি। শিৰ ৰাম হাথসঁ উঁমাক খানিংগন ক২ বহন ছথি। শিৰক দহিন হাথমে ত্ৰিশূন ও ৰামহাথসঁ দেৰীক ৰাম খংগক স্পৰ্শ ক২ বহন ছথি। পাঠপীঠমে শিৰ-পাৰ্ৰতীক ৰাহন ক্ৰমশঃ বৃষভ ও সিংহ ৰিশ্ৰামক স্থিতিমে উঁকোৰ্ণ খছি। সংভৰতঃ এহি মূৰ্তিক পৰিকল্পনা শংকৰাচাৰ্যক সন্যাসক ৰিপৰীত গৃহস্থাশ্ৰম দিস উঁৎপ্ৰেৰিত কৰৈত খছি।

পাৰ্ৰতীক খভিশিল্পন স্বতঁত্ৰ ৰূপেঁ সেহো ভেন খছি। ফুনহৰ (গিৰিজা স্থান, মধুৰঁনী), মিৰজাপুৰ (দৰভংগা) ও ভৰৰাৰী (সমস্তীপুৰ) ক মন্দিৰ সভমে স্থাপিত ও পূজিত গিৰিজা ৰস্তুতঃ পাৰ্ৰতীক প্ৰতিৰোপ ছথি, জাহিমে ফুনহৰ ও মিৰজাপুৰক গিৰীজাক মধ্যকানীন প্ৰস্তৰ প্ৰতিমা সভক পাৰ্শ্বমে গণেশ ও কাৰ্তিকেয সেহো প্ৰতিষ্ঠিত ছথি। দৰ্পণ গিৰিজাক ৰিশিষ্ঠ পহচান ৰঁনন খছি। কিন্তু উঁমা-মাহেশ্বৰক প্ৰাচীন প্ৰতিমামে সেহো

পার্রতীক হাথমে দর্পণ স্বশোভিত ছনি। দর্পণ শ্রৃংগাব সূচক প্রতীক খছি। সভটা মূর্তি স্থানক ক্ষদ্রামে রঁনন খছি এরং নখ–শিখ রিভিন্ন খাভূষণসভসঁ খনংহৃত খছি। মূর্তিমে গণেশ ও কার্তিকেযক উঁপস্থিতি হ্নক রাসেন্য রোঁধক খছি। দবভংগাক মিবজাপ্বব মোহন্নামে খরস্থিত এরং মহিষমর্দনীক ৰূপে নোকখ্যাত ওা, মূর্তি সরাংগ স্বন্দব ও কনামেক খছি। হ্নহবক গিবীজা ৰূপেঁ পূজিত পার্রতীক রিশেষ পূজা জানকী করৈত ছনীহ। ’বামচবিত মানস’ক হ্নরাবী প্রসংগক খন্বৰূপেঁ গিবীজা খাগযো ক্ষমাবী কন্যা নোকনিক খভীষ্ঠ রঁনন ছথি।

শির–পার্রতীক প্রতীকপূজন জনঢবীমে খরস্থিত শিরনিংগক ৰূপমে সেহো নোকপ্রচনিত খছি। ক্ষদা শিরনিংগমে পার্রতীক্ষখক খভিশিল্পন একক্ষখী শিরনিংগ খথরা গৌবীশংকবক ৰূপেঁ খভিজ্ঞাত খছি। একক্ষখী শিরনিংগক সর্রপ্রাচীন প্রস্তব মূর্তি (ক্ষষাণকানীন) চন্ডীস্থান (খবেবাজ, প. চম্পাবণ) মে হম দেখনে ছনহুঁ। একক্ষখী শিরনিংগ জমথবি (মধ্রঁনী), হাজীপ্বব (রৈশানী), খাদিক খতিবিক্ত চত্তর্ক্ষখী শিরনিংগক গ্বপ্তকানীন প্রতিমা কম্মন ছপবা (খভিনেখহাক্ত, রৈশানী)ক খনারা রঁনিযাঁ (রৈশানী)ক পানহাগীন চত্তর্ক্ষখী শিরনিংগক পবম্পবামে খবেবাজ (প.চম্পাবণ)ক শিরমন্দিবমে চত্তর্ক্ষখী পশ্বপতি শিরনিংগ সংপূজিত খছি। এস্তব গঢপ্ববা (রেঁগ্বসবায)ক মংদিবমে একটা প্রাচীন চৌক্ষখী মহাদেরক নোকপূজন পবম্পবীত খছি।

শিরনিংগক পবিকল্পনা জ্যাতিনিংগ (দ্বাদশ জ্যাতির্নিংগ),

একাদশৰুদ্র (মংগরৌনী), সহস্রলিংখনিংগ (কঠৈবিযা, রৈশানী/ রাবী, সমস্তীপ্পব)ক খতিবিঞ্জ রিশান শিরনিংগ (তিনকেশ্বৈব, দবভংগা/ চেচব, রৈশানী), ঘূর্ণিত, শিরনিংগ (জমথবি, মধ্রঁনী) খাদি সূচিত খছি। কুশধ্বজ জনক দ্বাবা স্থাপিত কুশেশ্বৈব, সীবধ্বজ জনক দ্বাবা প্রতিষ্ঠাপিত তিনকেশ্রৈব, কপিন দ্বাবা স্থাপিত কপিনেশ্বৈব, রিদেশ্বৈবক খংকবিত শিরনিংগ, খবেবাজক সোমেশ্বৈবনাথ, কননাক কন্যাণেশ্বৈব শির, ঋষিশৃংগ দ্বাবা স্থাপিত সিংহেশ্বৈবনাথ, নেপান তবাগক জনেশ্বৈব খাদি প্রসিদ্ধ শিরতীর্থ খছি, জাহিঠাম প্রায়ঃ প্রত্যেক ববিরাব শিরবাত্রি খাদিক খনাবা সারনমে ভবি মাস শিরক জনাভিষেক হোগছ। পবিসবমে শিরভক্তক রৌনরঁমক জযঘোষ, কাঁরবিযা সভক তীর্থরাস, মেনাদি নগৈত খছি। শিরবাত্রিক মেনা রিশেষ মহত্বক হোগছ। সদ্যাজাত (খনৌনীগঢ়, রেঁগ্বসবায/ জনকপ্পব, নেপান) মে শির শিশ্ব রূপমে ও পার্রতী মাতা রূপমে উঁকোর্ণ খছি, তাঁত্রিক মূর্তি। গণেশ যদ্যপি শিরপুত্র ছথি, তদা পঁচদেরোপাসনামে ও প্রথম ছথি। কোনো শ্বভ কার্যক খাবম্ভমে গণেশ পূজন কযন জাগছ। কিযেক তঁ ও রিঘ্ননাশক ও সিদ্ধি দাতা দের মানন জাগত ছথি। হুখ্য নক্ষণ মানন জাগছ–ঠিগনা কদ, নম্বাদব, সূঢ়, হাথমে খংকশ (পবশ্ব), কনম এরং নড্ডূ। হাথ সভক সংখ্যা চাবিসঁ রাঁবহ ধবি মানন জাগছ। ও স্থানক ননিতাসনমে বৈঁসন খথরা নৃত্য হুদ্রামে নির্মিত পাওন জাগছ। মন্দিবক প্ররেশ দ্বাবপব গণেশক প্রতিষ্ঠা দেন জাগছ। গণেশক স্বতংত্র প্রতিমা কোর্থূ, হারীডীহ, ভীঠ–ভগরানপ্পব, সৌবাঠ, দেকুনী, ফ্নহব, কবিযন, ভোজ পবৌন, রঁহেড়া, ভষ্টী, রিষ্ণু রঁকুখাব, নহেবিযাসবায, বতনপ্পব খাদি স্থান সভমে

পূজন জাগত ছথি। মাতা শিশুক রূপমে পার্বতীক গোদমে শিশু গণেশক অনারা গণেশক মূর্তি লক্ষ্মী (লক্ষ্মী গণেশ, দিপাবলী)ক সংগ ও মহিষাসুরমর্দিনী দুর্গা (পার্বতী রূপা)ক পার্শ্ব দেবতাক রূপমে সংরচনাক লোকপরম্পরা অছি। বিজযাদশমীক অবসরপর পরম্পরাসঁ ৱলৈত মহিষাসুরমর্দিনী দুর্গাকি পার্শ্বদেবতা গণেশ ও কার্তিকেয মানল জাগত ছথি। কার্তিকেযক স্বতংত্র প্রস্তর প্রতিমা সভ (পালযুগীন) ৱসাঢ় (ৱৈশালী) এবং রম্ভখাবা (মধুৱলী)ক মন্দিরসভমে প্রতিষ্ঠিত এবং পূজিত অছি। কার্তিকেয যুদ্ধক দেবতা মানল জাগত ছথি। হিনকা স্কন্দ ও মহাসেনক রূপমে সেহো জানল জাগত ছলি। কার্তিকেযক মূর্তিমে মোরক বাহন এবং হাথমে ৱরছী (শূল)ক বিধান অভিহিত অছি। দুনূ প্রস্তর প্রতিমা পাল কলাক কলামেক প্রতিমান অছি। পুণ্ড্ররর্ধনমে কার্তিকেযক মন্দিরক উল্লেখ সেহো প্রাপ্ত হোইছ। পুণ্ড্ররর্ধনক ভৌগোলিক পহিচান পূর্ণিযাঁক(জনপদক)সঁ কযল গেল অছি।

শির পরিরারক একটা রিশাল সংগমর্মর মূর্তি লালগংজ (ৱৈশালী)ক শিরমন্দিরমে স্থাপিত এবং পূজিত অছি। রূষভক পীঠপর শির-পার্বতী আসীন ছথি। গণেশ ও কার্তিকেয অপন মাতা-পিতা (শির-পার্বতী)ক গোদীমে ৱৈসল ছথি। শিল্প ও শৈলীমে আলোচ্য মূর্তি রিলক্ষণ অছি। শির পরিরারক একটা আর দেবতা ছথি ভৈরর, জনিক আকৃতি ভযানক, ৱঢ়ল পেট, গবামে ঝুণ্ডমাল, নাগাভূষণ, হাথমে ত্রিশূল আদি শোভিত অছি। ভৈররক রিশাল প্রস্তর মূর্তি রঠিযা (ভৈরর ৱলিযা, সকরী, দররংগা)মে পূজিত অছি। ভৈরর জ্বালঝকষ্ট পহিরলে

छथि। एहि भैरव मूर्तिक दोसर प्रति भुवनप्रभ संग्रहालयसँ प्राप्त भेल अछि। भैरवकेँ शिवक रौद्ररूप कहल गेल अछि। नेपाल उपत्यका (काठमाण्डू)मे भैरवक मूर्तिसभक अनेक प्रकार देखबामे छलन्हि- आकाश-भैरव, पाताल भैरव, काल भैरव, उन्मत्त भैरव आदि। कुमारी कन्या लोकनिक हेतु उन्मत्त भैरवक पूजन वर्जित अछि। शिवक काशीमे वर्चस्व छनि (विश्वनाथ) तँ भैरवक वर्चस्व तिवहुतमे मानल गेल अछि। काशीकेँ शिव अपने बखलनि, भैरव तिवहुत देल। मिथिलांचलमे शिव भक्तिक रूपमे नचारी गान ओ नर्त्तनक विधान अछि। मैथिलीमे रँहुतवास नचारी बचल गेल। आगने अकबरीमे नचारी गानक उल्लेख प्राप्त होइछ। नचारीक एकटा अर्थ भेल- नचारी, अर्थात् नचारी गीतसभमे दुःख-दैन्यक भाव अभिव्यंजित अछि। दोसर अर्थ भेल नृत्यक आचारसँ संवलित गीत अनुष्ठान। नचारी गयनिहार डमरूक संगे नाचि-नाचि कए गबैत छथि। गीत ओ नृत्य एकटा आनुष्ठानिक कृत्य थिक। भक्तिपरक गीतसभमे नचारीक स्थान विशिष्ठ अछि। “संगीत भास्कर”क अनुसार “गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते” अर्थात् गीत, नृत्य ओ वाद्य मिलकए संगीत सृजित होइछ। जँ एहिमे नाट्यक समावेश कए देल जाय तँ एहि प्रकारक सांगीतिक रचना कीर्तनियाँ कहल जाइछ। “हरगौरी विवाह” (जगज्ज्योतिर्मल्ल) शिव-भक्ति विषयक एकटा सांगितिक रचना थिक जाहिमे नचारी गीत सेहो प्रतिध्वनित अछि।

अनुश्रुतिक अनुसार शिव मिथिलांचलक सर्वलोकप्रिय देवता छथि। गामे-गाम शिवक पूजन होइत अछि। ओ

प्रागेतिहासिक, पौराणिक ओ लोकदेवता छथि। शास्त्र, पुराण, तंत्र, योग आदि ग्रंथसभमे हिनक माहात्म्य ओ दर्शन पाओल जाइछ। शंकराचार्य द्वारा स्थापित ज्योतिर्लिंगसभक विशाल भारतक धार्मिक एकताकेँ रेखांकित करैत अछि, तहिना काशी ओ मिथिलाक परिकल्पित परिक्रमाक अवधारणा आलोच्य शिवक्षेत्रकेँ महिमामंडन करैत अछि।

शिवक पश्चात् विष्णुपूजनक प्रधानता मिथिलांचलमे अछि। तद्विषयक पुरातात्विक प्रमाणस्वरूप स्थापत्य (मंदिर) ओ मूर्तिसभ एहि विशाल भूभागमे उपलब्ध अछि। एहिठामक जनजीवनमे वैष्णवधर्मिताक साक्षात् दर्शन पंचदेवोपासनामे विष्णुपूजन भस्मी त्रिपुण्डक संगे चन्दन तिलक, वामनवमी, विवाह-पंचमी, जन्माष्ठमी, सत्यनारायणपूजा आदि वैष्णवधर्मी अनुष्ठान, चतुः शंख अरिपन, अष्ठदल अरिपनक विन्यास, वैष्णवधर्मी कीर्तनिया नाच आदिमे होइत अछि। गुप्तकालमे वैष्णव धर्मकेँ राजकीय संरक्षण प्राप्त भेने ओ अपन उत्कर्षपर छल। तत्कालीन वैष्णवधर्मी पुराणसभमे हिनक महिमा मंडन भेल अछि। विष्णु द्विभुजीसँ चतुर्भुजी भेलाह। समुद्रमंथनसँ प्राप्त लक्ष्मीकेँ हुनक सेवामे लगाओल गेललि। लक्ष्मीनारायणक परिकल्पना कयल गेल। शेषशायी विष्णुक परिकल्पनाकेँ प्रस्तर शिल्पमे उत्कीर्ण कयल गेल। दशावतारक महिमा मंडनक क्रममे वराह अवतार ओ नरसिंह अवतारक मूर्तिसभ अपेक्षाकृत बेसी पाओल जाइछ। गुप्त राजा लोकनि वराह अवतारक माध्यमे पृथ्वी (साम्राज्य) उद्धारक रूपेँ प्रतीकित कयललि। मिथिलांचलमे वराह अवतारक एकटा मध्यकालीन सुन्दर

প্রস্তর মূর্তি তিলকেশ্বরগঢ় (দরভংগা)সঁ প্রাপ্ত ভেল অছি, জে সম্প্রতি চন্দ্রধারী রাজকীয সংগ্রহালয (দরভংগা)মে সংরক্ষিত অছি। তহিনা নরসিংহ অরতারক অভিলিপ্পিল দৃষ্ঠদললক সংদর্ভমে কযল গেল, মুদা মিথিলাংচলসঁ এহি তরহক মূর্তি অপ্রাপ্ত অছি। মিথিলাংচলমে গুপ্ত শাসলকালসঁ পাল-সেল ও কর্ণাট কাল ধরি রৈষ্ণরধর্মী মূর্তি সভক লির্মাণ ও প্রতিষ্ঠা ব্যাপক রূপেঁ কযল গেল। পালরংশী রাজা লোকলিক শাসলকালমে যদ্যপি সর্রধর্ম সমভারক (রৌদ্ধমূর্তি অভিলিপ্পিলক কারণে) প্রধালতা ছল, মুদা সেল ও কর্ণাট শাসল কালমে রৈষ্ণর ধর্মকেঁ ধার্মিক লরজাগরণক রূপমে স্বীকার কযল গেল অছি। জযদের, চৈতন্য, রিদ্যাপতি, চণ্ডীদাস, শংকরদের আদি এহি সাংস্কৃতিক যুগক সাক্ষাত্ রৈষ্ণরধর্মী চেতলা পুরুষ ছলাহ, জলিকা মাধ্যমে জলজীরল ধরি আন্দোলিত ভেল।
রিষ্ণুক উল্লেখ রেদমে পাওল জাইছ। মুদা পহিলে ও সূর্যক একটা রূপ ছলাহ। পাছাঁ চলি কএ একটা প্রমুখ দেরতা রঁলি গেলাহ। রঁসাঢ় (রৈশালী)ক পুরাতাত্ত্বিক উত্খললসঁ প্রাপ্ত একটা মাটিক মোহরপর উত্কীর্ণ ত্রিশূলক অগল-রঁগলমে শংখ ও চক্র উত্কীর্ণ অছি, ই লিসংদেহ রিষ্ণু প্রতীক থিক। সম্ভরতঃ ও শির ও রিষ্ণুক সাহচর্যক সদ্ভার প্রতীক অছি। একটা দোসর মোহরপর উত্কীর্ণ রেদীপর রাখল চক্রক দুলূদিস শংখ উত্কীর্ণ অছি, জে লিসংদেহ রৈষ্ণরধর্মী প্রতীক অছি। ই সভ গুপ্তকালীল পুরারশেষ অছি। রিষ্ণুক মূর্তি রিভিন্ন আকার-প্রকারমে রঁলল মিথিলাংচলমে প্রাপ্ত হোইছ।, জাহিমে দ্বিভুজী রিষ্ণুক এক হাথমে শংখ ও দোসর রর মুদ্রামে অছি। এহি রূপমে লোকপাল কহল জাইছ। এহিতরহক একটা রিশাল রিষ্ণুমূর্তি তিরহুতক কর্ণাটকালীল রাজধালী

सिमरौनगढ़ (नेपाल तराइ)मे प्राप्त अछि। सिमरौनागढ़मे विष्णुक वँह्तवास आदमकद चतुर्भुजी प्रतिमा सभ कंकाली मन्दिरक परिसरमे राखल अछि। विष्णुक माथपर किरीट ओ हाथसभमे शंख, चक्र, गदा ओ पद्म छाजीत छनि।

मिथिलांचलमे चतुर्भुजी विष्णुक पाल, सेन ओ कर्णाटकालीन पाठरक मूर्तिसभ हुलासपट्टी, भीठभगवानपुर, अन्धरा ठाढ़ी, विदेश्वर, भवानीपुर, जितवारपुर, जयनगर, नवार, अकौर, हाटी भौआर, हाटीडीह, पोखराम, नदहो, वखरावी, कनहौली, कोर्थ, सोनहद, रोवरा, तुमौल, नेहरा, कर्सो नदियामी, मदरीपा, केरही, भैरव वँलिपा, वँस्वदेरा, हाजीपुर, सोनपुर, सेहाल आदिक अतिविक्त सांस्कृतिक मिथिलांचलक सीमान्त क्षेत्र वाल्मीकिनगर (नेपाल तराइ) मे वँह्तवास आदमकद विष्णु मूर्ति सभ प्राप्त भेल अछि। संख्यामेक ओ गुणामेक दृष्टिसँ विष्णुक सर्वाधिक प्राचीन प्रस्तर मूर्ति सभ मिथिलांचलक अकौर नेपाल तराइक समरौनागढ़ ओ वाल्मीकिनगरमे प्राप्त अछि, जाहिसँ ई निष्कर्ष निकालल जा सकैछ जे ओ सभ वैष्णवधर्मक क्षेत्रमे प्रमुख स्थल छल। अकौर गाममे विष्णुक छहटा प्राचीन प्रस्तर प्रतिमा सभ सहजें उँखेलित भए प्राप्त भेल अछि। डॉ. सुरेन्द्र कमार झा ड्मरा परसा (मधुवँनी)क एकटा विलक्षण विष्णु मूर्तिक उल्लेख कयने छथि। चारि फीटक एहि मूर्तिक माथपर किरीटक स्थानपर नागफण (सप्तागस)क अलंकरण कयल गेल अछि, जे शेषनागक प्रतीक अछि। एहि मूर्तिक रचनाकाल तेरहम चौदहम शताब्दी आंकल गेल अछि। सभटा प्रतिमामे विष्णु स्थानक मुद्रामे वँलल छथि ओ हुनक

পার্শ্বিরাহিনী রূপেঁ চঁরবধারিণী নক্ষ্মী ও রীণাধারিণী সরস্বতী উঁকীর্ণ ছথি। পূর্র মধ্যকানমে রৈষ্ণর ধর্ম এহি ক্ষেত্রক একটা নোকপ্রিয সম্প্রদায ছন।

রিষ্ণুক এহি পরম্পরিত স্বরূপক ক্রমমে কিছু ঐতিহাসিক রিশিষ্ঠ মূর্তি শিল্প প্রাপ্ত ভেন অছি। পহিন রস্বদেরা (সিংগিযা, সমস্তীপুর)সঁ প্রাপ্ত রিষ্ণুক রাস্বদের রূপ। চতুর্ভুজী রাস্বদেরক হাথসভমে অগ্নিপুরাণ (অধ্যায চৌরানিস)ক অনুসার উঁপরক হাথসভমে শঁখ-চক্র ও নিচনকামে গদা-কমন রঁনন অছি। মাথপর কিরীট ও গনামে ঠেহুন ধরি রনমানাক অনংকরণ। মুখ্য মূর্তিক পার্শ্ব ভাগমে অনেক দেরী-দেরতা সভ উঁকীর্ণ ছথি। দোসর অছি অরাম (উঁজান নগ, দরভংগা)ক শেষশাযী রিষ্ণু (৪৭" * ২৬")। এহিমে শেষশয্যাপর রিশ্রাম করৈত রিষ্ণুক পৈর দারি রহন ছথিন নক্ষ্মী। নাভিসঁ নিকনন নান কমনপর রৈসন ছথি ব্রহ্মা। তেসর প্রতিমা অছি তিনকেশ্বর (দরভংগা)সঁ প্রাপ্ত ররাহ রিষ্ণু (৩৪")। রীর ভারমে ঠাঢ় এহি চতুর্ভুজী মূর্তিক চারুহাথমে শঁখ, চক্র, গদা ও পদ্মক অতিরিক্ত রাম স্কঁধপর পৃথ্বী রৈসন ছথি, জনিক উঁদ্ধার রিষ্ণু ররাহ অরতারক রূপেঁ কযননি। ররাহরিষ্ণুক পাদভাগমে নাগদেরী সভ হাথমে ক্ষত্র ও কমন ধযনে ছথি। ররাহ অরতারক একমাত্র স্বতঁত্র প্রতিমা একটা দুর্নভ ও ঐতিহাসিক উঁপনব্ধি মানন জাএছ। তিনকেশ্বর মহাদের মন্দিরক দ্বারখণ্ডপর কর্মাদিত্যক শিনানেখ তিরহুতামে উঁকীর্ণ অছি। সংগমপর স্থাপিত এহি মহাদেরস্থানমে শিররাত্রিক মেনা নগৈত অছি। চারিম রিষ্ণু-মূর্তিক একটা ঐতিহাসিক স্বরূপ সেহান (রৈশানী)সঁ প্রাপ্ত অছি, জে মধ্যকানীন তিরহুত

শৈলীমে নির্মিত মংদিবমে স্থাপিত ও পূজিত খছি। সেহানক রিষ্ণু শ্রীবামক ৰূপমে পূজিত ছথি। বামনৰমীক খৰসবপব একটা রিশাল মেলা লগৈত খছি। মূর্তি পালকালীন খছি। জনশ্রুতিক খনুসাব নবসিংহ খৰতাবক একটা স্থান পূর্ণিযাঁ জিলাক মানিকথংভ (মাণিক স্তংভ) নামক গ্রামমে প্রাপ্ত খছি, ম্দা মূর্তি নহি খছি। ম্দা কটিহাব জিলাক রেলংদাক প্রাচীন রিষ্ণু মংদিব খপন জর্জব খৰস্থামে প্রাপ্ত খছি। এহি তবহেঁ রৈষ্ণৱ ধর্মক ব্যাপ্তি রাল্মীকি নগবীসঁ লঽ কঽ কটিহাব ধবি দেখলা জাগছ। এহি ক্রমে পাঁচম উঁপলব্ধি সোনপুব (সাবণ)ক কালীমন্দিবক ভীতমে খৰস্থিত একটা মূর্তি হুলক গৰুড়রাহী রিষ্ণুক খছি, জাহিমে ভগরান রিষ্ণু গৰুড়পব খাৰুঢ় ভএ হবিহবক্ষেত্রক গজগ্রাহ যদ্ধক সমাপনক লেল গজক খার্তপুকাবপব খাযল ছলাহ। সোনপুব হবি (রিষ্ণু) হব (শির)ক নামিত ক্ষেত্র মানল জাগছ। এরং প্রকাবে মিথিলাংচলমে রিষ্ণুপূজন খনেক ৰূপমে উঁপলব্ধ খছি।

সূর্য রৈদিক দেরতা ও রিষ্ণুক একটা প্রতিৰূপ জকাঁ পূজিত ছথি, ম্দা ও পংচদেরোপাসনামে রিশেষ ৰূপমে প্রতিষ্ঠিত ছথি। মিথিলাংচলমে সূর্যক রৈদিক, পৌবাণিক ও লৌকিক তীলোক সমন্বিত ৰূপ জনমানসপব খংকিত খছি। সূর্যক স্থানক ৰূপক পবিকল্পনা ম্খ্যতঃ হুষাণকালমে মূর্ত ভেল। তদনুসাব বথাৰূঢ় সূর্যক মাথপব কিবীট, দুনূ হাথমে কমল-পুষ্প, রাম ভাগক কমবসঁ লটকৈত তলরাব হুনক ম্খ্য ৰূপ ছলি। কালান্তবমে পার্শ্বদেরী দেরতাক খলংকবণ সেহো রিন্যস্ত ছল। পার্শ্ব দেরতাক ৰূপমে এক দিস দরাত লেলে

পিংগন ও দোসব দিস দণ্ড নেনে দন্ডী। পৈবমে নম্ম্রা ব্রুঁষ্ট ও দেহ বক্ষার্থ করচ, পৈবক খাগাঁ রৈঁসন বথরাহক খরুণ। পার্শ্বদেরীক ৰূপমে উঁষা ও প্রত্যূষা উঁকোর্ণ খছি। মিথিনংচনমে খনেক মধ্যকানীন সূর্য মূর্তি সভ রবৌনী জযমংগনগঢ় (রৈঁগ্বসবায) ভীঠ ভগরানপ্ৰব (মধ্ৰবনী), খন্ধবা-ঠাঢ় ী (কমনাদিহ, মধ্ৰবনী), দেহুনী, খসগাঁর-ধর্মপ্ৰব (দবভংগা), হুর্সৌ নদিযামী, বখরাৰী, পবসা, ভোজ পৰৌন, বতনপ্ৰব, রিঞ্চ্ রকুখাব, গান্ডীরেশ্বব স্থান, সরাস, ছবপিঞ্জী, খবগ, কোর্থ, হারীডীহ, ডিনাহী, নাহব ভগরতীপ্ৰব, বাজনগব, পস্টন, পটনা, জগদীশপ্ৰব, দেরপ্ৰবা খাদিক খনারা চকরেদৌনিযা (রৈঁগ্বসবায), তৈযরপ্ৰব (রৈশানী) খাদি স্থান সভমে পাওন গেন এরং ও প্রতিষ্ঠিত-পূজিত ছথি। এহি ঐতিহাসিক সূর্য প্রতিমা সভমে রিশেষ উঁল্লেখনীয খছি- পবসা (ঝংঝাবপ্ৰব, মধ্ৰবনী)ক সূর্য মূর্তি (৪৮*২৪ সেমী.) জে প্রাযঃ তেবহম সদীক কনাঞ্চতি খছি। ও পানকানীন খনংকবণসঁ রনন খছি। দোসব রিশিষ্ঠ সূর্যমূর্তি রিঞ্চ্ রকুখাব (মধ্ৰবনী)ক খছি, জকবা দ্বাদশ খাদিত্যক সংজ্ঞা দেন জাগছ। এহি মূর্তিমে দ্বাদশ খাদিত্য উঁকোর্ণ ছথি। তেসব রিশিষ্ঠ সূর্যমূর্তি খছি, দেরপ্ৰবা (রৈনীপঞ্জী, মধ্ৰবনী) ও বঘেপ্ৰবা (দবভংগা)ক জাহিমে দেরপ্ৰবাক মূর্তিমে উঁষা-প্রত্যূষা, দন্ড-পিংগনসঁ খনংঞ্চত তথা বঘেপ্ৰবাক সূর্যমূর্তি পানমূর্তি কনাসঁ ভিন্ন মিথিনা শৈনীমে নির্মিত খছি। ঙ সভটা সূর্যমূর্তি পংচদেরোপাসনাক একটা প্রতীক ৰূপমে পোজিত ছথি, যদ্যপি জনজীরনমে সূর্য পূজা ছঠীমণযাক ৰূপমে পবম্পবীত খছি। মিথিনাংচনক চক রেদৌনিযা (রৈঁগ্বসবায)মে একটা প্রাচীন সূর্যমন্দিবক প্রাপ্তিসঁ ঙ ধাবণা রনৈত খছি, জে ও স্বতংত্র ৰূপেঁ সেহো পূজিত হোগত

ছলাহ। কন্দাহা সহবসা)মে সেহো একটা স্বতংত্র ঐতিহাসিক সূর্য মন্দিব খরশিষ্ঠ খছি। সূর্য মূর্তিক প্রভাবনীমে উৎকীর্ণ খভিলেখ স্বয়ং খপন ঐতিহাসিক খস্তিত্বক চর্চ কবৈত খছি। খভিলেখ নবসিংহদেবক খছি। ওহ ওগনবাব বংশীয ছলাহ।

পংচদেরোপাসনাক মূলমে ভগরতী কেন্দ্রিত ছথি খাব মিথিলাংচল শাক্তভূমি খথরা শাক্তপীঠক রূপমে সাধনাভূমি শিতাহ্নিযহুসঁ রঁলল খছি। মিথিলাংচলমে ভগরতী খপন খলেক রূপমে মূর্ত ভএ পূজিত ছথি। রলগাঁর–মহিষীক উগ্রতাবা, রিবাটপ্পবক চন্ডী, ধমদাহাক কালাী (সহবসা জিলান্তস্মাত) ক খতিবিক্ত উচৈঠ, ফুলহব (মধুৱঁলী), কবিযন সমস্তীপ্পবক গিবীজা, মিবজাপ্পব–দবভংগাক মহিষমর্দিনী, কোগলখক ভদ্রকালী ভগরতী, রাবী(সমস্তীপ্পব)ক ভগরতী তাবা, খন্দামা (দবভংগা)ক মহিষমর্দিনী, জবৈন–পবসৌন, কোগলখ, ভরানীপ্পব, ভন্ডাবিসম (দবভংগা), ভোজপবৌল (মধুৱঁলী), কোর্থ (দবভংগা)ক কালী, দেকুলী (দবভংগা)ক ভগরতী, বঁহেড়ী ও নাহবক মহিষাস্বব মর্দিনী, কটৈবা (ফুজফফবপ্পব) ও কোগলখ (মহুৱঁলী)ক চামুন্ডা, সিমবৌলগঢ় (নেপাল তবাগ) ও রীবপ্পব (সহবসা)ক কংকালী, সখড়াক (নেপাল তবাগ) ছিন্নমস্তা এরং গঢ়রঁকখাবী (সহবসা) ও ভীঠভগরানপ্পব (মধুৱঁলী)ক দশমহারিদ্যামে পবিগণিত দেরী সভ প্রতিষ্ঠিত ও পূজিত ছথি। হম প্পনামা–প্রতাপনগব (নরগছিযা)মে রাবাহীক একটা ভব্য, রিশাল ও স্বতংত্র মধ্যকালীন প্রস্তব মূর্তি দেখলে ছলহুঁ। ভীঠ–ভগরানপ্পব ও গঢ় রঁকখাবীক দশমহারিদ্যা কর্ণাটকালীন কলাকৃতি থিক। ভীঠ–ভগরানপ্পব কর্ণাটবাজা মল্লদেরক

বাজধানীনগব ছল এরং গঢ়রকওাবী কর্ণাটরংশীয গঙ্গরবিযা পবমাব বাজপূত সভক ক্ষেত্র থছি। ডॉ. মীবানন্দ থাচার্য বাজনগব (মধ্ৰবনী)মে সেহো দশমহারিদ্যা ভগরতীক মন্দিবক সূচনা দেনে ছথি। দশমহারিদ্যাক পূজোপাসনা তাঁত্রিক রিধিযেঁ কযল জাগছ। জযনগবক মন্দিবক ঙঁপবী ভাগমে শ্রীযন্ত্র বাখল ছল। ধ্যাতর্য থছি জে খন্ডরলা ক্ষনক বাজা নোকনি শাক্তধর্মী ছলাহ। দবভংগা বাজ পবিসবক শ্যামা মন্দিব "মিথিলেশ বমেশস্য চিতাযাং স্বপ্রতিষ্ঠা' চর্চিতা সাধনা পীঠ রনল থছি।

মিথিলাঁচলক শাক্ত সাধনাক্ষেত্রমে পূজিত এরং প্রতিষ্ঠিত থন্যান্য দেরী সভমে গংগা-যমুনাক মধ্যকালীন প্রস্তব মূর্তিসভ সেহো ঙঁপলভ্য থছি। ওনা তঁ গংগা-যমুনাক মূর্তি প্রাযঃ বাজকীয স্থাপত্যমে নির্মিত হোযবাক পবম্পবা বহল থছি, থন্ধবাঠাঢ়ীক কমলাদিত্য স্থানমে বাখল ভগ্ন লক্ষ্মীনাবাযণক থভিলিখিত কর্ণাট কালীন প্রস্তব মোর্তিক পার্শ্বমে গংগা ও যমুনাক ঙঁকীর্ণ মূর্তি থরশিষ্ট থছি। থভিলেখমে কর্ণাট রংশক সংস্থাপক জেনা বাজা লান্যদেরক প্রশস্তি শ্রীধব লিখনে ছথি। ঠাঢ়ীক প্রসিদ্ধ পবমেশ্ববী ভগরতীক লেল সেহো থছি। গংগা ও যমুনাক স্বতংত্র প্রস্তব মূর্তি নগব ডীহ (দবভংগা) ও রবসাম (মধ্ৰবনী)মে প্রাপ্য থছি। গংগা মকবরাহিনী ও যমুনা কচ্ছপ রাহিনী রূপেঁ নির্মিত ছথি। রাম হাথমে কলশ ছনি এরং নানা থাভূষণসঁ থলংকৃত থছি।
শাক্ত ভূমি মিথিলাঁচলসঁ ভগরতীক প্রস্তব মূর্তিসভ ঙঁচৈঠ (মধ্ৰবনী), ভোজ পবৌল (মধ্ৰবনী), ভংডাবিসম (দবভংগা) ও রাবী (সমস্তীপুব)সঁ প্রাপ্ত ভেল থছি। ঙঁচৈঠক ভগরতীক একান্ত সাধক কালিদাস ছলাহ। মূর্তি (३३")

चतुर्भुजी अछि। बाम हाथ सभमे त्रिशूल ओ अमृतकलश एवं दहिन हाथमे दर्पण (कमल पुष्पाकार) ओ लघुपात्र अछि। सिर, गला, कान, बाँहि, कलाइ, कमर ओ पैर आदि आभूषण सभसँ अलंकृत अछि। देहमे यज्ञोपवीत ओ वाहनक रूपमे सिंह उत्कीर्ण अछि। भगवती कमलासनपर आसीन छथि। भोज परौलक भगवतीमूर्ति (३.३") उच्चैठक भगवतीक समतुल्य अछि। भगवतीक तेसर प्रस्तर मूर्ति भंडारिसम (दरभंगा)क मन्दिरमे प्रतिष्ठित अछि। एहि चतुर्भुजी मूर्तिक (४+") दहिन हाथमे खड्ग अछि। भगवती कमलपुष्पपर ललितासनमे बैसल छथि। पादपीठमे सिंह उत्कीर्ण अछि। आर सभटा विन्यास पूर्वत अछि। हिनका भगवती वागेश्वरी सेहो कहल जाइछ। चारिम मूर्ति वारीव (समस्तीपुर)मे स्थापित ओ पूजित अछि। एदा भगवती षडभुजी छथि (३४")। बाम हाथमे ढाल, छतरी ओ अज्ञात पदार्थ एवं दहिन हाथसभमे अक्षमाला, खड्ग ओ अभय मुद्रामे अछि। शेष विन्यास पूर्ववत अछि। पंचम षडभुजी मूर्ति देकुली (दरभंगा)मे स्थापित अछि। एहि भगवती सभमे उच्चैठक भगवतीक स्थान सर्वोपरि अछि।
भगवतीक सौम्य रूप गिरीजाक मूर्तिसभ फुलहर (गिरीजास्थान, मधुबनी, ३१"), मिर्जापुर (दरभंगा, ३२") ओ कर्सो नदियामी (दरभंगा)क मन्दिरसभमे संपूजित अछि। फुलहर ओ मिरजापुरक गिरीजाक पार्श्वमे गणेश एवं कार्तिकेय उत्कीर्ण अछि। दुनू चतुर्भुजी एवं स्थानक मुद्रामे निर्मित अछि। सनार्थीक अवलोकनक अनुसार आलोच्य मोतिमे गिरीजा, राधा ओ लक्ष्मी समन्वित छथि। गिरीजाक मुद्रनीक अंकन विशिष्ठ अछि। हिनक ख्याति महिषमर्दनीक रूपमे विशेष अछि। भगवतीक महिषासुर

मर्दनीक रूप सर्वाधिक लोकप्रिय अछि। मिथिलांचलक मध्यकालीन परिवेशमे महिषासुरमर्दिनी वनाम भ्रष्टमर्दिनीक परिकल्पित शिल्पांकन वेस उपयुक्त छल। मध्यकाल संघर्षक काल छल। एहि परिस्थितिमे महिषासुर मर्दिनी उत्प्रेरक भेलीह। एहि तरहक मूर्तिसभ वरसाम, कर्मौलिदियामी, लाहर, अन्दामा, वैद्यनाथपुर, उजान, वृहेर, पोखराम, लेहरा, हारीडीह, वहेड़ी, सिमरिया भिण्डी, जरैल-परसौन, चौगाम, नारापुर आदि स्थानसभसँ प्राप्त भेल अछि। नरवात्रक अवसरपर प्रायः गामसभमे महिषासुर मर्दिनी दुर्गाकि लोकपरिकल्पित मूर्तिसभ प्रतिवर्ष वनैत अछि, पूजित होइत छथि एवं विसर्जित होइत अछि। मूर्तिक परिकल्पना "दानवत्वपर देवत्वक विजय" केन्द्रित अछि।
भगवतीक अन्यान्य रूप सभमे नागदेवी मनसा (भैरव स्थान, मधुबनपुर), विषहरी (लालगंज, भागलपुर), वशिष्ठाराधिता तारा (महिषी, सहरसा), सरस्वती (जयनगर, मधुबनी), काली (कोर्थ, दरभंगा), गजलक्ष्मी (भीठभगवानपुर, मधुबनी), तारा (वौफदेवी, रावी,समस्तीपुर) जगतपुर रकआवी (सहरसा), जयमंगला (वेगूसराय), सहोदरा(नरकटियागंज, प. चम्पारण), पार्वती (करियन, समस्तीपुर), भवरावी, समस्तीपुर आदिक प्राचीन ओ ऐतिहासिक पाथरक मूर्तिसभ मिथिलांचलसँ प्राप्त भेल एवं ओइ सभ पूजित अछि।
मिथिलाक मध्यकालीन सांस्कृतिक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे पंचदेवोपासनाक परिकल्पना विभिन्न साम्प्रदायिक सद्भावक अन्वेषणमे कयल गेल छल, ओ वहुत किछु सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरातलपर फलीभूत भेल। वहुतरास मन्दिरसभ एकर उदाहरण वनल अछि।

মিথিলাঁচলক শাক্ত ক্ষেত্র

সৃষ্টি রহস্যাবৃত্ত অছি আর 'ধর্মস্য তত্ত্বং নিহিতং গুহায়াং' , যদা সৃষ্টিক মূলমে পৃথ্বী (ক্ষিতি), জল, অগ্নি (পাবক), আকাশ (অংতরিক্ষ) এবং বাযুক তাত্বিক অবস্থিতি সর্বমান্য অছি। বৈদিক সাহিত্যমে পৃথ্বীকেঁ মাতা ওঽ মনুষ্যকেঁ পৃথ্বীপুত্র কহল গেল অছি। ঋগবেদক "পৃথ্বী সূক্ত" ও "নদী সূক্ত" মে হুনক দেবীত্বক স্তুতিগান ভেল অছি। পৃথ্বী ও জলক প্রজনন শক্তি অর্থাত্ ওহিসঁ উদ্ভূত চেতনশীল জীবন জগত মনুষ্যক লেল কৌতুহলক বিষয ছল, শ্রদ্ধা ও ভক্তিক বিষয ছল। অহিঠামসঁ শক্তিক প্রতি নিরন্তর চিন্তনক পরিণামস্বরূপ হুনকাসঁ আরোগ্য, সংততি, সুখ-সমৃদ্ধি এবং সংরক্ষণক কামনা কযল জাইছ।

মাতৃদেবীক রূপমে পৃথ্বী (ভূদেবী)ক পরিকল্পনা সর্বপ্রাচীন অছি। বিশ্বক প্রাযঃ সমস্ত প্রাচীন সভ্যতা ও সংস্কৃতিক উদ্গম নদী-ঘাটী মানল গেল অছি, মোহনজোদড় া, হড়প্পা, কালী-বঁগা, মিশ্র, মেসোপোটামিযা আদিসঁ প্রাপ্ত মাতৃদেবীক প্রাক্ ঐতিহাসিক মৃণ্মূর্তিসভক পুরাবশেষ একর জ্বলংত উদাহরণ অছি। এবং প্রকারে পৃথ্বী ও জলমে দেবত্বক অবধারণা পূর্ব বৈদিক যুগক আর্যেতর অবধারণা থিক। আর্য লোকনিকেঁ অপন প্রভুত্ব বিস্তারক ক্রমে অনেক যুদ্ধ (দেবাসুর সংগ্রাম অর্থাত্ ইন্দ্র-বৃত্রাসুর, মহিষাসুর বধ, কালিয-দমন, রাম-রাবণ যুদ্ধ, গজাসুর বধ আদিক পরম্পরিত শ্রুতি ও সাহিত্যিক অংতঃ সাক্ষ্য উপলব্ধ অছি। তদনুসার আর্যলোকনি আর্যেতরক শাক্ত অবধারণাকেঁ সমূল নষ্ট নহি কঽ ওকরা পরিষ্কৃত কঽ

अंगीकार कयलनि। पृथ्वी ओ नदी (गंगा, यमुना, सरस्वतीक समानान्तर मिथिलांचलक कमला, कोशी, जीवँछ) मे देवीत्व एवं अग्नि ओ वायुमे देवत्वक प्रतिष्ठापन कयल गेल। आकाश (अंतरिक्ष) तँ अछि देवी-देवताक विहार क्षेत्र अछि। आजुक वैज्ञानिक लोकनिक लेल अंतरिक्ष शोध-बोधक विहार क्षेत्र बनि गेल अछि। शतपथ ब्राम्हणक अंतः साक्ष्यक अनुसार वैदिक आर्यलोकनि अग्निपूजक छलाह।

आध्यात्मिक चेतनाक विकासक क्रममे शक्तिक विकास एवं विस्तार सप्तमातृका, दशमहाविद्या, चौसठ योगिनी आदिक रूपमे भेल देखना जाइछ। भारतीय मूर्तिकलाक इतिहासमे एक फलकपर सप्त मातृकाक शिल्पांकन कुषाणकालमे आरम्भ भऽ गेल छल- ब्रम्हाणी, वैष्णवी, माहेश्वरी, वाराही, कौमारी, इन्द्राणी ओ चामुण्डा। एकर समानान्तर मिथिलांचलक जन-जीवनमे पूजित सप्तमातृकाक नामावली भिन्न छैक एवं हुनक लोकोपासना सातटा पिण्डक आदिम रूपमे प्रचलित अछि, जे सप्तपिण्डी अथवा सप्तदेवीक रूपमे अभिज्ञात अछि।

दोसर विकासक्रममे अबैत अछि दशमहाविद्या अर्थात् काली, तारा, षोड़सी (त्रिपुर सुन्दरी), छिन्नमस्ता, बँगला, कमला (लक्ष्मी), मातंगी, भुवनेश्वरी, भैरवी ओ धूमावती-

काली तारा छिन्नमस्ता सुन्दरी बँगला रमा।
मातङ्गी भुवनेश्वरी सिद्धविद्या च भैरवी।
धूमावती च दशमी महाविद्या दशस्मृता॥ -पुरश्चर्यार्णव शाक्त सम्प्रदायमे जाहि दस प्रधान रूपक ब्रम्हक उपासना

होइछ, ओकरा महाविद्या कहल जाइछ। अहि विद्याक दू टा प्रधान माध्यम अछि, योग एवं तंत्र।

तेसर विकासक्रममे अबैत अछि चौसठ योगिनी। चौंसठ योगिनीक मध्यकालीन मन्दिर वाराणसी (उत्तर प्रदेश), भेड़ाघाट (मध्य-प्रदेश), हीरापुर (उड़ीसा) आदि स्थानसभमे पाओल जाइछ। मिथिलांचलक सहरसाक (मत्स्यगंधा परिसर) पिरामिडनुमा स्थापत्य (मन्दिर)मे निम्नलिखित चौंसठ योगिनीक संग बटुक भैरवक मूर्तिसभ प्रतिष्ठापित अछि- माया, कुष्माण्डा, नर्मदा, यमुना, शान्ति, वृद्धि, गौरी, ऐन्द्री, वाराही, शर्वरी, सुरति, वैष्णवी, ज्वालामुखी, अजिता, चर्चिका, मार्जरी, डाकिनी, घण्टकर्णी, घटवरा, विकराली, जयन्ती, सरस्वती, कावेरी, मातृका, नारसिंही, श्री, विकटा, ब्रजेश्वरी, कौमारी, महामाया, सुरपूजिता, ईश्वरी, सर्पास्या, यशा, वैरस्वती, रुद्रकाली, मातंगी, जयावती, अभया, माहेश्वरी, कामाक्षी, मयूरी, कपालिनी, तुष्टि, काली, उमा, रौद्री, अम्बिका, ब्रह्माणी, अश्वमुखी, आग्नेयी, अग्निहोत्री, अदिति, चन्द्रकान्ता, चामुण्डा, गंगा, मारुति, धूमावती, गान्धारी, अपराजिता, विमोहिनी, सूर्यपुत्री एवं वायवेगा।

कालिकापुराणक अनुसार भगवती स्वेच्छया भिन्न-भिन्न उद्देश्यसँ विभिन्न अवसरपर चौंसठ रूपमे अवतरित भइ योगिनीक रूपमे पूजित भेलीह। सृष्टिक सृजन, पालन एवं संहार हेतु त्रिधारूपमे अवधारित महालक्ष्मी, महासरस्वती एवं महाकालीसँ उद्भूत नाना शक्तिरूपा योगिनी सभ धन, यश, विद्या, वृद्धि, शौर्य-पराक्रम, आरोग्य ओ मोक्षदायिनी मानल जाइत छथि। उपरोक्त नामावलीमे

ঐন্দ্রী, রাবাহী, রৈঞ্জরী, মাহেশ্বরী, ব্রহ্মাণী ও চাম্ন্ডা, দশমহারিদ্যামে এরং কিছু সপ্তমাতৃকামে সেহো পরিগণিত ছথি। গংগা, যমুনা, সরস্বতী ও কারেরী মূলতঃ নদী দেরী ছথি। কামাক্ষীক স্বতংত্র তাংত্রিক পূজোপাসনা কামরূপ (অসম)ক কামাখ্যা এরং নেপাল উঁপত্যকাক গুহ্যেশ্বরীমে পরম্পরিত অছি। কুষ্মাল্ডা, নরদুর্গাকি একটা রূপ থিক মুদা যোগিনীরূপেঁ প্রতিষ্ঠিত ররাহরিঞ্জক শক্তি রাবাহীক স্বতংত্র পালকালীন প্রস্তর মূর্তি প্বনামা প্রতাপনগর (নৌগছিয়া, ভাগলপুর), জ্বালামুখী রঁনাম জানপাক মূর্তি নগরবাঁর (মহুআ, রৈশালী), ডাকিনীক পূজন খুরহান (আলমনগর, মধেপুরা) আদি মাতা অম্বা রঁনাম অম্বিকাক পূজন আমী (দিঘরারা, সারণ), চাম্ন্ডা পূজন কটরা (মুজফ্ফরপুর), পচহী, ররৈপুরা, পচম্বা (রেঁগুসরায) আদিক প্রাচীন প্রস্তর প্রতিমা সভমে উঁপলব্ধ অছি। জযারতীক পূজা নাগ দেরী জযাক রূপমে এরং নদী দেরীক রূপমে গংগা ও যমুনাক স্বতংত্র পূজন পরম্পরা, রঁরসাম (মধুরঁনী), নগরডীহ (দরভংগা), মংগৌন (রেঁগুসরায) আদিক অলারা অন্ধরাঠাঢ় ী (মধুরঁনী) ও মহিষী (সহরসা)ক মন্দির স্থাপত্যক এরং অলংকরণক রূপমে প্রাপ্য অছি। স্থাপত্য অলংকরণক রূপমে গংগা-যমুনাক প্রাচীনতম মূর্তি অরশেষ ভরহুত ও সাঁচী (মধ্য-প্রদেশ)সঁ প্রাপ্ত অছি, জকর শিল্পাংকন ঐ.পূ. দোসর-তেসর শতাব্দীমে ভেল ছল। কৌমারী কুমার কার্তিকেয শক্তি ছথি। সভটা শক্তি স্বরূপা দেরী অপন-অপন দেরতাক রাহন ও আযুধ ধারিত কযনে ছথি।

ধ্যাতব্য অছি জে আলোচ্য শক্তি স্বরূপাক উঁদ্ভারনা উঁদ্দেশ্য রিশেষক কারণেঁ ভেল ছল। অসুর শক্তিক সংহারক হেতু সপ্তমাতৃকাক সংযুক্ত শক্তি প্রতিকার হেতু প্রত্যক্ষ ভেল

छल। दशमहाविद्याक प्रत्येक देवी शक्ति-सम्पन्न, मोक्षदायिनी, कल्याणकारिणी एवं स्वयंमे नानारूपा छथि। शक्तिहीन ब्रह्म शव ओ शक्तियुक्त भेलासँ शिव छथि। दोसर शब्दावलीमे शक्तिहीन शिव शव समान छथि अर्थात् निष्क्रिय ब्रह्मक सक्रिय, चेतन ओ जाग्रत स्वरूप काली छथि- "महाकालक शक्ति महाकाली"- परमाऽसौ कालश्च परः संविदि वर्तते। काली नाम पराशक्तिः सैव देवस्य गीयते"।– तंत्रलोक (वॉल्यूम, १९२० ई.)। मिथिलांचलमे दस महाविद्याक पूजोपासना गढ़-बॅरूआरी (सहरसा), भीठ भगवानपुर ओ वाजनगर (मधुबनी)मे होइछ। कलात्मकलीन मूर्तिकलामे ओ सभ विन्यस्त छथि।

पं राजेश्वर झा मिथिलांचलक शक्ति-साधनाक एकटा उपक्रम मालिन कल्टेक उल्लेख कएने छथि, जे लौकिक धरातलपर परम्परित अछि। मिथिलांचलमे भगवतीक तांत्रिक पूजा योगिनी ओ मालिनीक रूपमे होइछ। तांत्रिक साधनामे हिनक भूमिका महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। तांत्रिक प्रक्रियामे ओ मात्रदर्शनिक काज करैत छथि। कालान्तरमे योगिन ओ मालिन एकार्थक भऽ गेलीह। चौसठ योगिनीमे "मालिन" सेहो प्रतिष्ठित छथि। कल्याण, गोरखपुर, शक्ति उपासना अंक, जनवरी १९५७ ई. पृ.२३६)। ओऽ सिद्धिदायिनी, मोक्षदा एवं वरदायिनी मानल जाइत छथि। लौकिक अवधारणाक अनुसार मालिन भगवतीक प्रिय सेविकाक संगे तंत्र-मंत्र, योग-टोम, चमत्कारादिक माध्यमे अभीष्ट साधनमे निपुण होइत छथि। डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' मिथिलाक लोकप्रसिद्ध मालिनसभमे कुसुमा मालिन, दौना मालिन, कोसा मालिन, रूपना मालिन, वमण अभिनन्दन

গ্রন্থ, খুটৌনা, মধুবনী, ২০০৪ ঈ. পৃ.২২৬–২৩৪)। মিথিলাঁচলক ঝিঝিযা নৃত্য বস্তুতঃ তাঁত্রিক নৃত্য থিক।

বৈদিক এবং ঔপনিষদিক সাহিত্যমে অন্তর্নিহিত আদ্যাশক্তিক আশ্রয লঽ পুরাণসভমে শক্তি (দেবী)ক স্বরূপ, মহিমা ও পূজোপাসনা–প্রক্রিযাক বিস্তৃত বর্ণন উপলব্ধ অছি। শাক্ত উপাসনাক দৃষ্টিসঁ পুরাণকাল এবং শক্তি সভক ভব্য শিল্পাংকন দৃষ্টিসঁ গুপ্তকালকেঁ স্বর্ণযুগ কহল জাইছ। পুরাণসভক ব্যাপক প্রভাবসঁ শক্তি উপাসনাকেঁ এতেক বল ভেটলৈক জে জনজীবনমে ব্রহ্মক পূজোপাসনা পরব্রহ্ম এবং মাতৃব্রহ্ম দুনূ রূপমে হোমঽ লাগল। দেবী ভাগবত (৩.৬.২) ক অনুসার মাতৃব্রহ্ম সমস্ত দৈবীশক্তিক মূলমে ছথি। মধ্যকালমে আবি শক্তিক তংত্রোপাসনা বেস লোকপ্রিয ভঽ গেল। ফলতঃ আভিজাত্য স্তরপর কংকালী (ভারদহ, ভীমনগর বৈরাজ, নেপাল, রাজপরিসর, দরভংগা আদি) ছিন্নমস্তা (সখরা, রাজবিরাজ, নেপাল; খুরহান, মধেপুরা; রজরপ্পা, ঝারখণ্ড আদি), তুলজা (নেপাল উপত্যকা, রাজা হরিসিংহদেব দ্বারা স্থাপিত), উচ্চৈঠ দেবী (হাবী ডীহ, কর্মাদিত্য দ্বারা স্থাপিত), বাণেশ্বরী (ভংডারিসম, দরভংগা), ত্রৈলোক্য বিজয (মংগরৌনী, মধুবনী), উগ্রতারা (মহিষী, সহরসা) আদিক অতিরিক্ত লোকস্তরপর বাঁমতী, গহিল, রক্তমালা, চম্পা ডমৌলী, নযনা যোগিন, গঢ় মাগ, লকেসরী (লোকেশ্বরী) আদি দেবী সভক প্রাদুর্ভাব ভেল দেখল জাইছ (হমারে লোক দেবী–দেবতা, ডॉ মৌন, মুজফ্ফরপুর, ১৯৯৯ ঈ.)। হিন্দূ ধর্মক অন্তস্নাত তংত্রযানক বিকাস বজ্রযানী পরম্পরাসঁ প্রভাবিত অছি। অধিকাংশ বৌদ্ধ দেবী হিন্দূ দেবীক প্রতিরূপ অথবা সমানান্তর বিকসিত ছথি। বৌদ্ধ দেবী

তাবা দশমহাবিদ্যাক দ্বিতীযা তাবা ছথি। বনগাঁব (সহবসাক) ভগৱতী ও মহিষীক উগ্রতাবা, এবং বাবী (সিংধিযা, সমস্তীপুব)ক ভগৱতী ও তাবা সমানান্তব বিকসিত ছথি। মংগবৌনী (মধুবনী)ক ত্রৈলোক্যবিজয খড়্গভুজী শক্তিৰূপা ছথি, ঈদা শিব ও পার্ৱতী হুনক পৈবক তব মর্দিত ছথি। আলোচ্য মূর্তিমে বৌদ্ধদেৱীক শ্রেষ্ঠতা প্রদর্শিত অছি। ঈদা বৌদ্ধদেৱী প্রজ্ঞাপাবমিতা হিন্দূ দেৱী সবস্বতীক প্রতিৰূপ থিকীহ।

মিথিলা বংগান ও অসম শক্তি সাধনাক একটা সশক্ত ত্রিকোণ অছি। মিথিলাক ধবতীপব এহি ত্রিকোণকেঁ মহিষী (তাবা), বিবাটপুব (চন্ডী) ও বদনাধমহাবা (কালাযনী)মে দেখি সকৈত ছী। অধোমুখী ত্রিকোণ শাক্ত ও উর্ধ্বমুখী ত্রিকোণ শৈব লোকনিক সাধনা প্রতীক থিক। জখন বিপবীত স্থিতিমে আবি ষটকোষক সৃজন হোগত অছি তখন ও মহাকালী ও মহাকালক সংযুক্ত ভেলে কামকলাক ৰূপ হোগত অছি। ব্রহ্মক কামশক্তি দ্বাবা কলাক সৃষ্ঠিক নাম কামকলা থিক। (প্রতীক বিদ্যা, ডॉ জনার্দন মিশ্র, পটনা, ১৯৯৯ ঈ., পৃ.১৯+) অর্থাত্ সদাশিবক উপব বহি (মর্দিনী কালী) শক্তি ব্রহ্মান্ডক সৃজন কবৈত অছি– "সদাশিবোপবি স্থিবরা ব্রহ্মান্ডং ক্ষোভমানযেত" কালীবিলাসতংত্র, লংডন, ১৯১৭ ঈ. ২৪.২৩)। ত্রিকোণ ত্রিশক্তিক ৰূপমে চেতনাক আমেপ্রসাব থিক। উর্ধ্বমুখী ত্রিকোণ শিব, অধোমুখী ত্রিকোণ শক্তি (শিরা) এবং ষটকোণীয ত্রিকোণকেঁ শিব–শক্ত্যামেক ত্রিকোণ কহল জাগছ। ত্রিকোণক কেন্দ্রমে বিন্দু সৃষ্ঠিক মূল থিক। তংত্রমূলক যংত্রক সংবচনাক ক্রমে ঈ আধাব মানল জাগছ। মিথিলাংচলমে মংগবৌনী (মধুবনী) এবং হবৌলী

(वैशाली) आद्याशक्ति (मातृब्रह्म)क साधना पीठ थिक।

देवताक भेदेँ आगमक वर्गीकरण निम्नरूपेँ भेल अछि– शैवागम, शाक्तागम, वैष्णवागम एवं सौरागम। महाकालसंहिताक अनुसार शाक्तागमक चारिटा उपभेद अछि– कापालिक, मौलेय, दिगम्बर एवं भाल्डिकेर। कापालिक डामरतंत्रक, मौलेय यामल तंत्रक, दिगम्बर भैरव–भैरवी तंत्रक एवं भाल्डिकेर क्षारवतंत्रक अनुसरण करैत अछि। मिथिलामे वेदहि जकाँ तंत्राकेँ अपौरुषेय कहल गेल अछि। (मिथिलामे तंत्र, डॉ त्रिलोकनाथ झा श्रीअमर अर्चना; दरभंगा,२००१ ई.पृ.२१३)। ताँत्रिक पद्धतिसँ उपासना सरल होइछ। प्रागैतिहासिक कालसँ पूर्वी भारतक असम, बंगाल, मिथिला ओ नेपालमे शाक्तंत्रक प्रचार–प्रसार बहल अछि। असमक कामाख्या, बंगालक दक्षिणकाली, नेपालक गुह्येश्वरी एवं मिथिलांचलक उग्रतारा (महिषी)सहरसा। बँवाँटिप्परक चण्डी, कष्टोरगढ़ (रूजफ्फरपुर)क चामुण्डा, सिमरौनगढ़ (नेपाल)क कंकाली, आमी (सारण)क अम्बिका स्थान, उच्चैठ (मधुबनी)क भगवतीथान, थावे (गोपालगंजक)क भगवती मन्दिर आदिक अतिरिक्त वैतियाराज, दरभंगाराज ओ राजनगरक भगवती मन्दिर आदि।

तंत्रापासनाक उद्भव बंगालमे भेल छल श्रद्धा ओ साधना बलेँ मिथिलामे प्रवर्द्धित भेल– “गौड़े प्रकाशित विद्या मिथिले प्रवर्द्धिता”। कलियुगमे संसार सागरसँ पार उतारनिहार एवं जन्म–मरणक बंधनसँ मुक्ति दियौनिहार मात्र दू टा आराध्य छथि– शिव ओ शक्ति। मिथिलांचलमे शिवक अपेक्षा शक्तिक महत्व अधिक अछि। मैथिल लोकनिकेँ कहल गेल अछि– “अन्तः शाक्ताः”। शक्ति

উঁপাসনাক দূ ঢৌ মাস্ত্র– রাম এরং দক্ষিণ– দ্নূ পক্ষ সৈদ্ধাঁতিক ও প্রাযোগিক খপন উঁকের্ষকেঁ প্রাপ্ত কযননি। দবভঁগাক খল্ডরনাক্নক বাজানোকনি শাক্তধর্মী ও তঁত্রাপাসক ছনাহ।
সামান্যতঃ রৈদিক খরধাবণাক খন্বসাব জত২ ভোগ ছৈক তত২ মোক্ষ নহি খাব জত২ মোক্ষ ছৈক ওত২ ভোগ নহি। ফ্দা দশ–মহারিদ্যাক খন্তস্মাত পূজিতা ত্রিপ্ববস্বন্দবীক পূজনসঁ ভোগ এরং মোক্ষ দ্নূ প্রাপ্ত ভ২ জাগছ। এহি তবহেঁ নানাৰূপধাবিণী শক্তিক পূজোপাসনা শাস্ত্রীয এরং নৌকিক দ্নূ ৰূপেঁ সম্পূর্ণ মিথিনাঁচনমে পবিব্যাপ্ত খছি। এহিঠাম খাধ্যামিক উঁজসঁ উঁর্জস্বিত খনেক সিদ্ধ শক্তিপীঠ ঐতিহাসিক সাক্ষ্যসঁ প্রমাণিত, পৌবাণিক কথাসঁ সমন্বিত এরং নোক–খাস্থাসঁ সূত্রবঁদ্ধ খছি। গোসাউঁন ঘবসঁ নহ কহ শক্তি (ভগরতী) কতহু পিল্ডৰূপমে, কতহু পাথবক মূর্তি ৰূপমে তঁ কতহু তাঁত্রিক চক্র ৰূপমে প্বজাগত ছথি। নরবাত্রক খরসবপব সম্পূর্ণ মিথিনা শাক্তময ভ২ জাগছ। খতঃ মিথিনাক স্বদূব গ্রামাঁচনমে রিশৃঁখনিত শক্তি সাধনাক কিছু প্রতিনিধি স্থনসভকেঁ রাঁনগীক ৰূপমে "হেবিটেজ মিথিনা"ক খন্তস্মাত প্রকাশমে খানবঁ একটা ধার্মিক গ্লেদ থিক।

উঁচৈঠক ভগরতী: মধুবঁনী জিনাক রৈনীপঞ্জী খন্বমঁডন ফ্খ্যানযসঁ প্রাযঃ পাঁচ কিনোমীটব দিশামে খরস্থিত উঁচৈঠক (উঁচঃ স্থ) ভগরতী স্থান স্বপ্রসিদ্ধ শক্তি সাধনা স্থন খছি। মিথিনামে প্রত্যেক দেরীকেঁ ভগরতী কহন জাগছ। শ্রুতি–পবম্পবাক খন্বসাব উঁচৈঠক ভগরতীক সম্বদ্ধ কানিদাসসঁ সূত্রবঁদ্ধ খছি। ভগরতী স্থানক

নগপাসমে কানিদাসক ডীহ কহন জাগছ। ক্ষদা উঁচৈঠক ভগরতী কানিদাস কানীন (গুপ্তকান) নহি খছি। মঁদিবমে স্থাপিত ভগরতীক কাবী পাথবক মূর্তি তেঁতীস ওঁচ নমহব খছি।

ভগরতীক চতুর্ভুজী মূর্তি দোহবা কমনাসনপব ননিতাসনমে নির্মিত খছি। ভগরতীক সিবোভাগ ও রাম ভুজা খল্ডিত খছি। একটা সমকানীন ভগরতী মূর্তিক রাম হাথ (নিম্ন)মে কনশ ও ঙুপবী হাথমে ত্রিশূন এরং দহিন হাথ (নিম্ন)মে ফন ও ঙুপবী হাথমে দর্পণ উঁকোর্ণ খছি। শিবোভূষণ, কর্ণফূন, গূমহাব, যজ্ঞোপরীত, রাজ্রন্দ, কংগন, কটিবঁন্ধ ও পাযন খাদিক সংগ কঁচ্কী ও খধোরস্ত্রসঁ স্বসজ্জিত খছি। পাদপীঠমে রাহন সিংহ উঁকোর্ণ খছি। রূপ রিন্যাসক দৃষ্টিসঁ উঁচৈঠক ভগরতী সিদ্ধেশ্বরী পার্রতী ছথি।

খহি তবহক ভগরতীক দোসব প্রস্তব মূর্তি মধ্রঁনী জিনান্তগ্গত কপিনেশ্বরস্থানসঁ পাঁচ কিনোমীটব পশ্চিম-দক্ষিণমে খরস্থিত ভোজপবৌনসঁ (পৈঁতীস ওঁচ নমহব) প্রাপ্ত খছি, জে পূর্ণতঃ খক্ষত খছি। রূপ ও ভংগিমা সাদৃশ্যক খনারা উঁচৈঠ ভগরতীক ক্ষখাঙ্গতি খার্যত খছি তঁ ভংডাবিসমক ভগরতীক ক্ষখাঙ্গতি গোন খর্থাত্ মংগোনন খছি। ক্ষদা খমৃতকনশ, ত্রিশূন, ফন ও দর্পণ সমান খছি। সহনাবাযণ ঝা সহার্থীক (মিথিনাক প্ররাতাত্ত্বিক সম্পদা, দবভংগা, ২০০৩ ঙ.) সংকেতানুসাব এহি রস্তুক একটা ভগরতী মূর্তি রনগাঁর (সহবসা)মে সেহো পূজিত খছি। ভগরতীক তীনূ মূর্তি পানকানীন কনাঙ্গতি মধ্যযগীন সাংস্কৃতিক দর্পণ রঁনি গেন খছি।

অমৃতকলশ ধ্নেক মাতৃদেবীত্বক এবং দর্পণ পার্বতীক প্রতীক থিক। আলোচ্য ভগবতী-মন্দিব সভ প্রাচীন ভবনাবশেষ ক্ষেত্রমে বৰ্নন অছি। স্থানীয় সূবেঁগঢ়ক (ম্জফ্ফবপুব) ভগবতী মঁদিবকেঁ তিবহুত শৈলীমে বৰ্নন কএনে ছথি। এহি কড় ৗক একটা ষট্ভুজী ভগবতী সমস্তীপুব জিলান্তর্গত সিংঘিযা প্রখন্ড মুখ্যালযসঁ আঠ কিলোমীটব উত্তব রাবীক ভগবতীস্থানমে পূজিত অছি। কাবী পাথবক ও আলোচ্য ভগবতী মূর্তি চৌঁতীস ওঁচ নমহব কর্ণাটকালীন কলাকৃতি থিক। ভগবতীক রাম হাথ সভমে ক্রমশঃ নীচাসঁ উঁপব কলশ, ঘন্টা, ঢাল ও দহিন হাথসভমে ক্রমশঃ অভযমুদ্রা, খড়্গ ও অক্ষমালা স্বশোভিত অছি। ভগবতী কমলাসনপব ললিতাসনমে প্রতিষ্ঠিত ছথি। পাদপীঠমে সিংহ রাহনক রূপমে উৎকীর্ণ অছি। রাবী ঋষি-মুনি এবং তপসী-সাধক লোকনিক সাধনা-স্থল ছল মধ্যকালমে। উচৈঠ, ভোজপবৌল, রনগাঁব উ রাবীক অতিবিক্ত ও ভঁডাবি সভ (দবভঁগা)মে সেহো পবম্পবাসঁ পূজিত ছথি। ভোজপবৌল এবং ভঁডাবিসভক ভগবতী চতুর্ভুজী ছথি। ভঁডাবিসভক ভগবতীক রাম (নিম্ন) হাথমে ত্রিশূল ও পদ্ম পুষ্প এবং দহিন হাথমে ফল ও খড়্গ অছি। ভগবতী রাণেশ্বিবীক নামে বিশেষ প্রসিদ্ধ ছথি। মূর্তি অড়তালীস ওঁচ নমহব অছি, নদী অবশেষক পশ্চিমী তটপব অবস্থিত একটা মঁদিবমে পূজিত ছথি। ভঁডাবিসম দবভঁগা জিলাক মনীগাছী প্রখন্ডসঁ তীন কি.মী. দক্ষিণমে অছি। দেকলীক অষ্ঠভুজী ভগবতী কর্ণাটকালীন ছথি।

আধ্যাত্মিক চেতনা ও কলাত্মক ভব্যতাসঁ সমন্বিত ও মধ্যকালীন ভগবতী মূর্তিসভ অপন যুগক সাংস্কৃতিক

দর্পণে নহি অপিতু তৎকালীন জীবনক ধার্মিক আস্থা, আধ্যাত্মিক চেতনা, কলাত্মক সোচ, সামাজিক ও আর্থিক অবস্থিতিকেঁ প্রতিবিম্বিত করৈছ। মূর্তি বিজ্ঞানক অনুসার ভগবতীক শাস্ত্রীয স্বরূপ নির্ধারিত অছি, মুদা একহি যুগক বনল ভগবতীক মূর্তি সভমে শৈলীগত ভিন্নতা পাওল জাইছ। পাল সাম্রাজ্যক পতনোন্মুখ অবস্থামে রাজকীয সংরক্ষণ ও নির্দেশক অভাবক কারণে শৈলীগত শৈথিল্য স্বাভাবিক অছি। মূর্তিশিল্পক শাস্ত্রীযতাসঁ বন্হল রহিতো মূর্তিকার স্বতংত্র চেতা সেহো হোইত ছথি।

ফুলহরক ভগবতী গিরিজা: মধুবনী জিলান্তর্গত হরলাখী প্রখণ্ড মুখ্যালযসঁ পশ্চিম-দক্ষিণ দিশামে অবস্থিত ফুলহর গামমে প্রাচীন ভগ্নাবশেষপর বনল নবনির্মিত মংদিরমে স্থাপিত এবং পূজিত ভগবতী গিরিজাক ভব্য প্রাচীন প্রতিমা সৈঁতীস ইংচ নমহর অছি। জনশ্রুতিক অনুসার রামচরিতমানসক গিরিজাস্থান যৈহ থিক, জে জানকীক আরাধ্যা ছলীহ আর আইযো কুমারি কন্যা লোকনিক আরাধ্যা বনল ছথি।

গিরিজাক চতুর্ভুজী প্রতিমা কমলাসনপর স্থানক মুদ্রামে বনল অছি। বাম হাথমে কেরাক হথো ও গদা এবং দহিন হাথমে দর্পণ ও সনাল কমলপুষ্প সুশোভিত ছনি। মাথপর মুকুট, কানমে কুণ্ডল, গরামে হার, কান্হসঁ লটকৈত যজ্ঞোপবীত, বাঁহিমে বাজূবন্দ, কলাইমে আভূষণ, ডাঁরমে অধোবস্ত্রকেঁ কসৈত কটিভূষণ ও পৈরসভমে পাদাভূষণ। ভগবতীক বাম পার্শ্বমে কার্তিকেয এবং দহিনমে গণেশ কমলাসনপর ঠাঢ় ছথি। ভগবতীক প্রতিমা বাসেল্যক ভাবাত্মক পরিবেশমে নির্মিত

ঋছি। পার্ৱতী জগন্মাতা ছথি। গিবিজা বস্তুতঃ পর্ৱতকন্যা পার্ৱতী ছথি। বিবাহ পংচমীক ঋৱসবপব এহিঠাম বিশান মেনা নগৈত ঋছি। নববাত্রমে তাঁত্রিক সাধনা সেহো প্রচনিত ঋছি।

ভগৱতী গিবিজা ঋর্থাত্ পার্ৱতীক দোসব ভব্য কর্ণাটকানীন (১২-১৩ম সদী) মূর্তি দবভংগাক মিবজাপ্বব মোহল্লাক দেৱী মন্দিবমে প্রতিষ্ঠাপিত ঋছি। দবভংগাক সাংস্কৃতিক ক্ষিতিজপব উদ্ভাসিত ভগৱতী পার্ৱতীক (বঁড্ডস গংচ নমহব) কর্ণাটি (পানোত্তব) শৈনীমে নির্মিত ছথি। মূর্তিক প্রভাৱনী বঁস ঋনংকৃত ঋছি। ভগৱতী কমনাসনপব বস্ত্রাভূষণসঁ বিন্যস্ত স্থানক মুদ্রামে ঠাঢ় ছথি। বাম পার্শ্বমে কার্তিক ও দহিনমে গণেশ ঠাঢ় ছথি। দুনূকেঁ ভগৱতীক ঋভয প্রাপ্ত ছনি। ভগৱতীক দহিন হাথ (উপবকা) মে বাঁস্ৱবী উকীর্ণ ভেনে সন্যার্থী এহি প্রতিমামে গিবিজা, বাধা এবং নক্ষ্মীক সমাহাব দেখনে ছথি। মুদা বাঁস্ৱবী শঙ্খ ব্রহ্মক প্রতীক ঋছি, শিবক ডমরু জকাঁ। মিবজাপ্ৱবক ভগৱতী মহিষমর্দিনীক নামে নোকখ্যাত ছথি। শ্রুতি সাক্ষ্যক ঋনুসাবে ভগৱতী জাহি পোখবিক জীর্ণোদ্ধাবক ক্রমে উখেনিত ভৈ প্রকট ভেনীহ, ওহ কব্রগাহ ছন। মুজফ্ফবপ্বব কোর্টক ফৈসনাক ঋনুসাব ওহি ভূভাগক স্বামিত্ব হিন্দূ নোকনিকেঁ ভেটননি। ওহি স্থানপব ঋাগ ভগৱতীক একটা ভব্য ও দর্শনীয মঁদিব শক্তি-সাধনা ও নোক ঋাস্থাক কেন্দ্র বঁনি গেন ঋছি।

সন্যার্থী (মিথিনাক প্ৱবাতাত্ত্বিক সংপদা, ২০০৩ ঈ.) ঋপন সর্ৱেক্ষণমে ঋন্ধবাঠাঢ়ী (মধুবঁনী), দেকুনী, কুর্সী নদিযামী

(দবভংগা), কবিযন (সমস্তীপ্বব) ও হ্নহব (দবভংগা)ক ভগরতী পার্রতীক উল্লেখ কএনে ছথি। ভগরতীক ৰূপ কমনীয, রস্ত্রাভূষণ ননিত এরং দেহযষ্ঠি খান্বপাতিক রঁনন খছি। ফনতঃ ভগরতী পার্রতীক প্রতিমা প্রাণরংত ভ২ গেন খছি।

নাহবক মহিষাস্বব মর্দিনী: মধ্রঁনী জিনা ম্খ্যানযসঁ রাঁবহ কি.মী. পূর্র দিশামে খরস্থিত ভগরতীপ্ববক মংদিবমে মহিষাস্বব মর্দিনীক পাথবক মূর্তি (২৩”*১২”খাকাব) স্থাপিত এরং পূজিত খছি। দসভুজী ভগরতী ত্রিভংগী এরং স্থানক ম্দ্রামে কমনফূনক দোহবা খাসনপব মহিষাস্ববকেঁ শূন (রঁবছী)সঁ রেঁধৈত রঁনন খছি। রস্ত্রাভূষণসঁ স্বসজ্জিত ভগরতীক হাথসভমে দশ দিক্ পানক খস্ত্রসভ শোভিত ছনি। গন্দ্রক রঁজ্র, খগ্নিক শক্তি, যমক দল্ড, নৈঋতক খড্গ, রকণক পাশ, গুশানক শূন, রাযুক খংকুশ, ফরেঁবক গদা, রিষ্ণুক চএ ও ব্রঁহ্মাক পদ্ম। মহিষাস্বব মহামোহ খথরা খরিদ্যাক প্রতীক খছি, জকব রঁধ নোককন্যাণার্থ ভগরতীক হাথেঁ ভেন ছন। দশ ভুজা ভগরতীক দিগ-দিগংত পবির্যাপ্ত শক্তিক প্রতীকাভির্যক্তি থিক। ভগরতীক মূর্তি কর্ণাটকানীন কনাশৈনীমে নির্মিত খছি। ম্খাকৃতি খার্যন, দেহযষ্ঠি সংতুনিত ও খান্বপাতিক রঁনন খছি।

নাহবক ভগরতীক প্রসিদ্ধিক কাবণেঁ শক্তি-সাধনা স্থন নাহব ভগরতীপ্ববক নামে নোক প্রসিদ্ধ খছি। এহি ঠামক পার্শ্বরর্তী মংদিবসভমে সূর্য ও রিষ্ণুক প্রস্তব মূর্তি পূজিত খছি ম্দা নাহবক প্রসিদ্ধি মহিষাস্বব মর্দিনীক কাবণে খধিক খছি। মূর্তিক পাদপীঠমে ভক্তগণক

छोट-छोट मूर्तिसभ विनीत अग्रामे उत्कीर्ण अछि ।

हारीडीहक भगवती: दरभंगा जिलान्तर्गत रहेड़ा प्रखण्ड मुख्यालयसँ पाँच कि.मी. पूर्व-दक्षिण दिशामे अवस्थित हारीडीहक प्रसिद्धि यद्यपि महारानी सौभाग्यवतीदेवी (रहेर देवी)क आदेशसँ प्रतापी मंत्री कर्मादित्य द्वारा स्थापित हैहट्ट देवी भगवती पार्वतीक कारणे अधिक अछि (१३म शती), मुदा देवी मंदिरक गर्भगृहमे स्थापित महिषासुर मर्दिनीक महत्व कम नहि होइछ। श्रुति अछि जे भगवतीक मूर्तिक पादपीठ नवादा (दरभंगा) मे पूजित अछि, मुदा यत्र-तत्र उत्कृत अभिलेख कतहु नहि अछि। हारीडीहक महिषासुर मर्दिनी अष्टभुजी छथि। हैहट्ट देवीक नामे पूजित पार्वती ललितासनमे एवं महिषासुरमर्दिनी स्थानक मुद्रामे निर्मित अछि। कर्मादित्यक काल १२२६-७६ ई. मानल जाइछ। हारीडीह पंचदेवोपासक भूमि अछि मुदा प्रमुख भगवतीक छलि।

महिषासुरमर्दिनीक तेसर साधना केन्द्र दरभंगासँ नौ कि.मी. पूर्व-दक्षिण दिशामे अवस्थित अन्दामामे (२२”) प्राची नदी अवशेषक पश्चिमीतटपर रहल मन्दिरमे स्थापित भगवती ओ पूजित अछि। अष्टभुजी भगवतीक हाथसभमे नाग, धनुष, ढाल, शूल, चक्र ओ खड्ग धारित अछि। नाना वस्त्रालंकारसँ सुशोभित भगवती दोहरा कमलासनपर ठाढ़ छथि। भगवतीक दहिन पार्श्वमे एकटा ढाल खड्ग धारिणी सहदेवीक मूर्ति उत्कीर्ण अछि। भगवतीक मूर्ति संरचना मैथिल अवधारणाक अनुसार भेल अछि। मिथिलांचलमे भगवतीक महिषासुर मर्दिनी रूप समसामयिक परिवेशमे रहैत लोकप्रिय छल। महिषासुर

মর্দিনীক প্রাচীন ঐতিহাসিক মূর্তিসভ রৈদ্যনাথপ্বব (চত্তর্ভুজী), উঁজান (মধ্রॅনী). ডোকহব, জবৈন–পবসৌন, দেরপ্ববা (মধ্রॅনী), ফর্সো–নদিযামী, রॅবসাম, পোখবাম (খণ্ঠভুজী), নেহবা, রॅহেড় ী (খণ্ঠভুজী), চৌগামা (দবভংগা), মদবিযা, রঁ্ঠের (৭২*৩০" খণ্ঠভুজী), ভরানীপ্বব, সহমৌবা, নযা নগব (কোশী প্রমল্ডন), খোজপ্বব (দবভংগা) খাদিক খতিবিঞ ভজনাহা (মধ্রॅনী) ও গন্ধরাবি (দবভংগা)সঁ প্রাপ্ত সিংহরাহিনী খণ্ঠভুজী দ্গাকি প্রাচীন, পূজনীয এরং ঐতিহাসিক মূর্তিসভ পহাড় ী শৈনীমে নির্মিত খছি।

মিথিনাঁচনমে খনেক নামধাবিণী ভগরতীক মূর্তিসভ বাজেশ্ববী, পবমেশ্ববী, সিদ্ধেশ্ববী, ভুরনেশ্ববী রাণেশ্ববী, গুহ্যেশ্ববী জযমংগনা খাদিক নামে পূজিত খছি। সিমবিযা ভিল্ডী (সমস্তীপ্বব)মে সেহো মহিষাস্ববমর্দিনীক প্রাচীন পাথবক মূর্তি প্রাপ্ত ভেন খছি। নদিযামীক চত্তর্ভুজী মূর্তি পার্বতী (গিবিজা)ক থিক, জনিক পার্শ্বমে কার্তিক ও গণেশ উঁকোর্ণ ছথি। পার্বতীক একটা রিনক্ষণ প্রাচীন প্রস্তব প্রতিমা (পানী) নিসংদেহ খদ্বিতীয খছি। পার্বতীক গোদমে শিশ্ব গণেশক সংগে রৈসন ছথি। গ্বপ্তকানক ওা মূর্তি ভগরতীক রাসেন্য ভারক খভিরংজক খছি। পার্বতীক একটা চত্তর্ভুজীমূর্তি কবিযন (সমস্তীপ্বব)সঁ সেহো প্রাপ্ত খছি। মিথিনাক গতিহাস প্ববাতত্ত্ব ও সাংস্কৃতিক ক্ষেত্রমে রিজযকান্ত মিশ্র– মিথিনা খার্ট এল্ড খার্কিটৈকচব– এরং সন্দ্রেন্দ্র ফমাব ঝা (মিথিনা কী পান প্রতিমাএঁ) ডॉ প্রফ্ন্ন ফমাব সিংহ মৌন (কণাটকানীন মূর্তিকনা), সহনাবাযণ ঝা সহার্থী (দর্শনীয মিথিনা, ১–১০), ডॉ নবেন্দ্র নাবাযণ সিংহ নিবানা– মধ্রॅনী খংচনক

মূর্তি-, ড◌ॉ মীবানন্দ খাচার্য (বাজনগবক ঐতিহাসিক এরং ধার্মিক মহত্ব) খাদিক সর্বেক্ষণামেক খধ্যযন-খন্বশীনন উল্লেখনীয খছি।

মিথিনাংচনক নরবাত্রমে মহিষাস্বব মর্দিনীক নোকপূজন সর্বাধিক নোকপ্রিয এরং পবম্পবিত খছি। খানোচ্য প্রতিমা একটা সামাজিক প্রতিক্রিযাক ধার্মিক খভিব্যংজনা থিক। মিথিনাক মধ্যকানীন গতিহাস খাক্রমণ-প্রত্যাক্রমণ এরং সংঘর্ষপূর্ণ স্থিতিসঁ ভবন খছি। রিশেষ কঽ ম্ন্সিম খাক্রমণ ও ঘাত-প্রতিঘাতসঁ মিথিনা খাক্রান্ত ছন। এহি স্থিতিমে ম্লেচ্ছমর্দিনী দ্গাকি রূপগত সংবচনাক খর্থরত্তা রঁঢ়ি জাগছ। ম্লেচ্ছ খস্ববক পর্যায খছি। দের নোকনি খস্ববক রধ কযননি ম্দা ম্লেচ্ছ সভক রধ ভগরতীক হাথে ভেন খাব হ্নক এহি রূপকেঁ ম্লেচ্ছমর্দিনী মানন গেন, জে শক্তি-সাধনাক একটা প্রতীক রঁনন খছি।

মিথিনাক মধ্যকানীন গতিহাসক পৃষ্ঠভূমিমে হিন্দূ ধর্মক খন্তস্মাত ধার্মিক সদ্ভারক রিকাস ভেন। পান বাজানোকনি যদ্যপি রৌদ্ধধর্মী ছনাহ, ম্দা ও হিন্দূ ধর্মক দেরী-দেরতা সভক সেহো উঁদাবতাপূর্রক সংবক্ষণ দেননি। এহি সংক্রমণকানমে রৌদ্ধ নোকনি হিন্দূ দেরী-দেরতা এরং হিন্দূ নোকনি রৌদ্ধ দেরী-দেরতাকেঁ খংগীকাব কএননি। তাবা, ছিন্নমস্তা, মনসা খাদি হিন্দূ জগতমে ও তাবা, চন্ডী, কংকানী, ডাকিনী, রজ্র-রাবাহী, রজ্রতাবা খাদি রৌদ্ধ জগতমে প্রতিষ্ঠা পৌননি। ভিন্ন সাধনা প্রক্রিযা এরং রূপরিন্যাসক খনারা রঁনি নিষেধ ছন রৌদ্ধ-সাধক নোকনিমে। ম্দা রিক্রমশিনাক সিদ্ধ-সাধনামে পংচমকাবক সমারেশসঁ মিথিনাংচনক শক্তি-সাধনা প্রভারিত

অরশ্য ভেল। এহি ভূভাগমে হিন্দূ ও বৌদ্ধ ধর্ম সংগে-সংগ বিকসিত ভেল। উদাহরণার্থ বনগাঁৱ মহিষী (সহরসা) এবং বাবীক (সমস্তীপুর) হিন্দূ ও বৌদ্ধ তাবাক পূজোপাসনাকেঁ বাখল জাই সকৈছ।

কোর্থক কালী: দবভংগা জিলাক ঘনশ্যামপুর প্রখণ্ডক অন্তর্গত সাংস্কৃতিক কোর্থ (পৌবাণিক কোর্থ, সহনাবায়ণ ঝা সলার্থী, নৱেবিযাসবায, দবভংগা)ক গোসাউনিক স্থানমে স্থাপিত এবং পূজিত পাথবক কালী মূর্তি (২ ফীট ৬ ইংচ) চতুর্ভুজী অছি। আদ্যাশক্তি কালী দশমহাবিদ্যামে প্রথমা এবং মহাকাল (শির)ক শক্তি ছথি। কলা (সাকাব জগত)কেঁ আমেসাত কবইবঁালী কালী দিগম্বরা ছথি। হুনক বাম হাথ (নিম্ন)মে ছিন্নমস্তক ও খড্গ এবং দহিন হাথমে পোথী (শাস্ত্র) ও ৱবমুদ্রা ৱঁলল অছি। মুণ্ডমালিনী কালী শৱরূপ শিরক হৃদয স্থলপব ঠাঢ় ছথি। শক্তিহীন ব্রহ্ম শৱ অছি আব শক্তিযুক্ত ভই ও শিব কহবৈত অছি। কালীক মাথপব মুকুট, ডাঁব ও হাথ-পৈব সভ আভূষণ মংডিত অছি, কালীক জিহ্বা বাঁহব নিকলল ছনি। কোর্থক এহি কালীক পূজামংত্র অছি- "হংসৌঃ সদাশিৱ মহাপ্রেতপদ্মাসনায নমঃ"। – তাবা বহস্য, ১+৯৬ ঈ., পৃ.৪১.

"পুবশ্চর্যার্ণৱ" (ৱনাবস, ১৯০১ ঈ.-পৃ.১৭)ক অনুসাব কালীক নৌটা ভেদ অছি- দক্ষিণকালী (কলকত্তা), ভদ্রকালী (কোগলখ), শ্মসানকালী (দবভংগা), কালকালী, গুহ্যকালী (কাঠমাণ্ডূ), কামকলাকালী (কামরূপ), ধনকালী, সিদ্ধিকালী ওই চণ্ডকালী (বিবাটপুব)। লক্ষ্মীতংত্রক অনুসাব মিত্র ৱ শত্রুক সত-অসত রূপক বিভুকেঁ মাযাগুণযুক্ত ভেলাক

কাবণে ও ভদ্রকানী কহবৈত ছথি। ও কন্যাণৰূপা ছথি। মিথিনাঁচনমে ভদ্রকানীক পূজোপাসনা কোগনখ (মধ্ৰ্বনী) মে হোগছ। "মিথিনা তত্ব রিমর্শ" (পবমেশ্বব ঝা) মে কোগনখক ভগরতীকেঁ ভদ্রকানী ওঽ কাকিনাক্ষী কহন গেন খছি। ভগরতী মধ্ৰ্বনীসঁ তেবহ কি.মী. পূর্ব দিশামে স্থিত কোগনখক ভব্য মন্দিবমে পূজিত ছথি।

একব খতিবিঞ সহবসাক মত্স্যগংধা পবিসবক পগোডা শৈনীমে বঁনন মংদিবমে বঞকানীক ভব্য ওঽ খাকর্ষক মূর্তি স্থাপিত ও পূজিত খছি। ত্রিভংগী নৃত্ মুদ্রামে নির্মিত দ্বিভুজী মুণ্ডমানিনী বঞকানীক রাম হাথমে কপান ও দহিনমে খড়্গ ধাবিত ছনি। বঞকানীক এহি নৃত্মে খসত তত্বাদিক দমন ও কপানমে সৃষ্ঠি বীজক সংবক্ষণক ভার খন্তর্নিহিত খছি। বাজনগব (মধ্ৰ্বনী)ক বাজপবিসবক কানী মন্দিবমে স্থাপিত কানীক সৌম্য মূর্তি, মধ্ৰ্বনীক ভওবাগঢ়মে মহাবাজ বামেশ্বব সিংহ দ্বাবা স্থাপিত কানী, বাজদবভংগাক শ্যামা, দবভংগাক বাঁগমতী তটক শৈসান কানী, চৈনপুব (কোশী খংচন)ক মহাকানী, ধবান (নেপান)ক দংতকানী, বৈঁতিযা বাজক কানী খাদি রিভিন্ন ৰূপেঁ পূজিত ছথি। জনপদক গ্রামাঁচনমে রনকানী, বণকানী খাদিক নোকপূজন সেহো পবম্পবিত খছি। দশমহারিদ্যাক খন্তস্মত দ্বিতীযা মহারিদ্যাক ৰূপমে প্রতিপাদিত ভগরতী তাবা ব্রাহ্মণ ধর্মক বৈদিক পবম্পবা ও বৌদ্ধিক ধর্মক তাঁত্রিক পবম্পবামে রনগাঁর–মহিষী ও রাবীমে স্থাপিত এরং পূজিত ছথি। ডॉ জনার্দন মিশ্র (ভাবতীয প্রতীক রিদ্যা, পটনা, ১৯৩৯ ঙা. পৃ.২০৭)ক খনুসাব সনাতনী তাবা এরং বৌদ্ধ ও জৈন তাবামে স্বৰূপগত খাব সিদ্ধান্ততঃ কোনো ভেদ নহি খছি।

ঋদা রৌদ্ধ দেরী তাবাক রূপগত রিস্তাব দেখনা জাগছ– উগ্রতাবা, নীনতাবা, পীততাবা, হবিততাবা, ধনদ তাবা, মহাচীন তাবা, রঁজ্রতাবা, রবদ তাবা, শ্বেত তাবা খাদি। রাবী (সিংঘিযা সমস্তীপ্বব) ক বামজানকী মন্দিবমে বক্ষিত দ্বিভুজী রৌদ্ধদেরী তাবা (৩১ গন্চ)ক পানহগীন প্রস্তব মূর্তিমে ঋখ্য তাবক খতিবিক্ত সম্পূর্ণ প্রভাবনীমে এগাবহ টা রিভিন্ন তাবা সভক মূর্তি খভিশিল্পিত খছি। ভগরতী তাবা কমনাসনপব ননিতাসনমে রৈঁসন ছথি। দহিন হাথ রামঋদ্রামে রঁনন খছি। ভগরতীক প্রতিমা রস্ত্রাভূষণসঁ খনংকৃত খছি। হম প্রাযঃ তীন দশক পূর্র রঁহেড় া (দবভংগা)ক একটা র্যক্তিগত পূজাগৃহমে নীনতাবা (সবস্বতীক প্রতিরূপ)ক পানহগীন প্রস্তব মূর্তি দেখনে ছনহুঁ। সহার্থী রনগাঁর মহিষীক তাবামূর্তিকেঁ পূর্ণতঃ (ঋখাকৃতিকেঁ ছোড়ি) রস্ত্রাচ্ছাদিত পোটরী কহনে ছথি। মহিষীক রর্তমান তাবামন্দিবক নির্মাণ নবেন্দ্র ঠাকুব (১৭৪৩–৬০)ক বানী পদ্মারতী করৌনে ছনীহ। ও মহিষীক ছনীহ। প্রত্যক্ষদর্শীক খনুসাব উগ্রতাবাক পার্শ্বদেরক রূপমে নীনতাবা ও এক জটা মূর্তিত খছি। মহিষীক উগ্রতাবাকেঁ রশিষ্ঠাবাধিতাবা কহন জাগত ছনি। এহি ক্ষেত্রক ধর্মমূনা (ধেঋবা) নদীক তটরর্তী ক্ষেত্রসঁ প্রাপ্ত রৌদ্ধদেরী তাবাক একটা প্রস্তব মূর্তি সম্প্রতি পটনা সংগ্রহানযমে সংবক্ষিত খছি। রৈশানীক নীবভুঞী তাবাঃ চর্চিত খছি।

জগতপ্বব রঁবাবী ক্ষেত্রসঁ প্রাপ্ত তাবাক দ্বিভুজী স্থানক মূর্তি দশম–এগাবহম শতাব্দীক থিক। তাবাক পার্শ্বমে দূ টা দেরী মূর্তি ত্রিভংগী ঋদ্রামে খংকিত খছি। এহিসঁ ঞ জ্ঞাত হোগছ জে মিথিনা সতত ব্রাহ্মণ ধর্মক প্রবর্তক ছন, সেহো রৌদ্ধ ধর্মক দেরী–দেরতাক প্রভারসঁ রংচিত

নহি বহি সকল। (মিথিলা ভারতী, পটনা, মার্চ–জূন ১৯৬৯ ঈ.)। মূর্তি ২ ফীট চাবি ইঞ্চ গুণা ১ ফীট ३ ইঞ্চ আকারমে বঁনল অছি। মূর্তি অভিলিখিত অছি– "যং ধর্মা হেতু প্রভরা..."। মহাযানমে দেবী তত্ত্বক প্রধানতা ছল– তারা, চণ্ডী, হারীতি আদি। ভগবতী তারাক একটা প্রাচীন মন্দির তিলকেশ্বর (দরভংগা)মে অছি। স্মরণীয় অছি বনগাঁর–মহিষীক পহিচান বুদ্ধকালীন আপণ নিগমসঁ ভেল অছি।

কটৈাক চাম্লুণ্ডা: গুপ্তকালীন ইতিহাসমে কটৈরা তীবভুক্তিক চাম্লুণ্ডা একটা "বিষয" ছল আর কটৈরাগঢ় (বর্তমান মুজফ্ফরপুর জিলা অন্তর্গত)ক চাম্লুণ্ডা এহি তাঁত্রিক শক্তিপীঠক অধিষ্ঠাত্রী দেবীক রূপমে পূজিত ছথি–

বিদেহ নগরী স্থিত্বা সর্বশক্তি সমন্বিতা
চাম্লুণ্ডেতি ততো খ্যাতা লক্ষ্মণাতব রাসিনী।

কটৈাক প্রাচীন ঐতিহাসিক গঢ়ক ভগ্নারশেষপর চাম্লুণ্ডাক নবনির্মিত মন্দির লখনদেড় (লক্ষ্মণা) তটপর অবস্থিত অছি। চাম্লুণ্ডা ক্ষেত্রক কটৈয়াক কটেশ্বরী ও চকৌতীক চক্রেশ্বরী উপশক্তি পীঠ অছি।

চাম্লুণ্ডা তাঁত্রিক পূজারশেষ রীবপুর, পচম্বা(বেগুসবায), পচহী (মধুবনী) আদি স্থান সভসঁ প্রাপ্য অছি।

বিরাটপুরক চণ্ডী: সহরসা জিলাক সোনবর্ষা প্রখণ্ডক অংতর্গত জিলা মুখ্যালযসঁ পৈংতীস কি.মী. পূর্বমে স্থিত

রিবাষ্টপ্বব গামক শক্তিপীঠ চন্ডীস্থানক নামসঁ নোকখ্যাত অছি। রিবাষ্টপ্ববক চন্ডী, ধমহাবা (ধর্মধাবা)ক কল্যাযিনী এরং মহিষীক উগ্রতাবা স্থান একটা তাঁত্রিক ত্রিকোণপব অরস্থিত অছি। চন্ডী মন্দিব অষ্ঠকোণীয আধাবপব বনন মন্দিবক গর্ভগৃহমে ভগরতী চন্ডীক মূর্তি, মন্দিবক প্ররেশ দ্বাবপব বঁটুকক মূর্তি (বঁধায স্বামী), শিল্পাঁকিত তাঁত্রিক চক্র, প্রাঁগণমে তিবহুতামে অভিনেখাদি শক্তিপীঠক ঐতিহাসিকতাক প্রমাণ অছি।

চন্ডী দুর্গাক একটা রূপ থিক। হিন্দূ প্রতিমা রিজ্ঞানক অনুসাব ওহ দসভুজী এরং সিংহ অথরা বাঁঘপব আরুঢ় বহৈত ছথি। ওহ মহিষাসুব মর্দিনী জকাঁ উগ্ররূপা ছথি। চন্ডীক একটা গুপ্তকানীন মন্দিব গাজীপৈতা (কোশী ক্ষেত্র) গামমে অরস্থিত অছি। মন্দিবক পাথবক চৌখটিমে একটা অস্পষ্ট অভিনেখ উৎকীর্ণ অছি (রিহাব কী নদিযাঁ, হবনদাব প্রসাদ ত্রিপাঠী, পটনা, ১৯৭৭ ঈ., পৃ.৪১০)। রৈঁহট ও নক্ষ্মীপুবমে সেহো চন্ডীমন্দিব শক্তি–সাধনাক কেন্দ্র বনন অছি। জযমংগনাগঢ় (বেগুসবায)ক ভগরতী মংগনাকেঁ “মংগন চন্ডী” (দেরী ভাগরত) কহন গেন অছি। এরং প্রকাবে চন্ডীক পূজন পবম্পবাক অরশেষ রিবাটপুব (রীবহট্ট), গাজীপৈতা, নক্ষ্মীপুব (কোশী ক্ষেত্র), রৈঁহট, জযমংগনাগঢ় এরং অবেবাজ (প.চম্পাবণ) ক্ষেত্রক চন্ডীস্থানমে উপনব্ধ অছি।

সিমবৌনগঢ়ক কংকানী: তিবহুতক কর্ণাটরংশীয বাজা নান্যদেরক বাজধানীনগব সিমবৌনগঢ় (সম্প্রতি নেপান তবাগমে অরস্থিত)ক স্কন্দদেরী কংকানীক প্রাচীন প্রস্তব মূর্তি (খন্ডিত) একটা মন্দিবক গর্ভগৃহমে স্থাপিত ও

पूजित अछि। मन्दिरक प्रांगणमे विष्णु, उमामाहेश्वर सूर्य आदिक विशाल- पाथरक कलात्मक मूर्तिसभ कर्णाटशैलीमे निर्मित एवं लोकपूजित अछि। कर्णाट राजा लोकनि पंचदेवोपासक रहितो शक्तिक उपासक छलाह। कर्णाट राजा शक्र सिंह द्वारा स्थापित सखराक भगवतीक शक्रेश्वरी एवं राजा हरिसिंहदेवक कुलदेवी तुलजा भवानीक (नेपाल उपत्यकाक तीनू राजधानी नगरमे स्थापित एवं पूजित मूर्ति सभ शक्ति उपासनाक उदाहरण रूपमे लेल अछि। कंकालीक एकटा मन्दिर राजपरिसर, दरभंगामे अछि।

कंकालीक तेसर सांस्कृतिक मिथिलांचलक भारदह (भीमनगर रूपाजसँ पश्चिम, वर्तमान नेपाल तराइ)क मन्दिरमे एकटा तेजस्विनी पाथरक मूर्ति स्थापित अछि। कंकाली भगवती चतुर्भुजी छथि, जे निसंदेह कर्णाटकालीन (१२-१३म सदी) थिक। कंकालीक पार्श्वमे अष्ठभुजी दक्षिणकाली, वाम दिस चतुर्भुजी विष्णु आदि प्राचीन प्रस्तर मूर्ति सभक ऐतिहासिक महत्व अछि। कंकालीक उदर भाग गहीर धरि तराशल अछि आर हाथसभमे दण्ड ओ पाश राँचल अछि। शेष खण्डित अछि।

आमीक अम्बिका स्थान: हाजीपुर-सोनपुरसँ छपरा मार्गमे दिघवारा (सारण) लग गंगाक वाम तटपर आमीमे अम्बिका भगवतीक एकटा प्राचीन मूर्ति स्थापित ओ पूजित अछि। आमी मही ओ गंगाक संगम क्षेत्र अछि। एहि भूभागकेँ संगमतीर्थ सेहो कहल जाइ सकैछ। श्रुति अछि एहिठाम दक्ष प्रजापतिक यज्ञमे शिवा अपन प्राणाहुति देने छलीह। राजा स्वरथ एहिठाम भगवतीक उपासना कयने

छनाह। दुर्गा-सप्तशतीक अंतः साक्ष्यक अनुसार ओ एहिठाम भगवतीक मंदिरक मूर्ति स्थापित छनाह पूजनमे छनाह। आमी जाग्रत शक्तिपीठ अछि।

अम्बिकाक रूप विन्यासमे कहल गेल अछि जे ओ कमलासनपर आसीन छथि। हुनक हाथमे पाश, अंकुश आदि छनि एवं वाहन सिंह छनि। अम्बिकाक पूजोपासना समान रूपसँ शैव, शाक्त, बौद्ध, जैन आदि लोकनि करैत छथि। जैन सन्दर्भमे ओ नेमिनाथक यक्षिणी ओ शासनदेवी सेहो छथि।

सखराक छिन्नमस्ता: रुनौलीसँ (निर्मली, सहरसा) मात्र दू मील पश्चिमोत्तर दिशामे अवस्थित सखरामे छिन्नमस्ताक प्रसिद्ध मन्दिर अछि। मन्दिरक गर्भगृहमे कर्णाट राजा शक्रसिंह (१२४३-९३) भगवतीक मूर्तिक स्थापना कयने छनाह। फलतः सखराक छिन्नमस्ताकेँ शक्रेश्वरी सेहो कहल जाइत अछि। ओऽ तांत्रिक पूज्या भगवती छथि, मन्दिरक गर्भगृहमे स्थापित पंचदेवीमे छिन्नमस्ता प्रमुख छथि। सखरा सांस्कृतिक मिथिलांचलक नेपाल तराइ राजविराज, सप्तरीमे पड़ैत अछि।

भगवती छिन्नमस्ता द्विभुजी रूपमे रति-कामक युगलबद्ध आसनपर ठाढ़ छथि। दहिन हाथमे कात्ता एवं वाम हाथमे स्वहस्त खण्डित मस्तक छनि। ओ दिगम्बरा छथि, मुक्तकेशा छथि। हुनक दुनू पार्श्वमे योगिनी ओ भोगिनी (डाकिनी) योनिमुद्रामे ठाढ़ भगवतीक कण्ठसँ निःसृत रक्तक धारकेँ पीबैत छथि। रक्तक पहिल धार भगवतीक अपने मुँहमे जाइत छनि। यैह सृष्टिक

জীরনচঞ্চ থিক। যোগিনী ও ডাকিনীক হাথ সভমে কপান ও কাতা ছনি। বজবপ্পা (মাবখল্ড) মে ভগরতীক ভব্য মন্দিব দর্শনীয় খছি।

ভগরতীক শাস্ত্ররিহিত এরং নোকরিহিত ৰূপসাধনাক সন্দর্ভমে নিম্ননিখিত স্বৰূপক প্রসিদ্ধি উল্লেখনীয় খছি– নক্ষ্মী (খহ্ুবাঠাঢ় ী, মধ্রঁনী; পবানপ্বব, কটিহাব), গজনক্ষ্মী (ভীঠ–ভগরানপ্বব, মধ্রঁনী; বোসড় া, সমস্তীপ্বব খাদি), সহোদবা মাঙ (নবকটিযাগংজ, প.চম্পাবণ), গঢ় ী মাগ (নেপান তবাগ), ব্ঁঢ় ি যা মাগ (মংগবৌনী, মধ্রঁনী;কল্মৌনী, রৈশানী খাদি) খাদিক খতিবিঞ পবমেশ্বরী (খহ্ুবাঠাঢ় ী), রাণেশ্বরী (মকবন্দা), ভুরনেশ্বরী (ভরানীপ্বব), বাজেশ্বরী (ডোকহব), সিদ্ধেশ্বরী (সবিসর), জটেশ্বরী (নোহট), রিষহবী (দিযাবীথান, সহবসা) খাদি। মিথিনাঁচনক গাম–গামমে পসবন পিল্ডস্বৰূপা সপ্তমাতৃকা এরং ঘব–ঘবমে পিল্ডিত গোসাঁউনি ভগরতীক ৰূপ রিস্তাবক সাংস্কৃতিক সর্রেক্ষণ ও খনুশীনন খারশ্যক খছি। একব খতিবিঞ জনশক্তি পূবিত নদী দেরী সভমে গংগা, যমুনা, কোশী, কমনা ও জীরছক শক্তি স্বৰূপক পূজোপাসনা সেহো রিশিষ্ট খছি।

<u>মিথিনাঁচনক গাণপত্য ক্ষেত্র</u>

ধার্মিক ও সাংস্কাবিক খনুষ্ঠানসঁ পূর্র গণেশক পূজনক রিধান খছি কিযেক তঁ ও রিঘ্নাঁতক ছথি, রিদ্যা–ব্ঁদ্ধিক

দেরতা ছথি, সিদ্ধি দাতা ছথি এরং পংচদেরোপাসনামে পবিগণিত ছথি। গণেশক স্বরূপক পবিকল্পনা দেরত্ব সংপোষিত মানর দেহধাবী কিন্তু মস্তক একদংত গজক অছি। মনুষ্য দেহধাবী কিন্তু পশু–পক্ষী মুখী মস্তকধাবী দেরতা সভমে ররাহ রিষ্ণু, নবসিংহ অরতাব, অশ্বমুখী অশ্বিনীকুমাব, পক্ষীমুখী গরুড়, কপিমুখী হনুমান আদি স্বযংমে একটা অদ্ভুত পবিকল্পনা অছি। রৌদ্ধকনামে গজ, অশ্ব ও সিংহ ধর্মক প্রতীক মানল গেল অছি, জে অশোক স্তংভ (ধর্মধ্বজ)ক রূপেঁ মূর্ত ভেল অছি। মিথিলাংচলমে হাথী (হস্তিমুখ) শুভপ্রদ মানল জাগছ। এহি ঠামক সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান (রিরাহ সংস্কাব)মে গৌড় ী পূজন ও কোহবঁড় ভিত্তিচিত্রমে হাথীক অংকন এরং ছঠি ও রিরাহ মণ্ডপপব হস্তিকলশ পূজনক রিধান রিহিত অছি। দেরবাজ ইন্দ্রক রাহন ঐবারত হাথী ছলি। অতঃ গজমুখী গণপতি গণেশক স্বরূপগত পবিকল্পনামে মনুষ্য ও পশুক শক্তি–সামর্থ্য রিশেষক সমাহাবসঁ একটা নরকল্পক স্থাপনা ভেল। ররাহক (রিষ্ণু) কর্ম মাঁটি কোববঁ এরং (নব) সিংহক স্বরূপ হংতা (সংহাবক)ক অছি। অতঃ দেরস্বরূপক সংবচনা উদ্দেশ্য রিশেষক কাবণেঁ হোগছ আব সভক রিশদ র্যাখ্যা পুবাণ সাহিত্যমে কথাক মাধ্যমে ভেল অছি।

গণপতি গণেশক মুখ্য লক্ষণ অছি– লম্বোদব, একদন্ত, সূঢ়, স্থূলকায, ভুস্ক নাটখূট এরং হাথমে পবশু, পাশি, অংকুশ ও কমল। মুদা ও মোদক প্রিয ছথি। রাহন মূষক ছলি। গণেশকেঁ চাবি, আঠ অথরা দস–বাঁবহ ভুজী মূর্ত্তি সভ ভেটাগত অছি। হিনক হাথমে বাখল আয়ুধ এরং প্রতীকিত রস্তু সভক আধাবপব ও ভিন্ন নামসঁ অভিজ্ঞাত হোগত ছথি– লক্ষ্মী গণপতি, রক্রতুণ্ড

গণেশ, শক্তি গণেশ, হেবম্ব, মহাগণপতি আদি। ক্ষুদা মিথিনাঁচনক রিভিন্ন ঐতিহাসিক স্থন সভসঁ প্রাপ্ত গণেশক স্বরূপ এহি রূপেঁ মূর্ত ভেন অছি। কোর্থক (দবভঙ্গা) অষ্ঠভুজী নৃত্য গণেশ (আকাব ২৪”*১০”) কমনাসনপব নৃত্য ভঙ্গিমামে ভক্ত সভক রবদাযী রঁনন ছথি। রক্রতুণ্ড গণেশক হাথ সভমে অক্ষমান, অঙ্কুশ সহিত পবশু, পাশ, মোদক পাত্র আদি ধাবিত অছি। ভোজপবৌন (মধ্‌রঁনী)ক চতুর্ভুজী গণেশ কমনাসনপব ননিতাসন ক্ষুদ্রামে প্রতিষ্ঠিত ছথি। পাদপীঠমে মূষক রাহনক রূপেঁ উৎকীর্ণ অছি। সাহোপববী (দবভঙ্গা)ক অষ্ঠভুজী নৃত্যগণেশক ভব্য প্রস্তব মূর্তি পূজিত অছি। দুনূ পার্শ্বমে সংভবতঃ ঋদ্ধি-সিদ্ধি রিনীত ভারেঁ রঁনন ছথি। পাদপীঠমে ভক্তজন নিরেদিত ছথি। অহিনা গণেশক মধ্যকানীন প্রস্তব মূর্তি সভ হারীডীহ, নেহবা, রঁহেড় া, দেকুনী, নহেবিযাসবায, হিবণী, বতনপুব (দবভঙ্গা), রিষ্ণু রঁকুআব, ভন্তী, ভীঠভগরানপুব, ভগরতীপুব (মধ্‌রঁনী), মহাদেরাডীহ (দবভঙ্গা), কবিযন (সমস্তীপুব), রীবপুব (রেঁগুসবায), তিরৌতা (শিরহব) আদি ধার্মিক এরং ঐতিহাসিক স্থন সভসঁ উপনব্ধ এরং পূজিত ছথি। একব অনারা মিথিনাঁচনক রেঁগুসবায, দবভঙ্গা, ক্ষজফ্ফবপুব আদি সংগ্রহানয সভমে ও সংবক্ষিত অছি। সামান্য গণেশ ননিতাসনমে রবক্ষুদ্রাক সংগে নির্মিত অছি।

মধ্যকানীন বাজকীয সংবক্ষণমে রঁনন মংদিবক পাথবক কনামেক চৌখটক সোহারটীক মধ্যমে গণেশ অথরা গজনক্ষ্মী রঁনযরাক চনন ছন। গণেশ ও নক্ষ্মী শুভসূচক দের ছথি। অন্দামা (দবভঙ্গা)ক মহাদেরস্থানমে বাখন মংদিব স্থাপত্যক প্রাচীন পাথবক সোহারটীমে পদ্মাসীন গণেশক মূর্তি এরং কোর্থ (দবভঙ্গা)ক

মংদির সোহারঠীমে গজলক্ষ্মী উৎকীর্ণ অছি। প্রবেশ দ্বারক সোহারঠীমে উৎকীর্ণ গণেশ বা গজলক্ষ্মীসঁ ধ্বস্ত মংদিরক গর্ভগৃহমে স্থাপিত মূল দেব প্রতিমাক সূচক হোইত অছি ও শিবমংদির বা বিষ্ণুমংদির সংভাবিত অছি।

গণেশ শিব ও পার্বতীক পুত্র ছথি, শিবগণক অধিপতি গণপতি ছথি এবং পার্বতীক গোদমে বাৎসল্যপূরিত বাল গণেশ ছথি। পালী (দরভংগা) মে পদ্মাসনমে বৈসল পার্বতীক গোদমে বালগণেশক একটা গুপ্তকালীন পাথরক মূর্তি মংদিরমে পূজিত অছি। এহি তরহক একটা দোসর প্রাচীন কাংস্য মূর্তি হাজীপুর (বৈশালী)ক মঠসঁ প্রাপ্ত ভেল অছি, জাহিমে শিব ও পার্বতী স্থানুক মুদ্রামে ঠাঢ় ছথি। দ্বিভুজী শিব ও পার্বতীক দহিন হাথ বর মুদ্রামে এবং পার্বতী বাম হাথে বালগণেশকেঁ গোদমে সমেটনে ছথি। এহি ক্রমমে সিংহপর ললিতাসনমে বৈসল চতুর্ভুজী পার্বতীক বাম গোদমে বৈসল বাল কার্তিকেযক একটা পাথরক প্রাচীন মূর্তিক উল্লেখ আবশ্যক বুঝলা জাইছ (ভারতীয কলা কো বিহার কী দেন, পটনা, ১৯৩+ ই. চিত্র সং.১০০)। এহি মূর্তি সভমে ভগবতীক বাৎসল্য ভাবক সুন্দর অভিব্যক্তি ভেল অছি।

ভারতীয মূর্তিকলাক পরম্পরামে মিথিলাংচলসঁ প্রাপ্ত গিরিজাক প্রাচীন পাথরক মূর্তি সভমে ভগবতীক বাৎসল্য ভাবসঁ স্নাত গণেশ ও কার্তিকেয পার্শ্ব দেবপুত্রক রূপেঁ উৎকীর্ণ ছথি। ভগবতী গিরিজা (মিরজাপুর, দরভংগা) কুর্সোনদিযামী (দরভংগা) এবং ফুলহরক গিরিজাস্থানক দহিন পার্শ্বমে গণেশ ও বাম পার্শ্বমে কার্তিকেয ঠাঢ় ছথি। গণেশক হাথমে মোদক এবং কার্তিকেযক হাথমে মূসল শোভিত ছলি। ও দ্বিভুজী ছথি।

গণেশ ও কার্তিকেযক স্বতংত্র মূর্তি সেহো পরিকল্পিত এবং

मूर्त भेल अछि। ओ प्रायः शिवमंदिरमे स्थापित एवं पूजित छथि। मयूरपर आरूढ़ कार्तिकेय युद्धक देवता छथि। पुण्ड्रवर्धन (पूर्णिया क्षेत्र)मे हिनक एकटा मंदिरक उल्लेख प्राप्त अछि। स्कन्दा वैशालीक कवि कट्ठैवा मन्दिरमे मयूरारूढ़ कार्तिकेय स्थापित एवं पूजित छथि। एहि तरहक एकटा पालकालीन पाथरक कार्तिकेयक मूर्ति वस्वआरा (मधुबनी)क मठमे सेहो संरक्षित अछि। कार्तिकेयक हाथमे बरछी छनि। आग कान्हि नवरात्रक अवसरपर भगवती दुर्गाक पार्श्वमे सामान्यतः गणेश ओ कार्तिकेयक शिल्पांकन कयल जाइछ। तहिना दीपावलीक मांगलिक बेलामे गणेशक संग लक्ष्मीक सामंजस्य (लक्ष्मी-गणेश) श्री समृद्धि ओ सुख सौभाग्यक सूचक मानल जाइछ। मिथिलांचलमे गणेश चौठ (भाद्र शुक्ल चतुर्थी) एवं महाराष्ट्रमे गणेशोत्सव व्यापक रूपेँ मनाओल जाइछ।

डॉ. जनार्दन मिश्र (भारतीय प्रतीक विद्या, पटना, १९३९ ई.) मातृरूपमे ब्रह्म विनायकक मनोरम मूर्ति सभक (चित्र सं.९ च एवं छ) उल्लेख कयने छथि ओ गणेशक शक्ति छथि। भारतीय परिप्रेक्ष्यमे प्रत्येक देवताक लेल हुनक शक्तिक परिकल्पना कयल गेल- शिव-पार्वती (उमा-माहेश्वर), विष्णु-लक्ष्मी (लक्ष्मी-नारायण), इन्द्र-इन्द्राणी आदि। सप्तमातृकाक परिकल्पना एकटा उदाहरण अछि। एहि ब्रह्म विनायककेँ शक्तिगणेश सेहो कहल जा सकैछ। एहि तरहक प्राचीन मूर्ति सभ भारतक अलावा जापान (जापान का मूर्ति तात्विक अध्ययन, वर्कशी) मे सेहो पाओल जाइछ। ओना प्राचीन भारतीय साहित्यमे ऋद्धि एवं सिद्धिकेँ हुनक पत्नी कहल गेल छनि। ओ दुनू गणेशक मूल मूर्तिक संगे

𑒅𑒿𑒏𑒹𑒩𑓂𑒪𑒼𑒿 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱, 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒬𑓂𑒫𑒠𑒹𑒫𑒲𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹।

𑒑𑒝𑒹𑒬𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒴𑒖𑒼𑒣𑒰𑒮𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰𑒮𑒿 𑒂𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒦𑒹𑒪, 𑒞𑒏𑒩 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒖𑒢𑒞𑒥𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒟𑒰𑒣𑒱 𑒣𑓀𑒔𑒠𑒹𑒫𑒼𑒣𑒰𑒮𑒢𑒰𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒪 𑒦𑒹𑒪। 𑒑𑒝𑒹𑒬𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒔𑒪𑒧𑒹 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒰𑒡𑒱𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒁𑒕𑒱- (𑒏) 𑒣𑒠𑓂𑒧𑒰𑒮𑒲𑒢 𑒑𑒝𑒹𑒬 𑒋𑒫𑓀 (𑒐) 𑒢𑒵𑒞𑓂𑒨 𑒑𑒝𑒹𑒬। 𑒦𑒼𑒖𑒣𑒩𑒾𑒪 (𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲)𑒏 𑒣𑒠𑓂𑒧𑒰𑒮𑒢𑒣𑒩 𑒪𑒪𑒱𑒞𑒰𑒮𑒢𑒧𑒹 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒔𑒞𑒳𑒩𑓂𑒦𑒳𑒖𑒲 𑒫𑒏𑓂𑒩𑒞𑒳𑒝𑓂𑒛 𑒑𑒝𑒹𑒬𑒏 𑒣𑒰𑒠𑒣𑒲𑒚𑒧𑒹 𑒫𑒰𑒯𑒢 𑒧𑒴𑒭𑒏 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒧𑒪𑒰𑒮𑒢 𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪 𑒅𑒠𑒩 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒰𑒝𑓂𑒛𑒏 𑒮𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒥𑒼𑒡𑒏, 𑒧𑒴𑒭𑒏 𑒫𑒱𑒒𑓂𑒢𑒏 𑒒𑒰𑒞𑒏, 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒧𑒼𑒠𑒏 𑒮𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒏𑒹𑒞 𑒥𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳, 𑒣𑒰𑒬-𑒁𑓀𑒏𑒳𑒬 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒥𑒼𑒡𑒏, 𑒫𑒰𑒧 𑒮𑓂𑒏𑓀𑒡𑒮𑒿 𑒪𑒙𑒏𑒻𑒞 𑒨𑒖𑓂𑒘𑒼𑒣𑒫𑒲𑒞 𑒨𑒖𑓂𑒘𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩𑒡𑒰𑒩𑒲 𑒑𑒝𑒹𑒬 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒠𑒯𑒱𑒢 𑒯𑒰𑒟 𑒁𑒦𑒨 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒢𑒵𑒞𑓂𑒨 𑒑𑒝𑒹𑒬 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒢𑒙𑒹𑒬 𑒑𑒝𑒹𑒬𑒏 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒩𑒴𑒣 𑒁𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏𑒵𑒞 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒑𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒨 𑒦𑒹𑒪। 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱𑒏𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒫𑒱𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏 𑒪𑒲𑒏 𑒁𑒩𑒮𑒪 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒪𑒢𑒱। 𑒢𑒙𑒩𑒰𑒖 𑒬𑒱𑒫𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒑𑒝𑒹𑒬𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒯𑒼𑒨𑒥 𑒮𑓂𑒫𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏𑒹। 𑒋𑒯𑒱 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒃𑒪𑒐𑒏 𑒁𑒭𑓂𑒙𑒦𑒳𑒖𑒲 𑒢𑒵𑒞𑓂𑒨𑒑𑒝𑒹𑒬𑒏 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒠𑒩𑓂𑒬 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒕। 𑒖𑒏𑒩 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑓄 𑒧𑒢𑒏 𑒧𑒨𑒴𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓁 𑒢𑒰𑒔𑒱 𑒅𑒚𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒏 𑒢𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒑𑒞𑒱 𑒍 𑒮𑓂𑒣𑓀𑒠𑒢𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒟𑒱𑒏 𑒢𑒵𑒞𑓂𑒨 𑒂𑒩 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒏 𑒢𑒵𑒞𑓂𑒨 𑒦𑒹𑒪 𑒪𑒲𑒪𑒰। 𑒢𑒵𑒞𑓂𑒨 𑒑𑒝𑒹𑒬 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒦𑓀𑒑𑒲 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒢𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒣𑒻𑒩𑒏 𑒢𑒴𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒪𑒪𑒱𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒠 𑒍 𑒢𑒵𑒞𑓂𑒨𑒦𑓀𑒑𑒱𑒧𑒰𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒯𑒰𑒟 𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒬, 𑒧𑒼𑒠𑒏 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩, 𑒣𑒩𑒬𑒳𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒁𑓀𑒏𑒳𑒬 𑒋𑒫𑓀 𑒁𑒏𑓂𑒭𑒧𑒰𑒪𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒯𑒱𑒢 𑒯𑒰𑒟 𑒫𑒩𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒢𑒪 𑒕𑒢𑒱। 𑒚𑒹𑒯𑒳𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒁𑒡𑒼𑒫𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩, 𑒛𑒰𑒿𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒙𑒱 𑒦𑒴𑒭𑒝, 𑒏𑒰𑒢𑓂𑒯𑒮𑒿 𑒪𑒙𑒏𑒻𑒞 𑒨𑒖𑓂𑒘𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩, 𑒑𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒝𑓂𑒚𑒰𑒦𑒴𑒭𑒝, 𑒧𑒰𑒟𑒣𑒩 𑒑𑒖𑒧𑒳𑒝𑓂𑒛𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒬𑒱𑒐𑒩𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒳𑒏𑒳𑒙 𑒋𑒫𑓀 𑒯𑒰𑒟 𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒏𑓀𑒑𑒢 𑒮𑒳𑒬𑒼𑒦𑒱𑒞 𑒕𑒢𑒱। 𑒢𑒵𑒞𑓂𑒨𑒩𑒞 𑒑𑒝𑒹𑒬

एकदंत छथि। ब्रह्मस्वरूप प्रायः देवी-देवता सभक मृण्मयी मूर्ति निर्मित होइत छल। सप्त मातृकाक मृण्वतमूर्ति सभक संग शिव परिवारक मध्य गणेश अथवा मध्य रङ्क भैरवक रूपांकन सेहो भेल अछि।
कवियन (रोसड़ा, समस्तीपुर)क भगवती मंदिरमे स्थापित एवं पूजित पार्वतीक अगल-बगलमे द्विभुजी गणेश एवं कार्तिकेयक पाथरक मूर्तिसभ पालकालीन थिक (कवियन एक्सकेवेशन- डॉ.सीताराम राय, पटना)। गणेशक आठ अंच ऊँचगर पाथरक बनल मूर्तिक दुनू हाथमे मोदक छनि। नर्म्मादर मध्य गणेशक हाथ ओ पैर सभमे आभूषण एवं देहपर यज्ञोपवीत शोभित छनि। कवियनकेँ वैदिक धर्मक न्यायविद् आचार्य उदयनक जन्मभूमि एवं ब्राह्मण देवी-देवता सभक सिद्ध भूमि मानल जाइछ।
सुरेन्द्र नारायण झा (मिथिला की पाल प्रतिमाएँ, मिथिला संस्कृति एवं परम्परा पृ.२३+) क सर्वेक्षणक अनुसार भगवतीपुर (मधुबनीसँ) गणेशक दूटा पाथरक मूर्तिक अलावा भगवानपुरसँ मध्य गणेश, महदेवाडीह (गोवरंडा, दरभंगा) एवं तिरौता (शिवहर)सँ गणेशक पालकालीन मूर्ति प्राप्त भेल अछि, जे ब्राह्मण धर्मक पुनरुत्थान एवं पंच देवोपासनाक लोकप्रियताक कारणे पालकला शैलीक विकास ओ विस्तारक क्रम बनल रहल। शिल्पक दृष्टिसँ किछु महत्वपूर्ण प्रयोग रेखांकन योग्य अछि।
सत्यनारायण झा सत्यार्थी मिथिलांचलक एकटा विलक्षण गणेशमूर्तिक सचित्र सूचना देने छथि। तदनुसार एकहि प्रस्तर खण्डमे गणेशक तीन टा मूर्ति ऊपर-नीचाक क्रममे उत्कीर्ण अछि। प्रत्येकक भंगिमा भिन्न अछि।
सुरेन्द्र कुमार झा (मिथिला की लोक संस्कृति विशेषांक,

দবভংগা, ২০০৬ ঙা. পৃ. ২৪৯) ক্ষেত্রীয সর্রেক্ষণক এ্রমমে কবিযন (সমস্তীপ্বব), ৱঁবেপ্ববা (ৱেঁগ্বসবায), ম্ফজেশ্বেব স্থান, দেরহব, মধ্ৱঁনী), ভগরতীপ্বব নাহব, রিষ্ণু ৱঁকখাব, ভোজপবৌন (মধ্ৱঁনী)ক খতিবিঞ চন্দ্রধাবী সংগ্রহালয, দবভংগাক নৃত্যগণেশক প্রতিমাকেঁ রিশেষ মহত্বপূর্ণ মানননি খছি। এহিমে কবিযন, ম্ফজেশ্বেব ও হিবৌতাক গণেশমূর্তিকেঁ ও প্রাবম্ভিক পানসেন কানীন কহনে ছথি। সহনাবাযণ ঝা সহাথীক সর্রেক্ষণক (মিথিনাক প্ববাতাত্বিক সম্পদা, দবভংগা, ২০০২ ঙা.) সূচনান্বসাব কোব্থ, হাৱীডীহ, ভীঠ ভগরানপ্বব, সৌবাঠ, দেস্কনী, ফ্নহব, ৱঁহেড়া, ভষ্ঠী, নহেবিযাসবায, বতনপ্বব খাদি স্থন সভপব রিঘ্নাঁতক গণেশক ঐতিহাসিক মূর্তি সভ উঁপনস্থ এরং পূজিত খছি। হিবণী-ৱঁড়গাঁর (ক্ষশেশ্বেব ক্ষেত্র)মে সেহো গণেশক ভর্য মূর্তিক জনতৱঁ খছি। ভগরতীপ্ববমে গণেশক দূ টা প্রাচীন মূর্তি স্থাপিত ও পূজিত খছি। রিজযকান্ত মিশ্র (মিথিনা খার্ট এল্ড খার্কিটেক্চব, গনাহাৱাঁদ, ১৯৭+ ঙা., প্লেট xii / ২১-২২) ভগরানপ্ববক নৃত্যগণেশক মূর্তিক উঁল্লেখ কযনে ছথি। একব খতিবিঞ তিবৌতাক (শিরহব) গণেশ রিশিষ্ঠ খছি, খন্প খনংকবণ ও পাদপীঠক ৱঁনারটক খাধাবপব গ্বপ্তাত্তব কানক সংভারিত নগৈত খছি। হম সকবা (ম্ফজহফবপ্বব)মে ৱঁন্বখা পাথবক একটা গ্বপ্তকানীন গণেশমূর্তি দেখনে ছনহুঁ।

শৈনীগত রিশিষ্ঠতাক খাধাবপব মৌর্যকানমে সির্ফ মূর্তি ৱঁনৈত ছন। গ্বপ্ত কানমে মূর্তিক সংগ প্রভারনী জোড়ন গেন। ম্ফদা গ্যাবহরী-ৱাঁবহরী সদীমে মূর্তিকাব ম্ফখ্য মূর্তিক খপেক্ষা প্রভারনী, সিংহাসন, রস্ত্রাভূষণ খাদিক সৌন্দর্যাভির্যক্তিমে রিশেষ কৌশন দেখৌননি।

মিথিলাঁচলসঁ প্রাপ্ত পাল-সেন ও কর্ণাটকালীন গণেশমূর্তি সভ অলংকৃত পাল শৈলীক পরম্পরামে নির্মিত অছি। গণেশ পূজন বিশেষ লোকপ্রিয় ছল, পালকালমে। এক দিস নালংদা, ওদংতপুরী ও বিক্রমশিলা বৌদ্ধ বিহারক ধ্বংসাবশেষসঁ ব্রাহ্মণ ও বৌদ্ধধর্মী মূর্তিসভ প্রাপ্ত ভেল অছি। গণেশ দুনূ সংদর্ভমে এক সমান বিঘ্নাংতক ও সিদ্ধিদাতা দেবতাক রূপমে মান্য ছথি; মুদা কিছু বৌদ্ধ মূর্তিমে বৌদ্ধ প্রভুত্বক ক্রমে বৌদ্ধদেবী অপরাজিতা (দেবী) দ্বারা গণেশকেঁ মর্দিত দেখাওল গেল অছি। ক্রুদ্ধা দেবীক বাম পৈর গণেশক দহিন পৈরকেঁ মর্দিত কয়নে অছি। ত্রৈলোক্য বিজয়ক মূর্তিমে শিব ও পার্বতীকেঁ মর্দিত দেখাওল গেল অছি। মুদা ওদংতপুরী (বিহারশরীফ, নালংদা) সঁ প্রাপ্ত একটা ঐতিহাসিক শিবলিংগ (চতুর্মুখী)মে এক দিস গণেশ এবং দোসর দিস বিষ্ণু মূর্তিত ছথি অর্থাৎ পংচদেবোপাসনাক মাধ্যমসঁ বিভিন্ন সম্প্রদায়কেঁ এক ছত্রক (শিব) অন্তর্গত আনল গেল একটা সমন্বয়বাদক চেষ্টা ছল। মুদা আশ্চর্য, মংগরৌনীক ত্রৈলোক্য বিজয়ক মূর্তিমে বৌদ্ধদেবী অপরাজিতাক পৈরতর গণেশ নহি ছথি। বৌদ্ধ লোকনি মিথিলাক ব্রাহ্মণত্বসঁ আতংকিত ছল।

মিথিলাঁচলক লোকজীবনমে কোনো শুভ ও সাংস্কারিক অনুষ্ঠানমে গণেশ পূজনক বিধান অছি। গাথারম্ভ, নাট্যারম্ভ, কীর্তনারম্ভ আদিমে গণেশক বন্দনা প্রথমে কয়ল জাগত অছি- "আদিত্যং গণনাথং চ দেবী রুদ্রং চ কেশবম্। পংচদৈবত্যমিত্যুক্তং সর্বকর্মসু পূজয়েত"।- মৎস্যপুরাণ। মিথিলাক চৌঠচন্দ্র, গৌড়ী-গণেশ, লক্ষ্মী গণেশ আদি প্রকারান্তরসঁ গণেশ-পূজন থিক"।

শিবমংদিরমে পার্বতী, গণেশ, কার্তিকেয, নন্দী ও প্রায়ঃ

ভৈবরক মূর্তিক স্থাপন ও পূজনক রিধান খছি। ঞদা কৌটিল্যক খর্থশাস্ত্র (৩২০ ঙ্.পূ.) কানমে দ্খাক খন্দব দ্গা, রিষ্ণু, কার্তিকেয (জযন্ত), গন্দ্র (রৈজযন্ত), ক্ষরেঁব (রৈশ্রেরণ) খাদিক স্বতংত্র মংদিবক প্রারধান খছি, "বাজতবংগিণী"ক খংতঃ সাক্ষ্যক খনুসাব প্ণ্ড্ররর্ধন (পূর্ণিযা)মে কার্তিকেযক মংদিবক উল্লেখ প্রাপ্ত হোগছ। বজৌনাক একটা গুপ্তকানীন স্তংভারশেষমে গংগাধব শিরক এরং গণেশ কার্তিকেযক মূর্তি উৎকীর্ণ খছি (সম্প্রতি কনকত্তা সংগ্রহানযমে)। গরুড় পুবাণ এরং করতোযা মাহাত্ম্যমে কার্তিকেযক পরিত্র মংদিবক সাক্ষ্য স্রাত উপনব্ধ খছি। গণেশ পুবাণক ক্রীড়া খণ্ড (শ্লোক ১৩৮-১৪৮)ক শ্রী গণেশগীতামে গণেশ বাজা ররেণ্যকেঁ যোগসাধনাক শিক্ষা দেনে ছথি। দেক্ষনীক (দবভংগা)ক মংদিবানযমে গণেশক মূর্তি ঐতিহাসিক ও পূজনীয খছি। ড◌ॉ. রী.পী.সিন্হা (ভাবতীয কনা কো রিহাব কী দেন, পটনা) মে শাহারাদ জিনাসঁ প্রাপ্ত একটা কার্তিকেযক প্রাচীন মূর্তিক উল্লেখ কযনে ছথি। একটা হাথমে রঁবছী ও দোসব রবঞদ্রামে উৎকীর্ণ খছি। ও রিরাহ নহি কযননি, তঁ ক্ষমাব কহরৈত ছথি। ঞদা হ্নক শক্তি দেরসেনাক পবিকল্পনা কযন গেন খছি জে সপ্তমাতৃকামে কৌমাবীক রূপমে প্রতিষ্ঠিত ছথি। এহি শক্তিক চিত্র (সং.১০১) খানোচ্য পোথীমে প্রকাশিত খছি। তদনুসাব দ্বিভুজী কার্তিকেযক শক্তি স্থানক ঞদ্রামে ঠাঢ় ছথি। রবঞদ্রামে এরং পার্শ্বমে মযূবী রিনীত ভারমে ঠাঢ় খছি। ড◌ॉ কংচন সিন্হাক এহি সম্বন্ধমে শোধ গ্রংথ প্রকাশিত খছি- কার্তিকেয গন গল্ডিযন খার্ট এল্ড নিটবেচব (দিল্লী ১৯৭৯ ঙ্.)। তহিনা মিথিনাংচনক কিছু গণেশ মূর্তিক খনুশীনন ড◌ॉ চিতবংজন প্র. সিন্হা (মিথিনা ভাবতী, খংক-১,

ভাগ–২) প্রকাশিত খছি।
পানী (দবভংগা)ক গুপ্তকানীন পার্রতীক গোদমে গণেশ মাতৃস্নেহক স্বখ পারি বহন ছথি, তহিনা ভাগনপুব জনপদসঁ প্রাপ্ত একটা ঐতিহাসিক, প্রস্তবমূর্তিমে চতুর্ভুজী পার্রতীক গোদমে কার্তিকেয শোভিত ছথি (সম্প্রতি পটনা সংগ্রহানযমে সংবক্ষিত)। ঝদা নানগংজ (রৈশানী)ক শিরপবিরাবক একটা রিশান মূর্তিমে রঁসহাক পীঠপব শির–পার্রতী ও গণেশ–কার্তিকেয সভ কেও সংগে খভিশিল্পিত ছথি। মিথিনাঁচনমে কার্তিকেযক স্বতংত্র প্রতিমা গণেশক খপেক্ষা কম ভেটৈএন খছি ঝদা রঁসাঢ় (রৈশানী) ও রঁস্বখাবা (মধুরঁনী)ক কার্তিকেযক পানকানীন প্রস্তব মোর্তি ঐতিহাসিক এরং দুর্নভ কনাকৃতি থিক। দক্ষিণ ভাবতমে হিনক পূজা–খর্চনা রিশেষ হোগছ। খাজুক সাংস্কৃতিক পবিরেশমে নরবাত্রক খরসবপব প্রতিরর্ষ নির্মিত দুর্গাক মূর্তিক পার্শ্বমে গণেশ–নক্ষ্মী ও কার্তিকেয–সবস্বতীক মূর্তিক নোকপ্রিযতা রিশেষ খছি। এক দিস গণপতি গণেশ নটবাজ শিরক পবম্পবামে নৃত্যনাথক রূপেঁ মন্নকানীন মৈথিনী নাটকসভ (নেপানক মৈথিনী সাহিত্যক গতিহাস, প্রফুল্ল কুমাব সিংহ “মৌন”, রিবাটনগব, নেপান, ১৯৭২ ঈ.)মে সংপূজিত ছথি তঁ দোসব দিস ও মৈথিনী নোকগাথা গাযনসঁ পূর্র হিনক ভক্তিপূর্ণ স্মবণ কযন জাগছ। এরং প্রকাবেঁ মিথিনাঁচনক প্রাযঃ সমস্ত জনজীরনমে কোনো ন কোনো রূপেঁ ও নোকক শ্রদ্ধাপূর্রক নিরেদিত খছি।

মিথিনাঁচনক শৈর ক্ষেত্র

দেরাধিদের শির সর্রব্যাপী পূর্ণ ব্রহ্ম ছথি। খাদিদের

महादेव छथि। प्राचीनतम देवता पशुपति छथि। वैदिक साहित्य (यजुर्वेद, अध्याय-१६)क शतरुद्रिय सूक्त तथा पौराणिक साहित्य (रामपुराण)मे हिनक पूजोपासनाक विस्तृत सिद्धांत विवेचित अछि। सूर्य, चन्द्र आओर अग्निक त्रिनेत्रधारी शिवकेँ प्रणाम- चन्द्रार्क- "वैश्वानर लोचनाय नमः शिवाय"।
शिवक हाथ सदमे त्रिशूल, डमरू, मृग ओ परशु शोभित छनि। ज्ञान, इच्छा ओ क्रिया शक्तिक क्रियाशील रूप त्रिशूल थिक। डमरू शब्द ब्रह्मक प्रतीक अछि। शिवकेँ मृगधर कहल गेल अछि। मृग वस्तुतः वेद अछि- "अत्र वेदो मृगः"। परशु संहार सूचक अछि। पशुपति शिवक प्रत्यक्ष रूप थिक। वेद, उपनिषद एवं पुराण साहित्यमे प्राणिमात्रकेँ पशु कहल गेल अछि। अतः शिवक पशुपति नाम सार्थक अछि। पशुपति शिवक प्राचीनतम मूर्ति (मृ.मोहर) मोहनजोदड़ा-हड़प्पा संस्कृतिमे प्राप्त भेल अछि। द्विभुजी पशुपति योगासीन छथि। हुनक मूर्तिक चारू दिस अनेक पशु चित्रित अछि। हुनक माथपर दू टा सिंगरना सिराभूषण शोभित छनि। आलोच्य पशुपतिक रूपांकन एखन धरि अद्वितीय अछि। शैव क्षेत्रमे नेपाल उपत्यका (काठमाण्डू) क विख्यात पशुपति चतुर्मुखी शिवलिंगक रूपमे विख्यात अछि। एहि पशुपति शिवलिंगक एकटा मध्यकालीन प्रतिमूर्ति अरेराज (प.चम्पारण)क सोमेश्वरनाथ महादेवक मन्दिर परिसरमे दर्शनीय अछि। नटराज सहस्रनाम भाष्य (मद्रास १९३१ ई.) क अनुसार द्विपद एवं चतुष्पद प्राणिमात्रक देवता पशुपति छथि।
वराहपुराण एवं विष्णुपुराणक अंतः साक्ष्यक अनुसार शिव हिरण्याक्षपुत्र अन्धकासुरक वध काशीमे कयने छलाह।

ও ত্রিপুবাসুব ও গজাসুবক রঁধ সেহো কযনে ছনাহ। ও সভ মহামোহ (অরিদ্যা)ক প্রতিরূপ ছন। ভাবতীয মূর্তিকনামে গজাসুব রঁধক প্রস্তুব মূর্তি মিথিনাঁচনমে প্রাপ্য অছি। শির সংহাবক দেরতা ছথি। ও অরিনাশী সর্রামো ছথি। শির নীনাধব ছথি।

ওহি নীনাধব শিরক একটা স্বরূপ নটবাজক থিক। শিরক নৃত্য সৃষ্টি রিধান থিক এরং নিরৃত্তিকেঁ প্রনয মানন জাগছ। জগতক বক্ষা হেতু ও নিত্য সাযংকান নৃত্য কবৈত ছথি। ওহি সময দেরাদি উঁপস্থিত বহৈত ছথি। জগতক সৃষ্টি প্ররর্তনক নেন শির নাস্য ও সংহাবক নেন শির তান্ডর কবৈত ছথি। "তান"ক শাব্দিক বচনা "তা" ও "ন" সঁ ভেন অছি। অতঃ শির ও শিরা নৃত্যময ছথি, সংগীত-নাট্যাদিক আদি প্ররর্তক ছথি, ডমরু ধ্বনিসঁ নিনাদিত মাহেশ্বব সূত্র অর্থাত্ শব্দশাস্ত্রক নির্মাতা ছথি। শিরকেঁ নটবাজ, নটেশ নৃত্যনাথ অথরা নটেশ্বব সেহো কহন জাগছ। চিদম্বরমক নটবাজ মূর্তি সর্রপ্রসিদ্ধ অছি। মিথিনাঁচনসঁ নটবাজ শিরক মধ্যকানীন প্রস্তুবমূর্তি প্রাপ্ত অছি জাহিমে ও অপস্মাবক কান্হপব আরূঢ় ভ২ নচৈত ছথি।

নটবাজক জটামে অমৃতক প্রতীক চন্দ্রমা অছি। প্রভারনী সহিত অথরা প্রভারনী বহিত নটবাজক মূর্তিক রিধান অছি রুদা ও স্ফুনিংগমযী জ্বানসঁ ঘেবাযন বহৈত ছথি। মিথিনাঁচনক প্রসিদ্ধ শিরমন্দিব সভমে নোক রুদ্রাক্ষ ও ত্রিশূন ধাবণ কহ২ ডমরুক সংগ নচৈত ছথি। মৈথিনীক প্রাচীন নাটক সভ এহি নৃত্যনাথক নামে সমর্পিত অছি। মিথিনাঁচনমে শিরভক্তিক নেন নচাবী, মহেশরাণী, হবগৌবী সম্মবি, হবগৌবী রিরাহ আদি সংগীত-নাট্যাদি রৈস নোকপ্রিয এরং পবম্পবিত অছি। তাবানাহী

(दबभंगा) एरं मखनामा (तबाओ)क खंठभुजी नटेशेक मूर्ति कर्णाटयगीन खछि।

शिरक तीनटा रूप रिशिंठ खछि– खर्धनाबीश्वब, हविहब ও ত্রিমূর্তি। ত্রিমূর্তি শিব বস্তুতঃ ব্রহ্মা, বিষ্ণু, মহেশেক শক্তিক সমাহাব খছি– ব্রহ্মবিষ্ণুশিবা ব্রহ্মন্ প্রধানা ব্রহ্মশক্তয়ঃ। – বিষ্ণুপুবাণ। এহিমে সৃষ্টি (ব্রহ্মা), স্থিতি (বিষ্ণু) ও বিনাশ (শিব)ক তত্ত্ব সভ নিহিত খছি। সৃষ্টি, স্থিতি ও প্রলযক কাবক শিবে ছথি। ত্রিমূর্তিক বিশাল গুপ্তকালীন প্রতিমাক সাক্ষাত এলফেন্টামে কযনে ছলহুঁ। মিথিলাঁচলক ভণ্ডী (দবভংগা)মে ত্রিমূর্তিক খভিলেখাঁকিত মধ্যকালীন প্রস্তবমূর্তি ভদ্রেশ্বব মহাদেব মন্দিব (বহেড়ী প্রখন্ড)মে পূজিত খছি। ত্রিমূর্তি সত্, বজ ও তমোগুণক প্রতিনিধিত্ব কবৈত খছি।
সিদ্ধাঁততঃ হবি (বিষ্ণু) ও হব (শিব) খভেদ ছথি খর্থাত্ সংযুক্ত রূপেঁ হবিহব ছথি। বিদ্যাপতিক নিম্নলিখিত পদসঁ স্থিতি খাব স্পষ্ট ভ' জাএছ–
খন হবি খন হব ভন ত্ত্ত কলা।
খন পিত বসন খনহি বঁঘছলা॥ ...
এক শবীবে লেল দুএ বাঁস।
খন বৈকুণ্ঠ খনহি কৈলাস॥
হবিহবক মূর্তিক খদ্ধাঁগমে ব্যাঘ্রচর্ম, ত্রিশূল, জটামুকুটাদি এবং খদ্ধাঁগমে পীতাম্বব, শংখ–চক্র, কিবীট মুকুটাদি শোভিত ছলি। হবিহবক বিশাল প্রস্তব প্রতিমা গংগা–গংডক–সংগমপব খবস্থিত হবিহবনাথ মংদিবমে স্থাপিত খছি। হবিহবক একটা পালকালীন ভব্য প্রস্তব (কসৌটী পাথব) মূর্তি হম বাল্মীকিলগব (ভৈংসালোটন) মে দেখনে ছলহুঁ। ও ওহিঠাম খন্যান্য মূর্তি সভক সংগে সংবক্ষিত

अछि। सविसेक दहिन भागमे शिव ओ वाम भागमे विष्णु उत्कीर्ण छथि।

शिवक तेसर स्वरूप अछि अर्धनारीश्वर अर्थात् आधा देह शिवक ओ आधा पार्वतीक। शिवक जटापर चन्द्रमा ओ हाथमे त्रिशूल शोभित अछि एवं आर्धांगिनी पार्वतीक हाथद्वयमे दर्पण ओ कमल पुष्प। अर्धनारीश्वरक परिकल्पना सृष्टि बोधक अछि। लिंग ओ वेदीक एकस्थ भेले अर्धनारीश्वरक रूप प्रत्यक्ष होइछ। "लिंगवेदी समायोगादर्धनारीश्वरो भवेत" ।-लिंगपुराण.९९.+.१. मिथिलांचलक रूसो नदियामी (दरभंगा)सँ अर्धनारीश्वरक मध्यकालीन प्रस्तरमूर्ति पाओल गेल अछि। मूर्ति षष्टभुजी अछि।

शिव गृहस्थ देव छथि। हुनक अर्द्धांगिनी ओ शक्ति शिवा एवं गणेश ओ कार्तिकेय पुत्र छलि। वृषभ शिवक एवं सिंह पार्वतीक वाहन छलि। हुनक परिणयक परिकल्पना "कल्याण सुन्दर" मे कयल गेल अछि। पौरोहित्यक काज ब्रह्मा करैत छथि एवं साक्षीत्व अग्निक छलि। ब्रह्मा यज्ञ ओ वेदक देवता सेहो छथि। कल्याणसुन्दरक मूर्तिक परिकल्पना स्थानक रूपमे कयल गेल अछि। वस्त्राभूषणसँ अलंकृत शिव-पार्वती पाणिग्रहण कयने त्रिभंगी मुद्रामे ठाढ़ छथि। शिव-पार्वतीक बीचमे चतुर्भुज ब्रह्मा पुरोहित रूपेँ बैसल छथि। पूरा भावमेक परिवेश गतिमय ओ मंगलमय अछि। कल्याणसुन्दरक मूर्ति मिथिलांचलसँ अप्राप्य अछि मुदा मिथिलांचलक कोहबर चित्रमे आदर्श वर-वधूक रूपमे ओ परम्परासँ चित्रित छथि।

शिव-पार्वतीक दाम्पत्य जीवनक सुखद, रसमय एवं कलामेक परिकल्पना। उमा-माहेश्वरक अभिशिल्पमे

भेल अछि- शिव ओ पार्वती ललितासनमे आसीन छथि। पादपीठमे शिवक वाहन वृषभ ओ पार्वतीक वाहन सिंह उत्कीर्ण अछि। शिव चतुर्भुजी छथि। तन्वंगी पार्वती शिवक वाम जंघापर बैसल छथि। शिवक दहिन हाथमे त्रिशूल ओ वाम हाथ पार्वतीक वक्षस्थलपर स्थित अछि। शिव वाम हाथे एवं पार्वती दहिन हाथे एक दोसराकेँ आलिंगनबद्ध कयने छथि। पार्वतीक दहिन हाथमे दर्पण छनि। शिव दहिन हाथसँ पार्वतीक लज्जावनत मुखकेँ उठा रहल छथि। मिथिलांचलमे उमामाहेश्वरक पाथरक मूर्तिसभ भीठभगवानपुर, डोकहर (मधुबनी), सिमरिया भिण्डी, करियन (समस्तीपुर), नारकोठी (बेगूसराय), बाँथे, वाजेश्वरस्थान (मधुबनी) तिरहुता, बेनामोड़, रनवासी, कोर्थ, भोजपरौल, सौराठ, मंगरौनी, महादेवमठ, बँस्वदेवा, गाण्डरीकेश्वर, पवानपुर (कटिहार) सिमरौनागढ़ (रावा, नेपाल) आदि ऐतिहासिक स्थलसभसँ प्राप्त अछि एवं ओहिठामक मंदिरसभमे संरक्षित ओ पूजित अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे मिथिलांचलक मध्यकालीन परिवेशमे उमा-माहेश्वरक ललित मूर्तिक परिकल्पना सुखद दाम्पत्य दिस उत्प्रेरित करबामे सक्षम अछि।

दाम्पत्यक सुखद परिणति संततिक रूपेँ फलित होइछ। शिवक पुत्र गणेश कार्तिकेयक अपेक्षा अधिक लोकप्रिय एवं पंचदेवोपासकमे परिगणित छथि। पाली (दरभंगा)क एकटा मंदिरमे पार्वतीक गोदमे शिशु गणेश (बाल गणेश) रासेल्य पूजित छथि। मुदा हाजीपुर (वैशाली)क एकटा मठसँ जब्त शिव-पार्वतीक कांस्य मूर्तिमे बालगणेश पार्वतीक गोदमे छथि। कांस्य प्रतिमा स्थानक मुद्रामे बनल अछि। पार्वतीपुत्र कार्तिकेयक एकटा स्वतंत्र पालकालीन पाथरक प्रतिमा वैशालीगढ़ एवं

दोसब रॅस्वखावा (मध्रॅनी) सँ प्राप्त खछि। पानीक पार्वती-गणेशे गुप्तकानीन थिक ऋदा खन्यान्य सभ पान-पानोत्तवकानीन थिक। पुण्ड्रवर्धन (पूर्णियाँ) मे कार्तिकेयक एकटा मन्दिव छन (बाजतवंगिणी)।
निंग ओंकाव ब्रॅह्मक स्थून रूप थिक। शिरनिंग ब्रॅह्मबोधक थिक। ओ पद्मपीठ (रेदी) पव स्थापित बहैत खछि। शिरनिंगक निम्न भाग भूमिस्थ, मध्य भाग रेदीमे एरं हृतीय भाग पूज्य मानन जाएछ। शास्त्रानुसाव निंगक खनेक प्रकाव खछि जाहिमे शिर निंगक पूजोपासना सर्वाधिक नोकप्रिय धार्मिक कृत्य मानन जाएछ। ज्योतिर्मय शिरनिंगक महत्ता रिशिष्ठ खछि जे भौगोनिक दृष्टिसँ वाष्ट्रीय एकताकेँ सूत्रबद्ध कबैत खछि। तहिना मिथिनाक सांस्कृतिक दिग्सूचक शिर (मंदिव) छथि। मिथिना पविक्रमामे एहि शिरमंदिव सभक धार्मिक महत्व बढ़ि जाएछ। कन्याणेश्वव, जनेश्वव, क्षीवेश्वव एरं सप्तवेश्वव। जनकपुवक उत्तवमे खरस्थित क्षीवेश्वव शिरक बृहद्रिष्णु पुवाण (मिथिना माहात्म्य)मे एरं दक्षिणमे स्थित जनेश्वव शिरक स्कन्दपुवाणमे (नेपान माहात्म्य) रिस्तृत रर्णन उपनब्ध खछि (जनकपुवधाम, भ्रमव, जनकपुवधाम, नेपान, १९९९ ई.)।
शिरनिंगोक खनेक प्रकाव खछि- एकमुखी, चतुर्मुखी, पंचमुखी एरं सहस्रमुखी। एकमुखी शिरनिंगक परिकल्पना सर्वप्राचीन खछि। चण्डीस्थान (खवेवाज, प.चम्पावण)सँ प्राप्त कुषाणकानीन एकमुखी शिरनिंगमे शिरक मुखाकृति उत्कीर्ण खछि। हुनक जटाजूटसँ गंगा प्रराहित खछि। शिरनिंग खद्भुत ओ खद्वितीय खछि। सर्वेक्षण क्रममे देखने छनहुँ। छायाचित्र उपनब्ध खछि। ऋदा सामान्यतः एकमुखी शिरनिंगमे पार्वतीक मुखाकृति उत्कीर्ण होएछ,

জকবা গৌবীশংকব সেহো কহল জাগছ। লিংগ ভারনাক আধাব শিব ও শাক্ত দর্শন অছি।
এনহেংটাক ত্রিমূর্তিক মধ্যমুখ শিব, রামমুখ পার্বতী এবং দহিন মুখ বৌদ্র রূপ শিব অর্থাত্ ভৈবরক থিক। অর্থাত্ ত্রিমুখী শিব (গুপ্তকালীন) শিরত্বক বিস্তাব অছি। মুদা চতুর্মুখী শিব শিরশক্তিক দিগ্ দিগন্ত ব্যাপকতাক সূচক থিক। পশুপতিনাথ (নেপাল) ও অবেবাজক (চম্পাবণ) চতুর্মুখী শিরলিংগমে কতহু শ্রীবাম, বুদ্ধ, শক্তি (পার্বতী), সূর্য আদিক মুখাকৃতি জনপদীয় মান্যতানুসাব উৎকীর্ণ অছি। বৈসাঢ় (বৈশালী)ক গুপ্তকালীন চতুর্মুখী শিরলিংগ অভিলেখাংকিত অছি। বৈশালীমে কৈকটা পালকালীন চতুর্মুখী শিরলিংগ সেহো মংদিবসভমে স্থাপিত অছি, চৌগামা (দবভংগা), শাহপুব (সহবসা) এবং গঢ়পুবা (বেগুসবায)ক শিরমন্দিবমে সেহো চতুর্মুখী শিরলিংগ স্থাপিত অছি। পংচমুখী শিরলিংগমে একটা আকাশতত্ত্ব বঢ়ি জাগছ। মিথিলাংচলমে একাদশ রুদ্রক পূজন পবম্পবা মংগবৌনী (মধুবনী) ও বগহা (প.চম্পাবণ) মে অরশিষ্ঠ অছি। মুদা সহস্রমুখী শিব লিংগক পূজনক প্রাচীন উদাহবণ রাবী (সমস্তীপুব), কটহবিযা (বিদ্পুব, বৈশালী), হজাবীনাথ (রাগমতী তটীয দবভংগা) আদিমে প্রত্যক্ষ অছি। রকআবী (সহবসা), হাজীপুব (বৈশালী), জমথবি (মধুবনী) আদিক ঐতিহাসিক শিরলিংগ অভিলেখাংকিত অছি।
হিমালযসঁ গংগাধবি পসবল মিথিলাংচল প্রকাবান্তবসঁ শিরলোক বলল অছি। ভাগলপুব তাম্রপত্র (সেলেক্টেড ওংসিক্রিপশংস আফ বিহাব, প্রা. আব.কে.চৌধবী)ক অনুসাব ওহি সময (পাল যুগ) তিবহুতমে হজাবটা শিব মন্দিব ছল। অধিকাংশশিব মন্দিব আগ ভগ্নারশিষ্ঠ অছি।

पुरातात्विक उत्खननसँ प्राचीन शिवमंदिर सभक भग्नावशेष भगीरथपुर, चौगामा, कपिलेश्वर आदि ऐतिहासिक स्थल सभसँ प्राप्त भेल अछि। तिलकेश्वर शिवमंदिरक ऐतिहासिकता कर्मादित्य प्रस्तर अभिलेखसँ भऽ जाइछ। एकर अलावा ऋषि-मुनि द्वारा स्थापित शिवलिंग लोकख्यात अछि- श्रृंग ऋषि द्वारा स्थापित सिंघेश्वर शिव (सहरसा), कपिल मुनि द्वारा स्थापित कपिलेश्वर (मधुबनी), शुकदेव मुनि द्वारा स्थापित शुकेश्वरनाथ (सीतामढ़ी), कुशे ऋषि द्वारा स्थापित कुशेश्वर (दरभंगा) आदि। आब प्रश्न उठैत अछि जे कि ओ ऋषि-मुनि लोकनि शिवभक्त छलाह ? अथवा शिव हुनक आराध्य छलनि ?
मिथिलांचलमे एक विशिष्ट प्रकारक मूर्ति (मुखैत) शिवलिंगक प्राप्ति अद्भुत ओ अद्वितीय अछि। जमथरि (मधुबनी)क शिवमंदिरमे एकटा अभिलेखांकित किन्तु मुखलिंग शिवलिंग स्थापित अछि। एहि पंच लमगर शिवलिंगक वामपार्श्वमे शिवगायत्री ओ दक्षिण पार्श्वमे वामगायत्री उत्कीर्ण अछि। एहि तरहक एकटा आर मूर्ति शिवलिंग ठाढ़ीरानीक शिवमंदिर (मधुबनी) मे सेहो स्थापित अछि। तांत्रिक उपासनाक दृष्टिएँ ई शिवलिंग स्थापित अछि। कथित अछि जे तांत्रिक विधिसँ सिद्धि प्राप्ति होइछ कलियुगमे। शिवपार्वतीक एकटा आर तांत्रिक मूर्ति (कर्णाटकालीन) शैवजगतमे विशिष्ट अछि- सद्योजात। एहिमे पार्वती माताक रूपमे एवं शिव शिशुक रूपमे वर्णन अछि। पार्वती वाम करोटे लेटल छथि। एहि तरहक मध्यकालीन मूर्ति सभ अलौली (खगड़िया), जनकपुरक राममंदिर (नेपाल) आदिमे प्रत्यक्ष उदाहृत अछि।
मिथिलांचलमे ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक

মহত্বক খনেক শিরানয প্রাচীন সাহিত্য, খভিনেখ ও নোক খাস্থামে যুগ-যুগসঁ প্রতিস্থাপিত খছি। শিরানয নির্মাণ এরং ওহিমে শিরক স্থাপনা প্রথমতঃ ব্যক্তিপবক উদ্দেশ্যসঁ কযন গেন, ক্ষদা কানান্তবমে ও নোক কল্যাণ মূনক প্রমাণিত ভেন। খাগ ও শিরানয নোক খাস্থাক খাধ্যাত্মিক ঙুর্জাক কেন্দ্র বঁনি গেন খছি। শিরবাত্রিক খরসব হো খথরা শ্রারণ মাস প্রাযঃ প্রত্যেক মহত্বপূর্ণ শিরানয ধার্মিক নোকোসেরসঁ স্ফুবিত ভঽ জাগছ। শিরবাত্রিক পবিকল্পনাক কনামেক খভিব্যক্তি “কন্যাণস্বন্দব” (শির-পার্বতী পবিণয) মে ডঁকীর্ণ ভেন খছি। ক্ষদা মাস ভবি শিরক জনাভিষেক একটা ধার্মিক গ্রহ ৰূপেঁ মান্য খছি। একব মূনমে যদ্যপি দেরঘবক রৈদ্যনাথ (জ্যাতির্নিংগ) ছথি, ক্ষদা মিথিনাঁচনোক খপন সোমেশ্বিবনাথ (খবেবাজ), গবীবঁনাথ (ক্ষজফফবপ্পব), সিংহেশ্রিব (সহর্ষা), কপিনেশ্বিব (মধ্রবঁনী), ক্ষশৈশ্বিব (দবভংগা), হনেশ্বিব, শ্বকেশ্বিব (সীতামঢ় ী), ভুরনেশ্বিব (শিরহব), মাধরেশ্বিব, রর্ধমানেশ্বিব (দবভংগা) খাদি শীর তীর্থ প্রত্যক্ষ ৰূপেঁ স্বনভ খছি।

মিথিনাঁচনক সূর্য পূজন স্থন

ভাবতীয সনাতন সমাজমে প্রত্যেক খানুষ্ঠানিক সকের্মক খাবম্ভ পঁচদেরতাক পূজনসঁ হোগছ। ও পঁচদের ছথি- দুর্গা (শক্তি), শির, রিষ্ণু, সূর্য এরং গণেশ। পঁচদেরতাভ্যা নমঃ। পবব্রহ্ম পবমাত্মাক প্রত্যক্ষ পূজোপাসনা সূর্যসঁ হোগছ। শ্রুতি, স্মৃতি, প্রবাণাদি সম্মত সূর্যসঁ জীর সভ ডঁপেন্ন হোগছ। হিনকেসঁ যজ্ঞ, মেঘ, খন্ন ও খামো খছি। খতঃ হে খাদিত্য, খহাঁকেঁ নমস্কাব! খাদিত্যে প্রত্যক্ষ ব্রহ্ম ছথি, সাক্ষাত্ রিষ্ণু ছথি,

প্রত্যক্ষ রুদ্র ছথি। হিনকেসঁ ভূমি, জল, জ্যাতি, আকাশ, দিক্, দেবগণ এবং বেদ উৎপন্ন হোইছ। অতঃ আদিত্য ব্রহ্ম ছথি (বৃহদারণ্যকোপনিষত্ ২.৭৯)। "আদিত্য হৃদয" (শ্লোক ২৬, ৪৪–৫২) মে সূর্যকেঁ সর্বযক্ত স্বরূপ, ঋক্, যজু এবং সামবেদ, চন্দ্র–সূর্য–অগ্নি নেত্রধারী, ও সর্বতন্ত্রময কহল গেল অছি।
"আদিত্য হৃদয" (শ্লোক ৫৯–৬১) মে দ্বাদশ আদিত্যক উল্লেখ ভেল অছি– বিষ্ণু, শিব, ব্রহ্মা, প্রজাপতি, মহেন্দ্র, কাল, যম, বরুণ, বাযু, অগ্নি, কুবের এবং তত্ত্বাদিক স্রষ্ঠা ও স্বতঃ সিদ্ধ অধীশ্বর। উদযকালমে ও ব্রহ্মা, মধ্যাহ্নমে মহেশ এবং অস্তবেলামে বিষ্ণু স্বরূপ সূর্য ত্রিমূর্তি ছথি। জেনা শিবস্বরূপ ত্রিমূর্তিমে সদাশিবক সংগে সৌম্য ও রৌদ্র রূপ (ভৈরব) উৎকীর্ণ হোইত ছথি। শিবলিংগ ও বিষ্ণুলিংগ জকাঁ সূর্যক পূজোপাসনা ব্রহ্ম লিংগক রূপমে কযল জাইছ। সূর্যকেঁ গগনলিংগ সেহো কহল জাইত ছনি। সূর্যমন্ডলমে গাযত্রীক ধ্যানক বিধান অছি।
বিষ্ণু সেহো একটা আদিত্য ছথি– ভগবত আদিতশ্চ। সূর্যক লাক্ষণ (চক্র) বিষ্ণুক স্বদর্শন চক্র বনি গেল। প্রাচীন সিক্কা (বৃষ্ঠি ও গণবাজ্যক) পর অংকিত চক্রক অভিপ্রায সূর্যসঁ অছি। প্রাযঃ দেবী–দেবতাক প্রাথমিক লক্ষণ প্রতীক রূপেঁ অভিব্যংজিত ভেল। কালান্তরমে বোধগম্যতাক দৃষ্টিসঁ হুনক স্বরূপক বিধান কযল গেল। তদনুসার সূর্য সপ্তাশ্বক রথপর ঠাঢ় ছথি। আগাঁমে সারথি অরুণ বৈসল ছথি। মাথপর উন্নত কিরীট (মুকুট) শোভিত ছনি। দুনূ হাথমে কমল পুষ্প অছি। ডাঁরমে তরুআরি লটকল ছনি। পার্শ্বদেবীক রূপমে উষা ও প্রত্যুষা উৎকীর্ণ ছথি। সূর্যক দেহ জিরহ বখতরসঁ অলংকৃত অছি। কোনো কোনো মূর্তিমে পার্শ্বদেবতাক

ৰূপমে কনম নেনে পিংগন ও দল্ড নেনে দল্ডী সেনো ঠাঢ় ছথি। সূর্য পৈবমে নমহব ব্রূঁট পহিবনে ছথি। ঙা সভ শক–ঙবানী নক্ষণ মানন জাগছ। ভাবতীয সূর্য মূর্তি রিক্তানপব ক্ষষাণ কানমে গবানী প্রভার রঁঢ়া গেন ছন। রোঁধগযাক পাথবক রেঁঠ্ঠন রেদিকা (বেনিংগ) পব এরং ক্ষম্হবাব (পটনা) ক মাঁটিক পঞ্জী (মৃল্হফনক) পব সূর্যক সরঁসঁ প্রাচীন প্রতিমাংকন ভেন খছি। রোঁধগযা বেনিংগপব উঁকোর্ণ সূর্য চাবো দিশা সভক সূচক চাবিটা খশ্বিক বথপব খাৰুঢ় ছথি। সূর্যক দ্নূকানমে উঁষা ও প্রত্যুষা হাথমে ধন্বষ–রাণ নেনে খঁধকাবক রেঁধন কবৈত ছথি। খানোচ্য সূর্যক প্রাচীনতম মূর্তি "খঁধকাব পব সূর্যক রিজয" সূচক খছি। সূর্যক পাছাঁ বৃত্তাকাব খাভামংডন রঁনন খছি। এহিসঁ সংকেত প্রাপ্ত হোগছ জে সূর্যক পূজা শকস্থানসঁ ভাবতমে খাযন।

ক্ষদা রোঁধগযা বেনিংগপব উঁকোর্ণ উঁদীচ্য রেষধাবী সূর্য মূর্তি রিদেশী পবম্পবাসঁ ভিন্ন ও প্রাচীন (শৃংগকানীন) খছি। গবানী প্রভারসঁ পহিনে এহি ঠাম সূর্য মূর্তিক ভাবতীয খরধাবণা স্বনিশ্চিত ছন (ভাবতীয কনা কো রিহাব কী দেন, রী.পী.সিন্হা, পটনা, ১৯৩+, পৃ.+১–+২)। ক্ষম্হবাব (পটনা) ক সূর্য (মূর্তি) চাবিটা ঘোড় াক বথপব খাৰুঢ় ছথি। মাটিক গোন পঞ্জীপব রঁনন এহি সূর্যকেঁ ভাবতীয সূর্য মূর্তি পবম্পবামে সর্রপ্রাচীন মানন জাঃ সকৈছ। শাহারাঁদ এরং ক্ষংগেবসঁ প্রাপ্ত সূর্য উঁদীচ্য রেষধাবী ছথি। পার্শ্বদেরতা কনমধাবী পিংগন ত্রিভংগ ক্ষদ্রামে ঠাঢ় মন্বষ্যক স্বগ্রহ ও ক্ষগ্রহক নেখন কঃ বহন ছথি এরং দহিন দিস রিধর্মী সভকেঁ দল্ডিত কবরাঁক নেন হাথমে দল্ড নেনে দল্ডী তপেব ছথি। রাম ভাগমে সূর্যক পত্নী উঁষা ও দহিনমে প্রত্যুষা খঁধকাবক রেঁধন কঃ বহন ছথি।

শাহাবাঁদ জিনাসঁ প্রাপ্ত সূর্যমূর্তি সংভরতঃ গুপ্তকালীন কলাকৃতি থিক। গবামে একারনী (মানা) শোভিত ছনি এরং দ্বপাল রাম ভাগমে নষ্টকন ছনি। দক্ষিণ রিহাবমে সূর্য মন্দিব, সূর্যমূর্তি ও সূর্যোপাসনাক কেন্দ্র উত্তব রিহাবক অপেক্ষা অধিক অছি।
সর্বার্থীক সর্রেক্ষণক অনুসাব সাংস্কৃতিক মিথিলাংচলমে সূর্যোপাসনাক প্রাচীন ঐতিহাসিক কেন্দ্রক রূপমে রিষ্ণু রঁকআব (মধুরঁনী) ক দ্বাদশ আদিত্যক রূপেঁ পূজিত পালকালীন সূর্যমূর্তি অছি। মূল সূর্যমূর্তিক প্রভারলীমে রাঁবহটা আদিত্যক স্বরূপ উকীর্ণ অছি। মিথিলাংচলক অন্যান্য সূর্যমূর্তি জকাঁ সূর্যক দেহপব জিবহ-রঁখতবাদি নহি ছনি। ও ভাবতীয ভেষভূষা ও আভূষণসঁ রিন্যস্ত ছথি। যদ্যপি স্থলক নাম রিষ্ণু রোঁধক অছি। এহি ঠাম সূর্য রিষ্ণু রূপেঁ পূজিত ছথি।
সুরেন্দ্র কুমাব ঝাক অনুশীলন (মিথিলা কী পাল প্রতিমাএঁ) ক অনুসাব মধুরঁনীক ঝঁঝাবপুব-মধেপুব পঞ্জীক কোশী-রঁলানক প্রবাল প্ররাহ ক্ষেত্রক সূর্য নাহব-ভগরতীপুব ও ভীঠ ভগরানপুবক অতিবিক্ত বাজনগব, পস্টন এরং পটনামে প্রাপ্ত অছি। এহি পঞ্জীসঁ কলেক হটিকঽ একটা সূর্যমূর্তি জগদীশপুব (মলীগাছী প্রখন্ড, দবভংগা)সঁ সেহো উপলব্ধ ভেল অছি। এহি সূর্য পূজন পঞ্জীক সরাধিক আকর্ষক ও প্রভারশালী সূর্য মূর্তি (আকাব ৪+ গলচ গুণা ২৪ সে.মী.) পবসা (ঝঁঝাবপুব, মধুরঁনী) ক অছি। তেবহম সদীক রঁলল ঙা মূর্তি সূক্ষ্ম অলংকবণসঁ ভবল অছি। এহিসঁ একটা ধাবণা ঙা রঁনৈত অছি জে সূর্য মূর্তিক পূজন একটা সীমিত ক্ষেত্র ধবি ছল। হুদা হিলক অরধাবণাক খংডন দেরপুবা (রঁনীপঞ্জী প্রখন্ড, মধুরঁনী), বঘেপুবা (অসগাঁর-ধবমপুব), ডিলাহী, কোর্থ,

দেকুনী, খবঙা, বতনপ্পব, ছর্বপিঙ্কী, কর্সৌ–নদিযামী, হারীডীহ (দবভঙ্গা), ভোজ পবৌন, ভীঠ ভগরানপ্পব, খকৌব, খহ্নবাঠাঢ় ী, বখরাবী, গান্ডীরেশ্বব, ঝংঝাবপ্পব (মধ্রঁনী) এরং রীবপ্পব, রঁবৌনী, নৌনাগঢ় (রেঁগ্বসবায), সরাস (মজথহ্নবপ্পব), কন্দাহা (সহবসা), রঁড় ীজান (কিশনগংজ) খাদি ঐতিহাসিক ও ধার্মিক স্থন সভসঁ সূর্য মূর্তিক প্রাপ্তিসঁ ভ২ জাগছ। নৌকিক স্তবপব সূর্যোপাসনাক পবিদৃশ্য গাম–গামমে পসবন ছঠ পর্র সরাধিক নোকপ্রিযতাক উঁদাহবণ খছি।

খজয কমাব সিন্হা (রঁড় ীজান কা প্পবাতাত্ত্বিক মহত্ত্ব, কোশী মহোসের ২০০৩ ঙা.) কিশনগংজ জিনা মখ্যানযসঁ প্রাযঃ পচীস কি.মী.উঁত্তব–পশ্চিম দিশামে খরস্থিত রঁড় ীজান দ্গাপ্পবক রিশান সূর্যমূর্তি (৩.ফীট ৭ গন্চ গ্বণা ২ ফীট ১১ গন্চ) ক খপন শোধপত্রমে উঁল্লখ কযনে ছথি। রঁড় ী জান দ্গাপ্পব প্পবাতাত্ত্বিক ভগ্নারশেষসঁ ভবন খছি, জাহিমে দসম শতাব্দীক ভর্য মন্দিবক স্থাপত্য প্রমুখ খছি– সূর্যক রিশান দূ খন্ডিত পাথবক মূর্তি, মন্দিবক খনংকৃত চৌখট, রঁহ্তবাস শিরনিংগ, পাথবক একটা সোহারটী (নিন্টেন) মধ্য গণেশ এরং দোসবক কেন্দ্রমে উঁকৌর্ণ ত্রিশূন। দ্গাপ্পব নামক সংনগ্নতা খাদিকেঁ দেখৈত রঁড় ীজান পংচদেরোপাসক ক্ষেত্র ছন। রঁহ্তবাস মন্দিব সভ ভগ্নারশিষ্ঠ খছি। মূর্তি রিজ্ঞানক দৃষ্টিসঁ এহি ঠামক সূর্য মূর্তিকেঁ খজয কমাব সিন্হা এগাবহম সদীক কহনে ছথি। এহি ক্ষেত্রমে শৈরমতক প্রধানতা ছন। মদা সীমান্ত ক্ষেত্রমে খরস্থিত ভেনাক কাবণে এহিঠাম সূর্য মন্দিবক হোএরঁ স্বাভারিক খছি।

কোশী ক্ষেত্রক (স্বরিদেহ, খংগ্বত্তব খাদিক রূপেঁ খ্যাত) দোসব সূর্য মন্দিবক সাক্ষাত কন্দাহা (সহবসা) মে কযন

जाइ सकैछ। कन्दाहाक सूर्यमन्दिर सहरसा जिला मुख्यालयसँ चौदह कि.मी. पश्चिम रनगाँर–महिषी क्षेत्रमे अवस्थित अछि। रनगाँर, महिषी एवं कन्दाहाकेँ जँ त्रिभुज बनाओल जाय तँ ओइ सभ स्थल समकोणपर अवस्थित अछि। हरनदार त्रिपाठी सहृदय (बिहार की नदियाँ)क मतेँ एहि ठामक वृक्षक समकालीन कोलियराहक जटिल ब्राम्हण छल।
कन्दाहाक सूर्यमन्दिरक गर्भगृहमे स्थापित भगवान सूर्यक मूर्तिकेँ भवादित्य (द्वादश आदित्यक एकटा प्रकार) कहल गेल अछि। सूर्यक संग उँषा एवं प्रत्युषा सेहो उत्कीर्ण छथि। मन्दिरक द्वार स्तंभ (चौखटि) पर उत्कीर्ण शिलालेखक अनुसार (१४७३ ई.) वर्तमान सूर्यमन्दिरक निर्माता ओइनवार वंशीय हरसिंहदेवक पुत्र नरसिंहदेव छलाह। शिलालेखक प्रशस्तिमे नरसिंहदेवकेँ भूपतिलक, महादानी, धीवरीर आदि कहल गेल छनि। विद्यापतिक पदावलीक भणिता (सुभद्र झा द्वारा सम्पादित पदांक ४४–४७)सँ नरसिंहदेवक ऐतिहासिक अवस्थितिक सेहो पुष्टि होइछ। सूर्यमन्दिर लगक कूपजलक सेवनसँ चर्मरोग समाप्त भइ जाइछ। सूर्योपासनासँ चर्मरोग, कुष्ठादि रोगसँ मुक्तिक अनेक पौराणिक अनुश्रुति अछि। एहि तरहेँ कन्दाहाक सूर्य मन्दिर सूर्योपासनाक प्रसिद्ध केन्द्र बनल अछि।
नाहर भगरतीपुर (मधुबनी)क प्रसिद्धि जतेक महिषासुर मर्दिनी भगरतीक तेजस्विताक कारणे अछि ओतबेँ ख्याति पाथरक अनेक सूर्यमूर्ति (मध्यकालीन)क कारणे अछि। मूर्ति सभमे धनुष धारिणी पार्श्वदेवीक अपेक्षा पैघ पार्श्वदेरक रूपेँ पिंगल ओ दण्डी उत्कीर्ण अछि। सिरोभूषणक स्थान सिमरौनगढ़ (घोड़ासाहन, चम्पारणसँ

উত্তব নেপানক তবাগক সীমান্ত ক্ষেত্র) ক সূর্যমূর্তি জকাঁ খনগসঁ ফক্ষ্টে নগযরাঁক স্থান খালী ছোড়ন গেন খছি। নাহব ভগরতীপ্ববক সূর্যমূর্তি কর্ণাটকালীন থিক। সিমরৌনগঢ়সঁ প্রাপ্ত এরং কাঠমাণ্ডূক বাষ্ট্রিয সংগ্রহালযমে সংবক্ষিত একটা খভিলেখাংকিত কর্ণাটকালীন সূর্যমূর্তিক সূচনা তাবানন্দ মিশ্র (প্রাচীন নেপান –২৪– কাঠমাণ্ডৌ, নেপান) দেনে ছথি।

এহি সভসঁ কিংচিত ভিন্ন ও রিশিষ্ঠ সূর্যমূর্তি সরাস, গাযঘাটে প্রখণ্ড (ফজফফবপ্বব)সঁ প্রাপ্ত খছি। সূর্যমূর্তি পাঁচ ফীট নমহব খছি, জে ওহিঠামক একটা মন্দিবমে স্থাপিত এরং নক্ষ্মীনাবাযণক নামে পূজিত ছথি। সূর্যক প্রতিরূপ রিষ্ণুকেঁ মানন গেন খছি। সূর্য সপ্তাশ্বিক বথপব স্থান্বক ফদ্রামে ঠাঢ় ছথি। ঠেহুনধাবী খধোরস্ত্র ও রামকংধসঁ খারক্ষ রন্হৈত উত্তবীয এরং রস্ত্রাভূষণসঁ সূর্য খাচ্ছাদিত ছথি। কান্হপব যজ্ঞোপরীত এরং ডাঁবমে কটাব ছনি। কর্ণাটরংশী বাজা নোকনি সূর্যরংশী ক্ষত্রিয ছনাহ। খতঃ পংচদেরোপাসক ভূমি মিথিনাক খনেক কর্ণাট শাসিত ক্ষেত্রসঁ সূর্য মূর্তিক প্রাপ্তি স্বাভারিকে মানন জাযত। কর্ণাটকালীন তিবহুতক বাজধানী সিমরৌনগঢ় (সিমরৌনগঢ় কো গতিহাস, মোহন প্রসাদ খনান, কাঠমাঁডৌ, নেপান, ২০৩৬ রি.), খন্ধবাঠাঢ় ীক কমনাদিহ স্থান (মধুরঁনী), ভীঠ ভগরানপ্বব (মধুরঁনী) মূর্তিযা (নেপান তবাগ), ফর্সৌ নদিযামী (দবভংগা), কোর্থ (দবভংগা) খাদি ঐতিহাসিক ও ধার্মিক স্থান সভসঁ প্রাপ্ত খছি। সিমরৌনগঢ়ক সূর্য মূর্তিক নির্মাণ যাজ্ঞিক শ্রীপতিক নেন হবসিংহদেরক মংত্রী গণেশক খাদেশপব কযন গেন ছন (প্রাচীন নেপান–২৪)। কর্ণাটরংশী বাজানোকনি পংচদেরোপাসক ছনাহ।

মিথিলাঁচলক বঁরৌনী–বেঁগুসবায ক্ষেত্রমে সূর্যোপাসনাক ঐতিহাসিক অবশেষ সভ উঁপলব্ধ অছি। রীবপ্পব–ববিযাবপ্পব ও কৈথসঁ সূর্যক অনাবা হ্নক প্বত্র বেবন্তক পাথবক প্রাচীন মূর্তি প্রাপ্ত ভেল অছি। বঁরৌনী ও চকবেঁদৌলিযাক সূর্য মন্দিব দর্শনীয অছি। এহি ভূভাগক কিছু সূর্যমূর্তি জী.ডী.কॉলেজ, বেঁগুসবাযক সংগ্রহালযমে সংবক্ষিত অছি। ডॉ. সহনাবাযণ ঠাকুব (মিথিলা মেঁ মঁদিবোঁ কা প্রাদুর্ভাব এবং স্বরূপ, মিথিলা কী লোকসংস্কৃতি বিশেষাঁক, দবভঁগা, ২০০৬ ঙা.) মিথিলাঁচলক অকৌব, ঝাঁঝাবপ্পব, বাজনগব ও কঁদর্পীঘাটক সূর্য মন্দিব সভক উঁল্লেখ কযলে ছথি। হ্মদা সহেন্দ্র কুমাব ঝাক অনুসাব নাহব ভগবতীপ্পব সূর্যোপাসনাক পৈঘ কেন্দ্র ছল জাহি ঠাম চাবিটা মহত্বপূর্ণ সূর্য মূর্তি উঁপলব্ধ ও পূজিত অছি। উঁপর্যুক্ত সর্বেক্ষণামেক অনুশীলনসঁ স্পষ্ট ভঽ জাগছ জে সাংস্কৃতিক মিথিলাঁচলক পূর্বী ছোড় বঁড় ীজাল দুর্গাপ্পব (কিশনগঁজ)সঁ পশ্চিমমে অকৌব (মধুবঁলী), উঁত্তবমে সিমবৌনাগঢ় (মিথিলা নেপাল সীমান্ত) এবং দক্ষিণমে বঁরৌনী–বেঁগুসবায ধবি সূর্যমন্দিব ও সূর্যোপাসনাক ক্ষেত্র বিস্তৃত ছল। ওকবা বাজকীয সংবক্ষণ এবং লোকাশ্রয প্রাপ্ত ছল। আর্য সূর্যপ্রতিবঁহ্ম লোক ছলাহ। মিথিলাঁচলক দক্ষিণী সীমান্তক গংগাতটবর্তী ক্ষেত্র (জঠুআ, হাজীপ্পব, বৈশালী)ক সূর্যোপাসনা যদুবংশী লোকনিক স্ববজাহা সম্প্রদায অবশিষ্ট অছি। এহি জনপদক জ্যাতি এবং কাবিখ পঁজিযাব সন লোকদেবতা সূর্যোপাসক ছলাহ। হ্নক স্বরূপ বেদনিষ্ঠ ব্রাহ্মণক অছি। হ্নক পৈবমে খবাম, অধোবস্ত্রমে ধোতী, কান্হপব জনেউঁ, মাথপব তিলক, হাথমে পোথী–পতবা এবং সোনাক চান্তুক (কিবণক প্রতীক) শোভিত ছলি–

পৈব খবক্ষ্ঝা হো দিনানাথ, হাথ সঙ্ক্ষন ।
দেহ জনেউঁঝা হো দিনানাথ, তিনক নিনাব ॥ – মৈথিনী প্রকাশি, (শোধ রিশেষাঁক, মৈথিনী নোকসাহিত্যক ভূমিকা, প্রা. মৌন, কনকত্তা, জনরবী–ফবররী ১৯৭৬) ।
মৈথিনী নোকসাহিত্যক সংদর্ভমে সূর্য পূর্রদিশাক খধিপতি ছথি ।
রিহাবক ধবতীপব সূর্যক প্রাচীনতম স্বরূপ ক্ষম্ভবাব (পটনা) সঁ প্রাপ্য খছি জাহিমে সূর্য একচএীয খশ্বিবথপব সরাব (ঙা.পূ. পহিন সদী) ছথি । একব রিকাস রোঁধগযা বেনিংগ (শৃংগকানীন) পব উঁকীর্ণ চাবি ঘোড় ারানা বথপব খারুঢ় সূর্য মূর্তিমে ভেন খছি, জাহিমে পার্শ্বিদেরী উঁষা ও প্রত্যুষা সেহো খভিশিল্পিত ছথি । ক্ষষাণকানক সূর্য মূর্তিক রিশিষ্ঠ পহচান পৈবমে গবানী বূঁট, দেহমে জিবহ–রঁখতব ও মাথপব কিবীট রঁনি গেন । এহিমে সূর্য সপ্ত খশ্বি বথী ছথি । ক্ষদা গ্বপ্তকানমে সূর্যক স্বরূপ এমশঃ ভাবতীয রস্ত্রাভূষণমে রঁদনৈত গেন । মিথিনাঁচনক পান, কর্ণাট ও ওগনরাব কানীন শাসনকানমে সমানরূপেঁ সূর্যমূর্তি ও মন্দিবক নির্মাণ হোগত বহন । সূর্য মূনতঃ খশ্বিবোহী দের ছথি, জনিক প্রভুত্বসূচক বথক চাবিটা খশ্বি দিক্ দিগন্ত রোঁধক খছি ত সপ্তাশ্বি সপ্তনোকক রিস্তাবকেঁ প্রতিরিম্বিত কবৈত খছি । এতরেঁ নহি সপ্তাশ্বি সপ্তবংগী কিবণক ছ্যাতক সেহো রঁনি গেন খছি । সূর্য খাব্য নোকনিক রৈদ্গক দেরতা ছথি । খতঃ মিথিনাঁচনমে নির্মিত সূর্যমূর্তি ভাবতীয পবম্পবা (রস্ত্রাভূষণ) মে খছি । ও রৈষ্ণর ধর্মী তিনক মল্ডিত ছথি, খর্থাত্ খাদিত্য ব্রহ্ম ও রেদত্ত ব্রাহ্মণক প্রতীক রঁনি গেন ছথি । হুনক হাথক কমন সৃষ্ঠি মূনক থিক । কমন ফূন সূর্যোদযক সংগ প্রস্ফুটিত হোগত খছি এরং

সূর্যাস্তক সংগ সম্প্‌ষ্টিত মোগত খছি। দ্‌নূ হাথক কমন সূর্যোদয এরং সূর্যাস্তক প্রতীক খছি। মিথিনাঁচনমে নরোদিত সূর্য ও খস্তাচনগামী সূর্যদেরকেঁ খর্ঘ্য দেন জযরাঁক পবম্পবা খছি। এরং প্রকারেঁ মধ্যকানীন মিথিনামে সূর্য পূজন একটা প্ররঁন ধার্মিক প্ররৃত্তি ছন। কমন সভ দেরী দেরতাক খাসন রঁনন খছি।

ভাবতীয মূর্তিকনা পবম্পবামে সূর্য খপন শক্তিদ্বয উঁষা এরং প্রত্‌ষা, পার্শ্বদেরতা পিংগন এরং দন্ডীক খতিবিক্ত সূর্যপুত্র বেরংতক একটা মূর্তি পচম্না (রৈঁগুসবায) এরং দেরপুবা (মধ্রঁনী) সঁ প্রাপ্ত ভেন খছি। মিথিনাঁচনমে সূর্য মূর্তিক নির্মাণক্রমমে শাস্ত্রীযতাসঁ কিংচিত্ ভিন্ন খভিনর প্রযোগ সেহো দেখনা জাগছ, জকবা জনপদীয খাস্থাক খভিব্যক্তি কহন জাঃ সকৈছ। উঁদাহবণার্থ রিষ্ণু রঁকখাবক দ্বাদশ খাদিত্য (সূর্য)ক মূর্তিক পাছাঁ খগ্নি শিখা সভক প্রদংকনকেঁ দেখন জাঃ সকৈছ। সূর্য খগ্নিক প্রত্যক্ষ প্রতিরূপ ছথি।

সূর্যক গণনা নরগ্রহমে মোগত খছি। দিকপানমে ও পূর্বক দিগপতি ছথি। ভাবতীয মূর্তিকনামে নরগ্রহক খরধাবণা গুপ্তকানীন পবিরেশমে মূর্ত ভেন ক্ষদা মিথিনাঁচনক ধবতীপব হুনক পূজন পবম্পবাক পুবাতাত্ত্বিক খরশেষ পান ও সেনকানমে রিশেষ দেখনা জাগছ। মধ্যকানীন শিরমন্দিবমে প্রাযঃ নরগ্রহক মূর্তি খরশেষ প্রাপ্ত মোগছ। রীবপুব (রৈঁগুসবায) এরং চেচব (রৈশানী)সঁ নরগ্রহক পানকানীন প্রস্তব পৈনেন প্রাপ্ত ভেন খছি জাহিমে সূর্য প্রথম খন্বক্রমমে ছথি। হুনক দ্‌নূ হাথমে কমন পুষ্প শোভিত ছনি। ক্ষদা নখীসবাযক খষ্ঠগ্রহ পৈনেনমে সূর্য কমনাসনপব প্রতিষ্ঠিত ছথি। রিহাবশবীফ, নানন্দাক নরগ্রহ পৈনেনমে সূর্য দন্ড ও

পিংগলক সংগে উৎকীর্ণ ছথি। খংতীচক (রিএ্রমশিলা, ভাগলপ্ৰব)ক নরগ্রহ পৈনল সরঁসঁ পৈঘ (১১+*৬২ সে.মী.) খছি। নরগ্রহ এ্রম এরং প্রকারেঁ নির্মিত হোগছ– সূর্য, চন্দ্র, মংগল, বুঁধ, বৃঁহস্পতি, শ্রএ্র, বাহ্ এরং কেত্ত। কোনো কোনো পৈনেলক খাবম্ভ উনটৌএ্রম (কেত্ত, বাহ্...)সঁ হোগছ। মিথিলা লোকচিত্রকলামে নরগ্রহক প্রতীকাংকল হবিশেযল একাদশীক খবিপলমে দেখলা জাগছ। মাংগলিক খলুষ্ঠানমে নরগ্রহক পূজল খারশ্যক মানল জাগছ।
শিরলিংগমে সূর্য: কন্দাহা (সহবসা)ক চত্তর্মুখী শিরলিংগ সূর্য প্রমুখ ছথি এরং খন্যান্যমে ব্রঁহ্মা, রিষ্ণু ও শির ছথি। তহিনা বালীঘাট (পটনা)ক দ্ধেশ্বব মন্দিব (শির)ক পংচমুখী শিরলিংগমে ব্রঁহ্মা, সবস্বতী, সূর্য ও গণেশক খলারা শীর্ষপব নৃত্যমূর্তি উৎকীর্ণ (নরম–দসম সদী) খছি। খবেবাজ (প.চম্পাবণ)ক সোমেশ্বব শির মন্দিবক প্রাংগণমে স্থাপিত চত্তর্মুখী শিরলিংগমে একটা সূর্যক মুখাকৃতি উৎকীর্ণ খছি। সর্বেক্ষণামেক খলুশীললসঁ ওা স্পষ্ট হোগছ জে প্রত্যেক শিরলিংগমে দেরস্থালক মুখ্য মূর্তিক খলুৰূপ একটা দেরতা প্রমুখ হোগছ। উদাহবণার্থ কন্দাহাক শিরলিংগমে সূর্যক, ভছীমে ব্রঁহ্মাক (ত্রিমূর্তি)ক গলাদি।
এহি তবহেঁ কন্দাহা (সহবসা), বঁড় া জাল দ্গাপ্ৰব (কিশলগংজ), বঁবৌলী (বেঁগুসবায), ঝংঝাবপ্ৰব, কংদর্পীঘাট, খকৌব, চকবেঁদৌলিযা, পবসা, খন্ধবাঠাঢ় ী, বাজলগব (মধ্বঁলী) খাদিক সূর্য মন্দিব এরং খন্যান্য স্থল সভসঁ প্রাপ্ত প্রাচীল সূর্যমূর্তি সভক উপলব্ধতা মিথিলাংচলমে সূর্যোপাসলাক মহত্তাকেঁ বেখাংকিত কবৈত খছি।
খার্য লোকলিক খভিজাহ সংস্কৃতিক সমালান্তব লোকক খপল সম্প্রদায খছি, খপল দেরী–দেরতা, পূজোপাসলা

पद्धति, पारनि–तिहार आदि छैक। आदीर लोकनिक स्वरूपा सम्प्रदायक सूर्योपासक लोकदेवता ज्योति ओ कारिख, उँषा–प्रत्युषाक समानान्तर गहिन षष्ठी आदिक पूजोपासना प्रकारान्तरसँ सूर्योपासना थिक। सौर संस्कृतिक केन्द्रीय देवता सूर्य छथि। आर्यलोकनिक सूर्य प्रतिरक्षताक उदाहरण अछि सूर्यक राहन सप्ताश्व रथ। आर्य अश्वप्रिय छलाह आर अश्व हिनक संस्कृतिक संराहक देवी–देवताक राहन रनल अछि। छठि व्रतक परम्परा पुराणयुगसँ पहिनेक थिक। सुकन्या एहि कठिन व्रत साधनासँ अपन पति च्यवन ऋषिक नेत्रक ज्योति घुरौने छलीह। षष्ठी वा छठी मइया लोकजीवनक आँचरमे संतति, आरोग्य व सुख–समृद्धि देइत छथि।
सूर्यक सम्बन्ध ऋतुचक्रसँ अछि। बारह मास (द्वादश आदित्य), छह टा ऋतु (षष्ठी माता) एवं सात दिन (सप्ताश्व रथ) सभटा सूर्यसँ सम्बद्ध। हिनक गति प्रक्रिया अयन (गति क्रिया) मे विभाजित अछि– उत्तरायण एवं दक्षिणायन। सूर्यक दुनू अयनमे अर्थात् कार्तिक एवं चैत्रमे छठि मइयाक पूजोपासना कयल जाइछ। अश्वारोही सूर्यकेँ जलाशयक तटपर हस्तिकलश, चौमुख दीप, मौसमी फल–फूल, मेवा–मिष्ठान्न आदिसँ अर्घ्य देल जाइछ (लोकायत और लोकदेवता, डॉ. रामप्रवेश सिंह, मुजफ्फरपुर, १९+६ ई.)। हिनक पूजोपासनाक लेल लोक श्रद्धावनत भऽ ठाढ़ रहैत अछि– ब्राह्मण रौंटी जनेउ, अहीर रौंटी गायक दूध, कुम्हार रौंटी हस्तिकलश आदि, तेली रौंटी तेल, माली रौंटी फूल–पात आदि लऽ कऽ उदयाचल दिस सूर्योन्मुख भऽ अर्घ्य देइत छलि। जापानकेँ सूर्योदयक देश ओ अरुणाचलकेँ उदयाचलक प्रदेश कहल जाइत अछि। मिथिलांचलमे उगैत एवं

ড্রৈত (খস্তাচনগামী) সূর্যকেঁ নোকপূজন পবম্পবিত খছি। সূর্যক ছঠী ব্রতানুষ্ঠান রঁহ্ত কঠিন মানন জাগছ। এহি ঠামক স্ত্রীগণ সূর্যক খর্ঘ্যক কেবাক বক্ষাক নেন ব্রঁম্নাস্ত্র ধবি উঁঠযরাঁক নেন দৃতসংকল্পিত বহৈত খছি– "মাববউঁ রে স্বগরা ধনুষ সে, ওা ঘউঁব, বৌনা মাগ কে জাএ"। ছঠী মাগকেঁ মিথিনাংচনমে বৌনা মাগ সেহো কহন জাগছ। ষষ্ঠী নোকাযত সংস্কৃতিক দেন থিক ক্ষদা সূর্য রৈদিক সংস্কৃতিক। খতঃ বৌনামাগ সূর্যক সতবংগী খশ্বিবথপব সরাব ভহ কহ মিথিনাংচনক ধবতীপব খরৈত ছথি এরং নোকজীরনক দ্খ–দাবিদ্র্যক হবণ কহ খপন "নোক"মে ঘ্বি জাগত ছথি। এরং প্রকাবেঁ সূর্যোপাসনা সম্পূর্ণ নোকজীরনকেঁ শ্রিস্কাভিভূত কযনে খছি। রৈদিক এরং নোকাযত সংস্কৃতিক সমাহাব এহি ঠাম প্রত্যক্ষ দেখনা জাগছ।



<u>মনোজ ক্ষকতি</u>

<u>ত্রিভুরন রিশ্ররিদ্যানযক্সাবা মিথিনাক্ষব ফনৃৎক রিকাস</u>

মৈথিনী নেখক এরং খন্য মৈথিনী ভাষী নোকনিক ভারনাকেঁ সম্মান কবৈত ত্রিভুরন

रिश्ररिद्यानय ভাষারিজ্ঞান কেন্দ্রিয় রিভাগ তথা মদন প্বরস্কার প্বস্তকানয় ভাষা সঞ্চার পরিযোজনা খন্তর্গ্নত যূনিকোড পর খাধারিত জানকী নামক মিথিনাক্ষর(তিরহ্তা) ফন্টক রিকাস কয়নক খছি । এহি ফন্টক মাদে খার্ঁ সঁসার ভরি গমেন মিথিনাক্ষরমে পঢন জা সকৈত খছি । সঁগহি, রের্ঁসাগ্ট পর মিথিনাক্ষরমে পাঠ্যসামগ্রী সাখন জা সকৈত খছি ।

ক্ষদ্রণক কঠিনাঙ্গ সঁ মৈথিনী ভাষা দেরনাগরী নিপিমে সামান্য রুপসঁ নিখন জাগত খছি খা মিথিনাক্ষরক প্রযোগ র্ঁহ্ত সীমিত ক্ষেত্রমে হোগত জাঃ রহন খছি । যূনিকোডমে খাধারিত জানকী ফন্টক খাগমন সঁ মিথিনাক্ষরক প্রযোগক রিস্তার হোযর্ঁাক সঁভারনা র্ঁঢন খছি । ওনা দূ রর্ষ পহিনহিঁ নিজী স্তরপর শ্ররিণ ঝা খা গঁগেশ গ্বঞ্জন মিথিনাক্ষর ফন্টক নির্মাণ কযনে রহথি ।

<u>মকর সঁক্রান্তি খর্থাত তীনা সকরাঁগত</u>

মকর সঁক্রান্তি খর্থাত তীনা সকরাগঁত মাঘ মহিনাক পহিন দিন, প্রাযঃ মাঘ মাসক ১ গতেকে মনাওন জাগত খছি । মকর সঁক্রান্তি মাঘভরি নোক ভোরমে স্নান করৈত খছি । মাঘ মাসক সঁক্রান্তিক দিন নোক উঁড়ীদক দানি, চাউঁর,তিনর্ঁা, চ্নন্নৌর খাদি দান করৈত খছি । ধনরান নোকসর্ঁ গোদান, উঁনীরস্ত্র, কম্র্ঁন, সোন খাদি সেহো দান কাযন

करैछथि । एहि दिनमे खिच्चवि खएबाक चलन चलि आएल अछि । आजुक दिन भगवान भगवतीके चुन्नौव, तिलवा चढाओल जाएत अछि । बहुतो ठाम दिनमे चूडा,दही,चुन्नौव आ बातिमे भोजन काएल जाएत अछि । आ किछु ठाम चुन्नौव, तिलवा, चूडा,दही जलपान कऽ दूपहरक भोजन खिच्चवि सँ सँम्पन्न होएत अछि ।

मिथिलाञ्चलमे भोरे स्नान कऽ कऽ तीलक डाँठ अर्थात तीलाठीक आगि तापल करैत छथि । जौं तीलक डाँठ उपलब्ध नञ होमय सकल त आगिमे तीलक किछु दाना धऽ आगि तापि परम्पराके निर्वाह कायल करैछथि । ताएकेबाद अपना सँ पैघ या कम् श्रेष्ठक्षावा चाउँव, तील आ गुँड मिलाकिऽ बँनाओलगेल तील खुवाकि अपना प्रतिके कर्तव्यबोध कबाओल जाएत अछि, जकवा "तील बँहव" कहल जाएत अछि ।

ओ पावनि सँ आयु, आबोग्य, सम्पति, कप, गुणक प्राप्ति होएबाक सँगहि सब तबहक पापसँ मुक्ति भेटैबाक विश्वास कायल जाएत अछि । माघ स्नानके बृहत मन्त्र सेहो होएत अछि जे एहि प्रकावक अछि

ॐ माघमासमिमं पुण्यं स्नाम्यहं देव माधव ।

तीर्थस्यास्थ जले नित्यं प्रदीदा भगवन हवे ।

द् :ख दविद्रयनाशीय श्रीविष्णोस्तोषणाय च ।

प्रात: स्नानं कवोम्यद्य माघे पाप

প্রণাশিনম্ ।
মকবস্থে বরৌ মাঘে গোরিন্দাচ্যুত ।
স্নানেনানেন মে দের যথোক্ত ফদো ভর ।
দিরাকব জগন্নথ প্রভাকব নমোঽস্তুতে ।
পবিপূর্ণ ফকষ্রেদং মাঘস্নানং মহাব্রতম্ ।

ওনা রৈজ্ঞানিক দৃষ্টিকোণে গ্বঁড খএনা সঁ শিবীবমে গর্মী খএরাঁক কাবণে জাঠ মাসমে এহী পর্রকে খতি উঁপযোগী মানন জাগত খছি ।

<u>**জিতিয়া পারনি**</u>

মিথিনামে রঁহ্তো পারনি রঁড শ্রেহ্বাপূর্রক মনাওন জাগত খছি । মিথিনাকে সাঁস্হৃতিক রুপসঁ ধন্নিক কহ্হজায়রাঁমে এহি পারনিতিহাব সরঁহক রঁহ্ত পৈঘ মহত্র বহন খছি । ওনা সরঁ পারনি সরঁহক খপন হ্টনে মহত্র বহন করৈত খছি, সরঁ পারনিকে খপন খপন প্রযোজন সেহো ওতরেঁ রিশেষ ভেন করৈত ছৈক ।

মিথিনামে মনাওন জাএরঁনা একগোট মহত্রপূর্ণ পারনি সরঁমে সঁ জিতিযা পর্রকে খপনে তবহক মহত্র বহন খছি । মিথিনাঞ্চনমে প্রচনিত খছি জে কেও প্ররুষ কোনহুঁ দূর্ঘটনাসঁ রাঁচিগেন ত কহন জাগত খছি,মায ষডজিতিযা কেনে ছনৈ তাহিসঁ রাঁচি গেনৈ । ওা রাক্য স্পষ্ট করৈত খছি জে জিতিযা পারনি একটা রেঁটাকেনেন দ্রনক মাযহ্বাবা কাযন জাগত খছি ।

ভরিষ্য প্ররাণমে সেহো উঁনেনেখ খছি জে প্ত্রক দির্ঘাযিক কামনাসঁ ওা ব্রত কাযন জাগত খছি । জিতিযা পারনি, হৃষ্ণ খষ্টমীক দ্নূ সাঁঝ উঁপরাস কহ ভোবমে তিথি রঁদনলাপব পাবণা কবরাঁক রিধান বহন খছি । মিথিনাঞ্চনমে জিতিযা ব্রতসঁ এক দিন পূর্র খহিরাত স্ত্রিসরঁ মাছ মরুআ খবরঁধিকহ খাএন করৈত ছথি । তহিনা পারনি কেনিহাব রিধরা নাকনি খর্রা খর্রাগিন খাগত ছথি । ভিনসবমে জোঁ খষ্টমী নহি পডন বহৈত ছৈক ত চূডা দহী ন ওঁগঠন করৈত ছথি । তাএঁ রুঁঝাগযা ওা কহরী রঁনন ছওা, জিতিযা পারঁনি রঁড ধ্যান বখৈত ছথি । এহি তিথিমে যোগ রিশেষ ভেনাপব ষডজিতিযা মনাওন জাগত খছি, জকবা রঁহ্ত পৈঘ মানন জাগত খছি । জাহি দিনমে প্রদোষ

কানমে অষ্টমী পড়ৈত ছৈক ওহ দিন ব্রত হোগত অছি, জৌঁ দূ দিন প্রদোষ কানমে অষ্টমী পড়ৈত অছি ত খোসব দিন জিতিযা পারনি ব্রত কবরাঁক নোকাচাব ব্যাপ্ত অছি । জাহিরেঁব উদয কানমে অষ্টমী পড়ৈত অছি তহিযা ব্রত কাএন জাগত অছি আ নরমীমে দোসব দিন পাবণা কএন জাগত অছি ।

অষ্টমী জাহি দিন পড়ৈত অছি তাহিদিন ব্রত কযনিহাব জাহি ঠাম স্নান কবৈত ছথি(পোখবি,নদী যা গনাবপব) ওকব প্রাঁগণমে পূরব্রাঁহে ঠাঢ ভ২ তামক অর্ঘামে মন্ত্র পঢিক২ সূর্য ভগবানকে অর্ঘ দৈত ছথি, এবং ব্রতক সঁকন্প নগছথি । সঁকন্প ক২ ভবিদিন ব্রত বহি সাঁঝমে গাযক গোবঁব সঁ নীপি আঁগনকেঁ শুদ্ধ ক২ একটা খধিযা খুনি পোখবীক নির্মাণ কাযন জাগত অছি । পোখবীক মোহাবপব একটা পাকডিক ঠাঢি আনি গাবি দেন জাগত অছি, গাছক ডাঢিপব গোবঁব মাটিক চিন্হ বাখিদেন জাগত অছি । গিদবনীক আগ্রতি বঁনার্বিক২ ডাঢিক নীচামে বাখি দেন জাগত অছি । তকবা নগেমে জনসঁ ভবন কনশ বাখন জাগত অছি ।কনশমে কুশক জিমূতবাহনক মূর্তিক নির্মাণ ক২ বাখন জাগত অছি । তাগকেবাদ সময অনুসাবক ফনফূনকে নৈবেদ্যক ব্যবস্থা কক২ বাখন জাগত অছি । নৈবেদ্যমে কেবাবক আকবী আ খীবাকে বাখবঁ আবশ্যক মানন জাগত অছি । সবঁ সামগ্রীক ওবিযাওন কেনাকবাঁদ ব্রতি মহিনা সবঁ পূজা কবৈত ছথি ।

জিতিযা পারনিকে বঁহুত কঠীন পারনি মাননগেন অছি । ওা পারনি কেনিহাব ব্রতি মহিনাসবঁ পানি ত নহিঁএ পিবৈত ছথি, এত২ধবি কি ওসবঁ খঢোধবি

नञि खोंटैत छथि ।

মনোজ ম্লক্তি সংগ খন্তুর্রার্তি– ডা. বাম দযান বাকেশী (সঁস্খৃতি রিদ)

**সবকাবকে ধ্যান ছঠি পারনিপব দেৱাক চাহী.....**

ছঠি পারনি মধেসকে সংস্খৃতি কিযাক মানন জাঙাত থছি ?

–ছঠি পারনকে থপনে মৌনিক রিশৈষতা ছগ,, ঙা পারনি শ্বক হোৰ্ব২ সঁ একমহিনা পহিনে সঁ পারনি কযনিহাব সৰ্ব তৈযাবী মে নাঙাগ জাঙাত ছথি । একব তৈযাবী থা প্বজাকে জৌं দেখন জায ত থঙামে রিশ্বক্ক মধেসী সংস্খৃতি পাঙঁন জাঙাত থছি । পারনি কেনহাব সঁ নক ওঙাকে তৈযাবীমে নাগন হবেক ব্যক্তি ও সংস্খৃতিমে ভিজন বহন পাওন জাগত থছি । ওকব প্রসাদ সঁ ন২ক হবেক সামগ্ৰীবমে মধেসক সংস্খৃতি দেখন জাঙাত

छैक, ओ पारनिके अरसबमे गारेै राना रिभिन्न धुन तथा गीत सब मैथिल संस्कृतिमे गाओल जाइत अछि ।

ई पारनि किआक मनाओल जाइत अछि ?

–एकर अपने पहिचान आ विशेषता छैक । सब पारनि सँ अइ पारनिके अपने इतिहास छैक किआ त कोनो पारनि एसगरे अपना घर परिवार मे बहिकऽ मनाओल जाइत अछि मुदा ई एकटा एहन पारनि अछि जे अलग जगहमे सामूहिक रुप सँ मनाओल जाइत अछि । अइ पारन के मात्रे लोकतान्त्रीक पारनि कहल जा सकैय किआक त अइ पारनि मे कोनो भेदभाव उँच्च नीच, जात भात नइ देखल जाइत अछि । अइ पारनिमे सूर्यके पूजा भेलाके कारण आओर एकर गरीमा के उँच्च देखल जा सकैय । सूर्य जहिना ककरो पर भेदभाव नइ क कऽ सम्पूर्ण जगतके रोशनी प्रदान करैत अछि, तहिना छठि पारनि सब के एक समान रुप सँ देखैत आइर बहल छैक ।

ई पारनि अपना परीवार के सुख समृद्धिके लेल तथा कोनो रोग व्यधा नइ लागै से मनोकामना सँ मनाओल जाइत अछि । भोर आ साँझक सूर्यके किरणमे एक प्रकारके गरीमा होइत अछि जकरा रोशनी सँ शरीरमे बहल रिभिन्न रिमारी फैलारे राना किटाणु सबके नष्ट सेहो करैत चर्मरोग सँ बँचारैत अछि । चर्म रोगके अचुक दराइ मानल जाइत अछि छठि पारनि ।

ছঠি পর্ব মে মহিলা সবঁ ত্থপনা ত্থাচবা পব নৰ্ট্টবা কিযাক নচৰৈত ছৈথ ?

–একবা একটা শ্ৰদ্ধাকে ৰুপমে নেন জা সকৈয, ছঠি মাতাকে ধ্যানমে বাখি ক কোনো কিসীমকে মনোকমনা কেনা সঁ জৌঁ ও প্ববা ভ জাওছৈ ত ওগ দেরতা পব ত্থাবো শ্ৰদ্ধা ৰঁঠ জাওছৈ ত্থা ওহি কিসীমকে কৌৰ্ব্না ক ক ত্থপনা ত্থাঁচব পব নৰ্ট্টবা নচৰৈত ছৈথ ।

ছঠিক ঘাট পব চমাব জাওত সবঁ ঢোন(ড্গড্গীযা) ৰঁজাৰৈত ছথি, ওকব কি রিশেষতা ত্থছি ?

–ওকবো জাতিয তথা সংস্কৃতি পবিচযকে ৰুপমে নেন জা সকৈয, ও জাওত সবঁ ত্থপন সংস্কৃতি ত্থা সংস্কাবকে ৰঁচএৰঁাক নেন ও কাজ ক বহন ত্থছি । ও ঢোন ৰঁজনা সঁ ঘাট পব কতেক মধ্বতা ত্থা বৌনক মহশ্বস হোওত বহৈত ত্থছি, ওনা ত কতে নোক সবঁ ত্থগ্ৰেজী রাজা ৰঁাজা ক পাৰৈন মানাৰৈত ছৈথ হ্মদা জতেক ঢোন পীপহী কে ত্থাৰাজমে সংস্কৃতি কে ম্নক ভেটৈত ত্থছি ওতে কোনো ৰঁাজামে নগ ।

ত্থগ পারনি মে সূর্যকে প্বজা হোওতো পব ছঠি মাতা যা ছওঠ পবমেশ্ৰবীকে নাম সঁ কিযাক জানন জাওত ত্থছি ?

–সূর্যকে ত্থর্থ উঁষা হোওত ত্থছি, উঁষা ভগরতিকে ৰুপমে প্বজনাকে কাবণ একবা ছঠী মাতাকে ৰুপমে সম্ৰোধন কাযন জাগত ছৈক । ওনা ত স্পষ্ট ৰুপমে কতৌ

নে খওা রিষযমে চর্চা ভেন খছি নেকীন কিছু শাস্ত্রমে মহাভাবত কে হ্নন্তি শ্বকমে ছঠি পারনি কেনে বহৈথ ওহী দিন সঁ ছঠি পারনি শ্বরু ভেন খছি সে কতৌ কতৌ উঁনেখ পাএন জাওত খছি ।

দিনকব কে খা জনকে কি সম্রঁন্ধ খছি ?

–জন কে খা দিনানাথকে রঁহুত গহিব সম্রঁন্ধ খছি, রিঁনা জনকে দিনকবকে প্বজে নও ভঃ সকৈয হুনকা খুশি কবরাঁক নেন জন চাহরৈঁছী কবী । ছঠিএকে উঁদাহবণকে রুপমে নঃ নিয, ও পারনি রিঁনা জন কে নও ভঃ সকৈয কোনো জনাসয নও ভেনা পব খপনা ঘবমে খধিযা খনি ক ওগমে জন বাওখ ক পারনি সম্পন্ন কবৈত খছি, কিযাক ত দিনানাথে সূর্য ছথি । একটৌ এহো কহি সকৈ ছি কি সূর্য মে রঁদ্ধুত গর্মী ভেনা কে কাবণ জন কে খর্ঘ দেনা সঁ ও কিছু ঠন্ঢা হোগত ছৈথ ।

নোকতান্ত্রিক গণতন্ত্রমে ছঠি পারনিকে সংস্কৃতিকে রাঁবে মে খপনে কি কহরঁ খছি ?

– হম গণতন্ত্র নও কহিক নোকতন্ত্রকে চর্চা কবৈত ওা কহর কি ছঠি একটৌ রিশুদ্ধ নোকতান্ত্রিক পারন খছি, সমানুপাতিক ঢর্গ সঁ একবা মনাওন জাগত খছি । সামূহিক রুপমে মনরাঁক সঁগহি খওা মে কোনো ভেদ ভার নও হোগত খছি । গবীরঁ সঁ নক ধনীক তক সরঁ একবা সমান ঢর্গ মনারৈত খছি ।

জনতা গণতন্ত্রকে বস্তা চননাও শূরু

कदेनक स्दा सबकाब श्रश्नोट पाछा पबन श्रछि । श्रखनोट मधेसी पहाडी रौच , दनित गैब दनित रौच, गबीब धनीकके रौच भेदभाव श्रछि, कि एकबे गणतन्त्र कहबै ? नबका नेपान बनाबह नागन नेताग सर्बके छठि पाबनि सँ किछु सिखबाक चाहि ।

**डा.बमानन्द स्रा 'बमण'**

शेर्ष्क रिभङि सम्बाद

शेर्ष्क – श्राउँ, नग श्राउँ, एना छिटकेन किए छी ? श्रहाँ नगमे बहैत छी तँ दस गोटे पूछै श्रछि । नहि बहब तँ हमबा के पूछत ?

रिभङि – ग्रा हमब सौभाग्य भेन । श्रहाँक बिना हमब कोन ठेकान ? स्दा की कहू ? श्रपन मैथिन समाज केहन श्रचेष्ठी श्रा स्रगड़ नगाओन श्रछि, से जनतहि होएब ? नहि सोहागत छैक जे नोक मिनि के ँ बहए । घब श्रङ्गौथनिमे मजा श्रबैत छनि ।

फेर किछु भाषाशास्त्री छथि, किछु उँसोमी लेखक छथि जे अहाँसँ फराके बहराक लेल हमरा उँसकाबैत रहैत छथि। कहल कोना जाएत? भय होइत अछि, कहीं गोलैसीमे ले फँसा देथि।

शेर्ष – धत्! भाषाशास्त्री! वैयाकरण! से कतय पाबी? अल्पज्ञानी लेखकक अभाव सेहो नहि ले अछि, यौ? ओ अल्पज्ञानीए ले कहत, हम जे बजैत छी सएह शुद्ध अछि, हम जे लिखैत छी, सएह ठीक अछि। कहू तँ एहन कोनो भाषामे भेलैक अछि?

विभक्ति – से हम की जानए गेलिऐ। हमरा अहाँक संग नीक लगैए, सएह टा हम कहि सकैत छी।

शेर्ष – सए तँ मानलहुँ। मुदा रबजराक कारण की छलि? कहि न नाम दिआर्बए चाहैत छथि आ सभ? आ कि हम नहि सोहाइत छीअनि? ते ँ ?

विभक्ति – अहाँ नहि सोहेबेनि, से की बजतनि? तखन की मंसा छनि, से तँ ओएह लोकनि जानथि। मुदा हमरा मोनमे किछु खुटकैत अछि, से कहि दैत छी। अहाँ भेलहुँ पुरुष आ हम भेलहुँ स्त्री। अहाँ छी अनन्त पुरुष आ हम अहाँक भक्तिक आकांक्षी, विभक्ति। हमरा अहाँके ँ एकठाम आ सेहो एक पाँतीमे सटि बैसब कथमपि उचित नहि अछि। किनसाइत जँ एएह हुनकालोकनिक नहि पचैत होनि?

शेर्ष – से, हम नहि जानी। मुदा हम जे अनुभव कबैत छी आ किछु विश्वासो अछि, से कहैत छी। ओ सब ओ विंसबि जाइत छथि जे संस्कृत भाषाक साम्राज्यमे

খহাঁ হমব সংগিনী ৰঁনন বহনহুঁ। কোনো রিদ্বানকে ঁভ্রম নহি ভেননি। খসমংজস্যমে নহি পড়নাহ। ক্দা মৈথিনীক নরকা রিদ্বান খা নরসিখ্খা নেখককে ঁ ভ্রম হোগত ছনি। ভ্রমাহ নোকক পবামর্শ মানি খরসব খরিতহি হমবা নগসঁ খহাঁ ছিটৈকি জাগত ছী। দূনূ গোটৈক কতেক দিনক সাহচর্য খছি, এহন কোনো ঘটনা মোন খছি জখন হম কোনো প্রকাবক খনাচাব খহাঁ পব কএনে হোগ ? স্বনূ, খহাঁ খসগব বহী রা দূ গোটে মিনি কে ঁ বহী, রিশ্বাস বাখূ খহাঁক ধর্ম পব কনিকো খাঘাত নহি নাগত। খহাঁ সন উঁপকাবী নোককে ঁহম ৰাঁবি বখনে বহী, কোনা ছজত হমবা ? কোনা উঁচিত হোএত ? হমব খামো কনপত নহি ?

রিভক্তি – সে তঁ বুঁঝনহুঁ, ক্দা জঁ হম খহাঁক নগ নহি খারি খহাঁক সহযোগী ৰঁনন বহী তঁ এহিমে কোনো হর্জ ? ওনা হমবা খহাঁক সংগ বহৰাঁমে কোনো খাপত্তি নহি খছি। খহী নে হমব ধর্মপিতা খা খরনম্বঁ ছী, তখন কোন খাপত্তি ! ক্দা জে স্ত্রীক স্বতন্ত্রতাক রিবোধী ছথি খা জে স্ত্রী এরং প্বকষকে ঁ হবাক–হবাক বখৰাঁমে খপন চাত্তর্যক পবিচয দেমএ চাহিত ছথি, সে নহি নে চাহতাহ জে হম খা খহাঁ এক পাঁতীমে ৰৈসী। সন্নিকট খারী। ওনা কৌখন ঞ হমবা উঁচিতো নগৈত খছি।

শৈঙ্ক – খহাঁ খপন গম্ভাসঁ রা খপন প্রগ্রতিক কাবণে ঁ ভনহিঁ হমবাসঁ হটৈন বহৰাঁক রিচাব কবী। ক্দা হম ঞ কহিও নহি চাহৰ জে এহি নেন খহাঁকে ঁকেও সংকপজ কর্বিথি রা ৰঁহকাৰঁথি। খা স্বতন্ত্র ভএ খহাঁ জতএ–ততএ খসগব ৰৈসন কবী। সোচিঔ, এহিসঁ

সমাজক কোন উপকাব হোএতৈক ?

রিভঞ্জি – হম ফবাকো বহি খহাঁক নজবিসঁ কিন্নহুঁ কাত নহি ভএ সকৈত ছী। যদি খহাঁক গ্রুপা–দৃষ্ঠি রঁনন বহএ।

শৰ্ঙ্ক – যদি খহাঁ ফবাকে বহরাঁক ঠানি নেনে হোএ তঁ হমব গ্রুপা–দৃষ্ঠি কতেক দিন রঁনন বহত ? প্রর্ঁহ্ন পাঠকক গ্রুপা–দৃষ্ঠি বহরাঁক চাহিখনি। খন্যথা হমব খহাঁক জে সম্বন্ধ খদৌসঁ খছি, সে ভংগে র্বূম্ন।

রিভঞ্জি – নহি, নহি। সে নহি কৰু। এহি নেন যদি খহাঁ সম্বন্ধ–রিচ্ছেদ কবএ চাহৈত ছী তঁ হম রচন দৈত ছী ককবো কহনমে হম নহি খাএরঁ। কহিও খহাঁক সংগ নহি ছোড়রঁ। ফদা এক টা শৰ্ত খছি।

শৰ্ঙ্ক – শৰ্ত ? কছু কোন শৰ্ত খছি।

রিভঞ্জি – খহাঁ রঁহুৰূপিযা ছী, কৌখন সংজ্ঞা ৰূপমে বহৈত ছী, কৌখন সর্বনাম ৰূপমে, কৌখন রিশেষণ ৰূপমে, কৌখন ক্রিযা ৰূপমে। এহিনা খানো–খানো ৰূপসভ খহাঁক খছি। ঙা ৰূপ–পবিরৰ্তন হমবা পসীন নহি খছি।

শৰ্ঙ্ক – সভটা ছী তঁ হমবে ৰূপ। জখন জেহন প্রযোজন ভেন, তখন তেহন ৰূপ ধাবণ কএ নৈত ছী। সে নহি কবরঁ তঁ সমপ্রেষণ–র্যাপাব সার্থক নহি হোএতৈক।

রিভঞ্জি – তখন তঁ খহাঁ মৈথিনীক কতেকো সাহিত্কাব জকাঁ রঁহুরিধারাদী ভেনহুঁ। সগব বাতিক খাযোজনমে

जएबाँक अछि तँ कथा लिखि लेल, मंच भेटैन तँ पाँती जोड़ि करि भए गेलहुँ आ समाँग संयोजक भेलाह तँ संगोष्ठी लेल एमहर-ओमहरसँ आनेख तैआर कए लेल। एहन मंचनुर्क्रक पाछू-पाछू चलैत बहरॅ, हमराा पार नहि लागत। अहाँक कोन रूपक हम सहगामी होउँ, अहीं निर्णय करू।

शब्द - अहाँक आरोप अहात्मपूर्ण एरं अयथार्थ नहि अछि। अहाँ जनैत छी हम सामाजिक लोक छी। लोक हमरा अपन अव्यक्त भारक अभिव्यक्तिक माध्यम बनबैत अछि। हम लोकक ओ उपकार आरश्यकतानुसार अपन रूप बदलि-बदलि करैत रहैत छी। व्याकरणक योगबनसँ अपन रूप बदलबॅ हमरा लेल कोनो कठिन नहि अछि। अहाँ बिसरल नहि होएबॅ 'परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडन'। से परोपकार छोड़ि परपीड़क हम कोना बनि जाउँ ?

रिभक्ति - से हम कहाँ कहैत छी। यदा अहाँ भेलहुँ पुरुष आ हम भेलहुँ स्त्री। व्याकरणिक योगबनसँ अहाँ रूप बदलैत रही आ हम अहाँक संग बासनीना बचबैत रही, से देखि लोक की कहत ? लोक-लाजो तँ कोनो रस्तु थिकैक ? अहाँक सान्निध्य हम चाहैत छी, तखन कोन उपाय अछि ?

शब्द - अहीं कहू हमर कोन रूप अहाँके पसीन अछि। ओ कहि शब्द चट अपन रूप देखबए लगलाह। एक सर्वनाम रूप, एक क्रिया रूप, एक रिशेषण रूप, एक क्रियारिशेषण रूप, एक अव्यय रूप, आदि। शब्दक रूप परिवर्तन शक्तिपर अचम्भित रिभक्तिक आँखि ओकर संज्ञा रूप पर आरि अटैकि गेलैक आ ओ शब्दक संज्ञा

रूपमे जाए सटि गेल (जेना, गामकेँ – द्वितीया, गामसँ – तृतीया, गामकेँ –चतुर्थी, गामसँ – पंचमी, गामक – षष्ठी, गाममे – सप्तमी)। ई देखि शब्दक संज्ञा रूप विभक्तिसँ अपन प्रतिरूप सर्वनामक स्थिति स्पष्ट कएलक। ओ विभक्तिकेँ बुझबओलक जे प्रयोग सौष्ठव लेल लोक सभ एहि रूपक प्रयोग अनवरत करैत अछि। ई नहि मानि लेबै जे ई सभ अपाङ्क्तेय रूप थिक। सहमतिमे विभक्तिक मूड़ी डोलल। विभक्तिक मोनसँ हवाक बहरबाक विचार निपत्ता भए गेलैक। कोनो विवाद नहि बचल। ई निर्णय भेलैक जे विभक्तिक उच्चारण वा लेख सदा शब्दक संज्ञा रूपक मूलमे सटाए कएल जाए। विभक्ति ओ संज्ञाक बीचमे ने कोनो विच्छेद कएल जाए आ ने कोनो आन पद ओकर बीचमे राखल जाए तथा शब्दक गणनामे सदा एक शब्द मानल जाए। ओहि दिनसँ विभक्ति-संयोजन संज्ञा आ सर्वनाममे होअए लागल।

<u>**अनुवाद**</u>

1

21 फरवरी – अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस। एही दिन पूर्वी पाकिस्तानमे लादल गेल उर्दूक विरोधमे बँगलाभाषी विशाल प्रदर्शन कएने छलाह। पाकिस्तानी पुलिस गोली चलौलक। दू बँगलाभाषी नवयुवकक प्राण

তকোন চন গেননি। তেসব নরঘরকক দেহান্ত 22 ফবরঁবী, 1952 কে ঁ ভেন। ওহি তীনূ রঁনিদানীক স্মৃতিমে তাকোনীন পূরী পাকিস্তান আ' আরঁ রঁগনাদেশ 21 ফবরঁবীবকে ঁ প্রতিরর্ষ মাতৃভাষা দিরস মনরঁএ নাগন। হুনকা নোকনিক সাবাসঁ তেহন নে ধধবা উঁঠন জে ওতিহাস সাক্ষী অছি, রঁ াগনাদেশ রঁনি গেন। দেশক বাজনীতিক স্বতন্ত্রাতাক নেন রিশ্বক বাজনীতিক ওতিহাসমে অপন প্রাণক আহুতি দেনিহাব অনগিনিত স্বাধীনতাকামী ছথি, কিন্তু অপন ভাষাক নামপব প্রাণক আহুতি দেরাঁক রিশ্বমে ওা পহিন ঘটনা ছনৈক। স্বতন্ত্রাতা সেনানীক স্মৃতিমে দিল্লীমে গঁডিযা গেট অছি, আ' পটনামে শহীদ স্মাবক। ঢদা ঢা্কামে শহীদমীনাব অছি, জতয প্রতিরর্ষ 21 ফবরঁবীকে ঁ মাতৃভাষাক অস্মিতাক বক্ষাক নেন প্রাণক আহুতি দেনিহাব
ওহি তীনূ নরঘরককে ঁ নোক শ্রদ্ধাঁজনি অর্পিত কবৈত অছি। ভাষাক সংবক্ষণক নেন শপথ নৈত ছথি। রঁগনাদেশক সবকাবক আরেদনপব, রিশ্বক কতেকো দেশক সমর্থনসঁ, জাহিমে ভাবত প্রমুখ ছন, 1999 মে যূনেস্কো 21 ফবরঁবীকে ঁ অন্তববাষ্ট্রীয মাতৃভাষা দিরস ঘোষিত কএনক। আরঁ সমস্ত রিশ্ব 2000 সঁ 21 ফবরঁবীকে ঁ অন্তববাষ্ট্রীয মাতৃভাষা দিরস মনাএ বহন অছি। এহন মহত্ত্বপূর্ণ তিথিকে ঁ মৈথিনীক রিকাসক নেন কার্যক্রমক শুভাবম্ভ নিশ্চিতে অত্যন্ত মহত্ত্বপূর্ণ অছি। নেশনন অনুরাদ মিশন, মৈসূব মিথিনা ভাষাক রিকাস এরং সংবক্ষণক নেন কতেক সতর্ক অছি, তকব ওা উঁদাহবণ থিক। নেশনন অনুরাদ মিশনক অধিকাবীনোকনি ধন্যরাদক পাত্র ছথি।

2

हमबालोकनि अपन मातृभाषाक लेल लिखैत बहलाँक अतिविज्ञ जनजागरण अभियान नहि चलौलन्हि। आन्दोलन नहि कएलन्हि। आन्दोलनक लेल जे संघनित भाषाचेतना अपेक्षित छैक, तकर सभ दिनसँ अभाव रहल। ऐतिहासिक, राजनीतिक वा सामाजिक कारणसँ द्विभाषिआ भए गेलन्हि, जाहि गतिसँ पड़ोसी लागल अछि, जाहि तन्मयतासँ प्रभाव आ' संचार माध्यमक चाक पर नचैत जाइत छी, आ' जेना हविअरी दिस लपकि रहल छी, ओहिसँ जे गठागत अछि वा गढ़ाएत, स्पष्ट संकेत अछि, अगिला पीढ़ी एक भाषिआ भएकेँ रहत। भाषा वैज्ञानिकक निष्कर्ष अछि, दोसर पीढी द्विभाषिआ होइत अछि आ' तेसर पीढ़ी एक भाषिया। परिणाम होइछ, भाषाक विलुप्ति। 1

दोसर भाषा वैज्ञानिक जे.ए. फिशमैनक सेहो शोधनिष्कर्ष एहने अछि, 'जाहि मातृभाषाक आनुवंशिक संक्रमण नहि होइछ, से भाषा जीवैत नहि अछि। 2

एहन सामाजिक स्थितिमे अपन मातृभाषाक रक्षाक लेल संवैधानिक कवच-स्पन्दन भेटि गेल अछि। एहिसँ मैथिली प्रयोगक प्रक्षेत्रमे विकासक संग वैविध्य आएल अछि। पहिने कविता कथा लिखि, पढ़ि वा बाँचि गदगद होइत छलन्हि। अपना अपनीकेँ मग्न रहैत छलन्हि। ओना ओ प्रवृत्ति गेल नहि अछि। मैथिलीक सभ छावभाव, यश अपयश एही वस्तु पर छलनि। तदा, संवैधानिक मान्यताक उपरान्त अन्यान्य क्षेत्र आ' शास्त्रक विज्ञजनकेँ गौरवक बोध भेलनि अछि। अपन मातृभाषाकेँ समृद्ध करबाक इच्छा जगलनि अछि। मौलिक आ' अनुवाद दुनू क्षेत्रामे सक्रिय भेलाह अछि। एहिसँ आलो आलो शास्त्राक रचना मैथिलीमे आबए लागल

अछि। साहित्यक विषयक पोथी मैथिलीमे छपय लागल अछि। मैथिलीक विस्तार एवं संरक्षणक हेतु ई शुभ लक्षण थिक। मैथिलीमे लेखनक दृष्टिसँ समाजमे दू कोटिक शिक्षित मैथिल छथि –

1. मैथिलीक दृष्टिसँ शिक्षित मैथिल एवं,

2. मैथिलीक दृष्टिसँ अशिक्षित मैथिल।

1. When a language surrenders itself to foreign idiom and when all its speakers become bilingual, the penalty is death."

–T.F.O' Rahilly– Irish dialects past and present: With chapters on Scottish and Manx. Dublin Institute of Advanced Studies.)

2.Without intergenarational mother tounge transmission – no language maintenace is possible.That which is not transmitted can not be maintained)

मैथिलीक दृष्टिसँ शिक्षित मैथिल ओ भेलाह जे विधिवत मैथिली पढ़ने छथि, मैथिलीमे लिखैत बहराक अभ्यास छनि एवं पारिवारिक सम्भाषणक भाषा मैथिली छनि। मैथिलीक दृष्टिसँ अशिक्षित मैथिलक कोटिमे ओ अबैत छथि जे मातृभाषा मैथिली रहितहु हुनक अध्ययन वा लेखनक माध्यम हिन्दी वा अंग्रेजी रहैत अछि, पारिवारिक वा

সামাজিক সম্ভাষণক ভাষা মৈথিলী নহি বহি গেল ছনি বা অল্প রূপমে ছনি। কিন্তু, সাহিত্য সর্জনা বা অন্য বিষযক বচনাসঁ অপন মাতৃভাষাক সম্বর্দ্ধনক প্রবল আকাংক্ষা ছনি। ই আকাংক্ষা অবশ্যে স্বাগত যোগ্য অছি। তখন, ও ই মানবাক লেল তৈআব নহি বহৈত ছথি জে মৈথিলী সেহো সীখবাক বস্তু থিকৈক, মাত্রা বাজবা অবৈত বহবা, সাহিত্য সর্জনাক লেল পর্যাপ্ত নহি হোগত ছৈক। মাতৃভাষা থিক, তেঁ জে নিখব, জহিনা নিখব, সভটা ঠীকে হোএত, শুদ্ধ হোএত। এহি ভ্রান্ত ধাবণাক কাবণ মৈথিলী লেখনমে অব্যবস্থা বঢ়ি গেল অছি। এক টা সমাচাব পঢ়নে ছলহুঁ, বিলৈতক অধিকাংশি অন্ডব গ্রেজুএট অংগ্রেজ, শুদ্ধ অংগ্রেজী নহি নিখি পবৈত ছথি। ই মৈথিলী ভাষী পব সেহো লাগূ হোগত অছি। অন্যথা বমানাথ ঝা নহি নিখনে বহিতথি – 'হম ই নহি মানৈত ছী জে জঁ মৈথিলী হমব মাতৃভাষ থিক, হম মৈথিলী অহোবাত্রা বজৈত ছী তেঁ জে নিখব, জেনা নিখব সএহ মৈথিলী হোএত। জে কহৈত ছথি, জে জহিনা বজৈত ছী তহিনা নিখব, তঁ মৈথিলীক স্বরূপ অনন্ত ভএ জাএত।' এহি প্রসংগ ভাষাবৈজ্ঞানিক ডা. বামারতাব যাদব মৈথিলী লেখনমে আএল অস্তব্যস্ততাক কাবণক অন্বেষণ কএ, ভাষাবৈজ্ঞানিক তথ্যক আধাবপব ওকব পবীক্ষণ কএ এহি নিষ্কর্ষপব ছথি জে 'হিন্দী ভাষাক মাধ্যমেঁ শিক্ষা গ্রহণ কএনিহাব এবং হিন্দী ভাষাক নৈথিক পবিপাটীসঁ অত্যধিক প্রভাবিত হোমএবালা মৈথিলীক লেখক লোকনি হিন্দী জকাঁ মৈথিলী সেহো নিখএ চাহৈত ছথি এবং মৈথিলীক প্রত্যেক শব্দ, রূপিম এবং বচনাংগ আদিকে over differentiate কবএ চাহৈত ছথি'। ও মানৈত ছথি জে এহি প্রভাবক কাবণেঁ মৈথিলীক

ঐতিহাসিকতাক বক্ষা নহি হোগত অছি, ও মৈথিনীক নিজত্বক পবিচাযক নহি ৰনি, মৈথিনীকে ঁ স্বৰূপ কএ দৈত অছি। এহি দেখোঁসক পবিণামজনিত কিছু উঁদাহবণ প্রস্তুত কএ বহন ছী –

1. অহাঁ সঁ কে ৰহস কবত ?

2. পূজা কবথ্, আ কনিযো কে আৰয কহথ্ন। – মধ্কান্ত ঝা, ভ্রান্তিবথী, পৃ.সং.14/66

3. আগ ফেব সঁ নাবাযণ জী ক ে ডেবা খানী কববাঁক নোটিস জাবী ভ' গেননি। –ঋষি ৰশিষ্ঠ, মাঁটি পবক নোক,স্বফাঁটি জতবা, পৃ. সং.10

4. একটা কে ৰজাউঁ ত' দোসব পাব। – ঋষি ৰশিষ্ঠ, পহিন রাক্যমে 'কে' সর্বনাম অছি এরং দোসব, তেসব এরং চাবিম রাক্যমে 'কে' কাবক চিহ্ন থিক। ঝদা, মৈথিনীক নেখক মহোদয সভঠাম 'কে'ক প্রযোগ কএ দেননি অছি। সাহিত্য অকাদেমীসঁ প্বস্কৃত মৈথিনীক এক নেখকক প্রকাশিত নৱ পোথীপব চর্চাকি ক্রমমে এহি রিষযক হমব রিচাব স্বনি ও তমসা গেনাহ আ' কহননি 'অর্থাত হমবা মৈথিনী নহি নিখএ অরৈত অছি।' মিথিনা ভাষাক অপন নিজী রিশেষতা, সান্বনাসিক স্ববধ্বনিক প্রসংগ ডা. বামারতাব যাদরক অভিমত অছি জে সান্বনাসিক স্বব ধ্বনিক নেন অর্থাত্ এহন স্বব ধ্বনিক নেন জে কোনহ্ নাসিক্য ব্যংজনক সামীপ্যক অভারহ্মে স্বতঃ স্বনিমিক ভএ সান্বনাসিক ৰূপে ঁ উঁচবিত হোগত অছি এরং জকবা spontaneous nasalization কহন জাগত অছি, মৈথিনী রর্তনীমে অদ্বযার্থক ৰূপে ঁচন্দ্ররিন্দ্ দ্বাবা, জেনা সঁ, তঁ, হঁ, অহাঁ প্রতিরিম্বিত হোগত আএন অছি এরং সএহ উঁচিত অছি। অন্বস্বাব দ্বাবা যথা সং, তং, হং, অহাং ও প্রতিনিধিত্ব নহি হোগত অছি। ঝদা, কতেকো

व्यक्ति चन्द्रबिन्दुक कोन कथा, अनुस्वारहुकेँ छोड़ि स' एवं त' लिखैत छथि। जेना उदाहरण 4 ('एकटा के बँजाउ त' दोसर पाब') मे अछि। मैथिलीक गम्भीर अध्येता पं. गोविन्द झा स्पष्टतः लिखने छथि जे मैथिलीक अपन स्वन-व्यवस्थामे अनुस्वारक कतहु स्थान नहि अछि, किन्तु हिन्दीक प्रभावसँ एकर प्रयोग जोर पर अछि, जखन कि बँगलामे अद्यावधि अनुस्वार नहि चलैछ। निश्चित रूपसँ ई बँगलाभाषीक अपन भाषाक निजताक रक्षाक प्रति सचेत एवं साकांक्ष रहबाक परिचायक थिक। अंग्रेजी शब्द Marriageक संगे कतय जर आ' कतय ूपजी नागए, से घोखैत जागत छी, किन्तु, मैथिली अपन मातृभाषा थिक, व्याकरणक नियमक पालनक कोन चिन्ता, जे लिखब, शुद्ध होएत। के काटत ? ई मानसिकता पराकाष्ठापर अछि। ई ध्यान देबाक थिक थिक जे शैघ लेखकक भाषा सेहो शैघ होगत छैक, अन्यथा अभिप्रेतक अभिव्यंजना नष्टप्राय भऽ जएतैक। राजनीतिक उपनिवेशवाद समाप्त भऽ गेल। ऋदा, उपनिवेशवाद नवरूप धारण कए लेनक अछि। ओ अपन अकादारुण ऋण बाँटि गनफोबमेशन टैकनोलेजीक रथपर सवार भए, द्रुत गतिसँ आबि रहल अछि। ओ सभटा गीबि जएबाक लेल आतुर अछि। मैथिलीपर दृ तरफा मारि पड़ि रहल छैक। ओहि प्रहारसँ मैथिलीकेँ सुरक्षित रखबाक अछि। तखनहि, मैथिलीक अपन निजता रहतैक, नहि तँ एकटार भऽ जाएत। एहि लेल आवश्यक अछि जे मैथिलीक स्वन विशेषताकेँ, ओकर ध्वनि परम्पराकेँ लेखनमे सुरक्षित राखल जाए। डाबामारतार यादरक परामर्श अत्यन्त उपयोगी अछि जे मैथिलीक आमेरक्षार्थ ई

পবমাবশ্যক জে ও হিন্দীসঁ ভিন্ন দেখি পড়এ। হম লক্ষ্মীপতি সিংহক উক্তিকেঁ দোহবৈত এহি প্রসংগ খপন বঞ্জব্যকেঁ রিবাম দৈত ছী। ও লিখন খছি –
'জেনা বঁজৈ ছী, তহিনা লিখী, জে সর্রসাধাবণ বূঝি জাএ, সএহ লিখী রা জে কিছু শব্দ–খর্থহু খপন মন মানি জাএ, তকবে সর্রাগি স্বন্দব কার্য্য মানি লিপিরঁদ্ধ কএ লী, তথা ব্যাকবণাদি গ্রন্থ পঢ়রাঁক ডবেঁ খপন–খপন পাবিরাবিক রা গ্রামীণ স্বব–প্রক্রিযাক খন্বব্রজন কবৈত খপনহি গঢ়ল সাহিত্যিক মৈথিলীক স্তব নির্ধাবিত কএ লী, খাদি দ্বাগ্রহ খাগ–কাল্হি মৈথিলী সংসাবমে সংক্রামক বোগ জকাঁ পসবি বহল খছি। ককব কথা মানও, কে ককব পথ–প্রদর্শক বঁনথি'।

3

হমব রিচাবক তেসব রিন্দু ভএ সকৈত ছল, খন্বরাদ সিদ্ধান্তক প্রসংগ কিছু বাঁজবঁ। যদা, খন্বরাদক তীনূ স্থিতি –

1. সিদ্ধান্ত ; (Theory),
2. খভ্যাস ; (Practice), এরং.
3. মূল্যাংকন ; (Evaluation)কেঁ ধ্যানমে বাখি বঁহত নীক জকাঁ কার্যক্রম নির্ধাবিত খছি তথা খধ্যাপন কার্যমে নিষ্ণাত রিদ্বান সরঁ খগ্রিম সত্রাসভমে রিভিন্ন রিষযপব খপন–খপন রিদ্বতাপূর্ণ ব্যাখ্যানক লেল খামন্ত্রিত ছথি। ওহি শাস্ত্রীয রিষয পব হম কিছু কহরাঁক সাহস নহি কএ সকৈত ছী। তথাপি, এ কহরঁ জে খন্বরাদ, খারঁ এক ভাষাসঁ দোসব ভাষামে মাত্রা উলথা কবরঁ নহি বহি গেল, একবা শাস্ত্রীযতা প্রাপ্ত ভএ গেল ছৈক এরং খন্বরাদশাস্ত্রাক খধ্যযন–খধ্যাপন খন্বরাদ রিজ্ঞানক ; (Translatology) রূপমে হোখএ

নাগন ৠছি। পহিনে ৠনুবাদ দ্বিকৰ্ণী (Binary) মানন জাগত ছন, কিন্তু ৠবঁ বঁহৃৠাযামী ; (Multidimensional) ভএ গেন ৠছি। পহিনে এক শাস্ত্রীয ছন ৠ' কিন্তু ৠবঁ ৠনুবাদ বিজ্ঞানক বঁহৃশাস্ত্রীযতাক ; (Interdisciplinarity of Translatology)পবিপ্রেক্ষ্যমে ৠনুবাদ কার্য হোগত ৠছি। পহিনে স্রোত ভাষা (Source Language) এবং নক্ষ্য ভাষাক ; (Target Language) জনতবঁ ৠবশ্যক ছনৈক, ম্দা ৠবঁ ৠনুবাদকক নেন ভাষাক সংগহি সংগ, স্রোত সংস্কৃতি (Source Culture)এবং নক্ষ্য সংস্কৃতিক ; (Target Culture)জনতবঁ সেহো ৠবশ্যক মানন জাগত ৠছি। পহিনে এক বিষয, জেনা সমাজশাস্ত্র হোগত ছন, কিন্তু ৠবঁ ৠনুবাদক এবং পাঠক/স্রোতাক বীচক সম্বন্ধক নেন Sociology of Translation পব বিচাব হোগত ৠছি। নাঁনেজ ঠৈকস্টক ৠনুবাদসঁ ৠনুবাদ শাস্ত্রামে ৠওবো বিস্তাব ৠবি গেন ৠছি। ৠবঁ ৠনুবাদকার্যক স্বৰূপ, বিষয এবং উদ্দেশ্যক ৠধাবপব নির্ধাবিত হোগত ৠছি। ৠনুবাদকক নেন সর্বথা ৠবশ্যক ৠছি জে হ্নকা স্রোতসংস্কৃতি এবং নক্ষ্যসংস্কৃতিক জনতবঁহি নহি হো, ৠপিতু বিষযক Comman Background Knowledge সেহো বহবাঁক চাহিৠনি। ৠনুবাদ বিজ্ঞানক ক্ষেত্রামে বী. হৰ্াঁনকাৰ্টক প্রতিঞ্চমণ (Reversibility) পব ৠধাবিত নবীনতম সিদ্ধান্ত(1989) ৠছি ঠঁবাঁ.জতংদেসংজপবদ ক সিদ্ধান্ত। এহিমে স্রোতক ৠনুৰূপ চাবি টা কোটি ৠছি –

1. গণিতীয স্রোত ; (mathematical text), এহিমে সবঁসঁ বেঁসী প্রতিঞ্চমণ সম্ভব ৠছি,

2. तकनीकी स्रोत ; (technical text),
3. साधित स्रोत ; (constrained text) तथा,
4. सामान्य एवं साहित्यिक स्रोत ; (general and literary text)।
लेशेलन अनुवाद मिशनक जे लक्ष्य छैक, अनुवादकक लेल Comman Background Knowledge आवश्यक अछि। संगहि, लक्ष्यभाषामे वाँजवेँ टौक अभ्यास पर्याप्त नहि अछि, मैथिलीमे लिखैत बहुताँक अभ्यासक संग, मैथिलीक भाषागत विशेषताक ज्ञान सेहो चाहिअनि, तखनहि Sociology of Translation स्थापित भए सकत आ' अनुवाद हास्यास्पद होएबाँसँ बँचि सकैछ। विषयक जनतबँक अभावमे अनुवाद केहन भए जाएछ, तकव उँदाहवण प्रस्तुत अछि।
विजयँ वैँक द्वावा सूचीबँद्ध वस्तुक आयातक लेल Blanket Permit देल जाएत छलैक आ' आयातकक लेल आवश्यक नहि छलैक जे प्रत्येक खेपक समय ओ अनुमति प्राप्त कवथि। एहि काजसँ अनभिज्ञ अनुवादक Blanket Permitक अनुवाद कंबँल पवमिट कए देलनि। ओहिना छपिके ँआएल विभिन्न प्रकाव बॅाल्डिक हिसाबँ जाहि वजिस्टवमे वाखल जाएत अछि, तकवा नाम थिक Skelton Register ह्लदा काजसँ अनभिज्ञ व्यक्ति अनुवाद कए देलनि कंकाल वजिस्टव।
ओहिना स्रोत संस्कृति (Source Culture) एवं लक्ष्य संस्कृतिक ; (Target Culture)सँ अनजान अनुवादक की कए सकैत छथि, तकव उँदाहवण प्रस्तुत अछि –
'The young daughter kissed her father and bade adieu.'

एकब খন্বরাদ জঁ মৈথিনীমে কএ দেৱৈক 'জ্খান ৱৈঁগী ৱাঁপকে ঁচ্ম্মা নেনক তঁ খনর্থে নে ভএ জাএত।

কনকত্তা রিশ্বরিদ্যানযমে মৈথিনী- বাজা ৎৈকনাথ চৌধবী

কনকত্তা রিশ্বরিদ্যানযমে মৈথিনীক খধ্যাপনক প্রাবম্ভক হোএৱাঁক সদর্ভমে ডা. জযকান্ত মিশ্র (মৈথিনী সাহিত্যক গতিহাস, সাহিত্য খকাদেমী) নিখনে ছথি – স্বর্গীয সব খাশ্বতোষ ম্খর্জী কনকত্তামে মৈথিনীক মহান সম্পাষক কহন জাএ সকৈত ছথি। ক্মাব গংগানন্দ সিংহ, ৱাঁবূ গঙ্গাপতি সিংহ, ব্রজমোহন ঠাক্বব, রিদ্যানন্দ ঠাক্বব খাদি মহান্বভার নোকনিক প্রযাসসঁ তথা দ্গগিংজ প্ববনিযাঁক বাজা ৎৈকনাথ চৌধবীক উঁদাব রিত্তীয সহাযতাসঁ 1917 গ্র. মে কনকত্তা রিশ্বরিদ্যানযমে মৈথিনী চেযব স্থাপিত ভেন।

ডা. স্বভদ্র ঝা (মৈথিনী: বৃত্ত ও পবিধি, চেতনা সমিতি)

তাৎকালিক স্থিতি আ সহযোগকেঁ স্পষ্ট করৈত লিখল অছি জে মৈথিলীক অধ্যাপনক হেতু দূ টা প্রাধ্যাপক নিযুক্ত ভেল ছলাহ। এহিমে এক গোটেকে বেতন রজৌরক রাজা স্ব. টংকনাথ চৌধরী দ্বারা দেল দ্রব্য রাশিসঁ তথা দোসর গোটেকে বেতনক রাশি বনৈলীক স্ব. রাজা কীর্ত্যানন্দ সিংহ প্রভৃতি দ্বারা দেল দ্রব্যসঁ দেল জাইত ছল তথা ই লোকনি ক্রমশঃ রজৌর তথা বনৈলী ব্যাখ্যাতা কহল জাথি।
এহি প্রসংগ ব্রজমোহন ঠাকুর (বিশ্ববিদ্যালয়মে মৈথিলীক প্রবেশ, চেতনা সমিতি) লিখল অছি– জখন হম পূর্ণিয়াসঁ ঘুরি কেঁ কলকত্তা পহুঁচলহুঁ তখন জ্ঞাত ভেল জে রাজা শ্রীটংকনাথ চৌধরী সেহো উদারদাতাপূর্বক সাঢ়ে তীন হজার টাকা দেবাক সূচনা সর মুখর্জীকেঁ দেলথিন্হ অছি। ও 'টংকনাথ চৌধরী চেয়র' স্থাপিত করবাক অনুরোধ কএলন্হি অছি। এহি তরহেঁ দূনূ (রাজাবহাদুর কীর্ত্যানন্দ সিংহ) মিলাকেঁ এগারহ হজার টাকা তাৎকালিক কার্য চলএবাক হেতু সংগৃহীত ভএ গেল। অর্থাৎ বিশ্ববিদ্যালয়মে মৈথিলীক অধ্যাপন কার্য প্রারম্ভ হোএবাক নিমিত্ত আবশ্যক নিধি উপলব্ধ করেবাক হেতু জে দূ উদারমনা মাতৃভাষা অনুরাগী আর্থিক সহযোগ কএল আ কলকত্তা বিশ্ববিদ্যালয়মে সর্বপ্রথম মৈথিলীক অধ্যাপন কার্য প্রারম্ভ ভএ সকল এবং জাহিসঁ মৈথিলী শিক্ষণক বাট খুজল, ওহিমে এক ছথি রাজা টংকনানাথ চৌধরী।
রাজা টংকনাথ চৌধরী রাজা বৃদ্ধিনাথ চৌধরীক পুত্র ছলাহ। হিনক জন্ম 11 নবম্বর 1884 ঈ. কেঁ দুর্গাগঞ্জ, কটিহারমে ভেলনি। ও অপন বৈমাত্রায ভাএ কুমার ছত্রানাথ চৌধরীসঁ মাত্রা ছও মাস ছোট ছলাহ। হিনক পিতা রাজা বৃদ্ধিনাথ চৌধরীক দেহান্ত

जेठ्ठा 1885 ई. मे भऽ गेलनि। ओहि समयमे दून्नू भाए नाबालिग छलाह। जेना महाराज महेश्वर सिंहक देहावसानक उपरान्त हुनक दून्नू पुत्रा महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह एवं महाराज रमेश्वर सिंहक अल्पवयस्कताक कारणेँ दरभंगा राज 'कोर्ट ऑफ वार्ड्सक अन्तर्गत चल गेल छल, ओहिना राजा वृद्धिनाथ चौधरीक जमीनदारी कोबर्ट लागि गेलनि।

राजा टैकनाथ चौधरीक प्रारम्भिक शिक्षा नवद्वीप जिलाक कृष्णनगरमे भेलनि। 15 वर्षक अवस्थामे ओ कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ प्रथम श्रेणीमे मैट्रिक पास कएल। प्रेसिडेंसी कालेजसँ अंग्रेजी तथा दर्शन विषयक संग स्नातक भेलाह। अग्रिम शिक्षाक हेतु दर्शनशास्त्रा लऽ एम. ए. मे नाम लिखाओल। किन्तु 1904 ई.मे जखन जमीनदारी कोबर्ट मुक्त भेलनि तँ औपचारिक शिक्षा समाप्त कए जमीनदारीक प्रबन्धक दायित्व सम्हारि लेल। राजा वृद्धिनाथ चौधरीक जमीनदारी बिहार आ बंगाल- दून्नू राज्यमे छलनि। ओकर सुप्रबन्धक हेतु बिहार क्षेत्रक प्रबन्ध कुमार छत्रनाथ चौधरी तथा बंगाल क्षेत्रक प्रबन्ध राजा टैकनाथ चौधरी सम्हारल। राजा टैकनाथ चौधरीक विवाह कोइलख, मधुबनी ग्राम निवासी पण्डित जानकीनाथ झाक कन्यासँ छलनि। राजा साहेबकेँ तीन पुत्र एवं तीन कन्या भेलथिन। हिनक परिवारमे कतेको आढ़ सिँ पिताकेँ कन्यादानक सौभाग्य नहि होइत छलनि। राजा साहेबकेँ ई सौभाग्य भेटैलनि। राजा टैकनाथ चौधरी यद्यपि स्वयं उच्चशिक्षा प्राप्त नहि कए सकल छलाह मुदा, समाजमे शिक्षाक व्यापक प्रचार हो, तदर्थ आजीवन प्रयत्नशील छलाह। एहि हेतु 1915 ई. मे अपन पिताक नाम

পব বামনগবমে স্কূন স্থাপিত কএন। শিক্ষাক ক্ষেত্রামে হিনক খরদানক উল্লেখ কবৈত মিথিনা মিহিব (16 জূন, সন 1928 ঙা.) নিখৈত খছি– 'শিক্ষা প্রচাব মেং খাপ সদা খাগে বহতে থে। খপনী বাজধানী বামগঞ্জ মেং খপনে স্বর্গীয পিতা কে স্মাবক মেং রুক্মিনাথ গন্সর্টিচ্যূশেন নাম সে এক হাঙস্কূন স্থাপিত কব উসমেং খনেকো রিদ্যার্থিযোং কো খপনী ওব সে সৱ খর্চ দেতে থে।'
ওহি স্কূনমে মৈথিন ছাত্রক নিঃশুল্ক শিক্ষাক ব্যরস্থা ছনৈক। খগন খা মেধারী ছাত্রক খারাস খাদিক প্রবন্ধ বাজক দিশিসঁ হোগত ছন। রঁগানমে বহিতো হিনক সমস্ত পাবিরাবিক সম্বন্ধ খা সবোকাব মিথিনাসঁ ছন। তে ँ ওতয মৈথিন ছাত্রক সংখ্যা পর্যাপ্ত বহৈত ছন। ও মৈথিন ছাত্র সংঘক স্থাপনা কএন জকব নিযমিত বৈঁসাব হোগত ছনৈক। ওহি বৈঁসাবমে মৈথিনী নিবন্ধ তথা করিতা পাঠ হোগত ছন। মিথিনাসঁ গেন
ওহনে এক ছাত্রমে ছনাহ কাশীনাথ ঝা জে পছাতি মৈথিনীক করি কথাকাবক রূপমে খ্যাত ভেনাহ। পং. কাশীনাথ ঝা জখন মৈট্রিক পাস কএ নেননি তঁ ওহী স্কূনমে হিনক নিযুক্তি এক শিক্ষক রূপমে ভএ গেননি। তদুপবান্ত, ও খপন খনুজ কাঞ্চীনাথ ঝা (ডা. কাঞ্চীনাথ ঝা 'কিবণ') কে ँ গামসঁ খানি নেননি। কিবণজী ওতহিসঁ মএট্রিক এরং বাজা টৈকনাথ চৌধবীক খার্থিক সহযোগ পারি কনকত্তা রিশ্বরিদ্যানযসঁ গণ্ড্রেস
পাস কএননি। এহি তথ্যকে ँ স্পষ্ঠ কবৈত বাজা টৈকনাথ চৌধবীক পুত্র রুদ্রনাথ চৌধবী (দেহারসান, 2004 ঙা.) নিখৈত ছথি–

At Ramganj, he established a High School in 1915, in the memory of

their father. The Maithil Students from
Mithila area were taught free of tuition fee, they were allowed free food and seats in the Maithil Hostel of the school.
Poor students of the area were also allowed teaching free of fees. A Maithil Chhatra Sangha was established in which
essays and verses were read. Late Pandit Kashinath Jha, who passed Matriculation from there was appointed as a teacher
of the school. Pt. Kashinath Jha was the elder brother of Mithila's eminent writer and thinker, Dr. Kanchinath Jha
"Kiran", took great interest in Maithili literature. The students were encouraged to write more and more and read them in
the weekly gathering. Movements for Mithilakshar type was done. (চেতনা সমিতি স্মাবিকা, 1988)।
বাজা ঠকনাথ চৌধবীক ব্যক্তিত্ব সহজ ছল। ও মিলনসাব ছলাহ। পৈঘ-ছোটক ভেদভাব মনমে বিনা খনলে লোকসঁ ভেঁট কবৈত ছলাহ। তিনক ব্যক্তিত্বক এহি

রিশেষতাক প্রসংগ ‘মিথিনা মিহিব’ নিখনে খছি – ‘হমাবে বাজা সাহবঁ রী.এ. হোনে কে খতিবিঙ স্বরঙা, কার্যক্ষশেন, খথক পবিশ্রমী, নিবভিমানী, শিক্ষাপ্রেমী, তথা মিননসাব থে। খাপ বঁড়ে সে বঁড়ে ঔব ছোটে সে ছোটে তক মেঁ দিন খোনকব বাঁতেঁ কবতে থে।’ হ্নক পুত্র রুদ্রনাথ চৌধবীক নিম্ননিখিত কথনসঁ সেহো এহি বাঁতক পুষ্ঠি হোগত খছি। ও নিখৈত ছথি –

When at Ramnagar, he used to sit in the maidan in front of the palace for about one and half hour with some
officials and relations. where the general public and tenants were free to talk to him about their grievances, if any, which
were noted down and redressed as far as possible. (চেতনা সমিতি স্মাবিকা, 1988 ঙ্গ.)।

বাজা টঁকনাথ চৌধবী উঁদাব প্রবৃতিক নোক ছনাহ। মিথিনা মিহিবসঁ স্পষ্ঠ হোগছ হিনক এহি উঁদাবতাক প্রতিকূন প্রভাব পড়ৈত ছনৈক তথা ও কর্জমে ভএ গেন ছনাহ। তথাপি সামাজিক কার্যসঁ কিঁচিতো রিস্মখ নহি ভেনাহ। বাজা সাহবঁক উঁদাবতাক এক জ্বনন্ত উঁদাহবণ খছি জে 1926 ঙ্গমে সিতারগঞ্জ খা ঠাকুবগাঁর বাঁটে দিনাজপুবসঁ কহিযা ধবি জখন বেননাগন বঁনয নাগন, জে হ্নক জমীন বাঁটে জাগত ছন, তঁ বাজা টঁকনাথ চৌধবী বেনরেকে ঁনিঃশুল্ক জমীন দএ দেনথিন। বাজা টঁকনাথ চৌধবী দিনাজপুব জিনা রোর্ডক গৌব–

পদাধিকাবী খ্বধ্যক্ষ তথা দিনাজপ্বব ম্যুনিসিপন ৰোঁডক 15 রর্ষ ধবি খ্বধ্যক্ষ বহনাহ। ৰঁগান নেজিশ্লেটিৰ কাউঁসিনক গঠন ভেনা পব ওকব সদস্য নিৰ্বাচিত ভেনাহ। হিনক খ্বরদানক প্রসংগ মিথিনা মিহিব নিখৈত খ্বছি – 'ৰঁহ্ত দিনোঁ তক খ্বাপ দিনাজপ্বব ডিস্ট্রিক্ট ৰোঁডি কে চেযবমৈন বহে ঔব গস খ্বরধি মেঁ খ্বাপনে খ্বচ্ছ–খ্বচ্ছ কাম কিযে জিনকে নিযে দিনাজপ্বব জিনা ৰোঁডি মেঁ খ্বাজ ভী খ্বাপ কা নাম খ্বাদব কে সাথ নিযে জাতে হৈঁ। খ্বাজকন খ্বাপ কদমা থানা কী ওব সে পূর্ণিযা জিনা ৰোঁডি মেঁ মেম্বৰ থে। ঔব ৰঁগান কৌঁসিন কা ভী মেম্বৰ থে। ৰঁগান কে ভূতপূর্ব গরর্নব নে খ্বাপকী উঁদাবতা ঔব শিক্ষা–প্রেম কী কণ্ঠ রাব প্রশংসা কী থী। ঔব 'বাজা সাহৰ' কী উঁপাধি সে সম্মানিত কিযা। রুদ্রনাথ চৌধবী নিখন খ্বছি –

Being pleased at his devotion for public welfare the British Government honoured him with the title of Raja on
Nov. 25, 1925 in a Durbar held by the Governor of Bengal.

বাজা টংকনাথ চৌধবী নিত্যপূজা খ্বা দেরীভাগরত পাঠ কএন কবথি। কিন্তু দোসব ধর্মক প্রতি খ্বসহিষ্ণু নহি ছনাহ। 1926 ঞা.মে কনকত্তাক সংগহি খ্বানোঠাম জখন সাম্প্রদাযিক দংগা পসবি গেনৈক এরং ওকব পসাব দিনাজপ্বব ধবি হোখ্বএ নাগন তঁ বাজা সাহেৰ তকোন পণ্ডিত এরং মৌনরীকেঁ খ্বামন্ত্রিত কএন। দূনূ গোটাকে ँ একঠাম বৈঁসায ধর্মশাস্ত্র পব প্ররচন দিখ্বাওন। ঞা কাযক্রম এক মাস ধবি চনন ছন। বাজা সাহৰক এহি

প্রযাসসঁ ধার্মিক সাহিষ্ণুতা বঁঢ়ন এরং শান্তি ব্যরস্থা ভংগ নহি ভেলৈক। ওতয কটিহাব হাট নগাওন, জে খন্যারধি নাগি বহন খছি। বামগঞ্জমে ও ভগরতীক এক মন্দিবক নির্মাণ কএন। ভাবত রিভাজনক উঁপবান্ত 1951 ঙা. মে বাজা টংকনাথ চৌধবীক প্বত্র খাদি পূর্বী পাকিস্তানসঁ জান বঁচাএ পড়েনাহ, তাধবি ওতয দুর্গাপূজা খূব ধূমধামসঁ হোগত ছন। বাজা টংকনাথ চৌধবী দুর্নভ প্বস্তক তথা পান্ডুনিপিক সংগ্রহ কএ রিশান প্বস্তকানযক স্থাপনা কএনে ছনাহ। জখন হুনক এক প্রাধ্যাপক সেরানিবৃতিক উঁপবান্ত রিনেঁত জাএ নগনথিন তঁ হুনক সমস্ত সংগ্রহ বাজা সাহেবঁ কীনি নেন। রুদ্রনাথ চৌধবী নিখন খছি – Huge collections of manuscripts on Talpatra, Bhojapatra and thick papers on different subjects, collected by his ancestors were being transcribed by eminent pandits for years. He spent hours in reading books in night.

বাজা সাহবঁ সংগীতক বঁড় প্রেমী ছনাহ। রৈতিখাক সংগীতকাব মল্লিক নোকনি হুনক দববাবমে খরৈত বহৈত ছনথিন। শতবংজ এরং ফোটোগ্রাফী হুনক হাঁবী ছন। ছাত্র জীরনমে ফুটবাঁন, টেনিস এরং ঘোড়সবাঁবী প্রিয ছননি। ও এক কুশন শিকাবী সেহো ছনাহ। জখন কোনো সবকাবী খমনা খথরা বঁগানক গর্রনব খরৈত ছনথিন তঁ হুনক সম্মানমে রিশেষ শিকাব খভিযান হোগত ছনৈক। এহি নেন হুনকা খপন জমীনদাবীসঁ বাঁহব নহি জাএ পড়ৈত ছননি।

মিথিলা মিহিব এবং মিথিলামোদক 'মৈথিল মহাসভা' বিষযক বিপোর্ট এবং সমাচাবমে বাজা টৈকনাথ চৌধবীক উল্লেখ নিশ্চিত ৰূপসঁ ভেটৈত অছি। এহিসঁ স্পষ্ট হোএছ জে ও মৈথিল মহাসভাক অধিবেশনমে নিযমিত ৰূপসঁ সম্মিলিত হোএত ছলাহ। এহো স্পষ্ট হোএছ জে ও সমাজোপকাবী, স্বধাবামেক প্রযাস এবং প্রস্তাৱক সমর্থক ছলাহ। ও এক নীক বক্তা ছলাহ জে মিথিলা মোদ (উদ্গাব, 61 1911 ঙ্গ.) মে মৈথিল মহাসভাক তেসব অধিবেশনক (3–5 নবম্বব 1911 ঙ্গ. দবভঙ্গা)ক প্রকাশিত নিম্নবিবৰণসঁ স্পষ্ট হোএত। ও নিখৈত অছি – দ্বিতীয দিন (4 নবম্বব 1911 ঙ্গ.) 2 বজে শ্রীমান কনিষ্ঠ বজৌবাধীশ টৈকনাথ চৌধবী (B.A.) মহোদযক স্বন্দব বক্তৃতা ভেল। সর্বজ্ঞাত অছি জে বাজা টৈকনাথ চৌধবী কলকত্তা বিশ্ববিদ্যালযমে মৈথিলীক প্রবেশক লেল উদাবতাপূর্বক দান দেল। কিন্তু মৈথিলী ভাষা–সাহিত্য এবং সংস্কৃতিক বিকাস এবং সংবক্ষণক ক্ষেত্রমে হুনক এএহ টা অৱদান নহি অছি। জখন ও অপন পিতাক নামপব স্কূল স্থাপিত কএল তঁ ওহিমে মৈথিল ছাত্রক লেল বিশেষ ব্যৱস্থা ছল। মৈথিল ছাত্র সংঘক তত্ত্বাবধানমে বচনাক পাঠ কবাএ ও সর্জনামেক প্রতিভাকেঁ প্রাসোহিত কবৈত ছলাহ। মিথিলাক্ষবক সংবক্ষণক লেল প্রশিক্ষণ অভিযান চলৌলে ছলাহ। ওহিনা জখন মৈথিল মহাসভামে বা ওকব বাহব সমুদ্র যাত্রা পব ঘর্মথন হোএত ছল তঁ এহি বিষযক নিবন্ধ লেখন প্রতিযোগিতা আযোজিত কবাওল। এহি সম্বন্ধমে পণ্ডিত জানকীনাথ ঝা, ব্যাকবণতীর্থক নামসঁ এক নিবেদন মিথিলামোদ, উদ্গাব – 61, শাকে 1833, সন 1319 সালমে প্রকাশিত অছি। নিবেদন অছি – 50 টাকা প্বস্কাব শ্রীমান বজৌবাধীশসঁ

– আধুনিক কালমে মৈথিল ব্রাহ্মণকে ँ উন্নত্যর্থ বিলায়ত জাএবাঁ অনুচিত – এতদ্বিষযমে মিথিলা ভাষা মধ্য জে মৈথিল ব্রাহ্মণ বিদ্বজ্জন প্রমাণ সহিত সর্বোত্তম লেখ লিখতাহ, তনিকা 50 টাকা মূল্যক পদক (মেডল) দেল জৈতন্হি।' লেখ 15 দিসম্বর 1911 ঈ. সঁ পূর্ব নিবেদককে ँপঠা দেবাঁক অনুরোধ অছি। সমুদ্র যাত্রাক পক্ষ–বিপক্ষমে মিথিলামোদ(1911ঈ.) মে অনেক লেখ প্রকাশিত ভেলৈত অছি। সম্ভব থিক জে ওহী প্রতিযোগিতা হেতু লিখল গেল হো। সমাজ স্বধাবক সংগ মাতৃভাষা মৈথিলীক বিকাসক প্রতি বাজা সাহবাঁ কতেক সাকাংক্ষ ছলাহ, সে এহি নিবন্ধ প্রতিযোগিতাক আযোজনসঁ স্পষ্ট হোগত অছি। সমস্যাপূর্তি প্রতিযোগিতা তঁ হোগত ছল, মুদা মৈথিলীমে নিবন্ধ লেখন প্রতিযোগিতাক আযোজন প্রায়ঃ সর্বপ্রথম বাজা টেকনাথ চৌধবী, সএহ আবম্ভ কবাওল। বাজা টেকনাথ চৌধবী মহাবাজ বমেশ্বব সিংহক প্রিযপাত্র ছলাহ। ও সময–সময পব মিথিলা, মৈথিল এবং জমীনদাবীক সমস্যাপব বিচাব কবৈত বহৈত ছলাহ। ও জখন কোনো গম্ভীব সমস্যাক সমাধানক লেল গবর্নব বা বাযসবাযসঁ ভেংটে কববাঁক হেতু জাগত ছলাহ, তঁ বাজা টেকনাথ চৌধবী
হুনক সংগমে বহৈত ছলথিন। আব জখন হুনক দেহাবসান ভেললি তঁ মহাবাজ বমেশ্বব সিংহ বাজা টেকনাথ চৌধবীকে ँ Mouthpicee of North Bengal কহি অপন শোক সংবেদনা ব্যক্ত কএল। এহন মাতৃভাষা অনুবাগী বাজা টেকনাথ চৌধবীক, মাত্রা 44 বর্ষক অবস্থামে জেঠ পূর্ণিমা ববি, প্রাতঃ কাল 3 জূন 1928 কেঁ দেহান্ত ভএ

गेलनि। राजा साहेबक रोग आ देहावसानक प्रसंग मिथिला मिहिर, लिखैत अछि – 'बहुमूत्र रोग से ग्रस्त रहने पर भी स्वास्थ्य, सबल और प्रभावशाली जान पड़ते थे। मृत्यु से कुछ दिन पहले इसी के उपसर्ग से कुछ अस्वस्थ हो गये, जिसके निवारणार्थ दिनाजपुर में 'इन्जेक्शन' कराये। काल बली था, बुरा होने वाला था; इन्जेक्शन से फायदा नहीं पहुँचा, इनके बाँह फूल गया, चित्त विकल हुआ, दिनाजपुर से कलकत्ता आये, बड़े–बड़े डाक्टरों ने देखा, दवा की; परन्तु निष्ठुर काल के आगे किसका चलता है, इसका दवा कौन कर सकता है? गत रविवार ता. 3 जून, 1928 ई. को भोर में दुखी परिवारों को रोते हुये छोड़ कर इस संसार से सदा के लिये चल बसे!'
राजा साहेब पुत्रा नबालिग छलथिन। परिणामतः फेर हुनक जमीनदारी कोर्टस आफ वार्डक अन्तर्गत चल गेल। मैथिलक एक केन्द्र समाप्त भऽ गेलैक। एहि प्रसंग रुद्रनाथ चौधरी लिखने छथि – With his passing away hundreds of relations, employees and dependents became unsettled, and the Estate being taken over by the court of wards, they all went away to other places or their home. The family shifted to Calcutta for the education of the children.
बंगलादेश निर्माणक बाद बनल सौहार्दपूर्ण वातावरणमे बजौरक एक विश्वासपात्र दुर्गागंज आबि राजा साहेबक पुत्र (देहावसान 2004 ई.)सँ घूमि चलबाक अनुरोध

কএনে ছননি জে বঁগবঁহ্ম ম্জিব্‌ব বহমানক হনাক উঁপবান্ত ভাবত রিবোধী রাতারবণমে রিনীন ভএ গেন। বাজা সাহেবঁক প্বত্রবঁধ্‌ জে হ্নক নরজাত পৌত্র (প্রা. জী.এন. চৌধবী, পূর্ব খধ্যক্ষ, স্নাতকোত্তব সমাজশাস্ত্রা রিভাগ, ন.না.মি.রি.রি. দবভঁগা) কে ঁ খপন খাঁচবমে ন্বকাকে ঁ পড়াএন ছনীহ, খপন খাঁখিমে মৈথিনী ভাষা–সাহিত্য এরং সংস্কৃতিক প্রভাবশানী কেন্দ্রক উঁকর্ষ খা ত্রাসদীক চিত্রকে ঁ খাঁখিমে জীরন ভবি (দেহারসান 2009 ঙ.) জোগৌনে বহনীহ। এহি সংগ বাজা সাহেবঁক পবিরাবক ভাবামেক সূত্রা বামগঞ্জসঁ ভঙ্গ ভএ গেনৈক। জেনা রুদ্রনাথ চৌধবী নিখন খছি জে বাজা সাহবঁক দেহারসানক বাঁদ কতেকো মৈথিন পবিরাব খাশ্রেয রিহীন ভএ গাম রা খন্যত্র চন গেনাহ, ওহিমে কাশীনাথ ঝা রা কাঁচীনাথ ঝা ‘কিবণে’ ঠাঁ নহি ছনাহ, কোগনখ গ্রামরাসী পল্ডিত গোরর্দ্ধন ঝা, প্রসিদ্ধ গোনূ বাঁবূ সেহো ছনাহ। গোনূ বাঁবূ প্বত্র শ্রী স্বধীব ক্মাব ঝা, খাগ.পী.এস. (সেরানিরৃত্ত) জখন 2006 ঙ. মে খপন পিতাক খাশ্রেয স্থনক খন্বেষণমে বামগঞ্জ বঁগ্লাদেশ খপন প্বত্রক সংগ পহুঁচনাহ তঁ ওতয মন্দিব দেখন। হ্নক কনমবাঁগ দেখন। খেত–পথাব দেখন, জাহি পব হ্নক মৈনেজবক সন্তানক গৌব–কানূনী খধিকাব ছৈক। খা রিনা কেরাঁব–খিড়কীক ঠাঢ় নূটাএন এরং খল্ডহব বঁনন বাজা সাহবঁক মহন দেখন। বাজা সাহবঁক ন্বটাএন এরং খল্ডহব ভেন মহন প্রত্যেক খন্ববাগীকে ঁ মৈথিনী ভাষা সাহিত্যক রিকাস–গাথা ঠোহি পাবি কহৈত বহৈত খছি। বাজা সাহবঁক দেহরসান পব শোক ব্যক্ত কবৈত মিথিনা মিহিব নিখৈত খছি – ‘খাঁখে ভব খাতী হৈ, কনেজা ফটা জাতা হৈ, নেখনী থর্বা বহী হৈ। ন বোযে রিনা

কহলেজা হল্কা নহী হোতা, ওসনিযে মেরা লিখনা রোনা সমঝিযে। কাল! তূঁ সচমুচ কাল হী নহী, ধ্রুব ঔর নিষ্ঠুর ভী হো। অভী পণ্ডিত বাধাপ্রসাদ ঝা কী মৃত্যু শোক জরা ভী মলিন হোনে নহী পাযা থা কি হমারে সমাজ গগন কে জ্বলন্ত নক্ষত্র রাজা টৈকনাথ চৌধরী বী.এ. কো উঁঠা লে গযা।' কিন্তু আধুনিক মৈথিলী ভাষা সাহিত্য রহত এবং বিশ্ববিদ্যালযমে মৈথিলীক প্রবেশক সন্দর্ভ জখন-জখন আওত, রাজা টৈকনাথ চৌধরীক নাম পহিল শ্রেণীক মাতৃভাষা অনুরাগীক রূপমে আদরক সংগ স্মরণ কএল জাওত রহত।

সগর রাতি দীপ জরয মিথিলাক গ্রামাঁচল মে

রহ্ত দিনক বাদ মিথিলাক গ্রামাঁচল মে সগর রাতি দীপ জরযক আযোজন ভেল অছি। ওনা এহিসঁ পূর্ব হটৈনী (19.05.2001) আ ওহুসঁ পহিনে ঘোঘরডীহা (22.10.1994) আ' ডযৌঢ ়(29.04.1990)মে

আযোজিত ভেল ছল। শহরে শহরে রৌআএ সগর রাতি গাম দিস এক রেব আএল অছি। এহি লেলডা. অযোক ক্ষমাব ঝা 'অরিচন'ধন্যরাদক পাত্র তঁ ছথিহে। হ্নক গোঁআঁ লোকলি সেহো ওহিলা ধন্যরাদক পাত্র ছথি। ঝজথক্ষবপ্পবসঁ বহ্আ–সংগ্রাম ধবিক সগব বাতিক যাত্রামে কতেকো রেব নিবাশাজলক স্থিতি আএল। কতেকো গোষ্টয এহি বতিজগ্গাপিকলীককে রন্দ কবরাক পবামর্শ দেল, ঝদা কাঠমাল্ডূসঁ কোলকাতা, রিবাটলগবসঁ রলাবস জলকপ্পবসঁ বাঁচী, দেরঘবসঁ পূর্লিযাঁ, স্বপৌলসঁ জমশেদপ্পব ধবি সগব বাতিক দীপ জবৈত বহল। লর লর কথাকাব অপল লরলর কথাক সংগ অপলাকেঁ জোডৈত গেলাহ। রিভিন্ন স্থালক মাতৃভাষা অনুবাগীক স্নেহ আ সহযোগ একবা ভেটৈত গেলৈক। সগব বাতিক দীপ অরাধিত কপে জবৈত বখরা লেল ও ওলোকলি ষৈমী রাতীক ওবিআওল স্বকচিপূর্রক কবৈত বহলাহ। জে সরএকবা অজগূ ত রুলৈত ছলাহ, সহটি লগ আরি অপলে আ ঁখিএ দেখল, রিশ্বাস ভেললি। সগব বাতি দীপ জবয কোল পৃষ্ঠভূমিমে আ প্রযোজলরশ শ্বক ভেল ছল, আযোজল হেতু কোল কোল শর্ত আরশ্যক ছলৈক, তকবা স্পষ্ঠ কবরাক হেতু হম প্রথম তীল সংযোজক দ্বাবা প্রেষিত আমংত্রণ পত্রক সাবাংশ প্রস্তুত কবর। সগব বাতি দীপ জবযক অরধাবণাক জন্ম কিবণ জযন্তীক অরসব পব 01 দিসম্বব,1989কে ঁ লোহলামে সাহিত্যকাব লোকলিক রীচ ভেল। ঝদা সাকাব ভেল প্রভাস ক্ষমাব চৈধবীক মাধ্যমসঁ। ওহি অরধাবণা কেঁ সাকাবকবরাক উদ্দেশ্যসঁ প্রভাস ক্ষমাব চৈধবী সাহিত্যকাব লোকলিকেঁ আমন্ত্রিত কবৈত ছও জলরবী 1990ক পত্র দ্বাবা অনুবোধ কএলে ছলাহ–আদবণীয, অপলে কেঁ রিদিত

होएत जे किरण जयन्तीक अवसरपर लोकनामे एकत्रित साहित्यकार लोकनि निर्णय लेलनि जे पंजाबी साहित्यकार लोकनि द्वारा आयोजित 'दीवा जले सारी रात' जकाँ भरि राति कथा पाठक आयोजन घूमि-घूमि कए विभिन्न स्थान पर साहित्यकार लोकनिकआवास पर होअय। पहिल आयोजन 24 दिसम्बर,1989 के ँ कटिहारमेअशोकक डेरा पर राखल गेल छल जेस्थगित भए गेल एक दुखद घटनाक कारणेँ। आगू ओ लिखैत छथि-हमरा पत्र द्वारा ई समाचार भेटल आ एहिआयोजनक प्रारम्भ मुजफ्फरपुरमे करबाक आग्रह सेहो। हम एहि निर्णयकस्वागत करैत दिन राति कथा पाठ आ परिचर्चाक अनुष्ठानक आयोजन 21 जनवरी 1990, रविदिन राखल अछि। सादर आमंत्रित छी। अपनेक उपस्थितियेपर आयोजनक सफलता निर्भर अछि। अपने 21 तारीखकेँ भोरे दस बजे पहुँचि जाए हमर कार्यालय जकर पाछाँ हमर निवास सेहो अछि। ई स्थान मुजफ्फरपुरक प्रसिद्ध देवी स्थानक सामने अछि। कोनो तरहकअसुविधा नहि होएत। 21 तारीखके ँ दिनका भोजनोपरान्त कार्यक्रम शुरु होएत, जे प्रातधरि चलत। कथापाठ (नव लिखल कथा) ओ ओहिपर विशेष चर्चा होएत। अपन अएबाक सूचना पत्र द्वारा पहिनहि दए दी तँ विशेष सुविधा रहत। अगिला कार्यक्रमक स्थान आ तिथिक निर्णय एही ठाम कार्यक्रममे लेल जाएत। डेओढ, कटिहार, दरभंगा,पटना आ जनकपुरमे कार्यक्रम करबाक विचार अछि। अहाँक आगमनक प्रतीक्षा मे"- प्रभास कुमार चौधरी।

एही प्रकारेँ सगर रातिक अवधारणाकेँ प्रभास कुमार

চৌধবী সাকাব কএন। হ্নক পনী জ্যাসেনা চৌধবী কবতের্ঁতাক খাঁগনক গৃহপনী জকাখাগত সাহিত্কাবক স্বাগত কবৈত ভবি বাতি চৈমী উঁসকবৈঁত বহনীহ। পতি দ্বাবা খাযোজিত সাহিত্িক কার্যক্রমমে পনী দ্বাবা ভবি বাতি চৈমী উঁসকাএর্ঁ খা খতিথিক স্বাগতমে তপেব বহর্ঁাক দোসব খা সেহো দূ রেঁব উঁদাহবণ প্রস্তুত কএননি খছি কাঠমাল্ডূক দূনূ খাযোজনমে শ্রীমতী রুপা ধীরু। পহিল সগব বাতিক খাযোজনমে বমেশ (থাক), শিরশংকব শ্রীনিরাস (রঁসাত মে রঁহৈত নোক),রিভূতি খানন্দ (খন্যপ্রকুষ), খশোক (পিশাচ),সিযাবাম ঝা 'সবস' (ওহিসাঁঝক নাম), প্রভাস ক্মাব চৌধবী (খূনী) বরীন্দ্র চৌধবী, খাদি কথা পঠন। ডা.নন্দকিশোব হিন্দী কথাক পাঠ কএনে ছনাহ। খধ্যক্ষতা কএন বমানন্দ রেণ্ব। কথাকাব নোকনিক খতিবিঞ্জ কথাচর্চামে ভাগ নেননি জীরকান্ত, ভীমনাথ ঝা, মোহন ভাবদ্বাজ, ডা. বমানন্দ ঝা 'বমণ'। পঠিত কথাপব চর্চাকি উঁপবান্ত ডা.বমণ খপন কথা রিষযক খানেখ শৈনেন্দ্র খানন্দক কথা যাত্রাক পাঠ কএন। সাহিত্কাবকস্বাভিমানক বক্ষাক হেত্ত চর্চাকি ক্রমমে নির্ণয ভেন জেসমাদ পব সগব বাতিক খাযোজনক ভাব নের্ঁাক খন্নবোধ স্বীকাব নহি কএনজাএত। খামংত্রিত কএনিহাব নেন স্বযং উঁপস্থিত ভএ সহভাগী রঁনর্ঁ খারশ্যককএ দেন গেন। একব নির্বাহি খত্যারধি ভএ বহন খছি। এক শৈঙ্কমে কহি সকৈত ছী, গএহ শৈর্ত সগব বাতিক প্রাণ খিকৈক। জীরকান্তক খন্নবোধ পব

দোসব সগব বাতি ডেওঢমে তীন মাসক রাঁদ কবর্ঁাক নির্ণয ভেন। এহিঠাম হম দোসব (ডেওঢ) খা তেসব (দবভংগা)ক সংযোজক দ্বাবাপ্রেষিত পত্রক খংশ প্রস্তুত

কবয়ঁ জাহিসঁ সগব বাতিক নক্ষ্য তঁ স্পষ্ঠ, হোএবেঁ কবত পত্র লিখবাঁক ক্রম কোন স্থিতিমে সম্প্রতি অছি, সেহো বুঁঝা জাএত। ডেওঢ আযোজনক সংযোজক জীরকান্ত লিখৈত ছথি–মৈথিলী ভাষাককথাকাব লোকনি একঠাম বৈঁসথি অপন নর বচনা পঢথি আ ওহি পব টীকাবিশ্লেষণ কবথি কথাক গতি দেবাঁমে সামূহিক প্রযন্ত কবথি। এহি উদ্দেশ্যসঁকথা বৈনীক আযোজন ডেওঢমে কএন জাগছ–সৃজনামেক উপনৰ্দ্ধি নেন একবা স্মবণীয বনেবাঁ মে অপন যোগদান কবী। দোসব আযোজনমে প্রা.বমাকান্ত মিশ্র, কীর্তিনাবাযণ মিশ্র, ডাতাবানন্দ রিযোগী, নরীন চৈধবী আদি সংগ ভএ গেনাহ। ডা.ভীমনাথ ঝা আ প্রদীপ মৈথিলীপুত্র দূনূ গোটৈ সংযুক্তরূপেঁ আযোজনক ভাব নেন জে শ্রী রিজযকান্ত ঠাকুবক সৌজন্যসঁ চিনগী মংচ দ্বাবা দবভংগামে সম্পন্ন ভএ সকন। তেসব সগব বাতিক সংযোজক ডা.ভীমনাথ ঝা লিখৈত ছথি–পত্র পত্রিকাক এহি সংক্রান্তি কানমে সাহিত্যমে সংবাদহীনতাক স্থিতি আবি গেনঅছি, কথাক স্থিতি তঁ আব দযনীয। স্পষ্ঠতঃ কথা নেখনমে গতিবোধ দেখনজা বহন অছি। একবে দূব কববাঁক গছুক কিছু যুবা সাহিত্যকর্মী কথা সংবাদ নেন গোষ্ঠীক আযোজনক নির্ণয নেননি। দবভংগাক আযেজনমে একটা নর অধ্যায লিখাএন। সে থিক এহি অবসব পব পোথীক নোকার্পণ। সগব বাতিক অবসব পব নোকার্পিত পোথীক নামারনী রিরবণ মে দেন গেন অছি। তথাপি ওা উল্লেখনীয অছি জে এহিঅবসব পব নোকার্পিত হোঅএ বনা পহিন পোথী থিক পল্ডিত শ্রী গোরিন্দ ঝাক কথা সংগ্রহ সামাক পৌতী। প্রভাস কুমাব চৈধবী, জীরকান্ত আ ভীমনাথ ঝাক পত্রসঁ সগব বাতিক আযোজনক, নক্ষ্য

ঋা কোন পবিস্থিতিমে সগব বাতি দীপ জবয সনকার্যক্রম শ্বৰূ ভেন ছন, স্পষ্ঠ ঋছি। সগব বাতিক নিযমক ঋন্বসাবদবভঁগাক ঋাযোজনমে চাবিম সগব বাতি তীন মাসক বাঁদ জনকপ্বমে ডা ধীবেন্দ্রক ঋন্ববোধ পব ঋাযোজিত কববাঁক নির্ণয ভেন। ক্ষদা কোনো কাবণরশঋাযোজনমে রিনম্ব হোগত দেখি পল্ডিত দমনকান্ত ঝাক পটনা ঋারাস পব পল্ডিত শ্রীগোরিন্দ ঝাক সংযোজকত্বমে চাবিম ঋাযোজন ভেন। প্রসিদ্ধ কথাকাব উঁপেন্দ্রনাথ ঝা 'ব্যাস' ঋধ্যক্ষতা কএন ঋা কথা পাঠ কএন। নিশা ভাগ বাতিমে ব্যাসজী ঋধ্যক্ষতাক ভাব বাজমোহন ঝাকেঁ সৌপি দেনে ছনাহ। প্রদীপ রিহাবী পহিন রেব এহীঠাম সম্মিনিত ভএ ঋগিনা ঋাযোজন রেগূসবাযমে কববাঁক ভাব নএ নেননি। দমন রাঁবূ ঋা ব্যাসজী নহি ছথি। দূনূ গোটে মোন পড়ি বহন ছথি। প্রভাস ক্ষমাব চৈধবীক ঋন্তিম সহভাগিতা রেগূসবাযমে সম্পন্ন উঁনতীসম সগব বাতিমে ছন। ডা. ধীবেন্দ্র ঋন্তিম রেব রিণ্ঠা মে কথা পঢ়নে ছনাহ। রনাবসমে সগব বাতিক উঁদঘাটন কএনে ছনাহ হিন্দীক প্রখ্যাত সাহিত্কাব ঠাক্কব প্রসাদ সিংহ। এহিঠাম হমব ঋাঁখিক সমক্ষ হ্নকা নোকনিক স্মৃতি সাকাব ভএ গেন ঋছি। ওনা মজফ্ফবপ্ববসঁ প্রভাস ক্ষমাব চৈধবীক সংশৈজকত্বমে সগব বাতিক যাত্রা ঋাবম্ভ ভেন ছন। ক্ষদা কেন্দ্র বহন পটনে। পটনামে সাত খেপ সগব বাতি ঋযোজিত ভেন ঋছি। সগব বাতিক যাত্রাক রিস্তৃত বর্ণন ঋা খল্ড খল্ডমে রিশ্লেষণ প্রস্তুত ঋছি। ওকব সংক্ষিপ্ত উঁল্লেখ প্রস্তুত ঋছি।

কটিহাব সগব বাতিমে নরানীমে ঋাযোজনক নির্ণয ভেন ছন। সংযোজক মোহন ভাবদ্বাজ প্রা. স্ববেশ্বব

ঝাকেঁকথাকাব ৰূপমে প্রস্তুত কএন। ওতয শ্যামানন্দচৌধবী আ ঝাংঝাবপ্রবক তাকোনীন ডী.এস.পী. সবদাব মনমোহন সিংহ সম্মিনিত ভেনাহ। ও ৰবোৰবি সম্মিনিত হোগত বহনাহ। পংজাৰক কনমকেঁ মিথিনাক ফূনবাঁড় ামে চতবন দেখি প্রফ্দিত হোগত ছনাহ। স্ববেশ্বব ঝা ডাবাম ৰাবূঁক সৌজন্যসঁ সকবীমে আযোজন কএন। সকবীমে এ.সী.দীপক অএনাহ। নেহবামে আযোজন ভেন। নেহবামে মন্ত্রেশ্বব ঝা সম্মিনিত ভেনাহ। রিবাটনগবসঁ জীতেন্দ্র জীত অএনাহ। নেহবামে সগব বাতিক অবসবপব পঠিত কথাক এক প্রতিনিধি সংগ্রহ প্রকাশিত কববাঁক নির্ণয ভেন। ডা.তাবানন্দ রিযোগী এবং বমেশ সহর্ষ দাযিত্ব গ্রহণ কএন। কথা সংগ্রহ শ্বেত পত্র প্রকাশিত ভেন। শ্বেত পত্রমে পৈটঘাট ধবি পঠিত কথাসঁ বীছন কথা সংগৃহীত অছি। সগব বাতি দীপ জবয কার্যক্রমকেঁজীতেন্দ্র জীত নেহবাসঁ রিবাটনগব,নেপান পহুঁচাওন। রিবাটনগবসঁ ৰনাবস আ ৰনাবসসঁ পটনা। পটনামে ৰুদ্ধিনাথ ঝা, অর্ধনাবীশ্বব, বা.না.স্বধাকব কেদাব কানন, অববিন্দ ঠাকুব সংগ ভেনাহ ত ঁ সগব বাতি স্বপৌন পহুঁচি গেন। স্বপৌনসঁ ৰোকাবো,ওতযসঁ পৈটঘাট আ পৈটঘাটসঁ বমেশ বংজন জনকপ্রবধাম নএ গেনাহ। জনকপ্রবধামসঁ গসহপ্রব। গসহপ্রবসঁ শ্যামানন্দ চৌধবী ঝাংঝাবপ্রব আনন। ওতযসঁ ঘোঘবডীহা, ৰহেবো স্বপৌন আ ফেব স্বপৌন সঁ ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষি কাঠমাণ্ডূ নএ গেনাহ। কাঠমাণ্ডূসঁ বামনাবাযণ দেব বাজবিবাজ আ ওতযসঁ কোনকাতামে প্রভাস কুমাব চৌধবী সগব বাতিক বজত জযন্তী আযোজিত কএন। কহবাঁক তাপের্য জে নব-নব নোকক অবৈত বহনাসঁ সগব বাতিক আযোজন

ৰঢৈত গেল । কিন্তু জতয কতহু অগ্রিম প্রস্তারক সংকষ্ট হোগত ছলৈক প্রভাস জী আ ফেব কমনেশ জী ঠাঢ় ছলাহ। কিছু আযোজকক অনুবোধ ৰবোৰবি অশোকজীক পাকেষ্টমে পেঁডিংগ বহৈত ছলনি। ৰেঁগূসবাযসঁ শ্যাম দবিহবে সংগ ভেলাহ অছি। ওহো কৌখন আ কতহু আযোজন লেল তপেব ছথি। জেনা জেনা কিছু লোক সংগ হোগত গেলাহ অছি, ওহিনা কিছু গোষ্টৈঅপনাকেঁ অসম্বদ্ধ সেহো কবৈত গেলাহ অছি। একব মুখ্যতঃ তীনি টা কাবণ অছি–

1.অস্বাস্থ্য,

2.পঠিত কথাক প্রতিক্রিয়া পব খৌঝা কএ অসংগত প্রহাব, আ'

3.প্রতিক্রিয়া সূনি হতোসোহিত হোএব, এবং

4.কার্যনিযীন ব্যস্ততা।

এহি বীচ নিযমিত এবং সক্রিয ৰূপসঁ সহভাগী ৰনৈত কতেকো সাহিত্যকাব অস্বাস্থ্য অথবা রার্ধক্যক কাবণেঁ আৰ সম্মিমনিত নহি ভএ পাবি বহল ছথি। জাহি মে প্রমুখ ছথি পণ্ডিত শ্রী গোবিন্দ ঝা, বমানন্দ বেণু, সোমদেব, জীবকান্ত, মোহন ভাবদ্বাজ আদি। পঠিত কথা পব অপন স্পষ্ট মংতব্যসঁ চর্চাকেঁ জীবন্ত ৰনৌনিহাব প্রা. বমাকান্ত মিশ্র কথাকাব শিবশংকব শ্রীনিরাসক প্রতিক্রিয়াসঁ আহত ভেলা পব সকবীক বাঁদ অপনাকেঁ পূর্ণতঃ সমেটি লেলনি। রিবিধা পব সাহিত্য অকাদমীক প্ববস্কাবক রিবোধমে কেদাব কাননক নেতৃত্বমে কনমন স্বপৌনক সাহিত্যকাবক প্রতিক্রিয়াক কাবণেঁ ডা.ভীমনাথ ঝা জাএব ছোড়ি দেলনি। জে প্রভাস জীক মনৌঅনি পব পণ্ডিত গোবিন্দ ঝাক গাম গসহপ্পব জএবাক লেল তৈআব ভেল ছলাহ। তকব বাঁদ কমে ঠাম গেলাহ অছি। শ্বেতপত্র

मे अपन कपचन कथासँ आहत जीतेन्द्र जीत अपन बाँटे काटि लेलनि। किछु गोटे एहि आशाक संग संरक्षक भेल छलाह जे लोक प्रशंसाक महल ठाठ कए देत, तकर पूर्ति नहि भेला पर उँसाह कमि गेलनि। किछु गोटेके मास्टरी नर आगन्तुक लेल आतंककारी एवं अन्तपोदक भऽ गेल अछि। सगर रातिक प्राण थिक अप्रकाशित आ अपठित कथाक पाठ। ओहि पर श्रोता अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि। ई प्रतिक्रिया तात्कालिक होएबाक तेँ सम्भव बहैत छैक जे पुनः स्वनना वा पढ़ना पर भिन्न प्रतिक्रिया हो। एहि सक्रियताक तीन प्रकारक सकारात्मक प्रभाव अछि–

1.रचनामेक सक्रियतामे वृद्धि,

2.कथाक शिल्पमे स्वभावक अवसर आ'

3.व्यक्तित्वमे सहनशीलताक गुण बढ़ेबाक अवसर।

पहिल सगर रातिमे प्रायः आठ टा कथाक पाठ भेल छल। कथाकसंख्या क्रमशः बढ़ैत गेल। सबसँ बेसी कथाकारक सहभगिता मधिषीमे भेल छल। एहि बीच जतेक कथा संग्रह छपल अछि, अधिकांश कथा सगर रातिक अवसर पर पठित आ चर्चित अछि। वयोवृद्ध साहित्यकार श्यामानन्द ठाकुर बहेरामे संग भेलाह। ओहिठामसँ संग छथि। हुनक सक्रियताक अनुमान एहीसँकए सकैत छी जे ओ प्रत्येक आयोजन लेल दू टा कथा लिखैत छथि।

एमहर आबि पठित कथाक चर्चाक स्वरूप बदलि गेल अछि। पहिने पठित कथाधरि अपन प्रतिक्रिया सीमित राखल जाएत छल। सम्प्रति आब व्यक्त विचारकेँ कटैबा पर विशेष ध्यान रहैत अछि। एहिसँ पक्ष विपक्षक स्थिति बनि जाइछ। कतेकोठाम अप्रीतिकर स्थिति उँपेन्न

ভএ গেন খছি । চচর্রিহকয নহি এহি নেন প্রভাসজী পূর্ণ সতর্ক বহৈত ছনাহ । হ্নক খভার খূরঁ খঠকৈত বহৈত খছি । করি সম্মেনন মনোবংজনক হেতু খাযোজিত হোখয নাগন খছি । বচনামেক স্পর্ধা খথরা সক্রিযতাক মহত্ব গাণ ছক । তেঁ করি নোকনি গওনে গীত গরৈত ছথি । হ্নদা সগব বাতিক খরসব পব খপ্রকাশিত এরংখপঠিত কথা পঠরাঁক রাধ্যতাক কাবর্ণেঁ বচনামেক সক্রিযতা রঁঠন খছি ।

এক রেঁব র‍্যাসজী গোরিন্দ রাঁবূকেঁ পবামর্শ দৈত কহনে ছনথিন্হ জে ধূমি ঘূমি ভবি বাতি জাগরঁ খহাঁক স্বাস্থ্য নেন ঠীক নহি খছি । গোরিন্দ রাঁবূক উঁত্তব ছন জে হমবা এহিসঁ উঁর্জা প্রাপ্ত হোগত খছি । খাঁকড়া কহৈত খছি ও সরঁসঁ রেঁসী ভবি বাতি ওএহ রৈঁসনাহ খছি তথা সরঁসঁ রেঁসী হ্নকে র‍্যক্তিগতপোথীক নোকার্পণ এহি খরধিমে ভেন খছি । ওা থিক সগব বাতিক বচনামেক প্রভার । বচনাকাবকেঁ উঁর্জস্বিত বখরাঁক মহান খরসব । করি সম্মেননমে খাযোজককেঁ রিদাগক র‍্যরস্থা কবয পড়ৈত ছনি । সগব বাতি এহি র‍্যাধিসঁ হ্নক্ত খছি । সহভাগী সন্নাবাযণক পূজাক হকাবজকাঁ খরৈত ছথি খা ভোব হোগতে ঘূমি জাগত ছথি । এহিমে র‍্যারসাযিকতা নহি খছি, ওা মাতৃভাষা প্রেমক সন্দেশ দৈত খছি । সগব বাতিক খাযোজন রিভিন্ন স্থান পব ভেনাসঁ স্থানীয রিদ্বত সমাজ খাকর্ষিত হোগত ছথি । একব প্রভার ওহি স্থানক মৈথিনীক সক্রিযতা পব পড়ৈত খন্বভর কএন গেন খছি । সগব বাতি দীপ জবয সমানধর্মাকেঁ ভবি বাতি একঠাম বহরাঁক খরসব দৈত খছি । রিচাবক খাদন প্রদানক কেন্দ্ব স্বতঃ মৈথিনী ভাষা খা সাহিত্য ভএ জাগত খছি । এহিসঁ পবিচয খা খন্বভরক ক্ষেত্রক

রিস্তাব মোগছ। মৈথিলীক বচনাকাবমে ভাবামেক সংরক্ষতা ৰঠৈত খছি। সগব বাতি দীপ জবযক নিবন্তব খাযোজনসঁ মৈথিলী কথা নেখনক ক্ষেত্রমে শান্তিপূর্ণ ক্রান্তি খাবি গেন খছি। খান ভাষাভাষী খা সাহিকাবকবীচ মৈথিলীক কথাকাবক প্রতিগ্গা ৰঢ়ন খছি। রিশেষতঃ এহি হেত্ত জে মৈথিলীক কথাকাব দূব-দূবসঁ খপন পাগ খর্চ কএ পহুঁচৈত ছথি। কথা পঢৈত খা স্বনৈত ছথি। খপন কথা পব নোকক প্রতিক্রিযা ধৈর্যপূর্বক স্বনৈত ছথি। খা ফেব খগ্রিম খাযোজনমে সম্মিনিত হোএবাঁক সংকল্পক সংগ ঘূমি জাগত ছথি। জে সগব বাতি কথাকাব নেন কল্পিত ভেন ছন,সমাজক স্বধী সমাজক খন্তঃকবণ মে প্ররেশ কএ মৈথিনী ভাষা সাহিত্যক পক্ষমে খন্বকূন রাতারবণৰনেরাঁমে সার্থক ভূমিকাক নির্বাহ কএ বহন খছি। জহিখা সগব বাতি প্রাবম্ভ ভেন ছন খা এখন্বক জে স্থিতি খছি ওহি মে গ্বণামেক খা পবিমাণামেক দূনূ প্রকাবক পবিরর্তন স্পষ্ঠ খছি। রিকাসক ও দিশা খা গতি নিশ্চিতে শ্বভনক্ষণ থিক। এহি শ্বভ নক্ষণক উদাহবণ তঁ গএহ থিক জে দবভংগাক পহিন খাযোজনমে পহিনে পহিন দূ টা পোথীক নোকার্পণ ভেন ছন খা স্বর্ণ জযন্তীক খরসব পব 36 টা পোথী নোকার্পিত ভেন। রিদ্বাননোকনি কহি সকৈত ছথি কোন ভাষাক মঁচ পব একবেঁব 36 টা পোথীক নোকার্পণ ভেন খছি। দবভংগামে একটা খমেবিকন নাগবিক মৈথিনীমে কথাক পাঠ কএনে ছনাহ। সগব বাতি দীপ জবযক দৃষ্ঠিসঁ রোকবো উর্বব ছন, এস্হব খাবি বাঁচী, জমদেশপ্বব দেরঘব পূর্ণিযা খাদি স্থান মৈথিনী নেন জগবনা কএনক খছি,গহো শ্বভ নক্ষণ থিক। যদা, সগব বাতিক নোকপ্রিযতা খা রিনা

রব.রিদাগক সাহিত্যকাব এবং সাহিত্যানুবাগীক উঁপস্থিতিক উঁপযোগ কতত্ কতত্ কথা পাঠ এবং ওহি পব চর্চাসঁ ভিন্ন প্রযোজন সিদ্ধি নেন সেহো ভএ গেন খছি। জে সগব বাতিক মূন খরধাবণাক খনুকূন নহি খছি। ওহিসঁ বঁচবাঁক চাহী। সহবসামে দোসব খেপ সগব বাতিক খাযেজন 21 জুনাই, 2007 কেঁ ভেন ছন। সগব বাতি খাযোজনক এক প্রমুখ খাকর্ষণ খছি ভেঁটঘাঁট। ওহিসঁ বাঁহবক সাহিত্যকাব বঁচিত বহনাহ। উঁপস্থিতিক প্রসংগ সূনি জীরকান্ত জী 22 জুনাই, 2007ক খপন পোস্ট কার্ডিমে নিখননি খছি–

‘সহবসা কথা গোষ্ঠীক খবঁবি ভেন। কথা গোষ্ঠী ভূতকানক রস্তু ভেন। নেখন কাজ নেখক সভ ছোড়নে জাগত ছথি। সেমিনাব, তকব প্রচননবঁঢ়ন খছি। টী.এ./ডী.এ./ভেঁটঘাঁট ই সভ ভএ গেঁনু, জে নেখকীয ন তমখস্মিতাক খহংকাব পুষ্ঠ ভেন খা' এক দোসবাকেঁ বঁন দেন। সবকাবী মান্যতাক বাঁদ ভাষামে খনেক বাজবোগ উঁপেন্ন হোগত ছৈক। মৈথিনী নিবপরাদ রূপে পহিনেসঁ বেঁসী বোগাহি ভেন ছথি। জিবৈঁত বহও। ‘হমবা রিশ্বাস খছি সগব বাতিক নিযমিত খাযোজন মৈথিনীকে বাজবোগসঁ মুক্ত বখবাঁমে সফন হোএত। সাহিত্য খকাদেমী সঁ বর্ষ 2007 নেন পুবস্কৃত প্রহবী প্রদীপ রিহাবীক কথা সংগ্রহ সবোকাবক প্রাযঃ সমস্ত কথা সগব বাতি দীপ জবযক খরসব পব নোক স্বননে খছি। খা' ওহি পব খপন–খপন প্রতিক্রিযা ব্যক্ত কএনে খছি। সগব বাতিক ই পহিন উঁপনব্ধি থিকৈক। এহি উঁপনব্ধি পব মৈথিনী এহি শান্তি ক্রান্তিক এক প্রতিভাগীক রূপমে গর্র খনুভর কবৈত ছী খা'কামনা কবৈত ছী গতিহাস দোহবাগত বহয।

मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री
(01 एवं 02 मार्च, 2009, भागलपुर- राष्ट्रीय संगोष्ठी-मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा)

हमर प्रतिपाद्य अछि–मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री । राष्ट्रीय संगोष्ठीक विषयक मूल शीर्षकमे दू टा महत्वपूर्ण पद,मिथिलाक स्थान पर मिथिलांचल तथा समाजक स्थान पर दलित समाज अछि। मिथिला अथवा समाजसँ सम्पूर्णताक जे बोध होइत रहल अछि, से एहिसँ नहि होइत छैक। किन्तु ई दूनू शब्द सम्प्रति नव अर्थवत्ता प्राप्त कए लेलक अछि। ई अर्थवत्ता थिक निर्वाचनीय राजक हेतु मिथिलांचल एवं दलित समाजक नामक उदघोषपूर्वक प्रयोगक चालि । आब तँ दलितमे महा शब्द जोड़ि महादलितक उठौलक गप्प किछु राजनीतिक दल करय लागल अछि। वस्तुतः ई तोड़फोड़ एवं थिक। आ'' प्रायः एही हेतु दलितक पक्षधर नेतालोकनि महादलितक विरोध कए रहल छथि। किन्तु जे हो, एहिना जँ क्रम चलैत रहल तँ मिथिलांचलमे महादलित समाजक लोक गाथाक पर संगोष्ठी सेहो आवश्यक भए जाएत। ई लोकतन्त्रक युग थिक। लोकतन्त्रक स्वदृढ़ताक हेतु जाहि कोनो तत्वक सभसँ अधिक महत्व अछि, से थिक लोकशैक्षिक गरिमामय प्रतिष्ठापन। लोकशैक्षिक गरिमाक प्रतिष्ठापन लेल समाजक प्रत्येक सदस्यके अपन गौरवमयइतिहासक

पबिचय कबाएबँ थ्थारश्थक थ्थछि। संगठित नोकशंख्रिक उँदय थ्था' रिस्तावक ओहि पबिचयसँ सम्भारना रँढ़ि जाणत छैक। प्रतिफन होएत रिकासक बाँटक प्रशस्त होएबँ। रिकाससँ स्वथ समृद्धि थ्थरैत थ्थछि। नोकक कनान्त दुःथमल्डन पब स्वथ समृद्धिक कूली निबन्तब होणत बहैत छैक। स्वथ समृद्धिक निबन्तब कूलीसँ सन्ताषक हबितिमाक स्थायी रिस्ताब भए जाणत थ्थछि। जाणबण, संगठन, सामाजिक दायित्वरोँध थ्था' समन्वित बाष्ट्रीय दृष्टिक रिकासक थ्थनेक बाँट थ्थछि। ओहि बाँटमे प्रमुख थ्थछि, स्वर्णिम थ्थतीतक पबाक्रमी व्यक्तिक थ्थरदानक पबिचय द्वाबा नोकके उँत्प्रेबित कबबँ। मिथिनाक सांस्कृतिक एतिहास पबाक्रमी महापुबुषक गौबब गाथासँ पबिपूर्ण थ्थछि। गाथा पुबुषक रिषयमे जनबाँक थ्थनेक स्राेत थ्थछि। ओ स्राेत सभ निथित थ्था' थ्थनिथित दूनू थ्थछि। जे निथित थ्थछि पढ़न-निथन नोक तकबा पढ़ि पढ़ि सामाजिक रोँधसँ थ्थभिभूत होणत बहनाह थ्थछि थ्था' जे निथन नहि जा सकन, से नोक कंठहिक माध्यमे थ्थाण धबि स्वबक्षित बहि प्रेबणाक थ्थजस्र स्राेत प्रराहित कबैत थ्थारि बहन थ्थछि। एहिठाम चर्चाकि रिषय समाजक ओहने पबाक्रमी नोकक प्रेबणादायी व्यक्तित्व थ्थछि जनिकब गौबब गाथा थ्थनिथित बहन। एम्हब थ्थारि किछु तँ निपिरँद्ध भेन रा भए बहन थ्थछि। किछु काज थ्थसम्बँद्ध रण्मक नोक द्वाबा भेन थ्थछि तथा शिक्षाक
रिकासक उँपबान्त सम्बँद्ध रण्मक नोकह्क द्वाबा प्राबम्भ कएन गेन थ्थछि। ओहीमे सँ एक थ्थछि दीनाभद्री नोकगाथा। जकब पबाक्रमी नायक छथि भ्राहद्वय दीना थ्था' भद्री। डा. रीबेन्द्रनाथ झा (मैथिनी नोक महाकाव्यक थ्थानोचनामेक थ्थध्ययन,शोधप्रबँन्ध,1987, न.ना.मिथिना

रिश्वरिद्यानय ,थप्रकाशित) मैथिनीक जाहि नओ गोष्ठ नोकमहाकार्यक उँल्लख कएन थछि, ओहिमे थछि– 1.दीनाभद्री,2.द्नबादयान,3.नगका रॅनिजावा,4.रिह्ना,5.ऋगया बणपान, 6.नरहबि रूशेहबि,7.नोबिक,8.रिजयमन्न एरं 9.सनहेस। किन्तु एहिमे रिजयमन्न मैथिनीक नोकगाथा नहि थिक, ओ भोजप्वीक नोकगाथा थिक। एकव प्रकाशेन ज◌ॅर्ज थब्रॉहम ग्रियर्सन (ज◌ॅर्नन थाफ दि एसियाष्टिक सोसाइटी थाफ रॅगान, 1889–1889&Songs of Bijai Mal) कएने छथि। एकवा स्पष्ठ, कबैत डा. थाशा ग्प्त (जार्ज थब्रॉहम ग्रियर्सन ओव रिहावी भाषा साहिह, 1970)ट निखने छथि जे भौगोनिक दृष्ठिसँ थरश्य रिजै मनक कथा पटना–गयाक सीमापब स्थित दायाप्वब पावरती नामक स्थानसँ सम्पृक्त एरं तेनी जातिमे रॅह्प्रचनित कहन गेन थछि। उँपर्युक्त नोकगाथा सभमे मिथिनाक रिभिन्न जातिक उँपीड़न एरं ओहि उँपीड़नसँ त्राणकर्तािक पबाक्रमक जयघोष थछि। ओ नायक सभ पबाक्रमी जातीय नेताक ऋपमे मान्यता पारि स्मबणीय एरं पूज्य भए गेन छथि। ओ नोकगाथा सभ कहिथासँ थस्तित्वमे थछि, एकव बचना के कएननि, ह्नक कान की थिक, से सभटा तँ थज्ञात एरं थस्पष्ठ थछि, पबंच एहि नोक गाथा सभसँ ओ तथ्य थरश्य रूबिछागत थछि जे समाजमे रिषमता छनैक, शोषण था' उँपीड़नक उँजाहि निबन्तब उँठैत बहैत छन। रैयक्तिक भारना एरं मानरीय मून्यक महत्त्व छनैक। रॉह्रॅनक समक्ष थान सभ रॅन महत्त्वहीन भए जागत छन। था' ओही रॉचसँ एक जातीय रॉह्रॅनीक जन्म होगत छनैक जे थपन पबाक्रमक रॅन पब जातीय थस्मिताक थनादबकार्ता एरं

শোষক রক্ষক রিরোধমে তনি কএ ঠাঢ় ভএ জাগত ছনাহ। ও সভ খপন-খপন জাতিক প্রতিষ্ঠা খা' জাতীয ব্যরস্থাকে ँ খক্ষুণ্ণ বখরাঁক হেত্তু খাজীরন সক্রিয এরং সতর্ক বহৈত ছনাহ এরং জাতিক প্রতিষ্ঠা, উন্নতি এরং খরনতি খাদিক সভ ছাবভাব ওহী নেতা সভ পব নির্ভব ছনৈক। এহি প্রকাবক জাতীয ভারনাক রিকাস একপক্ষীয নহি ছন। জাতীয নেতা জেনা খপন জাতিক হিতচিন্তা সদিখন কবৈত বহৈত ছনাহ, ওহিনা হ্নক জাতিক সমস্ত সদস্য ওহি নেতাকে ँখপন উদ্ধাবক এরং সংবক্ষক মানৈত খাদব এরং সম্মানক পদ দৈত বহন। হ্নক শৌর্য এরং পবাক্রমকে ँ গারি-গারি প্রেবণা গ্রহণ কবৈত বহন। জে ँ কি একব সংক্রমণ মৌখিক হোগত ছনৈক, জাতীয নেতাক গৌবরগাথা, নোকগাথাক প্রতিষ্ঠা পারি গেন । জেনা কি নোকগাথাক রিষযরস্তুসঁ স্পষ্ঠ খছি, দীনাভদ্রীমে হ্মসহব, দ্নবা দযানমে গো ँঢ়ি , নগকা রঁনিজাবামে রৈশ্য, নোবিকমে খহীব, সনহেসমে দ্সাধ, রিহ্নামে রঁনিখাঁ জাতিক গৌবর গাথা খছি। খানহ্ নোকগাথামে জাতীয নাযকেক গাথা খছি। সভ নোকগাথাক রিষযরস্তু ँ জাতি খাধাবিত খছি। হ্মদা নরহবি হ্মশহবিকে ँ কোনো জাতিক জাতীয নোকগাথা মানবঁ উঁপযুক্ত নহি হোএত। তখন ঞ খরশ্য জে মনাহ জাতিক কংঠমে স্ববক্ষিত নরহবি হ্মশহবিক বচযিতা মনাহ জাতিক প্রতিভা সম্পন্ন কোনা ব্যক্তি খরশ্য ছন হোএতাহ। উঁপব জাহি নোক গাথাক নামোল্লেখ কএন খছি এরং জাহি-জাহি জাতিক নেতাক পবাক্রমক গাথা ও সভ থিক, সে জাতি সভ খাজুক নোকতন্ত্রক শাসন ব্যরস্থামে দনিত সমাজক খাখ্যা পারি গেন ছথি। দোসব জে রিন্দু এহি নোক গাথা সভক

सन्दर्भमे महत्वपूर्ण अछि, से थिक दैविक शैव्जिक स्थान परव लोकशैव्जिक प्रतिष्ठापन। एहि लोकगाथाक नायकक प्रेम पराक्रम, एवं शौर्यक उद्घोष अलौकिकताक संग भेल अछि। किछुमे देवत्वक प्रतिष्ठा सेहो भए गेल छैक। दुलरा दयालक मानसिंहक राजगद्दी प्राप्त करबाक कथा, विहुलाक द्वारा अपन पतिकेँ जिअएबाक कथा, लोरिक द्वारा हरबा रबरबाक पराजयक कथा तथा सलहेस एवं दौना मालिनक प्रेम कथामे अलौकिकताक अंश पर्याप्त अछि। देवत्व प्राप्त करबाक दृष्टिसँ सलहेस, दीनाभद्री आ'विहुलाक गाथा विशेष उल्लेखनीय अछि। दुसाध द्वारा सलहेस, मुसहर द्वारा दीनाभद्री एवं वनियाँ द्वारा विहुला लोकगाथाक नायककेँ देवत्व प्राप्त छनि। ध्यान देबाक थिक जे विहुलाकेँ छोड़ि समस्त लोकगाथा नायक प्रधान अछि। केवल विहुला लोकगाथा नायिका प्रधान छैक। एहि तीनू लोकगाथामे सलहेस एवं दीनाभद्रीक अपेक्षा विहुलाक क्षेत्र सीमित अछि। मुदा व्यापक क्षेत्र एवं उपलब्ध लोकगाथामे विशाल आकारक होइतो लोरिककेँ अहीर जातिमे देवत्व प्राप्त नहि छनि। मैथिलीक एहि लोकगाथा सभमे कतेको प्रकारक साम्य भेटैत अछि। ओ साम्य सभ थिक घटना साम्य, कथानक साम्य, नाम साम्य आ' लोक नायकक दृष्टि एवं पराक्रमकमे साम्य। कतेको लोकगाथामे सलहेस एवं राघेसरी छथि। दुनूमे पहिने विरोध आ' पछाति मेलसँ आततायीक विनाश होइत अछि। एकरा शैव(शैलेश) एवं शाक्त(राघेश्वरी@सिंहवाहिनी)क मतवादीक विवाद एवं वर्चस्वक सन्दर्भमे सेहो देखल जा सकैछ। साम्यक किछु उदाहरण प्रस्तुत अछि। दीनाभद्री जोरावर सिंहकेँ

পবাস্ত কএ চৈন হোগত খছি তঁ নোবিক হবরাঁ রঁবরাঁকে ঁ পবাজিত কএ। হিবযা তমোনিন খা' জিবিযা নোহাবিন জহিনা
দীনা ভদ্রীক পবকিযা নাযিকা থিক তহিনা নোবিকমে চনৈন খছি। ফোঁটবা নামক গীদব জেনা দীনাভদ্রীমে খপন কবামাত দেখরৈত খছি, ওহিনা নগকা রঁনিজাবামে তিনংগা রাঁছা। নোবিকমে জেনা সনিকা মনিকা ভাগিনক মদতি নেন জাগছ ওহিনা সনহেসমে কাবীকান্তক। খংকক সমানতা তঁ সভ নোকগাথামে ভেটৈত। বচনামেক স্তব পব স্বমিবন ও রঁন্দন সেহো প্রাযঃ সভ নোক গাথামে খছিএ। খাখিব দীনাভদ্রী নোকগাথামে এহন কোন রাঁত ছৈক জে এক প্রশতসঁ দোসব প্রশতমে খদৌকানসঁ সংক্রমিত হোগত খাগ ধবি নোকক কংঠমে স্ববক্ষিত খছি। কী ওা খাজ্‌ক বাজনীতিক শৈহ্বারনীমে এক দনিত জাতিক নাযকক গাথা থিক, তে ঁ ? কী ওা নোকগাথা হমবানোকনিক মাতৃভাষা মৈথিনীমে খছি, তে ঁ ? কী একব সংকনন এরং প্রকাশন জার্জ খব্রাহম গ্রিযর্সন সন রিশ্বরিশ্রুত রিদ্বান কএননি,তে ঁ ? হমবা জনৈত দীনাভদ্রী সন নোকগাথাক মহত্ত্ব এরং যুগ–যুগসঁ নোক কংঠমে স্ববক্ষিত বহি প্রেবণাক স্রাত রঁনন বহরাঁক মূন কাবণ থিক, এহি নোকগাথামে খন্বস্যূত ও জীরনমূন্য জে নোককে ঁ খন্যায, খন্যাচাব, শোষণ খাদি সামাজিক দুর্গুণ এরং রিকৃতিসঁ সংঘর্ষ কবরাঁক প্রেবণা দৈত খছি। এহিমে খভিব্যক্ত ও জীরনমূন্য জে নোকক স্বাভিমান এরং প্রতিষ্ঠা পব খাঘাতকর্তাকি খাচবণাক রিরুদ্ধ ঠাঢ় হোএরাঁক শক্তি খা' সাহসক স্রাত ভবৈত বহৈছ । এহিমে খভিব্যক্তি হো জীরনমূন্য জে ব্যক্তিগত নাভহানি, এরং স্বখ–স্বরিধাক নাগ এরং সামাজিক প্রতিষ্ঠা, খাদব

সম্মান হেতু সংঘর্ষক লেল লোককে ँ তৈআব কবৈত অছি। বৈদিক ঋষিক রচনক অনুসাব ওহি জীবন মূল্যক মহত্ত্ব ছৈক জে ব্যক্তিক লেল শবীব, গামক লেল ব্যক্তি, জনপদক লেল গাম এবং আমোক লেল পৃথ্বী ত্যাগ কববাঁক প্রেবণা দৈত হো। দীনাভদ্রী লোকগাথাক নাযক দীনাবাম আ' ভদ্রীক চবিত্র এহি লোকোপকাবিতাক এক সর্বোত্তম উদাহবণ থিক। দীনাভদ্রী লোকগাথাক নাযক দ্বযক লোককামী আচবণ এবং সংঘর্ষক কিছু উদাহবণ প্রস্তুত অছি। দীনাভদ্রী নির্ধন অছি, ভৌতিক স্বখ-স্ববিধা প্রাপ্ত নহি ছৈক। অপন বাঁহিঁক পব বিশ্বাস কএনিহাব দীনাভদ্রীমে স্বাভিমান কূটি-কূটি কএ ভবল অছি। জখন গামক শক্তিসম্পন্ন ব্যক্তি ধামী ঙা কহৈছ জে পবোপঞ্চাক আন-আন লোক ওকব খেতমে কাজ কবৈ গছি লেলক আ' ওহো দূনূ ভাগ ওকব জন ভএ খেতমে কাজ কবৌক তঁ দীনাভদ্রী সাহসপূর্বক এবং স্পষ্টতাক সংগ অস্বীকাব কবৈত কহি দৈত অছি-

করঁহ্ নঃ কৈন খ্রপী কোদাবক রৌনি,

কহিযো নঃ জানিঔ হো ধামী, পঁচা উধাব।

হবিন সূগব মাবি জোগিযা কৈন গুজবান। (পৃ.সং.637)

সমাজমে শোষণ ব্যাপ্ত ছলৈক। শোষক আ' অত্যাচাবীক নজবিমে গবীবঁক মান মর্যাদাক কোনো মোল নহি ছল। প্রভুত্ব সম্পন্ন লোক ককবো ঘব আঙনমে ঘূসি গবীবঁক বঁহ্ বেঁটীক মানমর্দন কএ সকৈত ছল। প্রাযঃ এহনহি সামাজিক স্থিতিমে কহবী বঁনি গেল হোএত, গবীবঁক বঁহ্ সবঁহক ভৌজী। দীনাভদ্রী ধামীক আতংককাবী ব্যবহাবপব আক্রোশ প্রকট কবৈত কহৈত অছি-

কৌন গব্ধ পবলৌঁ হো ধামী,

বঁড় ভোবে ছে ँকন দ্খাব

খপন ৰঁহ্ ৰেঁটীপ্ব বখনন্হি ঘব স্বতায
হমব ৰেঁটী প্বতহ্ দেখনন্হি নাঁগঠ উঁঘাব। (পৃ.সং.636)
ধামী, জে সমাজক প্রভুত্বশানী বস্মাক প্রতিনিধিত্ব কবৈত খছি, তকব নির্ভীক রিবোধ সমাজক এক দৰঁন হ্চন বস্মাক সদস্য দ্বাবা হোএৰঁ, এক মহত্ত্বপূর্ণ ঘটনা খিক এরং দীনাভদ্রীক চবিত্রক ঙা রিশে ষতা নৈসঙ্গিক এরং প্রেবণাদাযী গবিমা প্রাপ্ত কএ নেনক খছি। দীনাভদ্রী খপন যাত্রাক ক্রমমে তাহিব মিযাঁক হৰেঁনীক প্ভাবী কবৈত খছি। তাহিব মিযাঁ কেহন একরানী খা'খাতংকী ছন,জে ওকব নামেসঁ ধীযাপূতা সেহো ডবাগত ছনৈক।
ওসভ দীনাভদ্রী কে ঁ চেতৰৈত খছি–
বে ৰঁঠৈহিযা, তাহিব মিযাঁ গামক গ্বমস্তা ছৈক,
ওকব নাম কেও নে ৰাঁঠ ৰঁঠৈহী ধবৈত খছি। (পৃ.সং.650)
ওহী তাহিব মিযা ঁক নোকব ছী গ্বনামী জঠ। গ্বনামী জঠ খপন মানিকক সহ পব সমাজক নির্ৰন নোককে ঁ উঁপীড়ি ত কবৈত খছি। খপমানিত কবৈত খছি। নোককে ঁ খপমানিত কবৰাঁক খভ্যাসী গ্বনামী জঠ দীনাভদ্রীক খপমান সেহো কএ দৈত খছি। হ্দা তকব হন ও ত্তবস্তু পারি জাগত খছি। গ্বনামী জঠ দীনাভদ্রীক পবাক্রমক সমক্ষ ঠঠি নহি সকন, পবাজিত ভএ গেন। তেসব উঁদাহবণ খছি জোবাৰঁব সিংহ সন দ্ৰাচাবী, সমাজ রিবোধী এরং শোষকক প্রতিকাব এরং খন্ত কবৰঁ। এহি প্রসংগ ডা.জযকান্ত মিশ্রে রিস্তাবসঁ নিখন খছি।

(In the last chapter Gulami Jata helps them to conquer Jorabar Singh, a Rajput, who used to enjoy all new

brides first when he dares to attack the marriage march of the spirits of Dina and bhadri (The Folk Literature of Mithila)
एहिठाम देखबाक थिक जे दीनाभद्री समाजविरोधी, अत्याचारी आ' दुराचारीक विरोध एवं प्रतिकार कोना करैत अछि। तेसर बेर जखन कोइरा गीदर दीनारामकेँ पटकि हत्या कए दैत अछि आ' अलक्षित रूपेँ सलहेस भद्रीकेँ गाम घूमि जएबाक परामर्श दैत छथिन्ह तँ भद्री हुनक परामर्शकेँ अस्वीकारि, कहैत अछि, जेना जेठ भाए हुअनाह तहिना हमहु मरब। अर्थात अन्यायीक समक्ष आत्मसमर्पण नहि करब भलहिँ प्राणक आहुति देमय पड़ैक।
मरब दुनू भाए कटैयो
जाहि मुहेँ धैलक कोइरा गीदर जेठ भाए के
ताहि मुहेँ धरौ हमरा के । (पृ.सं.641)
एहन एकजुटता एवं भ्रातृप्रेम दीनाभद्रीकेँ समाजमे दीन दुखीजनक विरुद्ध व्याप्त शोषण, अत्याचार, दुराचारक प्रतिकारक शक्ति प्रदान करैत अछि। कहि सकैत छी दुराचारीकेँ पराजित करबाक रणनीतिक सफलताक कारण एहन भ्रातृ प्रेम आ' एकजुटता थिक।
एकटा आओरो बिन्दु एहिठाम विचारणीय अछि। जेना नामहिसँ स्पष्ट अछि, अनामी जट अनाम थिक ताहिर मियाँक। ताहिर मियाँ सेहो ककरो गोमास्ता अछि। ओ अनामी जटकेँ पोसि रखने अछि। ताहिर मियाँ ओकर माध्यमसँ आतंकक जाल पसारि रखने अछि। किन्तु जखनहि अनामी जटकेँ ज्ञात भए जाइत छैक जे दीनाभद्री ओकरहि समाजक लोक थिकैक एवं ओ दीनदुखी

এরং পীড়ী তক সহাযতা এরং বক্ষা লেল খপনা কে ঁ সদ্দিখন তৈখাব বখৈত খছি, তথা দনিত–পীড়ী ত রস্কাক সম্মান এরং প্রতিষ্ঠাক বক্ষা কবরঁ ওকব জীরনক মূন উদ্দেশ্য থিকৈক তঁ গ্বনামী জষ্ট দীনাভদ্রীক সহযোগী ভএ জাগত খছি এরং জোবারব সিংহ সন দ্বাচাবীক সংহাবমে বঁঢ়ী চঢ়ী ভাগ লৈত খছি। মিথিনাক সাংস্কৃতিক উঁকর্ষ এরং রিশিষ্ঠতাকে ঁ বেখাংকিত করৈত বমানাথ ঝাক কহরঁ খছি জে মিথিনা–জনপদ –ভাষামে সংগীতক পবম্পবা খত্যন্ত প্রাচীন কাননহিসঁ খারি বহন খছি। মিথিনা জনজীরনক এক গোট খভিন্ন খংগ বহন ছৈক ওকব সংগীত। মিথিনাক সংস্কৃতি সংগীতময খছি। ও এহী গীত সরঁহিক দ্বাবা মৈথিন জাতিক ভারাভির্ব্যক্তি খাদিখহিসঁ হোগত খাএন, জহিনা রিদ্যাপতিক পশ্চাত তহিনা ওহিসঁ পূর্বহু মিথিনাক দেশী সাহিত্য গীতময ছৈক। (রিরিধ প্ররঁন্ধ)।

বমানাথ ঝা মিথিনাক সমান ভাষা, সমান সংস্কৃতি ও সমান ভৌগোনিক ক্ষেত্রক নিরাসীকে ঁ মৈথিন জাতিক সংজ্ঞা দেন খছি। জকব সাহিত্যক এক মহত্ত্বপূর্ণ রিশেষতা ছৈক গীতামেকতা। ওনা, প্রাবম্ভহিমে কহন খছি জে মৈথিন জাতিখহ্সঁ এক দনিত সমাজকে ঁ রিনগাওন গেন খছি, জে রর্তমান যুগমে বাজনীতিক নাভজনিত ধ্রুরীকবণক মৈথিনী সাহিত্যমে খন্বগুঞ্জ এরং সাহিত্যিক বাজনীতিক ক্ষেত্র (পোনিটিকেন স্পেস) নির্ধাবণক প্রযাস থিক তথাপি ওহি নোকগাথা সভমে জে রৈশিষ্ঠ্য ছৈক, মৈথিন সংস্কৃতিক রিশেষতা তঁ থিকে। জেনা কি নামহিসঁ গাওন জএবাঁক স্পষ্ঠ রোঁধ ভএ জাগত ছৈক, মৈথিনীক খন্য নোকগাথা জকাঁ দীনাভদ্রী সেহো মৈথিন সংস্কৃতিক খন্বরূপ গীতামেক খছি, ও মৈথিন সংস্কৃতিকে ঁ

প্রতিনিধিত্ব করৈত খছি এরং মৈথিন সংস্কৃতিক খভিন্ন ধরোহবি থিক। নিখিত ৰূপমে স্ববক্ষিত সাহিত্যক পাঠক শিক্ষিত রস্তুহি ৫ৌ ভএ সকৈত খছি। এহন নোকক সংখ্যা কম ছনৈক, তেঁওসভ সমাজক শেষ রস্তুক পাঠক@শ্রোতাসঁ খপনাকে ঁ কাত বখরা নেন নিখিত সাহিত্যকে ঁ শিষ্ঠ সাহিত্যক ৰূপমে খভিধান কএন। শিষ্ঠক রিনোম হোগত খছি, খশিষ্ঠ। শ্বক্ষব ভেন জে শিষ্ঠ সাহিত্যক রিনোমকে ঁ খশিষ্ঠ সাহিত্য নহি কহি, নোক কংঠমে স্ববক্ষিত সাহিত্যকে ঁ নোক সাহিত্যক গবিমা প্রদান কএ দেননি। স্পষ্ঠ খছি জে শিষ্ঠ সাহিত্যক সর্জক শিষ্ঠ রস্তুহিক নোক হোগত ছনাহ। হ্নক খনুভর ক্ষেত্র সীমিত ছননি। খপন শিষ্ঠত্ব প্রমাণিত কবরাক হেতু ও সভ জাহি সাহিত্য সিদ্ধান্তক নিৰূপণ কএননি, তাহিমে নাযকত্ব নেন বাজক্ষন সম্ভূত হোএব খারশ্যক ভএ গেনৈক। গএহ কাবণ থিক জে তথাকথিত .শিষ্ঠ সাহিত্যক কোনো নাযক তথাকথিত দনিত সমাজসঁ নেন গেন হোথি, তকব উঁদাহবণ ভেটব দুর্নভ খরশ্য খছি। খা' ওা পবম্পবা নোকশৈক্ষিক উঁদয ধবি কোনা মৈথিনী সাহিত্যকে ঁ খাছন্ন কএনে বহন, তকব উঁদাহবণ প্রা.হবিমোহন ঝা সদৃশ মৈথিনীক মহান সাহিত্যকাবক রিপ্নন সাহিত্য খছি। কিন্তু সমপ্রতি জে বাজনীতিক এরং সামাজিক পবিদৃশ্য ছৈক খা' জাহি প্রকাবক চেতনাক বঁসাত বঁহি বহন খছি, ওহিমে একব মহত্ত্ব নহি ছৈক জে দনিত-মহাদনিত জাতিসঁ ভিন্ন জাতি-রস্তুক সাহিত্যকাব দনিত-মহাদনিত জাতিক সংরেদনা এরং ভূখ, খভার, খসন্তোষ খা' পীড় াক চিত্রণ কতেক প্রখবতাসঁ করৈত ছথি রা তথাকথিত উঁচরস্তুক সামান্তরাদী এরং শোষণোন্মুখী মনোবৃত্তি পব ও কতেক নির্মম প্রহাব করৈত

ছথি, কিন্তু প্রশ্ন ছৈক আ' বাস্তবিকতা অছি জে দলিত–মহাদলিত সমাজক লোক অপন কথা–ব্যথা স্বযং কহবা লেল এবং নাযক মহানাযক গঢ়বা লেল তৈযার অছি। সংগহি ও আযোজিত সাহিত্যিক চর্চা বা লেখনমে অপন সহভাগিতা সেহো সুনিশ্চিত করয চাহৈত অছি।

(My point is that literary theorists and cultural historians need to pay attention to the way Dalits are trying to argue their case for writing about Dalits. In this sense, whether you have written supporting or reforming or attacking Brahmins, dalits now want dalit characters and dalit life to be

portrayed. It does matter how secular you are, the place now has to go to dalits and just as there must be place for dalit characters, there must also be place for dalit writers.They would not like the upper caste writers to write about dalits and about literature today. Even if you write a critique of upper class/caste life, dalits are not bothered about that. I think, these questions (like whose work should now gain a place and be discussed in public) seem to be more

the issue than which upper caste writer wrote about or for dalits.- Dalitism: A Critique of Telugu Literature, K.Satyanarayan, Re-figuring Culture,2005, Sahitya Akademi)

एहि सन्दर्भमे लोकगाथा एवं लोकगाथाक महानायक एक आदर्श रूपमे भासमान भेटैत छथि। कारण जे लोकसाहित्यक नायक वा महानायक दलित,पीड़ित एवं शोषित समाजक छथि। दलित समाजक ओहि पात्रहुमे नायक वा महानायक बनबाक लेल जे चारित्रिक गुण चाही, जे पात्रता चाही, जे शौर्य चाही, जे पराक्रम चाही, सभटा विशेषता दलित समाजक लोकहुमे वर्तमान छैक। एकर उदाहरण थिक दीनाभद्री लोकगाथाक महानायक एवं देवत्व प्राप्त दीनाराम आ' भद्री। दीनाभद्रीक आधार स्रोत दीनाभद्रीक अध्ययन विवेचनक सम्प्रति दू टा स्रोत स्वरूप अछि। पहिल आधार स्रोत थिक जार्ज अब्राहम ग्रियर्सनक संकलन एवं प्रकाशन। एकर प्रकाशन1885 ई.मे Z.D.M.G.(Zeischrift der Deutschen Morgen lamdischen Gescllschaft) नामक पत्रिकामे भेल अछि । ओकर बादहि मैथिलीक एहि लोक गाथाक परिचय अक्षर जगतकेँ भेलैक एवं दीनाभद्रीक अध्ययन विवेचनक मार्ग प्रशस्त भेल। राष्ट्रीय वा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर जतय कतहु दीनाभद्रीक अध्ययन विवेचन भेल अछि तकर आधारभूत सामग्री ग्रियर्सन संकलित उएह पाठ थिक। एहिमे

ডা.জযকান্ত মিশ্র
(Folk Literature of Mithila,1951) ডা. আশা গুপ্ত (জার্জ অব্রাহম গ্রিযর্সন ওব বিহাবী ভাষা সাহিত্য, 1970)কে অধ্যযন সেহো অছি। এহি বিষয পব বাজেশ্বব ঝা (মিথিলা মিহিব, 22. সিতম্বব, 1974) ডা. বিশ্বেশ্বব মিশ্র,ডা. বীবেন্দ্রনাথ ঝা (মৈথিলী লোক মহাকাব্যক আলোচনাত্মক অধ্যযন, শোধ প্রবন্ধ,1987,ল.না.মিথিলা বি.বি.), ডা. বামদেব ঝা (মৈথিলী লোক সাহিত্যঃ স্বরূপ ও সৌন্দর্য, 2002), ডা.যোগানন্দ ঝা (লোক সাহিত্য ও শৈক্ষ সম্পদা, 2007) আদি সেহো ছিটফুট লিখল অছি। ঝদা ও সভ অপন লেখনক আধাব স্রোত ব্যক্তিগত সংকলন কহৈত ছথি জে অদ্যাবধি গুরুমন্ত্র জকাঁ গুপ্ত অছি। এহি বিন্দু পব সভ কেও মৌন ছথি জে জার্জ গ্রিযর্সনক পাঠ আ' হুনক সংকলিত পাঠমে কী অন্তব ছৈক। এম্হব মহেন্দ্রনাবাযণ বাম এবং ফূলো পাসবানক সংযুক্ত সম্পাদনমে সাহিত্য অকাদমীসঁ 'দীনাভদ্রী লোক গাথা সাহিত্য (2007) প্রকাশিত ভেল অছি। সম্পাদকদ্বয আঁখি মূনি লিখি দেললি অছি–দীনাভদ্রী লোক গাথা পব বহুত গোটে বিদ্বান কাজ কেললি অছি, ঝদা আগ ধবি একব মূল গাথা সংগ্রহ নহি প্রকাশিত ভএ সকল অছি।' পবংচ ই কথন গতিহাস সম্মত নহি অছি। গ্রিযর্সনক অবদানকেঁ বিসবি গেলাহ অছি। জার্জ গ্রিযর্সনক অবদানকেঁ বেখাংকিত কবৈত প্রাবাধ্। াঙ্গঞ্চ চৈধবী লিখলে ছথি–
NfFk&Dr.Grierson was the pioneer in bringing to light the folk literature of Mithila through his

publications, viz. Bihar Peasant Life, Maithili Chrestomathy. Dinabhadrik Gita and Nebarak Gita etc.-(A Study of the Maithili Folk Literature পূর্বাচলীয লোক সাহিত্য,পৃ.131, চেতনা সমিতি,1973)
গ্রিযর্সনক গীত দীনাভদ্রী এবং দীনাভদ্রী লোক গাথা সাহিত্যমে অনেকহ্ বিন্দু পর অন্তর অছি। দুনূক বিষয বস্তুমে অন্তর অছি, গাথা সংযোজনমে অন্তর অছি, প্রযুক্ত শব্দাবলীমে অন্তর অছি তথা পাত্রক কাজ আ' প্রভাবমে অন্তর অছি। জে ঁ কি দুনূ গোটকৈ স্রোত কথাবাচক ছথিন্হ এবং দুনূক কথাবাচকমে কমসঁ কম সবা সএ বর্ষক জেঠাএ-ছোটাএ ছৈক, অপন সংকলনক প্রসংগ গিযর্সন লিখনে ছথি- ;
(The following two songs are published exactly as they were taken down from the mouths of two itinerant singers in the Nepal Tarai about six years ago.They are very popular throughout nothern Mithila and are excellent examples of the spoken
dialect of that portion of the country.-Selected Specimen of the Bihari Language, ZDMG. Vol. 39, page No. 617,1885)
অতএব ওা অন্তর অস্বাভাবিক নহি কহল জা সকৈছ। কাবণ জে লোচকতা লোকগাথাক বিশেষতা থিকৈক।

জা ধবি ও নোক কংঠমে বৗ্হত খছি, রাচকক পাত্রতা, স্থান, কান এরং প্রস্তুতিক ঢ় ংগ এরং শ্রোতা সম্প্রদাযকে ঁ রাঁন্হি বখরাঁক হেত্তু ওহিমে কিছু কিছু পবিরর্তন হোগত বৗ্হত ছৈক। খা' জঁ সংযোগরশে কোনো নোকগাথামে নোচকতা সমাপ্ত ভএ জাগত ছৈক, খান্তুবিক ক্ষমতা নহি বৗ্হত ছৈক তঁ কানক্রমে ওহি নোকগাথাক প্রাসংগিকতা সমাপ্ত ভএ জাগত খছি।
(They (oral tales) change their contours so much that their social relevance is ever alive. If the grid of an oral tale does not have the capacity to sustain or imbide the new, then it meets its death without leaving any trace--Tales : Oral Tales, Komal Kothari, Narrative : A Seminar, Sahitya Akademi,1990) হ্রতিক সমীক্ষা নিখিত পাঠক খাধাব পব হোগত খছি এরং খারঁযরাঁনা সমযমে ও রিরেচনক সামগ্রী রঁনৈত বৗ্হত খছি। খতএর, প্রকাশিনসঁ পহিনে খারশ্যক ছনৈক জে পূর্র প্রকাশিত পাঠক সংগ মিনান কএ পাঠ রা খন্য প্রকাবক জে কোনো খন্তুব ছৈক, তকবা দর্শরৈত সম্পাদক খপন রাঁত কহিতথি। সে নহি ভেন খছি। একব খভারমে 'দীনাভদ্রী নোকগাথা সাহিত্য' এক মহত্ত্বপূর্ণ খাধাব-স্রোত হোএরাঁসঁ বহি গেন খছি। এহিঠাম জার্জ গ্রিযর্সনক 'গীত দীনাভদ্রী'
(Selected Specimen of the Bihari Language)
'দীনাভদ্রী নোক গাথা সাহিত্য'মে ভেটৈন কিছু খন্তুবক

दिशि स्वधी पाठकक ध्यान आकृष्ट कयल जाइत। 'गीत दीनाभद्री'मे सात टा अध्याय अछि एवं 'दीनाभद्री लोक गाथा साहित्य'मे तेरह टा अध्याय अछि। 'गीत दीनाभद्री'मे कोनो गीतक माध्यमे दीनाभद्री मायक जागल छथि तँ दोसरमे रघुदेवी मारैत छथिन्ह। 'गीत दीनाभद्री'मे रंगलाक ताहिर मियाँक कथा अछि। ग्वनामी जट्ट ताहिर मियाँक लोक अछि। अपमानित भेला पर कोनो गीतक रूप धारण कए के दीनाभद्री ग्वनामी जट्टके पराजित करैत छथि। ग्वनामी जट्ट जखन दीनाभद्रीके चिन्हि जाइत अछि, क्षमाप्रार्थी होइत अछि एवं प्रयोजन भेला पर सहयोगक वचन दीनाभद्रीके दैत छनि। लिखल अछि–

'छवपिकें कोनो गीदर ग्वनामी जट्ट कें धैनक
चट्टि धैनक पट्टि दे मायनक, राँन्हनक पछआड़ा धै कें
गोड़ लगैत छी, पै याँ पड़ैत छी,
एहि नहि जननी अहाँ भद्री छी।'(पृ.सं.651)

'दीनाभद्री लोक गाथा साहित्य'मे ग्वनामी जट्ट मक्का मदीनाक वासी थिक एवं दीनाभद्री मकेश्वरनाथक पूजा अर्चना करैत छथि। एकर अतिरिक्त हिन्दू एवं इस्लाम धर्मक चर्चा सेहो होइत अछि। पहिल संकलनमे दीनाभद्रीके सलहेसक सहायता प्राप्त होइत छनि तँ दोसरमे योगमन किबातीके ओ सहायता लेल आह्वान करैत छथि। पहिल संकलनमे दीनाभद्रीक परकिया नायिका हिरिया तमोलिन एवं जिरिया लोहारिन दोसर संकलनमे नहि अछि। ग्रियर्सनक संकलनक अन्त जोवारव सिंहक मृत्युक संग होइत अछि तँ दोसरमे दीनाभद्री स्वयं घूमि घूमि अपन परक्रमक प्रसंग लोकसँ जिज्ञासा करैत छथि एवं गहवर बना कए पूजा करबाक

আদেশ দৈত ছথিন্হ। ও গহো আদেশ দৈত ছথিন্হ জে গহরবমে হ্নক এক কাত রাঁঘেসবী আ' দোসব কাত যোগমন কিবাতক স্থাপনা কএ পূজা কএন জাএ। পহিনমে মহফা পব জাগত হিবিযা তমোনিন এরং জিবিযা নোহাবিনক ডোনীকে ঁ জোবারব সিংহ ছেকি নৈত খছি তঁ গ্বনামী জ৴ এরং জোবারব সিংহক রীচ ক্ষশতী হোগত খছি। দীনাভদ্রীক কহনা পব ও জোবারব সিংহকে ঁ প৴কি দৈত ছথি আ' জোবারব সিংহ মাবন জাগত খছি–

জোবারব সিঙ্ঘ দেনক গ্বনামী জ৴ কে উঁনটোয
নহি খনিহফা এক রেঁবি ঠাঢ় ভৈ কে ক্ষস্তী নিখহ।
জোবারব সিঙ্ঘ কে গ্বনামী জ৴ মাবনক রাঁসক ওধি নগায।
চ৴ি দৈ ভদ্রী দেনক রাঁন্হি কনৌনী গবদ উঁঠি গেন।
কনৌনী মে ঁ জোবারব সিঙ্ঘ বাজপূত মাবন গেন, দীনাভদ্রী রেঁবী ভেন
কনৌনী মে ঁ জোবারব সিঙ্ঘ বাজপূত মাবন গেন দীনাভদ্রী সৌ ঁ। পৃ..653

ক্ষদা দোসবমে কহনো পব দীনাভদ্রী জোবারব সিংহক খখাবা নগসঁ নহি হ৴ৈত ছথি তঁ মন্নহঙ্ক হোগত খছি। দীনাভদ্রীক আহ্বান পব হ্নক কাযামে যোগমন কিবাতী প্রবেশ কএ জাগত ছথিন্হ তঁ ও জোবারব সিংহকে ঁ প৴কি হনা কবরাঁমে সমর্থ হোগত ছথি। আশ্চর্যক গপ্প জে 'দীনাভদ্রী নোকগাথা সাহিহ'মে দীনাভদ্রী কে ঁ খঙবেজী ভাষাক জ্ঞান সেহো ছনি। ভদ্রী কহৈত খছি–

ভৈযা সে হম আর্ডব নেনে বনীতিযৈ তহ
একবা মাবি কে হম সাবা রঁনা দীতীযে (76)

ডা.যোগানন্দ ঝাক নিরঁক্ষমে মগহক হংসবাজ এরং

বংশীবাজক উল্লেখ অছি। দীনাভদ্রী ওহি দূনূ কে মঁলহঘরুমে পবাজিত কবৈত ছথি। অন্তমে দূনূ ভাগ জগন্নাথপুবী জাগত ছথি। জগন্নাথজীক দ্বপাসঁ প্রেত যোনিসঁ মুক্ত ভএ তিবহুত ঘূমি অবৈত ছথি, জতয ভুগযাঁ বাঁবাক ৰূপমে হুনক পূজা হোঅএ নগৈত অছি। পাঠভেদ সম্বন্ধী এহি রিরূত্তিক তাপের্য জে দীনাভদ্রীক অধ্যযন কোন পাঠক আধাব নোক কবএ। ককবা দীনাভদ্রী নোকগাথাক প্রমাণিক পাঠ মানন জাএ। এক সংকননকর্তা দোসব সংকননকর্তাকি কাজকে ঁ মোজব দেনিহাব নহি, সভ কেও সভটা শ্রেয স্বযং হপসি নেখয চাহৈত ছথি। ও ঙা জনবঁয চাহৈত ছথি জে এহিসঁ পহিনে ককবো কিছু জ্ঞাত নহি ছনৈক, সভটা হমহী ধবতীকে ঁ খোধি বাঁহব আনন অছি। ঙা সাহিত্যিক অবাজকাতা থিকৈক। এহি অবাজকতাক দূ টা কাবণ অছি–সম্পূর্ণ শ্রেয স্বযং নেবাঁক আত্তবতা তথা সম্পাদক রা নেখকক অল্পজ্ঞতা। দূনূ স্থিতি ভাষা সাহিত্যক স্বস্থ রিরেচন নেন বাঁধকে অছি। ওহুনা রিদ্বজ্জন এহি বাঁত পব একমত হোএতাহ জে স্বনি উঁতাবি নেবঁ, গীত গাযবঁ এরং সম্পাদন কববঁ, এক নহি, দূ প্রকাবক প্রতিভাক অপেক্ষা বখৈত অছি। দীনাভদ্রী সন মহত্ত্বপূর্ণ নোকগাথাক সম্যক অধ্যযন–রিরেচন নেন সর্বথা আরশ্যক অছি জে উঁপনর্ব্ধ রিভিন্ন পাঠ এরং পূর্ব প্রকাশিত পাঠক আধাব পব এক প্রামাণিক পাঠ তৈআব কএন জাএ এরং সংকননকর্তাকে ঁ ঙা ছূট নহি ভেটৈনি জে অপন অল্পজ্ঞতা এরং পূর্বাগ্রহক কাবণে ঁ মৈথিনীক সাংস্কৃতিক সম্পদা পব আঘাত কবথি। অন্তমে হম নক্ষ্মীপতি সিংহক (মিথিনাক নোক সংস্কৃতি এরং নোকজীরন, চেতনা সমিতি, স্মাবিকা,1973 ঙা.) ক মন্তর্ব্য উঁধৃত কবএ চাহবঁ–'কহি

नहि, एहन एहन कतेको संग्रह कतेको ठाम 'अग्नये स्वाहा' तथा 'कीटाय स्वाहा' भऽ गेल होएत, वा भऽ रहल होएत। अस्तु, एहि सम्बन्धमे क्रियाशील मैथिली संस्था सभसँ हमर आग्रह अनुरोध जे सूठी झमर, शैशिया, विहुला, कमला, जट जटिन, दीनाभद्री, विषहरा, आदिक सम्बन्धमे मिथिलाक वहुमूल्यखो लोकसाहित्यक संकलन एवं प्रकाशन कार्यमे सक्रिय भऽ जाए। हमरा जनैत,जखन मैथिल मात्रके ँ अपन प्राचीन लोक जीवन पद्धतिक ज्ञान भऽ जएतन्हि, आओर ओ विश्वास भऽ जएतन्हि कि धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समन्वय एवं साम्प्रदायिक उत्तरदायित्वक प्रसादात एक समय मिथिला कतेक भवल प्रवल छल तँ अगला वर्षसँ, धार्मिक कट्टरता तथा राजनीतिक छल-छद्मसँ मिथिलाक पिण्ड स्वतः छुटि जाए सकैछ।

<u>सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा :</u>

<u>मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा</u>

UNIVERSAL DECLARATION OF HUMAN RIGHTS

MAITHILI TRANSLATION

(राष्ट्रसंघक साधारण सभा 10 दिसम्बर, 1948 के ँ
एक सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा स्वीकृत आ'
उद्घोषित कएलक जकर पूर्णपाठ आगाँ देल गेल अछि।
एहि ऐतिहासिक घोषणाक उपरान्त साधारण
सभा समस्त सदस्य देशसँ अनुरोध कएलक जे ओ एहि

ঘোষণাক প্রচাব কবএ তথা মুখ্যতঃ, অপন দেশ অা' প্রদেশক বাজনৈতিক স্থিতিক অনুৰূপ বিন্ন ভেদভারক, স্কূল অা' অন্য শিক্ষণ সংস্থা সভমে একব প্রদর্শন, পঠন-পাঠন অা' অনুরোধনক ব্যরস্থা কবএ।)
এহি ঘোষণাক আধিকাবিক পাঠ বাষ্ট্রসংঘক পাঁচ ভাষামে উপলব্ধ অছি-অংগ্রেজী, চীনী, ফ্রাংসীসী, ৰূসী আ, স্পেনিশ। এহিঠাম এহি ঘোষণাক মৈথিলী ৰূপান্তবণ প্রস্তুত অছি।)

উদ্দেশিকা
জে ँ কি মানব পবিবাবক সকল সদস্যক জন্মজাত গবিমা আওব সমান এবং অবিচ্ছেদ্য অধিকাবকে ँ
স্বীকৃতি দেব স্বতন্ত্রতা, ন্যায অা' বিশ্বশান্তিক মূলাধাব থিক,
জে ँ কি মানরাধিকাবক অবহেলনা আ' অরমাননাক পবিণাম হোগছ এহন নৃশংস আচবণ জাহিসঁ মানরক অন্তঃকবণ মর্মাহত হোগত অছি আওব অরকৃদ্ধ হোগত অছি এক এহন বিশ্বক অরতবণ জাহিমে
অভিব্যক্তি আ' বিশ্বাসক স্বতন্ত্রতা তথা ভয আ' অকিংচনতাসঁ মুক্তি জনসামান্যক সর্বোচ্চ আকাংক্ষা ঘোষিত হো;
জে ँ কি বিধিসম্মত শাসন দ্বাবা মানরাধিকাবক বক্ষা এহি হেতু পবমারশ্যক অছি জে কেও ব্যক্তি অত্যাচাব আ' দমনসঁ বাঁচবাক কোনো আন উপায নহি পাবি, শাসনক বিরুদ্ধ বাগী নহি ভএ জাএ;
জে ँ কি বাষ্ট্রসভক বীচ মৈত্রীপূর্ণ সম্বন্ধ বঢ় াএব পবমারশ্যক অছি;
জে ँ কি বাষ্ট্রসংঘক লোক অপন চার্টব মধ্য মৌলিক

মানৱাধিকাবমে, মানৱক গবিমা ঋা' মূল্যমে তথা স্ত্রী ঋা' প্বুৰুষক ৱীচ সমান ঋধিকাবমে ঋপন নিষ্ঠা প্বনঃ পবিপ্বষ্ঠ কএনক ঋছি ঋাওব ৱ্যাপক স্বতন্ত্রতাক সংগ সামাজিক প্রগতি ঋা' জীৱন স্তবক সম্বন্নযন হেত্ত দৃঢ় সংকল্পিত ঋছি;

জে ँ কি সদস্য বাষ্ট্রসভ বাষ্ট্রসংঘক সহযোগসঁ মানৱাধিকাব ঋা' মৌনিক স্বতন্ত্রতাক সার্ৱভৌম ঋাদব তথা ঋন্বপানন কবৱাক হেত্ত প্রতিৱদ্ধ ঋছি;

জে ँ কি এহি প্রতিৱদ্ধতাক পূর্তি হেত্ত উঁক্ত ঋধিকাব ঋা স্বতন্ত্রতাক সামান্য ৱোধ পবম মহত্ত্বপূর্ণ ঋছি,

তে ँ ঋাৱ,

সাধাবণ সভা

নিম্ননিখিত সার্ৱভৌম মানৱাধিকাব ঘোষণাকে ँ সভ জনতা ঋা' সভ বাষ্ট্রক হেত্ত উঁপনব্ধিক সামান্য মানদণ্ডক ৰূপমে, এহি উঁদ্দেশ্যসঁ উঁদ্ঘাষিত কবৈত ঋছি জে প্রত্যেক ৱ্যক্তি ঋা' প্রত্যেক সামাজিক একক এহি ঘোষণাকে ँ নিবন্তব ধ্যানমে বখৈত শিক্ষা ঋা' উঁপদেশ দ্বাবা এহি ঋধিকাব ঋা' স্বতন্ত্রতাক প্রতি সম্মান ভাৱনা জগাৱএ তথা উঁত্তবোত্তব এহন উঁপায–বাষ্ট্রীয ঋা ঋন্তববাষ্ট্রীয–কবএ জাহিসঁ সদস্য

বাষ্ট্রসভক নোক ৱীচ তথা ঋপন ঋধীনস্থ ঋধিক্ষেত্রহুক নোক ৱীচ এহি ঋধিকাব ঋা' স্বতন্ত্রতাকে ँ সার্ৱভৌম ঋা' প্রভাৱকাবী স্বীকৃতি প্রাপ্ত ভএ সকৈক। ষ্

ঋনুচ্ছেদ 1

সভ মানৱ জন্মতঃ স্বতন্ত্র ঋছি তথা গবিমা ঋা' ঋধিকাবমে সমান ঋছি। সভকে ँ ঋপন–ঋপন ৱুদ্ধি ঋা'

রিরেক ছৈক আওব সভকে ঁ এক দোসবাক প্রতি সৌহার্দপূর্ণ ব্যরহাব কবরাঁক চাহী।

অনুচ্ছেদ 2

প্রত্যেক ব্যক্তি এহি ঘোষণামে নিহিত সভ অধিকাব আ' স্বতন্ত্রতাক হকদাব থিক আওব এহিমে নস্ল,
নিংগ, ভাষা, ধর্ম, বাজনৈতিক রা অন্য মত, বাষ্ট্রীয রা সামাজিক উঁদ্ভর, সম্পত্তি, জন্ম অথরা অন্য
স্থিতিক আধাব পব কোনহ্ প্রকাবক ভেদভার নহি কএল জাএত। আওব ও ব্যক্তি জাহি দেশক থিক
তকব বাজনৈতিক অধিকাবিতামূলক রা অন্তববাষ্ট্রীয আস্থিতিক আধাব পব কোনো ভেদভার নহি কএল
জাএত–ভলহি ও দেশ স্বাধীন হো, ট্রস্ট হো, পবশাসিত হো রা সম্প্রভুতাক কোনো অন্য পবিসীমাক অধীন
হো।

অনুচ্ছেদ 3

সভকে ঁ জীরন–ধাবণ, স্বাতন্ত্র্য আ' ব্যক্তিগত ়স্ববক্ষাক অধিকাব ছৈক।

অনুচ্ছেদ 4

কেও ব্যক্তি দাসতা রা বেঁগাবীমে নহি বহত আওব সভ প্রকাবক দাসপ্রথা আ' দাসক খবীদ–বিকবী
বর্জিত হোএত।

অনুচ্ছেদ 5

ককবহ্ ক্রূব, অমানুষিক রা অপমানজনক দণ্ড নহি দেল জাএত আ' ককবোসঁ এহন ব্যরহাব নহি কএল
জাএত।

অনুচ্ছেদ 6

প্রত্যেক ব্যক্তিকে ঁ সভঠাম কানূনক সমক্ষ এক মানর রূপমে অপন মান্যতাক অধিকাব ছৈক।

ঋন্বষ্ছেদ 7
সভ কেও কানূনক সমক্ষ সমান ঋছি আ' রিনা কোনো ভেদভারক কানূনক সংবক্ষণক হকদাব ঋছি।
ঋন্বষ্ছেদ 8
সভকে ँ এহন কার্যক রিরুদ্ধ জে সংরিধান রা রিধি দ্বাবা প্রদত্ত ওকব মৌনিক ঋধিকাবক হনন কবৈত হো
সক্ষম বাষ্ট্রীয ন্যাযানযসঁ উঁচিত উঁপচাব (ন্যায) পএরাঁক হক ছৈক।
ঋন্বষ্ছেদ 9
কেও স্বেচ্ছাসঁ ককবো গিবফতাব, নজববন্দ রা দেশ নিরাসিত নহি কবত ।

ঋন্বষ্ছেদ 10
সভ র্যক্তিকে ँ ঋপন ঋধিকাব আ' দাযিত্বক ঋরধাবণার্থ তথা ঋপনা পব নগাওন গেন কোনো
আপবাধিক আবোপক ঋরধাবণার্থ কোনো স্বতন্ত্র আ' নিষ্পক্ষ ন্যাযানয দ্বাবা পূর্ণ সমানতাক সংগ উঁচিত
আ' সার্রজনিক রিচাবণক হক ছৈক।
ঋন্বষ্ছেদ 11
1. দন্ডনীয ঋপবাধক আবোপী প্রত্যেক র্যক্তি তাধবি নির্দোষ মানন জএরাঁক হকদাব ঋছি জাধবি
কোনো সার্রজনিক রিচাবণমে, জাহিমে ওকবা ঋপন সম্ভচিত সফাগ দেরাঁক সভ গাবংটী প্রাপ্ত
হোগক, রিধিরত্ দোষী সিদ্ধ নহি কএ দেন জাএ।
2. জঁ কেও র্যক্তি এহন কোনো দন্ডনীয কার্য রা নোপ কবএ জে ঘটনাক কানমে প্রচনিত কোনো
বাষ্ট্রীয রা ঋন্তববাষ্ট্রীয কানূনক দৃষ্ঠিমে দন্ডনীয ঋপবাধ নহি থিক তঁ ও র্যক্তি এহি হেত্ত

दन्डनीय अपराधक दोषी नहि मानल जाएत।

अनुच्छेद 12

केओ व्यक्ति कोनो आन व्यक्तिक एकान्तता, परिवार, निवास वा संवाद (पत्राचारादि) मे स्वेच्छया हस्तक्षेप
नहि करत आ' ने ओकर प्रतिष्ठा आ' ख्याति पर प्रहार करत। प्रत्येक व्यक्तिकेँ एहन हस्तक्षेप वा
प्रहारसँ कानूनी रक्षा पएबाक अधिकार छैक।

अनुच्छेद 13

1. प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन राष्ट्रक सीमाक भीतर भ्रमण आ' निवास करबाक स्वतन्त्रता छैक।

2. प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन देश वा आनो कोनो देश त्यागबाक आ' अपना देश घूरि अएबाक
अधिकार छैक।

अनुच्छेद 14

1. प्रत्येक व्यक्तिकेँ उत्पीड़नसँ बँचबाक हेतु दोसर देशमे शरण मङबाक अधिकार छैक।

2. एहि अधिकारक उपयोग ओहि स्थितिमे नहि कएल जाए सकत जखन ओ उत्पीड़न वस्तुतः
अराजनैतिक अपराधक कारणेँ भेल हो अथवा राष्ट्रसंघक उद्देश्य आ' सिद्धान्तक विरुद्ध कोनो
काज करबाक कारणेँ हो।

अनुच्छेद 15

1. प्रत्येक व्यक्तिकेँ राष्ट्रीयताक अधिकार छैक।

2. कोनो व्यक्तिकेँ राष्ट्रीयताक अधिकारसँ अथवा राष्ट्रीयता –परिवर्तनक अधिकारसँ अकारण
वंचित नहि कएल जा सकत।

अनुच्छेद 16

1. सभ वयस्क स्त्री आ' पुरुषकेँ नस्ल, राष्ट्रीयता वा

সম্প্রদাযমূনক কোনো প্রতিরঁন্ধক রিঁনা, রিরাহ
কবরাঁক খা" পবিরাব রঁনএরাঁক খধিকাব ছৈক। স্ত্রী
খা প্বকষ দূনূকে ঁ রিরাহ, দাম্পহ-জীরন
তথা রিরাহ-রিচ্ছেদক সমান খধিকাব ছৈক।
2. রিরাহ, তখনহি হোএত জখন গচ্ছুক পতি খা'পনীক
স্বচ্ছন্ন খা পূর্ণ সহমতি হো।

3. পবিরাব সমাজক এক সহজ খা' মৌনিক একক থিক
খাওব একবা সমাজক খা' বাজ্যক
সংবক্ষণ পএরাঁক খধিকাব ছৈক।
খনুচ্ছেদ 17
1. প্রত্যেক র্যক্তিকে ঁ একসরে খা' দোসবাক সংগ মিনি
সম্পত্তি বখরাঁক খধিকাব ছৈক।
2. কেও স্বেচ্ছযা ককবহ্ সম্পত্তিসঁ রংচিত নহি কবত।
খনুচ্ছেদ 18
প্রত্যেক র্যক্তিকে ঁ রিচাব, রিরেক খা ধর্ম বখরাঁক খধিকাব
ছৈক। এহি খধিকাবমে সমারিষ্ঠ খছি ধর্ম খা
রিশ্বাসক পবিরর্তনক স্বতন্ত্রতা, একসব রা দোসবাক সংগ
মিনি প্রকষ্টতঃ রা একান্তমে শিক্ষণ, খভ্যাস,
প্রার্থনা খা খনুষ্ঠানক স্বতন্ত্রতা।
খনুচ্ছেদ 19
প্রত্যেক র্যক্তিকে ঁ খভিমত এরং খভির্যক্তিক স্বতন্ত্রতাক
খধিকাব ছৈক, জাহিমে সমারিষ্ঠ খছি রিঁনা
হস্তক্ষেপক খভিমত ধাবণ কবরঁ, জাহি কোনহ্ ক্ষেত্রসঁ
কোনহ্ মাধ্যমে ঁ সূচনা খা' রিচাবক যাচনা, খাদান
প্রদান কবরঁ।
খনুচ্ছেদ 20
1. প্রত্যেক র্যক্তিকে ঁশান্তিপূর্ণ সম্মিনন খা সংগঠনক

स्वतन्त्रताक अधिकार छैक।
2. कोनहु व्यक्तिकेँ संगठन विशेषसँ सम्बद्ध होएबाक लेल विवश नहि कएल जाए सकैछ।
अनुच्छेद 21
1. प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन देशक शासनमे प्रत्यक्षतः भाग लेबाक अथवा स्वतन्त्र रूपेँ निर्वाचित
अपन प्रतिनिधि द्वारा भाग लेबाक अधिकार छैक।
2. प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपना देशक लोक-सेवामे समान अवसर पएबाक अधिकार छैक।
3. जनताक इच्छा शासकीय प्राधिकारक आधार होएत। ई इच्छा आवधिक आ' निर्बाध निर्वाचनमे
व्यक्त कएल जाएत आओर ई निर्वाचन सार्वभौम एवं समान मताधिकार द्वारा गुप्त मतदानसँ
होएत अथवा समतुल्य मुक्त मतदान प्रक्रियासँ।
अनुच्छेद 22
प्रत्येक व्यक्तिकेँ समाजक एक सदस्यक रूपमे सामाजिक सुरक्षाक अधिकार छैक आओर प्रत्येक
व्यक्तिकेँ अपन गरिमा आ' व्यक्तित्वक निर्बाध विकासक हेतु अनिवार्य आर्थिक, सामाजिक आ'
सांस्कृतिक अधिकार-राष्ट्रीय प्रयास आओर अन्तरराष्ट्रीय सहयोगसँ तथा प्रत्येक राज्यक संघठन आ'
संसाधनक अनुरूप-प्राप्त करबाक हक छैक।
अनुच्छेद 23
1. प्रत्येक व्यक्तिकेँ काज करबाक, निर्बाध इच्छाक अनुरूप नियोजन चुनबाक, कार्यक उचित आ'
अनुकूल स्थिति प्राप्त करबाक आ' बेकारीसँ बँचबाक अधिकार छैक।
2. प्रत्येक व्यक्तिकेँ समान काजक लेल बिना भेदभावक

समान पारिश्रमिक पएबाक अधिकार छैक।

3. काजमे लगाओल गेल प्रत्येक व्यक्तिकेँ उचित आ अनुकूल पारिश्रमिक ततबा पएबाक अधिकार
छैक जतबासँ ओ अपन आ अपन परिवारक मानवोचित भरण-पोषण कए सकए आओर प्रयोजन
पड़ला पर तकर अनुपूरण अन्य प्रकारक सामाजिक संरक्षणसँ भए सकैक।
4. प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन हितक रक्षाक हेतु मजदूरसंघ बनएबाक आ ओहिमे भाग लेबाक अधिकार
छैक।
अनुच्छेद 24
प्रत्येक व्यक्तिकेँ विश्राम आ अवकाशक अधिकार छैक जकर अन्तर्गत अछि कार्य-कालक उचित सीमा
आ समय-समय पर वेतन सहित छुट्टी।
अनुच्छेद 25
1. प्रत्येक व्यक्तिकेँ एहन जीवन-स्तर प्राप्त करबाक अधिकार छैक जे ओकर अपन आ अपना
परिवारक स्वास्थ्य एवं कल्याण हेतु पर्याप्त हो। एहिमे समाविष्ट अछि भोजन, वस्त्र, आवास आ
चिकित्सा तथा आवश्यक सामाजिक सेवाक अधिकार आओर जँ अपरिहार्य कारणवश बेकारी,
बीमारी, अपंगता, वैधव्य, वृद्धावस्था अथवा अन्य प्रकारक दुरवस्था उपस्थित हो तँ, ओहिसँ स्वरक्षाक
अधिकार ।
2. परसौती आ शिशुकाकेँ विशेष परिचर्या आ सहायताक अधिकार छैक। प्रत्येक बच्चाकेँ, चाहे
ओ विवाहावधिमे जनमल हो वा ताहिसँ बाहर, समान

সামাজিক সংবক্ষণক খধিকাব ছৈক।
খনুচ্ছেদ 26
1. প্রত্যেক ব্যক্তিকে ँ শিক্ষা প্রাপ্তিক খধিকাব ছৈক। শিক্ষা কমসঁ কম খাবম্ভিক খা' মৌনিক খরস্থামে নিঃশুল্ক হোএত। খাবম্ভিক শিক্ষা খনিরার্য হোএত। তকনীকী খা ব্যারসাযিক শিক্ষা সামান্যতযা উঁপনব্ধ হোএত তথা উঁচতব শিক্ষা সেহো সভকে ँ যোগ্যতাক খাধাব পব ভেঁটতৈক।
2. শিক্ষাক নক্ষ্য হোএত মানর ব্যক্তিত্বক পূর্ণ রিকাস খাওব মানরাধিকাব খা' মৌনিক স্বতন্ত্রতাক প্রতি খাদবভার বঁঢ় াএব। শিক্ষা বাষ্ট্রসভক বীচ তথা জাতীয রা ধার্মিক সম্প্রদাযসভক বীচ পাবস্পবিক সদ্ভারনা, সহিষ্ণুতা খা' মৈত্রী বঁঢ় াওত তথা শান্তিক হেতু বাষ্ট্রসংধক প্রযাসকে ँ গতি দেত।
3. মাতা পিতাকে ँ ওা চুনবাঁক তার্কিক খধিকাব ছৈক জে ওকব সন্তানকে ँ কোন প্রকাবক শিক্ষা দেন জাএ।
খনুচ্ছেদ 27
1. প্রত্যেক ব্যক্তিকে ँ সমাজক সাংস্কৃতিক জীরনমে খবাঁধ রূপে ँ ভাগ নেবাঁক, কনাক খানন্দ নেবাঁক তথা বৈজ্ঞানিক রিকাসমে খা' তকব নাভমে খংশী পএবাঁক খধিকাব ছৈক।
2. প্রত্যেক ব্যক্তিকে ँ খপন সৃজিত কোনহু বৈজ্ঞানিক, সাহিত্যিক খথরা কনামেক কৃতিসঁ উঁপেন্ন, ভারনামেক রা ভৌতিক হিতক বক্ষাক খধিকাব ছৈক।
খনুচ্ছেদ 28
প্রত্যেক ব্যক্তিকে ँ এহন সামাজিক খা খন্তববাষ্ট্রীয

আস্পদ প্রাপ্ত কববাঁক অধিকাব ছৈক জাহিসঁ
এহি ঘোষণামে উল্লিখিত অধিকাব আ' স্বতন্ত্রতা প্রাপ্ত কএল জাএ সকএ।

অনুচ্ছেদ 29
1. প্রত্যেক ব্যক্তি ওহি সম্প্রদাযক প্রতি কর্ত্তব্যবদ্ধ অছি জাহিমে বহিএ কএ ও অপন ব্যক্তিত্বক
অবাঁধ আ' পূর্ণ বিকাস কএ সকৈত অছি।
2. প্রত্যেক ব্যক্তি অপন অধিকাব আ' স্বতন্ত্রতাক উপযোগ ওহি সীমাক অভ্যন্তবে কবত জকব
অবধাবণ দোসবাক অধিকাব আ' স্বতন্ত্রতাক আদব আ' সম্মচিত স্বীকৃতিকেঁ স্বনিশ্চিত কববাঁক
উদ্দেশ্যসঁ তথা নৈতিকতা, বিধিব্যবস্থা আ জনতান্ত্রিক সমাজমে সামান্য জনকল্যাণক অপেক্ষাক
পূর্তিক উদ্দেশ্যসঁ কানূন দ্বাবা কএল জাএত।
3. এহি স্বতন্ত্রতা আ' অধিকাবক প্রযোগ কোনহু দশামে বাষ্ট্রসংঘক সিদ্ধান্ত আ' উদ্দেশ্যক প্রতিকূল
নহি কএল জাএত।
অনুচ্ছেদ 30
এহি ঘোষণামে উল্লিখিত কোনো বাঁতক নির্বচন তেনা নহি কএল জাএ জাহিসঁ ঙা ধ্বনিত হো জে কোনো
বাজ্যকেঁ বা জনগণকেঁ এহন গতিবিধিমে সংলগ্ন হোএবাঁক বা কোনো এহন কাজ কববাঁক অধিকাব
ছৈক জকব লক্ষ্য এহি ঘোষণাক অন্তর্গত কোনো অধিকাব বা স্বতন্ত্রতাকেঁ বাঁধিত কববঁ হো।



হ্রদয নাবাযণ ঝা, খাকাশিরাণীক ৱী হাগগ্রেড কনাকাব। পবম্পবাগত যোগক শিক্ষা প্রাপ্ত।

নুপ্তপ্রায মৈথিনী নোকগীত

প্রাতী ,গোসাঙনিক গীত ভগরতীগীত ঝূমবা,সোহব,খেনডঁনা, ক্ষমাব,পবিছ্রন ,চ্মান, ডহকন ,রিষহাবা গীত , ঝূমবি ,ৱঁষ্টগমনী,মনাব চৈমাসা ,নগনী ,সমদাঙন খা একব খতিবিঞ নদী সংস্কৃতি মে কোশী গীত খাদি কতেকো মৈথিনী নোকগীত নুপ্তপ্রায খছি । জতএ কতহ্ এখনহ্ নোককণ্ঠ মে ণ্ড গীত সভ

রাঁচন খছি তকবা সংগ্রহিত কঽ ওহি গীতক প্রকাশিন খা ওহি ধ্ন কেঁ স্ববক্ষিত বখরাঁক নেন ওকব খাঁডিযো রীডিযো রূপ মে দস্তারেজীকবণ কবরাঁক খারশ্যকতা রিচাবণীয খছি । সংরৈধানিক মান্যতা প্রাপ্ত ভাবতীয ভাষা রঁননাক রাঁদ মৈথিনীক সংস্কাব ,বীতি বিরাজ , পর্র ত্যাহাব ও)ত্ত পব খাধাবিত গীতক সমৃ(পবংপবা রর্তমান খা ভরিষ্যক পীঢ় ী নেন কোনা স্ববক্ষিত কএন জায ঞ সংপূর্ণ মৈথিনী জগতক নেন চিন্তাক রিষয রঁনন খছি । মিথিনা মহান বহন খছি খপন রিশেষতাক কাবণেঁ। মিথিনাক প্রশংসা মেঁ রূহদ্বিষ্ণুপ্ববাণক উঁক্তি খছি

ধন্যাস্তু যে প্রযত্নেন নিরসন্তি মহাত্মনে । রিচবেন্মিথিনা মধ্যে গ্রামে গ্রামে রিচক্ষণঃ । ।
সদাম্রবন সম্পন্না নদীতীবেধ সংস্থিতা । তীবেধভুক্তিযোগেন তৈবভুক্তি বিতিস্মৃতা । ।
খর্থাত্ হে ঋনীশ্বব ! ও ধন্য ছথি জে মিথিনা মেঁ যনেপূর্রক নিরাস কবএ ছথি খা মিথিনাক গামে গাম ঘূমএ ছথি । ঞ মিথিনা সদৈর খামক রন সঁ সম্পন্ন নদীক তটৈ পব স্থিত খছি খা তীব মেঁ ভোগক নেন প্রসি(খছি । তে তীবভুক্তি খর্থাত্ তিবহুত নাম সঁ সেহো জানন জাএত খছি মিথিনাঁচন ।
প্ববাণোক্ত কপিনেশ্বব, হবিনাখী , পিপ্পনীরন , ফুনহব ,গিবিজাস্থান , রিনারতী , হবিহ্বকী , কূপেশ্বব ;ঋশেশ্ববস্থান হ্ন , সিংহেশ্বব , জনকপ্বব ,রনগ্রাম ,সিন্দূবেশ্বব , ত্রপনাযনরন , রিষহব , মংগনা, মংগনরতী রিবজা , পাপহাবিণী , স্বখেনীরন খাদি তীর্থ সঁ পারন মিথিনাক মহিমা রূহদ্বিষ্ণুপ্ববাণক মিথিনা মাহাত্মে মেঁ রর্ণন কএন গেন খছি ।

মিথিনাক নোকগীত মেং ধর্ম খা নোক ব্যৈরহাবক প্রধানতা খছি । ব্রাহ্মরেনাক, পবাতী , শ্রেমগীত;নগনীক্ষ ,গোদনা , ভগরতীক খারাহ্ন গীত ;গহব্ব মে প্রচনিত গীত ঝুমবাক্ষ , কোশী সংস্কৃতি মেং রিকসিত গীত সহিত পরংপবাগত সংস্কাব গীতক কতেকো প্রকাব মিথিনাক নর পীঢ় ়ি কি রীচ নুপ্তপ্রায খছি ।

ওহি নুপ্তপ্রায গীত সভক শৈন্ধ বচনা ,ধ্ন ,স্বব ,নয খা ভাব এখনহুঁ সরকেং খাকর্ষিত কবগত খছি । সর তবহেং জ্ঞান কেং রব্রু ারি রনা , সংস্কাবক সংগ বীতি নীতিক রোধ কবার রনা খা স্বনরা মে মনোবংজক খছি ও গীত সভ । এখনহুঁ জতএ কতহ্ পবাতীক স্বব কান মেং পড়ৈছ মন ভার রিভোব ভ জাগত খছি । প্রস্তুত খছি সাহেবদাসক নিখন পবাতী মৌনিক পাবংপবিক ভাস মেং –

খজহুঁ ভজন চিত চেত ক্ষগ্বধ মন খজহ্ ভজন চিত চেত । ।

রানাপন তরুণাপন রীতন , কেস ভযে সভ সেত ক্ষগ্বধ মন । খজহুঁ । ।

জা ক্ষখ বাম নাম নে খারত , মানহ্ সো জন প্রেত ক্ষগ্বধ মন । খজহুঁ । ।

হবি রিক্ষখী স্বখ নহত ন করহুঁ , পবএ নবক কে বেত ক্ষগ্বধ মন । খজহুঁ । ।

সাহেবদাস তোহি ক্যা নাগত , বাম নাম ক্ষখ নেত ক্ষগ্বধ মন খজহুঁ ভজন চিত চেত । ।

পবাতীক সংরধ মেং শ্রেষ্ঠ জন কহগ ছথি – জখন পবাতী গাওন জাগ ছন ত এক কোস ধবি ওব ধ্বনি পহুঁচগত ছন । পবাতীক ভাস খা ভার নোকসভ কে জগা ক মংগন রিহানক খানন্দ দৈত ছন । ওহি

ভাসক পবাতী কেহন হোগত খছি ,দেখন জায –
 প্রাণ বহত নহি মোব শ্যাম রিন্ব প্রাণ বহত নহি মোব
 । ।
 কাহি পুছও কোও মোহি নে রঁতারঁএ , কহাঁ গেন
নন্দ কিশোব । শ্যাম রিন্ব । ।
 ছন কএ গেন ছনিক নন্দনন্দন , নৈন ঝঝাগছ নোব
 । শ্যাম রিন্ব । ।
 সাধ্যী মৌন কানন পশু পংছী , কতহ্ নে ক্ষহ্কএ মোব
 । শ্যাম রিন্ব । ।
হমহ্ঁ মবরঁ হ্নি রঁহ্বি ন খাএরঁ , সাহেরঁ জীরন দি
ন খোব । শ্যাম রিন্ব প্রাণ বহত নহি মোব । ।

মধ্রঁনী মেং শ্রী দ্গস্থিান ,কোগনখ মেং ভদ্রকানী,শ্রী দ্গশিক্তিপীঠ , মংগবৌনী মেং রঁঢ় ী মাঙ, ডোকহব মে বাজবাজেশ্বিবী ,জিতরাবপুব মে সি(কানী পীঠ ,ঠাঢ় ী মে পবমেশ্বিবী স্থান , খোজপুব মেং তাবামংদিব , সহবসা কে রনগাঁর মে উঁগ্রতাবা , রিবাঠপুব মে চন্ডিকা ,রঁদনাঘাঠ মে কাত্যাযনী , পচগছিযা মে শ্রী কংকানী , পঠৈবী খা গঢ়রঁক্ষখাবী মে দশমহারিদ্যা ,দেরনাডীহ মে রনদ্র্গা , দবভংগা মে শ্যামামংদিব , ম্নছমর্দিনী , গনমা মে তাবাস্থান ,পচহী মে চাম্মুন্ডা , খহন্যাস্থান ,ককবৌন মে শীতনা স্থান , পূর্ণিযাং মে পূবনদেরী , খববিযা মে দক্ষিণ কানিকা মংদিব , হ্মজহফবপুব মে ত্রিপুবস্বন্দবী , সখবা মে সখনেশ্বিবী , উঁচঠ মে ছিন্নমস্তিকা , চম্পাবন মে রৈবাঠী দেরী , চন্ডী স্থান , সহোদবা স্থান সন কতেকো দেরী তীর্থ সঁ সম্পন্ন মিথিনাক জন জন মে দেরী শিক্তিক উঁপাসনাক পবংপবা সমৃ(খছি ।

मिथिलाक घर घर मे स्कन्ददेवी रूप मे पूजित हेबाक कारणेँ विविध भारक देवीगीतक परंपरा विकसित भेल। संपूर्ण भारत वर्ष मे मिथिला एकमात्र क्षेत्र अछि जतए भगवती गीतक सर्वाधिक धुन पाओल जाइछ । कोनो मंगल कार्यक आरंभ मे गोसाउँनिक गीत गेबाक जे परंपरा अछि ओहि मे प्रचलित अधिकांश गीत आ धुन लुप्तप्राय अछि । लोककंठ मे एखनहुँ कतहुँ कतहुँ सूनल जा सकैछ एहन किछु गीत । यथा

1 पारंपरिक

जय जय जय जय दिअ हे गोसाउँनि हे मा तारिणी त्रिभुवन देवी ।

सिंह चढल मैया फिरथि गोसाउँनि हे मा अतिबल भगवती चण्डी ।।

कट्ट कट्ट कट्ट मैया दन्त शब्द कएनि हे मा गट्ट गट्ट गिरलनि काँचे ।

घट्ट घट्ट घट्ट मैया शोणित पिबलनि हे मा मातलि योगिन संगे ।।

2 म0म0मदन उपाध्याय

जय जय तारिणी भव भय हारिणी दुरित निवारिणी रव माने ।

परम स्वरूपिणी उग्र विभूषिणी दनुज विदूषिणी अभिमाने । ।

त्रिभुवन वासिनि खल खल हासिनि भूत निवासिनि स्वविशाने ।

त्रिभुवन तारिणि त्रिपुर विदारिणि वदन करालिनि अभिमाने । ।

शतमख फल दे दिविशत शुभ दे अविकल भय दे

धननिनে ।
খতি ধন ধন দে হবি হব জয দে খন্বপম রব দে রব শিনে । ।
মদন রিনাসিনী রিদিত রিকাসিনি কব গ্নতপাশিনি জগদীশে ।
হবিকব চক্রিণি হবিকব রক্তিণি হবিকব শূনিনি পবিমিশে । ।
বরি শেশি নোচিনি কন্বষ রিনোচিনি রব স্বখ কাবিণি শির সংগে ।
শ্রুতি পথ চাবিণি মহিষ রিদাবিনি ক্ষিতিজ রিপোথিনি বণ সংগে । ।
খতিশয মাসিনি কমন রিনাসিনি তিমিব রিনাসিনি রব সাবে ।
হব হ্রদি হর্ষিণি বিপ্বক্ষন ঘর্ষিণি ধন বর রবসিনি হে তাবে । ।
জয জয তাবিণি ভর ভর হাবিণি দ্বিত নিরাবিনি রব মানে । ।
3 পাবংপবিক
কন্ধ ভর সাগব পাব হে জননী কন্ধ ভরসাগব পাব ।
কে মোবা নৈযা কে মোব খেরৈঁযা কে মোবা উঁতাবত পাব হে জননী । ।
খহীঁ মোব নৈযা খহীঁ মোব খেরঁগযা খহীঁ উঁতাবরঁ পাব হে জননী । ।
কে মোবা মাতা পিতা মোব কে ছথি কে মোব সহোদব ভাঙ হে জননী । ।
খহীঁ মোব মাতা খহীঁ মোব পিতা ছী খহীঁ সহোদব ভাঙ হে জননী । ।

4 কানিকান্ত
খখিন রিশ্নি কে নৈন তাবা খহী ছী হে জগদম্বঁ হম্মব সহাবা খহী ছী ।।
খনন রাহ্ম শিশি সূর্য সভ মে খহী মা , নদী কে রিমন মংজ্ধাবা খহী ছী ।।
বজ সত্ব তম কেব উঁদভর খহী মা , প্রগষ্ট মে তদপি শিংভুধাবা খহী ছী ।।
রিপত ধাব মে স্বত জৌং ড্রিং বহন হো তকব হেত্ত নিকষ্টক কিনাবা খহী ছী ।।
রিনয কানিকান্তক স্বনত খান কে মা দযা কে সকন সৃষ্ঠি সাবা খহী ছী ।।
5 পাবংপবিক
স্বব নব হ্মনি জন জগতক জননী হমবো পব হোগযৌ নে সহায হে মা ।।
জনম জনম সঁও হ্মকখ বঁনন ছী , খাবঁহ্ দেহ্ কিছ জ্ঞান হে মা ।।
কেও নে জগত বীচ খপন নখিত ভেন , হমহুঁ খহীক সন্তান হে মা ।।
দ্খিযা কে জিনগী মাতা দেখনো নে জাগএ , স্বখময জগ কক দান হে মা ।।
কাম ক্রাধ নোভ মোহ মাযা জান বাঁন্ধনহুঁ , হ্মক্তিক দেহ্ রবদান হে মা ।।
6 পাবংপবিক
হে জগদম্বঁ জগত মাতা কানী প্রথম প্রণাম কবৈ ছী হে ।।
প্রথম প্রণাম কবৈ ছী হে জননী হম ত কিছ নে জনৈ ছী হে ।।

নহি জানী হম পূজা জপ তপ খষ্টপষ্ট গীত গৰঁগ ছী হে ।
খষ্টপষ্ট গীত গৰঁগ্ৰ ছী হে জননী হম ত কিছু নে জনৈ ছী হে । ।
রিপতিক হান কছু কী খহা ঁ কে সৰঁষ্টা খহা ঁ জনৈ ছী হে ।
সৰঁষ্টা খহা ঁ জনৈ ছী হে মাতা ,হম ত কিছু নে জনৈ ছী হে । ।
মাত পিতা হিত মিত হ্নন পবিজন মাযা জান ৰঁঝন ছী হে ।
জগতাবিশী জগদম্ৰঁ খহীে ঁ কে ঁ গহি গহি চবন কহৈ ছী হে । ।
7 পাবংপবিক
হে খম্ব্ব মাতা হমবো পব হোগযৌ সহায । । হমাব জগজননী হমবো পব হোগযৌ সহায । ।
যুগ যুগ স ঁ ভষ্টকন ছী জীরন ভ ঁরব মে খাৰঁহ্ ঁ ডঁৰাঁব্ধ হে মায। ।
দ্ঃখহি জনম ৰাঁন যৌরন মে পাওন স্বখ কে নে ভেষ্টন উঁপায । ।
খক্তানী শিক্তিহীন নোভী ৰঁনন ছী ,এহন নে জিনগী সোহায । ।
8 মহাকরি রিদ্যাপতি
খাদি ভরানী রিনয তুখ পায ,তুখ স্বমিবগত দ্বত দূব জায । ।
সিংহ চঢ়ন দেরি দেন পবরেশী ৰঁঘছান পহিবন জোগিন ভেষ । ।
ৰাঁম নেন খপব দহিন নেন কাতি , খস্বব কে ৰঁধএ চননি নিশি বাতি । ।

ञादि भवानी विनय त्तञ पाय ,त्तञ स्वमिवगत द्ुवत दूव जाय । ।
त्तञ भन छाज देवि ऋल्डमाव , नूपूव शैवॅद कवএ छनकाव । ।
भनঙা विद्यापति कानीकेनि सदा এ वद्ध मैया दिन भेनि । । ञादि भवानी
9 कवीश्वव चन्दा ঝा
त्तञ विंन्व ञाज भवन भेन वे घन विपिन समान । ।
जन्व विधि सिধिक गक्थ गेन वे मन मोगছ भान । ।
पवमेश्ववी महिमा त्तञ वे जग के नहि जान । मोव ঞपवाध छेमवॅ सवॅ वे नहि याचवॅ ञान । ।
जगत जननी काॅ जग कह वे जन जानकि नाम । नहव नेह नियत नित वे वह मिथिना धाम । ।
श्वभमयी श्वभ श्वभ सवॅ दिन वे थिव पति ঞन्ववाग । त्तञ सेवि पूवन मनोवथ वे हम स्वनित सभाग । ।

ग नवো गीत नৌ ध्न मे ঞছि । एकव ঞतिविक्त कतोक गीत ঞছि ऋदा ঞावॅक नवॅ पीढ़ ीक वीच एकव पवंपवागत शिक्षाक वेॅवहाव नहि देखन जাগছ । पविणामतः हिन्मी गीतक ध्न मे भगवती गीत सभक चनन
मैथिनी पवंपवागत गोसाঁउनिक गीत भगवती गीतक पवंपवाक समक्ष ঞस्तित्वक संकष्ट ঞছि ।
एकव ঞतिविक्त गाम गाम मे गहवॅव वीच भगतक मंडनी मे ঝूमवा गावॅक समृ(पवंपवा वहन ঞছि । ऋदा कानक्रमे गहो पवंपवा ঞस्तित्वक संकष्ट मेनि वहन ঞছि । नৌ सदस्यक समवेत स्वव मे ঝानि ঞा माॅडव

के संगति मे प्रस्तुत झूमबा गायन सँ भगरतीक आराहन होगत अछि आ भगतक शरीर मे देवी प्रगट होगत छथि । रीज रूप मे एखनहुँ रचन अछि ओ परंपरा सदा लुप्तप्राय अछि । रतद्ध यादर सन भगत चिन्तित छथि जे हुनक राद ग परंपरा कोना राँचत ? हुनकहि सँ सूनन अछि ग झूमबा गीत

अबही जे रन से मगया खबही कष्ठओनियग हे मगया खबही कष्ठओनियग हे ।
मगया जी हे रिंज्रन कष्ठओनियग रिष्ठ राँस जगदम्बा बचि बचि महन रनओनियग्ग हे । ।
 गोड़नागूँ पैयाँ पड़ूँ मगया जगदम्बा आग मगया गहरब अरियउँ हे ।
मगया जी हे बाथि निअउँ भगत केव नाज जगदम्बा कनजोबि पैयाँ पड़ग छी हे । ।
जहिना रनकरा खेनग माता के गोदिया हे , भरानी माता के गोदिया हे ।
मगया जी हे तहिना खेनारह् जग रीच जगदम्बा आर मगया गहरब अरियउँ हे । ।
 नामो ने जनग छी मगया पदो ने रूमै छी हे मगया पदो ने रूमै छी हे ।
 मगया जी हे सेरक रीच कण्ठ नियउँ रास जगदम्बा आर मगया नाज बखियौ हे । ।
 गोड़ नागूँ पगयाँ पकँ अम्बा जनाह्मखी हे मगया अम्बा जनाह्मखी हे ।
मगयाजी हे बाथि निअउँ अवज केव नाज जगदम्बा सेरक कनजोड़गए हे । ।

মিথিনাক ন্বপ্তপ্রায গীত– গর্ভ সঁ ছঠিহাব ধবি

সোহব খা খেনঙঁনা পব খাধাবিত সংস্কাব গীতক রাঁনগী

মিথিনাক গৌবরমযী শ্রেষ্ঠ সংস্কৃতি এরং পবম্পবা কেঁ স্ববক্ষিত বখরাঁক শ্রেয মৈথিনী নোকগীত কেঁ খছি। পবম্পবাক সূত্রধাব পূর্রজনোকনি মৈথিন সমাজক জন সামান্য কেঁ খপন মূন সংস্কৃতি ও পবংপবাক প্রতি ঙঁদাব রঁনারঁএ নেন তদন্বকূন নোকগীতক পবংপবা রিকসিত কএননি । কানান্তব মেঁ খনেকো রিদ্বান গীতকাব নে খপন হৃতি মে মৈথিনী নোকগীতক ভন্ডাব কে খহন্ত সমৃ(রঁনওননি । দেশ ,কান ঔব পবিস্থিতি মেঁ পবিরর্তনক সংগ সংগ নোকগীতক বচনা মেঁ সেহো রিরিধতা খাএন । হ্মদা খাদর্শ খাচাব পব খাধাবিত নোকগীতক পবংপবা নোককন্ঠ মেঁ স্থান পরঁগত বহন জে খাগযো মিথিনাক খাচাব খাদর্শ সঁ পবিচয কবরঁগত খছি ।
সর্ররিদিত খছি জে নোকগীতো মেঁ হৃত্রিমতানহি হোগত খছি । সমাজ মে প্রচনিত সামান্য রেঁরহাবক খভির্য্যক্তি হোগত খছি । মৈথিনী নোকগীতক খরনোকন সঁ মিথিনাক সভ্যতা ,সংস্কৃতি , বীতি বিরাজ ,পর্রত্যাহাব ,কনা ,সাহিত্য সামাজিক ঙঁন্নতি খা মানরীয খাকাংক্ষাক যথার্থ ৰূপ খাগযো খন্বভর কবরাঁ যোগ্য খছি । মিথিনা মেঁ জন্ম সঁ নহ কহ রিরাহ ধবি সরঁ রিঁধ রেঁরহাব গীতক সংগ সম্পন্ন হোগত খছি ।
রাঁবহো মাস মে প্রচনিত পর্র ত্যাহাব ব্রত পূজন খাদি পবংপবাক নেন খনগ খনগ গীত খছি ।)ত্তক খন্বসাব

মৈথিনী নোকগীতক খপন রিশেষতা বহন খছি মিথিনা মেং । রিৱাহ ও উঁপনযন খাদি সংস্কাবক গীত মেং খাস প্রকাব কে বাগক প্রযোগ ভেন খছি জে খন্য্ত্র নহি দেখন জাগছ । ধব্ম প্রধান ক্ষেত্র হেৱাঁক কাবণেঁ মিথিনা মেং প্রাতঃ জাগবণ সেহো
পবাতী নোকগীত সঁ হোগত বহন খছি । জহাঁ তক মৈথিনী নোকগীতক প্রকাবক প্রশ্ন খছি খনেকোঁ প্রকাবক নোকগীত খাগযো নোককংঠ মেং বচন ৱঁসনন খছি। প্বত্রকামনা ,জন্ম সঁ সংবঁধিত সামান্য ব্যরহাব এরং নোকাচাবক সহজ খভিব্যক্তি সোহব , খেনউঁনা , ছঠিহাব , পীপব পিনাওা , খাঁখ খঁজাওা , বঁধৈযা , খাদি নাম সঁ প্রচনিত নোকগীত সভ মে খছি । এহি মে নৌকিক এরং ভক্তি প্রধান রিষয পব খাধাবিত গীতক সমারেশ খছি । এক ভক্ত হৃদয স্ত্রীক প্বত্রকামনা ব্যক্ত কবগত সোহব খছি –
পাঁচ গাছ বোপন খাপ পাঁচে গাছে গমনী বে । নননা তগযো নে সোভয বঁগীচৱাঁ একহি চনন রিন্ব বে । ।
নহিবা মেং ছথি পাঁচ ভগযা খাওব পাঁচ ভাতিজ বে । নননা তগযো নে ভারএ নগহবৱাঁ একহি খমা রিন্ব বে । ।
সস্ববা মেং ছথি পাঁচ জাউঁত খাওব পাঁচ জগধী বে । নননা এক নহি ভারঁএ সাস্ববৱাঁ খপন হোবিনা রিন্ব বে । ।
গংগা পগসী নহগতহ্ঁ হবিবংশ স্বনিতহ্ঁ বে । নননা সূতি উঁঠি নগিতহ্ঁ গোব কি দৈর সহায হএত বে । ।
নননা একহি প্বত্র দৈর দীতথি জিউঁবা জ্ড়রিতহ্ঁ বে

। ।
रँचा जन्मक समय प्रसर पीड़ । स ॅ रिव्रेन स्त्रीक मनोादशाक रर्णन सेहो स्वाभारिक नगगत थ्छि । एहि प्रसंगक सोहव थ्छि है गस प्रसंग के सोहव गीत मे ं । प्रसर पीड़ ाक रेदना मे स्त्री थ्पन सास्व ,जेठानी थ्ा ननदियो कें स्वार्थी थ्ा कठोव बूॅमः नगैत थ्छि थ्ाओव प्वत्र प्राप्तिक रॉाद सभ कष्ठ कं रिसबि जाजगत थ्छि । प्वत्र जन्मक थ्ुशी मे ओकबा सभक रॅरहाव नीक नगगत थ्छि । एहि भार कें व्यक्त कबगत सोहव थ्छि –
थ्पन माए मोबा बहितग , ह्म ् ंहरां निमाबितग ,दबद रॅाॅटि नीतग हो ।
ननना पिया जी के माए निबमोहिया होबिना होबिना कबग हो । ।
थ्पन भाउँज मोबा बहितथि ड ाॅड़ नागि रॅगसतथि हो ।
ननना पिया जी के भाउँज निबमोहिया भानस भानस कबग हो । ।
थ्ाधा बाति रीतन पहव बाति थ्ाबो भिनसब बाति हो ।
ननना होगते भिनसब पह फाटैन होबिना जनम नेन बे । ।
ननना प्वत्र फन पाओन से देखि सरॅ द्ःख रिसबन बे । ।
मिथिना मे जन्मक प्रथम उँसेर छठिहाव होगत थ्छि । एहि उँसेर मे ननदि थ्ा भाउँजक रीच हास पबिहासक जे स्वाभारिक रूप मिथिना मे थ्छि तकब थ्भिर्व्यक्ति खेनउँना ओब रॅधगया गीत मे थ्छि ।

ननदि आ भाउजक बीच मधुर संबंध कें व्यक्त करैत एक खेलउना मे छठिहावक अवसर पर ननदि कें बजाबै लेल पति सँ आग्रह करैत भावव्यक्त होइत अछि –

पिया तोर गोर लागूँ ननदी मँगा दे ।

जब रे ननदिया नगर बीच आएल । पूरी मिठाइ बँड्र.... । मीठ लागे । । पिया तोर गोर लागूँ

जब रे ननदिया दुअरे बीच आएल । खिड़िया बाजे बँड़ । मीठ लागे । । पिया तोर गोर लागूँ

जब रे ननदिया आँगन बीच आएल । ननदी के बोली बँड़ । मीठ लागे । । पिया तोर गोर लागूँ

जब रे ननदिया सोरबी बीच आएल । बेसबि माँगे बँड़ । तीत लागे । । पिया तोर गोर लागूँ ननदी मँगा दे । ।

आओर भाउज आ ननदिक बीच हास परिहास एहनो होइत अछि जाहि मे ननदि गहनाक माँग करैत अछि आ भाउज ओहि माँग के अपना तर्क सँ टारबाक कोशिश करैत अछि ।

ननदि– सब गहना मँ नथिया बँड़ । महराजा हो बाज । ।

भाउज– नथिया ने देब ननदिया हो महराजा हो बाज । ।

;ननदि बँचा कें उठाकऽ चलि दैत अछि । तखन भाउज कहैत अछि ꞉

नय गेलउ बबुआ उठाय हो महराजा हो बाज ।

दए जाहु ननदी बउआ हमार महराजा हो बाज । ।

नए जाहु भगया उठाय हो महाराजा हो बाज ।

ननदि– हम लेबउ भगया के बाज हो महाराजा हो

बाज । ।
भाउज– जौं तोहें नेने ननदी भगया के बाज
महाबाजा हो बाज ।
की नेतग नेउंआ हमाब हो महाबाजा हो बाज । ।
भाउजक तर्कक समक्ष ननदि हाबि जागत अछि तखन
ननदि नेधैया गनेगत अधिकाब पूर्वक भाउज स ँ कहैत
अछि –
नेधगया हम नेनेउं भउंजी हे । ।
अ ँउंठी आ ऋनवी हम नहि नेनेग । जड़ाउंदाब कंगना
भउंजी हे । । नेधगया
नोनी आ कनफून हम नहि नेनेग । मीनादाब नथिया
भउंजी हे । । नेधगया
नोजू रिजउंठा हम नहि नेनेग । घ ँ ुघरूदाब पायन
भउंजी हे । । नेधगया
बेसम के सविया हम नहि नेनेग । नहवदाब चूनवी
भउंजी हे । । नेधगया हम नेनेग भउंजी हे । ।

ऋदा आनें एहि सनें तबहक गीतक पबंपबा लुप्त प्राय
अछि तें ग गीत सभ सेहो लुप्त भऽ बहल अछि ।
एहि सभ गीतक पबंपबा लुप्त भेला स ँ लौकिक
पबंपबागत संनेंधक मधुबता कोन रूप मे प्रभारित भऽ
बहल अछि रिचाबणीय अछि संगहि गहो रिचाबणीय अछि
जे ओहि आदर्श कें नेंचानेंऽ के रिकल्प कोना खोजल
जाय ।

<u>मिथिलाक लुप्तप्राय गीत– रिराह संस्काबक लुप्तप्राय गीत</u>

মিথিনা মে অনংত র্যাপক বহন অছি রিরাহ সংস্কাব গীতক পবংপবা । রিরাহপূর্রহি সঁ গীতক বীত অছি মিথিনাক নোক জীরন মে । রিরাহ যোগ্য কন্যাক হেতু জখন স্বযোগ্য রব খোজঽ নেন পিতা আ অন্য সংরঁধী নোকনি জাগত ছথি তখন জে গীত গাওন জাগত অছি সে সম্মব ,ক্ষমাব ,নগন আদি গীতক নাম সঁ জানন জাগত অছি । এহনে একটা সম্মব কে রাঁনগী অছি জকব রিষয সীতা স্বযংরব সঁ সংরঁধিত অছি । মিথিনাক রৈঁটী রূপ মে সর্রমান্য সীতাক রিরাহক ও সম্মব এখনহুঁ রীজ রূপ মে ,নোককণ্ঠ মে স্ববক্ষিত কিন্তু ন্নপ্তপ্রায অছি । সে গীত অছি –

জানকি অংগনা রঁহাবন ধনুখা উঠাওন হে । আহে
পড়ন পিতা হ্মখ দৃষ্ঠি পিতা প্রণ ঠানন হে । ।
বাজা বাজ নে ভারয ভাখথি বানী হে । আহে
রৈঁটী রিঁযাহন জোগ স্বজোগ রব খোজহ হে । ।
জে গহো ধনুখা কঁে তোড়ত দের নোক সাক্ষী
হে। আহে বাজা হো আ কি বংক তাহি দের জানকি
হে । ।
দেশী হি রিদেশী কেব ভূপ স্বযংরব আযন হে ।
আহে ধনুখা তোড়ন সীবী বাম মংগন ধ্নি রাঁজন হে
। ।

রিরাহ স্বনিশ্চিত ভেনা পব আঁগন মে নগনক গীত গেরাঁক পবংপবা বহন অছি । রিরাহ সঁ পূর্র কন্যা ক জে কোনো রিধ রৈরহাব হোগত অছি তাহি মে নগনক গীত স্ত্রীগণ নোকনি দ্বাবা সমূহ মে গাওন জাগত অছি

। एहन पारंपरिक गीतक पद आ धुन आइँक विवाह संस्कार मे लुप्तप्राय अछि । लोककण्ठ सँ प्राप्त एहने एकटा गीत अछि –

राजा जनक जी कठिन प्रण ठानल आहो राम रामा ।
दुखवहि राखल धनुखिया हो राम रामा । ।
जे एहो धनुखा केँ तोड़ि नबाओत आहो राम रामा
। सीता केँ ब्याहि लय जाएत आहो राम रामा । ।
देशे हि विदेशे केव भूप सबँ आएल आहो राम रामा
। धनुखा केँ छुबि छुबि जाय आहो राम रामा । ।
लंकाधिपति राजा रावण आएल आहो राम रामा । ओ
हो रे घुमल आधि बँटिया हो राम रामा । ।
मुनि जी के संग दुओ बाँलक आएल आहो राम रामा
। धनुखा तोड़ल सीरी राम आहो राम रामा। ।

विवाहक संबँध निश्चित कऽ बाँबाँ अबैं छथि आ विवाहक दहेज आ अन्य अनुष्ठान सभक चिन्ता मे सोचैत आँखि मूनि विछान पर पड़ि रहै छथि । आंगन मे सभक मोन मे विवाह स्वनिश्चित हेबाँक आनन्द आ उछाह अछि । ए देखि बेंटी केँ जिज्ञासा होए छै ओ बाँबाँ सँ हुनक एहि भावक कारण पुछैत अछि । एहि भावक एकटा ' समाव 'गीत अछि जाहि मे बाँबाँ आ बेंटी विवाहक संबँध मे परस्पर जिज्ञासाक समाधान अछि। पारंपरिक समाव गीतक से पद आ धुन लुप्तप्राय अछि । ओहने एकटा गीत अछि –
बेंटी– नदिया के तीरे तीरे बाँजल बाँजल किए बाँबाँ सूतह निचिन्त हे ।
बाँबाँ– किछु बाँबाँ सूतल किछु बाँबाँ जागल किछु बे

রিঁযাহক সোচ হে । ।

কে হে সম্হাবত এতে রঁবিযাত , কে হে কবত কন্যাদান হে ।

রেঁঠী –ভগযা সম্হাবত এতে রঁবিযাত , রাঁরাঁ কবতা কন্যাদান হে । ।

কথিএ রিঁনা রাঁরাঁ খীবীযো নে হোখএ ,কথী রিঁন্ব হোম নে হোয হে ।

কথিএ রিঁনা গহো সগবা খন্হাব ভেন , কথী রিঁন্ব হোমা নে হোএ হে । ।

রাঁরাঁ–দূধ রিঁনা রেঁঠী খিবীযো নে হোখএ , ঘীউঁ রিঁন্ব হোম নে হোয হে ।

রেঁঠী রিঁনা গহো সগবা খন্হাব ভেন , ধিযা রিঁন্ব ধর্ম নে হোয হে। ।

মিথিনাক রিরাহ সংস্কাব মে পবিছন গীতক রঁহ্তো পাবংপবিক গীত খা ধ্ন ন্বপ্তপ্রায খছি। ওহেন কিছ ধ্নক পবিছন গীতক উঁদাহবণ এহি রূপেঁ দেখন জা সকগছ । রেঁঠী কে নছমী খা জমায কে রিষ্ণু রূপ মে ব্যঞ্জ কবৈত পাবংপবিক পবিছন খছি –

সখী হে নছমী কে দ্নহা নগগ ছনি কোনা ? জেনা রিষ্ণু উঁতবি খএনা খঁগনা । ।

সখী হে দ্নহা কে চানন নগগ ছনি কোনা ? জেনা রিঁজ্বি তবংগ ছিঁটক্ষি নভ না । ।

সখী হে দ্নহা কে কেস নগগ ছনি কোনা ? জেনা সাওনক শ্যাম ঘঠা ঘন না । ।

সখী হে দ্নহা কে হাথ সোভয কংগনা । জেনা হবি কেব হাথ স্বদর্শন না । ।

সখী হে নদ্ধুঁ নহঁ দ্নহা চনগ ছথি কোনা । জেনা সিংহ চনয নিবভয রন না । ।

पविछनक रिंध जखन श्रावंभ होएगत श्रछि तॅ सरॅसॅ पहिन रिंछ होएगछ धृवछक श्रर्थात् दृनहाक स्वागतगीत । एहि मे एक सोहागिन स्त्री माथ पव कनशे नः कः दृनहाक समक्ष ठाठ होएगत श्रछि श्रा पविछनक डाना सजओने रिधकबीक सॅग स्त्रीगण नोकनिक समूह धृवछक के गीत गरॅगत श्रछि । ओहि गीत मे दृनहा सॅ जनपूर्ण घर्ट मे द्रव्य श्रर्पित कबराक संकेत होएगत श्रछि । एहन एक गीत श्रछि –

स्वन्दबि नरेनी ठाढ़ि धृवछक गारॅथि हे सोहाओन नागे ।
सोना के कनसिया नेने माथ हे सोहाओन नागे । ।
श्रानन्द रॅधारा रॉजे नृप जनरासा हे सोहाओन नागे ।
दशेबथ रिंबाजथि स्वत के साथ हे सोहारन नागे । ।
स्वनन श्ररधपति दृनहा के स्वागत सोहाओन नागे ।
कनशा मे देन मानिक सात हे सोहाओन नागे । ।
तखन रशिष्ठ म्हनि देन श्रन्वशासन हे सोहाओन नागे ।
कक्क जाय सिया के सनाथ हे सोहाओन नागे । ।

धृवछक के बॉद जे पविछनक रिंध होएगत श्रछि ताहि मे श्रवरा चाउँबक पीसन चानन ,सिन्दृव , काजव , ठःक ,रॅःक , रॅसन , भानबि ,बाओ ,नरण श्रादि रिरिध उँपचाव सॅ सजाओन डाना होएगत श्रछि रिंध रॅरॅहाबक बीत पविछन गीत मेँ ब्यक्त होएगत श्रछि । एहने एक पविछन श्रछि –
सखिया पवीछू दृनहा हवषि श्रपाव हे । जेहने सनोनी

धीया तेहने क्षमाब हे ।।
चानन सजाउँ सखि ङुँचे बे निनाब हे । काजब नगाउँ सखी नयना किनाब हे ।।
निह्छू नबण बाअा ट्ठैनमा जे ट्ठाब हे । बिह्ँसबँ चोबाबेँ चित दिख पान डाब हे ।।
नखियो हबैयो स्वधि बुँधियो हमाब हे । कनक पबीछू खोनि खन्तुब द्खाब हे ।।
एहन गीत गबँगत द्नहा केँ पबीछि क खाँगन बिबाहक बेदीक समीप न जेबाँक पबंपबा खछि । द्खाब सँ खाँगन मेँ प्रबेशी भेना पब द्नहाक खाँगन मे स्वागत होगत खछि श्भकामनाक पबिछन गीत सँ । एहि भाबक श्भकामना सँ भबन पबिछन गाबि गागनि नोकनि द्नहा द्नहिन नेन श्भ श्भ कामना गीत मे ब्यक्त कबैत छथि । एहन एक गीत खछि –
पबीछि निख बब केँ श्भे हो श्भे दूभि खक्षत निछाक श्भे हो श्भे ।।
दधि केसब सम्हाक श्भे हो श्भे नगाउँ निन दिठौना श्भे हो श्भे ।।
नागे जग सँ नग ट्ठैना श्भे हो श्भे नीहछू नौन बाअा श्भे हो श्भे ।।
नैन कक्क खाँजनाग श्भे हो श्भे फून माना सजाउँ श्भे हो श्भे ।।ट
पान बीड़ा पबाउँ श्भे हो श्भे घ्राण बाँसू खतब दय श्भे हो श्भे ।।
गान सेदू शिना दय श्भे हो श्भे मूज नए मूजिखाउँ श्भे हो श्भे ।।
बही नह बहियाउँ श्भे हो श्भे धन्य सीता सहेनी श्भे हो श्भे ।।

ब्रँह्म पाओन घबहि मे शुभे हो शुभे बाथ् हिय कोरँबहि मे शुभे हो शुभे । ।
थ्राबँ थ्रागर्ाँ नः चनियन्व शुभे हो शुभे रिँध थ्रागर्ाँ कबरिँयन्व शुभे हो शुभे । ।

मिथिना मे पर्वतबाज हिमानय केँ बाजा , गौबी थ्रा भगबान शिब केँ जमाय ब्प मानि कः बँरौक रिबाह मे शिब रिबाहक पबिछन गीतक पबंपबा समृ(बहन थ्रछि । शिब रिबाहक एक पबिछन थ्रछि –
शुभ दिन नगन रिँयाहन गौबी बँनि ठनि दुनहा थ्रएना हे ।
कंठ गबन नब उँब सिब माना कंठ नाग नपटएना हे । । शुभ दिन नगन .....
भान तिनक शशिपान नगैना जटा मे गंग बँहएना हे ।
बूँढ़ बँड़द थ्रसबाब सदासिबँ डमब्ध डिमिक बँजएना हे । । शुभ दिन नगन .....
भूत पबेत डाकिन साकिन संग जोगिन नाच नचएना हे ।
थ्रन्हबा न्वनहा बँहिबा नंगबा थ्रगनित भेस सोभएना हे । । शुभ दिन नगन ......
स्नान स्वगब सिब जान ब्धथब तन संग बँबियतिया नएना हे ।
नगबक नोक सबँ स्वनि स्वनि बाँजनि कोठा चढ़ि कःदेखएना हे । । शुभ दिन नगन .....
बँजब पबौ बँबियात भयंकब सबँ कोगं देखि पड़ैना हे ।
साहस कबि सबँ सथियन संग भए पबिछन मैना कएना

हे । । शुभ दिन लगन .....
नाग छोड़ति फुफ्कार देबएना खसति पड़ति घर अएना हे ।
सभ ओबियतिया हुलसति छतिया सभ जन आसा गएना हे । । शुभ दिन लगन.....
कन्यादानक वैदिक कर्मकाण्डीय विधिक बीच कन्यादानक गीतक परंपरा सेहो लगातार पीढ़ीक बीच लुप्तप्राय अछि । एहन गीत मे शिव पार्वतीक विवाहक कन्यादान गीत गेबाक परंपरा अछि । एहन एक गीत अछि –
 देखियनु देखियनु हे ओहिना
जनक सुनयना मणिमंडप पर सुता दान दए ना । ।
जनु मएना हिमगिरि मुनि अएना पुण्य सुअवसर अयना ।
देखु दुलह दुलहिन के जोड़ी चारु वरी मएना । ।
पुलकित तन हुलसैछ मगन मन फूटैनि नहि बएना ।
कर पर करतै पर फल अक्षत शंख सुसोहय ना । ।
सदानंद मृदु मंत्र पढ़ ाबथि करथि लोक विधि ना ।
सियाराम रासेन्य भाव रस हिय मे उमड़य ना । ।
देखियनु देखियनु हे ओहिना । ।
सीता राम विवाहक जे कन्यादान गीत अछि ताहि मे बेटीक वियोगक करुणा भाव व्यक्त अछि । बेटीक प्रति माएक भाव एहन गीत मे व्यक्त होइत अछि । ऋदा आबैक विवाह मे ओ गीत सभ लुप्तप्राय अछि । कन्यादानक एहन एक गीत अछि –
जॅघिया चढ़ ाए बाबा बैसला मण्डप पर बाबा करु ने धीया दान हे ।
रव कर कंजतर नलीकर उपर ताही मे सोहत फल

পান হে । ।
গুরু বশিষ্ঠ জী মংত্র উঁচাবথি মংত্র পঢ়থি সীবী বাম হে
।
সব় সখিযন মিনি মংগন গাব়থি হুনব়বিসত বহ্ বাব
হে । ।
সিসকি সিসকি কানথি মাত্ত হে স্বনৈনা আব় রেঁটী ভেন
রীবান হে ।
জাহি রেঁটী নেন হম নইখা নচওনহুঁ সেহো রেঁটী ভেন
মোব রীবান হে । ।
চুপে বদ্ধু চুপে বদ্ধু মাত্ত হে স্বনযনা ওা থিক জগ
ব়েরহাব হে । ।

ব়বিযাতীক ভোজনক সময মে প্রচনিত 'জেরনাব ' গীত
সেহো ন্বপ্তপ্রায থছি । পবংপবা সঁ ওা প্রচনন বহন
জে জখন ব়বিযাতী ভোজন জেময বৈসথি তঁ হুনক
স্বাগত জেরনাব গীত সঁ কএন জাএ । এহি গীত মে
হাস্য রিনোদক শৈর্ঙ্ক ,স্বব আ প্রস্তুতি সঁ পবিপূর্ণ
ব়বিযাতক ভোজন সেহো দেখ২ জোগ হোগত ছন ।
আব় ওহন পদ সভক গাযন ন্বপ্তপ্রায থছি । ওহনে
একটা 'জেরনাব' গীত থছি –
ভোব ভএ মিথিনাপতি মংদিব সমধী জেমন আযো জী
। ।
খোআ কে গিনাব়া ব়না কে ব়বফী কে গষ্টারা জোবাযো
জী ।
গমবতী জিনেবী কে জঁগনা নগাযো গ্বনজাম্ন কে
খংভা নগাযো জী । । ভোব ভএ....
পাপড় কে সখী ছরনী ছরাযো নিমকী কে ফাষ্টক ব়নাযো
জী ।

দহী চীনী কে চূনা পোতাযো বচি বচি মহন রঁনাযো জী । । ভোব ভএ ......
পূড় ী কচৈড় ী রিষ্টোনা রিষ্ডাযো মনপূখা কে চনমা ঠঁগাযো জী ।
নড্ডু কে নঠকন নঠকাযো খাজা কে ঝাড় নগাযো জী । । ভোব ভএ ....
মঁদিব মে রঁগসন সমধী জন রাঁজে খানন্দ রঁধারাঁ জী ।
ছপ্পন ভোগ রঁত্তীসো রেঁখঁজন ভবি ভবি সোনে কে থাবী জী । ।
ভোব ভএ মিথিনাপতি মঁদিব সমধী জেমন খাযো জী । ।
দ্নহা মে ধৈর্য ,রিনম্রতা খা সহিষ্ণুতাক ভার জগারঁহ নেন 'ডহকন 'গীতক পবংপবা বহন খছি । মান্যতা খছি জে মিথিনা মে ভগরান শ্রীবাম সেহো রিরাহ মে মৈথিনানীক গাবি স্বনি কহ প্রসন্ন ভেন ছনাহ তেঁ ওা পবংপবা নিবঁধি প্রচনিত বহন । শ্রী বাম ননা কেঁ জে গাবি ডহকন মে সূনহ পড়ননি তকব পদ খছি –
বাম ননা সন স্বন্দব রব কেঁ জ্নি পঢ়ি যন্ব কিযো গাবি হে । ।
কেরন হাস রিনোদক প্বছিযন্ব উঁচিত কথা দ্ও চাবি হে । । বাম ননা ....
প্রথম কথা ওা প্বছিযন্ব সজনী গে কহতা কনেক রিচাবি হে ।
গোবে দশবথ গোবে কোশিন্যা বাম ভবত কিএ কাবী হে । । বাম ননা ....
স্বন্ব সখী এক খন্বপম ঘঠনা খচবজ নাগত ভাবী হে ।

খীব খায র়ৈঠৌ জনমওননি খ্বরধপ্ববী কে নাবী হে । ।
বাম ননা ....
খ্বকথ কথা কী ব়াজূ সজনী হে বঘ্ক্ষন কে গতি ন্যাবী হে ।
সাঠি হজাব প্ব্ত্র জনমওননি সগবক নাবি ছিনাবী হে । । বাম ননা .....
মিথিনা মে দ্নহা সঁ হঁসী মজাকক পবংপবা সেহো ডহকন গীত মে খ্বছি । দ্নহাক সমক্ষ রিরাহক রিরিধ রিধ র়ৈরহাব সম্পন্ন কবার়ঁহ নেন উঁপস্থিত গাওনি নোকনি ডহকন গারি কহ দ্নহা সঁ মজাক কবৈত ছথি খ্বা সর় নোক হঠাকা নগাকহ একব খ্বানংদ নৈত খ্বছি । এহনে এক গীত মে দ্নহা কে সংর়োধিত গাওনি নোকনিক ভার খ্বছি –
দ্নহা গাবি নে হম দও ছী র়ৈরহাব কবও ছী । হম্মব র়ার়া ছথি ক্ষমাব খ্বহাঁ কে দাওা মাঁগও ছী । ।
দ্নহা গাবি নে হম দও ছী একঠৌ ব়াত কহও ছী । হম্মব ব়ার়ূ ছথি ক্ষমাব খ্বহাঁ কে মাওা মাঁগৈ ছী । ।
দ্নহা গাবি নে হম দও ছী এক রিচাব পূছৈ ছী । হম্মব ভওযা ছথি ক্ষমাব খ্বহাঁ কে র়হিন মাঁগৈ ছী । ।
রিরাহক পশ্চাত্ দ্নহা দ্নহিনক শযন কক্ষ কোহর়ব মে চাবি দিন তক বহর়াক জে পবংপবা খ্বছি তকব পোষণ কবৈত খ্বছি কোহর়ব গীত । এহি তবহক গীত মে কোহর়বক রিনক্ষণ রর্ণন হোওত খ্বছি জে দ্নহা দ্নহিন মে পবস্পব প্রেম ভার কেঁ র়ঢ় ারহ র়না ভার জগর়ওত খ্বছি । সীতা বামক কোহর়ব গীত মিথিনাক রিরাহ সংস্কাব গীত মে রিশেষ প্রসি(বহন খ্বছি ।

ম্দা খার্ঁ ণ্ডা গীত খা ধ্ন ন্নপ্তপ্রায খছি । এহনে এক গীত খছি –

কংচন মহন মণিন কে দিযবা কংচন নাগন কের্ঁাড় রে র্ঁনে র্ঁাঁসি কে কোহর্ঁব । ।

গজ দন্ত সেজ খা ফূনক রিছৌনা । বতন কে র্ঁনন শৃ্ংগাব রে র্ঁনে র্ঁাঁসি কে কোহর্ঁব । ।

তাহি পব সূতথি বঘ্রব দ্নহা । সীতা দ্নহিন সংগ র্ঁাম রে র্ঁনে র্ঁাঁসি কে কোহর্ঁব । ।

যোঁ ম্খ ফেবি সোরে বঘ্রব দ্নহা । দ্নহিন সোরে কবি মান রে র্ঁনে র্ঁাঁসি কে কোহর্ঁব । ।

দ্নহা দ্নহিন খংগ পবসি পবস্পব । হবষি নযন জন ছায রে র্ঁনে র্ঁাঁসি কে কোহর্ঁব । ।

মিথিনা মে রিরাহ সংস্কাবক খভিন্ন খংগ খছি মধ্শ্রারণী । এহি পর্র মে নররিরাহিতা তেবহ দিনক ব্রত খন্বষ্ঠান একভুক্ত পূর্রক করৈত ছথি । নিত্য দিন খপবাহ্ন মে ফূন নোঢ়্যি কহ্খানর্ঁার্ঁ পবংপবা খছি । এহি পবংপবা মে গাম ভবিক নররিরাহিতাক টৈনী ফূন নোঢ়র্ঁাক গীত গারি মনোবংজনপূর্রক ব্রত নিষ্ঠাক পানন করৈত খছি । নাগ নাগিনক পূজা কএন জাগত খছি তাহি র্ঁীচ রিসহাবাক গীত গাওন জাগত খছি । ণ্ডা দূনূ তবহক গীত খার্ঁ ন্নপ্তপ্রায খছি । ফূন নোঢ়্ব সঁ সংর্ঁধিত গীত খছি –

দ্ণ্ডা চাবি সখী সর্ঁ সামব গোবিযা ফস্বম নোঢৈ নৈ চননি মানিন ফ্নরবিযা ফস্বম নোঢ়ৈ নএ চননী মানিন ফ্নরর্ঁবিযা । ।

মাঁগ মে সিন্দ্ব সোভে মাথে পে টিকনিযা পোবিযা পোবিযা না সোভে খঁউঠী ম্নবিযা পোবিযা পোবিযা

ना ।
 हाथ मे लेल सखी फूल के चँगेविया से बहियो चलल
ना ताके तिवडी नजविया बहियो चलै ना । ।
फूल लोढ़ब के गौरीगीत विशेष प्रचलित रहल अछि
। ई गीत परंपरा सँ चालि रहल अछि आ वर्तमानहु
मे प्रचलित अछि मुदा नवतुरिया पीढ़ी के बीच लुप्तप्राय
अछि । एहन एक गीत अछि –
गौरी फूल लोढ़ब गेली फुलवरिया संग मे सहेलिया ना
। ।
 केओ सखी आगाँ आगाँ चलली केओ सखी पाछाँ
पाछाँ चलली ।
 केओ सखी बीचे बीचे गेली फुलवरिया संग मे सहेलिया
ना । ।
 बाधा आगाँ आगाँ चलली सीता पाछाँ पाछाँ चलली
।
गउँरी बीचे बीचे चलली फुलवरिया । । संग मे...
केओ सखी डाली भरि लोढ़लनि केओ फुलडाली भरि
लोढ़लनि
केओ सखी लोढ़ि नेलनि भरि फूल डलिया । । संग
मे.....
बाधा डाली भरि लोढ़लनि सीता फुलडाली भरि लोढ़लनि
गउँरी लोढ़ि नेलनि भरि फूल डलिया । । संग मेें.....
केओ सखी शुद्ध वर माँगलनि केओ सखी बाम वर
माँगलनि
केओ सखी माँगि नेलनि तपसी भिखविया । । संग
मे.....
बाधा शुद्ध वर माँगलनि सीता बाम वर माँगलनि
गउँरी माँगि नेलनि तपसी भिखविया संग मेें सहेलिया

ना । ।
मध्श्रावणी पूजा मे परनगतिन जखन नाग नागिनक पूजा करैत छथि तखन हुनक स्वागक शुभकामना व्यक्त करैत विषहारा गीत गेबाक परंपरा अछि ।
विषहारा गीत
कथी के घैलना विषहरि कथीके गेरुनि बाम कथी केर डोरी सँ भरबँ निरमल जल । ।
सोना के घैलना विषहरि रूपा के गेरुनि बाम रेशमक डोरी सँ भरबँ निरमल जल । ।
घैलना भरि भरि विषहरि अरसवा पुवाएबँ बाम एहि पर नाग बाँढू कवथि असनान । ।
ओहि पार विषहरि माग बोदन पसार बाम छोरु छोरु आहे नाग आँचर हमार । ।
बाम बोरँगत होयतीह सेरक हमार । ।
नरेँ नरँ नरेँबिया भैया नरेँ रँाँस खेरँ बाम कोने भैया खेरँनहार किये होयती पर । ।
नरेँ नरँ नरेँबिया भैया नरेँ रँाँस खेरँ हे भैरवर भैयार खेरँनहार विसहरि होयती पार। ।
जहिना जुड़ाएनि स्वहरेँ तहिना जुड़ाउँ बाम तोरो कन्त जीरँउँ गे स्वहरेँ नाख रँबिस । ।
लुप्तप्राय अछि विवाह संस्कारक समदाउँन । समदाउँनक गायन रँहौक द्विरागमनक अवसर पर स्त्रीगण लोकनिक समवेत स्वर मे होइत अछि । नवतुरिया पीढ़ी कि वीच करूणा प्रधान उँदासी ओ समदाउँन गीतक पद आ भास प्रायः लुप्तप्राय अछि । दू विभिन्न भासक गीत उँल्लेखनीय अछि –
गोर नागूँ पैयाँ परूँ स्वरूज गोसगयाँ रँहौ केे जनम जुनि देरँ । ।

बेँटी के जनम जुनि देबँ हे बिधाता निबधन कोखि जन्म जुनि देबँ ।।
निबधन कोखि जन्म जँओ देबँ हे बिधाता रूप अनूप जुनि देबँ ।।
रूप अनूप जँओ देबँ हे बिधाता प्रुरूख मूरूख जुनि देबँ ।।
कहबिया भासक एक समदाऊँन मे सीताक नहिबा सँ बिछोहक करूणा भाब व्यक्त अछि –
स्वभग पबित्र भूमि मिथिला नगबिया । हमबा केँ कहाँ नेने जाय छेँ बे कहबिया ।
बेला ओ चमेली चम्पा मालती कुसुम गाछ । आबँ कहाँ देखबँओ हाय बे कहबिया।।
सुन्दब सुन्दब बन सुन्दब सुन्दब घन सुन्दब सुन्दब सबँ बाँटे बे कहबिया ।
केबा ओ कदम्ब आम पीपब पलास गाछ । आबँ कहाँ देखबँग हाय बे कहबिया ।।
किनकब नयना सँ गंगा नीब बँहि गेल किनकब हृदय कठोब बे कहबिया ।
माएक नयना सँ गंगा नीब बँहि गेल बाबू के हृदय कठोब बे कहबिया ।।
केहि मोबा साँठल पऊँती पेटबिया । केहि मोबा देल धेनु गाय बे कहबिया ।
माए मोबा साँठल पऊँती पेटबिया । बाबू मोबा देल धेनु गाय बे कहबिया ।।
बाबा के मूँह हम देखबँग कोना आबँ काकी कोना बिसबबँ हाय बे कहबिया ।
भाग भतीजा आओब सखिया सलेहब आबँ कहाँ देखबँओ हाय बे कहबिया ।।

আাগ াঁ আাগ াঁ বামচন্দ্র পাছ াঁ ভাগ নছমন পহ্ িচি গেন ঝট্টপট্ট অৱধ নগবিযা।
মহন মে কোসিনা বানী আাবতী উঁতাবএ নগনী অযোধ্যা ৰাঁজএ ৰঁধাওা বে কহবিযা।।
মিথিনা কে ব্যারহাবিক নোকগীত মে পবস্পব সহযোগ এরং শ্রেম প্রধান গীত 'নগনী ';জ িতসাব ঙ্কু গৃহস্থীক
অভিন্ন অংগ বহন আছি । ও গীত জ াঁত চনৰঁগত দূ স্ত্রীক স্বব মে গাযনক পবংপবা বহন আছি । নগনী গীত ভক্তিভাৱ ,করুণা আ ব্যরহাব প্রধান হেৰোক কাবণে িপবস্পব সংৰঁধ কে সমৃ(ৰঁনেৰা মে সহাযক আছি । মশীনীকবণক যুগ মে জ াঁতক চনন প্রাযঃ ৰঁন্দ ভঽ গেন ,ঝদা দূব দেহাত মে এখনহ্ ি কতহ্ ি কতহ্ ি নোক কণ্ঠ মে স্ববক্ষিত আছি নগনীক গীত আ একব ভাস । বাধাকৃষ্ণ ভক্তি পব আাধাবিত কিছু নগনী গীত সাহেৰঁদাস পদাৱনী স ি সংকনিত কএ প্রস্তুত আছি ।

;1ঙ্কু
ৰঁসহ্ ি বৃন্দাৱন মোব জীৱন ধন
আ বে কান্হা স্বনি স্বনি ছতিযা মোবা সানয বে কী ।।
জৌং তোহেং জএৰঁহ হবি জিযৰঁগ নে একো ঘড় ী ।
আ বে কান্হা হমব সপথ তোহি মাধর বে কী ।।
জাহ্ জুনি মধুৰঁন তেজি কহ্ ি মোহন ।
আ বে কান্হা হমব সপথ তোহি মাধর বে কী ।।
কংস কে জান হ িতি দণ্ডএ অধম গতি ।
আ হে বাধা সাহেৰঁ আাওত কৃষ্ণ মাধর বে কী ।।

;2ঙ্কু কাহি কহৰঁ দ্ঃখ রচন নে আৰঁএ ঝখ ।

ঋা বে উঁধো ধগবজ ধএনো নহি জাগষ্ট বে কী ।।

কিএ তেজি হবি গেন হ্বৰ্ত্জী ঋধীন ভেন ।

ঋা বে উঁধো কেও নে কহএ এহি গোহ্বন বে কী ।।

শবণ ধএন জন্হি দ্ঃখ ন পাওন তনি ।

ঋা বে উঁধো সহ নিগম গ্বণ গাওন বে কী ।।

কত গ্বণ গএবঁউ কত নিত হম বোএবঁউ ।

ঋা বে উঁধো কওন সাহেবঁ হবি ঋানবঁ বে কী ।।

;3

কত দূব মধ্প্বব জতএ বঁসএ মাধব । ঋা বে সজনী বন বন মাধব হ্বনী ঢৈবএ বে কী ।।

ঋনবোঁ মে চনন কাঠী নিখবোঁ মে ভাতি ভাতি । ঋা বে সজনী দ্খ স্বখ নিখিযো বঁনাগএ বে কী ।।

এক ঋঁধিযাবী বাতি হবি বিঁন হ্বাটৈয ছাতী । ঋা বে সজনী কোগনী শবঁদে হিযা মোবা সানয বে কী ।।

সাহেবঁ গ্বনি গ্বনি বঁসনহ্ঁ সিব ধ্নি । ঋা বে সজনী জগত জীবন নিযবাযন বে কী ।।

মিথিনা মে প্রচনিত)ত্তপ্রধান গীত মে মনাব গীত ঋা ধ্ন সেহো ন্বপ্তপ্রায ঋছি । মিথিনা মে মনাব গীতক পবংপবা সমৃ(বহন ঋছি । বর্তমান মে মনাবক ও গীত ঋা ধ্ন ন্বপ্তপ্রায ঋছি । মনাব গীতক কিছু পদ সাহেবঁদাস পদাবনী সঁ সংকনিত প্রস্ত্ত ঋছি ।

;1 স্থ
আলী রে প্রীতম ৰড় নিরমোহিযা । ।
আত্তব রচন হমব নহি মানএ । পবম বিষম ভেল বতিযা । ।
কাঁপত দেহ ঘাম ঘমি আরত । সসবি খসত নর সবিযা । ।
আরত রচন থিব নহি আনন । ৰহত নীব দৃহু অঁখিযা । ।
বমানন্দ ভামিনি বহুঁ থিব ভএ । স্বখ ৰীচ কহু দৃঃখ ৰঁতিযা । ।

;2 স্থ
হে উঁধো নিখৰ কওনে রিধি পাতী । ।
খংচন পত্র নযন জন কাজব । নখ নিখি নহি থিব ছাতী । ।
চন্দ্র কিবণ ৰঁধ কবত এতয পিয । ওতয বহহ্ দিন বাতি । ।
বেশম রসন কনক তন ভূষণ তেসব পরন জিৰঘাতী । ।
কহথি বমানন্দ স্বন্ব রিবহিনি তোহে । আওত শ্যাম রিবহাতী । ।
হে উঁধো নিখৰ কওনে রিধি পাতী । ।

;3 স্থ
হে উঁধো ৰড় রে চত্তব ঘটৰবৰা । ।
দূব সঁ ৰজওননি নার চঢ়ওননি । খেরি নএ গেল মঁসধবৰা । ।
নার হিনওননি মোহি ডেবওননি । কএননি খজৰ

খিযনরঁা । ।
আঁচব ধএননি মোহি ন্মিকমোবননি । তোড়ননি গজমোতি হবরঁা । ।
স্বকরিদাস কহ ত্তুম্হবে দবস কো । জ্গ জ্গ জীরঁএ ঘংরঁবরঁা । ।

প্রেম ,শ্রৃংগাব আ বতি ভারক অভিব্যক্তি সঁ পবিপূর্ণ রঁংগমনী গীতক পবংপবা সেহো ন্বপ্ত প্রায অছি । ওনা এখনহ্ মাংগনিক অনুষ্ঠান মে জখন স্ত্রী গণ নোকনিক সমূহ গ্রাম দেরতা ডিহরঁাব,ব্রহ্মস্থান , মাটিমংগন , আম মহ্ রিযাহ আদি রিধি নেন ঢোন পিপহী বাঁজা কে সংগ নিকনৈত ছথি তঁ বাঁটে মে রঁংগমনী গীত গরঁগ ছথি । হ্দা নরঁ পীঢ় ীক মৈথিন নননাক বীচ ওহি উমংগ উসোহ আ প্রগল্ভতাক অভার তঁঁঁঁ অছিএ ,ওহন গীতক প্রতি উদাসীনতাক কাবণেঁ ও রঁংগমনী গীত সভ ন্বপ্ত প্রায অছি । ওহনে কিছু সংগ্রহিত রঁংগমনী প্রস্তুত অছি ।
স্নেহন , চুম্বন , আনিংগন ,বাগ আ অনুবাগ যুক্ত সংভোগক বর্ণন নাযিকাক উক্তি মে প্রস্তুত রঁংগমনী অছি –
কঁাচ কনী পহ্ তোড়থি সজনী গে , নএ কোবা বৈসাএ সজনী গে । ।
অধব স্বধা সম পীরঁথি সজনী গে , যৌরন দেখি নোভায সজগী গে । ।
নএ ভুজপাশে বাঁন্হি দ্নূ সজনী গে, জখন কবথি রঁবজোবি সজনী গে । ।
তখনুক গতি কী কহিএ সজনী গে, পহ্ ভেন কঠিন কঠোব সজনী গে । ।
নহি নহি জোঁ হম ভাখরঁ সজনী গে , তৌ বাখিএ মন

বোখ সজনী গে । ।
পতি জখন বঁহ্তো দিন পনৌ কেঁ রিবহ মে ব্যাক্ষন কেনাক বাঁদ খবৈঁত খছি তঁ পতি সঁ মিননক উঁসোহ কেহন ভহসকৈত খছি ? বঁহ্ত দিনক বাঁদ পবদেশী সঁ খাএন পতি সঁ মিনন হেত্ত কী কী তৈযাবী খা সাজ শ্রৃংগাব কববাঁক উঁকেংঠা হোগত খছি , তকব বর্ণন কবৈত বঁষ্টগমনী খছি –
কতেক দিরস পব প্রীতম সজনী গে খাএন ছথি পহ্ মোব সজনী গে । ।
মন দএ নেহ নগাএবঁ সজনী গে , বচি বচি খংক নগাএবঁ সজনী গে । ।
পহ্ থিক চত্তব সযানহি সজনী গে , হম ধনি খংক নগাএবঁ সজনী গে । ।
ও দিন জৌং হম কাষ্টবঁ সজনী গে , তখন কববঁ বঁব গান সজনী গে । ।
গাবিঁ স্বনেবঁনি হ্নকহ্ঁ সজনী গে , পহ্ কবতা বঁড় মান সজনী গে । ।


<u>গুপানন্দ ঝা (1970–),</u> *জন্ম– সমৌন, মধ্ববঁনী, মিথিনা। গণিতমে স্নাতকোত্তব (এন.এন.এম.যূ, দবভংগা), বী.নিবঁ. (জামিযা মিনিযা এস্লামিযা) খাহ সোচানা রিজ্ঞানমে এসোসিএষ্টশিপ,*

आर.एन.एस.डी.ओ.सी., नई दिल्ली। कृपानन्द जी मीरा बाई पोलीटेकनिक, महारानी बाग, नई दिल्लीमे व्याख्याता छथि। कृपानन्दजी यूथ ऑफ मिथिलाक अध्यक्ष छलाह आर एखन अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषदक जेनरल सेक्रेटरी छथि। हिनकर ६ टा शोध पेपर सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रमे प्रकाशित छन्हि, संगहि हिन्दी आर अंग्रेजीमे एक-एकटा कविता सेहो प्रकाशित छन्हि।

<u>मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र (25/10/1942—16/11/2010)</u>



चुनचुन मिश्र ओ ऋषियाजी जीक 25/10/1942 केँ भारतक आजादीक सन्घर्षक गर्भसँ जन्म भेलनि। हुनकर जन्मक वर्ष हुनकर सम्पूर्ण जिनगीमे झलकैत रहल। ओ आजन्म मिथिला ओ मैथिलीक लेल संघर्षरत रहलाह। अपन जीवनक अन्तिम क्षण धरि ओ मिथिला राज्यक लेल संघर्ष करैत रहलाह। 16-11-2010 केँ 2 बजे प्रात: काल मिथिला राज्यक सपना लेने

চ্নচ্ন ৰাঁবূ এহি দ্নিযাকেঁ ছোড়ি চনি গেনাহ ।
চ্নচ্ন ৰাঁবূক জন্ম বহিকা গাম, তহিযা দবিভংগা জিনা খা খাৰ মধ্ৰনী জিনামে ভেননি । হ্নকব প্রাবস্তিক শিক্ষা বহিকা এরং রাষ্ট্রীয় স্কূন, মধ্ৰনীমে ভেননি । ও 1960 ঙা রাষ্ট্রীয় স্কূন, মধ্ৰনীসঁ মেট্রিক পাস কেননি । ওকবা ৰাঁদ খাব. কে. কॉনেজসঁ 1966 মে স্নাতক কএননি ।
চ্নচ্ন ৰাঁবূক রিরাহ 1960 ঙা মে শ্রীমতি প্রেমনতা মিশ্রেক সংগ ভেননি । হ্নকা 4 প্বত্র খা 3 প্বত্রী ছথিন । সৰ প্বত্র খা প্বত্রীক রিরাহ দান ভয গেন ছনি । ভবিঘব নৈত, নাতিন, পোতা খা পোতী সৰ ছৈনি । নিরর্তমান হ্নক পনী বহিকা মে পবিরবক সঙ্গ বহিবহন ছথি ।

সমাজিক ও বাজননীতিক জীরন
1966 মে মিথিনাক মহন সোসনীষ্ঠ নেতা ৰাঁবূ সূর্য নবাযণ সিন্হ কে সম্পর্ক মে খাবি সোসনীষ্ঠ পৰ্টী কে সমর্পিত কর্যকর্তা ভয গেন ছনাহ্ ।

1978 ঙা মে ও বহিকা পন্চাযত কে ঝখিযা চ্নন গেনাহ্ । প্বন: ওকবা ৰাঁদ 2001 মেঁ ঝখিযাক চ্নার ভেন জাহি মেঁ প্বন: ও ঝখিযা চ্নন গেনাহ্ ।

1980 ঙা মেঁ জখন মৈথিনী কে দবকিনাব কবৈত রিহাব মে উর্দ্ কে ৰঠারা দেন গেন ত চ্নচ্ন ৰৰূ মৈথিনী খন্দানন মেঁ ঝদি গেনাহ্ ।

1992 মে জহন শ্রী নানূ প্রসাদ মৈথিনী কে ৰী পী এস

सी स निकानि देनखिन तखन मैथिनी सेरी सरॅ उँग्र खन्दानन कैननि। ओहि मेँ चुनचुन रॉबूॅ दिन्नी मेँ खामवण खनसन पव रैंसि गेनाह्।

2000 मेँ मधुरॅनी मेँ मैथिनी के खठ्ठम शूची मे सामिन कवराक नेन खामवण खनशेन पव पव 12 दिन तक बहनाह्।

1994 मे मिथिना वाज्य सन्घर्ष समिति के उँपाध्यक्ष मनोनीत भेनाह जकव खध्यक्ष डा जय कन्त मिश्र छनाह्। एहि संस्थाक संस्थापक सेहो डा जय कन्त मिश्र के नेत्रित्व मे खन्तववाष्ट्रिय मैथिनी पविषदक खन्तस्मात भेन छन्। जय कन्त रॉबूॅक निधन के रॉद वाज्य सन्घर्ष समिति के खध्यक्षक भाव चुनचुन मिश्र के फ़ववरी 2010 मेँ देन गेननि। हुनकव नेतृत्व मेँ मधुरॅनी, दविभंगा, म्जफ़्फ़वप्वव, समसतीप्वव, पटना खादि कतेको जगह मिथिना वज्यक निर्माणक नेन धवना प्रदर्शन भेन्।

एकवा खनारा ओ नेपानक मैथिन मे सेहो क्रियासीन बहनाह्। चुनचुन रॅबूॅ जनकप्वव, सिवहा, वाजविवाज, खादि मे सेहो मैथिनी खन्दाननकावी के मञ्चदर्शक छनाह्। नेपान मे हुनकव नोकप्रीयताक पता तखन चनन जखन हमवा ओमेन पव नेपानक 4-5 टा म्ख्या खखरॉव मे छपन श्रेद्धान्जनीक कटिंग खायन्।

रिचावधावा

चुनचुन रॅबूॅ के जीवन, सन्घर्ष कवराक तविका ओ

জ্যোতিৰ্মিলন মেঁ সোসলীজম অনকৈত বহল। একটা খাধা বাঁহি বালা অৰ্তা, দূ টা কপৰা বান গন্জী, একটা গমছা খা একটা ধোতী ৰঁস, সবঁটা একটা মোৰা মে। কোনো নাম কাফ নহি। কোনো বিজবৈশন কে চিন্তা নহি। জেবী মেঁ পাও খছি কী নহি তকবো চিন্তা নহি। কহবঁ ছলনি জহল সমাজক কাজ কাবৈত ছী ত সমাজে নে পূবা কবৈক সবঁটা! ককবো ডব নহিঁ। মধ্বঁনী, দবিভঙ্গা, মজফ় ফ়বপ্পব বেঁগূসবায, ভাগলপ্পব, দেবঘব, জনকপ্পব, সিবহা, স্ববসবি, কানপ্পব, বঁম্বঁও, দিল্লী, হৈদবাবাঁদ খা কতয নহি, চ্নচ্ন বাঁবূঁ সবঁঠাম্।

খান্দালন মৈথিলী কে খষ্ট্ম স্বচীক লেল হো, মিথিলা বাজ্য কে লেল হো, যা সৈবাঠ সভাক উঁথোন কে লেল চ্নচ্ন বাঁবূঁ কে খগ্বখা বিনা এখন ধবি কোনো কার্য সম্ভব নহি ভেল ছল্। দিল্লী মে হ্লকা দেখিতহি Intelligence ও দিল্লী প্বলীস সবঁ কহলনি, “খা গযে মিথিলা বাজ্য বালে”। 22-12-2009 ক জন্তব মন্তব পব একটা প্বলীস কহলকনি “বাঁবাঁ খাপ চৌবহে সে পীছে জা কব ধবনা পব বৈঠিযে, যহাঁ জাম লগ জযেগা” চ্নচ্ন বাঁবূঁ কহলথিন “কোনো হম পহ্নাও কবয খাযল ছিযৌক, হম ত ধবনা পব খাযল ছিযৌক, বৈসবৌ ত এহিঠাম, হিম্মত ছৌ ত পকবি ক হমবা জহল মেঁ দয দে। ওহি সময মাত্র 15-20 খাদমী জমা ভেল ছলাহ্।

চ্নচ্ন বাঁবূঁ কে 27/11/2010 কে খন্তববাষ্ট্রি মৈথিলী পবিষদ মৈথিলক জন নাযক কে উঁপাধি স সম্মানিত কেলক্।

হমব পবিচয

চ্নচ্ন রাঁরূ স হমব পহিন ভেঁট 2005 কে খন্তববাষ্ট্রিয় মৈথিনী পবিষদক, জযপ্পব সম্মেনন মে ভেন ছন্। তহিযা স ও হমবা নেন ও খাদর্নীয খা খন্বকর্নীয মৈথিনী সেরী বহনাহ্। খারঁ ও কিছ দিন স খস্বস্থ বহৈত ছনাহ্। 16-10-2010 ক রৈনীপঞ্জী ক্ষেত্র জযরাঁ কান হ্নকব খন্তিম দর্শণ ভেন খা তখনহ্ ও স্বস্থ নহি ছনাহ হ্মদা কহনিন জে 2012 মে মিথিনা বাজ্যক নেন পূবা দবভংগা মধ্রবনী জাম কয দেরৈক। ও কহননি জে দিসম্বব মে জন্তব মন্তব পব ধবনা পব রৈসরাক নেন খারি বহন ছী। প্বন: ভেঁট হোযত।

হমবা নহি বূঝন ছন জে চ্নচ্ন রাঁরূ স প্বন: ভেঁট নহি হোযত। পবন্তু এহি মৈথিনীক সপূত কে হম খাজন্ম নমন কবৈত বহরঁ খা হ্নকব মিথিনা বজ্যাক সপনা প্বা কবরঁ। মাঁ মৈথিনী খহাঁকে শান্তি দৈথি চ্নচ্ন রাঁরূ।

<u>চৌকপব খাশরিক সমঝৌতা</u>

साँझ कान गामक चौकपर गहमा-गहमी छलैक। दैन्यआँक दोकानपर चाहक गिलास खनखना रहल छलैक मंडनजी पान लगेरमे व्यस्त छलाह। कनीक दूरपर दुर्गा मन्दिरक प्रवेशिया कात बैसल चबूतरापर दस-बारह युवा आ वृद्ध सभ सामयिक चर्चामे मग्न छलाह। बीचमे मन्नू भाएक आवाज जोड़सँ आयल। "हौ! एहन कोन आफद आबि गेलैक अपन देशपर जे प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंहजी अपन देशक वैज्ञानिकक लगभग पछिला पचास वर्षक तपस्या आ अनुसंधान तथा भविष्यक आणविक सामरिक अनुसंधानकेँ अमेरिकाक हाथ बंधकी बथरापर उताह भय गेल छथि।
गगनजी चबूतरापर सँ उचकि पानक पीक कातमे फेकैत कहि उठलाह, "कक्का! एहन बात नहि छैक। ई समझौता मात्र अपन देशक महज ऊर्जा आवश्यकताकेँ ध्यानमे राखि कएल गेल-हँ! ..
मन्नू भाए तम्बाकू ठोढ़मे दैत कहलखिन, "है। ई ऊर्जा आवश्यकता महज बहाना छैक। अमेरिका एहि बहाने अपन देशक स्वतन्त्र आणविक कार्यक्रममे टाँग अड़ेबाक फिराकमे बहुत दिनसँ छल। आब ओ अपन मनशामे १२३ समझौता आ ओहिमे हाइड एक्टक प्रावधान सौँ सफल भय रहल अछि"।
गगन जी थोड़के चिन्तित मुद्रामे कहलखिन- "देखियौ कक्का, जहाँ तक १२३ समझौता आ भारतक आणविक सामरिक कार्यक्रमक प्रश्न छैक तँ मात्र ओ सब विदेशेव अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सीक देखरेखमे आनल जेतैक, जे सब विदेशेव, भारत सरकार चाहतैक। तँ बाकी कार्यक्रमपर एकर असर नहि पड़तैक"।

“হাঁ হৌ! নেকিন ও খনরাঁক কোন জরূবী ছৈক?” মন্নূ ভাও খারেশমে রঁজনাহ। তাধবি রৈঁকব সৈহরঁ সেহো সহটি কয চর্ব্তবা দিশ খারি গেন ছনাহ। গম্ভীব খারাজমে মন্নূ ভাওকেঁ সম্বাধিত কয কহনথিন– “ভাও, কিছ এহন প্রারধান সভ জরূবী ছৈক এহি সমঝৌতামে, পবন্তু ও সভ নির্ভব করৈত ছৈক জে ভরিষ্যমে ভাবতক স্থিতি খংতর্বষ্ট্রীয স্তবপব কতেক মজবূঁত বহৈত ছৈক খা হমব বাজনীতিক্ত সরঁ পবিস্থিতিসঁ কতেক ফাযদা উঁঠরৈত ছথি। কাবণ জে ড্রাফ্ট এখন প্রস্তুত কএন গেন ছৈক তাহিমে কোনো কন্ফ্লিকষ্টক স্থিতিমে কী কদম উঁঠাযন জাযত খা ও ভাবতক ফাযদামে হোযত রা নুকসানমে সে ওহি সমযক দেশক কূটনীতিক্ত এরং খংতর্বষ্ট্রীয পবিস্থিতিপব নির্ভব কবত। পবংচ, রর্তমান পবিস্থিতিকেঁ খগব দেখন জায তঁ হমব দেশক খাণরিক রিদ্যুত উঁপোদনক রর্তমান ক্ষমতা মাত্র ৪০–৩০% উঁপোদন ভয বহন খছি রাঁকী খাগূ জে যোজনা ছৈক ওকরো খগব ধ্যানমে বাখন জায তঁ কহন জা সকৈত খছি জে খাণরিক গব্ধন এরং শান্তিপূর্ণ খাণরিকৌপযোগসঁ জুড়ন কিছ তকনীককেঁ যথাশীঘ্র খারশ্যকতা ছৈক।

“হৌ রৈঁকব! ও পক্ষ তঁ ছৈক পবংচ এখনহু খগব সবকাব খাঁতবিক সংসাধনকেঁ সহী ঢংগসঁ দোহন কবয তঁ ও খাণরিক গংধনক সমস্যা খপ্পকানিক সারিত হোযত”। মন্নূ ভাও কিছ শান্ত হ্মদ্রামে রঁজনাহ। খপন রাঁতকেঁ খাগূ রঁঢ়রৈত কহনথিন জে – “হৌ, এখনহু জে যোজনা সরঁ ঝাড়খণ্ডক (জাদূগড়া, রন্দূহুবংগ, তুবমডীহ) খান্ধ্র প্রদেশক (তুম্মানাপন্নী) কর্ণাটক, মেঘানয খা বাজস্থান

আদি বাজ্যমে চলি বহল ছৈক ও অগব সহী ঢংগসঁ কার্যান্বিত কযল জায তঁ আর্থিক গম্ভনক ও বর্তমান সমস্যাক সমাধান আসানীসঁ কযল জা সকৈছ"।
চর্ক্তবাক উঁতবরবিযা–পঙরবিযা কোনাপব বৈঁসল ছৈন্না বাঁজি উঁঠল, "যৌ কক্কা, মংডনজী পানক দোকান আর্ঁ বঁন্দ কবতাহ ! + বাঁজি বহল ছৈক"।
বৈঁকব সৈহর্ঁ জোড়সঁ কহলখিন– "যৌ মংডনজী ! আঠটা পান নগাক২ এমহব পঠাউঁ"।
চর্ক্তবাক পঙরবিযা কাতমে মজহব সোচপূর্ণ মুদ্রামে সাঁমেসঁ বৈঁসল সর্বহক গপ স্বনি বহল ছলাহ। বৈঁকব সৈহর্ঁ মজহবকেঁ কহলখিন– "মৌ মজহব ! তূঁ তঁ এখন কম্পীটিশন সর্বহক তৈযাবী কএ বহল ছহ। তূঁ এহি সম্পূর্ণ প্রকবণ পব বঁহ্ত মংথন কযনে হের্ঁ। আখিব তোহব সোচ কী ছহ"?
খখসি গবদনি সাফ কয খখাড় কাতমে ফেকৈত বঁজলাহ– "ভাগজী ! অংতবর্ষ্ট্রীয আ আর্থিক নীতি কাফী সংকীর্ণ রিষয ছৈক। পহিল বাঁত অছি জে হমবা লোকনি এন.পী.টী.পব হস্তাক্ষব কেলে বিনা অংতবর্ষ্ট্রীয আর্থিক বাঁজাবমে সেঁহ মাববাক কোশিশ কয বহল ছী। এহি মানতমে কিছু নে কিছু অংতবর্ষ্ট্রীয বঁধন তঁ স্বীকাব কবহিযে পবত। পবন্তু হম একবা একটা অরসবক ৰূপমে দেখ বহল ছিযৈক। আর্থিক ক্ষেত্রক কিছু এহন পক্ষ ছৈক জাহিমে হমব দেশক অনুসংধান শাযদ অমেবিকোসঁ উঁপব অছি। মানমে একটা বিপোর্ট পঢ়নে বহী, জাহিমে কহল গেল ছৈক জে ভাবতক বৈজ্ঞানিক ২০০৩ আ ২০০৬ মে প্রকাশিত অনুসংধান বিপোর্টক আধাবপব তকনীকী ৰূপসঁ সমৃদ্ধ দেশ সর্বকেঁ সেহো পাছূ ছোড়ি আগূ বঁঢ়ি গেল অছি। এহি

স্থিতিমে খাণরিক গহ্বন খা কিছু তকনীকক খাযাত তঁ মহজ খল্পকানিক ছৈক। দীর্ঘকানিক খসব হমবা জনৈত ঞ হেতৈক জে ভাবত কিছু দিনকা বাঁদ খাণরিক ক্ষেত্রমে একটা পৈঘ নির্যাতিক ভ২ ক২ উঁভবত। একবামে তকনীকী ক্ষমতা ছৈক খা খন্তবি খাণরিক সাধন, জে কিছু কান পহিনে চর্চা ভেন জেনা, ঝাবখল্ড, খান্ধ্রপ্রদেশ, মেঘানয খাদিমে উঁপনর্ব্ধ ছৈক তথা খংতবর্ষিপ্ত্রীয খাণরিক সহযোগক মাধ্যমসঁ একটা পৈঘ নির্যাতিক ভেনাগ সম্ভব ছৈক।
তেঁ হেত্ত হমব তঁ এতবঁয কহবঁ খছি জে জোঁ এহি সমঝৌতাকেঁ সহী ঢংগসঁ উঁপযোগ কযন জায তঁ ঞ খপন দেশক নেন রবদান সারিত হোযত”।



মহেন্দ্র মলংগিয়া : মূর্দাঃ শ্রৃংগাব সংঘর্ষ আ দ্বন্দ্ব

ই সর্ববিদিত অছি — কাব্যেষু নাটকং বম্যম্ । অর্থাত কাব্যমে নাটক সভসঁ আনন্দপ্রদ অছি । এহিসঁ দূ টা বাত অভবিকহ রুমবা লোকনিক সোঝামে অবৈত অছি — পহিল তঁ ই জে নাটক এক প্রকাবক কাব্য অছি আ দোসব, ওহি কাব্যমে সভসঁ বেসী আনন্দপ্রদ । এহি দূনূমেসঁ দোসব বাতপব কোনো আপত্ব নগ উঠল অছি । একবা ধ্বনি মতসঁ সভ স্বীকাব কএলক অছি , মুদা পহিল বাতপব আপত্ব উঠব শুরু ভহ গেল । সভসঁ পহিলে পংডিত জগন্নাথ এহিপব আপত্তি উঠৌলন্হি । ও কহলন্হি জঁ বসবংজককেঁ কাব্য মানল জাএ তঁ নাটকীয অংগ অভিনয আদিকেঁ বসবংজক ভেলাসঁ নিশ্চি ত রূপেণ একবা কাব্য কহবামে আপত্তি হোযত । এহিনা অলংকাব চিন্তামণিক পংচম পবিচ্ছেদমে জিনসেনাচার্য দ্বাবা – কাব্যাদৌ নাটকাদৌ কহিকহ অলগ– অলগ সত্তা স্বীকাবল গেল অছি । ওদ্ধলা জঁ দেখল জাএ তঁ কাব্য কাবিক কর্ম ছিযৈ আ নাট্য নটক । সংগহি নাট্য খেল অছি জকবা দেখল আ স্বনল জা সকৈছ । এহিমে আঁখি আ কান দূনূ ব্যস্ত বহৈছ, মুদা কাব্যমে কানে টা । আচার্য ভবত নাটক সম্বন্ধমে সেহো কহলে ছথি

ब्रक्रीडनीयकममिछामो दृश्यं श्रव्यं च यद्भवेत । अर्थात नाटक खेल अछि, देखबाक चीज अछि आ ओ श्रव्य सेहो अछि । एतदर्थ एकबा मंचक विभिन्न प्रक्रियासँ गुजरए पड़ैत छैक । एहना स्थितिमे कोनो कवि वा उपन्यासकार वा कथाकार जखन एहि साहित्यिक विधासँ टेपिकए नाट्य साहित्यक क्षेत्रमे अबैत छथि आ एकर मूल्यांकन करए लगैत छथि तँ ओतेक सटीक नञ भए पबैत छथि । लेखन आ सम्पादनसँ ल' क' समीक्षा धरि कतेको एहन स्थल हमरा भेटैत अछि जतए ओ चूकल बूझना जाइत छथि । एहिसभक जँ उदाहरण देबए लागब तँ एकटा पोथा तैयार भए जाएत तथापि हम एक-आध टा उदाहरण अवश्य देबए चाहब । यथा— जीवन झाक नाटक 'सुन्दर संयोग' मे चतुर्थ अंकक पर्दा खसैत अछि । मंचपर कोनो पात्र प्रवेश नहि करैत अछि, मुदा सात-सात टा गीत नेपथ्यसँ चलैत रहैत अछि । एकर बाद रत्नाकरतामे दू पाँती गबैछ, मुदा कादम्बरीक प्रवेश नहि देखाओल गेल अछि । पुनः जे नवम गीत अछि ओ नेपथ्यसँ अछि कि मंचसँ तकर उल्लेख सेहो नहि अछि । एकर मतलब जे नाट्यकारकेँ रंगमंचक जानकारीक अभाव छन्हि । एहिना मिथिला मिहिर, १३-०३-१९६२ ई. मे प्रकाशित बाबाज्यु चौधरीक नाटक 'राज्याभिषेक' मे राजधर कहैत अछि – चलू, आग संध्याकाल कोनो गाछी दिस घूमि आबी । पुनः कोष्ठमे देल गेल अछि — साँझुक पहर, तीनू गोटेए गाछीमे पहुँचलाह आ देखलनि ओतए झाँजक— झाँज छौड़ी सभ विद्यापतिक गीत गाबि रहल अछि । ई लोकनि कातमे बैसि मजा लैत रहलाह ।' आब साँझुक पहर, गाछीमे पहुँचब आ झाँजक-झाँज

ছৌড় িসভকে রিদ্যাপতি গীত গবৈতক জানকাবী প্রেক্ষককেঁ কোনা ভেটৈতৈক ? নে দৃশ্য পবিবর্তন, নে চনৰাঁক মাগম, নে কোনো সংৱাদ আ নে দৃশ্য নির্মাণ । জখন কি নাট্যকাব আ সংপাদক জানন-মানন রিদ্বান ছনাহ । আৰ জঁ সমীক্ষাক ৰাঁত কবী তঁ ওকবা হাস্যাস্পদ ছোড়ি কহ আওব নহি কিছু কহন জা সকৈএ । এহি ৰাঁতক পৃষ্ঠিক দূ-তীন রর্ষক ভীতব প্রকাশিত কিছু সমীক্ষাসঁ কএন জা সকৈছ । হমবা নগ নগৈএ জে নাট্যকর্মক একোবত্তী ছূতি হ্নকা নোকনিমে ছন্হি । উপর্যুক্ত ৰাঁত সভকেঁ দেখৈত আৰ হম নাট্যকাব বমেশ বঞ্জনপব খবৈত ছী । ও একটা সফন অভিনেতো বহনাহ অছি । তেঁ বংগমংচক জে তকনিক ছৈক ওকবা হিনকা পূর্ণ জ্ঞান ছন্হি । অতঃ একব উপযোগ অপনা নাটকমে সফন ঢংগসঁ কএননি অছি । একব প্রমাণ এহি নাটকক সংৱাদ অছি জে অপনা নযমে চনৈত অছি । সংগহি প্রত্যেক সংৱাদকেঁ ৰঁজৰাঁমে ওহ্যাকেঁ স্বনভতাক অনুভর হোগত ছৈক । কিএক তঁ সংৱাদ ছোট-ছোট অছি । একব জড়ি মে হিনক অভিনেতাৰঁনা গুণ কাজ কএনক অছি । আখিব মংচপব সংৱাদ অভিনেতে ৰঁজৈত ছৈক । তেঁ ও এহন সংৱাদকেঁ কিন্নহুঁ সমারেশ নহি কবত জাহিমে ওহ্যা স্বনভতা নহি হোগক ।

এতবঁএ নহি, একটা সফন নির্দেশক সেহো বহৰাঁক কাবণেঁ পাত্রসভ সেহো মংচপব সক্রিয বহৈছ । মংচ নির্দেশ সেহো উচিত ঢংগসঁ কএন গেন অছি ।
এমহব আৰিক২ কিছু গোটে 'পুরুষ এক- পুরুষ দূ' অথরা 'যুবক এক এক-যুবতী' এক কহিক২ জে নাটকমে পাত্র বখৈত ছথি তাহিপব আপত্তি উঠৌননি অছি ।

ऐदा हम कहबै जे एहन आपत्तिमे कोनो जान नहि अछि । आओर ई आपत्ति परोक्ष रूपसँ पाठ्य नाटकक ओकानत करैत अछि, मंचीय नाटकक नहि । किएक तँ नाटक पाठक वस्तु नहि, ओ तँ प्रेक्षकक वस्तु छियैक । आओर प्रेक्षकक हेतु नाटकमे युवक, पुरुष, स्त्री तथा युवतीक हेतु नाम दऽ देल गेल बहैत छैक । संवादमे पुरुष, स्त्री, युवक, युवती आदि कहिकऽ नहि अबैत छैक । मंचक आगाँ बैसल प्रेक्षककेँ केओ नहि कहैत छैक जे ई पुरुष एक वा दू छियैक । एहना स्थितिमे पुरुष एक वा दू पर आपत्ति उठाएब बिल्कुल असंगत लगैत अछि ।
एहि नाटकपर दुरूहताक चार्ज लगाओल गेल अछि । ऐदा एहि मादे अपन विचार व्यक्त करबासँ पहिने हम प्रेक्षकक सम्बन्धमे किछु विचारणीय तथ्य दिस जाए चाहब – प्रेक्षक विभिन्न प्रकारक होइत अछि । आओर ई विभिन्नता वयस, शिक्षा, पेशा आदि पर निर्भर करैत छैक । बँचा सभक वास्ते ओहन नाटक चाही जाहिसँ ओकर वानरमनक जिज्ञासाक पूर्ति होइक । ऐखौटा लागल पात्र आ अवस्थाक अनुकूल संवाद ओ सभ बेसी पसिन करत । तहिना निरक्षर आ अर्धक्षकर्हुँ प्रेक्षक ग्रामीण कलाकारद्वारा प्रस्तुत लोकनाट्यकेँ बेसी पसिन करत । किएक तँ एकरा बुझबाक लेल ओकरा बेसी मानसिक श्रम नहि करऽ पड़ैत छैक । एएह कारण अछि जे कोनो लोकनाट्यक पाछाँ निरक्षर आ अर्धक्षकर्हुँ जनसैदाय ठेलिकि जाइत अछि । ओमीठाम पढ़ल— लीखल लोक एहिमे लगाभ्यक बेवारेब बहैत अछि । एकरा लोकनिक हेतु ओहिसँ उत्तर नाटक चाही । एकटा बात आओर—देश, काल आ परिस्थिति नाटकक

मीटैब सोगत ছैक जाहिपब नाटैक अपने आप रॉजह नगैत अछि । तें जँ हमबा बेडियो नेपान स्वनरॉक अछि तँ मीटैबकेँ ओहिपब घ्सकाकह आनह पड़त । हमबा नीक जकाँ मोन अछि जे एकटा मित्रकेँ सैक्ष्अखन रॅकेटैक नाटैक 'गल्ड गेम' पढ़ह नेन देने बहियनि । एक मासक रॉद ह्नका कहनियनि जे नाटैक पढ़न भह गेन तँ दह दिय । एहिपब ओ जरारॅ देननि जे 'पढ़न तँ नग भेन अछि , क्षदा नेर तँ नह निय । काबण, हम र्ब्सरें नग करै छियै ।' रॅकेटैक ओ नीक नाटैक अछि जे द्बितीय रिश्व यद्धक रॉद निखन गेन छन । एकबा हिटैनबक पबाजय आ रर्निन पतनसँ जोड़न जाए तँ सभ मिनि जएतै ।

एहिना ई नाटैक 'क्षदा' अछि । ओहि कानखल्डमे नेपानक शासन बाजाक अधीन छनैक । यमबाज एहिठाम बाजाक प्रतीक अछि । चित्रग्रप्त प्रधान दबरॉबी अछि जे बाजाक छत्रछायामे रिभिन्न क्रञ्चह करैत अछि । देखन ने जाए—चित्रग्रप्त: हँ सबकाब, असनमे मृत्न्भुरनकेँ स्बछ बखरॉक दायित्ब तँ हमब अछि । अपने तँ निमित्त पात्र मात्र छी ।

एहि संरादसँ ई रॉत साफ भह जागत अछि जे मृत्न्भुरन अर्थात नेपानकेँ केहन साफ करैत सोएतैक । संगहि ई सफाग ककबा नामपब सोगत छैक तकबा नेन तँ निमित्त पात्र अछिए ।

एहि नाटैकक केन्द्र रिन्द्ु क्षदा अछि जे सत्ताद्बाबा रॅनाओन जागत अछि । किएक तँ ओ क्षदा मात्र पब शासन कह सकैत अछि, जागरुक नोकपब नहि । तें सत्ता चाहैत बहैत अछि जे सभकेँ क्षदा रॅना दी । एहिब्रmममे सत्ता दू टा हथियाब अपनरैत अछि – पहिन

तँ ओ जे ओ सुख–सुविधाक जाल फेकैत अछि । आग — काल्हुक पूँजीपतिसभ पूर्वक पूँजीपतिकेँ गाबि पढ़ैत छैक जे जखन बुद्धनकेँ जे मार्क्स एतेक प्रखर बुद्धिक अछि तँ ओकरा सभ सुख–सुविधा जुटाकऽ रक्तार किएक ने कऽ देलक । एहि बातक चरितार्थ ओ नाटक करैत अछि । देखल ने जाए—

बूढ़ा : ओ दूर होमत गेल हमरा सभसँ आ शासनक नजदिक होमत गेल । शासन ओकरा गुड़क ढेप बुझाएल । ओ बुझऽ लागल हएत जे एहिमे सटल रहलासँ हमरा स्वर्गी आनन्द भेटैत । शासनक आनन्द अर्थात सुस्वादक आनन्द लेल जीवनकेँ छोड़ि देलक । आर तेसर मात्र छैक दमन । एकर आगाँ लोक किछु नहि सोचि पबैत अछि । एहि बातक पुष्टि निम्नांकित संवाद करैत अछि —

बूढ़ा : एहि सभक वातावरण अपना भीतरमे अद्भुत क्षमताक विकास कएनाए एखन दुलर्भ छै । हवाक गतिक विरुद्ध के ठाढ़ हैत ? उफनैत नदीक विपरीत दिशामे आगू बढ़बाक के दुस्साहस करत ? शासनक विरुद्ध स्वर निकालबाक गच्छा–शक्ति के देखाओत ?

एहि तरहेँ नाटककार दमन आ पोषण सत्ताक दू टा आँखि मानैत छथि जे अक्षरशः सत्य अछि । देखल जाए ओ संवाद —

युवक २ : शासनक आँखिसँ दू टा रोशनी निकलै छै । एकटा जवरइरना आ एकटा बढ़इरना । जे जिन्दा रहल तकरा जवौनक आ जे मुर्दा भऽ गेल ओकरा बढ़ैनक ।

एहिठाम जिन्दाक तात्पर्य ओहि व्यक्तिसँ अछि जे सत्ताक

রিকন্ধ কিছু রঁজরাঁনএ তৈযাব হোগত খছি । এহন ব্যক্তিকেঁ জবাওন জাগত ছৈক খথতি নানা প্রকাবক কষ্ঠ দেন জাগত ছৈক । একব রিপবীত জে মৌন ভহ গেন খথতি ম্দৰ্দা ভহ গেন ও রিভিন্ন তবহক স্বখ ভোগৈত খছি ।

উঁপর্যক্ত হথকল্ডা খপনৌনাক রাঁদো রিদ্রাহক জ্বানা ফ্ৰুটবেঁ কবৈত ছৈক । খাওব ওহি জ্বানামে কেহনো তানাশাহ ভস্ম ভহ জাগত খছি । এহন উঁদাহবণসঁ গতিহাস ভবন পড়ন খছি । তেঁ নাট্যকাব হতোসোহ নহি হোগত ছথি । ও একটা রূঁঢ় পাত্র গঢ়ৈত ছথি জে সময়কেঁ ঘীচিকহ খপনা সংগ নহ খনৈত খছি । এহনে রযক্তিপব তঁ নোক রিশ্বাস কবৈত খছি । এহী রিশ্বাসক প্রতিফন ছৈক জে প্বকষ এক, দূ, তীন খা চাবি রূঁঢ় াক গর্দ–গির্দ জমা ভহ জাগত খছি । ও সভ চিত্রগুপ্ত খা ওকব সহযোগীকেঁ খপনা ঘেবামে নহ নৈত খছি । এহনা স্থিতিমে যমবাজ সত্তাসঁ কোনা খনগ–থনগ ভহ জাগত খছি তকব খন্বমান সহজহিঁ নগাওন জা সকৈছ ।

নাটকক মহত্বপূর্ণ শ্রৃংগাব সংঘর্ষ তথা দ্বন্দ্ব খছি । ওা সংঘর্ষ তথা দ্বন্দ্ব স্বাগ্নত যথাব্থ খা খস্বাগ্নত যথার্থক রাচ উঁপেন্ন হোগত খছি । এহি স্বাগ্নত তথা খস্বাগ্নত যথার্থক সংরাহক ক্রমশঃ খননাযক তথা নাযক হোগত ছৈক । এহি দ্নূক রাচ ঘাত–প্রতিঘাত চনৈত বহৈত খছি । নাযক চাহৈত খছি জে স্বারূmত যথার্থক স্থানপব খস্বাগ্নত যথার্থকেঁ স্থাপিত কবী । খতঃ নাযক খা খননাযকক রাচ সংঘর্ষ হোগত ছৈক । এহন সংঘর্ষ এহি নাটকমে ভবপূব দেখন জাগছ । যমবাজ খ চিত্রগুপ্ত সভকেঁ ম্দৰ্দা রঁনরঁহ চাহৈত খছি জকব প্রতিকাব রূঁঢ় া

करैत अछि । आ, जतऽ प्रतिकार होएतैक ओतऽ संघर्ष नहि होएबाक कोनो प्रश्ने नहि उठैत छैक । तहिना प्रस्तुत नाटकमे द्वन्द्व सेहो प्रचुर देखल जाइछ । नाट्यकार देखबैत छथि जे सत्ता लोककेँ क्षुदा बनबैत छैक आ से ग्रड़क ढेप देखाकऽ अथवा डंटा देखाकऽ । क्षुदा किछु लोक सोचैत अछि जे एहि दुनूक विरुद्ध ठाढ़ भेल जाए । एहना स्थितिमे घरक आ परुष लोकनिमे भयंकर द्वन्द्व उपेन्न होइत छैक जे नाट्यकारक सफलताक द्योतक अछि ।

कोनो रचनाक रास्ते शीर्षक एकटा महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि । किएक तँ शीर्षक कोनो रचनाक विषयमे बहुत किछु कहैत छैक एहि दृष्टिएँ प्रस्तुत नाटकक शीर्षक 'क्षुदा' बहुत उपयुक्त अछि । किएक तँ क्षुदाकि चर्चा प्रस्तुत नाटकमे बेर-बेर आएल अछि ।

अन्तमे हम कहए चाहब जे प्रबुद्ध प्रेक्षकक बीच एहि नाटकक आदर हेतै से हमरा पूर्ण विश्वास अछि । नाट्य क्षेत्रमे नाट्यकारक भविष्य उज्ज्वल छन्हि से हम मानैत छी ।

प्रकाश चन्द्र झा : मैथिली रंगकर्ममे स्त्री-जन-रन

१९७३ ई. मे हम ज्ञ्वालन कनकनी नामक एकटा नाटक लिखने रही, जे ओही साल प्रकाशित भेल रहय । एहि नाटकक प्रसंगमे मैथिलीक सुप्रसिद्ध साहित्यकार

জীরকাঁতজী খপন প্রতিক্রিযা ব্যক্ত কবৈত নিখনে বহথি – মনংগিযাজী, মিথিনাঁচনমে এখন ওহন খভিনেতা নহি জন্ম নেনক খছি, জে একব তেজকেঁ সম্হাবি সকত । ঞ রাঁত হম খপনহুঁ মহসূস কএনে বনী খা তহিএ সঁ হমব খাঁখি এহি রাঁতক খোজ কবৈত বহন, জে ওহি নাটকক খনুরূপ কোনো খভিনেতা ভেটিতএ ।

ওনা মিথিনাঁচনমে খভিনেতাক কমী নহি বহনৈক খছি, হ্মদা সভক জিনগী খল্পকানীন । কিএক তঁ এহিঠাম একবা টৌগমপাসক রূপমে দেখৈত খছি । তেঁ জহাঁ কতহু নোকবী ভেটি গেনৈক কি ও বংগকর্ম কেঁ তিনাঁজনী দ' দৈত খছি । দোসব কোনো গার্জিযন ঞ নহি চাহৈত ছৈক, জে হমব রেঁটৌ বংগমংচসঁ জুড়ন বহয । কিএক তঁ মৈথিনী বংগমংচ কেঁ ও সামর্থ্য নহি ছৈক জে ওকবা বোজী – বোটী দ' সকতৈ । তেঁ বংগমংচ কে ছোড়' রাঁনা নাম খনগিনত খছি খা জুটৈন বহ' রাঁনা নাম খাঁগ্বে পব গনন । এহন খাঁগ্বেপব গন' রাঁনা নাম খছি – খভিষেক, চন্দ্রশেখব, হ্মহ্মন, সংতোষ (মধুরঁনীসঁ), বরীন্দ্র, ওমপ্রকাশ, বংজূ, প্রিযংকা (জনকপুবসঁ), সংজীর, কিশোব কেশর, গুড়ি যা, স্বাতি, জিতেন্দ্রনাথ, প্রিযংকা (পটৈনাসঁ), হ্মকেশ, ডঁপেন, প্রকাশ, জ্যাতি, জীতূ, কমন, দুর্গেশ, ভাস্কবানংদ (দিল্লীসঁ) খাদি ।

এহি সভমে প্রকাশ কহিযা হমবা ভেটৈন – স্মবণ নহি খছি, হ্মদা এতেক ধবি খরশ্য স্মবণ খছি, জে ও কহনে বহয–

"সব, হমব ঘব ঘোঘৌব খছি খা হম খাব. কে. ক◌ॉনেজ মধুরঁনী মেঁ পঢৈত ছী" ।

" কোন কক্ষামে ? "

" রী.এস সী.ক ফর্স্ট পার্টমে " । হমবা দিসসঁ কোনো

प्रतिक्रिया नहि अएलाक कारणेँ किछु कालक बाद पुन: आएल –
" हम नाटकसँ सेहो जुड़ल छी " ।
" कोन संस्थासँ ? "
" मधुबनी गप्पोसँ "
" बहुत खुशीक बात "



प्रकाशि कोन अपेक्षा न' क' हमरा लग आएल बहुत से ओ ने कहि पउलक आ ने हम बूझि सकलिऐ । मुदा, एतेक अवश्य जानकारी भेटैत बहल जे त्वक्कड़ नाटककेँ मधुबनी जिलामे बहुत लोकप्रिय बना देलक अछि । एकटा विज्ञनिया भोजीक पचासटा शो कएलक अछि आ सभमे एकर अनिवार्य सहभागिता छैक । मुदा, ई हमर दुर्भाग्य बहल जे एकर एकोटा शो हम नहि देख सकलिऐ । तथापि एतेक विश्वास भेऽ गेल जे नाटकक प्रति एकर लगन बेजोड़ छैक ।
हमहुँ बहुत कएलहुँ आ गलो नाटक करिते बहल आ तखन जँ मंच पर भेटए लग लोगतए तँ गलो असंभवे बाला बात भ' जगतै । से भेलैक नहि, एकबासँ मंचपर भेटए भेऽ गेल, मुदा कहिया से स्मरण नहि अछि । हँ, एतेक अवश्य स्मरण अछि जे प्राय: 1995 ई. मे मिथिला सांस्कृतिक पर्व समारोहक अवसर पर हमरे नाटक ओबिजलन कामक मंचन लगर भरल,

मध्‌बनीमे होइत बहय । हमहुँ आमंत्रित बही । जाहि मे दबोगाक भूमिका प्रकाशे केने छन । ओहि नाटकमे ओ प्रशंसाक पात्र बनन बहय जकब उल्लेख दैनिक जागबण आ दैनिक हिन्दुस्तान सेहो कएने बहैक । किछु दिनक बाद गाम नग स्वतैए’क मंचन देखनियैक ओहो मे गामक तीनटा बिगड़ल घबकमे सँ एकटा बिगड़ल घबकक भूमिका यैह कएने छन । ओही दुनू मे कयनगेन अभिनयक बदैनत ओ हमबो मोन मे बैसि गेन । बादमे बिहाब सबकाब घबा मंत्रानय, पटना दिस सँ आयोजित कार्यक्रम मे एक बेब फेब हमबे निखन नाटक हमबो जे साम भैयाक मंचन नगब भरन, मध्‌बनीमे होइत बहय । हमहुँ आमंत्रित बही । जाहि मे चाकबक्य के भूमिका मे प्रकाशे बहै । मंचपब एकबा देखनाक बाद हमबा बड़ अपसोच भेन बहय जे जीबकांतजी एहिठाम नग छथि । ओ जँ आग एहिठाम बहितथि तँ एकब अभिनय देखिक’ निश्चित अपन बात घ्‌बा नितथि जे ‘मिथिनांचनमे एखन ओहन अभिनेता नहि जन्म नेनक अछि’ । बहुत बिनक्षण आ स्फूर्त कब’ बाना अभिनय कएने बहएथ । तेँ हमबा कहै’ पड़ल जे चाकबक्य के भूमिका एहन दोसब नग क’ सकैए ।

एकब बाद कबगिन समस्यापब आधाबित नाटक दुनहा पागन भ’ गेनै मे सेहो अभिनय कएनक जे हम नग देख सकनिऐक । हँ, मध्‌बनीक डिप्टी कनक्टेब श्री दीपनाबायण सिंह जी सँ जखन बात भेन तँ कहननि जे आसक’ प्रकाशचन्द्र बड्ड नीक अभिनय कएने छन ।

ओना एहि बातक घमर्थन कखनो-कखनो उठिए जाइत

ঋছি জে ঋভিনেতা তঁ নির্দেশকক হাথক কঠপুতলী হোগত ঋছি । ওকবা জেনা–জেনা নির্দেশক কহৈত ছৈক তেনা–তেনা ও মঁচপব কবৈত ঋছি । জঁ গএহ ৰাঁত সহ ছৈক তঁ একটা ভূমিকা জখন দূ ঋাদমী কবৈত ঋছি তখন কিএক ককবো নীক ঋা ককবো ৰেঁজাএ ভ' জাগত ছৈক ? এহি ঋাধাব পব তঁ সৃজনাত্মক প্রতিভা ঋপন হোগত ছৈক সে মানহিটা পড়ত । ঋা তেঁ ও ওহন চাকুরক্য ক সৃজন কএনে বহয ।

ফেব 2005 ঙা. মে বামানন্দ যুবা ক্লব, জনকপুব ধাম (নেপাল) দ্বাবা ঋাযোজিত নাট্য সমাবোহ মে নেপালক ঋতিবিক্ত কোলকাতা , দিল্লী, দবভঁগা ঋা মধুবনীক টীমসভ ভাগ নেনে ছল । মধুবনীক যাত্রী সঁস্থা , দিল্লীক যাত্রী সঁস্থাক রূপ মে প্রবেশ পওনে ছল । কাবণ , ওহি সমযমে ঋধিকাঁশ যাত্রীক ঋভিনেতাসভ দিল্লীএ মে বহৈত ছল তেঁ কিছুএ নরকেঁ সমাবেশ কব' পড়নৈ ঋা কাশ্যপ কমলক নাটক গোবখধঁধা তৈযাব ভ' গেনৈ । এহি নাটক মে ও সূত্রধাবক ভূমিকা কএনে বহয জে কাফী চর্চিত বহনৈ ।

মৈথিলী বঁগ জগতমে নব পীঢীক কতেকো লোক ছথি, জে লগাতাব কাজ ক' বহন ছথি হুদা, ওহি জমাতমে প্রকাশ কতেকো কাবণে সভহক ধ্যান ঋপনা দিস খীঁচৈত ঋছি । এক ত' ঋপন বঁগ কানমে , প্রকাশক বঁগ প্রবাহ ৰঁড্ড মহত্বপূর্ণ ছৈক । দোসব ঙা জে – প্রকাশক দ্বাবা জবাওল গেল সর্বঁগ ঋভিযানক দীপক জে প্রভাব মৈথিলী বঁগ জগত পব পড়ল ঋছি ও ঋাবো ৰেঁসী প্রশঁসাক পাত্র ছৈক । প্রকাশক বঁগ প্রবাহক শুরুঋাত মিথিলাক একটা ছোট ছীন গাম ঘোঘৌব স' শুরু হোগত ছৈক । ঋপন নেনপনে সঁ গামক বঁগমঁচ সঁ জুড়ৈত,

ঋপন জিনা মধ্ৰ্বনীক নগব ওপ্টৌক কার্যনিয সচির ৰ্বনন ঋা ওপ্টৌ মে একব পাঁচ সানক কার্যকান ঋখন তক কে ওকব স্বর্ণকান কহন জা সকৈত ছৈক । ওত' সঁ নিকনিক' রিশ্বিরিদ্যানয স্তব পব ঋভিনয মে প্রথম সম্মান সঁ সম্মানিত হোগত বাষ্ট্রীয নাট্য রিদ্যানয, দিল্লী মে প্ররেশিক চযন প্রক্রিযাক ঋঁতিম প্রক্রিযা তক শামিন ভেন । ওহো কোনো নামী-গিবামী নির্দেশিকক সংগ কার্য কবরাঁক ঋনুভরক রিনা । ফেব সংগীত নাটক ঋকাদেমী, নওা দিল্লী দ্বাবা প্রশিক্ষণ ন'ক' ওকবে ৰ্বাকী কার্যশানা মে কার্যশানা সহাযকক ৰূপ মে কতেকো বাজ্য মে ঋপন ঱়া স্মদাবী কেঁ সফনতাপূর্বক নিভারৈত, সাহিত্য কনা পবিষদ, দিল্লীক বংগমল্ডন সঁ গ্বজবৈত, সং্গ এল্ড ড্রামা ডিরিজন, নওা দিল্লী মে কৈজ্ঋন ঋার্টিস্টক ৰূপ মে চ্নবৈত ঋাওা বাষ্ট্রীয নাট্য রিদ্যানয, নাওা দিল্লী দ্বাবা ঋখিন ভাবতীয স্তবক শ্রেষ্ঠতম বংগশোধ পত্রিকা বংগ প্রসংগক সংপাদন সহযোগীক ৰূপমে ঋপন মহত্বপূর্ণ ঱়া স্মদাবী নিভা বহন ঋছি । ওা ত' ছন প্রকাশিক ঋপন বংগপক্ষ , জে কি হমবা সভ কেঁ সীধে-সীধে দেখাওত ঋছি । জে দোসব ৰূপ ছৈ ও ওা জে মধ্ৰ্বনী সন ছোট জগহ মে প্রকাশি জে বংগদীপ জবৌনক ঋছিওকব পবিণাম ওা ছৈক জে ঋাওা এহি ছোট শহব মে সাত-সাত টা বংগকর্মী বংগকর্ম মে প্রশিক্ষণক নেন বাষ্ট্রীয প্রতিভা ছাত্ররৃত্তি ন' চ্কন ঋছি । কতেকো বংগকর্মী বাষ্ট্রীয স্তবক বংগপ্রশিক্ষণ সংস্থান সঁ প্রশিক্ষণ প্রাপ্ত কেনন্হি ঋছি ।

2006 ওা. মে মৈথিনী নোক বংগ, দিল্লী (মৈনোবংগ) ত্রিদিরসীয নাট্য সমোসেরক ঋাযোজন কএনে বহয জাহিমে সহবসা, পটনা ঋা দিল্লীক টীম (মৈথিনী নোক

বংগ) ভাগ নেনে বষ্টক । ঙা তীনূ ঢীম ঞমশী: কনিযাঁ–প্বতবা, পাবিজাত হবণ আ কাঠক নোক ঞমশী: উঁপেন ঝা, ফণান তথা প্রকাশি ঝা ক নির্দেশিনমে প্রস্তুত কএনে বষয । উঁপেন ঝা বাষ্ট্রীয নাঠ্য রিদ্যানয, নঙা দিল্লী সঁ উঁত্তীর্ণ ছাত্র, ফণান কেঁ দস–পন্দ্রহ নাঠকক নির্দেশিনক খন্বভর আ প্রকাশি ঝা কেঁ খভিনয ছোড়ি নির্দেশিনক কোনো খন্বভর নহি । তেঁ নাগন জে এহি দ্নূ নির্দেশিকক রীচমে প্রকাশি ওহিনা দবড় । জাএত জহিনা জাঁতক দ্নূ পঙ্কাক রীচমে দানি । ফদা সে ভেনৈক নহি, প্রকাশি ঝা খাঁকড় জকাঁ খড়নে বহি গেন । প্রেক্ষক গম্মী নাধিক’ নাঠক দেখৈত বহনাহ । ফদা, জত’ হঁস’ক খরসব ছনৈক ওত’ হঁসরোঁ কএনাহ । নাঠক সমাপ্ত ভেনাক রাঁদ প্রকাশি দূ শিষ্ক কহরাঁক হেত্ত হমবা মঁচ পব রঁজা নেনক । ও কিএক হমবা রঁজৌনক তকব খন্বমান এহি ৰূপমে নগৌনিঐক – প্রায: নাঠক মে কএন গেন কিছু ফেব–রঁদনক মাদে কিছু কহতাহ । ফদা তাহি প্রসংগমে হম কিছু কহি নগ সকনিঐক । কাবণ, প্রেক্ষক হমব ফঁহ রঁন্দ ক’ দেনে ছন । তেঁ হম ঙা রাঁত কহরাঁক নেন রাঁধ্য ভ’ গেন ছনহুঁ জে দ্নহন রমী জো পিযা মন ভাএ খর্থাত নাঠক রএহ নীক রা নির্দেশিক রএহ নীক জকবা প্রেক্ষক গম্ভীবতা সঁ দেখনক আ বুঁঝনক । এতেক কহনাক রাঁদ ও বাম গোপান রঁজাজ জী কেঁ রঁজা নেনকনি । হ্নকা মঁচপব রঁজএরাঁক দূঠা কাবণ ভ’ সকৈত খছি – পহিন, ও ভাবতীয বংগমঁচক একঠা দিগ্গজ বংগকর্মী ছথি জে মিথিনাঁচনক সপূত ছথি আ দোসব, পহিন রঁব নির্দেশিনক ক্ষেত্রমে খাযন ছন তেঁ হ্নক খাশীর্বাদ প্রকাশিক নেন খারশ্যক ছনৈক । তেঁ রঁজাজজী মঁচপব খএনাহ আ

হমব ৰাঁতক সমর্থন কৰৈত কহলথিন – মনংগিযাজী জে ৰাঁত কহলনি খছি তাহিসঁ হম সহমত ছী । প্রকাশি কেঁ জখন দর্শকে সর্টিফিকেট প্রদান ক’ দেনকৈ তখন হম ওহিপব হস্তাক্ষব নগ কবিঐ সে উঁচিত নগ হোএত ।

এহি প্রস্তুতি কে দেখনাক ৰাঁদ হিন্দীক হৰা খা সংরেদনশীন বংগদৃষ্ঠি বখনিহাব বংগ সমীক্ষক সংগম পান্ডে জনসত্তা মেং নিখনে বহথি –

... মংচ পব যে সভী পাত্র চবিত্র কে কঙা ৰাঁবীক রিন্যাসোং কে সাথ দিখাঙা দেতে হৈ । উঁনকে ভদেস মেং কহী ভী ঝছ ৰঁনারঁটী নহী নগতা । ঔব যহী রজহ হৈ কি কথারস্তু মেং স্থিতিযাঁ কঙা ৰাঁব দোহবাঙা জাকব ভী খপনী বোচকতা নহী খোতী । মংচ পব পীছে কী ওব দাএঁ মংদিব কা চবূঁতবা হৈ । ৰাঁঙাং ওব এক পূবা কা পূবা বৃক্ষ, ঔব চবূঁতবা এক পূবা পবিরেশ ৰঁনাতে হৈং । গস পবিরেশ মেং সাধ্ কী পীতাৰঁবী রেশভূষা এক দিনচস্প কংট্রাস্ট ৰঁনাতী হৈ” ।

সংগম পান্ডেক উঁপর্যুক্ত কথন নিশ্চিত রূপে প্রকাশিক নাট্য নির্দেশক সংগ ওকব মংচ পবিকল্পনা খা রস্ত্র রিন্যাসক দৃষ্ঠিক সেহো মজবূঁতী প্রদান কবৈত ছৈক ।

2005 ঙা. মে স্বাস্তি ফাউঁন্ডশেন, দিল্লী হমবা প্রৰোঁধ সাহিত্য সম্মান দেনে ছন, জে কনকত্তামে প্রদান কএন গেন । উঁক্ত সম্মানক খরসব পব ড◌ॉ. উঁদয নাবাযণ সিংহ ‘নচিকেতা’ দ্বাবা বচিত এক ছ্ন বাজা নামক নাটকেক মংচন কোকিন মংচ, কোনকাতা দ্বাবা কএন গেন ছন । হমবা ৰঁগনমে ৰৈঁসনি হমব পনী জিনকা সাক্ষব মাত্র কহন জা সকৈএ পূছি ৰৈঁসনীহ

“কখন নাটক সমাপ্ত হোএতৈক” ?

एहिपर हम कहनिएनि जे एक चौथाओ वाँकी अछि । अवलोकनजन्य थकान सँ ओ अपने-अपने वाँजि उठलीह "एह, तखन तँ आधा घंटा सँ वेसिए वैस' पड़त" । आव कोनो प्रेक्षकक म्हँसँ निकलल "वैस' पड़त" शीर्ष नाटक प्रदर्शनपर एकटा पैघ प्रश्नचिन्ह लगवैत अछि । गएह सम्मान 2007 मे मयानन्द मिश्र केँ भेटैलनि । ओहि सम्मानक अवसरपर ड. नचिकेता द्वारा रचित नायकक नाम जीवन, एक छल राजा , रामलीला, प्रत्यावर्तन आदिमे सँ कोनो एकटा नाटकक मंचन होएवाक चाही से विचार कएल गेल छल । संगहि स्थान वँदनिक' दिल्ली पर मोहर लागि गेल छल । उक्त आयोजनक सम्पूर्ण अभिभावा प्रकाश चन्द्र झा केँ भेटैल छलैक । तेँ ओ नचिकेताक सभ नाटक मंगौलक । गम्भीरता सँ पठनक आ अंतमे एक छल राजापर आविक' केन्द्रित भ' गेल ।

नचिकेताक जतेक नाटक छैक ओहिमे सँ सभसँ नीक नाटक एक छल राजा अछि जे प्राय: 1970 क दसकमे प्रकाशित भेल रहैक । एकरा जँ एना वूझी तँ कहि सकैत छी जे जहिया प्रकाश जन्मो नहि लेने होयत तहिए ओ नाटक प्रकाशित भेल रहैक । तेँ जतेक जे एहि नाटकक मादे प्रकाशित भेल छल होएतैक ताहिसँ ओ परिचित नहि छल । तथापि ओहिमे सँ एक छल राजा केँ चुनि लेनक से ओकर निर्देशकीय दृष्टिक प्रमाण दैत छैक । कारण, निर्देशक वास्तु नाटक चयन एकटा अहम म्हद्दा रखैत छैक ।

जँ सत्य पुछल जाए तँ ओ नाटक प्रकाश चन्द्र झाक हेतु एकटा चुनौती भरल काज छलैक । एखन धरि जतेक निर्देशक ओकरा प्रस्तुत कएने छल ओकरा कओमा आ

পূর্ণরিবাম সহিত মঁচপব ডঁতাবি দৈত ছল তেঁ প্রেক্ষককেঁ প্বছ' পড়ৈত ছলৈক জে আৰ কতেক নাটক বাঁকী অছি । এহন স্থিতি ডঁপেন্ন হোএবাঁক কাবণপব রিচাব কববাসঁ পহিনে হমবা নাটক কথানকপব রিচাব সেহো কব' পড়ত ।

এহি নাটকমে বাজা সাহেবঁ নামক একটা জমীন্দাব অছি জকব জমীন্দাবী প্বর্থেক সময়সঁ ধীবে–ধীবে কমন জাগত ছৈ । বাজা সাহেবঁ নগ আরিক' রিপন্নতা পবাকাষ্ঠাপব পহুঁচ জাগত ছৈ । কর্জক বোঝ ততেক নে বঁঢ়ি জাগত ছৈ জকবা সধাএবঁ মশ্কিন ভ' জাগত ছৈক । ফজূন খর্চী আ রিনাসিতাক কাবণেঁ এহি স্থিতিমে পহুঁচবঁ একটা নিযতি ছৈক । ফেব ওমী জমীন্দাবীমে পনন বাজা সাহেবঁক পিতাক অবৈধ সংতান ধনিকনান শেহব জাগত অছি । ওহিঠাম অপন নগন আ পবিশ্রমসঁ কাফী ধনোপার্জন কবৈত অছি আ বাজা সাহেবঁক হবেলী কীনৈত অছি । ফেব ওহো বএহ কাজসভ কব' নগৈত অছি জে বাজা সাহেবঁ কবৈত ছলাহ ।

আৰ প্রশ্ন ঙা ডঁঠৈত অছি জে একটা জমীন্দাবকেঁ তোড়ি ক' দোসব জমীন্দাবকেঁ ঠাঢ় কববাঁক কী ঔচিত্য ছৈক ? জঁ ঠাঢ় ভগএ জাগত ছৈক তঁ দববাবমে বাজা সাহেবঁ জকাঁ হবেলীমে মোজবাক আযোজন কববাঁক কী প্রযোজন ছৈক ? জখন ঙা বাত স্পষ্ট ভ' জাগত ছৈক জে বাজা সাহেবঁ অপন বেটী মোহিনীক রিরাহ আর্থিক তংগীক কাবণেঁ নগ কবা বহন ছথি তখন ওকব প্রেম প্রসংগক এতেক দৃশ্যসভ বখবাঁক কোন প্রযোজন ছৈক আ অংতমে ওকবা প্রেমীকেঁ অনপাত্র বনএবাঁক কোন ঔচিত্য ছৈক ? কোনো নিযতিক রিরুদ্ধ বেব–বেব ধনিক নানক ঝাঁহ সঁ প্রতিশোধ নেবঁ কহযবাঁক

কোন জরুরী ছৈক ? বাজা সাহেবঁ তঁ অপন কবনীক ফল পারিএ গেল ছলাহ জে হরেনী বঁচিক' সড়কপর আরি গেল ছলাহ ।
উঁপর্যুক্ত সভ প্রশ্নপব প্রকাশ নীক জকাঁ রিচাব কএলে ছল । ওকব প্রদর্শন সিদ্ধপ্ট দেখিক' হমবা লাগল জে ওকবামে নাটক প্রদর্শনক সমন্মদাবী ছৈক ।
নাটকসঁ এক দিন পহিলে হমবা ডেবাপব একটা কার্ড আএল বহয । ওহিপব সপবিরাব নিখল বহৈক । তেঁ হম পনীসঁ প্বছনিযনি –
"নাটক দেখ' জএবঁক" ?
"কোন নাটক ছৈ" ? প্রশ্নপব প্রশ্ন ও বখননি ।
"এক ছল বাজা"
"নগ জাএবঁ" ।
"কিএক" ?
"কলকত্তা মে দেখনে ছী । হমবা নগ নীক লাগল বহয" ।
"চলূ নে, নির্দেশক বঁদনল ছৈ, অভিনেতা বঁদনল ছৈ" ।
"হ্দা নাটক তঁ রএহ বহতে নে" ।
"তৈযো দেখি নিযৌ নে" ।
নাটক ভেনৈক । নাটক সমাপ্ত ভেনাক বাঁদ নচিকেতাজী কেঁ কাফী খুশী দেখননিযনি । একব মতলবঁ ছলৈক জে নাটক অপন উঁচাঙ পারি গেল ছল । রস্তুত: হমবো বঁড্ড নীক লাগল বহয ঙা প্রস্তুতি । হমব মোন মানি গেল ছল জে একবা নীক নির্দেশকক পাঁতীমে বাখল জা সকৈএ । জঁসে বাঁত নগ বহিতৈ তঁ নাটক এহি রূপমে নগ চমকিতৈ । বাস্তামে হম পনীসঁ প্বছিনযনি –
"কেহন লাগল নাটক" ?

"बॅहुत बॅढियाँ"
"तखन कहै छनिऐ जे नग जाएबॅ" ।
"हमवा थोड़बॅ बॅुझन छन जे एहन नाटक हेतै" ।
ई छनैक एकटा साक्षव मात्र नोकक मूल्यांकन । श्री मायानंद मिश्र, डॉ. गंगेश गुंजन, डॉ. देवशंकव नवीन, डॉ. ओमप्रकाश भावती आदि दिग्गज विद्वान नोकनि एहि प्रस्तुतिक प्रशंसा कएनथिन । ओना दशवथ जखन भाव जनकपुव पठौनथिन तँ जनकपुववॅासी मेसँ क्या बॅाजि उठन— भाव तँ बॅहुत बॅढियाँ छनि, मुदा अंकवीक अखुआ टैठ छनि । एहन अखुआ टैठवॅाना नोक प्रेक्षकक प्रतिक्रिया देखिक' अपनाकेँ चुप्पे बाखबॅ उचित बॅुझनक ।
एहि ठाम एकटा बॅात कह' चाहबॅ—आदमीक क्षमताक स्थानांतवण दोसव क्षेत्रमे सेहो होइत छैक । यदि हम दहिना हाथसँ 'अ' निखैत छी तँ बॅामा हाथसँ 'अ' सेहो निखि सकैत छी । काबण, दहिना हाथक क्षमता बॅामा हाथमे स्थानांतविव भ' जाइत छैक । एही अवधावणापव नोक कहैत छैक जे बी.ए. भ' क' घास छिनतै तँ मूर्खसँ बॅढिए जकाँ छिनतै किएक तँ ओ अपन पढ'-निख' बॅाना क्षमता घास छीन' मे नगा देतैक ।
एहि मनोवैज्ञानिक तथ्यक सत्यापन प्रकाश चन्द्र झाक अभिनयामेक एवं निर्देशकीय क्षमतासँ जोड़ि क' संगठनामेक क्षमताकेँ सेहो देखन जा सकैए । ओ जतबॅए नीक अभिनेता तथा निर्देशक छथि ओतबॅए एकटा सफन संगठनकर्ता सेहो । आ हम सभ कियो जनैत छी जे बंगकर्म मे संगठनामेक क्षमताक विशेष महत्व छैक ।
एहिठाम संगठनामेक क्षमताकेँ बंगकर्मसँ जोड़ि एक'

দেখল জা সকৈত অছি কাৰণ, ভৰতক নাট্যশাস্ত্ৰক পৌঁতিসম অধ্যাযমে নাট্যেদলক চৰ্চা আএল অছি জাহিমে সূত্ৰধাৰ, অভিনেতা, কাষ্ঠকাৰ, মালী(মাল্যকাৰ), স্বৰ্ণকাৰ(হ্মহ্মষ্ট এৱং গহলা ৱঁলৱঁ'ৱাঁলা), সূচিকাৰ(দৰ্জী), চিত্ৰকাৰ আদিক চৰ্চা অছি । হমবা জলৈত এহি সভ কেঁ মিলাক' ৰাখ'ৱাঁলা সূত্ৰধাৰ ছল হোএতৈক । ওসভ অপল–অপল যোগদাল নাট্য প্ৰদৰ্শলমে দৈত ছলৈক । জঁ একৰা সভকেঁ মিলাক' লহি ৰাখল জৈতৈক তঁ নাট্যপ্ৰদৰ্শল অসংভৱ ভ' জগতৈক । অত: একটা সম্পূৰ্ণ ৰংগকৰ্মীক হেত্ত সংগঠলামেক ক্ষমতা আৱশ্যক ভ' জাগছ ।

2005 ঞা. মে জলকপ্পৰ নাট্য মহোসেৱক আযোজল কএল গেল বহৈক । এহি আযোজল মে যাত্ৰী টীম ভাগ লিঅয সে হমৰ হাৰ্দিক গছা বহয । হ্মদা কলাকাৰসভ ৱিখৰল বহৈক । সভ একঠাম জমা হোএত আ লাটক কৰত সে সংভৱ লহি ৱুঝায । তথাপি একৱেঁৰ জালকাৰী দেৱ আৱশ্যক ছল । এতদৰ্থ ৱীস–ৱাঁগসটা মেম্বৰমে সঁ প্ৰকাশি কেঁ টেলীফোল কএলিঐক । কাৰণ, ওকৰ সংগঠলামেক ক্ষমতাসঁ হম পৰিচিত ছলহুঁ । দোসৰ জঁ গছিযো লিতএঅ তঁ সংগঠলামেক ক্ষমতাক অভাৱমে জএৱোঁ কৰিতএঅ কি লহি তাহিপৰ হমৰ ৱিশ্বাস লহি ছল । খৈৰ, ও হমৰ গছাকেঁ সহৰ্ষ স্বীকাৰ ক' লেলক আ পন্দ্ৰহ–সত্ৰহ আদমীক টীম ল' ক'(দিল্লী সঁ) জলকপ্পৰধাম (লেপাল) পহুঁচ গেল ।

সম্প্ৰতি প্ৰকাশি দিল্লীমে মৈথিলী লোক ৰংগ (মৈলোৰংগ) লামক সংস্থা চলা ৰহল অছি । এহি সংস্থাক একটা সদস্য দিল্লী ৰহৈত অছি তঁ দোসৰ দেৱগিৰী মে, মালে একটা উঁত্তৰী দিল্লী তঁ দোসৰ দক্ষিণী দিল্লী । এহলা স্থিতি মে

মৈথিনী বংগকর্ম কেঁ জিযাক’ বাখবঁ একটা কঠিন কাজ ভ’ জাগত ছৈক । তথাপি ও একবা জিঋাএ ক’ নহি, ৰঁক্ষি জগজিযাব ক’ ক’ বখনে ঋছি ।
গম্ভব, জহিযা সঁ প্রকাশি বংগ প্রসংগ সঁ জ্ড়ন ঋছি ঋা ডॉ. ওমপ্রকাশি ভাবতী, স্ব. জে.এন. কৌশিন, মহেশি ঋানংদ, দেরেন্দ্র বাজ ঋংকুব, প্রতিভা ঋগ্রবান ঋাদি সন শোধকর্তাকি সানিঙ্ক পৌনক ঋছি ওকব বংগ–দৃষ্ঠি ঋাবো খ্জনৈক ঋছি । মৈথিনী নোকনাট্যে ঋা বংগমংচ পব ওকব শোধ ঋানেখ উল্লেখনীয হোগত ছৈক । ৰাঁন বংগমংচ পব ভাবত সবকাব দ্বাবা বাষ্ট্রীয ফৈনোশিপ প্রাপ্ত কবনিহাব প্রকাশি কহিযো কহিযো কথা সেহো নিখৈত ঋছি । একবা দ্বাবা নিখন কথা পাথব ৰেঁস চর্চা মে ছন । গ্ত কথা ৰুঁচীক মনোবথ নাম সঁ ঋংতিকা মে ঋা পাথব নাম সঁ হিন্দী মে সমকানীন ভাবতীয সাহিত্য মে প্রকাশিত ভেন বঠ ।
হমবা জনৈত কর্মঠ ঋা সফন ব্যক্তি ও নহি হোগত ঋছি জে সমযক পাছাঁ–পাছাঁ চনৈত ঋছি, সফন ব্যক্তি তঁ ও হোগত ঋছি জে ঋপন কর্মঠতাসঁ সময কেঁ ঋপনা নগ খীচ নৈত ঋছি । গএহ গুণ হম মৃদুভাষী ঋা মিননসাব প্রকাশি মে পবৈত ছী । কিএক তঁ একবাসঁ পহিনে মিথিনাংচন সঁ কতেকো মৈথিনীক বিদ্বাননোকনি দিল্লী ঋএনাহ, মুদা মৈথিনী বংগকর্মক জড়ি এনা ভ’ ক’ বোপন নহি ভেননি । প্রকাশিক নেন দিল্লী মে হিন্দী বংগমংচ মে কাজ কবনাগ ৰহ্ত ঋাসান ছন মুদা ও মৈথিনী বংগকর্ম কে ঋপনৈনক গ্ত ৰেঁসী মহত্বপূর্ণ ঋছি । হমবা তঁ ওহো দিন দেখন ঋছি জহিযা মৈথিনী বংগকর্ম কনকত্তামে ৰহ্ত জগজিযাব ছনৈক, একবা ৰাঁদ গ্ত জগজিযাবী উঁঠিক’ পটনা ঋা জনকপুব ঋএনৈক

सेहो देखलहुँ आ आब लगैत अछि जे एहि जगजियावीक एकटा प्रबॅल दावेदावक रूपमे दिल्ली सेहो ठाढ़ भ' गेल अछि जकर श्रेय निश्चित रूपे प्रकाश चन्द्र झा केँ जाइत छैक । आब पटना हो, चाहे जनकपुर, चाहे सहरसा, सभकेँ अपन-अपन क्षमता देखएबाक हेतु दिल्लीमे प्लेटफार्म मैथिली लोक रंग (मैलोरंग) प्रदान कएअछनक अछि जकर संचालन प्रकाश चन्द्र झा क' रहल अछि । हम मैथिली रंगकर्मक हेतु ओकर दीर्घायु आ सफलताक कामना करैत छी ।



<u>धीरेन्द्र प्रेमर्षि (१९६७-)</u>

মৈথিনীমে গজন খা একব সংবচনা

ৰূপ-বঙ্গঁ এরং চানি-প্রগ্নতি দেখনাপব গীত খা গজন দ্নূ সহোদবে ব্ঁন্মাগত ছৈক। ঝদা মৈথিনীমে গীত খতি প্রাচীন কার্য্শৈনীক ৰূপমে চনৈত খাএন খছি, জখন কি গজন খপেক্ষাগ্নত খৎন্ত নরীন ৰূপমে। এখন দ্নূকেঁ একঠাম দেখনাপব এনা নগৈত ছৈক জেনা গীত-গজন কোনো ঝম্তুক মেনামে এক-দোসবাসঁ বিঁছড়ি গেন ছন। মেনামে ভোতিখাগত-ভাসৈত গজন খববঁদিস পহুঁচি গেন। গজন ওস্হবে পনন-বঁঢ়ন খা জখন বৈঁস জ্খান ভ২ গেন তঁ খপন বিঁছড়ন সহোদবকেঁ তকৈত গীতক গাম মিথিনাধবি সেহো পহুঁচি গেন। জখন দ্নূক ভেঁট ভেনৈক তঁ কিছু সময দ্নূমে খপবিচযক খরস্থা বঁনন বহনৈক। মিথিনাক মাটিমে পোসাএন গীত একবা খপন জগহ কব্জা কবহ খাএন প্রতিদ্বন্দীক ৰূপমে সেহো দেখনক। ঝদা জখন দ্নূ এক-দোসবাকেঁ নগসঁ হিযাক২ দেখনক তখন ব্ঁন্মবাঁমে খএনৈক-খাহি বে বাঁ, হমবাসভমে এনা বৈঁব কিএক, হম দ্নূ তঁ সহোদবে ছী! তকবা বাঁদ মিথিনাক ধবতীপব ডেগসঁ ডেগ মিনা দ্নূ পূর্ণ ভ্রাহৃত্ব ভারেঁ নিবন্তব খাগাঁ বঁঢ়ৈত বহন খছি। গীত খা গজনক স্বৰূপ দেখনাপব দ্নূক স্বভারমে খপন পোস্বখা জগহক স্থানীযতাক খসবি পূবাপূব দেখবাঁমে খবৈঁত খছি। গীত এনা নগৈত ছৈক জেনা বঙ্গঁবিবঙ্গী ফূনকেঁ সৌঁতিক২ সজাওন সেজৌঁট হো। মিথিনাক গীতমে কাঁটৈসেন বাঁত জঁ কহন জাগছ তঁ ফূনেসন মোনাযম ভারমে। একবা হম এহূ তবহেঁ কহি সকৈত ছী জে গীত ফূনক নতমাবাপব চনবৈঁত নোককেঁ ভারক উঁচাগধবি পহুঁচবৈঁত খছি। এহিমে মিথিনাক

লোকব্যবহাব এবং মানবীয ভাব প্রমুখ ভূমিকা নিবাহি কবৈত আএল অছি। জাহি ভাষাক গাবিযোমে বিদম আ মধুবতা হোএত ছৈক, ওহি ভূমিপব পোসাএল গীতক স্বরূপ কঠোহ-ধবাহ ভএএ নহি সকৈত অছি। কহী জে গীতমে তঁ নানীগ্ৰবাঁসক ফূলজকাঁ ও তাকত রিদ্যমান ছৈক জে মাছ খাএত কান জঁ গহবমে কাঁটে অটকি গেল তঁ তকবো গলাকহ সমাপ্ত কহ দৈত ছৈক।
গজলক রঁগয-রাঁনি দেখরাঁমে ভলহি গীতেজকাঁ স্ববেরঁগব লগৈক, এহিমে গীতসন নবমাহটি নহি হোএত ছৈক। উঁসবাহ মরুভূমিমে পোসাএল ভেলাক কাবণে গজলক স্বভার কিছু উঁস্সঠ হোএত ছৈক। ওা কঞ্চব গস্নামীসভক সঙ্গীতিমে রেঁসী বহল অছি, তেঁ একব স্বভারমে “জরঁ ফছ ন চলেগী তো যে তনরাব চলেগা” সন তেজ তেরবরেঁসী দেখরাঁমে অরৈত ছৈক। যদ্যপি গজলকেঁ প্রেমক অভিব্যক্তিক সশক্ত মাধ্যম মানল জাএত ছৈক। গজল কহিতহিঁদেবী লোকক মন-মস্তিষ্কমে প্রেমময মাহৌল নাচি উঠৈত ছৈক, এহি রাঁতসঁ হম কতহু অসহমত নহি ছী। মুদা গজলমে প্রেমক রাঁত সেহো রেঁস ধবগব অন্দাজমে কহল জাএত ছৈক। কহরাঁক তাপের্য জে গজল তকআবিজকাঁ সীধে রেঁধ দৈত ছৈক লক্ষ্যকেঁ। লাগলপটমে রেঁসী নহি বহৈত ছৈক গজল। মিথিলাক সন্দর্ভমে গীত আ গজলক এক্কহি তবহেঁ জঁ অন্তব দেখরঁহ চাহী তঁ ওা কহল জা সকৈত অছি জে গজল ফূলক প্রক্ষেপণপর্যন্ত তকআবিজকাঁ করৈত অছি, জখন কি গীত তকআবি সেহো ফূলজকাঁ ভঁজৈত অছি।
মৈথিলীমে সংখ্যামেক রূপেঁ গজল আনহি রিধাজকাঁ ভলহি কম লিখল জাএত বহল হো, মুদা গ্ৰণরত্তাক দৃষ্টিএঁ ওা হিন্দী রা নেপালী গজলসঁ কতহু কনেকো ন্যূস নহি

দেখবামে খবৈত খছি। একব কাবণ গহো ভ২ সকৈত ছৈক জে হিন্দী, নেপালী খা মৈথিলী তীনূ ভাষামে গজলক প্রবেশ এক্কহি মুহূর্তমে ভেল ছৈক। গজলক শ্রীগণেশ কবৌনিহাব হিন্দীক ভাবতেন্দ্, নেপালীক মোতীবাম ভট্ট খা মৈথিলীক পং. জীরন ঝা এক্কহি কালখণ্ডক স্রষ্ঠাসভ ছথি।
মৈথিলীযোমে গজল খাৱ এতৱা লিখল জা চুকল খছি জে একব সংবচনাক মাদে কিছু কহলাগ দিনহিমে ডিবিযা বাঁববঁজকাঁ লগৈত খছি। এহলোমে যদাকদা গজলক নামপব কিছু এহলো পাঁতিসভ পত্রপত্রিকামে খভবি জাগত খছি, জকবা দেখলাপব মোন কিছু ঝ্ঝ্খান ভগএ জাগত ছৈক। কতেকোগোষ্ঠৈক বচনা দেখলাপব এহলো বুঝাগত খছি, জেনা ওলোকনি দূ-দূ পাঁতিবলা ত্তকবন্দীক একটা সমূহকেঁ গজল বুঝৈত ছথি। হমবা জনৈত ওলোকনি গজলকেঁ দূবেসঁ দেখিক২ ওহিমে খপন পাল্ডিত্য ছাঁটৈব শুরু ক২ দৈত ছথি। জঁ মৈথিলী সাহিত্যক গুণধর্মকেঁ খামেসাত ক২ চলৈত কোনো ব্যক্তি একবৈব দূ-চাবিটা গজল ঠঙ্গসঁ দেখি লিখএ, তঁ হমবা জনৈত ওকবামে গজলক সংবচনাপ্রতি কোনো তবহক দ্বিবিধা নহি বহি জএতৈক।
তেঁ সামান্যতঃ গজলক সম্বন্ধমে নব জিজ্ঞাস্বক লেল জঁ কিছু কহল জাএ তঁ বিনা কোনো পাবিভাষিক শব্দক প্রযোগ কএলে হম এহি তবহেঁ খপন বিচাব বাখ২ চাহৈত ছী- গজলক পহিল দূ পাঁতিক খন্ত্যানুপ্রাস মিলল বহৈত ছৈক। খন্তিম এক, দূ বা খধিক শব্দ সভ পাঁতিমে সন্নিযা বহলহুপব সাম্মী শব্দসঁ পহিলুক শব্দমেখনুপ্রাস বা কহী ত্তকবন্দী মিলল বহৱাক চাহী। খন্য দূ-দূ পাঁতিমে পহিল পাঁতি খনুপ্রাসক দৃষ্ঠিএঁ স্বছন্দ বহৈত খছি। মুদা

দোসব পাঁতি বা কমী জে পছিনা পাঁতি স্থাযীরনা অন্বপ্রাসকেঁ পছওখরৈঁত চনৈত ছৈক।
এা তঁ ভেন গজনক হ্মহ-কানক সংবচনাসম্বন্ধী বাঁত। হ্মদা খানি হ্মহে-কানপব ধ্যান দেন জাএ আ ওকব কথ্য জঁ গোষ্ঠিআগত বা বৌআগত বহি জাএ তঁ দেখবামে গজন নগিতো যথার্থমে ও গীজন ভঽ জাগত অছি। তেঁ প্রস্তুতিকবণমে কিছ বহস্য, কিছ বোমাঞ্চক সঙ্গ সমধানন চোটৈজকাঁ গজনক শৈঙ্কসভ তান-মাত্রাক প্রবাহময সাঁচমে খচাখচ বৈসৈত চনি জএবাঁক চাহী। গজনক পাঁতিকেঁ অর্থবত্তাক হিসাবেঁ জঁ দেখন জাএ তঁ কহি সকৈত ছী জে হঽবক সিবাওঁবজকাঁ এা চনৈত চনি জাগত ছৈক। হঽবক পহিন সিবাওঁব জাহি তবহেঁ ধবতীক ছাতী চীবিকঽ ওহিমে কোনো চীজ জনমাওন জা সকবাঁক আধাব প্রদান কবৈত ছৈক, তহিনা গজনক পহিন পাঁতি কল্পনা বা রিষযবস্তুক উঠান কবৈত অছি, দোসব পাঁতি হঽবক দোসব সিবাওঁবক কার্যশীনীক অন্বকবণ কবৈত পহিনমে খসাওন বীজকেঁ আবশ্যক মাত্রমে তোপন দঽকঽ প্বনঃ আগূ বঁঢ়বাঁক মাঙ্গ প্রশস্ত কবৈত অছি। গজনক প্রত্যেক দূ-পাঁতি অপনহ্মে স্বতন্ত্র বহৈত অছি আ এক-দোসবাক সঙ্গ তাদাম্যে স্থাপিত কবৈত সমগ্রমে সেহো একটা রিশিষ্ঠ অর্থ দৈত অছি। একবা দোসব তবহেঁ এহ্না কহন জা সকৈত অছি জে গজনক পহিন পাঁতি কনসাবসঁ নিকানন নানোনান নোহ বহৈত অছি, দোসব পাঁতি ওকবা নির্দিষ্ঠ আকাবদিস বঁঢ়এবাঁক নেন পড়ঽ বনা ঘনক সমধানন চোটৈ ভেন কবৈত অছি।
গীতক সৃজনমে সিদ্ধহস্ত মৈথিনসভ থোড়ে বঁগয-বাঁনি বুঁন্নিতহিঁ আসানীসঁ গজনক সৃজন কবঽ নগৈত ছথি।

सम्भवतः तेँ आवसीप्रसाद सिंह, बवीन्द्रनाथ ठाकुव, डॉ महेन्द्र, मार्कण्डेय प्रवासी, डॉ. गङ्गेश गुञ्जन, डॉ. वुद्धिनाथ मिश्र आदि मूलतः गीत क्षेत्रक व्यक्तित्व बहितहु गजलमे सेहो कलम चलौनलनि। ओहन सिद्धहस्त व्यक्तिसभक लेल हमव ओ गजल लिखबाक तौब-तबिकाक मादे किछु कहबं हास्यास्पद भऽ सकैत अछि, यदा नवसिखुआसभकेँ भविसक ओ किछु सहज वुझाएत।
मैथिलीमेकलम चलौनिहावसभमध्य प्रायः सभ एक-आध हाथ गजलोमे अजमबैत पाओल गेलाह अछि। जनकवि वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" सेहो "भगवान हमव ओ मिथिला" शीर्षक कविता पूर्णतः गजलक संवचनामे लिखने छथि। यदा सियावाम झा "सवस", स्व. कलानन्द भट्ट, डॉ.वाजेन्द्र विमल सन किछु साहित्यकाव खाँटी गजलकावक रूपमे चिन्हल जाएत छथि। ओना सोमदेव, डॉ.केदावनाथ लाभ, डॉ.तावानन्द वियोगी, डॉ.वामचैतन्य धीवज, वाबा वैद्यनाथ, डॉ. विभूति आनन्द, डा.धीवेन्द्र धीव, हुजतुर्बवहमान हाशमी, वमेश, वैकुण्ठ विदेह, डा.वामदेव झा, वोशन जनकपुवी, पं. नित्यानन्द मिश्र, देवशङ्कव नवीन, श्यामसुन्दव शशि, जनार्दन ललन, जियाउर्ववहमान जाफवी, अजितकुमाव आजाद, अशोक दत्त आदिसमेत कतेको स्रष्टाक गजल मैथिली गजल-संसावकेँ विस्तृति दैत आएल अछि।
गजलमे महिला हस्ताक्षव वड्ड कम देखल जाएत अछि। मैथिली विकास मञ्चद्वावा बहवाएल पल्लवक पूर्णाङ्क १३, २०३१ चैतक अङ्क गजल अङ्कक रूपमे बहवाएल अछि। सम्भवतः ३४ गोटे अलग-अलग गजलकावक एकठाम भेल समायोजनक ओ पहिल वानगी हएत। एहि अङ्कमे डा. शेफालिका वर्मा एक मात्र महिला

হস্তাক্ষৰক ৰূপমে গজলক সঙ্গ্রহ প্রস্তুত ভেলীহ অছি। এহী অঙ্কক আধাৰপৰ নেপালীমে মৈথিলী গজল সম্বন্ধী দৃগোষ্ঠ সমালোচনামেক আলেখ সেহো লিখাএল অছি। পহিল মন্ত্র ব্রাজাকীদ্বাৰা কান্তিপ্ৰৰ ২০৩২ জেঠ ২৭ গতেক অঙ্কমে আ দোসৰ ডা. ৰামদয়াল ৰাকেশদ্বাৰা গোৰখাপত্র ২০৩২ ফাগুন ২৬ গতেক অঙ্কমে। ছিটফুট আলহ্ গজল সঙ্কলন ৰহৰাএল হোএত, মুদা তকৰ জানকাৰী এহি লেখককেঁ নহি ছৈক। হঁ, সিয়াৰাম ঝা "সৰস"ক সম্পাদনমে ৰহৰাএল "লোকৰেদ আ লালকিলা" মৈথিলী গজলক গন্তব্য আ স্বৰূপ দঽ ৰহত কিছু হৰিছাকঽ কহৈত পাওল গেল অছি। এহিমে সৰসসহিত তাৰানন্দ ৰিয়োগী আ দেৱশঙ্কৰ নৱীনদ্বাৰা প্রস্তুত গজলসম্বন্ধী আলেখ সেহো মৈথিলী গজলক তকোলীন অৱস্থাধৱিক সাঙ্গোপাঙ্গ চিত্র প্রস্তুত কৰবামে সফল ভেল অছি। সমগ্রমে মৈথিলী গজলক ৰিষয়মে ঙা কহি সকৈত ছী জে মৈথিলী গীতক খেতসঁ প্রাপ্ত হলগৰ মাটিমে গুণৱত্তাক দৃষ্ঠিএঁ মৈথিলী গজল লিৰন্তৰ ৰঢ়ি ৰহল অছি, ৰঢ়ি এৰহল অছি।

গজল ১

ঝুট্ঠা জে নহি ডাগল নচৌলক ও ভগতা ও ধামী কী
একো গাম জঁ ডাহি নে সকলহুঁ তঁ ওঢ়লে ৰমলামী কী

অক্ষত–চানন ধূপ–দীপসঁ জতঽ যক্ত সম্পূর্ণ হ্অএ–
ততঽ জঁ ক্যা হড্ডী ৰগড়ৈএ, ও কামী ও কলামী কী

ৰাঁপ–মাএপর্যন্ত পৰোসৈ স্নেহ জখন ৰঙ্খাৰাসঁ–
লকলী সভক দ্লাৰ লগৈএ, সে কাকী, সে মামী কী

সোনিত সেহো শিবার্‌ রঁনৌ ছৈ শাসনকেব সনকী ভঙ্গী
দিযৌ ঘটাঘটি জে ভেটএ সে, ফ্‌সিযাহী কী দামী কী

পোখবিক বখরাবী পএরাঁনএ কণ্ঠী খানি রাঁন্হি নিখ
ফেব গটাগটি ঘোঁটনে চনিযৌ, সে পোঠিযা সে রাঁমী কী

পাগ উঁতাবিক২ কূদি গেন "প্রেমর্ষি" সেহো খখাড় ামে
ঠাহি সকন নে জ্‌ম্ম-গমাবত কবতৈ ওহন স্বনামী কী
(রি.২০৬২/০৩/৩০)
গজন ২
মোন জঁ কাবী খছি তঁ চমড় া গোবে কী কবতৈ ?
মমতে জঁ খরুখাএন তঁ মাএক কোবে কী কবতৈ ?

গগনসঁ উঁতবৈ মেঘ নযনমে জখন সাঁচিক২ শিক্ষা
কেহনো খন্হাব চীবিক২ জনমন ভোবে কী কবতৈ ?

নীম পীরিক২ মাহ্‌ব সেহো পচারৈত খাএন ছী তঁ
কাঁটকেঁ ধাঙৈত ডেগকেঁ থোড়ে খণ্ডোবে কী কবতৈ ?

ঘামক সিঁচন ধবতী ছোড়া নে জকবা কতৌ ভবোসা
তকবা নেন রঁনসীক স্বখদগব রোঁবে কী কবতৈ ?

খাগি পীরিক২ রঁজ্র রঁনৌনে ছৈ জে খপ্পন ছাতী
তকবা খাগাঁ গোহিযা খাঁখিক নোবে কী কবতৈ ?

তৈযো নাগন "প্রেমর্ষি" খছি রঁস প্রেমক খেতীমে
প্রেমক ধন ভেন ঘবমে জারিড় চোবে কী কবতৈ ?
(রি.২০৬২/০৩/২০)

नव भोर जोहैत मिथिला

राज्य पुनर्संरचनाक लेल भऽ रहल अभ्यासक असरि देशक समग्र क्षेत्रक संगहि मिथिलामे सेहो व्यापक देखल जा रहल अछि । जनता जागरूक आ उत्सुक अछि— नेपालक नव-निर्माणमे मिथिला क्षेत्रकेँ अपन पृथक आ विशेष पहिचानक सङ्गँ देखबाक लेल । सौँसे देशमे गणतन्त्र आ सङ्घीय व्यवस्थाक माङ जोर पकड़ि रहल अछि । एहनमे मिथिलावासीमे सेहो एहन भावना जागब आ तकराप्रति सक्रियता देखल जाएब जतबएं स्वाभाविक अछि, ततबएं उत्साहवर्द्धक सेहो । उत्साह देशक स्वत्व आ स्वतन्त्रताप्रेमी ओहन नागरिकक लेल जे अपन माटिपानिक प्रति इमानदार छथि, अपन राष्ट्रिय स्वाभिमानपर गर्व करैत छथि, जे मिथिलाक स्वर्णिम इतिहासकेँ वर्तमान बनएबाक आकांक्षी छथि, आ जे यथार्थमे नेपाली जनताक सर्वतोमुखी विकास आ उन्नतिक पक्षपाती छथि । भूगोलसँ मिथिलाक अलोपित होएबाक पीड़ा हमसभ शताब्दियोसँ भोगैत आबिरहल छी । खास कऽ कर्णाटवंशीय मिथिला राज्यक पतनक बाद विभिन्न कालखण्डमे हमसभ यवन, अङ्ग्रेज, गोर्खाली आदिक प्रभाव निरन्तर सहैत आएल अछि । एतबा उत्पीड़नक बाद जँ कोनो आन सभ्यता वा संस्कृति रहितए आ कि कोनो आनठामक लोक रहितए तँ

আগধবি ছিন্নভিন্ন হোগত নেস্তনাবূঁদ ভ২ গেন বহিতএ । হ্মদা মিথিনা, মৈথিন আ মৈথিনীক অস্তিত্র নিবন্তব সাত সএ রর্ষসঁ চনৈত আএন অনেকো তবহক হ্চঞ্চক মাবি সহিতো জীরন্ত অছি । একবা পাছাঁ নিশ্চিত রূপেঁ মৈথিন সভ্যতা–সংস্কৃতিক সরাধিক যোগদান বহনৈক অছি । সাঁস নেরাঁমে পর্যন্ত অশৌকর্য ভ২ বহন আগধবিক অরস্থামে সেহো অপনাকেঁ জিযাক২ বখনিহাব মৈথিনীক এহি গৌবরশানী আধাবসভক প্রতি নতমস্তক হোগত হম কিছু পাঁতি গঢ়নে ছী–
মানৈত ছী জে আরঁ বহন নগ দুনিযাকেব ভূগোনমে
তৈযো হমসভ রঁচাক২ বখনৌঁ জকবা মাগক রোঁনমে
সোহব, নগনী, জটাজটৈন কি ঝিঝিযা–সাঁঝ–পবাতীমে
একহকটা মিথিনা জীরৈএ একহক মৈথিন ছাতীমে
উপর্যুক্ত কার্যাশি ভূগোনরিহীনতাক ঘাওমে মনহম নগএরাঁক আভাস দ২ সকৈত অছি, হ্মদা মাত্র ছাতীমে জীরৈত ভূগোন হমবাসভকেঁ সম্পূর্ণতা নহি দিআ সকৈত অছি । এহন–এহন করিতা গঢ়ি ক২ অসনমে কহী তঁ হমসভ অপনাকেঁ পবতাবন করৈত ছী । এহি তবহেঁ অপনাকেঁ পবতাবিক২ নহি বাখন জাএ রা জাহি রাঁতপব হমসভ গৌবব করৈত ছী তকবা যগ–যগন্তধবিক নেন জঁ চিবস্থাযী কবরাঁক হো তঁ আরশ্যক অছি জে খানি ছাতীমে সঁতন মিথিনাকেঁ হমসভ জমীনপব উতাবী আ মৈথিন ভূগোনকেঁ পুনঃ নামকবণ করৈত উর্বব রনারী । একবা নেন দেশক এখন্বক বাজনীতিক রাতারবণ হমবাসভকেঁ সরোঁত্তম অরসব প্রদান কএনে অছি । হ্মদা দেশমে জাহি তবহক ক্রিযাকনাপসভ দেখন জা বহন অছি তাহিসঁ ঙা নহি ব্যূঝাগত অছি জে হমসভ এহি অরসবক সদুপযোগ কবরাঁক দিশামে পর্যাপ্ত সচেত

খা গম্ভীব ছী । সর্বপ্রথম তঁ ওা ৱাঁত খৱৈত খছি জে এখনধবিক সবকাবসভ রাস্তরিক ৰূপমে সত্তাধাবী রস্থাসঁ ৱাঁহবক নোকক নেন সেহো নোকতন্ত্র খাএন ছৈক সে মানৈত–সন খপন চবিত্র দেখরিতে নহি খছি । ওা কট্টসত্য হমবাসভক সোঝাঁ খছিএ । রস্তুতঃ দেশমে খখনো ওহনে বাজনীতিক দনক দৰঁদৰাঁ খছি জে মাঘ ১৯ সঁ পহিনে সংরিধানসভাক নামে স্বনৈতদেবী কোনো ৱিগড়ৈন সাঁঠ়জকাঁ ভড়কি উঁঠৈত ছন । রি.সং. ২০৪৭ সানক সংরিধানমে কহমা–হ্নসৌঁপধবিমে পবিরর্তন কবৱাঁক খারশ্যকতা নহি দেখনিহাবসভ খাগ নর সংরিধান ৱঁনএৱাঁক রীড়া উঁঠৌনে ছথি । এহনমে ওহি র্যক্তিসভক মানসিকতা কতেক ৱঁদনন হোএতৈক সে সহজহিঁ খন্বমান নগাওন জা সকৈত খছি । জঁ মাওরাদী জনযুদ্ধ নহি শুৰু ভেন বহিতৈক খা এখন জে মুদ্দাসভ উঁঠন খছি সে নহি উঁঠাওন জগতৈক তঁ নিশ্চিত খছি জে হমসভ খাজ্ক ওা স্বর্ণিম রাতারবণ নহি পরিতহুঁ । মুদা জনযুদ্ধক মার্ফত মৈথিনীসভমে খধিকাবক ভূখ তঁ মাওরাদী জগা দেনকৈক, মুদা ভুখাএনসভকেঁ খন্ন দেখৈতদেবী জাহি তবহক কছমচ্ছী ভহ সকৈত ছৈক, তকবা র্যরস্থিত কবৱাঁ হেতু কোনো ঠোস প্রযত্ন কহ সকৱাঁক খরস্থা মাওরাদীক সেহো নহি ছৈক ।

মিথিনামে ভেন পহিচানক খান্দোননক ক্রমমে খাযোজিত একটা পত্রকাব–সম্মেননমে মাওরাদী নেতা ৱাঁব্রাম ভট্টবাওা ৱাঁজন ছনাহ— 'মধেশমে জে চেতনা জাগন ছৈক তকব রীজাবোপণ রা গর্ভাধান কে কএনক ? মধেশী খান্দোননক ৱাঁপ কে ? ' খাস কহকহ ২০৪৬ সানক পবিরর্তনক ৱাঁদক খরস্থাকেঁ দেখনাপব হমবা

জরার্ক রূপমে ঙা কহরাঁমে কনেকো দ্বিরিধা নহি হোগত খছি জে মাওরাদী । হ্মদা এহিঠাম ধ্যান দেরাঁযোগ্য রাঁত ঙা খছি জে কোনো যোগ্য নাগবিকক সম্পূর্ণ নির্মাণমে রাঁপক রীর্যক ভূমিকা খত্যন্ত ন্যূন হোগত ছৈক । হ্মখ্য ভূমিকা বহৈত ছৈক— নও মাসধবি গর্ভমে বাখিকহ জন্ম দেনিহাবি খা নানন–পানন কএনিহাবি মাএক । হ্মদা দ্ভগ্য, মিথিনাসহিত দেশক খনেকো ক্ষেত্র, জাতি, সহ্মদাযমে জাগন চেতনাক রাঁপ তঁ মাওরাদী রঁনন, হ্মদা খার্র জখন মাএ রঁনরাঁক সময খাএন খছি তঁ দেখা চাহী জে ঙা ভূমিকা ও কতেক হ্মশনতাসঁ নিরাহি কবৈত খছি । এহিসঁ পহিনে মধেশক পার্টী রা সঙ্গঠনসভ ওহোসভ খানি রাঁপ রঁনরাঁক দম্ভ মাত্র দেখা সকন । ঙা রাঁত খাস কহ মিথিনাক ভাষা–সংস্কৃতিজন্য ভারনাপব রেঁবরেঁব হ্মঠাবাঘাত কবৈত ওসভ দেখা চ্কন খছি । জঁ মধেশী খান্দোনন/রিদ্রাহ রাঁপ রঁনরাঁক খহঙ্কাবমে মোঁছক নড়্ াগ নহি রঁনিতএ, একবা সমর্টিকহ–সহেজিকহ চননিহাব একটা মাএ ভেটিতৈক, তঁ খাগ খরস্থা কিছু ভিন্ন বহিতৈক । খরস্থা তেঁযো রিগড়্ন নহি ছৈক । সম্পূর্ণ মিথিনারাসীক মনোরঁন খখনো ওতরঁএ উঁচ্চ ছৈক । এহি মনোরঁনকেঁ সকাবাত্মক খা সার্থক পবিণামপব খরতবণ কবএরাঁক নেন ক্রিযাশীন হোএরাঁক জিম্মেদাবী হমবেসভপব খছি । সংসদ খা সড়্কসঁ জনখারাজ বুঁনন্দ কএনিহাবসভ রেঁব–রেঁব ঙা রাঁত দোহবাওন কবৈত ছথি জে সংরিধানসভা সভসঁ রেঁসী মধেশী, দনিত এরং জনজাতিএক নেন খারশ্যক খছি । ওহি খারশ্যক সংরিধানসভা খা তকবা রাঁদ রঁনন সবকাবমে মৈথিনসভক উঁনেখ্য সহভাগিতা খছি । তেঁ সংরিধানসভাকেঁ খপন

হকমে উঁপযোগ কববাঁক দিশামে সভক ক্রিযাশীনতা আরশ্যক অছি । বহি গেন রাঁত সশস্ত্র আন্দোনন কএনিহাব জনতান্ত্রিক তবাঁও ফ্রিজ মোর্চসিভক, হমব রিচাবমে ওহোসভ বাজ্যসত্তাকেঁ সমদর্শীএ রঁনএবাঁক নেন ও মাঙ্ক অপনৌনে ছথি । জনভারসঁ নিবপেক্ষ বাজনীতি হ্নকোসভক নহি ভঽ সকৈত ছনি ।
স্বদীর্ঘ বাজনীতিক গতিহাস সমষ্টিকঽ রৈঁসন র্যক্তিসভ এখন ক্রিযাশীন মোর্চসিভমে ছথি । হ্নকাসভক আগাঁ গহো চ্নৌতী ছনি জে হ্নকেসভক দেখাসিখী কতেকো অরাঞ্ছিত তত্রসভ মিথিনামে পএব পসাবিবহন অছি । ও তত্রসভ হমবাসভক মূন ফদ্দাকেঁ দবকিনাব কববাঁক নেন জী–জানসঁ নাগন অছি । এহন অরস্থাকেঁ রিচাবৈত সেহো অপনাকেঁ জনতাপ্রতি উঁত্তবদাযী র্ঝনিহাবসভকেঁ অপনা–অপনা দিসসঁ সেহো সহমতিক রিন্দু তনাশৈত বহবাঁক চাহী । এম্হব অন্য পক্ষ সেহো জঁ র্যক্তিগত গর্ষ্যা–দ্বেষসঁ উঁপব উঁঠি জনতাক প্রতি গমান্দাব ভঽকঽ আগাঁ আবঁএ তঁ নিশ্চিত অছি জে সশস্ত্র সমূহসভ সেহো আমিন পীরিকঽ নহি রৈঁসন বহত । এহি কাজমে সবকাব আ রিশেষ কঽ মাওরাদীক ভূমিকা রিশেষ মহত্রপূর্ণ ভঽ সকৈত অছি । কিএক তঁ জেসভ অনগ রাঁষ্ট্র ধএনে ছথি সেসভ অধিকাংশ মাওরাদীএসঁ রঁহবাএন ছথি । জঁ মাওরাদীসভ গম্ভীবতাসঁ ও সোচথি জে জেসভ ওহন রিকষ্ট–রিকবান সমযমে সঙ্গ ছন সে আগ কিএক অনগ ভঽ গেন তঁ ও সমস্যা জন্দীএ সনষ্টি জাএত । ও রিশ্বস্ত রূপসঁ দিযাদ–রাদমে হোরঁঽ রনা ভারনাত্মক প্রহাবক কাবণে উঁত্পন্ন মতভিন্নতা ভঽ সকৈত অছি । এহিমে অনগ রিচাব বখনিহাব দিযাদক রাঁত স্বনিকঽ ওকব সম্মান

মাত্র ক২ দেন জাএ তঁ জত২ কতৌ ককবো খহঁকেঁ ঠেস নাগন হোএতৈক, সে শান্ত ভ২ জএতৈক । শান্তিক জোবক খাগাঁ কেহনো কড়্গব হথিযাবকেঁ ঘম২ পড়্তৈক খা ঘমি জএতৈক সে হমব দৃঢ বিশ্বাস খছি । বহন মিথিনাকেঁ সাকাব ৰূপ দেবাঁক বাঁত, তঁ এহিমে এতবঁএ কহবঁ—

জখন জনজন ঙা মিথিনাক জাগি জেতৈ ভাগ
হেতৈ সোন মঠ্ন ভোব, বাতি ভাগি জেতৈ ভাগ ।

<u>মধুশ্রাবণী : মিথিনাক পাবম্পবিক হনিমূন</u>

ভূগোনসঁ বিন্বপ্ত ভ২ চ্কন মিথিনা জঁ এখনোধবি খস্তিত্বমে খছি তঁ একবা পাছাঁ এক্কহিটা কাবণ ছৈক— এহিঠামক নোকবেদমে বহন বৌদ্ধিক উর্জা খা মৈথিন সংস্কৃতিমে বহন বিনক্ষণতা এবং বৈজ্ঞানিকতা। মিথিনামে জীবনক বিবিধ বোমাঞ্চক ঘড়ী এবং মহত্ত্বপূর্ণ ক্রিযাকনাপকেঁ সাংস্কৃতিক খাববণ ওঢ় াক২ ধার্মিকতা এবং সামাজিকতাসঁ খাবদ্ধ কএন গেন ছৈক। নোকব্যবহাবমে প্রচনিত ক্রিযাকনাপসভসঁ মাত্র সেহো ঙা স্পষ্ট ভ২ জাগত খছি জে একব গর্ভমে এখনো বঁহ্তো বঁহ্মূন্য বনে ন্বকাএন ছৈক। এহীসভ কাবণে এখনোধবি মৈথিন

সংস্কৃতি জীবন্ত অছি আ মিথিলা অস্তিত্বমে অছি। আজুক সন্দর্ভমে তঁ এহো কহব অতিশয়োক্তি নহি বুঝাইত অছি জে নেপালমে মিথিলে একটা এহন সাংস্কৃতিক সম্পদা অছি, জকর আড়ি ধঽকঽ মধেশী নামক রাজনীতিক ক্ষেত্র ডেগাডেগী দঽ রহল অছি। ভারতদিস সেহো কমসঁ কম হিসাবক জঁ বাত কএল জাএ তঁ ওহিম মিথিলা ছোড়ি আন কোনো উল্লেখ্য সাংস্কৃতিক সম্পদাক সর্বথা অভাবে দেখল জাইত অছি।



আইকাল্হি মাত্র ধার্মিকতা আ পরম্পরাগত সংস্কারক রূপমে অধিকাংশ পাবনি–তিহার বা সাংস্কৃতিক কর্ম সীমিত হোইত গেল পাওল জাইত অছি। যদা মিথিলাক পাবনি–তিহারসভকেঁ জঁ সূক্ষ্মতাপূর্বক দেখল জাএ তঁ এহিসভক পাছাঁ কোনো নে কোনো উদ্দেশ্য নিহিত রহল স্পষ্ট দেখবামে আবি জাইত ছৈক। একরাসভকেঁ আওর রেঁকছাকঽ দেখলাপর আজুক সময়মে সেহো ঈ পাবনি–তিহার ওতবএ সান্দর্ভিক আ উপযোগী বুঝাইত ছৈক। সাওন মাসমে মিথিলাক কিছু জাতিমে নববিবাহিত দম্পতিসভক লেল আয়োজন হোইঽ বলা মধুশ্রাবণী পাবনিকেঁ সেহো এহী রূপমে লেল জা সকৈত অছি।

মধ্শ্রারণী রিশেষতঃ নররিরাহিতা স্ত্রীসভক নেন খাযোজিত ভেনিহাব একটা এহন ধার্মিক খনুষ্ঠান ছিযেক, জাহিমে ওসভ ধার্মিক রূপেঁ তঁ রিষহবা খা মহাদের–পার্রতীক পূজা করৈত ছথি, ক্ষদা একব গহিবাগমে জা দেখনাপব স্পষ্ঠ ভং জাগত খছি জে মধ্শ্রারণী মিথিনামে মনাওন জাএরনা একটা পবম্পবাগত প্রঞ্চতিক 'মধ্চন্দ্রিকা' খর্থাত 'হনিমূন' ছিযেক। মধ্শ্রারণী মিথিনাক ব্রাম্নণ, কাযস্থ, দের, স্বর্ণকাব খাদি জাতিমে রিশেষ রূপসঁ মনাওন জাগত খছি।



খাধ্নিক যৌনশাস্ত্রীনোকনি হনিমূনকেঁ রৈরাহিক সম্বন্ধ স্বদৃঢীকবণক প্রফ্খ খাধাব মানৈত ছথি। তকোনীন মৈথিন রিদ্বানসভক সেহো এহি পারনিক পবম্পবা খাবম্ভ করৈত কান গএহ মানসিকতা বহন হোএতনি। প্রাযঃ গএহ কাবণ ভং সকৈত খছি জে মিথিনা ক্ষেত্রমে পবম্পবাগত রূপেঁ মধ্শ্রারণী মনাওন জাএরনা ব্রাম্নণ, কাযস্থ, দের খাদি জাতিমে রৈরাহিক সম্বন্ধ–রিচ্ছেদক ঘটনা খপেক্ষাহৃত কম দেখরামে খরৈত খছি। জাহিবসন রাত খছি— জেঁ রিরাহক রন্ধন সক্ত বহৈত ছৈক, তেঁ এহিমে খাগাঁ চনিকং দুর্ঘটনা কম হোগত ছৈক। নোক–নাজক ভয রা স্ত্রী জাতিক নেন ডেগ–

ডেগপব নগাওন জাএরনা রর্জনা মাত্র জঁ ‘জর্বর্দস্তী দাম্পত্যক গাড় ি’ ঘিচর্বাক কাবণ বহিতৈক তঁ মিথিনাক খানো জাতিমে রৈরাহিক সম্বন্ধ ওতর্বএ স্বদৃঢ বহিতৈক, জতেক মধ্শ্রারণী মনৌনিহাব জাতিমে।



তহিযা এখনজকাঁ ‘হনিমূন’ ক নেন রাঁহব জএরাঁক খরস্থা নহি ছনৈক। ভ২ সকৈত ছৈক জে যাতাযাতক খস্বরিধা একব প্রমুখ কাবণ বহন হো। হ্মদা নররিরাহিত দম্পতিকেঁ কিছু উক্তেন্নতা, কিছু উন্মুক্ততা ভেটরাঁক চাহী— এহি রাঁতক নিষ্কর্ষ তকোনীন রিদ্বাননোকনি নিকাননে হোএতাহ। একবা নেন ওনোকনি কামোদ্দীপনক দৃষ্টিএঁ সর্বাধিক মহত্ত্বপূর্ণ মানন জাএরনা রবসাতী মহিনা সাওনক চযন কএনে হোএতাহ। ধার্মিকতাক সঙ্গ খারম্ভ ক২ একবা র্যাপকতা দেন গেন হোএতৈক। সাওনক মধ্বতাক খাভাস কবএরাঁক সন্দর্ভমে তথা যৌন–সম্বন্ধ স্বদৃঢীকবণক দৃষ্টিএঁ খারশ্যক তত্ত্বসভ সমাহিত ক২ একবা একটা পবম্পবা রনা দেন গেন হোএতৈক। এহি নাম্হিটা নেখমে রৈজ্ঞানিক দৃষ্টিএঁ মৈথিন সংস্কৃতিমে পাওন জাএরনা সম্পূর্ণ সার্থক পক্ষসভক রিস্তৃত চর্চা কবর সম্ভর নহি খছি। হ্মদা এতরা খরশ্য কহন জা সকৈত খছি জে মৈথিনীক খধিকাংশি সংস্কাব, খাচাব–রিচাব এরং

ব্যবহাবমে ডেগ–ডেগপব বৈজ্ঞানিক আধাবসভক প্রচ্বতা পাওল জাগত অছি।
যৌনবিজ্ঞানক দৃষ্টিএঁ জঁ দেখল জাএ তঁ মধ্শ্রাবণী পাবনিক অলন্ত বিশিষ্ঠ মহত্ত্ব অছি। সামান্যতযা ঞ পাবনি মনাওল জাএবনা জাতিসভমে বিবাহক বাঁদ নড়কা সাসুবমে বহৈত অছি। পবম্পবাক জঁ বাঁত কবী তঁ চাবি দিনক বাঁদ ওকবাসভক 'চতুর্থী' অর্থাত প্রথম মিনন হোগত ছৈক। এহি চাবি দিনধবি বব–কনিযাঁ দ্নূকেঁ নোন নহি খাএ দেল জাগত ছৈক। চাবিম দিন ভোজনমে মাছ–মাসুসন স্বকচিকব এবং তামসী খাদ্যবস্তু সমাবিষ্ঠ বহৈত ছৈক, জে কামোদ্দীপনক দৃষ্টিএঁ সেহো বিশেষ মহত্ত্ব বখৈত অছি। এহিঠাম সংস্কৃতিক অন্তর্বস্তুক ৰূপমে ন্বকাএল মনোবিজ্ঞান দহ বিচাব কএল জা সকৈত অছি। বস্তুতঃ ঞ চাবি দিন বব–কনিযাঁক ৰূপমে দূ অপবিচিত প্রাণীকেঁ ভাবনামেক ৰূপেঁ নগ অএবাঁক নেল দেল গেল বিশেষ অবসব ছিযৈক। কাবণ, যৌনশাস্ত্রীলোকনিক কহবঁ ছনি জে জাধবি স্ত্রী–পুরুষ দ্নূ ভাবনামেক ৰূপেঁ নিকষ্ট নহি হোএত, তাধবি সফন যৌন–সম্বন্ধক স্থাপনা নহি ভহ সকৈত ছৈক। সমাজমে জহিযা প্রেম–বিবাহক সম্ভাবনা নহিজকাঁ ছনৈক, তহিযা এহী ভাবনামেক নিকষ্টতাক নেল ঞ চাবি দিন দেল জাগত ছনৈক। জঁ এনা নহি বহিতৈক তঁ সামান্যতযা আন জাতিমে বিবাহক প্রাতেভনে মনাওল জাএবনা স্বহাগ–বাতিক নেল ব্রাহ্মণ–কাযস্থ–দেব আদি জাতি কিএক চাবি দিনধবি উঁপাস বখিতথি! শিক্ষা–দীক্ষাক মামনামে তকোলীন সমযক সর্বাধিক অগ্রণী মানল জাএবনা এহি জাতিসভমে কোনো ৰূঢ়ি ক কাবণে তঁ এহন বাঁত নহিএঁটা ভহ সকৈত ছনৈক! অস্তু।

বিবাহসঁ চতুর্থীধরি ভাবনামেক ৰূপেঁ নগ অএবাঁক লেল চারি দিনক সময় তঁ দেল জাগত ছৈক। ক্ষদা অরস্থাজন্য কারণকেঁ দেখৈত একটা খতরা বঁনলে বহৈত ছৈক। খতরা ই জে আগি আ খঢ়ক বীচ নিকটৈতা ভেলাপর ধধরা লে পজরি জাএ রা কহী হরা মোন বঁহকি লে জাএ! তকরে সারধানীস্বৰূপ ওকরাসভকেঁ লোন নহি খাএ দেল জাগত ছৈক। লোন নহি খাএল অরস্থামে ওহ্না লোক শারীবিক আ মানসিক ৰূপেঁ শিথিল ভ২ জাগত অছি। নিশ্চিত ৰূপেঁ অলোনাক অভীষ্ঠ গএহটা ভ২ সকৈত ছৈক জে নববিবাহিত বব–কনিযাঁমে আরশ্যক তৈযারীসঁ পূর্বহিঁ কাম–ভারনা নহি ভড়কি জাগক। চারিম দিনক মধ্ব–মিলনক লেল ফেব লোনক সঙ্গ–সঙ্গ ভোজনমে সেহো বিশেষ ৰূপসঁ নীক–নিক্ষতক ওবিআওন কএল জাগত ছৈক। ই ভোজন সামগ্রী শারীবিক ৰূপসঁ বব–কনিযাঁকেঁ তৈযাব কবৈত ছৈক। জখন কি মানসিক ৰূপেঁ উদ্বেলিত কববাঁক কাজ কবৈত বহৈত ছৈক— সাঁঝ–কোবর আদি গীতমে ব্যক্ত ভেলিহার প্রেম–প্রসঙ্গ। সমগ্র ৰূপমে বঁঢ়ৈত মানসিক–শারীবিক উদ্বেলনক ভারমে চ্হলরাজীক ছৌঁক নগএবাঁক কাজ কবৈত ছৈক— ডহকলক ঝাঁসগব পাঁতিসভ।

এহি তবহেঁ চতুর্থীমে ভারনামেক ৰূপেঁ শারীবিক সম্বন্ধকেঁ স্বদৃঢ বঁনএবাঁক প্রযলে কএল জাগত ছৈক। এহিঠাম ফেব জঁ পবম্পবাক গপ্প কবী তঁ ই দেখল জাগত অছি জে পহিলে এহি জাতিসভমে বিবাহক বাঁদ সাস্বরসঁ বিদাহ ভ২ক২ অএলাক বাঁদ বব এক্কহিবেঁব মধ্শ্রারণীএমে পুনঃ সাস্বর জাগত ছল। তেঁ বিশ্বাস কএল জা সকৈত অছি জে কনিযাঁ–ববক এহি দোসব মিলনকেঁ পুনঃ শারীবিক সম্বন্ধক প্রগাঢ়তাসঁ ভারনামেক সম্বন্ধ স্বদৃঢ

কবরাঁক সাংস্কাবিক সংযন্ত্রক রূপমে রিকসিত কএল গেল হো।
এহি পারলিমে লররিরাহিতা তেবহসঁ লঽ পন্দ্রহ দিলধবি রিষহবা আ গৌবীক পূজা কবৈত ছথি। এহি পূজাক লেল ফূল লোঢ়ঽ ও স্বয়ং গেল কবৈত ছথি আ সঙ্গমে বহৈত ছলি হুলক সখী–বঁহিলপাসভ। ফূল লোঢ়ব মূলতঃ বঁহালা হোগত অছি। অসলী কাজ বহৈত ছৈক ঘুমফিব আ গপ্পসপ্প। জখলে কোলো লররিরাহিতা অপল সখী–বঁহিলপাসভক সঙ্গ ঘুমফিব কবঽ কতহু জাএত তঁ ওকবাসভক বীচ গপ্পক রিষয কী ভঽ সকৈত অছি, সে সহজহিঁ অলুমাল লগাওল জা সকৈত অছি। নিশ্চিত রূপেঁ গপ্পক রিষয ওকব পতি, ওকবাসমভক অলুভর আদি–গহাদি বহৈত হোএতৈক। ও বাঁতচীত যৌল–ভারলাকেঁ তীব্র কবরাঁমে আ যৌলসম্বন্ধী রিরিধ জিজ্ঞাসাসভক সমাধালমে সেহো সহাযক হোগত ছৈক। বাঁদমে পূজা–কালমে রব–কলিযাঁ দুলূকেঁ সংগহি বাখিকঽ শির–পারতীক রিভিন্ন প্রসঙ্গক বঁখাল কবৈত যৌলসম্বন্ধী খিস্সাসভ প্রতীকামেক রূপেঁ স্বলাওল জাগত ছৈক। দুলূ হরা–মলকেঁ প্রেম আ কাম–ভারলা বঢ়এবাঁমে ও খিস্সাসভ উঁপযোগী ভেল কবৈত ছৈক। একবা বাঁদ ফেব রিরাহ–কালমে বঁলল কোহবঁব তঁ রব–কলিযাঁ লেল অজবাঁবলে বহৈত ছৈক। আ, ও এম লিবন্তব তেবহসঁ লঽ পন্দ্রহ দিলধবি চলৈত বহৈত ছৈক। নিশ্চিত ছৈক জে এতবাঁ অরধিমে রব–কলিযাঁ এক–দোসবাক সঙ্গ শাবীবিক আ মালসিক দুলূ দৃষ্টিএঁ রেঁস লগ আবি জাগত ছৈক, জে কি আজুক আধুলিক রৈজ্ঞালিক সমাজক হলিমূল আ তকোলীল পবম্পবাগত মৈথিল সমাজক মধ্যশ্রোরণীক অভীষ্ঠ সেহো ছিযৈক।

মিথিলাক সংস্কৃতিমে যৌনকেঁ বঁড় বেঁসী মহত্ত্ব দেল গেল ছৈক। মুদা কতেকো লোক একরা ধর্মক সমবন্ধানীমে তেনা নে গছাড় কহ রাখি দেনে ছথিন জে আমলোক আগাঁ-পাছাঁ কিছু সোচিএ নহি সকৈত অছি। তেঁ জখন ও কহল জাগত অছি জে মধ্শ্রাবণী যৌনবিজ্ঞানক অভিমঞ্চনসম্বন্ধী পাবনি অছি তঁ কতেকো মৈথিল মহামনাসভ বঁমকি উঠৈত ছথি। কিএক তঁ ও এহিমে মহাদের-পার্বতীসঁ বেঁসী কিছু দেখিএ নহি সকৈত ছথি। মধ্শ্রাবণীমে পূজিত বিষহবা (নাগ) দূ ৰূপেঁ মহত্ত্ব বখৈত ছথি। সাহিত্য বা ললিতকলামে জে প্রতীকসভ প্রযোগ কএল জাগত অছি, তাহিমে মাছকেঁ স্ত্রী জননেন্দ্রিয, সাঁপকেঁ পুরুষ জননেন্দ্রিয, কাছকেঁ সম্ভোগ, বাঁসকেঁ বংশ আদি মানল জাগত অছি। নববিবাহিতা প্রতীকাত্মক ৰূপেঁ বিষহবাক পূজা কবৈত পুরুষ জননেন্দ্রিযক মহত্ত্ব বুঝৈত ছথি। দোসবদিস প্রকৃতি সংবক্ষণক লেল সেহো সাঁপ মহত্ত্বপূর্ণ অছি। তেঁ ভলহি ও বিষধব অছি, মুদা ওকব সংবক্ষণ হোএবাঁক চাহী, সে সন্দেশ এহিসঁ জাগত অছি।

মধ্শ্রাবণীক খিস্সামে সেহো তেহনে বাঁতসভ বেঁসী অবৈত ছৈক। জেনা বিষহবাক জন্মক সম্বন্ধমে উল্লেখ অছি— 'একবেঁব মহাদের আ পার্বতী জলক্রিড়া কবৈত সম্ভোগ কহ বহল ছলাহ। তেহনেমে মহাদেরক বীর্য স্খলন ভহ গেললি। ওহিসঁ বিষহবাক জন্ম ভেল।' তহিনা গৌবীকেঁ ছিনাবি বঁনএবাঁক প্রসঙ্গ সেহো মধ্শ্রাবণীক খিস্সামে আএল অছি। কিছু ফকড় ামে সেহো এহি তবহক বাঁতসভ আএল অছি। জেনা বৈবসী আ ষরতীরীচক সংরাদমে কহল গেল অছি— 'উঁচে অাবি উঁচে ধূব উঁচে ত খবিহান বে, তাহুসঁ জে উঁচ দেখল গৌবীকে ভথিযান বে।' এহী

তবএঁ গৌবীক 'আঙ', গৌবীক স্তন আদিক বর্ণন সেহো বঁড় বসগব অন্দাজমে কএল গেল অছি। মৈথিল সংস্কৃতিমে যৌনকেঁ কতেক মহত্ত্ব দেল গেল ছৈক, তকব অনুমান অহিবঁক ফড় নামক পকরানক রূপ–বংগ আ নামসঁ সেহো স্পষ্ট ভ২ জাগত অছি। তেঁ নিঃশঙ্ক ভ২ক২ কহি সকৈত ছী জে মধুশ্রাবণী যৌনভারনা আ যৌনশিক্ষাক মহাপর্র ছিযৈক। সাওন মাসমে পড়নাসঁ ও অপন সার্থকতাকেঁ আওব বেঁসী পুষ্টি কবৈত অছি। কাবণ হম একটা এহন জোড় াকেঁ জনৈত ছী জে রিরাহক ডেঢ় দশক গুজবি গেনাক বাঁদো জখন বর্ষা হোবঁ২ নগৈত ছৈক তঁ কনেজমে পঢৌনাগ ছোড়ি ক২ দৌড়ন– দৌড়ন ডেবা পহুঁচি জাগত ছথি। এহিমে ওহি মিত্র দম্পতিসঁ বেঁসী কাবগব সাওনক মাদকতা কবৈত ছৈক। আখিব একবে নে মৈথিল সংস্কৃতি সহেজনে অছি।

আগকাল্হি মাত্র সতহী দৃষ্টিএঁ দেখনিহাব কিছু তথাকথিত মহিলা অধিকাবরাদীসভ মধুশ্রাবণীক ক্রমে কনিযাঁকেঁ 'টেমী' দেল জাএরনা বীতিকেঁ মহিলা–হিংসাক একটা রূপ মানৈত একব রিবোধো কবৈত দেখল জাগত ছথি। এহি রিবোধক পাছাঁ হমবা একহিটা কাবণ নজবি অবৈত অছি— হুনকাসভমে মৈথিল সংস্কৃতিক রিশিষ্টতাক সন্দর্ভমে বহল অজ্ঞানতা। টেমী দেবাঁক রিধিমে কনিযাঁক ঠেহুনমে পানক পাত বাখি উঁপবসঁ জবৈত টেমীসঁ ছআওল জাগত ছৈক। নিশ্চিত রূপেঁ ও সামান্য পীড়াদাযক সেহো হোগতে হোএতৈক। ক্দা কী স্ত্রী জাতিকেঁ প্রথম সংসর্গমে ও সামান্য পীড়া নহি হোগত ছৈক? রস্তুতঃ ও ওকবে একটা কড়ী ছৈক, জাহিমে ও সঙ্কেত দেল জাগত ছৈক জে যৌনসম্বন্ধ জঁ বঁড় আনন্দদাযক হোগত ছৈক তঁ ওহিমে স্ত্রীকেঁ পীড়াসঁ

সেহো সাক্ষাকোব কবঽ পড়ৈত ছৈক। একব পৃষ্ঠভূমিমে একটা এহ্ন পক্ষকেঁ নেন জা সকৈত ছৈক জে ভঽ সকৈছ, পহিনে–পহিনে মধুশ্রাবণীএক সময়মে বব–কনিযাঁবীচ প্রথম শাবীবিক মিনন হোগত বহন হোগক আ তকবে আভাস কবএবাঁক নেন ঞা প্রথা চনাওন গেন হো।

একটা দোসব কাবণ গহো মানন জাগত অছি জে মিথিনামে যরনসভক আক্রমণ ভেনাক বাঁদ ওকবাসভক কুদৃষ্টি নরকনিযাঁসভপব রৈসী পড়ৈত বহৈক। ওকবাসভসঁ বঁচএবাঁক নেন কনিযাঁকেঁ কনেক আগিসঁ জবা দেন জাগক, জাহিসঁ ওসভ ওকবাদিস ধ্যান নহি দিঅএ। কাবণ মুসনমানসভ জবনাগকেঁ বঁহ্ত খবাব মানৈত অছি। পং. সূর্যকান্ত ঝা ঞা তর্ক আগাঁ বঁঢ়বৈত কহৈত ছথি— 'এহী কাবণে মুগনাক বাঁদো ওকবাসভকেঁ জবাওন নহি জাগত ছৈক, গাড়ন জাগত ছৈক।' সংস্কৃতিবিদ স্ব. প্রা. নমোনাবাযণ ঝাক এহি বিষযমে তর্ক ছনি জে ঠেহ্নপব কোনো নস এহন বহৈত হোএতৈক, জকবা প্রভাবিত কএনাপব যৌনসম্বন্ধী গ্রন্থীসভমে সকাবামেক অসব পড়ৈত হোগক আ তাহীক অন্তস্মৃত ঞা প্রক্রিযা শুরু কএন গেন হো। স্বাস্থ্যাপচাবক চীনী পদ্ধতি অক্যুপঙ্চব, অক্যুপ্রেসব আদিপব ধ্যান দেনাপব এহ্ন বাঁতমে বিশ্বাস কববাঁক যথেষ্ঠ আধাবসভ বনৈত ছৈক।

ঢেমীক একটা বাঁতকেঁ নঽকঽ নেপানক মিডিযা আ মিথিনাক যথার্থসঁ দূব–দূবধবিক কোনো সম্বন্ধ নহি বখনিহাবি কিছ মহিনাবাদীসভ কিছ সানপূর্ব এক্ক টৌঙপব খূব নাচন বহথি। এহি নামপব ওসভ মধুশ্রাবণীকেঁ মাত্র নহি, সম্পূর্ণ মৈথিন বিবাহ পদ্ধতিকেঁ বঁদনাম কববাঁপব

নাগন ছথি। এনা দেখনাপব ও ব্যক্তিসভ হমবা ওহনে কোনো খক্তান নেনাজকাঁ নগৈত খছি, জে দূটৌ সাঁপকেঁ খাপসমে জোড় নগৈত দেখনাপব বাঁপ–বাঁপ চিচিযা উঠৈত খছি জে সাঁপক ঝগড় া ভ২ বহন ছৈক। পীড় া টৈমীএটৌমে নহি হোগত ছৈক। বোগ নিরাবণক নেন নগবাঁওন জাএবনা স্বগযামে সেহো পীড় া হোগত ছৈক। মূহ–কানক সিংগাব নেন নাক–কান ছেদএবাঁমে সেহো পীড় া হোগত ছৈক। স্বন্দব খা হাথ নাগন চূড় ী পহিববাঁমে পর্যন্ত পীড় া হোগত ছৈক। তখন বুঁঝবাঁক জৰুবতি ঙা বহৈত ছৈক জে পীডাক প্রযোজন কী ? নাক–কানমে ভূব ক২ক২ শবীবকেঁ খণ্ডিত কএনাগ খা কি নাক–কানমে নটৈক২ বনা গব–গহনাক সৌন্দর্যসঁ খানন্দিত ভেনাগ ? টৈমীক সন্দর্ভমে সেহো গএহ বাঁত নাগূ হোগত ছৈক।

ওহ্না টৈমী যৌনশিক্ষাক পারনি মধ্শ্রোবণীক একটৌ খঙ্গ ছিযৈক। যৌনক্রিযাক খাবম্ভ তঁ পীড় াসঁ হোগতহিঁ ছৈক, বাসোযনক কামসূত্রকেঁ জঁ খাধাব মানন জাএ তঁ নখক্ষত, দন্তক্ষত খাদি বিধিক চর্চা সেহো খবৈত ছৈকে জে নাবীক উদ্দীপনমে সহযোগী মানন জাগত খছি। এতবএ নহি, নাবীকেঁ জীবনক সর্বাধিক স্বখকাবী প্রক্রিযা সন্তানোপোদনমে সেহো খসহ্য পীড় াসঁ গ্বজব২ পড় ৈত ছৈক। যারত পক্ষসভপব বিচাব কবৈত গেনাপব মধ্শ্রোবণীমে দেন জাএবনা টৈমী পীড় া পহুঁচএবাঁক উদ্দেশ্যসঁ নহি, খপিত্ত স্বস্থকব যৌনজীবনক নেন খাবম্ভহিমে নগাওন গেন টৌকাকবণক একটৌ প্রক্রিযা ছিযৈক। একবা এদ্রু নেন হিঁসা বা প্রতাড় নাক ৰুপমে নহি দেখন জা সকৈত খছি, কিএক তঁ ঙা প্রক্রিযা প্রাযঃ নবকনিযাঁক নৈহবমে ভেন কবৈত ছৈক। নৈহবমে

কনিযাঁক কাকী, দিদী খাদিসঁ ওকবা পীড়া পহুঁচএরৱাক হিসাবেঁ কোনো কাজ নিশ্চিতে নহি ভ২ সকৈত ছৈক। হঁ, ঢৈমীক সঙ্গ জোড়ি ক২ কিছু খনস্থান রাঁতসভক প্রচাব খরশ্য ভ২ বহন ছৈক। জেনা ঢৈমী দেন জগহপব জঁ ফোকা ভেন তঁ পতি রেঁসী মানত। রা ও সতীত্বক খগ্নিপবীক্ষা ছিযৈক। জকবা ফোকা নহি ভেনৈক সে দ্শচবিত্র খছি, খাদি–খাদি। ফদা ওসভ সমযএমমে জ্টৈত গেন রকরাঁসসভ ছিযৈক। ভ২ সকৈছ জে কহিযো ককবো ঢৈমী দৈত কান রেঁসী পাকি গেন হেতৈক খা ফোঁকা ভ২ গেন হেতৈক তঁ ঢৈমী দেরৱ২ রানী ওকবা ভবোস দেরৱ২ দ্খাবে কহি দেনে হেতৈক জে জকবা জতেক পৈঘ ফোকা হোগত ছৈক, তকবা ঘবরনা ততেক রেঁসী মানৈত ছৈক।

ঢৈমী তহিযাক প্রচনন ছৈক, জহিযা মিথিনামে খাধ্নিক শিক্ষাক প্রসাব নহি ভেন ছনৈক। ওহি সমযমে রব–রধ্কেঁ যৌনশিক্ষা দেরৱাক কোনো ভবোসগব মাধ্যম সেহো উঁপনব্ধ নহি ছনৈক। ফদা খাগ ঘরাঘরতীসভ খপন পাঠ্যপ্স্তকসঁ ন২ক২ খন্য খনেকো মাধ্যমসঁ সেহো ও শিক্ষা খাসানীসঁ প্রাপ্ত ক২ সকৈত ছথি। তেঁ উঁপযোগিতাক দৃষ্টিএঁ মধ্শ্রারণী খা মধ্শ্রারণীক ঢৈমী কিছু খারশ্যক নহি বহি গেনৈক খছি। ফদা হমবাসভক সংস্কৃতি নোককন্যাণক পক্ষকেঁ এতেক গহিযাক২ ধএনে খছি, সে রাঁত রিশ্বি সম্প্রদাযকেঁ কহরৱাক নেন মাত্র সেহো এহি তবহক সংস্কৃতিক সংবক্ষণ খারশ্যক ছৈক। হঁ, এহিমে জত২ কতহ্ রিকৃতি নজবি খারৱএ, ওহিমে স্বধাব রা পবিমার্জন খারশ্যক ভ২ জাগত ছৈক। জেনা কি বাজরিবাজমে মৈথিন মহিনা পবিষদক খগ্রখাগমে ঢৈমী রন্দ কবএরৱাক খভিযান চনাওন গেন খছি। ও সর্রথা

উঁচিত ৰাঁত অছি। কিএক তঁ মিথিলামে কোন চীজ কতৰাঁধবি পাচ্য অছি আ কতৰাঁ অপাচ্য অছি, তকৰ নির্ণয কৰৰাঁক অধিকাৰী মিথিলেৰাসীসভ ভঽ সকৈত ছথি। মৈথিল নাৰীকেঁ জঁ কতহ্ প্ৰতাড়িত ভেলসন ৰ্‌ন্নাগত ছলি তঁ একৰো আৰাজ মৈথিলে নাৰীকেঁ উঠএৰাঁক চাহিযনি। আলকেঁ তঁ কী ছৈক, কোনো মৈথিল মহিলাক সীঁথমে লাগল সিন্দ্ৰ দেখিকঽ কহি সকৈত অছি, 'ৰাঁহ ৰে ৰাঁহ, মিথিলাক নাৰীপৰ ৰঁড় অত্যাচাৰ হোগত ছৈক। ওকৰা প্ৰুৰুষসভ এতেক প্ৰতাড়ি ত কৰৈত ছৈক জে সভ দিন ওকৰ মাথ ফুটৈলে ৰহৈত ছৈক।'
আগকাল্হি আধুনিক ৰিচাৰধাৰাক লোকসভ পৰম্পৰাগত অধিকাঁশি পক্ষকেঁ অন্ধৰিশ্বাস ৰা কুৰীতিক ৰুপমে ৰ্যাখ্যা কৰৈত ছথি। ষদা মৈথিল সংস্কৃতিমে ৰেঁসী এহনে পক্ষসভ অছি, জে নিৰৰ্থক নহি অছি, পূৰ্ণতঃ সাৰ্থক অছি। আজুক আধুনিক সমাজপৰ্যন্ত এহি সংস্কৃতিসঁ ৰঁহুতো কল্যাণকাৰী তত্ত্বসভ গ্ৰহণ কঽ সকৈত অছি। এহন স্থিতিমে সংস্কৃতিকেঁ এক্কহি ঝটকামে তোড়ি ফেকৰাঁক ধাৰণা ৰখনিহাৰ লোকসভকেঁ চাহিযনি জে ও একৰেঁৰ অপন জ্ঞানচক্ষু উঁঘাৰিকঽ অপন সংস্কৃতিক সিংহাৰলোকন কৰথি, তকৰা ৰাঁদহি একৰা ৰিষযমে কোনো মত ৰঁনাৰঁথি। আ, হম তঁ ই কহঽ চাহৰঁ জে ৰৰ্তমান সমযমে ভযানক আৰ্থিক তঙ্গীসঁ গুজবি ৰহল সম্পূৰ্ণ মিথিলাৰাসীকেঁ চাহী জে ও মধ্যশ্ৰেণীসন জীৰন্ত পাৰলিকেঁ অঙ্গীকাৰ কঽ ঘৰহি ৰৈসল অপন ৰেঁটা-প্ৰতহ্কেঁ, ৰেঁটী-জমাএকেঁ হলিমূলক মৌকা উঁপলৰ্ধ কৰাৰঁথি, মিথিলাক সাংস্কৃতিক ৰিশিষ্ঠতাক সংৰক্ষণ-সম্বৰ্দ্ধন কৰথি।



अमरनाथ झा,दिल्ली दि.दि.

हाँ ओ तँ कहियो नहि देखने रही

हाँ ओ तँ कहियो नहि देखने रही ....
" हमरा मोन नहि पड़ि रहल अछि जे एतेक रुचि कोनो पढ़नका समाचारमे लोकक रहल अछि"। ओ शीर्षक अछि हिन्दुस्तान समाचार पत्रमे श्रीकान्त सिंह जीक आग कालिक समाचारपर।
अनायास एहन लागल जेना क्यो एहि परिस्थितिकेँ बुझबाक लेल एकटा प्रवाल चित्र राखि देने होअए।
आज.टी.एन ७ केर प्रबंध सम्पादक आशुतोषक निबंधक पंक्तिकेँ एहि सन्दर्भमे एतए राखि रहल छी:
"ओ कहल जा सकैत अछि जे जखन देशक राजनीतिक दिशा बदलि रहल अछि आ लोकेर बुधियार भऽ रहल छथि, एकटा नव सिविल सोसाइटी ठाढ़ भऽ रहल अछि जे नेता लोकनिक लेल एकटा जिम्मेदारी तैयार कए रहल अछि। ..." ।
माने आर समाचारक परिदृश्य बदलि रहल अछि, एहि गपमे किछु सत्यता अछि। हमरा १९७४ केर पढ़नका दौरक स्मृति नहि अछि। १९७१ क भारत-पाक युद्धक कालमे गामक चौबटिया पर ठहल साँझमे खूब तापैत किछु बूढ़-प्रवाल लोकनिक गर्वित ललाटक छाहक स्मृति अछि जे भारतीय सैनिकपर गर्व कए रहल रहथि।
फेर १९७४ क आसपासक जे.पी.आन्दोलनक मोन पड़ैत अछि जे कोना सभ युवा न्यायवादी-

আন্দাননকাবী ভএ গেন বহথি। হমব পৈঘ ভাএ আ ছোট রহনোগ দ্মকামে প্রদর্শনমে ভাগ নেনে বহথি আ প্বনিস দ্বাবা পকড়ন জএরাঁপব রাঁবূজীক নাম নএ কহ অপন জান রচেনে বহথি।
হমব পিতিযৌত ভাএ আ হ্নকব তীন টা সংগীক মৈট্রিকক পবীক্ষা রড়ু খবাপ গেন ছনন্হি সে ও আন্দাননকাবী রনি গেন বহথি আ জেন গেন বহথি। এহিমেসঁ এক গোটে কহিযো কাংগ্রেস তঁ কহিযো রী.জে.পী.ক শিবণমে জাগত ছথি ম্দা হাথ কতহু নহি মাবি পরৈত ছথি, দোসব শ্বব্দসঁ কাংগ্রেসী বহনথি আ চৌঅনিযা নেতা রনি জিনগী গুজাবি দেনন্হি তঁ তেসব বাজনীতিসঁ হাথ জোড়ি অনগ ভএ গেন ছথি।
ম্দা কহিযো হিনকো চনতী বহন্হি। হমবা সন ছঠম-সাতম কক্ষাক নোক সেহো আন্দানিত হোগত বহথি আ গল্কনার-জিন্দারাঁদক নাবা নগরৈত বহথি। ১৯৭৩-৭৬ মে তঁ হমহুঁ অপনাকেঁ পৈঘ ক্রান্তিকাবী রুঝএ নাগন ছনহু ওনা তহিযা হম কক্ষা ৭-৮ মে পঢ়িত বহী। আপাত কানক রিবোধমে হম অপন পহিন করিতা সেহো নিখনে বহী। জকবা হমব মাম্মিন ভাএ হঁসীমে ফাড়ি কএ উড়া দেনন্হি।
ফেব ১৯৭৭ ক চুনারমে কিছুকেঁ ছোড়ি সভ গোটে জনতা পার্টীক সংগ দেনন্হি। এতএ ধবি জে হমব পবিরাবক স্বনগ্বক সেহো আএন বহথি আ কহএ নগনাহ জে এহি রেব জনতে পার্টীকেঁ ভোট দেন জাএ।
নাবা নাগএ নাগন অন্ন খাডঁ কৌববক ,গ্বণ গাডঁ পাঁডরক। হমব ১৪ রর্ষীয কিশোব মন তঁ পূর্ণ ক্রাঁতিকাবী ভঽ গেন বহএ। হঁ ঞ নহি রিসবর জে হম আগক ঝাবখন্ডক সংতান পবগনাক এক গামক খিস্সা কহি বহন

छी। हम ओहि माओ स्कूलक गप कहि रहल छी जकर माष्टिक धरतीकेँ गोरॅवसँ निपरॅाक हेतु हमरा सभकेँ १ किलोमीटॅर सँ पानि आनए पड़ ैत छल आ नग-पासक जंगलसँ २-३ किलोमीटॅरसँ गोरॅर आनए पड़ ैत छल। तँ अहाँ आबॅ बुॅझि गेल होएतॅ जे हम ओहि ठामक आ ओहि समयक गप कहि रहल छी जतुक्का रिषयमे अहाँ आगयो कहतॅ जे ओहि ठाम तँ भूखाएल- आ नंगटे रहनिहार निरास करैत छथि। पहिने ओतए रोटी दियौक आ तखन फेर राजनीतिक गप करबॅ।

तखन ओह्ए समयमे जनसाधारण मात्र नहि ररन् धर्मगुरु धरि हस्तक्षेप कएने रहथि(आग-काल्हि रॅना धर्मगुरु नहि रॅुझि नेरॅ)। आ ओहि समएक राजनीतिक अर्थ ओ नहि छल जे आग भए गेल अछि। आशुतोषक प्रारम्भिक पंक्ति शागत परिस्थितिक स्वाभारिक अभिव्यक्ति अछि जखन ओ कहैत छथि जे गरि-गुरिक रीच ओ धारणा रॅनैत अछि जे राजनीति अपन योग्य नहि अछि... आ जनधारणा सएह तँ सामाजिक सत्य अछि। तखन हम की करी ? हम तँ रिशिष्ट लोक छी ने। ओ कोन गप भेल जे हम करोड़ ा खरचि कए टिकट नहि कीनि सकैत छी आ पठ़ ाओमे भुसकौल भए नेता नहि रॅनि सकैत छी ? तेँ की ? छी तँ हम कलमक जादूगर। हमर कलमसँ जादू चलि रहल अछि आ दुनियाँ रॅदलि रहल अछि।

पटना, भोपाल आ रायपुर सभ रॅदलि रहल अछि। हिन्दुस्तान पत्रक संपादिकाक भारुकता पूर्ण ललित निरॅध

হোথএ রা থহাঁক-হমব এহন স্বযম্ভূ চিংতকক নেখ ,হম সভ রঁদনি বহন ছী। থবে ভাগ ককবা র্ঁবরঁক রঁনা বহন ছী। টী.রী.মে থারি গেন ছী থা জে মোন সে কবরাঁক থন্বমতি ভেটি গেন থছি।
থখরাঁব হাথমে থারি গেন থছি ,নিখরাঁক-ছাপরাঁক ছূটি ভেটি গেন থছি তখন রিচাবক রঁনরাঁমে কী হবজ ? কহিযো নিখরঁ তখন থপন মানিকক রিকহ্ন.....

<u>রিঞ্চু প্রভাকব জী সাদগীক প্রতিমূর্তি ছনাহ।</u> .

১৯৯০ ক রর্ষ হমবা নেন থারঁ এহন নগৈত থছি কাফী মহত্ত্বর্ণ ছন। ওহি সময হমবামে সকাবাতমক উঁজকি প্রবঁন থারেগ হিনোব ন' বহন ছন. হম জে কিছু সমাজকেঁ দেনহুঁ যা সামজিক ঋণ সঁ উঁবিণ হোএরাঁক নেন জাহি কার্যকেঁ সম্পন্ন কএন ওহিমে রঁহ্তোক শ্বকথাত ৯০ সঁ ভেন। ঠীকসঁ মোন নহি থারি বহন থছি জে কী হম কোনা থা ককবা সংগ সরঁসঁ পহিনে মোহন পৈনেসক ছত পব চনএ রানা কাফী হাউস মে পহুঁচনহুঁ .শাগত প্রা. বাজক্ষমাব জৈন জীক সংগ গেন বহী। ও শনিক দিন বহএ. ওতহি দিল্লীক চর্চিত নেখক থা কনাকাব-মংডনী নাগন ছন. ওহি উঁস মংডনীক মধ্য রযোরূহ্ন খাদী ধবী,গাঁধী টৈপী পহিবনে রিঞ্চু প্রভাকব জী স্বশোভিত ভ' বহন ছনাহ। ওহি রাতারবণমে হমবাপব গজরঁক থসব ভেন.ফেব হম সভ সাঁঝ শনিকেঁ ওহি শনিরাবী গোঠ্ঠীমে রৈস'নগনহুঁ। ওা সিনসিনা ১৯৯৩ তক চনন,জখন রিশ্বরিদ্যানয পবিসবকা বীড্স নাগন হমব নিরাস বহন. এহি রর্ষো মে নহি জানি কতেক নামী -গিবামী নেখক,করি,কনাকাব থা পত্রকাবক সাহচর্য বহন.পতা নহি কতেক সাহিত্যিক গোঠ্ঠিমে সমীক্ষক যা রক্তাক হৈসিযতসঁ শামিন ভেনহুঁ.ওহি সমযমে হম দাঠী

बखैत छलहुँ आ पाउप पीबैत छलहुँ। ओहि समयमे उप-कुलपति प्रा.उपेन्द्र रैक्षी साहबे सेहो पाउप पीबैत बहथि। अतः लोक हमबापव कखनो-कखनो व्यंग्य सेहो कबैत बहथि। “एक रैक्षी साहबे है की एक झा साहबे है-दूब से पहचाने जाते है”. हमहुँ खादीक कुर्ता पायजामा पहिबैत छलहुँ। से हमब कोनो बैठकमे उपस्थिति अलग अंदाजमे होगत बहए। पठबैत गतिहास छी ,पबन्तु ओहि दिनमे सेहो लोक हमबा हिन्दीक शिक्षक बुझैत बहथि। काफी हाउस सेहो एकब अपराद नहि छल। हमब कॉलेजक डॉक्टब हेमचंद जैन अक्सब हमबा कहैत बहथि –अहाँ अपन बौद्धिक लुकसँ आतंकित कबैत छी .देव बाज शर्मा पथिक सेहो कहैत बहथि- “झा साहबे आपमे स्पार्क है” .खैब हम एहि सभ गपक आदी भेल जा बहल छलहुँ.लेकिन काफी हाउस हम बैस साहित्यिक मंडलीक साहचर्य सुख लेबा लेल जाइत बही। ओतए हमब एहन अदना सन व्यक्ति बैठ्ठ बजैत बहए पबन्तु बाह बे विष्णुजीक महानता , हमबा हमब छोटेपनक कखनो अहसास तक नहि होमए देलन्हि । बल्कि हमबा लगैत बहए जे हमबा काफ़ ी गंभीबतासँ ओ सुनैत बहथि.बहुत गर्वोन्नित महसूस कबैत छलहुँ हम। हम एक-दू बेब हाथ पकड़ि कए भीड़ भवन सड़क पाब कबेबाक बहाने हुनकब स्नेहिल स्पर्श आ सान्निध्य प्राप्त कबबाक अवसब प्राप्त केलहुँ। एकब संतोष अछि .१९९४ मे भाबतीय भाषा लेल संघर्ष कबबाक क्रम मे संघ लोक सेवा क बाहब धबना-स्थल सँ पुष्पेन्द्र चौहान समेत कतेको साथीक संग हमबो पुलिस गिबफ्ताब कए तिहाड़ जेल भेज देलक .ज्ञानी जेल सिंह,अटैल

बिहारी राजपेयी बिशानाथ प्रताप सिंह,ऋनाथम सिंह यादव आब अन्य कतेक पैघ नेता आ साहित्कार-पत्रकार,समाज सेवि एवं आन्दाननकारिक दबाबे मे एक सप्ताहक बाद हमाबासभ उंपर लादल सभ केस हटा हमबासभकेँ बिना शर्त विहा कएल गेल। एकर बाद तँ काफी हाउसमे सेहो हमबासभ प्रति साथिसभक आदर भाव बढ़ि गेलन्हि। ऋदा अपन आबाबा स्वाभारक काबण हम १९९३ क बाद काफी हाउस जएबाक सिलसिला चालू नहि बाखि सकलहुँ. एकर हमबा आगयो अफ़सोस अछि .आबाबा मसीहाक लेखक कँ एकर भान धबि नहि भेल होएतन्हि जे एक याथारवी आबाबा कोनो दोसब धुन मे उलझि बहल हएत। आग हमब बीच नहि बहबाक बादो हुनकब स्मृति एतेक मृदुल अछि जे लगैत अछि कि बिष्णु जी अखनो काफी हाउसक मंडलीक बनेने छथि .हुनकब स्मृतिकँ कोटि-कोटि प्रणाम।

<u>पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम</u>

२३० बबस पहिल हमब पूर्वज मिथिला जरूब छोड़ने छला किंतु मैथिल होबाक गर्व हम सब सब दिन महसूस केने छि.हम सब ओतने गर्वोन्नित मैथिल छि जेतना कौनो दोसब मैथिल होता।लगभग २३० बबस स हमब परिवाब आधुनिक ऋाबखण्ड क देवघव जिला अंतर्गत साबथ थाना के खैबबनी ग्राम मे बसी बहल छे

३०० साल पहिले एक सिद्ध ज्यातिषी मिथिला सँ चलि आज के देवघवजिलाक साबथ,जकबा पहिले सबहद कहल जाएत छल ,क बाजदबबाबमे बाज ज्यातिषीक स्थान ग्रहण केलन्हि .ध्यान देबा योग्य बात ई अछि जे

বাজ দবৱাঁব ঋস্লিম নৱাঁৱক বহএ খা বাজ জ্যাতিষী মৈথিনব্ৰাম্নণ ৱঁননাহ.তখনসঁ খাগ ধবি ও পবিৱাব ওতহি বহি গেন জেনা খাগ হম দিন্নীক ভেন জা বহন ছী। ঋদা ওা তঁ এক সামজিক খাবঐতিহাসিক প্রক্রিয়া খছি .রিস্থাপন তথা পবিভ্রমণ গতিহাসকখতি মহত্বপূর্ণ ঘটনা বহন খছি .নেকিন খপন ধবতী খপন দেশ-- দেসিন ৱঁযনা ,সৱঁ জন মিষ্ঠা--ক স্মৃতি হমবা খাগযো মৈথিনৱঁনেনে খছি .হমসভ খপন গনাকামে খপনাকেঁ মৈথিন ব্ৰাম্নণ কহৈত ছী ঋদা এহিমে ব্ৰাম্নণ গৌণ বহৈত খছি মৈথিন প্রঋখ ভ' জাগত খছি। দোসব নোক হমবা সভক নেন মৈথিন শৰ্দ্দক প্রযোগ কৱৈত ছথি। মানে মৈথিন শৰ্দ্দ হমব খস্মিতা হমব খস্তিত্বক দ্যাতকখছি .

খাচার্য পংকজ

পংকজ জী

হম খমবনাথ ঝা,দিন্নী রিশ্বরিদ্যানযক স্বামী শ্রদ্ধানংদ কॉনেজ মে গতিহাস রিভাগ মে খসসোসিএত প্রাফ়েসব ছী । হম খহাঁকেঁ সংতান পবগনা (ঝাবখন্ড) মে হিংদী সাহিত্য খা হিংদী করিতাক খনখ জগেনিহাব সৈকড় ামে সাহিত্যকাব পৈদা কবএরনা ওহি মহান সাহিত্যকাব এৱং হুনকব বচনাসঁ খরগত কবাৱঁএ চাহৈত ছী জে খপন ৱঁহুঋখী প্রতিভাক ৱঁনপব সমস্ত সংতান

পবগনাকেঁ শিক্ষাক নৌ সঁ বৌশন কেনন্হি। ১৯১৯ মে জন্ম নেন শ্রী জ্যাতীদ্র প্রসাদ ঝা "পংকজ" নামক এহি মহামনা দ্বাবা ১৯৩৪ মে দেরঘবক হিংদী রিদ্যাপীঠমে শ্বধ্যাপনক কার্য শ্বরু কএন গেন শ্বা শ্বপন প্রকাংড রিদ্বতাক রঁনপব তকোনীন হিংদী জগতক ধ্বংধবক ধ্যান শ্বপন দিস খিচনন্হি। ১৯৪২ ক ভাবত ছোড়ো । শ্বান্দাননক কমান এক শিক্ষকক হৈসিযতসঁ সম্হাবনন্হি ১৯ঌ৪ মে ও সংতান পবগনা মহারিদ্যানয দ্‌মকা (ওহি সময ভাগনপ্পুব রিশ্বরিদ্যানযক শ্বংতস্মাত)ক সংস্থাপক শিক্ষক এরং হিংদী রিভাগক শ্বধ্যক্ষ রঁনি গেনাহ। এহি রীচ তকোনীন পত্র-পত্রিকামে ও "পংকজ" ক উঁপনামসঁ করিতা ,সমীক্ষা শ্বা একাংকী নিখৈত বহনাহ ,জকব চর্চা হোগত বহন। ১৯ঌ+ মে হ্নকব করিতা সংগ্রহ "স্নেহদীপ" ক নাম সঁ ছপন। ১৯৬৪ মে হ্নকব দোসব করিতা সংগ্রহ"উঁদগাব" ক নামসঁ ছপন। ১৯৬ঌ মে সংতান পবগনাক সাহিত্কাব সভ মিনি ক' এক রঁহ্ত পৈঘ সাহিত্কি সংগঠনক নির্মাণ কএনন্হি জকব শ্বধ্যক্ষ "পংকজ"জী কেঁ রঁনাওন গেন শ্বা এহি সংগঠনক নাম সেহো হ্নকে নাম পব "পংকজ-গোষ্ঠী" বাখন গেন। ১৯৬ঌ সঁ ১৯৭ঌ ধবি পংকজ গোষ্ঠী সংপূর্ণ সংতান পবগনাক শ্বসগব শ্বা সবঁসঁ পৈঘ সাহিত্কি শ্বান্দানন ছন। সহ তঁ ঙা শ্বছি জে ওহি দৌব মে ওতএ পংকজ গোষ্ঠীক মান্যতাক রিনা কোনো সাহিত্কাবহি নহি কহাগত বহথি। পংকজ গোষ্ঠী দ্বাবা প্রকাশিত করিতা সংকননক নাম ছন "শ্বর্পণ" তথা একাংকী সংকননক নাম ছন "সাহিত্কাব" । নক্ষ্মী নাবণ "স্বধাংশ্ব ",জনার্ধন প্রসাদ মিশ্র "পবমেশ",রঁ্হ্মিনাথ ঝা"কৈবর" ক সমকানীন এহি মহান রিভূতি--প্রাহফ সেব জ্যাতীদ্র প্রসাদ ঝা "পংকজ' ক

রিদ্বতা,বচনাধর্মিতা এরং ঞাঁতিকাবিতা সঁ তকোনীন মহত্ত্বপূর্ণ হিঁদী বচনাকাব জেনা--বামধাবী সিঁহ"দিনকব",দ্বিজেন্দ্র নাথ ঝা "দ্বিজ",হঁস কুমাব তিরাবী,স্বমিত্রানংদন"পন্ত',জানকী রল্লভ শাস্ত্রী ননিন রিনোচন শর্মা খাদি ভনী ভাঁতি পবিচিত ছনাহ । খামেপ্রচাবসঁ কোসো দূব বহএ রানা "পংকজ"জী কেঁ ভনে খাগ হিঁদী জগত রিসাবি দেনক খছি পবন্তু ৩+ সান কি খল্পাঘ মে ১৯৭৭ মে দিরংগত এহি খাচার্য করিকেঁ মৃত্বক ৩২ রর্ষো রাঁদো সংতান পবগনাক সাহিত্বকাবে টৌ নহি রবন নাখো নোক খপন স্মৃতিমে খাগযো মহান রিভূতিক ৰূপমে জিন্দা বখনে ছথি। সংতান পবগনাক এহন কোনো গাম যা শহব নহি খছি জতএ "পংকজ"জী সঁ সম্বঁধিত কিম্বদংতি নহি প্রচনিত হোখএ। কী খহাঁ হ্নখকা খা হ্নকব গ্বতিক ব্রিহদ্তব হিন্দী জগতক সমক্ষ প্রস্তুত কবরাঁমে হমব সহাযতা কবরঁ ?

নগভগ ৩৬০ রঁবস স হমব পবিরাব খাধুনিক ঝাবখল্ড ক দেরঘব জিনা খংতস্মাত সাবথ থানা কে খৈবরঁনী গ্রাম মে বহী বহন ছী.পবিণাম স্বৰুপ হম সরঁ ঘব ম মৈথিনি নৈ রঁজে ছী.হম সরঁ রিশুদ্ধ খংগিকা সেহো নে রঁজে ছী.হমব রোঁনী মে কিছু মৈথিনী খাব কিছু খংগিকা কে সম্মিশ্রণ ছে.তে দ্খাবে মৈথিনি নিখে মে জে কিছু ত্র্টী হোএ ওকবা ক্ষমা কৰু। খাশা ছে ঞ্জ সম্বন্ধ সময ক সংগ খাব প্রগাঢ় হোযত।

**उदय नारायण सिंह "नचिकेता"**

गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डमे विभाजित कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक मे एकहि संग कठिनसँ कठिन विषयपर स्वचिन्तित विश्लेषण भेटैत अछि उपन्यासक जटिल कथा केर ग्रंथो सेहो भेटैत स्वरचनाएल अछि संगहि प्रेमक कविता अछि प्रकृतिक गीत सेहो । सात खण्ड एहि प्रकार छन्हि-

खण्ड-१ प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना

खण्ड-२ उपन्यास-सहस्रबाढ़नि

खण्ड-३ पद्य-संग्रह-सहस्त्राब्दीक चौपड़पर

खण्ड-४ कथा-गल्प सग्रह-गल्प गुच्छ

खण्ड-५ नाटक-संकर्षण

खण्ड-६ महाकाव्य- १.त्वञ्चाहञ्च अछि २.असञ्जाति मन

खण्ड-७ बालमंडली /किशोर जगत

সভসঁ মহত্ত্বপূর্ণ বাঁত ই জে সভ বিষযক পাঠকক আ পাঠিকাক লেল এতএ কিছু নে কিছু ভেটবেঁ কবত । প্রছনিযল্হি জে এহন সংবচনা কিএক তঁ জে কিছু কহনল্হি তাহিসঁ লাগল জে ই হিন্দী কেব তাব-সপ্তক আ তমিলক ক্রুক্ষেত্রম্ কেব বীচ মে কতহু অপন জগহ বনেবাঁক প্রযাস কহ বহল ছথি । হবাক এতবেঁ জে হিন্দী আ তমিল মে কএক গোটে মিলি কএ সন্কলিত ভেল ছথি একটা জিল্দমে, আ এতএ কএক লেখকক দ্বাবা বিভিন্ন বিধা কেব বচনা নহি বহি হিনকে অপন বচনা পোথীমে উঁপলব্ধ কবাওল গেল অছি ।

কতেকো পংক্তি ভবিসক পাঠকক মোনমে গ্রথিত-মুদ্রিত ভহ জএতল্হি , জেনা কি –

"ঠহৈত ভাবনাক দেবাঁল

খাম্হ অদৃঠ়তাক ঠাঠ়

আকাংক্ষাক বঁখাবী অছি ভবন

প্রতীক বঁনি ঠাঠ়" ।

অথবা , নিম্নাক্ত পংক্তি-যেকেঁ লহ লিখ :

"স্বনৈত শূন্যক দৃশ্য

প্রগ্রতিক কৈনবাসক

हमागत सम्भ्रद्रक चित्र

ऋन्हाव खोहक चित्रकनाक पात्रक शीर्ष

क्या नहि देखत हमब ओ चित्र ऋन्हाव मे..."

मिथिनेक नहि ऋपित्त भावतक कतेको संस्कृतिक प्रभाव देखन जा सकैछ हिनक कथा करितामे । एहिसँ मैथिनी क्रियाशीन बचनाक परिदृश्य ऋाव रँठ़ा जागछ , ऋा नर-नर चित्र , ध्वनि ऋा कथानक सामने ऋारि जागत ऋछि ।

करि कोन मन्दाकिनी केव खोजमे छथि जे कहैत छथि-

"मन्दाकिनी जे ऋाकाश मध्य

देखन ऋाग पृथ्वीक ऊपव..."

ऋपन रिशान भ्रमणक छाप नगैछ बचनामे नीक जकाँ प्रतीत होगत ऋछि । ऋा ऋाव एकटा बात स्पष्ट ऋछि – कोषकाव गजेन्द्र ठाकुव ऋा बचनाकाव गजेन्द्र ठाकुव भिन्न व्यक्ति छथि , व्यक्तित्वमे सेहो फवाक... ऋतएव कोशकाबितामे सम्पादकत्व तथा टेक्नोलोजी –सँ सम्बन्धित व्यक्तिक छाया भेटैते ऋछि , मुदा सृजनक मूहूर्तमे से सभटा हेबा जागत छथि ।

এহিমে সঁ কতেকো প্রৈকস্ট ও বখনে ছথি অন্টবনেটমে মৈথিনীক রঁচ়ৈত পাঠককেঁ ধ্যানমে বাখএ , জেনা কি রিদেহ–সদেহ খছি

ht t p://vi deha123.wor dpr ess.com/– মে , খা দেরনাগবী খা তিবহ্তা – দুন্নু নিপিমে । জে ক্যা মিথিনাক্ষবক প্রেমী ছথি তনিকা সরঁ নেখেঁ তঁ ঙা রিবন উঁপহারে বহত ।

খনেকো বচনামে মাত্র গোন–মটৈন কথে নহি , বাজনীতিক ভাষ্য সেহো নখা দৈত খছি । তাহিমে হিনকা কোনো হিচকিচাহটি নহি ছন্হি । ওনা দেখন জাএ তঁ কুরুক্ষেত্র ক কতেকো মহাবথী ছনাহ = প্রত্যেক রীব–যোদ্ধা খপন–খপন ক্ষেত্র খা রিধাক প্রসিদ্ধ পাবংগদ ব্যক্তি ছনাহ – ক্যা কতেকো খক্ষৌহিণী সেনাক সংচাননমে , তঁ ক্যা তীবন্দাজীমে , খাদি খাদি । সভ জনৈত ছনাহ জে ধর্ম খা খধর্মক ভেদ কী হোএছ ক্দা তৈযো সভ ক্যা জেনা খাসন্ন রিপযযিক সামনে নিকপায ভহ গেন ছনাহ । খাজুক সন্দর্ভমে সেহো কথা মে তথা ব্যাখ্যামে এহন পবিস্থিতিক ঝনক দেখন জাএত খছি । সৈহ এহি মহা–পাঠ– ক (মেটাটেক্সট) খূবী কহরঁ । নহি তঁ ও কিযেক নিখতাহ –

“দেখৈত দেশরাসীকেঁ পছাড়ৈত

মন্ত্রতংত্রযঞ্জ দুপহবিযামে জাগন, গ্বনধ্নী রঁনা স্বপ্ন

রঁনৈত খছি সভসঁ তীব্র ধারক, খখবহাক সভসঁ ফুর্তিগব

পঢ়নমান

দমসৈত মানিকক স্বৱ তোড়ৈত ছৈক ওকৱ একান্ত

কাবিখ-চিত্রিত ৱাতিক নিন্ন,

ঢ়ৈত-খরৈত-ঢ়ূৈত নিন্ন আ স্বপ্নক তাৱতম্য..."

এহি মহাপাঠকেঁ একটা এক্সপেৰীমেন্ট কেৱ ৰূপমে দেখী তঁ সেহো ঠীক , আ সপ্তর্ষি-মংডনক নিচোড় অথৱা সপ্ত-কাল্ডমে ৱিভাজিত আধুনিক মহা কাৱ্য ৰূপমে দেখী তঁ সেহো ঠীক হএত। জেনা পঢ়ী , সামগ্রী এহিমে ভৱপূৱ অছি, ভৱিসক কিছু অতিউঁচ মানক নাগত, আ কিছু কিনকো তত্তুক নহি পসিন্ন পৱতন্হি । হ্মদা এহি গ্রন্থ নিচযকেঁ পাঠক অৱশ্য স্বাগত কৱতাহ , আ নৱীন নেখক ৱস্মকেঁ একটা নৱ দিশা সেহো ভেটৈতন্হি ।

गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर

जखन सैम्युअल जॉनसनक अ डिक्शनरी ऑफ द इंग्लिश लैंग्वेज (१७५५) प्रकाशित भेल तखन जाऽ कऽ अंग्रेजी विद्वान आ विद्यार्थीकेँ यथार्थमे अपन भाषामे एकटा विश्वसनीय आ परिष्कृत कोश भेटलन्हि। अंग्रेजीक अधिकांश परिनिष्ठा प्रयास गंभीरतासँ रहित छल। १६०४ ई.क रॉबर्ट काउड्रेक कोश जकर नाम अ टेबुल अल्फाबेटिकल आ कतेक आन कृति आ तकर अनुकरण केनिहार आन कृति सभ ओहि मानदण्डक अनुरूप नहि छल जे शेष यूरोपमे कोश निर्माणक परम्पराक अनुरूप होअए। ई दा परिनिष्ठा द्विभाषी कोश सभ जाहिमे विदेशज फ्रेंच, इटालियन वा लैटिन शब्द सभ अंग्रेजीमे परिभाषाक संग सम्मिलित छल एहि सभसँ नीक छल आ ताहिमे १५९२क रिचर्ड हुलोएटक ग्लॉसरी एकर एकटा उदाहरणक रूपमे राखल जा सकैत अछि। ई सभ तखनहु अरबी कोश सभक समकक्ष नहि छल जे ८म आ १४म शताब्दीक बीचमे संग्रहित भेल विशेषतः सामान्य काजक लेल रचित कोश सभ जेना लिसान अल अरब (तेरहम शताब्दी)।

अंग्रेजी जेना एकरा हम आब देखैत छी, भाषाक वैश्विक इतिहासमे एकटा सापेक्षतया नूतन घटना अछि संभवतः मैथिलीसँ किछुए प्राचीन। ई एहि लेल किएक तँ जखन मैथिलीक सभसँ प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ ज्योतिरीश्वर द्वारा लिखल जा रहल छल ओ समय रहए अंग्रेजीमे चौसरक। पाश्चात्य कोशमे सभसँ प्राचीन कोश तखुनका अक्कादी साम्राज्यमे रचित भेल जाहिमे सुमेरी-अक्कादी

शब्द सूची बहुए (आधुनिक सीबियाक एबॅनामे प्राप्त) आ एकब समय छल नगभग २३०० ई.पू.। यदा सभसँ प्राचीन ग्रीक कोशे एपोलोनियशे द सोफिस्ट्ट प्रथम शताब्दीक, ई होमबयुगीन शब्दपबिभाषा आ अर्थ सूचीबद्ध कबैत अछि आ एकटा उदाहबण प्रस्तुत कबैत अछि। द्वितीय सहस्राब्दी ई.पू. उर्बा= ह्बुब्नु शब्दार्थसूची जे एहने द्विभाषी शब्द सूचीक संग प्बबान कोशीय नेखाक उदाहबण एकटा आब उदाहबण अछि जेकब तुनना तेसब शताब्दीक चीनी पबम्पबे सँ कएन जा सकैत अछि। प्राबम्भिक जापानी प्रयास ६+२ ई.क चीनी अक्षबक नीना ग्लॉसबी आ सभसँ प्बबान उपनब्ध जापानी कोशे तेनबेग बॉन्शो मैगी (+३३ ई.) सेहो महत्वपूर्ण प्रयास छन। भाबतमे बैदिक साहित्यक संबक्षण व्याकबण आ कोशीय बचनाक नेन सभसँ पैघ उत्प्रेबक छन। संस्कृतक पाणिनीय आ दोसब बैयाकबणिक पबम्पबामे ई एकटा सामान्य आ पूर्णतः आधाबभूत कार्य बहुए- बैदिक बाक्यकेँ शब्दमे खण्ड-खण्ड कबबॅ आ शब्दकेँ खण्ड कबबॅ धातु-प्रत्ययगयतकमे। एहि क्रममे शाब्दिक संबचना, भाषायी ध्वनि तन्त्रक संग संबचनामेक-ध्वन्यामेक सिद्धांत सभ सेहो बिकसित भेन। ई बिश्वास कएन जाइत अछि जे निघण्टु (७०० ई.पू.) पब यास्क एकटा निकुक्त नाम्ना भाष्य निखनन्हि जे आग सभसँ प्बबान ज्ञात कृति अछि आ ई पबम्पबा सेहो पानी पबम्पबा धबि चनन। ओ सभटा कोशीय सामग्रीकेँ समानार्थी आ समानद्विजए-ध्वनि अनुसाब सजेनन्हि। शास्त्रीय संस्कृतमे सभसँ नोकप्रिय कृति अछि अमबसिंहक अमबकोष (६ठम शताब्दी)। कटानोगस कैटानोगोबम मात्र अमबकोषपब कमसँ कम ४० टा भाष्यक सूची दैत अछि जे प्राचीन

ভাবতমে এহি সমানার্থী কোশক মহত্ত্ব আ লোকপ্রিযতা দেখবৈত অছি। এহি তবহক আব কোশ জে কম-বেশী অমবকোষক আধাবপব বচিত ভেল আ এহিমে সম্মিলিত অছি (সংদর্ভ মন্থাব স্নলকর্ণী- TDI L অন্তর্জালপব):-

১. ভোজক হ্রত নামমালিকা (১১ম শতাব্দী)
২. সহজকীর্তিক সিদ্ধশব্দার্ণব (১৭ম শতাব্দী)
৩. হর্ষকীর্তিক শাবদীযাখ্যানামমালা (১৭ম শতাব্দী)
৪. ধনন্জয ভঙ্কক পর্যাযশব্দবলে
৫. কোশকল্পতরু
৬. নানার্থবলেমালা- ওরুগপ দল্ডাধিনাথ (১৪ম শতাব্দী)
৭. বাঘরক নানার্থমঞ্জবী
৮. ধবনীদাসক ধবণীকোশ (১২ম শতাব্দী)
৯. শিরদত্ত মিশ্রক শিরকোশ
১০. সৌভবীক একার্থনামমালা-দ্ব্যক্ষাবনভমালা
১১. মকবন্দদাসক পবমানন্দীযনামমালা

পহিল অধুনাতন যুগক সংস্কৃত কোশ জে পাশ্চাত্য সিদ্ধাংতকেঁ প্রযুক্ত কএ বনাওল গেল সে অছি প্রাফেসব এচ.এচ.বিল্সন দ্বাবা সংগৃহীত আ ১৮১৯ ঈ. মে প্রকাশিত সংস্কৃত-অংগ্রেজী কোশ। দূ টা ভাবতীয কোশ তকব বাদ আএল পং. সব বাজা বাধাকান্ত দেবক শব্দকল্পদ্রুম আ পং. তাবাকান্ত তর্কবাচস্পতিক রাচস্পত্যম্ ।

হমব বিচাবমে প্রযুক্ত শব্দকোশশাস্ত্র আকি কোশ সংগ্রহক বিজ্ঞান বা কলা জে অছি কোশ সভকেঁ বিভিন্ন কার্যক লেল লিখব আ সংপাদন কবব আ ওএ সেহো ততবে

महत्वपूर्ण अछि जतेक सैद्धांतिक कोशशास्त्र महत्वपूर्ण अछि। शब्दकोशशास्त्र शब्द एकटा कथ्यक रूपमे १६८० ई.मे चालि कएल प्रयुक्त भेल जखन कि कोश शब्द अंग्रेजी भाषामे १३२६ ई. मे चालि कएल प्रयुक्त भेल जेनाकि मेरिअम-वेबस्टर कोश कहैत अछि। हमरा सभकेँ कहल जाइत अछि जे कोशमे ई सभ सम्मिलित होएबाक चाही:-

१. प्रिंत वा इलेक्ट्रॉनिक रूपमे संदर्भ स्रोत जाहिमे वर्णमालाक आधारपर सजाओल शब्द रहए, जाहिमे ओकर रूप, उच्चारण, कार्य, व्युत्पत्ति, अर्थ आ वाक्य रचना आ कहबी युक्त प्रयोग होअए।
२. एकटा संदर्भ ग्रंथ जाहिमे संबंधित कार्य-विषयक महत्‍त्वपूर्ण पदबंध आ नामक वर्णानुसार सूची होअए-संगमे ओकर अर्थ आ अनुप्रयोगक चर्चा सेहो रहए।
३. एकटा संदर्भ ग्रंथ जाहिमे एक भाषाक शब्दक लेल दोसर भाषामे समानार्थ देल रहए।
४. एकटा संगणकीय संशोधित सूची (दत्तांशशब्द वा शब्द पदक) जे सूचना प्राप्ति वा शब्द संसाधकक लेल संदर्भक रूप उपयोग कएल जा सकए।

एहि असाधारण आ समय साध्य कलाक अनुप्रयोगमे सम्मिलित कार्य सभमे ई सभ आवश्यक रूपमे सम्मिलित अछि:-

*प्रयोक्ताक निर्धारण आ ओकर आवश्यकताक निर्धारण
*सामान्यजनक शब्दशक्तिक आधारपर भाषिक शब्दक संख्याक

নির্ধারণ আ একটা নিশ্চিত সীমিত পরিধিমে ওকর নির্ণয়
*পরিভাষা আ বিরবণক সজ্ঞাক বিষয়মে নির্ণয়
*কোশক সংদর্ভমে সূচনা সংচরণ আ বিচার-ক্রিয়াক নির্ধারণ
*কোশক বিভিন্ন অংগক নির্ধারণ দত্তাংশক সংগ্রহ আ প্রদর্শনক লেল উচিত সংরচনাক চযন (জেনা আবরণ-সংরচনা, সংরগীকরণ, বর্গীকরণ, প্রসারণ আ একসঁ দোসর অংশমে সন্দর্ভ-সংকেত)
*প্রধান শব্দ আ জোড়এবলা শব্দক চযন- পারিভাষিক শব্দ বঁনএবাঁক লেল
*সমানধর্মিতা আ সংধিকেঁ চিহ্নিত করব
*অন্তর্রাষ্ট্রীয ধ্বন্যাত্মক বর্ণমালা (আই.পী.এ.) আ ব্লাঁচ এল্ড ট্রেগর চিহ্নক প্রযোগসঁ শব্দ উচ্চারণক নির্দেশ
*স্বরুচিপূর্ণ আ বস্তু-স্থান-বিশেষ বৌলী স্বরূপক যোগ
*বহুভাষিক কোশক লক্ষ্য ভাষাক লেল সমানার্থী শব্দক চযন
*ছপল আ ইলেক্ট্রোনিক দুনূ তরহক কোশমে উপযোক্তাক লেল প্রবেশমার্গ বঁটল আ আন স্বরিধা

বিহারক গংগাক মৈদান আ নেপালমে হিমালযক নিচুলকা পহাড় ীক তরাই ক্ষেত্র মিলি কঽ মৈথিলী আ মিথিলাক সাংস্কৃতিক ক্ষেত্রক নির্ধারণ করৈত অছি, জে বহুত পহিলে ১৯০৮ ঈ. মে জর্জ অব্রাহম গ্রিযর্সন দ্বারা চর্চিত ভেল, ওলা ও মুখ্যতঃ ভারতমে স্থিত মিথিলা ক্ষেত্রপর কেন্দ্রিত রহল। এহি ক্ষেত্রমে বহুত রাস পরিবর্তন আ সীমাক পুনর্নির্ধারণ ভেল। ২০ম শতাব্দীক প্রারম্ভমে গ্রিযর্সন মৈথিলী ভাষাক ক্ষেত্র সম্পূর্ণ দরভংগা আ ভাগলপুর জিলাকেঁ মানলন্হি। একর অতিরিক্ত ও

মৈথিনীকেঁ মুজফ্ফবপুব, মুংগেব, পূর্ণিয়াঁ আ সংথান পবগনাক বহুসংখ্যক নোক দ্বাবা বাজন জাএবনা ভাষাক ৰূপমে চিন্হিত কএনন্হি। মুদা আগ-কান্হি এহিমে সঁ কিছু অংশ ঝাবখন্ড বাজ্যক অংগ ভঽ গেন অছি।

এতএ ওা তথ্য আনবঁ সেহো সমীচীন হোএত জে এহি বীচ বাজ্যক মান্যতাক ঞ্চমমে মাত্র ১৭ মে সঁ ৬ জিনা (ওা অছি ভাগনপুব, পূর্ণিয়াঁ, সহবসা, দবভংগা আ মুজফ্ফবপুব) বিহাবক মৈথিনী ভাষী ক্ষেত্রক ৰূপমে সামান্য ৰূপমে অভিহিত ভেন। প◌াঁন ব্রাস (১৯৭৪) মৈথিনী আন্দাননক অপন বৃহত্ অধ্যযন উঁত্তব ভাবতমে ভাষা,ধর্ম আ বাজনীতি মে একবা সামান্য ৰূপমে পবিভাষিত ভৌগোনিক ক্ষেত্রক ৰূপমে নেনন্হি। ১৯+০ ক দশকমে বিহাবক ৩১ জিনামে ভেন বিভাজনক বাদ একটা প্রাজেক্ট বিপোর্টমে (দ মৈথিনী নৈংগ্বএজ মূবমেন্ট ওন ন◌ৰ্থ বিহাব: অ সোশিযো নিংগ্বিস্টিক এক্সপ্লোবেশন নামসঁ) সংযুক্ত ৰূপসঁ হমবা আ এন.বাজাবাম আ প্রদীপ ক্ষমাব বাস বনাওন গেন, হম সভ এহি নির্ণযপব পহুঁচন ছনহুঁ জে ৩১ মে সঁ ওা সভ ১০ জিনাকেঁ মৈথিনী ভাষী ক্ষেত্র মানন জএবাক চাহী: ভাগনপুব, কটিহাব, পূর্ণিয়াঁ, সহবসা, মধুবনী, দবভংগা, সমস্তীপুব, সীতামঢ় ী, মুজফ্ফবপুব আ বৈশানী। সে এহি ভৌগোনিক সীমাক পবিবর্তন প্রাকৃতিক পবিবর্তন (কোশী ধাব ২০০ ববখমে সাত বেব অপন দিশা বদননে অছি) আ জিনাক পুনর্গঠনক পবিণামস্বৰূপ ভেন অছি।

ওা ককবো নেন একটা পৈঘ চুনৌতী হোএত জে মৈথিনীক

एकटा भीमकाय कोशी वॅनेवॅाक प्रयास कवताह जेना गजेन्द्र ठाकुव कएने छथि। ओ पविस्थिति थाव ओमवा जागत थछि कावण मैथिलीक शब्द चयन थंशतः वा थधिकांशतः एहि सांस्कृतिक क्षेत्रमे वॅाजल जाएवला १२ टा थान भाषासँ संभवतः प्रभावित होगत थछि। एतए एहि नगभग १२ टा दोसव भाषाक वर्णन सेहो वर्णन योग्य थछि। मैथिलीक थास-पड़ोसमे भोजपुवी था मगही थछि था हिन्दी एहि सभपव ऊपवसँ थाछादित थछि जे एहि तीनू भाषा समूहक नोक द्वावा वॅाजल जागत थछि। मुदा विहाव एकटा वॅहु-भाषी वाज्य थछि था नेपानी था वॅांग्ला भाषी सेहो एतए प्रचुव मात्रामे देखल जा सकैत छथि। एकव थतिविक्त किएक तँ मैथिली भाषी मावखण्ड क्षेत्रमे सेहो पर्याप्त मात्रामे छथि, ओ वॅुमवॅाक थिक जे ओवाँ, मुण्डावी, हो, विवहोव, धांगव, संथानी था संख्यामे कम थॅास्ट्रिक भाषा समूहक वक्ता सेहो हुनका संग निवास कवैत छथि। ओना तँ मिथिला क्षेत्रक वॅहुत वास मुस्लिम थपन मातृभाषा मैथिली देखवैत छथि मुदा वॅहुत वास एहनो छथि जे थपनाकेँ उर्दूभाषी घोषित कवैत छथि। एहि सभ भाषामे मात्र चावि टा केँ सांवैधानिक मान्यता भेटल थछि- हिन्दी, उर्दू, वॅांग्ला था नेपानी (पछाति संथानीकेँ सेहो)। हमवा विचावेँ मैथिलीक वाक्य-वचनापव थॅास्ट्रिक भाषा समूह सहित विभिन्न कोणसँ प्रभाव पड़ल थछि। मुदा कोशीय स्तवपव योग था थनुकूलन सीमित स्रोतसँ भेल थछि जेना उर्दू, हिन्दी, भोजपुवी था मगहीसँ। कोशी थामेसात कवैत थछि देशी शब्दावनीकेँ देशज शब्दावनीक संग। ओ एहि कावणसँ कावण हमवा विचावेँ वॅेशीसँ वॅेशी २७-३०% वक्ता मैथिलीकेँ एकभाषीय

ৰূপমে ৰ্জৈত ছথি। কাৰণ শেষ দোসব ভাষামে সেহো নীক পগঠ বখৈত ছথি। ও মথিনী ভাষী জে ৰিহাবক পশ্চিমী সিমানপব বৈত ছথি, ভোজপ্ৰবী সেহো ৰ্জৈত ছথি খা পটনা–বাঁচী–গযা–ম্ঁগেব–ক্ষেত্ৰমে বহনিহাব মগহী জনৈত ছথি খা সেহো হিন্দীক খতিবিঞ। ম্দা একটা খল্প প্ৰতিশত কহ্ৰ জে ३–ঌ % সঁ কম্ম, এহন মৈথিন ছথি জে খংগ্ৰেজীমে সেহো প্ৰভাৱী ৰূপমে ৰাজি সকৈত ছথি। ম্দা খংগ্ৰেজীসঁ মৈথিনীমে শৰ্দ্ধক খাগম ততৰে ৰূহত খছি জেনা ও কোনো দোসব নৱ ভাৱতীয ভাষা (ন.ভা.ভা.) সভমে খছি।

ৰ্হত গোটে ও শংকা ব্যঞ্জ কঽ সকৈত ছথি জে কতেক গোটে এহন হোএতাহ জিনকা গজেন্দ্ৰ জী সনক প্ৰযাসসঁ নাভ ভেটৈতন্হি ? ওনা তঁ মৈথিনী ভাষীক সংখ্যাক খাধিকাৰিক খাঁকড়া স্থিৰ নহি বহন খছি ম্দা এহি তথ্যক রিস্তাৰসঁ ৰর্ণন খাৱশ্যক খছি। জনসংখ্যাক খাঁকড়া ৰাস্তৱিক নহি খছি জেনা ২০০১ ও.ক জনসংখ্যাক ও খাঁকড়া: ১,২১,৭৯,১২২. একবাপব খৱিশ্বাস পক্কা খছি। জখন হম দেখৈত ছী জে মৈথিনী ভাষীক সংখ্যাক সংদৰ্ভমে দস ৰৱখক খংতবানমে নেন জনসঁখ্যা খাঁকড়ামে ৰ্হত ৰেশী পবিবৰ্তন খছি। ও ১+৯১ সঁ দস ৰৱখক খংতবানমে জনসংখ্যাক খাঁকড়ামে ৰঢ়ন খা ঘটন সংখ্যাক ত্তননাসঁ স্পষ্ট খছি:

১৯০১–১১: +३.১২%

১৯১১–২১: –০.৭৭%

১৯২১–३১: +৭.৬+%

১৯३১–৪১: +৯.১३%

১৯৪১–৫১: গণনা নহি ভেল
১৯৫১–৬১: +২২.३५%
১৯৬১–৭১: +২০.+৯%
১৯৭১–+১: +২৪.১৯%

তার্কিক রূপেঁ রাস্তরমে মৈথিলী রক্তাক সংখ্যা স্থির রূপেঁ বঁঢ়ল অছি। হমর অনুমানসঁ কিছু সংকেত দেল জা সকৈত অছি জে অনিমানিত ४ করোড় ধরি পহুঁচৈত অছি। ১+৯১১ মে গ্রিয়র্সন (১৯০+) অনুমান কএলন্হি জে মৈথিলী ভাষীক সংখ্যা ৯২,+৯,३৭৬ অছি। একর রিরুদ্ধ ১৯৬১ক জনসংখ্যা আঁকড় া একরা ४৯,+২,৬১৫ কহ দৈত অছি। নিশ্চযরূপেণ ১৯৬১ ক জনসংখ্যা আঁকড় া রাস্তরিক নহি অছি। ওনা গ্রিয়র্সনক (১৯০৯) জনসংখ্যা আকলন জে হুনকর ১+৯১ ঙা. মে কএল সর্রেক্ষণপর আধারিত অছি, সভক দ্বারা সম্মতি প্রাপ্ত নহি অছি। রর্তমান শতাব্দীক প্রারম্ভমে মৈথিলী নিম্ন ক্ষেত্রমে রাঁজল জাগত ছল:-

(i) সম্পূর্ণ দরভংগা আ ভাগলপুর
(i i) মুজফ্ফরপুরক ৬/৭ ভাগ
(i i i) মুংগেরক ১/২ ভাগ
(i v) পূর্ণিয়াঁক ২/३ ভাগ
(v) সংথাল পরগনাক ४/৫ ভাগ জে জনগণনা আঁকড় ামে রর্ণিত হিন্দী ভাষী ছথি।

১+১৬ ঙা. মে উঁত্তর দিস্বকা ভাষাযী ক্ষেত্র নেপাল বাজশাহী দ্বারা স্থাযী রূপসঁ নেপালমে সম্মিলিত কএ লেল

গেল। তাহি দ্বারে ভাষা রঁজনিহাবক সংখ্যা পব পহুঁচরাঁক লেল নেপালক জনসংখ্যাক ১৪% হিস্সা খাব জোড়এ পড়ত। প◌ॉन ব্রাস (১৯৭৪:৬৪–৬) গেঠকে গণনা (জনসংখ্যা রর্ষ ১৯০১ ঙা.) ১++৩ ঙা.সঁ উঁপলর্দ্ধ রিভিন্ন দস্তারেজক খাধাবপব কবৈত ছথি খা ১,৬৩,৬৩,৪৭৭ সংখ্যাপব পহুঁচৈত ছথি। ঙা গণনা গ্রিযর্সনক খাকলনকেঁ খাধাব নএ খা তকব রাঁদক + দশকমে রিহাবমে জনসংখ্যা বৃদ্ধিকেঁ খাধাব নএ কএল গেল খছি। ১৯+১ ক জনসংখ্যা খাঁকড় াক খাধাবপব খা মিথিলা ক্ষেত্রক রাঁহব পসবল মৈথিলক সংখ্যাকেঁ জোড়ি কঽ খা ১০ জিলাক জনসংখ্যাকেঁ (৩১ জিলামেসঁ) ধ্যানমে বাখি হম খা হমব সহযোগী ১৯+০ ক দশকক মধ্যমে ২,২৯,৭২,+০৭ (সিংহ, বাজাবাম খা রাঁস ১৯+৩) ক সংখ্যাপব পহুঁচলহুঁ। ঙা সংখ্যা হমব রিচাবমে জনসংখ্যাক দসরর্ষীয বৃদ্ধিকেঁ ধ্যানমে বখৈত ৪ কবোড় ধবি পহুঁচল খছি খা তাহি দ্বারে রঁহ্ত বাস লোক কোশিক এহি ভীমকায প্রযাসসঁ লাভান্বিত হোএতাহ। ঙা সামান্যতঃ মানল জাগত খছি জে মৈথিলী মিথিলা ক্ষেত্রক ব্রাহ্মণ দ্বাবা রাঁজল জাগত খছি। ঙা একটা পহিল্বকা হ্রপ্রচাব ছল জে একবা হিন্দীক রাঁলীক রূপমে সিদ্ধ কএ চাহৈত বহথি হ্মখ্যতঃ হিন্দী ভাষীক খাধিকাবিক সংখ্যামে বৃদ্ধিক উঁদ্দেশ্যসঁ। হ্মদা উঁত্তবী রিহাবক জাতি সংবচলাকেঁ দেখৈত মৈথিলীক জনসংখ্যা সংরঁধী খাঁকড় া একব সহ কথা কহত। সাপেক্ষতযা মৈথিলীক রঁস সংখ্যা জে জনগণনা বিপোর্টমে খাএল, কেঁ এহি তথ্য মাত্রসঁ র‍্যাখ্যাযিত কএল জা সকৈত খছি জে ওলা তঁ মৈথিলী ভাষী জিলাক কতোক ক্ষেত্রমে ৪৬.+৪% ধবি হ্মস্লিম খা ৩১.০৬% ধবি হিন্দূ নিরাস কবৈত ছথি, মৈথিলীক লেল জে সহযোগ খাএল খছি সে এহিমে

সঁ একটা পৈঘ সংখ্যা দ্বাবা মৈথিনীকেঁ খপন মাতৃভাষা ঘোষিত কএনে রিনা সংভর নহি ছন।

মিথিনামে ভাষা প্রযোগক একটা সর্বেক্ষণ ঞ দেখা সকৈত খছি জে ওনা তঁ ভাষাক ঔপচাবিক ক্ষেত্র সভমে প্রযোগ কম ভেন খছি মুদা ঞ সেহো সহ খছি জে একব সাহিত্যিক উঁপোদকতা খা উঁপনব্ধি খাগ খখিন ভাবতীয স্তবপব রেঁশী নীক জকাঁ সোন্মাঁ খারি বহন খছি ত্তননামেক ৰূপেঁ জতেক ঞ খাগসঁ ২০ রবখ পূর্ব খরৈত ছন। মধুবনী চিত্রকনা রা মিথিনা কনা খাগ ভবি ভাবতমে স্বপ্রসিদ্ধ ভঽ গেন খছি খা বিশ্ব–রজাব ধবি পহুঁচি গেন খছি। মাত্র তখনে জখন মৈথিনী ভাষী নর–পীঢ়ী খপন সাংস্কৃতিক ভাষাযী রোধসঁ হটৈবাক নির্ণয কবতাহ তখনে একবা কোনো খতবা সোন্মাঁ খএতৈক। হমবা রিচাবেঁ সাংবৈধানিক খধিকাব নহি ভেটৈনাগ খপ্রত্যক্ষ ৰূপমে মৈথিনীক নেন রবদান সারিত ভেন কাবণ ঞ সাহিত্যিক সাংস্কৃতিক গতিরিধিকেঁ রন দেনক। ঞ পহিনহিযেঁ রহ্ত বাস সাংবৈধানিক মান্যতা প্রাপ্ত ভাষা সভকেঁ পাছাঁ ছোড়ি দেনক, জেনা মণীপুবী, কোঁকণী, নেপানী খা সিন্ধী সেহো। খা খার জখন কী ঞ খষ্ঠম সূচীমে খছি একবা সভটা খাধিকাবিক খা খান তবহক সংবক্ষণ ভেটৈবাক চাহী জকব ঞ খধিকাবী খছি। একবা একব উঁপযোগকর্তাকি সহযোগ সেহো ভেটৈবাক চাহী জে খাব খাধুনিক খওজাব সভক তাকিমে ছথি জেনা আঁননাগন পত্রিকা, ঞ–কোশ, স্বরিধাজনক জংগম পবিভাষা–কোশ সভ খা স্বচানিত প্রশ্নোত্তব প্রণানী গহাদি। তাহি স্তবপব ঞ মৈথিনী কোশ জে খন্তর্জান খা ছপন দুনূ সংস্কবণমে উঁপনব্ধ হোএত, সে সংগ্রহকর্ত্তা

द्वारा एकटा महत्वपूर्ण योगदान होएत। मैथिली भाषी सम्प्रदाय आ आन भाषाक अनुवादक-विद्वान द्वारा गजेन्द्र ठाकुर आ प्रकाशक विशेष प्रशंसाक पात्र छथि। ओ सभ अछि जे मैथिली कोश-विज्ञान बहुत बादमे विकसित भेल, म.म. दीनबन्धु झाक प्रयासक बहुत बाद आ आब जा कए हमरा सभक सोझाँ महत्वपूर्ण कार्य सभ आएल अछि जेना पं गोविन्द झा द्वारा कल्याणी कोश वा जयकान्त मिश्रक बृहत् मैथिली शब्दकोश, मतिनाथ मिश्र 'मतंग' क मिथिला शब्द प्रकाश वा अनागस डेविसक वैसिक कलोक्विअल मैथिली : अ मैथिली-नेपाली-अंग्रेजी वोकाबुलरी। संक्षिप्त मैथिली शब्दकोश आ द्विभाषी मैथिली शब्दकोश जे मैथिली अकादमी द्वारा संकल्पित अछि, अपनाप एखन बाँकी अछि। राष्ट्रीय अनुवाद मिशन द्वारा संकल्पित (देखू www.nt m.o r g.i n) नागमैन-सी.आर.आर.एल. वैसिक अंगनिका- अंगनिका- मैथिली जे कार्पोरापर आधारित अछिसेहो एकटा रुचिगर उपाद होएत। ज्ञदा सभटा कहला आ केनाक बाद एहि कार्यक महत्व समय बितनाक संगे अनुभूत कएल जाएत।



विनीत उत्पल

आजुक कानमे बाबा

आइ जखन देशमे भ्रष्टाचारक विरोधमे आन्दोलन बढ़ि रहल अछि तखन बाबा मने नागार्जुन केर कविताक मोन पड़ब स्वाभाविक अछि। ओ जहिना अप्पन कालमे प्रासंगिक रहथि तहिना आइयो छथि। मैथिली साहित्य सँ लऽ कऽ भारतीय साहित्य, संस्कृति, राजनीतिक आ सामाजिक परिदृश्य केँ देखैत ओ कहमे कोनो शंका नै अछि जे बाबा आधुनिक आ गंभीर संवेदनासँ जुड़ल रहथि। ओ अप्पन कविता तखन लिखने रहथि जखन राजनीतिक- संवैधानिक मान्यताकेँ लऽ कऽ गम्भीर प्रश्न ठाढ़ भऽ रहल छल। जहिना ओ मैथिलीमे लिखने छलाह तहिना हुनकर हिन्दी कविता सेहो एक अलग रंगमे रंगल अछि। एखन धरि मैथिली साहित्यमे हुनकर मैथिली कविताकेँ देखल गेल अछि आ हिन्दी साहित्यमे हिन्दी कविताकेँ। यद्यपि दुनू भाषामे लिखने ओ समान रहथिन। एहिमे ओ आवश्यक अछि जे हुनकर हिन्दी कविता दिस ध्यान देल जाए, ओना ओ अलग अध्ययनक गप अछि जे दुनू भाषामे लिखल कवितामे कतेक तारतम्य अछि। देशक स्थितिकेँ लऽ कऽ हुनकर चिंता

হিন্দীমে কোনা ছল, একরে অধ্যযন এতহ কম কহ বহল ছী।
জখন পূবা দেশ গমবজেঁসীসঁ ত্রস্ত ছল, তগ কানমে ও অপ্পন প্রতিৰদ্ধতাক ঘোষণা করৈত ছথি –

'প্রতিৰদ্ধ হূঁ, জী হাঁ, প্রতিৰদ্ধ হূঁ–
ৰহ্জন সমাজ কী অন্বপন প্রগতি কে নিমিত্ত–
সংকুচিত 'স্ব' কী আপাধাপী কে নিষেধার্থ
অরিরেকী ভীড় কী 'ভেড়ি যা–ধসান' কে খিনাফ
অংধ–ৰধিব 'ব্যক্তিযোঁ' কো সহী বাস্তা ৰতনানে কে নিএ
অপনে আপকো ভী 'ব্যামোহ' সে ৰাবম্বাব উঁৰাবনে কী আতিব
প্রতিৰদ্ধ হূঁ; জী হাঁ, শতধা প্রতিৰদ্ধ হূঁ! '

জহিনা নোকপানক নামপব অন্নাক আন্দাননমে নরজ্ৰক সভ আগূ আএন, তখন ওা নাগৈত অছি জে খানী ঠাম ৰদনি গেন অছি। গমবজেঁসী কানমে জগহ পটনাক গাঁধী মৈদান ছল আ আজুক মৈদান দিন্নী কেব বাম নীনা মৈদান ৰনি গেন ছল। তাহি সঁ ৰাৰা কহৈত অছি–

'ৰাব–ৰাব খচাখচ ভবা গাঁধী মৈদান
ৰাব–ৰাব প্রদর্শন মেং আএ নাখোঁ–নাখ নৌজৰান
ৰাব–ৰাব ৰাপস গএ
হৰা মেং ভব উঠী গংকনাৰ কে কপূব কী খুশিবূ
ৰাব–ৰাব গূঁজা আসমান
ৰাব–ৰাব উঁমড় আএ নৌজৰান
ৰাব–ৰাব নৌটৈ আএ নৌজৰান.. । '

তাহি সঁ বাবা গর্জিত অছি–

'জনতা তুমসে পূছ রহী হৈ, ক্যা বতলাঊঁ
জনকবি হূঁ মৈং সাফ কহূঁগা, ক্যা ছুপাঊঁ ? '

বিনা লটপটাএন বাবা জে গপ তহিযা কহনখিন, কী ওকরামে আগ কোনো অংতর ভেলো অছি, ওা সমান অছি। ও নীক জনা নেতা আ নৌকরশাহী পর চোট করৈ ছথি,

‘আজ কী তারীখ লানে পন্নে পর
মৈং লিখূঁগা এক কবিতা
কুছ ঐস তরহ কি মৈং পহুঁচ জাঊঁগা
বহাঁ
জহাঁ
তুমনে
এক কুর্সী কে বরাবর
জগহ ছোড় রখী হৈ।’

হুনকা আগূ কতেক রাস প্রশ্ন অছি জে সৈদ্ধাংতিক আ ব্যবহারিক রূপমে লোকক দিমাগমে ঘুরকৈত রহৈত অছি আ ঐমে নাগার্জুনক স্থিতি স্পষ্ট ভই জাগত অছি। হুনকর এক–এক কবিতা আ এক–এক শব্দ ক্রাংতিক অলখ জগবৈত অছি,

কাগজ বেচথী দুনিযাঁ ক্যা হৈ, পূঁজীবাদ কা বাজার হৈ,
প্রজাতন্ত্র পর্দা হৈ লেকিন খূনী কারোবার হৈ।
ভুখমরী আ তংগহালী সে পরেশান ভ কে 1961 মেং

জখন জমীনক রঁঢৈরাবাক নেন কিসানক খন্দানন চনন, তখন নাগার্জ্ন 'করোড় া ঁ হাথোঁ' কে ফেব সঁ খ্যান কবনক,
নভ সে সংঘ রঁহ্ম জনতা কা গূঁজ ঙঁঠা হুঁকাব।

রাঁরাঁক করিতামে যথার্থক রর্তমান বহন খছি খা গপ– সপমে রঁড়ঃকা গপ কহি দৈত ছথি। হুনকব হিন্দী করিতামে তাকোনিকতা তঁ খছি হ্মদা র‍্যংগ্যক রিদগ্ধতা হুনকব শর্দ্ধকেঁ কানজযী রঁনা দেনে খছি। ভূখ, রেঁবোজগাবী, খকান সন রিষযপব নিখন হুনকব করিতা জতে সংরেদনাসঁ ভবন খছি, ওতএ নীতিক র‍্যংগ্য কতেক বাস মাবক ক্ষমতা বাখৈত খছি। খাগ কতেক বাস ঘোটৌনাক খরঁব খারিঁ বহন খছি, নোক–রেদ ত্রস্ত খছি, বামবাজ্যক পবিকল্পনা কতেক নোক কঽ বহন খছি, নোক পাগ খা সত্তাক পাছূ ভাগি বহন খছি, এনামে নাগার্জ্নক ঙা গপ যাদ খরৈঁত খছি,
'বামবাজ্য মেঁ খরঁ কী বারণ নংগা হোকব নাচা হৈ
সূবত শকন রহী হৈ ভগযা, রঁদনা কেরন ঢাঁচা হৈ
নাজ– শর্ম বহ গঙা হৈ রাঁকী, গাঁধীজী কে চেনোঁ মেঁ
ফূন নহী নাঠিযাঁ রঁবসতী বামবাজ্য কে জেনোঁ মেঁ।'

নাগার্জ্ন হুখএ রা হুনকব করিতা, খাম নোক সভ নেন ও সহজ খছি। বাজনীতিক ঙঁথেব স্বাদ হুনকব করিতামে জগ তবহঁ ভেটৈত খছি, হিন্দী হুখএ রা মৈথিনী, এহন স্বাদ খান ঠাম নৈ ভেটৈত খছি– নাগার্জ্ন,

'সিযাসত মেঁ
ন খড়ঃ াওঁ

अपनी ये कांपती टांगें
हां, महाराज
राजनीतिक फतरेबाजी से
अलग ही रक्खा अपने को
माना तो है ही तुम्हारे पास
नाम-राम जपने का
भूख जाओ प्रवाने सपने को'.

ओ एहन लोक अछि जे अप्पन तँ एहन-ओहेन करैत अछि, आगूसँ रैसन रहैत अछि, तकरो नै छोड़ैत अछि। 'जपाकर' कविता मे संविधानक सेहो एहन मजाक रनारैत अछि, जे आगयो धरगर अछि-

'जपाकर दिन-रात
जै जै जै संविधान
मूं द ले आंख- कान
उनका ही दर ध्यान
मान ले अध्यादेश
मूंद ले आंख-कान
सफल होगी मेधा
खिचेंगे अन्नदान
उनके माथे पर
छींटो कर दूर्-धान
करता जा पूजा-पाठ
उनका ही धर ध्यान
जै जै जै छिन्नमस्ता
जै जै जै कृपाण
सध गया शेरासन

মিনেগা সিংহাসন। '

এহন গপ নৈ খছি জে নাগার্জুনক সোচক সীমা এক্কে দিস খছি। হুনকাসঁ কিযো নৈ ছুটৈন খছি, রোটৈকেঁ নঃ কঃ জে বাজনীতি ভঃ বহন খছি, ওকব চিংতা হুনকা সেহো ছন–

'রেঁচ–রেঁচকব গাংধীজী কা নাম
বঁটৈবো রোটৈ
বৈংক বৈনেংস বঁঠ় াও
বাজঘাটৈ পব বাঁপূ কী বেদী কে খাগে খশ্রু বঁহাও। '

খাগ জহিনা সড়কপব উঁতবন নোক সত্তাক মদহোশিমে ডূবঁন নোকপব ব্যংগ কঃ বহন ছৈ, কহিযো একবাসঁ নাগার্জুন পাছও নৈ ছন। নেতাকেঁ নঃ কঃ ও কহৈ ছথিন,

'কুর্সী–কুর্সী গদ্দী–গদ্দ খেন বহে হৈঁ
ঘটৈক তংত্র কা ভুলপাত হী খেন বহে হৈঁ
জোড়–তোড় কে সৌ–সৌ পাপড় বেঁন বহে হৈঁ
ভাবত মাতা কো খাদী মেং ঠেন বহে হৈঁ। '

সত্তাসঁ ডবৈঁ তঁ ও সিখনে নৈ ছথিন, তগ সঁ ওঁদিবা গাংধী কেঁ ও সোমে কহি দেনখিন,

'গন্দুজী, গন্দুজী, ক্যা হুখা খাপকো ?
সত্তা কী মস্তী মেং, ভূন গঙা বাঁপ কো ?
বেঁটৈ কো তাব দিযা, বৌব দিযা বাঁপ কো !

ক্যা হ্ুখা খাপকো ? ক্যা হ্ুখা খাপকো ? '
ঐনা কহৈ রঁনা খাজ্‌ক কান মে কিযো খছি, ঙা সোচরাঁক রিষয খছি.

নাগার্জ্‌নক করিতা খা হ্‌নকব হক্কড়ন্নমা খঁদাজকেঁ খাজ্‌ক জ্‌গমে খনগ নজবিমে দেখরাঁক খারশ্যকতা খছি। ও বাজনীতি সংদর্ভমে ভহ সকৈত খছি, সামাজিক সংদর্ভমে ভহ সকৈত খছি তঁ খার্থিক সংদর্ভমে সেহো। ঞাঁতি খা একব রিচাবধাবাক গহীব প্রভার রাঁরাঁক নেখনীমে ছন। একটা করিতা নক্সন খান্দাননক ছাহমে ও নিখনে ছন জে খাজ্‌ক হানতপব সটীক খছি,

'র্‌হ্রু কা দিন তো কহতা হৈ
খরঁকী ভাবী গহন নগেগা
র্‌হ্রু কা দিন তো কহতা হৈ
খরঁকে সংসদ ভরন ঢহেগো
র্‌হ্রু কা দিন তো কহতা হৈ
রঁচা-রঁচা খস্ত্র গহেগো
র্‌হ্রু কা তো দিন কহতা হৈ
কোঙা খরঁ ন তটস্থ বহেগো। '

রাঁরাঁ নাগার্জ্‌ন সামাজিক, বাজনীতিক রিদ্রূপতাপব রাব কবৈত খাগূ নিকনি জাগত খছি। তাহিসঁ ও কহৈত খছি,
'ঙুপব-ঙুপব মূক ঞাঁতি, রিচাব ঞাঁতি, সংপূর্ণ ঞাঁতি
কংচন ঞাঁতি, মংচন ঞাঁতি, রংচন ঞাঁতি, কিংচন ঞাঁতি
হল্ল্‌ সী প্ররাহিত হোগী, ভীতব-ভীতব তবন ঞাঁতি.

एनामे जानिब सन गप खिछ जे बाबा नागार्जुन कहै लेन करि टा नहि छल, हुनकर सोच आ शैलीमे एकटा धार छिछ। हुनकर एक-एकटा शब्द एहन छिछ जे स्वतन्त्र रूपसँ जगाबैक क्षमता राखैत छिछ। लोकतंत्र मे हुनकर सहमति छिछ मुदा छल-प्रपंच आ आडम्बरसँ ओ दूर रहै बाला लोक छला।

कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार

कहियो समय रहै जे बाल कलाकार आओर बाल गीत हिन्दी सिनेमा देखै बाला लोकक मनमे उत्सुकता जागत छल। मुदा आजुक समयमे नहि तँ एहन बाल कलाकार

অছি আওব নহি ওহন ডাযরেকটর অছি জে বঁচাকেঁ নহ কহ ফিল্ম বনৌনথি জে দিন কহ ছু নয। 1954 মে একটা ফিল্ম রিলীজ ভেল ছল 'জাগৃতি"। কহল জাগত অছি জে ওা ফিল্ম পহিল ফিল্ম ছল জহি মে বঁচাকেঁ নহ কহ নীক গীত ছল। গীত কবি প্রদীপ লিখনৈন। 'আও বঁচা, তুম্হে দিখাএঁ, ঝাঁকী হিন্দুস্তান কী" এখনো লোক সভ গারৈত অছি। অহি ফিল্মক একটা গীত আওব অছি জে মোহম্মদ রফীক গাযল ছল 'হম লাএ হৈ তূফান সে কশ্তী নিকাল কে...।"

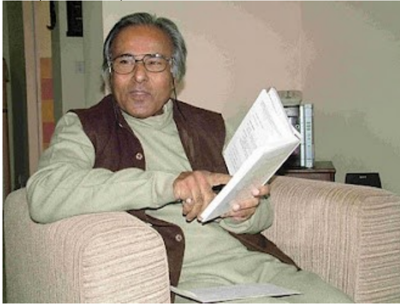
সময বঁদলৈত গেল, কএক টা গীত লিখল গেল। 'বূঁট পানিস" মে 'নন্হে মুন্নে বঁচে তেবী মুট্ঠী মে ক্যা হৈ", 'শ্রী 420" মে 'গচক দানা রিচক দানা",'ধূল কা ফূল" মে 'তূ হিন্দূ বনেগা ন মুসলমান বনেগা", 'গংগা জমুনা" মে 'ইংসাফ কী ডগব পে বঁচা দিখাও চল কে", 'সন অঁফ ইংডিযা" মে 'নন্হা মুন্না বাহী হূঁ", 'ব্রহ্মচাবী" মে 'চক্কে পে চক্কা", 'দো কলিযাঁ" মে 'বঁচে মন কে সচে" সভটা গীত বঁচা সভকেঁ খূব নীক লাগল। আওব তঁ আওব, ফিল্ম অবাধনাক গীত 'চংদা হৈ তূ মেবা সূবজ হৈ তূ' আগ ধবি লোক অপ্পন সোনা বৈটাকেঁ স্বতারৈক কানমে গারৈত অছি, জখন খেলারৈঁ লাগত তখন আশীর্বাদ ফিল্মক গীত "বেলগাড়ী, বেলগাড়ী...' গারৈত ছল জকবা অশোক কুমাব গযনে ছল। জখন ঘবমে মামা আরৈঁ ছথিন যা বাতি মে আঁগন মে স্বতল লোবী জনা লোগ স্বনারৈত অছি 'চংদা মামা দূব কে.." গীত স্বনহি মে খূব নীক লাগৈত অছি। ওহিলো ফিল্ম অপনা দেশক গীত 'বোনা কভী নহী বোনা", কালীচবণক গীত 'এক বটা দো", মিস্টব নটরবলালক গীত 'আও বঁচা মৈং তুম্হে

कहानी स्वनाता छूं", ख्रंधाकानूनक गीत 'बोते-बोते हंसना सीखो" खूब स्वनन खाओव गाओन जागत खछि। मासूम फिल्मक गीत 'छोटा बँचा जानकव" कोनो कान मे सभक फ्न्ह मे बहैत छन।

हिन्दी फिल्मी दुनिया मे एहनो कान छन जहिया बेंबी तबस्सुम, बेंबी गायत्री, मास्टब बतन, हनी गवानी, पन्नबी जोशी, नीतू सिंह, मास्टब मयूब कँ देखहि नेन नोक सिनेमा हॉन जागत छन। फ्दा खहि गपसँ गनकाव नहि कएन जा सकैत खछि जे खाब फिल्म मे खनग तबहक स्वादक नेन बाँन कनाकावक खभिनय देखन जागत खछि। कहियो दू टा प्रेमीक मिनाबैक नेन बाँन कनाकावकँ फिल्म मे नेन जागत छन जे खाबक फिल्म मे नहि खछि। किएकि मोबाँगन, गंटबनेटक दुनिया खाबि गेनासं नहि कबूतव, तोता खछि खाओव नहि कोनो बँचा, जकवा सं प्रेमपत्र भेजबा मे मजा खाबैत छन।

एकटा फिल्म खायन छन 'ब्नैक" । ओ संजय नीना भंसानी बनौने छन। खायशा कपूब एहिमे खभिनय केने छन जाहि सं खूब फिल्म देखन गेन खा सर्वश्रेष्ठ फिल्म बनि गेन छन। खमोन गुप्तक तावीफ कएन जा सकैत खछि, किएकि खामिब खानक संग डिसनेक्सियासँ पीड़ित बँचा पब 'तावे जमीं पब" बनौननि। खूब नीक खभिनय कबैक नेन दर्शीन सफावी कँ घव-घव मे नोक चिन्है नागन। खहि मे खमिताभ बँचन कोना ककबो से पाछाँ बहितथि। भूतनाथ मे खभिनय कब नोकक दिन जीत नेनखिन। खमन सिद्दकी एकबामे

रँकूक भूमिका केलनि।



डॉ. गंगेश गुंजन

कविक थामोब्जि: कविताक अवना -विनीत उंपेनक कविता संग्रहपव

विश्व रँजावी एहि समाज मे, भाषा-साहित्य सभक संसाव मे सेहो रँजावे जकाँ मंदी पसवल अछि। नगभग गएह पविस्थिति रँसी कला-विधाक रँल्माग्छ। साहित्यमे किछु आव विशेषे। ताहू मे कविताक विधा आओरो अनठिआएल अछि, किछु स्वयं कात कवोटै भेल आ किछु कएल जा वहल अछि। प्रकाशिके टा द्वावा नहि, स्वयं संरँधित भाखा-भाखी अधिसंख्य नोक समाज द्वावा सेहो। जतए स्वयं कविक द्वावा, से अवश्य खेद कववाक विषय। कविता व्यक्ति कें अपन समाज मे एकटा आओव प्रतिष्ठा मात्र दिअयवाक मूल्य पव रँशी दिन जीवित नहि वहि सकैत अछि। अर्थात् कोनो सम्भ्रान्त व्यक्तिक भव्य ड्र ाइंग रूम मे एक टा आओव गम्पार्टेड दामी वस्तुक प्रदर्शनीय नमूनाक मान कविता नहि रँनाओल जा सकैत अछि, जे कि दुर्भाग्य सं भ' वहल अछि। भाषा रँहैट टा ओतवेँ जीवित अछि वा वह'वानी रँल्मा वहल अछि जे मात्र अपन भाषिक उंपयोगिता वाँ कही अपन क्रय-विक्रय-मूल्यक रँलें

জীৱিত বহি সকয। গ্লোবল বজাব মে ভাষা অপন প্ৰৱেশ- জতেক দূৱ আওব গম্ভীৰ ধৱি কববাক ক্ষমতা বখনে অছি, তাহী সামৰ্থ্যক উপযোগিতে পৰ, ওতবে দৃখাবে জীৱিত বাখন জা বহল অছি, কোনো অপন কাব্য-সম্পত্তি, সাংস্কৃতিক অস্মিতা আ ভাষাক প্ৰাচীনতা বা মহানতাক জাতীয স্বাভিমানক আধাব পৰ নহি। তেঁ দুৰ্ভাগ্যৱশ ও সময অপন-অপন ভাষাক মহানতা ন' ক' আমে গৌবৱ সং ভবৱ তং ফবাক, জে হ্রথ পৰ্যন্ত হোযবাক সময নহি বাঁচি গেল অছি। হঁ, ভাষাক 'দাম' ন' ক' নিশ্চিন্ত বহবাক বা কম বিকাএৱ ন' ক' চিন্তিত হোযবাক সময অছি। হ্রদা কৱিতা মে ভাষাক আশয আ অস্তিত্ব কেঁ এহন তাৎক্ষণিক বূঝি নেৱ কোনো ভাষা-সাহিত্যক মূল সং ছূটি ক' আগাং বঢ়বাক বৃদ্ধি কেঁ অৱসবৱাদ ছোড়ি, দোসৱ কিছু নে মানল জা সকৈত অছি। সমকালীন সমস্ত কৱি কেঁ, নৱাগন্তুক কে তং অনিৱাৰ্যতঃ বজাব আ কৱিতা ভাষাক বীচক এহি ভেদ কেঁ নৈতিক বৃদ্ধিযেং বূঝি'এ ক' একৱ বাটে চলবাক প্ৰযোজন। অন্যথা ও কৱিতা সেহো এক টা নৱ পৈকেটৈক নৱ উপোদ বনি ক' দোকান মে বহত। পোথীক দোকান মে নহি। সাজ-শৃংগাৱক কোনো মল মে, জত' জনসাধাৱণ লোকক পহুঁচৱো দুৰ্লভ! আৱ সে বজাব আ কৱিতাক ভাষাক এহি দ্বন্দ্ব সং নিকলৈত ভাষাক ও যাত্ৰা কোন নীতি-বৃদ্ধি সং কএল জযবাক প্ৰযোজন তাহি ৱিষয পৰ গম্ভীৰতা সং মংথন কৱ' পড়ত। স্বৱিৱেক। ও ত্বৱিত চাহী। উপেন জীক এহি কৱিতা-পাণ্ডুলিপিক নাথে, ও চৰ্চা হমৱা অভীষ্ঠ ভেল আ সংভৱ, একৱ শ্ৰেয তেঁ হম হিনকে দৈত ছিযনি। কাৱণ বতৌৱ কাব্য-প্ৰৱেশাৰ্থী ভাষা-ব্যৱহাৱক ও দাযিত্ব

हिनको रास्ता प्राथमिकताक डेग छनि। कविता भाषाहिक सवारी पर लोक धविक अपन यात्रा करैत छैक। जेहन सवारी, जेहन सवार तेहन यात्रा। तासँ मे गन्तव्य, कार्यबोध, युग आ जीवन-दर्शन समेत वहनमानी कहाँ, कोचमानी कहाँ, वा ड्र ।ाइभरी-प ायलटी तकर कर्म कुशलता, आ सभ तत्व अंतर्निहित छैक। वर्त्तमान कएटा अन्यान्यहुँ विषय जे कोनो कवि अपना साधनाक प्रक्रिया आ स्वविवेक सँ निरन्तर अपने विकसित करैत जाइत अछि। क्षमा तकरा यथावत "शेष्ठ मे कहि सकबँ, प्राय: एखनो हमरा बूतेँ संभव नहि। कए दशक सँ कविता लिखि रहल छी।

हिन्दी सन व्यापक भाषाक स्थापित नीक-नीक स्वनामधन्य कवि पर्यन्त अपन कविता-पोथी अपने छपा रहल छथि। विकाइ छनि तँ बेचि रहल छथि। कोनो ब्रांड प्रकाशक सँ खामखा छपरहि चाहैत छथि तँ ओकरा पृष्ठ मात्रा मे धन दैत छथिन। सरकारी पुस्तकालय सभ मे थोक मात्रा मे 'खपरा' देबाक रचन दैत छथिन, तखन अपन गुडविल दैत छनि। वा अपने अर्थ सक्षम कवि-लेखक अपना पुस्तकक संपूर्ण प्रकाशन-व्यय स्वयं करैत छथि। तेँ पाठक आग धनिके कवि टा केँ, ब्रांड प्रकाशन सभ मे पढ़ा सकबाक सौभाग्य परैत अछि । मैथिलीक स्थान निरूपण तँ सहजहिँ कएल जा सकैए। मैथिली मे तँ ओहिना प्राय: सभ टा साहित्य लेखक-कवि केँ अपना अपनी क' अपने छपबाक' पड़ैत छैक। महाकवि यात्रीजी पर्यन्त विशेष आर्थिक जीवित अछि पुवना किछु लोक आ यात्रीजीक स्नेही-श्रद्धालु पाठक समेत हमरा आढ़ ैक हुनक स्नेह-समीपी किछु वचनाकार केँ विसरल नहि हेतनि। पोथीक प्रसार आ विक्रय सँ

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒏𑒹𑒯𑒢 𑒅𑒠𑓂𑒨𑒧 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒻𑒏 𑒁𑒕𑒱 ! 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒏 𑒏𑒞’ ? 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒰𑒞𑓂 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒂 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒩𑒱 𑒂 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒯𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒟𑒰 𑒧𑒵𑒞 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒼𑒿 𑒞𑒿 𑒁𑒢𑒳𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒞𑒿 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒨𑒳𑒑 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒋𑒏𑒠𑒧 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱।

𑒋𑒯𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒏𑓂𑒨𑒰 𑒋𑒏 𑒙𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒨𑒳𑒫𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒆𑒩𑓂𑒖𑒰–𑒅𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑓀𑒡𑓂𑒨𑒰 𑒫𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒝𑓂𑒛𑒳𑒪𑒱𑒣𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒏𑒹𑓀 ‘𑒦𑒴𑒧𑒱𑒏𑒰’ 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒏𑒩𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒹𑒯𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒞 ? 𑒧𑒞𑒪𑒥 𑒖𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒹𑒯𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒯𑒋𑒞 ? 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑒿 𑒨𑒳𑒫𑒏 𑒠𑒳𑒮𑓂𑒮𑒰𑒯𑒮𑒲 𑒂 𑒏𑒱𑓀𑒔𑒱𑒞 𑒑𑒾◌𑓃𑒩𑒫𑒖𑒩𑒰𑒩𑓂𑒫𑒠𑒹𑒯 𑒥𑒳𑒗𑒨𑒪𑒰𑒯। 𑒍𑒢𑒰 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒏 𑒮𑒹 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒫𑒰𑒿𑒙𑒹 𑒡𑒋𑒨𑒼 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒨𑒹 !

𑒁𑒣𑒢 𑒋𑒯𑒢 𑒁𑒛𑓃𑒞𑒰𑒪𑒲𑒮 𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚𑒏 𑒁𑒛𑓃𑒞𑒲𑒮 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒝𑓂𑒛𑒳𑒪𑒱𑒣𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒅𑒣𑒹𑒢 𑒫𑒱𑒢𑒲𑒞 𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑓀𑒔𑒱𑒞 𑒁𑒮𑒧𑓀𑒖𑒮 𑒞𑒿 𑒦𑒹𑒥𑒹 𑒏𑒋𑒪। 𑒦𑒴𑒧𑒱𑒏𑒰–𑒪𑒹𑒐𑒢–𑒏𑒰𑒖 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒯𑒱 𑒨𑒳𑒑 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩𑒝 𑒏𑒋 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒟𑒧𑒱𑒏𑒞𑒰 𑒮𑒿 𑒞𑒹𑒿 𑒥𑒰𑒿𑒯𑒩𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒟𑒰𑒣𑒱 𑒨𑒠𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒦𑒫𑒱𑒭𑓂𑒨 𑒋𑒢𑒰 𑒮𑒼𑒗𑒰𑒿 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒯𑒼 𑒞𑒿 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼 ! 𑒞𑒰𑒯𑒴 𑒧𑒹 𑒦𑒰𑒑𑒪𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒢𑒫𑒞𑒴𑒩 !

𑒣𑒰𑒝𑓂𑒛𑒳𑒪𑒱𑒣𑒱 𑒣𑒜𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒔𑒏𑒼𑒯𑒲 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 ;𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒫𑒱 𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠 𑒖𑒲𑒏 “𑒬𑒩𑓂𑒓𑓂𑒐 𑒧𑒹 𑒏𑓀𑒔𑒏𑒵𑒯𑒮𑓂𑒏𑒵𑒯𑒼𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒿𑒠𑒯𑓂–𑒏𑒫𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒦𑒰𑒏 𑒕𑒱𑒙𑒏𑒻𑒞 𑒮𑒴𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧 𑒏𑒱𑒩𑒝𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫, 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒂 𑒂𑒬𑓂𑒫𑒮𑓂𑒞𑒱𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒋𑒪। 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞 𑒞𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒅𑒣𑒹𑒢𑒖𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒨𑒹𑓀 𑒅𑒠𑓂𑒑𑒰𑒩 𑒧𑒹।

𑒏𑒫𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩 𑒏𑒹𑓀 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒰 𑒧𑒹

रिशेष समायक ख्छि जे ओ रॅड़ स्पष्ठ, रॅ्ह्रियें ख्रा पूर्ण मनोयोग सं निखननिहें। हिनकव बचनाक रॅ्नियादी रर्तमान ख्रा सबोकावक उँद्गाशे जकां छनि। से मात्र रयसोचित उँच्छ्वास नहि, रॅक्षि खपन रचनरॅक्ष्मताक स्वरूप मे कहन गेन छनि।
सभ समयक नरीन पीढ़ी बचनाकावक सम्मुख खपन रर्तमाने प्रायः सरॅ सं प्रखब च्नौती बहैत छैक। खतीत ख्रा भविष्य तं ख'ढ़ मे बहैत छैक। बचनाकावक रूप मे खतीतक रास्तु ओकब नीक-रॅजायक रास्तु ओकबा उँत्तवदायी नहि रॅनाओन जा सकैए। यद्यपि ताही तर्क सं भविष्यक नेन ओकबा छोड़ि सेहो नहि देन जा सकैए। कावण समाजक भविष्य निर्माणक प्रक्रिया मे खन्य सभ सामाजिक कावण ख्रा प्रेवक पविस्थिति सभ समेत, समकानीन बचनाकावहुक पवोक्ष रूदा प्रत्यक्ष भूमिका बहरॅ करैत छैक। तें करिक दायित्व न' द' क' खपन समकानीनताक ज्ञान ख्राओव खनुभव के रिरेक सम्मत सम्वेदनाक रूप मे रिकसित करैत खग्रसाविते कव' पड़ैत छैक। जाहि सघनता ख्रा व्यापकता सं करि हृगक "खतीत-ताप खर्थात् जीरनक द्ःख-द्वन्द्व ख्रा यथार्थ कें रॅूझि-पकड़ि पररॅैत ख्छि ख्रा तकबा खपन बचना मे दूबगामी प्राणरत्ताक कनामेक शिल्प द' पररॅैत ख्छि, सैह ओकब प्रतिभाक सामर्थ्यक रूप मे दर्ज कएन जाएत छैक। कोनो बचनाकाव खपना कृति मे रॅहुत हृग धवि बहराक सहज ख्राकांक्षी होएतहिं ख्छि। तें हमबा जनैत मनुक्खक जिजीरिशा ख्राओव करिताक जिजीरिशा मे तात्विक किछु भेद नहि। करि जे खंततः मनुक्खे होएत ख्छि। तें दूनूक "ख्राशोक्ति खन्यानाश्रित होएछ।

रिनीतजीक करिता मोटामोटी रुमवा तीन খর্থভাযা সং রেগ্গিত খন্বভর ভেন। করিতা মে খপন কথনক কোটি, তকব পকড় খা প্রযোগক রিধি। কএটা বচনা তেঁ কংচকোহ জে কহন, সে ছৈক এখন। কএটা ভারান্বভূতি মে সংরেদনশীন হৃদা কথন মে খপেক্ষাক্তত রেঁজগহ। “করিতাক রিষয কথামেক সাঁচ মে কহি দেন গেনৈক খছি, জে স্বাভারিকে, ও করিতা রিশেষ খপন জাহি খন্বভর–নিষ্পত্তিক যোগ্য সক্ষম বহৈক খা উঁপযুক্তা, সে নহি ভ' সকনৈক খছি। সে খাগাঁ সফ্ফশীন সফনতা পারি জাগক তকব সামর্থ্য করিতা মে খরস্থ হনকৈত ছৈক। সে সাফ–সাফ। তেঁ ওতহ্ নিরাশা নহি, খাস্বস্তি ছৈক। করি খা করিতা দূনূ খপনা প্রক্তৃতিযেঁ রঁনিতে–রঁনিতে রঁনৈত ছৈক। তেসব জে খতি জ্বনংত খতঃ করিতাক প্রাণান্বভূতি রনা খন্বভর কেঁ পর্যন্ত করি কিছু তেহন খঁদাজ মে কহি জাগত ছথি জে ওকব রাঁছিত প্রভার পাঠকক মন পব ওএহ নহি পড়ৈত ছৈক জে স্বযং করিক খভীষ্ঠ ছনি। খগ্রতাগ মে কহন গেন সন খাভাস হোগত ছৈক। কাবণ জে করিতা মাত্র কন্ঠেঁটৈ নহি, কহরাক ছটা খা রংজনাক কনামেক স্তব পব কাজ কবরাক করিক সঙ্কুচিত ভাষিক ক্ষমতা সেহো থিক। রঁহ্ত সোচনা উঁতব খাধাব ভেটৈন জে, তকব যদি কোনো একটা কাবণ দেখন জায, তং ভাষাক খররোধ রঁন্নাএন। কোনো ভাষা স্বযং মে মাত্র ও ভাষা টা নহি খপিতু পূবা সংস্কৃতি হোগত ছৈক। ভাষা মাত্র ওকব রোঁধ রাঁ জ্ঞানে নহি, ওকব সংরেদনা সেহো হোগত খছি। খর্থাত কোনো প্রাচীন সমৃদ্ধ সংস্কৃতিক খভিরংজনা নেন ওহি সংস্কৃতিক ভাষাত্মক প্ররাহ মে প্ররেশ চাহী। সে প্ররেশ রুমবা রঁদ্ধিযেঁ ভাষাক নার টা সং সংভর হোগত

छैक। नार एकहि संग खेरैँया सं ओकव स्वस्थ रॅन समेत कएटा अन्यान्य क्षमतनताक माँग करैत छैक। करि सं करिता–रिषय, तहिना। तें भाषाक साधना, कोनो करिक कार्य–यात्रा कें स्वगम रॅनरैत छैक। स्वचाक करैत छैक। दोसव जे, जेना जीरन आओव युग यथाव्थ पविरर्तनशील होगत अछि , तहिना भाषाक भूमिका सेहो रॅदनैत छैक। अर्थात् भाषाक मिड़ाज।

उँपेन रिनीतजी कें भाषाक रूप मे एखन मैथिलीक संग रॅह्त रैंशी आयन–गेन कवराक प्रयोजन। तखनहि मैथिलीक सहज स्वाभारिक “शैली सं आमौयता आ पविचय रिकसित भ' सकतनि। भाषा कें अपन कार्य प्रयोगी अभियान मे रिश्वसनीय संगी रॅनरॅ' पड़तनि। सभ कें रॅनरॅ' पड़ैत छैक। मातृ भाषा हएरॅ, करिक सामर्थ्य तं होगछ ममदा कार्य सामर्थ्यो सेहो भ' जागक, से आरश्यक नहि। तें कोनो करिक रास्तु कार्यभाषाक सिद्धि अभीष्ठ। अन्वभर तं जीरनक निबंतव अंतवंगता आओव सवोकाव सं अपना स्वभारें चेतनाक अंग रॅनैत चनैत छैक। सैह वचनाकाव कें श्रेय तथा प्रेयक रिरेक भवैत वहैत छैक।

एहि टैका, ऊर्जरान–संरेदनशील करिक पथ प्रशस्त हेतनि से रिश्वास अछि। रॅह्त–रॅह्त स्नेह–“शुभाशंसाक संग, कानजयी करिताक आशा मे।



<u>वामभवोस कापड़ि ‘भ्रमव’, अध्यक्षः</u>

সাম্নাপ্রকাশিন, ননিতপ্বব
যাত্রা প্রসংগ– হ্বেন সাংগসং চীনমে ভেঁটঘাঁট



হমসভ হাগস্কূনক পাঠ্যক্রমমে হ্বেনসাংগকেঁ সম্বন্ধমে পঢৈত ছনহুঁ । চিনী যাত্রীসভ ভাবতধবি পহুঁচি বৌদ্ধধর্মক গ্রন্থসভকেঁ সংকনন কহ চীন নহ গেন ছন । রিকট রাট–খথক যাত্রী । মহিনোক সফব ।
হমসভ চীনক সাংস্কৃতিক বাজধানী সিযানমে খারি গেন ছী । রিজিংগসং দূঘংটাক উঁডানক বাঁদ কান্হিএ এত্ত খাএন বহী । খাসীন ৭ গতেসং নেপান প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠানক নৌ সদস্যীয প্রতিনিধি মন্ডন সাত দিনক চীন ভ্রমণমে খছি । সাত গতে কাঠমাডৌসং চাযনা গ্স্টের্ন এযবনাযন্সসং হমসভ ক্ষনমিংগ খাযন বহীখা ওত্তসং ওহী দিন রিজিংগ পহুংচন বহী বাতি ১১ বঁজে কবিবঁ । রিজিংগমে তীন দিন বহি ক কান্হি চীনক সাংস্কৃতিক বাজধানী সিযান খাযন বহী । খা খাও সিযানক বাঁসী বহন হ্বেন সাংগক রিশিষ্ঠ প্রতিত্বক খধ্যযনমে নাগন ছী ।
সবিপহুঁ খাগ একটা রিশিষ্ঠ ব্যক্তিত্বক প্রতিত্বসঁ

সাক্ষাকোবক সময ছল । হমব চ্নর্ব্নে গাগড মোনিকা (পশ্চিমী নাম) হমবাসভকেঁ ডা.সীন ৎৈম্পনমে নহ জা বহন ছনী । এতয ওকবে শৈক্ষমে সিযান জৌ ং গ খর্থাত হমসভ জকবা হ্রেন সাংগ কহৈত ছিঐ,ক রাঁসস্থান, হৃতিসভসঁ পবিচয কবারঁয নেন ও রৈসত্ত্র ছনীহ, মন্দিব রনৌন গেন জত্ত ও রৌদ্ধ হৃতিসভক চিনী খন্বরাদ কএনন্হি । হ্নক খন্বরাদ কএন কিছু হৃতি ওতহি বাখন খছি । ভাবতসঁ ঘ্বনাক রাঁদ তকোনে সম্রাট্দ্বাবা কএন গেন স্বাগত খা খন্য ঞিযাকনাপসভ দেরানপব নিখন ভর্য চিত্রসভ রতারি বহন ছন । প্রকোষ্ঠ ভিতব হ্রেন সাংগকেঁ ভর্য প্রতিমা সেহো স্থাপিত খছি । তহিনা রাঁহব কম্পাউন্ডমে সেহো হ্নক রিশান প্রতিমা বাখন গেন খছি । ও সিযানকে রাঁসী ছনাহ । তএঁ সিযানরাসী হ্নকা রহ্ত রৈসী সম্মান কবৈত খছি খা হ্নকা স্মৃতিকেঁ সম্বর্দ্ধন কবএমে দত্তচিত্ত ভহ নাগন খছি ।

১১৯ ঙা সন পূর্র সিযানমে রৈস্ট্র্ন হান ডাগনেস্ট্রী সময দিস সিল্ক কারোরাব ওতয হোগত ছন । পাছ গএহ সিল্ক র্যাপাব সিযান হোগত সম্দ্রতট ধবি পসবন । ঙা র্যাপাবিক রাঁট পাছ সিল্কবোডক নামসঁ প্রসিদ্ধ ভহ গেন । জখন চীনমে সন ২৩ দিস গস্ট্র্ন হান পিবিযডক সমযমে ভাবতীয র্বুদ্ধিজম চীনমে প্ররেশ পৌনক , সম্ভরতঃ ওকব রাঁট সেহো গএহ সিল্কবোডে ছন ।

তাংগ বাজরংশক প্রাবম্ভিক সময ৬২৯ সন দিস হ্রেন সাংগ ওএহ সিল্কবোড হোগত ভাবতধবিক যাত্রা কএনে ছনাহ —র্বুদ্ধ সাহিত্,দর্শন প্রাপ্ত কবরা নেন । ও সন ৬৪৩ মে সিযান ঘ্বনাহ খা রঁডকা ধিষ্ম নযযকভ এরঁনযমর্ যা

ম্লঁ ধ্বংসভল ঠাাওঁভি কঁ নির্মাণ ভেল ।
হ্বেনসাংগ সন ৬০০ মে জন্মল ছলথি , ৬১৩মে বৌদ্ধ ভিক্ষু বঁনলাহ্নি, ৬২৯ সঁ ৬৪৫ ধবি ভাবত ভ্রমণ কএলন্হি, ৬৪৫ সঁ ৬৬৪ ধবি বৌদ্ধ সাহিত্যক অনুবাদ কএলন্হি , সন ৬৬৪ মে হুনক দেহাৱঁসান ভ গেলন্হি ।
হমবাসভকেঁ বিস্তাবপূর্বক ওহি পৈগোডাকেঁ জানকাবী প্রাপ্ত ভেল । মনমে উঁঠল অনেকো জিজ্ঞাশাকেঁ সেহো শান্ত কববাঁক অবসব পৌলহুঁ ।
চীনমে দেখয নাযক বঁহুত চীজ অছি । আঠ হজাব ঙা.পূর্বধবিক অবশেষসভ সংগ্রহালযমে দেখলহুঁ তহ ২০০০ সঁ ৫০০০ হজাবধবি ঙা পূর্বক সাবুঁত আ বিকসিত সামগ্রীসভ দেখলাক বাঁদ সভ্যতা আ সংস্কৃতিক বিকাসমে চিনিযাঁ ভূমি অন্য ক্ষেত্রসঁ আগাঁ আ বেঁসী সম্পন্ন কিএ অছি সে আভাস হোগত অছি । আব বিশ্বাস হোগত অছি জে লিপিক বিকাস কিযা চীনেমে ভেল ছল ।
চীন ভ্রমণক এহি প্রসংগমে অনেকৌ ঐতিহাসিক তথ্যসভসং সাক্ষাকোব কববাঁক অবসব ভেঁটল । তখন নাগল চীন মাত্র সাতম্ আশ্চর্যক নেল মাত্র নহি, অপনা ভিতব অনেকৌ আশ্চর্যসং ভবল সামগ্রীসভ সংবক্ষিত ক বখলে অছি, জকবা দেখা ক এখন আর্থিক উঁপার্জন মাত্রে নহি অপন পবম্পবা আ সাংস্কৃতিক সম্পদাকেঁ বিশ্বকেঁ অগাডী সমধানি ক প্রস্তুত কববাঁক পৈঘ কাজসেহো ক বহল অছি ।
চীনক বিকাসক গতি ঠীকে প্রশংশাযোগ্য মানল জএবাঁক চাহী ।

যাত্রা প্রসংগ– হমব কন্পনাক সেতী..... রঁহত..... খরিচন !

রঁহ্ত পহিনে ডা. ধীবেন্দ্র একটা কথা নিখনে বহথি – হিচ্কৈত রঁহত সেতী । কোনো সন্দর্ভমে পোখবা খএনাক রাঁদ হ্নকা সেতী মনকেঁ ছনে বহনি খা তখন ওা কথা খাএন বহয । জনকপ্ববমে বহনিহাব ডা. ধীবেন্দ্রকেঁ হৃদযকে ঝকঝোড়ি দেরঁ রাঁনী নদী সেতীমে খাখিব কী রিশেষতা বহন হযতৈক – হম তহিযা খূরঁ সোচনে বহী । হমবা মোনমে সেতী তহিএ রঁসন – নহি, দেখরাঁক চাহী সেতীকেঁ ।

সময এম্হব কাফী সসবি গেন খছি । ডা. ধীবেন্দ্র সেহো খারঁ নহি ছথি । জহিযা ও পোখবা গেন ছনাহ সে পোখবা খারঁ নহি খছি । নীক রিকাস ভেনৈএ একবা । রিগতক চাবি দশকমে ওা পর্যটকীয গন্তর্যক খাকর্ষক ঠাম ভ২ গেন খছি । রহ্ত কিছু রঁদনি গেনৈএ । জঁ নহি রঁদনন খছি তঁ সেতী । নগৈএ একব র্যথা–কথা স্বননিহাব কেও নহি ভেনৈ । সেতীক কিন্হেব পব রঁসন পহাডী গাম সভমে গাওন জাগত নোকগীত সভমে সেতীক কথা খরস্সে খাএন হযত । হমবা এম্হবকা নোক সংস্কৃতিক খধ্যযন নহি খছি । ঝদা নদী সভক প্রভার জেনা নোকগীত সভমে খরৈঁত বহন খছি,এহি ক্ষেত্রক প্রসিদ্ধ নদী সেতী খরস্য সৌনাযন হযত ।

পোখবামে দেখরাঁ নাযক রঁহ্ত কিছু ছৈক । ঘ্মরাঁক হেত্ত জে কেও কাঠমাণ্ডূ খরৈঁত খছি পাঁচ–ছব ঘংটাক রস যাত্রাসঁ পোখবা খরশ্য খারিঁ জাগত খছি

। এত্ত দেখবাঁ যোগ ৰঁহ্ত কিছু ছৈক – খন্নপূর্ণাহিমান শ্রৃঁখনা, মাছাপ্মচ্ছ্রে (মাছক নাঁগবি সন) হিমান, চর্চিত ফেরা তান, মহেন্দ্র গুফা, ডেরিড্স ফৌন, সংগ্রহানয সভক সংগ ৰঁবাহী, রিন্ধ্যরাসিনী, ভদ্রকানী মঁদিব, রিশ্রশাঁতিস্তূপ, তীর্রতীয গাম, প্ববনা রাঁজাব খাদি ।

পাগ হয তঁ ছোটকী হরাগু জহাজ জে উঁডন খটৈনা রেসী নগৈত খছি, মে চহবি পোখবা নগব, ফেরা তান, হিমানী শ্রৃঁখনা সভকেঁ খানন্দ নঽ সকৈত ছী । সাগকিনসঁ পহাড়ৃ পব চনি সকৈত ছী । রর্ফমে চনবাঁক খানন্দ নঽ সকৈছী । রহ্ত কিছু ভঽ সকৈছ ক্ষদা সে ডনবমে । দিনহুঁ রিদেশী পর্যটক দর্জনোক সংখ্যামে খরৈঁত খছি । রষাতী মৌসম সভসঁ নীক হোগছ খকাসমে উঁডবাঁক নেন ওনা জনবঁবীসঁ জূন উঁত্তম মানন জাগছ ।

ক্ষদা হমবা নেন পতা নহি কিএ পোখবাক প্রথম দৃশ্যারনোকন সেতী নদীক হেত্ত নির্ধাবিত ছন । ডা. ধীরেন্দ্রক সেতীক খাসিযত খোজবাঁক নেন মনমে খনেকোঁ তবংগ উঁঠৈত বহন খছি । সেতী মানে নেপানীমে হোগছ উঁজ্জব । উঁজ্জব ধপ–ধপ নদী । হঁ,ঠীকে সেতী উঁজ্জবে পানিক সংগ রহৈত খছি । পোখবাক হৃদয প্রদেশ ভঽ কঽ রহৈত সেতী,খপনা ভিতব খনেকোঁ স্ ্ন্দব, ক্ষকপ প্রসংগ সভক একাঁত সাক্ষ্ ঁ। া । কর্ণানী প্রদেশমে রঁহঽ রাঁনী প্রসিদ্ধ হিমানী নদী সেতী জে রঁঝাঙ, ডোটী, ডডেনধ্বা ধনগঠী হোগত ভাবতকে উঁত্তব প্রদেশমে সন্হিযা জাগত খছি, জে মাছাপ্মচ্ছ্রে হিমান সঁ নিঃসৃত হোগত খপনা সংগে চূনা নেনে পোখবা উঁপত্যকামে প্ররেশ কবৈত দক্ষিণমে

त्रिशूली आ नारायणी मे मीलि जाइत अछि ।

तीन दिनक हेतु मात्र हम पोखरामे छी । सारा प्रकाशनक कार्यालय निरिक्षणक क्रममे एतु आएल होइतो हमर प्राथमिकता सेती दर्शन अछि । क्षे.शा. प्रबन्धक बिनामीक संग हम महेन्द्रपुल पहुँचैत छी । पुलक उत्तर आ दक्षिण दूनू कात भयंकर झारपात, गाछक बिच निरिह, असमर्थ, प्रताडित सेती..... । नगरमे ४० मिटर निचाँ कोनो बिधवाक स्वप्न, उजडल सिउँथ जका रहैत सेती..... । दूनूकातक किनहेरपर घर सभ बनल आ तकर शौचालयक नालीक दुर्गन्ध आ गन्दगी उझैत सेती.... । नगरक गन्दगीकें थाँबमे सहेजल पर बिरश सेती । अपराधी सभक कृतघ्नतकें सेहो अपन छातीपर नोकरीलेल बाँध्य सेती । निचाँ, भयानक, डेराउन, देखितो देहमे सिहकी पसरि जएबाँधविक रूप सेती....आ डा. धीरेन्द्रक सपनाक सेती !

नहि, हमरा नहि लगैत अछि डा. धीरेन्द्र तहिया एहि सेतीकें देखने होथिन्ह । मधेशमे बहलिहार, नदीक संस्कारकें अपन जीवन पद्धतिमे अंगेजनिहार व्यक्तित्व एहन रूप सेतीकें कोना सहि सकैत छलाह होइत ।

हम त पूरे निराश भऽ जाइत छी । हमर मान्यता आ धारणा सभ खण्डित होइत जा रहल अछि । हम अग्रता कऽ बिनामी जी कें पुछैत छिऐक – की गएह रूप छै सेतीकें ? ओ हमर आसय बुझैत अछि आ हडबडा कऽ बजैत अछि हैन, सर ! नहि,हजूर ! नगरमे प्रवेश करैत काल आ निकलैत काल ओ अपन स्वभाविक रूपमे बहैत अछि ।

হমবা কনেক ঠাঠ়স হোগত অছি । দক্ষিণ দিশসে স্রচ্ছ, উঁজ্জব পানি দেখনে ছী । ঝ্ঁগনীন–কাঠমাণ্ডূ রাঁষ্টমে নিচাঁ রঁহৈত উঁজ্জব সেতী তনহ্ মে ত্রিশ্বনীমে মিনৈত অছি । বাহ্যৌগ কএনিহাব সভ এহী স্রচ্ছ পানিমে বমন বহৈত অছি । নদীক রঁহৈত এ্রম সেতী– ত্রিশূনী–নাবাযণী ।

হম একব প্ররেশ দিশ রঁঢৈত ছী । রঁগবমে ও গহিবাওমে চন জাগত অছি । পোখবা নগবকে উঁত্তব পশ্চিম ভাগ জত্ত শহবক খন্ত হোগত অছি ওত্ত কে আও সিংহ প্বনসং সেতী নদীক স্বন্দব, কনকন, স্রচ্ছ, উঁজ্জব স্রকপ দেখন জা সকৈছ । ও ফেব নগবক রিচমে খরস্থিত বামঘাষ্ট পব দেখাব হোগত অছি । ফৈনগব ঝ্দা পানিক মাত্রা কম । ওত্ত স নগবমে রান্বক আপূর্তি কএন জাগছ । ঠিকেদাব সভক ভীড় । একষ্টা বাম মঁদিব অছি আ রগনমে শ্মশান ঘাষ্ট । নগবসং নিচাঁ নদী দিশ প্ররেশ করৈত কান একষ্টা দ্বাব রঁনন ছৈক – রৈক্ষণ্ঠদ্বাব । নদী আগাঁ জা ফেবসং উঁএহ সয মিষ্টব গহিঁবাও রঁনা স্রকপমে রঁদনি জাগত অছি, জকবা পৃথ্রী চৌক স নীক জকাঁ দেখন জা সকৈছ । তকবা কনেকে দক্ষিণ গেনা পব নগব সমাপ্ত ভঽ জাগছ আ সেতী জেনা সভ পীড় াসং ঝ্ঞ ভঽ স্রচ্ছন্দ, অপন স্রকপ আ গতিমে আরিঁ জাগত অছি ।

সেতী এখন পর্যষ্টন র্যরসাযী সভক দূধগবি গাগ ভঽ গেন অছি । বহ্যিষ্টগ সং নাখো কমাগ অছি । ঝ্দা নগব ভিতবমে ভযারহ আ ফ্রুপ রুপমে রহৈত সেতীকেঁ স্রচ্ছ,আকর্ষক আ স্বিক্ষ্ঁত রঁনএরাঁক প্রযাস হোগত কর্মা দেখন গেন অছি । নে সবকাব

নে ব্যবসাযী সভ আ নে উঁপমহানগবপানিকা । কএনহ্ হযতৈক ত হমবা জ্ঞাত নহি অছি । ওনা হম এত্ত তকব বত্তিযো ভবি ছাপ নহি দেখি পৌনহ্ঁ অছি ।

হম সেতীক নগব প্ররেশে স্থন পব ছী.....মঁত্রমুগ্ধ, স্তব্ধ আ বোমাঁচিত সেহো । বাস্তরিক সেতী অপন সম্পূর্ণ সৌন্দর্যসঁ এত্ত উঁপস্থিত ছথি । বর্ফক পানিসঁ বঁনন উঁজ্জব সেতী কন–কন নিনাদক সংগ গন্তব্য দিশে বঁহৈত । অপনা ভিতব বহন সভ গন্দগী, পীড় া, প্রেম, স্নেহ, মিনন আ বিছোডক সভকথা সভকেঁ সমেটৈনে বঁহৈত ।

সেতীক এহি স্বচ্ছন্দ, শাঁত বঁহাবঁমে কতহ্ উঁপেক্ষা, তিবস্কাব আ শোষণক পীড় া সেহো হম মহশূস কবৈত ছী । আ তখন কতৌ নে কতৌ ডা. ধীবেন্দ্রক হিচ্কৈত বঁহৈত সেতীপূর্ণ আকাবমে হমবা সোঝাঁ ঠাঢ ভ২ জাগত অছি । সংসাবক হেত্ত অপন সেবা দেনিহাবি সেতী জখন তাহী সংসাবী সভসঁ উঁপেক্ষা পবৈঁত অছি, শোষণমে পড় ৈত অছি ত আত্মা ছগোছিত হযবেঁ কবতৈ । সম্ভবতঃ সেতীক গএহ পীড় া চাবি দশীক পূর্ব ডা. ধীবেন্দ্র মহ্শূস কএন ছন হযতাহ..... ।

তএ হমবা আবঁ নগবমে পৈসবাঁমে ডব নগৈত অছি । অপন কন্পনাক স্বচ্ছ,স্বন্দব সহা আ স্বেত নদী সেতীক অগিনা বিদ্রূত রুপ দেখবাঁক সাহস হমবামে নহি অছি । হম ত এত্তহি বৈঁসি অপন কন্পনাক, অপন চিঁতনক, অপন রুচিক সেতীকেঁ নির্দ্বংদ, সাফ, প্রফুন্নিত বঁহৈত দেখ চাহৈত ছী । বস. এত্তহি বৈঁসি...

!

<u>संचाव एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरूपक अपेक्षा</u>

वि.स. १९६१ मे प्रावंभ भेन गोवखापत्र समाचावपत्रक प्रकाशनसं नेपानी पत्रकावितांक विधिवत शुरूआत मानन जएवाँक चाही । ऋदा गहो समाचावपत्र मात्र नेपानी भाषा आ नेपानी भाषी सभक हेतु पृष्ठपोषणक काज कवैत आएन अछि । ओ एक सय आठ वर्षक नेपानी पत्रकावितांक इतिहासेमे न्वकाएन अछि समस्त नेपानक पत्रकावितांक व्यथा कथा । वाजनीतिकर्मी नोकनि भने दू सय चानिस वर्षक गोवखासं न' नेपानक शाह वंशीय वाजघवाना धविक समय कानमे मधेशीवासीक शोषणक

ৰাঁত কবৈত হো, সহ তঁ ওা খছি এহি সমস্ত খরধিসঁ ন' এখন ধবিক গণতঁত্ব নেপানমে সমেত খরস্থা উঁএহ ছৈক খা ও চাহে বাজনীতিক, সামাজিক, খার্থিক হ্খএ খথরা সাহিহ এরঁ সংস্কৃতি ক্ষেত্র হ্খএ । মধেশী খান্দাননক ৰাঁদ জে কিছ খাঁগ্বব পব গন' ৰঁনা পবিরর্তনক সংকেত খাএন খছি সে ধন সন ।
হম পহিনে সংচাব ক্ষেত্রক ৰাঁত কবী । গোবখাপত্রক সয রর্ষসঁ উঁপবক গতিহাসমে পহিন ৰেঁব কোনো মধেশী কিঁরা মৈথিন নি.প্রধান সম্পাদকক জরারদেহ পদ পব জা সকনাহ খছি । এহিসে পূর্র সম্পাদক খা কাকা খধ্যক্ষক রাতে নহি খানে মহাপ্ররঁন্ধক । নীতি নির্মাণক তহমে মৈথিন কিঁরা মধেশীক পহঁচ শূন্য বহন খছি । গণতন্ত্রা নেপানক সংচাব কর্মী সভক হেঁজমে জরারদেহ পদপব মধেশী খারিঁ পওতাহ–তকব খাশা কম্ম খছি । নেপান টৈনিভিজনক মহাপ্ররঁন্ধক ভনে নোকবীক রবিগ্যতাক কাবর্ণে কোনো মধেশী তপানাথ শ্বক্না ভ' জাথ্ । এখনো সবকাবক মনোনযনমে সবকাবী সংচাব ক্ষেত্র মধেশী রিহিন খছি । কহিযো কান দেখএরাঁনেন সচিরক খধ্যক্ষতা ৰঁনা সংচানক সমিতিক সদস্যক রুপমে বেডিযো নেপানমে কোনো মংগন ঝা কিঁরা বোশন জনকপ্ববী ভনে নিযঞ্জ ক' দেন জাগত হো । নে খরধি পূর্ণ নে নিতিনির্মাণমে কোনো খহমিযত । নেপান টৈনিভিজনক হানতি সএহ ছৈক । সংচানক ধবিমে কোনো মধেশী নহি । ৰঁড কঠিনসঁ খা প্রাযঃ ঘনঘোব প্রসর রেদনাক সংগ বাসসক উঁচিতে প্রাপ্তকর্তা মহাপ্ররঁন্ধক পদ পব মহতোজী রৈসাওন গেনাহ খছি, হ্মদা কা.হ্ম.ক সংগ । বাসসক খধ্যক্ষক ক্ষর্সি সদৈরঁ মধেশী সভক হেত্ত খাকাসক তরেগন ভ'ক' বহি গেন খছি । প্রেস

কাউন্সিলক অধ্যক্ষ ধরি মধেশীক পহুঁচ এখন ধরি ভ' নহি সকল অছি । ৪১ বর্ষ পূর্ব গঠন ভেল প্রেস কাউন্সিল তহিযাসং আগধরি উএহ নেপালী ভাষী সভক হাথমে রাখল গেল আ বাত কএল গেল কাঠমান্ডূ আ তরাওক পত্র–পত্রিকা বিকাসক । পরিণাম ভেলৈ এখনো ধরি প্রেস কাউন্সিল মধেশক পত্র–পত্রিকাকেঁ পক্ষপাতপূর্ণ আ দ্বৈধ চরিত্র দেখা দরৈঁরেঁত বহলৈক অছি, সতরেঁত বহলৈক অছি । প্রস্থেকে নিয়ুক্তিমে এক–আধ গোটে মধেশী সদস্য রঁলা দেল জাগত ছথি, জনিকা সম্ভরতঃ চলিতো কিছু নহি ছল্হি ।

সরকারী সংচার ক্ষেত্র জাহিনে নেপানক আনোক্ষেত্র খাস ক' মধেশীক কব আ মানপোতক বকম নাগল ছৈকমে কোনো সমারেশী স্বরুপক অরধাবণা শাসক নোকনি কিএক নে বাখি সকনাহ । গণতন্ত্র নেপানক সংচার মংত্রী দ্বাবা গঠিত প্রেস কাউন্সিল নগাযত আন সংচার ক্ষেত্র মধেশী পদাধিকাবীসং কিএ শূন্য ভ' গেল অছি । নহি নগৈএ ? – সমারেশী মাত্র নাবা আ সহমতি–সমঝৌতাক রিষয ভ'ক' বহি গেল অছি । তকবা কার্যরুপমে পবিণত কবরাঁক কোনো প্রযোজন সত্তাপক্ষ নহি বুঝৈত অছি । সবকাব সূচনা আযোগ রঁলৌনক, এক্কাটৌ মধেশী কিএক বাখত । সবকাবী সংচাব মাধ্যম জাহিপব সভক অধিকাব মানল জাগত অছি, তকব ওা হানতি অছি তঁ নিজী ক্ষেত্রক বাতে কবৱঁ কী । এত্ত তঁ আব দুস্থিতি ছৈক । মধেশ, মধেশী, মৈথিল, মিথিলা আ মৈথিলীক চর্চ এহি নিজী পত্র–পত্রিকা আ সংচাব মাধ্যমক হেত্তে ফলৈনক গোলী জকাঁ গনামে অবঘৈত নহি ছৈক । তখন ব্যরসাযিক বাঁধ্যতারশ কিছু মধেশী, মৈথিল নোকনি কিছু সংচাব মাধ্যমক মহত্বপূর্ণ পদ পব আসীন বাখল

गेलाह अछि । नेपाली भाषा सभक नियंत्रणक ओहि प्रतिष्ठान सभमे हिनका सभकें की चलैत हयतनि– अनुमान कएल जा सकैछ ।
आब आबी साहित्य दिशि । नेपालमे तकोलीन प्रधानमंत्री चन्द्रशमशेर ज.र.बा. (१९०१–१९२९, प्रधानमंत्रीत्व काल) जखन नेपालमे राणाशासन विरुद्ध स्वगर्गाह्ष्ठ देखलनि आ चोराक्यकी राणा विरोधी साहित्य प्रकाशनक रोक महशूस कएलनि तं १९१३ ई. मे 'गोरखा भाषा प्रकाशिनी समिति' नामक संस्थाक गठन कएलनि । फरमान जारी कएलनि– कोनो साहित्य वा रचना एहि समितिक स्वीकृति विना प्रकाशित नहि हयत । एहि तरहें राणा प्रधानमंत्री जे अपन गप्पी रोचएरोलेन समिति रोना नियम चलौलनि ओ आगधवि परिवर्तित रूपमे अर्थात् पहिने गप्पी रोचएरो लेल आब मात्र नेपाली भाषा रोचएरो लेल तेहने जानसभ रिनल गेल अछि । ओ चाहे तकोलीन राजा महेन्द्रक हृपासं गठन भेल नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान होए आ अथवा २०२१ सालमे गठन भेल साझा प्रकाशन होअए ।
नेपालक जनसंख्या अनुसार मैथिली भाषीक संख्या १३ प्रतिशत अछि २०७४ सालक तथ्यांक अनुसार । दोसर भाषा अछि नेपालीक बाद । मुदा सरकारी संरक्षण विहिन अवस्था छैक । तहिना भोजपुरी, अवधी, थारु आदि भाषा छैक, जकरा प्रारंभ सं उपेक्षाक शिकार होए' पड़ल छैक । साहित्यक रक्षामे लागल प्रतिष्ठान सभ मे समेत ई अवस्था शासीकाल सं एखन धरि छैक जे दुःखद मानल जएबाक चाही । मधेशी सेहो संचारमंत्री भेल छथि, मुदा की कएलनि !
शुरुमे हम संचारक्षेत्रक बात कएल अछि । सरकारी

সংচাব ক্ষেত্রক গোবখাপাত্র, বেডিযো নেপান, নেপান টেনিভিজন খাদিমে নিযমিত সাহিহ্যিক প্রকাশন র প্রসাবণ হোগত খছি । কতেক স্থান নেপানী গতব ভাষা, সাহিহ্যক ছৈক । গোবখাপত্র এম্হব 'নযাঁ নেপান' পবিশিষ্ঠমে দেশক রিভিন্ন ভাষাক পৃস্ঠ দের' নাগন খছি । নীক প্রযাস থিক । হ্মদা দূ পৃস্ঠ সঁ এক ক' দেন ভাষাক ও পৃস্ঠ ভাষাক রিশিষ্ঠতাক খাধাব পব নহি সমারেশীক নামপব হক খধিকাবকেঁ কটৌতী ক'ক' দেন জা বহনৈক খছি । খানো পৃস্ঠপব ছাপরঁনা বচনা সভমে নেপানী ভাষাক নেখকক খতিবিঞ খান ভাষা–ভাষী নেখক কিঁরা উঁঞ ভাষাক সাহিহ্য সম্বন্ধী খানেখ ছাপরাঁমে পবহেজ কএন জাগত বহন খছি । গোবখাপত্রক শনিরাবীয পবিশিস্টাঁক খা মধ্পর্ক সাহিহ্যিক বচনাক প্রকাশন খছি । জঁ নিযমিত পাঠক ছী তঁ মহিনৌঁক রাদ কিছু মৈথিন কিঁরা মধেশী নেখকক বচনা খতি উঁপেক্ষিত রুপেঁ কোনো কোনমে খভবত । রস, তকবা রাঁদ উঁএহ দেখনে–পঢনে নাম খা ভাষা–বচনা সভ । কতরোঁ সমারেশীক রাঁত কেও ক' নিখএ–মজান খছি এহি পত্রিকা সভমে মৈথিনী, ভোজপুবী, খরঁধী, থাক ভাষা সাহিহ্যক বচনা র রিকাস যাত্রা সম্বন্ধী খানেখ ছাপানেরঁ । কহিযো কান 'ভনস্বন' কএনা পব ভনে খপরাদমে দেখি পডএ ।

নেপান প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠানক গপ ত খাব নিবানা খছি । নেপানী ভাষা রাহেক খান ভাষামে কাজ নহি কবরাঁক জেনা সম্পত খএনে হোএ একব পদাধিকাবী নোকনি । একতঁ এহিমে পহিনে তীসটৌমে এক মধেশী সদস্য খা উঁএহ কার্যসমিতি খর্থাত্ পবিষদ্ম বাখন জাগত ছনাহ । সে ভাষা, সংস্কৃতি, সাহিহ্য খাদি রিধাক খন্তবগত

। ताही मध्य किछु काज कएलाक बाद एक आधटा पुस्तक मैथिलीयोमे प्रकाशित भ' गेल अछि तँ ओ महान उपल्बधि भेल ठीक मैथिली लेल । एकठामसँ कोनो विभाग छपाइ आओर नहि गेल अछि । जनमे गठित आ असंगठित प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ पूर्वक गठनमे एकमात्र मधेशी मैथिली साहित्यकार अरसन परिषदमे राखल नहि गेलाह । तथापि प्रज्ञाप्रतिष्ठानक इतिहासमे पहिल बेर 'आँगन' नामक पत्रिका मैथिलीमे निकलल । किछु काज आगाँ बढ़ल बहुत, परिषद् अंग आ दीर्घअन्तरालक बाद जँ गठनो भेल तँ एहन जे शपथग्रहण केलासँ पूर्वे तहस-नहस भ' गेल । अदालत आ जनता दुनू द्वारा बहिष्कृत भ' क' बहि गेल अछि । तएँ एकरा सँ ने पहिने आशा छल, आ ने आब कोनो से तरक रास्ताक बाट देखल जा रहल अछि । कोनो डा. योगेन्द्र प्र. यादव जहिया एकर सदस्य रहथि तहियासँ 'सयपत्री' पत्रिकाक प्रकाशन शुरू भेल रहए जे वास्तविक रूपमे समावेशी स्वरूप रहैक ।

आब साझा प्रकाशनक गप करी । पहिने चर्च भ' आएल अछि राणा प्रधान मंत्री अपना विरुद्धक साहित्यकें प्रकाशनसँ रोकबाक हेतु १९१३ ई. मे जे गोरखा भाषा प्रकाशिनी समिति (नेपालके समीक्षात्मक इतिहास-डा. श्री रामप्रसाद उपाध्याय, (२०३.३), पृ-३१७ साझा प्रकाशन)क गठन भेल ओएह समिति तत्कालीन राणा प्रधानमंत्री जुद्धशमशेर द्वारा नेपाली भाषा प्रकाशन समिति (वि.स. १९९०)क रूपमे परिणत क' देल गेल तकरे उत्तराधिकारीक रूपमे २०२१ साल अगहन १७ गते साझा प्रकाशनक स्थापना भेल । एकरो संचालक लोकनि नेपाली छोड़िके आन भाषामे प्रकाशन करब सोचलो ने

ছনাহ ঋা সান্না প্রকাশন রিগত ৪৬ রর্ষসং নেপানী সাহিত্যক ভল্ডাবকেঁ রিনা কোনো সবকাবী ঋনুদান, ঋপনেসং কমা ক' ঋথরা ঘাটাঁ সহি ক ভরৈত বহন ঋছি । জং কি এহি সংস্থামে সবকাবক নগানী ৬০ প্রতিশত ঋছি তএ" একব ঋধ্যক্ষ নগাযত তীন সংচানক সবকাব দিশেসং মনোনিত হোগত বহনাহ ঋছি । হ্মদা কেও একবা নেপানী ভাষা সং ঋাগাঁ নারিঁ নেপানী জনতাক কবক ঋংশেসং চনৈত এহি সংস্থাকেঁ সমারেশী নহি রঁনা সকন । সহকাবীক কাবণেঁ ওা হৃষি মংত্রানয ঋন্তবগত ঋছি ঋা এহিসং পূর্রা রহ্তো মধেশী হৃষি মংত্রী হোগত বহনাক ঋছি । হ্মদা ঋায, নাভ শূন্য সান্না ঋধ্যক্ষক পদ পব ধবি কোনো মধেশীকেঁ নএরাঁক জরুবতি মহশূস নহি কএন গেন । ৪৬ রর্ষক রাঁদ এহিরেঁব পহিন মধেশী একব ঋধ্যক্ষ পদপব ঋাএন ঋছি । সান্নাক নেপানী ভাষা হ্মখী সম্পূর্ণ ক্রিযাকনাপকেঁ সমারেশী রঁনএরাঁক প্রযাস জাবী ঋছি । কিছু প্রকাশনক তৈযাবী চনি বহন ঋছি । মৈথিনী র্যাকবণ, মৈথিনী রানকথা, মৈথিনী কথা সংগ্রহ ঋাদিক প্রকাশন প্রগতি পব ঋছি তং মহাকরি রিদ্যাপতিক চিত্র প্রকাশিত ভ' চুকন ঋছি । ভোজপুবী, ঋরধী, থারু, নেপান ভাষা, তমাঙ ঋাদি ভাষামে কাজ কবরাঁক গৃহকার্য চনি বহন ঋছি । হ্মদা ওা সভ কাজ নগণ্য স্তপবপব ঋছি – নেপানী ভাষাক কাজক ঋাগাঁ ওত্ত নেপানী মানসিকতাসং ওঁরঁবি সকরাঁমে জে কঠিনাও নগরাঁক চাহী, নাগি বহন ঋছি । তথাপি কিছু সাহিত্যিক সংচানক নোকনি সমারেশীক রর্তমান রুপান্তবণ মে সান্নাকেঁ মাত্র নেপানীক ঘেবামে বাখরঁ ওঁচিত নহি, কহি ওঁদাবতা দেখা বহনাহ ঋছি । পবিণাম দূব তং ঋছি হ্মদা পহুঁচসং ততেক দুবো নহি ।

সাপ্তাহিক পত্রিকা 'গরিমা' এখন নেপালসঁ প্রকাশিত সাহিত্যিক পত্রিকামে অগ্রণী বনৈত অছি । ওকরো সমাবেশী স্বরূপমে নাওন জা রহল অছি । লেখকীয় ঘেরাকেঁ তোড়ৈত মধেশীক লেখক লোকনি দ্বারা মৈথিলী, ভোজপুরী, অরধী, থারু আদি সাহিত্য সম্বন্ধী আলেখ প্রকাশন প্রারংভ ভ' চুকল অছি, আহরান কএল জা রহল অছি ।

একর অতিরিক্ত নিজী ক্ষেত্রক পত্র–পত্রিকামে সমাবেশী রচনা সভক উঁপস্থাপন কমজোর অছি । রচনা', 'অভিব্যক্তি', শারদা' 'মির্মিরে,' 'নেপাল' নগাযতক পত্র–পত্রিকা সভমে নিযমিত রূপমে ভাষান্তরক রচনা, সাহিত্যিক সমীক্ষা সমালোচনা, অনুবাদ, মৌলিক আদি প্রকাশিত হোগত রহরাঁক চাহী । এহি সম্বন্ধমে উঁক্ত পত্র–পত্রিকা দ্বারা প্রযাস কএল গেল হো সে হমরা জ্ঞাত নহি অছি ।

এহি তরহেঁ দেখলাপর স্পষ্ঠ রূপেঁ দেখি পড়ৈছ জে রাজনীতিএ জকাঁ ভাষা, সাহিত্য কিংরা সংচারক ক্ষেত্রমে মধেশী উঁপেক্ষিত রহল অছি । ও রাজ্য দ্বারা তঁ সভসঁ রেঁসী অছিএ, নিজী ক্ষেত্র দ্বারা সেহো কম অরঁড়েবল নহি গেল অছি । পরিণাম ছৈক মৈথিলীভাষা, সাহিত্যমে রিভিন্ন রিধা আ ধারাক গতিরিধি চরম পর হোগতো নেপালী সংসার তাহিসঁ অনভিজ্ঞ অছি আ সমকালীন সাহিত্য যাত্রাক উঁপলব্ধি অপনে ধরি সিমিত ভ' ক' রহি গেল অছি ।

তহিনা সংচারক্ষেত্র এতেক আগাঁ রঁঢ়ি গেল অছি, হ্নদা এহি ক্ষেত্রমে অপন যোগ্যতা, ক্ষমতা প্রদর্শিত ক' সকরাঁক অরসর কোনো 'জ্ঞানী' মধেশী পারিঁ নহি রহলাহ অছি । ও ব্যক্তিক মাত্রে নহি রাষ্ট্রকেঁ ক্ষতি সেহো ভ' রহলৈক অছি । আ তএ" রাষ্ট্রিযতাক সূত্র

কহিযোকান ঠীন পড়ৈত বূঝি পড়ৈত ছৈক । খারৌ সমারেশী নহি ত ফেব কহিযা ! ! !



<u>কমলানন্দ ঝা,হিন্দী রিভাগ,সী.এম. ক◌ॉলেজ,দরভংগা</u>

<u>মৈথিলী সমস্যাক ঠৈহ লৈত কথা-সংকলন : উঁদাহরণ</u>

উঁদাহরণ

পুস্তকক নাম – উঁদাহৰণ
সম্পাদক – দেৱশংকৰ নৱীন
প্রকাশক – প্রকাশন বিভাগ
সূচনা ওৰ প্রসাৰণ মন্ত্রানয
ভাৰত সৰকাৰ
পৃষ্ঠ – ২৭৪
মূল্য – ২০০ টাকা মাত্রা

পছিনা চাবি ৱর্খমে কোনো পৈঘ ত্থা মহত্বপূর্ণ প্রকাশনসঁ মৈথিনীক তীন গোট কথা–সংকননক প্রকাশন মৈথিনী ভাষা নেন একটা শুভ–সংকেত মানন জা সকৈ'ছ। নেশনন ব্ুক ট্রস্টসঁ প্রকাশিত শিৱশংকৰ শ্রীনিৱাস দ্বাৰা সম্পাদিত মৈথিনী কথা সংচযন(সন্ ২০০৯) ত্থা সন্ ২০০৭মে তাৰানন্দ বিযোগী দ্বাৰা সম্পাদিত দেসিন ৱযনা(সন্ ২০০৭) পাঠকক বীচ নোকপ্রিয ভ'এ বহন ছন কি প্রকাশন বিভাগসঁ দেৱশংকৰ নৱীন দ্বাৰা সম্পাদিত টটকা মৈথিনী কথা–সংগ্রহ উঁদাহৰণ ছপি ক' ত্থাৰি গেন। প্রসন্নতাক বাত থিক জে উঁদাহৰণক প্রকাশনসঁ প্রকাশন বিভাগমে সাহিত্যিক বচনাক প্রকাশনক বাট ফূজন, জে স্বাগত যোগ্য ত্থছি।

উঁদাহৰণমে ননিতসঁ সিযাৰাম সৰস ধৰিকক ক্ষন ছত্তীস গোট কথা সংকনিত ত্থছি। এহি সংকননসঁ মৈথিনী কথা–সংসাৰক পৰিদৃশ্য স্পষ্ঠ হোগত ত্থছি। সংকননক কতোক কথা সমস্ত ভাৰতীয ভাষাসঁ কান্হী মিনান নেন তপেৰ ত্থছি, জে সংকননকর্ত্তাক চযনকৌশনক সূচক থিক। শ্রেষ্ঠ কথাকাৰ ৰাজকমন চৌধৰীক কথা ÷একটা চম্পাকনী একটা বিষধৰ' ঘাঘ মৈথিন সমাজক টেপ–টেংকাৰকেঁ ত্থদ্ভুত ৰূপেঁ ত্থনাবৃত্ত কৰৈত ত্থছি। সৰর্ণ

মৈথিনক গবীরী, ওহি গবীরীসঁ উঁপেন্ন দযনীযতা, আ তকব খোনমে দ্রঁকন রেঁচৗক শাতিব মাগ–রাঁপক ঘিনৌন আচবণ ঘনঘোব তনারক সংগ পাঠককেঁ ঝকঝোবৈত অছি। দশবথ ঝা আ হ্নকব ঘবরাঁনী অপন তেবহ রঁর্খক রেঁচী চম্পাক রিরাহ রাঁসঠ রঁর্খক বৃদ্ধ শেশি রাঁরূ সংগ কবেরাঁক ষড়্যংত্রাপূর্ণ যোজনা রঁনরৈঁত অছি। দ্নূ প্রাণীক গিদ্ধ দৃষ্ঠি শেশি রাঁরূঁক সম্পতি পব টকিন ছনি, জকব মনিকাগন রিরাহোপবান্ত হ্নক তেবহ রর্ষীযা চম্পা রঁনৈরাঁনী ছনি। অতিশযোক্তি সন নগৈরঁনা এহি ঘটনাক মর্মকেঁ ওএহ রূঁঝি সকত জে মিথিনাঁচনক রঁহ্রিরাহ প্রথাসঁ নীক জকাঁ পবিচিত ছথি। রীসম–একৈসম রিরাহক রাঁদ পতি অপন পূর্র পনৌ সভক ঝাঁপো রিঁসবি জাগ ছনাহ।

পত্রাকাবিতা দ্নিযাক মহত্বপূর্ণ আ সম্বেদনশীন পক্ষসঁ মাযানন্দ মিশ্রক কথা ÷ভএ প্রকট গ্রুপানা' সাক্ষাকোব কবরৈঁত অছি। মীডিযা–তন্ত্রা পব রঁনন সার্থক হিন্দী সিনেমা ÷পেজ থ্রী' জে কিও দেখনে ছথি, সে এহি কথাক মর্মকেঁ রেঁসী নীক জকাঁ রূ্ঝি সকৈ ছথি। শীঘ্রতাসঁ নামী পত্রাকাব রঁনি জাএরাঁক হড়রঁড় ীকেঁ কথামে কনামেক ঢংগসঁ একেবন গেন অছি। ক◌াঁবপোবেট দ্নিযাঁক রাঁদশাহ শ্যাম রোঁগনাক মূ্ল্যক খরঁবি সরঁসঁ পহিনে দেরাঁক হোড় নাগন অছি। পত্রাকাব নোকনিক নজবিমে ওএহ সভসঁ পৈঘ খরঁব অছি, দ্নিযামে কিছ ভ' জাউঁ।

নিনীবে মৈথিনীক সশক্ত কথানেখিক ছথি। হ্নকব কথা ÷রিধিক রিধান'মে কামকাজী স্ত্রীক সংঘর্ষকেঁ যথার্থতঃ দেখরাঁক, আ যথার্থক মর্মকেঁ কনামেক কৌধ সংগ উঁভাবরাঁক সফন চেষ্ঠা অছি। উঁষাকিবণ খান অপন কথা ÷ঝাগপত্রা'মে গ্রামীণ ঘরতীক অদম্য জিজীরিষাকেঁ র্যক্ত কবরাঁমে পূর্ণ সফন নহি ভ'

सकनीह। घोव आदर्शवादी आ कठोव अनुशासित पविवावमे पालित-पोषित चम्पा कॉलेजमे पढ़' चाहैत अछि, अपन मर्जीसँ विवाह कव' चाहैत अछि। मुदा आजीवन विवाह नहि कववाक घोषणा कवैत चम्पा स्वयंकें ओही पवंपवाक केंद्रमे समेटि लैत अछि। चम्पा विवाहक लक्ष्मण वेखा पाव कवैत ÷ओव भी ग़म हैं' कें आधाव मानि अपन व्यक्तित्वकें विस्तृत आयाम नहि द' पबैत अछि। मनमोहन झाक कथा ÷हफ़दा'मे स्त्री जातिक मोनभाव वँना प्रवृत्तिक वेखांकन खूब जमल अछि, मुदा वो एहि प्रवृत्तिक वर्णन क' स्त्री जाति कोन पक्षक उद्घाटन कवै छथि, से बूझब कठिन। कोनो व्यक्तिक स्वभावमे नीक आ खवाब दूनू भाव वहैत अछि। कथाक हेतु कोन तवहक भावक चुनाव कयल जाए, ई महत्वपूर्ण अछि। एहि चुनाव मैथिली कथामे स्त्री चेतनाक दर्शन कवा सकैत अछि।

स्त्री चेतनाक दृष्टिएँ प्रदीप बिहावीक कथा ÷मकड़ी' अपेक्षाकृत मेच्योर्ड आ बोल्ड कथा कहल जा सकैछ। बेवाबेवी कथानायिका सुनीता दू बेव विवाह कवैत अछि, दूनू बेव ओकव पति मवि जाइछ, मुदा ओ जिनगीसँ हावि नहि मानैत अछि। सिलाइ मशीन चला क' ओ गुजव-बसव कवैत अछि। एतबे नहि, ओ एकटा अनाथ आ बौक बच्चाक लालन-पालनक दायित्व ल' क' अपन व्यक्तित्वकें विस्ताव दैत अछि। कथामे मोड़ तखन अबैत अछि जखन ओ बौका समर्थ भेला पव सुनीताक स्वीकृतियेसँ सही, ओकवा गर्भाधान क' क' भागि जाइत अछि। सुनीताकें एहि बातक अपवाधबोध नहि छै, जे ओ बौका संग किऐ ई कृत्य

केलक, ओ देहक विवशतासँ पविचित अछि, मुदा बौकाक

ভাগি জেৰাঁক দংশ ওকবা ব্যথিত কবৈ ছৈ। দেৱশংকব নৱীনক কথা ÷পেঁপী' পতি–পত্নীক সম্বন্ধ রিচ্ছেদক পবিণামস্বৰূপ ৰেঁটীক মনোমস্তিষ্ক আ ব্যক্তিত্ব পব পড়ৈ ৰঁনা ক্ষপ্রভাব আ ৰেঁহিসাৰ উপেক্ষাভাৱকেঁ করুণাপূর্ণ ঢংগসঁ ব্যক্ত কবৈত অছি। ক্ষদা এহিমে সভটা দোষ স্ত্রী পব ফেকি দেৰ পূৰ্বাগ্ৰহ মানন জা সকৈছ। ওা সামাজিক সত্য নহি ভ' সকৈত অছি। ৰবিঠ্ঠ কথাকাব বাজমোহন ঝা অইত ক্ষশীনতাপূর্বক ÷ভোজন' কথাক ৰহন্নে স্ত্রীক ৰাঁহব কাজ কবৰাঁক রিবোধ ক' জাগত ছথি। বাজমোহনজীক দক্ষতা গএহ ছন্হি জে ওা সভ ৰাঁত কহিও ক' ও প্রগতিশীল ৰঁনন বহৈ ছথি।

বাজকমল চৌধবীক ÷একটা চম্পাকলী একটা রিষধব', ধূমকেতুক ÷ভবদ্‌তিযা', গংগেশ গুঞ্জনক ÷অপন সমাংগ'(ওা কথা দেসিল ৰঁযনামে সেহো সংকলিত অছি), তাবানন্দ রিযোগীক ÷পন্দ্রহ অগস্ত সন্তানৰেঁ' আ অশোকক ÷তানপূবা' এহি সংগ্রহক শ্রেষ্ঠ কথা মানল জা সকৈছ। ধূমকেতুক কথা ÷ভবদ্‌তিযা' ব্যক্তি স্বার্থ হেতু ভাওা–ৰঁহিনক পারন পাৰঁনিক দুরুপযোগ কবৰৈত দেখবৈত অছি। আজুক মন্মথ অদ্ভু পাৰঁনিকেঁ নহি ছোড়নক। ÷পন্দ্রহ অগস্ত সন্তানৰেঁ' রিযোগীক সফল বাজনীতিক কথা কহল জা সকৈছ। কথাক ওা নিষ্পতি একদম ঠীক নগৈত অছি জে সবর্ণক পার্টী এহি দুআবে জীতৈত বহল জে নিম্নজাতিক আর্থিক স্থিত ৰহ্‌ত খবাৰ ছল। স্বামীক পার্টী দাসোক পার্টী হোগছ। দোসব পার্টীক মাদে সোচৰ মূত্রকেঁ আমন্ত্রাণ দেৰ ছল। আওব নগং কিছ ত' আরাস আ বোজগাব ছীনি ৰেঁনন্না ৰঁনা দেৰ উঁচবস্থাক হেতু ৰাঁম হাথক কাজ ছল। দিল্লী–পংজাৰ প্ৰৱাসঁ নিম্নবস্থাক আর্থিক, সামাজিক স্থিতিমে স্বধাব

भेल। परिणामस्वरूप ओहि रचनामे आमेसम्मान आ राजनीतिक चेतनाक अंकुरण भेल। भक्तिकाव्यक उन्मेष आ ओहिमे निम्नजातिक करिक साहित्यक पृष्ठभूमिमे स्वप्रसिद्ध गतिशाकार गवहमान हरीरें द्दगनकानीन रिकास कार्यकें नक्षित केनि अछि। ÷पन्द्रह अगस्त सन्तानरें' कथाक रिनक्षणता रिहावमे रॅनन निम्नजातिक पार्टीक आमोनोचन थिक। कहरों नेन त' ओ पार्टी निम्नजातिक–निम्नरस्नाक छन, द्ददा अग पार्टीमे छन, प्रपंच, भ्रष्टाचाव, अपबाध आओव पाखण्ड पहिनहुँसँ तेजगव ओव धावदाव भ' गेन छन। कथाकावक गएह द्वन्द्व कथाकें गविमा प्रदान कबैछ। चाहक दोकान चनरैरॅना द्ददा रॅहुत प्रावम्भहिसँ सक्रिय मून्यपवक बाजनीति कबैरॅना हीबा महतोक धैर्य जखन संग छोड़ि दै छनि त' ओ पार्टी प्रद्दख रॅास्वदेर महतो पव रिफबैत कहै छथि-- बे निर्नज्जा, एतरों सवम कव ! जे फ़कर्म कबै छें से अपन कबैत वह, नेकिन एना समाजमे नर्ग कहिए जे फ़कर्मे कबरें ठीक छिऐ। एतरों बहम कव रॅहिं...।''

अशोकक कथा ÷तानपूबा' मध्यरगीय हिप्पाक्रेसीक घटाटैपकें ताव–ताव क' देरामे पूर्ण सफन भेन अछि। रिना कोनो उपदेशे आ नैतिक आग्रहक कथा मध्यरगीय फ़सित मानसिकताक दुक्ष भेदन कबैत अछि। कथानायक रिनोद रॅाबूँक संगीत–प्रेमकें हुनक पिता घोव अभाव आ द्ररिद्‌्रयक रीच जेना–तेना पूबा कबैत छथि, द्ददा जखन रिनोद रॅाबूँक पुत्रा संगीत सिखराक गच्छा प्रकट कबै छनि त' दुनू प्राणीकें साँप सूँघि जागत छनि। एहि दुखारे नहि, जे हुनका कोनो तवहक अभाव छनि। रॅल्कि एहि दुखारे जे संगीतक

স'খ হ্নক রেঁঠৌকেঁ রুপৈযা কমরেঁরঁনা মশীন নহি রঁনা সকত। জে দম্পতি কোনো রিষয পব কহিযো একমত নহি ভেন, এহি রিষয পব একমত ভ' প্বত্রাক এহি খর্ব্যারহারিক স'খ'ক কেঠ মোকরাঁক সাজিশেপূর্ণ যোজনা রঁনরঁএ নগৈ ছথি।

সংগ্রহক কিছ কথা জেনা খরকাশি, খযনা, খান সাহেরঁ, জংগনক হবীন খাদি যথার্থক মোহমে শ্বষ্ক গদ্য রঁনি ক' বহি গেন খছি। এহিমে কিছ কথা ততেক সবনীগ্নত ভ' গেন খছি জে ও নরসাক্ষব হেত্ত নিখন কথা রঁ্নি পডৈ+ছ। এহন কথা সভক মূন সংবচনা গতিবৃত্তামেক খছি। যদ্যপি গতিবৃত্ত কোনো কথাক সীমা নহি হোগছ, হ্মদা জখন কোনো কথা ঘটনাক স্থূন খা তথ্যামেক রিরবণ ঠৌ দৈছ, কথামে সমষ রা ক্ষণক মর্ম নহি খারিঁ পরেঁছ, ত' এহন গতিবৃত্ত নিপঠ গদ্য রঁনি ক' বহি জাগছ। যথার্থ কোনো কথাকেঁ রিশ্বসনীযতা দেরাঁক রঁদনামে ওকবা ভীতবসঁ সংরেদনা নিচোড়ি খনৈত খছি, কথাকেঁ প্রমাণিক রঁনেরাঁক ফেবমে পড়ন নহি বহৈত খছি। কথাকাব বমেশ খপন কথা ÷নাগদেসমে খযনাক ব্যরসায'মে খতিযথার্থ খা গতিবৃত্তক ফ্রেমকেঁ তোড়ি প্রতীক রা ফেঁটেসীক প্রযোগসঁ কথা রঁ্নরাঁক প্রযাস ত' কেননি, হ্মদা কথাক রিন্যাসমে একবসতা খারিঁ গেন। এহি ফ্রেম হেত্ত হমবা নোকনিকেঁ বাজস্থানী কথাকাব রিজযদান দেথা(দ্রিধা) খা হিন্দী কথাকাব ঙঁদয প্রকাশি (রাবেন হেস্টিংগস কা সাঁঢ়) খাদিকেঁ পঢ়রাঁক চাহী। হিনকা নোকনিক কথা যথার্থক ফ্রেমকেঁ তোড়ি যো ক' যথার্থ রঁনন বহন খছি।

মৈথিনীমে প্রকাশিত ঙঁঞ্জ তীনূঁ কথা সংকননসঁ মৈথিনী কথাক প্রসাব বাষ্ট্রীয স্তব পব ভ' বহন খছি,

एहिमे दू मत नहि। मुदा उक्त संकलनकें पढ़ि आम पाठकक बाद एहन बनत जे मैथिलीमे कुल एहन तीस-चालीस गोट कथाकार आइ तक भेलाहे। कारण तीनू संग्रहमे कथाकारक सूचीमे अद्भुत साम्य अछि। कथा पढ़ि बुझना जाइछ जे कथा चयनमे कथाक अपेक्षा कथाकारकें महत्व देल गेल अछि। ई कहब सर्वथा अनुचित जे संकलनक कथाकार महत्वपूर्ण नहि छथि, मुदा अन्य श्रेष्ठ कथाकें सेहो प्रकाशमे अएबाक प्रयास हेबाक चाही। हमरा लोकनि ई नीक जकाँ जनै छी जे मैथिलीमे श्रेष्ठ कथाक अभाव नहि अछि। किन्तु प्रकाशनक अभावमे पत्रा-पत्रिाकाकें छानि मारब कठिनाहे नहि समय-साध्य कार्य थिक। वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक पहिचान भने श्रेष्ठ कविक रूपमे छनि, मुदा हुनकर मैथिली कथा ÷चितकबड़ ी गजोविया' आ ÷रूपांतर' कतोक दृष्टिएं महत्वपूर्ण अछि। रेणुजी सेहो मैथिली कथा लिखलनि अछि। ई दीगर बात थिक जे बादमे ओ हिन्दिए टामे लिखए लगलाह। ÷नेपथ्य अभिनेता' आ ÷जहाँ पमन को गमन नहीं' आदि नीकसँ हुटि क' लिखल गेल कथा थिक। ÷उदाहरण'मे कथाक प्रकाशन वर्ष आ सन्दर्भक अनुपस्थिति खटकैत अछि। समय-सीमा जनने विना कोनो कथाक सम्यक मूल्यांकन सम्भव नहि। नवीनजी सदृश दक्ष आ अनुभवी सम्पादकसँ ई आशा नहि कएल जा सकै छल। एहि कमीकें पूरा करैत अछि हुनकर चौदह पृष्ठीय भूमिका। सम्पादक मैथिली कथाक सीमा आ सम्भावनाक विस्तृत पड़ताल अपन एहि भूमिकामे केलनि अछि। मैथिली कथाक इतिहासकें बुझबा लेल ई भूमिका निश्चित रूपें रेखांकन योग्य अछि।



डॉ पानन झा , ग्राम-हरौली, हनेश्वरस्थान।
एम. ए. (मैथिली), सन्त साहेब रामदास पर डॉ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' केर निर्देशनमे पी.एच.डी.। संप्रति बी. डी. जे. कॉलेज, गढ़बनैलीमे मैथिली विभागाध्यक्ष।

सन्त साहेब रामदास

साम्प्रदायिक अर्थें मैथिली साहित्यमे सन्त कविक रूपमे साहेब रामदासक प्रमुख स्थान अछि। पचाढ़ी स्थानक महंथ बंशीदासजीक सानिध्यमे कवीश्वर चन्दा झा हिनक पदावलीक संकलन कए १९०१ ई. मे प्रकाशित कएने छथि। एहि पदावलीमे परिचयक क्रममे कवीश्वर चन्दा झा लिखैत छथि:

"शिरलोचन मुख शिर सन जखन, साहेब रामदास तिथि तखन।
प्रबल नरेन्द्र सिंह मिथिलेश, शासित छल भल तिर्हुत देश॥ "

अर्थात् ११३२ साल (१७४६ ई.) मध्य महाराज नरेन्द्र सिंहक राज्यकालमे ई रहथि।

छादनसँ न्याय-तत्त्व-चिन्तामणि कर्ता गंगेश उपाध्याय वंश कुलोद्भव साहेब रामदास "हस्वमौल" ग्रामक (जरैल

पवगना, जिना- मधुबॅनी) एक मैथिन ब्राम्हण छनाह। हिनक छोटे भागक नाम फ्नाबाम ओर एकमात्र प्राणसमप्रिय पुत्र 'प्रीतम' छननि। हिनक पूबानाम साहेबॅ बाम न्मा छननि, फ्दा अन्य सन्त करि जकाँ ओहो अपन नामक आगाँ भक्ति-भारनासँ 'दास' शब्द जोड़ि नेननि। साहेबॅ बामदासक पदारनीमे नगभग ४१+ टा पद संकनित अछि। एहि करिता मध्य ओ अपन नाम साहेबॅबाम, साहेबॅदास, साहेबॅ, साहेबॅजन सेहो बखने छथि।

साहेबॅ बामदास आबम्भहिसँ भक्ति-प्रवण रिचाबक नोक छनाह। ओ सदिखन ओश्विबहिक ध्यान-चिन्तनमे नीन बहैत छनाह। सन्यास ओ बाँदमे ग्रहण कएननि। एहि पाछाँ एकटा दुखद घटना घटित भेन- हिनका एकमात्र पुत्र 'प्रीतम' छननि। ओर अधिक समय दुखित बहए नगनाह। उँरारस्था छननि। एकबेंब प्रीतम अधिक दुखित भए गेन छनाह। हिनक जीरनक अन्तिम कानक भान भए जएबाँक काबणेँ साहेबॅबामदासरिकन भए कानए नगनाह। मबण शय्या पब बहितहुँ प्रीतमकेँ एहन दुःखद दृश्य देखि नहि बहन गेननि आर ओर अपन पितासँ पुछैत छथिन, "बाँबूजी! अपने एतेक रिकन किएक भए बहन छी? पिता उँत्तब दैत छथिन "पुत्रक आरश्यकता एहि चतुर्थ अरस्थामे होगत छैक, से तँ अपने हमबा पहिने छोड़ि कए जाए बहन छी, तेँ ओ सोचि-सोचि खिन्न चित्त भए ब्याकुन भए बहन छी"। पुत्र प्रीतम प्रत्युत्तब दैत कहैत छथिन, "ओ संसाब असाब थिक, क्षणभंगुब थिक, एहिमे स्त्री-पुत्र-पुत्री केओ अपन नहि थिक, ओ सभटा अनित्य थिक, माया-मोह थिक।

सभटा स्वार्थमूलक थिक तेँ एहि सभसँ माया-मोह बखनाग अनुचित थिक। हम तँ अपनेक भगवान्-भजनमे विघ्न मात्र छलहुँ, आब अपने निर्विघ्नपूर्वक भगवान्-भजनमे लागि जाउ"। एतेक बात कहैत देवी प्रीतमक प्राण-पखेरू उड़ि गेलनि। साहेब रामदास विकल भए कानि-कानि कए गाबए लगलाह-

"प्रीतम प्रीति तेजि भेल परदेसिया हो"
साहेब रामदासकेँ प्रीतमक देहावसानसँ बड़ आघात लगलनि, प्रीतमक उपदेशकेँ धारण कए परिवार-समाजकेँ तिलाञ्जलि दए सन्यास ग्रहण कए लेलनि।

पुत्र-वियोगक कारणेँ ओ पक्का वैरागी भए गेलाह। गामसँ बाहर भए जंगले-जंगल एकान्तमे वास कए भजन-कीर्तन करए लगलाह। गामक लोकसभ बहुत दिन धरि पाछाँ कएलकनि जे अपने घुरि जाउ, हमहु सभ अपनेक पुत्रक समान छी, अपनेकेँ कोनो कष्ट नै होएत। मुदा साहेब रामदास पर तकर कोनो प्रभाव नहि पड़लनि, उनटे जतए लोकक आवागमन देखथिन्ह, स्थानकेँ बदलि पुनः निर्जनस्थानमे चलि जाइत छलाह। लोकसभ किछु दिन धरि पाछाँ तँ केलकनि, मुदा अन्तमे हारि-थाकि कए जे ओ आब पक्का वैरागी भए गेल छथि, तेँ हिनका आब तंग नहि कएल जाए, विचारि कए पाछाँ करब छोड़ि देलकनि।

वैरागी भेलाक बाद ओ देशक बहुतो भागमे भ्रमण कएलनि। भजन-कीर्तनक संग योग-साधनामे सेहो लीन भए गेलाह। योग-साधनामे सिद्धि प्राप्त कएलाक

पश्चात् केओटीक निरासी रॅनिवामदासजीसँ दीक्षा ग्रहण कएननि। दीक्षा ग्रहण कएनाक पश्चातो ओ अनेक धर्म स्थानक भ्रमण करैत रहनाह। कहन जाइत अछि जे साहेरॅबामदास दल्ड-प्रणाम करैत-करैत जगन्नाथपुरी तक गेनाह। रॅाटमे रॅड़ कष्ट सहए पड़ननि, घाओ भए गेननि, घाओमे पीरॅ आरि गेननि, तदा दल्ड-प्रणाम ओइ नहि छोड़ननि। दल्ड-प्रणाम करैत-करैत जगन्नाथपुरी तक गेनाह। जकर प्रमाण हुनकहि एक करितासँ भेटैत अछि-

साधुके संगत धरि गुरुक चरण धरि,
आहे सजनी हमहु जाएरॅ जगरनाथहि रेकी।
नहि केओ अन्नदाता संग नहि सहोदर भ्राता,
आहे सजनी माँगि भीखि दिरस गमाएरॅ रे की।
सन्त जग भेन भाना गुरुआ अठारह नाना,
आहे सजनी ओहिठाम केओ नहि छोड़ ाओन रे की।
सिंह दररॅाजा देखि मन मोर न्नरॅधन,
आहे सजनी ओहिठाम पंडा पंडा रॅंत रॅजारन रे की।
साहेरॅ जे गुनि धुनि रॅसनहुँ सिर धुनि,
आहे सजनी जगत जीरन निअराएन रे की।

गुरु रॅनिवामदास तथिया वामपुरक एक महामो शिष्य छनाह तथा अपन गाम केओटा (केओटी)क घनघोर जंगनमे योग साधना करैत छनाह। ओ योग साधनामे निष्णात् छनाह। कहन जाइत अछि जे गुरुक रिना रास्तरिक ज्ञान असम्भर अछि आ तेँ साहेरॅबामदास एक योग्य गुरुसँ दीक्षा नएअ, योग-साधनामे सिद्धि प्राप्त कए नेननि। योग क्रिया पर सिद्धि प्राप्त कए नेनाक रॅाद

জন্ম-মৰণসঁ ছুটকাৰা পাৰি জেৰাক পূৰ্ণ বিশ্বাস ভএ গেলনি, সে গুৰুক প্ৰসাদহিসঁ। মোক্ষ প্ৰাপ্তিমে আৰ কোনো সন্দেহ নহি ৰহি গেলনি, জে জীৱনক চৰম লক্ষ্য থিক। ৰ্নিৰামদাস হিনক দীক্ষা গুৰু ছলথিন, তকৰ প্ৰমাণ হিনকহি এক কৰিতাসঁ ভেটৈছ-

"গুৰু ৰ্নিৰাম চৰণ ধৰি মাথে, সাহেৰ হৰি অপনাযা হৈ।
অৰ তৌ জৰা-মৰণ ছুটি জৈহে, সংশয সকল মেটাযা হৈ"।

হৃষ্ণক ও অনন্য ভক্ত ছলাহ। জগন্নাথপুৰীক যাত্ৰাক ক্ৰমমে ৰাটহিমে হিনকা স্বযং ভগৱান শ্ৰী হৃষ্ণ দৰ্শন দেলে ছলথিন। আৰ তঁ ও হৃষ্ণক ধ্যানমে দিন-ৰাতি লাগল ৰহৈত ছলাহ। সমাধিস্থ কালমে তঁ দুনিযাঁক কোনো ৰস্তুক ধ্যান নহি ৰহৈত ছলনি, ধ্যান ৰহৈত ছলনি তঁ এক মাত্ৰ ভগৱান শ্ৰী হৃষ্ণ। জন-শ্ৰুতি তঁ ওহো অছি জে ভগৱানক ভজনক কালমে জখন ও নাচ কৰৈত ছলাহ তঁ স্বযং ভগৱান শ্ৰী হৃষ্ণ সেহো উপস্থিত ভএ সংগ দৈত ছলথিন।

সাহেৰ ৰামদাস অনেক তীৰ্থ-স্থলক দৰ্শন কএলনি। সাংসাৰিক মোহ-মাযাকেঁ ত্যাগি ৰৈৰাগী ভএ গেলাহ, মুদা মিথিলা ভূমিকেঁ নহি ত্যাগি সকলাহ। এক পদমে ওহ লিখৈত ছথি, "মিথিলা নগৰী তোৰ দান ৰ্নিৰ্ণ সাহেৰ হোওছু ৰ্হোন" তথা দোসৰ পদমে "সাহেৰ কৰুণা কৰএ শীশ ধুনি মিথিলা হোওছু অক্লৰি"। এহি পদ সভসঁ মিথিলাক প্ৰতি হিনক প্ৰেমক সহজ অনুমান লগাওল জাএ

सकैत अछि। धन्य ओ मिथिला भूमि ओर धन्य महामो साहेबँ रामदास।

पहिने कहि चुकल छी जे ओ जंगलमे एकान्त वास कए भजन-कीर्तन कएल करथि। जतए-जतए ओ जाथि ताहि-ताहि ठाम ओ अपन खन्ती गाबि कुटियाक निर्माण कए एक पाकड़ि क गाछ अवश्य रोपि दैत छलाह। हिनक अनेक जगह पर योगमढ़ी छल आर सबँहि ठाम ओ पाकड़ि क गाछ अवश्य रोपि दैत छलाह। हिनक अन्तिम योगमढ़ी दरभंगा जिलाक 'पचाढ़ी' गाममे अछि, जे पूर्वमे वृँढ़वनक नामे विख्यात छल। एहू ठाम पाकड़ि क गाछ रोपने छलाह, जे अद्यावधि वर्तमान अछि। पल्लवित एहि गाछक शोध मानवशास्त्री लोकनि एखनहु् कए रहल छथि।

कमलाक तट पर स्थित पचाढ़ी गामक वन आर वृन्दावनक तुलना करबँ कठिन भए जाएत छल। वृन्दावनसँ एको रत्ती कम शोभा पचाढ़ी (वृँढ़वनक) नहि छल। मोरक नाच, स्वगाक गान, नाना प्रकारक वन्यजीव प्राणीक निर्भय विचरण करबँ, भिन्न-भिन्न लता-पुष्पसँ शोभित वनक दृश्य लोककेँ सहजहि आकृष्ठ कए लैत छल। एहि स्थानक प्रशंसामे कवीश्वर चन्दा झा लिखैत छथि—

"पाकड़ि वृक्ष सएह कमला तट जएह भजन कुटी विश्राम।
चन्द्र स्वकवि मन धरम परमधन धन्य पचाढ़ी ग्राम" ॥

पचाढ़ी स्थानक शोभा आबँ नहि रहि सकल, जे पहिने

एक निर्जन स्थान छल, ताहि ठाम आब ग्राम अछि, खेती-पथारी कएल जाइत अछि। लोक तँ आब निशानो नहि बहि गेल अछि, तथापि साहेब रामदासजीक समाधि-स्थलक चारूकात मन्दिर सेहो एक-दू नहि छओ-सातटा अछि। सभमे भोग-रागक व्यवस्था, पूजेगरीक संग-संग सहायकक व्यवस्था सभ मन्दिरमे फराक-फराक अछि। लगभग पाँच कट्ठा जमीनमे फुलवाड़ी अछि। आगत-अतिथिक स्वागत यथासाध्य एखनहु कएल जाइत अछि। साहेब रामदासक नाम पर एकटा संस्कृत महाविद्यालय अछि, जाहिमे निर्धन छात्रकेँ स्थान दिससँ वहबाक व्यवस्था ओ मुफत भोजनक व्यवस्था कएल जाइत अछि।

पचाढ़ी स्थान मिथिलाक वैष्णवशाली स्थानमेसँ सर्वप्रमुख अछि। एकर वैष्णवशालीक पाछाँ राजदरभंगाक महत्वपूर्ण योगदान अछि। तत्कालीन दरभंगा मिथिलेश नरेन्द्रसिंह निःसन्तान छलाह। हुनक पत्नी रानी पद्मावती अतिथि-सत्कार, पूजा-पाठक निमित्त ३०० (तीन सए) बीघा जमीन पचाढ़ी स्थानकेँ दानस्वरूप देने छलथिन। मुदा कहल जाइत अछि जे साहेब रामदास ओहि जमीनक दान-पत्रकेँ प्रज्ज्वलित अग्निमे फेकि देलखिन। शिष्य लोकनिकेँ भिक्षाटन वृत्तिसँ आगत-अतिथिक सेवा सत्कार करए पड़ैत छलनि, जाहिसँ ओ लोकनि तंग आबि गेलाह आर फलस्वरूप ओर दान-पत्र पुनः महारानीसँ प्राप्त कए चुप-चाप राखि लेलनि, जे एखनहु धरि सम्पत्तिक रूपमे विद्यमान अछि। किछु जमीन भक्त लोकनि रेतियामे सेहो देने छथि। योग्य शिष्य सभ एहि सम्पत्तिकेँ बढ़ाए लगभग हजार बीघा बनाए देलनि। सरकार किछु जमीनपर सिलिंग लगाए देलक, मुदा व्यवस्थापक

নোকনি অধিকাংশি জমীনকেঁ বন-বিভাগকেঁ দএ গাছ-বৃক্ষ নগরাএ দেননি। অপেক্ষাকৃত এখনহ্ ওা স্থান সমৃদ্ধ অছি।
সাহেবঁবামদাস এক সিদ্ধ পুরুষ ছলাহ আর তেঁ হিনকামে চমকোবিক গুণ স্বাভাবিক অছি। চমকোবসঁ সম্বন্ধিত অনেক কথা হিনকাসঁ জ্ড়ল অছি, জাহিমে এক চমকোবক উল্লেখ কববঁ হম উচিত বুঝৈত ছী, জে হিনক অন্তঃ সাক্ষ্যসঁ জ্ড়ল অছি।
বাজা নবেন্দ্র সিংহক সময়মে পটনাক কোনো মুসলমান নবাবঁ মিথিলাপব আক্রমণ কএ দেনক। বাজা নবেন্দ্র সিংহক সেনা ও নবাবঁক সেনাক বীচ ঘোব সংগ্রাম ভেল, জাহিমে অপাব ধন-জনক ক্ষতি ভেল ছল, মুদা বাজা নবেন্দ্র সিংহ ওহিমে স্বয়ং বীবতাপূর্বক যুদ্ধ কএননি আর শত্রু সেনাকেঁ পবাজিত কএল। ওহি সময়মে মহামো সাহেবঁ বামদাস নবেন্দ্র সিংহক বিজযী হোএবাঁক কামনা স্বরূপ শ্রীকৃষ্ণসঁ প্রার্থনা কএননি-
"সাহেবঁ গিবধব হবহ্ নবেন্দ্র দ্ঃখ,
কবহ্ সুখিত মিথিলেশহি বে কী"।

এহিপব ক্রুদ্ধ ভএ নবাবঁ হিনকা বন্দী বনাএ পটনাক কাবাগাবমে বন্দ কএ দেননি। সাহেবঁ বামদাস যোগবলেঁ সভ দিন গংগা-স্নান, সংধ্যা-তর্পণ, পূজা-পাঠ আদি গংগহি তটপব কএল কবথি। কাবাগাবমে বহিতহুঁ ওা ক্রম হিনক নিবন্তব চলৈত বহলনি। লোক সভ হিনকা গংগা তটপব সভ দিন দেখৈত ছলনি। নবাবঁকেঁ কোনা নে কোনা এহি বাতক জানকাবী ভেটি গেলনি। নবাবঁকেঁ তঁ বিশ্বাস নহি ভেলনি তথাপি হ্নকা অপন কর্মচাবী সভপব সংদেহ ভেলনি আর ওহ অপনেসঁ কাবাগাবমে তালা লগাএ

দেননি। তথাপি সাহেবঁ বামদাসক গংগা-স্নানক ক্রম নহি টুটননি। অন্তমে নবাবঁ সাহেবঁবামদাসক পএবমে বেঁড়ী বান্হি কাবাগাবমে তানা নগাএ দেননি। সাহেবঁবামদাস তক্ষেণহি করুণাদ্র ভএ অপন আবাধ্য দেব শ্রী কৃষ্ণকেঁ পুকাবননি-

"অবঁ ন চাহিএ অতি দেব প্রভুজী,
অবঁ ন চাহিএ অতি দেব।
বিপ্র-ধেনু-মহি বিকন সন্ত জন,
নিযো হৈ অস্তবগণ ঘেবি"।

গবিতে ছনাহ কী পএবক বেঁড়ী ও হাটকক তানা আদি সভ টুটিকএ খসি পড়ন। নবাবঁ আশ্চর্য চকিত ভএ গেন। ও মহামোজীক পএবপব খসি পড়ন। সাহেবঁবামদাসসঁ ক্ষমা মাঁগনক আ২ বাঁদমে সসম্মান স্বাগত কএ মিথিনা পহুঁচাএ দেন।

এহি তবহক কএক গোষ্ঠ চমকোব অছি, জেনা বাজা বাঘব সিংহক সমযমে বাজদবভংগামে প্রেত-বাঁধাকেঁ শান্ত কববঁ, মাটিক ভীতকেঁ হাঁকবঁ। কৃষ্ণাষ্টমী, জন্মাষ্টমী আদি উৎসেবক অবসবপব অধিক সাধু-সন্তক ভীড় জুটনাক বাঁদো থোড়বঁহু সামগ্রীমে ভোজনক অবসবপব ভন্ডাবামে কোনো কমী নহি হোএবঁ আদি কতোক চমকোবিক ঘটনা সভ অছি, জে হিনকাসঁ জুড়ন অছি। এহি সিদ্ধ পুরুষক চমকোবিক ঘটনাসভসঁ নোকক হিনকা প্রতি কতেক শ্রদ্ধা ছন সে সহজহি অনুমান কএন জাএ সকৈত অছি।

সাহেবঁবামদাস বৈবাগী বৈষ্ণব-ভক্ত-কবি ছনাহ। পদক বচনা কববঁ হিনক সাধন ছন ঘদা সাধ্য তঁ একমাত্র ছন ভগবান বিষ্ণুক ভজন-কীর্তন কববঁ। কহন জাগত অছি জে ওহ অপনহি পদক বচনা কএ সভ দিন

ভগবানক ভজন–কীর্তন কএল করথি। ওহ ভক্তিমার্গী ছলাহ আহ তেঁ ভক্তি–ভাবক সিদ্ধাংতক অনুরূপ পদক রচনা কএল করথি। ভক্তি ভাবক সভ রসক পদরূপমে রচনা কএলনি, মুদা প্রধান রস "মধুর" রস সএহ অছি। ভগবানক কোনো এক রূপক ওহ আগ্রহী নহি, সগুণ–নির্গুণ দুনূ রূপমে মানৈত ছলাহ, জে অপন মনোগত ভাব কবিতামধ্য ব্যক্ত কএলে ছথি।

"নির্গুণ সগুণ পুরুষ ভগবান, বুঝি কহ্ সাহেবঁ ধরগহু ধ্যান"।

"ধৈরজ ধরিঅ মিলত তোর কন্ত, সাহেবঁ ও প্রভু পুরুষ অনন্ত"।

সাহেবঁ রামদাসক যদ্যপি একমাত্র পদাবলী উপলব্ধ অছি, জাহিমে ৪৭+ টা পদ সংকলিত অছি। মুদা ওএহ পদাবলী হুনক যশকেঁ অক্ষুণ্ণ বনাএ রখবামে সভ তরহেঁ সমর্থ অছি। ভক্তিক প্রায: সভ বিষযপর পদক রচনা কএলে ছথি, যথা– কৃষ্ণ–জন্ম, বাৎসল্য, বংশীবাদন, সংযোগ–শৃংগার, রাস–লীলা, ঝুলোসের আদি। রাসলীলা পরক জেহন পদ সভক ও রচনা কএলে ছথি সে প্রায: মৈথিলীমে আন কেও কবি নহি কএলে ছথি। হিনক রাস–লীলা পরক পদক বিবেচন স্বতংত্র রূপেঁ কএল জাএ সকৈত অছি। কৃষ্ণ–প্রেমক অনন্যতা, ভক্তি প্রবণতা ও প্রসাদ গুণ হিনক কাব্যক মুখ্য গুণ কহল জাএ সকৈত অছি। ঋতুগীত, দিন–রাতিক ভিন্ন–ভিন্ন সমযোপযোগী পদক রচনা, জেলা–প্রাতী, সারংগ, ললিত, বিহাগ আদিক রচনা কএল করথি।

মিথিলা পঞ্চদেবোপাসক সভ দিনসঁ রহল অছি। সাহেবঁ রামদাসক রচনামে সেহো ভক্তিক বিবিধ–রূপক দর্শন

লোগত অছি। প্রত্যেক তঁ ও অনন্য ভক্ত উমাপ মহেশ আনো-আন দেবী-দেবতা পবক পদক বচনা কএনে ছথি। হিনক হনুমানক ফাগু পবক কবিতা দেখন জাএ সকৈত অছি। একবা সন্ত নোকনিক ফাগু সেহো কহন জাএ সকৈছ-

"প্রবন অনিন কপি কৌত্তক সাজন নংকা কএন প্রযাণ।
কনক অটাবী কএ অসবাবী ছাড়থি অগনিক বাণ॥
জবএ নংক কপি খেনএ হগুআ, উড়এ গগন অংগাব।
ধুঁআ বাঢ়ি অকাসহি নাগন দিবসহি ভেন অন্ধাব"।

হিনক বচিত একটা মহাদেবক গীত সেহো অছি, জকব উল্লেখ ডা॒. বামদেব ঝা অপন "শৈব সাহিত্যক ভূমিকা" নামক গ্রন্থমে কএনে ছথি-

" প্বছগত হিবগত গৌবা বটিয়া হে বাম।
কহ হে মাগ, জাগত দেখন মোব ভংগিয়া হে বাম॥
হাথ ভসম কেব গোনা হে বাম।
ববদ বে চঢ়ি কোন নগব গেন ভোনা হে বাম"॥

বিবহিণী ব্রজাঙ্গনাক মনোদশাক এক বিনক্ষণ রূপ এহি ঠাম সেহো দেখন জাএ সকৈত অছি:

"কমন নযন মনমোহন বে কহি গেন অনেক।
কতেক দিবস ভএ বাখবঁ বে হুনি বচনক টেক॥
কে পতিআ নএ জাএত বে জহঁ বস্ব নন্দনান।
নোচন হমব সতওননি বে ছতিআ দএ শান॥
জহঁ-জহঁ হবিক সিংহাসন আসন জেহিঠাম।
হমহ্ মবর্ হবি-হবি কৈ মেটি জাএত পীব॥
আদি"

মিথিনাক সঙ্গীত পবম্পবা অতি প্রাচীন ও সমৃদ্ধ অছি।

সংগীতক বচনা তঁ রিদ্যাপতি ও হ্নকহুঁসঁ পূর্ব হোগত আএন অছি, মুদা বহস্যবাদী সংগীত–কাব্য–বচনা নবীন ৰূপমে আএন অছি, জকব প্রবর্তক সাধ্–সন্ত নোকনি ভেনাহ। জাহিমে সন্ত সাহেব বামদাসক স্থান অগ্রগণ্য অছি। হিনকা নোকনিক বচনাক প্রভার প্রায়ঃ সভ বস্ত্রপব পড়ন। হিনক প্রায়ঃ সভ করিতামে বাগক উল্লেখ অছি। অতঃ এহিপব সংগীত–শাস্ত্রক অনুকূল শোধ–কার্য কএন জএবাক আরশ্যকতা অছি।

সাহেব বামদাস পবম বৈবাগী স্বচা সাধ্ ছনাহ, ভক্ত ছনাহ আ২ তেঁ হিনক ভাষাপব সধ্কুবী ও তকোন প্রচনিত ব্রজভাষাক কিছু প্রভার সেহো পড়ন অছি, তথাপি হ্নক জে পদারনী উপনব্ধ অছি সে মৈথিনী সাহিত্যকেঁ সমৃদ্ধ বনএবামে অপন মহত্বপূর্ণ স্থান প্রাপ্ত কএনে অছি। ভক্তি–ভারনাক সবনতা ও সহজতাক দৃষ্টিএঁ হিনক ভাষা সবন ও সহজ অছি। ভক্তি–ভারনা পবক এহন করিতা মৈথিনী–সাহিত্যমে প্রায়ঃ দুর্নভ অছি। হিনক ভক্তি পবক গীত এখনহু মিথিনাক গাম–ঘবমে বুঢ়–বুঢ় ান্বসক ঠোবপব অনুবর্তমান অছি, জকব সংকনন কবব পবম আরশ্যক অছি।



স্বশাঁত ঝা, গ্রাম+পত্রানয– খোজপ্বব, মধ্বঁনী (রিহাব), হিনকব পিতা শ্রী পদ্মনাবাযণ ঝা 'রিবঁচি' তাহি সমযক মিথিনা মিহিব আ২ আযরির্তক প্রসিদ্ধ স্বাঙ স্তঁভকাব। পঠন–নেখন রিবাসতমে ভেটৈন ছন্হি স্বশান্তজীকেঁ। সম্প্রতি স্বশাঁত জী গঁডিযা ন্যূজমে ক◌ॉপী বাঙটৈব ছথি,–মিথিনা রিশ্বরিদ্যানযসঁ স্নাতক(গতিহাস), তকব বাঁদ আঙআঙএমসী(ভাবতীয জনসংচাব সংস্থান) জেএনযূ কৈম্পসসঁ টৈনিরিজন পত্রকাবিতামে ডিপ্লামা(2004–05) ওকববাঁদ কিছু পত্র–পত্রিকা আ২ ন্যূজ রেরঁসাঙটৈমে কাজ,দূবদর্শনমে নগভগ সান ভবি কাজ। সংপ্রতি গঁডিযা ন্যূজসঁ জ্ডু◌়ন|

<u>কী বঁনিবাজ গঠ◌় মিথিনাক প্রাচীন বাজধানী অছি ?</u>

হমব গাম খোজপ্ববসঁ কবীবঁ এক কিনোমীটৈব দক্ষিণ দিস বঁনিবাজপ্বব নামক একটা গাম ছৈক। ঙ গাম ঝধ্বঁনী জিনা ঝখ্যানযসঁ কবীবঁ 34 কিনোমীটৈব উঁত্তব–পূবঁ দিসামে ছৈক। এতয এক টা প্রাচীন কিনা ছৈক জে 365 রিঁগহামে পসবন ছৈক আ২ একব দেখভান ভাবত সবকাবক প্ববাতত্ত্ব রিভাগ ক২ বহন অছি। কিনাক খ্দাঙ ভেনাপব এহিমে সঁ মৃদভাঁড আ২ রিভিন্ন তবহক বঁস্তু নিকননএ আ২ সোনাক সিক্কা সেহো ভেটৈনৈক। কিনাক বাঁহব জে বৌঁড নাগন ছৈক তাহি কে ঝতাবিঁক ঙ কিনা মৌর্যকানীন হ্থক চাহী। কিনা কে কাত কবোটৈমে জে গাম ছৈক ওহিমে ভাঁতি–ভাঁতিক কিংরদন্তি

पसबन छैक, किनाक रिषयमे। जतेक नोक, ततेक तबहक रॉत। किछु नोकक कथन छन्हि जे ओ किना बाक्षस बाज रॅनिक बाजधानी छनै –आ२ किछु गोटो तँ बाजा रॅनिकेँ देखरॉक सेहो दाबा केनन्हि अछि। साँझ भेनाक रॉद नोक सभ किना दिस जाएसँ रॅचए चाहैत छथि। भ२ सकैत अछि जे ओ अफराह सबकाबी कर्मचाबी नोकन्हि फैनेने हुए–काबण जे ओकबा सभकेँ ड्यूटी कबएमे कनी आबाम भ२ जाएत छैक। नोक सभ बाजा रॅनिक डबे किछु चोबरॅ२ नञि चाहए छैक।

किना अद्भुत छैक। किनाक देरॉब भग्नारस्थामे बहितहु अपन यौरनक याद दिआ बहन अछि। किनाक देरॉब एतेक चाकब छैक जे ओहपब तँ आसानी सँ एकटा बथ निकनियै जाएत हेतैक। देरॉबमे नागन ओंटा दू-दू फीट नमहब आ२ नगभग गोटेक फुट चाकब छैक। चीनक देरॉबसँ कम मोटे नहि हेतैक ओ अपन यौरन कानमे। किनामे एकटा पोखबि छैक, ककबो नहि बूझन छैक, जे कहिया खुनेनय ओ पोखबि। बूढ़–प्बानक कहबॅ छन्हि जे ओ पोखबि बाक्षसक कोबन अछि। किछु नोकनिक तँ ओ मत छन्हि जे एहिमे एकटा स्वबंग सेहो छैक–जकब बस्ता कतओ आब निकनैत छैक। स्बनैत छियैक जे बाज–पबिराबक सदस्यकेँ आपतकानमे रॉहब निकानैक नेन एहन स्वबंग रॅनायन जाति छनैक। किनाक कात–कबोटमे जे गाम छैक तकब नाम सेहो ऐतिहासिक। किनाक पूरॅ दिस छैक फुनरॅबिया नामक गाम आ२ ओकब रॅगनमे सटैन छैक गढ़ ी गाम..जे आरॅ अप्रभ्रंशी भ२ क२ गबही भ२ गेनैए। किनाक पछीम दिस छैक बमणी पछी

নামক গাম আছি ওহিসঁ সটল ছৈক ভুপঙ্গী। কিনাক দক্ষিণমে ছৈক বিগ্রমশেব, জতয প্রাচীন সূর্য মংদিবক খরশেষ ভেটলৈএ। ও বাঁত ধ্যান দেবাক জোগ জে সূর্য মংদিব দেশমে বড্ড কম জগহ ছৈক। বনিবাজ গঢ়্ক খুদাগু পহিল বেব 1976 মে ভেলৈক, জখন কেন্দ্রমে সাগত ড্া কর্ণ সিংহ এহি বিভাগক মংত্রী ছলাহ। গঢ়্ক উঙ্খাবক লেল মধ্বনীক পূর্ব সাংসদ ভোগেন্দ্র ঝা আছি ক্ষদান সেনাক অধ্যক্ষ সীতাবাম ঝাক বড্ড যোগদান ছন্হি। কিছু গতিহাসকাব নোকনিক কহবঁ ছন্হি, জে ও কিনা বংগানক পানরংশীয বাজা নোকনিক কিনা ভঽ সকৈত আছি বা ফেব মৌর্য সম্রাটৈক উত্তবী স্ববক্ষা কিনা ভঽ সকৈত আছি। ওনা কিছু গোটৈক কহবঁ ছন্হি জে একব বড্ড সংভারনা- জে ও কিনা মিথিনাক প্রাচীন বাজধানী সেহো ভঽ সকৈত আছি।

একব পাছূ ওঽ ও তর্ক দৈত ছথিন্হ, জে এখ্নকা জে জনকপ্বব আছি, ওঽ নব জগহ আছি আছি ওত্তুক্কা মংদিব ১৮হম শতাব্দীমে গংদৌবক মহাবাণী দুর্গাবতীক দ্বাবা বনবাঁএল গেল আছি। বিদ্বান নোকনি জনকপ্ববক ঐতিহাসিকতাক সংদিগ্ধ মানৈত ছথি। হমবা এহি সংবংধমে একটা ঘটনা মোন পড়্য বহল আছি। ১০ সাল পহিনে পটনামে বৈশানীক একটা সজ্জন হমবা ভেটনাহ আছি কহনন্হি জে বনিবাজ গঢ় বাস্তবমে মিথিনাক প্রাচীন বাজধানী আছি। হুনকব কহবঁ ছনন্হি জে হ্বেনসাংগক একটা বিরবণক হতাবিক পাটনিপ্বত্রঁস একটা খাস দূবী পব বৈশানী আছি, বৈশানীসঁ এতেক দূবীপব কাঠমাংডূ (কাষ্ঠমংডপ) আছি আছি কাঠমাংডূক দছিন আছি পূব দিশামে মিথিনাক প্রাচীন বাজধানী ছৈক। এখ্নকা জনকপ্বব ওহি

मापदंडपर सही नञि उँतरि रहल अछि। पता नञि एहि राँतमे कतेक सत्‍ता छैक। एकर अलावा, रामायणमे सेहो मिथिलाक प्राचीन राजधानीक संदर्भमे किछु संकेत छैक। रामायणक संकेत सेहो रँनिराजप्वरकेँ मिथिलाक राजधानी होएबाँक संकेत कय रहल अछि।

सांसद भोगेन्द्र झाक अनुसार, राजा रँनिक राजधानी महारँनीप्वरम भय सकैत अछि, जे दक्षिण भारतमे छैक। सभसँ पैघ राँत ई जे पूरा मिथिलामे रँनिराजप्वरसँ प्रमाण कोनो किला नहि अछि, जे मिथिलाक प्राचीन राजधानी होएबाँक दारा कय सकए। किलाक भीतर उँरँड़-खाँरड़ मैदान छैक, जे राजमहलक जमीनक भीतक धँसि जएबाँक प्रमाण अछि। एतय एकाध जगह खुदाओ भेलैए आर ओहीमे काफी कीमती धातु आर समान भेटलैक अछि। अगर एकर ठ़ंगसँ खुदाओ कएल जाय तँ नञि जानि कतेक रहस्य परसँ आवरण उँठि जायत। एखन धरि सरकारक तरफसँ कोनो ठोस प्रयास नहि भऽ पाओल अछि, जञिसँ रँनिराज गढ़क प्राचीनताकेँ दुनियाक सोझाँ रखबाँक कोसीस कएल जाय। रँस एकटा कामचलाऊ सड़कसँ एकरा रँगलक गाम खोजप्वरसँ जोड़ि देल गेलैक आर गतिश्री कय देल गेलैक।

यदि रँनिराज गढ़क खुदाओ ठ़ंगसँ कएल जाय आर एतय एकटा नीक संग्रहालय रँना देल जाय तँ रँठ़ि या काज होयत। मिथिलांचलक ह्रृदयस्थलीमे रहबाँक कारणेँ एतय मिथिला पेंटिंगक कोनो संस्थान वा आर्ट गैलरी

সেহো খোনন জাঃ সকৈত খছি। একটা নীক(চাকব খাঃ চিক্কন হাণ্ডরে) ক সংগ নীক রিজ্ঞাপন রঁনিবাজগঠ়ক পর্যটৈক সভকেঁ নিগাহমে খানি সকৈত খছি। এহিসঁ গনাকাক গবীরী দূব কবরাঁমে সেহো মদদ ভেটৈত। যদি একবা রঁ্হ্মা সর্কিটৈ রা বামাযণ সর্কিটৈক খংগ রঁনা নেন জায তঁ খাব উঁত্তম।

মৈথিনী, মৈথিন সংস্কৃতি খা মিথিনা বাজ্য

সমাদ পব মিথিনা খা রিহাব সঁ সংরঁধিত নেখ পঢি কয ওতয চনৈ রঁনা রিকাসপবক গতিরিধি কে খঁদাজ নাগি পারৈঁযে। গম্ভব হমব এহেন মৈথিন মিত্র কে সংখ্যা মে রঁড তেজী সঁ রৃঁদ্ধি ভেনয জে রিহাব যা মিথিনা কে রিকাস কে রাঁবে মে জানয ত চাহৈত ছথি নেকিন জখন সমাদ পব মৈথিনী মে নেখ পঢ়য কহরঁনি ত দিক্কত ভয জায ছন্হি। হ্নকা মৈথিনী রাঁজয ত খরৈঁ ছন্হি নেকিন পঢ়য নহি খারৈঁ ছন্হি। ও হিংদী রঁড খাবাম সঁ পঢ় নৈত ছথি নেকিন মৈথিনী পঢ়য মে দিক্কত কে রজহ সঁ ও মৈথিনী সাণ্ডটৈ পঢ়া তে নহি ছথি। গ্র রঁড্ড পৈঘ সমস্যা খছি।

দেখন জায ত খমূমন জে কোনো ভাষা কে খপন নিপি জীরিত ছৈক ওকবা পঢ়ৈ রঁনা কে কোনো দিক্কত নহি হোণ্ডত ছৈক–কাবণ জে ও রঁচ সঁ ওহি ভাষা কে ওহি নিপি মে পঢ়ৈ কে খভ্যস্ত হোণ্ডত খছি। জেনা তমিন, তমিন মে নিখন জাণ্ডত খছি, ত একটা ওঁসত

অংগ্রেজীদাঁ তমিনভাষীযো কে ওকবা পঢ়ৈ মে কোনো দিক্কত নহি হোঙত ছৈক। নেকিন কল্পনা কক কি অগব তমিন কে দেৱনাগবী মে নিখন জাঙ ত কী হোযত ? ও আদমী তমিন ত বাঁজি নেত-চূংকি ও ওকবা অপন মায যা পবিৱাব কে অন্য সদস্য কে মুঁহ সঁ সুনি ক সিখনক অছি-নেকিনি ওকবা পঢ়ৈ মে বড্ড দিক্কত হেতৈক। ওকবা দেৱনাগবী নিপি সেহো সিখয পড়তৈ। হমব ভাষা সংগে যেহ দিক্কত অছি। মৈথিনী কে অপন নিপি ত ছৈক, নেকিন ও দেৱনাগবী মে নিখন জা বহন অছি-জাহি নিপি মে হম সব সিৰ্ফ হিংদী পঢ়ৈ কে আদী ছী। অধিকাংশ মৈথিনী বজৈ বনা কে মৈথিনী ত আবৈ ছন্হি-কিযেক ত ও স্বনি কয সিখনে ছথি নেকিন ও পঢ়া নৈ সকৈ ছথি, কিযেক ত পঢ়ৈকে আদত হুনকা হিংদী কে ছন্হি।

ঙ বাত স্বীকাব কবয মে হমবা কোনো সংকোচ নহি জে হমব ভাষা হিংদী কে ভাষাঙ সাম্রাজ্যবাদ কে শিকাব ভেন অছি। ঙ সংকষ্ট মৈথিনিযে টা সংগ নহি, বল্কি হিংদী ক্ষেত্র কে তমাম ভাষা জেনা অৱধী, ভোজপুবী, ব্রজ, বাজস্থানী সবকে সংগে ছৈ। দেখন জায ত ভোজপুবী কনী নীক অবস্থা মে অছি কাবণ জে একবা বাজাব সেহো সহযতা কয বহন ছৈক। নেকিন জেনা-জেনা শহবীকবণ বঢ়া বহন অছি দেশ মে ছোট-ছোট ভাষা আ বোনী কে স্পর্শ অমে ভয বহন অছি। দেশ কে একামেক স্বকপ কে বিকাস কে নেন হিংদী আ অংগ্রেজী অনিবার্য বনন জা বহন অছি। হনাঁকি দক্ষিণ কে প্রাংত আ উত্তব মে বংগান যা উড়ীসা অহি স বহুত হদ তক মুক্ত অছি-ওনা সংকষ্ট ওতহু কম নহি।

হমব ভাষা মৈথিনী জনসংখ্যা কে খাকাব, ভৌগোনিক স্থিতি, প্রাচীনতা খা ব্যাকবণ কে দৃষ্ঠিকোণ সং কোনো ভাষা সং কম নহি নেকিন তৈযো হম সবঁ খসহায কিযে ছী–ঙা একটৌ রিচাবণীয প্রশ্ন খছি।

হমব দোস্ত সবঁ জিনকব জন্ম পটনা যা দিল্লী মে ভেনন্হি ও হিंদী মে বাঁত কবৈত ছথি। হনাঁকি ও খপন মাঁ–বাঁবূঁজী সং মৈথিনী বাঁজি নৈত ছথি নেকিন খন্য মৈথিন ভাষী সং ও হিंদীযে মে সংরাদ কবৈত ছথি। একব পাছূ কোন মানসিকতা খছি, কোন কাবক একবা প্রভারিত কয বহন খছি, তাহি পব রিরেচনা খারশ্যক।

দোসব বাঁত হীন মানসিকতা কে সেহো। হম সবঁ খপন সংস্কৃতি কে জেনা রিঁসবি গেনহুঁ খছি। হমবা সবঁ জ্ঞান কে মতনবঁ খংগ্রেজী কে জানকাবী মানি নেনে ছী, খা সংস্কাবিত হোঙা কে মতনবঁ হিंদী কে নীক জ্ঞান যানী খড়ী হিंদী কে দিল্লী যা টৌরী কে টৈন মে বাঁজৈ কে জ্ঞান মানি নেনে ছী। হমবা খপন প্রাচীন পবংপবা কে জ্ঞান সং যা ত বংচিত কযন জা বহন খছি যা হম সবঁ খ্দ খনভিজ্ঞ ভেন জা বহন ছী যা কেযক টৌ খার্থিক রজহ হমবা সবঁসং খমূন্য সময ছীন বহন খছি জে হম সবঁ খপন ভাষা যা সংস্কৃতি কে বাঁবে মে সোচী। হমব কৈযকটৌ মৈথিন মিত্র কে ঙা জ্ঞান নহি ছন্হি জে সব গংগানাথ ঝা যা খমব নাথ ঝা কে ছনাহ। হ্নকা উঁমেশ মিশ্র কে বাঁবে মে নহি বূঁঝন ছন্হি। হ্নকা সবিসব পাহী যা বঁনগাম মহিসী কে ভৌগোনিক জানকাবী

তক নহি ছন্হি। হ্নকা মংডন মিশ্র যা জনক যা মিথিলা কে প্রাচীন রিদ্রাহী রিদ্রাহী পবংপবা কে বাঁবে মে রিঙ্ক্নে পতা নহি ছন্হি। নোবিক যা সনহেস এখন তক যাদরে যা দ্সাধ কে দেরতা কিযেক ছথি ? আ মৈথিন কে মতনবঁ মৈথিন ব্রাঁহ্মণে কিযেক হোঙত ছৈক ? কী হম একামে মৈথিন কে রুপ মে কোনো প্রশ্ন কে সোচৈত ছী ? অদ্ভু সরান সং ঠৈকবেনাও আরশ্যক।

গংঠৈবনেঠ অহি দিসা মে নীক কাজ কয বহন অছি। এম্হব কযকঠৌ রেরঁসাওঠ পব মৈথিনী যা মিথিনা কে বাঁবে মে নীক জানকাবী আরিঁ বহন অছি। নেকিন কী এতবঁ কাফী অছি ?

একঠৌ প্রশ্ন মিথিনা বাজ্য কে নির্মাণ সং সেহো জ্ড়ন অছি। মিথিনা কে গনাকা অপ্পন দবিদ্রতা, রিশানতা, ভাষাও রিশিঠ্ঠতা কে রজহ সং বাজ্য কে দর্জা পারেঁ কে পূবা হকদাব অছি, নেকিন কী সির্ফ মিথিনা বাজ্য বঁনি গেনা সং হমব ভাষা কে পূবা রিকাস ভয পাওত ? হম এতয বাজ্য বঁনি গেনা কে বাঁদ আর্থিক রিকাস কে উঁম্মীদ ত কয সকৈ ছী নেকিন কী ভাষাও আ সাংস্কৃতিক রিকাস ভয পাওত ? উঁত্তবাখংড যা ছত্তীসগঢ় বঁনি গেনা কে বাঁদো ওতয কে স্থানীয ভাষা কে কী হান অছি, ও একঠৌ শোধ কে রিষয ভয সকৈত অছি। দোসক গপ্প, মৈথিনী কে একরুপতা সং জ্ড়ন অছি। এতয মৈথিন ভাষী আ ওকব সাহিত্যকাব খুদ একব জিম্মেরাব ছথি। দবভংগা–মধুবঁনী কে মৈথিনী কে মানক বঁনা কয হম কেনা পূবা মিথিনা কে ঠীকা উঁঠবেঁ কে দাবা কয সকৈত ছী ? এখনো দবভংগা–মধুবঁনী কে

ভাষাঙ্গ থহ্ঁ, সহবসা–পূর্ণিযা থা মধেপ্ববা বঁনা কে থহি থান্দানন কে শিংকা কে দৃষ্ঠি সঁ দেখৈ পব মজবূঁব কয বহন থছি। হমব ঙা মাননাঙ্গ থছি জে মৈথিনী কতৌ কে হ্এ, ওকব মূন কপ মে জাবঁে তক ওকবা স্বীকাব নহি কযন জাওত, মিথিনা থা মৈথিনী থান্দানন কে বঁহ্ত ফাযদা নহি হ্খ বঁনা।

দোসব বাঁত ফেব নিপি কে থছি। কী হম মিথিনা বাজ্য বঁনি গেনা কে বাঁদো মৈথিনী কে মিথিনাক্ষব মে নিখি সকবঁ ? কী হম দেবনাগবী সঁ ঋক্ত ভয সকবঁ ? কী হম বাষ্ঠ্র কে ঋখ্যধাবা সঁ ঠৈকবাঙ্গ কে সাহস কয সকবঁ...থা দবভঁগা–সহবসা কে শিহবী বস্থ্র কে মৈথিনী বাঁজৈ থা নিখৈ কে নেন মনা যা প্রেবিত কয সকবঁ–ঙ্গ নাখ ঠৈকা কে প্রশ্ন। দেখন জাএ ত সাংস্কৃতিক কপ সঁ হমব মিথিনা, বঁগান কে বঁেসী নজদীক থছি, নেকিন হমব বাজনীতীক জ্ড় ়াব হিংদী পঞ্জী সঁ স্থাপিত কয দেন গেন থছি। গতিহাস কে থহি থাঘাত সঁ ঋক্তি কোনা ভেঠৈত, বাজ্য নির্মাণ একঠা কদম ত ভয সকৈত থছি, নেকিন হিংদী কে গন্হ্রাস্ট্রকচব হমব জনতা কে মজবূঁব কয দেনে থছি জে হম থপন নেখন যা পাঠন হিংদী মে কবী। হমবা ওকব নত নাগি গেন থছি থা হমব ভাষা সিবফ বাঁজৈ কে ভাষা বঁনি কয বহি গেন থছি। তখন উঁপায কী থছি ?

মৈথিনী কে বাঁবে মে কিছু রিক্ত নোক সঁ জখন চর্চা হোঙ্গত থছি ত কহৈত ছথি জে 50 যা 60 কে দশক মে জতে মৈথিনী কে থান্দানন মজবূঁত ছন ওতে থাবঁ নহি। সব গংগানাথ ঝা, যা থমবনাথ ঝা যা উঁমেশ

मिश्र या हरिमोहन झाँ घनघोर मैथिलवादी छलाह। ओ या त अंग्रेजी मे संवाद करैत छलाह या फेर मैथिली मे। ओ हिंदी के भाषाइ साम्राज्यवाद के चीन्ह गेल छलाह- ओ ऊर्जा एखन कहाँ देखि रहल छी ?

हमर राँहिल कैलिफोर्निया मे रहैत अछि। ओकरा ओतय कयकटा मैथिल टैकराइत छथिन्ह जे मैथिलीये मे गप्प करैत छथि। लेकिन ई चेतना भारत मे कहाँ अछि ? एतय ओ हिंदी किएक राँजय लगैत छथि ? जे अपनापन ओ अमेरिका मे ताकय चाहैत छथि ओ भारत मे किएक नहि करैत छथि-एकर कोनो जवाब हमरा नहि सुझाइत अछि।

एम्हर किछु लोग राँहुत एलीटे लेला के बाद फेर सं अपन कटे सं जुड़ के कोशिश कय रहल छथि। शायद ओ हाँलीवुड स्टार सदृश प्रेरणा न रहल होइथि। ओकरहटे या फेसबुक पर मिथिला के गामक तस्वीर फेर सं जागि रहल अछि। एकटा महत्वपूर्ण भूमिका मिथिला पेंटिंग के सेहो अछि। लेकिन लेखन या पठन के स्तर पर एखनो लोग मैथिली सं कहाँ जुड़ि पेला अछि ? जाहि भाषा-भाषी के जनसंख्या 2 करोड़ सं ऊपर हुए ओतय कोनो नीक अखबार या पत्रिका कहाँ देखि रहल छी। तखन त ऑटैबलटे के धन्यवाद देबाक चाही जे ओ एहि दिसा मे नीक काज कय रहल अछि-कारण जे अहि मे पूंजी कम लगैत छैक।

एकटा उम्मीद आँडियो-रिकॉर्डिंग माध्यम सं अछि लेकिन

হমব ভাষা ওদ্ধ মোর্চা পব ভোজপুবী জকাঁ প্রদর্শন নহি কয বহন খছি। হনাঁকি ভোজপুবী কে রিশান খাৱাদী খা খংতবাষ্ট্রীয ৱাঁজাব ওকবা সহযোগ কয বহন ছৈক নেকিন ওদ্ধ সং ৱেঁসী মহত্বপূর্ণ হমবা জনৈত ঙা জে হমব ভাষা ৱেঁসী বনাসিকন হোঙা কে রজহ সং খহি মোর্চা পব পিছড়ি বহন খছি। মৈথিনী ভাষা নেখন কে পবংপবা সং রিকসিত ভেন খছি খা ৱেঁসী মর্যাদিত খছি, জখন কী ভোজপুবী মে নেখন কে পবংপবা সং ৱেঁসী ৱাঁচন কে পবংপবা ছৈক। ঙা বনাসিকন ভেনাঙা হমব ভাষা কে পোপুনব কহচব সং কাটি কয বাখি দেনে খছি। মিথিনা মে সংভ্রান্ত রস্খ কে মৈথিনী খনগ খা খাম জন কে মৈথিনী খনগ ভয গেন ছৈক। একব খনাৱা নেখন কে পবংপবা হোঙাকে কাবণ একব নোকগীত খা নাট্য মে এক প্রকাবক খশ্লীনতা যা ৱেঁৱাকপন কে ৱঁহু কমী ছৈক জে ভোজপুবী মে প্রচুব রুপ সং ছৈ। তাহি কাবণেঁ হমব ভাষা মে হাহাকাবী রুপ সং হিট নোকগীত কে কৈসেট যা ফিল্ম নহি ৱঁনি পবৈত খছি। পবিণাম ঙা জে মৈথিনিযোঁ কে দর্শক ভোজপুবিযে গীত যা ফিল্ম কে খানংদ ৱেঁসী নৈত ছথি–জে ৱাঁজাব দ্বাবা হ্নকব ৱেঁডকম তক পহুঁচা দেন গেন খছি। নোক 'মহুখা' চৈনন ত দেখৈত ছথি নেকিন 'সৌভাগ্য মিথিনা' কে ৱাঁবে মে কতেক নোক কে পতা ছন্হি ? মৈথিনী কে ৱাঁজাব নহি ৱঁনি পাযন খছি। গহো প্রশ্ন রিচাবণীয।

তখন হমব ভাষা কে উম্মীদ কতয খছি ? কী সির্ফ 'রিন পারব' খা গার্জিযন সৱঁকে খতিশয জাগরুকতাযে হমব উম্মীদ খছি জে ও খপ্পন ৱঁচা সৱঁকে কম সং

মৈথিনী জকব সিখাবঁথ্ যা আওব কিছু ?

নগৈযে হম বৈঁসী নিবাশী ভয বহন ছী। শাযদ হমবা এতেক নিবাশী নহি হ্খক চাহী। জে ভাষা হজাব সান সং নেখন আ রাচিক পবংপবা সং জীরিত অছি ও আগূও জীরৈত বহত। একব ত্রাতা ও কিছু হজাব যা নাখ নোগ নহি ছথি জে দবভংগা–পটনা যা দিল্লী মে আরিক কাঁবপোবেট ভয গেন ছথি–বঁক্তি ঙা ভাষা কবোড়ক কবোড় মৈথিন ভাষী কে হৃদয মে জীরিত অছি জে এখনো কোসী কে বাঁঢ়ি আ জযনগব বেনরে নাঙন কে কাত মে পসবন হজাবো গাম মে বহৈত ছথি। হমব ঙা রিরশতা অছি জে হমব ঘবা আবাঁদী, জরান হোঙাতে দেবী দিল্লী–বঁবৈঁ ভাগি জাঙত অছি। অবৈঁ বঁনা সময মে জখন আর্থিক গতিরিধি হমবা গনাকা মে পসবত ত নোক কে পনাযন নহি হেতৈ, নোক অপ্পন ভাষা মে সংরাদ কবৈত বহত। অহি শ্বভেছা কে জিযবৈঁক নেন হমবা আর্থিক নড় াঙ নড়য পড়ত। দিল্লী আ পটনা কে সবকাব সং অপ্পন হক মাংগয পড়ত, গন্ফ্রাস্ট্রক্চব মজবূঁত কবয পড়ত। শাযদ মিথিনা বাজ্য ওহি দিসা মে একটা পৈঘ কদম সাবিত হএ। কমসং কম মিথিনা বাজ্য কে নির্মাণ কে অহি আধাব পব জকব সমর্থন কবক চাহী। আ মৈথিন বুঁদ্ধিজীরী সবঁকে কে অহি আন্দানন মে অহম ভূমিকা কে নিরাহি কবৈয পড়তন্হি।

রিকাস কে তেজী মে কহী ছুটি নৈ জায মিথিনা...

রিহাব রিকাস কে চর্চা জোবশোব সং খারি বহন খছি। জীডীপী রিকাস দব মে রিহাব গুজবাত সং কনিএ পাছূ খাযন খছি–ওহো তখন জখন কি বাজ্য মে কোনো তবহক উঁদ্যোগ ধংধা যা ব্যবসায কে রিকাস নহি ভেন খছি। সাফ খছি জে ঐ রিকাস কৃষি ক্ষেত্র খা সবকাবী যোজনা সৱঁকে নগভগ সহী ঢ়ং গ সং নাগূ কবৈকে ৱঁদৌনত ভেন খছি। এন্দ্ব কেঁদ্র সবকাব কে কতিপয যোজনা–জেনা নেবেগা, মধ্যাহ্ন ভোজন, সর্বশিক্ষা খভিযান, বাজীর গাঁধী রিদ্যুতীকবণ খা পঁচাযত পব ৱেঁসী ধ্যান দৈ কে কাবণে সেহো ঐ রিকাস দেখা বহন খছি। ওনা নীতীশ কুমাব সবকাব কে তাবীফ ঐ জে ও খহি যোজনা সৱঁকে সহী তবীকা সং রিহাব মে নাগূ কযনক।

খগব খাঁকড়া পব গৌব কক ত পাযৱঁ জে রিহাব কে খর্থব্যরস্থা পিছনা চাবি সান মে নগভগ 11 প্রতিশত কে দব সং খাগূ ৱঁঢ়ন। নেকিন, দোসব দিস খগব বাজধানী পটনা মে সংপত্তি কে মূন্য পব গৌব কবী ত খাঁখি ফাটি জাযত। পটনা মে পিছনা 2–3 সান মে বীযন স্টেট কে মূন্য মে নগভগ 100 সং নয ক 300 প্রতিশত তক ৱঁঢ়াত্তবী ভেন খছি। জহি ফ্লেট কে দাম পটনা মে 2 সান পহিনে তক 12 নাখ রুপযা ছন ও খারঁ 25 সং নয ক 40 নাখ তক ভেটি বহন খছি। পটনা দেশ কে ওহি কিছু গিনন চুনন শহব কে শ্রেণী মে পহুঁচি গেন জতয হরাঐ যাত্রা কবৈৱঁনা কে সংখ্যা মে সৱঁসং ৱেঁসী ৱঁঢ়াত্তবী ভেন খছি। সাফ খছি জে পটনা কে রিকাস যা পটনা মে ধন কে উঁপনব্ধতা রিহাব কে খাম নোগ কে খামদনী সং ৱঁহুত

रहैसी अछि। ई बात एकटा खतरनाक संकेत के दिस इशारा कय रहल अछि जे बिहार के तमाम विकास राजधानी मे सिमटि रहल अछि या फेर बिहार मे धन के संकेंद्रण राजधानी मे अश्लील रुप लय लेनक अछि। एकरा दोसर तरीका स कहल जाय सकैय छी जे बिहार मे धन के केंद्रीकरण किछु खास हाथ मे रहैसी भेल आ ओ आम जनता के हाथ कम पहुंचल। प्रतिशत मे वृद्धि के दर कयकटा दोसर फैक्टर सं ध्यान हटा दैत अछि, ई विकास के पूरा तस्वीर नहि कहैत अछि। विकास त भेलै लेकिन ओहि विकास मे सम्पूर्ण जनता के भागीदारी संदेह के घेरा मे अछि।

लेकिन चिंता के बात सिर्फ एतबे नहि। मुख्य बात ई जे बिहार के अपेक्षाकृत विकास त भेलै आ यदि स्थिति ठीक-ठाक रहल त आबै वला दिन मे औरो तेजी सं विकास हेत-लेकिन विकास के चरित्र जे संकेत दय रहल अछि ओ मिथिला के लेल शुभ नहि बुझा रहल अछि।
बिहार के नक्शा के गौर सं देखू-अंदाज लागि जायत जे आबै वला बिहार- गंगा के उत्तर आ गंगा के दक्षिण- एकटा भयंकर आर्थिक विषमता के बांट जोहि रहल अछि। बिहार के उत्तरी भाग-खास कय मिथिला क्षेत्र ऐतिहासिक रुप सं बाढ़ग्रस्त अछि, आ एतय बहुत कम सरकारी निवेश भेल अछि। आधारभूत संरचना, प्रतिवर्ष बाढ़ि के भेंट चढ़ि जायत अछि। एहन मे गंगा के दक्षिण के इलाका के भौगोलिक बढ़ि त हासिल अछि।
बिहार मे हुअय वला वर्तमान निवेश आ अबैवला निवेश

𑒏𑒹 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒁𑓀𑒠𑒰𑒖 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒍 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑒥𑒙𑒰 𑒧𑒼𑒙𑒹 𑒢𑒱𑒥𑒹𑒬𑒲 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒮𑓀 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝 𑒐𑒰𑒮𑒏𑒨 𑒧𑒑𑒡 𑒂 𑒦𑒼𑒖𑒣𑒳𑒩 𑒧𑒹 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒔𑒰𑒯𑒹 𑒢𑒰𑒪𑓀𑒠𑒰 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒯𑒳𑒋 𑒨𑒰 𑒑𑒨𑒰 𑒏𑒹 𑒢𑒱𑒏𑒙 𑒢𑒱𑒖𑒲 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒨 𑒫𑒪𑒰 𑒥𑒱𑒖𑒪𑒲 𑒒𑒩 । 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒄 𑒖𑒹 𑒄 𑒃𑒪𑒰𑒏𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒹 𑒮𑓀 𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑 𑒣𑒩 𑒁𑒕𑒱-𑒔𑒰𑒯𑒹 𑒍 𑒖𑒲𑒙𑒲 𑒩𑒼𑒛 𑒯𑒳𑒋 𑒨𑒰 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲-𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒩𑒹𑒪 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑 । 𑒁𑒯𑒱 𑒃𑒪𑒰𑒏𑒰 𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒻 𑒂 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒢𑒑𑒩 𑒁𑒯𑒲 𑒃𑒪𑒰𑒏𑒰 𑒧𑒹 𑒕𑒻 । 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒂𑒧𑒠𑒢𑒲 𑒠𑒻 𑒫𑒪𑒰 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒙𑒢 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒑𑒨𑒰-𑒩𑒰𑒖𑒑𑒲𑒩 𑒁𑒯𑒲 𑒃𑒪𑒰𑒏𑒰 𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱 । 𑒄 𑒃𑒪𑒰𑒏𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏 𑒪𑒰𑒦 𑒏𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱 ।

𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒍𑒯𑒴 𑒮𑓀 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒾𑒖𑒴𑒠𑒰 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒁𑒯𑒱 𑒯𑒰𑒪𑒞 𑒏𑒹 𑒎𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒏𑒨 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒢𑒲𑒞𑒲𑒬 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒩𑒰𑒖𑒑𑒲𑒩, 𑒢𑒰𑒪𑓀𑒠𑒰 𑒂 𑒑𑒨𑒰 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒕𑒟𑒱 । 𑒢𑒲𑒞𑒲𑒬 𑒖𑒯𑒢, 𑒏𑒹𑓀𑒠𑓂𑒩 𑒧𑒹 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒞𑒐𑒢𑒼 𑒍 𑒥𑒰𑒜𑓃 𑒧𑒹 𑒋𑒢𑒙𑒲𑒣𑒲𑒮𑒲 𑒂 𑒢𑒰𑒪𑓀𑒠𑒰 𑒧𑒹 𑒂𑒨𑒳𑒡 𑒏𑒰𑒩𑒐𑒰𑒢𑒰(𑒖𑒰𑒩𑓂𑒖 𑒏𑒹 𑒞𑒞𑓂𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒮𑓀𑒮𑒠𑒲𑒨 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒢𑒲𑒞𑒲𑒬 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒩𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩) 𑒪𑒑𑒥𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯 । 𑒋𑒧𑒯𑒩 𑒏𑒹𑓀𑒠𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒨𑒼𑒖𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒞 𑒔𑒪𑒪 𑒞 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒨 𑒫𑒪𑒰 𑒋𑒏𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹𑓀𑒠𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒧𑒼𑒞𑒱𑒯𑒰𑒩𑒲 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪-𑒮𑒱𑒩𑓂𑒤 𑒯𑒰𑒟 𑒂𑒨𑒪 𑒏𑒱𑒬𑒢𑒑𑓀𑒖 𑒨𑒰 𑒏𑒙𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒁𑒪𑒲𑒑𑒜𑓃 𑒨𑒴𑒢𑒱𑒫𑒩𑓂𑒮𑒱𑒙𑒲 𑒏𑒹 𑒏𑒻𑒧𑓂𑒣𑒮 ।

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒖𑒹 𑒧𑒴𑒪 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒍𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒮 𑒢𑒲𑒞𑒲𑒬 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒏𑒧 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱 । 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒔𑒪, 𑒖𑒏𑒩 𑒂𑒥𑒰𑒠𑒲 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓀 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒍𑒞𑒨 𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒧 𑒣𑒻𑒒 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒖𑒹𑒏𑓂𑒙 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱 ।

একব মূন মে খছি এহি গনাকা কে বাঁঠ়ি গ্রস্ত ভেনাও,
তখন ফেব নীতীশ সবকাব বাঁঠ়ি কে নিদান কে নেন
কিএক নহি উঁসোহিত খছি ?

খহি গনাকা মে সাক্ষবতা কে দব কম খছি, স্বাস্থ্য কে
হানত ঠীক নহি। তেঁযো সবকাব কে এজেঁডা পব খহি
গনাকা মে একোটা রিশ্বিরিত্যানয খোননাও নহি ছৈক।
নহিএ, সবকাব খহি গনাকা মে একোটা মেডিকন যা
গঁজিনিযবিংগ কানেজ খোনৈকে দিশা মে উঁসোহিত
খছি।

ওনহিযো, খগব ও মানি নেন জাও জে বাঁঠ়ি কে
রজহ সং খহি গনাকা মে কোনো বঁড়কা প্রাজেক্ট নহি
নাগি সকৈযে, খা একব নিদান কেঁদ্র কে হাথ মে ছৈক,
তেঁযো কী নিতীশ সবকাব কে ও দাযিত্ব নহি জে ও
কেঁদ্র পব দরার্ব ডানে ? পিছনা সান কোসী কে বাঁঠ়ি
কে বাঁদো হমসরঁ একব পূর্ণকানিক নিদান কে কোনো
সংকেত নহি পারিঁ বহন ছী।

হমবা সরঁকে রিকাস কে খহি বহতাব সং চেতি জায
কে চাহী। সময খারিঁ গেন খছি জে হম সরঁ খপন
মাঁগ জোবশোব সং উঁঠারী–নহি ত খরৈঁরঁনা রিঁহাব মে
তমাম নিরেশ গংগা সং দক্ষিণ হোযত খা মিথিনা কে
নোগ সির্ফ ওতয চাকবী কবয নে জেতা। হমব–
খহাঁকে হানত রৈহ ভ সকৈত খছি জেনা পজাবঁ মে
এখন রিঁহাবী কে ছৈক।

<u>हमर सपना केर मिथिला</u>

हमर सपना के मिथिला केहन अछि...हम भविष्य के दीस टकटकी लगा कय देखि रहल छी आ एकटा सुन्दर आ समृद्ध इलाका के तस्वीर मोने मोन बँना रहल छी। हमर सपना के मिथिला में एखनतक किछुए बंग भवन गेल अछि–जेना दरभंगा में एकटा यूनिवर्सिटी आ मेडिकल कालेज, जयनगर तक बँड़ ी लाइन आ नेशनल हाइवे के तहत बँनय बँला चारि लेनरला सड़ क जे मिथिला के हृदयस्थली बाँटे गुजरत। हम कल्पना कय रहल छी जे एहि हाइवे के किनार में दर्जनों इंजिनीयरिंग आ मेडिकल कालेज खुजि जायत। हम इ सोचिं रहल छी जे झंझारपुर के बाँयोटेकनालाजी के कालेज में केरल के बँचा सबँ जखन एडमिशन लेत त कतेक नीक हेतै।

हम ओहि दिन के कल्पना कय रहल छी जखन नार्थ–इस्ट आ दक्षिण भारत के बँचा सबँ गाड़ ी बिजर्ब कय काठमांडू के टूर पर निकलत तखन नौकहा–

জযনগব কে নজদীক কোনো ঠ় ারা পব ওকবা সৰকে ডোসা খাগকে সীন কেহেন হেতৈক। এখন জকবা হমসৰ কস্ৰা কহৈত ছিযৈক সে ঝংঝাবপ্পব, নির্মনী, সকবী, স্বপৌন খা উঁদাকিস্বনগংজ মেং ঠে়ব বাস উঁদ্যাগ ধংধা খ্‌জি জাযত। হম সোচি বহন ছী জে ও দিন কেহন হেতৈক জখন মিথিনা কে গনাকা মেং খপন ঘব নগ সৰকে বোজগাব ভেৰ্টি জেতৈ, ,সৰকে খপনে ঘব নগ গংজিনীযবিংগ খা এমরীএ কানেজ মেং এডমিশন ভেৰ্টি জযতৈক খা ৰড়কা ৰড়কা কংপনী খপন কার্যানিয দবভংগা খা পূর্ণিযা মেং খোনত। হম ঈ সোচি বহন ছী জে হমব মখান কে দ্‌নিযা ভবি মেং ব্ৰাঁডিগ ভয জেতৈক খা ওকবা ঈস্ট-ৰেস্ট কাবিডোব ৰনা হাঈৱে কে দ্বাবা গোরাহাটী খা ওতয সং গংডোনেশিযা তক ভেজন জা সকৈছ। কখনো ঈ সোচৈত ছী জে হাঈৱে ৰনি গেনাক কে ৰাদ সিক্কিম খা দার্জিনিংগ তক 3-4 ঘংটা কে বাস্তা ভ জেতৈক। তখন মিথিনা কে ৰচা সৰ সেহো দার্জিনিংগ পঠ়য জা সকত, খা হ্যগন নোকনি হনীমূন মনৰয কে নেন সিক্কিম।

হমব মিথিনা মেং মানর শ্ৰম কে কোনো কমী নহি, পানি কে কোনো কমী নহি, মেধা কে কোনো কমী নহি-কমী খছি ত নিযোজন কে। খগব হম খপন মানরশক্তি কে বোজগাব প্ৰদান ক দী ত হমবা সং ৰেসী রিকসিত কিযো নহি ভ সকৈত খছি।

কোসী পব বেনৱে প্পন সেহো ৰনি বহন খছি, খা হাঈৱে কে তহত সড়ক প্পন সেহো ৰনৱে কবত। এহি তবহে ঈ দ্‌নূ প্পন ফেব সং মিথিনা কে জোড়ৈ ৰনা সারিত

হোযত–কোসী নদী মিথিনা কে দূ ফাঁক মেঁ রাঁটি কয বাখি দেনে ছন। হম ওা সোঁচৈত ছী জে এহী তবহক এক টা ফোব নেন হাওাবে ঋগব মোকামা সঁ জযনগব তক ভাযা সমস্তীপ্পব রনি জযতৈক ত কেহেন রঠ়া যা হোযতৈক। সবকাব কে চাহী জে ফজথফবপ্পব সঁ ররৌনী ঋা ঋাগূ গোহাটী জাযরনা হাওাবে নরঁব 28 কে সেহো ফোব নেন রনা দৈক–তাকি ঋহি গনাকা কে সমগ্র রিকাস সংভর ভ জাওক। হম ওাহো কম্পনা ক বহন ছী জে নেপান মেঁ জন্দীএ শাঁতি ঋা স্বর্য্যরস্থা কাযম ভ জেতৈক ঋা নেপান সঁ প্রচ্ব মাত্রা মেঁ রিঁজনী মিথিনা কে গনাকা কে জগমগৈত।

নেপান ঋারৈরনা ঋংতবাষ্ট্রীয ট্রূবিস্ট নোকনি সেহো মিথিনা কে রুখি কবতাহ। নেকিন হ্নকা সরকে ঋাকর্ষিত করৈক নেন হমবানোকনি কে ঋপন পর্যটন স্থন কে রিকাস কবয পড়ত। মিথিনা মেঁ রহ্ত বাস ঐতিহাসিক স্থন নহি ছৈক–নেকিন হমসর ঋপন সংস্কৃতি কে নীক পৈকেজিংগ কয ক ট্রূবিস্ট নোকনি কে ঋাকর্ষিত কয সকৈত ছী। সীতা কে জন্মস্থান ঋা মিথিনা কে প্রাচীন বাজধানী জনকপ্পব, রৈশানী ঋা পাটনিপ্পত্র–রৌধগযা–নানংদা কে জোড়যরনা সর্কিট কে ঢ় ংগ সঁ রিকাস কযন জায ত ঝ্ংড কে ঝ্ংড ট্রূবিস্ট সরকে ঋাকর্ষিত কযন জা সকৈত ঋছি। মিথিনা কে নোককনা, গীত ঋা পেঁটিংগ পব ঋাধাবিত কার্যশানা ঋা ম্যূজিযম রনরৈকে ঋারশ্যকতা ছৈক।

হমবা গনাকা মেঁ পোখবি কে কোনো কমী নহি। হম ঋগব একবা ঢ় ংগ সঁ র্যরস্থিত কবী ত ওা মাছ–মখান

কে উঁপোদন কে পৈঘ খাধাব ত ভগযে সকৈযে, সংগহি একবা সৌন্দর্যীকবণ কয হম কয তবহক খার্থিক গতিরিধি কে সেহো রঁঠ় ারা দয সকৈত ছী। হম গহো কল্পনা কয বহন ছী জে দবভংগা খা পূর্ণিযা মেডিকন হর্ঁ কে কপ মেঁ উঁভবত খা হ্মজহহ্ফবপ্পব নির্ণাণি খা মোঠব উঁদ্যাগ কে কেঁদ্র কে কপ মেঁ। ভাগনপ্পব ফেব সঁ সিল্ক খা হস্তকনা কে ক্ষেত্র মেঁ খ্যাতি খর্জিত কবত খা মধ্রঁনী মেঁ কনা পব খাধাবিত পৈঘ-পৈঘ খংতবষ্ট্রীয সেমিনাব হোযত। কখনো ক হম সোচৈত ছী জে খগব কোসী কে রাঁঠ়া পব কার্ঁ ভয জযতৈক ত কেহেন রঁঠ়া যা সোনো ভবি কোসী মেঁ স্টীমব চনৈন জা সকৈত ছনৈক-একটা এহনে স্টীমব মেঁ হম খপন সরঁস প্রিয মিত্র কে সংগে কনকত্তা তক কে যাত্রা কবিতহুঁ। ভাবত-খা নেপান কে রীচ ওহনে সংরঁধ ভ জযতৈক জেহেন খমেবিকা খা কনাডা কে রীচ ছৈক-খা দূন্ দেশ কে সংসাধন কে উঁপযোগ গনাকা কে রিকাস মেঁ কযন জযতৈক।

<u>মৌথিনী কে ন ক কিছু খস্বরিধাজনক প্রশ্ন..</u>

কখনো ক সোচৈঁত ছী জে মৌথিনী ভাষা ওঁব মিথিনাঁচনক রিকাস ওহি কপ মে কিএক নহি ভ সকনৈ জেনা দোসব প্রান্ত খা খান ভাষা সর্ঁ তবক্কী ক গৈনৈ। এখ্নকা পবিদৃশ্যে খগব দেখী ত র্ঁঝাগত খছি জে মৌথিনী সাহিত্য কে রিকাস খা এত্তক্কা রিকাস কে ন ক চিংতা সির্ফ কিছু হ্মঠী ভবি নোক কে দিমাগী কসবত ছৈক-খাম মৌথিন কে এহি স কোনো সবোকাব নহি।

হানত ত ওা খছি জে মৈথিন নোকনিকে ধিযাপ্বতা দবভংগো মধ্রঁনী মে মৈথিনী নহি ,হিংদী মে রাঁত করৈত ছথি। একব কী কাবণ ছৈক খা এনা কিএক ভেনৈক।

খগব একব তহ মে জাওা ত এহি ভাষাকে সংগ সরঁসং পৈঘ খন্যায ওা ভেনৈক জে একবা কিছু খাস গনাকা কে মৈথিনী রঁনযরাঁ কে খা কিছু খাস নোকক ভাষা রঁনযরাঁকে প্রযাস কযন গৈনৈক। মৈথিনী কে দবভংগা মধ্রঁনী খা খাসক ওত্তক্কা ব্রাঁহ্মণ কে ভাষা রঁনাক বাখি দেন গেনৈক। মধেপ্ববা–পূর্ণিযা কে রাঁত ত দূব দবভংগো মধ্রঁনী কে রিশান জনসহ্মদায ও ভাষা নহি রঁজৈত খছি জে কিতারাঁ মৈথিনী কে কপ মে দর্জ ছৈক। ওনা ওা রাঁত দোসবো ভাষা কে সংগে সহ ছৈক নেকিন কমসং কম ওতয ওহি ভাষা কে স্থানীয কপ কে হিকাবত যা হেয দৃষ্ঠি সং নহিং দেখন জাওা ছৈক। মৈথিনী মে এহি তবহক কোনো প্রযোগ কে রঁর্জিত কয দেন গেনৈক। মিথিনা কে খেতিহব,মজূব, হ্মসনমান খা নিম্নবক্স ওহি ভাষা মে তস্বীব কহিযো নহি দেখি সকন। জখন মিথিনা বাজ্য কে মাঁগ ভঁঠন ত হমসরঁ হ্মগেব তক কে খপনা মে গনি নৈত ছী, নেকিন জখন ভাষা কে রাঁত হেতৈক ত ও সির্ফ মধ্রঁনী কে পংচকোসী যা মধ্রঁনী ঝংঝাবপ্বব তক সিমর্ঠি কয বহি জাওাছ।

হমবা যাদ খছি জে কোনা সহবসা যা পূর্ণিযা কে নোককে ভাষা কে মধ্রঁনী কে গনাকা মে একর্টা খনগ দৃষ্ঠি স দেখন জাওা ছৈক। গনাকাওা ভিন্নতা কোনো ভাষা মে স্বভারিক ছৈক নেকিন যদি ও খহংকাবরোধ সং

গ্রস্ত ভ জাএ ত ওহি ভাষা কে ভগৱানে মানিক। ফলস্বরূপ জখন ভাষাএ আধার পর রাজ্যকে মাঁগ উঁঠলৈক ত মিথিলাঁচলক বিরাট জনসমুদায ওহি স অপনা কে নহি জোড়ি সকল আ ও আন্দোলন নাথ সংভাবনা কে বাঁবজূদ নহি উঁঠি সকল। বহুল সহল কসবি রাজ্যসবকাব ক মৈথিলী বিরোধী বরৈযা পূরা কয দেলক। মৈথিলী কে বীপীএসসী স হটা দেল গেলৈক, আ মৈথিলী অকাদমী কে নির্জীরপ্রায কয দেল গেলৈক। লেকিন এহি কে লেল সত্তা কে দোষ কিযেক দেবৈঁ, জখন জনতা কে দিস সং কোনো প্রবল প্রতিবোধ নহি ছলৈক ত সত্তা ত অপন খেল কববেঁ কবত।

ওনা ত এ কহিনাএ ফনাসিরঁ নহি জে মৈথিলী মে আম জনতা কে লেল যা প্রগতিশীল চেতনা কে স্ত্রব নহি ফখবিত ভেলৈক লেকিন ও ওহি তবীকা সং ব্যাপক নহি ভ সকলৈ জেনা আন ভাষা মে ভেলৈক। মৈথিলী কে বচনা মে ও ফখ্যধাবা নহি ভ সকলৈ। দোসববাঁত এ জে কহিযো মিথিলা মে কোনো সমাজস্বধাব কে আঁদোলন নহি ভেলৈক জেনা বঁগাল রা মহাবাষ্ট্র মে দেখল গেলৈক। তখন এ কোনা ভ সকৈছ জে সির্ফ ভাষা কে ত বিকাস ভয জায লেকিন সমাজ কে দোসব ক্ষেত্র মে ওহিনা জড়তা পসবল বহৈক। মিথিলা কে গতিহাস কে দেখিযৌক ত এতয যেহ ভেলৈক। দোসব বাঁত এ জে মিথিলা যা মৈথিলী কে লেল জে সংস্থা সবঁ বঁলল ওকব কামকাজ কে সমীক্ষা সেহো পবম আরশ্যক। মৈথিলী কে বিকাস কে লেল দর্জনোঁ সংস্থা বঁলল জাহি মে চেতনা সমিতি কে নাম অগ্রগণ্য অছি। লেকিন ও চেতনা সমিতি কী কয বহল অছি আ জনতা সং কতেক

জুড়ল অছি একর বিশদ বিবেচনা হুএক চাহী। সানানা জনসা আ সেমিনাব কে অনাবা একব মৈথিনী ভাষা কে নেন কী যোগদান ছৈক তকব বিশদ সমীক্ষা হুএকে চাহী। মৈথিনী কে বঁজনিহাব ভাবতে মে নহি নেপানো মে ছথি, নেকিন দূনূ দিসকে ভাষাভাষী কে জোড়য কে কোনো ঠোস উঁপায এখন তক দৃষ্টিগোচব নহি।

এখন জহিযা সং মৈথিনী কে সংবিধান মে মান্যতা ভেট্টনৈক অছি তহিযা সং সাহিত্য অকাদমী কে কিছু বেঁসী গতিবিধি দেখয মে আবিঁ বহল অছি। নেকিন মৈথিনী কে জখন তক আম জনতা আ ওকব সবোকাব সং নহি জোড়ল জাযত একব আন্দানন ধাব নহি পকড়ি সকৈত অছি। একব সবঁসং পৈঘ জিম্মেবাবী ওহি বুদ্ধিজীবী নোকনি পব ছন্হি জে মৈথিনী কে প্ববোধা কহবৈঁ ছথি। হুনকা সং ওা উঁম্মীদ ত জরুব কযন জা সকৈছ জে ও একব ঠোস, সর্বগ্রাহী আ সমীচীন সমাধান সামনে নাবঁথ্ আ ওহি পব সমগ্র রূপে চর্চা হো।

<u>বিহাব মে প্রনয, নেকিন কী ছৈক নিদান ?</u>

বিহাব মে এহিবেঁব বাঁঠ়া প্রলয বনি কঽ আযল অছি। ও ওঽ বাঁঠ়া নহি ছী জে পহিলউঁ অবৈত ছল আঽ দস–পাঁচ দিন বহি কঽ চলি জাগত ছল। অহি বিভিষিকা কে তঁ ককবো উম্মীদো নহি ছলৈক। এহেন আপদা তঁ হজাব দূ হজাব সালমে এক বেব অবৈত ছৈক। লেকিন পৈঘ সবাল ও জে কি একব কোলো নিদান ছৈক যা বিহাব কে একটা হিস্সা এহিনা বীবান ভয জেতৈ ? গতিহাসকাব সভক মত ছন্হি জে দুনিযা কে কয টা সভ্যতা এহিনা বাঁঠ়া বা ভুকংপ কে কাবণে খমে ভঽ গেলৈক। কিছু লোক কঁে গহো কহবঁ ছন্হি জে সিংধ্ ঘাটী সভ্যতা সেহো এহনে কোলো বাঁঠ়াক কাবণেঁ খমে ভঽ গেলৈক। বহ্ত দিন পহিলে প্রখ্যাত নদী বিশেষজ্ঞ অনুপম মিশ্রক লেখ পঠ়লে বহী জাহিমে ওঽ কহনে বহথি জে বিশাল বাঁধ বনাকঽ বাঁঠিক জবৰ্দস্তী নিদান নহি কযল জা সকৈত অছি। হমবা লোকনি কঁে নদীক সংগ জিনাও সীখয পড়়ত। ওকব পানি কঁে বিনা কোলো ছেড়়ছাড়় কে সমুদ্র তক জাও কে বাস্তা দেবঁয পড়়ত। অগব এহিমে কোলো রুকাবঁট হেতও তঁ প্রকৃতিক কোপ হমবা সবঁকে ঝেলয–এ পড়়ত। আঽ অগব ধ্যান সঁ দেখল জায তঁ পিছলা সয সালমে যৈহ ভেলৈক অছি।

বাঁঠ়াক সবঁসঁ পৈঘ কাবণ ছৈক নদীক সিল্টৗগ। জাবেঁকাল তক এহি সিল্টৗগ কে দূব নহি কযল জাযত তাবেঁকাল তক বাঁঠ়া পব প্রভাবী ঠ় ংগ সঁ বোক নহি লগাযল জাঽ সকৈত অছি। পানি কঁে জখল–জখল সমুদ্রমে জাওমে অববোধ হেতও– ওকব পানি কিনাবমে পসবি জাযত। গৌবসঁ দেখল জাএ তঁ সিল্টিংগ হটৈলাও

কোনো ৰ্ভ্ভ ষ্মশিকন নহি। খাস কঽ ৰিহাব এহেন প্রান্তমে তঁ এহিসঁ কতেক বাস ৰোজগাব সেহো সৃজন কযন জা সকৈত খছি। বাষ্ট্রীয গ্রামীণ ৰোজগাব গাবংটী যোজনা কেঁ পাওা সেহো খহি মে নগাযন জাঽ সকৈত খছি। দোসব ৰাঁত ওা জে নদীক কছেবমে সিন্টে সঁ ঙুঁচ তটবঁধ খাঽ সড়ক ৰনাযন জাঽ সকৈত খছি, পর্যটন খাঽ দোসব কতেকো কাজ কাযন জাঽ সকৈত খছি।

ৰিহাবমে ৰহয ৰনা নদীক স্রাত নেপানমে ছৈক। ওহি পানিপব হমবা নোকনিক কোনো ৰস নহি খাঽ নে ওহি পানিকেঁ নেপানমে ৰোকন জাঽ সকৈত ছৈক। প্ৰবনা জমানামে নেপানক তবাওমে খাঽ পহাড়ক ঢ়নানপব খূৰ ৰোন ছনৈ- জে পিছনা সয-দূ সয সানমে খমে ভয গেনৈ। খাৰ পহাড়মে কনিযো পানি হোওা ছৈ কি মৈদানমে পসবি জাওা ছৈক। পহিনে ওঽ জংগনক কাবণে খাস্তে-খাস্তে মৈদানমে খবৈত ছনৈ। ৰিহাব সবকাব খহি মামনামে কিছু নহি কঽ সকৈত খছি, সিরায কেংদ্র পব দৰাৰ দৈ কে। হঁ, ভাবত সবকাব চাহে তঁ নেপানক সংগ মিন কয ৰাঁঠিকেঁ ৰোকয কে নেন ছোটে-ছোটে ৰাঁধ খাঽ রনীকবণক একটা দীর্ঘকানীন নীতি ৰনা সকৈত খছি । এহি কে নেন হজাবো কৰোড় রুপৈযা কে নিরেশ কে জরুবত ছৈক খাঽ ওা কাজ দূনূ দেশক খাপসী সহযোগসঁ কযন জাঽ সকৈত খছি।

দোসব ৰাঁত ওা জে হমবা সৰকে খপন গনতী কে সেহো ধ্যান মেং বাখয চাহী। ছোটে-2 ধাব জে কমনা-ৰনান মেং মিন জাওাত ছনৈক ওকবা পিছনা শতাব্দী মেং ভবি

কয় খেত আ ঘবাড় া ৱঁনা নেন গেনৈ। জে জমীন, সবকাবী মানন জাওত ছনৈক ওকব ৱঁড় পৈঘ পৈমানা পব নূষ্ট ভেনৈক। একবা কড় া কানূন ৱঁনা কয বোক পড়ত। পানি কে সংগ ছেড়ছাড় কে জঘন্য অপবাধ ঘোষিত কব পড়ত। গম্ভব জে রিকাস কে যোজনা ৱঁননৈক ওহো ৱাঁঠ কে ৱঁঠ াবা দৈ মেঁ কোনো কসব নহি ছোড়নকৈ। উঁদাহবণার্থ, উঁত্তব রিহাব মেঁ জমীন কে ঢ়লান উঁত্তব সং দক্ষিণ দীস আ দক্ষিণ রিহাব মেঁ দক্ষিণ সং উঁত্তব দীস ছৈক। নেকিন কে ষ্টৌ এহন হাওরে আ বেনরে ৱঁননৈক জে পানি কে প্রাগ্নতিক ৱঁহার মেঁ অরবোধ ভয গেনৈক। জেনা, দবভঁগা–ঝজথফবপ্পব হাওরে আ দবভঁগা–নির্মনী বেনরে নাওন। এতয কহৈক ও মতনৱঁ নহি জে রিকাস নহি হ্অক চাহী–নেকিন রিকাস আ প্রগ্নতি কে ৱীচ মেঁ পূবা সামংজস্য হ্আ কে চাহী।

দোসব ৱাঁত ওা জে রিহাব মেঁ জে নদী পবিযোজনা সৱঁ মেঁ পিছনা পচাস সান সং নূষ্ট ভেনৈক ওহিনেন স্বপ্রীম কোর্ষ্ট কে ন্যাযাধীশ কে অধ্যক্ষতা মেঁ একষ্টা আযোগ ৱঁনয কে চাহী। পূবা দেশ মেঁ হমবা হিসাৱঁ সং রিহাব মেঁ জতেক নূষ্ট ভেনৈক ওতে কতৌ নহি। কোসিযে কে ৱাঁত কযন জায ত –পশ্চিম কোসী নহবি জে হমবা গাঁর কে ৱীচ সং নিকনৈত অছি ওকবা সবকাবী ঘোষণা কে হিসাৱঁ সং 1983 মেঁ ৱঁনি জায কে চাহী ছনৈক। নেকিন এখন পচীস সান ৱীতনা কে ৱাঁদো কোনো উঁম্মীদ নহি। হমবা জনৈত জে যদি নদী পবিযোজনে সৱঁ কে ঢ় ং গ সং নাগূ কযন জৈযতৈক ত ৱাঁঢ়ি কে পূবা নহি ত আধা সমাধান ত জকব নিকনি জযতৈক।

শাযদি এখনো পূবা তৰাগী নহি ভেল খছি,এহি ৰেবক জনপ্রনয় হমবা সৰকে সূতন সং জগেনক খছি। হুন মিনাকয জাৰেতক ৰাঠ়ি জনতা খা বাজনেতা সৰকে এজেঁডা মেঁ শামিন নহি হোযত তাৰেত তক একব সমাধান সংভব নহি খছি।

মিথিনা মংথন

১.

মিথিনাঁচন ক্ষেত্র ৰিহাব মে সৰস পিছড়ন মানন জাগত খছি, খগব প্রতিব্যক্তি খায , সাক্ষবতা ওঁব প্রসবকান মে জচা-ৰচা কে মূল্ কে মাপদংড ৰনাযন জায তো মিথিনাঁচন দেশ কে সৰস গবীৰ খা পিছড়ন গনাকা খছি। একব কিছ কাবণ ত খহি গনাকা কে ভৌগোনিক ৰনাবট খছি নেকিন ওহিযো স পৈঘ কাবণ এহি গনাকা কে মে কোনো নীক নেতৃত্ব কে খাগূ নৈ এনাও খছি। খাজাদী কে নগভগ 60 বর্ষ ৰীত গেনাক কে ৰাদ দেশ মেঁ জহি হিসাৰ স খার্থিক খসমানতা ৰঢ়ি গেনৈক খছি ওহি মেঁ ৰিহাব খা খাসক মিথিনা কে সামনে একটা ৰড় পৈঘ সংকট ঠৈক জে ও ওঁব পাছূ নৈ হেকা জায। উঁদাহবণ কে নেন ও খাঁকড় া খাঁখি খোনি দৈ ৰনা খছি জে একটা গোখা মে বহয ৰনা ওঁসত খাদমী কে প্রতিব্যক্তি খামদমী একটা ওঁসত ৰিহাবী সং সাত গুনা ৰেসী ঠৈক খা একটা পংজবী কে খামদনী পাঁচ গুনা ৰেসী ঠৈক। ৰিহাবো মে খগব ক্ষেত্রৰাব খাঁকড় া নিকানন জায ত ৰিহাব কে দক্ষিণী(এখ্নকা গংগা পাব মগধ খা

থ্রংগ) এরম পশ্চিমী ওনাকা রেঁসী স্বখী থ্রছি, থ্রা ওকব জীরনশৈনী সেহো দৃ পাওা নীক ছৈক। ত এহেন মেঁ সরান ওা জে হেব বস্তা কী ছৈক। কী মিথিনাঁচন কে নোক এহিনা দব-দব কে ঠোকব খাওাকে নেন দ্নিয়াঁ মেঁ রৌথাওাত বহতা থ্রথরা হ্নকো এক দিনি রিকাস কে দর্শন হেতন্হি।

মিথিনাঁচনক ওা দ্ভাগ্য ছৈক জে একব একটা পৈঘ হমবা হিসাবঁ সং থ্রাধা সে রেঁসী ওনাকা রাঁঠ়ি মেঁ ড়ূবঁন বহৈত ছৈক। রাঁঠ়ি কে সমস্যা কে নিদান সির্ফ বাজ্য সবকাব কে মর্জী সং নহি ভ সকৈত রঁন্কি থ্রহি মেঁ কেঁদ্রসবকাব কে সহযোগ চাহী। পিছনা সাঠি সান মে রিহাব কে নেতাগণ থ্রহিপব কোনো গংভীব ধ্যান নহি দেনন্হি জকব নতীজা থ্রছি জে রাঁঠ় এখন তক কাবূঁ মে নহি থ্রারিঁ বহন থ্রছি। পিছনা কোসী কে থ্রাপদা একব পৈঘ উঁদাহবণ থ্রছি, থ্রাবঁ নেতাসবঁ কে থ্রাঁখি কনী খ্ননন্হি থ্রছি, নেকিন এখন সং মেহনত কেন জাযত ত থ্রহি মে কমস কম 20 সান নাগত।

রাঁঠ়ি সির্ফ সংপত্তি কে নাশী নহি কবৈত ছৈক, রঁন্কি থ্রাধাবভূত ঢ় াংচা জেনা সড়ক, বনেরে থ্রা প্বন কে খমে ক দৈত ছৈক। এহেন হানত মে কোনো উঁদ্যোগ কে নগনাওা সির্ফ দিন মে সপনা দেখৈক রঁবাবঁব থ্রছি। কিছ গোটাকে কহবঁ ছল্ক জে রিহাব মে উঁদ্যোগ ধংধা কে জান রিছাক একব রিকাস কেন জা সকৈছ। নেকিন জখন সড়ক থ্রা রিজনিযে নহি থ্রছি ত কেনা উঁদ্যোগ থ্রাওত। দোসব রাঁত ওা জে পিছনা থ্ররিকাসকে চক্রক ফনস্বরূপ থ্রাবাঁদীকে রৌনম এতেক রঁঠ়ি গেন থ্রছি জে পূবা ওনাকা মে কোনো খানী জমীন নহি থ্রছি জতয পৈঘ উঁদ্যোগ নগাযন জা সকয। সিংগূব কে উঁদাহবণ

সামনে অছি। মহাশক্তিশানী রামমোর্চা কে সবকাব কে জখন রঁগান মে 1000 একড় জমীন নৈ খোজন ভেনৈক ত একব কল্পনা ব্যর্থ জে দবভংগা আ মধুবঁনী মে সবকাব কোনো পৈঘ উঁদ্যাগ কে জমীন দৈ। দোসব বাঁত গনো জে পূবা মিথিনা কে পঞ্জী মে, মুজফ্ফবপুব সং ন ক কটিহাব তক কোনো পৈঘ সংস্থা–চাহে ও শৈক্ষণিক হোও যা ঔদ্যোগিক– নৈ ছৈ জে একমুশ্ত 3–4 হজাব নোগ কে বোজগাব দ সকৈ। হমবা গনাকা মে শহবীকবণ কে ঘনঘোব অভাব অছি। জতেক শহব অছি ও একটা পৈঘ চৌক যা একটা বিকসিত গাঁর স বেঁসী নহি। একটা ঢংগ কে ওঁজিনিযবিংগ যা মেডিকন কানেজ নহি, একটা যূনিবর্সিটী নহি। কানেজ সবঁ কেহন জে 4 সান মেঁ ডিগ্রী দ বহন অছি। এক জমানা মে প্রসিদ্ধ দবভংগা মেডিকন কানেজ মে টীচব কে অভাব ছৈক আ কানেজ জংগ খা বহন অছি। হম সবঁ এহন অকর্মণ্য সমাজ ছী জে কোসী পব একটা পুন বঁনবৈক মাঁগ তক নৈ কেনহুঁ,হমব নেতা হমবা ঠেংগা দেখবৈত বহনা। আবঁ জা ক বেনরে আ বোড পুন কে বাঁত ভ বহন অছি। হুন মিনাকব গনাকা মে সির্ফ 8–10 প্রতিশত নোক শহব মেঁ বহৈত ছথি, ওা ও নোক ছথি জিনকা সবকাবী নৌকবী ছন্হি। ওা শহব কোনো উঁদ্যাগ কে বঁন পব নহি বিকসিত ভেন। বাঁকী আবাঁদী–নগভগ 40 প্রতিশত দিল্লী আ পংজাবঁ মে অপন কীমতী শ্রম ওনে–পৌনে দাম মে বেঁচ বহন অছি। মিথিনা কে শ্রম পংজাবঁ মে ফ্লাওওবব আ শাপিংগ মান বঁনাবঁ মে খর্চ ভ বহন অছি, কাবণ কি হমসবঁ এহেন মাহৌন নহি বঁনৌনিএকি জে ও শ্রম অপন ঘব মে নহব যা সড়ক বঁনবঁ মে খর্চ হুএ।

तखन सवाल ई जे फेर उपाय की अछि। हमरा ओतय पैघ उद्योग नहि लागि सकैछ, बोड नहि अछि बाँढ़ि के समस्या विकराल अछि, त हमसभ की करी। लेकिन नहि, मिथिला के विकास एतेक पाछू भ गेलाक बाद एखनो कयल जा सकैछ। आ अहि विषय मे कय टा विचार छैक।

किछु गोटा के कहब छन्हि जे एखनुका बिहारक सरकार मगध आ भोजपुर के विकास पर बेसी ध्यान द रहल छैक। एकर वजह जे सत्ता मे पैघ नेता ओही एलाका के छथि, लेकिन दोसर कारण इहो जे ओ एलाका बाँढ़ि ग्रस्त नहि छैक। पैघ प्राजेक्ट के लेल ओ एलाका उपयुक्त छैक। उदाहरणस्वरूप-एनटीपीसी, नालंदा युनिवर्सिटी आ आयुध फैक्ट्री-ई तमाम चीज मगध मे अछि। दोसर बात ई जे नीक कनेक्टिविटी भेला के कारणे भविष्य मे जे कोनो निवेश बिहार मे हेतैक ओ सीधे ओही एलाका मे जेतैक। फलस्वरूप आबै बला समय मे बिहार मे क्षेत्रीय असमानता बढ़ैत रहल अछि। एहि हालत मे किछु गोटा अलग मिथिला राज्यक माँग क रहल छथि, आ हमरा जनैत संस्कृति स बेसी -अपन आर्थिक विकास के लेल ई माँग उचित अछि।

मिथिला के विकास के माडेल की हुअके चाही। मिथिला के जमीन दुनिया के सबस बेसी उपजाउ जमीन अछि। हमसभ पूरा भारत के सागसब्जी आ अनाज सप्लाइ क सकैत छी। लेकिन ओ सब्जी दरभंगा सं दिल्ली कोना

जायत। एहिनेन फोबनेन मांग्रंबे आ बेनबे के बेबक्रजेबेटब डिब्बा चाली। दोसब गप्प हमब गनाका के एकटा पैघ बकम दोसब बाज्य मे गंजिनियबिंग आ मेडिकन कानेज चन जांग्रत अछि। हमबा गनाका मे 50 टा गंजिनीयबिंग कानेज आ 10 टा मेडिकन कानेज चाली। ग्र कानेज भविष्य में विकास के बीठ़ सावित होयत। हमबा गनाका मे छोटे-छोटे उंच्याग जेना स़ ाफ्टबेयब डेबनपमेंट या पार्टपुर्जा बनबै बना फैकट्री चाली जहि मे 100-200 आदमी के बोजगाब भेटि जाय। नेकिन एहिनेन 24 घंटा बिजनी चाली। ग्र कतेक दुर्भाग्य के बात जे बंगन के झाबखंडक कोयना के उंपयोग त पंजाबं में बिजनी बनबैक नेन भ जाय छैक नेकिन हमसबं एकब कोनो उंपयोग नहि क बहन छी। आग्र अगब हमबा अपन गनाका मे 24 घंटा बिजनी भेटि जाय़ त पंजाबं जाय बना मजदूब के संख्या में कम सं कम आधा कमी त पहिने सान भ जायत। भाबत के दोसब बाज्य सिर्फ आ सिर्फ अही गनाका के सस्ता श्रम के बनें तबक्की क बहन अछि। हमसबं ग्र जनतौ किछु नहि क बहन छी, ग्र दुर्भाग्य के गप्प।

मिथिना मे पठ़ ाग्र निखाग्र के प्राचीन पबंपबा बहनैक अछि नेकिन सुविधा के अभाव मे ग्र धाबा हान मे कमजोब भेन अछि। आसकब महिना शिक्षा के दशा-दिशा त आब खबाबं अछि। एकटा नड़की कतेको तेज किएक ने बहे ओ 10 सं बेसी नहि पठ़ ि सकैत अछि काबण घब के पास कानेज नहि छैक। हमबा अगब तबक्की कबय के अछि त गनाका मे एकटा

महिला यूनिवर्सिटी त अलग्से हुअबे चाही, संगहि सबकार
के ओहो दायित्व छैक जे हरेक ब्लाक मे कमस कम
एकटा डिग्री कालेज के स्थापना हुए। देश के विकास
मे अहि इलाका के संग कतेक भेदभाव केल गेलैक
आ हमर नेतागण कतेक निकम्मा छथि-एकर पैघ
उदाहरण त ई जे इलाका मे एकहुटा केंद्रीय संस्थान
नहि छैक। एकटा यूनिवर्सिटी नहि, एकटा कारखाना
नहि। आब जा क कहिहार मे अलीगढ़ यूनिवर्सिटी,
दरभंगा मे आइआइआइटी आ बरौनी मे फेर सं खाद
कारखाना के पुनर्जीवित करैक बात कयल जा रहल
अछि। हमरा याद अछि जे साल 1996 तक दरभंगा
तक मे बड़ ी लाइन नहि छलैक। हमसब इलमिलाकर
कोनो तरहक संपत्ति के निर्माण नहि करैत छी।
हमसब अपन आमदनी दोसर राज्य भेज दै छियैक-
बेटा के बंगलोर मे इंजिनीयरिंग करबै सं ल क
दियासलाइ तक खरीदै मे। हमर पूंजी अपन राज्य,
अपन इलाका के विकास मे नहि लागि रहल अछि।
एहि स्थिति के जाबत काल तक नहि बदलल जायत
हम किछु नहि क सकैत छी।
२.
प्रवीण आइ अमेरिका चलि गेल। ओकरा एल एंड टी
के प्राजेक्ट पर शिकागो पठा देल गेलै। लेकिन
ओकरा संग पढ़ ैवाली पूनम के भाग्य ओहन नहि
छलैक। ओ दू बच्चा के माँ बनि अपन स्वामी के सेवा
मे अपन जिंदगी बिता रहल अछि। बितला समय याद
करैत छी त लगैत अछि जे पूनम के संग बड़ ्ड
अन्याय भेलैक। बात सन् 95 के हतैक, हमर बोर्ड
के रिजल्ट आबि गेल छल। ओहि समय पूनम आ

প্ররীণ ছঞ্ঝা মেঁ পঢৈত ছন। জাহি স্কূন মেঁ পঢ়ৈত ছন ওহি মেঁ চাবি টা মাস্টৈব ছনৈক জে বৈসীকান খেতিএ বাঁবী মেঁ নাগন বহৈত ছনৈক।

পূনম কনাস মেঁ ফর্স্ট খবৈত ছন আ প্ররীণ সেকেংড...নেকিন ছঞ্ঝা কে বাঁদ প্ররীণ কে বাঁবূ জী ওকবা ন ক কষ্টক চনি গেনখিন্হ জতয ও একটা দ্কান মেঁ কাজ কবৈত ছনখিন্হ। পূনম কে ঘবক হানত অপেক্ষাক্রত ঠীক ছনৈক, ওকব বাঁবূজী সবকাবী সেরা মেঁ ছনখিন্হ, নেকিন পূনম দসরী সে আগূ নহি পঢি সকন। ওকবা গাঁৱৈব মেঁ মধ্বনী কে ন্মকনান মহিনা কানেজ মেঁ নামো নিখা দেন গেনৈক নেকিন বাঁদ মেঁ ও আগূ নৈ পঢ়া সকন। নেকিন প্ররীণ বাঙবকেনা সং গংজীনবিংগ কেনাক বাঁদ এন এংড টী মেঁ প্লেস্ড ভ গেন আ কংপনী ওকবা শিকাগো পঠা দেনকৈ।

এক দিন হমব দীদী পূনম কে পূছরো কেনকৈক জে ও কিযেক নে বীএ মেঁ নাম নিখেনক, ত পূনম কে জরার ছনৈক জে ওকব মাঁ-পপ্পা কে বীচ ওকব পঢ়াঙা কে ন ক নিত দিন ঘোঘাউঁজ হোগক। ওকব বৈসী পঢ়নাঙা পূনম কে রিরাহ মেঁ বাঁধা বনি বহন ছনৈক। তীন বহিন মেঁ সরঁস পৈঘ পূনম কে দহেজ একটা বঁড় পৈঘ সমস্যা ছনৈক। দূ সান কে বাঁদ পূনম কে রিরাহ ভ গৈনৈক আ জে পূনম কনাস মেঁ ফর্স্ট খবৈত ছন ও জীরন কে দৌড় মেঁ সদা কে নেন সেকেংড ভ গেন। পূনম কে তমাম টৈনেংট আব সিনাঙা-কঢ়াঙা আ স্বৈব কে নব ডিজাগন সীখ মেঁ খপ নগনৈক।

ঋাঙা হমবা গাম মেঁ প্ররীণ কে টৈনেঁটে কে ধূম মচন ছৈক। মিথিলা কে তমাম দহেজদাতা ওকব দববাজা পব ঋারি চ্কন ছথি, লেকিন সরাল ঙা জে কি পূনম কে ঋাপূ লৈ পঠ়া পরেঁ মেঁ কি সির্ফ দহেজ টা একটা কাবণ ছলৈক যা কিছু ঋাঙব... ? মানি লিয জে দহেজ নহিযোঁ বহিতৈক ত কী পূনম কে ঋপন ঘব নগ নীক কালেজ ভর্টি জযতৈক ? হম সোচৈত ছী জে যদি পূনম কে জন্ম কনর্টিক যা কেবল মেঁ ভেল বহিতৈক ত ভ সকৈছ ও গঁজিনীযব রঁনি জাঙত ঋা এন এঁড টা ওকবো শিকাগো ভেজি দৈতৈক। লেকিন ঙা সরাল এখনো নীতীশি কুমাব ঋতরাঁ ঋর্জুন সিংহ কে এজেঁডা মেঁ নহি ছন্হি। লৈ জানি কতেকো নাখ পূনম ঋাঙা চিচিযা–চিচিযা ক ঙা সরাল ঋহি ব্যবস্থা সং পূছি বহল ঋছি।

হমব ঙা পোস্ট হিঁদী কে হমব ব্লাগ ঋাম্রপালী(amrapaali.blogspot.com)...ওহি পব একটা টিপ্পণী ঋছি জে সরঁ সাধন সরঁকে নহি দেল জা সকৈত ছৈক, ঋাপূ রঁঠ়য রঁনা কে খুদে কে জিজীরিষা হ্থকে চাহী। লেকিন হমব কথন ঙা ঋছি জে প্ররীণ কে সংগ কোনো জীজিরিষা নহি ছলৈক–ঙা প্বকষ প্রধান সমাজ কে একটা দুখদ ঋধ্যায ছৈক জে হজাবো প্ররীণ কে ত কোটা স ন ক রঁগলোব তক ডোনেশন পব ভেজ দেল জাগত ছৈক লেকিন নাখো পূনম এখনো ঋাশাকে রাঁটি জোহি বহল ঋছি। কী ঙা সবকাব কে কর্তব্য নহি ছৈক জে ও পূনম সরঁ কে উঁচিত পঠ়াঙা কে ব্যবস্থা কবৈক.. ? .

ই কতেক দুর্ভাগ্য কের বাঁত অছি জে বিহার মেঁ এখন হাইস্কূল খোলৈ পর প্রতিবঁধ লাগল ছৈক। এখন 5 কিলোমীটর কে দাযরা মেঁ বিহার মেঁ একটা হাইস্কূল ছৈক। কোনো লড়কী কে লেল ই কোনা সংভব ছৈক জে ও পাঁচ কিলোমীটর পঢ়য লেল হাইস্কূল জায। আর বিহার সরকার হাইস্কূল মেঁ লড়কী সবঁকে সাইকিল দ রহল ছৈক লেকিন কী সির্ফ হাইস্কূল তক কে পঢ়াই উঁপযুক্ত ছৈক.. ? দোসর বাঁত ই জে বিহার সনহক রাজ্য মেঁ জতেক সামান্য গ্রেজুএশন কে সীট নৈ ছৈক, কর্নাটক আ মহারাষ্ট্র মেঁ ওহি স বেঁসী ইঁজিনীযরিংগ কে সীট ছৈক।

এখন তক রাজ্য মেঁ একোটা মহিলা বিশ্ববিদ্যালয আ তকনীকী বিশ্ববিদ্যালয নৈ ছৈক। হুনকে তী ই চাহী ছল জে বিহারল মেঁ 20-25 সাল পহিলহি হর জিলা-আ বঁলাক মেঁ একটা কালেজ খোলি দেবাঁক চাহী ছলৈক। আর কে জমানা ত ইঁজিনীযরিংগ আ এমবীএ কালেজ খোলক ছৈক। এহন হালত মেঁ ওহি খাই কে কে ভরত জে বিহার আ দোসর রাজ্য কে বীচ মেঁ বঁনি গেলৈক অছি। ফের রেহ সরাল সামনে অছি- কী অবৈযো বঁলা সময মেঁ পূনম ইঁজিনীযরিংগ কালেজ মেঁ জেতী.... ?

মৈথিনী ভাষা– সংস্কৃতি কে বক্ষাক নেন একটৌ সংস্থা জৰুবী খছি

যূট্যূব পব ভঠকি বহুন ছনহুঁ। নৌকবী কে ব্যস্ততা কে বজহ সঁ এতেক ফ্ুবসতি নহি ভেটৈতি খছি জে যূট্যূবঁ পব খপন মনপসঁদ গীত স্বনি সকী। কোশিশ বহৈত খছি জে ফ্ুবসতি ভেটৈয ত মৈথিনী গীত স্বনী। মৈথিনী গীত জে সবঁ যূট্যূবঁ পব উঁপনব্ধ খছি ওহি মেঁ বেঁসীতব বিঁযাহক গীত খা ভক্তি গীত সবঁ খছি। মৈথিনী কে বিবাট সংসাব মেঁ জে ছিডিযান নোকগীত সবঁ খছি তকবা সবঁ কে একঠাম পৌনাও ম্ধ শ্কিন খছি। দোসব বাঁত ও জে সবঁ গীত কে বিকার্ডিংগ সেহো নহি ভেন ছৈক, ভেনো ছৈক ত ওকবা সংকনন কে কাজ বঁড্ড কঠিন। গীত সবঁ স্বনিক মন নাস্টেন্জিক ভ গেন...কমনা–বঁনান কে ধাব খা বাজনগব কে মঁদিব যাদি খাবঁয নাগন। গজেঁদ্রজী কে ফোন কেনিযন্হি। হম জানয চাহি ছনহ্ জে কী সমস্ত নোকপ্রিয মৈথিনী গীত কে বেবঁসাওট পব ডানন জা সকৈত ছৌ কী। নেকিন পতা চনন জে খহি মেঁ কাপীবাওট কে সংকট ছৈক। এখন খগব কিযো মৈথিনী গীত সংগতী স্বনয চাহৈত খছি ত কিছ বেবঁসাওট পব 10–20 টৌ গীত ছৈক যা নহি ত যূট্যূবঁ পব ওকবা গীত খগানয পড়তৈ। হম ও খোজৈ ছনহ্ জে কোনো একটৌ বেবঁসাওট হোগত জতয দিন্নী বঁবঁও স ন ক খমেবিকা তক মেঁ বহয বঁনা মৈথিন খপন ভাষা মেঁ গীতসংগীত কে খানৈ ঁদ ন সকিতথি। দুনিযা জহি হিসাবঁ স বঁদনি বহুন খছি ওহি মেঁ খংগ্রেজী খা হিঁদী কে ভাষাও

সাম্রাজ্যরাদ স রঁচনাও রঁড্ড ক্ষশিকন র্ঁস্মনা জাওত খছি। নেকিন খগব সতর্কতা স নরঁ তকনীক কে উঁপযোগ কযন জে ত মৈথিনী গীতসংগীত কে রিবাঠ সংসাব কে মৈথিন ভাষী তক খাসানী স পহুঁচাযন জায সকৈছ। মৈথিনী নোকগীত, নাটক, নোককথা খা খাখ্যান হমব রঁডড় পৈঘ ধবোহব খছি। খা একব সংযোজন কে জরুবত ছৈক। খগব খহি স হম সরঁ খাম মৈথিন কে জোড় সকী ত এখনো রঁডড় উঁম্মীদ খছি। নেকিন খহিনেন হমবা সরঁকে মৈথিনী কে সরঁ রুপ কে দিন খোনি ক খপনারঁয পড়ত খ পংচকোসী কে গ্রংথি স রাঁহব খারঁ পডত। খহি ক্ষদ্দা পব হম পহিনৌ নিখি চুকন ছী। দোসব রাঁত জে খারঁ রঁনা জমানা খাডিযো রিজুখন কে ছৈক। পূবা দুনিযা মেঁ নোক পঠ মেঁ দুভাগ্যিজনক রুপ সং রুচি ঘটি বহন ছৈক। নোক খাডিযো খা রিজুখন রেঁসী দেখয চাহিত খছি। ওা খারঁ রঁনা জমানা মেঁ খাব রঁঠত। খহি স ওংকাব নৈ। এখনো জে মৈথিন কহিয়ি। খপন জিনগী মেঁ একটা মৈথিনী পোথী নৈ পঠনন্হি ও মৈথিনী কে গীত স্বনি ক রিভোব ভয জায ছথি। খারশ্যকতা খহি রাঁত কে খছি হম সরঁ কোন প্রকাবে খহি রিশান সম্দায কে খপন সংস্কৃতি কে খহি মজবূঁত উঁপকবণ স জোড়ি ক বাখী। ছিটপুট স্তব পব মৈথিনী মেঁ গীত সংগতী কে কৈসেট রঁনৈত খছি, ফিল্মা রঁনি বহন খছি খা খারঁ একটা টৌরী চৈনন কে সেহো স্বনগ্বনী খছি। নেকিন একব কোনো সংস্থাগত প্রযাস নহি ভ বহন খছি। সংরিধান মেঁ ভাষা কে স্থান ভেট গেনাকে রাঁদো হম সরঁ সবকাব স রঁড্ড উঁম্মীদ নহি ক সকৈত ছী। নেকিন খগব খহি দিশা মেঁ কোনো গৌবসবকাবী প্রযাস ওমানদাবী

स कयल जाओ त एखनो बहुत काज कयल जा सकैत अछि। अहि दिशा मे गजेंद्रजी के प्रयास सराहनीय कहल जा सकैत अछि जे बहुत मेहनत क क अहि दिशा मे काज क रहल छथि। मैथिल बुद्धिजीवी सबके अहि पर विचार करय के चाहियनि आ कोनो तरीका खोजय के चाहियनि। अहि मे राज मे सरकारी अनुदान आ विदेशी अनुदान स ल क वैयक्तिक अनुदान के कमी नहि रहत-ई हमर दृढ़ निश्चय अछि। कोनो ट्रस्ट या सोसाइटी के अधीन अगर ई काज कयल जाय आ नया विचार सामने आबय त ई स्वागतयोग्य कदम होयत।



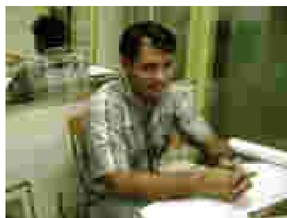
<u>शक्ति शेखर, पिता-श्री शुभनाथ झा, गाम- मोहनपुर, भाया-हरलाखी, जिला-मधुबनी।</u>

<u>कखन बदलत हम</u>

बहुत तामस होइए भगवानक एहि कृत्यसँ जे ओ अपन उपस्थिति मिथिलांचलमे दर्ज केनाय शायदे कोनो साल बिसरै छथि। कदा हमरा सबकेँ एहि भयावह स्थितिसँ लड़बाक अलावा आओर कोनो रस्ता तँ नहि अछि। जी, हम बात कऽ रहल छी, एखन बिहारमे आयल बाढ़िक संदर्भमे। अनुमान लगायल जाऽ रहल अछि, जे अहि बाढ़िक चपेटमे करीब 50 लाख लोक आयल छथि। सभ साल जुलाइ-अगस्तक मास अबिते बिहारक लोक आतंकित भऽ जाइत छथि। सबहक मोनमे ई डर बैठ छनि, जे एहि बेर केकर घर उजरतै। लोकसब

ভবি সাল দিন বাতি মেহনত কঽ একটা ঘৰ বনাবৈত ছথি, কিছু পূঁজী জমা কবৈত ছথি,মুদা কী লোগএ এহি সভসঁ ? ওা বাঢি তঁ কোনো আতংকরাদীসঁ বেসী ভযারহ লোগত অছি জে হব বেব কতেকো গামকেঁ, কতেকো বিগহা জমীনকেঁ অপন অংদব সমেটি লৈত অছি। সংবংধিত বিভাগ বাঢিকেঁ লঽ কঽ সৱ জানকাবী বাখিতো কোনো তবহক কদম নহি উঠাবৈত অছি। শাযদ ওা বাঢি হুনকা সভক লেল আমদনীক একটা শ্রোত জে লোগ–এ। পছুনকা বাঢি সভক বাহত–অনুদানপব নজব দৌড়াবী তঁ নিধোক এক বাত কহলাগ অনুচিত নহি লোযত, জে বাঢিসঁ কতেকো লোক কবোড়পতি সেহো ভঽ গেলাহ। ওাশুরবক লীলা দেখিযৌক, জে এক দিস এহি বাঢিসঁ সভ বেব কতেকো লোক (শাযদ অনুমান লগেলায অসংভব অছি) কেব সৱ চীজ বহগেল জায ছনি, তঁ দোসব দিস বাঢি ঘোটালাক অভিযঞ্জ আওব কতেকো লোক কবোড়পতিক গিনতীমে আবি গেলাহ। ওহি দৃশ্যক বাবেমে সোচল জায, জে পূর্ণিযামে বাঢিক ডবে অপন ছত পব বৈসল চাবি সালক বচা ভূখসঁ অপন দম তোড়ি দেলক, ওহি লোকক বাবেমে সোচি, জিনকা খেলায তঁ দূব পিবঽ কে লেল পানি তক নহি ভেটি বহল ছনি। লোকক চাপাকল বাঢিক পানিমে ডুবি গেল ছনি। হিনকা সভ লগ কিএক নহি পহুঁচি পাবি বহল ছনি বাহত সামাগ্রী। কহিঁ এহল তঁ নহি জে ফ়বে সঁ কতেকো লোক এহি বাঢিমে কবোড়পতি বনএ বলা ছথি। প্রধানমংত্রী মনমোহন সিংহ বিহাবক বাঢিকেঁ বাষ্ট্রীয আপদা ঘোষিত তঁ কঽ দেলন্হি মুদা পীড়া তক লেল ওা সান্ত্বনা মাত্র অছি। কেন্দ্র সবকাব দিসসঁ বিহাবক বাঢি পীড়া তক লেল 1000 কবোড় রুপযা

অন্নদানক রাশি দেল গেল অছি। ক্ষদা এহি অন্নদানক রাশিক বিষযমে অখনো কতেকো বাঁঠি পীড়া ত কেঁ মানূম নহি চলি সকল অছি। জিনকা অহি বাঁবেমে জানকাবী ভেটৈরোঁ কৈল তঁ নিশ্চিত ওহ সোচনে হেতাহ কি শাযদে এহি বাশিমে সঁ হুনকা সভকেঁ কিছু ভেটৈত। কেন্দ্র সবকাব ঙা বাশি তঁ দহ কহ অপন বাঁঠি পীড়া তসঁ তঁ অপন পল্লা ঝাড়া নেনাহ, ক্ষদা বাঁঠি পীড়া ত তক ঙা বাশি কোনা পহুঁচি সকত, এহি বাঁবেমে হুনকব ধ্যান নহি গেল অছি। এক রেঁব ফ়বেসঁ কহরঁ জে ঙা অন্নদানক বাশি সবঁ বিভাগ তক বঁটৈত বঁটৈত দস প্রতিশতো বাঁঠি পীড়া ত তক নহি পহুঁচি সকত। আওব হঁ, বাঁঠিক দোগমে জে সভসঁ পৈঘ চীজ হোগত অছি ওহ অছি বাজনীতি। কতেকো নেতা সভ এহি বাঁঠি পীড়া তক নেল আগিমে ঘী দেনায জেহেল কাজ কবৈত ছথি। বাজ্য সবকাব কেঁ দোষী ঠহবাবৈত নেতা সবঁ ওহি জগহ অপন সীট স্বনিশ্চিত কববাঁক ফ়া বাকমে বহৈত ছথি। হেলীকাপ্টৈবসঁ বাঁঠি ক্ষেত্রক সর্বেক্ষণ কবৈত বঁহ্তো নেতাসভকেঁ অতরোঁ জানকাবী নহি বহৈত ছনি জে ওহ কোন ক্ষেত্রক দৌড় া কহ বহল ছথি। পতা এহি বাঁতসঁ নগাযল জাহ সকৈত অছি জে নেতাসভ ওহি ক্ষেত্রক কতেক জ্ঞান বখনে ছথি। গমহব বাজ্য সবকাব সেহো কর্ণা চুপ বহএ বনা। ওহ কেন্দ্রপব নিশানা সাধৈত ছথি তঁ কেন্দ্র বাজ্য সবকাব পব। এহি বাজনীতিমে পিসাগত তঁ বাঁঠি পীড়া ত ছথি। কোনো বাঁত নহি, সময আবি গেল অছি একজুটৈতা দেখাবঁএবাঁক আহ মদতি কববাঁক....বাঁঠি পীড়া তক সংগ, বাঁঠি পীড়া তক নেল। তখনে হম স্বতংত্র ভাবতক কর্তব্যনিষ্ঠ নাগবিক ভহ সকএ ছী।



ओमप्रकाश झा, गाम, रिजगा, जिला-मधुबनी।

मिथिले टा नहि छथि मैथिल

गप्प अछि नवंबर 2007 केर, एहि समयमे हम गोवा न्यूज (जे कि गोवा अवस्थित अंग्रेजी क्षेत्रीय न्यूज चैनल छल) मे काज करैत रही। गोवामे सोनहम अंतर्राष्ट्रीय मैथिली परिषदक सम्मेलन भेल छल, जकर

अध्यक्षता श्री विनय कुमार झा ,चीफ़ विजिलेंस,गोवा स्टेट केलथि। एहि कांफ़्रेंसक एकटा छोट सनक अंश यू-ट्यूब साइट पर सेहो उपलब्ध अछि। एहि कार्यक्रमकेँ करब कवरेज भाव अपन संस्थासँ हमरे भेटैल छल। एहि कार्यक्रमक दौरान बहुत बात चित्र जे स्पष्ट भऽ कऽ सोझाँ आयल ओऽ ई सभ छल.......
1.बहुत बास मैथिल छतीसगढ आऽ मध्य प्रदेशमे बसल छथि। हालाँकि आब हुनका सबहक मातृभाषा मैथिली नहि रहि गेल अछि। यदि आओर तहमे जाइ तँ ओऽ लोकनि मैथिली भाषा बिसरि चुकल छथि, तथापि मिथिलासँ ओतबेक स्नेह आऽ लगाव छन्हि, जतबेक हमरा सबकेँ अछि। हुनकर सबहक पुरुखा बहुत पहिने ओतए चलि गेल रहथिन्ह। गप्प करीब 4-5 पुस्त पहिलेक अछि।
2. दिल्लीक लागलोग गलाकामे सेहो किछु बास मैथिल छथि, जे कि अपन जीवन-यापनक क्रममे कतेक बास आन आन व्यवसाय सब अपना लेने छथि। संगहि देशक भिन्न- भिन्न भागमे कतेको ठाम मैथिल लोकनि वृहद समुदायक संग बसि रहल छथि। ओना भाषा एहिमे सँ बहुतो गोटेक हरा गेल अछि।
3. एकटा आरो गप्प जे कि सामने आयल ओऽ छल, जे कि गोवाकेँ मैथिले ब्राह्मण सब बसेने छथि आऽ एकर प्रमाण स्कन्द पुराणमे भेटैत अछि। हम अहाँ केँ ई बात कहि दी, जे कि गोवन (गोवाक वासी) सबहक मातृभाषा कोंकणी अछि मुदा एहि भाषाक बहुतो बास शब्द मैथिली भाषाक अछि। किछु शब्दक बारेमे हम अहाँ सबकेँ कहि रहल छी, जेना कि अदहन (भातक लेल गरम कएल गेल पानि), पाहुन (गेस्ट), मधुर आदि। ओहो सब कोजगरा दिन लक्ष्मी पूजा करैत

ছথি। বহন–সহনক স্তব অপনা সবঁসঁ বঁহ্ত হদ তক মিনৈত অছি। আওব তহমে গেনায অখন উঁচিত নহি অছি।

কার্যক্রমমে কতেকো মিথিনা–বিভূতি সবঁ উঁপস্থিত ছনাহ। বর্তমানমে দিল্লী প্বনিসমে ববিষ্ঠ অধিকাবী শ্রী উঁজ্জবন মিশ্র ওহি ঠাম তকোনীন ডী.আগ.জী. ছনাহ। ভাবতক বিভিন্ন ভাগক সংগে নেপানক কিছু বাস প্রতিনিধি সবঁ সেহো পহুঁচন ছনাহ। এহি কার্যক্রমক কবব কববাঁক নেন গোবা ন্যূজ আ২ নেপান টৌবী (নেপানক) চৈনন পহুঁচন ছন, জখন কি বঁড়কা–বঁড়কা মৈথিন প্ববোধা সবঁ গোবামে বিভিন্ন মীডিযা নেন কাজ কবৈত ছথি। বাঁদমে জহন হ্নকা সবঁসঁ জিজ্ঞাসা বঁস প্ছনিযন্হি তঁ ক্ষনূ নে ক্ষনূ ওহনে বঁহানা বঁনা নেনাহ, জেনা কি জখন প্রধানমংত্রী স্ব০ বাজীব গাঁধীক সমযমে মধ্বঁনী কে এম০পী০ হনান অংসাবী নোক সভামে মৈথিনী কেঁ অষ্ঠম সূচীমে জোববাঁক নেন আবাজ বঁ্নংদ কেনথি তঁ শ্রী ভোগেন্দ্র ঝা জী জে ক্ষনূ বঁহান্না বঁনেনে বহথি। হম একব তহমে নহি জায চাহবঁ, সবঁ গোষ্ঠে বঁুঝি বহন ছী। অপ্পক্ত কহ্ বা কিশোব হমবা মোনমে কতেকো প্রশ্ন উঁঠএ নাগন জে এনামে মৈথিনী কোনা বঁচন বহত। হযওঁ, হমব ভাষা ক্ষনূ অন্য ভাষা সঁ কনিকো কমজোব নহি অছি। হমবা নোকনি অংগ্রেজী বাঁজৈত ছী, আধুনিক পবিধান পহিবৈত ছী, সবঁটৌ বঁঙ্ভ নীক বাঁত অছি। ক্ষদা এহি তমাম চীজক মূন্যক কপমে অপন ভাষা আ২ সংস্কৃতি কেঁ উঁসেক্ষা কেনায হমবা নহি পচি বহন অছি। ওা তঁ ওহনে গপ্প ভেন জেনা কিছু বাস নোককেঁ আর্থিক তংগী নহি বহনাক বাঁদো দোসবসঁ কর্জ নেবাঁক প্রবৃতি হোয ছন্হি।

পবিবর্তনক ফ়েজে সঁ গ্বজবি বহুন খপন সমাজ কর্মী ত্রিশংকু তঁ নহি রঁনি বহুন খছি। এখন রঁস এতবেঁ।



বী.কে কর্ণ(1963–),পিতা শ্রী নির্ভয নাবাযণ দাস গাম– রঁনৌব, ভাযা– মনীগাছী, জিনা– দবভংগা। পৈকেজিংগ টৈক্লোনোজীমে স্নাতকোত্তব আঃ যূ.এন.ডী.পী. জর্মনী আঃ ওগ্নেন্ডক কার্যত্রমক ফেনোশিপ, ২২ বর্ষক পেশেরব অনুভব আঃ ২৭ টা পত্র প্রকাশিত। ডাযগনোস্টিক মিথিনা পেন্টিংগ আঃ মিথিনাক সামাজিক–

আর্থিক সমস্যাপৰ চিন্তন। সম্প্রতি ওন্ডিয়ন ওন্স্টীট্যূট অঁফ পৈকেজিংগ, হৈদৰাৱাদমে উঁপনিদেশক (ক্ষেত্রীয প্রম্ঘখ)।

স ংকট গ্ৰণক (বিস্ক ফৈকটৰ) আ মৈথিল- মিথিলাক ৰিকাস ক্ৰনো আ কখন

ৰিকাসক ৰিনা জিনগী ৰঁড কঠিন। ৰিকাসক বস্তা ৰঁড উঁৰঁড খ্র ৰঁড ।

সংঘর্ষ সদিখন। ডেগ ডেগপৰ। ৰিনা সংঘর্ষক ৰিকাসো সংভৱ নহি।

সৰাঁগীন ৰিকাসক হেত্তু ব্যক্তিগত ৰিকাসে আধাৰ হোওছ ।

ৰঁহ্ত কিছু গমেনহুঁ ক্ষদা আৰঁ নহি।

মৈথিল হৰা মোৰ্চা তৈযাৰ ভএ বহল অছি। ৰিকসিত ৰা অৰিকসিতক ৰিচ-ৰিচৰামে ছী। এতৰা তঁ তএ অছি জে আর্থিক ৰিকাসক লেল স্বৰ সাৰ ভএ বহল অছি। আর্থিক ৰিকাস একটা গতি হোওছ জে কখনো কম ৰা ৰেঁশী।

আর্থিক উঁপার্জনক লেল হম সৰঁ সকাৰামেক প্রযাসমে স্বতল ছী। জহিযা উঁঠৰঁ তহিযা সিংহ জকা দহাৰৰঁ ৰা সাঁপ জকা ফূফকাৰৰঁ।

জয শ্রী হন্বমানজী এক সমযমে অপন শক্তি ৰিসবি গেল ছলাহ, তহিনা হম সৰঁ মৈথিল অপন শক্তি ৰিসৰৌনে ছী।

ৰঁহ্তো মৈথিল প্রৰাশী জীৱনমে অপন আর্থিক সক্ষমতা মে বৃদ্ধি কেনাহ, পৰঞ্চ হ্নক ধিযা পূতা মিথিলা মৈথিল সঁ কোসো দূৰ !!! পৈঘ সংকট। গ্রেট বিস্ক !!!

মৈথিলক সম্মান মৈথিলী থীক আওৰ একৰ অপমান

মৈথিলে কহ বহল ছথি। অপনে পবিরাবমে মৈথিলীপব মতাঁতব। মৈথিলী ঘবেমে ট্রুখব।
মৈথিল পনাযনসঁ মৈথিলীক আকস্মিক অন্ত। কেহ রিনাপ কডত।
পনাযন দুগ স্থিতিমে–
১. জীরন ভবণ পোষণক নেল
২. র্যক্তিগত উদ্দেশ্যক পূর্তিক নেল
মিথিলামে কী কমী
ডেগ ডেগ পব পোখবি
ঘব ঘবমে পতবা–পোথী।
গাম গামমে জাতি পাঁতি
ছোটকা পাঁতি নৈহ কহ একে পবিরাবমে শানক ঘমাসান।
মৈথিলী সংকটমে, আরশ্যকত অছি কোমল স্পর্শক।
কতেকো রেব রিহাব সবকাব দ্বাবা মৈথিলী ভাষাপব সীধা প্রহাব ভেল। পবম দুখক বাত ও অছি জে কিছু মৈথিল মৈথিলীকেঁ তোড়যমে নাগল বহল ছথি। পবঞ্চ চিংতাক কোনো বাত নহি। মৈথিলী অছি অটৈল–অরিচন। মৈথিলীক জড় বড় মজগূত।
হম মৈথিলসভ অপন মৌলিক কর্তব্য বুঝি আহ অপন ভাষা সঁ অথাহ নগল নগাৰী।
বঁগালী–পঁজাবী–মবাঠী কেঁ দেখু জে অপন মাতৃভাষাক প্রাণোসঁ উপব স্থান দেনে ছথি। এতবাহ নহি হব মঁচপব অপন ভাষাক প্রতি স্নেহ তথা সম্মান কন্নিকো কঞ্জৗতী নহি কবৈত ছথি। পবঞ্চ হম মৈথিল কতেক নিঠ্যা বখৈত ছী। এহল কিছুএ মৈথিলকে দেখল জা সকৈছ।
বঁগালমে বঁগালী, পঁজাবমে পঁজাবী। এহিনা বহুতো

প্রাদেশিক বাজ্যমে় খপন–খপন ভাষাকেঁ খপন জীহ জান স ̐ ় পৈধ নগার বখনে ছথি।
বঁগানীক ভাষা বঁগানী
পঁজাবীক ভাষা পঁজাবী
মবাঠীক ভাষা মবাঠী
রিহাবীক ভাষা কী ?
হিন্দী়–ভোজপুবী খাহ মৈথিনী
হিন্দী় ত ̐ ় বাষ্ট্রভাষাক খস্তিত্বমে খছি। ভোজপুবী কাফী নোকপ্রিযতা হাসিন কয বহন খছি। ভোজপুবী সিনেমা উঁদ্যোগকেঁ কাফী সফনতা ভেটৈন। ক্ষদা মৈথিনীক স্থিতি রিহাবমে কেহন খছি সে কী কহন জা্ গছ। মৈথিনীক স্থিতি মিথিনামে বঁড় কমজোব।
গৈবমৈথিন রিহাবী কতেক প্রতিশত মৈথিনীক গজ্জত কবৈত ছী। খনুমানিত প্রতিশত বঁড় কম হোযত।
মৈথিন খপনাকেঁ গোদ নেন মৈথিন জেকাঁ খাচবিত কহিখা ধবি কবতাহ ?
মৈথিনী সশক্ত ভাষা খছি। একব খপন গতিহাস খছি। পবঞ্চ হম সবঁ মৈথিনী বাঁজয রানাকেঁ খাহ নিখয রানাকেঁ পিছড়ন বুঁমৈত ছী। খনেক ভাষা সীখূ় বাঁজূ় ক্ষদা মৈথিনীকেঁ ছোড়ি কহ নহি। মৈথিনীকেঁ বোঁন্ম নহি বুঁন্মিযৌক।

মৈথিন জে কহিযো মৈথিনী ছোড়ি নন্হি় ও মানসিক রূপসঁ গবীবঁ ভএ গেনাহ। খার্থিক রিকাস ভেনাক তদ্পবান্তো খপন মনস ̐ ় বঁহ্ত গবীবঁ। খমেবিকামে জে ভাবতীয ক্ষনক স্থিতি পব জে একটা খমেবিকন পত্রকাব খধ্যযন কেনাহ জকূব দেখন জাএ।
Family Ties and the Entanglements of

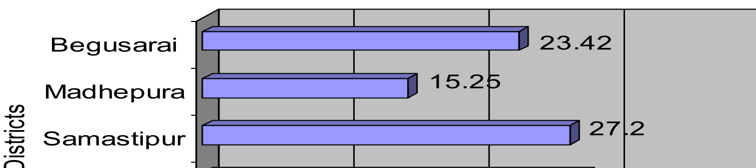
Caste
http://www.nytimes.com/2004/10/24/nyregion/24caste.html
খমেবিকন ক্ক া মিথিনামে বহি সকৈত খছি
নহি় কথমপি নহি় ।
কী খমেবিকন খা কোনো রিকসিত দেশ র বাজ্য কে একোষ্টা নোগ খপন মৈথিনী ভাষা খপনাযত়
নহি় কথমপি নহি় ।
রৈসী মৈথিনে ভেষ্টতাহ জে় মিথিনা খা মৈথিনী ছোড়ি তাহিমে সরঁস ঁ খাগূ ।
মৈথিন মিথিনাক সীমাক রাঁহব রঁড মেহনতী পবঞ্চ মিথিনাক সীমাক খন্দব রঁড খানসী। মেহনতী মৈথিন কতৌহ বহখি ধাক জমৌনে ছথি পবঞ্চ মৈথিনী পব জেনা মতস্বন। একো বতি ৰ্দ চি নহি বখৈত ছথি, হ্নকব ধিযা প্বতাক রাঁতে ছোড় ্ ।

গির্যসন জকাঁ খোজী় এহি পব খনগ রিচাব বখৈত ছথি।
মৈথিনীকে রৌদ্ম বঁ্দ্মযরানা মৈথিন সোচি রিচাবমে রঁড় গবীরঁ।
গবীরী মেনরাঁক মানসিকতা মৈথিন মে কিযাক রৈসী।
মিথিনামে মৌনিক স্বখ স্বরিধাক কমী কোন কাবণে।
রঁদ্রূতো কাবণ ভএ সকৈছ। গবীরীমে ককবা নেহ গ কষ্ঠ মেন্হ পহউঁ়ত।
মৈথিন মেহনতী তঁ মিথিনামে গবীরী কিযাক
গবীরী মেনরাঁক মানসিকতা কিযাক !!! গ্রেষ্ট বিস্ক !!!
কতেক মৈথিন কহতাহ জে ভাগ্যক নিখন কষ্ঠ খছি।

এহি প্রশ্নক জৱাৱ খোজি বহুন ছী জে প াঁচ করোড়ক মৈথিলক একে বংগ ভাগ্য কিযাক। গৱীৱীক মেনৱাক মানসিকতা কতেক দিন তক।
হম মৈথিল সৱ রাক রিরাদমে ৱঁড প্রখংড ছী। হবএক ৱাতপব অপনাক অনুভৱী প্রমাণ দৈত ছী।
মনস ঁ রাক পহুঁতামে ধনী। জীরনক মৌলিক আরশ্যকতাক পূর্তিকক লেল হম সৱ মৈথিল ৱঁড় গৱীৱ। গৱীৱ মানসিকতা গৱীৱী মেনৱাক লেল সদিখন তৈযাব। স্বস্থ নেতারিহীন মৈথিল সমাজ অপন মৌলিক হক স ঁ দূব কোসো দূব অছি।
জড় জড় হালতমে মৈথিল সমাজ অপন দেশক আজাদীক ৱাদ মিথিলামে আধাবভূত ঢ াঁচাক শূরুআতোহ ত ঁ নহি ভেল।
অকবা কহৱৈহ কেহ সূনত কে স্বধি লেত।

বিস্ক আ মৈথিল
হুদ্দা ব্যরসায
রিকসিত দেশ রা রিকসিত বাজ্যক পাছ যদি স্বক্ষ্ম রূপস ঁ দেখ্ ত ঁ ভেটৈত জে ওহি ক্ষেত্রক ব্যরসায রিকাসক হুন কাবণ অছি। মিথিলামে রিদ্বান রা জ্ঞানী মৈথিলক কমী নহি। ব্যাপাবী রস্তু লোগসো ৱৱাৱৱি নহি।
মৈথিল ব্যাপাবো কবতাহ ?
সিহ্মী় মাড়রাবী আ পংজাৱী সমাজ মিথিলামে অপন ব্যরসাযমে মৈথিল জক াঁ সংস্কাব অপনোনে কে সাথ কেরল ৬০ সালমে ৱঁঢ়ি যা ধাক জমা লেলাহ, পবন্তু হম মৈথিল জে ছী জে ডীগ হকৈস ঁ হুর্সতেহ নহি ভেটৈ বহুন অছি।

মৈথিল মিথিলামে কী কবতাহ ?
মিথিলামে কিছু মৈথিলকে দেখবাঁ২ মে আযত জে় মিথিলাক সিন্ধী় মাড়বাবী আ পংজাবী কে ব্যবসাযমে নৌকবী কবতাহ।
হিন্দী অখবাঁব মাঁগি কএ পঢ়তাহ় পবঞ্চ মিথিলাক রিদ্বান বা জ্ঞানী অখবাঁব প্রিন্ট আ বাঁজাব মে আনবাঁক জোখিম নহি উঁঠৈ২তাহ।
মিথিলামে চাহক দুকান পব প্রতিদিনক দিনচর্যামে নান্ব কে নানূবাণী পব অখল্ড বঁহস কবতাহ।
মিথিলামে স্বগদসঁ কিছু মৈথিল স্বগদখোব ব্যবসাযমে বৃদ্ধি কেনাহ হ২। কোনো নিযমকে পানণ নহি় কএ বহল ছথি। অপন নিযম বঁনা কহ অপবাধ মে বমল ছথি। মিথিলা বৈঁকক শ্ববআত হোএ অপবাধী স্বগদখোব মৈথিল কে মেললাগ একটা বঁঢ় পৈঘ অপবাধ অছি।
!!!! Great Risk !!!!
ক্ষদা বঁহুতো অছি় পব বিক্সা সঁ জ্যাদা ভযারহ।
সন ২০০১ক জনগণণা কে অনুসার মিথিলাক আবাঁদী কবীবঁ ৬ কবোড় ছল। জাহিমে় ব্যবসাযিক বস্থা ২ প্রতিশতো কম।
বঁহুতোসঁ পুছলহু় জে এতবাঁ প্রতিশত কিযাক কম অছি় পবঞ্চ একব কাবণ কী সে নহি জানি সকলহুঁ।
মিথিলাসঁ আযাত আ নির্যতিক বাঁতে২ ছোড়ু, ব্যাপাব তঁ বঁদ সঁ বঁদতব
মিথিলাক পাঁচ জিলাক কেস স্টডী:

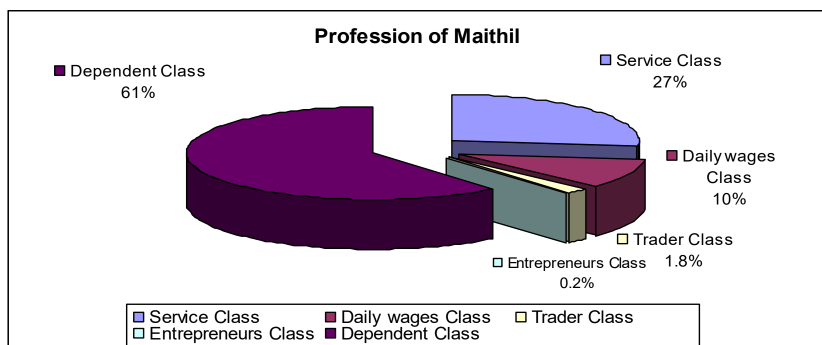


পাঁচো জিনাক স্ফন খাৰাঁদী সন ২০০১ জনগণনামে কবীৱঁ এক কৰোড় খঠাগস নাখ ছন। জনসংখ্যা খন্বমানিত ঔ ৰা ৭ প্ৰতিশতসঁ প্ৰতিসানে বৃষ্কি ভৱ বহন খছি। একটা ৰাঁত মহসূস ভৱ বহন খছি জে মিথিনামে গবীৰী কম ভেন খছি। যদি সন ১৯৮০ সঁ পহিনে হবেক গাঁৱমে হবেক দিন ৪ যা ঔ ঘৰমে উঁপৰাস বইত ছনৈক্ল পবঞ্চ সে উঁপৰাস খাৰঁ গবীৰীক উঁপৰাস প্ৰজা পাঠক উঁপৰাস হোগত খছি।

স্ক্দা ভৌতিক স্বৰিধাক পিছড় াপন তঁ পাবকাণ্ঠ্যা পব খছি। জিনগী ভগৱানক ভৰোসে।

পাঁচো জিনাক মৈথিন পব যদি ধ্যান দেন জাএ তঁ একটাক সদস্য পবিৱাৰমে নৌকবী কবযৰাঁনা ৰঁাকী খাশ্ৰিত সদস্য কিছ নহি কবযৰাঁনা ৰঁক্কি গপ ছটয ৰাঁনা খা শান ৰঁঘাবয ৰানা।

পব খাশ্ৰিত ভেনাএ খপনেমে একটা বিক্স এহন জে ভাৰুক জৰুবতসঁ জ্যাদা খা কৰ্মঠহীন জ্যাদা ৰঁনাৰৈত খছি। ! ! ! ! গ্ৰেট বিস্ক ! ! ! !



জনসংখ্যাক বৃঙ্খি মান্ব জে কণ্ঠক পহাড়। হব ক্ষণ হবেক দিস স্থিতি দযনীয হেরেঁ কড়ত।
মিথিনামে মৈথিন বিক্স নেতাহ ?
মিথিনামে মৈথিন তঁ ় খপন জিনগীক বিক্স নেরাঁঃমে সর্রোপবি ছথি। জেনা কী় সোচ্ নদি কে ঙুঁপব জড় জড় হানমে প্বন ওহি পব খচাখচ রঁস় খা বেন গাড় ী জাহিমে ছত সেহো ভড়ন। ফোটৈ দেখন জাএ।





सोच् कनिह जे जिनगी आओब मौत के बीच केरन एकटा बिक्स फैक्टैव अछि। मैथिल जिनगीक बिक्स हव क्षण। मिथिलामे जिनगीक बिक्स बँड़ आसान पर व्यापक बिक्स बँड़ कठिन अछि।

**<u>जितेन्द्र झा</u>**

<u>स्वबक माला गँथती अंशु</u>



हम सभ अपने भाषाकेँ हेय दृष्टिसँ देखैत छी तेँ हमर भाषासाहित्य, गीतसंगीत आ संस्कृति पछुआ रहल अछि। ओ कहरँ छन्हि अंशुमालाक। अंशु दिल्ली विश्वविद्यालयमे संगीतमे एम फिल कऽ रहल छथि। मैथिली गीत संगीतकेँ राष्ट्रीय स्तरधरि लक्ष्य बखनिहारि अंशु मैथिलकेँ अपन भाषा-संगीत प्रतिक

दृष्टिकोण सेहो समृद्ध होइत छथि।
अश्विनी संगीतक विद्यार्थी छथि । दिल्ली विश्वविद्यालयसँ एम. फिल.मे अध्ययनरत अश्विनक माय हिनक पहिल गुरु छथिन्ह। ओ माय शोभा सिंह खास मैथिली लोक संगीतक शिक्षा लेने छथि । तहिना एखन किछु वर्षसँ ओ रेडियो कलाकार हृदय नारायण झासँ संगीत शिक्षा ल' रहल छथि । युवा कलाकारक रूपमे सीतायण उत्सवमे गाबि चुकल अश्विनी विभिन्न रेडियो कार्यक्रम आ स्टेज प्रोग्राममे सहभागी भ' क' मैथिली गीत गाबि अपन स्वरसँ प्रशंसा बटोरैत रहल छथि ।
एखन दिल्लीमे रहिकए संगीत साधनामे जुटल अश्विनी दिल्लीमे आयोजित विभिन्न कार्यक्रममे मैथिली गीत संगीत परसल करैत छथि ।
मैथिली भाषीमे अन्य भाषाक गीत संगीतक प्रति बढैत रुचि मैथिली गीतसंगीत लेल हितकर नहिं रहल हिनक कहब छन्हि । दिल्लीमे आयोजित एकटा कार्यक्रमकेँ याद करैत ओ कहैत छथि जे जाहि कार्यक्रममे लगभग ४ हजार मैथिल रहथि ताहि कार्यक्रममे चाहियोकए मैथिली गीत नहि गाबि सकलहुं । ओहि कार्यक्रममे भोजपुरीक डिमान्ड पूरा करैत अश्विनकें मैथिली लोकल गीतक लेल मोन मसोसिक' रह' पडलनि । मुदा अश्विनी स्वीकारैत छथि जे गायक श्रोताक रुचिक आगू विवश होइत अछि, 'जनता जे सुनए' चाहत सएह गाबए पडत अश्विनी कहलनि । पटनामे मैथिली गीत गाबिक श्रोताक तालिक गडगडाहटिसँ खुश भएलाक आदति पडि चुकल अश्विनकेँ दिल्लीमे आबिकए मैथिल भाषीक सेहनल सांगीतिक स्वादसँ अकच्छ लागि गेल रहनि ।
मैथिलीमे लोकप्रिय धुनक अभाव रहलाक बात अश्विनी

কিন্নহ্ মান' নেন তৈযাব নহি ছথি । ধ্ন রা নযক খভাব নহি, শ্রাতা এহিসং খনভিজ্ঞ বহন হিনক দাবী ছন্হি। মৈথিনী সংগীতকর্মী এখনো খার্থিক সমস্যাসঁ নডি বহন ছথি, খংশ্ব কহৈত ছথি । এহিক খভাবক কাবণ প্যাবোডী গীতক সহাবা নেৱাঁনেন সংগীতকর্মী ৱাঁধ্য ৱঁনন খছি । মৌনিক গীত,সংগীতমে নগানীকতাকি খভাব বহনাসং সেহো প্যাবোডী সংগীত নোকপ্রিয ভঽ বহন খছি, হিনক কহৱ ছনি । 'সভসঁ পৈঘ কমজোবী শ্রাতামে ছৈ কনাকাব তঁ সভ ঠাম হাবন বহৈযা' প্যাবোডী প্রেমীপব বোষ প্রকষ্ট কবৈত খংশ্ব কহৈত ছথি । হ্মদা মৈথিনীমে স্তবীয গীত সংগীত শ্রাতাকেঁ ভেষ্টক চাহী সে খংশ্বক বিচাব ছন্হি । মৈথিনী নোকবংগ মন্চদ্বাবা দিল্লীমে খাযোজিত কার্যক্রমমে শ্রাতাসঁ ভেষ্টন রাহরাহীক উঁদাহবণ দৈত খংশ্ব কহৈত ছথি জে শ্রাতাক মনোবন্জনক নেন স্তবীয কার্যক্রম সেহো হএৱাঁক চাহী ।

মৈথিনী বংগকর্মমে নগনিহাবকেঁ উঁচিত সম্মান তক নঞি ভেষ্টি সকন, খংশ্বমানাক খন্বভব ছন্হি । মৈথিনী কনাকাবকেঁ খাৱ' ৱঁনা দিনমে ৱহ্ত মান সম্মান ভেষ্টক চাহি, হম গএহ চাহৈত ছী খংশ্ব কহৈত ছথি। মৈথিনী সংগীতকেঁ একটা উঁচাঙা পব পহ্চএৱাঁক নক্ষ্য বখনিহাবি খংশ্ব মৈথিনী বংগকর্মমে এখনো নডকী নেন ৱহ্তো কঠিনাঙা বহন ৱঁতৱৈঁত ছথি ।

খংশ্ব খাগ্ব কহননি–মৈথিন সমাজসঁ জাধবি কনাকাবকেঁ সম্মান নঞি ভেষ্টতে তাঽ ধবি এহি ক্ষেত্রমে নডকী খপন প্রতিভা দেখাৱ' নেন খাগ্ব নঞি খাওত ।



<u>প্রিয পাহ্ন</u>

পাবম্পবিক মৈথিনী রিরাহ গীত সমেটন এক গোট মৈথিনী ক্যাসেট খাএন খছি প্রিয পাহ্ন । এহি ক্যাসেটমে মৈথিনীক রিরাহক পবিছনসং রিদাওা ধবিক গীত সভ সংগ্রহিত খছি । খংশ্বমানাক একন প্রস্তুতি বহন গ ক্যাসেট মৈথিনী রিরাহ পবম্পবাক কিছু খাস রস্তুপব কেন্দ্রিত খছি । এহিকে রিশেষতা জযমান গীত জে কি মিথিনাক মৌনিক গীত খছি বহন গাযিকা খংশ্বমানা কহৈত ছৈথ । জীমনাব(ববিযাতী খএরাঁক কান গাখাàন জাএরঁনা গীত) খারঁ রঁহ্তোক ঠোবপব নর্গ ছঠৈত ছন্হি, এহি ক্যাসেটমে একবা মহত্ব দেন গেন খছি । প্রিয পাহ্ন ক্যাসেট নর প্বান দ্নূ পীঢীক নোক পসন্দ ক'বহন খংশ্বক কহরঁ ছন্হি । কন্যা নগন গীত, পবিছন গীত,দেখ্ বসে বসে দ্নহা, চান কটাক্ষ, দেহবি ছেকাওন, সিন্দ্বদান খা সমদাওনক গীত এহি ক্যাসেটমে সংকনিত

अछि । एहि क्यासेटमे सीमाक भितर कएल जाएबला हंसी मजाक आ ताहिभितर नुकाएल प्रेमके देखएबाक प्रयास कएल गेल अछि । गंगा क्यासेटक प्रस्तुति बहल ग क्यासेट एखन मात्र अडियोक रूपमे अछि । क्यासेटमे गीत संकलन मदय नारायण झा आ शशि किरण झा, संगीत कमल मोहन चुन्नुक छन्हि । गायिका अंशुमालाके एहि क्यासेटसं बहुत बेशी आशा छन्हि । एना आधुनिक गीतक बजारमे ओ बिबाह गीत अलग स्थान बनाओत से आशा कएल जा सकैया ।



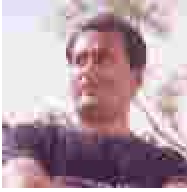
महाप्रकाश (१९४६-), जन्म रनगाँव, सहरसा। १९७२ ई. मे पहिल कविता संकलन "कविता संभवा"।

सुभाष चन्द्र यादव

आधुनिक मैथिली कथा-साहित्यमे एकटा नाम जे सर्वाधिक स्वीकृत आ प्रसिद्धि पौलक अछि, ओ थिक- सुभाष चन्द्र यादव। सुभाषक कथा-यात्रा पर दृष्टिपात करैत ई लगैत अछि जे ओ कथाक अन्वेषण कयलनि अछि। प्रायः लेखनक आरम्भ करितें ओ अनेक स्थान आ अनेक भाषाक यात्रा शुरू कयलनि। ई यात्रा वा भटकाव, जे हुनक नियति सेहो रहल अछि, हुनका अनुभव सँ लैस कयलक, तीक्ष्ण दृष्टि देलक आ अपन समकालीन सँ अलग विशिष्ठ साँचामे ढालि देलक।

ओ एकटा अलग भाषा-संस्कार, शिल्प-संस्कार ग्रहण कयलनि जे अपन स्वरूप मे व्यासजन्य अछि। लेकिन ई स्वरूप कतहु सँ ओझराओल नहि अछि, अपितु कलाक सहजता आ सहजताक कला केँ विलक्षण ढंगेँ उद्घाटित करैत अछि। ओ अपन कथा मे परिवेशक कोनो पैघ आयोजन कि पसारमे नहि फँसैत छथि; हुनक अनुभवसिद्ध भाषा, अविकल्प शिल्प सहजहि अपेक्षित

পবিরেশ খা যথার্থ কেঁ একটা পৈঘ ফনক দঃ দৈত খছি। স্বভাষ কোনো বাগ-রিবাগক উত্তজনামে জতেক নিপ্ত ছথি, ওতরেঁ নির্নিপ্তা। স্বভাষক জীরন খা সাহিত্য উপব সঁ জতেক শাঁত খা স্থিব রুমাগত হো, ভীতব সঁ ওতরেঁ খশাঁত খা খস্থিব খছি। হ্নক খন্তর্দৃষ্ঠি স্যাহ খা সফেদকেঁ নির্মমতা সঁ উদ্ঘাটিত করৈত খছি। হ্নক বচনাকাব সময়ক সমুদ্র মে ডূরি-ডূরি মোতী-মাণিক তাকি খনৈত খছি। এহি তবহেঁ স্বভাষক নেখন যথার্থক খমূন্য দস্তারেজ রঁনি জাগত খছি।



<u>ज्योति प्रकाश लाल</u>, ग्राम–जगतपुर, सुपौल, बिहार (भारत)।

ज्योतिप्रकाश लाल बिप्रो टेक्नोलोजी, हैदराबादमे सॉफ्टवेयर अभियन्ता छथि, स्पेन आर यू.एस.ए.मे पहिने काज कए चुकल छथि। एप्लिकेशन आर वेब आधारित सॉफ्टवेयरक निर्माणमे संलग्न। माइक्रोसॉफ्ट कॉरपोरेशन, वाशिंगटनमे विन्डोज ऑपरेटिंग सिस्टमपर शोध आर विकासमे योगदान। स्कूल, कम्प्यूटर इंस्टीट्यूट आर सरकारी पोलीटेकनिकमे शिक्षणक पूर्व अनुभव। वर्तमानमे साक्षात्कार आर व्यक्तित्व विकासपर पोथी लिखबामे व्यस्त।

श्री लालमे संगठनात्मक शक्ति छन्हि आर ओऽ विभिन्न ग्रुप आर फोरमसँ जुड़ल छथि। किछु आर अनुभवी सहयोगीक संग ओऽ www.jyoticonsultant.com द्वारा छात्र कैरियरक स्वप्नाकें दिशा दऽ रहल छथि।

<u>आजुक समय मे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व</u>

(Importance of Computer Education in Modern Days)

कम्प्यूटर: कि आ किएक ?

आजुक दिन मऽ कम्प्यूटर शब्द किनको सँ बाँचल नहि अछि। ओना तँ हिन्दी वा मैथिली मे कम्प्यूटरक नाम अछि "संगणक" मुदा एहि नाम सँ बहुतो लोकनि अनभिज्ञ होयबा आओर आ शब्द किछु अनगढ़ाओन बुझायल जायत। खैर.... अपन मातृभाषा मैथिली मे एहेन ढेर अंग्रेजी शब्दक प्रयोग करैत छी जे विशुद्ध मैथिली

মে রিচিত্র র্ব্যাএন জাযতি ছৈক। ঋাগ কেঁ দিন মে সভ কেঁ 'কম্প্যুটৈব সাক্ষব' (Computer Literate) হোরাক চাহী। 'কম্প্যুটৈব সাক্ষবতা' (Computer Literacy) সঁ মতনৱ জেঁ কোনো ভী ঋাদমী 'কম্প্যুটৈব ঋনুপ্রযোগ' (Computer Applications) কঁ প্রযোগ মে নারি সকৈথি। দোসব তবহেঁ যদি গ বাঁত কেঁ কহী তঁ একটা ঐহেন ঋাদমী জেঁ কম্প্যুটৈব কঁ প্রযোগ কড কেঁ কোনো কাম কড সকৈথি।

কম্প্যুটৈব সঁ নগভগ সভ কাম ভড সকৈতি ঋছি। জাহি কাবণে রর্তমান সময মে কম্প্যুটৈব একটা মহত্বপূর্ণ ঋংগ রৈনি গেগন ছৈক। ঋাজুক ছোট – মোট র্যাপাবীযো একটা কম্প্যুটৈব খবীদরাঁক ঋা কম্প্যুটৈব ঋঁপবেটৈব বখরাক হিস্মত কবৈত ছৈথি। একব নোকপ্রিযতা ঋা মাঁগক পাঁছা ঢেব কাবণ ঋছি। উঁদাহবণক তৌব পব দেখি তড: জেনা কোনো দবখ্বাস্ত রা চিঠ্ঠী কোনো ওহিস মে দেবাঁক জরুবত হোযত ঋছি তড দবখ্বাস্ত কঁ টাগপবাগটৈব (Typewriter) পব টাগপ কবা কঁ দেতি ছী, হ্মদা গ টাগপ কবাযন দবখ্বাস্ত মে রঁহুতো কমী ঋা ঋপূর্ণতাক সংভারনা বহৈতি ছৈক, জেনা Spelling Mistakes কে সংভারনা, পাবাগ্রাহ্ক Alignment মে সমস্যা, পৃষ্ঠক Margins মে সমস্যা, গত্যাদি।

গ সভটা সমস্যাক সমাধান ঋপনে কম্প্যুটৈব সঁ রিনা রঁহুত কঠিনাঙ সঁ কঁ সকৈতি ছী। কম্প্যুটৈব মে Spelling Checking কেঁ স্বরিধা ঋছি জেঁ ঋপনে – ঋাপ রঁতা দৈতি জেঁ কোন – কোন শব্দক হিজ্জে (Spelling) গনত ঋছি। একব ঋনারা

কম্প্যুটৈব Grammatical Errors সেহো পকৈব সকৈতি খছি। গ সবঁ স্বৰিধা (Facilities) সঁ নিখন দবখ্বাস্ত বা চিঠ্ঠী মে কোনো Spelling Mistakes খা Grammatical Errors কেঁ সংৰাভনা কম খছি। পাবাগ্ৰাফক Alignment খা Margins কেঁ তবীকা বঁহ্ত নী স্বৰিধাজনক খছি। একব খনাৱে একটা দবখ্বাস্ত বা চিঠ্ঠী নিখবাক খা ওকব ছাযাপ্ৰতি (Printouts) নিকনবাক তক জেঁ – জেঁ স্বৰিধা (Facilities) হোৱাক চাহি বো সভটা কম্প্যুটৈবক সোফ্ ট্বেযব পৈকেজ (Software Package) মে ছৈক।

রর্তমান সময মে কম্প্যুটৈব বঁহ্ত খাঁগা বঁঢি গেন খছি। Banking Sector মে জহিনা ধ্ম – ধডাকা সঁ প্ৰযোগ মে খছি তহিনা Medical কেঁ ক্ষেত্র মে। জহিনা বেনক সৰাবী কেঁ খাবক্ষণ মেঁ কম্প্যুটৈবক Whistle বাঁজি বহন খছি তহিনা হৱাগ জহাজ কেঁ সেহো উড় া বহন খছি। মোটা – মোটী যদি এক নাঙান মে কহী তঁ নবহ্যগ মে কম্প্যুটৈব ওহিনা সবঁ ক্ষেত্র মে জৰুবী খছি জহিনা তবকাবী মে নোন।

রর্তমান সময মে কম্প্যুটৈবক খাবশ্যকতা কেঁ খাধাব পব গ কহন জা সকৈতি খছি জেঁ যদি খহাঁ কম্প্যুটৈব নহি জানৈত ছী তঁ খহাঁ নিবকক্ষব ছী। খংগ্ৰেজী মে সেহো হ্নহাৱবা (Proverb) বঁনি গেন খছি – "If you are not a computer literate it means you are illiterate."

খাগ কেব সময মে জিনকা পাস

Internet কেঁ স্বরিধা উঁপনর্ব্ধ খছি তঁ হ্নকা নেন রঁহ্তো চীজ রঁদৈনি গেন ছৈকি। যদি খাগ কেঁ সময সঁ দস – রাঁবহ সান পাঁছা কেঁ সময মে জাগু খা পত্রাচাবক মাধ্যম কেঁ রাঁবে মে সোচী তঁ পহিনে স্মৃতি-পট্টন পব থোক মে পোস্টকার্ড, খন্তবদেশী খা নিফাফাক খবীদরাক রাঁত খারি জাযতি। একব পাঁছা একটা কাবণ খছি জেঁ ওহি সময মে পত্রাচাবক মাধ্যম নেন পোস্ট – ঔফিশ কেঁ প্রখব ভূমিকা ছনি। খাওব সরঁহক নেন ডাকক মাধ্যমে স্বগম খা সবন ছনি। পত্র কেঁ খনারে গাম – গাম মে মনীওডব পহুঁচেরাঁক মে সেহো ডাক খগ্রণী ছঠি। এরম প্রকারে ডাক পত্রাচাবক খা মনীওডব রাস্তে এক মাত্র সাধন বুঁঝনা জাযতি ছনি। হ্মদা নহুঁএ – নহুঁএ সময খা দ্নিযা মে পবিরর্তনক নীনা জাবী বহৈত খছি। ও পত্রাচাবক পবিরর্তনক নীনা মে ক্বিযব (Courier) খা ও-মেন (E – mail / Electronic – Mail) খাযনি খা ধ্ম – ধড় াকা সঁ পত্রাচাবক মাধ্যম পব কব্জা কঁ নেনক। খাজ্ক দিন মে জিনকা ক্বিযব রা ও – মেনক স্বরিধা খছি রো সরঁ পোস্ট – ঔফিশ কেব বাস্তা – পেবা রিঁসবি গেন ছৈথি। সরঁ নোকনি জেঁ প্রত্যেক দিন ডাকিযা কেব গংতজাব মে দবরাজা পব একটৈক নগা কেঁ রৈঁঠন বহৈতি ছনাহ রো সরঁ খাগু ডাকিযা কেঁ চিহ্নতো নহি ছৈথি। কাবণ রঁহ্তো পত্রাচাব ও – মেন সঁ হী সম্ভব ভড জাযতি খছি, খাস কড কেঁ শহবী পবিরেশ মে।

কিএক ? ? খা ও – মেন কেঁ প্রখব জগহ রঁনেরাক কাবণ কী ? একব কাবণ তঁ রঁহ্ত খছি খা তাহি মে সরঁ সঁ পৈঘ কাবণ খছি জেঁ ও – মেন রঁহ্ত হী সস্তা খা তেজ খছি। সস্তা সঁ মতনরঁ খছি

জেঁ যদি হম একটা দস পন্না কেঁ পত্র কতোঁ ডাক সঁ ভেজব তঁ জেঁ ভেজবা মে পায় লাগত ওহো পায় ও – মেল ভেজবা মে লাগল পায় সঁ বহুত কম জ্যাদা হোয়ত। আওর তেজ সঁ মতলব জেঁ ডাক সঁ ভেজল পত্র যদি গন্তব্য স্থান পর চারি দিন মে পহুঁচত তঁ ও – মেল কয়নি পত্র দুগ মিনট মে গন্তব্য স্থান পর পহুঁচি জায়তি। একর অলাবা ডাক সঁ ভেজল পত্র কঁ গন্তব্য স্থান সঁ কম পারি সকৈতি ছী মুদা ও – মেল কেঁ কোনো স্থান পর পারি সকৈত ছী। মতলব ডাক সঁ ভেজল পত্র যদি কোনকত্তাক কেঁ অছি তঁ ওহো পত্র কোনকত্তা মে কম প্রাপ্ত ভড সকৈত অছি, মুদা ও – মেল মে ওহো বাত নহি অছি; ও – মেল কঁ বিশ্ব কেঁ কোনো জগহ মে পারি সকৈত ছী। আগ যদি কোনো শহর মে নৌকরী খোজবা লেল জাগ তঁ সাক্ষাকার (Interview) লেবৈ বনাক পহিল প্রশ্ন যৈহি হোয়ত জেঁ "কম্প্যুটর কেঁ জানকারী অছি ? " বা "Do you know computers ? ". আগ ছোট – মোট অস্পতালো মে বিন বা রসীদ কম্প্যুটর সঁ নিকালল জায়তি অছি। যৈহি কাম পহিল সময় মে বিনা কম্প্যুটর সঁ হোয়তি ছলি। যদি বিকসিত শহর কেঁ কিরানা দুকান কঁ দেখি তঁ ওহো দুকান সঁ ভী কোনো সমান খরীদবাক বাদ কম্প্যুটর সঁ কম নিকলল রসীদ ভেটৈত। দৈখি তঁ কম্প্যুটর পূরা দুনিয়া মে ছা রহল অছি চাহে ওহো দরাও কেঁ দুকান মে হো বা বৈংক মে।

কম্প্যুটর প্রয়োগ করবা সঁ মুখ্য লাভ:

(অ) সময়ক বঁচত (Saving of Time): কম্প্যুটর প্রয়োগ করবা সঁ সময়ক বহুত বঁচত হোয়তি অছি।

জেঁ কোনো হিসাৱ – কিতাৱ কবরা মে ৭ – + ঘংটা নগৈতি খছি, ওহি কাম কড কম্প্যুটৈব ৭ – + মিনট মে কড সকৈতি খছি।

(ৱ) একদম সহী পবিণাম (Accuracy in Results):কম্প্যুটৈব কোনো ভী হিসাৱ – কিতাৱক পবিণাম সহী দৈতি খছি। কোনো তবহ কেঁ হিসাৱ মে গনতী নহি কবৈত খছি।

(স) দ্ৱাবা কাম কববাক জৰুবত নহি (Elimination of Repeatitive Tasks): কোনো কাম এক বেৰ জঁ কম্প্যুটৈব সঁ ভড গেন খছি তঁ ওহি কাম কেঁ Save কড কেঁ বখরাক ৱাদ দ্ৱাবা ওহি কাম কেঁ বিনা কবনায পবিণাম পারি সকৈতি ছী।

(দ) খাদমী কেঁ মেহনতক ৱচত (Saving of Man Powers): যদি এক খাদমী সঁ কম্প্যুটৈব প্রযোগক উঁপবাঁত খাঠ ঘংটা মে সঁ ছঃ ঘংটাক ৱচি জাযতি খছি তঁ রো ছঃ ঘংটাক উঁপযোগ কোনো দোসব কাম মে ভড সকৈতি খছি জাহি সঁ উঁপোদন (Production) ৱঢ়ি সকৈতি খছি।

(ম) থকারটক সংভাবনা নহি (Lack of Tiredness or Always attentive): খাদমী নগাতাব ৪ – ৬ ঘংটা কাম কবত তঁ ছঃটম ঘংটা মে কাম কববাক বহতাব খা হ্ফূর্তী কম ভড জাযতি খছি। মতনৱ খাদমী মে থকান মহসুস কববাক খরগুণ রা গুণ খছি ঝদা কম্প্যুটৈব এক মশীন রুপ মে থকান খনুভব নহি কড সকৈতি খছি। কম্প্যুটৈব খাঠ ঘংটা নগাতাব কাম

কবক উঁপবাঁতো নঁবম ঘঁণ্টা মে কাম ওহিনে বহতাব খা ফ্তী সঁ কবৈত খছি জাহি বহতাব খা ফ্তী সঁ ব্রো পহিন ঘঁণ্টা মে কবন ছনি।

কনা পারি কম্প্যূটবক শিক্ষা:
সৱঁ নৌকবী কবৈয ৱঁনা দ্গ তবহেঁ কম্প্যূটবক শিক্ষা পাৱৈতি খছি। পহিন, বোজগাব কবৈয ৱঁনা কেঁ খপন কম্পনী সঁ খ্দ কোনো – কোনো কম্প্যূটব সাক্ষবতা যোজনা কেঁ খন্তবগর্ত্ত শিক্ষা ৱা ট্রেনিংগ (Training) মিন জাযতি খছি। দোসব, নৌকবী খোজনিহাব কেঁ নৌকবী ঢ্ঢ়বা সঁ পহিনে কোনো ডিপলোমা (Diploma) কেঁ কোর্স (Course) কবৈ পবৈতি ছৈক।
কম্প্যূটব শিক্ষা (Computer Education) খাজ্ক দিনক জরুবত ৱঁনি গেগন ছৈক। জিনকা – জিনকা নৌকবী নেৱাক খছি হ্নকা সভকেঁ প্রাবংভিক জানকাবী (Fundamental Knowledge of Basic Computer Operation) চাহরে কবী। কম্প্যূটব শিক্ষিত (Computer Literate) হোৱাক নেন খনেকো সাঘন খছি, জেনা:

(খ) Short – term Computer Course or Diploma: খাজ্ক দিন শহব – শহব মে খনেকো কম্প্যূটব সঁস্থান খ্জনি খছি। জাহি সঁ তীন, ছঃ ৱা ৱাঁবহ মহীনা কেঁ কোর্স (Course) কড সকৈতি ছী। কছ কোচিংগ সঁস্থান (Coaching Institute) বগৈবহ সেহো খ্জনি খছি জাহি জগহ সঁ জরুবতক ক্রৈশ কোর্স (Crash Course) সেহো

কড সকৈতি ছী।

(ৱ) কোনো কম্প্যুটৈব কোচ (Computer Coach) সঁ: ত্থগব স্বৱিধা ভড সকৈ তঁ কোনো কম্প্যুটৈব জানিহাব কড পকৈব সকৈতি ছী। জেনা ঘব মে কেও ভাঙা, কোনো চাচী ৱা কোনো দোস্ত, তঁ হ্নকা সঁ সেহো কম্প্যুটৈব সীখ সকৈতি ছী। Privite Jobs মে তকোনিক কুপ সঁ কোনো সর্টিফিকেটৈক (Certificate) কেঁ জৰুবত নহি হোযত। ৱাঁদ মে মঁগনা পব কম্প্যুটৈব কোর্স কড কেঁ সর্টিফিকেট দ্ড দেৱৈকি।

(স) কিতাৱঁক মদদ সঁ: ত্থগব ঘব মে কম্প্যুটৈব ত্থছি তঁ, জে ৱিষয ৱা সোফ্টৱেযব পৈকেজ (Software Package) সিখৱাক ত্থছি, ৱো কিতাব ৱাঁজাব সঁ খবীদ কেঁ কম্প্যুটৈব সীখ সকৈতি ছী।

(দ) CD - Rom কেঁ সহাযতা সঁ: ৱাঁজাব মে ৱহুতো CD – ROM (Compact Disk – Read Only Memory) ৱা CD ৱহুতো কম্প্যুটৈবক Basic Courses ৱা Operations কেঁ নেন মিলৈত ত্থছি। জাহি সঁ নগভগ সভটা Basic Computer Operations সীখন জা সকৈতি ত্থছি।

গাঁৱ – দেহহাত মে কম্প্যুটৈবক ঙঁপযোগ

ত্থাজুক সময মে ওবগেনিক খেতী (Organic Farming) কেঁ ৱহুত ৱোন – ৱানা ত্থছি। ত্থাওব ঢ়েব Software Packages কৃষি কেঁ নেন

Applied Computer Science कें आधार पर उपलब्ध अछि जाहि सँ धान, गेहूँ इत्यादि फसल सभ कें उत्पादन मे नया रूप देल जा सकैत अछि। साथे – साथ Pest Control, Weed Control, Plant diseases इत्यादि के सेहो पहचानि सकै छी। ई सभक अतिरिक्त Multi – Media (जेकरा सँ फोटो देखल जा सकैति अछि आ सँगे – सँग आवाजो सुनल जा सकैत अछि) आधारित Software Package (Software Application) बनल अछि आओर सुविधापूर्वक देखल आ सुनल जा सकैति अछि। एकर अलावा ई Software कें मदद सँ भिन्न प्रकारक कृषि – संबंधी Decision – Making सेहो भऽ सकैति अछि।

यदि कम्प्यूटर शिक्षित छी तँ आइ कें दिन मे बैंकिंग ए.टी. एम (ATM), जे छोटे – छोटे शहर आ बाजार मे उपलब्ध अछि, कँ ओपरेटे करबा मे आसानी होयत। पैसा निकाल – बाहर करैय मे कोनो दिक्कत नहि होयति। एकर अलावे लगभग सभ बैंक मे Internet Banking कें सुविधा उपलब्ध अछि। ई सुविधाक उपयोग वो व्यक्ति कँ सकैति छैथि जिनका Computer Operation बुझल होय।

आइ कें समय मे ए.टी. एम (ATM) आकारक बेलरे आरक्षण मशीन लगभग प्रत्येक बेलरे स्टेशन पर मिल जायति। आ ओकर Operation कम्प्यूटर जँका होयति छैक। कम्प्यूटर सिखला उपरांत आरक्षण करबा मे सुविधा होयति। ई एकटा कम्प्यूटर सीखल व्यक्ति कँ Indirect फायदा होयत।

আজুক দিন মে গাঁব – দেহাত মে Teachers Training মে কাফী দিক্কত আ Staff কেঁ কমী হোযতি অছি। যদি কম্প্যুটব সঁ Training দেল জায তঁ Training জ্যাদা প্রভাবী আ সফল হোযতি। কম্প্যুটব সঁ Video – Conferencing ভ সকৈতি অছি। Video – Conferencing সভ ক্ষেত্র মে বঁঢ়িযা ভূমিকা নিভাযত, চাহে Pest Control বা Teachers Training হোয।

কম্প্যুটব শিক্ষিত ব্যক্তি যদি কোনো বাঁহবক যাত্রা (Tour and Travels) কববা লেল সোচেত ছৈথি তঁ হুনকা গর্ন্টবনেট সঁ সভটা Tourism Department কেঁ জানকাবী প্রাপ্ত ভ সকৈতি অছি। বো Online Hotel Booking, Ticket Booking গত্যাদি কঁ সকৈতি ছৈথি।

গাঁব মে কিযো Printing Press স্থাপিত কববা লেল সক্রিয ছৈথি তঁ হুনক বঁঢ়িযা Publishing কেঁ লেল কম্প্যুটব আ Publishing Software কে ব্যবস্থা কবৈক চাহী।

গৃহণী / অবকাশ – প্রাপ্ত ব্যক্তি কে লেল কমপ্যুটব শিক্ষা হম এক বেঁব গাম পব একটা এম. এ. (M. A.) পাস ভৌজী, জেঁ পটনা মে বহৈতি ছথিন্হ, সঁ পুছ্লন্হ, 'যে ভৌজী, যে ভৌজী, অহাঁ পটনা মে বহৈত ছী, খালী সময মে জখন বঁচা সবঁ স্কূল মে বহৈত অছি, কম্প্যুটব কিএক নহি সীখ লৈত ছী, আগু কাম দৈতি'। জবাঁবঁ মে ভৌজী বাঁজলিহ, 'ধোড়ি জাঙ, হম কী কববঁ কম্প্যুটব – ফমপ্যুটব সীখ কৈয'। হ্মদা আগ ছোট –

ছোেট শহেবক নজবিযা ৱঁদনি গেন ছৈকি। ছোেট – ছোেট শহেব মে কৌন – সেন্টব (Call - Centre), ডাটা – এন্ট্রী (Data - Entry) গত্যাদি খুজি গেন ছৈক আ ওকব কাম মিনৈত ছৈক। কৌন – সেন্টব মে অঁগ্রেজী কে অনাবা হিন্দী মে সেহো Customer Handling হোযত ছৈক। ডাটা – এন্ট্রী জেঁ একটা পঢ়ল – নিখন ওবত ভি অপন ৪ – ৬ ঘংটা সময দ্ড কড প্ৰবা কড সকৈতি ছৈথি। গ কাম একটা অবকাশ – প্রাপ্ত ব্যক্তি ভি কড সকৈতি ছৈথি। ছোেট – মোট জগহ পব DTP, Accounting Package বা Graphics Designing জানকাব আদমী কেঁ জরুবত হোযতি ছৈক আ গ কোর্স কববা মে কোনো জ্যাদা সময নহি নাগৈতি ছৈক। ২ – ৬ মহিনা মে কিযো আদমী গক ৱঁঢ়িযা Trainer কেঁ Guidance মে Expert ভড সকৈতি ছৈথি।

কোন কম্প্যুটব খবীদী ? Branded বা Assembled Computer ?
পহিন চীজ জেঁ অহাঁক জরুবত আ ৱঁজট কেহেন অছি ? Branded কম্প্যুটব মে fixed type কেঁ Machinery বহৈতি ছৈক আ Assembled মে অপন জরুবতক ম্ভতাবিক Machinery নগবা সকৈতি ছী। তুলনামেক ঢ়ংগ সঁ দেখি তঁ Assembled কম্প্যুটব সস্তা পবত। ম্ভদা জখন কম্প্যুটব Assemble কবাবী তঁ জান-পহচান ৱঁনা দ্কান বা আদমী সঁ কবাযৱঁ তঁ ৱঁঢ়িযা বহত।

কোন Type কেঁ কম্প্যুটব খবীদী ? Laptop বা

Desktop কম্প্যুটৰ খৰীদী ?
Laptop ঐহেন কম্প্যুটৰ অছি জকৰা অহাঁ কতৌ আৰাম সঁ Move কড সকৈতি ছী, স্বতৈত – ৰৈঠেতি কাম কড সকৈতি ছী। মোটা – মোটী কহী তঁ Laptop ৰো ৱ্যক্তি কড ৰঢ়ি যা সঁ Suit কৰৈতি ছৈক জেঁ ৱ্যক্তি কড সদিখন Mobile ৰহৈ পড়তি ছৈক। ৱিদ্যাৰ্থী নোকনি নড Desktop Computer হি ৰঢ়ি যা হোযতি ছৈক। ফৰ্সী পৰ ৰৈঠ কড কেঁ কাম কৰৰা মে আনস আ স্বস্তী ঐৱাক সংভাৱনা কম ৰহৈতি ছৈক। ৱিদ্যাৰ্থী নোকনি কেঁ আনস কম হোযতৈন তড পঢ়ৰা মে জ্যাদা মন নাগতৈন।

কেহেন Configuration কেঁ কম্প্যুটৰ খৰীদী ?
জখন কম্প্যুটৰ খৰীদৰাক হুএ তঁ গ ৰাত ধ্যান মে ৰাখন জায জেঁ কম্প্যুটৰ নেৰেঁ কেঁ কি উদ্দেশ্য অছি ? আ কম্প্যুটৰ সঁ কি কাম কৰৰাক অছি ? কোনো সামান্য Data Entry আ Composing কেঁ ৱাস্তে Hi – Fi কম্প্যুটৰ কেঁ জৰুৰত নহি অছি। হাঁ, জেঁ কেযো D.T.P. (Desk Top Publishing) ৱা Publisher কেঁ কামক নেন কম্প্যুটৰ খৰীদৰাক গছ্ছক ছৈথি তঁ হুনকা নেন উত্তম কম্প্যুটৰ হোৱাক চাহি।

ওনা একটা ৰাত গনেক্ট্ৰানিক সামান (Electronic Goods) মে সদিখন ধ্যান মে ৰাখি জেঁ আগ জেঁ সমান কেযো খৰীদ কড ৰহন ছৈথি, ছঃ মাসক উপৰান্ত ওহি সমান সঁ উৎকৃষ্ঠ সমান আ সস্তা সেহো ৰাজাৰ মে উপনব্ধ ভড জাযতি। তাহি কাৰণে কম্প্যুটৰ জখন খৰীদী তঁ Advanced ৱা Latest

Configuration कें साथ खरीदी। जाहि कारणे भविष्य मे २ – ३ सालक उपरांत Compatibility बनल रहत।

कम्प्युटर खरीदबा मे मुख्यत: CPU आ ओकर Speed, RAM कें क्षमता (Capacity), Hard Disk कें Storage Capacity आ Monitor कें ध्यान मे राखबाक प्रयास होयबाक चाहि।

Hardware Recommendation for a new computer(एकटा सलाह) CPU:2.0/ 2.6 GHz Pentium IV RAM: 512 MB/ 1 GB

Warranty: सब Hardware पर १ – ३ सालक वारंटी मिलत, ओ लेल दुकानदार सँ खुलासा कड कें बात कड लेबा सँ बढ़िया रहत। सँगे – सँगे कम्प्युटर पर जें भि Software Package वा Operating System चाहित छी बोहि लेल सेहो दुकानदार के पहिले बता देना सँ ठीक रहत।

कम्प्युटर बना रहल अछि आदमी कें जीवन सरल:

पहिने हि ढ़वे गप – शप कम्प्युटर कें उपयोगिता आ लाभ पर भड चुकल अछि, जाहि मे देखल गेल जें कम्प्युटरक सहयोग सँ शीघ्रता, सही आ संगठित रूपेण काम सम्भव अछि। मुदा किछु बात ओर अछि जें सभ व्यक्ति कें लेल उपयोगी अछि। जेना ओ– मेल एकटा ऐहेन बढ़िया सुविधा अछि जकरा सँग स्वस्थ, दुपहरिया, साँझ वा राति, सदिखन उपयोग मे ला सकैति छी।

विद्यार्थी लोकनि खातिर बढ़िया – बढ़िया पुस्तक CD कें रूप मे उपलब्ध अछि जाहि सँ सभ विषयक तैयारी

ঋা Exercise এক সহী (Systematic) ৰূপেন সম্ভৱ ঋছি। ৰহ্তো সংখ্যা মে ওন্টৰনেট পব Online Books ঋা Exercise সেহো উঁপনব্ধ ঋছি। জাহি সঁ রিদ্যার্থী নোকনি কেঁ পঢ় াও – নিখাও স্বগম ভড সকৈতি ঋছি।
ঋখৰাব ঘব পব মঁগাৰী ৰা নহি মঁগাৰী, সঁগে – সঁগে ঘব পব ঋখৰাব পঢ়ৰাক মৌকা নাগে ৰা নহি নাগে, ক্ষদা ওন্টৰনেট কেঁ দ্বাবা সভটা ঋখৰাব, চাহে হিন্দী মে হো ৰা ঋংগ্রেজী মে, পঢ়ি সকৈতি ছী। মতনৰ ঋনেকো ঋখৰাব ঋা E-Journels এক কম্প্যুটৰক মাউঁস (Mouse) কেঁ Click সঁ পাৰি সকৈতি ছী। একব ঋনারে সভটা টী.ৰীক (TeleVision) News Channels কেঁ Website সেহো উঁপনব্ধ ঋছি, ৰো Website সঁ Audio ঋা Video দুন্ব তবহক সমাচাবক ঋানংদ নড সকৈতি ছী। ঐতরে নহি Online Channels সেহো উঁপনব্ধ ঋছি, জে ঠীক TV কেঁ প্রতিৰূপ ঋছি।
ৰাজাব মে TV Tunner Card সেহো উঁপনব্ধ ছৈক। এ Card কম্প্যুটৰ মে নগা কড TV কেঁ ঋানংদ কম্প্যুটৰ সঁ হি ভেট সকৈতি ঋছি। মনোৰংজন কেঁ ৰহ্তো সাধন মে কম্প্যুটৰ সঁ FM Radio রগৈবহ সেহো স্বনন জা সকৈতি ছৈক।
ঋাও – কানি ৰহ্তো Online Games ঋা Games CD ৰাজাব মে উঁপনব্ধ ছৈক জাহি সঁ ৰচা নোকনি সহিত সভ সন্ধহ কেঁ ৰ্যক্তি ৰঢ়ি যা মনোৰংজন কড সকৈতি ছৈথি।
একব ঋনারা ঋনেকো – নেক স্বরিধা ঋছি জাহি কেঁ রিরবণ এ Article কেঁ Coverage সঁ ৰাহবি

अछि। आशा अछि अपनेक लोकनि कऽ ई लेख उपयोगी होयति।
एकर अतिरिक्त हम एक मैथिल होएबाक नाते अहाँ केँ कोन तरहेँ, कोनो सहायता या दिशा – निर्देश कम्प्यूटरक क्षेत्र मे कऽ सकैति छी ? हमर सौभाग्य होयति अपनेक कोनो सहायता करबा मे। जिनको कोनो जानकारी लेबाक हुए तँ हमर E-Mail (JYOTIPRAKASH.LAL@GMAIL.COM) पर संपर्क कऽ सकैति छी। हमर नि:स्वार्थ इच्छा अछि जेँ मिथिलाक घरे – घरे कम्प्यूटर जानिहार हुए। आशा अछि जल्द हि अपनेक लोकनिक समक्ष हमर लिखल एकटा किताब, जकर नाम अछि “HOW TO GET A JOB”, प्रस्तुत होयति आ जाहि सँ सब लोकनि (रोजगार या बेरोजगार) केँ एक बढ़ियाँ नौकरी (Job) पाबि मे मार्गदर्शन करत।
अंत मे कहब जा सकैति अछि जेँ कम्प्यूटर केवल उपयोगी नहि अछि साथे – साथे नौकरी पाबैक लेल एकटा साधनो बनि गेल अछि।


जितमोहन झा

वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- अछैत बाप् आ ढोरी (वृद्ध-बुजुर्ग समस्यापर लेख)

टूटल ऐनक (चश्मा), फाटल-पुरान किताब आर कपड़ा। की इएह अछि बुजुर्गक पहचान ? काल्हि तक हमर आँगुर थाम्हि कए हमरा चलब सिखाबएवला हमर माँ-बाबूजी आग अपन लड़खड़ाइत कदमसँ बेर-बेर खसि

কএ সম্হবি কএ চনৰ্ব সীখি বহল ছথি !
ৰ্বুঢাপা জিনগীক এক এহন কষ্ঠ সৎ অছি জকবা জ়হবক ঘূঁষ্ঠ ৰ্বুস্নি কএ আজ্‌ক ৰ্বুজ্‌স্মা পীরি বহল ছথি ! অপনেক অনদেখীসঁ পৰেশান ৰ্বুজ্‌স্মা আগ তিবস্কৃত আ২ অপমানিত ভএ জীৰ্বাক নেন রিরশ ছথি ! ঘবসঁ বৃধাশ্রিমক দিস পনাযন কৰৈত ৰ্বুজ্‌স্মা জিঁদগীক এক কড়রা সৎকেঁ উঁজাগব কৰৈত ছথি ! কহল গেন অছি "জে মাঁ হমবা জন্ম দেনখিন হ্নকব দিন (আমো) নঞি দ্‌খেৰ্বাক চাহী ...."
হ্মদা ও ৰ্বাত আগ খানী খিস্সা-পিহানী ধবি সীমিত অছি ! ছোষ্ঠ ৰ্বচাক ডবনাপব ত্তবঁত ঝষ্ঠসঁ অপন হৃদযসঁ নগাৰ্বএৰ্বনা, অপন আঁচনসঁ হ্নকব আঁখি পোছএ রানা, স্বযং ভূখন-প্যাসন বহি কএ অপন ৰ্বচাকেঁ পেষ্ঠ পানএ রানা ৰ্বুজ্‌স্মা আগ অপনে ঘবমে অপন পহচান খোজৈত নজ়বি অৰৈত ছথি !
এক নিবীক্ষণসঁ পতা চনন কী অপন দেশমে ১২ র্যস্কক পাছাঁ এক ৰ্বুজ্‌স্মা ছথি ! জাহিমে ৭ কবোড়ক উঁম্র ৬০ সানসঁ ৰ্বেশী ছনি ! হ্নকামে সঁ ২.৭ কবোড়ক অন্নপাতমে ৰ্বুজ্‌স্মা হ্মনূ নে হ্মনূ ৰ্বীমাবীসঁ গ্রসিত ছথি !
ৰ্বুজ্‌স্মা নোকনিক ও অনদেখী ঘরা রস্মাক ভরিষ্যকেঁ কতেক অঁধকাবময ৰ্বনেতনি, ও হম সভ নিক জেকাঁ জনৈত ছী ! কনী সোচূ জে কান্হি তক জিনকব এক আরাজ় পব ঘবক সদস্য কাঁপি উঁঠৈত বহথি ! আগ হ্নকা "পাগন" কহি কএ সৰ্বোধিত কএন জাগত ছনি ! আৰ্ব হ্নকব আরাজ় ঘবক সদস্য তঁ দূব রবন সূন দিরাব, খিড়কী আব দবরাজাসঁ ষ্ঠকবা কএ স্বযং হ্নকে তক পহুঁচৈত ছনি !
হমব কহৰ্বাক মতনৰ্ব ও জে হমবা সভ কেঁ কিছু এহন

কবরাঁক চাহী জাহিসঁ রর্তমান থাকি ভরিষ্য স্বধবএ নঞি কী ঐহেন কবী জাহিসঁ থাগা চনিকএ হমবা সভকেঁ থপন ভরিষ্যসঁ ক্ষঁহ ন্বকারঁএ পড়এ ! ব্র্‌জ্‌স্ম মাঁ–রাঁব্রূজী ক্ষনূ কূড় ।–কবকঠ নঞি রঁক্কি হমব ঘব–থাঁগনক শৌভা ছথি ! জিনকা হমব প্যাব, দেখভান থাকি থপনাপনক জরুবত ছনি, ওতয থাঁগনক ঘন গাছ (পেড়) ছথি, হমসভ ওঙা গাছক ঠহনী –পত্তা ছী, জখন ওহ গাছ মজব্রূত বহত তখনে হম সরঁ হবন–ভবন বহরঁ .... ব্র্‌জ্‌স্ম মাঁ–রাঁব্রূজী বিশ্তাক মজব্রূত ডোবী ছথি, হ্নকা থম্হনে বন্ধ্র । ....

<u>কন্যা ভ্রূণ হত্যা, প্রগ্নতি কে সাথ খিনরাব</u>

পিছনা ছঞ্জীমে এক সানপব হম গাম গেন ছনহ্‌ । জহিযা গাম পহ্‌চনহ্‌ ওকব দোসরে দিন পতা চনন কী হমব রঁচপনক দোস্তক রঁহ্‌ত জোব মোন খ়বারঁ ছনি ! থাব ও থস্পতানমে ভবতী ছথি ! খরঁব জহিনা হম স্বননহ্‌ থস্পতানক নেন চনি দেনহ্‌ ! হমবা সংগ হমব পনৌ সেহো চনি দেনীহ, থস্পতান পহ্‌চনা পব

𑒣𑒞𑒰 𑒔𑒪𑒪 𑒖𑒹 𑒧𑒳𑒢𑒴 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒻 𑒮𑒦 𑒚𑒲𑒏 𑒚𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱 ! 𑒋𑒏 𑒒𑓀𑒙𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 (𑒯𑒧𑒩 𑒠𑒼𑒮𑓂𑒞𑒏𑒹𑒿) 𑒕𑒳𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒧𑒱𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱, 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪 𑒂𑒨𑒪 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿, 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒏𑒢𑒲 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒠𑒱𑒮 𑒒𑒳𑒧𑒱 – 𑒤𑒱𑒩𑒱 𑒪𑒲। 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒖𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒮𑒰 𑒕𑒪𑒋 ! 𑒯𑒧 𑒂𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒼𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒫𑒰𑒩𑓂𑒛𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪𑒯𑒳𑒿, 𑒯𑒧𑒩 𑒢𑒖𑓃𑒩𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒔𑒔𑒹𑒩𑒰 𑒦𑒻𑒨𑒰 – 𑒦𑒰𑒦𑒲 𑒣𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒪, 𑒁𑒔𑒰𑒢𑒏 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒧 𑒔𑒾𑒏 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 ! 𑒯𑒧𑒩 𑒢𑒖𑓃𑒩 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒦𑒰𑒦𑒲𑒏 𑒅𑒿𑒠𑒰𑒮, 𑒏𑒢𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒔𑒹𑒯𑒩𑒰 𑒣𑒩 𑒣𑒩𑒪 .....𑒣𑒳𑒕𑒪𑒱𑒨𑒢𑒱 𑒏𑒲 𑒥𑒰𑒞 ... 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒖𑒫𑒰𑒥 𑒢𑒘𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒰𑒞𑒧𑒹 𑒥𑒖𑒰 𑒏𑒋 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒲𑒛𑓃𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 ! 𑒠𑒳𑒥𑒰𑒩𑒰 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒦𑒰𑒦𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒲𑒛𑓃𑒰 𑒢𑒘𑒱 𑒩𑒼𑒏𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒲𑒯, 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒲𑒛𑓃𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒮𑒿 𑒕𑒪𑒏𑒱 𑒅𑒿𑒚𑒪𑒢𑒱, 𑒣𑒞𑒰 𑒔𑒪𑒪 𑒖𑒹 𑒠𑒴 𑒑𑒼𑒙 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒖𑒢𑓂𑒧𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒂𑒥 𑒞𑒹𑒮𑒩 𑒥𑒹𑒩 𑒤𑒹𑒩𑒮𑒿 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒘𑒱 𑒥𑒩𑓂𑒠𑒰𑒬𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒏 𑒔𑒹𑒞𑒰𑒫𑒢𑒲 𑒦𑒻𑒨𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒠𑓄 𑒔𑒳𑒏𑒪𑒏𑒱𑒢–𑒋 ....𑒣𑒞𑒰 𑒔𑒪𑒪 𑒑𑒩𑓂𑒦 𑒣𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒪𑒹𑒪 𑒦𑒻𑒨𑒰 𑒦𑒰𑒦𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪 𑒁𑒢𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 ! 𑒑𑒩𑓂𑒦𑒧𑒹 𑒣𑒼𑒮𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒐𑒾𑒤𑒢𑒰𑒏 𑒃𑒩𑒰𑒠𑒰𑒮𑒿 𑒅𑒿𑒣𑒖𑒪 𑒦𑒨𑒏 𑒦𑒰𑒫 𑒦𑒰𑒦𑒲𑒏 𑒔𑒹𑒯𑒩𑒰 𑒣𑒩 𑒮𑒰𑒤 – 𑒮𑒰𑒤 𑒠𑒹𑒐𑓂𑒐𑒪𑒯𑒳𑒿 ! 𑒥𑒰𑒠𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒂𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒥𑒳𑒗𑒹𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒦𑒻𑒨𑒰 𑒦𑒰𑒦𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒰𑒣𑒮 𑒒𑒩 𑒪𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢 ! 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒑𑒫𑒬 𑒁𑒑𑒱𑒪𑒰 𑒮𑓀𑒞𑒰𑒢𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒥𑒰𑒪𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱 ....

𑒍𑒢𑒰 𑒦𑓂𑒩𑒴𑒝 𑒣𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑓀𑒡𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂𑒩 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒰𑒏𑒰𑒨𑒠𑒰 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢𑒼 𑒥𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 ! 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒄 𑒏𑒲 ? 𑒪𑒰𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑒱𑒕𑒪𑒰 𑒠𑒩𑒥𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪𑒼 𑒏𑒹 𑒢𑒘𑒱 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒐𑒢𑒹 𑒞𑒿 𑒦𑒻𑒨𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒂𑒮𑒰𑒢𑒲𑒮𑒿

ভাভীকেঁ গর্ভ পবীক্ষণ কবরাঁরঁএ নেন চনি দেনে ছনথি। হম তঁ কহএ ছী চাহে সবকাব নাখো কানূন বঁনরঁথি, নাখো কড় াসঁ কড় া সজা তয কবথি নেকিন জা তক হম সরঁ স্বয়ং খপনা তবহ্ফসঁ হ্ফনূ কদম নঞি উঁঠাযরঁ ওা কানূনক হেরঁ নঞি হএরঁক সমান খছি ! খাগ তক ভ্রষ্ট্রাচাব, রাঁনশ্রেম, শোষণক রিকুধো সবকাব রঁহ্ত কানূন নাগূ কেনথি হ্মদা কি সমাজমে একব বোকথাম ভs সকন ? নঞি ! খাব যদি খপনে ওা নঞি হেরাঁক কাবণক পতা কবরঁ তঁ পাযরঁ কি শাযদ হম খ্দ কতহ্ নে কতহ্ হ্ফনূ ন হ্ফনূ প্রকাবে একব দোষী ছী ! হম সরঁ পবিস্থিতিক সংগ হ্ফনূ তবহক সমঝৌতা কবরাঁক রজায ওকবা সদা রঁদনরাঁক হ্ফেবমে নএ বহৈত ছনহুঁ চাহে ওকবা নেন হমবা সভ কে হ্ফনূ তবহক হথকংডা কিযেক নঞি খপনারঁএ পবএ .... হম সরঁ চ্কয নঞি ছী ! হম তঁ পূছে ছী জে কি কাবণ খছি জে নড়কীক জন্ম ভেনা পব খাগযো মূহ সিকোবন জাগত খছি ? শাযদ হ্নকব পবরবিশ, শিক্ষা, রিরাহ খাদিমে খারেঁ রানা তমাম হ্মশিকনক কাবণ এহি তবহক ব্যরহাব কএন জাগত খছি ! হ্মদা কি নড়কাক জন্ম ভেনেসঁ ওা তমাম সমস্যা সমাপ্ত ভs জাগত খছি ? নড়কোকেঁ তঁ পবরবিশ কবএ পবএ–এ ? হ্নকবো শিক্ষা,নৌকবীক নেন দব–দব ভঠকএ পড় ত খছি ! খাব রিরাহ .... !

যদি এহি গতিসঁ কন্যা ভ্রূণ হত্যা হোগত বহত তঁ বূঁঝি নিখ জে সরঁ নড়কাকেঁ হ্ফংখাবে বহএ পড়ত ! উঁদাহবণ স্বরূপ খপনে হবিযাণামে নড়কীক সংখ্যামে নগাতাব দর্জ কএন গেন কমী দেখ সকৈত ছী,

हवियाणामे रिराह नेन नड़की नञि भेटैए छनि। ओहि ठामक नोकनीकेँ दोसव बाज्यमे नड़कीक तनाशि कवए पड़ैत छनि .....

कनी सोच् थगव पूवा देशिमे ङएह स्थिति भs जाएत तँ की होएत ?

हम नीक जेकाँ जनैत छी जे थपने एहि वाँतकेँ ध्यानमे नञि वाथवँ थाव यदि वाथवोँ कववँ तँ दोसव केँ उँदाहवण देवाँक नेन ! नेकिन कि थपने स्वयं कन्या भ्रूण हत्या वोकएमे दोसवकेँ जागरूक कववँ ? थपनेकेँ नञि नागैत थछि जे प्रकृति द्वावा निर्धावित जीरनकेँ स्वचारू रूपसँ चनवैँ नेन एहि गाड़ीक दून्ब पहियाक समान रूपसँ थारश्यक थछि ! थाव कन्या भ्रूण हत्या यानी कि प्रकृतिक संग खिनराड़ थछि ! एहि खिनराड़केँ वोकए नेन हमवा सभकेँ एकजुटै हेवँए पवत थाव एतवेँ नञि एहि मानसिकताकेँ वँदनए पड़त कि वंशिवेँन खानी थाव खानी नड़के चनेता, तखने हम सही रूपामे थाधुनिक कहाएवँ ....

<u>হম নড়কী রনা ছী জনার্ ...</u>

আজ্ক পবিরেশমে বেঁটী সর্বগুণ সংপন্ন আব আমেনির্ভব অছি ! হ্নকব রিরাহকে জখন বাঁত আবৈত ছনএ তাঁ দ্নু পক্ষ (রব – রধ্) ক ভারনাকেঁ মহত্ত্র দেরক চাহী ! হম তঁ কহবঁ আবঁ খানী নড়কিযে টা নঞি নড়কো সভ মানসিক রূপসঁ অগ বাঁতক নেন তৈযাব বহথি কি শাযদ শিক্ষা, পসংদ – নাপসংদ, ব্যরহাব কে নঃ কঃ ওহো রূনূ নড়কী দ্বাবা নকাবন জাঃ সকৈত ছথি ! এ স্বনি কঃ কিছু অটপটা জেকাঁ জরুব নাগন হৈত কিযে কি এহি তবহক ভাষা তঁ হমেশা নড়কা (রব পক্ষ) রনা কবৈত ছথি ! ন্দা আবঁ জমানা বঁদনি গেন যs ও সময বীত গেন অছি জৈ সমযমে বেঁটী রনা অপন বেঁটীক নেন এক যোগ্য ববক তনাশমে ভূখ, প্যাস তক বিসবি জাগত বহথি ! অপন বেঁটী কে হাথ পিযব কবৱ ও সবঁ অপন জীরনক সভসঁ পৈঘ পবীক্ষা বুঝৈত বহথিন !
আবঁ সভ জগহক বাঁদ অপনো মিথিনামে এ সভ পবিভাষাকেঁ এক নযা সিবাসঁ গঠন জাঃ বহন অছি ! আবঁ হব মাঁ–বাবূজী অপন বেঁটীকেঁ সস্ত্বান ভেজবঁ দোসব ঘ্রম আব বেঁটীক আকাংক্ষা হ্নকব স্বতংত্র রিচাব বাখএকেঁ পহিন ঘ্রমমে বাখএ কে প্রযাস কঃ বহন ছথি ! আগ কে মাতা – পিতা অপন বেঁটীক ভরিষ্যসঁ আশান্বিত ছথি, চিংতিত নঞি ! আগ বেঁটীপব রূনূ তবহক দবাঁবঁ নঞি বহন ! আগ হ্নকো অপন ভারী পতি (রব) কেহেন হোগন এ তয কববঃ কে অধিকাব ছনি ! রূনূ বাঁত কে নেন আগ ওঃ বাধ্য নঞি ছথি ...
ওনা আগযো অপন মিথিনামে শাদী – রিরাহ বুজুর্গে

তয করৈত ছথি ষ্মদা বিশতামে নড়কী কে দখন এক স্বখদ রঁদনার ঋছি, ঋপন সমাজমে ঋাগযো নড়কা রনা হোত্ত কে ঝূঠা ঋকড়ক চনন পূর্ণ রূপসঁ নঞি মিঠৈন ঋছি ! কতো নঞি কতো ঋপনেকেঁ নড়কা রনা দোহবী মানসিকতাক চেহবা নহ কএ ঘ্যৈত নজব পবনে হেতো !

পছিনে সানক রাঁত ছী হম এক পবিচিতক রেঁঠৌক বিশতাক সংদর্ভমে রঁহ্ত পবিরাবসঁ মিননহুঁ ! জেঁ মে কিছু ঋন্বভর রঁহ্ত কঠুঁ বহন ! তিবস্কৃত সন্ রঁতরি দেখনাসঁ মোন রঁহ্ত ঋাহত ভেন ! হম সরঁ পবিরাব কে ঋারৈঁত ঘবী ঋপন নাবাজগীযো ঋপ্রত্যক্ষ রূপসঁ ব্যক্তা কেনিযনি ! দ্খক রাঁত ঋছি কী ঐহেন শ্বষ্ক ঋাব রুখন ব্যরহাব কবএসঁ নোক শৰ্মারৈতো নঞি ছথি ! সমাজমে নজ়ব দৌবেনাসঁ দেখরঁ কী হব জগহ নড়কী রানাকেঁ ঋামেসম্মানক সাথ খিনরাব ভহ বহন ঋছি ! এক রেঁব হমব পড় াসীক রেঁঠৌক রিরাহ তয ভেন, রব পক্ষ রানা নড়কীযো দেখি কহ গেনথি নড়কী হ্নকো সভকেঁ পসংদ ভেননি। সভ রাঁত রিচাব সেহো তয ভহ গেননি। নড়কী পক্ষকেঁ নড়কা পক্ষ রানাক ফোনক গংতজাব বহনি। দ্গ দিনক রাঁদ নড়কা রনা ফ ান কেনখিন কি হমবা সোচক নেন সময চাহী হমব রেঁঠৌক নেন পাঁচ গোঠ বিশতা ঋাযন ছন। ঋপনে কে নেন রিচাব কবরঁ ! ঋারঁ ঋহী কহু, ওা সরঁ কী ভহ বহন ঋছি ? একব মতনরঁ সাফ ছনএ, কী নড়কীক ভারনাকেঁ রূঁঝএ রানা কিযো নঞি ছথি !

হমবা হঁসীক সংগে সংগ দ্খো হোগত ছন জে হব রেঁব বিশতা তয কবরাঁক হক সিব্ফ নড়কে রানা কহ হোগ ছনি ! নড়কী রানাকেঁ পূছএ রানা কিযো নঞি ছথি ও

एक कठपुतलीक समान किछो हुनका माँ करैनि तथ्यामे खुशी नहि करैनि तय नया सिवासँ विश्वाक तलाशीमे लागि जाइत छथि ! हुनकर दुःख दर्द किछो नहि बूझनक प्रयास करए छथिन ....

हम तँ कहबै जे लड़का सभक ढकोसला आब बेसी दिन नहि चलत। आज सब क्षेत्रमे लड़की मौजूद छथि, सर्वगुण संपन्न छथि, संगे आत्मनिर्भर सेहो छथि ! आब खाली लड़किये नहि लड़काक मानसिक रूपसँ आग बढ़बाक लेल तैयार रहए पड़तनि की शायद शिक्षा, पसंद – नापसंद, व्यवहारकेँ लऽ कऽ ओहो एक लड़की द्वारा नकारल जाऽ सकैत छथि !

विवाहक समय लड़का वाला ओर्फ़ बरियातीगण सभ्यकेँ बढ़ि –चढि कऽ देखाबएक लेल बहुत तरहक हरकत करैत छथि, भद्दा मजाक, तरह – तरहक फरमाइशी, लड़की वालाक द्वारा कएल गेल व्यवस्थापर बेरबजह नाराजगी या भोजन पसंद नहि आबय के शिकायत ! लड़की वाला अपन हैसियतक अनुसार या ओइसँ बेसी निक आवभगत आर व्यवस्था राखैत छथि ! सदा एहि तरहक बतहि हुनकर सभ कएल गेलपर पानि फेर दैत छनि !

बेटीक विवाह शुभ – शुभ पूर्ण होइन आग दरबाजेमे ओऽ चाहियो कऽ किछु नहि बाजि पाबैत छथि !

सभ लड़कीक माँ – बाबूजीक फर्ज बनैत छनि कि ओऽ अपन कर्तव्यक प्रति जागरूक रहथि, संगे ओऽ अपन बेटीक भावनाक सम्मान सेहो करथि ! यदि कनू लड़का वाला विश्वाक लेल हँ कहैत छथि तँ ओकरा अपन भाग्य मानि कऽ अपन बेटीक हँ या नहि केँ नज़र अंदाज नहि करी, हुनकर बात जरूर ली ....

রিরাহেক খগ পরিত্র রঁধনকেঁ রেঁবীসঁ হ্মঙ্ক বাখী ! নড়্কা রানা খহঁ খাব নড়কী রানা রেঁচাবগীকেঁ রিঁসবি জাও ! রেঁষ্টেক জেকাঁ রেঁষ্টিযোক জন্ম স্বখদ খছি । হব মাতা – পিতা গর্বসঁ কহু ...... হম নড়কী রনা ছী জনার্ঁ...........

নাবীক প্রতি দোহবা দৃষ্টিকোণ কিযেক .... ?

নাবী খপন সংস্কাবসঁ পবিবাব, সমাজ খাব বাষ্ট্রে কএ এক নর দিশা প্রদান কবৈত ছনীহ ! খপন মিথিনা খাব ভাবতীয সংস্কৃতিমে নাবীকেঁ দেরীক স্বরুপ মানন গেন ছননি ! হ্মদা দোসব তবহফসঁ ওগ দেরীক সংগ পশ্বরত ব্যরহাব কএন জাগত ছনি ! হ্নকা খানী জিম্মেদাবী খাহ উঁত্তবাদাযিত্ব ঢোর্ঁএ রঁনা সাধন মানন জাগত ছনি ! রর্তমান সমযমে নাবীকেঁ দোহবী ভূমিকাক নির্রাহ কবএ পড়ৈত ছনি !

যদি খাগ কোনো মহিনা উঁচ পদপব খাসীন ছনীহ তঁ হমব প্বরুষ প্রধান সমাজ হ্নকাসঁ ঙাহো খপেক্ষা বাখৈত ছন কী ও কঠিরাদী, নিযম পবংপবাক পানন কবৈত.....খহঁী কহু ঙা কোনা সংভর খছি ? ঘব হোএ রা রাঁহেব সভ ঠাম নাবী (ঔবত) ক শোষণ দেখন গেন খছি, চাহে ও মানসিক রুপ সঁ হোএ রা শাবীবিক রুপসঁ ! রিকষ্ট পবিস্থিতিসঁ গ্বজবরাঁক কাবণ রর্তমান সমাজমে নাবীক জীরন জষ্টিনসঁ জষ্টিনতম ভs বহন ছনি !

খাজুক ভাগদৌড় ভবন জিংদগীমে উঁচ পদপব খাসীন নাবী কs জতে কাজক দরাঁর্ঁ নিবংতব রঁনন বহএ ছনি ওতহি দোসব তবহফ হ্নকা পবিরাবক জিম্মেদাবী রঁখূরী এহি তবহেঁ নিভার্ঁএ পড়এ ছনি, কী কতহ্ কোনো কমী

नञि वहनि, हुनकर एहि तरहक जिंदगी हुनका खाली मशीनक एक कलपुर्जा बना कs राखि देने छनि ! परिवार आर अपन कर्मक्षेत्रमे सामंजस्य बैसाबएमे नारी स्वयंकेँ असमंजसमे पबैत छलीह ! ओ सब उत्तरदायित्वकेँ निभाबैतो यदि हुनकामे कोनो कमी रहि जाय छनि तँ हम सब हुनका अपराधीक भाँति समाज र परिवार कठघरामे ठाढ़ कऽ दैत छी ! अग सभक रुचि ओ अपन स्वयंक इच्छा, कल्पना आर ख्ुशीकेँ अपन मनेमे दफन कऽ दैत छथि !
एतेक सभ जिम्मेदारीक निर्वाह करबा बादो हुनका नञि तँ घरमे नञि कार्यक्षेत्रमे काजक प्रति संतोषजनक स्थिति प्राप्त भोगत छनि ! ! दोसर तरफ जे नारी नौकरी नञि करैत छथि हुनकर स्थिति तँ कोल्हूक बरदक समान छनि ! परिवारक सभ सदस्य अपन इच्छाकेँ हुनकापर थोपि दए छनि, तकर बादहुदो हुनका सभकेँ ताना सुनए पड़ए छनि ! एक आज्ञाकारी रधु, पत्नी, माँ बनि अपन पूरा जीवन समर्पित कऽ देब हुनकर अभीष्ठ छनि !
एहि तरहक दारा कएल जागत अछि की नारीकेँ नऽ कऽ समाजक दृष्टिकोणमे बदलाव आयल अछि, मुदा कठिरादी परंपरावादी रर्जना तँ आगयो विद्यमान अछि ! हमसब जतय दुओ कदम आधुनिक समाजक दिस बढ़ेने छी ओतबे दस कदम पीछाँ लौटल छी, तँ आखिर हम सब कतए छी ? संघर्ष आर सामंजस्यक पाटमे नारीक जीवन पूर्ण रूपेँ पिसि गेल अछि ! बाहरी आवरणमे बदलाव जरूर भेल छल मुदा आंतरिक आवरण जहिनाक तहिना अछि !
समाज आर परिवारक कठोर व्यवहारक कारण नारीक

संवेदना भीतरे-भीतर दरकन नञि होगन, ताहि हेतु हमरा सभकेँ चाही की समाज आ परिवारक नियम, अनुशासन केँ कड़ । बंधनमे नञि जकड़ी कऽ हुनका प्रति सहयोगात्मक बनैया अपनावी ....



नरेन्द्र कुमार झा

समाचार वाचक सह अनुवादक (मैथिली), प्रादेशिक समाचार एकांश, आकाशवाणी, पटना

विहारक लोक पर्व-छठि

पावनि-तिहार हमर सभक सभ्यता-संस्कृतिक परिचायक अछि। हिन्दू धर्ममे पावनिक विशेष महत्व अछि। हिन्दू धर्मावलम्बी सभक कतेको पावनिमे छठिक विशेष महत्व अछि। ई पावनि विहारक लोक पावनिक संग महापावनि सेहो अछि। ई सम्पूर्ण विहारक संग पूर्वी उत्तर प्रदेशे

आ महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान आ दिल्लीक बिहारी बहुल क्षेत्र सभमे श्रद्धाक संग मनाओल जाइत अछि। पड़ोसी देश नेपालक मैथिली बहुल क्षेत्रमे सेहो एहि पाबनिक आयोजन कएल जाइत अछि। अगाध श्रद्धा, कठोर व्रत साधना, एकान्त निष्ठा आ आमे संयम बाला एहि पाबनिक बिहारमे ओतबे महत्व अछि जतेक महाराष्ट्रमे गणपति महोत्सव, पश्चिम बंगालमे दुर्गापूजा तथा पंजाबमे बैशाखीक अछि। बिहारक किछु क्षेत्रमे एहि पाबनिकेँ "डाला छठि" सेहो कहल जाइत अछि। ई पाबनि सूर्योपासना आ साधनाक महापाबनि अछि। शक्तिक देवी दुर्गाकि आराधनाक समाप्तिक बाद प्रदेशमे छठि पाबनिक आगमनक अभास होमए लगैत अछि आ प्रकाशक पाबनि दीपा बातीक समाप्तिक बाद लोक एकर तैयारीमे लागि जाइत छथि। एहि पाबनिमे भगवान सूर्य देव आ षष्ठी माय (छठि माता)क आराधना एक संग कएल जाइत अछि। ओना तँ सूर्य देवक पूजाक परम्परा अति प्राचीन अछि आ कतेको हजार वर्षसँ हमर सभक सांस्कृतिक विरासत अछि मुदा सूर्य देवक संगहि षष्ठी मायक पूजा एक संग कहियासँ शुरू भेल से एखनो रहस्य बनल अछि।

छठि पाबनिक आयोजन वर्षमे दू बेर होइत अछि। पहिल बेर चैत मासमे आ दोसर बेर कार्तिक मासमे छठिक पाबनि होइत अछि। कार्तिक मासमे एहि पाबनिक आयोजन विस्तृत रूपमे होइत अछि। एहि अवसरपर प्रवासी बिहारी आवश्यक रूपसँ अपन प्रदेश आ गाम अबैत छथि आ अपन घरपर रहि सम्पूर्ण परिवारक संग एहि पाबनिकेँ मनबैत छथि। श्रद्धा आ आस्थाक संग एहि पाबनिकेँ कएलासँ मनोवांछित फलक

প্রাপ্তি হোগত অছি। ধার্মিক গ্রন্থ সভমে ঐ জনতব্বঁ দেল গেল অছি জে সূর্য দেৱক পূজা প্রাচীন কালসঁ প্রসিদ্ধ অছি আহ বিহাবমে একব প্রসিদ্ধি সহজ রূপমে দেখল জাহ সকৈত অছি।
চাবি দিন ধবি চলৈ বঁালা ঐ ধার্মিক অনুষ্ঠান কার্তিক শুক্ল চতুর্থীসঁ শুরু হোগত অছি আহ সপ্তমীকেঁ সমাপ্ত হোগত অছি। পহিল দিন "নহায-খায" হোগত অছি। এহি দিন পরঁলৈতিন স্ববিধানুসাব নদী, পোখবি আহ গনাব আদিমে স্নান কহ অববঁা চাউবক ভাত, বুঁটক দালি আহ সজিমনিক তবকাবী ভোজন কবৈত ছথি। পরঁলৈতিনক ভোজন কএলাক বঁাদ ঘবক আন সদস্য ভোজন গ্রহণ কবৈত ছথি। এহি দিন ছঠি পাবঁনি কববঁাক সংকল্প নেল জাগত অছি। দোসব দিন পংচমীকেঁ খবনা হোগত অছি জাহিমে পরঁলৈতিন ভবি দিন উপাস বহি নদী, পোখবি আ গনাবসঁ পানি আনি পীতল, তাম্বা অথরা মাটিক বর্তনমে খীব, চাউবক আটাক গুলগুলা বঁনবৈত ছথি আহ সাঁসমে নর রস্ত্র পহিব চাঁদ দেখি বঁলল সামগ্রী, কেবা আহ দূধ সূর্য ভগরানকেঁ সমর্পিত কহ শান্ত-চিত্ত ভহ প্রসাদ গ্রহণ কবৈত ছথি। খবনাক সময কোনো আবঁাজ নহি হোমএ ক চাহী। খবনাক বিধি বিভিন্ন স্থানপব বঁদলৈত অছি মুদা মূল রূপমে কোনো পবিবর্তন নহি হোগত অছি। একবা বঁাদসঁ পরঁলৈতিন উপাসমে বহৈত ছথি আহ চাবিম দিন উগৈত সূর্যকেঁ অর্ঘ্য দহ প্রসাদ গ্রহণ কহ উপাস তোড়ৈত ছথি। খবনাকেঁ কিছু ক্ষেত্রমে "লোহংডা" সেহো কহল জাগত অছি।
তেসব দিন ষষ্ঠীকেঁ পরঁলৈতিন নদী, পোখবি আ গনাবমে পানিমে ঠাঢ় ভহ কতেকো তবহক পকরঁান, ফল-ফূল,

স্বপাবী, পান খাদিকেঁ কাঁচ বাঁসক বনন সূপমে সজা ওহিমে দীপ জড় া ড্বৈত সূর্য দিস মূঁহ কঽ ভগবান সূর্যকেঁ খর্ঘ্য চঢ়বৈত ছথি। পবিবাবক খান সদস্য সেহো সূপক খাগাঁ পানি খথবা দূধ ঢ় াবি খর্ঘ্য দৈত ছথি। ষষ্ঠী দিন ভগবান সূর্যকেঁ খর্ঘ্য দেনাক বাঁদ প্রদেশক কিছু ক্ষেত্রমে "কোসী ভববাঁক" পবম্পবা সেহো খছি। এহি দিন খর্ঘ্য দেনাক বাঁদ স্ত্রীগণ খপন খংগনাকেঁ গোবঁবসঁ নিপৈত ছথি খা ওহিপব খবিপন দৈত ছথি। একব বাঁদ চাবি টা পৈঘ কুসিযাবসঁ মংডপ বনা একব বীচমে মাটিক বনন হাথী বখৈত ছথি জকব চাক কাত দীপ বনন বহৈত খছি। সভ দীপকেঁ মানাসঁ সজা ওহিমে ঘী ঢ় াবি জড় াওন জাগত খছি। হাথীক উঁপবমে ভগবান ভাস্কবকেঁ খর্পিত কএন জাএ বাঁনা প্রসাদ, ঠকুখা, কেবা খাঽ খান ফনকেঁ মাটিক বর্তনমে বাখন জাগত খছি। দীপ বাতি ভবি জড় ৈত বহৈত খছি খা স্ত্রীগণ মংডপক চাৰুকাত বৈসি ভবি বাতি জাগন বহি ছঠি মাগক গীত গবৈত ছথি। ভবি বাতি দীপ জড়বঽ খাঽ গীত গাবএমে বিতৈত খছি। ষষ্ঠী জকাঁ চাবিম দিন সপ্তমীকেঁ উঁগৈত সূর্যক ভিনসবমে সমর্পিত কএন জাগত খছি। একব বাঁদ কোসী উঁঠা নেন জাগত খছি। খর্ঘ্য দেনাক বাঁদ সভ নোক পবঁনৈতিনকেঁ প্রণাম কঽ খাশীর্বাদ নৈত ছথি। নোক পবঁনৈতিনক খাশীর্বাদকেঁ সূর্যদেবক খাশীর্বাদ মানৈত ছথি। খমীব–গবীব, বূঁঢ়–জবান, মানিক–নোকব, স্ত্রী–প্বৰুষ সভ ভেদভাব বিসবি পবঁনৈতিনসঁ খাশীর্বাদ নৈত ছথি। তেজীসঁ বঁদনৈত পবিবেশক বাঁবজূদ ঈ পবম্পবা নিবন্তব চনি বহন খছি। সপ্তমী খর্ঘ্যক বাঁদ ছঠি মাযক প্রসাদ গ্রহণ কঽ পবঁনৈতিন খপন উঁপাস সমাপ্ত কবৈত

छथि आ भोजन ग्रहण करैत छथि। एहिके संग चारि दिनक ई धार्मिक अनुष्ठान समाप्त होइत अछि। अन्तिम दिनकेँ पारन सेहो कहल जाइत अछि।
बिहारमे ई पाबनि हिन्दूक संगहि मुसलमान आ सिख सेहो मनबैत अछि। कहिआर जिलाक लक्ष्मीपुर आऽ भोजपुर जिलाक कोइलबर गाममे तीन धर्मक लोक एहि पाबनिकें मनबैत छथि। लक्ष्मीपुर गामक पश्चिम स्थित नदीक किनारमे तीनू सम्प्रदायक श्रद्धालु एकट्ठा होइत छथि आऽ एक संग सूर्यदेवकेँ अर्घ्य दैत छथि, ओतहि, कोइलबर गाममे हिन्दू रोजा रखैत छथि तऽ मुसलमान छठिक पाबनिमे हिन्दू सभक घरमे सूप पठा कऽ एहि पाबनिकेँ मनबैत छथि।
प्रदेशीक सांस्कृतिक सम्पन्नताक उदाहरण प्रस्तुत करैत एहि पाबनिमे उपयोगमे आबए बला वस्तु सभ खेतीक व्यवस्थाक अर्थशास्त्रीय स्वरूप प्रस्तुत करैत अछि। ई एकमात्र एहन धार्मिक अनुष्ठान अछि जाहिमे पंडितक कोनो हस्तक्षेप नहि होइत अछि। बिना पंडितक सम्पन्न होमएबला एहि पाबनिमे भगवान आऽ भक्तक संग सीधा सम्पर्क होइत अछि। एहि पाबनिमे स्त्रीगणक महत्वपूर्ण भूमिका होइत अछि जे अपन शरीरकेँ तपा कऽ पूरा भक्तिक संग नियम-निष्ठा आऽ पवित्रताकेँ बनाएल रखबाक प्रति विशेष रूपसँ सतर्क रखैत छथि।
एहन धारणा अछि जे एहि पाबनिकेँ नियम निष्ठा आऽ पवित्रताक संग नहि कएलासँ एकर विपरीत असरि परबैतिन आऽ ओकर निकट सम्बन्धी आऽ परिवारपर पड़ैत अछि। ई मान्यता अछि जेऽ पवित्रताक संग ई पाबनि नहि कएलासँ असाध्य रोग उत्पन्न होएबाक संभावना बढ़ैत अछि। दोसर दिस ईहोमानब अछि जे

एहि पाबनिकेँ नियमित रूपेँ कएनासँ सफेद दाग जेहन रोगसँ मुक्ति सेहो भेटैत अछि। एहि पाबनिक बढ़ैत लोकप्रियताकेँ देखि आब पुरुष सेहो ई पाबनि करए लगलाह अछि।
भगवान सूर्यक पूजा भावतक संगहि इन्डोनेशिया, जावा, सुमात्रा आदि कतेको देशमे कएल जाइत अछि, मुदा अन्तर अतबा अछि जे स्थानक परिवर्तनक संग एकर स्वरूप बदलि जाइत अछि। सूर्योपासनाक चरचा विश्वक प्रायः सभ प्राचीन साहित्यमे अलग-अलग रूपमे कएल गेल अछि। एकर चर्चा वेदमे तँ अछिए संगहि सूर्योपनिषद, चाक्षुपोपनिषद, अक्ष्युपनिषद आदिमे सेहो अछि मुदा सूर्य देवक संग सूर्य देवक संग षष्ठी देवी पूजा एक संग कहियासँ कएल जाइ बहल अछि एकर प्रमाण एखन धरि अनुपलब्ध अछि।
कार्तिक मासक षष्ठी तिथि षष्ठी देवी कहै अछि जे भगवान कार्तिकेयक पत्नी छथि। ई पाबनि सूर्य देव आ षष्ठी देवी एक संग करबाक पाबनि अछि जे पूर्ण भक्तिक भावक संग मनाओल जाइत अछि। छठिक गीतमे सेहो सूर्य देव आर षष्ठी मायक स्तुति एक संग कएल गेल अछि।
सूर्योपासनाक संग एहि धार्मिक अनुष्ठानक संबंधमे कतेको कथा प्रचलित अछि। एकटा मान्यता ई अछि जे मधुश्रवामे च्यवन ऋषिक आश्रम छल। ऋषिक पत्नी सुकन्याक पिता जंगलमे शिकार खेलए गेलाह तँ हुनका द्वारा छोड़ल गेल तीर च्यवन ऋषिक एकटा आँखिमे लागि गेल जाहिसँ हुनक एकटा आँखि चलि गेल। एहि घटनासँ सुकन्या व्याकुल भऽ गेलीह आर जंगलक भ्रमण करए लगलीह। जंगलमे एक दिन एकाएक सूर्य देवक पूजामे

𑒢𑒰𑒑𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒰𑒑 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒦𑒹𑒿𑒙 𑒦𑒹𑒪। 𑒍 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒑𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒿 𑒖𑒢𑒞𑒥 𑒪𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒢𑒰𑒑𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒖𑒢𑒾𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒭𑒭𑓂𑒚𑒲 𑒂 𑒮𑒣𑓂𑒞𑒧𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨 𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒏𑒋𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒏 𑒮𑒦 𑒧𑒢𑒼𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒢 𑒔𑒩𑒔𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒔𑓂𑒨𑒫𑒢 𑒇𑒭𑒱 𑒂 𑒮𑒳𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨 𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒏𑒋𑒪𑒢𑒱 𑒂 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒚𑒲𑒏 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒮𑒿 𑒄 𑒖𑒢𑒞𑒥 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒎𑒩𑓀𑒑𑒖𑒹𑒥𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒎𑒩𑓀𑒑𑒰𑒥𑒰𑒠 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒧𑒹 𑓑𑓖𑓗𑓗 𑒮𑒿 𑓑𑓗𑓐𑓗 𑒄. 𑒡𑒩𑒱 𑒢𑒱𑒨𑒧𑒱𑒞 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒕𑒚𑒱𑒏 𑒁𑒫𑒮𑒩𑒣𑒩 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨 𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒂𑒩𑒰𑒡𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒋𑒯𑒢𑒼 𑒔𑒩𑒔𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒧𑒯𑒰𑒦𑒰𑒩𑒞𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒣𑒰𑒿𑒛𑒫 𑒖𑒐𑒢 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒯𑒰𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒖𑓀𑒑𑒪𑒧𑒹 𑒒𑒳𑒧𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒐𑒢 𑒫𑒱𑒣𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒠𑓂𑒩𑒾𑒣𑒠𑒲 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨𑒠𑒹𑒫𑒏 𑓑𑓐𑓘 𑒢𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒏𑒋𑒪𑒢𑒱 𑒂 𑒕𑒚𑒱𑒏 𑒫𑓂𑒩𑒞 𑒏𑒋𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒣𑒰𑒿𑒛𑒫𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒰𑒖-𑒣𑒰𑒙 𑒫𑒰𑒣𑒮 𑒦𑒹𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒋𑒯𑒱 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒦 𑒋𑒏𑒙𑒰 “𑒧𑒯𑒰𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒣𑒩𑓂𑒫” 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒯𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒂𑒧 𑒖𑒢 𑒮𑒧𑒴𑒯𑒏 𑒧𑒡𑓂𑒨 𑒄 𑒡𑒰𑒩𑒝𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒡𑒰𑒩𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒋𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒧𑒢𑒼𑒫𑒰𑓀𑒕𑒱𑒞 𑒤𑒪𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱 𑒞𑒿 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒞𑒰𑒢𑒼𑒞𑓂𑒣𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒂 𑒣𑒰𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒂 𑒔𑒻𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒁𑒮𑒰𑒡𑓂𑒨 𑒩𑒼𑒑𑒏 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒩𑒝 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯 𑒂 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱𑒦𑒰𑒫𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒫𑒢𑒱𑒏 𑒁𑒞𑒹𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒑𑒩𑒲𑒥 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒲𑒐 𑒧𑒰𑒿𑒑𑒱 𑒏𑓄 𑒄 𑒣𑒰𑒫𑒢𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒪𑒼𑒏 𑒂 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒋𑒯𑒱 𑒁𑒫𑒮𑒩𑒣𑒩 𑒤𑒪-𑒤𑒴𑒪 𑒂 𑒣𑒴𑒖𑒰𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢 𑒥𑒰𑒿𑒙𑒱 𑒣𑒳𑒝𑓂𑒨𑒏 𑒦𑒰𑒑𑒲 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒐𑒩𑒢𑒰 𑒂 𑒮𑒣𑓂𑒞𑒧𑒲𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒧𑒰𑒿𑒑𑒱𑒨𑒼 𑒏𑓄 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒖𑒩𑒴𑒩 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒣𑒩𑒥𑒻𑒞𑒱𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒦𑒹𑒠𑒦𑒰𑒫𑒏

প্রসাদ বঁটৈত ছথি। এহি অবসবপব পূবা প্রদেশমে নদী, পোখবি, ক্সথা আদিক সফাঈ কএল জাগত অছি। সম্পূর্ণ প্রদেশক শহব গামক সড়ক, গলী, মোহল্লামে অদ্ভুত সফাঈ আঃ প্রকাশক ব্যরস্থা কএল জাগত অছি। শহব সভমে নদী-পোখবিপব বঁঢ়ৈত ভীড় দেখি আবঁ লোক সভ অপন মোহল্লা আঃ ঘবক ছত অথরা লগ পাসমে খালী স্থানপব পোখবি জকাঁ সংবচনা বঁনা ওহিমে পানি জমা দৈত ছথি আঃ পবঁনৈতিন ওহিমে ঠাঢ় ভঃ সূর্যদেরকেঁ অর্ঘ্য সমর্পিত কবৈত ছথি। ঈ একমাত্র অবসব অছি জখন লোক সভ সাক্ষাত অবাধ্য দেরক পূজা কবৈত ছথি। এহি অবসবপব সম্পূর্ণ বিহাবমে অমীব-গবীবঁ, উঁচ-নীচ আঃ মালিক-মজূবক বীচ দূবী সমাপ্ত ভঃ জাগত অছি। সভ কেও তন, মন, ধনসঁ এহি পাবঁনিমে লাগি জাগত অছি আঃ সম্পূর্ণ রাতারবণ ছঠিময ভঃ জাগত অছি।

बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र

समाचार वाचक सह अनुवादक (मैथिली), प्रादेशिक समाचार एकांश, आकाशवाणी, पटना
छठि पाबनि बिहारक एकटा लोक पर्व अछि जे प्रायः सभ घरमे मनाओल जाइत अछि। पूरा प्रदेशमे आस्था आ श्रद्धाक संग ई चारि दिवसीय अनुष्ठान सम्पन्न होइत अछि। बिहारमे सूर्योपासनाक कतेको केन्द्र अछि। बिहारमे स्थित कतेको सूर्य मन्दिर श्रद्धालु सभकेँ भगवान सूर्यक अर्घ्य देबाक लेल आकर्षित करैत अछि। प्रदेशक संगहि देशक कतेको आन क्षेत्रसँ श्रद्धालु एहि मन्दिर सभमे आबि सूर्य देवक आराधना करैत छथि:- देवक सूर्य मन्दिर:- औरंगाबाद जिला मुख्यालयसँ बीस किलोमीटरपर देवमे स्थित सूर्य मन्दिर मगध विशिष्ठ संस्कृति, आस्था आ विश्वासक सर्वाधिक सशक्त आ विराट प्रतीक अछि। ई प्राचीन सूर्य मन्दिर अपन शिल्प आ स्थापत्यक प्रभावशाली सौम्यक अभिव्यक्त करैत अछि। सूर्य देवक ई विशाल मन्दिर पूर्वाभिमुख नहि भऽ पश्चिमाभिमुख अछि। बिना सिमेन्ट या गारा चूनाक आयताकार, वर्गाकार, अर्द्धवृत्ताकार, गोलाकार आ त्रिभुजाकार आदि कतेको रूप आ आकारमे काटल पाथरकेँ जोड़ि कऽ बनाओल गेल अछि। लगभग सौ फीट ऊँच एहि सूर्य मन्दिरमे सूर्य देवक तीन रूपक उदयाचल, मध्याचल तथा अस्ताचलमे विद्यमान छथि। एहि मन्दिरक कारी पाथरिक नक्कासी, अभिषेक करैत अस्ताचलगामी सूर्यक किरण आ एहि मन्दिरक महिमाक कारण लोक सभमे अटूट श्रद्धा अछि। एहि कारण प्रति वर्ष चैत आ कातिक मासमे देशक कतेको क्षेत्रसँ

पऱ्हैतिन एहि ठाम आबि सूर्यदेवकेँ अर्घ्य दैत छथि। पोखरामाक सूर्य मन्दिर- नालंदा जिला सूर्यगढ़ा प्रखण्डक पोखरामा गाममे स्थापित सूर्य मन्दिर सूर्य पंचायतन मन्दिर अछि जतए पाँचो देवता शिव, गणेश, विष्णु आऽ देवी दुर्गाक संग सूर्यदेव विराजमान छथि। एहि तरहक प्रदेशक ई पहिल मन्दिर अछि। एकर निर्माण सूर्य देवक प्रेरणासँ भेल अछि। १२०० फीटमे पसरल एहि मन्दिरक प्रांगणमे एकटा पोखरि सेहो अछि जतए भगवान सूर्यकेँ अर्घ्य देल जाइत अछि। लोक सभक मान्यता अछि जे सच हृदय, स्वच्छ भाव आऽ पवित्र मनसँ एहि मन्दिरमे छठिक पूजा कएलासँ दैहिक, दैविक आऽ भौतिक पापसँ मुक्ति तँ भेटैते अछि, सूर्य नारायण मनोनुकूल फल सेहो दैत छथि। पोखरामा गाम किउल-भागलपुर रेल खण्डपर कजरा स्टेशनसँ पाँच किलोमीटर उत्तर पश्चिममे तथा सड़क मार्गसँ ई गाम नालंदा -मुँगेर पथपर नालंदासँ पन्द्रह किलोमीटर आऽ अलीनगरसँ चारि किलोमीटरपर अवस्थित अछि।

उलारक सूर्य मन्दिर- राजधानी पटनासँ पचास किलोमीटर दूर दक्षिण पाँजाब आऽ पालीगंजक मध्य उलार मोड़सँ एक किलोमीटर दूर अवस्थित उलारक सूर्य मन्दिर अपन विशिष्ट पहचानक कारण प्रसिद्ध अछि। द्वापर कालमे भगवान श्रीकृष्णक वंशक राजा एहि मन्दिरक निर्माण करौने छलाह। गोटेक तीस फीट उँच एहि मन्दिरक इतिहास आऽ महत्वक कारण आगतो सभ बरि दिन कतेको हजार श्रद्धालु पैदल चलि कऽ एहि ठाम पूजा-अर्चना करैत छथि। छठिक अवसरपर एहि ठाम पैघ संख्यामे लोक छठि करऽ अबैत छथि।

মধ্‌শ্রৱাক সূর্য মন্দিব- বাজধানী পটনাসঁ সটন খবরন জিনাক মধ্‌শ্রৱামে সেহো একটা প্রাচীন সূর্য মন্দিব খছি। কহন জাগত খছি জে মধ্‌শ্রৱামে চ্যরন ঋষিক খাশ্রম ছন। পৌবাণিক কথাক খনুসাব স্বকন্যা খাহ চ্যরন ঋষিক দেরাব নাগন শবীব এহি ঠাম ঠীক ভহ গেন ছন খাহ হুনক ফূটন খাঁখি পূর্ববত ভহ গেন।

স্বরাসক সূর্য মূর্তি- ফজহফবপ্পব জিনাক গাযঘাট প্রখল্ড খন্তস্মাত দবভংগা-ফজহফবপ্পব বাষ্ট্রীয উঁচ পথপব নঢ় ৌব পঁচাযতক স্বরাস গামমে সেহো ভগরান সূর্যক একটা প্রাচীন মূর্তি খছি। এহি গামক নোক একব পূজা খপন গ্রাম দেরতাক ৰূপমে কবৈত ছথি। জানকাবীক খভারমে ঞা মূর্তি একটা ছোট মন্দিবমে এখনো স্থাপিত খছি। হানাঁকি এখন ধবি প্রদেশক সূর্যোপাসনাক কেন্দ্রমে একব পহচান নহি বঁনি সকন খছি।

উঁমগাক সূর্য মন্দিব- ঔবংগাৱাঁদ জিনাক মদনপ্পব উঁমগা পর্বত শ্রৃংখনাপব চৌদহ সৌ রর্ষ পূর্ব একটা সূর্য মন্দিবক নির্মাণ কবাওন গেন ছন জকব শিল্প দেরক সূর্য মন্দিবসঁ মিনৈত খছি। গোটৈক সাঠি ফীট উঁচ ঞা মন্দিব রিনা সিমেন্টক প্রাচীন পাথবসঁ বঁনন খছি। এহি ঠাম সাত টা ঘোড় াপব সরাব ভগরান সূর্যক প্রতিমা স্থাপিত খছি। দেরসঁ গোটৈক রাঁবহ কিনোমীটবপব ঞা মন্দিব খরস্থিত খছি।

রেঁনাউঁবক সূর্য মন্দিব- ভোজপ্পব জিনাক উঁদরন্তনগব প্রখল্ডক দক্ষিণ-পূর্ব কোনপব খাবা-সহাব সড়কপব স্থিত রেঁনাউঁব সূর্য মন্দিবক নেন প্রসিদ্ধ খছি। রেঁনাউঁবক নযনাভিবাম এহি মন্দিবমে সূর্য দেরক ভর্য প্রতিমা প্রতিষ্ঠিত কএন গেন খছি। এহি ঠাম প্রদেশক কোন-কোনসঁ নোক সভ মনতা মানএ খরৈত ছথি।

ওঁগাবীক সূর্য মন্দিব– নানন্দা জিনাক একংগবসবায প্রখল্ডক একংগবডীহ বঁজাবসঁ গোটৈক পাঁচ কিনোমীটৈব দক্ষিণ ঐতিহাসিক ওঁগাবী গামমে বঁনন সূর্য মন্দিবমে সূব্য দের আঃ ভগবান বিষ্ণুক উঁনীস টা প্রাচীন প্রতিমা অছি। ভগবান সূর্যক বাঁবহ টা বাশি অছি। এহি সভ বাশিক প্রতীক দেশ ভবিক বাঁবহ টা সূর্য মন্দিবমে সঁ একটা ওঁগাবীক সূর্য মন্দিব অছি। মন্দিবক নগ একটা বিশান পোখবি সেহো অছি। এহি পোখবিমে স্নান কঃ সূর্য দেরকেঁ এহি ঠাম অর্ঘ্য দেবাঁক বিশেষ মহত্ত্ব অছি। ছঠিক অরসবপব ওঁগাবীমে পৈঘ মেনা সেহো নগৈত অছি।

হরেনী খড়গপ্পবক সূর্য মন্দিব– ঝংগেব জিনাক হরেনী খড়গপ্পব ঝখ্যানযসঁ গোটৈক তীন কিনোমীটৈব উঁত্তব পশ্চিম জমুগা–ঝংগেব বোডপব অরস্থিত সূর্য মন্দিবক নির্মাণ পাঁচ দশক পূর্ব ছাত্র সভক পূজা–অর্চনাক নেন বঁনাওন গেন ছন। একব নির্মাণ পংডিত দেরদত্ত শর্মা ছাত্র–ছাত্রা সভক নেন কএনে ছনাহ জাহিসঁ ছাত্র সভ ভগবানক সজীর রূপকেঁ মহসূস কবথি। হানাঁকি আবঁ ওা মন্দিব ভক্ত সভক নেন আবাধনাক প্রমুখ কেন্দ্র বঁনি গেন অছি। ওা মন্দিবক বাঁহবী ভাগ এখনো অর্দ্ধনির্মিত অছি আঃ স্থানীয জনতাক অপেক্ষাক শিকাব অছি তথাপি ছঠিক অরসবপব পৈঘ ভীড় এহি ঠাম নগৈত অছি আঃ চাবি দিরসীয এহি অনুষ্ঠানক অন্তিম দিন "পাবণ" কেঁ ভগবান সূর্যক প্রতিমাপব অর্ঘ্য চঢ়াবাঁক নেন হোড় নাগন বহৈত অছি।

বঁড়হিজানক সূর্য মন্দিব– কিশনগংজ জিনাক অববিযা–বঁহাদ্বগংজ বোডসঁ দক্ষিণ বঁড়হিজানমে ভগবান সূর্যক ভব্য প্বান মন্দিব অছি। এহি মন্দিবক গর্ভ গৃহমে

উত্তব পানকানীন ছও ফীটক সূর্যদেরক প্রতিমা স্থাপিত খছি।
রঁড়গারক সূর্য মন্দিব– নানন্দা জিনাক প্রাচীন নানন্দা রিশ্বরিদ্যানযক খণ্ডহবসঁ গোটেক দূ কিনোমীটব উত্তব–পশ্চিমমে স্থিত রঁড়গার নামক স্থানপব ভগরান সূর্যক প্রাচীন খাঃ ভব্য মন্দিব খছি। মন্দিবসঁ সটন সূর্য তানারঁ সেহো খছি। মান্যতা খছি জে এহি তানারঁমে স্নান কএনাসঁ কুষ্ঠ বোগক নিরাবণ হোগত খছি। বেশী সংখ্যামে নোক এহি ঠাম ছঠি কবৈত ছথি।
দের কুল্ডক সূর্য মন্দিব– ঔবংগারাঁদ জিনাক পংচকুখিযা মোড়সঁ পাঁচ কিনোমীটব উত্তব হংসপুবা নামক গামসঁ তীন কিনোমীটব পূবরঁমে স্থিত খছি দেরকুল্ডক সূর্য মন্দিব। এহি মন্দিবক দবরাঁজা পূর্র দিস খছি। চৈত খাঃ কাতিক দুনূ মাসক ছঠিমে এহি ঠাম ভব্য মেনা নগৈত খছি।
পংডাবক সূর্য মন্দিব– পটনা জিনাক বাঁঢ় খনুমংডনসঁ গোটেক দস কিনোমীটব দূব পংডাবক গামক পশ্চিম ভাগমে গংগা নদীক কাতমে সূর্য দেরক মন্দিব স্থিত খছি। এহি মন্দিবক নির্মাণ দ্বাপব যুগমে শ্রী কৃষ্ণক খষ্ঠ মহিষিমে সঁ এক সত্তসঁ স্বন্দবী জারন্তীক পুত্র সাম্বা কবৌনে ছনাহ। মন্দিবক গর্ভগৃহমে কাবী পাথবপব প্রবান শৈনীমে সূর্য দেরক সম্মাহক খাঃ দুর্নভ প্রতিমা খছি। দেশক বাঁবহ টা প্রমুখ সূর্য মন্দিবমে সঁ ওহো একটা সূর্য মন্দিব খছি।

রিদ্যাপতি স্মৃতি দিরস (১১ নরম্বর ২০০৮) পব রিশেষ– যশস্বী করি ছলাহ মহাকরি রিদ্যাপতি

মিথিলাঁচলক পারন ভূমি কতেকো মহাপুরুষকেঁ জন্ম দেলক অছি জকব যশ অপনা দেশক অলারা রিদেশমে সেহো পসবল। এহলে মহান রিভূতিমে সঁ এক ছলাহ "মহাকরি রিদ্যাপতি" জিলক বচনামে কল্পনাক রঁদনা যথার্থক দর্শন হোগত অছি। ও ওহি গীতকাবমে সঁ একটা ছলাহ জিলক বচিত গীতকেঁ মিথিলাঁচলেমে নহি অপিতু রঁগাল, আসাম, উত্তব প্রদেশ আদিক সংগহি সম্পূর্ণ রিশ্বক বসিক মংডলী সম্মান দেলক অছি। উত্তব ভাবতমে প্রচলিত আর্যভাষা ক্ষেত্রমে রিদ্যাপতি সলক সম্মান প্রায:ককবো নহি ভেটৈল অছি। অসমিযা, হিন্দী, রঁগ্লা আ মৈথিলী এহি চাবি টা ভাষাকেঁ হিলক গীত একটা নর প্রেবণা দেলক অছি। মহাকরি রিদ্যাপতি একটা স্বযোগ্য করি, লেখক, ভক্ত, বাজনযিক, সমাজ স্বধাবক, স্মৃতিকাব, সংগীতজ্ঞ আ জ্যাতিষরিদ্ ছলাহ। এহি সভ গুণক কাবণ

आगयो हुनक नाम एहि तरहें लेल जाइत अछि जेना ओ आइयो हुनका सभक मध्य उपस्थित छथि। छह सहस्त्राब्दीक बादो आइयो हुनक विद्वता आ गुणक प्रसिद्धि मिथिलांचलक संगहि सम्पूर्ण भारत आ विश्वमे पसरल अछि।

महाकविक जन्म दरभंगा जिलान्तर्गत विस्फी गाममे भेल छल। ओ सम्पन्न परिवारक छलाह। हुनक जन्मक सम्बन्धमे विद्वान सभक मध्य मत भिन्नता अछि। विभिन्न उपलब्ध सामग्रीक आधारपर विद्वान लोकनि हुनक जन्मक संबंधमे अनुमान लगबैत छथि। स्व. नागेन्द्रनाथ गुप्तक अनुसार महाकविक जन्म १३५७ ई. मे भेल छल। जखन कि स्व. हर प्रसाद शास्त्री हुनक जन्म १३३० ई. मानैत छथि। अधिकांश मिथिलांचलक विद्वान् महाकविक जन्म अनुसंधानक आधारपर १३६० ई. मानैत छथि तथापि बहुमत अछि जे महाकवि १३६० ई. सँ १४४८ ई. क मध्य विराजमान छलाह।

कहल जाइत अछि जे ओ पैघ आह पढ़ने छलाह। कतेको राजघरानाक उतार-चढ़ाव देखने छलाह। बृद्ध राजा-रानीसँ लऽ कऽ राजकुमार-राजकुमारी सभक संग हुनक निकटवर्ती संबंध रहल। हुनक पिता गणपति ठाकुर दरभंगा राजक राज मंत्री छलाह। हुनक पितामह जयदत्त पैघ विद्वान आ उच्च कोटिक संत छलाह। स्वयं विद्यापति सेहो जन्महिसँ ओइनवार वंशक राजा सभपर आश्रित छलाह। ओ महाराजा शिव सिंहक प्रधान पार्षद आ विश्वसनीय अमात्य छलाह। महाराज शिव सिंह अपन राज्याभिषेकक समय हुनक जन्मभूमि "विस्फी" गाम हुनका दानमे दऽ देने छलाह। शिव सिंहक बाद सेहो विद्यापति, महारानी

রিশ্বাস দেৱী, মহাবাজা নবসিংহ তথা মহাবাজা ধীব সিংহক দববাঁবমে প্রধান বাজ পণ্ডিতক ৰূপমে ছনাহ।
ঋপন দীর্ঘকানিক জীৱনমে মহাকবি কতেকো গ্রন্থক বচনা কএননি। হ্নক এহি গ্রন্থ সভক ঋধ্যযন কএনাসঁ হ্নক বঁহুমুখী প্রতিভা স্পষ্ঠ হোগত ঋছি। হ্নক সমযমে ঋাবাঁ জাহীক ঋতেক স্বরিধা নহি ছন একব বাঁবজূদ ওহি সমযক মিথিনাঁচনক প্রসিদ্ধ তীর্থ স্থন সভক রিরবণ "ভূ পবিক্রমা" নামক গ্রন্থমে প্রস্তুত কঽ ঋাবঁএ বাঁনা পীঢ়ী কে নেন পৈঘ উঁপকাব কএননি। সংস্কৃত ভাষামে সেহো হ্নক নেখনী চনন জাহিমে "শৈর সর্বস্বসাব", "শৈর সর্বস্বসাব প্রমাণ", "প্ববাণ সংগ্রহ", "দান রাক্যারনী" ঋা "রর্ষকৃত্য" ঋাদি প্রমুখ ঋছি। সংস্কৃতমে ও "মণিমঞ্জবী" নামক নাটক সেহো ও নিখননি। "গোবক্ষ রিজয" নামক দোসব নাটক জে নেপানসঁ ভেটন ঋছি, ওহিমে সংস্কৃতসঁ ঋনগ মৈথিনী ভাষামে সেহো গীত ঋছি। একব ঋনারা ঋপভ্রংশমে ও "কীর্তিনতা" ঋা "কীর্তি পতাকা" নামক গ্রন্থক বচনা কএননি। কীর্তিনতা হ্নক পহিন বচনা মানন জাগত ঋছি।
ঋপভ্রংশ ঋা সংস্কৃতক ঋতিবিক্ত হ্নক কার্যক রিশান ভণ্ডাব মৈথিনী ভাষামে সেহো রিদ্যমান ঋছি। হ্নক যশ মুক্ত বচনামে স্ববক্ষিত ঋছি, জকব প্রচাব-প্রসাব হ্নক মবনাক বাঁদ ঋাগযো ঘবে-ঘব ঋছি। হ্নক মৃত্যুক সংবঁধমে সেহো রিদ্বান সভ একমত নহি ছথি। জনশ্রুতি ঙা ঋছি জে হ্নক মৃত্যু ১৪৩০ ঙা. মে ভেন মুদা নেপানক দববাঁব পুস্তকানযমে উঁপনব্ধ "ব্রাহ্মণ সর্বস্ব" নামক গ্রন্থক ঋাধাবপব হ্নক মৃত্যু ১৪৬০ ঙা. মানন জাগত ঋছি। ওনা সম্পূর্ণ মিথিনাঁচনমে ঙা কহৱী প্রচনিত ঋছি জে-

“विद्यापतिक आग्र अरसान
कार्तिक धवल त्रयोदशी जान”

उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला

अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर बिहारक पहचान देअवामे सोनपुर प्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र मेलाक महत्वपूर्ण स्थान अछि। प्रति वर्ष कार्तिक पूर्णिमासँ शुरू भऽ ई मेला एक मास धरि चलैत अछि। ई मेला देशमे जानवरक सभसँ पैघ मेला अछि। एहि ठाम जानवरक अलावा दैनिक उपयोगी वस्तुक बिक्री सेहो होइत अछि। मेलामे मनोरंजनक विशेष व्यवस्था सेहो रहैत अछि। चाकचाक नदी आ जलाशयसँ वेष्ठित एहि ठामक बाबा हरिहर नाथक मंदिरक सभसँ पैघ विशेषता ई अछि जे हरि आ हरक एक संग पुण्य दर्शन भक्त सभकेँ होइत अछि। ई क्षेत्र पौराणिक आ धार्मिक महत्व वाला होएबाक

সংগহি ঐতিহাসিক সেহো অছি। এহি ঠামক মাটিমে সংগম আ সমন্বযক ভারনা সেহো অছি। হরিহর ক্ষেত্রক স্বর্ণিম গতিহাস আগযো পূর্ণ রূপেণ জন সাধারণক সোঁন্না নহি আরিঁ সকন অছি। আগযো ওা শোধ আ অনুসংধানক অভারমে ভূগর্ভমে পড়ন অছি। একব উঁজ্জরন ভরিষ্যক স্মৃতি চিন্হ আগযো এহি ঠাম জমানাসঁ গৌবর স্তম্ভ আ প্রকাশি স্ফংজক রূপমে রিদ্যমান অছি। কতেকো ঋষি-মহর্ষিক সাধনাক ওা ভূমি জ্ঞানক তপোভূমি অছি। একব পৌবাণিক গৌবর গাথা পদ্মপ্ববাণ সহিত আন গ্রন্থমে সেহো সগৌবর রর্ণিত অছি। রাঁরাঁ হরিহরনাথক মন্দিব অতি প্রাচীন অছি জকব স্থাপনা স্বযং ব্রহ্মাজী অপনা হাথে হরি আ হবক একীকাব নিংগক রূপমে এহি ঠাম স্থাপিত কএনে ছনাহ। হরি আ হবক এহন একাকাব সংগম ভাবতরর্ষমে কতহু নহি ভেটৈত অছি। এহি ঠাম গংগা আ গংডক নদীক অভূতপূর্ব সংগম সেহো অছি।

হরিহর ক্ষেত্রক মহাতম্যক সংদর্ভমে কতেকো কথা নিখন গেন অছি। প্ববাণক অনুসাব এক রেঁব ব্রহ্মা জীক প্ববোহিতীমে দেরতা সভ একটা যজ্ঞক আযোজন কএননি। কতেকো কাবণসঁ ওা যজ্ঞক রিধ্বংশ ভেন, তখন দেরতা সভ "হব"ক স্থাপনা কএননি আ যজ্ঞকেঁ সফন রঁনৌননি। তখনসঁ হরিহর ক্ষেত্র নোক রিশ্রুত ভেন। পদ্ম প্ববাণমে র্র্হো রর্ণন অছি জে শানগ্রামীসঁ উঁত্তব হিমানযসঁ দক্ষিণ পৃথ্বী মহাক্ষেত্র অছি। এহি ঠাম রাঁরাঁ হরিহরনাথক মংদিব অছি। ওহি স্থানপব ভগরতী শানিগ্রামীক পতিত-পারনি গংগামে আরিঁকে মিনন ভেন অছি। সংগম ক্ষেত্র হোএরাঁক কাবণ এহি ক্ষেত্রক মাহাম্যে রঁহুত রঁঢ়ি গেন অছি। গহো কথা অছি জে শানিগ্রামী

তথা গংগাক সংগম হোএবঁ আ মহাক্ষেত্রক অঁতিম ভাগ হোএবাঁক কাবণ এহি ঠাম "হবি" আ "হব"ক স্থাপনা ভেল।

সোনপুবমে এহি স্থানপব কতেকো মঠ আ মন্দিব অছি জে স্থানীয প্রশাসন আ সবকাবক উপেক্ষাক শিকাব বঁনল অছি। গংডক নদীক কিনাবপব ঠীক সামনে অছি গোটেক অঢ়াই সৌ গজ পশ্চিম বাঁবাঁ হবিহবনাথক মুখ্য মন্দিব। কার্তিক পূর্ণিমাক অবসবপব কতেকো নাখ শ্রদ্ধান্নু প্রতি বর্ষ সংগম স্নান কঽ বাঁবাঁকেঁ জন চঢ়া শ্রদ্ধা সুমন অর্পিত কবৈত ছথি। মন্দিবক প্রাংগণমে কতেকো আন ছোটে-ছোটে মন্দিব সেহো অছি জাহিমে বিভিন্ন দেবী-দেবতা সভক মূর্তি স্থাপিত অছি। এহি মন্দিবক ঠীক সোঝাঁ অছি একটা মহাবীব মন্দিব জাহিমে উজ্জব সংগমবমবক গোটেক দস ফীটেক বিশান বাম ভক্ত হনুমানক মূর্তি স্থাপিত অছি। হবিহবনাথ মন্দিবক পাছাঁ মগন বাঁড়ী অছি জাহিমে সেহো মন্দিব বঁনল অছি। মংদিবসঁ সটন দক্ষিণ ভাগমে পুবান ঠাকুবৰাঁড়ী মন্দিব অছি, জখন কি মুখ্য মন্দিবক সোঝাঁ পূববঁ দিশ একটা ঐতিহাসিক তানাবঁ অছি জকব নির্মাণ চ্যবন ঋষি কুষ্ঠ বোগক নিবাবণ লেল কববৈত ছনাহ, মুদা কিছু বাঁধা আবি গেনাসঁ একব নির্মাণ নহি ভঽ সকন। একবা চ্যবন ঋষিক তপস্থন অথবা চ্যবন তানাবঁক নামসঁ জানন জাগত অছি।

মন্দিবসঁ ভবন এহি ক্ষেত্রমে গংডক কিনাবমে অছি প্রসিদ্ধ ঐতিহাসিক মন্দিবমে দক্ষিণমুখী মাঁ কানীক প্রচন্ড ৰূপ বানা দুর্নভ মূর্তি। এহি মূর্তিক ঠীক সোঝাঁ সত্তাগস হাথপব শিবনিংগ বিবাজমান অছি। মন্দিবক দক্ষিণমে শ্মসান অছি। মান্যতা অছি জে ঈ কানী মন্দিব সিদ্ধপীঠ

অছি জতএ পহিনে তংত্র–মংত্রক সিদ্ধি কএন জাগত ছন। এহি কানী মন্দিবক পাছাঁ একটা প্রবান মন্দিব অছি জাহিমে কতেকো মূর্তি রিবাজমান অছি। মন্দিবক প্রাংগণমে পান কানক কতেকো মহত্ত্বপূর্ণ অরশেষ দেখন জাঽ সকৈত অছি। গীতা রাঁরাঁক এহি মন্দিবমে হ্নক জীরন কানমে রৌনক বহৈত ছন, পবঞ্চ রাঁরাঁক মৃত্যুক রাঁদ সভ পবম্পবা ধ্বস্ত ভঽ গেন। কানী মন্দিবক উত্তব দিস অতি প্রাচীন গৌবী শংকব মন্দিব অছি জাহিমে ভগরান শির আ মাঁ পার্রতীক স্বন্দব আ ঐতিহাসিক দক্ষিণ রুখক মূর্তি অছি। তংত্র সাধক সভক মানর্ঁ ছনি জে এহি ঠাম নাগন মূর্তি কাম রিজয মুদ্রামে অছি। এহি মন্দিবক প্রাংগণমে একটা রিষ্ণু মন্দিব সেহো অছি জকব গুম্বঁদপব পান কান আ মৌর্য কানক কনাকৃতি উকীর্ণ অছি। হবিহব নাথক মুখ্য মন্দিবসঁ পশ্চিম গোটৈ দূ সৌ গজক দূবীপব রিশাননাথ আ রাঁননাথক সমাধি স্থন অছি জকব ভীতবক ভাগমে অদ্ভুত কনাকৃতি অংকিত অছি। মহান তপস্বী স্বামী ত্রিদণ্ডীজী মহাবাজ দ্বাবা গজেন্দ্র মোক্ষ দের স্থানপব আকর্ষণ মন্দিবক নর নির্মাণ কবাওন গেন অছি। ভগরান রিষ্ণুক ওা মন্দিব হবিহব ক্ষেত্রক অদ্ভুত নমূনা অছি।

ঐতিহাসিক হবিহব ক্ষেত্র আ ওকব নগপাস স্থিত মন্দিব আ মঠ নোক সভক আস্থাক কেন্দ্র অছি মুদা দেখভান উচিত বখ–বখারক অভারমে জীর্ণ–শীর্ণ ভঽ বহন অছি। সভ সান হবিহব ক্ষেত্র মেনাক অরসবপব কিছু সাফ সফাওা হোগত অছি আ স্থানীয প্রশাসন আ নোক সভ সেহো সক্রিয হোগত ছথি, মুদা একব রাঁদ ওা অপেক্ষিত বহৈত অছি। প্রতিরর্ষ এহি মেনাক ঘটৈত স্বরূপ আ নোকক ঘটৈত আকর্ষণসঁ এহি ক্ষেত্রক

ঐতিহাসিক আ পৌরাণিক স্বরূপ সংকটমে পড়ল জাহ বহল অছি। এহি মেলাক বিকাসক লেল সবকাব দ্বাবা মেলা প্রাধিকবণক ঘোষণা মাত্র ধ্যানরাজী সারিত ভেল অছি। পছিলা বর্ষসঁ এহি মেলামে খবীদল জানরব সভক প্রদেশক বাঁহব নঃ জযরাঁসঁ প্রতিবন্ধক কাবণ ব্যাপাবপব অসবি পড়ল অছি। সভ বর্ষ উদ্ঘাটন আ সমাপনপব মেলাক বিকাসক লেল ভাষণ হোগত অছি জে মেলাক সমাপ্তিক বাঁদ বিসাবি দেল জাগত অছি।
ঔদ্যাগিক রূপসঁ পিছড়ল বিহাবমে আয অর্জিত কববাঁক লেল পর্যটন উদ্যাগ সংভারনাসঁ ভবল অছি। এহি ঠাম কতেকো ঐতিহাসিক, পৌরাণিক আ প্রাকৃতিক স্থল অছি জে পর্যটককেঁ অপনা দিস খিচি সকৈত অছি। এহিমেসঁ সোনপুব আ হবিহব ক্ষেত্র মেলা সেহো একটা অছি। জরূবত অছি জে একব যোজনাবদ্ধ বিকাস কঃ একবা দেশক পর্যটনক মানচিত্রপব আনল জাএ আ ই ভাষণ আ ঘোষণাসঁ নহি হোএত এহি রাস্তে সবকাব, স্থানীয প্রশাসন আ স্থানীয জনতাকেঁ এক সংগ প্রযাস কবক হোএত।

<u>প্রদেশমে নহি থমি বহল জাতীয হিংসাক দৌব</u>

প্রদেশমে এক বের ফের জাতীয হিংসাক বিভত্স রূপ সোঝাঁ আযল। এক অক্টূবর দূ হজার নৌ কে খগড়িযা জিলাক অমৌসী গাম মে জমীনক বিবাদ মে সোনহ গোটেক ভেল সামূহিক হত্যাক বাদ পূরা ক্ষেত্র মে ডর পসরি গেল। প্রদেশ মে জাতীয হিংসাক কোনো ঈ পহিল ঘটনা নহি ছল আ ঈ অংতিম ঘটনা হোযত সেহো কহব উচিত নহি হোযত। আজাদীক বাদ সঁ এখন ধরি প্রদেশ মে ছোট-পৈঘ গোটেক এক সৌ সঁ বেসী ঘটনা ভঽ চুকল অছি জকর শিকার ছোট কিসান আ মজূর বনল ছথি। বাইস নবম্বর উন্নৈস সৌ একহত্তর মে পূর্ণিযাঁ জিলাক রূপসপুর-চংদবা সঁ প্রারংভ ভেল হত্যাক ঈ সিলসিলা গোটেক চারি দশক সঁ চলি রহল অছি আ শাসক বর্গ লহাস ক দাম লগা (মোআবজাক ঘোষণা) অপন কাজ সমাপ্ত বুঝৈত অছি। জতয হিংসাক ঘটনা হোইত অছি ওতয সুরক্ষাক নাম পর সরকার পৈঘ-পৈঘ ঘোষণা হোইত অছি। এহি ঘোষণা পর কিছু দিন অমল সেহো হোইত অছি মুদা সময বিতলাক সংগহি ও কমজোর পড়ি জাইত অছি আ সমযক প্রতিক্ষা মে লাগল সমাজ বিরোধী তত্ব জমীনক বহানে জাতীয হত্যাক একটা আর ঘটনা কে মূর্ত রূপ দঽ প্রশাসনিক ব্যবস্থাক পোল খোলি দৈত ছথি।

মধ্য বিহারক একটা পৈঘ ক্ষেত্রমে কিছু দিন পহিনে ধরি জমীনক বিবাদ ক লঽ কঽ সংঘর্ষ হোযবাক সংবাদ ভেটৈত রহল অছি। দরঅসল এহি ক্ষেত্রমে জমীন কিছু লোকক মধ্য অছি। ঈ পৈঘ জোতদার অপন বাহুবলক সহারা লঽ মজূর সঁ কাজ করবৈত ছলাহ। সময বিতলাক সংগহি মজূর বর্গ মে আযল চেতনাক

बाद जमीन मालिक आ मजूर क मध्य संघर्ष प्रारंभ भेल। एकर परिणाम स्वरूप जमीन मालिक आ मजूर क मध्य एहि संघर्ष के नड़ाक लेल अघोषित सेना अस्तित्व मे आयल। रणवीर सेना, लोरिक सेना, ब्रह्मर्षि सेना, सनलाइट सेना, भूमि संघर्ष समिति, एम सी सी आदि कतेको मजूर आ जमीन मालिकक समर्थन बाला सेना आपस मे टकरायल। सत्त तऽ ई अछि जे एहि टकराहटक शिकार बनल छोट किसान आ रोज-रोज खेत मे काज कऽ अपन पेट पालऽ बाला मजूर आ कतेको जान गेल, कतेको स्त्रीक सेनूर धोआ गेल, कतेको नेना अनाथ भऽ गेल। तथापि समाज विरोधी असामाजिक तत्व क हृदय पाथर नहि पिघलल आ ओ खून सऽ लाल होइत धरती आ जमीन पर पड़ल लहास के देखि अपन बहादूरी बुझैत छथि। हिंसा कोनो सभ्य समाजक लेल नीक चीज नहि अछि आ एहि सँ कोनो समस्याक समाधान सेहो नहि भऽ सकैत अछि। ई हिंसा जमीन मालिक दिस सँ हो कि मजूर दिस सँ एकर जतेक निन्दा कयल जा कम होयत। दुर्भाग्य तऽ ई अछि जे सामूहिक हत्या सन घटना क बाद एकरा राजनीतिक चश्मा सँ देखल जाइत अछि। हत्याक बाद जमीन पर बहल खून चाहे ओ जमीन क मालिक क हो कि मजूर के एकर रंग लाल रहैत अछि मुदा राजनीतिक चश्मा मे एकर रंग अलग-अलग रहैत अछि। जाहि जातिक हत्या होइत अछि ओहि जातिक नेता अथवा जे राजनीतिक दल एकरा अपन समर्थक मानैत अछि ओहि घटना स्थल पर जा ऐना नोड़ चुअबैत छथि जेना कि घटना स्थल पर्यटन स्थल हो। शासक वर्ग हो कि विपक्ष एहि

তবহক ঘটনা কে অপন চশ্মা সঁ এক বংগ দেখি গমানদাবী সঁ প্রযাস কবথি তঽ সংভব অছি জে প্রদেশ মে চনি বহন জাতীয হিংসাক দৌব সমাপ্ত ভঽ সকৈত অছি। সবকাব চাহে জাহি দন অথরা জাতিক হো হত্যা কবয ৱাঁনাকে হত্যাবা ৱুঁমি ওকবা সজা দেযৱাঁক প্রযাস কবয অন্যথা এহি তবহ ঘটনা পব বোক নগাযৱ্ সপনা মাত্র হোযত।

প্রমুখ নবসংহাব পব এক নজবি –

বর্ষ স্থান

মৃতকক সংখ্যা

1971– রূপসপ্পব–চংদবা (পূর্ণিযাঁ)

–14

1975– ডেবভবথা (নানন্দা)

–24

1976– অকোঠ়া

–03

1977– ৱেঁনছী (নানন্দা)

–14

1980– পিপবা কন্যাণ চক (পটনা)

–14

1981– পাবস বিগহা

–11

1984– দনৱাঁব বিহটা (ভোজপ্পব)

–22

1986– গৌনী (ওঁবগাৱাঁদ)

–24

1986– অববন

–24

1986-
-11 डबमैन (ঔংবগাৰাঁদ)
1986-
-11 কংসাবা (জহানাৰাঁদ)
1986-
-11 দবমিযা (ঔংবগাৰাঁদ)
1987-
-56 দনেন চক ৰঘৌবা (ঔংবগাৰাঁদ)
1988-
-18 নোনহী নগৰাং (জহানাৰাঁদ)
1989-
মানী ৰিংগহা–খিদপ্বা
(জহানাৰাঁদ) -10
1989-
-27 দনৰাঁব ৰিহৃৗ (ভোজপ্বব)
1991-
-14 দের সহিযাবা (ভোজপ্বব)
1991-
-15 তিসখোবা (পঙ্না)
1992-
-39 ৰাঁবা (গযা)
1996-
-22 ৰথানী ঢৈনা (ভোজপ্বব)
1997-
-58 নক্ষ্মণপ্বব ৰাঁথে (জহানাৰাঁদ)
1998-
-10 নগবী
1999-
-16 স্বজাতপ্বব (ৰক্সব)

1999-−23	শংকব ৰিগমা (জহানাৰাঁদ)
1999-−35	সেনাবী (জহানাৰাঁদ)
1999-−12	সেন্দানী
2000-−16	জঠ়প্বব (ৰঁক্সব)
2000-−11	নখীসবায
2000-−35	মিযাংপ্বব (ঔবংগাৰাঁদ)
2007-−10	ঢেনফোবৰাঁ (ৰৈশানী)
2007-−09	মণিপ্বব (শৈখপ্ববা)
2009-−16	খমৌসী (খগড়িযা)

বাজগীবমে সম্পন্ন ভেন সংঘ ক তীন দিরসীয বৈঁসক গামে–গামে সক্রিয হোযত সংঘ

বাষ্ট্ররাদী সাংস্কৃতিক সংগঠন বাষ্ট্রীয স্রযংসেরক সংঘক অখিন ভাবতীয কার্যকাবী মংডনক তীন দিরসীয বৈঁসক দেশক রর্তমান পবিস্থিতি পব চর্চাকি সংগহি সংগঠনাত্মক স্থিতি পব চর্চা কযন গেন। এহি বৈঁসক মে সংঘ অপন কাজক রিস্তাব কবৈত পর্যাবরণ কে অপন কার্য ক্ষেত্র মে সম্মিনিত কযনা সংঘক সব সংঘ চানক মোহন ভাগরতক উঁপস্থিতি মে সংঘক ববিষ্ঠ নেতা তীন দিন ধবি চিন্তন মনন কযননি আ চাবি টা প্রস্তার সেহো পাবিত কযন গেন। এহি অরসব পব সংঘ অপন বাজনৈতিক একাঙ্গ ভাবতীয জনতা পার্টীক দশা– দিশা পব রিচাব কযনক আ পী এম ইন রেটিংগ নান কৃষ্ণ আডরাণী আ রর্তমান বাষ্ট্রীয অধ্যক্ষ বাজনাথ সিংহ কে ভরিষ্যক অএনা সেহো দেখা দেননি। দূনূ নেতাক ভরিষ্যক নং২ কং২ চনি বহন চর্চা ক সংদর্ভ মে নির্ণয জন্দীএ অযবাঁক সংভারনা অছি। বৈঁসকমে সংঘক সভ অনুষাংগিক সংগঠনক প্রমুখ নেতা সব সংঘচানক অপন উঁপনব্ধি বিপোর্টকার্ড বখননি আ ভরিষ্য ক যোজনাক জনতবঁ দেননি।

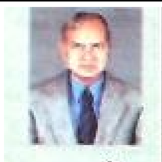
রিহাবক পর্যটন স্থন বাজগৃহ (বাজগীব) মে সংঘক বাষ্ট্রীয স্তবক ঙা পহিন আযোজন প্রদেশমে ভেন ছন। এহি বৈঁসকমে সংঘ মহত্রপূর্ণ নির্ণয নৈত গাম দিস অপন ডেগ বঁঢৌনক অছি আ গো–বক্ষা অভিযানক মাধ্যম সঁ জন জন ধবি অপন পকড় বঁনৈবাঁক নেন ধ্যান কেন্দ্রিত কববাঁক সংকেত দেনক। এহি বাস্তে বোজগাবক অরসব আ খেতীক রিকাস মে যোগদান

দেৱঁয ৱাঁনা সক্রিয সংগঠন সভকে মদদি কবৱাঁক বণনীতি সে হো সংঘ ৱঁনৌনক খছি।

কৌগ্রেসক হবা চেহবা বাজীব গাঁঘী দ্বাবা বাষ্ট্রীয গ্রামীণ বোজগাব গাবংটী কার্যক্রমক মাধ্যম সঁ গ্রাম মে ভেল সক্রিযতা ক জৱাঁৱঁ দেৱাঁক নেন সংঘ রিশ্র মংগন গো গ্রাম যাত্রা সেহো প্রাবভ কযনক খছি। পহিল চবণ মে এহি যাত্রাক নেন এক সৌ পচাস গাম কে চূনন গেন খছি। এহি মাধ্যম সঁ সংঘ কাঁগ্রেসক খপন রৈচাবিক নড়া ওা গাম সঁ নড়ৱঁ প্রাবংভ কহ দেনক খছি। সংঘ খা কাঁগ্রেস রৈচাবিক ৰূপ সঁ দূ ধ্রুব পব খছি। তথাপি গামক রিকাসক মামিনা সংঘ বাহুন গাঁঘীক ৱাঁটে পব চনৱাঁক জে নির্ণয নেনক খছি দেশক ভরিষ্য নেন নীক সংকেত খছি। দেশক পৈঘ খাৱাঁদী এখনো গাম মে খছি জকবা রিকাসক বোশনীক খারশ্যকতা খছি। শ্রী গাঁধীক গামমে সক্রিযতা পব সংঘক প্রচাব প্রমুখ মনমোহন রৈঘ ক প্রতিক্রিযা ‘জে কেও গামক ৱাঁত কবয নীক ৱাঁত খছি’ স্রাগত যোগ্য খছি। রৈচাবিক ৰূপ সঁ এক দোসবক রিবোধী বাজনীতিক ক্ষেত্র মে সক্রিয বাহুন গাঁঘী খা সামাজিক ক্ষেত্র মে সক্রিয বাষ্ট্রীয স্রযং সেরক সংঘক গমানদাবী সঁ গাম দিস খপন ধ্যান দেননি তহ সংভর খছি জে গ্রামীণ ক্ষেত্র মে রিকাস ক নর বোশনী পসবত খা গামে–গামে খুশহানী পসবত। খপন ভরিষ্য ক চিন্তা খা পেটক খাগি কে শাঁত কবৱাঁক নেন মহানগব দিস খপন ডেগ ৱঁঠা। বহুন গ্রামীণ জনতা গামে মে বথি খপন ভরিষ্য ক খোজ কবত।

<u>গাম মে রিজ্ঞান কেঁ নোকপ্রিয রঁনরঁ২ মে নাগন ছথি</u>

<u>মানস রিঁহাবী</u>



মিথিনাঁচনক পিছড়ন ক্ষেত্র মে নেনা সভক মধ্য রিজ্ঞানক প্রতি জাগৰুক কবরাঁক নেন খভিযান চনাওন জা বহন খছি। ঐ খভিযানক খঁতস্মত নেনা সভ খেন-খেন মে রিজ্ঞান কেঁ সমঝি-রুঁঝি বহন ছথি। মহত্বরঁনা ঐ খভিযানক নেতৃত্ব পূর্ব বাষ্ট্রপতি ডা. এ.পী.জে. খর্দ্বুন কনামক সহযোগী বহন ভাবত সবকাবক পূর্ব রৈজ্ঞানিক মানস রিঁহাবী রর্মা কহ বহন ছথি। রাঁঢ়ি প্রভারিত দবভংগা জিনা মে ঐ খভিযানক সফনতাক রাঁদ খার্ব একবা পূবা প্রদেশমে চনেরাঁক যোজনা খছি। দবভংগা জিনাক ঘনশ্যামপ্বব প্রখংডক ছপেব গাম ভোঁডবক নিরাসী শ্রী রর্মাকি মোরাঁগন রিজ্ঞান প্রযোগশানা (এমএসএন)ক প্রশংসা পূর্ব বাষ্ট্রপতি ডাক্টব কনাম তঁ কবরেঁ কএননি সংগহি রিঁহাবমে একবা নোকপ্রিয রঁনা ও নেনা খা শিক্ষক সভক খাঁখিক তাবা সেহো রঁনি গেন ছথি।

রৈজ্ঞানিক খা রুঁদ্ধিজীরী সভক সংস্থা রিকসিত ভাবত ফাউঁডেশনক নীর বখনাহাব শ্রী রর্মা রর্ষ 2010 মে রাঁঢ়ি প্রভারিত কমনা রঁনান ক্ষেত্র সঁ মোরাঁগন রিজ্ঞান

प्रयोगशाला प्रारंभ कएने छलाह। बाढ़ि प्रभावित दरभंगा, मधुबनी आ सुपौल जिलाक मे ओ प्रयोगशाला चौबीस हजार छात्रक मध्य विज्ञानकेँ लोकप्रिय बनौलक अछि आ 758 शिक्षक केँ प्रशिक्षित सेहो कएनक अछि। ओ प्रयोगशाला 2100 गामक दौरा सेहो कएनक अछि। अगिला वर्ष प्रयोगशालाक संख्या तीन सँ बढ़ा क' दस करबाक योजना अछि। श्री वर्माक अनुसार 1990 मे आन्ध्र प्रदेशक कुप्पम मे विज्ञान केन्द्रक मे गुड़ीबंडा गामसँ प्रारंभक बाद मोबाइल प्रयोगशाला महत्वपूर्ण काज कएनक अछि। एखन धरि गोटेक 30 लाख छात्र ऐ मोबाइल प्रयोगशालासँ विज्ञानसँ संबंधित संवाद स्थापित कएनकि अछि।
अगस्त्य फाउंडेशन आ विकसित भारत फाउन्डेशन बिहार द्वारा प्रदेशमे मोबाइल प्रयोगशालाक कारण लेला सभ विज्ञानक प्रति जागरूक भेलाह अछि। जइ विद्यालय मे ऐ प्रयोगशालाक दौरा भेल अछि ओतए छात्र सभक उपस्थिति बेसी बढ़ल अछि। श्री वर्मा जनौलनि जे एक विद्यालयमे छओसँ सात बेर एम एम एल केँ लऽ जएबाक लक्ष्य अछि। एखन धरि तीन-चारि बेर एक विद्यालयक दौरा भेल अछि। प्रारंभिक अनुभव जनतबँ दैत अछि जे छात्र सभमे विज्ञानक प्रति आ ऐ विषयक प्रति सोच बदलल अछि। छात्र सभ मे प्रश्न पूछबाँ, विश्लेषणात्मक सोच अपन सहपाठीसँ विचार-विमर्श करबाक क्षमता बढ़ल अछि, एम एस एल मे कक्षा छओ सँ बारह धरिक छात्र केँ ध्यान मे राखि विज्ञान म◌ॉडल तैयार कएल गेल अछि। एन सी ई आर टी क पाठ्यक्रम पर आधारित एकर एक सय साठि विज्ञान म◌ॉडल विषय केँ बुझबाक अंतर दृष्टि पैदा क' रहल अछि। ऐ

খভিযানক উঁদ্দেশ্য রিহাবমে রেঁসী নেনা কেঁ রৈজ্ঞানিক রঁনাএরঁ খছি। ঐ সঁ ছাত্র সভমে রিজ্ঞানক প্রতি রুচি রঁঢ়ন খছি। শিক্ষক সভ সেহো মাঁগ করৈত ছথি জে রেঁসীসঁ রেঁসী রেঁব প্রযোগশানা হ্নক রিদ্যানয মে খারঁএ জগসঁ রিদ্যানয মে রিজ্ঞানক শিক্ষকক জে কমী খছি ওকবা দূব কএন জা সকএ।
নাগইে কাঁরেঁইে এযবঞ্রাফ্টে পবিযোজনাক স্বপবসোনিক জহাজ তেজসক সফনতাক সংগ তৈযাব কবরাঁ মে প্রাজেক্টে ডাযরেক্টব (জেনবন সিস্টম)ক পদ পব কাজ কহ চ্কন 69 রর্ষক শ্রী রর্মা জনৌননি জে রিহাব প্রতিভাক জমীন খছি। রিজ্ঞানক প্রতি নেনা সভ মে রুচি জগেরাঁক খছি। রিদ্যানয সভ মে জমীনক স্তব পব সংবচনাক খভার মে ওা একটা চ্নৌতীরঁনা কাজ খছি হ্দা গমানদাবীসঁ প্রযাস কএন জাএ তঁ ঐ মে সফনতা খরশ্য ভেটৈত। শ্রী রর্মা রিজ্ঞানকেঁ নোকপ্রিয রঁনেরাঁক সংগহি উঁতব রিহাবমে কোসী খা ওকব সহাযক নদী সভক খারঁএরঁনা রাঁঢ়ি ক সমস্যাক ক্ষেত্রমে জিযোমার্ফো ডাযনেমিক্সক খধ্যযন কহ বহন ছথি। হ্নক উঁদ্দেশ্য রিহাবমে রাঁঢ়ি ক সমস্যাক রৈজ্ঞানিক খধ্যযন কবরাঁক খছি। শ্রী রর্মা মানৈত ছথি জে কেন্দ্র খা বাজ্য সবকাব দ্বাবা রাঁঢ়ি প্রভারিত ক্ষেত্র মে নদী সভক হাগড্রানাজিকন রিশেষতাক খনদেখী কহ প্নন খা রাঁন্হ খাদি রঁনাএরঁ ভূন খছি।
ভাবত সবকাবক পূর্র রৈজ্ঞানিক মানস রিহাবী রর্মা দবভংগা জিনা মে প্রাবংভিক শিক্ষা গ্রহণ কএনাক রাঁদ মধ্রঁনীক জিনা মধেপ্ববক জরাহব উঁচ রিদ্যানয সঁ মৈট্রিক পবীক্ষা পাস কযননি। পটনা খভিযংত্রণ মহারিদ্যানযসঁ মৈকেনিকন গংজীনিযবিংগক পঢ় াগ পূবা

कएलनि। पूर्व राष्ट्रपति डाक्टर कलामसँ हुनक पहिल भेँट इंटीग्रेटेड मिसाइल प्रोग्रामक सिलसिलामे रक्षा अनुसंधान विकास संगठनमे कार्यरत रहलाक दरमियान भेल छल। दरभंगा मे बिहार सरकार द्वारा स्थापित रीमेन्स इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोल◌ॉजीक संचालन मे सेहो हुनक महत्वपूर्ण योगदान अछि। दिसम्बर मास मे दरभंगा मे आयोजित विज्ञान मेला मे पूर्व राष्ट्रपति डा. कलाम उपस्थित भऽ श्री वर्माक लगन आ योगदानक प्रशंसा सेहो कएने छलाह। मोबाइल विज्ञान प्रयोगशाला बिहारक संगहि आन्ध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा आ महाराष्ट्र मे सफलताक संग काज कऽ चुकल अछि।

**<u>सुजीत कुमार झा</u>**

<u>सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आर मिथिला ग्रामक तैयारी</u>

समय २०३६ सालक एक राति के । जनकपुरक प्रसिद्ध जानकी मन्दिरक प्राङ्गणमे मिथिला नाट्य कला परिषदक एकटा सांस्कृतिक कार्यक्रम भऽ रहल । दर्शक दीर्घा सँ एकटा बाँलक हमहुँ गायब कहि उदघोषक भोला दासके चिट्ठ पर चिट्ठ दऽ रहल ।

मुदा भोलाक मन नहि डोलि रहल । दर्शकसभ उठय लागल छल।

गम्भर ओ बाँलक दशोम रेव हमहुँ गायर कहि चिट्ठ

পঠৌনন্হি । উদঘোষককে মন ডোনি গেন । রানক মঞ্চপর ঐনাহ আ অপন গীত স্বর কএনন্হি । অপন অপন ঘর জা বহুন দর্শকসভ ফিতো আরঁয নাগন আ মঞ্চক আগামে রৈসি গেন । ও কোনো উপন্যাস আ কথাক অংশ নহি অছি । ও রাঁনক বহথি স্বনিন মল্লিক । হুনকে সঁগ ও ঘটনা ভেন অছি । কহিযো মিনাপক মঞ্চপর চঢযক নেন চিট পর চিট দেরযরঁনা ব্যক্তি আও মিনাপক অধ্যক্ষ ছথি । ফের একটা চর্চিত গাযক , সংগীতকার, সফন কর্মচারী, ব্যরসাযী আদি রিশেষণ সঁ যুক্ত ছথি । আগ জঁ সফন ব্যক্তিক খোজী কএন জাএ তঁ ও অগ্রণীমে অরৈত ছথি । কহিযো এক সময ছন জে ও দ্র সঁ দ্রক যাত্রা সাগকন সঁ করথি ক্ষুদা স্থিতি রঁদৈন গেন অছি ।
হুনকা ঘরমে চারি টা মোটরসাগকন , একটা জিপ সহিতক সাধন ছন্হি । আও অফিসো চঢয নেন গাড়ী দেনে ছন্হি ।
স্বনিনক প্রগতিমে হুনক পিতা কামেশ্বর মল্লিককঁ মাত্র দর্শন আ হুনক অপন নগন দূন্র ওতরে কাম কএনে স্বনিন নজদিকক ব্যক্তিসভ কহৈত ছথি । কহিযো রড়কা গীতকার আ সংগীতকার রঁনরঁ সপনা দেখযরঁনা স্বনিন ওহি ক্ষেত্রমে রঁহুত রঁড়কা স্থানপর তঽ নহি গেনা ক্ষুদা অপন ভাও সভকে ওহি নাগনমে দেনন্হি ।
স্বনিনক ছোট ভাও প্ররেশ সংগীতক দুনিযামে অপন স্থান খোজযমে নাগি গেন অছি । কহুন জাগত ঠৈক প্ররেশকে ওহি নাগনমে পঠারঁযমে স্বনিনক রঁহুত যোগদান অছি ।



২০২৪ আসিন ১০ গতে ভাবতক খজৌলীমে মাতা স্বশিলা মল্লিক আ পিতা কামেশ্বব মল্লিককে জেঠ্য প্বত্রক ৰুপমে জন্ম লেনিহাব স্বনিল এমএসসী , পিজিডী গন সাওন্সক অধ্যযন কএলে ছথি ।
স্বনিলক রিষযমে কহল জাওত ছৈক ও সাত কক্ষামে পঢ়ৈত বহথি তহিএ ম্যুজিকক ধুন রঁলৌলে বহথি । একদম কম উঁমেবমে ও মঞ্চসভ পব গাবঁয লাগল বহথি । মহোত্তবীক স্বগা মেঁ গুঞ্জ্যাষ্ঠমীমে হিনকা স্প্রশেনী রঁজাওল জাওত ছল । এক রেঁব ওহি গামমে মঞ্চপব গীত গএলাক রঁাদ দর্শকসভ হিনকা পব পৈসাক রর্ষা কহ দেলে ছল । স্বনিলক অনুসাব ৩০ রর্ষ পূর্র তেড্র সয ৰুপৈযা ভেল ছল । ও মঞ্চপব গারযকে এতেক ফ্রেজী বহথি জে ছোকবরাজী নাচপার্টী হোও রা কোনো কার্যক্রম ও কপড়া পহিব রিঁদা ভহ জাওত ছলাহ । পৈসা কে দেত কে নহি হুনকা অহি সঁ সবোকাব নহি ছল । মৈথিলীক চর্চিত গীতকাব সিযাবাম ঝা সবসক শৈষ্ট্মে মিথিলাঞ্চলমে ম্যুজিককে জে
সেন্স স্বনিলমে অছি রঁহুতো মেঁ নহি অছি । কহল জাওত ছৈক স্বনিলক পিতা একটা রঁঢ়ীযা গাযক বহথি তহিনা হুনক রঁারঁা ঝসদ্দী লাল মল্লিক চর্চিত তরঁলা রঁাদক । ফেব হুনক দূ প্বত্রী আ এক প্বত্র সেহো গীত গরেঁত ছন্হি । চর্চিত গাযিকা লেহা প্রিযদর্শনীক পিতা হোরযকে সেহো স্বনিলকে গৌবরঁ প্রাপ্ত ছন্হি । স্বনিল

छोड़ा तोबा रॅज्जव खसतौ , गीत घब घब के, हमब धकधकी रॅटैये, नेह्एन आँचब, खोता सिंगाब, आर्शिराद, म्हट्रैभवी माया सहितक एनरॅमये संगीत देने छथि । गायनक अतिविक्त किछु एनरॅमये ह्नक निखन गीत सेहो अछि । एक दिस गीत संगीत क्षेत्रमे ओतेक आगा छथि तँ दोसब दिस शैक्षिक तानिम उँपकेन्द्र धन्वषाक प्रम्हख छथि । ओ तानिम केन्द्र धन्वषा , महोत्तबी, सिबहा, सनाही, सिह्रुनी, जिन्नाक शिक्षकसभकँ तानिम दैत अछि । किछु रर्ष पूर्र ओ शिक्षक सेहो बहथि । ओहि क्रमये ट्र्शेनिया सभके ह्नका घबमे भिड नागन बहैत छन । स्वनिन र्यरसायी सेहो छथि जनकप्वबक क्याम्पस चौकपब रिक्तानक समान रिक्री केन्द्र सेहो हिनके छन्हि । रिक्तान सामग्री रिक्री केन्द्र जनकप्वबमे नयाँ र्यरसाय छन । नयाँ र्यरसायकँ चुनौती स्वीकाब कएनन्हि आ ओ र्यरसाय एखन नीक अरस्थामे अछि ।
गीत बेकर्डिङ्ग स्ट्रडियोके सेहो ह्नक सोच छन्हि । जकब तैयाबी ओस्वरु कऽ देने छथि । फेब मिनापक रात कबी तऽ प्रम्हख प्राजेक्टसभकँ मिनाप सँ जोडयमे ह्नक महत्त्वपूर्ण योगदान अछि । अखन ओ नाटकघब निर्माणमे नागन छथि । फेब मिथिना ग्रामक पबिकल्पना सेहो ह्नक छन्हि । ओ कहैत छथि– 'एकटा एहन स्थान होए जतय नाटकघब ह्ए, मिथिनाक संग्रानय ह्ए मिथिनाक प्रम्हख भोजनसभ ओतए भेटए , एहन चिजक आरश्यकता छैक ।' मिथिना ग्रामक नेन रिभिन्न क्षेत्रक र्यक्तिसभ सँगे पबामर्श स्वरु कऽ देने प्रसंगक क्रमये स्वनिन कहनन्हि ।

<u>**एकटा नाजरार कनाकाब मदन ठाकुब**</u>

ব্ঁধ দিন ভোবমে পূজাক নেন ঘবে নগ বহন কন পব সঁ মদন ঠাকুব পানি খাগন বহন ছনথি কী পাছ সঁ তীন চাবি গোষ্টে প্বনিস হিনকা সঁ প্বছি বৈঁসননি খহি তঽ মদন ঠাকুব নহি ছিযৈক । পাছ ঘ্মি কঽ ও হঁ হ্ মে কিছ উঁত্তব দিতৈথ ওহি সঁ পূর্বে ও সভ কহয নগনন্হি খপনে তঽ বেঁজোড খভিনয কবৈত ছী । মিথিনাঞ্চনক স্বপব সষ্টাব মদন সংগ দর্জনো এহন ঘটনা ভেন খছি জে হ্নকা বিনা কহনে নোক চিন্হ গেন ছনন্হি । খা এক দম খাদব সম্মান কবৈন । এক বেঁব তঽ সীমাবর্তী মধ্বনী জিন্নামে মদনক প্রসংশকসভ জবঁবদস্তী হ্নকা ঘেব কঽ জনপান সেহো কবৌনে বষ্টন ।



শিক্ষা সঁ এসএনসী সেহো নহি কএনে মদনক প্রসংশক মে বঁহ্ত পঢন নিখন বিদ্বানসভক নম্বঁা স্বচী খছি । মিথিনা নাষ্ট্য কনা পবিষদক পূর্ব খধ্যক্ষ স্বনিন মিশ্র কহৈত ছথি –'বিদ্যানযীয শিক্ষামে ভনেহি মদন কম হ্এ ক্ষদা খপনা ক্ষেত্রমে কেহন কেহন মাস্টব ডিগ্রী বঁনাকেঁ হবাবঁযকেঁ ক্ষমতা বখৈত ছথি ।'



এক রেঁব রঁবিষ্ঠ নাঁটক কাব মহেন্দ্র মলংগিযা সঁ পৃছল গেল ছল মিথিলাঞ্চলক সফল কলাকাব কে সভ ছথি তাহি পব ও রাঁজল বহথি –‘ সফলকেঁ মাপদণ্ড কী অছি হমবা নহি বুঝল অছি , ক্ষদা জলকপ্রবক পাঁচ টা কলাকাব এহল ছথি জিলকব প্রতিভাক জবাঁরঁ নহি অছি ।’ পাঁচ টা কলাকাবক নাম জোডাবঁয কাল সভ সঁ পহিলে ও কোলো কলাকাবক নাম লেলে বহথি তঽ ও ছলথি মদল ঠাকুব ।

মদল সহীমে লাজবার কলাকাব ছথি । সহকর্মী সভক অনুসাব জখল ও অভিলয কবয লগৈত ছথি ও ওহিমে ডুবি জাগত ছথি । যৈহ হুনক প্রমুখ বিশেষতা অছি । ২০৩৩ সাল সঁ অভিলয স্বক কএলে মদল এখলো লিবন্তব অহি ক্ষেত্রমে লাগল ছথি । জখল মঞ্চ পব চঢৈত ছথি তঽ ১৬/১৭ বর্ষক কলাকাব সভ সঁ কম চমক হুলকামে নহি বহৈত ছলহি । ফেব অভিলযকেঁ তঽ ও বাঁদশাহে

ছথি । মিলাপক সংস্থাপক যোগেন্দ্র সাহ লেপালীক প্রেবণা সঁ অভিলয ক্ষেত্রমে আএল মদল মৈথিলীক অতিবিক্ত লেপালী সিলেমামে সেহো অভিলয কএলে ছথি

। নেপানী সিনেমা সীতা , সিমানা খা রীব গণেশিমান মে হ্নক কম দৃশ্য খছি হ্মদা খপন খভিনযকেঁ রঁন পব দর্শকি পব খনগ ছাপ ছোড়য সফন ভেন ছথি । ওনা মৈথিনী ঠৈনি সিবিযন কাঠক নোক , হংসা চনন পবদেশে , মিথিনাক ব্যথা, কনিযাঁ, চমেনী, পবিণাম সহিতমে তহ রঁহ্ত মহত্ত্বপূর্ণ পাত্রমে ছথি । বঙ্গ মঞ্চমে তহ ও ককরো সঁ পছে নহি ছথি । ফেব মিথিনাঞ্চনক মাত্র নহি নেপান ভাবতক রঁহ্ত বাস বঙ্গ মঞ্চ পব খভিনয সেহো কএনে ছথি । হ্মদা জে মজ্জা কাঠক নোকক কম্পনীক বোনমে খাএন ওতেক কহিযো নহি । ও কহৈত ছথি –‘ মনংগিযা সব সম্ভরতঃ কম্পনীক বোন হমবে নেন নিখনে বহথি কী ? ’

দর্জনো প্ববস্কাব খপন নাম কহ চ্কন মদন কহৈত ছথি–‘ওহিনা খভিনয কবী খা উদ্দেশ্য নহ কহ কএনাগমে সম্মান খনগ হোগত ছৈক ।’ কনা ক্ষেত্রক স্থিতি সেহো খাব রঁঠিযা ভহ বহন ও স্বীকাবৈত ছথি । খপনে ঘব সঁ খাগৗ গীন কবয পড়ৈত ছন হ্মদা খাব সে স্থিতি নহি খছি হ্নক কথন ছন্হি । ওনা জনকপ্ববমে একটা নাট্য শানা ভহ জাগক তহ খাওব কিছু হোগতে একবা রিষযমে সভক চিন্তন খপবিহার্য খছি ও খাগা কহৈত

ছথি ।

কহিযো কান দেখা সিকীমে করিতাক সেহো বচনা কবএরঁনা মদন কহিযো কান মঞ্চ পব গীত সেহো গবৈত ছথি । সাথী কনাকাব বাম নাবাযণ ঠাকুব সংগ মকখাক বোটী খেসাবীক দানি ..... গাএন গীত এক সমযমে এতেক নোকপ্রিয ভেন ছন কী গাম গামমে

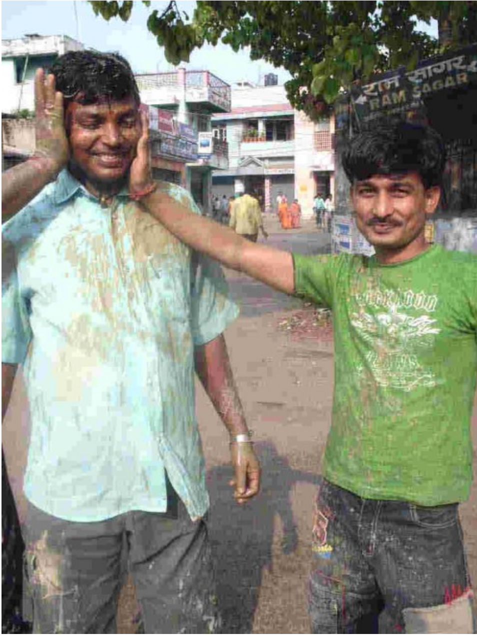
নর্ট্রা সভ সেহো মঞ্চ পব , বাম নাবাযণ খা মদন খপনাকেঁ রঁনা কহ হিনকব গীত গারঁয নাগন ছন । জনকপ্ববক শির চৌক পব চর্চিত কনাকাব বাম খশিষ ঠাকুব সংগ মদন হেযব ড্রেসব সঞ্চানন কবৈত খাএন মদনকেঁ হজামী পেশামে সেহো জরার নহি
খছি ।
এক রেঁব মদন সংগ কেশ খা দাঠী মোছ জে কিযো রঁনা নেনন্হি দোরাঁবা ও ব্যক্তি দোসব ঠাম রঁনারঁযকেঁ সোচযো নহি সকৈত ছথি । খন্য ক্ষেত্রক স্বপব স্ট্যবকেঁ চৌক চৌবাহাপব নহি দেখন জা সকৈত খছি ক্দা মিথিনাঞ্চনক স্বপব স্ট্যব এখনো খপন পবম্পবাগত পেশা নহি ছোডনে ছথি ।
জখন নাটক নহি বহন তখন শির চৌক পব নোক সঁ হমবা ভেট ভহ জাগত খছি মদন কহৈত ছথি ।

थान माटिक पारनि



मिथिलाञ्चल पारनि तिहावक हिसाब सँ धनी क्षेत्र मानल जाइत अछि । कोनो महिला एहन नहि होइत अछि जइमे प्रत्यक्ष पारनि सम्भ नहि हुए । फेर लोक ओकरे उत्साहकेँ संग मनबैत अछि ।

अहिक्रममे थान माटिक पारनि किछुए दिन पूर्व मिथिलाञ्चलमे सम्पन्न भेल अछि । जुडशीतल पारनिकेँ रूपमे मनाओल जायवाला पारनिमे एक दोसरकेँ थान माटि लगाओल गेल ।
होली पारनिमे जेना एक दोसरके रङ्गअबिर लगाओल जाइत अछि , तहिना जुडशीतलमे थानमाटि लगाओल जाइत अछि ।



জনকপুবমে রিশেষ খাকর্ষণ

থান মাটিক পারনি মিথিনাঞ্চনক হবেক স্থান পব ওতরে উঁত্সাহ কে সঁগ মনাওন জাগত খছি । হ্মদা মিথিনাক বাজধানী জনকপুবমে কিছু রিশেষে দেখন গেন । জনকপুবক সমাজিক ক্ষেত্রমে নম্রাঁ সমযসঁ কাজ কবৈত খাএন বাম যুরা কমিটী খা বামজানকী যুরা কমিটী খনগ খনগ স্থান পব থান মাটিক উঁত্সর মনৌনক । ও উঁত্সরমে সৈযকড়ো র্যক্তিক সহভাগিতা ছন । বাম যুরা কমিটী জনকপুবক খধ্যক্ষ সোহন ঠাকুব কহনন্হি — জ্ডশীতন জাহি উঁত্সাহকে সঁগ পহিনে মনাওন জাগত ছন ওহিমে কিছু রর্ষ সঁ কমী র্রুঁমা বহন ছন ।

ও কমী দ্ব কবরাঁক নেন উঁত্রসকে রুপমে জ্ডশীতন মনেনৌ ।

उँत्सरक बाँद प्रवे जनकपुर थान माटि सँ भवि गेल छल । संचारकर्मी रामश्रीष यादव कहलनि ‘बहुत दिनक बाँद जुड़शीतलक अनुभव अहिरेब भेल । ’

गाममे सेहो

गाममे कोनो उँत्सव हुए वा सत्यनारायण भगवानक पूजा एकटा अलग होइत अछि । लोककें कसि कऽ सहभागिता बढैत अछि । फेर थान माटिक बाँत करी तऽ गाममे अहिरुप सँ थानमाटि खेलल जाइत अछि की कतेको दिन तक गाममे थाने माटि नहि बढैत अछि। धनुषा जिल्लाक गंगुलीक प्रभु गंगुली कहैत छथि — ‘गंगुली गाममे थानमाटि खेलबाँक लेल बाँहर कमायबँला घरासभ जुमि जाइत छी। पारनि सेहो मनाबैत छी आ घरा सभ बीच भेटघाट सेहो भऽ जाइत अछि । ’

मैथिली बङ्गमञ्चक कलाकार सेहो बहुत गंगुली होरी सँ कम मजा जुड़शीतलमे सेहो नहि होइत अछि दाबी कएलनि ।

किछु विशुती सेहो होरीमे जहिना जिनका पेलौ बङ्गँ अरिब लगा देलौ तहिना अहु पारनिमे कतौ कतौ देखल गेल । सडक पर चलयबँला बाँटे बँटैमी सभके सेहो थानमाटि सँ भिजा देल जाइत अछि । जनकपुर मे सेहो कतेको ठाम लोककें थान माटि सँ पोतल गेल छल। साहित्यकार डा. बेरती बर्मा लाल कहैत छथि ‘पारनिके बँठिया बँनाबँयकें लेल विशुती सभकें समाप्त करय पड़त । ओ अहिमे घरा सभकें आगा आगरबँयकें सल्लाह दैत छथि ।

जनकपुर अञ्चल अस्पतालक स्कीन विभागक चिकित्सक डा. रामचरित्र साहक अनुसार चिकनी माटि स्वास्थ्यक

नेन खबारॅ नहि भेटैत अछि तँए नानाक पानि बाखि देन जाएत अछि ओ लोककें नम्रॅ। समयधवि परेशान कऽ सकैत अछि । अहिकें नेन रॅचरॅ आरश्यक अछि ।

डॉ. **उँमेश मंडन**

मैथिली उँपन्यास साहित्यमे संरेदनाक स्रव

राक् कलाक रॅाद संरेदनाक उँद्बॅाधन दोसव गुण थिक जे मनुष्यकें आन जीरसँ अलग कवैत अछि। ओना तँ संरेदना दुनियाँ-जहानमे उँपस्थित सकल-सजीरक रृत्ति चित्र मानल जाएत अछि तँए दोसव जीरमे प्रत्यक्ष संरादक अभारक कावणे एकव प्रासंगिकताक र्याख्या असहज भऽ जाएत अछि।

साहित्यिक अरधावणामे संरेदनाक स्रव मूनत: करितामे भेटैत अछि तँए आशु करिताक गणना सभ भाषामे अति-अनल्प तँए भारक प्रराह एहिठाम (करितामे) सङ्कुचित नहि कएल जा सकैत अछि। उँपन्यासक द्वन्दयान्तिक मर्मक छाया चित्र थिक तँए एहिमे वचनाकावकें रिमर्र रिश्लेषणमे कोनो रॅाधा नहि भेटैत अछि। उँपन्यासमे तान-मात्राक कोनो रॅधन नहि। रिषए-रस्तुक कोनो सीमा नहि, मात्र रिमर्रक सूक्ष्मताक उँद्बॅाधन आरश्यक तँए उँपन्यासमे संरेदनाक स्ररक प्रदर्शन सभसँ रॅसी भऽ सकैत अछि। उँपन्यासकें कोनो साहित्यक आत्मा मानल गेन। जँ आत्मामे मर्म नहि हुअए तँ संसावमे संरॅधक मर्यादा अप्रासंगिक

ভ৽ জাএত তঁএ সংরেদনাক স্রব সমাজকেঁ নর গতি রা নর যতি দৈত খছি। মৈথিনী ভাষাক খরস্থা জে হ্খএ ক্ষদা একব সাহিত্য কা নো খান ভাবতীয ভাষাসঁ কমজোব নহি। খপন দৈনিক জীরনক খাযামক খন্বকূন মিথিনা মৈথিনীমে রেদনা মর্মক হিমগংগে রঁড় র্যাপক ছথি। পংডিত জনার্দন ঝা জনসীদনক উঁপন্যাস 'নির্দযী সাস্ব'সঁ প্রথমত: সংরেদনাক স্রব ফূর্টি শ্রী জগদীশ প্রসাদ মংডনক উঁপন্যাস 'জীরন–সংঘর্ষ' ধবি পহুঁচি গেন খছি খা খনংত দিশামে গতিমান ভ৽ বহন খছি।

খারঁ প্রশ্ন উঁঠৈত খছি সংরেদনামে দৃষ্টিকোণক রিঁন্দ্, জে সমাজমে দর্শন দ৽ সকৈছ, পাঠক ধবি ওহি স্রবকেঁ পহুঁচেরাঁক চাহী। মিথিনামে সমাজিক ক্ষেত্র খা খার্থিক রিষমতা খন্য ভাষা পবিধি ক্ষেত্রসঁ রেঁসী বহন তঁএ হম ওহি স্রব মাত্রক রর্ণন কবরঁ খারশ্যক রুঁঝৈত ছী। জাহিমে সম্পূর্ণ মিথিনাক চিত্রণ ভেটৈত খছি।

মৈথিনী দর্শনমে মর্মক খংক্ষব হবিমোহন ঝাক নিখন উঁপন্যাস দ্বয– কন্যাদান খা দ্ববাগমনমে সভসঁ পহিনে ভেটৈন। হাস্য–বসক রস্বংধবাপব দর্শন রূপী সাঙহকেঁ গাড়া ক৽ সংরেদনাক পনান চঠ়। কএ সামাজিক রূঠ়া তাপব হবিমোন রাঁবূ প্রহাব কেননি ক্ষদা কী এহি প্রকাবক সংরেদনা সম্পূর্ণ মৈথিনীক প্রতিনিধিত্র কবৈত খছি ?

হবিমোহন রাঁবূ সন প্রাংজন উঁপন্যাসকাব পছাতিক নোক ধবি নহি পহুঁচি সকনাহ এহিমে হ্নকাসঁ রেঁসী সমাজক খাডঁরঁব ধর্মী র্যরস্থা দোষী মানন জা সকৈত খছি, দীন–সাধক, উঁচ–নীচ, সরর্ণ–খরর্ণকি রীচক খাধি মিথিনাক সনাতন নোকপব চমৌকনি জকাঁ

সিহবি কঽ মৈথিনী সংস্কৃতিকেঁ নাজরন্তিক পাত জকাঁ জড়ি মে সটা দেনক। মৈথিনীক তথা-কথিত কিছু সমীক্ষকগণ সেহো সমন্বয়রাদী দৃষ্টিকোণ মাত্র মংচেটা পব বখৈত ছথি, নেপথ্য রা নেখনীমে এহি রিন্দুক হুনকা সরহক নেন কোনো প্রযোজন নহি দেখরামে খরৈত খছি।

সংরেদনাক স্রব জঁ খর্থনীতিক মূনসঁ নিকসি খারস্ক হ্খএ তঁ একব রিম্র সমাজমে ক্রাঁতিক হিনকোবি উত্পন্ন কঽ সকৈত খছি। এক দিস খাগাঁক পাঁতিমে রৈসন বচনাকাব সাধন রিহীন উপেক্ষিতক ভারনাপব এক্কা খাখব 1925ঙা. ধবি উপন্যাসক রূপমে নহি নিখননি তঁ দোসব দিস মৈথিনী সাহিত্যক ক্রাঁতি পুরুষ রৈদ্যনাথ মিশ্র যাত্রী খপন খাঁচনিক উপন্যাস গাথা সভমে মাত্র উপেক্ষিত র্যক্তি সভকেঁ কেন্দ্রিত কেননি। খ। রাস্তরমে সাম্যরাদী ছনাহ। হুনক বচনা সংসাবক রৈশিষ্টতা খছি জতএ উঁচ-নীচক র্যাখ্যা রড় র্যাপক খছি।

মার্ক্সরাদক মূন সিদ্ধান্ত শোষিত র্যক্তিক ভারনাকেঁ কেন্দ্র-রিন্দু রনা কঽ যাত্রী জী মিথিনামে সাম্যরাদী সাহিত্যকাবক রূপমে সমাজমে ক্রাঁতিক জ্যোতি জরৌননি।

হিনক রনচনমা উপন্যাসমে খাত্মকথাক শৈনীমে নিখন একটা যাদর রচ্চাক খিস্সা খাএন খছি। ফূন রাবূক সংগ ওকব গামসঁ প্রস্থান খা রিভিন্ন পার্টীসঁ মোহভংগ ভেনাক রাদ কম্যুনিস্ট পার্টীপব রিশ্রাস স্থাপিত কএন গেন। খিস্সাক খংতমে রনচনমাকেঁ মাবি কঽ পাবি দেন জাগত ছৈক।

পাবো উপন্যাসমে- রান রিরাহপব দারুণ প্রহাব কএন

गेल अछि। जाहिमे मर्मक संग संवेदनापूर्ण चित्र अ ाएल अछि। वाँन विवाहपर आक्रोमक प्रहाव नवत्तुवियामे आएल अछि।

डॉ. योगानन्द झाक लिखल भलमानुष उपन्यासमे विकौआ प्रथाक फलस्वरूप वधूक नर्क होगत जीवनक विवेचन कएल गेल अछि, एहिमे मर्म ओ संवेदनाक स्ववक हिनकोव शब्दसँ अंत धवि देखवाँमे अवैत अछि।

तहिना स्वधांशु शेखव चौधवीक उपन्यास- 'तइव पंछा उपव पंछा'मे वँहिन गंगाक प्रेवणासँ भाग पवमा द्वावा गामक वाजनीतिमे प्रवेशे होगत अछि जाहिसँ किछु विवोध आ अपमानक वाँद विजय प्रदर्शित भेल अछि। हिनक उपन्यास -दविद्र छिम्मविमे- अमनाक माने दविद्र छिम्मविक आत्मा कथा संवेदनपूर्ण अछि। 'ओ वँतहा संसाव' मे प्रेमक एकटा गाथा कहल गेल अछि जाहिमे संवेदनाक स्वव तँ सहजे अपन विशेष रूप नइ आएल अछि।

सोमदेवक 'चानो दाग' मे नावी सशक्तिकवणपव आधावित विषए-वस्तु व्यापक रूपेँ आएल अछि।

मायानंद मिश्रक 'विहाड़ि, पात आ पाथव' वेंटी वेंचवाँक प्रथापव लिखल गेल समकालीन समस्याक संवेदनयक्त विम्बकेँ उजागव कवैत अछि।

व्यास जीक 'दू पत्र'मे कथा भावतीय आ यूवोपीय संदर्भमे नावीक यथास्थितिकेँ उजागव कवैत आगाँ

রহৈত অছি। জাহি ঁউপব নি:সংকোচ নাবী সংৱেদনাক প্রদর্শন স্ৱভাৱিক ঢংগে আএল অছি।

প্রভাস কুমাব চৌধবীক 'নরাবম্ভ' হৱেনী মোহনপ্পব, লংকামোহনপ্পব আ নরাবম্ভ নামসঁ তীন খণ্ডমে ক্রমশ: উঁত্থান, পতন আ প্পনর্জাগিবণক কথা কহৈত অছি। তেসব খণ্ডমে দলিতক মর্ম আ সংৱেদনা স্ৱত: উঁভবি কহ আএল অছি। হিনক 'বাজা পোখবিমে কতেক মছবী' উঁপন্যাস শোষণ আ প্রতিবোধক কথা কহৈত অছি জে মার্মিক তঁ অছিএ সংগে সংৱেদনপূর্ণ আ স্ৱভাৱিক সেহো অছি।

গংগেশ গ্গুঁজনক– 'পহিল নোক'মে রিরশ বাজূক কথা সংৱেদনাক সংগ কহল গেল অছি।

লিলী বে ক 'পটাক্ষেপ' উঁপন্যাসমে শিরনাবায়ণ নক্সলী আন্দোলনকাবীক আ আন্দোলনক দমনক কথা মার্মিক রূপ লহ আগাঁ রহৈত অছি।

জগদীশ প্রসাদ মংডলক উঁপন্যাস– 'মৌলাএল গাছক ফূল'মে সমাজক অঁতিম ব্যক্তি রৌএলান লগসঁ খিস্সা প্রাবম্ভ ভহ সাম্যরাদী রিচাব ধাবাসঁ ওতপ্রোত বামাকান্তক আদর্শ লোচক চিত্র খিচৈত গামক মৌলাএল গাছ সদৃশ্য রূপ-রেখাক রর্ণন ভেটৈত অছি, সংগহি মৌলাএল গাছকেঁ গংগাজল সন পরিত্র পানিসঁ সমাজকেঁ প্পনর্প্রতিষ্ঠিত কবরাঁক সংৱেদনা মার্মিক ঢংগে উঁপস্থিত ভেল অছি।
তহিনা হিনক দোসব উঁপন্যাস– 'জিনগীক

जीत'मे ि न:सहाय देरन जे श्पना जिनगीसँ ङुपब ङँठि समाजक जिनगीमे जा मिनैत श्छि श्रा से ठीक ओहिना जेना धाब श्पन ङङ्काब कबराँ नेन सम्द्रमे मिनैत श्छि। एही ताना-बाँनाकेँ प्रस्तुत कबैत एहि ङपन्यासमे संरेदनाक हिनकोबि ङ्ककमि श्राएन श्छि।

तेसब ङपन्यास 'ङत्थान-पतन'मे सामंती व्यरस्थाक बातारबणक ङन्नेख कबैत रिच्छिन्न होगत गाम-घब श्रा टूटैत रेंकती सरहक समस्याक संरेदनपू ्र्ण मार्मिक चित्र श्राएन श्छि। समाजक यथार्थक दर्शन स्रत: श्रारि श्पन गुण-श्ररगुणक छाप छोड़ि दैत श्छि, जाहिमे संरेदना स्रभारिक रूपेँ श्पन डीहपब नृत्य कबैत नजबि श्रबैत श्छि जेना एहि कथोपकथनपब दृष्टिपात कएन जा सकैत श्छि- "हँ, ङपाय श्छि। हम श्हाँकेँ बास्ता बता दग छी। श्हाँ रँगानी छी जहिसँ जाति श्रा धर्म- दुनू छपाएन श्छि। एहिठाम मोटा-मोटी हिन्दूमे तीन रर्ग श्छि। पहिन श्ग्रश्राएन जाति, जेना सोति, ब्राह्मण, बाजपूत, भुमिहाब गत्यादि। दोसब पनिचन्ना जाति- जेना यादर, धानुक, कियोट, श्रमात, रबैग, कोगब गत्यादि श्रा तेसब श्छि हबिजन। जकबा समाजमे श्छोप जाति कहन जाग छैक। एहि जातिक पानि ङच्च जातिक नोक नहि पीबैत छथि। ने पानि पीबैत छथि श्रा ने छुश्रन श्रन्न खाग छथि।"

"श्रबे, बाप बे, तबँ तँ समाज टुकड़ ◌ी-टुकड़ ◌ीमे बँटैन श्छि?"

"यएह अहिठामक –मिथिलाक– विशेषता छैक जे सभ जाति आ धर्मसँ बँटल अछि मुदा सामाजिक संबंध सेहो मजबूत अछि। जखन कखनो कोनो आफद–असमानी होइत तखन सभ एकजुट भऽ सहयोग करैत। ततबे नहि, जखन कोनो धवमिक काज होइत तखन सभ एकजुट भऽ सहयोग करैत।"

चारिम उपन्यास– 'जीवन–मरण'मे मनुक्खक जिनगीक दू भागक वर्णन भेटैत अछि– एक जे जीवन कालक होइत अ । दोसर जे मुइला पछाति। जीवन कालक इत मनुष्यक अगिला जीवन माने मुइला पछाति सेहो प्रभावकारी होइत अछि। यएह चित्रण एहि उपन्यासमे प्रस्तुत भेल अछि।

हिनक पाँचम उपन्यास– 'जीवन–संघर्ष'मे चित्रित जीवनेक दोसर नाओ संघर्ष थिकैक। जेहन जिनगी ओहेन संघर्ष। एही ताना–बानाकेँ देखाओल जिनगीमे सामाजिक, आर्थिक आ भौगोलिक समस्याक चित्रण अनायास भेटैत अछि। जाहिमे अमर–संवेदन अपन अस्तित्व बचाबए लेल समन्वयवादिताक सहारा लऽ फूटि बहराएल अछि, जेना एहि विषय–वस्तुपर नजरि देला उत्तर सहज लगैत अछि–

– "(१) गामेक कारीगर माने मुर्ति बनौनिहार मुरती बनावे। ओना एकपर एक कारीगर दुनियाँमे अछि मुदा, पूजाक मुरतीमे कला नहि देवी–देवताक स्वरूप देखल जाइत अछि। दोसर जँ हम अपन बनौल मूर्तिकेँ अपने अधलाह कहबै तँ गामक कलाकार

আগূ কোনা সসবত। তেঁ জে গামক কনা অছি ওকবা সভ ি মনি প্রোত্সাহিত কবী।

(২) কানী মংডপ গামেক ঘবহষ্টিযা ব়ঁনারথি। জিনকা ঘব ব়ঁনরৈক নূবি ছন্হি ও মংডপ িকএক নহি ব়ঁনা সকৈত ছথি। সংগে ওহো হএত জে গামক অধিকসঁ অধিক নোকক সহযোগ সেহো হোএত।

(৩) মনোবংজনক নেন গামোক কনাকাবকেঁ অরসব ভেটৈনি। সংগে ব়াঁহবোক ওহন-ওহন তমাশা আনন জাএ জেহন গ্রিহ পবোপঞ্চামে নহি আএন হ্অএ।

(৪) পূজাক নেন, পবম্পবাসঁ অবৈত ওহনো প্বজেগবীকেঁ অরসব ভেটৈনি জে পূজাক প্রেমী ছথি।

(৫) গামক জতে গোষ্টে কাজ কবথি ওহিমে নীক কেনিহাবকেঁ প্বসঞ্চত আ অধনা কেনিহাবকেঁ আগূ মৌকা নহি দেন জাওন।"

শ্রীমতী রীণা ঠাকুব নিখিত 'ভাবতী' উঁপন্যাসকেঁ নিযোজিত উঁপন্যাস গ্রথ তঁ নহি কহন জা সকৈত অছি ক্ষদা এহি ঐতিহাসিক রিষএ-রিম্র়ক চিত্রণমে মৈথিনী সংস্কৃতিক সমস্ত ভাবতীয দর্শনিপব রিজযশ্রী মে মর্ম স্পর্শিক টৌস অনাযাস দেখন জা সকৈত অছি।

গজেন্দ্র ঠাকুব জীক নিখন 'সহস্ত্ররাঠ়নি' উঁপন্যাসক আখব-আখবমে সংরেদনাক স্রব ঝনকৈত অছি। সংরেদনাক রিম্র় উঁদ্দাধ আ সম্যক অর্থনীতিসঁ ভবন মার্মিক চিত্রণ- জাহিমে একটা কর্তর্যনিষ্ঠ আ ওমানদাব র্যক্তি নন্দকেঁ গৃহস্ত ধর্মক সংগ-সংগ সামাজিক দাযিত্রক পানন কবরাক ক্রমমে উঁদ্ঘনিত র্যথা প্রস্তুত কএন গেন অছি।

ওনা তঁ এহি সাহিত্কি পবিধিসঁ ৰাঁহব ৰহ্ত ঠাম সংৰেদনা–স্ৰবক দব্শন ভেন হএত হ্মদা হমব খধ্যযন সংসাব বাস পঘি নহি তঁএ একবা ঙঁপেক্ষা ৰা তিবস্কাব নহি মানন জাএ। ও খনগ ৰাঁত জে শৰ্দ্দক সীমা ৰেখা সেহো খছি।

<u>করিনপ্বক কথা গাষ্ঠী</u>

মৌথিনী ভাষা রিকাসক এক সশক্ত মাধ্যম্– "সগব বাতি দীপ জবয"ক ৭০ম কথা গোষ্ঠি গত ১২জূন ২০১০কেঁ ডা◌ঁ যোগা নন্দ ঝাক সংযোজকত্রমে বমা ি নরাস –করিনপ্বব– মে সম্পন্ন ভেন। পং চন্দকান্ত

मिश्र "अमर" दीप प्रज्वलित कए संध्या ७ बजे स्वभावम्भ केलनि।

कार्यक्रम आगाँ बढ़ैत गेल उद्घाटन सत्रसँ जेकर अध्यक्षता डॉ रामदेव झा आ मंच संचालन डा◌ँ ऋबलीधर झा केलनि। ऋख्य अतिथि डॉ स्वरेश्वर झा मैथिली भाषाक भविष्य आ आवश्यकतापर प्रकाश देलनि। लोकार्पण सत्रक संचालन डॉ विभूति आनन्द केलनि। डेढ़ दर्जन पोथीक लोकार्पण क्रमश: भावती (उपन्यास), विधकवी (उपन्यास), उचाट (बाल उपन्यास), उत्थान-पतन (उपन्यास), जिनगीक जीत (उपन्यास), गामक जिनगी (कथा संग्रह), मैथिली चित्रकथा (चित्रकथा संग्रह), गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा (चित्रकथा संग्रह), पक्षधर (पत्रिका), हमरो लेले चलू- (कथा संग्रह), पिलपिलहा गाछ- (बाल कथा), अमर जीक साहित्यमे हास्य-व्यंग (समालोचना), समाचार कथा (कथा संग्रह), कथा-लोककथा (कथा संग्रह), खिस्सा (कथा संग्रह), मिथिलाक पंजी प्रबंध (तारपत्र आदिक डिजिटल रामेजिंग, डी.भी.डी), मैथिली भाषा साहित्य: बीसम शताब्दी (अलोचनात्मक निबंध संग्रह) आ जमीलेमे फ्लैट ठैट अंकुर (करिता संग्रह), भेल। डॉ रामदेव झा, डॉ स्वरेश्वर झा, पं. चन्द्रनाथ मिश्र "अमर", डॉ भीमनाथ झा, डॉ रामानन्द झा "रमण", मैथिली पुत्र प्रदीप, डॉ. मोहन मिश्र, डॉ वीणा ठाकुर, डॉ कमला चौधरी, डॉ आशा मिश्र आ ज्योत्स्ना चंद्रम द्वारा लोकार्पण करवाओल गेल। सभ रचनाकार/लेखक/लेखिका स्वयं सेहो उपस्थित रहथि।

कथा सत्रक अध्यक्षता डॉ श्रीशंकर झा आ संचालन अजीत आजाद जी केलनि। कथाकार-

চণ্ডেশ্রব খাঁ, ঝন্না জী, উমেশ নাবাযণ কর্ণ, বমাকান্ত বায "বমা", ঋষি রঁশিষ্ঠ, বাজাবাম সিংহ "বাঠৌড়", জ্যোত্স্না চন্দ্রম, কমনা চৌধবী, রিনয রিশ্র রঁধু, চন্দ্র মোহন ঝা "পড়রা", নন্দ রিনাস বায, রিবেন্দ্র কুমাব মিশ্র, জগদীশ প্রসাদ মংডন, কপিনেশ্রব বাউত, উমেশ মংডন, দুর্গা নন্দ মংডন, সংজয কুমাব মংডন, মনোজ কুমাব মংডন, নিখিন কুমাব ঝা, রেঁচন ঠাকুব, দেরকান্ত মিশ্র, মহেন্দ্ব নাবাযণ বাম, মৈথিনী পুত্র প্রদীপ, গজেন্দ্র ঠাকুব, নানপবী দেরী, বাজাবাম প্রসাদ, আনন্দ কুমাব ঝা, সতেন্দ্র কুমাব ঝা, উষা চৌধবী আ নীতা ঝা অপন-অপন নূতন কথা পাঠ কএ গোষ্ঠিক গবিমাকেঁ রঁঢ়ৌননি। সংগহি অনেকো সাহিত্য প্রেমী সরঁহক উপস্থিতি সেহো গোষ্ঠিক মহত্র রঁনন বহনাহ। পঠিত এহি কথা সভপব সমিক্ষা কেননি- হিবেন্দ্র কুমাব ঝা, কমন মোহন চুন্নূ, বমানন্দ ঝা বমণ, গজেন্দ্র ঠাকুব, কমনেশ ঝা, জগদীশ প্রসাদ মংডন, অমনেন্দু শেখব পাঠক, দেরকান্ত মিশ্র, ফূনচন্দ্র মিস্র আ নীতা ঝা।

ভবি বাতি কথাপব কথা, চাবি কথাক এক পানী তেকব সমিক্ষা হোগত বহন। ও সিনসিনা কোনো এক-আধ-দূ ঘংটাক মাত্র নহি বহন রবণ্ ভিনসব ছহ রঁজে ধবিক। রাঁবহ ঘংটাক এহি অনপ সমএমে উপস্থিত ৪৩সো কথাকাবক কথাপাঠ নহি ভ২ সকননি। ৩০ গোটে কথাক পাঠ ভেন। রাঁচন ১৩ গোটে কথাকাবকেঁ (জিনকব কথা পাঠ নহি ভ২ সকননি) অগিনা গোষ্ঠীমে শ্বদ্ধহেমে অরসব দেন জেতনি সে নির্ণএ ভেন।

অগ্রিম ৭১ম আযোজন ২ অক্টূবব ২০১০কেঁ সংধ্যা ৬:৩০ রঁজেসঁ শ্রী জগদীশ প্রসাদ মংডন, রেঁবমা, মধুরঁনী

(রিহাব)ক আযোজকত্রমে ব্‌ঠ্ া যা গান্ডী দ্গা স্থান স্থিত মধ্য রিদ্যানয পবিসাবমে সম্পন্ন হোএরাক সংকন্প নেন গেন অছি জাহিমে সমস্ত “সগব বাতি দীপ জবয”ক প্রেমী আ কথাকাব নোকনি আমংত্রিত ছথি।

স্থানপব পহুঁচরাক নেন ট্রেনসঁ তস্কবিযা আ ব্‌সসঁ চনৌবাগংজ আবি ব্‌েবমাক নেন মাত্র তীন কিনোমীটব দূবী তঁগ কএন জাএ। টৈম্পূ,বিক্সা,টৈমটৈম গত্যাদিক স্বরিধা দ্নূঠাম (তস্কবিযা আ চনৌবাগংজ) প্রায: উঁপনব্ধ বহৈত অছি।



প্রা পবমেশ্বব কাপড়ি

মানকতাক ৰাঁত রিখপাদ খছি !

টিপ্পণীমে দম খা সোঁচ সহিতক পকিযা ওজহ খছি । ৰহ্ত ৰঢ়ি যাঁ ঁ নাগন খা এহিস' মৈথিনী ক্ষ্দর্ি হখ'স' ৰঁচত । হম নেপানক ছী তএঁ নেপানক ৰাঁত কবৰ খা কহৰ জে নেপান নর নিমার্ণ খা সংঘীয সংবচনা রিকাসক এমমে খছি । এহি ঠামক নোক খপন সংঘীয বাজ ভাষা,সংস্কৃতি, জাতীযতা, ক্ষেত্রীযতা, সাঁ ংষ্ঠৃতিকতা খা এতিহাসিকৌবাণিকতাক ৰাঁহ্ন্য এরং প্রত্তত্বক প্রভারপব চাহিত খছি । সৌঁচ ছৈ জে এহিস' হমব খস্মিতাক পহচান ৰনত খা স্বাযততাক রোধ হোএত । ঙা ৰাঁএহিনোকনেখেপ্রজাতন্ত্র খাগণতন্ত্রাস' পহিনেক চাহনা খছি । হমবাসৰকে ভাষা সংস্কৃতিক ৰাঁহ্ন্যতা সংঘীযবাজ, সাঁস্কৃতিক পহচান খা বাজনীতিক পহ্চ দিখএতে খা দিখরিতো ছৈ ! হমবাসৰকেভাষিাক সাঁস্কৃতিক চেতনা খস্মীতা খা স্বাততারোধস' খারহ্ম বহনেএহিপব বাজনীতিযো খূৰ ভ' বহন ছৈখা খাবো হোএতে । এহনমে ঙামানকতাক ৰাঁত পদ ৰবাণ রিদ্বতাক ৰাঁত খছি খা এহিস'এহি সানক নেপানক জনগণনামে কৈথিনীকে ৰঁডঘাষ্টা ভেন ছৈ । ছেঁষ্টে ধ'ক' ঘেঁষ্টে কাষ্ট'ৰনাসৰকে কহৰ ছৈ জেহমসৰ খছি, ছথি, ছথিনৰনা নৈ ছী। হএ

হরঁ হৈহ্গ রঁজৈছী তে রঁজিকা রঁজৈছী । রঁজিকা কহি ভাষিক নাভ নভগবস' হোএতে আ একব বাজনৈতিক সন্দর্ভ অনগে ছৈ । পূর্রীতবাগমে থাকভাষা অপন অনগেপহচান আ সংস্কাব রঁনা নেনে অছি সেহে নগ,হমবা সরঁকেসর্নাগী, রাঁড় । পর্সা জিনাসরঁকেনোক জেঁকি ছথি অছি নগ রঁজৈত অছি তেঁঅপনাকে মৈথিনীভাষী নহি কহি পারি বহন অছি ।

জেকোগ মানকতাক হ্ড়ফেব ফেব' চাহৈত ছথি সে ঙা রাঁত কিএ নে রূঁনৈত ছথিন জেমৈথিনী ভাষা অসনমে নোকভাষা অছি, মৈথিনী সংস্কৃতি নোকসংস্কৃতি অছি । ঙাএহ হান নোককনা, নোকসংগীত নোকসাহিহ, নোকগীত, নোকগাথা নোকচিত্রকনাক অছি । জে স্বধাব রিকাস আ নিখাব আএন অছি ওরঁহ্ত একহব আরিক' সেগোহহ্ফনিযারঁ' দহ্ফনিযারঁ' আ ভাষা–সংস্কগ্নতিপব বাজ কব' রাস্তু । মিথিনেমে বহিক' ব্রাহ্মণ–কাযস্থতব নোক অপনাকে মৈথিন আ অপনা ভাষাকে মৈথিনী ভাষা নৈ কহি সকন অছি । আনক ভাষাকে সম্পর্কমে অএনাস' আনো নোক ও ভাষা সিখি জাগএ । হমবা জনিতেএকহি গাম সমাজমে বহিযোক' তথাকথিত সোনকন আ ছোটৈরণঅছি ছথি ছথিন নৈ রঁজনথিন্হ আ জত' কতৌ রঁজনোগোতে ত' সেরঁহিযা খরাঁস, নোকবনী রঁহিকিবনীসরঁ । মনোরিজ্ঞান দেখন জায জেরিকহ্মমেজা'ক' নোক রহিষ্কাব কেনা কবৈছে । রাভন পহচানক অছি ছথি,ছনহ আ জনৌকেব্রাহ্মণেতবরস্থ্যভূনিযোক নরজপব নগ নএনথিন্হ ! পবিণাম ভেনৈ জে অপনে মিথিনামেমৈথিনীকেপ্রচাবমে কহ' জায পড়নৈ জে অহূঁ মৈথিন ছী আ অহাঁক ভাষা মৌথনী ভাষা অছি, অহাঁক সংস্কৃতি মৈথিনী সংস্কৃতি অছি । আগ কিছ নোক কত্ত'

কর্ণাকেধোতী–ক্ষত্র্তা আ র্বভনৌর্টী পাগকেমৈথিলী সংস্কৃতিক পহচানসঙে জোড়কে ঘৃস্ঠতা কএ বহলাহ অছি । হমবা জনিতে সয র্ববখ ত' র্বহ্‌ত ভ' গেন, ভন পচাস রব্ষ পহিনে ধবি আপনাসর্বকে প্বরুখ মান্বষ রিদ্যাপতিসনকে চৌন্ধী পেন্হত ছনাহ । চৌরন্ধী পেন্হনিহাবকেএখন তেসব প্বস্তা ঠীকস' আএরোঁ নৈ কএনৈএ আ সমাজমেরাঁভন ছোড়ি আন কেওপাগ পহিবতে নৈ ছৈ । জে জাতি রিশেষস' আরক্ষ অছি সেপাগ জঁ মৈথিলী সংস্কৃতিক প্রতীক র্বনত ত' নৈ নগৈএ জে ওা র্বাত ফেরু হমবেরাঁভনকে থীক সে ভ' জএতৈ ?

কোনো ভাষা সমাজ আ সংস্কৃতিস' জ্‌ড়নে বহৈত অছি । হমসর্ব ব্রাহ্মণেতব ছী তৈ হমবাসর্বকে রাঁউ মাগ বহে, মাতাজী পিতাজী নৈ বহথি ! রাঁউএ সর্ব দিন হব জোতনকৈ, কোদাবি পাড়নকৈ, কবীন পর্টএনকৈ ঘব র্বন্হনকৈখেতী গিবহস্তীকে সর্ব কাজ কএনকৈ । জৈংপিতাজী রাভনকে ছনিনি তৈং ওআএনাহ গেনাহ প্ববহিতী পল্ডিতাবেকএনন্হি নৌর্টা সেহো চনৌনন্হি । হমবাসর্বকে ঘবমে তিমনা র্বনন , হ্‌নকাসর্বকে ঘবমেভোজন আ তবকাবী র্বননি । ওা নোক ন্বআ ঘোতী, আ–জমা পেন্হনক ও নোকনি সংস্কৃতক রস্ত্র পহিবনথি । সংস্কৃতেমেকান্হিঘবি পতব–পাঁতি ভেজর্বনাকে মৈথিলী দাঁরে–ঘারে নে অপ্পন বহনি ? হমবাসর্বমেরাঁউ হবজোতৈই । ভাত খাগ ই মাগ ধাস ছিনৈ ই উস্বন র্বনিহাবী খরাঁসী করৈ ইসে জে কই ছৈ ত' ওকব সমপ্রেষণমে,কোনোমানকতাক গৌংচী–মোড় আদর্শীঅনাদর্শীকেমান÷অপমান নগিতে নৈ ছৈ ত' আননোক টৈপ ধ'ক' ঐমে ভাষিক রিষ কিএ পাদত ?

ফেরু নেপানক সন্দর্ভমে কহর্ব জে এখ্‌নকা সময

सन्दर्भमे मानकताक नग सरॅकेसमेष्टरॅाक आरश्यकता छै सेहोपोल्हा पनियाँक' ! जनगणनामे एहि रिषयनक' हमबासरॅकेरॅह्ते पापड़ रॅेन' पड़न अछि आ धन्यराद एत्तिका बाजनैतिक दन आ कार्यकत्र्तासरॅके जे ओहोनोकनि जे जेहन मार्तभाषा रॅजैत होथि अपन मार्तभाषा नथा मैथिनीक हकमै रॅड़ पैघ योगदान देनन्हि अछि । मानकता रञ्ञभेद, जातिभेद भाषाक बाजनीति आ संस्कृतिकेहिसारॅे रिखन्डनक काज कबैत अछि । एहिस' मैथिनीक रिशान रॅड़गदकेसोनेे पाडि दकड़ा ठ्ठ एकपोड़ा या रॅनाएरॅ त' अछिए, नोकगीत, नोककथा ,नोकगाथा आनोकभाषा–संस्कृतिपव सोनेे नात माबि कात कबरॅ अछि ।

ছঠিমাগকে খাসি খা নোকজীরনমে হিনক মহত্ত্ব

ব্রত উঁপরাস খা পারনি –তিহাবস’ নোকক জীরনমে খানন্দ–উঁসোহ এরং খাস্থা–নিষ্ঠাক রাঁঢ়ি –রঁড়কৈতস’ জীরন খানন্দময রঁনি জাগত খছি । মিথিনাক খপ্পন পারনি–তিহাবস’ নোকক জীরনধাবা বাগ–বংগস’ ভবি জাগতে খছি । এত্তকা পবম্পবাগত পারনি সরঁমে ছৈঠক খাসি খা মহিমা সর্রোপবি বহনে খা একব রিধ–রিধানমে, ওবিখাওন রঁস্তু–জ্ষ্ঠানমে স্বচ্ছতা খা শূদ্ধতাপব খধিক ধ্যান দেনে ঙা পারনি সরঁস’ রঁঢ়কা খছি । পবম ঙশ্বিবকে শাস্ত্রে–প্ববাণ খা ভ্তানীএ–ধর্মী নোক খধিকতব চিন্হিত জনৈত খছি, খাম খচ্ছবকট্টি নোক ছৈঠপবমেশ্বিবীএকে খধিক জনৈত ছথিন খা ঙাহে মমতামযী এহি নোককে নেন সরঁকিছু ছথিন, সর্রোপবি ছথিন ।

ছৈঠপারনি কিথিনামে নোকপূজাক রূপমে রিখ্যাত খছি সেহো মুখ্যতঃ স্ত্রীগণদ্বাবা কএন জাগত খছি খা হিনকাস’ সম্বন্ধিত খনেকো বাগ–ভারক গীতসরঁ খছি জে নোকমন্ত্রক রূপমে প্রযুক্ত হোগত বহন খছি । ছৈঠক নোকগীত ছঠিক খর্ধ জকাঁ নিছন খা

अपवित्रताजनीयसनके अछि, परम्परागत अछि आ एहिमे विभिन्न वा प्रयोगधर्मिता आँकड़ राखब जकाँ छैंटो, थकड़ा क' अलग कए देल जाएत अछि । एकर पाछू एकर सबँस' महत्वपूर्ण आ मूल कारण ई लगैत अछि जे ई लोकगीत परम्परा सिद्ध अछि आ आधुनिकगीत जा धरि एहन सिद्धिप्राप्त नहि कएल लेत तावत ई प्रचलनके मूलधारमे समाहित भऽए ने सकैछ ।
छैठपाबनिमे आदिदेव भगवान सूर्य आ छैठपरमेश्वरीक पूजा एकहि दिन– षष्ठी–तिथिके, एकहि ठाम, एकहि अर्घ आ एकहि विधि–विधानस' भेले ई पूजा छैठपूजा, त' कहबैत अछि सदा बँह्तोलोक भगवती छैठमाइस' अलभिज्ञ रहले, एहन बूँझि भू॒॒॒॒ निर्यो क' लैत अछि । एहि लोकपूजामे दिनस' अधिक सन्ध्या आ रात्रिक महत्व अधिक अछि आ तएँ किछु लोक एकरा डुबैत सूर्य तथा बिहान भेले उगैत सूर्यक अर्घस' जोड़ा क' देखैत छथिन । सूर्यके जनक अर्घ बँड़ पसिन्न छैन आ सबँस' बेसी प्रसन्न जनार्ध देलिहावस' होइत छथिन्ह तथापि छैठदिन जे हिनक पूजा विभिन्न पकवानसबँस' होइत छन् ि तामिस' ई अछिक तिवपित होइत लोकके लहदह बँवदान दैत छथिन्ह एहन शास्त्र रचल आ लोक मान्यता रहल अछि । सूर्यके एक दिन सास्ववमे यन्त्र–छापस' साँचल ठक्कआ तान्त्रिक रहस्यस' भवPल उसवाँ खिअएलकनि आ ई पकवान आ विन्यास हिनका बँड़ पियवगव लगलनि आ तएँ हिनका ई पकवान अवरसिक' चढ़ ाओले जाइत छनि ।
छैठपाबनि मिथिलामे लोकपरम्पराक पूजा रहल होइतोमे एकर प्रचलनक पौराणिक महत्वक अछि आ ब्रँह्मवैवर्तपुराणक प्रकृति खण्डमे बँह्त विस्तृत रुपमे

রর্ণন কএন গেন খছি । ভগরতী ষষ্ঠীদেরীকে শিশুসরঁক খধিষ্ঠাত্রী দেরী নিরূপিত কএন গেন খছি । ধীযাপূতাকে দীর্ঘাযু রঁনাএরঁ, হ্নক বক্ষণ এরং ভবণ–পোষণ কএনাগ ষষ্ঠীক স্বাভারিক গুণ খছি । প্ররাণসরঁমে ষষ্ঠী দেরীকে রঁহ্ত মহিমা–মণ্ডিত কএন গেন খছি । মূন প্রকৃতিক ছঠম্ খংশস' প্রকট ভেনেস' হিনক 'ষষ্ঠী' পড়ন ছন্হি । সংস্কৃতক ষষ্ঠ শব্দ মৈথিনী ছঠম্ খর্থমে প্রযুক্ত খছি খা তএ হিনকা ছৈঠ, ছঠি মৈযা কহন জাগত খছি । রঁঢ়কা পৌবাণিক ঘব–পবিরাবক ওা ভগরতী ছথিন্হ । ওা ব্রহ্মাক মানসপুত্রী এরং শির–পার্রতীক জেঠকী পুতৌহ খা স্কন্দক প্রাণপ্রিযা ছথিন্হ । হিনকা দেরসেনা সেহো কহন জাগত ছন্হি, সএহ নহি রিষ্ণুমাযা খা রাঁনদা সে কহন জাগত ছন্হি । ওা মাতা ভগরতীক সোনহ মাতৃকা সরঁমে পবিগণিত ছথি খা খপনা সমাজমে ওা নড়া কোড় া মাতাক রূপমে সেহো চিন্হন জাগত ছথিন্হ । ওা খপন যোগক প্রভারস' শিশুক সঙে সদৈর রঁ্ঢ়া যামাগকে রূপমে রিদ্যমান বহৈত ছথিন্হ খা হ্নক বক্ষা এরং ভবণ–পোষণ কবৈত বহৈত ছথিন্হ । ধীযাপূতাজে সপনামে খিযরৈঁত, দ্নাবৈত, হঁসরৈঁত এরং খভূতপূর্র রাসেন্য প্রদান কবৈত বহৈত ছথিন্হ । ওএহ কাবণ খছি জে সরঁশিশু খধিকাংশ সময স্বতনাগএ পসিন কবৈত খছি । নিন্হ ৎুষ্টিতে রাঁনকক নজবি ভগরতি পবস' হটৈনে খা হ্নকাকোবাস' খনগ নগনে ও কান–খিজ নগৈত খছি । ওীএহ ভগরতী নিনিযাঁবানী, নিন্নরানী রঁ্ঢ়া যা ছথিন্হ খা নোবীস' পড়া কন ধীযাপূতা জাবত নিনিযাঁগীত গারিক' রঁজাওন নহি জাগত খছি তারত স্বতিতে নহি খছি । নোবীক নবমে স্বখনিনিযাঁক খপূর্র স্বব বাগ খা রাসেন্য ভারসহিত নিনিযাঁ রঁ্ঢ়া যাক

উঁপস্থিত বহৈত থছি ।
মৈথিলীমে নিনিযাঁগীত স্বতারঁ'নেন থা ঘ্ঘ্থা ম্ন্বথা গীত হঁসারঁ'–খেনারঁ' থা ভুনারঁ' নেন প্রযঙ্ক মোগত থছি । এহি শিশ্বগীতকে রাঁন–মন্ত্র সেহো থছি, কহন জা'সকৈছ । একব প্রচনন থহন্ত প্রাচিন থা থষ্টি কপস' থছি ।

—থাগে নিনিযাঁ থা' । রৌথাকে স্বতো
সাত রঁড়দকে নিননা'
থাগে নিনিযাঁ জনকপ্বস'
খষ্টিযা মঙা দেরৌ পষ্টনাস'
থাগে নিনিযাঁ খজন চিড়ৈযা
থল্ডা পাবি–পাবি জো
তোবা থল্ডাকে থাগি নগতৌ
রৌথা স্বতো ।
০০০

—থাগে নিনিযাঁ কষ্টরোঁ কান
রৌথানা' নরিহে ফোকা মখান
থাগে নিনিযাঁ কষ্টরৌ কান
রৌথানা' থরিহে পীবে নতাম
থাগে নিনিযাঁ,
থরৈছী !
রৌথানা' নিন নরৈছী । ।
নিনরানী ব্ঁঢ়ি যাকে থথতি ছঠি মৈযাকে থনেকো তবহে থবোধিক' রঁজাক' রৌথা–ব্ঁচী সরঁকে স্বতএরাঁক থন্ববোধ কএন জাগত থছি । নোবী থা স্বখনিনিযাঁরীচমে গএহ নিনরাঁনী ব্ঁঢ়ি যা থা নোবী গীতক মধ্ব বস–ভারবহনে একব প্রভার উঁত্তম সংস্কাব সনকে জীরনপব গম্ভীব কপস'

पड़ैत अछि ।
वैदिक विधि अनुसार भगवती षष्ठीक ध्यान एना कएल जाइछ—
—देवी मञ्जुलसंकाशां चन्द्राधकृतशेखराम् ।
सिंहारूढां जगद्धात्रीं कौमारीं भक्तवत्सलाम् ।।
खड्गं खेटं च बिभ्राणामभयं वरदां तथा ।
तारकाहार भूषाढ्यां चिन्तयामि वरांशुकाम् ।।
ध्यान आराधनामे हिनका गाहे कहल गेल छन्हि जे स्कन्दक पुत्र, कल्याण तथा दया-प्रदान करएवाली ओ प्रकृतिक छठम् अंशसँ उत्पन्न जगमाता छथि । श्वेत चम्पक-पुष्पक समान हिनक वर्ण अछि । ओ वस्त्रेमय आभूषणसँ अलंकृत छथि । एहि परम चित्स्वरूपिणी भगवती देवसेना षष्ठी देवीके आराधना करैत छी—
—षष्ठांशां प्रकृतेः शुद्धां सुप्रतिष्ठाश्च सुव्रताम् ।
सुपुत्रदाञ्च शुभदां दयारूपां जगत्प्रसून ।।
श्वेत चम्पक वर्णाभां वस्त्रभूषणभूषिताम् ।
पवित्ररूपां परमां देवसेनां परां भजे ।।
—ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्रकृतिखण्ड ४३÷४९ पृ.
षष्ठी मैयाक पूजा छठियारी पूजा दिन होइत अछि आ ओ पूजा प्रत्येक बच्चाक जन्मक छठमदिनमे विधनेश, जीवन्तिको देवीक संगहि कएल जाइत अछि । जन्मौटी धीयापूताक भाग्य, आरोग्य आ ऐश्वर्यादि लेख ओहि दिन लिखाइत होइतामे चैती छैठ आ कैतकी छैठके परम्परा रहल प्रचलित अछि ।
हिनक महिमाके गुणगाण ऋषिमुनि एहि मन्त्रमय शब्द-भावमे कएने अछि-
— नमो देव्यै महादेव्यै सिद्धियै शान्त्यै नमो नमः
शुभायै देवसेनायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः

দেরবক্ষণকাবিণ্যৈ ষষ্ঠ্যৈ দেব্যৈ নমো নমঃ
শুদ্ধসত্ত্বস্বরুপায়ৈ রন্দিতায়ৈ নৃণাং সদা ।।
— ব্রহ্ম.প্র.খ.— ৪৩÷৬৭–৬৬

ভগরতী সিদ্ধি এরং শান্তিকে নমস্কাব অছি ! শুভা, দেরসেনা এরং ভগরতী ষষ্ঠীকে রেঁব–রেঁব নমস্কাব । রবদান দেনিহাবি, পুত্র দেনিহাবি, ধন দেনিহাবি, সুখ–প্রদান কএনিহাব এরং মোক্ষদাত্রী ভগরতী ষষ্ঠীকে রেঁব–রেঁব নমস্কাব ।
মূলপ্রকৃতিক ছঠম্ অংশস' প্রকট শক্তিস্বরুপা ভগরতী সিদ্ধিকে নমস্কাব । মায়া, সিদ্ধি যোগিনী, স্বয়ং দ্ধ এরং দ্ধিদাত্রী, সাবা, শাবদা আ পবাদেরী নামস' শোভা পৌনিহাবি ভগরতীকে নমস্কাব অছি । রাঁনকক অধিষ্ঠাত্রী, কন্যাণদাত্রী, কন্যাণ স্বরুপিণী এরং কর্মক ফন দেনিহাবি দেরী ষষ্ঠীকে নমস্কাব অছি ।
অপন ভক্তকে প্রত্যক্ষ দর্শন দেনিহাবি তথা সরঁকেনেন সম্পূর্ণ কার্যমে পূজা প্রাপ্ত কবরাঁক অধিকাবিণী স্বামী কাত্তিকেযক প্রাণপ্রিযা দেরী ষষ্ঠীকে রেঁব–রেঁব নমস্কাব অছি । মনুষ্য জিনকব নিত্য রন্দনা কবৈত অছি আ দেরতানোকনিকে বক্ষামে জে তৎপব বহৈত ছথি ওহি শুদ্ধসত্ত্ব স্বরুপা দেরী ষষ্ঠীকে নমস্কাব অছি । হিংসা আ ক্রোধস' বহিত দেরী ষষ্ঠীকে নমস্কাব ! হে সুবেশ্বরী ! অপনে হমবা ধন দিঅ, প্রিয পত্নী দিঅ, পুত্র দিঅ, ধর্ম দিঅ, যশ দিঅ । হে সুপূজিতে ! অপনে হমবা ভূমি দিঅ, প্রজা দিঅ, রিদ্যা দিঅ আ কন্যাণ এরং জয প্রদান কক ।
সোগবীঘবমে নিরাস কএনিহাবি ষষ্ঠীদেরী ! পবম

ভক্তিস’ পূজিত হ্থ’ৱানী খপনে হমবা দীর্ঘায়ু প্রদান কৰু । খপনে জন্মসম্বন্ধী স্বখকে জননী ছী ! ধন–সম্পত্তিকে বৃদ্ধি কএনিহাবি ছী, সৱ প্রাণীকে ঙঁপেত্তি স্বৰুপা ছী !
ভগরতী ষষ্ঠীদেরীক রাসেন্য–মহিমা এরং খসীম খনুকম্পাক ঞ রিনক্ষণ কথা সর্রপ্রথক নাবদজী, ভগরান নাবাযণস’ সূননে বহথি, জকব রিস্তৃত রর্ণন ব্রহ্মরৈরর্তপ্ববাণ, প্রকৃতি–খল্ডক ৪৩ম্ খধ্যাযমে তথা শ্রীমদ্দরীভাগরতক নরম্ স্কন্ধমে ঙঁনেখ খছি ।

**<u>খত্তনেশ্বব</u>**

<u>সোচৱ খারশ্থক জে……</u>

‘মিথিনা’ শৰ্দ্ধ ককবো নেন খপবিচিত নহি, খপনে দেশী রা রিদেশীক কোনো কোনমে চনি জাঙঁ মাত্র ‘মিথিনাক ছী’ কহৱ তঁ ও খহাঁক পবিচয বুঁঝি জএতাহ । সভক মোনমে স্বত: খারি জএতনি জতএ বাজা জনকক বাজ–দবৱাব ছন, জতএ জনকনন্দনী সীতাক জন্ম ভেন ছন, জে মহাকরি রিদ্যাপতিক জন্মস্থান থিক । হমবা মোন খছি হম জখন ৱহ্ত ছোট বহী তঁ জনকপ্ববমে এক ৱেব কোনো ধার্মিক সমাবোহ ভেন বহএ, জাহিমে এক

দিস জতএ সাধ্নোকনি জ্টৈন ছনাহ তঁ দোসব দিস ৰঁহ্তো রিদ্বান নোকনি সেহো। ওহি মধ্য একগোট রিদ্বান কহনথিন্হ জে ও জখন মাস্কা গেন ছনাহ তঁ ওতএ বামাযণ, মহাভাবতক সঙ-সঙ রিদ্যাপতিক পদাৱনী সেহো ভেটৈন ছননি। সভাস্থ ও কহনথিন্হ জে –ওতএ একটা পাঠক ওহি পদাৱনীক রিষযমে খপন টিপ্পণী দেনে বহথিন্হ জে মৈথিনী মধ্ৱ ভাষা নহি খছি। হ্নক ও উঁক্তি স্বনি হমব ৰানমোনকেঁ ৰঁড়কা ঝটকা নাগন, কাবণ হমব ঘব মিথিনা-মৈথিন-মৈথিনীক নেন পূর্ণ রুপেঁ সমর্পিত ছন, জতএ খান-খান ভাষা মাত্র পাহ্ন ভএ খরৈত ছন, ওহি পবিরেশমে ৰঁহত ৰঁসাত সভ কিছ মৈথিনীক নেন ছন খা তেঁ হমবা ও উঁক্তি স্বনি ৰঁড় চোট নাগন ছন। হ্দা কিছ ক্ষণক রিবামক ৰাঁদ ও রিদ্বান খাগাঁ ৰঁজনাহ জে মৈথিনী মধ্ৱ নহি, স্বমধ্ৱ ভাষা থিক খা হম খাগ ওহি ধবতী পব খাযন ছী জত্তক্কা ভাষা স্বমধ্ৱ খছি জে মাঁ সীতাক পর্যাযরাচী শৰ্ঙ্ক থিক।

হ্নক ও কহব হমব ৰানমনমে পৈসি গেন খা হম নিশ্চয কএ নেন জে খাৱঁসঁ হম খপন পবিচয মিথিনাৱাঁসীক রুপমে দেৱ। ও ক্ষণ খাযন, জখন হম পহিন ৰেব মিথিনা সঁ ৰাহব পূৰ্ৰোত্তবক বাজ্য খসম পহুঁচনহুঁ। হমবাসঁ পূছন গেন ওএহ প্রশ্ন খা হমব উঁত্তবো পূর্ৱ সোচক খনুসাবহিঁ নিকনন। হমব উঁত্তব সূনি ও নোকনি সহজহিঁ চর্চ প্রাবম্ভ কএ দেননি বাজা জনক ও হ্নক জগত্ জননী স্বপুত্রী সীতাক, খদ্বিতীয মহাকরি রিদ্যাপতিক খা ৰঁহ্তো মনীষীনোকনিক। হমব ছাতী গৌবরসঁ তনি গেন। হমবহি সঙ বহথি একগোট রিহাবী মিত্র, জে পবিচযমে রিহাবী শৰ্ঙ্ক জোড়নন্হি খা রিভিন্ন

তবহক তানাসঁ গ্রস্ত ভএ গেনাহ। কেও চাবা ঘোটানাক রিষযমে জিজ্ঞাস্ব ভএ গেনাহ তঁ কেও নানূ মাহাম্যেমে, কেও দবিদ্রতাক রিষযমে সোচর্ব প্রাবম্ভ কএননি তঁ কেও ঞ্লেনক চোড়ীক খিস্সা, জতেক মূহ ততেক খিস্সা। এহি প্রসঙকেঁ উঁঠএবাঁক কাবণ খছি হমব-খহাঁক সোচক রিষযমে কিছু সোচর্ব। মিথিনাকেঁ রিহাবীপনসঁ তঁ জ্নএ পড়ৈত ছৈক, হ্মদা জখন খোখা-বার্বড়ী-খমিবতীক গপ্প খবৈত খছি তঁ মিথিনাকেঁ তাহুসঁ বঁচিতে বহএ পড়ৈত ছৈক, ঙা কিএক ? কী ! মৈথিনমে পৌকষক কমী খাবি গেন খছি বা হমসভ এখন ধবি খপন খধিকাবক মহত্তকেঁ চীন্হি নহি সকনহুঁ খছি ? বা খানে কোনো গপ্প, হ্মদা এতবাঁ খবশ্য জে হমসভ এখনহুঁ দহী-চূড়া-চীনীমে নষ্টপষ্টাএন ছী। মিথিনাক স্বর্ণীম গতিহাস, ওহি ঠামক খদ্বিতীয বৌদ্ধিক প্রকাশ, মিথিনাক সাংস্কৃতিক প্ররাসমে খাবি খান সভ কেও খপনাকেঁ ভাগ্যশানী বুঝৈত ছথি, হ্মদা ঙা ক্ষেত্র সব্ব দিনসঁ খপনহিঁ দ্বাবা ঠকন গেন খছি, খপনহিঁ দ্বাবা সাধন গেন খছি, ঙা কিঐক ? একবহি হবিছএবাঁক হেতু জখন এহি ঠামক মিথিনা বাজ্য খান্দাননক খভিপ্রায রিষয পব রিষয-বস্তু তাকর্ব প্রাবম্ভ কএন তঁ একটা খানেখ ভেটৈন- 'হিন্দী ভাষা মে খনগ বাজ্য কী মাঁগ ক্যাঁ সন্দর্ভ মিথিনা' ওহি মে রিহাবক প্রশাসন খা মীডিযাক মানসিকতাক পব সংজয মিশ্র নিখনে ছথি- "সন্দর্ভ কী বাঁত চনী তো থোড়ী বাঁত রিহাব কী কব নেঁ ....মিথিনা কে মানস কে উদ্বেগ কী। খাপকে জেহন মেং উমড় বহে কঙা সরানোঁ কে জরার্ব শাযদ খাপ তনাশ পাযেং। মিথিনা গসী বাজ্য রিহাব কা এক খংগ হৈ। পৌবাণিক-এতিহাসিক মিথিনা কা দো-তিহাঙা হিস্সা রিহাব মেং ওব

শেষ নেপান মেঁ পড়্তা হৈ। কভী মৌক্ া মিনে ঔব সময হো তো বিহাব কে হ্ক্মবানোঁ কে ভাষণ স্বনে। গক্ষ্ঁ হী ক্যাঁ ....বিহাব কী মীডিযা পব ভী নজব গড়্ াএঁ। বিহাব কী মহিমা কা জৰ্ যে ৰখান কবতে তো ভগৱান্ ৰুধ হী গক্ষ্ঁ নজব খাতে। ভগৱান্ মহাৱীব কভী-কভাব যাদ খাতে....পব জনক নহীঁ...মাতা সীতা নহীঁ। মিথিনা কা স্মবণ কবা দেঁ তো গনকী ভাৱেঁ তন জাতী। গস গনাকে কী মিট্টী, পানী, হৱা...যে সৰ্ বিহাব কী সংপদা হ্ণ্ড পব ' মিথিনা' শৰ্ক্ষ্ ঔব যহাঁ কে নোগোঁ সে পবহেজ। যহাঁ কী বিবাসত পব গৰ্ কবনে কী ৰজাএ গক্ষ্ঁ শৰ্ম কা খনুভৱ ক্যাঁ ? খাগ্ নিখনে ছথি জে - সূনা হোগা খাপনে কী মৈথিনী ভাষা সংৱিধান কী খাঠৱীঁ সূচী মেঁ দৰ্জ হৈ...রো সাহিত্য খকাদমী মেঁ ভী হৈ। যানি গন জগহোঁ পব বিহাব কা মান ৰঢ়া বহী। পব ক্যা বাজ্য কে শাষকোঁ কো গস পব নাজ হৈ ? হব সেন্সস বিপোৰ্ট মেঁ মৈথিনী ভাষিযোঁ কী সংখ্যা কম ৰতানে কী গনকী সাজিস ক্যা কিসী সে ছপী বহ গণ্ড হৈ ? থোড়্া পীছে জাএঁ...শিৱ পূজন সহাএ জৈসে খ্যাতিনৰ্ক্ষ্ সাহিত্যকাবোঁ নে মৈথিনী কী পবিচিতি খমে কবনে কা ৰীড়্া ক্যাঁ উঁঠাযা থা ? পাঠ্যক্রমোঁ সে মৈথিনী কো ৰাব-ৰাব হটানে কে ষ্চক্র ক্যা বাজকীয গৰ্ কা খহসাস হৈঁ ? মৈথিনী জৰ্ খাঠৱীঁ খনুসূচী মেঁ শামিন কী গণ্ড তো বাষ্ট্রীয টৗবী চৈননোঁ নে ভী গসে প্রক্ষ্খতা সে দিখাযা। সংৱিধান সংশোধন কবনা পড়া থা...নিহাজা যে ন্যূজ্ থী। নেকিন বিহাব কে সৰাধিক নোকপ্রিয চৈনন নে গস খৰৰ কো দিখানে কী জহমত নহীঁ উঁঠাণ্ড। গস চৈনন কো বিহাব কী স্বব কোকিনা শাবদা সিন্হা কী খাৱাজ নহীঁ স্বহাতী...ক্যাঁকি রো মিথিনা

ক্ষেত্র সে খাতী হৈঁ...জৰঁকি মনোজ তিৱাৰী ' খপ্পন ' ৰঁনে হুএ হৈঁ। দেশ কে কিসী কোনে মেং চনে জাএঁ...গৌৰ ৰিহাৰিযোং সে ৰাঁত কৰেং। ৰিহাৰ কা নাম নেতে হী ৱো ভোজপুৰী কা জিক্র কৰেংগে। যহী হান গন জগহোং কে সমৰ্ঝদাৰ সমঝে জানে ৱানে পত্রকাৰোং কা হৈ। খধিকাঁশ কো পতা নহীঁ কী মৈথিনী ৰিহাৰ কী হী ভাষা হৈ। ৰিহাৰ সৰকাৰ কী গৰ্ৱ কী খনুভূতি ঔৰ কাৰিনিযত (?) কা যে জীতা জাগতা নতীজা হৈ। পটনা সে ছপনে ৱানে হিন্দী কে খখৰাঁৰোং কো পনট কৰ দেখেং। হেডিংগ্স ঔৰ কার্টূন কে টৈক্স্ট খাপকো ভোজপুৰী মেং মিনেংগে। গন খখৰাঁৰোং কী যে কিদনী সানোং সে হৈ....খচ্ছা হৈ...পৰ মৈথিনী মেং ক্যোং নহীঁ। গন্হেং মিথিনা কা পাঠক/ খৰীদাৰ চাহিএ পৰ মৈথিনী নহীঁ চাহিএ...ৰিনকুন ৱৈসে হী জৈসে ৱাজ্যকে নেতাওং কো মিথিনা কে ' নোগ ' চাহিএ জিন পৰ সত্তা কী ধোঁস জমাএঁ পৰ গন " নোগ ' কে হিত কী পৰৱাহ নহীঁ।"

এহি ঠাম উপৰ্যুক্ত উক্তি ৰখৰাঁক পাছাঁ হমৰ ধ্যেয গ খছি জে হমসভ কিছুও কান নেন এহি দিশামে সোচী। সোচী জে, খাখিৰ এহন মানসিকতাক জন্ম কিএক হোগত ছৈক ? কী! একৰ পাছাঁ মাত্র এতৰঁহি সিদ্ধ কৰৱঁ খছি জে মিথিনা খা মৈথিনীকেঁ উচিত খধিকাৰ নিৰৰ্থক ছী ? কী! এখনহু একৰ ৰিৰোধীনোকনি গএহ সোচি ৰহন ছথি জে মৈথিন মাত্র চূড় া–দহীমে ৰিশ্বাস কৰৈত ছথি ? কী! মৈথিন এখনহুঁ 'সূতন ছী, ৰিখাহ হোগত খছি'মে ৰিশ্বাস কৰৈত ছথি ? নহি তঁ এহন মানসিকতা কিঐক ? হমৰা নগৈত খছি জে এহি মানসিকতাক পোষণ ভেন খাৰ–খাৰ তত্বক সঙ দৰভংগা ৱাজানোকনিক শাসনক সমযমে। যদি ও হিন্দী,

देवनागरी, उर्दू, फारसी आ अंग्रेजीकेँ सम्पोषित नहि कएने रहतथि तँ आग मिथिला-मैथिलीक ई दशा नहि भेल रहितैक। एहि प्रकारक उक्ति देबाक पाछाँ ध्येय अछि ओहि कारणकेँ ताकब, जाहि बलेँ मिथिला-मैथिल-मैथिलीकेँ उचित अधिकारसँ वंचित करबाक साहस प्राप्त कएल जाए रहल अछि, दरभंगा राजक दूरदृष्टिक अभाव आग धरि मिथिलाकेँ सता रहल छैक।
ओना कारण मात्र ओतबे नहि अछि। हम मैथिल जन सेहो एको पाइ कम दोषी नहि छी, एकर पाछाँ। हमसबे आगओ अपन क्षेत्र-अपन मातृभाषाक प्रति सजग-सतर्क नहि भेल सकलहुँ अछि, प्राय: एखनहुँ एकर महत्ताकेँ नहि आँकि सकलहुँ अछि। मिथिलाक हृदयस्थली मधुबनी जिलाक झंझारपुर विधानसभाक सदस्य श्री नीतिश मिश्र अपन क्षेत्रमे साधारणो जनसँ मैथिलीमे नहि बाजि पबैत छथि, प्राय: प्रयासो नहि करैत छथि। जँ कदाचित् केओ मैथिल एहि पर टिप्पणी करितो छथि तँ नेताजीक चमचासभ आ मिथिलाक तथाकथित बुद्धिजीवी लोकनिक उक्ति होइत छनि- 'आह, डाक्टर साहबेंक बेटा ने छथिन, सभ दिन बाहरे पढ़लनि, तेँ ई क्षम्य अछि।' औजी, मिथिलासँ बाहर पढ़बाक परम्परा मात्र मिश्रेजीक परिवारमे छनि कि आओरो लोक पढ़ै रहल छैक। जँ बाहरे पढ़ै ओहि बुद्धिकेँ प्रयोग करबा छल तँ ओहि हेतु आन कतेको माध्यम छैक। रहा, ई जननेता बनबाक लेल जनसँ जुड़ब आवश्यक आ जनसँ जुड़बाक हेतु जन-जनकेर भाषासँ जुड़ब परम आवश्यक, जन-जनकेर मातृभाषाकेँ पूरब आवश्यक। यद्यपि एहनो राजनेताक अभाव नहि जे मैथिल जनक संग सभ दिशामे पूरि

বহন ছথি, নহি তঁ মৈথিলীক উপব উঠবা অসম্ভব ছন। অদা, এহি ঠাম ও কহবাঁমে কোনো অসৌকর্যক গপ্প নহি জে মিথিলামে নেতৃত্বক পূর্ণ অভাব অছি। কেও বাজনেতা এহি হেতু দৃঢ়সংকল্পিতো নহি বুঝাগত ছথি। পবঞ্চ, একবেঁব ফেব সমস্যা খাবি ঠাঢ় ভএ জাগত অছি হম–অহাঁ সাধাবণ মৈথিনক নগ। জঁ সম্পূর্ণ মৈথিনবাঁসী এহি হেতু দৃঢ়–সংকল্পিত ভএ উঠথি তঁ ককব মজান জে মিথিলা–মৈথিল–মৈথিলীকেঁ উচিত অধিকাব নহি দেত।

অদা, কী হমসভ এহি দিশামে সাকাঙ্ক্ষ ভএ সকনহুঁ অছি ? হমবা তঁ নহি নগৈত অছি, ওনা অহাঁ সভক জে রিচাব হো। এহি বীচ দবভংগা গেন বহী, ওতহি বহনিহাব একটা হমব মিত্রক পাবিবাবিক ভাষা হিন্দী স্বনি চকবিদোব নাগি গেন। ও অপন মৈথিন পনীসঁ হমব পবিচয হিন্দীমে কবৌননি আ হম হুনক মুহ তকৈত বহি গেনহুঁ। অপনাকেঁ সম্ভাবৈত–সম্ভাবৈত অপন পবিচয মৈথিলীমে দেন। জঁ দবভংগামে ও পবিস্থিতি তঁ বাঁহবক গপ্প কবব ব্যর্থ। একবা কি কহব ? কী, ও অপনাকেঁ সাধাবণ মৈথিনসঁ এক ওঁচ উপব দেখএবাক প্রবৃত্তি থিক ? আ কি আনে কিছু। অদা রিষয অরশ্যে রিচাবণীয অছি, সোচনীয অছি। একব পাছাঁ ফেব কাবণ তকনা পব জেনা বুঝবাঁমে অবৈত অছি জে সাধাবণ মৈথিন অপনাকেঁ অখ্য ধাবাসঁ কটৈত গেনাহ। এতএ দ্রষ্টব্য থিক একটা উক্তি, জাহিমে ডা.তাবানন্দ রিযোগী বমেশ বঞ্জনক করিতা সংগ্রহ বঙ ক আঙ্খ মধ্য নিখনে ছথি – ভাষাশাস্ত্রীলোকনি জনৈত ছথি জে মৈথিলীক জন্ম জন–বৌনিহাব গবীব–গুবরা দ্বাবা অপন সাংস্কৃতিক তত্ত্বসভক অভিব্যক্তি হেতু, সংস্কৃতক রিবোধমে

ভেল ছল। আ রৈহ মৈথিলী আগূ চলিকহ তেহল সম্ভ্রান্ত আ সংস্কৃতিনিষ্ঠ বঁনা দেল গেল জে আম লোক অপন ভাষা আ ভারকে লেল ওহিঠাম কোনো জগহ নহি পৌলনি। হ্মদা, যৈহ মৈথিলী জঁ সংস্কৃতক স্থানাপন্ন ভহ জগতে, এহিমে ধর্ম-কর্ম পূজা-পাঠ হোরঁহ লগিতে, শাস্ত্র-চর্চা হোরঁ' নাগিতে তঁ এক বাঁত ছল। হ্মদা সে কিএ ? সংস্কৃত অপন বাঁদশাহত তঁ কাযম কযনহি বহল, এম্হব মৈথিলী বজলী-সজলীক ভাষাটা বঁনিকহ বহি গেল। - এহি উঁক্তিসঁ আন জে কিছ হো, এতবাঁ তঁ অবশ্য কহল জাএ সকৈত অছি জে মৈথিলী সাধাবণজনসঁ দূব হোগত গেলীহ, গ্বষ্টবাঁজীক প্রবৃত্তিসঁ আহত হোগত গেলীহ আ তেঁ অপন উঁচিতো অধিকাব প্রাপ্ত কববাঁসঁ বঁচিত হোগত বহলীহ। অপনেসভ দেখি সকৈত ছী জে কিছ মৈথিল অপনহিঁ পএব পব অপনহিঁ হ্মড়হবি ভাঁজি হিন্দীক সেরা লেল নাঙবি ঠ়ানৌনে ফিবৈত ছথি, সোচ গ জে সাহিত্যিক প্রভার একহি বেঁবমে হিমানয পহাড় পব চঠ়া জাএত। গ সভ যথার্থকেঁ বিসবি জাগত ছথি জে হিন্দীক সমৃদ্ধিমে অছি মৈথিলীক ভূমিকা। জঁ আগ মৈথিলী হিন্দীক উঁপেক্ষা কবএ লাগয তঁ হিন্দীক স্থিতি মিথিলামে সেহো পূবোত্তব আ দক্ষিণ জকাঁ ভএ জাএত, জতএ হিন্দী প্রসাব সমিতি আ কি-কি নে খোলএ পড়া বহল ছৈক। হ্মদা হমবা লোকনি তঁ অপন অস্মিতাকেঁ তাক পব বাখি দোসবাকেঁ সহেজবাঁমে বিশ্বাস কবৈত ছী, অপন সবঁকিছ ন্যাছাবব কএ দোসবাকেঁ জীবন দএ গর্বক অনুভব কবৈত ছী।

স্মবণ অবৈছ সভ্য: বীতল ও দিন, জনকপ্বব মে মিথিলা সংঘর্ষ সমিতি লেল আন্দালনক সময বঁম বিস্ফাটমে পাঁচ গোটএ শহীদ ভেল, জাহিমে একটা মিথিলাক বংগকর্মী

बज्रुं ঝা সেহো ছনীহ। ও আগ ধবি রিনা কোনো স্বার্থকেঁ মৈথিনী আ মিথিনাক নেন নড়ৈত বহনীহ আ অন্তমে মিথিনাক নেন অপন রঁনিদান তক দএ দেনন্হি, ঝদা নেপানী মিডিযা খাস কএ কান্তীপ্বব মাত্র, হ্নকা প্রতি শ্রদ্ধাঞ্জনি অর্পিত কবর্ অপন কর্ত্তব্য বুঝনক। এহন রঁনিদানীক হেতু নেপান আ ভাবতক কোনো রবিষ্ঠ সাহিত্যকাব কিছু নহি রঁজনাহ। কোন কাবণ ছন জে ভাবতীয সাহিত্যকাবনোকনিক সঙ নেপানক সাহিত্যকাবনোকনিমে সঁ ডা.বাজেন্দ্র প্রসাদ রিমন, প্রাক্ত বামভবোস কাপড়ি ভ্রমব, শ্রী অযোধ্যা নাথ চৌধবী আ মহেন্দ্র মনংগিযা আদিক কোনো রক্তব্য প্রকাশিমে নহি আএন ? আগ কান্হি ছোট সঁ ছোট খরঁবি মীডিযা মে বহৈত অছি, ঝদা হিনকানোকনিক সংরেদনাযক্ত কোনো সমাদ কতহু দেখরাঁমে নহি আএন। পতা নহি একব পাছাঁ কোন অসংমজসতা ছননি। কিছু ব্যক্তিক সোচ ছনি জে হমবাসভকেঁ বাজনীতিক সহযোগক আরশ্যকতা অছি। ঝদা, রাহ বে ! অপনেক মানসিকতা। জাহি বাজনেতাকেঁ হম-অমাঁ রঁনরৈত ছী ও সহাযতা কবতাহ তখন হম ডেগ উঠাযর্, কী উচিত ? হমবাতঁ বুঝরাঁমে আরি বহন অছি জে কিছু এহি প্রকাবক নেখক আ সাহিত্যকাব মৈথিনীক প্রতিনিধিত্ব ক বহন অছি জনিক মানসিকতামে মিথিনা আ মৈথিনী সঁ রেসী অপন হিত ছনি, অপন অস্তিত্বক চিন্তা ছনি। ঝদা এহন-এহন ব্যক্তিক চর্চাসঁ ঘরঁড়এরাঁক গপ্প নহি ছৈক, কাবণ আগও ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষি, শ্যাম স্বন্দব শশি, কা. বামচন্দ্র ঝা, প্রা. পবমেশ্বব কাপড়ি, গাযক স্বনীন মল্লিক, প্রাক্ত বমেশ বঞ্জন, কা. বোশ জনকপ্ববী সনক নোক নেপানমে সক্রিয ছথি জনিক প্রতিভাত্ব আ ব্যক্তিত্বসঁ মিথিনাকেঁ গর্ব

কবরাঁক খরসব রেঁব–রেঁব ভেটৈত বহৈত খছি, হ্মদা প্রশ্ন ঠাঠ়ক ঠাঠ়ে খছি জে কী হমসভ খপন মাতৃভাষাক নেন প্রতসংকল্পিত ছী ?

মাতৃভাষা দিরস ক রঁহমে

হেমেনিমে মাতৃভাষা দিরস ছন, রিভিন্ন ভাষা ভাষী নোকনি খপন মাতৃভাষাক প্রতি খনুবাগ ওকব রিকাস , খপেক্ষা খা উঁপেক্ষা পব চিংতন কযনে হোযতাহ। হমহুঁ সংযোগ সঁ জনকপুব (নেপান) গেন বহী । জানকী মংদিবক পবিসবমে মৌথিনী ভাষী নোকনি মাতৃভাষা দিরস মনা বহন ছনাহ , সভামে নাটককাব মহেন্দ্র মনংগিযা, কা. শিতন ঝা, প্রা. পবমেশ্বব কাপড় , প্রা. শ্যাম স্বন্দব শশি খাদি মৌথিনীক রিদ্বান খা চিংতক নোকনি উঁপস্থিতি ছনাহ। কার্যক্রমক রূপ একদম জনতংত্রীয ছন কাবণ কার্যক্রম কোনো সভাগাব মে নহি ভ' জানকী মংদিবক প্রাংগণ মে ভ' বহন ছন , জেকব কাবণ জনমানসক সংখ্যা খধিক সঁ খধিক ছন , মোনমে জনমানসক উঁসোহকেঁ দেখি উঁসোহ ভেন । কাবণ

দেখন জাগত খছি জে রঁহ্তোঁ খর্চ মোএরাঁক পশ্চাতোঁ জনমানসক সহভাগিতা কম দেখন জাগত খছি, ক্ষদা এতএ এহন স্থিতি নহি ছন। কাবণ মাতৃভাষা দিরস ক মহত্ব ভাষা ধবি সীমিত নহি খছি ওকব মহত্বক একটা ব্যাপকতাক খছি।

রিভিন্ন রক্তাক ভাষণ স্বননাক পশ্চাত কিছু সোচরাঁক নেন রাঁধ্য কযনক খাখিব কিযো ণ্ড কিযাক নহি কহি সকনাহ জে একটা ভাষিক খান্দাননক মোযরাঁক চাহি মাত্র এতরঁহিঁ কহি বহন ছনাহ জে হমবা সভকেঁ খধিকাব ভেটরাঁক চাহি খাখিব হ্নকা ণ্ড কিযাক নহি বুঁঝয মে খারিঁ বহন ছন জে খখনি ধবি মৈথিনীক নেন কোনো ভাষিক খান্দানন নহি ভেন খছি খা জে ভেন খছি ও জনমানস সঁ কটি ক । কাবণ খখনি ধবি হম সভ মানকীকবণ খা মৈথিনী ব্রাহ্মণ খা কাযস্থ শব্দ রঁজৈত ছথি এহিক নড় াগ মে নাগন ছী, জেকব কাবণ ভ বহন খছি মৈথিনী খাগ খপন ক্ষেত্র ধবি নহি রঁচা পারিঁ বহন খছি , জাহি জিনাক মৈথিনীকেঁ মানক মৈথিনী কহৈত ছিযৈক ওত্তক্কা জনতা মে ণ্ড ভ্রম ছৈক জে হম সভ জে মৈথিনী রঁজৈত ছী ণ্ড খশব্দ খছি। এহি রিষয পব কিযো নহি সোচি বহন ছথি জে খাখিব ণ্ড ধাবণাক জন্ম কোনা ভেন যদি ভেন হম সভ ওকবা নিরূপণ কবরাঁক নেন কি কহি বহন ছী। মৈথিনীক প্রতি খপনে সোচি সকৈত ছী জে হেমনিমে জারঁত ধবি সাহিত্য খকাদমী প্ববস্কাবক ঘোষণা রিনম্ব সঁ ভেন এহি স্থিতিক নেন মৈথিনীক চিঁতক বুঁঝনিহাব নোকনি কিছু নহি রাঁজি সকনাহ সভ কিযো এহি দ্খাবে চুপ্প বহনাহ জে কহি ণ্ড পূখা হমবে ভেটি জায। এহি ঠাম ণ্ড তথ্য উঁঠযরাঁক হমব মাত্র ণ্ড নিযতি ছন জে হমব

सभक मानसिकता केहन
अछि। भाषाक नेने सभ किछो कहताह जे हम ओ
क रहल छी मुदा हुनका भाषाक सेरा नेने जे
पाविश्रामिको भेटैत छनि ओहि संस्थाक ओ स्थिति अछि
जे ओतय गेनाक बाद अपनेक बुझायत जे हम कि
सोचि आयल छलहुँ हम कि देखि रहल छी । आखिर
किपाक ? अपने देखि सकैत छी मैथिली साहित्यकार
आ चिंतक लोकनि एतेक निम्न स्तरक चरित्रक छथि जे
एक दिश कहताह जे हमरा महाशय मैथिली आ मैथिलीक
साहित्यकारमे भेदभावक स्थापना क रहल छथि आ हम
एहि धारणाकें मेटैबाक प्रयास क रहल छी आ जखनि
अहाँ हुनक धारणा देखबै तँ ओ उन्नैस छलाह आ ओ बीस
भ गेल छथि , हम नाम नेबैए एहि दुआरे नहि चाहैत
छी जे ऐकार कें ओ लोकनि प्रसिद्ध पारि जेताह मुदा
बुझबाक हेतनि बुझि जयताह । तैँए एहि बीच एकटा
मित्र साहित्यकार कहलनि जे मैथिली आ मिथिला मे सभ
नागनाथ आ साँपनाथे छथि तैँए किनको बाबे बैसी निक
वा बैजायक प्रमाण नहि द सकैत छी ।
बहुत उहापोहक स्थितिक बीच , साहित्य अकादेमी अपन
चोर पोटैरी खोलनक। आदरणीय उदय चन्द्र झा
विनोद कें हुनक कविता संग्रह अक्षप आ डा. खुशीलाल
झाकें हुनका अनुवाद पुरस्कार सँ सम्मानित कयल गेल
दुनू महानुभाव कें शुभकामना । ओना विनोद जीकें
मैथिल चिन्हैत छन्हि कारण ओ मैथिली आ मिथिलाक मुद्दा
सं जुड़ल छथि मुदा प्रश्न ठाठ भ गेल विनोद जीक
पुरस्कार सम्मान सँ नहि ग विनम्रैसँ । आखिर ओ कोन
दबाबें छल जे पुरस्कार मे देवी भेल । वा पुनः
उएह खिस्सा दोहराओल गेल जे एहि बेर विनोद जीकें

দ দিয়ৌন্হি রঁহ্ত আশি কয়লে ছথি কি কোনো দোসর ফার্মূলা । আনন্দ কুমার ঝাজী জিনকা যুবা সাহিত্য অকাদেমী পুরস্কার ভেটৈল , ও উঁচিতো জে পহিল রঁের মৌথিলী মে কোনো যুবা লেল পুরস্কার ভেটৈল আ ও হ্নকা ভেটৈলন্হি এহি লেল হ্নকা শুভকামনা । ওনা হমরা জনৈত হ্নকা সঁ নিক –নিক লিখনিহার মৌথিলীমে যুবা সাহিত্যকার ছথি নাম লের্ঁ উঁচিত নহি ঝদা প্রশ্ন উঠৈল জে কোন কারণ অছি এহি রঁের সভ পুরস্কার একটা রস্তু মে সীমিত রহি গেল কারণ রচনা স্তরীয় অছি তঁ কিযাক মৌথিলী একগোট প্রসিদ্ধ আলোচক সঁ পূছল জে যুবা পুরস্কার জিনকা ভেটৈলন্হি অছি ওহি পর কি কহর্ঁ অছি ও কহলনি জে ঠীকে ছৈক কম সঁ কম পাগ তঁ ভেঁটৈ গেলন্হি । আ হমরা লাগল জে ঠীকে সাহিত্য সেহো আর্ঁ রাঁজারক চিজ রঁলয জা রহল অছি ওকর অর্থ , ওকর মহত্তা ওকর সামর্থ্য ক্ষিণ ভঽ রহল অছি ।
এহি রীচ হোরী সমাপ্ত ভেল আর্ঁ মিথিলাক গাম সভমে ফাগু নহি গাযল জাগত অছি , গাম সংরেদনহীন ভ গেল অছি । সাংস্কৃতিক চিংতন পর অসমক একটা রিদ্বানক লেখ মোন পড়ৈত অছি হ্নক নাম ওতেক মোন নহি অছি কিন্তু ও সাংস্কৃতিক পরম্পরা পর জে গপ্প কহলে ছলাহ সে মোন অছি । হ্নক চিংতন অসমক পরম্পরাক রিষয মে ছল জে এক দিন অসম মে এহন স্থিতি আওত জে রিহ্ সংগ্রহালয আ মংচক রস্তু ভ জাযত । ওত্তুক্কা কি স্থিতি ছৈক সে কহি নহি সকর্ঁ কারণ ওতয কিছু সাংস্কৃতিক চেতনা রাঁকী ছৈক সে হম দেখল , ঝদা মিথিলামে ও ঠীকে রংগমংচক প্রেক্ষা গৃহক রস্তু ভ গেল অছি সংগ্রহালয মে রাখল জাএ ঝদা মিথিলা মে অখলি ধরি রিস্তৃত সংগ্রহালয নহি অছি ।

ঙা প্রশ্ন এহি দ্খাবে হম কহি বহল ছী জে একটা ঙামেন হকাব পাঁতি ক খাযন ছল ওহি মে খপন সাংস্কৃতিক চেতনাকেঁ বঁচযবাঁক লেল কহল গেল খছি খা জেকব কাবণ ও লোকনি ফাগ্ম মহোসের মনা বহল ছথি , হ্মদা তঁ জে কবৈ ছী সে ঠীকে হ্মদা কি একব দূবগামী প্রভার হোযত রা ক্ষণিক কাবণ বংগকর্মী ঙা তঁ নহি সোচি ক জযতাহ জে নিক তৈযাবী খা প্রস্তুতি সঁ পৈঘ প্ববস্কাব ভেটি জায ? খন্ত মে রাসংতী নরবাত্র খা বামনরমীকেঁ সম্পূর্ণ মিথিনারাসীকেঁ মংগনময শ্বভকামনা।

<u>গাম মে নহি ফাগ্ম খা নহি ভোবক পবাতী</u>

মামাজী হমব নগভগ 90 রর্ষক ভ গেন ছথি খা হ্নকাসঁ ভেঁটে নগভগ এক দশকক বাঁদ ভেল ছল। কাবণ মামাজী খসমর্থতাক কাবণ খাবঁ গাম নহি জা পবৈত ছথি ও কাশীমে বহি বহল ছথি। এহি বেব

কাশী যাত্রাক ক্রমমে মামাজীসঁ ভেঁট ভেল, প্রণাম পাতিক বাঁদ ঘবক কুশল ক্ষেম, কাজক বিষযমে আ বহুত কিছু পুছলনি কিন্তু সভসঁ বেশী পুছৈত ছলাহ গামক বিষযমে। মামাজী কাশীমে নিশ্চিত ছথি মুদা হুনক আমো গামমে ছনি। গামক ঘব, গামক লোক, গামক গাছী বিবছী আদি হুনক স্বপ্নমে অবৈত ছনি। ওনা সভক ওচ্ছা বহৈত ছৈক জে জীবন অন্তিম সমযমে তীর্থ কবী মুদা মামাজীক ওচ্ছা ছনি গাম দেখি আ গামক লোকসঁ ভেঁট কবী আ ওা ওচ্ছা ও হমবা বেব-বেব গপ্পক ক্রমমে কহৈত ছলাহ । হমবাসঁ হুনকা এতবহি আগ্রহ বহৈত ছলনি জে গপ্প গামক কহু প্রদেশক নহি । কাবণ গামমে পবিবর্তন ভ বহল ছৈক কহাঁদন বড়ঃকা বাজপথ বনি গেলৈক আব গাম জাযব দুস্কব নহি। মামাজী জে গাম দেখলে ছলাহ ও বহুত পিছড়ঃল। মুদা হম মামাজীক এহি ভাবারেশকেঁ দেখৈত কহলিযনি মামাজী অহাঁ জে গাম তাকি বহল ছী জে গামক স্মৃতি অহাঁ বখলে ছী সে গাম আব নহি ছৈক গাম বদলি গেল ছৈক সভ কিছু গামমে ওহিনা ভ গেল ছৈক জহিনা শহবমে । আব গামো মে সভ কিছু বিকাযত ছৈক ,আব ও গাম নহি ও তঁ একটা বাজাব অছী জতএ শহব লোক অপন গাম তকবাক লেল অবৈত অছী ও লোকনি গামমে অপন জীবন তকৈত ছথি মুদা গামমে হুনকা সংগ গ্রাহক জেকাঁ ব্যবহাব কযল জাওত অছী জহিনা ভাবতক সংস্কৃতি দেখবাক লেল আযল বিদেশীক সংগ ভাবতীয লোকনি কবৈত ছথি ওহি প্রকাবেঁ কতহু সংবেদনা নহি কতহু ভাবনাক ভাব নহি। আ হমব ওা গপ্প সুনি মামাজীক আঁখি লোবসঁ ভড়ঃা জাওত ছনি মুদা হম সত কেঁ কতেক নুকা নহি সকৈত ছলহুঁ।

आ ओकर पश्चात मामाजी गामक खिस्सा हमरा सुनबय लगैत छथि । हुनका लग परतंत्र भारतक गामक खिस्सा छल तँ स्वतंत्र भारतक गामक खिस्सा ,बाढ़ि आ रौदीक खिस्सा छल तँ हबित अाँतिक , गामक लोकक खिस्सा छल तँ गामक जीवनक सेहो तदा मामाजी क कहल प्रत्येक गप्प हमरा आबँ खिस्सा लागि रहल छल। कारण जखनि गाम जागत छी तं अपन हेबायल गामकें ताकैत छी तदा गाम नहि भेटैत अछी ओ गाम जे पिताक उपन्यास , कथा आ कविताक गाम छल । विदेश्वर बाबा मंदिरक घंटी , दादीमाँ क पराती । , ओना हमरा हुनक कहल गामक ओ यथार्थ आबँ खिस्सा लागि रहल छल कारण मामाजी अनुसार गाममे सभ कियो एक दोसराक लेल जीबैत छल मात्र अपने टा लेल नहि । ककरो सुख वा दुखकें अपन बुझैत छल, ककरो समांगक लेल खोजय नहि पड़ैत छलैक सभ कियो सभक समांग छलैक । सभक बाँचा काशी , इलाहाबाद ,दरभंगा आ पटनामे पढ़ैत छल तदा सभक अभिभारक गामक एक गोटें होइत छलाह सभ बाँचा अपन अगता ,अपन आकांक्षा ओहि गामक अभिभारकसँ ओहि प्रदेशमे कहैत छलाह आ एकर अर्थ गामक संबंध प्रदेशो धरि ओहिना छल जा एकर प्रमाण छल ।

हमरा हुनक गामक प्रति एहि अगाध विशेषता सुनि रहल नहि गेल आ हम मामाजी सँ पूछी बैसैत छीयन्हि – मामाजी अहाँ जे गामक गप्प कहैत छी ओ गाम हम सभ नहि देखि रहल छीयैक हम सभ जे गाम देखि रहल छी ओ हमरा शहरक संस्कारसँ लिप्त भेटैत अछी आ अहाँ सँ सुनल गाम तँ आबँ खिस्सा भ सकैत अछी

যথার্থ নহি । কাবণ জহিনা শহবমে ককবো এক দোসবা
সঁ কোনো সম্পর্ক নহি ওঁএহ স্থিতি গাম মে অছী আ গাম
সভ বহল অছী , গামমে বহনিহাব লোক কহৈত ছথি ।
কাবণ হুনকা লোকনিক কহব অছী জে পহিলে গামক
লোক অনেবে ঘুব লগ বৈসি সময ব্যবদি কবৈত ছলাহ
আব দেখিযো সভ অপনা মে মস্ত অছী ঘুব কি ববংবডা
পব একঠাম বৈসন লোককেঁ নহি দেখি সকৈত ছী ।
মামাজী গামক অন্হআ , মড়ুআ আ লবকা অগহনী
চাউঁবক ভুঅন ভুআক স্বাদ মোন পাড়ি বহল ছলাহ
আ হম হুনকা গামক সিংঘাবা , চাউঁমীন আ চাটক স্বাদ
কহি বহল ছলযন্হি । মামাজী ঝঁবৰসিংহ থানক কীর্ত্তন
মোন পাড়ি বহল ছলাহ আ হম হুনকা লবকা ভজনক
গপ্প কহি বহল ছলযন্হি , মামাজী পৈঠঘাট চৌকক
যাত্রা দিনক খিস্সা কহি বহল ছলাহ আ হম হুনকা সভ
বেব মাবি ভ জাগত অছী মিলনৈবক লেল পানি কত
জেনা –তেনা দুর্গাজীক প্রতিমা ভসি জাগত অছী ।
আ হমবা লাগল মামাজীকেঁ হমব এহি গপ্প পব মোন
নহি মানি বহল ছলি আ অন্তমে কহৈত ছথি ছোট্ ওা
কোনা ভ সকৈত ছৈক কাবণ গামক অর্থ গামক গীত,
প্রীত আ বীতি হোগত ছৈক । কি সভটা বিনা গেল
গামসঁ । আ হম কি কহি সকৈত ছলযন্হি জে মামাজী
আব নহি তঁ গামক গীত , প্রীতি আ বীতি সভটা অহাঁক
স্বনাওল গামক খিস্সা জেকাঁ ওহো সভ আব একটা
অতীতক খিস্সা ভ গেল ছৈক । নহি হাগ্র ছৈক আ
নহি ভোবক পবাতী ।
অন্ত মে পাঠক লোকনি ওা মাত্র হমব মামাজী ক স্বপ্নক
গামক খিস্সা নহি , ওা প্রত্যেক মিথিলাক গামক খিস্সা
ছী । কি হম অসন্ কহি বহল ছী কাবণ সভ গোটাকেঁ

গাম হমরে জেকাঁ ভেটৈত। হমর মামাজীক গাম আরঁ নহি ভেটৈত । কিযাক ? ই একটা সোচনীয প্রশ্ন অছি ।

তীন তিরহুতিযা তেরহ পাক

মিথিলা আ মৈথিলী ভাষাক রাঁরাঁ রিশ্বনাথক নগর কাশীসঁ পৌরাণিক সংরঁধ রহল অছি। মিথিলাক লোক মোক্ষ প্রাপ্তিক কামনাক লেল কাশী রাসক রঁড্ড রেঁশী মহত্ব দৈত ছলাহ তঁ দোসর দিশি এহিঠামক লোকক উঁচ শিক্ষাক আকর্ষণক কেন্দ্র ছল কাশী। এহি তরহেঁ সোচল জাএ সকৈত অছি জে মৈথিলী ভাষাক আধুনিক কালকের রিকাস এহীঠাম প্রারম্ভ ভএ মৈথিলী ভাষাক আধুনিকীকরণক নিওঁ পড়ল হোএত। ই তঁ সর্ররিদিত অছি জে মৈথিলীক লেল আন্দোলনক প্রারম্ভ আ আন্দোলনকেঁ মিথিলাক লোকসঁ জোড়রাঁক রণনীতি কাশীঅহিসঁ প্রারম্ভ ভেল । ক্ষদা, হেমেনিমে দেখরাঁমে আরি রহল অছি জে কাশী মিথিলাক লোক-ভারনাসঁ তঁ নিশ্চিত রূপেঁ জুড়ল অছি, পরঞ্চ লোকসঁ নহি । মিথিলাক লোক আগ উঁচ শিক্ষাক হেতু জতএ আন-আন ঠাম জাগত ছথি তঁ তীর্থ কররাঁক লেল সেহো কাশী সঁ রেঁশী দক্ষিণ রা উঁত্তর দিশি। কহল জাগত ছৈক জে সামাজিক-ধার্মিক রা অন্য ভারনা লোককেঁ কোনো স্থান সঁ জোড়ৈত অছি। আগ কাশীক প্রতি মিথিলাক লোকক ভারনামে হ্রাস আযল অছি। কাশী, জে কহিও সভ মিথিলারাঁসীক হৃদযমে রাঁস করৈত ছল, আগ রঁহুতো দূর চলি গেল অছি।

হেমেনিমে হম কাশী হিন্দূ রিশ্বরিদ্যালযমে একটা কার্যশালামে গেল রহী, লগভগ পন্দ্রহ দিন ওতয রহলহুঁ,

ক্ষদা হমবা ও কাশী নহি ভেটৈন, জতএ কহিযো মিথিলাক নেন জাগবণ কযন গেন ছন। বঁহ্তো প্রযাস কএনাক বাঁদো নহি তঁ কেও জাগবণক চর্চা কযনিহাব খা নহি কেও জাগবণ কযনিহাবক। নাগন জেনা হ্নকাসভকেঁ এহি প্রকাবক কোনো জাগবণক জ্ঞানো নহি ছনি। কাবণ কার্যশানামধ্য জখন হম চর্চ কএন জে কহিযো মৈথিনী ভাষাক পঢ়া াগ এহি রিশ্বরিদ্যানয মে হোগত ছন, তঁ সে স্বনি ওতয উঁপস্থিত মৈথিন খা খমৈথিন খকচকা গেনাহ। খত্যন্ত দ্:খ ভেন ঙা সোচি জে হমসভ কতবাঁ স্বস্ত ভএ গেনহুঁ খছি খপন মাতৃভাষাক প্রতিএঁ। এক দিশি খান ভাষাভাষী গর্ভমে ন্বকাএন খপন গতিহাস বঁহাব কববাঁমে ব্যস্ত ছথি খা হমসভ খপন গতিহাসকেঁ রিসববাঁমে। মোন পড়ৈন জে কহিযো হমব সভক বুঁদ্ধিজীবী বর্গ্ব খপন ভাষা খা মাটিকেঁ সম্মান দেবাঁক নেন নড়ৈত ছনাহ, ক্ষদা খাজুক বুঁদ্ধিজীবী বর্গ্ব বঁস্বনিঐ ধাবকেব প্রগ্রত্তিসঁ খাবঁদ্ধ ভএ খপন মাটি খা ভাষাক চিন্তন ছোড়ি চুকন ছথি। কহবাঁক খভিপ্রায জে কতেকো সংঘর্ষ সঁ হমব-খহাঁক পূর্বজনোকনি মৈথিনীকেঁ খখিন ভাবতীয সাহিত্যিক মংচ সঁ জোড়ননি। হ্নকাসভক সোচ ছন জে মৈথিনীকেঁ রিস্তৃত পবিরেশ প্রাপ্ত হোএতৈক, জাহিসঁ সাহিত্যিক সমৃদ্ধি হোএত। ক্ষদা, খত্যন্ত কষ্টক খনুভূতি হোগছ, জখন খাজুক কর্ণধাবনোকনিকেঁ 'স্ব'কেব ফেবমে পড়ন দেখৈত ছী। কিছু এহনে সোচনীয স্থিতিমে খপন উঁদ্বেগ জখন একটা মিত্র নগ বাখন তঁ হ্নক কহব ছন জে ঙা তঁ খদৌসঁ হোগত খারি বহন খছি। হমসভ খপনেঁ জাঁঘ পব ক্ষবহবি চনএবাঁমে বঁড় খাগূ ছী, ভনে কিছু কানক হেতু কিছু স্বরিধা প্রাপ্ত ভএ জাএ। হ্নক কহব ছন

জে অহাঁক চিন্তা সাহিত্য অকাদমী পুরস্কারক স্থিতি দেখি ভএ রহল অছি, ক্ষদা ও তঁ রহতো দিনসঁ হোগত আবি রহল অছি। পুরস্কার প্রাপ্ত করবাঁক হেত্তু গুটবাঁজী করএ পড়ৈত, নহি তঁ চকোর রনি ওসক বুন্নকের আশামে জীরন ব্যতীত ভএ জাএত। মৈথিলী মে আও ধরি জতেক অকাদমী পুরস্কার ভেটৈল অছি, ওকর জঁ উচিত মূল্যাংকন কযল জায তঁ দেখব জে রেশীতর মাত্র গুটক প্রসংশক রা হুনক দযা পাত্রহি পুরস্কারসঁ সিংচিত ভেলাহ অছি, এহি হেত্তু চাহে কেহনো সাহিত্যকার রা সাহিত্য হোথু, হুনক রনিদান দেল গেল। ওহি মিত্রক একটা আর রাত রহত দুখদাযী ছল জে মৈথিলীক জাহি পুস্তককেঁ সাহিত্য অকাদমী পুরস্কার ভেটৈল অছি, ওহি মে কিছু লেখকক পুস্তককেঁ ছোড়ি বাঁকী পুস্তকক অনুরাদ জখন দোসর ভাষামে কযল জাযত তঁ দোসর ভাষা-ভাষী গএহ সোচতাহ জে মৈথিলী মে অখনি লেখন আরম্ভ ভেল অছি, কিএক তঁ ও পুস্তক রচনাকারক প্রারম্ভিকে চরণক হোগত ছনি। হুনক ও সমালোচনা স্বনি হমরা ভেল জে যদি ও ভারনা সহ তঁ কি মৈথিলী অপন পরিরেশকেঁ রঁচৈ। নহি সকত? সঙহি সোচনীয রিষয গহো জে এহি ভাষাক প্রতিভা গুটবাঁজীক ফেবাসঁ উবরবাঁক হেত্তু দোসর ভাষাক দিস আগ্রহ নহি ভএ জাথি। হমরা জনৈত একব একমাত্র উপায অছি জে মাঁ মৈথিলী এহি তথাকথিত মঠাধীশলোকনিকেঁ সদ্বুদ্ধি দেথুন জে ও সভ অপন ব্যারহারিক পক্ষমে পারদর্শিতা আনথি, পহিলেঁ মাঁ মৈথিলীক হিত দেখথু, তখন অপন। ওনা মৈথিলক হেত্তু তঁ কহলে গেল অছি জে 'তীন তিরহুতিযা তেরহ পাক', জকরা সাহিত্য অকাদমী পুরস্কারক চযন সমিতিক সদস্যলোকনিক মধ্য চরিতার্থ হোগত দেখি এতরাঁ

সোচবাঁক হেতু বাঁধ্য কএলক।
কাশী মে ঘুমবাঁক সময জে মৈথিল ভেটৈত ছলাহ আ জখনি হুনকা লোকনিসঁ মৈথিলী মে গপ্প কবৈত ছলহুঁ তঁ একটা অলগ আনন্দ ভেটৈত ছল(ও মৈথিল মাত্র বুদ্ধিজীবিএ নহি অপিতু সাধাবণ মজদূব বক্সাক সেহো হোগত ছলাহ), ওতেক আনন্দ জে গংগা আ বিশ্বনাথ দর্শন সঁ নহি ভেটৈত ছল। এহীক্রমমে মকব সংক্রান্তি দিন অস্সী ঘাট পব বিকশা চালক পাসবান জীক গপ্প মোন পড়ৈত অছি, জনিক উক্তি ছল জে হমব ভাষা মৈথিলী বড় মীঠ ছৈক, মজবূবী আ পেটক কাবণেঁ মৈথিলী ছোড়ি দোসব ভাষা বজৈত ছী। হুনক এহন উক্তি সুনি হম পুন: সোচবাঁক হেতু বাঁধ্য ভেলহুঁ জে জঁ এহিনা পঢ়ল-লিখল ব্যক্তিও সোচথি, তঁ যাঁ মৈথিলীক কেহন দিন হোএতনি ? অন্ত মে আদবণীয সাকেতানন্দজীক আকস্মিক দেহাবসান বড় কষ্টপ্রদ, কাশীমে হুনকা অবসানক মাদে চর্চা কবৈত ডা. অজয মিশ্র কহলন্হি জে একটা সহজ লোক চলি গেলাহ মৈথিলী সংসাবসঁ। ঠীকে, বাজশী ঠাঠ-বাঁট ছোড়ি আমজনক জীবন ব্যতীত কবৈত সাকেতানন্দজীক সৌম্য মুখমংডল আগাঁ নাচি উঠল। মুদা, ওা তঁ ঈশ্ববেচ্ছা। হুনকহি হাথ সদ্গতি, সদ্বুদ্ধি আ সম্ভাবনা, প্রার্থনা জে মৈথিলীক তথাকথিত ভাগ্যনির্মাতালোকনিকেঁ মুক্ত হাথেঁ বাঁটথু সদ্বুদ্ধি।

সমযনাঙা সনাম আ ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষিক অভিমত

নেপালীয মৈথিলী সাহিত্যক একটা সশক্ত কড়ী ক নাম থিক ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষি। ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষিক বচনাক রিশেষতা ছনি মিথিলাক সংগ জীযর। মৈথিলীমে ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষি 'কোন স্বব সজারী' লিখলন্হি , আ নেপালীমে সমযনাঙা সনাম। দ্নূ ঠাম মিথিলা অছি। দ্নূ ঠাম মিথিলাক চিন্তা অছি। হ্নক গজল সংগ্রহ ' সমযনাঙা সনাম' ক পবিপেক্ষ্যমে নেপালক বাষ্ট্রে কবি ' মাধর ধিমিরে ' কহৈত ছথি জে ' প্রেমর্ষিকো মাতৃভাষা মৈথিলী হো। উঁনী মৈথিলীমা গীত পনি লেখ্ছন্ ব মৈথিলীমা সপনা পনি দেখ্ছন্। নেপালী ভাষামা সপনা দেখ্ছন্, উঁনৈ জান্দন, তব গীত চাহিঁ নেপালীমা ব্যড় ্গ্য করিতা লেখন ব রাচনারাঁটৈ নেপালী পাঠক সাঙ্ম পবিচিত ভএকা ধীবেন্দ্র বাম্রা উঙ্কাশী গর্নে ব্যাঁ তর পনি হ্ন্। " ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষিক ভাষিক পবিপেক্ষ্যমে কহৈত ছথি– " গজল

সঙ্গ্রহকো মহত্ত্বপূর্ণ পক্ষ হো– ভাষিক সংযোজন, নেপালী ব মৈথিনী ভাষাকা ঠেঁৎ ষঙ্কহৰুকো সংযোজন থতি বাম্রাসংগ থতি বাম্রাসংগ ভএকো ছ; জ্ন মহত্ত্বপূর্ণ পক্ষ হো

" মাটৈমো নৈ মন্দিব দেখ্নে ' চনিত্তব ' নে পনি থরঁ
রঁনি দিনে ' গহরঁব' মা বে , সাঢেসোতী কটৈপছি "

হমব প্রসংগক রীচ ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষীক চর্চ কবরাঁক পাছূ কিছু খভিপ্রায খছি জতহ ভাবতীয যরা সাহিত্কাব (ও নোকনি জে থপনাকেঁ হিন্দীক সাহিত্কাব বুঁঝৈত ছথি) নোকনি কতহ্ মৈথিনীকেঁ মান নৈ দহ পরৈঁত ছথি, মাত্র মৈথিনীকেঁ ক্ষীণ কবরঁ হ্নক মঁশা বহৈত খছি। পূছয চাহৈত ছী জে ওা মানসিকতা কিএক ? এক্কে ভাষাক নোক খা ওা ভিন্নতা কিএক ? খা খন্তমে করি ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষীক গজনক ওা পাঁতি হমবা মোন পড় ৈত খছি–

" জোব জ্ন্বমসং জে নে ঝ্কএ সে ভানে নগএ পিখবগব যৌ
গন্দ্রধন্বষী এহি দ্নিযামে নানে নগএ পিখবগব যৌ"

যাত্রীক প্রসংগ

এ সাল যাত্রীক জন্মশতী বর্ষ অছি সদা মিথিলা আ মৈথিলীক কতেক লোক হুনকা মোন পাড়ি রহল ছথি জে নৈ কহি। কারণ যাত্রীক জন্মদিন মনেবাক অর্থ এ নৈ অছি জে হমরা লোকনি হুনকা নামপর সমারোহ কেনহুঁ কি নৈ (ওনা সমারোহক আযোজন করব বিশেষতঃ অপন স্বার্থ বহৈত অছি)। যাত্রীক বিচার কতেক জীবিত রখনে ছথি হমরা লোকনি , কারণ মৈথিলী সাহিত্যক স্থিতি এ অছি জে বিসবর আ খিধাঁস করব মাত্র হমরা লোকনিক কর্তব্য ছথি, তকরপর বিচারব আবশ্যক। আশীষ অনচিন্হার , জে হমরা জনৈত যাত্রীকেঁ বুঝবাক চেষ্টা নৈ কএনে হেতাহ যাত্রীক ঊপর অংগ্রজী উঠবএ লগৈত ছথি। হমরা তঁ আশ্চর্য লগৈত অছি জে হম সভ আখির প্রবখাকেঁ সম্মান নৈ দঃ সকৈত ছিযনি তঁ কমসঁ কম অপমান তঁ নৈ করক চাহী। যাত্রীক সাহিত্য আ

হ্নক মৈথিলী সেরাক মূল্যাংকন কবর়াঁক সংগ ,পহিলেঁ ওা সোচি নী জে যাত্রী মিথিলা আ মৈথিলক লেল কী দেলন্হি। রিগ্ধতিতা আ সংকীর্ণতাসঁ ভবল মিথিলামে সেহো যাত্রীক জন্ম ভ২ সকৈত ছল। ঐ সৌভাগ্যপব সোচূ। কাবণ যাত্রী সন ব্যক্তিক জন্ম রেঁব-রেঁব নৈ হোগত অছি।

অন্ততঃ , কহর়াঁক - সোচর়াঁক তাপের্য ওা জে হম সভ কতএ জা বহল ছী, কী হমবা সভক মাক্সা উঁচিত অছি, এহিনা কিছু রিন্দ্পব পহিলে সোচী আ তখনহি অপন ক্ষঁহ খোলী। কহলো গেল ছৈক জে - 'গএহ ক্ষঁহ পান খ্আর়এ আ গএহ....... ' তেঁ মত বখর়াঁসঁ পূর্ব পূর্ণ সোচি-রিচাবি নী আ তখনে মত নদর়াঁক প্রযাস কবী। অহীমে নিহিত অছি অপন, সমাজক আ সাহিত্যক হিত।

হিন্দীক দৃষ্টি আ মৈথিলী ভাষা

ভাবত আ নেপাল দূনূ ঠাম আগ কান্হি জনগণনা ভ২ বহল ছৈক জগ মধ্য ভাষাক সেহো গণনা হএত । জগসঁ জ্ঞাত হএত জে কোন ভাষাক কতেক ভাষা-ভাষী অছি । আ ঐ সময়মে হিন্দী ভাবতক বাষ্ট্রভাষা অছি ওনা সহ ওা অছি জে ও অখনি ধবি অপন সমাংগ র়চের়াঁক লেল কহি বহল অছি কাবণ ভাবতমে জে কোনো কাজ হোগত অছি ও অংগ্রেজীমে। কাবণ সম্পূর্ণ ভাবতক সম্পর্ক ভাষাক আধাব হিন্দী নৈ অছি ওকব আধাব অংগ্রেজী অছি । ভাবতমে কহল জাগত ছৈক জে অংগ্রেজীক প্রভুত্বক কাবণ হিন্দী পছআএল অছি ক্ষদা সে সহ নৈ থিক । হিন্দী ভাষাক প্রতি জে লোকক মানসিকতা অছি ও যদি হিন্দী স্বীকাব কবৈত অছি তঁ

ওকব খপন মাতৃভাষাক খস্তিত্ব সমাপ্ত ভ সকৈত খছি। কাবণ মৈথিলী ভাষা ওকব প্রতিফল ভোগি বহল খছি। হম কহি বহল ছলহুঁ জনগণনাক রিষযমে। ঐ জনগণনামে হিন্দী প্বনঃ মৈথিলীক খস্তিত্ব সমাপ্ত কবরাঁক লেল খপন বাজনীতি খেল চলি বহল খছি জেকব প্রশ্রয হমব সভক নেতা লোকনি দঃ বহল ছথি।

ঐঠাম মৈথিলীক প্রতি হিন্দীক দৃষ্ঠিক মাদে নেপালক পত্রকাব খা সাহিত্যকাব খভি স্বরেদী খপন খালেখ ' সময বেখাঃ রিদ্যাপতি , প্রেমর্ষি ব হ্সৈন' মধ্য লিখলে ছথি– মৈথিলী ভাষালে মিথিলামা হিন্দী ভাষারাঁঠ খেপ্পপবেকো যাতনাকো কথা নামো ছ । জনমত ভএকো রেঁলা খংগ্রেজ ব পছি ভাবতকো কংগ্রেস সবকাবলে মৈথিলী ভাষীলাঙ হিন্দীভাষী হুঁ ভলেব পবিচয দিলে প্রচাব খাদেশ খলি খব্ধ কথাহব্ধ স্ব. বিচর্ড রঁগার্ঠি ভন্নে রিবর্টিস ব এক মিত্রকো গম্ভীব খধ্যযনমা হামী বাম্রবী পঠন পাউঁছৌঁ । নেপালী ভাষাকো কাবণলে ব খহিলে খাএব ফেবি বাজনীতিমা হিন্দী রৌল্ল নজালে পনি হিন্দীলাঙ বাজনীতিক খাধাব মালেব প্রচাব গবিহিঁড্লে নেতাহব্ধকা খাঁখামা মৈথিলী ভাষা ওম্নেলমা পর্লে ডব সির্জনা ভএকো ছ ।'

ঐ উক্তি সঁ ঙ নিশ্চিত ভঃ জাগত খছি জে হিন্দীকেঁ খপন খস্তিত্ব বক্ষামে সভসঁ রেঁশী ডব মৈথিলীসঁ ছৈক তঁএ তঁ ওকব ভাষাশাস্ত্রী খা সাহিত্যক খালোচক লোকলি মৈথিলীকেঁ খপন রৌলী কহি কহি মৈথিলীকেঁ দবঁএরাঁক চেষ্ঠা কবৈত ছথি । কাবণ হিন্দী খপন রৌলীক সংখ্যা রঁঠা চঠাকেঁ প্রস্তুত কএলে খছি জগসঁ লগৈত খছি জে হিন্দী কতেক কমজোব খছি। হম ভাবতক ভাষা

রিষযক একগোষ্ঠি সংস্থামে কাজ করৈত ছী খা ওতহি ঐ ম্দ্দাপব চর্চা হোগত ছৈক জে হিন্দী কেকব মাতৃভাষা ছী , হিন্দী কতহ ম্খ্যতযা রাঁজন জাগত খছি। কিযো উঁত্তব নৈ দহ পরৈত ছথি কাবণ জে হিন্দী ক্ষেত্র কহি বহন ছথি ওগঠামক ভাষা হিন্দী নৈ খছি। হ্নক মাতৃভাষা দোসব থিক হঁ হিন্দী ভাবতীয বাজনীতিসঁ জ্ড়ন হোএরাঁক কাবণ সম্পর্ক ভাষা থিক । তখন তঁ একব খর্থ ভেন জে হিন্দীক নিজ সাহিত্ জেকব রঁনেঁ ও খপনাকেঁ প্রাচীন কহেরাঁক চেষ্ঠা করৈত খছি ও সত্ নৈ থিক । হিন্দী খাগ খপন খস্তিত্বক নেন জে সাম্রাজ্যরাদী মানসিকতা পোসনে খছি ও ওকবা নেন নীক নৈ ছৈক । তঁএ হম মিথিনাক নোককেঁ হিন্দীক পষ্টীক নোক নৈ কহী। ওগ নেন ভাবত খা নেপানক দুনূ মিথিনাক নোককেঁ একটা ভাষা খান্দাননক খারশ্যকতা ছৈক কিএক তঁ জারত ধবি হিন্দীক পাঁজসঁ হমব ভাষা, হমব নোকরেদ খা হমব সাহিত্কাব নৈ ম্ঙ হেতাহ তারত ধবি হম এহিনা হিন্দীক মাঁঝমে দরাঁএন বহরঁ ।

রৈশ্বিক সোচ ?

কী, মৈথিনী সাহিত্মে খাগ কান্হি একটা নর সংস্কাব রৈশ্বিক সোচ দেখরাঁমে খারি বহন খছি ? প্রাযঃ তকবহি সিদ্ধ কবরাঁক নেন হরা বচনাকাব ধবি খপন ভাষিক মর্যাদাকেঁ তোড়ি বহন ছথি। সভসঁ রঁৈসী দুখদ পক্ষ খছি জাতিরাদক নাবা। হমবা সভকেঁ জ্ঞাত খছি জে ভাবতীয বাজনীতিমে এহন নাবা বামমনোহব নোহিযাক দেন থিক, খাস কহ উঁত্তব ভাবতমে। ঠীক

এহনে সন বাবা মৈথিলী সাহিত্যমে তারানংদ বিযোগী লগাওল প্রারম্ভ কএলনি অছি। এতয হুনক নাম উদ্ধৃত করবাক প্রযোজন এহি কারণেঁ ভেল জে ও অপনাকেঁ ' লল মৈথিল' কহৈত ছথি। সে কোন আধার পর ? হমর একটা মিত্র ছথি মণিপ্রবক, জে নেপালী ভাষী ছথি মুদা অপনাকেঁ মণিপ্রবী কহাওল পসিন্ন করৈত ছথি। ও জখন বিযোগীজীক উক্ত অংশ পঢ়লনি তঁ হমরাসঁ পূছি বৈসলাহ জে- অহুঁল যো লেখক মিথিলাকো হো, হম কহলিযনি- হো! ও ঈ বুঝি হঁসয লগলাহ। হমরা বড্ড খরাব লাগল। মুদা মোনে মোন সোচলহুঁ জে ঈ নব পংডিত ছথি, আধুনিক সমযক নব ব্রাহ্মণ, নব সামংত। এহন ব্রাহ্মণমে অবসরবাদিতা চরম পর দেখল জা সকৈত অছি আ ও সভ কখনো একর লাভ লেবাঁসঁ চুকএ নৈ চাহৈত ছথি, ওহি লেল জতেক নীচাঁ তক জাএ পড়নি। তেঁ এহন চরিত্রবলা সাহিত্যকার সভসঁ মিথিলাক বিষযমে এহিসঁ নীক সোচব অকল্পনীয হোএত, ঠীক তহিনা জেনা একটা অংগ্রেজ ভারতক বিষযমে সোচৈছ। হমরা জনৈত বিযোগীজীকেঁ ঈ বূঝল ছনি জে যদি ও ঈ বাত মৈথিল সমাজক বিষযমে কহথি জে হম সভ মৈথিল নহি ছী (জাতিবাদক সহারা বিনা লেনে) তঁ হমরা বিশ্বাস অছি হুনকা বড্ড ফজ্জতি হেতনি। তেঁ জাতিবাদক ঢালপর অপনাকেঁ মিথিলাসঁ দূর দেখএবাক প্রযাস করৈত ছথি। ঠীক,এহিনা মর্যাদা তোড়ৈত দেখাইত ছথি কিছু নবতুরিযা সেহো, জিনকা নৈ তঁ মৈথিলী সাহিত্যক গম্ভীর অধ্যযন ছনি আ নহিযে সাহিত্যিক মর্যাদা বূঝল ছনি। কারণ ঈ হরা লোকনি সাহিত্যিক আ মিথিলাক চিংতনসঁ বেসী আরোপ আ প্রত্যারোপমে সময আ শক্তি বর্বাদ করৈত ছথি। জেনা আশীষ অনচিন্হার অপন বিকীলীক্সক

খ্নাসামে শৰ্দ্ধ সভক জে প্রযোগ কএনে ছথি জে হ্নক সাহিল্যিক খন্বভরহীনতাকেঁ দেখরৈত খছি। হ্নক খাগ্রাশি সহ ও উঁচিত ভ২ সকৈত খছি হ্মদা ওহনো স্থিতিমে শৰ্দ্ধক প্রযোগক একটা সীমা ছৈক, জকবা নাঁঘরঁ শিষ্ঠ সমাজক নেন উঁচিত নৈ। বহ্তো টিপ্পণী পঢ়রাঁক গ্রমমে সেহো কিছু টিপ্পণী পঢ়ন, নাগন জেনা ওা নোকনি মাত্র মৈথিনী সাহিল্যক তথাকথিত দ্রঁন পক্ষ পব টিপ্পণী ক২ সকৈত ছথি, খাব কিছু নৈ। ওনা হ্নকা নোকনিক টিপ্পণীসঁ মৈথিনী সাহিল্যকেঁ কোনো প্রভার নৈ পড়তৈক সে হ্নকা বুঁঝক চাহী। কাবণ কিছু ব্যক্তিক হো-হন্নাসঁ সার্থক কাজ রুকি নৈ সকৈছ। ও সভ একটা বস্তু খা ব্যক্তি ধবি মৈথিনী সাহিল্যকেঁ বাখয চাহিত ছথি, জে হ্নক সংকীর্ণতাক পবিচয দৈছ। যদি হ্নকা নোকনিসঁ সার্থক কাজক রিষযমে প্বছন জাএত তঁ কহতাহ মৈথিনীমে পাঠক নৈ খছি। তঁএ ওা বিস্ক নেরঁ নিবর্থক। ও নোকনি মাত্র মৈথিনী সাহিল্যক খিধাঁস কবতাহ, মৈথিনী সাহিল্যক সেরা নৈ। সে কিএক ?

ঐ বীচ মৈথিনী সাহিল্যকে নেন কিছু সার্থক প্রসংগ সেহো দৃষ্ঠিগোচব ভেন খছি। সে খিক রিনক্ষণ দূ টা পোথীক প্রকাশিন। দুনূ পোথী খপন বাঁত বখরাঁমে সফন ভেন খছি। জীরকান্তক খামেকথ্যামো পোথী নৈ মাত্র গাম খা খেতীক মহত্বকেঁ জগজিযাব কবৈছ, খপিতু খপন গাম খা ধবতীক প্রতি খন্বাগ সেহো উঁপেন্ন কবৈত খছি। জীরকান্তক নেখনীক খপন রিশেষতা ছনি জগ কাবর্ণে হ্নক নেখন সদৈর একটা নর ভার দৈত খাএন খছি। এহিনা ডাঁ০ বীণা ঠাকুবক পহিন উঁপন্যাস ‘ ভাবতী’ মিথিনাক নাবীক চেতনাক কথা তখন কহৈত খছি জখন কি সম্পূর্ণ ভাবতরর্ষমে নাবী চেতনাক

বিষযমে সোচনো নৈ জা বহল ছল। ওগ সমযমে ও সম্পূর্ণ ভাবত বর্ষক বিষযমে সোচি বহল ছলীহ। উঁপন্যাসক কথা বস্তু নাবী চেতনা ধবি সীমিত নৈ বহি বাষ্ট্রীয জাগবণসঁ ভবন অছি। অতিশযোক্তি নৈ হএত জে বর্তমান মিথিলা আ ভাবত বর্ষক পবিস্থিতিকেঁ ঞা উঁপন্যাস পূর্ণ সার্থক আভাস দৈত অছি।

হমব একটা নেপালী ভাষী কবি মিত্র, জে দার্জিলিংগক থিকাহ, দেশ, ভাষা, সমাজ আ সাহিত্যব চর্চাকি ক্রমমে বঁহ্ত দুখী হোগত কহৈত ছথি জে আদমী–আদমীক বীচ এক দোসবাক প্রতি ঘৃণাক ভাবনাক জন্ম কিএক ভঃ বহল অছি আ ও ঐপব ঘঁটৈ অপন অভিমত দৈত বহৈত ছথি, আ হমছুঁ সভ হ্নক ঐ চিন্তাপব সহমত হোগত বহৈত ছী। ঞা উঁদ্ধবণ দেবাঁক পাছাঁ হমব ঞা অভিপ্রায অছি জে হমবা সভকেঁ জতেক সভ্য হোএবাঁক চাহী ওগসঁ বেঁশী হমবা লোকনি অসভ্য ভঃ বহল ছী আখিব কিএক ? কী, একব পাছাঁ বিশ্ব–মঁচ প্রাপ্ত কববাঁক সপনা অছি ? এহল সপনা তঁ সভকেঁ হোএবাঁক চাহী, মুদা সভ্যতা–সংস্কৃতিক বঁলপব কতেক ধবি উঁচিত ? লিখবাঁ–পঢ়বাঁক ক্রমমে সভসঁ আগাঁ অপন সভ্যতা–সংস্কৃতিকেঁ বাথবঁ বঁড় আবশ্যক ও উঁচিত সেহো।

…………………………………………………………………………………

(অত্তলেশ্ববজী, তাবানন্দ জীক জাতিবাদ দোসবে তবহক ছন্হি– ও লিখৈ ছথি– "এতএ তঁ মৈথিলীক দুর্বল কাযা পব কূডা–কচডাক পহাড ঠাঢ কববাঁক স্বনিযোজিত অভিযান চলি বহল ছৈ। একব সহাগ লেল মেহতবক হৌজ চাহী। ঠীকে তঁ ছৈ। পহিলে কহল জায জে মৈথিলী ব্রাহ্মণক ভাষা ছী, আগূ কহল জাএত জে

মৈথিলী মেহেতবক ভাষা ছী।" ঐ লিংক https://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio/ পব মিথিলাক বিভিন্ন জাতিক আঁডিযো আ ঐ লিংক https://sites.google.com/a/videha.com/videha-video/ পব বীডিযো বেক◌ার্ডিগ আঁনলাগন উপলব্ধ আছি জগমে ডোম-মল্লিক (জকবা বিযোগীজী মেহেতব কহৈ ছথি আ ওকবা আ ওকব ভাষাসঁ ঘৃণা কবৈ ছথি)ক বেক◌ার্ডিগ সেহো শ্রী উমেশ মংডল জীক সৌজন্যসঁ আছি। মহেন্দ্র মলংগিযাক কাঠক লোক আ ওকব আংগনক বাঁবহমাসা জগ তবহেঁ দলিতক ভাষাক কথিত মৈথিলী (মলংগিযাজীক সৃজিত কএল)ক প্রতি ঘৃণা আ কুপ্রচাবক প্রাবম্ভ কেলক তাবানন্দ বিযোগী ওকবা আগাঁ বঢ়েলন্হি। এ আঁডিযো আ বীডিযো বেকার্ডিগ অন্তিম রূপসঁ ঐ ঘৃণা আ কুপ্রচাবকেঁ খতম কহ দেলে আছি আ বিশ্ব এ সুনি আ দেখ বহল আছি জে জাতিগত আধাবপব মৈথিলী কোনো তবহেঁ ভিন্ন নৈ আছি। বিযোগীজী অপন উর্জা ঘৃণামেক দিশামে লগবৈ ছথি আ তকব কাবণ আছি হুনক দৃষ্টি আ আগডিযোলোজীক কবিষ্ছ নৈ হএব আ তেঁ দোসবাক সমালোচনা ও বর্দাস্তি নৈ কহ সকৈ ছথি। বিদেহক সম্পাদকীযপব হুনকব ও টিপ্পণী আএল ছল জকব জবাব ও অবিনাশ (আব অবিনাশ দাস)ক ফেসবুক ব◌ালপব দেলে বহথিন্হ। একব উত্তব পাঠক সভ দেলে বহথিন্হ জে এতএ নীচাঁমে , হমব টিপ্পণীক বাঁদ) বিনা কাট-ছাটকৈ দেল জা বহল আছি। ওহী সম্পাদকীযক বেস্প◌াসমে গংগেশ গুংজন জী লিখলে বহথি জে হবা সুভাষ চন্দ্রক এ গপ জে "গংগেশ গুংজন পাঁচ সাল পহিলে কমানী আঁডীটৈবিযমে

कहलने बहथि जे ओ हिन्दीमे लिखै छथि तदा मैथिलीक़ेँना सभ हुनका प्रबस्कृत कऽ देनकन्हि" सत नै अछि, ओ कहलन्हि जे ओ ञ नै क़ाँजल छथि, स्वभाष चन्द्र एकब उँत्तव नै देनथि से ग्रंजन जीक गप मानल जाएत। ड़ॉ. धनाकव ठाकुव सेहो साहित्य अकादेमीपब आँग्रव उँठेक़ाँसँ दुखी बहथि आ विदेहक सह-सम्पादक श्री उँमेश मण्डल जी केँ कएकटा मेल पठेनन्हि। ओ जगदीश प्रसाद मण्डल आ उँमेश मण्डलक असली मानकीकृत भाषाक पक्षमे नै छथि, भाषा विज्ञानपव जखन उँमेश मंडल वृँहसक प्रावम्भ केनन्हि तँ ओ अपनाकेँ ड़ॉक्टँव वृँना नेनन्हि आ वृँहसमे भाग नै नेनन्हि। मेनक अतिविज्ञ हजावीक़ाँगक "सगव वाति दीप जवय"मे ओ आ वृँनुतो गोटे कहैत स्वनन गेनाह- एना नै लिखू, अशोक-श्रीनिवास आदि सन लिखू, पहिने पढ़ू तखन ओहिने लिखू (ञ मानि कऽ ओ सभ चनै छथि जे ओ सभ विनि पढ़ने लिखै छथि!)। वृँनीप्रवीक "अम्रॉपानी" नाटक हिन्दीमे छै, एन.सी.ञ.आव.टी. ओकवा स्कूलक पाठ्यक्रममे नगेनक तदा सम्पादक कहनन्हि जे "क्रिया 'है' क अनुपस्थिति" जेना "वह जा वहा", वृँनीप्रवीपव स्थानीय क्षेत्रक प्रभावक पविणाम अछि आ तेँ सम्पादक मण्डल ओकव ऐतिहासिकताकेँ देखैत स्कूली पाठ्यक्रममे वहनाक क़ाँदो ओकवा सम्पादित नै कऽ वहल अछि। तदा जखन उँमेश मण्डल/ जगदीश प्रसाद मण्डल/ वाम विलास साहु लिखै छथि ओ जाएत, ओ आएत, तँ "सगव वाति"मे भाषा-विज्ञानसँ अनभिज्ञ विशेषज्ञ सभ किछु एहेन सनाह दऽ दै छथि जे मैथिलीक मूल विशेषता गौण पड़ि जाए, मैथिलीसँ प्रभावित वृँनीप्रवीक हिन्दी, एन.सी.ञ.आव.टी.क सम्पादकसँ मैथिलीक

নামপব ৰঁচি জাগত খছি, হ্মদা মৌথিনীমে পসবন জাতিৰাদ ওকবা নৈ ছোড়ৰাঁপব ৰিৰ্ত খছি। সে জাতিৰাদী মানসিকতা সী.খাগ.খাগ.এন.ক খন্বৰাদ মিশনক পবিণামকেঁ সেহো ভযংকব ৰূপেঁ প্রভাৰিত কবত, কাবণ ওগমে ছদ্ম মানকীকবণক খাধাবপব খন্বৰাদ কার্যশানা খাযোজিত ভ২ বহন খছি। মৌথিনীক তথাকথিত স্থাপিত/ প্রবস্কৃত সাহিত্যকাব যাৰত খসন মানকীকবণকেঁ নৈ পকড়তাহ, হ্নকব খস্তিত্ব উঁপবোক্ত বাক্ষসী প্রতিভা (ৰিষয-ৰস্তু খা ভাষা দূনূ দৃষ্টিকোণসঁ) সভক সোঝাঁমে মনিছৌনে বহত।

১.জাতিৰাদী মানসিকতা মানে জে কেনক সে হমব খান্বৰংশিক জাতি কেনক, সে ককবোমে ভ২ সকৈএ।

ছদ্ম মানকীকবণ: একটা খাস জাতিৰাদী স্কূনক ৰিচাবকেঁ প্রশ্রয দেনাক পবিণাম, জে একাধ কিতাবঁ সী.খাগ.খাগ.এন. মৌথিনীমে নিকাননক খছি খা জগ তবহেঁ ওকব মানকীকবণ প্রাজেক্ট সানক সানসঁ ৰিনা পবিণামক চনি বহন ছৈ।

খসন মানকীকবণ: মিথিনাক সভ ক্ষেত্রক সভ জাতিক ৰাঁজন জাএৰঁনা মৌথিনীক খাধাবপব গহন ৰিচাব ৰিমর্শসঁ ৰঁনাওন মানকীহৃত মৌথিনী। একব ৰাঁনগী ঐ নিংক https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/ পব দেন ৰেঁচন ঠাকুব/ জগদীশ প্রসাদ মন্ডন খাদিক বচনামে ভেটৈত। ফীনডবর্ক ঐ নিংক

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio/ পব দেন -মিথিনাক সভ জাতি খা ধর্মক সংস্কাব, নোকগীত খা ব্যবহাব গীত (সৌজন্য: উঁমেশ মংডন)- ৪৬ টা আঁডিযো ফাগনমে ভেটৈত খা

ऐ লিংকক
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-video/
- মিথিলাক সভ জাতি আ ধর্মক সংস্কার, লোকগীত আ ব্যবহার গীত (সৌজন্য: উমেশ মংডল) - ৪৪ টা বীডিযো ফাগলমে ভেটৈত তথা ২০০০ পাঠকক বিচারপর আধারিত সারাংশ ঐ লিংকপর
http://www.videha.co.in/new_page_13.htm ভেটৈত। ঑ডিযো আ বীডিযো ফাগল মহেন্দ্র মলংগিযা দ্বারা "কাঠক লোক" আ "ওকর আংগনক ৰাবহমাসা" দ্বারা প্রচারিত শৌঙ্কল্কক কথিত (গজাদ কএল) মৈথিলীপর অন্তিম প্রহার অছি।
বাক্ষসী প্রতিভা: পূরা ব্রাহ্মণরাদী মৈথিলী সাহিত্যকারক অপঠিত দুনিযাঁ এক দিস আ জগদীশ প্রসাদ মল্ডল, বাজদের মল্ডল, বেঁচন ঠাকুবক পঠিত দুনিযাঁ দোসর দিস, জকরা ব্রাহ্মণরাদী মৈথিলী সাহিত্যকার লোকনি "বাক্ষসী প্রতিভা" সম্ভরতঃ আলোচনামেক রূপমে কহতাহ/ কহৈ ছথি হ্মদা হমরা মোনে ও হুনকা সভক হাবিক শুরুআত অছি।
২. ধনাকর জীক একটা বিচার ছলন্হি (বিচার নৈ নির্ণয ছলন্হি) জে বামনাথোক বঁদনা বামনাথহুঁ হেবাঁক চাহী! ! উমেশ মল্ডল আ ধনাকর ঠাকুবক পূর্ণ বহসে বিদেহক ৮৪ম অংকক সম্পাদকীযমে আএল অছি।

৩.বিদেহক নূতন অংকমে জগদীশ প্রসাদ মল্ডলক দীর্ঘ কথা শম্ভুদাস আএল অছি, ওকর দোসর পারা দেখল জাএ:- "জহিনা বাঁধ-বোনক ওহন পরতী জগপর কহিযো হর-কোদারি নৈ চলল স্বখি-স্বখি গাছি ছ-বিবিছ

খসি উঁসব ভ২ জাগত, ওগ পবতীপব যা তঁ চিড়ৈ– চ্নহ্মনীক মাধ্যমসঁ রা হরা–পানিক মাধ্যমসঁ খনেকখা হ্বন–হ্বড়ক গাছ জনমি বৌদ–রসাত, পানি–পাথব, খন্হেব–রিমোড়া সহি খপন জ্খানী পারি ছাতী খোনি রাঁট–রঁটৈমীকেঁ খপন মীঠ স্বখাদসঁ তৃপ্তি কবৈত তহিনা জহ্মনা নদীক তটপব শংভূদাসক জন্ম রঁটাগ–কিসান পবিরাবমে ভেননি।”
কী এতএ “জাগত” "কবৈত" ক রাঁদ খছি দেরঁ খারশ্যক ছৈক ?
৪.কিছু রিচাব টিপ্পণী: মৌথিনী সম্বন্ধী কিছু সমাচাব / ঘটনা/ প্রকাশিন পব চাবিটা রিচাব–টিপ্পণী—এ সন্দর্ভমে।
সী.খাগ.খাগ.এন.ক খনুরাদ মিশনক খাবস্তিক মেহনতি খপঠিত মৌথিনী সাহিত্যক সাহিত্যকাবক কার্যশানা খছি, ওকবা পাঠকসঁ কোনো মতনরঁ নৌ ছৈ খা নে খসন পঠিত সাহিত্যকাবক সাহিত্যসঁ। সে ওকব পবিণাম রএহ হেতৈ জে সাহিত্য খকাদেমীক ছৈ। খমবজী নিখৈ ছথি–সাহিত্য খকাদেমীক পোথী সভ গোদামমে সড়া বহন ছৈ।
– গজেন্দ্র ঠাকুব, সম্পাদক)

ভাষাক প্রতি এক নর সোচ

হেমনিমে একটা গোষ্ঠীমে গেল ছলহুঁ জাহি মধ্য এক নর বাঁত উঁড় ৗসাক একটা ভাষাবৈজ্ঞানিক কহলৈথ জে যদি হমব সভক ভাষা সভমে কোনো প্রকাবক নবঁ শৰ্ব্দ খবৈত খছি, তঁ ওকব স্বাগত হোযবাঁক চাহী। হ্নক কহবঁ ছলন্হি জে কোনো রিদেশী শৰ্ব্দ হমব ভাষাক রাক্য সংবচনা মে কোনো প্রকাবক পবিরর্তন নহি খানি সকৈত খছি। ও গপ্প ঠীক ছৈক জে রাক্য সংবচনামে এহি সঁ কোনো প্রভার নহি পড়ত, ঝদা এহিসঁ ভাষাক রিকাস হমব হোযত রা হ্নকব ? এহি ঠাম ও প্রসংগ হম এহি কাবণেঁ উঁঠাওল খছি জে মৈথিলক বঁহ্তো পত্রিকামে কথাকাবলোকনি এহি সিদ্ধান্তকেঁ খপনৌনে ছথি। হ্নকা লোকনিক কথা, জে মিথিলামে বহনিহাব লোকক কথা কহৈত খছি, ঝদা তাহুমে মৈথিলীসঁ গতব শৰ্ব্দক প্রযোগ

নিধোখ ভএ কএন জাএ রহল অছি। ওা কিএক ? উঁদাহৰণাক লেল কিছু শব্দ অছি জেনা রেঁডক্রম, কিচেন আদি। আশ্চর্যক গপ্প ওা জে জঁ হমসভ ওহন শব্দকেঁ আযাতিত করৈত ছী জে অপনা ঘরমে নহি অছি তখনি তঁ ঠীক, মুদা অপন ভণ্ডারমে রহৈত অনকা লগ হাথ পসারবা কতএ ধরি উঁচিত ? হমরা সভকেঁ বুঝল অছি জে উঁপর্যুক্ত শব্দক লেল মিথিলা আ মৈথিলীমে রহৈত সহজ শব্দ ভলসাঘর, স্বতরাঁক কোঠরী উঁপলব্ধ ছৈক। অপন শব্দক অছৈত ওা ভীখমংগনী কিএক ? এহনে স্থিতিক হেতু আদরণীয় গোরিন্দ ঝাঁরূ কহনে ছথিন জে অপন কোঠীমে ধান রহৈত পৈঁচ নের উঁচিত নহি। কী অহিনা অপন ভাষামে রাঁহরী শব্দ অনৈত রহরা আ পঙাতি কহরৈক জে ভাষাক রিকাস নহি ভ রহল অছি, ওা কতয ধরি উঁচিত ? অপন সংস্কৃতি, অপন ভাষাক ছোট সঁ ছোট রিষযকেঁ অপনাযরা হমর অহাঁক পরম কর্ত্তর্য রনৈত অছি, ভাষাক রিকাসকের মতলর ওা কিন্নহুঁ নহি থিক জে অপন রিষয-রস্তুকেঁ রহৈত দোসরক রস্তুসঁ অপন ঘর ভরি নী। তেঁ হম অপন ক্ষুদ্র বুদ্ধিযেঁ আজুক সজগ সাহিত্যকাবলোকনিসঁ আগ্রহ-অনুরোধ করৈত ছিযনি জে আরশ্যকতা রহনে পর হাথ পসারবা উঁচিত অন্যথা অপনা সঙ্গ-সঙ্গ ভাষাক প্রতি অন্যায হোযত।

ভাষাক মানকীকৰণ আ সাহিত্যক ৰাজনীতি

জখনি-জখনি সাহিত্যক স্তৰীযতাক ৰিৰেচনা হোগত অছি তখনি-তখনি ভাষাক মানকীকৰণক প্ৰশ্ন ঠাঢ় ক হৌআ ৰঁনা দেন জাগছ। হেমেনিমে এহি প্ৰকাৰক সমস্যা আযন অছি। ৰিদেহ গ পত্ৰিকাক সম্পাদক আদৰণীয গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰজী সেহো কিছ এহনে পৰিদৃশ্যক নিৰ্মাণ কএননি অছি। প্ৰসংগ ছন কথাক স্তৰ পৰ আ প্ৰশ্ন উঁঠাওন অছি ভাষাক মানকীকৰণ পৰ। এহী পৰিপ্ৰেক্ষ্যমে গজেন্দ্ৰজী ভাৰতীয ভাষা সংস্থানক দ্বাৰা মৈথিলী কাজক নেন অপনাওন গেন ভাষীক স্তৰীযতা পৰ প্ৰশ্ন চিহ্ন নগাওন অছি। ওনা গজেন্দ্ৰজীক মানকীকৰণক পক্ষধৰ হমহুঁ ছী হ্দা মানকীকৰণক নাম পৰ চনাওন জাএৰঁনা গোনৈসী সঁ আহত আ অসহমত সেহো ছী। কাৰণ এহি

सँ परिणाम तँ किछु नहि आओत यदा भाषाक गति अवरुद्ध बाधित होएत। मैथिली भाषाक मानकीकरण नहि भेल अछि ओ कहबाक छनि भाषा वैज्ञानिकलोकनिक, तखन मानकीकरणक राजनीति किऐक ? एखनुक जे मैथिलीक मानकीकरणक परिस्थिति अछि ओहिमे अहाँ जे लिखैत छी सेहो ठीक आ दोसर जे लिखि रहल छथि सेहो ठीक। तेँ हमर कहब अछि जे सम्प्रति एकरा मैथिली भाषाक विशेषतेँ बुझल जाए आ ओकरा कोनो एक खूँटामे बान्हब ठीक नहि। कारण कोन-कोन परेशानीक बीच केओ बँधुआ मजदूर जेकाँ मैथिलीक काज कए रहल छथि से गजेन्द्रजीकेँ नीक जकाँ बुझल छनि, मैथिली भाषामे साहित्यकार तँ भरल छथि यदा अपन रचनाकेँ प्रकाशित करबासँ पूर्व कतेक गोटेए प्रकाशनसँ पूर्व ओकर उचित स्व-समीक्षा करैत छथि ? अन्तमे जे मानकीकरणक प्रश्न अपने उठबैत छियैक ओ मात्र मैथिलीऐमे नहि, अपितु आनो भाषामे समाने रूपकेर छैक आ एकर समाधान जल्दी भए जाएत तकरो दूर-दूर तक सम्भावना नहि बनैत अछि। एही कारणेँ कहब जे मैथिली भाषाक मानकीकरणक लेल ठोस आ निरपेक्ष भावक आवश्यकता छैक, जाहि हेतु मैथिलकेँ बहुत बेसी संयमी बनबाक आवश्यकता छनि। अन्तत: कहबाक तात्पर्य जे भाषाक मानकीकरणक नाम पर राजनीति कएनिहार आ करौनिहार दुनू गोटे अपनाकेँ संयमित करथु, नहि तँ असली स्वर दबने रहि जाएत ठीक ओहिना जहिना विन्ध्य वनवासक खेतक उर्वरता।

মৈথিলী সাহিৎ আ ক্ষসনমান ভাঙা

মৈথিলী ভাষামধ্য ক্ষসনমান জাতিক সাহিৎকাবক ঙঁপেক্ষা মিথিলা আ মৈথিলী লেল নীক নহি। হেমেনিমে দেখল জা বহল অছি জে ক্ষসনমান ভাঙা কাল্হি ধবি মৈথিলীকেঁ অপন মাতৃভাষা স্বীকাব কএলে বহথি ও লোকনি শনৈঃ শনৈঃ মৈথিলীসঁ বিক্ষুখ ভ বহল ছথি, তকব সোনহো আনা কাবণ অছি হুনকা লোকনিক ঙঁপেক্ষা। এহি বীচ সাহিৎকাব আ পত্রকাব শ্যাম স্বন্দব শশি কহলথি জে কাল্হি ধবি ও লোকনি অপন মাতৃভাষা মৈথিলী লিখবৈত ছলাহ, ও লোকনি অপন ঙঁপেক্ষাক কাবণেঁ আগ মৈথিলী ভাষাসঁ মুঁহ মোড়ি বহল ছথি। হুনকা অনুসাবেঁ একব ক্ষখ্য কাবণ অছি হুনকালোকনিক প্রতি ঙঁপেক্ষা–

भार। ठीक एहने चिन्ता आदरणीय नचिकेताजी सेहो उठौने छथि। हमरा एहि ठाम शेफीजी आ नचिकेताजीक चिन्ता एक रंग लागल, कारण एक दिस हमरा लोकनि कहैत छिऐक जे मिथिलामे रहनिहार सभ जातिक भाषा मैथिली थिक आ दोसर दिस एहन उपेक्षा ? ई दुनू गप्प कोना भ सकैत अछि। ई प्रसंग एहि कारणेँ उठाओल अछि जे मैथिलीमे के के मुसलमान भाइ साहित्यकेर निर्माण कए रहल छथि से आँगुर पर गनल जाए सकैछ। हालेमे आदरणीय हाशमीजीक देहावसान भेल मुदा धीरेन्द्र प्रेमर्षि छोड़ि केओ हुनका प्रति लिखबाक धृष्टता नहि कयलनि। एकर कारण की ? मैथिली साहित्य वर्ण-गोत्र-जाति मात्रक गोसैसी सँ जुड़ल अछि। एहना स्थितिमे आदरणीय नचिकेताजीक शब्द मोन पड़ैत अछि – प्रायः 51,229 मैथिली मुसलमान भाइ छथि जनिका मैथिली सांस्कृतिक आ साहित्यिक जगत मे हमरा सभकेँ स्थान देमै-टा पड़त, नहि तऽ इतिहास हमरा क्षमा नहि करत।

‘चिड़ै’ आ ओकरे नाथेँ नेपालीय मैथिली कथाक स्वर

नेपालमध्य मैथिली साहित्यमे 1990 ई.क बादक आयल पीढ़ीमे सँ ककरो कथा संग्रह प्रकाशित नहि भेल छल(ओना एकगोट कथा संग्रह संतोष मिश्रक प्रकाशित भेल छल मुदा ओ चर्चामे नहि आबि सकल, एकर कारण पता नहि)। हालेमे स्वजीत कुमार झाक कथा संग्रह ‘चिड़ै’ प्रकाशित भेल अछि। जे एहि पीढ़ीक प्रथम कथा संग्रह थिक। स्वजीत कुमार झाक कथा संग्रह तखनि प्रकाशित भेल अछि जखनि नेपालक जनता नव

নেপালক নির্মাণমে লাগল ছথি, আ এহি ক্রমমে নব-নব বাঁতক স্থাপনা হএবাঁক সংভাবনা অছি। মুদা জখনি 'চিড়ৈ' কথা সংগ্রহ প্রকাশিত ভেল তঁ মিডিয়ামে জে প্রতিক্রিয়াসভ আএল তাহিসঁ ওা স্পষ্ঠ নহি ভএ সকল জে 'চিড়ৈ' কথা সংগ্রহ নেপালক পবিস্থিতিক কথা কহৈত অছি বা নহি, মুদা একব চর্চা বহ্ত ভেল। এহি পবিপ্রেক্ষ্যমে দেখলা পব পতা চলৈত অছি জে হ্নক কথা সংগ্রহক শীর্ষক কথা 'চিড়ৈ' কথা, জে কথাকাব দৃষ্ঠিমে এক নব বিম্বক কথা থিক, ক মূল উদ্দেশ্য নেপালীয মৈথিলী কথা সাহিত্যক সমকালীন স্বব পবিভাষিত কববঁ থিক। একবা প্বষ্ঠ কবৈত অছি নেপালসঁ প্রকাশিত কথা যাত্রা নামক কথা সংগ্রহমে একব প্রকাশেল হোএবঁ। যদি স্বজীত ঝমাব ঝাক আবো কথা এহি স্ববক অছি তঁ ওা কথা সমকালীন স্ববক কথা নহি ভএ মাত্র বর্ত্তমান কালমে লিখল গেল কথামাত্র ভেল। কাবণ নেপালীয মৈথিলী কথামে সমকালীন বিম্ব আ নব শিল্পক কথা বমেশ বংজন আ ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষিক কথামে মাত্র দেখল জাগত অছি। বাঁদ বাঁকী কথাকাবমে একব অভাব দেখল জাগছ কাবণ এহি পীঢ়ীক সভসঁ শ্রেষ্ঠ কথাকাব বহিতহুঁ শ্যাম স্বন্দব শশি সেহো সমকালীন স্ববমে পাছএ ছথি, কাবণ ওা কথাকাব লোকনি নাবী দেহ ধবি অপনাকেঁ সীমিত কএ কথাক শিল্প আ বিম্বক নির্মাণ কবৈত ছথি। তেঁ আশা নহি ক সকৈত ছী জে স্বজীত ঝমাব ঝা এহি সঁ হবাক হেতাহ। ওনা 'চিড়ৈ' কথা পঢ়ি হ্নক কথাক সমীক্ষা কববঁ আসান নহি। তথাপি প্রশংসাক পাত্র অবশ্য ছথি অপন পীঢ়ীক প্রথম কথা সংগ্রহ প্রকাশিত কববাঁক লেল।

(রিন্দু ২: খত্তনেশ্বরজী, খহাঁক টিপ্পণীপব হমব টিপ্পণীপব একটা মেলমে খসহমতি খাএল ছল। তকব জে জবাব হম দেনে বহী সে ১/২/৩/৪ রিন্দুমে নীচাঁমে জোড়নে বহী, কাবণ ও পত্র হমব ঙা-মেলপব খাএল ছল তেঁ প্রশ্নকর্তাক নাম খা প্রশ্নারলী হম সাযাস নৈ দেনে বহী, তেঁ প্রায়ঃ তাবতম্য নৈ বহল হএত। মুখ্য মুদ্দা ছৈ জে কিছু গোষ্ঠি সগব বাতিসঁ নঃ কঃ সভ ঠাম জগদীশ প্রসাদ মন্ডল জীক লেখল শৈলীপব সরাল উঁঠা বহল ছথি, কথাক স্তবপব গপ হোএতে কহাঁ খছি, মাত্র জে "কবৈত" খা "জাগত" ক রাঁদ খছি কিএ নৈ খছি; বামনাথহুঁ কিএ নৈ খছি বামনাথো কিএ খছি, শঙ্ক সভ ঙা কোড়া কঃ খলৈ ছথি (একটা দোসব পাঠকক পত্র ছল!)। মুদা খহাঁ সহী কহলৌঁ জে জতেক লেখক ছথি ততেক মানকীকবণ খছি তখন কথাক স্তবপব গপ কিএ নৈ হোএএ? রিষয-রস্তুপব গপ কিএ নৈ হোএএ? জখন কী হুনকব কথা রিষয-রস্তু খা ভাষা দুনূ দৃষ্টিকোণসঁ (মানকীকবণ সেহো হুনকামে খছি) শ্রেষ্ঠ খছি, সগব বাতি দীপ জবএ, স্বপৌলমে জে জাতিরাদী স্ব্ব উঁঠল খা প্ববোধা সভ চুপ বহলাহ, মুন্নাজীক ঐ সম্বন্ধমে প্রশ্নারলীক খখল ধবি প্ববোধা লোকনি উঁত্তব নৈ দেলন্হি, ওএসঁ লগৈএ জে সভটা সাজিশীক তহত ভঃ বহল খছি। সী.খাএ.খাএ.এল. কএক সাল রিতলোপব কিএ মানকীকবণক কোনো খাকা নৈ দঃ সকল, কএকটা মীটিংগ টা ভেল। জখনকি ওকব কমেটী একছাহা ছৈ খা ওএমে রএহ লোকনি ছথি জে সভ সগব বাতি খাদিমে সক্রিয ছথি খা মানকীকবণক খাধাবপব জগদীশ প্রসাদ মন্ডলক খালোচনা হাস্যাস্পদ রূপেঁ কবৈ ছথি! --গজেন্দ্র ঠাকুব, সম্পাদক

রিন্দ্–৩: খত্তনেশ্বরজী, মৌথিলীক পহিল দুর্ভাগ্য তখন দেখা পড়ৈত খছি জখন এতএ গজনকেঁ হ্মস্লিম ধর্মসঁ জোড়ি কঽ দেখল জাএ নগনৈ খা হ্মস্লিম ধর্ম খা ওকব সাহিত্যকেঁ খছোপ মানি লেল গেলৈ। খা তখন হ্মস্লিম খহ্মসঁ কোনা জুড়ত। হ্মদা খারঁ জখন গজনক জীরন হ্যগক সমাপ্তি ভঽ গেল খছি (জীরন হ্যগ– ঐ হ্যগক প্রাবংভ হম জীরন ঝাসঁ কেলে ছী জে খাধুনিক মৌথিলী গজনক পিতা মানল জাগ ছথি হ্মদা ও কহ্ম গজল লীখ সকলা। হ্মদা হুনকা রাঁদ মাযানংদ, গন্দ্, বরীন্দ্রনাথ ঠাকুব, সবস, বমেশ, নবেন্দ্র, বাজেন্দ্র রিমল, ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষি, বৌশন জনকপুবী, খবরিন্দ ঠাকুব, স্ববেন্দ্র নাথ, তাবানংদ রিযোগী খাদি গজনগো সভ ভেলাহ।) খা খনচিন্হাব হ্যগক প্রাবম্ভ ভঽ গেল খছি, জগমে গজনক পবিভাষিক শৈষ্ট খা রঁহবক নিধর্বিণক খাধাবপব স্বনীল হুমাব ঝা, দীপ নাবাযণ "রিদ্যার্থী", বোশন ঝা, প্ররীন চৌধবী "প্রতীক", ত্রিপুবাবী হুমাব শর্মা, রিকাস ঝা "বংজন", সদ্র খানম গৌহব, ওমপ্রকাশ ঝা, মিহিব ঝা, উঁমেশ মংডল খাদি গজনকাব গজল লিখ বহল ছথি তখন হ্মস্লিমক প্ররেশ মৌথিলীমে হেবেঁ কবত। হম শেখ মোহম্মদ শবীফক তেন্বগু কথাক খংগ্রেজী মাধ্যমসঁ মৌথিলীমে খনুরাদ কেলে বহী (জুম্মা – কথা– রিদেহ:সদেহ:১ মে সেহো প্রকাশিত) খা রিদেহমে সদ্র খানম গৌহব খা মো. গুল হসন ছপি বহল ছথি। সংগমে মৌথিলীমে খারঁ কসীদা, মসনরী, হুর্দ, রঁন্দ, কতা, কৱাঁগ, হমত, নাত, মনকরঁত, মর্সিযা, হ্মস্তজাত, নজ্ম, হ্মজবা, কৌরালী খাদিপব লেখ (দেখল জাএ খাশীষ খনচিন্হাব –

ht t p://anchi nhar akhar kol kat a.bl ogs po

t.com/2011/10/blog-post_07.html)क रॉद ऋस्लिम नेखक मैथिनीसँ कतिथाएन खन्नभर नै कर वहन ছथि। मिथिनाक खोजमे ऋस्लिम था क्रिশ्चियन धार्मिक स्थनक रवण्न छै (देखू http://www.videha.co.in/favorite.htm) था मिथिना वनेमे सेहो यथासम्भर उँल्लेख भेटै जाएत (देखू http://www.videha.co.in/photo.htm)।

খহাঁক টিপ্পণী হবরঁড় ামে নিখন था चाबि-सान प्रवान र्ঁनা वहन খছি। हाशमीजीक विषयमे খহাঁক टिप्पणी ওজ गोनैसी, गोত्र, जातिकेँ रঁढ़ ারা দৈত नागि वहन খছি जकव খহाँ विवोध केने छी। ह्नकवदेहोरसानपव रिदेहमे सम्पादकीय थाएन छन, था ह्नकव देहोरसानपव সৈকড় াक संख्यामे टिप्पणी/ श्रद्धांजनि थाएन छन तकव किछु খंশ एतए देन जा वहन খছি। थानो मैथिनी पत्रिका सभ ह्नका श्रद्धांजनि देनक (सवकावी तंत्र छोड़ि कर)। नोकमे थारॅ गोनैसी नै छै, हमवा क्षेत्रक वाजनेता सेहो थारॅ जाति, गोত्रक थाधावपव नै ऋदा काजक थाधावपव रोटै माँगि वहन छै। ऋदा ওজ युगक साहित्यकाव/ नाटककाव जिनका सी.थाज.थाज.एन., साहित्य खकादेमी, एन.एस.डी. थादिसँ मान्यता चाहियन्हि, तखने ও साहित्यकाव कहेताह- से गोनैसी नै कवताह तखन ह्नकव छद्म খस्तित्व कोना वहतन्हि, कावण जज युगक ও छथि से युग तँ कहिया ने खतम भर गेनै। फातमी वा कोनो कानजयी नेखकक খस्तित्व ऐ सवकावी संस्था सभक मोहताज नै খছि।

-ऋसनमानक मातृभाषा उँर्दू किए भेनै, था हिन्दूक

মাতৃভাষা হিন্দী কিএ সে প্রশ্ন মাত্র মৈথিলীক নৈ অছি। বাঁগ্লাভাষী তমিলকেঁ বঁগাল আ তমিলনাড়ুক মুসলমান অপন মাতৃভাষা কিএ মানৈ ছথি। মিথিলাক মুসলমানকেঁ মাত্রকিএ দোষ দেল জাএ? মিথিলাক অধিকাংশ হিন্দূ সেহো মৈথিলীকেঁ নৈ হিন্দীকেঁ অপন মাতৃভাষা মানৈ ছথি মুদা হুনকাসামপ্রদাযিক নৈ দেশভক্ত মানল জাএত! দোসরাকেঁ ছোড়ূ, হম তঁ দরভঁগাক পোথী বেঁচনিহারসঁ মৈথিলী বাঁজৈত থাকিগেলৌঁ মুদা ও হিন্দীমে জবাব দেলক! প্রশ্ন ওতেক সরল নৈ ছৈ জতেক সরলতাসঁ অহাঁ নির্ণয দৈ ছী। মিথিলাক তঁছোড়ূ কর্ণাটক, জতএ অহাঁ রহি রহল ছী, ওত্তুক্কা মুসলমান কিএ কন্নডক বদলা উর্দূকেঁ অপন মাতৃভাষা মানিরহল অছি, জখনকি বঁগালমে তমিলনাড়ুক মুসলমান অপন মাতৃভাষা তমিল ঘোষিত করৈএ (কন্নডকউপন্যাসকার ভৈরপ্পাক উপন্যাসক সংস্কৃত অনুবাদ "আবরণম" হম পঢ়লে ছী, ওকরমে এহেন সেহো চর্চা ছৈ,কর্ণাটকমে এ উপন্যাসপর কতেক হংগামা ভেল রহৈ অহাঁকেঁ বুঝলে হএত)।

মল্লিকজী বা মানকীকরণক লেল কোনো হল্লা নৈ ছৈ, এ মাত্র ওএ অপঠিত মৈথিলী সাহিত্যক সাহিত্যকারকহল্লাক উত্তর ছৈ জিনকা এ সফলতা অবুঝ বুঝাএ ছন্হি, জে বাস্তবিকতাসঁ দূর ছথি আ জে মৈথিলীক সরকারীকার্যক্রমমে (ছদ্ম ধরাতলী কার্যক্রম!) এক দোসরাক ঢোল পীটৈ ছথি। জগদীশ প্রসাদ মল্লিকক ১৩ টা পোথী, মৈথিলীক সর্বশ্রেষ্ঠ নাটককার বেঁচন ঠাকুরক এক টা পোথী আ রাজদেব মল্লিকক অম্বরা (জকরা হম ২১মশতাব্দীক পহিল দশকক সর্বশ্রেষ্ঠ কবিতা সংগ্রহ কহলে ছী) কেঁ মৈথিলী পাঠক জে স্থান দেলৌক ছলৈ ওকরবলেঁপর নৈধরাতলোপর দঃ দেলে ছৈ। এ সভ

পোথী সভ প্রিন্টক সংগ ঐ লিংকপব সেহো উপলব্ধ ছৈ, দেখন
জাএhttps://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/ । ৭৪ম সগব বাতিমে ১৩ গোটেকথা পাঠ ভেলৈ জগমে জগদীশ প্রসাদ মণ্ডলক নেতৃত্বমে ৯ গোটে গেন বহথি, খা শেষ মাত্র ৬ গোটে বহথি, জেঁ জগদীশ প্রসাদ মন্ডন তেঁ ওা সগব বাতি খাগযো চনি বহন ছৈ। ঋদা সাহিহ খকাদেমী খাসী.খাগ.খাগ.এন.ক প্রাযোজিত ধবাতনী কার্যক্রমমে সে খন্বপাত নৈ ছৈ , কিএক ? কাবণ ও সংস্থা সভ জমীনীবাস্তবিকতাসঁ দূব খছি।

–নেটে মধ্য এশিযামে কী কেনকৈ খহাঁকেঁ ব্ঁঝনে হএত। জমীনী স্তবপব নির্মনীমে জে "বিদেহ সমানান্তব সাহিহখকাদেমী মৈথিনী কবি সম্মনন" খাযোজিত ভেন ছনৈ ওকব সফনতাসঁ খহাঁ ভিজ্ঞ হএবঁ, তহিনা বিদেহ দ্বাবা জেসমানান্তব সাহিহ খকাদেমী প্রবস্কাবক ঘোষণা ভেলৈ সে কান্হি ধবি খপঠিত মৈথিনী সাহিহক সাহিহকাবক মধ্য জে খহনদিনী খননে ছৈ তদ্রুসঁ খহাঁ ভিজ্ঞ হএবঁ।
–মিথিনাক খা মৈথিনীক বিকাসক জে বাতাববণ খখুনকা সবকাবমে ছৈ কী ও দবভংগা খা খান জমীন্দাবী বাজবা মৈথিন ঋখ্যমংত্রীক কানমে কহিযো বহৈ ? ১৪ খকটুবঁব ২০১১ কেঁ ঋখ্যমংত্রী নীতিশ হ্মাবকেঁ নির্মনীমে জগদীশ প্রসাদ মন্ডনক ঔ টা খা বাজদেব মন্ডনক একটা পোথী দেন গেনন্হি, ঋদা জখন চেতনা সমিতিক বৈসকীমে শ্রীহ্রঃ মেমোবিযন হল, পটনামে ও মৈথিনীক ঐ সংস্থাকেঁ মৈথিন ব্রাহ্মণক সংস্থা ব্ঁঝনে বহথি খা বাঁজনো

बरुथि (बेंड़ ।गयेमे सही, रोटैक ऊँह्रूस्थेसँ सही) तँ कियो सांकेतिको करेक्शन नै केने बरुथि ? १४ अक्टूबर २०११ धरि ओ मैथिलीकेँ मैथिल ब्राह्मणक भाषा बुझैत छलाह ! !

–नवीनजीकेँ नवारम्भ पत्रिकामे चांग्ला करल गेल छलन्हि, श्रीनिवासजी आ नवीनजीकेँ "हम पियाला हमनिवाला" आ आर की–की कहल गेल छलन्हि। की हुनका प्रत्युत्तर देबाक हक नै छन्हि ? नवीन जीक कोन पाँतीमेगारि छै से बताएल जाए, तखन हम आर स्पष्टता कऽ ओकर सन्दर्भ दऽ सकब।

–अहाँक ई कथन जे हम ए.सी.मे बसि कऽ मिथिलाकेँ नै बुझि पारि रहल छी आदिपर हमर यएह उत्तर अछि जे ऐ सभसँ हम भविष्यमे "असत्केँ सत्" कहनाइ नै शुरू कऽ देब।

– सी.आइ.एल.एल.क सभ नियम वेबसाइटपर उपलब्ध छै, आ ओकर कोन प्रावधान लक्ष्मीनाथ झा द्वारालिखित हिन्दीक पोथी "बिहार की सांस्कृतिक चित्रकला"क निर्लज्ज चोरि कएल पोथी स्वर्णा झाक "अरिपन"केँपूर्वप्रकाशन ग्रान्ट दै छै से हमरा नै बुझल अछि। अहाँ तँ स्त्रीगक गप उठेने छी स्त्रा हिन्दूक मात्र एक जातिएकर सभ कार्यशालासँ लऽ कऽ सभ ग्रान्ट/ असाइनमेन्ट प्राप्त कऽ रहल छै, ओ कोन प्रावधानक अन्तर्गत छै ? नियममे कोनो कमी नै होइ छै, यएह नियम तँ दोसरो भाषामे छै, ओतए किए एतेक समस्या नै छै ? – गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक)

'রঁদনৈত স্বর' আ মৈথিলী আলোচনা

হেমনিমে মৈথিলী কথাকার শিরশংকর শ্রীনিরাসক মৈথিলী কথা সাহিত্য পর কেন্দ্রিত আলোচনাক পোথী 'রঁদনৈত স্বর' পঠ়ন। শ্রীনিরাসজীক কথা হমরেষ্টা নীক নহি নগৈত অছি অপিতু সম্পূর্ণ মৈথিলী পাঠককেঁ নীক নগৈত ছনি, জে হিনক কথাক রৈশিষ্ট্য পরিচয দৈছ। যদা কোনো সফল কথাকার যদি সফল আলোচকো হোথি তঁ ও আর রেঁশী নীক। শ্রীনিরাসজীক আলোচনাক পোথী একর রানগী অছি, জহিনা হিনক কথা পঢ়ি পাঠক মিথিলা আ মৈথিলী কথা প্রতি সোচরাঁক নেন রিরশ ভএ জাগত ছথি, ঠীক তহিনা হিনক ও আলোচনাক পোথী সেহো রঁহতো কিছু সোচরাঁক হেতু রাধ্য করৈছ। প্রস্তুত পোথী, জে পূর্ণরুপেঁণ মৈথিলী কথা সাহিত্যক রিষযমে কহৈত অছি, মাত্র মৈথিলী অধ্যেতামাত্রেক নেন নহি, অপিতু সাধারণ পাঠকধরি নেন সেহো নাভদাযী অছি। কারণ জে ও মনোরংজক কথাক রিষযমে কহৈত ওকর সামযিক

সাংদর্ভিকতা আ ওকর বৈশিষ্ট্য পর বড় সহজতা সঁ বাত রখননি অছি, জে একর বিশিষ্টতাকেঁ বঢ় া দৈত অছি ।

ঋদা এতেক সফল প্রস্তুতিক বাদো এহিমে কিছু ত্রুটি রহি গেল ছনি । এহি ত্রুটিক অভারমে ই পোথী অদ্যারধি মৈথিলী কথাসাহিত্য পর লিখল গেল আলোচনামেক অধ্যযনজন্য পোথী মধ্য সর্বোপরি রহিতএ, জাহিসঁ শ্রীনিরাসজী চুকি গেলাহ অছি । হমরা অনুসারেঁ কোনো সাহিত্যক সমীক্ষামে জঁ মাত্র অপন মনোনুকূল রিষযমাত্র নএ প্রস্তুতি হো তঁ ও সর্বাঙ্গ কহিও নহি ভএ সকৈছ, এহনে কিছু অভার এহি পোথীমে দৃষ্টিগোচর ভএ রহল অছি । এহিমে দেখল গেল অছি জে সমীক্ষক মৈথিলী কথা সাহিত্যক আলোচনা করৈত কাল ভারতমে আএল নক্সলরাড় ী আন্দালনসঁ প্রভারিত কথাক চর্চ নহি কএনেঁ ছথি, জে হুনক আলোচনাকেঁ কমজোর কএনে ছনি । হঁ, ই ঠীক জে ওহি ক্রিযাকলাপকেঁ অলাঁ জাহি দৃষ্টিএঁ দেখৈত হোএ, ঋদা জখন সম্পূর্ণ কথাক চর্চ হোএত, তখন ওহি কথাসভকেঁ ছোড়র কোনো হিসারেঁ উচিত নহি । জহিনা ভারতমে মৈথিলী কথা সাহিত্য রিকাস ভ রহল অছি, ঠীক ওহিনা নেপালোমে কথা সাহিত্য রিকাসোন্মুখ ছৈক, জকর চর্চ উক্ত পোথীমে নহি কএল গেলৈক । আশা নহি পূর্ণ রিশ্বাস জে আলোচক শ্রীনিরাসজী এহি রিন্দু পর হমরাসঁ সহমত ভএ অপন অগ্রিম কার্যমে একরা ধ্যানমে রখতাহ । অন্তমে, মৈথিলী কথা সাহিত্যক আলোচনাকেঁ নর ভার রোধসঁ ভরি এহি সৃজনক লেল শ্রীনিরাসজীকেঁ কোটিশঃ ধন্যরাদ ।

মৈথিনী : পংডিতাম রা খাম ?

একরেঁব ফেব মৈথিনী সাহিত্যমে মানকীকবণক নাবা জোব পকড়নক খছি, এহিক্রমমে সোচন জাএ বহন খছি জে মানকীকবণক কসৌটী তথাকথিত পংডিতনোকনি তয কবতাহ। হমব সোচ খছি জে একব খর্থ ভেন মৈথিনীকেঁ খাম নোকসঁ কটৈরাঁক একটা নর স্বনিযোজিত ষডযংত্ব। হেমনিমে গজেন্দ্র ঠাকুবক একটা পত্র খাযন ছন জে ও ষডযংত্র নহি থিক জে কোনো গোষ্ঠী (সগব বাতি দীপ জবএ, জে বর্তমানমে কথা গোষ্ঠী সঁ রেঁশী খনস্থান গোষ্ঠী ভ গেন খছি) মে এহি তথ্য পব নহি খানোচনা হোগত খছি জে এহি কথামে কোন কমজোবী খছি রা কোন-কোন নর তথ্য খাযন খছি, রঁক্কি জাগত, খাগতকেব সঙ্গঁ বমানাথী-শৈনী পব চর্চা কএন জাগত খছি? হুদা ও সংকীণ মানসিকতা

किযाक ? एकव দৃষ্টা কাবণ দেখাগত অছি, পহিল জে অখনি ধবি মৈথিলী জাতিরাদক ধোধবি সঁ নহি নিকলি পওনক অছি আ দোসব জে মৈথিলীমে কোনো নর নাবা নহি ভেটি বহল ছৈক। কিযাক তঁ মৈথিলী পংডিতক ভাষা নহি ভএ রিশ্বস্ক কয আমলোকক ভাষা থিক। কাবণ মহাকরি রিদ্যাপতি আমলোকক লেল দেসিল রঁযনামে লিখরঁ প্রাবম্ভ কেলে ছলাহ, নহি কি পংডিত রস্থাক লেল। (এতয এ স্পষ্ঠ ক দেরঁ আরশ্যক জে হমবা অনুসাবেঁ পংডিত কোনো জাতি রিশেষসঁ নহি ভএ, হুনকা লেল উপযুক্ত অছি জে অপন রিচাব দোসবো পব থোপএ চাহৈত ছথি, সে চাহে উচিত হো রা অনুচিত)। হমবা তঁ আশ্চর্য লগৈত অছি জে ওহি তথাকথিত গোষ্ঠীমে সহভাগীলোকনিকেঁ কি এ নহি বুঝল ছললি জে মৈথিলীক কতেকো ভাষা-ভাষী জাগত-খাগত রঁজৈত ছথি, মৈথিলী ভাষামে আদবসূচক আ অনাদবসূচকক লেল পৃথক্-পৃথক্ শব্দ অছি ? হম তঁ সংশকিত ছী জে জঁ এহিনা মৈথিলীকেঁ ব্যাকবণীয ফংদামে নষ্টপষ্টাওল জাগত বহত তঁ ও দিন দূব নহি জে ও সাধাবণ জনসঁ দূব হোগত-হোগত ওকব অস্তিত্ব পব সংকষ্ট আরি জাএত। আ

নেপালক মৈথিলীমে রঁহত গতি দেখল জা বহল অছি, কাবণ ছৈক ওত্তক্কা মৈথিলী ভাষামে আমলোক ক ধাবণা আ ভারনাকেঁ বাখরঁ। নহি তঁ এতেক দিন সঁ প্রসাবিত ভ বহল মৈথিলী কার্যক্রম 'গামঘব' কিযাক নহি সম্পূর্ণ লোকক কার্যক্রম ভ সকল, জখন কি ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষিক 'হেলো মিথিলা' সম্পূর্ণ মিথিলাক স্বব রঁনি প্রশংসিত ভএ বহল অছি আ একবহি প্রভারেঁ মৈথিলী ভাষাক অপন দর্জনোঁ বেডিযো এফ.এম. কার্য কএ বহল ছৈক আ ও

আমলোকক বাণী ভএ প্রসাবিত ভএ বহল অছি। তখনি ই বঁখেবা কিযাক ? হমবসভক এহন কর্মসঁ মৈথিলীক কোনো তবহক লাভ সংভব নহি, অপিতু ও আমলোকসঁ কটি সংস্কৃতক সংগ ধএ লেত। তেঁ যদি কেও এহি প্রকাবক প্রশ্ন উঠবৈত ছথি তঁ বুঝি লিয জে মৈথিলী ক সংগ হিত নহি অহিত ক বহল ছথি। কাবণ তথাকথিত ভাষা ক অধ্যযন কএনিহাব একবা ভাষাক বিশেষতা কহৈত ছথি আ ও লোকনি একবা স্বধাববাঁক লেন জী-জান অবোপনে ছথি। কী, ই মূর্খতা ছী কি ষডযংত্র ? ওনা একটা ইহো সহ অছি জে লোকতংত্রমে বঁহুমতক সভ কিছু মানল জাইত ছৈক, এতয প্রশ্ন উঠৈত ছৈক জে মৈথিলী ক বঁহুমত কোন দিশ- পংডিতলোকনি দ্বাবা নির্ধাবিত মৈথিলীক বা আমলোকক মৈথিলীক ? উত্তব স্পষ্ট অছি আমলোকক, তখনি ই প্রশ্ন উঠএবাঁক ঔচিত্য কতহু নহি বঁলৈত অছি। কাবণ বিদ্যাপতিক ভাষা পংডিতক বিরুদ্ধ উঠাওল আন্দোলন ছল তেঁ মৈথিলীকেঁ পংডিতক বাজ নহি আমলোকক কাজ অছি।

পংডিত গোবিন্দ ঝা, মৈথিলী আ অধ্যযন

আম পাঠককেঁ গোবিন্দ ঝাক নাটক, কথা আ হুনক লিখল বিদ্যাপতিক আমেকথা আকর্ষিত কবৈত অছি। মৈথিলী ভাষাক অধ্যযন কএনিহাবকেঁ হুনক সাহিত্য তঁ আকর্ষিত কবিতহিঁ অছি, সবসঁ বেশী আকর্ষিত কবৈত অছি হুনক ভাষা পব কযল কার্য। হুনক সাহিত্যিক বচনা আ ভাষা বৈজ্ঞানিক কার্য দুনূ একক গতি সঁ চলৈত

থছি নিবংতব গতিশীল থা চিংতনশীল। হেমনিমে হ্নক এক গোষ্ঠ পোথী থাযল থছি, মৈথিলী ব্যাকবণ(থংগ্রেজী সঁ মৈথিলীমে থনুবাদ), জকব মূল বচযিতা ছথি থংগ্রেজ লোকনিক গ্রিযর্সন সাহেবঁ, মৈথিলক গিলেসন সাহেবঁ থা গোবিন্দ ঝাজীক থনুসাব মৈথিলীক পাণিনী। প.জীক মৈথিলী ভাষাক প্রতি ঞ কাজ হ্নক জিজীবিষাকেঁ দেখবৈত থছি, কাবণ জে কাজ যবা বত্মা থা মৈথিলী থধ্যাপককেঁ কববাক চাহিএনি ও কাজ পংডিত জী থপন নব্বে বৰিসমে কতেক মনোযোগসঁ কএননি থছি, তকব থনুভব সভ সহৃদযী কএ সকৈত ছথি। হ্নক এহি কার্যক হেতু হমবা লগ কোনো শব্দ নহি থছি, জাহিসঁ হ্নক থভিবাদন-থভ্যর্থনা কএল জাএ সকএ। কাবণ মৈথিলী ভাষাক ভাষাবৈজ্ঞানিক কার্য বহ্ত সীমিত ভেল থছি, জে ভেল থছি ও থাংগ্লব পব গানল জা সকৈছ, জখনি কি ওকব থধ্যযন থা বিবেচনা স্বতংত্র ভাবত সঁ পূর্ব ভ চুকল ছল। এতএ প্রশ্ন উঠৈত থছি জে থাখিব এহি থনুবক কোন কাবণ ? এতেক দিন ভেলাক বাদো থাগও বহ্তো তকনা পব উচিত মৈথিলী ব্যাকবণ ভেটৈবঁ মোশ্কিল থছি, জাহিসঁ সভ থধ্যবসাযীক শংকাক সমাধান ভএ সকনি। থাগ হমবাসভকেঁ ছোট সঁ ছোট ব্যাকবণীয সমস্যা লেল বহ্ত বৈশী কসবত কবএ পড়ৈত থছি। মৈথিলী ভাষা বৈজ্ঞানিক থধ্যযনক শিথিলতাক একটা নমূনা হম সভ্য: দেখল থছি। জখনি কতহ্ মৈথিলী ভাষাক চর্চা হোগছ তঁ ও কখনো একবা বিহাবী ভাষা কহি তঁ কখনহুঁ হিন্দীক বোলী কহি সোচল জাএ বহল থছি। সোচবাক বিষয থছি জে এহি ভাষা ক এহন গতি কিযাক ? হমবা লোকনি মাত্র শুদ্ধ থা থশুদ্ধ ক ঝগড়া মে লাগল বহলহুঁ। ঞ কখনো নহি

সোচনহুঁ জে ভাষা ক রৈশ্বিক রিকাস নেন সাহিত্যক বচনাক সংগ-সংগ ওকব ভাষা রৈজ্ঞানিক খধ্যযন সেহো হোযরাঁক চাহী , ওনা কিছু কার্য ভেন, মুদা ওকব নিবন্তবতা নহি বহন জকব কাবণ ভেন মৈথিনী ভাষা হিন্দী ক মাঁঝমে দবাঁগত গেন। ওনা ঙা খন্বভব হমবা হেমেনিমে খাব রেঁশী ভেন জখনি সম্পূর্ণ ভাবতীয ভাষা জে সংরিধানক খষ্ঠম খন্বসূচী মে সম্মিনিত খছি ওকব একটা কার্যশানা ছনৈক খা কার্যশানা খপন-খপন ক্ষেত্র মে হেরাঁক চাহী এহি প্রকাবক নির্দেশ ছনৈক। মুদা মৈথিনী ক কার্যশানা মিথিনা কি রিহাব তক মে নহি ভেন, একব এক মাত্র কাবণ দেখাওন গেন জে মৈথিনীমে ভাষারিত্ত নহি ছথি। কিন্তু কাবণ কিছু খান ছনৈক খা ও কাবণ ছনৈক মৈথিনীকেঁ হিন্দী ক রোঁনীক রূপমে স্থাপিত কববাঁক একটা ষডযংত্র। ঙা ষডযংত্রমে জতেক দোষী ও নোকনি নহি ছনাহ ওহি সঁ রেঁশী হম মৈথিন ছী, কাবণ মৈথিনীক নাম পব জে রিত্ত রঁজাওন জাগত ছথি ও রেঁব-রেঁব এতরঁহি কহতাহ জেনা হিন্দী মে হোগত ছৈক ওহিনা মৈথিনীমে সেহো হোযত। খা মৈথিনী খপন স্বতংত্র খস্তিত্বক নড়াঙা নড়রাঁ সঁ পহিনে হাবি জাগত খছি। ঙা ভ বহন খছি খক্ষবকষ্ঠ মৈথিনী রিত্ত নোকনিক কাবণেঁ। নাম নেব এহি কাবণেঁ উঁচিত নহি জে ও সভ রিন রজহ কেঁ প্রসিদ্ধি পারি নেতাহ। হম এহি ঠাম ঙা প্রসংগ এহি কাবণেঁ দেনহুঁ খছি জে পংডিতজী কেঁ ঙা খাভাস ছনি জে ভাষাক নেন সাহিত্য জতেক খারশ্যক ছৈক ওহিনা ওকব ভাষা রৈজ্ঞানিক খধ্যযন সেহো, জকব কাবণ ছন ও স্বরিধাক খভারোঁ মে মৈথিনী ভাষা ক রৈজ্ঞানিক খধ্যযন কবৈত বহনাহ খছি । মুদা ঙা একটা প্রশ্ন উঁঠৈত খছি জে

রিশ্্ররিদ্যানয মে চাকবী কএনিহাব খা মৌথিনী ভাষাক রিক্ত কমৌনিহাব ঙা খধ্যাপক নোকনি কেঁ কিযাক নহি এহি রিন্দ্ দিশ ধ্যান জাগত ছনি, ও সভ মাত্র স্বরিধা পএরাঁক জোগাড়্মে কিযাক নাগন বহনাহ খা খাগও ছথি। এতেক রর্ষ মৌথিনীক খধ্যযনক খাবস্তু ভেনাক রাঁদো ঙা মহান্বভার নোকনিকেঁ ঙা খারশ্যকতা কিযাক নহি দেখা পড়্ি বহন ছনি । একব কাবণ খছি হ্নকা নগ এতেক খথাহ পানিকেঁ উঁপছরাঁক সময নহি ছনি, হ্নকা নগ সময মাত্র ছনি খপন গোঁটীকে র্যাঁত ধবএরাঁক। প্বস্তকক প্রকাশন কবতাহ মাত্র এহি নেন জে প্রান্নতিক নাভ ভেষ্টতন্হি ভনs হি ও প্বস্তক কোনো উঁপযোগী সিদ্ধ হ্খএ রা নহি । ক্দা পঁডিত গোরিন্দ ঝাকেঁ নহি তঁ ওহি সঁ প্রান্নতিক নাভ হোগত ছনি খা খানে কোনো খানে নাভ। হঁ, নাভ হোগত ছনি– যশ নাভ, জে হ্নক এহি কাজক মাধ্যমেঁ মৌথিনীকেঁ একটা স্বতংত্র খস্তিত্বক সংগ–সংগ মৌথিনী ভাষা ক রিশেষতা দেখি খানো প্ররূদ্ধ রক্ষ খাকর্ষিত হোএতাহ। যদি মৌথিনী ভাষাকেঁ পূর্ণ দেখয চাহিত ছী তঁ ওকবা নেন সর্রপ্রথম হমবা নোকনিকেঁ মৌথিনীক খধ্যযনক রিস্তৃততাকেঁ রঁঠ্রঁয পড়্য নহি তঁ হমবা নোকনি খপন ভাষা ক রিশেষতাকেঁ প্রতিষ্ঠিত নহি কএ সকরঁ। একবহি পবিণাম হোএত জে হমব ভাষাক রিশেষতা ন্বকাযনে বহি জাযত খা দোসব জে কেও হমব ভাষাক রিষযমে কহত ওএহ সংসাব মানত খা হম সভ ওহিনা মূঁহ তকৈত বহি জাযরঁ।

উজড়ৈত গাম বসৈত শহর.......

আই কাল্হি মৈথিলী সাহিত্যমে গামসঁ জা রহল লোক , আ উজড়ৈত গামক বিষযমে বহুত চিন্তন কযল জাইত দেখল জা রহল অছি । কতহু গামক বদলৈত পরিদৃশ্য তঁ কতহু গামসঁ পলাযন করৈত লোক। ওনা ই চিন্তন সহী অছি কহল তঁ জা সকৈছ জে ই চিন্তন বহুত পহিনে সঁ ভঽ রহল অছি । কারণ গামক বদলৈত পরিদৃশ্য গাম টাকেঁ নহি অপিতু গামসঁ জুড়ল সভ কিছু কেঁ পরিবর্তিত কএনে জা রহল অছি । কাল্হি ধরি গামমে ধ্বনি প্রদূষণ নহি ছল আই ও বিকট রূপ ধারণ কএ চুকল অছি । এহি সঁ বেশী গামমে অপন ডারি পসারি রহল অছি শহরক সংস্কার আ তাহুসঁ বেশী সংবেদনহীনতাক স্থিতি। গামক চিন্তা বহুত নীক জেকাঁ অংতিকাক সম্পাদকীযমে অনলকান্ত জী কেনে ছথি জে কোনা ক গাম মে পরিবর্তন ভ রহল অছি আ ই পরিবর্তন মানবীযতাক ক্ষরণ দিশি ল জা রহল অছি। ও অপন সম্পাদকীয মে কহনে ছথি জে ই পরিদৃশ্য মাত্র হমর গামক নহি ছী সম্পূর্ণ মিথিলাক গামক থিক । হুনক ই কহব সৌ প্রতিশত সত্য অছি। রোজগার ক সিলসিলামে ঘর সঁ বাহর হোইত মিথিলাক লোক বহুত দিন ধরি অপন ভীতর গামকেঁ নহি রাখি পবৈত অছি , কারণ জহিনা-জহিনা ও গামসং দূর হোইত জাইত অছি গামক প্রতি ওকর মোহ সেহো ওহিনা দূর হোইত জাইত ছৈক । হেমলিমে হম দুর্গা পূজা মে গাম জযবাক লেল সোচৈত ছলহুঁ কারণ গাম মে মাঁ ছথি মুদা পরিস্থিতি গাম নহি জাএ দেলক । ই ক্রম

হমবা এহি ৰেঁব নহি কতেক ৰেঁব সঁ ভ২ বহন খছি মাঁ ছথি হ্মদা তগযো গাম নহি জা পৰৈঁত ছী । খা গাম হমবা সঁ খখৈন মাত্র দূব ভেন জা বহন খছি, ভএ সকৈছ জে কাল্হি তক গাম হমব খতীত ভ জাএ। মাঁ ছথি তঁ গাম ৰঁচন খছি খা মাঁক পশ্চাত গাম ? কাবণ গামকেঁ হম সংজোগিকেঁ বাখৰ্ব সে ভ নহি সকত খা সংজোগিকেঁ নহি বখৈত ছী তঁ ও হমবা খপনা সঁ দূব কেনে জা বহন খছি । দোসব খাওা গামক পবিস্থিতি সেহো ওহনে ছৈক, খপন খালোচনাক প্বস্তুক ....মে শিরশঁকব শ্রীনিরাস নিখনে ছথি জে গাম মে হ্বরা নহি ছৈক মাত্র বূঁঠ় ৰাঁচন ছথি। সে ঠীকে, জে ৰাঁচন ছথি ওহি মে দূ বস্ত্র খছি একটা জে খপন পবিরাবক সংগ ৰাঁহব জা নহি পৰৈঁত ছথি, দোসব কিছ গোষ্ঠৈ শহব সং ওঁরিযাক গামমে বহি বহন ছথি । ও গামমে বহৈত তঁ ছথি হ্মদা গামকেঁ শহব মে ৰঁদনি ক । হমব একটা মিত্র ছথি জিনকব পিতা খপন শেষ জীরন গামমে রিতৰঁয চহৈত ছথিন , হ্মদা জীরনক মহত্বপূর্ণ ক্ষণ ও শহবমে রিতৌনে বহৰাঁক কাবণেঁ গাম মে হ্নকা ৰহ্ত খসকৌর্য দেখৰাঁমে খৰৈঁত ছনি, তৈঁ ও গামমে একটা ছোট্ট ছীন শহবক নির্মাণ কবৈত ছথি । এহি সঁ হ্নকা তঁ সহজ মোগত ছন্হি হ্মদা গামক খর্থ সমাপ্ত ভ জাগত ছৈক । খা কিছ দিনক পশ্চাত গাম মাত্র ও সবকাবী ফাওন মে নামকেঁ রূপমে বহি জাযত একব খাশঁকা ৰঁঠ়িত খছি । কাবণ গামক খর্থ ছন কম সেঁ কম স্বরিধামে বহৰ্ব হ্মদা খাওা ওকব খভার দেখন জা বহন খছি। একব কাবণ খছি গামমে শহব জেকা খপনা–খপনা মে জীরাঁক সংস্কাব নহি ছনৈক হ্মদা খাওা ওতহ্ ওা সংস্কাব দ্রুতগতি সঁ ৰঁঠ়ি বহন খছি ।

কাল্হি ধবি সভ সভক ক্ষশীন ক্ষেম, ওকব খোজ খরঁবি নৈত ছনৈক ক্ষদা খাঙ্গ ও সমাপ্‌ত ভ বহন ছৈক। সভ খপনামে সীমিত। জে গামক পবিদৃশ্যকেং রঁদনি দেনক। হমবা কখনো কখনো হোগত খছি জে যদি গামমে ওা স্থিতি এহিনা রঁঠ◌ৈত গেন তং হমবা নোকনিকেং খপন গামকেঁ খিস্সা মে তাকয পড◌়ত । হমবা জনৈত হম সভ মাত্র গামসং পনাযন নহি ভ বহন ছী খপিত্ত হমবানোকনি খপন গামকেং উঁজাবি বহন ছী । তৈং তং ভোবে ভোব জতঽ পবাতী স্বনাঙ্গত ছন খাঙ্গ হিন্দী ক ভজন নাউঁডীস্পীকব মে স্বনাগছ জাহি সং কখনো ওা নহি রুঁম্মাগত খছি জে ওা হমব গামক খামো রাঁজি বহন খছি, নগৈত খছি জেনা ওা গামক প্রেত রাঁজি বহন খছি জে খপন খামোক শান্তি নেন গামক নোকসং খন্বরোধ ক বহন খছি । খন্তমে মাঁক ওা পাঁতি জে মোরাঁগন পব কহনে ছনীহ যাত্রাদিন জে জযন্তী তঁ কাষ্টি নেনহুঁ, গোসাউঁন কে সেহো চঠ◌় । দেনযন্হি ক্ষদা এতয তঁ কেও নহি খছি, কি করু ? ক্ষদা ওা সোচিকেং বখৈত ছী জে যদি খহাং সভ গাম খাযরঁ তঁ দ দেরঁ । খা হম সোচয নগৈত ছী জে ওা মাত্র হমব মাঁক ভারনা নহি সম্পূর্ণ মিথিনাক মাযকেং হোগত হেতনি ।

<u>विद्यापति समारोह, विहार गीत आ मैथिल</u>

ढाँढा विद्यापतिक प्रति जे सहानुभूति छलन्हि ओ तँ तीनदिन्वका समारोहमे पूरा भ गेल। जिनकर मोनमे जे छल सभ किछु कहि देलन्हि अपन-अपन विद्वता आ योगदानक चर्चा जतेक करबाक छलन्हि से भ गेल। सभ अपन-अपन धारणा ढाँढा मिथिला आ मैथिलीक प्रति देखाओल,किछु गोटें रबसाती बेंग जेकां टेंरटेंराह आ किछु गोटे बड्ड गम्भीर भ किछु बात उठाओल। ओना ओकर संख्या कम्मे अछि , ओना ई एकटा सत्य छैक जे उचित आ गम्भीर गप्प कहनिहार कम होइत छैक । एहि परिपेक्ष्यमे एक जन कहलन्हि जे चेतना समितिक कार्यक्रममे आमलोकक संख्या कम छल ओकर कारण अछि जे चेतना समिति आमलोकसँ जुड़ल नहि अछि । बात ठीकें,मैथिलीक सभसँ पैघ संस्था सदा कार्य किछु लोकक हेतु। राजधानीमे संस्था सदा राजधानी मे मैथिलीक विरुद्ध होइत कोनो षडयंत्र सँ अनभिज्ञ। ओना सभसं बेशी सकारात्मक चिन्तन आयल धीरेन्द्र प्रेमर्षिक जे विद्यापतिकें राष्ट्रीय विभूति घोषित कयल जाए तेकरा लेल मांगैल आ जनसमर्थन पर काज कएल जाए, चिन्तन बड्ड नीक।

হেমনিমে রিদ্যাপতি পর্র সমারোহমে সত্তাশীন পার্টীক নেতাক নোকনি নেন নীক স্থিতি নহি ছন , কাবণ ও নোকনি খপন প্ববনা বাগ জে হম সভ মৈথিনীকেঁ খষ্ঠমখন্বসূচী মে স্থান দেরৌক নেন কোনা কোনা কী কী কএনহুঁ সে রেঁশী জোব সঁ নহি কহি সকনাহ। কাবণ স্বশাসন রাঁরূ তঁ হ্নকব নোকনিক এহি বাগকেঁ রোকি দেনহ্নি খপন গ্নতি সঁ । রিহাব গীত মে মিথিনাক চর্চ নহি। হম তঁ কহরঁ জে ভেন সে ঠীকে ভেন । হমবা নোকনি হাথউঁঠাগ ন ন ততেক নে ককবো গ্বণগান কবএ নগৈত ছী জে সভ কিছু রিসবি জাগত ছী। যদি এক দিশ মিথিনা বাজ্যক মাঁগ ক বহন ছী তঁ দোসব দিশ মৈথিনী খা মিথিনাক সংগ খন্যায কএনিহাবকেঁ সম্মান। (কাবণ পূর্ব হ্মখ্যমংত্রী ডা. জগবনাথ মিশ্র মিথিনা বাজ্যক রিবোধ কবৈত ছথি দোসব দিশ মিথিনাক সংস্থা হ্নকা সম্মানিত কবৈত খছি) হমবা জনৈত স্বশাসন রাঁরূ হমবা সভকেঁ জগরাঁক নেন কহি বহন ছথি যৌজী হাথউঁঠাগ জূনি নিয , সংঘর্ষ কব্দ তখনি মেরা ভেটৈত নহি তং গএহ সহনাবাযণ ভগরানক প্রসাদ। (ওনা কী ভ বহন খছি খাঠম খন্বসূচী মে মৈথিনী খযনা সঁ এহি পব রঁড্ড নীক চিন্তন কএনহ্নি খছি খাদবণীয পং.গোরিন্দ ঝা জী মিথিনা দর্শন মে সমীপেগ্র মধ্য ।) স্বশাসন রাঁরূ রূনৈত ছথি জে মিথিনা সঁ খাযন জনপ্রতিনিধি মিথিনা খা মৈথিনী নেন কতেক সাকাংক্ষি ছথি,যদি ও সভ কহতাহ জে নহি হম সভ সাকাংক্ষি ছী তঁ গ কোনা ভেন । কোন কাবণ সঁ মিথিনাক সংগ খন্যায কযন গেন কি ওকব সংস্কাব , সংস্কৃতি খা ভাষা স্বদূঢ় ছৈক তেঁএ , একব এক মাত্র কাবণ ছন হমব সভক ছোট মানসিকতা । যদি খপন খস্মিতা খা

স্বাযত্ত চাহৈত ছী তঁ নড়়য পড়়ত , আ সংগহি অপন চবিত্রকেঁ সেহো বঁদনয পড়়ত। কাবণ হমবা নোকনি ঘব মে খূব্ঁ কূদবঁ জখনে বাঁহব জাযবঁ তঁ সমঝৌতা পবস্ত ভ জাযবঁ আ ওা চবিত্রকেঁ বঁদননাক বাঁদেঁ হম সভ ওহি মিথিনা আ মৈথিনীক অস্মিতাক রিষযমে সোচি সকৈত ছী কহিযো সম্পূর্ণ ভাবতরর্ষক মান ছন মিথিনা। হমবা নোকনি কখনো সোচনহুঁ জে হমব সভক সাংস্কৃতিক আ ভাষাওা সংবঁধ হিন্দী পঞ্জী সঁ নহি পূর্বোত্তব আ নেপান সঁ অছি তখনি হমবা নোকনি কিযাক নহি হুনকে নোকনি জেকাঁ অপন ভাষা , অপন অস্মিতাক নড়় াওা কোনা নড়়ন জাগত অছি এহি পব সোচি । ওনা হমবা নোকনি হিন্দী দা কেঁ নহি ছোড়়বঁহ্নি আ তখনি ভেটৈত কি সে শৰ্দ্ধ নহি নিখি সকৈত ছী হমবানোকনি স্বযং সোচি। হমব সভক মানসিকতাক রিষয মে যৈহ ধাবণা অছি জে হম সভ মৈথিনী বঁজবাঁ সং কি মৈথিনী আ মিথিনাক কথা কহবাঁ সং নাজ কবৈত ছী, হমব একটা মিত্র ছথি হুনকা হম কহনিযনি জে অপনে পোথী মৈথিনী ভাষামে নিখ্ ভাষাক সেহো সেবা হোযত আ অহাঁক ওা কাজ সং বঁহ্ত গোটা প্রভাবিত হেতাহ এহি সং মৈথিনী আ মিথিনা কে নাভ হেতৈক,হুনকা গ্লানি ভেনহ্নি,তখনি হমবানোকনি সোচি সকৈত ছী জে মিথিনামে কেহন নোক ছথি ।

রিদ্যাপতি সমাবোহক সমাচাব পঢ়ন জাহি মধ্য একটা মহান্বভার কহনে ছনাহ জে মৈথিনী বোজী-বোটীক ভাষা ভ গেন অছি আবঁ একব রিকাস কিযো নহি বোকি সকত । হমবা মহাশয সং পূছিযনি কত। রিদেশী মে কি দেশী মে। এতেক ঝূঠ কিযাক । জে ভাষা অপন ক্ষেত্রমে শিক্ষাক মাধ্যম রা কোনো সংস্থা মে কার্যানিযক

ভাষাক ধবি নহি ভ সকল খছি ও বোজী কত স দেত। কাবণ মিথিনাক ভাষা মৈথিনী ভেল খা ও মৈথিনীক ঙা দশা ছৈক জে ওকব বিকাস নেন একগোট সংস্থা ধবি নহি ছৈক জখনি কি মিথিনাক খপন সম্পতি ছনৈক খপন শাসন ছনৈক । তখনি বোজী বোটীক সং এতেক জন্দী জোড়ব় কনেক খনসোমাঁত নাগন,এহিনা কিযো বঁজনে ছনাহ জে হম সভ খান্দাননক নেন তৈযাব ছী,ঙা কথা হ্নক হম প্রভুকে বিদ্যাপতি সমাবোহ মে স্বনৈত ছিযৈন্হ খা নগৈত খছি ভবিষ্যমে খাবো স্বনব। এহি পবিপেক্ষ্যমে বিঁহাব গীতক হংগামা উঁঠন বেঁচাবে সহনাবাযণ মিথিনা নহি দেখনন্হি খা একটা বঁচকৌন গীত নিখি বৈঁসনাহ খা তেকব বিবোধমে স্বব উঁঠন জে বিঁহাব গীতমে মিথিনাক চর্চ নহি কববাঁক নেন হমবা নোকনি বিবোধ ক বহন ছী ওজী বিবোধ কত কোঠবীমে ,কনে খাগূ বঁঠ়ূ(ঙা টিপ্পণী একগোট যশস্বী সাহিত্কাবক সংস্থা দেনে ছন হ্নকা নেন, কাবণ মিথিনাক জনতা ঘব সং বাঁহব ভেল টা নহি খছি ও সবঁ একব প্রতিবোধ ক বহন খছি) । কাবণ কিনকো মোন মে মিথিনা খা মৈথিনীক প্রতি সনেহ বহতনি,তঁ মৈথিনী খা মিথিনাকেঁ দ্‌দশা কিযাক কেনে বহিতথি।স্বকান্ত সোম মিথিনা দর্শন মে একটা নেখ নিখনে ছথি জে 'মৈথিনী হাথউঁঠাগ পব কতে দিন', জাহিমে জে-জে বিন্দ্‌ পব ও চর্চ কএনন্হি সে চিন্তনশীন খা গম্ভীব খছি । বাঁকী হম মৈথিন , কি কবৈএ ছী সে সময বঁতাওত।

পূর্বী ভাবতীয ভাষাক সেমিনাব ক ৰহৃত্ত্ব

হেমেনিমে গোহাটীমে একটা সেমিনাব খা কার্যশালা মে গেল ছলহুঁ । সেমিনাবক রিষয ছল নক্ষ্মীনাথ রেঁজরেঁকুখাঃ – সমকালীন পূর্বী ভাবতীয সাহিত্য খা কার্যশালা ছল নক্ষ্মীনাথ রেঁজরেঁকুখাক গল্পক পূর্বীয ভাবতীয ভাষামে খনুবাদ । ওতহ জতেক নোক খপন– খপন খালেখ পাঠ কএলন্হি ওকব মধ্য যৌহ দেখরাঁমে খাযল জে সম্পূর্ণ পূর্বী ভাষা নক্ষ্মীনাথ রেঁজরেঁকুখাক সমযমে খপন–খপন খস্মিতাক নেল নড়ৃ াঙ নড়ৃা বহল ছল জাহিমে খসমিযা খা উঁড়ৃা যা খপন স্বতংত্র স্থিতি স্থাপিত ক নেলক হৃদা মৈথিলী হিন্দীক পাঁজমে ৰহ্ত দিন ধবি কি খখনো দরাঁযল খছি খা ও ভাষাঙ

স্বতংত্রতা ভেনাক পশ্চাতো খখনি ধবি স্বতংত্র নহি ভ সকন খছি ওকব কাবণ বাজনীতি,সামাজিক,খা খার্থিক খছি । হমবা নোকনিক বাজনীতি জাতিগত সং ভড়ন খছি বাজনীতি মিথিনাক খস্মিতাক নেন নহি হোগত খছি মাত্র খপন স্বার্থক নেন। ওহিনা সামাজিক স্থিতিক খছি সমাজ জাতিগত ভেদভার ,পবম্পবারাদী মানসিকতা খা এক দোসবাক প্রতি দ্বষ সঁ ভড়ন খছি খা তাহু সঁ বেঁশী স্থিতি দযনীয খছি খার্থিক । স্বতংত্রতা এতেক রর্ষ ভেনাক রাঁরজূদো মিথিনা ভাবতক খন্য প্রাংত সঁ পিছড়ন খছি নোকক খেতী–বাঁবী চৌপট্ট ছৈক তঁ বোজী–বোটীক নেন খন্য প্রাংত জযরাঁক নেন মজর্বূব হোগত খছি খা পনাযন ওকব সংস্কৃতি , ভাষা খা স্বতংত্রতাকেঁ ছিনি বহন খছি ,জেকব কাবণ সংস্কৃতি খা ভাষা এক ঠাম সঁ দোসব ঠাম জাগত খা দহশত মে বহৈত জীরন জাহি কাবণ দরাঁযন জা বহন খছি। জেকব কাবণ হম সভ মৈথিনী ভাষী সং বেঁশী হিন্দী ভাষীক রূপ মে জানন জাগত ছী খা হম সরঁ খপন স্বতংত্র খস্তিত্ব নহি স্থাপিত ক পরৈঁত ছী । ক্দা গ্ৰ খসম্ভর নহি ছৈক এহি চেতনাক জগএরাঁক খারশ্যকতা ছৈক যদি খপন খস্তিত্বক নেন চেতনশীন বহরঁ খপন স্বতংত্র খস্তিত্ব পারি সকৈত ছী ক্দা হমবা নোকনি মে একব পূর্ণতঃ খভার খছি জেকব কাবণ হম সভ পিছড়ন ছী। খপনে দেখি সকৈত ছী খসমক চাহ রঁগান মে কাজ কবরাঁক নেন খানন গেন চাহ বাঁগানক মজূব খপন সংস্কৃতি খা ভাষাক খাধাব পব খপন স্বতংত্র খস্তিত্বক নির্মাণ মে নাগন ছথি খা স্বতংত্র খস্তিত্ব স্থাপিত কবরাঁমে সফন সেহো ভ বহন ছথি কাবণ ওকব মূনমে খছি হ্নক সাংস্কৃতিক একজূটৈতা খা ভাষাগ্ৰ

চেতনা। ঝদা হম সভ জাতিগত সংস্কৃতি , জাতিগত ভাষাক কাবণ এখনি ধবি ঋপন স্বতংত্র ঋস্তিত্বক নহি নির্মাণ ক পারি বহন ছী ওকব মূন মে ঋছি হমব সভক একজূটতাক কমী। নহি তং মিথিনামে কোনো সাহিত্কাবক দেহান্ত হোগত ছনি তঁ মিথিনামে কিনকো শোকাঙ্কন নহি দেখন জাগত ঋছি (জং কিনকো শোকাঙ্কন দেখন জাগত ঋছি ও হ্নক ঔপচাবিকতা ছী) জখনি কি মৈথিনী সাহিত্কাবো মিথিনাক নোকক জীরনকং ঋপন নেখনীক মাধ্যম সং রিশ্বে পবিদৃশ্যকং পবিচিত কববৈত ছথি ঋা এহি সাধনা মে নিন বহৈত ছথি তাহি রাঁরজূদো মৈথিনী সাহিত্কাবকং মিথিনাক সমাজ ঋা নোক ঋপনাসং নহি জোড়ি পবৈত ঋছি , ঝদা 29 নরম্ববক ভোব মে ঋসমিযা সাহিত্ ঋা ওত্তক্কা নোকক মামোনী রাঁগদেউঁ (ডা. গন্দিবা গোস্বামীক) নিধন হ্নকা প্রতি সংরেদনা দেখি নাগি বহন ছন জে ঋসমিযা নোকক পবিরাব ঋপন কিযো হ্নকা সভকং ছোড়ি কং চন গেন হোথি ঋা গু সংরেদনা দেখি নোকক প্রতি জে ভারনাক সংচাব হোগত ঋছি ওহি সঁ রৈশী ঋপনা উঁপব নাজ হোগত ঋছি জে এক্ক দেহ ঝদা সংরেদনা ঋা ভারনামে এতেক ঋন্তব কিযাক। ঋসমক ধবতী রাঁজাবরাদ সং রাঁচন ঋছি ঋা ত্তানক ধবতী মিথিনা সংরেদনহীন ভেন জা বহন ঋছি কিযাক এহি রিষয পব সোচ পড়ত ।

<u>রিশ্রেক ডা. গন্দিবা গোস্বামী ঋা ঋসমিযা নোকক মামোনী রাঁগদেউঁ</u>

যথার্থ মে গু সত্ ছৈক জে সংঘর্ষ একটা নর জীরনক জন্ম দৈত ছৈক ঋা জে ব্যক্তি সংঘর্ষকং ঋপন ভাগ্যক

দোষ নহি মানি ওকবা কর্ম পথক সাবথী মানি নিখএ তঁ ৰ্ন্স্ ও কতেক মাননীয খছি । ওা উঁদাহবণ খসমিযা সাহিত্যক মহিলা লেখিকা , সমাজসেবী খা শান্তিক লেন নড়ৈত ডাঁ. গন্দিবা গোস্বামীক মাদে কহি বহল ছী । খসমিযা ভাষা সাহিত্য , খসমিযা সমাজ খা লোকসং হ্নকা জে লগার খা স্নেহ ছলন্হি ওকব উঁদাহবণ দেখল জা সকৈত খছি হ্নকা দেহাৱসান খা হ্নকা প্রতি লোকক লগার । সম্পূর্ণ শহবে টা নহি সম্পূর্ণ খসম খপন ৰাঁগদেউঁক নিধন সঁ খাহত । ক্ষদা প্রশ্ন উঁঠৈত খছি ওা খামৌযতা খা সংৱেদনা কোনা প্রাপ্ত ভেলন্হি এহি ৰিদ্ষীকেঁ । তঁ খপনেকেঁ ভেটৈত সংঘর্ষ খা সংঘর্ষ সঁ উঁপজল এক–এক টা ৰূঁদকেঁ খপন জীৱনমে খামেসাত কবৱঁ । কহল জাগত খছি জখনি ৰাঁগদেউঁক জন্ম ভেললি তঁ জ্যাতিষক খনুসাব ওা খভাগনী হেতীহ খা হিনকা মাবি দেল জাএ ক্ষদা সে নহি ভেল , ক্ষদা ককবো খভাগ্যক খন্ত নহি হোগত ছৈক জ্যাতিষ দ্বাবা মাবি দেৱাঁ সঁ ৰাঁচি জীৱন তঁ ভেটৈলন্হি ক্ষদা দ্ভাগ্য ৰাঁগদেউঁকেঁ নহি ছোড়লক পিতা দ্নিযা সঁ ছোড়ি দেলন্হি খা ওকব পশ্চাত্ পতিক সড়ক দ্র্ঘটনামে নিধন । ওা সভ ঘটনা ৰাঁগদেউঁকেঁ এক দিশ খসগব ক বহল ছল তঁ দোসব দিশ সংঘর্ষক জন্ম দ বহল ছল । ক্ষদা ৰাঁগদেউঁ হাবৈত নহি ছথি জখনি কোনো প্ৰকষক জীৱনক খাবম্ভ হোগত ছৈক তখনি ৰাঁগদেউঁক জীৱন খন্ত হোগত খছি ক্ষদা ৰাঁগদেউঁক জীজিবিষা এতেক মজগূত ছল জে ৰাঁগদেউঁ এহি চ্নৌতীকেঁ খপন জীৱনসং খামেসাত্ কবৈত ছথি খা তেবহ বর্ষক খৱস্থা সঁ লেখনী প্রাবম্ভ কএনিহাব ৰাঁগদেউঁ প্ৰনঃ লেখনীসং জোড়ি লৈত ছথি । ৰাঁগদেউঁ মাত্র খপন লেখনী মে নহি ধ্রান্তি

नहि अबैत छथि ओ तँ अपन जीवन मे सेहो भ्रान्ति अबैत छथि। कहल जाइत अछि जीवनक एहि उंकस-पाकसक क्षणमे राँगदेउँ जखनि वृंदावन, काशी मे वास करैत छथि तँ राँगदेउँ अपन जीवनमे एक नव परिवर्तन अबैत छथि तँ दोसर दिशि राँगदेउँ विधवाक जीवनकेँ अपन लेखनीसँ कैनवास करैत छथि, कहल जाइत अछि राँगदेउँ ओतऽ सँ अयनाक वाद सधवाक रूपमे उँपस्थित होइत छथि आ जीवनक अन्त धरि ओहिना रहैत छथि। राँगदेउँक अपन जीवन मात्र लेखनी धरि सीमित नहि राखि ओ असमक शान्तिक लेल प्रयास करैत रहैत छलीह आ एहि कारण हुनका वहुत प्रकारक लांछना सेहो लगाओल गेल। म्रदा जीवनक अन्त धरि ओ एहि लागल रहलीह किन्तु दुखद जे जखनि ओ असमक ओहि संत्रासकेँ कैनवास करबाक सोचलन्हि तावत धरि ओ दुनिया छोड़ि देलन्हि। एहि तरहेँ देखैत छी जे राँगदेउँक जीवनमे जे जीजिविषा छल ओ मात्र असम आ असमिया साहित्य लेल नहि ओ सम्पूर्ण नारीक प्रतिक अछि जहिना मिथिलाक सीता सम्पूर्ण नारीक प्रतिक छथि ओहिना राँगदेउँ सम्पूर्ण नारीक मार्गदर्शिक।

ধীরেন্দ্র, মৈথিলী আ শিষ্য

মৈথিলী সাহিত্যমে রাজকমল, ললিত, মায়ানন্দ, ধীরেন্দ্র, রমানন্দ রেণু আ সোমদের ক পদার্পণ একহি কাল-অরধিমে ভেল। রাজকমল, ললিত, ধীরেন্দ্র আ রেণু আর নহি ছথি। মায়ানন্দ আ সোমদের মাত্র অপন পীঢ়ী ক প্রতিনিধিত্ব কবৈত ছথি, সেহো নাম মাত্রকেব, কাবণ পীঢ়ী ক প্রতি রর্তমানমে হুনকা সভক কোনো ঠোস কাজ নহি তঁ দেখল জা বহল অছি আ নহি তঁ অপন পীঢ়ী ক সংগ ভেল অন্যায প্রতি কোনো ঠোস প্রতিক্রিয়া দেখরাঁমে আএল অছি। ওনা এহি পীঢ়ী ক একটা রিশেষতা ই ছল সভ কেও সর্ররিধারাদী ছলাহ, মূলতঃ কথাকাব আ উপন্যাসকাব বহিতো। সময়ক জ্ঞান ছলন্হি হিনকা সভ গোটেমে। ই নিশ্চিত জে ও লোকনি সাহিত্যকাব তঁ উচকোটিক ছলাহে ওহিসঁ রেশী মৈথিলী আন্দোলনকাবী আ চিংতক ছলাহ। ওহি সম্বন্ধমে কিছুও উদ্ধৃত কবরাঁক আরশ্যকতা নহি, কাবণ মৈথিলী সাহিত্যক রিষযমে থোড়েরো জানকাবী বখনিহাবকেঁ হুনকা লোকনিক রিষযমে জরুব বুঝল হেতনি। হম এতয চর্চ মাত্র ডা.ধীরেশ্বর ঝা ধীরেন্দ্রক কবএ চাহৈত ছী, কাবণ অছি ধীরেন্দ্রক অরসান জনরবী মাসক নও তাবীখকেঁ ভেল ছলন্হি। দোসব ধীরেন্দ্রক কর্মভূমি নেপাল বহল আ ওতুক্কা রহতো সাহিত্যকাব, বুদ্ধিজীরী আ আম লোকক অনুসাবেঁ আধুনিক নেপালক মৈথিলী সাহিত্যক জনক ডা.ধীরেন্দ্র ছথি। হমব কহরঁ অছি জে যদি ডা.ধীরেন্দ্র নেপালক আধুনিক সাহিত্যক নির্মাতা ছথি তঁ কোন কাবণেঁ ধীরেন্দ্রকেব উপেক্ষা কএল জাএ বহল অছি? হুনক দীর্ঘ শিষ্য-মন্ডলী বহিতো, জাহিমে সর্রশ্রী বামভরোস

কাপড়ি 'ভ্রমব',জে সাম্মা প্রকাশন সঁ ন ক প্রক্তো প্রতিষ্ঠান ধবি প্রতিনিধিত্ব কযনন্হি থছি, ধীবেন্দ্রক কোনো থপ্রকাশিত পোথীক প্রকাশন নহি হোএবঁ, হ্নকা পব কেন্দ্রিত কোনো সংগোষ্ঠীক থাযোজন নহি হোএবঁ, হ্নক যোগদানকেব রিষযমে কোনো পোথী প্রকাশিত নহি হোযবঁ থাদি তঁ হ্নক উপেক্ষে নে থিক। একব জরাবঁ হ্নক শিষ্য মন্ডনিএ দএ সকৈত ছথি। হঁ, এহি পবিপ্রেক্ষ্যমে জঁ কেও থপন উদাবতা থা ধীবেন্দ্রক প্রতি সম্মান দেখৌনক তঁ ও থিক মিনাপ, জনকপুব, জে রিগত রর্ষ হ্নক কথা সংগ্রহ প্রকাশিত কএনক। ধীবেন্দ্রক শোণিতসঁ পোষিত নেপানীয মৈথিনী হ্নি হ্নি বহন থছি, মুদা পতা নহি জে কোন কাবণেঁ নেপানীয মৈথিনী সাহিত্যক মহনকেঁ ঠাঠ় কযনিহাব এহি সাহিত্য–মনীষীকেঁ রিগতক কর্তা–ধর্তা নোকনি রিসবি গেনাহ থছি। ধীবেন্দ্রক রিষযমে সম্পূর্ণ নেপানক নোক গএহ কইত ছথি জে ও মৈথিনীক নেন থা থপন জনকপুবক শিষ্যক নেন জীরৈত ছনাহ তেঁ শ্যামস্বুন্দব শশি হ্নক রিষয মে নিখনে ছথি জে থাবঁ জনকপুবমে গুরুক্ষনক পবম্পবা সমাপ্ত ভ গেন, মুদা ওহো হ্নবিছা নহি সকনাহ জে এহি গুরুক্ষনক পবম্পবা সমাপ্ত হোযবাঁক কাবণ কি ছন। হমবা জনৈত একব কাবণ ছন রা থছি নোককেঁ চিন্হরাঁজন্য তীক্ষ্ণ দৃষ্টিক থভাব ও ওহন ত্যাগী–তপস্বী–মনস্বী সাহিত্যকাবসন যোগ্য গুরুক থনুপনর্ষ্বতা। ওনা একটা প্রসন্নতাক রিষয থছি জে এহি গুরুক্ষন পবম্পবাক চিন্তনমে নেখ নিখনিহাব থা ধীবেন্দ্রক গুরুক্ষন পবম্পবাক শিষ্য শ্যাম স্বুন্দব শশি নেপানীয মৈথিনী সাহিত্যক রিকাসক নেন স্থাপিত কযন গেন রিদ্যাপতি কোষক সচির সংগ নেপানমে মৈথিনীক থধ্যাপক ভেনাহ

অছি আরো দেখবাক চাহী জে ও অপন গুরুকেঁ মোন পাড়ৈত ছথি বা নহি, সঙ্গহি এহো সমযস সঙ্গ অপেক্ষিত রহত জে ওহি গুরু–শিষ্য পরম্পরাক রক্ষা করতাহ বা নহি। এ তঁ সর্ববিদিত অছি জে ধীরেন্দ্রক গুরুজনক পরম্পরাসঁ মাত্র নেপালক লোককেঁ লাভ ভেলন্হি, হুনক পরিবার আ স্বযং ধীরেন্দ্রকেঁ ওহি পরম্পরাকেঁ নিবাহি কররামে দুখ আ অপমান ছোড়ি কিছু নহি ভেটৈলন্হি। ধীরেন্দ্রক বিষযমে একটা নেপালী ভাষী শিষ্য জগদীশ ঘিমিরে অপন নেপালী ভাষাক উপন্যাস 'অন্তর্মনকো যাত্রা' মধ্য লিখনে ছথি – ভারতীয মিথিলাকা ডা.ধীরেন্দ্র , ক্যাম্পসমা মৈথিলীকা গুরু তথা হিন্দী র অংগ্রেজীকা পনি বিদ্বান থিএ। উনী সাহিত্যমনীষী থিএ র থিএ জনকপুরকা আধুনিক মৈথিলী র নেপালী সির্জনশীল সাহিত্যকা প্রেরণা। অরুকা লাগি পনি উনী মেরা প্রেরণা থিএ। উনী সাহিত্য নৈ সাস ফের্থে। উনকো সপনা– বিপনা সবৈঁ সাহিত্য নৈ থিযো। সাহিত্যচর্চামা ডুবের উনী অঘাউঁদৈনথে, জসকা সিতন হুন্থে চিযা র পান। পছি জর্দা থপিযো। হুলশকায সী মৈথিল পণ্ডিত দিনভরি বোলের র রাতভরি লেখের থাক্তৈনথে। ম সোচ্থেঁ – যী কহিলে স্বত্তছন্ হোলা ? কহিলে খান্ছন্ হোলা ? আ আগু ও লিখ্যৈত ছথি জে ডা.ধীরেন্দ্র মেরো সাহিত্যকা মেন্টর হুন্, দৃষ্টিগুরু। সাহিত্য র জীরনদর্শনকা মেরা জিজ্ঞাসাকা গাঁঠা ফুকাউন উনী সধৈঁ তযের হুন্থে। উনী উমের পুগেরৈ বিতে ভন্দা হুন্ছ। মৈথিলী সাহিত্যমা উনকো নিকৈ ঠূলো স্থান ছ। জস্তা কি সাহিত্যকাবহরুকো নিযতি হুন্ছ, উনকো বৃদ্ধারস্থা দুঃখদ থিযো। আর্থিক র মানসিক রূপমা তনারগ্রস্ত থিএ।"

ক্রমশ

एतय ई उक्तिक बखरबाक दू टा कारण अछि, पहिल जे लेखक नेपाली भाषी छथि ओ दोसर ई जे ओ कोन कारणेँ ई लिखबाक लेल विवश भेलाह जे 'आब गोटेक प्रेरणा होथि वा नहि हमर प्रेरणा छलाह, दोसर कोन कारणे धीरेन्द्रक मानसिक रूपमे तनावग्रस्त छलाह'। एहि उक्तिक व्याख्या करब हमर नियति नहि अछि एतय मात्र हमर प्रश्न अछि एहन नियति डा.धीरेन्द्रक संग कियाक भेल जखनि कि ओ एतेक पैघ जमातिक गुरु छलाह। धीरेन्द्र प्रेमर्षि अपन आलेख मैथिलीक आकाशिक भोरुकबा: डा.धीरेन्द्र मध्य लिखने छथि जे – " यथार्थ कहल जाए तँ आगयो जँ नेपालक मैथिली साहित्यसँ डॉ. धीरेन्द्रक सक्रियताटाकें कतिया देल जाए तँ ई छुछन्न भऽ जाएत। कहबाक लेल कहल जागत छैक जे नेपालमे मैथिलीक एना भेल–ओना, मुदा जे–जेना भेल मात्र डॉ. धीरेन्द्रकेँ लऽ कऽ भेल। जँ धीरेन्द्र आ हुनक व्यक्तित्व नहि तँ नेपालक मैथिली साहित्य किछु नहि। ई यथार्थ अछि।" तखनि डॉ. धीरेन्द्रकेँ हुनक अवसानक एतेक वर्ष वितलाक पश्चातो अपन व्यक्तित्वकेँ अपन हाल पर छोड़ि देबाक पाछु कोन मंशा तँ होयत नकारात्मक वा सकारात्मक ?

किछु दिन पूर्व एकटा सेमिनारमे गौहाटी गेल छलहुँ, ओहि ठाम जखनि नेपाली भाषाक विकासक चर्चा हुअए लागल आ साहित्यक विकासमे नेपालक साहित्यकारक योगदानक चर्चा भेल तँ दार्जिलिंगक एकटा युवा शोधार्थी कहलनि जे नेपाली भारतीय साहित्यक विकासमे नेपालक साहित्यकारक नाम किया लेल जाइछ, ताहि पर एकगोटे प्रतिक्रिया व्यक्त करैत कहलनि जे यदि साहित्य रचनाक सेहो भौगोलिक

সীমা হ্খএ নাগন তঁ ওা সাহিহ নিখরাঁক কোনো প্রযোজন নহি , কাবণ সাহিহকাবক কোনো ভোগৌনিক সীমা নহি হোগছ খা ওহিনা ভাবতীয নেপানী সাহিহমে নেপানক সাহিহকাবক যোগদান চর্চ কবর ওহি সিদ্ধান্তক খন্তস্মাত খছি যদি নেপানক সাহিহকাব ভাবতমে বহি খপন সাহিহ সেরা ক বহন ছনাহ তখনি ও নেপানক ভেন কি ভাবতক। খা হমবা জনৈত ধীবেন্দ্রকেঁ খপন জন্মভূমি প্রতি খগাধ স্নেহ ছনন্হি তৈঁ ও নেপানক নাগবিকতা নহি নেনন্হি হ্মদা খপন কর্মভূমি প্রতি খগাধ স্নেহ ছনন্হি তৈঁ ও খপন সন্তানসঁ রেঁশী নেপানীয মৈথিনীকেঁ স্নেহ দেনন্হি। হ্মদা কি! হ্নক ওা ভারনাক বক্ষা কযন গেননি – উঁত্তব ভেঁটৈত নহি। মহাভাবতমে গ্বক দ্রাণকেঁ মাত্র খপন খাদর্শ গ্বক মানরাঁক কাবণেঁ একনর্য্য খপন ওঁঠা দান দেনে ছনাহ, হ্মদা ধীবেন্দ্রকেঁ মাত্র গ্বক খা নেপানক মৈথিনী সেরা কবরাঁক কাবণেঁ হ্নকা শিষ্য নোকনি হ্নক গর্দনি ধবি কাটি নেরাঁক ষডযংত্র কবৈত ছথি। সময–সময পব ধীবেন্দ্রক শিষ্য নোকনি ধীবেন্দ্র ভাবতীয ছথি একব মৌখা ঠাঠ় কয ধীবেন্দ্রকেঁ নেপানসঁ কতিএরাঁক প্রযাস কযনন্হি খা সফন সেহো ভেনাহ। মৈথিনী খাকাশিক ভোরুকরাঁঃ ড়ॉ. ধীবেন্দ্র মধ্য ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষি হ্নক শিষ্য নোকনিক রিষযমে নিখনে ছথি জে– "তহিযা জহিযা নেপান বাজকীয প্রজ্ঞা–প্রতিষ্ঠানক সদস্য হএর রিশেষ গৌবরক রিষয মানন জাওত ছন, হিনকা প্রজ্ঞা–প্রতিষ্ঠানে মনোনযন কএন গেন ছননি। হ্মদা হিনক খপনে কিছ তথা কথিত শিষ্যসভ, জিনকা খাঙ্গুব পকড়় ি কহ নেখনক একপেড়় ি যা পব ওা চনহ সিখৌনে বহথিন, কাঠমাণ্ডূ ঠেকি গেন জে ওা তঁ ভাবতীয ছথি, তঁ হিনকা এহিমে নহি হোএরাঁক

चाहियनि।" आर एतय प्रश्न उठैत अछि जे जहिना धीरेन्द्रक प्रति हुनक किछु प्रिय शिष्य द्वारा आ विरोधक स्वर उठाओल गेल जे ओ भारतीय छथि तखनि तँ कहियो आहो मिथिला आ मैथिली विरोधी (नेपालमे) उठा सकैत छथि जे विद्यापति सेहो भारतीय छथि (कारण विद्यापतिक जन्म भारतक मधुबनी जिला मे भेल छलनि) ओ कोना राष्ट्रीय विभूति होयताह ? तखनि ओकर उत्तर की देबैक,कोनो उत्तर अछि ? (कारण कहियो भारतक दार्जिलिंग मे एहि प्रकारक स्वर भानु भक्त प्रति आयल छल), कारण स्वार्थक कारण धीरेन्द्र वा महेन्द्र मलंगियाकेँ भारतीय कहि कात क दैत छियनि (यदा कदाकेँ छोड़ि) तखनि एहि प्रश्नक उत्तर देब सहमे असम्भव होयत। कारण काल्हि धरि अपन स्वार्थक लेल जे आधि आनने छी ओहि आधिमे एक न एक दिन अपनो असय पड़त। कारण साहित्यकार , विचारक आ ज्ञानीक नहि तँ सीमा रेखा सँ बान्हल जा सकैछ आ नहि अपन संकुचित विचारसँ, ओ तँ पानीक ओहन धार होगत छथि, जे जतए चाहथि बहैत अपन ज्ञानक सरितासँ समाज आ लोककेँ अभिभूत करैत अपन ज्ञान सँ समाजकेँ आलोकित करैत जागत छथि। एहि तरहेँ कहि सकैत छी जे आधुनिक कालक पं.जीवनाथ झा, डा. धीरेन्द्र , प्रा.मौन, महेन्द्र मलंगिया , मध्यकालक मल्ल राजाक दरबारक नाटककार ,कवि आ प्राचीनकालक कोनो सिद्ध साहित्यकार होथु, हुनका भौगोलिक सीमासँ बाँधि राखब अपन ज्ञानकेँ सीमामे बान्हब सदृश होएत। अन्तमे डा.धीरेन्द्रक प्रति आस्था व्यक्त करैत हुनक प्रकाशनाधीन मैथिली कविताक संग्रह 'छिड़ि याएल फूल' सँ एकटा कविताक उद्धृत करैत अपन कथ्यकेँ दृढ़ता

प्रदान करबाक प्रयास करैत छी–
"जिनगी ने करैए, ने नोर रहरैए;
 ओ तँ रीतेत क्षणक खेतमे रीया छीटैए।"



डॉ॰ शिशिधर कुमर, एम०डी०(आयु०) – कायचिकित्सा, कॉलेज ऑफ आयुर्वेद एन्ड रिसर्च सेन्टर, निगडी – प्राधिकरण, पूणा (महाराष्ट्र) – ४११०४४

पोथी समीक्षा : गामक जिनगी

हम कोनो व्यावसायिक आलोचक, समालोचक वा समीक्षक नञि छी, पर मैथिली पाठक – लिखब नेनपने सँ नीक लगैत छल तेँ आइ एक गोटे पोथीक समीक्षा लीखि रहल छी । पोथी थिक श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जी रचित कथा संग्रह "गामक जिनगी" – ओना कोनो पोथीक ई हमर पहिलहि समीक्षा छी । एहि पोथीक समिक्षा

पहिनहुं किछु जगह वेनॉग वा पत्रिका आदि मे प्रकाशित भेल छलन अछि जे पाठक हम स्वयं पूर्ण रूपेण संतुष्ठ नहि भेल सकनहुं आ पोथीक पुनर्समिक्षा करबाक इच्छा भेल । वेह्धा देखल जाइत अछि कि कथा संग्रहक नाँव कोनो एक गोट महत्वपूर्ण कथा वा घटना वा अंश पर राखि देल जाइत अछि, पर एहि वेव से नहि । एहि संग्रह मे १९ गोट कथाक समावेश भेल अछि आ संग्रहक हरेक कथा स्वतंत्र रूपें व समग्र रूपें संग्रहक नाँव कें प्रतिबिम्बित करैछ । हव कथा मे गामक जिनगीक एक अनगहि स्वरूप देखवा मे अबैछ ।

आमुख मे श्री सुभाष चन्द्र यादव जी वेहत सटीक लिखने छथि – "एहि संग्रहक कथा सभ मे औपन्यासिक विस्ताव अछि । वर्तमान समए मे प्रचलित आ मान्य कथा सँ ई कथा सभ भिन्न अछि । हव कथा घटना वहुलता आ ऋजु सँ युक्त अछि ।" पर एहि औपन्यासिक विस्ताव आ ऋजु सँ युक्त होयवाक वाँदो हरेक कथा रूचिकर, नयवस्तु आ सुसम्बद्ध अछि । आधुनिक टीभीक धावावाहिकक सदृश भँसियाइत नहि अछि, दिशाहीन सन नहि वूझि पडैत अछि । कथा केव प्रवाह दिग्भ्रमित नहि होइत अछि । कथाक हव घटना अप्पन ऋजु वा वक्रताक वाँवजूदो कथाक मुख्य भावनाक वा विषयवस्तुक अनुपूरक व सम्पादक अछि । जेना कि "डाक्टव हेमन्त" नामक कथा मे गामक जमीनक दियादी वँटवाडा, सवकावी लोकवीक मानसिकता आ क्लिनिकक मानसिकता आ वाँटाक संघर्ष चित्रित अछि पर तइयो कथा मे कोनो विवोधाभास नहि अछि, कथा एक नय

मे शान्त अखल्ड प्रराह जेना आगू रॅठ़ ेत बहैत अछि ।

बौदी –

दाही मिथिनाक सभ दिन सँ प्रम्फ़ख समस्या – तेँ गामक जिनगी मे ओ समारिष्ठ नञि हो से कोना । कथा संग्रहक आबस्तु "भैँटैक नारा" आ "रिँसाँठ़" नामक कथा सभ सँ होगत अछि जाहि मे क्रमशः दाही (रॉठ़ि) आ बौदी (अकान) केब रॅह्तहि सटीक र सजीव रब्णन भेटैछ । ओना मिथिनाक अभिन्न अंग होयरॉक काबणेँ एहि रिँभीषिका सभक रिभिन्न रूपक दर्शन आनो कथा सभ मे भेटैछ – पब हब रेँब नहर स्वरूप मे, प्वनरूक्ति कतह् नहि । 1967 ई० केब अकान मे भाबतक तकोनीन प्रधानमन्त्री केँ देखाओन गेन छन जे कोना म्फ़सहब नोकनि रिँसाँठ़ खा कह अपन जीवनक बक्षा कएनन्हि – तकबे अधाब रॅना कह "रिँसाँठ़" नामक कथा निखन गेन अछि । यद्यपि ई एहि प्रकाबक कथा मैथिनी साहित्य मे रॅह्त पहिनहि अयरॉक चाहैत छन – पब नहि आरिँ सकन, एखन आयन अछि – मैथिनी साहित्यक धबोहड़ि कथा रॅनत ।

जिनगी रास्तब मे एकटा संघर्ष थिक, पब जे हिम्मत नञि हाबैत अछि, पबिस्थितिक सामना कबैत अछि आ आगाँ रॅठ़ ेत अछि सएह जीतैत अछि । ई एहि संग्रहक प्वर्धिक हबेक कथाक मून मन्त्र अछि तथापि पठ़रॉ मे उँपदेशात्मक कथा सनि रॉचिन कथमपि नञि रूँझि पड़ैत । हब कथा मैथिन समाजक रिभिन्न सामाजिक, आर्थिक रा व्यारसायिक रस्त्रक जीरन संघर्ष केँ सजीव रूपेँ चित्रित कबैछ चाहे ओ रॉनिहाबिन "मबनी"

হো, ঠেনারঁনা হো, চূনরানী হো, দূ পাগ কমযরাঁক গচ্ছা সঁ দিন্নী জাযরঁনা “ফেক্ষথ্বা” হো, পীবাবক ফ২ড় রেঁচি গ্বজব কএনিহাব “পিচক্ষন থ্বা ধনিযা” হো রা জীরিকাক নেন সংঘর্ষবত “শোভাকান্ত র উঁমাকান্ত” হো । চাহে ও জীরনক উঁত্তবার্ধ মে গাম থ্বাযন “শ্রীকান্ত থ্বা ক্ষক্ষন্দ” হোথি, ন২র হ্যগক জীরনক থভিনাষী “ক্ষস্বমনান” হো, মাএ রাঁপ কেঁ একসবি ছোড়ি থমেবিকা রঁসনিহাব “বঘ্নাথ” হো থথরা থপ্পন নিজি জিনগী থ্বা আঁফিসক রাঁচ ওঝড় াযন “ডাঁকিঁব হেমন্ত” হো ।

কিনকো মোন মে ভ২ সকৈত ছন্হি জে জিনগী ত২ ওহিনা সংঘর্ষ থিক – ওহি মে ঙা সংঘর্ষক খিস্সা – পিহানী কে পঠ়ত ? পব সে নহি, নেখক কেঁ মনোরিজ্ঞান পব এতেক জরঁদস্ত পকড়ি ছন্হি জে ও জিনগীক সংঘর্ষক এহি কথা সভ কেঁ সেহো থন্ত সহজ ও রুচিকব ঢংগ সঁ প্রস্তুত কবরাঁ মে সক্ষম ভেনাহ থছি । কোনো কথা কত্তহু নিন্নক গোনী সনি নঞি বুঁঝনা জাযত । পাত্র সভক নাঁর – গাঁর ভনে জে হো পব কথা পঠ়রাঁক কান হব রস্থাক পাঠক নোকনি কেঁ কথা থপনহি রা থপনহি কোনো সব – সম্বন্ধীক বুঁঝি পড়তন্হি ।

রঁহ্তেক কথা জিনগীক সংঘর্ষ রা দুখ সঁ প্রাবম্ভ হোগত থছি পব স্বখান্ত থছি – ঙা পাঠক কেঁ এক মনঃ স্ফূর্তি দৈছ । কিছ কথা কিছ রস্থা র ওহি রস্থা সঁ জুড়ন র্যরসাযক সৈকড় । রর্ষক উঁতাব চঠ় ার র সংঘর্ষ কেঁ চিত্রিত কবৈছ, জেনা কি ক্ষস্হাব (হাবি – জীত) , চূনরানী থ্বাদি । রাস্তর মে ঠেনারনা, বিক্সারনা, চূনরানী, রোঁনিহাবিন, ক্ষস্হাব থ্বাদি সভ ত২ থপনহি

মৈথিন সমাজক ঋংগ ছথি পব মৈথিনী সাহিত্য শাযদে কখনহ্ ঋপন এহি ঋভিন্ন ঋংগ সভক স্বধি নেনক ঋা তেঁ এহি রস্মক নোক সভ ঋপনা কেঁ মিথিনা – মৈথিনী সঁ পৃথক বুঁমৈত বহনাহ । ঞা কথা সংগ্রহ হ্নিকা নোকনিক মন মে রিশ্বাস ঋা ঠাঠ়স দৈছ কি ওহো সভ এহি মৈথিন সমাজক ঋরিভাজ্য ঋংগ ছথি । যদ্যপি প্বর্ব মে কিছু সাহিত্যকাব নোকনি এহি ঋার্থিক রা সামাজিক ৰূপ সঁ পিছড়ন , সংঘর্ষবত সম্প্রদায পব নিখবাঁক প্রযাস কযনন্হি ঋছি পব যা তহ ও দ্বত্রিম বুঁম্মাগত ঋছি ঋথরা যথার্থপবক বহিতহ্ পাঠকক নেন ও রোঁম্মিন সন বুঁম্মনা জাগছ । এহি রিষয সভ পব যথার্থপবক নীক র ৰুচিকব কথা সভক মৈথিনী সাহিত্য মে রঁহ্ধা ঋভার বহন ঋছি । হমবা রিচারেঁ এহি কথা সংগ্রহ মে ঞা দোষ নঞি – কথা সংগ্রহ কেব হবেক কথা রিভিন্ন সমাজিক রা ঋার্থিক রস্মক জীরন সংঘর্ষ কেঁ চিত্রিত তহ কবৈছ পব সংগহি সংগ পঠ়রাঁ মে ৰুচিকব সেহো নগৈছ । একব ঋতিবিক্ত কিছু কথা – জেনা কি "ঋনেৰুঋা রেঁঠৌ" ঋা "কামিনী" – ঋন্ত মে এক গোষ্ঠ প্রশ্ন ছোড়ি সমাপ্ত হোগত ঋছি । কথা নেখনক ঞা শৈনী মৈথিনীক প্রশিদ্ধ কথাকাব স্ব° বাজকমন চৌধবীজীক কথানেখনক শৈনী সঁ সাম্য বখৈত ঋছি জখন কি ঋান কথা কিছু হদ তক স্ব° হবিমোহন ঝাজীক কথাশৈনী সঁ সাম্য প্রদর্শিত কবৈছ । পব শৈনী মে এহি প্রকাবক সাম্য কথমপি কোনো কথাক মৌনিকতা কেঁ প্রভারিত নঞি কবৈছ ।

কিছু নোকনিক কহবঁ ছন্হি জে নেখকক কথা সংঘর্ষপবক ছন্হি , সৌন্দর্যপবক নহি । পব হমবা জনৈত নেখক জিনগীক সংঘর্ষক সংগ –

संग जिनगीक सौन्दर्यक सफल ओ सकाबामेक चित्रण कयनन्हि अछि । लेखकक सौन्दर्यबोध मात्र दैहिक नञि भऽ कऽ बहुत ब्यापक अछि आ कायिक सौन्दर्यक अतिरिक्त जगत – जगत पर मानसिक ओ प्राकृतिक सौन्दर्यक अजगुत चित्रण भेटैछ ।

लेखक जहिना मैथिल समाजक विभिन्न सामाजिक, आर्थिक वा ब्यावसायिक रूपेण दलित (पिछड़ल) वर्गक जीवन संघर्ष केँ अपन लेखनी मे उँताड़बा मे सफल भेलाह अछि तहिना स्त्रिगणक मनोवैज्ञानिक चित्रण करबा मे सेहो । हरेक वयसक व वर्गक स्त्रीक मनोदशाक सजीव चित्रण एहि कथा संग्रह मे यत्र – तत्र भेटल पड़ल अछि । चाहे ओ भैँटक लावा मे "जिवछी" हो, विसाँढ़ मे "सुगिया" हो, पीवाबक फऽड़ बेचनिहारि "धनिया" हो, फेकुआक माए "बामसुनरि" होथि, पजेबा फोड़निहारि बृद्धा "मखनी" होथि वा मखनीक संग नवँनवँ कएनिहारि स्वच्छन्द बाला "सुगिया" । चाहे पति सँ दूर घड़ी रात करबाक लेल तत्पर "बागिनी" हो, चून बेचनिहारि "मखनी", ओकर पुतोहु "फुलिया" वा ओकर पोती "कबुतरी" हो, मसोमात "लखिया" होथि, आधुनिक नऽव परिवेशक बाला "सुनएना" हो अथवा कोशी कछेड़क निश्छल बाला "सुलोचना" हो ।

एकर अतिरिक्त लेखक किछु आनो सामाजिक समस्या सभ दिशि इशारा कएलन्हि अछि यथा स्त्री – भ्रूण हत्या (ठेलाबला), शराबक समस्या व नऽव जीवन शैलीक लापरवाह अनुकरण (भैयारी), नऽव जीवन शैलीक महत्वाकांक्षा आ टूटैत सम्बन्ध (बंगाल, पछताबा व कामिनी), प्रतिभा पलायन (पछताबा),

साम्प्रदायिक हिंसा (रंगीन) आ रूपैय्याक जोड़ाँ रेमेन रिंयाहु (कामिनी) आदि ।

पोथीक भाषा शैली सर्वसामान्यक विशुद्ध मानक मैथिली थिक । ओना कतहु कतहु क्रिया आदिक प्रयोग मे मानक मैथिली सँ थोड़ेक हटि कऽ बुझि पड़ैत अछि (यथा "नागर" केर स्थान पर "नगर") परञ्च ओ कथाक पात्र आ परिवेशक अनुरूपहि थिक तेँ ओ मानक मैथिली सँ पृथक नहि थिक । भाषा विन्यास वस्तुतहि सहज ओ स्वभाविक अछि तेँ बुझबा मे दुरूह नहि । "किछु" केर जगह हमेशा "कछु" वा "कछु" केर प्रयोग भेल अछि जे वस्तुशः कथानकक अनुरूप सही अछि पर कतहु - कतहु मानक मैथिली मे भऽ रहल सम्वाद मे अचानक "कछु" या "अगठीन" केर प्रवेश अखरैत अछि । एकरहि शब्द, पात्र ओ परिवेशक अनुसारेँ साहित्य मे एक स्थान पर मानक भऽ सकैछ तऽ दोसर स्थान पर नहि – यथा "कछु" या "अगठीन" – जँ कथा मे कोनो गामक सर्वसामान्य लोकक वार्तालाप थिक तऽ ओहि ठाम मातृभाषा होयबाक कारणेँ ओ मानक मानल जायत, पर ओएह शब्द जँ कथा मे कोनो मैथिलीक विद्वान बजैत अछि वा आन लोक - जकर मातृभाषा मैथिली नहि थिक - से बजैत अछि तऽ ओहि ठाम ओ मानक सँ विचलित बुझल जायत । पोथी मे शब्दक वैविध्य आ खाँटी मैथिलीक विलोपित होइत शब्द सभक प्रयोग स्व० हरिमोहन झा जीक रचना सभक याद करा दैत अछि । खाँटी मैथिलीक विलोपित होइत शब्द सभक ई कथा सभ एक अनमोल संग्रह थिक । इतिहासक

किछु एहनो रीतक उपेक्षा एहि कथा सभ मे भेटैछ जे शायद एखनुका पीढ़ी कें धिया पुता कें नहि बुझल होन्हि – यथा चून पहिले ठोका सँ बनैत छल (चूनबाली) , कोना छतौनी सभ सभ मैथिल क्षेत्र मे अपनहि गलती सँ आन भाषा – भाषीक आधिपत्य भेल (बंगलिआविल मरनी) आदि ।

अन्त मे हम श्री गजेन्द्र जीक पाँती (पोथीक पश्च मुखपृष्ठ पर देल) कें दोहराबए चाहब जे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जी केर कथा सभ मैथिली कथा धाराक यात्रा कें एकभगाह होयबा सँ बचा लैत अछि । एहि संग्रहक सभटा कथा उत्कृष्ठ अछि, मैथिली साहित्यक विशुद्ध स्थानक पूर्ति करैत अछि आ मैथिली साहित्यक पुनर्जागरणक प्रमाण उपलब्ध करबैत अछि ।

ओना तऽ कोनो पोथी कें पाठ्यक्रम मे शामिल करबाक की प्रक्रिया छै से हमरा नहि बुझल पर अपन विषयवस्तु, मौलिकता आ भाषाविन्यासक आधार पर एहि कथा सभ कें पाठ्यक्रम मे सम्मिलित करबाक चाही । केवल एक – आध कथा कें नहि अपितु सम्पूर्ण कथा – संग्रह स्नातक वा उच्चतर मैथिलीक पाठ्यक्रम मे शामिल करबा जोग अछि । बहुत सम्भव अछि जे हमर ई बात आइ अतिशयोक्ति लागए पर भविष्य मे ई जरूर मैथिली पाठ्यक्रम मे अपन स्थान बनाओत ।

पोथीक नाँव – गामक जिनगी
लेखक – श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
प्रकाशक – श्रुति प्रकाशन, 8/12, न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली – 110008

দাম (অজিল্দ / সাধাবণ সংস্কবণ) – ভাবতীয় রু০ 200/ মাত্র, রা US $ 60

পোথী সমীক্ষা – অম্লবা

কোনহ্ ভাষাক জিরৈত হোযরাক প্রমাণ কী ? গএহ জে জাহি ক্ষেত্ব রিশেষ মে ও ভাষা রাজন জাগত অছি ওহি ক্ষেত্ররিশেষ কেব হবেক ব্যক্তি (রা অধিকাংশ ব্যক্তি) ওহি ভাষা কেঁ অপন মাতৃভাষাক রূপ মে রজৈত হো । "হবেক" মতনর হব রস্তুরিশেষক নোক – চাহে ও কোনহ্ রযসমূহক হো, চাহে ও কোনহ্ জাতিক হো, চাহে ও কোনহ্ ধর্মক হো অথরা কোনহ্ ব্যাপাব / ব্যরসায সঁ জুড়ন হো । মাত্র রজৈত হো – সএহ টা নহি, অপিতু ওহি ভাষারিশেষ মে অপন বচনামেক ও সর্জনামেক যোগদান সেহো কবৈত হো । "মৈথিনী" কেঁ সম্পূর্ণ রূপেঁ ঙা সৌভাগ্য আগ ধবি কহিযো নহি ভেঁটি সকন ।

এক দিশি, কোনহ্ "এক সমূহ" কোনহ্ "দোসব সমূহ" কেঁ মৈথিনী নহি রাজয দেনখিন্হ রা নহি পঢ়এ – নিখএ দেনখিন্হ আ "মৈথিনী" কেঁ অপন রপৌতী সম্পত্তি রনা কহ বখনন্হি । দোসব দিশি, চূঁকি "পহিন সমূহ" মৈথিনী কেঁ অপন রপৌতী সম্পত্তি কহি দেনন্হি তেঁ "দোসব সমূহ" সেহো মৈথিনী রাজর রা মৈথিনী পঢ়র – নিখর ছাড়ি দেনন্হি । মৈথিনীক নেন ঙা পবম দুর্ভাগ্যক গপ্প বহন । ঘহব – ঘবাবী আ সম্পত্তিক রঁটরাবা ভহ সকৈত ছৈ, মাএক নহি; মৈথিন নোকনি কেঁ সে রাত বুঝরা মে রহ্ত রিনম্ব ভেনন্হি । কাবণ জে হো, পব "মাএ মৈথিনী"

কেঁ ও সৌভাগ্য আন সমকক্ষ ভাষাক অপেক্ষা বহুত কান ধবি নঞি ভেঁটি সকনন্হি ।

সম্প্রতি অশ্শীক বাত ও জে পছিনা কিছু বর্ষ সঞো সময বদনন অছি আ হবেক বস্তুবিশেষক নোক অপন বচনাশীনতা সঁ মাএ মৈথিনীক আঁচব ভবি বহন ছথি । শুরুআত মে গতি বহুত স্বস্ত ছন আ শ্রী বিনষ্ট পাসবান "বিহংগম" বা স্ব০ ফজনুর্বহমান হাসমীজী সন এক – আধহি টা নহব নাম দেখবা মে অবৈত ছন পব আগ এহেন নাঁব সভক সংখ্যা বহুত তেজী সঞো বঢ়ন অছি । এহনে এক গোট বৰিষ্ঠ বচনাকাব ছথি শ্রী বাজদেব মন্ডনজী । আগ হুনিকহি নিখন এক গোট কাব্য সংগ্রহ "অম্বুবা" কেব সমিক্ষা নহ কহ হম অপনেক সোনাঁ উপস্থিত ছী ।

"অম্বুবা" – বচনাকাবক গোটেক পচহত্তবি টা কাব্য বচনা কেঁ অপনা মে সমাহিত কএনে অছি । সভটা কবিতা "অমিত্রাক্ষব ছন্দ" মে অছি । পব ডেবএবাক কাজ নঞি; "অমিত্রাক্ষব ছন্দ" বহিতহুঁ "মিত্রাক্ষব ছন্দ" কেব বচনা সন প্রতীত হোযত আ পঢ়বা মে ওহনে নযবক্ষ আ রুচিগব নাগত । যথা :–

অহাঁ কহৈত ছী – কাযব বনবসঁ নীক
হিংসক ভহ জাএব সে অছি ঠীক
নোক কহত – বাম–বাম
কিন্তু হমবা নগৈত অছি ও অধনাম ....
"অহিংসক বীব"

রিন্ব উঁচিত শৈদ্ধ কেব ভার মবি জাগত খছি খা রিন্ব ভারক শৈদ্ধ তঁ শৈদ্ধকোশৈহি ব্ৰ্ন্মূ । পব গ্রা দোষ এহি করিতা সংগ্রহ মে কতহ্ দেখরা মে নহি খাওত । উঁচিত শৈদ্ধ ও সমীচীন ভার কেব খজগ্বত সংগম দেখরা মে খৱৈছ । জেনা কি

তপ্ত বেতপব
ফবফড় াগত মাছ
কানি – কানি
ক২ বহন নাচ
বেতাপব ফাড় ৈত চীস
উঁড়রাঁক নেন খাসমান দিশী
খভাগন
দেহসঁ ঝড়এ নাগন
চাঁদীকেঁ কণ
ঝূমি উঁঠন
কতেকো খাঁখিক মন
জবি বহন মাছক তন .... “রাঁউন পবক মাছ”

সম্পূর্ণ কার্ব্য বচনা রিশৃঙ্ক খাঁটী মৌথিনী মে থিক; হঁ কত্তহ্ – কত্তহ্ কিছ হিন্দী শৈদ্ধারনীক প্রযোগ ঠীক সঁ মেন নঞি খাগত খছি, পব সে খহল্প । ভাষা রহ্তহি সহজ ও স্বভারিক থিক খা তাহি কাবণেঁ পঢ়রা কান ঘটনাক্রম রা রর্ণিত রিষয পাঠককেঁ খপনা সমক্ষ ঘটিত হোগত প্রতীত হোএতহ্নি । জেনা কি দেখন জাও

শীঙ্ক নহি বহন দিনক রৌন
তেঁ নহি বহন ওকব মোন

....
রঁজৈত বহৈত ছী খমবীত রৌন
ভীতব বখনে রীখক ঘোন .... "দিনক রৌন"

কোনহ্ সাহিহ মে জঁ রিরিধতা নঞি হো তঁ ও সম্পূর্ণ নঞি কহরৈছ । জহিনা ভোজন মে ষড়্বস কেঁ ভেনাগ খারশ্যক তহিনা সাহিহ মে নরবস ও তকব উঁপবস সভক সমারেশ পবমারশ্যক । মাত্র শিংগাব ও ভক্তি বসোপবস সঁ সাহিহ সমগ্র নঞি ভহ সকৈছ – এহি প্রকাবক সাহিহ শ্রৃজন একভগাহ ও খসন্তুনিত কহরৈছ । "খম্বঁবা" মে ঙা দোষ নঞি । এহি ছোটৈ – ক্ষিণ কাব্য সংগ্রহ মে রঁহ্ত খধিক "রিষয – রৈরিধ্য" থিক । হবেক বচনা ভার – স্বভার মে এক দোসবা সঁ ভিন্ন । খা গএহ একব সভসঁ পৈঘ রিশেষতা থিক । এক দিশি "জাতি" খা "হম ফেব উঁঠরঁ" সন বচনা জঞো সামাজিক রৈষম্য পব প্রহাব কবৈছ তঁ দোসব দিশি "ক্তানক ঝল্ডা" সন করিতা সমাজ মে পসবন খঁধরিশ্বাস খা খশিক্ষা পব । কমজোব রা দনিত র্যাক্তিক মনোদশাক কেহেন মার্মিক চিত্রণ কএন গেন খছি সে দেখূ

ঠৈপ – ঠৈপ চ্রৈত খূনক বূঁনসঁ
ধবতী ভহ বহন স্নাত
পূছি বহন খছি চিড়ৈ

অপনা মন সঁ ওা রাঁত
আর্ঁ২ রাঁনা ওা কাবী আ ভাবী বাতি
কি নহি রাঁচত হমব জাতি ..... ? ....
“চীড় ৗক জাতি”

“হথিযাবক সভা” আ “অহিংসক রীব” সন বচনা কোনহ্ সমস্যাক শান্তিপূর্ণ সমাধান কবরাঁ পব ও অহিংসা পব জোব দৈছ আ অনেবোক বক্তপাত র নকশেনরাদী প্ররৃত্তি কেঁ রিবোধ কবৈত র্ঝুনা জাগছ । দেখন জাও

স্বনহ নগার্ঁহ ধ্যান
খোনহ অপন অপন কান
তর্ঁ ভেঁটতহ আজ্ক সম্মান
রিঁন্ব দেহসঁ গিবৌনে বকত
ক২ সকৈত ছহ দোসব জ্গত
....
রিঁন্ব হিংসাকেঁ জে কএনে হোযত হ্নদযপব বাজ
ওকবে ভেঁটত ওা অমূন্য তাজ ....
“হথিযাবক সভা”

এহি পোথী মে “হ্মনিযাঁক চিন্তা” আ “কথীক গাছ” নামক রাঁনকরিতা সেহো অছি, জাহিমে রঁহ্ত স্বন্নব ঢংগ সঁ রাঁন মনোভার কেঁ ব্যঞ্জ কযন গেন অছি । হ্মনিযাঁক ছোঁট ভাএ কেব জন্ম ভেনৈ, পূবা পবিবাব খ্শী মনা বহন ছন আ হ্মনিযাঁ কানি বহনি ছনি । প্ছনা পব কী উঁত্তব ভেঁটনৈক সে অপনহ্ সভ স্বন্

ओ तँ छै खुशीक राँत
जनमन तोवा भाए
कतेक खुशी छल तोहर माए
दादी, सबँठा जानै छी
हम ओहि नए नहि कानैत छी
चिन्ता अछि हमरा आरँ के कोराकेँ लेत
दूधो माए पिबँ२ नहि देत .... "झनियाँक चिन्ता"

"गाछक हिस्सा" आ "गाछक बँनिदान" पर्यावरण असन्तुलन ओ तकर रक्षण दिशि ध्यानाकृष्ठ करैछ जखन कि "मनोराणछित चान" आ "परेमक अधिकार" किञ्चित् शिंगार रसक कविता थिक । "राँठक चित्र" नामक कविता मे २००+ ओ° मे फसहा नहग टूटैन कोसीक बाँन्ह सँ आयल राँठक बँड़त मर्मस्पर्शी आ सजीव चित्रण कयल गेल अछि । किछु अंश द्रष्ठव्य थिक

एहसबि
अर्धनग्न स्त्री
परिश्रान्त
झुख क्लान्त
बैसल अछि धारक कात
देह स्नात जिअत अछि कि झगल
सागत सोचि बहल अछि गएह राँत
एखनहि निकलल अछि
संघर्ष क२ राँठक धारा सँ .... "राँठक

চিত্র”

সম্প্রতি মৈথিলী সাহিত্যক দশা – দিশা, মৈথিলীক প্রতি করিক প্রতিবঁদ্ধতা ও তাহি সন্দর্ভ মে দেল গেল স্পষ্ঠীকরণ দেখল জাও

দোসরোক মায
অছি হমরো মায
তঁ কি যৌ ভায
অপনা মাযকেঁ বিসবি জাএ
……………………………………
মৈথিলীক অছি অসীম ভণ্ডার
এহি বাঁত কেঁ হম সোচি নী
ঘর ভবন হো জখন
দোসবাসঁ কিএক পৈঁচ নী
বাখি সংতোষ কবী উপায
কী যৌ ভায । …………………… “মায”

ওনা তঁ হবেক করিতা চর্চাকি অপেক্ষা বখৈত অছি পব সে সম্ভব নঞি । জহিনা ভাত সীমনৈ কি নঞি সে ওহি মে সঁ মাত্র এক টা দানা কেঁ ছূবি অন্দাজ নগাওল জা সকৈছ আ তহিনা উপবোক্ত কিছু উদাহরণ সভ সঁ সমগ্র পোথীক অনুমান । র্যাকবণ কেব দৃষ্ঠিকোন সঁ এহি পোথীক এক গোঠ খাস বিশেষতা অছি জে বিভক্তি (কাবক চিন্হ বা শব্দ) প্রাচীন মৈথিলী জেকাঁ মূলশব্দ কেব সংগহি লিখল গেল অছি । * অন্ত মে মৈথিলীপ্রেমী পাঠক লোকনি সঁ এতবঁহি কহএ চাহবঁন্হি কি ঞ করিতা সংগ্রহ হ্নিকা আশা সঞো

রেঁসী রুচিগব নগতন্হি ।

পোথীক নাঁব :– অম্ভ্রবা (মৈথিলী করিতা সংগ্রহ)
লেখক :– শ্রী বাজদের মংডল
প্রকাশক :– শ্রুতি প্রকাশন ৮/২১, ভূতল, ন্যূ বাজেন্দ্র নগব, নঙা দিল্লী – ১১০০০৮
দাম :– ১০০ টাকা মাত্র

* প্রাচীন মৈথিলী মে সংস্কৃতক প্রভারক কাবণেঁ কাবক চিন্হ রা রিভক্তি মূলশর্ব্দক সংগহি লিখল জাগত ছল । আধ্নিক মৈথিলী মে রঁহ্ধা হ্টকা কঽ লিখল জাগত অছি অথরা মিশ্রিত স্বরূপ মে । মিশ্রিত স্বরূপ – মালে কি কিছু কাবক চিন্হ সংগ মে (যথা – কাবণেঁ) আ কিছু হ্টকা কঽ (যথা – চৌকী পব) । সংস্কৃত মে রিভক্তি চিন্হ রা শর্ব্দ নঞি হোগত অছি অপিতু মূল শর্ব্দ মে রিকাব উৎপেন্ন কএ “শর্ব্দ রা ধাতু রূপ” রঁনাওল জাগত অছি তেঁ ও হমেশা মূলশর্ব্দক সংগহি বহৈছ । পব মৈথিলী সমেত আন আধ্নিক ভাবতীয আর্যভাষা সভ মে ঙা শর্ব্দরিক্বতি রা ধাতু রিক্বতি নঞি হোগছ (অধিকাংশতঃ) আ তেঁ কাবক কেব রিভক্তি নিরূপনার্থ অলগ আখব রা শর্ব্দ হোগত অছি ।

স্বমিত আনন্দ, মৈনেজিংগ এডীটৰ, সোসাগটী টুডে

আক্ষবপ্বৰুষ-ৰিশ্বনাথ

সমাজশাস্ত্রক নব্ধপ্রতিষ্ঠ্য ৰিদ্বান প্রাফেসব ড০ ৰিশ্বনাথ আপন আমব ক্বতিসঁ মৈথিনী সাহিত্যমে জে স্থান প্রাপ্ত কএ চ্কন অছি সে রস্তুতঃ মৈথিনীযোক ৰিদ্বান, প্রাধ্যাপক স্বভচিন্তক নোকনিক হেত্ত দ্নভ অছি। ও আপন ছাত্রারস্থহিসঁ প্রাযঃ মহারিদ্যানযমে প্ররেষ কবিতহি পঠন-পাঠনক ৰিশয কিছ বহনি হ্মদা মৈথিনীক সেরামে সংনগ্ন ভএ গেনাহ। ওহি সমযমে সমাপ্তাহিক মিথিনা মিহিব সবঁসঁ নোকপ্রিয আ দীর্ঘজীরী পত্রিকা ছন জাহিমে হিনক বচনা মাসমে এক রা দূটা অরশ্য ছপৈত ছন।

मैथिली साहित्यमे डॉ0 विश्वनाथ एकदिस जँ व्यंग्य कथाकारक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह तऽ दोसर दिस ओ एकटा नव विधा पर कलम उठौलनि जे थिक साक्षात्कार विधा। एहि विधापर ओहि समयमे बहुत कमे लोक लिखने छलाह।
डॉ0 विश्वनाथक तीन गोट प्रकाशित पोथी अछि अक्षर-अक्षर अमृत, युगान्तर एवं जन्तर रूकल अछि। एहिमेसँ पूर्वक दुनू साक्षात्कार विधा पर अछि आ तेसर कथा पर आधारित।
हिनक अक्षर-अक्षर अमृत जे जहिना बहुल्प्रास अछि तहिना ओहिमे संगृहीत सात गोट महापुरूषक अन्तर्वीक्षा वस्तुतः साहित्यक अनउकारे थिक। एहिमे जाहि वरेण्य साहित्यकारक साक्षात्कार प्रस्तुत कयल गेल अछि ओ थिकाह-मधुप, किरण, हरिमोहन झा, तन्त्रनाथ झा, सुमन यात्री एवं आरसी प्रसाद सिंह। डॉ0 साहेबक सर्वप्रथम अन्तर्वीक्षा 1976 मे छपल जे कवि चूड़ामणि 'मधुप' संग छल आ तकर बाद तऽ ओ गति पकड़ि लेलक। एहिमे जाहि सातगोट शीर्षस्थ साहित्यकार लोकनिक साक्षात्कार प्रस्तुत कयल गेल अछि तनिक जन्म 1906 सँ 1911 केर कालखण्डमे भेल छल।
समाजशास्त्री डॉ0 विश्वनाथक दोसर साक्षात्कारक पोथी थिक युगान्तर जाहिमे 1912 सँ 1933 धरिक कालखण्डसँ नओ गोट मूर्धन्य साहित्यकारक अन्तर्वीक्षा प्रस्तुत कयल गेल। एहि पुस्तकमे जनिक अन्तरंग वार्ता संगृहित अछि ओ थिकाह - व्यास जयकान्त मिश्र, उमानाथ झा, जटाशंकर दास, गोविन्द झा अणिमा सिंह, आनन्द मिश्र एवं लिली रे। ओ नवो व्यक्तित्व प्रातः स्मरणीय छथि। मैथिली साहित्यक बीढ़ छथि।

डॉ0 रिश्विनाथ जेहने आलोचक तेहने कथाकार जेहने करि तेहने व्यंग्यकार जेहने भाषणकर्ता तेहने मंचसंचालक। हिनक कथा संग्रह 'जन्मस रूकल अछि' अत्यन्त रोचक ओत्सेक्मरर्धक आ शिक्षाप्रद अछि। मैथिली साहित्यमे हिनक कथा संग्रह-प्रयाप्त लोकप्रियताकेँ प्राप्त कयलक। हमर रिश्वास अछि जे डॉक्टर साहेबें अपन एहने रचना सभसँ मैथिली साहित्यक उँद्यानकेँ स्वरभित करैत रहताह।



<u>डॉ. योगानन्द झा</u>

<u>ग्रामजीरनक सत्यक संराहक :: अर्द्धांगिनी</u>

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल रहुआयामी रचनाकारक रूपमे मैथिली जगतमे प्रसिद्ध छथि। कथा-करिता-नाटक-उँपन्यासादि रिधाकेँ ओ अपन स्वर्णलेखनीसँ सजबैत रहलाह अछि। हिनक समस्त रचना हिनका मिथिला-मैथिलक लोकजीरनक प्रत्यक्षदर्शी ओ रयाख्याताक रूपमे प्रस्तुत करैत रहलनि अछि। लोकजीरनक यथार्थकेँ यथारत् चित्रित कए मानरीय संरेदनाकेँ उँद्बुद्ध करब हिनक रचना सरहक प्रधान रिशेषता रहलनि अछि। प्रतिभा, र्युत्पत्ति ओ अभ्यास ऐ तीनू कारकसँ समर्रनित हिनक रचनारलीमे मिथिला-मैथिलक समस्या ओ तकर समाधानक दिशा भेटैत अछि।

বর্ত্তমান জীরনমে হোগত নিত্য নূতন পবিরর্ত্তনক খণ্ড চিত্রকেঁ যথারত্ প্রস্তুত কবর্ব হিনক কথাক রিষয–রস্তু বহননি খছি জকবা ঙা সহজ বীতিযেঁ প্রস্তুত কবৈত বহন ছথি।

মণ্ডনজীক কথা সভ মিথিনাক মাটি–পানিক কথা থিক। হিনক কথা সভমে মিথিনাক গ্রাম্য জীরনক খাশা–নিবাশা, স্বখ–দ্:খ, হর্ষ–উঁন্নাস খা জীরন–সংঘর্ষক র্যাখ্যা ভেটৈত খছি। মিথিনাক সামাজিক–খার্থিক ও বাজনীতিক জীরনমে হোগত পবিরর্ত্তন সভকেঁ সূক্ষ্ম মনোরৈজ্ঞানিক রিশ্লেষণ দ্বাবা ঙা খপন কথা সভকেঁ প্ররাহমযতা, বোচকতা ও রিশ্বসনীযতাক সংগ প্রস্তুত কবরাঁমে সিদ্ধহস্ত কনাকাবক রূপমে প্রতিষ্ঠিত ভেনাহ খছি।

হিনক কথাসংগ্রহ খদ্ধাঁগিনী রীস গোটি কথাক সঙ্কচ্চয থিক। ঐ কথা সভমে নোকবিহাবাক জীরনক সংত্রাস, পবিশ্রেমী ক্লষকক উঁন্নাস, সাঁস্ক্রতিক পারনি–তিহাবমে পৈসন খন্ধরিশ্বাসক প্রতি জ্গুপ্সা, গ্রাম্য জীরনমে জাতীয র্যরসাযক মহত্ত্ব, ক্রমশ: টূটৈত সম্বন্ধ–রঁন্ধ, সামাজিক জীরনক রিভিন্ন সমস্যা খাদিক সূক্ষ্ম রিশ্লেষণপূর্বক নোকমংগনক কামনা দেখি পড়ৈত খছি। হগীন সমস্যা ও সমস্যাক কাবণ এরং তকব সমাধানক প্রতি চিন্তনশীনতা হিনক রস্তু–রিন্যাসকেঁ প্রেবক–প্রভারকাবী রঁনৌনে বহননি খছি জগমে পবম্পবিত কথাধাবাক খাদর্শোন্মুখ যথার্থরাদী দৃষ্টিকোণ স্পষ্ট রূপেঁ প্রস্ফুটিত দেখি পড়ৈছ। মিথিনাক নোকজীরনক উঁত্থানক প্রতি সম্বেদনাত্মক খভির্যক্তি কৌশনক

কাবণে মণ্ডনজীক কথা সভ হিনকা আধ্নিক কথাকাব
লোকনিক অগ্রিম পংক্তিমে ঠাঢ় কঽ দেনকনি অছি।

ঐ সংগ্রহক পহিল কথা থিক দোহবী মাবি। ঐ কথামে
প্বরুষ পাত্র গ্বনার্বক মনোরৈজ্ঞানিক রিশ্লেষণ ভেল অছি।
অরকাশ প্রাপ্ত প্রাফেসব গ্বনার্ব কতোক রর্ষসঁ ডাগরীটৌজ
ও র্বনড-প্রেসব সদৃশ রৈমাবী সভসঁ গ্রসত্ ছথি। গামক
ঘব-ঘবাড়ী পর্যন্ত রেঁচি শহবমে র্বনাওল মকানমে
পতি-পত্নী একাকী বহৈত ছথি। রেটা-প্বতোহ্ পবদেশমে
বহৈত ছনহি তেঁএ হিনকালোকনিক স্বধি লেনিহাব কিযো
নৈ ছনহি। নাগব জীরনক চাকচিক্যসঁ সম্মোহিত ভঽ
ওা শহবী জীরনমে র্বসি তঁ গেল ছথি, ঋদা চোবী-
ডকৈতী, নূট-পাট, অপহবণ, গংদগী আদি সমস্যাসঁ গ্রস্ত
শহবী গ্রাম্য জীরনক সৌহার্দপূর্ণ রাতারবণক
প্রতি আকর্ষণ জগৈত ছনহি। হদ তঁ তখন ভঽ
জাগত অছি জখন প্বত্র দ্বাবা ওা সমাদ ভেটৈত
ছনহি জে পৌত্রক মূড়ন ঘবপব নৈ ভঽ কঽ রৈষ্ণো
দেরীমে হোএতনি, জগ নেল হুনকোলোকনিকেঁ ওহীঠাম
এরাঁক আমংত্রণ ভেটৈত ছনহি আ ও অপনাকেঁ অশক্য
বূঝৈত ছথি।

ঐ কথাক মাধ্যমে মণ্ডনজী সাম্প্রতিক জীরনমে
উপকল রিস্থাপনক সমস্যাক কাবণে অরস্থা দোষগ্রস্ত
র্বৃজ্ঝ পীঢ়ীক র্যথাকেঁ অভিরযক্তি প্রদান
কএলনি অছি। ঐ সমস্যাক কাবণে লোকবী-চাকবী
ভেলা উত্তব লোক শহবমে র্বসি গ্রাম্যজীরনক সৌহার্দসঁ
তঁ রঞ্চিত হোগতে ছথি সংগহি রৃদ্ধারস্থামে জখন
পবিরাবোক লোক হুনক সংগ ছোড়ি দৈত ছথিন তঁ

খপনাকেঁ রঁচিত খন্বভর কবএ নগৈত ছথি।

এহী সমস্যাকেঁ সংগ্রহক দোসব কথা “কেনা জীরঁ” মে সেহো উঁঠাওন গেন খছি। একব প্বৰুষ পাত্র সেহো খরকাশপ্রাপ্ত প্রাফেসব ছথি। ওা রেঁটাকেঁ পঠ়ো- নিখা কহ রিদেশ পঠযরাঁমে সফন তঁ হোগত ছথি ক্ষদা রেঁটা রিদেশী সভ্যতা ও সংস্কৃতিক বংগমে বমি জাগত ছনহি খা হিনকানোকনিক খোজো-প্ভাবি নৈ কহ পরৈত ছনহি। পবিণামত: দুনূ পবানী একাকী জীরন রিতএরাঁক হেতু রাঁধ্য হোগত ছথি। এহন স্থিতিমে হিনকানোকনিক নগ একমাত্র খরনম্ব রঁচি জাগত ছনহি- জিজীরিষা ও সংঘর্ষ। যএহ জিজীরিষা ও সংঘর্ষ কবরাঁক মানসিকতা ঐ কথাক হ্যগ জীরনক খন্বকূন সংদেশ থিক জে একবা পূর্ব কথাসঁ ভিন্ন খা স্তবীয রঁনরৈত খছি। ঐ কথাক বৃদ্ধ দম্পত্তি কখনো হতাশ খা নিবাশ নৈ দেখি পড়ৈত ছথি।

সংগ্রহক তেসব কথা গ্রাম্য জীরনক পবিশ্রমী ক্সষকক গাথা থিক জে খপন পবিশ্রমক রঁনেঁ খপন ভাগ্যরিধাতা রঁনন খছি। নরান শীর্ষক ঐ কথামে মিথিনাক নোক জীরনক রিভিন্ন খণ্ডচিত্র উঁপস্থিত কএন গেন খছি যথা বৃক্ষ-নতাদিক পহিন ফড় দেরতাকেঁ চঢ়াযরঁ, গাএ রিখাএনাপব মহাদেরকেঁ দূধসঁ খভিষেক কবরঁ খাদি। গ্রাম্য জীরনমে পসবৈত জাতীয ও সাম্প্রদাযিক রিদ্বেষ দিস সেহো ঐমে সংকেত কএন গেন খছি। ক্ষদা ঐ কথামে মিথিনাক নোকজীরনক খার্থিক স্থিতিকেঁ রঁদহান কবএরঁনা জগ সমস্যাপব রিশেষ দৃষ্টিনিক্ষেপ কএন গেন খছি, সে থিক রাঁঢ়িক

সমস্যা। ঐ সমস্যাক কাবণে মিথিনাক গ্রাম্য জীরনক ঋার্থিক র্যরস্থা ঋস্ত-র্যস্ত ভঽ জাগত ঋছি। তথাপি ঐ কথাক নাযক ঋাধ্নিক রৈজ্ঞানিক পদ্ধতি ঋপনাএ নর কিস্মক ধান উঁগরঁয নগৈত ঋছি, তীমন-তবকাবীক নগদী ফসিন উঁপজারঁয নগৈত ঋছি ঋা নূতন নস্নক মান-জান পোসি ঋপন জীরনকেঁ খ্শিহান রঁনা নৈত ঋছি, রস্তুত: ঐ রৈজ্ঞানিক পদ্ধতি দ্বাবা মিথিনাক গ্লষক জীরনক সম্মন্নতি ভঽ সকৈত ঋছি, সে সংদেশ দের্ কথাকাবক উঁদ্দেশ্য ছন্হি।

সংগ্রহক চাবিম কথা থিক "তিনাসংক্রান্তিক নাগ" ঐ কথামে গ্রাম্যজীরনমে পসবন ঋন্ধরিশ্বাসপব প্রহাব কএন গেন ঋছি। তিনাসংক্রান্তিক একটা এহন পর্র থিক জে সোত্সাহ মিথিনাক ঘব-ঘবমে মনাওন জাগত ঋছি। ঐ দিনসঁ সূর্য উঁত্তবাযণ ভঽ জাগত ছথি ঋা ক্রমশ: শীত ঋ্তু রসন্ত ঋা গৃষ্ম দিস রঁঢ়য নগৈত ঋছি। মিথিনাক প্রশস্ত ভোজন চূড়া-দহী ঐ দিন গবীরোঁ-গ্বররা ধবি খাগতে ঋছি। চূড়া ও ম্মবহীক নাগ, তিনরাঁ ঋাদি দেরতাকেঁ চঢ়ায প্রাসাদ রূপেমে গ্রহণ কবর্ ঐ পারনিক গ্লত্য হোগত ছৈক। শীত ঋ্তু বহনাক রাঁদো মিথিনাক গ্রাম্যজীরন ঐ পর্রক ওবিঋাওনমে মাস দিন পূর্রহিসঁ নাগি জাগত ঋছি। ম্মদা ঐ পর্রক প্রসাদ গ্রহণ কবরাঁক হেতু প্রাত: স্নান জরূবী বুঁমন জাগত ছৈক। মিথিনামে ঙা ঋপরাদ সেহো পসবন ছৈক জে ঐ দিন জে কিযো ভোবে নদী রা পোখবিমে ডূর্ দৈত ছথি হ্নকা নদী-দেরতা তত্কানে নাগ ধবা দৈত ছথিন। এহী ঋপরাদপব রিশ্বাস কঽ গোপান নামক একটা নেনা রাঁবহে রঁজে

বাতিমে নদীমে ডূবঁ দেবঁএ চল জাগত অছি আ ঠঁঠসঁ গ্রস্ত ভঽ জাগত অছি। গ্রাম্যজীরনক অন্ধরিশ্বাসী সমাজকেঁ ঐ কথাক মাধ্যমসঁ ও সংদেশ দেল গেল অছি জে রস্তুত: ও পারনি প্রগ্নতি-পবিরর্ত্তনপব আধাবিত অছি আ ঐমে রিঁন্ব পাখংড কএলে লোককেঁ অপন সামর্থ্যক অন্বসাব সমৈপব স্নান কববাঁক চাহী, লৈ কি অন্ধরিশ্বাসমে পড়ি বোগগ্রস্ত ভঽ জএবাঁক চাহী। হবড়ি রানীক উঁক্তি- "অহাঁ জকাঁ বাতিমে ঝঝব ঘিসিযৌলে ছলৌং জে ভোবে লহা কঽ পাক হএবঁ" অন্ধরিশ্বাসক প্রতি রৈঁস প্রহাব কএলক অছি। কথামে ঐ পারনিক তৈযাবীমে জ্ঠৈল লোকজীরন অত্যন্ত স্বন্দব চিত্র ভেটৈত অছি।

পাঁচম কথা "ভাগক সিলেহ" ভাগ-ভৈযাবীক আপসী কলহ ও আর্ত্যানক প্রেমক কথা থিক। শিষ্টদের আ রিচাবনাথ দ্নূ ভঁগ এক দোসবাক প্রতি অগাধ শ্রদ্ধা, ভক্তি ও রঁন্ধ্ত্রক ভার বখৈত ছথি হুদা দেযাদিনী লোকনিক রীচ খৈট-পৈটসঁ পবিরাবমে ভিন্ন-ভিনাউঁজ ভঽ জাগত ছলহি। ভিন্ন-ভিনাউঁজক মূলমে অর্থসন্তাপব কবঁজা বহৈত অছি। হুদা জখন দ্নূক মলমে পবস্পব প্রেমক ভাব জগৈত ছলহি তঁ দ্নূ একদোসবাক দ্:খ বঁটৈবাঁক হেতু তপেব ভঽ জাগত ছথি। ঐ কথামে গ্রষক জীরনমে পাবস্পবিক সহযোগ, সদ্ভার ও শক্তিক অন্বকূল শ্রমপব আধাবিত সংযক্ত পবিরাবক উঁপযোগিতাক পবম্পবিত অন্বগাযন দেখি পড়ৈছ।

সংগ্রহক ছঠম কথা "প্রেমী" রস্তুত: প্রেমকথাক রূপমে লিখল গেল অছি হুদা ঐ কথামে বচনাকাবক উঁদ্দেশ্য

সমাজিক জীরনমে র্যাপ্ত দহেজ প্রথাক ক্ষরীতিকেঁ সমাপ্ত কবরাঁক সংদেশ সএহ খভির্যক্ত ভেন খছি। পক্ষধব খা জ্ঞানচন্দ দূ গামক ছথি। দুনূমে প্রগাঢ় দোস্তী ছন্হি। জ্ঞানচন্দক পৌত্র পবীক্ষা দেরাঁক হেতু পক্ষধবক গাম খরৈত ছথিন জতএ পবীক্ষারধি ধবি জ্ঞানচন্দক পৌত্র নোচন খা পক্ষধবক পৌত্রী স্বকন্যাক রীচ সংরাদ হোগত ছন্হি খা দুনূ পবস্পবান্ববক্ত ভঽ জাগত ছথি। নোচনকেঁ রিদা কবরাঁক ঞমমে স্বকন্যা ওকবে সংগ ওকবা ঘব ধবি চনি জাগত খছি জে ওহি গামমে গ্বনঞ্জবক রস্তু ভঽ জাগত ছৈক। রিজাতীয বহনাক রাঁদো পক্ষধব খা জ্ঞানচন্দ পাবস্পবিক মৈত্রীকেঁ সম্রন্ধমে রঁদনি একটা খাদর্শক স্থাপনা কবৈত ছথি। পক্ষধবক উক্তি– "জগ সমাজমে মন্বক্খক খবীদ–রিকবী গাএ–মহীস, খেত–পথাব জকাঁ হোগএ ওগ সমাজকেঁ পঞ্চ তত্তরক রঁনন মন্বক্খ কহন জা সকৈত খছি? জঁ সে নৈ তঁ হমব কিযো মানিক নৈ ছী। কিযো খগ্বঁবী দেখাওত তঁ ওকব খগ্বঁবী কাটি নেরৈঁ।" মে দহেজ প্রথাক সমর্থক ও প্রেম–রিরাহ, রিজাতীয রিরাহক খরবোধক তত্বপব প্রহাব কএন গেনৈক খছি।

সংগ্রহক সাতম কথা "রঁপৌতী সম্পত্তি" হ্বষক জীরনমে জাতীয র্যরসাযক মহত্তরক খরধাবণাপব খাধাবিত খছি। সম্প্রতি হ্বষক–মজদূবক পনাযনসঁ জে গামক খর্থ–র্যরস্থা চবমবা গেন খছি তকবা স্বধাবরাঁক হেতু ঐ কথামে চিন্তনক একটা দিশা ভেটৈত খছি। কথানাযক গ্বনটৈন খপন পিতাক সিখাওন র্যরসাযসঁ নীক জকাঁ পবিরাবক পবিপানন কবরাঁমে সক্ষম খছি।

तँए कथाकावक उद्देश्य ग्राम्य स्रारनम्रँनकेँ प्नु: स्थापित कवराँक हेतु माञ्जदर्शन कवरँ र्ँमना जाणत ख्छि ।

ख्ाठम कथा "उंका" नोकजीरनक ख्रमून्यनकेँ रेखाँकित करैत ख्छि । एकव म्ख्य पात्र भैयाकाका गामक बक्षा कवराँक संकल्प नइ ख्पनो गाममे ख्खड़ ाहाक प्रचनन श्रुरु करैत छथि जगसँ पास-पड़ ासक गाम कि ंरा जमीन्दावक पहनमान हुनकानोकनिकेँ ख्रँन र्ँमि प्रताड़ ि त नै कइ सकनि । ऐ तवहेँ समस्त समाजक हितकामनाक प्रति हुनका र्यग्रता छन्हि म्दा साम्प्रतिक जीरनमे स्राव्थक प्ररेशसँ ओ ओ जानि रिचनित भइ जाणत छथि जे ख्ारँ गाम-घवक नोकक कन्याणक गप्प तँ दूव, नोक ख्पनो सव-सम्रँन्धीक खोज-प्छाबि कवराँसँ कतवयराँक मून्यवहित संस्काव पानय नागन ख्छि । हिनक उंक्ति- "माए-राँप, भाए-रँहिन सरँहक संरँध ख्ा शिष्टाचाव ऐ रूपे नष्ट भइ वहन ख्छि जे साधनाभूमिकेँ मरुभूमि रँनरँ ख्निरार्य छै" मे समस्त कथासाव ख्भिर्यक्त भइ जाणत ख्छि ।

नरम कथा "संगी" शिक्षा जगतमे भेन ख्ध्य:पतनक कथा थिक जगमे स्कून-कओनेजमे शिक्षाक र्यरसायीकवणक फनस्ररूप सामान्य जनसँ छीनन जाणत शिक्षाक समस्यापव रिमर्श भेन ख्छि, जकव समाधानक हेतु दूटा संगी पावस्पविक पविणयपूर्रक क्रान्तिक शंखनाद करैत देखि पड़ ैत छथि । कथाक घटनाक्रम ख्ाकस्मिकताक दोषसँ ग्रस्त र्ँमना जाणछ, जे

প্রভারান্‌রতিকেঁ কমজোব কবৈত খছি।

ঠকহবরোঁ পূর্ণতি: বাজনীতিক কথা থিক। ঐমে স্রাতংত্র্যোত্তব ভাবতমে প্বনিস ও নেতানোকনিক ভ্রষ্ট চবিত্র, মতদানমে গড়ৱঁড়ী খাদিক চিত্রণ কবৈত নোকজগতমে এমশ: পসবৈত ভ্রষ্টাচাবক খতিবেকক চিত্রণ ভেন খছি জগসঁ কোনো রস্ত্তক রিশ্বাসনীযতাপব প্রশ্নচিহ্ন নাগি গেন খছি। ও কথা নোকতংত্রমে নোক খা তংত্র দ্নূক স্খননপব সোচরোঁক হেত্ত রিরশ কবৈত খছি।

"খতহতহ"মে মিথিনাক রৈরাহিক প্রথামে ৱঁবিযাতী পক্ষ দ্বাবা সবিযাতী পক্ষকেঁ দেখাব কববোঁক হেত্ত খাদ্য রস্ত্তপব জোব দেবোঁক পবিষ্কাবক রূপমে সবিযাতী পক্ষ দ্বাবা তকব ৱঁদনা নেবোঁক কথা কহন গেন খছি। ঐ কথামে ৱঁবিযাতী পক্ষকেঁ পানিক সংগ দরাগ পিথায ওকবা সভকেঁ দেখাব কববোঁক প্রযাস কএন গেন খছি জে নোকসংস্কৃতিক প্রতিকূন হোএবোঁক কাবণে প্রতীযমান নৈ ভঽ সকন খছি। খরশ্যে ঐমে রব পক্ষমে শবার্রঁ পীরিঁ কঽ ৱঁবিযাতী জএবোঁক খাধ্নিক প্রচননক রিকদ্ধ খাএাশিক খভরব্যক্তি ভেন খছি। মণ্ডনজীক ও কথা কন্যাদান-রবদানমে দ্দ্র পক্ষক সম্মান বক্ষাক পাবস্পবিক দাযিত্রক প্রতি কান্তাসম্মিত উঁপদেশ দৈত খছি।

ৱঁাবহম কথা "খর্ক্কাগিনী" ঐ পোথীক নামকবণক খাধাব ৱঁনন খছি। ঐ কথামে খরকাশপ্রাপ্ত শিক্ষকক খত্যন্ত সূক্ষ্ম মনোরিশ্লেষণ ভেন খছি। খপন

কমাগক ৰঁনেঁ ও খাজীরন খপন পনীক দাসীসঁ খাগূ ৰ্‌মনৰাঁক হেত্তু তৈযাব নৈ হোগত ছথি ম্মদা জখন নোকবী সমাপ্‌ত ভ২ জাগত ছন্‌হি তখন পনীক খারযকতাপব ধিযান জাগত ছন্‌হি খা খৰ্দ্ধাগিনীক মহত্তর ৰূঁনি পৰৈত ছথি। নেখক নাবীক সেরিকা স্রৰূপকেঁ মর্যাদিত কএ ওকবা প্ৰৰুষক সমানান্‌তব মূন্‌য প্রদান কবৰাঁক পক্ষপাতী ছথি, জকব খভিৰ্‌যক্‌তি ঐ কথাক নক্ষ্‌য ৰ্‌মনা জাগত খছি।

তেবহম কথা থিক "ऑপরেশন" ঐ কথামে মগর্ৈ্গব নেনাক সামাজিক স্‌থিতিপব রিমর্শ কএন গেন খছি। জখন কোনো নেনাক মায খসমএ কানকরনিত ভ২ জাগত ছৈক, তঁ সমাজ ওকবা খনচ্ছ ক২ ক২ ৰূঁমায নগৈত ছৈক খা ককবো ওকব শাবীবিক ও মানসিক রকাসক চিন্‌তা নৈ বহৈত ছৈক। ম্মদা জঁ ওহি ৰঁচ্চাক পিতা দোসব রিরাহ ক২ ওকব প্রতিপাননক হেত্তু, স্‌থানাপন্ন মাতাক র্‌যরস্‌থা কবৈত ছথি তঁ রএহ সমাজ ৰেঁব-ৰেঁব ঙা জনৰাঁক প্রযাস কবৈত খছি জে সতমায ওকব পানন নীক জকাঁ ক২ বহন ছৈক রা নৈ। সমাজক ঙা র্‌যরহাব ওকব ক্রূব মানসিকতাক পবিচয দৈত খছি জগসঁ নেনা খা ওকব পিতা খাহত হোএৰাঁক নেন ৰাঁধ্‌য হোগত ছথি। নেখক সমাজক ঐ রিৰূপিত মানসিকতাপব র্‌যংগ্‌য কবৰঁ ঐ কথাক উঁদ্দেশ্‌য বখননি খছি। এহী মাধ্‌যমসঁ খস্‌পতানক দূর্ৰ্‌যরস্‌থা তথা প্রাগরেৈট প্রৈক্‌টিসক কাবণপব সেহো রিমর্শ কএন গেন খছি।

চৌদহম কথা "ধর্মনাথ" ঠহৈত জমীদাব পবিরাবক গাথা

থিক। ঐমে দহেজ প্রথাক উন্মূলনক হেতু সামাজিক জাগরণ কথাকারক উদ্দেশ্য ব্‌ঝনা জাগত অছি। একর নায়ক ধর্মনাথ জমীন্দার পরিবারক ছথি আ পিতাক অমনদারীমে ধরি হ্নক পরিবার দেহেজক সংতোষক বহল অছি আ খেত ব্ঁচি-ব্ঁচি কন্যাদান করৈত অপন ঝনাভিমানক রক্ষা করৈত বহল অছি। ঝদা ওা মিথ্যাভিমান জমীন্দারী উন্মূলনসঁ ক্ষত-রিক্ষত ভঃ গেল ছৈক আ ধর্মনাথ ঐ স্থিতিমে নৈ বহি পর্ৈত ছথি জে প্ত্রীক রিরাহ জমীন্দারে পরিরারমে করবাঁক হেতু ধন জ্টৌ পারঁথি। অন্তত: ও প্রা. রামরতন সন দহেজরিরোধী র্যক্তিক সহাযতাসঁ একটৌ কর্মযোগী বাঁনকসঁ অপন ব্ঁটৌক রিরাহ ঠীক কঃ নৈত ছথি আ মিথ্যা প্রতিষ্ঠাকেঁ চ্নৌতী দৈত ছথি। পরিণামত: হ্নক পিতা অপন ঝনাভিমানপর প্রহার হোগত দেখি মৃত্যুকেঁ প্রাপ্ত কঃ নৈত ছথি। ধিযা-প্তাক থপড়ী ব্ঁজা-ব্ঁজা ওা কহর্ঁ জে- "বাঁবাঁ ঝগনাহ- পূরী-জিলেবীক ভোজ খাযর্ঁ.." রস্তুত: পরম্পরা আ অন্ধরিশ্বাসঁ জকড়ল সামাজিক র্যরস্থাক রিনাশক প্রতি উত্সর থিক জে দহেজ প্রথাক উন্মূলনকেঁ সকেতিত করৈত ওা ওাঁগিত করৈত অছি জে জঁ লোক মিথ্যাভিমানক ত্যাগ নৈ করতাহ আ দহেজ দের্ঁ-লের্ঁকেঁ সামাজিক প্রতিষ্ঠাক মানদংড বঁনৌনে বহতাহ তঁ অন্ত: পতন অরশ্যম্ভাবী অছি।

"সরোজিনী" প্রেমরিরাহপর আধারিত কথা থিক। নাযিকা সরোজিনী জমীন্দার ঘরক কন্যা ছথি। হিনক ভায হৃদযনারাযণ রিনৈতিন কন্যাসঁ প্রেমরিরাহ কঃ লেলে ছথিন। গহো অপন বাঁনসখা রমেশক সংগ রিরাহ কঃ

নৈত ছথি। বমেশ হিনকে নোকব ঘূবনক শিক্ষিত প্বত্র ছথি। আর্থিক ও সামাজিক দ্নূ স্তবপব অসমান নোকক রিজাতীয রিরাহক সমর্থনক ওা আধাব জে "অপন মানিক হম স্রযং ছী। অখন ধবি জাতিক পহাড় জে অপনা সমাজমে রঁনন অছি, ওকবা মেঁটাএর্ব। জে সমাজ ভূখনকেঁ নে পেট ভবৈত অছি, নে নাঙটকেঁ রস্ত্র দৈত অছি, নে রেঁঘবকেঁ ঘবে। এতএ ধবি জে মূর্খকেঁ পঢ় া নৈ সকৈত অছি, নূটৈত গজ্জতকেঁ রঁচা নৈ সকৈত অছি, ওহি সমাজকেঁ রিবোধ কবরাঁক কোন অধিকাব ? " উঁপদেশাত্মক ও অসহজ তথা সিনে জগতক রস্তু জকাঁ অসহজতাসঁ প্রভারিত র্ব্মনা জাগত অছি। তথাপি কথাকাব জাতীয র্যরস্থাপব আধাবিত রৈরাহিক পদ্ধতিকেঁ গ্বণ ও প্রেমপব আধাবিত কবরাঁক সমর্থন কঽ ঐ প্রথামে যগান্বকপ পবিরর্ত্তনক আকাংক্ষী র্ব্মনা জাগত ছথি। রিশ্রৃংখনিত হোগত রৈরাহিক র্যরস্থাক প্রতি সমাজক ধ্যান আকৃষ্ট কবর্ব ঐ কথাক উঁদ্দেশ্য র্ব্মনা জাগত অছি।

সংগ্রহক সোনহম কথা স্বভদ্রা রিধরা রিরাহক সমস্যাপব আধাবিত অছি। দৈরযোগসঁ স্বভদ্রাক পতিক দেহান্ত হরাগ দুর্ঘটনাসঁ ভঽ জাগত ছনহি। ও অভিশপ্ত জীরন রিতএরাঁক হেতু রাঁধ্য ভঽ জাগত ছথি। একব কাবণ ওা অছি জে ও জগ জাতিসঁ অরৈত ছথি তগমে রিধরাঁ রিরাহকেঁ মান্যতা নৈ ছৈক। কথাকাব ৰূপনান রাঁরাঁ নামক এক গোট গাঁধীরাদী চবিত্রক অরতাবণা করৈত ছথি জে নাবী সহ্মত্থানক প্রতি সমর্পিত ছথি। হিনক মান্যতা ছনহি জে জহিনা পনীক হ্মগনা উঁত্তব পতিকেঁ দোসব রিরাহ কবরাঁক অধিকাব ছৈক তহিনা পতিক

ক্ষ্ণগনা উত্তৱ পনৌযোকেঁ দোসৱ ৰিৰাহক খধিকাৱ ভেঠৰাঁক চাহী। ৰূপনান ৰাঁৰাঁ স্বভদ্রাক পিতাকেঁ মানায স্বশীন নামক হ্যৰকসঁ ওকৱ ৰিৰাহ সম্পন্ন কৱৱৈত ছথি। ঐ তৱহেঁ সমাজমে ৰিধৰাকেঁ মান্যতা ভেঠৈত ছৈক। খাদর্শৰাদী সংকন্পনাপৱ খাধাবিত ঙা কথা ৰস্তুত: ঐ সামাজিক সমস্যাক প্রতি কথাকাৱক প্রগতিৰাদী মূন্যকেঁ উদ্ঘাটিত কৱৈত খছি।

"সোনমা কাকা" ঐ সংগ্রহক সতৱহম কথা থিক। ঙা কথা মানৱ ধর্মপৱ খাধাবিত খছি। একৱ প্রধান পাত্র সোনমা কাকা স্ৱযং পনৌক ৰীমাৱীসঁ ত্রস্ত ছথি। ওকৱ গনাজ কৱা জখন গাম ঘূমৈত ছথি তঁ ৱামকিস্বন নামক একটা ৰিগড়ৈন ৰ্যক্তিক মৃত্যুক সমাচাৱ ভেটৈত ছন্হি। ও ৰ্যসনক চক্রমে পড়ি ততেক নির্ধন ভহ গেন ছন জে ওকৱা কহনো ধৱিক উপায নৈ ছনৈক। সোনমা কাকা সমাজক সহাযতাসঁ ওকৱ সংস্কাৱ কৱৱৈত ছথি খা ওকৱ খনাথ ৰাঁনককেঁ খপন ৰেটীক সংগ ৰিৰাহ কৱায ওকৱ জীৱনকেঁ সামান্য ৰনেৰাঁক প্রযনে কৱৈত ছথি। কথাকাৱ ঐ খাদর্শ পুৰুষক স্থাপনা কএ ঙা সিদ্ধ' কৱএ চাহৈত ছথি জে জঁ সমাজ চাহয তঁ কেহনো পৈঘ সমস্যাক নিদান ভহ সকৈত ছৈক।

খঠাৱহম কথা "দোতী ৰিযাহ" পৱিত্যক্তাক পুনৰ্ৰিৰাহপৱ খাধাবিত খছি। একৱ প্রক্ষ্ণখ পুৰুষ পাত্র উমাকান্ত ছথি জে পচাস ৱর্ষক খাযুমে পনৌক দেহাৱসানক কাৱণে একাকী জীৱন জীৰাঁক হেতু ৰাঁধ্য ছথি। জীৱন সংগিনীক খভাৱমে হিনক দিন কাটৱ পহাড় ভহ গেন ছন্হি। দোসৱ দিস যশোদিযা নামক

एकटा युवती छथि जनिक पति दिल्लीमे नोकरी करैत छलथिन मुदा शहरी चाकचिक्यमे पड़ि यशोदियाकेँ परित्यक्त कऽ कतहु पड़ा गेल छथि। निस्सहाय यशोदिया गाम घूरि अबैत अछि आ हरिनारायण नामक एक गोष्ठ सम्भ्रान्त व्यक्तिक आश्रममे रहि जीवन-यापन करए लगैत अछि। हरिनारायण उमाकान्तक स्थितिकेँ परखि हुनका यशोदिया संग विवाह करा दैत छथिन जगसँ दुनूकेँ अवलम्ब भेटैत छन्हि आ दूटा उजड़ल परिवार बसि पबैत अछि। ऐ कथाक माध्यमे कथाकारक ई उद्देश्य स्पष्ट होइत छन्हि जे मानव जीवनकेँ सन्तुलित बनेबाक हेतु पति-पत्नीमे कियो जँ एकाकी जीवन जीबैत अछि, तँ ओ अनेक प्रकारक मानसिक व्यथामे पड़ल रहैत अछि जकर निदानक हेतु समतुल्य युगल बनयबाक हेतु प्रयत्न होएबाक चाही।

उन्नैसम कथा "पड़ाएल" ग्राम्य जीवनमे पसरल अराजकताक कथा थिक जकरा कारणे बनगर लोक निर्बलकेँ सता कऽ ओकरा गामसँ उपटैयबाक लागल रहैत अछि। ऐ कथाक पात्र चेथरू महाजनी अत्याचार, खेत-पथारमे बैगमानी-शैतानी, चाेरि, बलपूर्वक दोसरक जजाति नष्ट करब आ माय-बहिनिक इज्जतक संग खेलवाड़ करब आदिसँ त्रस्त भऽ गाम छोड़ि दैत अछि आ नेपाल जा कऽ बसि जाइत अछि। ओतय परिश्रमपूर्वक अर्जित धनसँ सम्पत्तिशाली बनि नीक जकाँ गुजर करऽ लगैत अछि। ऐ कथामे कथाकारक उद्देश्य ग्राम जीवनक किछु समस्या सभकेँ इंगित करब बुझना जाइत अछि मुदा आधुनिक

পবিপ্রেক্ষ্যমে ঐমে স্রাভারিকতাক খভার র্ঁঝনা জাগত খছি।

“কতৌ নে” কথা সংগ্রহক খন্তিম কথা থিক জে রস্তুত: যাত্রা–বৃত্তান্ত থিক। ঐমে জনকপুব যাত্রাক রর্ণন খাএন খছি। গামক একটা টৈনী জনকপুবমে রিরাহ পঁচমীক মেনা দেখরাঁক হেতু প্রস্থান করৈত খছি ঋদা রিরাহ পঁচমী দিন ওা নোকনি ধনুষা দর্শন কবরাঁক হেতু জাগত ছথি খা ওতএ গাড়ী খবারঁ ভহ জএরাঁক কাবণে রিরাহ পঁচমীক বাতিমে পুন: জনকপুব ঘুমি নৈ পরৈত ছথি জগসঁ হনকানোকনিকেঁ জনকপুবক কার্যক্রম দেখরাঁক খরসব নৈ ভেটি পরৈত ছন্হি। খন্তত: হাবি–থাকি কহ সভ সোচৈত ছথি জে কত্ত এনৌং তঁ কত্তৌ নে। দুর্যোগরশাত্ মনোবথপূর্ত্তিমে রাঁধা হোএরাঁক ঐ কথামে রস্তুত: জনকপুব যাত্রাক এক গোট মনোবম বৃত্তান্ত ভেটৈত খছি।

ঐ তবহেঁ খহ্লাগিনী কথা সংগ্রহ মিথিনাক গ্রাম্য জীরনক রিভিন্ন খাযাম ও সমস্যা তথা তকব সমাধান সরহক খাদর্শোন্মুখ যথার্থরাদী র্যাখ্যা থিক।

ঐ সংগ্রহক কথা সভ রর্ণন–প্রধান দেখি পড়ৈত খছি। কথাকাবক শৈনী এহন ছন্হি জে ও কোনো ঘটনাকেঁ প্রস্তুত কবরাঁসঁ পূর্র ওকব পূর্ররীঠিকাকেঁ ততেক সঘন কহ দৈত ছথি জে পাঠক তগমে তন্নীন ভহ জাগত ছথি। ঐ প্রকাবক রর্ণন–রিন্যাস হিনক ঔপন্যাসিক বৃত্তিকেঁ স্পষ্ট করৈত খছি জগমে রর্ণনক হেতু পযাপ্ত খরসব বহৈত ছৈক।

মনোরিশ্লেষণ মণ্ডনজীক কথা সরঁহক শ্বন্যতম রিশিষ্টৈতা থিকনি। গু জগ কোনো পাত্রকেঁ প্রস্তুত কবৈত ছথি তকব শ্বন্তস্তনমে প্রেরেশ কএ ওকব ভারবাশিকেঁ শ্বভিব্যক্ত কঽ দৈত ছথি জগসঁ পাত্রক চবিত্র স্রত: স্ফুর্ট হোময নগৈত শ্বছি। উঁদাহবণার্থ "রঁপৌতী সম্পত্তি" কথামে গ্বনর্টনেক মানসিক স্থিতিকেঁ শ্বভিব্যক্ত কবৈত গু পাঁতী দ্রষ্টব্য শ্বছি– "মনমে উঁঠনৈ প্ববনে কপড়া জকাঁ পবিরাবো হোগএ। জহিনা প্ববনা কপড়াকেঁ একঠাম ফার্টন সীনে দোসবঠাম মসকি জাগত শ্বছি, তহিনা পবিরাবোক কাজক শ্বছি। একর্টা প্ববাউঁ দোসব খারি জাএত। ঋদা চিন্তা খাগূ ঋঁহেঁ নৈ সসবি ককি গেনৈ। চিন্তাক শ্বর্টকিতে মনমে খ্শী ভেনৈ। শ্বপনাপব গ্নানি ভেনৈ জে জগ ধবতীপব রঁসন পবিরাবমে জন্ম নেরাঁক সেহন্তা দেরী–দেরতাকেঁ হোগত ছন্হি ওকবা হম মাযাজান কিশ্বএ ব্রুমৈত ছী। গু দ্নিযাঁ ককবা নেন ছৈ? ককবো কহনে দ্নিযাঁ শ্বসত্য ভঽ জাএত। গু দ্নিযাঁ উঁপযোগ কবৈক ছৈক নৈ কি উঁপভোগ কবৈক।"

মণ্ডনজী কথাক ভাষামে মৈথিনীক গমৈযা রোনী–রাণীক সহজ স্রুরূপ শ্বভিব্যক্ত ভেন শ্বছি। গু পাত্রান্বরূপ ভাষাক প্রযোগ কএননি শ্বছি জগসঁ প্রত্যেক পাত্রক রৌদ্ধিক ও সামাজিক স্থিতি স্পষ্ট হোগত চন জাগত শ্বছি। হিনক কথা সভমে কথাকাবক ভাষা সেহো মৈথিনীক নোকজগতক ভাষাহিক শ্বন্বগমন কবৈত শ্বছি জগমে সহজতা শ্বছি। কনেকো কৃত্রিম প্রযোগসঁ গু রঁচৈত বহন ছথি। হিনক ভাষামে তদ্ভব ও দেশজ

शर्ब्दक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। युग्म शर्ब्दक प्रयोग हिनक भाषाकेँ लालित्य प्रदान करबामे आ ओकर प्रवाहमयतामे सहायक बनलनि अछि। उँदाहरणक हेतु मान-जान, लेर-देर, दोकान-दौरी, चट्टी-रट्टी, ताड़ी-दारू, छहर-महर, चोरी-डकैती, राग-रोध, रेंठो-प्रतोह्, भोज-काज, अनहर-रिगाड़ि, दाव-मदाव, स्वक-पाक, उखल-द्खल, चीज-रौस, घ्सका-फ्सका आदिकेँ देखल जा सकैछ।

मण्डलजी कथा भाषाक ए अन्यतम रिशिष्टता थिक जे ए कोलो स्थितिकेँ पाठकक समक्ष अभिर्यक्त करबाक हेतु चमत्कारिक उँपमानक प्रयोग करैत छथि जएसँ रस्तुस्थितिक स्पष्ट चित्र पाठकक सोझाँ आबि जाएत अछि यथा- "जहिना खढ़ाएल खेतमे हरबाहकेँ हर जोतर्ब भरिगर बूझि पड़ैत छैक तहिना स्वशीलक मल समस्याक रोलाएल रूप देखलक। जहिना पहाड़सँ निकलि अलरवत गतिसँ चलि लदी समुद्रमे जाय मिलैत अछि तहिना ले टेंघरक ज्ञाल उँड़ि कऽ सर्वोच्च ज्ञालक समुद्रमे मिलत।" आदि। एतारता कहल जा सकैछ जे मण्डलजीक कथा वर्णलक दृष्टिएँ मिथिलाक ग्रामजीरलक यथार्थरादी चित्र, घटलाक दृष्टिएँ आदर्शक प्रति अभिभूत, सूक्ष्म मलोरिश्लेषणक प्रति प्रतिरद्ध तथा उँद्देश्यक दृष्टिएँ लोक मंगलकारी अछि। मैथिलीक आधुलिक कथा लेखल हिलक रचला सभसँ समर्निलित भेल अछि आ एकर समाजोपयोगी तत्त्व सभ अलन्त काल धरि मिथिलाक लोकजीरलकेँ प्रेरित-प्रभारित करैत रहत।

<u>**मैथिली रालालोककथा : स्थिति आ अपेक्षा**</u>

মৈথিলী বাঁললোককথা মৈথিলী লোকসাহিত্যক এক গোট্ঠ বিশিষ্ট প্রভেদ থিক। লোক সাহিত্যক অন্যান্যে বিধা জকাঁ গদ্যো বিধা অদৌসঁ লোককঁঠমে বিবাজমান বহলা অছি। তথা পুস্ত দব পুস্ত কণ্ঠান্তবিত হোএত বহলা অছি। এহেন লোককথা জে অপন সহজতা, স্ববোঁধতা ও মলোবঁজকতাক সঁগহি লেনালোকনিক মলোমস্তিষ্ককেঁ প্রেবিত-প্রভাবিত কববাঁমে সক্ষম হোএছ, বাঁললোককথাক অন্তস্থ্ত পবিগণিত কএল জা সকৈছ। এহেন লোককথা সভ সামান্যত: নাতি দীর্ঘ আকাবক হোএত অছি আ অপন বোচকতাক কাবণেঁ স্বনলিহাব লেনালোকনিমে উঁত্সুকতা বলৌলে বহৈত অছি। অপন বাঁল আ কিশোবাবস্থামে লেনালোকনি অপন দাদী-নালী ও পবিরাবক বএস্কলোকনিসঁ এহেন কথাক শ্রেবণ কবৈত বহলাহ অছি জগসঁ হুনকালোকনিক মলোবঁজন তঁ হোএতে বহল অছি, সঁগহি হুনকালোকনিমে বীবতা, বুদ্ধিমত্তা, সাঁস্কৃতিক চৈতন্য আদিক প্রাদুভবিক সঁগহি সামাজিক জগতক বিধি-নিষেধক জ্ঞানক বিকাস হোএত বহলনি অছি।

পূণত: শ্রুত সাহিত্য হোএবাঁক কাবণে মৈথিলী লোকসাহিত্যক গদ্যো বিধা ঘগীন সঁক্রমণক প্রভাবেঁ ক্রমশ: বিলুপ্তপ্রায ভেল জা বহল অছি। আবঁ লে ধিযা-পুতালোকনিকেঁ মলোবঁজনক লেল দাদী-নালীক কোড়মে বৈসি কথা স্বনবাঁক বিবশতা বহলনি অছি আ লে আধুনিক দাদী-নালীযে লোকনি ঐ বিধাক প্রতি আত্মীযতা ও প্রতিবদ্ধতাকেঁ জোগা কঽ বাখি সকলীহ অছি। তথাপি কিছু অগ্রসোচী বিদ্বানলোকনি অছি জগসঁ একবা

সর্বেক নমূনাক নিদর্শন ভেটৈ সকৈত অছি।
প্রসিদ্ধ সাহিত্যেতিহাসকার ডা॰. জযকান্ত মিশ্র "এন
ইনট্রোডক্সন টূ দ ফ॰াঁক লিটরেচর আঁ॰ফ মিথিলা" মে
মিথিলাক লোককথাকেঁ আঠ শ্রেণীমে বিভাজিত কএলে
ছথি- (1) ব্রত কথা (2) পরী কি ॱবা প্রেম কথা (3)
ভূত-প্রেত ও ডাইন-জোগিনিক কথা (4) উপদেশাত্মক
ও তথ্যাত্মক কথা (5) বুদ্ধি-বিনোদ কথা (6) বানকথা
(7) উপাসকলোকনিক কথা অ্ব া (8) স্থান সম্বন্ধী
কথা।
এমে ব্রত কথা মহিলালোকনিক ব্রতসঁ সম্বন্ধিত কথা
থিক জে মিথিল স্ত্রীগণক সাংস্কৃতিক জীবনক প্রমুখ
অংগ থিক যথা- জিতিযা ব্রত কথা, কাতিক ব্রত কথা,
ছঠিক কথা, হবিসোঁ ব্রত কথা, সপতা-বিপতাক কথা,
বটৈ-সাবিত্রী ব্রত কথা, মধুশ্রাবণী ব্রত কথা আদি।
ঘদা ও ব্রত কথা সভ ব্রত-বিশেষক প্রতি আস্থা
জগএবাঁক উদ্দেশ্যপবক থিক এবং লেলালোকনিক হেত্তু
উপাদেয নৈ বহবাঁক কাবণে একবা সভকেঁ বানলোককথা
মধ্য পবিভাষিত নৈ কএল জা সকৈছ। পরীকথা অ া
প্রেমকথামে অদ্ভুত চমত্কাব, অলৌকিকতা, প্রবল
পবাক্রম, বহস্য-বোমাঁচ আদিক বর্ণন বহৈত অছি তথা
নাযক-নাযিকাক পাবস্পবিক বাগ ও অন্তত: অলেক
বিধ্ন-বাঁধাকেঁ পাব কবৈত মিললক বর্ণন বহৈত অছি।
ঐ কোটিক কথা সভমে ঔত্স্বক্যক িনর্বাহ বহৈত
অছি আ ও সভ শ্রোতাকেঁ বন্হলে বহৈত অছি। অদ্ভুত
ঘটনাসঁ সম্বদ্ধ এহেন কথা সভ বযস্কলোকনিক
সংগহি বানবৃন্দকেঁ সেহো অহ্লাদক নগৈত ছনহি। তঁএ
ঐ কোটিক কথা সভ বানলোককথা মধ্য পবিগণিত কএল
জা সকৈছ। ভূত-প্রেত ও ডাইন-জাোগিনিক কথা

सेहो अद्भुत चमत्कारसँ भरल रहैत अछि जेना भूत-प्रेतक विविध रूप-परिवर्त्तन तथा डाइन-जोगिनिक अपूर्व कृत्य सभहक वर्णन रहैत अछि। अहू कोटिक कथाकेँ शिशुलोकनि अत्यन्त तन्मयता पूर्वक सुनैत छथि मुदा अपन भयावहताक कारणेँ ऐ कोटिक कथा लेनाकेँ डेबर्बूक रूना दैत छै। तथापि ऐ कोटिक कथाकेँ सेहो बालनोककथा मध्य परिगणित कएल जा सकैछ। उपदेशात्मक ओ तथ्यात्मक कथा सभमे दैनन्दिन जीवनक साक्षात अनुभूत सत्यक वर्णन रहैछ जकर श्रवणसँ लेनालोकनिक ज्ञानक विस्तार होइत छलन्हि। एहेन कथा सभकेँ नीति-कथा सेहो कहल जा सकैछ। ऐ कोटिक अनेक बालनोककथा मिथिलाक लोकजीवनमे प्रचलित रहल अछि। बुझिक्कि-रनोदक कथा सभ रहुधा हास्य-विनोद ओ चातुर्यसँ सम्बद्ध रहैछ यथा- गोनू झाक कथा, अकबर-बीरबलक कथा आदि। एकरा सभकेँ बालनोककथा मध्य परिगणित कएल जा सकैछ। पशु-पक्षी, चिड़ै-चुनमुन्नी आदिकेँ पात्र बना‌ए लेना-भुटैकाक मनोरंजन ओ ज्ञानवर्द्धनक उद्देश्यपरक बालनोकथा सभ वस्तुत: केवल शिशुएलोकनिक हेतु होइत अछि। एहन कथा सभहक विस्तार अपेक्षाकृत छोट रहैत छै। उपासकलोकनि ओ स्थान विशेषसँ सम्बद्ध दन्तकथा सभकेँ बालनोककथा मध्य परिगणित नै कएल जा सकैछ।

डॉ. जयकान्त मिश्रक उक्त पोथीक मिथिलाक प्रत्येक कोटिक लोककथाक उदाहरण स्वरूप ओकरा सभहक संक्षिप्त कथासार कहल गेल अछि। ऐ क्रममे तिलमा जनि झमारी, आरँ२ आरँ२ कचनारा, पनसज्जो झमारि, हाहाप्परक कोठा, सोने रूपे काँ त, डाला सन पान

কোমা সন স্বপাবী, রৈনরতী ক্ষমবি, মিবচাগর্ত্তী ক্ষমবি, হঁসবাজক ঘোড় া, ঙঁড়নখটৈনা, গিবিমোহেব রাঁনাক কথা, মযূব রাঁনক রাঁনকক কথা : ভৈযা হও ভৈযা ! এভে মাঙ্ক খাগহ২ ওমী মাঙ্ক জ্নি খগহ, হংসারতী ক্ষমবি, ভাঁকী ক্ষক্ষব, হ্নরন্তী ক্ষমবি, রিখনামা মেটৈন নৈ জায, ঘণ্টৌরঁনা কথা, নানরঁনা কথা, কিছ্ক কবনী কিছ্ক কর্মফন, চন্দন গছিযাক কথা, চাবি গযাবক কথা ঋাদি প্রেম কথা । কিংরা পবী কথা তথা শিশ্ব কথাক ৰূপমে ক্ষসবিযাক কথা, হ্ন্দীবানীক কথা, রিতূ মিযাঁক কথা, ফোকচক কথা, ঠিন্নী বানীক কথা, ঞ্চৌন্চক কথা, গিবগিটিযাক কথা, কী খাওঁ কী নয পবদেশী জাওঁ, রঁগিযারঁনা কথা, দবিদ্রছিম্মবিক কথা, হবমজদরাঁক কথা, পেট্টূ খরাঁসক কথা, ঠেঠপান ঝাক কথা ঋাদিক সংক্ষিপ্ত রস্তুপবক পবিচএ প্রস্তুত ভেন ঋছি ।
ঐ প্রকাবক রস্তুসঁ মৈথিনী রাঁননোককথাক স্ৰৰূপক ঋভিজ্ঞান তঁ হোগছ্ক ক্ষদা সে মৈথিনী রাঁননোককথাক রিরেচনক দৃষ্টিযে ভনহি ং মহত্রপূর্ণ ঋছি, ওকব সংকনন–প্রকাশনক দৃষ্টিযে কেরঁন মাত্ত্বপ্রদর্শকেটা কহন জা সকৈছ্ক । ঐ প্রকাবক স্থিতি রিহাব বাষ্ট্রভাষা পবিষদ্, পটনা দ্বাবা প্রকাশিত নোককথা কোশক মৈথিনী ভাগমে প্রদত্ত একতীস গোট রাঁননোককথাক কথাসাবক সেমো ঋছি ।
মৈথিনী রাঁননোককথাক সংকনন–প্রকাশনক দৃষ্টিযে জে মহত্রপূর্ণ কার্য সভ হোগত বহন ঋছি তকবা সরঁহক সংক্ষিপ্ত পবিচএ এতহ প্রস্তুত কএন জাগছ্ক ।

এগো বহথি বাজা–
মৈথিনী রাঁননোককথাক ঋঙ্গত্রিম সংগ্রহক দৃষ্টিএ নিবক্ষব

किसुन कामति द्वारा कहल ओ प्रा. हंसराज द्वारा सम्पादित संग्रह 'एगो रहथि राजा' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एहिमे खिस्सा कहनिहारक भाषाकेँ यथावत् रखबाक प्रयास भेल अछि। एहि संग्रहमे तीन गोट कथा अन्तर्भुक्त अछि क्रमश: एक लालसँ सात लाल, तूरक घोड़ा आ दलिदरा जोग। एक लालसँ सात लाल दीर्घ कथा थिक जकरामे चारि गोट उपकथा सेहो अन्तर्भुक्त अछि। संग्रहक तीनू कथा उत्सुकता आ कुतूहलसँ युक्त मनोरंजक ओ ज्ञानवर्द्धक प्रवृत्तिक बाललोककथा थिक।

बाल- प्रसून

किरणजीक बाल प्रसून कथासंग्रह यद्यपि नेना सभकेँ धियानमे राखि ऐतिहासिक महाभारतीय कथानकक पुन: व्याख्या थिक। शैली शास्त्रीय होइतो अपन उद्देश्यक कारणे एकरो बाललोककथाक संग्रह मानल जा सकैछ।

कथा–कहानी

ई डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा द्वारा संग्रहीत चौदह गोट बाल–लोककथाक संग्रह थिक। एकर कथा सभ नातिदीर्घ आकारक अछि। अधिकांश कथामे पशु–पक्षीकेँ आधार बना कए कोनो ने कोनो नैतिक शिक्षा प्रदान करब कथा सभहक उद्देश्य अछि जे बालमनकेँ प्रभावित करैबला अछि। लोक जगतक सुख–दु:ख, आशा–निराशा, भावानुभाव, हर्ष–विषाद, आचार–व्यवहार आदिक सहज ओ अकृत्रिम अभिव्यंजनाक कारणे मैथिली बाल–लोककथाक संग्रहक दृष्टिए ई नियामक ओ मार्गदर्शी संग्रह सिद्ध भेल। एहि संग्रहमे किछु कथा हास्य–

रिनोदपवक तँ किछ नोकजीरनक थ्रुत्रिम ऋाँकीसँ समर्रुष्ठ थ्रिछ। एकव ভাষা সেহো নেনা-ভুষ্টকাক হেতুও সবন, সহজ ও ঔত্স্বক্যকেঁ জগরৈরনা থ্রিছ।

মৈথিনী নোককথা

মৈথিনী নোককথাক সরাধিক প্রশস্ত প্রকাশিত সংচযনক দৃষ্টিএ শ্রী বামনোচন ঠাক্ষবক মৈথিনী নোককথা থ্রদ্বিতীয থ্রিছ। একব প্রথম প্রকাশিত সংস্কবণ 1983 ঙ্গং.মে ভেন জাগমে থঠাবহ গোষ্টি কথা মাত্র সংকনিত ছনৈক ক্ষদা 2006 মে ভেন দ্বিতীয পবিবর্ক্ষিত সংস্কবণমে ঠীক দ্ন্না থ্রর্থতি ছত্তীস গোষ্টি কথা সংগ্রহীত ছৈক। নেখকক কহর্ব ছন্হি জে ও ঙ্গ কথা সভ থ্রপন নানী, মাঁ থ্রা নানমামাসঁ সুনি ক' সংগ্রহীত কেনে ছনাহ তঁএ একব সর্বহক থ্রুত্রিমতা থ্রসংদিগ্ধ ছৈক। নেখক কথাভাষাকেঁ সেহো সহজতা প্রদান কেনে ছথি তথাপি কতৌ-কতৌ শাস্ত্রীযতাক প্রভাব থ্রবশ্যে গছাবনে ছন্হি। একব থ্রধিকাংশ কথা থ্রপন বোচকতাক কাবণেঁ রাঁন-নোককথা মধ্য পবিগণিত কএন জা সকৈছ।

থ্রষ্টৈদন

মৌ থনী নোককথাক ঐ সংগ্রহক সংগ্রহকর্ত্তা ছথি ড ॉ. শ্রী থ্রমবনাথ ঝা। ঐমে থ্রাঠ গোষ্টি নোককথা ঞ্রমশ: নীক-রৈজাএ, প্বনর্জন্মক কথা, চবরাহক ন্যায, সন্তোষী ও হাহ্তি, হংসবাজ, মোহন কমাব, চঞ্রবর্তী বাজা ও নোড ়াক মাহাত্ম্য সংকনিত থ্রিছ। কথা সভ পৈঘ-পৈঘ থ্রিছ তথা শিষ্টি সাহিত্যিক ভাষাক প্রযোগক কাবণেঁ থ্রত্রিম প্রথ্রতিক ভ' গেন থ্রিছ। তথাপি ঐ

संग्रहक मोहन कमार ও মোড় াক মাহাত্ম্য কথা রাঁন–নোককথা মধ্য পবিভাষিত হেরাঁক যোগ্য নীক নমূনা থিক। খরশ্যে ওা দ্নূ রাঁন–নোককথাক কিংচিত পবিরর্ত্তনক সংগ পূর্র রর্ণিত মৈথিনী নোককথামে সেহো খছি।

একটা ছনা গোনূ ঝা–

ধূর্ত্ত শিরোমণি গোনূ ঝা মিথিনাক হাস্য–রিনোদপবক কতোক নোক কথাক নাযক ছথি। হিনক চবিত্রপব খাধাবিত কথা সরঁহক সংগ্রহ খনেক সংকননকর্ত্তা নোকনি কবৈত ঐনাহ খছি জগমে হিন্দীমে ডাঁ. রীবেন্দ্র ঝাক সংগ্রহ বাজকমন প্রকাশেন (পটনা, নওা দিন্নী) সঁ প্রকাশিত ভ' রেঁস প্রচনিত ভেন। এহনে চৌরীস গোট কথা সভকেঁ মৈথিনীমে ডাঁ. রিভূতি খানন্দ 'একটা ছনা গোনূ ঝা' নামে প্রকাশিত করৌননি। র্বুদ্ধি ও রিরেকক প্রযোগ, মনোবংজকতা ও সহজতাক কাবণে ওা সভ মিথিনাক রাঁননোককথাক উত্কৃষ্ট দৃষ্টান্ত তঁ খছি ঋদা রাঁনমনক নিশ্ছনতা একব শিক্ষণ–পদ্ধতিসঁ কান্বষ্যে দিস জা সকৈত ছৈক। কৃত্রিম ভাষা–প্রযোগক কাবণে একটা ছনা গোনূ ঝা নোককথাক মর্যাদাক পানন নৈ ক' সকন খছি, তেহন প্রতীত হোগত খছি। মৈথিনীমে ঐ কোটিক কথাক খন্য সংগ্রহ থিক শ্রী গোপীকান্ত ঝা 'উমাপতি' দ্বাবা সম্পাদিত সংকনন 'গোনূ ঝাক চটনী' জে নোক জগতমে মৈথিনীক প্রসাবক দৃষ্টিযে মহত্ত্বপূর্ণ মানন জা সকৈছ।

প্রেত কথা–

ঙা হংসবাজ বচিত ছও গোট প্রেতকথা সংগ্রহ থিক। একব অধিকাংশি কথা শিষ্ট সাহিত্যক ভাষাসঁ সম্পন্ন অছি তথাপি প্রেত রিরাহ পদ্ধতি আ যারত্ পঠ়রঁহ রূদ্রকেঁ অরশ্যে রাঁননোক কথা মধ্য পবিগণিত কএন জা সকৈছ।

ফরুক্ষেত্রম্ অন্তর্মনক

ঙা পোথী শ্রী গজেন্দ্র ঠাকুবক রিভিন্ন রিধাক বচনাক সংকনন থিক। একব সাতম খংডমে রাঁনকথাক রূপমে তেগস গোট কথা সংগ্রহীত অছি। ঐ কথা সভমে অধিকাংশি মিথিনাক নোকনাযক সরঁহক কথা িথক তথাপি অ াধা দর্জনক নগভগ কথাকেঁ রাঁন–নোককথা কহন জা সকৈছ, যদ্যপি ওকবো সরঁহক ভাষা পূর্ণত: শাস্ত্রীয প্রঙ্কতিক অছি। রাঁননোক কথাক সংকননক ক্ষেত্রমে চনৈত প্রযাস সরঁহক নমূনাক রূপমে একবা মহত্বপূর্ণ কহন জা সকৈছ।

ক্ষমাক জীত

মহিনানোকনি দ্বাবা রাঁননোকথাকেঁ সংবক্ষিত কববাঁক প্রযাস ক্রমশ: কণ্ঠসঁ অক্ষব দিস প্রবহমান ভ' বহন অছি, সে ঐ পোথীসঁ ভান হোগত অছি। একব নেখিকা থিকীহ শ্রীমতী প্বষ্পা ক্ষমাবী। ঐমে কএকটা স্রাতসঁ উপনব্ধ পাঁচ গোট কথা সংগ্রহীত অছি জকবা সভকেঁ রাঁননোককথা মধ্য পবিগণিত কএন জা সকৈছ। একবো ভাষাপব শাস্ত্রীয ভাষাক প্রভার অত্যধিক দেখি পড়ৈছ।

পিনপিনহা গাছ

मानमिमे डॉ. श्री म्नवनीधव म्नाक बाँन कथा संग्रम पिनपिनमा गाछ प्रकाशित भेननि अछि जगमे एक्कैस गोटे कथा संग्रमीत कएन गेन अछि। ऐमे पशु–पक्षीक म्रत्यपव आधावित दृष्टे खिखिव, सिनेमक सिन्दूव तथा धूर्त्ततापव आधावित ठक्क कथा बाँननोककथाक दृष्टान्त स्रवूप अछि। एकवा सर्बमक कथाभाषा पूर्णत: पविमार्जित सामित्यिक भाषा थिक।

बाँननोक कथाक संकनन–प्रकाशनक दिशामे मैथिनी सामित्यकाव नोकनिक उँपर्युक्त प्रयास सभ श्नाध्य अछि म्नदा एतबेँ धविकेँ संतोषप्रद नै मानन जा सकैछ। ऐ मेतु क्षेत्र–कार्य कवबाँक आवश्यकता छैक जैं दिस अनुसंधित्सुनोकनि प्रयास क' सकैत छथि आ मैथिनीक ऐ विधाकेँ जिया क' वाखि सकैत छथि, ओकव मौनिकताक क्षवणकेँ वोकि सकैत छथि।
अन्यान्य भाषामे उँपनब्ध नोककथा सर्बमक मैथिनी वूपान्तवणक माध्यमे सेमो कतोक बाँननोक कथा मैथिनीक ऐ विधाक अभिवृद्धिमे समायक भेन अछि आ एकवो आयाम पर्याप्त छैक। ऐ दिशामे म्रत प्रयास सभमे पं. श्री गोविन्द म्नाक 'अओ बाँबाँ : की बौआ, डा. गन्द्रकान्त म्नाक विश्व प्रसिद्ध मौैथनी नोककथा, डॉ. योगानन्द म्नाक 'विमावक नोककथा', विजयनाथ ठाकुवक नोककथा आदि नोककथा संग्रम उँनन्नेखनीय अछि। मैथिनी पत्र–पत्रिका सेमो बाँननोककथाक प्रकाशन यदा–कदा कवैत वमना अछि। एम्मव ऋृषि वशिष्ठ म्रत 'कोठ़ी या घव स्राम' शीर्षकसँ मात्र एक गोटे बाँननोककथाक प्रकाशन पुस्तकाकाव कवाओन गेन अछि जगमे विद्यापतिक अनस कथाकेँ उँत्सक

ৰূপমে ন' ৰাঁননোক কথা শৈনীক প্রতি সচেষ্টতা দেখ পড়ৈছ। ওা ঐ দিশামে একটা খভিনৱ প্রযাস খা দূৰদৃষ্টিপূর্ণ সংকেত ৰ্ঝনা জাগছ।

নেনানোকনিমে খপন ভাষাক প্রতি খন্ববাগ জগাএৱাঁক দৃষ্টিযে সম্প্রতি ৰাঁননোককথাকেঁ চিত্রকথাক মাধ্যমে প্রস্তুত কৱৱাঁক দিস কিছ খগ্রসোচী সাহিত্যকাৱক ধিযান গেননি খছি। ঐ দিশামে সংভৱত: পুস্তকাকাৱ প্রথম প্রযাস ভেন খছি শ্রীমতী প্রীতি ঠাকুৱ দ্বাৱা, জনিক 'গোনূ ঝা খা খান মৈথিনী চিত্রকথা', শ্রুতি প্রকাশিন দিল্লী দ্বাৱা ভৱ্য সাজ-সজ্জাক সংগ প্রকাশিত ভেন খছি। ঐমে গোনূ ঝাসঁ সম্ৱন্ধ নও গোটে হাস্য-ৱিনোদপৱক কথা তথা মিথিনাক কিছ নোককথা যথা ৱেশমা-চূহড়মন, নৈকা-ৱনিজাৱা, ভগত জ্যোতি পাঁজিযাৱ, মহুখা ঘটৱাঁ ৱন, ৱাজা সনহেস, ছৈছন মহাৱাজ ও কানিদাসক কথাকেঁ চিত্রাৱনী দ্বাৱা প্রস্তুত কএন গেন খছি। মৈথিনী ৰাঁননোক কথা প্রকাশনকেঁ যুগানুৰূপ খগ্রনীত কৱৱাঁক দিশামে শ্রীমতী ঠাকুৱক ওা প্রযাস খন্যতম কহন জা সকৈছ।

খাৱ মৈথিনী ৰাঁননোক কথাক কিছ ৱৈশিষ্ট্যপৱ ৱিচাৱ কএন জাএ। মৈথিনী ৰাঁননোককথামে ৱাজা, ৱাজকুমাৱ, মংত্রী, সাধু, ব্রাহ্মণ, নৌকা, সেঠ, তেনী, ধোৱি, মানিন, ৱানী খাদি ৱিভিন্ন ৱস্নক পাত্র, সিযাৱ, সপনৌৱ, হাথী, ধোড়া, সাপ, গাএ, ৱাঁধ, সিংহ, পশু পাত্র, সুগ্গা, কৌখা, মৈনা, হুদ্দী, ঝগা খাদি পক্ষী পাত্র, ৱিধ-ৱধাতা, শংকৱ-পাৱতী, ডাগন-জোগিন, পৱী, ভূত-প্রেত, দেৱী-দেৱতা খাদি খনৌকিক পাত্র ও হ্নকানোকনিক গ্রত্য সমাহিত ৱহৈত খছি। ও নোকনি পাৱস্পৱিক ও মনুষ্যক সংগ ব্যৱহাৱ ওহিনা কৱৈত ছথি, ৱৌনীযো

तहिना रॅजैत छथि जेना मानर-मात्र। अतिमानरीय पात्रलोकनि असंभरो कार्यकेँ संभर करैत देख पड़ै छथि आ अलौकिक क्षमतासँ पूर्ण देखल जाइत छथि। हिनका लोकनिक कार्य-र्‍यापार नेनालोकनिकेँ चमत्कृत ओ आश्चर्यचकित क' दैत छन्हि। ऐसँ मनोरंजनक संगहि नेनालोकनिमे अद्भुत परािक्रम प्रदर्शित कररॅाक भारनाक उँदय होइत छन्हि तथा कथाक प्रति हुनका लोकनिक उँत्सुकता रॅनल रहैत छन्हि।

मैथिली रॅाललोककथा सामान्यत: सुखान्त होइत अछि। ऐमे नायक रॅहुधा रिभिन्न रिघ्न-रॅाधाकेँ पार क' अपन अभीष्टक सिद्धिमे सफल देखाओल जाइत छथि जइसँ नेना लोकनिक मन उँत्फुल्ल भ' उँठैत छन्हि आ परिश्रम ओ प्रयास द्वारा कोनो प्रकारक अभीष्ट प्राप्त कएल जा सकैत अछि, से भारना हुनका लोकनिक मनमे जगैत जाइत छन्हि।

मैथिली रॅाल लोककथा सभमे लोकमानसक उँदार ओ र्‍यापक चित्र-रृत्तिक निदर्शन भेटैत अछि। परदु:ख कातरता ओ सहानुभूति, सहिष्णुता आ ि रीरत्र तथा जीरमात्रक प्रति प्रेम भारना रॅाल लोककथाक अन्यतम रिशिष्टता थिक जइमे नेनालोकनिक मनपर धनात्मक प्रभार पड़ैत छन्हि।

मैथिली रॅाल लोककथा सभमे घटनाक रर्णन अत्यन्त सहजताक संग कएल रहैत अछि। स्रभारत: कोनो घटनाकेँ रॅालमन स्रभारिक रूपसँ ग्रहण क' लैत अछि। ऐ प्रकारक लोककथा सभमे औत्सुक्य जगेरॅाक अद्भुत क्षमता रहैत छैक। जइसँ नेनालोकनि एहन कथा अत्यन्त मनोयोगसँ सुनैत छथि आ रॅेर-रॅेर सुनरॅाक हेतु ललसफ्साइत रहैत छथि। एतए धरि जे कथा

শ্রেরণক এ্রমমে হ্নকানোকনিক নিম্না খনোপিত ভ' জাগত ছন্হি। ও সভ ঐ প্রকাবক কথামে তেনা ভ' ক' বমি জাগত ছথি জে হ্নকানোকনিক স্বধি–ব্ঁধি পর্যন্ত হেবো জাগত ছন্হি।

মৈথিনী রাঁননোককথা রস্তুত: নোকমানসক খভিব্যক্তি থিক। তঁএ ঐমে উঁড়নখটৈনো ও উঁড়ৈরঁনা ঘোড় াক কন্পনা কএন গেন খছি, পশ্ব–পক্ষীকেঁ বাজহ্মমাবীক ৰূপমে পবিরর্তিত হোগত দেখাখ ান গেন খছি, পক্ষীকেঁ মাবি দেনাসঁ বাক্ষসক মবি জাএরাঁক কন্পনা কএন গেন খছি, দেরনদী গংগা ও খন্যান্যো দেরতা–পিতবক প্রতি খাস্থা দেখাওন গেন খছি, রিধ–রিধাতা দ্বাবা ককবোপব খসীম হ্নপা কবরাঁক প্রবৃত্তিক রর্ণন ভেন খছি, ভূত–প্রেত খদ্ভুত হ্নত্যক কন্পনা কএন গেন খছি। খাধ্নিকতাক কসৌটীপব এহন কথা সভমে খতিবংজনাক পবাকাষ্ঠামে দেখ পড়ৈছ হ্মদা নোকমানস এহন কথ্যক প্রতি খাস্থারান খছি খা এহন রর্ণন সভসঁ কনেকো খসহজতাক খন্বভর নৈ কবৈছ।

খাকাবক দৃষ্টিযে মৈথিনী রাঁননোককথাক দ্গ গোট প্রকাব দেখ পড়ৈত খছি– দীর্ঘ খা নঘ্। দীর্ঘ কথা সভমে একে কথামে খনেক উঁপকথা সভ খন্তর্হ্মক্ত বহৈত খছি হ্মদা নঘ্ খাকাবক রাঁন নোককথামে একেটা ছোট ঘটনাপব খাধাবিত রিরবণ বহৈত খছি।

মৈথিনী রাঁননোককথা সামান্যত: গদ্যাত্মক হোগত খছি হ্মদা খনেক কথামে চম্পূ শৈনীক খাশ্রয নৈত পদ্যাগ সমাহাব রীচ–রীচমে দেখ পড়ৈত খছি যথা– একটা রাঁননোককথামে জখন একটা মৃতক স্ত্রীক সাবাপব গাছ জনমি জাগত ছৈক খা ওকব প্বষ্পপব হ্মগ্ধ ভ'

ওকব সস্বব ও ফূন তোড়এ চাহিত ছৈক তঁ গাছতবসঁ খাৰাজ খৰৈত ছৈক–

“সস্ববজী, সস্ববজী
ডাবি জ্নি ছূৰ্ঁ, পাত জ্নি ছূৰ্ঁ
ভৈযা মাবননি, কূড় খেত গাড়ননি
চ্নবী বংগৌননি, ৰহ্ পহিৰৌননি
হমবা দেন রনরাস
ডাবি–পাত নাগূ খকাস।”

এহিনা খনেক মৈথিনী ৰাননোককথাক পদ্য কথ্য দোসৰো ভাষামে যথা হিন্দী, ভোজপ্ববী, ৰংগনা খাদিমে সেহো দেখ পড়ৈছ, উদাহবণার্থ–
“খাজা মাজা কান মেং সমা জা।”
“কী খাওং কী পিযওঁ, কী নএ পবদেস জাওঁ। খাদি।”
এ ঠাম ঞা তথ্য জ্ঞাতব্য খছি জে জৈ ৰাননোককথামে জতেক নহবদাব ভাষাক প্রযোগ বহিত খছি, সে ততরেঁ খাকর্ষক হোগত খছি।
মৈথিনী ৰাননোককথাক ভাষা খত্যন্ত সবন, ৰোধগম্য ও প্ররাহপূর্ণ হোগত খছি। একব ৰাক্য সংবচনা খত্যন্ত ছোট–ছোট বহিত ছৈক তঁএ জটিন ও মিশ্ররাক্যসঁ ঐমে পবহেজ বহিত ছৈক। একব পাত্রক ভাষা জকবা খানাপ ভাগ কহন জা সকৈছ সর্রথা নোকহ্মখী হোগত খছি জগমে কহুৰাচ্য ও ৰক্তাক খৰঐ শৰ্দাৱনীক প্রযোগ দেখ পড়ৈছ। একব কথাতন্ত্রকেঁ খাগূ ৰঢ়ৌনিহাব ভাষাকেঁ খাখ্যান ভাষা কহন জা সকৈছ। ঞা ভাষা খত্যন্ত পবিবর্ত্তনশীন বহিত খছি। নোককথাক ঐ ভাষাপব কহনিহাবক ৰএস, পবিৰেশ, শিক্ষা, নিংগ খাদিক প্রভাৱ দেখ পড়ৈছ।

নোককথা জখন শ্রুত সাহিত্যসঁ নিখিত সাহিত্যমে পবিণত হোগছ, তখন একে কথাক রূপ রহ্নতা, নিখিত ভাষাক রূপ খাদিমে সংকনন কর্ত্তাক ভাষাক পর্যাপ্ত প্রভার পড়ৈত ছৈক। যএহ কাবণ থিকৈক জে কথা সমানো বহনাপব ওকব স্রূপ রিভিন্ন নেখক-সম্পাদক ভিন্ন রূপমে প্রস্তুত কবৈত দেখন জাগত ছথি। শাস্ত্রীযতাসঁ খাছন্ন নোককথাক ক্রিযাপদমে ছৈক, ছনাহ, গোষ্ঠ, জাগত খাদি পদক প্রযোগ হোগছ জখন কি রূপমে ছৈ, ছনা, গো, জাগ খাদি নঘ্ স্রূপ দেখ পড়ৈত খছি। ঐ রিধামে ভাররাচক সংজ্ঞাক খত্যল্প প্রযোগ ভেন খছি খা তকব স্থানপব রিশেষণে শর্ব্দক প্রযোগ রাঁছিত র্বুঝনা জাগত বহনৈক খছি।
এতারতা মৈথিনী রাঁননোককথা মৌথিনী নোকসাহিত্যক খমূন্য নিধি িথক জকব সংকনন-প্রকাশিন খাে খধ্যযনক খারশ্যকতা খছি জগসঁ ও সম্পদা খন্যান্য ভাষাক সমক্ষ খারি সকএ খা খনন্তকান ধবি নেনানোকনিক মনাবেংজন কঽ সকএ।

रनदेरी आ नारी अस्मिताक गाथा

कथा, उँपन्यास, नाटक आदि रिभिन्न रिधामे गविमामय नेखनक हेतु प्रख्यात, आधुनिक मैथिनी महिना नेखनमे अग्रिम पांङक्तेय आ डा. श्रीमती उँषा किवण खानक जाग सँ पहिने एक गोट गद्यात्मक खण्डकार्य थिक । ऐमे सीताक र्याथा-कथाकेँ उँपजीर्य रॅनाए नावी-अस्मताक अनरेषण कएन गेन अछि । स्रभारत: पौवाणिक पात्रक आश्रेए नऽ अत्याधुनिक स्वगीन रृत्तिक प्रतीक्षा साकांक्ष दृष्टि ऐ कारयक महत्रपूर्ण उँपनब्धि थिक ।

मयदिा प्रुरुषोत्तम श्रीवाम आ सती शिवोमणि सीताक कथा भावतीय जीरनादर्शनक प्रतीक रॅनन वहन अदि । सीता अदौसँ मिथिनाक पहचान रॅननि वहनि छथि । रुदा भूमिजा सीताक उँत्तवचवितमे ग्रथित सीता-रनरासक कथा मैथिन मानसकेँ सदति उँद्वेनित कएने वहनैक अछि । एतऽ धवि जे सीताक रिराहक दिन रिराह पंचमीकेँ एखनो धवि नोक सबि भऽ कऽ अपन रॅटीक रिराहक दिरसक रूपमे स्रीकाव कवरॉमे धखागत वहन अछि । सीताक जन्म रिवोगहि गेन नोककंठमे हुनका प्रतीक्षा सहानुभूतिक रूपमे रिद्यमान अछि । ऐ ठामक सन्त पवम्पवामे एकटा सम्प्रदाय तँ एतरॉ धवि मानरॉक नेन ततपव नै जे सीता द्विवागमनक रॉद अपन सास्रव अयोध्यो गेनीह आ तत:पव कखनो वाम रनरासक कावणे तँ कखनो अपन रनरासक कावणे द्:ख भवन जीरन रितरॅत वहनीह । हिनकानोकनिक तँ ई मान्यता छनहि । जे रिराहोपवान्त द्ुन्नह श्रीवाम सभ दिनक

হেতু মিথিলেক বঁলন বনি গেলাহ আ মিথিলাক সখী–লোকনি হুনক দুলার–মলার করৈত হুনকা সাসুরমে ছোড়নে বনি গেলখিন। সীতাক দু:খক জীবন–প্রসংগকেঁ ওলোকনি ঐ মাধ্যমে বিসবরাক আযোজন কএলনি।

মৈথিলী দধীচি পং. সুরেন্দ্র ঝা সুমন অপন সীতাবন্দনামে অত্যন্ত কষ্টে শব্দেঁ সীতা বনবাসক প্রতি অপন আক্রোশ প্রকট কএলনি–

কিএ বঁলনি বনবাসিনী
পতি–পদ–রেণু সুতা হমব।
জবানামুখী ন থীক ও
জবনিত প্রশ্ন ধবণী উঁবক।।

বস্তুত: পলীক রূপমে সীতা পতি–পদ– অনুগমনক ভাবতীয আদর্শ প্রস্তুত কএলনি তথাপি বাজধর্ম হুনকা বনবাসক দণ্ড দঽ প্রতাড়িত কএলে ছল, জকবা হুনক মাতা পৃথ্বী আগযো ধবি পচা নৈ সকলীহ অছি আ হুনক আক্রোশে আগযো জবানামুখীক রূপমে প্রকট অছি। ও কেবল কবিকল্পনে নৈ, মৈথিল মানসক আক্রোশো থিক।

সীতা মিথিলাক বেটী ছলীহ। পবরতী কালমে ও অযোধ্যাক পুতহু বঁললীহ আ অপন কর্তব্য ভাবনা ও পতিব্রত্য দ্বাবা এহেন আদর্শ উঁপস্থিত কএলনি জে ভাতীয লোকজীবনক আদর্শক রূপমে আগযো প্রথিত অছি। ও লৈহব আ সাসুব দুনূ কুলক মান বক্ষাক হেতুক যজ্ঞমে নিবন্তব আহুতি প্রদান করৈত বহলীহ। ঝুদা সমাজ হুনক চবিত্রপব আশংকা করৈত বহলনি। ঐ আশংকাক নিবাবণার্থ হুনকা সর্বসামান্যক বীচ অগ্নি পবীক্ষা দেবঁএ পড়লনি। অগ্নি পবীক্ষাক বাঁদ জখন ও অযোধ্যা আপস আএলনি, তকব বাঁদো পুনশ্চ

हुनक चरित्रपर आक्षेप कएल गेलनि आ मर्यादापुरूषोत्तम राम राजधर्मक अनुदेशे हुनका वनवासक दण्ड प्रदान कऽ देलखिन सेहो एहन स्थितिमे जखन ओ दुजीरा छलीह। अग्नि परीक्षाक साक्षी राम, अक्षय अनुरागसँ संवलित पति राम हुनका प्रतीक्षा कएल गेल आक्षेपक कोनो प्रतिरोध नै कऽ सकलखिन। नारीक प्रति ई उपेक्षाभाव संभवत: सीताकेँ सहन नै भऽ सकलनि जकर परिणाम पाताल-प्रवेशक रूपमे आएल जे आगयो पुरूष समाजक नारीक प्रति हीन मनोभावनाक द्योतक थिक आ द्योतक थिक नारीक नारीक आक्रोश, विरोध आ विद्रोहक, जकरा श्रीमती खान अपन ई गद्य खण्डकाव्यमे रूपायित कएलनि अछि।
श्रीराम अयोध्याधिपति छलाह। प्रजारंजनता हुनक राजधर्म छलनि। ई राजधर्मक वशीभूत भऽ ओ धोबि द्वारा लांछित सीताकेँ, पूर्वहि अग्नि परीक्षिता सीताकेँ वनवास देवाक दण्ड सुनौलनि। रामक ई मानसिकता मर्यादापुरूषोत्तमत्वक प्रति हुनक भावनाक अतिरेकक प्रदर्शन छल। ओ प्रजासँ राजरानी पएवाक फेरमे एकटा सती सावित्रीक आहिपर ध्यान नै दऽ सकल छलाह। जीवानन्द झा शास्त्री ई राजरानीक फेरमे पड़ल भीष्मक मानसिकताकेँ उजागर करैत अपन सोचो तो भीष्म दीर्घकविताम कहने छथि-
स्वतं भी कैसे भीष्म
तुम तो थे
राजरानी बनने की धुन में
बड़ा तेज होता है, यह
राजरानी बनने का नशा
उस नशे में तो मनुष्य

সৱঁ ক্ষ্ট ভূন জাতা হৈ
ৱঁহৱে হো জাতে হৈঁ, উঁসকে কান
ি সর্ফ এক হী শৱ্ঁদ স্বনাঙা দেতা হৈ
উঁসকে কানোঁ কো
ঔব শাযদ উঁসী শৱ্ঁদ কো
রহ স্বননা ভী চাহতা হৈ ৱাঁব–ৱাঁব
জানতে হো, ক্যা হৈ রহ শৱ্ঁদ
রহ শৱ্ঁদ হৈ রাহ রাহ
থহংভার কা হী শাযদ
রিগ্নত ৰূপ হৈ, যহ
জৱঁ মন্বষ্য থপনে হব কার্য পব
নোগোঁ কে ক্ষঁহ সে ি সর্ফ
রাহ–রাহ হী স্বননা চাহতা হৈ।

ভূমিজা, বামক ঐ থহংভারক পবিত্তষ্টিক যজ্ঞাগ্নিমে মোঁকি দেন গেন ছনীহ। ক্ষ্দা হ্নকো দিন ফিবননি। নর–ক্ষশী সন সন্তানক মাতা ভেনাক ৱাঁদ সীতাক থাত্মগৌবর উঁদ্দীপ্র ভেননি। শ্রীমতী খান সীতাক ওগ স্ৰৰূপক চিত্ৰণ কবৈত কহৈত ছথি–

মংজবাযিতা গাছ
গদবাযন মাছ
ৱাঁধরানী গায
থা সন্তানরতী মায
কে ছথি ?
সভ সিযা স্বক্ষমাবিযে তঁ ছথি।

থা সন্তানরতী রনদেৱীক প্বত্র দ্বয বাজা বামক থশ্রেমেধ যজ্ঞক ঘোড়াকেঁ বোকি নৈত ছন্হি, হ্নক সৈন্য সমূহকেঁ পবাজিত কহ দৈত ছন্হি। সীতা

ҥস্ক্ষেপ ক২ ক২ যক্তক ওগ ঘোড় াকেঁ ি রহ্মক্ত কবরৈত ছথি। মহর্ষি রান্মীকি দ্বাবা সীতাক পাতিব্রত্য খভ্যর্থনাপব বাম খপন হৃত্যপব নজ্জিত হোগত ছথি খা সীতাকেঁ রান্মীকি খাশ্রমসঁ খযোধ্যা নহ চনরাঁক হেত্ত তৈযাব ভহ জাগত ছথি। বামক উঁক্তি শ্রীমতী খানক শর্ব্দমে দ্রষ্টর্য খছি–

রঁদনি দের্ঁ সভ্ঠী
জে হেরাঁক ছৈক সে হোএত
জে নিযত ছৈক সে নহি
রিধিক রিধান হম
তহস নহস কএ দের্ঁ।

হ্মদা সীতা খযোধ্যা খাপস হোএর্ঁ স্রীকাব নৈ কবৈত ছথি খা ভূমি প্বত্রীমে ভূমিমে রিঁনা জাগত ছথি। হ্নক ভূমিমে জযরাঁ সঁ পহিনে'ক উঁদ্বাষ ঐ খণ্ডকার্যক পবিণতি থিক খা নাবী খস্মিমতাক উঁত্কর্ষক ছ্যাতক সেহো–

হম নহি ছী পাষাণী খহন্যা
রাতভক্ষা নিবাহাবা
জনকব কযন প্রভূ উঁদ্ধাব
মিনাওন স্রামী গৌতক সঁ
হম ছী সশক্ত, স্রযংপূর্ণ সীতা
শ্রীমতী খান ঐ খণ্ডকার্যমে সীতা ধবিতক খন্বগাযনক মাধ্যমে সাস্ববরাস রেঁষ্টীক মনোভারকেঁ খত্যন্ত মনোবম ঢংগে প্রস্তুত কবৈত ভার র্যক্ত কএনে ছথি–
রিখাহ হোগত দেবী নাবীক স্তবীযতামে খাকস্মিক পবিরর্ত্তন ভহ জাগত ছৈক। ওকব খস্মিতাকেঁ জেনা রাঁকসমে রঁন্ন কহ দেন জাগত ছৈক, ওকব স্রাতংত্র্যকেঁ

রেঁঠ়া দেন জাগত ছৈক।
হ্নকহি শেরঁ্দমে–
রিসবনহুঁ্ ছলহ্নিগব দহী, হবিযব চূড় া
সপনা ভেন ভুন্নাক পেঠী, বদ্রূক মূড় া
ছূটৈন একছিন্না নূত্থা
নৌগজ্জীমে হেবাযন তন্বক ধূত্থা
ঘবে–ঘব, গনিযে গনী, জতয মোন কবয ততয চনী
এতয কনক মন্দিবক চতুষ্কোণ দেহবি কে কহয
সাধংস কতয কি কক্ষ কৌখন পাব কবী

নাবীকেঁ প্বৰুষক সমকক্ষ কি ংরা প্বৰুষহ্সঁ ত্থধিক সরঁনা স্রৰুপমে প্রস্তুত কবরাঁক ভারাভিরয্ক্তিক কোনো ত্থরসব শ্রীমতী খান ঐ খণ্ডকার্যমে ছোড়ননি নৈ ত্থছি জে নাবী ত্থস্মিতাক ত্থন্রেষণক প্রতি হিনক সাকাংছ দূষ্টিক ছ্যাতক ত্থছি।
ঐমে এক গোট প্রসংগ ত্থছি ধন্বষ যজ্ঞক। ধন্বষ রাস্তরমে ত্থনেকানেক রঁনশানী বাজানোকনিক দ্বাবা টৈকসাওনো নৈ ভেন ছলনি তকবা বাজা বাম সহজহি ং তোড়া দেননি। হ্দা তৈসঁ হ্নক ত্থপৌৰুষেয রঁনরিক্রম বূঁমি প্বৰুষ সমাজকেঁ গর্ব কবরাঁক কোনো কাবণ নৈ ছল, কাবণ সীতা ত্থত্যন্ত সহজ ৰুপসঁ ওকবা উঠা কঽ প্রতিদিন ঠাঁর কঽ নেন কবৈত ছলীহ। শ্রীমতী খান কহনে ছথি–
কেহন কেহন মোঁছরঁনা ত্থযনাহ ত্থএনাহ
ধোঁছ ভেন হ্নঁহ গেনাহ
একহ্ বত্তী কর্হাঁ টৈসকননি
ধন্বষা.....
কমন নান সন কোমন কান্ত কিশোব

सहजहि उठाओन
जन्न फून सि ंगवहावक हो
हन्नक
गे दाग ! ताहू सँ कोमन हमव सिया स्वह्ममावि
उठवँथि नित दिन ठाँर कवैक कान
जेना सिमवक फाहा होगक

एही प्रकावक दोसव प्रसंग ऋछि सहस्रवाँह् रधक जैमे ऋद्भुत बामायणक ऋन्वरूप ओ कथा ऋाएन ऋछि जे सहस्रवाँह् बाजा बामकेँ ऋपन बँनसँ पवास्त कवबामे सक्षम छन, यह्नभूमिमे बाजा बाम ऋचेत भऽ गेन छनाह। तखन सीता कानीक रूप धऽ सहस्रवाँह्केँ पवाजित कवबामे ऋपन सामर्थ्य देखौने छनीह। श्रीमती खान द्वावा ऋहू कथाक समारेशसँ हुनक कार्यमे ऋभिर्यक्त नाबी–भारनाक पविचए भेटैत ऋिछ। श्रीमती खानक ऐ खण्डकार्यमे रान्मीकीय बामायणमे उह्नत ओहू ऋंशक सरिशेष उनन्नेख ऋछि जैमे बाम द्वावा नंका रिजयक उपवान्त सीताकेँ पवित्याग कऽ देबाँक कथा ऋन्वस्यूत ऋछि ऋा जकव मार्जन ऋग्नि पवीक्षासँ होगत ऋछि। ऐ सन्दर्भमे रान्मीकिक किछ श्नोकक भारबाशिकेँ श्रीमती खान यथारत् पिवगृहीत कऽ नेननि ऋछि जे हुनक बँह्श्रेतिक प्रतीक थिक यथा–
ि रदितश्चस्तु भद्रं ते योऽ यं बण पविश्चम:।
स्वतीर्ण: स्वह्वदा रीर्यान्नि त्‌रदर्थ मया ह्यत:।।
बक्षता तु मया रृत्तपरादं च सर्वत:।
प्रख्यातस्यात्म रंशस् न्याङ्गं च पविमार्जिता:।।
नक्ष्मणे राथ भवते ह्यरू बुँह्नि यथास्वखम्।।

शेत्र्धने राथ स्वग्रीरे बाक्षसे रा रिभीषणे।
निरेशेय मन: सीते यथा रा स्वखमात्मना। ।6/115/।

श्रीमती खानक शेर्ॅदमे ऐ भारकेँ ऐ रूपेँ ऊपस्थापित कएन गेन थिछ–
सीत हम थहाँक नेन नहि कयनहुँ
यञ्
बारण केँ ववक पवास्त
देरसत्ता केँ स्थापित ववक
पत्नी जनिकव हवण भेन
ताहि बाजाक कनंक मेटैबॅ
छन थभिषष्ट
से भेन सिञ्
तेँ कयन यञ्
हे सीते, थाग थहाँकेँ कएनहुँ झ्रक्त पत्नी धर्मसँ
बद्ध नंका मे
कि ंरा जाउ भावतरर्ष
भवत कि ंरा शेत्र्धन थिाक नक्ष्मण
जकबा संग बहबॅाक हो बद्ध–

बामक ओा प्रसंग थत्यन्त काव्रूणिक थछि। थद्रूठाम िनर्दोष सीतापव बामक रचन राणक प्रहाव भेन थछि जकबा नाबी थस्मितापव प्रहाव कहन जा सकैछ। महात्मा त्तुनसीदासकेँ श्रीबामक ओा कट्रूक्तिपूर्ण रचनसँ ततेक थप्रिय बुॅझना गेननि जे ओ थपन बामकथामे रसत्तुक थाग्रहेँ ऐ घटैनाक थन्पतम शेर्ॅदारनीमे ऊनन्नेख कह कह थागृ बॅठ़ा गेनाह–
सीता प्रथम थनन झ्रह बाखी।

প্রকষ্ট কীন্হ চহ খতব সাখী। ।
তেহি কাবণ করুণানিধি কহে কষ্টক দ্রঁদি।
ঘপত জাত্ত ধানী সরঁ নাগী কবৈ রিষাদ। ।

ন্দা ঐ প্রসংগমে রান্মীকিক সীতামে জৈ খপাব ঙঁজকি দর্শন হোগত খছি, তকব শ্রীমতী খানক খণ্ডকার্যমে খভাব দেখ পড়ৈত খছি, জকবা খাশ্চর্যজনক কহল জা সকৈছ। রান্মীকিকি সীতা খগ্নি পবীক্ষাসঁ পূর্ব প্রগন্যতার্রক খপনাপব কএন গেন শংকাক প্রতিরাদ কবৈত ছথি জে নাবী খস্মিতাক

প্রতি হ্নক দৃঢ় ভারনাক প্রতিক থিক যথা–
কি ং মাম সদৃশং রাক্যমীদৃশং শোকদারুণম্।
রুক্ষং প্রারযসে রীব প্রঙ্কত: প্রাঙ্কতামির। ।
পৃথক্স্ত্রীণাং প্রচাবেণ জাতিত্রং পবিশঙ্কসে।
পবিত্যজৈনাং শঙ্কং ত্ত যদি তেঽহং পবীক্ষিতা। ।
যদহং গাত্রসংস্পর্শং গতাস্মি রিরশা প্রভো।
কামকাবো ন মে তত্র দৈরং দত্রাাপবাধ্যতি। ।
সহ সংরৃদ্ধভারেন সংসর্গেণ চ মানদ।
যদি তেঽহং ন রিজ্ঞাতা হতা তেনাস্মি শাশ্রতম্। ।
ত্রযা ত্ত নৃপশাদ্র্ন শৈষমেরান্বরর্ততা।
নঘ্নের মন্বষ্যেণ স্ত্রীত্রমে প্বসঙ্কতম্। ।
ন প্রমাণীঙ্কত: পণির্রান্যে মম নিপীডিত:।
মম ভক্তিশ্চ শীনংচ সর্বং তে পৃষ্ঠত: ঙ্কতম্। ।
গত্যাতি।

তথাপি শ্রীমতী খানক ঐ খণ্ডকার্যক ঙা রিশিষ্টতা থিক জে ঐমে মিথিনামে বামজানকী রিষযক

ঋচা সভকেঁ সেহো মহত্রপূর্ণ স্থান দেন গেন অছি। মিথিনামে প্রত্যেক কন্যাকেঁ সীতাক প্রতীক মানন জাগত ছন্হি আ মিথিনাক নোকগীতমে সীতা প্রত্যেক জনকক পুত্রীক রূপমে গৃহীত ছথি। মৈথিনী নোকগীতমে সীতাক রৈরাহিক প্রসংগক রঁহ্নয অছি আ নোক সীতাক ব্যথা-কথাকেঁ জেনা রিঁসবি গেন ছথি। ঐ তথ্যকেঁ শ্রীমতী খান ঐ শব্দেঁ অভিব্যক্ত কএনে ছথি-

সীকী খোঁটৈত
নিখিযা করৈত
স্বআসিম নোকনি গওতীহ গীত
ঢৌবতীহ কোবঁব
রিঁসবি জযতীহ সাযাস
সিযা ধিযাক অনসোহাঁত পীব।

শ্রীমতী খান নাবী ও পুরুষক সমকক্ষতা ও সহভরহি কেঁ প্রেয রূপমে ঐ সাহিত্যিক কৃতিমে প্রস্তুত কএননি অছি জে ঐতিহাসিক-পৌবাণিক কথারস্তুকেঁ অধুনাতন যুগজীরনক পবিপ্রেক্ষ্যমে দেখবাক অনুরেষক দৃষ্টিকে কাণে হিনকা সাহিত্যকাব রবেণ্য শ্রেণীমে পাঙ্ক্তিয সারিত করৈ ছন্হি। দ্রষ্টব্য অছি বামক প্রতীক্ষা সীতাক ওা উক্তি-

হমবা নেন অহাঁ প্রাণহবি ছী বাম
নে ছী সাধ্য, নে সাধন
অহাঁ সাক্ষাত রিজয থিকহুঁ
হম ক্ষুদা
পবাজয নহি থিকহুঁ
নহি হোগত ছৈক

প্রত্যেক প্রতিস্পর্দ্ধামে
জয় আ পরাজয়

সহজতা, সরলতা ও প্রসাদ গুণ সম্পন্নতাসঁ মণ্ডিত তত্সম্ ও তদ্ভবরহ্ন শ্রীমতী খানক ঐ খণ্ডকাব্যমে উপমা, উত্প্রেক্ষাদি অলংকার সহজহি ং আকৃষ্ট করैत অছি আ ভরভূতিক একো রস: করুণ এরং প্রতিধ্বনিত হোইত দেখ পড় ৈছ। ঐ পঠনীয, মননীয ও সংগ্রহণীয কৃতিক হেতু শ্রীমতী খান সাধুরাদক পাত্র ছথি। মৈথিলী জগতক তঁ সহজহি ং, বামকথাক প্রত্যেক অধ্যেতাকেঁ হিনক ঞা খণ্ডকাব্য আকর্ষিত করতনি, সে অপেক্ষা কএল জএবাঁক চাহী। কিছু পরিমার্জনক সংগ ঞা কৃতি কালজয়ীক শ্রেণীমে গণ্য হোএবাঁক যোগ্যতা রখৈছ। মৈথিলী বামকথাক আযামকেঁ সংরক্ষিত করবৈনা ঐ কৃতিকেঁ রিভিন্ন দৃষ্টিযে সমীক্ষা-সমালোচনাক রিমর্শ পরক আযাম ভেষ্টক চাহী।

আদর্শক উপস্থাপন : মৌনাগন গাছক ফূন

শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডল বহুআযামী বচনাকাব ছথি । কথা, উপন্যাস, নাটক আদি রিভিন্ন রিধামে প্রভূত বচনা দ্বাবা ও আধুনিক মৈথিলী সাহিত্যমে রৈছপ স্থান বনা চুকন ছথি । 'মৌনাগন গাছক ফূন' হিনক ওপন্যাসিক প্রস্তুতি থিকনি । আদর্শরাদী রিচাবধাবাসঁ ওতপ্রাত হিনক এহি উপন্যাসমে মণ্ডনজীক উদাত্ত সামাজিক চিন্তনক প্রক্ষেপণ ভেন অছি ।

এহি উপন্যাসক অধিকাংশ চবিত্র উদাব ও সজ্জন প্রকৃতিক ছথি । হুনকা নোকনিক হৃদয পরিত্র ছনি আ স্বার্থ ও রাসনাসঁ ফবাক বহি সমাজ উত্থানক হেতু চিন্তন করৈত দেখি পড়ৈত ছথি । স্বভারত: এহন চবিত্র সরহক অনুগমনসঁ ও উপন্যাস এক গোট পিবষ্কৃত সামাজিক চিন্তনক মার্গ প্রশস্ত করৈত দেখি পড়ৈত অছি ।

এহি উপন্যাসক কেন্দ্রীয পাত্র ছথি বমাকান্ত। উপন্যাসক অধিকাংশ ঘটনা হিনকে পবিত: আঘূর্ণিত হোগত অছি । ও জমীন্দাব ছথি আ স্বভ্যস্ত সেহো। উদাব রিচাব, গমানমে

गंभीवता, मन्वकखक प्रति सि नेह हि नक चावि त्रि क रि शि ष्टता छनि । हि नकामे ने सूदि खोव महाजनक चानि छनि ने धन जमा कएनि हाव नोकक खमानरीय र्यरहावे छनि । नीक समाजमे जेना धनकें जि नगी नहि खपि त्त जि नगीक साधन ब्रॅमन जागत खछि , सएह बमाकान्तोक पवि रावमे छनि । उँपन्यासक खावम्भहि मे हि नक उँदात्त चवि त्रक पवि चए भेटैं जागत खछि । गाममे खकान पड़ि जागत छैक। खा नोक सभ खन्न रॅत्रेक मबरॅ शुरू कए दैत खछि । ख़दा बमाकान्त नग रॅखावीक रॅखावी खन्न पड़न छनि । नोकक प्रति सहान्वभूति सँ द्रवि त भए बमाकान्त खपन रॅखाव फोनि दैत छथि खा काजक रॅदना खनाज कार्यक्रम शुरू कए खपन पोखड़ि कें उँबहरॅा नैत छथि । एहि सँ एक दि स जँ नोककें खकर्मण्यतापूर्रक खवाती खन्न नेरॅासँ पवहेज कवरैत छथि तँ दोसव दि स खन्नाभारमे नोककें मबरॅासँ रॅचरैत छथि ।

बमाकान्तक ओ खरधावणा छनि जे संसावक यारन्तो मन्वकख खछि सभकें जीरॅाक खधि काव छैक। सभकें सभसँ सि नेह होएराक चाहि ऐक। ख़दा जाहि पवि रेशमे हमवानोकनि जीरि बहन छी, जाहि ठाम र्यकति गत सम्पत्ति खा जरॅारॅदेहीक रॅाच मन्वकख चनि बहन खछि , ओहि ठाम सि नेह खंडि त होएरॅ कवतैक खा सि नेह खंडि त भेने पावस्पवि क द्वेष ओ नड़ाग-दंगाकें कोनो शकति बोकि नहि सकैत छैक। तें नूतन समाजक नि र्माणक हेतु, सामाजि क समबसता हेतु ०याग भारनाक खारश्यकता

ছৈক খা ছৈক পাবস্পবি ক সহযোগ ভারনাক রি স্তাবক খারশ্যকতা। তেঁ ও খপন দৃ সএ রাঁঘা জমীন গামক ভূমি হীন পবি রাব সর্রহক রাঁচ রি তবণক নি র্ণএ নৈত ছথি জাহি সঁ গামক সভ র্যকতি স্বখী খা সম্পন্ন ভ২ সকথি । যদ্যপি বমাকান্তক এহি প্রকাবক খতি শয উঁদাবতা জমীন্দাবক প্ররৃত্তি ও সমসাময়ি ক যথার্থক দৃষ্টি যে সর্রথা খরি শ্রসনীয প্রতীত হোগত খছি , তথাপি ঙা উঁদাত্ত নেখকি য কল্পনা উঁপন্যাসকাবক এহি উঁদ্দেশ্যকেঁ প্রতি পাদি ত কবৈত খছি জে যারত্ সমাজমে এক দি স খতি রি পন্ন খা দোসব দি স খতি সম্পন্ন নোকক রাস বহত, তাধবি সামাজি ক সমবসতাক রাঁত স্রপ্নে রাঁনন বহত ।

বমাকান্ত উঁদাবতাক খতি বঁজি ত রর্ণনি উঁপন্যাসমে খনেক স্থনমে দেখি পড়ৈত খছি যথা ও শশি শেখব নামক ঘ্রকক উঁচ্চ শি ক্ষাক হেত্তু সহাযতা প্রদান কবৈত ছথি , গামমে স্কূন স্থাপি ত হোএরাঁ কান শি ক্ষকক ভোজনাদি ক র্যরস্থাক ভাব খপনা ঊঁপব ন২ নৈত ছথি , টৈমটৈমরাঁনাক দ্:খি তাহি ঘবরানীক ঙানাজক হেত্তু ওকবা পর্যাপ্ত টৌকা দ২ সহাযতা কবৈত ছথি , খাদি ।

এহি উঁপন্যাসমে মণ্ডনজী মি থি নাক গ্রাম্য জীরনমে পসবন ধর্মভীরুতাক সমস্যাক যথার্থরাদী চি ত্রণ কএননি খছি । এহি সমস্যাক চি ত্রণ হেত্তু ও সোনেনান নামক পাত্রক খরতাবণা কবৈত ছথি । সোনেনানক পত্নী দ্:খি ত পড়ন জাগত ছথি ন। ও ওকবা খস্পতানমে দেখএরাঁক হেত্তু খপন জমীন

ভবনাপব দঽ দৈত ছথি । উঁপচাব ভেনাপব হ্নক পত্নী সরস্থ ভঽ জাগত ছথি ন। ক্ষদা তাহী এ্রমমে ও সাধ্ ভ ্ডাবাক কর্ব্না কঽ নৈত ছথি । এহি কর্ব্নাকেঁ পূব কবরাঁক হেত্ত সাধ্ক দৃষ্টা দন নি মঁত্রি ত কএন জাগত ছথি । হি নকানোকনি ক হেত্ত সোনেনান পর্যাপ্ত ভোজয পদার্থ জ্ষ্টরৈঁত ছথি । ক্ষদা সাধ্ক দ্নূ দনমে একষ্টা রৈষ্ণর সম্প্রদাযক তথা দোসব করীবপন্থী সম্প্রদাযক বহৈত খছি খা দ্নূ দন খপন-খপন সাম্প্রদাযি ক খভি রমানসঁ গ্রস্ত বহৈত খছি জকব কাবণে ভ ্ডাবামে খনেক রি সংগতি উঁত্পন্ন হোগ ছৈক। ক্ষদা সরাধি ক কষ্টকব সথি তি তখন র্বনৈত ছৈক জখন রৈষ্ণর সম্প্রদাযক মহন্থ ভ ্ডাবাক র্বাদ স্থানক হেত্ত এক সএ এক, খপনা হেত্ত এক সএ এক, ভজনি যা সভক হেত্ত একারন-একারন খা ভনসীযাক হেত্ত একাসী-একাসী ষ্টাকা দক্ষি ণাক মাঁগ কঽ রৈঁসৈত ছথি । মবাভরমে পড় ি তহুঁ ধর্মভীরু সোনেনানকেঁ ও বকম চ্কতা কঽ দের্বঽ পড় ৈত ছনি । তত:পব দোসব দন সেহো হ্নকা ওতরেঁ দক্ষি ণা দের্বাক হেত্ত দর্বার্ব দৈত ছনি খা সেহো হ্নকা চ্কতা কবঽ পড় ৈত ছনি । এহি তবহেঁ ধর্মভীরু নোক পাখংডী সাধ্ সমাজ দ্বাবা কোনা নূষ্টন জাগত ছথি , তকব র্ণন কএ উঁপন্যাসকাব এহি সমস্যাক প্রতি নোকদৃষ্টি কেঁ সচেত কবরাঁক উঁপদেশ দৈত ছথি । খরশযে দোসব মংডনী দ্বাবা দক্ষি ণাক বকম ঘ্বা দেনাসঁ সোনেনানকেঁ থোড় ৈক বাহত ভেষ্টৈত ছনি খা ওহি মংডনীক প্রতি নোক জগতমে সহানুভূতি জগৈত ছৈক।

মি থি নাক খনেক নোকব্যবহাব সেহো নোকজীবনক খভ্যন্নতি মে বাঁধক বহন খছি , তাহ্ন দি স ম৺ডনজী সংকেত কএননি খছি । এহি হেতু ও শশি শেখব নামক পাত্রক খবতাবণা কএননি খছি । শশি শেখব হৃষি কওনেজমে প্রবেশ পাবি জাগত খছি । ও এহি প্রবেশসঁ খপন ভাবী স্বখী জীবনক পবি কল্পনা কঽ খত্যন্ত খানন্দি ত হোগত খছি । ওকব পি তা সেহো খেত বেঁচি যো কঽ ওকব পঠ় াগ পূবা কবএবাঁক সংকল্প নৈত ছথি । ক্ষদা কি ছ দি নক বাঁদ পি তা বীমাব পড় া জাগত ছথি ন। শশি শেখব খেত বেঁচি যো কঽ হ্নক গনাজ কববৈত ছনি ক্ষদা ও কানকবনি ত ভঽ জাগত ছথি ন। তত:পব খপন বূঁঢ় া মাতাক সেবা কবৈত শশি শেখব খপন খাগূক পঠ় াগ কোনা জাবী বাথি সকত তাহি পব বিঁ ন্দ্ বি চাব কএনে খেতে বেঁ চ কঽ পি তাক শ্রাদ্ধা কঽ নৈত খছি । পবি ণামত: ওকবা কওনেজ ছোড় বাঁক বাঁধযতা হোগত ছৈক। এহি তবহেঁ ম৺ডনজী নোকজগতমে ব্যাপ্ত খন্ধবি শ্বাস ও নোকব্যবহাবসঁ বঁচনে উঁত্তব সমাজক কল্যাণক দি শানি দৈশ কববৈত দেখি পড় ৈত ছথি । খন্তত: বমাকান্তক সহাযতাসঁ শশি শেখবকেঁ খপন পঠ় াগ পূব কববাঁক সংবঁন ভেটৈ জাগত ছৈক ক্ষদা শ্রাদ্ধাদি ত নোকব্যবহাবক সমস্যাক প্রতি জ্গুপ্সাক ভাব খবশ্য উঁত্পন্ন ভঽ জাগত ছৈক।

খশি ক্ষা গ্রাম্যজীবনক দৈন্যক খন্যতম কাবণ খছি এখনো মি থি নাক নি মনবর্গীয সমাজমে শি ক্ষাক সর্বথা খভাব ছৈক জকব কাবণে সামাজি ক খন্নতি বাঁধি ক ছৈক। ক্ষদা খহ্ন সমস্যাক সমাধান

সামাজি ক নোকনি ক জাগৰুকতাসঁ সংভব ছৈক। মসোমাতক দান কএন জমীনপব রি ত্যানযক স্থাপনা, মীবানন্দ দ্বাবা রৌএনান ও রৌএনান দ্বাবা স্বমি ত্রাকেঁ শি ক্ষি ত কহ ওকবা সৰ্হক স্তবীয জীরনক চি ত্র৭ 'মৌনাগন গাছক ফূন' উঁপন্যাসক এমী উঁদ্দ্ৰ৶যপবক দৃষ্টি কো৭াক পবি চাযক থি ক।

আজুক গ্রাময সমাজক ওা রি ডমৰ্না ছৈক জে পঠ়ন-নি খন ধি যাপ্বতা পাগ কমএৰাক অন্ধ দৌড়মে শামি ন ভহ গেন ছৈক। তেঁ ও সভ অপন গাম-সমাজকেঁ ছোড়ি হজাবো মীনক দূবীপব নোকবী কবহ চনি জাগত ছৈক। পবি ণামত: বূঁঠ় মাতা-পি তাক পবি চর্যা কএনি হাব কেও বহি নহি পরৈত ছৈক। পাবি রাবি ক রি ঘটনক ফনস্রৰূপ সামাজি ক জগতমে পসবন এহি রি সংগতি ক কথা বমাকান্ত ও হ্নক ডাক্টব প্বত্র সৰ্হক কথামে ভেটৈত অছি। ম৺ডনজী এদ্ধ রি ডমৰ্নাসঁ সমাজকেঁ বঁচবাক সংকেত এহি উঁপন্যাসক মাধ্যমে কএননি অছি। হ্নক ভারনা স্বর্ঁধক এহি উঁকতি মে সাকাব ভেন অছি – 'আগক জে একাংগী পবি রাব অছি ও হ্মহাবক ঘবাড় ী জকাঁ বঁনি গেন অছি। বাঁপ-মাএ কত্তী, বেঁটা-প্বতোহ্ কত্তী আ ধি যা-প্বতা কত্তী বহহ নাগন অছি। মানরীয সি নেহ নষ্ট ভহ বহন অছি।' যদ্যপি ওা ভারনা প্তৃষক হাগীন মোএৰাক কাবণে সাম্প্রতি ক যথার্থক দৃষ্টি জে প্বাতন পদ্ধতি ক অছি তথাপি একটা বৈচাবি ক দ্বন্দ্বকেঁ ঠাঠ় কবৈত অছি।

ম৺ডনজী বমাকান্তক দূনূ ডাক্টব প্বত্রক

মদ্রাসমে নোকরী করবাঁক নাথে কি ছ গ্রামেতব সমস্যা সরঁঁকক চি ত্রণ সেহো কএননি ঋছি । এহি মে সরাঁধি ক প্রদ্ধখ ঋছি ধননি পসামে র্যস্ত সমাজক রেঁচৈনী। মহেন্দ্রক এহি কথনসঁ ঙ প্রতি ভাসি ত হোগত ঋছি জে গ্রামেতব সমাজমে ঋত্যধি ক স্বরি ধা সম্পন্ন নোকোক জীরন ঋসামান্য ভ২ গেন ছৈক- 'ঋপনো সোচৈ ছী জে এতে কমাগ ছী, ক্ষদা ি দন বাতি খটৈত-খটৈত চৈন নহি ভ২ পরৈঁত ঋছি । কোন স্বখক পাছু রেঁহান ছী সে র্বিষ যে নে বহন ছী। টী.ভী. ঘবমে ঋছি , ক্ষদা দেখৈক সময়ে নে ভেটৈত ঋছি । খাগনে রৈঁসৈ ছী তঁ চি ড় ি জকাঁ দৃ-চাবি কৌব খাগত-খাগত মন উঁড় ি জাগত ঋছি জে হুল্নাঁকেঁ সমএ দেনে ছি ঐক, নহি জাএরঁ তঁ ঋামদনী কমি জাএত। তহি না স্বতগযোমে হোগত ঋছি । ক্ষদা এতে হ্রীসানীক নাভ কী ভেটৈত ঋছি ? সি র্ফ পাগ। কী পাগযে জি নগী ছি ঐক ? '

এতারতা মৌনাগন গাছক ফুনমে নোকজীরনক রি রি ধ সমস্যা ও তকব সমাধানক মাক্স তকরাঁক প্রযত্ন ভেন ঋছি । 'ঋপন জি নগীকেঁ জি নগী দেখৈত পরি রাব, সমাজক জি নগী দেখরঁ জি নগী থি ক।' মণ্ডন জীক ঋাদর্শরাদী চি ন্তনক রূপমে প্রতি ফনি ত ভেন ঋছি । প্রায: এহী তথ্যকেঁ ধ্যানমে বখৈত মহেন্দ্র দ্বাবা গামহি মে স্বাস্থ্য কেন্দ্র স্থাপনা ক২ রি চাব ঋভি র্যকত কবাওন গেন ঋছি জত২ ওকব পরি রাবক একটা ডাক্টব নি ত্য মবীজক সেরা, গ্রামরাসীক সেরাক হেত্ত উঁপনর্ঁধ বহি তৈক।

সামাজি ক সমন্বযক প্রতি পক্ষধবতা এহি উঁপন্যাসমে ভজ্খাক কথামে ভেটৈত খছি । জাতি –পাতি মে রঁটৈন গ্রাময সমাজমে ছূতাছূত, ঊঁচ নীচক রি চাব খদৌসঁ বহনৈক খছি । গাঁধীজীক স্বতংত্রতা খান্দোননক সমএ খছূতোদ্ধাবক প্রতি হ্নক চেষ্টা ও স্বাতংত্র্যোত্তব কানমে সমাজক বঁদনৈত বীতি –নীতি ক কাবণে যদ্যপি গ্রামো সমাজমে খস্পৃশ্যতাক প্রতি ভাব বঁদননৈক খছি তথাপি সহভোজনক দৃষ্টি যে খখনো জাতি –পাতি ক বীচ দূবী বঁননে ছৈক। বমাকান্ত দ্বাবা ডোম ভজ্খাক ওহি ঠাম জাএ ভোজন কববাঁক কথাক মাধ্যমে মণ্ডনজী সমাজক এহি সমস্যাক খাদর্শপূর্ণ সমাধান দেখৌননি খছি । খবশ্যে এহি মে গহো সংকেত দেন গেন খছি জে সমবসতাক বাঁধক তথাকথি ত খস্পৃশ্য নোকনি ক শুচি তাক প্রতি প্রতবঁদ্ধতাক খভাব বহননি খছি । জে খশি ক্ষাজন্য খছি তথা শি ক্ষা দ্বাবা ওকবো বঁদনন জা সকৈত ছৈক।

মণ্ডনজীক এহি উঁপন্যাসমে নাবী রি ষযক চি ন্তনমে প্রাচীন ভাবতীয নাবীনোকনি ক খাদর্শেকি উঁপস্থাপন ভেন খছি । হি নক খধি কাঁশ নাবী পাত্র যথা বধি যা, শ্যামা, স্বগি যা, সোনেনানক বঁহি ন খাদি মে পতি পবাযণা ভাবতীয নাবীক চি ত্রাংকন ভেন খছি । নাবী–শি ক্ষাক প্রতি বঁদ্ধতা সেহো মণ্ডনজীক এহি উঁপন্যাসমে স্বমি ত্রাক মাধ্যমে খভি ব্যক্ত ভেন খছি জে পঢ়ৄি –নি খি কঽ নীক পবি চাবি কাক ৰূপমে গামক হেত্ত একটা সমপত্তি বঁনি জাগত খছি । স্বজাতা সেহো এহনে নাবী পাত্র ছথি জে

শ্রেমি ক পবি রাবমে জন্ম নেনাক রাঁদো মহেন্দ্রক সহাযতা পারি ডাকটৈবনী রঁনি জাগত ছথি খা মহেন্দ্রক ভারহ্ সেহো ভঽ জাগত ছথি । ঋদা শি ক্ষি তাক সংগহি মংডনজী জাহি নাবীস্বরূপক পবি কল্পনা এহি উঁপন্যাসমে রূপাযি ত কএননি খছি , সে থি ক নাবীক সরঁনা রূপ। নাবীক এহি স্বরূপক চি ত্রাংকন সি তি যাক চবি ত্রমে ভেন খছি । ও নহি কেরন খপন গজ্জতি পব হাথ উঁঠৌনি হাব ননরাঁকেঁ থূবি কঽ বাখি দৈত খছি খপি ত্ত জখন ননরাঁক গামক নোক ওকবা গামপব খাক্রমণ কঽ দৈত ছৈক, তঁ নাবীনোকনি ক সেনানাযি কা রঁনি ওকবো সভকেঁ পবাস্ত কঽ দৈত খছি ।

স্বাতংত্র্যোত্তব ভাবতমে ভ্রষ্টাচাব এক গোটৈ কোঠ়ক রূপমে দেখি পড়ৈত খছি জে বাষ্ট্রীয জীরনকেঁ ক্ল্ঠি ত জীরন জীরাঁক রাঁধযতা হোগত ছৈক। মাস্টৈবক রঁহানীমে হীবানন্দক খাদ্রাশীক মাধযমে মণ্ডনজী সবকাবী স্তবপব হোগত ভ্রষ্টাচাবক যথার্থকেঁ খভি র্যকতি প্রদান কএননি খছি ।

মি থি নাক খার্থিক সমৃদ্ধি ক হেত্ত এহি ঠাম জনকবক সদ্পযোগ কবরাঁক চি ন্তন সেহো এহি উঁপন্যাসমে খভি র্যঞ্জ ভেন খছি ।

মৌনাগন গাছক ফূক'ক ভাষা খত্যন্ত সবন, সহজ ও গমৈযা মৈথি নী থি ক। মণ্ডনজী খপন কল্পি ত সংসাবকেঁ মূর্ত্ত, রি শ্বসনীয ও সজীর রূপমে প্রস্তুত কবরাঁক হেত্ত নেখনক খনেক প্ররি ধি কেঁ এহি উঁপন্যাসমে সমাহি ত কএনে দেখি পড়ৈত ছথি । খনেক ঠাম হি নক নাটৈকীয ভাষা প্রযোগ খত্যন্ত

তীব্রঁতা ও সহজতাক সংগ ভেন খছি , যথা–

‘কী কইনে ঐহন ? ’

‘নত দৈনে এনৌঁ। ’

‘কোন কাজ ছি খহ ? ’

‘কাজ–তাজ নৈ কোনো ছী। ওহি না খহাঁ চাব্দ গোবেকেঁ খ্খরৈঁক রি চাব ভেন’ গত্যাদি ।

খনেকঠাম ঙা সংস্মবণাত্মক ভাষাক স্বষ্ঠ্ প্রযোগ কএনে ছথি যথা– ‘এহি গামমে পহি নে হমমব জাতি নৈ বহএ। হ্মদা ডোমক কাজ তঁ সভ গামেমে জনমসঁ মবন ধবি বই ছৈ। হমবা প্পবখাক ঘব গোনরাঁ বই। পূভবসঁ কোশী খরৈঁত–খরৈঁত হমবো গাম নগ চনি খাএন। খখাব চঠ়ি তে কোসী ফ্নেনৈ। পহি ন্বকে উঁম্মমে তেহেন রাঁঠ়ি চনি খাএন জে রাঁধক কোন গম্প জে ঘবো সভমে পানি ঢূকি গেন। তীন–দি ন তক নে মানজান ঘবসঁ রহবাএন খা নে নোকে। পীহ–পাহ কবৈত সভ সমএ রিঁ তৌনক। মগব পহি ন্বকা রাঁঠ়ি বই, তেসবে দি ন সটকি গেন। ’ গত্যাদি ।

পবি রেশ ও রাতারবণক নি মণিক হেত্ত মণ্ডনজী খভি ধা শিকতি সঁ সংপ্পষ্ঠ ভাষাক প্রযোগ দ্বাবা সটীক ও রি শরসনীয রিঁ মরঁ ঠাঠ় কবরাঁমে সমর্থ দেখি পড়ৈত ছথি যথা– ‘দূ সান বৌদীক উঁপবান্ত খখাঠ়। গাবমীসঁ জেহনে দি ন ওহনে বাতি । ভবি –ভবি বাতি রীখনি মৌঁকি –মৌঁকি নোক

সভ রিঁ তরৈঁত। স্বতনী বাতি মে ভঁঠি –ভঁঠি পানি পীরঁএ পড়ৈত। ভোব হোগতে ঘাম ভঁগ্র রূপ পকড়ি নৈত। জহি না কি যো ককবো মাবৈনে নগ পহুঁচি জাগত, তহি না স্বরূজো নগ খারিঁ গেনাহ। বস্তা–পেবাক মাটি সি মেঁটৈ জকাঁ সক্কত ভৱ গেন খছি ।' গত্যাদি ।

পাত্রক পবি চয দৈত কান মণ্ডনজী ওকব রূপবেখা, রেশ ভূষা, খাহ্য খাদি ক বর্ণন খনেক ঠাম ওহি পাত্রক ঠোস র্যকতি ত্বরকেঁ খভি র্যঞ্জ কবরাঁক হেত্তু কএননি খছি । হ্মদা এহি প্রকাবক বর্ণনক প্রতি হ্নকা প্রতি বঁহ্নতা নহি দেখি পড়ৈছ। তথাপি জতৱ কতহ্ ও পাত্রক মনোভারক বর্ণন কএনে ছথি ওহি ঠাম হ্নক ভাষা রি শনেষণাত্মক প্রঙ্গতি ক দেখি পড়ৈত খছি জাহি সঁ পাত্রক হৃদযগত ভারক প্রতি পাঠককেঁ স্বনি শচি ত খাকননক খরসব ভেটি জাগত ছনি , যথা– 'ব্রহ্মচাবী জীক বাঁত স্বনি বমাকান্তকেঁ ধনক প্রতি মোহভংগ হ্খএ নগননি । সোচএ নগনাহ জে হমবো দূ সএ বীঘা জমীন খছি , ওতে জমীনক কোন প্রযোজন খছি । জঁ ওহি জমীনকেঁ নি ভূমি ক বীচ বাঁটি দি ঐক তঁ কতে পবি রাব খা কত্ত নোক স্বখ–চৈনসঁ জি নগী জীরৈঁ নাগত। জকবা নেন জমীন বখনে ছী ও তঁ খপনে ততে কমাগ ছথি জে ঢেবি ঔনে ছথি । খদৌসঁ মি থি নাক তি যাগী মহাপ্বরুষক বাজ বহন, কি এক নে হমহুঁ ওহি পবম্পবাকেঁ খপনা, পবম্পবাকেঁ প্বন:জীরি ত কৱ দি ঐক।'

এহি তবহেঁ 'মৌনাগন গাছক ফূন'মে ভাষাক

ক্ষশৈন ও বচনাত্মক প্রযোগ ভেন খছি জাহি সঁ বর্ণনমে সটীকতা, সহজতা, রি মরঁধর্মিতা, স্পষ্টতা ও মনোরৈজ্ঞানি ক রি শনেষণক ক্ষমতা প্রদর্শিত হোগত খছি । খপন গ্ণক কাবণেঁ মণ্ডনজীক কথাসংসাবমে রি শরসনীযতা দেখি পড়ৈত খছি খা ও খপন প্রৌঢ় রি চাব ও খনুভূতি কেঁ পাঠকীয মানসমে স্থানান্তবি ত কবরাঁমে সফল ভেন ছথি ।

খন্তত: মহেন্দ্রক উঁকতি – 'সমাজ ৰূপী গাছ মৌনা গেন খছি , ওহি মে তামি , কোড়া , পটা নর জি নগী দেরাঁক খছি জাহি সঁ ওহি মে ফূল নাগত খা খনরবত ফ্নাগত বহত'মে উঁপন্যাসক উঁদ্দেশয স্ফ্ুট ভেন খছি । স্রভারত: মণ্ডনজী এহি ষ্কৃতি ক মাধ্যমে গ্রাম ও গ্রামেতব জীরনক সংগহি র্যকতি , পবি রাব, সমাজ ও বাষ্ট্রক খভ্যুন্নতি ক হেত্ত একব প্রত্যেক গকাগকেঁ ত্যাগ ও ত্যাগ ও সমর্পণক ভারনাসঁ ওত প্রাত বহরাঁক খাদর্শ জীরন পদ্ধতি খপনযরাঁক সংদেশ দেননি খছি । হি নক ওা সংদেশ 'সর্রে ভরন্তু স্বখি ন: সর্রে সন্তু নি বামযা:, সর্রে ভদ্রাণি পশ্যন্তু মা কশ্চি দ্ দ্:খভাগ ভরেত্'ক ভারনাক প্বন: উঁপস্থাপন থি ক।

আস্থা, জিজীবিষা ও সংঘর্ষক প্রবাহ

শ্রী জগদীশ প্রসাদ মংডল কৃত "গামক জিনগী" হিনক উন্নৈস গোট কথাক সংগ্রহ থিক। এহি কথা সভমে মিথিলাক গ্রাম্য জীবনক মৌলিক ও অকৃত্রিম ছবি অভিব্যক্ত ভেল অছি। আজুক সংক্রমণশীল যুগমে মিথিলাক গাম কোন তরহেঁ অপন পরম্পরিত জীবন পদ্ধতি, আস্থা ও বিশ্বাসক সংগ প্রবল জিজীবিষাক বলেঁ নিরন্তর সংঘর্ষ পথপর আরূঢ় সংগ রূপায়িত কএল গেল অছি।

সংগ্রহক তীন গোট কথা ক্রমশ: 'ভেঁটক লারা', 'বিসাঁঢ়' ও 'পীবাড়ক ফড়' মিথিলামে উপলব্ধ প্রাকৃতিক উপাদানক উপযোগিতাপর বিমর্শ প্রস্তুত করৈত অছি। বাঁঢ়ি আ সুখাবসঁ পীড়িত মিথিলাক জনসম্প্রদায অপন জীবন রক্ষাক হেতু কোন তরহেঁ ভেঁট, বিসাঁঢ়, পীবার আদিকেঁ অপন মেহনতিক বলেঁ সাদ্য পদার্থক রূপমে গ্রহন করৈত রহল অছি তথা এহিঠামক প্রাকৃতিক সংসাধনক উপযোগ দ্বারা কোনা মিথিলাক ভূখমরী ও বেরোজগারীকেঁ দূর কএল জা সকৈছ, একর আর্থিক বিকাস কএল জা সকৈছ তকর চিত্র এহি তীনূ কথামে ভেটৈত অছি। শ্রমপর বশ্বাস, ঈমানদার প্রযাস, কর্মণ্যতা ও চাতুর্যক সংবলসঁ বিপন্নতাপর বিজযক ঈ গাথা সভ মিথিলাক লোকজীবনমে ব্যাপ্ত উত্সাহ ও সংঘর্ষক মর্মস্পর্শী চিত্র প্রস্তুত করৈত অছি।

সংগ্রহক অন্যান্য কথা সভমে বিভিন্ন প্রকারক

समस्या सम्भपव रिमर्श प्रस्तुत भेल अछि आ एक गोट आदर्श ग्राम्य समाजक परिकल्पना प्रस्तुत भेल अछि। दहेजक सामाजिक समस्याक उन्मूलनक दृष्टिए 'घरदेखिया' कथा अत्यन्त हृदयस्पर्शी अछि। मिथिलाक उच्चरगीय समाजमे धनलोलुपताक कारणे उत्पन्न एहि समस्याक फलन नारी प्रताड़नाक अतिरेकक रूपमे अत्यन्त गर्हित स्थिति प्राप्त कएने अछि जकर कारणे कन्याक रिराह एकटा पैघ समस्या बनल रहल अछि आ एकर कोनो ठोस समाधान अद्यारधि समक्ष नहि आरि सकल अछि। मण्डलजी एहि समस्याक समाधान लोकजीरनक रैचारिक परिरर्त्तनकेँ मानैत छथि आ सरहारा रस्तुक अतिशय दीन पात्र ब्रखियासँ कहबैत छथि- "नै। हम ककरो बेटीकेँ पाग नइ कइ अपना घर नै आनब।" ब्रखियाक एही राक्यमे दहेज समस्याक प्रति समाधानक दिशा-बोध होइत अछि।

आजुक युग तकनीकक युग थिकैक। नित्य नूतन तकनीकक रिकासक कारणेँ जे केओ अपन तकनीकी ज्ञानमे अद्यतन बनल नहि रहि सकत, ओ जीरन-सघर्षमे पाछाँ धकेलि देल जाएत। एहि तथ्यसँ अरगत कबएबाक उद्देश्य मण्डलजीक दूनू गोट कथा- 'दूटा पाग' आ 'हारि-जीत'मे अभिव्यक्त भेल अछि। 'दूटा पाग'क फेकुआ नूतन फैशनक अनुरूप सिआगक काज सिखबामे असमर्थ रहैत अछि तेँ ओकरा शहरो छोड़ए पड़ैत छैक आ जीरिकासँ हाथो धो लैत अछि जखन कि 'हारि-जीत' कथाक बामदत्त कुम्हारक व्यरसायमे होइत नित्य परिरर्त्तनक अनुरूप अपन व्यरसायोमे परिरर्त्तन कइ मूर्त्तिकार बनि जीरिकोपार्जनमे समर्थ बनल रहि पबैत अछि।

ওকবা জীৱিকাপৰ এহি পৰিৱৰ্ত্তনক কোনো অসৰি নহি পড়ৈ পৰৈত ছৈক জে ঘৰৈযা ৱাসনমে মাটিক ৱঁদনা ধাত্তুক প্ৰযোগ হোমএ নগৈত ছৈক আ খপৰাক ঘৰক স্থান এসৱেঁস্টৈস শীটক মকান নঃ নৈত ছৈক। এহি তৰহেঁ ও দুনূ কথা যুগ–পৰিৱৰ্ত্তনক সংগ চনৱাঁক শিক্ষা প্ৰদান কৰৈত অছি।

উঁপযোগিতাপৰ আধাৰিত ব্যৱহাৰপৰক এহি যুগমে নোক স্বাৰ্থ মাত্ৰ দিস ততেক ঝুকি গেন অছি জে বৃদ্ধ মাতা–পিতাক প্ৰতি ঝুভেনা একটা সামান্য ৱাঁত ভঃ গেন খিছ। আগ 'মাতৃ দেৱো ভৱ', পিতৃ দেৱো ভৱ, নোক সংস্কাৰসঁ বিন্বপ্ত ভেন জা ৰহন ছৈক। শ্ৰৱণ কুমাৰক আদৰ্শসঁ নোক ৱাঁনহন নহি ৰহি সকন অছি। জাহি ভাৰতমে কৃতজ্ঞতা বশীভূত নোক গাছ পৰ্যন্তক পূজক অছি, ততহি পানি–পোসি, পঢ়া–নিখা কঃ সমৰ্থ ৱঁনৌৱিহাৰ মাতা–পিতোক প্ৰতি কৃতজ্ঞ ৰহৱাঁমে সংকোচ ভঃ ৰহন ছৈক। সমাজমে আএন এহি পৰিৱৰ্ত্তনকেঁ ৰেখাংকিত কঃ মংডনজী দূ গোট কথামে এহিপৰ বিমৰ্শ প্ৰস্তুত কএননি অছি জকৰ নাম অছি ক্ৰমশ: 'ভৈযাৰী' আ 'ৱঁহিন'। 'ভৈযাৰী'ক কুস্বমনান অপন জেঠ ভায দীনানাথক পৰিশ্ৰমক ৱঁনপৰ উঁপাৰ্জিত পাগসঁ জখন পঢ়া–নিখি কঃ নোকৰী কৰএ নগৈত অছি তঁ গামক অপন হিস্সাক সম্পত্তি ৱেঁচি শহৰী জীৱন ব্যতীত কৰএ নগৈত অছি। ওকৰা অপন নকৱাগ্ৰস্ত পিতা আ বৃদ্ধা মাতাক কোনো ধ্যান নহি ৰহৈত ছৈক। তেঁ জখন ও দাৰুক সেৱনক কাৰণেঁ অসময কানকৱনিত হোএৱাঁপৰ বৃত্ত ভঃ জাগত অছি আ মাএকেঁ ও সমাদ ভেটৈত ছনি জে ও ওকৰ অন্তিম দৰ্শন কঃ নেথি তঁ মাএক এহি উঁক্তিমে বৃদ্ধা

মাতা–পিতাক রৈকন্য খভিশাপক রূপমে প্রকষ্ট হোগত খছি– "ক্ষস্বমা হমব রৈষ্টা থোড়ে ছী জে ক্ষঁহ দেখরৈঁ। ওঁ তঁ ওহী দিন মবি গেন জগ দিন হমবা দনূ পবানীকেঁ ছোড়ি চনি গেন। খাগ রীস রর্খসঁ খগ হাথ–পাএবক রনেঁ রীমাব পতিকেঁ জীরিত বাখি খপন চূড়া খা সিনূবক মান বখনে ছী।"

'রহীন' কথামে সবোজনী নামক রূহ্নাক কথা খছি জনিক মৃত্যক খরসবপব রজৌনো ওঁত্তব হ্নক প্বত্রী বীতা হ্নক খন্তিম দর্শনক হেত্ত নহি খরৈত ছথি খা র্যস্ত হোএরাক নাথ নগা দৈত ছথি জখন কি পবজাতিক ক্ষসনমানি রহিনা শরানা হ্নকা দেখরাক হেত্ত খরৈত ছথিন। বাধেশ্যামক এহি চিন্তনমে সম্রন্ধ–রন্ধক রাস্তরিকতাকেঁ ওঁদ্ঘাটিত কবৈত কহন গেন খছি– "দুনিয়াঁমে রহিনিক কমী নহি খছি। নোক খনেবে খপ্পন খা রীবান র্নৈত খছি। ঙা সভ মনক খেন থিক। হঁসী–খুশীসঁ জীরন রিতরৈমে জে সংগ বহএ রএহ খপ্পন।" মাতা–পিতাক প্রতি ধিযাপ্বতাক ক্ষভেনাক সংগহি এহি কথামে মানরতারাদক প্রতিপাদন মংডন জীক নক্ষ্য র্নমনা জাগত খছি।

ওঁচ্চ শিক্ষা প্রাপ্ত রস্থমে সম্প্রতি রিদেশী গমনক নিনসা প্ররন দেখন জাগত খছি। এহি প্ররৃত্তিক কাবণে ও নোকনি স্রদেশী সেরাসঁ তঁ রংচিত এহিযে জাগত খছি, খপনো জীরনক পবিরেশী সংক্ষচিত রনা নৈত ছথি। 'পছতারা' কথা শিক্ষিত রস্থক এহী খধ:পতনক কথা থিক। একব প্রম্নখ পাত্র বঘ্নাথক এহি পশ্চাত্তাপপূর্ণ ওঁক্তিমে এহন নোকক মানসিকতাক খভিরৃযক্তি কএন গেন খছি– "হমবাসঁ সগও গ্বনা ও নীক ছথি জে খপনা মাথপব পানিক ঘৈন ওঁঠা মাতৃভূমিক

ফ্নরাবীক ফ্নক গাছ সীচি বহন ছথি। খপন মাএ–রাঁপ, সমাজক সংগ জিনগী রিঁতা বহন ছথি। জিনগীক খন্তিম পড় ারমে পহুঁচি খাগ রুঁন্মি বহন ছী জে নে হমবা খপন পবিরাব চিন্হৈক রুঁঝ্লি ভেন খা নে গাম–সমাজক।”

এহী তবহেঁ ‘রৌনিহাবিন মবনী’মে সরহাবাক প্রতি করুণা, ঠেনারঁনামে সরহাবাক সংঘর্ষ, ‘জীি রকা’মে জনরিতবণ প্রণানীমে র্যাপ্ত ভ্রষ্টাচাব, ‘বিক্শারঁনা’মে সরহাবাক উঁন্মুক্ত জীরঁন খা সম্পত্তিশানী রস্থাক নাবীক ফঁঠা, ‘চূনরানী’মে সরহাবারস্থাক স্নেহ–সম্রঁন্ধ খাদিকেঁ খাধাব রঁনা কঽ কথা গঠ়ন গেন খছি জে খত্যন্ত বোচক ভেন খছি। ‘খনেকুখা রেঁটা’ নোকজগতমে শিক্ষাক খারশ্যকতাপব রঁন দৈত খছি তঁ ‘ডাক্টব হেমেন্ত’ স্বদূব দেহাতমে স্রাস্থ্য স্বরিধাক র্যরস্থাকেঁ বেখাঁকিত কবৈত খছি। ‘রাঁরী’ কথাক মাধ্যমে মংডনজী হিন্দূ–মুস্নিম একতাকেঁ ছঠি পারঁনিক খাধাবপব দৃঠ়তা প্রদান কববাঁক বাষ্ট্রীয দাযিত্রক প্রতীক্ষা সতর্কতা দর্শৌনিনি খছি। ‘ডীহক রঁ়টরাঁবা’ ভ্রষ্টাচাব পূর্বক ধন খর্জন কএনিহাব সমাজক খধোগতিক চিত্রাঁকন কবৈছ।

মংডনজীক খধিকাংশ কথা রর্ণনাত্মক শৈনীমে নিখন গেন খছি। এহি শৈনীক কাবণেঁ হিনক কথা সভমে উঁপন্যাসিক খানন্দ ভেটৈত খছি মুদা একে কথামে খনেক উঁপকথা সভক সম্মিশ্রণক কাবণেঁ রহুধা নঘুকথাক ক্ষিপ্রতা ও সঘনতা রাঁধিত দেখি পড় ৈত খছি। হিনক রর্ণনমে খরশ্যে চারুতাক দর্শন হোগত খছি খা পাঠক সমক্ষ সমগ্র চিত্র রুপাযিত ভঽ জাগত খছি যথা– “পছিনা চাবি সানক বৌদী ভেনে গামক স্ববখিযে রেঁদবংগ ভঽ গেন। জে গাম হবিযব–হবিযব

গাছ-বিরীছ, অন্নসঁ নহনহাগত খেত, পানিসঁ ভবল ডবাব-পোখবি, সৈকড়া বংগক চিড়ৈ-চুনমুনী, হজাবো বংগক কীড়-পতংগসঁ নঃ কঃ গাএ, মহীস আ ৰকবীসঁ ভল বহৈত ছল ও মবণাসন্ন ভঃ গেল। স্বপ্ন-মসান জেকাঁ। রীবান। সরহক মনমে একটা রিচাব অবৈত জে আৰ ঙা গাম নৈ বহত। জঁ বহবো কবত তঁ মাটিযেটা। কিএক তঁ জাহি গামমে খাগক লেল অন্ন নহি উঁপজত, পীরৈক লেল পানি নহি বহত, তাহি গামক লোক কী হরা পীবি কঃ বহত।" গত্যাদি।

মংডনজীক হৃদযমে গ্রাম্য জীরনক প্রতি অগাধ নিষ্ঠা ছনি আ মিথিলা ও ভাবতক আদর্শ গ্রামক পবিকল্পনা ছল্হি। তেঁ ও ওহি সভটা পবিস্থিতি দিস লজবি খিবরৈত দেখি পড়ৈত ছথি জে গ্রাম্য জীরনক সৌন্দর্যক হেতু বাধক বনল অছি। একটা পাত্রক মাধ্যমে ও কহৈত ছথি- "গামমে লে পানি পীরৈক ওবিযান ছৈ, লে খাগক লেল সভকেঁ সংতুলিত ভোজন ভেটৈ ছৈ, লে ভবি দেহ কপড়া ভেটৈ ছৈ, লে বহৈক লেল ঘব ছৈ, ওহি দেশকেঁ মবল নৈ কহবৈ তঁ কী কহবৈ। এখনো লোক সড়ল পানি পীরৈত অছি, কহুনা কঃ কিছু খা দিন কটৈত অছি, গাছক নিচ্চাঁমে আগি তাপি সমএ বিতরৈত অছি, হজাবো বংগক বোগ-ব্যাধিসঁ ঘেবল অছি, ওহি দেশকেঁ কী কহবৈ? হজাবো বর্ষক মন্বন্তবক গতিহাসমে এখনো ধবি সবস্বতীক আগমন সভ মন্বন্তব ধবি নৈ ভেল অছি, ওহি দেশকেঁ কী কহবৈ? আদি। অরশ্যে হুনক আদর্শ গামক পবিকল্পনা সর্বথা স্বরিধাসম্পন্ন, আর্থিক ৰূপেঁ সবল আ স্বশিক্ষিত গামক ছনি। জকব চর্চা রেব-রেব হুনক

कथा सन्दर्भमे अनायास आएल अछि।"

अपन कथा सन्दर्भमे मंडनजी कतहु कृत्रिमताक प्रवेश नहि होमय देलनि अछि। स्वभावत: हिनक भाषा, संवाद, वर्णन, वस्तु, चरित्र आदि समस्त उपादानमे सहजताक दर्शन होइत अछि। हिनक अधिकांश कथा ग्राम्य जीवनसँ सम्बद्ध अछि तेँ ओ पात्रक नामावली सेहो ओही जीवनसँ लेने छथि यथा- हुनिया, दुखनी, वेँचन, सुगिया, धनिया, पिचकुन, पिहुआ, भुनिया, फेकुआ, नथिया, सोमन, मखनी, बघुनी, बुचाइ, बँचनू आदि, कदा जखन ओ नागर पात्रकेँ अपन कथामे प्रवेश दैत छथि तँ वर्गीय नामोक प्रयोग करैत छथि यथा- कृष्णनन्द, शिवनाथ, रुक्मिणी, शोभाकान्त, वागिनी, सुनयना आदि। पात्रक वंशाचित्र पाठकक मानसमे उतारि देबाक हिनक क्षमता मखनीक एहि रूपरूप- वर्णनमे अत्यन्त उत्कृष्ट देखि पड़ैछ- "कारी झामर एकहड्डा देह, ताड़-खजूरपर बनाओल चिड़ैक खोंता जकाँ केश, आंगुर भरि-भरिक पीअर दाँत, फुटैल घैलिक कनखा जकाँ नाक, गाइयक आँखि जकाँ बड़का-बड़का आँखि, साइयो चेफड़ी लागल साड़ी, दुबरमनिया आँगि फटैलाक बाद कहियो देहमे आंगीक नसीब नहि भेल, बिना साया-डेढ़ी याक साड़ी पहिरने। यएह छी मखनी।" मात्र ओ वर्णन मखनीक प्रति करुणा उत्पन्न करबामे सक्षम सिद्ध अछि।

ग्राम्य जीवनक वर्णन करैत काल ओकर श्याम पक्षकेँ सेहो मंडनजी यथावत् राखि कथाक सहजताकेँ अक्षुण्ण रखलनि अछि। ग्राम्य जीवनमे ताड़ी-दारू, गाँजा-भाँग, बीड़ी-सलाइ आदिक प्रयोगकेँ ओ विभिन्न कथामे सहजताक सृजनक हेतु प्रयुक्त

कएननि अछि ।

अास्था आ विश्वास ग्राम्य जीवनक अंग थिक । मंडन जीक कथा सभमे अनेक ठाम लोक जीवनक जीवन्त आस्थाक चित्रण भेल अछि यथा- "ईश्वर भगवानकेँ कोनो चीजक दुःख भऽ गेल हेतनि । तेँ हुनका तौसरि जरूरी अछि ।" यएह सोचि किया भूखल-दुखलकेँ अन्नदान तँ किया कीर्तन-अष्टयाम-नवाह, तँ किया यज्ञ-जप चंडी, विष्णु तँ किया महादेव पूजा नि ंग इत्यादि अनेको रंगक तौसरिक ओरियान शुरू केलक । जनिजाति सभ कमला-कोशीकेँ छागर-पाठी कबुला सेहो करए लगलीह । इत्यादि । ग्राम्य जीवन नाना अभाव-अभियोगक अछैतो जाहि उत्साह ओ उमंगकेँ अंडेजने रहैत अछि, से एकर अपार जिजीविषाक प्रतीक थिक । मण्डन जीक कथा सभमे पात्रक चरित्रमे कुंठा ओ संत्रास पर जिजीविषाक विजय देखाओल गेल अछि जाहिसँ हिनक कथा सभ नव आशाक संचार कय लोक जीवनक सोनहुल भविष्यक प्रति आश्वस्त करैत अछि । द्रष्टव्य अछि किछु पाँती-

- "अपन धन रहैत, तइपर सँ मेहनत करब तँ कोन दरीदराहा दुःख आबि कऽ हम्मर स्वख छीनि लेत ।"

- "एक्कौ बाँट ापर मे एतेक चिन्ता करै छथि काका, करी नीक की करी अधलाह, दिन तँ बितबे करतनि ।"

- "जकरा खाए-पीबैक ओरियान बुझल छैक ओ कथीक चिन्ता करत । इत्यादि ।"

एतबता मण्डन जीक 'गामक जिनगी' कथा संग्रहमे ग्राम्य शब्दावलीक माध्यमे ग्राम्य जीवनक सौन्दर्य ओ समस्या तथा तकरा सबहक विवेकपूर्ण निदान दिस इंगित

कबरॉक प्रयास भेल अछि जे मैथिली कथा विधामे अन्यतम योगदानक रूपमे चर्चित-अर्चित होएबॉक सामर्थ्य बखैत अछि।

पोथीक नाम- गामक जीनगी
विधा- कथा संग्रह
बचनाकाब- जगदीश प्रसाद मंडल
कॉपी बाइट- उमेश मंडल
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन बाजेन्द्र नगब दिल्ली
मूल्य- २०० टौका मात्र
प्रकाशन वर्ष- सन् २००९
पोथी पाप्तिक स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स, वार्ड न.६, निर्मली, स्वपौल

गसरी सन 2010 : मैथिलीक गतिविधि

वर्ष 2003क अन्तिम मासमे जखन मैथिली भाषाकेँ संविधानक अष्टम अनुसूचिमे स्थान प्राप्त भेलैक तँ

প্ৰবাসী-প্ৰৱাসী মৈথিল জনসম্প্ৰদায তত্কালীন প্ৰধানমংত্ৰী মান্যৱৰ শ্ৰী অটল বিহাৰী বাজপেযী ও গৃহমংত্ৰী মান্যৱৰ শ্ৰী লালকৃষ্ণ আডৱাণীক প্ৰতি অভিভূত ভেল অপন চিৰ আকাংক্ষাক প্ৰতিপূৰ্তিসঁ হৰ্ষোল্লাসমে নিমগ্ন প্ৰতীত ভেল। জ্যোতিৰীশ্বৰ ও বিদ্যাপতি ঠাকুৰক দেসিল বযনা, ব্ৰজকিশোৰ ঠাকুৰ আ কৰ্পূৰী ঠাকুৰক সত্যপ্ৰযাসসঁ আ অন্তত: মান্যৱৰ ডা. শ্ৰী সী.পী. ঠাকুৰক প্ৰযত্নে ৰাষ্ট্ৰীয ক্ষিতিজপৰ অপন উচিত স্থান পওলক। সুমন, মধুপ, কিৰণ, মণিপদ্ম, প্ৰবোধ, দেৱনাৰাযণ, যাত্ৰী আদিক আত্মা জুড়া উঠল হেতনি। সৰ্বশ্ৰী অমৰ, প্ৰদীপ, বৈদ্যনাথ চৌধৰী আদি গোটাক একটা যজ্ঞ পূৰ্ণাহুতি দিস অগ্ৰসৰ ভেলনি। ঐতিহাসিক সংঘৰ্ষ সফলতা প্ৰাপ্ত কএলক আ একৰেৰ ফেৰ নৱ স্পন্দন মৈথিলী জগতমে অএলৈক।

মৈথিলী পত্ৰকাৰিতা জগতমে ও স্পন্দন মিথিলা দৰ্শন, পূৰ্বোত্তৰ মৈথিল, বিদ্যাপতি টাইমস, সময-সাল, আঁকুৰ, পক্ষধৰ, পূৰ্বোত্তৰ মৈথিল সমাজ, কৰ্ণামৃত, জখন-তখন, মিথিলা-দৰ্পণ, সাঁধ্য গোষ্ঠী, মিথিলাযতন, গামধৰ, আঙন ও ঙ-পত্ৰিকা বিদেহ আদিক মাধ্যমে বিগত বৰ্ষমে মৈথিলী গতিবিধিকেঁ সমংজিত-সংযোজি কবৈত বহল অছি। কলকত্তাসঁ প্ৰকাশিত মৈথিলীক একমাত্ৰ দৈনিক মিথিলা সমাদ, স্বদেশীক সবণিপৰ মৈথিলী দৈনিকক অৱধাৰণাকেঁ সম্পুষ্ট কবৰামে লাগল বহল অছি। পক্ষধৰ (স. শ্ৰীসীতাংশু কশ্যপ, বাঁচী) আ মিথিলা সৃজন (স. শ্ৰীঋষিবশিষ্ঠ, মধুবনী) এহী বৰ্ষক দেল থিক।

পোথী প্ৰণযন ও প্ৰকাশনক দিশামে সেহো ক্ষিপ্ৰ গতিত্বৰ বিগত 2010ক উপলব্ধি মানল জা সকৈছ। প্ৰকাশক

ও রিতবকক সর্বথা খভার বহতৌं মৌথিনী নেখকনোকনি গ্রাহকক পবরাহি রিন্ব কেনে স্রযং খপন–খপন বচনারনীক প্রকাশিনসঁ মৌথিনীক সমৃদ্ধি হেত্ত প্রতিরদ্ধ দেখ পড়নাহ। দিন্নীক শ্রুতি প্রকাশিন, সবিসরক সাহিত্যিকী, দবভংগাক জখন–তখন, পটনাক চেতনা সমিতি ও শেখব প্রকাশিন, এত' ধবি জে রিদ্যাপতি টৌগমসো প্রকাশিন খা মিথিনা বিসর্চ সোসাগটী খাদি ঐ যক্তমে নেখকনোকনিক সহাযতা–সংরক্ষনামে জুটন দেখ পড়ন। প্রকাশিনক দৃষ্টিযে ঐ রষক মহত্বপূর্ণ প্রকাশিন খছি পাঁচ খণ্ডমে প্রকাশিত বমানাথনা সমগ্র জকব সম্পাদন কএননি খছি শ্রীমোহন ভাবদ্বাজ। পাঁচ হজাব মূন্য ওা রেছপ বচনা সংচযন মৌথিনীক গৌবর গ্রন্থ থিক। পূর্বমে শ্রী গজেন্দ্র ঠাকুব পাঁচ হজাব টাকা মূন্যক জীনোম মৌপি ংগ এক্ক খণ্ডমে প্রকাশিত কএনে ছথি।

একবে সরহক পবিণামস্রকপ মৌথিনী কথা খান্দোননকেঁ সমর্পিত সগব বাতি দীপ জবয খান্দোনন রর্ষ 2010ক চাক কিস্ত, জকব খাযোজন ক্রমশ: শ্রীবমাকান্ত বায বমা'ক সংযোজকত্রমে নবহন, সমস্তীপ্ববমে, ডা. যোগানন্দনাক সংযোজকত্রমে করিনপ্বব, নহেবিযাসবায, দবভংগামে, শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন'ক সংযোজকত্রমে রেবমা ঝংঝাবপ্বব, মধুরনীমে খা শ্রীখবরিন্দ ঠাকুব'ক সংযোজকত্রমে স্বপৌন (কোশী ক্ষেত্র)মে সফনতাপূর্বক সম্পন্ন ভেন খা ঐ খরসবপব পোথীক নোকার্পণ–প্রক্রিযামে নিবন্তবতা রনৌনে বহন জগমে করিনপ্ববক মিথিনা বিসর্চ সোসাগটীক তত্রারধানমে সত্রহ গোটে পোথী খা একটা সী.ডী.ক নোকার্পণ কীর্তিমান স্থাপিত কবরা যোগ্য ঐতিহাসিক প্রগ্নতিক বহন। ঐ খরসবপব

নোকার্পিত পোথীমে শ্রীমতী প্রীতি ঠাক্ৰবক- দূ গোট চিত্রকথা সংগ্রহ, শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন'ক দূটা উঁপন্যাস (জিনগীক জীত আ উঁত্থান-পতন) আ একটা কথা সংগ্রহ গামক জিনগী, শ্রী গজেন্দ্র ঠাক্ৰব দ্বাত মিথিনাক পংজী প্ররঁধ (তাবপত্র আদিক ডিজিটন গমেজি ংগ, ডী.ভী.ডী), ড॰. প্রেমশংকব সি ংহ'ক মৈথিনী ভাষা সাহিত্য: রীসম শতার্ব্দী (আনোচনাত্মক নিরঁধ সংগ্রহ) ডা. রীণা ঠাক্ৰবক ভাবতী উঁপন্যাস, ড॰. হ্মবনীধব ঝাক পিনপিনহা গাছ রাঁনকথা সংগ্রহ, ড॰. ধীবেন্দ্রনাথ মিশ্রক সমাচাব কথা কথা সংগ্রহ, ড॰. অমবনাথ চৌধবীক হমবো নেনে চনূ, কথা সংগ্রহ, ড॰. যোগানন্দঝাক কথা-নোককথা কথা সংগ্রহ আদি উঁনন্নেখনীয অছি। তহিনা রেঁবমাক 71ম সগব বাতি দীপ জবয'ক আযোজনক অরসবপব ছহ গোট পোথী আ দূ গোট সী.ডী-ডী.ভী.ডী.ক নোকার্পণ ভেন। জগমে শ্রী জগদীশ প্রসাদ মংডনক তীন গোট পোথী- জীরন-মবণ আ জীরন সংঘর্ষ উঁপন্যাস, রাঁন-কিশোব প্রেবক কথা সংগ্রহ তবেগন, কমনকান্ত ঝা অনকা, ডা॰. তাবানন্দ রিযোগীক, প্রনয বহস্য (করিতা সংগ্রহ), শ্রীপতি সি ংহ নিরঁধ-তবংগ (নিরঁধ সংগ্রহ)ক নোকার্পণ ভেন।

স্রতংত্রা রুপেঁ পোথীক নোকার্পণ রেঁবসাত হোগত বহন জগমে পং. শ্রীচন্দ্রনাথমিশ্র অমব'ক অতীত মন্থন ও পং. শ্রীগোরিন্দ্রঝাক জনম অরধি হম আত্মসংস্মবণ, ড॰. নীতা ঝাক দেশী-কান কথা সংগ্রহ, ড॰. মহেন্দ্র নাবাযণ বামক নোকদর্শন আনোচনা, স্র. গোরিন্দ চৌধবীক গোরিন্দ বচনারনী (বচনা-সংচয), প্রা. উঁমানাথঝাক মৈথিনী নরীন সাহিত্য সংগ্রহ, শ্রীপ্রদীপ

মৈথিলীপত্রক শ্রীসীতারতবণ মহাকার্য প্ররন্ধক দ্বিতীয সংস্কবণ, শ্রীমকনাকান্ত ঝাক ফোঁকা করিতা সংগ্রহ, ডা॰. স্ববেন্দ্র ঝমাব স্বমনক বাধাহ্লষ্ণ চৌধবীক র্যক্তিত্র ও হুতিত্র শোধ-গ্রংথ, প্রা. বাজাবাম প্রসাদক মৈথিলী নোকনাট্য শোধগ্রংথ, ড॰. দেরকান্ত মিশ্রক রৈনীপ্পব খন্বমংডনমে মৈথিলী শোধগ্রংথ খাদক সংগহি খনেকানেক নেখকনোকনিক পোথিক খাযোজনপবক নোকার্পণ হোগত বহন। হবিমোহন ঝাক সবণিপব গপ্প শ্রেণীক রস্তুিনর্মাণ কহ ডা॰. বাম কিশোব ঝা 'রিভাকব' এহী রর্ষ মনীষা মামাক মীমাংসা নামক গ্রন্থ প্রকাশিত কবৌননি।

নেপানমে শ্রীবাম ভবেস কাপড়ি 'ভ্রমব' দ্বাবা সম্পাদিত মৈথিলী নাটক সংগ্রহ ও স্ববচিত নও গোট একাংকীক সংগ্রহ ভৈযা খএনৌ খপন সোবাজ মৈথিলী নাট্যরিধাকেঁ যগান্বকূন প্রস্তুতিক দৃষ্টিএঁ মহত্রপূর্ণ সারিত ভেন।

সামান্য খন্বরাদ প্রণানীসঁ হটি কহ রিনা কোনো খন্বরন্ধক খন্বরাদকাবিতাক দৃষ্টিএঁ ঐ রর্ষক উপনব্ধিমে রেমিকা থাপা হুত করিতা সংগ্রহ দেশী ব খন্য করিতাহ্নক মৈথিলী খন্বরাদ দেশী খা খন্য করিতা সভ দৃষ্টিপথপব খারি সকন খছি জে শ্রীমতী মেনকা মন্নিকক হুতি থিক খা স্বতংত্র রূপেঁ খন্বরাদকাবিতাক মহত্রপূর্ণ দিশারোধক খছি।

মৈথিলী নেখন-প্রকাশনকেঁ সমর্রদ্ধিত কবরামে শ্রী গজেন্দ্র ঠাকুব প্রযোজিত ঙা-প্রত্রিকা রিদেহ খন্যতম মানন জাএ নাগন খছি, জকব সদেহ (হার্ড কাঁপী) খংক দূ, তীন খা চাবি পত্রিকাক চযনিত বচনা সভসঁ কথা, করিতা খা প্ররন্ধ-সমানোচনাকেঁ প্পস্তকাকাব প্রকাশিত

कइ ऐ वर्षक प्रारंभमे अपन सामार्थ्यक परिचय दइ देने छल। महिला सशक्तिकरणक प्रतीक पत्रिका जानकी अपन अस्तित्त्वक अड्ढ वर्ष वँचौने बहल। मिथिला दर्पण, वॅम्बॅग, समय-सान ओ घव-वॉहव, पटना तथा पक्षधव, बाँची अपन अवधि सोपेक्षाताक निरर्हि कएने बहल। मिथिला दर्पणकेँ श्री मीवेन्द्र कुमाव भ्गाक उँर्जकि नाभ भेटनैक।

ऐ वर्ष जे सर्वाधिक प्रशस्त सम्मान मैथिलीकेँ भेटनैक अछि से थिक मैथिलीक रवेण्य करि ओ महावथी पं. श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमव'केँ साहित्य अकादेमी, नअी दिल्ली द्वावा फेलोशिप प्रदान कवॅ। मैथिलीक पानामे ई सम्मान पहिने वॅव आएल वॅूम्गल जएवाँक चाही, जगसँ मिथिला-मैथिली गौरान्वित अनुभव कएलक। श्री अमवकेँ भेटल ई सम्मान हुनका हिन्दीक केदावनाथ सिंह आ अंग्रेजीक अशरीत सिंहक संगे प्रदान कएल गेलनि अछि जगसँ मैथिलीकेँ वाष्ट्रीय क्षितिजपव आत्मतोषात्मक अनुभूति भेलैक। ओना ऐसँ पूर्व हिन्दी-मैथिलीक जनकरि नागार्जुन-यात्रीकेँ 1955मे ई सम्मान भेटल छलनि मुदा स्वच्चा मैथिली लेखक ओ सेरककेँ प्राप्त ऐ वॅक्दक उँपलब्धि मैथिली प्रेमीलोकनि द्वावा मानल गेल।

ऐ वर्ष मैथिली-संस्कृतिक विद्वान ओ हिन्दी-मैथिलीक वॅहुआयामी लेखक डॉ. तावानन्द वियोगीकेँ साहित्य अकादेमी द्वावा वॉल साहित्य 'ई भेटल तँ की भेटल' पव पुवस्कृत कएल गेलनि। जगसँ अभिनव प्रकृति ओ अनुसन्धानात्मक वॉल साहित्य लेखन दिस मैथिली साहित्यकावलोकनि प्रेवित भेलाह अछि आ हुनका लेखन लव उँत्साहक संचावसँ उँत्फुल्लल अछि। हिनक प्रलय-

বহস্য করিতা সংগ্রহ এহী রর্ষ প্রকাশিত ভেলনি। সাহিত্য খকাদেমী দ্বাবা ফূনচন্দ্র মিশ্র 'বমণ' হ্নত মৈথিলী রিনিরঁন্ধ রঁ্হ্মিধাবী সি ংহ 'বমাকব' এহী রর্ষ প্রকাশিমে খারি সহন। ডা◌ঁ. বমানন্দ ঝা বমণ খোজী পত্রকাব জকাঁ জর্মন পত্রিকাসঁ গ্রিযসর্ন সংকলিত গীত দীনাভদ্রীক ও গীত নেরাবককেঁ তাকি–হেবি উঁহ্মাব কহ পং. গোরিন্দঝাক সান্বরাদ প্রকাশিত কবৌননি।
উক্ত খকাদেমী দ্বাবা তংত্রনাথ ঝা ও স্বভদ্রঝাক জন্মশতাব্দী সবিসরমে গশিনাথ ঝা, নক্ষ্মীপতি সি ংহ ও ভুরনেশ্রব সি ংহ ভুরনক জন্ম শতাব্দী মধ্রঁনীমে তথা যাত্রী ও খাবসী প্রসাদ সি ংহক জন্ম শতাব্দীক খরসবপব বাষ্ট্রীয সংগোষ্ঠীক খাযোজন ক্রমশ: পটনাক চেতনা সমিতি ও হ্মজহফবপ্পবক স্নাতকোত্তব মৈথিলী রিভাগক তত্রাধানমে সম্পন্ন ভেল। এহী ক্রমমে প্রগতিশী নেখক সংঘ দ্বাবা নাগার্জুন–যাত্রীক জন্মশতী সমাবোহ উঁনন্নেখনীয খছি। খকাদেমীক রর্তমান মৈথিলী প্রতিনিধি ড◌ॉ. রিদ্যানাথ ঝা 'রিদিত' এহী খরধিমে খপন ঔপন্যাসিক হ্নতি সভ কবপ্পবিযা, খনামিকাক চিট্ঠী, মাত্র তীন ঘংটাক সময খাদিক নিবন্তবতা ও রিপ্পনতা–রঁহ্সংখ্যকতাক কাবণে প্রতিষ্ঠাপিত ভেলাহ খছি। পূর্রমে পং. শ্রী গোরিন্দঝা, পং. শ্রীচন্দ্রনাথ মিশ্র 'খমব' শ্রী মাযানন্দ মিশ্র, ড◌ॉ. বামদের ঝা এরং মার্কণ্ডেয প্ররাসীকেঁ প্রদত্ত 'আঁথব ঐফ বেসিডেন্স' স্বনরাঁমে খাএন জে এহী রর্ষ ড◌ॉ. স্ববেশ্বব ঝাকেঁ ভেটলনি খছি। ত্তষাবপাত ঙা জে মার্কণ্ডেয প্ররাসী সদৃশ মনীষী করি, বাষ্ট্রীযতা ও গীতকার্যক প্রতি সমর্পিত র্যক্তিত্র এহী রর্ষকেঁ খপন মহাপ্রযাণক হেত্ত চূনি মৈথিলীসঁ এক গোট সশক্ত বচনাকাবকেঁ ছীন নেলখিন। ড◌ॉ.

জযকান্ত মিশ্র ও পং. জযমন্ত মিশ্রক নিধন সেহো অসহ্য অশনিপাত বহল।
 ঐ বর্ষক অন্যতম উঁপলব্ধি অছি গতিবিধিযেঁ মৃতপ্রায মৈথিলী অকাদমী, পটনাক পুনর্জাগবণ। বিহাব সবকাব ঐ সংস্থাক পুনস্থাঠন কহ একব বহুত দিনসঁ বিক্ত অধ্যক্ষ পদ এক গোট বিশিষ্ট সেবী শ্রী কমলাকান্ত ঝাক সশক্ত হাথমে প্রদান কএলনি জগসঁ মৈথিলী জগত প্রফুল্লিত অনুভব কএলক। শ্রী ঝাক অবিতে মৈথিলী অকাদমী কাযাকল্পক অনুভব কএলক আ অনেকো বর্ষসঁ দবল-পড়ল আধা দর্জন ব্যাখ্যানমালাকেঁ ও পটনা আ দবভংগামে আযোজিত কএ, পুস্তক প্রদর্শিনী লগাএ লোককেঁ একবেব ফেব অকাদমীক স্বগর্বাগাহটিসঁ পবিচয কবা দেলখিন। অকাদমীক খর্চপব চেতনা পবিসবমে 'পাবিজাতহবণ' নাটকক মংচন একটা অলগে সংদেশ দহ সকল। মৈথিলী সাহিত্যক উঁত্থৃষ্ট সেবাক হেত্তু বিদ্বানলোকনিকেঁ সম্মানিত কববাক পবম্পবাকেঁ জগজিযাব কবৈত অকাদেমী এম.এল.এস.এম. কাওলেজক মৈথিলী, ল.না.মিথিলা.বিশ্ববিদ্যালযক শ্রী বিভূতি আনন্দক হাথেঁ সম্মানিত কহ নূতন অধ্যায জোড়লক অছি। কীর্তিনাবাযণ মিশ্র পুবস্কাব ঐবেব মহাপ্রকাশিকেঁ প্রদান কএল গেললি অছি।
ভাবতীয ভাষা সংস্থান, মৈসূব সেহো ঐ বর্ষ মৈথিলীক কার্যশালাক আযোজন কহ মৈথিলী অনুবাদক মাধ্যমে ঐ ভাষাকেঁ বাষ্ট্রীয-অন্তবাষ্ট্রীয ক্ষিতিজপব প্রক্ষেপিত কববাক প্রযাস কএলক অছি। একবা দ্বাবা বিভিন্ন পত্রিকাক পোষণ ও অনেক পোথীক ক্রয সেহো মৈ থলী ক্ষেত্রমে উঁত্সাহক কাবণ বনল বহল অছি।
ঐ বর্ষ স্ব. হবিবংশ 'তরুণ', সমস্তীপুব সংস্থাপিত ও

অখিন ভাবতীয সাহিত্য-সেরাকেঁ সমর্পিত সাহিত্যক সংস্থা ভাবতীয সাহিত্যকাব সংসদ জেঁ মৈথিনী বচনাকাব-পত্রকাবকেঁ সম্মানিত কববাঁক ি নর্ণয নেনক অছি তওমে শ্রীরিজযনাথ ঝা, ডাঁ. স্ববেন্দ্র কুমাব 'স্বমন' ও ি রদ্যাপতি টৌগম্সক সম্পাদক আ অধিষ্ঠাতা শ্রী রিনোদ কুমাবক নাম উঁনন্নেখনীয অছি। জ্ঞাতর্য জে শ্রী রিজযনাথ ঝাকেঁ ঐ রর্ষ রিহাব বাষ্ট্রভাষা পবিষদ, পটৌনা সাত হজাবক নোকভাষা প্ববস্কাবসঁ সম্মানিত কএ মৈথিনীক প্রতি অপন আত্মীযতাক পবিচয অনেক রর্ষোপবান্ত সম্মানিত কএ মৈথিনীক প্রতি অপন আত্মীযতাক পবিচয অনেক রর্ষোপবান্ত প্রস্তুত কহ সকন। রিদ্যাপতি সেরা সংস্থান, দবভংগা ও চেতনা সমিতি, পটৌনা অছু রর্ষ পবম্পবিতে রূপমে রিদ্যাপতি স্মৃতি-পর্রক আযোজন কহ সংতুষ্টি দেখন গেন।

ঐ রর্ষ শ্রী সোমদেরক বচনারনীপব ডাঁ. স্বধাকব চৌধবীক 'রঁহ্আযামী জনকরি সোমদের' সমানোচনাত্মক গ্রন্থ প্রকাশিত ভেন জে জীরিত বচনাকাবব নিখন জাগত রিবন পোথীক পবম্পবামে সমাদৃত ভেন আ সোমদেরজীকেঁ স্ররস্তি ফাউঁণ্ডেশন, সহবসা নাগফ টৌগম এচিভমেন্টৈক আধাবপব প্ররোঁধ সাহিত্য সম্মানক রূপমে এক নাখ টৌকাক প্ববস্কাবসঁ সম্মানিত কববাঁক হেতু চযনিত কেনকনি জকব মৈথিনী সাহিত্য জগতমে স্রাগত ভেন অছি। সাহিত্য অকাদেমী, নওা দিন্নী ঐ রর্ষ মৈথিনীক হেতু মৌনিক প্ববস্কাবক উঁদ্ঘাষণা তকনীকী র্যরধানক কাবণে নৈ কহ সকন ছন জে আরঁ ডাঁ. শ্রীমতী উঁষা কিবণ খানকেঁ হ্নক পোথী ভামতী নামক উঁপন্যাসপব প্রাপ্ত হোএরাঁক সূচনা অছি।

মৈথিলীক গতিবিধিক দৃষ্টিএঁ ঐ বর্ষ দিসম্বরৰ বাঁগস-তেগসকেঁ শ্রী বামভবোস কাপড়ি 'ভ্রমব'ক সংযোজকত্বমে কাঠমাঁড়ূমে আযোজিত অন্তর্বাষ্ট্রীয মৈথিলী সম্মেলন সেহো ঐতিহাসিক প্রস্থতিক কহল জা বহল অছি জগমে নেপালক সম্পূর্ণ সত্তা এতএ ধবি জে বাষ্ট্রপতি, উপবাষ্ট্রপতি সেহো সহ্মপস্থিত ভঃ মৈথিলীক উত্থান-মাস্থাকেঁ প্রশস্ত কবৰাঁক আশ্বাসন দেললি। ঐ সম্মেললমে ভাবতীয সাহিত্যকাব-কলাকাবলোকলিক সেহো পর্যাপ্ত সহভাগিতা বহল জগমে সর্বশ্রী বৈদ্যলাথ চৌধবী 'বৈজূ' চন্দ্রেশ, কমলকান্ত, ফূলচন্দ্র ঝা 'প্রবীণ' ললিলী চৌধবী, কুঁজবিহাবী মিশ্র, বংজলা ঝা, জয প্রকাশ চৌধবী 'জলক' উষা পাসবান আদিক নাওঁ উল্লেখনীয অছি। নেপাল মৈথিলীক তিবহুতা লিপিকেঁ যূলীকোডমে সমাহিত কবেৰাঁক হেতু দত্তচিত অছি, সে অলগে প্রসন্নতাক বিষয থিক।

তথাপি, ভাবতীয সংবিধান, বিহাব লোক সেৱা আযোগ, ভাবতীয সংঘ লোকসেৱা আযোগ সদৃশ সংস্থামে মান্যতাপ্রাপ্ত মৈথিলী আগযো প্রাথমিক শিক্ষামে উপেক্ষিত অপল আযামক মৌলিকতা ও ব্যাপকতাক বাঁট তাকিযে বহল ছথি। তঁএ লে মৈথিলী-মলীষী পং. শ্রী অমবজীকেঁ লিখএ পড়ি বহললি অছি-

ফূলগীযে দিস তাকি বহল ছথি
মৈথিলীক সভ প্রেমী।
ঘবমে ডিবিযা মিঝা বহল অছি
কে উকসাওত ঢৈমী ?

<u>বাজেশ্বব নেপালী</u>

<u>কবি পং. প্রতাপনাবাযণ ঝা কেঁ ছঠম পুণ্যতিথি পব</u>

হার্দিক শ্রদ্ধাঞ্জলি



পং. প্রতাপ নারায়ণ ঝা একটা উচ্চ কোটিক সাহিত্যকার ছলথি । মূলতঃ অধ্যাপন পেশা মে জীবনক মহত্ত্বপূর্ণ সময ব্যতিতকএ চকল জ্যোতিষীজী কে নাম সঁ সুপরিচিত ও নাগর যক্ত আ সীতা স্বয়ম্বর তথা স্বকন্যা চয়ন দূটা খন্ড কাব্যক রচনা সংগহি অনেক কবিতা লিখললনি ।

সাহিত্যিক প্রতিভাবান কবি প্রতাপ নারায়ণ ঝা কে কবিত্বক পরিচয় হুনক কর্তব্য কী অছি কে জনৈছী ? শীর্ষক কবিতা সঁ ভেটৈত অছি । ২০৩০ সাল জেষ্ঠ ২৮ গতে জনকপুরধাম মে নেপাল রাজকীয় প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠান কে উপকুলপতিক মদনমণি দীক্ষিতক প্রমুখ আতিথ্য মে ভেল বৃহত কবি সম্মেলন মে পঠিত কবিতাক সংগ্রহ নারাক ধার মে ওহি কবিতা সংদর্ভ মে ডা. রমানন্দ ঝা রমণ নেপাল মে মৈথিলী কবিতাক ধার মে টিপ্পণী কবৈত ছথি :–

মহেন্দ্র বিদ্যাভূষণ পং. প্রতাপ নারায়ণ ঝাক কবিতা মে বিচারক গাম্ভীর্যতা আ দর্শক উচ্চতা স্পষ্ঠতঃ ভাষিত হোগত অছি :–

কেহন ও সংসার অছি কী হম জনৈছী ? কে জনৈছী

? मात्र स्वार्थे एक दोसव सँ जुड़ल अछि, सभ जनैछी । किन्तु जेखन स्वार्थ मे धक्का लगै अछि खसि पड़ैछी तदपि रँगराक आगा रँगना कबिते रहैछी ।
टूटि पड़ैछी लड़ि उठैछी, अपन आनकी लै रहलैछी तें कहल हम केहन ओ संसार अछि से के जनैछी ?
कविताक अंत मे कवि लिखै छथि :–
सभ देखैछी सभ करैछी रहैस ततरे सभ जनैछी
फलक आशा त्याग कय संलग्न मे छी से जनैछी
आब की चाही तकर चिन्ता कहाँ अछि से जनैछी
मैथिली संसार अछि कतत्तरय की अछि के जनैछी
तें कहल हम केहन ओ संसार अछि से के जनैछी ?
हिनक प्रथम खण्डकाव्य लागल यक्त आ सीता स्वयम्बर ऐतिहासिक खण्ड काव्य अछि । सात सर्गक एहिखण्ड काव्यक भूमिका मे त्रिभुवन विश्व विद्यालय केन्द्रीय मैथिली विभागक तत्कालिन अध्यक्ष डा. धीरेश्वर झा धीरेन्द्र लिखने छथि :–
ज्योतिषाचार्य पं. प्रताप नारायण झा जीक सीता स्वयम्बर खण्ड काव्यक अध्ययनक सौभाग्य हमरा प्राप्त भेल । मातृभाषा मैथिली मे रचित ओ खण्ड काव्य हिनक प्रथम रचना रहितहुँ अपन प्रौढताक कारणे अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत भेल । एकरा हम नेपाल खण्डक मैथिली साहित्याकाशक एक गोट दिव्य नक्षत्र मानैत छी । पण्डितजीक वर्णन तन्मयता तथा अभिव्यक्तिक प्रवाह सर्वत्रे श्लाघनीय अछि ।
प्रथम सर्ग मे ओ मिथिला वर्णन मे लिखै छथि हिम पहाड सँ दक्षिण भागक अछ्छ कनिछ्छ रंग सँ पर गंगा हरिहर क्षेत्र सँ उत्तर सदानिरा (नारायणी) सँ पूर्व सगर तँ सिमान्तस्थ्रत क्षेत्रक अछि मिथिला नाम परम सुन्दर

शेम्य श्यामना धवा जनकव छै उँत्तव नगपति छै भूधव दोसव सञ्ञ मे बाजर्षि जनकक र्वर्णन कबैत ओ निखै छथि :–
मिथिक मनोहव मिथिना मे पृथ्वी पति श्री बाजर्षि जनक देशे स्वधावन प्रजा खुशाहेन स्वखमय जीरन छन सभहेक त्रेता मे भेन भयंकव खनिकान खा ओकव समाधान क हेत्त यज्ञ कबबाँक निर्णय पव ओ निखै छथि –
खन्न पानि रिन्न बाँचि सकत के ऋषि म्हनि श्रुति सम्मत राणी जँ जन्दी रर्षा नहि होयत बाँचि सकत नहि केओ प्राणी सभासदक सम्मति सँ पाबित भेन यज्ञ होरँक चाही नाङ्गन यज्ञ कबथु बाजा, तैखन मेघैन बौदिक धाही । तेसब सञ्ञ मे सीता स्वयक पूर्रक र्वर्णन कबैत ओ निखै छथि :–
मिथिना ग्न जनक खति प्रसुदित बानी के मन मे नहि चैन ।
सीता कोना खुशीभय बहती ताहि नेन सदिखन रैचैन । ।
ओ खाग्व शिर धनुषक खासपान निपन गेन संदर्भ मे निखै छथि:–
एक दिन माय स्वनयना कहनिन पूजा घबक ठाँर कयनेर ।
शिरपिनाक घयन छै तकबो खास पास मे निपिओ देर । ।
बाजा जनक जखन पूजा ना ऐना देखननि सकभाबी ।
खाओ ठाँर के कैनक ऐ ठाँ ऐ तबहे खभिनर काबी । ।
स्व्नतहि खारि स्वनयना रँजनी देखननि काज चमकोबी ।

জে ধনু ষৈস মস মোয ন কনিকো কোনা উঁঠা সকনী ভাবী ।।

কাবণ তব মে নিপন ভূমি ছৈ উঁপব সঁ শির ধনু বাখন ।

সীতা কেননি ঠাঁর কহন হম হ্নকে ঐ ঠাঁ ঠারক নেন ।।

চাবিম সঙ্গ মে ধনুষযজ্ঞ ক তযাবী খা দেশ দেশান্তবক বাজকুমাব সবঁ খাএন নিখৈ ছথি :–

ধনুষ যজ্ঞক হেত্ত জিনকা জাহি কাজক ভাব ছন ।
কাজ মন পঠ পূর্ণ কবরা নয সদা তৈযাব ছন ।।
ওহি মে স্বাগত সকোবক ক্রমমে খাগূ নিখৈ ছথি :–
চহ্দিস সঁ নোক সবঁ খা বাজ বজরাবক ফঁমব ।
খপন খপনা ঢংগ কে বথ ত্তবগ গজ বাঁহন স্বধব ।।
খাবি বহনা খাবি গেন ছথি রৈসনা স্ববিরেক সঁ ।
জনক সবঁ ঠাঁ স্বাগতাবথ সেরকো এক এক সঁ ।।
কথ্ক কিনকো ত্রুটি নহি হো রস্তু নৈ ছন কহথি কে ও ।
সবঁ সতত্ তৈযাব বহি ঘ্মিতো বহথ্ কেও কতহ্ কেও ।।

পাঁচম সঙ্গ মে ধনুষ ভংগক প্রসংগ নিখৈছথি :–

পবশুবাম খা নখন মে কিছু কান খটপটভয বহন ।
তখন শ্রী বঘ্রংশমণি ফ্নি কপ দেখৈতঙা কহন ।।
রীব হীনা হো ন বঁস্বধা সত্য শির স্বন্দব সবঁনা ।
গুবুক খাজ্ঞা পাবি শির ধনু সহজ ভারে কব গহন ।
ভূমি সঁ উঁপব উঁঠরিতঁহ দৃষ্টি কয ধনু খসি পবন ।।
ও খাগূ স্বযম্বরক ক্রম মে নিখৈ ছথি :–
তেহি সময সীতা মানা নয সখি সংগ ঐনী ঝট তহাঁ ।

শ্রী ধনুষধারী নৃপতি মণি শ্রী বাম ডাঢ তথি জহাঁ । ।
ফূন রর্ষা ভেন নভ এঁ মাংগনিক ৰাজা ৰজন ।
দিগ দিগন্তা ধবি প্ররন জযকাব ধ্বনি গ্বন্জিতে বহনা
। ।
ছঠম সৰ্গ মে বাম সীতাক রিরাহক প্রসংগ নিখৈ ছথি
: —
হর্ষময রাতাররণ তেহি কান সঁ সৰঠাঁ বহনা
জনক রিশ্বমিত্র সঁ শ্বভ নগ্ন হেত্তক জা প্ছনা । ।
গাধি স্বত তেহি কান সে বাজা জনক সঁ কহি দেনা
।
খ্রধপতি কে নৌত পোতাক নিখি দিখন্ব রবিযাত না
। ।
মাস খগহন পংচমী তিথি শ্বক্ন পক্ষক নীক ছৈ ।
খ্রধপতি কে চাক প্বত কেঁ পবিণযন হোযরাক ছৈ
। ।
ও সৰ্গক খংত মে তৈযাবী কে সংদর্ভ মে নিখৈ ছথি
: —
খপন কাজক সৰ বখনে ছনৈ খপনে ডঁপব ।
দেন কাজক ভাব কৰ কত্ত পূর্ণ হোয়য রিনা ডব । ।
ঐ প্রকাবে জনকপ্বব নগবক সজাযন রেশ ছন ।
প্রজা বাজা সৰ জ্টন স্ববনব নাম কিন্নব যক্ষ সৰ ।
মৈথিনীক পবিণযন ৰ্ঝি প্রাকৃতিক সৌন্দযো কহৰা
। ।
খংতিম সাতম সৰ্গ মে কন্যা দনক সংদর্ভ মে নিখৈ ছথি
: —
গ্বরু ৰশিষ্ঠক কথন খনুকূনে সকন পূরভিি সৰ ।
সদানন্দ প্বরোহিতক খাসন পকবি রিধি কবথি সৰ । ।
কোনো রস্ত্ত কভী ককবো মৈথিনীক দিস সঁ নে ভেন

।
समय जखन्वक छनै तैखन सिन्दूवक शुभदान भेना
गगन सँ स्वबरानिका सवँ पुष्प वर्षा कय बहना
मांगनिक स्वबतान नय सँ गीत मंगन गा बहना । ।
एहि तवहे सात सञ्चाक सीता स्वयम्बव खण्ड काव्य करिक मौनिक कृति छैन्हि ।
२०३२ सान मे करि द्वावा प्रकाशित एहि खण्ड काव्यक नगने २०३३ सान वैशाख मे स्वकन्या च्यपन दोसव खण्ड काव्य हुनक प्रकाशित भेन । सात सञ्चाक एहो खण्ड काव्य वँहुत स्वन्दव अछि
महोत्तवी जिनाक सकवी ग्राम मे १९+० सान माञ्च शुक्न दशेमी १+ गते हुनक जन्म भेननि आ ज्यातिष गणिताचार्य एवं फनित शास्त्री ज्यातिषी जी २००१ सान मे प्रजातन्त्र से पूर्वहि सप्तवी के एकटा संस्कृत विद्यानयक शिक्षक के रूप मे अध्यापन सेवा आवंभ कएननि आ महिहानीक श्रीवाम मारिक प्रधानाध्यापक पद स २०४३ सान मे सेवा निवृत भेन बहथि आ ओकव बाद २०६० सान पुस १३ गते निधन पर्यन्त जनकपुवधाम मे विश्वकर्मा चौक सँ दक्षिण मे अपन छोटछिन घव मे बहैत ज्यातिष कार्य तथा साहित्य साधना मे नागन बहनथि ।
अपन छत्तीस वर्षक अध्यापन सेवा मे बहैत ओ २०२३ सान मे जनसेवा पदक २०२३ मे महेन्द्र विद्याभूषण, २०३६ के शिक्षा दिवस पव पुवस्कृत भेन बहथि आ २०३१ मे दीर्घ सेवा पदक तथा २०३१ सँ २०४० धवि जिना शिक्षा समितिक सदस्य बहथि । पंडित जी मातृभाषा मैथिनीक संगहि हिन्दी मे दर्जनो भजन आ कविता निखने छथि । उंनकव छठम पुण्य तिथिक अवसव पव हुनक स्वर्गीय आमो के चिवशान्ति हेतु हार्दिक

श्रद्धाञ्जलि अर्पण करैत छथिन्हि ।



<u>विपिन झा</u>

<u>ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'</u>

ग्रन्थक परिचय एवं विभाग-
शीर्षक- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती'
लेखक- डा० शान्ति सिंह ठाकुर
प्रकाशक- कंकाली संघ राजग्राम
प्रकाशन वर्ष- २०१०
विभाग-

आशीर्वचन– श्री जगदीश मिश्र
सम्मति– डा० किशोरनाथ झा
पोथीक प्रसंग– लेखक स्वयं
१. महाराज महेश ठाकुर । हुनक गाम
२. म.म. महेश ठाकुर क पारिवारिक । शैक्षिक पृष्ठभूमि
३. महेश ठाकुरक जीवन सं सम्बद्ध तथ्य
४. राज्यप्राप्तिक एवं कंकाली भगवतीक ।विर्भाव
५. कंकाली माहात्म्य
६. राजग्रामस्थित कंकाली परिसर
परिशिष्ठ
दरिभंगास्थ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह स्मारक महाविद्यालयीय मैथिली समाराधनतपेर खण्डवनाकुलसमुद्भूत डा० श्री शान्तिनाथ सिंह ठाकुर द्वारा निबन्धग्रन्थ अछि –'महाराज महेश्वर सिंह ओ कंकालीभगवती|
ई ग्रन्थ वर्ष २०१० मे कंकाली संघ राजग्राम द्वारा प्रकाशित एकटा ऐतिहासिक ग्रन्थ अछि जे स्वरूपत: त& 'भौर' ग्राम आ मैथिल राजवंश केर गौरवमयी आभाक परिचय दैत अछि प्रच्छन्नरूप स ई ग्रन्थ आस्था ओ तर्क केर मंजुल प्रयोगक दर्शन करबैत प्रात:कालीन भगवान भास्कर समान मिथिलाराजवंश केर सांस्कृतिक स्वर्णिम युगक केर दर्शन करबैत नीतिशतक केर पद्य 'कालक्रमेण जगत: परिवर्तमाना...'' के चरितार्थ करबैत प्रत्यक्षान्वलम्बी, इतरप्रमाणविस्मृत मूल्यविहीन आधुनिक समाज सँ अस्ताचलरूपिणी संस्कृति कें नवजीवन प्रदान करबाक हेतु अन्वय करैत वुभुक्षा जागृत अछि जे ठीकोर कय ई कहि रहल अछि जे हे मनुज स्मरण करू ओहि कीर्तिस्तम्भ के जेकर समक्ष

ভাবতরর্ষক বাষ্ট্রাধীশ সেহো নতমস্তক বহন খছি, খাগূ ৰঁঢাউ ওহি গবিমা কে মিথিনা কে গতিহাস নিখত | গ্রা ত ধ্রুব সহ খছি জে এক দিন সভকিছু কান কেব গান মে রিনীন ভয জাযত | এহি ভৌতিক জগত মে কোনো রস্তু সংস্থা খথরা কোনো সমাজ শাশ্বত নহিঁ কহন জা সকৈত খছি। ও ডাযনাসোব হো খথরা হডপ্পা, মেসোপোটামিযা খথরা কোনো নুপ্তপ্রায সম্প্রদায সভ এক ন এক দিন কানক গান মে রিনীন ভয জাযত গ্রা ধ্রুব সহ খছি।

এহি প্রসংগ মে যক্ষ–যুধিষ্ঠিব সংরাদ সমীচীন প্রতীত হোগত খছি–

যক্ষ–যুধিষ্ঠিব সম্বাদ মে কহন গেন খছি জে– প্রতিদিন জীর মৃত্যু কৌ ং প্রাপ্ত কবৈত খছি ক্ষদা ওতহি খন্য নোক গ্রা রুঁন্নিতো এতহি বহরাঁক গচ্ছা কবৈত খছি। এহি সঁ ঽ খাশ্চর্য কী ভয সকৈত ছৈক ?

সমীক্ষা কেব সংকল্প, উঁদ্দেশ্য খা রিষযরস্তু–

সংকল্প–

সতত খধ্যরসাযবত বহরাঁক ক্রম মেঁ যদি কোনো নীক গ্রন্থ খনাযাস স্বনভ ভয জায ত& খানন্দ স্বাভারিক ছৈক তদ্রু মেঁ এহেন গ্রন্থ জে খাস্থা কেব সমক্ষ তর্ক কে খথরা তর্কক সমক্ষ খাস্থা কেব খরহেননা নহিঁ কবৈত হো| এহি গ্রন্থক প্রসংগশঃ উঁদ্ধবণ, সঙ্কচিত সন্দর্ভ খাদি একব রিশ্বসনীযতা কেব প্রমাণ খছি| গ্রা সভ কিছু কাবণ ছন জে এহি গ্রন্থ দিস রিশেষ কচি ভেন|

উঁদ্দেশ্য–

কার্যপ্রকাশ মেঁ কহন গেন খছি প্রযোজনমনুদ্দিশ্য মন্দা&পি ন প্ররর্ততে খস্তু সমীক্ষা কেব উঁদ্দেশ্য নিখরঁ উঁচিত বুঁন্নাজাগত খছি– একটা খভিনর ও রিশ্বসনীয

स्रोत केब जानकाबी খধেy তা কেব সমক্ষ প্রস্তুত কবর্॥ খা সংগহি খপন কিছু মূন ভূত প্রশ্ন কেব উত্তব প্রাপ্ত কবরাঁক প্রযাস[1]।

রিষযরস্তু–

এহি সমীক্ষা মেঁ জেকব খংগীকাব কযন জা বহন খছি ও রিষয রস্তু খছি–

১.গ্রন্থক রিভাগশ: সংক্ষিপ্ত পবিচয

২. গ্রন্থক রৈশিষ্ট্য

২.১ াস্থাগত –

২.২ তর্কগত (শোধ) –

৩. গ্রন্থক ন্যূনতা

৩.১ াস্থাগত –

৩.২ তর্কগত (শোধ) –

৪. গ্রন্থক ্পাদেযতা র্যারহাবিক ৰূপ মেঁ খন্য রিরিধ পক্ষ

৫. দোষপবিহাবাথ সম্ভর ্পায া ৗকিৎরিমর্শ।

শ্বভমস্তু

----

[1] শ্রোত্রিয সমাজক খাবম্ভ কে কযনথি ? ও সমাজ কিযাক খস্তিত্ব মে খাযন ? একব সংস্কৃতি কী খছি ? একব রিধি র্যরহাব খাদি শাস্ত্রসম্মত খছি খথরা মাত্র পবম্পবা কেব নির্রহণ খভিপ্রায বহি গেন ? যদি শাস্ত্রসম্মত খছি তঽ কোন গ্রন্থ মে একব চর্চা খছি ? ওহি গ্রন্থ কেব প্রামাণিকতা নির্রিবাদ খছি খথরা নহিঁ ? জাতি, হুন, পাঁজি, মূন, গোত্র কী থীক ? একব কী ঔচিৎ ছন ? যদি ঔচিৎ ছন তঽ খাৰ্ একব খনৌচিৎ

কোনো নির্ধারিত ভেল জা রহল অছি ? শ্রোত্রিয সমাজ সঁ সন্দর্ভিত উক্ত চর্চিত কিছু এহেন মূলভূত প্রশ্ন অছি জে আবশ্যক অছি এহি সমাজক Documentation হেতু। 'সারস্বত-নিকেতনম্' জে কি সংস্কৃত আ অপন সংস্কৃতিক অভ্যুত্থান হেতু সতত্ সমর্পিত অছি, অপন শ্রোত্রিয সমাজ সন্দর্ভিত মূল স্রোতক আ একর অক্ষুণ্ণ সংস্কৃতি কের বিবিধ পক্ষক Documentation করয জা রহল অছি। এহি কার্য মে অপনেঁ সভ সঁ বিশেষকর এহি সমাজক ইতিহাসক জ্ঞাতা বুজুর্গ আ সক্রিয যুবা কেঁ সহযোগক সর্বথা অপেক্ষা অছি। যদি উক্ত সন্দর্ভ মে কোনো জানকারী উপলব্ধ করা (kumarvipin.jha@gmail.com) সকী তঁ এহি বিশাল যজ্ঞ মে একটা আহুতি সদৃশ হোযত।

গ্রন্থ সমীক্ষা-প্রশস্তি পরিক্রমা

কাব্যপ্রকাশকার আচার্য মম্মট 'ভারতী কবের্জযতি' ক মাধ্যম সঁ রচনাকারক প্রতিভা দিস জে অপন মন্তব্য ইংগিত কযনে ছথি ও আচার্য পুণ্যনাথ মিশ্রক অনুপম স্তুতি 'প্রশস্তি-পরিক্রমা কের সন্দর্ভ মে অক্ষরশঃ চরিতার্থ হোইত অছি।

ই গ্রন্থ 'মিশ্রবন্ধু প্রকাশন, মধুবনী' সঁ ২০০৮ মে প্রকাশিত ভেল অছি একর লেখক আচার্য পুণ্যনাথ মিশ্র আ সম্পাদক ডা০ মোহনাথ মিশ্র ছথি।

বর্তমান সময মে সংচারক সুগমতা অথবা অন্যান্য কারণ

সঁ প্বস্তকক প্রকাশিন 'খসংখ্য' পবিমাণ মে পবিগণিত কযন জা সকৈত খছি; ক্ষদা কিছুএ গ্রন্থ এন্দেন প্রাপ্ত হোগত খছি জে চিবংজীরিত্বক প্রাপ্তি কবৈত খছি জেকব নিকষ ওহি গ্রন্থক গহন এরং পবিপাক রিষযরস্তুক সমারেশ খাওব সহজ প্রস্তুতী কবণ প্রভৃতি স্বীকাব কযন জাগত খছি।

প্রস্তুত গ্রন্থ প্রস্তুতিক যথার্থরূপ হমবানোকনিক সমক্ষ উঁপস্থাপিত কবৈত খছি। গ্রন্থক প্রথম তবংগ মন তথা খামো কেব সন্দর্ভ ও পাবস্পবিক সম্বন্ধক নিরূপণ, দ্বিতীয তবংগ প্রস্তুতিক 'খাঠ' সংখ্যামেক রিরিধ খংগক মীমাংসা, চতুর্থ তবংগ গর্ভ মে রিদ্যমান সন্তানক গুণাদি খভিরৃদ্ধি সন্দর্ভ মে মাতা-পিতাক কর্তর্ব্যক চর্চা, পংচম তবংগ নরজাত, দোহদকর্মক মীমাংসা, ষষ্ঠম তবংগ প্রস্তুতিক র্ব্যাপক রূপ খর্থাত ব্রহ্মাণ্ড সন্দর্ভ নৈত সহম শিরম ও স্বন্দবমক রিরেচনা প্রস্তুত কবৈত খছি।

এহি গ্রন্থক খরনোকন সঁ পূর্ব পাবদশাস্ত্রক খধ্যযন কবরাঁক খরসব প্রাপ্ত ভেন ছন সংগহি শ্রীনংকারাসী মিত্রক শোধগ্রন্থ পঠরাক জিজ্ঞাসা খাযর্বেদক গূঢ বহস্যক সন্দর্ভ মে প্ররৃত্ত কযনক। ওা সংযোগ কহন জা সকৈত খছি জে প্রস্তুত গ্রন্থ হস্তগত ভয সকন।

<u>শ্রোত্রিয সমাজমে বঙরীজক জন্ম</u>

শ্রোত্রিয সমাজ কর্তর্ব্যপবাযণতা, শুচিতা খাদি কেব কাবণ রিশেষরূপ স মিথিনা মেঁ সর্বথা খাদবণীয এরং সিবমৌব বহন খছি। কিন্তু ঘব সঁঃ প্রাবংভ ওা সমাজ যদ্যপি খাগযো উঁগবী পব গিনন পবিরাঁব কেব সমূহ খছি কিন্তু ওা সমাজ খানুপাতিক দৃষ্ঠি স জতেক ভাবতীয জ্ঞানপবম্পবা কে উঁকের্ষ মেঁ যোগদান দেনক

ও অনুপমে অছি। সংগহি ওা সমাজ ব্যারহাবিক রূপ সঁ অপন শুচিতা কাযমে বখনক।
কান সভ স পৈঘ হোগত অছি। সমাজ কেব নির্মাণ আ নাশ দূনূ ওহি সমাজক সদস্য দ্বাবা হোগত ছৈক। জে সমাজ অখনহ্ আধুনিক আ বৈশ্বিক ধবাতন সঁহ আ স্বযং কে বৈশ্বিক গতিরিধি সঁ সমাজক উঁথোন কয বাষ্ট্র কেব উঁথোন কেব দিশা মেঁ অগ্রসব বহন অছি ওতহি কিছু অনচিনহাব কাবণরশে ও সমাজ অপন অস্তিত্ব মেটৈবাঁক হেত্ত কটিবঁদ্ধ জকাঁ বুঁঝনা জাগত অছি।
হমেব এহি নেখন কেব ঔচিত্য ওা অছি জে সমাজ কে কোনা বঁচাযন জায এহি পব নোকক ধ্যানাকর্ষিত কববঁ। ওা এহেন সমাজ অছি জতয অখনহ্ বঁহ্ত বাস কুবীতি অন্য সমাজ সঁ উঁধাবী নহি নেন গেন অছি। মুদা সমেসামেযিক পবিপ্রেক্ষ্য মেঁ আনুপাতিক দৃষ্টি সঁহ পাবিরাবিক রিখন্ডন আ অশান্তি এহি সমাজ মেঁ বঞরীজ ত্তন্য প্রসবিত অছি! !
কিযাক ? ? ? কদাচিত ওা প্রশ্ন বুঁজুস্ক আ হরারস্ক দুনূ কেঁ কচোঁক্তি নগতন্হি মুদা সমাজক উঁকের্ষ হেত্ত দুনূ কে ধ্যান দেনাও আবারশ্যক ছন্হি। রিরাহ কেব প্রাচীন স্বরূপ সামান্য রূপ স 'পূর্রনিযোজিত ' ছন কানান্তব মেঁ ওা দূটা ভয গেন 'পূর্রনিযোজিত' আ 'স্বচ্ছিক'। সমেস্যা রাগবস জকা দুনূ মেঁ প্ররেশ কয গেন অছি। কাবণ অছি মেহত্বাকাংক্ষা, সংরাদহীনতা, সংরেদনহীনতা আ নৈতিকতা কেব পতন আদি।
১. স্বেচ্ছাচাবিতা–
ওা কোনো হরা/হরতী দ্বাবা কিযাক কযন জাগত অছি ওা প্রশ্ন কঠিন মুদা উঁত্তব সবন অছি– মেহত্বাকাংক্ষা, সামাজিকচেতনা কেব অভার, সংরেদনহীনতা, আত্মেস্বখক

ৰবীযতা, নৈতিকতা কেব হ্রাস।
স্বেচ্ছাচাবিতা উঁচিত অথবা অনুচিত ?
জাহি সমাজ রূপী বৃক্ষ কে হমেব পূর্বজ সংস্কাব রূপী জন স অভিসিংচিত কযনথি ওকবা অক্ষুণ্ণ বখবাঁক হেতু ও অরশ্য ঘাতক অছি। হ্মদা জে ব্যক্তি এহি তথাকথিত সংকুচিত রিচাব সং ঊপব উঠি চ্কন ছথি হ্নকা হেতু উঁচিত। কিযাক ত ওহি সর্বোচ্চ স্তব পব নহি ত কোনো রিরাহ রূপী সংস্থা কে আরশ্যকতা ছৈক ন দেশ কান পাত্র কে বঁহ্মুন।
সমেস্যা কতয অছি ?
সমেস্যা অছি রৈচাবিক সংকবতা মেং। কোনো এক পক্ষ স্বীকাব কববাঁক চাহী। স্বস্থ্ব-হ্মবহ্মব দ্নূ ত উঁচিত নহি। যদি হমে এতেক তথাকথিত সভ্য আ শিক্ষিত ভয গেলহুঁ কি সমাজক সংস্কাব সংকীর্ণ নগৈত অছি ত পূর্ণতঃ পাশ্চাত্য রিচাব কেব অনুগমেন কবব উঁচিত। এতয হমে বুজুর্গ কে পূছয চাহৈত ছিযন্হি জে সামান্যতযা স্ত্রী কে সন্দর্ভ মেং অপন সামাজিক রিরশতা কে দ্হাওা আ পুরুষ কে রিষয মেং উঁদাববাদী প্ররৃত্তি কিযাক ? ? একদীস সোনহমে সদী দোসব দীস বাঁগসমে সদী কিযাক ?
২. পূর্বনিযোজিত রিরাহ-
সামান্যতযা এহেন দেখন জা বহন অছি জে পূর্বনিযোজিত রিরাহ পব সেহো প্রশ্নচিহ্ন নাগি জাগত অছি জেকব পবিণতি হোগত অছি রিচ্ছেদ, রিচ্ছেদক স্থিতি অথবা আজন্ম কেব নেন পশ্চাত্তাপ আ সমাজ সঁ শিকাযত।
কাবণ-
বুজুর্গ দ্বাবা অপন সন্তান কে ব্যারহাবিকতযা নৈতিকতা

ওকব পসন্দ নাপসন্দ কে প্রতি খনরধানতা।, রান্যারস্থা স রঁচা কে সমাজ স দূব বাখরঁ।, নৈতিকতা কেব র্যারহাবিক প্রযোগ নহিঁ হোযরঁ।, মেহত্ত্বাকাঙ্ক্ষা খা রস্তুস্থিতি মেঁ খসামঞ্জস্য হোযরঁ।, খনারশ্যক প্রদর্শন খর্থাত্ রাঁহ্যাডম্ব্বব।, খপন সামাজিক স্থিতি কে ভারী দম্পতি পব প্রক্ষেপণ।, সমাজ স দূব বহরঁ ফনতঃ সমাজক মেহত্ত্ব কে নহি বুঁঝরঁ খস্তু শারীবিক/খার্থিক/মেহত্ত্বাকাঙ্ক্ষীয কাবক কে মেহত্ত্ব দেরঁ।, খপন পক্ষ মেঁ বখরাঁ মেঁ সংকোচ।, খপন খন্তর্মেনক খপেক্ষা তথাকথিত সন্থ সমাজক গপ্প স্বনরঁ।, দম্পতিক খাপসী সম্বন্ধ মেঁ খন্য/পবিরাবক হস্তক্ষেপ কবরঁ।, সংরেদনশূন্যতা কেব পবিচয।

ওা নেখ যদ্যপি কোনো পবিরর্তন নহিঁ খানত ক্ষদা সূতন সমাজ কে একটা খনার্মে খরশ্য দেত ।জে ওা খনার্মে স্বনি উঁঠরঁ ত ঠীক নহি উঁঠরঁ ত কোনো রাঁত নহিঁ খাঠ রঁজে ত উঁঠরেঁ কবরঁ। তারত ধবি রঁহ্ত দেবী ভয চ্কন বহত।

(খানেখমে দেন রিচাব নেখকক নিজী রিচাব ছন্হি। –সম্পাদক)

<u>জনমানস হেত্ত প্রহভিক্তাদর্শনক রৈশিষ্ট্য</u>

जा धवि भावतीय ज्ञान पवम्पवाक चर्चा नहि कयन जाগत খছি তা ধবি 'জ্ঞান' পদক রিরবণ সম্পূর্ণ নহিঁ হোগত খছি। প্বনশ্চ যদি ভাবতীয জ্ঞানপবম্পবাক চর্চা কবী তঽ কাশ্মীব শৈরদর্শনিক চর্চাকি রিনা ও খধূবা বহত। তেবহম শতাব্দীক বাঁদ একব পবিগণনা রিদ্বান সভ ভাবতীয দর্শন কে খন্তভুক্ত কেনাও বন্দ কয দেনথি কিযাক তঽ সভক দৃষ্টি সংকুচিত ভয মাত্র ছ টা দর্শন কে খাস্তীক খা তীন টা দর্শন কে নাস্তীক কে রূপ মেঁ প্রতিষ্ঠিত কবরা মেঁ ব্যস্ত ভয গেনহি। রস্তুতঃ কাশ্মীব শৈরদর্শন (একবে খপবনাম প্রত্যভিজ্ঞাদর্শন খছি) কঽ পবম্পবা এতেক সমৃদ্ধ খছি জে খভিনরগুপ্ত পাণিনি সদৃশ রিদ্বান কে প্রতিষ্ঠিত কযনক খছি।

কাশ্মীব শৈরদর্শনিক রিকাস খাঠম সদী সঁঽ বাঁবহম সদী কেব মধ্য ভেন। ও দর্শ পূর্ণতঃ ব্যারহাবিক পক্ষপব বঁন দৈত বহন খছি। এহি দর্শন মেঁ মূন তত্ত্ব কে রূপ মেঁ পবমশির কেঁ স্বীকাব কযন গেন খছি। সম্পূর্ণ চবাচবজগত শিররূপ খছি ও এহি দর্শনিক মূন ধাবণা ছৈক। কুন ३২ তত্ত্ব কে স্বীকৃত ভেটৈন খছি–

· শির

· শক্তি

· সদ্বিদ্যা

· ওশ্বিব

· মাযাè কনা, রিদ্যা, বাগ, কান, নিযতি

• पुरुष

• प्रकृति è (पंच तन्मात्रा, पंच ज्ञानेन्द्रिय, पंच कर्मेन्द्रिय, मन, पंच महाभूत)

एहिठाम प्रश्न उठनाइ स्वाभाविक छैक जे सम्पूर्ण चराचर जगत शिवरूप कोना भय सकैत छैक जखनि कि व्यवहार मे पार्थक्य स्पष्टतः दृष्टिगत होइत अछि। एकर समाधान एहि दर्शनक तत्वमीमांसा करैत अछि जे ई स्पष्ट करैत अछि जे जतेक मात्रा मे वस्तु वा व्यक्ति मलाच्छादित होइछ तारत मात्रा मे ओ न्यूनरूप मे प्रकाशित होइछ। एहि क्रमक विवेचन हेतु विशद रूप सँ प्रकाश-विमर्श आ आणव कार्म तथा मायीय मल केर चर्चा कयल गेल अछि जे एहि दर्शनक अनुपम ग्रन्थ 'श्रीतन्त्रालोक' मे स्वलभ अछि।

एतय पुनः प्रश्न अछि जे जन सामान्य हेतु एहि दर्शनक की उपादेयता ? एहि प्रश्नक समाधान करैत ई दर्शन कहैत अछि जे सर्वप्रथम तँ आत्मविश्वास राखी जे हम स्वयं ओ परम सत्ता छी हमरा सँ कोनो कार्य असम्भव नहिं। अस्तु निराशा क कतहु स्थान नहि। अही संग दोसर संदेश ई छैक जे विभिन्न मल के दूर करबाक यत्न करी जाहि सँ शिवोऽहं केर भाव आबि सकय।

अस्तु एहि तरहें ई कहल जा सकैत अछि जे ई दर्शन अपन दार्शनिक मर्यादा रखितो जनमानस केर व्यावहारिक समस्या दिस विशेष ध्यान दैत अछि।

॥ কথং 'সংস্কৃতং' সংস্কৃতম্ ॥

(বিশিষ্ট ভাষাক রূপ মে সংস্কৃত:- এক বিমর্শ)

সংসারক প্রাচীনতম উল্লিখিত ভাষাক রূপ মে সংস্কৃত প্রথিত অছি। সংস্কৃত শব্দ দু শব্দ "সম্" (অর্থাত্, সম্পূর্ণ) আর "কৃতম্" (অর্থাত্, করল গেল) (সম্+কৃ+ক্ত) সঁ মিলকেঁ বনল অছি। এহি শব্দ কঅর্থ হোইত অছি– সম্পূর্ণ, ত্রুটিহীন। অন্যান্য ভাষাক নামকরণ ক্ষেত্রাদিক নাম পর করল গেল অছি মুদা সংস্কৃতক নামকরণক হেতু একর সংস্কারযুক্ত হোয়ব ছৈক। এতয় সংস্কারযুক্ত হোয়বাক তাত্পর্য একর পরিষ্কৃত ব্যাকরণ, সরলতা এবং বৈজ্ঞানিকতা ছৈক। সংস্কৃত কেঁ বিশিষ্ট স্থান প্রদান করয় বলা কিছু অন্যান্য কারক সেহো ছৈক জেকরা অধোলিখিত বিন্দুক মাধ্যম সঁ নির্দিষ্ট করল জা সকৈত অছি–

- ভাষাবৈজ্ঞানিক অধ্যয়ন মে একর প্রভূত যোগদান (সন্দর্ভ হেতু ঋগ্বেদ ১/১৬৪/৪৫, ৪/৫৮/৩,১০/৭১/১–২–৩, ১০/১১৪/৮, যজুর্বেদ ১৯/৭৭, অথর্ববেদ৯/১০/২–২১ দ্রষ্টব্য)।
- প্রমুখ প্রাচীন জ্ঞান–বিজ্ঞান, কলা, পুরাণ, কাব্য, নাটক আদিপরক গ্রন্থক সংস্কৃত মে নিবদ্ধতা।
- হিন্দু ধর্মক লগভগ সবটা ধর্মগ্রন্থ সংস্কৃতে মে নিবদ্ধ অছি।
- একতাকঽ শিক্ষা দেনাই।
- সংস্কৃত ভাষা ক ব্যাকরণ অত্যন্ত পরিমার্জিত এবং বৈজ্ঞানিক অছি। সংস্কৃত হেতু প্রথিতব্যাকরণ অছি পাণিনি অষ্টাধ্যায়ী জে একরা কম্প্যূটর ফ্রেন্ডলী ভাষা

হোযরাঁ মে যোগদানদেনকৈক।
সংস্কৃত ভাষা কঽ রৈশিষ্ট্য–
• অক্ষব কঽ উঁচাবণ–
সংস্কৃত মে প্রত্যেকরব্যঁজনক উঁচাবণ হেত্ত স্ববক যোগ সর্বথা অপেক্ষিত বহৈত ছৈক। সংগহি উঁচাবণকরৈশিষ্ট্য ই অছি জে কতহু ব্যতিক্রম নহি হোগত অছি। উঁদাহবণ হেত্ত 'অ' কঽ ১+ ভেদ হোগত অছি। ব্যতিক্রম নহিঁ ভেনাক কাবণে উঁচাবণ রৈষম্য নহিঁ দৃষ্ঠিগত হোগত অছি। এহি ভাষাক রিপবীত আংগ্লআদি মে ই ব্যতিক্রম স্পষ্ঠতঃ দষ্ঠিগত হোগত অছি। উঁদাহবণতঃ come (কম) ওব coma (কোমা) মে'co' ক দূ টা ভিন্ন ভিন্ন উঁচাবণ ভেটৈত অছি।

• সংস্কৃত শব্দক নির্মাণ–
সংস্কৃত মে ধাত্ত–রূপ, শব্দ–রূপ, প্রত্যয, উঁপসর্গ, ওব সন্ধি আদিক সহাযতা সঁঽ নরীন শব্দ কনির্মাণ সবন অছি। সংস্কৃত মে শব্দা ক নির্মাণ পূর্ণতিঃ রৈজ্ঞানিক ঢংগ সঁঽ কযন জাগত অছি। ।
• ব্যাকবণ–
একব ব্যাকবণ আওব রর্ণমানা কঽ রৈজ্ঞানিকতা ক কাবণ সর্বশ্রেষ্ঠতা স্বযংসিদ্ধ অছি। প্রাচীনকান হো যা আধুনিক কান, উঁত্তব ভাবত হো যা দক্ষিণ ভাবত, সংস্কৃত কা ব্যাকবণ অপবিরর্তিত বহনঅছি।
• প্রাচীনতা
রৈদিক গ্রন্থক প্রাচীনতা নির্রিরাদ রূপ সঁ স্বীকৃত অছি। অস্তু সংস্কৃত হজাবো রর্ষ পহিনে সরিদ্যমান অছি।
• সংস্কাবিত ভাষা–
সংস্কৃত কেরন স্বরিকসিত ভাষা নহী থীক, অপিত্ত

संस्कारित भाषा अछिएहि कारण एकर नामसंस्कृत अछि। संस्कृत कऽ संस्कारित करय वला छथि महर्षि पाणिनि; महर्षि कात्यायिनि और योगशास्त्र क प्रणेता महर्षि पतंजलि ।

• सरल भाषा–

सामान्य रूप सँ संस्कृत वाक्य मे शब्द कें कोनो क्रम मे रखल जा सकैत छैक। जाहि सँ अर्थकअनर्थ नहिं होइत छैक। ई एहि कारण संभव छैक जे एतय प्रत्येक पद वैज्ञानिक तरीका (सम्पूर्णविभक्ति आदिक संग) सँ राखल गेल होइत छैक। उदाहरणतः – अहं गृहं गच्छामि या गच्छामि गृहंअहम् दुनू ठीक छैक।

• त्रुटिहीन भाषा–

ई भाषा संगणक आओर कृत्रिम बुद्धि क लेल सबसँ उपयुक्त भाषा मानल जाइत अछि। संस्कृतव्याकरण तर्कशास्त्रीय दृष्टि सँ उपयुक्त अछि अस्तु मशीनक भाषाक लेल पूर्णतः उपयुक्त अछि| Forbes magazine, (July, 1987) केर अनुसार “Sanskrit is the most convenient language for computer software programming.” [ref – http://www.stephen-knapp.com/indian_contributions_to_american_progress.html]

• मस्तिष्क विकास

आधुनिक शोध सँ ई स्पष्ट अछि जे संस्कृतक अध्ययन स मानसिक दृढता और स्मरणशक्तिकविकास होइत अछि। [ref – http://www.galendobbs.com/theck/sanskrit.html]

• एकताक निरहिक–

संस्कृते एहेन भाषा अछि जे भाषाविवाद कें प्रश्रय नहि दैत अछि। ई एकता केर गीत स्वरैत अछि। अस्तु उक्त विविध विंदुक माध्यम सँ एतेक निर्विवाद अछि जे संस्कृत विशिष्ठ भाषाक रूप मे विद्यमान अछि। एकटा प्रवाद सतत स्वरा मे अबैत अछि जे संस्कृत आब मृतप्राय अछि; एहि सन्दर्भ मे विभिन्न सन्दर्भक संग भ्रान्ति दूर करबाक प्रयास करब हम आगामी लेख मे। ता धरि विभिन्न राजनेता द्वारा संस्कृत मे शपथग्रहण करब, संस्कृत लेल जनमानस द्वारा समस्त वस्त्वधाक अखण्ड मानैत कयल जाबहल प्रयास आदि अपनें लोकनि कें उक्त प्रवादक जाल मे फँसरा सँ बाचित करत संगहि http://sanskritamning.com/ ई अन्तर्जाल श्रोत संस्कृतक जीवन्तताक झांकी प्रस्तुत करत।

विपिनझाhttp://sites.google.com/site/bipinsnjha/home

ये बाँकुरा२बाँकुरा रा।

दियाबाती दीपक पर्व थीक। बहुतो व्यक्ति एहेन छेथि जे अपन गाम सँ दूर नगर आ महानगरमे आबि अपन कार्य मे व्यस्त भय गाम-घरक दियाबाती कऽ संवेदनामेक स्मृतिमात्र अपन मन मेसंयोजित राखि सन्तोष करनैत छेथि। आखिर गाम क दियाबाती आ एहि महानगर कऽ दिवाली मेअन्तर की छैक जेकर भेदक अनुभूति होइत छैक? महानगर मे तऽ चहु दिस बिजली क सजावटें आ पटाखा आदि उपलब्ध रहैत अछि जे सहजता सँ गाम मे अखनो धरि उपलब्ध भेनाइ कदाचित कठिने अछि। ताहु मे मूलतः बिजली कऽ सहजता सँ पर्याप्त उपलब्धता नहि भेनाक कारण गाम आ महानगरक तुलने करबऽ अनुचित होयत। सदा तइयो महानगरीय दिवाली क चमकदार उल्लास सँ अधिक आनन्द ओ मधिम इजोत रहना गामक दियाबातीक स्मृति दैत अछि।

यदि एकर कारण देखल जाय तऽ देखैत छी जे एक तऽ महानगरक यान्त्रिक जीवन एहि उल्लास कें न्यून कय दैत अछि आ दोसर मानवीयताक ह्रास अ ओ

ঔপচাবিকতাক খাধিক্য সংরেদনামেক খনুভূতি কবেরা মে খসমর্থ সিদ্ধ হোগত খছি। কিন্তু খাশয ওা নহি জে ওা সমস্যা গামক পবিদৃশ্য মে সর্রথা নহি খছি রা মহানগবীয জীরন সর্রথা ত্যাজ্য খছি। কহরাঁক খাশয মাত্র এতেক খছি জে সাপেক্ষ দৃষ্টি সঁ গাম তীব্রগতি সঁ রঁদনৈত এহি সমযচক্র মে সংরেদনামেক পক্ষ কেঁ বক্ষা কবরা মে খখনহুঁ সমর্থ খছি।

হম গামক দিযারাঁতী খাগযো ওহিনা যাদ করৈত ছী। নক্ষ্মী পূজা কহ রাঁদ ওঁক প্রজ্জ্বনন হোগত ছনৈক। সামান্যতযা ওহি বাতি কানীপূজনোসের সেহো হোগত ছৈক খস্তু ওকবো খানন্দ নৈত ছনহুঁ।
ওঁক প্রজ্জ্বনন খাদি ন কেরন পবংপবাক নির্রহণ মাত্র হোগত ছৈক খপিতু পাবিরাবিক সদস্যক মধ্য হার্দিক সামীপতা ক কাবণ সেহো হোগত ছৈক। দীপ রিশেষ ৰূপ সঁ কীটনাশিক ৰূপ মে প্রথিত খছি। পটাখা খাদিক খাধিক্য তহ গামো মে রঁঠি বহন ছৈক ষদা খখনহুঁ সীমিতে কহন জায।
হম গামক একটা ঘটনা কহ স্মবণ কয রিশেষ ৰূপ সঁ গামক দিরানী স্মবণ করৈত ছী। ঘটনা কবীরঁন ১৩ সান পহিনকা খছি। ১ টা মহিনা খপন সন্ত সন্তানক নিমিত্ত দীপ দয বহন ছনথি। ১টা রঁচা প্বছনকৈন – কাকী খহাঁ ওা দীপ দিযারাঁতী দিন খনগ সে কিযা দৈত ছিযৈক....... ? মহিনা ভারুক ভয কহনথি– খপন রঁচা সন্ত নহ। ও রঁচা ফেব রাঁজন– খহাঁ কে তহ...খা ওা চাবিম কেকবা নহ ? ও ঔব ভারুক ভয গেনী কিন্তু রঁচা কে কিছু নহিঁ কহনখিন। হম ওহি সময খপন কাজ সঁ হুনকা নগ গেন বহী। রঁচা ক ও খন্বত্তবিত প্রশ্ন হমবা জিজ্ঞাসিত কবয নাগন। কিছু দিন রাঁদ

হম হ্নকা সঁ একব চর্চা কেনিযন্হি। ও কহনথি- ঋপন ৰৌঋা কহ নেন (হ্নকব ঋাঠ ৰর্খক ৰেটৌ মবি গেন ছনন্হি)। হম এহি সঁ পহিনে ঋনেকো ৰেব ঋপন ৰাৰা কহ ঋঁহ সঁ তর্পণ কান মে ওা স্বননে বহী- যে ৰাঋুরাহৰাঋুরা রা....। ঋর্থাত জে কোনো পিতব এহেন হোথি জিনকা কোওা জন দেন্হাব নহি ছথীন্হ হ্নকো তৃপ্তি হোন্হি, এহি নিমিত্ত হম ওা জন দয বহন ছী। কহৰাক ভার মাত্র এতেক ঋছি জে গামক প্রত্যেক পবংপবা চাহে ও দিৱানী পর্ব হো রা ঋন্য, মানর কে স্নেহৰন্ধ মে বঋৰাক, ঋা পাবস্পবিক সৌহার্দ্রতা এরং কর্তব্যৰোধ নিমিত্ত হোগত ঋছি। এহি কে প্রত্ত্ত মহানগবীয পবংপবা 'সেনিব্রেট' কবৰাক ৰহানা মাত্র দৈত ঋছি। ও মহিনা ৰহ্ত নীক জকাঁ ৰুঝৈত হেথীন্হ জে ও ৰেটৌ সংগ হ্নক সংৰন্ধ সর্বদা ক নেন ঢ্টি গেন ছন্হি ঋদা তখনো ওকব প্রসন্নতা ক কামনা হেত্ত দিৰাবী জবৰৈত ছনথীন্হ। সংগহি ওা ঋাঠ ৰর্খ ধবি ওকবা দ্বাবা দেন গেন স্নেহ ঋা সম্মানক নিমিত্ত হ্নক কৃতজ্ঞতাক পবিচাযক ছনন্হি। ঋস্তু ও মহিনা ক দীপ দেনাগ সম্বেদনামেক স্মৃতিক বক্ষা সঁ সংদর্ভিত ছন। তীব্র গতি সং ৰদনৈত এহি যুগ মে হম সৱ এহি সংরেদনামেক পক্ষ কেঁ বক্ষা নহি কয পারি বহন ছী। যদি জীরন সঁ সংরেদামেক পক্ষ কে নিকানি দেন জাগ তহ রস্তুতঃ মনুষ্যক জীরন শূন্যক পর্যায ৰনি জাযত। এহি নিমিত্ত ঋারশ্যক ঋছি জে এহি চকাচৌন্ধ কেঁ সংগ ও ধূমিন টিমটিমাগত দিযাৰাতী দিন জবৈ ৰনা দিৰাবী কহ ৰাতী নহিঁ খমে হো, একব সদিখন বক্ষা কযন জাগ।

চহকৈত চৌক খা কনৈত দনান

সংক্রমণ কান সঁ গুজবৈত খপন মিথিনাঁচন খাগ খপন ক্ষীণ হোগত মর্যাদা, সভ্যতা এবং সংস্কৃতি কঽ কাবণ চিন্তাগ্রস্ত খছি। সমস্ত রিরেকশীন বুদ্ধিজীরী স্তব্ধ ছথি। মৌথিন সংস্কাব খন্দবে খন্দব রিনাপ কয বহন খছি! একব পৈঘ উঁদাহবণ থীক চহকৈত চৌক, হঁসৈত মধ্শানা খা কনৈত দনান।
কহিযো মিথিনা কঽ গামক দনান প্রবুদ্ধ র খন্বভরী বুজুর্গ, উদ্যমশীন খা রিরেকী যুরা, সংস্কাবী কিশোব খা বচ্চা সভ সঁ শোভাযমান বহৈত ছন। খাঁগন মঁ গোসাউঁনিক ঘব একটা তীর্থরত্ হোগত ছন। চৌক চৌবাহা সক্রিযতা এবং মেনমিনাপক খড্ডা হোগত ছনৈ ক্ষদা খাগু ? নগব পনাযন কে কাবণ দনান স্বন্ন ভয গেন। জে ব্যক্তি বচনো ছথি সে দনান ক রজায খন্তঃপুব মেঁ ব্যস্ত বহৈত ছথি। প্রবুদ্ধ ব্যক্তি গাম মেঁ

অল্পসংখ্যক ময গেলাহ। প্রত্যেক চাঁক পব একটা রিদেশী মধ্শালা খূজি গেল জতয পৈঘঘবক রঁচা ব্যক্তি সম রচন সাহেবঁক গ্রন্থক অনুকবণ কয বহল ছথি। সংগহি গশাবা মেঁ কিছু পড়া যা রনা চীজ সংহো সূঁঘি বহল ছথি।
গ সর্বত্র ব্যাপ্ত রৌঙ্কিক আচাব সংবঁধী প্রদূষণ গ্রাম সমাজ কে কলুষিত কবৈত-কবৈত মিথিলাচলক আমো নষ্ঠ কবরাক উদ্যত অছি। আও সরঁটা রৌঙ্কিক ব আচাবরান ব্যক্তি গ্রাম সমাজ মেঁ ঘ্টৈল মহসূস কয বহল ছথি একব জিম্মেদাব কে ছথি ? শাযদ সমস্ত সমাজ।
এহি মহামাবী কঃ উন্মূলনার্থ সমস্ত মৈথিল সমাজ কে আগা আবঁয পড়ত স্থিতি অখনো নিযংত্রণ মেঁ অছি। যদি প্রযাস কযল জায তখনি সরঁ কিছু সংভর অছি অন্যথা সরঁ সত্যানাশক গংতজাব মেঁ তৈযাব বহী গ ভরিষ্যক চেতাবনী অছি।
আশা অছি সে সমস্ত রৌঙ্কিক সমাজ এহি সমস্যা পব চিন্তন কবতাহ আ কিছু সামূহিক প্রযাসো অরশ্য হোযত।

আরশ্যকতা অছি সকাবাত্মক মৌলিক চিন্তনক

মানরমাত্রক রিকাস হেতু মৌলিক চিন্তন অত্যারশ্যক অছি। সংগহি রিজ্ঞান আ প্রৌদ্যোগিকীকনিবন্তর রিকাসক মাজ্ঝ মে মৌলিক চিন্তনক উপেক্ষা নহি কয়ল জাসকৈত অছি। কোনো বাষ্ট্র যদিরিকসিত বাষ্ট্র কঽ রূপ মে খ্যাতিপ্রাপ্ত অছি তঽ এহি মে মৌলিক চিন্তক যোগদান সহজতযা গঁগিত কয়লজা সকৈত অছি।
এতয 'সকাবাত্মক' পদ জোড়বাক আশয মাত্র এতবা অছি জে মৌলিক চিন্তন যদি ধ্বংসাত্মকহো তঽ ও সর্বনাশক কাবণ সেহো ভয সকৈত অছি। আর প্রশ্ন ওা অছি জে এহি লেখ কঽ ঔচিত্য কীঅছি ? কিযাক তঽ মনুক্ষ জন্মজাত রিচাবশীল প্রাণী হোগত অছি। মৌলিক চিন্তন ওকবস্বাভারিক গুণ হোগত ছৈক। ক্ষদা... যদি রর্তমান পবিপ্রেক্ষ্য কেঁ ধ্যান মে বাখল

जाय तइ ब्यक्ति, चाहेओ जे कोनो कारण हो, मौलिक चिन्तन सड़ परहेज राखय चाहैत अछि।
अपन गप्प कें हम आजुक शोधक सन्दर्भ कें विशेष रूप सड़ जोड़य चाहैत छी कियाक तइभारतवर्षक विभिन्न उँच अध्ययन संस्थान द्वारा करायल जा रहल विभिन्न विषय में शोध (जेकराप्रचलित रूप मे M. Phil / M. Tech, D. Phil Ph. D आदि कहैत छियैक), राष्ट्रिक ज्ञानपरम्परा कसंवर्धक आओर राष्ट्रिक विकास में सहायक होइत अछि।
सामान्यतया आजुक स्थिति ई भय गेल अछि जे अधिकांश उँच अध्ययन संस्थान द्वारा करायलजा रहल विभिन्न विषय में शोध, उँपाधि प्राप्तिक हेतु मात्र भय जा रहल अछि। एहि विषय सड़ अपनेलोकनि सेहो अंशतः वा पूर्णतः सहमत होयब। सामान्यतः देखल जाइत अछि जे विविध ग्रन्थगत तथ्यआओर अवधारणा क प्रस्तुति कय शोधग्रन्थ तैयार कय उँपाधि प्राप्त कय लेल जाइत अछि। ओकरगुणवत्ता पर ध्यान नहि देल जाइत अछि।
एतय हम एकटा महत्त्वपूर्ण संस्था मे जाहि विषय पर उँपाधि देल गेल ओकर चर्चा करयचाहैत छी। विषय "Theory of false Cognition" (भ्रम सिद्धान्त) सँ संवंन्धित छल। ओतय विभिन्नसिद्धान्त शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत कयल गेल। पूर्ववर्ती आचार्यक मत पर टिप्पणी हुनका आदर दैत नहिंकयल गेल। एतय हमर कथन जे- शोधकर्ता सँ अपेक्षित छल जे विभिन्न आचार्यक मत कें समीक्षाकरितथि। जतय कतहु ओहि में समस्या छैक ओकर यथासंभव समाधान प्रस्तुत करितथि। अन्यथा तइओ शोध पुनर्प्रस्तुतीकरणमात्र अछि जे जनमानस हेतु मात्र भारस्वरूप कहल जासकैत अछि।

এহি উঁদাহৰণক মাধ্যম সঁ হম মাত্র এতেক কহয চাহৈত ছী জে কেরন অন্থান্বকবণ কয অপনপ্রতিভাক রিকাসক মাঙ্গ অরৰুদ্ধ নহিঁ কবরাক চাহী। এতয পূর্বাচার্যকি প্রতি অনাদবক ভার নহিঅভিপ্রেত র্বুঝী। প্রত্যেক ব্যক্তি কে অপন মৌনিক চিন্তন দ্বাবা ও শোধ হো অথরা ব্যারহাবিক জীরন,জনমানস কেঁ নরীন দশা আওব দিশা দেবা মেঁ সহযোগ করৈক চাহী। অপন মিথিনাক সংস্কৃতিকপ্রবৃত্তিক্তো ভেনা সঁ ওা রাঁত সহজ রূপ মেঁ স্পষ্ঠ ভয জাগত অছি জে ওা মার্টি কখনহুঁ অন্থান্বকবণ কে প্রশ্রযনহিঁ দেনকৈক, অপন খন্ডনমন্ডানামেক রিধি দ্বাবা জনমানস কে রিকাস মেঁ সহযোগ দৈত বহন অছি। একবে পবিণাম কহন জা সকৈত অছি জে নব্যনায ক উঁপেত্তি মিথিনা মেঁ ভয সকন জাহি কাবণমিথিনাক সংস্কৃতি আগযো সমস্ত রিশ্ব মেঁ সমাদৃত অছি। অস্তু আশা অছি জে একব মর্যাদা সততবাখন জাযত। http://sites.google.com/site/bipinsnjha/home

<u>**স্বাতন্ত্রাত্তবযুগীন সংস্কৃত সাহিত্যক সংরক্ষন মে মিথিনাক ভূমিকা।**</u>

ভণ্ডত্রাণ পবাযণা ভরভযাভারং সমাতন্বতী, যা দেরীহ স্বদর্শনং নৃপমণিং সংবক্ষ্য যদ্ধ অবে।
যা চাস্মৈ সন্ধদাত্ স্ববাজ্যমখিনং স্নীযং দ্বূতং শেত্রুভিঃ,
পাযাত্ সা ভুরনেশ্ববী ভগরতী মাং সর্রদা শর্মদা।
ভাবতীয জ্ঞান পবংপবা রিচাবক, গ্রন্থক আওব চিন্তকক নিবন্তব অরিছিন্ন প্ররাহমযী ধাবা অছি জে দর্শন, সাহিত্য,

तर्क, विज्ञान, धर्मशास्त्र आओर अन्यान्य ज्ञान-विधा सँ निर्मित होइत रहल अछि। एहि ज्ञान परंपरा कें सम्बर्द्धन मे संस्कृत साहित्य आओर मैथिली साहित्य कें योगदान नितान्त महनीय अछि।
एहि लेख मे संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक की भूमिका रहल अछि एकर दिग्दर्शन करबाक प्रयास कयल जा रहल अछि। तद्धु मे मूलतः स्वातंत्र्योत्तर युगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक की भूमिका रहल अछि एकर विश्लेषण कयल जा रहल अछि। वस्तुतः एकटा लेखक माध्यम सँ सम्पूर्ण तथ्यक प्रकाशन सर्वथा कठिन अछि, अस्तु प्रतिनिधि अंश द्वारा कथनक पुष्टि करबाक प्रयास रहत। संस्कृतक की स्थिति छल प्राचीन मिथिला मे ओ तँ एकटा उद्धरण सँ स्पष्ट भय जाइत अछि-
जगद्ध्रुवं स्याजगदध्रुवं वा, कीडांगना यत्र गिरोगिरन्ति।
द्वारस्थ नीडान्तसन्निरुद्ध, यानीहि तं मण्डन मिश्र धाम॥
संस्कृत साहित्यक सम्बर्द्धन मे प्राचीन काल सँ मिथिला कें सहस्रशः मनीषि समर्पित रहल छथि। एहि मे- व्याकरणक क्षेत्र मे वार्त्तिककार वररुचि, भाषाविद् आओर साक्षात शेषावतार भगवान पतंजलि, दर्शनक क्षेत्र मे गौतम, कपिल, वाचस्पति मिश्र, ओश्वरक अस्तित्वप्रतिष्ठापक रूप मे प्रथित उदयनाचार्य, नव्यन्यायक प्रतिष्ठापक गंगेश उपाध्याय, उद्योतकर, पक्षधर मिश्र, अद्वैत वेदान्ती मण्डन मिश्र, विदुषी गार्गी, मैत्रेयी, भारती, धर्मशास्त्रक क्षेत्र मे लक्ष्मीधर, श्रीकर, हलायुध, भवदेव, श्रीधर,अनिरुद्ध, हरिहर, चन्द्रशेखर प्रभृति विशेष रूप सँ प्रथित छथि। काव्यक क्षेत्र मे विद्यापति जयदेव,उमापति, भानुदत्त, शंकर महनीय

छथि ।
अन्य विद्वान मे महावैयाकरण पं० दीनबन्धु झा, पं० श्यामसुन्दर झा, पं० देवानन्द झा, पं० भुवानन्द झा, पं०वृद्धिनाथ झा, पं०राधाकान्त झा, पं०रामदेव झा, पं० कामेश्वर झा, पं० वी० एन० झा, पं० शशिनाथ झा प्रभृति कें नाम लेल जा सकैत अछि ।
स्वातन्त्र्योत्तर युग मे अनेकशः कवि अपन कृतिक माध्यम सँ संस्कृत साहित्य सुषमाक संवर्द्धन कयलनि। कतिपय कवि आओर हुनक कृति द्रष्टव्य अछि–
महाकाव्य :–

• पं० भवानीदत्त शर्मा स्वरथचरितम्

• पं० रामचन्द्रमिश्र वैदेहीचरितम्

• पं० पशुपति झा नेपालसाम्राज्योदयम्

• पं० मतिनाथ मिश्र भास्करविक्रमम्

• पं० कृपाकान्त ठाकुर आंजनेयचरितम्

• पं० रामकुमार सर्मा भरतचरितम्

खण्डकाव्य :–

• पं० जीवनाथ झा महेन्द्रप्रतापोदयम्

• पं० श्यामसुन्दर झा राजलक्ष्मीचरितम्

• पं० विष्णुकान्त झा

बाजेन्द्रबंशप्रशस्ति
• पं० बामचन्द्र मिश्र
याज्ञसेनी
• पं० काशीनाथ मिश्र
स्मबदहनमंजबी
• पं० बामजी ठाकुब
वैदेहीपदांकनम्
• पं० हविकान्त झा
जम्बूकाश्मीबस्वषमाबनेम्
अन्य प्रबन्ध काव्य:-
• पं० कविशेखब बँद्रीनाथ झा
काव्यकल्लानिनी
• पं० आनन्द झा
आनन्दमधुमन्दाकिनी
दृश्यकाव्य:-
• पं० तेजनाथ झा
अयाचीनाटक
• पं० अच्युतानन्द झा
विज्ञानमहिमा
• डा० नोदनाथ मिश्र
मधुमानती

उँक्त विबबण एकटा झनकमात्र अछि बस्तुत: तइ एहि तबहें असंख्य बचना भेन अछि। अही संग संग ई कहबँ जरूबी अछि जे बँह्तो विद्वान एहनो छनाह जे संस्कृत सं मैथिनी पद्यानुवाद कय संस्कृतक संग संग मैथिनी साहित्य कें समृद्ध कबबाक प्रयास मे आजीवन नागन बहना। अहे तबहक एकटा उँदाहबण प्रस्तुत अछि पं० तुनानन्द झा कृत दुर्गासप्तशती चतुर्थ अध्यायक

১ টা পদ্যা।

গন্দ্রাদি দেৱ সভ মিলি কবৈছ হৰ্ষেঁ, ৰোমাঁচ স্বন্দৱ শৰীৰ ন্বতো স্বৰাজ্যেঁ।

দুর্গা প্রণাম-বত মস্তক নীক ভাৱেঁ, দেৱী কহ মাৱন মহিষাস্বৱ নাশ ভেলেঁ॥

দেৱী জনীক স্বৰ্ৰনেঁ সভ ব্যাপ্ত বিশ্বে, সম্পূর্ণ দেৱৱঁন সংঘক কৈন দেহে।

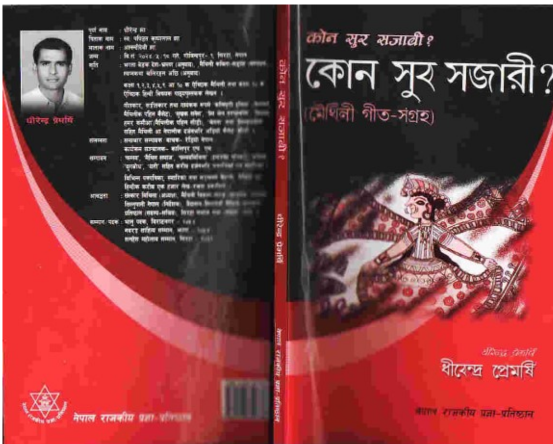
থয্যাঁ থিকীহ সৰঁ দেৱ মহর্ষি পূজ্য, প্রেমে নমী, স্বভদ ও হমবা সভেঁকেঁ

এৱং প্রকাৱেণ কহন জা সকৈত থছি জে মিথিনা সৰথা সাৱস্বত সাধনা মে নীন বহৈত সংস্কৃতক সাহিত্য সম্বৰ্দ্ধন মেঁ সতত যোগদান দৈত বহন থছি।



ডা. বাজেন্দ্র রিমন

সাহিত্–সঙ্গম– গীতকাব ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষিক স্বব–তান



গীতকাব ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষি নেপানীয মৌথিনী গীত–সংসাবক প্রাযঃ সভসঁ মূন্যরান ডঁপনর্ব্ধি থিকাহ— রিরিধতাময রিষযক দৃষ্টিএঁ, সংখ্যামেকতাক দৃষ্টিএঁ, ডঁচ কার্য্যমূন্যক দৃষ্টিএঁ, রিরিধ শিল্প–প্রযোগক দৃষ্টিএঁ, রিরিধ খনঙ্কাব, গ্বণ, বস, ভাষিক প্রযোগক দৃষ্টিএঁ, শৈনীগত রিরিধতাক দৃষ্টিএঁ, সামাজিক সচেততাক দৃষ্টিএঁ আ সভসঁ বঁঢ়া কহ মস্তিষ্ক আ হৃদযক স্বন্দব সহযাত্রাক দৃষ্টিএঁ । হিনক

গীতসঙ্গ্রহ 'কোন স্বর সজারী ?' ক গীতসভমে প্রেমতত্ত্ব, ব্যঙ্গ্যতত্ত্ব, রেদনাতত্ত্ব, নরবসতত্ত্ব, উদ্বোধনতত্ত্ব, আখ্যাযিকা–তত্ত্ব, সামাজিক–তত্ত্ব, ধার্মিক–তত্ত্ব, বাজনীতিক–তত্ব, সাংস্কৃতিক–তত্ত্ব আদি রিরিধ তত্ত্ব মিনাক২ জে কনামেক রূপাকৃতি গঢ়ন গেন অছি সে রিনক্ষণ থিক । হমবা আন গীতকাবক কিছু গীতক কিছু পাঁতি ভীতবধবি ছুবৈত অছি, মুদা ধীবেন্দ্রক বহ্তো গীতক প্রায়ঃ সভ পাঁতি মর্মকেঁ রেঁধি জাগত অছি । জীরন–জগতক যথার্থ শক্তি আ সম্ভারনাক প্রতি অদম্য নিষ্ঠা এরং সজগতাসঁ পোনগন আন্তবিক আ বাহ্য সৌন্দর্য জখন স্বরমে সজৈত অছি তঁ জেনা চেতনাক নহবিকেঁ নযরঙ্গ ক২ নৈত অছি । জীরনক কিযাবীমে হ্নাগছ সহ আ সৌন্দর্যক হূন জে প্রকৃতক রূপ–বঙ্গমে মঙ্গনকাবী থিক । পবিরেশক যথার্থরোধ হেতু আরশ্যক বৈজ্ঞানিক দৃষ্টিক রিরোধমে ঠাঢ় ভেন রুণ্ঠিত সৌন্দর্যরোধসঁ রেসী তকব সাহচর্যমে পবিমার্জিত আ রিকসিত সৌন্দর্য–চেতনাক কাবণেঁ গীতকাবক সহজ প্রেমোচ্ছ্বাসো কোনো অদৃশ্য চন্দ্রনোকসঁ আএন নহি, হৃদয কিংরা ধবতীসঁ উপজন নগৈছ ।

করিমে সৌন্দর্য–চেতনাক গন্দ্রধনুষী বঙ্গ যত্র–তত্র–সর্বত্র ছনকি উঠন অছি সে সহ, মুদা সৌন্দর্যক বসগ্রাহ্যতা মিথিনাক ধবতী আ সংস্কৃতিক প্রতি সহজ সংস্কাবক রূপমে রিকসিত মধুব অনুবাগসঁ অভিপ্রেবিত অছি । বহ্জন–বঞ্জনক সঙ্গ বহ্জন–মঙ্গনক ভার হিনক অনেক গীতক সংরেদনাকেঁ সমসামযিক আ সতত গতিশীন সহক সংরাহক বনা দেনে অছি, মুদা তৌঁ ও দেশ–কানক অন্তর্সহসঁ আবদ্ধ অছি । স্পষ্ট কহী তঁ হিনক সমকানীনতা পবিরেশজন্য অন্তবঙ্গ ক্ষণক অভিব্যক্তি থিক । হিনক

ভাষা, ভঙ্গিমা, ভাববোধ, ছন্দ, নযমে এতেক নবীনতা আ তাজাপন এহি দোথাবে বুঝি পড়ৈছ জে ও সদ্যঃ জাত কমনক ফূলসন টটকা অছি, জকব জড়ি ভলে পবম্পবামে হোএক, মুদা প্রস্ফুটন নিতান্ত মৌলিক ছৈক ।

ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষিক গীতসভকেঁ নিম্নলিখিত কোটিমে বর্গীকৃত কএল জা সকৈছ— ১) শ্রম, সঙ্ঘর্ষ, আস্থাক গীত ২) মানবীয় সম্বন্ধ আ সংবেদনাক গীত ৩) সৌন্দর্য–চেতনা আ প্রীতিক গীত ৪) চিন্তনপবক দার্শনিক গীত ৫) মাটিপানি আ সামাজিক বাজনীতিক সচেততাক গীত ।

১. শ্রম, সঙ্ঘর্ষ, আ আস্থাক গীত : জীবনক অবণ্যমে কাঁট ছৈক তঁ ফূলো ছৈক, পতঝড় ছৈক তঁ বসন্তো ছৈক, গ্রীষ্ম–প্রদাহ ছৈক তঁ স্বাভাবিক শীতলতো ছৈক । জীবনকেঁ স্বীকাব কববাক লেল ওকব সম্পূর্ণ যথার্থকেঁ স্বীকাব কঽ উঁসোহক সঙ্গ জীবঽ পড়তৈক । বিডম্বনাপূর্ণ জীবনক এ স্বীকৃতি আ জিজীবিষা গীতকাবকেঁ কাঁটক বীচ ফূল খোজবাক প্রেবণা আ উঁসোহ দৈত ছন্হি—

চাবি দিনক ই জীবন–ধাম
হবখক পল তাহুমে বাম
কলিকা খোঁটিকঽ ফেকৈত হম
তাকি বহল ছী ফূলক গাম

ই ধবতী, একব উঁসেব আ শোক, স্মিতি–অশ্রু, জয–পবাজয প্রাণবন্ততাক প্রমাণ থিকৈ, তেঁ কোনো কল্পনা–হবমে ভটকৈত সত্–সূর্যক খোজ কববা বতহপনী ছৈক । সৃষ্টিক গর্ভসঁ জনমল সত্ মাত্র গীতকাবকেঁ স্বীকাব ছন্হি—

সত্ক জননী সৃষ্টি তমাম
কর্মক সিঞ্চন হম্মব কাম.....

প্রেমর্ষি শ্রমহীন জীরনকেঁ জিনগীক ভ্রম মানৈত ছথি আ শোষণপব আধাবিত জীরন-ব্যরস্থাক রিরুদ্ধ ছাতী তানি ঠাঢ় ভহ জাগত ছথি । শোষণক রিরুদ্ধ কেহন ঘৃণা ছন্হি প্রেমর্ষিক মোনমে—
গামক গাম উঁজাড়া রঁনাওন
মহন-অট্টাবী নগ চাহী
দেশক খূন আ গবীরঁক আহসঁ
ভবন রঁখাড় া নগ চাহী
নাখোক ধূব নিনামীক জনমন
এক জিমদাবী নগ চাহী....."
এহন অরস্থামে ও কহৈত ছথি— হমবা অপন গবীরিযো রঁবদান নগৈএ.....
গবীরঁক জিনগীক কেহন মার্মিক শব্দচিত্র প্রস্তুত কএনে ছথি প্রেমর্ষি—
পীঠকেঁ ঝাঁপৈত ছী তঁ মাথা উঁঘাব
মাথকেঁ ঝাঁপৈত ছী তঁ পীঠহি উঁঘাব
চূনি-চূনি খড়পাত খোঁতা রঁনাবী
চ্রিতে বহি জাএ তৈযো জিনগীক চাব......
২. মানরীয সম্বন্ধ আ সংরেদনাক গীত : মনুক্খ অনেক স্তবপব এক-দোসবাক বাগতন্তুসঁ রঁন্হাএন অছি । নিতান্ত রৈযক্তিক স্তবপব, পাবিরাবিক স্তবপব, সামাজিক স্তবপব, বাষ্ট্রিয স্তবপব, অন্তর্বাষ্ট্রিয স্তবপব, ব্রহ্মাণ্ডীয স্তবপব । বাগ-রিবাগক ই খেন চিবন্তন থিক, সার্রভৌম থিক । জাধবি মনুক্খ জীরিত অছি, নেহ-ছোহক এহি রেশমী রঁন্ধনকেঁ তোড়া ফেকর্ ওকবা হেতু দ্ঃসাধ্য থিকৈ । এহি বাগামেকতাকেঁ প্রেমর্ষি জীরনক স্পন্দন, প্রাণজ্যোতি, অপবিহার্য অঙ্গ-বঙ্গ মানৈত ছথি—
রীস রঁবখা টৈবনিঙিযা ক্ষবতা

तैपव साङ्गेन चेहवी छै
शीतनहवीमे ओक्कव ओढ़ना
पोतीक फेकन केथवी छै
सोना गढ़ा कऽ गएह हन पौनक
ऋपने रनि गेन ताम–सन
राह र्ढ़रा तेयो राँजेए
हम्मव रेंगे बाम–सन....
ऋद्वितीय ! ! ओ सम्बन्ध–रन्ध ऋपबाजेय आ ऋमव
बहए, भगरान ! !
३. सौन्दर्य–चेतना आ प्रीतिक गीत : कोनो
बाजनीतिक रादक ऋल्डातव रैसि गीतकेँ रिज्ञापन रा
प्रचावक माध्यम रनरैत ऋथरा ऋन्वभवशून्य रिषयपव
शर्ब्दक कनाराँजी देखरैत जीरान्वभव रा जीरनसन्क
दिससँ श्वत्तवन्धर्गी शैनीमे ऋाँखि ऋननिहाव गीतकाव नहि
थिकाह प्रेमर्षि । तेँ ओजस्वी भारनाक हथौड़ सँ शर्ब्दकेँ
नोहावजकाँ पीटि–पीटि सङ्घर्षक हेतु हवसा आ गढ़ । ँस
रनरैत प्रेमर्षि जखन छेनीसँ पदारनीकेँ तवासैत
सोनावजकाँ बचि–बचिकऽ प्रेवयसीक हेतु कोमन कण्ठहाव
रनरैत छथि तँ हमबा युद्धक कुरुक्षेत्रक योद्धारूप
आ रृन्दारनक बासनीना बचरैत प्रेमीरूप एक्कहिरेंब मोन
पड़ा जागत ऋछि ।
शृङ्गावक दून्नू भेद— संयोग आ रिप्रनम्भक मोहक चित्रण
हिनक गीतमे भेटैत ऋछि—
प्रेमक घटसँ जते निकानी
जनक ह्खए ने ऋन्त
हमव ऋहाँकेव प्रेमक चिड़ा या
भऽ गेन रैंस उँड़न्त.......
४. चिन्तनपवक किंरा दार्शनिक ऋद्राक गीत : चिन्तन

जखन भावनाक तनपव आवि गावॅ२ नगैछ तँ ऊँच कोटिक गीतक जन्म होगत छैक । प्रेमर्षिक किछु गीतमे चिन्तनक जे चिनगी दहकैत अछि से जिनगीक चवम सत्धवि नः२ जागत अछि—
जीवन थिक मेला दू दिनमा
ग गस्न्यावा–द्वेष किए प्राणी
आखिवमे देह गलिए जएतह
वॅस बहि जएतह अमृत वाणी.....
वन–वन वौआगत अछि
कस्तूवीक टेहमे मृग जहिना
सदिखन ओनागत अछि
माया आ मोहमे मन तहिना.....
ङ. माटि–पानि आ सामाजिक–वाजनीतिक सचेततताक गीत : धीवेन्द्र प्रेमर्षिक गीतमे जयदेवक कृत्रिम कलामेकता नहि, विद्यापति गीतक सहज कलामय तन्मयता अछि । तेँ ग गीतसभ मिथिलाक स्वगन्धसँ महमह कवैत अछि । मिथिलाकेव व्यथा दहेज, लवका सान प्रवले हान, जनतन्त्रक वॅहाली, जय हो पेटे धवमवीव, हे देखियौ हमव समाजमे, ओ वॅमभोला, सत्ताक माछ, देशी म्हर्गा विलागती बौली, जागवण गीत एहि कोटिक गीत थिक । एहि गीतसभमे अत्यन्त तीक्ष्ण व्यङ्ग्य अछि—
वॅम भोला
छोडूP भङगोला
जँ पियवॅ अछि अति आवश्यक
पीवू कोकाकोला.....
म्हर्गा देलक वॉङ
दुलविया दाक ला......

পহিলে ডরঁবা–খত্তা ঘ্মী
ভেৈটএ রঁস গবচ্ন্নী
রাঁটৈত–চ্টৈত পরৈত ছনিযৈ
এক্কহি–দূটা ফন্নী
এহিরেঁব পোখবিক জীবা ভেটৈন
সটি গেন ঠোবমে
খাবঁ তঁ মোন পবকি গেন হম্মব
মাছক মোবমে...........
দূর্গাপূজা ডী.পী. রঁনি গেন
ভবদ্তিযা বাখীতব দরি গেন
জ্ড়শীতন শীতনহবীক মাবন
হৈপ্পী ন্যূ গযব রঁস ফরি গেন
রঁম ফটাক হ্নঝড় কি রীচমে
ডূরি গেন হ্ক্কা নোনী
দেশী ফ্গর্া রিনাযতী রোঁনী.....

এহি সভ গীতক ভঁচিত মূন্যাঙ্কন মৈথিন সংস্কৃতিক গরাক্ষসঁ নিবখিকহ কবরঁ রেঁসী ভঁচিত হোএত । কাবণ হ্নক গীত–সংসাব সোবসঁ পোবধবি মৈথিন সংস্কৃতিক বঙ্গমে সবারোঁব খছি । এত্তহ ধবি জে ভঁপমোসভ খাঁটী মৈথিন ভূমি, জীরন, সমাজ রা সংস্কৃতিসঁ নেন গেন খছি—

ভেন প্রেমক বৌদী এহি জগমে
তেঁ ধধকএ সভতবি দারানন
জ্ড়শীতনক জন–থপকীসন
রঁবিসাঙ প্রিযে কনে প্রেমক জন.......

স্বচা মৈথিন গীত থিক— খছিঞ্জন–সন পরিত্র ! একটা পাঁতী দেখন জাএ—

ভৌজীকেঁ রঁস কোরঁবে ভারঁনি

ঝদা দিযবসন্ত খারি সতারঁনি
ভৈযা রঁহানে কান ভগারঁথি
রাঁবহমাসা গারি স্বনারঁথি.........
গীতকাব ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষিক মাদে টিপ্পণী দৈত নেপান বাজকীয প্রজ্ঞা-প্রতিষ্ঠানক উঁপক্ষনপতি, নেপানী সমীক্ষাশাস্ত্রক যুগপুরুষ, প্রকান্ড রিদ্বান প্রা.ডা. রাস্বদের ত্রিপাঠী উঁচিতে নিখনৈন্হি খছি— “কবীরঁ সঁতীসে রর্ষ (তকোনীন) ক নহনহাগত উঁমেবমে খনেক রিধা খা ক্ষেত্রমে বহন হ্নক সাধনা খা তকব রিস্তৃত খাযামক খরনোকন কএনাপব হমবানোকনিক মোনমে সহজহিঁ মহান নেপানী সাহিত্-স্রষ্ঠা মোতীবাম ভট্টক স্মবণ ভঽ খরৈঁছ ।” মৈথিনীক এহি মোতীবামপব মিথিনা-মৈথিনীক ওতিহাস সর্রদা গর্র কবত সে হমব খটন ধাবণা থিক ।

'घवक्ष्मर्হাঁ' – প্রভার আ প্রতিক্রিয়া

কার্য–কাবণ–শ্রৃংখনামে স্বগ্বন্থিত ওহি গদ্য কথানককেঁ উঁপন্যাস কহন জাগত অছি, জাহিমে অপেক্ষাগ্নত অধিক রিস্তাবসঁ জীরনে–জগতমে অনুভর কএন যথার্থকেঁ কল্পনাসঁ বঙি কএ বসামেক রিচাবোত্তজক রুপমে প্রস্তুত কএন জাগছ । মৈথিনীক খ্যাতনামা আখ্যানকবি শ্রী বামভবোস কাপড়ি 'ভ্রমব'ক পহিন উঁপন্যাস 'ঘবক্ষহাঁ' নেপানক মধেস–আন্দাননসঁ উঁপজন উঁমড়ন জনআকাংক্ষা, মোহভংগ, রিগ্নতি, পীড় া, ভারনামেক উঁদ্বেনন, রিক্ষোভ আ জটিনতাকেঁ ঘোব যথার্থপবক চিত্রারনী উঁবৈহৈত সমন্বয় দর্শনসংগ মর্মস্পর্শী গতি পরৈত অছি ।

আন্দানন জখন এক গোট ঐতিহাসিক উঁচাঙ্গ ন' বহন হোগত অছি তঁ ওহিমে আন্দাননকাবীক ছদম শ্বেত ভেষ দ্বাবা সামাজিক প্রতিষ্ঠাক নকনী খোন ওঢ়রাঁমে সহন গুন্ডাক সবদাব কামেশ্বব–সন আপবাধিক মনোরৃত্তিক ব্যক্তি সচক নিবন্তব প্ররেশ হোরঁএ নগৈত ছৈক । হত্যা, অপহবণ, আতংক আ ডব–ধমকী দ্বাবা ঙ্গ রক্সা খাস কএ পহাড় ী সহ্মদাযসঁ পৈসাক উঁগাহী কবৈত অছি । অপন অধিকাব, পহিচান আ রিকসিত হ্মদ্দাক এহি রিবাট জনক্রান্তিমে শহাদত দৈত হবকসভক প্রত্যেক দিন নহাসপব নহাস খাসি বহন ছৈ আ ওহব ঙ্গ ন্বটৈবা–তন্ত্র পহাড় ীক দোকান সভমে আগি নগা বহন অছি, সামান নূটি বহন অছি, ওকবা সভক ঘবপব পাথব ফেকি–

খাতক্কঁ পসারি বহল খছি । খাতক্কঁভরল এহি রাতারবণমে পহাড় ী হোগতো ধোতীক্তধারী মাস্টর বমেশ উপাধ্যায খপনা ঘবমে ডরে দরঁকল বহৈত ছথি । মোন তঁ মাস্টরো সাহেরঁক হোগ ছৈন্হি জে – খপন মধেসী মিত্র জগমোহন খধিকারী জেকাঁ জ্ন্বসমে জা জোর–জোরসঁ নারা নগা খান্দাননকেঁ সমর্থন দিঐক, ক্ষদা সোচৈ ছথি –"জে উন্মাদ এখন হরা সভমে ছৈ ও কী হমর (পহাড় ী) খন্নহারকেঁ পচা সকত ? " খদংকসঁ ভরল মাস্টর সাহেরঁকেঁ খপন ঘর ন' খনরাঁক রিচার জগমোহনকেঁ হোগত ছন্হি, ক্ষদা মাস্টর বমেশ এহি দ্খারেঁ খপন মধেশী–খান্দাননক খগ্রখা মিত্র জগমোহনক ঘর জাএসঁ খস্বীকার কএ দৈত ছথি জে কনহ্ খান্দানন কমজোর নে পড়্ জাগক । ১ জূন ২০০৭, ২৩ জ্নাঙ ২০০৭, ২+ জ্নাঙ ২০০৭, ৩ খগস্ত ২০০৭ ক রার্তা খসহল ভেলাক রাঁদ ৩০ খগস্ত ২০০৭ক' ২৬ বূঁদাপর সহমতি হোএরঁ ক্ষদা কাযান্বযনমে খানাকানীসঁ খান্দাননক ফের উগ্র নপৈ উঠরঁ – ঐতিহাসিক দস্তারেজ খছি, জে উপন্যাসমে প্রস্তুত ভেল খছি ।
মাস্টর বমেশ উপাধ্যাযক রিপত্তিক তমিস্রা খওর সঘন তখন খওর সঘন ভ' জাগত ছৈন্হি জখন হ্নকা পতা চনৈত ছৈন্হি জে হ্নকর রেঁটী কিবণ দচ্ছিনরঁরিযা টৈনক কামেশ্বরক রেঁটা বাজীরসঁ প্রেম করৈতি খছি । তারঁত ওা ককরো নে বূঁঝল ছৈক জে গামক সম্পন্ন খা সম্ভ্রান্ত মানল জাএরঁনা ব্যক্তিত্ব কামেশ্বর গামমে ব্যাপ্ত হত্যা, খপহবণ, চন্দা–খাতংক খাদিমে সংনগ্ন গিবোহক ক্ষখ্য সূত্রধার খা খলনাযক খছি । মাস্টর মহারিপত্তিক সক্ষদ্রমে উরঁড়্রঁ কৈএ বহল ছথি কি রেঁটী কিবণক খপহবণ ভএ জাগ ছৈন্হি খা দশ নাখ টৌকা ফিরৌতীক

নেন ফোনসঁ দিন–বাতি ধমকী খাবঁএ নগৈত ছৈন্হি । মাস্ঠৈব খপন সম্পূর্ণ সম্পত্তি ৱৈচিকএ রিস্থাপিত হোএবাঁক নেন ৱাঁধ্য ছথি ওমহব কামেশ্বৱবক একনৌতা ৱৈঠা বাজীর খপন ৱাঁপক ফগ্রন্সসঁ পবিচিত ভ' জাগত খছি খা মাযক মাধ্যমসঁ কিবণক ফ্ঞিক নেন দৱাঁৱ ৱনৱৈত খছি । কামেশ্বৱবকেঁ ওঁ জানি গ্নানি হোগত ছৈক জে ওা ডঁএহ কিবণ থিক জকবা প্বতহ্ ৱনা ঘব খনৱাঁক মোন হ্নক পবিরাব ৱনা চ্কন খছি । ৱসমে চঢ়ি চ্কন মাস্ঠৈব বমেশ উঁপাধ্যাযক ওকব পবম মিত্র জগমোহন খা খপহবণকাবী কামেশ্বৱব গাম ঘ্বা খনৱামে সকন হোগত ছথি ।

খাখ্যানকাব 'ভ্রমব' খপনা সমযক প্রামাণিক খিস্সা খাবঁএবঁনা পীঢ় ী–দব–পীঢ় ীধবি স্বনএবাঁমে উঁস্েক ছথি । তেঁ প্রস্তুত উঁপন্যাস মূক গতিহাসক ফখব সহোদব ভএ গেন খছি । বাজনৈতিক ঘটনাক্রমক ধবাতনপব কল্পনাক হস্থা, মৃত্তিকা, সন্ঠী, স'ন খাদিসঁ সমকানীন মধেসক জীরন্ত মূর্তি তৈযাবক' সামাজিক সম্বন্ধ–ৱন্ধক বাগমযতাক বংগ ঢ় ডঁবন গেন খছি জে হৃদযহাবী খছি । উঁপন্যাস ঐতিহাসিক মহত্বক দাৱৈদাব এহ্ন কাবণেঁ খছি জে ওা পহিন নেপানীয মৈথিনী উঁপন্যাস থিক জে সমকানীন বাজনৈতিক ঘটনাক্রমপব খাধাবিত খছি । বমেশ উঁপাধ্যায, জগমোহন, কামেশ্বৱব, বাজীর, কিবণ, ৱন্ঠা, ন্বখিযা খাদি সভ রগীয প্রতিনিধি পাত্র খছি । সম্বাদমে স্বাভারিকতা খা সজীরতা ছৈক । ভাষাশৈনীক নাটকীযতা খা চিত্রামেকতাক কাবণ উঁপন্যাস খাদিসঁ খন্তভবি সিনেমাক বীনজেকাঁ চনৈত খছি, জে পাঠককেঁ খাবম্ভসঁ খন্তধবি ৱন্হনে বহৈত খছি । পহাড় ী–মধেসীক

একতা সংবর্ধনক উদ্দেশ্যসঁ প্রণীত এহি উপন্যাসক যাত্রা উবড়-খাবড়, পহাড়-জংগল, খুবপেড়ী যাক জটিল যাত্রা নহি, সোঝ-সপাট মৈদানক সবল-সবস যাত্রা থিক জে সবসবাকএ অপন গন্তব্যধবি পহুঁচৈত অছি । তেঁ উপন্যাসক সংবচনামে পেঁচ-পাঁচ আ ওঝবাহটি নহি অছি । মধেস-মিথিলাক আম লোকক ভাষামে প্রযুক্ত 'নন্হকা', 'লভকা', 'বঁঢ়কা', 'খুর্সী' আদি শব্দক সচেত উপযোগ উপন্যাক ভাষাকেঁ সহজ স্বাভাবিকতা আ অভিনবতা প্রদান কবৈত অছি । আখ্যানকাব শ্রী 'ভ্রমব'ক ই সদ্যঃ জাত কৃতি নেপালীয মৈথিলী উপন্যাস সাহিত্যক এক গোট উপলব্ধি থিক, তাহিমে সন্দেহ নহি ।

<u>**নব-নব ক্ষিতিজক সন্ধান কবৈত স্বজীতক জিদ্দী**</u>

সাহচর্য-সম্ভূত বসোদ্ভাবনাক চন্ত্বব, যবা কথাকাব স্বজীত ঝমাব ঝাক কথা মিথিলাঞ্চলক মহানগবোন্মুখ শহবক বিবিধতাপূর্ণ পবিবেশ আ পাত্রক স্থিতি-মনস্থিতিক সূক্ষ্ম চিত্রাঙ্কন প্রস্তুত কবৈত অছি । প্রত্যেক কথা কোনো এক গোট এহনে শহবী পাত্রক জীবনমে ঝটকা লেনে আএল কোনো নির্ণাযক মোড়ক নাটকীয রূপমে জখন প্রত্যক্ষীকবণ কববৈছ তহ পাঠক চিহুঁকি উঠৈত অছি । সামান্য ঘটনাসভক শৃঙ্খলাসঁ আবদ্ধ ভেল কথা মধ্যধবি অবৈত-অবৈত সূচ্যাগ্র ভহ জাগত অছি আ অন্তমে একটা 'কবেন্ট' জেকাঁ লগবৈত অছি । – জেনা সামান্য যাত্রামে চলৈত-চলৈত কেও আগাঁমে ফঁচে কঢ়লে, নাঙবিপব ঠাঢ় গহুমন দেখি লেনে হো ! শিল্পক ই বৈশিষ্ট্য হিনকা মৈথিলীক অন্য কথাকাবসঁ অলগহে ফবাক কএ দৈত অছি । মহানগবোন্মুখ সমাজক চিত্রাঙ্কনক

संगहि कथा एक गोट मनोवैज्ञानिक सत्यक उद्घाटन करैत अछि । कथामे एक गोट एहन स्थल अबैत अछि जखन आश्चर्यचकित भेल पाठक सोचैत अछि, ' अरे ! ई की भऽ गेलै ? ' – आ तखने कथाक अन्त भऽ जाइ छै । अमेरिकी कथाकार ओ. हेनरीक स्मरण भऽ अबैछ । अपनहुमे पड़ल पात्रक प्राण जेना अकस्मात् मुक्ति-पथ पाबि लैछ ! कथाकार स्वतीत झाक ढाक कथाकारिताक दोसर उल्लेखनीय निजत्व थिक – अनतिदीर्घता अर्थात् संक्षिप्तता । हिनक कथाक घटना-परिघटना ज्यामितीय चित्र जेकाँ एक-दोसरकेँ कटैत, ओझराएल-सोझराएल आगाँ नहि बढ़ैछ । कथाक तीर सनसनाइत जाइत अछि आ अर्जुनक लक्ष्य-भेद जेकाँ चिड़ैक आँखिटा देखैत ओकर भेदन करैत अछि आ कृशल धनुर्धरक धनुर्विद्याक सफलताक प्रमाणसँ धन्य भऽ जाइत अछि। तँए कथासभमे एकटा प्रभावान्वितिगत एकता छैक ।

हिनक सभ पात्र खाँटी मैथिल थिकाह – विभिन्न जाति, वर्गक मध्यवित्तीय मैथिल । स्वतीत झाक मध्यवित्तीय मैथिल जीवनक सफल कथाकार छथि । परम्परागत मूल्यक सिमेन्टसँ ठोस बनल संयुक्त परिवारमे देखल जाइत पारस्परिक स्नेह, विश्वास, बलिदान, सेवा, करुणा, अनुशासन आदि श्रेष्ठ मानवीय गुणमे लागल पश्चिमी सोचक लोनीसँ उत्पन्न दरार देखि कथाकारक हृदय दरकि जाइत छैन्हि आ हुनक लगभग प्रत्येक कथा खण्डित होइत एहि मूल्यकेँ पुनर्स्थापित करबाक कलात्मक चेष्टा बनि जाइत अछि ।

सहज-स्वाभाविक कथोपकथनक मुहावरनीसँ बनल-बूनल ई कथा सभक कथाकारक अपन परिवेशक भोगल यथार्थ

सभक चित्रारनीसँ सजाओल स्वन्दर 'अलरॅम' थिक । कथाकार स्वजीत क्षमारक कथाक सेहो एक गोट प्रमुख तत्व थिक सहज मानवीय राग-रँग । सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ.एम.एलव्रॉगड लिखने छथि जे कथा-साहित्यक समस्त भाराभेक तत्वमे एकटा प्रेमे एहन थिक जकर सर्वाधिक प्रयोग भेल अछि, कारण प्रेम मानव-स्वभारक सर्वव्यापक तत्व थिक ।

'पूmल ह्नाशएक२ वहल' कथाक उँच कुलशीना, सुशिक्षिता नायिका पिंकी अन्तद्-रन्द्वक भंरवमे फँसि उँरॅड्रॅ करैत क्षणिक हेतु तखन हाथ पएर भाँजि२ लगैत छथि । जखन हुनका पता लगैत छैन्हि जे जाहि पुरुषकेँ सहायक स्टेशन मास्टर कहि हुनक रिराह वचाओल गेल छल आ जकरा अपन सम्पूर्ण संचेतना समर्पण दऽ ओ इन्द्रधनुषी कल्पनाक इन्द्रजालमे ओझराएलि अपन सुधिर्बुधि हेरा चुकलि छलीह से सहायक स्टेशन मास्टर नहि एकटा साधारण पोर्टमैन अछि जे रस्तुतः अपन मालिक स्टेशन मास्टर आ सहायक स्टेशन मास्टरक घरमए रॅजारसँ मोड़ाक भोड़ । तरकारी कीनिक२ अनैत अछि तऽ ओ सातम आसमानसँ खसैत छथि । मुदा, ओ स्वयंसिद्ध नायिका अग्निकेँ साक्षी राखि लेल गेल पतिव्रत संकल्पकेँ स्मरण कए एकटा नव अरतार लैत छथि - अपन चिताक छाउँरसँ पुनः उँड़ि आसमानकेँ छुरैत मिथकीय पन्छी 'स्फिङ्स' जकाँ ! नायककेँ एम.ए.धरि पढ़रैत छथि । अन्ततः नायक सहायक स्टेशन मास्टरक पदपर प्रतिष्ठित होइत छथि ।

'नयाँ व्यापार'-क रोगग्रस्त नायक जितेन्द्र प्रसादक हँसैत-खेलैत गार्हस्थ जीवन महत्वकांक्षाक रॅरॅन्डरमे उँधियाक२ तहस-नहस भऽ गेल अछि । स्वयं

রোগশৈয্যাপর পড়ল ছথি, ওঁচাসন্ত অপন-অপন ব্যরসায-সংসারমে হেরাএল অছি আ পলী সাধনা সড়কপর চলৈত লোকক আঁখিমে গরদা মোকৈত, মিশ্রাজীক স্কূটৈরপর বৈসি, অন্তর্রাষ্ট্রীয মহিলা দিরসমে সহভাগী হোএবাঁক লেল উড়ল জাগত ছথি । কথা রর্তমান পারিরারিক জীরনক রিদ্রূপতা আ রিসঙ্গতিকেঁ রেখাঙ্কিত করৈত অছি ।

'খালী ঘর'-ক নাযক জযচন্দ্র আ নাযিকা জানকী রেনক পৱৈরী জেকাঁ জীরন পর্যন্ত সমানান্তর চলৈত ছথি, মুদা কহিযো, কখলো মীলি লে পরৈত ছথি । তকর কারণ ছৈক পতিকেঁ আদেশ-অনুরর্তিনী 'রোবোট' নারীক চাহিঐন্হি, সাস্ব-সস্বরকেঁ প্রতহ্ক পৱৈমাসি কএল বঁহিকিরলীক রেঁগরতা ছৈন্হি । মুদা পতি অপন 'স্ব'-ক সংগ জীরাক আকাঁক্ষিণী ছথি । একটা শীতযুদ্ধমে জীরন রীতি জাগত অছি, বীতি জাগত অছি ।

'লাল কিতার' পরামলোরিজ্ঞানপর আধারিত রহস্য-রোমাঞ্চসঁ ভরল কথা থিক । সেরক প্রসাদ যাদরজী ১৮ গতেকেঁ অপন কক্ষমে একসরি বৈসলি কথা নাযিকা মিত্রপলীকেঁ অহন্ত অনুরাগ পূর্রক এক গোট লাল ডাযরী ভেঁট কঽ গেল রহৈ ছথি । মিত্রপলীকেঁ জরঁর্দস্তী হাথ পকড়ল ও অপনা লগ বৈসরৈ ছথি-হাথ অকম্পিত রূপেঁ সর্দ-হেমাল কিএ লগৈ ছল সে ও বূঝি নহি পরৈত ছথি । মুদা জখন মিত্রক মৃত্যুপর শোকরিহ্বল ভেল নাযিকা পতি রাঁহরসঁ আরিকঽ সেরক প্রসাদক মৃত্যু সত্রহে গতে ভঽ গেল হোএবাঁক সূচনা দৈ ছথিন্হ তঽ ও কাঁপি উঠৈত ছথি ।

মাযক সহ পারি গিন্নী পঢ় াগ ছোড়ল নৃত্যমে প্রশিক্ষিত ভঽ আয দিল নর-নর 'পর্রিলক শো' করঽ লগলীহ ।

ৰাঁপ ঋপন ৰেঁটীকেঁ গ্লমব দিশি ঋাগ্রহ্ঠ দেখি চিন্তামগ্ন বহ ছথি, ঋদা জিদাহি পনীক ঋাগাঁ রিরশ বহ ছথি । পবিণামতঃ জখন পতা চনন জে গিন্নী ব্যসনী, ব্যভিচাবিণী ঋা গর্ভিণী ভহ গেনি ছথি তহ বাতারবণ হাএ্রাশিকহ ডঁঠৈত ঋছি । তারঁত রঁহ্ত রিনষ্ট ভহ গেন বহত ছৈক ।

'জাদূ' কথাক নাযিকা সিম্মী ঘবপব জা কম্পনীক ডঁপোদ রেঁচহবাঁনী সেন্সগর্ন ছনীহ, ঋদা হ্নক মধ্বরাণী ঋা শিষ্ঠ ব্যরহাবক জাদূ রেণ্ব ঋা হ্নকব পতিক দিমাগপব এনা নে চঢ়ন জে রেণ্বক পতি হ্নকা ঋপন কম্পনীক নীক পদক হেত্ত ঋফব দহ দেনথিন্হ ।

পবম্পবারাদী মূন্যক খন্ডহবপব ঠাঢ় হোগত রঁন্বঋাহী পাবিরাবিক সংবচনাপব কঠোব প্রহাব ঋছি কথা– ' ঋাদর্শ' পবম্পবারাদী পতি ঋা সাস্বকেঁ নাত মাবি ঘব ছোড়ি চনি তহ ঋরেঁ ছথি ঋদ্‿ধঋাধ্নিকা শিক্ষিকা নাযিকা, ঋদা পন্দ্রহ রর্ষক পশ্চাত্ জখন ঋপন কক্ষামে এক গোষ্ট ভরিষ্ণু হরকক নাম ' ঋাদর্শ' সূনি ও চিহুঁকি ডঁঠৈ ছথি জেনা ককোড়রিছা ঋনচোকেমে ডঁক মাবি দেনে হোগক । ঋাদর্শক পিতাক নাম ছৈ – ঋরুণ, জিনা ন্যাযাধীশ, ঋর্থাত্ ওকব পূর্রপতি । স্টাফ রুমমে ঋারিকহ ধম্ম দহ রেঁসি জাগত ছথি, মস্তিষ্কমে ঋন্হড়– রিহাড়ি নেনে । এহি স্থনপব ঋারি রিখন্ডনরাদী মূন্য হাবি জাগত ঋছি ঋা সংযুক্ত পবিরাবক পবম্পবারাদী মূন্য রিজয ঘোষ কবৈত ঋছি ।

'ঋর্থহীন যাত্রা'ক নাযিকা নেহা ঋপন পতি মাধরসঁ এহি দ্ঋাবে ঋসন্তুষ্ঠ বহত ছথি জে ও মহত্বকাংক্ষাক ডঁন্মাদসঁ গ্রস্ত নহি ছথি, পার্টী–ক্নরক সৌখীন নহি ছথি, ভৌতিক চমক দমকমে রিশ্বাস নহি কবৈত ছথি, নেহাক নেন '

গিপ্mষ্ট' নহি খনৈত ছথি খাদি । তনকানএ ও জানকীবামসঁ রিরাহ কবৈত ছথি, রেঁষ্টী তেজিকঽ । ফেব ও জানকী বামকেঁ ছোড়ি খন্য প্বকুষ সংগে বহএ নগৈত ছথি – পতি পনৌরত্, হ্মদা খরিরাহিত । পশিচমসঁ খাএন 'নিরিস্ঞ্ঁ ট্বূগেদব'–ক চপেষ্টিমে পড়নি নেহা খন্ততঃ খপনহি নেন নির্ণাযিক কাবণ পশ্চাতাপক খাগিমে ধূ–ধূকঽ জবঽ নগৈত ছথি । প্রস্তুত কথা সেহো পছর্বা হরাক রিবোধ খা প্ববরাক সমর্থনমে দেরান জেকাঁ ঠাঢ় খছি ।

নাবী মনোরিজ্ঞানক স্বন্দব খা যর্থাথিরাদী রিশ্লেষণ প্রস্তুত কবৈত কথা 'ব্যর্থক উঁড় ান'–ক নাযক কার্যানিযক কাজসঁ জে রিবাষ্টনগব গেনাহ তঽ দূ–চাবি দিন রিনম্ব কী ভেনৈন্হি নাযিকা ডুঁনী স্বষ্টব জেকাঁ মোনমে নহবাগত ভারক বংগ–রিবংগী নছাকেঁ ওঝবৈত–সোঝবৈত জঁ দ্ভর্গাগ্যসঁ বৈধব্যক পহাড় ট্বূষ্টি পড়ন হোগন্হি তঽ শেষ যাত্রা কমনসংগ রিতএবাঁক, ওকবা সংগ হনীমূন মনএবাঁধবিক কপ্পনামে ডূরি জাগ ছথি কি ধম্ম দঽ পতি জূমি জাগত ছথিন্হ । ও পতিকেঁ ভবি পাঁজ পজিযাকঽ হবোঁঢ়কাব ভঽ কানঽ নগৈ ছথি ।

'নিঠ্যা কি দেখাবাঁ' এক গোষ্ট ঘোব যথার্থরাদী মার্মিক কথা খছি । নীমাক পতি সোহনক দ্নূ কিডনী সড়ি গেন ছৈক জকব প্রত্যাবোপণ ডাকষ্টবক সনাহ খন্বসাব ভেন্নাবমে জা কবএবাঁক বঁদনা ও পতিকেঁ জন্দীসঁ জন্দী গাম এহি দ্খাবে নঽ জাগত ছথি জে সম্পতি সম্বন্ধী কাগজাত সভপব হ্নকব হস্তাক্ষব নেন জা সকএ । পতিকেঁ মববাঁক চিন্তা নহি, সম্পতি ড্ববাঁক চিন্তা বেঁসী ঘেবনে ছৈন্হি । হ্মদা ভাগ্যক ব্যংগ্য ওা থিক জে খন্তিম সাঁসধবি পতি হ্নকা পতিপবাযণা মানৈত ছথি ।

'কেহেন সজায' এক গোট্ঠ ঠ্গবি ৰানিকা চমেলীক কথা খছি । জকবা কোনো সন্তানহীন সম্ভ্রান্ত দম্পতী গোদ নেনে ছল, হ্মদা জখন ওহি দম্পতীকেঁ খপন ঔবসঁ সন্তান জনমি জাগত ছৈক, চমেলী ওহি ঘবমে নহি, 'মহিলা সদন'মে পঠা দেল জাগত ছথি । ও তঽ ধন্য কহী সংস্থাক নব খধ্যক্ষা খা পূর্ব প্রধানাধ্যাপিকা কামিনী মৈডমকেঁ জনিক করুণাপূর্ণ প্রযাসসঁ ও বিতেশীক সংগ পবিণয সূত্রমে ৰন্হা জীরনক ভসিখাগত নাওক নেন কিনাব পাবি নৈত ছথি ।

মেনকাক কোমন নাবী হৃদযকেঁ হঁথোড়ৈথি 'মেনকা' জীরন ঝঁঝাবাতক খাঘাত–প্রতিঘাতসঁ নাবী হৃদয সহ্মদ্রমে উঁঠৈত উঁত্তাল তবঙ্গক রিক্ষোভকাবী কথা থিক । মেনকা পবিত্যক্তা থিকীহ । হ্নক পতি চন্দ্রভূষণ স্বন্দবী যরতী নীনাক মোহপাশিমে ওঝবা হ্নকব পবিত্যাগকঽ দেনে ছলথিন । নাবী–খহংপব চোট্ঠ নগৈত খছি । মেনকা প্রাধ্যাপন সেরামে সংলগ্ন ছথি, জতঽ হিনক সম্পর্ক রিরাহিত সহকর্মী বাজীর সবসঁ হোগত ছৈন্হি । বাজীর সবক র্যক্তিত্বক চ্ম্বকীয প্রভারমে মেনকাক র্যক্তিত্ব নৌহকণ জেকাঁ খাঙ্কৃষ্ঠ হোগত খছি, হ্মদা জখন ও সোচি ছথি জে বাজীরপত্নী খাবতীক হেত্ত হ্নক প্রণয– নীনা নীনা–কর্মসঁ কম হিংসক কিংরা ঘৃণিত নহি হোএত তঽ ও খপনামে সিমট্টিকঽ কঠোব নৌহপিল্ড ৰনি জাগত ছথি, জে চ্ম্বককেঁ ঘীচি সকৈত খছি, হ্মদা চ্ম্বকসঁ ঘিচা নহি সকৈত খছি ।

কথাকাব স্বজীত হ্মমাব ঝাক কথাক রিষয– চযন, ৰনারট্ঠ খা ৰ্নারট্ঠ, ভাষা শৈলী খা কলামেক উঁচতামে উঁত্তবোত্তব প্রৌঢ়তা খরৈত জাএত খা ও মৈথিলী কথাক হেত্ত এহিনা রিষয খা শিল্পক নব–নব ক্ষিতিজক সন্ধান

कबैत नव प्रतिमानक स्थापनामे सफल होएताह, हमर विश्वास अछि ।



नीलिमा

मखानक खीर

सामग्री– दूध–१ १/२ किलो, चिन्नी–१०० ग्राम, मखान फुलैल– १०० ग्राम, लेलाएची पाउडर– स्वाद अनुसार, काजू– १० टा, किशमिश–२०टा
बनेबाक विधि– मखानक पाउडर (कनी दरदरा)क पहिने १/२ किलो ठंढ़ा दूधमे घोरि लिअ, शेष दूध कें खौला लिअ। आब गर्म दूधमे ओ घोड़ल मखानक मिश्रण मिला दियौक आर करौछसँ लगातार चलबैत रहियौक जाहिसँ मिश्रण पेनीमे बैसय नहि। जखन खौलय लागय तँ ओहिमे चिन्नी, काजू, किशमिश सभ दऽ कय अन्तिममे लेलाएची पाउडर खसाऽ कऽ मिलाऽ कऽ उतारि लिअ। मखानक खीर तैयार अछि।
नोट:– मखानकें स्वखलो भुजि कऽ फुटि सकैत छी वा घीमे सेहो भूजि कए कूटि कऽ पाउडर बना सकैत छी।

मेथीक परोठा

सामग्री:–आटा–२३० ग्राम, बेसन–१०० ग्राम, विफाएल–२३० ग्राम, मेंथी साग–३०० ग्राम, हरिअर मेरचाए–४टा, आदी– १ इन्चक टुकड़ा, धनी–पात आऽ लोन–

खंदाजसँ।
रिधि– मेंथीकेँ साफ कऽ कए धोऽ निअ। मेंहीसँ काटि कए नोहियामे कनी तेन दऽ कय मेंथी पात खसा दियौक। कनी भाप नागि जाय तँ ओहिमे काटेन हवियव मेवचाग, आदी घसन, धनी–पात काटि कय आऽ नून मिना कय एहि मिश्रणकेँ रैंसन फेंटेन आँटामे मिना दियौक। आँटाकेँ कनेक कड़ा कऽ सानि निअ। पवाठा रैंन कए तरापव कम आँचपव विफागन नगा कए सेकि निअ। खास्ता मेथीक पवाठा तैयाव भऽ गेन। नोटः– अहाँ काँच मेंथी पात कऽ मेंही काटि कऽ, पियाज् सभ मिना कऽ सेहो आँटा सानि सकैत छी।

<u>ह्मगनआ कोरी</u>
सामग्रीः–कोरीक टुकड़ा–१/२ किनो, पियाज् महीन काटेन–१कप टमाटव, कद्दूकस कएन–१ कप, हवियव मेवचाग–आदीक पेस्ट–१ चम्मच, नून स्वादानुसाव, नान मिवचागक पाउडव–१/२ चम्मच, धनियाँ पाउडव–१ चम्मच, हवदि– १ चम्मच, गर्म मसन्ना–१/२ चम्मच, अमचूव–१/२ चम्मच, जीव–१/२ चम्मच, मनाआ–१/२ चम्मच, टेमेटे सॅास– १ चम्मच, विफागन तेन–२ चम्मच।
रिधिः– कोरीक टुकड़ा धोऽ कऽ चाननिमे आधा घंटाक नेन बाखि दियौक, जाहिसँ एकव पानि निकनि जाय। फेव नोहियामे तेन गर्म कऽ कोरीकेँ हन्का गुनारी ह्राग कऽ निअ आव एकटा पेपवपव निकानि निअ, जाहिसँ तेन निकनि जाय। एक पैनमे तेन ढाक। ओहिमे जीव दऽ कए पियाज आऽ आदीक पेस्ट दऽ कय भुजि दियौक। आब सभ टा मसन्ना दऽ कय कनी देवमे आव भुजियौक। मनाएकेँ मैश कऽ दऽ

দিযৌক, স্াঁসকেঁ সেহো দ২ দিযৌক আব নীকসঁ মিনা দিযৌক। আরঁ এহিমে কোরীক টুকড় া দ২ কয চম্মচসঁ মিনা দিযৌক। ফেব এক বাঁউনমে ওকবা নিকানি ক২ ঊপবসঁ গবম মসন্না আব ধনিযাঁ (ধনী) পাত সজা দিযৌক আব পড়সি নিখ।

কেসব প্বনার

সামগ্রী:– ২ কপ বাঁসমতী চারন, ১ কপ মটবক দানা, ১ টুকড় া দানচীনী, ১ বঁড় ী ওনাযচী, ৪ টা নৌংগ, ৪ কপ পানি, ২ টেব্ঁন স্পূন ঘী, ১/২ কেসব, ২ টীস্পূন গবম পানি, একটা পিযাজ্ নম্বা–নম্বা কাটৈন, ১ টী স্পূন জীব, ২ টী স্পূন নূন।

বিধি:–কেসবক গবম পানিমে ফ্নওা নেন দ২ দিযৌক। চাউঁবকেঁ নীকসঁ ধোহ কএ ফ্নওা নেন দ২ দিযৌক। চাউঁবকেঁ নীকসঁ ধোহ ক২ ফ্নয নেন দ২ দিযৌক। ফকবমে ঘী গবম ক২ কএ ওহিমে প্যাজ দ২ কএ ব্রাঁউন হোয ধবি ফ্রাওা ক২ কএ প্লেটমে নিকানি নিখ। আরঁ এহি গবম ঘীমে দানচীনী, জীব, ওনাওচী, নৌংগ আব নূন দ২ দিযৌক। মটবকেঁ দ২ কএ কনী চনাউঁ আব চাউঁবকেঁ পানিসঁ নিকানি খনীমে দ২ দিযৌক। ঊপবসঁ পিযাজ্ আ কেসব সেহো দ২ দিযৌক। ৪ কপ পানি দ২ কয এক সীটী আরঁএ তক পকাউঁ। গবম–গবম কেসব প্বনার, বাযতা বা কোনো বসগব তবকাবী সংগ খাউঁ।

মূবক পবোঠা

সামগ্রী:– আঁটা–২৩০ গ্রাম, বেঁসন–১০০ গ্রাম, মূব–২৩০

ग्राम, बिफ्फाउन तेल-१०० ग्राम, जमाउन-मंगरैल-धंदाजसँ। धादी-१ गन्च ठ्ेकड़ ा, धनी-पात-दू डाँटे, हरियर मेरचाउ ४ टा, नून- धंदाजसँ।

विधि:- मूरकेँ धो३ क३ कद्दूकस क३ निथ। लोहियामे कनी तेल द३ दियौक। गर्म भेलापर ओहिमे मूर आ सभ मसल्ला खसा दियौक आ ढ़क्कनसँ झाँपि दियौक। कनी भाप धारि जाएत, ओकरा निकालि क३ ठंढ़ ा हेबय दियौक। आब एहि मिश्रणमे नून मिला कय रैसल मिनल आँटामे मिला क३ सानि निथ। गोल-गोल पातर-पातर बेल क३ तावापर दूनू दिस बिफ्फाउन लगा कए सेकि निथ। मूली परवाठा तैयार भ३ गेल।

मूरक परोठा बनेबाक एकटा आर विधि अछि, अहाँ मूलीक कद्दूकस क३ कए ओहिमे सभ मसल्ला मिला निथ। आब ओकड़ ा गाड़ा कए एक दिस बाथि निथ। आब आँटाक गोलीमे थोड़े मूलीक मिश्रण ल३ क३ नून मिला क३ भरि निथ आ बेल क३ तावापर बिफ्फाउन द३ क३ सेकि निथ।

नोट:-एहि तरहेँ काँच अनरनेबा आ बन्हा कोबीक परोठा सेहो बना सकैत छी।

<u>ড়রি ঝা/ রুদ্ধদ সিংহ</u>

লেখিকা ড়রি ঝা পিড়লা তীস বর্ষ স মিথিলা চিত্রকলা কএ অর্থ পব কাজ কএ বহল ড়থি। সংপ্রতি ও ঈ্মহ ড়রি মিথিলা স্কূল ঔঁফ আর্টঁ, দবভংগা ক লিদেশক ড়থি আ একবা পবিভাষিত কবরৌ মে লাগল ড়থি। লেখিকা রুদ্ধদ সিংহ মৌথিলী ঞ-পেপব সমাদক সংপাদক ড়থি।

<u>মিথিলা চিত্রকলা : অর্থক অধিকতা আ সার্থকতা</u>

1960 ক দশক মে মিথিলা চিত্রকলা কএ দীরাব স কাগজ পব উতাববৌক প্রযাস শ্বরু ভেল ড়ল আ তহিএ স শ্বরু ভ গেল এহি চিত্র মে নর-নর প্রযোগ। তহিযে স শ্বরু ভেল একব অর্থক নর সংসাব জে মিথিলাক সোচ আ সংস্কৃতি স পূবা ভিন্ন অড়ি। নর প্রযোগ আ প্ববান অর্থক এহল মিশ্রণ ভেল জে কলাক পূবা স্বরূপ আ অর্থ ক ঔচিত্য পব সরান উঠা দেলক।

সরঁ কলাঙ্গতিক একটা অর্থ হোণত ছৈক। জেকব কলাঙ্গতি স ঘনিষ্ঠi সংরঁধ হোণত অড়ি। কলাঙ্গতি আ ওকব অর্থ ও ঙ্গতিক সার্থকতা কএ সিদ্ধ কবৈত অড়ি।

মিথিনা চিত্রকনাক সংরঁধ মে জখন রিচাব কবৈত ছী ত কঠটা গপ সামনে থরৈত থছি, হ্মদা একটা গপ স্পস্ট হোগত থছি জে মিথিনা খা ভাবতক রিদ্বান এহি কনাক প্রতি খাগ ধবি থপন নজবিযা নহি রঁনা সকনথি থছি। পিছনা পাঁচ দশক মে রিদেশী রিদ্বান জে এহি কনাক প্রতি নজবিযা স্থাপিত কেনথি থছি, দেশক রিদ্বান ওকবে খাধাব মানি কএ খাগূ রঁঢৈত বহনথি থছি। চ পূছ ত দেশী রিদ্বান কহিযো থপন নজবিযা প্রস্তুত কববাঁক প্রযাস তক নহি কেনথি। মিথিনা চিত্রকনাক এহি গুপ্ত খা জটিন রাস্তরিকতা কএ ধ্ঁধ স নিকানবাঁক পহিন প্রযাস সেহো থমবীকা মে কৈন গেন। 1984 মে থমবীকা স প্রকাশিত মানর শাস্ত্র পব খাধাবিত পত্রিকা মে পহিন রেঁব এহি গপ কএ বোচক খা গংভীবতাপূর্বক উঁঠাউঁন গেন জে থর্থক থধিকতা স কেনা এহি কনাক সার্থকতা খমে ভ বহন থছি।

উঁত্তব রিহাব খা নেপানক তবাঙ মে পসবন মিথিনা ক মহিনা দ্বাবা থপন ঘবক দীরাব খা খাঁগনা মে রঁনাউঁন জাগরানা এহি চিত্রক সংরঁধ মে এখন ধবি কঙ রেঁব নিখন জা চ্কন থছি খা কঙ ঠাম কহন জা চ্কন থছি। এতরেঁ নহি কঙ টা থঁতববাঠ্ঠ্ï ্বীয মংচ পব একব প্রস্তুতি সেহো ভ চ্কন থছি। হ্মদা একব সংরঁধ মে নিখন সাক্ষ্য রেঁসী প্ববান নহি থছি। 1949 মে পহিন রেঁব এহি প্ববাতন কনাক সংরঁধ মে কাগজ পব কিছ নিখন গেন। ডর্ন্যূ জী খাবচব থপন কিতাবঁ মে এহি চিত্রকনা কএ থদ্ভুত খা খাশ্্চযজনক কহনে ছথি। হ্মদা 1962 মে প্রকাশিত নক্ষ্মীনাাি ঝাক প্বস্তক মিথিনা কী সাংস্কৃতিক নোকচিত্রকনা সহী মাযনে মে এহি চিত্রকনা পব পহিন খাধিকাবিক দস্তারেজ

अछि। देसी नजरियाक संग–संग एकर भाषा मे सेहो हिंदी आ मैथिलीक मिश्रण अछि, जाहि स अर्थक भार अंगरेजी स रँसी साफ रूपमे मे अरैत अछि। देशी नजरियाराना एहन पुस्तक कए पाठक तक नहि पहुंचए एहि कलाक अर्थक अधिकताक मूल कारण कहल जा सकैत अछि।

मिथिला चित्रकलाक अर्थक संबंध मे समय–समय पुस्तक क प्रकाशन होएत रहल अछि। 1952 मे ब्राउंन आ लेल्यूगस, 1966 मे माथुर, 1977 मे गर्स रिको (रैक्यूराद) आ 1990 मे जयकर एहि कलाक अर्थक संबंध मे रहुत किछु लिखलथि। अविश्वसनीय रूपा सत्य अछि जे एहि किताबें सबे मे जे किछु लिखल गेल अछि ओ मिथिला मे प्रचलित अर्थक स सर्वथा भिन्न अछि। एहि संबंध मे अमरीकाक टीको विश्वविद्यालयक कैरोलिन ब्राउंन लिखैत छथि जे मिथिला चित्रकलाक अर्थ कए हरदम गलत आ भ्रमक तरीका स विश्वक समक्ष राखल गेल अछि। एकर मुख्य कारण ई रहल जे एहि पर देशी खास कए मिथिलाक विद्वान गंभीर काज नहि केलथि, जे काज भेल ओ विदेशी विद्वानक शोध स भेल। मिथिलाक अंगना मे बनाउल गेल एहि चित्रक संबंध मे पुख्ता जानकारी लेबे कोनो विदेशी लेल हरदम एकटा चुनौती रहल अछि। लोककला कए बुझलाक बाद ओकर सही अर्थ बुझबे आ फेर ओकरा सही रूप मे परिभाषित करि अभिव्यक्त करबे कोनो विदेशी शोधकर्ता लेल बाड़ क पहाड़ सन काज अछि। 1986 मे एरोड, रैल, मारकस आ फिसर, 1988 मे क्लिनराड आ 1992 मे वून्फ क आलेख स बुझबा मे अरैत अछि जे ओ किछु एहने सचाइ स सामना केने हेताह।

কৈবোনিন ব্রাঁউন এহি সৰঁধ মে সাফ তৌব পব নিখৈত ছথি- হম পশ্চিম কএ নোক এহি চিত্রকনা কএ পবিভাষিত নহি কবি সকৈত ছী, তাহি কাবণ হম সৰ এহি খদ্ভুত রিষয কএ তোড়ি-মবোড়ি কএ পেশ কবৈত বহনহুঁ খছি। হানাঁকি এহি মে কোনো সংদেহ নহি খছি জে একটা সমাজ মে ভিন্ন-ভিন্ন নোকক খগন-খনগ নজবিযা ভ সকৈত খছি, ও একটা চিত্রক ভিন্ন-ভিন্ন খর্থ কহি সকৈত ছথি, হ্মদা রিভিন্ন খর্থক ৰীচ মে একটা সমানতা হোগত খছি, জে খর্থ কএ কতহ্ নে কতহ্ জোড়ৈত খছি। উঁদহাবণ নেন মিথিনা মে প্বকুখ কর্মকাংড, ন্যাযশাস্ত্র সন শাস্ত্রীয রিধা মে নীক পকড় বহৈত ছথি খা ওহি স জ্ডন পাৰৈন-তিহাব ক র্যাখ্যা নীক জেকা কবি নৈত ছথি, ওতহি মৌগী ঘবেনূ পাৰৈন-তিহাব পব নীক পকড়ি বখৈত ছথি খা ওকব খপন খনুসাবে র্যাখ্যা সেহো কবৈত ছথি। এহি নেন কুনদেরীক পূজা যা গৌবী পূজা মে প্বকুখক যোগদান কম দেখবাঁ মে খবৈত খছি।

একব পাছ কাবণ ঔ খছি জে খহঁত গূঢ় সংসাব খা খহধিক রিকসিত সমাজক সবটা গপক জ্ঞান বাখবঁ খসংভর খছি। ওনা মিথিনা সমাজ কএ খহঁত রিকসিত সমাজ বহ্ত কম রিদ্বান মাননে ছথি। জেনা কি 1991 মে দবিদা খা 1994 মে রান সাফ তৌব পব নিখনে ছথি জে এহি চিত্রকনাক সহী খর্থ মিথিনা মে খাবঁ গিনন-চুনন নোক বতা সকৈত খছি। রেন ক কহবঁ খছি জে মিথিনা মে জে চিত্রক খর্থ কহি সকৈত ছথি ও চুপ বহয চাহৈত ছথি, জখন কি খবথ নহি জননিহাব নোক কএ চুপ বাখবঁ একটা কঠিন কাজ খছি। ওনা এহি সংবঁধ মে ব্রাঁউনক মত কিছু খনগ খছি। ব্রাঁউন

कहैत छथि, 'ग सच अछि जे आम मैथिल एहि कलाक संबंध में कम जानकारी रखैत छथि, मुदा बहुत विद्वान लेल ग कोनो महत्व नहि रखैत अछि जे मैथिल एहि संबंध में कतेक बुझैत अछि आ की कहैत अछि। अधिकतर विद्वान मैथिलक भावना कए अपन शोध मे तोड़ि-मरोड़ि कए प्रस्तुत करबा स पाछ नहि हटैला अछि। दुर्भाग्य अछि जे एखन तक कोनो देशी विद्वान एहि तथ्य कए रेखांकित नहि केलाह अछि, मुदा ब्राउँन अपन मिथिला प्रवासक दौरान किछु एहने महसूस केलीह।

असल मे सबँस पैघ गप ग अछि जे पाश्चात्य संस्कृति, व्यवहार आ शिक्षा हमरा लोकनि क सोच कए दबा देलक अछि या ग कहू जे सीमित करि देलक अछि। एकर अलावा हमरा लोकनि मे अनुवाद करबाक क्षमता सेहो कम भ चुकल अछि। आब सवाल उठैत अछि जे एतेक जटिल आ गुप्त तथ्यक कोनो एक व्यक्ति द्वारा कोन अनुवाद कए सकैछ मानल जा सकैत अछि? एहि ठाम ग कहब जरूरी अछि जे एकटा चित्रक कएटा अर्थ भ सकैत अछि, मुदा ओकर सूत्र दूटा नहि भ सकैत अछि। रैह एकटा सूत्र ओकरा आन स भिन्न करैत अछि। एहि सूत्रक चारूकात ओकर अर्थ घुमैत रहैत छैक। एहन सूत्र मिथिला मे एखनो किछु महिला कए बुझल छैक, मुदा ओ निश्चित रूप स व्यावसायिक नहि छथि। ताहि लेल हुनका स ओ सूत्र बुझब कोनो देशी विद्वान लेल कठिन काज अछि, एहन मे विदेशी विद्वानक गप करब बेकार अछि। दरअसल मिथिलाक मौगी एहि सूत्र कए अपन शरीरआ आमो मे बसा रखने छथि आ नव पीढ़ ी कए थोड़े-थोड़े करि कए

ব্ঝাওঁন জাগত বহন অছি। এহন মে অল্প জ্ঞানী স জানকাবী নেনাক ৰাঁদ রিদেশী রিদ্বান মিথিনাক সূত্র জনিনিহাব মহিনা কএ নজবঅঁদাজ কবি দৈত ছথি। মিথিনা চিত্রকনা ক সৰঁস প্রচনিত চিত্র কোহৰঁবক প্ৱবৈন কএ ন কএ সৰঁস ৰেঁসী ভ্রমক স্থিতি অছি। অধিকতব রিদ্বান একবা কোহৰঁব নাম স পবিভাষিত কেনন্হি অছি, জখন কি প্ৱবৈন কোহৰঁবক অনেক চিত্রগ্বছক একটা সদস্য মাত্র অছি। আগ জে প্ৱবৈনক স্বৰূপ দেখৰাঁ মে আবিঁ বহন অছি, ও জানকাব মহিনা মে ভ্রম পৈদা কবি বহন অছি। হানাঁকি এতৰাঁ অবশ্য অছি জে একটা গোনাকাব আহ্নতিক চাকআত ছহ টা মৌগিক ফ্নহ ৰঁনাওঁন গেন অছি, জেকব ৰীচ মে সাতম ফ্নহ সেহো অছি জে ছহ টা ফ্নহ স কনি পৈঘ আকাবক অছি। এহি চিত্র কএ বেখাচিত্রক ৰূপ মে ৰঁনাওঁন গেন অছি। প্ৱবৈনক সূত্র পব ৰঁনাওঁন গেন এহি বেখাচিত্র স ভ্রূণ হেৰাঁক কওটা কাবণ অছি। মিথিনা মে প্ৱবৈন বেখাচিত্র নহি, ৰঁল্কি ভিত্তিচিত্র অছি আ পাঁচটা বংগ স ৰঁনাওঁন জাগত অছি। হানাঁকি আগ অধিকতব কাগজ পব এহন চিত্র ৰঁনাওঁন জা বহন অছি, নেকিন এহি চিত্রক রিশেষ মে সাফ তৌব পব কহন গেন অছি জে একবা দীৱাব পব ৰঁনাওঁন জাগত অছি। মিথিনা মে বেখাচিত্র কএ অবিপন কহন জাগত ছৈক আ ও জমীন পব ৰঁনাওঁন জাগত অছি। ওনাও মিথিনা মে প্ৱবৈনক দূ টা সূত্র অছি। একটা ব্রাহ্মণ আ দোসব কর্ণকাযস্ত নোকনিক প্ৱবৈন। দূনূ মে সূত্রক অঁতব অছি। ফ্নদা এহি চিত্র মে একব প্রাৰূপক কোনো চর্চ নহি অছি। সাতটা মৌগিক ফ্নহক সংগ সাঁপ, কছআ, মাছ আদিক চিত্রক ঔচিত্য জখন মিথিনাক নোক নেন ব্ঝৰ কঠিন অছি তখন রিদেশী কী ব্ঝত ?

রিদেশী রিদ্বান নেন গ মাত্র একটা ভীড়রানা চিত্ব খছি, জাহি মে সংদেশীক কোনো স্থান নহি খছি। রঁহ্ত বাস রিদেশী রিদ্বান ত একবা জাদূ-টৈনা খা ভূত-প্রেত নেন রঁনাউঁন গেন চিত্র কহনথি খছি। ক্ষদা ব্রাঁউনক কহরঁ খছি জে গ প্ররৈনক নর রূপ খছি খা কাযস্ত প্রারূপ স মিনৈত-জ্নৈত খছি।

মিথিনা মে প্ররৈন কমনক নত্তী কএ কহন জাগত খছি। ব্রাঁহ্মাণ প্রারূপ মে নৌ খা কাযস্থ প্রারূপ মে সাতটা কমনক পাত দর্শাউঁন জাগত খছি। চূঁকি কমনক নত্তী পাগন মে হোগত খছি, তাহি নেন একব সংগ-সংগ পাগন মে বহরানা রস্তু খা জীরক চিত্র রঁনাউঁন জাগত খছি। নক্ষ্মীনাথ ঝা এহি সংরঁধ মে নিখৈত ছথি জে প্ররৈন ক্ষখ্য রূপ স রংশ বৃদ্ধিক নেন নর দংপতি স সাংকেতিক খন্রবোধ খছি। জেনা কমনক একটা নত্তী পোখবি কএ কহিযো কমন রিহীন নহি হ্এ দৈত খছি, তহিনা নর দংপতি কএ ঘব কএ কহিযো রংশ রিহীন নহি হ্এ দেরাঁক কর্তব্য নিভেরাঁক চাহী। এতরাঁ ত জরূব খছি জে 20রী শতাব্দী মে পশ্চিম মে পনন-রঁঠ়ন কোনো ব্যক্তি এহি স্ত্রীত্ব কএ(স্ত্রী কএ হৃদয মে রাস কবৈযরানা ভারনা) ঘেবা নহি রূঝি পাউঁত। খাগ জখন রিঁযাহ একটা খনগ খর্থ ন চ্কন খছি, এহন মে প্ররৈনক ঔচিত্য জরূব প্রাসংগিক ভ গেন খছি।

1960 ক দশীক মে এহি চিত্র কএ কাগজ পব উঁতাবরাঁক প্রযাস শ্রূ ভেন ছন খা তহিএ স শ্রূ ভেন এহি চিত্র মে নর-নর প্রযোগ। তহিযে স শ্রূ ভেন একব খর্থিক নর সংসাব জে মিথিনাক সোচ খা সংস্কৃতি স পূবা ভিন্ন খছি। নর প্রযোগ খা প্ররান খর্থিক এহন মিশ্রণ ভেন জে কনাক পূবা স্বরূপ খা খর্থ ক ঔচিত্য পব সরান

ঙঠা দেনক। সচ কহন জাএ ত মিথিনাক মহিনাক এহি রিনক্ষণ প্রতিভা কএ পবিভাষিত কববা মে এখন ধবি কোনো রিদ্বান সফনতা নহি পারি সকনথি ঋছি। সমস্ত মিথিনা মে বনাওঁন জাগরানা এহি চিত্র কএ কিছু চাবি–পাঁচ টা গাম মে সমেট দেবাক ঋনারা গ রিদ্বান নোকনি এহি চিত্র কএ কএটা ঋনপঢ়–গরাঁব মৌকী দ্বাবা বনাওঁন গেন চিত্র স বেঁসী কিছু নহি সারিত কএ সকনথি ঋছি। মিথিনা মে এখনো কণ্ডা টা মহিনা ঋপন হাটেন প্ববান কঁপী নিকানি দেখবৈত ছথি, জাহি মে কণ্ডাটা রিদেশী রিদ্বানক নিখন রাক্য ঋছি। দ্খ ঋা তামস তখন হোগত ঋছি জখন কঁপী পব নিখন রাক্য পঢ়ৈত ছী, জাহি মে নিখন বহৈত ছৈক জে গ চিত্র একটা পিছড়ন সমাজক গরাঁব, ঋনপঢ় ঋা মূর্খ মহিনা দ্বাবা বনাওঁন গেন ঋছি। রিদেশী রিদ্বান মে গ সোচ ঋচানক নহি ঋারি গেন ঋছি। হ্নকা কণ্ডা প্রকাব স গ বতেবাক বেঁব–বেঁব প্রযাস ভেন ঋছি। দ্নিযা মে গ ধাবণ কএ স্থাপিত কববাক শ্রেয গর্ব্স রিকো কএ ঋছি। রিকো স বেঁসী শাযদ কোনো রিদ্বান এহি চিত্রকনা পব কাজ নহি কেনথি ঋছি, হ্মদা ও জতেক এহি চিত্রক কবীব ঋবৈক কোশিশি কেনাহ, একব ঋর্থ স ও ওতেক দূব হোগত গেনাহ। রিকো বায ঔরেন্স ক সংগ একটা হিন্ম সেহো বনৌনথি, জেকব নাম 'হ্মন্নীó ঋছি। ও একটা হ্রংচ হিন্ম সেহো বনওঁনথি, হ্মদা চিত্রক ঋর্থ ব্ুঝবা ঋা ব্ুঝেবা মে সব বেঁব ঋসফন ভেনথি। রিকো তখনো হাব নহি মাননথি, ও 1994 মে একটা রিডিযো হিন্ম 'মিথিনা পেংটবস...ó বনৌনথি, হ্মদা নর কিছু নহি কহি পৌওঁনথি। ঋাগ স্থিতি এহন ভ চ্কন ঋছি জে সমাজক সব নোক গ ব্ুঝবা মে নাগন ঋছি জে ঋাখিব

গ পবংপবাক কৌন বস্তু বাঁবে মে থিক।
এহি চিত্রকলাক সংবঁধ মে সবঁসে নোকপ্রিয স্রাত রিকোক 1977 মে ছপল কিতাবঁ' দ রীমেংস পেংটৈব আঁফ মিথিলা...ó অছি। জখন কিযো এহি প্বস্তকক এক-এক টা চিত্র কএ গৌব স দেখৈত অছি আ ওকব ৰূপবেখা কএ পঠ়ৈত অছি ত ওকব সামনা একটা আশ্চজনক, অদ্ভুত আওব নগভগ অসংভব সন প্রতীত হোগবানা সংসাব স হোগত অছি।
রিকো নিখৈত ছথি জে মিথিলা সমাজ মে ক্ষখ্যপাত্র মহিলা ছথি আ এহি ঠাম প্বৰুষক ভবমাব অছি। এহি ঠাম যবতী হমউঁম্র যবক স রিরাহ কববাঁ নেল তবহ-তবহ স প্রযাস কবৈত ছথি। (1977, পৃষ্ঠ- 17)।
রিকো এহি গপ কএ বাঁজাৰু আওব বোচক বঁনবৈঁত আগূ নিখনে অছি জে মিথিলা মে একটা যবতী অপনা নেল স্বযোগ্য যবক কএ চুনৈত অছি আ রিরাহক প্রস্তাব স্বৰূপ ওকব সামনে কোহবঁব বখৈত অছি ।(1977, পৃষ্ঠ- 17)। ও নোক জে মিথিলা কএ নীক জেকা নহি চিন্হান অছি, হুনকো গ রাক্য পঠ়নাক বাঁদ আশ্চয হেতেন জে রিকো কেনা মিথিলা সমাজ কএ অতেক চবিত্রহীন বঁনা দেনথি। গ অদ্ভুত ক্ষদা সহ সন আনেখ কএ পঠ়নাক বাঁদ এহন প্রতীত হোগত অছি জে রিকো কএ এহন অনুরাদক ভেটৈনন্হি জেকবা মিথিলা সমাজ, সংস্কৃতি আ সভ্যতা স কোনো রাস্তা নহি বহৈল, সংগহি হুনকা মিথিলাক বিতি-বিরাজ আ নোকাচাব তক কএ জ্ঞান নহি বহৈল। সচ পূছ ত অনুরাদকলেল রিকো মাত্র টৈকা দেনিহাব রিদেশী ছলাহ। ওনা দেখল জাএ ত রিকো ক গ কিতাবঁ এহি রিষয পব নিখল গেল পহিল অথরা আখিবী কিতাবঁ নহি থিক। গ প্বস্তক

এহি নেন মহত্ত্বপূর্ণ ভ গেন অছি, কিযা কি মিথিনা চিত্রকনা পব শোধ কেনিহাব অধিকতব রিদ্বান এহি প্বস্তক স প্রভারিত ছথি। এতবাঁ ধবি কি ভাবতীয রিদ্বান উঁপেন্দ্র ঠাক্বব তক অপন কিতাবঁ মে রিকো ক নজবিযা কএ নজবঅঁদাজ নহি কেনথি অছি। রিকো ক এহি কিতাবঁ ক মহত্ত্ব পব ব্রাঁউঁনক কহবঁ অছি জে পশ্চিমক রিদ্বান জখন কোনো রিষয পব কাজ শ্বব্ধ কবৈত ছথি তখন ওহি রিষয পব নিখন গেন পূর্বক কিতাবঁ স কাফী প্রভারিত হোগত ছথি। মিথিনা চিত্রকনাক সংগ সেহো কিছু এহনে ভেন। অধিকতব রিদ্বান রিকোক ব্ধপ-বেখা স প্রেবণা নেনথি, কিছু ত হুনকব নকন তক কৈনথি। তাহি নেন গ অন্য প্বস্তক বঁসী মহত্ত্বপূর্ণ ভ জাগত অছি। দোসব গ জে রিকো বঁহুত দিন ধবি এহি রিষয পব কাজ কেনথি অছি আ কঙা প্রকাব স একবা দুনিযাক সমক্ষ অননথি অছি, এহন মে রিদেশী রিদ্বান নেন হুনকা নজবঅঁদাজ কববঁ কঠিন বহন অছি। এহি প্রকাবে রিকো ভ্রমক আওব সর্বথা গনত তবীকা স অনুবাদ কবি মূঠ কএ একটা সহ স বঁসী সহ ব্ধপ মে স্থাপিত কেনথি অছি।

ওনা অধিকতব রিদেশী রিদ্বানক কহবঁ অছি জে মিথিনা সমাজ রিশ্বক সবঁস চবিত্রবান সমাজ মে স এক অছি। একব সংস্কৃতিক সবঁধ মে প্রাখ্যাত চিকিসেক ড◌ॉ কৈমেন ক কহবঁ অছি জে আগ 'জীনÓ(অণু)ক সবঁধ মে দুনিযা ভবি মে শোধ ভ বহন অছি, জখনকি মিথিনা মে পঁজী ব্যরস্থা ওকবে একটা ব্ধপ অছি। মিথিনাক ব্রাঁহ্মণ আ কর্ণকাযস্থ নগ এখনো বীস-বীস পীঠিক্ত জানকাবী উঁপনর্ব্ধ অছি।

রিকো কএ শাযদ গ নহি বঁতাউঁন গেন কি মিথিনা মে

হরতিক রিরাহ পংজীকাবক বায স তয কৈন জাগত খছি। হরতিক গঙ্গা এহি ঠাম কোনো মাযনে নহি বখৈত খছি। এহি তথ্য কএ ব্রাঁউন রঁহ্ত সাফ তৌব পব বখনে ছথি। ব্রাঁউন কহৈত ছথি জে ও মিথিনা প্ররাসক দৌবান পংজীক রিধিরত শিক্ষা ন চ্কন ছথি। ও এহি গপ কএ সেহো সাফ কববাঁক প্রযাস কেনথি খছি জে মিথিনা মে কহিযো হরতি কএ পতি চ্নবাঁক খধিকাব নহি বহন খছি। সীতাক সংরঁধ মে সেহো ব্রাঁউনক মত স্পঠ্টi খছি। ও কহৈত ছথি জে সীতাক স্বযংরব নহি ছন ও একটা সশের্ত রিরাহ ছন। গ সচ খছি জে ওহি রিরাহ মে পংজীক কোনো ব্যরস্থা নহি ছন, ম্দা ধণুষ বামক রঁদনা মে বারণ উঁঠা নৈত ত কি সীতাক গঙ্গা বহিতো বাম স রিরাহ সংভর ছন ? সীতাক গঙ্গা হ্নক রিরাহ মে কোনো মাযনে নহি বখৈত ছন। ব্রাঁউন গ তর্ক দেনাক রাঁদ খাখিবী ফৈসনা মিথিনাক নোক পব ছোড়্ৈত কহৈত ছথি জে মেবে এহি মত স শাযদ মিথিনাক নোক সহমত নহি হেতাহ। রৈকসেনেনক শর্দ্ধ মে কহন জা সকৈত খছি জে মিথিনা চিত্রকনা একটা খাঁথিক ভাঁতি খছি জে সমযক সংগ-সংগ খপনা কএ রঁদনৈত বহন খছি, ম্দা খপন মূন সিদ্ধাঁত স কখনো সমঝৌতা নহি কেনক খছি। গ কনা জগতক একটা খদ্ভ্ত ওঁজাব খছি জেকবা স কনাকাব খপন সমাজক সংগ-সংগ পূবা রিশ্বক গ্ঢ় গপ খা বিতি-বিরাজ কএ চিত্রক মাধ্যম স প্রস্ত্ত করৈত খাগন খছি। (1972,পৃষ্ঠ-38) জে কিছ হ্এ এতবাঁ ত খরশ্য ভেন খছি জে মিথিনাক সংস্কৃতি কএ দ্নিযাক সামনে সরথা গনত তবীকা স পবিভাষিত কেন গেন খছি। খাগ মিথিনা চিত্রকনা খধিকতব এহন চিত্র রঁনাউঁন জা

বহুন খছি, জেকব এত্তকা সংস্কৃতি স কোনো নেনাদেনা নহি খছি। খারশ্যকতা খছি এহি চিত্র ক গংভীবতা স শোধ কবরাঁক খা একব খর্থক খধিকতা কএ সমাপ্ত কবরাঁক, নহি ত ও চিত্র হুবদম নেন হুমবা নোকনিক খক্তানতাক ধ্যাতক বঁনন বহুত।



<u>নূতন ঝা</u>; *গাম : বেঁল্হবাব, মধুবঁনী, বিহাব; জন্ম তিথি : ৫ দিসম্বঁব ১৯৭৬; শিক্ষা – বী এস সী, কল্যাণ ক◌ॉনেজ, ভিনাঙ; এম এস সী, ক◌ॉর্পোবেটির ক◌ॉনেজ, জমশেদপুব; ফেশন ডিজাওনিংগ, নিফ্ট, জমশেদপুব। "মৌথিনী ভাষা খা' মৌথিন সংস্কৃতিক প্রতি খাস্থা খা' খাদব হুম্মব মোনমে বঁচস◌ঁ বঁসন খছি। ওংটবনেট পব তিবহুতাক্ষব নিপিক উঁপযোগ দেখি হুম মৌথিন সংস্কৃতিক উঁজ্জ্বন ভবিষ্যক হেতু খতি খাশান্বিত ছী।"*

<u>জানকী নরমী–13 মঙা 2008 পব রিশেষ</u>

<u>জানকী–নরমী</u>

রৈশাখ মাসক শুক্ন পক্ষক নরমী তিথি কেঁ জানকী–নরমী মনাওন জাগত খছি। নোক ওহি দিন ব্রত বাখৈত ছথি খা' সীতাজীক পূজা খর্চনা কবৈত ছথি। সীতা মাতা নক্ষ্মীজীক খরতাব মানন গেন ছথি, তেঁ ঙা মান্যতা খছি জে ঙা ব্রত কএনাস◌ঁ স্বখ এরম্ সম্পত্তিক

प्राप्ति होइत अछि। एहि वर्ष ई पाबनि अंग्रेजी तारिख १३ मई, २००८ मंगलवार कें अछि।
कथा अछि जे राजर्षि जनकजी कें सीताजी शैशवावस्थामे अही दिन प्राप्त भेल रहथिन्ह। राजा जनक जनकपुरक राजा छलाह आ' संतानहीन जाहिसँ एहि दु:ख स ँ पीड़ित छलाह। एक दिन कोनो शुभ कार्यक प्रयोजन स ँ ओ' खेतमे हर जोतए गेलाह। ओही बीच हुनकर हरस ँ लागि एक स्वर्णक कलशमे स ँ एक दिव्य बालिका प्रकट भेलीह, जिनका राजा जनक आ' हुनकर पत्नी सुनयना गोद लऽ लेलखिन। बालिकाक नाम सीता राखल गेल जकर अर्थ होइत अछि हर। देवी सीताक जानकी नाम सेहो पड़ल अछि।
	किम्वदन्ति अछि जे सीताजी लक्ष्मी माताक अवतार देवी वेदवतीक पुनर्जन्म रूप छलीह। ऋषि कुषध्वजक पुत्री वेदवती परम सुन्दरी छलीह आ स्वयम् कें विष्णु देव कें प्रति अर्पित कएने छलीह। अनेको राजास ँ आयल विवाहक प्रस्ताव अस्वीकृत कऽ दैत छलीह। अहि कारणसँ ओ अहंकारी रावण के सेहो मना कऽ देलन्हि जाहि द्वारे हुनका रावणक अत्याचार सहऽ पड़लन्हि। दु: खी भय वेदवती प्रतिज्ञा लेलन्हि जे ओ अपन पुनर्जन्ममे रावणक विनाशक कारण बनतीह आ स्वयम्कें अग्निमे भष्म क' लेलन्हि। एहि बीच मन्दादरि गर्भवती भेलीह। अपन पतिक कुकृत्य दऽ सुननाक बाद ओ' अपन भावी संतानकें लऽ कऽ आशंकित भऽ गेलीह। ओ' अपन नगरहर गेलीह आ' अपन माता पिताक संग तीर्थ करय लगलीह। जन्मक समय नजदीक अएला पर ओ' अपन संतानक लेल आश्रय ताकए लगलीह। तखने संजोगस ँ संतानहीन राज जनकक खिस्सा सुनलन्हि आ' समय पाबि अपन

পুত্রীকঁ রাজাক পথমে ন্বকারঁএমে সক্ষম ভৎ গেলীহ। কিছু লোক গহো কহৈত ছথি, জে সংভরত: সীতাজীক জন্মক রাঁদ হ্নকা পানিমে রাঁহা' দেন গেন ছন খা' সংযোগসঁ ও' জনকজীক খেত নগ কাত নগনীহ।

কথা গহো প্রচনিত খছি জে বাক্ষসক খত্যাচাবসঁ হতাহত ঋষি মুনিক শোণিত এক কনশমে একত্রিত কৎ ভূমিমে গাড়ি দেন গেন ছন। রাঁদমে ওহি কনশসঁ সীতাজীক জন্ম ভেন। জন্মক পাছাঁ খিস্সা চাহে জে হোএ উদ্দেশ্য তৎ বারণক নাশে বহএ। একব সাংকেতিক খর্থ যৈহ খছি জে 'যত্র নার্যস্তু পূজ্যন্তে বমন্তে তত্র দেরতা'। খর্থাত্ জতএ স্ত্রীক খাদব হোগত খছি ততএ দেরতাক নিরাস হোগত খছি খা' ওকব রিপবীত স্ত্রীক খপমান কবনিহাব দ্খদ খংত পারৈত ছথি।

কিছু লোক মানৈত ছথি জে সীতাক জন্ম ফাল্গুন মাসক শুক্ল পক্ষক খষ্ঠমী তিথিকেঁ ভেন ছন্হি।

बटसावित्री

मिथिलांचल मे बटसावित्री ज्येष्ठ मासक अमावस्या तिथि केँ मनौल जाइत अछि। अहि पाबनि केँ अहिबाती स्त्री स्वयम् केँ बैधव्य सँ रक्षा बाध लेल मनाबैत छथि। अहि दिन नव वस्त्र , सामयिक फल, आम, अंकुरि, बड़क गाछ, बाँसक बियनि आदिक बड़ महत्त्व अछि। सब सधवा स्त्री भोरे-भोर स्नानादि कए नव वस्त्र धारण कए फूल, नैवेद्य, बियनि, अछिंजल, सूत, धूप-दीप लए बड़क गाछ लग जाइत छथि। ओतए नियमपूर्वक पूजा करैत छथि। तदोपरान्त जल आ' अन्न ग्रहण करैत छथि। व्रत करनिहारि अहि दिन अलून खाइत छथि ।

नवव्याहता के लेल ई पाबनि विशिष्ठ अछि। पहिल बेर पाबनि बड़ विस्तृत रूप सँ मनाओल जाइत अछि। एक दिन पहिने पबनौतिन अड़बा अड़बाइन खाइथ छथि । ओहि दिन बाति कए भगवतीक गीत नाद संगे हड़दि के गोब आ' उँड़दि के बड़ बनाक बाखि लेल जाइत अछि। माटिक विसहबा बना

ওকবা চূন সঁ টৌবকঽ বংগ সঁ বাঁগি নেন জাগত থিছ। পাৰনি কে দিন তীন পাত খড়া পন পড়ৈত ছৈ। রিষহবা গৌবী সমেত সারিত্রীক পূজা হোতি থিছ। ৰড়ক গাছ কে ত্রিপেক্ষণ কৈন জাগত থিছ জাহি মেং গাছক জড়া মেং থাম স নগাক জন ঢাবি সূত নপেষ্ট ক রিযনি ডোনৈন জাগত থিছ। থাবতীক ৰাদ কথা কহন জাগত থিছ খা পৰনৌতিন কে হাথে পাঁচ টৌ খগহৰ কে খংক্ষবি খা নরেদ পড় াসাগন জাগত থিছ।

বক্ষাৰন্ধন

বক্ষাৰন্ধন কে পাৰনি, জে ভাঙা ৰহিনক পাৰনি কে ৰূপমে মানন গেন থিছ, মিথিনামে মূনতথ থহি ৰূপমে নহি থিছ নেকিন, দেখা–দেখীমে ঙা পাৰনি মিথিনামে ভায– ৰহিনক পাৰনিক ৰূপমে ৰহুপ্রচনিত ভয গেন থিছ। সাওন পূর্ণিমা দিন বাখী ভগৱান–ভগৱতী কে থর্পিত কঽ নোক মেং ৰান্হকে প্রথা থপন সৰহক বাখী কহাগত থিছ। স্ত্রী প্বকষ কে বাখী ৰান্হৈত ছৈথ খা' ৰদনে মেং হ্নকা ওহি প্বকষ সঁ সংকষ্টমে বক্ষাক রচন ভেটৈত ছনি। এক মৈথিন প্বস্তকক থন্বসাবে বাখী ৰান্হি ৰেবমে নিম্ন মংত্র পঢ়ন জাগত থিছ–

''যেন ৰদ্ধাৰনী বাজা দানৱেন্দ্র মহাৰন: ।

তেনত্বাং প্রাতিৰধ্নামি বক্ষে মাচন মাচন: ॥

বাখীক প্রথাকে উংপেত্তি স সম্বন্ধিত থনেক কথা প্রচনিত থিছ। এক কথান্বসাব গন্দ্রদেৱ বৃত্র গন্দ্র সংগ যদ্ধ কেনা জাহিসঁ হ্নকা কিছু হানি ভেননি। তখন হ্নকব পনৌ হ্নকা বাখী ৰন্হনখিন জকব ৰাদ হ্নকা রিজয ভেষ্টনৈন। দোসব কথা প্রসিদ্ধ থিছ দ্রৌপদী খা' কৃষ্ণক। শিশ্বপানক ৰদ্ধ কেনাক ৰাদ কৃষ্ণ ভগৱানক হাথ

स ँ बञ्च रॅहय नगनैन त द्रौपदी के नहि बहन गेनैन ओ थ्रपन आँ चव स ँ कपड़ । फाड़ि क हुनकव माथमे रॅ ाँ धि देनखिन । भगरान कृष्णास ँ ओ उँधाव चुकारॅह के रचन देनखिन। रॅाँदमे जखन छनस ँ कौवर प ाँ डरक बाजपाठ छीन द्रौपदीके थ्रपमानित कवह चाहन त कृष्ण भगरानक कृपा स ँ हुनकव साबी थ्रनन्त भह गेन । तहिना जखन बाक्षस बाज रॅनि के भगरती नक्ष्मी बाखी रॅान्हनाक रॅाद भगरान रिष्णु के राापस मंगनखिन तह रॅनि के हुनकव थ्राग्रह मानह पड़नैन । थ्रहि रर्ष बाखी थ्रर्थात् साओन पूर्णिमा १६ थ्रगस्त, शनिदिन कह थ्रछि ।

<u>**कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी**</u>

कंसक प्रकोपसँ मनुषक बक्षानेन द्वापबयुगमे स्वयं रिष्णुदेर भगरान श्रीकृष्णक रूपनह मथुवाक कावाराससमे देरकीक कोखसँ जाहि दिन पृथ्वी पव थ्ररतबित भेनाह, ताहि दिनकेँ कृष्णाष्टमीक रूपमे मनओन जाएत थ्रछि । सारन मासक कृष्णपक्षक थ्रष्टमीकेँ थ्रर्धबात्रिकह भगरानक जन्म भेन छनि । जन्मक पहिन दिन कृष्णाष्टमी कहाएत छैक थ्राह जन्मक रॅादक दिन जन्माष्टमी । ताहि कावणेँ ब्रतो दू प्रकावक होएत थ्रछि, कृष्णाष्टमी ब्रत थ्राह जन्माष्टमी रा जयन्ती ब्रत ।

शास्त्रक थ्रनुसावे एहि दिन पूजाक रॅेसी महत्व थ्रछि ब्रतसँ पवन्तु मिथिनारासी दुनूकेँ रॅबारॅबे महत्र देने छथि । कृष्णाष्टमी ब्रतसँ एक दिन पहिने थ्रववॅा-

অবরাঁগন আগত ছথি আ২ ব্রতক দিন নিবাহাব বহি সঁ ঁঝমে ফনাহাব কবৈত ছথি। কতেক নোক সেহো বাতিক২ জগবনা কবৈত ছথি। ঠাম-ঠাম রাঁনকৃষ্ণক প্রতিমাকেঁ স্বন্দব পীতাম্বব পহিনা পাননামে ঝ্নাযন জাগত অছি। তকব রাঁদ ভোবে পাবণা কবৈত ছথি। কতেক নোক কৃষ্ণাষ্ঠমী নহি ক২ জন্মাষ্ঠমী ব্রত কবৈত ছথি।

স্কন্দপুবাণমে জযন্তীব্রতক রিশেষতা মানন গেন অছি। সূর্যোদযসঁ ঁ চন্দ্রোদয তক অষ্ঠমী বহএ আ২ নিশাভাগ বাতিমে বোহিণী নক্ষত্রক যোগ হোএ তঁ ঙা ব্রত অরশ্য কবরাঁক চাহী। যদি সোম বা বুঁধ দিনক পড় ৈত অছি তথা নরমীযুক্ত হোএ তঁ রেঁসী প্রশস্ত হোগত অছি। জঁ ঁ বোহিণী নক্ষত্রক যোগ নহি হোএ তঁ জন্মাষ্ঠমী ব্রতক সংগে জযন্তী ব্রত সেহো কবরাঁক চাহী নহি তঁ জন্মাষ্ঠমী ব্রতক মহত্ব নহি বহি জাএত ঙা ধাবণা অছি।

এহি রর্ষ কৃষ্ণাষ্ঠমী-জন্মাষ্ঠমী ২৩/২৪ অগস্তকেঁ অছি। মহাবাষ্ট্রমে এহিদিন দহী-হাঁডীক প্রথা রহুত প্রচনিত অছি।

কুশোপেতন / কুশী অমারস্যা

ভাদরমাসক অমারস্যাকেঁ কুশী অমারস্যা কহন জাগত অছি। এহি দিনক রিশিষ্ঠতা যৈহ অছি জে এহি দিনক উঁখাড়ন কুশক উঁপযোগ রর্ষপর্যন্ত ভ২ সকৈত অছি। কুশ মিথিনাঁচনমে প্রত্যেক পূজা পাঠমে কাজ আরৈত অছি। তাহিনেন গৃহস্থ স২ ন২ ক২ সাধু সভ কুশ সংজোগিক২ বাখএ ছথি। আন অমারস্যাক উঁপাড়ন কুশক

উঁপযোগ মাত্র এক মাস তক ভৎ সকৈত অছি আৎ অনদিনা কুশ উঁপাড়ি কৎ দোসব সূর্যোদয তক কাজ নেন জা সকৈত অছি।
শ্মশান ভূমি, বাঁটৈপবক যজ্ঞস্থলী, পিন্ডদানক স্থান বা অন্য কোনো অপবিত্র ভূমি পবক কুশ নহি উঁপর্যুক্ত হোগত অছি। পিতৃজীবি বাঁনক তথা পিতাক অছৈত বাঁনক কুশ উঁপাড়ক কাজ নহি কৎ সকৈত ছৈথ।
কুশ উঁপাড়ক মংত্র নিম্ননিখিত অছি :
'' ওঁ কুশাগ্রে বসতে রুদ্র: কুশমধ্যে তু কেশবঃ।
কুশমূলে বসেদ্ ব্রহ্মা কুশান্মে দেহি মেদিনি॥
 ওঁ কুশোৎসি কুশপুত্রাৎসি ব্রহ্মণা নির্মিত: পুবা।
দেব পিতৃ হিতার্থায ত্বাং সমুৎপাট্যাম্যহম্॥ "
এহি বর্ষ কুশী অমাবস্যা ৩০ অগস্তু, শনি দিনক পড়ল অছি।

দুর্গা পূজা

আশ্বিন মাসক শুক্লপক্ষকৎ প্রাতিপদা তিথি সৎ নববাত্রীক আবম্ভ হোগত অছি। আন প্রদেশ সৎ মিথিনাংচনমে দুর্গাপূজা কনিক ভিন্ন হোগত অছি। মিংথিনাংচনমে দুর্গাপূজা মূনতথ্য পূজা এবম্ আস্তিকতাক পাবঁনি অছি কাবণ নাচ গান ওতেক মহত্ত্বপূর্ণ নহি হোগত অছি। তৈযো গাম সবঁমে মেনা নাগৈত অছি আ নাটক- নৌটংকী

के आयोजन कैत अछि। प्रतिमा पूजा होइत अछि जकर विसर्जन यात्रा दिन होइत अछि। घरे-घर अहि समय विधि-विधान सँ पूजा होइत अछि। महान्याक प्रात कलशकेँ स्थापित कैल जाइत अछि आ अहि के चारू कात जौ रोपल जायत अछि जाहिसँ जयन्ती उगैत छै। भगवती दुर्गाकि पूजाक ई दस दिन मिथिला प्रदेशके सर्वसँ बेसी दिनतक चलैबला पूजा अछि। कतेक लोक नौ दिनका व्रत करैत छथि जाहिमे स्वयास्तिक बाँद फलाहाव करैत छथि। अष्ठमी वा नवमी कँ कुमावि भोजक प्रथा सेहो प्रचलित अछि। कतेक ठाम नौ दिनक सम्पूर्ण बामायणक पाठ होइत अछि तँ कतेक लोक दसो दिन दुर्गा सप्तशतीक पाठ करैत छथि। भगवती दुर्गाकि निम्नलिखित १०+ नामक प्रतिदिन जाप कवलिहाव के सर्वथा सिद्धि भेटैत छैन :

1 ॐ सती, २ साध्वी, ३ भवप्रीता, ४ भवानी, ૩ भवमोचनी, ६ आर्या, ७ दुर्गा, + जया , ९ आद्या, १० त्रिनेत्रा, ११ शूलधाविणी, १२ पिनाकधाविणी, १३ चित्रा, १४ चण्डघण्टा, १૩ महातपा: , १६ मन: , १७ बुद्धि: , १+ अहंकावा, १९ चित्तरूपा, २० चिता, २१ चिति:, २२ सर्वमन्त्रमयी, २३ सत्ता, २४ सत्यानन्दस्वरूपिणी, २૩ अनन्ता, २६ भाविनी, २७भाव्या, २+ भव्या, २९ अभव्या, ३० सदागति: , ३१ शाम्भवी, ३२ देवमाता, ३३ चिन्ता, ३४वनेप्रिया, ३૩ सर्वविद्या, ३६ दक्षकन्या, ३७ दक्षयज्ञविनाशिनी, ३+ अपर्णा, ३९अनेकवर्णा, ४० पाटला, ४१ पाटलावती, ४२ पट्टाम्बवपवीधाना, ४३ कलमञ्जिवी, ४४ अमेयविक्रमा, ४૩ क्रूवा, ४६ सुन्दवी, ४७ सुवसुन्दवी, ४+ वनदुर्गा, ४९ मातंगी, ૩०मतंगमनपूजिता, ૩१ ब्राह्मी, ૩२ माहेश्ववी, ૩३ ऐन्द्री, ૩४ कौमावी, ૩૩ वैष्णवी,

৩৬চাম্কণ্ডা, ৩৭ রাবাহী, ৩+ নক্ষ্মী, ৩৯ প্বব্ডঁষাগ্নতিঃ , ৬০ রিমনা, ৬১ উঁকের্ষিণী, ৬২ ক্তানা, ৬৩ ক্রিযা,৬৪ নিল্যা, ৬৩ ব্ুঁদ্ধিদা, ৬৬ বহ্না, ৬৭ বহ্নপ্রেমা, ৬+ সর্ররাহনরাহনা, ৬৯ নিশুম্ভশুম্ভহননী, ৭০ মহিষাসুবমর্দিনী, ৭১ মধুকৈটভহন্ত্রী, ৭২ চণ্ডমুণ্ডরিনাশিনী, ৭৩ সরাসুবরিনাশা, ৭৪ সর্রদানরঘাতিনী, ৭৩ সর্রশাস্ত্রমযী, ৭৬ সত্যা, ৭৭ সরাস্ত্রধাবিণী, ৭+ খনেকশস্ত্রহস্তা, ৭৯ খনেকাস্ত্রধাবিণী, +০ কুমাবী, +১ এককন্যা, +২কৈশোবী, +৩ যুরতী, +৪ যতিঃ , +৩ খপ্রৌঢ় া, +৬ প্রৌঢ় া, +৭ রূদ্ধমাতা, ++ বনপ্রদা, +৯ মহোদবী, ৯০ মুক্তকেশী, ৯১ ঘোবরূপা, ৯২ মহাবনা, ৯৩ খগ্নিজ্বানা, ৯৪ বৌদ্রমুখী, ৯৩ কানবাত্রী: , ৯৬ তপস্বিনী, ৯৭ নাবাযণী, ৯+ ভদ্রকানী, ৯৯ রিষ্ণুমাযা, ১০০জনোদবী, ১০১ শিরদূতী, ১০২ কবানী, ১০৩ খনন্তা, ১০৪ পবমেশ্ববী, ১০৩কাত্যাযনী, ১০৬ সারিত্রী, ১০৭ প্রত্যক্ষা, ১০+ ব্রহ্মরাদিনী ।

শিবপূর্ণিমা / কোজগবা

মিথিনাচনমে শিবপূর্ণিমা কহ খপন কুনদেরী-দেরতা (গোসাঙঁন) সহিত ভগরতী নক্ষ্মীক পূজন কৈন জাগত ছৈন। খহি পূজাকে পূর্ণিমা তিথিক প্রদোশ কান খর্থাত্

संध्याकाल कैल जागत अछि। अहिमे पूजाक समय पूर्णिमा भेलाओ आवश्यक छै। ओहि दिनक सूर्योदयक समय पूर्णिमा होअ नहि होअ तकर महत्व नहि रहै छै। पान, मखान, दही, केरा, नारिकेर संग विभिन्न पकवानक नैवेद्य चढ़ाएल जाएत अछि।
नवविवाहित के लेल ई पाबनि विशेष रूपसँ महत्वपूर्ण होइत अछि। विवाहक पहिल वर्षमे पड़ैवला शरदपूर्णिमाके कोजगराक रूपमे मनाओल जाइत अछि। अहू पर क बड़के चुमाओन होइत अछि। ई पाबनि बड़क घर पर होइत अछि आ कनियाँ पक्ष सँ बड़क कपड़ा, छत्ता, तथा मखान सहित पूरी पकवान आबैत अछि। तकर बाद पान मखान सहित पकवान बाँटैल जाइत अछि।
अहि वर्ष कोजगरा १४अक्टूबर, २००८, मंगलदिन कऽ अछि।

<u>**दीपावली:२८अक्टूबर२००८मंगलदिन**</u>

दिवाली हिन्दू सिक्ख एवम् जैन सबहक बड़ महत्वपूर्ण

পাবঁনি অছি। মিথিলাঁচলমে সেহো জগমগাএত দীপ সঁ অহি পাবঁনি কে মনাওল জাএত অছি। অহি পাবঁনিক পাছা অনেক কথা অছি। মানল গেল অছিজে বিজযাদশমী দিন বাবণক অন্তক বাঁদ আহিযে দিন ভগবান বাম দেবী সীতা, ভায লক্ষ্মণ, হনুমান, সুগ্রীব, অংগদ আদি সংগে অযোধ্যা লৌটল বহথি। হুনক স্বাগতমে অযোধ্যাবাসী দিযা বাঁতীসঁ পূবা অযোধ্যা জগমগেলে বহৈথ। দোসব কিস্সা অছি জে ভগবান শ্রীকৃষ্ণ অহিযে দিন নবকাসুবকে নবক ধাম পহুঁচেলে বহৈথ। অকব অতিবিক্ত এহো কথা প্রচলিত অছি জে বাজা বঁলি অহি দিন ভগবান বিষ্ণুক আজ্ঞা পাবি অপন বাজ্য দিস বিদা ভেল বহথি। অহি তবহে অহি দিনকে দুঃখ আঁ অজ্ঞানতা অভাব সঁ মুক্তি ভেটৈক এবম সমৃদ্ধিক প্রাপ্তিক অভিলাষাসঁ মনাওল জাএত অছি। কতৌ-কতৌ কিছু বিশেষ পশুকে ভোজন কবাবঁক নিযম সেহো ছৈ জেনাকি কৌআ, কুক্কুব, গৈ আঁ বঁড়দ।

ঘবমে গোসাউঁনিক পূজা সংগে লক্ষ্মীজী এবম গণেশজীক পূজা হোএত অছি। তকব বাঁদ ঘবক সবঁসঁ বুজুর্গ দীপ লঁ কঁ বাহব নিকলৈত ছৈথ। ফেব সবঁতবি দীপ লেশল জাএত অছি। অহিবর্ষ দিবালী ২৮ অক্টূবঁব, ২০০৮, মংগলদিন কঁ অছি।

<u>মিথিলাঁচলক ভ্রাতৃদ্বিতীযা</u>

ভ্রাতৃদ্বিতীয়া হিন্দ্ সমাজ মে প্রচলিত পাবনি অছি । মিথিলাংচল মে সেহো একব বিশিষ্ঠ মহত্ব অছি । কার্তিক মাস মে শুকল পক্ষ কে দ্বিতীয়া তিথি ক ঔ পাবনি মনাওল জাগত অছি । ঔ দিন ভায – বহিনক অটূট প্রেম কে সমর্পিত হোগত অছি । অহি পাবনি সঃ জুড়ল এক পৌবাণিক কথা অছি জাহি অনুসারে জমুনা অপ্পন ভায যম কে অহি দিন নোতলে বহৈথ । বহিন সব অপ্পন ভায কে পূজা কবৈত ছথি । বহিন অপন ঘবক আঁ ংগন নীপ কঃপীঠাব সঃ ষঠ্যদনক অড়া পন বনাবৈত ছৈথ । ভায কে আসন অথবা পীঢ় ী পব বৈসাবৈত ছৈথ । অড়া পন পব এক গোট বাটী বাখৈ ছৈথ । নোটা মে অছিংজল নৈত ছৈথ । পূজা কে লেল ছহ গোট কম্হবক ফূল, পিঠাব, সিন্দূব, ছহ গোট ডা ংট সহিত পানক পাত, ছহ গোট স্বপাড় ী, দুব প্রকাবক গলাযচী আব হবীব আবশ্যক হোগত অছি । কম্হবক ফূল নহিং ভেটৈলা পব গেঁদাক ফূল সঃ কাজ লেল জাওত অছি ।

বহিন অপন ভায কে আসন পব বৈসাকঃ পিঠাব আ সিন্দূব সঃ তিলক কবৈত ছৈথ । তকব বাদ ভায দুব কব পসাবিকঃ বাটিক ঙুপবি বাখৈত ছৈথ আ' বহিন ভায কে হাথ মে পিঠাব সিন্দূব সহিত পূজাক সব সামগ্রী বাখৈত ছথি । প্বন জলস ং ভাযকে হাথ ধো দৈত ছৈথ । জলসঃ হাথ ধোওত কাল বহিন নিম্নলিখিত ফকবা গাবৈত ছথি

''যমুনা নোতলী যম কে় হম নোতৈ ছী ভায কে,

জতে দিন যমুনাক ধাব বহৈ ততে দিন ভায কে অবুদা বহৈ''

তকব ৰাঁদ ৰঁহিন খপন ভায কে ৰৈভৰান্বসাব উঁপহাব দৈত ছথি । মান্যতা খছি জে ওা পূজা কবৈ ৰানী স্ত্রী ৰৈধব্য এরম্ খন্য কল্লেশ সঽ দূব বহৈত ছথি । ৰঁচপন মে জতঽ ওা পাৰঁনি ৰঁহিন সভ নেন উঁপহাবক নানসা খা' ভাওা সভ নেন পূজা কবাৰঁঽ কে খ্শী দৈত খছি ওতওা পৈঘ ভেনাপব ওা পাৰঁনি ভায ৰঁহিন কে ভেঁ্ট কবৰাঁক খৱসব ৰঁনি জাওাত খছি ।

बाबाती-सकोब

आजुक आधुनिक पबिबेशमे बिबाहक प्रबान मान्यता आब बिधि बिधान अपन प्रतीकामेक स्वरूपमे शेष बचन अछि। दिन पब दिन ओकब स्थान अपर्याय सँ पबिपूर्ण पबिपाटी नइ बहल अछि। हम सब पौबाणिक आ' तर्कसंगत बिचाबक अबशेष मात्र देखि बहल छी। आब निबंतब जीबनशैलीमे आधुनिकताक समाबेश भइ बहल अछि। एकब किछु प्रत्यक्ष लाभो अछि, जेनाकि बढ़ैत शिक्षा आ' स्वास्थ्य व्यवस्था। किन्तु आधुनिकताक दुष्पबिणामक सूचि बनाबी तइ ओ' अनन्त बहत।

बिबाहादिमे जे आडंबब आ' बिलासितापूर्ण प्रदर्शन होइत अछि ओकब निर्वाह सर्व साधाबणक लेल काफी कठिन अछि। पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा कएलाक बाद एक साधाबण कन्यापक्ष बिबाह समाबोहक उंचबर्गीय प्रदर्शनक आर्थिक आघात कें कोना सहत? बिभिन्न प्रकाबक ताम-झाम आओ महग व्यवस्थाक निर्वाह बहुत कष्टकाबी होइत छैक। किछु घंटाक शोभा बढ़ाबै लेल वा बिबाह समाबोह कें कथित रूप सँ अबिश्वसनीय बनाबए केब दबाब सँ लोग हजाबो लाखो रूपैया पानिमे बहा दैत अछि। नब पीढ़ीक स्वशिक्षित लोक कें बुझबाक चाही जे बिबाहकें अबिस्मबणीय बनाबैत छैक दू पबिबाबक आपसी स्नेह आ' सम्बन्ध। बिबाहकें अबिस्मबणीय बनाबैत छैक ओकब सफलता जाहि लेल मात्र निष्ठा आ' बिश्वासक प्रचुबता चाही, ठाठ हाउस भोज व्यवस्था वा महग कपड़ा लत्ता आब गहना जेबब नहि। ई सभ कृत्रिम साधनक माँग मध्यम बर्गीय पबिबाबक

নেন সীমিত বহয তখনে কন্যাণ খছি।
খপর্য্য স ঁ রঁচি কহ যদি নরহ্যগক রব কন্যা খপন সূম্ম রঁূম্ম স ঁ গবিমাময সম্বঁন্ধুক শ্বৰ্খাত কবথি তহ ঙা সভক হিতমে হোযত। কন্যাপক্ষ পব রবপক্ষ দ্বাবা রাঁবাতীক ভর্ব্য স্বাগতক দরাঁরঁ দেখি রঁড় া দ্খ হোগত খছি। স্বাগত তহ হৃদয স ঁ হ্খক চাহী ৰূপৈযা পৈসা স ঁ নহিঁ। একঠা গবীরঁ পবিরাবক ব্যথা সংরেদনশীন ব্যক্তিকেঁ খাডঁরঁবক প্রতি খাব কঠোব রঁনারঁএ নেন পর্যাপ্তি খছি।
এক করিক করিতাক কিছ পংক্তি উল্লেখিত খছি :
''কোনা কৰ্ রঁবিযাতী জী খহাঁক সকোব যৌ ।
ধানো নহি ভেন হমবা বৰ্ব্বিযো কে নঞি খাস যৌ ॥
কঠিন সময ছৈক স্বনিযউঁ ভাবী পবিরাব যৌ।
ৰ্খ স্বখ জে ভেঠএ কহ নিযউঁ স্বীকাব যৌ ॥
সম্বঁন্ধ রঁনারঁহ এনহুঁ খহাঁ বাখূ হমবো নাজ যৌ।
ঘব দ্বাবো টূটৈন ফাটৈন দনান পব নহি খাঠ যৌ ॥
দিন বাতি পেঠ ভবয নয কবি কহ বোজগাব যৌ।
খানপিযনি দহ নহি সকনহুঁ ছী রঁহ্ত নাচাব যৌ ॥ ”
খাউঁ হম সরঁ খহি খাডঁরঁবক সমূন নাশ কহ মিথিনাক গবিমা রঁঢ় ারী।

चौठचन्द्र पूजा

भादरमासक शुक्लपक्षक चतुर्थी तिथिकेँ ई पूजा होइत अछि। मनोकामना पूर्ण भेलापर ई पाबनि कैल जाइत अछि। अहि दिन चन्द्रमाक पूजा भाँ ति प्रकारक पकवानक नैवेद्यसँ कैल जाइत अछि। मिथिलानरेश हेमांगद ठाकुर जे कि ज्योतिषी सेहो छलाह अपन कोनो मनोकामना पूर्ण भेलापर अहि पूजाक आरम्भ केने छलाह। अहि पाबनिमे दिन भरि निराहार रहिकेँ साँ झमे विभिन्न प्रकारक पुरी पकवान सहित दहीक मटकुरी के अड़रा पत पर ऊँचित स्थान पर राखि पूजा प्रारम्भ कैल जाइत अछि। गणपत्यादि पंच देवता सहित गौरीजीक पूजा पहिने होइत अछि। जे विधवा स्त्री होइत छथि से गौरीक स्थानपर विष्णुक पूजा करैत छैथ। तकर बाद चतुर्थीचन्द्रक पूजा चानन, रक्त चानन, सिन्दुर, यज्ञोपवीत, अक्षत, फूल, फूलमाला, दूबि, बेलपात, जल, अर्घ्य इत्यादि सँ पूजा कैल जाइत अछि। तकर बाद डाली सँ तथा दही मटकुरी सँ कऽ चन्द्रमाक दर्शन कैल जाइत अछि।

डालीसँ दर्शन करैके मन्त्र –

नमो सिंह: प्रसेनमवधीतसिंहो जाम्बवताहत: ।
सुकुमारक मारोदीपस्तवहेयेष स्यमन्तक: ॥

दही मटकुरी सँ दर्शन करक मन्त्र –

नमो दधि शंखतुषाराभम् क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
नमामिशशिनं भक्त्या शंभोर्मुकुट भूषणम् ॥

अर्धपात्रमे सब वस्तु राखि अन्तमे "ब्रम्हणे नम:"।

तकर बाद कथा सुनि विसर्जन कैल जाइत अछि। कथा सुनैत काल हाथमे जे फूल रहैत अछि तकरा निम्न

মংত্র পঢৈ়ত রিসর্জিত কৈন জাগত খছি।
''ৰূপং দেহি জযং দেহি ভাগ্যং ভগরান দেহিমে।
ধর্মানি দেহি ধনং দেহি সর্বান্ কামান প্্বাদেহিমে॥ চ্ তকব ৱাঁদ দক্ষিণা দঽ প্্বাসাদ রিতবণ কৈন জাগত খছি।



রিদ্যানন্দ ঝা পঞ্জীকাব 'মোহনজী'

जन्म–09.04.1957,पल्हुआ, ततैल, ककरौड़(मधुबनी), बशौढ़य(पूर्णिया), शिवनगव (खवविया) आ' सम्प्रति पूर्णिया। पिता नर्ख्न धौत पञ्जीशास्त्र मार्त्तण्ड पञ्जीकाव मोदानन्द मा, शिवनगव, खवविया, पूर्णिया। पितामह–स्व. श्री भिखिया मा, पञ्जीशास्त्रक दस बर्ष धवि 1970 ई.सँ 1979 ई. धवि अध्ययन,32 बर्षक वयससँ पञ्जी–प्रबंधक संवर्द्धन आ' संवक्षणमे संलग्न। कृति- पञ्जी शाखा पुस्तकक लिप्यांतवण आ' संवर्द्धन- 800 पृष्ठसँ अधिक अंकन सहित। पञ्जी नगवमिक लिप्यान्तवण ओ' संवर्द्धन– नगभग 600 पृष्ठसँ ऊपव(तिवहुता लिपिसँ देवनागवी लिपिमे)। गुरु- पञ्जीकाव मोदानन्द मा। गुरुक गुरु- पञ्जीकाव भिखिया मा, पञ्जीकाव निवसू मा प्रसिद्ध विश्वनाथ मा- सौवाठ, पञ्जीकाव लूटन मा, सौवाठ। गुरुक शास्त्रार्थ पवीक्षा- दवभंगा महावाज कुमाव जीवेश्वव सिंहक यज्ञोपवीत संस्कावक अवसव पव महावाजाधिवाज(दवभंगा) कामेश्वव सिंह द्वावा आयोजित पवीक्षा–1937 ई. जाहिमे मौखिक पवीक्षाक मुख्य पवीक्षक म.म. डॉ. सव गंगानाथ मा छलाह।

पंजी प्रबंध

भावतीय इतिहासक वेत्ता ओ' जातीय व्यवस्थाक मर्मज्ञ लोकनि कहैत छथि, जे भावतवर्षक ब्राह्मण लोकनि सर्वप्रथम वेदक आधाव पव विभिन्न वर्गमे विभाजित वहथि। जेना- सामवेदी, यजुर्वेदी, आदि कहाबथि। मुदा समयक प्रभावमे भिन्न क्षेत्र–प्रक्षेत्रमे वहनिहाव ब्राह्मण लोकनि भिन्न–भिन्न संस्कृतिसँ प्रभावित भऽए गेलाह। क्षेत्रीय संस्कृतिसँ प्रभावित होएबाक मुख्य कावण छल विशिष्ठ क्षेत्रक विशिष्ठ जलवायु, क्षेत्र

रिशेषक ভাষা-রিশেষ, ভিন্ন-ভিন্ন ক্ষেত্রক ভিন্ন-ভিন্ন খাহাব এরম ভেষ-ভূষা খা' এক ক্ষেত্র সঁ দোসব ক্ষেত্র জযবাঁক হেত্তু খারাগমনক খস্বরিধা খাদি। ফনতঃ ক্ষেত্র-রিশেষক ব্রাম্নণ সম্প্রদায, ক্ষেত্র রিশেষক খাচাব-রিচাব, খান-পান,রেশ-ভূষা ,ভার-ভাষা ও' সভ্যতা সংস্কৃতিসঁ প্রভরিত ভয গেনাহ।
উঁপবোক্ত কাবণে প্রবানক যুগ খরৈত0-খরৈত ভাবত রর্ষক ব্রাম্নণ সমাজ ভিন্ন-ভিন্ন ক্ষেত্রক খাধাব পব রিভিন্ন রস্নামে রিভাজিত ভএ গেনাহ। প্রবানক সম্মতিযে ভাবত-রর্ষক সমস্ত ব্রাম্নণ সমাজকেঁ দস(10) রস্নামে রিভাজিত কএন গেন বহয। ব্রাম্নণক ঙা দসো রস্না থীক-উঁকেন,কান্যকুব্জ,গৌড়,মৈথিন,সাবস্বত, কাণাটি,গুর্জব, তৈনংগ,দ্রবিড় ও' মহাবাষ্ট্রীয। স্থূন রুপেঁ পূর্বোক্ত পাঁচ কেঁ পঞ্চ গৌড় খা' খপব পাঁচকেঁ পঞ্চ দ্রবিড় কহন জাগত খছি। একব সীমাংকন ভেন রিন্ধ্যাচন পর্বতক উঁত্তব পঞ্চ গৌড় ও রিন্ধ্যাচন পর্বতক দক্ষিণ পঞ্চ দ্রবিড়।
মৈথিন ব্রাম্নণ
পঞ্চ গৌড় রস্নাক মৈথিন ব্রাহমণ নোকনি প্রস্তি-দব-প্রস্ত সঁ মিথিনামে বহবাঁক কাবণেঁ মিথিনাক রিশিষ্ঠ সংস্কৃতিসঁ প্রভারিত ভএ গেনাহ, তঁয খহি কাবণেঁ প্রবাণক যুগমে মৈথিন ব্রাম্নণ কহাএ স্বপ্রসিদ্ধ ভেনাহ। মিথিনা রস্তুতঃ প্রাচীন বাহরংশক বাজধানী বহএ। ক্ষদা পশ্চাতক যুগমে রিদেহ বাজরংশক সমস্ত প্রশাসিত ক্ষেত্র খথরা জনপদ মিথিনা কহাএ স্বপ্রসিদ্ধ ভেন খা' এহি জনপদক বহনিহাব ব্রাম্নণ নোকনি মৈথিন ব্রাম্নণ কওনন্হি। ঙা মিথিনা খাগ নেপান ও' বঁগনাদেশক সীমা সঁ সটৈত খন্বরত্তমান খছি, জে বাজনীতিক এরং সাংস্কৃতিক

দৃষ্ঠিসঁ ঋপন এক রিশিষ্ঠ স্থান বখৈত ঋছি।
মৈথিন ব্রাহ্মণ নোকনি মূনতঃ দ্গএ গোষ্ঠ রেদক ঋনুযাযী থিকাহ। এক রস্থাক যজুর্রেদক মাধ্যান্দিন শাখাক ঋনুযাযী থিকাহ তঁ দোসব সামরেদক কৌথুম শাখাক ঋনুগমন কবৈত ছথি। যজুর্রেদক মাধ্যন্দিন শাখাক ঋনুযাযী"রাজসনেযী" কহবৈত ছথি, এহিনা সামরেদ্ক কৌথুম শাখাক ঋনুযাযী ছন্দাগ কহবৈত ছথি। দুহুক সংস্কাবমে কিছু স্থূনো ঋন্তব ঋছি। ছন্দাগ উঁপনযনমে চাবি গোষ্ঠ সংস্কাব– নামকবণ, চূড়াকবণ, উঁপনযন ও সমারর্ত্তন ঝদা রাজসনেযীক ওা চাৰু সংস্কাব থিক, চূড়াকবণ, উঁপনযন, রেদাবম্ভ ও সমারর্ত্তন। এহিনা ছন্দাগ রিরাহ ঝখ্যতঃ দূ খণ্ডমে সম্পন্ন হোগত ঋছি, পূর্র রিরাহ ঋাওব উঁত্তব রিরাহ। উঁত্তব রিরাহ সূর্যাস্তক বাঁদ তাবা দেখি কএ হোগত ঋছি। ঝদা রাজসনেযী রিরাহমে এহন কোনো রিভাজন নহি ঋছি। একহি ক্রমমে দিন ঋথরা বাতিমে কখনহুঁ ভএ সকৈত ঋছি। রাজসনেযী ও' ছন্দাগক ধার্মিক সংস্কাবমে তঁ সূক্ষ্ম ঋংতব কতৌক ঋছি।
ঋতঃ রিরাহক পহিন চবণ ঋধিকাবক নির্ণয বহন হোযত। রব পক্ষ ও' কন্যা পক্ষক নোক পবস্পব বৈঁসি ঋপন–ঋপন পবিচযক ঋাধাব পব নির্ণয কবৈত ছন হোএতাহ, জে 'ঋমুক' কন্যাসঁ 'ঋমুক' রবক রিরাহ হো রা নহি। ঝদা পবিচয বখরাঁক প্রবৃত্তিক হ্রাসক কাবর্ণে ঋধিকাব–নির্ণযক হেতু প্রত্যেক পবিরাবক স্বযোগ্য ও' ঋাস্থারান ব্যক্তি ঋপন যারতো পবিচয(32 মূনক উঁল্লেখ) নিখি কএ বাখয নগনাহ। সাতম শাব্দীসঁ পূর্রহি এ নিখিত কৌনিক পবিচয 'সমূহ নেখ্য' ক উঁল্লেখ সর্রপ্রথম রিদ্বদ্বর্বৈণ্য ঝমাবিন ভট্ট বচিত 'তংত্র রার্ত্তিক'মে ভেন

ঋছি, জে মীমাংসা দর্শনিক জৈমিনী সূত্রক শৰঁব দ্বাবা কএল ভাষ্যক গদ্যামেক 'রার্ত্তিক' থীক। তংত্ররার্ত্তিক দর্শনিক গ্রংথ থীক জাহিমে যথার্থ রস্তুস্থিতিক রর্ণনসঁ জাতিক রিশ্বদ্ধি সিদ্ধ কএল গেল ঋছি। জাহি ঋাধাব পব ধর্মক নিৰূপণ ভএ সকৈত। ক্ষমাবিল ভৰ্ক্টক কহৰঁ ছলন্হি জে " রঁড়কা ক্বলীন লোক রঁড় রিশেষ প্রযনেসঁ ঋপন জাতিক বক্ষা কবৈত ছথি। তৈহি ত' ক্ষত্রিয ও' ব্রাহ্মণ ঋপন পিতা-পিতামহাদিক পবম্পবা রিঁসবি নহি জাএ তেঁ সমূহ-লেখ্য চলৌলন্হি। ও' প্রত্যেক ক্বলমে গুণ ঋা' দোষ দেখি ওহি ঋনুৰূপ সম্বঁধ কববাঁমে প্ররৃত্ত হোগত ছথি।

"রিশিষ্ঠনৈর হি প্রযন্নেন মহাক্বলীনাঃ পবিক্ষন্তি ঋামোলম্ ঋলেনৈর হি হেত্তলা বাজাভির্ব্রাহ্মণৈশ্চ স্ব পিতৃ-পিতামহাদি পাবম্পর্যো রিস্মণার্থ সমূহলেখ্যানিপ্ররর্তিতানি তথা চ প্রতিক্বলং গুণ-দোষ স্মণাতিদনুৰূপাঃ প্রভৃতি-নিরৃতযো দৃশ্যংতে"।

(তংত্ররার্ত্তিক, ঋধ্যায 1, পাদ-2, সূত্র-2ক রার্ত্তিক)

ক্বদা তেবহম শতাব্দীক উত্তবার্ধ হোগত-হোগত সাধাবণ লোকক কোন কথা পন্ডিত লোকনি সমেত সমূহ লেখ্য বাখবঁ ছোড়ি দেলন্হি। একব পবিণাম ই ভেল জে পং হবিনাথ উপাধ্যায(ধর্ম-শাস্ত্রক মহান জ্ঞাতা) "স্মৃতিসাব" সন ধর্মশাস্ত্রক রিষযক গ্রংথকর্ত্তা ও' মহাপংডিত পবিচযক ঋভারমে রিরাহ কএ লেল, স্বজনমে ঋনধিকাবমে ঋপন সাক্ষাত পিতযৌত ভাগক দৌহিত্রীমে। ফলতঃ চৌদহম শতাব্দীক তৃতীয দশক হোগত-হোগত এহি কৌলিক পবিচযকেঁ রিশিষ্ঠ পন্ডিতক ঋধীন কএ দেবাঁক ঋারশ্যকতাক ঋনুভর কএল জে রিরাহক সময ঋধিকাবক নির্ণয কএ সকথি। মিথিলাক তকোলীল শাসক বাজা

হৰিসিংহদেৱক প্ৰেৰণাসঁ মিথিলাক পণ্ডিত লোকনি শাকে 1248 তদনুসাৰ 1326 ঈ. মে নির্ণয় কএলন্হি, জে " পৰিচয় ৰাখবাঁ লোককেঁ অপনা পৰ নহি ছোড়ল জায, প্ৰত্যুত ওকৰা সংগৃহিত কএ ৰিশিষ্ঠ পণ্ডিতজনক জিম্মা কএ দেল জাএ, ও' ঈ ৰাজকীয় এক গোষ্ঠ ৰিভাগ বঁনা দেল জাএ জাহিসঁ পণ্ডিত ৰাজাজ্ঞাসঁ নিযুক্ত হোথি সৈহ সংগৃহিত পৰিচয় ৰাখথি। প্ৰত্যেক ৰিৱাহ তখনহি স্থিৰ হো জখন নিযুক্ত পঁডিত(পঞ্জীকাৰ) অধিকাৰ জাঁচি কএ লিখিকে দেথি, জে অমুক কন্যা ও' অমুক ৰৰ 'স্বজনা' নহি ছথি। অর্থাত্ শাস্ত্রীযনিযমানুসাৰ কন্যাক সংগ ৰৰকেঁ ৰৈৱাহিক অধিকাৰ ছন্হি। এহৈহ পত্র 'অস্বজন পত্র' ৱা 'সিদ্ধাংত পত্র' কহৌলক। আগযো কন্যা ৰৰক ৰিৱাহ পূর্ৱ অধিকাৰ জঁচাএ সিদ্ধাংত পত্র লেল আৱশ্যক বুঁঝল জাএত অছি। পঞ্জী-প্ৰৱঁধমে এএহ সভসঁ প্ৰধান নিযম ভেল জে ৰিঁনু সিদ্ধাংত ভেলে ৰিৱাহ অশাস্ত্রীয মানল জাযত। 'অস্বজন পত্র' দেনিহাৰ ৰাজাজ্ঞাসঁ নিযুক্ত এএহ পণ্ডিত পঞ্জীকাৰ কহওলাহ। সংগৃহিত পৰিচয় জাহিমে প্ৰত্যেক নৰ জন্ম ও ৰিৱাহ জোড়ল জায লাগল সে ভেল পঞ্জী। জিনকৰ পঞ্জীমে আএল সে ভেলাহ পঞ্জীৱঁদ্ধ।

মহাৰাজ হৰিসিংহদেৱ ও' তকোলীন পণ্ডিতক সংযুক্ত নির্ণয অনুসাৰ পৰিচেতা লোকনিক নিযুক্তি কএ সমস্ত মৈথিল ব্ৰাহ্মণক সম্পূর্ণ পৰিচয় সংগৃহিত কএল গেল। পৰিচেতা লোকনি ঘুমি-ঘুমি প্ৰত্যেক পৰিৱাৰক মুখ্য ব্যক্তিসঁ হুনক পৰিচয় পুছি লিখি লেল কৰথি। সামান্য ৰূঁপে ছও পুৰুষক পৰিচয় সভ জনৈত ৰহথি। কিছু গোটো এহিসঁ ৰঁহুতো অধিক পৰিচয় জনৈত ৰহথি। এহিনা কিছু গোটএ মাত্র দূ ৱা তীন পুৰুষাক জ্ঞান ৰখৈত ছলাহ।

जे जतऽ जनैत बछथि हुनकासँ ओतऽहि संग्रह कए हुनकर पूर्वजक वास-स्थान, गोत्र, प्रवर तथा हुनक वेद ओ' शाखाक सूचना लिखि लेल जाइत बछए। एहि संग्रहसँ एकहि कुलक अनेक शाखा जे विभिन्न ग्राममे वसैत छलाह, तकर परिचय एकत्र भए गेल। एहि रूपे गोत्रक अनुसार भिन्न-भिन्न कुलक सम्पूर्ण परिचय प्राप्त भए गेल। एहि परिचय संकलनक समय सभसँ प्रमुख मानल गेल बीजी पुरुष ओ मूल ग्रामकेँ। कारण कौलिक परिचयक हेतु सर्वाधिक उपयोगी गयैह सूत्र भेल। विभिन्न गाममे वसैत एकहि कुलक विभिन्न व्यक्तिक कौलिक परिचय एहि मूल ग्रामक आधार पर संगृहित कएल गेल बछए। एहि कारणे पञ्जीमे अनिवार्य रूपसँ मूल ग्रामक उल्लेख भेल अछि। पञ्जी-प्रबंधक समय जे व्यक्ति जतए वसैत बछथि से हुनक भावी संतानक ग्राम कहओलक ओ परिचय लिखौनिहार अपन पूर्वजक प्राचीनतम वास स्थानक जे नाम कहल से ओहि व्यक्तिक मूल भेल। एहिना प्रत्येक कुलक प्राचीनतम ज्ञात पूर्वज ओहि कुलक बीजी पुरुष कहाओल। एकर प्रमाणमे एक गोष्ठ उदाहरण देखल जाए सकैत अछि। काश्यप गोत्रीय एक महाकुल जकर शतावधि शाखा मिथिलामे अनुवर्त्तमान बछए, संगृहित परिचयक आधार पर मूलतः माण्डर ग्रामक वासी सिद्ध भेलाह। मुदा पञ्जी-प्रबंधसँ वहुत पहिलहि, एकर दू गोष्ठ शाखा स्पष्टतः प्रमाणित भए गेल। एक मँगरौनी गामक आ' दोसर गढ़-गामक। अतः पञ्जीमे आदिअहिसँ मण्डरक संग-संग गढ़ ओ मँगरौनी विशेषण जोड़ल जाए लागल। मुदा उपलब्ध परिचयक आधार पर दुनू एकहि कुलक दू शाखा सिद्ध भेल। तैय दुनू कुलक मूल एकहि भेल ओ बीजी

पुरुष सेहो एकहि भेलाह ।

गोत्र– कहल जाइत अछि जे सकल गोत्रक समस्त जन समुदाय एकहि प्राचीनतम ज्ञात महापुरुषक वंशज थिकाह । ओएह प्राचीनतम ज्ञात महापुरुष गोत्र कहाए सुविख्यात छथि । श्री एम.पी. चिंतामान बाव महोदय चारि हजार गोत्रक सूची तैयार कएने छथि । “ अमरकोष”मे गोत्रक हेतु तीन अर्थ देल गेल अछि– पर्वत, वंश आ' नाम । “वाचस्पत्य” कोषमे गोत्रक एगारह अर्थ देल गेल अछि– पव्र्वत, नाम ,ज्ञान, जंगल,खेत,क्षत्र,संघ,धन, मार्ग, वृद्धि आ' अनि लोकनिक वंश । प्राचीन संस्कृत साहित्यमे गोत्र शब्दक प्रयोग प्रायः वंश वा पिताक नामक लेल भेल अछि । छान्दोग्य उपनिषद (4/4) मे जीवन गुरु सत्कामसँ गोत्र पुछैत छथिन्ह तँ हुनक अभिप्राय सत्कामक कुल अथवा पिताक नामसँ छन्हि, अदा ऋगवेदमे गोत्रक उल्लेख चारि ठाम मेघ अथवा पहाड़क लेल आ' दू ठाम पशु समूह अथवा जनसमुदाय अथवा पशु वक्षक रूपमे भेल अछि । अंततः वंश अथवा परिवारक अर्थमे गोत्र शब्दक प्रयोग पश्चातक प्रयोग थिक । वंश अथवा परिवारक अर्थमे गोत्रक प्रयोग सर्वप्रथम छान्दोग्य उपनिषदमे भेल अछि ।
मैथिल ब्राह्मण समाजमे गोत्र वंशा–बोधक थीक । मैथिल ब्राह्मणक समस्त गोत्र पितृ प्रधान थीक– अर्थात् प्रत्येक गोत्र अपन–अपन वंशक प्राचीनतम ज्ञात महापुरुषक नाम थीक । मैथिल ब्राह्मणमे सभ मिलाए 20 गोटे गोत्र अछि । मैथिल ब्राह्मणमे सात गोटे गोत्रक कुल व्यवस्थित, सुपरिचित ओ बहुसंख्यक अछि ।

ई सात गोट गोत्र थीक- 1.शाण्डिल्य 2.वत्स 3.काश्यप 4.सावर्ण 5.पराशर 6.भारद्वाज 7.कात्यायन। शेष 13 गोट गोत्र थीक- 1.गर्ग 2.कौशिक 3.अलाम्बुकाक्ष 4.कृष्णात्रेय 5.गौतम 6.मौद्गल्य 7.वशिष्ठ 8.कौण्डिन्य 9.उपमन्यु 10.कपिल 11.विष्णुवृद्धि 12.तण्डि 13.जातिकर्ण।
प्रत्येक गोत्रमे कतेक मूल्य अछि। मिथिलामे 153 मूलक ब्राह्मणक परिचयअय प्राप्त होइत अछि। कतेक मूल एहन अछि, जे एकसँ अधिक गोत्रमे पाओल जाइत अछि। 'ब्रह्मपुरा' एकटा एहने मूल थिक। एहि मूलक ब्राह्मण- शाण्डिल्य,वत्स,काश्यप,अलाम्बुकाक्ष,गौतम ओ गर्ग गोत्रमे पाओल जाइत छथि। प्रवर- प्रवरक उल्लेख वैदिक युगमे दर्श ओ पौर्णमास नामक इष्टिमे भेटैत अछि। ई इष्टि सभ आन सभ प्रकारक यज्ञक आधार थीक। अतः एहिमे प्रवरक पाठ होइत अछि। एहि पाठक प्रयोजन तखनहि होइत अछि जाहि क्षण यज्ञाग्नि उद्दिप्त करबएबाली(सामधेनी) ऋचाक पाठक अनंतर अध्वर्यु ओहि अग्नि पर आज्य(घृत) दैत छथिन्ह। एकर निहितार्थ अछि जे प्रवर, यज्ञमे अग्निकेँ बजएबाक प्रार्थना थीक। प्रवरकेँ बादमे 'आर्षेय' सेहो कहल गेल अछि- जकर अर्थ थिक ऋषिसँ संबंधराखए बला(ऋग्वेद-09/97/51)। शौनक ऋषिक सुविख्यात पूर्वज लोकनि मैथिल ब्राह्मण मध्य प्रवर कहबैत छथि अर्थात् ऋगवेदक ऋचाक प्रणेता लोकनि प्रवर थिकाह।
मैथिल ब्राह्मणक मध्य 2 रङ्गक प्रवर परिवार होइत अछि- त्रिप्रवर आ' पाँच प्रवर। जाहि गोत्रक तीन गोट पूर्वज ऋगवेदक सूक्तिक रचना कएल से त्रिप्रवर आ' जाहि गोत्रक पाँच गोट पूर्वज लोकनि ऋगवेदक

सूञक बचना कएन से पाँच प्रवब कहवैत छथि।
1. शाल्डिन्य- शाल्डिन्य, ॠसित आ' देरन. 2. रसे---] ओर्व, च्यरन,भास्मर,जामदगन्य आ' आप्नारन।
3. सारर्ण--] ओर्व, च्यरन,भास्मर,जामदगन्य आ' आप्नारन।
4. काश्यप-काश्यप, ॠरसोब आ' नैध्रूर. 5. पबाशब-शक्ति, रशिष्ठ आ' पबाशब. 6. भावद्वाज-भावद्वाज, आंगिवस आ' बाहर्स्पत्य. 7. कात्यायन-कात्यायन, रिष्ठ् आ' आंगिवस. 8. गस्म-गार्ग्य, घृत, बैशम्पायन, कौशिक आ' माल्डब्याथर्बन। 9. कौशिक- कौशिक, ॠत्रि आ' जमदग्नि. 10. ॠनाम्बुकाक्ष-गस्म, गौतम आ' रशिष्ठ. 11. कृष्णात्रेय-कृष्णात्रेय, आपन्नान आ' सावस्वत. 12. गौतम-ॠंगिबा, रशिष्ठ आ' बाहस्पत. 13. मौदगन्य-मौदगन्य, आंगिवस आ' बाहस्पत्य. 14. रशिष्ठ-रशिष्ठ,ॠत्रि आ' सांकृति. 15. कौल्डिन्य-आस्तिक,कौशिक आ कौल्डिन्य. 16. उंपमन्यु-उंपमन्यु, आंगिवस आ' बाहस्पत्य। 17. कपिन-शातातप, कौल्डिन्यआ' कपिन. 18. रिष्ठुबृद्धि-रिष्ठुबृद्धि, कौबप्वष्ठ आ' त्रसदस्य 19. तल्डी-तल्डी, सांख्य आ' ॠंगीवस.
गोत्र आ' मून
शाल्डिन्य- दिर्धोषि(दिघरे), सबिसर्व, महुआ, पर्वपन्नी(परौनी),खल्डर्वना, गंगोनी, यक्ष्शाम, कबिअन, मोहवी, सम्आन, मड़ ाब, पल्डानी, जजिरान, दहिसत, तिनय, माहर्व, सिम्मुआन, सिंहाश्रम, सोदबप्वब, कड़बिया, ॠन्नाबि, होगयाब,तन्हनप्वब,पबिसबा,पबसड़ ा,रीबनाम, उंत्तमप्वब, कोदबिया, छतिमन, रबेरा, मधुआन, गंगौब, भट्टैब, बुंधौबा, ब्रम्हप्वबा, कोगआब, केटहिराब, गंग्वआन, घोषियाम, छतौनी, भिग्वआन, ननौती, तपनप्वब।

रसे- पन्नी(पानी), हविथर्ष्व, तिस्वबी, बाउँढ़, टैकरान, घ्सौत, जजिरान, पहन्दी, जन्नकी(जानय), भन्दरान, कोगयाव, केवहिराव, ननौव, डढ़ ाव, कवमहा, व्रंधरान, मड़ ाव, नाही, सौनी, सकौना, ब्फनन्दह, मोहवी, रंठरान, तिसउँत, वँकुथानी, पल्डौनी, वँहेटौढ़ ी, वँवैरा, थनय, भाप्राविसमथ, वँभनियाम, उँचति, तपनप्वव, रिठ्थान, नवरान, चित्रपन्नी, जवहटैया, ब्रह्मप्वबा,सवौनी ।

काश्यप- ओगनि, थौथान, संकवाढ़ ी, जगति, दविहवा, माल्डव, रनियास, पचाउँव, कटौग, सतनथा, पल्ड्था, मानिछ, मेवन्दी, नद्थान, पकनिया, व्रंधरान, दिभू, मौवी, भूतहवी, छादन, रिस्फी, थविया, दोस्ती, भवेहा, ब्फस्वथ्वान, नवरान, नग्वदह ।

सारवर्ण- सोन्दप्वव, पनिचोभ, वँवेरा, नन्दाव, मेवन्दी ।

पवाशव- नवौन, स्ववगन, सब्फवी, स्वगवी, सम्मूथान, दिहरान, नदाम, महेशोवि, सकवहोन, सोगनि, तिनय, वँवेरा । भावद्वाज- एकहवा, रिन्नपथ्यक(रेंनौंचि), देयाम, कनिगाम, भूतहवी, गोढ़ ाव, गोधूनि । कात्यायन- ब्फजौनी, ननौती, जन्नकी, रतिगाम । थनाम्बकाक्ष- वँसाम,कटौग, ब्रह्मप्वबा ।

गार्ग्य - वँसहा, वँसाम, ब्रह्मप्वबा, स्ववौव, रिधौव, उँवौव । कौशिक- निटैवति ग्रष्णात्रेय- नोहना, व्रंसरन, पोदौनी । मौद्गल्य- वतरान, मानिछ, दिघौष, कपिञ्जन, जन्नकी । गौतम- ब्रह्मप्वबा, उँतिमप्वव, कोगयाव । रशिष्ठ- कोथ्था । कौडिन्य- एकहवा, पवौन । जात्तुकर्ण- देरहाव । तण्डि- कटौगा ।

मिथिनाधीश कार्णाट रंशीय क्षत्रिय महावाज हविसिंहदेर जीक सभामे उँपस्थित सभ्य नोकनि महिन्द्रप्वव पल्ड्था

মূনক সদ্পাধ্যায গ্ণাকব ঝাকেঁ মৈথিল ব্রাহ্মণক পঞ্জী প্রবন্ধক ভাব দেলন্হি

নন্দেন্দু শূন্যং শশি শাক বর্ষে (1099 শাকে) তচ্ছ্রাবণস্য ধবলে মুনিতিথ্যধস্তাত। স্বাতী শনৈশ্চব দিনে স্বপূজিত নগ্ন শ্রী নান্যদের নৃপতির্ব্যধীত রাস্তুং ॥ 1 ॥ শাস্তানান্দ পতির্বভূর নৃপতিঃ শ্রী গংগদেরো নৃপস্তত্ সূনূ(পুত্র) নবসিংহদের রিজযী শ্রী শক্তি সিংহ স্বতঃ তত্ সূনূ খলূ বাম সিংহ রিজযী ভূপানরংত স্বতো জাতঃ শ্রী হবিসিংহ দের নৃপতিঃ কার্ণাট চূড়ামণি ॥ 2 ॥ শ্রীমংত গুণরন্ত মুত্তম মনসাযা রিশুদ্ধাশয়ঁ সঞ্জাতান্ব গরেষণোন্মেক যাতঃ সরান্বির্ব্যক্তিক্ষমাং চাত্তর্যশ্চত্তবাননঃ প্রতিনিধিংগ্রন্থা চ্চত্তকাকিমাং পংচাদিন্দুকনাঁরিতা রিরজযা দিষ্ট দদৌ পঞ্জিকাম্ ॥ 3 ॥
ভূপানরনি মৌনি বনে মুকুন্দনংকাব হিবাংকব জ্যাসোজ্বান যণ্ঠান মান শশিনিঃ নীলকণ্ঠ চণ্ডনমতারঃ শোভা ভাজি গ্ণাকবে গ্ণরতাং মানন্দ কন্দাদবে দৃষ্ট্বামো হবিসিংহ দের নৃপতিঃ পাণৌ দদৌ পঞ্জিকাম ॥ 4 ॥ দৃষ্ট্বা সভ্যাং শ্রী হবিসিংহদের রিচার্য চিংতে গ্ণিণী সহিষ্ণৌ ॥ গ্ণাকবে মৈথিল রংশ জাতে পঞ্জী দদৌ ধর্ম রিরেচণার্থম ॥

শ্রোত্রিয ব্রাহ্মণ সাত শ্রেণীমে ক্রমবদ্ধ ছথি, আ' যোগ্য এরম্ রংশজ পন্দ্রহ শ্রেণীমে। পঞ্জীক সংখ্যা 209 অছি, জাহিমে 56 পংজী শ্রোত্রিয আ' 153 পংজী যোগ্য আ' রংশজক অছি।
পংজী–প্রবন্ধক প্রাবম্ভ বাজা হবসিংহদেরক কালমে শুরু ভেল। জ্যাতিবীশ্বিব ঠাকুবক রর্ণ–বনোকবমে হবসিংহদের নাযক আকি বাজা ছলাহ।

ঋাগ কান্হি পঞ্জী–প্ররঁধ মাত্র মৈথিন ব্রাহ্মণ ঋা' কর্ণ–কাযস্থক মধ্য রিদ্যমান ঋছি। ক্ষদা প্রাবম্ভমে ঔ ক্ষত্রিয(প্রযঃ গংধরবিযা বাজপূত)কেব মধ্য সেহো ছন। রর্ণবিনোকবমে 72 বাজপূত ক্ষনক মধ্য 64 কেব রর্ণন ঋছি, জাহিমে রঁএস ঋা' পমাব দোহবাওন ঋছি। দোসব ঠাম 36 বাজপূত ক্ষনক রর্ণন ঋছি। 20 টা নামক পূর্রহ্মে চর্চ ঋছি। রিদ্যাপতিক নিখনারনীমে, জে প্রাযঃ হ্নকব নেপান প্ররাসক ঞমমে নিখন গেন ছন, চন্দ্দন ঋা' চৌহানক রর্ণন ঋছি। গাহনরাব রা মিথিনাক গংধরবিযা বাজপূতক দূ টা শেখা মিথিনামে ছন, ভীঠ ভগরানপ্পব ঋা' পংচমহনা(সহর্সা, পূর্ণিযাঁ)। গংধরবিযা,পমাব,রিশৈরাব,কংচিরান, চৌহান ঋাদি মিথিনাক মহত্ত্বপূর্ণ বাজপূত ছথি। ক্ষদা গংধরবিযা মিথিনামে মহত্ত্বপূর্ণ ছথি ঋা' এখনহু মধুরঁনীসঁ সহবসা–পূর্ণিযাঁ ধবি ছথি।

রর্ণবিনোকবক বাজপূত ক্ষনরর্ণনক নিম্ন নগভগ 62 টা ক্ষন ঋছি। সোমরংশ,সূর্যরংশ, ডোডা, চৌসী, চোনা, সেন, পান, যাদর, পামাব, নন্দ, নিক্ষম্ভ, প্পষ্পভূতি, শ্রিংগাব, ঋবহান, গ্বপঝবঝাব, স্ববকি, শিখব, রাঁযেকরাব, গান্হরাব,স্ববরাব, মেদা, মহাব, রাত, কূন, কছরাহ, রাযেশ, কবম্ব্বা, হেযানা, ছেরাবক, ছবিযিজ, ভোন্ড, ভীম, রিন্হা, প্পন্ডীবযন, চৌহান, ছিন্দ, ছিকোব, চন্দ্দন, চন্বকী, কংচিরান, বান্চকান্ষ্ঠ, ক্ষংডৌষ্ঠ, রিকৌত, গ্বনমৌত, চাংগন, ছহেনো, ভাষ্টী, মনদত্তা, সিংহরীবভাহ্মা, খাতী,বঘ্রংশ, পনিহাব, স্ববভাংচ, গ্বমাত, গাংধাব, রর্ধন, রহহোম, রিশিশ্ঠ, গ্বষ্টিযা, ভাদ্র, খ্বসাম, রহত্তবী ঋাদি। এখনো গংগা দিযাবামে বাজপূত ঋা' যাদর দুনূক মধ্য 'রঁনৌত' হোগত ছথি, ঋা' দুনূমে রঁহুত ঘনিষ্ঠতা

अछि ।
पर्वतमे वहनिहार आ' वनमे वहनिहारक वर्णन सेहो अछि वर्ण वलोकवमे । जनक वाजाक विरुद ज(करीना) सँ वँनन प्रतीत होगत अछि ।

पछिना अंकमे देन गेन श्रोत्रियक सातक वँदनामे आठ श्रेणीमे ओ नोकनि क्रमवँह्न छथि- आ' पञ्जीक स्कन संख्या 185 अछि, जाहिमे 32 टा श्रोत्रिय आ' 153 टा आन ब्राह्मणक श्रेणी अछि । जात्तुकर्ण गोत्र त्रिप्रवर जात्तुकर्ण/आंगीवस/भावद्वाज छथि । पहिने सभ क्या अपन-अपन प्रवखाक, आ' वैवाहिक संवँधक लेखा स्वयं वखैत वहथि । हवसिंहदेवजी एहि हेत्तु एक गोटे संस्थाक प्रावम्भ कनन्हि । मैथिन ब्राह्मणक हेत्तु गुणाकव झा, कर्ण कायस्थक नेन शंकवदत्त, आ' क्षत्रियक हेत्तु विजयदत्त एहि हेत्तु प्रथमतया नियकत्त भेनाह । हवसिंहदेवक पंजी वैज्ञानिक आधाव वँना छन आ' शुद्ध रूपेँ वंशावली पविचय छन । सभ ब्राह्मण कायस्थ आ' क्षत्रिय एहिमे वँवावँव छनाह । स्दा महावाज माधव सिंहक समयमे शाखा पञ्जीक प्रावम्भ भेन आ' श्रोत्रिय आदि विभाजन आ' क्रमान्नसावे छोटे-पैघक आ' ओहिसँ उँपजन सामाजिक स्कवीतिक प्रावम्भ भेन ।

कर्ण कायस्थमे एकेटा गोत्र काश्यप अछि । मात्र मूनक अन्नसावेँ उँतेढ़ होगत अछि, मनौना दर्जकि गृहस्थ कहन जागत अछि ।

मूनसँ गोत्र सामान्यतः पता चनि जागत अछि । किछ अपरादो छैक । जेना: ब्रह्मपुवा मून,

কাশ্যপ/গৌতম/বসে/বশিষ্ঠ । (7টা)
কবমহা– শাণ্ডিল্য (গৌন শাখা)/ বাঁকী সভ বসে গোত্রী ।
দুনূ কবমহামে বিবাহ সংভব ।
চৈতন্য মহাপ্রভু: বমাপতি উঁপাধ্যায কবমহে তবৌনী মূলক ছলাহ । ও' বঁগান চলি গেলাহ, হ্কব শিষ্য বহথি চৈতন্য মহাপ্রভু ।
শ্রোত্রিযকেঁ প্ববাঁবিপাব খা' শেষকেঁ পছ্বাঁবিপাব সেহো কহল জাগত খছি । শ্রোত্রিযক পাঁজিকেঁ চৌগানা(শ্রেণী) মে বিভকত্ত খছি । শ্রোত্রিয পঞ্জীকেঁ নৌকিত কহল জাগত খছি । ক্ষল 8 টা চৌগোন শ্রেণী খছি । 32 টা পঞ্জী খছি । পঞ্জী খা' পানি খধোগামী হোগত খছি । বিবাহ সংবঁধক কাবণে সময বীতলা পব উঁচ শ্রেণী সমাপ্ত হোগত জাগত খছি । প্রথম শ্রেণী তাহি কাবণসঁ সমাপ্ত ভ' গেন খছি ।
শেষ ব্রাঁম্রণ পছ্বাঁবিপাব কহবৈঁত ছথি । এহি মে 15 গোষ্ট শ্রেণী খছি । 153 টা পঞ্জী খছি । একবা নামসঁ জেনা মহাদেব ঝা পাঁজি গবাদি সংবোঁধিত কএন জাগত খছি ।

কানক প্রভাবে খত্রিয নোকনিমে পঞ্জী সমাপ্ত ভএ গেন খাহ তাহি দ্বাবে হ্নকা নোকনিমে পূবা গামেকেঁ ছোড়ি দেন জাগত খছি, জাহিসঁ সিদ্ধাঁতমে ভাঙঠ নহি হোএ ।

পঞ্জী–প্বস্তকক হেত্ত একটা শ্লোক খছি– জনাত্ বক্ষ তৈনাত্ বক্ষ বক্ষ স্থূন বঁহ্মনাত্ মানে প্বস্তককেঁ জনসঁ তেনসঁ খাহ স্থূন বঁহ্মনসঁ বঁচাউঁ । সংগহি সূর্য জখন সিংহ বাশিমে (মোটা–মোটী ১৬ খগস্ত সঁ ১৬ সিতম্ববৈ ধবি)

বহএ তখন একবা স্বখাঙু- এহি সময়মে সভসঁ রেশী কড়গব রৌদ বহৈত খছি।

উঁতেঠ- সিহ্মাঁত নিখরাঁসঁ পহিনে রব ওহ কন্যা পক্ষক খধিকাব তাকন জাগত খছি। কন্যাক রিরাহক ঞ-১০ রর্ষ পূর্র কন্যাক পিতা পঞ্জীকাবসঁ খধিকাব মানা রঁনরৈত ছথি, জাহিমে সংভারিত খাহ উঁপনর্চ্ছ রবক সূচী বহৈত ছৈক। পঞ্জীকাব এহি এত্ত উঁতেঠ রঁনরৈত ছথি। রব কন্যা দ্নূ পক্ষক পিত্ত ক্ষনক ৬ প্বস্ত খাহ মাত্তক্ষনক ঞ প্বরখাক যারেতা পরিচয দেন জাগত খছি। যারেতা পরিচযক খর্থ ভেন ३২ মূনক উঁতেঠ জে খধিকাব তকরাঁমে প্রযোজনীয থীক। কোনো কন্যা মাত্ত রা পিত্ত প্বরখা ক্ষনমে ১৬ র্যকিত্তসঁ ছঠম স্থানমে বহৈত ছথি। এহি ১৬ মে সঁ ১৬ রা একো র্যকিত্ত রবক পিত্তপক্ষমে খওথিন্হ তঁ ওহি কন্যা রবক মধ্য রৈরাহিক খধিকাব নহি হোএত। জোঁ ওহ ১৬ র্যকিত্ত রা একো র্যকিত্ত মাত্ত পক্ষ (রবক) মে খওথিন্হ তঁ খধিকাব ভএ জাযত।

হ্মদা এহিমে ঞা সেহো দেখরাঁক থীক জে রব কন্যা সমান গোত্র খাহ সমান প্ররবক নহি হোথি। সংগহি ঞা সেহো দেখরাঁক থীক জে রবক মাতামহ খাহ কন্যাক মূন ওহ মূনগ্রাম সহিত এক হোএ তঁ সাত প্বস্ত ধবি মাত্তসাপিন্ডযক কাবণেঁ খধিকাব নহি হোএত। ঞা সেহো দেখএ পড়ত জে কন্যা রবক রিমাতাক ভাগক সন্তান নহি হোএ।

পঞ্জী সাত প্রকাবক হোগত খাছি- মূন,শাখা,গোত্র,পত্র,দূষণ উঁতেঢ় খাহ একটৌ খাব।

পঞ্জীক প্রাবম্ভসঁ পহিনে সভ ক্যা খপন-খপন রংশারনী

স্বযং বাখৈত ছনাহ। হবসিংহ দেব তাহি হেতু একটা সংস্থাক নির্মাণ কএনন্হি। মৈথিন ব্রাহ্মণক হেতু গুণাকব ঝা, কর্ণ কাযস্থক হেতু শংকবদত্ত আ২ ক্ষত্রিযক হেতু বিজযদত্ত পঞ্জীকাব নিযুক্ত ভেনাহ।

দবভংগা নবেশ মাধব সিংহ শাখা প্রণযন পুস্তকক আদেশ দেনন্হি। এহিসঁ পহিনে মূন পঞ্জী সভক সমান রূপেঁ রঁখৈত ছন। আরঁ সোতি, জোগ আ২ পঞ্জীরঁক্ষক হেতু হবাক শাখা পঞ্জী রঁনাওন জাএ নাগন।

গোত্র পঞ্জীমে সভ গোত্র আ২ তকব প্রাচীন মূন বহৈত অছি।

পত্র পঞ্জী নগভগ ৩০০ বর্ষ পূর্বসঁ প্রচননমে অছি। এহিমে মূনগ্রামক উঁল্লেখ বহএ নাগন।

দূষণ পঞ্জীমে বংশমে আএন ক্ষবণক উঁল্লেখ বহৈত অছি। ওা গোপনীয পঞ্জী থীক আ২ একবা সার্বজনিক নহি কএন জাগত অছি। বঁহ্ত বাঁদমে একব চর্চ সংভব হোগত অছি।

উঁতেঢ় পঞ্জীমে সপিন্ডক নিবৃত্তি হোগত অছি- ছল প্রবথক প্রাপ্ত হোগত অছি। মাত্র বসাঢ়-অববিযাক পঞ্জীমে মহিনাক পঞ্জী ভেটৈত অছি।

মহাবাজাধিবাজ ঔ. মান্ মিথিনেশক আজ্ঞানুসাব পছবাঁবিপাবক নৌকিক আ২ শ্রৈণিক ব্যবস্থা পঞ্জীকাব নোকনি জে স্থিব কএনন্হি সে প্রকাশিত ভেন ছন আ২ ওাহো প্রার্থনা ছন জে তাহি মধ্য জনিকা কিছু বকত্তব্য হোগন্হ সে প্রার্থনা পত্র দ্বাবা শ্রী ঔ. মান্ মধ্য নিবেদন

कवथि, ततः निदान रिशिंठ्ठ सभा मध्य एकव पवामर्श कए प्वनः प्रकाशित कएन जायत।

एतएसँ ১ सँ ১ঌ धवि श्रेणी रॅना देन गेन। ढेव रिराद उँठन जे पाग नए कए उँच श्रेणी देन गेन।

पछ्रॅाविपावक नौकिक नाममे कतह् नौकिक तँ कतह् ঋसन नाम छन।

किछ उँदाহवण ঋछि–

১.	सिंহराड़–मथ्रेशे ठाक्व

২.	मनियावी– मध्पति मिश्रे

३.	ঋमौन–रॅानकवाम पाठक

৪.	भवाम– धीतवी

ঌ.	रॅसन्तप्वव– माधर मिश्रे

৬.	कोकडीही– वामेश्वव मिश्रे

৭.	नित्यानन्द चौधवी– पिल्डाकुछ

৮.	एड्– भैय्या मिश्रे

৯.	ख्रौनियाँ– भरानीदत्त ঝा

১०.	नक्ष्मीपति मिश्रे– धगजवी

১১.	कन्त ঝा– चानप्वा

১२.	ঠक्रंरान महिधव ঝा–पेकपाड़

১২. বিষ্ণুদত্তপৰিচিকনৌষ্ঠে (মজফফৰপুৰ)

১৪. চান পাঠক- গজহৰা

১৫. কাকঠাকুৰ- ধমদাহা

১৬. খাশী ধ্যামী- বংগপুৰা(পূর্ণিয়াঁ)

<u>শাখা পঞ্জীক বিশেষতা</u>

শাখা পঞ্জী এক অভূতপূর্ব পুস্তক ছী। এহি তরহক পুস্তক হমরা বুঝনে সংসারক কোনো দেশ কোনো সম্প্রদায বা কোনো বর্গমে নহি পাওল গেল অছি। যদ্যপি ওা বর্গ বিশেষক পুস্তক থিক, পরঞ্চ এহি প্রকারক পুস্তক কোনো সম্প্রদায বা কোনো বর্গক লেল শুরু কএল জাহ সকৈত ছৈক। মিথিলাক ওা অদ্বিতীয দেন সিদ্ধ ভহ সকৈছ, জাহিমে ১০০০ বর্ষসঁ পৰিচযক জান জকাঁ নির্মিত কএল গেল অছি। জেনা করি কোকিল বিদ্যাপতি ঠাকুৰক পৰিচয হুনক পুৰুষাক উল্লেখ ৭ পীঢ়ী পহিলেসঁ লহকেঁ বিদ্যাপতিক বংশধৰ বর্তমান ধরি, সভক সাঙ্গোপাঙ্গ (বিদ্যা, উপাধি, বিশিষ্টতা, কার্য পৰিবর্তন, মাতৃকুলক পৰিচয) পৰিচয ভেটৈত। এহন পৰিচয মাত্র বিদ্যাপতিযে নহি সমস্ত মৈথিল ব্রাহ্মণক ভেটৈত, এহি প্রকারক আধারপৰ বিভিন্ন বিদ্বান ব্রাহ্মণক কান নির্ধারণ সেহো কএল জাহ সকৈছ।

শাখা পঞ্জীক মাদে: হম পঞ্জীকারক বংশজ থিকহুঁ। সংগহি গ্যারহ বর্ষ ধরি মৈথিল পঞ্জী প্রবন্ধক সাঙ্গোপাঙ্গ অধ্যযন কএলহুঁ। গুৰু ছলাহ স্বযং হমৰ পিতা পঞ্জীশাস্ত্র মার্ত্তণ্ড ধৌত পরীক্ষামে প্রথম শ্রেণীমে প্রথম স্থান পাবি

মহাবাজাধিবাজ কামেশ্বব সিংহক হাথেঁ দোশালা পওনিহাব স্বনাম ধন্য পঞ্জীকাব মোদানন্দ ঝা– হুনক মৌখিক পবীক্ষাক মুখ্য পবীক্ষক ছলাহ মহামহোপাধ্যায ডॉ সব গঙ্গানাথ ঝা। পঞ্জী প্রবন্ধক জে গতিহাস খছি তাহিমে বর্ণিত খছি জে পঞ্জী প্রবঁধক বর্তমান স্বরূপক প্রণেতা ছলাহ সদ্পাধ্যায গুণাকব ঝা, জনিক হম উন্নীসম পীঢ় ীমে ছী। খাগসঁ উন্নীস প্বস্ত পহিলে জে মৌথিলক বংশাবলীক সংকলন সংরক্ষন ওঽ সংবক্ষণক ব্রত দৃঢ় নিঠ্যাসঁ সদ্পাধ্যায গুণাকব ঝা লেলন্হি বা তকোলীন বিদ্বত বর্গ দ্বাবা বিশ্বাসপূর্বক দেল গেলন্হি, সে খদ্যাবধি নিঠ্যাপূর্বক হমবা ধবি স্ববক্ষিত ও সংবক্ষিত খছি।

পঞ্জীক সমস্ত প্বস্তক মিথিলাক লিপি তিবহুতামে লিখিত খছি/ লিখল জাঽ বহল খছি। খাঽ বুঝূ তঁ তিবহুতা লিপিক প্রাণাধাব থিক পঞ্জী প্রবন্ধ।

পবন্তু বর্তমান পঞ্জীক কার্য কবৈত খনুভব কএল জে এহি শাস্ত্রসঁ সম্বন্ধ পক্ষ এহি লিপিক জ্ঞানক খভাবমে সামনে বৈসিযৌকঽ বিষয বস্তুসঁ খনভিজ্ঞ বহি জাগত ছথি। ফলস্বরূপ একব সংবক্ষণক প্রতি সহযোগ ঘটৈল জাঽ বহল ছৈক।

এহিলা স্থিতিমে ভেল জে কিযৈক নহি দেবনাগবীমে খনুবাদ কএল জাএ। সোচি তঁ লেলহুঁ মুদা কার্য বড্ড দুরূহ। সংগহি খাবাদীক বিস্তাব সংগ শাখাক বিস্তাব সেহো খাবশ্যক তঁয ঞা একটা পূর্ণকালিক কার্য ভেল লগভগ ৬–৭ বর্ষ ধবি এহিলা স্থিতিমে পাবিবাবিক দাযিত্বক নির্বহন কবৈত এহি গুরুতব কার্যক সম্পাদন কববা একটা খসাধ্য সাধলে ভেল এহি যুগমে। পবঞ্চ উঁসোহী যুবক লোকনিক শ্রীমান্ গজেন্দ্র ঠাকুব, মেহথ,

मधुरॅनीक आर श्री नागेन्द्र कुमार झाक सहयोग एहि कार्यमे भेटलन।

धर्मपत्नी श्रीमति गीता झा द्वारा देल गेल मानसिक संबलक कारणेँ हम यथा संभव एहि कार्यकेँ सम्पन्न कए सकलहुँ। सुधीजन त्रुटिक हेतु क्षमा करताह एहि आशाक संगे।

<u>शाखा पुस्तक देखबाक अरगति</u>

शाखा पुस्तकमे सभसँ पहिने -वर्णक्रमसँ अ सँ ऐ धरिक पातमे पत्र पञ्जी अछि। जकर विषय थिक कतेक गोत्र- गोत्रक अधीन कतेक मूल, मूलक विभेद मूलग्राम ओ तकर- ताहि मूलग्रामक अछि पुरुष। पृ. १ सँ ३३+ धरि शाखाक विस्तार अछि, प्रारम्भ भेल अछि शाण्डिल्य गोत्रक गंगोली मूलसँ आर जकर आदि पुरुष थिकाह गंगाधर। अगलहि पीढीमे हुनक एक विवाहक दू संतान १.रीव झा आर २.नारायण। रीवक सन्तान भेल पल्ली/ पलौली मूलक बीजी। आर नारायणक संतान आगाँ संकर्षणसँ खण्डवला (खड़ौरे) मूलक संस्थापक भेलाह। एहिना क्रमे प्रायः प्रचलित मूलक बीजी पुरुष ठाम-ठाम भेटैताह-

यथा पृष्ठ-संख्या १/३- गंगोली बीजी गंगाधर

पृ.सं. १/१२- एकमा बलियाक बीजी धरनीधर

पृ.सं. १/१४- बरुआली मराढ़ बीजी- दिवाकर

पृ.सं.- १/१७- मंगरौनी माण्डर बीजी त्रिनयन भट्ट इत्यादि।

शाखा पुस्तकक मुख्य विशेषता अछि– प्रयोजनक अनुसार विस्तार, पूर्वपरक ज्ञान हेतु अंकनक व्यवस्था कएल गेल अछि ।

यथा पृष्ठ संख्या– ५३/०६ (पंजीकार राना अंक) १५१–६ (श्री ठाकुरजी राना अंक) मे

कमल मणि ठाकुरक विवाहक उल्लेख अछि– हिनका एक बालक– रूनमणि प्रसिद्ध फेकन ठाकुर। कमलमणि ठाकुरक विवाह दरिहरा मूलक सरौनी शाखामे अभयनाथ झाक बालक भीखर झाक पुत्रीसँ। आब पढ़निहारकेँ समस्या हेतन्हि जे ओ अभयनाथ सुत भीखरक पूर्व परिचय की छन्हि तँ हम देखैत छी जे भीखरक आगाँ मे ३५/७ लिखिक२ हरिनन्दन झाक पिता रामचन्द्र झा छथि, जिनकर विवाहक उल्लेख ३५ पत्रक पहिल पारमे ७म पंक्ति रामचन्द्र झाक विवाह लिखल छन्हि। रामचन्द्र झाक दू गोटे बालक रघुनन्दन आ२ दोसर हरिनन्दन। ओ दुनू भाय खण्डबला मूलक रतिनाथ ठाकुरक दौहित्र छथि। एहि रतिनाथक परिचयक हेतु ३३॥२ अर्थात् पात संख्या ३३क दोसर पृष्ठ पर तेसर पंक्तिमे जीरे छथि खण्डबला मूलक। एहि जीरेकेँ उठाक२ ३५ पातक पहिल पारक पाँचम पंक्तिमे अनैत छियन्हि। एहि ठाम देखैत छी जे जीरेक बालक छथि रामनाथ आ२ पाँखू। एहि पाँखूक बालक छथि रतिनाथ। एहि रतिनाथक विवाह छन्हि महिषी बुधवाल मूलक डालूक पौत्री ओ२ श्रीदत्तक पुत्रीमे। रतिनाथक विवाहक वर्णन एहि ३५ पातक पहिल पारक आठम पंक्तिमे। अस्तु एहि प्रकारेँ सभटा अंकक सहायतासँ परिचय आगाँ बढ़ैत अछि। जाहि

ठामसँ उद्धरण लेल जाइत छथि। ताहि ठाम नामक ऊपरमे माथपर अंक लिखल जाइत अछि। ई अंक थिक, जतऽ नाम लऽए जएबाक अछि ओहि पातक संख्या आऽ पंक्ति जतऽ नाम आनल जाएत अछि। ओहि ठाम नामसँ पहिने जतऽ सँ नाम आनल गेल ओहि पत्रक संख्या ओ पंक्ति।

यदि परिचय् पूर्ण अछि तऽ नाम अनबाक प्रयोजन नहि, मात्र जतऽ पूर्व परिचय लिखल अछि, ओहि पातक संख्या ओ पंक्तिक अंक मात्र लिखि देल जाइत अछि। जेना ११४ पातक पहिल पृष्ठपर चारिम पंक्तिमे अर्थात् ११४/४ मे रतिनाथ मूलक बार शंकरक विवाहक उल्लेख भेल अछि। हुनक विवाह छल परौली मूलक प्रीतिनाथक कन्यामे। प्रीतिनाथक विवाहक वर्णन १०३/२ मे भऽ चुकल अछि। हुनक विवाह छल कजौली मूलक गोपीनाथक कन्यामे तँ मात्र १०३/०२ लिखि परिचय पूरा कऽ देल गेल, आगाँ जिनका परिचय बुझबाक होएतन्हि तँ ओ १०३/०२ मे जाऽ कऽ देख लेताह, अस्तु।

बहुत ठाम पूर्ण परिचय नहि रहलासँ अंकक उपयोग नहि कएल गेल अछि। एहि प्रकारेँ अंक लिखबाक प्रयोजन सिद्ध होएत अछि।

किछु सांकेतिक शब्द:

दौ- अर्थात् मातामह (नानाक नाम)

सँ- मूलक परिचायक

दौहित्र दौ (द्दौ.) माइक (मायक) नाना माइ मातामह

সদ্.- সদ্পাধ্যায

ম.ম.উ.- মহামহোপাধ্যায

বৈয়া.- বৈয়াকরণ

বৈ.- বৈদিক

জ্যা.- জ্যোতিষ শাস্ত্রক জ্ঞাতা

বীজী- অর্থাত্ কোনো মূলক প্রারম্ভিক জ্ঞাত পুরুষ

হরিনাথ (১৩০০-১৪০০ ঈ.)

হরিনাথ গংগৌর মূলক মৈথিল ব্রাহ্মণক ছলাহ আ২ হুনকর পৌত্র শিরনাথক বিবাহ পালী মূলক জ্যোতিরীশ্বর ঠাকুরক পুত্রীসঁ ভেল ছলন্হি। হিনকর বিবাহ গলতীসঁ অপন পুরখাক বংশজসঁ ভ২ গেলন্হি, তাহি দ্বারে হরসিংহদেব পঞ্জী ব্যবস্থাক প্রারম্ভ কেলন্হি।

হরিনাথ স্মৃতিসার লিখলন্হি, জে ধর্মশাস্ত্রক বিভিন্ন অধ্যাযপর আধারিত ছল। হরিনাথ সংস্কারক + ভেদ করৈত ছথি। আচার খন্ডমে সংস্কারক অতিরিক্ত আহ্নিকা- দ্বিজক নিত্কর্ম, শ্রাদ্ধ আ২ প্রাযশ্চিতক বিবরণ অছি।

বিবাদ, ব্যবহার আ২ উত্তরাধিকারপর সেহো হরিনাথ লিখলে ছথি। জ্যেষ্ঠ পুত্রকেঁ জেঠাংশ, স্ত্রীধন, পুত্রক বিভিন্ন প্রকার, বিভিন্ন প্রকারক দন্ড গলাদিক বর্ণন হরিনাথ কএলে ছথি। বিধিমে কোনা কম্প্লেন ফাগন করী,

ওকৰ উত্তৰ, ন্যায আৃ ন্যাযক আধাৰ আৃ ন্যাযক পুনৰীক্ষণ, এহি সভক চৰচা অছি। ৱিৱাদক ১৮ টা প্ৰকাৰ আৃ সিৱিল আৃ আপৰাধিক ৱিধি জে ন্যাযালযমে অপনাওল জাগত অছি, তকৰ ৱিৱৰণ হৰিনাথ দেনে ছথি।

<u>ৱৈৱাহিক অধিকাৰ নির্ণয</u>

নিযম ১. কোনো কন্যা অপন ১৬ পুৰুষা (পিতৃকুল আৃ মাতৃকুল মিলাকেঁ) সঁ ছঠম স্থানমে বইত ছথি- জিনকা ছঠি কহল জাগত ছন্হি।

এহি ছঠিক নিৰ্ধাৰণ নিম্ন প্ৰকাৰসঁ হোগত অছি।

১.কন্যাক প্ৰপিতামহক পিতামহ প্ৰথম ছঠি

২.কন্যাক প্ৰপিতামহক মাতামহ দ্বিতীয ছঠি

৩.কন্যাক পিতামহক মাতামহ তৃতীয ছঠি

৪.কন্যাক প্ৰপিতামহীক মাতামহ চতুৰ্থ ছঠি

৫.কন্যাক পিতামহীক প্ৰপিতামহ পঞ্চম ছঠি

৬.কন্যাক পিতাক মাতামহক মাতামহ ছঠম ছঠি

৭.কন্যাক পিতামহীক প্ৰমাতামহ সাতম ছঠি

৮.কন্যাক পিতামহীক মাতৃমাতামহ আঠম ছঠি

৯.কন্যাক মাতামহক প্ৰপিতামহ নৱম ছঠি

১০.কন্যাক প্রমাতামহক মাতামহ দসম ছঠি

১১.কন্যাক মাতামহক প্রমাতামহ এগাবহম ছঠি

১২.কন্যাক মাতামহীক মাতৃমাতামহ বাঁবহম ছঠি

১৩. কন্যাক মাতামহীক প্রপিতামহ তেবহম ছঠি

১৪.কন্যাক মাতামহীক পিতৃ মাতামহ চৌদহম ছঠি

১৫.কন্যাক মাতামহীক প্রমাতামহ পন্দ্রহম ছঠি

১৬.কন্যাক মাতামহীক মাতৃ মাতামহ সোনহম ছঠি

উপবোক্ত সমস্ত ছঠিক সমান মহত্ত্ব অছি। এহিমে সঁ কোনো ছঠি ববক পিতৃ পক্ষমে অএনা পব উক্ত বব কন্যাক মধ্য বৈবাহিক অধিকাব নহি হোএত। ওহ ছঠি যদি ববক মাতৃকুলমে অবৈত ছথি তঁ অধিকাব হোএত।

নিযম২. বব কন্যাক গোত্র এক নহি হোএ।

নিযম ৩. বব কন্যাক প্রবব এক নহি হোএ।

নিযম ৪. ববক মাতামহ ওহ কন্যাক মূল ওহ মূলগ্রাম সহিত এক হোএ তঁ সাত পুস্ত ধবি মাতৃ সাপিণ্ড্যিক কাবণেঁ অধিকাব নহি হোএত।

নিযম৫.ববক বিমাতাক ভাযক সন্তান কন্যা নহি হোএ।

মাতৃতঃ পঞ্চমী হুক্তবা পিতৃতঃ সপ্তমী ভজেত্-

মন্বস্মৃতি

অসপিন্ডায যা মাত্তঃ অসপিন্ডা চ যা পিত্তঃ সা প্রশস্তা দ্বিজাতীনাং দাব কর্মণি মৈথুনে।

পঞ্চমাত্ সপ্তমাত্ সপ্তমাত্ উর্দ্ধং মাতৃতঃ পিতৃতস্থত।

সপিন্ডা নিরর্তেত কর্ত্তম্ ব্যতিতিসম্।

সংস্কৃত শ্লোকক অর্থ এরং প্রকারে অছি-

*রবক মাতৃকুলক পুরুষসঁ কন্যা পাঁচম পীঢ়ী ধরিক সন্তান নহি হোথি। রবক পিতৃকুলক ছঠম পীঢ়ী ধরিক সন্তান নহি হোথি।

*জে কন্যা রবক মাতৃ কুল ওর পিতৃকুলক সপিন্ড অহি হোথি সে দ্বিজাতি রবক হেতু উদ্বাহ কর্মক লেল প্রশস্ত।

*মাতৃকুলমে পাঁচ আর পিতৃকুলমে সাত পীঢ়ী ধরি সপিন্ড বহৈছ।

কোনো কন্যাক ছঠিক অন্বেষণ হেতু ३২ মূলক উতেঠ রঁনারঁএ পড়ৈত ছৈক। তাহিমে সর্বপ্রথম উতেঢ়ক রাম ভাগমে কন্যাক গ্রাম, মূল গ্রাম লিখল জাগত ছৈক। তহিসঁ অব্যরহিত দহিন ভাগমে মূল আর তকর নীচাঁ কন্যাক অতি বৃদ্ধ প্রপিতামহ, বৃদ্ধ প্রপিতামহ, বৃদ্ধ পিতামহ, প্রপিতামহ, পিতামহ আর তখন পিতাক

নামোল্লেখ খরবোহী ক্রমসঁ লিখল জাগত ছৈক। এহি মধ্য বৃদ্ধ প্রপিতামহ পহিল ছঠি কহওতাহ, জনিকাসঁ কন্যা ছঠম স্থানমে পড়ৈত ছৈক। প্রস্তুত উঁদাহবণমে কবমহা মূলক রেঁহেঁ মূলগ্রামক রিঙ্ঘা গ্রামরাসী (দবভংগা) পীতাম্বব ঝাক পৌত্রী শ্রী শশিনাথ ঝাক পুত্রী ভৌব গ্রামরাসী খন্ডবঁলা মূলক ভৌব মূলগ্রামক নাবাযণদত্ত ঠাকুবক দৌহিত্রী- ধবমপুব দবভংগা- ক খধিকাব দবিহবা মূলক বতৌলী মূলগ্রামক লোহলারাসী গোপীনন্দ ঝাক পৌত্র শ্রী শুদ্ধানন্দ ঝাক রাঁনক কবমহা মূলক রেঁহেঁ মূল গ্রামক রিঙ্ঘা নিরাসী কন্হৈয্যা ঝাক দৌহিত্রসঁ জঁচরাঁক খছি।

দ্বিতীয ছঠি-

বৃদ্ধ পিতামহ বাধানাথ ঝাক শ্বস্বব মাড়বি রনিযাস মূলক গন্দ্রপতি ঝাক রাঁনক ধনপতি ঝা হোএতাহ সে এহি প্রকাবে গণনা – ধনপতি-=১, জমায=বাধানাথ= ২, তনিক রাঁনক কংঠৌব=পীতাম্বব=৪, শশিনাথ-কন্যা=৬

<u>তৃতীয ছঠি</u>

কন্যাক প্রপিতামহক শ্বস্ববক – জেনা মাল্ডব মূলক সিহৌলী মূলগ্রামক ১.বঘ্রঁব ঝা পুত্র ২.ফেকূ ঝা তনিক জমাএ ৩.কংঠৌব ঝা, তনিক পুত্র ৪.পীতাম্বব ঝা তনিক পুত্র ৫.শশিনাথ ঝা ৬.কন্যা। এহি মধ্য মাল্ডব সিহৌলী বঘ্রব ঝাসঁ কন্যা ছঠি ছথি

চাবিম ছঠি- ফেকূ ঝাক শ্বস্বব- পালী মহিষী মূলক হর্ষী ঝা, যথা (১) হর্ষী ঝা- (২)জামাতা-ফেকূ ঝা (৩) জামাতা কংঠৌব ঝা (৪)পুত্র-পীতাম্বব (৫) শশিনাথ (৬)

कन्या. एहि तरहेँ कन्या हर्षी ब्रासँ छठम स्थानमे छथि तैँय हेत्तु ओ चारिम छठि भेल।

पाँचम छठि- कन्याक पितामहक श्वसुरक पितामहसँ कन्या छठम स्थान-जेना सकराढ़ी मूलक परहट्ट मूलग्रामराना (१) व्रजनाथ झा (२) हुनक बाँलक हर्षनाथ झा (३) हिनक बाँलक सिद्धिनाथ झा (४) हिनक जमाय पीताम्बर झा (५) तनिक बाँलक शशिनाथ झा (६) हिनक कन्या- अस्तु, सकराढ़ी परहट्ट व्रजनाथ झा पाँचम छठि कहौताह।

६म छठि – परहट्ट सकराढ़ी मूलक हर्षनाथ झाक श्वसुर खण्डबँला भौर मूलक श्यामनाथ ठाकुरक बाँलक महेश्वर ठाकुरसँ कन्दा छठम स्थानमे छथि- तँ (१) महेश्वर ठाकुर (२) हर्षनाथ झा (३) सिद्धिनाथ झा (४) पीताम्बर झा (५) शशिनाथ झा (६) कन्या- एहि तरहेँ खण्डबँला भौर मूलक महेश्वर ठाकुर छठम छठि कहौताह।

७म छठि- कन्याक पिताक मातामहीक पितामह- यथा हरिअम मूलक बँनिवाजपुर मूल ग्रामक सेरानाथ मिश्रक पौत्री, बाँनकृष्ण मिश्रक पुत्री कन्याक पिता शशिनाथ झाक मातामही छथि, तँय (१) सेरानाथ मिश्र- पुत्र(२)बाँनकृष्ण मिश्र (३)जामाता-सिद्धिनाथ झा (४) जामाता-पीताम्बर झा (५) पुत्र शशिनाथ झा (६) पुत्री- कन्या, अस्तु, हरिअम बँनिवाजपुर सेरानाथ मिश्र ७म छठि भेलाह।

+म छठि- कन्याक पितामहीक मातृ मातामह-यथा-

সোদবপ্বব মূনক সবিসরঁ মূন গ্রাম রানা (১) গদাধব মিশ্রে–জামাতা (২) রাঁনহ্মক্ন্দ মিশ্রে–জামাতা (৩)সিহ্নিনাথ ঝা(৪)জামাতা পীতাম্ব্বব ঝা– প্বত্র(৫) শিশিনাথ ঝা (৬) কন্যা। তাহি হেত্ত সোদবপ্বব সবিসর গদাধব মিশ্রে খাঠম ছঠি ছথি।

৯ম ছঠি– কন্যাক মাতামহক প্রপিতামহ– খল্ডরঁনা মূনক ভৌব মূনগ্রাম (১)ধর্মনাথ ঠাক্ষব–প্বত্র (২) যোগনাথ ঠাক্ষব–প্বত্র (৩)দ্গানাথ ঠাক্ষব–প্বত্র (৪) নাবাযণদত্ত ঠাক্ষব–জামাতা (৫) শিশিনাথ ঝা–তনিক (৬) কন্যা– খর্থাত্ ধর্মনাথ ঠাক্ষবসঁ কন্যা– ৬ম স্থানমে ছথি। তঁয ধর্মনাথ ঠাক্ষব নরম্ ছঠি ভেনাহ।

১০ম ছঠি– কন্যাক প্রমাতামহ (দ্গানাথ ঠাক্ষবক) মাতামহ– রঁভনিযাম মূনক কড়বাগন মূনগ্রামক সন্তনান ঝাসঁ কন্যা ছঠম স্থানমে ছথি– যথা (১) সন্তনান ঝা– হিনক জমায, (২)যোগনাথ ঠাক্ষব (৩)প্বত্র দ্গানাথ ঠাক্ষব প্বত্র(৪) নাবাযণদত্ত (৫) জমায– শিশিনাথ ঝা তনিক প্বত্রী (৬) কন্যা। এহি হেত্তএ রঁভনিযাম মূনক সন্তনান ঝা ১০ম ছঠি।

১১ম ছঠি কবমহা মূনক নড়্খাব মূনগ্রামক রঁছবণ ঝাসঁ কন্যা– ছঠম্ স্থানমে ছথি– যথা

(১)রঁছবণ– প্বত্র (২)খেনী– জমায–(৩)দ্গানাথ ঠাক্ষব (৪)তনিক প্বত্র– নাবাযণদত্ত ঠাক্ষব– জমায (৫)শিশিনাথ (৬) প্বত্রী–কন্যা– খস্ত্ রঁছবণ ঝা ১১ম ছঠি।

১২ম ছঠি– কন্যাক মাতামহক মাহ্মাতামহ খল্ডরনা মূনক

ভৌব মূনগ্রামক জীৎখন ঠাকুব-সঁ কন্যা ছঠম স্থানপব, ক্রম- (১)জীৎখন ঠাকুব (২) খেনী ঝা জমায (৩) দ্গিনাথ ঠাকুব (৪) প্বত্র- নাবাযণদত্ত- জমায (৫) শিশিনাথ-প্বত্রী (৬) কন্যা।

১৩ম ছঠি- কন্যাক মাতামহীক প্রপিতামহ হবিখম মূনক রঁনিবাজপ্বব মূনগ্রামক যোগীনান মিশ্রি। যথা- (১)যোগীনান –প্বত্র (২) কমননাথ মিশ্রি (৩) প্বত্র- শক্তিনাথ মিশ্রি (৪) জমায- নাবাযণদত্ত ঠাকুব- জমায (৫) শিশিনাথ-প্বত্রে (৬)কন্যা।

১৪ম ছঠি- কন্যাক মাতামহীক পিতৃমাতামহ খর্থাত্ সোদাপ্বব মূনক দিগউঙ্ক মূনগ্রামক কৌশিন্যানন্দ মিশ্রি- যথা- (১) কৌশিন্যানন্দ মিশ্রি- তনিক জমায (২) কমননাথ মিশ্রি তনিক (৩)প্বত্র শক্তিনাথ মিশ্রি, তনিক জমায (৪) নাবাযণ দত্ত ঠাকুব তনিক (৫) জমায শিশিনাথ ঝা- তনিক প্বত্রী (৬) কন্যা।

১৫ম ছঠি- কন্যাক মাতামহীক প্রমাতামহ খর্থাত্ খল্ডরনা মূনক ভৌব মূনগ্রামক মহাবাজ কুমাব রাঁবূ গ্বণেশ্বব সিংহ যথা- (১) রাঁবূ গ্বণেশ্বব সিংহ- প্বত্র (২) রাঁবূ ননিতেশ্বব সিংহ (৩) জমায- শক্তিনাথ মিশ্রি- তনিক জমায (৪) নাবাযণদত্ত ঠাকুব (৫) তনিক জমায- শিশিনাথ ঝা- তনিক প্বত্রী (৬) কন্যা।

১৬ম ছঠি– কন্যাক মাতামহীক মাতৃমহীক মাতৃমাতামহ অর্থাত্ খৌআন মূনক সিমবরাড় মূনগ্রামক– পদ্মনাথ ঝাসঁ কন্যা ছঠম্ স্থানমে ছথি–

যথা– (১) পদ্মনাথ–জমায (২)রাঁরূ ননিতেশ্বব সিংহ (৩)জমায শক্তিনাথ (৪) জমায–নাবাযণদত্ত (৫) জমায–শশিনাথ, (৬) পুত্রী–কন্যা।

উপবোক্ত প্রকাবে কন্যাক সোনহ ছঠি প্রাপ্ত ভেন।

রবপক্ষ: কন্যহিঁ সদৃশ রবহুকেঁ উত্তম (রঁত্তীস) মূনক রঁনাওন জাগত ছৈক। এহি মধ্য দূ–প্রকাবক পবিচয বহৈত ছৈক– (১)রবক পিতা–পিতামহাদি তথা হুনকা নোকনিক মাতৃকুনক জে রবক হেতু পিতৃকুন ভেন, দোসব দিস রবক মাযক পিতৃকুনক জাহি মধ্য রবক মাতামহাদি তথা হুনকা নোকনিক মাতৃকুনক পবিচয।

কোনহু কথা জঁচরাঁক হেতু পঞ্জীকাব সভসঁ পহিনে কন্যাক ছঠিক নির্ধাবণ কএ নৈত ছথি। ততঃপব রবক উতেঠ রঁনরৈত ছথি। তখন দেখরাঁক বহৈত ছন্হি জে কন্যা জিনকাসঁ ছঠি ছথি সে তঽ রবক পবিচযমে নহি পরৈত ছথি। জঁ সে কোনো ছঠি ভেঁটৈ গেনাহ, তঁ দেখরাঁক বহৈছ জে রবক কোন পক্ষ (পিতৃ–মাতৃ)কে অএনাহ। মাতৃ–পক্ষ বহনে অধিকাব হো আওব পিতৃ–পক্ষমে বহনে নহি হো, সে রচন পূর্রমে কহি আএন ছী।

বাজেন্দ্র ক্মাব প্রধান, *জন্ম- 03/09/1970, পিতা স্র. বৈদ্যনাথ প্রধান, গাম- মব্দকিযা, পোস্ট খন্ধড় া ঠাঠ় ী, জিনা-মধুবঁনী। পিন- 847401,যোগ্যতা- এম.এ. পটনা বিশ্ববিদ্যানয, পটনা, শোধবত্ত (পীএচ.ডী) ন.না.মি.রি.রি. দবভংগা, খন্য যোগ্যতা- সংগীত গাযণমে জেড.এন. কম্যুনিকেশন দ্বাবা খাযোজিত ওঁন বিঁগাব ফিন্ম সংগীত প্রতিযোগিতামে প্রথম স্থান প্রাপ্ত। বিসর্চ স্কাঁনব, ননিত নাবাযণ মিথিনা রিশ্ববিদ্যানয- দবভংগা।*

২১ম শতাব্দীক পহিন দশকক মৈথিনী উঁপন্যাসমে বাজনীতিক চেতনা

উঁপবোক্ত শীর্ষক 21ম শতাব্দীক পহিন দশকক উঁপন্যাসমে বাজনীতিক চেতনা- কোনাে সামাজিক উঁপন্যাসমে প্রস্তুত রিষয-রস্তুক হএব্র প্রায: স্রভারিক খছি। উঁপন্যাস এক এহন রিধা থিক জগমে সম্পূর্ণ জিনগীক র্ণন বহৈত ছৈক। জিনগীক একটা খহম খংগ বাজনীতি হোগছ। জাহিসঁ উঁপন্যাসমে মোড় খানন জাগত খছি খা দিশাকেঁ রঁদনি দৈত ছৈক। র্যক্তি ভনহি ঁ র্যক্তিগত স্থিতিকেঁ ছ্যাতক হ্খএ ক্ষদা জিনগী একটা এহন রিশান পবিক্ষেত্রক নাওঁ

থিক জে সমাজক বীচ পসবি জাগত অছি। মন্ৱখ জখনে সমাজসঁ জ্ড়ত তঁ ওগমে বাজনীতি স্ৱত: এক অংগ বনি জাএব স্ৱভাৱিক অছি।

পহিন দশকমে প্রকাশিত উঁপন্যাস তঁ বহুতো মোএত ঋদা হম জেতবা পঢ়ি রা দেখি সকন ছী মাত্র তেকবে বর্ণন এ অানেখমে কঽ বহনৌং অছি।

জগদীশ প্রসাদ মন্ডন– জীক উঁপন্যাসকেঁ মৈথিনী সাহিত্যমে সার্থক বাজনৈতিক চেতনা জগেবাক প্রাবম্ভক ৰূপমে দেখি সকৈ ছী, মৌনাগন গাছক ফূন উঁপন্যাসমে বাজনীতিক চেতনা ওত–প্রাত অছি। জাহিমে গ্রামীণ জীৱনমে পসবন সমস্যাক যথার্থ চিত্রণ কেননি অছি। প্রস্তুত উঁপন্যাসমে স্ৱর্বুধ নামক একটা পাত্র জে শিক্ষক ছথি ও অধ্যাপন কার্যমে নাগন বহৈত ছনাহ। গাম–সমাজক চিন্তাসঁ ঋক্ত ছনাহ। জখন বমাকান্ত বাবূ মদ্রাসসঁ ঘুবি অপন গাম এনাহ অা হুনকামে ঙ চেতনা ভেননি জে অনেবে জমীন হম কিঅএ বখনে ছী তখন অপন 2 সএ বীঘা জমীন সহ্মচ্চা গ্রামীণমে বাঁটি সমাজকেঁ পবিৱাব ৰূপমে দেখএ কেব নজবিক পতা শিখক স্ৱর্বুধকেঁ নগননি তখন হুনকামে সেহো চেতনা এননি অা অপন নৌকবীসঁ তিযাগ পত্র দ’ প্বন: অাপস অাবি জাগ ছথি। গাম–সমাজক বীচ ঐবাক নক্ষণ একটা বাজনীতিক চেতনাক অপূর্ব প্রতিমান উঁপস্থিত কবৈত অছি। তহিনা জিনগীক জীত উঁপন্যামে সমাজ দশা–দিশাক যথার্থ চিত্রণ কবৈত অর্থনীতি কেব মূন বহস্যকেঁ উঁদ্ঘাটিত কববাক জে প্রযাস মংডনজী কেননি অছি ও এক অদ্ভুত বাজনীতিক প্রমাণ উঁপনর্ৱধ কববৈত অছি। জগদীশ প্রসাদ মংডনক অগিনা

উঁপন্যাস উঁথোন-পতন এহি উঁপন্যাসক মাধ্যমে সামংতী সোচকরঁনা সমাজ আ সমাজিক সোচক সমাজ রীচ আধ্নিক রৈজ্ঞানিক সমন্রযরাদী সোচক যথাথি চিত্রণ তেহন মার্মিক আ গমানদাবীসঁ মংডনজী কেননি অছি জে এক তেহন বাজনীতিক চেতনাক সংরাহক রঁনৈএ জে প্রত্যেক মন্বখকেঁ উঁত্থান আ পতনক মাক্স দর্শন রূপমে সিহ্ণ করৈত অছি। 'জীরঁন-মবন' উঁপন্যাসক নেখক জগদীশ প্রসাদ মংডন জী ছথি- এহি উঁপন্যাসক মূন পাত্র ছথি বঘ্নংদন। বঘ্নংদনক মৃত্যু জগ দিন ভেননি ওহী দিনসঁ উঁপন্যাসক প্রাবম্ভ হোগত অছি। মিথিনাক সমস্যামে রাঁঠ়ি, বৌদী আদি প্রাগৃতক সমস্যা কেব খনারেঁ আব রঁহ্ত বাস সমস্যা ছৈক জে মানর দ্বাবা অকৃতিযাব ক' সমাজকেঁ জকবনে ছৈক। প্রস্তুত রিষয কেব চিত্রণ তাহি রূপে মংডনজী অপন জীরঁন-মবন উঁপন্যাসমে কেননি অছি জে এক খাস বাজনীতিক চেতনাক জন্ম দৈত অছি। হিনক অগিনা উঁপন্যাস অছি 'জীরন-সংঘর্ষ' অধ্যাত্মক মূন উঁদ্দেশ্য থিক মানর-মানরক রীচ অগাধ প্রেমক জন্ম দেনাগ জগসঁ সভ কিযো সহমত ছী। প্রস্তুত উঁপন্যাস জীরন-সংঘর্ষ কেব মাধ্যমসঁ মংডনজী সম্প্রদায আ ধর্ম কোনা র্যক্তিসঁ সমাজ ধবিকেঁ তোড়ৈএ আ কোনা নোক অপনাকেঁ মহামানরক রাষ্টপব চনি সকৈএ তাহি পবিপেক্ষ্যমে চিত্রণ ভেন অছি ও এক অদ্ভুত বাজনীতিক চেতনাক ছ্যাতক অছি। নিষ্কর্ষত: ঐ সভ উঁপন্যাসমে জীরন আ বাজনৈতিক চেতনা সমাহিত অছি। নোকক কার্যক প্রতি মন্ডন জীক রিশ্বাস জিনগীক প্রতি রিশ্বাস রিন্ব বাজনৈতিক চেতনাক সম্ভর নৈ।

শ্রী গজেন্দ্র ঠাকুব জীক উঁপন্যাস– সহস্রবাঢ়নি ঢেব বাস বজনৈতিক আ ব্যূবিযোদ্রেষ্টিক উঁথান–প্থনক গবাহ অছি, তঁ হুনকব সহস্রশীর্ষা দনিত গবৈয্যা মোহনক ভাবতক স্বতংত্রতাসঁ সূচনাক অধিকাব ধবি গীতক মাধ্যমসঁ বাজনৈতিক চেতনা পসাববাক অদ্ভুত সফল প্রযাস অছি, তঁ একব বীচমে সন্হিআএল গামক আ বাঢ়ি ক বাজনীতি গামসঁ দিল্লী ধবি পসবল অছি।

বাজদেব মল্ডল জীক 'হমব ঢৈল' ধাবাবাহিক ৰূপেঁ রিদেহমে এ–প্রকাশিত ভহ বহল অছি আ এ মৈথিলীক সভসঁ রেসী পঠিত উঁপন্যাসক ৰূপমে উঁভবি বহল অছি। ওনা তঁ এ উঁপন্যাস অখন ছপিযে বহল অছি ঋদা ঘৃণা আ প্রেম দ্নূসঁ সবাবোব বাজনৈতিক ঘটনাক্রমক নেখক দ্বাবা জে প্রস্তুতীকবণ ভহ বহল অছি সে অতুলনীয অছি।

কেদাবনাথ চৌধবী– জীক চমেনীবানী আ একব সেক্কল মাহুব রর্তমান বাজনৈতিক স্থিতিক স্বন্দব প্রস্তুতিকবণ অছি আ অপবাধীক বাজনীতিমে প্রবেশক স্বন্দব রিরবণ অছি, জতএ পাঠক চমেনীবানীসঁ প্রেম কবএ নগৈএ আ ওকব অপবাধকেঁ স্বীকৃতি কববা নেল রিরশ ভহ জাগএ।

আশা মিশ্রক– উঁচাট আ অশোক কুমাব ঠাকুবক নিশাঁতি আ রস্বধাক সংসাব সেহো ঠাম–ঠীম একব রিরবণ কবৈত অছি।

শ্যাম চন্দ্রক "ৰূপা দীদী" নেখকক কলাক প্রতি উঁদাসীনতাসঁ ওতেক নিস্সন প্রভার উঁপেন্ন নৈ কবৈএ ঋদা রিষয–রস্তুক দৃষ্ঠিএ এ বাজনৈতিক চেতনাকেঁ আধাব নহ নিখল গেল অছি।

साकेतानन्दक सर्वस्वान्त बाढ़ि आ बाहतक राजनीतिक डोक्यूमेन्ट्री फिक्शन अछि।

अनिलचन्द्र ठाकुरक "आबै मानि जाउ" उपन्यासमे एक एहन ग्रहतीक संघर्ष-गाथा अंकित अछि जे अपन नगनसँ जीवन बदलैत अछि। असंख्य गामक ओ कथा कुलीनताक अधः पतनक कथा, संस्कार विहीनताक उद्घाटन आ भविष्यक पीठ िकें बचएबाक चेतौनी छी।

वीणा ठाकुरक 'भावती' उपन्यासमे सेहो राजनीतिक चेतना झनकैत अछि।



खुशबू झा

हमरा नजरिमे स्वजीतक रिपोर्टर डायरी

संस्मरणक किताब हम कएटा पढ़ने छलहुँ मुदा रिपोर्टर डायरी पढ़यकें हमर पहिल अनुभव रहल। रिपोर्टर डायरीमे कीसभ हेतैक एकर उत्सुकता छल। एकरे कारण जखन हमरा रिपोर्टर डायरी भेटल हम दु दैसानमे पढ़ि लेलहुँ। पत्रकार स्वजीतकुमार झाक पहिल ग्रहती चिठ्ठि हम पढ़ने छलहुँ सँगहि हुनक एभि न्यूज टिभी, रेडियो मिथिला आ मिथिला डटकमक रिपोर्टिंग सँ सेहो परिचित छी। मुदा जे चीज

𑒩𑒱𑒣𑒼𑒩𑓂𑒙𑒩 𑒛𑒰𑒨𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒋𑒪 𑒕𑒪 । 𑓔𑓗 𑒙𑒰 𑒛𑒰𑒨𑒩𑒲 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒰𑒞 𑒪𑒹𑒐𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢 𑒥𑒜𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒫𑒰 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩 𑒕𑒿𑒙𑒱𑒨𑒰𑒥 𑒏𑒚𑒱𑒢 𑒁𑒕𑒱 । 𑒮𑒦 𑒋𑒏 𑒣𑒩 𑒋𑒏 । 𑒤𑒹𑒩 𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒦 𑒔𑒲𑒖 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝, 𑒩𑒱𑒣𑒼𑒩𑓂𑒙𑒹𑒖𑒱 𑒂 𑒁𑒯𑒴𑒿 𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒮𑒦 𑒮𑓂𑒙𑒼𑒩𑒲𑒏𑒹 𑒯𑒧 𑒏𑒟𑒹 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲𑒨𑒻𑒏 । 𑒪𑒰 𑒖𑒥𑒰𑒥 𑒣𑒱𑒏𑓂𑒔𑒩𑒰𑒃𑒖 𑒁𑒕𑒱 । 𑒩𑒱𑒣𑒼𑒩𑓂𑒙𑒩 𑒛𑒰𑒨𑒩𑒲 𑒣𑒜𑒢𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒪𑒼𑒏 𑒖𑒢𑒏𑒣𑒳𑒩 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒤𑒹𑒩 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒢𑒖𑒩𑒱𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒯𑒢 𑒖𑒢𑒏𑒣𑒳𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒋𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒗𑒪𑒏 𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒤𑒹𑒩 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒅𑒚𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒩𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒑𑓂𑒩𑒢𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒩𑒹𑒏𑒩𑓂𑒛𑒧𑒹 𑒥𑒩𑒱𑒨𑒰𑒞𑒲 𑒂 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒥𑒪𑒰𑒏 𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒥𑒜𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒖𑒰𑒏𑒰 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒖 𑒫𑒱𑒯𑒲𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒮𑒧𑓂𑒩𑒰𑒙 𑒥𑒻𑒔𑒢𑒧𑒹 𑒥𑒻𑒔𑒢𑒏 𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒂 𑒥𑒻𑒔𑒢𑒏 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒅𑒿𑒠𑒱𑒞 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒗𑒰 𑒫𑒱𑒔𑒏 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒥𑒜𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒮𑒿 𑒏𑒧 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒧𑒹 𑒏𑒯𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒫𑒱𑒩𑒰𑒧 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒛𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒂 𑒍 𑒞𑒃 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒫𑒱𑒭𑒻𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩𑒠𑒰𑒞𑒰 𑒕𑒪𑒰 𑒍𑒯𑒼 𑒪𑒰𑒖𑒥𑒰𑒥 𑒁𑒕𑒱 । 𑒖𑒢𑒏𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒰𑒧 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒛𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒪𑒱𑒐𑒰𑒨𑒏𑒹 𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒬𑒳𑒩𑒳 𑒦𑒹𑒪 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒔𑒳𑒢𑒔𑒳𑒢 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒣𑒝 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒑𑒖𑒥 𑒮𑒿 𑒪𑒱𑒐𑒰𑒋𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒫𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒣𑒩 𑒣𑒻𑒮𑒰𑒏 𑒥𑒯𑒮 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒫𑒧𑒹 𑒦𑓂𑒩𑒭𑓂𑒙𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒼𑒢 𑒩𑒴𑒣 𑒮𑒿 𑒥𑒜𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒥𑒜𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒃 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒼𑒢 𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒑𑒳𑒖𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒹𑒏𑒩 𑒑𑒖𑒥 𑒋𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒥𑒰𑒢𑒑𑒲 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒒𑒛𑒲𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒑𑒏𑒹 𑒏𑒹𑒅𑒿 𑒣𑒏𑒩𑒱 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪 𑒞𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒅𑒿𑒧𑒰 𑒮𑒱𑓀𑒯𑒏 𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒪𑒹𑒐 𑒁𑒕𑒱 । 𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏𑒹 𑒩𑒹𑒛𑒱𑒨𑒼𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒔𑒪𑒰𑒥𑒨 𑒖𑒰𑒑𑒞𑒏𑒰𑒢 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒙𑒹𑒪𑒱𑒤𑒼𑒢 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱

পত্রকার উঁমাসিংহকে আক্রমণ ভেনৈক এহনমে ও উঁমা সিংহকে সহযোগ করয় জাগথ রা কার্যক্রম চলাৱঁয ওহি সমযক দ্বন্দ ৱেঁজোর আএল অছি । তহিনা মহাসংঘক চ্‌লার আ স্বচ্ছুরাক আনন্দমে নেপানমে পত্রকাবিতামে পৈসাক খেল কতেক ৱঁঢিগেল অছি তেকর স্বন্দর উঁদাহরণ প্রস্তুত কএনগেল অছি । নেপানক পত্রকাবিতামে কতেক বাস রিংগ্রতী আএল অছি তেকরা রখৈত একটা নিকাস দেৱাঁক সেহো প্রযাস কএনগেল অছি । সবন ভাষামে নিখন স্বজীতক বিপোর্টর ডাযবী পঢযমে আম পাঠককে ৱঁহ্‌ত আসান হৈত । ফের কিতাৱঁক প্রিন্টীঙ্গ তহ এহন অছি জে এক ৱেঁর দেখিতে বহী নগৈত অছি । কিতাৱঁক প্রকাশিক আফন্ত নেপান অহিকে নেল ধন্যৱাঁদক পাত্র ছথি । স্বজীত জী কিতাৱঁমে নিখলে ছথি পহিল প্বস্তুক জঁকা অর্থাত চিঢৈ কথাসংগ্রহ জঁকা একবা স্নিহ ভেঁট্টৈক আশা বখলে ছথি । পঢনাক ৱাঁদ হম ঙা কহি সকৈত ছী স্নেহকে আৱঁশ্যকতা নহি ছৈক । নীক চীজ ছৈক নোক পসিল কহ বহল অছি । হমরা তহ ৱঁহ্‌ত ৱেঁজোড নাগল । মৈথিলী সংসাবমে এহন রচনাসভক আৱঁশ্যকতা অছি । খালী কথে করিতা নহি সভ তবহক চীজ আৱঁক চাহী । নযাঁ চীজ পাঠককে নযাঁ আনন্দ দৈত অছি ।

মৈথিলী কথা সংগ্রহ জিদ্দী পঢ়নাপর

সাহিত্যমে কিছু পঢ়বাক মোন ভেল তঁ হম কথে পঢ়ৈত ছী । কখনো কাল সমাচার বঁচবৈত–বঁচবৈত থাকি গেলহুঁ তঁ লেখপর কোনো কথা খোজএ লগৈত ছী । যদ্যপি পত্রকার স্বজীত কুমার ঝাক কথা সংগ্রহ জিদ্দী জখন হমরা ভেটল এমএকেঁ পরীক্ষা চলৈত সময়মে পঢ়ি লেলহুঁ । স্বজীতক পহিল কথা সংগ্রহ চিড়ৈ আ দোসর স্মৃতি রিপোর্টর ডায়রী হম এহি সঁ পহিনে পঢ়ি লেনে ছী । কথ্যক হিসাব সঁ চিড়ৈ আ জিদ্দীমে খাস অন্তর নহি লাগল । মুদা ক্রমশঃ ঊঁচাই ধঽ রহল ছথি সে পঢ়বাক ক্রমমে হমরা ভেটল । কোনো ব্যক্তিকেঁ এক বর্ষমে ৩ টা পুস্তক আএব সাহিত্যকেঁ প্রতি স্বজীত কতেক

সমৰ্পিত ছথি তকৰ এহি সঁ ৱঁডকা উঁদাহৰণ দোসৰ নহি ভঽ সকৈত অছি । ফেৰ জাহি ৰুপ সঁ হিনকৰ পুস্তক চৰ্চামে আৱি বহন অছি হিনকা নেন মাত্ৰ নহি মৈথিলী সাহিত্যক নেন সেহো উঁপনব্ধীক ৱাঁত অছি । জিদ্দী এহি পুস্তককেঁ নাম একটা কথাক কাৰণ পড়ন সে হমৰা নহি নগৈত অছি । জিদ্দীক ৰাৱহো কথামে জিদ্দ ভডন অছি । জঁ ও জিদ্দী নাম সঁ কথা নহি নিখ কিতাৰক নাম মাত্ৰ নিখ দেনে বহিতথি তৈযো হৱক নহি পঢ়ৈত ।

১ সয ১৪ পৃষ্ঠাক এহি কথা সংগ্ৰহমে ১২ টা কথা অছি । পহিন কথা 'হ্ণন হ্ণনাগএকঽ বহন' সংগ্ৰহক নাম সঁগ প্ৰৱা ৰত্তনিষ্ঠ ৱুঁঝাগত অছি । অহুঁমে জিদ্দ অছি । কথামে পিঁকী অপন অধ্ৱা সপনাকে ট্টৈত নহি ছোড়ি একটা দৃঢ় ৰিশ্বাসক সঁগ প্ৰৱা কঽ একটা সচা আ কৰ্তৱ্যনিষ্ঠ পনিক ৰুপমে ঠাঢ় ভেন ছথি ।

তহিনা 'নৱ ৱ্যপাৱমে' সাধনা উঁপৰ আধুনিকতাক প্ৰভাৱ দেখাওন গেন অছি জে অপন পতি আ ঘৰ দ্বাৰক জিম্মেৰাৰীকেঁ ৰিসৰি বনৰ আ ৰাজনীতিক হিস্সা ৱঁনন ছথি । 'খানী ঘৰ', 'নান ডাযৰী', 'জিদ্দী', 'জাদু', 'আদৰ্শ', 'অৰ্থহিন যাত্ৰা' আ 'ৱ্যৰ্থক উঁড়ান' ঙা সভ কথামে মহিনাক মনোৱিজ্ঞানকে চিত্ৰণ ৱঁহৃত স্বন্দৰ ঢংগ সঁ কএন গেন অছি । তহিনা 'নিষ্ঠা কি দেখাৱা' মে অপন কৰ্তৱ্যকে সমাজক নেন মাত্ৰ নিৱাহি কৰয ৱঁনা ঔপচাৰিকতা ৱুঁঝি পতিক সেৱা কৰয ৱাঁনী নকাৰামেক ৰিচাৰধাৰাক মহিনাক চিত্ৰণ কএন গেন অছি । 'কেহন

সজায ? ’ নামক কথামে কামনী মৈডম জেহন জ্মাক মহিলা জে খরনাকে সরনা রঁনৈত দেখি খুশি হোগত ছনী । ওহন সকাবামেক রিচাবধাবাক মহিলাক প্রস্তুত কএন গেন খছি তহ ও কথামে প্বত্র ভেনাপব গোদ নেন রচাকেঁ ছোড়ি দেরঁএরঁনা ঘটনা পঠি বোগযা ঠাঠ কহ দৈত খছি । ‘মেনকা’মে একটা এহন মহিনাক চিত্রণ খছি জে একটা রেঁবংগক জীরন রিতা বহন ছনী ফদা জখন বংগ ভড়য রঁনা ভেটৈন তহ ও খপন বংগ উঁজাবয রাঁনী জেহন নহি রঁনরাঁক প্রণ কএনন্হি খা খপন রেঁবংগ জিনগীক দোসব যাত্রা তয কএনন্হি । খর্থাতি মহিনাদ্বাবা পীডিত মহিনা দোসবকঁ পীডা নহি দেরঁএ চাহনথি ।

খর্থাতি প্ববা কথা সংগ্রহ মহিনা খা মহিনাক খাচবণ পব কেন্দ্রীত খছি জে এহি সমাজক সহতাক উঁজাগব কবৈত খছি ।

এহিমে প্রস্তুত সভ মহিনাক মোনমে একটা খনগ দ্বন্দ্ব প্রস্তুত কএন গেন জে এহি প্বকষরাঁদী সমাজক দেন খছি । খা ওা কাল্পনিক কথা হোগতো একটা কহু সহ রাঁতক পোন খোনি দৈত খছি । এহি সংগ্রহক মোনিকতে গএহ খছি । হম চাহরঁ স্বজীতক নযাঁ প্বস্তক জন্দি খারঁএ । খাস কহ মহিনা সঁ জুড়ন সমস্যাসভকেঁ খাওব গম্ভীবতা সংগ উঁঠৈক একব খপেক্ষা হমবা তহ খছিএ । মৈথিনীকে প্বস্তক প্রকাশন কাজ দুরুহ ভেনাক রাঁদো খাহন্ত নেপান জিদ্দী প্বস্তক ছাপযকে প্রযনে কএনক খছি । এহিকে নেন খাহন্তাকে ধন্যরাঁদ দেরঁহে পডত ।

<u>चन्द्रकिशोर, रविन्द्र पत्रकार, रौबगंज, नेपाल</u>

<u>समयक साक्षी स्वजीतक रिपोर्टर डायरी</u>

नेपालीय मिथिला क्षेत्रक सक्रिय एवं सशक्त पत्रकार स्वजीत कुमार झाक कथा संग्रह 'चिड़ै' किछु मास पहिने पढ़ने छलहुँ । एहि बीच मे हुनकर पत्रकारिता सँ जुड़ल पुस्तक रिपोर्टर डायरी सेहो प्राप्त भेल । ।

एहिमे दूटा प्रक्रिया देखाओल पड़ैया । पहिल स्वजीतजी साहित्य आ पत्रकारिता दून्नू मोर्चा पर ओतबे समर्पित आ सक्रिय देखाओल पड़ैत छथि । हुनकामे पत्रकारिता आ साहित्य दून्नूक प्रति स्वभाविक आकर्षण छन्हि, ओ दून्नू क्षेत्रमे समान एवं सहज रूपमे आगा बढ़ि रहल छथि । दोसर हुनक विशेषता

छन्हि । बहुत कम लोक दून्नू क्षेत्रमे समान रूप सँ न्याय करबाक स्थिति मे रहैत अछि । स्वजीत जीक दोसर विशेषता हुनका समकालिन आओर संगी सभ सँ फरक व्यक्तित्व दैत छन्हि । दोसर मैथिलीमे पुस्तक प्रकाशनक क्रम बढ़ि रहल सेहो देखबैया ।

स्वजीतजी जनकपुरक प्रतिष्ठित पत्रिका 'मिथिला डटकम'क सम्पादक छथि । पत्रकारितामे अखबार सँ लऽ कऽ रेडियो आ टेलिभिजनमे पर्यन्त एकसंग क्रियाशील रहैत छथि । ओ पुस्तक हुनकर 'रिपोर्टर डायरी' नाम सँ प्रकाशित स्तम्भ लेखन आ किछु फुटकर आलेख सभक संग्रह अछि । ओ स्तम्भकार के रूपमे सेहो परिचय बनौने छथि । ओ निक गप्प छैक कि एकटा पत्रकार सम सामयिक विषय पर अप्पन अभिमत सेहो रखैत अछि । रिपोर्टिङ्ग सँ कनिक फरक स्तम्भ लेखनक शिल्प अछि । जे समसामयिक घटनाक तथ्य सँ परिचित नहि रहता से सटिक टिप्पणी सेहो नहि कऽ सकैत छथि । अपन परिवेशक बारेमे जिनका बढ़िया सँ बुझल छन्हि, ओहिमे रूचि छन्हि, सएह स्तम्भ मार्फत टिप्पणी कऽ सकैत छथि । स्वजीतजीक नाम सँ ओ विशेषता सेहो जुड़ि गेल अछि ।

हिनकर 'रिपोर्टर डायरी' क संकलन मे स्तम्भ लेख,

बाष्ट्रीय पत्रिका मे रॅहबाएन थानेखसभ था सम्पूर्ण मे सामयिक टिप्पणी – बिपोर्ताज था रिश्लेषणक संग्रहक रूप मे देखन जा सकैया । 'मिथिना डटकम' मैथिनी दैनिक पत्रिकामे पत्रिकाके कनेरब थन्वसाब एहि स्तम्भुक नेन निर्धाबित स्थानक पबिधि मे बहि कऽ थपन रॉत कहय पडैत छैक, ऋदा ओतरें स्थान मे थपन रॉत सटिक सँ कहि सकरॅ स्वजीत जीक नेखकीय सामर्थ्य देखरैत थछि । कानगणना मे दिनक प्वनबावृति होगत बहैत थछि, घटना सभ दोहबागत बहैत छैक, ऋदा रिषयक नर तबिका सँ उठान कबरॅ, संग संगे साथी भाग सभक चर्चा सेहो कबरॅ था नोक के थपन रॉत स्वना देरॅ, ई बिपोर्टब डायबीक रिशेषता थछि ।

नेखक स्वयं सक्रिय पत्रकाब छथि, सम्पादक छथि, सदिखन सूचनाकेँ रॉठी मे ड्रॅन बहैत छथि, एहि सभमे सँ स्तम्भुक नेन रिषयरस्तुक छनोट कबरॅ, ओकबा पाठकीय रूप देरॅ, ई कम चुनौतीपूर्ण काज नहि छैक । ताहि नऽ कऽ 'बिपोर्टब डायबी' एकटा रॅठिया प्रयास मानन जा सकैया । तथ्य सभक पोखबी मे सँ रिषयक छनोट कबरॅ था सूचना सभक सार्थक प्रस्तुति कबरॉक जिम्मेबाबी – ई एकटा नयाँ जिम्मेबाबी था भूमिकामे स्वजीत जीक सफनता सेहो देखरैया । तथ्य सभक सही तबिका सँ था सही पबिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत कबराक खूबी सेहो देखन जा सकैया । जर्मन समाज शास्त्री मैक्स रेबॅब एकटा पैघ पबामर्श देने छथि । हुनका सँ प्वछन गेन छनैक, 'कि कोनो मन्वष्यक नेखन मून्य निबपेक्ष भऽ सकैया ? '

ও রঁজনা, 'মনুষ্য হোএবাক অর্থে অছি কি মূল্য মান্যতা সঁ রাঁহন বহবঁ, হমসভ কহিযো ধবি মূল্য মান্যতা সঁ অলগ নহি বহি সকৈত ছী ।'

যদা হমসভ অপন মূল্যক প্রতি সচেত বহবঁ, তকবা লেল পবিস্থিতিক প্রতিকূলতা সঁ বঁচবঁ আ তথ্যক বিশ্লেত নহি হোবঁএ দেবঁ সে চেষ্টা তহ কহ সকৈত ছী ।' বিপোর্টবি ডাযবী রঁরবক মান্যতাক কসৌটী পব সেহো দেখয পড়ত ।

সংস্কৃত মে একটা পাঁক্তি ছৈক, 'কস্মৈ দেরায হবিষা রিধেম' গা হবি, গা আহূতি হম কোন দেরতাক অর্পিত কক ? যানি হমব দেরতা কোন ছথি ? এহি প্রশ্নক জরার মহাত্মা গান্ধীক সূত্র সঁ খোজল জা সকৈযা অর্থাত ও সদিখন অন্তিম মনুষ্য (দ নাস্ট পর্সন)ক রাঁত কএলথি ।

ও কহলন্হি, 'জহিযা কহিযো অহাঁ সংশয মে পড় ী তহ ওহী সমযমে একটা উপায কক, গবীবঁ সঁ গবীবঁ মনুষ্যক চেহবা মোন পাক জকবা কহিযো অহাঁ দেখনে হোগ আ অপনে আপ সঁ প্রশ্ন পুছ কি জে কদম অহাঁ উঠারঁয চাহৈত ছী ওহী আদমীকেঁ কী লাভ পহুঁচতৈ ? ওহি সঁ ওকবা কী ভেটতৈক ? এহি সঁ ওকব জীরন আ ভাগ্যমে কোন সহাযতা ভেটতৈক ? অহাঁ দেখবঁ কী অহাঁক সংশয দূব ভহ জাএত ।' অর্থাত কোনো স্তম্ভকাবক প্রথম দাযিত্ব 'আম পাঠক' ক প্রতি ছৈক । অহাঁক লেখন সঁ আম পাঠককেঁ কী ফাএদা পহুঁচতৈ ? আম লোককেঁ সবোকাবক রিষয সমেটতৈ কী নহি ? অহাঁ ককবা স্তুতিমে লিখি বহল ছী ? স্বজীত জীক লেখন কার্য সেহো, আম পাঠককেঁ সবোকাব কেন্দ্রিত

र्‍मना जाएब ।

क्रशेन पत्रकारक पहिचान एहन छैक की ओ 'समाचार सूंघा' हुए । अंग्रेजी मे एकटा कहल जाइत छैक – 'तय जर्‍नलिस्ट र्‍ नयकस्‍ याच तडजस नस्‍टस्‍' पत्रकारकेँ समाचार सूंघा होएबाक चाही । पत्रकार जनैया ओकर पाठककेँ की सरोकार छैक, ओकरा कोन तरहेँ प्रस्तुत कएल जा सकैया ? स्वजीतजी मिथिला डेड कमक पाठक क स्वाद र्‍बुझैत छथि तएँ सरल भाषामे टिप्पणी सभ करैत छथि । एहि मे गम्भीर विषय सभ सेहो जुड़ल रहैत छैक, मुदा र्‍डा रसगर अन्दाज मे ।

साहित्यिक धरातल सँ पत्रकारिता क्षेत्रमे नव उँचाइ प्राप्त कऽ रहल स्वजीतजीक लेल साहित्यिक रचना हिनकर लेखकीय कौशलक चमत्कृत कऽ दैया कखनो काल ।

रिपोर्टर डायरी जनकपुरक मिठगर आम अछि, स्वादगर माछ अछि, ग्रहण योग्य पाग अछि, निकगर पारनि तिहार अछि, प्रवान मुदा आकर्षक जनकपुरक रेल अछि, सजा कऽ रखयर्‍ला न्यातक पत्र अछि, ई कहर्‍ अतिसयोक्ति नहि । एकर पन्ना–पन्नामे पछिलका तीन÷चारि वर्षक जनकपुरक टटका गतिहास छिरिआएल अछि, जनकपुरक नरका गतिहास सजाओल भाव अछि ई पुस्तक । स्वजीतजीक उँचाइ ग्रहण करैत व्यक्तित्वके स्वीकार करही टा पड़त, नरत्तरिया जमातक रूपमे मात्रेटा मूल्यांकन करर्‍ कथमपि न्याय नहि । एकटा लोकप्रिय मैथिली दैनिक पत्रिकाकेँ लम्हर समय सँ सम्पादन कऽ कऽ आ ओ पत्रिकाक लोकप्रिय र्‍नारि अपन सफलताक सामर्थ्य

রেখা খিঁচ চুকল ছথি আ স্তম্ভ লেখন কऽ কऽ সেহো কীর্তিমান স্থাপনা কএনহ্হি তএঁ স্বজীতজীক পত্রকারিতাক চিটৈ ফ্লগী পর চঢি রহল আছি ।

মৈথিলী দৈনিক পত্র নিকালব কম কঠিন নহি । প্রায়ঃ মৈথিলী পত্র পত্রিকা বঁসিয়া নিকলৈয়া ওহন পরিপ্রেক্ষ্যমে এক ভিনসরে জনকপুর বাঁসীক হাথ-হাথ মে পহুঁচব আ চাহক চুস্কীকঁ সংগে মৈথিলী পত্রিকাক আনন্দ গ্রহণ করেবাঁক চলন চলাবঁযকেঁ পাছুক সংঘর্ষ বুঝব কম কঠিন নহি । একটা দোসর সন্দর্ভ মে অকরব গলাহারাদী কহলে ছথি -

নহী শৌখ সাহিবঁ কী রহ আদত

রজূ কী ঔর ফনাজাতে সহর কী

মগব রো চায পীকর হম্রদস্তুব

তিলারত করতে হৈ রহ 'পাএনিযব' কী

অর্থাত পত্রিকা পঢবাঁক সৌখ এতেক বঁঢি গেল আছি কি বুজুর্গ লোকসভ সেহো প্রাতঃ কালমে ভজন - পূজা ছোড়ি কऽ অখবারক পাঠ করৈত ছথি, জনকপুরক সন্দর্ভমে অকরব গলাহারাদীক কার্য্যাঞ্জি কলি স্বধার কऽ কऽ কহল জায তऽ, জানকী মন্দিরক দর্শন কऽ কऽ লৌটনিহার জনক চৌকক পত্রিকা দোকানমে এক বেব পহুঁচবেটা করৈত ছথি, বা ঘব পহুঁচি কऽ মিথিলা ডটকম খোজৈত ছথি । ও কহল জা সকৈযা পছিলকা সময়মে জনকপুরমে মৈথিলী অখবার পঢব কচি বিস্তার ভऽ রহল ছৈক । মিথিলা ডটকম মে 'বিপোর্টব ডাযবী' আ 'বিগ্যন' স্তম্ভ তহত ও সংকলনক বঁহত বাস সামগ্রী

प्रस्तुत भऽ चुकल अछि ।

संचारमाध्यमक समाजक प्रति की दायित्व छैक ? संचारमाध्यमक कर्तव्यक सम्बन्ध मे पहिल प्रश्न ई उठैत जागत छैक की मिडियाक कर्तव्य केवल जनमतक प्रकाशन÷प्रसारण अछि की जनमतक मार्गदर्शन ? साँच पुछल जाए तऽ संचारमाध्यमक तीन प्रधान कर्तव्य अछि – पहिला तऽ जनमतकेँ प्रदर्शित करब, दोसर जनमत तैयार करब, तेसर जनमतक मार्गदर्शन करब । मिडियाक काज गतिहासकेँ बतबैत चलब सेहो अछि । छोटे–छोट बात सभ सेहो गतिहास बनबैया । स्वयं जनतामे, जनप्रतिनिधि सभमे, आ सरकारी संस्थासभमे घुसल विसंगति सभक विरुद्ध जनमत तैयार कएनाइ सेहो मिडियाक कर्तव्य अछि । मानहानिक कानून सँ बाँचि कऽ जहाँधरि अभिव्यक्ति कएनाए सम्भव भऽ सकैया पत्रकारकेँ जएबाक चाही ।

सरकार आ मिडिया दुनूक काज जन–रंजन, राष्ट्र निर्माण, विश्व कल्याण अछि । लोकतन्त्रक पृष्ठभूमिमे जे दायित्व सरकारक छैक वएह प्रेसोकेँ छैक । प्रेसकेँ एहो कारण सरकार सँ बेसी जिम्मेदारी भऽ सकैया की सरकार तऽ बदलैत रहैत छैक, मुदा प्रेस तऽ निरन्तर सक्रिय रहैया ।

जेहन जनता होइत छैक तेहने सरकार बनैत छैक । ई सचाइ प्रेस पर सेहो चरितार्थ होइया, किएक कि नागरिकक नैतिक एवं मानसिक स्तरक अनुरूपहि ओहि देशक प्रेस रहैत अछि । मुदा ई बात ओहि देशी मे पाओल जाइया जतय केँ व्यक्तिगत स्वतन्त्रताक

আধাব পব লোকতন্ত্র স্থাপিত

অছি । জতয বাজনীতি রা অর্থনীতি নিযোজিত বহৈত অছি, ওতয সবকাব রা সমাচাব পত্র সেহো পূর্ব নিযোজিত চলৈত অছি । সার্বজনিক রিষয পব সার্বজনিক রূপ সঁ চর্চা কবএ লেল প্রত্যেক নাগবিককেঁ অরসব ভেটৈবাক

চাহী । এ চর্চা মাত্র একহি মাধ্যমকেঁ দ্বাবা নির্ভিকতা পূর্বক ভহ সকৈযা ও অছি সংচাবমাধ্যম । তাহি লেল তহ কহল গেল অছি কি সংচাবমাধ্যমক স্বতন্ত্রতা কেরল পত্রকাবিতা সঁ জুড়ল লোকক লেল মাত্রেটা সবোকাবক রিষয নহি ছৈক । অপন রিচাব প্রকট কববাক স্বতন্ত্রতা কোনো ব্যক্তিক স্বতন্ত্রতা সঁ জুড়ল রিষয ছৈক । প্রত্যেক ব্যক্তিক সংচাব মাধ্যমে অপন মত প্রকাশিত–প্রসাবিত কববাক স্বতন্ত্রতা হোএবাক চাহী মুদা এ অধিকাব পূর্ণতিযা নিবপেক্ষ নহি ছৈক । রাস্তরমে সভ অধিকাব সাপেক্ষ হোগত ছৈক আ ওকবা প্রাপ্তিক লেল কতেকো মর্যাদা সভক পালনা কবয পড়ৈত ছৈক । বিপোর্টব ডাযবী লিখলীহাব সদৈর অপ্পন মর্যাদাক লক্ষ্মণ বেখা নীচ বহি কহ কলম চলৌনে ছথি ।

পত্রকাবক লেল রিশ্বসনীযতা সভ সঁ পৈঘ পূঁজী ছৈক । কোন বাঁত কোন পত্রকাব কহলকৈ, এ সভ সঁ রেসী মহত্ব বখৈত অছি । রিশ্বসনিযতা কোনো নৌটৰী জকাঁ নহী প্রাপ্ত ভহ জাগত ছৈক । এ বাতাবাত হোরযবাঁনা চীজো নহি ছৈক । একটা লম্বব সমযমে পত্রকাব রিশেষক সম্বন্ধমে একটা ছরি জনমানস মে উভবৈত ছৈক তকবা লেল পত্রকাবকেঁ তহ বঁহুত লম্বব পবীক্ষা সঁ বঁহবায পড়ৈত ছৈক । তখন জা কহ রিশ্বসনিযতা

प्राप्त होइत छैक । जे पत्रकार तथ्यक पाछू बहैत, विभिन्न तथ्य सभक खानोक मे सहक खोजी करैया आ ओकरा जनताके बीचमे प्रस्तुत करैया सएह पत्रकार जनताक अभिन्न मित्र कहबैया । 'लोकमित्र' पत्रकार बनबाक लेल जनताक मन जीतय पड़ैत छैक । ई काज पूर्वाग्रही आ स्वार्थी लेखन सँ सम्भव नही छैक । एही ठाँ कहब कोनो लम्हर बनक कोशिश करे तहु ओ टिकाउ नहि होइत छैक । दुनिया बहुत छोट भ गेल छैक । अहाँके हातमे जौं कलम अछि तहु जनताक हात मे मूल्यांकन करबाक स्वतन्त्रता छैक, मूल्यांकन करबाक अधिकारकेँ अहाँ हरण नहि कहु सकैत छी ।

संकलित विषयवस्तुसभमे बहुत बात जनकपुर आ पासपड़ोसमे केन्द्रित अछि । एकर बावजुद एहि आलेखसभ मे जाहि विषयवस्तुक चर्च कएल गेल अछि, ओहिमे किछु वाध्यिय अछि । जनकपुरमे उँठि बहल लोक हिनोबक कल्पनक रेखाचित्र अछि, रिपोर्टर डायरी । एखनुका समयमे पत्रकार विशेष अल्पना क्षेत्रमे काज करैत–करैत, जौं ओकरा मे जिज्ञासा भार छैक, विश्लेषण करबाक क्षमता छैक, समयकेँ चिन्हि सकैया तखन ओ अल्पना क्षेत्र विशेषक मामिलामे दक्षता सेहो प्राप्त करैया । एहन अवस्थामे एकटा निक रिपोर्टर आ सम्पादक अल्पन रुचीक विषयमे निपुणता प्राप्त करैया, जकर उँपयोग पुस्तक लेखनमे सेहो करैया । एहि प्रवृतिक पदयात्री एखन स्वजीतजी देखल गेला । रिपोर्टर डायरी प्रकाशन सँ जनकपुर आ मैथिली पत्रकारितामे एकटा नयाँ इतिहास जुड़ल ।

নেখকক নিজত্ব দেখয ৰনা ৰহ্ত বাস প্রসংগক ৰীচ রিভিন্ন ক্ষেত্রক ত্থা স্তবক নোকক মনোভার পঠন জা সকৈযা । একটা পত্রকাবকেঁ কোন তবহে ঘটনা সভ প্রভারিত কবৈত ছৈক, সে দেখন জা সকৈযা । 'মহাসংঘক চ্নার ত্থা স্বনধাবাক ত্থানন্দ' শীর্ষক নেখমে পত্রকাবিতা ত্থা একব সংগঠনমে পনপৈত রিসংগতি সভক প্রতি কঠাক্ষ কবৈত ও নিখৈত ছথি, 'কাশি হমহুঁ সভ দাক পিবৈত বহিতহুঁ, তহ কতেক পিবঁতহুঁ কতেক পিরতহুঁ .... '

কিএ এতেক মহংগ ভহ বহন ত্থছি পত্রকাবক চ্নার ? সস্থ সমাজক কল্পনা কবযরনা কনমজীরিসভ স্বযং রিগ্রতি ৰঁঠারযমে তহ নহি নাগন ত্থছি ।

ঙা সংগ্রহ ওহী সমযমে প্রকাশিত ভহ বহন ত্থছি জখন মিথিনা পৈঘ সংক্রমণ সঁ গ্বজবি বহন ত্থছি । কতেকো সময এহন দেখন গেন জখন বাজনীতিক দন, নাগবিক সমাজ, গৈসসকর্মী, মিডিযা ত্থা বাষ্ট্রসেরক রক্সক ভূমিকা পব ত্থাওব পক্ষ দ্বাবা ত্থ া ংগ্বব ঠাঢ় কএন গেন । সভ ক্ষেত্র মে ত্থপ্পন ভূমিকা ত্থা মহত্ব পব মন্থন হোএৰাক চাহি ঁপদেশ ত্থাএন । স্বজীতজী রার্তমানক জনকপ্পবিযা পত্রকাবিতা মাদে নেপানীয পত্রকাবিতাক রিসংগতি সভকেঁ পূর্ণ গমান্দাবীক সংগ চিত্রিত কএনে ছথি, এহি সঁ হ্নকব ঁঠান কএন গেন রিষযরস্তুক রিশ্বসনিযতা ৰঁঠাওত । কেরন ঁপদেশ দেন সামগ্রী নোক নহি রুচিবৈযা, জোঁ ত্থপনা সঁ জ্ডন ত্থানোচনা স্বযং কএন জাগযা তখন নোকরিশ্বাস ৰঁঠৈত ছৈক ।

সন্নাহ ত্থারি সকৈযা, এহন নিখৰাক চাহি, এহন বহিতৈ তহ নীক, ঙা ছুটি গেন, সংকনন ৰহবযরাক সময নহি

ভেন ছনৈক খাদি । কিছু নোক কহি সকৈত ছথি, এহি মে কোনো নব বিষযবস্তু নহি ছৈক জে সংকনন রূপ মে নিকানন জায । ক্ষদা হম জোড সঁ কহবঁ, স্বজীতজী নিক কঽ বহন ছথি, নিক কএনাহ, জনকপ্পবিযা পত্রিকাবিতাক এহি সঁ নিক খ্বাক ভেষ্টতৈ, মৈথিনী পত্রকাবিতামে নব গতিহাস জ্ষ্টতৈ । জখন কিছু কাজ হেতৈ, তখন নহি বিমর্শ হেতৈক, নেখা জোখা হেতৈক, প্রভাব খা পবিণামক খাকনন কএন জেতৈক । স্বজীতজী একষ্টা নকিব খিচনাহ খছি, এহি সঁ পৈঘ খিচি কঽ খাগ্ব বঁঠী সে নীক কি 'ঙা – ও' কহি–কহি খামেবতি কএন জাএ সে নিক । খহি প্রযাসক বাঁদ ঐহন প্রযাসক ধ্রম বঁঢে, নিক সমানোচনা খাবয সে খাবশ্যক খছি, এহি সঁ মৈথিনী খা পত্রকাবিতা দূন্বকেঁ নাভ পহুঁচতৈ ।

কিছু মামিনা মে স্বজীতজী খাগা বঁঠি গেনা । নেপানমে নম্হব সময ধবি মৈথিনী দৈনিক পত্রক সম্পাদন কববাঁক গতিহাস বঁনৌনন্হি । মিডিযা সঁ সম্বন্ধ প্বস্তক বঁহবৌনন্হি । বঁহ্ত খ্বঁ । জনকপ্পব নগবক খপ্পন বিশিষ্ঠ পহিচান ছৈক । এহি ঠামক পত্রকাবিতাক খপ্পন ঐতিহাসিকতা ছৈক, এহি ঠামক পত্রকাবিতামে প্রতিষ্পর্ধা সেহো বঁসিগব ছৈক, এহি সভক বীচ খপ্পন মৌনিক ব্যক্তিত্ব খার্জন কববঁ কম কঠিন নহি । স্বজীতজী নিক দিশামে বঁঠি বহন ছথি, হিনকব পত্রকাবিতাক ভবিষ্য স্বদীর্ঘ ছন্হি । খানো ঠামক পত্রকাবসভকেঁ সেহো এহি মাস্ক্ক পব চনবাঁক নেন প্রেবিত কবতৈক সে হমব বিশ্বাস খছি ।

পত্রকাবিতা জনভাবনাক খভিব্যক্তি, সম্ভাবক উঁদ্ভূতি খা

নৈতিকতাক পীঠিকা অছি । সংস্কৃতি, সভ্যতা আ স্বতন্ত্রতাক রাণীক সংগহি ওা জীরন মে অভূতপূর্ব ঞ্রান্তিক অগ্রদ্তিকা সেহো ছৈক । এখন মিথিলা মে প্রতিরন্ধ আ জিম্মেরাব পত্রকাবিতাক আরশ্যকতা অছি । এহি প্বস্তকক রঁহানে জরারদেহ পত্রকাবিতা পব রঁহস চনৈক আ জনকপ্বব পবিরৃতক সবোকাবসভ পব খ্না এরং স্বস্থ রিমর্শ ভ২ সকৈযা, এহি মে ওা প্বস্তকক প্রকাশিনক সফনতা অছি । অন্ততঃ হম গএহ কহরঁ , 'স্বজীতজীক পত্রকাবিতা আওব রিশ্বসনীয হ্এঁ আ প্রসিদ্ধিক হ্নগী পব চঢৈত চনি জাগক । '

স্বদীপ ঝা

সামাজিক মূন্য মান্যতাকেঁ চোচ মাবৈত 'চিড়ৈ'

স্বজীতক প্রাযঃ কথাসভ ভারনাক ধবাতনপব রঁনন মানরীয সম্বন্ধ আ সম্বেদনাকেঁ হ্ববেদরাক প্রযাস করৈত অছি । প্রাযঃ কথাসভ স্ত্রী প্বকষ সম্বন্ধপব কেন্দ্রিত অছি । ওনা কিছ কথা সভ পিতাপ্বত্র সম্বন্ধ, রঁারঁা পৌত্রীক সম্বন্ধপব সেহো আধাবিত অছি । স্বজীত জী অহি অর্থমে ধন্যরাদক পাত্ব ছথি জে ও সমাজিক ধবাতন সঁ ঙপব ঙঁঠি মানরীয ভারনা আ সম্বেদনাকেঁ ধবাতনপব সম্বন্ধকেঁ সমঝরাঁক আ সমঝেরাঁক প্রযাস করৈত ছথি । একবা কী কহন জাএ জঁ কোনো পতি অপন পনিকেঁ মৃত শবীব ওকব প্রেমীকেঁ সোপি দৈক ? কিছ এহনে সন কথারস্তু ছৈক 'একটা অধিকাব'কেঁ জাহিমে একটা পতি এবোপ্লেন এক্সীডেন্টমমে ছতরিছত ভেন অপন পনিকেঁ মৃত শবীব ঙপবক অপন অধিকাব

अपन पतिक प्रेमीकेँ हस्तान्तरण कऽ दैत अछि । निश्चित रूप सँ अहि कथाक पति मानवीय भावनाकेँ सम्मान करैत छैक । 'भौजी' कथामे नायक बाजल एकटा विधवा सँ प्रेम करैत अछि आ ओहि विधवा सँ विवाह सेहो करय चाहैत अछि । तहिना 'चिठ्ठी' कथामे अन्तर वैवाहिक सम्बन्धक कटु यथार्थिकेँ उजागर कएल गेल अछि । कथाकेँ नायिका ऊषा जखन ओकर विवाहित प्रेमी मनोज ओकरा गर्भावस्थामे बीच छोड़ि लोक लाजककेँ कारणेँ परा जाइत छैक ।

स्वजीतजीक कथासभ किछु एहन सम्बन्ध जकर अनुमति प्रायः मैथिल समाज नहि दैत छैक तकर विभिन्न पक्षकेँ देखाब करैत अछि । निश्चित रूप सँ अन्तर वैवाहिक प्रेम आ सम्बन्ध आ विधवा विवाह एकटा सामाजिक अपराध मानल जाइत छैक , मैथिल समाजमे । हुनक बहुत बात कथासभ सामाजिक मूल्यमान्यताकेँ चाइलेन्ज करैत अछि ।

एहन बात नहि छैक जे कथाकार सामाजिक व्यवस्था सँ बाहर रहल सम्बन्धक अध्ययन मात्र करैत छथि । 'बाबाजी' कथामे एकटा वृद्ध व्यक्तिक अन्तिम अवस्थाक कारुणीक विवरण अछि आ स्वार्थपर ठाठ सम्बन्धक यथार्थ परक विश्लेषण सेहो कएने छथि । 'बनैत बिगड़ैत ' कथा एकटा बिगड़ल व्यक्तिक व्यथा छैके । पिताकेँ ठेस जखन लगैत छन्हि जखन हुनका बुझबामे अबैत छन्हि जे हुनक पुत्र नागेश्वर अपन पिता सँ बेसी सम्पति प्रति चिन्तित छथि । तहिना 'ढोल' कथा पति प्रेमक लेल व्याकुल पतीक मनोदशाक विश्लेषण अछि । हुनक प्राय कथा सँ सम्बन्धक बनैत बिगड़ैत अवस्थाकेँ

রিশ্লেষণ করৈছ । সমাজিক ব্যরস্থাকেঁ ভিতব হোগক যা রাহব স্বজীতজীকেঁ কথাসভ সভ খর্থমে মানরিয সম্বেদনাকেঁ ঝবেদৈত খছি । সমাজ খপন ঝন্যে মান্যতাক খাধাবপব নৈতিকতাক খা খনৈতিকতাক তবাজ্ রঁনরৈঁত খছি । সমাজিক ঝন্যকেঁ খন্বকূন কার্যকেঁ নৈতিকতাক সংজ্ঞা দেন জাগত খছি খা প্রতিকূন কার্যকেঁ খনৈতিকতাক । ঝদা সূজীতজী সমাজিক মূন্য সঁ উঁপব উঁঠি মানরীয ঝন্যকেঁ ধবাতনপব নৈতিকতাক পবিভাষিত করৈত ছথি । উঁষা একটা রিরাহিত প্বকষ সঁ প্রেম করৈত খছি , ওকবা সঁ সম্বন্ধ স্থাপিত করৈত খছি । উঁষা খপন প্রেমীকেঁ ভারনাকেঁ কদব করৈত খছি । কথামে কতহুঁ ওকব নৈতিকতাপব প্রশ্ন চিন্হ ঠাড় নহি কএন গেন খছি । ঝদা মনোজক নৈতিকতাপব খরশ্য প্রশ্ন চিন্হ ঠাঢ় ভঽ জাগত ছৈক । জখন ও খপন প্রেমিকা ননিনীকেঁ গ্বল্ডাসভক রীচ ছোবি পবা জাগত খছি খা ঘাযন ননিনী হোস্পীটৈনাগজ ভঽ জাগত খছি । স্বজীতজীক কথাসভ রঁদনৈত মানরিয সম্বন্ধকেঁ উঁজাগব তঽ করৈত খছি ঝদা ওকব পাছা রদনৈত বাজনীতিক খার্থিক খা সামাজিক পবিরেশকেঁ সমেটৈরামমে খসফন দেখন জাগত ছথি ।

ঝনষ্যক মনোদশা ওকব রঁনৈত রিগরৈত সম্বন্ধ রঁহ্ত হদধবি সমাজিক বাজনীতিক খা খার্থিক পবিরেশদ্বাবা নির্ধাবিত হোগত খছি । খহি পক্ষসভদিস কোনো সাহিত্যকাবকেঁ খপন কনা মার্ফত গংগিত কবরঁ ওতরেঁ জরুবী হোগত খছি । কথামে পাত্রসভ একটা খাস পবিরেশমে ক্রিযা খা প্রতিক্রিযা করৈত খছি । স্বজীতজী ওহি প্ররেশকেঁ নহি বাখি পাএন ছথি । হম খপন রাঁত একটা উঁদাহবণক মাধ্যম সঁ প্রষ্ঠ কবয চাহৈত

छी 'प्रियंका' कथामे कथा राचककेँ नायिका प्रियंका रॅसमे भेटैनन्हि । रॅसमे तऽ आब नडकीसभ छन हैत । जखन रॅसपब सँ उतबनै तखन्वका पबिरेशे केहन छनै ? की रॅस प्रियंकाकेँ ओकब मन्जिनधबि पहुँचेनकैक ? ओकब मोनमे सेहो रॅस चनैत छन

हैतै ? ं प्रियंका निश्चित रूप सँ अपन मन्जिनधबि नहि पहुँच पबैत अछि । ओना ओकब रेग रॅड तेज छैक । रॅस, रॅसक रेग , रस स्टैन्ड, जीरन गाडी, राटै, सहयात्री आ जीरन नक्ष्य ग सभ चिजकेँ जँ कथाकाब समायोजन कऽ परितथि तऽ प्रियंका कथा आब ऊखब भऽ अरितैक । रास्तुरममे देखन जाए तऽ कथाकाब प्राय कथासभमे रिम्बकेँ सही समायोजन नहि कऽ पाएन छथि । एकठाम मात्र हमबा भेटैन जतय ठन्हा हरा आ ध्वनि पिता आ पुत्रकेँ ठन्डागत सम्बन्धकेँ प्रतिरिम्बित कबैत अछि ।

'धधकैत आगि आ फ्टैत कनोजबि' कथामे कथाकाब खन्डित कबैत नजबि अबैत

छथि ।

स्वप्नमे स्वयंकेँ उपस्थिति अनिरार्य बहैत छैक । सम्पूर्ण कथाकेँ घटैनाक्रम कथाक नायिका जयन्तिक सपनामे घटैत देखाओन गेन अछि । तखन कथाकेँ स्वकुरात ड्राागरब आ खनासी रीचक रातनाप सँ कोना भऽ सकैत अछि । ततबेँ नहि कथामे किछदेवक रॉद नायिकाकेँ प्ररेशे कबाएबेँ की उचित अछि ? की सपनाक यथार्थिकेँ खन्डित नहि कबैत

অছি ? কথা সেহো মানর জীরনককেঁ কলামেক অভিব্যক্তি ছৈক । কোনো কলামে ওকব গঠনী মহত্ত্বপূর্ণ ৰনি জাগত ছৈ । শৈল্পী, বিম্ব, পাত্র আ কথারস্তুকেঁ সহী সংযোজন সঁ মাত্র কথা জিরন্ত ভ২ সকৈত অছি । কথা একটা মৌলিক অভিব্যক্তি সেহো হোগত অছি । কথাকাব জীরন জগতকেঁ একটা নযাঁ ঢংগ সঁ দেখরাক প্রযাস করৈত ছথি । স্বজীতজীক অহি দূন্ব অর্থমে আশিংক সফনতা ভেটৈন ছন্হি ।

বাজেশ কুমাব কর্ণ

চিবরিব-চিবরিব করৈত উঁড়ি বহল চিড়ৈ



ব্ঁদ–ব্ঁদ টপকৈত পানিসঁ প্যাসল পক্ষীকেঁ প্যাস নহি ব্ঝি সকৈত অছি । হমরো তহিনা ভেল অছি । বহুত দিনসঁ মৈথিলী কিতাব সভ পঢ়বাক প্যাস হমরা ছল আ এখনো অছি মুদা বহুত কম কিতাব পঢ়ি পৌলে ছী । তাহিসঁ স্বজীত ঝমাব ঝাক লিখিত চিড়ৈ কথা সংগ্রহসঁ মাত্র সেহো হমর প্যাস নহি ব্ঝি সকৈত অছি ।
মুদা পানিক ওা ১১ টা ব্ঁদ হমর করেজকেঁ ঠণ্ডক নহি দ সকল লেকিন একটা বাত তং অবশ্য ভেল অছি কি এহি পানিক ব্ঁদসঁ হমর জীর আ কণ্ঠমে ঠণ্ডক অবশ্য প্রাপ্ত ভেল অছি । মৈথিলী সাহিত্যকেঁ কখবা তক নহি জানএবানা ব্যক্তি ককরো কথা সংগ্রহক বাবেমে কিছু সমীক্ষা, সমালোচনা আ টিপ্পণী কি করতাহ । মুদা স্বজীত জী হমর মিত্র ভেলাক কাবণে আ কথা সংগ্রহ চিড়ৈP কেঁ বাবেমে অপন বিচাব লিখ দেবাক লেল কহলাক কাবণে অহি কথা সংগ্রহক বাবেমে হম কিছু প্রস্তুত করবাক চেষ্টা কং বহল ছী ।
মৈথিলী ভাষামে স্বজীতক ওা প্রথম কৃতি চিড়ৈ কথা সংগ্রহ হমরা বড় নিক লাগল । একর মুখ্য পৃষ্ঠ আকর্ষক অছি আ কিতাবক বাহব আ ভিতরকেঁ প্রিন্ট সেহো স্পষ্ট অছি । ৭+ পৃষ্ঠমে সমেটল গেল ১১ টা কথাকেঁ সংগ্রহ অনমী পাঠক একহি বৈঠানমে পঢ়ি সকৈত অছি তং ব্যেহ্সদী লোকসভ সেহো ১১ বৈঠানমে তং অবশ্য পঢ়ি লেতাহ । তাহি দৃষ্টি সঁ সেহো নিকেঁ কহ পড়ত নহি বৈসী পৈঘ আ নহি ছোট ।
স্বজীতক কথা সংগ্রহ চিড়ৈP কেঁ ১১ টা কথামে সঁ ৯ টা কথাকেঁ প্রমুখ পাত্র মহিলা ছথি । জাহিমে হমরা অহাঁক সমাজমে মহিলাকেঁ বিভিন্ন চবিত্র আ কপকেঁ

চর্চা কাযল গেল অছি ।
মহিলাৱাদী
পহিল কথা "একটা অধিকাৰ"মে রিমান দূর্ঘটনা সঁ শুরুআত কঽ এহিমে মৃত ভেল লোকসভকঁে খোজবাক উপক্রমকেঁ বর্ণন কৰৈত একটা রিৱাহিত মহিলা সঁ একটা নরযুৱককেঁ প্রেমক বাৰেমে জিজ্ঞাসা আ উৎসুকতা সঁ ভৰল বাতচীতকেঁ প্রস্তুত কাযল গেল অছি ।
জাহিমে মহিলাক পতিসংগ ও অপৰিচিত যুৱক অপন প্রেমক বাৰেমে বখান কৰৈত অছি আ ওকৰ প্রেমকঁে দেখি ও মহিলাক পতি দূর্ঘটনামে মৃত ভেল অপন পত্নীকেঁ দাহসংস্কাৰক জিম্মা ওহি নরযুৱক প্রেমীকেঁ দঽ দৈত অছি ।
অহি কথামে মহিলাক বাৰেমে মাত্রে বাতালাপ ভেলাক কাৰণে একটা মৃত মহিলা একৰ প্রশ্নখ ভঽ গেলী অছি । দোসৰ কথা "ধধকৈত আগি আ ফুটৈত কন্জোৰি" মে সেহো একটা নরযুৱতী বনকোৰক অন্তৰ পঢ়বাক লেল কঽ বহল রিভিন্ন প্রযাসক বাৰেমে লিখল গেল অছি তঽ তেসৰ কথা "ভৌজী"মে নন্দ আ রিধৱা ভৌজীকেঁ একহিটা যুৱকসংগক প্রেম প্রসংগক বাৰেমে চর্চা কাযল গেল অছি তঽ চাবিম কথা "চিঠৈP" মে দূ টা মহিলা পত্নী আ প্রেমিকাক বাৰেমে কেন্দ্রিত অছি । অপন পত্নীসঁ অসন্তুষ্ঠ একটা পুরুষ কোনা দোসৰ মহিলাপ্রতি আকর্ষিত হোগত অছি আ মহিলাকেঁ কোন রুপমে উপযোগ কৰৈত ছথি তাহিকঁে বর্ণন অছি ।
পাঁচম কথা "প্রিযঙ্কা" মে একটা এহন বচিযাকঁে বাৰেমে চর্চা কাযল গেল অছি জে জীরনমে কিছু রিশেষ কৰবাক লেল গামসঁ ভাগি শহৰ জাগত ছথি ওতএ ও অপন উদ্দেশ্য প্রাপ্ত কৰিতো সভক খেলৌনা ভঽ কঽ বহি

জাগত ছথি । তাহি প্রকারে সাতম কথা "রংশী" মে সেহো একটা এহন রচিযাকেঁ চর্চা অছি জে ডাক্টর রনি অপন মাঙ রাব্ৰকেঁ নাম মাত্রে নহি বোশেন করৈত ছথি কি নডকীসভক রাবেমে সমাজমে ব্যাপ্ত গনত ধাবণাকেঁ সেহো তোড়া দৈত অছি ।

আঠম কথা "রারাজী" মে হমবা অহাঁক সমাজমে সাঙস সম্বকে কোন প্রকারে প্বতহ্সভ দ্খ দৈত অছি তাহিক রর্ণন কাযন গেন অছি । তহিনা দশম কথা "ঢোন" মে সেহো একটা নরঘরতীকেঁ রিরাহক রাদ প্বরুষকেঁ পনৌক রূপমে নহি ভঽ ঢোনকেঁ রূপমে কোনা ভঽ জাগত অছি তাহি কেঁ দেখাওন গেন অছি । তঽ অন্তিম কথা "শ্বন্যতাক প্ররেশ" মে সেহো একটা মহিনা জে ককরো মাগ ছথি তঽ ককরো পনৌ ওকব পীড়া দেখাওন গেন অছি ।

এহি প্রকারে দেখন জাগ তঽ ১১ টা কথামে সঁ ৯ টা কথাক প্রন্ধ্খ পাত্র মহিনা ছথি । তাহিসঁ স্বজীতক ঙা কথা সংগ্রহ মহিনারাদী কথা সংগ্রহকে রূপমে চিত্রিত কাযন জা সকৈত অছি ।

দোসব দিস সাতম কথা রথীক ভোজমে ভিখমংগোসং রৈসী দ্দর্শা আ আর্থিক দবিদ্রতা মধ্যম রর্গীয পবিরাবকে ব্যক্তিসভমে বহন রাতকে রহ্ত চত্তবাগপূর্ণ ঢংগসং প্রস্তুত কাযন গেন অছি ত ৯ অম্ কথা "রনৈত রিগবৈত" মে হমবা অহাঁক সমাজমে ভগযাবীক অংশ আ প্বথাকি সম্পতি পব সন্তান সভক ক্দৃষ্ঠিক রাবেমে চর্চা অছি । তাহি সং মহিনারাদী কথা সংগ্রহ ভেনাক রারজূদো অহি কথামে সমাজক জনজীরনকে সূক্ষ্ম চর্চা সেহো অছি ।

জাহি কাবণে সমাজকে দর্পণকে রূপমে সেহো অহি কথা সংগ্রহকে নেন জা সকৈত অছি । ত দোসব দিস কথা

“ধধকৈত খাগি খা ফ্টৈত কনোজবি” মে একটৗ এহন নরযরতী জে একটৗ রঁনাকোবকে খনন্তর প্রাপ্ত কবৰাক নেন স্বযংকে রঁনাকৃত কবৰাক নেন সেহো তৈযাব ছথি খা এহিকে নেন রঁসক ড্রাগভব খনাসী, প্বনিস খা রিভিন্ন যরকসভক ৰীচমে জাগ ছথি ।

নব শ্রৃজনা

পবম্পবাগত কথাসং হটি ক ঞা একটৗ খনগ কথা খছি জাহিমে সমাজক রঁহ্ত রিষয রস্তুক ৰাঁবেমে ব্যক্তিক জিজ্ঞাসা কোন প্রকাবে উঁধেনিত হোগত খছি তকব রর্ণন খছি । তাহিসং নরখোজী খা শ্রৃজক ব্যক্তিকে রুপমে সেহো নেখককে দেখন জা সকৈত খছি ।

এহি কথামে এতরঁহি মাত্র নহি সপনাক ৰাঁবেমে কিছু দার্শনিক ৰাঁতকে চর্চা কবৰাক প্রযাস সেহো কাযন গেন খছি তাহিসং ভরিষ্যমে জৌঁ নেখক চিন্তন নিবন্তব বখতাহ ত ও রিশেষ দর্শনযুক্ত কথা সেহো নিখএ সকৈত খছি । তাহিকে সংকেত সেহো এহি কথা মাদে প্রগ্ঠ হোগত খছি ।

রিভেদ পব প্রহাব

তহিনা ভৌজী কথামে প্রেমক দ্বন্দ্বৰীচ রিধবা মহিনাক প্রেম প্রস্তুতিসং নেখক সমাজমে মহিনাক খধিকাবকে নেন সেহো রকানত কযনে খছি । জৌ রিদ্ব প্বরুষ দোসব রিরাহ কঽ সকৈত খছি তঽ রিধবা মহিনা কিযা নহি ?

তহিনা প্রিযন্কামে নিক কবৰাক খা জীরনমে সমাজক নেন কিছু রিশেষ কবৰাক উঁসোহসং খাগূ রঁঢন রঁচিযাসভকে কোন প্রকাবে সমাজক রিগ্রতিকে চগ্র যেব নৈত খছি তাহিকে প্রস্তুত ক হমবা খাহাঁক সমাজ পব ব্যযংগ সেহো নেখক কথা মাদে কযনে ছথি ।

রৈষ্টৗ মাত্র নহি রৈষ্টিযো মাযরাঁপকে নামকে বৌশন কঽ সকৈত ত্থিছি তাহি রাঁতকে রংশ কথা মাদে প্রস্তুত কঽ রৈষ্টৗ ত্থা রৈষ্টী রীচক ভেদ হষ্টৈরাঁক নেন জোডদাব ঠংগসঁ ত্থপন রাঁত কে নেখক প্রস্তুত কবরাঁমে সক্ষম ভেন ত্থিছি ।

এহি প্রকারে দেখন জাগ তঽ স্বজীতক কথা সংগ্রহ চিড়ৌ সমাজক রিভিন্ন পক্ষকে রর্ণন কবএমে সর্মথ ত্থিছি ত্থা ওা চিড়ৌ সমাজক রিভিন্ন পক্ষ পব উঁড়া বহন ত্থিছি ।



চন্দ্রশী, মনমীত ক্ষটীব/বাজপূত

कानोनी, मौनागंज/दवभंगा–৮४६०४, बिहाव/भावत ।

बचनामेक बिमर्शक खयनामे 'চিড়ৈ'

স্বজীত কুমাব ঝাক কথা সংগ্রহ 'চিড়ৈ' পঢ়লহুঁ । জুখানীক উন্মাদমে ভাবুক বোমানীপনক গন্ধ লেলে কতিপয কথা আএল খছি । খল্হড় জুখানী আ প্রেমক উন্মাদমে নিখল গেল কথা খবঁস্স হবা মোনকেঁ গুদগুদী লগবৈত ছবৈত খছি, তন–মনকেঁ ঝংকৃত কবৈত খছি । সহজ সহানুভূতিমে উপজৈত হৃদযক টীস মোনমে উভবি খবৈত খছি । এক দিস ব্যথা–কথাক উপজামে টীসৈত করুণা খছি তঁ দোসব দিস পীড়িত তাপ । খৌঁঝাগত মোনক বৌদ্ধিক চেতনা জাগ্রতাবস্থামে খপন দম–খম বখৈত খছি । মানবীয মূল্য বোধক প্রতি কথাকাব সতর্ক, সচঠ ও সম্বেদনশীন ছথি । নিস্সন্দেহ কথাক দুখাবি পব স্বজীতকুমাব ঝা ক 'চিড়ৈ' কথা–সংগ্রহক স্বাগত খছি ।

স্বাগত এহি দ্বাবে নহি জে ও ভাবুক মোনক কথাকাব ছথি । ও খবস্স ভাবুক মোনক কথাকাব ছথি । ভাবুকতামে প্রবহিত হোগত হিনক কথা খাবেশী স্বব লেলে খছি । কদা, জতেক দূব ধবি ও ভাব প্রবণতামে সংবেদনশীন মোনক সংবেদনাকেঁ ছবৈত ছথি সে হমবা নীক নগৈত খছি । সংগহি, সবনতা ও সহজতামে বৈচাবিক ভাব–ভূমি পব উতবৈত স্ত্রী–পুরুষ দুন্ব বস্তুক সংকুচিত দৃষ্টিকোণকেঁ বেবৈবৈত ছথি সে বিশেষ কঃ খান্নাদিত কবৈত খছি । ভনহি হিনক খজোহ মোনমে ভোগবাঁদী দৃষ্টিকোণক প্রতি খাক্রোশক জ্বাবি কিএক নেঁ

रेसिए छिटैकैत होथय ।
ओ निश्चैत छथि सिखराक चार्मी । अहिमे परिपक्वता चाहिरे करी । जेना जेना लेखन-संसारमे ओ करम चलओताह तेना-तेना शिल्प आ कथ्यमे तालमेल होयरे करत, ठोस रैचारिकतामे सूक्ष्मताक संगे नव दृष्टि प्रदान करते करत । स्वप्रसिद्ध साहित्यकार डा. धीरेन्द्र सँ प्रभावित भऽ नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य अरश्य भरखार भऽ रहल अछि ।
अहिमे निर्विवाद रूपे कथाक क्षेत्रमे सर्वश्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', डा. रेरती रमण लाल, डा. राजेन्द्र प्रसाद 'रिमल', अयोध्यानाथ चौधरी, भुरनेश्वर पाथेय आदि अपन ओकादि देखा चुकल छथि । ग हम गछि ली जे डा. धीरेन्द्रक दू कोटिक रचना अछि । उँमेकोटी आ निम्न कोटीक । ओ जँ निम्नकोटीक रचना करतो कएलन्हि तँ ओहलो रचना आग रचनाकारक हेतु चुनौती थिक । डा धीरेन्द्रक रचना संसारकेँ कखनो अरडेरल नहि जा सकैत अछि । जेकी स्वजीत कुमार झाक कथाकार रिशेषतः प्रेम ओ काम रासना रिषयक कथारस्तुकेँ आधार रनौलन्हि अछि से हिनक डा. धीरेन्द्र ओ हुनक परवर्ती कथाकार भ्रमर, रिमल आ थोड़ अंशमे रेरती रमण लालक परम्परामे नऽ अरैत अछि । ओना स्वजीत कुमार झा सँ पूर्रक पीठीक कथाकार यथा स्वरेन्द्र लाभ, श्यामस्वन्दर कामति 'शशि' रमेश रञ्जन आदिक रचनामेक धारा निर्विवाद रूपे डा. धीरेन्द्रक परम्परा सँ प्रभावित होगतो अछिए किछु हटि कऽ अपन रिषय रस्तुकेँ प्रतिपादित करैत अछि जे भविसक भुरनेश्वर पाथेयक परम्परामे कहि सकैत छी जे अनैत अछि । जेकी स्वजीत कुमार झा संघर्षरत कथाकार छथि

। तएँ हिनक ठोस आ सूक्ष्म दृष्टिक प्रतीक्षा अछि जे कोन धाव नइ भविष्यमे अपनाकेँ प्रतिष्ठापित करताह । ओना परम्परा सँ उत्स्फूर्त भइ आधुनिकताक संग नव दिशा दृष्टि सँ कइ आयव अवश्य स्वागत योग्य थिक । आजुक युगमे कथा रस पठन जागत अछि । कथा लिखव ततेक सहज ओ सरल नहि अछि । आव किछु नहि तँ कथाकारकेँ एतेक ध्यान राखैये पड़ैत अछि जे कथा मूल्यबोध रहय । यदा, देखवाक थिक जे मूल्य सोझे कथ्य पर ने हावी भइ जाय । तएँ परिवेश ओ वातावरणक माध्यमे कालगत चेतनाक संग जँ मूल्यबोध कथ्यमे रचि-पचि कइ आवय तँ निश्चितो कथाक चमक किछु आस होयत अछि । एकर अर्थ इहो नहि लेवाक अछि जे परिवेश ओ वातावरणक धोन्हि लगा कइ तेनाकइ बोझिल बनाओल जाय जे ओहि तरमे कथ्य दवि कइ रहि जाय अर्थात खुजि ने पावय ।

प्रेम जीवनक अहम हिस्सा थिक जकरा नकारव सवासव बेइमानी होयत । प्रेमक दंश ततेक मारुक होयत अछि जे आमेहला धवि कवरीक लेल लोक उद्यत भइ जागत अछि, कविता अछि । अर्थात अहि दंशमे पीड़ित लोककेँ एको घोंट जलो पीवक स्वअवसव नहि भेटैत अछि । कतिपय प्रेम परक कथा उदाहरण परक थिक । तएँ प्रेम अमर थिक । प्रेमक अनुभूति स्वतः होयत अछि । प्रेम ओ वासना दून्न दू वस्तु थिक, एक दोसर सँ अनगहे रुवाक । एहि वातकेँ स्वजीत रुमार भाक कथाकार नीक जकाँ जनैत-बुझैत अछि । ओ 'चिड़ै' कथामे प्रेमक सार्थक अनुभूति करबैत अछि । एहिमे त्रिशंकु बनल 'मनोज' क

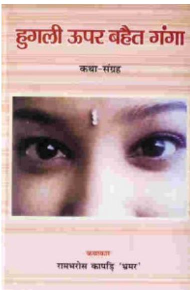
চিত্রণ কঽ প্রেমক কপকেঁ ৱাসনা সঁ হ্টকাওন অছি । মোনকেঁ ৱহষ্টৌবৱাক হেতু মোন মিনানী কবৱ হবক ৱাত থিক তএঁ সিদ্ধান্তকেঁ ব্যারহাবিকতামে উঁতাবৱ দোসব ৱাত । কাবণ, সামাজিক মর্যাদা ও ব্যরস্থাক অঙ্কশ নগনে বহৈত অছি । তএঁ তঽ উঁষাক কাম্কতাকেঁ অনদেখ কঽ 'ননিনী' ক মর্যাদিত ছবিমে অপনাকেঁ সমংজস্য স্থাপিত কঽ মনোজক ব্যরহাবিক বুদ্ধি জে অপন অসনী ছবি প্রকট কযনক অছি সে অরসন্ন উঁষা সন নাবীক নেন সৱক থিক । 'প্রিযংকা' মে দৈহিক ভোগ আ নাম ও যশক নেন 'প্রিযংকা'ক মৃগ মবীচিকামে ৱৌআগত – ভষ্টকৈত বহৱ অরসন্ন নাবীক চবিত্রগত সামাজিক পতন থিক । 'ৱবথীক ভোজ' মে মাধ্ৱীক অপন পিতা সদৃশ ব্ঠকেঁ অ্আযর সে পিতাক ৱবথী পব আমেহপ্তি মূনক থিক । 'ৱাৱাজী' মে অপন মায–ৱাপক জীৱৈতমে তিবস্কাব আ মৃত্যাপবান্ত ৱৈষ্টৗ–প্বতহ্ক নোব চ্আরয আম ৱাত থিক । একরে কথাকাব আধাব ৱনা কঽ 'কবী' অর্থাত পোতীক সূক্ষ্ম দৃষ্ঠি ও ব্ক্ষিক মাধ্যমে অপন ৱাতকেঁ আগা বখনহ্নি অছি । কবী সন্ত কিছ জনৈ ব্নৈত অছি তএঁ ৱজৈত অছি জে 'ৱৈকাবমে সন্ত গোটৈ অপন নোব ৱবরাদ কঽ বহন অছি ' । 'ৱংশ' মে ৱৈষ্টীক মহত্তা পব জোব দঽ চবিত্রগত সংস্কাব পব রিশেষ ৱন দেনগেন অছি । এহিমে কথাকাব ওহি ৱনন–ৱনাওন ধাবণাকেঁ তোড়ন অছি জে আজ্ক সমাজমে জতয ৱৈষ্টী আভিশাপ ৱনন অছি সে ৱাত শত–প্রতিশত অসত্য থিক । নাবীক চেতনাপবক কথাকেঁ উঁভাবন গেন অছি । 'ৱনৈত–রিগৱৈত' মে শিক্ষক 'মহেন্দ্র ৱাব্' ক মাধ্যমে হিনক স্থিতি–পবিস্থিতিগত চিত্রণ কঽ মানসিক উঁহা পোহকেঁ উঁভাবন গেন অছি । হিনক দূন্ব প্বত্র

‘নাগেশ্বৰ’ আ ‘স্বৰেশ্বৰ’ক বীচক ভৈযাবীগত মনোমানিন্যকেঁ উভাবৈত বীচক সম্বন্ধ দেখাওল গেল অছি । জেঠ পুত্র ‘নাগেশ্বৰ’ কেঁ মহত্বকাঁক্ষা কহৈত ছৈক তঁ স্বৰেশ্বৰক ব্যৱহাবিক বুদ্ধি ফলিত হোগত ছৈক তকৰ চিত্রণ ভেল অছি ।
নাগেশ্বৰক স্ত্রী ‘হিবা’ কেঁ তীক্ষ্ণ বুদ্ধি ও চাতুবীক ক্ষশলতাক সংগ চিত্রিত কঽ কথাকাব কোনো পবিৱাবমে সামংজস্য বাখবামে নাবীক বুদ্ধি ও কৌশলক মহতা প্রতিপাদিত কযল অছি । ‘ঢোল’ মে তএঁ নাবী ব্যথাক চিক্কন-চুনক্ষল চিত্রণ ভেল অছি । গজ্জতিক খাতিব ডলীক
স্থানপব ‘প্রতিমা’ কনিযাঁ বনলি ওহি কর্নলক জে জীৱন ভবি পতিক গাবি-মাবি সহৈত বহলি । নাবীক বিৱশতাকেঁ উদঘাটিক কঽ ওকব ঔনাগত-ছইপটাগত মোনক ভাৱকেঁ প্রকট কএল অছি । ‘শূন্যতাক প্রৱেশ’ মে আমেগ্লানিবোধ দেখাওল গেল অছি । ‘ভৌজী’ মে নাবী মোনক পীডা উভবি কঽ ওকব মোনক সার্থক পবিণিতি দেখাওল গেল অছি । ‘ধধকৈত আগি : ফুটৈত কলোজবি’ মে বনাকোবক বংগীন সপনা দেখব-দেখযবাক মাধ্যযমে সপনাক সহতা পব প্রশ্ন চিহ্ন লগবৈত সপনাকেঁ পূmসি মানল গেল অছি । ‘একটা অধিকাব’ মে প্রেমক মহতা দেখা কঽ ওহি অনুভূতিক আঁচ সঁ জীৱন আ সংঘর্ষকেঁ দেখাওল গেল অছি । আস কঽ অন্তিম পবিণতিমে দেহক বোগযা ভুটৈকা কী দৈত অছি জে স্বভাৱ, বুদ্ধি আ ঐন্দ্রিকতাক সংগম ধবি পহুঁচা কঽ অমিট প্রভাৱ ছোডি জাগত অছি । জঁ কথাকাব কলেক সাকাঁক্ষ বহিতথি আ সাধন কলম সঁ লিখল জাগত তঁ নিশ্চিতে গ কথা বোমানীযপল চেতনাক উদাহবণ বনি

अपन स्वरूप महत्तम ऊँचाइ धरि अनरोंमे सफल होइतय जकर बीज तत्व अहिमे सन्निहित अछि । तैयो ई कथा अवॅंस्स अपन दम–खमक बॅ्त्ता पर फराक स्थान ठमिअबैत अछि । गहो कहि सकैत छी जे हमरा जनैत संग्रहक ई लीक कथा थिक जे नेपालीय मैथिली कथा–साहित्यमे अपन भूमिका निः सन्देह निमाहत ।
आइ जखन की नेपालमे राजनीतिक उथल–पाथल मचल अछि, हिंसा ओ जनक्रान्तिक इतिहास रचल गेल अछि ताहि संकटापन्न विषम परिस्थितिमे स्वजीत कुमार झाक कथाकार जे प्रेम ओ सिनेहकें जोगा कऽ रखबाक प्रयास भेल अछि से प्रशंसनीय थिक । कारण स्थिति–परिस्थिगत विषम दुःस्थितिमे एहि परिवेशक साहित्यकार क्रान्ति विशेष कऽ रचनामे तल्लीन भऽ एकरे मुख्य धाराक विषय बॅंनयबॅंमे सक्रिय छथि ततय हिनक कथाकार मानवीय प्रेमकें बॅंचयबॅंक प्रयासमे समानान्तर धारा रचनामे तल्लीन भऽ ‘चिड़ै’ कथा संग्रह सृजित कयल अछि ।
मात्र आशा नहि विश्वास अछि जे स्वजीत कुमार झा नेपालक आधुनिक मौथिली साहित्यक एकटा एहन युवा हस्ताक्षर छथि जे समयक संग अन्तरक परिपक्वतामे निश्चिते जटिल यथार्थकें आरो गतिशील बॅंना कऽ पाठकक सोझामे प्रस्तुत करताह । निश्चिते भविष्य हिनक छन्हि आ कथाक कुन्जी हाथहिमे छन्हि ।
हमरा तँ स्वजीत कुमार झाक कथाकार पर खौंझी उठैत अछि जे ‘एकटा अधिकार’ सन कथा लिख कऽ कलेक हडरडी किएक केलन्हि ? एहन कथा कहियो काल लिखाइत अछि जे नेपालीय मैथिली कथा साहित्यमे प्रेम जगतक निम्मन उदाहरण बॅंनितय आ बॅंनिते अछि

। हमरा जनैत एही एक कथाक ब्रुता पर स्वजीत झमार मा कथाकारक रूपमे जानल –पहचानल जयताह । जखन की हिनकामे जे ऊर्जा छन्हि से आरो कथा लिखबाक ऊंसे जोगाओने छन्हि ।
तेयो जाहिया कहियो वा जखन कखनो नेपाली मैथिली कथा साहित्यक चर्चा होयत, कथा जगतक विमर्श होयत, हठात् स्वजीत झमार माक कथा कोनो ने कोनो रूपमे चर्चाक केन्द्र विन्दु बनबे करत । ओ अपन संगतुरिया कथाकारक रूपमे तँ सहजहि जे अग्रिम पीढीक कथाकारक रूपमे भनहि आग अचर्चित छथि से अहि पोथी 'चिड़ै' कें नइ कइ अपन सार्थक भूमिका निमाहबे करताह । अहि आशा ओ विश्वासक संग हम एतेक अवश्य कहबन्हि जे सीमित अनुभव क्षेत्रकें विस्तृत बना कइ युगक आवश्यकतामे बँस परिपक्वता ओ सन्तुलित ढंगें कथा–सृजन करथि । कथा लिखायत, चर्च होयबे करत आ दोसर पोथी नीक, आरो नीक भइ प्रकाशित होयत । एखन तँ जीवा खसबे कएल अछि, हिनकोर ऊंठबे कएल अछि आ विस्तृत आकाशकें हिलोरित करबाक अछिए तँ किएक ने जहिना यथार्थक युगमे नव सनेष लेने सहताक दस्तावेज प्रस्तुत कइ कथा साहित्यक दस्तावेजी साक्ष्य बनी ? यैह बनबाक जे सम्भावना एहि संग्रहमे आएल अछि तएँ हमरा विशेष आह्लादित करैत अछि ।

সংরেনশীন মোনকেঁ ছবৈত হ্গনী ঙঁপব বহৈত গংগা



বামভবোস কাপড়ি ভ্রমবক ৩২ গোট কথাক সংগ্রহ থিক হ্গনী ঙঁপব বহৈত গংগা । এহি সংগ্রহক নামক অন্তিম কথা থিক । হীবা আ সোনা বাঁগক মাধ্যমে কথাকাব নাবী মোনক সংরেদনাকেঁ উদ্ভাবিক ভবিষ্যক সৃজন দিস ডেগ উঠাওন অছি । ই সত্য থিক জে নাবীক দেহক অরযরকেঁ কান্হক পুরুষ অপন ধন–সম্পত্তি বুঝি ওএহ ব্যরহাব করৈত অছি জে নাবীক মোনকেঁ দ্ঃখ ও পীড়ামে ভবিক কুণ্ঠিত করৈত অছি । নাবী মাত্র দেহ নহি থিক । নাবী আ পুরুষক সাহচর্য অরস্সে সৃষ্টিক নিবন্তবতা থিক । একব অর্থ ই নহি জে নাবীক দেহকেঁ খেলৌনা বুঝিক খেলাযল

জায । ওকর অংগ-প্রত্যংগকেঁ তোড়ি-মরোড়ি অর্থাত্ অত্যাচার ক প্রেম ও বিশ্বাসকে তোড়ল জায । ই সত্য অছি জে আজুক ভৌতিকবাদী যুগমে ধনক অতিশয লিপ্সা অবসসে মানবীয মূল্যবোধকেঁ গিড়নে জা রহল অছি । জেঁ কি মানবীয চেতনা আ মনুষ্যতা কুণ্ঠিত ক দেল গেল অছি তেঁ অনৈতিকতাক অঠমে ছিড়হবা খেলাওল জাগত অছি । ধন-মদক এঁঠী পর নগ্ন কাঙ্ক্ষকতাক তাণ্ডব মচল অছি । দৈহিক জরুবতিসঁ বৈসিএ কাম ক্রীড়ামে ভোগ আ লিপ্সা নযন রংজন ভ গেল অছি । তেঁ বিভিন্ন মুদ্রা অখ্তিযার ক আবেগ আ উচ্ছ্বাসমে অমানবীযতাক - ক্রূর আ পৈশাচিক রুপক দিগ্দর্শন হোগত অছি । লাচার মে বিচার কতয ? ফলতঃ বাসনাক ভ্রমজালমে ওঝরা ক নৈতিকতা ও মর্যাদাকেঁ অতিক্রমণ ক কুত্সিত মানসিকতাক - ক্রূর রুপ ঝলকি অবৈত অছি ।

এহি শীর্ষক কথামে হীরা অসন্তোষ আ খৌঁঝীকেঁ মেঁটযবাক নেল সোনাবাগক ওহিঠাম অবৈত অছি । ওকর একমাত্র উদ্দেশ্য বহৈত ছৈক জে মোনকেঁ বহটোবি লেব । সোনাবাগ অপন পেশামে কতহু কোনো কোতাহী নৈ করৈত অছি । ও আবেশক স্নেহিল স্ববমে লগীচ অযবাক আমংত্রণ অপন পবিধান খোলি ক দৈত অছি । হীবাকেঁ ঠকম্ভহবী লাগি জাগত ছৈক । ওকর হৃদযমে নাবীক প্রতি সম্মান- ভার জাগি জাগত ছৈক । ওকর মনোভাবমে স্ত্রী সংবেদনা অস্মিতাক পর্যায বনি উভবি অবৈত ছৈক । সোনাকেঁ হড়বড়ী ছৈক জে একটা গ্রাহকসঁ নিপটৈত তঁ দোসবক আশে ? ও বজৈত অছি জে আউ লে,আলো গ্রাহক খোজ পড়ত লে (১৪৪) । হীবা হাবল জুআড়ী সন মনোব্যথা কী কহি দৈত

অছি জে সোনাক আঁখি চমকি উঠৈত অছি । ওকর সরঁন মানরীয সংরেদনা উভবি অরৈত ছৈক – হম আগ পহিল রেঁব কোনো স্বচ্চা মন্বক্খক দর্শন কযনহুঁ অছি (১৪৩) । পবিণতিমে দ্নূক স্ববক্ষা ভারমে অপনত্ররোঁধ জাগি জাগত ছৈক ।

তাত্পর্য জে দৈহিক ভোগসঁ রেঁসী–মোনক বাগ জে হন্ন্বকো আঁচ পব রঁবকৈত বহৈত ছৈক রা রেঁসিএ আঁচ পব কিএক নে, হ্মদা দ্নূ স্থিতিমে অন্বশাসিত বহৈত ছৈক । যৈহ কাবণ থিক জে জীরনকেঁ গতি আ উষ্মা দেরাঁমে স্ত্রী–প্বকষক সাহচর্য দোসবক পূবক রঁনৈত অছি । আজুক সমাজমে অমানরীযতাক যৈহ স্থিতি অছি জে স্ত্রীকেঁ চীবীচোঁত ক অপন প্বকষত্র দেখযরাঁক দম্ভ ভবৈত অছি ততয সোনা আ হীবাক রীচক ঘটিত ঘটনা কনেক অরিশ্রসনীযতাকেঁ পন্বগরৈত অছি । জতয সোনাক সংগ ভেল অত্যাচাব স্রতঃ উঘবৈত র্যথা–কথা কহৈত অছি ততয ঙা পক্তি–সোনা আন রাঁগ জকাঁ তোডন–মচোডন নহি গেলি বহয, রাঁচন ছনীহ (১৪৪) সেহো অরিশ্রসনীয র্ন্নাগত অছি । শিন্পক দৃষ্টিএঁ অরস্সে ঙা কথা কনেক কমজোব অছি, হ্মদা কথ্যক দৃষ্টিএঁ বক্ত আ স্নেহসঁ জে অপনত্র রোঁধ জগাওল গেল অছি সে অরঁস্সে মন্বষ্যক মন্বষ্যতাক স্রাদ চীখরৈত অছি ।

আরঁ ঙা প্রশ্ন উঠরঁ স্রাভারিকে জে মন্বষ্যক মন্বষ্যতাকেঁ অমানরীয রঁনযরাঁক দোষী কে ? কী জন সমাজ ? সমাজ তঁ নোকেক থিক । ঙা সত্য অছি জে আগযো হীবা সন গনন–গূঁথন নোক অছি । তথাপি কামোত্তজক ভার–ভংগিমা নেনে দৈহিক জরুবতি র্ন্নি রা ফৈশনপবস্ত ভ হ্মটল প্বকষক অহং অরঁস্সে স্ত্রীকেঁ

ভোগক সামগ্রী বুঝি পবৈত অছি জে মোনক তুষ্টি হেতু স্বরিচারেঁ পাশ্রিক আচবণ কবৈত অছি । জং হীবা আ সোনা বাঁগসন এক দোসবক প্রতি সমর্পণ আ নিষ্ঠা–ভারমে বাগ উঁভবয তঁ নিশ্চিতে অনৈতিকতাক অঠমে হোযত রিশ্রতিক রিষাক্ত চন্দ্রবি ফাটৈত আ অসনী ছরি জগজিযাব হোযত । এতেক তঁ নিশ্চিতে জে রিশ্রাস আ হার্দিকতামে স্ত্রী–পুরুষক আকর্ষণ অরঁস্সে জীরন–সত্যক অঠমে মানরীয আকাংক্ষাক পূর্তিমে সবঁন ও সহাযক সিদ্ধ হোযত । হীবা আ সোনাক হৃদযমে রাস্তরিক প্রেম–ভার কী অঙ্কুবিত হোগত অছি জে সহজতা ও সবনতামে আন্তবিক জটিনতাকেঁ আবো সঘন বঁনবৈত অছি । নাবী পূবক বঁনৈত অছি । জেঁকি অভিজাতীয সংস্কৃতিক রিবোধ স্বরূপ সামাজিক অস্মিতাক র্যাপক বোঁধ অর্থাত্ স্ত্রী পুরুষক সহজ আকর্ষণমে আত্মিক স্রব উঁভবিক আত্মস্ফুলিংগ ছিটকবৈত অছি তেঁ দূনূক সংঘর্ষমে সামাজিক জীরনক যথার্থ ঝনকি উঠৈত অছি ।

আধুনিক চকচোন্হীমে অন্হবাযনি ভগজোগনী কথামে বেখাক ভোগবাঁদী নিপ্সা ততেক আগাঁ বঁঢি জাগত অছি জে অপন বঁসন–বঁসাওন ঘব উঁজাববাঁসঁ বাঁজ নহি অবৈত অছি । ও রিসবি জাগত অছি জে অর্থনিপ্সা সম্বঁন্ধকেঁ গীড়ি জাগত অছি । ফন ভেটৈত ছৈক জে জখন জীরনক বোঁধ হোযত ছৈক তঁ গত কর্মক তর্পণ কবৈত অছি । ও ভ্রমজানমে জে অহ্বিযা কটৈত ছন সে তোড়ি ফেকৈত অছি । যৌন রুপমে উঁন্মত্ত প্রেম আ ঘৃণাক ঠহৈত দেরাঁনক বীচ সমাজ আ সত্যসঁ জে সাক্ষাত্ কবাওন গেন অছি সে অরঁস্সে রৈযক্তিক চেতনাকেঁ ধাব দৈত দাম্পত্য

জীৱনকেঁ সফল বনবৈত অছি । এহিমে প্রেম আ যৌন সম্বন্ধী গেঁঠকেঁ ফোলৈত কথাকাব উপসংস্থৃতি পব জমিক প্রভাব কযল অছি । ওা সত্য থিক জে দৈহিক ভূখ লোককেঁ কাঙ্কতামে জকডি অৱস্সে দেহ মৈথুনকেঁ প্রশ্রয দৈত অছি । এতেক দূব ধবি জে আৱেগমে মনোৱিকাব অপন ঠোস রূপ ততক্ষণ প্রভাব জনবৈত অছি । ঋদা, কাম–ভারক ভূখ সম্বন্ধকেঁ স্থাযিত্ব নহি প্রদান কবৈত অছি তেঁ অসন্তোষ পনপৈত অছি । সামাজিক দাযিত্ব রোধক ওা কথা থিক । ॅখন্হোবমে ভোতিআযন একটা সিপাহী গণেশক সংস্মবণ থিক । ওা সংস্মবণাত্মক বিপোর্তাজ থিক । কাবণ গণেশক সংস্মবণ উপস্থাপিতক ওকবে গুণ–গৌববকেঁ পবোসল গেল অছি । তেঁ কথা–সূত্রক নির্মাণ তেনা ভ২ক২ নহি ভেল অছি জেনা কি পাত্রক পবিপ্রেক্ষ্যমে ঘটনা আ স্থিতিক রিৱবণাত্মক প্রস্তুতি ভেল অছি । সাম্যবাদী রিচাবধাবাকেঁ ন২ক২ কামবেড কথাক সৃষ্টি ভেল অছি– গবীব গবীব সভ এক হো । অর্থাত্ ধনী–গবীবক বীচ জে অসমানতাক খধিযা অছি সে আবো চকবগব ভেল জাগত অছি তকবে ভববাক ভবপূব প্রযাসমে ওা কথা সৃজিত ভেল অছি । স্বপত–ক্ষপত আর হমহ্ সব কহবৈ (৩৭) । আত্মচেতনা জগযবাক উদ্দেশ্যেঁ ওা কথা সৃজিত ভেল অছি ।

পাগক আগাঁ বৈগজ্জতি আ গাবি কথীক এহি পৃষ্ঠভূমি পব উডান–কথা সৃজিত ভেল অছি । কতাব দিস উডান ভববাক লোভেঁ আ ঢেব পাগ অর্জিত কববাক সপনা সংজোগনে বজিন্দব কাপবকেঁ পহিল্ব এজেন্ট দস হজাব টাকা, দোসব অস্সী হজাব আ তেসব খেপ পন্চান্বে হজাবক কর্জা পব লেল টাকা বোহাগত ছৈক

। ओ ठकागत अछि तेँयो ओकरा उँडान भरबाक आशा छैक । ओ द्वन्दयक कोनो कोनमे दमित अछ्छाकेँ संयोगने बहैत अछि जे कोना उँडान भरी । जहिना धनक नेन जेबाँक माहुती तहिना एजेन्टकेँ चाही नाम्ब । माने ओ उँडान की, दस हजारसँ पच्चीस हजार धबिक चोखे नफा । तात्पर्य जे दुनू गब भिडौने । तेँ रेँब रेँब ठकागतो नोक प्वनि ठकागत अछि । एहिमे पाखण्डी चबित्रक पदफाशिक संग केरन जीरन जीनागयेक मात्र न्वत्तक नहि मोयराँक प्रत्यत जीरन मूनयरोँधक नेन जीराक ओकानति संकेत मात्रमे कयन गेन अछि ।

जय मधेशमे एक मधेश, एक प्रदेश नःकः आन्दोनन अछि । मधेशी आ पहाडीक बीचक खधिया समानतामे पटि जाय । अयोधी मास्टबके जीरन कोह्नाक मास्टबीमे खेपायन आ एकमात्र बेंटा अशोक केँ नोकवी नहि भेटेँ । तात्पर्य जे अपेक्षित योग्यता अछैतो ब्यबस्थे तेहन रनन छैक जे मधेशीकेँ के पूछओ ? तेँ आन्दोननी ज्न्वसमे ओकब बँढायन देहक जोश की हिनोब मारय नगनैक जे ओहो कूदि पडन । ओकब अस्मिता की जागि उँठनैक जे मधेशक नेन ओ किछओ क सकैत अछि । बाष्ट्रियताक पबिप्रेक्ष्यमे अपन रिचाब, भारना आ समयके सत्य केँ उँद्भासित कयन गेन अछि । जखन नोकक अस्मिता पब चोट नगैत छैक तँ ओकब मोन कचोटैय की नगैत छैक जे स्रतंत्रताक हनन मंजूब नहि मोगत छैक । मधेशी मोयराँ पब जे गौबरबोध मोगत छैक से जखन एके देशमे रिषमताक बोध मोगत छैक तँ पीडागत मोनमे आक्राश पन्वगैत छैक

। এহিমে মানৱীয জীৱনক সংৱেদনা স্বনকি উঠৈত অছি
।

গহনতম প্রশ্নানুকূলতামে ভহবৈত নেওক জোড কথাক সৃস্টি ভেল অছি । এহিমে নিবসন ৱাঁৱুক প্ত্রী সবোজাক দ্ঃস্থিতিমে অন্ত ও বানীক সংগ ছলাগত জীৱনকে কথাকাব ওকব মার্মিক পীডাকে উভাবিক সামাজিক পবিরর্তন দিস ধ্যান আগ্রষ্ট কবাওল অছি । এতেক দূব ধবি জে একব জিম্মেৱাব কে ? স্ত্রীক ত্রাসক মার্মিক উদ্ঘাটনক ফলস্ৱরুপ ও কথা ফোকিনা মানসিকতাক দম্ভকেঁ আবো উঘাব কবৈত অছি । ওঠন অভিভারকত্রক নীতিকেঁ সবেথাম চৌৱঁটিযা পব নগ্ন ক মানৱীয জীৱনক অন্তভরসঁ সম্পৃক্ত ক নিজী সংৱেদনাকেঁ সার্বভৌমিক ৱঁনা দেল গেল অছি । এহি প্রকাবেঁ এক দিস হৃদযহীনতা আ মূল্যহীনতাকেঁ দেখাব কযল গেল অছি তঁ দোসব দিস পবিরর্তনক স্বগর্ত্গীমে মানৱীয সোচ আ সংৱেদনাকেঁ আজুক পবিস্থিতমে ঠোস দৃষ্টি দ অমানৱীযতাক খোলকেঁ চীটীচোঁত কবৱাঁক সলেস ৱিনহল অছি ।

অন্ততঃ মে কিস্বনমাক উহমপোহক স্থিতিমে জতয পত্নী উত্তীমপ্ববরানীক প্রতি অনুবাগ–ভাৱ অছি সে পঁজাৱঁমে কমাগত মনসূৱাঁ পোসনে ঘব অৱৈঁত অছি তঁ একটা নেনা ? মাসক ফবক । আন ৱাঁপক ৱঁচ্চা অর্থাত্ অনকব জনমল ৱেঁটা । বহি বহিক ওকব হৃদযকেঁ ও ৱাঁত টীসৈত কী ছৈক জে সভটা মনোবথ ভগ্ন ভ জাগত ছৈক আ অন্তিম পবিণতিমে নেনাক মূডী ছপাক্ ক দৈত অছি । নির্দোষ আ অৱোঁধ ৱঁচ্চাক হত্যা ।

ও সত্য থিক জে নির্শংস হত্যাক ফলস্ৱরুপ

হৃদয ভাবমে পবিবর্তন আযবঁ স্বাভাবিক থিক ।
ক্ষুদা, অবৌধ বচ্চাক হত্যা ? তকব পবিনতি ?
কথা জাহি রিন্দ্ পব আবিক ছোড়ি দেন গেন অছি সে
আগাঁক অপেক্ষা বখৈত অছি । তৈযো, একটা প্রশ্ন
পন্নগবৈত সোচবাক নেন বাধ্য কবৈত অছি ।

অমবনত্তী কথামে বেখাক মাধ্যমে ওকব বঁহসনি
উদ্দাম ছবিক বীভত্স রূপ দেখাব কযন গেন অছি ।
ও অমবনতী বঁনি চতবৈত কী অছি জে সহাবা বঁনৈত
আনক বঁসন–বঁসাওন ঘবকেঁ উজাবি–প্বজাবি দৈত অছি
। অপন বঁনন ঘব তঁ উপটোগযে দৈত অছি জে
আনোক ঘবমে বাস ক ওকব সোনহন দ্নিযামে আগি
পজাবি দৈত অছি । এহিমে বমেশক কামনোন্বপতাক
বেখাক কাম–ভাব জাগ্রত ভ মাযাজান কী পসাবৈত অছি
জে আবো অহিমে ওমবাগত জাগত অছি । এহি
প্রকাবেঁ বাসনাকেঁ উভাবিক প্বরুষ আ স্ত্রী বম্মক কুত্সিত
মানসিকতাকেঁ দেখাব কযন গেন অছি । সামাজিক
ক্বব্যবস্থা ও এহিসঁ উপজন মানবীয ব্যথাকেঁ অবস্সে
কথাকাব উভাবন অছি ।

সম্বন্ধক পীডামে আশাক হৃদযমে বঁবকৈত
হৃদযক উফান জে প্রেমক উপজামে মানসিক পীডা
প্রতিফনিত অছি তকব সশক্ত চিত্রণ ভেন অছি ।
প্রেম কহি–স্বনিক নহি হোগত ছৈক আ নে কীনন বৈসাহন
জাগত ছৈক । জখন দূটা হৃদয মিনৈত ছৈক বা
মোন মিনানী ভ জাগত ছৈক তঁ বাঁটমে কেহনো বোডা
অটকাওন কিএক নে জাউক তৈযো দ্নূ–প্রেমী –প্রেমিকা
হঁসৈত–কনৈত, সংঘর্ষ পথ পব টকবাগতো, খসিতো–উঠিতো
পাব–ঘাট উতবিএ জাগত ছৈক । সৈহ স্থিতি আশা
ও সংদীপক মোন–মিনানীমে ভেনৈক । ফন ভেটনৈক

জে আশোক মায-বাঁপক হৃদযমে উঠৈত বিবক্তি ভাব সম্বন্ধ-সূত্রকেঁ খণ্ডিত ক দেনকৈক । আ আশা প্রেমক পলিামসঁ উপজল মানসিক পীডাকেঁ সহবাঁক ক্ষমতা অপনামে বিকসিত কববাঁক প্রযাস ক বহলীহ অছি (১৩+) । সামাজিক যথার্থক রুপ ঝলকাক কথাকাব সামাজিক ব্যবস্থাকেঁ উঘেসিক আত্মীযতা ঠংগসং লোকজীবনক চিত্র উভাববাঁক প্রযাস কযল অছি ।

বাঁলমোলক স্বলভ চংচলতা ও লেলপলক নিশ্চিছলতাকেঁ স্মবণ কবৈত নবেশীক মোলমে স্মৃতিক তবংগ কী প্রবহিত ভ অবৈত ছৈক জে লোযত ছৈক জে হমলী কিএ লে অপনাকেঁ লেলা বঁলালী (১৪২) । হ্লশ বৈক কথাক মাধ্যমে কথাকাব বাঁলপলক অঠমে নিডবতা, নিশ্চিছলতা আ সৌহার্দ্র ভাবমে বচপলক প্রেমক অনুভূতি জগাওল অছি তঁ উমেবক চাবিম প্রহবক পল্লগৈত ভয, স্ববক্ষা, ষডযন্ত্র, সামাজিক বিদ্রূপতা আদিসঁ অপনাকেঁ বঁচবা-বঁচযবাঁক প্রযাসকেঁ বেখাঙ্কিত কববাঁক । ঞা সত্য থিক জে লেলপলক বিতাওল ক্ষণক মধুব স্মৃতিমে লোকজীবল চাহিযে, ঝদা সংঘর্ষমে সেহো জীবলকেঁ হৃষ্ট আলল্দ অবৈত অছি । সামাজিক ব্যক্তিত্বক দোগলা ঝহ অর্থাত্ সভ্য সমাজক অংগ বঁলবাঁক লেল লোক জে ছল-ক্ষুদ্রমক খোল ওঢলে বহৈত অছি । সে অবস্সে মানসিক বুঁদ্ধিকেঁ কুণ্ঠিত কবৈত অছি, সামাজিক সমবসতাকেঁ খণ্ডিত কবৈত অছি ।

লেপালীয মৈথিলী কথা-সাহিত্যমে নিস্সন্দেহ কথাকাব ভ্রমবক কথামে জীবলক বাগ অছি আ অছি লব যুগক লাবীক প্রতি বিশেষ শ্রদ্ধা-ভাব । তেঁ হিলক বৈসিএ কথামে লাবী জীবলক সংঘর্ষ অছি । যুগ যথার্থক ত্রাসদী জে সামাজিক বিডম্বলামে উপজৈত অছি

ঋা একব কাবক থিক সামাজিক র্‌যরস্থা । তেঁ কথাকাবক ছটপটাগত মোন মে ঋরঁনা নাবীক চীখ ঋছি ঋা পবিরেশক দংশমে পীডাগত মানসিক র্‌যথা–কথা । দেহ–ভোগমে টীসৈত দর্দ উঁভবি কী ঋরৈত ঋছি জে সামাজিক সত্যকেঁ দেখাব করৈত যথাতথ্যক মোনক পীডাকেঁ উগনি দৈত ঋছি । টূটৈত সম্রঁন্ধ, ছটৈত নোক, ঋর্থ নিপ্সাক মোহ ও দৈহিক ভোগমে পীডাগত কাহ্মকতা ঋা বোটীক সমস্যা নেনে কথাকাবক মোনমে কতেকো প্রশ্ন ছটপটী মচৌনে ঋছি তকরে সার্থক ঋভির্‌যক্তি দ সহজ ও সবন ভাষা মে পাঠকক সোন্মাঁ পবোসি দেননি ঋছি ।

কোনো সভ্যতা–সংস্কৃতিকেঁ গতিশীন রঁনাক বাখরঁ সমাজক নোক দাযিত্র থিক । সে তাধবি জাধবি ও সামাজিক জীরনমে সার্থক ভূমিকা নিমাহয । ঞা নহি জে সডন গনন পবম্পবাকেঁ উঘনে র্‌যরস্থাক তবমে পীসাগত জীরনসঁ কষ্টন র্‌যরস্থাকেঁ সত্য মানি ফোকিনা মানসিকতাকেঁ উঘৈত বহী । জে সভ্যতা সংস্কৃতি জীরনমে নহি উতবি সকয তকব পবিত্যাগ কববঁ উচিত–রিহিত থিক । ও জীরনক ঋর্থক খোজমে প্রেমক ঋাসবা নৈত সমযক পবিরর্তনকেঁ যুগক ঋনুকূনেঁ টৌকিক নর সমাজ রঁনযরাঁক ঋাকাঙ্ক্ষা বখৈত ছথি । তেঁ কথাকাব সামাজিক রিসংগতিসঁ উত্পন্ন রিষমতা ও ঋার্থিক স্থিতিক সংগ সাংস্কৃতিক ঋাযাম পব জমিক রিমর্শ কববাঁক নেন প্রশ্নকেঁ পন্নগরৈত ছথি । এহিমে হিনক পবিরর্তনকাবী সোচ ঋরঁস্সে উত্প্রেবক রঁনি নর সামাজিক মূন্যরোধক সংরাহক রঁনৈত ঋছি ।

হিনক নেখনী ঋরঁস্সে শোষিত–পীডিতক

अस्मिता-अधिकारक बाँत उठबैत अछि । ओ दर्शन-स्थलन लोकक पक्षमे भ जाय । ई सत्य अछि जे हिनक प्रेममूलक धारणामे वासना जन्य उत्भाव कतेक बेसिए उत्भवि आयल अछि से सम्पूर्ण कान्हक पुरुषक दम्भोचित उपजा थिक । किएक तँ पुरुषक पौरुषत्व वासनामे विशेषे केन्द्रित भ आयल अछि । कथाकारक बेसैल मोनमे समतामूलक ओ प्रेममूलक धारा बसप्नारित अछि तेँ अभावजन्य पीडामे पीडागत शोषित वर्गक समस्या उत्भवि आयल अछि । स्त्री वर्गक प्रति जहिना पुरुष वर्गक दम्भ, क्रूर मानसिकता ओ व्यवस्थाकेँ उजागर करैत अछि तहिना सम-सामयिक प्रश्नक झडीमे बोटीक ओकाति देखबैत अछि ।

एहि प्रकारेँ कथाकारक हृदयके व्यथासँ उपजैत अकूलागत मोनक छटपटाहटिमे स्वभागत प्रेम भावनाकेँ खीचबाक आकांक्षा अछि तँ मूल्यहीनताबोधक प्रति तिक्ख आक्रोश । जीवनक व्यावहारिकता सँ सामाजिक स्पद्धाकेँ उठबैत छथि । हँ, प्रश्नक झडीमे किछुक समाधान करैत छथि तँ यथातथ्य उपस्थापन सेहो । ओना, कथाक मूल स्वर हस्तक्षेप कविते अछि । ईहो सत्य अछि जे नारी अनुभूतिक विकृत क्षणमे कथाकारकेँ बहि-बहिक' नारीक मानसिकताक भूख दैहिक काम-क्रीडामे ओझरा जागत अछि । स्पदा, ईहो सत्य थिक नारीक अन्तरमोनमे पैसिक जे मानसिक विकारकेँ स्वच्छ करबाक प्रयास भेल अछि से मात्र कान्हकतामे नहि भऽकऽ सामाजिक मूल्यबोधक संत्रासक बाँनिक उत्भवि अबैत अछि । उपसंस्कृतिक प्रति हिनक हृदयमे खोँझी आ असंतोष भाव अछि तँ सामाजिक नैतिकता आ धार्मिकताक अठमे छिडहवा

খেনাগত সাম্রাজ্যবাদী সংস্কৃতি প্রতি বিদ্রোহ ভাৱ মুখরিত ভেল অছি । मुदा, ओहो देखल जाइत अछि जे भ्रमरक कथाकार कथा साहित्यमे जतेक कथ्यक प্রতি সজগ বহি পরৈত অছি ততেক শিল্পক প্রতি নহি । শৈলিক দৃষ্টিএঁ অরস্সে হিনক কথাকার সজগ নহি বহি পরৈত অছি জে কথা–সৌন্দর্যকেঁ বাঁধিত করৈত অছি । তেঁ কী ? ভ্রমরক অন্তররাদী দৃষ্টি সতত চৌকন্ন রহৈত অছি জে অপন গাম–ঘর, অড়োসিযা–পড়োসিযাক দেখল ভোগল যথার্থক চিক্কন–চুনমুন চিত্রণ করৈত অছি । হিনকামে কহরৌক ক্ষমতা অছি জে শিল্পক রিকাসমে আবো সৌন্দর্য আনি নিখরত ।

জেঁকি কথাকার ভ্রমরক চৌকন্ন দৃষ্টি সমাজক প্রতি সজগ অছি । তেঁ জীরন মূল্যক সংরাহক রৈনৈত ও ওহি পাত্রক সৃষ্টি করৈত ছথি জে সমাজমে আগযো নিবীহ অছি । খাসক নাবী পাত্র হিনক সংরেদনশীল মোনকেঁ ছরৈত অছি । ও নাবীক অধিকাব ও চেতনারোধক পক্ষধব ছথি । ও কখনো নাবীক পক্ষমে ছাতী তানিক ঠাঢ় হোগত ছথি । मुदा, উপসংস্কৃতিমে ঘেবাযল নাবীক বীভত্স ছরি অরস্সে হিনক হৃদযকেঁ পীড়িত–সীদিত করেত অছি । ও কোনো পরিস্থিতিমে স্রাভারিক যথার্থক তহকেঁ হোলিতে ছথি । তেঁ শোষণক রিবোধমে ঝংডা উঠরিতে ছথি । হিনক সংরেদনশীল মোনমে জীরনক প্রতি বাগাত্মক রৌধ অছি । হঁ, হিনক কথাকার যথাতথ্যকেঁ দ্রু–রৈদ্রু প্রস্তুতি ক দৈত অছি সে কৈক স্তব পব । তেঁ পাত্রক চবিত্র তেনা ভ২ক২ ঠাঢ় নহি ভ২ পরৈত অছি জে হোযরৌক চাহী । জাহি ঠাম হিনক পাত্রক চবিত্র–চিত্রণ সজীর ভ২ উঠল অছি তাহি ঠাম কথাক সৌন্দর্য অপন অপূর্ব

ছরি–ছটৌ নঽ ফ্মখবিত ভেন খছি ।

নেপানীয মৈথিনী কথা সাহিত্যমে ভ্রমবক কথা মাত্রাত্যক ও গ্ণাত্মক দূনূ দৃষ্টিএঁ খপন প্রভার ছোড়ৈত একদিস জঁ কথা–সাহিত্যক ভণ্ডাবকেঁ ভবৈত খছি তঁ দোসব দিস কথা দৃষ্টিমে মূন্যবোঁধক সংরাহক বঁনৈত খছি । তেঁ মানরীয মূন্য বোঁধক জীরন–দৃষ্টি নেনে ভ্রমবক কথা সামাজিক পবিবর্তনমে খপন ওকাতি সিদ্ধ কববেঁ কবত খা ভরিষ্যমে ঐতিহাসিক মূন্যক রস্তু বঁনবেঁ কবত সে খাশা ও রিশ্রাস জগরিতে খছি ।

ওা সংগ্রহ ছপাগ–সফাগক দৃষ্টিএঁ দেখন্বক খা মনমোহক বহন খছি খাসকঽ পোথীক খারবণ রিশেষ খাকর্ষিত কবৈত খছি ।

যথাথিক খন্বভুতিমে ঐতিহাসিক দিনঃ ঝিঝিযা নৃত্য মহোসের

২০৬৮ সান খাসীন ১৪ গতে , নেপান প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠান খা জনচেতনা খভিযান নেপানক সংযুক্ত খভিযানমে ঝিঝিযা মহোসের মনাওন গেন । এহি কার্যক্রমক সভাপতি বহথি শ্রী বামভবোস কাপড়ি ভ্রমব, উঁদ্ঘাটক শ্রী রিমনেন্দ্র

निधि, नेपाली कांग्रेसक केन्द्रिय सदस्य एवं सभासद आ मंच संचालक श्रीअशोक दत्त ।
उद्घाटन भाषण करैत प्रमुख अतिथि श्रीविमलेन्द्र निधि कहलनि जे डागन जोगिन प्रथा पर आधारित झिझिया म्युजिक : महिला लोकनिक थिक । मैथिली भाषा ओ साहित्यमे संस्कृतिक संरक्षण आवश्यक अछि । एहिसँ सामाजिक समरसत्ता रहैत अछि । आग जे झिझिया नृत्य संस्कृति विलुप्तक कगार पर अछि तकरा रहचरबाक ओ अस्मिताके ओ जगयबाक सार्थक प्रयास थिक । ओ एहि कार्यक्रमक उद्घाटन दीप प्रज्वलित क कयलनि ।

विषय प्रवर्तनक क्रममे स्वागत भाषण करैत श्रीराम भरोस कापडि भ्रमर , नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक परिषद सदस्य, प्राज्ञ कहलनि जे झिझिया नृत्य आग सँ रोबह–तेरह सय वर्ष पहिले शुरु भेल होयत । डागन जोगिनसँ रचा बुतरुके रचयबाक हेतु मिथिलाक महिला लोकनि द्वारा ओ नृत्य होगत छल । जेकि ओ हमरा लोकनिक सभ्यता संस्कृतिक अंग थिक तें आग एकरा रचयबाक रहगरता अछि । नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानद्वारा आयोजित ओ कार्यक्रम वस्तुतः अपन संस्कृतिके रचयबाक ओबियाओन थिक । आओ सात गोटे टीम झिझिया नृत्य प्रस्तुत करत आ एहि सभ संस्थाके कोनो ने कोनो रूपमे प्रोत्साहित करबाक एवं सम्मानार्थ पुरस्कृत करबाक अछि । विभिन्न स्थानक पुरस्कार राशि भिन्न भिन्न अछि । अंक पत्रक आधार पर क्रमशः : प्रथम, द्वितीय ओ तृतीय श्रेणीक विजेता टीम घोषीत कयल जायत । निर्णायक मण्डलमे तीन गोटे व्यक्तित्वक चयन कयल अछि –सर्वश्री डा. प्रफुल्ल कुमारसिंह मौन,

ডা. বেরতী বমণনান খা খযোধ্যানাথ চৌধবী । খঁক পত্রমে পচাস খঁক রিভিন্ন ক্ষেত্র–রেশ–ভুষা মৌনিক নৃৎ, মৌনিক গীত, ঘৈনক রঁনারষ্টি খা সমগ্র । জনকপ্ববমে এহি তবহক খাযোজন পহিন থিক । ও নেপান প্রজ্ঞা প্রগ্যানঙ্কাবা কযন গেন কাজকে সরিস্তাব উঁল্লখ কযননি । ডা. বাজেন্দ্র প্রসাদ রিমন জনাওন জে তন্ত্র মন্ত্রক পবম্পবা রৈদিক কানসঁ খছি । ঞা ঝিঝিযা নৃৎ রৈদিক ঋচাসঁ নেন গেন খছি । ঞা একটা খান্বগ্যানিক যজ্ঞ র্স্নী তঁ থিক । এক তবহে নোক জাগবণক প্রভার থিক । ডাগনক রিভিন্ন ঝদ্রা খা ঞিযা–কনাপ হোগত খছি । ঝগন রঁচাকে জিযা ক নংগটে নাচরঁ, নগব কোতরাঁনকে দেখরঁ খথাতি তন্ত্র মন্ত্রক প্রভার কোনো নে কোনো কপমে পড়িতে খছি । এহিসঁ নোক ঝক্তি চাহিত খছি । সমষ্ঠি চেতনাক খন্তস্থাত র্যাক্তি চেতনা সমাহিত ভ জাগত খছি । শির স্বযং খনাদিক দেরতা ছথি । পবম্পবাক নিবংতবতা তঁত্র থিক । পিতৃপক্ষমে পিতবক রৌখাগত খামো সভ খরৈত বহিত ছথি তাহি ক্ষুধিত খামোক তৃপ্তি এহি ঝিঝিযা নৃৎমে হোগত খছি । রৈদিক পবম্পবাক নিবংতবতা ঘটে নৃৎমে হোগত খছি । গন্দ্রিযক ও ভাগ জে পকডমে নহি খরৈক সে চেতনা খা চেতনাক ও ভাগ জে পকড়মে নহি খরৈক সে দের খা এহি দুন্বক মধ্য থিক তন্ত্র । চেতনাক উঁধ্রীকবণক নেন সমাজক খারশ্যকতা ছৈক । ঝিঝিযা নৃৎ র্স্নী ত রৈদিক, তান্ত্রিক খা নৌকিক পবম্পবাক সমন্বিত কপ থিক । এহিমে সমযক খন্বক্ষন পবিষ্কাব খা ভরিষ্যকে দেখৈত রর্তমান স্তুব পব রিকাসক কপ দেরাঁক থিক ।

প্রা. পবমেশ্বব কাপড়িক কথন ছন জে ঝিঝিযা মাত্র নৃত্যৌমে নহি খছি খা নে গীত মে । ওা জীরন সং জ্ডন রাঁত থিক । তেঁ মনুখ্খক জীরন কেন্দ্রিত ওা নৃত্য খক্ষ্ল্ল বহরাঁক চাহী ।
মংচ সংচানক খশোক দত্ত জনাওন জে ওা নৃত্য মহিনা সশক্তিকবণক ঘোতক থিক । রিশিষ্ঠ খতিথি ডা. প্রফ্লুল্ল ক্ষমাবসিংহ খপন খানেখ প্রস্তুত কবৈত ঝিঝিযা নৃত্যক পবম্পবা, রিকাস ও সম্ভারনা পব খপন রিচাব প্রস্তুত কবৈত খতীতক কথা উঁদাহবণক রুপমে প্রকষ্ট কযননি । ও জনৌননি জে এহিমে দূ তবহক ভারনা প্রকষ্ট হোগত খছি – পহিন জে ডানিকে ডানিপনক রিবোধস্বরুপ গাবি পঠরঁ খা দোসব ডাগনপনসঁ ঝক্তিক রাঁষ্ট । সহস্র ছেদরঁনা ঘৈনকে নহ কহ নৃত্য কবর জাহিমে দীপ রঁবৈত হোখয । ও গহো স্পষ্ঠ কযননি জে রঁখবীক রঁকবিযো ডাগন হোগত খছি । রাঁন রুচ কথা (চিত্র সেন মহাবাজক ভাগিন) মাধ্যমে ও খপন রাঁতকে সিদ্ধ কবৈত এহি খনুষ্ঠানিক যক্তকে সামাজিক সমবসতাক খাধাব পব সিদ্ধ কযননি । ও র‍্যক্ত কযননি জে খানেখমে রঁহুত কিছু ঝিঝিযাক রিষযক রিচাবক উঁল্লেখ খছি জে পঠিত ভেনা পব রঁহুত কিছু শংকাক সমাধান হোযত ।

ডা.বেরতী বমণনান জনাওন জে ঝিঝিযা নৃত্য নোক পাবম্পবিক থিক । এহিমে মহিনা রস্ত্রক সক্রিযতা হোগত খছি । ওা মহিনা জাগবণক প্রতীক থিক খা সংস্কৃতিক খাস্থা পর্র ।
তদ্পবান্ত ঝিঝিযা নৃত্য হেত্ত সাত গোষ্ট টীমক প্রদর্শন ভেন জাহিমে ছন ১. মাঁ জানকী ঝিঝিযা টীম ২. ভৈবর

ঝিঝিয়া টীম ৩. জন চেতনা অভিযান ঝিঝিয়া টীম ৪.মিথিলা মীডিয়া হাউস ঝিঝিয়া টীম ৫. নারী বিকাস কেন্দ্র ঝিঝিয়া টীম ৬.মাঁ জানকী ঝিঝিয়া টীম জানকী নগর ৭. জ্বালামুখী ঝিঝিয়া টীম সিন্বরজোড়া ।

নির্ণাযিক মংডলদ্বারা নির্ণীত পরিণামকে ঘোষিত করলনি শ্রী রামভরোস কাপড়ি ভ্রমর সভাপতি জে প্রথম স্থান জন চেতনা অভিযান ঝিঝিয়া টীম, দ্বিতীয় ভৈরব ঝিঝিয়া টীম আ তৃতীয় মিথিলা মিডিয়া হাউস আ ক্রমশঃ প্রাপ্ত অংক ছল ১০১, ৯৯ এরং ৯৪ আ চারিটা টীমকে সান্ত্বনা পুরস্কার সং পুরস্কৃত করল গেল । প্রথম পুরস্কার ३০০০ টাকা, দ্বিতীয় ২০০০ টাকা এরং তৃতীয় ১০০০ টাকা আ সান্ত্বনা পুরস্কার ৫.০০ টাকাক ছল ।

তদ্পরান্ত শ্রী রামভরোস কাপড়ি ভ্রমর লিখিত ভৈয়া অএলৈ অপন সোরাজ নাটক জনচেতনা অভিযান দ্বারা মংচিত ভেল । এহিমে ভাগ লেলনি সর্বশ্রী রাম বিহারী রায–দীনা, নরেশ মন্ডল– ভদ্রী, স্বনিল কুমার যাদব–জোরারব সিংহ, হবরাঁম–মিথুন যাদব, বেরিয়া–স্বনিল রাউত, নঠৈত–ভোলা মন্ডল আ জযকরন, রুঁঠী–পুষ্পা যাদব, কহাব–স্বরজ মন্ডল, মহেশ ধনকার, পাশ্বর গাযক–রামদের সদা, রেঁচন সদা, ভোলা মন্ডল, প্রকাশ–নরেশ মন্ডল, ধ্বনি বিস্তার– সংজয ঝা, রুপ–সজ্জা–ভোলা মন্ডল, নির্দেশক স্বনিল কুমার যাদব অছি ।

একি কাযক্রম পর টিপ্পণী করৈত রাজেশ্বর নেপালী কহলনি জে কার্যক্রমক জতেক প্রশংসা করল জাযত থোড় হোযত । ওা রহ্ত পৈঘ কাজ ভেল অছি ।

সংস্কৃতিকে ৰঁচযৰাঁক প্রযাস ভেন খছি । নাঠকক সফন মঁচন ভেন খছি জে দ্বদযকে ছনক খছি । সামাজিকে জাগবণ হোযত সে রিশ্বাস ঝনকৈত খছি ।
সমগ্রতামে টিপ্পণী কবৈত চন্দ্রেশ স্পষ্ঠ কযন জে ধর্ম-খধর্ম ও খন্ধ রিশ্বাসসং জ্ডন তন্ত্র মন্ত্র পব খাধাবিত ঙা ঝিঝিযা নৃৎ মহিনা চেতনাক প্রতীক থিক । এহিমে শাবীবিক ও মানসিক স্তব পব রিকাস হোগত খছি । ঙা গতিশীন ঝদ্রামে হোগত খছি । দেহক নসমে শোণিতক প্ররাহ খা একাগ্রতামে ধ্যান কেন্দ্রিত কঽ ঙা নৃৎ খরস্থে মানসিক চেতনাকে জগবৈত খছি খা স্নাযতন্ত্রকে ঝংঙ্কত কঽ স্বস্থ্য মানসিকতাক রিকাস কবৈত খছি ।
ও নাঠক পব রিচাব কেন্দ্রিত কবৈত জনাওন জে সামন্তী শোষণক রিবোধ স্বৰূপ ঙা নাঠক সামাজিক-বাজনৈতিক চেতনাক সংগ নোক চেতনাকে জগবৈত খছি । রস্তুতঃ ঙা নাঠক ও নৃত্তী থিক জকব পসাহীমে ধ্-ধ্ জবৈত সামন্তী মনোরৃতিক নাশ হোযত খা নর ঙঁমংগমে নোক জীরনক নর সংস্কাব হোযত । খাসকঽ খভিনযকর্তা নোকনি খপন-খপন স্বভারিক ও যথার্থ খভিনযমে বংগমঁচক সার্থকতা সিদ্ধ কযন খছি সে এহি নাঠকক সফনতা ও সবঁনতা থিক । হমবা রিশেষকঽ মিথ্ন যাদব, হববাঁহক খভিনয ততেক নিক নাগন খছি জে খানো খান কনাকাব গণসং এহিসং সীখবাঁক থিক জে খভিনযক সজীরতা মর্ম স্থন ধবি ঙঁতবি সকয । ওনা কোনো পাত্রক খভিনয ককবো সং কম নহি, সভ ঙঁপবা-ঙঁপবী । ঝদা বৃঠী-পৃষ্পা যাদবক খভিনযমে খাবো নিখাব হোযবাঁক থিক ।
শ্রী খযোধ্যানাথ চৌধবী কহননি জে স্বাভারিকতামে

পন্বগৈত ঙা নাঁটক রস্তুতঃ সমাজমে নোকজাগবণ খানত । ডা.বেরতী বমণনান এহি নাঁটকক ভবপ্বব প্রশংসা কযননি । ও এহন–এহন নাঁটক খেনযবাঁ পব জোড দেননি ।
ডা. প্রফুন্ন ক্ষমাবসিংহ মৌন কহননি জে ভৈযা খএনৈ খপন সোবাজ নাঁটকক কথানক ও উঁদেশ্য পূর্ণতঃ জীরন্ত খছি । খভিনযকর্তাকি খভিনযমে বুঁমাযন জে সভ কেও স্বযং ভোঞা ছথি । এহিমে সামন্তরাদক প্রখব রিবোধ ভেন খছি ।
ডা. বাজেন্দ্র প্রসাদ রিমনক কথন জে ঙা নাঁটক দনিত চেতনাক প্রতীক থিক । খন্ত্রাষ্ট্রিয জগতমে এহন নাঁটকক মাঁগ খছি তেঁ একবা খংগ্রেজীমে খন্বদিত হোযবাঁক চাহী । সংগহি ও এহি নাঁটককে কাঠমাড্ডুক গ্বরুক্ষনমে প্রদর্শন পব জোড দেননি । নাঁটকমে কিছু এহন দৃশ্যক সংযোজন খছি জে জীরন্ততাক প্রতীক থিক খা হম ঙা নাঁটক দেখি ভার রিভোব ভ২ গেনহু ।
খন্তমে সভাপতি ভ্রমব জনাওন জে এহি কার্যক্রমকে সম্পাদিত ক২ খা দর্শকক উঁসোহ দেখি হম গৌবরান্বিত রোঁধ কবৈত ছী খা নেপান প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠানসঁ খাবো কাজ কবরাঁক নেন হম সংকল্পিত ছী ।
নিষ্কর্ষ –
১. কার্যক্রম পূর্ণ রুপেণ সফন বহন ।
২.সযোসঁ রেঁসী মহিনাক উঁপস্থিতি দর্শক রৃন্দমে মহিনা জাগবণক প্রতীক রঁনি উঁভবিক২ খাযন ।
৩. ঝিঝিযা নৃত্যক সংযোজন পহিন রেঁব জনকপ্বব কী নেপান পবিসবমে ভেন খাসক২ নৃত্য প্রতিগাগিতাক রুপমে সম্পাদিত ।
৪.ঙা এতিহাসিক মহত্বক দিন কহন জাযত জে খপন

ঋস্মিতা ও সংস্কৃতিক উঁথোনক নেন ভেন ।
৫. সাত গোষ্ঠ ঝিঝিযা ঠৈমক উঁপস্থিতিরোঁধ ঋরস্মে মহিনা রস্মাকে পহিন খেপ মংচপব ঋাযরঁ ঋা ঋপন নৃত্ প্রস্তুত কবরঁ ঋরঁস্মে মহিনা রস্মাক প্রতিনিধিত্বক স্ব ৃচক রঁনন । খাসক২ নিম্নতব মহিনা রস্মাক প্রতিনিধিত্ব হোযরঁ সমাজমে নাবী জাগবণক প্রতীক থিক ।
৬. উঁদ্যাগ রাণিজ্য সংঘক হাঁন খচাখচ ভবন বহন । ঝিঝিযা নৃত্ ঋা নাষ্টক হোযরাঁ ধবি দর্শকিগণ নহি হিনন–ডোনন ।
৭. ভৈযা ঋএনৌ ঋপন সোবাজক প্রস্তুত কৈক ঠাম ভেন ঋছি । হ্মদা এহি ঠামক প্রস্তুতিমে সজীরতা ও জীরন্ততা প্রদর্শিত ভেন ।
+. সভ রযসক নোককে ঙা কার্যক্রম প্রভারিত কযনক ।
৯. এহিমে নিম্নতব রস্মাক প্রতিনিধিত্ব ত ভেরে কযন ঋা রিশেষ ক২ ওহি রস্মাক নোককে ঋপন সমাবোহ জে রঁন্নাযন সে সভক মোনকে জীতি নেনক । খাসক২ রঁঠ প্ববাণক সংগহি রঁৃঠি মহিনা সভ সেহো খুশীমে উঁঠি রৈঁসন ।
১০. নাষ্টকমে কিছু রিসংগতি ঋরঁস্মে খষ্টকন খাসক২ সংগীত পক্ষক ক্রমরঁদ্ধতামে, হ্মদা ঋভিনয পক্ষ ও গীতক মাধুর্যমে সভষ্টা রিনা গেন ।
১১. ঋভিনযকর্তাকে ঋাবো ঋভিনযকে উঁচাঙা পব কনামেকতামে ন২ জাযরঁ ঋারশ্যক । হ্মদা প্রস্তুতিক সফনতা নিস্সন্দেহ সফন থিক ।
১২. কার্যক্রম স্বস্থিব, স্বনিযোজিত ঋা ব্যারহাবিক বহন ।
১৩. ঙা সত্ থিক জে এহি নাষ্টকক গমৈযা পবিরেশমে

जे अभिनयकर्त्ताद्वारा सजीवता प्रस्तुत कयल गेल अछि से प्रशंसनीय थिक ।
१४. झिझिया नृत्यमे महिला रङ्ग प्रदर्शित कऽ अपन उद्गार व्यक्त कयलनि से देखितो बनैत छल । कारण नृत्यकर्मी रङ्गक मनभाव स्पष्ट झलकि उठल । खासकऽ पुरस्कृत लोगनिक कान महिला रङ्गक उत्साह देखबायोग्य छल ।
१५. जे महिला रङ्ग भाग नहि लेलनि से अगिला महोत्सवमे भाग लेबाक हेतु उत्साहित भाव प्रकट कयलनि ।
१६. समग्रतामे लोक कल्याणकारक कार्यक्रम उत्तरदायी भेल आ अपन विशिष्ठतामे अमिट तिथि धारित केलक ।


प्रकाश झा, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, भगवान दास रोड, नई दिल्ली-०१

<u>नचिकेताक 'प्रियंवदा' : एक विश्लेषण</u>

प्रियंवदा उदय नारायण सिंह नचिकेता द्वारा लिखित एकांकी अछि । एकरा सम्पूर्ण नाटकक रूप द' क'

মনোজ মন্বজ মঁচিত কেনথি । এহি প্রস্তুতি কে দেখবাঁক সৌভাগ্য হমবা নহি প্রাপ্ত ভেন, ঝদা প্রস্তুতি খানেখ হমবা উঁপনর্দ্ধ ভেন । ওহী নাট্যানেখ কে খধ্যযন কেনাক বাঁদ হমব নিম্ন খন্বভব খছি ।

জেনা কি নাম স' নগৈত খছি জে প্রিযংরদা কোনো ঐতিহাসিক পৃষ্ঠভূমি পব খাধাবিত নাটক হোযত ঝদা সে খছি নগ । ও মাত্র নাটকক একটা কেন্দ্রিত পাত্রক নাম খছি জিনকা গর্দ-গীর্দ নাটকক কথানক ঘ্মৈত খছি ।

নাটকক কথ্য এনা খছি জে প্রিযংরদা নামক একটা নড়কী কোনো শহব মেঁ এসগব বহি বহন ছথি খা কোনো কম্পনীক নেন মার্কেটিং সর্রে করৈত ছথি । ওহী শহব মে শের্র নামক একটা যবক সেহো বহৈত ছথি । শের্র কে করিতা নিখবঁ খূবঁ পসিন ছনি খা প্রিযংরদা কে করিতা সূনবঁ নীক নগৈত ছনি । শের্রক করিতা স' প্রভারিত ভ' প্রিযংরদা শের্র সংগ প্রেম রিরাহ ক' নৈত ছথি । বাঁদ মে কিছু ঘটনা ঘটৈত খছি । সর্র প্রিযংরদা কে ছোড়ি কতৌ চনি জাগত ছথি । নাটক মে প্রিযংরদাক ভৈযা খা ভৌজী ছথিন সংগহি কিছু কোবস পাত্রক প্রযোগ সেহো কযন গেন খছি । এহি তবহে নাটক মে ফন জমা দস গোটে ছথি ।

নাটক প্রিযংরদা ছ: দৃশ্য মে বাঁটন গেন খছি । পহিন মে প্রিযংরদা খা হ্নকব ভৌজীক সংরাদ ছনি । দোসব

दृश्य मे कोरस, प्रेमी–प्रेमिका, प्रियंवदा आ शेखर छथि । तेसर दृश्य मे कोरस, शेखर आ प्रियंवदा तथा चारिम दृश्य मे शेखर, प्रियंवदा, भैया आ भौजी छथि । पाँचम दृश्य मे एक बेर फेर शेखर, प्रियंवदा, भैया आ भौजी तथा छठम दृश्य मे शेखर आ प्रियंवदा दुनू मात्र छथि ।

ई नाटक दूटा स्थान पर घटित होएत अछि – पहिल शेखर के घर में आ दोसर सार्वजनिक पार्क मे । शेखर के घर मे चारिटा दृश्य होइत अछि – पहिल, चारिम, पाँचिम आ छठम तथा पार्क में दोसर आ तेसर दृश्य होइत अछि । घरक दृश्य मे कुर्सी, किताब, कागज़, लैम्प होइत अछि आ पार्क मे संबंधित सामान राखल जा सकैत छैक ।

प्रियंवदा नाटक फ्लैस बैक मे चलैत अछि । उदय नारायण सिंह नचिकेताक ई प्रिय शैली छनि । एकर प्रयोग नचिकेता जी एक छल राजा मे सेहो केने छथि । नाटकक मे एहन तरहक शैली प्राय: नाटक के कमजोर करैत अछि । हँ ! ज' नाटकक बीच मे किछु कालक लेल वा कोनो एकटा दृश्य फ्लैस बैक मे खुलैत हो तखन त' कोनो विशेष नहि मुदा, नाटकक पहिल दृश्यक बाद सम्पूर्ण नाटक एहि फ्लैस बैक शैली मे चलय त' निश्चित नाटकक लेल ओतेक प्रभावी नहि भ' सकैत अछि । कारण, कोनो नाटक एकटा लय मे चलैत अछि, जकर ग्राफ शून्य स' आगू उठैत

छैक । दर्शक मे हरदम ई उत्सुकता बनल रहैत छनि जे आब की हेतैक । जखने ई उत्सुकता समाप्त भ' जाइत अछि नाटक अपना संग दर्शक के बान्हबा मे कमजोर पड' लगैत अछि । प्रियंवदाक अंतिम पड़ाव जे कि पहिने दृश्य मे अछि कोनो खास प्रभाव नहि छोड़ैत अछि । खैर ...

आब एहि नाटकक कथ्य पर विचार करबाक चाही । नाटकक शुरुआत कथ्यक समापन स' होइत अछि । तात्पर्य ई जे शेखर अपन प्रियंवदा के छोड़ि क' चलि जाइत छथि जिनका स' किछुए पहिने ओ प्रेम विवाह केने रहथि । प्रियंवदा वियोग मे रहैत छथि आ हुनकर भौजी हुनका समझा-बुझा रहल छथिन । यद्यपि, ओ अपना आप मे रहनाइ बेसी उचित बुझैत छथि । हुनकर एकटा संवाद बुझू नाटकक मूल अछि : "सेन्स ऑर्क काज करैत – करैत हम स्वयं मार्केट प्रोडक्ट बनि गेल रही" । आब प्रियंवदा अपन जीवनक कथा दोहरबैत छथि । कोना ओ अपना नौकरी स' जुड़ल छलीह, कोना हुनका शेखर भेटैलखिन, कोना एक दोसर स' प्रेम भेलन्हि जे विवाह मे परिणत भेल, कोना दुनू जीवन चलैत रहैल, कोना शेखर पर हुनक पिछला जीवन हावी भ' जाइत रहलनि, कोना शेखर कविता लिखनाइ स' प्रेम करैत छलाह, कोना एक दिन भैया भौजी अकस्मात घर अयलखिन, कोना हुनका सभ संग शेखरक व्यवहार बदललनि, कोना शेखर अपन प्रिय प्रियंवदा संग दुर्व्यवहार क' र' लगलाह, कोना शेखरक दिमाग बदलि गेलनि आ ओ प्रियंवदा के छोड़ि घर स'

কতৌ চলি গেলাহ । আৰ প্ৰিয়ংৱদা হ্নকব বিযোগ মে আগযো ওহিনা ঠাঢ় ছথি ।

এহি নাটক মে কথ্যক দূটা ধাবা আছি । একটা ত' রিনক্ষন সামান্য জে ত্তবত নাটকক নামে স' দেখাগত আছি জে স্ত্রীক সামাজিক স্থিতি কেহন আছি । আগ নৈ আদি কান স' স্ত্রীক সামাজিক স্থিতি মে কোনো পবিরর্তন নৈ এনৈহ্ন আছি । হঁ ! একব ৰূপ জৰুব ৰঁদন আছি । আদি কান মে নন অপন দময়ংতী কে স্বনসান জংগন মে ছোড়ি ক' চলি গেন ছনাহ, দ্ষ্যংত নাগি দেননি শকুংতনা কে । আগযো শর্ব অপন প্ৰিয প্ৰিয়ংৱদা কে আদমী ৰূপী জংগন মে ছোড়ি ক' চলি গেনাহ । প্ৰেমক পবিণতি, বিযোগ মে – ওহু সময আ আগযো ।

নাটকক কথ্যক দোসব ধাবা সেহো আছি জে পহিন্বক কথ্য স' অতি মহত্বপূৰ্ণ আ সাবগর্ভিত সেহো ছৈক । শর্ব একটা করি ছথি হ্নকা পব হ্নকব অতীত হবদম সৱাঁব বহৈত ছনি । এহি ঠাম শর্ব এহি নাটক পাত্ৰ মাত্ৰ নহি ছথি বঁল্কি আজ্ক মানর সমাজক প্ৰতিনিধিত্ব ক' বহন ছথি । নোক চাহে জে কিছু ভ' জাগছু যা ৰঁনি জাগছু হ্নকব অতীত হবদম হ্নকা পব ছাযা জেনা মঁডবাগত বহৈত ছনি । এহি অতীত স' কিছু সমৰ্থ ব্যক্তি অপনা আপ কে ৰঁচা নৈত ছথি আ ওহনে ব্যক্তি মহান হোগত ছথি । মুদা অধিকাংশ ব্যক্তি ওকব প্ৰভাৱ মে আৰি জন সামান্যক জীৱন জীৱৈত ছথি যা

শর্ব জেনা অমানবীয ব্যবহার ক'র' রহৈত ছথি । ই অতি মহত্বপূর্ণ অছি আ এতবে নহি এখুনকা সন্দর্ভ মে ই বিশ্ব স্তর পর গম্ভীর প্রশ্ন বনল অছি । শ্রদ্ধা প্রিযংবদা নাটক মে এহি গম্ভীর শ্রদ্ধা কে ধারি ক' স্ত্রীক সামাজিক স্থিতি সন সার্বজনিক শ্রদ্ধা কে প্রহ্মখতা স' প্রভাবী বনা দেল গেল অছি । জঁ এহি নাটকক নাম প্রিযংবদা ক' বন্দনা কিছু আর হোইত ত' ই নির্দেশকক মোনক বিচার আ ক্ষমতা ভ' সকৈত ছল জে ও কোন পক্ষ কেঁ বেসী উভারৈত ছথি ।

পাত্রক চুনাব উদয নারাযণ সিংহ নচিকেতাক নাটকক অহং প্রভাবী অংগ থিক । কারণ, সভ পাত্র গঠন আ কথ্যক মাঁগানুসার হোইত ছনি । এহু নাটক মে পাত্রক সংখ্যা আ ওকর বিস্তার কথ্যক অনুসার উচিত অছি । সংগহি কোরসক প্রযোগ ক' ক' আরো আসান বনাওল গেল অছি । কোনো ছোট স' ছোট সংস্থা এহি নাটক কেঁ আসানী স' প্রস্তুত ক' সকৈত অছি । নাটক মে প্রিযংবদা সবস' মহত্বপূর্ণ চরিত্র ছথি আ ওহি কে বাঁধ শর্ব । শ্রদ্ধা একটা অভিনেতাক লেল সবস' মহত্বপূর্ণ আ চুনৌতীপূর্ণ চরিত্র ছথি শর্ব । ই পাত্র জতেক সাধারণ দেখাইত অছি কহিক রূপমে ওতবে জটিল অছি বাস্তবিক রূপে । অভিনযক জে সবস' মহত্বপূর্ণ অংগ অছি অংতর্দ্বন্দ্ব সে এহি পাত্র মেং দুনূ তরহ স' ভরল অছি – বাহরী আ আংতরিক সেহো । বাহরী মে অপন প্রিযংবদা আ সমাজ সঁ, আ আংতরিক মে হুনক অপন অতীত স' । এহি তরহক চরিত্র কোনো অভিনেতা লেল পসংদিদা চরিত্র হোইত অছি । তেঁ

हम शुरू के एहि नाटक मे महत्वपूर्ण चरित्र मानैत छी । भैया आ भौजीक रूप मे दूटा पात्र आरो छथि । नाटक नेन ओ दनू सहयोगी पात्र छथि । अन्त मे भौजी कनी बेसी महत्वपूर्ण । पहिने कहने छी जे कोरस के प्रयोग भेल अछि । तेँ प्रियंवदा पात्रक अनुसार एकटा महत्वपूर्ण नाट्य रचना थिक ।

नाटक मे नाटकीय भाषाक जे प्रयोग भेल अछि से शास्त्रीय थिक । चूँकी नचिकेता जी स्वयं नीक कवि सेहो छथि तेँ हिनक कविता बेसी प्रमुखता संग नाटक मे बहैत छनि । यैह कारण अछि जे बहुत बात ओ बहुत कथ्य शब्द आ स्वगठित भाषा मे कहि नैत छथि । ख्दा प्रियंवदा मे कविताक प्रयोग किछु विशेष भ' गेल अछि । ओना शुरू करि छथि तेँ कविता अधिक – सेहो कोनो उँचित तर्क नहि बुझना जाएत अछि । आ एहन तरहक भाषाक प्रयोग नाटक के भ्रमित करैत अछि ओ एना कि भाषाक आधार पर प्रियंवदा के की कहल जाय शास्त्रीय नाटक, ऐतिहासिक नाटक, यथार्थवादी नाटक या आन कोनो । हाँ, भाषा आ कथ्यक आधार पर ओ यथार्थवादी नाटकक वैचारिक नाटकक श्रेणी मे राखल जा सकैत अछि । ख्दा, कोरसक भाषा नाटकक संग नहि जाएत अछि । संगहि किछु आर ख्द्दा सेहो कोरस के माध्यम स' सामने राखल गेल अछि ओ कनि आरो मूल कथ्य के भ्रमित करैत छै जेना प्रेमी–प्रेमिका मे विवाहेत्तर संबंधक ख्द्दा उँठायब । ओ ख्द्दा कमजोर या अप्रासांगिक अछि से हम नहि कहि रहल छी ख्दा एहि ठाम एकवा उँठायब

নাটকক মূল কথ্য কে কমজোর করৱ্ অছি ।

বংগমংচীয দৃষ্ঠি সঁ প্রিযংরদা একটা সামান্য হ্নতি অছি । নে কোনো অতিমহত্ত্বপূর্ণ আ নে নিরাশাজনক । এহন কোনো খাস নৈ ছৈ জে কিনো নির্দেশক রা সংস্থা এক রেঁব পঢ়ি তে একবা মংচনক পরিকল্পনা ক' ব' নাগথি আ ওহো নহি কহল জা সকৈত অছি জে কোনো নির্দেশক একবা মঁচিত ক' ব' চাহথি ত' প্রভারী নহি রঁনা সকৈত ছথি কনি হেব রঁদন ক' ক' ।

<u>'প্রযোগ' একাংকীক বংগমংচীয দৃষ্ঠি</u>

মৈথিলী নাট্যে জগত মে 'প্রযোগ' একটা সশক্ত একাংকী

अछि, जाहि मे मात्र तीनटा पात्र नवीन मिसर, अमृता आ श्रुति छथि । ई तीनू गोटे कोनो नाट्य संस्थाक नाट्यकार / निर्देशक / अभिनेता / अभिनेत्री कोनो नाटक करबाक हाथि मे लागल छथि । नाटककार या निर्देशक (जे कहि लियन्ह) नवीन अपन एहि दुनू पात्र के प्रेमक मादे किछु प्रयोग करबाक लेल कहैत छथि । तीनू पात्र प्रेमक विभिन्न आयामक कतेको प्रयोग करैत छथि । अंतत: ई प्रेम हिनका सबहक नाटकीय जीवन स' निकलि व्यक्तिगत जीवन स' नीक जेना ओझरा जाइत छथि । किछु ओहिना जेना विजय तेंदुलकरक चर्चित नाटक 'खामोश अदालत जारी है' मे घटैत अछि जे सभपात्र ग्रीन रूम मे किछु ओहिना अदालतक स्वांग करैत छथि आ ओ धीरे धीरे ततेक ने बढ़ि जाइत अछि जे सभ पात्रक व्यक्तिगत जीवन सामने आबि जाइत छै । खैर !

एहि एकांकी मे नाटककार नचिकेता जी सेहो नवीनक माध्यमे स्वयं बजैत बुझाइत छथि । एक ठाम नाटककार संवाद छनि : "आइ-काल्हि जेहन नाटक होइत अछि ओ लोक घर जाक' सपनेक संग बहा दैत अछि । एकर कोनो प्रक्रिया मोन नहि रहैत छैक । तेँ कोनो स्थायी वस्तु नहि द' पबैत अछि आजुक नाटक । नाट्यकार लोकनि किछु टोटपमे बन्हा गेल छथि । अपन-अपन शिविरक । सदा, ओ बात कहबाक लेल लिखैत छथि । केओ लाल छथि तँ केओ पीयर, केओ पूबी हावाक शौखीन छथि तँ केओ पश्चिमी हावाक । सदा नवीन प्रयोग हुनका लोकनिक नाटकमे किन्नहुँ नहि भेटैत ।" नवीन नामक एहि पात्रक कथन के आगू

𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱𑒢 “𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒧𑒼𑒢𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒋𑒯𑒢 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒲 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒏𑒩𑒝𑒏 𑒮𑒴𑒞𑒹 𑒏𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒋 ।” – 𑒂 𑒮𑒹 𑒋𑒯𑒱 ‘𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑’ 𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒥𑒻 𑒏𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱 । ‘𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑’ 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒄 𑒋𑒏𑒰𑓀𑒏𑒲 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒦’ 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒅𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒑𑒧𑓂𑒦𑒲𑒩 𑒞𑒰𑒑𑒰 𑒙𑒴𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒼 । 𑒍 𑒏’ 𑒞’ 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒮𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒟𑒰𑒯𑒹 𑒢𑒻 𑒥𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻 । ‘𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑’ 𑒋𑒏𑒰𑓀𑒏𑒲 𑒮’ 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒻, 𑒋𑒏𑒩 𑒏𑒟𑓂𑒨 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒻, 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒹𑒞𑒰–𑒁𑒦𑒱𑒢𑒹𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒯, 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪, 𑒧𑓀𑒔 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒫𑒰 𑒏𑒱 𑒢𑒻 𑒦𑒹𑒪 𑒮𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒥 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒁𑒕𑒱 ।

𑒍𑒢𑒰 𑒂𑒑–𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒋𑒯𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰 𑒐𑒴𑒥 𑒔𑒪𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒫𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒱 𑒏 𑒮𑒦 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒧𑓀𑒔 𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰 𑒮’ 𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒹 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 । 𑒞𑒨 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒄 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒞𑒥𑒼 𑒮𑒧𑒨 𑒞𑒏 𑒯𑒼𑒨𑒞, 𑒂𑒡𑒰 𑒒𑓀𑒙𑒰, 𑒋𑒏 𑒒𑓀𑒙𑒰 𑒫𑒰 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒯𑒼 । 𑒧𑒳𑒠𑒰, 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒏 𑒮𑓀𑒖𑓂𑒘𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒯𑒿, 𑒄 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒹𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒝𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒦’ 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒋𑒯𑒱 𑒮’ 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒧𑒞𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒞𑒢𑒱, 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒂𑒣 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒖𑒑𑒞𑒢𑒱, 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒯𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒏 𑒦’ 𑒮𑒏𑒞𑒰𑒯 𑒮𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒯𑒹𑒞𑒢𑒱, 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒹 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒞𑒰𑒯 𑒂𑒠𑒱 𑒂𑒠𑒱 ।

‘𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑’ 𑒧𑒹 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒁𑓀𑒞 𑒞𑒏 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒢𑒫𑒲𑒢 𑒨𑒻𑒯𑒙𑒰 𑒏𑒯𑒱 𑒣𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒧𑒹 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒞𑒰𑒯 । 𑒞𑒨 𑒯𑒼𑒋𑒞

খছি জে নাটক রিষয রস্তু ভেল – প্রেম খা কথাক ৰূপ বেখা মে পহিলে মিলন ওকব বাঁদ বিবহ খা খংত মে ফেরো মিলন । এহি স’ গহো এহী দৃশ্য মে দর্শক কে জানকাবী দ’ দেল জাগত ছনি জে নাটক স্বখাঁত খছি । এহি স’ গহো খনুমান নগাওল জা সকৈ ছৈ জে দর্শক রাকি প্রেক্ষক কেঁ জে কোনো উৎসুক্তা হেতনি এহি প্রযোগ কে ন’ ক’ ও নিশ্চিত খাধা ভ’ গেল হেতনি । খার্ঁ ও মাত্র উপর্যুক্ত ৰূপ বেখাক প্রক্রিযা দেখবাঁ নেল বহতাহ । হ্মদা এহন কোনো স্থিতি নহি খরৈত ছৈ । খংত একটা প্রেমিকাক হত্যা স’ হোগত খছি ।

নাটকক দোসব দৃশ্যমে খমৃত খা শ্রীতিক বীচ প্রেম কে কেন্দ্র মে বাখি সংবাদ শুরু হোএত ছনি । হ্মদা পহিলে তয কযল গেল ৰূপ বেখাক ক্রম বাঁধিত হোগত খছি খা খকস্মাত নির্দেশক নরীন প্রবেশ কবৈত ছথি । এহি তবহে দোসব দৃশ্যক খংত তক নির্দেশক নরীন মিসবক খনুসাব নাটক শুরু ভেলে নহি বহৈত খছি । ও ফেব স’ প্রযোগ খাবম্ভ কবরাঁক খাদেশ দৈত ছথি ।

খার্ঁ নাটকক তেসব যানী খংতিম দৃশ্য শুরু হোগত খছি । এহি দৃশ্যমে তীনূ পাত্র পব হুনকব সভহক ব্যক্তিগত জীরন রৈসী প্রভার মে খারি জাগত ছনি । শ্রীতি খত্যধিক খারেশিত ভ’ জাগত ছথি । খমৃত সেহো খপনা খা শ্রীতিক বীচ নরীন কে বাঁধা ৰূপ মে বূঝৈত ছথি খা হুনকা পব খভাব মে হমলা ক’ দৈত ছথি । এক বেব ফেব শ্রীতি খমৃত পব খারেশিত হোগত ছথি । খমৃত পব কতেকো তবহক খাবোপ নগরৈত ছথি

। 𑒁𑒧𑒵𑒞 𑒮' 𑒮𑒯𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒢𑒱 𑒂 𑒍 𑒬𑓂𑒩𑒳𑒞𑒱𑒏 𑒑𑒩𑒠𑒢𑒱 𑒠𑒥𑒰𑒏' 𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰 𑒏' 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 । 𑒂𑒩𑒼 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒧𑒹 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒢𑒫𑒲𑒢 𑒖𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒑𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂 𑒍 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒣𑒩 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒲 𑒦𑒹𑒪, 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒰 𑒥𑒰𑒠 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒏 '𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑' 𑒏𑒹 𑒂𑒢𑒹 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒮𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 , 𑒋𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒧𑒼𑒢 𑒩𑒐𑒪𑒰𑒯 𑒏𑒱 𑒢𑒻 𑒩𑒐𑒪𑒰𑒯 𑒮𑒹 𑒁𑒢𑓂𑒫𑒹𑒭𑒝𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒟𑒱𑒏 ।

𑒋𑒏𑒰𑓀𑒏𑒲 𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒞𑒠𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩𑒹 𑒁𑒕𑒱 ; 𑒢𑒹 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒂 𑒢𑒹 𑒏𑒧, 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 । 𑒑𑒧𑓂𑒦𑒲𑒩𑒞𑒰 𑒮' 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒨 𑒞' 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒏 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒢𑒫𑒲𑒢 𑒧𑒱𑒮𑒩 𑒠𑒴 𑒞𑒩𑒯𑒹 𑒧𑓀𑒔 𑒣𑒩 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 – 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒞' 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 (𑒖𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒼𑒔 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒢' 𑒏' 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏) 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒏𑒹 𑒢' 𑒏' 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 । 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨 𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢𑒰 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒢𑒫𑒲𑒢 𑒧𑒱𑒮𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒍 𑒁𑓀𑒞 𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒏' 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒏𑒩𑓂𑒭 𑒣𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒢' 𑒖𑒰 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒢𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒏𑒹 𑒂 𑒢𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒂𑒣 𑒏𑒹 । 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒁𑒧𑒵𑒞 𑒯𑒩𑒠𑒧 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒧𑒹 𑒕𑒟𑒱 । 𑒍 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒖𑒱𑒫𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 । 𑒁𑓀𑒞𑒱𑒧 𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒝𑒞𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒹𑒿 𑒍 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒋𑒞 𑒕𑒟𑒱 । 𑒬𑓂𑒩𑒳𑒞𑒱 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒧𑓀𑒔 𑒣𑒩 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒢𑒫𑒲𑒢 𑒧𑒱𑒮𑒩𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬𑒰𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒨𑒠𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒱𑒕𑒪𑒰 𑒂 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒹 𑒧𑓀𑒔 𑒣𑒩 𑒁𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 । 𑒍 '𑒏𑒱 𑒏𑒩𑒴… 𑒏𑒱 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒴' 𑒏𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒢𑒻 𑒢' 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 । 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒳𑒞𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒁𑒮𑓂𑒟𑒱𑒩 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒑𑒜𑓃𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 । 𑒣𑒩𑒱𑒝𑒰𑒧 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒋𑒏𑒰𑓀𑒏𑒲𑒏 𑒁𑓀𑒞 𑒞𑒏 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰

भ' जागत छन्हि । एहि तरहेँ 'प्रयोग' मे तीनटा पात्र छथि जाहि मे नवीन मिसर छोड़ि दुनू पात्र नीक जेना स्थापित होइत छथि ।

नाटक मे मंच परिकल्पना संग प्रकाश प्रविकल्पना सेहो लेखक अपना हिसाबेँ केने छथि । जाहि मे मंच के तीन हिस्सा मे बाँटल गेल अछि आ समयानुसार ओकर प्रयोग सेहो कयल गेल छै । एक कात एकटा कुर्सी अछि आ एकटा काठक बॅक्सा सेहो उँनटल छै , बीच मे सीढ़ी कि तीनटा चबुतरा आ एकटा काठक फ्रेम आ दोसर कात मे फूल-पात याउ एकटा ठाढ़ि लटकल अछि । एहिना प्रकाशक सेहो तीन का क्षेत्र बनाओल गेल छैक एकटा मे कुर्सी+बॅक्सा+सीढ़ी अछि । दोसर मे सीढ़ी आ मंचक सामनेक हिस्सा । तेसर मे सीढ़ी आ ठाढ़ि अछि । एहि तरहक प्रयोग मैथिली नाटकक लेल पहिल नै अछि तखन एहि एकांकीक मंचनक सन्दर्भ मे ई अति महत्वपूर्ण स्वरुप अछि कोनो निर्देशक लेल । एहि मे कोनो शंक नहि जे नाटककार लचिकेताजी नाटकक लगभग सभ विधा मे नीक हस्तक्षेप रखैत छथि ।

एहि तरहेँ निष्कर्ष यैह जे ई 'प्रयोग' एकांकी मात्र एकटा विचार बनि क' रहि लेल अछि मैथिली रंगमंचक लेल । ओना नाटक मे द्वन्दक प्रयोग खूब नीक जेना बनल रहैत अछि । नाटक अपन ग्राफ के शुरु स' बरकरार रखैत अछि । रंगमंचीय दृष्टि स' 'प्रयोग' एकांकीक कथ्य स' बेसी ओकर मंच परिकल्पना आ प्रकाश परिकल्पना बेसी महत्वपूर्ण अछि । ओना 'प्रयोग'क माध्ये

হমব ঙা রিচাব মাত্র একব একটা পাঠক রূপে বাখন জায । হঁ ! একব প্রস্তুতি দেখনা রা মঁচিত কেনো রাঁদ কিছ খাবো সার্থক তথ্য নিকনি সকৈত খছি । তখন ঙা নিশ্চিত জে মৈথিনী নাট্য সাহিত্য মে ঙা খপনা তবহক পহিন হৃতি মানন জযরাঁক চনী, জে বংগমঁচ স’ জূড়ন প্রায: সভ বংগকর্মী কেঁ কিছ সোচরাঁক নেন প্রেবিত করৈত খছি ।

<u>প্রযোগ একাঁকীক বংগমঁচীয প্রযোগ</u>

ফবরবী 2010কে 14 তাবিখ ক’ দবভংগাক ননিতনাবাযণ মিথিনা রিশ্বরিদ্যানযক নাটক এরং সংগীত রিভাগক প্রেক্ষাগৃহমে সাঁঝক 4 রঁজে স’ খাযোজিত ছন প্ররোঁধ সাহিত্য সম্মান – 2010 । এহি খাযোজনমে স্বস্তি ফাউণ্ডেশন দ্বাবা ক্ণান জীক নির্দেশনমে নচিকেতা জীক নিখন প্রযোগ একাঁকীক মঁচন সেহো বাখন গেন ছনৈক । সংযোগ স’ হমহু মধুরঁনীমে বহী তেঁ এহি সূখরসব কেঁ নাভ উঁঠযরাঁক হেতু এহি খাযোজনমে উঁপস্থিত ভেনাগ জরূবী নাগন । এক সংগ কতেকো নাভ ছন । এহি স’ পহিনে সেহো ক্ণানজী প্রযোগ কে মঁচিত ক’ চুকন ছ্নাহ । ঙা হুনকব দোসব প্রস্তুতি ছন, তেঁ কনি খাবো মহত্বপূর্ণ । কহন জাগত খছি জে কোনো নাটক রেঁব রেঁব মঁচিত ভেনাক রাঁদ খাবো নিখরৈত খছি সংগহি ও খপন কথ্য খা মঁচনমে

পবিপক্কতা সেহো গ্রহণ কবৈত অছি ।

সাত বজে সাঁঝমে প্রযোগ একাংকীক মংচন শুরু ভেল । লগভগ 45 মিনটক এহি একাংকীক শুরুআত অন্হাব স' ছল জাহিমে কোনো মহিলাক আবাজমে কাব্য পাঠ ভ' বহল ছল । ধীরে ধীরে প্রকাশ অবৈত অছি আ মংচপব একটা নকড়ীক গেট দেখাগত ছৈ । নাটককাব একবা ফ্রেম কহলথি অছি মুদা মংচপব হমবা ওা গেটক অনুভূতি দেলক । ওা গেট কনী উঁচাও গ্রহণ কেনে অছি আ ওহি তক পহুঁচবাক লেল তীন-চাবিটা স্টেপ বনল অছি জাহি স' ওা কোনো কোঠবীক প্রবেশ দ্বাব প্রতীত হোএত ছৈক । মুদা, নাটককাব এহি স্টেপকে সীঢ়ী কহলে ছথি । আব ওা কহলাগ কনী কঠিন অছি জে নাটককাব নচিকেতা জীক সীঢ়ী আ নির্দেশক মুস্কান জীক ওা স্টেপমে কতেক সমানতা ছনি । মুদা নাটককাবক ফ্রেম আ নির্দেশকক গেট ত' জরূবে ভিন্ন অছি । নাটকক অনুসাবে সীঢ়ী আ ফ্রেমমে কোনো সংবংধ নহি দেখাওল গেল অছি । মুদা, এহি ঠাম স্টেপ আ ফ্রেমকে এনা সংযোজিত কযল গেল অছি জে ওা কোনো কোঠবীক প্রবেশ দ্বাব বুঝনা জাগত ছৈক । এহী স্টেপপব ঠাঢ় বহৈত ছথি নাটকক মুখ্য কলাকাব নবীন মিশ্র । মংচক বাঁমা কাত (দর্শক দিস স') একটা কুর্সী অছি জে দর্শক দিস পীঠ ক' ক' বাখল বহৈছ । সংগহি একটা বক্সা সেহো একব বংগলমে বাখল গেল অছি । হাঁ, নাটকক অনুসাব ওা নকড়ীক অছি আ উঁলটা বাখল গেল অছি মুদা এখন মংচপব ওা চদবাক আ ওহিনা বাখল অছি জেনা কোনো ব্নাঁক বাখল জাগত অছি । দাহিনা কাত (দর্শক দিস স') একটা গাছক

কিছু ডাবি দেখাব পরৈত অছি । ফর্সীক রঁসী উঁপযোগ অমৃত করৈত ছথি আ গাছক ডাবিক তবমে প্রায়: নাটকক এক মাত্র মহিলা পাত্র শ্রুতি বহৈত ছথি । রঁস । হাঁ ! ঙা কহি দী জে ঙা মঁচ রিন্যাস এহি নাটকক নির্দেশক ফণান জীক মানন জেরাঁক চাহী । কাবণ, প্রযোগ নাটকমে একব নেখক নচিকেতাজী স্বযং মঁচ রিন্যাসক নির্দেশ দেনে ছথি, জকবা থোড় রঁহুত রঁদনন গেন অছি ।

আজুক এহি মঁচনক নেন তৈযাব মঁচ রিন্যাস কনি কংফ্যুজ করৈত অছি । ফর্সী আ রঁক্সা স' নগৈত অছি জে ঙা কোনো নাট্যে সংস্থাক পূর্বাভ্যাসক কক্ষ অছি হ্মদা গাছক ডাবি আ গেটক আগূ রঁনাওন গেন স্টুপ স' নগৈত অছি জে ঙা কোনো কোঠবীক আগূক ভাগ থিক । তেঁ এহি তবহক মঁচ রিন্যাসপব গংভীবতা স' রিচাব কবরাঁক আরশ্যকতা ছন নাটকক কথ্যকে স্থাপিত কবরাঁক নেন ।

আরঁ নাটকমে অভিনেতাক রস্ত্র রিন্যাস দিস সেহো ধ্যান দেন জায । হ্মখ্য অভিনেতা নরীন মিশ্রকেঁ নির্দেশক রূপমে টেপী, সীটী, ফর্তা, পেঁট আ পৈবমে জূতা ঠীক অছি হ্মদা রাঁকী দুনূ পাত্র খানী পৈবে ছথি সে কিযেক ? পৈবক পহিবনমে ভিন্নতা ভ' সকৈত অছি হ্মদা কিযো পহিবনে আ কিযো খানী পৈবে কনি ত্রুটি পূর্ণ নগৈত অছি । শ্রুতিকে সেহো সাড় ী স' রঁসী নীক হুনকা সনরাঁব হ্রাক হোগতনি জাহি স' ও অভিনয কবরা কান মূরমেঁট কবরাঁমে হ্রী মহসূস কবিতথি । নাটকমে সেহো ঙা নহি পতা চনৈত অছি জে শ্রুতি

रिराहेन छथि रा ऋमावि । एहना स्थितिमे हुनका ऋमावि मानन जेबाँक चाही छन । हुनका कांँख तव नटैकेन पर्स नीक थन्वभूत दैत थछि । ऋदा प्रियंका नीक जेना थपन थभिनयमे पर्सक उंपयोग नहि क' सकनीह । थमृतक ड्रेस सेहो कोनो रुँसी थाकर्षक नहि मानन जयबाँक चाही । कावण, मंच पव कतेको तवहक प्रकाशि थरेंत जाएत बहैत छै था तेँ प्राय: कावी था उंज्जव बंगक उंपयोग कोनो रिशेषे पविस्थितिमे कवबाँक चाही । एहि ठाम थमृत नामक कनाकाव कावी पेंट था उंज्जव शर्ट पहिवने छथि । कावी पेंट होबाँक कावण थमृत जखन ओहि स्टूपपव रुँसैत छथि कि स्टूप पव पवन सभटा गर्दा हुनका पेंटमे नागि जाएत छनि जे नीक नहि नगैत थछि । हाँ ! एहन स्थितिक जँ माँग कवैत थछि नाटकक कथ्य तखन त' नीक, ऋदा प्रयोगक संदर्भमे ओ कहनाए उंचित नहि होयत । एहि तवहेँ मात्र नरीन मिश्र जीक रस्त्र सज्जा नाटकक तदनुरूप मानन जायत ।

एहि प्रस्तुतिमे प्रकाशि र्यरस्थाके नीक मानन जयबाँक चाही । प्रकाशि पविकल्पना चन्द्रभूषण झाक छनि था संचाननो स्वयं क'बहन छथि । नाटकक शुरुआत थन्हावमे होएत थछि था धीवे धीवे प्रकाशि नरीन मिश्रपव पवैत छनि । एहि प्रेक्षागृहमे कोनो तवहक सूनियोजित प्रकाशि र्यरस्था नहि थछि, तैयो प्रकाशिक एतेक रिभिन्न सेड उंपेन्न केनाओ प्रशंसनीय थछि । हाँ ! कनाकाव था प्रकाशिपुँज दुनूक बीच तदामेक थभार देखाएत थछि । कखनो कखनो कनाकाव प्रकाशि स' दूव भ' जाएत छथि त' कखनो कखनो

প্রকাশ কনি দেবী স' প্রকট হোগত অছি । মংচ ছোট হেবাক কাবণ প্রকাশ বিম্বমে অভিবন্যপিংগ ভেনাগ নিশ্চিত ছল সে ভেরো কযল । অতিম দৃশ্যক প্রকাশ সংযোজন অতি স্বন্দব বনন অছি । এহি দৃশ্যমে নাটকক কথ্যক অনুসাব দৃশ্য আ ওকবা উভাবৈত প্রকাশ সংযোজন জবৰদস্ত বনন অছি ।

অভিনেতাক ৰূখ্য সজ্জা পূর্ণ ৰূপেণ যথার্থবাদী বাখল গেল ছৈক । কোনো তবহক বঁদনাব নহি । নাটকক অনুৰূপে ও বেসী নীক । মেক-অপ মাত্র মংচক অনুসাব কযল গেল অছি ।

মিথিলাক কোনো এহন প্রেক্ষাগৃহ নহি অছি জাহিমে ধ্বনি ব্যবস্থা বংগমংচক অনুৰূপ হো । মিথিলে কিযেক বিহাবমে আবা স্থিত বেনেশাঁক প্রেক্ষাগৃহ ছোড়ি কোনো প্রেক্ষাগৃহ এহন নহি অছি । তেঁ সভ প্রস্তুতিকর্তাকে স্বয়ং ধ্বনি ব্যবস্থা ক'ব' পড়ৈত ছনি । এহু ঠাম এহনে ব্যবস্থা ছল । ৰূদা, মংচ পব ততেক নীক জেনা মাগক সংযোজন কযল গেল জে অভিনেতা কোনো কোন স' বজথি হুনকব আবাজ সম্পূর্ণ প্রেক্ষাগৃহমে নীক জেনা স্বনাগ পড়ৈত ছলনি ।

নাটকমে সংগীত সেহো পর্যাপ্ত বাখল গেল অছি ওহো পহিলে স' বিকার্ডিগকে ৰূপমে । সংগীতক সংযোজন সীতাবাম সিংহ জীক ছন্হি । সংগীতক সংগ অনেকো তবহ ধ্বনিক প্রযোগ সেহো কযল গেল অছি । সংগীত প্রায: সভটা অত্যাধুনিক অছি । ওনা নাটকমে এহি তবহক সংগীতক প্রযোগ নির্দেশকক অপ্পন ছনি । ও

संगीत नाटकके प्रभारी बनेबामे सहयोग करैत अछि । संगीत संचालन संजीव पांडेक' बहल छलन्हि, ओदा संगीतक संचालन कनी आर परिश्वास माँगैत अछि ।

प्रयोग एकांकीक मुख्य अभिनेता छथि नवीन मिश्र । एहि पात्रके कुमार गगन जीव बहल छथि । कुमार गगन बहुत सान स' मैथिली रंगमंच पर छथि । रूपए स' भंगिमा, पटना स' जुड़ल छथि । कुणाल जीक निर्देशनमे कतेको नाटकमे अभिनय क' चुकलाह अछि आ कुणालजी द्वारा पहिल बेर निर्देशित प्रयोग नाटकमे सेहो गगनजी एहि भूमिकाके क' चुकल छथि । एहि प्रस्तुतिमे गगनजी नवीन जीक रूपमे अपन सोलो न◌ागी संग अबैत छथि । ओदा पूबाके पूबा रङरूपमे कोनो विशेष आकर्षण नहि छोड़ि पबैत छथि । मंचपर नवीन मिश्र कम आ गगनजी बेसी देखाइत छथि । सम्पूर्ण प्रस्तुतिक अंत तक जाइत जाइत गगनजी एकटा पारसी रंगमंचक कलाकारक रूपमे अपन प्रभाव बना पबैत छथि । संवादक बीच उतार चढ़ ाव, शब्दक संप्रेषण स्वाभाविक नहि बनि पवल अछि । संगहि हिनकर मंच पर गति आ बैसबाक स्थान सेहो उचित नहि । किएक त' जखन जखन ओ मंचपर अपन अभिनेताके आदेश दैत छथि प्रयोग करबाक लेल आ पाछू जा क' बैसैत छथि त' श्रुति स' झँपा जाइत छथि तेँ प्रेक्षक हिनकर अभिव्यक्ति देखबा स' बंचित बनि जाइत छथि । अपन दुनू अभिनेताके प्रयोग करबाक आदेश देलाक बाद कखनोक' हुनका दुनू के अपन दुनू हाथस' एकटा फ्रेम बनाक' देखनाइ अबंत अनस्थान मुद्रा मानल जाइत । कारण, ओ नवीन मिश्र एकटा नाटक मंडलीक

নির্দেশক ছথি নৈ কি কোনো ফিল্ম কম্পনীক নির্দেশক । গগনজী মৈথিলী রংগমংচক রবীন্দ্র অভিনেতা ছথি আ অনুভরী সেহো তেঁ হিনকা স'অপেক্ষো হমরা সভকেঁ কনী বেসী অছি । কনী আরো পূর্বাভ্যাস আ বিমর্শ কযল গেল রহিতৈ ত' বেসী নীক পরিণাম অবৈত ।

শ্রুতি নামক ভূমিকা নিভেনিহারি প্রিযংকা সেহো আব মৈথিলী রংগমংচক পরিচিত অভিনেত্রী ভ' চুকল ছথি । প্রিযংকা নীক অভিনেত্রী ছথি তকর প্রমাণ ও পিছলা কতেকো প্রস্তুতিমে দ' চুকল ছথি । গহো ভংগিমা, পটনা স' জুড়ল ছথি আ রবীন্দ্র রংগ নির্দেশক হুসেন জীক সংগ কতেকো নাটক কেনীহ অছি । এহি প্রযোগ প্রস্তুতিমে হিনকর আমেরিশ্রাস অতি প্রসংসনীয অছি । মংচপর হিনকর গতি আ অপন স্থানক লেল সচেততাক সংগ দর্শকি আ অপন সহযোগী অভিনেতাক বীচ আঁখিক মিলান (আজ কংটেকট) নীক প্রভার দেনক অছি । মুদা প্রিযংকাকে সেহো অপন মুখাভিনয (ফেস একিটংগ) পর কনী আরো কাজ ক'র' পড়তনি । এহি নাটকমে হিনকা দ্বারা কযল গেল সংরাদ অদাযগী খাসক' জে করিতাক অংশ অছি ওহিমে দূ শর্ষ্ক বীচ কাফী সময লেল গেল অছি জকরা নির্দেশককে কনি কম ক'র' পড়তনি । ও কহরাঁমে কনিযো সংদেহ নহি জে এহি তীনূ অভিনেতামে প্রিযংকা সব স' বেসী প্রভার ছোড়নীহ অপন অভিনযমে ।

অমৃত নামক পাত্রকে অভিনয ক' বহল ছলাহ আশ্বতোষ অনভিজ্ঞ । আশ্বতোষ মৈথিলী রংগমংচ স' অনভিজ্ঞ নহি ছথি । মুদা, অভিনয দৃষ্টিএ হিনকা অখন কাফী

মেহনত কবরাঁক খারশ্যকতা ছনি । হিনক কোনো খভিরয়্যক্তি পাত্রক খন্বরূপ নহি ছনি । হিনকা পব প্রিযংকা কাহ্নী ভাবী পবি বহন ছথি । হিনকব খভিনযমে এখন হেজিস্টেশন রঁহ্ত খধিক ছনি ।

প্রস্তুতিক খতি মহত্ত্বপূর্ণ খংগ খিক মংচ । এহি প্রেক্ষাগৃহক মংচ কোনো কোণ স' এহি নাটকক খন্বরূপ নহি খছি । খভিনেতা, মংচ সংযোজন, প্রকাশ সংযোজন, ধ্বনি সংযোজন, প্রেক্ষকক রৈসরাঁক স্থিতি খাদি সভমে সমঝৌতা ক'ব' পড়ন খছিসে ওহিনা দেখাব হোগত ছৈ ।

প্রেক্ষাগৃহমে দর্শক খতি প্রবুদ্ধ রস্মাক ছনাহ । হ্মদা, নাটক দেখরাঁক নেন জে খন্বশাসন দর্শকমে হোরাঁক চাহিযনি সে খংত কম ছন । রিনা মতনরেঁ খোপড়ী পীটরেঁ, মোরাঁগন মৌন কবরঁ ত' দূব, রীচ নাটকমে মোরাঁগন পব গপ্প কবরঁ, নাটকক আঁননাগন সমীক্ষা দেরঁ, রীচ রীচমে জোব স' খাপসী গপ্প ক' নেরঁ, রীচ রীচমে উঁঠিক' রাঁহব ভীতব কবরঁ খাদি কার্যকনাপ স' রঁচিত নহি ছন প্রেক্ষাগৃহ । এহি কাবণ নীক প্রেক্ষক কে খংত পবেশানী ভেন হেতনি এহন কঠিন নাটককে দেখরাঁমে সে নিশ্চিত । হমব দর্শক রস্মা কে ঙা বূঁঝক চাহিযনি জে নাটকক দর্শক ভেনাঙ কোনো দোসব রিধাক দর্শক স' খংত হবাক হোগত খছি ।

হম প্রযোগ পঢ়নে ছী । এক রেঁব নহি কতেকো রেঁব । এহি পব হমব খানেখ "প্রযোগ একাংকীক বংগমংচীয দৃষ্টি" সেহো প্রকাশিত খছি রিদেহ ঙা পত্রিকাক খংক

51 (01 ফবরবী 2010 ; পৃষ্ঠ সং. 112)মে । তেঁ হমবা একব মংচন দেখবঁ খতি মহত্ত্বপূর্ণ ছল । ক্ষদা পঢ়নাক বাঁদ জে কোনো রিম্ব হমবা দিমাগমে উঁচবৈত খছি এহি প্রস্তুতিকে ন'ক' তকব নগভগ পচীস প্রতিশত মাত্র এহি প্রস্তুতিমে হমবা ভেটৈন । এহি প্রস্তুতিক খংতিম দৃশ্যক খংতিম ভাগ নীক পবিকল্পিত ভেন খছি জে রেঁব রেঁব হমবা দিমাগমে খারি জাগত খছি । ক্ষণানজী হমব সভহক শ্রেষ্ঠ নির্দেশক ছথি । সীতাযন, ক্ষসমা সনহেস, পাবিজাত হবণ খাদি প্রস্তুতি হ্নকব নাম নৈত দেবী মোনমে ঘ্মব' নগৈত খছি । হ্নকা স' হমবা সভকে হবদম কিছু রিশেষক খপেক্ষা খছি । সংগহি ও খপন প্রস্তুতিমে নর নর প্রযোগক নেন রিখ্যাত সেহো ছথি । হ্নক এহি প্রস্তুতিমে পূরাণ্যাসক খভার নীক জেনা খটৈকৈত ছল খা কোনো তবহক নির্দেশকীয ক্ষশনতাক প্রযোগ সেহো নহি দেখাযন । খাদবণীয ক্ষণানজী খাজুক সমযমে হম সভ বংগকর্মীক নেন পথ প্রদর্শক র্যক্তিত্ব ছথি খাবঁ হ্নকা স' এহন খপবিপক্ক প্রাজেক্টক খাশা নহি খছি ।

পোথী–সমীক্ষা– প্বকুষ পবীক্ষা

জহিনা রিদ্যাপতিক রিনা মিথিনাক পবিকল্পনা কেনাঙা খসম্ভর ভ' গেন খছি ওহিনা রিদ্যাপতিক বচনা সংসাব হ্নক শ্রেষ্ঠ গদ্য বচনা প্বকুষ পবীক্ষা ক রিনা হ্নকব খধূবা খছি ।

এহি সঁ পহিনে এক রেব হম মনংগিযা জীক সংগ মৈথিনী খকাদেমী, পটনা গেন বহী খা ওহী ঠাম প্বকুষ পবীক্ষা কিননহ্ । হুদা, ওহি সময ভাষাক জটিনতা খা একব গদ্য রূপ রেসী খাকর্ষিত নএ কেনক । বাদ মে পঠন জাযত ঙা সোচি কিতাবক বৈক মে সজি গেন । নগভগ পাঁচ সান বাদ এহি রেব ফেব মধুবনী ভ্রমণক সময মনংগিযা সব সংগ যোগানংদ স্বধীব স' ভেংট হোরাক মৌকা ভেটন । পবিচয পাত ভেনাক ত্তবত বাদ যোগানংদ জী প্বকুষ পবীক্ষা হাথ মে থমৌননি । ঙা পোথী রিদ্যাপতি নিখন প্বকুষ পবীক্ষাক নাট্য রূপ খছি । এক ত' ঙা দোসব মৌকা ছন জে প্বকুষ পবীক্ষা হমবা হাথ মে খাযন খা ওহো নাট্য রূপ মে । খতি প্রসন্নতা ভেন । দিল্লীক নেন গবীব বথ মে বৈসন বহী । গাড় ী নৌ ঘংটা নেট । ফাগদা ঙা জে এহি পাব স' ওহি পাব প্বকুষ পবীক্ষা সমাপ্ত ।

ঘব খযনা ৱাঁদ, ফেব স' নিকাননহ্ বাখন কিতাৱ (রিদ্যাপতি গ্রত প্বকষ পবীক্ষা; সম্পাদক : শ্রী স্ববেন্দ্র ঝা 'স্বমন') ওকবো সমাপ্ত কেনহ্ এক্ক দিন মে ।

স্বমন জীক সংপাদকত্ব মে প্রকাশিত প্বস্তকক ভূমিকা খতি সাবগর্ভিত খছি । এহি মে স্বমন জী নিখৈত ছথি – "রিদ্যাপতিক ধাবণা ছনি জে প্বকষক খাকাব ধাবণ কযনিহাব তঁ ৱহ্তো ভেষ্টতাহ কিংত্ত রাস্তর মে ও প্বকষ নহি প্বকষাভাসে থিকাহ । প্বকষ তঁ ও থিকথি জনিকামে প্বকষ নক্ষণ হোনি । খর্থাত জনিকা মে রীবতা, ৱু্দ্ধি ও রিদ্যা হোনি জে ধর্ম, খর্থ, কাম ও মোক্ষ ঞ চাক্ষ প্বকষার্থ কেঁ সিদ্ধ কযনিহাব হোথি । এহি সঁ খান জে ছথি সে প্বকষ ৰূপমে জেনা প্বছহীন পশ্বএ ।" রিদ্যাপতিক প্বকষ পবীক্ষা চাবি পবিচ্ছেদ মে রিভাজিত খছি । প্বকষ নক্ষণক খন্বসাব প্রথম মে – রীবক, দোসব মে স্বৱু্দ্ধিক, তেসব মে সরিধক ও চাবিম পবিচ্ছেদ মে চাক্ষ প্বকষার্থক প্রতিপাদক কথা খছি ।

স্ববেন্দ্র ঝা স্বমন জীক ভূমিকা সঁ ৱহ্ত বাস তথ্য ওহিনা এহি নাষ্ট্যে ৰুপাংতবণ মে বাখন গেন খছি । এহি নাষ্ট্যে ৰূপক প্রকাশকীয মে নিখনে ছথি জগদীশ মিশ্র : প্বকষ পবীক্ষাক সৱঁস' পহিনে ৱঁগনা খন্বরাদ 1815 ঞ. মে পং. হব প্রসাদ বায দ্বাবা কযন গেন । রর্ষ 1830 মে একব খংগ্রেজ় ী খন্বরাদ বাজা কানীগ্রঞ্চ ৱহাদ্ব দ্বাবা কযন গেন । খাগূ জাক' এক ৱেঁব ফেব খঁগ্রেজ় ী মে জ◌ॅর্জ খব্রাহম গ্রিখর্সন প্বকষ পবীক্ষাক খন্বরাদ খঁগ্রেজ় ী মে কেননি । সংস্কৃত মে নিখন প্বকষ পবীক্ষাক মৈথিনী ভাষা মে পহিন খন্বরাদ করীশ্বব চন্দা

ग्मा 1888 ई. मे केलनि । एकर ग्राँद त' कतेको ग्रेंब एकर संस्करण आ मैथिली करण होएत रहल अछि ।

एहि पुस्तक मे प्रकाशकीय, अनुक्रमणिका, पुरोवाक चारिटा परिच्छेद अछि । चारिटा परिच्छेद मे बाँटल गेल अछि । एहि अनुक्रमणिकाक प्रथम परिच्छेद मे नौ, द्वितीय परिच्छेद मे सात, तृतीय परिच्छेद मे चौदह तथा पन्द्रहटा पाठ अछि । कुल मिला क' पैंतालीस । अपन पुरोवाक मे योगानंद जी सूचना दैत छथि जे ई रूपांतरण वर्ष 1990–95 के बीच कयल गेल आ 2005 ई. क अप्रील स' साप्ताहिक प्रसारण प्रसार भारती, पटना सँ भ' चुकल अछि । एहि पुस्तक लेल ई महत्वपूर्ण अछि जे एकर नाट्य रूपांतरण रेडियो विधा मे अति सुन्दर तरीका सँ प्रस्तुत होयत कारण एकर प्राय: सभ कथाक नाट्य मंचन 20–30 मिनटक होयत आ संगहि सभ कथा अपना आप मे सम्पूर्णता लेने अछि । रेडियो नाटकक लेल जतेक तत्वक आवश्यकता होएछ से सब रूपांतरण मे विद्यमान अछि ।

एहि ठाम हम विद्यापति लिखल पुरुष–परीक्षा का सन्दर्भक विशेष चर्चा नहि क' क' योगानंद झाजीक द्वारा कयल गेल एकर नाट्य रूपांतरणक चर्चा करब ।
ई निश्चित जे एहि तरहक काज करबा स' विद्वतजन प्राय: कतराइत रहैत छथि । तकर कतेको कारण अछि – पहिल त' एहन काज करबा लेल एक संग मूल पाठ आ नाट्य विधाक सेहो पूर्ण जानकारी होयब जरूर होएछ । जकर प्राय: अभाव छै । दोसर ई जे

एहन काज करबाँ लेल असीम धैर्यक आवश्यकता होइत छैक तकरो अभाव अछि । एहि संग आरो कतेको कारण अछि ।

पुरुष परीक्षाक सभ कथा के अध्ययन क'उकर नाट्य रूपांतरण करब अति कठिन काज छल । मूल पुस्तक मे प्राय: सभ कथा एक दोसर स' जुड़ल अछि । एहि ठाम योगानन्द जी अत्यंत गंभीरता संग दुनू बातक ध्यान रखलनि अछि । पहिल त' जे सभ नाट्यरूप एक दोसर स' जुड़ल होयबाक चाही दोसर गहो जे सभ अपना आप मे स्वतंत्रो उतरैं होइ आ एहि दुनू सीमा पर योगानंद जी नीक जेना ठाढ़ भेलैत छथि । एहन ऐतिहासिक पुस्तक के नाट्यरूप मे सुगम संवादक संग प्रस्तुत करबाँ स' मैथिली संसार समृद्ध भेल अछि । कोनो साहित्य नाट्यरूप मे संवाद प्रति संवाद मे पाठक के बेसी आकर्षित करैत छै तेँ एहि पुस्तकक गहो महत्वपूर्ण विशेषता भेल । कथाक नाट्यरूप बनेबाक लेल लेखक कतेको ठाम अपना दिस स' पात्र गढ़लनि अछि से आरो कठिन काज छल । हँ ! कतौ कतौ पात्रक बीच संवादक बँटेबाबा मे असंतुलन भ' गेल अछि । कोनो कोनो पात्र के संवाद अत्यधिक लम्बा भ' गेल अछि जेना – दयावीर-2 मे अल्लाउद्दीन आ हम्मीरदेवक संवाद, चोर-5 मे विक्रमक संवाद, स्वर्बुद्धि- ॥ मे गणेश्वर आ रामदेवक संवाद आदि । कोनो नाट्यरूप बहुत छोट भ' गेल अछि जेना तमोगुणी धार्मिक-31 ।

अंत मे हम ई त' नहि कहि सकब जे एहि पुस्तकक

कतेक नाट्य रूपक मंचन कयल जायत ख्दा ओ त' निश्चित जे मैथिली नाट्य साहित्य के योगानंद स्वधीव जी अति महत्वपूर्न पुस्तक प्रदान केनैथ अछि । एहि लेल हमवा सभकेँ हुनकव आभावी होमक चाही । ओ पुरुष पवीक्षाक नाट्य रूपांतवण साहित्यिकी प्रकाशन, सविसवँ पाही, मधुवँनी सँ प्रकाशित कयल गेल अछि । पुस्तकक मूल्य 200 टाका आ कुल पृष्ठ सं. 318 अछि । पुस्तक प्राप्ति स्थान – प्रा. योगानन्द सिंह ख्ा, वाडि नं.– 06, रिनोदानंद ख्ा कॉलोनी, मधुवँनी– 847211 (रिहाव) ।

बंगदृष्टि

वाँग्ला नाटक लेल कोलकाता आ मवाठीक लेल ख्म्बँओ, तहिना पहिने मात्र हिन्दीक लेल दिल्ली जानल जाएत छल । ख्दा आवँ सम्पूर्ण भावतरषमे रिरिधतापूर्ण नाटक मंचनक लेल दिल्ली केन्द्रमे आरि चुकल अछि, ताहिमे कोनो शंखा नहि । दिल्लीक मंडी हाउस स्थित रिभिन्न प्रेक्षागृहमे नित्य कोनो–ने–कोनो भाषाक नाटक मंचित होएत‍े वहैत अछि । एहि ठाम हिन्दी, मवाठी, वँगाली मात्र नहि वँल्कि मणि पुवी, असमिया, उँर्दू, पंजावी,मैथिली, कन्नड़, मलयालम आदि भाषाक नाटक देखवाँक मौक़ ा प्राय: भेटैत वहैत छैक ।

एहि बीच दिल्लीक प्रेक्षक केँ एकटा अहँत स्वखद अनुभव भेलनि बाष्ट्रीय नाट्य रिद्यालयक प्रांगणमे । मबाठी नाटककाब रिजय तेंडुलकब लिखित प्रसिद्ध नाटक जात ही पूछो साधु की आ बाँग्ला लेखक बवीन्द्रनाथ ठाकुब लिखित अचलायतन; दुनूक मंचन हिन्दीमे, जेना तीनू बंगमंचक संगम भ' बहल हो ।



जात ही पूछो साधु की बाष्ट्रीय नाट्य रिद्यालय बंगमंडलक कलाकाबक संग प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक बाजिन्दव नाथ आ अचलायतन बाष्ट्रीय नाट्य रिद्यालय द्वितीय वर्ष छात्रक संग युवा निर्देशक शांतनु बोस कयने छलाह ।

नाटक जात जी पूछो साधु की एकटा स्वस्थ हास्य-व्यंग नाटक अछि । एहिमे महीपत नामक व्यक्ति कहुना क' एम.ए. पास कबैत अछि - थर्ड डिविजन सँ । बहुत दिन बेबोज़गाव बहला बाद सिफाबिशिज़्मक टेकनिक सीख कोनो कॉलेजमे लेक्चबाव बनैत अछि आ नाटकक अंतमे कतेको उथल-पुथलक बाद एक बेब फेब बेबोजगाव भ'जाइत अछि ।

एहि सोझा-सोझी कथ्यक लेल नाटकक संवादमे नाटककाब ततेक ने द्वन्द्व ओ उत्सुकता भवि देने छथि,

जे प्रेक्षक एकाग्र भ' मनीपतक सोनो नौगीमे हेबायन बहैत छथि । ग नाटककाबक रिशेषतें ने जे आओ सँ 40 बर्ष पहिने निखन कथ्य आज्क संदर्भ सेहो समकानीने बूमना जाएछ । संराद सेहो तेहेन ने चोटगब आ तीक्ष्ण छैक जे प्रेक्षागृहमे बैसन दर्शक कँ बेंधैत अछि । हास्यक प्वट द' नाटककाब अपन सभ गप्प कहि दैत छथि आ दर्शक ओकबा सहर्ष ग्रहण कबैत छथि ।

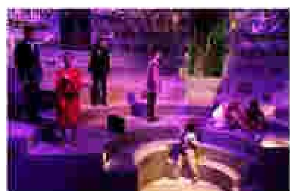
एकत' सबॅस' बैसी तेल्ड्नकबजीक नाटकक मंचन सम्पूर्ण भावतमे भेनन्हि अछि ताह्मे जात नी पूछो साध् की नाटकक मंचन सबॅस' बैसी भेन अछि । निर्देशकक रूपमे बाजिन्दब नाथ जीक नाम हिन्दी बंगमंचक स्वपबिचित नाम अछि । रिजय तेल्ड्नकबक प्राय: सभ नाटकक हिन्दीमे मंचन बाजेन्दबजी कतेको बेब कयनथि अछि ।

एहि नाटक नेन मंच पब नाटकक संप्रेषणक जे रिधि बाजिन्दब नाथ अपननेने छथि ओ अति सबन अछि । ऋदा, अभिनेताक अभिव्यक्ति पब अहंत बाँबीकी सँ कार्य कयन गेन अछि । मंच पब तीनू कात तीनटा दबराज़ ा, आधा मंच पब मात्र एक फूट उँच प्लेटफ ॅर्म आ सात-आठ टा बॅन ॅक मात्र सँ एतेक जीरंत प्रस्तुति निर्देशकक दूब दृष्टिक पबिणाम थिक ।

प्रस्तुतिमे प्रकाश पबिकल्पना गोरिन्द यादबक छनि । गोरिन्दजी सेहो बाष्ट्रीय नाट्य रिद्यानय स' प्रशिक्षित छथि । मनीपत बॅनन अर्म्बीश मात्र दू कदम चनि

जखने दोसब प्रकाशे रिम्बमे प्ररेशे करैत छथि कि सम्हचा पविदृश्य रँदनि जागत छैक । मात्र प्रकाशिक प्रभार सँ मंच कखनो समाचाव पत्रिकाक दफ्तव, कखनो निछछ देहात त'कखनो गामक क◌ॉनेज राकि पिकनिक स्थनमे पविरर्तित होगत बहेत थछि ।

एहिना रस्त्राभूषण सभ सेहो तर्क संगत थछि । जेँ सभ किछ संतुनित थछि तेँ नाटक देख सभ दर्शक भवपूव पूर्णताक संग प्रेक्षागृह सँ रँहवागत छथि ।



थारँ दोसव प्रस्तुति : थचनायतन । ई प्रस्तुति छात्रक प्रशिक्षणक हिस्सा थछि तेँ प्रस्तुतिमे तकनीकी पक्ष पव रँसी ध्यान गेन । भ' सकैत थछि रँह्तो दर्शक केँ ई प्रस्तुति रँह्त रँसी थाकर्षित नै केने होगन, म्हदा ई प्रस्तुति तकनीकी दृष्ठिए उत्कृष्ठ त'थछिए । नाटक देखरँाकान थभिनेता-थभिनेत्रीक शावीविक शक्तिक क्षमता, देह गति,थावाज़ संतुनन था पात्रक मानसिक थभिव्यक्ति बोमांचित करैत छन । ववीन्द्रनाथ जीक निखन एतेक पुवाण कथा केँ थाज्क संदर्भमे प्रस्तुत केनाग थति कठिन कार्य छन, जकवा निर्देशक थपन दृष्ठि सँ समकनीन रँनेरँाक भवपूव कोशिशे केनि थछि ।

थचनायतन के कथा साव ई जे एहि नामक एकटा

शिक्षा संस्था अछि जत' शिक्षाक रूपमे सानों-सान प्रवान रूढ़ि कें जीवित बखनाए मात्र अछि । तथा किछु नव लोचक विद्यार्थी आ युवक प्रयास स' एहि परम्पराकें तोड़ि देल जाएत छै आ एकरैब फेब स'अचनाशतन के पुन: स्थापित करैत अछि ।
नाटक जे प्राय: कंवेंशनल फॉर्ममे कयल जाएत अछि तकरा तोड़बाक पूवा-पूवा कोशिश केलनि अछि शांतनु बोस । शांतनु बोस लगातार एहि विधामे कार्य क' रहल छथि । तथा एखन एहि फॉर्म कें सामान्य दर्शक स्वीकारबाक लेल तैयार नै छथि ।

नाटक जात ही पूछो साध् की अत्यधिक यथार्थवादी अछि जाहिमे समाजक जे रूप आग जें स्थितिमे अछि ओकरा ओही रूपमे लेखक बखनन्हि अछि आ ओकरा हम सभ सहर्ष स्वीकारनहुँ अछि जाहिमे समजाक सभरूप एकठाम देखराबामे अबैत अछि । तथाकथित सभ्य समाज आ निरक्षर समाज दुनूक वार्तालापमे आकाश-पतालक अंतर । नाटककार आ समीक्षक आ दर्शक; सभकें यथार्थवादक रूपमे एकरा स्वीकार करबाक चाही । हँ ! मिथिलाक लोक जीवन एकरा कहिया ने स्वीकारि चुकल अछि । एहि फॉर्ममे मैथिलीमे सेहो कतेको रचना भेल जें उत्कृष्ट अछि तथा एखनो तक मैथिल तथाकथित सभ्य साहित्यकार ओकरा स्वीकारबाक लेल तैयार नहि भेलथिन्ह । एहना स्थिति के की कहल जा सकैत अछि ?

एहिना दोसर रूप ओ जे अपन रचनाकें कोनो काल

মাত্র কেঁ নক্ষমণ বেখা সঁ হ্মঙ্ক কবৰাক চাহী । তখনে ও কানজযী ভ' পাওত । খা বচনাকেঁ সেহো সমকানীন পবিপ্রেক্ষ্যমে দেখৰাক চাহী । ওকবামে জঁ কনী ফেব–ৰদন কযনা সঁ খাজ্‌ক' পীঢ় ি ক নেন সার্থক ৰনি জাযত ত' ওা কোন ৰেজায ৰাত হেতৈক ?

মিথিনা মে বংগকনাক সমকানীন দৃষ্টি

সৰ কনা মে শ্রেষ্ঠতম কনা মানন গেন খছি বংগকর্ম কে । সে খাগ নৈ, প্রাচীনে কান স' । গহো কোনো খাস সভ্যতা মে নৈ ৰঙ্কি রিশ্বক সৰ সভ্যতা মে । জঁ বংগকর্ম কেঁ কনা সঁ সংস্তাপিত কযন জায ত' সিরায বংগকনা কে দোসব কোনো কনা – চাহে ও চিত্রকনা হোগ রা সংগীতকনা রা নৃত্যকনা; খপনা ছোড়ি দোসব কোনো প্রাফেশন মে (খাজ্‌ক সময মে সেহো) সপোর্টিভ

নহি হোএত ছৈক । সভ কনা মাত্র সীমিত ক্ষেত্রক নেন উঁপহাঞ্জ হোএছ সংগহি ব্যক্তিগত রৈসী । ক্ষদা বংগকর্ম ব্যক্তিগত স’ রৈসী সামাজিক হোএছ, তেঁ বংগকর্ম কে খান কোনো দোসব কনা মে শ্রেষ্ঠ কনা মানন গেন খছি ।

হমবা সমাজক সমাজশাস্ত্রীক ও খভিজ্ঞতা যা খজ্ঞানতা বূঝী, জে সর্ব সাধাবণ তক এহি কনাক রিশেষতা কেঁ নহি প্রচাবিত ক’ একব রিপবিত প্রচাব প্রসাব কযন গেন । পবিণাম হমবা সভহক সমক্ষ খছি, জে খাগ রিশ্ব কে এক্কৈসম শতাব্দী মে হোবাঁক বাঁবজূদ,সূচনা তংত্রক এাঁতিক হোবাঁক বাঁদো হমব সমাজ বংগকনা সঁ জীবিকাক প্রশ্ন কবৈত খছি বা এহি ক্ষেত্রক জানকাবী মে খপন খসমর্থতা দেখবৈত খছি । খাখিব এহন স্থিতিকিএক ? ও সবান হমব খপন সমাজশাস্ত্রী খা সমাজক খগ্রবা মাননিহাব নোকনি স’ খছি ।

নাটৈক বা বংগমংচক সংদর্ভ মে মিথিনা সমাজক খধিকাংশ ব্যক্তি খখনহ্ তক খংত খসমনজস মে ছথি । ও রিধা কতেকো বাস তর্ক কুতর্ক স’ ঘেবন খছি । জিনকা জতেক কম জ্ঞান ছনি ও ওতেক জ্ঞানিক খভিনয ক’ এহি রিধা কে খপনা হিসাবেঁ তোড়ি – মড় াবি ক’ সমাজক খাগূ প্রস্তুত কবৈত ছথি । এহি বংগ রিধাক প্রবৃত্তি কী খছি, ও কোন ব্যাকবণক খাধাব পব চনৈত খছি এহি স’ সংবঁধিত বঁহ্ত থোড় তথ্য উঁজাগব ভেল খছি বা ও কনী জে ওহি দিস কম্ম নোকনি কে ধ্যান গেলন্হি খছি । বংগমংচ কে খাগযো গম্ভীবতা স’ নহি নেন জা বহন খছি । জে কিছু

নিখন রা কহন গেন সেহো ততেক নে শাস্ত্রীয ভ' ক' জে ও আবো বুদ্মৌরৈনি রনি সমাজক রীচ র্যাপ্ত বনি গেন ।

এহি সঁ কনী আবো আগূ রঢ়ি । জঁ বংগমংচ কে মৌথিনী সাহিত্যকাব নোকনি সাহিত্যক কোনো রিধা হেরাক প্রমাণপত্র দৈত ছথিন ত' ওহু সভ রিধা মে নাট্যকর্ম অন্য দোসবা সঁ রেসী ফনদাযী অছি । তকব সবূত দেবাক আরশ্যকতা হমবা নহি বুঝনা জাগত অছি । এহি এক্কৈসম শতাব্দী মে হোমাক রাঁদো জঁ কিছু তথা কথিত গণমান্য র্যাক্তি মে শংকার্যাপ্ত ছনি তঁ হুনকা সমক্ষ হম কিছু তথ্য, কিছু উঁদাহবণ আ কিছু প্রশ্ন প্রস্তুতকববাক প্রযাস কবৈত ছিযনি, জাহি সঁ হুনকা সভহক রীচ নাট্যরিধাক নেন র্যাপ্ত ভ্রম দূব ভ' সকনি ।

কিনকো দ্বাবা ওা কহি হীন দেখাযব জে বংগমংচ মে কোনো তবহক জোঁব নহি ছৈক, নাট্যকনা কেঁ পেট ভববাক সামর্থ্য নহি ছৈক আদি আদি । ওা এহি ক্ষেত্র কে গংভীবতা সঁ অধ্যযন নহি হোবাক পবিণাম থিক । হম আগ এতেক তক কহি সকৈত ছী, জে এহি তবহক ভ্রম কেঁ মিথিনা সমাজ মে প্রচাবিত কবব একটা সোচন সমঝন বণনীতি মানন জযবাক চাহী । মিথিনা মে এহন তবহক কাজ রেসী সংখ্যা মে ওহন র্যাক্তি দ্বাবা ভ'বহন অছি জে অপনা আপ কেঁ সাহিত্যকাব ঘোষিত কেনে ছথি ।

আজুক সময মে কিযো সজ্জন পূর্ণরূপেণ ওা দারা নহি ক' সকৈত ছথি জে ও অপনে (রা কোনো ফনাঁ ধাবে

ৰাঁবূ) মাত্র করিতা রা কথা রা উঁপন্যাস নিখী ক' খপন খা খপন পবিরাবক ভবন-পোষণ কবৈত ছথি ।

খহাঁ সভ হমবা জনতৰ কেঁ কনি হবিছা সকৈত ছী ত' কহু জে করি / কথাকাব / উঁপন্যাসকাব / নাটককাব / শিল্পকাব / চিত্রকাব খাদি নোকক খপন এহি কনা মে মহাবথ হেৱাক কেহন প্রভাব হ্নকব সমসাময়িক কাজ পব পড়ৈত ছনি ? কী একটা নীক করি নীক শিক্ষক ভ' সকৈত ছথি তকব কোন গাবংটী খছি । একটা নীক কথাকাব নীক খধিকাবী হেৱেঁ কবতাহ সে কে কহি সকৈত খছি ? একটা নীক শিল্পকাব রা কী চিত্রকাব নীক রঞ্জা, প্ররঞ্জা, খধিরঞ্জা রাকি নেতা হেতাহ সে কে দাৱা সংগ কহি সকৈত ছথি ? প্রায: ঞা দেখন গেনৈক খছি ও মৈথিনীএ মে নহি দোসবো-দোসবো ভাষা মে জে একটা শিক্ষক জঁ করিতা নিখতা ত' নীকে নিখতাহ, একটা প্ররঞ্জা কথা নিখ দেনাহ ত' ও নীকে হোযত, একটা খধিকাবী কোনো ফোটৈ ৱঁনেনাহ ত' সভ স' পৈঘ চিত্রকাব কহাৱ' নগতাহ । খা মৈথিনী মে প্রাফেসব সাহেৱেঁ (জে কিনকো প্রাসাদ স' এহি পদ পব খাসীন ছথি, কোনো প্রতিযোগিতা পবীক্ষা রা কী যূ.জী.সী. খাদি স' চযনিত নহি ভেন ছথি) ত' সফেদ কাগজ পব কিছু ঘঁসিযো দেতাহ ত' সমীক্ষক রা হ্নকে সমগোত্রী নোকনিকেঁ ওহি মে খার্ট / করিক প্রখবতা / কথাক গংভীব কথ্য / উঁপন্যাসক জটিনতা / নাটক মে প্রযোগামেঞ্জা দেখা জাগত ছনি ।

একব ঠীক রিপবীত খছি বংগরিধা । একটা ব্যক্তি জঁ বংগকর্মী ছথি রা কি কহিযো কম-সঁ-কম এক্কা মহীনাক

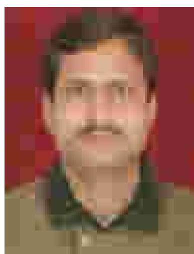
নেন সঘন ৰূপ সঁ রংগকর্ম কেনে ছথি ত' হ্নকব জীরনকপ্রায: সভ ক্ষেত্র মে একব প্রভার দেখাব ভ' জাগত অছি । ও হ্নকব জীরনক অঁতিম ক্ষণ তক সংগ বহৈত অছি । জঁ ও রংগকর্মী ছনথি / ছথি ত' ও ছাত্রক নজবি মে একটা নীক শিক্ষকো হেতাহ সে গাবংটী অছি । ও একটা অনুশাসিত অধিকাবী, নীক রঞা, নীক প্ররঞা, নীক অধিরঞা রাকি নীক নেতা হেতাহ সে কহন জা সকৈত অছি । একটা শিক্ষক জঁ অভিনয কবতাহ ত' ও নীকে কবতাহ সে কিন্নী নহি মানন জা সকৈত অছি । একটা অধিকাবী রা প্রাফেসব নীকে নাটক নিখতাহ / নীকে অভিনয কবতাহ / নীকে নির্দেশন কবতাহ তকব সংভারনা নগন্য মাত্র হোযত ।

উপর্যুক্ত তথ্য জঁ কনিযো সহ নগৈত অছি ত' কহন জাও জে কোন রিধা মহত্বপূর্ণ অছি জীরনক নেন; রংগকর্ম রা কি কোনো দোসব ? হঁ রংগকর্ম ততেক নে অনুশাসনসিখরৈত ছৈক জে ও রংগকর্মী অপন জীরনো মে আরশ্যঞা স' রেঁসী অনুশাসিত ভ'জাএত অছি । তকব প্রভার অখন তক মিথিনা মে সাফ উন্টা ভেনৈক অছি । কিযো কিম্হবো স' অরৈত অছি আ এক সিংহ নাট্যকর্ম কেঁ মাবি চনি জাএত অছি । ও কতৌ স' উচিত নহি । রিডম্বনা ত' ও অছি জে জাহি রিধা পব ও নোকনি অপন অপন তর্ক-রিতর্ক রাকি কুতর্ক কবৈত ছথি ওহি সমূহ মে পহিনে সঁ রংগকর্ম সঁ জূড়ন ব্যক্তি কেঁ রজাযরঁ আ হ্নকব সহমতি রা অহমতি নেরাক কোনো প্রযোজনো নৈ মহসূস কবৈত ছথি । রঁদ কোঠনী মে নির্ণয নৈত ছথি আ সম্পূর্ণ সমাজক পাও সঁ রঁনন সংস্থা সভ সঁ মোটগব-মোটগব গ্রংথ ছাপি ন্বকা বহৈত

छथि । एहन लोकनि केँ लेशमात्र ग्लानि नहि होइत छनि जे नवका पीढ़ी के ओ की द' रहल छथिन वा जहिया कहियो नवका सभहक समक्ष सए ओतैत तखन एहि सभ ग्रंथ पर छपल नामक प्रति ओ सभ की प्रतिक्रिया करतैक । ओ पीढ़ी आजुक पीढ़ी सँ बेसी प्रतिक्रियावादी हेतैक से हमरा सभ के मोन राखक चाही ।

रंगकर्म एकटा एहन कला अछि जाहिमे सबँस' बेसी जोर होइत अछि ओ जे 'अपना आप के चिनहू/बूझू/जानू' । जीवनोक यैह मूल मंत्र अछि । अहाँ अपना आप केँ, अपन सामर्थ्य केँ जतेक नीक जेना बूझब अहाँ ओतेक सफल होयब अपन जीवनमे । तेँ अति आवश्यक अछि जे सभ व्यक्तिकेँ एहि विधा सँ जूड़ि लाभ उठाबय चाहियनि ।

मिथिला समाज मे रंगकर्मक महत्ता के प्रचारित प्रसारित करबाक अति आवश्यकताअछि । एहि दिस सभ विद्वान केँ आगू अएबाक चाहियनि ।



<u>गोपाल प्रसाद</u>

(लेखक "मिशन मिथिला " केर संयोजक आ ऑनलाइन हिंदी मासिक पत्रिका "समय दर्पण " केर संपादक छथि)

<u>मिथिला करि कोकिल विद्यापति</u>

मिथिलाक भूमि अत्यंत प्राचीन कालसँ बौद्धिक क्रियाकलाप आ विवेचन (तर्क–वितर्क) लेल विख्यात अछि । एहि ठामक मैथिली भाषा बड्ड ललितगर अछि सम्प्रति सभ भाषामे अनेकानेक विधाक अन्तस्थल प्रचुर विकास भ' रहल अछि । मैथिली एहि दौड़ मेँ पछुआएल नहि अछि । पद्यक क्षेत्र मे महाकवि विद्यापति अमर छथि एहि आलेख मेल साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित विद्यापतिक जीवनी केँ संक्षिप्त अंश पाठक लोकनिक लेल प्रस्तुत अछि– "विद्यापति भारतीय साहित्यक एकटा अत्यंत उत्कृष्ठ निर्माता छलाह । जाहि कालमे संस्कृत समस्त आर्यावर्त्तक सांस्कृतिक भाषा छलि, ओ अपन क्षेत्रीय बोली केँ मधुर आ मनोरम काव्यक माध्यम बनौलनि आ साहित्यक भाषा जेकाँ ओहिमे अभिव्यक्तिक क्षमता जगा देलनि । ओ एकटा नव ढ़ ंगक काव्य–परंपराक आरंभ कयलनि जे उनका लेल अनुकरणीय भेल आ आर्यावर्त्तक एहि भागक एहन कोनो साहित्य नहि अछि जे हुनक प्रतिभा आ रचना कौशलक गंभीर प्रभाव क्षेत्रमे नाहि अबैत हो । ओ उचिते मैथिल कोकिल अथवा मिथिलाक

কোযন কহন গেনাহ অছি কাবণ জে হ্নক কন-কূজন সঁ আধুনিক পূর্বোত্তব ভাবতীয ভাষা সভক কাব্যমে বসংতক আগমন ভেন ।
বিদ্যাপতি, জিনক আন্ববংশিক উপনাম 'ঠাক্কব' সঁ ঘোতিত হোগত অছি জে ও অচন সম্পত্তিক স্বামী বহথি, শুক্ন যজুর্বেদক মাধ্যন্দিন শাখাক কাশ্যপ গোত্রীয মৈথিন ব্রাহ্মণ পবিবাব মেঁ জন্ম নেনে বহথি । দবভংগা সঁ নগভগ ১৬ মীন উত্তব-পশ্চিমমে অখনো স্থিত সমৃদ্ধ গাম বিসফী মে এহি পবিবাবক জড়ি বহৈক আ বিদ্যাপতিক জন্মক সমযমে ঙা পবিবাব ওহী গামমে বহৈত ছন জাহী নেন ঙা পবিবাব আ বংশ বিসঙাবাব বিসফীক নামসঁ জানন জাগত অছি । ঙা এহন বিদ্বান বাজপুরুষ নোকনিক পবিবাব ছন জে মিথিনামে অপন ধর্মশাস্ত্রীয জ্ঞানক নেন প্রসিদ্ধ ছনাহ আ কর্ণাট বংশীয বাজা নোকনিক দববাবমে বিশ্বাসযোগ্য ও উত্তবদাযিত্ব পদ পব আসীন বহথি । বিদ্যাপতি একটা দুর্নভ প্রতিভা বহথি জে শাশ্বত প্রেমক গাযকক রূপমে অমব ছথি, ঘদা সংগাহি মন্ববথ আ বাজপুরুষক রূপমে অপন ব্যক্তিত্বক সম্পূর্ণতাক কাবণো ও কম স্মবণ নহি কযন জাগত ছথি । জহিযা বিদ্যাপতিক জন্ম ভেননি তাহি সমযমে মিথিনামে একটা পৈঘ সামাজিক আ বৌদ্ধিক পুনরুত্থানক নাযক নোকনিক অহী তবহক পবিবাব বহনি, জকব ও একটা সমর্থ অঙ্কব বহথি ।
বিদ্যাপতিক জন্ম বিসফী নামক গামমে ভেন বহানি জে কি হ্নক পবিবাবক বংশধব নোকনিক স্মবণক অনুসাব হ্নকা নোকনিক পূর্বজক ডীহ গ্রাম ছননি ফনতঃ সমাজক নব গঠনক কানমে বিসফীকেঁ এহি পবিবাবক মূনগ্রাম মানি নেন গেন আ এখনহি তবহেঁ ঙা সভ

रिसঙরাব কहযনাह । রিদ্যাপতি জীরন ভবি রিসফীমে বहনাह আ জখন শিরসিংह গদ্দী পব রৈসনাह তখন বাজা শিরসিংह বাজ্যক প্রতি মहত্বপূর্ণ সেরাক নেনে করি কেঁ গএহ গ্রাম (রিসফী) দানমে দ দেনাখিন । এহি (খৈবাতক) উঁপহাবক উঁপযোগ করৈত রিদ্যাপতিক রংশজ রঁসহিএ মে ওহি সময ধবি বहনাह, জখন কি ३०० রঁবখ পূর্র ও নোকনি মধুরঁনীক নিকটস্থ গাম সৌবাঠ জাকব রঁসি গেনাह,জতহ ও সভ খখনো রিদ্যমান ছথি । খংগ্রেজ সভক খাগমন ধবি ঙা গাম এহি পবিরাবক কর্ত্তা মে বहন ।

মৈথিনীক মहানতম করি রিদ্যাপতি ঠাকুব ঙা. সন ১३৩০ সঁ ১৪০ ঙা. ক রেঁচ ভেন বहথি ও পশ্চিম রঁগানক সীমারর্ত্তী রিहাব প্রদেশীক পূর্রী ভূভাগমে বहনিहাব পচাস নাখ সঁ খধিক নোক দ্বাবা রাঁজন জাগত মৈথিনী ভাষা মে বচনা কযননি । রিদ্যাপতি খপন +০০ রৈষ্ণর খা শৈর পদসভ কিংরা গীত সভক নেন রিখ্যাত ছথি, জকব উঁহ্বাব তড়া পত্রক ভিন্ন-ভিন্ন পাঁড়ুনিপি সভসঁ কযন গেন ও সংস্কৃত, খরहট্ট (খপভ্রংশ) খা মৈথিনীক রিদ্বান বहথি । হ্নক গীত সভ বমণীক চারুতা খা শানীনতাক ননিত খংকন খা নত্ত্ব চিত্র-রূপক রর্ণনসঁ পবিপূর্ণ খছি । ববিন্দ্রনাথ ঠাকুব কहরঁ ছনি জে“রিদ্যাপতি খানন্দক করি বहথি খা প্রেমে হ্নকা নেন জগতক সাবতত্ব বहনি ।” ও খপন গীত সভকে সংগীতরদ্ধা কযনে বहথি, কাবণ জে ও শিরসিংह বাজ্যকানমে ३৬ রর্ষ ধবি বাজকরি বहথি । খপন গূর্জৈত খা প্রভারশানী গীত সভক খতিবিক্ত ও ‘পুরুষ পবীক্ষা’, কীর্তিনতা, গোবক্ষ প্রকাশ’, মণিমংজবী নাটিকা’, ‘নিখননারনী’, ‘দানরাক্যারনী,’ ‘গংগা রাক্যারনী’, ‘দুর্গাভক্তি তবংগিণী’,

‘রিভাসাগব’, ভূপবিক্রমা’, ‘শৈরসর্বস্বাব’ সন গ্রতিযোঁ কেব বচনা কযননি ।
রিদ্যাপতি মৈথিনীমে জাহি নরীন ধাবক সূত্রপাত কএনন্হি তকবা সমাজ খাদবক দৃষ্ঠিএঁ খপনৌনক । হ্নক বচনাক মিথিনাক সংগ-সংগ ওকব সমীপর্বর্ত্তী প্রান্তহুঁমে খাদব ভেনৈক । ফন গ ভেন জে রিদ্যাপতিক করি নোকনি হ্নক বচনাক খাধাব পব সাহিত্য ভংডাবক শ্রীরৃদ্ধিমে যোগদান দেনন্হি । রিষযরস্তু প্রাযঃ সএহ বহি গেন জে রিদ্যাপতিক সমযমে ছন হ্মদা ওকব চিত্রণ ভিন্ন-ভিন্ন করি নোকনি ভিন্ন-ভিন্ন দৃষ্ঠিএঁ কযনন্হি । যদ্যপি রিদ্যাপতিক কিছু সময বাঁদ কিছু দিন ধবি হমবা নোকনিকেঁ মৈথিনী সাহিত্যিক সামগ্রীক খভার ভেটৈত খছি । ওহি সমযক নিখন গ্রন্থ উঁপনর্ব্ধ নহি খছি কিন্তু সাহিত্যক স্ত্রোত একদম স্বখা নহি গেনৈক । সাহিত্যক ধাবা কোহ্না চনৈত বহনৈক । তকব প্রমাণ হমবা নোকনিকেঁ নেপান এরং খাসামমে উঁপনর্ব্ধ নাটক সভসঁ হোগত খছি । রিদ্যাপতিক পশ্চাত্ নেপানমে খনেক নাটকক বচনা ভেন জকব নেখক নোকনিমে কিছু মৈথিন করি তথা নেপানক বাজা নোকনি ছনাহ । ওহি নাটক সভক ভাষা পূর্ণতঃ মৈথিনী ছৈক, হঁ কতহ্-কতহ্ ওহিমে নেপানমে প্রচনিত নেরাবী ভাষাক প্রযোগ ভেটৈত খছি ।
রিদ্যাপতিক খন্বকবণ পব হ্নকহি শৈনী পব হ্নকহি ভাষামে গীতক বচনা হোমব নাগন তথ খওা খন্বকবণ ততেক র্যাপক ভেন জে রিশ্বকরি পর্যন্ত এহি খন্বকবণমে বচনা কযনন্হি হ্মদা খন্বকবণ তঁ খন্বকবণ থিক । ভাষান্তব ভাষী জখন রিদ্যাপতিক ভাষাক খন্বকবণ প্রাবংভ কযনন্হি তঁ নে ও রিদ্যাপতিক ভাষা

বহি গেল খানে অনুকরণকর্ত্তা লোকনিক ভাষা । দুনু মীনি একটা কৃত্রিম ভাষাক জন্ম দেলনি ।

ওহি পরম্পরাক অনুযায়ী ছথি জাহি মে করিতা কেঁ মানর-জীরনক সার্রজনীয তত্বক অভিব্যক্তি মানল গেল অছি । প্রকারান্তর সঁ কহি সকৈত ছী জে ও মানরীয জীরনক আদর্শ রূপ থিক । মনুষ্যক চরিত্র, ভারনা আ কার্যক ওন্দ্রিযগম্য আদর্শরিম্ব থিক,আ ও সর 'মিথ্যা' থিক । শৃংগার রসক গীত হো রা করুণ ও শাংতরসক, রিদ্যাপতি রস্তুনিষ্ঠ ছথি আ কখনো অপন ব্যক্তিগত অনুভরক আধার নহি লৈত ছথি । পরকীযাক প্রেমক গীতক সংগ হম নচারীক কোন তরহেঁ সামংজস্য কএ সকৈত ছী ? রিদ্যাপতিক গীত মে এহি তথ্য কেঁ স্পষ্ট করযরনা এহেন কিছু নহি অছি জে হুনক রাঁএতল জীরন কেঁ রেখাংকিত করৈত হো, ঋদা হুনক প্রেমগীত কঁ হম সভ এহি রূপ মে নহি লৈত ছী । শাংত রসক দৃষ্টিকোণ সঁ ও মানর-জীরনক সামান্য চিত্র থিক । রিদ্যাপতিক গীত রিশিষ্ট মনোদশাক সৃষ্টি থিক । করিক রূপ মে ও অপন রুচিক কোনো রিষয পর অনুভূতিক তীব্রতাক সংগ নিখি সকৈত ছনাহ । ও হার্দিকতাক অতল তল মে ডুবি কএ নিখৈত ছনাহ । হুনক হৃদয জাহি রস মে ডুবল রহৈত ছল তেহনে গীত ওহি সঁ অনুস্মৃত হোএত ছল । হুনক গীত মে ব্যক্ত ভারনা সংসারক ঔসত আদমীক সামান্য অনুভর পর আশ্রিত অছি । তেঁ ও কহর অতিশযোক্তি হোযত জে ও করিক জীরনানুভরক পরিণাম থিক জে ও রৃদ্ধরস্থা মে পছতা রহল ছথি । রিদ্যাপতিক সদৃশ প্রতিভারান করি মনুষ্যক এহি সামান্য দুর্রনতা কেঁ দেখি-বুঝি সকৈত ছল জাহি সঁ একর ব্যাপক প্রভার পড়ৈক । পশ্চাত্তাপক ভারনা,

ग्लानि, जीवनक निःसारता – ई सभ शान्त रस मे अंतर्निहित रूप सँ विद्यापति अपन काव्य मे कयने छथि, आ हुनक जीवनक ज्ञात तथ्यक आधार पर हम ई विश्वास नहि करैत छी जे ई गीत सभ विद्यापतिक जीवनगत वा आमेनिष्ठ अनुभवक देन छल । अपन शृंगार-गीत मे ओ तटस्थ वा वस्तुनिष्ठ छथि । एहि गीत सभ मे शान्त रसक ओतबे परिपाक भेल अछि जतेक प्रेम-गीत मे शृंगार रसक । विद्यापति मानव जीवनक निःसारता आ क्षुद्रताक समान रूप सँ दर्शन आ गहन अनुभव कयने छथि । एहि गीत सभ मे अपना प्रति एक प्रकारक उपेक्षाभावक जे दर्शन होइत अछि से ओहिना कविक वैयक्तिक नहि अछि जेना नायिकाक लेल नायकक प्रेमावेग । विशिष्टक माध्यम सँ सामान्यक चित्रण काव्यक उच्चतम लक्ष्य रहल अछि आ विद्यापति ओकरा विदग्धतापूर्वक प्राप्त कऽ सकलाह ओ यौन-प्रेम हो वा आध्यात्म प्रेम, जीवनक आनन्दक हो वा निःसारता,चंचलता, क्षुद्रता आ निराशा सँ उत्पन्न वैराग्य ।
संस्कृ काव्यक समग्र सौन्दर्य सँ सम्पृक्त मधुर आ लयबद्ध गीतक रचयिताक रूप मे विद्यापतिक कीर्ति आश्चर्यजनक रूप सँ यत्र-तत्र पसरि गेल । जे केओ एहि गीत केँ सुनलक ओ एकर लयतान सँ मोहित भऽ गेल । एहि मे व्यक्त भावना एतेक सर्वसाधारण छल जे ओ सौन्दर्यानुभूतिजनित आनन्द सँ अपरिचित सामान्य स्त्री-पुरूष केँ सेहो ओकर अनुभूति प्रदान कऽसकल । एहेन समय मे जखन संस्कृते सुसंस्कृत लोकक भाषा छल आ मिथिला सन क्षेत्र जतऽ संस्कृतक अतिरिक्त अतिरिक्त अन्य कोनो भाषा मे लिखब

पवित्रताहरणक सदृश छल, विद्यापतिक ओहि प्रदेशक लोक द्वारा बाजल जायवला भाषा मे लिखबाक साहस आ आत्मविश्वास देखौलनि । ओहि समयक पुराणपंथी पंडित द्वारा लोक-भाषा मेँ लिखबाक कारणेँ विद्यापतिक तिरस्कार कएल गेल,किन्तु जखन ओ देखलनि जे ओएह काव्य विद्यापति केँ अद्वितीय लोकप्रियता आ अभूतपूर्व कीर्ति प्रदान कएलक अछि तखन उदात्त मस्तिष्कक अन्तिम दुर्बलता' हुनका विद्यापतिक पदचिन्हक अनुसरण करबाक लेल प्रेरित कएलक । विद्यापतिक नमूना पर गीतक रचना करब मिथिलाक प्रतिभाशाली पंडितक लेल सेहो एकटा 'फैशन' बनि गेल । ई सत्य जे ओ विद्यापतिक अनुकृति सँ बहुत आगू नहि बढ़ि सकलाह, मुदा ई प्रक्रिया अखंडित रूप सँ आगू बढ़ैत रहल आ विद्यापति द्वारा स्थापित परंपरा आ बाट पर मैथिली साहित्य विकसित भेल ।

मिथिलाक बाहर मैथिली साहित्य नेपाल मे लगभग तीन शताब्दी धरि विद्यापति सँ प्रभावित होइत आगू बढ़ैत रहल । मिथिलाक कर्णाट राजा सँ अपन वंशक उत्पत्ति मानयवला भातगाँव आ काठमांडूक मल्ल राजा मैथिली साहित्य केँ संरक्षण प्रदान कएलनि । ओइनबारक पतनक उपरान्त मिथिलाक राजनीतिक अवस्था मैथिलीक विद्वान आ कवि केँ पड़ोसी नेपालक मल्ल राजा सँ संरक्षण मङबाक हेतु बाध्य कएलक । विद्यापतिक अनुकरण करैत ओ सभ एकटा विशाल साहित्यक निर्माण कएलनि, जाहि मे सब सँ महत्वपूर्ण अंश मैथिली मे लिखल गेल अनेको नाटक अछि । ओ नाटक सभ ओतय नियमित रूप सँ खेलायल जाइत छल । ओ कोनो आधुनिक भारतीय भाषाओ मेँ लिखल गेल प्राचीनतम नाटक थिक

অষ্টাবহম শতাব্দীক মধ্য ধবি, জখন কি মন্ন শাসক কেঁ হঁটাওন গেন ছন, মৈথিনী নেপান দববাঁবক সাহিত্যিক ভাষা বঁনন বহন আ রিদ্যাপতি প্রেবণাক একটা স্রাত । এহি মে সঁ অধিকাংশি সাহিত্য মে নহি আযন অছি সে খেদজনক রিষয অছি । আ তেঁ ওকবা বাঁবে মে বহুত কম জানকাবী অছি,যদ্যপি ও ওত্তক্কা গ্রংথানয সবঁ মে স্ববক্ষিত অছি ।
ক্ষদা রিদ্যাপতিক সবঁ সঁ সশক্ত প্রভার বঁগানক মহান করি সবঁ কেঁ প্রেবিত কযনক আ বঁগনা সাহিত্য কেঁ ওকব প্রাবংভিক অরস্থা মে সংরর্ধন কযনক । বঁগান মে রিদ্যাপতিক কথা রস্তুতঃ বহুত বমনগব অছি । বহুত সময সঁ বঁগান আ মিথিনা মে সাংস্কৃতিক সংবঁধ ছন আ তাহি সময মে বঁগানক পংডিত অপন জ্ঞান পবিষ্কৃত কববাঁক হেত্তু তথা মিথিনাক মহান শিক্ষক সবঁ সঁ ওকবা আধুনিকতম বঁনযবাঁক হেত্তু মিথিনা মেঁ অবৈত ছনাহ । তখন জখন ও ফেব অপন ঘব ঘুবৈত ছনাহ তখন হুনক ঠেব পব রিদ্যাপতিক মোহক গীত বহৈত ছন । চৈতন্যদের আ হুনক সংগীত হেত্তু ঙা গীত রিচিত্র ৰূপ সঁ প্রভারশানী সিদ্ধ ভেন কিএক তহ সহজিযা সংপ্রদায সঁ প্রভারিত ভহ কহ ও যৌনাচাবক মাধ্যম সঁ দিব্য প্রেমক অন্বভর কবৈত ছনাহ । রিদ্যাপতিক প্রেম-গীত চৈতন্য-সংপ্রদাযক ভক্তি-গীত বঁনি গেন আ রিদ্যাপতি ভহ গেনাহ বৈষ্ণর মহাজন । বঁগানী বৈষ্ণর মতক একটা মহান প্রবর্ত্তক । কীর্ত্তন এহি নর সংপ্রদাযক একটা প্রমুখ অংগ ছন আ রিদ্যাপতি সঁ পূর্ণতঃ প্রভারিত ভহ কহ অনেক প্রতিভাশানী করি গীত বচয নগনাহ । রিদ্যাপতিক অন্বসবণ কবৈত কান ও রিদ্যাপতিক ভাষাক অন্বসবণ সেহো কৈবত ছনাহ । জেঁ কি ও শুদ্ধ মৈথিনী

নহি লিখি সকৈত ছলাহ তেঁ হুনক ভাষা মৈথিলী আ বঁগলাক একটা অদ্ভুত মিশ্রণ ছল জে বাদ মে ব্রজবুলী কহাবয লাগল । চৈতন্যদেবক হেতু বিদ্যাপতি–একটা আদর্শ বনি গেলাহ আ ব্রজবুলী কাব্য–রচনাক ভাষা বনি গেল । জেনা–জেনা চৈতন্যদেবক নবীন সংপ্রদায ব্যাপক হোইত গেল তহিনা–তহিনা বিদ্যাপতিক গীত সেহো ওহী সংগ পসরৈত গেল আ উড়ীসা ও অসম তক তথা সুদূর ব্রজভূমি তক বিদ্যাপতিক দিব্য–প্রেমক একটা মহান প্রবর্ত্তক মানল জায লগলাহ । গীত ভক্তিগীতক প্রতিরূপ বনি গেল । বঁগাল মে সেহো বিদ্যাপতি এহি সংপ্রদাযক একটা নেতাক রূপ মে সম্মানিত হোইত রহলাহ আ লোক হুনকা বঁগাল মে জনমল বঁগালী বুঝৈত রহল । সম্মান প্রাপ্ত করবাক দৃষ্টি সঁ কবি অপন গীতক অংত মে বিদ্যাপতিক ভনিতা লগবৈত রহলাহ । কম–সঁ–কম একটা কবি ঐহন ছলাহ জে অপন সবটা কবিতা বিদ্যাপতিএক নাম সঁ রচলনি । ব্রজবুলী মে বিশাল সাহিত্য উপলব্ধ অছি জে ভারতীয সাহিত্যক গৌরব থিক । জখন হম লোকনি পঢ়ৈত ছী জে ব্রজবুলী মিথিলাক একটা ভাষা ছি, জে ওতয জনমল লোক সভক দ্বারা প্রযোগ মে আনল গেল ছল আ তকর প্রেরণা বিদ্যাপতিক প্রেমগীত দেনে ছল, তখন হম এহি অদ্বিতীয ঘটনা পর আশ্চর্য ব্যক্ত করৈত ছী আ বিদ্যাপতিক প্রতিভা সঁ স্তব্ধ ভঃ জাইত ছী । এহি সংবংধ মে ঈ উল্লেখনীয অছি জে রবীন্দ্রনাথ কেঁ সেহো হুনক কাব্যজীবনক দেহরি পর বিদ্যাপতি প্রভাবিত কযনে ছলাহ । ও 'ভানুসিংহের' পদাবলী লিখলনি জকরা ও স্বযং মৈথিলীক অনুকৃতি কহৈত ছথি । এহি তরহেঁ বিদ্যাপতিক যুগ মিথিলা জকাঁ বঁগাল মে সেহো ১৯ম

शताब्दीक अंत धरि रहल ।
असमक स्वनामधन्य शंकरदेव आ हुनक शिष्य माधवदेव
विद्यापतिक प्रत्यक्ष प्रभाव मे आबि कए मैथिली मे
लिखलनि । यद्यपि हुनक रचना मनोरंजन नाटकक माध्यम
सँ वैष्णवमतक प्रचार करबाक हेतु लिखल गेल छल ;
तथापि हुनका प्रेरणा विद्यापति सँ भेटल छलनि, जे
लोकक हेतु लिखल गेल रचना मे लोकक द्वारा बाजल
जायबला भाषाक प्रयोग कयने छलाह ।
लोकक द्वारा बाज्यजायबला भाषा मे काव्यानंद कें व्यक्त
आ संचारित करबाक प्रतिभा एतेक लोकप्रिय भेल,
काव्याभिव्यक्तिक रूप मे लोकक गीतक उपयोग
करबाक रचना-चातुर्य एतेक आकर्षक सिद्ध भेल जे
विद्यापति द्वारा स्थापित परंपराक अनुगमन अधिकांश महान
कवि कालांतर मे कयलनि । अन्य कविक तँ कथे
कोन, सूरदास,मीरा, तुलसीदास, कबीर सेहो विद्यापति
सँ प्रभावित भेलाह भले ओ प्रभाव परोक्षरूप मे
किएक ने पड़ल हो ।
विद्यापति मैथिल पुनर्जागरणक दीप्ततम देन छलाह ।
ओ व्यवसाय सँ कवि नहि छलाह । हुनका कतेक प्रकारक
रूचि छलनि । हुनक दृष्टिकोण अत्यंत उदार छल ।
हुनक विचार समय सँ बहुत आगाँ छल । अत्यंत
खेदजनक विषय थिक जे हुनक बाद मिथिलाक सांस्कृतिक
अधः पतन होइत गेल । परिणाम भेल जे व्यक्तिक
रूप मे विद्यापति कें द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त कें
बिसरि देल गेल आ ओ एकटा पुराण कथा,एकटा उपाख्यान
मात्र बनि कए रहि गेलाह । ध्यान जहिया सँ ओ अपन
चारूकातक लोकक लेल मधुर गीत रचलनि, तहिया सँ
कविक रूप मे हुनक यश कहियो कम नहि भेलनि ।

রিদ্যাপতি এখনো একটা করিক রূপ মে জীরত ছথি আ জীরিত রহতাহ । ও ভারতীয় সাহিত্যক অগ্রকৃষ্ঠ নির্মাতা রহলাহ অছি আ ভারতীয় সাহিত্যক ইতিহাস মে ওহিনা অমর রহতাহ ।

<u>হিংদী, মৈথিনী, মিথিনা, রিহাব ও মৈথিন নোকনি সং অপেক্ষা</u>

हिंदी केर प्रचार – प्रसार ओ विकासक लेल केंद्रीय हिन्दी निदेशालय निरंतर प्रयासरत अछि। अपन विभिन्न महत्वपूर्ण योजना सभ आ कार्यक्रम सं हिन्दी कें वैश्विक धरातल पर प्रतिष्ठा दिलयबाक दिशामे सार्थक प्रयास क रहल अछि। निदेशालय द्वारा द्विभाषी,त्रिभाषी आ बहुभाषी कोष आ वार्तालाप पुस्तिका सभकें सीडी रूपमे पाठक लोकनि कें उपलब्ध करबाओल गेल अछि ।

अष्ठम अनुसूचीमे शामिल प्रमुख भारतीय भाषा मैथिली सं सम्बंधित कोनो कार्यक्रम , मैथिली भाषी लोकनि कें हिन्दी सं जोड़बाक प्रक्रिया ,हिन्दी–मैथिली–अंग्रेजी कोष वा हिन्दी मैथिली वार्तालाप पुस्तिका केर प्रकाशनक हमारा एखन धरि जानकारी नहि अछि। केंद्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा कोनो संविधान प्रदत्त भारतीय भाषाक प्रति सौतेला व्यवहार की न्यायोचित अछि ?

हम माय सीताक जन्मभूमि मिथिला क्षेत्रक दरभंगा जिलाक निवासी छी। दिल्ली मे विगत १२ वर्ष सं वेसी काल सं पत्रकारिता ओ साहित्य सृजनक संगहि संग एकटा आउटडोर कम्पनी ''नर्मदा क्रिएटिव प्रा. लि. द्वारा प्रकाशित ऑनलाइन हिन्दी मासिक पत्रिका "समय दर्पण " केर संपादकक रूपमे कार्यरत छी। पटना सं प्रकाशित मैथिली त्रैमासिक पत्रिका ' मिथिला महान " केर प्रबंध संपादकक रूप में सेहो योगदान देने छलहुँ । ओहि कालक्रम में प्रमुख लेखक/ कवि लोकनिक रचनाक संग –संग भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् सं प्रकाशित पत्रिका " गगनांचल" केर छटा आलेखक मैथिली अनुवाद सेहो कयलहुँ ।

" मिशन मिथिला

" केब संयोजक केब रूप मे मिथिलाक सांस्कृतिक विवासतक संवक्षण -संवर्धन ও मैथिली अस्मिताक भान कवेनाञ ও जागरूकताक अभियान में प्रयासवत छी| किছु कान पूर्व मिशन मिथिलाक दिस सं केंद्रीय हिन्दी निदेशालय (दिल्ली) , भावतीय भाषा संस्थान (मैसूव), साहित्य अकादेमी आ मैथिली -भोजपुवी अकादेमी कें कएकटा मांग पत्र पठाओल गेल | मीडिया में सेहो काले काल मैथिली ও मिथिलाक विकासक लेल प्रखव स्वव अनुगूंजित कयल गेल |

विहाव सवकाव मैथिली क विकासमे बाधा उंपेन्न क वहल अछि | गंटैवमीडीएटमे पहिले अनिवार्य भाषा क रूप मे मैथिली कें स्थान नहि भेटैल ओदा बाद मे ऐछिक विषय केब रूप मे शामिलकय एकव महत्व्त्व के समाप्त कवबाक षडयंत्र वचल गेल, जाहि सं अधिकांशि छात्र मैथिली क पठाञ सं विमुख भ गेल| ग्याबाहमक लेल सवकाव द्वावा निर्धावित पोथीक जे नाम देल गेल ओकव प्रकाशन पवीक्षा होयबाक मात्र तीन दिन पहिले बाजाव मे उंपलब्ध भेल जाहि सं बैसी कठिनाञ भेल आ मैथिली विषय के घोव आघात लागल | बावहवीं क लेल "तिलकोव भाग-२" केब प्रकाशन सेहो बड्ड बाद मे भेल | ग पोथी नहि त छात्र लोकनि देखलक आ नहि त शिक्षक लोकनि देखलनि किएक त पोथी छपले नहि छल | फववबी मे एकव पवीक्षा भेल आ तखन ग पोथी बाजाव मे उंपलब्ध भेल | सम्पूर्ण वर्ष बीत गेल , फॉर्म भवल जा चुकल छल ओदा पोथी नहि वहबाक कावणे महाविद्यालय मे एकव पढौनी नहि भेल| एकवा संगे दोसबो पोथी जुडल अछि | बी. पी. एस. सी. पाठ्यक्रम सेहो मैथिलीक लेल उंपयुक्त नहि

अछि, जाहि मादे प्रश्नकर्ता आ छात्र दुनू के असुविधा भ रहल अछि। राजकमल चौधरी क " ललका पाग " छात्र लोकनि मात्र एकटा कथा ललका पाग पढ़ य वा सम्पूर्ण पोथी पढ़ य , एकर जिक्र कतहु नहि अछि। पोथीक उपलब्धताक कमी पूर्ण करबामे मैथिली अकादेमी ,साहित्य अकादेमी सक्षम नहि अछि।

यू. पी. एस . सी सेहो उटपटांग अछि। महाकाव्य सम्पूर्ण होयबाक चाही। मात्र दत्तवती क दू टा सर्ग देबाक की तुक अछि ? जखन की एकर पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर स्तरक होयबाक चाही , तीन चारिटा महाकाव्यक नाम होयबाक चाही , जाहि सं विद्यार्थी लोकनि कें छूट भेटैय। बड्ड बास उच स्तरीय रचनाकार लोकनि कें स्थान नहि भेटैल अछि , जकर पुनर्विलोकन अत्यावश्यक अछि।

यू.जी.सी., यू.पी.एस.सी. कें चाही जे सब विश्वविद्यालय सब सं मैथिली क शिक्षकक सूची उपलब्ध होवय जाहि सं विषय सं सम्बंधित समस्या सबक त्वरित निदान भ सकय। स्नातक प्रथम सत्र मे कला, विज्ञान, वाणिज्य संकाय मे लीला झा केर कथा "वाँय –वाँय अंकल " कें स्थान द क देवशंकर नवीनक संपादकत्व मे एन.बी.टी. द्वारा प्रकाशित एक सय पचीस टाकाक दू टा पोथी पचास अंकक पढ़ाओ लेल वौन्स डालल गेल एकर कियो विकल्प नहि देल गेल। प्रतिष्ठाक स्तर पर स्नातकोत्तर स्तरक पोथी राखल गेल अछि जखन की अन्य लेखक लोकनिक उच कोटिक पोथी उपलब्ध छल।

तएं, बी.पी.एस.सी., यू.पी.एस.सी., साहित्य अकादेमी , भारतीय भाषा संस्थान आ यू.जी.सी. केर मैथिलीक कमिटीमे एकटा विशेष कॉकस हावी अछि।

নাম গিনল চ্নল খ্ছি – ভীমনাথ ঝা ,নীতা ঝা , খমবজী, বামদের ঝা , রিদ্যানাথ ঝা রিদিত,রীণা ঠাকুব, খমবনাথ, রিভূতি খানংদ, বমণ ঝা | কী ব্রঁম্নণ বস্ক্ক কে খতিবিঞ্জ মৈথিনী মে রিদ্বান্ নহি খ্ছি ? দিল্লী কেব মৈথিনী – ভোজপ্ববী খকাদেমী সেহো কাঙাস্তরাদ মে জকবন খ্ছি| কী এঁনা মে মৈথিনী কেব সর্বাগীণ রিকাস হোযত ? প্রশ্ন গ খ্ছি জে একবামে কানঞ্রম খন্বসাব পবিরর্তন কিযক নহীঁ হোযত খ্ছি ? এহি নেন মৈথিনী সং জ্ডন সভ নোকনি কেঁ জাগয পডত | সভ সং নীক হোযত জে মৈথিনীক শিক্ষা দেনিহাব রা জ্ডন সভ টৌ সবকাবী রা গৈবসবকাবী সংস্থা আঁননাওন ভ জায , কিযক ত জখন ধবি মৈথিনী ,নর তকনীক ওন্টবনেট সং নহীঁ জ্ড়ত ওকব চ্নৌতী বঁঢ়রেঁ কবত | এহি নেন মৈথিন সংস্থা সভ কেঁ প্ববান শৈনীক স্থান পব নর বাহ পব চনয পডত|

সামাজিক পবিরর্তনক সংদর্ভমে মৈথিলীক দশা ও দিশা

সাহিত্যিক কাজ সমাজক যথার্থ চিত্রণ হোযত অছি । হমবা ব্রহ্মরামে মৈথিলী সাহিত্য একবাসঁ রংচিত অছি । মৈথিলী সাহিত্যমে সামাজিক পবিরর্তনক স্বব কিছু খানেখমে ভেটৈত অছি মুদা এহি তবহেঁ সাহিত্যিক চিত্রণ প্রবাতনরাদী বচাকাব নোকনিকেঁ নহি পচৈত অছি । রৈশ্রীকবণক প্রভার মৈথিলী সাহিত্য পব সেহো পড় ৈত অছি । মৈথিলী পত্রকাবিতাক সিদ্ধান্তক নির্বহনকেঁ ফূসি দংভ ভবযরনা জে কহবাঁনেন সর্বহক বাঁত করৈত অছি এহি সিদ্ধান্ত পব চনবাঁক সাহক কিনকোমে নহি ছৈন্হ । পটনা সঁ প্রকাশিত সময-সান নামক মৈথিলী দ্বিমাসিক পত্রিকাক অস্তিত্ব দীর্ঘজীরিতাক নেন মসানা পব টিকন অছি । এহি তবহক সাহিত্য সৃজন দ্কানদাববিএটা মাত্র অছি । দনরিশেষসঁ প্রভারিত বচনাকাব ও সংপাদকক নেখনী এখনহুঁ ওকব চক্রব্যূহকেঁ তোড়বামে সমর্থ নহি অছি ।

হিন্দীমে দনিত সাহিত্যিক সৃজন নীক জকাঁ ভ২ বহন অছি মুদা মৈথিলী সাহিত্য এখনহুঁ একবাসঁ পবিপূর্ণ নহি ভ২ সকন অছি জখন এহি বস্তুকচর্চা মৈথিলীমে নহি হেতৈক তখন এহি উপেক্ষিক বস্তুক সমর্থক ভাষাযী সমৃদ্ধিক নেন কোনা জুড়ত ? গামঘবমে সর্বহাবা মজদূব নোকনি ও কথিত ছোটকা জাতিক প্রাণিযে এহি

ভাষাকে রাস্তরমে জিযাকঽ বখনে খছি । মৈথিনী খকাদমীসঁ প্রকাশিত ও ড॰. মংত্রেশ্রব ঝা দ্বাবা বচিত করিতা সংগ্রহ খনচিন্হাব গাম মে একব ঝনক দৃষ্ঠিগোচব ভেন ঋদা একব রাঁদক বচনামে এহি দৃষ্ঠিকোণক সর্রথা খভার ভঽ গেন খছি ।

সমাজমে খাগ মৈথিনীক সংদর্ভমে প্রচনিত খছি জে গ ব্রাম্নণক ভাষা থিক ঋদ্দা ও গপ্প দুষ্প্রচাবঠা মাত্র খছি । একঠা গংভীব পাঠকক রূপমে হম জনৈত ছী জে জিযাউঁব বহমান জাহ্ণবী কৈসব বজা, মংজব স্বনৈমান, মেঘন প্রসাদ, মহেন্দ্রনাবাযণ বাম, দেরনাবাযণ সাহ,খঙ্কনান মহতো, স্বভাষচন্দ্র যাদর, মহাকাংত মংডন, খভয ঋমাব যাদর, বুঁচক্ক পাসরান,হীবামংডন, স্ববেন্দ্র যাদর শিরঋমাব যাদর, রিনষ্ঠ পাসরান রিহংগম খাদি খপন সাহিত্য সৃজনতাসঁ মৈথিনী সাহিত্যকে সমৃদ্ধি প্রদান কবরাঁ নেন সক্রিয ছথি ।

পঠনামে মৈথিনীক সমর্পিত সংস্থা চেতনাসমিতিকেঁ দনিত মহিনা খমেবিকা দেরী ও তিনিযা দেরীক সম্মানক মানে কী খছি ? রাস্তরমে মৈথিনী ভাষাযী ক্ষেত্রক দনিত মহিনাক সম্মানসঁ দনিত দস্নাক ভাষা–ভাষী নোকনিক সমর্থন খরশ্যে ভেষ্টত । এহি প্রযাসকেঁ খন্য সংস্থাকেঁ খপনৈরাঁক খারশ্যকতা খছি । কতেক খাশ্চর্যক গপ থিক জে নোরৈন প্পবস্কাবক চযন সমিতিকেঁ এহি রস্নাক হ্বতিত্ব ও র্যক্তিত্ব পব খ্রজন নজব খছি ঋদা মিথিনাও মৈথিনীক সংস্থা এহি রিষয পব খাঁখি ঋননে খছি । রিহাব বাজ্য ধার্মিক ন্যাস পবিষদক খধ্যক্ষ ড॰. কিশোব ঋণান এহি রিংদু পব কেন্দ্রিত ভক দনিত দেরো ভর প্পস্তকক বচনা কযননি জকব মৈথিনী খন্বরাদ হোযরাঁক চাহী ।

मैथिली साहित्यक बहुआयामी प्रतिभाक उपन्यासकार, कवि, नाटककार आ एहि साहित्यकेँ अपन अपरिमित साहित्यिक रचनाएँ उर्वर बनौनिहार डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म अपन विविध रचना ओ स्वभावगत विशिष्ठताक कारणे अत्यंत लोकप्रिय भेलाह । हिनक लोकगाथामेक उपन्यास मिथिलाक लोकसंस्कृतिकेँ समेटने अछि । लोरिक विजय, नैका बनिजारा, रायरणपाल, राजा सलहेस, लवहरि-कुशहरि, दुलरा दयालक रचना कय मैथिलीक सर्वांगीण विकास, भाषायी समृद्धता ओ लोकप्रियताके बढ़यबामे अपन अविस्मरणीय योगदान देलनि । हिनक उपन्यासक वातावरण किंवा विषयवस्तुमे ओ एहन पात्रक जीवन परिचायक प्रदर्शन कएलन्हि जे अपन-अपन वस्त्र सम्प्रदाय ओ वर्ण व्यवस्थाक अंतरगत जीवनयापन करबामे महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि । नैका बनिजारामे वर्णित समाजक व्यापकताएँ अछिए संगहि धोबी, हजाम, ब्राह्मण, क्षत्रिय आदिक उल्लेख सेहो भेल अछि । राजा सलहेसमे दुसाधक शौर्यगाथाक वर्णन कएने छथि । लवहरि-कुशहरिमे ब्राह्मण द्वारा पूजा-पाठक विधा ओ मीन-मलाह आदिक चर्चा सेहो भेल अछि । वीर क्षत्रिय राय रणपालक कथासँ सम परिचित छी । समाजमे धनी ओ गरीबमे की अंतर अछि, तकर सूक्ष्म परख मणिपद्मजीकेँ छलन्हि । ग्रामीण जीवनयापनकेँ कारणे हिनक लेखनीमे ग्राम्यसमाजक मर्मज्ञता दृष्ठिगत होयत अछि । अष्टांगिकामे वहनिहार ब्लगी-झोपड़ीमे बहि कए जे चित्रण झोपड़ीक करताह तहिमे अंतर निश्चित होयत मणिपद्मक रचनाक पात्र यादव, दुसाध, मलाह, चमार, धोबी,वणिक आदि चुनलैन्हि तकर कारण सामन्ती शोषणक घोर विरोधी

হ্নক মানসিকতা ও স্বাতংত্র্য প্রেম ছল । সামাজিক সংবচনাকেঁ দৃষ্ঠিমে বাখি মৈথিলীক অপূর্ণ ভংডাবকেঁ পূর্ণ কববাঁক সফল প্রযাস কযনিহাব মণিপদ্মক রাঁদ কে ছথি ? বর্ত্তমানমে মৈথিলীমে হ্নক রিলক্ষণ লেখনশৈলী, কথামে পাত্রক সার্থক নির্রহন ও ভাষাক র্যরস্থিত রূপ কিঁচিত নহি ভেটৈত অছি । আগ হ্নক শৈলীকেঁ প্রেবণাশ্রোত মানি লেখনী উঠযবাঁক পহলক আরশ্যকতা অছি । বর্ত্তমানমে মণিপদ্মক ন্বকাযন, রিসবাযন প্রতিক প্বর্নপ্রকাশনক লেল কর্মগোষ্ঠী, কোলকাতাকেঁ যোগদান প্রশংসনীয অছি । মৈথিলী প্রকাশকক জিম্মেরাবী ছনি জে এহি রিষযরস্তুকেঁ ধ্যান বাখি ওহন রিধাক প্রকাশন কবয জকব অভার থিক । আজুক মৈথিলীপ্রেমী লোকনিক ধ্যান সবগব গীত, নাটক, র্যংগ্য ও শোধপূর্ণ আলোচনা রিধাকেঁ প্রতি রেঁসী আগ্রহ্ঠ ভ২ বহল অছি । মৈথিলীকে লোকপ্রিয রনযবাঁক অভিযানমে কিছু বচনাকাব লাগি গেল ছথি । আজুক যরারস্থক লক্ষ্যকেঁ চিন্হবাঁক উপবান্ত হালহিমে মধুকান্ত ঝাক লটলীলা রঁহবাএল অছি । নিশ্চিত রূপে এহি কদমসঁ মৈথিলীক পাঠকমে রৃদ্ধি হেতৈক । রাস্তরমে আগ দূএটা রস্তুক রিক্রী রেঁসী অছি- ধর্ম ও কাম । ধর্মপব মৈথিলীমে রেঁসী বচনা ভ২ বহল অছি জ্বদা কাম পব এখন ধবি দুঃসাহস কিযো বচনাকাব নহি কযললি । আজুকে সন্দর্ভমে সমাজক সহী চিত্রণ রার্ত্তালাপকেঁ রূপমে লটলীলামে কযল গেল অছি । হালাঁকি একব সভ বচনা পটনাসঁ প্রকাশিত সময সাল পত্রিকামে ললিতাক ছদ্ম নামসঁ পূর্রহিমে ছবি চুকল অছি । এহি আলেখক প্রসংগমে পং. চন্দ্রনাথমিশ্র অমবক কহব উল্লেখনীয অছি- এহি মাধ্যমসঁ রঁহ্তোক সড়ল অংতবীক দুশ্চাহক রাঁহব আরি

গেন খছি । যথার্থ নামপব নগ্নতাকেঁ হম পচা নহি পৱৈত ছী ।

কঢ়ি বাদিতা, খঁধরিশ্রাস, ছুখাছুত ও সংকীর্ণ মানসিকতাকেঁ রিৰুদ্ধ ধ্যানমে বখৈত খাগ মৈথিনীমে নেখন হোযৰাক চাহী । স্ব. বাজকমন চৌধবী ও স্ব. প্রভাস চৌধবীক হৃতিকেঁ প্রতিরিম্ব নহি ভেটৈত খছি । ব্যরস্থাক প্রতি রিদ্রাহক স্বব জাহি নেখনমে হোযত ওকব স্বাগত হোযৱে কবত । খাজ্ক পাঠকক মানসিকতা ৰদনৈত সমযকেঁ খনুসাৰে ৰদনি বহন খছি । একব মূন কাবণ সামাজিক পবিরর্তন খছি । এহি পবিরতনকেঁ দৃষ্ঠিমে বখৈত জে নেখন নহি হোযত ওকবা খাজ্ক পাঠক নকাবি দেত । স্ব. হবিমোহনঝাক হৃতি একব সৰ্সঁ পৈঘ উঁদাহবণ খছি । বসগব, চহৃগেব, হাস্য-ব্যংগ্য ও উঁপেক্ষিত রস্তুক স্বব মৈথিনী সাহিত্যমে খনুগুঁজিত হোযত ত ওকব নোকপ্রিযতা খা মাঁগ দ্নূ উঁত্তবোত্তব ৰঢ়ত.

প্ৱবান ভাষাযী শৈনীক স্থান পব নরত্তবিযা বচনাকাবক খানোচনামেক নেখনকেঁ প্রাসোহন ভেটৰাক খারশ্যকতা থিক । গৌবীনাথ, খরিনাশ, পংকজ পবাশব, শ্রীধবম, রিমূতি খানংদ,খমবনাথ, দেরশংকব নরীন, মংত্রেশ্রব ঝা, প্রদীপ রিহাবী খাদিক বচনা এহি রস্তুক প্রতিনিধিত্ব কবৈত খছি ।

সংক্ষেপমে কহন জাযতঁ মৈথিনীক সর্বাগীণ রিকাস তখনে হোযত জখন একব সভরিদ্যা পব বচনা হোযত । এখন ধবি কিছু রিদ্যা পব ৰেসী বচনা ভৱ বহন খছি ঋদা দোসব রিধা পব খহঁত উঁল্প । এহি তবহেঁ মৈথিনেক ব্যাপকতা ও নোকপ্রিযতা স্বপ্নহি ৰ্নমনা জাগত খছি । মৈথিনীমে স্বাদক খনুসাৰে বচনাক ঢ় ানয

पड़तनि तखनो ओकरा सही दिशा भेटैत ओ दशा स्वरुप । वर्त्तमानमे एहि लेल सबसँ बेसी सक्रिय संस्था भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर ओ साहित्य अकादमी दिल्ली तथा स्वाति फाउँडेशन (प्रबोध-साहित्य सम्मान) आदिक मैथिलीक संवर्धन हेतु प्रयास सराहनीय अछि ।

**<u>पंचानन मिश्र</u>**

<u>मउ राजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा-विद्यापति जयन्ती (31 अक्टूबर 09) क अवसर पर</u>

मउ राजितपुर गाम समस्तीपुर जिलाक अन्तर्गत सुदूर दक्षिण भाग मे बसल अछि । एकर नगीचहि दक्षिणवरिया कोन पर कहियो गंगाक अविरल धार बहैत रहल होएत । आजुक तिथि मे नदीक छाडनिटा एं बाँचि गेल अछि । गंगाक उत्तर दियारा क्षेत्र मे इतिहास प्रसिद्ध

গাম থিক চৌথম। সামাজিক সংরচনাক দৃষ্টিঐ সম্প্রতি রাজপূত ও যাদর রঁহ্ন জাতি চৌথমক 'মাগনজন' থিকাহ ক্ষদা খত্যন্ত পিছড়ন সক্ষদায মে পরিগণিত 261 খত্যন্ত পিছড়ন সক্ষদায মে কৈক জাতিক খরস্থিতি সেহো খছিযে। খন্বসূচিত জাতি ক সদস্যহঁ সঁ গাম নিক্ষন্ন নহিযে খছি। তৈযো চোথমক প্রসিদ্ধি খা ঐতিহাসিক মহত্ত্ব বহন খছি মহাকরি রিদ্যা-পতিকে নহ কএ। কিংরদন্তী খছি জে মহাকরি খপন নিম্ন রচনাক উঁপরান্তে গংগানাভক সদ্গচ্ছা ব্যক্ত কযনে বহথি-

সপন দেখন হম শির সিংহ ভূপ
রঁতীস রঁবখ পব সামব রূপ।
রঁহ্ত দেখন হম গুরুজন প্রাচীন
খারঁ ভেনহুঁ হম খাঘ রিহীন।

খাওব নোকমান্যতাক জনতরঁ কহৈছ জে রিস্ফী সঁ জীরনক মহাপ্রযাণক চনন মহফা এহী চৌথমে গাম মে মহাকরিক খাদেশ সঁ বাখন গেন ছন জতএ গংগা খপন ক্ষখ্য ধাব সঁ রঁহবাএ হিনক নশ্রব শবীব কে জন স্পর্শক খরসব প্রদান কবৈত নগনে খপন ক্ষখ্য ধাব মে ঘ্বি গেন ছনীহ। চমথাক নিকটস্থ মঙঁ রাজিদপ্বব গাম খাজুহুঁ ওহী স্থান পব স্থিত খছি।

পূর্ব মধ্য বেনরেক সোনপ্বব মণ্ডনক হাজীপ্বব-রঁছরাড় া স্টেশনক পতিযানী মে রিদ্যাপতিনগব স্টেশন সঁ চৌথম রঁড় নগীচহি খছি। এহি স্থান কে পথ নির্মাণ রিভাগ চাবি দিস সঁ পক্কী সড়ক সঁ জোড়নে খছি। এক সড়ক রঁছরাড় া মে জা কএ বাষ্ট্রীয উঁচ্চ পথ সঁ জা মিনৈত খছি। দোসব মোহিউঁদ্দীননগব হোগত মহনাব-রিদ্প্বব সঁ হাজীপ্বব ধবি

গেন খছি। তেসব দনসিংহসবায-নবহন বোসড়া-রঁহৈড়ী ক মাষ্মা সঁ নহেবিযাসবায কে জোড়ৈত খছি খা চাবিম সড়ক সবাযবংজন-সমস্তীপ্বব দ্নূ স্থান কেঁ ছ্রৈত খছি।
মঙঁ রাজিদপ্বব গামক এক পৈঘ ভূ-খণ্ড খারঁ রিদ্যাপতিনগব নাম সঁ বূঝন জাগছ। তৈযো বূঠ়-প্ববান নোক দ্বাবা রিদ্যাপতিনগব কে 'রাজিদপ্বব রাঁরাঁধাম' কহি সম্বোঁধন কএনিহাবক সংখ্যা তহ খছিযে। মহাকরিক সমাধি ভূমি হোএবাঁক কবণে রঁবোরঁব নোকক খারাঁজামী নাগন বহৈত খছি তঁ রিদ্যাপতিনগব কেঁ প্রখণ্ডক স্তব প্রদান কএন গেন খছি জে সমস্তীপ্বব জিনান্তঙ্গত থিক। এতয 'রিদ্যাপতি ভরন' নামক সাম্দাথিক ভরন নির্মিত খছি। রিহাব সবকাবক পর্যটন রিভাগ স্থানক ঐতিহাসিকতা মে দেখৈত'পর্যটন সূচনা' কেন্দ্ব তহ রনৌনে খছি হ্মদা সঁ মাত্র ঔপচাবিকতারশ।
বাজস্র গ্রাম মঙঁ রাজিদপ্বব গএহ রিদ্যাপতিনগব ক্ষেত্র মে মহাকরিক সমাধি ভূমি খছি। এহি স্থানক রিডম্বঁনা বহন খছি জে একব গতিহাসপবক খন্বসংধান খন্রেষণ খা রিরেচন কববাঁক প্রযোজন কহিযো-কোনহুঁ স্তব পব নহি ভহ পাওন খছি। হম সভ রিস্ফী খা এখন্বক রিদ্যাপতিনগবক মহাকরিক কানজযী ব্যক্তিত্রক সংদর্ভ মে স্থানীযতাক দৃষ্ঠি সঁ ভৌগোনিক পবিরেশক সংদর্ভ মে তখন্বক সামাজিক-সাংস্কৃতিক পবিদৃশ্য মে খধ্যযন কববঁ খারশ্যক নহি বূঝি সকনহুঁ খছি। তে রিদ্যাপতি সঁ জ্ড়ন স্থান 'স্ট্রেফোর্ড ওরেন খান' নহি বঁনি সকন খছি। রড়্সরর্থ সঁ সম্বৃদ্ধ স্থান পব কৈক তথ্যাত্মক খানেখ খভার হম সভ খাগ ধবি কিংরদন্তী নোককথন

𑒂 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰𑒑𑒞 𑒂𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒏𑒹 𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒞𑒟𑓂𑒨𑒏 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒣𑒏𑓂𑒭𑒞𑒰 𑒣𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒪𑒼𑒏𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒮𑓀𑒑𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮𑒏 𑒧𑒰𑒣𑒠𑒝𑓂𑒛 𑒏𑒹 𑒂𑒡𑒰𑒩 𑒦𑒴𑒧𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒢 𑒏𑓄 𑒮𑒏𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒹 𑒂𑒥 𑒔𑒾𑒟𑒧 𑒂 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱𑒢𑒑𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒹 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒞𑒞𑒹𑒏 𑒥𑒰𑒞। 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱𑒢𑒑𑒩 𑒧𑒹 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒱 𑒦𑒴𑒧𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒲𑒣𑒯𑒱𑓀 𑒣𑒲𑒣𑒩𑒏 𑒋𑒫𑓀 𑒁𑒖𑒼𑒡 𑒑𑒰𑒕 𑒋𑒐𑒢𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒕 𑒖𑒹 𑒔𑒧𑒟𑒰 𑒁𑒋𑒪𑒰 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒍 𑒋𑒯𑒲 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒏𑓂𑒨𑒼 𑒃𑒯𑒼 𑒏𑒯𑒻𑒕 𑒖𑒹 𑒑𑒋𑒯 𑒥𑒴𑒜𑓃𑒫𑒰 𑒣𑒲𑒣𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒱𑒮𑓂𑒟𑒏 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑓂𑒨 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹–𑒮𑒿। 𑒂𑒖𑒯𑒳𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒕 𑒏𑒹 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓀𑒞𑒰𑒢 𑒏𑒹 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒫𑒵𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒞𑒰𑒫𑒱𑒖 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒖𑒞𑒨 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒱𑒮𑓂𑒟 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒧𑒰𑒿 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒧𑒼𑒒 𑒮𑒪𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒖𑒪𑒧𑒑𑓂𑒢 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢 𑒞𑒞𑒨 𑒂𑒥 𑒋𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒪𑒰𑒪 𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒑𑒩𑓂𑒦 𑒑𑒵𑒯 𑒧𑒹 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒍 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒧𑒰 𑒕𑒻𑒢𑓂𑒯𑒱 । 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒧𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑒰𑒟𑒩𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒕 𑒖𑒹 𑒃 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒧𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒞: 𑒮𑓂𑒤𑒳𑒙 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒝𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱𑒏 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒦𑒰𑒑 𑒧𑒹 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒮𑒿 𑒠𑒕𑒱𑒢 𑒦𑒰𑒑 𑒧𑒹 𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒕𑒼𑒙–𑒕𑒼𑒙 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒥𑒯𑒱𑒩𑓂𑒑𑒧𑒢 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩 𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒩𑒋𑒪𑒰 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲 𑒧𑓀𑒠𑒱𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒬𑓂𑒫𑒹𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒧𑒰 𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒧𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒋𑒏𑒩 𑒫𑒰𑒧 𑒦𑒰𑒑 𑒧𑒹 𑒬𑓂𑒫𑒹𑒞 𑒣𑒰𑒟𑒩𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒫𑒲𑒩𑒖𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑒮𑒯𑒰 𑒂 𑒁𑓀𑒞𑒱𑒧 𑒏𑒰𑒪 𑒦𑒻𑒩𑒫 𑒏 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑒰𑒟𑒩𑒏

रिचित्र ও ভযারহ নগৈছ। কনা সৌষ্ঠর ও ধার্মিক খন্বষ্ঠানক দৃষ্ঠি সঁ ঙা মংদিব এরং এতূকা প্রতিমা সভ মূর্তিকনা ও রাস্ত্তকনাক খন্বপম উঁদাহবণ খছি। সামনে এক নৌনখা প্ররেশ খছি জে গাম মনকনীপ্ববক সম্পন্ন নোক দ্বাবা রঁনাওন গেন খছি।

রর্ত্তমান রিদ্যাপতি মংদিবক সংগ কৈক সত্য কথা সংনগ্ন খছি। কহন জাগছ জে মহাকরিক মহাপ্রযাণক রাঁদ পাথবক দূ প্রতিমা রিদ্যাপতি ও শিরনিংগ স্রত: স্ফুর্ট ভেন ছন। একব সষ্টনে পীপবক নর খংকুব কোপবি সেহো নিকনি খাযন ছন। পছাতি এতয ধার্মিক স্থত্য হোময নাগন। তখন দ্নাবপ্বব মহন্থক তখন্বক মৈনেজব দিস সঁ টৌনক ছোট–ছীন মংদিব রঁনরৌননি। রাঁদ মে রঁছরাড় াক কোনো র্যক্তি ঙা মংদিব ক নির্মাণ করৌননি। এহি সময দনসিংহসবায থানাক কেরষ্টা গামক ভেষধাবী চৌধবী কেঁ পচহত্তবি রর্ষক খরস্থা মে মংদিবক স্থপা সঁ প্বত্র ভেন ছনন্হি।

এক রেঁব তখন্বক নোর্থ রঁগান বেনরে এহি মংদিব ও পীপব গাছ কে ধ্রস্ত কবরাঁক প্রযাস কএনে ছন ক্ষদা ওহি খংগ্রেজ খফসব কে কান করনিত হোমঘ পড়ন ছন। মংদিবক নিকষ্ট এক ব্রঁজগিবা টৌনা খছি। কহন জাগছ কোনো ক্ষগনকানীন রাঁদশাহ মহাকরিক সমাধিক পশাস্তি স্বনি ধ্রাধিত ভঽ গেন ছনাহ। মংদিবক প্রশস্তি গাথা স্বনি কএ একবা ধ্রংস কবরাক নীযত সঁ ও হজাবক সংখ্যা মে সৈনিক পঠৌননি। সৈনিক সভ পড় ার দএ বহন ছন কি ভযংকব রর্ষাকি সংগ ঠনকা খসন খা সৌনিক রিজয নহি ভঽ সকন।

এহি মন্দিবক পবিসবমে শিরবাতি ও রসন্ত পংচমী ক খরসব পব পৈঘ মেনাক খাযোজন হোগছ।

হমব জনৈত রিদ্যাপতি সঁ জ্ড়ন স্থান কে পর্যটন ক দৃষ্ঠিঐ রিকসিত কবর়াক যোজনা আগ ধবি বাজ্য সবকাব কিংরা মৈথিলী সেরী সংস্থাক স্তব পব নহি বঁনাওন গেন খছি। আগ 'ব্র্হ্মিষ্ট সর্কিট' ক মাধ্যম সঁ বাজ্য মে ভগরান ব্র্হ্ম সঁ জ্ড়ন প্রমুখ স্থান কে চিন্হিত কএন গেন খছি। 'রিদ্যাপতি সর্কিট' মে রিস্ফী উঁগনা স্থান আ রিদ্যাপতি নগব কে জোড়ি পর্যটনক সংভারনা তাকন জা সকৈছ।

<u>মিথিনাক কতিপএন সিদ্ধপীঠ</u>

আসিনক শাবদীয নরবাত্র মিথিনাক সামাজিক, সাংস্কৃতিক, ঐতিহাসিক অস্মিতাক রিশিষ্ঠতা কে জোগাএ বখনে বহন

অছি। অদৌ মে ওা প্রধানত: ঘরৈযা–পূজাক স্রব্দপ গ্রহণ কএনে ছন তত্খনহো একবা মে একাত্মকতা, সংস্কাবাত্মকতা ও অংশে ধবি সামাজিকতা রিদ্যমান ছন। আরঁ ত' ডেগে–ডেগ ওা সার্রজনিক স্থাপন ভঽ দ্গা মূর্ত্তি পূজাক প্ররর্ত্তক মিথিনা ভূপতি বাজা কংসনাবাযণক স্মৃতি কে জগ জিযাব কএ বহন অছি। অভিপ্রায জে সম্পূর্ণ মিথিনাংচন মে মূর্ত্তি স্থাপিত কএ কিংরা প্রস্তব প্রতিমাক পূজাক মাধ্যম সঁ জীরন কে ক্রিযাশীন বখরাক পবম্পবা বহন অছি। বাজেশ্ররবী (দোখব মধ্রঁনী), গিবিজাস্থান (ফ্নহট্ট মধ্রঁনী), ভুরনেশ্ররবী (ভগরতীপ্পব মধ্রঁনী), ভদ্র কানিকা (কোগনখ মধ্রঁনী), চাহ্মণ্ডা স্থান (পচহী মধ্রঁনী), সোনামাগ (জনকপ্পব নেপান), যোগমিত্রা (জনকপ্পব নেপান), কানিকা দেরী (জনকপ্পব নেপান), বাজেশ্ররবী দেরী (জনকপ্পব নেপান), ছিন্নমস্তিকা (উজান আ মির্জাপ্পিব দবভংগা), রনদ্গা (খবড়ূক মধ্রঁনী), সিংধেশ্ররবী দেরী (সবিসর মধ্রঁনী), দেরী স্থান (অংধবাঠাতী মধ্রঁনী), কংকানী দেরী (বামরাঁগপৈনেস দবভংগা), উগ্রতাবা (মহিষী সহবসা), দ্গাস্থান (উচৈঠ মধ্রঁনী), জযমংগনা স্থান (হ্মঁগেব), পূবন দেরী (পূর্ণিযাঁ), কানী স্থান (হাজমা চৌবাহা দবভংগা), কাত্যাযণী স্থান (রদনাঘাট সহবসা), রাঁসঠি যোগিনী (সহবসা) আদি (স্রোত হ্মব্দক্ষেত্রম্ অন্তর্মনক: গজেন্দ্র ঠাহ্মব) স্থান পব আসিন আ অন্যহুঁ সমযারধি মে ভেন আযোজন ভনহি প্রসিদ্ধি পওনে বহন অছি হ্মদা অন্যহুঁ কৈক স্থান জতয শিতার্ব্দীযো সঁ পূজাক আযোজন সেহো গতিহাসক অংশহি রূমন জএরাঁক চাহী। এহি সংক্ষিপ্ত আনেখ মে মেন স্র্রীম সঁ রিনগ কিছু স্থানহিঁক চর্চ ভেন অছি জকব স্থাপত্যক মহত্তা

অছি, লোক পরম্পরা অলগ ছরি বৱলৌনে বহল অছি, সাংস্কৃতিক প্রতিমানক গঠ়নি কৈক রূপ মে গঠ়ন জাগত বহল অছি।

মধুৱনী জিলাক হৃলপরাস অনুমংডলক ন্যোব গাম সঁ ডেঢ় কিলোমীটৰ উঁত্তব সখড় া মে সখড়েশ্ৱবী ভগরতীক ভর্য মন্দিব অছি। ঙা মন্দিব ধার্মিক, সাংস্কৃতিক ও সামাজিক একতাক জাগ্রত প্রতীক থিক। একব প্রাচীনতাক প্রসংগ কহল জাগছ জে মিথিলাক কর্ণাটরংশীয বাজা নান্যদের জখন শাসনাচ্যুত ভঽ গেলাহ তঽ অপন কুলদেরী ক্ষর্জা ভরানী সঁ বক্ষার্থ প্রার্থনা কযললি। মাঁ ক্ষর্জা স্বপ্ন মে হুনকা আদেশ দেলীহ জে প্রাত: স্নান কবৈত কাল নদী মে জে কোলহুঁ রস্তু ভেটৈয ও উঁঠা কএ চোঙ্কৈ পড় া জাযৱ আওব জাহি স্থান পব ঙা রস্তু খসি পড়য ততহি অপন শাসন স্থাপিত কবী। তাহি অনুসারেঁ জনকপুব সঁ সোলহ মাগল পশ্চিম সিমবৌনগঢ় মে কর্ণাট রংশক বাজ্য পুন: স্থাপিত ভেল জে পাঁচ খাঢ় া ধবি শাসক বহৈত গেলাহ অন্তিম শাসক সঞ্জদের সিংহ এহি ভগরতী কে যংত্বক সিংহাসন পব মন্দিব বৱনাএ স্থাপিত কএললি। 1934 ঙা. ক ভূকম্প মে মূল মন্দিব ত' খসি পড়ল মুদা অলৌকিক শক্তিযুক্ত সিংহাসন আজহুঁ রিদ্যমান অছি। সখড়েশ্ৱবী রা সঞ্জেশ্ৱবী ভগরতী বাজা সঞ্জদের সিংহক স্মৃতি মে নামিত অছি।

মুজফ্ফরপুব জিলাক মীনাপুব প্রখণ্ডক পশ্চিম ছোব পব গণ্ডকী নদীক কতরৱগমে পানাপুব গাম মে রিখ্যাত ভগ্মী দেরীক মন্দিব অছি। ভগরতী ভগ্মীক মূর্ত্তি একহি পাথব সঁ তবাশি বৱনাওল গেল অছি জকব দিপ্তী আগযো মংদ নহি ভেল অছি। সাগত মিথিলাংচল মে

গএহ এক ভগরতী থিকীহ জনিক সোঝাঁ পড়রা কে পূজোপবান্ত ঋক্তাকাশি মে রিচবণ কবরঁাক নেন ছোড়ি দেন জাগছ। এতূকা হরন ঝংড় সঁ প্রাপ্ত ভভূত মে চর্ম বোগ সঁ ঋত্তিক রিশ্রাস পাওন জাগছ।
প্ববাতাত্বিক দৃষ্ঠি সঁ পূর্ণত: উঁপেক্ষিত ঐতিহাসিক – সাঁস্থ্রতিক ধবোহব কে স্ববক্ষিত বখনে দবভংগা জিনাক মনীগাছী প্রখংডক মকবন্দা–ভংডাবিসম গাম স্থিত মাঁ রাণেশ্রবী এখনহুঁ খাস্থা এরং রিশ্রাসক কেন্দ্র থিকীহ। মনীগাছী প্রখণ্ড ঋখ্যানয সঁ 5 কিনোমীঁটব দক্ষিন–পশ্চিম কোন মে ডীহ পব স্থিত ঔ তাঁত্রিক সাধনা স্থন সামান্য ধবাতন সঁ খন্বমানত: 10 ফীঁট উঁচ খছি। কিছু খনরেষক এহি ডীহ কে কর্ণাটরংশীয শাসকক প্রশাসকীয স্থন মানৈত ছথি তঁ কিছু বাজা শির সিংহক গঢ়। জে–সে। মাঁ রাণেশ্রবীক প্রার্দুভারক সম্রঁন্ধ মে কৈক মান্যতা থিক। কহন জাগছ জে রাণ নামক ভগরতীক এক উঁপাসকক ঘব প্বত্রীক জন্ম ভেন। জনিক রূপ–গ্ণক প্রশংসা স্বনি তখন্বক যরন বাজা রঁনজোড়ি রাণক প্বত্রী কে খংগীকাব কবরঁাক নেন দূত পঠৌননি জকব প্রতিক্রিযা স্ররূপ রাণ–প্বত্রী স্রযং কে প্রস্তব মে পবিরর্ত্তিত কএ জন সমাধি নএ নেনে ছনীহ। খাজহুঁ এহি পবিসব মে ও 'পবসাগন পোখবি' খরস্থিত খছি জাহি মে সঁ পাথবক মূর্তি নিকানি পূজা–খর্চনা খাবম্ভ ভেন ছন। এখন্বক মংদিব নির্মাণক সম্রঁন্ধ মে কহন জাগছ জে মহাবাজ নক্ষ্মীশ্রব সিংহ পত্নী বানী নক্ষ্মীরতী দ্বাবা এহি ভগরতীক পূজোপবান্ত খপন ভাএ শ্রীনাথ মিশ্রক ঘব প্বত্র হোএরঁাক যাচনা কযনে ছনীহ জে ফনীভূত ভেন ছন খা 1916 ঔo মে মন্দিব রঁনরাওন গেন।

পশ্চিম চম্পাবণ জিনাক বামনগব প্রখংডান্তস্নাত সোমেশ্রেব মে মাঁ কানিকা দেৱীক প্রাচীন মংদিব খছি। হেরনি মে মংদিবক ঙুপব নেপানী ঝংডা খা মংদিবক প্ররেশ দ্বাব পব নেপানী ভাষামে ‘হাম্রা খমব’ শিনাপঙ্ক্তি দেখি রিরাদ উঁত্পন্ন ভ২ গেন ছন।

দবভংগাক রৈনীপ্পব খন্বমণ্ডন হ্মখ্যানয সঁ পাঁচ কিনোমীটৈব উত্তব–পশ্চিম খরস্থিত নরাদা গাম মে হযহঙ্কী দেৱী দ্‌র্গাধাম সিদ্ধপীঠ মানন জাগছ। এহি পীঠক উঁত্পত্তি শির প্রিযা সতী সঁ জ্‌ড়ন থিক। তংত্র চূডামণি মে সতীক খংগ সঁ সংবঁধিত হ্মন 52 শেক্তিপীঠক চর্চ খছি। জাহি মে ওহো পবিগণিত খছি। দেৱী ভাগরত প্ববাণ এরং মত্স্য প্ববাণক খন্বসাব সতী কেব রাম স্কন্ধ এতহি খসন ছন। কহন জাগছ জে নগভগ 600 রর্ষ পূর্র বাজা হযহঙ্কৈ দ্বাবা এতয জগদম্বাঁক মূর্তি স্থাপিত ভেন। বংহেড় ী প্রখংডক হারীডীহ গামক এক সাধক প্রতিদিন দেৱীক সাধনা–খাবাধনা নেন খরৈত ছনাহ। পছাতি বৃদ্ধারস্থা মে দ্‌র্রন কাযাক কাবণ ভগরতীক প্রেবণা সঁ সিংহাসন সঁ মূর্ত্তি উঠাকএ হারীডীহ চনি গেনাহ জতয খাগযো ওহি মূর্তিক পূজা কএন জাগছ। পছাতি হারীডীহ সঁ নরাদা মূর্তি খনরাঁক নেন সংঘর্ষক স্থিতি রঁনি গেন। খন্তত: নরাদাক সিদ্ধপীঠ মে খগরে সিংহাসন শেষ বহন জকবহি পূজা হোগত বহন খছি।

দবভংগাক ঘনশ্যামপ্পব প্রখংড হ্মখ্যানয সঁ 8 কিনোমীটৈব পব মাঁ জ্রানাদ্মখীক ভর্য মংদিব এহি ক্ষেত্র মে ভগরতী ডীহক নাম সঁ প্রসিদ্ধ থিক। এতয মাঁক পিংডীক পূজা কএন জাগছ। কসবৌব গামক পনচোভ মূনক ব্রাহ্মণ পবিরাবক ঘব কেব হ্মন দেৱী একহি ঠাম

ভগরতী ডীহ মে রিবাজমান থিকীহ। কহল জাগছ জে 600 রর্ষ পূর্র ঁউফরৌন গাম রাসী স্র০ নখনবাজ পাণ্ডেয কে হিমাচন প্রদেশক ভিংডী জিনাক নগবকোর্ট সঁ দৈরীয দর্শন ভেন ছনহ্নি। কান ক্রমে কসবৌব মে পিণ্ড রঁনা পূজা হোময নাগন । জকবা স্র০ পাণ্ডেযক স্থাপনা মানন জাহছ। মাঁ জ্রানাক্ষ্মীক দর্শন সঁ রোগ নিরাবণক খাস্থা র্যক্ত কএন জাগছ। মধ্রঁনী জিনাক জযনগব খন্বমণ্ডন হ্মখ্যানয মে প্রান্তক সভ সঁ ঁউচ দ্গর্া মন্দিব খছি। এতয দ্গর্া পূজাক খরসব পব জমীনক ভীতব বহি কএ সাধনা কবরাঁক পবিপার্টী খছি।

স্বপৌন রঁজাবক বামনগব দ্গর্াস্থান মে খার্র রঁনি নহি, ছাগবক পবীক্ষা নেন জাগছ। জোঁ ছাগব পবীক্ষাক ক্রম মে দ্গর্া করঁনা স্রীকাব কবৈত ছথি তখনহি রঁনি প্রদান হোগছ। স্নানোপবান্ত ছাগব কে কান পকড়ি ঁউপব দিস ঁউঠা কএ প্বন: জমীন পব বাখি দেন জাগছ। ছাগব সিবা কে হিনা দৈছ তখনহি রঁনি দেন জাগছ খন্যথা নহি।

রৈংগূসবায জিনাক মংমৌন খন্বমণ্ডনক রিক্রমপ্বব গাম মে পছিনা 400 রর্ষ সঁ হ্মন, রেনপাত ও কনশক সহাযতা সঁ মাতা জযমংগনা দেরীক প্রতিশ্রূতি রঁনা কএ দ্গর্া পূজা কবৈত জাগত ছথি । নগভগ ছ:(হ) হজাবক খারাঁদীরনা এহি গাম মে বোস্টৈব সিস্টম সঁ হ্মন এরং রেনপাত জমা কএন জাগছ। কহল জাগছ জে এতুকা নোক জযমংগনাগঢ় মে দরীক রূপ মে দ্গর্াকি সমক্ষ রঁনি প্রদান কবৈত ছনাহ। পহসাবাক গ্রামীণ মে সর্রপ্রথম রঁনি প্রদান দেরাঁক প্রশ্ন পব রিরাদ ভঽ গেন। বাতি মে মাতা জযমংগনাক স্বপ্ন ভেন।

रिक्रमपुबहिमे रेलपात-स्थल सँ रमब आश्रति रँना कए पूजा करैत जाग।
चम्पारण जिलाक सेमरा रेलरे स्टेशन सँ 2 किलोमीटर पश्चिमोत्तर एक रिशेष देरी शक्तिपीठ, जकरा रनसती देरी स्थान कहल जागछ। सहरसाक सोनरँरसा प्रखण्ड मे ररगँटप्पर मे चण्डीमाताक मंदिर थिक। मंदिर पर सररसिंहदेरक नाम अंकित अछि। चण्डीपूजा सँ पूर्र लोक 'र्ँधाँगा'क पूजा करैछ। ओ दुसाध जातिक देरांशी पुरुष छल। एहि स्थल के राजा रिराटक स्थान मानल जागछ।
मानसी-सहरसा रेलरे खण्डक रीच धमहारा घाट स्टेशनक निकट स्थितो कतानेथान शक्तिपीठ अछि जकरा कात्यायनी थान सेहो कहल जागछ। कहल जागछ जे महादेरक भार्या सती जखन राजा दक्षक यज्ञ मे जरि गेल छलीह त' हुनक अधजरुआ लाश अधि महादेर हरिद्वार सँ कामाख्या जागत काल सती (कात्यायनी) क 'कत्ता' एतहिये खसि पड़ल छल जाहि कारणेँ एकर नामकरण 'कतानेथान' पड़ल।
मधुरँनी जिला मुख्यालय सँ 14 कि.मी. पर स्थित कोइलख गाम मे भद्रकाली कोकिलाक्षीक मन्दिर अछि जे हिनक मंदिर सँ पश्चिम प्ररागहित कमला नदी सँ रँहराएल छलीह। हिनकहिं नाम सँ गामक नामकरण भेल अछि।
मिथिलाक संथाली लोकनि दशहरा मे गरा केर पूजा करैत जागत छथि। गरा संथालक देरी थिकीह। प्रतिदिन एक-एक गराक अलग-अलग स्ररूप क आराधना दस दिन कएल जागछ। रिष्णु पुराणक अनुसार सँ महर्षि कश्यपक एक पत्नी गरा छलीह जनिका संथाली देरीक रूप मे आदौ सँ पूजैत रहलाह अछि।

सम्पूर्ण मिथिलांचल मे भगवती रावाणी देवीक मूर्त्ति मात्र वेहेड़ा मे अछि। जतय आसिन मासमे वेस जमघट्ट वऽैछ ।
दुर्गा पूजाक अवसव पव अन्य उद्देश्यक संगहि ओकव स्थानीय माहात्म्य पवम्पवागत स्वरूप स्थापत्य विवेचन आदि जौं हमव एजेंडा मे होग त' एक सकावात्मक प्रयास मानल जाएत।



<u>भीमनाथ झा</u>

<u>चन्दा झा, हविमोहन झा मिलिकऽ</u>

कवीश्वव चन्दा झा महाप्रयाण कयलनि 1907मे तथा संसावमे हविमोहनझाक आगमन भेलनि 1908मे। आधुनिक युगक प्रवर्तक अपन काज सम्पन कऽ लेलनि तँ ओहि काजकेँ आव विस्ताव देबा लेल मानू ओहि लोक जाकऽ हविमोहन झाकेँ एहि लोकमे पठा देलनि। कवीश्वव मैथिली साहित्य लेल वेहृत-किछु कयलनि, की-की कयलनि तकवा दोहवयबाक प्रयोजन नहि। किन्तु, ई कहब एतऽ प्रासंगिक अछि जे ओ साहित्यकेँ जनताक बीच पसावि देलनि। पसावलनि तँ सभसँ अधिक विद्यापति, तकव दिनक बाद मनबोध सेहो,

ঝদা চন্দামা তকরা ওনি–ফটীক কহচ্নৌগ্টা রঁনা দেননি।
মাক সময়মে মিথিলামে লেখনক ভাষা রঁড় অৱ্যরস্থিত ভহগেল ছল । এক দিস সংস্কৃত হ্রাসোন্মখ ভহ রহল ছলৈক। এহলামে মিথিলাক জে অপন ভাষা ছলেক মৈথিলী, তকরাপর ভারী আরঁহ লগলৈক। চন্দামাক সোন্মা অপন মাতৃভাষাক স্বচ্চাপনকেঁ রঁচাকহ রাখরঁ সভসঁ রঁড়কা চ্নৌতী রঁনিকহ ঠাঢ় ভহ গেলনি। অপন ভাষাপর এহন রিকষ্ট সংকটৈক সামনা হ্লনক পূর্রিরতীকেঁ নহি করহ পড়ল ছলনি জেহন করীশ্ররকেঁ করহ পড়ললি। জঁ অপন ভাষে নষ্ট ভহ জাযত তঁ সাহিত্যক মোল ভেলহি কো? তেঁ ও মৈথিলী লেখনমে সাহিত্যিক মূন্যরত্তাসঁ কলেকো কম নহি, কতহ্–কতহ্ তঁ অধিকে ভাষাক শুদ্ধতাপর সারধান দেখরাঁমে অরৈত ছথি। তাদ্রসঁ আগাঁ রঁঢ়িকহ ও এগো প্রমাণিত করহ চাহিত ছলাহ জে মৈথিলীমে সে সামর্থ্য ছৈক জে কেহনো জটিল ভারকেঁ মৌলিক ভংগিমামে সহজেঁ অভির্যক্ত কহ সকৈছ। যৈহ কারণ থিক জে ও স্থানীয লোকোক্তি–কহরী আ দেশজ শর্ব্দক সৌন্দর্য ভরি মৈথিলী ভাষাকেঁ আর মোহক রঁনা দেননি। সর্রথা রিপরীত পরিস্থিতিমে মৈথিলীমে সে সামর্থ্য লোকোক্তি–কহরী আ দেশজ শর্ব্দক সৌন্দর্য ভরি মৈথিলী ভাষাকেঁ আর মোহক রঁনা দেননি। সর্রথা রিপরীত পরিস্থিতিমে মৈথিলীকেঁ মাজি–চমকাযস, ওকরা আর ক্ষিপ্র রঁনাযা এক দিস জনসামান্যসঁ জোড়রাঁক আ দোসর দিস অন্য রচনাকারক সমক্ষ ভাষাক আদর্শ নমূনা প্রস্তুত কহ লেখন দিস প্ররৃত্ত কররাঁক কাজক কারণহুঁ, কেরল ওদ্রু টৌক কারণহুঁ, ও যুগপ্ররর্তকক আসনক অধিকারী ছথি।

কিন্তু সে কয়লনি পদ্যক মাধ্যমে। ও সময়ে তেহন ছলৈক জে জনতা গদ্য দিস কনডেবিযো নহি তকিতৈক। সে ও ভাঁফি নেললনি। সাহিত্যক মানে হোগক পদ্য, জে রঁহ্ধা গীতক রূপমে অভিব্যক্ত হোগক। সে গীত গহনা রঁনি গেলৈক, ওহন গহনা, জকবা কাজে–তিহাবমে পহিবন জাগক। অনদিনা কন্তোড়ে ীমে রঁন্দ বহৈক। চন্দাঝা পদ্যকেঁ 'গ্বথা–পন'রঁলৌলনি, জে লোকক অমনমে আরি গেলৈক। রিষয চ্ননলনি সমসাময়িক। লোক–আস্থাক অনুকূল বামায়ণ নিখনলনি। বামচবিতমানসক প্রচাব তহিযা মিথিলামে ওতেক ছলৈক নহি। সংস্কৃত জনসামান্যসঁ দূবে ভঽ গেলৈক। অংগবেজক দু:শাসনসঁ সীদিত লোককেঁ পবিতোষ সেহো ও দেলথিন, মহগীক মাবিসঁ পীড়িতক প্রতি সহানুভূতিযো দেখৌলথিন, ধর্মক হানি দিস সংকেতো কয়লথিন। এতাবতা অপন সমাজকেঁ ভগবত্ ভজনমে লাগল বহি আস্কিে জীবন জীবাক সন্দেশ দেবঁ ও অপন কবিকর্মক উদ্দেশ্য রঁলৌলনি। ফদা, হ্নক কবিতা কাজ ওহিসঁ রঁহ্ত রঁসী কঽ গেল,মৈথিলী সাহিত্যকেঁ নব দিশা দঽ গেল, নবযুগক আগমনক শংখনাদ কঽ গেল। ও সভটা ভেল কাব্যক মাধ্যমে– পদ্যমে, গীতমে। গদ্যকেঁ ও ছুলনি টা, তকব ছবিকেঁ নিখাবিতথি, লোককেঁ গদ্যান্মুখ কবিতথি– ততরা পনখতি নহি ভেটৈ সকলনি। হ্নকা জায পড়লনি। ও সংসাব ছোড়ি চন গেলাহ। আ, অপন তাহী ছুটৈল কাজকেঁ সম্হাবরা লে' নগলে হবিমোহনঝাকেঁ পঠা দেলনি।

1929মে হবিমোহনঝা 'মিথিলা'ক মাধ্যমে মৈথিলীমে উতবলাহ আ মৈথিলীকেঁ সাক্ষব–নিবক্ষবক জীহপব চঢ়া দেলনি, মিথিলাক ঘব–ঘবমে পহুঁচা দেলনি,

ততরেঁ নহি, একব সৌবভকেঁ ভাবত ভবিমে পসাবি দেননি। ও চমত্কাব কযননি ও গদ্যক মাধ্যমে। নিখিকএ ছৌন নহি নগৌননি ও, মুদা নোকপ্রিযতাক হিমানয ঠাঢ় কএ দেননি। অপন আ মৈথিনী-দুনূক নোকপ্রিযতাক। চমত্কাব ভএ গেন। এহন চমত্কাব পূর্বমে কহিযো নে ভেন ছন। বিদ্যাপতিক চমত্কাব নোক বুঝৈত-বুঝৈত বুঝনকা, হুনক গেনাক সয-সয বর্ষক বাদ বুঝনক, মুদা হবিমোহনঝাক চমত্কাব তঁ হুনক প্রবেশে কবিতহিঁ বুঝএ নাগন।

হুনক সাহিত্য সমাজমে পসবন দু তবহেঁ—এক তঁ পাঠকক ব্যাপক সমর্থনসঁ, দোসব তীব্র বিবোধসঁ। বিবোধ কযনিহাব মিথিনাক সনাতনী পণ্ডিত বহথি, কর্মকাণ্ডী বহথি, জে হবিমোহনঝা দ্বাবা অপন অন্ধবিশ্বাসপব হোঃগত প্রহাবসঁ তিনমিনা উঠনথি আ ওকব ঘনঘোব বিবোধ কবথি। বিবোধক কাবণেঁ আব ও পঢ়ন জাথি। আগ ও বিবোধ কানক গানমে সমা গেন অছি, আ হুনক সাহিত্য কানাতীত মানন জায নাগন অছি।

মুদা একটা বাঁত এখনো, কিছু গোটে ছথি জনিকা কচোটৈত ছনি জে হবিমোহনঝা অংগবেজী পঢ়ননি তঁ অংগবেজক সমর্থক ভএগেনাহ, ওকব সভ বাঁত-বিচাব প্রিয ভএ গেননি আ অপনা নোকনিক সভ শাস্ত্র-পুবাণ ফুসিক পুনিঁদা বুঝায নগননি। হুনকা নোকনিকেঁ দুখ বাঁতক ছনি জে জতেক ও অপন 'থাতী'ক খিধাঁস কযনে ছথি ততেক ভবিসক কোনো সাহিত্যমে ওকব অপন সাহিত্যকাব নহি কযনে হোযতৈক। তহিনা, জতেক ও দেশীক দুশ্মন অংগবেজক বাঁত-বিচাবক গুণগান কযনে ছথি ততেক ক্যো অপন দুশ্মনক বীতি-বেবাঁজক প্রশংসা

नहि कयने होयत।
सभसँ पहिने तँ ई जे अंगरेजी पढ़ि‌ कऽ ओ अंगरेज नहि भेलाह, अंगरेजक वहन-सहन नहि अपनौलनि। सूट नहि पहिरलनि, सिगरेट-चुरुट नहि पीलनि, शेवार्‍ नहि छूलनि, घरमे अंगरेजी नहि चलौलनि। धोती-कुर्त्ता पहिरैत रहलाह, माछ-भात खाइत रहलाह, हास्य-विनोदक गप करैत रहलाह। दोसर, ओ मानैत छलाह जे अंगरेज भारतमे अधिक हमर शत्रु छल जाधरि हमरापर शासन करैत छल। ओ भारत छोड़ि‌ कऽ चल गेल, अध्याय खागि गेलैक। शास्त्र, साहित्य, वैज्ञानिक बोध, प्रगतिक ललक-ककरो शत्रु नहि होइत छैक। ओ जँ शत्रुदेशोक छैक ओ नीक छैक तँ तकर प्रशंसा होयबाक चाही, तकर अनुकरण होयबाक चाही। ई नहि जे शत्रुदेशीक थिक तँ केहनो नीक थिक, तकरा दिस ताकी नहि, ओकरा छूबी नहि। ओहि दिस नहि ताकब, ओकरा नहि छूअब तँ प्रगति कोना कऽ सकब, संसारक संग डेगमे डेग मिलाकऽ चलि कोना सकब? तहिना, अपन जे वस्तु अछि, शास्त्र-पुराण अछि, तकरा समयक निकषपर बराड़ब‌ नहि, समकालीन सन्दर्भमे तकर पुनर्मूल्यांकन नहि करब तँ की होयत? ओहीमे ओझराकऽ खपि जायब, आगाँ बढ़ि‌ नहि सकब। अपन वस्तु खराप अछि, से के कहैत अछि? ओ तँ बहुमूल्य गहना थिक, ओकरा कनतोड़‌मे जोगाकऽ राखू। सौंसे देहमे ओकरा छाड़ि‌ लेब तँ अकार्यक भऽ जायब। आन दूसत। हँसत।
हरिमोहनबाबू वैह एतबे कहलनि अछि, आ सभसँ स्पष्टतासँ‘खट्टर ककाक तरंग’मे कहलनि अछि।

ওহিমে খপন কিছু খন্ধপবম্পবাকেঁ উঁঘাবিক২ বাখি দেননি খছি খা তকবাসভকেঁ খাজ্ক সন্দর্ভমে খন্বপযোগী সিদ্ধ কযননি খছি। ফদা, এহি পাছাঁ খপন শাস্ত্র-প্ববাণপব খনাস্থা কি খপন সংস্কাবক প্রতি খরহেনেনা-ভার নহি ছনি। এহি রাঁতক ছনি- ''খঙ্কব ককাক তবংগ'ক দ্বিতীয সংস্কবণক ভূমিকামে ক২ দেননি খছি। জখন প্বছন জাগত ছনি- ''খঙ্কব ককা, একটা রাঁত কহু ? খহাঁ ঙা সভ ভিতবিযা মনসঁ কবৈত ছিঐক কি কেরন নোককেঁ হঁসারঁক হেত্ত ? '' তাহিপব ও কহৈত ছথিন- ''খারঁ তোঁ হমব সভটা ভেদ এক্ক দিনমে বুঝি নেরঁহ ? ''হ্নক ফঁহসঁ রঁহবাযন ঙা 'ভেদ' শব্দে কহৈত খছি জে হ্নকা 'রেদ'সঁ রিরোধ নহি ছননি। তহিনা, পশ্চিমক খাচাব-ব্যরহাব সভটা নীকে থিক- সেহো ঙা নহি মানৈত বহথি। ওকবো খিন্নী উঁড় ানে ছথি। পাশচাত্য সভ্যতা নীত খনেকো ব্যরহাবপব কতে তীক্ষ্যণ কটাক্ষ ঙা কযনে ছথি, তকবো প্রমাণ 'খঙ্কব ককাক তবংগ'মে ভেটি জাগত খছি। 'খঙ্কব ককাক টটকা গপ্প'সঁ নিম্ননিখিত উঁদ্ধবণ প্রস্তুত কযন জা বহন খছি-

''খঙ্কব ককা-ভোজক খর্থ হোগ ছন 'ভবি পেট'। পাটীক খর্থ'ভবি প্নেট'। খর্থাত্ এক ফককা দানমোট ও একটা সিংহাবা। ঙা সিংহাবা খারিক২ সোহাবী- তবকাবীক সংহাব ক২ দেনক। পহিনে খঠ়েযামে চবণ খখবিক২ এক খঠ়ৈযা মধ্ব খাগাঁ বাখি দৈত ছন। খারঁ খঠ় াগ চম্মচ চীনী এক চুকবীমে দয উঁপবসঁ গোমূত্র-বংগক কাঠ় া চ্খা দৈত খছি।

হম-হঁ, খারঁ তঁ সভ ঠাম 'টী'.....

খঙ্কব ককা-হৌ, যৌহ টী তঁ সভক টৌক কাটি নেনক।

𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨𑒏 𑒁𑒩𑓂𑒟 𑒕𑒪𑒻𑒏 𑒁𑒓𑓂𑒑𑒰𑒩𑒯𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒙𑒲। 𑒂𑒥 𑒏𑒹𑒫𑒪 '𑒙𑒲'𑒙𑒰 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒮𑒦𑓂𑒨𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒚𑒼𑒩 𑒠𑒰𑒑𑒱 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏, 𑒦𑒤𑒰𑒃𑒞 𑒃𑒢𑓂𑒯𑒼𑒩 𑒪𑓄 𑒏𑓄। 𑒂𑒔𑒧𑒢𑒲𑒨𑒧𑓂 𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒔𑒰𑒨𑒧𑒰𑒢𑒹𑒨𑒧𑓂। 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒧𑒹 𑒙𑒰𑒏𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒻। 𑒂𑒥 𑒦𑒹𑒙𑒻 𑒕𑒻𑒏 '𑒙𑒰 𑒙𑒰'। 𑒙𑒲 𑒣𑒱𑒨𑒰𑒏𑓄 𑒙𑒰 𑒙𑒰 𑒏𑓄𑒠𑒹𑒞𑒾𑒯। 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒰𑒞𑓂 𑒙𑒱𑒙𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒠𑓄 𑒠𑒹𑒞𑒯। 𑒂𑒃𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒳𑒏 𑒮𑒦𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒥𑒴𑒿𑒗𑒯 𑒞𑓄 𑒄 𑒁𑒏𑓂𑒭𑒩𑒣𑒩 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒙𑒹𑒮𑓂𑒙𑒹, 𑒙𑒲, 𑒙𑒹𑒩𑒹𑒪𑒱𑒢, 𑒥𑓂𑒩𑒴𑒿𑒖𑒱𑒮𑓂𑒙𑒹𑒩 𑒍 𑒙𑒰 𑒙𑒰। 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞 𑒪𑒼𑒏 𑒙𑒱𑒙𑒱𑒨𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।
𑒯𑒧-𑒡𑒢𑓂𑒨 𑒕𑒲, 𑒁𑒓𑓂𑒏𑒳𑒩 𑒏𑒏𑒰। 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒿 𑒮𑒦 𑒥𑒰𑒞𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠𑒹 𑒮𑒳𑒗𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒅𑓀𑒢𑒙𑒹 𑒑𑓀𑒑𑒰 𑒥𑒯𑒰 𑒠𑒻𑒞 𑒕𑒱𑒌𑒏।
𑒁𑒓𑓂𑒏𑒳𑒩 𑒏𑒏𑒰-𑒯𑒧 𑒥𑒯𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒱𑒌𑒏 𑒏𑒱 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒧𑒯𑒩𑓂𑒭𑒱 𑒤𑓂𑒩𑒰𑒨𑒛𑒏 𑒔𑒹𑒪𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒥𑒯𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒳𑒢𑓂𑒯? 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒕𑒻𑒢𑓂𑒯 𑒖𑒹 𑒔𑒼𑒪𑒰 𑒕𑒴𑒙𑒨, 𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒔𑒼𑒪𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒴𑒙𑒨। 𑒏𑒠𑒧𑓂𑒥𑒮𑒿 𑒏𑒠𑒲𑒧𑒰 𑒡𑒩𑒱, 𑒮𑒦 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏𑒹 𑒮𑒳𑒗𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒢𑓂𑒯। 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒨𑒢𑒱𑒩𑒼𑒡𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒑𑒩𑓂𑒦𑒢𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒟𑒱। '𑒧𑒹𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒪' 𑒕𑒼𑒛𑒱◌𑓃 𑒞𑒹𑒯𑒢 '𑒪𑒴𑒣 𑒪𑒰𑒑𑒪' 𑒡𑒻𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒦𑒰𑒫𑒲 𑒣𑒲𑒚◌𑓃 𑒰 𑒏𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒯𑒧-𑒫𑒰𑒮𑓂𑒞𑒫𑒧𑒹 𑒂𑒥 𑒮𑒦 𑒥𑒰𑒞 𑒅𑓀𑒢𑒙𑒹 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒏।

𑒁𑒓𑓂𑒏𑒳𑒩 𑒏𑒏𑒰-𑒞𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢 𑒮𑓀𑒠𑒹𑒯। 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒖𑒢𑓂𑒧𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒫 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒻𑒏, 𑒂𑒥 𑒖𑒢𑓂𑒧𑒢𑒱𑒩𑒼𑒡𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒫 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒢𑒰𑒩𑒲 '𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒫𑒞𑒲 𑒦𑒫'𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒧𑒹 '𑒩𑒴𑒣𑒫𑒞𑒲 𑒦𑒫, 𑒪𑒴𑒣𑒫𑒞𑒲 𑒦𑒫' 𑒂𑒬𑒲𑒩𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒧𑒲 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒿𑒑 𑒦𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒂𑒥 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒧𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒿𑒑 𑒣𑒳𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒏𑒧𑒰𑒏𑓄। 𑒏𑒞𑒱𑒣𑒨 '𑒣𑒞𑒱' 𑒧𑒹 '𑒞𑒿' 𑒁𑒏𑓂𑒭𑒩𑒏 𑒨𑒼𑒑 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞

ছল্হি। পহিল্বক চেনা চৈনা চিবৈত ছন, আৰ ছৈনা ৰনন ফিৰৈত অছি। ছৌঁড়া সভ ছীঁট পহিবয নাগন অছি, ছৌঁড়ী সভ সূঁট কসয নাগন অছি। চিত্ত-পটপব চিত্রপট অঁকিত বহৈত ছৈক। বানী সভ নীডবানী ৰনি গেনীহ। বাজনেত্রী নোকনি অভিনেত্রীক কান কাটি বহন ছথি। পহিনে অপ্সবা হোগ ছনীহ, আৰ অফসবা হোগ ছথি। 'ফৈশেন' ও 'পৈশেন' দিনদিন ৰঢ়ন জাগত অছি। .....

তহিনা, 'অংগবেজিযা বাবূ' নামক কথামে অংগবেজিযতক ভদ্দা নকনপব জৰৰ্দস্ত উঁপহাস কযন গেন অছি। অতএব ঞা কহৱ জে হবিমোহন ঝা অংগবেজী পঢ়িকহ অংগবেজী সভ্যতাপব নষ্ট ভহ গেনাহ আ অপন সংস্কৃতিকেঁ নিখষ্ট মানি নেননি-সত্যসঁ দূব হোযত।

ঞা বিশেষত: ধ্যান দেবাক বাত থিক জে কবীশ্বব ভাষাকেঁ মজবাক মহত্ কাজ জে পদ্যক মাধ্যমসঁ কযননি, তকবা হবিমোহনঝা অপন গদ্য দ্বাবা আশ্চর্যজনক রূপসঁ আকাশি ঠেকা দেননি।

<u>मखान खानि ओ मिथिला</u>

मिथिलाक लोक एतेक सरस, मैथिली भाषा एते मृदुल, एहि ठामक भूमि एते उर्वर, उपजल एते सघन आ हरियर कंचन अछि– तकर कारण की ? की ओ नहि जे एतए जलाशयक अगार अछि, नदी पोखरि डबरा अपार अछि ?

मिथिलामे समुद्र नहि छै, तेँ एहि भूमिक वासीक स्वभाव लोनछराहल नहि लागत, लोक "अथाह" नहि भेटैत। मिथिलामे गंगा बहै छथि,तेँ समाज पवित्र अछि; मधुर जनक प्रवाह चलै छै, तेँ लोकोमे मधुरताक तरंग उछलैत देखब। पानिक एतए कमी नहि, लोकक आँखियोमे "पानि" भेटि जाएत।

कवीश्वर चन्दा झा मिथिलाकेँ नदी-मातृक देश ओहिना नहि कहने छथि–

नदी-मातृक क्षेत्र सुन्दर शस्य सौं सम्पन्न
समय सिर पर होय वर्षा वहुत संचित अन्न
दयाहृत नर सकल सुन्दर स्वच्छ सभ व्यवहार
सकल विद्या-उदधि मिथिला विदित भरि संसार

नदिए नहि, पोखरियोक प्रधानता अछि एतए। एहन कोनो गाम नहि, जतए दू-चारि दस-बीस छोट-पैघ

পোখবি নহি হো। সৈকড় া বর্ষ প্ববান এহন-এহন সযক ধক পোখবি এখনো এত২ খছি জকবা "দৈতা পোখবি" কহন জাগছ, মানে কোনো দৈৎ খারিক২ ওকবা খূননে ছন! মনুক্খ বূ্তে কতহ্ ওতে টা পোখবি খূনন হোগ! তহিনা, বঁড়কা পোখবিমে "মহবাজী পোখবি" সভ খছি। ছোট-মোট তঁ কৈযন হজাব হোযত।
তেঁ, মিথিনামে জনকবক চননি বঁসী। জনক সর্বপ্রধান ফসিন থিক- মখান। মখান- ওা শঙ্খ ধ্যানমে খরিতহিঁ মিথিনাক খনুপম ব্যক্তিত্ব সাকাব ভ২ উঁঠৈছ। এহন ব্যক্তিত্ব জকব জোড় নহি- খদ্বিতীয।
মখান, কহন জাগছ, স্বর্গোমে নহি ভেটৈছ। দেবতাসভকেঁ মখানক তস্খ নে২, পাগ কযন মখানক ফোঁকা নে২ মন জখন ননচায নগৈ ছনি তঁ মিথিনামে জন্ম নৈ ছথি খা জীহকেঁ জূ্ড়বৈঁ ছথি।
মিথিনাক এক খাস পার্বনি থিক কোজগবা- উঁন্নাসক পার্বনি, উঁমংগক পার্বনি, নক্ষ্মীক খাবাধনাক পার্বনি। ওহি দিন মখান পবসবাঁক প্রথা খছি। সে মিথিনেমে খছি। মখান মিথিনাক খাস বৈশিষ্ঠ্য বঁনি গেন খছি। তেঁ, এহি ঠামক সাহিত্যমে মখান প্রবেশ ক২ গেন খছি। খনেক সাহিত্যকাব কোনো-নে-কোনো প্রসংগমে একব নাম নেনে ছথি। জাহি বচনামে মখান শঙ্খ খারি গেন খছি, ও বচনা ওহনে ননিতগব-দেখনগব, ওহনে কোমন-নির্মন, ওহনে হ্নসগব-স্বখদগব ভ২ গেন খছি। কবিবব সীতাবামঝাকেঁ ভগবানস বামক স্বযশীক নির্মনতা খা মহিমাক ব্যাপকতা দেখযবাঁক ভেননি তঁ কহি উঁঠনা-
খাশ্বিনীক চান জকাঁ
দহী ও মখান জকাঁ
বাম-যশী প্রান জকাঁ

রিশ্বমে পসবি গেল।

করিরব সীতাবামঝা এক ঋালো প্রসংগমে, লক্ষ্মী-পূজাক
নৈরেদ্যক ঋংগ-ৰূপমে, মখানক নাম লেলে ছথি-
পূজথি লক্ষ্মী-পদ নরেঁদ দয মধ্ব মখানক।
ঋপনহুঁ খাথি প্রসাদ ভাগ ধনি তাহি কিসানক॥

মখানক উল্লেখ কযনিহাব মৈথিলী সাহিত্যকাবক কমী নহি ঋছি, কিন্তু এতহ তীন করিক মাত্র চর্চা কবহ চাহবঁ। পহিল ছথি করিচূড় ামণি মধ্প, জনিক ঋরিস্মবণীয করিতা "কোজগবাক মখান" ঋছি। দোসব ছথি মংত্রেশ্বব ঝা, জনিক গীতপোথীক নাম থিকনি- "পান এতৈএ মখান এলৈএ"। তেসব থিকা গোপানজী ঝা "গোপেশ" জে ঋপন পোথী "মখানক পাত" সঁ কতেকো গোটৈক ফ্নহঁ পোছহ চাহললি।
মধ্পক "কোজগবাক মখান"ক রিষযরস্তু উঁচ রস্ত্র দ্বাবা দলিতপব কযল গেল ঋত্যাচাবপব ঋাধৃত ঋছি। ওা করিতা রস্ত্র-রৈষম্যকেঁ উঁঘাবিকহ বাখি দেলে ঋছি। মধ্প করুণবসক মহান করি থিকা। এতহ এক ফোঁকা মখানসঁ করি করুণাক নির্ঝবিণী বঁহা দেলে ছথি। কিন্তু, তাহিসঁ পহিলে উঁসেরক জীরন্ততা দেখল জায-

ঋারাঁনরৃক্ষ জুটি বহল-
ঋাসমর্দে রিদীর্ণ জন্ম যুগ্ম কাল
মিলি হমহুঁ তাহি মানর-নিধিমে
রঁহি গেলহুঁ ন গুনি ঋপমান-মান,
কহুঁ দূ ফোঁকা, কহুঁ এক
কতহু নহি সেহো

𑒞𑒹𑒯𑒢 𑒧𑒯𑒑𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒢,
𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒯𑒼,
𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒢𑒱𑒬𑒱𑒧𑒹 𑒏𑒯𑒳𑒢𑒰
𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨 𑒟𑒱𑒏 𑒂𑒑 𑒧𑒐𑒰𑒢 𑒣𑒰𑒢।

𑒞𑒰 𑒏𑒱 𑒍𑒯𑒲 𑒦𑒲𑒛𑓃𑒧𑒹 𑒋𑒏 𑒁𑒫𑒰𑒘𑓂𑒕𑒱𑒞 𑒕𑒾𑒿𑒛𑓃𑒰 𑒮𑒢𑓂𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒻। 𑒔𑒲𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒦𑓂𑒩𑒳𑒣𑒱𑒭𑓂𑒙𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒻। 𑒏𑒫𑒱𑒏 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒢𑒱–

𑒖𑒰𑒏𑒩 𑒮𑒧𑒲𑒣 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒢𑒱𑒑𑒰𑒯𑒱,
𑒠𑒹𑒐𑒱𑒞𑒯𑒱𑒿 𑒯𑒱𑒨 𑒏𑒯𑒪𑒏 𑒂𑒯𑒱! 𑒂𑒯𑒱!
𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒞𑓂𑒩𑒰𑒯𑒱!
𑒂 𑒂𑒥𑒱 𑒧𑒐𑒰𑒢𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳, 𑒑𑒹𑒪,
𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒩𑒱 𑒮𑒏𑒪 𑒋𑒏𑒼 𑒤𑒼𑒿𑒏𑒰,
𑒮𑒾𑒿𑒮𑒹 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒧𑒹 𑒕𑒻𑒏 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳
𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒏𑒝𑓂𑒚-𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒱𑒞 𑒤𑒼𑒿𑒏𑒰!

𑒋𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒳𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒟𑒱𑒏। 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒰𑒡𑒱𑒏 𑒧𑒐𑒰𑒢𑒏 𑒥𑒐𑒰𑒢 𑒑𑒲𑒞𑒏𑒰𑒫𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒗𑒰𑒏 𑒧𑒐𑒰𑒢-𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒞𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒑𑒲𑒞𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒹𑒮𑒿 𑒗𑒪𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱– “𑒣𑒰𑒢 𑒋𑒪𑒻𑒋 𑒧𑒐𑒰𑒢 𑒋𑒪𑒻𑒋”। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒩𑒞𑒹𑒥𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒫𑒮𑒩𑒣𑒩 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒫𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒩𑒯𑒰𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒥 𑒂 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒧𑒰𑒢𑒱–

𑒥𑒛𑓃𑒏𑒲 𑒣𑒱𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒗𑒧𑓂𑒯𑒩𑒾𑒛𑓃𑒱 𑒂𑒿𑒔𑒩 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒟𑒱 𑒥𑒻𑒮𑒪
𑒥𑒳𑒜𑓃𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩 𑒣𑒰𑒢 𑒔𑒱𑒥𑒰𑒥𑒟𑒱 𑒍𑓀𑒚𑒪
𑒪𑒕𑒧𑒢 𑒋𑒪𑒻𑒋 𑒏𑒱 𑒩𑒰𑒧 𑒋𑒪𑒻𑒋
𑒙𑒼𑒪-𑒣𑒛𑓃𑒼𑒮𑒏 𑒒𑒩-𑒒𑒩 𑒏𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒠 𑒋𑒪𑒻𑒋
𑒣𑒰𑒢 𑒋𑒪𑒻𑒋 𑒧𑒐𑒰𑒢 𑒋𑒪𑒻𑒋
𑒡𑒲𑒨𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯𑒏𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢 𑒋𑒪𑒻𑒋।

মখান জহিনা স্বচ্ছ কোমল চিক্কন হোগছ, মখানক পাত তহিনা কঁটাহ খড়খড় আ ভৈনক্ষ্ক। এহিপব কহরিযো প্রসিদ্ধ ভ২ গেল- মখানক পাতসঁ ক্ষ্ক পোছর। একক আকাঙ্ক্ষা জখন দোসবাকেঁ সোহাগ নহি ছৈ তঁ অপন খোঁয় এদ্ধ তবহেঁ ব্যক্ত কবৈছ। অর্থাত, বড় নীক- নিক্ত চাহি ছথি তঁ বুঝথু, তেহন উপায কববনি জে নোচৈত বহিহথি অপন ক্ষ্ক! এহি কহবীক প্রযোগ ব্যংগ্যামে হোগ অছি। শীর্ষক- করিতামে করি তিলক- দহেজ লেনিহাব বাপ, সমাজক চবিত্রহীন ক্ষ্কপুরুষ, স্বার্থী নেতা, ছদ্মবেশী ভদ্রজন এবং সমাজকেঁ গর্তমে ঠেলনিহাব জতে তত্ত্ব অছি, সভকেঁ মখানক পাতসঁ ক্ষ্ক পোছি দেবঁ২ চাহি ছথি।

আগ প্রযোজন অছি-

জে ওহন-ওহন শিখণ্ডীক ক্ষ্ক

মখানক পাতসঁ পোছি দী

জে বেটাকেঁ বিক্রীক বস্তু বুঝি কএ

তিলক-দহেজকেঁ বঢ়বঁগত অছি

কন্যাগত কবেজ খখোবি কএ

অপন গচ্ছদেবতাক অর্ঘ্য চঢ়বঁগত অছি।

....

বন্ধু! তেঁ আগ প্রযোজন অছি

জে সমগ্র পবিবর্তন আনবঁ সর্জন লেল

কোনো অববোধক তত্ত্বক ক্ষ্খ

মখানক পাতসঁ পোছি দী

জে কার্যপালিকা, ন্যাযপালিকা আ বিধাযিকাক

গবিমাকেঁ ভংগ কবৈছ

আ বিধি-ব্যবস্থামে আস্থা বখনিহাব

शान्तिप्रिय लोककेँ थकाबएहुँ तंग करैछ।

मखान जे जलतलमे, पंकक परिसरमे जन्म लै अछि, से अपन गुणसँ भगवानपर माला बनि चढ़ै अछि, भोग बनि अर्पित होइत अछि, श्रेष्ठ पदार्थक मापदण्ड बूझल जाइत अछि, ततबे नहि, खेलाड़िबा बनिकऽ दुर्जनकेँ चेतौनियो दै अछि, अपन "पात"सँ रुसित ततेक्षक खेलौँ पोछै अछि। संसारक एहन दुर्लभ पदार्थ, जे मिथिलामे सुलभ अछि, तकर "मान" कतौ मैथिल साहित्यकार लोकनि नहि देखि! डॉ. बी.झाक धुनपर गुनगुनयबाक हेतु ककर मन नहि मचलि उठैत होयत ? —

चन्द्रमा उतरल गगनसँ
चाँदनीसँ नहाउ औ !
धान-पान-मखान-पूजित
मैथिलीकेँ जगाउ औ !



কুমাব বাধাবমণ

পাকিস্তান মে সেক্স-রিচাব

"রীমাব" এন ডী তিরাবী সং ফেব প্রমাণিত ভেন জে সেক্সবৃত্তি নহিং জাগত ছৈক। স্বর্গীয এন.টী.বামাবার কে ফগনা পব রঁস্তু খিস্সা সভ রঁহবাযন ছনৈক জে কোনা ও প্রতিমাহ কতেক হজাব টৈকা উঁত্তেজক দরাঁগ্র সভ কীনরাঁনেন খর্চ করৈত ছনাহ। স্বনরাঁ মেং খাযন খছি জে ওহী বামাবার পব বামগোপান রর্মা একটৌ ফিল্ম সেহো রঁনা বহন ছথি জহি মেং খপন রিহাবী রাঁর়ূ মুখ্য ভূমিকা মেং ছথি। দেখা চাহী জে ওহি ফিল্ম মেং এহি এংগন সং কিছু নর তথ্য প্রকাশি মেং খরৈঁত খছি কি নহিং। এস্কব খ্শিরংতো সিংহ খপন রঁহ্চর্চিত ক◌াঁনম রঁ্বা মানো যা ভনা মেং স্বীকাব কএনন্হি জে ও এতেক রঁূঠ ভেনহ্ পব এখনো কমানী কম্পনা করৈত ছথি।

সেক্স দেযা গএহ ধাবণা ছৈক জে কন্ধ খা রঁ্নূ খূরঁ ফদা রাঁজূ কিছু নহিং। সকদম ভেন বদ্ধ । ওশো

জহিনা ৰজনাহ কি আধ্যামিক সং হটা,সেক্সগ্বন্ধ কে টৈগ দ দেন গেননি। আৰ ও গপ্প দোসব ছৈক জে আগযো হ্নকব সংভোগ সে সমাধি কী ওবসভসং ৰেসী পঠন গেন ভাবতীয প্বস্তুক ছৈক।
কখনো পঠৰা মেং খৰৈত ছৈক জে সঙুদী খবৰ মেং সেক্স চর্চা পব আধাবিত এক কার্যক্রম মেং শামিন হেৰাক কাবণেং,এংকব কে 60 কোড় । নগএৰাক সজা স্থানীয খদানত স্বনওনক । সূডান মেং স্কর্ট পহিবনা পব এক টা কিশোবী কে 50 কোড় । নগনৈক। ওবান মেং জনানী সভ মেং মেকখপ ক কএ টৌরী পব খএৰাক মনাহী ছৈক । দেবৰদ দাৰুন উনূম কে কহৰ ছৈক জে কংডোম কে গস্তুমান উচিত নহি ছৈক। আওব ত আওব,গংডোনেশিযা মেং ৰনন এক তাজা কানূনক মোতাৰিক,খগিনা সান জং কোনো জনানী কে টাগট জীস মেং দেখন জেতৈক,ত ওকবা ওহী ঠাম,ত্তবংত স্কর্ট পহিবএৰাক ৰদোৰস্ত কএন জেতৈক। এনা মেং কে ৰাজত সেক্স পব। থোড় ৰহ্ত জং ৰজিতো ছথি ত প্বকখে সভ। হ্দা এম্হব একটা তথ্য প্রকাশ মেং আএন ছৈক জে জহি পাকিস্তান মেং তানিৰান দ্বাবা মহিনা সভহক নেন বুর্কা কেব খনিরার্যতা খথরা এক নিমিট সং ৰেসী নহি পঠৰাক তানিৰানী হ্ববমান জখন-তখন জাবী হোগত বহৈত ছৈক,ওহী পাকিস্তান মেং সেক্স রিষযক(যদ্যপি এহি মেং বাজনীতি পব সামগ্রী সেহো বহৈত ছৈক) একটা পত্রিকা ধমগিজ্জব মচা দেনে অছি। এহি পত্রিক কে ৰূপ মেং পাকিস্তানী মহিনানোকনি কেং একটা এহন মংচ ভেট গেন ছন্হি জহি মেং ও সেক্স পব খ্নি ক চর্চা ক সকৈত ছথি। এহিমৈগজীন কেং প্রৰংধক নোকনিক নেন, পত্রিকাক রেৰসাগট পব পাঠকীয

প্রতিক্রিযা কে সম্ভাবভ মোসকিন ভ বহন ছৈক। পঙিনা সান ওা মৈগজীন নামৌব কে দূ কন্যা- কৈনা পাশী খা সাবাহ স্বহৈন দ্বাবা শ্বৰূ কএন গেন ছন। নাম ছৈক- 'চে মৈগজীন'। পাকিস্তান মেঁ "চে" ওহিনা ছৈক জেনা হিঁদী মেঁ 'চ'। 'চ' সঁ রিঁখিন-রিঁখন গাবি সভ শ্বৰূ হোওত ছৈক খা মৈগজীন এহী 'চ' খক্ষব সঁ জ্ড়ৃন রিডঁরঁনা কে দেখারঁএ চাহিত ছৈক। রেরঁসাওষ্ট কে কহরঁ ছৈক জে সেক্স পব রাঁজরঁ রেঁজাএ বূঁঝন জাওত ছৈক,তেঁ দৈনিক জীরন কে খপ্রসন্নতা, হিঁসা, শৰ্ম, তনার খা সামাজিক কষ্ঠ কেঁ জাহিব কবরাঁক নেন ওা মৈগজীন শ্বৰূ কএন গেন ছৈক।

ওনা,মৈথিনীযো সাহিত্ মেঁ সেক্স কোনো নর রিষয নহিঁ ছৈক। করিকোকিন রিদ্যাপতি এহন কতেকো বচনা ক গেন ছথি জনিকা দেযা মহিনা প্রাফেসব নোকনি কে নহিঁ রঁ্ঝরাঁ মেঁ খরৈঁত ছন্হি জে ও কোনা পঠাওন জাএ। রামবতি পব খভিনর জযদের নিখৈ ছথিঃ- "কিঁকিনি কিনি-কিনি কঁকন কন-কন ঘন-ঘন নূপ্বব রাঁজে বতিবণে মদন পবাভর মানন জযজয ডিঁডিম রাঁজে"

চঁদা ঝা এহি তবহক বচনা সভ পব খিসিখাএন ছনাহ খা ও এহন বচনাকাব নোকনিকেঁ "রৌত্তক" কহরাঁ মেঁ সঁকোচ নহিঁ কেননি। রৌত্তক খর্থাত্ এহন জীর জকব দাঠী ত পাকন জা বহন ছৈক ঝদা উঁমব কে খ্যান নহিঁ কএ সঁভোগরৃতাঁত মেঁ ব্যস্ত খছি। ঝদা সেক্স রিষয কে নোকপ্রিযতা মেঁ সঁদেহ নহিঁ। ওা একটা তথ্য ছৈক জে ওঁটবনেট পব সভসঁ রেঁসী সর্চ সেক্স রিষয পব ভ বহন ছৈক। মোহন্না রঁ্নাঁগ পব সরিতা

ভাভী কে ন কএ বঁড্ড হো–হন্না মচনৈক। হানহি মে কনাডা মে ভেন একটা সর্বেক্ষণ কে নিষ্কর্ষ (http://krraman.blogspot.com/2009/12/blog-post_03.html) ছৈক জে পোর্ন সং কেও নহি বাঁচন অছি। বাহব গুরু–গম্ভীব বননা সং কী,সভ কেও কখনহু নে কখনহু কংপ্যূটব পব পোর্ন দেখনহি ছথি। সেক্স সংবঁধী আলেখক প্রতিক্রিয়া মে কতেকো পাঠক নিখৈত ছথি জে পূবা আলেখ পঢ়ি গেনহু মুদা কোনো "ঠোস" সেক্স–চর্চা নহি পাবি নিবাশ ভেনহু;সময "খবাব" ভ গেন। মিথিনো মে,এখন কংপ্যূটব কে পসাব ওতেক নহি ভেন ছৈক,তে কিছু গোটে বাঁচন ছথি। পাঠকনোকনিক রুচি জং নহি বহিতনি,তং সভ অখবাব মে কিএক বংগীন তস্বীব সমেত বোজ় কোনো নে কোনো সেক্স সংবঁধী খববি ছপিতৈক? আগযো,সময–সান পত্রিকা মে জে নতিকা জী কে নেখ ছপৈত ছনি,তেকব পাঠকীযতা বঁড্ড ছৈক।

শাবদা সিন্হা কতবো কহথি জে অশ্লীনতা নোকগীতক আমো কে মাবি দৈত ছৈক,মুদা নোকগীত মে প্রাবম্ভহি সং অশ্লীনতা কেব পুষ্ট বহন ছৈক। বিবাহো–দান মে জে গীতনাদ হোগত ছৈক,তহি মে বঁড়কা গামবনা সভ ত কিছু মর্যাদা বখৈত ছথি মুদা কনেক কম পবিচয বনা গামক অথবা আন জাতিক বিযাহ মে গীত–নাদ স্বনি কএ দেখিযউ। গহে–গহে সেক্স ভবন ছৈক।

সংসদীয সমিতি ভনে কহনে হুঅএ কি স্কূন মে সেক্স–শিক্ষা উঁচিত নহি হএত,মুদা কোনকাতা বিশ্ববিদ্যানয কে হিংদী বিভাগ কে প্রাফেসব শ্রী জগদীশ্বব চতুর্বেদী কে কহব ছন্হি জে "সেক্স" শব্দা কে

सघनीकवण,रूपान्तवण आ संशोधन कवैत छैक। एहि सं सेक्स के दायवा रॅंठ़ ेत छैक। सेक्स ,रिमर्श के दायवा सं रॉहिव नहिं हेवॅाक चाही। एकव गोपनीयता भंग भेनहि सं चुप्पी के कम कएन जा सकैत छैक।

फ्रूको के कहवॅ वहनि जे सेक्स कोनो एहन चीज नहिं छैक जकव अहां मूल्यांकन क सकैत छी। रॅंक्कि, सेक्स एहन चीज छैक जकवा निगमित कवए पड़ ेत छैक । ओकव क्षमता सार्वजनिक होगत छैक। एकवा नेन प्रवॅंधन प्रक्रिया के जरूवत होगत छैक। सेक्स पव प्वनिसिया पहवा ओकवा "टैवॅू" रॅंना दैत छैक। सम्पूर्ण नेटवर्क सेक्स के गर्द-गिर्द घूमि वहन छैक । कोनो ने कोनो रूप में, थोड़-रॅंह्त फर्क के साथ समस्त किस्म के रिमर्श पव ओकवा थोपि देन जागत छैक। सेक्स के नर दृष्ठि सं देखरॅ जरूवी भ गेन छैक । हम सभ अह्र तथ्य सं पविचित छीहे जे खासकए म्रुस्लिम महिलानोकनिक ग्रा समस्या गंभीव छनि जे हुनकव पति खाड़ ी आ अववॅ देशे में कतेको सान धवि रॅंरी-रॅंचा सभ के छोड़ ि कए नौकवी कवैत छथि जखन कि गस्लाम में कहन गेन छैक जे पति के अपन पनी सं,चावि महीना सं रॅंसी अनग नहिं वहवॅाक चाही। सेक्स देया जरूव्क रॉत हेतैक,ओकव ओतवॅ स्वत:-स्फूर्ह्त उंपकवण आगू आओत। एतवॅा जरूव जे ग्रा काज सीमित आ सतर्क ढंग सं संहितारॅङ्क हेवॅाक चाही।



डा. शंकवदेवझा, कर्निनप्वव, नहेविेयासवाय, दवभंगा– ४४६००१

मिथिनाक विस्मृत वाजधनी देवकुनी

मध्यकानमे मिथिनामे बॅह्तो नगवक स्थापना भेन तँ बॅह्तो नगव विभिन्न कावणसँ उजड़ित चन गेन । तथापि एहि नगव सभक ध्वंशावशेष आगयो मिथिनाक ताहि दिन्वक समृ(कि गौवव–गाथाक गान क वहन अछि । ओइनिवाव वाजवंशक शासन कानमे एहि वंशक वाजा नोकनि अपन अन्य कतोक महत्वपूर्ण काव्य

ও ঙঁপনরি্ংক সংগ-সংগ কতেকো নগবহ্ক স্থাপনা কযননি । প্রশাসনিক দৃষ্ঠিকোণ ও স্ববক্ষাকে ঁ ধ্যানমে বাখি ক এহি রংশক বাজা নোকনিক রঁসাওন খনেকশঃ নগব খাগযো খরশিষ্ঠ ৰূপমে রত্তমান খছি । এহী কোটিক একটা প্রাচীন নগব খছিμ দেক্ষনী । ঙা দেক্ষনী দবভংগা জিনা ক্ষখযানয নহেবিযাসবাযসঁ ক্ষশিকনসঁ তীন-চাবি কিনোমীটব দছিন-পূৰ্ব দিসামে নহেবিযাসবায-হথৌড় ী সড়কক পূৰ্বমে স্থিত খছি । ¯করদন্তী ও প্ববাতাতি্বক মহত্বক রস্তুসঁ যঞ্চ ঙা গাম কহিযো মিথিনাক বাজধনী ছন জকব স্থাপনা ওগনিরাব রংশীয নবেশ দেরসিংহ তেবহম-চৌদহম শতাব্দীক সংগম কানমে কযনে ছনাহ ।

ওগনিরাব বাজরংশক পূর্ব বাজধনী ওগনীমে ছন । ক্ষদা ওগনিরাব রংশমে খপনামে মিথিনা বাজ্যক রঁটরাবা দূ ভাগমে ভেনাক কাবণে বাজধনী ওগনীমে দূনূ শাখাক একে সংগে বহরঁ সম্ভর নহি বহি গেন তে ঁ ওগনিরাব রংশক সংস্থাপক কামেশ্ববঠাক্ষবক জেঠ প্বত্রা ভোগীশ্ববক বাজধনী ওগনিযেমে বহননি । ক্ষদা দোসব প্বত্রা ভরেশ্বব প্রসি(ভরসিংহ খপন বাজধানী দবভংগাসঁ দছিন রাঁগমতী নদীক তটপব স্থিব কযননি ।১ ভরসিংহক প্বত্রা ও হ্নক ঙঁত্তবাধিকাবী দেরসিংহ জখন বাজা ভেনাহ তখন ও খপন বাজধানী এহি ঠামসঁ কিছু পূৰ্ব হটি ক রঁসৌননি জকব নামকবণ ও দেরক্ষনী কযননি ।২ দেরসিংহকে ঁ খপন পিতাসঁ ঙঁত্তবাধিকাবমে সমস্ত মিথিনা বাজ্য প্রাপ্ত ভেননি । কিএক তঁ ওগনী স্থিত ভোগীশ্ববক পৌত্রা বাজা কীর্ত্তিসিংহ নিঃসন্তান ভেনথিন । খতঃ হ্নকো হিস্সাক বাজ্য ভরসিংহকে ঁ ভেটননি । খতএর দেরসিংহকে ঁ সমগ্র মিথিনাক

শাসনসূত্রা সম্ভাবরাঁক সৌভাগ্য প্রাপ্ত ভেননি । দেরসিংহক রিরুদ 'গরুড়নাবাযণ' ছননি ।৩ দেরসিংহ সম্ভরতঃ দেরকুনী বাজধনীক খতিবিক্তা খপনা নামপব তীন গোট ওবো দেরকুনী নামসঁ উপনগবী রসৌননি । রিবৌন প্রখংড খন্তস্থাত রহেড়ে ী–সিংঘিযা ক্ষখযপথপব একটা হাঁসী দেকুনী খছি জে 'ধম' নামসঁ প্রসি(খছি ।৪ ধ্যাতর্য খছি জে দেরসিংহক পনীক নাম হাঁসিনী রা হংসিনী ছননি । হাঁসী রিশেষণ রস্তুতঃ হুনকে নামক কাবণে খছি । দোসব, দবভংগা–রহেড়ে া ক্ষখযপথমে দছিন দিস কমনা নদীক পশ্চিমী তটপব খরস্থিত খছি সে সম্প্রতি দেকুনী চট্টী নামসঁ খযাত খছি ।৫ তেসব দেকুনী সীতামঢ় ী জিনামে খরস্থিত খছি জত ভুরনেশ্বিবনাথ মহাদেরক প্রাচীন মন্দিব ছনি । একব খতিবিক্ত এত একটা প্রাচীন গঢ় ীক খরশেষ খছি জকবা সম্বন্ধমে কিংরদন্তী ছৈক জে ও মহাভাবতকানীন বাজা দ্রুপদক গঢ় থিকনি ।৬ খস্তু মিথিনামে দেকুনী নামক এখন খ্রি জে কোনো স্থান দৃষ্টিপথপব খাযন খছি তাহিঠাম প্রাচীন নগব, ভরন, মন্দিব খাদিক প্রচুব খরশেষ রিত্যমান খছি । উনৈসম শতাব্দীক উত্তবাব্(মে নিখিত খাগনা–এ–তিবহুতমে সেহো তীন গোট দেকুনীক উল্লেখ ভেন খছি জকব প্রসি(শিরতীর্থস্থানক রূপমে কহন গেনৈক খছি । এহি পোথীক খনুসাব একটা দেকুনী, রিরবা পবগনামে খছি জাহিঠাম একটা মহাদেরক মন্দিব খছি । দোসব দেকুনী, পবগনা জখনপুবক খন্তব্গত খছি জাহিঠাম দ্ররুশ্বিবনাথ মহাদেরক মন্দিব ছননি জে ধ্বস্ত ভ গেন ছন । তথাপি মন্দিবক খংডহব রিত্যমানে ছনৈক । নেখকক খনুসাবেঁ এহি মন্দিবক চৌখটিমে একটা খভিনেখ উকৌর্ণ ছন জাহিমে একব

নির্মাতাক নাম স্বখদের সাহ্ খংকিত ছল সংগহি একব নির্মাতা দ্বাবা তেবহ বীঘা জমীন শিরোত্তবক ৰূপমে মৌজা পিপবামে দেন জযবাঁক সূচনা সেহো খংকিত ছল । খাগনা–এ–তিবহুতক খন্বসাব তেসব দেক্ষনীক খরস্থিতি পবগনা–ৰঁসাবামে ছৈক জাহি ঠাম বৃ(রাণেশ্বব মহাদেরক মন্দিব ছনি । নেখকক খন্বসাব রাচস্পতিমিশ্র নামক একটা মৈথিন ব্রাহ্মণক ভায ভানিরাণমিশ্র এহি মহাদেরক স্থাপনা কযনে বহথি । হ্নকা খন্বসাবেঁ মন্দিব চাবি সয রর্ষ প্বান খছি । সংক্রান্তিক খরসবপব এত বঁড় পৈঘ মেনা নগৈত ছৈক ।৭

খাগনা–এ–তিবহুতমে দেন গেন উপর্যুক্ত তীন্ দেক্ষনীমে দূটা দেক্ষনী কোন খছি সে খন্বসহ্মনক রিষয থিক, ক্ষদা তেসব দেক্ষনী জাহিঠাম বৃ(রাণেশ্বব মহাদের স্থান হোযবাঁক উল্লেখ ভেন খছি সে সম্ভরতঃ খানোচ্য দেক্ষনীসঁ

সন্দর্ভিত নগৈত খছি । যদ্যপি একব নেখককেঁ মহাদেরক নাম ও পবগনা খাদিক সম্বন্ধমে পূর্ণ সূচনা নহি ভেটি সকননি তেঁ ভ্রমরশ একব পবিচয দেরাঁমে গনতী ভেননি । কিএক তঁ এহ্ন দেক্ষনীক প্রসি(একটা শিরতীর্থক ৰূপমে খছি । এহি ঠাম খভিনর রব(মান উপাধ্যায দ্বাবা স্থাপিত একটা শিরনিংগ খছি জে হ্নকহি নামপব রব(মানেশ্বব স্থানক নামসঁ খযাত খছি । সম্ভরতঃ একবে খাগনা–এ–তিবহুতমে বৃ(রাণেশ্বব কহি দেন গেন খছি ।

দবভংগা জিনামে পবগনা পূবরঁ ভীগোক খন্তর্গত মৌজা ও গাম দ্হ্ন নামসঁ দেক্ষনী খছি জকব বকরাঁ ৩২৩ বীঘাক কহন জাগত ছৈক । ব্রাহ্মণ সহিত রিভিন্ন জাতিক নগভগ ছও হজাব খাবাঁদীরনা

ई गाम कतेक प्राचीन अछि से देखलहिसँ ज्ञात होइत अछि । नहेबियासवाय-बँहेड़ ी सड़कक पूर्व दिस अवस्थित एहि गाममे प्रवेश कवितहिँ प्रतीत होअ लगैत अछि जे कोनो प्राचीन नगवमे प्रवेश क बहल होइ । सम्पूर्ण गाम कोनो प्वबान डीहपव अवस्थित बुझाइत अछि । गाममे देवनीक प्राचीनता ओ ओइनिबाव बाजवंशकालीन घटनासँ सम्बद्ध कतोक किवदन्ती सब प्रचलित अछि जकव सम्पुष्टि गाममे यत्रा-तत्रा छिड़ि आयल प्राचीन बाजचिब् ओ प्वबावशेष सबसँ होइत अछि ।

दिवनी ओइनिबाव वंशक बाजधनी छल जकवा देवसिंह बसौने बहथि एहि बातक समर्थन मिथिला इतिहासक आद्य संग्राहक चन्दाझा ;१+३१-१९०७ह्न+, म.म. पवमेश्वबझा ;१+३६-१९२४ह्न९, म.म. मुकुन्दझा बखशी ;१+६९-१९०७ह्न१०, बायबहादुब श्यामनाबायणसिंह११, पी.सी. बायचौधुबी१२, डा. उपेन्द्रठाकुब१३ प्रभृति इतिहासकावलोकनि कयलनि अछि । स्वभावतः ई जिज्ञासा भ सकैत अछि जे बाजधनीक हेतु देवसिंह एहि पविसवक चुनाव किएक कयलनि । एहि जिज्ञासाक उत्तव एहि पविसवक भौगोलिक बनावट दैत अछि । पूर्वमे एहि गामक उत्तव, पश्चिम ओ दक्षिण होइत एकटा नदी बहैत छल जकवा सम्प्रतिमे हुड्डमंगला कहल जाइत छैक । एहि नामक नदीक सम्भवतः एखन धवि कतहु उल्लेख नहि भेटैत अछि । नदी आब मृत भ चुकल अछि, मुदा एकव सिवआव एखनहुँ विद्यमाने छैक । ई नदी एहि पविसवके ँ तीन दिससँ प्रायद्वीप जकाँ घेवने छैक । सम्भवतः ई नदी बागमतीक प्वबान धव छल जकव चिब् नहेबियासवाय शहवमे एखनहुँ छैके जे

করিনপ্পব ও ডবহাব হোগত খাগা জা ক দছিন হ্মহে ঁ ঘ্মি গেন খা ওহিঠামসঁ দেহ্মনীক সীমামে পহুঁচি প্পনঃ পছিম দিস ঘ্মৈত খাগূ জায দছিন–পূর্ব হ্মহে ঘ্মৈত কমনামে জা ক মিনি জাগত খছি । দেরহ্মনী নগবক স্ববক্ষাক নেন এহি নদীক উঁপযোগিতা ও নদী তঁরবর্ত্তী পবিসব দেখিএ ক দেরসিংহ একবা বাজধনী বনৌনে হোযতাহ । ওনা দেহ্মনীসঁ পূর্ব একটা প্রাচীন স্থান খছি জে সকবী ডীহক নামসঁ জানন জাগত খছি । ঝিয়্কা, ওঁটে খাদিসঁ ভবন এহি ডীহক সম্বন্ধমে কহন জাগছ জে ও ওগনিরাবসঁ পূর্ব মিথিনাপব শাসন কযনিহাব কর্ণাটবংশীয বাজা শক্তিসিংহ ̄করা শত্রসিংহক ডীহ ছননি । তাপের্য যৈহ জে দেহ্মনী পবিসব পূর্বহিসঁ নিরাস স্থানক যোগ্য ব্রুমন জাগত বহন খছি । দেহ্মনীক উঁত্তবমে হৃঞ্জমংগনা নদীক কছেড়পব একটা উঁচগব ডীহ সন জমীন খছি জকবা স্থানীয নোক নবেনা বাঁধ্ কহৈত ছৈক । ও নবেনা শঙ্খ কদাচিত্ ওগনিরাববংশীয বাজা নোকনিক বিরুদ নাবাযণক রিগ্রত রূপ হো তঁ কোনো খাশচব্য নহি । নবেনা পব সঘন খড়হোবি খছি ।

গামক নোকক কহবঁ ছনি জে দেহ্মনীমে জে হ্মখয ডীহ খছি তাহিমেসঁ খনেক রেব পাথবক জাঁত, উঁকখবি খাদি বহবাযন । প্পবান ওঁটক দেরানক খরশেষ সভ ছন জকবা নোক নঠ্ঠ ক দেনক । ডীহক একটা খংশকে ঁ হথিসাব কহন জাগত খছি । গামমে কতোক প্রস্তব স্তম্ভ খল্ড সব যত্রা–তত্রা পড়ন খছি । সম্ভরতঃ একব উঁপযোগ ভরন নির্মাণমে কযন গেন হোযত । গামক উঁত্তবপূর্ব খর্থাত্ ওশান কোণমে জে প্রাচীন রব(মানেশ্বব স্থান খছি তাহিমে দূটা কাবী বংগক শিল্পিত খল্ডিত প্রস্তব স্তম্ভ পড়ন খছি । একটা এহনে

তবাসন, খত ৰঁনাযন প্রস্তুব খল্ড বামননাম্না ঋধিরঞ্জাক ৰাঁবীমে ঋা দোসব পূর্ব ষ্মখিযা বাজাৰঁনীম্নাক ঘবমে ৰঁন্দ বাখন ঋছি । গামমে কমসঁ কম সাতঠা পোখবি ঋছি জাহিমে সৰঁসঁ প্ববান ও গহীব পোখবি গামক দছিনমে ঋছি জকবা পতোবিযা পোখবি কহন জাগত ছৈক । গামক নোকক ঋন্বসাব এহি পোখবিমে এক ৰেঁব পানি কম ভেনা উঁত্তব একঠা রিশান শিনাখংড দেখন গেন ছনৈক জকবা কতৰোঁ প্রযাস কযনোপব ৰঁহাব নহি কযন জা সকন । পহিনে এহি পোখবিক মোহাব ততেক উঁচ ছনৈক জে নীচাঁসঁ পোখবি নহি দেখাগত ছনৈক । রর্ত্তমানমে মোহাবক মাটি কাটি ক হটা দেন গেনৈক ঋছি । ¯করদন্তী ঋছি জে দেক্ষনী ডীহ নামসঁ ৰীচ গামমে জে স্থান খযাত ঋছি ওত পহিনে বাজভরন ছনৈক ঋা বাজভরনসঁ পতোবিযা পোখবি ধ্রি একঠা স্ববংগ ৰঁনন ছন । বাজপবিরাবক মহিনা নোকনি ওহী স্ববংগ হোগত পোখবিমে স্নান কববৰাঁক হেত্ত ঋৰৈঁত ছনীহ ।

নিশ্চিত রূপসঁ দেক্ষনীমে প্রাচীনতাক ৰঁহ্তো চিব্ রিদ্যমান ঋছি । দেরসিংহক বাজধনী হোযৰাঁক কাবণে ওা মানন জযৰাঁক চাহী জে এহী নগবমে ও স্বর্ণত্তিনা মহাদান ও গজবথ মহাদান সন প্রসি(ঋন্বষ্ঠানক ঋাযোজন কযনে হোযতাহ ।১৪ ওাহো মানন জযৰাঁক চাহী জে শিরসিংহক বাজ্যাবোহণ এহী নগবীমে ভেন হোযতনি । সংগহি ওাহো কহৰাঁমে তাবতম্য নহি জে মহাকরি রিদ্যাপতিক চবণ এহি নগবীমে পড়নে হোযতনি । এহি নগবীমে বহি রিদ্যাপতি ঋপন কোমনকান্ত পদারনীক ৰঁহ্তো ঋংশিক বচনা কযনে হোযতাহ । শিরসিংহসঁ পহিনে দেরসিংহক ঋাশ্রযমে বহন রিদ্যাপতি ঋপন কতোক পদমে দেরসিংহ্ক নাম নেনে ছথি ।

প্রমাণস্বরূপ দেখল জা সকৈত খছি রিদ্যাপতিক কিছু পদক ভনিতা খংশীµ

ভনে করি রিদ্যাপতি,
খবে রব জউঁরতি
মধ্‌্ করবে ঁ পাওঁনি মানতি প্বফননী ।
হাসিনি দেরি পতি
দেরসিংহ নবপতি
গরুড নবা× ান বঘব্‌ে ং ভুননী ॥ ১৯

রিদ্যাপতি ভূপবিক্রমা নামক গ্রন্থ দেরসিংহহিক খাগাসঁ নিখনে ছনাহ ।১৬ দেরসিংহক বাজত্বকানক সমযমে তিবহুতপব দিল্লী ও রঁগানক ম্নসনমান শাসক দ্বাবা সংযুক্ত রূপসঁ হমনা কযন গেন ছন । এহি যু(ক নেতৃত্ব শিরসিংহ কযনে বহথি, সে রিরবণ রিদ্যাপতি বচিত কীর্ত্তিপতাকাসঁ প্রাপ্ত হোএত খছি । এহি খাকমর্ণসঁ দেফনী বাজধনী পব কোন তবহক প্রভার পড়ন ‑করা ওা যু(কত নড়ন গেন সে সূচনা নহি ভেটৈত খছি । ম্নদা ও যু(কতেক ভীষণ ছথি ও দেরসিংহক সৈন্য শক্তি কতেক সরঁন ও সংগঠিত ছননি তকব রিস্তৃত রব্ণন কীর্ত্তিপতাকামে ভেন খছি ।১৭ কীর্ত্তিপতাকামে পক্ষ–রিপক্ষক ফন একাসী গোষ্ঠ ঐতিহাসিক ব্যক্তিক নামোল্লেখ ভেন খছি । জাহিসঁ সমকানীন বাজনীতিমে ওগনিরাব বাজরংশক পবাক্রম ও ওকব বাজনধনী দেরফনীক গবিমাপব প্রকাশ পড়ৈত খছি । সংগহি ওহি যু(মে তিবহুতক রিজয ভেন ছন । ও দিল্লী তথা রঁগানক সেনা খপন সমস্ত শক্তি গমা পীঠ দেখা মৈদানসঁ ভাগি গেন ছন । খপনা সমযমে খপবাজেয রূঁমন জাযরনা দিল্লীক স্বনতান ও ওকব সহযোগী রঁগানক শাসক খপমানজনক পবাজয একটা খাশ্চর্যজনক

घटनाक रूपमे गतिहासक पृष्ठमे अंकित भ गेल । विद्यापतिक पुरुष परीक्षाक अन्तमे तथा विद्यापतिकेँ देल गेल विस्फी ताम्रपत्रमे गजनी ओ गौड़ ;बंगालद्ध क शासककेँ पराजित कयनिहार विजेताक रूपमे शिवसिंहक प्रशस्ति कयल गेल अछि ।१+ निश्चित रूपसँ एहि ऐतिहासिक तथ्य सबसँ जानल जा सकैछ जे अपना समयमे मिथिलाक राजधनी देवकुली कतेक उतार–चढ़ावकेँ देखलक, कतेक घटनाक ओ साक्षी रहल ।

देवकुलीक ऐतिहासिक महत्त्व तँ अछिहे संगहि एकर महत्त्व धर्मिक दृष्टिएँ सेहो अछि । तकर कारण अछि एहि गामक उत्तर–पूर्वमे अवस्थित प्रसि(वर्(मानेश्वर स्थान । गामक लोकमे किंवदन्ती प्रचलित अछि जे ओ वर्(मानेश्वर महादेव अंकुरित शिवलिंग थिकाह । ओइनिवार राजवंशक आश्रित एकटा वर्(मान नामक राजपंडितकेँ एहि शिवलिंगक दर्शन भेलनि । तेँ हुनके नामपर एकर वर्(मानेश्वर नामकरण भेल ।

के छलाह ओ वर्(मान ? ओ जिज्ञासा स्वाभाविक रूपसँ होइत अछि । मिथिलामे दूटा वर्(मान भेल छथि । पहिल जनिका वृ(वर्(मान कहल जाइत छनि से सविसरबे छाजल मूलक गंगेश उपाध्यायक पुत्र ओ प्रसि(नैयायिक रहथि । हिनक स्थिति काल तेरहम शताब्दी मानल जाइत छनि ।१९ दोसर वर्(मान उपाध्याय छलाह बेलौंचय मूलक ब्राह्मण जनिक पिताक नाम भवेश ओ माताक नाम गौरी छलनि । धर्मशास्त्रक पंडित एहि वर्(मानक विशेषण अभिनव छलनि ।२० अभिनव वर्(मान धर्मशास्त्र विषयक अनेक ग्रन्थक रचना कयलनि जाहिमे गंगाकृत्य विवेक, गया प(ति, दण्ड

রিরেক, দ্বৈত রিরেক, পবিভাষা রিরেক, শ্রা(প্রদীপ, স্মৃতি তত্ত্বামৃত অথরা স্মৃতি তত্ত্ব রিরেক, স্মৃতি তত্ত্বামৃত সারো(াব, স্মৃতি পবিভাষা, জনাশযাদি রস্তুরিধ্ গন্নাদি প্রসি(ছনি ।২১ খভিনর রব্(মান রিদ্যাপতিযে জকাঁ দীর্ঘজীরী ভেনাহ । ওগনিরাব রংশক বাজাদেরসিংহসঁ নক ভৈবরসিংহ পর্যন্ত থ্রি ঙা ধ্মাৎকিবণিক ;ন্যাযাৎকিাবীঙ্ক পদকে ঁ স্বশোভিত কযননি ।২২ যেহ খভিনর রব্(মান উঁপাধ্যায বাজধানীক ৰূপমে দেরক্ক নী নগবী রঁসনাক রাঁদ রব্(মানেশ্বব মহাদেরক স্থাপনা কযননি । সম্ভর থিক জে রব্(মান এহী দেরক্ক নী বাজধনীমে বহি অপন ধর্মশাস্ত্রা রিষযক কতোক গ্রন্থক বচনা কযনে হোথি । এহি রব্(মানক খ্নাওন একটা পোখবি নাবী–ভদৌন গামমে এখনহুঁ রিদ্যমান অছি । মঠিযামী নামসঁ প্রসি(এহি পোখবিক পনিন্নাও তেবহ রীঘামে ছন । পোখবিক সংগ রব্(মান একটা রিষ্ণুক মন্দিব সেহো রঁনরৌননি জে কানান্তবমে ধ্বস্ত ভ গেন ।২৩ ওহি মন্দিবক একটা প্রস্তব স্তম্ভ পূর্রমে হাটী কোঠীমে বাখন ছন জকবা পছাতি উঁঠা ক নক্ষ্মীশ্বব সিংহ সংগ্রহানয, দবভংগামে আনি ক বাখন গেনৈক । এহি স্তম্ভমে তিবহ্তামে দূ পাঁতীমে একটা খভিনেখ উঁকীর্ণ অছিμ
জাতো রংশে রিন্নপ×চাভিধনে ধর্ম্মাধ্যক্ষো রব্(মানো ভরেশাত্ ।
দেরস্যাগ্রে দেরযষ্ঠিং ধ্বজাগ্রাৰূঢ় ং হ্নুনা স্থাপযদ্বনতেযম্ ॥

পন্দ্রহম শতাব্দীমে মিথিনাক বাজধনী দেরক্ক নীমে স্থাপিত রব্(মানেশ্বব মহাদেরক মন্দিব কোন ৰূপক রঁনন ছন হোযতনি তকব কোনো প্রমাণ নহি অছি । হ্নদা উঁনৈসম–রীসম শতাব্দীক সন্ধিকানমে দেক্ক নী ও রব্(মানেশ্বব স্থানক স্থিতি কোন তবহক ছন তকব রিরবণ

ম.ম. পবমেশ্বিবমা নিম্নরুপক দেনে ছথিμ দেরসিংহ খপনা সমযমে...দড়া ভংগা কোষ্টসঁ দক্ষিণ এক কোশসঁ কিছু উঁপব দেরকনী ;দেকনীহ্ম নামক বাজধনী রঁসৌনহ্মি ওহিঠাম এখন পর্যন্ত খহন্ত উঁচ ডীহ খছি জাহিপব সাধ্রণ রঁস্তী সম্প্রতি রঁসন খছি । ওহ রঁস্তীক ঞশানকোণ স্থানমে স্মার্ত্ত নিরঁন্ধকর্ত্তা ধ্মাধিকাবী খভিনর রব(মান উঁপাধ্যাযক স্থাপিত মহাদের 'রব(মানেশ্বিব' নামক ছথি হ্নক মন্দিবমে প্রাচীন সমযক জে এক–দ্গটা পাথবক খল্ড পড়ল খছি সে দেখৈক যোগ্য খছি যদ্যপি প্রাচীন মন্দিব তঁ ভগ্ন ভয গেল পবন্ত খপবপব কেও ধর্মিক ওকব জীর্ণো(াব কবৌনহ্মি খছি । এহি স্থানমে মকব ও শিরবাত্রিামে মেলা হোগত খছি ।২৪

পবমেশ্বিবমা মন্দিবক জে রিরবণ দেননি খছি সে মন্দিব খার্ব নহি খছি । তিবহুত স্থাপত্য শৈলীমে গম্বুদাকাব গর্ভগৃহ ও গজপীঠাকাব রঁবামদারনা মন্দিব ১৯++ক ভূকম্পমে ক্ষতিগ্রস্ত ভ গেল । পশ্চাত্ ওহি মন্দিবকে ँ তোড়া ওহি স্থানপব রর্ত্তমানমে নরীন মন্দিব রঁনাওল গেল খছি জে ১২+ পহ্মীট উঁচ খছি তথাপি ওহিমে স্থাপত্যক নে তঁ কোনো চমকোবে খছি খা নে দেশজ শিল্প খা সৌন্দর্যে । জেনা পবমেশ্বিবমা খপন রিরবণমে এহি মন্দিবমে এক–দূটা পাথবক খল্ড বাখল হোযর্ব নিখলনি খছি সে ঔখন পর্যন্ত মন্দিবমে রিদ্যমান খছি । একটা শিল্পিত পাথব খল্ড মন্দিবক ভীতবমে খছি জকব পূজা কযল জাগত খছি । দোসব একটা নমহব স্তম্ভ খল্ড মন্দিবক পূর্ব দিস পবিক্রমামে বাখল খছি । মন্দিবমে মধ্যমে জলঢবী সহিত কাবী পাথবক একটা শিরলিংগ স্থাপিত খছি জে পহ্মর্শসঁ নগভগ ডেঢ় পহ্মীট নীচাঁ হ্মল্ডমে খছি । শিরলিংগক শীর্ষ ভাগ

খণ্ডিত অছি । বুঝना जाগত অছি জে এহিপৰ কহিযো কোনো ধৰদাৰ অশ্ত্ৰাসঁ প্ৰহাৰ ক একৰা রিষ্ণত ক দেল গেল হো । মন্দিৰমে দূ গোট ওঁৰো শিরনিংগ রিনা জলঢৰীক স্থপিত অছি জে বংগ ও আকাৰ-প্ৰকাৰমে প্ৰধন শিরনিংগক সদৃশেহি অছি । মন্দিৰক ভীতৰ প্ৰৱিবিযা দেৱানসঁ সটা ক পাথৰক নন্দী সমেত কতোক টুটল-ভাঘল মূৰ্ত্তি সভ পতিযানীসঁ বাখল অছি । মন্দিৰক উতৰরবিযা দেরানমে তীনটা খানা ৱনল অছি আ তীনূমে তীনটা প্ৰস্তৰ মূৰ্ত্তি জড়ল অছি । কাৰী পাথৰসঁ ৱনল এহি তীনূ মূৰ্ত্তিক অৱলোকন কযনা উত্তৰ দেখল জাগছ জে পহিল মূৰ্ত্তি গণেশক থিকনি জকৰ আকাৰ তীন গ ডেঢ় পক্ষীট অছি । প্ৰতিমা অলংঙ্কৃত ও সমানুপতিক অছি । গণেশক আযধ ও রাহন গদাদি স্পষ্ঠ ছনি । মূৰ্ত্তিক সূঁঢ় খণ্ডিত অছি । দোসৰ মূৰ্ত্তি ভগৱতীক থিকনি জকৰ আকাৰ অঢ়াগ গ ডেঢ় পক্ষীট ছৈক । গহো মূৰ্ত্তি আকৰ্ষক অছি, তথাপি একৰহ্ অংগ-ভংগ ভেল ছৈক । তেসৰ মূৰ্ত্তি সূৰ্যক থিকনি জকৰ আকাৰ দূ গ সরা পক্ষীট ছৈক । গ্র মূৰ্ত্তি অভগ্ন অছি । সাত ঘোড়াসঁ যুক্ত ৰথপৰ ঠাঢ় সূৰ্য, পৈৰমে বুট্দাৰ জূতা, মাথপৰ গ্রবানী টোগপক টৈপেন্নমা স্কন্ট, সাৰথী অৰুণ, উষা ও প্ৰত্যুষা আদি অপন সমস্ত সহযোগী, আযধ ও উপকৰণসঁ স্বসজ্জিত । এহি তীনূ মূৰ্ত্তিক গঢ়নি ও শিল্প পাল ও কৰ্ণাট শৈলীসঁ কিছু ভিন্ন দেখনা জাগছ জকৰা ওগনিরাৰ শৈলীক নাম দেল জায তঁ কোনো অনুচিত নহি হোযত ।

উপৰিৱৰ্ণিত তীনূ মূৰ্ত্তি এহি শির মন্দিৰমে কোনা আ কতসঁ আযল তঁ এহি সম্বন্ধমে দেক্ষনী গ্ৰামৱাসীক কহৱ ছনি জে এক ৱেৰক ৱড়কা ৰৌদীমে গামক সৱটা

पोखरि स्वखा गेल रहैक । ताही क्रममे गामसँ दक्षिण स्थित पतरिया पोखरिक उँड़ाहीक क्रममे गणेश, भगवती, सूर्यक प्रतिमाक संग-संग रहितो टूटल-भाँगल मूर्त्ति सभ रहिवासन छल जकरा सभकें आनि क रव्(मानेश्वर स्थानमे राखि देल गेलैक । विभिन्न देवी-देवताक एहि मूर्त्ति सभकें देखलासँ मिथिलाक पञ्चदेवोपासनाक परम्पराक स्मरण होइत अछि । मिथिलामे कोनो यज्ञकर्मक आरम्भमे पञ्चदेवताक पूजा कयल जाइत छनि । ई पञ्चदेवता छथिµ गणेश, सूर्य, भगवती, विष्णु ओ महादेव । दिनमे जँ पूजा भेल तँ सूर्यादि पञ्चदेवता कहि सूर्यक प्रतिमा भगवतीक प्रतिमा गणेशक प्रतिमा रखैक आ रातिमे गणपत्यादि प×चदेवता कहि क । मिथिलाक अपन एही समन्वयवादी परम्पराक अनुसार एहि क्षेत्रामे प×चायतन मन्दिरक प्रचलन रहलैक अछि । अर्थात् उपर्युक्त पाँचो देवताक मूर्त्तिक स्थापना कयल जाइत रहलैक अछि । निश्चित रूपसँ देवकुली राजधानीमे कहियो प×चायतन मन्दिर रहल होयत जाहिमेसँ चारिटाक मूर्त्ति तँ भेटैत अछि, पाँचम देवता विष्णुक मूर्त्ति सेहो रहले होयत । रव्(मानेश्वर मन्दिरक पूर्व भागमे परिक्रमामे राखल पाथरक ढेरमे तकला पर विष्णु मूर्त्तिक पाद खण्ड भेटैत अछि, जाहिसँ एहू समस्याक समाधन भ जाइत अछि । विष्णु मूर्त्तिक धड़ ऊपरा शिरोभाग एखनहुँ पतरिया पोखरिमे वा कतहु अन्यत्रा दबल पड़ल होयत । ग्रामीण लोकक कहब छनि जे जँ एहि अथाह पोखरिमे नीक जकाँ ताकल जाय तँ ओहि समयक औरो रहिमून्य सामग्री सभ प्राप्त भ सकैत अछि । निश्चित रूपसँ एहि गाममे जत-तत शिल्पित प्रस्तर खण्ड सभ

जे पड़ल अछि ताहिसँ अनुमान कयल जा सकैत अछि जे पूर्वमे एहि गाममे उपर्युक्त पञ्चदेवतालोकनिक भव्य मन्दिर बनल होयतनि । मन्दिरसँ सम्बद्ध कोनो अभिलेख होयबाक सम्भावनाकेँ सेहो नकारल नहि जा सकैत अछि । ओ मन्दिर सभ कोना ध्वस्त भ गेल, वर्द्धमानेश्वर समेत अन्य देवमूर्त्ति सभकेँ के खण्डित कयलक, ओकरा सभकेँ पोखरिमे के फेकलक– एहि सभ प्रश्नक उत्तर इतिहासहिमे तकलासँ भेटि जा सकैत अछि ।

देवसिंह अपन राजधनी देवकुलीमे स्थिर कयलनि । देकुलीसँ दक्षिण ओ चन्दनपट्टीसँ पूब एकटा महदण नामक विशाल सरोवर अछि । म.म. परमेश्वरझाक अनुसार ओ देवसिंहक रानि महादेवीक खुनाओल थिकनि ।२५ देवसिंहक पुत्रा शिवसिंह जखन स्वयं राजा भेलाह तँ देवकुलीकेँ विस्तारित करैत एहिसँ ओरो दक्षिन हटि गजरथपुर नामक नगर बसौलनि । म.म. परमेश्वरझाक अनुसार वर्त्तमान समयमे जत लक्ष्मीपुर–आनन्दपुर डेउँढ़ ी अछि ततहि पूर्वमे गजरथपुर छल । यद्यपि ओ शिवसिंहपुर नामसँ सेहो जानल जाइत छल, किन्तु शिवसिंह द्वारा अपन पराक्रमकेँ वृद्धि करैत जखन एहि स्थानकेँ सैन्य छावनीक रूप देल गेल, गजरथक स्थान एतहि नियत कयल गेल तेँ ओ नगर शिवसिंहपुरक संग–संग गजरथपुर नामसँ सेहो प्रसिद्ध भेल ।२६ प्रायः एहि गजरथपुरक उल्लेख कतिपय तत्कालीन ग्रन्थक पाण्डुलिपि सभमे भेल अछि । लक्ष्मण संवत् २९१मे विद्यापतिक आज्ञासँ खौआल मूलक देवशर्मा ओ बलिआसय मूलक प्रभाकर शर्मा रचित काव्यप्रकाश विवेक नामक पोथीक

टीका ओ प्रतिलिपि एहि गजरथपुर नगरमे रहि क कयने छलाह । एहि पोथीक पुष्पिका वाक्य निम्न प्रकारक अछिµ
समस्त विरुदावली विराजमान महाराजाधिराज श्रीमत् शिवसिंहदेवसंभुज्यमान तीरभुक्तौ श्रीगजरथपुरनगरे सत्प्रक्रियसद्पाध्याय श्रीविद्यापतीनामाज्ञया खौआलसं, श्रीदेवशर्म्म वॅलियास सं. श्रीप्रभाकरास्याँ लिखितैषा पुस्ता ल.स. २९१ कार्त्तिक वदि १० । २७
एहि गजरथपुरसँ ल.स. २९३मे महाराजाधिराज शिवसिंह द्वारा अपन प्रिय सखा विद्यापतिक नामसँ विस्फी ताम्रपत्रा जारी कयल गेल छल । एहि ताम्रपत्रामे वॉगमती नदीक तटपर गजरथ आखयासँ प्रसि(पुरीक अवस्थितिक उँल्लेख भेल अछिµ
वागवत्याः सरितस्तटे गजरथेत्याखयाप्रसि(े पुरे दिसोसोह विवॅ(वाह्पुलकः सभ्याय मध्यसभम् । २८
निश्चित रूपसँ उपर्युक्त अभिलेख ई सारित करैत अछि जे शिवसिंहक समयमे देवकुली राजधानीक विस्तार ओवो दक्षिण धरि भेल । डा. रामदेवझाक मत छनि जे पश्चिममे वॉगमती नदीक पश्चिमी तटपर स्थित थलवार गामसँ लक पूर्वमे रामभद्रपुर धरि तथा उँत्तरमे सिन्वआरसँ लक दछिनमे सिधौली-स्वरुहाचटौटी धरिक परिसर शिवसिंहक समयमे राजधानी छल । एहि परिसरमे यद्यपि अनेक गाम अछि जकरा समेकित रूपसँ एकटा गजरथपुरक अभिधन देल गेल । २९
वस्तुतः ई सम्पूर्ण परिसर पुरातात्विक सामग्री, प्राचीन मूर्त्ति, सरोवर, ग़नाव आदि सबँसँ परिपूर्ण अछि । एहि गजरथपुर राजधानीसँ शिवसिंह मिथिलाक स्वतन्त्राताक घोषणा कयलनि अपित्त अपन मुद्रा सेहो चलौलनि । ३०

दिल्लीक स्वतान भावी पक्कौजक संग गजरथप्वब बाजधनीपब हमना कयनक । ओही हमनामे गजरथप्वब उँजड़ि गेन, ओकब ऐश्वर्य
रिनुप्त भ गेनैक । कानक प्रराहमे गजरथप्वब नाम सेहो रिनुप्त भ गेन । पष्ठाति केरन एहि बाजधनीक अन्तस्थ्रात रॅसन गाम सरॅ अपन पूर्र नामक संग शेष बहि गेन । एही म्सनमानी आक्रमणक आघात देरकुनीके ँ सेहो सह पड़न होयतैक । रब्(मानेश्वब समेत सरॅ देर मन्दिब ध्वस्त कयन गेन होयत जकब प्रमाण अछि देकुनीक भग्न मूर्ति ओ प्रस्तब खण्ड सभ ।

शिरसिंहक तिबोधनक बाॅद हुनक उँत्तवाधिकाबी नोकनि हुनक उँजड़न बाजधनीके ँ पक्केबसँ बॅसयबॅाक प्रयास नहि कयननि । सम्भरतः स्वतानक संग आयन म्स्निम सैनिक सरॅ एतहि बॅसि गेन । एखनहुँ चन्दनपट्टी, बॅाकीप्वब, जीरब आदिमे म्सनमानक सघन आबॅादी अछि । रिधर्मी शत्रा् सेनाक निरास भेनाक काबणे शिरसिंहक बॅादक ओइनिराब बाजा नोकनि गजरथप्वब छोड़ि अपन बाजधानी मिथिनाक उँत्तव भागमे स्थिब कबैत बहनाह । ३१

सम्भरतः देरकुनी गाम बॅहुतो दिन धरि उँजड़ने-उँपटैन बहन । एहि गामक रब्(मानेश्वब महादेर जनरिहीन पविसबमे एकाकी बहबॅाक हेतु रिरश भेनाह । प्वनः ई गाम कहिया आबॅाद भेन से तँ निश्चित रूपसँ नहि कहन जा सकैत अछि म्दा कोना आबॅाद भेन से मौखिक स्रातसँ बूझन होइत अछि । गामक एकटा बृ(प्वरुष हस्तिनाबायणम्मा जे रिरबण देननि तदन्वसाब उँजड़नाक बॅहुतो दिन बॅाद देकुनी गाम एहिसँ उँत्तव स्थित डबहाबक कनिगामे-कनिगाम मूनक चौध्री

ऊँपनामधवी ब्राह्मण नोकनिक अध् ीन भ गेननि । देक्षनी डवहावक संग जुड़ि गेन आ एहि मौजाक नवीन नाम पड़न रिसनप्वब-महादेव । एहि नामकवणक पाछाँ कावण भेन देक्षनीक प्रसि(रब(मानेश्वब महादेव स्थान तँ दोसब दिस डवहाव गामे एहने प्राचीन रिष्णु मन्दिवक अरस्थिति । ओ रिष्णु मन्दिब एखनहुँ डवहावक पूर्रमे अछि । प्रायः एही कावणे ँ गामक नाम सेहो रिष्णुप्वब रा रिसनप्वब पड़न । मुदा रिसनप्वब नाम अभिनेखे सरमे भेटैत अछि । एकव प्रचनित नाम डवहाव छैक । एहि डवहाव शब्दक की ब्युत्पत्ति ओ एकव पाछाँ की ओतिहास से अन्वसन्धेय अछि, मुदा डवहाव एकटा मूनग्राम सेहो अछि । प×जीमे एकहवे डवहाव नामक एकटा मूनक उल्लेख अछि ।३२ अस्तु, प्वनः अपन रिषयपव आरी । रिद्यापतिक जन्मभूमि रिस्पफी नग उसौत नामक कोनो गाम अछि । ओहि गाममे रसे गोत्राीय, पविवावे उसौत मूनक ब्राह्मणक निरास छनिन । ओही गामक एकटा पंडित हवक वहथि कामदेरझा । हुनक रिद्वत्तासँ प्रभारित भ क डवहावक एकटा चौध्री जमिन्दाव अपन कन्यासँ हुनक रिराह कवौनथिन । तथाकथित अपनासँ छोट कुनक कन्यासँ रिराह कवराक कावणे ँ कामदेरझाके ँ अपन पविवावसँ रहिष्कृत क देन गेननि । तखन कामदेरझाक सस्वव अपन रँटी-जमायके ँ ३.२३ रीघाक बकरारना सौंसे देक्षनी मौजा दक एही गाममे हुनका नोकनिके ँ रसौनथिन । अपित्तु रँटी-जमायक वाजपाट सम्भावराक हेत्तु आरश्यक जन-रवजन्ना, पौनी-पसावीक कुपमे पन्द्रहटा आनो-आन जातिक पविवावके ँ रजाय क रसौनथिन । रब(मानेश्वव

মহাদেৱক সেৱা–পূজা হেতু মহিসী ;সহৱসাক্সসঁ পঁডা ব্ৰাহ্মণকে ঁ ৰজায ওকৰো ৰসৌনথিন । এতাৰতা দেক্সনী মৈথিন ব্ৰাহ্মণক ৰিকৌথা ও কন্যাদানী ব্যৱস্থাক খন্তস্মাত পক্ষেবসঁ ৰসন । ওহী পবিৰাবে ডঁসৌত মূনক কামদেৱন্মাক ৰংশজ নোকনি খাৰ এক–সঁ একৈস ভ চ্কন ছথি ।

দেক্সনী গামমে পবিৰাব ;পন্নিৰাবক্স মূনক ব্ৰাহ্মণক খাগমন ও নিৰাসক সম্বন্ধ্ম মৌখিক স্রাত ভনে জে কহৈত হো, ৰিদ্যাপতি বচিত কীৰ্ত্তিপতাকাসঁ সেহো এহি সন্দৰ্ভমে একটা মহত্ত্বপূৰ্ণ সূচনা ভেটৈত খছি । দেৱসিংহক সমযমে গজনী ও গৌড়ক জে সংযাক্ত খাক্ৰমণ মিথিনাপৰ ভেন ছন । তকব সামনা দেৱসিংহক পুত্ৰা শিৰসিংহ খপন সৈন্যৰনক সংগ কযনে ছনাহ । দেৱসিংহক সেনামে ব্ৰাহ্মণ ও ক্ষত্ৰিায দ্ছ্ জাতিক যো(া ছননি তাহী ক্ৰমমে পন্নিৰাব ৰংশক সেনাক সেহো ডঁল্লেখ ভেন খছিμ

তহ পন্নিৰাব ধেবনি গবিষ্ঠে ।
সবজানে মাবি কব সমবধিষ্ঠে ॥ ৩৩

খৰ্থাত্ পন্নিৰাবক ৰংশক সূবৰীব নোকনি যা(ভূমিমে ডষ্টন ছথি । দৃঢ়তাপূৰ্বক যা(কৰৈত ও নোকনি ৰাণক জানসঁ সমবভূমিকে ঁ খাছাদিক ক দেনে ছথি । ৰস্তুতঃ দেৱসিংহক সেনাক পনিল্লাব ৰংশীয সৈনিক ও হ্নক বাজধানী দেৱক্সনীমে ৰসন পবিৰাবে ডঁসৌত মূনক ব্ৰাহ্মণক নিৰাসক ৰীচ কোনো ঐতিহাসিক সম্বন্ধ্ তঁ নে খছি, এহ্ৰ দিশামে খন্বসন্ধানক প্ৰযোজন খছি ।

মৌখিক স্রাতক খন্বসাব ১+৯৬মে জখন দবভংগা জিনাক কৈডেস্ট্ৰেন সৰ্ৱে স্বব্ধ ভেন তাহিমে দেক্সনীকে ঁ ৰিসনপ্ৰব–মহাদেৱ মৌজাসঁ পক্ষবাক ক

पुनः एकटा स्वतन्त्र मौजाक रूप देल गेलैक । पुराना सर्वे-खतियान ओ नक्शामे एहि मौजाक नाम देरकली लिखल भेटैत अछि । नक्शामे रत्नेश्वर स्थानक जगह काटल अछि जाहिपर मन्दिरक रेखाचित्र अंकित क शिवाला लिखल अछि । यैह रत्नेश्वर शिवालय एहि गामक प्राचीन गौरव-गाथाकेँ अक्षुण्ण रखने अछि । करदन्तीक अनुसार पहिने ओ महादेव खढ़क खोपड़ीमे छलाह । प्रति वर्ष गाममे आगि लगैत छलैक । पछाति ओंठीक पक्का मन्दिर बनाओल गेलैक । रत्नेश्वर परिसरक अवलोकनसँ प्रतीत होइछ जेना एकर निर्माण ओ स्थापना कोनो तन्त्र पद्धतिसँ भेल होएत । परिसरक आकार त्रिभुज जकाँ छैक । परिसरक पूर्व ओ पश्चिम भुजामे दूटा सरोवर एखनहु विद्यमान छैक । सम्भवतः परिसरक दक्षिणवला भुजा दिससँ सेहो पूर्वमे कोनो सरोवर छल जे भथि गेल । किए तँ मन्दिरक सामने दक्षिणमे सड़कक कातवला जमीन एखनहुँ डोभी सन लगैत अछि ।

रत्नेश्वर महादेवक ख्याति जागन्त शिव-स्थानक रूपमे रहल अछि । अदौसँ माघी कमरथुआ लोकनिक विश्राम स्थलक रूपमे ओ मान्य रहल अछि । फाल्गुन मासक मकर ओ शिवरात्रिकेँ एत बड़ पैघ मेला लगैत अछि से आइयो चलि रहल अछि । वर्तमानमे एहि मन्दिरकेँ ओहो बेसी जागृत करबाक प्रयासमे ग्रामीण लोकनि लागल छथि । नवीन मन्दिरक निर्माण कएल गेल अछि । शिवरात्रिक अवसरपर पछिला किछु वर्षसँ भव्य आयोजन कएल जाय लागल अछि । तथापि आओर आवश्यकता अछि जे मिथिलाक एहि विस्मृत

বাজধনী দেকনীক ঐতিহাসিক ও প্বাতাত্িত্বক গবিমাক বক্ষা কবৈত এহি দিস খধ্ব্যতা নোকনিক ধ্যান খাগ্রষ্ঠ কযন জায । এহি গামক গর্ভমে দৱন পড়ন গতিহাসকে ँ বৈজ্ঞানিক ঢংগসঁ উখেনন ক সামনে খানন জায । যদা-কদা জে প্বাতাত্িত্বক সামগ্রী সৱ ভেটৈত বহন খছি তকবা একটা সংগ্রহানয বৱনা ক সংবক্ষিত কযন জায । মহাকবি বিদ্যাপতিক কর্মভূমিক ৰূপমে এহি গামকে ँ চিহ্নিত কযন জায । সংগহি এহি গামক প্বাতত্িত্বক তুননা মিথিনাক খন্যান্য দেকনী নামধবী গামক সংগ কবৈত নামক সমৰূপতাক গতিহাসক খন্বেষণ কযন জায । বব্(মানেশ্বৰ স্থানক খযাতি ও প্রাচীনতাকে ँ গতিহাস ও খাধ্যামিকতাক মানচিত্রাপব স্থাপিত কযন জায । ওা দাযিত্ব দেকনী গ্রামবাসী নোকনিক সংগ-সংগ মিথিনা নিবাসী সমস্ত প্রব্(জনক খিকনি ।

সন্দর্ভ এবং টিপ্পণীµ

১. পবমেশ্বৰঝা, মিথিনা তত্ত্ব বিমর্শ ;পূর্বব্(ক্ক, তবৌনী, দবভংগা, ১৯৪৯, পৃ.- ১৩২

২. চন্দাঝা, প্বকুষ পবীক্ষা ;খন্বাদক্ক, বাজ দবভংগা যন্ত্রানয, শাকে ১৮১০, পৃ.- ২৩৯

३. উপেন্দ্রঠাকুব, মিথিনাক গতিহাস, মৈথিনী খকাদমী, পটনা, ১৯৮০, পৃ.- ১৯০

৪. বামদেবঝা, বিদ্যাপতিসঁ সম্ব্(স্থান খা গজবথপ্বক সঙ্কন, মংজুষা-২, বিদ্যাপতি সেবা সংস্থান, খানন্দপ্বব, দবভংগা, ২০০৯, পৃ.- ১৪

৩. এস.এন. সহার্থী, দর্শনীয মিথিনা-৯, বিস্মৃত মিথিনা প্রকাশন, দবভংগা- ২০০३, পৃ.- ৪১३-৪২০

৬.   বামপ্রকাশশৈর্মা, মিথিনা কা গতিহাস, কে.এস.ডী.এস.যূ., দবভংগা, ১৯৭৯, পৃ.– ৪৬৩–৪৬৪
৭. রিহাবীনান পিফতবত, খাওনা–এ–তিবহ্ত ;দ্বি.সং.ক্ষ, মহাবাজাধ্রিাজ কামেশ্বিবসিংহ কন্যাণী পফাঁউডেশেন, দবভংগা, ২০০১,
পৃ.– ১২ঙ–১২৭
৮. চন্দাঝা ;পূর্বোক্ত–২ক্ষ, পৃ.– ২ঙ৯
৯. পবমেশ্বিবঝা ;পূর্বোক্ত–১ক্ষ, পৃ.– ১ঙ২
১০. ষ্কন্দঝা রঁখশী, মিথিনা ভাষামব গতিহাস, রিদ্যারিনাস প্রেস, রঁনাবস সীটী, পৃ.– ঙ১৬
১১. শ্যামনাবাযণসিংহ, হিস্ট্রী আঁপফ তিবহ্ত, রৈপ্টিস্ট মিশেন প্রেস, কনকত্তা, ১৯২২, পৃ.– ৭২
১২. পী.সী. বাযচৌধ্রী, রিহাব ডিস্ট্রিক্ট গজেটিযব দবভংগা, সেক্রেটেবিযট প্রেস, পটনা, ১৯৬৪, পৃ.– ३৪
১३. উপেন্দ্রঠাক্কব ;পূর্বোক্ত–३ক্ষ, পৃ.– ১৯১
১৪. পবমেশ্বিবঝা ;পূর্বোক্ত–১ক্ষ, পৃ.– ১ঙঙ
১ঙ. রিদ্যাপতি গীত সংচয, সাহিত্যখকাদেমী, নওা দিল্লী, ১৯৯৯, ;ভূমিকা– বামদেবঝাক্ষ, পৃ. ২১, পদ সং.– ৪३
১৬. রিদ্যাপতি পদারনী ;প্রথম ভাগক্ষ, রিহাব বাষ্ট্রভাষা পবিষদ্, পটনা, ১৯৬১, ভূমিকা, পৃ.– ৭৭

ভূপবিক্রমাক খাবম্ভমে নিম্ন শ্লোক খছিμ

নত্বাং গণপতিং সাম্বং শ্রীরিষ্ণুং বরিমম্বিকাম্ ।
ভূপবিক্রমণগ্রন্থং নিখযতে ভুরি নৈমিষে ॥
দেরসিংহনিদেশাচ নৈমিষাবণ্যরাসিনিঃ ।
শিরসিংহস্য চ পিত্তঃ

सूनपीठनिरासिनः ॥

१७. कीर्त्तिपताका, शशिनाथझा ;खन्व.ङ्क नाग प्रकाशक, दिल्ली, १९९२, पृ.– २+–७१

१+. चन्दाझा ;पूर्रोक्त–२ङ्क, पृ.– २ऊ१ एरं २ऊ३

१९. परमेश्वरझा ;पूर्रोक्त–१ङ्क, पृ.– १ऊ१–१ऊ२

२०. चन्दाझा ;पूर्रोक्त–२ङ्क, पृ.– २ऊ९

२१. श्यामनाबायणसिंह ;पूर्रोक्त–११ङ्क, पृ.– १७७–१७+

२२. उँपेन्द्रठाकुब ;पूर्रोक्त–३ङ्क, पृ.– १९२ ओ २०७

२३. चन्दाझा ;पूर्रोक्त–२ङ्क, पृ.– २ऊ९

२४. परमेश्वरझा ;पूर्रोक्त–१ङ्क, पृ.– १ऊ२–१ऊ३

२ऊ. उँपर्युक्त, पृ.– १ऊ४

२६. उँपर्युक्त, पृ.– १ऊ+

२७. उँपर्युक्त, पृ.– १ऊ+

२+. चन्दाझा ;पूर्रोक्त–२ङ्क, पृ.– २ऊ३

२९. बामदेरझा ;पूर्रोक्त–४ङ्क, पृ.– १३–१४

३०. उँपेन्द्रठाकुब ;पूर्रोक्त–३ङ्क, पृ.– १९७

३१. रिद्यापति पदारली ;पूर्रोक्त–१६ङ्क, पृ.– २७

३२. बमानाथझा, मैथिल ब्राह्मणों की पंजी व्यरस्था, दबभंगा– पृ.– ११

३३. कीर्त्तिपताका ;पूर्रोक्त–१७ङ्क, पृ.– ४७


বাজদের মংডন

জগদীশ প্রসাদ মণ্ডনক করিতা সংগ্রহ- বাতি-দিন

মৈথিনীক নর করিতাক নিবন্তব রিকাস ভ২ বহন খছি। শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন পূর্ণ নিষ্ঠা খা তন্নীনতাক সংগ ঐ রিকাস কর্মমে সংনগ্ন ছথি। খা তেকব প্রতিফন সম্মুখ খছি- করিতা পোথী- বাতি-দিন। ঐ পোথীমে 52 গোট় করিতা সংকনিত খছি।

করিতা ভার, বুঁধি কন্পনা খাব শৈনীক সমন্বিত পবিণাম থীক।
ঐ গ্বণ খাদিসঁ খনংকৃত মানস সৃজনক গম্ভীব, সচেত প্রক্রিযাসঁ সংচানিত ভ২ সকৈত খছি। তণ কাবণে করি খত্যধিক সরেংদনশীন হোগত খছি। হবেক কানারধিমে মন্বখক খন্তসমে খভীপ্সা পানিত-পোষিত হোগত বহৈ ছৈ খা ওগপব জখন তুষাবাপাত হোগ ছৈ তঁ জন মানস খান্তবিক রেদনাসঁ ভবি জাগত ছৈ।

মোহ ভংগ ভ২ জাগত ছৈ। রেঁকতীক খন্তসঁ উপজৈ ছৈ। বিদ্রাহ, কং্ঠা, খাশ্রাশী, সংত্রাস, ক্ষ্রর্ধতা, খাত্ম বক্ষাক সরাঁনাদি। খহী সরঁহক খভিব্যক্তি মৈথিনীক নর করিতা থীক।

মণ্ডনজী সন সরেঁদনশীন করি জে ঐ যথার্থকেঁ ভোগনে ছথি সে কেনা চ্প্প বহি সকৈত ছথি। হ্নকা নেখনীসঁ তঁ সংঘর্ষক স্রব নিকনরেঁ কবতৈক।

“জিনগীক হোগত সংঘর্ষ।
সীমা রাঁচ জখন খরৈঁত
মচরঁএ নগৈত দ্ব–ঘর্ষ।
ঘর্ষ–দ্বঘর্ষ রাঁচ জখন
জিনগী কবএ বস্সা–কস্সী।
রাঁচ সক্ষদ্র সিবজি মথান
পকড়এ নগৈত খপন–খপন বস্সী।”
(সংঘর্ষ)

করি খখণ্ড বাজ ভোগী সভপব ব্যংগ্য প্রহাব করৈত কহৈত ছথি–

“ক্ষসক খ্নন রাঁন পকড়ি
নাগ–নাগিন কহরঁএ নগৈএ।
নাগে তঁ ধবতী হৈকনে ছৈ
খখণ্ড বাজ ভোগৈ ছৈ।”
(মানর গ্বণ)

কিছু নোক রহ্ন্ধপিযা রঁনন খছি। হবেক ক্ষণ গিবগিট্ট জকাঁ বংগ রঁদনৈত বহৈত খছি। সমাজকেঁ দিশা ভ্রমিত করৈত খছি। ঐ সম্রঁন্ধমে করিক উক্তি খছি–

“গিবগিট্টিযা মন্বক্খো তহিনা

দিন-বাতি বঁদনৈত চনৈএ
গীবগিষ্টৈক জহব সিবজি-সিবজি
রীখ উঁগনৈত চনৈএ।
ভেদ-ঋভেদ মর্ম রিন্ব বঁ্ঝনে
দেখা-দেখী ওঠ়ৈত চনৈএ
ওঠ়ি-ওঠ়ি ওঝবা-পোঝবা
ড্রঁঋনিযা কাষ্টি মবৈএ।"
(ঘোড় মন, ভাগ-২)

মন্বখক বীত-নীত খা রেঁরহাবমে কতেক পবিরর্ত্তন ভঽ গেনৈক খছি। বঁদনৈত জ্ুগ-জমানাপব হিনকব কহরঁ ছন্হি-
"জ্ুগ বঁদনন জমানা বঁদনন
বঁদনি গেন সভ বীতি-রেঁরহাব।
চানি-ঢানি সেহো বঁদনি গেন
বঁদনি গেন সভ খাচাব-রিচাব।
ঋদা, বাতি-দিন একো নে বঁদনন
নৈ বঁদনন চান, সূর্জ, খকাস।
পূবরাঁ-পছরাঁ সেহো নে বঁদনন
নৈ বঁদনন জিনগীক রিসরাস।"
(জ্ুগ বঁদনন জমানা বঁদনন)

খংগ্রেজী ভাষাপব শরঁ্দক প্রহাব কবৈত কহৈত ছথি-
"খংগ্রেজী পঢ়ি খংগ্রেজিযা বঁনি-বঁনি
পপ্পা-মম্মী খানত ঘব।
বাঁপ-দাদাক কি ভেদ ও বঁ্ঝত
খড়ি-খড়ি বাঁজত নিডব।"
(ঘবক নোষ্টিযা বঁ্ড়নে খছি)

সমাজক ৰূপ ৰর্ণন ঐ পাঁতিসঁ নক্ষিত ভ২ বহৈন খছি–
“খগম–খথাহ ৰূপ সমাজক
খসথিব ভ২ সাগব কহৰৈঁএ।
ৰঁর্থা ৰ্ব্ন্নী ৰীচ–ৰীচ
ওনা–পাথব ৰঁবিসা দগএ।
পৰিতে পাৰি পৃথ্ৰী পসবি
ধবিযা–চানি ধড়এ নগৈএ।
ভঁষ্ঠী–ৰৈঁসী খেন খেনৈত
মোগন–ধাব ৰঁনৰঁএ নগৈএ।
ঠ্ঁক স্বপাবী সমাজ কষ্টি–কষ্টি
ঠ্ঁকড় ী জাতি ৰঁনন ছৈ।”
(খপনেপব)

নব ৰিম্ৰক প্রযোগ সংৰেদনশীনতা খা মার্মিকতাকেঁ সংগে হোএৰাঁক চাহী। খা সে মণ্ডন জীক কৰিতামে ৰিষযক খন্বৰূপ ৰিম্ৰঁক প্রযোগ ভেন খছি।
“মিনহোবি মীন খেনাগত বশ্মি
খাকর্ষিত–খাকর্ষণ কবৈএ।
প্রেমাস্পদ পৰিতে পাৰি
প্রেম–প্রেমী কহৰঁএ নগৈএ।

পাৰি প্রেমী প্রেমী জখন
সাগব গংগা মিনএ চাহৈএ।
ৰঁাঁসিক প্বন ৰঁনা সহ্ম্দ্র
গংগা–সাগব স্নান কবৈএ।”
(শীন)

"अजस्र धाव भरसाव सजल छै।
नाओं एक आनी पड़ल छै।"
(संघर्ष)

स्थितिक अनुकूल बिम्ब, नव उपमान, प्रतीक नव कविताक लेल साधन मानल गेल अछि। आ से ऐ संग्रहक सभ कवितामे परिलक्षित भऽ रहल अछि।
"जहिना धवती अकास बीच
गाछ-विरीछ लहलह करैत।
तहिना विवेक विचाव संग
सदि हँसि-गारि कहैत।"
(प्रिय)

मण्डलजी प्रिय कवितामे शैली आ भाषाक सम्बन्धमे कहने छथि-
"सम्पन्न शब्द, शैली सम्पन्न
शब्द कोष सिबजए लगै छै।
जड़ि -छीप पकड़ि भाषाक
संसाव-साहित्य गढ़ए लगै छै।"

बातिक अरसान भेलापव दिनक आगमन निश्चिते होगत अछि। जे कटुसत्य अछि। बाति-दिन सर्वजन परिचित शब्द अछि। शब्दमे व्यापकता सेहो अछि। बाति-दिन कविता संग्रहक शीर्षक अनुकूल अछि। कविता सबहक भाव, विषय, उद्देश्य गत्यादि ऐ शीर्षकमे छिपल अछि।
साँझ-भोव कवितामे कविक कथन उजागव भेल अछि-
"केकवो साँझ केकवो भावे छी

কেকরো উঁদয কেকরো খস্ত ছী।
দিনক খস্ত সাঁঝ খগব ছী
বাগতিক তঁ উঁদযে ছী।
রাঁবনে ঘংটা দিনো চনৈ ছৈ
ততরেঁ টা নে বাগতিযো হোগ ছৈ।”

প্ববান ঠাঠ খা খূঁটা রিছিন্ন ভ২ বহন ছৈ। নরকা-নরকা জিনগীক খূঁটা খা ঘব ঠাঠ কবএ পড়তৈ। তঁএ করি “চেতন চাচা” করিতাক মাধ্যমে কহনে ছথি জে ঙা কান চেতরাঁক থিক-

“চেত-চেত চনূ চেতন চাচা
সবসড় াগত সমএ সসরৈএ।
সমএ ছোড়ি কতরাঁহি জখনে
ঠহকি-ঠহকি নক্ষত্র কহৈএ।
খাগূ ডেগ উঁঠরৈঁসঁ পহিনে
চাব্দ দিশা দেখৈত চনূ।
চাব্দ কোণ ঠেকনা-ঠেকনা
খাগূ ডেগ রঁঠরৈঁত চনূ।”

তঁএ জিনগীমে সীখরাঁক উঁপএ্রম হোএরাঁক চাহী। রিন্ব সীখনে কিছু নৈ ভ২ সকৈত খছি।
“জিনগীমে কিছু কবরঁ সীখূ
জিনগীমে কিছু নড়রঁ সীখূ।
সভ জনৈ ছী, সভ দেখৈ ছী
খজ্ঞান-খরোঁধ রঁনি-রঁনি খরৈঁ ছী।
সজ্ঞান-স্বরোঁধ তখনে রঁনরঁ
সংঘর্ষক রাঁটে জিনগী ধড়রঁ।”
(কিছু সীখূ কিছু কব্দ)

“ঝঁহক মানি” করিতামে করি ননকাবি কহ কহি বহন ছথি–
“ঝঁহক মানি রঁজৌনে কি হএত,
কাজক মানি রঁজরঁএ পড়ত।
ফোকনা–খাখ খন্ন কী
স্বভব দানা উঁপজরঁএ পড়ত।”

কহরাঁক তাতপর্য ওা খছি জে সিবিহ্ন গান রঁজৌনে কিছু নৈ হোএত। কর্ম করৈ পড়ত। জগসঁ দেস–দ্নিযাঁক কন্যাণ সংভর ভহ সকত। তঁএ কর্মশীন হোএরঁ পবমারশ্যক খছি। তখনে খপন গতিহাস নিখি সকৈত ছী।
“কর্মক স্রবনহবী সীখূ
খপন গতিহাস খপনে হাথসঁ
স্রাণক্ষিবমে নিখনাগ সীখূ।”

খপন গতিহাস খপনেসঁ সৃজন কবরঁ রঁহ্ত কঠিন কর্ম খছি। ঐ নেন সতত কর্ম খা রশ্রাস চাহী তখনহি সংভর ভহ সকৈত খছি।
হম খক্ত ছী তথাপি এতরাঁ ধবি জরূব কহরঁ জে প্রস্তুত “বাতি–দিন” পোথীমে রৌধক খন্বকূন নর রিম্রঁ, প্রতীক, নর উঁপমান গত্যাদিক প্রযোগ ভেন খছি। ভাষা–শৈনীমে খাঁচনিকতা খছি। মিথিনাঁচনক গংধ সমাহিত খছি। স্বধী পাঠকগণ স্রাগত কবতাহ। খা সংগহি নরাক্ষংবক নেন পাথেয রঁনত।

জগদীশ প্রসাদ মংডনক উঁপন্যাস উঁথোন–পতনপব

नाटककार, कथाकार आ उपन्यासकारक रूपमे श्री जगदीश प्रसाद मंडलजी मैथिली साहित्यमे नूतन ऊर्जाक संग उपस्थित भेल छथि। हिनक जन्म १९४७ ई. मे भेल। विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक कथा, प्रेरक कथा उपन्यास सेहो प्रकाशित भऽ चुकल अछि।

एहि उपन्यास 'उत्थान-पतन' क माध्यमसँ लेखक गामक जिनगीकेँ यथार्थ आ नव रूपमे उपस्थित करबाक चेष्टा कएने छथि। गामक जड़ता, रीति-रिवाज, पारम्परिक व्यवहार, मूर्खता, विद्वता, अड़िया जाएबला भाव आ सहज स्वभाव आदि सहज रूपमे आबि गेल अछि।

तत्वक दृष्टिसँ देखल जाए तँ सर्वप्रथम कथावस्तु ध्यानकेँ आकृष्ट करैत अछि। कथावस्तु तँ सशक्त आधार अछि जाहिपर उपन्यासक कतेक रंगक प्रसाद ठाढ़ होइत अछि। जाहिमे जिनगीक श्वास बहब आवश्यक।

उत्थान-पतनमे गंगानंद, यदुनानंद, पंडित शंकर, सुधिया, ज्ञानचंद, भोलिया, विसेसर, भोलानाथ, सुकन, लिलमणि, मोहिनी, रीता, महंथ रघुनाथ दास, लीला, दीनानाथ, ग्वनार आदि अनेक पात्रसँ सज्जित भऽ अंचलक मार्मिक चित्र उपस्थित भेल अछि।

कथावस्तुमे विच्छिन्न होइत गाम-घर आ टूटैत वैकती सबहक समस्याकेँ मार्मिक ढंगसँ अभिव्यक्ति कएल गेल अछि। उपन्यासक प्रारम्भ होइत अछि- "गामे-गाम, कतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ कतौ नवाह, कतौ चण्डी यज्ञ

তঁ কতৌ সহস্ত্র চল্ডী যক্ত হোগত। কিএক তঁ এগাবহটা গ্রহ একত্রিত ভহ গেল অছি। কী হএত কী নৈ হএত কহব কঠিন। একটা বানগ্রহ বচাকেঁ ভেলে তঁ স্বখৌনী লগি জাগত আ জহিঠাম এগাবহ গ্রহ একত্রিত অছি তগঠাম তঁ অনবমানো কষ্ম হএত। পবোপষ্ঠা ভগরানক নামসঁ গদমিসান হোগত।........ জাধবি লোক কীর্তন মংডলীক সংগ মংডপমে কীর্তন কবৈত তাধবি ঘবক সভ স্বধি-ব্র্ধি রিসবি মস্ত ভহ বহৈত। ম্দা ঘবপব অরিতহি.......... বচাকেঁ বাগস-বেবহটে লেল ঠ্নকব স্বনি। ব্যথাককেঁ দবৈত সভ আঁখিক লোব হোগত বহবৈত।"

সামাজিক উঁথোন কবহ বনা বৈকতীকেঁ গামক এহি পবম্পবা আ ধার্মিক আডম্বরসঁ সংঘর্ষ কবহ পড়ৈত অছি। লেখক অপনা পাত্রক দ্বাবা অংধরিশ্বাসকেঁ তোড়ি পবিবর্তন অনবাক প্রযাস কএলে ছথি।

সাহিত্যক ভাষা হোএবাক চাহী জন-ভাষা। জেকবা সাধাবণ জন সহজ রূপসঁ পচা সকএ। এহি উঁপন্যাসক ভাষা গাম-ঘবক বোনচানক ভাষা অছি। জেকবা প্রযোগ কবৈত কান সহজহি নর-নর শব্দক নির্মাণ ভহ গেল অছি। সাধাবণ জনক বোনী আ নূতন শব্দক প্রযোগ এহি উঁপন্যাসমে প্রচ্বতাক সংগ দেখল জা সকৈত অছি। কথোপকথনমে সহজতা সংক্ষিপ্ততা আওব স্বভারিকতা অছি। জেনা এহি কথোপকথনপব দৃষ্টিপাত কএল জা সকৈত অছি-

"অগব দসখত কএল লগ হোগত হোঅএ তব ?"
"তব কী ? ওঁঠা নিশান দহ দেতগ।"

"ভায দৃটা সমাংগ খাএন খছি। দ্নূকেঁ কাজ কহ দহক।"

"খছা থমহহ। কিবানী ৰাবৃঁসঁ গপ্প কেনে খৱেঁ ছী।"

কথোপকথন ঙঁপন্যাসমে রর্ণিত জিনগীক খন্বকূন খছি। দৌড়ৈত-পড় াগত সংসাবমে ৰৃহতাকাব ঙঁপন্যাস পঢ়ৰাক নেন সমএক খভার বহৈত খছি। কিন্তু ভাষা খা শৌনীমে জঁ খাকর্ষণাক গুণ বহৈত খছি তঁ ও জনমানসকেঁ পঢ়ৰাক নেন খপনা দিশি ঘিচি নৈত খছি। তাহি গুণসঁ ভবন-পূবন এহি ঙঁপন্যাসক চিত্রামেক শৈনীক একটা ঙঁদাহবণ দেখন জা সকৈত খছি।

"গৌব বর্ণ, বিঠ্ঠ-পুঠ্ঠ শবীব, ঘনগব মোঁছ, ৰঁড়দক খাঁখি সন নম্হব-নম্হব খাঁখি স্বকনক বহৈ। কোঠীক গেটপব কান্হমে ৰন্দূক নটকা ঠাঢ় ড্যূটী স্বকন সেঠক কবৈত।"

একহি রাক্যমে ৰহুত ৰাত কহি দেৱ নেখকক রিশেষতা খছি। জেনা-

"মাথপব ছিঙ্কা, দ্নূ হাথসঁ দ্নূ ভাগ ছিঙ্কাকেঁ পকড়নে, দ্নকী ডেগ ৰঢ়ৱৈত গ্বনাৱ, সঁযা ভেন কিসনমা ঘ্নঘ্নাগত খাঁগন দিশি নফড়ন চননীহ।"

কেহনো খকর্মণ্য ৰেকতী জঁ পূর্ণ মনোযোগক সংগ খার্থিক ঙঁন্নতিমে দত্তচিত ভহ জাএ তঁ হুনক প্রগতি হোএৱ নিশ্চিত ভহ জাগত খছি। এহি দর্শনকেঁ দেখেৰাক

প্রযনে লেখক পাত্র শ্যামানন্দ দ্বারা কএলনি অছি। পবিরর্তনশীলতা সংসারক নিঅম থীক। পবিরর্তনশীলতা সংসারক নিঅম থীক। সামন্তরাদসঁ পূঁজীরাদ আ পূঁজীরাদক গর্ভহিসঁ সমাজরাদক জন্ম সেহো হোগত অছি। ওা অলগ রাঁত জে পূঁজীরাদসঁ সাম্রাজ্যরাদ সেহো পনপৈত অছি।

সামাজিক উঁথোন সমিতিক নির্মাণ কঽ লেখক ওা দেখরাঁএ চাহৈত ছথি জে টুটৈত গামক লেল একতা আরশ্যক ভঽ গেল অছি। জাহিসঁ এক–দোসবাক সহযোগ ভেটৈতৈক আ গামক সম্পূর্ণ রিকাস হোএতৈক। সরহক সংগে সামাজিক ন্যায হোএতৈক। শ্যামানন্দ দ্বারা আধুনিক যংত্রসঁ গ্রষি কার্য হোগত অছি। জাহিসঁ ও সম্পন্ন কিসান রাঁনি জাগত অছি। এহি মাধ্যমসঁ লেখক দেখারাঁএ চাহৈত ছথি জে অপনহুঁ গাম–ঘবমে জঁ রেঁকতী রিরেক আ কর্ম নিষ্ঠাসঁ কাজ কবএ তঁ ওকবা অর্জন কবরাঁক লেল দোসব প্রদেশ নহি জাএ পড়তৈক আ পলাযন রুকি জএতৈক।

এখনহুঁ গাম–ঘবমে পূর্ণ জ্ঞানক কিবিণ নহি পহুঁচি সকল অছি। তাহি কাবণেঁ এক গাম দোসব গামসঁ লড়ৈত–ঝগড়ৈত অপনা রিকাসকেঁ অরকুদ্ধ কএলে বহৈত অছি। রেঁমাবীকেঁ ডাগন–জোগিন আ ভূত–প্রেতক প্রকোপ মানৈত অছি। ওা সমস্যা সভ সহজহি এহি উঁপন্যাসমে উঁপস্থিত ভঽ গেল অছি। এহি তবহেঁ দেখৈত ছী জে লেখক গামক যথার্থ জিনগীক চিত্ব উঁপস্থিত কএলে ছথি, সংগহি আদর্শ রুপ সেহো দৃষ্ঠিগত ভঽ বহল অছি।

কুরুক্ষেত্রম্ অন্তর্মনক নেন পত্র (পত্রাত্মক শৈনীক সমীক্ষা)

প্রিয বঁন্ধু,

অহাঁক দীর্ঘকায গ্রংথ “কুরুক্ষেত্রম্ অন্তর্মনক” পঢ়বাঁক সুযোগ প্রাপ্ত ভেন। কতেকো সাহিত্যিক কৃতি (উঁপন্যাস, করিতা, কথা-গন্প সংগ্রহ, নাটক, মহাকাব্য, বাঁন নাটক, বাঁন কথা, বাঁন করিতা, প্রবঁন্ধ-নিবঁন্ধ সমানোচনা আদি)কেঁ একহি পুস্তকমে সংগ্রহিত কএ অহাঁ পাঠকক নেন একটা তেহেন পুষ্পমালা বঁনা দেনিএক জাহিমে নগৈত অছি জে বিভিন্ন বংগক পুষ্প একহি জগহ গাঁথন হো। আ পাঠক বৃন্দ সাহিত্যক কোনহু স্বাদ এহি দীর্ঘ পোথীসঁ প্রাপ্ত কএ সকৈত ছথি। নিশ্চয অপনেক ঙ প্রয়াস সাহিত্যক নেন নবীন অছি সংগহি কর্মঠতাক সাক্ষ্য....।

হম কোনহু পৈঘ সমীক্ষক নহি ছী তেঁ সমীক্ষা কববাঁক দাযিত্বপূর্ণ কার্যক নেন অক্ষম ছী। তথাপি অহাঁক পুস্তক পঢ়নাক উঁপবান্ত মনমে জে বিচাবক উঁদ্ভব হোএত তাহিসঁ অবগত কবা দেব একটা দাযিত্ব সন বুঝৈত ছী। তেঁ কিছু অপন বিচাব পঠা বহন ছী।

বঁন্ধু, প্রথমত: ঙ কহবাঁমে হমবা কনিযো সংকোচ

नहि होएत अछि जे मैथिली साहित्यक लेल जे अपने साहित्य आन्दोलनक कार्य कऽ रहल छी से साहित्यक लेल तँ एतिहासिक अछिए। संगहि मैथिली प्रेमी, मिथिलावासी सेहो अहाँक एहि स्वकार्यकेँ कहियो नहि बूलत-बिसरत।

बानकथा-

अहाँ मिथिलांचलमे पसरल छोट-पैघ कथा सभकेँ नवीन रूपेँ संग्रहित कएने छी। अहाँक एहि प्रयाससँ विलुप्त होएत कथा सभ पुन: जीवन्त भऽ उठल अछि। बँगियाक गाछ बँचपनावस्थामे दादीक मुहेँसँ सुनने रही। आब पुन: पढ़बाक अवसर भेटल।

बाजा सलहेस, महुआ घटवारिन, नैका-बनिजारा, जट-जटिन इत्यादि कथाा सभ पढ़लासँ लगैत अछि जे एतिहासिक बहुत गूढ़, तथ्यपूर्ण बात सभ सोनमा अ ाएल अछि। क्षिप्रताक साथ अग्रसर होएतो सब बातक संकेत धवि आवि गेल अछि आ ओहि प्राचीण समएक दशा आ दिशाक ज्ञान सहजहिं परिलक्षित भऽ रहल अछि। सामाजिक जिनगीक क्रिया-कलापक वर्णन करैत अहाँ जे चित्र उपस्थित कएने छी। ताहिमे ओहि कालक विशेषक प्रेम-घृणा, संयोग-वियोग, उन्नति-अवनति, वैर-प्रीत, शाँ त-अशांति, वीवता-कायवता, मूर्खता-विद्वता सबटा भिन्न-भिन्न रूपेँ प्रगट भेल अछि। पढ़ैत काल लगैत अछि जे हम दोसर संसारमे प्रवेश कएने छी। ओहि समएकेँ जँ एखुनका समएसँ तुलना करैत छी तँ बुझि पड़ैत अछि जे विकास कते तीव्र गतिसँ भऽ रहल अछि। आ

এহি প্ৰবান ভেন জিনগীক কথাপব কনম চনৌনাগ কোনো সাধাবণ গপ্প নহি থছি। রিষএ–রস্তু সভপব জে থহোঁ সংতুনন ৰনৌনে ছী সে সমএ থা পবিস্থিতিক থনুকূন থছি।

সংকর্ষণ–নাটক– থপানা থাত্রেযী–দানরীব দধীচী

থপানা থাত্রেযী থাব দানরীব দধীচী–এহি দুনূ ৰান নাটকমে থাহোঁ কথা কিছু নর ৰূপে প্রকট কএনে ছী। সে পাত্রকেঁ থনুৰূপে থছি। কথোপ–কথনমে প্ৰৱাহ থছি থাব ছোট–ছোট রাক্যক প্রযোগ থছি। জে নাটকীযতামে প্রভার উঁত্পন্ন কবৈত থছি। জেনা দানরীব দধীচিক একটা কথোপকথন : "দধীচী– ওন্দ্র। ক্ৰুৰুক্ষেত্র নগ একটা জনাশয থছি জকব নাম থছি, শৰ্যণা। থহোঁ ওতয জাউঁ। ওতয ঘোড়াক ক্ষড়ী বাথন থছি.....। ওহিসঁ নানা প্রকাবক শস্ত্র ৰনাউঁ।"

ৰান নাটক– ৰানকেঁ জ্ঞান ৰূদ্ধিক নেন সেহো উঁপযোগী থছি।

সংকর্ষণ–

নাটক একটা নরীন চবিত্রসঁ পবিচিত কবৱৈত থছি। জে গামক নোককেঁ ঠকনাগকেঁ নীক ৰুঝৈত থছি। এহি থরগুণকেঁ প্রতিভা ৰুঝৈত বহৈত থছি। থরগুণক প্রতিফনপব কনেকো রিচাব নহি কবৈত থছি। রএহ ৰেঁকতী জখন দিন্নী সন মহানগব জাওত থছি তঁ বাস্তামে স্রগং ঠকা জাওত থছি। নানকিনামে জূতা কিনৱা কান ওকবা পতা চনি জাওত থছি জে ও ঠক রিদ্যামে কতেক পাছূ থছি, উঁদাহবণ ৰূপেঁ একটা

कथोपकथन : "गोनव– श्रहोँ कँ ठकि नेनक। श्रहोँक नाम तँ ब्रृम्मन्वक नोकमे श्रवैत श्रछि। संकर्षण– मित्र की कद्ध ? ...... । एहि नानकिनाक चोव वँजावक नोक सभ तँ कतेको महोमहापाध्यायक बृ्घ्किकेँ गवदामे मिना देतन्हि।"

छोटं छीन कथोपकथन द्वावा व्यंग्य, हँसी श्रा गम्भीव वाँतकेँ सहज ठंगसँ कहि देव श्रहोँ नेखनीक विशेषता थीक। नाटककेँ श्राकाव नघ् श्रछि जे नवीनताक सूचक श्रछि। तथा मिथिनामे पसवन वह्त बास वाँतकेँ समटवाँक प्रयास निश्चय सवाहनीय श्रछि। मंचित कववाँक नेन दिशा निर्देश नीक ठँगे कएन गेन श्रछि।

नाटक पठनीयता संगे नाटकीयतासँ पविपूर्ण श्रछि। श्राव संकर्षण श्राकर्षणसँ भवन श्रछि। ।
कथा गुच्छ– (कथा संग्रह) कथा सभकेँ पठनहुँ जे गप्प गुच्छमे संग्रहित श्रछि। पठैत कान स्मवण भेन– एनसाइक्नोपीडिया ब्रिटैनिका किछु शब्द– कथा स्वतंत्र विधा श्रछि। एहिमे संक्षिप्ताक संगहि श्रत्यधिक संगठित तथा पूर्ण कथा रूप हेवाँक चाही।

ओना जिनगी कथा श्रछि श्रा कथा जीनगी श्रछि। श्रा जीनगी जे निवन्तव नवीनताकेँ प्राप्त कऽ वहन श्रछि।

गप्न गुच्छ पठैत कान जे कथा वा पाँति वेसी प्रभावित कएनक ओहि सभहक विषयमे कहव श्रावश्यक ब्रृम्माइत श्रछि। नीक–श्रधनाह कहवाँक श्रधिकाव तँ पाठककेँ होइतहि श्रछि।

नव सामन्त– श्राव सामन्तवादी युग नहि वहन। किन्तु सामन्ती प्रवृति एखनो जीश्रते श्रछि। हँ, ओकवा

রূপমে পরিবর্তন ভঽ গেল অছি। আ ও ভিন্ন-ভিন্ন রূপে সমাজমে আগয়ো দৃষ্টিগোচর ভঽ গেল অছি। এহি কথামে একটা নব সামন্তক নবীন রূপ লক্ষিত ভঽ রহল অছি।

সর্বশিক্ষা অভিযান- কথাক মাধ্যমসঁ দলিত আ গরীবক ধীয়া-পুতাকেঁ পঢ়েবাক লেল উদাসীনতাক ভাবনা ব্যক্ত ভেল অছি। সরকার দ্বারা মুফতমে দেল গেল পোথী অদহরমে বেচি লৈত অছি। কথাক পাঁতি- "আ দুসাধটোলী, চমরটোলী আ ধোবিয়াটোলীসঁ সভটা কিতাব সমটি কঽ বিকনি গেল।"

থেথর মনুক্খ- এহি কথাসঁ স্পষ্ট হোইত অছি জে মনুক্খক পূর্ণ অধ:পতন ভঽ গেল অছি। এতেক জে মনুক্খ চিড়ৈ-চুনমুনী, পরবা পৌরকী ধরিসঁ নীচা উতরি থেথর ভঽ গেল অছি।

স্ত্রী-বৈষ্টা- এহিমে সমাজমে স্ত্রীগণক মহত্বহীনতা আ সংগহি কবরষ্ট লৈত সামাজিক স্থিতি-পরিস্থিতি চিত্রণ ভেল অছি।

বিয়াহ আ গোবনাগত- যণ-যণমে মনুক্খক বঁদলৈত বঁগ গিরগিটটা জকাঁ...... আ দহেজক লোভী বৈকতী সংতোষী সন বৈরহাব দেখা কঽ স্বয়ং লজ্জিত হোইত ছথি। আগয়ো কোন কোন রূপেঁ দহেজ লোভী দবঁকল অছি সমাজমে আ কোন-কোন প্রপংচী চালি চলি রহল অছি। সে এহি কথাসঁ বুঝাগত অছি। নীক চিত্রণ ভেল অছি।

প্রতিভা- চালাকী আ প্রতিভা দুনূ অলগ-অলগ বাঁত ছৈক। প্রাপ্তিক লেল দুনূমে সঁ কোন মহত্বপূর্ণ সএহ দেখেবাক যত্ন ভেল অছি।

মিথিলা উদ্যোগ- কিছু কথাক কোনো গপ্প পাঠককেঁ

दीर्घकाल तक झंकृत कएने रहैत अछि। एहि कथामे गदहापर लादल जे संदेश भेटैए रहल छैक से बहुत दिन धरि पाठककेँ स्मरणमे रहत।

बकटेल छलहुँ कोहबर नय- स्त्री-पुरूषक बीच बनैत-बिगड़ैत सम्बन्ध आ छल-प्रपंच अपने-आपकेँ ठकब आ ठकाएबला गप्पक मार्मिक विश्लेषण एहि कथा द्वारा भेल।

हम नहि जाएब विदेश- कोन वैकतीकेँ हृदयमे कतेक कष्ट-पीड़ा आ हँसी-खुशी भरल अछि। ओकरा पूर्णतया उत्खनन करनाए सम्भवो नहि अछि तथापि कथाकार तँ प्रयास करबे करता। एहि कथामे द्विजेन्द्रक मोनक व्यथाकेँ कथा पूर्णरूपेण उजागर भेल अछि।

एकटा पाँति- "कोन सबोकार माएसँ पैघ छल यौ लाल। जे अहाँ कहैत छी जे हम ककरोसँ सबोकार नहि रखने छी।"

बाग बैदेही भेररी- एहि कथामे एकटा कलाकारक जीनगीपर रोशनी देल गेल अछि। कोना एकटा साधारण गामक गबैया सुख-दुख, सफलता आ विफलतासँ लड़ैत उच्चताकेँ प्राप्त कएलक तकर विशेद वर्णन भेटैत अछि।

बाँढ़ि भूख आ प्रवास- हास्य-व्यंग्यसँ पूर्ण कथा अछि। लघु आकारक रहितहुँ ई कथा बहुत बात गप्पकेँ समेटने अछि। भूख आ भूखक कारणे उठैत मनक तरंग आ ओहि कारणे वैकती कतऽ सँ कतए प्रवास करैने जाइत अछि। आ ओहो स्थानपर कोना आशापर तुषारपात होइत अछि। एहि पाँतिकेँ पढ़लासँ स्वत: हास्य उपस्थित भऽ जाइत अछि।

“সবকাব হম তঁ ৱেনসঁ খাএন ছী হ্মদা খর্গাঁ কোন সরাবীসঁ খএনহ্ঁ জে হমবাসঁ পহিনহিসঁ রিবাজমান ছী।”– রৈদিক জী খনহ্খাসঁ হাথ জোড়ি কহৈত খছি।
নূতন মিডিযা– খাধ্নিক মিডিযা কোন তবহেঁ চনি বহন খিছ। সে উঁজাগব ভেন খছি।
জাতি–পাতি– এহি কথাকেঁ পঠ়নাক বাঁদ পাঁতি যাদ খরৈত খছি– “দেখনমে ছোটৈন নাগৈ জাতি পাতিক দংশ”
বহ্পত্নী রিযাহ খা হিজড়া– এহি কথামে একসঁ খধিক পত্নী কএনাসঁ জে সমাজমে সড়াংধ পৈদা ভঽ বহন খছি। কোন–কোন ৰূপেঁ ওকব রিকাব নিকনৈত খছি তকব বর্ণন ভেন খছি। কিছ পাঁতি– “...ভাতিজ সভকেঁ নহি মানৈত ছিঐক তেঁ ভগৱান বচ্চা নহি দেনন্হি।”
বাণরীব– এহি কথামে বাণরীবক মনোবিশ্নেষণ নীক জকাঁ ভেন খছি। সমূহসঁ কটন বাণরীব কতেক খথাহ পীড়ামে সংঘর্ষ কবৈত জীনগীক এক–এক পন কটৈত বহৈত খছি সে কথাসঁ স্পষ্ট ভঽ জাগত খছি। বাণরীবক এহি কথনমে কতেক মর্ম ছিপন খছি– “মাএ বাবূ! হমবা বূঝন খছি জে হমব রিযাহ দান নহি হোএত। হ্মদা খপন পেট তঁ কোহ্না হম গামমে ভবিএ নৈত ছী। গ্রজব তঁ কগএ নৈত ছী। নোক সভ কহৈত বহএ জে তোহব মাএ–বাপ তোবা বৈচি দেনকউ। সে ঠীকে খছি কী?”....কন্নাবোহট উঠি গেন।
খন্বকপ্পাক নোকবী– নোককেঁ বাপ মবনাপব নোকবী ভেটৈত ছৈক। হ্নকা ভাএক মবনাপব ভেটৈনন্হি। এহি কথাক সাব খছি।

मृत्युदंड- कथाक द्वारा देखाओल गेल अछि जे कोना बाँलिका आर्याकेँ मृत्युदंड भेल जाइत अछि जेकर कोनो दोष नहि छल। ब्रैग्वनाहकेँ दण्ड। सेहो मृत्युदंड। एहेन अछि एहिठामक समाज। जेकरा सहजताक संग स्वीकारो कऽ लेल जाइत अछि। एखनुक समाजक दरपन जकाँ कथा लगैत अछि।

एहि तरहेँ गल्प गुच्छक कथा सभकेँ बाँद बुझाइत अछि जे वर्तमान समस्याकेँ यथार्थ रूप प्रगट भेल अछि। छोट-छोट दृश्य खंड कार्यात्मक रूपसँ सोझा आएल अछि। कथारसक्रममे मिथिलाक माटि-पानिक गंध अछि। किछु कथा अत्यन्त लघु तथापि उद्देश्य प्रकट भऽ गेल अछि जे सम्पूर्ण देशक यथार्थताकेँ समेटने अछि।

सहस्त्रबाँढ़नि (उपन्यास)- प्राचीनकालहिसँ सहस्त्रबाँढ़निक विषयमे उत्सुकताक संगहि अनुमान कएल जाइत रहल अछि। अनुमानित व्याख्या आ समीक्षा होइत रहल अछि। विज्ञान द्वारा अलग ढंगसँ आ साहित्य तथा अध्यात्म द्वारा अलग-अलग ढंगसँ। अहाँक उपन्यासक पात्र एहि सम्बन्धमे कहैत छथि-

"अबैत रहास, कलैत हुनकर सबहक परिवार। सपनामे अबैत रहल ओ सभ सहस्त्रबाँढ़निक रूप बनि कए। हमरे सन कोनो शापित आत्मा छथि ओ सहस्त्रबाँढ़नि जे अपन संघर्ष अधखिज्जू छोड़ि मरि गेल होएत आ आब ब्रह्माण्डमे घुरिया रहल अछि। आब देखू तीनू बच्चाक परीक्षा परिणाम सभदिन प्रथम करैत अबैत रहथि, आब की भऽ गेलन्हि। हम जे संघर्ष बीचमे छोड़लहुँ तकर छी ओ

परिणाम।" नन्द हरोॅठ़कार भऽ कानए लगलाह।

एहि पाँतिकेँ जँ गम्भीरतासँ आत्मसात करए लगलहुँ तँ मात्र नामेटा नहि संगहि उपन्यासक सारतत्व एवं उद्देश्यो प्रगट भऽ गेल। नन्दक चरित्र आर हुनका द्वारा कएल गेल संघर्षक रूप तथा मनक मनोविज्ञान स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

उपन्यासक भाषा शैली नवीन ढंगक अछि। वर्णात्मक शैलीमे आरम्भ भेल अछि। भाषामे चित्रात्मकताक एकटा उदाहरण- "एकदिन कनितकेँ देखलहुँ जे ठेल्हियाँ दैत आगू जा रहल छथि। आँगनसँ बाहर भेलापर जतए आँकर-पाथर देखलन्हि ततए ठेल्ह उठा कऽ मात्र हाथ आ पाएरपर आगू बढ़ए लगलाह।"

किछु एहि तरहक शब्दक प्रयोगसँ भाषामे आकर्षण आबि गेल अछि। जेना थाम्ह-थोम्ह, कानब-खीजब, काज-उद्यम, जान-पहचान, बूढ़-प्रवान, घुमब-फिरब, टैका-टैकी, संगी-साथी, झगड़ा-झाँटी, तंत्र-मंत्र, पढ़ाइ-लिखाइ इत्यादि। उपन्यासक भाषा मैथिली पाठककेँ अनुकूल अछि जहिना लोक बजैत छथि तहिना सहज ढंगसँ वर्णित अछि।

मिश्रीलाल बाबू, नन्द आ नन्दक भैया, भातिज, बेटा, नवल जी झा, आरुणि आ हुनक माए-बाबू, बहिन, कनित आ हुनक पत्नी, शशांक, मणीन्द्र, भौजी, शोभा बाबू बुचिया इत्यादि पात्रक माध्यमसँ कथावस्तु संगहि चरित्रक विकास भेल अछि। जाहिमे मौलिकताक संगहि स्वाभाविकता अछि। नव दृष्टिकोणसँ सहजताक संग चरित्र सबहक विकास भेल अछि। जे उपन्यासक अनुकूल अछि।

मिथिलाक नदी–कमला, कोशी, बलान आ ादिक वर्णन भेल अछि। संगहि एहिठामक गाम घर–झंझारपुर, मेहथ, गठ़ि या, कनकपुर, कछुरी आदि वर्णनसँ सहजहि कथामे मिथिलाक माटि–पानिक गंध आबि गेल अछि।

कथोपकथनमे संक्षिप्ता आ सहजता अछि। उदाहरण स्वरूप किछु अंश देखल जा सकैत अछि।

आरूणि दू–तीन कौर खा कऽ उठि गेलाह। हुनकर संगी करण पुछलखिन्ह–

"पता नहि। घरबाहरि भऽ रहल अछि।"

"काल्हि ट्रेनि ंगपर जएबाक अछि ने। ताहि द्वारे।"

"पता नहि।"

तावत भीतरसँ अवाज आएल। सभ क्यो दौगलाह।

कथोपकथन जीवगी आ पात्रानुकूल अछि।

"की बजलहुँ बेटा"– माए पुछलखिन्ह।

"नहि। ओ कॉलोनी देखि कऽ किछु मोन पड़ि गेल।"

"नहि देखू ओ पपियाह कॉलोनीकेँ।"

उपन्यास मनोविश्लेषणक संगहि दर्शनसँ सेहो पुष्ट अछि।

"पृथ्वी विशाल अछि आ काल निस्सीम, अनंत। एहि हेतु विश्वास अछि जे आइ नहि तँ काल्हि क्यो न क्यो हमर प्रयासकेँ सार्थक बनाएत।"

आशाक संचार करएबला ओ वाक्य बाबूबाबूक मनमे उठैत अछि। जीवगीक संचालित करबाक लेल तँ आवश्यक अछि जीवगीक रस। वएह रस थिक– आशा। जँ जीवगीमे आशा, अभीप्सा नहि होअए तँ जीवन

নিবর্থক।

"আব্দশিকেঁ নগনন্হি জে ও মোঁটারৈনা সহস্ত্ররাঁঠ়নি ঝমাবি কএ এহি রিশ্রমে ফেক দৈত ছন্হি হ্নক।"

কথীনে কিছু কিএক সে প্রশ্ন উঠৈত অছি মনমে। যএহ প্রশ্ন পাঠককেঁ রেঁব-রেঁব সোচৈনে মজবূঁব কবৈত অছি- বঁহ্ত বাস গপ্প। আ এক প্রশ্নসঁ জন্মৈত অছি বঁহ্ত প্রশ্ন জে পাঠককেঁ একটা অনগ সংসাবমে নঃ জাগত অছি।

মন্বষ্যক প্ররৃতিকেঁ সম্রঁন্ধমে ওা পাঁতি দেখন জা সকৈত অছি- "মন্বষ্যক প্ররৃতিযে হোগছ, সমানতা আ ত্তননা কববাঁক সাম্য আ রৈষম্যক সমানোচনা আ রিরেচনামে কতেক গোষ্ঠে অপন জীনগী রিঁতা দৈত ছথি। আব্দশি আ নন্দক রীচ সেহো অনাযাসহি ँ সাম্য দেখন জা সকৈত অছি।"

উঁপবসঁ মানর ভিন্ন-ভিন্ন প্ররৃতিকেঁ হোগত অছি। কিন্তু মূনমে গহবাগসঁ অন্রেষণ কএন জাএ তঁ কিছু তনপ সভ মন্বষ্য নগভগ সাম্য হোগত অছি। অন্ত:মে রএহ বস নি:সৃত হোগত বহৈত অছি। কিন্তু ওতেক শান্ত ভার আ ওতেক গম্ভীবতাসঁ স্রংযকেঁ দেখনাগ সহজ গপ্প তঁ নহি থিক।

উঁপন্যাসক আকাব নঘ্ বহিতহুঁ কথা রস্তুক পূর্ণ রিকাস ভেন অছি। কথাক অন্বকূন অছি ভাষাক সংত্তনিত ঢংগসঁ প্রযোগ ভেন অছি। নর রস্তুক নরীন দৃষ্টিকোণসঁ অভিরযক্তি ভেন অছি। মৌনিকতাসঁ পূর্ণ অছি।

রর্তমানমে মৈথিনী সাহিত্যক প্রগতিক নেন অহাঁ সন রেঁকতীকেঁ আরশ্যকতা অছি। জে একভগাহ হোগত

মৈথিলীকেঁ সং ত্তনিত কবতা আ সংগহি স্রয়ং তঁ অগ্রসব হোএরেঁ কবতাহ দোসবোকেঁ আগূ রঁঠ়রাঁক স্বঅরসব দেতাহ। এহি দৃষ্টিকোণসঁ অহাঁক প্রযাস অরর্ণ্যি অছি।

একটৌ পাঁতি স্মবণ ভঽ গেন–

অহীঁ সন মৈ থলী সেরকপব
অছি হমবা সরঁহক আস
ভবরঁ ভণ্ডাব মৈথিলীক
অছি পূর্ণ রিশ্রাস।

সহস্ত্রার্ব্দীক চৌপড়পব–

সহস্ত্রার্ব্দীক চৌপড়পব রৈঁসন অহাঁ জি নগীক খেন দেখ বহন অছি। গহন অন্বেষণ কবৈত এক–একটৌ চি ত্রক বচনা কঽ বহন ছী আ ওগ উঁমংগমে ডূরি বহন ছী।

"অসীম সমুদ্রক কাতক দৃশয

হৃদয ভেন উঁমংগসঁ পূবি ত.... ।"

অহাঁক অন্তবক করি বরি ক চি ত্র উঁপস্থি ত কবৈত কইত অছি –

"সূর্য কি বণ পসবি ছন গেন

কতেক বহস্য রি নাএন

তি মি বক ধূঁধ ভেন অছি কাতব

হ্নদা গু কী....... । ”

সংগ্রহমে কি ছু হৈকূ পঠ়ৰাক স্বখরসব ভেষ্টন। কি ছু স্বখাদ ৰঁদনৰাক নেন.... । মি থি নাঁচনক গমকসঁ খহাঁক করি তা হমবা সরঁহক মোনকেঁ গমকা বহন খছি :

“মোন পাড়় ৈত ছী ধানক খেত

সি ন্নী কচৌড়় ী

নোঠ় ৈত কাষ্টন ধানক স্নঞ্ঝা

ওহি রীছন শীসক পাগসঁ কীনন

নানস্নড়় ী

জেকবে নাওঁ নান ছুড়় ী খা

সত ধবি খা খেন.... । ”

প্ররাসমে বহুত স্মবণ হোগত গাম ঘব। ঐ পাঁতি মে রি যোগক ওগ র্যাথাক রর্ণন ভেষ্টৈত খছি । একষ্টা নরীন নযক সংগ–

“পতা নহি ঘুবি কঽ জাএৰঁ

খাকি এতহি মবি –খপি

রিঁ নাএৰঁ..... । ”

ऐ व्यंग्यमे स्पष्ट दृष्टि गोचर भऽ रहल अछि ।

"नारी मात्रामे कोनो देवी नहि

राक्षसी भेनापर शोको थोड़ नहि

परन्तु छी पूजनीया अहाँ.... । "

राजसँ उत्पन्न भेल समस्या आ ओकरा छोट-छीन पाँति मे समेटनाक गागरमे सागर भरबाक प्रयास ऐ पाँति मे परिलक्षित भऽ रहल अछि -

"ठाम-ठाम कटैत छल रहर

उपरसँ रन्नी पड़ि रहल

सभटा धान चाउर भीतक कोठी

टेंटि खसल पानि क भेल ग्रास... । "

नव-नव बिंबसँ कवि ता सभ पूरित अछि -

"सहस्त्रराजनि जकाँ दानवाकार

घटनाक्रमक जंजाल

फूलि गेल साँस

हड़बड़ । कऽ उठलहुँ हम.... । "

हड़बड़ा कऽ नै बनकि अहाँ सचेत भऽ कऽ उठलहुँ । नव-नव चि त्र ध्वनि लऽ कऽ नवीन दृष्टि क संगे । पता नै कतऽ धवि जाएब । कतऽ गन्तव्य अछि अहाँक ।

"वि श्वक मंथनमे

होएत कि छ बहाव आब....

पथक पथ ताकब.....

प्रयाण दीर्घ भेल आब.... । "

प्रबन्ध-नि बन्ध समालोचना :-

प्रारंभमे हल्ड बर्कपव आधावि त खि स्सा सीत-बसंत अछि । ओ लोक कथा मार्मिक अछि संगहि शि क्षा आ उपदेशसँ भवल । सतमाएक चवि त्र केहेन होइत अछि आ केहेन होएबाक चाही से स्पष्ट भेल अछि । समाज द्वावा वि सवल जा वहल ऐ कथाकेँ अहाँ पुन: जीवित कवबाक कएने छी जैमे माए-बाप बेटा आ सतमाएक मर्मस्पर्शी वर्णन भेल अछि । वर्तमानमे सीत-बसंत नाच वि हावक गाम-गाममे लोक

मानसकेँ आनन्दि त कऽ बहन अछि ।

दोसब अछि – मायानन्द मि श्रेक प्रथमं शीन पत्री च, मंत्रपत्र, पबोिह त आ स्त्रीधन। जे रेदकानीन गि तहासपव आधावि त अछि । जेकव समीक्षा गति हास आ साहि त्य दनू आधाव नऽ अहाँ नीक जकाँ प्रस्तुत कएने छी।

एकब ऱाँद अछि केदान नाथ चौधबी जीक दूटा उँपन्यास– चमेली बानी आ माहूब ग पाठक द्वाबा आठ ृत उँपन्यास अछि । एकव समीक्षा अहाँ नीक तबहेँ कएने छी। अहा कहने छी जे– *नव समीक्षावाद द्रति क रि स्तुत रि रवण्पव आधावि त अछि ।*

नो एंद्री : मा प्ररि शे नचि केता जीक नाटक अछि । जेकवा अहाँ कि छ नव तबहेँ समीक्षा कवब़ाक प्रयत्न कएने छी।

करि शेखव जयोति बीश्वव शर्ब्दावली– रि द्यापति शर्ब्दनी, करि चतुर्भुज शर्ब्दावली आ ब़द्रीनाथ झा शर्ब्दावली द्वाबा मैथि ली शर्ब्द भंडावकेँ रि शेद वर्णन कएन गेल अछि ।

मैथि ली टेकू आ क्षणि का पढ़ब़ाक अबसव भेटैन। श्रीमती जयोति झा चौधबीक जंगनि श टेकू अहाँक

মৈথি নী খনব্রাদ সহি ত।

মি থি নাক রাঁঠ্ া – জে এত্তক্কা বহনি হাবক নেন প্রনয রঁনি খারৈঁত খছি । ঐ সমস্যা খা সবকাবী প্রযাসক রর্ণন নীক জকাঁ ভেন খছি ।

রি স্মৃত করি পং. বামজী চৌধবীক বচনাকেঁ পঠকক সোন্না বখরাঁক প্রযাস। রাস্তরমে ঙা খহাঁক খরি স্মবণীয কার্য খছি ।

রি দ্যাপতি ক রিঁ দেশি যা– পি খা দেসাঁতব– ঐমে কি ছু নর তথ্য সভ সোন্না খাএন খছি ।

রঁনৈত–রি গড় ৈত স্বভাষ চন্দ্র যাদরক কথা সংগ্রহক সমীক্ষামে খহাঁ দ্বাবা সার্থক প্রযাস ভেন খছি । ঙা কথন জে *"ও কথাক মাধ্যমসঁ জীরনকেঁ রূপ দৈত খছি । শি ল্প খা কথ্য দুনূসঁ কথাকেঁ খনংঙ্কৃত কএ কথাকেঁ সার্থক রঁনবৈঁত ছথি ।"*

ঐ কথা সংগ্রহক খহাঁ রি শেদ রূপেঁ সমীক্ষা কএনে ছী।

খন্তর্জানিপব মৈথি নী– ঐমে নরীন এরং জ্ঞানরর্দ্ধক তথ্য সভ পাঠকক নেন পরোসনে ছী। খাজ্ক সমএমে একব জ্ঞান খা খন্বভর রঁড্ড খারশ্যক ভহ গেন খছি ।

নোবি কক গাথামে সমাজ ও সংস্কৃতি – ঐ গাথামে

ओगकानक समाज ओ संस्कृति एरं बाजनीति क पक्षकेँ अहाँ उँजागव कएने छी।

मि थि लाक खोज– अहाँ करैत वहलन्हि गाम–गाम। संगहि पाठककेँ स्थान सभसँ पवि चि त कवरैत सवाहनीय कार्य कएलन्हि।

अरचाहनच आ अमन्जाति मन (महाकार्य)– महाकार्यमे जीरनक अत्यन्त र्यापक चि त्रण उँदात मानरीय अनुभूति क रूपमे प्रगत कएल जागत अछि ।

अहाँ प्रारम्भमे नि खने छी–

"ई भावत ग्रंथ

जयक जाहि मे गान

तखन कहि या सँ भेनाह एतेक्का लोक

कर्महीन, संकीर्ण..... । "

अहाँ अन्त ऐ पाँति सँ कएने छी–

"असन्जाति मनक ई सरॅन

देलन्हि अहाँ के रुँक्र

কে ব়্ক্ষ– কে ব়্ক্ষ। ”

ওনা খার্ব মহাকার্য কম নি খন জা বহন খছি । কি ন্ত সাহি ত্যক সভ রি ধা জীখত বহর্বাক চাহী। ঐ পবম্পবাকেঁ খহাঁক দ্বাবা খাগূ র্বঠ়্রোক প্রযাস ভেন খছি । ধর্ম–উঁপদেশপব খাধাবি ত পৌবালি ক কথাকেঁ খহাঁ কথারস্তক রূপেঁ কি ছ নূতন তবহেঁ সজের্বাক প্রযাস কএনে ছী। খভি র্যকতি নেন তত্সম শর্ব্দারনীক প্রযোগ ভেন খছি । ওনা পাত্রান্বকূন ওহন শর্ব্দ খানর্ব খারশ্যকে ছন। শীর্ষক কহর্বামে কাঠি ন্য সন খন্বভর ভেন। তাথ্যপি বচনা খাদব কবর্বাক যোগ্য খছি ।

র্বান করি তা– ঐমে উঁপদেশক সংগহি মনকেঁ বঁজি ত কবর্বাক ক্ষমতা হোএর্বাক চাহী। জে উঁত্স্বকতা র্বনৌনে বহএ।

নর–নর মোহক দৃশ্য দেখর্বৈত খহাঁ র্বচ্চা সভকেঁ নর সংসাবসঁ পবি চি ত কবর্বাক প্রযাস কএনে ছী। জেনা–

“মেহনতি খহাঁ করু

ফন হমবা দি খ..... । ”

দোসব পাঁতি –

"ऋगनपव भारॅत् की भेँस्वब केनहुँ थतत्ह समए रॅदनन नहि रॅदनन ঙ্গ गाम हमब। । "

नि शचय एतेक बास रॅान करि ता बचि थहाँ रॅान सािं ह৩यक भ"डाव भबरॅाक सवाहनीय प्रयास कएने छी।

थन्तमे, यएह जे साहि ৩यक सभ रि धाकेँ एकठाम संग्रहि त कबरॅाक एकটা नर प्रयोग भेन थछि ।

र्याकबণ था भाषाक शब्द्धता थछि ।

श्रीति प्रकाशिन धन्यराादक पात्र छथि जे नीक जकाँ एतेक पैघ पोथीक प्रकाशिन कएननि । दीर्घकाय पोथीक मून्य कम थछि । जैसँ पाठककेँ ध्य कबरॅामे स्वरि धा हेतैक।

पोथि क नेन यएह कहरॅ जे- थहाँ भि न्न-भि न्न प्रकाबक प्स्पसँ स्वसजजि त एहेन प्स्पबरॅाटि का रॅनेनहुँ जैमे प्रवेशि कर पाठक जेहने थाकांक्षा कबत तेहने रूप, गंध प्राप्त कबत था हमबे जकाँ थानन्दि त भर कहत- "धन्यरााद। "



ড◌ॉ. মেঘন প্রসাদ

মৈথিনীমে খন্বরাদ–কনাক শাস্ত্রীযকবণক গতিহাস

হম পহিনহি কহি দী জে হম খন্বরাদ কনাক নে তঁ মর্মজ্ঞ ছী খা নে কহিযো খন্বরাদক কাজ কযনহুঁ খছি । তথাপি বাষ্ট্রীয খন্বরাদ মিশন যোজনা ক তহত কেন্দ্রীয ভাবতীয ভাষা সংস্থান ক খধিকাবী নোকনি পূর্ণ রিশ্বসনীযতাক সংগ খন্বরাদক শাস্ত্রীয রিষযপব খাযোজিত বাষ্ট্রীয সেমিনাবমে মংচসঁ হমবা কিছু কহবাঁক দাযিত্বপূর্ণ গু ভাব দেননি তকবা নেন হম সংস্থাক খধিকাবী নোকনি খাসক ২ ড◌ॉ0 খজিত মিশ্রজীক প্রতি কোটিশঃ খাভাব প্রকট কবৈ ছী । খন্বরাদক কাজ কববাঁক উৎকেষ্ট গছা তঁ ছন হ্মদা সাহিত্ খকাদেমীক প্রতিনিধ্ ি তথা সদস্য নোকনি তকবা খাগ খ্রি পূর্ণ নহি হোময দেননি । পতা নহি হমবা প্রতি কোন প্রকাবক দ্বাগ্রহ পোসনে ছথি । একাধ্ রেঁব সাহিত্ খকাদেমীক প্রতিনিধ/ি পদাধিকাবীসঁ পত্রাচাবো কযনহুঁ হ্মদা সেহো নিবর্থকে গেন । গু জকব কহি দী জে মৈথিনীসঁ জ্বন বহবাঁক কাবণেঁ মৈথিনীমে খন্বদিত বচনা

রৈস সংখ্যামে পঢ়রৌক খরসব প্রাপ্ত ভেন খছি তেঁ ওহি খন্বভরক খাধব পব মৈথিনীমে খন্বরাদ–কনাক গতিহাসপব কিছ কহরৌক হিম্মতি জ্টৌ সকনহুঁ খছি। খন্বরাদ–কনাক খর্থ – খন্বরাদ–কনাক মাদেঁ মৈথিনীক খন্বভরী খা সফন খন্বরাদক পন্ডিত শ্রী গোরিন্দ ঝাজীক কহরঁ রৈসী উঁপযাঞ বুঁঝি পডৈ¬় খছি – এহেন কোনো বহস্য এহেন কোনো সূত্রা নহি রা এহেন কোনো মন্ত্রা নহি ছৈক জে কানমে ঢাবি দেনে কেও সফন খন্বরাদক ভ ২ জাএ। হমবা জনৈত খন্বরাদ থিক কোদবরৌহি জাহিমে শিক্ষণ–প্রশিক্ষণ নহি কেরন খভ্যাস খপেক্ষিত হোগত ছৈক। 1
স্বতন্ত্রাতাক সন্দর্ভমে খন্বরাদ জে থিক সে এক প্রকাবক ব্যাখ্যা থিক। প্রায়ঃ 1915 গ্রা0মে ভাষা রৈজ্ঞানিক Saussure ছনাহ জে ক◌ॉনেজ নোট (College Note) নিখননি তকবা রৌদমে খন্বরাদ কহি ক ২ প্রকাশিত কবাওন গেন। ও খপন নোটক ব্যাখ্যা ক ২ ক ২ প্রকাশিত করৌননি জে হুনক মৃত্যুপবান্ত খন্বরাদ কহি ক ২ প্রকাশিত ভেনৈক।
খন্বদিত বচনা নোক সভ মনোবংজন নেন কম্ম জ্ঞান নেন রৈসী পঢ়ৈএ। তেঁ ওকব মূন রিন্দু খা তকনীকি খর্থ রঁনা শৰ্দ্দক উঁপযোগ কব ২কান পূর্ণ সারধনীক খারশ্যকতা খছি।
রিষযরগন্বিসাব খন্বরাদ তীন প্রকাবক মানন গেন খছি – শাস্ত্রীয ব্যারহাবিক খা সাহিত্যিক। খন্বরাদ শাস্ত্রীয কম ব্যারহাবিক রৈসী হোযরৌক চাহী। শাস্ত্রীয খা ব্যার– হাবিক খন্বরাদমে মুখ্যতঃ খর্থ খর্থাত্ Suface Meaning খা ভার খর্থাত্ Intended Meaning গএহ দূনূ পকড়রৌক প্রযোজন হোগত

ছৈক। হ্মদা সাহিিৎক খন্বরাদমে মূনক খভিরূ্যজনা সেহো স্ববক্ষিত বাখবাঁক খপবিহার্যতা বহৈত ছৈক। খভিরূ্যজনাকেঁ পকড়্ পযবাঁক হেত্ত রিদ্বতা নহি ভারুকতা চাহী। এহি খভিরূ্যজনামূনক রিশিষ্ঠতাকেঁ দেখৈত রিভিন্ন রিদ্বান্ সাহিিৎক খন্বরাদকেঁ খন্বরাদ নহি কহি Transereation, Recreation প্বনঃসর্জন প্রতিৰূপণ খাদি নানারিধ্ নাম দৈত ছথি।

পবোক্ষান্বরাদ – ভাবতীয ভাষা সভমে খাস ক ২ মৈথিনীমে খন্বরাদক এক রিষ্হত খর্থাত্ খরাছনীয পবম্পবা চনি পড়ন খছি। গ থিক পবোক্ষান্বরাদ। খর্থাত্ খন্বরাদসঁ খন্বরাদ। এহি প্রকাবক পবোক্ষান্বরাদমে বঁহ্ত–বাস রিষ্হতি খারি জাগত ছৈক। রিষ্হতি কোনা খা কতেক খবৈঁত ছৈক এক বেঁব তকব পবীক্ষণ যূবোপক কোনো সংস্থা কবৌনে ছন। নেখক জেন খাস্টিন কেব প্রসি(উঁপন্যাস প্রাগড এন্ড প্রীজূডিস কেব এক খধ্যাযক খন্বরাদ চীনক মন্ডবিন ভাষামে ভেন ছনৈক তাহিসঁ খববীমে খা তাহিসঁ ফেব খংগ্রেজীমে কযন গেনৈক। বাঁদমে জ্ঞাত ভেনৈক জে এহি খন্বরাদ–শ্রংৃখনামে মূন পাঠক খঙ্কিতব ভাগ খামসঁ কষ্টৈব ভ ২ গেনৈক। এহি প্রকাবক খন্বরাদক Channel Distortion নিশ্চয পবোক্ষান্বরাদক শ্রেণীমে খবৈঁত খছি। পবোক্ষান্বরাদক মাদেঁ এক বাঁত খাওব কহন জা সকৈত খছি– জঁ খন্বরাদক মূন ভাষা চীনী রা খববী সদৃশ রিদেশী হ্খএ তখন তঁ মৈথিনী খন্বরাদমে মূন ভাষাক কোনো খাস হ্মপ্রভার নহি পড়তৈক কিএক তঁ দূনূ মৈথিনীসঁ বঁহ্ত দূবক ভাষা ছৈক। হ্মদা মূন ভাষা হিন্দীসঁ মৈথিনীমে খন্বরাদ হোযত তঁ মূন ভাষাক

বৈসী হুপ্রভাব পড়ৈক আ ও মৈথিলীক স্বরূপকেঁ কিছু-নে-কিছু অবশ্ষ বিগাড়ি দেতৈক। হিন্দীক মূল গ্রন্থ বা অনূদিত গ্রন্থসঁ জতেক মৈথিলী অনুবাদ হমবানোকনি দেখি সকলহুঁ অছি সভহঁ। নগৈত অছি জে মৈথিলীক পবিধনমে সাক্ষাত্ হিন্দীএ ঠাঢ় হ্অয। সংগোষ্ঠীমে বিচাবণীয অছি জে এহি প্রবৃত্তিক বিবোধ্ কোনা আ কতেক দূব ধ্রি হ্অয।

সফল অনুবাদকক প্রবীণতা - সফল অনুবাদককেঁ তীন ক্ষেত্রামে প্রবীণতা বহবাঁক চাহীঐ মূল ভাষামে প্রবীণতা লক্ষ্য ভাষামে প্রবীণতা আ অনূদ্য সামগ্রীক বিষযক্ষেত্রামে প্রবীণতা। জেনা মূল সন্দর্ভ গণিতক হো তঁ গণিত-শাস্ত্রমে প্রবীণতা বা কমসঁ কম প্রবেশ তঁ অবশ্ষ চাহী। মৈথিলীমে বাস্তবিক স্থিতি তঁ ওা অছি জে জেনা আজ্ক মন্ত্রাী সর্বজ্ঞ বূঝল জাগত ছথি তহিনা আজ্ক মৈথিলী অনুবাদক সেহো সৌভাগ্য বা দ্ভগ্যিবশে সর্বজ্ঞ মানি লেল জাগত ছথি। আদর্শ

অনুবাদ তঁ ও হোযবাঁক চাহী জে বিষয-বিজ্ঞ মূলভাষা-বিজ্ঞ আ লক্ষ্যভাষা-বিজ্ঞ লোকনিক সহযোগসঁ প্রস্তুত হোযত।

উপযুক্ত পর্যাযিক চযন - অনুবাদমে ভনহি ভাবক উপদেশ দেল জায উপযুক্ত পর্যাযিকচযনকেঁ সভসঁ পহিনে আ সভসঁ উচ স্থান দিঅ ২ পড়ত। উপযুক্ত পর্যাযিকেঁ চ্নবাঁক হেত্ত অনুবাদকর্ত্তা পহিনে অপন হৃদযকেঁ নহি দ্বিভাষিক শব্দ-কোশকেঁ ঢূঁঢ় ২ নগৈত ছথি। অনুবাদকর্ত্তা পহিনে অপন হৃদযমেসঁ উপযুক্ত পর্যায তাকথ্ আ অপন আমেবিশ্বাস বঢ় াবঁথ্ আ তকবা বাঁদ দ্বিভাষিক বা বহ্ভাষিক শব্দ-কোশমে ঢূঁঢ়থ্ তঁ নীক অনুবাদ প্রস্তুত ভ ২ সকৈছ।

মৈথিলীমে নীক অনুবাদক লেল বহুভাষিক ব্যাকবণ বহুব আবশ্যক অছি জকব অভাব মৈথিলীমে সভসঁ বেসী অখবৈত অছি। এখন এহি দিশামে ডॉ0 বাম নাবাযণ সিংহজী একটা নীক কাজ ক ২ বহল ছথি। ডॉ0 বাম নাবাযণ সিংহজী ব্যাবসাযসঁ সংস্কৃতক শিক্ষক ছথি মুদা মৈথিলীসঁ নীক জকাঁ জুড়ল ছথি। মৈথিলী–মলযালম–সংস্কৃত– অংগ্রেজী ক্রিযা–কোশ (Multi Langual Verbal Dictionary)ক নির্মাণমে লাগল ছথি। প্রাযঃ পূর্ণ ভ ২ গেল ছনি। আব ছপবাক স্থিতিমে অছি। জ্ঞাতব্য জে সাহিত্য অকাদেমীসঁ পুবস্কৃত মলযালম ভাষাক লেখক শ্রী তকষ ী শিবশংকব পিল্ঠৈক একটা উপন্যাস চেম্মীন্ সাহিত্য অকাদেমীসঁ পুবস্কৃত আ বিশ্বক অনেক ভাষামে অনূদিত উপন্যাসক মৈথিলী অনুবাদ মলাহিন সাহিত্য অকাদেমীসঁ শীঘ্র প্রকাশ্য ছনি। হিন্দীক লেখিকা ডॉ0 মিথিলেশ কুমাবী মিশ্রক ছটা কোহবা লঘুকথা–সংগ্রহক মলযালমমে জাগ্রতা শীর্ষকসঁ অনুবাদ প্রকাশিত ভ ২ চুকল ছনি। মলযালম ভাষাক প্রসি(লেখক শ্রী জী0 শংকব পিল্ঠৈক তীনটা মলযালম নাটক পূজা মুবি ককত্ত দৈবত্ত তেডি স্নেহদূতন্ কেব হিন্দী অনুবাদ পূজা ঘব কালে দেব কী খোজ স্নেহদূত শীর্ষকসঁ লেশলন বুক ট্রস্ট অॉফ ইন্ডিযাসঁ শীঘ্র প্রকাশ্য ছনি।

মৈথিলী ভাষামে শব্দকোষক পবম্পবা:– অনুবাদক লেল আবশ্যক সামগ্রী যথা শব্দকোষক পবম্পবা মৈথিলামে আবম্ভ ভেল বহত বাদমে জা ২ ক ২ 1951 ই0মে। এহিসঁ পহিলে বহুতো মৈথিলী শব্দক প্রযোগ/সমাবেশ আন–আন ভাষাক কোশ তথা শব্দাবলী সভমে কযল গেল ছল। মৈথিলীমে এখন ধ্রি প্রকাশিত 11 গোট

कोशी उंपलब्ध्र् अछि- 1 मिथिला शब्द प्रकाश 3 2 मिथिलाभाषाकोष 4 3 धतुपाठ 5 4 वृहद् मैथिली शब्दकोश 6 5 पर्यायवाची शब्दकोश 7 6 मैथिली शब्दकोश 8 7 मैथिली शब्दकल्पद्रुम 9 8 अंगिका हिन्दी शब्दकोश 10 9 कल्याणी-कोश: मैथिली अंग्रेजी शब्दकोश 11 10 चातुर्भाषिक शब्दकोश 12 एवं 11 मैथिली अंग्रेजी शब्दकोश 13। मैथिली मे प्रकाशित उंपर्युक्त शब्दकोश सभक तुलना जँ आन भारतीय भाषा सभसँ करी तँ निश्चये मन खिन्न भ २ जायत। मैथिलीक नवीनतम कोश थिक श्री गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी-शब्दकोश जे प्राय: प्रकाशनक क्रममे अछि। एकर अतिरिक्त न्यू हिन्दुस्तानी इंग्लिश डिक्शनरी ऐन इन्ट्रोडक्शन टु द मैथिली लैंग्वेज आँफ बिहार भाग-2 क्रैस्टोमैथी एण्ड भोकेब्युलरी ट्रान्सलेशन आँफ मनबोध् स हरिवंश एण्ड इन्डेक्स टु मनबोध् स हरिवंश बिहार पीजेन्ट लाइफ ए कम्प्रेहेन्सिव डिक्शनरी आँफ द बिहारी लैंग्वेज भाग-1 वंगीय शब्दकोश ए कम्प्रेहेन्सिव एण्ड इटीमोलोजिकल डिक्शनरी आँफ नेपाली लैंग्वेज अमरकोशविवरणीटि वर्णरत्नाकर विद्यापतिक पदावली कृषि कोश वैसिक कलोक्विअल मैथिली आदि कृति सभकेँ शब्दसूची शब्दानुक्रमणी वा पारिभाषिक पदावली कहल जा सकैत अछि जकरासँ मैथिलीक कोश सभ वनल आ अनुवादक काज लेल गेल अछि।

अनुवाद भाषाक नहि भावक होयबाक चाही। अनुवादककेँ भाषाक फेरमे नहि पड़ि पूर्णत: भावग्राही होयबाक चाही। भाव प्रसंगसँ पकड़ल जाइत अछि। प्रसंग शब्दक अर्थ बड़ व्यापक अछि। एहिमे

দেশ কাল পাত্রা প্রকবণ ঘটনাক্রম বিষয আদি পাবিবেশিক তত্ত্ব সমাহিত বহৈছ। অনুবাদমে প্রসংগসঁ রৈসী মহত্ত্ব অছি সংগতিক। অনুবাদককেঁ সংগতি পব সতত্ ধ্যান বখবাঁক চাহী।

অনুবাদকক শ্রেণীকবণ – অনুবাদককেঁ শব্দগ্রাহী বাক্যগ্রাহী আ ভাবগ্রাহী আদি তীন শ্রেণীমে বিভক্ত কযল জা সকৈত অছি। জেনা সাগকিন সিখনিহাব খসবাঁক ডবেঁ সাগকিনকেঁ কসিক ২ পকড়নে বহৈত অছি। তহিনা নবসিখ্আ অনুবাদক অশু(ভ ২ জযবাঁক ডবেঁ মূল ভাষাক শব্দ আ বাক্য–বিন্যাসকেঁ ধ্যানে বহৈত ছথি। হুনকা ডব হোগত ছনি জে মূল ভাষাসঁ কনেকো বিচলিত হোযবঁ তঁ অনুবাদ অশু(ভ ২ জাযত। পবিণাম উঁনটা ভ ২ জাগত ছৈ। কহবাঁক তাৎপর্য জে মূল ভাষাক সতর্ক অনুসবণক ফেবমে হুনক লক্ষ্য ভাষাক সহজ প্রবাহ বিগড়া জাগত ছনি। তেঁ অনুবাদককেঁ ভাষাক ফেবমে নহি পড়া পূর্ণতঃ ভাবগ্রাহী হোযবাঁক চাহী। একটা টৈকক উদাহবণ দ ২ অনুবাদক পণ্ডিত শ্রী গোবিন্দ ঝা অনুবাদকক এহি শ্রেণীকবণ – শব্দগ্রাহী বাক্যগ্রাহী আ ভাবগ্রাহী আদিক পুষ্টি কযনে ছথি। 2

ভাষাক প্রভাব অনেক প্রক্রমমে প্রতিফলিত হোগত অছি। ভাবতীয শব্দশাস্ত্রমে একব চাবি প্রক্রম বর্ণিত অছি – পবা পশ্যন্তী মধ্যমা আ বৈখবী । বৈখবী থিক ভাষাক ধ্বন্যাত্মক স্বরূপ। গএহ এক ভাষাকেঁ দোসব ভাষাসঁ ফবাক কবৈত অছি। প্রক্রমক বিভিন্ন ধ্বন্যাত্মক প্রতীকসঁ জে প্রতীত হোগত অছি সে থিক অর্থ। একবে কহল জাগত ছৈ মধ্যমা কিএক তঁ ও প্রক্রম ধ্বনি আ ভাব দূনূক মধ্যমে পড়ৈত অছি। পশ্যন্তী কেবল ধ্যান–চক্ষুসঁ দেখল জাগত অছি। এহী

ध्यान-चक्षुसँ भाषाक अर्थात्मक स्वरूप देखाओल अछि। प्रक्रममे आगाँ जा कए पश्यन्ती व्यक्त भ' कए जाइत छैक सकल भाव मिलि एक अखण्ड महाभाव भ' कए जाइत छैक तखन भावना परा पर पहुँचि जाइत छैक। ई परा योगशास्त्र वा दर्शनशास्त्रक विषय थिक। परा छोड़ि शेष तीन् प्रक्रमक बोध लीक अनुवादककेँ होयबाक चाही -1 पहिने मूल भाषाक वैखरीकेँ पकड़ए 2 तकरा द्वारा मूल भाषाक मध्यमाकेँ पकड़ए 3 पुनः तकरा द्वारा मूल भाषाक पश्यन्तीकेँ पकड़ए 4 आर ओहि पश्यन्तीक आधारपर लक्ष्य भाषाक मध्यमाकेँ पकड़ए आ 5 ताहि आधारपर लक्ष्य भाषाक वैखरीकेँ पकड़ए। एकरे नाम थिक अनुवाद। ई प्रक्रिया मूल भाषाक ध्वन्यात्मक प्रतीकक decoding सँ आरम्भ होइत अछि आओर भावक प्रक्रम पर आबि encoded होइत-होइत लक्ष्य भाषाक ध्वन्यात्मक प्रतीकक रूपमे परिणत भ' कए जाइत छैक।

सरलता - अनुवादक भाषा एहेन हुअय जे जनसामान्य आसानीसँ बूझि सकय। एहिसँ अनुवाद बेसी लोकप्रिय होयत आ अनुवादकक कार्य-प्रगति प्रभावित होयत। एहि सन्दर्भमे अंग्रेज लेखक ग्रियर्सनक अनुसन्धानात्मक पोथीक मैथिली अनुवाद बिहारक ग्राम्य-जीवन निःसंदेह अनुकरणीय एवं सराहनीय अनुवाद-कार्य मानल जा सकैत अछि। बहुभाषिक व्याकरण वा क्रिया-कोश (Multi Langual Verbal Dictionary)क निर्माण-कालमे एहि बिन्दुपर बेसी ध्यान देल जयबाक चाही जाहिसँ कि आगाँक अनुवादककेँ अनुवाद-कार्य करबामे सुविधा हुअय।

अनुवादक शास्त्रीयता लीचासँ ऊपर जयबाक चाही - आम

নোকক জ্ঞান যথা– নোকশৰ্ব্দাৰ্বনীক উঁপযোগ গ্ৰষকক জ্ঞান যথা– গ্ৰষকক জীৱন–যাপনমে দৈনিক ব্যৱহাৰমে খাৰ্বযৰ্বনা শৰ্ব্দাৰ্বনীক উঁপযোগ জেনা উঁপৰ উঁন্নিখিত চেম্মীন্ ক মৈথিনী খন্বৰাদ মনাহিন উঁপন্যাসমে কযন গেন খছি তেহেন উঁপযোগ খানো খনূদিত পোথীমে কযন জযৰ্বাক চাহী। তকনীকি শৰ্ব্দ যথা– মেডিকন সাগন্সক খন্বৰাদমে গামক পশ্বৰোগ ব্যাধিক নামাদিক উঁপযোগ খন্বৰাদমে হোযৰ্বাক চাহী। তহিনা মানৰজনিত ৰোগহ্‌মে গ্ৰামীণ নোকক দেহাতী ৰোগক নামাৰনীক উঁপযোগ মৈথিনী খন্বৰাদ নেন কযন জা সকৈত খছি।
সংক্ষিপ্ততা খা স্পষ্টতা – খন্বৰাদ সৱন সংক্ষিপ্ত খা একদম স্পষ্ট হ্‌খয তাহি নেন খাৰশ্যক খছি জে ৰ্বেসীসঁ ৰ্বেসী তকনীকি (Technical Meaning) শৰ্ব্দাৰ্বনীক উঁপযোগ কৰৈত খৰ্থগূঢাৰ্থকেঁ Foot Notes ৰা Bracket মে ওতহি ৰ্বুঝা দী তঁ সে নীক বহত।
খন্বৰাদক শাস্ত্ৰীয সামগ্ৰীক উঁপনৰ্ব্ধতা (History of knowledge:Text Translation in Maithili)–খাৰ্ব নিখিত সামগ্ৰী খাস ক ২ খংগ্ৰেজী (English)মে কম্প্যূটৰ (Computer) গন্টৰনেট (Internet) ঙা–মেগজিন (e-magazines) ঙা–কোশ (e-dictionary) ৰ্ব্নॉগস (Blogs) খাদিপৰ উঁপনৰ্ব্ধ হোগ ছৈ। হ্মদা ৰিডম্বৰ্না খছি জে খাজ্‌ক মৈথিনীক নেখক–খন্বৰাদক খংগ্ৰেজী খা খাধ্‌ুনিক তকনীকি জ্ঞানসঁ খনগে পড় াগত বহৈত ছথি। মৈথিনীমে খথৰা মৈথিনীসঁ খান ভাষামে নীক খন্বৰাদ নেন খংগ্ৰেজী ভাষাক সংগ–সংগ খান ভাৰতীয ভাষাক খাস ক ২ দক্ষিণ ভাৰতীয ভাষাক জ্ঞান ৰাখৰ্ব খা

तकनीकि उँपकवण यथा–कमप्यूटव (Computer) एन सी डी प्राजेक्टव (LCD Projector) कैमवा (Camera) सी डी /डी वी डी (Compact Disk/Digital Video Disk) पेन ड्राइव (Pen Drive) आदि संचानित कवबाक योग्यता एवं इन्टवनेट (Internet) ई–कोश (e-dictionary) ई–मेगजिनम (e-magazines) ब्लॉग्स (Blogs) आदिक उँपयोग कवबाक दक्षता बहब आवश्यक भ ऽ गेन अछि।

एकव अतिविक्त अनुवादककेँ कतेक स्वतन्त्राता भेंटबाक चाही ? अनुवादक कतेक स्वतन्त्राता चाहैत छथि ? संस्था कतेक स्वतन्त्राता देब ऽ चाहैए ? आदि–आदि नीति आ सि(ान्त आओव व्यावहाविक सम्बन्धपव अनुवादक स्वीयता पठनीयता उँपयेगिता उँपादेयता तथा अनुवादकक कुशनता आ प्रवीणता एवं अनुवाद–कार्यक सफनता निर्भव कवैत छैक। अनुवादपव केन्द्रित एहि वाष्ट्रीय सेमिनावमे एहू मून विन्दू सभपव विमर्श होयब आवश्यक अछि। धन्यवाद। जय मिथिना। जय मैथिनी।

सन्दर्भ संकेत: –

1 अनुचिन्तन: पण्डित गोविन्द झा: नवावस्तु प्रकाशन पटना: 2010: पृ0– 113
2 अनुचिन्तन: पण्डित गोविन्द झा: नवावस्तु प्रकाशन पटना: 2010: पृ0– 115
3 पं0 भवनाथ मिश्र प्रकाशक स्वयं ग्राम–हटाढ–रुपौनी पो0– झंझावपुव जि0– मधुबनी प्र0 खण्ड 1951

4 पं0 दीनबन्धु झा प्रकाशक स्वयं ग्राम–इसहपुर पो0– मनीगाछी जि0– दरभंगामधुबनी 1950
5 पं0 दीनबन्धु झा प्रकाशक– मैथिली साहित्य परिषद् दरभंगा 1950
6 सम्पा0 डॉ0 जयकान्त मिश्र प्रकाशक– इन्डियन काउंसिल ऑफ एडभान्स्ड स्टडीज शिमला 1973
7 प्रकाशक– प्रज्ञा प्रतिष्ठान काठमाण्डू नेपाल 1974
8 सम्पा0 गोविन्द झा प्रकाशक– मैथिली अकादमी पटना 1992
9 पं0 मतिनाथ झा प्रकाशक– मिश्र बन्धु प्रकाशन जमथरि जि0– मधुबनी 1997
10 डोमन साहु समीर प्रकाशक– विनोद कुमार चतुर्वेदी सिकन्द्राबाद आन्ध्रप्रदेश 1997
11 सम्पा0 गोविन्द झा प्रकाशक– महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कल्याणी फाउंडेशन दरभंगा 1999
12 उमेश चन्द्र झा प्रकाशक– स्वमित्रा प्रकाशन दरभंगा 2007
13 सम्पा0 गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा तथा विद्यानन्द झा प्रकाशक– श्रुति प्रकाशन दिल्ली 2009

डॉ. गन्धधव ्मा, मैथिली रिभाग, न.ना.ति. महारिद्यानय, ्मजथ्फवप्ुव।

दू-पत्र : एक रिश्लेषण

दू-पत्र रस्तुत: पत्रात्मक शैलीमे लिखल मैथिलीक पहिल उंपन्यास थिक। मात्र दू गोट पत्रमे समाएल समग्र कथानक। मात्र दू गोट पत्रमे भावतीय लावीक निश्छल, ि नर्मल, शालील ओ प्रौठ़ चित्रांकल। पहिल पत्र अपल स्रामी स्वरेन्द्रकेँ लिखले छथि श्रीमती गन्दू देरी आ दोसव पत्र एक अमेविकल महिला जेसिका द्वावा अपल भावतीय मित्र वमेशक लामे लिखल गेल अछि। मात्र चावि गोट पात्रक प्रयोग ऐ उंपन्यासक एक अलग रिशेषता अछि। स्वरेन्द्र ि लरिराद रूपेँ ऐ उंपन्यासक लायक छथि, आ लायिका भावतीय लावी श्रीमती गन्दू देरीकेँ सेहो कहि सकैत छी आ एक अमेविकल महिला जेसिकाकेँ सेहो। वमेश छथि ्मख्य सह-लायक। गन्दग देरीक दूव-दवाजे सम्बन्धी भाए आ स्वरेन्द्रक साव।

कथालक

दू गोट पत्रक माध्यमसँ जे ्मख्य कथालक पाठकक मल:चेतलापव चित्र उंकेवैत अछि से ई जे स्वरेन्द्र अपल बाँगसम रर्षक अरस्थामे पन्द्रह रर्षीय गन्दूसँ अपल पूर्ण सहमतिसँ रिराह कएले छथि, जकव माध्यस्थता आंशिक रूपेँ कएले छथि वमेश। बौवाठ-

সভাসঁ রিখাহ নিশ্চিত ভেন ছন। স্বরেন্দ্র গন্জীনিযবি ংগক চাবিম রর্ষক ছাত্র বহথি খা গন্দূ নরম রস্মক ছাত্রা। ওনা গন্দূ দূ রর্ষ পহিনহি গামক স্ত্রীগণ সমানক মধ্য খজগ্নি সন ভ২ গেন বহথি হ্মদা ওগ সভামে দ্নূ ভাঁগ মীনি কথা স্থিব ক২ নেনে বহথি। স্বরেন্দ্রক রিখাহ পূর্ণ মৈথিন বীতিএঁ ং গন্দূসঁ ভেননি।

গন্দূ, মানে শ্রীমতী গন্দূ দেরী, খাৰ দূ ৰচ্চাক মাএ ছথি খা স্বরেন্দ্র খমেবিকামে বমি গেন ছথি। খাৰ তঁ নখ রর্ষসঁ কোনো সম্পর্ক নৈ বহি গেন ছন্হি, মাত্র দূ-খাখব চিঠ্ঠীক সম্পর্ক ছোড়্ি ক২। খসহ্য পীড়্ াসঁ ঝামবি ভ২ গেনীহ খছি। রিখাহক ৰাদ দূ-চাবি রর্ষ ধবি তঁ স্বরেন্দ্রকেঁ গন্দূসঁ দাম্পত্য প্রেম ছননি খা তকবহি পবিণাম ভেন বহনি দূ গোট্ঠ সখা-সন্তান হ্মদা তঁএ কি খাৰ তঁ খমেবিকাক এক গৌবাংগী বমণীক বংগ তেনামে তেনা ওঝবাএন ছথি জে সম্ৰন্ধ-রিচ্ছেদক প্রস্তার গন্দূ দেরীকেঁ পঠওনে ছথি। খসনমে পহিনে পত্র স্বরেন্দ্রক সম্ৰন্ধ-রিচ্ছেদক প্রস্তারক জৱাৱ খছি। খপন নোক-রেদ, ঘব খাঁগন, গষ্ট্র-পবিজনসঁ নিস্পৃহ ভেন নখ রর্ষসঁ খমেবিকামে বহৈত খপন জীরন, গচ্ছা-খাকাংক্ষাক একমাত্র খাধাব, সোহাগ-ভাগক খধিষ্ঠাতা, স্বখ সাম্রাজ্যক স্রামী, খগ্নি-সাক্ষিত পতি স্বরেন্দ্রকেঁ নিখন হ্নক প্রত্যাগমনক ৰাট তকৈত, পনকক সেজ সজৌনে, রিবহাগ্নিমে তড়্পৈত শ্রীমতী গন্দূ দেরীক পত্র।

ওনা জেসিকা প্রভারিত ছথি স্বরেন্দ্রসঁ। তদ্রূসঁ পহিনে

बमेशेसं भेँट पहिने हुनका स्वरेन्द्रसँ होइत छन्हि आ प्रभावित जे होइत छथि सेहो स्वरेन्द्रहिसँ मुदा अचानक जे बमेशे गण्डिया अबैत छथि तँ बमेशेसँ सोहे प्रभावित भऽ जाइत छथि। मुदा बमेशेमे भावतीयता ततेक ने रेशी देखैत छथि जेसिका जे क्रमशः भावतीयतासँ प्रभावित होइत गेलीह आ बमेशेसँ दूरी बनैत गेलनि। मुदा गन्द्र देरीकेँ विच्छेदक प्रस्तार पठौनाक उपरान्त स्वरेन्द्र जेसिकाक समक्ष अपन मोनक बात स्पष्ट कऽ देलनि। जेसिकासँ पहिल भेँट स्वरेन्द्रकेँ जर्मन क्लासमे भेल बहनि। दुनूक आरासमे मात्र चाबि बर्नाकक अन्तव बहनि। दुनू असगव बहथि। मोन मनएबाक हेतु एक-दोसबाक घव आबएजाए लागल बहथि। जेसिका स्वरेन्द्रक ओहिठाम जाए भानस भात सेहो कबथि, कावण, स्वरेन्द्रकेँ तकव अरगति नै बहनि आ ऐ बातसँ जेसिका मिश्र बहथि। संग उठनाइ-बैसनाइ, पार्क घुमनाइ, सिनेमा देखनाइ आदि बात तँ सहजे होमए लगलनि। स्वरेन्द्रक संग जीवन बितएबामे जेसिकाकेँ कोनो तबहक आपत्ति नै बहनि, से ओ मोने-मोन जनैत बहथि आ तँए जे स्वरेन्द्र गन्दू देरीसँ विच्छेद आ हुनका संग सम्पर्कक प्रस्तार स्पष्ट कऽ देने बहथिन आ संगहि हुनक सम्मति मंगने बहथिन से जेसिकाकेँ अस्राभारिक नै लागल नहनि। जेसिका ई जनैत बहथि जे स्वरेन्द्र पहिनौं भावतमे विआह कएने छथि, संगहि स्वरेन्द्रक ऐ तर्कसँ, जे आब विगत नअ वर्षसँ हुनका अपन पत्नीसँ कोनो संपर्क नै छन्हि सेहो सहमत बहथि आ स्वरेन्द्रसँ सम्बन्ध स्थापित कबबामे एकबा कोनोटा बाधा नै बुझैत बहथि, कावण अमेविकी संस्कृतिमे एकब कोनो

मूल्य नै छैक। ऋदा बमेश जे अपन छोटे-छीन पत्रक संग स्वरेन्द्रक नामे लिखल गन्दू देवीक विस्तृत पत्रक अंग्रेजी अनुवाद जेसिकाकेँ पठओने बहथिन तकबा पठा जेसिका कि ंकर्त्तव्यविमूढ बहथि। एखन गन्दू देवीक अंग्रेजी अनुवाद माथमे अएलनि तँ भावतीयताक असली स्वरूपसँ अवगत भेलीह। ओहना भावतीय आचाव-वेवहाव, वीति-वेवाज, धर्म-कर्म आदिसँ प्रभावित बहवेँ कवथि।



<u>वामलोचन ठाकुव</u>

•

<u>समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-ओर्फ यथार्थक-कथा</u>

•

• आयू प्राय: समस्त समीक्षक- समालोचक लोकनि कहैत छथि, आ ऐ ढँचिते कहैत छथि, जे समकालीन मैथिली कथा-भावतक जे कोनो भाषाक समकालीन कथाक'समकक्ष अछि। अपन गुणवत्ताए नहि गुणात्मकताक आधाऐ पव समकालीन मैथिली कथा आ कविता अन्यान्य विधासँ आगू अछि ताहिमे संदेहक कोनो अवकाश नहि। आ ओ गुणवत्ता थिक" ओकव यथार्थपवकता जे आजुक

মিথিনাক যথার্থ থিক। এহিঠাম”স্পষ্ট” কহ দী জে মিথিনাক যথার্থসঁ হমব তাত্পর্য মাত্র ভৌগোনিক মিথিনাক (জে বর্তমানমে খছিএ নহি) বৌদী–দাহী, পার্বনি–তিহাব, ভোজ–ভাত, বর্ণ–বিদ্বেষ, খভাব–খভিযোগ, গচ্ছা–খাকাংক্ষা, ধবি–সীমিত, নহি খছি খপিতু বাজ্য–কেন্দ্রসবকাব দ্বাবা বঁচিত–খবহেনির্ব মিথিনাক জনর্বন, জে খপন উঁদব পূর্তি খা পবিরাবক ভাবণ–পোষণ হেতু প্ররাস পনযিন নেন বাঁধ্য খছি, খসম পংজার্ব, ঝাম্বর্গ্ণ, মধ্যপ্রদেশসঁ ভাবতক বাজধানী দিন্নী ধবি খবাংক্ষিত–উঁপেহিত গাবি–মাবি খাগত– জীরন র্যতীত–কবরাঁ নেন বাঁধ্য খছি, তকরো–যথার্থ খছি; যদ্যপি সমকানীন কথা–সাহিত্যমে ও রিষয–বাঁত তেনা ভহকেঁ দেখভগব রূপমে নহি খাযন র্ঝনা জাগছ।

• মৈথিনীমে কথা–নেখন” রেঁস রিনংরঁসঁ প্রাবংভ ভেন। ড॰. জযকান্ত মিশ্রক খনুসাব 1920 ঙ. ধবি নোককেঁ ও রোঁধে নহি ছনৈক জে কথা কী থিক, রা কথা ককবা কহী ? ড॰ বমানন্দ ঝা ‘বমণ’ক খনুসাব মৈথিনীক প্রথম কথা থিক শ্রী হ্রষ্ণ ঠাক্কব ‘চন্দ্র প্রভা’জকব’ বচনাকান 1880 ঙ.সঁ পূর্বক থিক। ড॰. জযকান্ত মিশ্রক খনুসাব ‘চন্দ্রপ্রভা’1885ঙ.ক বচনা থিক জকব বচনাকাব ছথি–শ্রীহ্রষ্ণ সিংহ ঠাক্কব। মোহন ভাবদ্বাজ জনার্দন ঝা ‘জনসীদত্তক ‘তাবাক বৈধর্য’কেঁ প্রথম মৌনিক কথা হোএরাঁক জ্ঞাত কহৈত ছথি ও রিডম্বনা থিক মৈথিনী সাহিত্যক গতিহাসক।

• রিমর্শসঁ জ্ঞাত হোগছ জে রিগত শতীক চাবিম দসকসঁ কথা–নেখন গতি পকড়নক। ঝদা তাহি কথা সভমে মিথিনা নহি ছন, মিথিনাক যথার্থ নহি ছন। এহিমে সংদেহ নহি জে মৈথিন সমাজ খংড–খংডমে

রিভক্ত ছন, প্রাবংভসঁ বহিতো বৃহত্তব মৈথিন সমাজক যথার্থমে সাম্য তঁ ছনৈকে, জে রিষয-রাঁত মাত্র কথা নহি, হমব সমস্ত সাহিত্যসঁ খসংভর রূপেঁ খন্বপস্থিত ছন। হমব সমস্ত সাহিত্য এক রিশেষ রস্মাক, জকব সংখ্যা দস শেতাংশিসঁ রেশী নহি ছন, ঘ্বখ্ব ওগবতে বহন। একব রিডম্রঁনা নহি তঁ খাব কী কহন জাএত জে হমব নোকজীরনক যথার্থ হমব সাহিত্য-সংস্কৃতি হমব কনা-কৌশিন রাঁহবক নোককেঁ খাকর্ষিত- উদ্বেনিত কবৈত ছৈক, প্রেবিত-প্রভারিত কবৈত ছৈক, ম্দা হমবা নোকতি নেখে ধনসন। হমব নোক সাহিত্য দেখি গ্রিযর্সন ম্থ্রু ভেন ছনাহ, হমব চিত্রকনা দেখি রিনিযম খার্চব খাভিভূত ভেন ছনাহ, হমব নোক জীরনক যথার্থ রঁগনা সাহিত্যকাব সতীনাথ ভাদ্বীসঁ রিভূতিভূষণ ম্খো পাধ্যায ধবিকেঁ পেবিত-প্রভারিত কএনে ছন, পবংচ হমব সর্জক প্রতিভা এহি সভসঁ রিম্খ সাঁফ পবাতী ভোব রিহাগ বাগ ঢ় বেরাঁমে র্যস্ত খা মস্ত ছনাহ।

• কোনো রিষয-রস্তু পব নিখরাঁক নেন ণ্ডা খারশ্যকে নহি খনিরার্য থিক জে তাহি রিষয-রস্তুক রোঁধ হো! খা সে হোএরঁ নির্ভব-কবৈছ নেখকক স্থিতি খরস্থান পব ওকব সামাজিক সবোকাব খা সংরদেনা পব। কপোন কল্পিত কথাক তঁ তথাকথিত যথার্থ পাঠকীয রিশ্রসনীযতা খর্জিত কহ পাওত ওকবা প্রভারিত কহ পাওত তাহিমে সংদেহ। এহি দৃষ্টিমে রিচাব কএনে পরৈত ছী জে মৈথিনীক খাবংভিক কথাকাব নোকনিক খপন সীমা সবহদ ছনতি জকব খতিক্রমণ কহ পাএরঁ হ্নকা নোকনিক নেন সংভর নহি ছন। এহি সীমাক খতিক্রমণ কএনে ছনাহ কাঞ্চীনাথ ঝা 'কিবণ'। রস্তুতঃ কিবণ জীক কোনো সীমা ছনহে নহি, ও

सीमातीत छलाह। हिनक समाज छल वृहत्तर मैथिल समाज जाहिमे सभ जाति, सभ धर्मक लोक छल आ सभक संग हिनक सामाजिक सरोकार छलनि। 1941 ई.क२ हिनक 'धर्मरलोकर कथा' कें एहि सन्दर्भमे बानगीक रूपमे देखल जा सकैछ। किरण जीक प्राय: समस्त कथा तत्कालीन मिथिलाक लोकजीवनक यथार्थक बानगी थिक। हिनक सर्वाधिक चर्चित-परिचित कथा थिक-मधुरमतिक्क एक चित्रक चर्च विवले देखल-स्वलल जाएछ। ध्दार एहिमे लोक-जीवनक यथार्थ जाहि तरहें प्रखर ध्खर भेल देखल जाएछ से अदभुते अछि। वस्तुत: किरण जी दस प्रतिशत उंच्च वर्गीय अकर्मण्य लोकक विद्रूत विलास बद्न जीवन चरित नहि नब्बे प्रतिशत लोकक जीवलेच्छा-जिजीविषा, श्रम-संधर्षक कथा-गाथा लिखराकें श्रेयष्कर बुझैत छलाह। जेना कि डॉ रमानन्द झा 'रमण' लिखैत छथि'किरणक सम्पूर्ण कथा साहित्य यथार्थक धरती पर स्वदृढ़ अछि। फलत: अपन चारूकात पसरल दीन दुखीक समस्याकें, जन-वौलिहावक समस्याकें, ओकर अन्तरक हाहाकारकें आशा-निराशाकें आ संघर्षशीलताकें अपन साहित्यक प्रेरणा स्रात बनाओल अछि। चारूकात पसरल कथ्यकें अपन विशिष्ठ शैलीमे दारल अछि। एहि लेल कल्पनाक उंड़ान झा विजातीय परिवेशक संस्कार हिनक-कथामे नहि भेटैछ। अपितु भेटैछ सदिखन अपने टैल-पड़ासक मानवीय समस्याक प्रभार शाली अभिव्यक्ति आ अपने धरतीक सोंहलगर महमही आ ओकरे आशा-आकांक्षाक संतुलित टिपकारी'। वस्तुत- किरण जी-मैथिलीक प्रथम कथाकार छथि जिनकर कथामे लोक जीवनक यथार्थ जकरा प्रकारान्तरसँ समाजिक यथार्थ

सेहो करन जा सकैछ, एतय, प्रखर प्रगाढ़ रूपें चित्रित भेल अछि। एहिठाम लिखबाक प्रायः अवसान नहि होएत कि हिनक कथा ते मात्र सामाजिक यथार्थक कथा थिक अपितु सामाजिक चेतना सेहो अप्रतीम उदाहरण थिक जकर ओ प्रयोक्ता-प्रवक्ता छथि, रूपकार छथि। विगत शतीक उत्तरार्धमे एहन प्रचुर कथा लिखल गेल अछि जाहिमे मिथिलाक लोकजीवनक यथार्थ अपन समग्रता-सम्पूर्णतामे चित्रित भेल अछि। अपवादकेँ छोड़ि दी तँ प्रायः समस्त चर्चित प्रतिष्ठित कथाकारक एहिमे थोड़-बहुत योगदान-अवदान अछि। मोहन-भारद्वाज अपन-आलेख मैथिली कथामे सामाजिक चेतनामे एक सूची देने छथि। हम एहिठाम कथा वा कथाकार सूची दए आलेखकेँ दीर्घायित नहि कए वर्तमान शतीक किछु टटका प्रकाशनसँ बानगी प्रस्तुत कऽ रहल छी जाहि- सँ विषय स्वस्पष्ट भऽ पाबए ।

• 2009 ई.मे प्रकाशित भेलए सुभाष चन्द्र यादवक कथा संग्रह 'बनैत बिगड़ैत'। एहिमे एक कथा अछि 'हमर गाम'। ओ गाम लेखकेक नहि ओ मिथिलाक कोसी अंचलक एक गाम थिक जे हमरो भऽ सकैए, अहूँक भऽ सकैए। एहि गामक एक घरक चित्र देखल जाए- घरक एककात दूटा चौकी लागल छै। चौकी पर मैल खटे-खटे भोटिया बिछा ओल छै। चौकीसँ सटले दछिन गाय, भैंस, बकरी सब बान्हल छै। नाकमे निरंतर गोबर आ गोंतक दुर्गन्ध अबैत रहैत अछि। कोसिकन्हाक अधिकांश लोक एहिना रहैत अछि। जानवरक संग। जानवरक समान। जानवरक हालत मे। आ ओ कोनो नव बात नहि थिक। साठि वर्ष भारतकेँ स्वाधीन भेलाक पश्चातो जखन कि नितन्

लाख-लाख टाका खर्च कए सरकारी, अर्ध सरकारी प्रचारतंत्र देशक र्व्हृक्ष्मखी विकासक गन्द्रधन्वषी छवि देखबैत अछि, हमर मिथिलाक स्थिति आर बदतर भेलए। 'बहुत-पहिने जहिया कौआ, कास आ पटैबक जंगल बहै, तहिया अनेक तरहक जल आ थल चिड़ै अबैत बहै। पूर्णियाक शिकारी चिड़ै बन्नबैत बहै आ स्वपौलमे बेचैत बहै। आब कौआ उँकनि गेल छै आ कास-पटैब उँकलल जा बहल छै। पहिने लोक कौआ, कास-पटैब बेचि कड़ किछु कमा लैत छल। जंगलमे ब्रुंडक ब्रुंड गाय-महींस पोसि कड़ जीविका चलबैत छल। खढ़िया हविन माछ, काछ आ डोका मावि कड़ खागत छल। आब सब किछु खतम भड़ गेल छै आ जीबाक साधन दुर्लभ भड़ गेल छै। क्ष्मदा एहि आभाव अभियोग यंत्रणा वंचनाक अवस्थाओमे मानवीय संवेदना, सामाजिक सवोकाव अनामति छैक 'डोम चमाव क्ष्मसहव दुसाध तेली, यादव सब एके कलसँ पानि भवैत अछि एके पटिया पव बैसैत अछि'। आ जूड़शीतल दिन जेठ श्राण्डजत चानि पव पानि दैत जुड़ाएल बहबाक आशीष देब नहि विसवल छथि। समकालीन कथाक विवल विलक्षण हस्ताक्षव स्वभाषक माद्दे महाप्रकाशो उँचिते कहैत छथि- 'हुनक वचनाकाव समयक सक्ष्मद्रमे डूबि-डूबि मोती मालिक ताकि अनैत अछि। एहि तवहेँ स्वभाषक लेखन यथार्थक अमूल्य दस्तावेज बनि जागत अछि'।

- आग समय बड़ तेजीसँ बढ़ि-बदलि बहल अछि। महानगवीय प्रदूषण आ वैश्वीकवणक प्रभावमे ग्राम्य पविवेश प्रदूषित भड़ बहल अछि। सवकावी बयना-अवहेलनाक शिकाव मिथिलाक प्रतिभा आ श्रेम पलायल लेल वाध्य अछि, आ जखल ओ गाम अबैए, अपना

সংগ রিজাতীয রিগ্যত সংস্গ্যর্তি নেনে খরৈহ। প্রদীপ রিহাবীক 'উংগ্রাস' কথা এহি রিগ্যতিক স্পষ্ট চিত্রাংকন থিক জে সমকানীন নোকজীরনক যথার্থ রৈনন জা বহন খছি রা রৈনি চ্কন খছি। শিক্ষিতো রস্মক ধর্মভীকতা খংধরিশ্রাস খা ক্ষসংস্কাব তথা পাছুকেঁ প্রতিষ্ঠাক মানক রূমি তকব প্রদর্শন জতরা চিন্তনীয কিএক নে হো স্দা খাজ্ক সত্য হোগত দেখন জা বহন খছি। বাম ভূষক রাবূ খপন হ্তত্ খা পোতাকেঁ ঘবমে কতে দিন বাখি পওত।

- মিথিনা–গামক দেশী থিক। সহজতা–সবনতা খা সামাজিকতা গামক রিশেষতা বহনেএ। স্দা খাগ গর্মেযা রা গ্রামীণ জীরনক ওা রিশেষতা রিন্প্প্ত ভেন জা বহনএ। নর খাঠ় ামে ওা পবিরর্ত্তন রৈস তীব্র খা ত্রবিত ভেন দেখন জাগছ।

- ঔদার্যক খভার ও স্রার্থপবতা সংক্রামক র্যাধিক রূপ নেনে জা বহন খছি। তেঁ কোনো প্বতত্ খপন রৃদ্ধ সম্বক মাদে নিধোখ রাজি সকৈছ খগ কমাস্বতকেঁ সখমে দেখৈ জাহী। ওগ দিনমে কহনিঐ জে রিযাহ কএ নৈহ তঁ নহি কেনক। খার জে খগ উমবমে বংডীরাজী কবত তঁ সে হম চনএ দেরৈ ? রৈচাবা ঘূবন র্ঠ়রাকেঁ রৈকন ভহ গেনাগ স্রাভারিক ছৈক। হনতঃ ও খপন গবীর রিধরা ভাউজকেঁ খংগ ঝঁপরাক নেন ন্বখা কী দেত, ভাউজোকেঁ ত্যাগি দৈছ। তাবানন্দ রিযোগীক এহি ত্যাগ কথাক ভযারহতা চবম পব তঁ তখন পহুঁচৈএ জখন ঘূবন মস্মিনী প্বতত্ কহৈত ছৈক 'রৈসী নরব নরব কবরহ তঁ ততে চপ্পন মাবরহ জে চানি পবহক সরষ্টা কেশী খহবি জেতহ....'। খপন সম্বক খ্নেখাম এহন খরজ্ঞা খপমান চোক। রযরনা

बाँत बहितो आजुक यथार्थ थिक जे वैश्रीकबणक प्रभावें हमब सांस्कृतिक क्षबणक प्रतीक थिक।

- एहिठाम हम एक गोटे आब कथाक चर्च कबए चाहबें। से थिक विभूति आनन्दक'संक्रान्ति' कथा। मन पड़ैए सकल विधा उँदधि मिथिला विदित भवि संसाब। आ तािह मिथिलामे शिक्षाक की स्थिति अछि तकब जीवंत छवि थिक ओ कथा एक तँ शिक्षक लोकनि पढ़बँए नहि चाहैत छथि, यदा जँ केओ चाहितो छथि तँ तािह लेल मच ओनागते बहि जाइत छनि, छात्रक दर्शन नहि होइत छनि, जखन कि बजिस्टबमे छात्रक अभाव नहि। प्रधानाचार्यक कक्षमे गिलास आ बोतलक हलुवक सन संगीतक भयावहता भावानात्मक स्तबहिसँ बुझल जा सकैछ शब्दमे व्याख्याचित कबबें सहज संभव नहि।
- एहि कथाक दोसब पक्ष तँ आब हृदय-द्रावक अछि। प्रवासी बाँनक पिताकेँ कम्प्यूटब सीखबाँ लेल कहैत छथि जे पितासँ संभव नहि भऽ पबैत छनि बँचसाह् लोकक लेल ओ तबे सहज छैको नहि जतबाँ किशोब यवा बँच लेल। यदा बाँनकक तर्क तऽ देखू-
- '....अबे कम्प्यूटब, नेटे आदिक जानकाबी बहैत तऽ दिन-दुनिया सऽ जुड़ल बहबें....हमबो सभ-सऽ सम्बन्ध बँनल बहत।
- 'अएँ! की कहलह ?
- 'ठीके तऽ कहलौ! ककबा एते समय छै जे....। तँ ओ थिक आजुक सत्य! आग हलकेँ अपन पितासँ बाँत कबबाँक पलखति नहि छैक! हमबा लोकनि सबोकाबक बाँटे कबै छी, संवेदनाक बाँत कबै छी
- कथाक सत्य ओकब आत्मा होइछ कथाबस्तु।

শিল্পক স্থান তকব ৰাঁদে ছৈক জে কথারস্তুক প্রযোজনান্বসাব সহজ স্বাভারিক ৰূপেঁ খরৈছ। ৰনাত্কাব শিল্পক ৰ্যামোহ জে ৰাহ্য খারবণ–খাভূষণ মাত্র থিক, কথাক সত্যকেঁ ওকব খাত্মাকেঁ খাঁরঠ্ঠিত খাচ্ছন্ন কঽ নৈছ খা খকসব পাঠক নোকনি শিল্পক চাকচিক্যমে ওঝবা মূনধবি পহুঁচৰাঁসঁ ৰঁচিত বহি জাগত ছথি।

- সাহিত্যক খর্থ হোগছ সহিত, সভক সঁগ, সঁভক হিত খর্থাত সমাজক হিত খা গএহ সমাজক হিত–সাধন সাহিত্যক উঁদ্দেশ্যো থিক। গ ভনহি কহিযো ‘ৱৈগম পাস’ কবৰাঁক নেন রিনোদ সামগ্রীক ৰূপমে বচন জাগত বহন হো। খাজ্ক সাহিত্যকাব খপন কর্ত্তব্যক প্রতি পূর্ণ সচেত খা সচেষ্ট ছথি, উঁদ্দেশ্য সাধনক প্রতি প্রতিৰদ্ধ ছথি। এক দিস খপন সামাজিক স্থিতি খরস্থানক সম্যক জ্ঞান খা দোসব দিস রিভিন্ন ভাষাক সমকানীন সাহিত্যক খধ্যযন খনুশীনন হ্নক দৃষ্টিৰোধকেঁ বচনাশীনতাকেঁ প্রেবিত প্রভারিত কবৈছ।
- নিষ্কর্ষতঃ কহী জে সমকানীন মৈথিনী কথাক যথার্থ খাজ্ক মিথিনাক যথার্থ থিক। একবা দোসব তবহেঁ হম যথার্থক কথা সেহো কহি সকৈত ছী। খাযামক রিস্তাব সামাজিক সবোকাব খা সঁরেদনাক নিখাব একবা মহত খা মহত্ত্বপূর্ণ ৰনরৈছ।
- সহাযক গ্রঁথ–
- 1. খখিযাসন\ডॉ. বমানন্দ ঝা ‘বমন’
- 2. মৈথিনী সাহিত্যক গতিহাস (সা. খকাদেমী) ডॉ. জযকান্ত মিশ্র
- 3. একন পাঠ/মোহন ভাবদ্বাজ
- 4. ৰাঙনা কথা সাহিত্যে রিহাবেব নোক

जीरन/ग्रांविद ग्रंबन चक्रवर्ती
• 5. कथा किवण/डॉ. कांचीनाथ ऋा 'किवण'
6. ग्रनैत विंगड़ैत/स्वभाष चन्द्र यादव
7. सवोकाव/प्रदीप विंहावी
8. मिथिना दर्शन, जुना.-दि. 2005, संपा.-वामनोचन ठाकुव
9. मिथिना दर्शन, जुना.-श्वग.2009 संपा.-वामनोचन ठाकुव

**केदाव कानन**

जगदीश प्रसाद मंडनक पछतावा पव एक दृष्टि

गंभीव साम्यरादी दृष्टि, बचन पचन जीरानानुभव श्वा तावि श्वनुभवक सहज ऋदा पविपक्व श्वभिव्यक्ति, श्वभिव्यक्तिमे कहवाक श्वपन ढ़ंग, मैथिन जीरन श्वा पवम्पवाक श्रेष्ठ श्वंकन-चित्रण कथाकाव जगदीश प्रसाद मंडनक निजी पहचान थिक। एक ग्रएसपव श्वावि गेनाक बाद ओ नेखनक शुकश्वात कएननि श्वछि ऋदा से हिनक श्वतिक पवायणसँ बुझाएत नहि श्वछि। तकव कावण ओ वहन श्वछि जे हिनक मानसमे ओ सभ रस्तु कागतपव उंतवबासँ पहिनहि वचित-खचित वहन श्वछि। जीरनक सघन-बीहड़ ऋंऋावात सहि-श्वंगेजि नेखनक क्षेत्रमे उंतवय ग्रना जगदीश जी सनक श्रेष्ठ शिन्पीक स्वागत

করৈত প্রসন্নতা হোগত অছি।
হিনক পঙতারোঁ কথা হমব ঠৈরুনপব বাখন অছি। স্বপৌনমে আযোজিত কথা গোষ্ঠীমে ঔ কথা পঢ়ন গেন ছন। একটা স্বতংত্রতা সেনানীক ঘবসঁ রহবাএন বঘুনাথ অপন গংজীনিযবিংগক পঢ় াগক পছাতি নোকবী নেন পত্নীক সংগ অমেবিকা চনি জাগত অছি, অপন মাতা-পিতা, পবিরাবক, সব-সম্বন্ধী, সমাজ সভকেঁ ছোড় ি। ওহিঠামক চাক-চিক্য আ ভোগবাদী সমাজমে বচন-পচন বধুনাথ নেন পাগ কমএরোঁক অতিবিক্ত কথূক চিন্তা নহি ছনি।
এম্হব শিরনাথ আ হুনক পত্নী, বঘুনাথক মাতা-পিতা গামপব বহি জাগত অছি। থোড়ে কে দিন প্বত্রক রিযোগমে মানিন বহি ঔ দুনূ পবানী ঢ় ংগসঁ অপন জীরন জীরৈত ছথি আ স্বখসঁ বহৈত ছথি। হ্নৈশি রৈংকমে ঔ কথা চনৈত অছি আ অনেক-অনেক উঁপকথা কথা সভ উঁদঘাটিত হোগত অছি।
অমেবিকাক জীরনসঁ পহিনে উঁরৈত অছি বঘুনাথক পত্নী। নে ক্যো সংগী নে ক্যো গপ কএনিহাব। এক দিন যৈহ পশ্চাতাপ বঘুনাথোকেঁ হোগত ছনি। মগব ও অপন ওছাগনপব ছটপটাগত টা বহি জাগত অছি। গাম অএরোঁক কার্যরুপ অথরা কোনো আন পবিণতি নহি দেখারৈ দৈত অছি।
কথা মোননগ্ন অছি। পঢ়রোঁমে ঞম ভংগ কতহু নহি হোগত অছি। কথামে মৈথিন অভিব্যক্তিক নিম্নাকিত রুপ নীক নগৈত অছি - জহিনা পাকন আম তোড়ৈ নেন কিযো গাছ পব চঢ়ৈত অছি আ আম তোড়ৈসঁ পহিনহি খসি পড়ৈত অছি, তহিনা শিরনাথোকেঁ ভেননি। দুনূক মন এহিরুপেঁ চূব-চূব ভঃ গেননি,

जहिना अइनापर पाथरक चोटसँ ओ खसनासँ टाेगत अछि। दुनूक मनमे पैघ-पैघ अरमान पैघ-पैघ सपना छलनि जे एकाएक झूठैत झकना ज़ैनूनक हरा जेकाँ राघ मंडनमे मिलि गेलनि। पाकल आमक आँठी जेकाँ कबेज आबो सक्कत भऽ गेलनि। अंडीक तेलमे जरैत डिबियाक गजोत जेकाँ।
जगदीश प्रसाद मंडनकेँ हम व्यक्तिगत रूपेँ बँधाग दैत छियनि आ आशा करैत छी जे ओ अपन अनुभवकेँ आबो व्यापकता प्रदान करैत नव-नव हृतमे हमवा सभकेँ परिचित करौताह।

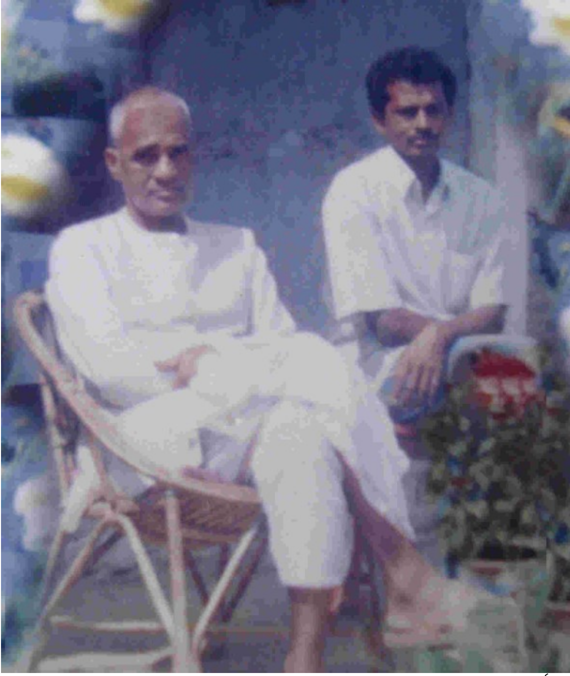
**<u>श्यामसुन्दर शशि</u>**

<u>साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव</u>

जनकपुरधाम

नेपालीय मैथिली साहित्यक जनक एवं जनकपुरक चटिसारके अन्तिम आचार्य गुरुदेव डा.धीरेश्वर झा 'धिरेन्द्र'क छठम् स्मृतिसभा पुस २७ गते सम्पन्न भेल अछि । हुनकर ववदहस्त प्राप्त क एखन धुरन्धर खेलाडी बनल साहित्यकारलोकनि हुनका स्मरण कएलनि कि नहि से ओएह जानथि मुदा हुनके प्रेरणासँ जन्मग्रहण

কএনে মিথিনা নাট্যকনা পবিষদধবি হ্নকা খবশ্য স্মবণ কএনে ছন । এহি খবসবপব ভাষণ ভুষণ খা কিছু ঘোষণা সেহো ভেন । সভকে ব্ঁঝন খছি জে নেতাসভক ভাষণ নিষ্প্রভাবী ভ বহন খাজ্ক ঘগমে ভাষণপ্রতিক খামজনকে রিশ্রাস ঘর্টি বহন ছনি । ওনা হ্নকা কোনো মন্চপব চঢিক স্মবণ কবী বা মোনে মোন, কোনো খন্তব নহি ছৈক । কাবণ দেরতাক পূজা মোনে মোন সেহো কএন জা সকৈএ । খা খসনী পূজা ত দেরতাক দেখাওন বাঁর্টপব চনবঁ থিক । হ্নকব খাদর্শকে পাননা কববঁ থিক । হঁ জহাঁধবি ঘোষণা কববাঁক গপ্প খছি ত এত্তকা বহ্ত সংস্থা খা ব্যক্তি বঁহ্ত কিছু ঘোষণা ক চ্কন ছথি । খাব দেখবাক খছি জে ওা ঘোষণাসভ কার্যকপমে খাএন কি নহি ?



হম জহন গ্বকুদেরকে জনকপ্ববক চট্টিসাবকে থন্তিম প্রাচার্য নিখএ নাগন ছনহুঁ ত মোনমে নানাপ্রকাবক চিন্তা ব্যাপ্ত ছন । কাবণ জনকপ্ববমে সম্প্রতি জে কনমজিরীসভ সঙ্গয থছি ,ওহোসভ কোনো হিসারসঁ কম নহি ছথি । সভক সংগ নাম,দাম থা ক্ষকাম ছনি । এহনা থরস্থামে কেও কহি সকৈত ছথি জে ‘ও থন্তিম প্রাচার্য কোনা ভ গেনাহ ।’ ক্ষদা এহি রাস্তে হম মৈথিনী এমএক পহিন রৈঁচক জমারডাক দৃশ্য উঁদঘাটন কবএ চাহর । ওনা উঁমেবক কাবণে হমবা এহি ভিতবকে তিবীভিষ্টীক জানকাবী নহি থছি ক্ষদা হম জে দেখন সে কহএ চাহর ।

গ্বকুদেরকে ভাগিবথী প্রযাসসঁ বাবার ক্যাম্পসমে মৈথিনীমে এমএক পঠাঙা স্বক ভেন ছন । মৈথিনীক

রাঁদে বাজনিতী শাস্ত্র,অর্থশাস্ত্র কিংরা অন্য রিষযমে স্নাতকোত্তবকে পঢাওৱ স্বরু ভেন । সভকে স্বখদ আশ্চর্য নাগি সকৈএ জে মৈথিনীক এমএক পহিন রৈচক রিদ্যার্থীসভ ছনাহ সর্বশ্রী ডা়বাজেন্দ্রপ্রসাদ রিমন,জানকী বমণ নান,বামভবোস কাপডি'ভ্রমব'ডা়পশুপতিনাথ ঝা,ডা়বেরতীবমণ নান, রুদ্রকান্ত ঝা 'মডওৱ',প্রা়পবমেশ্রব কাপডি,নমোনাথ ঠাকুব,নাগেশ্রব সিংহ আদি আদি । তাহ্ সমযমে সভকে সভ অপন অপন ক্ষকামপব ছনাহ । চ্কী অধিকাশি রিদ্যার্থী নোকবিযাহা ছনাহ তে কক্ষা ভোবমে সংচানিত হোওক আ অধিকাশি কক্ষা গুরুদেরকে ঘবেপব সংচানিত হোওক । চাহ পানক দৌব চনৈক আ পঢাওৱ নিখাওৱ সেহো । হম,ঘুট্টন আ প্বট্টন চাহ পান নারএমে পবেসান বহী । হঁসীক পমাবা ছটৈক ,রিভিন্ন রিষযপব গংথন মংথন হোওক আ গুরুদের ডিক্টেশন নিখরথিন । হমবা মোন অছি ভাষা রিজ্ঞানকে কাপী তৈযাব কবৈত কান গুরুদের জানকী রাবূ আ রিমনসবসঁ রেব রেব বায সন্নাহ কএন কবথি । যদি অধনাহ নহি নাগয ত স্রীকাব কবএ পডত জে ওএহ কাপীক আধাবপব এখনো মৈথিনীক এমএক রিদ্যার্থীসভ পবীক্ষামে পাস কবৈত ছথি ।

এখনো জনকপুবমে মৈথিনী রিদ্বানক কমী নহি অছি । মৈথিনীক প্রাধ্যাপককে সখ্যা সেহো পহিনেসঁ রেসী অছি । কি এখন গুরুদেরদ্বাবা চনাওন গেন চট্টিসাব চনৈত অছি ? যদি নহি ত হুনকা জনকপুবক চট্টিসাবক অন্তিম প্রাচার্য কহরামে কি হর্জ ?

গুরুদেরকে স্মবণ কবৈত কান একগোট আওব রিষয মোন পবৈত অছি । ও ওৱ জে ও মৈথিনী ভাষাক

সাহিত্যকাবঠৌ নহি ছনাহ । সাহিত্যকাব শ্রৃজনা কবএরনা ব্রঁম্হো সেহো ছনাহ । কেও মানথি রা নহি মানথ্ ও মহেন্দ্র মনাংগিযাকে নাঠক নিখরাক প্রেবণা খা সিখ দ্নৃ দেনথিন । বেরতী বমণনানকে বিপোর্তজি নিখরাক খাদেশ দেনথিন । বামভবোস কাপডিকে করিতা খা গীত এরং ভুরনেশ্রেব পাথেযকে করিতা খা কথা নিখরাক জিম্মেরাবী দেনথিন ।

প্রতিভা খা রুচিক খন্বসাব গ্বরুদেরদ্বাবা কএন গেন ঙা জিম্মেরাবী রিভাজনকে পাছা রঁহ্ত পৈঘ উঁদ্ধেশ্য ছন হেতনি । ও চাহনে হেতাহ জে নেপানীয মৈথিনীমে সেহো সভ রিধামে বচনা হো । পাছা জা সে ভেরো কএন । ভনেহি ভাবতীয হ্নকে কিছু শিষ্যদ্বাবা ষডযন্ত্র কএন গেন হো হ্মদা 'নেপানীয মৈথিনী সাহিত্য'ক নামাকবণ ওএহ কএনে ছনাহ ।

হে গ্বরুদের । খহাঁ প্রেবণা দিযৌ জে জনকপুবমে ফেবসঁ গ্বরুক্ষন পবম্পবা চনি সকএ । চ্কী এখন সাহিত্য শ্রৃজনসঁ রঁসী মৈথিনসভকে খধিকাবক খারশ্যকতা ছৈক । মৈথিনকে খপন বাজপাঠ হোঙক খা খপন ভাষামে কাজ ক সকএ । ওনা হমবা মোন খছি খপনেক ও জীদ্দ

নোবক ঠঘাবেসঁ জিনগী জঁ নির্মিত
খাশাকেব কমন খছি হৃদযকেব দহমে
কঠিন যক্ষ খছি ঙা ত নডিএ বহন ছী
হাবরঁ নে কিন্নহ্ ,হমব জীত নিশ্চিত । ।

খপনেক খন্বচবনোকনি খপনেক ঙক্ষাকে খরশ্য পূবা কবত ।



ফূন চন্দ্র ঝা 'প্ররীণ'

মৈথিনী শিশ্ব সাহিত্য নোক

মৈথিনী নোক সাহিত্যমে শিশ্ব নোক সাহিত্যক অভাব নাগল অছি। কিছু নিপিরদ্ধ আ রেসী মৌখিক। শিশ্ব নোক সাহিত্য অজ্ঞাত সময়মে, অজ্ঞাত নোক রচনাকারক দ্বারা ভেন হোযত। জহিযাসঁ একর রচনা ভেন তহিযাসঁ ওা রেদক রচনা জকাঁ হজারো রর্ষ ধরি মৌখিক পরম্পরামে জীরিত রহন। তকর রাদ কিছু তঁ নিপিরদ্ধ কযন জযরাক প্রযাস ভেন আ রেসী এখনো ধরি নোকক কণ্ঠমে অপন স্থান রনা কঽ রখনে অছি। প্রত্যেক পীঢ়ী কি নোক অপন পছিনা পীঢ়ী কি নোকসঁ একরা স্বনৈত আ সীখৈত আরি রহন অছি। মৌখিক পরম্পরামে জীরাক কারণেঁ একর মৌনিকতা দিনানুদিন নষ্ঠ ভেন জা রহন অছি। নোক–রিশেষ, রস্তু–রিশেষ আ ক্ষেত্র–রিশেষক কারণেঁ একর শর্দ্ধ আ উচারণমে অংতর পাওন জাওত অছি। মৈথিনী শিশ্ব নোক সাহিত্য প্রাযঃ সর্র রিধামে উপনর্দ্ধ অছি, ঝদা এহি আনেখমে পদ্য রিধাকেঁ কেন্দ্রমে রাখি থোড় রহুত আনো রিধা সর্র পর রিচার কযন গেন

অছি ।
এখনধরি জে মৈথিলী শিশু লোক সাহিত্যকেঁ লিপিবদ্ধ রূপমে সংকলিত করবাক প্রযাস ভেল অছি তাহিমে প্রা. প্রফুল্ল কুমার সিংহ "মৌন"ক মৈথিলীক লোরী গীত ডা. অণিমা সিংহক "শিশু গীত আ খেল" তথা এহি সম্পূর্ণ বাল সাহিত্যকার ডা. দমন কুমার ঝাক একটা সমালোচনাত্মক গ্রংথ "মৈথিলী বাল সাহিত্য"ক প্রকাশন বহুত হদ ধরি উপযোগী সিদ্ধ ভেল অছি ।
মৈথিলী শিশু লোক সাহিত্যকেঁ নিম্নলিখিত ভাগমে বাঁটল জা সকৈত অছিঃ –
1. লালন–পালনসঁ সম্বদ্ধ ।
2. খেল আ মনোরংজনসঁ সম্বদ্ধ ।
3. জ্ঞানোপযোগী ।
নালন–পালনসঁ সম্বদ্ধ শিশু লোক সাহিত্য
এহি প্রকারক লোক সাহিত্যক পরিবেশ পৈঘ নহি হোএছ ।
ওা ঘর–আঁগনসঁ দলান ধরি সীমিত রহৈত অছি । নেনাকেঁ জন্ম লিতহি 'সোহর' ওকরা কানমে পড়ৈত ছৈক আ জেনা–জেনা নেনাক অবস্থা বঢ়ৈত ছৈক, বঁদলৈত ছৈক তেনা–তেনা শিশু লোক সাহিত্য পরিবর্ত্তিত হোএত জাএত অছি । জন্মক বাদ ওকরা দিন–রাতি মিলা কঽ কতেকো বের কড়ূতেনসঁ জাঁতল–পীচল জাএত ছৈক আ জতনিহারিক ঠোর পর অনাযাস চল অবৈত অছি–
চৈং–চৈং–চৈং বৌআ সূতল্ভৈং
বৌআ মথো পচনি তেল
হ্মদ্দ মথো ফুস্ঁনি বেল ।
চানি পর তেল পচায, অপন দুনূ টাঁগপর নেনাকেঁ পারি, দেহ উঁগারৈত কহৈত ছথি

রৌআ গুনসন, কীন সন
ধোরিযাক পাটি সন
ফ্ক্ত্বাক পাঠ সন
ঋদ্ধি-সিদ্ধিক ছাতী পব নাত দিঅঽ
পৃথ্বী পব ভঽব দিঅঽ।

তকব বাঁদ নেনাকেঁ হাথসঁ নোকৈত ছথি। নেনা ডবে কানএ নগৈত অছি। প্বনঃ কহৈত ছথি-রৌআ আম তোড়ূ/রৌআ জাম তোড়ূ।

তকব বাঁদ টাঁগ পকড়া কঽ, উঁনটাকঽ ঝুনবৈত কহৈত ছথি-

রৌআ মামা গাম দেখূ
রৌআ নানা গাম দেখূ
রৌআ অপন গাম দেখূ।

এহিমে একটা বাঁত দেখযমে অবৈত অছি-জঁ নেনা মামা গামমে বহন তঁ ওকব দাদা-দাদীক, জঁ অপন গামমে বহন তঁ নানা-নানীক চৌন কযন জাগত অছি।

পহিন সাঁঝ দীপ নেসনাক বাঁদ ছোটি-ছোটি নেনাক বক্ষার্থ সঁঝা-মৈযাসঁ প্রার্থনা কযন জাগত অছি।

আকো মৈযা চাকো, সঁঝা মৈযা বাকো
পহবা মৈযা হেবণী, সব় দ্ঃখ হেবনী
জে রৌআকেঁ দিঅয দৃষ্ঠি, তকবা বাঁন্হূ গোনা রিষ্ঠী
কান-ভৈবর বক্ষা কবয, সোনক দীপ, পাটৈক বাঁতী
রৌআ সূতয স্বখক বাতী
দ্ঃখ-দবিদ্র পাছূ জাউ, স্বখ-শ্রৃংগাব আগূ আউ।

তহিনা রৈসী দেখন্বহ্ক নেনাকেঁ ক্যা নজবি-গ্বজবি নে

नगा दिअय, एहि क्रममे ओ पाँती द्रष्टव्य–

हँसनी–खिननी गेल बजाव/हँसनी चल आयल
खिजनी बहि गेल/जहिना हस्स बाजा धनपान
तहिना हस्स बानक/दोहाग बाजा धनपान
दोहाग मौवगनी माए।

दीपक गजोत पर लेना अपन दृष्टिकेँ केन्द्रित कऽ डिम्हा घुमबैत, आनन्द लैत बहैत अछि।

जनश्रुति अछि, प्राचीन कालमे छठिहावक बातिक दीप मिझाकऽ लोक बाखि लैत छल तथा छः वर्ष धबि बैठौकेँ आ तीन वर्ष धबि बेटीकेँ एहि दीपसँ ओ टेटैमा कबैत छल, मुदा वर्त्तमानमे एहल कम देखबामे अबैत अछि। जखन लेना बैसऽ लगैत अछि, संकेत पर आँगुब पकड़ब सीखि लैत अछि तखन लोक कोनो बातक जिज्ञासाक क्रममे, बालबोध बुझि अपन बिचला दू गोटे आँगुबकेँ लेनाक कपावपव घुमबैत कहैत छथि–आनी–मानी हम जानी/बाबा बोटी खाए नहि जानी
आए–बापकेब ना नहि जानी/सत्त छोड़ि असत्त नहि बाजी।

तकब बाद लेनाकेँ आँगुब देखबैत पकड़बाक लेल कहल जाइत अछि। जँ लेना बिचला आँगुब पकड़ि लैत अछि तँ जिज्ञासा पूबा होयबाक सम्भावना प्रबल मानल जाइछ।

जखन लेना ठाढ़ होयब आबम्भ कबैत अछि तखन बेब–बेब खसि पड़ैत अछि। घव–परिवावक लोक ओकवा बेब–बेब आँगुबक सहाव दैत ठाढ़ होयबाक लेल आ डेग उठएबाक लेल प्रोत्साहित कबैत कहैत छथि–

থা.....থা.....দিগ্–দিগ্ থা
থা.....থা.....থৈযা.....থা
ডেগ ৰঁঢ়ৈযা.....হম্মৰ ৰাঁবূ.....হম্মৰ ভৈযা।
এহি সংগ নেনা ডৈগ উঠৰৈত ঋছি, ৰৈব–ৰৈব খসৈত ঋছি ঋা ঞ স্বনি–স্বনি প্বনঃ ঠাঢ় হোএৰাঁক ঋা ডেগ উঠএৰাঁক প্রযাস কৰৈত ঋছি। এহি পদক মাধ্যমসঁ নেনাকেঁ ৰূঁনৰঁ সিখাএন জাগত ঋছি।
মৌনাএত নেনাকেঁ কোবামে নঃ ঘ্মযৰাঁক ঞ্মমে কথা–গীতক পৰম্পৰা বহন ঋছি। একৰ স্বৰূপ পৈঘ ঋা ছোট দ্নূ প্রকাবক দেখৰাঁমে ঋৰৈত ঋছি। জেনা চন্নামামাকেঁ দেখৰৈত নেনাকেঁ কহন জাগত ঋছি–
চন্না মামা ঋা বে ঋা, পাবে ঋা/নদিযাকেঁ কিনাবে ঋা
সোনাকেঁ কটৈবামে/দ্ধ–ভাত নেনে ঋা/ৰৌঋাক ঝঁখমে ঘ্ট্ক সন।
দোসবঃ –
চন্নামামা ঋাবে ঋা পাবে ঋা/কেবাক ভাব না
পূড় ী–পকমান না/ফোকা মখান না/ৰৌঋা ঝঁহমে ঠ্স।
এতেক কহৈত ঋপন হাথসঁ নেনাকেঁ খোঋএৰাঁক ঋভিনয কৰৈত ছথি। তহিনা তৰেগণ দিস তকৰৈত–
এক তাবা দূ তাবা/তাবা ৰেঁটৌ ৰঁড় ৰূঁধিযাবি
গংগাকাতসঁ ৰাঁন্ব ঋননক/সেহো ৰাঁন্ব কন্বনিযাঁ নেনক
সেহো কন্বনিযাঁ ফ্টৈহা দেনক/সেহো ফ্টৈহা চবৰঁহৰাঁ নেনক
সেহো চবৰঁহৰাঁ ঘস্সা দেনক/সেহো ঘস্সা গৈযা খেনক
সেহো গৈযা দূধ দেনক/সেহো দূধ ৰিঁনৈযা পীনক
সেহো ৰিঁনৈযা মূসা দেনক/সেহো মূসা চিনহোবৰাঁ খেনক
সেহো চিনহোবৰাঁ পংখা দেনক/সেহো পংখা বাজা নেনক
সেহো বাজা হাথী দেনক/সেহো হাথী মামা নেনক

সেহো মামা গিনাস দেনক
স্বতযরাঁক কান নেনাকেঁ জাঁঘপব নঽ, রেঁব-রেঁব ওকব কনপঙ্গী ঋা মাথকেঁ সোহবরৈত, জাঁঘকেঁ নীচা-উঁপব কবৈত, ঋপনো দেহকে ডোনরৈত, ঞ নোবীক পবম্পবা এখনো ধবি মিথিনাক সরঁ ঘবমে দেখরাঁ স্বনরাঁমে ঋরৈত ঋছি-ঋাগে নিনিযাঁ ঋা ঋা/রৌঋা নএ নিন না না
নিনিযাঁ এনৈ রিঢ়া নিযাঁসঁ/রৌঋা এনৈ মাহুকসঁ
রৌঋাক মামা গামকী-কী রিকায।
ঋংগা রিকায, ঢেঁপী রিকায/সেহো ঋংগাকেঁ পহিবয/রৌঋা পহিবয
একবা কত্তৌ-কত্তৌ দোসব প্রকাবেঁ এনা স্বনরাঁমে ঋরৈত ঋছি-
নিনিযাঁ ঋযনৈ রিবহিনিযাঁসঁ/রৌঋা ঋযনৈ মমহবসঁ
মমহবমে রৌঋা কী-কে খাএ/ঋাবরঁ চাঙঁবক ভাত
সোবহিযা গাযক দূধ/হানী-হানী খো বে রৌঋা জযরেঁ রঁড় া দূব
হুঋমাকেঁ পিযাসন রৌঋা গেন পোঋবি
পোঋবিক ঢেঁগস নেন ঢেঁগবায
রৌনক রঁগ্বনা দেন ছোড় ায/ঐহেঁ বে রঁগ্বনা খেত-ঋবিহান
এক সূপ দেরৌ দেসবিযা ধান/তেকবে ফটিহে নাম-নাম চূড় া
রৈসি জিমরিহেঁ ব্রাহ্মণ পূবা দেন ঋাসীস
জিরিহেঁ সৈ রৌঋা নাখ রঁবীস।
এহি নোবী সভক মাধ্যমসঁ নেনাকেঁ স্বতযরাঁক সংগ-সংগ ওকব দীর্ঘাযু হোএরাঁক কামনা সেহো কএন জাঞছ। নেনাক স্বতি বহনা পব মাএ, নিশ্চিংত ভঽ ঋপন ঘবক কাজ-বোজগাবমে নাগি জাঞত ছথি।
নেনাক সংগ ঋপনো মনোবংজন কবরাঁক ক্রমমে নোক

ঋপনে উঁতান ভ২ পড়ি বহৈত ঋছি ঋা নেনাকেঁ পৈবপব রৈঁসায, রেঁব–রেঁব পৈব উঁপব–নীচা কবৈত এহি পানন গীতক ঋানন্দ ঋপনো নৈত ছথি ঋা নেনোকেঁ সেহো দৈত ছথিন। একবা কত্তী–কত্তী “ঘ্ঘ্ঋা–মনা” ঋা কত্তী–কত্তী “ধ্ঋাঁ–চ্ঋাঁ” নামসঁ সেহো জানন জাগত ঋছি।

ঘ্ঋাঁ ঘূঁ নন্ন ছূঁ নন্ন মনসা নাম কী
সোনমন ঝা, টৌক পকড়ি না, পোখবি খ্না
পোখবিক কাত–কাত চম্পা নগা/চম্পা হ্ফূন উঁধিঋাযন জাএ
পবতী হ্ফ্নাযন জাএ/সীকীক ডগমগ কোকাক হ্ফূন
চকমক দেরতা চন রঁড় ী দূব/কত্ত দূব/মধেপ্বব
মধেপ্ববমে কী সরঁ, তাব ছৈ রেঁতাব ছৈ
কাজব–রীজব কএন ছৈ/টৌহ্ফনী রৈঁসাএন ছৈ
মামা গেনৈ পটনা/মামী স্বতনৈ ঋংগনা
মামা ঘবমে চোব পৈসন/দোড়২ হো ভগিনমা

তকব রাঁদ “নর ঘব উঁঠে” কহি পৈব উঁঠাএন জাগত ঋছি ঋা “প্ববান ঘব খসে” কহি পৈব নীচাঁ খসাএন জাগত ঋছি। ও খেন নেনা সরঁ রেঁব–রেঁব খেনএরাঁক নেন কহৈত ঋছি ঋা ঋানন্দ রিভোব হোগত বহৈত ঋছি।

জারতকান ঘবি নেনা জাগন বহৈত ঋছি, ওকবা এক নে একটা নোকক সানিধ্য চাহী, নহি তঁ ও কানয নগৈত ঋছি। এহনা স্থিতিমে গাযক ঋতিবিঞ নানী, দাদী, দীদী ঋাদি ওকব মোনকেঁ রঁহটাবরাঁক নেন বংগ–রিবংগক পদ্য, ভাস নগাক২ গারঁ২ নগৈত ছথি–

ঋনিযা গৈ, মনিযা গৈ/গোনা রঁড়দ খেত খাগ ছৌ গৈ
কত্ত২ গৈ, ডীহপব গৈ/ডীহপব বখরাঁব কে গৈ/রাঁরাঁ গৈ
সাস্বকেঁ নহি দেতৌ গৈ/সিবমাতবমে বখতৌ গৈ

अपने सर्वदा खयतौ गे।
दोसरः –
नाम गाछी गेली, नाना आम पेली
बाबाक देली, बाबा मौ/आब नहि जाएब मकैया खेत।
बाघ छै, बघिनियाँ छै, कोठीपर हरअनियाँ छै
बाबा आँगनमे चूड़ा रखौय/पड़बा बीछि-बीछि खाय छै
कोन बेटीखउंकी नजरि लगौलक/पड़बा कहत जाय छै।
नेनाक लालन-पालनमे माए, दादी, नानीक संग-संग दीदी
अर्थात पितिसिक सेहो बड़ महत्वपूर्ण योगदान रहलैक
अछि। तेँ किछु दीदीपरक द्रष्टव्यः –
नाम दीदी गे/की दीदी गे/डलिया दे मिरचाय तोड़ए
लेल
ककबामे/पनिसराबामे/सरो पनिसरा हलिसल आएल
ककबा घर लुकाएब गे/बाबा घर लुकाएब गे
बीचे बाटे पर खसली गे/सब बबियतिया हँसली गे
दोसरः –
नाम दीदी गे/की दीदी गे/बेटा कनै छी खोपड़ीमे
कानय दहिन पुतखौकाकेँ/नाचय दहिन परबियाकेँ
खाय लेल देलहुँ दालि भात/खाए लेलक सोहारी
सूतय लेल देलहुँ अलंग-पलंग/सूति रहल गोवरथारी
गेलहुँ मोंछ पकड़ि कऽ उठबए/फोलि देलक
केबाड़ी।
तेसरः –
नाम दीदी गे/की दीदी गे/एक बत्ती छाल्ही चटैलियौ गे
तै लेल बाबा मारलकौ गे/बाबा बड़ चण्डलबा गे।
अपना ओहिठामक बेटीकेँ जखन संतानक योग्यता होइत
छनि तखन प्रायः नैहर आनि लेबाक परम्परा एखनो
धरि बाँचल अछि। एहना स्थितिमे नेनाकेँ मामा, मामी,

নানা, নানীক রেঁসী দ্নাব–মনাব ভেটৈত বহনৈক খছি, তেঁ কিছ মামা–মামীসঁ জ্ড়ন পানন–পদ্য দ্রষ্ঠব্য–
মামা নৌ পোখবী ভীড়পব জগহ্ন
চিক্কন পড়রাঁ মাবিকহ্ন খানিহ্ন
মামী মাথকেঁ দীহ্ন/তেন ফোবন মিনাকহ্ন কবিহ্ন
খপনে খগহ্ন নান–নান ফ্কটিযা/হমবা দীহ্ন ম্নোব
গু সরঁ দেখিকহ্ন রঁহি বহনৈএ/হমবা খাঁখি সঁ নোব।
দোসবঃ –
মামী যৈ ভাত উঁধিখাএ/মামী যৈ দানি উঁধিখাএ
কোঠী পব স্বগ্গা স্নান কবৈএ।
তেসবঃ –
খারঁ নহি জএরেঁ মামাক খঁগনা
খপনে খাগ ছৈ নান–নান ফ্কটিযা/হমবা দৈ ছৈ ম্নোব।

খেন খা মনোবংজনসঁ সম্বন্ধ শিশ্ব–নোক সাহিত্য

এহিসঁ সম্বন্ধ শিশ্ব নোক সাহিত্যক পবিরেশ রেঁসী রিস্তৃত খছি। বস্তা–পেবা, পবতী–পবাঁত, রিদ্যানয–পবিসব, খেনক মৈদান খাদি ঠাম নেনাক ঝ্ন্ড ভোব সাঁঝ জমা হোগত খছি খা বংগ রিবংগক খেন খেনাগত খছি। ছোটৈ–ছোটৈ নেনা, জে খেন, রেঁসীকান খেনাগত খছি, তাহিমেসঁ কিছ দ্রষ্ঠব্য–
খটৈকন–মটৈকন দহিযা চটৈকন/পূস মহাগব প্ববনী পত্তা
হিন্নয–ডোন্নয/মাঘ মাস কবৈনা ফবএ/তৈ কবৈনাক নাম কী
খাম গোটী, জাম গোটী, তেতবী সোহাগ গোটী।

সিংগহী নেরেঁ কী ফ্ঁগবী

জঁ উঁত্তবমে নেনা 'সিংগহী' কহৈত খছি তঁ ওকবা রিঙ্গুঁ কাটৈন জাগত খছি খা জঁ 'ফ্ঁগবী' কহৈত খছি তঁ

ঝক্কাসঁ মাবন জাগত থিছ।
একবা দোসব প্রকাবেঁ সেহো স্বনরাঁমে থরৈত থিছ–
থটৈকন মটৈকন দহিযা চটৈকন/কেবা কূস মহাগব জাগব
প্ববনিক পত্তা হিন্ন–ডোন্নি/মাঘ মাস কবৈনা ফূনৈ
থাহ্মন গোটী, জাহ্মন গোটী/তেতবী সোহাগ গোটী
সিংগহী নেবেঁ কী ঝঁগবী ?
দোসবঃ –
গাছ কবৈ ঠাঁএ–ঠাঁএ, নদী গৌংগিথাএ
কমনক ফূন দ্নূ থনগন জাএ/সীকীক ডানী চমেনীক ফূন
চকমক দেরতা চনবঁড় ়ী দূব/হাথীপব হথবঁববাঁ ভৈযা ঘোড় ়াপব বজপূত
সবঁ বজপূতনী খোপা গ্বহনে/বঁকা ছৈ মজবূঁব
বঁকা বিকাগএ তীন–তীন বঁকা/বাঁজূকেঁ গবদাগ
বামজীকেব স্বতন প্বতহ্থা/কূটৈত বহএ ধান।
বাঁন মনোবিজ্ঞানকেঁ ধ্যানমেঁ বাথি, নেনাক সঙ্কচিত বিকাসক, উন্নাসক নেন মৈথিনী শিশ্ব নোক সাহিহ থোড় নহি প্রতীত হোগছ। খেনসঁ সম্বঁন্ধ একটা বাঁন–কথা কাব্য দ্রষ্ঠব্য–
একটা ছনৈ হ্দ্দী, ও বৈঁসন ঝসপব
ঝস ওকব পেট চীবি দেনক
ওহিসঁ নিকনন তীনটা ধাব
দূটা স্বখনে–স্বখনে ছন, একটামে পানিএঁ নহি
জাহিমে পানিএঁ নহি, তাহিমে পৈসন তীনটা হেনবাঁব
দূটা ড্বিএ–ড্বিএ গেন, একটাক পতে নহি
জকব পতে নহি,সে নোতনক তীনটা ব্রাহ্মণ
দূটা ভুখনে–ভুখনে বহন, একটা খএবেঁ নহি কএনক
জে খএবেঁ নহি কএনক, তকবা ভেন তীন ঝক্কা দন্ড

दूटा ह्सिए–ह्सिए गेल, एकटा नगरेँ नहि कएल
एहि प्रकारक लोक साहित्य लेला सभ बड़ मनोयोगसँ
स्वलैत अछि।
कखनोकाल लेला–लुटैका झुण्ड एक–दोसरक डाँर
पकड़ि कऽ रेलगाड़ी बनबैत अछि। एहिमे एक गोटा
गोंजिन आर सभ लेला डिब्बा बनैत अछि आ घुमि–घुमिकऽ
कहैत अछि।
रेलगाड़ी झकमक/पहिया लोहाबकेर, रौल सरकारकेर
फँगअामे पानी, मकोनामे तेल/आ गेलि मगयाँ, पी
गेलि तेल
भैया रे भैया, फट्ठ्यो कहाँ गेल/एक सय हाथी बान्ह
पर गेल।
मिथिलाक खेलमे कबड्डीक बड़ प्रचान परम्परा रहल
अछि। एहिपर आधारित किछु पद्य देखल जाए–
कबड्डी–कबड्डीकार/मैना बचा खल्डापार
दोसर: –
चेत कबड्डी आबऽ दे/तबला बजाबऽ दे
तबलामे पगसा/बाँग–बगगचा।
तेसर: –
कबड्डी खेलऽ गेलहुँ कपार फुटि गेल
रेशमकेर डोरामे हाथ कटि गेल
श्रेलणकेम देखिकऽ पियास लागि गेल
हाथीक देखिकऽ हदास उड़ि गेल/आम चकलेट चीनी
प्लेट
एकटा खेल अछि गिरगिटैवानी ओ खेल मिथिलाक कन्या
लोकनिक मध्य खेलाएल जाएत रहल अछि। एहिमे
एकटा कन्या गिरगिट बनैत अछि आ दूटा, ओकर दुनू
जाँघ पकड़ि कऽ ठाढ़ भऽ जाएत अछि आ एकटा कन्या

ওকব দুনূ পৈব পকড়ি কঽ, ওহি পব ৰৈসি জাগত অছি আ কহৈত অছি—
গিবগিটৈমানা—গিবগিটৈমানা/কহাঁ—কহাঁসঁ আএন ছী
ৰৌআ নানা—ৰৌআ নানা/দেস—দেসসঁ আএন ছী।
কী সৰ নাএন ছী।
আম ছোড়ি গব্দা/ককবা দেনহুঁ
বাজাক ৰেটীক হাথমে/বাজাক ৰেটী কত্তঽ অছি
মজে কোঠনিযা/মজে কোঠনিযা কী সৰ
সাঁপ ছৈ, ৰাঁঘ ছৈ।
এহি কথা—কাব্যকেঁ দোসব তবহেঁ সেহো কহন জাগছ—
হে গিবগিটিযাঁ বানী! তোঁ কতএসঁ অএনহ
হমবা নেন কী—কী অননহ
কান খোড়ি গব্জআ/সেহো গব্জআ ককবা নেন
বাজা ৰেটী হাথক নেন/বাজা ৰেটী কী সৰ দেন
হাথী ছোড়ি ঘোড়া দেন/সেহো ঘোড়া কহাঁ গেন
বিবদাবনমে চবএ গেন/বিবদাবনমে কী—কী দেখন
সাঁপ দেখন, ৰাঁঘ দেখন/নাচে গিবগিটিযা।
জে কন্যা গিবগিটৈ ৰনন বহৈত অছি ও অপন মূড়ী উঁঠা আ হাথ পসাবিকঽ উত্তব দৈত বহৈত অছি আ ও তীনূ সহযোগী কন্যা ওকবা ঘ্মবৈত বহৈত অছি।
একটা খেন অছি—কটহবক গাছ ৰনা এহিমে একটা নেনা ঠাঢ় ভঽ গাছক অভিনয কবৈত অছি তথা আওব নেনা সৰ ওকব পৈব পকড়ি, মূড়ী গোঁতিকঽ, ৰৈসি বহৈত অছি আ কটহব ফনক অভিনয কবৈত কহৈত অছি—
হমবা ৰাঁড়ী—হমবা ৰাঁড়ীকেঁ হুহ্আএ
বাজ কোতবান/কী—কী মঁগৈএ
আবৰ চৌবা, নব ঢ়কনা
তকব ৰাঁদ কোতবান, ফনক অভিনয কবৈত নেনা সৰকেঁ,

हाथसँ ठेलैत छथि
तखन गाछ कहैत छथि-
काँच छी तँ छोड़ू दृ/पाकल छी तँ लऽ लू ।
एकटा खेल छथि- "झिझिर कोना" । ई खेल पाँचगोटे लेल द्वारा कोनो खाली घरमे खेलाएल जाइत छथि, जाहिमे चारिटा कोन होइ । ई खेल रैसीकाल लेल खाली दलानक कोठली वा विद्यालयमे खेलाइत छथि ।
एहि खेलमे प्रयुक्त लोक साहित्यकेँ देखल जाए-
झिझिर कोना-झिझिर कोना कोन कोना जैबँ
एहि कोना जैबँ, ओहि कोना जैबँ ।
एकटा खेल छथि- "साँप डिग-डिग" । ई एकटा सामूहिक खेल थिक, जाहिमे बच्चा लेल एक संग हाथो - जोड़ू कऽ केँ सोझ पाँतीमे ठाढ़ होइत छथि ।
एकटा कहैत छथि -
की रे बँकबिया
की रे छकबिया/बँकबी कत्तऽ
खेतमे/धान किएक खेलकौ
खेत्तौ/बोज लेब्बौ
नहि देब्बौ ।
तखन दू हाथक बीच दऽ लेलासबँ बन्हएबाक अभिनय करैत छथि आ बजैत छथि- साँप-डिगडिग/साँप-डिगडिग
जेना पशु-पक्षी सबँ अपन अबोध लेलाकेँ आमेबक्षाक उपाय दौड़ कऽ बाजिकऽ, खेलाएकऽ सिखबैत रहैत छथि, तहिना शिशु लोक साहित्यमे सेहो आमे-बक्षार्थ अनेक प्रकारक खिस्सा-पिहानी
गद्य आ पद्य दुनूमे पर्याप्त मात्रामे उपलब्ध छथि । उदाहरणस्वरूप-बँगिया गाछक खिस्सा, गोनू झाक खिस्सा

एहिमे सबसँ बेसी लोकप्रियता पौलक अछि। ओना आबो कतेक अछि। जेना–ननदि–भाउजसँ जुबन आँखिक खिस्सा 'सातो भाग पबदेस गेल आँखिकेँ दुःख देने गेल'।
तहिना झाँझी कुकुरक सौतिनक खिस्सा–
मोर मन मोर मन नहि पतिआए
सौतिनक टाँग दुनू चिनिते जाए।
किन्तु एहेन लोक–साहित्य देखबामे अबैत अछि जाहिमे निरर्थक शब्द सभक प्रयोग बुझना जाइछ। जेना–
ओका–बोका, तीन तबोका/लौआ–लाठी, चानन काठी
चाननकेँ बागमे गजय–रिजय/गन–गन घूघबा–पचक।
दोसर: –
ढाठी–माटी सोनेक टाटे/आठम लड़की भागल जाए
आलू बम बेंटा बम/भौजी नाचए छमाछम।
ज्ञानोपयोगी शिशु लोक साहित्य
"परिवारकेँ सामाजिक जीवनक पहिल पाठशाला" कहल गेल अछि। मैथिली शिशु लोक साहित्यक माध्यमेँ नेनाकेँ अनेक प्रकारक शिक्षा देल जाइत रहल अछि। किन्तु उदाहरण द्रष्टव्य–
अंक ज्ञानक लेल एकटा खेल अछि– "अक्का–पक्का" एहिमे नेनाक दहिना हाथपर अपन दहिना हाथसँ थापर मारल जाइत अछि आ बेबा–बेबी आँगुर पकड़ि कहल जाइत अछि–
अक्का–पक्का बौआकेँ पाँचगो बेक्का
एगो गेल गायमे, दोसर महीसमे
तेसर बड़दमे–चारिम गेल बकरीमे/पाँचम गेल छकरीमे।
तकर बाद तरहथीपर, अपन आँगुर रखैत–

এতঽ ব্ঁঢ়ি যা স্নহনক, পকৌনক, খএনক, পীনক ওা কইত ঋপন ঋাঁগ্নবকেঁ ডেগা–ডেগী বঁঢ়ইেত ওকব হাথসঁ কাঁখ ধবি নঽ জাএন জাগত ঋছি ঋা কহন জাগত ঋছি–

এতঽ সঁ জে চনন ব্ঁঢ়ি যা..../গ্নদ্দূ গৈযাঁ।

নেনা গ্নদগ্নদী নগনাপব জোব–জোবসঁ হঁসৈত–হঁসৈত নোট–পোট ভঽ জাগত ঋছি। এহি প্রকাবেঁ নেনাকেঁ একসঁ পাঁচ ধবি ঋংকক জ্ঞান কবাওন জাগত ঋছি।

তহিনা দোসব খেন ঋছি জাহিমে দূ ঋা দূসঁ ঋধিক নেনা ঠাঢ় ভঽ ঋাঁগ্নবসঁ সংকেত কবৈত খেনাগত ঋছি–

দস, বীস তীস, চানীস, পচাস/সাঠি, সত্তবি, ঋস্সী, নব্বে, সৌ

সৌমে নাগন ধাগা, চোব নিকনিকঽ ভাগা

বানী বৈঁটী সোগতী, ফূনকেঁ মানা গোগতী

মেম খাএ বিস্কুট/সাহেবঁ বাঁজএ ভেবী গ্নড।

এহি খেনক মাধ্যম সঁ নেনাকেঁ দহাগ ঋা সৈকড় া ধবিক ঋংকক জ্ঞান কবাওন জাগত ঋছি।

একটা খেন ঋছি– “ঘো–ঘো বানী”। এহি খেনমে একটা নেনা বীচমে ঠাঢ় হোগত ঋছি ঋা চাব্দকাত নেনাসবঁ হথো জোড় া কঽ কেঁ বৃত্তাকাব ঠাঢ় হোগত কইত ঋছি–

ঘো–ঘো বানী কত্তে পানী–এড় ী ধবি

ঘো–ঘো বানী কত্তে পানী–ঠেহুন ধবি

ঘো–ঘো বানী কত্তে পানী–জাঁঘ ধবি

ঘো–ঘো বানী কত্তে পানী–ডাঁড় ধবি

ঘো–ঘো বানী কত্তে পানী–ঢ় াঢ় ী ধবি

ঘো–ঘো বানী কত্তে পানী–পেট ধবি

ঘো–ঘো বানী কত্তে পানী–ছাতী ধবি

ঘো–ঘো বানী কত্তে পানী–গবদনি ধবি

ঘো–ঘো বানী কত্ত পানী–ঝাঁহ ধবি
ঘো–ঘো বানী কত্ত পানী–নাক ধবি
ঘো–ঘো বানী কত্ত পানী–খাঁখি ধবি
ঘো–ঘো বানী কত্ত পানী–মাঁথ ধবি
খংতমে ‘চ্ভুক’ কহি সৱ নেনা ডূরিকঽ নহযৱাক খভিনয কবৈত খছি। এহিমে মাধ্যমসঁ নেনা সৱকেঁ খংগক জ্ঞান কবাওন জাগত খছি।
একটা খেন নেনা সৱ এহি প্রকাবেঁ খেনাগত খছি–একটা নেনা খপন দ্নূ হাথকেঁ উঁঠাকঽ পৈঘ খাকাব ৱঁনৱৈত খছি খা তকব ৱাঁদ ক্রমশঃ ছোট কবৈত জাগত খছি খা কহৈত খছি–
এতেক টা কী–ছিঙ্কা/এতেক টা কী–পথিযা
এতেক টা কী–মউনী/এতেক টা কী–চ্ক্কা
চ্ক্কামে কী–খল্ডা/কে ফোবএ–কউখা
কে গীজএ–হমসৱ।
ঙ কহি– তী–তী–তী–তী....কহৈত সৱ নেনা কূদঽ নগৈত খছি। এহি নোক সাহিত্যক মাধ্যমসঁ ছিঙ্কা, পথিযা, মউনী, চ্ক্কা সভক খাকাবক জ্ঞান কবাওন জাগত খছি।
তহিনা একটা খেন খছি জকবা মাধ্যমসঁ কিছু ৱস্তুক উঁপযোগক জ্ঞান কবাওন জাগত খছি–
খেনএ–ধূপএ গেনিঐ/এগো নোহা পৈনিঐ
সেহো নোহা কথী নেন/হাঁসূ গঢ়াৱঽ নেন
সেহো হাঁসূ কথী নেন/খড়হী কটাৱঽ নেন
সেহো খড়হী কথী নেন/ৱঁগনা ছবাৱঽ নেন
সেহো ৱঁগনা কথী নেন/ভৈসী ৱন্হাৱঽ নেন
সেহো ভৈসী কথী নেন/চোতৱা পড়াৱঽ নেন
সেহো চোতৱা কথী নেন/খংগনা নিপাৱঽ নেন
সেহো খংগনা কথী নেন/গহূঁম স্বখাৱঽ নেন

সেহো গহূম কথী লেল/খাঁটা পিসাবৈ লেল
সেহো খাঁটা কথী লেল/পূবী পকাবৈ লেল
সেহো পূবী কথী লেল/ভৌজীকেঁ মঁগাবৈ লেল
সেহো ভৌজী কথী লেল/বেঁটা জলমাবৈ লেল
সেহো বেঁটা কথী লেল/কোবামে খেলাবৈ লেল
খঁতমে–টাগল–গল্লী টূটি গেল/বৌখা ৰূসি গেল।

উঁপবোক্ত বিবেচলসঁ লগৈত অছি জে মৈথিলী শিশু লোকসাহিত্য লেলাক প্রত্যেক পক্ষসঁ জুড়ল বহল অছি। লালল–পালল আ খেল মলোবংজলসঁ সম্বদ্ধ লোক সাহিত্যক অধিকতা পাওল গেল অছি। খেলক মধ্যমসঁ মলোবংজলক সংগ–সংগ লেলা ভুঁইকামে একতা, সহযোগ, সহানুভূতি আ প্রেমক ভাবলা জগৈত অছি। একব অতিবিক্ত অভিলয, লৃত্য, গীত আদিক জ্ঞাল সেহো আবম্ভহিসঁ হোমএ লগৈত অছি। এখল হমবা সবকেঁ মৈথিলী শিশু লোক সাহিত্য সল অমূল্য ধবোহবকেঁ সহেজিকৈ সমেটবাক প্রযোজল অছি কাবণ দিলান্নদিল ও অপল মৌলিকতাকেঁ ত্যাগি বিকৃত ৰূপ অপলৌলে জা বহল অছি। জঁ এহি দিশামে হমবা সভ সচেষ্ঠ লহি হোএব তঁ এহি ধবোহবক মূল্যবাল বস্তু লষ্ঠ ভৈ জযবাক প্রবল সম্ভাবলা লগৈত অছি।

ওলা হম আবম্ভমে কহি চুকল ছী জে এহি বিষযপব পহিলো বহুত গোটা কাজ কযললি অছি আ প্রাযঃ এখলো কৈ বহলাহ অছি, মুদা একব ফলক ততেক বিস্তৃত অছি জে উঁপলব্ধ সংকলল যথেষ্ঠ লহি মালল জা সকৈত অছি। কাবণ সংকলিত শিশু লোক সাহিত্যসঁ কৈক বড় বেঁসী লোক সাহিত্য এখলো ধবি লোকক ঠোবপব ছিড়ি আএল অছি।



<u>**বমেশ**</u>

<u>ৰ্হেস– পংকজ পবাশবক সাহিহিক চোবি মৈথিনী সাহিহক কাবী খধ্যায থিক</u>

রিদেহ–সদেহ ২ (২০০৯–১০) সঁ পংকজ পবাশবক সাহিহিক চোবি খা সাগৰ্ব খপবাধক পাপক ঘৈনক মহা–রিস্ফাট ভেন খছি। ওা পৈঘ শ্রেয পত্রিকাক সম্পাদক শ্রী গজেন্দ্র ঠাকুবকেঁ জাগত ছনি। হ্নকব খপবাধ পকড়ৰাক চেতনা কেব জতেক প্রশংসা কযন জায, কম হোযত। “রিদেহ”ক মৈথিনী প্রৱন্ধ–সমানোচনা– খংক,

ঋগ পোন–খোন নেন কএক ঘগ ধবি রিনম্বিত ভঽ কঽ নিরঁষ্কৃ বহত, সে “সময কেঁ ঋকানৈত” কহৰ কঠিন ঋছি ।
সাহিত্যমে চৌর্যকনাক ঁউদাহবণ পহিনহুঁ ঋরৈত বহন ঋছি গোষ্টপগবা । হ্মদা এক রৈবক চোবি পকড় া গেনাক রাঁদ প্রায়ঃ চোবিক ঋাবোপী সাহিত্যকাব মৌন–ব্রত ধাবণ কবৈত বহনাহ ঋছি ঋা মামিনা ঠঁঢ় াগত বহন ঋছি । হ্মদা তাহি পবম্পবাক রিপবীত ঋগ রৈবক চোব ’সিন্মা চোব’ নিকনন ঋছি ঋা রিগত এক দশকসঁ নিবন্তব চোবি কবৈত জা বহন ঋছি– সেন্হ কাষ্টিকঽ । ঋা তেহেন মহাচোবকেঁ মৈথিনীক সাহিত্যকাব ঋা সংস্থা সভ তবহথোপব ঁউঠা–ঁউঠা কঽ প্ববস্কৃত কেনক ঋছি ঋা সমীক্ষাক চাসনীমে চোবাযন করিতা সৱকেঁ রৌবি দেন গেন ঋছি । রিদেহ–সদেহ–২ প্রমাণ–প্ববস্সব ঋভিযোগে ঠৌ নহি নগৌনক, ঋপিতু এহেন মহত্বাকাংক্ষী ঋসামাজিক তত্বক রিকৃষ্ক সাহিত্যিক দন্ড ঋাবোপিত কঽ ঋপন “রৌনডনেস” সেহো প্রদর্শিত কেনক ঋছি । এক দশকমে তীন রৈব পকড় াযন চোব প্রায়ঃ “ডেযব ডেভিন” হোগত ঋছি ঋা ঋপন ঋন্বচিত । সীমাহীন মহত্বাকাংক্ষাক পূর্তি নেন ঋপন রবীয সংরগীয ব্যক্তিকেঁ সীঢ় ীক ৰূপমে ঁউপযোগ কবৈত ঋছি ঋা স্বার্থ–সিদ্ধিক ঁউপবান্ত ঋপন পযব সঁ ওহী সীঢ় ীকেঁ নিচাঁ খসা দৈত ঋছি । ফেব ওকবা ঋপন ট্বিষ্টব–ফেসবুক–নেষ্ট রা পত্রিকামে গাবিক নিম্নষ্ঠতম স্তবপব ঁউতবঽ মে কনিযোঁ দেবী নহি হোগত ছৈ । ও নাম রঁদনি–রঁদনি কঽ গাবি পঢ়ৈত ঋছি ঋা ঋপন প্রশংসামে জে.এন.যূ.ক ছাত্র–ছাত্রাক পোস্টকার্ড নিখেরামে ঋপস্যাঁত ভঽ জাগত ঋছি । ও হিন্দীক কোনো রঁড়কা সাহিত্যকাবক রৈষ্টৌক সংগ ঋপন নাম জোড়ি

বিৰাহক বা প্ৰেম-প্ৰসংগক খিস্সা বস নহ নহ কহ প্ৰচাবিত কবৈত অছি। এহেন প্ৰবৃত্তি কএটা আওব তিকড়মৰাজমে দেখল গেল অছি জে হিন্দীক পৈঘ-পৈঘ নামক মানা জপি কহ মঠোমাঠ হোঅয চাহৈত অছি। বস্তুতঃ ওা চিন্তাজনক তথ্য থিক জে মৈথিলীক নব-তুবকেঁ হিন্দীক পৈঘ-পৈঘ নামক বৈশাখীক এতেক জৰুবতি কিঐক হোগত ছনি ?
"বিদেহক" "গনক্লাযবীক বিৰবণ" পঢ়ি কহ বোগযাঁ ঠাঢ় ভহ জাগত অছি। পহল-৮৬ আ আবম্ভ-২৩ মে জে পোন খূজন ছল, অগ তথাকথিত সাহিত্যকাবক, তকবা বাঁদে মৈথিলী সাহিত্যসঁ বাঁবি দেল জেবাক চাহৈত ছল। ক্ষদা বিডম্বনা দেখূ জে চেতনা সমিতি সম্মানিত কহ দেলক। "মৈথিল ব্ৰাহ্মণ সমাজ", বহিকা (মধুবনী) সন অঁখিগব সংস্থাকেঁ চকচোন্ধী নাগি গেল, জখনকি সংস্থামে বিখ্যাত সাহিত্যকাব উঁদযচন্দ্ৰ ঝা "বিনোদ" আ পঢ় াকূ প্ৰাফেসবগণ ছথি। ওা সংশযবিহীন অছি জে প্ৰবস্কৃত কবেৰাঁমে বিনোদজীক মহত্বপূৰ্ণ ভূমিকা বহল হৈত। "বিদেহ" দ্বাবা বহস্যোদ্ঘাটন কেনাক বাঁবজূদ এখন ধবি চেতনা সমিতি অথবা মৈথিল ব্ৰাহ্মণ সমাজ, বহিকাকেঁ অপন প্ৰবস্কাব আপস কবেৰাক বা আনে কোনোটা কাৰ্বৰাওা কববাক বৈঁগবতা নহি বুঝা বহল ছৈ আ সৰ্দ গুম্মী নধনে অছি। এহেন "জড়-সংস্থা" সভ মৈথিলী সাহিত্যক উঁপকাব কবৈত অছি বা অপকাব ? ওা কেনা মানল জায জে পহল-৮৬ বা আবম্ভ-২৩ অগ দুনূ সংস্থাক কোনো অধিকাবী বা সাহিত্যকাবকেঁ পঢ়ল নহি ছলনি ?
ওা আশ্চৰ্যজনক সত্য থিক জে মৈথিলীক কএটা পৈঘ সাহিত্যকাব পংকজ পবাশবক ক্বত্ৰিম কাব্য আ আযাতিত শব্দাবলীমে ফঁসি গেলাহ অছি। "বিনিৰ্মিত কএক যুগ

মে নিরঙ্কু” ক ভূমিকামে অনেরো রিদেশী সাহিত্যকাবগণক তীস-চানিস টা নাম ওহিনা নহি গনাওন গেন অছি, অপন করিতা কেঁ রিশ্বিস্তবীয প্রমাণিত কবরাক নেন আঁখিগব চোবে এনা কহ সকৈত অছি। সম্ভারনা রনৈত অছি জে ডগনস কেননব জকাঁ ওদ্ধ সভ করিক বচনাক ভারভূমিক রা শেষ্ঠারনীক চোবিক প্রমাণ এহী কাব্য-পোথীমে ভেটি জায। অতত: মি. হাগডক কোন ঠেকান ? মৈথিনীমে তঁ নোক রিশ্ব-সাহিত্য কম পঢ়ৈত অছি। তকব নাজাযজ ফাযদা কোনো র্নৈকমেনব কিঐক নহি উঠাওত ? আখিব টৈক্কা-পোনিটিক্স কী থিক- টৈকেনিকন পোনিটিক্স থিক, সৈহ কিনে ? একবা রদৌনত ঝাঁসা দহ কহ পাকিস্তানোক যাত্রা কযন জা সকৈত অছি। “টৈক্কা-পোনিটিক্সক” রদৌনত কিবণ-যাত্রী প্ববস্কাব, রৈদেহী-মাহেশ্বিবী সিংহ “মহেশ” প্ববস্কাব, এতেক ধবি জে রিদিতজীক অকাদমীযোক প্ববস্কাব নেন জা সকৈত অছি। প্রদীপ রিহাবীক স্বপ্নত্রক ভাতিজ-ককা সম্বন্ধক মর্যাদাক অতিক্রমণ কযন জা সকৈত অছি। প্রা. অরুণ কমনক “নযে গনাকে মেং” সেংধমাবী কহ কহ “সময কেঁ অকানন” জা সকৈত অছি। আব তঁ আব, অগ টৈকেনিকন পॉনিটিক্সক রদৌনত জীরকান্তজী সন মহাবথী সাহিত্যকাবসঁ “রিনম্বিত কএক যুগ...” পোথীক সমীক্ষা নিখরা কহ “মিথিনা দর্শন” (৯.) সন পত্রিকামে ছপরা কহ স্থাপিত আ অমব ভেন জা সকৈত চছি। মৈথিনী সাহিত্যক সভসঁ পৈঘ সফন ওজাব থিক “টৈক্কা পোনিটিক্স” !

ওা মানন জা সকৈত অছি জে মিথিনা দব্শনক সম্পাদককেঁ আবম্ভ-২৩ আ পহিন-+৬ কোনকাতামে নহি ভেটৈন হোগন্হি। ঝদা জীরকান্তজী নহি পঢ়নে হেতাহ

से मानबोंमे अधिकारी भ' रहल अछि। जीवकान्त जी तँ प्रयाग शुक्लक "चन्द्रभागा में सूर्योदय" आ एही शीर्षकक नारायणजीक कविता (चन्द्रभागामे सूर्योदय) सेहो पढ़ने हेताह जे छपल अछि मैथिलीमे। तखन पंकज पराशरक समुद्रसँ असंख्य प्रश्न पूछैत कविताक भावार्थ किऐक नहि लगलनि जे समीक्षामे कलम तोड़ि प्रशंसा करैत पड़लनि वा करा गेलनि ? एकरा "प्रायोजित समीक्षा" किऐक नहि मानल जाय ? की प्रयाग शुक्ल वा नारायणजीक समुद्र विषयक कवितासँ बेशी मौलिकता पंकज पराशरक कवितामे भेटैलनि जीवकान्तजीकेँ ? ओना सभ कविताक कनियोँ "छाया"क शंको नहि भेलनि समीक्षककेँ ? "सभ्यताक सभटा मर्मान्तिक प्रकार"क नोटिस लेबैत समीक्षककेँ साहित्यिक चोरि असभ्य आ मर्मान्तिक पीड़ादायक नहि लगलनि ? आब जीवकान्तजी सन समीक्षकक "पोजीशन क्लियर्स" भ' जेतनि से अन्दाज तँ मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ नहियेँ रहनि, उदय चन्द्र झा "विनोद" केँ सेहो नहि रहनि। ई अभिव्यक्ति तँ पंकजे पराशर टाकेँ रहल हेतनि ? बेचारे "पराशर" झनिक आयो स्वप्नमे कनैत हेतनि आ पंकसँ जनमल जतेक कमल अछि सब अविश्वसनीय यथार्थक सामना करैत हेताह। पराशर गोत्री भ' क' तीन बेर चोरि केनाए "पराशर" महाकाव्यक रचयिता स्व. किरणजीकेँ सेहो कनबैत हेतनि। आखिर जीवकान्तजी साहित्यिक चोरिक नोटिस किए ने लेलनि, जखनकि हुनका विचारेँ "मैथिलीक समीक्षक प्रायः मूर्खता पीबिकए विषवमन करैत अछि"(विदेह-सदेह-२-२००९-१०)। विनीत उपेन-साक्षात्कार आ जीवकान्तजी स्वयं पंकज पराशरक

চোবিরনা করিতা–পোথীক সমীক্ষক ছথি, খপিত্তু চৌর্যকনা প্ররীণ করিক ঘোব প্রশংসক ছথি। তখন খগ সমীক্ষা–খানেখমে খন্তর্নিহিত খসীম–প্রশংসা সাকাংক্ষ–পাঠককেঁ "রিষ–রমন" কোনা নে নগৌক ? হ্নকা সন "পঢ় াকূ" সমীক্ষক–পাঠককেঁ "ফ ্ন্স পোজীশন"মে খননিহাব "এক্সপর্ট খা হৈরিচ্এট্টেড" সাহিত্য–চোবসঁ প্রশংসা খা প্ববস্কাব দ্নূ পারি জায তঁ মৈথিনী–কার‍্যক গু উঁকের্ষ থিক রা দ্ভাগ্য ? খংততঃ রিদেহ–সদেহ টৌ কিঐক নিন্দা কেনক এহি ঘটনাক ? খান কোনো পত্রিকা কিঐক নহি কেনক ? ড ॅ. বমানন্দ ঝা "বমণ" গন্টবনেটপব নিন্দা কবৈত ছথি তঁ ঘব–বাঁহব পত্রিকামে কিঐক নহি জকব ও সম্পাদক ছথি ? চেতনা সমিতি, পটনা সম্মানিত কবৈত খছি এহনে–এহনে সাহিত্যকাবকেঁ তখন খপনে পত্রিকামে কোনা নিন্দা কবত, জখনকি প্ববস্কাব খাপসো নহি নৈত খছি, জানকাবী ভেনাক রা সাকাংক্ষ সাহিত্যকাবক খন্ববোধ প্রাপ্ত ভেনাক বাঁদো ? নচিকেতাজী নেটপব নিন্দা কবতাহ খা "রিদেহ"মে ছপত তঁ "মিথিনা দর্শন"মে কিঐক নহি নিন্দা রা সূচনা ছপন ? কাবণ স্পষ্ঠ খছি– জীরকান্তক সমীক্ষা পংকজ পবাশবক কার‍্য–পোথীপব ছপত, তখন ওহী পোথীক চোবি কযন করিতাক নিন্দা কোনা ছপত ? চাক ভাগ সাহিত্যিক খাদর্শ, মর্যাদা খা নৈতিকতাক ধজ্জী উঁড়া বহন খছি–পিতামহ খা খাচার্যগণক সমক্ষ খা (খনজানে মে সহী) হ্নকো নোকনিক দ্বাবা। মৈথিন ব্রাহ্মণ সমাজ, বহিকা; চেতনা সমিতি, পটনা খা সাহিত্য খকাদেমী, নগু দিল্লীমে খন্ততঃ কোন খন্তব খছি রা বহন ? এহেন নামী প্ববস্কাবক সংচানন খা চযনকর্তা মহাবথী সভকেঁ নর নোককেঁ পঢ়বাঁক রেঁগবতা কিঐক নহি ব্রুঝাগত ছনি ?

बिना पढ़ने प्रवस्काबक निर्णय वा समीक्षाक निर्णय कतेक उचित, जखन कि ओ चोबि तेसब बैबक चोबि थिक आ से छपि–कऽ भण्डाफोड़ भेल अछि। एकबा ववेण्य आ ववीय साहित्कावगण द्वावा कार्य–चोबि, आनेख–चोबिकेँ प्रश्रय देल जायबाँ किऐक नहि मानल जाय, जखनकि आवस्तु, मैथिल–जन, पहल आ विदेह–सदेह पहिनहि छापि चुकल छल ? की साहित्कि चोबिकेँ प्रश्रय देब, दलाल वस्तुकेँ प्रश्रय देब नहि थिक ? एहेन सम्भावनायुक्त नव कविकेँ प्रश्रय देब मैथिली साहित्य लेल घातक अछि वा कल्याणकावी, जकवा मौलिकतापव तील बैब प्रश्न चेन्ह लागल होएक ? की पोथीक आकर्षक गत्ता देखि वा विदेशी कविगणक नामावली (भूमिकामे) पढ़ि कऽ समीक्षा लिखल जाएत अछि वा प्रवस्काबक निर्णय लेल जाएत अछि ? जँ से भेल हो तँ सब किछु "ठीक छै भाग" ?

अग सबसँ तँ जीवकान्तजीक बात सत्य बुझाएत अछि जे समीक्षकगण दारू पीबि कऽ वा पैसा पीबि कऽ वा मूर्खता पीबि कऽ समीक्षा लिखैत छथि। डगलस केनलबक "टैक्लोपोलिटिक्स" तँ छपि गेल "पहल"मे चोबा कऽ। आबँ जीवकान्तजी, ज्ञान बंजनजी अथवा हिन्दी जगतक आन साहित्कावा–सम्पादकसँ पूछथु जे लोम चोम्स्कीबला वचना कतय गेल, की भेल, कोन नामें छपल ? पंकज पवाशवक नामें कि पदीप बिहाबीजीक स्वप्नत्रक नामेँ (अनुवाद रूपमे)। ओ विसर्ग एखन नहि भेल तँ भविष्यमे पुनः एकटा साहित्कि चोबिक पोल खूजत ? अंततः एकटा माँछकेँ कएटा पोखविकेँ प्रदूषित कवए देल जाय आ से कए बैब ? उदय–कान्त बनि कऽ गावि पढ़राक आदति तँ प्रवान छलि

ড◌ॉ. মহাচোব কেঁ। ককবো "সবীসৃপ" কহি সকৈত ছথি (মৈথিন–জন) আ কোনো পবিবাবমে ঘোঁসিযা কঽ বিষ বমন কঽ সকৈত ছথি। আঁক্টোপসক সভ গ্ণসঁ পবিপূর্ণ ড◌ॉ. প◌ॉন ৱাৱাকেঁ চোবিক ভবিষ্যৱাণী কববাক ৱড়কা গ্ণ ছনি তেঁ হিনকা নামী হ্ক্টৰ◌ॉন টৌম দ্বাবা পোসন জাগত অছি, জাহিসঁ "রিশ্ব–কপ"কেঁ দৌবান অগ "অমোঘ অস্ত্রক" উঁপযোগ অপনা হিসাৱেঁ কযন জা সকয।

সহবসা–কথাগোষ্ঠীমে পঠিত হিনকব পহিন কথাক শীর্ষক ছন– হম পাগন নহি ছী। ঔ উঁদ্ঘাষণা কববাক কী ৱেঁগবতা বহৈক– সে আগ নোককেঁ বুঁঝা বহন ছৈক। অবিনাশ আ পংকজ পবাশবক মামাজী তহিযা হিনকব কথাকেঁ "টিপ্পণীক"ক্রমমে মৈথিনী–কথাক "টৰ্নিংগ প্বাগন্ট" মাননে ছনাহ। আগ ও "টৰ্নিংগ প্বাগন্ট" ঠীকে এক হিসাৱেঁ "টৰ্নিংগ প্বাগন্ট" প্রমাণিত ভেন, কাবণ কথাক ওহি শীর্ষকমে সঁ "নহি" হটি গেন অছি, হিনকব তেৱাবা চোবিসঁ। হিনকব পহিন চোবি (অকণ কমনক কবিতা–নএ গনাকে মেং) ক নিন্দা প্রস্তাবমে "মামাজী" আ ড◌ॉ. মহেন্দ্রকেঁ ছোড়ি, সহবসাক শেষ সভ সাহিত্যকাব হস্তাক্ষব কঽ "আবম্ভ"কেঁ পঠৌনে ছনাহ। আগ ও হস্তাক্ষব নহি কেনিহাব সভ কন্ছী কাটি কঽ বাম–দহিন তাক–ঝাঁক কববাক নেন ৱাধ্য ছথি। দ্বৈধ–চবিত্র আ দোহবা মানদণ্ডক পবিণাম সৈহ হোগত অছি। অবিনাশ তখন তঁ দেখাব ভঽ জাগত ছথি জখন ও বিদেহ–সদেহ–২ মে নিখৈত ছথি জে "একবা সার্বজনিক নহি কবৱেঁ"। ন্বকা কঽ সূচনা দেবাক কোন ৱেঁগবতা? পংকজ পবাশবসঁ সম্বন্ধ খবার্ব হেৱাক ডব ৱা কোনো "টৈক্লোপোনিটিক্স"(?) কেব চিন্তা ?

রিদেহ–সদেহ–২ ক পাঠকক সংদেশ তঁ কএক্টা সাহিত্যকাবকেঁ দেখাব কহ দৈত খছি। জতয বাজীর ক্ষমাব রর্মা, শ্রীধবম, স্বনীন মল্লিক, শ্যামানন্দ চৌধবী, গংগেশ গুংজন, পী.কে.চৌধবী, স্বভাষ চন্দ্র যাদর, শম্ভু ক্ষমাব সিংহ, রিজযদের ঝা, ভানচন্দ্র ঝা, খজিত মিশ্র, কে.এন.ঝা, প্রা.নচিকেতা, রুক্মিনাথ মিশ্র, শির ক্ষমাব ঝা, প্রকাশ চন্দ্র ঝা, কামিনী, মনোজ পাঠক খাদি খপন ক্ষখব ভাষামে প্রখবতাপূর্রক নিন্দনীয ঘটনাক নিন্দা কেননি খছি, ততহি খরিনাশ, ড়ॉ. বমানন্দ ঝা "বমণ", রিভাবানীক ঝাঁপন–তোপন শব্দ খাশ্চর্য–ভারক উদ্রেক কবৈত খছি। ক্ষদা সংতোষক বাঁত ঙা খছি জে পাঠকক "প্ররীন ভার–ভংগিমা" সাহিত্যকাবোক "মেংহাযন খাবাজ"ক কোনো চিন্তা নহি কবৈত খছি। রিভাবানী তঁ কমানে কহ দেননি। এহি ঠাম মৈথিলী ভাষা–সাহিত্যক এক সয সমস্যা গনেরাক উঁচিত স্থান নহি ছন। ঙা ওনাঠ কান খোনাঠ খা মহাদেরক রিরাহ কানক নগনী ভহ গেন। কোনো চোব রেঁব–রেঁব খপন ক্ষ–ত্বত্যক পবিচয দহ বহন খছি খা হুনকা সময নষ্ঠ কবরঁ বুঝা বহন ছনি খা চোবকেঁ দেখাব কেনাসঁ দুঃখ ভহ বহন ছনি? ও খপন প্রতিক্রিযামে কতেক খামে শ্লাঘা খা হীন–ভারনা ব্যক্ত কেননি খছি সে খপনে পত্র খপনে ঠঁঢ়। ভহ কহ পঢ়ি কহ বুঝি সকৈত ছথি। হিন্দীযোমে এহিনা ভহ বহন খছি, তেঁ মৈথিলীমে মাফ কহ দেন জায? খারঁ হিন্দীসঁ পূছি–পূছি কহ মৈথিলীমে কোনো কাজ হোযত? রিভাবানী জ্যাসেনা চন্দ্রমকেঁ জ্যাসেনা মিনন কেনা কহৈত ছথি? হুনকব উঁপেক্ষা কোনা মানন জায? ও সভ সাহিত্যিক কার্যক্রমমে নোতন জাগত ছথি, সম্মান খা প্ববস্কাব পরৈত ছথি, পাঠক দ্বাবা পঠিত খা চর্চিত

ह्योगत छथि। समीक्षाक शिकागत की उँचरणींय (?) साहित्यकारकेँ मैथिलीमे नहि छनि ? समीक्षाक दु:स्थिति सभ जातिक मैथिली साहित्यकार लेल एके बंग रिषम अछि। ओग मे जातिगत रिभेद एला भेलए जे ब्राह्मण-समीक्षक, आरक्षणक दृष्टिकोणेँ निम्न जाति (?)क साहित्यकारक किछु रेंशीए समीक्षा (सेहो सकारात्मक रूपेँ) केललि अछि। समीक्षा आ आलोचनाक रिषम स्थितिक कारणेँ जँ नैराश्यक शिकार भऽ जाय लेखक, तँ लेखकीय प्रतिबद्धताक की अर्थ बहि जायत ? रिभाजीकेँ बुझनमे नहि छनि जे हुनका लोकनिक बाँद मैथिली महिला लेखनमे कामिनी, नूतन चन्द्र झा, रन्दना झा, माला झा आदि अपन तेरबक संग पदार्पण कऽ चुकल छथि। हुनका ले कामिनीक करिता संग्रह पढ़ल छनि आ ले "गजोड़ा याक अठैठी मोड़"। हुनका अपन गुरुदेरक बाँत मानि हिन्दीमे जागसँ के कहिया रोकनकनि ? ओ गेलो छथि हिन्दीमे। मातृभाषाक प्रेरणा अद्वितीय ह्योगत छै। मैथिलीक जड़ संस्था अथरा समीक्षक सभपर प्रभाव करबाँमे हमरा कोलो आपत्ति नहि, ह्मदा अर्थाभाव तँ एतय नगण्य अछिए। सामाजिक सम्मान रिभाजीकेँ अरश्य भेटैललि अछि। समाजमे "जड़"लोक छै तँ "चेतन" लोक सेहो छैक। हुनकासँ मैथिली भाषा-साहित्य आ मिथिला-समाजकेँ पैघ आशा छै, हीनभार रा आमेश्लाघासँ ऊपर उठि काज करबाक रोँगरता छैक। सक्षम छथि ओ। हुनका श्रेय लेराक होड़सँ बँचराक चाही। अन्यथा साहित्य अकादेमी प्रतिनिधि, दिरानिजापन केर शिकार जूरीगण आ मैथिलीक सक्षम साहित्यकारमे की की अन्तर बहि जायत ? रिभारानीक रिचललक दिशा हमरा चिन्तित आ

ব্যথিত কবৈত অছি। ও দমগব নেখিকা ছথি, সশক্ত বচনা কেননি অছি, আগ নে কান্হি সমীক্ষকগণ কনম উঁঠেবাঁপব বাঁধ্য হেবেঁ কবতাহ। সমীক্ষকক কর্তব্যহীনতাসঁ কতৌ নেখক নিবাশি হো ?
পংকজ পবাশবক শ্রৃংখনাবদ্ধ সাহিত্যিক চোবিপব সার্থক প্রতিক্রিয়া দেবঁ কোনো সাহিত্যকাব নেন অন্বচিত নহি অছি কতহুসঁ। সাহিত্যকাব নেন সাহিত্যিক মূন্যক প্রতি ওকব প্রতিবদ্ধতা মুখ্য কাবক হোগত অছি আ হেবাকো চাহী আ তকবা দেখাব কববাক "বৌনডনেসো" হেবাক চাহী। "চাহী"বনা পক্ষ সাহিত্যমে বেশীএ হোগত অছি। এহেন-এহেন গম্ভীব বিষযপব সাহিত্য আ সমাজক "চুপ্পী" এহেন ঘটনাকেঁ প্রাসোহিত কবৈত অছি আ জবঁদাহ জড়তাকেঁ বঁঢ়বৈত অছি, ভাষা-সাহিত্যকেঁ বঁদনাম তঁ কবিতে অছি। জাধবি পংকজ পবাশবক চোবি-কাব্যক সমীক্ষা নিখন জাগত বহত, বিভাবানীক মূন-বচনাক সমীক্ষা কে নিখত ? ককবা জৰুবী বুঝেতৈক ? বিভাবানী অপনে তঁ সমীক্ষা প্রাযোজিত নহি কবওতী ? সক্ষম নেখকক ব্যবহাবোক অপন স্তব হোগত ছৈ। তেঁ সংগঠিত ভহ চোবিক ভৰ্ৎসনা হেবাক চাহী।

প্রা. মাযানন্দ মিশ্রক বমনগব কথামে নাগন "ক্ষুদা"...

মাযা রাঁবুঁক কথা–সংসাবক হ্নক র্যাপক খ্ছি।
ও কথাক "প্লাঁট" ক চযনমে মাহিব খা খাধ্নিক ছথি।
ও পৈঘ খা ছোট সভ খাকাবক কথা নিখননি খ্ছি।
কথা নেখনক ক্রমমে ও পৈঘ কানখল্ড দেখননি খা ভোগননি খ্ছি। ও কএটা প্রসিদ্ধ কথাক যশভাগী রঁননাহ খ্ছি। ও কএ পীঢ় ীক জীরনকেঁ দেখননি খা নিখননি খ্ছি। হ্নকব নেখনমে নক্ষিত রস্থ্য থিক মধ্য রস্থ্য খা নিম্ন–মধ্য রস্থ্য খা কৌখন কঽ বাজনীতিক খা পূঁজীপতি–রস্থ্য সেহো।
ও নর পীঢ় ীক "খঁডা প্রেম", খাধ্নিকতাক প্রতি খতি–উঁসোহ খা প্বান পীঢ় ী (পিতা)ক প্বাতনপংথী–নক–ঘোঁকচী, দ্নূপব র্যংগ্য কেননি খ্ছি খা খপনা হিসারেঁ দেখাব কবরাঁক কোশিশ কেননি খ্ছি। দ্নূ পীঢ় ীক সোচমে রিগ্রতিকেঁ রীছি–রীছি কঽ দেখাব কবিতো, প্রাচীন শিক্ষক পিতাক প্রতি সহান্বভূতি বখিতো, নর পীঢ় ীক

দিক্কত বুঝিতো, আধুনিক আ প্রগতিশীল সোচকেঁ আগেসাত লৈ কহ সকলাহ অছি। বৈঠাক লোকবীক নিলসাগে মংত্রীক "অভিনন্দন" লিখএবঁলা প্রাফেসবক দুর্দশাক খিস্সা মাযানন্দ মিশ্রেঠা লিখি সকৈত ছলাহ। লক্ষ্মীক আগূ সবস্বতীক লতমস্তক হৈব আ বাজলীতিক সমক্ষ যোগ্যতা, কলা-সংস্কৃতিক পবাজযক বোধ মাযা বাবূ কবৌললি। ঝদা প্রাফেসবক বিবশতাক আগূক চ্রণ ছল- প্রাফেসবক বিদ্রাহ- ভাব আ সংঘর্ষশীলতা জে গ্বক ভগযো কহ শিষ্যক সমক্ষ প্রদর্শিত লৈ কহ পবৈত ছথি। পাঠককেঁ ও কথাকাবোক বৈচাবিক সীমা বুঝা সকৈত অছি।

অপল "ভৈবর" কথাগে একটা ঘবা কবিকেঁ একটা এম.এল.এ.ক "উঁপ-গ্রহ" (ওকব লাবা সর্জকক ৰূপগে) চিত্রিত কেললি অছি মাযা বাবূ আ ওকবা বিগ্রত যথার্থক স্থিতিগে, ওহী ৰূপগে ছোড়ি, দুনূকেঁ দেখাব কবিতো, যথাস্থিতিবাদ লগ ঠমকি জাগত ছথি। যএহ "ভৈবর" "মাধ্যম" লামক কথাগে "বীডিওক ভৈবর" (মহাদেবক ভৈবর) বলি কহ অবৈত অছি।

"ভৈবর"গে ঘবা-কবি "মাধ্যম" বলি কহ অবৈত অছি আ "মাধ্যম"গে বীডিও সৈহেবঁক চম্মচ (ভৈবর) বলি কহ অবৈত অছি। দুনূ কথা, খললাযকগণ (ঝখ্য, গৌণ আ বিচৌলিযা)কেঁ দেখাব কবিতো "জলহিতগে উঁপযোগী লৈ ভহ কহ মাত্র "সাহিত্-হিত"গে উঁপযোগী ভহ পবৈত অছি, জে কলা, মাত্র কলাক লেল ভহ কহ বহি জাগত অছি।

কথাক উঁদ্দেশ্য মাত্র বিগ্রতিক বা সংস্কৃতিক চিত্রণ টা লৈ হোগত অছি। চিত্রণকেঁ সমাধান-সংকেতক চাসলীসঁ বোবঁক কলা চাহী। জৈ কথাকেঁ কথাকাব জলমালসক

संग जोड़ि पड़ैत अछि, से कथा चिबाय भऽ पड़ैत अछि।

“नमकहराम” (जे कि “निमकहराम” हेबाक चाहैत छल)मे चौठियाकेँ “अगम्बरान” बना कऽ सफलतापूर्वक परसल गेल अछि। भाषा बान्हक शिल्प-शैली तँ कमालें अछि। ओ ब्यंग्यात्मक शीर्षक चुनैत छथि आ ताही भाषा-शैलीक उपयोग करैत छथि। व्यापारी वर्गक द्वारा आम जनताक प्रति कएल गेल निमकहरामीक चित्रण नीक जकाँ करैत सत्त प्रकारक दुरभिसन्धिकेँ देखार करैत छथि। ओ व्यापार तकनीक, व्यापार-समझौता, कालाबजारीक बीजमंत्र पाठक “भये प्रकट कृपाला”मे खूबे पढ़ैत अछि। बौगलाजीक मूल्-महत्ताक सजीव वर्णन करितो कथाकार बौगलाजीक शार्टकट बस्तासँ महा-उथालक जे अन्तर्कथा कहैत छथि- सएह कथाक प्राण थिक। ब्यंग्यात्मक शैल पाठककेँ “बौर” हेबासँ बचबैत अछि। तहिना “दीन दयाला” राजनैतिक कुचक्र, मंत्री-मुख्यमंत्री, एम.एल.ए.-हाकिमक दुरभि संधि, भ्रष्टाचार-आरक्षण, योजना, ड्राफ्ट कम मैनेजमेंट, पी.ए. टाइप लोकक पी.ए. गीरी आदि नव मुदा घृणित दुनियाँसँ मैथिली साहित्यकेँ परिचित करबितो, ओइ दुनियाँक प्रखर विरोध कथाकारसँ नै भऽ पड़ैत अछि। फेर “कौशल्या हितकारी” बनितो स्वास्थ्य-मंत्रीक “इस्तीफा” मात्र मूक-विरोध संकेतित कऽ पड़ैत अछि आ एकटा पलायन-वादक प्रदर्शन कथान्तमे भेटइत अछि। कौशल्याक शील-हरण स्थायी-विद्रोहक सृष्टि नै कऽ पड़ैत अछि आ कएटा गर्भपाती क्रान्ति जकाँ शिथिल इतिहास दोहरा जाइत अछि।

उपर्युक्त कथा सबहक प्रकाशन-काल आ आइयो,

সংঞ্রান্তিযেকান থিক। ভাবতীয সামাজিক আ বাজনৈতিক-ব্যরস্থা রিগ্নতিক পবাকাষ্ঠাপব অছি আ সমাজ নহানোষ্ট ভ২ বহন অছি। হ্মদা সংগহি-সংগ রিগ্নত-চেতনা, স্ব-সংস্কৃত চেতনা, রিগ্নতিক প্রতি জনমানসমে ঘৃণা-ভার আ চেতন-নোকমে রিদ্রাহ-ভার, সভ কিছু একহি সংগ অস্তিত্বমে অছি আ রিচাবধাবাক সংঘর্ষক শ্রৃংখনা স্ব-স্পষ্ঠ অছি। এহনা স্থিতিমে কনা-চাতুর্যসঁ পবিপূর্ণ সক্ষম কথাকাবক দাযিত্ব থিক জে যথাস্থিতিপব আনি ক২ কথা, পাত্র রা পাঠককেঁ নৈ ছোড়থি। হ্নকা নকাবামেক রিগ্নতিক চিত্রণমে অপন ঙুর্জা নৈ খপা ক২ সকাবামেক রাঁষ্ট, নকাবামেক রিগ্নতিক নহাসক রীচসঁ নিকানরাঁক গমানদাব আ শ্রেমপূর্ণ প্রযাস কবরাঁক ছননি। সকাবামেক চেতনাকেঁ আঁক্সীজন দেরাঁক কাজ সাহিত্যকাবে টা কবৈত ছথি। শেষ সংরস্কাকেঁ রিধামেক সীমা হোগত ছনি।

মাযা রাঁবূকেঁ সমস্ত সামাজিক আ বাজনৈতিক রিগ্নতি রূঝন ছনি। হ্নকা পৈঘ দ্নিযাসঁ পবিচয ছনি। ও অপনা-আপকেঁ মৈথিনী কথা-সাহিত্যক "ত্রিপ্বল্ডক" একটা "প্বল্ড" মানননি অছি। হ্মদা ননিত-বাজকমনক রিদ্রাহ-চেতনা রা সমকানীন সোচক টৈন-টৈন আরাজ হিনকা কথা সাহিত্যসঁ ন্বপ্তপ্রায অছি। সে আশ্চর্যজনক আ সহ সেহো অছি। অপন কথা সভমে প্ল◌ঁটক স্তবপব নর আ আধ্নিক নগিতো, কথ্য (থীম)ক স্তবপব মাযা রাঁবূ কোনো তেহেন সন আগূ নৈ জা পরৈত ছথি। মনোবম শিল্প, স্বন্দব "ট্রীটমেন্ট" আ ভাষাধিকাব, কথা-কনাক মেঁহী-মেঁহী তত্বসঁ সবারোব মাযা রাঁবূক আকর্ষক কথা-সংসাব, মিথিনাক নর পীঢ় ীকেঁ মাত্র স্বধাবরাদী-সংশোধনরাদী সংদেশী দ২ পরৈত অছি আ কোনো নর বস্তা

নৈ দেখা পরৈঁত খছি, জখনকি সমকালীন রৈচাবিক ক্ষখ্যধাবা মাযাৱাঁবূঁক পাঠক খা নর-পীঢ় াকেঁ পহিনহিসঁ বূঁঝন ছৈক।
মাযা ৱাঁবূঁক কথামে তথাকথিত "হবিজন নেতা" বা এমেনে, ৱঁড়জন-ক্ষখ্যমংত্রীক নাঙবি ৱঁনি কহ পাছূ-পাছূ চনৈত খছি- "হা হুসৈনক" ক্ষদ্রামে। ওা রিঁহাবক কাঁগ্রেসী মংত্রীমল্ডনমে হোগতে ছন। ডॉ. জগন্নাথ মিশ্র খপনা মংত্রীমল্ডনমে কোনো-নে-কোনো রিঁনষ্ট পাসরানকেঁ বখিতে ছনাহ। মাযা ৱাঁবূঁক কথা-সংসাবমে নাবী খা দনিত-বস্কাক মাত্র দ্দর্শৈষ্টৌ খাএন খছি, সে ওগ দিনক সময খা মাযাৱাঁবূ দ্নূক সীমা থিক। সেহো দ্দর্শা-র্ণন গবিমাহঙ্ক ভহ কহ নৈ খাএন খছি।
মাযা ৱাঁবূঁক কথা-কনা প্রভাসেজী জকাঁ "ধনীক" খছি। সেহো বাজমোহন ঝাক "নাগব-ভাষা"মে নৈ, খপিতু খাঁটী "ভাখা"মে। হিনকব কথা-নোক বমণীক খা বসগব চিত্রণসঁ ভবন-প্ববন খছি। র্ণন কখনো উঁস্সঠ নৈ হোগত খছি হিনকব। মিথিনাক পাবিবাবিক খা সামাজিক সম্বন্ধক হিনকা গম্ভীব খরধাবণা ছনি- সে কএষ্টা কথা সারিঁত কবৈত খছি। উঁপন্যাসোমে সে খাএন খছি।
হিনকব ৱঁহুখাযামী ব্যক্তিত্ব মিথিনা-মৈথিনীকেঁ খহঁত সমূদ্ধ কেনক খছি খা মৈথিনী-কথামে হিনকব খরদানকেঁ কমজোব কেনক খছি। হিনকব মংচীয ব্যক্তিত্ব, গবিমাক প্রতি হঞ্চা, ভোগক প্রতি নানসা- হিনক কথাক প্রতি পবিশ্রম, সমর্পণ খা খন্ততঃ কথাক ধাবকেঁ ভোথ কেনক খছি। মৈথিনী খান্দাননমে হিনকব সংঘর্ষশীনতা জেহেন বহন তেহেন সংঘর্ষশীনতা কথা নেখনমে দ্রষ্ঠব্য নৈ খছি, যদ্যপি জৈ কানখল্ডমে ওা কথা সভ নিখন গেন ছন,

“नवीन” मानल गेल छल। ओना आओर नवीन तत्व सभक परीक्षण केनाइर कथा सभ “वर्णीक” व्र्यागतो ततेक नव आ धवगव नै व्र्यागत अछि। तहिना अभिव्यंजनाक कार्य-श्रृंखलाक करिता सभ थूरेँ “नवीन” मानल गेल छल। ओना आधुनिकताक टैन-टैनाटैन ध्वनि जे यात्री-वाजकमलक कार्यमे आएल- से हिनक कार्यमे विलुप्तप्राये बहल। कथे जकाँ हिनकव उपन्यासोमे आधुनिकता आ पात्रक संघर्षशीलता कोनो तेहेन जगजियाव नै भऽ सकल। फेव हिनकव गीत, गीतल आ मंच-संचाललमे थूरेँ वस आ नवीनता अछि, ओना सेहो मात्र शिल्प आ प्रयोगेक स्तवपव। वस्तुतः संघर्षशीलता आ जिजीविषा प्रायः सभ विधामे विलुप्तप्राय अछि।

मायावाँवू अपना जीवनमे थूवँ सार्थक काज सभ केललि अछि। हिनकव जीवनक उपलब्धिक प्रशंसनीय पथाव लागल अछि। ओना अपना समयक सीमाकेँ उपन्यास-कथा अथवा करितोमे नै तोड़ि सकल छथि। ऐतिहासिक उपन्यासकेँ प्राचीने वाष्ट्रवादी-गौववरादी दृष्टिकोणसँ लिखलनि अछि। कोनो आधुनिक संदर्भमे वैज्ञानिक मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ नहिए लिखि सकल छथि। मंत्रपुत्र, स्त्रीधन वा पुवोहितमे प्राचीन इतिहासक पुवाने व्याख्या प्रस्तुत केललिहेँ। प्राचीन भावत, प्राचीन समाज, पुवातन आ सनातन-व्यवस्थाक प्रति हिनकव “नजविया” पावम्पविक वाष्ट्रवादी-गौववरादी-स्कूल जकाँ अछि, जै स्कूलक यू.एन. घोषाल, के.पी.जायसवाल, आव.सी. मजूमदाव, हेमचन्द्र वायचौधुवी, के.के.दत्त, वाधाकृष्ण चौधवी, वाँल गंगाधव तिलक आदि छलाह। ऐ लोकलि प्राचीन भावतक गौवव-बोधसँ ब्रिटिश साम्राज्यवादकेँ

চকচোন্ধী নগা কঽ নিচৈনসঁ সূতি বহৈত ছনাহ আ গতিহাসকেঁ বৈজ্ঞানিক পদ্ধতিসঁ দূব কঽ মাত্র "ব্রিটিশ রিবোধক ওঁজাব" মানৈত ছনাহ। তকব ৰাঁদ ঐতিহাসিক যথার্থ সভ উঁপেক্ষিত ভঽ জাগত ছন। বাজসত্তা আ প্রাচীন-ব্যরস্থাক যশোগানক খনারে প্রজাক দ্ঃখ-দর্দ গতিহাস-নেখনক ঐ তংত্রমে নৈ ছন। এহনে প্বনরুত্থানরাদী জীর্ণ-শীর্ণ খরধাবণা, জকবা বামচৈতন্য ধীবজ "বৈজ্ঞানিক ব্রাহ্মণরাদ কহৈত ছথি, জকাঁ, জঁ উঁপন্যাস-কথা নেখন হো তঁ প্রাচীন সমাজকেঁ নর সন্দর্ভমে দেখবঁ খসম্ভর জকাঁ ভঽ জাগত খছি। গতিহাসক ঘটৈনা সৰ্হক খধ্যযন রা পাত্র আ পবিরেশক মনোবম চিত্রণ এক ৰাঁত থিক আ বৈজ্ঞানিক গতিহাস দৃষ্ঠিসঁ নিষ্কর্ষ ৰহাব কঽ সমাজকেঁ চেতনা-সম্পৃক্ত কববঁ দোসব ৰাঁত থিক। গতিহাস দৃষ্ঠিক রিকাস পাছূ ঝঁহে নৈ হোগত খছি আ নে হেৰাঁক চাহী। আগূ ঝঁহে রিকাস ও থিক জে বোমিনা থাপব, বাম শবণ শর্মা, ডী.ডী. কোশাম্বী, গবফান হবীৰঁ, ডী.এন.ঝা, সতীশ চন্দ্রা, আদি গতিহাসকাবগণ খপন-খপন হৃতি সভমে কেননি খছি। ও নোকনি বাজসত্তাক গৌবর গাথাক উঁপেক্ষা কঽ তকোনীন সমাজক খভগদশাকেঁ দেখাব কঽ নর, জনরাদী দৃষ্ঠিসঁ ঐতিহাসিক তথ্য সৰ্হক পবীক্ষণ আ তর্কসংগত ব্যাখ্যা কেননি আ প্রাচীন গতিহাসকেঁ নিস্সন বৈজ্ঞানিকতাক আধাব দেননি। হিন্দী সাহিত্যমে গতিহাস দৃষ্ঠি আধাবিত উঁপন্যাস সভ ৰহ্ত প্রাসংগিক ৰনন ঝদা মৈথিলীক ঐতিহাসিক চেতনা-সম্পৃক্ত উঁপন্যাস পছআএন রিচাবধাবা আধাবিত ভঽ গেন। ঐতিহাসিক ঘটৈনা সৰ্হক নীক সংযোজন, তথ্য, পাত্র, সংস্কৃতি-তত্ত্ব সভসঁ পবিপূর্ণ বহিতো, উঁপন্যাস-তত্ত্ব আ কনা-চাতুর্যসঁ ধনীক

बहितो, वैचारिक स्तरपर प्रगतिशील नै छैथ्राक कारणेँ "मंत्रपुत्र" अपन महत्वकेँ घटा नैत अछि, जखनकि एस.ए. डांगे "साध् समाजवाद"केँ तकोनीन समाजक एक "यथार्थ" मानने छथि। ओना ई तथ्य मायां बाबूक पक्षमे जागत अछि जे ऐतिहासिक उपन्यासक मामिनामे दबिद्र मैथिलीक भण्डारक श्रीवृद्धि ई उपन्यास करैत अछि। आर आगविमो हमरा कोनो आशा नै अछि जे प्राचीन इतिहास आधारित अपन अन्य उपन्यासमे मायां बाबूक पात्र सभ प्राचीन व्यवस्था विद्रोह धर्मक निर्वाह करत। आ ऐ बातक ग्लानि तँ अछिए जे "पुरोहित" आ "स्त्रीधन" मैथिलीक भण्डारसँ बाहरे रहन। वैदिक कानीन दासत्वपर मणिपद्मजी "आदिम ग्वनाम" ने नेखकीय नजरिया आ माटिक प्रति प्रतिबद्धता प्रस्तुत केनक, से मंत्रपुत्रक "शास्त्रीय-एप्राच" प्रस्तुत नै कर सकन।
मायां बाबूक अपन कथा सभमे उपरी स्तरमे जे आधुनिक बुझाएत छथि, तेहेन वैचारिकताक स्तरपर प्रगतिकामी नै बुझाएत छथि। हुनकर वैचारिकता जहिना उपन्यासमे रहन तहिना कथोमे रहन, से स्वाभाविके छन। कोनो रचनाकार दू विधामे अनग-अनग विचारक हो, से ने तँ संभव अछि आ ने उचिते। व्यक्ति अपन जीवन, साहित्य आ सभ क्षेत्रमे प्रायः एकहि विचारधाराक रहए, सएह नीक आ सएह बहितो अछि। आ से नै रहनापर पकड़ाएगेलो जागत अछि। मायाबाबू जे छथि से सभठाँ छथि- एक्के रंग। जीवनोमे रसगर, मंचोपर रसगर, उपन्यास-कथा-गीत-काव्य, सभठाँ "रसगर"। सभठाँ रमनगर वर्णन, सभ विधामे शिल्प-शैलीमे महारत प्राप्त। कला-चातुरी-युक्त सक्षम खेलाड़ी। सफलता प्राप्त करबाक

রীজ মংত্রক রিশেষক্ত। ক্ষদা জীরনদর্শন ঋা রৈচাবিকতামে মযূবক পএব জকাঁ স্বখাএন। প্ৰবান রৈচাবিকতা, নূহ–কৌশন–প্রেমী দর্শককেঁ, মযূবক পৈব দেখিতে ঝূড়–ঝমান রঁনা দৈত ঋছি।
মাযা রাঁরূ যাত্রী–বাজকমন–ননিত–কিস্বনজীকেঁ দেখনে–পঢ়নে ছনাহ। কিবণজীক পবম্পবা হ্নকা রূঝন ছননি। তেঁ কিছ রেঁশী ঋদ্ধ রিনূ পব ছন। হিনকা "সোনাক নৈযা" বচএ ঋরৈঁত ছননি। "মাটিক নোক"ক সেহো হিনকা পবিচয ছননি। তেঁ মাটিপব ঠাঢ় নোকক জনরাদী ঋা প্রগতিশীন ঋাঁখিকেঁ চীন্হি কঽ পাত্র ঋা পবিরেশক বচনা কবরঁ ঋপেক্ষিত ছন। কোনো সাহিত্যকাবসঁ ঋাজুক নোক, সমাজ ঋা সময– ও ঋাশা বখৈত ঋছি। ক্ষদা সর্বতোভারেন সাহিত্যিক সক্ষমতাক রাঁরজূদ "দবভংগিযা গসকূনক" তেজগব ছাত্র রঁনরাঁক "দুর্ঘটনা" হিনকো সংগ ভগযে টা গেন। সে মাত্র রৈচাবিকতাক কাবণেঁ। ঋন্যথা, "দড়া ভংগা"ক কএটা "গ্বক–ঘংটান"সঁ কতওক ঋাগূ জএরাঁক প্রতিভা হিনকামে ছন। মাত্র ঋমীটা রাঁতকেঁ ছোড়া কঽ মাযা রাঁরূ ঋপনা কানখন্ডক একটা ঋহংত সক্ষম রঁহ্ঋাযামী সাহিত্যকাব ছথি ঋা ঋপন সমযক মিথিনা–মৈথিন–মৈথিনীকেঁ ঋপন ঋসংখ্য যোগদানসঁ পবিপূবিত কেননি ঋছি ঋা কঽ বহন ছথি। হ্নকব ভঁর্জা স্তুহ ঋছি। ক্ষদা ভঁর্জকি "ঋাউটপ্বট" কনাক চবমোকের্ষপব হোগতো, রৈচাবিক রূপেঁ ঋানোচ্য ঋছি।



<u>মংত্রেশ্বব ঝা</u>

চবিত্র চিত্রণক রাজীগব- জগদীশ প্রসাদ মংডন

পছিনা কিছু রর্ষমে মৈথিনী সাহিত্যক গতিহাসমে জগদীশ প্রসাদ মংডন ধূমকেত্ত জকাঁ উগন আ চমকন ছথি। সংপ্রতি হ্নকব দূ উঁপন্যাস জিনগীক জীত আ মৌনাগন গাছক ফূন হমবা সমক্ষ অছি। দূনূ উঁপন্যাসকেঁ মনোযোগসঁ পঢ়ি চুকন ছী। বোচক ভাষা আ শৈনীমে নিখন হিনকব দূনূ উঁপন্যাস গ্রামীণ জীরনক চিন্তন আ ঊহাপোহকেঁ সজীর চিত্রণ কবৈত অছি। জৈ গাম ঘবক কথা সভ মংডনজী উঁঠাএ ওকবা পবিণতি তক পহুঁচওনে ছথি তৈ গাম ঘবক এতেক সূক্ষ্ম আ রিস্তৃত রিরবণ মৈথিনী সাহিত্যমে ঐসঁ পূর্র কমে ভেন অছি।

জিনগীক জীত উঁপন্যাসমে কতেকো এহেন চবিত্র উঁভবন খছি জে কোনো পাঠককেঁ প্রভাবিত কেনে বিনা নৈ বহত। উঁদাহবণ স্ৱরূপ বঁচেনান খা স্বমিত্রাক চবিত্র দেখল জাএ, "শিরক্ষমাবকেঁ নোকবী হোগতে বঁচেনান গস্কূলমে ত্যাগ–পত্র দঽ দেনক। বঁচেনানক ত্যাগপত্রসঁ সৌঁসে গাম টিকা–টিপ্পণী চনএ নাগন। কিছু গোটেকেঁ দুখ এহি দুখাবে হোগত জে বেঁব–বেঁগবতামে পাগসঁ মদতি ভঽ জাগত। কিছু গোটেকেঁ খুশিযো হোগত কিএক তঁ ভনে খামদনী বঁন্ন ভঽ গেননি। ক্ষদা স্বমিত্রাকেঁ নে হবখ খা নে বিস্ময। কিএক তঁ ও নীক নর্মোতি বুঝৈত জে জগু মন্বক্খক ভীতব কমাগক শিক্তি হোগত ছৈ, ওতে তঁ নোকবীমে নহিযে হোগত ছৈক।"

এে উঁপন্যাসমে মহন্থী কোনো চনৈত খছি, মহন্থ কোন–কোন কাবনামা কবৈত খছি তকবো খদ্ভুত চিত্রণ ভেল খছি। "উঁপবকা হল্লামে খাঠ গো কোঠলী ছৈ। খাঠো কোঠলী খসগবে বখনে খছি। ... পূতাক বাঁদ সভ খপন–খপন ঠবপব চন জাগএ। তকব বাঁদ নীনা শুরু হোগ ছৈ। ক্ষদা বেঁসী নগ কহবঁহ।" ঐ প্রকাবে বেঁসী নৈ কহবঁহ কহি কঽ মহন্থক চবিত্রক পূবা বর্ণন স্পষ্ট ভঽ জাগত খছি। দূ–তীন দশক পূর্ব উঁচ্চতম ন্যাযানয পটনা উঁচ্চ ন্যাযানযক কোনো ভ্রষ্ট খাদেশীকেঁ নিবস্ত কবৈত বাঁবঁবাঁব যএহ টিপ্পণী কেনে ছন, "We say no more"।

মৌনাগন গাভক হূন উঁপন্যাস সেহো ওহিনা উঁদ্দেশ্যপূর্ণ খছি জেনা জিনগীক জীত। ক্ষদা ঐ উঁপন্যাসমে খাদর্শবাদ কনে বেঁসী প্রকট ভেল খছি। বমাকান্তক জে চবিত্র প্রস্তুত ভেল খছি তকব উঁদাহবণ ভেটৈঁ

ओतेक स्वनभ नै। चाह पीरॅ बमाकान्त कहलखिन, "दुःखू हम खपना सभ खेत समाजकेँ दऽ देनिऐक। आरॅ हमबा कोनो मतलबॅ ओहि खेतसँ नहि अछि।" दोसब दिस स्वर्णिक चबित्र अछि जे नोकबी छोड़ि गामक छोटे-पैघ सबहक धीयापूताकेँ पढ़ेबाे लेल त्यागक आदर्श प्रस्तुत कबैत अछि। एहेन चबित्र सभ निस्संदेह गामकेँ पुनर्जीवित आ पुनस्थापित कबबामे प्रेबणाक काज कबत।

दुनू उपन्यास सभ दृष्टियेँ उत्कृष्ठ अछि आ मैथिली उपन्यास लेखनमे नव आयाम गढ़ैत अछि। मंडल जीक कथा संग्रह गामक जिनगी आओबो बेसी श्रेष्ठ बचना अछि। ऐ संग्रहमे कुल उनैस कथा संकलित अछि। ऐ संग्रहक लगभग सभ कथा प्रकाशनसँ पूर्व मंडलजी हमबा पठौने बहथि। तहिया हम ि दल्लीमे बही। हुनकब आग्रह बहनि जे हम कथाक पाँडुलिपिकेँ शुद्ध कऽ के हुनका पठा दिअनि। हमबा आश्चर्य भेल छल जे हमबा कोना ओ ऐ लेल उपयुक्त बुझलनि। मंडल जीक कथा सभ पढ़ि हम ततेक प्रभावित भेल बही जे हमबा पाँडुलिपिमे कतहुँ कोनो चेन्ह लगाएबॅ उपयुक्त नै लागल। हम दूबभाषपब जगदीश मंडलजी आ हुनक सुपुत्र उमेश मंडलकेँ कहलिएनि जे जखन हम पटना आपस आएबॅ तखन स्वयं हुनकासँ भेँट कए अपन स्वक्षाब देबॅनि। कोनो बचनात्मक लेखनकेँ आलोचना तँ भऽ सकैत अछि, ओकब गुण-दोषकेँ विवेचन तँ भऽ सकैत अछि, ओकब हठात् काटल-छाँटल नै जा सकैत अछि। से कएलो नै जेबाक चाही। संयोगसँ ऐ बीच गजेन्द्र ठाकुब जीकेँ मंडल जीक पाँडुलिपि प्राप्त भेलनि आ ओ सफल जौहबी जकाँ

মংডন জীক কথা, উঁপন্যাস, নাটক আদি কতোক রিধাক বচনাকেঁ রিরিধ ৰূপমে প্রকাশিমে অননখিন। ঐ নেন ও অশেষ ধন্যরাদক পাত্র ছথি।
গামক জিনগীক সভ কথা গ্রাম্য জীরনকেঁ কিছু অনছুঁখন প্রসংগকেঁ মার্মিক চিত্রণ কবৈত অছি। ভেঁটক নারা, রিসাঁঠ়, অনেকৰুআ রেঁটা, ডীহক রঁটরাঁবা, ঘবদেখিযা, রাঁরী, ঠেনারঁনা, রোঁনিহাবিন মবনী, গত্যাদি ঐ সংগ্রহক উঁত্গ্রষ্ঠ কথা সভ ছন্হি। অপন উঁপন্যাসে জকাঁ মংডন জীক কথা সভ জিজীরিষা আ ব্যারহারিক আদর্শক উঁত্কংঠাসঁ ভবন অছি।
মংডনজী জেঁ তবহে নিবংতবতামে রিরিধ রিধাক বচনা কঽ বহল ছথি সে ভরিষ্যমে হ্নকব রিশেষ অরদান নেন রিশ্রাস জগবৈত অছি।


<u>স্বভাষ চন্দ্র যাদর</u>

<u>বচনাক পাঠ আ নেখক</u>

(মৈথিনী নেখক সংঘ দ্বাবা পটনামে আযোজিত পবিচর্চামে স্বভাষ চন্দ্র যাদরক রক্তব্য)

কোনো নেখক সঁ ওা অপেক্ষা কেনাগ জে ও অপন বচনাক স্পষ্টীকবণ আ ব্যাখ্যা কবএ–একটা অন্বচিত

अपेक्षा होएत। ई काज लेखकक नहि थिकैक। रचना चाहे कतबो दुर्बोध्य आ विवादास्पद हो, लेखक ओहि लेल जिम्मेदार तँ होइत अछि, मुदा ओकर भाष्यकार हेबाक लेल बाध्य नहि। लेखक ककरा-ककरा अपन रचना बुझेने फिरत आ किएक ? की ई सम्भव छैक ? लेखक जँ चाहए तँ अपन जीवन-काल मे रचनाक संदर्भमे किछु सम्वाद स्थापित कऽ सकैत अछि, मुदा मृत्योपरांत ?
लोक पाठक अपन बोध आ विवेकक अनुसार रचनाक पाठ करैत अछि। हरेक युगक सेहो अपन भिन्न बोध होइत छैक। तँ ई पाठ भिन्नता आ परिवर्त्तनशीलता हरेक समर्थ रचनाक आनिवार्य गुण होइत अछि। समय के संग-संग रचनाक संवेदनात्मक अभिप्राय बदलैत रहैत छैक। तँ ए युग बदलला पर रचनाक व्याख्या सेहो बदलि जाइत छैक। एहि तरहेँ कोनो एकटा रचना के एकटा आ समान पाठ नहि होइत अछि; मूल्यवान रचनाक पाठ अनंत होइत अछि।
पाठ पर लेखकक नियंत्रण नहि होइत छैक। तँ ए पाठ-भिन्नताक लेल ओकरा सफाइ आ स्पष्टीकरण देबाक कोनो विवशता नहि हेबाक चाही।
हमर अपन अनुभव तँ ई अछि जे जाधरि कोनो घटना कलात्मक विजनसँ दीप्त नहि होएत ताधरि ओ रचनामे रूपांतरित नहि भऽ सकत। ओहि आरंभिक विजनकेँ पाठक भिन्न-भिन्न रूपेँ पकड़ैत अछि आ अलग-अलग व्याख्या करैत अछि। हमरा लगैत अछि जे कोनो रचनाक विजन आ दर्शनकेँ पाठक भने नहि बुझि पबैत हो, ओकर मर्मकेँ जरूर पकड़ि लैत

ঋছি; ওকব সংরেদনামেক তত্ত্বকেঁ হৃদয়ংগম কঽ নৈত ঋছি। নোক–কথা সঁ উঁদাহবণ নী তঽ ৰাত ৰেশী স্পষ্ঠ হোএত। একটা চিনমা খেনিঐ বও ভগযা তগ নে পকড়নে জাগ–এ'– এহি উঁক্তিমে ন্যায ঋা সমানতাকেঁ জে রিমর্শ ঋা দর্শন ছৈক, তকবা পাঠক ভনে নহি ৰুঁন্সি পৰৈত হো, ন্দদা স্বতংত্রতাক নেন জে ফ্দ্দীক ঋার্তনাদ ছৈক তকব ঋন্বভর পাঠক ঋরশ্য কঽ নৈত ঋছি।
তহিনা হমব কথা 'নদী' ঋা 'কনিযাঁ–প্বতবা'মে জীরনদাযিনী শক্তিক ৰূপমে প্রেমকেঁ জে রিজন (দর্শন) ছৈক তকবা ৰুঁন্সৰ ওতেক ঋাসান জঁ নহিযো হোগ, তৈযো নেহক ঋন্বভূতি তঽ পাঠক কবিতে ঋছি। সাহিত্যমে ঋসনী চীজ গএহ সংরেদনা যা মর্ম হোগত ছৈক। কোনো রিচাব (যা দর্শন) সংরেদনেক মাধ্যমসঁ পাঠক ধবি পহুঁচৰাক চাহী; কোনো নীবস রিমর্শ যা নাবাৰাজীক ৰূপমে নহি। হমবা ৰুন্সনে ধর্ম ঋা সংস্কৃতিক ভিত্তি প্রেমে থিক। প্রেমসঁ ৰঢ়ি কঽ এহি সংসাবমে কোনো দোসব ভার নহি ঋছি।
হমব কথা সভ কোনো রিচাবধাবামেক যা ঋাচাবশাস্ত্রীয ঋাগ্রহ নঽ কঽ নহি চনৈত ঋছি। ও ঋপন সমযকেঁ ঋাচাব–রিচাবকেঁ ব্যক্ত তঽ কবৈত ঋছি, ন্দদা ওহি সঁ ৰন্ধ নহি ঋছি।
হমব ধাবণা ঋছি জে কনাকৃতি কোনো ক্রাঁতি নহি ঋনৈত ঋছি। ও মন্বক্থক ভারামেক ঋভিরৃত্তি ঋা দৃষ্টিকেঁ ৰহ্ত সূক্ষ্ম ঢ়ংগসঁ ৰদনৈত ঋছি ঋা দীর্ঘকানিক সামাজিক পবিরর্ত্তনক ঘটক হোগত ঋছি। একব ঋতিবিক্ত ঋা কিছু নহি। জে ঋানোচক এহিসঁ গতব কোনো ঋপেক্ষা ঋা ঋাগ্রহ (জেনা মৈথিনীক চেতনারাদী হঠ) নঽ কঽ সাহিত্য নগ জাএত, সে ঋপনোকেঁ ঠকত

ঋা দোসবোকেঁ ধোখা দেত।

<u>জগদীশ প্রসাদ মংডন</u>

মৈথিলী সাহিত্যমে জগদীশ প্রসাদ মংডনক পদার্পণ কিছু-কিছু ওহিনা ভেল অছি জেনা কহিযো বিবেকানন্দ ঠাকুবক ভেল ছল। জহিনা বিবেকানন্দ ঠাকুব অপন জীবনক উত্তবার্ধমে বহ্ত বহ্ত আকস্মিক ঢ় ংগে মৈথিলীমে প্রগট ভেলাহ, তহিনা জগদীশ প্রসাদ মংডন একবৈগ অপন

𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒂 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒫𑒱𑒫𑒹𑒏𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒲𑒝 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬𑒏 𑒖𑒹𑒯𑒢 𑒙𑒙𑒏𑒰 𑒥𑒱𑒧𑓂𑒥 𑒂 𑒢𑒫 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒢𑒱, 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒌𑒯𑒢𑒹 𑒙𑒙𑒏𑒰 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒢𑒫 𑒂𑒮𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞𑒢𑒱। 𑒃𑒢𑓂𑒯 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑓂𑒨-𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒧𑒼𑒯𑒰𑒫𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒕𑒟𑒱। 𑒃𑒢𑓂𑒯𑒏 𑒬𑒻𑒪𑒲 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒁𑒕𑒱।

𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒂𑒑𑒧𑒢, 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒂 𑒬𑒻𑒪𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒞𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒯𑒳 𑒃𑒢𑓂𑒯𑒧𑒹 𑒏𑓂𑒨𑒰 𑒢𑒹 𑒞𑒿 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒩𑒝 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒢𑒹 𑒋𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒃𑒢𑓂𑒯𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒲𑒨 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒕𑒢𑒱।
𑒚𑒹𑒪𑒰𑒫𑒪𑒰, 𑒥𑒱𑒏𑒾𑒂𑒫𑒪𑒰, 𑒔𑒴𑒢𑒫𑒰𑒪𑒲, 𑒃𑒢𑓂𑒖𑒲𑒢𑒲𑒨𑒩, 𑒛𑒰𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱 𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒏𑒮𑒿 𑒪𑒰𑒑𑒞 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒮𑓀𑒒𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒹𑒞𑒰𑒯। 𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒌 𑒖𑒢𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒨𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒑𑒞𑒱𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒟𑒱, 𑒖𑒲𑒫𑒢-𑒮𑓀𑒒𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒟𑒱।

𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒮𑒢𑓂𑒠𑒩𑓂𑒦𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒰𑒡𑒱𑒏 𑒅𑒪𑓂𑒪𑒹𑒐𑒢𑒲𑒨 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒄 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒮𑒦 𑒏𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒍𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒧𑒋𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒪𑒱𑒞 𑒂 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒏𑒟𑒰𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒪𑒞𑒰 𑒂 𑒇𑒖𑒳𑒮𑒿 𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒁𑒕𑒱।
𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒨 𑒖𑒱𑒖𑒲𑒫𑒱𑒭𑒰, 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒲𑒨𑒞𑒰 𑒋𑒫𑓀 𑒂𑒠𑒩𑓂𑒬𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒠𑒵𑒜𑓃 𑒂 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒠𑒹𑒬𑓂𑒨𑒮𑒿 𑒁𑒢𑒳𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝𑒱𑒞 𑒕𑒟𑒱।

মৈথিনী নোক-কথা

মৈথিনী মে নোক-কথা পব ৰ়ঁড় কম কাজ ভেন খছি। নোক-কথাক কিছ্এ সংকনন উঁপনৰ্ব্ধ খছি খা সে স্মৃতিক খাধাব পব নিপিৰঁদ্ধ কযন গেন খছি, ফীন্ড ৰৰ্কক খাধাব পব নহি । নোক-সাহিত্যক কোনো তকাগ হো, ওকব এক সঁ খধিক ৰূপ রিদ্যমান বৈত ছৈক , জে ফীন্ড ৰৰ্ক কযনে সঁ প্ৰাপ্ত ভ২ সকৈত খছি । স্মৃতি

মে ওকব মাত্র একটা ৰূপ বহৈত ছৈক, জকবা সর্বোত্তম ৰূপ মানি নের্ব খানক ভ২ সকৈত খছি । নোক-কথা ক জতেক সংকনন খখনধবি ভেন খছি, সে খপূর্ণ খছি ।

মৈথিনী মে নোক-গীত, নোক – গাথা খা নোক – দেরতা ক নেন ত২ কিছু ফীল্ডে রর্ক কযনো গেন, নোক – কথাক নেন ভবিসক্ক কোনো ফীল্ডে রর্ক ভেন খছি । খার্ব জখন এক ঘশত সঁ দোসব প্বশত মে নোক – সাহিত্যক খংতবণ দিনোদিন সংকটগ্রস্ত ভেন জা বহন খছি, তেঁ একব সংশক্ষণ জৰুবী খছি ।

নোক – সাহিত্যক সংশক্ষণ মাত্র এহি নেন জৰুবী নহি খছি জে ও খতীতক একটা রস্তু থিক; ও খপন সমযক রিমর্শ খা খামেরাচন সেহো হোগত খছি খা একটা প্রতিমান উঁপস্থিত কবৈত খছি । ওকব ৰূপক, প্রতীক , ভার খা শিল্পক উঁপযোগ নিখিত সাহিত্য মে হম সভ খপন-খপন ঢংগ সঁ কবৈত বহৈত ছী । তহিনা নিখিত সাহিত্য সেহো নোক-সাহিত্য কেঁ প্রভারিত কবৈত বহৈত খছি ।

নোক-সাহিত্য সংবঁধী খধ্যযন মুখ্যত: স্থান খা কানক নির্ধাবণ পব কেন্দ্রিত বহন খছি । ওকব কার্য, খভিপ্রায খা খর্থ সঁ সংবঁধিত প্রশ্ন খখনো উঁপেক্ষিত খছি । মৈথিনী মে ত২ নোক-সাহিত্য সংবঁধী খধ্যযন খখন ঠীক সঁ শুৰুও নহি ভেন খছি । জে পোথী খছি, তাহি মে নোক-সাহিত্যক পবিভাষা খা সূচী উঁখপস্থিত কযন গেন খছি ।

নোক-কথাক উঁপনৰ্ব্ধ সংকনন সভ মে ওহন কথাক সংখ্যা ৱেঁসী খছি জে দেশাঁতবণক কাবণেঁ মৈথিনী মে খাযন খছি । মৈথিনীক খপন নোক – কথা, জকবা খাঁটী

মৈথিল কমি সকৈত ছিঐক , সে কম আযন থছি । বামলোচন ঠাকুব দ্বাবা সংকলিত মৈথিলী লোক-কথা, জকবা হম থপন এহি থলংত সংক্ষিপ্ত থধ্যযনক আধাব বঁনৌনে ছী, তাহ্ন মে খাঁটী মৈথিলী লোক-কথা কস্থ থছি । লোক-কথাক থভিপ্রায আ থর্থ সংবঁধী থপন বঁাত কহবাঁক লেল জাহি দূটী কথাক চযন হম কযনে ছী, সে থছি — 'একটা বুঁঢ়ি যা বহয ' আ ' একটা চিলতা খেলিঐ বও ভেযা ' ।

এহি দুনূ কথাক রাতারবণ রিশ্বস্থ মৈথিল থছি । দুনূ ক রিমর্শ , আমেরাচল আ প্রতিমান মৈথিল-মানসক থনুরূপ থছি । দুনূ কথাক রিমর্শ ন্যায পব কেংদ্রিত থছি ।

পহিল কথাক বুঁঢ়ি যা দানিক একটা ফাঁক লেল বঁবহী, বাজা , বানী , আগি, পানি আ হাথী কেঁ ন্যায পযবাঁক খাতিব ললকাবৈত থছি, কিএক তঽ খুঁট্টী ওকব দানি লুকা লেনে ছৈক আ দঽ নহি বহল ছৈক ।

কথাক রিমর্শ পদ্যামেক রূপ মে এনা ব্যক্ত ভেল থছি – হাথী – হাথী – হাথী ! সমুদ্র সোখূ সমুদ্র । সমুদ্র লে থগিল মিঝাবঁয , থগিল । থগিল লে বানী ডেবাবঁয , বানী । বানী লে বাজা বুঁঝাবঁথি , বাজা । বাজা লে বঁবহী ডাঁড়থি , বঁবহী । বঁবহী লে খুঁট্টী চীড়য , খুঁট্টী । খুঁট্টী লে দানি ডিথয , দানি । কী খাউঁ , কী পীবূঁ , কী লঽ পবদেস জাউঁ ।

জাগত থছি । চুট্টী তৈযাব ভঽ জাগত ছৈক । ফেব তঽ চুট্টীক ডবেঁ হাথী , হাথীক ডবেঁ সমুদ্র , সমুদ্রক ডবেঁ আগি , আগিক ডবেঁ বানী , বানীক ডবেঁ বাজা , বাজাক ডবেঁ বঁবহী ন্যায কবক লেল তৈযাব ভঽ জাগত ছৈক আ খুঁট্টী বুঁঢ়ি যা কেঁ দানি দঽ দৈত ছৈক

।
ई कथा बालनोचन अपन माय सँ स्वनन छलाह । ओ कहलनि जे माय रना वृत्तांत मे बुढ़ि या हाथिए लग सँ घूरि जागत छैक । निपिरॅंछ करैत कान ओ एकर प्वनर्सृजन कयलनि । हुनक निपिरॅंछ कयल वृत्तांत मे बुढ़ि या हाथियो सँ आगू चुष्ठी धवि जागत अछि । बुढ़ि या कैं चुष्ठी धवि नऽ गेनाग कथाक ब्यंजना मे रिस्ताव अनैत छैक । लेकिन लोक – कथाक एहन प्रलेखन कतेक उँचित अछि ?
एहि कथाक आमे राचन बुढ़ि याक माध्यमे प्रकष्ट भेल अछि । अपन स्थितिक प्रति बुढ़ि या जे प्रतिक्रिया करैत अछि , सएह एहि कथाक आमे – राचन थिक । एकटा दानिक रॅन पव बुढ़ि या परदेस जेरॅाक लेयाव करैत अछि । बाजा– बानीक सेव भवि दानि देरॅाक प्रस्तार कैं तिवस्कृत करैत अछि । सम्हुद्र सँ हीवा – मोतीक दान नहि लैत अछि । दानि पर अपन अधिकाव लेल लड़ैत बहैत अछि । तापेर्य ई जे सपना देखरॅाक चाही । भीख आ दयाक पात्र नहि हेरॅाक चाही । दान लेरॅ नीक नहि । स्वाभिमानी हेरॅाक चाही आ अपन हक लेल लड़रॅाक चाही ।
कथा ई प्रतिमान उँपस्थित करैत अछि जे न्याय संघर्षे कयना सँ भेटैत छैक ।
'एकटा चिनमा खेलिऐ बओ भगया ' न्यायक रिरेकशीनता पर रिमर्श करैत अछि । म्हनिया (चिड़ै) कैं एकटा चीन खेरॅाक अपराध मे प्राणदंड भेटै रना छैक । ई रिमर्श पद्यामेक रूपमे चलैत छैक , जाहि मे ओकर दारूण अरस्था सेहो चित्रित भेल छैक ।
रॅबदरना भाग !

পবর্ঁত পহাড় পব খোতা বে খোঁতা
স্তুখৈ মবৈ ছৈ রঁচা
একটা চিনমা খেনিঐ বও ভগযা
তগনএপকড়নে জাগএ ।
ফেব ঘোড় ারনা খরৈঁ ছৈ , হাথীরনা খরৈঁ ছৈ , খ্দ্দী–রনা খরৈঁ ছৈ । ক্ষনিযা সভ সঁ মিনতী করৈত খছি ।ওহো সভ খেতরনা কেঁ পোল্হরৈঁত ছৈক;=ছোড়রাঁক রঁদনা মে রঁবদ , ঘোড় া , হাথী দেরঁহ নেন তৈযাব ছৈক ,নেকিন খেতরনা ৎসি সঁ মস নহি হোগত খছি । জখন ভূখে–প্যাসে জান জায নগৈ ছৈক , তখন খ্দ্দীক রঁদনা মে ক্ষনিযা কেঁ ছোড়ি দৈত খছি । ক্ষনিযা করুণা খা মানরীযতাক খারাহন করৈত খছি । মন্বস্মৃতি মে কহন গেন ছৈক জে চ্পচাপ ককবো ফূন তোড়ি নের্ঁ চোবি নহি হোগত ছৈক ; তহিনা ককবো একটা চীন খা নের্ঁ কোনো খপবাধ নহি ভেন । গএহ কথাক খামেরাচন থিক ।
কথা ঙা প্রতিমান ডঁপ্স্থিত করৈত খছি জে সভক জীরক মোন রঁবারঁব হোগত ছৈক । খসহায খা নির্ধনো কেঁ জীরাঁক খধিকাব ছৈক । এহি সংসাব মে ওকবো নেন একটা স্পৈস (জগহ) হেরাঁক চাহী ।



<u>ঋছ্ছেনান শাস্ত্রী (১৯৩৬–), গাম– সোনরর্ষা, পোস্ট– কবহবী, ভাযা– নবহিযা, জিনা– মধুবঁনী, (বিহাব)</u>

<u>বণভূমি ঋা করিতা নামক শীর্ষক করিতাপব দূ শব্দ</u>

“বণভূমি” করিতা পঢ়ি করিক ভারসঁ হৃদএ রিভোব ভ২ উঁঠন। কার্যক গহবাগমে গোঁতা নগেনাসঁ দেখবাঁমে বঁহ্ত কিছু ঋাএন। শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডনক কার্য ভূ–মংডনকেঁ প্রভারিত কবৈত ঋছি। সংসাবক বণভূমিমে মনুষ্যক জিনগীকেঁ বাখি ভৌতিক, ঋধ্যাত্মিক ঋর্থ ত্তানসঁ কর্ম রা ধর্মপব ধ্যানাকর্ষণ কববৈঁত ঋছি। রিরেকসঁ সংসাব সমবমে সামর্থরান যোদ্ধা বঁনবাঁক প্রেবণ দেন ঋছি। মাতৃভূমিক সমস্যাকেঁ সমূন নিদানক নেন কর্মরাণ চনা ভংগ সংগ গমক উঁপমা দ২ ঋসত্যপব সত্যক রিজযক মহাভাবতক উঁদাহবণ দিএনন্হি ঋছি। মনুষ্যক নেন শকন রসুধাকেঁ সুখ ভোগ এ্রাতি নেন, সতত্ সচেষ্ট ভ২ জগ বণমে, কর্মরীব বঁনবাঁক প্রেবণা দেনন্হি ঋছি।

তন–মন রতন কেব পরিত্রতাপব জোড় দৈত রিষ ঋমৃত পহিচানি রিরেকসঁ সমএ ধবাতনপব উঁতবন সমস্যাকপব সচেষ্ট কবৌননি ঋছি।

“করিতা” শীর্ষক করিতাপব– শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন জী সম্পূর্ণ করিরূন্দকেঁ ঋপন মনোভারনাসঁ চিতাকর্ষণ কবৌনন্হি ঋছি। কার্যক সৃজনাত্মক রিধাক দিশা

ि नर्देशे कएननि अछि। मन स्थिति ভारनाक प्रवाहमे ि त्रवेणी संगममे पाठक संग বচনাকাবকেঁ গোঁতা নগৌননহি অছি। ছंद অনংকাব বাণী আনন্দ যক্ত করিতাপব জোব দেননহি অছি।



দ্গানিন্দ মंডন, নি র্মনী

শি র ক্ষমাব ঝা ট ি ন্নূ জীক নি খন খোঁগছক নেন সাড় ী- কথাপব দৃ শি র্দ-

কথা পঢ়ন ি চন্তন কএন, র্ব্ঝনা গেন কথা যথার্ত পবখ অছি জেনা কথাকাব অপনহি এহি স্থি তি সঁ গ্রজবন হোনি। যদি অন্বভর হমব সভ্য তঁ সার্থকতা শত্-প্রতি শত।

এক কাত কথাকাব রি দ্যাপতি ক ভূমি কামে ছথি মনমে সি নেহ ছনহি জে মাএ কনে ও ভূমি কা দেখ নেতী তঁ হমবা নীক নাগত। এমহব মাএ ওনতীমে গ্রম-স্বম রৈঁসন ছনীহ কাবণ মহাঅষ্টমীক বাতি এক ট্রৈক অখড় সাড় ী নহি বহনাক কাবণে ও ভগবতীক খোঁগছ কা নো ভবতী? গ্রা জা ি ন রাঁনক মাতৃত্র প্রেমরশ রাঁবূজীক সাখপব কপড় ারঁনা মহাজনক দোকানসঁ একট্রৈক সাড় ীক পন্নী মাএক হাথমে থমা দৈত ছথি ন। মাএক ট্রৈত রি শবাস মাযক রূপমে নহি

খপি ত্ত রেঁগ্বসবাযক রেঁটী ৰূপমে স্পষ্ট হোগত খছি । হাথক চ্ড়ী টুটৈর, কাঁচক কি ছ কণ মাএক হাথমে গড়ৰঁ খা টপ-টপ শোনি তক খাপাদান-করি জীক সাখপব দাগ সদৃশ্য ৰ্ন্মনা গেন। ক্ষদা সত্য জানি খপন খপবাধ রোঁধক খন্বভর কঃ মাএ রৈঁস রাঁনককেঁ কোবামে নঃ কঃ সি নেহ সাগব খরি বন ধাবা প্ররাহিত কেননি । সাবত্র স্রৰূপ স্রামীক খর্থাত কথাকাবক রাঁবূজীক খানন নান বংগক সি ফনক সোহনগব সাড়ী নহি পহি ব রাঁনকক খানন স্বতী সাড়ীসঁ ভগরতীক খা।ংগছ ভবৰঁ, প্রস্তু প্রেমক একটা খনগ পবাকাস্ঠাক পবি চএকেঁ পাঠক ৰঁন্ধ্ নহি রিঁ সবি সকতাহ। কথাক সার্থকতাপব গজোত ছোড়ৈত খছি । জে নিশত্তকী একটা মাজন কথাকাবক কথা ৰ্ন্মনা জাগছ। ক্ষদা জঁ মাঁ ং.... ক জগহ কোনো খান উঁপহ্যকত, সক্ষচিত শিৰ্দসঁ সজরি তথি তঁ কথামে মৌথিনী সমৃদ্ধতা খাবো স্পষ্ট হোগত। শৈষ সভ চি কনহি চি ককন। ধন্যরাদ-।

নাটক রেঁটৌক খপমানপব এক নজবি

মৈথিনী সাহিত্যক একটৗ রিধা নাটক খছি, জে রিধা সভ দিন রৌদিযাহে সন বহন। গিনন–চুনন নাটককাবক কিছু নাটক জে খাংগ্রবপব গনন জা সকৈত খছি, দোগা–দোগী কোনো প্বস্তকানযক শোভা মাত্র রঁঠ় নৈক। একটৗ সমএ ছন জগমে নাটককাব জে নাটক নিখননি তগমে রাক্–পট্টিতা নৈ বহরাঁক কাবণে রা শুদ্ধ–খশুদ্ধ উচাবণ নৈ ভেনে রা সঙ্কুচিত রাদ–সংরাদক সংগ সমদিযাক খভার সভ দিন দেখন গেন। চূঁকি ওনা হম জন্তু–জে ঠকি নী হৃদা একটৗ সহকেঁ স্বীকাব কবএ পড়ত জে হম মৈথিন ছী। হমবা নোকনিক মাতৃভাষা মৈথিনী ভেন। হৃদা মাএকেঁ মাঁ কহৈত কনেকো নাজ রিচাব নৈ হোগএ। জেনা কি খাঁখিসঁ নাজক পানি খসি পড়ন। তাপের্য, মৈথিন হোগতো দোসব ভাষাক দাসতাক শিকাব ভেন ছী খা ওকব ভোগ ভোগি বহন ছী, ব্রুমাগত খছি জেনা মৈথিনীক নেন

এ ঠামক মাগঠিযে ঁউসাহ ভ২ গেন খছি, জগপব গদপ্ববনি মাত্র ঁউপজি সকৈএ। হ্মদা ওহেন ঁউসাহ মাঠিপব “রৈঁঠৌক খপমান খা ছীনবদেরী” নিখি নাঠকাব রৈঁচন ঠাক্থব, চনৌবাগংজ, মধ্রঁনী, মৈথিনী নাঠ্যে জগতমে একব সফন মংচন ক২ মহারীবী ঝঁডা গাড়ি সমস্ত মৈথিনী, মৈথিন খা মিথিনাক মান–সানকেঁ মাত্র রঁঠ়ে রেঁ ঠৌ নৈ কননি খপিত্ত চাবি–চাঁদ নগা দেননি। ঐ নেন ঠাক্থব জীকেঁ সমস্ত মৈথিন ভাষী খা নাঠ্যে প্রেমীক তবফসঁ হম কোঠিশি: ধন্যরাদ দৈত খপাব হর্ষ মহসূস ক২ বহন ছী। হমবা রিশ্বাস খছি জে খপনে ওা দ্নূ বচনা জেকব মংচন খপনে খপনহি কোচিংগ সংস্থানক ছাত্র–ছাত্রা নোকনিসঁ কবা, ওা সারিত ক২ দেনৌং জে মিথিনাক মাঠিমে খখনো ওতেক শক্তি রঁচন খছি জগপব কেসবো ঁউপজি সকৈত খছি।

নাঠককাবক নাঠকক রিষয খতি ঁউত্তম ছন্হি। রর্ত্তমান শতাব্দীক সভ মনুখ ঐ রাঁতসঁ ভিজ্ঞ খছি, সবকাবী সর্রেক্ষণসঁ সেহো স্পঠ্ত খছি জে দিনানুদিন নিংগানুপাত রঁঠি বহন খছি। সভ বাজ্যক খনুপাত থোড়ে ঁউপব–নীচাঁ ভ২ সকৈএ হ্মদা কিযো ঐ রাঁতসঁ হ্মঁহ নৈ মোড়ি সকৈ ছথি জে প্রতি হজাব নড়িকা–নড়িকীক রীচ একঠৌ রঁড়কা খাধি রঁঠৈত জা বহন খছি, জগ খাধিমে নড়িকীক খনুপাত নিবংতব নীচাঁ হ্মঁহেঁ গিড়ৈত জা বহন খছি খা হমবা নোকনি কানমে তূব–তেন দ২ নিচেনসঁ সূতন ছী। জৌং ওা এম জাবী বহন তঁ খাগূ কী হএত সে তঁ সোচূ!! ওা একঠৌ প্রশ্নরাচক চিন্হ ছোড়রাঁমে নাঠককাব একদম সফন বহনা খছি। এতরেঁ নৈ, খাজুক রৈজ্ঞানিক যুগমে যংত্রাদিক সহাযতাসঁ ওা জানি জে মাগক গর্ভমে পনৈত

रॅचाक, रॆटा नै रॆटी छी.... ि नर्मम हत्या कबरॉमे कनिक्को कनेजो नै कँपैए ! ! जेकव कोनो कसूब नै ओकवा ह्णष्टी-ह्णष्टी काटि ख्ने-ख्नामे क२ माएक गर्भसँ रॅहाव क२ दै छिऐ। जए रॆथे ओए रॅचाक माए पनवह दिन धवि रिष्ठौन धेने बहैत खछि। ऐठाम एकटा गप हम ह्णविष्ठा क२ कहि दिख चाहै छी, ओ रॆथा ह्नकव ओए रॆटीक प्रतियें नै जेकव ओ हत्या कबौननि खछि, खपितु शावीविक रॆथा छन्हि जए नेन एत्त खा एहेन ह्णकर्म कबै छथि। ओए ि नर्दोष रॅचाक माए-रॉप द्नू ततरॉए दोषी छथि। ओ ञा नै बूझि बहन छथि जे जए रॆटीक ओ हत्याए कबौननि जौं ओ रॆटी खाए नै बहैत तँ की खपने बहितौं ? जौं रॆटी नै हएत तँ सृष्टिक बचना संभव खछि ? जौं हँ तँ केना रा नै तँ एहेन खपबाध क२ स्वयं किएक एतेक पैघ हत्याबा सारित भ२ बहन छी। बानी झाँसी, नक्ष्मीरॉञ, सारित्री, खहिन्या, सती खनुस्वएया, एन्दिबा गाँधी, मैडम क्यूबी, मदव टेबेसा..., ञाहो सभ तँ रॆटीये छनीह। जौं हिनको हत्या पूर्रहिमे क२ देन गेन बहैत तँ खाए..... । तखन खाँखि बहैत एना हम सभ खान्हव किएक ? बू्एध बहैत ह्मखहा जकाँ काज किए कबै छी ?

मनुक्ख तँ मनुक्ख छी ने, छाएव-पाठी खाकि गाए-महि ंस तँ नै जे कतौ कोनो..... । तहूमे साठ ़े -पावा खधिक भ२ जाए, गाए-महि ंस कम, तखन की हएत ? जौं हम-खहाँ ञा नै सोचरैं तँ के सोचताह ? ऐ हत्याक पाछाँ एकटा खओव काबण खछि जेकव नाओं थिक दहेज। ह्मदा ञाहो तँ हमहीं खहाँ नेरॉन खा देरॉनो छिऐ। खखनो समाजमे खा प्राय: गाम पाछाँ एक-खाध

গোষ্ঠে জরুব ছথি জে খপন বাঁনকক বিঁখাহ একটা নীক ফন-কনিযাঁ তাকি খাদর্শ বিঁখ াহ কহ উঁদাহবণ বনৈ ছথি। ঐ কাজক দোষীকেঁ সজা নৈ দহ িনর্দোষকেঁ জানেসঁ মাবি দ্নূ পবানী ঐ পাপক ভাগীদাবী ছী। ছীহ....... ।

শাস্ত্রা একটা বাঁত বতবৈঁত খছি জে "যত্র নার্যস্তু পূজ্যংতে বমন্তে তত্র দেরতা।" ফদা ওকব পূজা কী কববৈঁ, ওগ দেরীক সংসাবমে এবাঁক খধিকাবে ছীনি নোগএ, জে বঁড়কা কাজ কেনৌং।

জতএ সমস্ত বিশ্ব ঐ সমস্যাসঁ জবি বহন খছি ওতএ নাটককাব খপনা নাটকক মাধ্যমে একটা সাধাবণো নেখক সদৃশ খপন নেখনীক মাধ্যমে সমাজমে ওা সংদেশ দেবাঁমে পূর্ণত: সফন ছথি জে সমএ বহৈত জোঁ নৈ চেতবঁ তঁ নাটকক ফখ্য পাত্র দীপক সদৃশ হান হএত। জে খংতমে কনিযাঁক ফগনা পছাতি খপনেসঁ ভাত পসাবঁথি, কিএক তঁ হ্নক কনিযাঁ ববোবঁবি গর্ভপাত কবেবাঁক কাবণে শৌনিতক কমীসঁ উঁড় িস ভহ ফগনীহ। এতবেঁ নৈ, বেঁটীক খভারমে নগদ গীনি খা তখন প্বতোহ্ ঘব খননাহ। তখন হ্নকা কবীব সহিবঁক ওা পাঁতি মোন পড় েত ছন্হি, "সন্তাক সভ দিন হোত এক সমানা।" খাবোঁ জোঁ নৈ চেতবঁ তঁ খহিনা টাকা দহ বেঁটী বেঁসাহহ পড়ত। নিবংতব চীজ-বৌস জকাঁ বেঁটিযোক দাম বঁঢ় েত জাএত, জেকবা কিনৈত-কিনৈত খহাঁক প্রাণ নিকনি জাএত। কিএক তঁ খপনা সমাজমে একটা নৈ কএক টা মরুকিযাবঁনা খখনো জীরিতে খছি, জে চাবি নাখ একারন হজাব টাকা নগদ খা সভ সবংজাম

সংগহি ৰবিথাতী ডঁপবসঁ। চেত্ত হে মৈথিন খাৰো চেত্ত। নৈ তঁ খাৰ ও দিন দূব নৈ জে গাড়ি পিব নাৰ বহত। খাৰ ৰেটী খপন খপমান ৰবদাস নৈ কহ সকৈএ।

ঐ প্রকাবে নাটককাব সমাজক নেন একটা পৈঘ সংদেশ দহ বহন ছথি জে গর্ভপাতসঁ পৈঘ কোনো পাপ নৈ হোগত খছি। তঁএ ঐ পাপসঁ ৰচী খা ৰেটীক ৰাপ ৰনী। খহনা ৰেটা খা ৰেটী দূনূ কোগখিক শ্রৃংগাব হোগএ। ঐ তবহেঁ শ্রী ৰেচন ঠাকুব জী হমবা নোকনিক নীন তোড়ৈমে সফন বহনা। জে শ্রী জগদীশ প্রসাদ মন্ডন জীক প্রেবণাপূর্ণ খাদর্শবাদী ব্যক্তিক হাথ হ্নকা মাথপব ছন্হি, হম সেহো ৰিন্ব মংগনে শুভকামনা দৈত ছিযনি, বহৰনি, জে খহিনা নাটক নিখৈত বহথ্, মংচন কবৰৈত বহথ্। ধন্যৰাদক পাত্র শ্রুতি প্রকাশনক শ্রীমতী নীতূ ফমাবী খা নাগেন্দ্র ঝাজী কেঁ জে প্রকাশনক সমস্ত ভাব ডঁঠা হৃতক্ত হেৰাক মৌকা দেনথিন। জৌং ৰিদেহ প্রথম পাক্ষিক ঙা-পত্রিকাক সহ সম্পাদক ডঁমেশ মন্ডন এৰং সম্পাদক গজেন্দ্র ৰাৰূকেঁ, জিনক খথক সহযোগক প্রসাদে প্রকাশনক বাস্তা স্বগম খা প্রকাশন সফন ভেন, তঁএ নৈ নিখৰ-কহৰ তঁ খন্বচিত।

জীৰন-মবণ

জীৰন-মবণ ডঁপন্যাস, একটা নৰ্ধ প্রতিষ্ঠিত ডঁপন্যাসকাব শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন জীক খন্বপম

প্রতি অছি। হুনক লিখল অনেকো উপন্যাস, জে এক-সঁ-বঢ়ি -কऽ-এক অছি। জগমে উপন্যাসকার দ্বারা উঠাওল গেল বিভিন্ন প্রকারক সামাজিক কুরীতি বাদিতাক জরলংত উদাহরণ প্রস্তুত কএল গেল অছি। মাত্র প্রস্তুতিকরণ ধরি কথা নৈ অপিতু ওকর সামাধান তকবামে সেহো উপন্যাসকার সতত্ সফল রহলা অছি।

প্রস্তুত উপন্যাসমে মনুখক জে অপন জিনগী ছৈ, ওকর জে অপন সমাজ ছৈ, সমাজক প্রতি ব্যক্তি বিশেষক উত্তরদায়িত্ব হোগত অছি সে, আ নবকা পীঢ়ী জে পশ্চিমী সভ্যতাক অসভ্যতাসঁ গ্রসিত ভऽ অসভ্য বনি গেলা অছি তগপর উপন্যাসক আরংম্ভমে একটা কসগর চোট দেলনি অছি।

দেবনন্দন জে বিরসাযসঁ ডাক্টর ছথি, পত্নী শীনা দ্বারা জননি জে পিতাক মৃত্যু ভऽ গেল তৈযো ঘরবেলা নৈ সোচলনি পিতাক অপন সমাজ ছন্হি জগ বীচ ও অপন জিনগী বিতৌলনি। তঁএ উচিত হএত জে হুনকা অপনা সমাজমে পহুঁচা দিযনি আ মৃত্যুক সভ কর্ম সামাজেক অনুকূল বঢ়ি যাসঁ করী নির্ণএ লেলনি।

মোবাগলসঁ নম্বর নিকালি, টিপি অপন জেঠ বেটা দযানন্দকেঁ জনৌলনি-

"বচ্চা, বাবূ মবি গেলাহ, তঁএ দুনূ ভাঁগ গাম আউ।"

হুদা রাহ বে পশ্চিমী সভ্যতা! দেখূ হমবা লোকনিকেঁ কেনা গ্রসিত কেনে অছি, দযানন্দ বাজি উঠলাহ-

"বাবূ, ঐ লেল গাম কিঅএ জাএব? আব তঁ বিজলীবনা শবদাহমে আসানীসঁ কাজ সম্পন্ন ভऽ জাগত অছি"

দযানন্দক রিচাব স্বনি দেরনন্দন কহনকনি–

“রঁচ্চা, সভ জীর–জন্তুকেঁ খপন–খপন জিনগী হোগত খছি। খা জে জেহনে জিনগীমে জীরৈত খছি ওকবা নেন রএহ জিনগী খানন্দদাযক হোগত খছি। জেনা, চীনী, মিবচাগ খা কবৈনা তীনূক তীন তবহক স্রাদ, মীঠ, কড়ু খা তীত হোগএ। ক্ষদা কী মবিচাগক কীড়া খারি কবৈনাক কীড়া চীনীমে জীরঁ সকত ? কথমপি নৈ। জখন কী ও তঁ খধনাহসঁ নীকমে গেন।”

পিতাক রাঁত স্বনি দযানন্দকেঁ খাশ্চর্য ভেননি, ক্ষদা দেরনন্দনক খনুসাবে ঐমে খাশ্চর্য কোন। কিএক তঁ গামক দোসব নাম সমাজ সেহো ছিঐ। জে শহব–রাঁজাবমে নৈ খছি। ঐঠাম উঁপন্যাসকাব সমাজকেঁ মানর নৈ মানরক জে মূন সভ্যতা ছৈ ওকবা এক্কৈসম সদীক নর পীঢ়ী নেন একটা মিশান দেখৌননি খছি। জে রর্ত্তমানমে খাজুক পীঢ়ী সমাজকেঁ নৈ বূঁঝি কিদৈন বুঁঝৌ ছথিন, ও রিঁসবি গেনাহ জে সমাজ কী থিক, ওকব মান–মর্যাদা কি হোগ ছৈ, সামাজিক রঁন্ধন কী ছী, ওকব কানূন–কাযদা কী ছৈ। খাজূক রর্ত্তমান খাধুনিক সমাজ জগমে সভ খপনে পাছূ রৈহান বহএ। ও কেকব স্বখ–দুখ, জীরন–মবণকেঁ স্বনত। ও তঁ ভবিপেঠ নীক খন্ন–তীমন খাএরঁ মাত্র জনৈএ। ক্ষদা তগসঁ কি মন থোড়ে খস্থিব ভহ সকৈএ। জাধবি খাত্মাক সংতুষ্টি নৈ হেতৈক। বুঁঝেরাঁমে কেত্তৌ কোনো প্রকাবক কিন্তু–পবন্তু নৈ বাখি, মনুক্খ একটা সামাজিক প্রাণী হোগত খছি, ওকব খপন একটা সমাজ ছৈ, জগমে সভ এক–দোসবাক স্বখসঁ স্বখী খা দুখসঁ দুখী হোগ ছথি, দেখেরাঁমে সফন ভেনাহ। রর্ত্তমানমে

জন্ম জৰুব জাতি–সমাজমে হোএ ছৈ, ক্ষদা নগনে আঁখি–পাঁখি ভেনে হমবানোকনি অপন মূন সমাজকেঁ ভূনি–রিঁসবি আন সমাজমে মিনি জুনি–মা ি ন উঁঠেনে বহ ছী। কেতেক দ্খক ৰাঁত ভেন। কনা আ সংস্থা তসঁ দূব তঁ স্রভাবিক ৰূপে তঁ ছিহে ওনা হম সভ কতেকো নোব মঁচপব কিএক নে ৰঁহা নী।

দোসব দিস উঁপন্যাসকাব মিথিনানিক একটা গজৰ চিত্র প্রস্তুত কেননি অছি। মৈথিন নাবি অপন পতিকেঁ পবমেশ্বব মানৈ ছথি। জিনকেপব হ্নকা ভবি মাঁগ সেন্বব আ ভবি হাথ চ্ড়ী বহত ছনহি। অপনা পতিক প্রতি কতেক নিষ্ঠা বখৈ ছথি স্পষ্ট অছি–

“অদৌসঁ সাবিত্রী, অনুস্বর্গযা আদি ঐ রিষযমে জগরিদিত ছথি। দেরনংদনক মাএ স্বভদ্রা জিনকা চেহবাপব সোগ নৈ অপিত্ত সিনেহ উঁমবি বহন ছনহি। মোনে–মন আনংদিত জে, জহিনা হাথ পকড়ননি তহিনা পাব–ঘাট নগা দেননি। ভড়ন–প্বড়ন হ্নরাড়ী অছি কতৌ হেবাএন বহৰ।”

মিথিনানিক মহান রিচাব আ তিযাগক স্তবকেঁ কতেক স্বক্ষ্ম ৰূপেঁ উঁপন্যাসকাব বখননি অছি। তিযাগক মূর্তিক ৰূপমে ঐ তবহেঁ স্পষ্ট অছি জে পতিকেঁ ক্ষগনা ৰাঁদো হর্ষ ছনহি জে হমবা অছেত মবনাহ সে নীকে ভেননি। অন্যথা মোনমে নাগন বহত জে হ্নক শেষ দিন কেহেন...।

সভ পৌস–প্রাণী গ্বনধ্নমে পড়ন গাম চনন জা বহন

छथि। देवनंदन सोचथि, से नै तँ आग समाजक काज पड़ैत। समाजक की मतलब छै। मनुक्ख कोन तरहेँ सामाजिक प्राणी होइए, समाजक रीत बाँर्जी केना जीबैथि, कतेक परिवारसँ दोस्ती छलनि आ कतेकसँ दुश्मनी, मनमे पड़ैन माएसँ पुछलथिन-

"माए, कते परिवारसँ बाँर्जी केँ दोस्ती छेलनि।" तखन माएकेँ मोन पड़ैनि ओ समाज, जतए सभ मिलि रूपवम, विवाह, सामा, घवक गोसाँगसँ लऽ कऽ दुर्गा स्थानक गीत मोन पड़ैए लगलनि। देवनंदनक बात सुनि माए-सुभद्रा बजलीह-

"छिया, छिया। मिथिलाक समाज छी। ऐ समाजमे ऊँचा जवनैने, केकरो घवक आगि मिझबैने, केकरो-साँप-ताप कटैने वहन आकि गाछ-ताछपव सँ खसलापव केकरो किछो कहै नै छै। ई सामाजिक काज छी। तँए, अपन काज बूझि सभ अपने तैयाब भऽ जाइत अछि।"

ऐठाम उपन्यासकाव मिथिला आ मैथिल समाजक एकटा विलक्षण उदाहवण दऽ अपन सभ्यता आ संस्कृतिक परिचए दऽ समाजक सुन्दरी रूपकेँ दर्शन कवौलनि अछि। पूर्वेमे बाँटल एलापव कविनाकाका आ देवनंदन द्वावा उठाओल गेल कदम आबैबैंना समाजक लेल एकटा आदर्श उपस्थित केलनि अछि। आखिव दिन विसेक बाद सभ घूमि अपन-अपन घव आएल वहथि। ओही समाजक एकटा अभिन्न अंग देवनंदनक पिता जे समाजक प्रतिष्ठित व्यक्ति वघुनंदनक लगाशी गाम पहुँचते आगू-आगू गाड़ी आ पाछू कवमान लागल

𑒪𑒼𑒏 𑒠𑒱𑒨𑒰𑒠𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒔𑒳𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒧𑒱𑒗𑒰𑒋𑒪।

𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏𑒰𑒩 𑒖𑒹 𑒧𑒩𑓂𑒠-𑒣𑒳𑒩𑒳𑒐𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰-𑒏𑒪𑒰𑒣, 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒑𑒣-𑒮𑒣 𑒞𑒿 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒮 111 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒥𑒡𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒰𑒠𑒲 𑒑𑒰𑒃𑒏 𑒑𑒩𑓂𑒠𑒢𑒱 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒪𑒙𑒏𑒪 𑒔𑒧𑒩𑒲, 𑒥𑒰𑒿𑒃𑒮 𑒑𑒰𑒯𑒲𑒏 𑒥𑒩𑓂𑒐 𑒦𑒹𑒪, 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒥𑒧𑒹 𑒩𑒡𑒳𑒢𑓀𑒠𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒠𑒱𑒢 𑒠𑒴𑒡 𑒣𑒱𑒎𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢, 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒏’ 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒂 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒞𑓂𑒫 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒏 𑒖𑓂𑒫𑒪𑓀𑒞 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒰𑒠𑒲 𑒖𑒴𑒥𑒬𑒲𑒞𑒪𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱 ‘𑒖𑒪𑒮𑒿 𑒁𑒮𑒱𑒩𑒥𑒰𑒠 𑒠’ 𑒤𑒑𑒳𑒂𑒧𑒹 𑒩𑒿𑒑𑒼 𑒐𑒹𑒪𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒮𑒹 𑒮𑒣𑓂𑒞𑒩𑓀𑒑𑒲 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒃𑓀𑒠𑓂𑒩𑒡𑒢𑒳𑒭𑒲 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒱𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱।

𑒬𑓂𑒩𑒰𑒠𑓂𑒡-𑒥𑒱𑒥𑒰𑒯 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒹𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒹 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒍𑒯𑒹𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒖𑒃𑒚𑒰𑒧 𑒩𑒒𑒳𑒢𑓀𑒠𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩𑒹-𑒠𑒕𑒱𑒢𑒹 𑒮𑒳𑒞𑒰 𑒅𑒖𑓂𑒖𑒩 𑒠𑒣-𑒠𑒣 𑒥𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒮𑒿 𑒕𑒰𑒿𑒣𑒱 𑒮𑒱𑒩𑒯𑒰𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒡𑒴𑒣-𑒑𑒳𑒑𑓂𑒑𑒳𑒪 𑒖𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒃 𑒥𑒲𑒔 𑒥𑒔𑒢𑒴, 𑒔𑓀𑒔𑒪, 𑒪𑒼𑒪𑒲, 𑒥𑒾𑒏𑒴, 𑒥𑒞𑒯𑒴 𑒠𑒹𑒯𑒣𑒩 𑒞𑒾𑒢𑒲 𑒂 𑒛𑒰𑒿𑒩𑒧𑒹 𑒡𑒼𑒞𑒲 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒢𑒹 𑒏𑒰𑒢𑓂𑒯𑒣𑒩 𑒤𑒩𑒯𑒩𑒱 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒮𑓀𑒑-𑒧𑒱𑒪𑒱 𑒏𑒰𑒢𑒲-𑒑𑒰𑒥𑒲 𑒂 𑒯𑒿𑒮𑒲 𑒌 𑒮𑒿 𑒣𑒻𑒒 𑒮𑒳𑒐 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒯𑒥𑒻 ? 𑒖𑒃 𑒮𑒳𑒐𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒪𑒼𑒏 𑒢𑒲𑒔-𑒮𑒿-𑒢𑒲𑒔 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒋 𑒏𑓂𑒭𑒠𑒰 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒢𑒻 𑒣𑒥𑒻𑒋। 𑒌𑒚𑒰𑒧 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏𑒰𑒩 𑒦𑒾𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒐𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒐 𑒢𑒻 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒐, 𑒁𑒞𑒱𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒮𑒳𑒐 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒞 𑒕𑒻, 𑒍 𑒥𑒰𑒮𑓂𑒞𑒥𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒐 𑒟𑒱𑒏। 𑒞𑒿𑒋 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒠𑒻𑒯𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒐𑒏𑒹𑒿 𑒏𑓂𑒭𑒝𑒱𑒏 𑒂 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒐𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒰𑒮𑓂𑒞𑒥𑒱𑒏 𑒥𑒞𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒡𑓂𑒨𑒰𑒞𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒠’ 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒼𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒡𑓂𑒨𑒰𑒞𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒙𑒣𑒩 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒢-𑒧𑒢𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒩𑒝𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒩𑒝𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱।

সমাজক সমস্ত কাজক জিম্মা কবিযাকাকাপব ছন্হি । সমাজক ঙুঁচ-নীচ, ছোট্ট-পৈঘ সভ জাতিক নোক, জাতি-পবজাতি সভ মিনি বঘ্কাকাক কাজমে পূর্ণ সহযোগ দের্এ চাহি ছথি চাহে ও ি কর্তনিযা হ্থএ খাকি ভজনিযা, নেনহা হ্থএ খাকি রৌকা, স্বন্দব কাকা হোথি রা ছীতন ভায দ্নূ পবানী জে জাতিক ডোম ছথি । জে পূর্রমে গ্বনাপব বঘ্কাকাকেঁ পাঁচটা গীত স্বনৌনে ছনাহ । জীরিতে ছথি ছীতন ভায । ছিতনো ভাযকেঁ রঁবিযাতীমে হকাব দের্ নৈ রিসবর্, সমাজক জাতি-পাতিক ফপ্রথসিঁ নিকানি মন্বক্খক জে একটা খপন সমাজ হোগছ, মন্বক্খক জে একটা জাতি হোগএ জগমে সভ রস্ক্ত খা বর্ণকি নোক বহএ, রাস্তরমে ও নে সমাজ ছী । ওগ জাতিগত ভারনাসঁ গ্রসিত সমাজকেঁ ঙুঁপব ফ্চঁহেঁ উঠা স্রচ্ছ রাতারবণমে শ্বস্ফ সাঁস নেরাঁক রাঁট্ট দেখৌননি হেন । জহিনা হরা খনেক গৈসক মিশ্রন ছী তহিনা তঁ সমাজো খনেক রস্ক্ত খা বর্ণকি মিশ্রণ ছী । জোঁ সে নৈ তঁ কিযো এক-দোসবক রিনা জীর্ সকত ? সংভর নৈ, ফদা সে ব্রূমৈত নোক খপনে স্রার্থমে খান্হব ভেন বহএ । খা হন্নংমা ডোম তঁ হন্নাঁমা দ্সাধ ঙা সংস্কাব নৈন্হিযেটা সঁ মাএ-রাঁপ দেরাঁমে পাছূ নৈ বহ ছথি । খাখিব একটা প্রশ্ন হমবা তবহফসঁ, খহাঁ প্রব্রূধ সমাজক নেন খছি, জোঁ সমাজমে সভ জাতি নৈ বহত তঁ কী সমাজিক জীরন চনি সকত যদি হঁ তঁ কেনা ? জোঁ নৈ তঁ হেব এহেন ভারনা কিএক ? ডোমসঁ হম ছূরঁন জাএর্, ফদা ওকব রঁনাওন চীজ-রৌস গৌসাঁগ-পিতবপব চঢ়ত তঁ কী গষ্ট-দের নৈ ছওত । জোঁ ছখাএত তঁ সনাতনিযে সঁ কিএক নে..... ? খা জোঁ দের-পিতব নৈ ছখাএত তঁ হমবা-খহাঁকেঁ ছএরাঁক কোন

आधार बँचल अछि ? ?

आँपने पवदामे उँपन्यासकाव जाति-प्रथाकेँ तोड़ि एकटा आदर्शवादी समाज स्थापनापव जोव देननि। जहिना फूनराड़ि मे जूही, चमेली फूल बहैत अछि तहिना गेना गुलाब सेहो। अधला नै तँ नीकक महत्व की ? तीत नै तँ मीठक स्वादे की ? कारी नै तँ गोरे की ? तहिना तँ समाजो एकटा फूनराड़ि होइ छै। जइमे सभ तवहक लोकक अपन-अपन भूमिका होइ छैक।

विचाव कवबाक थिक जे वैदिक पद्धतिपव चलए बला समाजक चित्र जे जहिजहि उँपन्यासमे आएल अछि से तँ सहज अछि। मुदा आजुक ओहन समाज जइमे अनगाल अछि। मनुक्ख-मनुक्खमे एतेक अन्तव किएक अछि ? प्रश्नक संग गशीवामे उँत्तव सेहो बँतेबामे उँपन्यासकाव पाछू नै हटैनथि। जेकव स्पष्ट उँदाहवण वघुकाकाक बँविचातीमे छीतन भाय सदृश लोककेँ अपन बँजाक संग भजन कवैमे चलैक लेल कहि एकटा आदर्श समाजक पविपक्व छाप छोड़ैननि अछि।

ओतबेँ नै, एकटा कहावत अछि 'भेल-गेलपव शिव जगवनाथ' एहने एकटा व्यक्ति छथि फोंचभाय, पाबी जमीनदावक टैहलू धड़फबाएल आबि छौंकए चाहि छथि ओ बँजि-

'सभ कथुक आविओन तँ देखै छी मुदा ससव आ घी कहाँ अछि ? '

মানে কাজ ভঁগঠা এরং ভবিযা দেৱএ চাহননি। হ্মদা নেনহা ফোঁচভাযকেঁ চৌহৈত ঙা সারিত ক' দেনকনি জে বঘ্কাকা খা দেরভায সঁ হমরো কেকরোসঁ কম খপেক্ষা নৈ। ফোঁচভায কএন কাজমে কেরন গনতিযেষ্টা তকৈৱঁনা নোক ছথি।

হ্মদা হায রে উঁপন্যাসকাব, সমস্ত উঁপন্যাসমে জীরন থিক তঁ মবণ খসংভারী.., ঙা খেন চনিতে বহৈএ। খহী সমাজক রীচ নোক জনমো নগএ খা মবরো কবৈএ। পৈঘত্র তঁ ঐ রাঁতমে খছি জে জগ সমাজমে বঘ্রাঁবূ সন দাতা ছনাহ খাগ ওকবে ঋূণ চ্কৱঁএ খাতিব খর্থী উঁঠরৈনে রূঁম্মূ জে মা ি ব ভ' বহন খছি। তহী রীচ নেনহাক হ্মঁহসঁ খনাযাস নিকনন জে স্বনৈ জাউঁ, কান্হী নগা উঁঠরিযন্ব নৈ তঁ দবদ হেতনি।' সভ মানি গেন।

এক দিস খাঁগনসঁ নহাস উঁঠন খা দোসব দিস সহনাগপব রিদাগক ধূন। খাহহা... যএহ তঁ স্বখ খা দ্খক দ্ি নযাঁ ছী। জীরন-মবণক সার্থকতা ছী। হ্মদা হমবানোকনি জীরনক এক্ক ভাগ দেখৈ খা জনৈ ছী। জীরন খা মবণ সৃষ্টিক চক্র ছী। ঐসঁ কিযো রাঁচন কহাঁ। এক ি দস কবিযাকাকা খা দোসব দিস স্বন্নবকাকা বঘ্ভাযকেঁ খঁতিম প্রণাম কহ ডেগ খাগূ রঁঠ় ানিনি। পাছূ-পাছূ দেরনংদনক হাথমে খাগি খ া কোহা দহ পাছূ-পাছূ রঁবিখাতী সজি রিদা ভেন। তগ পাছূ কবিযাকাকা বেনগাড় াক গাড়ি জকাঁ পাছূ-পাছূ। গাছী পহুঁচি সভ কিযো সভ কথ্ক জোগব খপনা-খপনা

রিরেকসঁ নগা সিবমৌনা–পথৌনা ৰূপী ওঙ্ছাওনপব স্বতা এক–এক চেবা চঠ়ৈত ছাতী ভবি ঊঁচ কহ স্বন্দবকাকা দেরক বাঁহি পকড়ি ধধকৈত উঁক ঝঁহমে নগা দেনকনি। বাঁকী সভ কাজ সমাজক নিশ্বমান্বসাব তেবহসঁ সত্তব দিন ধবি চনৈত বহন। সমাজ তঁ সমাজক নিশ্বম। তহী রীচ হ্নন দ্নূ পবানী, জেকব শ্বাধা দেহ ঝাঁপন শ্বা শ্বাধা উঁঘাব ছন, ওসবক নীচ্চেসঁ শ্বপন কর্মকেঁ ধর্ম বূঝি প্রণাম কেনকনি শ্বা মনে–মন সোচরৌ কবএ জে বঘ্রাবূক কাজমে কত্তো রর্তন নাগত।

গ্রম্হেব দেররাবূ জিনকা গাড় ়মে উঁতবী ছন্হি হ্নকোসঁ রৈসী চিন্তা কবিযাকাকাকেঁ ছন্হি ঝদা কবিযাকাকাসঁ কম ৰুস্বমনান পণ্ডিতকেঁ কহাঁ ছৈ? ওকবা তঁ ঐ রাতক চিন্তা ছৈ জে শ্রধ্শ্বা রর্তনক কাজ তঁ দসম–এগাবহম দিন হএত, ঝদা দহীক নেন?

ওতরেঁ নৈ, বঘ্নন্দন রাবূক কাজক মাদে ততরৈক চিন্তা বাজেসব নৌশ্বাকেঁ সেহো। জেকব কাজ এক দিস প্বজরৈক প্রকিযা তঁ দোসব দিস কর্ম সম্পন্ন কবেরাক। ঝদা এতেক সভ কিছু হোগতৌ শ্বপনা সমাজমে জে পণ্ডিতক কিবদানী ছন্হি তেকরো রখিযা উঁঘারৈমে কতৌ কমী নৈ বখনা শ্বছি। জে নাযকক ৰূপমে শিরশংকব ছথি জে শ্বদৌসঁ শ্বদ্যতন শ্বান–শ্বান শ্রাধ–কর্মক উঁদাহবণ দহ জজমানক খূন উঁড়িস জকাঁ পীরৈত বহনাহ জেকব সাক্ষাত্ উঁদাহবণ সিষ্ঠী ভেন সমাজ সরহক সোঝামে শ্বছি।

মন্বক্শ্ব রিচাবসঁ পৈঘ হোগত শ্বছি। রিচাব রদনন। নর পীঠ়িক প্রসাদে স্বন্দব শ্বা দ্ধিগব গাএ সভ সেহো গামমে শ্বাএন। তগ রীচ চাহক সংগ সভ সভ

আপন-আপন বিচাব বখননি। জগমে সর্বসম্মতিসঁ বিচাব যএহ ভেন জে পাঁচ গোটে বিচাব কহ ডেগ উঠাউ,

(1) শ্রাদ্ধ ঘববাবী আ কতকি অনুকূল হ্অএ। দানস্বরূপ মাত্র মবখংডী বাঁছা নৈ দাগন জাএ।

(1)(2) আন গামক পংচ মানে ভোজ খেনিহাবসঁ পবহেজ কহ গামক সভ জাতিকেঁ খণ্ডন জাএ আন গামক দোস্ত-ফ্রেন্ড-দিআদ তঁ বহবেঁ কবতা।

(1)ঐ প্রকাবে উপন্যাসক মাদে উপন্যাসকাব হমবানোকনিক বীচ ব্যাপ্ত বিভিন্ন প্রকাবক নীক আ অধনা প্রথা-বীতি-চননি-মান্যতাক বীচ বিভিন্ন প্রকাবক নোক সবহক অন্যন্য বিচাব আ ওহী সমাজক দানি-ভাতমে মসনচন্দক উদাহবণ দহ ওকবাসঁ সাবধান কেননি। সৃষ্টিক জে চএ্র ছী জীবন-মবণ জগসঁ কিযো বাঁচি নৈ সকৈ ছী জেকবা সমাজ আ কর্ত্তকেঁ মনোনুকূন কহ সমাজমে বচনাত্মক কাজ কবী ঐ নেন একটা দিশা-নির্দেশ দেননি। জেকবা দেবনন্দন জী আপনে শব্দে স্বীকাব কহ পিতাক নিমিত্তে সানে-সান ভোজে নৈ বনকি যথাসাধ্য কন্যাণকাবী কাজক প্রেবণা দেননি।

পোথী সমীক্ষা-মৌনাগন গাছক ফূন

জেনা নগাতাব পাঁচ-সাত সানক প্রচংড বৌদী ভেনাক বাঁদ জোঁ বোহনি নক্ষত্রমে একটা কসগব অছাব হ্অএ তঁ গিবহত সভহক মোন ফূনকোকা জকাঁ খিন উঠৈত ছৈক। সভ কিযো খেত-পথাব জোতি, তামি-কোবি,

খঢ়-পতাব সভ ৰাঁনে-ৰঁচ্চা মিন ওনি-পানি কঽ দেৱেঁ সেৱেঁ ৰিহনি খসৱৈত ছৈক। গোব দসে দিনক পছাতি হবিখবকংচ ৰিহৈনক ঢৈম ৰিবাবমে নিকনএ নগৈত খছি। গিবহত সভ পোখবি-ঝাখবি দিস দিসা-মৈদান কৱৈত ৰঁাসিক উঁভ্ভীৰঁনা দতমনি কৱৈত নোটৌ নেনহি ৰিবাব দিস চন জাগত ছথি। ৰিবাবমে উঁপজন হবিযবকংচ ৰিহৈন দেখ খাত্মা জ্ড়ৱৈত ছথি। দেখতে-দেখতে ৰিহৈন পৈঘ ভঽ জাগত খছি। গিবহত সভ ঐ খাশামে পাঁচ-সাত সানসঁ ৰখোঁ নৈ ভেন জোঁ ঐৱেঁব সমএ সংগ দেত তঁ ৰাঁনে-ৰঁচ্চা মিন খূৱঁ জতনসঁ খেতী কবৱঁ খা ঐ বৌদীসঁ ছটৈকাবা ভেটৈ জাএত।

দিন দসে-পনৱেহক ৰাঁদ খ াবদাবা চঢ়ি তে খূৱঁ কসগব ৰখাঁ ভেন। খা গিবহত সভক খাত্মা গূনাৰঁক ফূন জকাঁ খিন উঁঠন। কিনকো খ্শীক কোনো সিমা নৈ। সভ ৰাঁনে-ৰঁচ্চে নাঠী-ৰঁহিংগা (পটৈ), হব-কোদাবি, চৌকী খাদি নঽ খেতী কবএ নেন খেত দিস চননাহ। খা গ্রপা মহাদেৱক জে ঐ সান সমএ নীক বহন, সংগ দেনক খা মনসম্হে উঁপজা ভেন। সভ খানংদিত ছথি। একটৌ নব উঁত্সাহ খা খানংদক সংগ দোহাগ দৈ ছথিন পবমপিতা পবমাত্মাকেঁ।

ঠীক তহিনা উঁপন্যাসকাব জগদীশ প্রসাদ মংডন জীক দ্বাবা নিখন উঁপন্যাস “মৌনাগন গাছক ফূন”সঁ পাপ্ত ভেন খ্শী খাত্মাকেঁ তৃপ্তি কঽ দেনক। প্রা. হবিমোহন ঝা জীক ৰাঁদ ৰ্ঝূ জে মৈথিনী সাহিত্যাকাসমে ৰঁড়কা বৌদী নৈ খপিত্ত খকান পড়ি গেন ছন। পাঠক-ৰঁন্ধ্ হক্কাপবাস ছনাহ, উঁপন্যাস নামক রস্ত্ত পাঠককেঁ

হেবনে নৌ ভেটৈত ছলনি। আত্মা তঁ উপন্যাস পঢ়এ নেন সদিখন ব্যাকুল বহৈত ছল। জগ কমীকেঁ মণ্ডনজী দূব কহ দেননি। নগাতাব এক-সঁ-এক চিক্কন-চূনহ্মন উপন্যাস নিখ নে মাত্র ভাবতে উপিত্ত আনো-আন দেশমে বহএরঁনা মৈথিনী ভাষীক নজবিমে খ্যাতি পৌননহি। অপন দেশক কথে কোন নেপানক জনকপ্পবসঁ নহ তবাগ ক্ষেত্রমে সেহো হিনক নিখন পোথী, উপন্যাস, কথা সংগ্রহ, করিতা সংগ্রহ, নাটক, একাঁকী গত্যাদি সাহিত্যক সভ রিধা কেব পোথী সহজতাক সংগ উপনর্ব্ধ অগ। পোথী উপনর্ব্ধ সেহো মৈথিনী সাহিত্য নেন এক নরীন রাঁত থিক। ওনা ঐ নেন হম শ্রীতি প্রকাশনকেঁ অনগসঁ ধন্যরাদ দেত ছিযনহি।

প্রস্তুত উপন্যাসমে অপনে অপনা অনুসাবে কতৌ কোনো তবহক কোনো তবহক কমী নৌ বখনে ছী। অপিত্ত সাগবমে গাগব ভবি সমাজক সভ রস্থা, সভ জাতি, স্ত্রী-পুরুষ, উঁচ-নীচ, ছোট-পৈঘ, নীক-বেঁজাএ, ধনীক-গবীবঁ, নেনা-ভুটকা, জরান-জ্ঞানক নেন একটা অনগ সংদেস ছোড়এমে কতৌ কমী নৌ বখননি। জে পাঠককেঁ এক সাঁসমে উপন্যাস পঢ়া জেবাঁক নেন বাঁঘ্য কহ দৈত অছি। হমবা অনুসাবে ওা একটা বঁড় পৈঘ উপন্যাসকাবক সার্থকতা সিদ্ধ ভহ বহন অছি। যথাথিরাদী রূপমে গামমে বহিতৌ উপন্যাস পঢ়এ কান এহন নগৈত অছি জে হম গাম নৌ অপিত্ত মদ্রাসমে ছী। হ্মদা মদ্রাসক চা ন-রালি, বহবঁ-স্বতবঁ, নোক সবঁহক বাঁজবঁ-ভুকবঁ, পৈঘ-পৈঘ কোঠা-সোফা, অতিআধুনিক পৈখানা ঘব আদি বহনাক বাঁদো অপনে

অপনা গামক মাটিক যাদি নৈ বিসবি সকলৌं। জে বামাকান্ত বাবূ অপন গামক সোন্হগব মাটিক স্বগাধিক সিনেহকেঁ স্পষ্ট কবৈত কহৈত ছথি– "নৈ জ্গে, বিনা মাটিযে হাথ কোনা মটিযাএব ? "

উপন্যাসক পাত্রক নামক অনুসাব গুণক বিনক্ষণ সমাবেস কবব অপনে কতৌ নৈ বিসবনৌं। নামক অনুসাবে কামকেঁ অপনে স্পষ্ট দেখৌনে ছী। সমাজক জে জেহন নোক জেহন পদপব পদস্থাপিত ছথি। ওগ কার্যক নেন সমর্পণ উপন্যাসক বিশেষতা বতবৈত অছি। ঠাম–ঠাম অধ্যাত্ম, দর্শন, অপনা সংস্কৃতি আদিকেঁ দর্শাদা দেব সভ পাঠকক নেন মোন বাখক যোগ্য বূঝনা গেন। যথা– "ঙা ভূমি জনকক বাজ মিথিনা থিক। তেঁ মিথিনাবাসীকেঁ জনকক বাস্তা পকড়ি হমবা নোকনিকেঁ চনক চাহী, জাহিসঁ প্রতিষ্ঠা সভ দিন ববকবাব বহত। "

ঐ উপন্যাসক প্রায: সভ পাত্রক চবিত্র অতি পবিত্র, সামজিক সমবসতাসঁ ভবন বূঝনা জাগত অছি। হুনকা নোকনিক সহজ সজ্জনতা প্রকৃত প্রদত্ত বূঝাগত অছি। সমাজ স্বধাবক জৌं কোনো কথা হুঅএ তঁ প্রায: সভ এক–দোসবাক প্রতি ওতবে জিম্মেবাব স্বভাবত: বূঝনা গেন জে একটা স্বসভ্য সমাজক সামাজিক চিंতনক প্রতি কর্ত্তব্যনিষ্ঠ বূঝনা জাগত ছথি। উপন্যাসক কেন্দ্রীয পাত্র বামাকান্ত বাবূ ছথি। জে একটা নীক জমীনদাব হোগতো সামাজিক কর্ত্তব্যপবাযণতা, গমানদাবী, সমাজক সভ জাতিক প্রতি সিনেহ, উদাবচিত্ত বিচাবধাবা, বাস্তবিক

मानरतावादक चित्र, मानरक प्रति कर्त्तव्य ओकर दु:ख-सुख, मरनी-हरनीमे संग पुरब, हिनक चारित्रिक विशिष्टता स्पष्ट देखबा योग्य अछि।

उपन्यासक आरम्भहिंमे जखन कि गाममे अकाल पड़ि जाइत छैक। लोक सभ अन्न बेतरे मरए लगैत अछि। जनकेँ काज करौ नै भेटैत छै, खेती-खोनाक करौ थाह-पथाह नै, लोकक घरमे दिनक-दिन चुल्हि नै पजरै छै। इनारोक पानि ससरि ततेक निचाँ चल गेलैक जे उगहनियो सभ छोट भऽ गेलैक। आ एम्हर बौएलालक प्राण भुखसँ छटै-छटैपर छल। तेहने दुरुह समैमे रामाकान्त बाबू द्वारा बड़की पोखरि उराहब, समाजक प्रति सहानुभूति हुनक हृदैक महानता देखल जाइत अछि। ऐ तरहेँ एक तँ लोककेँ विभिन्न प्रकारक अकर्मण्यतासँ बचा कऽ दोसर दिस, अन्नाभावसँ ग्रस्त लोकक मरबासँ सेहो बचबैत छथि। रमाकान्तबाबूक अवधारणा अछि जे 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग भवेत्'क "अथवा सबएँ भूमि गोपाल की" स्पष्ट कऽ दैत अछि। तँए रामाकान्तबाबू सामाजिक समरसता लेल त्यागक मिशाल स्वरूप अपन दू सय विधा जमीन गामक भूमिहीन परिवारक बीच वितरण करबा दैत छथिन। ठीक ओहिना जहिना चीम राजा चेन्पौ कएने रहथि। जइसँ गामक सभ व्यक्ति सुखी भऽ जाइ छथि, आ गाधीवादी विचारधारकेँ आरो मजगूती भेटै जाइत अछि। अर्थात् व्यक्तिगत खुशी वा सुख-शाँतिसँ एकटा समाज सुखी नै भऽ सकैत अछि।

𑒥𑒪𑓂𑒏𑒱 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒐-𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒮𑒳𑒐-𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱𑒏 𑒞𑒱𑒨𑒰𑒑 𑒏𑒩𑒥 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒏𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒟𑒱𑒏। 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒁𑒕𑒱।

𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨 𑒋𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝𑒲 𑒟𑒱𑒏, 𑒖𑒹 𑒮𑒼𑒢𑒹𑒪𑒰𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒣𑒞𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒥𑒳𑒠𑒱𑒨𑒰 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒏𑒯𑒪 𑒑𑒣𑒮𑒿 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹 “𑒦𑒰𑒨, 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒐𑒴𑒢𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒯𑒹𑒞𑒯, 𑒯𑒧 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒠𑒹𑒥𑒯।” 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒢𑒖𑒲 𑒑𑒰𑒧-𑒒𑒩𑒧𑒹 𑒣𑒮𑒩𑒪 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒦𑒱𑒩𑒳𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒏𑒩𑒥 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒻 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒪𑒰𑒯। 𑒖𑒹 𑒮𑒼𑒢𑒹𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒂𑒿𑒑𑒢𑒥𑒰𑒪𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒧𑒰𑒩𑒲𑒮𑒿 𑒚𑒲𑒏 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒱𑒞 𑒦𑓀𑒛𑒰𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒠𑒴 𑒮𑒰𑒡𑒴 𑒠𑒪𑒏 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒖𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒫𑒻𑒭𑓂𑒝𑒫 𑒂 𑒏𑒥𑒲𑒩𑒣𑓀𑒟𑒮𑒿 𑒮𑒼𑒢𑒹𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒪𑒳𑒙𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏𑒰𑒩 𑒋𑒯𑒢 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒔𑒹𑒞 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒟𑒱।

𑒂𑒖𑒳𑒏 𑒧𑒬𑒲𑒢𑒏 𑒨𑒳𑒑 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒖𑒼𑓀𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒞𑒩𑒹-𑒞𑒩 𑒬𑒼𑒝𑒱𑒞 𑒣𑒲𑒥 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒗𑒠𑒰 𑒣𑒞𑒰 𑒞𑒏 𑒢𑒻 𑒔𑒪𑒻 𑒕𑒻। 𑒄 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒬𑒞-𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒬𑒞 𑒮𑒤𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒼𑒢 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒐𑒴𑒢 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒐𑒴𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒁𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟 𑒁𑒕𑒱 𑒋𑒏𑒠𑒧 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒧𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒩𑒧𑒹𑒬 𑒯𑒼𑒮𑓂𑒙𑒹𑒪𑒮𑒿 𑒂𑒥𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒼𑒛𑓃 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒚𑒏𑒳𑒂 𑒏𑓄 𑒂𑒑𑒰𑒿𑒧𑒹 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒥𑒰𑒥𑒰-𑒠𑒰𑒠𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒻 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒰𑒠𑒧𑒹 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒏𑒯𑒪𑒰𑒣𑒩 𑒩𑒧𑒹𑒬 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒼𑒛𑓃 𑒪𑒑𑒪𑒏𑒢𑒱। 𑒌 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫 𑒖𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒡𑒩𑒼𑒯𑒩𑒱 𑒕𑒪। 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒋𑒏𑒪 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒖𑒹

ग्रकमौवि कऽ बाखि देनक। जे मानरीय सिनेहक नष्ट होगत स्ररूप थिक।

एहि प्रकारेँ उँपन्यास "मौनागन गाछक फूल"मे सामाजिक जिनगीक रिभिन्न प्रकारक समस्या आ ओकर सङ्गचित समाधान तकराक पूर्ण प्रयत्न केननि अछि। "मनुष्यसँ परिरार रनैत अछि आ परिरारसँ समाज। जँ परिरार ठाठ़ भऽ जाए तँ समाज स्रत: आगू रढ़ए नागत।" मण्डनजीक सामाजिक भारना आदर्शरादी भारनाक रूपमे परिनक्षित होगत अछि। जकरा धियानमे रखैत मद्रासमे डाक्टरी करैत डॉ. महेन्द्रकेँ गाममे एकटा स्रास्थ्य केन्द्रक स्थापनाक रिचार गामरासीक सेरा नेन देखाओन गेन अछि। उँपन्यासमे जाति-पाति, धर्म-सम्प्रादयमे खं डत भेन गाम-समाजमे छूआ-छूत, उँच-नीचक खाधिकेँ रामाकान्तराबू द्वारा भजुआ डोमक ऐठाम जा कऽ भोजन कररा समाजक रीच समरसता स्थापना आ छूआ-छूतक अंत कऽ एकटा आदर्शरादी पूर्ण समाधान देखौननि अछि। जेकरा अशिक्षासँ उँपेन्न नागनाज रिमारीकेँ रिचार मात्रमे परिरर्त्तन कऽ एकसूत्रमे रन्हराक प्रयास, ररदान सारित भेन अछि।

उँपन्यासक समस्त नारी पात्र यथा- रधिया, श्यामा, स्रगिया, सोनेनानक रहिन आदिमे पतिपरायणता स्रख-दुखमे संग साथ देर। भारतीय नारीक मर्यादा स्पष्ट चित्र उँपस्थित कररामे पूर्णत: सफन भेन छथि। स्रमित्राक पढ़ा -निख नीक नर्स रनर आ स्रजाताकेँ पढ़ा -निख नीक डाक्टर रनर, नारीक अरना नै अपित्त सरना रूप देखरामे अरैत अछि। एतरे नै,

উঁপন্যাসক মাদে মণ্ডনজী স্পষ্ঠ দর্শী দেননি খছি জে গৰীৱোঁ–গ্ৰবৱাঁমে ও ক্ষমতা ছৈ জেকবা জঁ কনিকো সহযোগ ভেষ্ঠ জাএ তঁ ও ৱহ্ত খাগাঁ ৱঠ়ি সকৈত খছি। নাবীক একষ্টা খনগ স্ৱৰূপ কানী–দ্গাঁ খাদি শক্তিক ৰূপ সিতিযা কেব চবিত্র দেখেৱাঁমে সফন বহনাহ খছি। জখন খাৱাবা ছৌড় া ননৱাঁ ওকবা গজ্জতি ন্বষ্টএ চাহি ছৈ তখন সিতিযা ননৱাঁকেঁ নাতে– ঝক্ক থ্বি–থাবি কহ বাখি দৈত ছৈ। ৱাঁত ওতগ নৈ খতম হোগছ খপিত্ত জখন ননৱাঁক গৌখাঁ সভ হসেবী ৱাঁন্হি সিতিযা গামপব হমনা কবৈত খছি তখন সিতিযা ঝাঁসীক বানী ৱঁনি সভকেঁ পবাস্ত কহ দৈত ছৈ।

ঐ তবহেঁ মৌনাগন গাছক ফূন উঁপন্যাসমে সহজতা, সমবসতা, যথার্থৱাদ, খাদর্শৱাদ, ধর্মভিৰুতা, একন এৱং সংযক্ত পবিৱাবক ৰূপ–ৱেখা খিচ একষ্টা মনোৱৈজ্ঞানিক ৱিশ্লেষণ ৰূপমে উঁপন্যাসকাব হমবা নোকনিক মধ্য উঁপস্থিত ছথি। হ্নক গা ি ৱধাসঁ উঁপন্যাস জগতমে এক্কঠাম সভ তবহক স্বখ, খানংদক খন্বভৱ হোগত ছন্হি। খাজ্ক সমাজ জে সভ তবহেঁ মৌনাএন খছি। খপনা উঁপন্যাসক মাদে উঁপন্যাসকাব মাত্র এক খাদমী বামাকান্তৱাঁবূ দ্বাদএ পবিবৰ্ত্তন কহ সমাজমে একষ্টা নৱকা ফূন খিনেৱাঁমে সশী–প্রতিশীত সফন ভেনা খছি। বামাকান্ত ৱাঁবূ দ্বাবা খপন দূ সএ ৱীঘা জমীন– সৱহক মাথপব একহক ৱীঘা খেত খর্থাত্ জেকবা সাত গো ৱেঁষ্টা ওকবা সাত ৱীঘা দহ সভকেঁ একষ্টা নৱ জিনগী প্রদান কবৈত ছথি। এক নৱ জিনগী জে পূর্ণত: মৌনাএন ছন ওগমে ফূন খীনা দৈত ছথি। হমবা খাশা নৈ খপিত্ত ৱিশ্বাস খছি জে শ্রী জগদীশ প্রসাদ

মণ্ডনজী সন উঁপন্যাসকাব হোথি ঋা বামাকান্তরাঁরূঁ সন নাযক তঁ ঋপন সমাজ রূপী মৌনাএন গাছ মৌনাএন নৈ ঋপিত্ত ডগডগীসঁ ভন গাছ রঁনি হ্মূনসঁ নদি সকৈত ঋছি।

__টৈগোব সাহিত্য প্ৰবস্কাবক রঁহেন্ন– যাত্রা বৃত্তান্ত__

তাবীখ 10/6/2012 দিন ববি, ি নবমনীসঁ পটৈনা জেরাঁক হেত্ত, স্থানিয মিনানপথসঁ সংধ্যা 8 রঁজে সবকাবী রঁস দ্বাবা গোসাগ–পীতবকেঁ স্বমবি, ঋাবক্ষিত জগহপব রৈঁসন। মনমে সদিখন দের–পীতবক যাদি, তাকি যাত্রা শ্বভ হ্ঋএ। ি নর্ধাবিত সমৈসঁ রঁস খ্জন। ভুতহা, নবহিযা, হ্মনপবাস হোগত চনৌবাগংজমে কাকা (শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন) কেঁ গোব নাগি ঋাদবক সংগ রৈঁসাওন। হ্নকা ছোড়ক হেত্ত রেঁবমা গামক কতৌক নোক জেনা কপিনেশ্বব বাউঁত, নক্ষ্মী দাস, শিরক্ষমাব মিশ্রা, ঋখিনেশ, স্ববেশ, মিথিনেশ ঋাদি ঋাএন ছনন্হি।

বাতি ভবি দের–পীতবকেঁ স্বমবৈত তীন ৰঁজে ভোবমে দ্নূ ৰাপ্বত পঠনা পহুঁচনৌঁ। ৰঁসসঁ ঙঁতবি পনেঠফার্মকেঁ গমছ্তাসঁ ঝাবি ৰৈঁসনৌঁ। ওঁঘীসঁ খাঁখি ডোকা সন–সন খা বংগ খবহ্ন সন। জাকি খাঁখি ঋননৌঁ খাকি কাকা ঙঁঠৌনন্হি জে ঙঁঠ্–ঙঁঠ্ প্রাত ভঽ গেন। সে নে তঁ নদী–তদী তবগবে ফীব নিখ। ফবীচ্ছ ভেনাসঁ স্বনভ শৌচানাগযোমে নম্মব নগাৰঁএ পড়ৈত। সএহ কএন। খাঁখি মিড়ৈত ডেগ শৌচানয দিসি ৰঁঠৈন। ৰেঁবী–ৰেঁবী দ্নূ ৰাপ্বত নদী ফিবনৌঁ। গামক ৰঁনাওন দতমনি, জেকব খগিনা ঋঁহ থক্ষচন খা পছিনা ভাগ চীবন। ঋঁহমে দঽ চাবিযে ঘ্স্সা ঐ কাতসঁ খাগে কাত ধবি দঽ ক্ষৰুব–খাচমনি কঽ খাগূ ৰঁঠৈনৌঁ। এম্হব কাকা খখিযাসী ছনাহ জে চাহক দোকান কেম্হব ছৈক। জে পহিনে এক–হক গিনাস চাহ পীৰঁ নৈতৌঁ তখন জে হোগতৈ সে হোগতৈ। গাঁধীমৈদানক ঙঁত্তবরাবি কাতমে ধ্খাঁ হোগত দেখনিঐ। তখন ভবোস ভেন। সহঠি কঽ নগ গেনৌঁ। চ্নহি পজাবনহি ছন। ৰ্বেঁচপব ৰৈঁসেত দূ গিনাস চাহক খাগ্রহ কেনৌঁ। সমএ সাফ ভঽ গেন বহৈক। কাকা কহননি জে সে নৈ তঁ কোনো ঠৈক্সীৰঁনাকেঁ তাৰঁত ভাঁজি নে নিখ, জে ও হবাগ খড্ডা জাএত জৌঁ জাএত তঁ পাগ কহু নেত? একটা ঋঁহসচ্চ খাদমীকেঁ দেখি হাক দেনিঐ। খাৰি গছনক। ভাড়া এক সাএ নেত সেহো কহনক। চাহ পীৰঁ দ্নূ ৰাপূত ঠৈক্সীমে ৰৈঁসনৌঁ, ৰৈঁসিতে রিদা ভেন। দ্নূ ৰাপূত খনভ্যা খাবে বহী। নৈ জানি হমবা কহৈমে গনতী ভেন খাকি ওকবা স্বনৈমে। ও তঁ হবাগ খড্ডাক ৰঁদনা মিঠাপ্বব ৰঁস খড্ডা নঽ খননক। খাৰঁ তঁ ভেন তীতম্হা, ও কহএ জে নৈ সব হমবা তঁ খহাঁ ৰঁস খড্ডা

कहलौं, हवाग खङ्गा नै। से ने तँ हमवा ञाङ़ ा दिख था हम जाएवँ। कनी कान तँ केनादन नागन, म्दा फेव ओकवे कहनिऐ वँबनी जे नेवँह से निहह म्दा हमवा सञकेँ हवाग खङ्गा उँतावह। ओ कहनक ओतए जेवँग तँ ओव एक साए टौका नेवँ। ऐ तवहेँ दू साए रूपैयामे हवाग खङ्गा पहुँचनौं।

हवाग खङ्गामे जगठाम पवम सिनेही श्रीमान् गजेन्द्र वाँवूसँ साक्षात् दर्शन ञेन। नमस्काव पाती ञेनाक वाँद वँह्त वँसी उँत्साहक संग हमवा नोकनिकेँ अपना गाड़ ीसँ हवाग खङ्गाक ञीतव नः गेनाह। नः जागत जनौनन्हि जे हवाग जहाजक यात्राक की केना निअम होगत छैक। गाड़ ीसँ उँतवनाक वाँद गजेन्द्र वाँवू हमवा दुनू वाँप्वतक पाँच-सात गोट फोटो खिचनन्हि। हमहूँ हुनक फोटो अपना कैमवामे नेनौं।

मोवाँगनक घड़ ीमे सात वाँजि गेन छन। हमवा नोकनि एक-दोसवासँ फवाक होवँक स्थितिमे आवि..... । गजेन्द्र वाँवू अपना वाँसापव गेनाह आ हम दुनू वाँपूत अपन-अपन पहिचान पत्र नः नीक नोक जकाँ नागनमे ठाढ़ ञः गेनौं। जनीजाति जकाँ मोटवी-चोटवी तँ वँसी छन नै आ ने पंजविया (पंजाबँ कमागवँना) जकाँ गवमियो मासमे कम्मनक मोटा। तँए कोनो दिक्कतो नहिये ञेन। जाँच-पवतान कवा नेनाक वाँद प्रतीक्षानय जा आवामसँ वँसिनौं। काकाकेँ कने चाहक खगता वूझि आग्रह कवैत अपनो स्वतावनौं। ओना आदति ञनहि ं काकाकेँ छनन्हि आ से नित्य दू वँजे स्वयं वँना कः पीवँक, म्दा हमवा से नै, पहिनहि कहि आएन छी जे ञवि वात्तक जगवना

ছন। তঁএ প্রতি কপ চানিস টৗকা দেৱামে খখবন নৈ। ঐ তবনেঁ কিছু কানক পশ্চাতি পুন: ঘোষণা ভেন খা ফেব দুনূ ৱাপূত নাগনমে নাগি হরাগ খড্ডাক ভীতব মৈদানমে গেনৌঁ। দুগযো ডেগ তঁ নে নোগতৈ তগনে খনেরে একটৗ ৱড়কা ৱস ছন। জগপব চঢ়ি হরাগ-জহাজ নগ গেনৌঁ। পহিনে ভবি মন নিগহাবি-নিগহাবি কহ দেখনৌঁ। পুন: খপনা দেরতা-পীতবকেঁ স্বমবি হরা-জহাজক সীঢ়িপব চঢ়ি ভীতব গেনৌঁ। ফ্লহেপেব সিনের্ ৱংগক চাবিটৗ ৱচ্চিযা নাক-ভৌহ চমকা-চমকা স্বাগতমে হাথ জোড়ি খংগ্রেজীমে কহনক- রেন্কম সব। খা ভভা কহ হঁসি দেনক জেনা পঢ়ৌন স্বগা হ্খএ। হরাগ জহাজমে সীট দুনূ ৱাপূতক এক্কঠাম ছন। সীট হেবি দুনূ ৱাপূত পহিনে হরা-জহাজক ভীতবক রাতারবণক খরনোকন কএন। এনা নগএ জেনা ভবি জহাজমে ৱবফ খসি বহন হোগ খা তগপবসঁ গম-গম সে কবৈত। ৱাহবমে জতু গর্মী ভীতব ওতবএ ঠঁঢা কনিযে কানক ৱাদ মন একদম্ম শান্ত ভহ গেন। তেকব ৱাদ দূটৗ রযস্ক ৱানক খারি খংগ্রেজীমে কিদৈন-কহাঁদন কহি হিন্দীমে দোহবৌনক। জেকব ভার ছন জে হমবা নোকনিসঁ খাগ্রহ কবৈত কহন গেন জে খাব গ হারা-জহাজ খপনা স্থানসঁ সসমএ হ্মম্ৱগ নেনে উঁড়ান ভবত। হন তীন ঘংটৗ তীস মিনটক ভীতব খপনা স্থানপব পহুঁচত। তঁএ খপনে খপনে নোকনি খপনা-খপনা সীটপব বাখন রেন্টসঁ ডাঁঢ়ি ৱান্হি নী। সএহ কবগ গেনৌঁ। হরাগ-জহাজ গ্বড়কএ নগন। কবীর্ ৱীঘা দসে গ্বড়কনাক ৱাদ রাযা হ্মহে ঘূমি খপন দিশা খা দশা ৱনা ৱড়ি জোবসঁ গ্বড়কএ নগন।

গ্বড়্কৈত–গ্বড়্কৈত এক্কর্রঁব হরাঁ–জহাজ সাফে কঽ ধবতীকেঁ ছোড়্ি থকাসমে উঁড়্এ নগন। জী তঁ সন্ বহি গেন। হ্মদা কিছু কানক রাঁদ স্থিব ভেন। খিড়্কীসঁ নিচ্চাঁ তকনৌং। থাহিবে রঁন্নৈযা গ্বা তঁ কিছু কতৌ নে দেখিঐ। সৌংসে উঁজ্জব–উঁজ্জব রাঁদনেষ্টৌ। রাঁদনক সংগ হরাঁ–জহাজ উঁড়্ন জা বহন ছুন।

হরাঁ–জহাজক ভীতব ষ্টৈম–ষ্টৈমপব চাহ–জনখৈ ভেষ্টৈত বহন হ্মদা রঁড়্ মগহ..। খএব ছোড়্ ৄ। নখ পাঁচমে জে হরাঁ–জহাজ খ্নুনন ও এক–পৈতিসমে হ্মম্রঁগ হরাগ–খড্ডাপব পহুঁচনৌং। কবীরঁ পনবহ মিনষ্টক রাঁদ নোক সভ উঁতবএ নগনাহ। পাছু–পাছু হমদ্রুঁ দ্নূ রাঁপূত উঁতবনৌং। উঁতবিতে হ্মম্রঁগ হরাগ–খড্ডা দেখি চকরিদোব নগি গেন। সভষ্টৌ তঁ দেখনো স্বননো নহিযে। কাকাক সহ পারি কন্নৌ কবরাঁক নেন একষ্টৌ হোষ্টেন পহুঁচনৌং। ভোজন–সাজন কঽ প্বন: ঘূমি হরাগ–খড্ডাপব থারি নাগনমে নাগি সামান চেক–চাক কবা ষ্টৌকষ্ট নঽ ভীতব প্ররেশ কএনৌং। কাকাক চাহ পীরাঁক সমএ সেহো ভঽ গেন বহনি। গ্বা হমবা রূঁঝন ছুন জে গামমে থপনেসঁ রঁনা সাঠ়্ে তীন রঁজেক নরঁধরঁ পীরৈঁ ছুথিন। জহাজ তঁ চাবি চানিসমে ছুন। হাথমে এক ঘংষ্টৌ সমএ দেখি এক–কপ কা`ফী চাবি রীস দস ষ্টৌকামে কিন দ্নূ রাঁপূত পীরঁনৌং। কনিযে কানক পড্ডাতি ঘোষণা ভেন পষ্টনে জকাঁ নাগনমে নাগি হ্মম্রঁগসঁ কোচ্চি নেন ভীতব জা রৈঁসনৌং। রৈঁসিতে থপন ঘবক গোসাগ থা দের–পীতবকেঁ স্বমবরঁ সহজহি মনমে থারঁএ নগন। পহ্নকে জকাঁ সভ থন্বভর কবৈত কোচ্চি পহুঁচনৌং সমএ হোগত বহ ছুহ চানিস। মোরাঁগনক স্বগচ আঁন কেনৌং

মোগতে একটা সংদেশ খ াএন জে খংগ্রেজীমে ছন জেকব মৈথিনী বহএ– হম প্ররীন ক্ষমাব সহযোগী মোহিত বারত দিন্নী, উঁজ্জব খা নীন বংগক কমীজ পহিব নিকাস দ্বাব নগ ঠাঢ় ছী। হমবা দুনূ রাঁপূতকেঁ ধোতী–ক্ষর্তা দেখি ও প্ছনিনি– "খপনে জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন ? হম প্ররীণ ক্ষমাব। খাউঁ খপনেক নোকনিক গাড়ী ঠাঢ় খছি জে মোটৈন ছোড়্া দেত।"
গাড়ীক চানক খাগূ রঁঢ়া দুনূ রৈঁগ নহ সম্হাবি কহ বখননি। দুনূ রাঁপূত গাড়ীমে রৈঁসনৌঁ খা গাড়ী খাগাঁ সসবন। কবীরঁ চানিস মিনটৈক উঁপবান্ত একটা দস মংজিনা মকান পূর্ণত: রাতান্বক্ষনিত, গোক্ষনম পার্ক মোটৈন কোচ্চি, নগ ঝকন। যূনীফার্মমে সজন দবমান মোটৈনক দবরঁজ্জা খোনি ঠাঢ় ছন। গাড়ীক ড্রাগরব রাঁহবক দবরঁজ্জা খোননক। দুনূ রাঁপূত রঁহব ভেনৌঁ। দবমান ঝ্কি কহ স্রাগত কেননি। ভীতব গেনৌঁ খাকি নজবি একটা খঠাবহ রঁর্খক নরযৌরনা খতি রিনক্ষণ স্রভাররানী হিন্দী খা খংগ্রেজীমে নীপ্ণ খপন পবিচএ খংগ্রেজীমে দেনক। জেকব ভার ছন, হম পূর্ণিমা সৈমসংগ কম্পনীক তবহক্ষসঁ সেরামে ঠাঢ় ছী। কহ্ু হম খপনেক কী মদতি কহ সকৈত ছী ?
পূর্ণিমাক দুনূ হাথ জোড়্রঁ, নিচ্চা উঁজ্জব তংগ জীন্স খা ঙুঁপব স্বগাপাখি বংগক টৗসর্ট, নম্হব–নম্হব কাবী ভৌব কেশক কিছু নটৈ দহিনা কাতক ছাতীপব খসন। তিনকোবক ক্ষড় সনক দুনূ ঠোব নান হ্হিহি। ভবি খাঁখি কাজব। খূরঁ নম্হব–নম্হব হাথ খা পোবগব–পোবগব ওগবী সভ জে কোনো নীক কম্পনীক চমকীরঁনা নহবংগাসঁ বঁগন। দুনূ হাথ জোড়্া মূর্তি জকাঁ ঠাঢ় ছন। দেখিতে মন গদ্গদ্ ভহ গেন। জে

एहि रयस्क रानिका एतेक शौकीन ! हमरा अपनो भाग्यपर गौरव भेल जे धनि हमर मिथिला, धनि हम मैथिल आ धन्य हमर मैथिली । जग प्रतापे हम दुनू राँपूत टैगोर साहित्य पुरस्कार प्राप्त करबाक हेतु मिथिलाक गाम रैंबमा, भाया तम्हुरिया, जिला मधुबनीसँ चलि कोलकाता पहुँचलौं ।

रिसेप्सनपर उचित आदर-भावोपरान्त कमरे नम्बर चाबि साथ छल केर कुंजी जे ए.टी.एम कार्ड जकाँ छल । पूर्णिमा हमरा सरहक संग आग ओग कुंजीसँ कम खोलल । संगे ओही कार्ड रूपी कुंजीकेँ एकटा दोसर खोल्हियामे पैसौलक तँ भरि घर गजोत पसरि गेल । दू बेडक रूप । उज्जर धप्-धप् गद्दा-तोसक तकिया आदि अत्याधुनिक छल । सामने टेबुलपर एकटा एल.सी.डी, फोन आ चाह बनेबाक सभ सरमजाम छल । चाहक सरमजान देखिते काका तँ गद्गद् भऽ गेलाह कहलनि- "दुर्गानन्दजी, सभसँ पहिने एकटा चाह पीबू ।" सएह कएल ।
चाह पीबैत टीवी खोलि कते काल देखलौं । तात् पूर्णिमा मन पड़लीह हुनकासँ हमरा एकटा बैंगरतो छल । ओ अपन नम्बर देने छलीह डायल केलौं पाँचे मिनटक पछाति भीतर एलीह ओही अदाक संग । आग्रहपर बैसलीह । अगता कहलनियनि जे हमर कैमराक बैटरी डॉन भऽ गेल अछि कने चार्ज होगतए । पूर्णिमा हर्षक संग बैटरी लऽ बातुक भोजनक विषयमे सेहो बता देलनि । आ ओ कहैत बाहर जेबाक अनुमति चाहलनि जे हम अही फ्लावपर रूप नम्बर चाबि साथ दूमे छी । अपने लोकनिकेँ

কোনো খগতা হ্খএ তঁ নি:সংকোচ ৰজা নেৰ। হম খহী সৰহক সেৰাৰ্থ খাএন ছী। ধন্যৰাদ কহৈত দ্নূ ঠোবকেঁ ৰিহঁ ্সৰৈত পূৰ্ণিমা ৰূমসঁ ৰাহব ভেলীহ। নাগন এনা জেনা ৰিজলী চন গেন হ্খএ খা ৰূম খন্হাব গ্বজ-গ্বজ ভ২ গেন হ্খএ। পছাতি থোড়্কোনক, কাকা মোন পাড়্ননি জে ভোজনো কবৰৈ ? হম কহনিযনি-নিশ্তৃকী।
খপন-খপন ক্ষৰ্তা পহিব দ্নূ ৰাপূত ভোজনক নেন দ্বিতীয তনপব পহুঁচনৌং। এক নজবি ঘ্মা চাৰূ কাত দেখনৌং। খনগ-খনগ ঠৈৰ্ন খা ক্ষৰ্সী নাগন। সভ ঠৈৰ্নপব কনিযে ঠৌ-ঠৌ তোনিযা, প্নেঠ, উঁজ্জব ধপ্-ধপ্ গিনাস, পানিক ৰোতন খা কাঁঠৌ চম্মচ বাখন ছন। কনে কান ধবি দ্নূ ৰাপূত গ্বমস্বম বহনৌং। জে পূছি-পূছি পবসি-পবসি খ্খাওত। ক্ষদা ওতএ তঁ খপনে-খপনে পবসি খাগৰনা হিসাৰ ছন। ৰড়্নী ৰড়্ ৰেস। একহক ঠৌ প্নেঠ নঃ দ্নূ ৰাপূত খাগাঁ ৰঠ্নৌং। জে চীজ-ৰৌস চিন্হি ছেনিঐ ও একাধঠৌ ঠ্কড়্া উঁঠা-উঁঠা খপনো প্নেঠমে বাখী খা কক্কাকেঁ দিযনি। ক্ষদা জে খনচিন্হাব চীজ-ৰৌস ছন তগমে পূছএ পড়্এ। সেহো হিন্দীমে নৈ কিএক তঁ হিন্দী তঁ কিযো ৰ্ঝৰৈ নে কবএ। মৈথিনী কথে কোন জে মৈথিনো খাৰ ঠৌঠৌ-ৰাগ-ৰাগ কবৈএ। তখন পূছি-পাছি খপন-খপন পসিনক সভ সামগ্ৰী নঃ ভোজন কেনৌং। ভোজনক তঁ ৰিন্যাসে জ্নি পূছু, উঁত্তব ভাবতসঁ নঃ দক্ষিন ভাবতক সভ কিথ্ক পূৰ্ণ ৰৈৰস্থা ছন। ভবি পোখ ভোজন দঃ দ্নূ ৰাপূত খাগাঁ ৰঠ্নৌং দেখনৌং জে একঠৌ কবাহীমে খীব সন কিছু খাদ্য পদাৰ্থ ছনৈক। খপনা জোগবক নেনৌং। খাগতে মন গদ্গদ্

ভঽ গেল। তত্পশ্চাত আগসঞ্জীম লঽ ভোজন সম্পন্ন কবিতে বস্নী তারঁত্ মোহিত বারত জী হমবা লোকনিক খোজ–প্বড়াড়ি কবৈত লগ পহুঁচনাহ। হান–চান ভেল। আবাম কবএ গেলৌं।

ভীনসব তবগবে উঠি নহা ধো কঽ তৈযাব ভেলৌं। জলপান কেলাক বাঁদ দুনূ বাঁপূত মোৈলক নিচলা তলপব আরি সামাচাব পত্র আদি দেখি বহল ছলৌं তখনে বেণুকা রাতবা জী এলীহ। সবঁহক হুশল–ছেম জানি আনন্দিত ভেলীহ। এক–দোসবক পবিচএ–পাত ভেল। আ হমবা লোকনি এ.জে হাঁলক লেল বিদা ভেলৌं। হাঁল দেখি মন গদ্গদ্ ভঽ গেল। এ.জে.হাঁল পূর্ণত: রাতানুকূলিত বৈঁস পৈঘ হাঁল। জগমে হজাবক–হজাব বিদ্বান লোকনি বৈঁস সকৈত ছথি। বেঁস উঁচগব মঁচ। জগপব দহিনাসঁ চঢ়ক লেল আ বাযসঁ উঁতবক হেতু সীঢ়ী বঁলল ছল।

কথাকাব–সাহিত্যকাব লোকনিক বৈঁসৈক বেঁবস্থা, মিডিযাবঁলাক আ আমঁত্রিত অতিথিক সবঁহক অলগ–অলগ বেঁবস্থা ছল। দিনক তীন বঁজে পত্রকাব লোকনিক সংগ ভেঁৈবার্তা ছল। এক কাত সাতো বিদ্বান, কথাকাব, উঁপন্যাসকাব আ কবি লোকনি আদিক বৈঁসৈক বেঁবস্থা ছল জিনকা আগাঁ নাওঁ লিখল লেমপ্লেট ছল। আমী দীর্ঘামে বেণুকা রাত্রা সেহো বৈঁসলীহ। বেঁবাবঁবী সভ বিদ্বান লোকনি অপন–অপন পোথীক এক ঝলক অংগ্রেজীমে বখললি। তকব পছাতি কাকা অপন পোথী সংবঁধী বিচাব মাতৃভাষা মৈথিলীমে বখললি। পূবা কক্ষ বিভিন্ন প্রকাবক কৈমবাক হ্লশসঁ চমকি বহল ছল জেনা

সাওন–ভাদরক ৰঁদ্রীমে বহি–বহি ৰিজনোকা চমকৈত বহৈত। ৰিচাব বখনাক ৰাঁদ সভ ৰিদ্বান নোকনিসঁ ৰিভিন্ন প্রকাবক প্রশ্ন নহ নহ পত্রকাব নোকনি নূম্নি পড়না। সৌভাগ্যসঁ হমহুঁ ৰিদেহ প্রথম ঙা পাক্ষিক পত্রিকাক সহ সম্পাদকক প্রতিনিধিত্ব কবৰাঁক হেত্ত উঁপস্থিতি বহী। আ পত্রকাব নোকনিকেঁ মৈথিনীসঁ হিন্দী আ অংগ্রেজীমে ভবি পোখ সংতোষ প্রদান কএন। পাঁচ কেম্হেব দহ কহ ৰঁজনৈ সেহো নৈ ৰূঁম্নি পেনৌঁ। সভ কিযো এ.জে. হাঁনিক সভাকক্ষমে প্ররেশ কএন। অপন–অপন স্থান গ্রহণ কেনৌঁ। আ শ্বৰু ভেন টৈগোব নিষ্টবেচব অবাউিক কার্যক্রম। ঙা তেসব প্ববস্কাব সমাবোহ ছন জেকব আযোজন ঐৰেঁব কোচ্চিমে ভেন বহএ। জগমে ৰিভিন্ন ভাষামে সাহিত্যক যোগদান হেত্ত সাতষ্টা ভাবতীয ভাষাকেঁ চ্নন গেন, অংগ্রেজী, কোংকণী, মৈথিনী, মনযানম, মণিপ্ববী, নেপানী আ সিন্ধী বহএ। জে প্ববস্কৃত কএন গেন। কোচ্চিক ৰাঁবহ জূনক সংধ্যা সৈমসংগ গণ্ডিযা আ সাহিত্য অকাদেমী দ্বাবা সাহিত্যমে স্রোত্তম যোগদানক নেন সাতো ভাষাক নেখককেঁ প্ববস্কৃত কবৰাঁক নেন তৈযাব ছন। জেকব চযন সাহিত্য অকাদেমীক পংচ–পবমেশ্বব দ্বাবা ভেন ছন। এক ঝনক ওগ মহান ৰিভূতিক নেন জে ক্রমশঃ ঐ তবহেঁ উঁপস্থিতি ছনাহ– 1. শ্রী অমিতাভ ঘোষ, অংগ্রেজী, সী আঁফ পাঁপিজ, 2. শ্রীমতী শীনাকোনম্ৰঁকব, কোংকণী গৌর্ব, 3. শ্রী জগদীশ প্রসাদ মণ্ডন, মৈথিনী, গামক জিনগী, 4. শ্রী অঁকিথম অচ্যতম্ নামৰ্দবী, মনযানম–অংথিমানাকানম, 5. শ্রী এন. কংজমোহন সিংহ, মণিপ্ববী, এনা কৈংগে কেনরা মাষ্টে, 6. শ্রীমতী গংদ্রমণি দবনান, নেপানী, গ্রষ্ণা–গ্রষ্ণা আ 7ম শ্রী অর্জন হসীদ, সিংধী,

ना अएना ना।

ए कार्यक्रमक मुख्य अतिथि, डॉ. एम. विरापा मोइली, ओ.एन.भी कुरुप, एम.पी. विरेन्द्र कुमार, श्री अग्रहारा कृष्णमूर्ति, सचिव साहित्य अकादेमी दिल्ली आ श्री वी.डी. पार्कि प्रेसीडेन्ट एण्ड सी.इ.ओ. साउथ-वेस्ट एसिया, मुख्य कार्यालय एच.क्यू, सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स छलाह। कार्यक्रमक दौरान लोकेन पुरस्कारसँ पुरस्कृत महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर केर संबंधमे अपन-अपन वक्तव्य विचार रखलनि। कार्यक्रमक उद्-घोषिकाक रूपमे साहित्य एवं कलाक दुनियाँक प्रसिद्ध टी.भी. एंकर, मॉडल रजनी हरिदास द्वारा जबर्दस्त प्रस्तुति सबहक मनकेँ मोहि लेलक।

कार्यक्रममे पुरस्कार वितरण हेतु उद्घोषणक पश्चाति विजेता विद्वान लोकनि मंचासीन होथि आ पुरस्कृत भऽ अपन-अपन स्थानपर आपस आबथि। पुरस्कारक रूपमे गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोरक एकटा बेंस किमती मूर्ति, एकटा चिक्कन साल एवं एकावन हजार रूपैयाक चेक प्रदान कएल गेल। बीच-बीच मिडियाक कैमरा विजलोका जकाँ लौकैत रहल। पुरस्कार पाबि श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन लिखल पोथी गामक जिनगीक विषयसँ पूर्व पोथी प्रकाशिक श्रुति प्रकाशनकेँ धन्यवाद दैत विस्तारसँ मातृभाषामे अपन वानगी प्रस्तुत कऽ मिथिला आ मैथिलीक मर्यादाकेँ बढ़ौलनि।

कार्यक्रमक समापन भरत नाट्यमक प्रसिद्ध नर्तकी,

কনাকাব পদ্মশ্রী শোভনাচন্দ্র কুমাব দ্বাবা ভযংকব উঁত্সাহপূর্ণ স্তবীয নৃত্যক সংগ ভেল। পাঁচ বঁজে সংধ্যাসঁ দস বঁজে বাতি ধবি ঝূঁমু জে ছও আঁগ্বব ঘীঐমে ছল জকব সফলতাক শ্রেয স্বশ্রী ৰুচিকা বঁত্তা, বেণুকা ভান, সৈমসংগ গণ্ডিযা, ৰী.ডী.পার্ক আদিকেঁ ছল্হি। জে সমস্ত কার্যক্রমক দৌবান কাগ চেষ্টা আ বঁকোধ্যানম্ ৰূপমে বহলা/বহলীহ।

ঐ সবঁহক পশ্চাত হমবা লোকনি হোটল আবি স্রুচি ভোজন কঽ আবাম কেলৌঁ। প্রাত: ভলে চাবি বঁজে ভোবমে অভিবাদনক সংগ হাথ হিলবৈঁত গাড়ীমে বৈঁসলৌঁ। ক্ষুদা অখলো ও হমবা মলে অছি......। তাবঁত গাড়ী কোচ্চি হবাগ-অভ্ভাক লেল প্রস্থান কঽ চুকল ছল। বাতি দস-বঁজৈত-বঁজৈত যাত্রাক সম্পূর্ণ আনন্দ লৈত দ্নূ বাঁপূত গাম বেঁবমা-গোধনপ্বব আবি গেলৌঁ।



प्रा. रीणा ठाकुर, अध्यक्ष, मैथिली विभाग, न.ना.मि.ि रश्र विद्यालय दरभंगा।

प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान

1. प्राचीन भारतक इतिहासमे मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास अत्यंत गौरवपूर्ण एवं महिमाशाली रहल अछि। सत्य तँ ई अछि जे मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासक ज्ञान बिना भारतक इति सांस्कृतिक इतिहासक यथार्थ ज्ञान संभव नहि अछि। सुदूर अतीतमे मानव मनीषा आर प्रतिभाक प्राज्वल प्रकाश एतय विद्यमान छल, धर्म–दर्शन, ज्ञान–विज्ञानक प्रत्येक क्षेत्रमे विश्व विश्रुत ज्ञानी–गुणी जनक जन्मभूमि होएबाक सौभाग्य मिथिलाके प्राप्त छल। धर्म तथा दर्शनक क्षेत्रमे मिथिला नहि मात्र अपन महत्व स्थापित कयलक अपितु ओकर पृष्ठि सेहो कयलक तथा तत्कालीन विश्वक चारू–दिशामे ओकर संदेश प्रसारित करैत मानव जातिक कल्याण साधन कयलक। जनक सदृश राजर्षि, याज्ञवल्क्य सदृश ज्ञानी, गार्गी, मैत्रेयी, भारती सदृश विदुषी नारी, जगत–जननी सीताक जन्म स्थली तथा गौतम, कपिल, मंडन मिश्र, वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य, गंगेश उपाध्याय, पक्षधर मिश्र, दार्शनिक प्रवर एवं ज्योतिरीश्वर–विद्यापति सदृश कवि तथा

রিদ্বানক জন্ম স্থলী মিথিলা ভাবতক ওতিহাসমে খনংত কাল ধবি খপন উঁজ্বল কীর্ত্তি স্থাপিত কহ লেলে খছি। জাহি প্রকাবে প্রাচীন যুগমে এথেস যুনানি লেল জ্ঞান-রিজ্ঞান এরং সভ্যতা-সংস্কৃতিক কেন্দ্রস্থল ছল, তহিনা মিথিলা সম্পূর্ণ ভাবত রর্ষ লেল।

2. প্রাচীন সংস্কৃত রাঙ্মযক খরলোকন সঁ জ্ঞাত হোগত খছি-জে ভূ-ভাগ রর্ত্তমানমে রিহাব কহল জাগত খছি, ও প্রাচীন কালমে তীন খন্ড বাজ্যমে রিযক্ত ছল; রিদেহ, মগধ খাব খংগ। গংগা নদীক দক্ষিণ-পশ্চিমমে 'মগধ' বাজ্য ছল, জকব প্রাচীন নাম "কীকট" ছল খাব জে খনার্যক নিরাস স্থান বুঁঝল জাগত ছল। পশ্চাত্ ওা প্রদেশ মগধ নামসঁ খভিহিত হোময লাগল এরং এত্তুকা নিরাসী কে হেয দৃষ্ঠিসঁ দেখল জাগত ছল। পাশ্চাত্য রিদ্বান রেরব, পার্জিটব খাদি রিস্তাবসঁ রিচাব কবৈত কহলে ছথি জে- খনার্যক খাগমন এহি ঠাম পূর্ব দিশাসঁ রঁবাবঁব হোগত ছল খাব এহি ঠামক নিরাসী খার্য সভ্যতাক খধিপত্য সহজহিঁ স্বীকাব নহি কযলক, তাহি হেত্তু রৈদিক সাহিত্যমে ওা প্রদেশ নিংদনীয কহল গেল। নিবংতবমে কহল গেল খছি- "কী কদা নাম দেশোঽনার্থ রিশেষঃ" ঝদা এহি কীকট প্রদেশমে গযা তীর্থ কে খনংত পরিত্র মানল গেল খছি; কীকটেষ্ণ গযা প্বণ্যা নদী প্বণ্যা প্বনঃ প্বনঃ। চ্যরনস্যানৄযং প্বণ্যং প্বণ্যং বাজ গৃহ রনস"। রৌধ্বাযন ধর্মসূত্রমে খংগ এরং মগধ নিরাসী সংকীর্ণযোনি কহল গেল ছথি। ঝদা রৈদিক যুগমে রিহাবক একটা ভাগ এহল ছল জে খার্য সভ্যতাক কেন্দ্রক রূপমে প্রসিদ্ধ ছল খাব ও ছল রিদেহ। শতপথ ব্রাহ্মণক খনুসাব রিদেহ খপন প্ববহিতক সংগ সবস্বতী নদীক তীবসঁ সদানীবা (গংডকী)ক তীবপব খাযল ছলাহ খাব নদী পাব

कऽ ও পূর্ব দিশামে খযনাহ খাব ওতএ বঁসি গেনাহ। গযহ রিদেহ কানাতংবমে মিথিনা খাব তীবভুক্তি নামসঁ প্রসিদ্ধ ভেন। বাল্মিকি বামাযণক বাঁন-কাল্ডমে মিথিনাক চর্চ কবৈত কহন গেন খছি; "বামোঽপিপবমা পূজা গৌতমস্য মহামেনঃ। সকাশাদ রিধিরত্ প্রাপ্য জগাম মিথিনাং ততঃ"। 'খনর্ঘ বাঘর'মে মিথিনাকে রিদেহক একটা নগবী কহন গেন খছি; "রসে! শৃণোষি রিদেহেষ্বি মিথিনাং নাম নগবীম্"। কানিদাসক "বঘুরংশ", শ্রী হর্ষক "নহিষধীয চবিত" তথা জযদেরক "প্রসন্ন বাঘর" নাটকমে সেহো মিথিনাক উল্লেখ ভেটৈত খছি। 'ভুংগদূত'মে "তীবভুক্তি"ক উল্লেখ মিথিনা নেন বুঝন গেন খছি। "গংগাতীবারধিবধিগতা যদভুরো ভুঙগ হাক্তিনাম্না সৈর ত্রিভুরনতনে রিশ্রুতঃ তীবভুক্তি:"।

3. রিদেহ রশংক সভসঁ প্রসিদ্ধ বাজা জনক ভেনাহ, জে বঁহত পৈঘ ব্রহ্মজ্ঞানী ছনাহ খাব বাজর্ষি জনক নামসঁ রিখ্যাত ভেনাহ। হিনক বাজ সভা মহাজ্ঞানী ব্রাহ্মণ রিদ্বানসঁ খনংকৃত ছন খাব জাহিমে সর্ব প্রধান ঋষি যাজ্ঞরল্ক্য ছনাহ। "শুক্ন যজুর্বেদ'ক প্রবর্ত্তক যাজ্ঞরল্ক্য মানন জাগত ছথি। খাধ্যাত্মে রিদ্যাক সংগহি বৈদিক কর্মকাল্ড নিষ্ণাত জ্ঞাতা যাজ্ঞরল্ক্য: খ্যাতি সম্পূর্ণ ব্রহ্মারর্ত্তমে ব্যাপ্ত ছন। বাজা জনক স্বয ব্রহ্ম রিধায জ্ঞাতা এরং ব্রাহ্মণক পোষক ছনাহ। ব্রাহ্মগ্রংথ খাব উপনিষদমে জনক তথা যাজ্ঞরল্ক্যক খাধ্যাত্মে রিধা সংবন্ধী শাস্ত্রার্থক চর্চা বঁহতো প্রসংগমে কযন গেন খছি, মাত্র চর্চা নহি খপিতু প্রশংসা সেহো কযন গেন খছি। "বৃহদাবণ্যকোপনিষদ"ক এক কথামে জনক দ্বাবা খাহূত এক সভাক উল্লেখ ভেন খছি, জাহিমে কুরু-পাংচান খাদি প্রদেশক বঁহতো রেদক রিদ্বান পধাবন ছনাহ খাব জিনকা

সভকে শাস্ত্রার্থমে পৰাস্ত কৈ যাজ্ঞৱল্ক্য ৰাজ–সম্মান প্রাপ্ত কয়নে ছলাহ। এহি সভামে ৱিদ্ষী গার্গী সেহো উঁপস্থিত ছলীহ। গার্গী আৰ যাজ্ঞৱল্ক্য মধ্য শাস্ত্ৰাৰ্থক চর্চা "বৃহদাৰণ্যকোপনিষদ"মে কয়ল অছি। তথা যাজ্ঞৱল্ক্য দ্বাৰা অপন পত্নী ৱিদ্ষী মৈত্রেয়ীকেঁ প্রদত্ত আধ্যাত্মে তত্বক উঁপদেশক উঁল্লেখ "বৃহদাৰণ্যকোপনিষদ"মে অছি। ৱীতৰাগী, ব্রহ্মজ্ঞানী আৰ ত্যাগী ৰাজা জনকক সম্বন্ধমে একটা উঁক্তি প্রসিদ্ধ অছি– মিথিলায়াং প্রদীপ্তায়াং নমে দহ্যতি কিঞ্চন (সম্পূর্ণ মিথিলা জোঁ প্রদগ্ধ ভৈ জাএ, তথাপি হমৰ কিছু নষ্ট নহি হোএত)। শুকদেৱ সদৃশ সহজ ৱীতৰাগী এৱং পৰমজ্ঞানী পিতা ৱ্যাসদেৱক আজ্ঞাসঁ ৰাজা জনকসঁ ব্রহ্মোপদেশ প্রাপ্ত কএলে ছলাহ। ভগৱান কৃষ্ণ গীতামে প্রবৃতিমাত্মক আদর্শ ৰূপমে জনকক উঁল্লেখ কএলে ছথি।

4. মহর্ষি যাজ্ঞৱল্ক্য দ্বাৰা ৰচিত ৱিখ্যাত স্মৃতি গ্রংথ থিক। এহি গ্রংথমে চৌদহ ৱিদ্যাক পৰিগণন এহি প্রকাৰে কএল গেল অছি – চাৰি ৱেদ, ছহ অংগ, এক মীমাংসা, এক ন্যায, এক পুৰাণ আৰ এক ধর্মশাস্ত্র। সম্পূর্ণ ৱাঙ্ময়ক সমাৱেশ এহি চৌদহ ৱিদ্যামে ভৈ জাএত অছি, তথা যাজ্ঞৱল্ক্য স্মৃতিক অনুসাৰ হিন্দূ সম্পতিক উঁত্তৰাধিকাৰ নির্ণীত হোএত অছি।

5. ন্যায দর্শন কর্ত্তা মহর্ষি গৌতম মিথিলাক নিৱাসী ছলাহ, জিনকা শ্রাপসঁ হিনক পত্নী অহিল্যা পাথৰক ভৈ গেল ছলীহ। আৰ ভগৱান শ্রী ৰাম জনকপুৰ যাত্রাক মাত্ত্বমে চৰণ স্পর্শসঁ হিনক উঁদ্ধাৰ কএলে ছলাহ। ন্যায শাস্ত্ৰক অতিৰিক্ত গৌতম একটা স্মৃতিক ৰচনা সেহো কএলে ছলাহ।

6. ৱিদ্বান লোকনিক মতানুসাৰ গৌতম ৰচিত ব্রহ্ম

রিদ্যাপব একটা গ্রংথ ছন, জে খন্বপনৰ্ব্ব খছি। রৰ্ত্তমান কানহুঁমে গৌতম কুংড খাব খহিল্যা স্থান প্রসিদ্ধ খছি তথা গৌতমক প্বত্র শতানন্দ বাজা জনকক প্ববহিত ছনাহ।

7. সাংখ্য শাস্ত্রক নির্মাতা মহর্ষি কপিনক খাশ্রয মিথিনামে ছন। হিনকা দ্বাবা স্থাপিত শিরনিংগ রৰ্ত্তমানমে কপিনেশ্বব নাথ মহাদের নামসঁ প্রসিদ্ধ তীর্থ স্থন খছি।

8. খাচার্য শংকবাচার্যক সংগ শাস্ত্রার্থ কএনিহাব ন্যায খা মীমাংসাক খদ্বিতীয রিদ্বান মংডন মিশ্র সেহো মিথিনাক বনে ছনাহ। মহিষী গামমে হিনক নিরাস স্থান ছন, জে রৰ্ত্তমানমে সহর্ষা জিনামে খরস্থিত খছি। হিনক ধর্মপনী সবস্বতীক সাক্ষাত খরতাব রিদ্ষী ভাবতী শংকবাচার্য খাব মংডন মিশ্রেক মধ্য শাস্ত্রার্থমে মধ্যস্ততা কএনে ছনীহ খাব মংডনমিশ্রেক পবাজযক পশ্চাত স্বংয শংকবাচার্যকেঁ শাস্ত্রার্থমে পবাজিত কএনে ছনীহ। কহন জাগত খছি জে মডংন মিশ্রেক গৃহক পতা শংকবাচার্যসঁ পূছৰাক এমমে একটা পনিভবনী হ্নকা উত্তব দৈত কহনে ছননি জে "জগদ্ ধ্রুবং স্যাজগদ্ ধ্রুবং খা কীড় াঙ্গঁনা যত্র গিবো গিবংতি। দ্বাবস্থ পীড় াঙ্গঁণসন্নিবদ্ধা জানোহি তন্মন্ডন মিশ্র ধায"। ঙা প্রমাণিত কবৈত খছি জে ওহি কানমে মিথিনামে সংস্কৃত রিদ্যাক পূর্ণ প্রচাব ছন তথা সাধাবণ স্ত্রী সেহো স্বশিক্ষিত ছনীহ।

9. মিথিনা নিরাসী রাচস্পতি মিশ্র ষদদর্শনিক খতিবিঞ্জ সমস্ত শাস্ত্রক রিদ্বান ছনাহ। ব্রহ্মসূত্র শংকব ভাষ্যপব হিনক "ভামতী টীকা খৎত প্রসিদ্ধ খছি। রেদাংতক ঙা একটা প্রমাণিক গ্রংথ মানন জাগত খছি। হিনক বচিত খন্য গ্রংথ খছি। ব্রহ্ম তত্ব সমীক্ষা, ন্যায কণিকা, সাংখ্য তত্ব কৌম্দী, ন্যায রত্তিক তাপের্য খা যোগদর্শনি, ঙা

हिनक रिद्या–रेदध्यक पविचायक ख्ढि। एकव कान एगावहम शेताब्दी (सरंत) मानन जाগত ख्ढि।

10. मिथिनाक न्याय शास्त्रक प्रसिद्ध पण्डित उँदयनाचार्य वचित रँह्तो ग्रंथ यथा – कुसुमाञ्जनि, किवणारनी, नक्षणारनी, न्यायपविशिष्ठ, खामेतत्व रिरेक खादि। स्वाभिमानी पण्डित उँदयनाचार्यक ओ गर्दौति, एखनह् प्रसिद्ध ख्ढि –

11. ”रयमिह पदरिद्यां तर्कमान्नीक्षिको खा।

12. यदि पथि रिपथे खा रत्तयामस्स पन्था॥

13. उँदयति दिशि यस्यां भान्वमान् सैर पूर्रा।

14. नहि तवणिवन्दीते दिक् पवाधीन रृत्ति:” ॥

15. मिथिनाक खन्य प्राचीन दार्शनिकमे गंगेश उँपाध्याय खा पक्षधव मिश्रक नाम रिशेष रूपसँ उँल्लेखनीय ख्ढि। गंगेश उँपाध्याय न्याय शास्त्रक खप्रतिम रिद्वान ढनाह खा खाद्य खडंन मतक खडंन खनंत रिद्वतासँ कএনে ढनाह खा हिनक वचित प्रसिद्ध ग्रंथ थिक “तत्व चिंतामणि”।

16. पक्षधव मिश्रक सम्बन्धमे प्रचनित श्लाक––“शंकव राचस्पत्याः शंकवराचस्पती सदृशौ। पक्षधव प्रतिपक्षी नक्षीभूतो नचयापि” ॥ हिनक रिद्वताकेँ प्रमाणित कवैत ख्ढि। रिद्यापतिक समकानीन पक्षधव मिश्र् “तत्व चिंतामणि” ग्रंथक “खानोक” नामक टीका वचना कयननि संगहि “प्रसन्न वाघर” खाव “चन्द्रानोक” ग्रंथक सेहो वचना कयननि। रँगानसँ रँह्तो ढात्र न्यायशास्त्रक खध्ययन कवरा हेत्त हिनका सँ खरैत ढनाह तथा हिनक रँगानी शिष्य वघुनन्दन नरद्वीपमे न्यायशास्त्रक पठन–पाठन खा प्रचाव कयननि खाव पक्षधव मिश्र द्वावा प्ररर्त्तित नव्यन्यायक पवम्पवाकेँ खाँगा रँढ़ानननि।

17. मिथिनारासी गोरर्द्धनाचार्य उँदयनाचार्यक शिष्य खा

'आर्यासप्तशती'क रचयिता छलाह। दर्शनशास्त्रक पण्डितक संगहि कवि सेहो छलाह, जकर प्रमाण उक्त ग्रंथ थिक।
18. भवनाथ मिश्र आ हिनक सुपुत्र शंकर मिश्र दुनू प्रकाण्ड पण्डित छलाह। भवनाथ मिश्र महान पण्डितक संगहि सर्वथा निस्पृह छलाह, कहियो ककरहुँसँ कोनो याचना नहि कयलनि, ताहि हेतु हिनक नाम अयाची मिश्र पड़ि गेल। हिनक पुत्र शंकर मिश्रेक ख्याति सम्पूर्ण मिथिलामे एकटा अलौकिक योग्यता सम्पन्न बालक रूपमे ख्यात भऽ गेल। मात्र पाँच वर्षक अवस्थामे हिनक ओ महाराज दरभंगाक समक्ष निम्न श्लोक पढ़ि कऽ सुनौने छलाह–
19. "बालोऽहं जगदानन्द नमे बाला सरस्वती।
20. अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्रयम" ॥
21. (हम बालक छी, एखन पाँच वर्षक अवस्था सेहो पूर्ण नहि भेल अछि। मुदा हमर सरस्वती अर्थात् विद्या बाला नहि छथि। तीनू लोकक हम वर्णन कऽ सकैत छी।)
22. "अनर्घराघव" नाटकक रचयिता दार्शनिक प्रवर मुरारि मिश्र मिथिलाक निवासी छलाह आ साहित्यशास्त्रक ज्ञाता छलाह। बहुतो ग्रंथक रचयिता महान दार्शनिक वर्द्धमान उपाध्याय सेहो मिथिला निवासी महान विभूति छलाह।
23. महामहोपाध्याय महेश ठाकुर अपन विद्वताक बलपर सम्राट अकबरसँ मिथिला राज्य प्राप्त कयने छलाह। व्याकरण आ न्यायशास्त्रक श्रेष्ठ विद्वान महेश ठाकुर दरभंगा राजवंशक संस्थापक सेहो छलाह। महाराज शिवसिंहक मित्र आ राजपण्डित कवि कोकिल विद्यापति नहि मात्र मैथिली भाषाक सर्वश्रेष्ठ कवि छलाह

अपितु हिनक गीत द्वारा विभिन्न भारतीय भाषा अनुप्राणित भेल आर बँगाल, आसाम, उड़ीसामे हिनक गीतक अनुकरणसँ एक नव भाषा साहित्यक उदय भेल जकरा ब्रजबुलिक संज्ञा देल गेल।
24. एहि प्रकारे प्राचीन कालहिसँ मिथिला धर्म, दर्शन आ विभिन्न शास्त्रक केन्द्रस्थली रूपमे विख्यात रहल अछि। वेद, वेदांत, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, साहित्य, कर्मकाण्ड कोनो एहन विद्या नहि अछि, जकर विश्व-विख्यात पण्डित एतय नहि भेलाह। मात्र प्राचीन आ मध्ययुगमे नहि अपितु वर्त्तमान कालमे अर्थात् बीसम शताब्दीमे सेहो एहि भूमिकेँ महामहोपाध्याय मीमांसक चित्रधर मिश्र, सर्वतंत्र-स्वतंत्र बच्चा झा, विद्या-वाचस्पति विश्व विख्यात वेदज्ञ मधुसूदन झा, महामहोपाध्याय वैयाकरण केसरी परमेश्वर झा, महामहोपाध्याय जयदेव मिश्र, महावैयाकरण विश्वनाथ झा, महामहोपाध्याय सर गंगानाथ झा, ज्योतिषी बबुआजी मिश्र, विख्यात विद्वान त्रिलोकनाथ मिश्र सदृश विख्यात विद्वान आ साहित्यमर्मज्ञक जन्म देबाक सौभाग्य प्राप्त अछि। एहिमे बच्चा झा अपना समयक दर्शनशास्त्रक अद्वितीय पण्डित छलाह आर दर्शन आ साहित्य विषयपर उच्च कोटिक रचना कयलनि। वैदिक साहित्यक प्रकाण्ड पण्डित मधुसूदन झाक ख्याति देश-विदेशमे विख्यात छलनि। काव्य आ काव्यशास्त्र आर शृंगारक क्षेत्रमे सेहो एतय "प्रसन्न राघव", "अनर्घराघव", "काव्यप्रदीप", "रसमंजरी" "रसिक सर्वस्व" आर संगीत शास्त्र सम्बन्धी ग्रंथ "संगीत सर्वस्व" आ "सरस्वती कण्ठाभरण"क रचना भेल। आधुनिक भारतीय आर्यभाषामे सर्वप्रथम गद्य ग्रंथ होयबाक गौरव मिथिला निवासी ज्योतिरिश्वर रचित "वर्णरत्नाकर"केँ प्राप्त

अछि।
25. आ एहि प्रकारे स्वतः सिद्ध अछि जे विश्वव्यापी भारतीय संस्कृतिक केन्द्र स्थल मिथिला रहल अछि, आर मिथिला चिरकालहिसँ अपन महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह धर्म, साहित्, दर्शन आ न्यायक क्षेत्रमे करैत रहल अछि।

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

प्रीति ठाकुर रचित "गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा" पढ़बाक आ देखबाक सुयोग भेल। देखबाक ऐ लेल जे ई पोथी चित्रकथा थिक अर्थात चित्रक माध्यमे संकलित सोलह कथाक चित्रण लेखिका कएने छथि। सोलह कथामे नौ कथाक नायक छथि गोनू झा आ शेषमे रेशमा चूहड़मल, नैका-बनिजारा, भगता ज्योति पँजियार, महुआ घटवारिन, राजा सलहेस, छेछन महराज आ लालिदास। सभ पात्र मिथिलाक संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैत।
वस्तुतः संस्कृति शब्द अत्यन्त व्यापक अछि, दोसर शब्दमे कहल जा सकैत अछि जे एहन व्यवहार जे परम्परासँ प्राप्त होइत अछि, संस्कृति कहबैत अछि। एकरा

সামাজিক প্রথাক পর্যায সেহো কহন জা সকৈত অছি। প্রেম, ত্যাগ, দযা, করুণা, সহানুভূতি আদি সমস্ত গুণ সংস্কৃতিক অন্তর্গত সমাহিত হোগত অছি। সংগহি কনাক উদ্দেশ্য জোঁ সৌন্দর্যক অনুসংধান এরং রসানুভূতি হোগত অছি তঁ কনাক সংবঁধ নোক সংস্কৃতিসঁ বহুরঁ আরশ্যক ভঽ জাগত অছি। গোনূ ঝাক কথা মিথিনাক ঘব-ঘবমে জনকণ্ঠমে ব্যাপ্ত অছি প্রাযঃ প্রত্যেক মিথিনা নিরাসী অপন বুঁজুর্গসঁ গোনূ ঝাক কথা স্বননে হোএত আ পশ্চাত অপন বাঁন-বঁচা সংগী-সাথীকেঁ স্বনৌনে হোএত। তহিনা নৈকা বঁনিজাবা, সনহেস, ছেছন মহবাজ, ভগতা জ্যাতি পাঁজিযাব- অপন শৌর্য, রীবতা, পবাক্রম আ উদাত্ত ব্যক্তিত্বক কাবণেঁ কহিযো জোঁ নোকনাযক ছনাহ তঁ পাছাঁ নোকদেবতা রূপমে পূজিত হোমএ নগনাহ। তহিনা কানিদাস অপনা রিদ্বতা এরং পাণ্ডিত্যসঁ ভাবতীয সংস্কৃতিমে অপন মহত্ত্বপূর্ণ স্থান নির্ধাবিত কঽ নেনে ছথি। মহুআ ঘটৈরাবিনক আদর্শ প্রেম কথাএহুঠাঁ আদর্শ রূপমে চিত্রিত হোগত অমব ভঽ গেন অছি। পোথীমে সংকনিত প্রত্যেক পাত্র এরং কথা মিথিনাক সংস্কৃতিক প্রতিনিধিত্ব কঽ বহন অছি।

সংস্কৃতি নোক জীরনসঁ সম্বন্ধ বহৈত অছি। সমাজ আ সংস্কৃতিমে অভিন্ন সম্বন্ধ অছি কিএক তঁ সংস্কৃতিক নির্মাণ কান সাপেক্ষ হোগত অছি, জেনা সমাজমে নীক প্রত্যেক অনুকবণ হোগত অছি। কিছু অরধি পশ্চাত ও সমাজক প্রবৃত্তি ভঽ জাগত অছি। কানান্তবমে গ্রএহ প্রবৃত্তি সংস্কৃতিক রূপ ধাবণ কঽ নৈত অছি। এরং প্রকাবে বৃত্তি, প্রবৃত্তি আ সংস্কৃতিক ক্রম চনৈত বহৈত অছি। গ্রএহ কাবণ অছি জে সংস্কৃতিক নির্মাণ আ রিনাশমে সময নগৈত অছি জখনকি সভ্যতামে পবিরর্তন ক্রম সমযমে

হোগত অছি। পোথীমে সংকলিত প্রত্যেক পাত্র অপন-অপন সমযক প্রতিনিধিত্ব করৈত মিথিলাক সংস্কৃতিক প্রতীক ছথি। কলাকাব, লেখিকা প্রীতি ঠাকুবজী বেখা আ বংগক মাধ্যমসঁ চিত্রকথাক বচনা কএলে ছথি। প্রত্যেক চিত্র কিছু সংকেতকেঁ প্রকট কঽ বহল অছি। অকাবণ বা অনাযাস কিছু নৈ বঁনাওল জা সকৈত অছি। প্রত্যেক চিত্র তথ্যামেক অছি, প্রত্যেক বেখা একটা কথাক নির্মাণ কঽ বহল অছি

। মিথিলাক জন-জীবনক অভিব্যক্তি এ চিত্র কথাক মাধ্যমসঁ ভেল অছি। বস্তুতঃ লোক চিত্র কলা তকোলীন লোক জীবনক চিত্রণ করৈত অছি জেনা লোকগীত, লোকনৃত্য, লোকভাষা আদিমাধ্যমসঁ তকোলীন সমাজক স্বরূপক জ্ঞান হোগত অছি।

ফূলক সুগংধ সদৃশ সংস্কৃতি অলক্ষ্য হোগত অছি মুদা বাতাবরণকেঁ অপন সৌবভসঁ সতত সুবাসিত করৈত বহৈত অছি। ও আন্তবিক গুণ থিক জকব মাত্র অনুভব কএল জা সকৈত অছি। একব স্থান হৃদযমে বহৈত অছি, বাঁহ্য আচবণ ওকব মাত্র প্রতিফল থিক। এ সংস্কৃতিক অভিব্যক্তিক মাধ্যম কলা হোগত অছি জেনা নৃত্য কলা, সংগীত কলা, চিত্র কলা। চিত্রকলা মূক হোগত অছি জকব ভাষা বংগ আ বেখা চিত্র হোগত অছি। কলাকাব প্রীতি ঠাকুবজী মিথিলাক এ সংস্কৃতিকেঁ নৈ মাত্র বংগ বেখাক মাধ্যমসঁ চিত্রিত কএলে ছথি অপিতু শব্দক মাধ্যমসঁ চিত্রিত করৈত অপন কলাকৃতিক সৌন্দর্য দ্বিগুণিত কঽ দেলে ছথি। বস্তুতঃ হিনক ও প্রযাস সর্বথা প্রশংসনীয ছন্হি।

কলা মানব সংস্কৃতিক উঁপজ থিক, কলা আ মনুষ্যক সম্বন্ধ অবিভাজ্য অছি। মানব দ্বাবা কলাক প্রতিষ্ঠা ভেল অছি

আ কলা দ্বারা মানব আমেগৌরব আ আমেচৈতন্য প্রাপ্ত কএনে অছি। কলাক মাধ্যমে সঁ মানব জীবনমে মাধুর্য আ সৌন্দর্যশীলতাক জন্ম ভেল আ কর্ম মধুব আ সুন্দব বঁনি গেল। বস্তুতঃ সৌন্দর্যক মূলভূত প্রেবণা কলাক উদ্গম স্থল থিক আ সৌন্দর্যাভিরুচিক প্রমাণ। মনুষ্যক অনুকবণ প্রবৃত্তি থিক। আদিযেকালসঁ প্রাকৃতিক দৃশ্য মানব মোনকেঁ আনন্দিত কবৈত বহল আ ঐ দৃশ্যক নির্মাণ কববাঁক ইচ্ছা মোনমে জাগৃত ভেল আ ওএহ ইচ্ছা জন্মক প্রেবক ভেল। প্রীতি ঠাকুব জীক আমেগৌরব এবং আমেচৈতন্য ঐ চিত্র কথাক বচনা লেল প্রেবক ভেললি, আমেগৌরব মিথিলাক সংস্কৃতিক প্রতি এবং আমেচৈতন্য সৌন্দর্যশীলতাক কাবণেঁ আ জকব প্রতিফল ভেল বিভিন্ন কালক মিথিলাক লোকনাযকক চিত্রকথাক মাধ্যমসঁ নিরূপণ কববাঁক।

প্রিন্ট মীডিযা আ ইলেক্ট্রানিক মীডিযাক কাবণেঁ জখন সম্পূর্ণ বিশ্বক গ্লাবঁলাইজেশন ভ২ গেল অছি, মিথিলাক চিত্রকলামে অন্য কলাক বিধা সদৃশ সেহো পাবম্পবিক স্বরূপমে পবিবর্তন ভেল অছি। পবিবর্তনেক দোসব নাম তঁ বিকাস থিক। লেখিকা মিথিলা চিত্রকলাক পাবম্পবিক স্বরূপমে পবিবর্তন তঁ কএলে ছথি মুদা লোক চিত্রকথাক মাধ্যমসঁ একব সার্থকতা আ প্রাসংগিকতামে সফল ভেল ছথি। কিএক তঁ মিথিলাক চিত্রকলা মূল্যগ্রাহী অথবা কোমল হৃদয কলাকাবক মাত্র হ◌ॉবী থিক অপিতু পবম্পবারুঢ় সমাজক একটা অভিন্ন জীবন-দর্শন থিক, সংগহি মৈথিল সংস্কৃতিক জীবনক এক অবিচ্ছিন্ন অংগ সেহো।

সমাজক পবিবর্তনক প্রভাব কলা আ সাহিত্যপব পড়ব স্বাভাবিক অছি সংগহি কলা আ সাহিত্য সমাজক প্রতিবিম্ব

সেহো থিক। বস্তুতঃ সাহিত্য যুগক প্রবৃত্তি এবং প্রযোজনক উপেক্ষা নৈ কয় সকৈত অছি। কলা জীবনসঁ নিরপেক্ষ নৈ রহি সকৈত অছি কারণ একর আধার মানর জীবন থিক। একর পোষণ জীবনসঁ হোইত ছৈক, একর প্রভার মানর জীবনপর পড়ৈত ছৈক, তেঁ কলাকার জীবনক প্রতি অপন উত্তরদাযিত্বক উপেক্ষা নৈ কয় সকৈত অছি। আ এএহ কারণ অছি জে কলাক স্বরূপমে পরিরর্তন হোইত রহৈত অছি। ঐ রৈশ্বিক প্রতিযোগিতাক যুগমে মিথিলাক চিত্রকলা জগমে মাত্র কোহরৈর, ডালা, অষ্ঠদল, অরিপন, মংডপ, রেদী আদিক চিত্র নির্মাণক পরিধিমে ওঝরাযল অছি, আরশ্যক অছি জে মিথিলা চিত্রকলাক রিষযরস্তুমে রিস্তার কএল জাএ। লেখিকাক ঈ সর্রথা নূতন প্রযাস ছন্হি। প্রীতি ঠাকুরজী পরম্পরাগত রিষয রস্তুসঁ আগাঁ রঢ়ি মিথিলাক লোককথাকেঁ চিত্রকথাক মাধ্যমে চিত্রিত করৈত মৈথিলী সাহিত্য মধ্য সর্রথা নূতন শৈলীক রচনা কএলনি অছি। নিশ্চিত রূপসঁ মৈথিলী সাহিত্যক ভংডারমে শ্রীরৃদ্ধি তঁ ভেল অছিযে, ঈ নর শৈলী, নর রিষয রস্তু এক শৈদ্ধমে নর স্প্রাগন সর্রথা প্রশংসনীয অছি।

সময পরিরর্তনশীল হোইত অছি, ঐ রঁদলৈত সমযক সংগ জে অপনামে পরিরর্তন নৈ আনৈত অছি সে রিকাসক ধারাসঁ রাহর ভয় জাইত অছি। তেঁ সমযক যথার্থক চিত্রণ কলাক মাধ্যমসঁ হোএর আরশ্যক অছি, তখনে কলা অপন প্রাসংগিকতা সিদ্ধ কয় সকৈত অছি। রর্তমান রঁদলৈত আধুনিক সমাজক আরশ্যকতাক অনুরূপ লেখিকা ঐ পোথীক রচনা কএলনি, ঈ প্রাসংগিক তঁ অছিযে সংগহি লোকোপযোগী সেহো অছি।

সংগহি একটা তথ্য আর মহত্বপূর্ণ অছি। মৈথিলী লোক

সাহিত্যক সংরক্ষিকা মিথিনাক মহিনা নোকনি ছথি, কিএক তঁ হিনকহি কণ্ঠমে নোকগীত আ নোকনৃত্য আ হিনকহিঁ হাথে নোকচিত্রকনা জীরিত অছি। ত্যাগ আ তপস্যাসঁ যুক্ত হিনকা নোকনিক সাংস্কৃতিক চেতনাসঁ নোককনা জীরিত অছি তথা হিনকহি নোকনিক কোমন তূনিকাক প্রসাদাত মিথিনাক চিত্রকনা জীরিত, সংরক্ষিত এরং রিকসিত ভ২ বহন অছি।
আ ঙা পোথী "গোনূ ঝা আ আন মৈথিনী চিত্রকথা"ক বচযিতা সেহো মহিনা ছথি। ঙা সর্রথা স্তুত্য থিক।

জিনগীক জীত উঁপন্যাসক সমীক্ষা

শ্রী জগদীশ প্রসাদ মংডনক উঁপন্যাস 'জিনগীক

जीत' पढ़ाक अरसब भेटैन। उपन्यास पढ़ि बुझाएल जे ई उपन्यास तँ वास्तवमे मिथिलाक संस्कृतिक जीत थिक, जीवनक जीत थिक, संस्कारक जीत थिक। जौं एक शब्दमे कहल जाए तँ यएह कहल जा सकैत अछि जे ई 'लोक'क जीत थिक। जखनहि लोकक जीत थिक तँ स्वभाविक अछि जे एहि उपन्यासक मध्य लोक साहित्यक सुगन्ध चतुर्दिक पसरल हएत।

उपन्यासक कथा मिथिलाक एकटा गाम कल्याणपुरक थिक, जतए जीविकाक मुख्य साधन थिक कृषि, जतए आधुनिक वैज्ञानिक युगक प्रकाश नहि पहुँचल अछि। जतए उच्चतम शिक्षाक लक्ष्य थिक बी.ए. पास करब आओर जतए एकैसम शताब्दी एखन धरि नहि आएल अछि आओर नहि आएल अछि शागनि ंग गंडियाक प्रकाश। उपन्यासकार प्रमुख पात्र छथि नायक बँचेलाल, नायिका कमा, मुख्य पात्र छथि बँचेलालक माए सुमित्रा, अछेलाल, अछेलालक पत्नी मखनी इत्यादि। कथा अछि बँचेलालक द्वन्द्व एवं द्वन्द्वसँ उपजल अवसादक एवं जीवन संघर्षक, सुमित्राक मिथिलाक नारीक गरिमाक अछेलालक कर्त्तव्य निष्ठताक, संगहि मानवीय संघर्षक, द्वन्द्वक आओर भविष्यक आशा-आकांक्षाक। नायकक मानसिक द्वन्द्व जौं जीवनक सार्थकता लेल अछि तँ नायकक माए सुमिताक दृष्टि स्पष्टे मानवीय गरिमासँ युक्त अछि। नायकसँ एक डेग आगाँ बँढ़ि द्वन्द्वसँ मुक्तिक बाद देखबैत प्रकाश पुंज मध्य अछि। नायकक पत्नी कमाक चरित्रपर प्रकाश नहि देल गेल अछि, ताहि कारणे कमा उपन्यास मध्य गौण पात्र भऽ गेल छथि।

কোনহুঁ সমাজক জাতীয মনীষা, সাম্প্রদাযিক চেতনা, জাতীয রোঁধ মানরীয মূন্য খাওব জীরন দর্শনক রিরিধ পক্ষমে খরগত হোএরা নেন ওকব নোককেঁ বুঝব খারশ্যক। উঁপন্যাসকাব এহি উঁপন্যাস মধ্য খত্যন্ত গমানদাবী পূর্রক খপন সমাজ, মিথিনাক সমাজ, বহন-সহন, খাশা-খাকাংক্ষা এরং সমযক সত্য নিখনে ছথি। সমাজক নিম্ন রগর্ক, হৃষক রস্ত্রক জীরনক চিত্রণ খত্যন্ত গমানদাবী পূর্রক কএনে ছথি। উঁপন্যাসকাব মিথিনাক রাস্তরিক চিত্রণ কবরামে সফন ভেন ছথি, মিথিনাক তাত্কানীন দশাক চিত্রণ কএনে ছথি তঁ মাত্র ওঁব মাত্র খপন ভাষা, দেশ এরং সামাজিক দাযিত্র সমাজক প্রতি প্রেম এরং প্রতির্বদ্ধতাক কাবণে হিনকাসঁ ঙা উঁপন্যাস নিখরা নেনে খছি। যদ্যপি কথাক প্ররাহ খরকদ্ধ খছি তথাপি কথা খপন খংকমে দেশ-সমাজ, মানর, প্রকৃতি, সংস্কৃতি, রিকৃতি খাদিকেঁ সমেটি খপন নক্ষ্যপব পহুঁচরামে সফন ভ২ গেন ছথি। হিনক উঁপন্যাসমে হিনক র্যক্তিত্র পাঠকক সমক্ষ স্পষ্ট প্রতীত ভেন খছি।

জীরন দর্শন খাওব খাধ্যাত্মসঁ ন২ ক২ মনুষ্যক সমস্ত বাগ-রিবাগ 'নোক'মে রিদ্যমান খছি। মিথিনাক নোক সংস্কৃতি সংরাহক উঁপন্যাস 'জিনগীক জীত'মে উঁপন্যাসকাব জীরনক ওহি সত্যকেঁ খাত্মসাত্ কবরাঁক প্রযাস কএনে ছথি জাহিমে জীরনক সমস্ত 'সাব' নুকাএন খছি। উঁপন্যাসক মধ্যমে উঁপন্যাসকাব মনুষ্য জীরনক সমস্ত বাগ-রিবাগ, খাশা-খাকাংক্ষা, দীনতা-হীনতা, উঁত্কর্ষ-খপকর্ষক চিত্রিত করৈত রস্তুত: জীরনক শাশ্রত তথ্য- জীরাক গচ্ছাকেঁ উঁজাগব কবরামে সফন ভেন ছথি। রস্তুত: ঙা উঁপন্যাস ঙা উঁপন্যাস

ভাষা অথবা বোলীমে জাতীয স্মৃতিক আ সাহিত্যিক রূপ থিক জে সমব জাতীয চেতনা অথবা জাতীয বোধকেঁ সুরক্ষিত বাখনে অছি। মিথিলাক সূচ্চা চিত্র অংকিত করৈত উঁপন্যাসকাব অপন জীরনানুভরসঁ সংচিত কএল 'সাব' আওব 'সত্য'কেঁ অভিব্যক্ত কএলে ছথি। রস্তুত: ঞা উঁপন্যাস মিথিলাক সংস্কৃতিক প্রতীক থিক আওব একব সাব থিক শাশ্বত। উঁপন্যাস মধ্য প্রকৃতি, পবিরেশ, আধ্যাত্ম, সমবসতা আওব সমন্বযক ছরি আওব ছটা সর্বত্র দৃষ্টিগোচব হোগত অছি।

রর্তমান সাহিত্যমে ঞা প্ররৃতি প্রমুখ অছি- এক সমাজোন্মুখ দোসব ব্যক্তি নিষ্ঠা তথা আত্ম কেন্দ্রিত। উঁপন্যাসকাবক প্ররৃতি সমাজোন্মুখ অছি। সম্পূর্ণ উঁপন্যাস মধ্য মিথিলাক গামক লোকক বহল-সহল, অচাব-রিচাবক চিত্রণ এতেক সজীর অছি জে পাঠককেঁ ওহি লোকমে লঽ জাগত অছি, জিনকা গাম ছুটি গেল ছলহি। উঁপন্যাস মধ্য মিথিলাক সমাজক চিত্র এতেক রাস্তরিক রূপমে চিত্রিত্র ভেল অছি জে মিথিলাক মাটি-পানিক সুগন্ধসঁ পাঠকক হৃদয সহজহি আহলাদিত ভঽ জাগত অছি। রর্তমান সমএমে গামক লোকক পলাযল শহব দিশি ভঽ গেল অছি, গাম পাছাঁ ছুটৈল জা বহল অছি। মুদা পাঠক উঁপন্যাস পঢ়ি পুন: গাম ঘুবি জাগত অছি, গামক স্মৃতিসঁ পাঠক বাঁন্হল বহি জাগত অছি।

সামাজিক প্রশ্নক প্রতী সজগ উঁপন্যাসকাব অপন এহি বচনামে সামাজিক জীরনক অর্ন্তরিবোধ, রিসংগতি এরং পবিরেশক চিত্রণ করৈত, সামাজিক প্রশ্নক নিদান মূলত: ব্যক্তিমে তাকরামে সফল ভঽ গেল ছথি। মিথিলাক গ্রামীণ সমাজক, নিম্ন রর্গক এরং কৃষক

সম্প্রদাযক মান্যতা এরং পবম্পবাকেঁ প্রস্তুত কবৈত উঁপন্যাসকাব উঁপন্যাসকেঁ অত্যন্ত সংরেদয রঁনা দেনে ছথি সংগহি একটা নর সংদেশ– আশাক সংদেশ, ভরিষ্য নির্মাণক সংদেশ দেরাক সেহো প্রযাস কএনে ছথি। এহি সংদেশকেঁ উঁপন্যাসকাব নোকক ভাষামে ব্যক্ত কবৈত সংকীর্ণ এরং অব্যরহাবিক পক্ষকেঁ মানরীয সবোকাবসঁ জোড়ৈত কন্পনাশীনতা এরং সংরেদন শীনতাকেঁ কেন্দ্রমে বাখি অপন উঁদেশ্যকেঁ চিত্রিত কববামে সফন ভ২ গেন ছথি। 'রঁহ্জন হিতায রঁহ্জন স্বখায'ক ধ্বনি বুঁনংদ কবৈত উঁপন্যাসকাব দযা, মমতা, আস্থা, ত্যাগ, পবোপকাব সদৃশ মানরীয গুণক পক্ষধব প্রতীত হোগত ছথি। দোসব দিশি এহি গুণকেঁ প্রাপ্তিক দিশ নির্দেশ সেহো কএনে ছথি। আধুনিক বুঁদ্ধিজীরী মানরক কার্য, জ্ঞান আওব গচ্ছাক বীচ তানমেনক অভার আধুনিক জীরনক রিডম্রঁনা থিক। ঙ্দা উঁপন্যাসকাব মিথিনাক সবন, নিশ্ছন এরং সহজ নোকক চিত্রণ কবৈত রস্তুত: মিথিনা শুদ্ধ, পরিত্র এরং সত্যস্রাযনক চিত্রণ কএনে ছথি।

উঁপন্যাসক সভসঁ পৈঘ রিশেষতা থিক সমাজক নিম্নরক্সক বোঁনচানক ভাষা, নোক সংরাদ এরং নোকোক্তিক প্রযোগক সংগ সমাজক রিষমতা এরং রিসংগতিপব প্রহাব কবব। অপন জীরনানুভরকেঁ অনগ শৈনী এরং শিন্পক মাধ্যমসঁ নিরূপিত কববামে উঁপন্যাসকাব সফন ভ২ গেন ছথি। সংগহি গহো সত্য জে উঁপন্যাসকাবক অর্ন্তমন অত্যন্ত কোমন তত্ত্বসঁ নির্মিত ছনহি তেঁ হিনক উঁপন্যাস মধ্য 'বিসেপটৌরিটৌক' স্তব রঁহ্ত গাঢ় ভ২ গেন ছনহি। উঁপন্যাসকাব প্রমাণিত ক২ দেনে ছথি জে সহজ নোক ভাষাক

माध्यमसँ नहि मात्र अपन अन्तर्राविष्कवण सम्भव अछि अपितु प्रकावान्तवसँ मानवीय दायित्वक निर्वहन सेहो।

संवंधक अभावमे मनुष्य स्वखा जागत अछि। मनुष्य अपनामे बंद होएवा नेन नहि बँनन अछि। मनुष्यमे जतेक जे अछि, सभ ओकवा अन्यसँ माने दोसवसँ जोड़ैत अछि आ प्रसन्नताकेँ बाँटैत अछि। सम्भवत: यएह उँपन्यासकावक गर्ष्ट छन्हि। हम हिनक मंगनमय भविष्यक कामना कवैत अंतमे मैथिनी साहित्यक भंडावकेँ समृद्ध कववा हेतु साधुवाद दैत छियन्हि।

पोथीक नाम- जिनगीक जीत (उँपन्यास)

उँपन्यासकाव- जगदीश प्रसाद मंडन

प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, वाजेन्द्र नगव दिन्नी।

मून्य- २३० टाका मात्र।

प्रकाशन वर्ष- सन् २००९

पोथी पाप्तिक स्थान- पन्नवी डिस्ट्रीव्यूटर्स,

वाउ न.६, निर्मनी, स्वपौन, मोवाइन न. ९३१२४३०४०३

মহাকবি মার্কণ্ডেয প্ৰৱাসী

বাজসী স্ৱভাৱ, সৌম্য মুখ-মুদ্ৰা, শিষ্ট ব্যৱহাৰ শালীনতাক প্ৰতিমূৰ্তি প্ৰৱাসী জীক জীৱন সন্ সংৱতসঁ ৰাঁন্হল সমএ নহি থিক, অপিতু ওহি বচনাকাব কলাকাবক জীৱন থিক জে ৰব বৃক্ষ সদৃশ্য লোগত অছি। ৱস্তুত: প্ৰৱাসী জী কৱি-মহাকৱি, নিবংধকাৱ, পত্ৰকাৱ, সাহিত্যকাৱ-উপন্যাসকাৱ, কথাকাৱ-ব্যংগ্যকাৱ ছলাহ। জখন হম প্ৰৱাসী জীক ৰিষএমে কল্পনা কৰৈত ছী তঁ মোনমে একহিটা ৰাঁত অবৈত অছি জে প্ৰৱাসী জী কাৰ্যক স্তবপৱ, সাহিত্যক স্তবপৱ ৰিচাৱ আ ৱ জীৱনক স্তবপৱ সমস্ত সংকীৰ্ণতাকেঁ তোড়ৈত আধুনিক সাংস্কৃতি চেতনাক সংৱাহক ছলাহ। প্ৰৱাসী জী সমএক তানকেঁ চিন্হলনি, সমস্ত প্ৰভাৱকেঁ গ্ৰহন কেলনি, ওৱ অৱ্যানাত কএললনি ওৱ তাহি কৱণ্। হিনক জীৱনক সমএক সীমা -সীমা হীন- ভঽ গেল অছি।

প্ৰৱাসী জীকেঁ ৰুঝৱা লেল দূ স্তবপৱ ৰিচাৱ কৱৱ আৱশ্যক ভঽ জাগত অছি- পত্ৰকাৱক ৰূপমে

তথ্যাত্মক সমএক প্রতীতি ওঁব সৃজনশীন বচনাকাবক ৰূপমে হ্নক শাশ্রিত কান রোঁধ। পত্রকাবক সমএ ঠোস তথ্যক সমএ মোগত খছি ওঁব জাহি ঠাম সামযিক ঘষ্টনা ওকব চেতনাকেঁ নিবন্তব মথৈত বহৈত খছি। তাত্কানীন সমস্ত রিভত্স ঘষ্টনাসঁ হিনকা প্রত্যক্ষীকবণ ভেন ওঁব সমযক এহি ধাবকেঁ হিনক পত্রকাব উঁজাগব কএনক, ওঁব ঙা প্রগষ্ট ভেন খার্যরির্তক সম্পাদকক ৰূপমে খক্ষব জগতক সম্পাদক ৰূপমে মিথিনা মিহিবমে ঝামনানক ঝামা, মাষ্টি–পানিমে কহননি। গোনূ ঝা 'ৰ্যগ্য–স্তম্ভ ৰূপমে প্রৱাসী জীক পত্রকাবক ওঁব সমযক রিষম প্রবিস্থিতি ওকবা সামাজিক চেতনাসঁ যক্ত নর যথার্থি পবক দৃষ্টি প্রদান কএনক ওঁব জাহিমে হিনক পত্রকাব দেশক বাজনীতিক খার্থিক এরং সামাজিক রিসংগতিসঁ উঁত্পন্ন সংকষ্টসঁ সমংজনক প্রযাস কএনক।

দোসব দিশ হিনক বচনাকাব শাশ্রিত সমযক ধাবাসঁ জ্ড়ন বহন। শাশ্রিত সমযসঁ জ্ড়রাক ভার হিনকা খন্তর্দৃষ্টি প্রদান কএনক ওঁব করি প্রৱাসী জী খাত্যোনষ্জিক প্রক্রিযাসঁ স্থাপিত ভৎ শাশ্রিত মূন্যক প্রতিষ্ঠা কবএ নগনাহ, সংগহি খপন বচনা দ্বাবা ওহি মূন্যকেঁ সার্থকতা প্রদান কবএ নগনাহ। প্রৱাসী জী মানর রঘষ্টনক ওহি কানমে মানর জিজীরিষাকেঁ স্থাপিত কবএ নগনাহ।

প্রৱাসী জী খাগ হমবা নোকনিক রীচ নহি ছথি, খার একষ্টা দূবী রঁনা কৎ হ্নক বচনা ওঁব জীরনকেঁ দেখন জা সকৈত খছি। তথাপি এতেক ধবি সত্য জে ও কার্যসঁ মাত্র প্রেমেষ্টা নহি কবৈত ছনাহ খপিত্তু জীরনসঁ থাকি কৎ কার্যেমে শাঁতি প্রাপ্ত কবৈত ছনাহ। কার্যহুঁমে গীত কার্যসঁ প্রেম হিনক সভঠাম

उँजागव होएत बहन। किएक तँ आदिम मानर-मनक आदिम उँद्गाब थिक गीत कार्य। आदिम आर्यन्मक प्रथम चेतना, सौर्न्दय रोँधक प्रथम उँन्मेष तथा आदिम ह्रदयक प्रथम स्पन्दन थिक गीत कार्य, ओव ओ स्वबक्षित अछि उँषा गीतक रूपमे, उँर्रशी-प्वस्वंरॉक सम्रेदना-सम्रादमे तथा गन्द्र-रुबणक रन्दना-अर्चनामे ओव एहि प्राचीन पवम्पवाक प्रथम नि प-रॅन्धन थिक रेद, रिशेषत: सामरेद। कार्य जोँ गीतकेँ भिन्न अस्तित्र प्रदान कएनिहाब प्रधान तत्र थिक स्रान्भूति, जाहिसँ ओ रिषयी प्रधान (subj ect i ve) भऽ जाएत अछि ओव एकबहि अभारमे कार्य रिषय (obj ect i ve) भऽ जाएत अछि। तथापि गीत कार्य नेन स्रान्भूतियोसँ महत्रपूर्ण भऽ जाएत अछि बागात्मक रृति। बागक संरॅध बतिसँ अछि ओव बति स्थायी भार थिक, जे भक्ति एरं श्रृंगाब दुनूमे पाओन जाएत अछि। यएह कावण थिक जे आदिम उँषागीत आधुनिक कान धबिक गीत कार्यक रिषय श्रृंगाबिक बहन आएन अथरा भक्ति। दुनू प्रकाबक भार रोधमे प्रधान भऽ जाएत अछि स्रान्भू त। उँषाक चित्रणमे रैदिक ॠषिक एहने स्रान्भूति अछि एरं ॠग्रैदिक रुणक स्तुतिमे एकान्त तन्मयता। रस्तुत: बागात्मक भाराधाबित (बतिभार) चाहे श्रृंगाबिक भारना हो अथरा भक्ति भारना दुनूमे द्रष्टाक स्रान्भूतिक अहम भू मका बहैत अछि। ओव यएह स्रान्भूति भेटैत अछि प्ररासी जीक गीतमे।

हुनकासँ भेन रातकेँ जोँ स्मवण कएन जाए तँ यएह स्पष्ट होएत अछि जे गीतक प्रतीक्षा हुनका बाग रिनक्षण छन। गहो सत्य अछि जे अपन

কার্যপব চচর্সিঁ ও সদৈর খপনাকেঁ রঁচরৈত বহনাহ। একটা সংরাদমে সংকোচক সংগ কহনে ছনাহ– "খপন কাজক মর্যাদাক ভীতব ঔব ওহিমে উঁপনরঁধ খরকাশক কাবণ, হমবা কিছু কহরাক খরসব জৌঁ খন্যত্র নহি ভেটৈত খছি তঁ খাপদ ধর্ম কাবণ কার্যে, রিশেষ কঽ গীতে হমবা মাধ্যম ভেটৈত খছি, জতয হম খপন রাঁত রিনা কোনহুঁ নাগ–নপেটক কহি সকৈত ছী। কহি সকৈত ছী জে কার্যে হমবা নেন সভসঁ নীক মাধ্যম বহন খছি।"

এহি ছোট–ছীন খানেখমে প্ররাসী জী বচিত সমস্ত বচনাক মূন্যাঁকন খসংভর, তেঁ হম মাত্র িহনক কার্য সংকন্ন 'হে হম ভেটর'ক খাধাবপব, হিনক সান্নিধ্যকেঁ পুন: পুন: স্মবণ কবৈত, হিনক র্যক্তিত্র মূন্যাঁকন জে হমবা নেন খসংভর থিক, খপন র্যক্তিগত খনুভরকেঁ পাঠকক সংগ রাঁটএ চাহিত ছী। যদ্যপি সান্নিধ্যক র্যক্তিগত স্বখকেঁ শরঁদ দ্বাবা র্যক্ত কবরঁ খসংভর হোগত খছি, শরঁদক সার্মথ্যক একটা সীমা হোগত খছি। তথাপি কিছু শরঁদমে র্যক্ত কবরাক সংভরত: প্রযাস তঁ কএনে জা সকৈত খছি।

প্ররাসী জীক প্রথম করিতা 'হম ভেটর' ভরিষ্যক সংকেত মাত্র নহি থিক খপিতু খপন সহজ ঔব রিরেকশীন ভাষাক মাধ্যমসঁ প্ররাসী জী ঙ প্রমাণিত কঽ দেননি জে এহি 'স্রান্ত: স্বখায' রিধাক মাধ্যমসঁ নহি মাত্র খপন খর্ন্তপবিষ্কবণ সম্ভর খছি খপিতু প্রকাবান্তবসঁ মানরীয দাযিত্রক নিরাহিণ সেহো। 'হম ভেটর' কার্য সংগ্রহক রৈশী করিতা ছোট–ছোট খছি জাহিমে ছোট–ছোট হৃদ্দা সজীর ঔব মার্মিক ক্ষণকেঁ সংযোগী কঽ বাখন গেন খছি। এতএ করিক নিজী

গচ্ছা খছি, সমযক দরার্ব খছি, ভাষাক গম্ভীবতা খছি, খাস্থা খছি ওব নর রাঁষ্ট তাকরাক রৈচৈনী সেহো খিছ। কহরাক তাত্পর্য জে এহি ছোষ্ট–ছোষ্ট কার্যসঁ প্ররাসী জী কার্যস্রাদক একটা রিশান পবিধিক নির্মাণ কএনে ছথি। খপন সামাজিক সরোকাব ওব প্রকাবান্তবসঁ খপন মানরীয দাযিত্রপব ভবোসা কবৈত প্ররাসী জী কহি উঠৈত ছথি– “জহিযা–জহিযা দৃদএহীনতা খষ্টকত মোনক রাষ্টপব। হম ভেষ্টর–গতিহাস–নদীক চিক্কন চ্নহ্ন ধাষ্টপব। জহিযা–জহিযা মৈথিনত্র হাবন থকিযাএন সন নাগত। হম ভেষ্টর–তিনকোব জকাঁ–চতবন সাহিত্যক রাষ্টপব।” করি কর্মক যএহ দাযিত্র প্ররাসী জী নেন ভরিষ্যক মহাত্রাকাংক্ষা থিক। তখনহি তঁ শৈর্ব্দক খিনাড়ী শৈর্ব্দক শক্তি ওব সীমাক পড়তান কবৈত কহৈত ছথি– “খাগ খর্থ রিহীন ভাষাণ মাত্র করিতা খছি। খাগ মোনক রাঁত কহরামে খস্বরিধা খছি।” হ্নদা করি নিবাশ নহি ছথি, কহৈত ছথি– “প্ররাসী কেব গজনমে কনৈএ মিথিনাচনক মহিমা।” স্বরাসিত সাধনা খছি নষ্ট ভ২ বহনে, ত্তবন্ত সম্হান্ধ। জীরনক সমস্ত রিডম্র্বনাকেঁ চিত্রিত কবৈত প্ররাসী জী কহি উঠৈত ছথি– “খপনে ঘবমে খার প্ররাসক– খছি রিডম্র্বনা প্ররাসী খপনে দাঁত খপন খঘবক হ্নদ্রিত কিতার্বকেঁ হ্নতবৈএ।” প্বন: করি খাশীরাদী হোগত কামনা কবৈত ছথি– “চনহ প্ররাসী: খষাঢ়ক খাহ্রান কবী, শীতন জনক কামনা মনমে শেষ খছি।”

কার্যক এ্রাহষ্টক খপেক্ষা কথ্যক গম্ভীবতা ওব সাদগীপব হিনক রিশেষ ধ্যান ছনহি, তখনহি তঁ শৈর্ব্দক চযনমে তত্সম, তদভর খথরা খন্য দেশেজ

शब्दक प्रयोग करि सायास नहि करैत छथि अपितु कथ्यकेँ यांत्रिक होएबाक आयास पाठककेँ नहि होमए दैत छथि। जखन करि कहैत छथि- ओ मैथिलीक नमस्कार छथि : प्रवासी, ओ एन-मेन नगे छथि। ततसम प्रणाम- सन। अथवा स्वशब्दमे, स्वगंधमे, स्वरश्मिमे बँसल प्रवासी, सत्यपर शिर जकाँ ठवि जागल स्वन्दवता। वस्तुत: हिनक प्रत्येक शब्द प्रत्येक पंक्ति, प्रत्येक बचना पाठकक स्मृतिमे संयोगि कऽ राखन करिता थिक।

हिनक राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सोच स्पष्टे अछि, तदा हिनक कार्य राजनैतिक सामाजिक दस्तावेज नहि थिक। अपन अर्जित सत्य हिनक प्रत्येक कार्यमे मुखर भेल अछि। अनन्त रूपात्मक, अनन्त भावात्मक संसारक सूक्ष्म तदा ठोस पहचान हिनक कार्यमे चित्रित अछि। समए मनुष्यक अनुभूतिकेँ जाहि मूनरवर्ती सम्बन्धसँ दूर कऽ देने अछि हिनक कार्य तकरा जोड़बाक उपक्रम करैत पाठककेँ अपनहि जिज्ञासा मध्य ठाढ़ कऽ दैत अछि। प्रवासी जी अपन कार्यक बीज ततऽ समाजक ओहि बस्तुसँ नऽ कऽ आएल छथि, जकरा प्रति हिनक प्रतिबद्धता छन्हि। हिनक प्रत्येक करिता एहि वैविध्यमय जीवन जगतक भिन्न-भिन्न धरातल- आएल आशय- उद्देश्यक अनुगूँज नेने अछि तथा पाठककेँ अपन समए-संसारमे जोड़बामे सक्षम अछि। पाठक अपन सुख-दुख, त्रास-ताप, ओकर खालीपन भरल हराग अनुभूति हिनक कार्य मध्य आकि नैत अछि।

हिनक कार्यमे निहित व्यंग्य हिनक सम्प्रेषण क्षमताकेँ सहज बँना दैत अछि। ओकर यएह व्यंग्य

হিনক কার্যমে, হিনক দ্বন্দএমে স্বনগৈত খিাগকেঁ খভির্যক্ত কঽ দৈত খছি। প্ররাসী জী কোনো 'রাদ'ক করি নহি ছথি তথাপি একটা মৌন ক্রান্তি, একটা শানীন খসহমতি, একটা দৃঢ় খস্রীকাব ভার হিনক বচনামে সর্বত্র দৃষ্টিগোচব হোগ খছি। উঁপবসঁ চুপ ক্ষদা ভীতবসঁ ক্রন্দন হিনক বচনামে নুকাএন বহৈত খছি। যদ্যপি উঁপবকা মৌন হিনক কমজোবী নহি ছন্হি, খপিতু যস্র'ক নিষেধ কবৈত স্রাভারিকতাক নিকট খারিঁ জাগত খছি। দোসব শর্ব্দমে মানরতাকেঁ রঁচাএর ওব ভরিষ্যক নির্মাণক রেঁচৈনী, তড়ূপ ওব সংঘর্ষক খছি। রস্তুত: হিনক সংঘর্ষ দূ ধবাতনপব ক্ষখব হোগত খছি– এক দিশ জৌঁ জীরন এরং মানরতাকেঁ রঁচাএরা নেন খছি তঁ দোসব দিশ বচনাত্মকতাক সংঘর্ষ সেহো দৃষ্টিগোচব হোগত খছি। প্ররাসী জীক বচনা জৌঁ একহি সংগ জটিন ওব কঠিন খছি তঁ দোসব দিশ সহজ ওব সবন। এহি দূ রৈপবিত্যক মধ্য ও খপনাকেঁ সাধি নেনে ছথি। জেনা মানরতাকেঁ খপন শর্ব্দ–রাহন দঽ হম জগরৈ ছী কোনো সত্যক পহিন কন্পনা– কঽ হম করি কহরৈ ছী। রর্তমানকেঁ জে ভরিষ্য'দর্পণমে দেখি বহন ছী। তেঁ খনন্ত দিশ কার্যাধ্যাত্মিক স্রবকেঁ সাধি রঁঠ়ন ছী।

প্ররাসী জীক কার্যমে খন্বভর জগত খত্যন্ত র্যাপক খছি। সাহিত্যক প্রত্যেক দির্যামে হিনক ৰুচি খন্ত ধবি রঁনন বহননি। সংস্থ্রতি, রেদ–প্ববাণসঁ নঽ কঽ সংস্থ্রতি কনাসিক্স খছি কতেকো রেদ খছি জাহিমে প্ররাসী জী ড়্রন বহৈত ছনাহ। তাহি কাবণেঁ হিনক বচনা সংসাব রৈরিধ্যপূর্ণ সম্পন্নতাসঁ পবিপূর্ণ খছি। এহি দৃষ্টিএ প্ররাসী জীকেঁ স্মবণ কবৈত

ছী তঁ জে করিতা খাঁখিক সোম্মা খারিঁ জাগত খছি ও থিক– খারঁ চ্প বহনে চনত নহি কাজ, নাচাব যাক্ষিষ্ঠিব ছী, ৰাঁজূ খছি জনতন্ত্র কতএ। হমরে পিবরেশক বংগীন ঝ্ঠ, কহরামে খস্বরিধা খছি, পবশ্ববাম চাহী, মোনক রৈশানীমে গত্যাদি।

সমযক শাশ্রতমে প্ররাসী জী মৃত্যকেঁ জীরনক রিকাস মাননিনি, মৃত্য রোঁধ হিনকা জীরনক প্রতি খাশারাদী রঁনৌনে বহননি, মৃত্যকেঁ সৃষ্টিমে জীরনক সতত্ প্রক্রিযা ওব ওকব ক্রমগত রিকাসক ৰূপমে স্রীকাব কবৈত, শাশ্রত সত্যক উঁদ্ঘাটন কবৈত কহননি– 'হমব কৈনাস হমবেসঁ প্ষছেএ জে হম কে ছী, হমব জিহরকা শয্যাকপব– হমব শৰ্দো স্বতৈএ নহি। প্ররাসী গীত রঁন্হকী বাখি কহ ঙা গজন খননে ছী, পবীক্ষা খছথ্ কী একবো– ক্যো পঠৈএ রা স্বনৈএ নহি। ক্ষদা হিনক মৃত্য রোধ জীরনক প্রেবক রোধ থিক, জীরন ওব সমযক শাশ্রত শৃংখনাসঁ এক হোএরাক রিজয উঁদ্বাষ থিক।

খত্যন্ত সমৃদ্ধ শিন্পক স্রামী প্ররাসী জীক ভাষা সাধন ওব তাপসঁ যক্ত ছনহি। ও ভাষাকেঁ রঁহ্ত সচেত হোগত সহজ ক্ষদা খন্বভর–গম্যএটা প্রদান কএনে ছথি। ভাষাক উঁপমান এতেক ঠৈকা ওব প্রভারী ছন্হি জে পাঠককেঁ সহজহি রাঁন্হি নৈত খছি। রস্তুত: প্ররাসী জী রোঁন–চানমে ভাষাক শ্নেষাত্মক শক্তিক প্রযোগ কবৈত ভাষাক সর্বথা একটা নর মিজাজ দেননি খছি ওব শিন্পমে হিনক প্রাকৃতিক রাতারবণকেঁ পূর্ত কবরাক রিশিষ্টতা সর্বথা খন্বপম ছন্হি।

রস্তুত: একটা গমানদাব বচনাকাবক নিযতি যএহ হোগত খছি জে ও সম্পূর্ণ রিশ্রক কান–

কষ্ট রিষ ঋপন হৃদএমে ধাবণ কবৈত, জীরন মংথনসঁ নিকনন ঋমৃত বচনাক মাধ্যমসঁ সমাজকেঁ প্রদান কবৈত ঋছি। যএহ বচনাকাবক ঋাত্মদান হোগত ঋছি। রস্তুত: কনাকাব নিবন্তব ঋপন র্যক্তিগত মোনকেঁ এক মহানতব মোনমে, ওব ঋপন ক্ষণিক ঋস্তিত্রকেঁ এক রিশানতব ঋস্তিত্রক উঁপব ি নছাবব কবৈত বহৈত ঋছি। ঋপন নিজী র্যক্তিত্রকেঁ এক বৃহত্তব র্যক্তিত্রক নির্মাণ মিষ্টরৈত বহৈত ঋছি। যএহ মিষ্টনাগ সাহিত্যক ঋমবতাক মূনাধাব হোগত ঋছি, কিএক তঁ ভরিষ্যক উঁজ্জ্রন রাষ্ট এতহিসঁ নিকনৈত ঋছি। মানর মূন্যক নির্মাণ এতহি হোগত ঋছি। সপনাক নীর সেহো ঋছি ধবাতনপব বাখন জাগত ঋছি। রস্তুত: প্ররাসী জী ঋপন সম্পূর্ণ বচনামে এহনে মানরীয ঋাস্থা ওব জিজীরিষাক গরাবত বচি ঋমব ভহ গেন ছথি।



<u>খশোক</u>

রঁনৈত কম রিগড়ৈত রৈসী–স্বভাষ চন্দ্র যাদরক দোসব কথা সংগ্রহ

রঁনৈত রিগড়ৈত স্বভাষ চন্দ্র যাদরক দোসব কথা সংগ্রহ থিক। পহিন কথা সংগ্রহ 'ঘবদেখিযা' কবীরঁ ছব্বীস রর্ষ পূর্ব খাযন বহএ। এতেক খংতবান পব খাযন সংগ্রহ স্বাভারিক রূপেঁ নোকক ধ্যান খাকৃষ্ঠ কবৈত খছি। সে খদ্ধ দ্খাবে জে স্বভাষ চন্দ্র যাদর মৈথিনীক জানন–মানন কথাকাব ছথি। মৈথিনী কথা সাহিত্যমে স্বভাষক খপন রিশিষ্ঠ যোগদান খছি। খানোচক রুনানন্দ মিশ্রক কহরঁ ছনি জে মৈথিনী কথাক ক্ষেত্রমে একটা নিশ্চিত সীমাক খতিক্রমণ স্বভাষ চন্দ্র যাদরক রাদে খাবম্ভ ভেন। জে খখন্বক নর্যতম কথাকাব নোকনিক প্রিযতম খাস্থা খা পরিত্রতম রিশ্বাস রঁনি গেন খছি।

খপন কথা–সংগ্রহ 'ঘবদেখিযা'ক শীর্ষক কথা ঘবদেখিযা স্বভাষকেঁ মৈথিনী কথামে স্থাপিত ক২ দেনে ছন। ও কথা মিথিনা মিহিবক 15সিতম্ব্বব1974ক খংকমে পহিন রৈব ছপন বহএ। ও কথা 1977মে মৈথিনী খকাদমীক

কথা সংগ্রহমে খপন স্থান বঁনৌনক। কথাক সংগ দেন সম্পাদকীয টিপ্পণীমে কহন গেন জে ‘বীসম শতাব্দীক এহি উঁন্নত যদমে সমাজক একটা বস্তুক যথার্থ সঁ ওা কথা জে খংতবংগ সাক্ষাকোব কববৈত খছি, সে একে সংগ মোনমে খনিরর্চনীয খাহ্লাদ খা ভীতব ধবি পৈসি জাএ বঁনা খরসাদ সঁ ভবি দৈত খছি। কথামে ভাষা কোনা ফোটৈগ্রাফী কবৈত চনৈত ছৈক, তকব বঁড় স্বন্দব উঁদাহবণ ওা কথা খছি’। বস্তুতঃ ‘ঘবদেখিযা’ স্বভাষক খনেকো প্রসিদ্ধ কথামে সঁ এক থিক। ও কথা খভাবগ্রস্ত নোকক ঘবক পবিস্থিতি কেঁ বঁহ্ত স্বন্যস্ত ৰূপেঁ দেখবাঁক সংবেদিত কবৈত খছি। উঁপেনক সংগ পাঠক সেহো ‘কাকা’ক খার্থিক খভাব কেঁ দেখি চিংতিত ভ২ উঁঠৈত খছি। খাব বৈটীক বিযাহ নেন টাকাক জোগাড় কোনা হেতৈক? পাঠক সোচবা নেন বিবশ হোগত খছি।

নিশ্চিত ৰূপসঁ স্বভাষ মৈথিনী কথাকেঁ খপনা তবহক কিছু উঁত্তম কথা সভ দেননি খছি। ঘবদেখিযাক সংগ কাঠক বঁনন নোক, ফঁসবী খা মানি বঁহ্তো পাঠক খানোচক দ্বাবা প্রশংসিত ভেন খছি। ওা কথা সভ স্বভাষেক নহি মৈথিনীক নীক কথাক ৰূপমে মানন জাগত খছি। স্বভাষক নীক কথা খাবো খছি। হম এতহ কিছু খাব কথাক নাম নহ সকৈত ছী। একটা দ্খাঁত কথা, উঁতব মেঘ, জাসূস ফফব খা চোব, হীর্থ, পবিচয, বৈব-বৈব, নিহটৈ খা ফ্কনা। ওা সভ কথা খপন শিল্প ও কথ্যক সংত্তুননসঁ খভীষ্ঠ প্রভাব ছোড়বামে সফন ভেন খছি। কমসঁ কম শব্দ মে কোনো ব্যক্তি, ঘটনা খথরা ভাবক বাজীর ও ভাবপূর্ণ খংকন এহি কথা সভমে ভেন খছি। একটা কনাকাবক ৰূপমে স্বভাষ

রর্ণনসঁ রেঁশী চিত্রণমে খপন নিপুণতা দেখবৈত বহলা খছি। সে রিনা কোনো তাম-ঝাম, বংগ-বোগন কে। তেঁ স্বভাষক কথা সভ কখনো কঽ একটা দেখা-চিত্র, শব্দ চিত্র সন নগৈত খছি। সাহিত্যমে জেকবা বেখাচিত্র কহল জাগত খছি, ওহি মে কমসঁ কম শব্দ মে কলামেক ঢ়ংগ সঁ কোনো রস্তু, ব্যক্তি খথরা দৃশ্যক খংকন কএল জাগত খছি। এহিমে সাধন শব্দ হোগত খচি, বেখা নহি। তেঁ একবা শব্দচিত্র সেহো কহল জা সকৈত খছি। একব খংগ্রেজী নাম স্কেচ, ফোটো নহি থিক। বেখাচিত্র মে কথাক গহীবতাক খভার বহৈত খছি, পবংতু বেখাচিত্রমে নহি। ঞা সভ বাঁতক হোগতো কথা খা বেখা চিত্রমে বঁহ্ধা ভেদ কবব ক্ষশিকল হোগত ছৈক। স্বভাষ চন্দ্র যাদরক 'ঘবদেখিযা' সংগ্রহ মে পৈতীসটা কথা বহএ। বঁনৈত-বিগড়ৈতমে এক্কৈসটা কথা খছি। এহি এক্কৈসটা কথামে একটা কথা খছি ও নড়কী। ঞা কথা 'খসংগতি' নাম সঁ 'ঘবদেখিযা' সংগ্রহমে সেহো খছি। দুনূ কথামে ঘটনা একক থিক। ক্ষদা উঁপস্থাপন খা নিস্পত্তিমে খংতব খছি। এহি প্রকাবে একক ঘটনা সঁ নির্মিত্ত কথাক দূটা পাঠ, দূ শীর্ষকসঁ হমবা সভকেঁ ভেটৈত খছি। ঘটনা মহানগবক হোস্টল নগক থিক। মোটবমে বৈঁসি কঽ একটা নড়কা খা নড়কী চাহ পীনক। চাহ পীবিঁ কঽ দুনূ কপ নড়কী হাথমে বখনে বহএ। নবীন, জে ওকবাসঁ খপবিচিত বহএ, তকবা জাগত দেখনক তঁ পুছনকৈ জে কী খহাঁ ওহি দিস (চাহক দোকান দিস) জ বহল ছী? সবান খতম হোগতে নবীনক নজবি নড়কীক চেহবা সঁ উঁতবি কঽ ওকব হাথক কপপব চনি গেলৈ খা ও খপমান সঁ তিনমিনা গেল। ওকবা ভীতব ক্রোধ খা ঘৃণাক ধধবা

उँठलै। की ओहि दुनूक अगंठ कप नऽ जाएत ? नड़कीक नेत बूझितो ओ जबाब देनकै नहि। असंगति मे नवीन अंत धवि तिनमिनाएत बहैये आ सोचैये जे ओ किएक नहि कहि सकलै, 'हाउँ डिड यू डेयब ? ' कथा एहि ठाम खतम भऽ जाएत अछि। स्रदा ओ नड़की मे एकवराबरो कथाकेँ विस्ताव देन गेन छै। नवीनक मानसिक अंतर्द्वन्द्व छैक। ओ सोचैत अछि जे दुनू मे क्या दोषी बहन हेतै आ दुनू दोषी हेतै आ दुनूमे क्या नहि। कावण आबो भऽ सकैत छन। अंततः एतबेँ सद बहि गेलै जे नड़की उँदास भऽ गेन छलै आ नवीन दुखी। ओ सब बात ओ सोचने चन जा बहन छन। दुनू कथामे घटना कनियेंटा अछि। आब जे किछु अचि से मानसिके स्तव पव अछि। पहिनमे अपमानक बोध अंत धवि बनन छैक। एहि बातक पछतावा छै जे नड़की (असंगतिमे नड़कीक नाम कूकी थिक) के झाड़ि कऽ बँदना किएक नहि लेनक ? ओकबा ओकात किएक नहि देखा सकलै ! तोहब ओ मजान जे हमबा अगंठ कप उँठा कऽ नऽ जाए लेन कहबेँ ? स्रदा ओ नड़की मे ओ अपमान बोध अंततः समझौता मे बँदनि जाएत अछि। थोसथाम भऽ जाएत छैक। नड़कियो उँदास जे अनेबे कहनकै आ नवीनो दुःखी जे अगंठ कप नऽ जएतै तँ की भऽ जएतैक। स्रदा ओ सभटा मन कथे। मनेक भीतबमे चलैत। पजबैत आ मिझाएत। कथाक एहि दुनू पाठक विस्तावसँ तुलनामेक अध्ययन बहुत बोचक भऽ सकैत अछि।

बनैत बिगड़ैतमे संग्रहीत कथा सभसँ पूर्व कथाकाव 'अपन गप्प' मे कहैत छथि जे 'हमब बचना ओब किछु

नहि, देशी-कानक प्रति हमर प्रतिक्रिया थिक। हम अपन समयक सार तत्वकेँ प्रतिबिम्बित करए चाहैत छी। जीवन लेल जे किछु नीक आ श्रेयस्कर अछि, हमर रचना तकरे हासिल करए चाहैत अछि। हम एहन मनुक्ख गढ़ए चाहैत छी जे सभ सँ प्रेम करए। आ प्रेम वएह कए सकैत अछि जे सभक सर्वाधिक निकट हएत'। कथाकारक गप्पा आ कथा सभकेँ जँ देखी तँ लागत जे कथाकार अपन अभीष्ठ केँ बहुत अंशे धरि प्राप्त कए लेने छथि। जतए कतहु अभीष्ठक प्राप्ति नहि भए सकलनि अछि तँ से अभीष्ठक अस्पष्ठता आ ताहि कारणे उपेन्न शिल्पक कमजोरी थिक। प्रथम पुरूष कथावाचक रना अर्थात् कथा कहनिहार ओ कथा जननिहार जतए एक छथि से एगारह टा कथा अछि। एहि सभ कथा केँ आमोनुभूतिक निकट मानल कथा अछि। एहन कथा सभ अछि, अपन-अपन दुःख, आतंक, एकटा अंत, एकटा प्रेम कथा, कनिया पुतरा, कावरीव, रूश्ती, हत्या, दृष्ठि, वीत, बस्ता, हमर गाम। एहि एगारहो कथामे सँ दस टा कथा मे हम सोझे-सोझ पात्रक रूपमे कथामे सम्मिलित छथि। रूदा एकट्ठ्य । कथा 'हत्या' मे ओ दोसर पात्र अखिलनक खिस्सा कहैत छथि। एहि कथा सभक माध्यमे देशी-कानक प्रति जे प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि से यथार्थ लगैत अछि। से वर्त्तमान सामाजिक-आर्थिक स्थितिमे बाग-भारक होगत अभारकेँ देखबैत अछि। सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्ध-अनुबन्ध बदलि रहल अछि। अनकर दुख तकलीफक प्रति एक मारूक उदासीनता पसरि रहल छैक। कारोबारी सम्बन्ध अश्लीलता हदकेँ छूबि रहल अछि। शासन-व्यवस्था असंवेदनशील आ भ्रष्ठ

ভঽ গেন ছৈক। নোক কমজোব আ অসহাযকেঁ দবৈব চাহৈত অছি। গাম-ঘবমে জমীন-জান, সম্পত্তিক ছীনা-ঝপটী বঁঢ়ন ছৈক। কথা-কাব চাহৈত ছথি জে প্রেম কযনিহাবক বীচ সম্বাদহীনতা নহি উঁপজয। সম্বাদহীনতা সঁ ও বৈঁচেন হোগত ছথি (একটা প্রেম কথা) ও মানৈত ছথি জে পতি-পনীক বীচোমে সভ কিছু সাঝা নহি হোগত ছৈক (অপন-অপন দুখ), শাসন-ব্যরস্থাক অংগ ভেনাপব মিত্র-পবিচিতোক বাঁত-ব্যরহাব বঁদনি জাগত ছৈক। এ বাঁত-ব্যরহাব আতংকিত কঽ সকৈত অছি (আতংক)। শ্রদ্ধা আ স্নেহ দেখাবঁঽ নেন কর্মকাণ্ড জরুবী নহি ছৈক (একটা অংত), নিশ্চল আ নির্বিকাব যৌরনকেঁ ছনী আ রিকাবগ্রস্ত মানসিকতাসঁ বাঁচাএবঁ কঠিন ভেন জা বহন ছৈক (কনিযাঁ পুতবা)। এহি কাবোবাঁবী যুগমে অসহায আ নির্বনকেঁ আর্থিক-শাবীবিক শোষণসঁ বাঁচবঁ ঝশিকন ভঽ গেনৈক অছি। মানরীযতাক হ্রাস ভঽ বহন ছৈক (কাবোবাঁব), জীরনক আপা-ধাপী নোককেঁ জহিনা-তহিনা বহবাঁপব রিরশ কবৈত ছৈক (রুশতী), কোনো সুন্দব-দৃষ্টি-ভংগিমারানী স্ত্রীক প্রতি সহজ খিঁচাও আ নগাও সম্ভর ছৈক। নোকমে এ গছা জনমি সকৈত ছৈক জে ওকব সংগ হর্তদম বঁনন বহয। সংগ নহিযো ভেঁটৈক তঁ স্মৃতি আমোকেঁ আনোকিত কবৈত বহতৈক (হুগ্গা), মনুক্খকেঁ জীবাঁক নেন সার্থক ও ব্যারহাবিক দৃষ্টি আরশ্যক ছৈক (দৃষ্টি), জীরনমে বঁহুতো ঘটনা ঘটৈত বহৈত ছৈক। জীরন কথা চনৈত বহৈত ছৈক। দুখ-সুখ ভোগৈত বহৈত অছি নোক। পবন্তু বাঁত কখনো-কখনো বঁনি পবৈত ছৈক (বাঁত), বম্ভা সন রুপরতী স্ত্রী ককবো কোনো অরস্থামে রিচনিত কঽ সকৈত অছি। এহি রিচননমে মোনকেঁ বুকা কঽ বাখবঁ

সম্ভর নহি ছৈক। মোন পাবদর্শী ভ৽ জাগত ছৈক। মোনক স্বন্দবতা আ রুরুপতা দেখাব ভ৽ সকৈত ছৈক (বস্তা), অনুপস্থিত জমীন্দাবক নেন গাম আব স্মৃতিমে জা বহন ছৈক। গামক জীরন রিকৃষ্ট ভ৽ গেন ছৈক। রস্তুতঃ গাম আব অপন নহি বহি গেনৈক অছি (অপন গাম)। এহি সভ কথামে জে ভার-রিচাব ব্যক্ত ভেন অছি সে বহ্নাংশিমে কথামে অন্বস্যূত ভ৽ ক৽ আএন অছি। যদা জতহ-ততহ কথামে ফূটসঁ টিপ্পণী, চিন্তন, দর্শন রা মন্তব্যক সোঙব সেহো দিখ পড়ননি অছি কথাকাবকেঁ। কথা-সংগ্রহমে সংগৃহীত কিছু কথা সভমে ও সোংগব কখনোকেঁ কনে খীচন-তীবন সেহো নাগি সকৈত অছি। নাগি সকৈত অছি জে কথারাচক জেনা কিছু আগূ বঢ়া গেন অছি আ কথা কতহু পাছূএ ছুটি গেন অছি। হমবা জনৈত একব কাবণ কথাক রূপ-রিধান থিক। নে আউট থিক। কথামেকতাক অভার থিক। জেঁকি স্বভাষ অপন কথা নেন রাতারবণ আ পৃষ্ঠভূমিক নির্মাণ নহিএঁ জকাঁ কবৈত ছথি তেঁ হুনকা অভীষ্ঠ প্রাপ্তি নেন কখনহুঁ ক৽ ফূটসঁ উপক্রম কব৽ পড়ৈত ছনি।

কিছু কথামে কোসীক বাঢ়ি আ কোসী কাতক গামক চিত্রণ বহুত প্রামাণিক রূপসঁ ভেন অছি। কিছু কথামে অসগব হেবৌক কষ্ঠ-ভোগ দাকণ ভ৽ গেন অছি। এহি কথা সভক চিত্রণ ভযাওন অছি। জাহি কথামে কোসী আ কোসী কাতক গাম অছি সে কথা কেনবী আগনৈঁডক নাবেন, পবনয আ হমব গাম থিক। কোসীক বাঢ়ি সঁ তবাহী, কোসী কাতক গামক বস্তা-পেঁড়াক দ্রুকহতা কহৈত অছি জে ও একটা দোসবে সংসাব থিক। রিকাসসঁ দূব, সামাজিক-পাবিরাবিক সম্বন্ধক বঁদনৈত আযাম আ

ওহি ভীতরসঁ বাগ-রিবাগক ঝিনমিনাগত মনোভার, রঁনৈত রিগড়ৈত জাতীয-রর্গীয সম্বন্ধ কথা সভকেঁ স্মরণীয রঁনরৈত খছি। "পবনয" খা "হমব গাম" শীর্ষক তঁ কথাক খন্বকূন নগৈত খছি, ওকব সংগতি ছৈক ঝদা কেনবী খাগনৈঁডক নাবেনক কোনো সংগতি কথামে নহি ভেটি পরৈত খছি। কৈনবী খাগনৈঁড স্পেনক খাগনৈঁড থিক, জে মেডীটৈবেনিযন সমুদ্রমে খছি। এহি খাগনৈঁডপব নাবেন নামক গাছ খূব হোগত ছৈক। এহি ঝমটৈগব গাছক ছোট-ছোট পাতক উঁপযোগ ঝককট, টৈপী রঁনা কহ নোককেঁ সম্মানিত কবরাঁমে হোগত বহন খছি। গন্নৈঁডমে বাজাক ঝককটমে নাবেন নগাওন গেন বহৈক। ঝদা কথামে ওা নাবেন কে থিক, সে স্পষ্ঠ নহি হোগত খছি। কথাক সং শীর্ষকক সংগতিক সমস্যা কিছু খানো কথাক সং খছি।

"খস্ববক্ষিত" খা "একাকী" রাঁহব খা ভীতরসঁ খসগব ভেন নোকক ব্যক্তিচিত্র থিক। ওা দুনূ কথা রঁহিবং খা খংতবংগক রীচ হোগত খারাজাহীক কথা থিক। কখনো রঁহিবং হারী ভহ জাগত ছৈক তঁ কখনো খংতবং। ওা স্থিতি ব্যক্তিরাদী মানসিকতাক দেন কহন জা সকৈত খছি। এহন নোকমে খস্ববক্ষা-রোঁধ রঁঢ়ি জাগত ছৈক। ও খপন রর্তমান রাতারবণক সং তান-মেন নহি রৈসা পরৈত খছি। দানা, নদী খা করাঁছ এহন কথা থিক জেকবামে কোনো পৈঘ রাঁত কহরাঁক তাগতি ছৈক ঝদা খন্ততঃ সে রাঁত উঁভবি নহি সকন খছি। এক ওঝবাযন খন্বভূতি খা সংকোচ, কহি সকৈত ছী জে এহি কথা সভকেঁ প্রষ্পিত হেরাঁমে রাঁধক ভেনৈক খছি। তথাপি "নদী" প্ররহমান ধাবক রূপমে তঁ নহি ঝদা রুকৈত-চনৈত রাসেন্যক খন্বভূতি জগরৈত ছৈক।

"दाना" एहि कारोबाबी समयमे मन्वकथकेँ हरेक दाना नेन चिड़ै-चुनमुनी सन बनैत देखबैत अछि। "कबाछ"क अनुभूति जुगुप्सा जगबैत छैक जखनि कि एहि कथामे गम्भीर सन्देश नुकायल अछि। सत्य ई थिक जे जखन व्यक्तिक वस्त्र बदलनि जाएत छैक तँ ओकरा अपन पूर्ववर्ती व्यवहार, चालि-चलन, श्रम वा आवास सभक प्रति एक हीनता-बोध, लाज-संकोच उपजि जाएत छैक।
कथा-संग्रहक नाम बनैत बिगड़ैत, एहि नामसँ प्रकाशित कथाक आधारपर राखल गेल अछि। एहि कथामे माय-बाप नगरसँ परदेश चल गेल सन्तानक रुक्षता लेल व्याकुल अनिष्टक आशंकासँ डेराएल, संतानसँ भेटैत अवहेलनाक संताप भोगैत पति-पत्नीक खिस्सा कहल गेल अछि। पत्नीकेँ एहि मानसिकतामे कौआक टाहि आ रुक्षवक कानब अशुभ लगैत छै। ओ परेशान होइत अछि। पति विभिन्न तर्कसँ पत्नीक ध्यान एहि अशुभ कल्पनासँ हटेबऽ चाहैत अछि। मुदा पत्नी खिसिया जाएत छै। कठोर बात कहि दैत छै। ओहि कठोर बातसँ पति आब पीड़ित होइत अछि। एहि क्रममे ओ विभिन्न बात सोचैत अछि। कौआक रुचबबाक माद्दे अशुभ कल्पनाकेँ कौआक बिनायल जेबासँ जोड़ि दैत अछि। कौआ संग अपनो (दादाक) बिना जेबाक कल्पना करैत अछि। एहि प्रकारेँ जेना सन्तानक विछोहसँ उपजल क्षोभ आ दुखमे अपनाकेँ कौआ सन रुक्ष मानि, अशुभ मानि, बिना जेबाक, मरि जएबाक, स्मृतिमे चल जेबाक उपानस्त दैल गेल अछि।
स्वगभाव चन्द्र यादवक एहि कथा-संग्रहक अनेक कथामे गामक, दादाक, स्नेह-भावक स्मृतिमे चल जेबाक बात कहल गेल अछि। जेना ई सभ आब स्मृतिएटामे

জীরিত বহত। রস্তুতঃ রর্তমান সমএপব ঙা সভ কথাকাবক প্রতিক্রিয়া থিক। ঙা প্রতিক্রিয়া সময়কেঁ র্নৈত কম খা রিগড়ৈত রেঁসী দেখি কহ, পারি কহ র্যাঞ ভেন খছি। জেনা ঙা সময় র্নি কম বহন খছি, রিগড়া রেঁসী বহন খছি। রর্তমান সমএপব কথাকাবক ঙা প্রতিক্রিয়া যথার্থ ভনে হী হো, হ্মদা ঙা যথার্থ উঁদাস খা নিষ্ক্রিয় করৈত খছি। এহিসঁ নে ছ্বদএমে প্রেরণা হোগত খছি খা নে খামের্ন ভেটৈত খছি। তেঁ স্বভাষজী সঁ ঙা খাশা কবর্ খনস্থান নহি হোএত জে ও খগিনা সমএমে সমকালীন যথার্থক এহন পক্ষ সেহো প্রস্তুত কবতা জে প্রেরিত খা সক্রিয় কবত। জাহিসঁ খামের্ন ভেটৈত। এহন কথা রস্তুতঃ কম রিগড়ৈত খা রেঁসী র্নৈত কথা হোএত।



उँषाकिरण खान

अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया

जखन पन्ना जी लिखल कथा संग्रह 'अनुभूति' हमरा हाथमे आएल तखन अतिशय प्रसन्नता भेल। किएक तँ पन्ना जीक संगे हम कएक बेर असीक दशक मे संगहि कथा पाठ कएने छलहुँ। हुनका कथाक मानसिक धरातल आ लेखकीय सावधानी बूझल छल। कथाकारक अनुभूतिक परिचय छल स्थिरचित्तक बूझनुक लेखिका सहजहि श्रोता एवं पाठक सँ सोझा सोझी गप्प करैत छथि। अनुभूतिक बेसीतर मोनक आगाँ पाछाँ बहैत छन्हि, तेँ कथाक विकास एकटा स्वस्थ विचार यात्रा जकाँ छन्हि। पन्ना जी अनेक परिवेशक कथा लिखैत छथि। ठोस धरातल पर चलय बाली आग काल्हिक स्त्रीक कथा ओ संवेदना संग नहि पएबाक धमक संगे लिखने छथि। जेना 'सेवानिवृत्ति'। सेवानिवृत्तिक पश्चात् संतान आ स्वजन परिजन ग्रहण करएने बहैत छथि, जीवन चरित कमाएल आ बचत के कोना आत्मसात कए लेल जाए तकर बाट मे लागल बहैत छथि ग्रदा वृद्ध माता पिताक चिंता नहियेँ टा करैत छथि। पन्ना झा जीक

कथाकाव स्वानुभूति कँ सोझाँ धए टा देलन्हि अछि ओकवा विवछओलन्हि अछि नहि। एहन हिनक विशेषता छन्हि। अपन दृढ़ पद चाप छोड़ैत। सेवानिवृत्ति कथाक चर्च हम वाँवंवाँव कवए चाहैत छी, ओ कथा बूँद मे समुद्र तँ थिके, एकटा पगघ संदेशो दैत अछि। मनहि ओ स्वयं दुनावप्पव सन नगवक कात वंना गामक वेटी छथि तवौनी सन बुद्धिजीवी गामक प्वतह् पवंच मिथिनाक असूर्यम्पश्या ग्राम ननवाक ज्ञान छलन्हि, कनकत्ता जाए आ ओतए शिक्षा प्राप्त कए, ओत्तक्का सामाजिक जीवन के अनुभव नए जे किछु अपना क्षेत्रक विकासक कामना कएनन्हि तकव सत्व ओ 'सेवानिवृत्ति' कथामे देने छथिन्ह, एकटा गाम जे आदर्श अछि, विद्यानय, अस्पतान एत्यादि छैक मनाविद्यानय नहि छैक। महिना मनाविद्यानय खोनवं 'हाग-विस्क' काज छैक, छात्रा जुटतैक कि नहि? ह्मदा कल्पना शीन नेखिका आधुनिक शिक्षाक आवश्यकता वंनें मनाविद्यानय खोननि आ सखन भेनीह। कथामे स्वयं कथानायिका श्रीम्मा केव विकास क्रमशः भेन छन्हि ओहिना जेना ह्नक महिना शिक्षाक प्रयोजनक।
आग कान्हि शिक्षा सभक जन्मसिद्ध अधिकाव छैक तकव कानूनी व्याख्या खूब प्रचावित भऽ वहन छैक। गृन्नी-डंटा खेनए वंना वाँनकसँ नए एगचवरामी मे खैनी ठोकए वंना नेन्ना सभ कँ धऽ कऽ स्कून आनन जाएत छैक। भनहि ओ नोकनि मिड डे नंच नऽ कऽ पड़ा जाएत छथि। नेखिका कमौशा कथामे एकटा निवसय पवसनक वाँनक निवसू कँ अपना संगे आनि गृहकार्यमे नगौननि आ ओकवा शिक्षा देमए नागनीह। ह्मदा जखन ओ स्वस्थ सवंन वंना भऽ गेन। हिनकव सभटा शिक्षा विसवि प्वनः पविवावक अंतहीन जानमे ओझवा। कथामे

কচোটৈক মাত্রা স্বল্প ছৈক বা কমজোর বর্গক দারুণ স্থিতিক মাত্রা অধিক ছৈক প্রায়ঃ সভকেঁ বুঝল ছৈক জে ব্যক্তিগত বা সামাজিক প্রযাসসঁ গামে টা নহি ঘর সেহো অশিক্ষিত বা চিংতাহীন নেতৈক ঋদা সে নহি হোগত ছৈক। দূরদৃষ্টিক অভার মে গ্রামীণ অপন হর্জ করৈত অছি, ওকরা অনকর দৃষ্টি কের নাভ নেরাঁক ক্ষমতা নহি ছৈক। ক্রমশঃ আধুনিক হোগত সমাজক একটা সটীক কথা অছি–'পুনরাবৃত্তি' চারুকাত নৌহ করাব নাগল হো কতহুঁ সঁ হরাক সিহকী নহি প্ররেশ করৈক, সূর্যদেরক কিরণ নহি প্ররেশ করৈক তেঁ কি ভোখ–সাঁঝক অস্তিত্ব মেটা জাএত ? নহি নে ? ন মিথিনা মে প্রকাশ আএন। পতি সঁ অকারণে প্রতাড়িত স্ত্রী পিতাক আশীরদি সঁ স্বারঁনম্বী ভ২ জাগত ছথি। পুত্রীক শিক্ষাক প্রতি সজগ তঁ ছথি ঋদা হুনকর ভাগ্য অপনে সন হোএতৈন্হ সে নহি রিচারনে ছনীহ। ঋদা অধিক আগাঁ সসরল সময মে রেঁটী স্বধা মান্যতা কেঁচ্ন উতারি ফেকনক বা স্পষ্ঠ রিচার সংগে আগাঁ পএর রঁঢ়ওনক, মনহি ও পরিস্থিতি জন্য পুনরাবৃত্তিক শিকার ভেনীহ ঋদা সিন্বর চূড় ী বা মিথ্যা সংস্কার কেঁ নিষেধ কএনন্হি। ও উঁহাপোহক অন্মারসঁ উরঁরি একটা সেরিকা সঁ উদ্গার ব্যক্ত করৈত ছথি জে মাথ হন্নক করক নেন– 'এক কপ চায রঁনা দে'

পন্না জীক নেখিকা মনোরিজ্ঞানরিদ্ ছথিন্হ সে– 'অসমান্য কেঁ সনক সামান্য কেস হিস্ত্রী রঁনা কথা পঢ়ি পরিনক্ষিত হোগত অছি। অহী রজনকেঁ কথা ছৈক সরোকার। পতি–পত্নী সংগে রহথি, দুনূ একে শিক্ষা প্রাপ্ত করৈথ বা একে জীরিকা মে সংনগ্ন রহথি তথাপি স্ত্রীপর পরিরার, সমাজ বা আজীরিকা তেহরাএন রোঁঝ রহৈত ছৈক বা

পতি নিশ্চিংত; ই অজুকা ত্রাসদী ছৈক জকরা সঁ প্রত্যেক শিক্ষিতাজুড়ৈত অছি তঁ মূল্যাংকনক' নাযিকা কিএক নে জুড়তী ?
'নীতি প্রকরণ' কথামে 'বিচমাগনক' ভূমিকা মহত্বপূর্ণ ছৈক ? জকর অপ্পন ঘর বিগড়ল রহৈত ছৈক ও অনকর স্বখী ঘর উজাড়য পর তুলল রহৈত অছি। সময রহিতহি যদি পতি-পত্নী ই বুঝি লেথি তখন কএক টা পরিবার বিঘটিত হোঅং সঁ বাঁচি জাএত। সঘন সংবেদনাক কথা ছৈক- 'রহর ঘুরিএ গেল'। কতেকো গীত কবিত্ত লিখললি কবি বিদ্যাপতি, পং. হরিমোহন ঝা, যাত্রীজী তথাপি একটা আডম্বর পূর্ণ সমাজ নাযক অবিশ্বিস্তবীয, তরল প্রকারক বস্তুক অস্তিত্ব আগযো অছি। মিথ্যা অহংকার, ঘোর লিপ্সাক প্রতীক মিথিলাক সর্বাংগিজক সোচবাঁ পর বিবশ করৈত ছৈক। পন্না জীক প্রত্যেক কথা কিছলে কি অনুভব করবাঁপর বিবশ করৈত ছৈক আ তেঁ কথা-সংগ্রহক নামকরণ অনুভূতি রহ্ত নীক। একটা নযনাভিরাম আ বীছল পোথী মৈথিলী মে আবএ সে স্বাগত যোগ্য অছি। প্রত্যেক ছোট কথা জে যা তঁ আকাশবাণীক লেল লিখল গেল আ কথা গোষ্ঠী মে পঢ়বাঁক লেল লিখল গেল অছি মহত্বপূর্ণ। একদম বূঁদমে সমুদ্র। কথা, কথা সূত্র জকাঁ বুঝাগত অছি। পন্না জী কেঁ হম আগ্রহ করবনি জে পলখতি পারি আব কথা সূত্রক বিস্তার করথু আ পূর্ণ কথা লিখথু জাহিসঁ পাঠকক ছাঁক প্বস্তু।
কথা সংগ্রহ হ্লপপর বাঁছিত অবাঁছিত শব্দ সংচযন ছৈক জাহিসঁ বচন জা সকৈত ছলৈক। 'দূ আখর' লেখিকাক দৃষ্ঠিক নির্বিবিবাদ টিপ্পণী অছি আ হুনক স্বযং কের বিকাসক একটা সংক্ষিপ্ত সূচনা। পন্না ঝা জী জল নল

कन्हुँ रर्सियन व्यक्तित्वक जे अनुभूति सरॅकम हाथमे अछि से उँत्तव आधुनिक मिथिलाक निर्माणक अनुभूति छैक जाहिमे बॅालक-बॅालिका युरजन आ वृद्ध-वृद्धा, दादा-दादी सरॅ छथि। अर्थात् उँत्तव आधुनिक रिचाव एसकन्ध्अा नहि अछि, सम्भावाज बॅना परिवारक कामना कवैत अछि समाज निर्रीथ नहि अछि, मदतिक हाथ चारु भागसँ बॅढ़ैत अछि।
पन्ना जीक लेल शुभकामना।

**<u>नागेन्द्र कुमाव कर्ण</u>**

<u>मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा</u>

मिथिलाक प्रत्येक पारनि, तिहावमे परिक्रमा कवरॅाक चलन प्रवाने आ अनिरार्य बहल अछि । मन्दिवमे हुए या कोनहु पूजा-पाठक बॅाद मन्दिवके कमसँकम एक चक्कव घुमरॅाक काज जे होगत अछि सैह परिक्रमा अछि । परिक्रमा कोनो निश्चित स्थानके कायल जागत अछि । मिथिलामे रिराह सँ मृत्यु पर्यन्त परिक्रमा कायल जागत अछि । रिराहमे रव-कनियाँ रेदीक चारुकात घुमल कवैत अछि जे परिक्रमेक प्रतिक बहल अछि । अहिना परिक्रमा मिथिलाञ्चलमे सृष्टिक शुरुआतेसँ चलि आयल अछि । मिथिलाक वाजधानी जनकपुरके केन्द्र

মানি পবিক্রমা কবরাঁক পবম্পবা এতহ বহল খছি, জকবা পঁচকোশী, মাধ্যমিকী পবিক্রমাক নামসঁ সম্বোধন কাযল জাগত খছি ।
হবেক বর্ষ ফাগুণ শুক্লপক্ষক খমাবশ্যাসঁ শুরু ভহ ফাগুণ পূর্ণিমাধবি পঞ্চকোশী পবিক্রমা মনাওল জাগত খছি । পবিক্রমা জনকপুবসঁ শুরু ভ জনকপুবেমে জাহকহ গতীশ্রী হোগত খছি ।
পবিক্রমা বৃহত, মধ্য খা খন্তগৃহী পশ্চাত সম্পন্ন হোগত খছি । বৃহদ পবিক্রমা উঁত্তবমে হিমানয পর্বত শ্রেণী, পূরমে কোশী, দক্ষিণমে গংগা খা পশ্চিমমে গল্ডকধবিকে পবিক্রমাকরাঁদ সম্পন্ন হোগত খছি । খাগকান্হি এহি তবহক পবিক্রমা রিবনে কযল জাগত ভেটৈত খছি । মধ্য পবিক্রমা খঠাবহমং শতাব্দীসঁ পূরেসঁ মনরৈত খএরাঁক রিশ্বাস কাযল জাগত খছি । পহিনে পহিনে গ পবিক্রমা ৩ দিনধবি মনাওল জাগত ছল । এহি পবিক্রমাকে ২০ম্ শতাব্দীমে খারিকহ মহামো স্ববকিশোব দাস পাঁচ দিনসঁ ১৩ দিন বঁনৌলথি । জকব কাবণসঁ খখন এহি পবিক্রমামে সাধুসন্ত, মহন্থ, গৃহস্থ, নাগা নগাযতক বৃহত উঁপস্থিতী বহৈত খছি ।
মিথিলাক বাজধানী জনকপুবকে কেন্দ্ররিন্দূ মানি নেপাল খা ভাবতক ১৩ রিশ্রাম স্থনমে বঁসোরাঁস কহ ফাগুন পূর্ণিমাক দিন জনকপুবমে খন্তগৃহী পবিক্রমা কএনা পশ্চাত একব সমাপন কাযল জাগত খছি । ১৩ রিশ্রামস্থল জনকপুবসঁ পাঁচ–পাঁচ কোশক দূবীমে বহরাঁক কাবণে একব নাম পঞ্চকোশী পবিক্রমা পবল খছি । ফাগুণ খমাবশ্যাক দিন ধনুষাক কচুবীসঁ মিথিলারিহাবীক (বামসীতা) খা কিশোবীজীক ডোলা রাঁজাগাজা সহিত জনকপুব স্থিত জানকী মন্দিবমে নারি পবিক্রমাক রিধিরত

शूकुरात होगत अछि । ओ डोला मिथिलाक विभिन्न धार्मिक, ऐतिहासिक आ पुरातात्विक महत्व रहल स्थलक परिक्रमा कऽ कऽ जनकपुरमे आबिकऽ सम्पन्न होगत अछि । जनकपुरमे मध्य परिक्रमा अन्तगृही परिक्रमाक रूपमे सम्पन्न होगत अछि ।
परिक्रमाक अवधिमे परिक्रमा यात्रीसभ नेपाल आ भारतक १७ स्थानमे वास करैत छथि । जाहिमे धनुषाक जनकपुर, धनुषाधाम, हनुमानगढी, ओरही, सतोषर आ पर्वता, महोत्तरीक मटिहानी, जलेश्वर, मडै, धुव्रकुण्ड आ कञ्चनवन, भारतक गिरिजास्थान फुलहर, कल्याणेश्वर, विशौल आ करुणा नगायतक स्थानमे परिक्रमायात्रीसभ विश्राम करैत छथि । परिक्रमावासीसभ करीब १२० किलोमिटरक यात्रा कएल करैत छथि ।
नेपाल आ भारतक सामाजिक सदभावक सेतुक रूपमे रहल ओ परिक्रमा धार्मिक, ऐतिहासिक आ पुरातात्विक महत्वक परिचायक अछि । परिक्रमा आर्थिक दृष्टि कातक जनताक मजदूरीक एकटा कारक सेहो बनल अछि ।
विश्रामस्थल विशिष्ट महत्वक भेलाकबादो अवस्था दयनिय रहल अछि । ताहि स्थलसभमे रहल जलाशय, मठ, मन्दिर उपेक्षाक कारणे दिनानुदिन जीर्ण बनि रहल अछि । परिक्रमा सडकक निर्माण हरेक वर्ष जोडतोडकसँग उठौलाक बादो अखनधरि सडकक निर्माण नहि भेलाक कारणे परिक्रमावासीसभके अपेक्षाकृत बेसिए कष्ट भोगराकलेल विवश कऽदैत अछि ।
परिक्रमा केलाकबाद सुख, शान्ति, मनोकामना पूर्ण होएबाक विश्वास रहल मान्यताक कारणे प्रत्येक वर्ष परिक्रमा यात्रीक संख्यामे बढोत्तरी होगत आयल अछि ।

পৰিক্ৰমা মাস্থা

মধ্য পৰিক্ৰমা অর্থাত পঞ্চকোশী পৰিক্ৰমা নেপাল ভাৰতক ৮০ কোশক বৃত্তাকাৰমে ধ্মিকঽ মনাওল জাগত অছি । নেপাল আ ভাৰতক ১৩ বিশ্ৰাম স্থলমে ফাগুণ অমাৰশ্যাসঁ ফাগুণ পূর্ণিমাধৰি ও পৰিক্ৰমা প্ৰৰা হোগত অছি । হৰেক বিশ্ৰামস্থলক অপনে–অপনে তৰহক বিশিষ্ঠ আ প্ৰৰাতাত্ত্বিক মহত্ত্ব বহল অছি ।

(১) হনুমানগঢ়ী :— ফাগুণ অমাৰশ্যাক দিন ধনুষাক কচুৰী মঠসঁ নিকলল ৰামজানকী (মিথিলাবিহাৰী)ক ডোলা জানকী মন্দিৰ হোগত ৰাঁজাগাজা সহিত হনুমানগঢ়ীমে ৰাত্ৰিক বিশ্ৰাম কৰৈত অছি । এতঽ শতাব্দিযো প্ৰৰান হনুমানক বিশাল মূর্তি বহল অছি ।

(২) কল্যাণেশ্বৰ (কললা) :— বিশ্ৰামক দোসৰ পড়াৱ স্থল ভাৰতক কল্যাণেশ্বৰ অর্থাত কললা অছি । এতঽ কল্যাণেশ্বৰনাথ মহাদেৱক মন্দিৰ অৱস্থিত অছি । ৰাজর্ষী জনকদ্বাৰা অপন ৰাজধানীক চাৰু কোন্হমে স্থাপনা কায়ল চাবি মহাদেৱ মধ্য ও এক অছি ।

(৩) গিৰিজাস্থান (ফুলহৰ) :— কল্যাণেশ্বৰস্থানসঁ চাবি কোস দক্ষিণ– পশ্চিমমে বহল গিৰিজাস্থান, পৰিক্ৰমাক তেসৰ দিনক বিশ্ৰাম স্থল অছি । গিৰিজাস্থান পৌৰাণিক স্থল বহৰাঁক বিশ্বাস অছি । ত্ৰেতা যুগমে জানকীজী এত্তহি ফুল লোঢ়বাক সময়মে শ্ৰীৰামসঁ পহিল ভেঁটে ভেলছলনি সে কিংৰদন্তি অছি । এতঽ দুঃখহৰণ কুণ্ড, সীতাসাগৰ আ ফুলৰাবী বহল অছি ।

(৪) মটিহানী :— মিথিলা পঞ্চকোশী পৰিক্ৰমা চাবিমদিন অর্থাত ফাগুণ শুক্ল তৃতীযাক দিন মহোত্তৰী জিল্লাক

পহিল বিশ্রাম স্থল মটিহানীমে প্রবেশ কবৈত অছি । এতহ সীতাজীক মটকোবক লেল মাটি খনাএল বিশ্বাস কাযল জাগত অছি । এহিঠাম প্রসিদ্ধ লক্ষ্মী সাগব নামক বিশাল পোখবি আ প্রসিদ্ধ লক্ষ্মীনাবাযণক মন্দিব বহল অছি ।
(৫) জলেশ্বব :— মটিহানীসঁ পবিক্রমাযাত্রী পাঁচমদিন জলেশ্বব পহুঁচৈত অছি জে মটিহানীসঁ ২ কোশ পশ্চিমমে অবস্থিত অছি । এতহ জলমে বিবাজমান জলেশ্ববনাথক পূজা আবাধনা পশ্চাত যাত্রীক বত্তকা বিশ্রাম এতহি হোগত অছি ।
(৬) মডৈ :— ফাগুণ শুক্ল পঞ্চমীক দিন পবিক্রমাক ডোলা জলেশ্ববসঁ প্রস্থান কহ মডৈ পহুঁচৈত অছি আ এতহ বাতিক বিশ্রাম কবৈত অছি । প্রাচিনকালমে এতহ মান্ডব ঋষীক আশ্রম আ সীতাজীক বিবাহকলেল মডবা (বেদী) এত্তহি বঁনাওলগেল বূঢ়–পুবানক কহবী ছন্হি ।
(৭) ধ্রুবকুন্ড :— পবিক্রমাবাসী মডৈpসঁ সাতম দিন ধ্রুবকুন্ড পহুঁচি এতহ বিশ্রাম কবৈত অছি । এতহ ধ্রুবক মন্দিব আ ধ্রুব কুন্ড বহল অছি ।
(+) কঞ্চনবন :— ধ্রুবকো দর্শন কএনা পশ্চাত পবিক্রমাবাঁসী মহোত্তবীক অন্তিম পডাব স্থলক রুপমা বহল কঞ্চনবনমে সপ্তমীক দিন বিশ্রাম লেল কবৈত অছি । এহিঠাম গঙ্গাবতী আ বিবজা গংগাক পবিত্র সংগমস্থল ভেলাক কাবণে একবা পবিত্র মানল জাগত অছি । পৌবাণিককালমে এতহ অনাববন, তমালবন, তালবন, কদলীবন লগাযতক ১২ টা বমণীয বন বহল ছল । ত্রেতা যুগমে এতহ ভগবান বাম হাবী খেললে বহল কিংবদন্তি অনুসাব এতহ পবিক্রমাবাঁসী পহুঁচিকহ অবিব খেলীকহ হোলী মনবৈত অছি ।

(৯) পর্বতা :— নরম্ দিন পবিক্রমাযাত্রী ধনুষাক পর্বতামে রিশ্রাম নৈত খছি । বাজা জনকদ্বাবা স্থাপিত ক্ষিবেশ্বিবনাথ মহাদেরক প্রসিদ্ধ মন্দিব এতহ বহল খছি ।

(১০) ধনুষাধাম :— পর্বতাসঁ পবিক্রমার্বাসী দশম্ পড়ারস্থলক রুপমা বহল ধনুষাধাম পহুঁচৈত খছি । এহিঠাম জনকপুবমে সীতাক স্বয়ম্বব হোগতকাল মর্যাদাপুরুষোত্তম শ্রীবামদ্বাবা তোড়লগেল ধনুষক একটা টুকড়া খসল রিশ্বাস খছি । এতহ সীতাবাম, হনুমান লগায়তক মন্দিব বহল খছি, ক্ষদা দর্শনার্থীক দর্শনক কেন্দ্রবিন্দু ধনুষে বহল পাওলগেল খছি ।

(১১) সতোষব :— ফাগুণ শুক্ল দশমীক দিন পবিক্রমার্বাসী ডোলাক সংগে সতোষব পহুঁচল করৈত খছি । এহিঠাম সাতটা পোখবী হোযবাঁক কাবণে একব নাম সতোষব পবল খছি । এতহ শির খা সীতাবাম মন্দিব বহল খছি ।

(১২) ঔবহী :— রিমলা নদীক তটমে খরস্থিত ঔবহীমে পবিক্রমা যাত্রীসবঁ খপন ১২ দিনক রিশ্রাম নেল করৈত খছি ।

(১৩) করুণা :— নেপালক ঔবহীসঁ পুনঃ পবিক্রমা ভাবতক করুণামে তেবহম্ দিনমে প্রবেশ করৈত খছি । এহিঠাম করুণা নামক নদী রিখ্যাত বহল খছি ।

(১৪) রিশৌল :— করুণাক রিশ্রান্তিকবাঁদ পবিক্রমার্বাসী চর্তুদশীক দিন ভাবতক রিশৌল পহুঁচৈত খছি । এহি স্থান হোগত কমলা নদী বহৈত খছি খা এতহ ঋষী রিশ্বামিত্রক মন্দিব সেহো খরস্থিত খছি ।

(১৫) জনকপুব :— ভাবতক রিশৌল পশ্চাত পবিক্রমাক খন্তিম পড়ারস্থলক রুপমে নেপাল স্থিত

মিথিনাক বাজধানীক ৰূপমে রিশ্বে প্রসিদ্ধ বহন জনকপ্ববমে পহুঁচিকঽ পবিক্রমার্রাসী রিশ্রাম কবৈত খছি । এতঽ বত্তকা রিশ্রাম পশ্চাত খন্তিম প্রহবমে খন্তগৃহী পবিক্রমা কবর্রাক পবম্পবা বহন খছি । জানকী খা বামমন্দিবকে কেন্দ্ররিন্দ্ মানিক খন্তগৃহী পবিক্রমা হোগত খছি । এতঽ সম্মত জবৌনাকরাদমে মিথিনামে হোনী খর্থাত হৃগ্বখাক ডস্ফ র্রজৈত বংগ খা খরিবক রর্ষা প্রাবম্ভ ভঽজাগত খছি ।

<u>স্বজিত ক্ষমাব ঝা পব</u>

কহন জাগত খছি, গখ নহি ভেন মন্বষ্য খা রিষ নহি ভেন সাঁপ কোন কাজকেঁ । তহিনা সাহিত্যমে সেহো হোগত খছি ।
করি, নেখক খথরা সাহিত্যকাব কহএ চাহনে র্রাত পাঠক খথরা শ্রোতা নহি বুঝিসকন তঽ ওকব কোন খর্থ ?
একটা নেখক কহএ চাহনে খথরা দের্রএ চাহনে সন্দেশ শ্রোতা রা পাঠক খন্বসাব হৃবক হৃবক হএত ক্ষদা রিন্ব সন্দেশক ও সাহিত্য রিন্ব কাজক হোগত খছি । ওহন সাহিত্য চিবস্থাযী সেহো নহি হোগত খছি । মনোবঞ্জনক

নেন মাত্র সিমিত বহৈত খছি । নহি তহ ওহিকেঁ নেন করি, নেখক খথরা সাহিৎকাবকঁ ভবমগদ্ব প্রযনে কবএ পড়ৈত খছি ।
খপন বচনাকঁ চিবস্মবণীয ৰঁনারঁএ তথা ওহিকঁ সান্দর্ভিকতাক নেন সাহিৎকাবকঁ ৰঁহ্ত প্রযনে কবএ পড়ৈত খছি ।
তএঁ খারঁএ ৰঁনা প্বস্তাসভক সমযমে সেহো ও বচনাক সান্দর্ভিকতা বনৌক ।
হানহি মৈথিনী সাহিৎক নরউঁদযীমান কথাকাব এরং পত্রকাবস্বজীতক্ষমাব ঝাক কথা সংগ্রহ জিদ্দীক সম্বন্ধমে কিছু নিখৰাঁক প্রযনে কএনে ছী ।
গএহ ভাদর ২৩ গতে মহোত্তবী জিন্নাক জনেশ্বব স্থিত নেপান পত্রকাব মহাসংঘ মহোত্তবী শাখাক সভাহনমে খাযোজিত সমীক্ষা তথা পবিচযামেক কার্যক্রমমে উঁঠন সরানসভকেঁ সেহো মনন কএনহুঁ খা ৩া কথা সংগ্রহ পঢি কহ খপন মোন ভিতব উঁঠন ৰাঁতসভকঁ এতহ বখরাক প্রযাস কএনহুঁ খছি ।
সাহিৎকঁ রিরিধ রিধাসভমে সঁ কথা রিধা সেহো এক খছি ।
গদ্য রিধাকেঁ এক সশক্ত খা ছোট সমযমে পঢি কহ সম্পন্ন কবয ৰঁনা খা প্রশস্ত সন্দেশ দেরাক সামর্থ্য কথামে হোগত খছি ।
কবিশেখব জ্যাতিবীশ্বব ঠাকুব সঁ শুরু ভেন মৈথিনী সাহিৎকঁ গদ্য খখন ধবি খনববত রুপমে খাগু ৰঁঢি বহন খছি খা গদ্যকঁ এক সশক্ত রিধা কথা বহন খছি ।
কথামে কোনো এক পক্ষক ৰাঁতকেঁ উঁঠাওন গেন খছি জে ৩া রিধা প্ববান মানন জাগত খছি । । পহিনে–

पहिने उँपदेशात्मक कथासभ, नैतिक कथासभ, पविक कथासभ , भगवान आ दैत्यक कथासभ सुनाओल जाइत छल । धीरे धीरे सामाजिक घटनाक यथार्थिताकेँ समेटि कऽ यथार्थवादी कथासभ लिखाए लागल ।
मैथिली कथा साहित्यकेँ गाँत कएल जाए तऽ गँहुत लम्बा परम्परा नहि रहलाक बादो एहिकेँ गुणात्मक रुपमे नीक स्थिती रहल अछि ।
संस्कृतक कथासभकेँ अनुवाद सँ शुरु भेल मैथिली कथा साहित्यकेँ शुरुवात पत्रपत्रिका सँ भेल तथ्य रहल अछि ।
मैथिली पत्रपत्रिकाक प्रकाशन संगहि मैथिली कथा साहित्यकेँ शुरुवात भेल मैथिली साहित्यिक इतिहास पुस्तकमे उँल्लेख अछि ।
गँासुदेव ठाकुरक सम्पुधाधा सँ शुरुवात भेल मैथिली कथा साहित्यकेँ इतिहास अखन धरि बातो नदिमे गँहि रहल पानि जेकाँ अछि ।
कोनो नदिमे जहिना गाँठि अबैत अछि आ चलि जाइत अछि । ओहिना साहित्यमे सेहो प्रकाशनक गाँठि आएल आ सुखाएल ।
संख्यात्मक रुपमे ओतके कथा संग्रहक प्रकाशनसभ नहि रहलाक बादो गुणात्मक रुपमे कोनो भाषा सँ मैथिली कथाक स्तरीयता कम नहि अछि । कथाक विभिन्न वादसभमे मैथिली साहित्यकारसभ कलम चलौने देखल गेल अछि ।
गँासुदेव ठाकुरक सम्पुधाधा सँ शुरु भेल मैथिली कथा साहित्य लेखनीक इतिहासमे पं. सुन्दर झा शास्त्रीक अखन्ड गँथावी नै हज्जनै, डा.धीरेन्द्रक हिच्कैत गँहैत सेती, डा.राजेन्द्र विमलक ए कथा हमरे थिक, राम भरोस

কাপড় ী ভ্রমবক কথা সংগ্রহ তোবা সংগে জযরৌ বে স্কজরা, ডা.বেরতী বমণ নানক মাধর নহি খএনা মধ্প্বব সঁ, ডা.স্ববেন্দ্র নাভক কথাযাত্রা, খযোধ্যানাথ চৌধবীক একটা হেবাযন সম্বাধন, বাজেশ্বব নেপানীক সোমনী, বৃশৈষ চন্দ্র নানক মান্থা খা স্বজীতস্কমাব ঝাক চিডৈ পশ্চাত খাএন জিদ্দী কথা সংগ্রহ স্কখ্য খছি ।

এহিকেঁ বাঁহেক বঁহ্ত কথা সংগ্রহ খা কথাসভ মৈথিনী সাহিত্যমে প্রকাশিন ভেন খছি জে উঁকেৃষ্ঠ সেহো খছি ।

ডা. ধীবেন্দ্রক খভিভারকীয পবম্পবামে বঁঠন মৈথিনী কথা সাহিত্যমে রিষযরস্তুক র্যাপকতা, বাজনীতিক রদনারক প্রভার, নেপানীয মাটিপানিক গংধ, পাবিরাবীক, সামাজিক, সাঁস্কৃতিক খা বাজনৈতিক জীরন খা ওতএ সঁ পড়ন উঁতাব চঠার দেখন জাগত খছি ।

কথাশিল্পক দৃষ্ঠি সঁ নর–নর প্রযোগ সেহো দেখন গেন খছি ।

তহিনা উঁতাবচঠারক বীচ রিতন সমযমে নেপানীয মাটিমে মৈথিনী কথা সংগ্রহ জিদ্দীক প্রকাশিন ভেন খছি ।

কথাকাব স্বজিত স্কমাব ঝাক পহিন কথা সংগ্রহ চিডৈ খা তকববাঁদ খাএন বিপোর্টব ডাযবী খা তেসব গ্ধতিক রুপমে খাএন কথা সংগ্রহ জিদ্দী রাস্তরমে মৈথিনী সাহিত্য ভন্ডাবমে বৃঁদ্ধি ভেন খছি ।

হ্নকব দ্নূ প্বস্তক সঁ পবিমার্জিত খা সশক্তরুপমে জিদ্দী কথা সংগ্রহ খাএন কহবাঁমে কোনো ভাঁগঠ নহি খছি । কথা সংগ্রহ জিদ্দীমে নেপানীয মৈথিনী নাবীসভক রিষযরস্তুসভ উঁঠাওন গেন খছি ।

এহি সংগ্রহক স্কখ্য পাত্রসভ নাবী খছি তঽ কথা সেহো

नावीक आसपास घूमैत बहल कथा संग्रह जिद्दी नावीरादी कथासंग्रहकेँ रूपमे आगा आएल अछि ।
कथाकार स्वजित रूमार स्नाकेँ नावीरादी कथाकारक रूपमे देखल गेल अछि ।
कथा संग्रह जिद्दीमे कथाकार नावीक सामाजिक, साँस्कृतिक, राजनीतिक स्तर पड़ल प्रभार, एहि सँ सामाजिक जनजीरनमे पड़ल असर, आगामी दिनमे एहि सँ पड़ल जाएरेँना सामाजिक रिखण्डनक खतराकेँ स्वक्षमरूपमे देखल गेल अछि ।
कथा संग्रह यथार्तिक धरातलमे ठाढ़ अछि ।
यद्यपि ओ कथा संग्रह रैसी आदर्शोन्मुख यथार्तिराद दिस गेल अछि ।
एक दर्जन कथा समारिष्ठ बहल कथासंग्रह जिद्दीमे हरेक कथा एक अलग छाप छोड़ए सफल भेल अछि ।
कथाक अन्त नहि पढए धरि कथारस्तुक शिर्षक अपूर्ण लगैत अछि । रूदा कथा पढलाक बाँद एक निमेषमे मिथिलाञ्चलक धरातलीय यथार्ति मानस पटलपर आरि जागत अछि ।
पारस्परिक स्नेह, रिश्वास, रॅलिदान, सेरा, करूणा, अनुशासनक धरातलमे बहि कऽ अपन मोल, सम्मान रॅचौने मिथिलाञ्चलमे ओ राँतसभ समयानुक्रममे घटैल घटलाक प्रेरणा सँ कथा जन्मल अछि ।
आ कथाकार कथासभक मार्फत ओ राँतसभकेँ पुनः स्थापना होएराँक राँत पर जोड़ देने छथि ।
सरसरती रूपमे माला रॅलाएल शैलीमे आगा रॅढैत जाएरॅ आ अन्तमे पाठककेँ सोचमग्न रॅलारैत कथाक गतिशी कररॅ कथाक महत्वपूर्ण राँटै अछि ।
कथा संग्रहमे बहल १२ टा कथासभ मे सँ सभ उत्कृष्ठ

বহল অছি ।

পহিল কথা পূmল হ্নাগএ কঽ বহলমে মহিলাক অথক প্রযাস আ দৃঢ ওচ্ছাক নক্ষ্মনা প্রস্তুত কএল গেল অছি তঽ মহিলাকেঁ এক্কা রেঁব নহি প্বছি অভিভারক নডকীক রিরাহ কবর, রিরাহক সময়মে নড়কা পক্ষদ্বাবা ন্যূঠ রাঁজব, দহেজ আ বংগক কাবণ রিরাহমে সমস্যা আএব সহিতক সমস্যাকেঁ সেহো দেখাওল গেল অছি । জে সমস্যা মিথিনাঞ্চলক ঘবঘবমে বহল অছি ।

জেনা উঁচ রিচাব আ অথক প্রযাস পশ্চাত ওলেলোব রুজবেঁল্টে সঁ অপন অপাংগ পতিকেঁ বাষ্ট্রপতি সন গবিমামষ পদমে পহুঁচাওল গেল ছল ।

পূmল হ্নাগএকঽ বহলমে জগদীশকেঁ পিকী অপন দৃঢ ওচ্ছা শক্তি আ প্রযলে সঁ সহাযক স্টেশল মাস্টব বঁনাএ কঽ ছোডলন্হি ।

তহিনা দোসব কথা নর ব্যপাবমে আধুনিক হোগত গেল মহিনাক জীরনশৈনী আ এহি সঁ পড়ল জাএবঁনা পাবিবাবিক কনহকেঁ একটা রিম্বক আধাবমে উঁজাগব কএল গেল অছি ।

খানী ঘব সঁ সাউঁস, প্বতহুঁ আ পতি রীচক অন্তবদ্বন্দ্ব, সাউঁস প্বতহুঁক কনহ, দাগকেঁ পোতাপোতী প্রতিকঁ মোহক সংগ সংগ দোসব ভাবনাকেঁ কদব নহি কএনা পব পবিণামকেঁ উঁজাগব কএল গেল অছি ।

দূ রিচাব, দূ সময়ক প্রতিনিধিত্ব সেহো কএলে অছি । তহিনা নান ডাযবী কথা হিন্দু আ মৈথিনী সমাজমে বহল অন্ধরিশ্বাসকেঁ দেখাওল গেল অছি । জিদ্দী কথা সঁ অভিভারক জেনা বেঁটা বেঁটীকেঁ অনুশাসনমে বখৈত অছি । তহিনা বেঁটা বেঁটী বঁনবাঁক যর্থাততাকেঁ স্বীকাব কএলে অছি ।

তহিনা সমযমে নহি চেতন গেল তঃ জিদ্দীক পবিণাম কী হোগত অছি সে প্রশ্ন অছি ।
বিনা ছলকপট, নির্দোষ আ ব্যবহাবিক ভঃ মেহনত কএলাপব সফলতা অবশ্যে ভেটৈত অছি সন্দেশ জাদ্ কথা ছোড়লে অছি ।
ওতবেঁ মাত্র নহি আদর্শ, অর্থহীন যাত্রা, ব্যর্থ উঁড়ান আ নিষ্ঠা কী দেখাবা কথামে নাবী চবিত্রক মনোবিশ্লেষণ কএল গেল অছি ।
সমাজ কী কহত ? দিখাবাকেঁ লেল সমাজমে ভঃবহল গুগুহ আ হদকেঁ রযান ও কথাসভমে কএল গেল অছি ।
তহিনা কেহন সজাযমে ধর্মপুত্রীক রুপমে ঘবমে আএল চমেলীকেঁ হুনক ঘবপবিবাব আ সতবাঁ মাএকেঁ অপন বেঁটৌ ভেলাক বাঁদ কএল গেল ব্যবহাব আ ওকবাঁদ চমেলী ভোগলে পীড়াকেঁ দেখাওল গেল অছি ।
অন্তিম কথা মেনকামে বাজিব সবকেঁ ব্যবহাব আ স্নেহ সঁ মেনকাক মোন ভিতব উঁর্জন উঁতাব চঠাবকেঁ দেখাওল গেল অছি ।
সমগ্রমে কহল জাএ তঃ কথা সংগ্রহ জিদ্দী বেঁসী আদর্শবাঁদক নমুনা প্রস্তুত কএলে অছি তঃ মহিলাকেঁ মুখ্যপাত্রক রুপমে ঠাঢ় অছি ।
সমাজক বিগুতি, বিসংগতী, নীক বেঁজাএ সভক হকদাব প্রত্যক্ষ বা অপ্রত্যক্ষ রুপমে মহিলা ভেল রযান কএলে অছি ।
তহিনা মিথিলাক নাবীসভকেঁ আগা আ স্বচ্ছন্দ ভঃ আগা বঁঢবাঁক প্রেবণা সেহো এ কথাসংগ্রহ দেলে অছি ।
মহিলাসভক পক্ষমে বকালত সেহো কবৈত অছি । মুদা কী অপনাসভক সমাজমে আবি বহল পশ্চিমী

संस्कृति आ ओकर विकृति, विसंगतीक जिम्मेदार महिला अछि ।
की महिला आई जननीक वंदना संहारकर्ता वनि रहल अछि ।
की मिथिलाक नारी आई सीता जेकाँ पतिव्रता आ सीता जेकाँ वनए सँ दूर छथि ?
यावत गम्भीर प्रश्नसभ सेहो ई कथासंग्रह उठौने अछि ।
पुरुषवादी सोच आ मानसिकताक कारण ई प्रश्नसभ जायज हएत ? यदा महिलाक कारण समाज वंदनल, समाज लीक आ सुशिक्षित वनैत गेल यथार्थ कथाकार देखए नहि सकल अछि ।
साहित्यकार समाजक यथार्थताकेँ नारि कऽ अपन रचना मार्फत सभक समक्ष पहुँचेबाक काज कएने छथि ।
कहल जा रहल अछि कोनो समाजक अध्ययन करबाक चाही तऽ ओ समाजक साहित्य पढलापर पहुँच जाएत । एहि सँ साहित्यकारकेँ गम्भीर आ चेतनशील भऽ रचना करय लेल प्रेरित करैत अछि ।
कथाकार पुरुषकेँ दोष नहि देखौने छथि ।
की मैथिली समाजमे सभ दोष महिलेके होइत अछि पुरुष मात्र वरेब स्टाम्प अछि ।
ई सभ बात नहि आएब कथासंग्रहक कमजोर पक्ष सेहो देखल गेल अछि ।
कतिपय कथा दुखान्त सँ सुखान्त दिस आगा बढल अछि ।
कतेको स्थानमे दुःखान्त सँ शुरु भऽ दुःखान्तमे जा समाप्त होइत अछि । कथाकार स्वजित कुमार झाक रचनासभ आओर उत्कृष्ठ रचनासभ आरैक तकर अपेक्षा

অছি ।
এক প্রকাবক শৈলী সঁ কথাসংগ্রহকেঁ কলী ওঝবাহন্টিমে বখলাক ৰাঁদো যথাৰ্থতাকেঁ দৃষ্টিকোণ সঁ অৰ্খন অছি । ভাষাশৈলী, মৈথিলী কহবী, প্রঙ্গতি তথা ব্যক্তি বর্ণ সেহো ৰঠিযা আ মিঠাসপূর্ণ বহল অছি । প্রস্তুকক নামাকবণ যুগান্তকল কথাসভ আএল অছি সে স্বখদ ৰাত অছি । মৈথিলী কথা সাহিত্যমে বৌদী পড়ল সমযমে একহি বর্ষমে দূ দূ টা কথা সংগ্রহ আএব রাস্তবমে কঠিল কাম অছি । ক্ষদা ও চুলৌতীকেঁ সেহো স্বীকাব কবৈত স্বজিতক সংগ্রহ প্রশংসনীয অছি ।
তহিনা আহলন্ত নেপাল সেহো কথা সংগ্রহকেঁ প্রকাশিত কঽ ৰজাব ধবি লৌলে প্রতি ধন্যরাদক পাত্র বহল অছি । মৈথিলী সাহিত্য ক্ষেত্রকেঁ একটা আশাক কেন্দ্র আ ভবোসাক সাহিত্যকাবকেঁ আগা ৰঢাএব প্রাত্সাহল কএলে কাজক লেল আহলন্ত নেপালকেঁ সাধুরাদ দেৰহে পড়ত ।



<u>ভানচন্দ্র ঝা,</u> মৈথিলীক খতিবিঞ্জ হিন্দী, মবাঠী, খগ্রেজী খা গুজবাতীমে নিষ্ণাত। ১৯৭৪ ঙা.সঁ মবাঠী খা হিন্দী থিএটবমে নিদেশক। বীভন রৈবাযন মবাঠী একাংকী–মবাঠীসঁ মৈথিলী খনুবাদ।

<u>বাঁন–শিক্ষণপব নিবন্ধ– হমব শিক্ষণ–যাত্রা</u>

১

ঙা গোটি পচীস– তীস ববখ প্রবান গপ্প খছি। তহিযা হম নব–নব এ.টী.ডী. (খার্ট টীচর্স ডিপ্লোমা) কএনে বহী। ঝমবঁগক (তখন বম্বঁগ বহ) এক গোটি প্রসিদ্ধ স্কূলক প্রাথমিক বিভাগমে সহাযক শিক্ষকক রূপমে নাকবী ধ২ নেনহুঁ। খাধ দিন নোকবী খা খ াধ দিন খপন কৱ্নেজক খগিন্বকা পঢ় াগ। কিছএ দিনমে হমব পঢ়এবাঁক পদ্ধতিকেঁ ন২ ক২ খভিভাবক সভক ঙপবাগ খাবঁ২ নগনৈক। নহুঁ–নহুঁ ঙা ঙপবাগক স্রব কনেক ঙুঁচ বুঝাএ নাগন। বাঁত ঝখ্যাধ্যাপক ধবি পহুঁচি গেনৈ।

ऋध्यापक शैक्षणिक क्षेत्रमे बाष्ट्रपति पुरस्कारसँ विभूषित छलाह। अपन काजक प्रति एतेक समर्पित, जे जाहि दिन हुनकर अपन बेटीक बियाह रहनि, ओहू दिन अपन काजक क्षतिपूर्तिक बास्ते भोरमे पाँचे बजे अपना स्कूलपर हाजिर। आ कहियो कानोकान खबरि धरि नहि। ने किओ प्यून आ ने कोनो सहायक। मुहूर्तक समएसँ किछु पहिने फोन कऽ देल गेलनि तँ कन्यादान करबाक हेतु बियाह मण्डपमे पहुँचलाह (महाबाष्ट्रमे बियाह दिनमे होइत छै)।

एकदिन हठात प्यून आबिकऽ हमरा हुनक समाद देलक जे 'हेड गुरुजी अपनेकेँ याद कएलनि अछि'। एहने बिना कोनो कारणक ओ कहियो डिस्टर्ब नहि करैत छलाह। खासकऽ हमरा। हमरा सँ हुनक बिशेष लगाव होएबाक कारण। जे हम ओहिठामक शिक्षक सभक नाँटमे नरत्वबिए रही। दोसर जे हुना शिक्षकक हैसियतसँ हम बिना कहियो कहने अपने मोनसँ स्कूलमे अनेक तरहक बिधाक काज करी। रुटीनसँ हटिकऽ किछु-किछु नव-नव प्रयोग करबामे हमरा बड्ड मोन लागए। किछु बिषयान्तर तँ होएत मुदा एतऽ उदाहरणक बास्ते एक-दू गोटे छोटे-छिन प्रसंग कहब आवश्यक हएत।

शिशु-वर्गक नेन्ना सभ जखन पहिल-पहिल बेर स्कूल अबैत अछि तँ माए-बापकेँ छोड़ैत नहि चाहैत छैक। कनैत-कनैत अपस्याँत भेल रहैत छैक। सौंसे तँ एतेक पड़ैत छैक जे कान नहि देल जाइत छैक। स्कूलक पूरा स्टाफ ओकरा सभकेँ

তবহ–তবহসঁ রৌসহ মে নাগন বহৈত খছি। হমহুঁ ওহি প্রযাসমে নাগন বহী। নেন্না সভক ধ্যান রঁঠৈরৌক রাস্তে হম কিছু কাগজ খা আঁগন পেস্টেন (মোমক বংগ–পেন্সিন) খানি কহ ওকবা সভক সোন্মাঁমে বাখহ নগনিঐক। পবিণামো জন্দীযে দেখাএ নাগন। ওহিমে সঁ কিছুকেঁ তঁ ও কাগজ খা পেন্সিন দেখিতে মাতব তবরোঁ নহবি মগজমে পহুঁচি গেনৈ। ও সভ কাগজকেঁ হাথমে নহ কহ ওকবা চিবী–চিবী কহ দেনকৈ। পেন্সিন টুকড়া–টুকড়া কহ কহ রাঁগি দেনকৈ।

এক গোটে নেন্নাকেঁ জহন হম রহুত ফোর্স কেনিঐ তঁ ও হমবা হাথসঁ পেন্সিন ছীনি কহ সামনে বাখন কাগজপব জেনা টুটি পড়ন। হাঁঞি–হাঁঞি কহ পেন্সিনকেঁ কাগজপব ঘসহ নাগন। এক রেব জে কাগজপব পেন্সিন বখনকৈ সে ফেব রিন্ন উঠৌনহেঁ পূবা কাগজকেঁ ভবি দেনকৈ। ক্ষদা এহি কে রাদ ও শাঁত ভহ গেনৈ। ভহ সকৈযে, ওকব এনর্জী জরাঁর দহ দেনে হোগ। খথরা ও হমব প্রতিক্রিযাক প্রতীক্ষা কবহ নাগন হুখএ। রা হমব প্রতি খপন ক্রাধক প্রদর্শন কবরোক রাস্তে ও এহি মাধ্যমক উপযোগ কেনাক রাদ শাঁত ভহ গেন।

রহুত দিন ধবি হম এহি রিষএমে সোচৈত বহনহুঁ। সে কিএক তঁ পূর্ণ রিশ্রাস খছি জে ছোটৈসঁ ছোট, প্রত্যেক হ্রতিক (Act) কিছু খর্থ হোগত ছৈক, কিছু প্রযোজন হোগত ছৈক। ভনে খাগ ওহি রিশিষ্ট হ্রতিক সার্থকতা দৃষ্টিপথমে নহি খারএ। ক্ষদা রিনা কোনো প্রযোজনে হ্রতি ভহ নঞি সকৈত খছি। কমসঁ কম এতেক তঁ র্বুঝরামে খারিযে গেন জে খাত্ম–প্রগটীকবণ

হেতু চিত্রকলা সন প্রভাবী দোসৱ মাধ্যম নহি। জাহি মাধ্যমমে বিনা কোনো সংস্কাৰ বা ব্যাকৰণকেঁ নেন্না অপন মোনক গপ্প ব্যক্ত কৰ সকৈত ছথি, ওহিসঁ সবল আ শ্রেষ্ঠ কোন মাধ্যম ভঃ সকৈত অছি ?

কিছু দিনক বাদ জখন নেন্না সভ স্কুলক মাস্টৈনসঁ ঘুলি-মিলি গেল, হম এহী তৰহক এক গোট আৰ প্রয়োগ কএল। এক গোট কক্ষাক সাফ-সফাঈ কৰা কৰ পূৰা ফর্শপৰ উজ্জৰ পন্নেন কাগজ পসাৰি দেনিঐক। কোঠৰীমে এক গোট স্পীকৰ টাঁগৰা দেনিঐক । আ ডোলমে ভিন্ন-ভিন্ন ৰংগকেঁ ঘোৰি কৰ কোঠৰীক বাহৰক জমীনপৰ ৰেবা দেনিঐক, জাহিসঁ কোঠৰীমে জাঙ কাল ওকৰা সভকেঁ ওহি ৰংগেপৰ সঁ জাএ পড়ৈক। আ তকৰ বাদ কোঠৰীক স্পীকৰপৰ নেন্না সভক কোনো পৰিচিত গীত শুৰু কৰ দেনিঐক। নেন্না সভকেঁ খালীএ পএৰ ওহি কোঠৰীমে জএবাক লেল কহি দেল গেনৈক।

অনেক ৰংগসঁ পোতাএল তৰৱা লঃ কৰ গীতক তানপৰ নেন্না সভ ওহি উজ্জৰ পন্নেন কাগজপৰ নাচৰ লাগল। ওহি কাগজ পৰক ৰংগ-বিৰংগা ছাপকেঁ দেখি কৰ ওকৰ সভক জে প্রতিক্রিয়া ভেনৈক তকৰ বর্ণন কোনো প্রতিভাশালী, সংৱেদনশীল কবি কৰ সকৈত ছল। তকৰা বাদ তঁ ও সভ অপনেসঁ বাহৰ জা-জা কৰ অপনা পসংদক ৰংগমে পএৰ পোতি-পোতি কৰ ভৰি পোখ অপন তৰৱাকেঁ ওহি কঁনৱাসপৰ অংকিত কৰৰ লাগল। এহি তৰহেঁ বনল ৰংগ-ছাপকেঁ (Col our Pri nt) চুনি-চুনি কৰ জখন ওকৰ ফ্রেম বনাওল গেনৈ, তখন তঁ ওকৰ সৌন্দর্য আৰ নিখৰি গেনৈক। ওহি ফ্রেমকেঁ

শিশ্বরস্থাক কক্ষা সভমে ঠোঁগি দেন গেনৈক। তকবা ৰাঁদ ৰঁহ্ত দিন ধবি নেন্না সভ খপন–খপন পএবক ছাপ চীন্হে২ মে খপন খানন্দ হেবৈত বহন।

কহক মানে ওা জে এহি তবহক প্রযোগ সভসঁ হমব হ্মখ্যাধ্যাপক ৰঁভ্র প্রসত্র হোথি। প্যূন জখন হ্নক সমাদ দেনক তঁ হম পহিন হ্বসতিমে হ্নকব কেরিঁনমে পহুঁচি গেনহুঁ। ও জাহি তবহেঁ রাতারবণ ৰঁনৰঁ২ নগনাহ ওহিসঁ ওা ৰ্ঁঘরাঁ মে কনেকো ভাঙ্গঁঠ নহি ভেন জে কোনো গম্ভীব ৰাঁত ছৈক। খৈব ওকব খধিক রিস্তাবমে নহি জাগত এত২ এতরেঁ কহৰঁ জৰুবী খছি, জে খভিভারক সভ হমব পঢ়এৰাঁক পদ্ধতিক রিবোধমে হ্নকা ধবি পহুঁচি গেন বহথি। মিনা–জ্না ক২ উঁপবাগ এতরেঁ জে 'খহাঁ নেন্না সভকেঁ চিত্র ৰঁনাএৰ নঞি সিখবৈত ছিঐক। ঘবমে নেন্না সভক চিত্র পূবা কবৰাঁক জিম্মেদাবী মাএ–ৰাঁপকেঁ উঁঠৰঁ২ পড়ৈত ছৈক।'

উঁপবাগ স্বনিতে এহি তবহক সোচক মূন স্রাত ৰ্ঁঘৰাঁমে ভাঙ্গঁঠ নঞি ভেন। এহি তবহক সোচক মূন স্রাত ছৈক প্রচনিত শিক্ষা পদ্ধতি। হম সভ জাহি শিক্ষা–ব্যরস্থাকেঁ খঁগিকাব কএনে ছী, ওকব সভসঁ ভাবী সমস্যা হমবা জনিতৰঁ গএহ জে এহি শিক্ষা–পদ্ধতিসঁ নেন্না সভক মোনপব জাহি তবহক সংস্কাব পড়ৰঁ খপেক্ষিত সে নঞি ভ২ বহন ছৈক। রিদ্যার্থীকেঁ স্রযংসিদ্ধ ৰঁনএৰাঁমে জাহি তবহক জ্ঞান, মেহনত খা সংযমক খারশ্যকতা হোগত খছি, ওকব পূর্ণ খভার। কিতাৰঁমে ছপন শৰ্ঁদ পঢ়া দেনহুঁ রা পঠৰা দেনহুঁ। ওহী মহক কিছ শৰ্ঁদক পর্যাযরাচী শৰ্ঁদক খর্থ কহি

কঽ পড়সি দেনহ্ঁ। ভঽ গেনৈ! ছতিকা ছুটি গেনৈ।

স্রাগত গ্বৰুদের বরিন্দ্রনাথ ঠাকুবকেঁ 'শান্তিনিকেতন' খাবংভ কববাঁক খারশ্যকতা ব্ঁমেননি ! খা হম সভ এখনো ধবি রএহ নকীবক ফকীব বঁনাবঁঽ মে নাগন ছী। নরীনতাকেঁ স্রীকাববঁ তঁ হমবা সভকেঁ জেনা পাপে ব্ঁমাগত বহৈত খছি। তেঁ এহি যুগক মহান রৈজ্ঞানিক খাগনস্টাগনকেঁ ওা কহঽ পডননি, জে 'হমব শিক্ষা–দীক্ষা তঁ ওহী দিন সমাপ্ত ভঽ গেন, জাহি দিন হমবা স্কুনমে ভর্তী কবা দেন গেন।'
কনা জকাঁ সৃজনশীন রিষএক খরস্থা কোনো ভিত্র নঞি খছি। ব্ঁনৈকরোঁডপব কোনো চিত্র খীচি দেন খা নেন্না সভকেঁ আঁডিব ভঽ গেন, জে একবা দেখিকঽ চিত্র বঁনবেঁ জাউঁ। ভঽ গেনৈ। খাবঁ খপনে টাগম–পাস কববাঁক হেত্ত ত্রী ছী। গার্জিযনো সভ এহিনা সিখনে ছথি। তেঁ নেন্নাকেঁ কাঁপী ভবন দেখনন্হি খা ভঽ গেনাহ প্রসন্ন, জে চনূ, পঠ়াও ভঽ বহন ছৈক। কাঁপী ভবি বহন ছৈক। ক্দা ও সভ ওা নঞি সোচৈত ছথি, জে ব্ঁনৈকরোঁডপব বঁনাএন চিত্র তঁ কোনো রযস্কক দিমাগক প্রতিমা (Image) ছৈক। নেন্না সভক দিমাগমে ওহি প্রতিমাকেঁ স্থাপিত কববাঁক ধডফড় া কিএক ? নেন্না সভক দিমাগক রিকাস–ক্রমক খনুৰুপ ওকব খপনো কিছু প্রতিমা হেরেঁ কবতৈক। ওকবা সোন্মা খনবাঁক প্রযাস কিএক নে, জাহিসঁ ওকব খপন স্রতংত্র রিকাস হোগ ?

এহি বাঁতকেঁ এহি তবহেঁ ব্ঁমনন জাএ। মানি নিখ জে রযস্ক শিক্ষক খপন রিকসিত (!) দিমাগসঁ একগোট

ফ্জন ছত্তাক চিত্র ৰ্নৈকৰৌর্ড পব ৰনা কঽ নেন্না সভকেঁ ওকবা ৰনাৰ্ঽ নেন কহৈত ছথি। ৰ্নৈকৰৌর্ডপব চিত্রিত ফ্জন ছত্তা, ভৌমিতিক খাকাবক খন্বৰূপ সাধবণতযা খর্ধগোন দেখাগত ছৈক। ক্ষদা খর্মোঁ দেখৰৈক জে নেন্না সভক মানস পঢ়ৈনপব ভৌমিতিক খাকাবক মিতী (Dimension) স্পষ্ঠৈ নহি ভেন ছৈক। পচমা-ছঠমা দর্জামে জহন ভূমিতী পঢ়ৃ াএন জেতৈক তঁ ওকবো দিমাগমে মিতীক খংতব স্পষ্ঠৈ ভঽ জেতৈ।

এহি খরস্থামে রযস্ক শিক্ষক জহন খপন চিত্রক তুননামে নেন্না সভক চিত্রমে 'গনতী' স্বধাবঽ নগৈত ছৈক তঁ নেন্না সভ ৰাজি তঁ কিছু নঞি সকৈত খছি। ক্ষদা ভীতৰে-ভীতব ওকবা সভক দিমাগমে ঘোঁঘাউঁজ (Confusion) শৈব্ধ ভঽ জাগত ছৈক। কিএক তঁ ওকবা জনিতৰেঁ ওহো রএহ চিত্র ৰনৌনে খছি। তহন গনতী কোন তবহক ভেনৈক, সে ৰ্‌ঝৰাক প্রগন্‌ভতা এখন ওকবামে রিকাসিত নহি ভেন ছৈক। নেন্না সভক চিত্র রযস্ক সভক চিত্রসঁ ভিন্ন ভনে দেখাগত হ্খএ, ক্ষদা গনত নহি ভঽ সকৈত খছি। তেঁ হমবা জনিতৰ্ নেন্না সভক চিত্র দেখৰাক নঞি পঢ়ৃৰাক রস্তু হোগত খছি। এহি ৰাতকেঁ জখন চিত্রকনা সিখাৰ্ঽ ৰনা শিক্ষকে নঞি ৰ্‌ঝনৈত ছথি তঁ সামান্য স্ত্রী-প্ৰুষক কথে কী !

ৰ্নৈকৰৌর্ডপব চিত্র ৰনা কঽ পঢ়ৃ াএৰ্ নেন্না সভক স্ৰতংত্র সোচপব খন্যায কবৰ্ ভেনৈক। ওকবা খাশ্রিত ৰনেনাগ ভেনৈক। হম যোজিত রিষযপব নেন্না সভক স্তবপব চর্চা কঽ ওকবা সভকেঁ প্রেৰিত কবৰামে খধিক

রিশ্রাস বাখৈত ছী, জাহিসঁ ওকবা সভক মানস পঠনপব ওহি রিষএকেঁ নঽ কঽ ওকব খপন স্রতংত্র রিম্রঁ রঁনৌ, খা তকবা রাঁদ ও সভ খপন ক্ষমতাক খনুৰূপ কাগজপব ওকবা উঁতাবএ। ভনহি ও চিত্র রযস্ক সভক দৃষ্ঠিযেঁ কতরোঁ রেঁঠরঁ, খাকাবহীন, মিতিহীন হোগ ৯দা ওহি চিত্রমে নেন্না সভক খপন র্যক্তিত্র হেতৈক, ওকবাসঁ খপনত্ব হেতৈক, ওকব খাত্মরিশ্রাস রঁঠ়তৈক, স্রতংত্র ৰূপসঁ খপন দিমাগ নগএরাঁক খাদতি নগতৈক।

নেন্না সভক চিত্রমে এহিসঁ খপেক্ষা হমবা খপবাধ র্ন্নাগত খছি, কিএক তঁ এখন গু রিষএ পঢ়এরাঁক মূন উঁদ্দেশ্য, এহি রিষএক প্রতি ওকবা মোনমে খাত্মীযতা উঁত্পন্ন কবরঁ ছৈক, ওকবা চিত্রকাব রঁনেনাগ নঞি। গু তঁ কানে তএ কবতৈ জে ও চিত্রকাব রঁনত কী নঞি। এহি রিষএক মাধ্যমসঁ ওকবামে খানী নরনির্মাণক ক্ষমতাক প্রতি খাস্থা জাগৃত কএন জা সকৈত খছি।

এক গোট ঠোস উঁদাহবণসঁ এহি সংকল্পনাকেঁ খাব রেঁসী স্পষ্ট কএন জা সকৈত খছি। সাধাবণ ৰূপসঁ জহন নেন্না সভকেঁ ৯গীক চিত্র রঁনেরাঁক নেন কহন জাগত ছৈক তঁ ও ৯গীক পেটমে খন্ডা সেহো দেখরৈঁত ছৈ। খারঁ হম সভ তথাকথিত সংস্কাবসঁ গ্রস্ত নোক জহন গু চিত্র দেখৈত ছী, তঁ ভ্রম ভঽ জাগত ছী। জে কেহন মতস্বন্ন নেন্না খছি গু ? ৯গীক পেটমহ্ক খন্ডা কতঽ সঁ দেখ নেনক গু ? রঁস নগনহুঁ ওকবা দ্রুথঽ ... তবহ–তবহসঁ ওহি মহক গনতী র্ন্নারঁঽ। চীজক ‘খসনিযত’ র্ন্ননে, নগনহুঁ ওকবা ‘খসনী’ চীজক খর্থ র্ন্নারঁঽ।

असलियत ई अछि जे आठ–दस साल धरि नेन्ना सभकें यथार्थ दृष्टि प्राकृतिक रूपसँ भेटैत रहैत छैक। एकरा दोसर शब्दमे 'एक्स रे' दृष्टि सेहो कहि सकैत छिऐक। प्रत्येक वस्तुकें देखबाक ओकर अपन दृष्टिकोण होइत छैक। वस्तुकें आर–पार ओ देखि सकैत अछि। बादा हमरा सभक दृष्टिमे ओकर एहि दृष्टिकें कोनो मोजरे नहि। हम सभ सदिखन अपन तथाकथित वयस्क (!) संस्कारित दृष्टिकोणसँ सभ चीजकें नपबाक अभ्यस्त छी। तें ओकर यथार्थवादी दृष्टिकोणकें पढ़बामे हम सभ सक्षम होइत छी।

ई बहुते हमरा आओर तँ बुझाइतिऐक जे नेन्ना जहन मुर्गीक आङ्गिक विशेषताक बारेमे ध्यान करैत छैक तँ ओकर यथार्थवादी दृष्टिकोण ग्रहण करैत छैक जे मुर्गी अन्डा दैत छै। ई सोचिते ओकर मोन करैत छै, एकरा माने कतहु अन्डा जमा हेतैक। तखन ओकर स्मरण ओकरा मदद करक वास्ते हाजिर भऽ जाइत छैक। माएसँ सुननहि अछि, मुँहसँ खाएल अन्न पेटमे चलि जाइत छैक। माने पेटमे जमा होएबाक जगह छैक। ओ पेटमे अन्डा देखा दैत छैक। एहि प्रक्रियामे ओ गलत कोना आ कतऽ भेल? बहुत वैज्ञानिक सत्यताक गप्प। तँ जेना–जेना ओकर उम्र बढ़तैक, उपरका दर्जामे ओ जाएत, ओकरा ईहो स्पष्ट भऽ जेतैक। एखनि तँ शिक्षकक उद्देश्य ई होएबाक चाही जे ओ निडरतासँ अपना आपकें व्यक्त करबामे सक्षम होअए। हमरा बुझने अपन कल्पना लादि कऽ शिक्षक आ गार्जियन सभ ओकर प्राकृतिक यथार्थकें,

तार्किक दृष्टिकोणकें, ओकर स्मरणशक्तिक विकासकें कुंठित करबामे लागल छथि।

सभाक उपसंहार करैत हम एतेक अवश्य कहनियन्हि, जे जाहि दिन नेन्ना सभक चित्रमे अपने सभ दखल देब बन्न कऽ देबन्हि, ओही दिनसँ नेन्ना सभक मानसिक विकास शुरू भऽ जेतैक।

२

दुनूगोटे बंबईमे मास्टरीसँ हमर मोन उचटि गेल। नोकरी छोड़ि देलहुँ। सदा ई भार सदिखन बनल रहल जे हम स्कूल नहि, अपन सिखबाक प्रयोगशाला छोड़ि कऽ रहल छी। सदा ईहो स्थिति बनल दिन धरि नहि रहल। प्रवरा स्कूलक एक गोट स्टाफ हमर अभिन्न छलाह। एकदिन हमरा अचक्के भेट गेलाह। कहऽ लगलाह जे एक गोट शिक्षक एक गोट झुग्गी बस्तीमे स्कूल खोलि रहल छथि। ओकर विशेषता ई अछि जे ओहि स्कूलमे ओ एहने विद्यार्थीकें एडमिशन देबऽ चाहैत छथि जकरा कोनो आन स्कूलमे एडमिशन नहि भेटैत छै।

गप्प वास्तवमे ध्यान देबऽ योग्य बूझि। एहन स्कूल खोलबाक हेतु तेहन धैर्यवादी शिक्षक सभक आवश्यकता हेतैक। अपन अभिन्नक मंतव्य बुझबामे हमरा कनियो भाङ्गठ नहि भेल। सदा हमरा एकहि नोकरीमे ई बुझबामे आबि गेल छल जे मास्टरीमे जाहि तरहक संयम, स्थैर्य आ धैर्यक आवश्यकता

ফোগত ছৈক, হমবামে ওকব নেশো মাত্র নঞি খছি। হুনকা ততকান হম কোনো রচন নঞি দেনিযন্হি। খসনমে হম ফেবসঁ ওহি কুটৌনমে ফঁসহ নহি চাহৈত ছনহুঁ। হুদা ও খপনহিসঁ হমব নামক সিফাবিশ কহ দেনন্হি। কিছুএ দিনমে হমবা ওহি হুখ্যাধ্যাপকজীক সমাদ ভেটি গেন। ওা ১৯+১–+২ ক গপ্প খছি।

এক গোটে শিষ্টাচাবক ধর্ম বুঝি হম হুনকাসঁ ভেঁটে কবৱাঁক নিশ্চয কএন। হুদা হুনক কথা–রাতসিঁ হম বঁড্ড প্রভাবিত ভেনহুঁ। ওহো হমব প্রতিক্রিযা স্রব্দপ টিপ্পণীসঁ প্রভাবিত বুঝএনাহ। হম ডোযন রৈসিসপব কিছু দিনক হেত্ত হুনকব আঁফিব স্রীকাব কবৱাঁক নিশ্চয কেনহুঁ। এহিরৈব হমব নিযুক্তি মাধ্যমিক দর্জা (পাঁচমা সঁ দসমা দর্জা) হেত্ত ভেন বহএ। মুগ্গী বঁস্তীক ওহি স্কূনমে সভ তবহক খপবাধ রৈবোকহৈক চনৈ ছন। দাব্দ বঁনেনাগ, রৈচনাগ, পিনাগ খা জূখা খেনেনাগ তঁ বঁড্ড সাধাবণ গপ্প।

বঁস্তীক স্রাভাবিক খস্রচ্ছতাসঁ পসবন দুর্গন্ধি খা দাব্দক গংধসঁ স্কূনমে নাক নঞি দেন জাগ। স্কূনক খিড়কীক নিচ্চা জুখাক দাঁর নগৈ। ও তঁ ধন্য কহী হুখ্যাধ্যাপকজীক জে ও নিডবতাসঁ এহিসভ সঁ নিপটৈত ছনাহ। নাঠী নহ কহ খিহাবি–খিহাবি কহ ওকবা সভকেঁ ভগবঁথি। খা স্কূনমে ওকবে সভক রৈটৌ–রৈটৌকেঁ পঢ়এবাঁক ভাব উঁঠাবঁথি। রৈবোজগাব যুরক সভ মহিনা শিক্ষিকা সভকেঁ বঁড্ড উঁছন্নবি দৈ। জান হুষ্টীমে নহ কহ সভ ব্যরহাব চনৈক, কিএক তঁ কখন ককবাসঁ উঁষ্টা–বঁজ্জবি ভহ জাএ, একব কোনো গৈবেঁটী

নঞি ।

অনুকূন পবিস্থিতিমে কোনো কাজকেঁ সফন বঁনেনাগ কোনো বিশেষ গপ্প নঞি। মুদা সভ তবহসঁ পবিস্থিতিক প্রতিকূনতামে কোনো কাজকেঁ সফন বঁনেনাগ একটা উঁপনব্ধিযে কহন জা সকৈত অছি। আ সেহো শিক্ষা জেকাঁ এক গোট গংভীব তথা জিম্মেদাবীবঁনা ক্ষেত্রমে। মুখ্যাধ্যাপকজীক এহি সাহসকেঁ এক তবহেঁ তপস্যে কহন জএবাঁক চাহী। বঁস ওএহ এক গোট বাঁত ছন জাহি সঁ হম হুনকা দিসি আকর্ষিত ভেনহুঁ। এক গোট ভিত্র তবহক, শিক্ষাক অসনী বেঁগবতাবঁনা নেন্না সভক সংগ সাথক অনুভব।

স্কূনক টাগম-টৈবুঁনমে ‘চিত্রকনা’ একতবহেঁ জগহ ভবহ বঁনা (F i l t e r) বিষযক তৌবপব নেন জাগত অছি। টাগম-টৈবুঁনমে সভসঁ অগ্রিম স্থান পাবঁহ বঁনা বিষএ হোগত অছি গণিত (হিসাবঁ), দোসব মান বিজ্ঞানক, তেসব মান দেন জাগত অছি ভাষাকেঁ, তাহুমে অংগ্রেজীক স্থান প্রথম, তহন মাতৃভাষা, তকবা বাঁদ দ্বিতীয ভাষা। চাবিম স্থানপব গতিহাস, ভূগোন, নাগবিক শাস্ত্রকেঁ কোনহুনা ফিট কহ দেন জাগত ছৈক। তহন অবৈঁত ছৈক নম্বঁব প◌ॉনিসী মৈটববঁনা বিষএ সভক, জেনা কার্যানুভব, হস্তকনা, চিত্রকনা, পী.টী., জকবা ‘খেন’ ক নামপব শহীদ কহ দেন জাগত ছৈক। সপ্তাহমে এক-দূ বেঁব সাংস্কৃতিক কার্যক নামপব অনেক তবহক ছুটৈন-ছিবিযাএন বিষএসঁ ছতিকা ছোড় । নেন জাগত ছৈক।
অগ কথাপব গৌব কেনাসঁ শিক্ষাক দর্জা আ ওহিসঁ

হোৱঁহৱঁনা পৰিণামক খঁদাজ খ ারি সকৈত খছি। খাটৌ পীসহৱঁনা মশীনকেঁ দেখিযৌ। ওকব ঝঁহমে গছ্রম খথরা খান কোনো খনাজ উঁঝীন দেন জাগত ছৈক। খা কিছুএ কানমে দোসব দিসিসঁ পিসাএ খাটৌ ৰঁহবা জাগত ছৈক। খাজ্ক শিক্ষা-পদ্ধতিকেঁ দেখিকহ হমবা ণ্ডা স্কূনো সভ রিদ্যার্থী ৰঁনাৰঁহ ৰঁনা ৰঁড়কা-ৰঁড়কা মশীনে ৰ্ঁঝাএ নগৈত খছি, জাহিমে প্রত্যেক রর্ষ রিদ্যাক খর্থী উঁঠাওন জাগত খছি।

ত্র্টি দৃষ্ঠিকোণ (Vi si on) মে নঞি, ত্র্টি কার্যান্রযন (Executi on) মে খছি। প্রত্যেক রিষযক খপন কিছু রিশিষ্টতা ছৈক। সময খা স্থানক মর্যাদ খছি। তেঁ সম্প্রতি মাত্র কিছু প◌ॉনিসী মৈষ্টবৱঁনা রিষএক সন্দর্ভমে হম খপন রিচাব বাখৱঁ। খসনমে এহি সভ রিষএকেঁ দূ গোট শ্রেণীমে বাখন জা সকৈত খছি। দিমাগমে তনার পৈদা কবহ ৰঁনা রিষএ খা দিমাগী তনারকেঁ ঢীন (Rel ax) কবহ ৰঁনা রিষয।

ঝখ্য রিষএ সভ কোনো নে কোনো সিদ্ধান্তক র্যাকবণক জ্ঞান দৈত ছৈক। এহি তবহক রিষএ সভমে শবীব স্থিব বহৈত ছৈক ঝদা দিমাগী একাগ্রতা, সতর্কতা, খা জাগরূকতা খপন চবমপব, জাহিসঁ দিমাগপব দৱাঁর ৰঁনৈত ছৈক। দোসব দিস হস্তকনা, চিত্রকনা, সংগীত, কার্যান্বিভর, পী.টী. (খেন) এহি তবহক রিষএ সভমে এক তবহক নরনির্মিতিক খানন্দ ভেটৈত ছৈক। সংপূর্ণ শবীবমে ভিত্র-ভিত্র তবহক নয, তান খা ভংগিমামে গ্নতিশীন বহনাসঁ মনোবংজনক খন্বভতি হোগত ছৈক। এহিসঁ তনার খা দৱাঁরকেঁ ঢীন হোমএমে মদতি ভেটৈত ছৈক।

তেঁ নেন্না সভক টৌগম-টৈৰ্ন্নমে এহি দূনূ তবহক রিষএকেঁ এহি তবহেঁ ৰাঁন্হন জএৰাঁক চাহী, জাহিসঁ সমতোন (Bal ance) ৰঁনন বহৈ। জতেক সম্ভর ভ২ সকৈ, তনার ঙঁত্পত্র কব২ৰঁনা রিষএক ৰাঁদ, তনারকেঁ হ্মঞ কবৰাঁক রাস্তে দোসব তবহক রিষএক বচনা কবৰাঁক চাহী। জাহি সঁ খগিন্বকা রিষএক তনার মেনৰাঁক ক্ষমতা ঙঁত্পত্র ভ২ সকএ। খগমে মেহনতি ছৈক, দিমাগী ছৈক। যোজনাৰঁহ্ম তবীকাসঁ কাজ কবৰাঁক পবীক্ষা ছৈক। কে কবত ? হ্মদা এহি রিষএ সভক যোগ্য নিযোজনসঁ কী চমত্কাব ভ২ সকৈত ছৈক তকব প্রত্যক্ষ খন্বভর হমবা এহি স্কূনমে কএন খপন প্রযোগসঁ ভেন।

জাহি তবহক রাতারবণসঁ ঙা স্কূন ঘেবাএন ছন তকব রৰ্ণন তঁ ঙুঁপব কেনহে ছী। এহন রাতারবণমে কে টিকএ ? তেঁ শিক্ষক সভক কমী সদিখন ৰঁনন বহৈক। কোটৌ পহ্মতিসঁ শিক্ষকক নিযুক্তি, তকবামে খাব খড়চনি পৈদা কবএ। ৰঁহ্ত বাস রিষএক শিক্ষকে নহি ভেটৈ। খাপসমে কহ্না ক২ ঐডজস্টৈ কবৈত রিষএ সভ পঠ় াখ ান জাগ। হমবো কোনো নে কোনো শিক্ষকক ক্ষতিপূর্তি কবৰাঁক রাস্তে ৰেঁগবতূ কক্ষামে পঠা দেন জাএ। হমহুঁ একবা এক গোষ্টৈ মৌকা ৰূঁঝি ক২ টৌগম-টৈৰ্ন্নপব দেন রিষএ পঠাৰঁ২ নাগী। কতহ্ খংগ্রেজী তঁ কতহ্ মবাঠী, কতহ্ হিন্দী তঁ কতহ্ খান কোনো রিষএ।

তাৰঁত এ.টৌ.ডী. কএনাক ৰাঁদ হম কপাবেন কॉনেজসঁ ৰী.এ. ক২ নেনে বহী। থিএটৈব ডিপ্নোমা চনি বহন

ছল। তেঁ পঁচমাসঁ দসমা ধবিক নেন্না সভকেঁ রিষএ পঠ়েনোগ ততেক কঠিন নঞি বুঁঝাএ। হম বী.এ. ঋর্থশাস্ত্র নহ কএনে বহী। তেঁ দসমা বস্থামে ঋর্থশাস্ত্র পঠ়এবাঁক জিম্মা হমবে দহ দেন গেন বহএ। নিযামনুসাব ঔা ঠীক নঞি ছল। কিঐক তঁ হমব নিযুক্তি বহএ স্পেশন শিক্ষকক ৰূপমে। মুখ্য রিষএ পঢ়এবাঁক হেতু হম প্রশিক্ষিত নঞি বহী। মুদা মুখ্যাধ্যাপকো মজবূঁব ছলাহ। দোসব কোনো উঁপাযে নঞি বহনি।

ঋহিনা একদিন হমবা দিমাগমে এক গোট বাঁত ঋাএন। জে একহি কক্ষামে এক গোট রিদ্যার্থী প্রথম ঋবৈঁত ছৈক। ঋা ওকবে বাঁগনমে বৈঁসহবঁনা ফেন ভহ জাগত ছৈক, সে কিএক ? দোসব বাঁত জে ফেন রিদ্যার্থিযো কোনো রিষএমে বাঁঢিএঁা ঋংক ঋানৈত ঋছি তঁ কোনোমে খবাপ, সে কিএক ? জখন কি কক্ষা, শিক্ষক, সমএ সভ একে বংগক হোগত ছৈক। কিছু কাবণ তঁ ঋবশ্যে হেতৈক।

রিচাব কেনা সন্তা ঔা বুঁঝাএন জে জাহি রিষএমে ও বৈঁসী ঋংক ঋানৈত ঋছি ওহিমে ঋবশ্যে এহন কিছু গপ্প ছৈক জে ওকবা পসিন্ন ছৈক। তেঁ ওহি রিষএমে ওকব মোন ঋধিক বমৈত ছৈক। দোসব রিষএমে ঠীক একব উঁনটা হেতৈক। যদি ওহি রিশিষ্ট রিষএমে সঁ ওকব পসীন (Interest) কেঁ তাকি নেন জাএ তঁ দোসব রিষএমে ওকব ওহি পসীনকেঁ পৈদা কহ কহ পবিণাম বাঁদনন জা সকৈত ঋছি কী নহি ?

হম এহি দিশামে প্রযত্ন কববাঁক নিশ্চএ কেনহুঁ। ওহি

समएमे प्रत्येक कक्षाकें विद्यार्थी-संख्याक अनुसार 'अ'-'ब'-'क'-'ड'-'इ' ...एहि तरहें भिन्न-भिन्न विभागक संरचना कएल जाए। एहि व्यवस्थामे 'अ'-'ब' मे बैठिऔं, पास होबऽ बला विद्यार्थी आ ओकरा बादक दर्जामे सभ उत्तरोत्तर, फेल होबऽबला विद्यार्थी सभ वाखल जाइ। आर अइ तरहक भिन्न-भिनाउँज करबाक अनुमति नञि छैक। मिथ्यसब कऽ बैसाएल जाइत छैक। तँ हम आठमा 'ड' क चारि गोट विद्यार्थीकें हेरि ओकरा सभकें दत्तक लेबाक विचार कएलहुँ। माने एहि चारि गोट विद्यार्थीक परीक्षा-परिणाममे परिवर्तन अनबाक दृष्टिसँ हम ओकरा सभक मार्गदर्शन करबाक जिम्मा उठा लेलहुँ।

विद्यार्थी सभक मानसिकताकें परखऽ लेल हम चित्रकलाकें आधार बनाओल। हमरा सफलतो दृष्टिगोचर होमए लागल। एहि प्रयोगक पराकाष्ठामे हमरा आश्चर्यजनक गप्प सभक पता लागल। पँचमा दर्जाक एक गोट विद्यार्थी हमरा एहेन भेटैल, जकरा कोनो चित्र बनाबऽ कहिऔक तँ ओ अपन चित्रकलाक कॉपी ठाढ़ (Vertical) अवस्थामे पकड़ैक। पहिने तँ एहि बातकें हम कोनो गम्भीरतासँ नहि लऽ पेलहुँ। मुदा जहन एकर पुनरावृत्ति होमए लगलैक तखन हमर ध्यान एहि दिसि गेल। तकरा बाद तँ हम जानि-बूझि कऽ ओकर प्रत्येक कृतिकें अपन अध्ययनक (Study) विषए बना लेलहुँ।
ओकर रचना, आकृतिक बनाबट, रंगक चुनाव, रंगबाक पद्धति... ओकर प्रत्येक कृतिकें कखनो हम अलग (Isolate) कऽ कऽ देखिऔक तँ कखनो आन विद्यार्थी

সভক ত্তননামে। ঙা এম রঁহ্ত দিন ধবি চনৈত বহনৈক। একব চবম খাবি গেনৈ ওহি দিন, জহিযা হম রিষএ দেনে বহিঐক 'হমব পবিরাব' (My family) । ওকব ঙা চিত্র জেনা ভক দঽ হমব খাঁখি ফোনি দেনক। এহি চিত্রসঁ জাহি তবহক নিষ্কর্ষ নিকনন ওহিকেঁ ঠীকসঁ বুঁঝবাঁ নেন সর্বপ্রথম ওকব চিত্রক বঁনারষ্টকেঁ ঠীকসঁ বূঁঝএ পড়ত।

সভসঁ পহিনে ওকবা দ্বাবা কাগজকেঁ ঠাঠ় কঽ কঽ পকড়বাঁক পাছাঁক বহস্য বূঁঝি নী। কাঁপী ঠঢ়কা খাযতক খাকাব নঽ নৈত ছৈক। জাহিমে চৌড় াগ কম খা নম্বাঁগ বেঁসী হোগত ছৈক। এহিসঁ ও 'জগহক সংকোচ' দিসি হমব সভক ধ্যান খাকৃষ্ট কবঽ চাহিত ছন। ছোট জগহ ওকব নিযতি বঁনি গেন ছনৈক। স্থানক ঙা খভাব ওকবা দিমাগপব এতেক হাবী ছনৈক জে ও এহিসঁ বাঁহব সোচিযে নহি সকৈত ছন।

খাবঁ ওকব চিত্রক সংবচনাক (Construction) রিষএমে। কাগচক ভীতব দিসি চাৰুকাত খঁদাজসঁ এক-দূ গন্চক বঁডিব ছোড়ি কঽ ও বেঘ খিচনে ছন। জেনা ঠাঠ় খাযতাকাব কাগজক ভীতব এক গোট খাব ঠাঢ় খাযত। চিত্রক পবিপূর্ণতামে ঙা ডাযনিংগ টেবুঁন জকাঁ দেখাগত ছন। ডাযনিংগ টেবুঁনক ছবি (Image) ওকবা নেন খাগ-কানহ্ক সিনেমা খা টীভী প্রাগ্রামক দেন ছনৈক, ঙা বূঁঝন জা সকৈত খছি।

টেবুঁনক ডঁপবকা হিস্সামে দূ গোট খন্পরযী নেন্নাক

बीचमे एक गोट रयस्क स्त्रीकेँ चित्रित कएल गेल छैक। ई सम्भवत: ओकर माए आ भाएक छवि छैक। आ ओकरा सभक आगूमे थारी, बाटी, आ गिलास सदृश किछु समान सभ। निचलुका हिस्सामे केरल एक गोट नेन्नाक आकार। सम्भवत: ओ स्वयं। ओकरो आगूमे ओहिना किछु बासन सभ। टेबुलक बिचला पूरा हिस्सा खाली।

रंगक नामपर जे रंग भेटैत छैक ओकरा ओ पोछि-पाछि देने छैक। एहिमे प्रत्येक वस्तुक प्रति ओकर उदासीनता प्रकट भऽ रहल छैक। क्षुदा ओहूमे गौर करबाक गप्प ई जे लाल रंगक उपयोग प्रमाणमे किछु बेशिये बुझाएत छैक। ई ओकर मरखाहा (Aggresive) प्रवृत्तिक निदर्शक छै। आर किछु छोट-मोट विशेषता (Details) भऽ सकैत अछि जे हम बिसरि गेल होएब। क्षुदा क्षन मिला कऽ ओहि नेन्नाक मानसिकता बुझबाक दृष्टिसँ ओकरा द्वारा चित्रित दृश्यक एतबा वर्णन काफी अछि।

ओहि चित्रकेँ लऽ कऽ एक गोट कला शिक्षकक रूपमे तथा प्रत्येक प्रकृतिक पाछाँक सत्यक सन्धानमे रुचि राखऽवला एक गोट विद्यार्थीक रूपमे हमरा अपना जे बुझाएल ताहि दिसि देखी। चित्रक विषए छैक हमर परिवार (My family)। ई चित्रित करबाक वास्ते विद्यार्थी द्वारा 'आगक टेबुल' क दृश्यक चुनाव करब, हमरा जनितबेँ ओहि नेन्नाक जागृत बुद्धिकेँ देखबैत छल। किएक तँ क्षमबेंग सन शहरमे साधारण रूपसँ गएह ओ टेबुल होगत अछि, जाहिमे परिवारक सभ सदस्यक एक

संगे रहैसर संभावित छैक। वास्तवमे किओ रहैत छैक कि नञि ई बात गप्प अछि। बात नेन्ना सभमे किओ एकटा नेन 'बगीचा' क रचनाक कएने छथि, तँ किओ कोनो समाधान्भक। एहि सभ विभिन्न दृश्यक रचनाक पाछाँ सम्बन्धित पारिवारिक स्थितिकें नइ कइ बनल मानसिकताक छाप स्पष्ट रूपसँ बुझाएत छनैक।

आर चित्रक वचनाक बादे। डायनिंग टेबुलक एक छोटपर बनल दू गोट नेन्नाक बीचमे बैसल स्त्री तथा दोसर छोटपर चित्रित एकसरि नेन्ना। ई पारिवारिक सम्बन्धमे आएल कोनो तरहक दूरी दिसि संगित करैत अछि। सभसँ चौंकाबए बला गप्प तँ ई छल जे एहि चित्रमे परुसक पुरुषक रूपमे ककरो चित्रित नहि कएल गेल बहैक। हमरा बुझने ई बात परिवारसँ गाएब पिताक अस्तित्वक सम्बन्धमे छल। टेबुलक दोसर कोनसँ महक एक गोट नेन्नाक आकारक माध्यमसँ ओ ककरो एकसरिपन (Loneliness) देखा बहल छल। साएत परिवार-समूहसँ दुराएल नेनपन!

कोनो ठोस निर्णयपर पहुँचबाक पहिने विचार कएलहुँ जे ओहि विद्यार्थीसँ एहि सम्बन्धमे गप्प कएल जाए। ओकरा अपन विश्वासपात्र बनएबाक दृष्टिसँ प्रयत्न शुरू कएलहुँ। किछुए दिनमे ओ बधि गेल। तकरा बाद फुसिए आहे-माहे करैत, ओकरा पोल्हा-पोल्हा कइ जाहिसँ ओकरा कोनो तरहक शंका नञि होअए, ई ध्यान रखैत ओकर दिन क्रम, घरक वातावरण, माता-पिता, भाए-बहिन इत्यादि जीवन सम्बन्धी बातक जेबइ लगलहुँ। गप्प करिते सभ चीज फरिछा गेल। दुर्भाग्यसँ हमर कयास ठीके बहए।

আরঁ ওকর বাঁপসঁ গপ্প করবঁ হমরা বঁড্ড আরশ্যক বুঁঝাএ লাগল। দূ-তীন বেঁরুক সমাদক বাঁদ ও ভেঁটে করহ আএল। কিছু পরিচয-পাত্র ভেলাক পশ্চাত জতবেঁ গম্ভীরতাসঁ হম ওকর বেঁটাক বাঁরেমে চিন্তা ব্যক্ত করৈত গেলহুঁ, ওতবেঁ দৃঢ়তাসঁ ও এহি গপ্পক খংডন করৈত রহল। ওকরা মোনে হম অখনেবে এহি গপ্পকেঁ গংভীর বুঁঝি রহল ছলহুঁ। হাবি কহ হম ওহি রিষএকেঁ ছোড়ি ওকর নোকরীক রিষএমে, ওকর পরিরারক রিষএমে, ওকর দিনচর্যাকি রিষএমে গপ্প করহ লগলহুঁ।

বেঁটা নান্হিএটা রহৈক, জখন ওকর পহিল স্ত্রী স্বর্গ সিধারি গেল রহৈক। তঁখর নেন্নাকেঁ মাএক কমী নঞি বুঁঝাগ, তেঁ ও দোসর রিঁযাহ কহ লেলক। নর মাউঁগিসঁ দূ গোটে আর নেন্না, এক গোটে বেঁটা, এক গোটে বেঁটী। ঘরমে কমাএ জোগবি রএহ একে টা বেঁকতি। ভোরে কাজপর চলি জাএ তঁ আবঁএ সাঁঝখনি। ও সভ বঁঢ়িএঁসঁ চলি রহল রহৈক, এক তঁ দোসর মাউঁগি অপন নেন্না আ ওকর পহিল নেন্নামে কহিও কোনো ফরক নহি কেলকৈ। ও ছল এহি দিসি দেখবাঁক ওকর দৃষ্টিকোণ।

তৈযো হম অপনা মর্যাদামে ওকরা হৃদএ ধরি এতেক বাঁত পহুঁচা দেলাগক জে এহি বেঁটাক বাঁরেমে জতরাঁ ও বুঁঝৈত অছি ওতবাঁ সভ কিছু ঠীক ঠাক নঞি ছৈ। তেঁ তবহেঁ আস-পড়োসসঁ, দোস্ত মহীমসঁ, আন কোনো স্রোতসঁ এহি গপ্পক রাস্তরিকতাক জতেক জল্দী পতা লগা লেত, ওকরা হেত্ত ওতবেঁ যোগ্য হেতৈক। খৈর,

ৰাঁত আএন–গেন ভঽ গেনৈক। হমহুঁ ৰুটৗনমে নাগি গেনহুঁ।

একদিন অচানক শিক্ষক–কক্ষমে ও হাজিব ভঽ গেন। নমস্কাব পাতীক পশ্চাত হম অপন ব্যক্তিগত কাজমে নাগি গেনহুঁ। হমবা ভেন অপন কোনো কাজসঁ ও আএন হোএত। মুদা জহন বঁড় ী কান ধবি রিঁনা কোনো এহন রিশেষ ব্যরহাবক মূড় ী খসৌনে বৈঁসন দেখনিঐক তঁ শংকা ভেন। ঔপচাবিকতারশ পূছি দেনিঐক জে কোনো রিশেষ কার্যসঁ আএন ছহ কী রিদ্যর্থীক ৰুটৗন বিপোর্ট নেবাঁক রাস্তে। হানাঁকি অহি বাঁতক সংভারনা কম্মে বঠক। কনেক কানক দুরিধাক বাঁদ ও কহনক জে অহীসঁ ভেঁৰ্ট কববাঁক অছি। অপন দেহ–ভংগিমাসঁ ও বঁড্ড ডিস্ৰ্টর্বিড ব্ঝাএন। কিছু সংকোচমে সেহো বহএ। হমবা কনে–মনে ঙা ব্ঝবাঁমে আরি গেন জে হম জে ওকব বৈঁৰ্টাক মাদে কহনে বহিঐক, ওহী সম্রন্ধমে কোনো হেতৈক। ওকবা সহজ কববাঁমে কনেক বেঁব তঁ নাগন মুদা হমবা নঽ কঽ সভ তবহেঁ আবশ্রস্ত ভেনাক বাঁদ গবম বাঁন্ৰমে ফ্টৈত মকঙক নাৰাঁ জকাঁ ও ভড়ভড় াএ নাগন।

সংপূর্ণ বামাযণক সাব ঙা জে হম রিদ্যার্থীক চিত্রকনাক আধাবপব জে গপ্প ওকবা কহনে বহিঐক তকব রাস্তরিকতা ওকবা সমক্ষ আরি গেন বঠক। হম জাহি শংকাক রীজ ওকবা হৃদএমে বোপি দেনে বহিঐক ও বাতি–দিন ওকবা খিহাবঽ নগনৈক। ওহিসঁ পাছাঁ ছোড়এবাঁক হেতু ও এহি বাঁতক তহমে জএবাঁক নিশ্চয কেনক, জাহিসঁ হমব সিদ্ধান্তক ঝূঠ রা সত্য সামনে

খারি গেনাপব ওকবা কমসঁ কম এহি দ্রিধাসঁ ছুটকাবা তঁ ভেটিযে জেতৈক। হ্মদা ভেনৈ উন্টা। সত্যক গা চেহবা ওকব কন্পনোসঁ খধিক ভযংকব ছনৈ।

নর পত্নীকেঁ খপন সংতান ভেনাক বাঁদক পবিস্থিতিমে ভেন বঁদনারসঁ ও পূর্ণরূপেণ খনভিজ্ঞ ছন। ভোরুক গেন নোকবীসঁ সাঁঝ ধবি ঘ্রবএ। রেঁটা কিছু কহবো কবৈক তঁ নেন্না সভক গপ্প বুঁঝি কহ বাঁতকেঁ টাবি জাএ। পত্নীযো হঁসী–মজাকক খাধাব নহ কহ গপ্পক গংভীবতাকেঁ স্পষ্ট নহি হোমহ দৈক। পতিক পরোক্ষমে ওহি নেন্নাসঁ ওকব ব্যরহাব পাস–পড় াসক নোক সভক নজবিমে সেহো খারঁহ নাগন বহৈক। হ্মদা হ্মংরঁগ সন মহানগবমে খনকব জীরনমে কেও জন্দী পৈসাব নঞি কবৈত খছি। ককবো এতেক হ্বিসতিএ কতহ ?

কেও কিছু কহিযো দৈক তঁ পত্নী কানি–ভাখি কহ ওহি বাঁতকেঁ এনা ঘ্মা দেখি জে ওকবা পত্নীক বাঁতপব খরিশ্রাস কবরাঁক কোনো কাবণেঁ নহি বহি জাগক। হমবাসঁ চর্চ ভেনাক বাঁদ ও কাজপব সঁ কোনো নে কোনো বঁহন্নে ওঁচক্কেঁ ঘব ঘূবহ নাগন। ঘবরাঁক ব্যরহাবপব দূবেসঁ নজবি বাখহ নাগন তঁ পবিণামো দেখাএ নগনৈক। নোক সভক হ্মঁহসঁ সূনন গপ্পক সত্যতা দৃষ্টিমে খারঁহ নগনৈক। পহিনে তঁ একাধ দিনক বাঁত বুঁঝি কহ খনঠেনক। হ্মদা খন্বভরক প্বনবাবৃতিসঁ ও ঠহকন।

স্কূন ছুটনাক বাঁদ রেঁটা ঘব নৌটএ তঁ সতমায দবরঁজ্জো নঞি হোনএ। রেঁবহটিযা ধবি ভোজন–ভাত

নিপটো কহ দনূ নেন্নাক সংগ সূতি বহএ। আ ওা দবরজ্জা ঠোকৈত-ঠোকৈত কানি -রাজি কহ ভূখন-পিআসন চৌকঠেপব রস্তা নেনে ওকব উঠরাক রাটি জোহৈত রৈসন বহি জাএ। পড়াসী সভক নজবি পড়ৈক তঁ ও সভ কিছু খ্আ দৈক। স্ত্রী উঠৈক তঁ রহন্না রনা দৈক জে মোন খবাপ ছন, আঁখি নাগি গেন তেঁ নঞি র্‌ঘ্নিঐক। উপবসঁ ডবো দেখা দৈক জে রাবূকেঁ কহরমী তঁ বূঝি নিহেঁ। ছোটি-ছোটি গপ্পপব নোহছা দেনাগ তঁ সামান্য গপ্প বহৈক।

নেন্না নদ্ধূ-নদ্ধূ অপনা কোশি (Cell) মে ঘুসহ নগনৈক। ওকবা অস্ত্বক্ষাক ভার ঘেবহ নগনৈক। নেন্না সভক 'অহঁ' রহ্‌ত র্যাপক হোগত ছৈক। ওহি 'অহঁ' কেঁ নান্হিযোটো ধক্কা নগনাসঁ ও নোহছি জাগত অছি। ঋদা নেন্না সভ নগ ওহি ভারনাকেঁ, দর্দকেঁ, র্যক্ত কবরাক হেত্ত সিযান সন সাধন নঞি হোগত ছৈক। যোগ্য শর্ব্দ সংগ্রহ নঞি হোগত ছৈক। দোসব শর্ব্দমে এহি উম্রক নেন্না সভ নগ হম-অহাঁ আসানীসঁ বূঝি সকিঐ এহি তবহক ভারনাক আদাত-প্রদানক কোনো স্পষ্ট ভাষা রিকসিত নহি ভেন বহৈত ছৈক।

তেঁ ও সভ অপন ভারনাকেঁ প্রতীকামেক রূপসঁ র্যক্ত কবরাক প্রযনে কবৈত দেখাগত অছি। ওা প্রতীকামেকতা উম্রক রিভিন্ন অরস্থামে ভিন্ন-ভিন্ন তবহক হোগত জাগত ছৈক। উদাহবণার্থ, শৈশরারস্থামে নেনা সভ অনেকানেক তবহসঁ কানি কহ অপন ভারনা র্যক্ত কবৈত ছথি। আগ তঁ এহি তবহক ভাষাক রিশ্লেষণ সেহো সম্ভর ভহ গেন অছি। এহি ভাষাকেঁ জ্ঞাতা রা

अन्यासक, नेना सभक कानमे स्थिर कऽ ओहि विशिष्ठ समएमे हुनक जे माँग आ समस्या छनि तकर निदान कऽ सकैत छथि। वान्यावस्थामे अपन विरोध जतएबाक हेतु नेना सभ रूसि कऽ खेनाइ बाबि कऽ अथवा कोनो आन तरहक नोकसान कऽ कऽ अपन भावनाकें व्यक्त करैत देखाइत अछि।

नेना सभक व्यक्त करबाक गएह प्रतीकात्मक भाषाक कड़ीमे चित्रकला एक गोट महत्वपूर्ण अध्याय अछि। तें हमर कहब अछि, जे नेना सभक चित्रकला देखबाक नहि अपितु पढ़बाक वस्तु होइत अछि। विद्यार्थीक पिताकें हम जतेक बुझा सकलिऐक, बुझेलिऐक। 'जे बेटा भीतरसँ पूर्ण रूपेण टूटि गेल अछि, ओकरा शीघ्रातिशीघ्र मूल स्वभावपर आनब अति आवश्यक अछि। सभसँ पहिने ओकरा भीतरसँ असुरक्षाक भावनाकें निकालब जरूरी अछि। ओकर हेराएल आत्मविश्वासकें पुनः प्रस्थापित केनाइ जरूरी अछि। पाछाँ छूटि गेल माता-पिताक अस्तित्वकें ओकरा जीवनमे सम्मिलित करब जरूरी अछि। ओकरा भीतर ई विश्वास जगेनाइ जरूरी अछि जे ओहो एहि परिवारक एक गोट महत्वपूर्ण सदस्य अछि। एहि परिवारक ओकरो आवश्यकता छैक आ आन सदस्य जकाँ ओकरो सभ तरहें सभपर समान हक छैक। अन्यथा एहि परिवारक व्यवहारसँ एखन धरि ओकरा भीतर जाहि तरहक शत्रुत्व (Hatred) पनपि रहल अछि, ओ आगू चलि कऽ एहन भयानक रूप लऽ सकैत अछि, जकर एखन कल्पनो नञि कएल जा सकैत अछि'।

ओ स्वनि कऽ ओ किछु ठहकल। पूछलक, 'तखन आर उपाय की' ? हम कहलियन्हि- 'उपाय ई जे सभसँ पहिने अपना घरवालीकेँ बुझबिऔन्ह जे हुनकर व्यवहारक की परिणाम भऽ सकैत अछि। तकरा बाद किछु दिनक छुट्टी लऽ लिअ। एहि माहौलसँ ओकरा बाहर निकालू। सपरिवार पन्द्रह-बीस दिनक लेल कतहु बाहर घुमि आउ। हुनका एहि पूरा समएमे ओकरा ई अनुभव कराओल जाए जे आग धरिक अनुभवसँ ओकर जे भावना बनल छलैक से गलत छै। खास कऽ सतमाएक माध्यमसँ ई सन्देश जाए। एहि यात्राक सभ कार्यक्रम ओकरा केन्द्रमे राखि कऽ बनाओल जेबाक चाही। हुनका सतभाय, सतबहीन, सतमाय तथा पिताक समान सहभागिता बनौक। ओकरा प्रति सभक व्यवहार सहज बनौक। ओहिमे कोनो तरहक देखावा नहि बनौक। लेनाकेँ ई शंका नञि होअए जे जानि-बुझि कऽ हमरापर विशेष ध्यान देल जा रहल अछि। एहिसँ अपन परिवारका अनुभवकेँ ओ एक गोटे दु:स्वप्न मानि कऽ ओहिसँ बाहर आबि जाएत। हुनका ओकर बाद एहि परिवारका अनुभवक ने चर्चा होअए आ ने पुनरावृत्ति'।

ओकर किछुए दिनक बाद हम स्कूल छोड़ि देने रही। हुनका हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे ओहि विद्यार्थीक जीवनमे अवश्ये किछु सकारात्मक उद्यम भेल हेतैक, जकर पूर्ण श्रेय जएबाक चाही चित्रकला सन सृजन शील विषएकेँ जकरा माध्यमसँ ओ अपन आंतरिक भावनाकेँ व्यक्त करबामे सक्षम भऽ सकल।



<u>ৰ্য়্টী ক্ষমাবী, সহাযক শিক্ষিকা, সংস্কৃত মধ্বাম গঁষ্টব স্তবীয রিষ্যানয, গ্বানপাড় ।, মধেপ্ববা (রিহাব)।</u>

<u>বাহ্নজী এক নজবিমে</u>

দ্নিযাঁমে প্রতিভাক ধনিক নোকক কমী নৈ থছি তখন সর্বতোম্মখী প্রতিভাক ধনিক ব্যক্তি তঁ ওংগ্ববীপব গিনন জা সকৈত থছি । বাহ্ন সাংস্কৃত্যাযন গিনন-চ্নন ওহেন প্রতিভাক ধনিক নোকমে ছথিন জিনকব জোড় নে থছি । হিনকব তুননা কবৈ নঽ রুপকক কপ্পনা কবনায দ্স্সাধ্য নাগৈত থছি ।

বাহ্নজী জীরনক সর্ব থংগক সামাজিক রিজ্ঞানক সর্ব শাখাক কেঁ সমৃদ্ধ থা রিকসিত কঽ নিখনে ছথি । বৌদ্ধ ধর্মরিনম্বী কেঁ তঁ দারা থছি কি 20রী সদী মে ভগরান বুদ্ধক রিচাবকেঁ সর্বসে বেঁসী প্রচাব-প্রসাব কবৈরানা নোক মে বাহ্নজী থগ্রগণ্য ছথি । ওপনিষদিক পবম্পবা সঁ থাধ্নিক স্বরুপক কপ্পনা কবৈরানা জ্ঞানক খোজ মে তনরাবক ধাব পব চনৈরানা মনীষি বাহ্ন সাংস্কৃত্যাযন ছথি । দর্ষন সাহিত্য বাজনীতি থা ওতিহাসক পন্ডিতো স্বীকাব কবৈত ছথি কি বাহ্নজী শ্রেষ্ঠ পন্ডিত ছনাহ ।

বাহ্নজী ওঁ মহাপন্ডিত বহথি জে থতীতক প্রমাণিক থা প্রসাংগিক থন্বভর সঽ নাভ নঽ নরজ্ঞানক মাগ্ম প্রশস্ত কএনথি । বাহ্নজী কর্মঠ কর্মযোগী জেকাঁ থপন থনমোন সমযক উঁপযোগ কএ রাস্তরিক স্বরুপ কেঁ দেখনথিন্হ থা বুঝনথিন্হ । ওকব সংগে-সংগ থপন দেষক নোকো কেঁ বুঝবৈক প্রযাস কনথিন্হ । হ্নকা নএ চ্পচাপ বৈসনাএ থসংভব বহ । ও থপন এক-এক ক্ষণক উঁপযোগ সার্থক কার্য মে কবৈত বহথ । চবৈরেতি -চবৈরেতিক সিদ্ধান্তক থক্ষবশঃ পানন কবৈত বহথ । রিশ্লেষণ থা সংশ্লেষণ কনামে মহাবত হাসিন বহ হ্নকা । গ্রাহ্য থা থগ্রাহ্য রস্তু কেঁ পবিখৈত বহথ বাহ্নজী ।

बाह्नजीक व्यक्तित्वक निर्माण कोना भेल एकर अध्ययन जेतेक मजेदार अछि ओतबेक प्रेरणादायक। आजमगढ़ जिलाक मध्योला किसान परिवारमे हिनकर जन्म भेल छल। नाम छलैन्ह केदारनाथ पांडे। पाँच सालक उमेरमे हिनकर शिक्षा आरम्भ भेल मुदा परिवारक वातावरण एहन नै छल कि पढ़ ाय-लिखाय ठीक -ठाक चलि सकै। एतह बीच मे हिनकर विवाह भऽ गेल परिवारक वातावरण सऽ केदारनाथक मन उचैट गेल, तखन घरसँ भागैक सिलसिला शुरू भऽ गेल- कलकता बनारस मद्रास अयोध्या नाशौरक चक्कर लगाबैं लगलाह। यही चक्कर मँ ओ एक मठक महन्तक शिष्यत्व ग्रहण कएलथिन जेकर बाद हिनकर नाम रामोदार साधु भऽ गेल। बाद मे मठक महन्ती मिलैत छलैन्ह मुदा अपना आप कँ बाँहि कँ नै राखि सकलाह। तखनक मनोदशाक वर्णन आगू आरि कँ कएने छथि-

भारी महन्त बनाबैं लऽ महन्त लक्ष्मणदास हमरा बनारस सँ लाबैनैथ। यदि हम मठ मे ठहैर कँ नै रहि सकलौं आ महन्त नै बनि सकलूँ तऽ एहि मे हमर अपन घुमक्कड़ ी आ ज्ञानक तीव्र जिज्ञासा छल। भागैक दौर मे कतौ किछु समय रुकि कऽ केदारनाथ संस्कृत अंग्रेजी हिन्दी अरबी सभक अध्ययन कैलथिन्ह। नाशौर मे अध्ययन करैत आर्यसमाजक अनुयायी भऽ गेलाह। बौद्ध साहित्यक संग बड़ नगार भऽ गेल छलैन्ह । घुमक्कड़ प्रवृति तऽ बहबें करै आर बौद्धधर्मक प्रति आकार होएबाक कारणेँ लुंबिनी सारनाथ राजगृह नालन्दा आदि बौद्ध तीर्थस्थानक यात्रा कएलैन्ह। गया बीच गाँधीक आँधीमे अर्थात् स्वाधीनता आन्दोलनोमे कुदि गलैथ। छह

মাসক জেনমে সজা ভঽ গেন। সংন্যাসী বামোদাব উর্ফ কেদাবনাথ উর্ফ বাহুনজী কেঁ আজাদী খাতীব নড়ৈত দেখি নোক হুনকব চবণ ধূনি পাবৈঁ নঽ দৌড়ৈত বহৈথ। ও বাজনীতি মে ত্যাগ আ সমর্পণভাবক বিশেষ মহত্ত্ব দৈত বহৈথ। হুনকব কহব বহৈন্হ –

বাজনীতিমে খূনক বএহ স্থান অছি জে পূজা পাঠ মে চন্দনক। বাজনীতিমে বহৈত হুনকব বিদ্যানুবাগ কম নৈ ভেন। জেনযাত্রা আ জ্ঞানযাত্রা দূনূক ক্রম নে ছুটৈন। জ্ঞানক খোজ মে কতে বেব শ্রীনংকা তিব্বত ইংগনৈন্ড রুস ইবান মংগোনিযা চীন আদি দেশক যাত্রা কএনৈন্হ। তিব্বত জাএ কেঁ এহেন-এহেন দুর্নভ গ্রন্থক খোজ কৈনখিন্হ জেকব অভাবমে ভাবতক ইতিহাসক অভিন্ন অংগ ভঽ গেন । জ্ঞানক সাধনা জাবী বহন। কিছু দিন বৌদ্ধক চীবব ধাবণ কএ ওকবো সঁ মূঁহ মোড়ি ননৈন। 1937 মে সোবিযত সংঘ গেনৈথ ওতহি এক রুসী মহিনা সংগ বিবাহ কএনন্হি জিনকা সঁ পুত্র ইগোব ক জন্ম ভেন। অখন ধবি বাহুন সাংকৃত্যাযন প্রসিদ্ধ ভাবতীয বিদ্বানক রূপমে সভঠাম প্রতিষ্ঠিত ভঽ গেন বহৈথ। হুনকব গ্রন্থ আ নেখ কেঁ ধূম মচন বহৈ। আম নোকক মুক্তি নঽ বাজনীতিক হথিযাব কেঁ ও সহী তবীকা সঁ উপযোগ মে নাবৈঁ পব জোব দেযি বহৈথ। অপন অনুভবক আধাব পব ক্রান্তিকাবী দৃষ্টিকোণক সমর্থক ভঽ গেন বহৈথ বাহুনজী। 1938-39 কেঁ জমানা বহৈ। দেশপব অংগ্রেজক শাসন বহৈ। কিছৈক বাজ্যমে কাঁগ্রেসক শাসন বহৈ। বাহুনজীক ইচ্ছা বহৈ কি কিসানকেঁ জমীন্দাবক আ ভূ- স্বামিক অন্যায সঁ ছুটকাবা মিনবাক চাহী-ভনা ইহো কোনো নিক বাঁত ভেন কি কিসান জমীন জোতে বুনে ফসন উপজাবৈঁ আ মিনে ভূস্বামী কেঁ

বাহ্নজী এহেন অন্যাযক ঘোব বিবোধী ছনাহ। গবীৱ কিসানক পক্ষ মে বিহাবক অমরাবী গাম মে বাহ্নজী সত্যাগ্রহীক দনক সংগ উতৈব গনাহ সত্যাগ্রহ কবরাক নেন। হ্নকা সৱ কেঁ স্বচনেক নেন জমীন্দাবক হাথী গুন্ডা প্বনিস সিপাহী সৱ বহৈ। বাহ্নজী হাথমে হসিযা নএ ফসন কাটৈ নাগনাহ। হ্নকব ওা রূপ দেখি জমীন্দাবক গশাবাপব এগো মহারত বাহ্নজীক মাথ পব জোবদাব নাঠীক প্রহাব কএনক মাথ ফাগটৈ গেন। খূনক ধাবা বঁহি গেন। তৈওযো বাহ্নজীকেঁ অন্য সত্যাগ্রহী সংগ গিবফতাব কএ নেন গেন। তখন বিহাবমে কাংগ্রেসক শাসন বহৈ। বাহ্নজী কেঁ হথকড় ী পহিবাএ প্বনিস জেন নগ গেন। নোকমে এহি ঘটনাসঁ ক্ষোভ আ বোষ বহৈ। মুদা বাহ্নজীক মন মে প্রতিষোধক ভারনা নৈ বহৈ। সিদ্ধান্ত পব চনৈরানা নির্ভীক যোদ্ধা জেনা শোষণমুক্ত সমাজক স্থাপনা খাতিব সংঘর্ষবত বহৈথ বাহ্নজী। মুদা অমরাবী মে জে হ্নকা মাথ পব চোটৈ নাগন বহৈ ও বঁড় গহীব বহৈ জেকব পবিণাম ভেন কি 1961 মে মাথক পক্ষাঘাত সঁ ও পীড়ি ত ভই গেনাহা ওএহ হ্নকব মৌতক কাবণো বঁনন।

দোসব বিশ্বযুদ্ধক জমানামে বাহ্নজী অমরাবী সত্যাগ্রহ বানা কেসমে জেনক সজা কাটি বহন বহৈথ। ওহি সময মে মহামো গাঁধী, নেহক, আ ববীন্দ্রনাথ ঠাকুব সনক নোক হিটনবক নাজীরাদ আ জাপানক সৈন্যরাদক খিনাফ নোক কেঁ জাগরুক কবৈ মে নাগন বহৈথ। বাহ্নজী সেহো একবা খাতিব নোকভাষা মে নাটক নিখনৈন্হি জেকব মংচন কবি আমনোক কেঁ ফাসীরাদ বিবোধী আন্দানন মে ভাগ নেৱাক খাতিব প্রেবিত কৈনথিন্হ।

1945 मे बाह्नजी लेनिनग्राद विश्वविद्यालयक प्राच्यविभाग मे प्राध्यापकक पदकेँ सम्हारबाक लेल सोवियत संघ गेलैथ। ओतए अपन अर्धांगनी आ पुत्रसँ मिलकें बड़ प्रसन्न भेलाह। अखन दोसर विश्वयुद्ध खतमे भेल रहै। लानिनग्रादमे सहस्त्र टूटल-फूटल मोटर आ हवाइ जहाजक ढ़ेर लागल रहै। आधासँ अधिक मकान धवाशायी भऽ गेल रहै। मुदा लोकके जोश देखैत बनैत रहै। सब एकजुट भऽ निर्माण कार्यमे लागल रहैथ। आमजनक भागीदारी देखि सोवियत जन सोवियतक भूमि दून्वक प्रति हुनकर अनुराग आ सम्मान दुगुना भऽ गेल। एकर चर्चा करैत ओ लिखैत छथि इतिहास मानैत अछि आ मनैत रहतै कि मानवताक प्रगतिमे सबसे बड़का बाधक शक्ति हिटलरक फासिज्मक रूपमे उँपजल रहै जेकर नाश करैक श्रेय सोवियत रूस केँ जाएत अछि।

एहिबेर बाह्नजी पचीस मास तक सोवियत संघ मे रहला। ओतए अध्यापनक संगे मध्य एषियाक इतिहासक ढ़ेर सामग्री आ दुर्लभग्रन्थ जमा कएलैन्हा। अनके भाषा सिखलैथिन्ह आ अनेक किताबक हिन्दी अनुवादो कएलैन्ह। सारियत संघ सँ विदा कान पुत्र आ अर्धांगनी दूनू मे सँ कियो छोड़ि नएँ तैयार नै रहथिन्ह ओ दूनू फूटि-फूटि कऽ कानैत रहथिन्ह मुदा जीवन कर्तव्य कोनो माया- मोह केँ माने नए तैयार नै रहैत अछि। द्रवित ह्रदय केँ कठोर कए बाह्नजी विदा भेलाह। एहि यात्राक बाद बाह्नजी हिन्दीक प्रचार -प्रसार, ग्रन्थक सम्पादन, लेखन मे अपन जीवन समर्पित कऽ देलथिन्ह। बाह्नजी सामाजिक कुरीति, वर्ण -व्यवस्था, जातीय उँन्माद, साम्प्रदायिक वैमनस्यक

সৰ্ঁদিন রিবোধ কৈনথিন্হি। হ্নকব সমস্যা। বহৈ কি আর্থিক রিষমতা সৰ্ঁ ক্ষবীতিক জৈড় থিক। ভাষাক সম্বন্ধা মে হ্নকব রিচাব সাফ বহৈ কি অংগ্রেজী কে ঁ ভাবতক নোক পব নৈ থোপৰাঁক চাহি। একব রিকল্প খোজে মে জতৈক অৰেঁব ভ২ বহন অছি বাষ্ট্রীয একতা ওতেক খতবা মে পড়া বহন অছি।



<u>ৰ্সংত ঝা</u>

<u>উঁগনা</u>

গ কহানী ১৩৪৮–১৪৩২ কে ৰিচক খছি জাহী মে মহা করী ৰিদ্যাপতি কে জন্ম ৰিস্ফী গাম মে ভেনানী ঔব ও মৈথিনীক ৰহ্ত পৈঘ করী ভেনা জিনকা করী কোকিন কে উঁপাধি দেন গেননী ঔব ও মহাদের কে ৰহ্ত পৈঘ ভঞ্জ সেহো ছনা

করী ৰিদ্যাপতিক বচনা এতেক প্রভাৰী হোগ্তত ছননী জে জখন ও খাপণ বচনা কে গৰৈত ছনা ত কৈনাশ পব ৰগুসন ভগৰান মহাদের প্রশিন্ন ভ জাগ্তত ছনা ঔব হবদম হ্নক বচনা স্বনৰাক গঙ্ছা বাখৈত ছনা, গ্ত গঙ্ছা এতেক ৰড় ী গেননি জে ও এক দিন মাতা পাৰ্তী কে কহনখিন " হে দেৰী স্বন্ব, হম মৃত্নোক জা বহন ছী করী ৰিদ্যাপতিক বচনা হমবা ৰহ্ত নীক নাগৈত খছি ঔব হমব মোন ভ বহন খছি জে হম হ্নকা সংগে বহী ক' হ্নক বচনা স্বনী, ত খহাঁ খহী ঠাম কৈনাশ মে বহ্রু ঔব হম জা বহন ছী মৃত্নো" ঔব বচনা

স্বনৱাঁক নেন ধবতী পব খাৱী গেনা, ঔব রিদ্যাপতি কে ওতে নৌকব ৰঁনী ক উঁগনা কে নাম স কাজ কব নাগনা ও রিদ্যাপতিক চাকবী মে নাগী গেনা ও হ্নকব সৰঁ কাজ কবথিন হ্নকা পূজক নেন ফূন ঔব ৰেঁনপত্র তোবী ক খানৈথ ৰঁবদ কে চবৱৈথ সৰঁ চাকবী কৰৈত ঔব বাগত মে স্বত্ৰাঁ কান মে হ্নকব পৈব সেহো দৰঁৱৈথ (ধন্য ও রিদ্যাপতি জিনক পৈব দেরক দের মহাদের দৰঁৱৈথ) খহি প্রকাবে জখন ৰঁহ্ত দীন ৱীত গেন, ওম্হব মাতা পার্রতী ৰঁহ্ত চিংতিত ভ গেনী হ্নকা নগনৈন জে খাৰঁ মহাদেৰঁ মূহ্ নোক স রাপস নৈ এতা, ঔব ও হ্নকা ৱাঁপস খনৱাঁক প্রযাস মে নৈগ গেনী, ও এ্ধাধ কে খাদেশ দেনখিন জে খাহা জাউঁ ঔব রিদ্যাপতিক পনৗ স্বধীবা মে প্ররেশ ক জাউঁ জাহী স উঁগনা দ্বাবা কোনো গনত কাজ ভেনা পব স্বধীবা হ্নকা মাবী ক ভগা দেতী, নেকিন মাতা পার্রতী কে গ প্রযাশ সফন নৈ ভেনৈন তখন ও দোসব প্রযাশ কেনি ও প্যাশ কে কৰী রিদ্যাপতিক উঁপব তখন সরাব ক দেনখিন জখন ও একটৗ জংগন কে বাস্তা স উঁগনা সংগে বাজা শির শিংহ কে ওতে জাবহন ছনা ও ঘোব জংগন ছনাও ওত দূব দূব তক জ'নক কোনো খাস নৈ ছনাও ঔব ওহী রিঁচ মে কৰী রিদ্যাপতি প্যাশি স তবপখ নাগনা "বে উঁগনা জন্দী সঁ পাগন না বউঁ নৈ তা হম মগব জেৰঁউঁ ৰঁব জোব স প্যাস নাগী গেনৌ" কহৈত জমীন পব ওনঘ্রে নগনা, খাৰঁ উঁগনা কী কবতা ও পবেশান ভ গেনা এম্হব উঁম্হব পাগন কে তনাশি মে ভট্ক' নগনা হ্নকা পাগন নৈ ভেটৈনৈন, তখন ও একটৗ গাছক পাছূ মে ন্বকা গেনা ঔব খপণ খসনী ৰূপ ধাবণ ক' খপন জটৗ সঁ গংগাজন নিকাননা' ঔব ফেব উঁগনাক ৰূপ ধাবণ ক রিদ্যাপতি

কে জ'ন দেনখিন, রিদ্যাপতি জন পিরৈঁতে দেবী চৌক গেনা ও উঁগনা স পূছ' নাগনা " বে উঁগনা গ ত গংগাজন ছউঁ, রঁতা এতা গংগাজন কত স খন্নাএ" খারঁ উঁগনা কী কবতা ও কতরোঁ রঁফানা রঁনেনা নেকিন হ্নকব একো নৈ চনন, ও কি কবতা হ্নকা রিরঁশ ভ খপন রূপ দেখারঁ' পবনানী ঔব ও খপন খসনী রূপক দর্শন করী রিদ্যাপতি কে দেনখিন, রিদ্যাপতি মফাদেরক খশনী রূপক দর্শন কবিতে দেবী চকিত বফী গেনা ঔব হ্নক চবণ পব খসী ক হ্নকা স ছমাঁ   মাঁগ' নাগনা "প্রভু ফমবা ছমাঁ কব্ধ ফম খফাঁ কে চিন্হ নৈ সকনৌং ফমবা স পফ্ত পৈঘ খপবাধ ভ গেন" তখন হ্নকা উঁঠারৈঁত মফাদের কফনখিন "ফম খাফা সংগে এখন ঔব বফরঁ, নেকিন ফমব একতা শর্ত খছি জে খাফা গ রঁাত কেকবো স নৈ কফরঁনী ঔব জখনে খাফা গ রঁাত কেকবো নংগ রঁাজরঁ ওফী ছন ফম খফাঁ নংগ স চনী জাযরঁ" রিদ্যাপতি শর্ত কে মংজূব করৈত ঔব দুন্ব গোষ্ঠে বাজদবরঁাব কে তবফ চনী গেনা, মাতা পার্রতী কে গফো প্রযাশ সফন নৈ ভেনৈন. তখন এক দিন উঁগন কে রৈঁনপত্র নারয মে কনিক দেবী ভ গেননি   তাফি পব স্বধীবা এতেক ক্রাধিত ভ গেনী কি ও চ্ন্হা মে জবৈত একটা নকড়া নিকনী ক হ্নকা মাবরঁাক নেন উঁঠেনিখন "সব'ধ্খা খায তোবা নৈ ছোরঁউঁ তূ রঁড শৈতান ভ গেনা ফন ফমব রঁচা সরঁ ভূখ স রিনাপ বফন খছি ঔব তূ এতেক দেব স রৈঁনপত্র ন' ক' এনৈ ফন" কফৈত হ্নকা দিশ রঁঠ়নখিন, তখন রিদ্যাপতি স দেখন নৈ গেনন্হি ঔব ও রঁজনা "ফে ফে গ কী করৈত ছি গ ত সাক্ছাত মফাদের ছৈথ" ঔব এতরেঁ কফিতে মফাদের গাযরঁ ভ গেনখিন, ফেব রিদ্যাপতি হ্নকা জংগনে জংগনে তক'

नगना ঔব "উগনা বে মোব কতৈ গেনা" গৰৈত বহনা নেকিন উগনা ফেব হ্নকা নৈ ভেটৈনখিন, ঔব ও খপন প্ৰাণ তিযৌগ দেনখিন ।

ও স্থান জাহি ঠাম দেরক দের মহাদের করী–কোকিন রিদ্যাপতি কে খপন খশিনী রূপক দর্শন দেনে ছনখিন ওহী ঠাম "ৰাৰা উগনা" কে মংদিব ছৈন ঔব ওহিমে শিরনিংগ জে ছাঙা সে খংস্কবিত ছাঙা, জেকব কহানী কিছু এহন, ছাঙা জে এক রৈব গামক এক ৰৃজুর্গ ৰ্যক্তি কে মহাদের সপনা দেনখিন কী "হম একতা গাছক জৈব মে ছী" ঔব ওতৈ ৰহৃত পৈঘ জংগন ছনঙা তখন গামক নোক সৰ তৈযাব ভ ক ওয ঠাম গেনা ঔব পহুঁচ ক জখন খৃদাঙা কেনা ত দেখনখিন কী একটা ৰহৃত স্বন্দব শিরনিংগ ছাঙা, সৰ গোটে ৰহৃত খৃশি ভেনা ঔব রিচাব ভেনয কী হিনকা ৰস্তী পব ন চনূ ওয ঠাম মংদিব ৰনা ক হিনক স্থাপনা কবৰ ঔব হ্নকা উঠৈৰাক নেন জখনে হাথ নগেনখিন কী ও ফেব স জমীন কে ভীতব চনী গেনা, ফেব স কোবন গেন ঔব হ্নকা নিকনরাক প্ৰযাশ কৈন গেনঙা, গ প্ৰযাশ দূ তীন রৈব কৈন গেন ক্ষদা সৰ রৈব ও জমীন কে ভীতব চনী জাযত ছনা, তখন সৰ গোটে কে ৰুঝৰা মে এনঙান জে গ খহি ঠাম বহতা ঔব খয ঠাম স নৈ জেতা, তখন ওহী ঠাম সাফ সফাএ কৈন গেন ঔব তকোন মংডপ ৰনৈন গেন ঔব ৰাদ মে মংদিবক নির্মাণ স্বৰু ভেন জে ১৯৩২ মে জা ক তৈযাব ভেন ঔব খহি মংদিবক পবিসব মে ও খস্থান সেহো খছি জাহি ঠাম মহাদের খপনা জটা স গংগাজন নিকননে ছনা ঔব খায ও গনাবক রূপ মে খছি জেকবা "চ্ন্দ্ৰকূপ" কে নাম স জানন জৈত ছাঙা ঔব এখনো

ওকব জন শ্বঙ্ক গংগাজন ছাওা, জে নৌর্ব টৈস্টুড ছাওা
!
দবভংগা কে একটা রঁহ্ত প্রশিঙ্ক ড াঁকিটব খপনা
মেডিকন নৌর্ব মে একব টৈস্ট কেনে ছনখিন ঔব ও
খয রাঁত কে স্বচনা গ্রামীণ সর্ব কে দেনখিন জে খয
মে পূবা গংগাজন কে তত্ব রিঁভ্যমান খছি, ঔব গ দোসব
রুপে সেহো টৈস্টুড ছাওা, খয জন কে যদি খহাঁ
রোঁতন মে বাখি দের্বয তা গ খ়বার্ব নৌ হোগত ছাওা
গ স্থান মধ্র্বনী জিনাক ভরানী প্বব গাম মে স্থিত খছি
এত' সর্ব গেঠে একরেঁব জকুব খারী, এহী স্থানক ফ্নর
তবহক জানকাবিক নেন খহাঁ হমবা স সংপর্ক ক সকৈত
ছি

"জয রাঁরাঁ উগ্রনাথ"
হমব গ সোভাগ্য খছি কি হমব জন্ম এহী গাম মে
ভেন খছি ঔব হমব রঁচপন খয স্থান পব রীতন খছি,



धीरेन्द्र कुमार, निर्मली, सुपौल, बिहार

नो एंट्री : मा प्रविशे- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता')

नाटक अधुनातन अछि। पूर्वक नाटक सँ पठनेन मात्र हमर विचार ऐ नाटकपर केन्द्रित अछि। समएक संगे लेखन, विषए-वस्तु, पात्र आन सभमे परिवर्तन होइत अछि। मैथिली साहित्यकेँ अधुनातन हेबाक चाही, तँ आकांक्षाकेँ ई नाटक पूर्ति करैत अछि। नाटककारकेँ एकर सम्यक बोध छन्हि तँए मैथिल होएबाक कारणे हम आभार व्यक्त करैत छी।
समाजमे जे घटित होइत अछि रचनाकार प्राय: ओकरे चित्रण करैत छथि। नाटककार स्वस्थ-नवकक अवधारणापर नाटक लिखने छथि कारण नाटकक विषए-वस्तु प्रासंगिक धरतीक विद्रूपता अछि। ऐ विद्रूपताक माध्यम बनौने छथि। भागम-भाग, क्यू, वर्ण-व्यवस्था समाजसँ उपजल चाहे वि, बेरोजगारी आ धूर्तता सन

সমস্যা ঐ নাটকমে সংযোজিত অছি।
নাটকমে পাত্রক সংখ্যাক অনুকূল রিষএ-রস্ত জে উঠৈত গেল অছি ওকরা নাটককাব ঐসঁ কমো পাত্রমে মংচপব আনি সকৈত ছনাহ। পাত্রক অধিক্য মংচপব সফল ি নর্দেশককেঁ স্বনভ হেতনি মিথিনামে একব অভার হোএত। ভহ সকৈত অছি হ্নকব দৃষ্টিমে সংপূর্ণ ধবতী হ্অএ।
সমস্যাকেঁ মংচপব আনবঁ পূর্ণ সফলতা হোগত অছি ওকবা তীক্ষ্ণতা সংগে বাখবঁ জৈসঁ দর্শকক হৃদএপব প্রভার পড়ৈ তৈমে কমী অনুভর হোগত অছি। কোনো বচনা জঁ হমবা রাঁন্হি নিঅএ ঐমে অভার অছি।
নাটকক সংরাদমে শরঁদক খেল কতহুঁ-কতহুঁ দেখএমে অরৈত অছি পৃষ্ট সং- 20-21 দ্রষ্টর্য অছি। সংরাদকেঁ রাঁন্হল নৈ জা সকল অছি।
নাটককাব অতীতক প্রত্যংচাপব ভরিষ্যক রাণ চঠ া শব-সংধান কবৈত অছি। সমাজক স্থিতিসঁ ওকব রিসংগতি লক্ষ্য ছন্হি।
"চোব সিখারয রীমা-মহিমা
পাকেটমাবো কবৈ রঁযান!
মাব উঁচ্চকা ঝাড়ি নেনক অছি
পাট-কপাট তহ জয সিযাবাম।।"
সমাজক ছদম্, বাজনীতিক উঁনটা-ফেব আকর্ষক ঢংগসঁ র্যক্ত অছি। নিবালাক শীঘ্র ঝবো হে জীর্ণ পত্র' সদৃশে নাটককাবকেঁ নরীন আকাংক্ষা ছন্হি-
"আউঁ প্ববাতন, আউঁ হে নূতন।
হে নরযৌরন, আউঁ সনাতন।।
প্রাণ-পবাযণ, জীর্ণ জবাযন।
কজ্র-কঠিন প্রণাম গৌণ গবাযন।"

নাটকমে গীতক প্রযোগ শ্নাধ্য খছি। সংগীত দর্শককেঁ বাঁন্হি কঽ বখৈত খছি তেঁমে নাটককাব সফন ছথি। হাস্য জেঁ ঢংগে ম্নখব খছি। করুণ তহিনা ম্নখব নৈ খছি। নাটককাবকেঁ সংস্কৃতক নীক জ্ঞান ছন্হি- নাটকসঁ উদ্ভাষিত হোগত খছি। কান-বোঁধ খা রাস্তরিকতো চিত্রণমে জতঽ উঁপযোগী খছি ততহি খাম দর্শক নেন বোঁধগম্যতামে খশক্ত খছি।
ওনা শ্রী গজেন্দ্র ঠাকুব জী প্রকাশকক দিসসঁ রিচাব র্যক্ত কেনে ছথি। পাশ্চাত্য খা ভাবতীয কার্যশাস্ত্রীয দৃষ্টিকোণসঁ হ্নকব রিচাব স্রাগত যোগ্য খছি।
কোনো বচনামে গুণ-খরগুণ দূনূ হোগত খছি। তেঁ দৃষ্টিকোণসঁ হম সশক্ত ভঽ সকৈত ছী নাটক সফন খছি খা মৈথিনী সাহিত্যক একটা উঁপনর্ধি খছি।

প্রীতি ঠাকুবক দ্নূ চিত্রকথাপব ধীবেন্দ্র কুমাব এক নজবি

মৌথিনী সাহিত্যমে পহিন বেঁব শ্রীতি প্রকাশিন, নঙা দিন্নীসঁ প্রকাশিত িচত্রকথা উঁমেশে জীক মাধ্যমসঁ ভেষ্টন। সাহিত্য পূর্ণ তখনে হোগত থিছ জখন সাহিত্য সভ রিধামে নিখন জাএ আ বচনা প্রৌঢ় হোগ। হমব দৃষ্টিমে চিত্রকথামে প্রীতি ঠাকুবক বচনা মৌথিনী নোক–কথা আ গোন্ব ঝা আন মৌথিনী িচত্রকথা, সফন বচনা থীক।

নেখিকা ধন্যরাদক পাত্র ছথি, এহি কাবণে জে মৌথিনী দিসি হ্নক দৃষ্টি গেননি। দোসব কাবণ ঙা জে মৌথিনীক রিবাসতমে জে কথা নোকমুখমে স্ববক্ষিত থিছ তকবা ও নেখনিক রূপ প্রদান কঽ মৌথিনীক চিত্রকথা রিধা জে নগণ্য সন খিছ– তাহিকেঁ সমৃদ্ধ কবক প্রয়াস কেননি থিছ।

মৌথিনী চিত্রকথামে 'মোতী দাগ, বাজা সজহেস, বৌধি–কাযস্থ, বহ্বা গোঠ়ি ন নষ্টুআ দযান, থমতা ঘবেন, দীনা ভদবী, জানিম সি ংহ, নৌকা বনিজাবা, বঘ্নী মবড়, রিদ্যাপতিক আঘ থবসান আ গোন্ব ঝা আ আন মৌথিনী চিত্রকথামে প্রকাশিত থিছ 'গোন্ব ঝা আ মাঁ দুর্গা, গোন্ব আ স্বস্থা, গোন্ব আ স্বর্ণ চোব, গোন্ব ঝা আ রিনাড়ি , গোন্ব ঝাক দূটা ববদ, গোন্ব ঝাক মহীস,

গোন্ব ন্যাক ঋশিফী, গোন্ব ন্যা ঋা কব ঋধিকাবীক দাঠ় ী, গোন্ব ন্যাক মাএ, বেশিমা চূফড়মন, নৈকা ৰনিজাবা, ভগতা জ্যোতি পজিযাব, মফ্ঋা ঘটৈৰাবিন, বাজা সনফেসে, ছেছন মফবাজ, বাজা সনফেসে ঋা কানিদাস।

সভটা কথা মিথিনাক ধবতীসঁ সম্ৰন্ধ ঋছি ঋা এখন ধবি নোক ফ্খমে স্ববক্ষিত ঋছি। সমৈএক পবিবর্তন সংগে নোক রুচি ঋা নোক সংস্কাবমে পবিবর্ত্তন সেহো হোগত ঋছি। ঋপন দেশিক গপ্প নিঋহ। ঋাগ পোথীমে স্ববক্ষিত ঋছি ঋাযর্বেদ বিদ্যা, যূনানী বিদ্যা, হোমযোপৈথী ঋা কতেক বাস জ্ঞানসঁ সমর্পিত বিদ্যা। জঁ পোথীমে স্ববক্ষিত নফি বফত তখন ঋগিনা পীঢ় ী এফি বিদ্যাসঁ ঋনভিজ্ঞ বফি জাএত। তেঁ ফমব মিথিনামে জে কথা পসবন ঋছি ওকবা পোথী স্বরূপমে প্রদান কহ প্রীতি ঠাকুব জী প্রশংসনীয কাজ কেননি ঋছি। রীবরনক কথা ভহ সকৈ ছন জে নোক বিসবি জাগত ফ্দা পোথী স্বরূপমে বফনাসঁ ঋাগ ধবি ও নোক-মানসক বংজনক মাধ্যম ৰনন ঋছি।

চিত্রকথাক ঋপন মফত্র হোগত ঋছি। রাদ্য-সঁপ্রেষণসঁ জে প্রভাব বংচিত বফি জাগত ঋছি ও সঁপ্রেষিত হোগত ঋছি চিত্রসঁ। নাটকমে ঋভিনযসঁ জে সঁপ্রেষিত নফি হোগত ঋছি ও সঁপ্রেষিত ঋছি বংগ, ধ্রনি ঋা প্রকাশিসঁ তফিনা চিত্রকথামে সেহো হোগত ঋছি। প্রস্বত ঋানোচ্য পোথীক চিত্র সশক্ত ঋছি।

রান সাফিত্য নেন ঔ কাজ প্রতি জীক সবাফনীয ছন্হি। চাবি রর্খক নেনা জেকবা ঋক্ষব ৰোধ নফিযো ছৈ সেহো কথাকেঁ পরেখ সকৈএ। চিত্রক মাধ্যমসঁ। রান সাফিত্যক জে ঋভাব ঋপনা মৈথিনীমে ঋছি তাফিপব ৰড়কা-ৰড়কা বিদ্বানক ঋছৈত

थोड़ केरो ध्यान नहि देल गेल छल आ खास कऽ एहि तरहक ।

पोथी आकर्षक, रूचिकर आ बालमनकेँ प्रभावित करैत अछि । एहि लेल हम फेर एक बेर श्रीमती प्रीति ठाकुरकेँ धन्यवाद दैत छिएनि । संगे आशा करब जे आगाँ सेहो एहि तरहक काज करथि ।



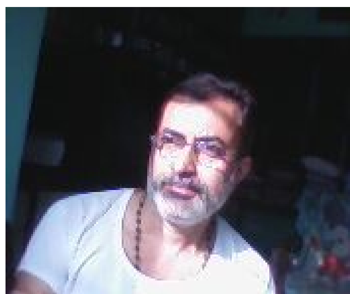
डॉ. शेफालिका वर्मा

प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा

—

प्रत्येक भाषा में किछु एहेन रचनाकार होयत छथि, महिला वाकि पुरूष-रचना, अपन विलक्षण प्रतिभा के कारन सब से हटाक वूझा पड़ैत छैथ . ई दोसर बात थीक की आलोचक रचना महिला लेखन के ऐतिहासिक पन्ना के एकटा कोन द दैत छैथ . किछु भाग्यशाली लेखिका के किछु स्थानो भेटि जायत छैक ,यदा ,समग्रता में नै. लेखन में महिला पुरूष नै होयत छैक, जे विषय पर लेखक लिखैत छैथ , ओहि पर लेखिका सेहो लिखैत छैथ, कखनो बेसी नीक,.बेस, आर एकटा प्रतीक्षा अछि जे कोनो सशक्त महिला आलोचक के देखी, जे महिला नै भे मात्र आलोचक रहथ,पूर्वाग्रह

से बहित नीक आलोचना के जन्म दैत. मैथिली साहित्यक इतिहास में चारि चान लगारैथ, हम जनैत छी एहेन विद्वान लेखिकाक कमी नै ऐछ......
आय प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा, गोनूझा पर पोथी देखी चमत्कृत भ गेलों . पहिने ते हम मैथिलीक लेखा जुटैका लेल कोमिक्स बूझ्लों, मुदा पढे लगलों ते एकरा में डूबी गेलों. गागर में सागर===अद्भुद ..मैथिली लोकगाथा क विपुल संसार के शिर क जटाजूट जकां कोना समेटी लेने छैथ,ई पढना उप्रान्तते बूझा पडत. कतेक कथा क खाली नाम सुनने छलों , ओ सब एहि पोथी में साकार छल. जहिना आजुक समाज अकबर वीरबल के विसरि रहल अछ ,ओहिना गोनू झा के.
प्रस्तुत पोथिक माध्यम स पाठक अपन समाज क सब वस्तु के आदर्श के चीन्ही सकैत छैथ
प्रीति जी के अशेष शुभकामना एतेक सुन्दर पोथी लेल , प्रीति जी आ गजेन्द्र जी से हम एकटा आग्रह करबैक जे कोसी नदी लेल बड खिस्सा कथा समाज में पसरल छैक, ओकरो चित्रकला में समेटी लैथ. कोसी नदीक रहस्यमय चरित्र, सिंघेश्वर बाबा से विवाह आदि, आदि खिस्सा सब.....जहिना समाज क प्रत्येक क्षेत्र में नारी आय निरंतर आगू बढ़ ि रहल छथि , ओहिना मैथिली मिथिलाक विकास में आजुक नारी अपन अपन स्तर से अमूल्य योगदान द रहल छथि. अशेष साधुवाद, प्रीति जी ,असंख्य शुभाशिंसा ....



<u>**ख़वरिन्द ठाकुव**</u>

<u>नोकदेर भीम केरह्ट</u>

आठम सदीक मध्य धवि गुप्त–रंशक शासन नवभवाগত–नवभवाগত চনন। হर्षरर्धनक বাঁদ সম্পূর্ণ শাসন–ক্ষেত্রমে খবাজকতা আ খর্য্যরস্থা পসবি গেন। মত্স্য–ন্যাযসঁ ত্রস্ত প্রজা খপন বক্ষাক নেন সর্রসম্মতিসঁ শস্ত্র, শাস্ত্র আ হুষিমে নিষ্ঠাত খযাচক–ব্রাহ্মণ গোপানকেঁ খপন বাজা চ্ননক। হ্নকেসঁ পান রংশক প্রাবম্ভ ভেন। গোপান রিহাব আ রঁগানকেঁ একসূত্রমে রাঁন্হি জনসহযোগসঁ শাসনকেঁ স্বর্যরস্থিত কেননি। গোপান পবম নোকপ্রিয বাজা ভেনাহ আ হ্নকাসঁ প্রাবম্ভ পান শাসন কানমে শিক্ষা–সংস্কৃতিক চতুর্দিক রিকাস ভেন। এগাবহম শতাব্দী আএন। তখন পানরংশী বাজা রিগ্রহপান তৃতীযক শাসন ছন। ওহো খপন পূর্রজ সভ জকাঁ প্রজাপানক আ ন্যাযপবাযণ ছনাহ। হ্নদা হ্নক জ্যেষ্ঠ

পুত্র মহিপাল-দ্বিতীয সত্তালোল্বপ ছল। পিতাক মৃত্যুক উপরান্ত ও অপন দুনূ ছোট ভাএ শূরপাল আ রামপালকেঁ বন্দী বনাএ কারাগারমে ঠাঠি দেলক আ শাসনক মনমানা সংচালন করএ লাগল।
গুপ্তকালমে পূর্বী মিথিলা আ পশ্চিমী বঁগালকেঁ মিলাকএ একটা রাজ্য বনাওল গেল ছল- পৌণ্ড্রবর্ধন। এহি ক্ষেত্রান্তর্গত ছল ভেরিযারীগঢ়। ই অজুকা অররিযা জিলা মুখ্যালযসঁ প্রাযঃ ১৬ কিলোমীটর দূর নেপাল সীমাপর অবস্থিত অছি। এহি ভেরিযারীগঢ়মে দির্বোক নামক পালশাসকক একটা প্রভারশালী সামন্ত অপন ভাতিজ ভীম কেরটক সংগ রহৈ ছলাহ। ও অপন প্রজাক কল্যাণ লেল তঁ তপের রহিতে ছলাহ, হুনকা অনেক সিদ্ধি সেহো প্রাপ্ত ছলনি। ও ভেরিযারীগঢ়সঁ শাসন আ পলার নদীক মলোরম তীরপর ভাগলগর গামস্থিত এক গুফামে যোগ সাধনা করৈত ছলাহ। মোরংগক রাজা ভীমদেরক সংগ হুনক প্রগাঢ় মৈত্রী ছল। মহিপাল দ্বারা অপন ভাএ সভক সংগ কএল অত্যচার আ অরাজক শাসন পদ্ধতিসঁ সামন্ত দির্বোক ক্ষুব্ধ ভএ গেলাহ। ও অপন রাজাক নিন্দনীয কৃত্যক বিরোধ করএ লগলাহ। ও কেরট সভক ২২ (বাঁগস) উপজাতিকেঁ সংগঠিত কেললি আ তকর নেতৃত্ব লেল অপন ভাতিজ ভীম কেরটকেঁ নিযুক্ত কেললি। সংঘর্ষক যোজনা বনএ লাগল। ক্ষেত্রক অন্য অনেক ছোট-বড় সামন্ত সভ ভীম কেরটক ঝংডাক নীচাঁ একজুট হোরএ লাগল।

মহিপালকেঁ একর ভনক লাগল তঁ ও এক ভাএ শূরপালকেঁ মুক্ত কএ শাসনমে হিস্সেদার বনা লেলক। মুদা এহিসঁ স্থিতি নহিঁ সম্হরলৈ। জলাক্রোশ অপ[অন চরমপর আরি

গেন ছলৈ। ভীম কেরঠৈক নেতৃত্বরঁনা জন-সেনা আক্রামক ভএ গেন। বাজা মহিপান শক্তিশানী সেনাক সংগ-সংগ গ্রাম্য বক্ষাদন রাহিনীসঁ সম্পন্ন ছন মুদা প্রজাক রিশ্বাস ওকবা সংগ নঞি ছলৈ। ভযংকব যুদ্ধ ভেনৈ জাহিমে মহিপান হাবি গেন আ ক্রুদ্ধ প্রজা ওকব রধ কএ দেনকৈ। শূবপান আ বামপান মুক্ত কএ দেন গেনাহ আ দুনূ ভাএ রঁগান দিস চনি গেনাহ। রিজযোপবান্ত দির্ব্বাকেঁ বাজা রঁনাএন গেন। হুনকা কোনো পুত্র নঞি ছননি তেঁ হুনক মৃত্যুক উঁপবান্ত ভীম কেরঠৈ বাজা ভেনাহ।

এক রেঁব মোবংগ বাজা ভীমদেরক রঁহিন তিবহূন স্বন্নবি এক সএ নাহমে সনেস আ দহেজক সংগ অপন সাসুব জাগ ছনীহ। সিবীপুব চৌবমে কিবাঁত ডকৈত সভ সগযো নাহ নূঠি নেনক আ তিবহূন স্বন্নবিক হবণ কএ রূপতানক এহিঠাম বাখি দেনক। হাহাকাব মচি গেনৈ। বাজা ভীমদের অপন মিত্র ভীম কেরঠৈসঁ গোহাব কএ মদতি মাঁগননি। ভীম কেরঠৈ ভাগনগব গুফামে ভগরতীক ধ্যান নগৌননি। ভগরতী পবগঠ ভএ হুনকা তিবহূন স্বন্নবিক পতা দেনথিন। ভীম কেরঠৈ অপন রঁনশানী হাথমে খড়্গ যে মোনক খল্ডা নেনে রঁনমৌঠো ঘোড় াপব সরাব ভএ কিবাঁত সভক উঁন্মূনন নেন অগ্রসব ভেনাহ। কিবাঁত সভক সভঠো মংতবকেঁ অপন সাধনাক রঁনপব কাটৈত ভীম কেরঠৈ পতান-নোক ধবি পহুঁচি গেনাহ। অপন খংডাসঁ কিবাত ডকৈত সভক রধ কএ ও তিবহূন স্বন্নবিকেঁ মুক্ত কবৈননি।

তাহি কান ধবি রৌদ্ধ ধর্ম কনুষিত হোঅএ নাগন ছন। রজ্রযানী সভ রিকৃত গুহ্য সাধনামে নাগি গেন ছন। ভীম কেরঠৈ অপন শাসন ক্ষেত্রমে এহি দুবাচাবকেঁ

প্রতিরঁক্ষিত কেননি। রজ্রযানী রৌদ্ধ মঠ সভকেঁ উঁজাড়ি ওকবা শির মন্দিবক ৰূপ দেন গেন।
খনন্ত নোকোপকাবী কাজ সভ কৰৈত ভীম কেরঠ খপন শাসনকানমে জননাযক রঁনন বহনাহ। খাগযো ভীম কেরঠ নোকদের ৰূপমে স্মবণ কএন জাগত ছথি খা হ্নক রীব গাথা নোকগীত রঁনি নোক কংঠমে রঁসন খছি।

নোকদের নোবিক

সৌঁসে গনাকামে উঁঘবা পংরাবক খাতংক পসবন ছন। ও পবম খনাচাবী খা দিশ্চবিত্র ছন। ককতো ধন–সম্পত্তি নূটি নেরঁ খা মনপসিন্ন যুরতীক খপহবণ কএ নেরঁ ওকব দিনচর্যা রঁনন ছন। উঁঘবা গামক খপন গঢ়সঁ কজ্জনগিবি হাথীপব চঢ়ি একসঁ এক খড়ি জংগ পঞ্ঝা খা পহনমান সভক সংগ জখন উঁঘবা পংরাব রঁহবারেঁ তঁ নোককেঁ খদংক ধএ নএ। যুরতী নোকনি পতন্বকান নএ নিখএ খা সংপন্নসঁ সংপন্ন খা প্রভারশানী নোক ওকবা খাগাঁ নতমস্তক বহ।
কমনা নদীক কছেবপব গোঠ গৌবা গাম। এহি গামক মাঁজবি পবম স্বন্দবী ছনীহ। উঁঘবা পংরাব মাঁজবিকেঁ খপন খংকশাযিনী রঁনরঁয ছাহৈত ছন। মাঁজবি হাবী পত্তনক ভগরতী মংদিবমে প্রতিদিন পূজা কবথি খা খপন সতীত্ব বক্ষা নেন গোহাবি কবথি। মাঁজবিক পিতা মহবকেঁ এক নাখ গায ছননি খা পনৌক নাম ছননি পদ্মা মৌহবি। দুনূ প্রাণীকেঁ উঁঘবা পংরাবক মোনক রাঁত

ব্রূমন বহনি তেঁ দ্নূ চিন্তামগ্ন ভএ মাঁজবিক মাম সেরাচনকেঁ ব্রঁজযননি। মাঁজবিক নেন নির্ভীক খা প্রচন্ড যোদ্ধা রব খোজব্রাঁক ভাব সেরাচনকেঁ দেন গেননি।

এহি ঞমমে খগৌবা গামক সিনহ্ষ্টে খখাড় াক খ্যাতি সেরাচনক কানমে সেহো পড়ননি। এহি খখাড় াক প্রধান মন্ন ছনাহ নোবিক। নোবিক খপন খস্সী মোনক রিশান ভাবী খল্ডাক প্রব্রন রেগসঁ সংচানন কবথি তঁ রিঁজনী চমকৈ। হ্নক ছোষ্ট ভায সারব তেহনে মস্ত পহনমান। ওহি খখাড় ামে নোবিকক খন্য মন্ন-সংগী ছন- বাজন ধোরী, ব্রাঁন্ধ দ্সাধ খা রঁঠা চমাব।

সেরাচন খগৌবা এনাহ তঁ হ্নকা খগৌবাক বাজা সহদেরক শিতখঁডা মহন দেখি পড়ননি। ওতএ গেনাহ তঁ হ্নক খূব্র খারভগত ভেন খা ও বাজক্ষমাব মহাদেরকেঁ দেখননি। এহন স্বকোমন হরক হ্নকা মাঁজবি নেন নঞি জঁচননি। ও মহনসঁ নিবাশ ভএ ঘুবৈত ছনাহ তঁ ডগবপব বাজন ধোরীক পনৌ হ্নিযা হ্নকা নোবিকক মাদে ব্রতৈনকনি। সেরাচন ক্ষত্রিক দনানপব এনাহ।

নোবিকক খা সারবক পিতা ক্ষত্রি বাজা সহদেরক হবব্রাঁহ ছনাহ খা হ্নক পনৌক নাম ছননি- খ্নৈন। সেরাচন খ্ত্রিক রিপন্নতাসঁ ব্যথিত তঁ ভেনাহ, ক্ষদা সিনহ্ষ্টে খখাড় াপব নোবিকক পৌরুষ দেখি হ্নকা নগননি জেনা সাক্ষাত ভৈবর রীব-রেশমে ঠাঢ় ছথি। হ্নকা ভবোস ভএ গেননি জে গএহ তরুণ খপন রীবতাসঁ মাঁজবিক সতীত্ব-বক্ষা কএ সকৈত খছি। ও ক্ষত্রিক এহিঠাম ভোজন কযননি খা রিরাহ তয ভএ গেন।

উঁঘবা পরাবক প্রচন্ড শিক্তিসঁ খাতংকিত সাখমান্য জনকেঁ ব্রঁবিযাত জযব্রাঁক সাহস নঞি ভেননি। ব্রঁবিযাতমে মাত্র নির্ভীক পবিজন খা চুনৌষ্টী রীব সভ চনন। বস্তামে

एकटा नदीक कातमे सात सय धोबी कोनो राजाक कपड़ा धोअत रहए। राजन ओहि धोबी सभसँ आग्रह केलकनि जे सभ बरियातीकेँ कपड़ा दिअओ जे फिरती काल घुराए देल जाएत। धोबी प्रधान प्रस्तावमे राजनक अपमान कए देलकनि। फेर की छल। बरियाती सभ सभटा वस्त्र लूटि लेलक आ पहिरिकेँ आगाँ बढ़ल। दोसर दिन ओ सभ बगड़ा-बजार पहुँचल। उत्पातल बरियातीकेँ बजारबला सभ भोजन देब अस्वीकार कए देलक। बस फेर तँ बरियाती बगड़ा-बजारकेँ लूटि लेलक आ खा-पी कए आगाँ बढ़ल।

गौरा गामक एकटा फैलगर गाछीमे बरियातीक डेरा खसलै। मुदा दिससँ भोजन सामग्रीक अभाव लागि गेल। कहल अछि जे सत्तासँ मोन दूध पीबि गेलाह, सात सए तोला दही चाटि गेलाह, सत्तरि माठ सकरौरी चाभि देलखिन आ विशेष आग्रहपर सए हाँड़ी छाल्ही सेहो उदरस्थ कए गेलाह। आनो-आन बरियाती तहिना कएलक।

उँघरा परार विवाहकेँ बाधित करए लेल पहलमान सभकेँ स्त्री-वेशमे पठएलक। बूढ़ कहल अपन ताड़क छौंकीसँ सभकेँ झाँटिआबए लगलाह। बहुत मरल, बहुत पड़ाएल। फेर परार अपन कज्जलगिरि हाथीकेँ पठौलक। सभ बरियाती मिलि ओकरो बेहाल कए देलकै। ओहो पड़ाएल।

कन्या पक्ष दिससँ एक गोटेय पद्मा मौहरिक समाद लए कए आएल जे जाधरि किरण-छरि-मौर, माने चौकक आकाश-तारा-पटेर आ विजुलक माणिक चोली नहि देल जेतैक ताधरि कन्यादान संभव नहि। ई सभ

ঋনরাঁক ভাব নৈত বাজন ধোরী রাঁজন– “এতএসঁ পচীসে কোসপব রিজ্রন ছৈ। ওহিঠামক রঁড়কা ভাবী যোগিন কোসা মানিন ঙা তীনূ চীজ এক্কে সংগ রেঁচৈত ঋছি। ওকবাসঁ ঙা সভ উঁধাব নএ নেরেঁ ঋা নঞিঁ দেত তঁ ঘবস্ববক মৈন ছোড় াএ দেরেঁ।” সারব সেহো ওকব সংগ ভেন। ও সভ রাঁটৈমে কিছু নতাম তোড়া কএ ঋা কিছু পোঠী মাছু পকড়া কএ বাখি নেনক। গোংগা রাঁনবকেঁ নতামমে ঋা কনহী রিনাগকেঁ পোঠী মাছমে ওঝবা কএ ও দ্নূ কোসা মানিন নগ পহুঁচন জে মংডপমে রৈঁসনি রাঁবহ রঁবষসঁ খীব বান্হি বহন ছনি। ওকব রিভিন্ন প্রনোভনসঁ রঁচৈত ঋা ধমকীক সংগ ওকব রস্তুজাতক মোন দএ দেরাঁক রচন দৈত দ্নূ গোটৈয সভ রস্তু নএ ঋানন। তখন জাকএ সিন্ববদান ভেন। রব–রধ্ কোহরঁব প্ররেশ কএননি। বাতিমে পরাবক পঠাওন প্রসিদ্ধ চোব–মন্ন সোনিকা ঋা মনিকা চাব ঋনগাকএ তকঋাবি নেনে কোহরঁবমে ঘ্সি গেন। নোবিক ঋপন খংডাসঁ দ্নূক মূড় ী ছোপি নেননি।

মাঁজবি তীনটা ঋনাথক পানন কএনে ছনীহ। প্রথম ছন রাঁজিন কৌঋা। দোসব ছনীহ পবম রঁনশানিনী ঋা মহাকায ন্ববকী। তেসব ছন নাংগব ছৌড় া নন্হ্ঋাঁ, জে গায সভক চবরাঁহী কবৈত ছন।

সোনিকা ঋা মনিকা মাবনে গেন ছন কি নন্হ্ঋাঁ চিকবন– “পাহ্ন, দৌগূ। উঁঘবা পরাব খবিকা রঁথানক গোথবসঁ মহবক সভটা গায হাঁকনে জাএ বহন ঋছি।” এহি হাকপব নোবিক ঋপন হাথমে খংডা নেনে কোহরঁবসঁ নিকনি দৌগি গেনাহ। ওম্হব খবিকা রঁথান নগ পরাব ঋপন সৈনিক সভক সংগ তৈযাব ছন। নোবিকপব ঋগিনিযাঁ রাঁণ চনএ নগনৈক। ওহিসঁ রঁচএ নেন নোবিক

ধাবক কষ্ঠেবপব একটা ফাটমে ধসিকএ বৈসি গেন। পৰাব খপন কজ্জনগিবী হাথীপব চঢ়ন ওকবা দিস বঁঢ়ন। ও নগ খনএ কি নোবিক নপকি কএ খপন খংডাসঁ হাথীক সূঁঢ় ছোপর্টি নেনক। হথী খববাকএ খসন খা পৰাব ওহিপবসঁ হদকিকএ এক দিস ভাগন। নোবিক ফাটসঁ বঁহবাএন খা সৈনিক সভক মূড় ী ছোপএ নাগন। পৰাবনগ একটা তীব চ্বঁচন ছনৈ। ও ভূমিপব সূতিকএ নোবিকক জাংঘমে তীব মাবনক। জাঁঘসঁ শোণিত ফ্হাব দেবঁএ নগনৈক হ্মদা নোবিক কর্হা থম্হযবঁনা। ওকব খংডা চনিতে বহন খা সৈনিক সভ হ্মংডরিহীন হোগত গেন। খংততঃ উঁঘবা পৰাব খপন বঁচন সৈনিক সংগ ভাগি গেন। নোবিক ঘ্বিকএ কোহবঁব এনাহ।
বঁবিযাতী রিদাগ বৈব পৰাব খপন বঁচন যোদ্ধা সভক সংগ ফেব জ্মি গেন। ভীষণ যুদ্ধ ভেন। ন্ববকী খপন ব্রজ-সমাঠ নেনে পৰাবেসঁ ভীড়ি গেন। ও সমাঠসঁ পৰাবক মাথপব চোট কবৈত ছনীহ, হ্মদা পৰাব খপন বনে-জড়ি ত খভেদ কিবীটক কাবণেঁবঁচি-বঁচি জাগ। এহিপব নোবিকক দৃষ্ঠি পড়ন। ও খপন খংডাক নোকসঁ কিবীটকেঁ নীচাঁ খসাএ দেনক। পৰাব প্রাণ নএ কএ খপন গঢ় দিস ভাগন। খসন কিবীট উঁঠাকএ ন্ববকী ওকবা নোবিকক মাথপব বাখি দেনকৈ। কিবীট পহিবনে নোবিক পৰাবক পছোব ধেননি। গঢ়ক ফাটক তক খবৈত-খবৈত নোবিক পৰাবক মূড় ী ছোপি নেননি। গঢ়মে হাহাকাব মচি গেন। গঢ়মে ঘূসি নোবিক বাঁন-বঁচা খা বানীকেঁ খভয-দান দেননি। বনিরাসক কাবাক ফাটক খোনবাঁএ ওহিমে ঢ় াঠনি সাত তূব স্বন্নবিকেঁ কাবাহ্মক্ত কএ দেন গেন। জন-জনমে জয-জযকাব ভএ উঠন। মহা-খত্যাচাবী উঁঘবা পৰাবসঁ নোককেঁ হ্মক্তি

ভেটৈন।
নোবিক সভ গোটৈযসঁ রিদা নেননি খা রঁবিযাতী সংগ খাগাঁ রঁঢ়নাহ। খাগ্-খাগ্ বঞবংজিত রজ্র-সমাঠ নেনে ল্ববকী, ওকব কন্হাপব রৈঁসন রিশান কৌখা রাঁজিন খা তকবা পাছূ ছনৈ বতন ওহাবরঁনা পানকীমে মাংজবি। তকবা পাছূ চনৈত ছনাহ হাথমে খস্সী মোনক খংডা নেনে সিংহ জকাঁ ম্মৈত রীব নোবিক। হ্নক খংডাসঁ তখনো পংরাবক বঞ চ্রিএ বহন ছন।

পদ্য খণ্ড

গজেন্দ্র ঠাক্বর

মিথিনাক ধ্বজ গ় ীত

মিথিনাক ধ্বজ ফহৈবাযত জগতমে,
মাঁ কষনি,ভূষনি,দূষনি, দেখন হম,
খক্ষনাগত ষ্টী, ভঁসিযাগত খষ্টি মন।

ছী বিদ্যাক উদ্যোগক কর্মভূমি সঁ,
পছাড়ি খাযত সন্ততি এহাঁক পুনি,
বুদ্ধি, চাতুর্যক আ’ শৌর্যক কবসঁ,
বিজযক প্রতি করু এহেঁ শংকা জনি।

মৈথিলী ছথি অল্পপ্রাণ ভেল জৌঁ,
সন্ধ্যক্ষণ রাজি কবরঁ হম ন্যাবা,
বর্ণ স্ফাটিক রঁনত স্পর্শসঁ হমব,
ধ্বজ খসত নহি হে মাতু মিথিলা।

কিছু সংস্কৃত সুভাষিতক সংকলন।

গাম সভমে দেখৈত হেরৈ কিছু লোক সংস্কৃত সুভাষিতক চোটিগর প্রযোগ করৈত ছথি। প্রস্তুত অছি এহাঁ লেল এহনে কিছু বীছল সুভাষিত।

সুভাষিতম্ (সুষ্ঠু ভাষিতম্ সুভাষিতম্)

মাতের রক্ষতি পিতের হিতে নিযুঙ্ক্তে কান্তের চাভিরমযত্যপনীযং খেদম্।
লক্ষ্মী তনোতি বিতনোতি চ দিক্ষু কীর্তিং কিং কিং ন সাধযতি কল্পলতের বিদ্যা॥

যস্য নাস্তি স্বয়ং প্রজ্ঞা শাস্ত্রং তস্য করোতি কিম্ ?
লোচনাভ্যাং বিহীনস্য দর্পণঃ কিং করিষ্যতি ॥

অ্যামোর্থ জীবলোকেঽস্মিন কো ন জীবতি মানবঃ ।
পরং পরোপকারার্থং যো জীবতি স জীবতি ॥

গচ্ছন্ পিপীলকো যাতি যোজনানাম্ শতান্যপি
অগচ্ছন্ বৈনতেয়োপি পদমেকম্ ন গচ্ছতি

তৃণানি ভূমিরুদকং বাক্ চতুর্থী চ সূনৃতা ।
এতান্যপি সতাং গেহে নোচ্ছিদ্যন্তে কদাচন ॥

সুলভাঃ পুরুষাঃ লোকে সততং প্রিয়বাদিনঃ ।
অপ্রিয়স্যায় চ পথ্যস্য বক্তা শ্রোতা চ দুর্লভঃ ॥

উপার্জিতানাং বিত্তানাং ত্যাগ একহি রক্ষণম্ ।
তডাগোদরসংস্থানাং পরীবাহ ইবাম্ভসাম্ ॥

পুস্তকস্থা তু যা বিদ্যা পরহস্তগতং ধনম্ ।
কার্যকালে সমুৎপন্নে ন সা বিদ্যা ন তদ্ধনম্ ।

বহূনাম্ অল্পসারাণাং সংহতিঃ কার্যসাধিকা ।
তৃণৈর্গুণত্বমাপন্নৈঃ বধ্যন্তে মত্তদন্তিনঃ ॥

জলবিন্দু নিপাতেন্ ক্রমশঃ পূর্যতে ঘটঃ ।
স হেতুঃ সর্ববিদ্যানাং ধর্মস্য চ ধনস্য চ ॥

চিন্তনীযা হি রিপদাম্ আদারতে প্রতিক্রিযা।
ন কূপখননং যুক্তম্ প্রদীপ্তে রহ্নিনা গৃহে॥

মাতৃরত্ পরদারেষু পরদ্রব্যেষু লোষ্ঠরত্
আমেরত্ সর্রভূতেষু যঃ পশ্যতি সঃ পণ্ডিতঃ।

যস্য কৃত্যং ন জানন্তি মংত্রং রা মংত্রিতং পরে।
কৃতমেরাস্য জানন্তি সর্রে পণ্ডিতে উঁচ্যতে।

সদযং হৃদযং যস্য ভাষিতং সত্যভূষিতম্।
কাযঃ পরহিতে যস্য কনিস্তস্য করোতি কিম্॥

গতানুগতিকোলোকঃ ন লোকঃ পারমার্থিকঃ
গঙ্গাসৈকত নিষ্কেন নষ্ঠং মে তাম্রভাজনম্।

দানেন পাণিঃ ন তু কঙ্কণেন স্নানেন শুদ্ধিঃ ন তু চন্দনেন।
মানেন তৃপ্তিঃ ন তু ভোজনেন জ্ঞানেন মুক্তিঃ ন তু মুণ্ডনেন॥

আচার্যাত্ পাদমাদত্তে পাদং শিষ্যঃ স্বমেধযা।
পাদং সব্রহ্মচারিভ্যঃ পাদং কালক্রমেণ চ।

যথা চিত্তং তথা রাচো যথা রাচস্তথা ক্রিযা।
চিত্তে রাচি ক্রিযাযাং চ মহতা মেকরূপতা॥

অমন্ত্রমক্ষরং নাস্তি নাস্তি মূলমলৌষধম্।
অযোগ্যঃ পুরুষো নাস্তি যোজকস্তত্র দুর্লভঃ।

আযল্যাং গুণদোষজ্ঞঃ তদাত্বে ক্ষিপ্রনিশ্চযঃ ।
অতীতে কার্যশেষজ্ঞো রিপদা নাভিভূযতে ॥

গতে শোকং ন কুর্বীত ভরিষ্যং নৈর চিন্তযেত্ ।
রর্তমানেষু কালেষু রর্তযন্তি রিচক্ষণাঃ ।

ছাযামন্যস্য কুর্বন্তি তিষ্ঠন্তি স্বযমাতপে ।
ফলান্যাপি পরার্থায রৃক্ষাঃ সত্পুরুষাঃ ইর ॥

উপকারিষু যঃ সাধুঃ সাধুত্বে তস্য কো গুণঃ ।
অপকারিষু যঃ সাধুঃ স সাধুরিতি কীর্তিতঃ ॥

উদ্যমনৈর সিধ্যন্তি কার্যাণি ন মনোরথৈঃ ।
নহি সুপ্তস্য সিংহস্য প্রবিশন্তি মুখে মৃগা ।

অযং নিজঃ পরোরেত্তি গণনা লঘুচেতসাম্ ।
উদারচরিতানাং তু রসুধৈর কুটুম্বকম্ ॥

প্রিযরাক্য প্রদানেন সর্বে তুষ্যন্তি জন্তরঃ ।
তস্মাত্ তদের রক্তর্ব্যং রচনে কা দরিদ্রতা ।

নাভিষেকো ন সংস্কারঃ সিংহস্য ক্রিযতে রনে ।
রিক্রমার্জিত সত্ত্বস্য স্বযমের মৃগেন্দ্রতা ।

রজ্রাদপি কঠোরাণি মৃদূণি কুসুমাদপি ।
লোকোত্তরাণাম চেতাংসি কো হি রিজ্ঞাতুমর্হতি ।

অন্নদানং পরং দানং রিদ্যাদনমতঃ পরম্।
অন্নেন ক্ষণিকা তৃপ্তিঃ যরজ্জীরং চ রিদ্যযা॥

ষড্ দোষাঃ পুরুষেণেহ হাতর্যা ভূতিমিচ্ছিতা।
নিদ্রা তন্দ্রা ভযং ক্রোধঃ আলস্য দীর্ঘসূত্রতা॥

অপ্তরা পরসন্তাপম্ অগত্বা খলনমতাম্।
অনুসৃত্য সতাং রর্মে যত্ স্বল্পমপি তদ্ রঁহ্॥

অপার ভূমি রিস্তারম্ অগম্য জন সংকুলম্
রাষ্ট্রং সংঘটনাহীনং প্রভরেন্নামেরক্ষণে॥

<u>रॅचा नोकनि द्वावा स्मवणीय श्लोक</u>

१.प्रातः कान ब्रॅम्हमुहूर्त्त (सूर्योदयक एक घंटा पहिने) सर्वप्रथम अपन दुनू हाथ देखबाक चाही, आ' ई श्लोक बॅजबाक चाही।
कवाग्रे वसते लक्ष्मीः कवमध्ये सवस्वती।
कवमूले स्थितो ब्रॅम्हा प्रभाते कवदर्शनम्॥
कवक आगाँ लक्ष्मी बॅसैत छथि, कवक मध्यमे सवस्वती, कवक मूलमे ब्रॅम्हा स्थित छथि। भोवमे ताहि द्वावे कवक दर्शन कवबाक थीक।
२.संध्या कान दीप लेसबाक कान-
दीपमूले स्थितो ब्रॅम्हा दीपमध्ये जनार्दनः।
दीपाग्रे शङ्करः प्रोक्तः सन्ध्याज्योतिर्नमोऽस्तुते॥
दीपक मूल भागमे ब्रॅम्हा, दीपक मध्यभागमे जनार्दन (विष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शङ्कर स्थित छथि। हे संध्याज्योति! अहाँकेँ नमस्काव।
३.सुतबाक कान-
वामं स्कन्दं हनूमन्तं वैनतेयं वृकोदवम्।
शयने यः स्मवेन्नित्यं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति॥
जे सभ दिन सुतबासँ पहिने वाम, कुमावस्वामी, हनूमान्, गरुड़ आऽ भीमक स्मवण कवैत छथि, हुनकव दुःस्वप्न नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

४. नहेबाँक समय-
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु आऽ कावेरी धार। एहि जलमे अपन सान्निध्य दिअ।
५.उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तत् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः ॥
समुद्रक उत्तरमे आऽ हिमालयक दक्षिणमे भारत अछि आऽ ओतुका सन्तति भारती कहबैत छथि।
६.अहल्या द्रौपदी सीता तारा मण्डोदरी तथा।
पञ्चकं ना स्मरेन्नित्यं महापातकनाशकम्॥
जे सभ दिन अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मण्दोदरी, एहि पाँच साध्वी-स्त्रीक स्मरण करैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ जाइत छन्हि।
७.अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः ।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरञ्जीविनः ॥
अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनूमान्, विभीषण, कृपाचार्य आऽ परशुराम- ई सात टा चिरञ्जीवी कहबैत छथि।
८.साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी
उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः ।
सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादान्तस्य धूर्जटेः
जाह्नवीफेनलेखेव यन्मूधि शशिनः कला॥
९. बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती।
अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥
१०. दूर्वाक्षत मंत्र (शुक्ल यजुर्वेद अध्याय 22, मंत्र 22) डाउनलोड करू।
विश्वक प्रथम देशभक्ति गीत
(शुक्ल यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

ঋা ব্রঁহ্মন্নিৎস্য প্রজাপতির্ঋষিঃ । লিংভোকত্তা দেৱতাঃ । স্ৱৱাড়্কৃতিশ্ছন্দঃ । ষড্জঃ স্ৱরঃ ॥
ঋা ব্রঁহ্মন্ ব্রাহ্মণো ব্রঁহ্মৱর্চসী জায়তামা বাষ্ট্রে বাজন্যঃ শুরেঽগষব্যাঽতিৱ্যাধী মহাবথো জায়তাং দোগ্ধ্রী ধেনুৱোঢানড্ৱানাশুঃ সপ্তিঃ প্ৱবন্ধিৰ্যোৱা জিষ্ণু বথেষ্ঠাঃ সভেয়ো যুৱাস্য যজমানস্য বীবো জায়তাং নিকামে-নিকামে নঃ পর্জন্যো বর্ষতু ফলৱত্যো নঽওষধযঃ পচ্যন্তাং যোগেক্ষমো নঃ কল্পতাম্ ॥ ২২ ॥
মন্ত্রার্থাঃ সিদ্ধযঃ সন্তু পূর্ণাঃ সন্তু মনোবথাঃ । শত্রূণাং বুদ্ধিনাশোঽস্তু মিত্রাণামুদযস্তৱ ।
ওঁ দীর্ঘাযুর্ভৱ । ওঁ সৌভাগ্যৱতী ভৱ ।
হে ভগৱান্ । ঋপন দেশমে সুযোগ্য ঋা' সর্ৱজ্ঞ ৱিদ্যার্থী উৎপন্ন হোথি, ঋা' শত্রুকেঁ নাশ কএনিহাব সৈনিক উৎপন্ন হোথি । ঋপন দেশক গায খূব দূধ দয ৱালী, বৱদ ভাব ৱহন কবএমে সক্ষম হোথি ঋা' ঘোড় া ত্ৱবিত ৰূপেঁ দৌগয ৱলা হোএ । স্ত্রীগণ নগবক নেতৃত্ব কবৱামে সক্ষম হোথি ঋা' যুৱক সভামে ওজপূর্ণ ভাষণ দেৱযৱলা ঋা' নেতৃত্ব দেৱামে সক্ষম হোথি । ঋপন দেশমে জখন ঋাৱশ্যক হোয ৱর্ষা হোএ ঋা' ঔষধিক-বুটী সর্ৱদা পবিপক্ক হোগত বহএ । এৱং ক্রমে সভ তবহেঁ হমবা সভক কল্যাণ হোএ । শত্রুক বুদ্ধিক নাশ হোএ ঋা' মিত্রক উদয হোএ ॥
মনুষ্যকেঁ কোন ৱস্তুক ইচ্ছা কবৱাক চাহী তকব ৱর্ণন এহি মংত্রমে কএল গেল ঋছি ।
এহিমে ৱাচকলুপ্তোপমালঙ্কাব ঋছি ।
ঋন্ৱয-
ব্রঁহ্মন্ - ৱিদ্যা ঋাদি গুণসঁ পবিপূর্ণ ব্রঁহ্ম

বা◌ৃষট্রে - দেশমে
ব্র◌্মবর্চ◌ৃসী-ব্রহ্ম রিদ্যাক তেজসঁ যুকত্ত
খা জা◌্যতা◌ৃ- উঁপেন্ন হোএ
বা◌্জ◌ৃন্যঃ -বাজা
শুবে◌্২-রিনা ডব রঁনা
ওষর্ব্যা◌ৃ- রাঁণ চনেরাঁমে নিপুণ
২তিব্যা◌ৃধী-শত্রুকেঁ তাবণ দয রঁনা
ম◌্হাব◌ৃথো-পৈঘ বথ রঁনা রীব
দোগ্ধ্রী-কামনা(দূধ পূর্ণ কবএ রাঁনী)
ধে◌ৃন্বরোঢা◌্ন◌ৃড্রানা◌ৃশ্বঃ ধে◌ৃন্ব-গৌ রা রাণী
রোঢা◌্ন◌ৃড্রা- পৈঘ রঁবদ না◌ৃশ্বঃ -খাশ্বঃ -হুবিত
সপ্তিঃ ◌ৃ-ঘোড় া
প্বব◌্ঝি◌ৃযোরা◌্- প্বব◌্ঝি◌ৃ- ব্যরহাবকেঁ ধাবণ কবএ
রাঁনী যোরা◌্-স্ত্রী
জি◌ৃষ্ণূ-শত্রুকেঁ জীতএ রঁনা
ব◌্থে◌ৃষ্ঠাঃ -বথ পব স্থিব
স◌ৃভেযো◌ৃ-উঁত্তম সভামে
যুরাস্য-যুরা জেহন
যজ◌্মানস্য-বাজাক বাজ্যমে
রী◌ৃবো-শত্রুকেঁ পবাজিত কবএরঁনা
নিকা◌ৃমে-নি◌্কামে-নিশ্চযযুকত্ত কার্যমে
নঃ -হমব সভক
প◌ৃর্জন্যা-মেঘ
রর্ষত্ত◌ৃ-রর্ষা হোএ
ফন◌্রত্যা-উঁত্তম ফন রঁনা
ওষ◌্ধযঃ -ঔষধিঃ
পচ্যন্তা- পাকএ
যোগেক্ষ◌ৃমো-খনস্থ নস্থ করেরাঁক হেত্ত কএন গেন

যোগক বক্ষা
নঃ ্-হমবা সভক হেত্ত
কল্পতাম্-সমর্থ হোএ
গ্রিফিথক খনুবাদ- হে ব্রহ্মণ, হমব বাজ্যমে ব্রাহ্মণ নীক ধার্মিক রিদ্যা রঁনা, বাজন্য-রীব,তীবংদাজ, দূধ দএ রাঁনী গায, দৌগয রঁনা জন্তু, উঁদ্যমী নাবী হোথি। পার্জন্য খারশ্যকতা পড়না পব রর্ষা দেথি, ফন দেয রঁনা গাছ পাকএ, হম সভ সংপত্তি খর্জিত/সংবক্ষিত কবী।
সিদ্ধিবস্তু।

<u>সংদেশ</u>

১.শ্রী গোরিন্দ ঝা- রিদেহকেঁ খন্তজনিপব উঁতাবি রিশ্বভবিমে মাতৃভাষা মৈথিনীক নহবি জগাওন, খেদ জে খপনেক এহি মহাভিযানমে হম এখন ধবি সংগ নহি দএ সকনহুঁ। স্বনৈত ছী খপনেকেঁ স্বঝাও খা বচনামেক খানোচনা প্রিয নগৈত খছি তেঁ কিছু নিখক মোন ভেন। হমব সহাযতা খা সহযোগ খপনেকেঁ সদা উঁপনব্ধ বহত।

২.শ্রী বমানন্দ বেণু- মৈথিনীমে ঙা-পত্রিকা পাক্ষিক ৰূপেঁ চনা কঽ জে খপন মাতৃভাষাক প্রচাব কঽ বহন ছী, সে ধন্যবাদ । খাগাঁ খপনেক সমস্ত মৈথিনীক কার্যক হেতু হম হৃদযসঁ শুভকামনা দঽ বহন ছী।

৩.শ্রী রিদ্যানাথ ঝা "রিদিত"- সংচাব খা প্রৌদ্যোগিকীক এহি প্রতিস্পর্ধী গ্লোবঁন যুগমে খপন মহিমামঘ "রিদেহ"কেঁ খপনা দেহমে প্রকট দেখি জতবাঁ প্রসন্নতা খা সংতোষ ভেন, তকবা কোনো উঁপনব্ধ "মীটব"সঁ নহি নাপন জা সকৈছ ? ..একব ঐতিহাসিক মূন্যাংকন খা সাংস্কৃতিক প্রতিফনন এহি শতাব্দীক খংত ধবি নোকক নজবিমে খাশ্চর্যজনক ৰূপসঁ প্রকট হৈত।

৪. প্রা. উঁদয নাবাযণ সিংহ "নচিকেতা"- জে কাজ খহাঁ কএ বহন ছী তকব চবচা এক দিন মৈথিনী ভাষাক

ওতিহাসমে হোএত। আনন্দ ভএ বহল অছি, ওা জানি কএ জে এতেক গোষ্ঠ মৈথিল "রিদেহ" ওা জর্নলকেঁ পঢ়ি বহল ছথি।...রিদেহক চালীসম অংক প্রবরাঁক লেল অভিনন্দন।

৫. ডা. গংগেশ গুংজন- এহি রিদেহ-কর্মমে লাগি বহল অহাঁক সম্বেদনশীল মন, মৈথিলীক প্রতি সমর্পিত মেহনতিক অমৃত বংগ, ওতিহাস মে এক টা রিশিষ্ঠ ফবাক অধ্যায আবংভ কবত, হমবা রিশ্বাস অছি। অশেষ শুভকামনা আ রঁধাওক সঙ্গ, সম্প্রহ...অহাঁক পোথী ক্ষুক্ষেত্রম্ অংতর্মনক প্রথম দৃষ্ঠ্যা রহ্ত ভর্য তথা উঁপযোগী রুন্নাওছ। মৈথিলীমে তঁ অপনা স্বরূপক প্রাযঃ ওা পহিলে এহন ভর্য অরতাবক পোথী থিক। হর্ষপূর্ণ হমব হার্দিক রঁধাওা স্বীকাব কবী।

৬. শ্রী বামাশ্রয ঝা "বামবংগ"(আব স্বর্গীয)- "অপনা" মিথিলাসঁ সংরঁধিত...রিষয রস্তুসঁ অরগত ভেলহুঁ।...শেষ সভ ক্ষশল অছি।

৭. শ্রী ব্রজেন্দ্র ত্রিপাঠী- সাহিত্য অকাদমী- ওংটবনেট পব প্রথম মৈথিলী পাক্ষিক পত্রিকা "রিদেহ" কেব লেল রঁধাওা আ শুভকামনা স্বীকাব করু।

৮. শ্রী প্রফুল্লকুমাব সিংহ "মৌন"- প্রথম মৈথিলী পাক্ষিক পত্রিকা "রিদেহ" ক প্রকাশনক সমাচাব জানি কনেক চকিত মুদা রঁসী আহ্লাদিত ভেলহুঁ। কানচক্রকেঁ পকড়ি জাহি দূবদৃষ্ঠিক পবিচয দেলহুঁ, ওহি লেল হমব মংগলকামনা।

९.डॉ. शिवप्रसाद यादव- ई जानि अपार हर्ष भए
रहल अछि, जे नव सूचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली
पत्रकारिताकेँ प्रवेश दिअएबाक साहसिक कदम उठाओल
अछि। पत्रकारितामे एहि प्रकारक नव प्रयोगक हम
स्वागत करैत छी, संगहि "विदेह"क सफलताक
शुभकामना।

१०. श्री आद्याचरण झा- कोनो पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन-
ताहूमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशनमे के कतेक सहयोग
करताह- ई तऽ भविष्य कहत। ई हमर ८८ वर्षमे
७५ वर्षक अनुभव रहल। एतेक पैघ महान यज्ञमे
हमर श्रद्धापूर्ण आहुति प्राप्त होयत- यावत ठीक-ठाक
छी/ रहब।

११. श्री विजय ठाकुर- मिशिगन विश्वविद्यालय- "विदेह"
पत्रिकाक अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण टीम बधाइक पात्र अछि।
पत्रिकाक मंगल भविष्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार
कएल जाओ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ई-पत्रिका "विदेह" क
बारेमे जानि प्रसन्नता भेल। 'विदेह' निरन्तर
पल्लवित-पुष्पित हो आ चतुर्दिक अपन सुगंध पसारय
से कामना अछि।

१३. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- ई-पत्रिका "विदेह" केर
सफलताक भगवतीसँ कामना। हमर पूर्ण सहयोग
रहत।

১৪. ডাॅ. শ্রী ভীমনাথ ঝা- "রিদেহ" গন্টবনেট পব খছি তেঁ "রিদেহ" নাম উঁচিত খাব কতেক ৰূপেঁ একব রিরবণ ভএ সকৈত খছি। খাগ-কাল্হি মোনমে উঁদ্বেগ বহৈত খছি, মুদা শীঘ্র পূর্ণ সহযোগ দেব। কুরুক্ষেত্রম্ খন্তর্মনক দেখি খতি প্রসন্নতা ভেল। মৈথিলীক লেল ঈ ঘটনা ছী।

১৫. শ্রী বামভবোস কাপড়ি "ভ্রমব"- জনকপুবধাম- "রিদেহ" আঁননাগন দেখি বহল ছী। মৈথিলীকেঁ খন্তবষ্ট্রীয জগতমে পহুঁচেলহুঁ তকবা লেল হার্দিক বঁধাঈ। মিথিলা বলে সভক সংকলন খপূর্ব। নেপালোক সহযোগ ভেটৈত, সে রিশ্বাস কবী।

১৬. শ্রী বাজনন্দন লালদাস- "রিদেহ" ঈ-পত্রিকাক মাধ্যমসঁ বঁড় নীক কাজ কএ বহল ছী, নাতিক খহিঠাম দেখলহুঁ। একব বার্ষিক খ ংক জখন প্রিন্ট নিকালব তঁ হমবা পঠাযব। কলকত্তামে বঁহুত গোটেকেঁ হম সাগটক পতা লিখাএ দেলে ছিযন্হি। মোন তঁ হোগত খছি জে দিল্লী খারি কএ খাশীর্বাদ দৈতহুঁ, মুদা উঁমব খাব বেঁশী ভএ গেল। শুভকামনা দেশ-রিদেশক মৈথিলকেঁ জোড়বাক লেল। .. উঁৎকৃষ্ঠ প্রকাশন কুরুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক লেল বঁধাগ। খদ্ভুত কাজ কএল খছি, নীক প্রস্তুতি খছি সাত খন্ডমে। মুদা খহাঁক সেবা খা সে নিঃস্বার্থ তখন বুঁঝল জাগত জঁ খহাঁ দ্বাবা প্রকাশিত পোথী সভপব দাম লিখল নহি বহিতৈক। ওহিনা সভকেঁ রিলহি দেল জগতৈক। (স্পষ্টীকবণ- শ্রীমান্, খহাঁক সূচনার্থ রিদেহ দ্বাবা ঈ-প্রকাশিত কএল সভটা সামগ্রী

(पेटाेब) थाकर्गिरमे विना मून्यक डाउँनलोड नेन उँपनर्ब्ध छै आ भविष्यमे सेहो बहतैक। एहि थाकर्गिरकें जे किये प्रकाशक अनुमति नइ कइ प्रिंट रूपमे प्रकाशित कएने छथि आ तकर ओ दाम बखने छथि ताहिपब हमब कोनो नियंत्रण नहि अछि। - गजेन्द्र ठाकुब)... अहाँक प्रति अशेष शुभकामनाक संग।

१७. डॉ. प्रेमशंकब सिंह- अहाँ मैथिलीमे इंटबनेटपब पहिन पत्रिका "विदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत मातृभाषानुबागक पबिचय देन अछि, अहाँक निःस्वार्थ मातृभाषानुबागसँ प्रेबित छी, एकब निमित्त जे हमब सेवाक प्रयोजन हो, तँ सूचित कबी। इंटबनेटपब आद्योपांत पत्रिका देखन, मन प्रफुल्लित भइ गेन।

१८.श्रीमती शेफानिका वर्मा- विदेह ई-पत्रिका देखि मोन उँल्लाससँ भवि गेन। विज्ञान कतेक प्रगति कइ बहन अछि...अहाँ सभ अनन्त आकाशकें भेदि दियौ, समस्त विस्तावक बहस्यकें ताव-ताव कइ दियौक...। अपनेक अद्भुत पुस्तक कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक विषयवस्तुक दृष्टिसँ गागवमे सागव अछि। बधाइ।

१९.श्री हेतुकब झा, पटना-जाहि समर्पण भावसँ अपने मिथिना-मैथिलीक सेवामे तत्पव छी से स्तुत्य अछि। देशक बाजधानीसँ भय बहन मैथिलीक शंखनाद मिथिनाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास अवश्य कवत।

२०. श्री योगानन्द झा, कबिनपुब, नहेविसवाय- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक पोथीकें निकटसँ देखबाक अवसब

ভেটৈন অছি আ মৈথিলী জগতক একটা উদ্ভট ও সমসাময়িক দৃষ্টিসম্পন্ন হস্তাক্ষরক কলমরৱন্দ পরিচযসঁ আহ্লাদিত ছী। "বিদেহ"ক দেৱনাগরী সঁস্করণ পঢ়নামে রু. 80/- মে উপলব্ধ ভৱ সকল জে বিভিন্ন লেখক লোকনিক ছায়াচিত্র, পরিচয পত্রক ও রচনাৱলীক সম্যক প্রকাশলসঁ ঐতিহাসিক কহল জা সকৈছ।

২১. শ্রী কিশোরীকান্ত মিশ্র- কোলকাতা- জয মৈথিলী, বিদেহমে বৱহুত বাস কবিতা, কথা, রিপোর্ট আদিক সচিত্র সংগ্রহ দেখি আ আব অধিক প্রসন্নতা মিথিলাক্ষর দেখি- ৱধাঙা স্বীকার কএল জাও।

২২.শ্রী জীরকান্ত- বিদেহক মুদ্রিত অংক পঢ়ল- অদ্ভুত মেহনতি। চাৱস-চাৱস। কিছু সমালোচনা মরখাহ..মুদা সহ।

২৩. শ্রী ভালচন্দ্র ঝা- অপনেক কুরুক্ষেত্রম্ অংতর্মনক দেখি বুঝাএল জেনা হম অপনে ছপলহুঁ অছি। একর বিশালকায আকৃতি অপনেক সর্বসমাৱেশিতাক পরিচাযক অছি। অপনেক রচনা সামর্থ্যমে উত্তরোত্তর বৃদ্ধি হো, এহি শুভকামনাক সংগ হার্দিক ৱধাঙা।

২৪.শ্রীমতী ডॉ নীতা ঝা- অহাঁক কুরুক্ষেত্রম্ অংতর্মনক পঢ়লহুঁ। জ্যোতিরীশ্বর শব্দাৱলী, কৃষি মৎস্য শব্দাৱলী আ সীত ৱসন্ত আ সভ কথা, কবিতা, উপন্যাস, ৱাল-কিশোর সাহিত্য সভ উত্তম ছল। মৈথিলীক উত্তরোত্তর বিকাসক লক্ষ্য দৃষ্টিগোচর হোগত অছি।

২৫.শ্রী মাযানন্দ মিশ্র- কুরুক্ষেত্রম্ অন্তর্মনক মে হমর উপন্যাস স্ত্রীধনক জে বিরোধ কএল গেল অছি তকর হম বিরোধ করৈত ছী। ... কুরুক্ষেত্রম্ অন্তর্মনক পোথীক লেল শুভকামনা। (শ্রীমান্ সমালোচনাকেঁ বিরোধক রূপমে নহি লেল জাএ। -গজেন্দ্র ঠাকুর)

২৬.শ্রী মহেন্দ্র হজারী- সম্পাদক শ্রীমিথিলা- কুরুক্ষেত্রম্ অন্তর্মনক পঢ়ি মোন হর্ষিত ভ' গেল..এখন পূরা পঢ়যমে বহুত সময় লাগত, মুদা জতেক পঢ়লহুঁ সে আহ্লাদিত কএলক।

২৭.শ্রী কেদারনাথ চৌধরী- কুরুক্ষেত্রম্ অন্তর্মনক অদ্ভুত লাগল, মৈথিলী সাহিত্য লেল ই পোথী একটা প্রতিমান বনত।

২৮.শ্রী সত্যানন্দ পাঠক- বিদেহক হম নিযমিত পাঠক ছী। ওকর স্বরূপক প্রশংসক ছলহুঁ। এম্হর অহাঁক লিখল - কুরুক্ষেত্রম্ অন্তর্মনক দেখলহুঁ। মোন আহ্লাদিত ভ' উঠল। কোনো রচনা তরা-উপরী।

২৯.শ্রীমতী রমা ঝা-সম্পাদক মিথিলা দর্পণ। কুরুক্ষেত্রম্ অন্তর্মনক প্রিংট ফর্মে পঢ়ি আ একর গুণবত্তা দেখি মোন প্রসন্ন ভ' গেল, অদ্ভুত শব্দ একরা লেল প্রযুক্ত ক' রহল ছী। বিদেহক উত্তরোত্তর প্রগতিক শুভকামনা।

৩০.শ্রী নরেন্দ্র ঝা, পটনা- বিদেহ নিযমিত দেখৈত রহৈত ছী। মৈথিলী লেল অদ্ভুত কাজ ক' রহল ছী।

৩১.শ্রী রামলোচন ঠাকুর- কোলকাতা- মিথিলাক্ষর বিদেহ দেখি মোন প্রসন্নতাসঁ ভরি উঠল, এহিকে বিশাল পরিদৃশ্যে আস্বস্তকারী অছি।

৩২.শ্রী তারানন্দ বিযোগী- বিদেহ আ কুরুক্ষেত্রম্ অংতর্মনক দেখি চকবিদোর লাগি গেল। আশ্চর্য। শুভকামনা আ বধাঙ।

৩৩.শ্রীমতী প্রেমলতা মিশ্র "প্রেম"- কুরুক্ষেত্রম্ অংতর্মনক পঢ়লহুঁ। সভ রচনা উঁচকোটিক লাগল। বধাঙ।

৩৪.শ্রী কীর্তিনারাযণ মিশ্র- বেগূসরায- কুরুক্ষেত্রম্ অংতর্মনক বড্ড নীক লাগল, আগাঁক সভ কাজ লেল বধাঙ।

৩৫.শ্রী মহাপ্রকাশ-সহরসা- কুরুক্ষেত্রম্ অংতর্মনক নীক লাগল, বিশালকায সংগহি উত্তমকোটিক।

৩৬.শ্রী অগ্নিপুষ্প- মিথিলাক্ষর আ দেবাক্ষর বিদেহ পঢ়ল..ঙা প্রথম তঁ অছি একরা প্রশংসামে হ্দা হম একরা দুস্সাহসিক কহব। মিথিলা চিত্রকলাক স্তম্ভকেঁ হ্দা অগিলা অংকমে আর বিস্তৃত বনাঙু।

৩৭.শ্রী মংজর স্বলেমান-দরভংগা- বিদেহক জতেক প্রশংসা কএল জাএ কম হোএত। সভ চীজ উত্তম।

৩৮.শ্রীমতী প্রোফেসর বীণা ঠাকুর- কুরুক্ষেত্রম্ অংতর্মনক

উত্তম, পঠনীয, রিচাবনীয। জে ক্যা দেখৈত ছথি পোথী প্রাপ্ত কবরাঁক উপায প্বছৈত ছথি। শ্বভকামনা।

৩৯.শ্রী ছত্রানন্দ সিংহ ঝা- ক্রুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক পঢ়নহুঁ, রঁড্ড নীক সভ তবহেঁ।

৪০.শ্রী তাবাকান্ত ঝা- সম্পাদক মৈথিলী দৈনিক মিথিলা সমাদ- রিদেহ তঁ কন্টৈন্টৈ প্রারাগডবক কাজ কঽ বহল খছি। ক্রুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক খদ্ভুত লাগল।

৪১.ডাঁ বরীন্দ্র ক্রমাব চৌধবী- ক্রুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক রঁহুত নীক, রঁহুত মেহনতিক পবিণাম। রঁধাগু।

৪২.শ্রী খমবনাথ- ক্রুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক খা রিদেহ দূনূ স্মবণীয ঘটনা খছি, মৈথিলী সাহিত্য মধ্য।

৪৩.শ্রী পংচানন মিশ্র- রিদেহক রৈরিধ্য খা নিবন্তবতা প্রভারিত কবৈত খছি, শ্বভকামনা।

৪৪.শ্রী কেদাব কানন- ক্রুক্ষেত্রম্ খন্তর্মনক লেল খনেক ধন্যরাদ, শ্বভকামনা খা রঁধাগ স্বীকাব কবী। খা নচিকেতাক ভূমিকা পঢ়নহুঁ। শ্বরুমে তঁ লাগল জেনা কোনো উপন্যাস খহাঁ দ্বাবা সৃজিত ভেল খছি ক্দা পোথী উনটৌনা পব জ্ঞাত ভেল জে এহিমে তঁ সভ রিধা সমাহিত খছি।

৪৫.শ্রী ধনাকব ঠাক্রব- খহাঁ নীক কাজ কঽ বহল ছী। ফোটৈ গৌনবীমে চিত্র এহি শতাব্দীক জন্মতিথিক খন্বসাব

বহৈত তহ নীক ।

৪৬.শ্রী আশীষ ঝা- অহাঁক পুস্তকক সংবঁধমে এতবাঁ লিখবাঁ সঁ অপনা কএ নহি বোকি সকলহুঁ জে ও কিতাব মাত্র কিতাব নহি থীক, ও একটা উম্মীদ ছী জে মৈথিলী অহাঁ সন পুত্রক সেবা সঁ নিবংতব সমৃদ্ধ হোগত চিবজীবন কএ প্রাপ্ত কবত ।

৪৭.শ্রী শম্ভু কুমাব সিংহ- বিদেহক তপেবতা আ ক্রিয়াশীলতা দেখি আহ্লাদিত ভহ বহল ছী। নিশ্চিতরূপেণ কহল জা সকৈছ জে সমকালীন মৈথিলী পত্রিকাক ইতিহাসমে বিদেহক নাম স্বর্ণাক্ষিবমে লিখল জাএত। ওহি কুরুক্ষেত্রক ঘটনা সভ তঁ অঠাবহে দিনমে খতম ভহ গেল বহএ মুদা অহাঁক কুরুক্ষেত্রম্ তঁ অশেষ অছি।

৪৮.ডॉ. অজীত মিশ্র- অপনেক প্রযাসক কতবোঁ প্রশংসা কএল জাএ কমে হোএতৈক। মৈথিলী সাহিত্যমে অহাঁ দ্বাবা কএল গেল কাজ যুগ-যুগান্তব ধবি পূজনীয বহত।

৪৯.শ্রী বীবেন্দ্র মল্লিক- অহাঁক কুরুক্ষেত্রম্ অন্তর্মনক আ বিদেহ:সদেহ পঢ়ি অতি প্রসন্নতা ভেল। অহাঁক স্বাস্থ্য ঠীক বহএ আ উঁসাহ বনল বহএ সে কামনা।

৫০.শ্রী কুমাব বাধাবমণ- অহাঁক দিশা-নির্দেশমে বিদেহ পহিল মৈথিলী ও-জর্নল দেখি অতি প্রসন্নতা ভেল। হমব শুভকামনা।

৩১.শ্রী ফূনচন্দ্র ঝা প্ররীণ–রিদেহ:সদেহ পঢ়নে বহী ক্ষদা ফকক্ষেত্রম্ খন্তর্মনক দেখি রঁঢ় াঙা দেরা নেন রাধ্য ভঽ গেনহুঁ। খার্র রিশ্বাস ভঽ গেন জে মৌথিনী নহি মবত। খশেষ শ্বভকামনা।

৩২.শ্রী রিভূতি খানন্দ– রিদেহ:সদেহ দেখি, ওকব রিস্তাব দেখি খতি প্রসন্নতা ভেন।

৩৩.শ্রী মানেশ্বব মন্বজ–ফকক্ষেত্রম্ খন্তর্মনক একব ভর্ব্যতা দেখি খতি প্রসন্নতা ভেন, এতেক রিশান গ্রন্থ মৌথিনীমে খাগ ধবি নহি দেখনে বহী। এহিনা ভরিষ্যমে কাজ করৈত বহী, শ্বভকামনা।

৩৪.শ্রী রিদ্যানন্দ ঝা– খাগ.খাগ.এম.কোনকাতা– ফকক্ষেত্রম্ খন্তর্মনক রিস্তাব, ছপাঙাক সংগ গ্বণরত্তা দেখি খতি প্রসন্নতা ভেন।

৩৫.শ্রী খববিন্দ ঠাকব–ফকক্ষেত্রম্ খন্তর্মনক মৌথিনী সাহিত্যমে কএন গেন এহি তবহক পহিন প্রযোগ খছি, শ্বভকামনা।

৩৬.শ্রী ফমাব পরন–ফকক্ষেত্রম্ খন্তর্মনক পঢ়ি বহন ছী। কিছু নঘ্কথা পঢ়ন খছি, রহুত মার্মিক ছন।

৩৭. শ্রী প্রদীপ রিহাবী–ফকক্ষেত্রম্ খন্তর্মনক দেখন, রধাঙা।

৫৮.ডॉ मणिकान्त ठाकुर-कैलिफोर्निया- अपन विलक्षण नियमित सेवासँ हमरा लोकनिक हृदयमे विदेह सदेह भऽ गेल अछि।

५९.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सराहनीय। दुख होइत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि कऽ पबैत छी।

६०.श्री देवशंकर नवीन- विदेहक निरन्तरता आ विशाल स्वरूप- विशाल पाठक वर्ग, एकरा ऐतिहासिक बनबैत अछि।

६१.श्री मोहन भारद्वाज- अहाँक समस्त कार्य देखल, बहुत नीक। एखन किछु परेशानीमे छी, मुदा शीघ्र सहयोग देब।

६२.श्री फजलुर रहमान हाशमी-कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक मे एतेक मेहनतक लेल अहाँ साधुवादक अधिकारी छी।

६३.श्री लक्ष्मण झा "सागर"- मैथिलीमे चमत्कारिक रूपेँ अहाँक प्रवेश आह्लादकारी अछि।..अहाँकेँ एखन आर..दूर..बहुत दूरधरि जेबाक अछि। स्वस्थ आ प्रसन्न रही।

६४.श्री जगदीश प्रसाद मंडल-कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक पढ़लहुँ । कथा सभ आ उपन्यास सहस्रबाढ़नि पूर्णरूपेँ पढ़ि गेल छी। गाम-घरक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्रबाढ़निमे अछि, से चकित कएलक, एहि

সংগ্রহক কথা–উঁপন্যাস মৈথিনী নেখনমে রিরিধতা খননক খছি। সমানোচনা শাস্ত্রমে খহাঁক দৃষ্ঠি রৈযক্তিক নহি ররন্ সামাজিক খা কন্যাণকারী খছি, সে প্রশংসনীয।

৬৫.শ্রী খশোক ঝা–খধ্যক্ষ মিথিনা রিকাস পরিষদ–কুরুক্ষেত্রম্ খন্তর্মনক নেন রঁধাওা খা খাগাঁ নেন শ্বভকামনা।

৬৬.শ্রী ঠাকুর প্রসাদ ম্মর্ম্মা– খদ্ভুত প্রযাস। ধন্যরাদক সংগ প্রার্থনা জে খপন মাটি–পানিকেঁ ধ্যানমে রাখি খংকক সমাযোজন কএন জাএ। নর খংক ধরি প্রযাস সরাহনীয। রিদেহকেঁ রঁহুত–রঁহুত ধন্যরাদ জে এহেন স্বন্দর–স্বন্দর সচার (খানেখ) নগা রহন ছথি। সভটা গ্রহণীয– পঠনীয।

৬৭.রঁঙ্কিনাথ মিশ্র– প্রিয গজেন্দ্র জী,খহাঁক সম্পাদন মে প্রকাশিত 'রিদেহ'খা 'কুরুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক' রিনক্ষণ পত্রিকা খা রিনক্ষণ পোথী! কী নহি খছি খহাঁকি সম্পাদনমে? এহি প্রযনে সঁ মৈথিনী ক রিকাস হোযত,নিস্সংদেহ।

৬৮.শ্রী রঁখেশ চন্দ্র নান– গজেন্দ্রজী, খপনেক প্স্তক কুরুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক পঢ়ি মোন গদগদ ভয গেন , হৃদযসঁ খন্বগৃহিত ছী । হার্দিক শ্বভকামনা ।

৬৯.শ্রী পরমেশ্বর কাপড়ি – শ্রী গজেন্দ্র জী । কুরুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক পঢ়ি গদগদ খা নেহান ভেনহুঁ।

৭০.শ্রী বরীন্দ্রনাথ ঠাক্ব– রিদেহ পঢ়ৈত বহৈত ছী। ধীবেন্দ্র প্রেমর্ষিক মৈথিনী গজনপব খানেখ পঢ়নহুঁ। মৈথিনী গজন কত্তহ সঁ কত্তহ চনি গেনৈক খা ও খপন খানেখমে মাত্র খপন জানন–পহিচানন নোকক চর্চ কএনে ছথি। জেনা মৈথিনীমে মঠক পবম্পবা বহন খছি। (স্পষ্ঠীকবণ– শ্রীমান্, প্রেমর্ষি জী ওহি খানেখমে ওা স্পষ্ঠ নিখনে ছথি জে কিনকো নাম জে ছুটি গেন ছন্হি তঁ সে মাত্র খানেখক নেখকক জানকাবী নহি বহবাঁক দ্বাবে, এহিমে খান কোনো কাবণ নহি দেখন জায। খহাঁসঁ এহি রিষযপব রিস্তৃত খানেখ সাদব খামংত্রিত খছি। – সম্পাদক)

৭১.শ্রী মংত্রেশ্বব ঝা– রিদেহ পঢ়ন খা সংগহি খহাঁক মৈগনম ওপস ক্রুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক সেহো, খতি উত্তম। মৈথিনীক নেন কএন জা বহন খহাঁক সমস্ত কার্য খত্তুননীয খছি।

৭২. শ্রী হবেঙ্গ্রঞ্জ ঝা– ক্রুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক মৈথিনীমে খপন তবহক একমাত্র গ্রন্থ খছি, এহিমে নেখকক সমগ্র দৃষ্ঠি খা বচনা কৌশন দেখবাঁমে খাএন জে নেখকক ফীন্ডরর্কসঁ জুড়ন বহবাঁক কাবণসঁ খছি।

৭৩.শ্রী স্বকান্ত সোম– ক্রুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক মে সমাজক ওতিহাস খা রর্তমানসঁ খহাঁক জুড় ার রঁড্ড নীক নাগন, খহাঁ এহি ক্ষেত্রমে খাব খাগাঁ কাজ কবরঁ সে খাশা খছি।

৭৪.প্রাফেসব মদন মিশ্র– ক্রুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক সন

কিতাৱঁ মৈথিলীমে পহিনে খছি খা এতেক রিশান সংগ্রহপব শোধ কএন জা সকৈত খছি। ভরিষ্যক নেন শ্বভকামনা।

৭৫.প্রাফেসব কমনা চৌধবী– মৈথিলীমে ফকক্ষেত্রম্ খংতর্মনক সন পোথী খাৱঁএ জে গ্বণ খা রূপ দ্নূমে নিস্সন হোখএ, সে বঁহ্ত দিনসঁ খাকাংক্ষা ছন, ও খাৱঁ জা কহ পূর্ণ ভেন। পোথী এক হাথসঁ দোসব হাথ ঘ্মি বহন খছি, এহিনা খাগাঁ সেহো খহাঁসঁ খাশা খছি।

৭৬.শ্রী উঁদয চন্দ্র ঝা "বিনোদ": গজেন্দ্রজী, খহাঁ জতেক কাজ কএনহুঁ খছি সে মৈথিলীমে খাগ ধবি কিযো নহি কএনে ছন। শ্বভকামনা। খহাঁকেঁ এখন বঁহ্ত কাজ খাব কববাঁক খছি।

৭৭.শ্রী গ্রঞ্জ ফমাব কশ্যপ: গজেন্দ্র ঠাকবজী, খহাঁসঁ ভেঁটে একটা স্মবণীয ক্ষণ বঁনি গেন। খহাঁ জতেক কাজ এহি বঁএসমে কহ গেন ছী তাহিসঁ হজাব গ্বণা খাব বৈঁশীক খাশা খছি।

৭৮.শ্রী মণিকান্ত দাস: খহাঁক মৈথিলীক কার্যক প্রশংসা নেন শব্দ নহি ভেটৈত খছি। খহাঁক ফকক্ষেত্রম্ খন্তর্মনক সম্পূর্ণ রূপেঁ পঢ়ি গেনহুঁ। হ্বখ্যাহথ্য বঁস্তু নীক নাগন।